1473(17)

M





বাৰতীয় সংস্কৃত, ৰাজালা ও প্ৰায় দৰ্শের অৰ্থ ও বৃংগভি: আরব্য, গারত, হিন্দি অভৃতি ভাষার চলিত
লক্ষ ও ভাষােরের অর্থ; প্রাচীন ও আধুনিক ধর্মসংগ্রেলার ও ভাষােরের মত ও বিবাস, মকুব্যতক এবং
আব্য ও অনাব্য জাতীর বৃত্তাভ; বৈদিক, গৌরাণিক ও ইভিহাসিক সর্কলাতীর প্রাক্তিশগের বিবরণ; বেবলে, প্রাণ, তত্ত্ব, ব্যাকরণ, অলকার, হলোবিল্যা, ভাষ,
ল্যোভিষ, অভ, উত্তিশ্ব, রসারম, ভূতক্ব, প্রাণিতক্ব, বিজ্ঞান, আলোগ্যাবী,
হোমিলগাবী, বৈদ্যুক, ও হক্ষিমী মতের চিকিৎসাগ্রশালী ও ব্যবহা,
শিল্প, ইফ্রজাল, কৃষিতক্ব, পাক্ষিক্যা প্রভৃতি নামা শালের
সারসংগ্রহ অকারাদি বর্ণাস্ক্রমিক বৃহত্তিধান

সপ্তদশ ভাগ।

রোজ—বস্ত্র

১৪ নং ভেলিপাড়া লেন, খ্যামপুকুর, বিশ্বকোষ-কার্য্যালয় হইডে

শ্রীনগেন্দ্রনাথ বস্থ কর্ত্তৃক সঙ্কলিত ও

প্রকাশিত।

কলিকাতা

মং রামধন মিলের-লেন, ভামপুরুর, বিবক্ষোব এেলে
 শ্রুপ্চিন্দ্র দাস বারা মুক্তিত।

1	834	ब ्ना 890		ee>	40 609 (ग ी ११> १	176 (8¢3	र्मन १०७	বাকা	টক	কা	रूप		চা চা	ুক্য ং	थांग ।	চাৰুকা	610	€ ম-	৬ৡ খ	প র্বা ভাক ')ম শ্	ভাৰ	
,	# 	~ ·	0	8		~	٠,	<u>-</u> ا	`	 ۱۰	"	<u>ئۆ</u>	>0	>8	36	3*	39	3 F	স ল ১৯	٠,	23	<u>۔</u> ۲२	২৩	•8	
٥	च	9	অ		·	4				জ	व्य	•	व	484	व्य	4	•	W		-		व्य	9	•	44
2					'আ	আ	আ	আ	আ	আ	আ	ব্যা	আ	আ	না	*3	আ		· W			•		আ	
9				*	•	*	1	₹	₹		₹	•	₹		ē.	¥	₹	₹					ŧ	₹	
. 8	4					4	₹		Ø	9	4	4	4	4			\$	4						\$	
C																*	•								
•	Ð					Ø	à				Q	Q	Œ		Œ	Œ		4		এ			9	Œ	٠
7	-	*		*	-	-		*	*	3		_	-	-	-		-	*	-	-	·§	- ·	_	2001	
2	₹	₹ 4	रका श	र थ	ह चि	रू च	का च	ৰ বি	4	दर्ग चि	কা খে	इ चि	ক থি	*	Ŧ	ক খে	क	হ থা	की धर	₹	डू था	ক	रू देश	का दथ	
۶.	100	গ	গি	গৈ		গ	গো	গা	শী	গো	গো	গ	9	গো	গো	3	গো	গো	গৌ	•	গ	গৃ	গ	গ	
>>	च	Ę	2	च	খা	*	ų	•	٦ ع	₹	•	7	च	•	•	₹	चि	হা	₹		घ	¥	4	ų	
>2	可	o	₹	वि	ক্	व्य	#	इ टेन	63	ना	বো	7	*	ঙ্হা	CT	Ŧ			CT		₩.		•		
20	5	Бİ	6	Þ	CO	51	Б	51	5	চি	5	চৈ	Б	5	15	চো	5	C5	Б	Б	55		5	চো	
>8	(BE			.85	Œ	2 €	Ę	矆	(N E	(™	क्	5	(E)	硬		暖	চিছ		₽ €	5	Ę				
36		4	জা	क्	टेब	देख	-	ব্দা	का	4	জি		•	9	4	জা	₩:	4	C	빡	4:	-	अ	9	
24	*			<u>.</u>	- cha	مخت		- Opp	<u>an</u>		**	*	4	(a)	*	40	ख्य	50	30 1	*	*			*	
>9	<u>5</u>	ট		টা	P ?	টা	Ū	F F	টা	টে	ট	ট	5	ট	টা	টি ঠা	ট	Ū	78.	ট	ff _		টা	F	
24		ডি		ত	186	ালে	वर्ष	0	ਜ਼ਮ	િ	nta.			m:				186	हैं चर्च	100	8		and.	Person	
33 30		₽¢		9	4	ডো	<u>ডা</u> ঢ		ডা	19	ড		5	Œ	ডে	জুগ ড		®	ডা	Ø	3		ভা	Ast	
\$5	ণং	٠ ٩	C 4	4	P	ette	9	1	9	লা	ণে:	C٩	41	P	• •	শাং	भार	•11	41	41	41	4	41	4:	
२२	Æ	<	তী	তি	ভ	ভা	তী	26	ডিঃ	Æ	Ą	Ø.	ভা	তী	ভা	Æ	A		তে	তে	ভা	ভি	35	তে	
२७	ર્	9	খ	থা	থা	থা	थ	খ	4	વિ	થ	ংগী	થિ	थ	थि	થિ	થ	থা	থা	થ	থা		થ	থি	
₹8	सी	न्त	मी	' स्त	न	CT	ंस्	नी	न	CT	দৌ	₩.	দে	स	मि	टेम	H	R	CT	न	P	Q	Ą	F	
₹.	ধি	ধি	Ķ		८थो	िध	ধা	CH	धि	ধ	श	ধা	ধ	ধা	ि	ধা	ধা	ধা	ধি	वी	ধা	H	भ	4	
२७	又	ৰ্	নৈ		নে	叉	न	म ्	퓇	न१	নেঃ	ন্	ㅋ	নাং	ना	শে	要	₹.	नी	নো	নো	নো	নে	7	
२१	꺽	পা	পু	পা	পু	প	পু	পৌ		পৌ		পৌ	બ્	পৌ	7	1.	멧	পৌ	পু	পৌ	পৌ	7	*	শৌ	
54		Ţ		\$ 7	-	ফ	य	ফ	क्	_	하	_	ফ	स्		平	₹	4	₹					4	
२३	বো	વ	ą	ब	ৰি	₹ —	ব ~	₹	₹	₹	ৰ ভৈ	বা	বো	ৰু	বে	ৰ	· ব	বো	₹	4	₹	_	₹	বা	
9.	ন্তি	3	জি মৈ		_	্ভু কো		₩ ₩	₹			ভূ মা	ভূ ম	ভা মি	2 5	₹	24 26	Á	ভা	¥	¥	Æ	1	<u>a</u>	
৩১ ৩২	자. 목	ম ঘ	্ৰ যা	्र री		। মে। যু	भू यः	মা যা	भू वा	মা যাং	মে যে	ৰ। বে	ৰ বো	াশ খো	म् या	মে ধা	মা বো	म् य	• মৃ যো	মে স	ম বী	মে হ	মা যা	মূ	
ઝ	বে	7	素	70	- '2	्र ऋ	রা	রা	্ব। হো	ব্যো	রা	त्रा	রা	স্থে	al	#	রা	ζn	टेन्न	यू देव	র র	₹	থ। ক্লো	व श्री	
08	न	न	(*)				ল	•	শে	T	न	শে	শো		न	ij	লো		7.1	गा	ू टेन	न	व्य	। अप	
9¢	র্	ব	বি	ৰি		वी	বি	বি	বৈ	বা	देव	বে	देव	বি	ৰি	वि	ৰি	ना	ৰা	ब	ड	বি		वी	
9	À	7	শে			*	7			*	M	9	4	শে	**	CM	শে	4	*1	M	9	41	*	7	
29	ষ	ষ	ৰু	ষ	वि	4	4	4	₹		বো	বে	বি	T	ৰি	বো	4	ৰাঃ	ৰি	ষ	₹		বি	4	
O F	স	7	[স					শে		নৌ		मी	नी	সং	7	শি	শে	न्र	শে	निः	7	স		गिर	
Ø,	₹1	₹	Ę	Ę	হা	হা	C	₹ ₹	Ψį	হা	হা	₹	হা	•	T	री	₹	₹İ	₹	হা	देश	₹i	₹ :	C₹Í	
8.										_	_	_	-	<u>শ</u>	শে	ग		<u>ग</u>		_				* 1	
83	খ্যা	কা				শে			*	F	(F	क जोन	(M	*	1 3	শে	₫	Ą	41	8	T	₫	Ą	1	
88	W eff	C4	*5 (*1			38	**	। রা ^	र्फा इत	ৰ ৰ	कि नाः	वान् वी म्	জ্যে গাং	QN.	ভা >্গ	\$			শো ভা	নাৎ শ্ৰা		खें: ज्या		ख	
\$10 88	ণ্য জা	छ (क्		(: এই স্য		*	4	म मा	₹I Ø	#5 @	नाः स्	ष् र्ष			म् म	<u>\$</u> 1	টুক ত্য	CHI	च्या क्रारि		म की	জ্ৰা শ্যা	কা গেৰ্শ	ni F	
84	40	8	: 9	- U 22"	२		*5		*5	18	4	Ę.	2	या	C¶	হ হ্প	CITI		割	म्	₹	3	مامر برآدر	। रिज	
84	4	*	: 4	;	मा : ल	: 1		₩		B	गा	%		হ্প		#	-	3	٠.		7	चित्र चित्र	1		
	-	কাৰ ক'										·	`	•	•					•		. ,	71	~	

দাক্ষিণাত্য লিপি, খুড়ীর ৮ম হইছে ১৫শ শতাব্দী পর্যন্ত ৪র্থ তালিকার বির্তি

			प रा	April .	@) (°	11-19	ЯЭІЯ	•4	7700	-		F) *()	140 4	, 64	O110	जारि	भेग	4		টেলেখ	
1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1	*13	<u> </u>		াঃ চালু	का	10/10/10	**************************************	44.6	~	78		¥:	. ;	3400	-181 es	alcelor.	•		ž ,	ভাষর র	 Ilaani
	į	2	ABON.	. 2164	ृः ५०दा		FA	F %	110 4		e 4;		¥ %				-			~~~	
•	•	•	6	•	•	-	_	_	**	>>	*	3.0	>*	24	36	31	34	>>	٠.	43	44
> 44	* •	•	•	4		ना	₹,	4	4	•	4	4	•	4	•	•		4	4	•	94
र जा		4	_	<u>ৰা</u>	91	বা	ৰা	4		41		লা	শা	4 1	4	<u>লা</u>		4 1		জা	91
0 £	₹	Ĭ	₹	1	R R		X	*		ŧ		**	\$	₹	₹	₹ ¥		\$		7	夏
• P	•	3		न 20	6		*		2			b	è	\$	4	3		æ		₹ 5	₩ 5
	•	•	t	•	•	•		Ç	•		•	•	•		•	•		•		•	
9	•		•			•		•						•							
v a	4	4	æ	4	4		4	•	4			J.	4		4			-G		ď	4
a	•													•	4	4		4			
٠.							9														
22 A	₩ì	₹	C₹I	C#	(क)	₹ 1	(₹1	7	₹	কো	*	(∓	₹.	Ψλ	4	*	₹	₹	₹i	*	41
>ર થ	4	4	41	41	41		4	41	•	4	4	4	4	41	割		C ▼	₹	₹		₹
>0 4	পি	C			71	CFE	4	গ	CHI			•	সি	7	Ŧ		ৰে ।	रेक		栗	₹
>		4	2	বে	4		4	4		_	_	4	পৃথ	্ৰে!	栗			4		C#	(1)
24 🛣		_				233	49			*	*	7	-	#	4	40	-4	*	_		
30 B	*5	fi		(5		5	5	₹ 	5	<u>₹</u>	5	5	5	5 100(1	5 51	চ চি	5 1	5	हि	Б	6 1
37 R	書	E W		व्य ्	। ह जी	*	Ę.	म्हा व	(X	甲	¥	喇		= · · · ·	চি	10	C5 (51		Œ		f6
39 49	*		-		*	=	ण्र	•	9 1	-	1	•	(es	(a)	10		apr.			.ge	Į.
₹• ₹₹	ĞI	5		` ;	8		V I	BI	ķ	E	Ř	Di	16	5	5	Ē	B I	र्व		•	है।
₹2 B	*1	5		b	b		3	8	èι	Ř	i	•		*	16	10		টা		वी	Ī
44 (T	ডি	G	া ভ	E	ভ	Œ	ডি	U R	4	-	5	W	5	G	Ĕ			ţ		1	ं क्य
२७		G	it .				¥											•	र्ट	; (টো.
48 1	٩	4	4	19				P	4	বৈ	24	41	41	পে	1	4			41		41
২৫ ডি:		9						•	₹i	ভো	3	তি	81	ভাং	9	Ø	তি	ত:	fe	5 3	3
২৬ ধা	4	1	. 4				4	4	थाः	41	43	4	[4	बी	কি	Æ	_ A	3			ভি
२१ मी	स्रो स्थ	3						4	₽ ~	े मा	्रम्	पि	CVI V	टेल चि	Æ		(ত	ভে	j		ভৈ
२५ व	િ વિ	4	1 4				। धू स नः	4	41 80	ধা দে	ं थी नि	4 (4	ৰে।	नी	তে দৈ	7	্ভো নি	म	f		(ক)
২৯ সৃ ৩০ পি	7		1 13: 1		[및 에 약		ก าง ที ๆ	• भू	ष् भ	٠, م	*11	મુ	71	1	#	9	।"। श्र	71		ন ন 11 প	•
62 4	'		₹ I T				· ·		*	*1	*	*	"	*	প				Ħ		Pt "
σ ξ Ψ	3				• বি শু		1 1		4	स्य	•	4	3	8	•		শে	**		শু	7
00 W	•					F)	•	S i	-	•	•	•	更	ভা	শে			`	শো	ે ભ	CPIT
જકર્મે	না					4 1 1	ৰ ম	ৰে	া শা	वि	41	7	7	7	7	¥	Ą	*	7	. 4	দৈ
ওং বে						~	य य			4	₹.	व	বে	ৰি	वि	4	বে			য়া - বা	वि
** *1			# 1				११ स				ৰো	al		নো	7	A		7	*	. , , ,	*
৩৭ সূ	, ,		লা বি	~		ने च			गि	ग		श्रू रेष	(9 1	ग	শে	7	্ণি =	7	_ (1	न न	লি
৬৮ বে ৩৯ শি		4	(प (मो	₹ 1	17 #		य य ले :	. >.		ৰ লা	-			ः । मा	ৰ বি	3	ৰা		4	4	नी
8 - 47			व	TI ₹	₹		4 7 4			न। य	न व	7		। ना व	बू						
45 60		ŧ	71	7				, 2		· •	_	मू मर			*						
84 E		t El	Ř	ŧ				TE (1													
10		रेण	Pi	4			7 1	লৈ ক	1	4		नि	লে	i or		লা	णि	नि	7	্ লা	नि
88 %		æi -	4	7	4		C# 1	¥ 5	4 4	4		•	₹	*	াঃ সূ		मि	27	7		
84 *		2 1	₹	•	*	₹	# 1	† 1		4		 ₹]	CT				_	7	देव	7	퐧
14 3		4	***	•	*	a .	C	मी म	4	*		4	জা			*	R	W	Ŧ		ৰি
41 W			_	71	*	4			4 a			3			T 7	₩ est	শ্ৰে			3	
er a		(취) -	7	•	4	21	(#1 ·		। देश मूर्ग व्य			€ ₹!			। प्र संबं	41 24			art .	4	2 22
8	Ţ	4	ना	•	ল	स्र	•	14 .	বুল 🐃		Ħ	-41		•	, 7				41		24

	्र बरमाक-मिलि	८ । मृः मृः ४थ मठामा	6 नानाषाठे थुः शृः २३ मठायी	a नातिक थुः शुः ऽ-२३ भेठावी	० क्वा कु: ४-०व महाकी		المامد ال	र भार कुः ०-६६ मछादी			८ यमछी थुः ७-५त्र मछायी	🔀 माहेक्टे कुः ৮य महाजी	, vo	{ जगात्मत्र मिक्षि थुः ६व+४व ४	८ कशिक थुः १-५व मधानी	ó ateibe q: c+a ≠ei@	্ৰ জীৱৰ ভাৰত খ্ৰ: ৮খ শতাৰী	र छरकन थुः असमधानी
3			>	•	>	>		>	>	>	>		>					
ર			ર	2	*	•	•	2	*	•	ર		٠ ع ع				•	
9				9	9	9		•	٩	ڻ	•		9		9			
. 8	8			8	8	8		8	8	8								
· ·				8	8	8			8									
9				e e	•		4		¢	ŧ	•							
7 b	4.			•	•	•	•	•	E t				t .					
2	•	•	٩	٩	9	٩		٩	1	9	•		•		. 1			
٥.			7	•	,	7		7	7	7	9	1	1		. 1			
22				ь	ь	٦	٧	b	۳	٧	·					۲	۳	.
75				b			•	ъ	V		•				·	•	•	•
>9			2	2	۵	2	৯	•	>	- 20	>	۵	۶	۵	·	۵.	``	
>8			30	٥.	3.	>•	3.	>•	>•	>•	>•		٥.	-	٠.	5.	۶٠	
>6				>•	>•	>•					>•		٥.		>•	>•		
20				₹•	₹•	₹•	₹•	₹•	₹•	₹•	₹•		٠.		₹•	₹•		
>9					•	90	9.		90	• •	•		9 •	9.				
24				8•	8•	8 •	8 •				8•		8•					
25					8•						8 •				8.		•	
₹•	¢•				4+	4.	¢.											
25						t.							,					
२ २						6.	••		••	••	•							
२०				4.	9.	9.	9•		4.		9.	9.						
૨ ક ૨ €			b •		90	1					9 •		1		•			0
26			•		۵٠ ۲۰	p. 0	> •		••		۲. ۵.				b. •		٠.	b.
49			٠	> •	>••				ەھ	>•• >•	~		> • •		>**		>••	
26					• • •				3	•••			3	:	3		>••	
22	٠٠ ٠	₹•	· ২•	· ২••	₹••				3	૨ ••	٠٠,		• • •		•-•		•••	२
٥.		•	900	•	•				•	•	•••		9	900				
৩১			8.							8	8		8	8		4		
૭૨					>***	२•••	••••											
್ತು																		
08			•••	>***	8	8		••••	****									

			6	है जा	नेकांत्र	বিশ্ববি	ठ		<u>.</u>	
	किनियात्र जिल्ला		নেপালের	। পুৰি			जम .		A 10 1	JA:
	N. N.	· {	8		7	_	4	त्रा	100	Ci,
,	•	•	•		,	3	•	15	V.	
•	ą	ર	į.		ર		2	ર	6.0	M
9	٥	ò	9		9		ù	Ö		
	8	8			8		8	8		
	Ł	•			ť	ŧ		Ł		
				•		9		•		
9	•	9	9		9	,	9	9		
	·	•	b		*	Ė		b		
۵	>		a		2	۵	>	۵		
3.	>•	>•	•		>•	5.	>•	>•		
22	₹•	٠ ٤ ۰	₹•		₹•	२०	₹•	₹•		
>5		9.	9.		9.	9.	•	٥.		
30		8 .	8•		8•	8•	8•	8•		
	4.		e.				4.			
>¢		••	•		••	••	••	••		
>6		9•	9 •		90	9.	9.	9.		
>9			b. •		b •	je o		b •		
24			.		>	>•	>•	>•		
>>		>**	>••		>**	> •	> •	***		
२०		2			₹••	5.0	₹••	२०●		
₹ 5		9.0				٠.٠	•••			
२२							8			
>			9	8		•				
₹					¢	•	9		0	
٩							٩		>	
8		ર	૭		¢					
•			9	8	¢	•	٩	•	2	
•				8			_	b	»	
. 4		ર	9	8	•	•	7		2	
•			9	_	t		_	b	_	
2		ર	9	8	¢	•	9	b	>	
2.		ર	9	_				1_		
>>		ર	9		¢	•	٩	F	2	
>5	•	ર	9	8	t	•	•	7	•	

..

J., \$1380.0

一大年 日本 一本 一部 日本 日本 一部

्राह्मा अस्त्र अस्त्र । •

THE THE STREET STREET,

ការប្រជាជាក្រុងក្នុងសុខស្ថិតសង្សារស្សាស្រប់ ខេត្ត ស្ថិតសង្សាធិន្តិក្នុងសុខសុ

٠.



•

বিশ্বকোষ



সপ্তদশ ভাগ

রোঝি

রোটাস

রোজ (দেশৰ) প্রতিদিন। নিজ্য।

রোজ আফ্জান্ (নাজির), সম্রাট্ মহম্মদশাহের অধীনত্ব

একলন থোলা। খালা সরা নামে প্রাসিত্ত। ইনি ১৭৪৮
খুটালে দিনীর নিক্টবর্তী শাহজহানাবামে 'বাস নাজির' নামে
প্রসিদ্ধ উদ্মান-বাটিকা নির্দাণ করান।

রোজ বিহান্ (শেখ), একজন প্রসিদ্ধ সুসলমান পঞ্জিত ও
সাধু। ইনি ভফ্নার আলি আলি নামে কোরাণের টাকা ও
সক্বং-জল্ ম্বারিব্ অভি কএকথানি প্রস্থাবন করেন।
১২০৯ খুটাকে ইবার মৃত্যু ঘটে।

রোজা, ম্নমানদিংগর চল্লিশাহ উপৰাসরূপ পর্বভেদ।
রোঝান, পঞ্জাব-প্রদেশের দেরা গাজি খাঁ জেলার অন্তর্গত
একটা নগর। নিজু নদের পশ্চিম কুলে দেরা গাজি খাঁ
নগরের দক্ষিণে অবস্থিত। অক্ষাণ ১৭° উ: এবং জাখি ৩৮৫১৯০০
পূ:। সজারি বলুচ জাভির তুমান্দার (স্পার) বহুরাম খাঁ
১৮২৫ খুটান্দে এই নগর ভাপন করিয়া রাজধানীরূপে মনোনীত করেন। বর্তমান স্পারের প্রতিষ্ঠিত বিচার-পূহ এবং
ভাহার পিতা ও আতুপ্রের স্যাধিসন্দির কেখিবার জিনিস।
পশ্মী রাগ্ণবা আছোদন-বল্লের জন্ত এই হান প্রসিদ।

রোঝি, বোবাই-প্রেসিডেনীর কাঠিরাবাড় বিভাগের নবানগর রান্যের অন্তর্গত একটা বীণ। কছেউপসাগরের নবানগর খাঁড়ির মোহানার নবানগর হইতে ৪ ক্রোপ উত্তরে
অব্ভিত। এবানে চারণ-রম্বীর উদ্দেশে স্থাপিত একটা
মন্দির আছে। কিংকান্তী এইরপ, একদা নাগররাক মুগরার
ব্যব্ত ইবা একটা নীলগাইর পশ্চাবস্থারণ ক্রেন। প্রাণ-

ভবে ভীভ নীলগাই ক্রভবেগে আদিরা নেই চারণ-রনণীর আশ্রমে প্রবিষ্ট হইল। রাজা পশ্চাৎ পশ্চাৎ আদিরা উপনীত ছইলেন এবং সেই বুভা চারণ-রনণীকে মৃগটা দেখাইরা দিছে বলিলে ভিনি বৃগ সমর্পণে অখীরুতা হইলেন, রাজা বলপূর্বক মৃগটা বাহির করিরা নিছত করেন। ইহাতে ঐ বুভা কুণিতা হইরা রাজাকে অভিনন্দাতপূর্বক আত্মতীবন উৎনর্গ করেন। বুভার এই অক্ষরণীর্ভি ত্বরণ রাধিবার অভ সম্প্রক্রৈকভোগরি ভাষার আশ্রমসারিহিত হানে একটা মন্দির ছাপিত হইরাছিল। এই বীপের উত্তরপূর্বকোণে স্ক্রাবের অলমেধা হইতে ৪২ ফিট উচ্চ খেতপ্রথমনির্বিত ভাজোপরি এধানকার আলোকবাটিকা বিভ্যান আছে। অক্ষাত ২২০০২ ৫০ উ: এবং ফ্রাহিত গাটিকা বিভ্যান আছে। অক্ষাত ২২০০২ ৫০ উ: এবং ফ্রাহিত গাটিকা বিভ্যান আছে। আকাত ২২০০২ ৫০ উ: এবং ফ্রাহিত বাটিকা বিভ্যান আছে। আকাত মহানগর-রাজ এই আলোকবাটিকা বিভ্যান করান। আকাশ পরিজ্ঞর থাকিলে সমুদ্রগর্ভেণ বাটকা দ্বাহ হুতে ইহার আলোক কল্য করা বার।

রোট্ (জি) কট (জভেজোহণি যুক্তরে। পাও।২।৭৫) ইতি-বিচ্। ১ হিংল। ২ বংক।

রোটকব্রত (क्रो) রভভেগ। (রভপ্রকাশ)

রোটাল, পঞ্জাব প্রদেশের বিলাস নেলার অন্তর্গত একটি
নিরিছর্গ ও তংপাদমূলত গণ্ডগ্রাম। লবণপর্যন্তের বে তানে
কুহান নদী নিঃস্তত হইরাছে, ভাষার সমীপ্রমী একটী শৈলপুলে
অবস্থিত। অকাণ ৩২° ৫৫ টা এবং গ্রামিণ ৭৩° ৪৯ পূ:।
এখান হইতে বিলাম নগর ৫৪০ জ্বোলা সম্পিশ্পুর্য।

আফ্রান্স্কার শেরণাই যে সমর দিলীসিংবাসন বলপুর্জক আশহরণ করিবাছিলেন, সেই সমরে ১৪৪০ খুটাকে ভিনি গক্ষজাতিকে ধনন করিবার অভিপ্রাহে এই হুর্গ স্থাপন করেন। তিনি এই গিরিপথের সন্থাদেশে অবস্থিত একটা শৈলপুল পরিবেটিত করিয়। ছুর্গের চতুর্দিকে প্রার্থ নাইল বিস্তৃত একটা স্থানীর প্রাচীর নিশ্বাণ করান। ঐ প্রাচীর শক্ষর আন্দেশ হইজে হুচু রাখিবার জন্ত হানে স্থানে আবস্থক নত ৩০ হইজে ৪০ ফিটু পর্যন্ত প্রশক্ষ করা ক্রইরাছে। ইহার প্রবেশবার অভ্যাপিও পূর্ণনাত্রার বিরাজিত আছে, ক্রির হুংবের বিবর সীমাপ্রাচীরের মধ্যগত ভুর্গবাটিক। জালের ক্রবলে পড়িরা বিশ্বক ছুইরাছে। এই স্থানিক হুর্গভূমির পরিমাণ আন্দান্ধ ২৬০ একর হুইবে। এই স্থানের প্রাকৃতিক চিত্র অতীব মনোহারী।

রোটাস্গড়, (রোহতাস্) বাদালার শাহাবাদ জেলার অন্তর্গত একটা গিরিছর্গ। সাসেরাম নগরের ১৫ জোণ দক্ষিণে কোএল ও শোণনদের সক্ষের অদ্রে শৈলোপরি স্থাপিত। অন্ধাণ ২৪° ৩৭' ৩০' উ: এবং ক্রামিত ৮৩° ৫৫' ৫০' পু:।

শাধাবাদ জেলার স্থানে স্থানে প্রাচীন কীন্তির অনেক নিদর্শন থাকিলেও প্রত্মত্বাস্থ্যকিংলার এরণ আগ্রহের বিষর আর কোথাও নাই। এই স্থানের প্রাচীনত্ব স্থানে নানা কিংবদন্তী প্রচারিত থাকিলেও এক্যাত্র চুর্গ হইতেই উধার অভীতকীর্তির স্থান্ধই আভাগ পাওরা বার। স্থাবংশাবতংশ রাজা ধরিশ্চন্তের পুত্র রোধিতাখের নামাস্থ্যারে এই স্থানের নাম গোহিতাখগড় হইরাছিল। পরে মুগলমানাধিকারে ক্রমে রোহত্তগঙ্গড় ইতে রোটাস্গড় নামে আথাতে হইরাছে। এথানে গোহিতাখ-মুর্ত্তি প্রতিতি ছিল। স্থানীয় লোকে ভক্তি সহকারে সেই দেবপ্রতিম মৃর্ত্তির উপাসনা করিত। স্তাট্ অরক্ষতের রোটাস্গড় অধিকার করির। ঐ স্থান ধ্বংস করেন।

উপরোক্ত সদাগরাপূণীর অধিপতি মহারাজ হরিশুল্র ছইতে তবংশীর কভ জন নরপতি এই চ্গাধিকার রক্ষা করিরা আদিয়াছিলেন, ভাহার কোন বিবরণ পাওয়া বায় না। ঐতিহাসিক মৃগে ১৫০৯ পুটাকে শেরশাহ এই স্থান অধিকার করিয়া চ্র্গাংজারে যত্নবান্ হন, কিন্তু কিছুকাল পরেই তিনি সেই আন পরিভাগে করিয়া শেয়গড়ে চ্র্গ নিআণ পূর্ব্বক তথার বাস করেন। সমটে অকবরশাহের সেনাপতি ও বালালার প্রতিনিধি লাজা মানসিংহ পুঠীর ১৬শ শভাক্তের শেষভাগে এই চ্র্প হাল্ট করিয়া তথার সেনাদল স্থাপন করিয়াছিলেন। প্রাচীন চ্র্গের সংক্ষার ও নৃত্বন বাসভবনাদি তিনি নির্দাণ করিয়া বান। তাহার উৎকার্থ চ্র্গাত্রহ সংস্কৃত ও পারভভাবার লিখিত শিলাক্ষক চ্ইথানি হইতে ভাহার আপুশ্রিক বিবরণ বিরুত আছে।

বোটাস্গড় লৈগের বে অধিতাকাঞালেশে **ব্যত**্থর্গর নিদর্শন রহিরাছে, ভাষা পূর্বগশ্চিমে ৪ মাইল এবং উভর-দক্ষিণে ৫ মাইল ছইবে। উহার সমগ্র পরিধি আন ২৮ মাইল। ১৮৪৮ খুটাব্দে ডাঃ হকার এই স্থানের উচ্চতা ১৪৯০ ফিট্নির্দ্ধারণ করেন।

এই পর্বতে উঠিবার ৮০টা রাজা আছে। ভর্মধ্য ৪টা বঙ্গবাট ও ৭৯টা ঘটা নামে কথিত। ছুর্গপরিক্রমার মধ্যে বজ্ঞতিনি প্রাচীন কীর্ত্তি দৃষ্ট হয়, ভর্মধ্যে মানসিংহের প্রতিষ্ঠিত ছুইটা হিন্দুমন্দির, অরঙ্গজেবের নির্মিত মদ্জিদ, মহাল-সরাই, নামক প্রাসাদ ও 'বারদোরারী' নামক রাজকার্যাণর স্থাপতাশিলের অভ্যুৎকৃষ্ট নিদ্দন।

ভবিষ্যত্রহ্মখণ্ডে গন্ধার অন্তর্গত কহিদাসপত্তনের উল্লেখ আছে। ভৌগোলিক বিষরণাত্মারে ঐ স্থানকে রোটাস্গড় বলিয়াই অনুমিত হয়। (ত্রহ্মধ৽ ৩০৬)

রোটিকা (ত্রী) পিটবিশেষ, চলিত কটা। ইহা মরণা, মায়, ছোলা প্রভৃতি ঘারা প্রস্তেহইয়া থাকে। সাধারণতঃ কটি বলিলে মরদা ঘারা প্রস্তুত খাদ্যবিশেষ বুঝায়। ভাবপ্রকাশে—

"७६(गार्महूर्वन किष्किर्शृष्टीक (भागिकाः।

ভপ্তকে খেদরেৎ ক্লখা ভূষোহঙ্গারেহগি তাং পচেৎ ॥

নিৰ্বৈধা রোটিকা প্রোক্তা গুণানতাঃ প্রচন্দ্রহে।

त्राष्टिका वनक्रम्का। दःश्वी थाञ्चर्कनी ।

বাতমা কফকুল্ডবরী দাঁগুয়েনাং প্রপুজিতা।" (ভাবপ্রত)
মোটিকা প্রস্কৃতপ্রবালী—শুক গোধুন চূর্ণ করিয়া তন্ত্রারা
কিঞ্চিৎ পুরু পোলিকা প্রস্কৃত করিতে হইবে, পরে উহা
ভাওরার গরম করিয়া লইয়া প্রভূত অলারাগ্রিতে (করণার
আগতন) পাক অর্থাৎ সেকিয়া লইলে ইহা প্রস্কৃত হয়।
ইহার খুণ বলকারক, কচিজনক, শরীরের উপচয়কারক,
ঝাতুবর্জক, বায়ুনাশক, কফকারক, এবং খুরু। প্রবলাগ্রি
মানবের পক্ষে ইহা বিশেষ উপকারী।

ববরোটিক।—ঘৰ চূর্ণ করিয়। উক্তরণ প্রণালীতে রোটাই প্রস্তুত করা হয়, তাহাকে যবরোটা কছে। ইহার গুণ— রুচিকর, মধুরয়স, লঘু, মলবর্জক, গুক্র ও বাতজনক, বল-কারক, এবং ক্ষরোগ, পীনস, শাস, কাস, মেহ, প্রমেহ ও গলরোগনাশক।

মাধরোটিকা— শুক মাবকলারের চুর্ণকে চমনী বলে, এই চননী বারা বে রোটিকা প্রস্তুত হর, ভারাকে বলভজিকা বা মাবরোটিকা করে। গুল কল, উষ্ণবীধ্য, বাযুবর্ত্তক ও বলকারক। ইহা প্রবলায়ি মানবগণের পক্ষে প্রশস্ত । মাবকলাইরের হাইল বলে ভিজাইরা উহার তুব ফেলিয়া বিয়

त्त्रोत्व क्षणहेवा बद्ध त्ययं कत्रियां वहेत्व छादारक यूगरी करहा अहे यूगरीत करों करू के विकासक, अवर विकिथ बाह्यक्रका अहे क्षणीत नाम सर्वातिका।

চণকরোটকা-কল, কল ও বজপিজনাশক ওল, বিষ্টা, এবং চলু:শীড়াকর, ভিলের রোটাও এইলপ ওপযুক্ত। রোড়, উলাব। অনাধর। জাবিং পরবৈশ অকং কেই। সই বোড়কি। লোট, রোড়জু। বিট্ ক্লোড়া। বিচ্ রোড়কডি। সূত্ অক্রোড়ং।

রোড় (বি) ২ ছন্ত। ২ কোন।

ব্যেড়, পঞ্চাৰ ও বৃক্ত এনে শ্ৰাসী ক্লবিনীৰি-ভাতিবিশেষ।
পঞ্চাবের কণাল ও অবালা জেলার সীমান্তর্মনী এবং
ছারীবরের দক্ষিণছ ছবিত্ত ধাক্জালল এনেশে চৌরানীবানি প্রানে ইহারা বাস করে। ভারত্ত্রের অবসান সমরে
পাপ্তবগণ কুফকুল সমূলে নির্দুল করিবার আশার শেষরুদ্ধের
সমর বে ছানে সৈন্তসমবেত করিয়াছিলেন সেই আমীন্
প্রামই ইহানের আলি বাসভূমি। এই ছান ক্টতে ইহারা
ক্রমশং পশ্চিম ব্যুনাথালের ভারবেশ, নিম্ন্ত্রিল ও বিশ্ব

ইহারা দৃঢ্কার ও স্থালরগঠন। দেখিছে সর্বাংশে জাটলাভির অসুরূপ; কিন্তু শান্ত ও মন্ত্রপ্রভিনিশিষ্ট ও কৃষি-কার্যানিরত। জাটলাভির ভার ইহারা ফুম্বপ্রির বা প্রস্থাপ-হারী নহে।

हेरात्रत छेरमीस मध्यक विरमय दकान वर्रमाभाशान नारे। चात्राका-(भूक्षभक्षावधारात्म द्वाका नात्र बाक)-দিগের ভার ইহারাও আপনাদিগকে ক্ষত্রির বলিয়া পরিচিত करत। शतकतारमञ्जल करत काकाताः "व्यक्ति" (व्यात्र - व्यश्त) আভি বলিরা পরিআণ পাইমাছিল, এই জন্ম ভদব্যি একটা খতত জাভি বলিয়া পরিগণিক হইয়াছে। যুক্তগ্রেদেশের चारबाफा ও गकारबंब शृक्षांकनवांशी रबाफा वहेरक खनूत ৰানেশরপ্রাক্তবাদী রোড়েরা বে দম্পুর্ণ পৃথকু জাভি, ভাহার কোন যুক্তিযুক্ত আমাণ নাই। পাশ্চাভা জাভিজজুৰিল্গণ श्र्यांकनवानी त्वाकांकांकि इटेंटक शक्तित्र शक्षाववानी त्वाक-দিগতে অপেকাকত দ্বল্যার দেখিরা চুইটাকে পৃথক লাভি বৰিরা করনা করেন; কিন্তু ভাতাদের পরস্পরের আচারাদি नका कतित छेडवरकरे जिल्ह बनिया त्वाव रहा। भागानिक च्चाठारत कार्वेनरभव महिक हेशारमत वित्मय (कान नार्थका ৰাই।

নোরাধাবাদবাদী আধীন-প্রামীয় রোড়েয়া বলে বে, আহারাও ছালীয় ভৌহান রাজপুড়দিগের এক শাধা, সংগ হইতে এখানে আদিরা বাদ করিয়াছে। অপর রোজের বলে বে, হোত্তত জেলার বাবর কর্মীলের বলনী গ্রানই ভাষাদের আদি বাদহাদ, আবার কেহ কেন্দ্র স্থান্ত্রনা হইতে ব্যাগত বলিয়া গরিচর দিয়া থাকে।

ইবাদের সংখ্য দাপ্ৰাদ, সাইয়া, খিটি ও জগুৱান ঐভৃতি
ক্ষক্ত বি পাক পাতে। ইবারা বিধ্বাস বিবাহ দের।

্ৰাহ্বানপুত্ৰত হোড়েবা বৰে, ভাৰতবৃদ্ধ কালে ক্ৰিক্ক বোলবজে কৈবলঞাৰে ইহালেয় উত্ত কৰিচাছিলেন্দ্ৰ ইহালেয় বিবাহপ্ৰথা আট ও অক্সন্ধাতিৰ ভাৰ। বি্ধবা-বিবাহ প্ৰচলিত আহে। বেশৰ বিবাহই প্ৰশত। ইহালা মংস্য, মন্য ও ছাগ পুক্ৰালিয় মাংস্ তক্ষণ কৰে।

বিশ্বনোরবাসী ব্যাড়েয়া শাগনাধিগতে আরামচক্রভনর কুশের বংশধর বলিয়া পরিচিত করে। বিগত চারি শতাফ পূর্বে ইহায়া কর্ণাল কেলার ক্তেপুর-পুঞী নামক আন হইতে এখানে আলিয়াছে। এই প্রাথে নৈরহদিশের বাস ছিল। কালে নৈরদ ও ব্যোড়াদিগের মধ্যে কল্ উপান্তি হয়, তথন রোড়েরা নলপতি সহীচাদের অধীনে অন্তল বাইরা বাস-ক্রিতে বাধ্য হয়।

ইহানের মধ্যে কোন কোন থাক আপনাদিকে তোমর-রাজপুত বংশোডুত বলিরা থাকে। দিলীর তোমররাজবংশের গ্রভাব থক্ষ হইলে ভারারা নানাছানে বাইরা বাস করে। কেহ কেহ বলে, নোগণসমট্ অরলজেবের শাসনে উৎপীড়িত হইরা ভারারা অঞ্জ বাইরা বাস করিতে বাধ্য হইরাছে।

ইহারা বিবাহ ও অপরাপর জিরাক্সাপাদি সন্ধান্ত হিন্দুবংশেরই অন্থরণে নির্বাহিত করিয়া থাকে। বিধবারা
দেবরকে বিবাহ করিতে পারে, কিন্ত আহা বিধবার ইচ্ছাধীন।
জীচরিত্র সহলে সন্দেহজনক প্রমাণ পাইলে জাতীর সভার
অন্থনাদনে ভাহাকে স্বাভিচ্যত ক্রিবার ব্যবহা আছে,
কিন্ত পদ্মীভ্যাগের সাধারণ কোন নিরম নাই। কোন কোন
স্বর অস্থাকে অর্থদন্ত দিরা সে অ্লাভি মধ্যে থাকিতে
পার। স্ক্রিব্যতীত ইহারা টাট্ (মাহর) ও প্রভাগী প্রস্তাভ

রোচু (আ) উদ্ধমনীল। অছ্রিত হওল।
রোণ, বোখাই-এে: বিভেজীর ধারবাড় জেলার অর্থত একটা
উপবিভাগ। ভূপরিমাণ ০৭০ বর্গমাইল। এই উপবিভাগের
মধ্যে দক্ষিণ-সহারাই রেলপথের আলুর ও বল্লাপুর নামক
ক্ষানে ভ্ইটা টেশন আছে।

২ উক্ত বেশার একটা ক্ষম ও উপবিভাগের স্বর। ক্ষা- ১৫°৪১ ৩০° উঃ এবং জাখি- ৭৫°১১ ১° পুঃ। এখানে "লয়াকুষণো বনকোটিরজাঃ আৰু পশ্চিমে রোধকপতনক। অধবতঃ নিতপুরং প্রেরঃ সৌমেহন বাস্যে বড়বানলক।" (নিতাতনিয়োমনি নোনাগায়)

রোমকর্গক (পুং) শশক। (বৈজ্ঞানত)
ব্যোমকসিজান্ত (পুং) নোমকাচার্য দিখিত জ্যোতিপ্রস্থ ।
রোমকাচার্য্য (পুং) একলম বিধ্যাত জ্যোতিপ্রিল্। শাকলা
সংহিতার ও বচাহনিহিল্ল ক্ষত হারণরত্বে ইহার উল্লেখ আছে।
রোমকার্মন (পুং) গ্রহ্মারতেন। (বৃহদ্ধার্থ ৩১০)
রোমকুস (পুং) লোম্পাং কুলঃ। লোমবিবল।
"প্রানাকিকালমালাং স্বে) ব্রজ্ঞা ক্মওলুম্।

সমতবোমক্পেরু নিজরতীন্ বিগকর: ॥" (বেবীমাণ ১ জং)
বোমকেশর (ক্লী) কোন্গাং কেশরমিব। চামর। (ভিকাং)
বোমগর্ত্ত (গুং) বোম্গাং গর্ত্তঃ। রোমকুণ।

রোমগুচছ (খং) রোম্ণাং খঞ্চ: । চমর । (তিকা॰) খার্থে-

কন্। রোমগুরুক—চামর। (জটাধর)
রোমগুরুস (পুং) চামর। চামরী গোর পুরু।

রোমণুৎ (জি) ঝোমণুক্ত। পুছ্বিশিষ্ট। রোমতাক্রী (জী) অলোমা জী। (রুগ র •)

রোমত্যজ (बि) শোমনাশক।

রোমদ্বীপ (পুং) কুমি। (বৈদ্যক্রি•)

রোমন্ (রৌ) রৌতীতি ক (নামন্ সীমন্ ব্যোমন্ রোমলিতি। উণ্ ৪।১৫০) ইতি মমিন্প্রতারেন সাধুং। শরীর জাভাজুর, চলিত বোঁরো। প্রার—লোম, জলজা, অগ্জা, চর্মজা, ডন্কছ।

শরীরের রহজ স্থানে অর্থাৎ গোপনীর স্থানে বে রোম হয়ে, ভাহা স্পর্ণ করিতে নাই।

"ন সপশিকোঃ জীড়েত খানি খানি ন সংস্থাধ।
স্বোদাপি চ সহজানি নাশিটোন সদা এলেং ॥"
(কুলপ্ ১৫ আং) ২ জনপদবিশেষ। ৩ জন্মেশবাসী।
(পুং) ৪ ভূমা।

''বানায়ৰো ৰশাঃ পাৰ্যা রোমাণঃ কুশবিক্ষৰঃ।"

(कात्रक का ना दर)

রোমস্থ (পুং) উদ্পারণ করিও। চর্মণ, চলিত আবরকাটা, প্রভিদের এমিড চর্মণ।

"মৃগৈৰ্বন্তি ত্যোমৰ্ম্ট লাক্ষনভূমিকু।" (রছু ১। ৫২)
ব্যোমপাল (থং) লোমপাল, অলংগনীর রাজবিশেষ।
(নিকপুরাণ আন্তঃ) [লোমপাল দেব]

(क्रांसभूलक (प्रः) त्वान्ताः प्रवकः। त्वायवर्ष, त्वायकः। (ब्रास्त्रका र की) किविन, ग्राक्तः (देवक्रम्तिः) রোসভূষি (খী) লোম্পাং ভ্নিরিক। চর্মণ (খালনি•) (त्रांत्रमूर्क्तम् (बि) (त्रांतर्क मछ क्विभिडे। (ख्वांक) ° রোমরভাসার (পুং) উদর। রোমরক্র (ক্লী) রোমক্ণ। ক্রোমরাজি (জী) বোদাং রাজিঃ। রোদসমূহঃ। বোদদাঝি-छोय् द्वामबाको द्वामनगृह । রোমলতা (জী) রোদাং লভেব। রোমাবলি। (হেম) (त्रांभलद्व (क्री) मास्त्र नवन, वर्कन नवन। ব্লোমলতিকা (জা) নাভিন্ন উপরে মননীগণের পোৰের त्रिथी ६व । রোম্ব্ (তি) রোমন্ মন্তার্থে মতুপ্ মন্ত বং, নক্ত লোগং। (मार्गावनिष्ठे। (त्राभवली (की) किनक्षा भागक्नी। রোমবাহিন্ (অ) > লোমকর্ত্তনযোগ্য তীক্ষ ধারবিশিষ্ট। রোমবিকার (খং) রোমাং বিকার:) রোমঞ্চ ৷ (২লাম্ধ) রোমবিক্রিয়া (রী) রোমাঞ্চ। রোমবিধবংস (পুং) > লোমনাশকারী। ২ উকুণ। রোমবিবর (क्रो) রোদাং বিবরং। লোমকুপ। রোমবেধ (খুং) একজন প্রাচীন এছকার। রোমশ (পুং) রোমাণি সভাভেতি রোমন্ (লোমাদিপামাদি (কেম) ২ পিঞালু। ৩ কুঞী। ৪ শুকর। ৫ ঋষিবিশেষ। এই ধ্বির এক একটা জোন প্তনে এক একটা ইঞ্লগাই इहें । এই कर्ष हे हात्र यथन गम् ख (ताम शक्न इहे दि, कथन ইঁহার প্রমায়ু লাশ পাইবে। এই ঝৰি ভাহার নিদের

রোমবন্ধ (জি) চুলের বিনানে। গড়ির হারা আৰম্ভ ট

(ब्री) ७ উপছ। "দেৱীশে বন্ধ জোসশং নিষেত্ৰো" (অক্ ১০৮৯১৮) 'লোমশং উপছং' (সারণ)

बहे नवमायू कानिया अवर हेरा कि नामान्नकान विस्कृत

ক্রিয়া গৃহনির্মাণ ক্রেম নাই, কেবল বর্বাকালে ধারাপাত

নিবৃত্তির জন্ত মতকে কট (মাছ্র) রাধিয়া তপশ্চর্য্যা করিতেন ৷

(ভাগৰত ৬/১৫) ইছার বিশেষ বিষয়ণ অন্ধবৈষ্ঠ পুরাণে

প্ৰীকৃষ্ণ ক্ষমণতে বৰ্ণিত হুইয়াছে।

(a) ৭ অভিশন রোম বিশিষ্ট, বাহার গাজে অভিশন রোম আছে।

"হীনজিয়ং নিশ্কহং নিশ্কেলা রোমশার্শসন্।" (মহ ৩১)
রোমশপ্রে (জী) দেবভাড়গুল। দেয়ভাড়া গাছ।
রোমশ্ফল (পুং) রোমশং ক্লম্ভ। ভিঙিশ বুক। চ্যাড়্শগাছ।
রোমশ্যুলিকা (জী) হরিষা। (ইব্যক্ষি-)

রোমশ্সিদ্ধান্ত, বোৰণমূল-বির্টিত ক্যোতির ইভেদ।
রোমশা (জা) জোমণি সভাগ্যা ইভি রোমন্ শ, টাগ্।
১ বঙা বৃষ্ণ। (জাভলি•) ২ লোমণা, রুংস্ভিদ্ধা।
"স্বাহ্মত্বি লোমণা সভাগীণানিবাবিদা।"

(খক্ ১। ১২৬। ৭) ও কর্কটিকা, কার্ড়। (বৈছক্রি৽) এ অনগদ নামক স্বিধ জনোকাডেল। (সুখ্রুত স্থ- ১৩ জঃ) ৫ সাংস্কোহণী। (বৈছক্রি৽)

রোমশাতন (জী) রোমাং শাতনং। লোমের উত্তংসন। রোমশুক (জী) রোমবৃক্তং শৃকং বজ। ছৌণেরক। চলিত গেটেলা। (ভাৰপ্রক)

রোম-সাম্রাজ্য, পাশ্চাত্য-সভ্যতার আদর্শক্ষেত্র স্থপ্রাচীন রোম
মহানগরী হইতে রোমক বা লাটিন জাতির সোভাগ্যোয়তির
সঙ্গে সঙ্গে শৌর্থাও রাজতন্ত্রের প্রতিষ্ঠা-প্রভাবে রাজ্যসমূদ্দির
পরির্দ্ধি সহকারে ধীরে ধীরে যে স্থবিস্থত রাজ্যসম্পৎ অর্জিত
হইরাছিল, তাহাই খুগীর ভূতীর শতাব্দে রোমসামাজ্যসীমার চরম
বিস্থতি লাভ করে। খুগুপুর্ব্ব ৮ম শতাব্দে পুরুষ-পরম্পরাক্রুত কিংবদন্তীমূলক রাম্লাদ্ কর্তৃক পালেটাইন্ শৈলোপরি
রোমনগর স্থাপন; সেবাইন্, লাটন প্রভৃতি বিভিন্ন পার্বত্যজ্যাতির পরম্পর সন্মিলন ও শক্তিবৃদ্ধি; রাজনির্ব্বাচন ও রাজতন্ত্রগঠন; সেনেট মহাসভা ও কমিটারা কিউরিরাটা স্থাপন এবং
সিপিও, জিয়াস মরিয়াস্ কর্ণেলিয়াস্ সালা, জ্লিয়াস্ সিজার
প্রভৃতি ভূদ্ধর্ব বোদ্ধ্রন্দের আবিভাবে ও রাজ্যজর হইতেই রোমসাম্রান্থ্যের পতন হইয়াছিল।

ক্রটাস্ ও কেনিরানের বড়বছে ডিক্টেটার সিজারের হত্যা এবং অক্টেভিয়ান্ ও আন্টনিকর্তৃক ফিলিপি রণক্ষেত্রে উক্ত প্রজ্ঞাতন্তরপ্রমাসী দলপতিবরের পরাজয় হইতে রোমে প্রজ্ঞাতন্তরপ্রতিষ্ঠাশা বিশুপ্ত হর। জগদিখাত স্থলরী ক্লিওপেট্রার পাণি গ্রহণোপক্ষে অক্টেভিয়ানের ভগিনী অক্টেভিয়াকে পরিত্যাগ করার আন্টনির সহিত অক্টেভিয়ানের মতবিরোধহেতু এক্টিয়াম্ রণক্ষেত্র ঘোর সংঘর্ষ উপস্থিত হয়। এই যুদ্ধে আন্টনি পরাজিত হইলে, ডিক্টেটার সিজারের প্রক্রত উত্তরাবিকারী ও প্রাতৃপৌত্র (Great-nephew) অক্টেভিয়ান্ ২৭ পৃষ্টপূর্কান্ধে রোমসাত্রাক্ষের অব্যক্ত করার মনোরজনার্থ এই মহদ্ভার স্বীর মন্তকে না লইয়া সেনেট সভার উপন্ন ক্রন্ত করেন। তিনিই প্রকৃতপক্ষে সাম্রাজ্যে কমনওয়েল্থের' পূনঃ প্রতিষ্ঠা করিয়া গিয়াছিলেন।

বাহা হউক, তাঁহার সমর হইতে ক্রমশঃই রোমসাদ্রাজ্যের বৃদ্ধি হইতে থাকে এবং টাসিটাস্, প্রোবাস্ও কেলস্ (২৮৪ প্রাম্ব) প্রভৃতি সূত্রাট্যুপ পূর্ণবিস্থত রোমসাদ্রাজ্যের প্রাক্তনীমার আপনাপন শাসনদণ্ড পরিচালন করিবাছিলেন। এই সমরের
মধ্যে রোমসাম্রাজ্য কোন্ কোন্ স্থালার শাসনকালে কডন্র
পর্যন্ত ব্যাপ্ত করিছাছিল, ভাষা ইতিহারজালে বথাছানে বিবৃত
হইরাছে। সাধারণের অবগতির আজ নিজে নেই সজ্যাসমূহ
সাম্রাজ্যের বিভার সীমা ও দেশবিভাগের অবস্থান নির্দেশ করা
গেল।

এই সাত্রাজ্যের পশ্চিমনীমা আটুলান্টিক মহাসাগর; উত্তরে ইংলিস চেনেল, জন্মাগসাগর, ডেন্মার্ক, বলটিক সাগর ও ক্লব-সাত্রাজ্য; পূর্বেক ক্লিনেরসাগর ও পারক্তের কডকাংশ এবং দক্ষিণে পারক্রোপসাগর, জারব, লোহিডসাগর ও ভূমধ্যসাগরোপ-কুল ব্যতিরিক্ত আক্রিকা মহাদেশ। বর্তমান সমূহ ইংলওরাজ্যও রোম সাত্রাজ্যক্ত হইয়াছিল।

প্রাচীন কালের বিস্তীর্ণ রোমসাম্রাক্ষ্য বে কয়টী দেশভাগে বিচ্ছিন্ন ছিল এবং বর্জমান সময়ে কোন কোন রাক্ষার বা প্রস্তাভ তন্তের প্রতিনিধিবর্গের সাহাব্যে পরিচালিত হইতেছে, নিমে ভাহার তালিকা নির্দেশ করা হইল—

মুরোপীর মাজ্য।

লাটিন নাম বর্তমান নাম

वृष्टीनिया—**देश्यक्ष ७ अत्यन्**त्र ।

গালিয়া---ফ্রান্স, বেলজিয়াম, হলও ও স্থইজর্লতের কতকাংল।

হিম্পানিয়া—ম্পেন ও পর্জুগাল।

বলিয়ারিস্— বেলিয়ারিক্ শীপপুঞ।

निनिनिन्न।--निनिनि।

ইতালিয়া--ইতাগী।

রেটিয়া—সুইজর্গগু ও অট্রোহান্দেরীর কতকাংশ।

डि**ए** अनित्रियां — स्वर्षाण नाम्नारसात प्रक्रिगारम ।

আর্মাণিয় — ভিল্কু লানদীর পশ্চিমতীর পর্যান্ত কর্মণ সাম্রাজ্য ও পোলতের কতকাংশ এবং দীনিয়বের উত্তরকুল পর্যান্ত অস্ট্রিয়াজা।

পানোনিয়া—লানিয়্ব নদীর পশ্চিমক্ল পর্যান্ত আব্রোহালেরী
প্রদেশ।

তাকিরা—থিস্নদীর পূর্ববেত্তী অট্টোহালেরী প্রদেশ এবং প্রথ ও দানিয়ব নদী মধ্যবন্তী ক্রমানিরা রাজ্য।

নোরিকাম্—দানির্ব নদীর দক্ষিণকূলে: ভিরেনানগর-সন্নিছিত প্রদেশ হইতে জাদ্রিয়াটিক্ সমুদ্র পর্যান্ত বিশ্বভ ।

ইলিরিকান্—আদ্রিরাটিক্ সাগরোপকুলবর্ত্তী আষ্ট্রোহালেরী প্রবেশ, মন্টিনিগ্রো ও তুলকের কডকাংশ।

এপিরান্—গ্রাস ও ইলিরিকানের মধ্যবৃতী তুরুক প্রানেশ। কর্মিকা, সার্ভিনিরা, সাইঞাস ও এটাইবীণ—ভূমধ্যসাগর মধ্যে। भागदेश--वीतः वातः । वान्यानिश-पृत्रस्य स्वयंत्रदेशः पुनिश-गृत्यानिश्च ७ स्वयंत्रिकतानं भागकं पृत्रकं विकाशः। विनिश्च-गार्षिशः ७ पृत्रस्य स्वयंत्रिकाः

আনিরার ব্যক্ত রাজা।
নাইলিরা, লিভিয়া, ব্যবিধা—ইবিয়ান লাগরভীরবর্তী আলিরামার্মির প্রবেশ্ধ

-বিশ্ নিরা ও পাটাস্— ক্লফসাগরের বন্দিপ ও এসিরাবাইনরের ভব্ন এবেশ।

্ৰকাৰ্নোনেসান্ টোরিকা— মুলোপীর কবিরার ক্রিনিরা বিভাগ।
কলকিন্, ইবেরিরা, আনবানিরা—ককেসন্ পর্বতের দক্ষিণ ও
আর্থেণিরার উত্তর এবং ক্রকসাগর হইতে কাম্পীর
ক্রণতীর পর্বান্ত বিশ্বত তৃপঞ্জ।

ব্রিজিরা, পিসিভিরা, গালাসিরা, লাইকোনিরা, কাপাডোকিরা ও আর্মেণিরা নাইনর—এসিরামাইনরের অন্তর্ভুক্ত। আর্মেণিয়া—আসিরীরার উত্তর।

আসিরীয়া, মিসোপোটেমিরা, বাবিলোনিরা, কান্ডিরা রাজ্য, আরাবিরা-পিট্রিরা, সিরিরা ও পার্থিরা—শিভান্ট উপসাগরকৃল হইতে পারতের পশ্চিমার্ক, আরবের উত্তর ওআর্মেণিরা কৃষ্ণিশ পর্যন্ত বিভূত ভূভাগ।

वाधिकात्र वस्त्र्य श्रीवा ।

মৌরিটানিরা, নিউমিছিরা, আজিকা (কার্থেজ রাজধানী), লিবিরা ও ইাজস্টান্ নামক ভূমধ্যসাগরতীরবর্ত্তী আজিকার উপ-কুল প্রবেশ। এই সকল রাজ্যভাগ বর্তমান মরোজা, আল্জিরিরা, টিউমিন্, টিপোলি, বার্কা ও ইজিপ্ত (মিশর) রাজ্যের ক্তকাংশ লইরা গঠিত হইরাছিল।

এই বিহুত রোমসাত্রাজ্যের প্রাকৃতিক সৌলব্য কিরুপ ছিল
এবং নদী ও পর্ক ত্রমান্ত কোথার ও কিরুপ তাবে প্রসারিত ইইরাছিল, তাহার সঠিক বিবরণ ফানিবার উপার নাই। বর্তমান
ছুরোপের তত্তংগ্রদেশে বে সকল পর্কত ও নদীমালা বিহুত দেখা
যার, তখনও সেই সকল সমভাবে বিরাজিত ছিল। বিস্তবিরাস,
ট্রুরোলী ও এটুনা নামক আরেরগিরির অধ্যানসম তৎকালে রোম
রাজধানীকে কশিত করিরাছিল। ত্র্তাটীন হার্তুলেনিরম ও
পশ্লিরাই নগক বিস্তবিরাসের ক্লান্ত ধাতব নিঃমারে প্রথম উত্তর্থ
তব্দে পূর্ণ ইইরা গিরাছিল। ত্রই সহক বৎসর ভাহার নিল্পন্নমাত্র
ছিল না। বর্তমান প্রেমারাল ইমাছরেনের পাসনকালে নেই স্থা
লগরবরের অতীত্রকীর্ত্ত উম্বাছিত ইইরাছে। প্রথম আরু সে
লগরবরের অতীত্রকীর্ত্ত উম্বাছিত ইইরাছে। প্রথম আরু সে
লগ্নস্থার্যম নাই। বর্তমান বর্ষে (১৯০৫কা সেপ্টেবর) কাল্যান্তিরেছ।

ভংকালে ভীবন ৰটিকার ভূমধ্যনাগরোপকুলক ইভালীর অসেশনবুক আলোকিভ হঠত। সময় নকা কণামাবনে এ সকল ছান কণাবর হইরা অধিবানির্শের কঠ উৎপাবন করিছ। চিবতন অনিক ক্রিণাক ও কুর্মিন বটনারালি আচীম রোম্বালো বিরল ছিল না।

নেই প্রাচীদ লম্ম রোমরাজ্যের বাশিক্তপ্রভাব চিন্তা
করিলে মনে অভ্তপুর্ক বিশ্বর আগিরা উঠে। বে সময়ে অলবাশিল্যের কয় ক্রন্তমানী ইনার ছিল না, নেই লম্মরে রোমকগণ
ভ্রম্যনাগর্মক ক্রেপ্টার্ক নৌকার আলোড়িত করিরা মিসররাজ্য
হতৈ ভারতীর ও পারক্রমেশলাত ক্র্যন্তার সম্প্র পথে অনেশে
আনর্ম করিত। গণ, হুণ, ভাগুলে ও বর্করপণ যে সমর
পশ্চিম এসিরা পাশ্চাত্য আতিমাত্রেরই তরের কারণ করিয়া
ভূলিরাছিল,মির্ভাক রোমক আতি বাছবলে সেই ক্র্ম্ম এসিরাবাসীদিগকে পদানত করিয়া অল্প্রভাবে তুলকের মধ্য দিয়া
আপনাদের হলপথের বাণিজ্যপরিচালনা করিয়াছিল। বুর্বিপ্রহে
রোমকগণ যেরপ ক্রিহন্ত ছিল, অন্তল্যাদি প্রন্তত কার্য্যেও
তাহাদিগের তদক্রপ অমিপুণতার পরিচর পাওয়া গিরাছে।

রোমরাজ্বানীতে ভারতীর মণি মৃক্তার যথেষ্ট আদর ছিল,
ভাষা প্রাচীন গ্রন্থাদি পাঠে জানা বার। এই কারণে সমৃদ্রগমনোপযোগী অর্ণবিযান নির্দাণে তাহারা বিশেব অধ্যবসার ও
শ্রন্থ কীকার করিরাছিল। তৎকালে দাঁড় ও পালের ভরে সমৃদ্রে
ভাষাজ্ঞ চলিত। কার্থেজিনীয়-সর্দার হানিবল রোম আক্রমণকালে এবং রোমসেনাপতি সিপিওর গ্রাক আক্রমণকালে এরপ
দাঁড়বাহী অর্ণবিয়নের উল্লেখ পাওরা বার। ইতিহাসাংশে
রোমকজাতির ক্রমান্নতির যথেষ্ট পরিচর দেওরা হইরাছে।

ইতালীর জন্তর্গত টাইবার নদী তীরস্থ রোম (Roma) নগরী এই বিহৃত সামাজ্যের রাজধানী। এখানে খুইপূর্ব ২য় শতান্দ হইতে খুইার ১৪শ শতান্দ পর্যন্ত হাপত্য, বিষ্ক্র, বাণিজ্য ও সকীতাদি কলাবিভার বে সমূহ উন্নতি সাধিত হইমাছিল, সমগ্র রুরোপের অপর কোন রাজধানীতে তাহার কোন বিষরেই সমত্লা উন্নতি দেখা যার নাই। রোমের "কলোসিরাম্" প্রাসাদ স্থাপত্য বিভার চরম মিদর্শন। ইহা অগতের সপ্ত অত্যন্ত্ত কীর্তির এক্তম।

বর্তমান জগতের উন্নতি-বিভারের সঙ্গে সংশ্ ইতালীতেও নামা বিষয়ের উন্নতি সাথিত হইরাছে, কিন্তু এখন রোমকগণের আর সে শৌর্যপ্রভাব নাই। এখন রোম নিজ্ঞত। রোমকগণের বিভারে ইতালীরাজ্য ও রোমনগরে বাক্স্যিরেভাব সংগ্রেভিছত বাহ্নিকেও পূর্ব সমৃতির সৌরব-বৃদ্ধিকর আর বোনমুগ কার্যই। ইয়ানীজনকালে অন্তর্ভিত হুইক্তে সেধা বাম সান When the control of a control of

লোনের আধিম ইতিহাস নানা একার অভিনত্তিত কার্যনিক আবাদে পরিপূর্ব। আহা হইছে সজ্ঞ নিদাপন করা বছুই ক্ষর। বাহা হউক, এই সমস্ত পৌরাবিক আন্যায়িকার অভ্যন্তরে অনেক আত্যা তথা নিহিত্ত আছে।

ক্ষিত আছে, প্রসিন্ধা বাইদরের অন্তর্গক টুর নগর বিবরত হইবার পরে রোবের প্রথম প্রতিষ্ঠা হয়। বংলালে গ্রীক বীরগণ টুর নগর অবর্গেষ করিবাছিলেন, তংকালে আকাইনের উরসে ভিলাদের গর্ভরাত পুর ইনিদ্ (Ænous) টুর হইতে পলারন করিরাহিলেন। তিনিই সর্ব্ধ প্রথম রোবে আসিরা বাসহান করনা করেন। টুর হইতে পলারনকালে তিনি স্বীয় পুর আহ্বানিয়াশ্কে, পিনেট্ল নামক গার্হত্ব। তিনি ব্যায় পুর আহ্বানিয়াশ্কে, পিনেট্ল নামক গার্হত্ব। কেবার প্রতিম্বর্গিত সলে লইরা আসিরাহিলেন। তিনি লাটিয়ামের উপকূলে পৌছিলে, তকেশক্ব নরণতি লাটিনাল্ কর্তৃক সমান্ত ইইলেন। পরে লাটিনাল্ ইনিনের সহিত স্বীয় ছহিতা লেভিনিয়ার বিবাহ দিলেন। ইনিল্ পন্ধীর নাম চির্লম্বনীর করিবার কর্ত্ব ত্রাহেনাম নামক নগর প্রতিষ্ঠিত করিলেন।

ইনিসের সহিত বিবাহের পূর্ব্বে, লেভিনিরার কটু নির্মন্নিগের
অধিপতি টার্ণাসের সহিত বিবাহের সবদ হইরাছিল। টার্ণাস্
ইনিসের সহিত লেভিনিরার বিবাহে অপমানিত হইরা অবিলয়ে
ইনিস্কে আক্রমণ করিলেন। বৃদ্ধে টার্ণাল্ ইনিসের হতে
নিহত হইলেন। ইহার তিন বংসর পরে টার্ণাসের অক্রচরগণ
প্রার ইনিস্কে আক্রমণ করিল। এই সমরে ইনিস্ একদিন
অক্রাৎ নিউমিশিরাস্ নামক নবীসলিলে অদ্প্র হইরা গেলেন।
তদববি তিনি 'ক্লিটর ইঙিজেন্' বা নগর-দেবতা নামে প্রিত
হইরাছিলেন।

তাঁহার পুত্র আধানিমাস বা ইউলাস্ ৩০ বংসর পরে লেভিনিরাম্ হইতে রোমের ১৫ নাইল বিজ্ঞাপুর্বে অবান পর্বতের
শিধরে 'জল্বা লক্ষা', বা বীর্ষ খেতপুরী নামে এক নগর নির্নাণ
করিলেন। ক্রমে ইহা লাউমান্ প্রদেশে একটা বিখ্যাভ নগর
হইরা উঠিস এবং সমস্ত লাউন নগর সকলের উপরে কর্তৃত্ব
করিছে লাগিল। আঘানিরাসের পরে ইনিল্ বংশীর ১২ জন
রাজা এইহানে রাজ্য করেন। এই বংশের শেব রাজা প্রকাশ
নিউনিটর ও আর্লিয়ান্ নামক ছই পাত্র রাখিরা পরলোক গমন
করেন। কনির্চ আর্লিয়ান্ নামক ছই পাত্র রাখিরা পরলোক গমন
করেন। কনির্চ আর্লিয়ান্ নিংহানন অধিকার করিলেন।
জার্চ নিউনিটর শাক্তরেলভি বশতে কোন বিরোধ উথাপন
করিলেন না

গাহে যোৰ্ক বাভার একদাৰ পুৰ রাজ্যপাত করে, এই

व्यानकाव, नीकानव व्यापुर्विकान् कार्याक व्यापेनस्थात कविरागम । এই নিষ্ঠুলাচরণে ভাষার আপকা ভূতিক সাঃ ভবন জোঠ প্রাভার অক্ষাত্র হৃতিতা রিয়ানিল্ডিরাক্তে এক ক্লেক্সিরের নেবিকারণে वित्रमुमात्री कतिका ताथिरणम । उनक्षणास्त्र किलि वाकीयम वानुवा वाकितन। किन मोर्ग (मनन) नामक ताकान केंग्रह धरे क्यां भीत गर्छ इंदेंगे यसक शूत कविता। कांत्रुनियान ७९-কুণাৎ ইহা কানিতে পারিলেন। সিল্*চিয়া কে*নীয়ারওত ভদের কল আণ হারাইলেন। ব্যক্তর একটা হিলোলার স্থাপিত হইরা নলীগর্জে নিন্দিপ্ত হইল ঃ তৎকালে বজার টুইবার শ্ৰদীর জীরভূমি বহনুর পর্যাত্ত প্রাধিত হইরাছিল। হিলোলাটা ভাসিতে ভাসিতে পালাটাইন পর্বতের পাদদেশে সংলগ্ন হইল। এইছানে একটা বন্ধ আন্ত্রীর বুক্দের মূল লাগিরা থিলোলাটা উপ্টাইরা গেল। এই সমরে একটা বাহিনী সেইস্থানে মল পান করিতে আসিরাছিল, সে শিশু ছুইটিকে সমীপবর্তী গছররে শইরা গিরা রাখিল এবং তম্মপান করাইতে দাগিল। এতহাতীক মার্স দেবতার বাহন কাঠঠোকরা পাখী অস্তান্ত খাভ আনিয়া শিশুমকে দিতে লাগিল।

অবশেবে একদিন কঠা লাস্ নামক রাজার এক মেবপালক এই অত্যাশ্চর্য দৃশ্য দেখিতে পাইল এবং নিগুছরকে তংক্ষণাং লইরা গিরা খীর পত্নী অভা লরেন্শিরার নিকট পালনের জন্ত অর্পণ করিল। শিশুছর রোম্লাস্ ও রেমাস্ এই চ্ই নামে অভিহিত হইল এবং কেবপালকের সম্ভানগণের সহিত বর্ধিত হইতে লাগিল।

রাজার মেবপালকগণের সৃষ্টিত নিউমিটরের মেবপালকগণের বিবাদ উপস্থিত হইল। এই সময়ে কৌশলক্রমে রেমাস্কে তাঁহার পিতামহ নিউমিটরের নিকট উপস্থিত করা হইল। কিশোরবরক রেমাস্কে দেখিরা নিউমিটরের হৃদর বাৎসল্য রুসে পূর্ণ হইল। বহুস ও আঞ্চতি দেখিরা নিউমিটর রেমাস্কে স্থীয় দেহিত্র বলিরা সন্দেহ করিলেন। অবশেষে তাহাদের অভ্তত আখ্যারিকা গুনিরা তিনি তাহাকে স্থীর দেহিত্র বলিরা বিখাস করিলেন। অবশেষে রোম্লাস্ও পালক পিতার সহিত নিউ-মিটরের সমুব্ধে আনীত হইলেন।

নিউমিটর দৌহিত্রবরকে লইরা প্রাতৃরত নির্চুরাচরণের অভিচলাধ লইতে সভয় করিলেন। বিষয় কর্মচারিগণের সহারভার ভাঁহারা আমুলিরালের প্রাণসংহার ক্রিলেন এবং শিভাক্ত নিউমিটরকে সিংহারনে বসাইলেক।

রোমুনান্ এবং রেমান্ তাঁহাবের পূর্কবানহান টাইবার নদীতীরহ ব্যাহের গকর নদীশে নগরমিশ্বাংশ সভয় করিলেন। কোন হানে নগর নিশ্বিত হুইতম্, এই বিহর স্ট্রায় ছই নহোগরের মধ্য বাধান্ত্ৰাৰ হবল। নোগুলান্ পান্টাইন নৈতে এবং
নেমান্ আৰেণ্টাইন নৈতে নগৰনিৰ্দ্ধণের ইচ্ছা প্রকাশ করিলেন। এই উভা সকটে লেকে আই-ছিন্ন হবল বে, উভা ঘটনা
বেবভানিগের হারা মীমাংসিত ছইবে। এইরূপ ছিন্ন করিরা উভন
সহোদর প্রভ্যেকের মনোনীত ছানে নৈবভার ইন্দিভ অপেকা
করিয়া রহিলেন। সমন্ত রাত্রি অভিবাহিত হবল। উবাভালে
রেমান্ ৩টা পুঞা দেখিতে পাইলেন। যথকালে এই সংবাদ
বোম্লাসের কর্ণগোচর হবল, তৎকালে ভিনিও ১২টা গ্রা
বেন্দিতে পাইলেন। প্রত্যেকেই নিজের অন্তর্কুলে দেবভা ইন্দিত
করিয়াছেন—এইরূপ কলিতে লান্তিনেন। অবশেবে সেবশানকগণের মধ্যক্তার রোম্লালের জয় হবল।

উপরোক্ত প্রকারে রেম্নুলান্ বেবতার অন্থর্গত লাভ করিরা
নগরের দীমা নির্দেশ করিতে যাত্রা করিলেন। তিনি একটা
লালকে একটা বৃষ ও একটা গাভী সংযুক্ত
রাল্বন্দানের
রাল্বন্দান করিয়া পালাটাইন পর্বতের চতুর্দিকে
(৭০০-১১৭ বৃং গুং)
গভীর হল চিহ্ন আন্তিত করিলেন। সেই
চিহ্নই পরিত্র রোমনগরীর চতুংশীমা বলিরা নির্দিষ্ট হইল।
তৎকালে এই নৃতন নগরদীমার নাম হইল প্রেরিয়াম্।

পাল্যটাইন পর্ব্বত-শিশ্বরত্ব আদিম রোম-নগরের নাম হইল
"রোমা কোরাড্রেটা' বা চতুকোণ রোম। পরবর্ত্তা কালে এই
নগরের পরিধি প্রসারিত হইরা সপ্তশৈলশিধরে সংস্থাপিত হইরাছিল। বাহা হউক, আদিম রোম নগর উক্ত প্রকারে ৭৫০ খ্রঃ
গ্রং ২১এ এপ্রিল প্রতিষ্ঠিত হইল। তৎপরে রোম্লাস্ রোমের
চতুঃসীনার একটা প্রস্তব-প্রাচীর নির্মাণ করিতে আরম্ভ করিলেন। ইংতে রেমাস্ উপহাস করিয়া বলিলেন, "এই প্রকার
বালকোচিত প্রাচীর-নির্মাণে কোন লাভ নাই।" এই বলিয়া
রেমাস্ এক লক্ষে প্রাচীর উক্তর্জন করিলেন। তদ্দর্শনে রোম্নালের ক্রোধানল অসিয়া উঠিল। তিনি তৎক্ণাৎ রেমাস্কে
বিনাশ করিলেন এবং ঘোষণা করিলেন,—"বে ক্ছে এই প্রাচীর
উক্তর্জন করিবে, তৎক্ষণাৎ তাহার পিরশ্বিত হইবে।"

যাহা হউক, রোম্লাস্-প্রতিষ্ঠিত প্রাচীরবেষ্টিত রোমে ক্ষমিক অধিবাসী হইল না। তদর্শনে রোম্লাস্ কাপিটোলাইন পর্বত-শিধরে নরহত্যাকারী ও পলাতক অপরাধীদিগের কল একটা আশ্রম নির্মাণ করিলেন। এই আশ্রম নীত্রই বহুসংখ্যক চুক্রিয়ানীল অপরাধিরকে পরিপূর্ণ হইরা উঠিল। কিছু বংশরুছির কল তাহারা গ্রীলোক পাইল না। কোন হানের অধিবাদিগন উক্ত প্রতিগণের সহিত কল্পার বিবাহ বিতে সক্ষত হইল না। অবশেষে রোম্গান্ কলপুর্বাক কলাগ্রহণের সহর করিতে লাগিলেন।

ভদ্যুসারে রোম্লাস্ কন্সাস্ নামক দেবভার নামে এক

বিরাট্ উৎসবের বোকণা করিয়া বিলেন। হানীয় লাটন এ সেক্টন্পণ এই উৎসবে নিমন্ত্রিক হইল। জাহারা জাহার পাননে কৌ হুবলী হইরা বীপু ফ্রক্ডাবর্সের সহিত উৎসবজ্ঞের্কেলে কলে আসিতে লাগিল। সকলে সমাগত হইলে রোমক-বুক্কগণ লল-বছ হইরা তাহাদের সমস্ত অন্চা কন্তাবিগকে হরণ করিয়া লাইয়া গেল। কন্তাগণের পিতারা অপমানিত হইরা বেলে প্রভ্যাগমন-পূর্কক রোমের কিল্লে সমরক্ষা করিলেন।

ক্সিনী, আণ্টেম্নি এক জাই মেরিরাস্ নানক লাটিন নগরের অধিবাসিসমূহ একে একে অর ধারণ করিলেন, কিন্ত জাহার। সকলেই রোমকগণের নিকট পরাভূত হইলেন। রোম্লান্ কেনালীর রাজা আজেশকে অহতে বধ করিলেন একং সৃষ্টিত অরদমূহ জুপিটরের পদতলে অর্পণ করিলেন।

জনশেবে সেবাইন রাজ্যের জন্তর্গত কিউরেসের পরাক্রমশ্রনীঃ
নরপতি টাইটাস্টেশিরাস্ জন্তব্য জনীকিনী লইরা রোমের
কিল্পে বৃদ্ধ বাত্রা করিলেন। এই প্রকার বিপুল সৈপ্তের সহিত
প্রকাশ্ত ক্ষেত্র যুদ্ধ করা জন্তব্য নে করিরা রোম্লাল্ নগরহর্ণে
আত্রর লইলেন। রেরম্লান্ তৎপূর্বে কাপিটোলাইন পর্বতের
চতুর্দিক্ হারন্দিত করিয়াছিলেন, টার্পিয়াল্নামক এক সেনানীকে
তিনি কাপিটোলাইন্ রক্ষার ভার দিয়াছিলেন। কিন্ত এই
সেনানীর কলা টার্পিয়া সেবাইন সৈঞ্জালের মণিবদ্ধে পরিহিত
উক্ষল হার্প কলার দেখিয়া বিশারবিম্ঝা হইয়া, সেবাইন সেনাপতির নিকট দৃত পাঠাইয়া বন্দিন,—"যদি তোমরা তোমাদের
সোণার বালা সকল আমাকে লাও, তাহা হইলে আমি তোমাদিগকে নগরে প্রবেশ করিতে কোন বাধা দিব না।"

সেনাপতি টার্পিয়ার প্রকাবে সম্মত হইলেন । গভীরনিশীথে ভ্রণপ্রিয়া টার্পিয়া নগরতোরণ খুলিয়া দিলেন ; পিণীলিকাশ্রেণীর স্তায় সেবাইন-সেনা হুর্গমধ্যে প্রবেশ করিতে লাগিল। টার্পিয়া উৎকুলক্ষরে পুরকার চাহিবামাত্র সেবাইন্-সৈপ্তগণ বর্বাখাতে তাহাকে নিহত করিল। তদবধি রাজন্দোহিগণকে টার্পিয়া-পর্কাতের শিথর দেশ হইতে নিমে নিকেপ করা হইত।

পর্যদিন রোমক নৈজগণ কাপিটোলাইন উদ্ধারের ক্ষম্থ স্থানিজত হইল। পালেটাইন ও কাপিটোলাইন পর্বতের মধ্যবর্তী উপত্যকার ভর্তর যুদ্ধ সংঘটিত হইল। বহুক্ষণ জীবণ সংগ্রামের পরে রোমক সৈজগণ প্রত্যার্ত্ত হইবে এমন সময়ে রোম্বানাশ যুদ্ধ কর হইবে ক্ষ্মিনার নামে একটা মন্দির প্রতিষ্ঠা করিবেন — এই মানস করিবেন। তংক্ষণাং রোমক সৈনাগণ বিশ্বণতর উৎসাহে যুদ্ধ করিতে লাগিল। এমন সময়ে বাহাদের লইরা যুদ্ধ সেই অপদ্বতা সেবাইন-ক্ষ্মাণণ সময় ক্ষেত্র উপস্থিত হইরা তাহাদিগের নেডাদিগকে যুদ্ধ বিটাইবার ক্ষ্মঃ

া সমূরোধ করিল। ারমণীর প্রার্থনা কে অগ্রাহ্ম করিছে। পারে १ ্তখন নেধাইনগদ রোমক্ষিণের প্রালক ও বওরন্তল আগ্যারিভ स्रेति अविः शांभमभूर्याक देवराहिकः त्रवयः तृतृष्ठतः कतिरागनः। রোমকস্প পালাটাইন পর্বতে রোমুলাসের খালনাধীনে বাস ক্ষরিতে লাগিল। সেবাইনগণ টাইটাল টেলিয়ালের শাসনা-ধীনে ভাপিটোলাইনে বাস ভরিভে থাকিল। উভর রাঞা ছুই পর্বতের মধ্যবন্ত্রী উপজ্যকার সেনেটের অধিবেশন করিতেন। সেই বলে পরে "কোলাব্" নির্মিত হইরাছিল। এই উভয় রাজ্য বেশী দিন স্বায়ী হইল না। ক্তক্তলি উৎপীড়িত লাটন क्षका कईक ठाँरेठान निरुष्ठ स्रेशनम । उर्लाख जायुगान अकाकी সেবাইন ও লাটনগণের উপর রাজ্যশাসন করিতে লাগিলেন। তিনি ৩৬ বংসর রাজ্য করিয়াছিলেন। একনিন রোম্বাস গোটস্পুল নামক স্থানের নিকটে কাম্পাস্ মার্লিরাস্-প্রজাপুঞ পরিদর্শন করিতেছেন, এমন সময়ে স্থাগ্রহণ হইল এবং তং-পরেই একটা ভরতর ঝটকা সমুখিত হইল। সেই সমরে রোমু-লাদের জনক মার্স জন্মিয় পুস্করথে রোমুলাসকে স্বর্গে লইয়া গেলেন। পরদিন প্রাত:কালে কেহই তাঁহাকে দেখিতে পাইল না।

রোমুলাসের মৃত্যুর পরে রোমবাসীরা জ্ঞানী ও ধার্মিক স্থমা
পশ্লিরাস্কে রাজা মনোনীত করিল। তিনি টাইটাস্
তেলিরাসের কন্যাকে বিবাহ করিরাস্থমা পশ্লিলাসের
রাজকলাল ৭১৫৬৭০ গুল্পা। রাজকও পরিচালন করিয়াছিলেন। তিনি
রোমসামাজ্যের সর্কা প্রথম ধর্মাশান্তপ্রযোকা। ইজেরিয়া নামী
দেবী তাঁহাকে প্রিনিয়ার পবিত্র প্রমোদ উভানে উপদেশ
দিতেন। তদস্সারে তিনি ক্লেমেন্স নামক তিনজন প্রোহিত
নিযুক্ত করেন। তাঁহারা যথাক্রমে জ্পিটর, মার্স এবং কুইরিনাসের পূজা করিতেন। এতজির তিনি, অল্বা লক্লা হইতে
আনীত ভেটার পবিত্র অগ্নি সঞ্জীব রাখিবার জন্য ওটা ভেটাল
কুমারী নিরোজিত করেন। তৎপরে তিনি মার্সের ২২ জন
মালিআই বা প্রোহিত নিযুক্ত করেন। ইইারা ১২ গানি
মঠে পবিত্র ধর্মের পূজা ও রক্ষণাবেক্ষণ করিতেন।

ন্থমা তৎপরে সাত্রাজ্যের বহু হিতকর কর্ম্পের অন্নষ্ঠান করেন।
তিনি পঞ্জিকাসংকার কারা জ্যোতিব শারের উন্নতি এবং কৃষি
ও বাণিজ্যের উৎসাহ প্রদান করেন, সম্পত্তির সীমা নির্দারণ
করিরা তাহা টার্মিনাস নামক এক দেবতার অধীনে ন্যন্ত করেন।
এতত্তিন তিনি জেনাস নামক বিমুধ দেবতার মন্দির নির্মাণ
করেন। যুদ্দের সময় এই মন্দিরের বার উদ্ঘাটিত হইত এবং
শান্তির সময় উক্ত বার অর্থগ্রহ থাকিত।

ছমার কুড়ার পরে টারাস্ ইটিসিরাস্ রাজা মনোনীত হইলেন।
ইহার রাজত শান্তির পরিবর্তে বৃত্তবিশ্রহসমূল হিল। তথাপ্যে
আল্বা ললার কালে-লাখনই সর্বাদেশ।
টারাস্ ইটিনিরাল
(১৭৬-৬৪২ বৃং পুং)
অসির ঘটনা। উভর নগরের মর্থে একটা
ক্লহস্ত্রে এই বৃহ উপস্থিত হয়। উভর
নগরের সৈন্যপণ যথম স্কার্থ প্রস্তুত হইল, তখন হিল্ল হইল বে,
উভর সৈভ হইতে মনোনীত বীর্ষরের স্বাধ্যমে জন্ম পরাজর
নিশী,ত হইবে।

রোমক সৈজের মধ্যে হোরেশিরাস্ নামক তিন সহাদর
ছিল, তাহারা তিন জনেই যুগপৎ এক গর্ডে জয়িরাছিল।
সেইরপ আল্বান্ সৈঞ্জনলের কিউরিরাশিরাস্ নামক এক গর্ডজাত
তিন সহাদর ছিল। পরস্পর এই তিন সহোদরের ছব্দুছ্
হবৈ, এইরপ স্থির হইল। ছব্দুছে হোরেশিরাস্ আত্বর
নিহত হইল, কেবল একটা জীবিত রহিল, পক্ষান্তরে তিনজন
কিউরিরাশিরাস্ আহত হইল। একাকী প্রতিছালিররের সহিত
যুদ্ধ করা অসম্ভব ব্রিরা হোরেশ কৃটকৌশল ধরিলেন। তিনি
রপে ভল দিবার ভাগ করিয়া কিছু পশ্চাদ্গামী হইলে, উপরোজ
তিন সহোদর তাঁহাকে বিভিন্ন দিক্ হইতে আক্রমণ করিতে
ছুটল। তথন হোরেশিরাস সম্বর গতিপরিবর্তনপূর্কক একে
একে তিন সহোদরকে ধরাশারী করিলেন।

রোমকগণ যুদ্ধে জয় লাভ করিল এবং আল্বান্গণ ভাহাদের অধীনতা খীকার করিল। কিন্ত এই জনোলানের মন্ধ্য
একটা বিষম প্র্যটনা ঘটিল। বংকালে বিজনোলালে উৎস্ক এবং নিহত প্রতিব্বিত্তক্তের জন্তপত্তে ভ্বিত হইরা হোরেশিয়াল্ নগরে প্রবেশ করিতেক্তের, এমন সমরে প্রিমধ্যে তাঁহার ভগিনী তাঁহাকে দেখিয়া উচ্চৈঃম্বরে কাঁদিতে লাগিল। কারণ উক্ত কিউরিয়াশিনের এক শ্রাভার সহিত তাঁহার প্রশার হইয়াছিল। রোমক্বীরের ক্রোধানল প্রজ্বলিত হইয়া উঠিল। তিনি ভদপ্তেই ভগিনীকে তরবারির আঘাতে নিহত করিলেন। এই অপরাধে রোমের বিচারকগণ তাঁহাকে ফাঁসিছারা প্রাণদভের আলেশ বিয়াছিলেন। অবশেবে বেশের সমস্ক লোক তাঁহার

ইহার পরে টালাস্ ইটিলিয়াস্ ফিডনি ও এট্রামানদিগের বিক্লে বৃদ্ধোষণা করেন। আল্বান্গণ রোমকনিগের অধীনক্লপে যুদ্ধন্দেরে গামন করিল। কিন্ত বংকালে রোমক সৈচ্চ
এট্রামানদিগের সহিত ঘোরতর যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইল,তখন আল্বামগণ পর্যতের অন্তরালে গৃভারিত থাকিল। পরে রোমকসৈন্য
অরলাভ করিলে, ভাহার। আলিয়া কণ্ট আনক্ষ প্রকাশ করিল।
এই ঘটনার বিরক্ত হইরা টালাস্ আলবা ধ্বংস করিতে আদেশ

নিলেন । আন্তান্ কৈন্যগণকৈ জিনি প্রকাশ ক্রিক পাবনান করিবেল । অধন ভালা আন্তান বিলা এইনা কোনল কৈন্ত বংগ প্রকাশ করিব। অধন ভালা আন্তানক বিলাপাতা প্রধান করিবলেন করিব। অধন ভালা আন্তানক বিলাপাতা প্রধান করিবলেন করিবলান কর

এই আকারে নানা বুকে জনসাক্ত করিনা টারাক্ পীড়িত মুক্তানন। অংকালে ভিনি জুলিটারের কুগালাভারে উলাসনাদি জরিতে সানিলেন। ভিত্ত জুলিটার ভারার জাচরণে বিশ্বক মুক্তা বস্ত্রাবাতে ভারার বধ্যাধন করিলেন। ভিনি ৩১ বংসর সাক্ত ভরিনাভিনেন।

টালানের বৃদ্ধার পর জুমার দৌহিত্র সেবাইনবাসী আন্তাস্
মার্শিরাস্ রাজা মনোনীত হইলেন। তিনি সিংহাসনে আর্চ্ আ্রাণ নার্শিরাস্ আ্রাণ নার্শিরাস্ তর্ম-৩১৭ খু: পু:
লাগিলেন। কিন্তু বাটিন নগর সকলের সাহিত হুলে উচ্চাকে পাত্তিভক ক্রিতে হইল। বুলে তিনি

সহিত যুদ্ধে উচ্চাকে গান্তিভল করিতে হইল। যুদ্ধে তিনি আনেকগুলি লাটিন নগর অধিকার করিবেন। তিনি যুদ্ধারছের পূর্বের রীতিমত দেবদেবীর পূর্বা করিরা ইছে প্রস্তুত্ত হইতেন। তিনি টাইবার নামক হানে এক উপনিবেশ এবং জেনিকিউলাদ্ নামক হানে একটা হর্দ নির্দাণ করেন। তৎপরে টাইবার নদীর উপরে এক প্রকাশ্ত সেতৃনির্দ্ধাণ করিয়া জেনিকিউলাদ্ হর্দের বহিত রোমনগরকে সংযুক্ত করেন। এই কান্তনির্দ্ধিত সেতৃর নাম ছিল "পন্স সার্বিসিরাস্টান ইহার পরে তিনি একটা কারালাদ্ধ প্রতিন্তা করেন। ২৫ বৎসর রাজ্য করিয়া আভাস্পর্বাদ্ধাক গ্রমন করিবেল। তৎপরে ক্রিফান রাজা ইইবেন।

জিলি "প্ৰকাৰ (জোঠ) টাৰ্ক্টন নামে খ্যান্ত ছিলেন। লোমেয় পঞ্চন ৰূপত্তি টাৰ্ক্টন মাড্পক্ষে এট্ৰানান্ এক পিতৃপক্ষে

জিউনিয়ান টার্কুক্ষিত্রনিয়ান টার্কুক্ষিত্রনিয়ান টার্কুক্ষেত্রনিয়ান ভিন্ন টার্কুক্ষেত্রনিয়ান ভিন্ন টার্কুক্ষেত্রনিয়ান ভালন ক্ষেত্রনিয়ান ক্ষেত্রনিয়াল ক্যেত্রনিয়াল ক্ষেত্রনিয়াল ক্ষেত্রনিয়াল ক্ষেত্রনিয়াল ক্ষেত্রনিয়াল ক্

অবটা জীনকানী বুবে করিয়া ক্রিকে উজিয়া তেলাও জিলাকণ মনে কর্মণানী উজা কুনী প্রমায় তার্ক হৈছে জমানে জাপন করিক। জ্ঞানিক ভবণতী টানাকুইন গজিয়া নাক্ষানা মানানাকরণ উজাজিয়াবের ভিত্তি স্থাপন করিয়াছিলোন। উচ্চায় ভবিষ্যালী শীমা ক্ষমণী হুইল।

ः वाद्यद्रकेम वेर्क्ट्रेन जिन्द्रपः व्यावानः यानिवानः वाद्यः जान-वाद्यः व्यावाः नांधातत्रतः जिन्नगात्र व्यावानः । व्यावानः वानिवानः वीर्द्याः ग्रंबन्तरानः निक्षः वः तक्षः निवृकः विक्राननः । व्यवावर्गः शवतः व्यावानः यानिवात्तवः कृष्णः व्हेरणः जानवानीः व्यवावर्गः निक्षं नेनद्वः निर्दालस्य यान्दरननः।

টার্ক্ ইনের রাজ্যকাণ নানাপ্রকার প্রসিদ্ধ ঘটনার পূর্ণ।
ভিনি সেবাইন্গণকে পরাজিত করির। তাহারের কলেশিরা নামক নগর অধিকার করেন এবং ইজেরিরাস্ নামক প্রাকৃত্যুত্রকে সেই ছানের শাসনকটা নিযুক্ত করেন। তিনি গাটিরাম্ প্রকেশের অনেক নগর অধিকার করিয়াছিলেন।

এই সৰল কাৰ্য জিল তিনি অনেক বেশহিককর কার্য্যের অহ্বান করিছাছিলেন। সর্ব্ধপ্রথমে তিনি কাণিটোলাইন্ ও আন্তেটাইন্ পর্বতের মধ্যবর্ত্তী জলাভূমির জলনিকাসমপূর্বক সেবলাল প্রত্যপ্রথিত করিরা তথার "কোরান্" এবং "সার্চান্" নামক হই প্রকাপ্ত অটালিকা নির্দাণ করেন। ইবার নির্দাণ-নৈপ্ণা প্ররূপ অহ্বত যে, আজি ও তাহার একথানি প্রস্তর্থপ্ত ভানচাত হর নাই। তারির্দিত "নাকান্ মান্নিমান্" নামক রক্ত্বে নানাপ্রকার জীড়াকৌশল প্রদর্শিত হইত। গ্রিনি বলেন বে, তিনি কাণিটোলাইন্ পর্কতিশিধরে প্রক বিরাইসৌধ প্রেডত করিছাছিলেন। এতত্তির তিনি রাজ্যের শাসনপ্রশালীর নানাপ্রকার সংস্কার করিরাছিলেন। এই সমরে চারিকন তেইাল কুমারীর প্রিবর্গত হ্বজন কুমারী নিযুক্ত ক্ষ।

টাকু ইন নার্ভিয়ান্ টারিয়ান্ নামক জীতদানীপুরকে অত্যস্ত ভাল বাসিতেন। এই বালকের শৈশৰ অভুত বটনামর। একদিন নার্ভিয়ানের শব্যার আগুন লাগিল। শব্যা নয় হইতে
বাগিল, কিন্তু প্রজনিত অগ্নিনিখা নিফ্রিড শিশুর একটা কেশও
শর্পা করিল না। তদর্শনে টার্ক্ ট্নপন্নী টানাকুইল বিশিওভাবে
বলিলেন, এই বালক উত্তরকালে সমাট্ হইবে। ভলবধি
ভিনি নার্ভিয়ান্কৈ শোষাপুরের ভার শালন করিকে লাগিলেন
জ্বারু বছার সহিত ভাহার বিবাহ দিলেন।

ভূতপূর্ব রাজা আভাস্ মার্লিরাসের প্রকাশ বেথিলেন যে, জাবিরাতে এই জামাতা রাজসিংহাদন অধিকার করিব। তজ্জ্জ্জ তাহারী রাজার তথ্যসন্দের নিমিত্ত হুইজন গোক নিযুক্ত করিবেন। ইহাবিসের একের কুঠারাখাতে ট্রাকুইন নাংবাভিক- कार्य कारक रहेरका । किन्दु जानीन वास्तिहरूम नृत्याय करे অনুহত্যার কলগাও করিছে সায়িত্বন সা। প্রতিষ্ঠী সাঞী টানাকুইন ৰাধারণে আচার কলিকেন বে, টার্ক ইনের আঘাত जाःचा**डिक जरह, छिनि चर्बिगरच हुए प्रहेरका** १ अहे जगरव য়াজী খীর প্রির শোক্ষপুত্র সাজিয়ালুকে রাজকান্ট নির্কাই করিতে च्यातम कतित्वतः मार्डिनाम स व्यक्तत्वक स स्टब्स व्यक्तिमान नाबाज्यक श्रिक्षनाच व्हेश केंद्रियन । क्ये ग्रेक्ट्रियन पूर् অধিক্ৰিন গুৱ ৰাকিল বা**া ব্ৰন্** মৃত্যুসংখ্য লোকে জানিতে পারিল, তথন সার্ভিয়ার সিংহারনে গুড়ভাবে উপবিষ্ট হইরাছেন।

৩৯ ব্রাজা সাতিয়ান কেবল সাধারণের নাবিলাণ টালিলাণ (বৰ্ণ-বৰ্ণ হু: পু:) নিৰ্মাচনে নিংহানন পাইলেন ভ তাঁহার কোন স্থারনলত অধিকার ছিল না।

ইহার বাজহুকাল পারিতে অভিবাহিত হইরাছিল। পরবর্ত্তী ঐভিহাসিকগণ ভাঁহাকে শাসনবাৰহার অনক বলিরা কীর্তন করিরাছেন। তাঁহার সংস্থারাবলির মধ্যে শাসনসংস্থার সর্বশ্রেষ্ঠ। পূর্বে আভিজাত্য বংশগত ছিল, ইইার সময়ে তাহা ধনগত হইল। छज्जन धानामार्जन कतिरम कृतीन रहेय--धारे रेव्हा नकरणद হালে বলবতী হইল। রোমের ধনভাগার শিল্প-বাণিল্য-ক্লবিঞাসত অর্থে পরিপূর্ণ হইতে লাগিল। সার্ভিরাস্ রোমক্রিগকে চারিবর্ণে বিভাগ করেন। তৎপরে তিনিই সর্বা প্রথমে মতুষাগণনা এবং সম্পত্তির মূল্য নির্দ্ধারণ করেন। উপরোক্ত চাতুর্বর্ণ বিভাগ ধ্ৰগত ছিল। থাহাদিগের এফলক বা ততোধিক মুক্রা ছিল, ঠাহারাই প্রথমশ্রেণীর ধনী বলিরা খ্যাত ছিলেন। 🕒 💵 শ্রেণীর লোকগণের ১২৫০০ বুক্রা থাকিত।

এই শাসনসংস্থারের পরে দার্কিরাস রোমনগরের সীমার্ডি করেল। পূর্বে 'পামরিরাব' নগরের নির্দিষ্ট পথিত পরিধি ছিল। अध्य कृष्टेविमान् किमिमान् अवर अबूप्रेनिम् नर्सक जकन मगत-দীমার অন্তর্ভ হইল। এই দীমাম চতুর্দিকে এক অনুভূ প্রস্তরপ্রাচীর নির্মিত হইন। ইহাকে লোকে সার্ভিয়াসের প্রাচীর বলে। এই সমরে রোমের পরিধি । মাইল হইল। নগরের বহিৰাবে এক মাইল বীৰ্ব একটা প্ৰকাশ জুপ নিৰ্বিত এবং ১০০ কিট বিশ্বত ০০ কিট গভীয় একটা পরিবা বনিত হবি । <u>एकारमञ्ज्ञ महाद्रेतिएमञ्ज्ञ भागनकामः भर्यत्र कारावे निर्मित्रे सभरत्रव</u> मीमा विभावित । धारे अवैनाव शांत नार्किवान गांकेवारमञ অভান্ত প্ৰদেশত কৰিবালীবিপকে হোসবাসীয় সহিত বিলিত এবং ज्ञाज परिकार दशान सहान ।

्रशृदक्षांचा व्यावे वार्क हेर्स्य हरे शृदका महिच नार्किसरमञ াই স্কাৰ নিবাৰ ইইয়াছিল। স্কান্য ছোঠপুত্ৰ লিউনিয়াস ্নিষ্ঠার প্রাকৃতি, বিশ্ব স্থান্তাই 🏙 সময়ত্ত সোমদপ্রকৃতি ছিলেন।

क्लिड नेव आपीन कडीके नेव के काडिक, कवड कारात ही টানিরা অভাত ক্রত্তিতি ও উত্তারীকারিক ছিলেন। এই व्यम ने विषय मिनरमद खद्रानक विष क्षित । विद्विभिक्षान बीव वन्या बीरक वर कडिएनन। हाहिन बीर्ड महासूक्ष्य गुरुरक रमम कतिरमम । उपम त्यार्कः व निर्वासमा विकासकार अप्रजनकी मितिहारक महानाम विवाह कतिराम रिकार नहीं ७ পতिर्ভात वर अस्तिम् भव्यभाठ स्तित्मम मा।

শার্ডিনাদের বিরক্তা টারিরা পতিহত্যা এবং ভাতর্বিবাহ मन्नानं कतिता निक्किजीतं दाठी विधित्तनं विधानति क्या ध न्यामाण नार्डिहारमङ व्यापमस्याद निहर्तन । हिल्लिहा वरकारम গাড়ীতে চড়িয়া গৰে কিয়িতেছিল, ভাষাৰ পিভার বক্তাক্তানেত পথে পড়িরাছিল। গাড়ীচালক ভদর্শনে অবর্থনি সংহত করিল। কিছ উপযুক্ত কথা কহিল, পিডার শবের উপর দিরা গাড়ী চালাও। শক্টচক্রে মৃতদেই ছিন্ন ছইনা স্কালোভ টারিবার বল্লরঞ্জিত করিল। ভদববি রোমের সেই পথটা "উইকেড ট্রাট্র" বা নিষ্ঠর পথ ধলিরা ক্থিত হইতেছে। সার্ভিয়াসের মৃতদেহের কোন সংকার वर्षेत्र मा । जिमि १७ वर्त्र ब्राक्क्य करियाक्रितम ।

ইহাঁকে লোকে অহতারী টার্ক ইন বলিয়া विकिलियान है। ई है-বর্ণনা করে। ইনি নির্মাচনের অলেকা নাল কুপাৰ্বাল everes o st m না করিয়াই নিজে গর্বিতভাবে সিংহাসন অধিকার করিলেন। তিনি রাজা হইবাই সার্ভিরালের সংস্কৃত কার্যা সকল লোপ করিতে লাগিলেন। অভ্যাচারে প্রজানিগকে প্রাপীড়িত করিলেন। ভীহার আঁট্রালিকা-মির্গ্বাণের মার্চ শিল্পী ও কাক্সদিগকে বিনাবেজনে বা অলবেজনে কাৰ্য্য করিতে বাধা করাই-লেন; ডক্ষম্য অনেকে বিষ্ম হংবে আত্মহত্যা করিয়াছিল। ডৎপরে তিনি বনীদিগকে নির্বাদিত করিয়া তাঁহাদিগের ধনসম্পত্তি হত্ত-গভ করিতে লাগিলেন। ভিনি নিজের জীবনের আপভার দৰ্শনা প্ৰহরী বেটিত থাকিতেন। কিছ ছোলে ভিনি ভীবন অভাচার করিকেও বিষেশে পরাক্রমণালী দ্বালা বলিয়া খ্যাত হইলেন। ভিনি অ**টেভিয়ান মানেলিয়ালের** সহিত খীর **ক্**সার বিবাহ দিলা সাটিয়ামে প্রাক্তর প্রাক্তর স্থাপন করিলেন। তৎপরে টার্ক ইন ভলনিরামবিগের সমুক্তিপূর্ণ স্থরেষা পমেটিয়া নগর অধি-কার করিয়া আচুর ধনরত লুঠন করেন এবং নেই অর্থে কানি-টোলাইৰ পৰ্যাছের লিখনে জুপিটার, জুমো এবং কিনাৰ্জা এই ভিন বেৰভাৱ নামে, কাপিটোলিয়াৰ নামে এক বিশ্লাই কলিয় निर्मान करतम। धमिरतम किवि-नमनगरक अक्को जकावित অবিক্লত নরমূপ্ত পাওরা গিরাছিল ৷ এই শশ্বিরে একটা ভগ্ডত বিলালের মধ্যে অনেক পথিত হয়েলিকিছ পু'বি রঞ্জিত ছিল।

इहात नाव छाङ् हेल क्लिकाई नावण अवकी वाकिन नगत

विश्वानवाककणानुसंक अधिकात करान । आहे नगरत अक रेपर-ষ্টমার ভিনি ক্ষণিত হইলেন। এক্রিক একটা দর্শ পূলা বেদীর মধ্য হইতে উথিত হইরা ব্যক্তিতে নিহত বুবের শার ভক্ত ক্রিভে লাগিল। ভবর্গনে টার্ক্ট্র জীন্-দেশের ভেলিকির रिववानी बानियात अन्न कारात हुए गृत ७ क्रिमीनफिरक প্রেরণ করেন। তৎপরে আর একটা লোমবর্ণকাও সংঘটত হইল। টার্কুইন ফান আর্ডিরা অবিকার করিবার জন্ত বুছবাত্রা করেন, ভংকালে টার্ক ইন-পুত্র সেকুটাস্ কোলেনিয়ালের পতি-পদ্মাৰণা পদ্মী বুক্তেশিয়ার সহীৎনাশ করেন। গভীর নিশীথে সেষ্টাদ্ উন্মুক্ত ভরবারি-হত্তে দুক্তেশিরার কক্ষে প্রবেশ করিলেন এবং তর দেখাইরা কহিলেন বে,"ৰদি তুমি আমার প্রভাবে সম্বতা না হস্ত তকে তোমার শিরশ্ছেদ করিব এবং ঘোষণা করিব বে, তুমি ক্ৰীতনাদের সহিত ব্যক্তিচারকালে তোমাকে বং করিয়াছি।" লুক্তেশিরা শিরক্ষের ভর অপেকা কলকের ভর করিলেন। সেকটাস তাঁহার সতীখনাশ করিবার পরেই তিনি পতি ও পিতাকে ডাবিরা এই নিদারণ অপমানের প্রতিশোধ লইতে উত্তেবিত করিলেন এবং বন্ধে ছুরিকাগাত করিরা কলছমদিন অস্ততপ্ত ৰীৰনের সীলাখেলা শেব করিলেন। এই ঘটনার রোমবাসী উত্তে-জিত হইয়া উঠিল এবং নাজার ও ডৎপরিবারত্ব সমত্ত পরিজনের নিৰ্মাসন হও বিধান করিল। রাজা টার্কুইন ডৎকালে বাহিরে যুদ্ধে ব্যাপৃত ছিলেন ৷ তাঁহার ভাগিনের, এল্ফুটাস্ সৈজের অধিনায়ক হইরা টার্কু ইনের বিরুদ্ধে বুদ্ধাতা করিলেন। সৈঞ্চগণ অভ্যচারী টার্ক ইনকে সহজেই পরিভ্যাগ করিয়া ক্রটসের অধীনভা বীকার করিল। টার্ক ইন তাড়াডাড়ি রোমে কিরিয়া স্মানিলেন, কিছ কেই নগর তোরণ উল্মোচন করিব না। তখন তিনি জীত হইয়া পুত্রগণের সহিত কারেরী নামক স্থানে আশ্রয় লই-লেন। তিনি ২৫ বংসর রাজত করিরা পুত্রের লোবে প্রজাপুত্র-कर्कक निकांशिष्ठ रहेरनन।

রোমে রাজত্বশাসনপ্রণাদীর পরিবর্ত্তে সাধারণতত্ব প্রবর্তিত হইল। রাজার নির্কাদন ও সাধারণতত্বের প্রতিষ্ঠা চিরাম্বরণীর করিবার জন্ত রোমবাসিগণ ৩০ খুঃ পুঃ ২৪এ ক্রেক্সারি "রেজি-ক্রিক্রার বা ক্রিটালিয়া" নামক বার্বিক উৎসবের প্রপাত করিল। কিন্তু সাধারণতত্বের প্রকর্তমে শাসনপ্রণাদীর কোন আমৃল পরিবর্ত্তম হইল না। সাধারণের নির্কাচনে হইজন নহানাভণিক নির্কাহকে দার্ভিক্রমে বিচার ও শাসন বিভাগে ক্ষরতা চালনা ক্রিক্তে সাগিলেন। ইইলারা প্রিটর ও প্রের ক্ষরতা নামে ক্রিত হল।

६०० पः गृर आहळाग् च छाई हेमान् कारमनियान् धारम

ক্ষাণ নিযুক্ত হন। কিছ টার্কুইন-কলোডৰ বিগন্ধ কোণে-পিন্নান্ পরে ব্যান পরিক্যাণ করিছে বাধ্য হন একং পি-ভালে-রিরান্ তৎপধে নিযুক্ত হন।

এই সময় নির্বাসিত টার্কুইন এট্রাখানবিপের বাহাব্যে ক্তরাল্য প্নঃপ্রান্তির বড়বর করিতে লাগিলেন। টার্কুইন নিজের রাজিগত (private) সম্পতি পাইবার প্রোর্থনা করিরা রোমে চুইজন দৃত প্রেরণ করিলেন। কর মৃত্যাণ করেতী রোমক বুবকের সহিত বড়বর করিরা টার্কুইনের রাজ্যপ্রান্তির চেটা করিতে লাগিল। একজন ক্রীতনাস এই বড়বর প্রকাশ করিরা বিশ। বড়বরকারিগণের মধ্যে কলল ক্রটাসের চুই পুত্র লিপ্ত ছিল। ক্রটাস্ প্রের অপরাধ ক্রমা করিলেন না, তিনি বাতকদিগতে অভ্যান্ত বড়বর প্রথমিনিপের সহিত প্রবহরকে হনন করিতে আভ্রান্ত বড়বর প্রতাস্ মন্থ্যের ইতিহানে চিরামরণীর হইরা আছেন।

টার্ক ইনের সম্পত্তি এই বড়মত্রের সম্ভ আর প্রবন্ধ হইল না।
সাধারণে তাহা লুঠন করিরা লইল। টার্ক ইন বড়মত্র বিফল
দেখিরা এটারানদিগের সহারতার রোমের বিফল্ডে যুড় ঘোষণা
কর্মিলন। ক্রটন্ ও ভালেরিরাস্ও সৈভ লইরা অগ্রনর হইলেন।
টার্ক ইনের প্রে আর্গান্ ক্রটাসের সহিত বন্দ্র্যুক্ত প্রবৃত্ত হইল।
উভরে সাংঘাতিকরণে আহত হইরা অর্থপৃষ্ঠ হইতে পতিত
হইলেন। তৎপরে উভর সৈন্তের ঘোরতরমূভ আরম্ভ হইল।
জন্ম পরাজর নির্ণন্ন কঠিন হইরা উঠিল। অক্সাৎ নিশীপসমরে দৈববাণী উট্চেম্বরে ঘোষত হইল,—"রোমকগণই জরী হইরাছে।"
এই শব্দে ভীত হইরা এটাঙ্কানগণ পলারন করিল। ভালেরিরাস্
ক্রটনের মৃতদেহ লইরা রোমে ফিরিলেন। ক্রটনের জন্ত সকলে
হাহাকার করিরা বিলাপ করিতে লাগিল। ভালেরিরাস্ ভারপরতাগুণে সর্ব্ব সাধারণের প্রিত্ত হাগিল। এইজন্ত তাহার
শণান্ধিকোলা অর্থাৎ সাধারণের প্রিত্ত হাগির নার হইল।

পরবংশর ৫০৮ খ্যা পূা, টার্কুইন এট্যন্তানের অন্তর্গত ক্লাসিন রানের রাজা লাস্পাসে নার শরণাপার বইলেন। পর্কেনা বিরাট সৈন্তরল লইরা রোমের অপর পারত্ব জেনিকিউলান্ হর্গ অবাধে অবরোধ করিলেন। সন্থ্যুত্ব অসত্তব বৃথিয়া রোমকগও বেশোভারের জন্ত টাইবার নবীর উপরিছিত সেতুভজের উভোগ করিছে ব্যালিল। হোরেশিরাস্ কর্লেন্ নামক এক জ্লোকিক বীর অসাধারণ বীরবে সেড্র অপর প্রাক্তে শক্ষ্পানের হিছে লাগিলেন। এবিকে রোমকর্মণ সেড্র ভালিতে লাগিল। সেড্জন প্রার্থ ইবল হোরেশিরাস্ বহন্ত বছল শক্ষ্প বীরবর্ধবের লাগে টাইবার সবীতে লাক বিরুধ সঞ্চিত্রুত্ব একং কৰিকেন, — "নিজ্ঞ টাইবার নগ আবাকে নির্কিনে রোনে লইরা
বাঙা" অনামান্য সভরবকোলনে জিনি শুজর শ্রাকৃত অভিন্দর
করিরা অন্য তীরে পৌছিলেন। এই নটনা চিনক্ষণীর করিবার
ক্ষার রোমের গবর্মে ও উহার এক প্রতিমূর্তি নির্বাণ করিবেন
থকা ক্ষাত ক্ষি ভিনি বভটা বাইতে পারেন, ভভটা ভূমি ভাঁহাকে
প্রান্দ করিলেন। রোমের ইভিহানে হোরেশিরানের কীর্তি
বর্ণাকরে নিশিবক আছে।

ভৎপরে পর্দেশা রোমনগর ক্রবরোধ করেন। পাছরব্যের আম্দানী বন্ধ হওরার রোমবাসিগণ বিব্রত হইরা উঠিল। তথন মিউলিয়ান নামক এক অন্তেশবংসল যুবক রোম উভারের সভয় করিলেন। তিনি গুপ্তহত্যা বারা পর্সেনার প্রাণনাপের চেটার ভাঁহার শিবিরে প্রবেশ করিলেন। কিছ ডিনি পর্সেনাকে চিনিতে না পারিরা রাজমন্ত্রীকে নিহত করিলেন। তৎপরে যুক্ত হইরা পূৰ্দে নার সন্থে নীত হইলে বখন পূর্দে না তাঁহাকে বল্লগাদারক মুত্যুদণ্ড বিধান করিতে চাহিলেন,তখন তিনি সহাক্তবদনে দক্ষিণ হত্ত অগ্নির উপরে স্থাপন করিলেন। হত্ত দথ্য হইরা গেল, তথাপি দৃচ্চিত্ত মিউলিয়ানের মূখে হাক্তরেখা বিলীন হইল না। তথন মিউশিরাস নিতীকভাবে পদে নিকে কহিলেন,—"আমার ন্যার ৩০০ যুৰ্ক ভোমার গুপ্তহত্যার লগ্ন প্রতিক্রাবদ্ধ হইরাছে, তল্মধ্যে भामिष्टे व्यथम। भन्माना वाकि शक्त करम करम भागित।" ভক্ত বণে ভীত হইরা এবং মিউশিয়াদের সাহস ও ক্টসহিষ্ণুতা দর্শনে বিশ্বিত হইরা তাঁহাকে নির্কিন্নে রোমে পৌছাইরা দিলেন। এই অন্তত কীর্ত্তির জন্য মিউশিরাস্ কিভোলা বা 'বামবাহ' এই আখ্যার অভিহিত হইলেন। পর্সেনা তৎপরে রোমের সহিত সৃষ্টি করিয়া সসৈন্যে অন্তেশে গ্রম্ম করিলেন ৷ রোমকগণ সৃষ্টির প্রতিভূ স্বরূপ দশব্দন যুবক এবং দশ্টী কুমারীকে পর্সে নার নিকট পাঠাইলেন,—ভন্মধ্যে ক্লিলিয়া নামী একটা কুমারী শিবির হইতে প্ৰায়নপূৰ্কক সম্ভৱণে টাইবার পার হইয়া রোমে উপস্থিত হয়। রোমক্পণ ভাঁহাকে পুনর্কার ধরিরা পর্সেনার নিকট প্রেরণ করে। পদেনা ভাষার প্রতিভা ও সাহস্কর্ণনে তাঁহাকে ও তৎসন্ধিনীদিগকে মৃক্তি দিরাছিলেন।

ইংার পরে টার্ক ইন লাটন নগরসমূহত্ব ব্যক্তিগণের সহারতার
তর বার রোম আক্রমণ করেন। রোমকগণ বিপর হইরা একজন
"ডিটেটনে" নিযুক্ত করিল। কলগণণ ডিটেটর নিযুক্ত করিতেন।
ছর্মাসকাল এই পদ থাকিত। ডিটেটরের সর্কভোর্থী ক্ষমতা
ছিল। এ পঠু মিরাস্ প্রথমে ডিটেটর হন। উত্তর পক্ষের সৈন্য
রোজয়ার রবের নিকট সক্ষিত হইল। এই ভরতর রুভে রোমকপদ জরলাত করিল। টার্ক ইনের প্র টাইটাস হত হইলেন।
টার্ক ইন আহত হইরা রোগ সইবা প্রায়র করিলেন।

ক্ষিত আছে কাইর ও ক্ষোলার নামক রম্ম আকৃষ্যের
অসামাত বীর্থে রোমগণ এই বুল্লে স্থানার ক্ষিত্র হিন্ত হিন্

ইবার পরে টার্কুইন রাজ্যলাজের আর চেটা করেন, নাই। আতঃপর তিনি কিউনি নামক হানে পলারন করেন একং ১৯৬ বঃ পুঃ অব্যে হঃখমর বীবনের পরিসমাধ্যি করেন।

রোমের ইতিহাসে এই ৪৮ বংসর কেবল পেট্রি দিরান বা আতিলাতগণ এবং শ্লেবিরান বা নির্দ্রেশীর বিরোধে পরিপূর্ণ। রোমের রাল্যতর সুপ্ত ইইলে শাসনপ্রণালী হবের ব্যা হইলে শাসনপ্রণালী হবের ব্যা হইলে খাসনপ্রণালী হবের হবের প্রান্তর স্থা ইইলে শাসনপ্রণালী বহির হিল । প্রান্তর পরিতর করিতেন ইত্যাবি। ক্রমে ক্রেবিরানগণ অভ্যাচারপ্রান্ত ইরা অসভোষ প্রকাশ করিতে লাগিল। এতত্তির রোমের রুপ গ্রহণ ও প্রধানের নিরম বড় কঠোর ছিল। শ্লেবিরানগণের মধ্যে অনেকে অবের লারে পেট্রি শিরানদিগের নিকট ক্রীতদাসরূপে জীবন বাপন করিত। রাজতর-বিলোপের পরে রাজার বে সকল সাধারণ ভূমি ছিল, ভাহাও পেট্র শিরানেরা ইছামত ভোগ দথল করিতেন, প্রেবিরানদিগের ভাহাতে কোন অধিকার ছিল না।

এই সমত কারণে উৎপীড়িত হইরা মেবিরানগণ ৪৯৪ খৃঃ পৃঃ
আবে রোমের ৩ মাইল দ্রে একটা নৃতন নগর স্থাপন করিতে সকর
করিল। কিছ তাহাগিগকে ফিরাইবার ক্ষপ্ত নেনেসিরাস্ এগ্রিপা
নামক একব্যক্তি প্রতিনিধি নিযুক্ত হইলেন। তিনি ক্ষপের
কথামালা হইতে উদর ও অভাত অবরবের গর বনিরা মেবিরানদিগকে শাস্ত করিলেন। তাহারা কহিল, বদি ভাহারা সর্কবিবরে
ভারবিচার প্রাপ্ত হর, তবে তাহারা প্রতিনির্ভ হইবে। তাহারা
ট্রিক্টন (ধর্মাধিকার) স্থাপন রারা আপনাদের প্রতি অভ্যাচার
প্রতিবিধানের চেটা করিল।

এই সময়ে শ্লিউরিরাস্ কাশিরাস্ নামক একজন বিখ্যাত পেট্রশিরান মেবিরানগণের অমূক্দে"এগ্রেরিরান্ ল"বা ক্লবিবিধি নামক এক আইন বিধিবদ্ধ করিছে চেটা করেন। এই স্নাইনে সাধারণভূমির কির্মণে মেবিরানগণ প্রাপ্ত হুইল।

এই কালের রোম ইতিহাসে করিওলেনাস্ এবং জন্সিরান-গণের কাহিনী তির অঞ্চ কোন উল্লেখযোগ্য মটনা নাই।

নাৰ্শিনান করিওলেনান্ নানক এক অহভারী গোটুপিনান্ বুবা মেৰিনানবিগকে অভাত স্থা করিতেন। ৪৮৮ খ্রঃ পুং একবার হুর্তিকের নান রোনের নাহাব্যার্থ এক আহার লভ আইনে। ক্ষিপ্রলেনাস্ ভাষা প্রেবিয়ানদিগকে দিতে নিবেধ করেন।
ভাষাতে মেবিয়ানপণ তাঁহাকে সংহার করিবার চেঠা করে,
কিন্তু কললগণের কৌণলে তিনি উদ্ধার পান, কিন্তু সেই অপয়াধের জন্ম নির্মানিত হইলেন। করিওলেনাস্ নির্মানিত ইইয়া
ভল্নিয়ান্গণকে রোম আক্রমণে উত্তেজিত করিলেন। তাহারা
তাহাকে সেনাপতি করিয়া রোম আক্রমণ করিতে পাঠাইল।
করিওলেনাস্ প্রবল প্রতাপে অনেক নগর সুঠনাদিপূর্কক রোম
আক্রমণ করিলেন। রোমের প্রেবিহত ও প্রধান প্রধান সমান্ত
বাজিগণ করিওলেনালের নিক্ট রোমরক্ষা করিবার প্রার্থনায়
গমন করিলেন। কিন্তু তিনি কিছুতেই কর্ণপাত করিলেন না।
অবশেষে রোমের রমনীর্ক্ষ, করিওলেনালের জননী ভেটুরিয়া এবং
ব্রী ভলাম্নিয়াকে অগ্রবর্ত্তিনী করিয়া রোমরক্ষার জন্ম করিওলি
ক্রমানের দিবিরে গমন করিলেন। ইইাদিগের বিলাপে বিচলিত
ইইয়া করিওলেনান্য বিললেন — মাতঃ তুমি রোম রক্ষা করিলে,
কিন্তু পুত্রকে হারাইলে। "

তৎপরে তিনি জন্শিরানদিগকে ফিরাইরা কইয়া গেলেন।
কেহ বলেন বে, জন্শিরানগণ এই কার্য্যের জন্ম তাঁহাকে নিংত
করিয়াজিল। কেহ বলেন, তিনি বৃদ্ধকাল পর্যান্ত বাঁচিয়া ছিলেন
এবং সর্বাদাই বলিতেন, "বিদেশীরদিগের মধ্যে বাসের কট বৃদ্ধ
জির জন্ম কেহ বৃদ্ধিতে পারে না।"

৪৭৭ খৃ: পৃ: ভিয়েণ্টাইনগণের সহিত একটী যুদ্ধ হয়, তাহাতে রোমকগণ জয় লাভ করে এবং কলল টাইটাল মেনেলিয়াসের আদেলে সমগ্র ভিয়াইগণ সম্লে বিনই হয়। কেবল উক্ত বংশের একটা মাত্র বালক য়লা পাইয়া উত্তরকালে রোমের ইতিহাসে খ্যাতি লাভ করিয়াছিল।

৪৫৮ খৃঃ পৃঃ একুইয়ানগণের সহিত একটা ভরতর যুদ্ধ হয়।
সিন্সিনেটাসের অন্থিতীর রণকৌশণে রোমকগণ জয় লাভ করিল।
যংকালে সিন্সিনেটাস্কে সেনাপতিতার বরণ করিতে গিয়াছিল,
তৎকালে তিনি ক্ষেত্রে হলচাগনা করিতেছিলেন। তৎপরে
জাহার পত্রী রেসিলিয়া-প্রদন্ত সামান্ত পরিছেল ধারণ করিয়া
রাজসভার গমন করেন এবং তথার ডিক্টেটর বা রোমের সর্কময়
কর্মা নিযুক্ত হন। অসামান্ত প্রতিভাবলে রণকৌশলে শত্রকৈন্ত পরাজিত করিয়া কয়মাণ্যে ভূষিত হইয়া তিনি রোমে প্রভাগমন করেন।

এই সমন্ন এট্রান্নানগণের অধঃপতন ঘটে। সাইরাকিউজের রাজা নীরো এট্রান্নানিগকে কিউমির নৌগুদ্ধে সম্পূর্ণরূপে পরাত্ত করেন। স্পিউরিরাস ক্যাসিয়াস্ প্রবর্তিত এগ্রিরিরান্ আইন সইয়া পোট্র শিরান ও মেবিরানগণের মধ্যে বরাবর বিরোধ চলিতে থাকে। পরে ৪৭১ বঃ পুঃ টিবিউন পাব্-লিলিরাস্ ভলেরা সপের স্বাধীনতা-বৃদ্ধি হয়। তৎপরে ৪৬২ থা পু: ট্রিকিন

করাস টেরেন্টিলিয়ান্ আর্মা'র প্রস্তাবে

ভিদেশ্বিটে বা

বশলানন ৪৫১
১০৯ খা পু:

একটা সমিতি গঠিত হয়। কিন্তু ইহাতে
পোট্রিলিয়ানগণ জনেক আপত্তি করিলেন। জবশেষে ৮ বংসর
বিরোধের পরে তাঁহার তিনন্ধন বিপ্রব্যক্তিকে গ্রীস্দেশে সোলনের আইন সংগ্রহ করিতে প্রেরণ করেন। তাঁহারা তথার তুই
বংসর থাকিয়া রোমে প্রত্যাগমন করিলেন। ৪৫২ খা পু:

দশলনের ঘারা একটা সমিতি গঠিত হইল। এই সমিতি
সর্কোর্মরা হইয়া শাসনদণ্ড পরিচালন করিতে লাগিলেন।
ইহাদের মধ্যে প্রপিয়াস্ ক্রডিয়াস ও টাইটাস্ জেনিউলিয়াস্
কন্সল নিযুক্ত হইলেন। এই সমিতি দশটা প্রধান বিধি সম্বলন
করিলেন, তাহাই সর্ক্রাদি-সম্মতিক্রমে আইনে পরিণত হইল।

এই আইনে রোমের উভর শ্রেণীর মধ্যে অনেক দাম্য স্থাপিত

হুইল। ডিসেম্ভিরেটগণের শাসনে সকলেই সম্ভূষ্ট হুইয়া পুনরায়

তাহাদিগকে নিযুক্ত করেন। পূর্ব্বতন ব্যক্তিগণের মধ্যে কেবল

এপিয়াস স্থপদে প্রতিষ্ঠিত থাকিলেন এবং সাধারণের প্রতি

অত্যাচার আরম্ভ করিলেন। পুর্ব্বোক্ত আইনের ১০টী ধারার

আর ছইটা বিধি সংযুক্ত হইয়া ১২টা বিবিতে পরিণত হইল।

পাব্লিয়ান' নামক আইন বিধিবন্ধ করেন। ইহারারা প্লেবিয়ান-

৪৪৯ থঃ পু: একুই আন ও সেবাইনগণ পুনর্কার রোম আক্রমণ করিল। এপিয়াস স্বরং যুদ্ধকেত্রে না ঘাইয়া রোমে থাকিলেন। কিন্তু তাঁহার প্ররোচনার নিভাক্তম দেনাপতি ডেণ্টাটাস্ গুপ্তভাবে হত হইলেন। ইনি ১২০ বার যুদ্ধে ধ্বরলাভ করিয়াছিলেন। তৎপরে এপিয়াদ্ অনাতর দেনাণতি ভার্জি-নিয়ার অলোকিক রূপবতী কন্যাকে বল পূর্বক হস্তগত করিবার জনা নানা উপার অবস্থন করেন। উপারাম্বর না দেখিয়া ভার্জিনিয়া স্বীর কন্যার বক্ষে ছুরিকাঘাত করিয়া তাহার উদ্ধার সাধন করেন। এপিয়াসের এইরূপ অত্যাচারে প্রেবিয়ান গণ উত্তেজিত হইয়া উঠিল এবং দ্বিতীয়বার ভাহারা রোমনগর পরিত্যাগ করিরা অন্যত্র গিরা বাদ করিতে লাগিল। তখন পেটি শিয়ান পক্ষ নিরূপার হইয়া এল্ ভালেরিয়ান্ এবং এম-হোরেশিয়ান নামক হুই ব্যক্তিকে প্রেবিয়ানগিগের সহিত সন্ধি-স্থাপনে প্রেরণ করিলেন। ডিসেম্বর বা দশ-সমিতি বিলুপ্ত হইল এবং উপরোক্ত তুইবাক্তি কন্সল নিবুক্ত হইলেন। তাঁহারা পুনরায় আইন সংস্থার করিয়া প্রেবিয়ানদিগের অনেক স্থবিধা প্রদান করিলেন। ডিলেস্টরগণের মধ্যে এপিয়ান কারারুদ্ধ হটয়া আত্মহত্যা করিলেন এবং অন্যান্য অনেকে কেই নির্বাসিত ও কেই হত ইইলেন। তাঁহাদের ধনসক্ষত্তি বাজেরাপ্ত হইল।

৪৪৪ খু: পু: রোমের শাসন-প্রণালীর পুলরার পরিবর্তন ছইল এবং ও জল "মিলিটারী ট্রিউন" বা সামরিক বিচারক নিযুক্ত হইলেন। পুর্বেক কললগণ কেবল পেট্রিশিরান দল হইডে মনোনীত হইতেন, একলে প্রেবিয়ান দল হইতেও সামরিক বিচারক নিয়োগের কাবতা হইল।

ঞ্জিদিন পর্যান্ত রোম রাজ্য নির্দিষ্ট সীমাবদ্ধ ছিল। একণে রোমকগণ এটুরিয়া অধিকার করিয়া তথায় এবং অস্থান্ত श्रुर्व छेपनिरवर्व शांभरन मरनानिरवर्व कतिरानन। রাজ্যপরিধি প্রদারিত হইতে লাগিল। ৩৯৪ খু: পু: রোমকগণ ভিয়াই রাজ্য একেবারে বিধ্বন্ত করিলেন। ভয়ঙ্কর যুদ্ধের পরে রোমকগণ জয়লাভ করেন। এই সময়ে দৈববাণী দারা ঘোষিত হয় যে, যাহারা ৩০০০ ফিট স্লড়ল খনন করিয়া আলবান হুদের জল সমুদ্রে সংযোগ করিয়া দিতে পারিবে, তাহারাই যুদ্ধে জন্মী হইবে। তদস্থদারে রোমের ডিক্টেটর ফিউরি-য়াদ কামিল্লাদ উক্ত স্থড়ক নিশ্মাণ করেন। অস্থাবধি উক্ত স্থড়ক বিশ্বমান আছে। তৎপরে এটাস্কানু রাজ্য একেবারে ধ্বংস-প্রাপ্ত হইল। এই যুদ্ধে জয়লাভ করিয়া কামিলাস মহা আড়মরে শ্বেতাখসংযুক্ত রথে রোমে প্রবেশ করিলেন। জুনোদেবতার প্রতিমর্জি রোমে আনীত হইরা তহুপরি এক বিরাট মন্দির নিশ্যিত হইল।

ত্র পু: পু: কামিলাস নির্বাসিত হইলেন এবং গলগণ

অসংখ্য সেনাদণ লইয়া রোমনগর ধ্বংস করিতে যাত্রা করিল।
ব্রেলাস্ নামক গলসেনাপতি রোমকে শ্মশানে পরিণত করিবার
সঙ্কর করিলেন। রোমকগণের অনেকে আসর বিপদ্ দেখিয়া
নানাস্থানে পলায়ন করিল। গলগণ রোম অবরোধ করিল।
আলিয়া নামক স্থানের ঘোরতর যুক্তে সহল্প রোমসৈত্য
ধরাশায়ী হইল। তথন অবশিষ্ট অধিবাসিগণ প্ররোহিত ও
ভেষ্টাল কুমারীগণসহ কাপিটোলে আশ্রন্ন লইলেন। গলগণ
রোমে প্রবেশ করিয়া নরহত্যায় এবং অগ্নিপ্রদানে নগর মহাশ্মশানে পরিণত করিল। কেবল মানিলেয়াদের সাবধানতায়
কাপিটোল শত্রুহন্ত ইইতে রক্ষা পাইল। তজ্জন্ত তিনি বীর
আখায় ভৃষিত হইরাছিলেন।

অবশেবে ১০০০ বর্ণমূলা পাইরা গলগণ রোম পরিত্যাগ করিল। কিন্তু পথিমধ্যে রোমকদৈয় কর্তৃক আক্রান্ত হইরা ধ্বংসপ্রাপ্ত হইল। তৎপরে রোমবাসিগণ রোমে প্রত্যাগত হইল এবং পুনরার গৃহাদি নির্দাণ করিতে লাগিল। কামিলাস-নির্বাসন হইতে আসিরা পুনরার লাধারণ তত্ত্বের ডিক্টেটর মিযুক্ত হইলেন। ৩৬১ বঃ পৃঃ, গলগণ পুনরার রোম আক্রমণ করেন। কিন্তু আর্ণোনদী তীরস্থ বুদ্ধে মানিলিরাসের অন্তুত বীরস্কে রোম রকা পাইল। তজ্ঞ তিনি টকটোস্ নামক গোরবাহিক উপাধি পাইমাহিলেন। কিন্তু আকৃতজ্ঞ রোমবাসী পরে তাঁহার নিধন সাধন করিল। এই সময়ে পেট্রি শিয়ান ও মেবিয়ানদিগের স্বন্ধ ও স্থামিক লইয়া পুনরার নানা গোলবোগ উপস্থিত হইল। পরে ৩৬৭ খঃ পৃঃ মেবিয়ানদলের এল—সেরুটিয়াস্ সর্ব্ধ প্রথমে কল্সল্ হইলেন এবং বিচার-কার্য্যের জন্ত "প্রিটর" বা এক জন নৃতন ম্যাজিট্রেট নিযুক্ত হইলেন। কিছুকালের জন্ত মেবিয়ান ও পেটি শিয়ান পক্ষে শাক্তি স্থাপিত হইল।

ইহার পরে লাটিয়ামের প্রাধান্ত লইয়া রোমের সহিত সাম-

নাইট ও লাটনদিগের সহিত ছইটা ভীষণ যুদ্ধ সংঘটিত হয়। প্রথম সামনাইট যুদ্ধে (৩৪৩-৩৪১ খঃ পুঃ) রোমকগণ জয়লাভ এবং সামনাইটগণ তাহাদের অধীনতামীকার করিল। লাটিন-গণ দৃতপ্রেরণ দারা জ্ঞাপন করিতে বাধ্য হইল যে, তাহাদের মধ্যে হইতেও শাসনকর্তা এবং কন্সল নিযুক্ত হইবে। কিন্ত রোমকেরা ভাছাতে আপত্তি করায় লাটন लांदिन गन्ध সম্প্রদায়ের সহিত যুদ্ধ উপস্থিত হইল। ৩৪ - - ৩৩ - গুঃ পুঃ ভেসেরিস্ এবং টিফানাম্ নামক স্থানের যুদ্ধে রোমকগণ সম্পূর্ণরূপে জয়লাভ করিল (৩৪ • খু: পু:)। লাটিনগণের বার স্থানা লোক মৃত্যুমুথে পতিত হইল। এই যুক্তে মানেলিয়াস্ টর্কাটাস্ সামরিক নিয়ম্লঙ্খনের জন্ম ত্রুটদের ন্তায় নিজ প্রত্যের শিরশ্ছেদ করিতে অমানবদনে আদেশ প্রদান করেন। ৩৩০ খু: পু: রোমকগণ ভলসিয়ানদিগের সহিত যুদ্ধে জয়লাভ করেন। রোমকদিগের পুন: পুন: শ্রীবৃদ্ধি ২য় সামনাইঠ মহাৰুদ্ধ দেখিয়া সামনাইটগণ গ্রীকগণের সহায়তায় পুনরার রোমের বিরুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা করিল। এই যুদ্ধ ২২ বৎসর চলিয়াছিল। প্রথম ৫ বংসর রোমকগণই জয়লাভ করিতে থাকে এবং সামনাইটগণ হতাশ্বাস হইরা যুদ্ধ পরিহারের সন্ধন্ন করে। পরে সি পণ্টিয়াস নামক একজন সামনাইট বীরের অত্যন্ত সমর-কৌশলে সামনাইট-গণের ভাগ্যচক্র ফিরিভে থাকে। তিনি "কডাইন ফক" নামক গিরিদ্বটে রোমকদিগকে এরপ ভাবে পরাঞ্জিত ও অপমানিত করিয়াছিলেন, যাছার তুল্য ঘটনা রোমের ইতিহাসে আর পশ্চিয়াদের সমরকোশলে রোম্বৈভ শৈলপথে স্ম্পূর্ণরূপে অবরুদ্ধ হইলেন। অবশুভাবী বিনাশ দেখিয়া রোমকগণ বৃদ্ধিপূর্ব্বক আত্ম-সমর্পণ করিলেন। পণ্টিয়াস্ও দ্যাপুর্বক রোমসৈক্ত ও সেনাপতিদিগের প্রতি স্চ্যবহার করিলেন। কন্সলম্বর প্রেনাপতিষয় অঙ্গীকার করিলেন যে. ভাহার৷ সামনাইটদিগকে রোমকদিগের সহিত সর্কবিষয়ে তুল্যাধিকার প্রদান করিবেন এবং ৬০০ অখারোহী প্রতিত-

শ্বরূপ সামনাইটনিগের নিকট থাকিবে। বধন এই সংবাদ রোমে পৌছিল, তৎকালে সেনেটের সমস্তগণ প্রতিজ্ঞাপালনে সন্মত হইলেন না; তাঁহারা বলিলেন, সেনাপতিদিগের শীকৃত বিষক্ষ পালন করিতে তাঁহারা বাধ্য নহেন।

পুনরার যুদ্ধ চলিতে লাগিল। রোমের অনৃষ্ট আবার প্রসর হইল। ৩০৪ থঃ পুঃ রোমকগণ সম্পূর্ণরূপে জরলাভ করিল। এই সমদ্ধে এট্রাজানগণও পরাজিত হইরা সকলে রোমের অধীনতা স্বীকার করিল। মধ্য ইতালীর অধিবাদীরাও রোমের সহিত স্থিতি হইল। ৩০০ থঃ পুঃ রোমের প্রভূষ মধ্য ইতালীতে সম্পূর্ণরূপে বৃদ্ধমূল হইয়া পড়িল।

ব্য়েমের উত্তরোত্তর উর্নতি দেখিরা সামনাইটগণ পুনরার
ক্র বোষণা করিল। গলগণ তাহাদের সাহায্যার্থ যুক্করি:ত
কা সামনাইট যুক্কলাছয় সদৈতে রণক্কেরে যাত্রা করিলেন।
ভেসিয়াল্ ভয়কর যুক্ক করিয়া প্রাণত্যাগ
ক্রিলেন, ম্যাক্সিমাল্ জয়লাভ করিলেন। সামনাইটগণ পুনকার
রোমের সহিত একত্র মিলিত হইল।

ইহার দশ বংসর পরে এটায়ান ও গলসৈক্যগণ ভাডিমো হদের যুদ্ধে রোমকদিগের নিকট সম্পূর্ণ পরান্ত হইল। এক্ষণে রোমের রাজ্যসীমা দক্ষিণদিকে বর্ষিত হইতে চলিল। দক্ষিণ ইতালী পূর্কে এটকগণকর্ত্বক উপনিবিষ্ট হইরাছিল, এই কারণে এই স্থান মাগ্না গ্রীশিয়া বলিয়া কথিত হইত। এই সমন্ত নগর-বাসিগণ লুকানিয়ানদিগের লারা আক্রান্ত হইল। রোমের সাহায্য প্রার্থনা করিল। রোমকসৈক্ত তাহাদিগের সাহায্যার্থ যাইয়া বহযুদ্ধে ২৮২ খুঃ পুঃ পুকানিয়ানদিগকে পরাজিত করিল এবং তথার রোমকসৈক্ত স্থাপিত হইল।

রোমক কলাল দশখানি নৌকা লইয়া টরেন্টাম নগরের উপকঠবত্তী সমুদ্র দিয়া রোমে ফিরিতে ছিলেন, এমন সময়ে টরেদটাইনগণ রঙ্গালয়ের উঠ অলিন্দ হইতে তাহা দেখিতে পাইয়া
অবিলম্বে সক্ষিত হইয়া নৌযুদ্ধ তাহাদিগকে আক্রমণ করিল।
৪ খানি ঢাগাল কলমগ্ন হইল। কলাল ভালেরিয়াল্ হত হই
কেন, অর্বানিষ্ট কেহ কেহ পলায়ন করিল। রোমের সেনেট এই
ঘটনার কারণ জানিতে ইচ্ছুক হইয়া পাই, মিরাস নামক এক
বাজিকে দৃত প্রেরণ করিলেন। তিনি অভ্যোতিত ভাবে অপমানিত হইয়া প্রভাগিমন করেন। টরেন্টাম্ ও রোমের মধ্যে যুদ্ধ
বাধিল। টরেন্টাইন গ্রীকগণ এপিরাসের রাজা পিরহাসের নিকট
সাহায্য প্রার্থনা করিল। পিরহাস মনে মনে সমন্ত ইভালী পরাজন্ন করিয়া প্রক প্রকাপ্ত হেলেনিক সাম্রান্ত সংস্থাপনের সম্বন্ধ
ক্রিতেছিলেন। তিনি স্ব্যোগ উপস্থিত দেখিয়া টরেন্টান্দিগের
ক্রিতেছিলেন। তিনি স্ব্যোগ উপস্থিত দেখিয়া টরেন্টান্দিগের

প্রার্থনার সম্বত হইলেন এবং বৃহৎ সৈম্পদল সংগঠন করিক্তে
লাগিলেন। অবিলবে তিনি মিলো নামক এক সেনাপজিকে
৩০০০ পদাতিক সৈম্ভসহ টরেন্টাম নগরে প্রেরণ করিলেন।
অবশেবে (২৮১ খ্বঃ পৃঃ) তিনি ২০০০০ পদাতিক, ৩০০০ অখারোহী এবং ২০টী হত্তী লইয়া রোমের বিশ্বছে বৃদ্ধাত্রা করিলেন।
টরেন্টামে পৌছিয়া তিনি রঙ্গালারের ক্রীড়া কোতুক বদ্ধ করিয়া
দিলেন এবং সমন্ত যুবকদিগকে যুদ্ধ শিখাইতে লাগিলেন।

রোমক কলল ভালেরিরান্ নিভিনান্ সলৈপ্তে লুকানিরার মধ্য দিরা বারো করিলেন। পিরহান্ হৌশল করিয়া সমর লইবার জন্ত রোমক কললের নিকট পত্র লিখিলেন। কলল গর্বিত-ছারে তাঁহাকে ক্ষদেশে ফিরিতে উপদেশ দিলেন। তথন পির-হাস জগতাা যুদ্ধ যাত্রা করিলেন। সিরিস নলীতীরে হিরাফ্লিয়া নামক স্থানে উত্রপক্ষীর সৈক্ত সমবেত হইল। পিরহান্ প্রথমে জ্বারোহী সৈত্ত লইরা রোমক-সৈত্ত আক্রমণ করিলেন। রোমক 'লিজন' ভীমবেগে আক্রমণ প্রতিরোধ করিল। তথন পিরহান্ পদাতিক সৈত্ত পরিচালনা করিলেন। ভরকর যুক্ত চলিতে লাগিল। ৭ বার ন্তন আক্রমণ হইল, তথাপি জন্ম পরাজয় নির্ণাতি হইল না। তথন পিরহান্ রণহত্তী চালনা, করিলেন। হত্তিগণের পরাক্রমে রোমক সৈত্ত বিমুখ হইয়া পলায়ন করিল (২৮০ খ্যু পুঃ)।

পিরহাদ রোমক সৈভের বীর্ষ এবং পৃঠে অস্ত্রাঘাভটিক নঃ দেখিয়া বলিয়াছিলেন, "আমি এই সৈভের চালক হইলে পৃথিবী জর করিতে পারি।" তিনি দেখিলেন, আর একটা বৃদ্ধ হইলে তাঁহার অবস্থা শোচনীর হইবে। তজ্জ্ঞ্ভ ইতালীবাসী গ্রীকগণের স্বাধীনতা প্রার্থনাপূর্বকে সন্ধিহাপনের জন্ম রোমে দূত পাঠাইলেন।

গ্রীক-দ্ত সিনিয়াসের বস্তৃতাচ্ছটায় সেনেটের সদস্তগণ সদির
পক্ষপাতী হইয়াছিলেন, কিন্তু স্বদেশবংসল বৃদ্ধ ক্লডিয়াস
কিকাসের উদীপনাপূর্ণ বাকের সদ্বিদ্ধন ত্যাগ করিলেন। তথন
পিরহাস্ শনৈঃ শনৈঃ সনৈতে রোমের দিকে অগ্রসর হইলেন।
পরে বিপদ্ ব্রিয়া শ্রীতকালের আশ্রবের ক্লপ্ত টরেন্টামে আগমন
করিলেন।

রোমকগণ এই সমরে বন্দীর বিনিমন্থ করিবার জন্য পিরহান সের নিকট দৃত প্রেরণ করিকেন। পিরহাস্ রাজেচিত সন্মান প্রদর্শনপূর্বক রোমক দৃত কেব্রিশিরাস্কে অভিনন্দন করিকেন। কেব্রিশিরাস্ অতান্ত সভানিষ্ঠ এবং বিক্রমণালী বলিরা থাতি ছিলেন। তিনি স্বহন্তে হলচালনা করিতেন। পিরহাস্ ভাঁছাকে হন্তগত করিতে সাম, দান, ভেদ ও দণ্ড এই চারিনীতি অবলম্বন করিরাও কৃতকার্য্য হইলেন না। ক্লেব্রিশিরান মন্ত মাতক্ষের শুণ্ডান্দালনেও অচলভাবে দণ্ডান্ধমান থাকিলেন। পিরহাস্ নিপ্লপার ইইয়া বলিণেন যে, রোমক বলীদিগকৈ তিনি 'সাটাণে-লিয়া' বা শনি উৎসবে যোগদান করিতে অন্তমতি প্রধান করি-লেন এবং কহিলেন, 'যদি সেনেট সন্ধির প্রতাবে সমত না হন, ভবে বন্দিগণ পুনরার প্রত্যাগমন করিবে।' সেনেটের সদস্তগণ অবিচলিত ভাবে সন্ধির প্রতাব অগ্রাস্থ করিলেন। উৎসবাধ্যে রোমকবন্দিগণ পুনরার পিরহাসের শিবিরে গমন করিল।

২৭৯ খু: পূ:, পূনরার যুকারস্ত হইল। আকুলাম নামক ছানের যুকে রোমক দৈল পূনরার পরাত্ত হইল। ৩০০০ রোমক মুককেরে প্রাণত্যাগ করিল। পিরহাস প্রান্ত হইল। ১০০০ সৈন্য হারাইলেন। যুকে জরী হইলেও পিরহাসের ক্ষতি ভিন্ন লাভ হইল না। এই সমর তাঁহার স্বরাজ্য গলগণ কর্ত্তক আক্রান্ত হওরার তিনি বিপল্গত হইলেন এবং সিসিলীবাসিগণও তাঁহাকে সাহাযোর জন্য এই সমরে আহ্বান করিল। পিরহাস্ রোমক ক্রীণিগকে সস্মানে প্রত্যূপণ করিরা সন্ধির প্রার্থনা করিলেন, কিন্তু সেনেট বা মন্ত্রিসভা তাহাতে স্বীকৃত হইলেন না।

শিরহাস্ সিসিলিতে গমন করিয়া আক্রমণকারী কাথে জিয়দিগকে পরাজিত করিলেন। কিন্তু সিসিলিরগণ তাঁহার
আত্যাচারে ব্যতিব্যক্ত হইল। অনস্তর তিনি ২৭৬ খৃঃ পৃঃ
পুনরার ইতালীতে প্রত্যাগমন করিলেন এবং অবিলম্থে
রোমকাধিক্বত লেক্রিনগর অধিকার করিয়া অর্থাভাবে পার্সিকোন দেবীর মন্দিরত্ব বিপুল ধনরত্ব গ্রহণ করিলেন। তাহাতে
তাঁহার অর্থপূর্ণ একথানি জাহাজ জলময় হইয়া গেল। শিরহাস্
পার্সিফোনের নিগ্রহ মনে করিয়া ভ্রোথাৎসাহ হইলেন।

পরবংসর কন্সল এম কিউরিয়াস পিরহাসের বিরুদ্ধে যুদ্ধাত্রা করিলেন। বেলিভেন্টাম নামক প্রসিদ্ধ স্থানে উভয় সৈন্য সন্মুখীন হইল। পিরহাস্ নৈশ আক্রমণে জয়লাভের চেটা করিলেন, কিছ তাহা বিহুল হইল। ভয়ত্বর যুদ্ধ সংঘটিত হইল। ছইটা হস্তী হত ও চারিটা রোমকদিগের হস্তগত হইল। পিরহাসের সৈন্য রণে ভঙ্গ দিয়া পলায়ন করিল। পিরহাস্ কতিপর অন্ধুচরসহ গ্রীসে গমন করিলেন। আর্গন নগরাধিকারকালে একটা রমণীর ইইকালাতে তাঁহার মৃত্য হয়।

অরকাল মধ্যে টরেন্টাম প্রভৃতি সমস্ত গ্রীকনগর রোমের অধিকারভুক্ত হইল। রোম সমস্ত ইতালীর উপরে প্রাধান্ত বিতার করিল। তদানীস্তন পাশ্চাত্যপ্রদেশে রোম পরাক্রমশালী বলিরা খ্যাত হইল। সকলের দৃষ্টি রোমে আরুষ্ট হইল। মিসরের রাজা ট্রেক্সি ফিলাডেলফাস্ দৃত প্রেরণ করিরা রোমের সহিত সধ্য ভাপন করিলেন। রাজ্যবিভৃতির সঙ্গে সঙ্গে রোমের শাসন-প্রণালীর অনেক পরিবর্ত্তন ইইল। রোমের অধিকারত্ব অধিবাসিল্পত প্রেনীতে বিভক্ত ইইল।

- (১) রোমবাসী বা রোমনগরস্থ ৩০টা বিভিন্ন স্থাতি।
- (২) রোমের উপনিবেশিক **অধিবাসি**গণ।
- (৩) রোম্বের অধিকার তৃক্ত মিউনিদিপাল (খারত-নাসন). চালিত নগরসমূহ।

मिछेनिमिशान नगत्रतामिशारात मान्छ मानामहान मान्ग्री व्यथि-কার ছিল এবং তাঁহার৷ রোমবাসীর সহিত বাণিজ্য ও অন্তর্বিবাহের व्यक्षिकांत्री हिल्लम । এতভিন্ন मिळ ও সহযোগী कुल ब्रोबा अलि अ রোমকশাসনের ছবিধা প্রাপ্ত হইয়াছিল। চতুর্দিকে স্বাধীন রাজগণের সহিতও রোমকগণ সখ্যস্তত্তে আবদ্ধ হইয়া রাজ্যশাসন দুঢ়তর ভিত্তির উপর সংস্থাপন করিল। সামাজিক বিধিব্যবস্থাও অনেকাংশে দংম্বতপ্রণালী ক্রমে প্রতিষ্ঠিত হইল। শিল্পী এবং পাৰসারিগণ নির্বাচন বিষয়ে মডামত প্রকাশ করিবার অধিকার পাইল। ক্রীতদাসগণকে কোন কোন বিষয়ে স্থবিধা দেওয়া হইল। এই সময়ে আইনসংক্রান্ত এবং সরকারী কার্য্যের আমূল পরিবর্ত্তন হইতে লাগিল। তৎপুর্বের পুরোহিত শ্রেণীই কেবল আইন প্রণয়ন এবং ধর্মপান্তের অনুশাসন করিতেন। কিন্ত ক্লেভিয়াস এই সময়ে সরকারী ও সামাজিক কার্য্যের অমু-শাসন সংক্রান্ত এক বিধিব্যবস্থা সম্বলিত পুত্তক প্রকাশ করিলেন। ইহাতে কোন কোন দিনে ধর্মাধিকরণাদি সরকারী কার্য্য হইবে ও বন্ধ থাকিবে, তাহা স্থলররূপে নির্দিষ্ট থাকিল। পুরোহিতগণের পবিত্র অধিকার মন্দীভূত হইয়া আসিল।

রাজাবিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে চতুর্দিকে উপনিবেশ স্থাপিত हरेए गांशिय। २२ है। नृजन कां जि त्रायत भागनाशीन हरेग। লিভি বলেন, ২৭৫ খঃ পু: মন্ত্র্য-গণনাম রোমনগরে ৯০০০০ शुक्रव हिन। जीलात्कत मःशा निर्फिष्ट नारे। त्रात्मत ममुक्त গুনিয়া নানাদেশের বিষদরন্দ রোমে আরিতে লাগিলেন। ক্রমে ক্রমে শন্মী বৃদ্ধির সঙ্গে সংশ্ব সরস্বতীরও রূপা হইতে লাগিল। গ্রীক পণ্ডিভগণ রোমে বাস করিতে, লাগিলেন। বিছদ্রুন্দও রোমের উদীয়মান সৌভাগ্যদর্শনে যাত্রা করি-প্রাচীনকালে দেশব্রমণ বিভাশিকার নির্দিষ্ট ছিল। এই সময়ে কার্থেজ রাজ্য প্রথম শ্রেণীর রাজ্য বলিয়া খ্যাত ছিল। টায়রবাসী ফিনিকীয়গণ ৮২৫ খুঃ পুঃ আফ্রিকার উত্তরে ভূমধ্যস্থ সাগরোপকৃলে এই বাণিজ্যসমৃদ্ধ ঐশর্য্যশালী রান্ধ্যের প্রতিষ্ঠা করিরাছিলেন। সেমিটিক স্বাতীয় ছিলেন। কার্থেনের সমৃদ্ধি সামুদ্রবাণিক্স হইতে হটরাছিল। কাথেজীয়গণ ক্রমে রাজ্যব্যবসায় আরম্ভ করিরাছিল। তাঁহারা স্পেনের কিয়দংশ, কর্নিকা, সার্ডিনিয়া এবং ইতালী ও গ্রীদের কিরদংশ অধিকার করিরাছিল। এতত্তির লাইবিয়া ও আফ্রিকার নানা স্থানে তাঁহাদের শাসনদও পরিচাণিত হুতৈ।

ভূমধানাগরের চভূপার্থিকী রাজ্যনন্ত্র মধ্যন্ত্রে হাণিত
ইতালীরাজ্য এতজাল ধরিরা শক্তি ও নবৃদ্ধি আর্জনপূর্বাধ্ব রাজ্যকীর জগতের প্রবৃত্তকেন্দ্র লাভ করিডেছিলেন। উক্ত
সালরোপকূলর রাজ্যবাসী রাজা ও প্রজাগদ সকলেই ইতালীর
শীর্ষকেত্র রোমের আধান্য অক্তর করিডেছিলেন। পিরহাসের
পলারন ও প্রীক্ষিণের অধিকত বক্ষিণ ইতালীর নগরসমূহে
রোমের আধিশতা ও বক্ততা খীন্ধার ইইতেই পূর্ব ভূমধ্য-জগতে
(Eastern Mediterranean world) এই ইতালীর রাজ্যের
দক্তিপ্রভা বিজসিত হইরা পড়িল। ইজিপ্র রোমের বন্ধুত্ব বাজা
করিরা পরস্পারে সভাব স্থাপন করিলেন। গ্রীক্ বিষৎসমাজ
এই নবোত্তত ও দিগন্তপ্রসারিতঝাতি রোমরাজ্যের ইতিহাস,
রাজতত্র ও লাটিন প্রজাতরের মূল-বিষরের উরতিলাধনে
সাহায্য করিতে লাগিলেন। পিরহাসের প্রত্যাবর্তনের পর
রোমের পূর্বাপধ্ব প্রকাপই ছিল। তদবধি পঞ্চাল বর্ব পর্যান্ত
আর রোমের ক্রুরগৃষ্ট পূর্বাঞ্চল প্রসারিত হর নাই।

ইতালী প্রায়োষীণের পশ্চিমকুল উর্বার ও ধনজনপূর্ণ এবং পুর্বাতীর অপেকা বাণিজ্যোপযোগী জানিয়া প্রথমে সেই পশ্চিম पिक् अत्रकात अक्षरे ठाँशास्त्र नत्रन आकृष्ठे श्रेशाधिल। कात्रन এই সময়েই শক্তিশালী কার্থেজ-শক্ত সগর্কে ভূমধ্যসাগর উহেলিত ক্রিয়া ইতাশীর প্রতীচ্য সীমান্ত-দার সার্ডিনিয়া ও সিসিলী খীপে আসিয়া করাঘাত করিয়াছিল এবং তাহার নৌবাহিনী সকল পশ্চিমভূভাগের লুপ্তরত্ব উদ্ধার মানসে ও কার্থেজ নগরীর সমৃদ্ধি বুদ্ধির আশার ঈর্বা কটাকে রোমের সমূরত সমৃদ্ধির দিকে দৃষ্টিপাত করিতে করিতে জলদস্থার স্থায় সাগরবক্ষ মথিত করিতেছিল। পশ্চিম-সমদ্রতীরে কার্থেকীর সাম্রাক্ষ্য বিস্তার দেখিয়া রোম ভীত হুইলেন ৷ ষ্ডই কার্থেঞীয় সমি্ছির বৃদ্ধি হুইবে, ততুই রোমের বাণিজ্যার বিশেষ ক্ষতি অনুভব করিয়া রোমক সভা চঞ্চল হইয়া পড়িলেম। ঐ দম্মদলের নিকট ইতালীর পশ্চিমোপকুলও নিরা-পদ নহে জানিয়া তাঁহাদের ভরের মাত্রা বাড়িয়া উঠিল। এদিকে আবার সিদিনীর পূর্কোপকুলত সাইরাকিউন্-পতিকে গ্রীদের স্বাধীনতা রক্ষার বন্ধপরিকর দেখিয়া যুদ্ধ ভিন্ন স্বার্থ রক্ষার উপায় নাই, এই নীতিবাক্য অবলম্বন করিয়া রোম যুদ্ধার্থ উচ্ছোগ ক্রিতে লাগিলেন। গ্রীক ও ফিনিকীয়দিগের রণক্ষেত্র অচিরে ইতালীর শাসনকর্ত্গণের ও ইতালীর সমুদ্রের সর্কামরকর্ত্ ফিনিকীরগণের রণপ্রাক্তবে পর্যাবসিত হইরাছিল।

রোমের বংকালে সাধারণতত্ত্ব প্রবর্তিত হয়, তথন রোম কার্থেকের সহিত সন্ধিপুত্রে মিলিত ছিলেন। বংকালে পির-হাস্ সিসিলিতে কার্থেকের সহিত বৃত্তে প্রবৃত্ত হন, তথনও কার্থেক রোমের সহিত নৃত্ন দৃদ্ধি করিয়া স্থাপুত্রে বৃদ্ধ ইইয়া- ছিল। বিশ্ব বর্তমানে রোমের উত্তরোভর ত্রীবৃত্তি দর্শনে কার্থেজ ক্টবাপর্যক হউলেন। সিসিলি খীপ নইয়া রোমের সহিত কার্থেকের বিরোধ বাধিল। সিসিলির অন্তর্গত মেসালা নগরে ৰছকাল পৰ্য্যন্ত মেমাটিনি (বা মঙ্গলপুত্ৰগণ) নামৰ এক প্ৰাবল দক্ষা সম্প্রদার বাস করিত। সাইরাকিউকের রাজা হীরো ইহা-দিগকে পরাম্বন করিবা ভাহাদের উচ্ছেনসাধনে প্রবৃত্ত হইলে ভাহারা রোমের সাহায্য প্রার্থনা করিল। রোমকগণ হীরোর সহিত স্থ্যবন্ধ ছিলেন বলিয়া হঠাৎ সম্মত হইল না। পরে কার্থেনীরদিগকে নাহায্যার্থ প্রবৃত্ত দেখিয়া রোম তাহাদিগকে সাহায্য করিতে প্রতিশ্রুত হইন। পূর্ব্বোক্ত কলন ক্লডিয়ানের পুত্র এপিয়াস ক্লডিয়াস সসৈতে সিসিলি যাতা,করিলেন। ইহার পুর্ব্বেই কার্থেন্সীয় সৈত্ত মেমার্টিনদিগের সাহায্যার্থ মেসানা নগরে নমাগত হইলেন। হীরো ও রোমক সৈক্ত উপস্থিত দেখিয়া কার্থেকীয়দিগের সহিত মিলিত হইরা জলপথে ও স্থলপথে মেসানা অবরোধ করিলেন। রোমক সৈহাও উপরোক্ত মিলিত সৈচ্ছের সহিত যুদ্ধ ঘোষণা করিল (২৬৪ খঃ পুঃ)। প্রথম পিউনিক যুদ্ধের আরম্ভ হইল }

কার্থেক জল যুদ্ধের ক্ষন্ত প্রসিদ্ধি লাভ করিরাছিল, কারণ ফিনিকগণ প্রাচীনকাল হইতে সামুদ্রবাণিজ্যে প্রবৃত্ত থাকার ভারতীয় শিল্লিগণের নিকট হইতে বৃহৎ অর্ণবিষান-নির্মাণকোশল শিক্ষা করিরাছিল। কার্থেজের বৃহৎ বৃহৎ অনেক রণতরী ছিল, কিন্তু রোমের তাহার কিছুই ছিল না। তথাপি নির্ভাইন ক্লিডিরান রাক্তির প্রাক্রমে সাইরাকিউজ এবং কার্থেজের মিলিত সৈত্ত উপযুগ্পির পরাজিত হইল। ৩৬৩ খঃ পঃ রোমকসৈত্ত হীরোর রাজধানী সাইরাকিউজ আক্রমণার্থ উভোগী হইল। বহসংখ্যক নগর নৃষ্ঠিত ও বিধ্বন্ত করিয়া তাহারা সাইরাকিউলের প্রাচীর সারিহিত হইল। হীরো অগত্যা রোমের সহিত সিদ্ধি করিয়া তাহার সাহায়কারী হইলেন।

রোমক-সৈপ্ত হীরোর সহিত মৈত্রীক্থাপন করিরা কার্থেজীয়-লৈক্সের সহিত যুকার্থে এগ্রিকেণ্টাস নগর অবরোধ করিল। এই নগরে সিসিলিবাসী গ্রীকগণের হুর্গ ছিল। রোমকগণ ২৬২ খুঃ পুঃ যুক্তে লরণাভ করিরা উক্ত নগর অধিকার করিল। এবত্যকারে বুক্তের প্রথম তিন বৎসর তাহারা জ্ববলাতপূর্কাক সিসিলির অনেকাংশ অধিকার করিরা বসিল। এই সময় কার্থেজীয় রণত্ত্রী সকল ইভালীর উপকৃল পূঠন করিয়া রোমের বিশেষ ক্তি করিতে লাগিল। ভদ্দনিন নির্দায় হইয়া রোমকগণ জাহাজনির্মাণে সম্বন্ধ করিল। নানাবেশ সূধনে রোমকগণ জাহাজনির্মাণে পূর্কক লাহাজের কার্যারন্ত হইল। পূর্কে একথানি বড় কিনিক লাগাল চড়ার লাগির। ইতালীর উপকূলে পড়িরাছিল। নেই আবর্ল সন্মধে স্থাপন করিরা শিলিগণ লাহাজনির্দ্ধাণ আরম্ভ করিল। বৃক্ষক্রেদনের দিন ইইতে ৩০ দিনের মধ্যে ১৩০ থানি লাহাজ-নির্দ্ধিত ইইরা সমুদ্রতরকে ভাসিল। অবিলবে মাঝি, কর্থবার এবং নাবিক শিক্ষিত হইল। জ্বপথে রোমের প্রথম রণত্রী

২৬০ থঃ পঃ কলৰ কৰ্ণিলিয়াল ১৭ থানি সুসক্ষিত রগতরী কাইরা যদ্ধবাতা করিলেন। কিছু তিনি কার্থেনীয়দিগের নিকট লিপারা নামক স্থানে সম্পূর্ণরূপে পরাঞ্চিত হইয়া বন্দী হইলেন। অন্ত কলল ডুইলিয়াস্ অবশিষ্ট রণতরী সক্তিত করিয়া পুনরায় যুদ্ধযাত্রা করিবেন। তিনি অসামান্ত কৌশলে এক ন্তন প্রথা আবিদার করেন। প্রত্যেক জাহাতে ২৪ হাত লখা এক একটী সেতু মাস্তলের সহিত রক্ষুবদ্ধ থাকিল। শতার জাহাজ সমীপবত্তী হইবামাত্র তিনি ঐ সকল সেতৃর প্রস্থি শিথিল করিয়া দিলেন, সেতু সকল লখিত হইয়া কার্থেজীয় জাহাজের উপরে সংলগ্ন হইল এবং অবিদম্ভে শত শত স্থসক্ষিত রোমক-সৈন্ত উক্ত দেতৃপথে শক্রর জাহাজে প্রবেশপুর্বাক কার্থেজীয়দিগকে পরাঞ্জিত করিয়া ভাহাদের সর্ব্বস্থ লুগুন করিল। মাইলি নামক স্থানের এই প্রসিদ্ধ ক্ষন্যন্তে ৩১ থানি কার্থেকীয় রণতরী অধিকৃত হুইল এবং ১৪ খানি বিধবস্ত হুইল। অবশিঠগুলি প্লাইয়া রক্ষা পাইল। ডুইলিয়াস মহাডুম্বরে রোমে প্রবেশ করিলেন। শত শত গ্রেজনিত আলোকস্তম্ভে, বিচিত্র পুষ্পপতাকা শোভিতপথে এবং বীণাদিষরে রোম মুখরিত হইণ। বুদ্ধে অধিকৃত শক্রর জাহাজের গলুই বারা গঠিত একটা শুস্ক তাঁহার সন্মানার্থ ফোরামে প্রতিষ্ঠিত হইল। উহার নাম রষ্টাটা ভক্ত। রোমের কাপিটোলাইন মিউজিরমে উহা অত্যাপি রকিত আছে।

ইহার কএক বংসর পরে ২৫৬ খৃঃ পৃঃ রোমক কল্সলন্ত্র রেগুলাস এবং মানেলিরাস্ ৩০০ খানি রণতরী সক্ষিত্ত করির। কার্থেজীর সৈত্তের বিরুদ্ধে থাত্রা করিলেন। ইহার পূর্ব্ধে প্রাচীন-কালে কোন যুদ্ধে সমুদ্রে এত রণতরীর সমাবেশ হর নাই। পূর্ব্ধেক্তি সেতৃপথের কৌশলে রোমক-সৈন্ত কার্থেজীর জাহাজ সকলের ধ্বংস্যাধন করিল। রোমকনিগের কেবল ২৪ থানি জাহাজ রেবাসামগ্রীসমেত অধিকার করিরাছিল। যুদ্ধে জন্মলাভ করিরা রোমকণণ কার্থেজীর নগরাদি পূর্ত্বন প্রাম্বিত্ত লাগিলেন। এই পূর্ত্তনে তাহারা প্রচুর ধনরত্ব প্রাপ্ত হইলেন। কিছুনিন পরে শীতকালে মানেলিরাস অর্থেক সৈন্ত লইরা রোমে প্রত্যাগ্যমন করিলেন। রেগুলাস যুদ্ধক্তের থাকিলেন।

রেওলাদ্ প্রতিদিন কার্থেলীর নগরাদি, অধিকার পূর্বক প্রবদ-विद्या कार्यक्रित मिक अञ्चनत बहैरनम । कार्यक्रीहर्गणं हर्छी, ভাৰ এবং পদাতিক দৈলে সুস্ক্ৰিত হইরা যুদ্ধাতা করিল। এই মহাবুদ্ধে রেওলাস্ জন্মণাভ করিবেন। কার্থেজীরগণের ১৫০০০ সৈতা বুধকোরে প্রাণ বিস্তর্জন করিল এবং ৫০০০ সৈতা ७ ३৮ में इंडी वसी इंडेंग। त्व छतात्र त्रमञ्जलन लुईन-পূর্ব্ধক কার্থেকের সন্নিহিত হইলেন এবং কার্থের অবরোধের কৌশল উদ্বাৰন করিতে লাগিলেন। তিনি অবিলাৰ টিউনিস নগর অধিকার করিয়া লুগন করিবেন। নিউ মিডিয়গণ এই স্থােগে সার্থেনের অধীনতা অস্বীকার করিরা স্বাধীনতালাভের চেষ্টা করিতে লাগিল। কার্থেজীয়গ্র হতাবাস হইয়া রেগুলাসের নিকট সন্ধির প্রার্থনা জানাইল, কিছু জন্মদমন্ত রেখলাস ভাহাতে কর্ণণাত করিলেন না। কিছু এই সময়ে কার্থেকীয়নিগের ভাগা च्रश्रम इरेम डेंग्रेन। न्यामाना वन्त्रियान हरूर व्यादारी, ১০০ হন্তী এবং বহু সহস্র পদাতিক সৈত্য লইয়া কার্থেজের সাহায্যার্থ আগমন করিলেন। তয়য়য় য়ৢয় উপস্থিত হইল। ৩০০০ রোমক-দৈশ্র রণক্ষেত্রে প্রাণত্যাগ করিল। রেগুলাস ৫০০ সৈপ্তের সহিত বন্দী হইলেন। অব্শিষ্ট ২০০০ সৈত্ত শিবিরে পলায়ন করিল (২৫৫ খঃ পুঃ)। রোমকদিগের হুর্জাগা এখানে শেষ হইল না। অবশিষ্ট রোমক-দৈত সকল জাহালারোহণে খদেশ ফিরিতেছেন, এমন সময় ভীবণ ঝটকায় ছিল বিচ্ছিল হট্যা রোমের সমস্ত রণতরী এবং বিরাট সৈভাগল সমূলে ধ্বংস প্রাপ্ত হইল। ৩৬৪ খানি রণতরীর মধ্যে ৮০ খানি মাত্র কএকদল দৈন্তসহ রোমে পৌছিল।

রোমকগণ নিরুৎসাহ না হইয়া পুনর্বার রণতরী নির্মাণের উডোগ করিল। তিনমাদে ২২০ থানি তরী নির্মিত হইল। তাহারা পুনরায় জলপথে যুদ্ধযাত্রা করিল। ২৫৩ থাঃ পুঃ রোমক কন্দলগণ কার্থেজের উপকূল লুঠন ক্রিতে লাগিলেন। যুদ্ধ জয়ী হইয়া ফিরিতেছেন, এমন সময়ে পালিনারাল্ অন্তরীপের নিকট এক ভীষণ ঝাঁকোয় রণতরী সকল ধ্বংসপ্রাপ্ত হইল।

রোমক নৈশ্র পুনরায় সিসিলিতে যুক্কারস্ত করিলেন। ২০০খৃঃ
পৃঃ রোমক প্রোকসল নেটেলাস পানার্মাস্ নামক স্থানে এক
ভীষণ যুক্কে জ্বরলাভ করিলেন। ২০০০০ কার্থেজীয় সৈপ্র
রণস্থলে বিনষ্ট হইল। ১০৪টা হস্তী রোমকলিগের হস্তগত
হইল। এই বুদ্ধে জ্বরলাভ করিয়া রোমকগণ উৎসাহিত হইয়া
পুনরার ২০০ রণভরী নির্মাণ করিল। কার্থেজীরগণ রোমের
সহিত সন্ধি করিতে প্রস্তত হইল। রেগুলাস্ পূর্কে কার্থেকে
কলী হইরাছিলেন। রোমক ইতিহাসে তাঁহার বীর্দ্ধ, সত্যানিষ্ঠতা এবং অন্দেশবাৎসল্য অর্থাক্রের লিখিত আহে। কার্থে-

শীর বন নিজদুভগণের সহিত রেপ্রলাদৃকে রোমে পাঠাইল এবং কহিল, যদি ভিনি সন্ধিত্বাপন করিছে না পারেন, ভবে তিনি পুনরার কার্থেজের কারাঝানে কিরিয়া আসিবেন ৷ নিতীক द्रिश्रमात्र तथ्य हरेत्नम । द्रिश्रमात् बनी हरेप्राह्म सनिम्न অব্ধনে রোমক নগর প্রাচীরের অভ্যন্তরে বাইতে ইঞা করেন নাই। বীরহদর রে**গুলাসকে খিরিয়া পাইবার বন্ন রোমক** भारति कार्यक्षीयमिर्वत गरिक मिन्दिना मध्य इटेरानता किंख द्रिश्रमान् फेटेक:चरत कहित्नन, "बाबादक शहिबाद अश मिक क्रिया द्यारमञ्ज भावत नहे क्रियन मा, त्यारमञ्ज भीतरहरे আমার গৌরব।" সেনেটের সভাগণ রেওলাসকে কার্থেকে कित्रिया गाँटेए निर्देश क्रियन अवर महस्य महस्य लाहक कहिन. "বিদেশে বলপুর্বক গৃহীতের শপথপালন না করিলে পাল হয়না।" किंद्र मञ्ज्ञमक चारमबर्मन द्वश्रमान् । नाम्बद व्यवास्थिक वृक्ष्मा আমিয়াও অবিচালত ভাবে কাথেজে গমন করিলেন। কার্থে-জীয়গণ বিরক্ত ধুইয়া তাঁথাকে নুশংসভাবে নিহত করিল। প্রথমে চক্ষের পাতা কাটয়া জাধাকে ভাষণ রোজে ফেলিরা রাখিত। পরে একটা বাবে শত শত তীক্ষমুথপ্টীবিদ্ধ করিয়া তাঁহাকে ভাহার ভিতরে প্রবেশ করাইতা স্বদেশবংসল রেগুলাস্ অমানবদনে এই নিচুর নিগাডন সহু করিয়া প্রাণ হারাইলেন।

এই নিচুন্নভার বীভৎস কাহিনী গুনিয়া রোমকণণ কাথেজের ধবংস সাধনে ক্রন্তসভল হইল এবং অবিল্য সেসেপ্তে সিসিলির অন্তর্গত কাথেজীয় নগর লিলিবিয়াম্ অবরোধ করিল। অন্তর্গত কাথেজীয় নগর লিলিবিয়াম্ অবরোধ করিল। অন্তর্গত কাথেজীয় নগর লিলিবিয়াম্ অবরোধ করিল। অন্তর্গত আক্রমণ করিলেন। অথপম যুদ্দে রোমক সৈত্র জয়লাভ করিলেও জলমুদ্দে ক্রডিয়াসের নির্কৃদ্দিলান কালাটিনাস্ কার্নার পরিবর্গত রোমক কলল নিযুক্ত হইলেন। অন্তর্গর কলল সি-ভ্নিয়াস্ ১০০টী রণতরী লইয়া লিলিবিয়ামে রোমকস্পেত্র সাহায্যার্থ গমন করিতেছিলেন। পথিমধ্যে ভীষণ ক্রিলায় রণতরী সমূহ বিধবত্ত হইল। কেবল ছইথানি জাহাজ ক্রেমা কাইয়াছিল। এই অকার দৈবছর্বিপাকে ও বার রোমক্রণজরীসমূহ নই হয়। তথন রোমক্রণণ জলমুদ্ধ-সঙ্কল্ল পরিত্যাগ করিয়া অ্বগ্রুদ্ধে মনোনিবেশ করিল।

এই সমরে কাথেজৈ একজন বীরপুরুবের আবির্ভাব হইল।
ইহার নাম হামিলকার বার্কা। ইনিই ইভিহাসপ্রমিদ্ধ হানিবলের জনক। ২৪৭ খুঃ পুঃ, বখন তিনি মিসিণিতে কাথেজীর
সৈভের সেনাপতি হইরা গমন করিলেন, তখন তিনি অতি
ভক্ষণ বরর । তিনি সোজাস্থলি বৃদ্ধক্তের না বাইরা হার্কটে
নামক পর্কতের পাদদেশ দিরা সৈপ্রচালনা করিলেন। এইহানে

ভিনি এমন ফুছরচনা করিয়া বংসরকাল ক্ষরণ করিন গেন বে, শক্রমিত্র সকলেই সেই অকুত কৌশনে বিশ্বিত হইয়া-গেল। এই স্থরক্ষিত বৃাহ হইন্তে তিনি ক্রমে ক্রমে রোমক-সৈন্তের অভিমুখে ধাবিত হইলেন। রোমক সৈল্প তাঁহাকে বাধা দিতে পারিল না। হামিলকার অগ্রসর হইলেন এবং ভ্রেপানামের নিকটবন্তা এরিক্স নামক স্থরক্ষিত পার্বিত্যনগরু অধিকার করিলেন। ছইবংসর অক্লাভ চেটার রোমক-সৈত্য হামিলকারকে এক পদত বিচলিত করিতে পারিল না।

তামৰণণ একণে ব্যিতে পারিলেন যে, জলমুদ্ধে প্রাধান্ত লাভ না করিতে পারিলে তাঁহারা কার্থেরের সহিত প্রতিব্যাগিতা করিতে পারিলেন না। ২৪২ খৃঃ পুঃ কলল পুটাটিয়াস্থ কেটাগাইন্ ২০০ রণভরী লইয়া যুদ্ধানা করিলেন। হানোল্যাক সেনাপতি কার্থেরীর রণভরীর অধ্যক্ষ ছিলেন। ইগেট্ স্থ্ নামক বীপের নিকটবর্তী যুদ্ধে রোমকগণ জরলাভ করিলেন। এই বৃদ্ধে রোমকগণ সক্ষবিষয়ে স্থবিধা প্রোপ্ত হইলেন। কারণ জলপথ বন্ধ করিতে পারিলে কার্থের হইতে আর কোন সাহায্য আসিতে পারিলেনা, অগত্যা হামিলকারকে সনৈভে অনাহারেঃ প্রাণভ্যাগ করিতে হইবে।

কাথে জীয়গণ নিরূপার হইয়া হামিণকারকে রোমের সহিত্ত সন্ধি করিতে পত্র লিখিল। ২৪১ খৃঃ পুঃ সন্ধি ছাপিত হইল। তছারা কার্থেজীয়গণ সিসিলির প্রভুছ এবং নিকটবন্তী দ্বীপপ্রের আধিপতা পরিত্যাগ করিলেন। তাঁহারা মুদ্ধে ধৃত বন্দিগণকে কিরাইয়া দিলেন এবং প্রস্তাব হইজ বে, কার্থেজ ১০ বংসরের মধ্যে রোমকে ৩২০০ তোল বর্ণ ক্ষতিপূরণ ব্ররূপ প্রদান করিবেন। কর্সিকা ও সার্ডিনিয়া রোমের অধিকারভুক্ত হইণ। রোমের দেনেট কি প্রকারে সিসিলি শাসিত হইবে, তাহার উপায়চিক্তা করিতে লাগিলেন। রোমের সহিত এক শাসনপ্রণালীতে সিসিলি শাসন অসম্ভব বলিয়া তাঁহারা সিসিলিতে সম্পূর্ণ নৃত্রন শাসনপ্রণালী হাপন করিলেন। রোম হইতে প্রতিবংসরে নির্ম্কাটিত একজন শাসনকর্তা বারা সিসিলির শাসনকার্ট্য চলিতে লাগিল। এইরূপে রোমসান্ত্রাক্রের প্রথম ভিত্তিশিলার পত্রন ইইল।

এদিকে হামিলকার খনেশে প্রত্যাগত হইরা প্রতিশোধ লইবার

জন্ত বল পরিপৃষ্টি এবং স্পেন দেশে এক বিপৃল নামাজ্যপ্রতিষ্ঠার
আরোজন করিতে লাগিলেন। বছকাল পরে রোমে শান্তি বিরাজ
করিতে লাগিল। ছমার সময় হইতে এতদিন রণদেবতা
কেনালের মন্দির্বার খোলা ছিল। রোমের ইতিহাসে

দিতীর বার এই মন্দিরের হার রক্ত হইল। কিন্তু অধিক দিন
ধান্তিল না। রণভেরীর উন্ধান আহ্বানে আবার অন্তিবিসক্ষ

ন্ধ-দেৰতার সন্দির্বার উদ্বাটিত হইল। পুর্বে ওঞী জাতি মিলিত হইরা রোমরাজ্যের অভিন্না হইরাছিল, এখন আর ছইন জাতি উহাতে মিলিত হইরা সর্বানাকলো ওংটা জাতি ছইল।

আদ্রিয়াতিক সাগরের পূর্বাংশে ইলিরীরগণ বাস করিত।
ইহারা অব্যবহাতা দারা সমৃদ্ধ হইরাছিল। ইহালের উপদ্রব ইতালীর উপকৃল তাগ মিরাপদ ছিল না। ইলিরীয়ন বৃদ্ধ (১২৯ বৃ: পু:)
নিক্ট দুড পাঠাইলা এই উপদ্রব নিবারণের

জন্ত প্রার্থনা করিলেন। রাজা ভাহাতে ক্রক্ষেপ করিলেন না,
বরং দৃতগণ নিহত হইল। অবিলবে রোমক-শৈক্ত আদ্রিয়াতিক
উত্তীর্ণ হইরা যুদ্ধবাত্রা করিল (২২৯ খঃ পুঃ)। নেই সমরে
আগ্রনের মৃত্যু হওয়ার টিউটা নারী তাঁহার বিশ্ববা পত্নী দিনেত্রিয়াস্ নামক একজন গ্রীকের মন্ত্রণার রাজ্য শাসন করিতেছিলেন।
দিনেত্রিয়ন্ টিউটাকে পরিত্যাগপূর্ব্বক 'কর্মাইরা' নামক দীপ
রোমকদিগকে অর্পণ করিলেন। টিউটা নির্মণায় হইয়া রোমকদিগের প্রস্তাবিত সকল বিষয়ে সন্মতি দিলেন। এই প্রকারে
আদ্রিয়াতিক উপকৃল জলদফাশ্ভ হওয়ার গ্রীকগণ অত্যন্ত সন্তই
হইয়া রোমকদিগকে ধভাবাদ জ্রাপনার্থ দৃত পাঠাইল।

এই যুদ্ধ শেষ না হইতেই গলগণের সহিত আবার যুদ্ধ বারিল। গত ৪০ বংসর গলগণ শাস্তভাবে ছিল। আবার ইহারা উগ্রমূর্ত্তি ধারণ করিল। গলগণের পূর্বে আক্রমণ ও রোমের ধ্বংসদাধন মরণ করিলা ইতালীবাসী প্রমাদ গণিলেন। দৈবজেরা সাইবিলাইন প্রতক আলোচনা করিলা কহিলেন, রোম তুইবার শক্র কর্ত্তক আক্রান্ত হইবে। এবং ইহাও ঘোষিত ছইল যে, তুইজন গলকে কেরোমে জীবিত অবস্থায় গোর দিলে রোমের বিপদ কাটিয়া যাইবে। অবিলম্থে বিরাট্ দৈন্যদল সজ্জিত হবল। ১৫০০০০ পদাতিক ও ৬০০০ আখারোহী যুদ্ধার্থ চলিল।

ইটুরিয়ার অন্তর্গত টেলামন নামক স্থানে ভীবণ যুদ্ধ সংঘটিত হ'ইল (২২৫ খুঃ পুঃ)। ৪০০০০ গলনৈত্বের রক্তে সমরক্তের প্লাবিত হ'ইল। ১০০০০ গলনৈত্ব বন্দী হ'ইল। রোমকগণ বোআই প্রদেশ হ'ইতে পো নদীর তীর দেশ পর্যান্ত অধিকার করিলেন। ২২০ খুঃ পুঃ, রোমক কন্সল ক্লেমিনিয়াদ্ নদী পার হ'ইয়া অগ্রসর হ'ইলেন এবং ইনস্থারদিগকে একটী বুল্দে সম্পূর্ণনির অগ্রসর হ'ইলেন এই সময়ে কর্ণিলিয়াদ্ সিপিও এবং ক্লিডিয়াদ্ মার্নেগাদ্ রোমের কন্সল নিয়ুক্ত হ'ইলেন। তাঁহারা ইনস্থারদিগকে ভাড়াইয়া পো-নদীর অপর তীরে রাজ্যবিত্তারের ক্রম্ভ ধাবিত হ'ইলেন। মার্নেলাদ্ বহুতে ভিরিডোমেরাদ্ নামক ইনসাবিরানে সন্দারকে বধ করিরা ভাহাদিগকে পরাজিত করি-

লেন। সিপিও তাহাদের রাজধানী মিলান অধিকার করিলেন। তাহারা রোমের অধীনতা খীকার করিলে। প্রানেকিরা এবং ক্রিমোনার হুইটা রোমক উপনিবেশ স্থাপিত ছুইল (২১৮ খুঃ পুঃ)। প্রত্যেক স্থানে ৩০০০ লোক উপনিবিষ্ট ছুইল এবং রোম হুইতে আরিমিনিরাম নামক গলনগর পর্যাপ্ত রাজা প্রস্তুত হুইরা উক্ত ছান সকল রোমের সহিত সংযুক্ত ছুইল। রোমের রাজ্যপরিধি ক্রমে ক্রমে চারিদিকে প্রসারিত হুইতে লাগিল। উত্তরে আরম পর্যাত্ত পর্যান্ত রোমের অরপতাকা উত্তিল।

সেই সমন্ব হামিলকার স্পেনে 'সাম্রাজ্যের ভিত্তি পত্তন কুরিয়া-ছিলেন। ভাঁহার অভুত প্রতিভার তথার রাজ্যসীমা শীম বুদ্ধি পাইতে লাগিল। হামিলকারের অন্তঃকরণে রোমকদিগের প্রতি প্রবল বৈরভাব সর্বাদা জাগঙ্গক ছিল। তিনি খীয় নয় বৎসর বয়ন্ত পুত্র হানিবলকে অগ্নিময়ী বজ্ঞবেদী স্পর্ণ করিরা শপথ করাইয়াছিলেন যে, যেন তিনি আজীবন রোমের প্রতিজ্ঞাতবিধেষ থাকেন এবং বৈর্নিয়াতনে প্রাণপণ চেষ্টা করেন ৷ ছামিলকার वाना ट्रेंटिंडे श्रामिवनरक युक्त विश्वास स्विनिक्क क्रिटिक्शिन । হানিবল পিতার প্রতিজ্ঞা এবং রণপাণ্ডিতা প্রভৃতি গুণের উপযুক্ত অধিকারী হইয়াছিলেন। ছামিলকার স্পেনের অভ্যন্তরে ধীরে ধীরে রাজ্য বিস্তার করিতেছিলেন। ২২৮ খু: পু: একটা যুদ্ধে হামিলকারের মৃত্যু হওয়ায়, তাঁহার জামাতা হাস্ফবল সেনা-পতিত্ব গ্রহণ করিলেন এবং স্পেনে নিউকার্থেজ নামে এক স্থানর নগর স্থাপন করিবেন, উহার বর্তমান নাম কাটেজনা। তরুণ वयुक्त हानिवन (जनानायुक्त न्युक्त हिंगुक्त हिंदान। २२५ थु: হাসক্রবল একজন ক্রীতদাসকর্ত্ত গুপ্তভাবে হত হইলেন। তথন হানিবল সেনাপতি ও শাসনকর্ত্রপদ পাইলেন। হানিবলের আন্ত:-করণে সর্বাদাই রোমরাজ্ঞা আক্রমণের ইচ্ছা বলবতী ছিল। তজ্জ্য তিনি অক্লান্ত পরিশ্রমে সৈয়দিগকে স্থাপিক্ষত করিতে লাগিলেন। হানিবল অন্তত প্রতিভাবলৈ স্পেন মধ্যত্ব সমস্ত জাতিদিগের সাহায্য লাভে ক্বতকার্য্য হইলেন। একণে তিনি যুদ্ধের ছল খুঁজিতে লাগিলেন।

পূর্ব্ধ হাস্ড্রবের সহিত সন্ধিতে দ্বিরীক্তত হইয়াছিল বে, এব্রো নদীর পূর্ব্বসীমা পর্যাস্ত রোমকগণের অধিকারে থাকিবে এবং নদীর পশ্চিমপারে কার্থেজীর স্পেনের সীমাবদ্ধ হইবে। কিন্তু হানিবল এই সন্ধি অগ্রান্থ করিয়া ২১৯ খ্বঃ পূং নিজ রাজ্যের বহিভূতি সোণিটাম নগর আক্রমণ করিয়া ৮ মাস যুদ্ধের পরে অধিকার করিলেন। রোমকগণ মিত্র-রাজ্যের সাহাধ্যার্থ এতদিন কিছুই করিতে পারিল না। রোমকগণ হানিবলের নিক্ট সন্ধিতকের কারণ জিল্পাসাকরিয়া ছইবার দ্ত প্রেরণ করিলেন। হানিবল তাহাতে কোন

শ্পষ্ট উত্তর দিলেন না। বিতীয়বারে রোমক-দৃত কিউ-কেবিরাস তাহার দিরসাণ খুলিয়া হানিবলকে বলিলেন, "তোমরা লাস্তি বা যুদ্ধ, ইংার ভিতর কি ইচ্ছা কর"। হানিবল কহিলেন, "তুমি যাঞ্ছ ইচ্ছা তাহাই, নাও"। তাহাতে ফেবিয়াস্ বলিলেন, "তবে যুদ্ধ ল.ও"। তথন কার্থেজীয়গণ সোৎসাহে ববিয়া উঠিল, "আমরা আনন্দের সহিত ইহাই গ্রহণ করিলাম।" এইয়পে বিতীর পিউনিক যুদ্ধের ক্রেপাত হইল।

হানিবল সেগান্টাম অধিকার করিয়া শীতকালের कड़ निष्ठेकार्थिक व्यक्तार्गमन कतिरामन वादर २३৮ थुः शृः প্রারম্ভে বিরাট সৈঞ্চল লইরা পরাক্রান্ত বিতীয় পিউনিক যুদ্ধ রোমরাজ্যের ধ্বংস সাধ্যের নিমিত্ত २>४-२०३ सृः श्ः স্থলপথে যাত্রা করিলেন। यक्रवा बांब পুর্বে তিনি স্পেন এবং কার্থের রক্ষণের স্থন্দর ব্যবস্থা করিয়াছিলেন। স্বীয় সহোদর হাসক্রবলকে স্পেন-রক্ষার ভার দিয়া একদল সৈত্য কার্থেজ রক্ষার্থ আফ্রিকার প্রেরণ করিলেন। এই সমস্ত ব্যবস্থা করিয়া তিনি ২১৮ খঃ পুঃ বসস্তকালে ৯০০০০ পদাতিক, ১২০০০ অশ্বারোহী ও কতকগুলি হস্তী লইয়া ইতালী যাত্রা করিলেন এবং ৫ মাদের মধ্যে পিরিনীজ্ পর্কত অতিক্রম করিরা রোণ-নদীতীরে উপস্থিত হইলেন। পিরিনীজ পর্বাতে অসভ্য জাতি সকলের সহিত যুদ্ধে তাঁহার অনেক সৈত ছাস হইরাছিল। রোমকগণ হানিবলের যুদ্ধযাত্রা শুনিয়া অবি-লম্মে একদল সৈনাসহ কন্সল পি-কাণলিয়াস সিপিওকে হানি-বলের পথ অবরোধ করিতে পাঠাইলেন। কিন্তু সিপিও মেসালিয়া পৌছিবার পূর্বেই হানিবল রোণ নদী উত্তীর্ণ হইয়া আারস পর্ব্যতের সরিহিত হটলেন। সিপিও হানিবলকে সেই স্থানে রোধ করা অসম্ভব বৃষিয়া রোমে প্রত্যাগমন করিলেন এবং তাঁহার সহোদর নেসিয়াস্ দিপিওকে স্পেন অধিকার ক্ষরিতে পাঠাইলেন। °এই কৌশলেই পরবর্ত্তী কালে রোম হানি-বলের হন্ত হইতে রক্ষা পাইয়াছিল। কারণ হানিবল স্পেন হইতে সাহায্য পাইলে রোমনগর সমলে ধ্বংস করিতে পারিতেন।

হানিবল বিরাট দৈশদলসহ নিজীকরণরে ছ্রারোহ শৈলমালা এবং নিবিড় বনাস্থাদিত আরস্ পর্কতের মধ্য দিরা ক্রতবেগে ইতালীর অভিমুখে অগ্রসর হইতে লাগিলেন এবং অনতি বিল্লে সিরামাইন গলে আসিয়া পর্কত হইতে উপত্যকার অবতরণ করিলেন। তাঁহার অতর্কিত ক্লিপ্র আগমনে রোমকগণ বিমিত এবং জীত হইলেন। আরস্ পর্কতের হুর্গম পথে গ্রমকালে হানিবলের বহুনেন্য কর প্রাপ্ত হইল। বধন তিনি উপত্যকার আসিয়া সৈন্য সমাবেশ করিলেন্, তখন তাঁহার বিরাট সৈন্যহলের কেবল ২০০০ প্রাতিক এবং ৩০০০ ক্ষা-

রোহী অবশিষ্ট ছিল। কিছুদিন বিশ্রাম করিয়া তিনি সৈন্য দিগের পথশ্রান্তি অপনোদন করিলেন।

এদিকে রোমক-সৈত্ত জগ্রসর হইরা তাঁহার সমুখীন হইল। টিশিনাশ এবং টেবিয়া নামক স্থানে ছইটা ভীষণ যুদ্ধ ঘটল। হানিবলের নিউমিডিয়া অখারোহীর ভীমবিক্রমে রোমক-দৈ**ত ছিল বিচ্ছিল হ**ইরা পরাজিত হইল: গুরুতর্ব্ধপে আহত হইলেন। সিপিও পিছাইরা প্লাসন্টিয়ার প্রাচীর মধ্যে আশ্রয় লইলেন। হানিবল পোনদী উতীর্ণ হইয়া যুদ্ধার্থ উপস্থিত হইলেন, কিন্তু রোমক-দৈন্য যুদ্ধে পরাধ্যুথ হইল। সেই সময়ে সেম্প্রোনিয়াস্ নামক অন্যতর ৰুফাল সসৈন্যে সিপিওর সাহায্যার্থ আগমন করিলেন। রোমক-সৈন্য সমর-সজ্জার সজ্জিত হইয়া হানিবলকে আহবান করিল। পক্ষে তুমুল সংগ্রাম চলিতে লাগিল। হানিবলের রণনৈপুণ্যে বিশাল রোমক-দৈন্য সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইল। কিন্তু শাত-কাল আগত হওয়ার, হানিবল রোমের দিকে অগ্রসর হইতে পারিলেন না। দারুণ শীতের প্রকোপে তাঁহার বছদৈনা বিনষ্ট হইল। একটা ব্যতীত সমস্ত হতী মৃত্যমূপে পতিত হইল। হানিবলের চকুর পীড়া হইয়া একটী চকু নষ্ট হইল। তথন তিনি শীত কাটাইবার জন্য ফিসালি নগরে গমন করিলেন।

সাভিয়াস এবং ক্লেমিনিয়াস এই বৎসর রোমের কন্সল নিযুক্ত হইলেন। ফ্লেমিনিয়াস্ প্রনরায় সৈন্য লইয়া হানিবলের বিরুদ্ধে যাত্রা করিলেন। কিন্তু হানিবলের কৌশলে তিনি সমৈনে। একটা গিরিসন্থটে বন্ধ হইলেন, একটা কুল্র পথের সন্ধান পাইয়া তিনি টাসিমিন ছদের তীরে সৈন্য সমাবেশ করিলেন। কিন্তু পশ্চাৎ হইতে শক্রর অস্তাঘাতে সহস্র সহস্র রোমক-সৈন্য প্রাণ-ত্যাগ করিল। কন্সলও প্রাণ হারাইলেন। বছসহত্র মৈনঃ ত্তদের জলে নিমগ্ন হইল। এই যুদ্ধে হানিবল ১৫০০০ . রোমক-সৈন্য বন্দী করিলেন, কিন্তু তাঁহার পক্ষে কেবল ১৫০০ সৈন্য বিনষ্ট হইল। হানিবল কেবল রোমের অধিবাসীদিগকে কারারুগ্ধ করিয়া অন্যান্য ইতালীয় সৈন্যদিগকে সম্মানে মুক্তিদান করিলেন। তাঁহার উদ্দেশ্য ছিল বে, তিনি অন্যান্য হাতি-দিগের সহামুভৃতি লাভ করিয়া রোমের উচ্ছেদ্সাধন করিবেন, তক্ষনাই তিনি এই নীতি অবলম্বন করিলেন। প্রক্লত প্রস্তাবে বচ জাতীয় লোক হানিবলের প্রতিভা এবং বীরত্ব দেখিয়া তাঁহার পক্ষপাতী হইল। কিন্তু অনেক বৈদেশিক আক্রমণ-কারীর প্রতি বিশেব আশাস্থাপন করিল না। এই যুদ্ধে জয়লাভ করিয়া হানিবল অবিলবে রোম আক্রমণ করিতে পারিতেন, কিন্তু তাঁহার অন্য উদ্দেশ্য ছিল। তিনি পূর্বাভিস্থে অগ্রসর হইয়া ভরবারি এবং অগ্নিষারা বছনগর ধ্বংসসাথ করিতে সাগিলেন। প্রই সমরে তাহার কেবদ ২৬০০০ পথাতিক ছিল, কিছ
রোমকপণ সহবোগী ভূপতিগলের সাহায়ে ৭০০০০০ সৈন্য
সংগ্রহ করিতে পারিতেন। হানিবন সনৈন্যে আপুলিয়ার শস্তস্মৃত্ব প্রবেশে গমন করিবা সুঠনাদি বারা রোমের সহবোগি-রাজস্মের কর্মনাশ করিতে লাগিলেন। তাহার ধারণা ছিল, এইরপে
উপক্রত হইরা জনেকে তাহাকে রোমের বিরুদ্ধে সাহায় করিবে।
এই সমর ইমিলিয়াশ্ পলাস্ এবং টেরেন্টিয়াশ্ ভারো কজল
নিযুক্ত হইরা সনৈন্যে আপুলিয়া প্রবেশে বারা করিলেন।
তাহাদের অহুপত্তিতে রোমকগণ আর একলল সৈন্যসংগ্রহ
করিবা ক্মিশিরা সেকুরিল্ বারা কেবিয়াশ্ মাল্লিনাস্কে ডিউটের
নিযুক্ত করিলেন। কেবিয়াশ্ কৌশলে হানিবলকে পরাজিত
করিতে মনত্ব করিলেন।

হানিবল আপিনাইন পর্বতে অতিক্রম করিয়া কাল্পে-নিয়ার সমতলভূমিস্থিত সমৃত্ত নগরাদি শুষ্ঠন এবং ধবংস ক্রিতে লাগিলেন। তথাপি ফেবিয়াস্ সমুখ-যুদ্ধে বিলম্ ক্রিতে লাগিলেন ৷ ফেবিয়ান কাম্পেনিয়ার গিরিস্কট অধিকার করিয়া মনে করিলেন, এই পার্বভাপথে ছানিবলকে বিনষ্ট कतिर्दिन । किन्तु अद्भुक्तिनेतन शामितन धेर विनाम स्टेरक উত্তীৰ্ণ হইলেন। তিনি তংপুৰ্বে কাম্পেনিয়া লুগ্ন করিয়া বহ-সংখ্যক বুৰ ও গাভী অধিকার করিয়াছিলেন। রাত্রিকালে তিনি ২০০০ বুবের শুকে ছই ছইটী মশাল বাঁবিয়া সেই মশালে অগ্নি-প্রদান করিয়া, স্বীয় দৈনাগণকে ব্যাহিত রোমক-দৈন্যের অভিমুখে সেই বুৰ্যনিগকে ভাড়াইতে কহিলেন। বুৰগণ শৃঙ্গন্থ মশালালোকে জীত হইয়া চতুৰ্দ্ধিকে ছুটিতে লাগিল। রোমক-দৈন্য অসংখ্য প্রেজনিত মশাল দর্শনে মনে করিল, হানিবল অতর্কিত নৈশ আক্রমণে ভাহাদিগকে বিনষ্ট করিবে। অবিলৰে সক্ষিত হইয়া ব্যুহিত গিরিস্কট পরিত্যাগ করিয়া বিপরীত দিকে ধাবমান বুনগণের পশ্চাতে অগ্রসর হইল। হানিবলও সেই স্পুৰোগে নির্কিরোধে গিরিসকট অভিক্রম করিয়া আপুলিরার সমতলে পৌছিয়া শীতাবাদের জন্য ক্রিরোনিয়াম सामक जारन भिवित मजिरम् कतिरम्। ধু: পু:) শীতকাল এই দ্বানে অভিবাহিত করিয়া বসস্ত ममाश्रास मस्त्रमञ्जा क्रिएक गाशिरनम, क्यि थामाजरवाह अकारव তিনি এই স্থান হইতে বাত্রা করিয়া কানি নামক স্থানে স্নোমক-रैत्रत्मात मञ्जूषीन रहेवा निवित्रहालन कतिरमन ।

পূর্ব্বোক্ত রোমক কলাবর ৮০০০ পরাতিক এবং ৬০০০ অখারোহী লইরা হানিবলের সমুধীন হইলেন। হানিবলের পরাত্তিক ৪০০০০ এর অধিক ছিল না, কিছ তাঁহার ১০০০০ অখারোহী সৈন্য সক্ষিত হইল। অফিলিয়াস নদীর পঞ্চিশতীরে বিত্তীর্ণ প্রাপ্তরে বৃদ্ধ সংঘটিত হইজ। এই কানির
বৃদ্ধ স্বনবিখ্যাত। হানিবলের অভারোহী সৈন্য তীমবিক্রমে বৃদ্ধ
করিতে লাগিল। রোমের বিশাল অমীকিনী একেবারে ধবংসপ্রোপ্ত হইল। রোমক-সৈন্য সম্পূর্ণরূপে পরান্ধিত হইল।
১০০০ রোমনৈনার পোণিত-তর্গে কানির সমরক্ষেত্র ভীবণ
দৃশ্ধ ধারণ করিল। ক সল এনিলিয়াদ্, পূর্ববংসপ্রের ক্ষালবর এ ং
আধারোহা সেনাধ্যক মিনিউনিয়াদ্, ৮০ জন সেনেটের সভ্য ও
বহুসংখ্যক সেনাধ্যি এই যুদ্ধ পঞ্চম পাইলেন। জন্যতর
ক্ষাল ভারো কতিপর অখারোহী সৈন্য লইবা ভেম্পিরার
আল্রর লইলেন। বহুসংখ্যক রোমক-সৈন্য বন্দী হইল।

হানিবল এই সমরে ইচ্ছা করিলে অনায়াসেই রোম অধিকার করিতে পারিতেন। কিন্তু তিনি তাহা করিলেন না ।
তজ্জন্য অনেক ঐতিহাসিক তাঁহার নীতির নিন্দা করিয়াছেন।
হানিবলের অধীনত্ব সেনানী মহর্জল রোমে অগ্রসর হইখার
কথা বলিলে, হানিবল বলিয়াছিলেন, "তুমি অখারোহী সৈন্য
সংগ্রহ কর, আমরা ৫ নিনের মধ্যে কাপিটোলে বসিয়া ভোজন
করিব।" কিন্তু নগর অবরোধে তাঁহার সৈন্যগণ অনভ্যন্ত থাকার
তিনি তাহার আরোজন করিতে লাগিলেন এবং আপুলিয়ায়
বসিয়া রোমের সহযোগি-রাজাদিগের গতিবিধি পর্যালোচনা
করিতে লাগিলেন। অবিলক্ষে তাঁহার মনোরথ সিদ্ধ হইল।
সামনাইটগলের অধিকাংশ আপুলিয়ান, লুকানিয়ান, এবং
ফ্রাটয়ানগণ কার্থেজের পক্ষ অবলম্বন করিল। ইতালীর দক্ষিণভাগের অধিকাংশই রোমের বিরুদ্ধে কার্থেজের পক্ষাশ্রম করিতে
কৃতসক্ষম হইল। লাটিন উপনিবেশগণ কেবল দৃঢ়ভাবে রোমের
সহায়তা করিতে লাগিল।

হানিবলও সহযোগী রাজাদিগকে রোমের হত্ত হইতে নিক্সতি পাইবার অন্ত সৈক্ত পাঠাইরা সাহায্য করিতে লাগিলেন। হানিবল সামনিয়াম্ হইতে যাত্রা করিয়া কাশোনিয়া পৌছিলেন এবং তথাকার প্রসিদ্ধ নগর কাপুরা অধিকার করিলেন। নগরবাসিগণ বিনা বাকারায়ে নগরছার উল্লোচন করিয়া উলোকে অভিনম্পন করিল। এইছানে তিনি শীতকালের অন্ত শিবির সমিবেশ করিলেন। এই পর্যন্ত পিউনিক যুক্তের আত্বলাল। এইকালে হানিবল সর্বতেভাবে সাফল্য লাভ করিয়াছিলেন।

বাণিজ্ঞা-সমূহি, বিলাসবৈভৰ, শিল-বিপ্রানের উনতি এবং
সাধারণ ঐবর্থে কাপুরা নগরী সর্বাংশে রোমের সমকক্ষ ছিল।
রোমের আলকারিকগণ এবং বিখ্যাত ঐতিব্যান্থ মধ্যকাল
২১৫-২০৭ খৃঃ পুঃ
বিলাস বাত্যাকোলিত স্থমস্পর্শে হানিবলের
সৈন্তগণ অনেকাংশে দৃত্তা ও উক্তম হারাইলা ছিল। যাহা হউক,

এই কাৰে বুৰ আধার স্তম তাৰ ধাৰণ কৰিব। তামিবল পূৰ্ব-নীতি অস্থানন করিতে লাগিলেন। সোমের কারোক্তিসের ধারা সোমের ধাংসকাধন করাই তাঁহার বুলা উল্লেড বিজ।

केर नमद रहेटक द्यारमत पुत्रमीतिक न्यूकन व्यमानीटक नाव-ছালিও হইল। রোমকাশ চতুর্লিকে সৈত পাঠাইছা লেশ কল कतिएक गानिरमन । अवस्थिताक धानामा अवस्थान असा (कोनन খাৰলখন কবিলোৱা জান্তৰিভাগৰ লেখনে নৈক লাঠাইয়া ভগার হানিশ্লের ক্তি করিছে সকলে বন্ধ পরিকর হুইলেল। হাত্রিকণও রোমের শহরোগীবিগের সাহায্যার্থ ইভালীর একপ্রান্ত হইতে অন্ত প্ৰান্ত পৰ্যান্ত লেশে আধিপত্য বিস্তান কলিতে সাগি-्राजन । २५ व्युः शृंश शृंगतात महात्रमत्र चात्रक हरेन । किरियात्र এবং সেত্রোনিরাস নামক কজালন্য বৃদ্ধ সকল করিছে লাগিলেন। इश्नियम् । धिकामा भर्करण सुर गर्रम कतिरमन । धरेषारम जिनि ইতালীবাদী সাহাব্যকায়ী রাজগণের অপেকা করিতে কাগিকেন। সার্থেক হইতেও অখারোহী সৈম্ভের জন্ম তিনি প্রতীকা করি-লেন: এই সময়ে নোকা নামক ছালে একটা কুন্ত যুৱে তাঁহার সনেকগুলি সৈত কর প্রাথ হইল। টিফাটার অবভানকালে जिनि চতुर्षिक् रहेएक माहाया आश्र रहेएक मानिएनन। माकिनन-পতি ফিলিপ ও সাইরাফিউজ-রাজপুত্র হীরোনিমাস হানিবলের নিকট দুত পাঠাইয়া সাহায্য করিতে চাহিলেন। এই প্রকারে রোমের বিজকে হইটা পরাক্রান্ত রাশ্য যুদার্থ প্রস্তুত হইলেন।

২০৪ খ্রঃ পৃ: কেবিরাস্ উমার্নেলাস্ প্নর্জার কন্সল নিযুক্ত
হইলেন। হানিবল আপুলিরা হইতে টিফাটার গমন করিরা
কাপুরানগরী রক্ষার উপার দেখিতে লাগিলেন। তিনি পিউটোলি অধিকার করিবার সক্ষা করিতেছেন, এমন সমরে টরেন্টাম নগর অধিকার করিবার এক স্থকোগ হইল। ভদম্পারে
তিনি অবিলব্দে তলভিমুখে বাঝা করিবেন। রোমক-সৈভও
টরেন্টামে পৌছিরা হুর্গরিকা করিতে লাগিল। হানিবল পুনরার
কীতাবাসের জন্ত আপুলিরার কিরিরা আলিলেন। ২০৩ খ্রঃ পৃ:
গ্রীমকালে সিসিলিতে বুদ্ধ আরম্ভ হইল। এক্ষণল কার্থেলীর
সৈন্তা সিসিলিতে আলিরা বুদ্ধ উপাইতে করিল। রোমক-সৈভের
কর্মণ সিসিলিতে যাইল। ইতিমধ্যে টরেন্টাম নগরের
হুইজন অধিবাসী বিশ্বাসবাতকতাপুর্ক্ষক হানিবলকে নগর সমর্পণ
করিতে লক্ষ্য করিল। কিছু পুর্গ মধ্যে রোমক-সৈভ থাকার
হানিবল তাহানিগের কিছুই স্বরিতে পারিকেন না।

সাইরাকিউজের রাজা হীরো রোমকনিগের মিত্র ছিলেন।
কিন্ত তাহার প্তর হীরোনিমাস জিল প্রকৃতির লোক। তিনি
রোমের বিসতে কার্থেজের সাহাত্য করিতে সঙ্গল করিনাছিলেন। ১৫ মান রাজত্বের পরে তিনি শুপ্রবাতক কারা হত

হইলে সাউরাকিউজে সাধারণতর লংখাপিত হইল। বাের ও

কার্থে উজরেই ইহার আধিপত্য লাভে সমুখ্যক ইইলেন। অবশেষে রোমকগণ প্রবল হওরার, হানিবলপ্রেরিক
কার্থেরীর প্রতিনিধিছর প্রশিনাইডেস্ ও হিশোক্রেটিস্ পলাইরা
লিওকিনি নগরে প্রস্থান করিলেন। এই সমরে কলল মার্নেলাস্থ
লাক্রিকে সিসিলিতে উপরিত হইলেন (২১৪ খ্রু পূঃ)। তিনি
অবিলবে লিওকিনিতে হানিবলের প্রতিনিধিছরের সহিত বুরার্জ
বাক্র করিলেন। এই বুরে তিনি জরলাভ করিরা লিওকিনি
ক্রিকার করিলেন। তিনি অধিবাসীনিগকে ক্রমা করিলেন,
ক্রি ২০০০ পলাতক রোমকসৈনের প্রাণম্ভ হইল। ক্রিরেন
ক্রিকোর প্রতিনিধি হিপোক্রেটিসের আশ্রের করিরা কার্থেকীর
ক্রিকের অধিবাসিগণ্ড ঐ পক্র আশ্রের করিরা ক্রাথেকীয়লিগকে নগর হার খুলিরা নিল।

মার্সেরাস্ অগ্রসর হইরা হল ও জলপথে সাইরাকিউজ অব-রোধ করিলেন। রোমকগণ প্রাচীর ভঙ্গের নিমিন্ত নানাপ্রকার যন্ত্র ও কলকোললের অবভারণা করিয়াছিলেন, কিছ ভূবন-বিখ্যাত গণিতজ্ঞ পণ্ডিত আর্কমিনিসের প্রতিভাবলে সমস্ত চেপ্তাই-ব্যর্থ হইয়াছিল। অনেক ঐতিহাসিক ক্ষেন বে, বৃহৎ কাচ (আতসী)-থণ্ড প্রতিফলিত হুর্থাকিরণ দ্বারা তিনি রোমক্দিগের-বৃহ সংখ্যক রণ্ডারী দ্বাধ করিয়া দিয়াছিলেন।

বৈঙানিক বৃদ্ধিবলের নিকট আত্মরিক বাছবল হার মানিল। রোমক-দৈত্তগণ আর্কমিদিদের জাহাজ দশ্ধকারী এঞ্জিনের ভরে বিমৃঢ় হইয়া পড়িল। মার্সেলাস্ তথন इन १८० मुम्बर अंख शान अवत्तां कतित्वन । রাত্রিতে বৎকালে সাইরাকিউজের তুর্গন্ত সৈনাগণ মহোৎসকে ভোজন প্রবৃত্ত, মার্সে লাস্ অন্তত কোললে সেই নৈশান্ধকার ভেদ ক্রিরা মই লাগাইরা হুর্প-প্রাচীর উল্লন্সন করিছে লাগিলেন এবং অতর্কিতভাবে আক্মিক আক্রমণে এপিপোলাই অধিকার कतिरामन । अभिराक मरहारमारह मगरतत व्यक्ताक व्यक्ति मुर्छन । । চনিতে নাগিল। এপিসাইডেন্ অবিলয়ে এই তুর্গ পরিত্যাগ**পুর্বাক** আক্রাডিনা এবং ইউরেলাস হর্ণে আশ্রর সইলেন। সাসে লাস্ हेफेरतनाम् अधिकात्रभूर्वक आकृतांजिना अवस्ताध कतिस्नम । হিমিকো এবং হিলোক্রেটিসের অধীনস্থ কার্থেজীর সৈত চুর্গরক্ষার্থ নমাগত হইল: কিন্তু মহামারী উপস্থিত হওরার ক্রসংখ্যক কার্থেনীর সৈন্যের মৃত্যু হইল। মার্সেলাদ্ ব্রহলাভ করিয়া তুর্গ অধিকার করিবেন। নগরবাসিগ্ল তুর্গমার খুলিয়া দিল। त्रांभकान मनत्र गूर्फन कतिएक नानिन। संश्कारन एतासकरेनका " জীবণ কোণাহলে নগম নুষ্ঠন করিতেছিল, তৎকালে আর্কনিনিক

শ্বনি শ্রামিতির প্রতিজ্ঞা করন করিরা তাহার উপপত্তি করিতেছিলেন। একজন রোমক-দৈয় কর্তৃত জিজানিত হইরাও একাগ্রতানিকন তিনি উত্তর দেন নাই। তাহাতে উজ্জ্বোমকদৈয় তাহার শিরুদ্ধের করিরাছিল। মার্সে লান্ তজ্পুরণে শ্বাভার হংখিত হইরা বিলাপ করিরাছিলেন এবং মহাসমারোহে তাহার সমাধি দিরা সভাও পরিবারবর্গকে বহু অর্থ প্রদামপূর্কক লাহায্য করিরাছিলেন। আর্কমিদিসের সমাধিভত্তে ভত্ততাবিত রেবাগনিতের সিরাক্ত সকলের প্রতিকৃতি এবং বৃত্তস্কতিজ্ঞেবের চিত্রাবলী অভিত ছিল।

শাইরাকিউন্ধ প্রাচীনকালে বাণিজ্যন্তাত বিলাস-বৈভবে বিশেষ প্রামিন লাভ করিরাছিল। শির্মবিক্রিড ভ্রনমোহন চিত্রাবলীতে এবং রুমণীর ভারহোর হুকুমার কারুকার্য্যে ইহার চিত্রশালিকা অনরাবতীর উপমা-ছল হিল। মার্সেলাস্ নগরসূর্গ্রন করিয়া আশাতীত ধনরত্ব মণিমুক্তা প্রাপ্ত হুইলেম এবং শিরজাত অপূর্ব্য জব্য সামগ্রী সকল রোমের দেবমন্দিরের শোভনার্থ লইয়া গোলেন। ইহার পূর্ব্বে প্রাচীনকালে কেহ শির্মবিক্রিড ভান্ধর্য চিত্রাবলী সংগ্রহ করিতে চেষ্টা করে নাই।

রোমকদৈশ্য সাইরাকিউজ জার করিয়া অবিলম্বে সমস্ত সিসিলিতে খীয় আধিপতা বিতার করিল। কিন্তু অগুলিকে রোমের বিশেষ হুর্বটনা ঘটল। সিপিও গম স্পেনের যুদ্ধে প্রাণ হারাইলেন। ইহাঁরা স্পেনে অনেক রুদ্ধে জরলাভ করিয়া হানিবলের সহোলর হাস্ডেবলকে পরাজিত করিয়াছিলেন এবং ভাঁহার ইতালী গমন প্রতিরোধ করিয়া হানিবলের সাহায্যপ্রাপ্তি বিফল করিয়াছিলেন। ভাঁহারা অর্মদিনের মধ্যে কার্থেজীরদিগকে স্পেন হইতে বিতাড়িত করিবেন, এরূপ উপার উদ্ভাবন কয়িয়া-ছিলেন। কিন্তু তাঁহারা পৃথক্ভাবে যুদ্ধ করিতে আরম্ভ করিয়া উত্তর সেনাপতিই হুইটা যুদ্ধে বুগপৎ প্রাণত্যাপ করিলেন। হাস্ডেবল এক্ষণে বিপশ্বন্ধ হুইয়া হানিবলের সাহায্যার্থ ইতালী গমন করিতে সঙ্কর করিলেন।

এনিকে ২১২ খাঃ প্র, কললছর এপিরাস্ ক্লডিরাস্ এবং কিউ
ভাবিরাস্ কাপুরা উকার করিতে যাত্রা করিলেন। হানিবল
সল্পীন হইলে ভাঁহারা কিঞ্চিৎ হটিয়া আসিলেন। হানিবল
টানেন্টামের গুর্গলাতের জন্ত পুনরায় তথায় যাত্রা করিলেন।
তথায় তিনি ২১১ খঃ প্র পাতকাল যাপন করেন। কললভর এই স্থানে কাপুরা আক্রমণ করিবায় সকর করিলেন
এবং কবিলবে হাই প্রেণী সৈন্যে নগর বেরিয়া কেণিলেন।
এই সংবাদে হানিবল ক্রতবেগে রেমকলৈকের সল্পীন
ইইলেন। গুর্গছ সৈত্রগণও ভিতর হইতে ভাহার সাহায্য
ভারতে লাগিল। বাহির ও অভ্যন্তর হইতে ভাত্রক্রণ করিয়াও

रामिका द्वामक-पार्ट्यक कविष्क गाविद्यान ना। प्रथम किनि होन अधिकांत्र कतिबाक सांबदन बामा कतिहन्स धारः ভাবিদেন, ইহাতে কল্পদৰ রাজধানী জ্ঞার্থ ক্ষতাই ক্ষতায় ভাগে করিবেন ৷ কিন্তু ভাহাতে কোন কল হুইল কা ৷ হানিবল নলৈভে রোবের সিংহ্ছারে জানিরা উপত্তিত ছইলেকা রোমবানী रामिनराम जाभवरन कीक वरेरानक मृत्य शंकारशक वर्षेत्र मा **७९काल क्रांट्यन आंठीतांकांबदन्य जानक देनस दिन है अहिएक** कावितात् काशूना कानरतार्थय विरूप कानता कतिन अक्रमन সৈম্ভনত রোম বাজা করিলেন া সামিবল রোম আক্রমণে অসমর্থ হইরা চতুঃপার্থবর্তী হান স্কল মুঠন এবং অভ্যাচার করিতে গাগিলেন। অবশেবে ডিনি হতাশ হইয়া প্রত্যাগরনে वाश इंदेरनम । फिनि चीत वाहिनी दनवारेम अवश नाममारेष প্রাদেশের মধ্য দিয়া গমন করিতে লাগিলেন। কিন্তু তিনি পুনর্জার কাপুরা নগরের সাহায়ার্থ গমন করিতে অক্স হইলে সেই নগর-বাসিগণ রোমকদিগের নিকট আছ-সমর্পণ করিল। বিজ্ঞাহিগণের প্রাণ দও হইল। সম্রান্ত ব্যক্তিগণ কারাক্ত হইলেন এবং অবশিষ্ট অধিবাসিগণ ক্রীভদাসরূপে বিক্রীভ হইতে লাগিল। অভূল ঐশ্বর্যা ও বিলাসবৈভবপূর্ণ স্থাপুরানগরী মহাম্মণানে পরিণত इहेग। (२३) श्वः शृः)

তৎপরে রোমক কলল মানে লাল্ লালাপিরা অধিকার করিলেন। কিন্তু হার্ডেনাইএ নামক ছানে কাবিরাসের সৈত্র পরাজর লাভ করিল। বাহা হউক, রোমের প্রকর্মার উত্তরোভর উরভিতে বিল্রোহী সহবোগিগণ প্ররার রোমের পক্ষ আশ্রর করিতে লাগিল। ২০৯ শুঃ পুঃ বীয়কালে সামনাইট ও প্রামিরগণ রোমের সহিত পূর্ককব্যে বন্ধ হইল। এনিকে চুর্গত্ব সৈন্তের বিধাসবাভকভার টরেন্টাম নগর রোমকনিগের অধিকত হইল। ফাবিরাসের রণকৌশলে রোমকর্গণ প্রমং ক্ষাক্ত হইতে লাগিলেন। ক্ষানিবল এবন সমুপ্রত্বে বিপাশকা করিরা নগরানি পূর্কনপূর্কক ক্ষিণ ইতালীতে শিবির সরিবেশ করিরা হাসক্রবলের নাহাব্যপ্রত্যাশার দিন গণিতে লাগিলেন। এইরলে ২০৭ খুঃ পুঃ আকে ইতালীতে পিউনিক যুদ্ধ অবসানপ্রার হইরাভিল।

সিপিওবরের মৃত্যুর পর, হাস্ত্রুখন জত গতিতে সংহাররের সাহাযার্থ ইতানী অভিমূপে বাত্রা করিলেন। ২০৭ খৃঃ পুঃ বসক কালে তিনি আরম্ পর্যক্ত উর্লুখনপূর্বক ইতানীর সমস্কৃত্রিতে অবতীর্গ হইলেন। এই বংসর রুতিরাস্ নিরো এবং এর নিভিন্নাস্কুলন নির্কু হন। নিরো সসৈতে দক্ষিণ ইজানীতে হানিবলের সকুবীন হইলেন এবং লিভিন্নাস্ হাস্কুজনরের গতিরোধ করিতে আরিমিনিরামে বাত্রা করিলেন। সলগন হাস্কুজনের সাহায্য

করিতে লাগিল। তিনি শীর শীর ইতালীর মধ্যে গমন না कतिका भारतिकेता करिकारत्व कता तमक महे कृतिएक नानिस्तत. **অবলেবে ডিনি খীয় ভ্রাতা হানিবলকে গুঁহার সহিত আধি** য়া স্বাদৈ স্থিপিত হইবার শ্রমা হত প্রাঠাইলেন। কিছু সেই দত ও সমত চিঠিপত্র নিরো কর্ত্ত হইল ৷ নিরো এই স্থােগে অবিশবে ৭০০০ সৈন্য লইয়া হাসক্রবলের অভিবৃধে ক্রতবেগে ব্যঞ্জ করিলেন। হানিবল এই সংবাদ পাইবার शृद्धिर क्लाम्बर निविधि देनना नरेत्रा शाम् अन्तित्र मध्यीन रहेराना। निरातंत्र अश्राम जपत्य शमितम भूटम् विष्टूरे वानिए भारतम मा । निरदा ९ विंट्स २८० मार्टेन अथ शांक्रिता निष्ठितारम्य স্থিত বিলিত হইলেন। কার্থেঞ্জীর দৈন্যগণ ভাহার আগমন সংবাদ জানিতে পারিদ না। একদিন বিপ্রাম করিয়া উভয় কলবে যুদ্ধে অগ্রসর হইকেন। হাস্ফবল হইরূপ বুদ্ধভেরী ওনিশ্বা অন্তমান করিলেন যে হানিবল পরাজিত হইরছেন এবং কললখৰ নিলিত হইৱাছেন ৷ তৰ্জন্য তিনি বৃদ্ধে প্রাখুধ হইরা পশ্চাতে প্রত্যাবর্তন করিতে লাগিলেন। কিছু রোমকলৈন্য তাঁহার অন্থগমন করিল। তখন তিনি নিক্ষপার হইরা মেটোরাস নদীর দক্ষিণ তীরে সৈন্য সমাধেশ করিলেন। তুমুল যুদ্ধ সংঘটিত হইল। হাস্ক্রবল অভ্যন্ত বীরত্ব এবং রণপাণ্ডিভা প্রদর্শন ক্ষিতে লাগিলেন। ভীমকর্মা হাস্ক্রবলের ভরাবহ বুদ্ধে সংস্র गरम त्रामकरेमना धनानाती रहेग। भारत युद्ध अन्नणाएउन मञ्जावना मार्डे द्रिविद्या हर्मिक्यवन, हाभिनकादतत्र शूरज्ज এवश हानिवरनत नरहांशरतत छेशबुक मृजुः नाएक छेशबुक हहेरान। তথন তিনি বক্সমৃষ্টিতে তরবারি হল্তে রণহলে ভীম পরাক্রমে শত্রুসংহার করিতে করিতে সমূধ যুদ্ধে প্রাণবিসর্জন করিলেন। তাঁহার পৃষ্ঠে একটাও অন্তলেখা ছিল না। কলল নিরো হাদ্-জ্বলের ছিল্ন মন্তক লইয়া বিহাজেগে আপুলিরায় হানিবলের শিবির সমীপে যাত্রা করিলেন এবং শিবির মধ্যে ছিন্নমুগু নিক্লেপ ক্রিরা হাসক্রবের পরাজর ও মৃত্যু হানিবলকে জ্ঞাপন করিলেন। क्कर्नरम शनिवन मर्चएङ्मि विशाल क्क्रिया बनियाहिरनम, "बामि আনিরাছি, কার্থেকের হর্তাগ্য আসর প্রার।"

মেটোরানের বৃদ্ধে রোমকৃগণ পুনরার ইতানীর আধিপত্য প্রাপ্ত ইইনেন। হানিবল সমুধ বৃদ্ধ বা বদেশ প্রক্যাগমন অসম্ভব মনে করিয়া বিজিল স্থানহিত সৈঞ্চসংগ্রহ করিয়া পর্কত-পরিবৃত ফুটারাই নামক স্থানে গৃঢ়ভাবে শিবির সনিবেশ করিয়া ৪ বংসরকাল অবস্থান করিলেন। এবার পিউনিক বৃদ্ধক্তের পরিবর্তিত হইল। আজিকা ও শ্পেনে বৃদ্ধ চলিতে লাগিল। পূর্বে উক্ত হইরাছে, সিপিও ২>২ বঃ প্র শ্পেনে প্রাণত্যাগ করেন। তাহার স্থ্যসিদ্ধ পূত্র দিণিও

একৰে ৰয়:প্ৰাপ্ত হইয়া তৰুণ ৰয়সেই শৌৰ্যাৰীৰ্য্যে আশ্চৰ্য্য পরিচয় প্রদান করিলেন। রোমবাদীরা তাঁহাকে দেবতার ৰরপুত্র ৰশিয়া বশিয়া অভিহিত ক্রত বজের ভতীয় খা এবং এ সকৰে তাঁহার মনেও এরূপ ধারণা ছিল যে, দেবতারা তাঁথাকে সমন্ত কার্য্যে পরামর্শ দিরা থাকেন। পরবর্তী রোমের ইতিহাস ইটার উচ্ছণ কীৰ্দ্ধিত উদ্লাসিত। ইনি সপ্তদশ বংসর বয়:ক্রমকালে ২১৮ বঃ পু: টিশিনাসের ভীষণ বুদ্ধে পিডার প্রাণরক্ষা করিয়া-ছিলেন। কানির রণক্ষেত্রেও তিনি ট্ বিউনক্সপে যুক্ত করিরা-ছিলেন। একংশ তিনি আপিরাস ক্লডিরাসের সহিত্ স্পেনে সৈঞ পরিচাশনে নিযুক্ত হইলেন। এই সময়ে রোমের প্রো-কন্সালের পদ শুক্ত হওরার ২৪ বৎসর বর্ছ সিপিও উক্ত পদের প্রার্থী হইলেন ৷ ২১০ খঃ পৃঃ তিনি স্পেনে উপস্থিত হইলেন এবং দেখিলেন তদানীস্তন কার্থেক্সীয় সেনাপতি ৰার্কাপুত্র হাস্ফ্রবন, জিস্গোপ্ত হাস্ক্রবন এবং মাগো এই তিন জনের মধ্যে পরস্পরে শক্রতা বিভয়ান রহিয়াছে। কার্থেন্সীয় স্পেনের রাজধানী নিউ-কার্থেক্স অধিকার করিতে **नक्त कतिरनन। अविनास छैश छाँशांत रुस्नग्छ रुहेन।** এই নগরের অভ্যন্তরে বৃদ্ধোপকরণ এবং খাদ্যদ্রব্য প্রচুর পরিমাণে **সঞ্চিত ছিল।** সিপিও নগরাধিকার করিয়া বন্দিগণের প্রতি বিশেব সন্ধাৰতার করিলেন। তাঁতার বীরত্ব এবং সন্ধাৰতার দেখিরা স্পেন-সন্ধারণণ কার্থেকের পক্ষ পরিত্যাগ পূর্বাক তাঁহার পক্ষ অবশ্বন করিল এবং মাণ্ডোনিয়ান ও ইভিবিলিস নামক পরাক্রাক্ত রাজ্যহয় সিপিওর পক্ষাশ্রয় করিরা যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হইল। ছাস্ক্রবল গোরাডালকুইবার নদীতীরবন্তী বিকুলা নামক নগর সরিধানে সৈছ, সমাবেশ করিলেন। কিন্তু এই স্থানের বৃদ্ধে তিনি সিপিও কর্ত্তুক সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইলেন। ইহার পরে ইনি হানিবলের সাহাব্যার্থ ইতালীতে যাইরা মেটোরা-সের যুদ্ধে নিহত হন। সিপিও সমস্ত স্পেন জর করিতে ইচ্চা করিরেন। পর বংসর পুনর্কার বিকুলার ভরত্বর যুদ্ধে মাগো এবং জিদ্গো-হাদ্জবদকে দম্পুর্বরূপে পরাভূত করিলেন। কার্থেনীর সেনাপতিষয় গেড্গ নামক এক প্রাচীন ফিনিকীর নগরে আশ্রর সইলেন। স্পেনের অধিবাসিগণ রোমের জর বোষণাপুর্বক, সকলেই সিশিওর শ্রণাপন্ন হইল। ভাহার। সিশিওর বীরত, ফিউচ্চন এবং সদর-ব্যবহারে মুগ্র হইরা পড়িল।

নিশিও এক্ষণে আক্রিকান্থ কার্থেনীয়নিগকে পরান্ধর করিবার সক্তম করিতে লাগিকেন এবং অবিলপে তথার গমন করিরা নিউমিডিয়ার প্রাক্তবেক্ত সহিত সভাবতাপন করিলেন গ নিপিওর আকার সমৃশ প্রাক্তবা এবং বুড়িমভার মুগ্ত হইরা

ি সকলেই ভাহার সহিত স্থাস্ত্রে আবদ্ধ হইন। ভিনি পশ্চিম নিউমিডিরার মেগালিরাবিশভির প্র মেদিনিসার সহিত বছুত্ব श्रीन क्रिएन। এইরবে ভিনি পূর্বে নিউমিডিরারাজ সাইকারের মিত্রতা লাভ করিলেন। কিন্তু তংপুর্বে জিস্পা বান্দ্ৰবৰও সেই উদ্দেশ্তে ভৰার গমন করিরাছিলেম। সিপিও তাঁহার সহিতও বন্ধভাবে অবস্থান করিতে গাগিলেন। জিন-গোর সকোনিস্বা নারী এক পরমা স্থক্ষরী কস্তা ছিল ৷ সাইকাল্প ভাহার রূপনাবণ্যে মুদ্ধ হইরা ভাহাকে বিবাহ করিলেন। অগত্যা সিপিও সাইকাল্পের সাহায্য হারাইলেন। স্পেন হৈতৈ সিপিওর অসুপত্তিতিতে বিষম বিল্লোহ উপন্থিত হইল। সিশিও অবিশব্দে তথায় গমনপূর্বক ইলিটার্জিস্ নামক নগর-वांगीिभिगरक ভ्यानक भाष्ठि ध्रमान कतिया विद्याशनक निर्माण এবং অবিলয়ে গেড্স অধিকার করিলেন। ম্পেন হইতে লিগারিয়া গমনপূর্ব্বক হানিবলের সাহাব্য করিতে প্রকৃত প্রস্তাবে স্পেন সম্পূর্ণরূপে সিপিওর দিপিও ২০৬ খৃঃ পুঃ রোমে গমনপূর্বক कष्मनभरतद आर्थी इटेरनन এवः २०१ धः भूसीस्त्र सन्न कष्मन নিযুক্ত হইরা আফ্রিকার যাইরা পিউনিক বুদ্ধের শেব করিতে চাহিলেন, কিন্তু প্রবীণ কন্সগদ্ম তাহাতে সম্মতি দিলেন না। তথন সিপিও সিসিলি জয় করিবার ইচ্ছা প্রকাশ করিলেন, কিন্ত সেনেট তাঁহাকে সৈম্ম দিতে অনিচ্ছুক হইলেন। অন্তুত প্ৰতিভাৱ শত সহস্ৰ রোমক যুবক স্বেচ্ছাপ্ৰণোদিত হইৱা যুদ্ধার্থে অগ্রসর হইল। সেনেট ইহা নিবারণ করিছে পারিলেন না। সিপিও সিসিবিতে যাইয়া বুদ্ধের উদ্মোগ করিতে এদিকে রোমে তাঁহার শত্রুগণ তাঁহাকে ফিরিয়া আনিবার জন্ম সেনেটকে উত্তেজিত করিতে লাগিল। দিশিও গ্রীক-সাহিত্যে অম্বক্ত এবং অত্যন্ত বিলাদী ছিলেন, তজ্জন্ত অনেক প্রাচীন রোমক তাঁহাকে ভাগবাসিতেন না । ভাঁহার শব্দপণ সংবাদ দিল হে, সিপিও সিবিলিতে বসিয়া বিশাসলোতে ভাসিতেছেন, তজ্জন্য তাঁহাকে অবিশবে রোমে • আহ্বান করা উচিত। কিন্তু সেনেট তাঁহাকে ফিরাইতে সাহসী লা হইরা অসুস্থানের নিমিত্ত ক্ষিণন পাঠাইলেন। তাঁহারা ৰাইরা সিপিওর যুদ্ধোভোগ এবং অভিনৰ রণকৌশল দেথিয়া বিশ্বিত হৃদরে ভূমনী প্রাথসো করিলেন ৷ তখন সেনেট তাঁহাকে ৰদেশে প্ৰভ্যাগমনের পরিবর্তে আক্রিকার বাইরা বৃদ্ধ করিতে चारमन पिरमन। जमसूनारत २०८ मृः भूमीरम निभिष्ठ निमि-বিদ্যান হইতে বাজা করিয়া আক্রিকার উপকূলে উটকা নামক ক্সানে অবভরণ করিদেন। কার্বেজীয় দৈন্য সিপিওর श्रद्ध अण्डिको सिन्द्रगा श्रम्करत्वत स्थीत्म शक्किंगिक रहेन

এবং তাঁহার স্বামাতা সাইকাল সাহায়ার্থ সার্থেরের প্রক্রে ক্রিতে সাগিলেন। ২০৩ বৃং সূর্য রীতিমত কুরারত হইন। মেসিনিনা পূর্বা সোহত অহসারে সিশিওর নিক স্বর্থকন করিলেন।

গভীর নিশীবে নিশিও কার্যেকীর শিক্ষি আক্রমণপূর্বক অগ্নি धानाम कतिरामन। नमण निवित्र जन्मीकृष्ठ व्हेन । अविकारन कार्यभीत्र देनना उद्रवाति ७ अधितृत्य सीदन दिन्न्यन कतिन। शंज्ञवन जुनर्सात चात्र धक्नन रेजना नहेत्रा जाहेकारस्त्र जाहारण যুদ্ধার্থ প্রস্তীত হইল। কিন্তু সিপিও ও মেসিনিসায় বিশিত নৈন্য ভাহাদিগকে সম্পূর্ণরূপে পরাজিত করিল। নাইফাল্লের अविति गरकानियवा विक्रिमी इंडेरमम । स्मिनिया वह अपिन ইহার পাণিপ্রার্থী ছিলেন, একণে চিরাভিলবিভ জনরলন্দীকে বন্দিনী পাইয়া ভাহাকে সিপিওর অজ্ঞাতসারে বিবাহ করিলেন। সিপিও ভাবিলেন, পাছে এই বিবাহে মেসিনিসা খীর খণ্ডর হাসক্রবদের পকাশ্রর করে, এইজন্য তিনি উক্ত কন্যাকে তাঁহার হত্তে সমর্থণ করিতে বলিলেন। मिनिना नामानिनवादक যথার্থ ভাল বাসিরাছিলেন, স্বজ্ঞাং তাঁহার অধনন্দী হইরা সে যে বন্দিনী হটবে, তাহা তাঁহার সহু হইলনা। তিনি প্রণয়িনীকে विष ज्ञान कतिरान। धहेक्रार गरकनिमवांक क्रफारशांत শেব হইল। কার্থেজীরগণ সিপিওর পরাক্রমে ব্যক্তিবাত্ত হইয়া রোম হইতে আসিবার জনা হানিবল ও মাগোর নিকট দুত পাঠাইল। হানিবল সুদীর্ঘ ১৫ বৎসর কাল ইতালীতে বুদ্ধ করিয়া ইতালীর এক প্রান্ত হয়ুতে অপর প্রান্ত পর্যান্ত অধি-कांत्र कतिशाष्ट्रितन। शानियलत्र अपन्यागारन त्त्रामकाग महा আনন্দিত হইল। হানিবলের সহিত যুদ্ধে রোমক্দিগের ৩০০০০ সৈনা বিনষ্ট হইয়াছিল, ধনসম্পৎ কন্ত যে লুট্টিত হইয়া-ছিল, তাহার ইয়ন্তা করা হুকর। রোমকগণ তৎপুর্বের এতাদুশ যদ্ধপ্রতিভা নয়নগোচর বা কর্ণগোচর করে নাই।

অবিতীয় পিতৃতক্ত পুত্র পিতার আক্রাপালনের জন্য বে
মহাব্রতের উদ্যাপন করিয়াছিলেন, তাহার কিয়দংশ পূর্ণ করিয়া
দীর্ঘ নিঃখাল ফেলিরা হানিবল জাহাজে উঠিলেন। তিনি
কার্থেজে উপন্থিত হইবা মাত্র কার্থেজীয়গণ পুনরায় নববলে
বলীয়ান্ হইয়া উঠিল। কিন্তু হানিবল বর্ত্তমান অবহা পর্যালোচনা করিয়া যুক্ত অপেকা সন্ধির অন্তাবের অন্তমোদন করিলোন। কিন্তু যুক্তোগতে কার্থেজীয় সৈন্যগণ রোমক-সেনাপতি
সিপিওর সন্ধির সর্ত্তে শীক্ত হইল না। হানিবল শ্বরং সিপিওর
সহিত সাক্ষাৎ করিয়া কোন কোন সর্ত্ত পরিবর্তন করিছে বলিলোন, কিন্তু সিপিও তাহা গুনিলেন না। অগ্রত্ত্যা বুক্ত বাধিল।
২০২ খঃ পুঃ, জেমা নামক শ্বানে উক্তর্জ সৈন্যের ভর্তরর
মুক্ত উপন্থিত হইল। হানিবল শক্তুত রশক্ষোণল প্রেদ্রেন

করিতে লাগিলেন, কিন্তু বে পর্বারোধীর অমিত বিজ্ঞানে তিনি বোমক বাৰা হিন্ন ভিন্ন করিবাছিলেন, একৰে ভাহারা ছিল না। ভঞানিত বহসংখ্যক স্থাপাতক সিশিগুদ্ধ অন্তত শীয়তে অকৰ্মণ্য হইয়া গেল। নিহত নৈনিকের রক্তনোতে শোণিত নদী প্রবা-হিত হইল। যোরতর বৃত্তের পারে সিশিও জরলাভ করিলেন। २००० कार्यभीत रेमरमात्र हिन्न मूरक ज्ञानक क्रीवन मुख बाउन कतिन। २६००० कार्यकीय क्ली हरेन। हानियन कार्छ-কটে আৰু ক্লা ক্লিলেন। মেনিনিনা ভাহার অহপঞ্জী হইলেন। পুনর্কার বৃদ্ধ অসম্ভব বৃধিয়া কার্যেকীয়গণ সন্ধির প্রস্তাব ক্রিল। সিশিও সন্ধির সর্ভ পূর্বাপেকাও কঠোরতর করিলেন। ক্ষি কাৰ্যেকর উপায়াতর ছিল না। ২০১ খ্র: পু: স্থিপত্র বাক্রিড হইল। কার্যেঞ্জীরগণ আক্রিকার বাধীন ভাবে রাজ্য स्त्रिष्ठ शांकिरमन । छांशांसत्र जनामा नमछ अधिकात्र विमुश হইল। ইহাও দ্বিরীকৃত হইল বে, তাংবার বেনের আদেশ ৰাতীত বুদ্ধ বিগ্ৰাহ ক্ষািতে পানিবেল না এবং নণহন্তী সকল রোমক্দিগকে দিবেন। ফ্রেলিনিলাকে জাভারা নিউমিডিরার রাজা বলিরা স্বীকার করিবেন এবং ক্ষতিপুরণ স্বরূপ ১০০০০

এইব্রুণৈ রোম বাহবলে পশ্চিম প্রান্ধের সার্ব্যন্তীম অধিপতি বলিয়া স্বীকৃত হইলেন। রাজাসীমা দিন দিন পরিবর্দ্ধিত হইতে চলিল। রোমকগণের রণতরী ভূমধাত্ত সাগরে অকুভোভরে বিচরণ করিতে লাগিল। বিশাল স্পেন-রাজ্য রোমক শাসনাধীন হইল। এবং তদানীস্কন প্রাচীন ৰগতে রোমের সাধারণতত্র সর্বাপেকা পরাক্রান্ত বলিয়া নর্কভোভাবে স্বীকৃত হইল। এই বুদ্ধের পরে রোমের রাজ্য পরিধি এসিরাগতেও বিশ্বত হইরাছিল। দিখিলয়ী আলেকসান্দরের উত্তরাধিকারিগণ কর্তুক সংস্থাণিত গ্রীক রাণ্যগুলির অবস্থা অভ্যন্ত শোচনীর হইরাছিল। যে দিরীয়া রাজ্য সিন্ধুনদ হইতে ইন্সিয়ন সাগর পর্যান্ত বিভূত হইরা-ছিল, ভাহার অনেক প্রদেশ স্বাধীনতা অবলম্বন করিয়াছিল। এসিরা মাইনরের রাজগণ সিরীয়ার শাসন অগ্রাক্ত করিরা স্বাধীন ছইরাছিলেন। ফ্রাইজিরা এবং গালেশিরার গলগণ প্রবল হইরা-ছিল। মাইগিরা নামক নূতন রাজ্য স্থাপিত হইয়াছিল, ইহার রাজধানী পার্গামাস্। পার্গামাসের রাজা আটারাস বিভীর পিউ-নিক যুদ্ধের সময় রোমের সহিত মিত্রতা স্থাপন করিয়াছিলেন।

त्त्रोभा मूखा ६० वश्मदात मध्य त्वामदक श्रमान कतिरवन।

এই সময়ে ৩র অন্তিওকান্ নিরীরার স্বাক্ষা ছিলেন, তিনি পার্থিরান্দিগকে পরাজিত করিরা"এেট"বা নহারাজ আখ্যা পাইরা-ছিলেন। এই সমরে টলেমীবংশীর গ্রীক্ রাজগণ নিসরের সিংহারনে উপবিষ্ট ছিলেন। ইইারাও পিরহানের ন্মরে দৃত

পাঠাইরা রোবের সহিত স্থাসূত্রে আবন্ধ হইরাছিলেন : কিন্ত २-६ कः पू: ६६ हेल्मीत बृङ्ग रख्तात वानकनशां छेल्मी এশিক্ষেনিস সিংহাসনে আরোহণ করেন। দিরীয়া ও মাকিদনের আক্রমণ আশহা করিয়া রোমক-লেনেটের সাহায্য প্রার্থনা করিরাছিলেন। ইঞ্জিরনসাগরে রোডদের লাধারণতত্ত্ব লামুদ্রবৃদ্ধে অধিতীর বলিরা বিবেচিড ছিলেন, এই বাধারণ তন্ত্রও মাকিদনের আক্রমণ আলভার রোমের সহিত বিত্রতা করিরাভিলেন: মাকিদনিরা এই সমরে প্রাচাযণতে পরাক্রমশালী রাজ্য বলিরা পরিগণিত ছিল। স্থাক সরপতি শ্রে ফিলিপ ইহার শাসনদশু পরিচালনা করিতেছিলেন। তিনি २२० थुः शृः >१म वरमञ्ज वद्याम निःशामान चारत्राहर करत्रन । গ্রীদ্দেশে তাঁহার রাজ্য বিহৃত ছিল। কিন্তু তৎকালে গ্রীদে 'একিয়ানলিগ' ও 'ইভোলিয়ানলিগ্' নামে চুইটা নৃতন সম্প্রকায়ের অভ্যুথান হইরাছিল। আথেন্স এবং স্পার্টা তথন পর্যান্ত স্বাধী-নতা রক্ষা করিতেছিলেন। কিন্তু পূর্ববগৌরব এখন ছারাবশিষ্ট হইরা পড়িরাছিল। যথন প্রাচ্য ও প্রতীচ্য দেশের এইরূপ অবস্থা, তৎন রোমের সহিত মাকিদনের প্রতিধন্দিতা আরম্ভ চইন।

পূর্ব্বেই উক্ত হইরাছে যে, ছিতীর পিউনিক যুদ্ধকালে মাজিদনপতি কিলিপ কার্থেজের পক্ষ হইরা রোমের সহিত শক্ততাচরণ করিরাছিলেন। দিমেত্রিরাস্ নামক একজন বিশ্বাসঘাতক গ্রীকবিজোহী ইলিরীর গ্রাদেশ হইতে রোমকগণকর্তৃক বিভাড়িত হইরাছিল। সে কিলিপের রাজসভার যাইরা রাজার বিশেষ প্রিরপাত্র এবং পরামর্শনাতা হইরাছিল। কিলিপ সর্বাদা তাঁহার আজ্ঞাবহ থাকিতেন। দিমেত্রিরাস্ ব্বক ফিলিপের

অন্ত:করণে জিণীয়া বলবতী করিয়া দিয়া म।क्लिनीत निजीत রোমের বিরুদ্ধে উত্তেজিত করিয়াছিলেন। ও গ্যালেশিয় বৃদ্ধ (২১৪-১৮৮ 별: 월:) ২>৪ খ্রু পুঃ ফিলিপ কএকথানি রণভরীর সাহায্যে অবিক্রম অধিকার করিয়া আপলোনিরা অবরোধ করেন। কিছ রোমক-সৈন্য আগমন করায় প্রত্যাবর্তন করিতে বাধ্য হন। हेराव लब फिन वरनत जात त्कान चंदेना नाहे। लात २०० थ: পু: বংকালে 'ইডোলিরান লিগু' রোমের সহিত বন্ধুদ্ধ স্থাপন ক্রিল, তখন ভাহারা ফিলিপের বিশেষ বিয়াগভাজন হটল। এই সময়ে 'একিয়ানলিগু' ফিলিপের দহিত মিলিত হইল। ইতো-নিয়ানলিগ্ৰ জাগত্যা কিলিপের সহিত সন্ধি করিতে বাধ্য হইল। এই সমরে রোম আফ্রিকার বুদ্ধে যাপুত থাকার রোমকরণও ২০৫ খঃপুঃ কিলিপের সহিত সন্ধি করিল। এই প্রকারে टापम माक्तिनीप गुरुषत्र व्यवनाम स्टेन । क्नि क्रेस्ट्रन्स्क्टे তৎকালে বুঝির।ছিলেন বে, এই সন্ধি স্থারী হববৈ না। সিপিও ৰংকালে আফ্রিকার প্রসিদ্ধ কেনার বুদ্ধে লিপ্ত ছিলেন, ভংকালে

'কিলিপ হানিবলের নাহাবার্থ ৪০০০ সৈন্য পাঠাইরা ছিয়াছিলেন। জিনি ইজিয়ন সাগরে প্রাধান্য লাভ করিবার জন্য সমস্ত জীন খবলে আনারন করিছেছিলেন। ভজ্জনা রোড্দের সাবারণতর এবং পার্নামানের রাজা জাটালাসকে জবিল্য ব্দাক্রমণ করিলেন। ইহারা উভরেই রোমের সহিত মিক্তা-প্রমে বছ ছিলেন। ফিলিপ বুছ জারভের পূর্বে দিরীরারাজ অতিথকাদের সহিত সন্ধি করিরাছিলেন। কুডরাং রোম নিশ্চির থাকিতে পারিলেন না। এই প্রকারে ভিতীয়বার बाक्मिनीय युक्त आवश्व इटेंटन (२०० चू: शू:) किनिश প্রথমে আথেল আক্রমণ করিলেন। তাহাতে কলল সালগেনি-দ্বাদ গলবা কএকথানি রণতরী দইরা আথেনের দাহাব্যার্থ আসিলেন। ফিলিপ ক্রোধান হইরা আধেন্সবাসীদিগের উপর ভয়ানক অত্যাচার করিতে লাগিলেন। কিছু প্রকাশ্র যুদ্ধ সংঘটিত হওরার কোন পক্ষই জন্ত পরাজন লাভ করিতে পারি-লেন না। গলবার পরে ভিলিয়াস কলাল নিযুক্ত হইলেন (১৯৯ খঃ পুঃ)। তিনিও ফিলিপের কিছু করিতে পারিলেন না। তৎপরে ১৯৮ থা: প্রেমিনিয়াস কলল নিযুক্ত হইয়া নবো-ছ্মমে যুদ্ধ চালাইতে লাগিলেন। তিনি অবিলম্বে থেসালী অধিকারপূর্ব্বক কোসিস এবং লোক্রিসে শীতকাল কাটাইলেন। পরবংসর ১৯৭ খঃ পুঃ শিনো-সেফালে বা 'কুকুর মন্তক" নামক স্থানের যুদ্ধে বিতীয় মাকিদনীয় যুদ্ধের অবসান হইল। রোমক-গণ প্রথমে বিষম বিপদগ্রন্ত হইয়াছিলেন, পরে ইতোলিয়ান অস্বারোহী সৈনোর ভীম বিক্রমে রক্ষা পাইলেন। সাকিদনীর সৈন্যও (phalanx) অমিতবিক্রমে যুদ্ধ করিতে লাগিল। ৮০০০ माकिशनीय रेमना २७ जवर ४००० वसी २२न । किन्न त्रामकशत्क ৭০০এর অধিক সৈনা কর হয় নাই। ফিলিপ অগত্যা সন্ধি করিতে বাধ্য হইলেন। ১৯৬ খুঃ পুঃ সন্ধিসত্র স্বাক্ষরিত হইল। हेहा बाजा किनिश शामालन हरेएक रमक छेठाहेबा नरेलन। বণভবী সকল রোমকদিগকে প্রদান করিলেন এবং রোমের অভ্যমতি ব্যতীত কোন দেশের সহিত মিত্রভা করিবেন না বলিয়া প্রতিজ্ঞা করিলেন। যুদ্ধের ব্যর স্থরূপ ১০০০ মুদ্রা स्त्रामकनिशस्य धानान कत्रिरनन।

ক্লেমেনিরাস্ গ্রীকবেশকে অবিলব্দে রোমের শাসনাধীন করা সক্ষত নয় মনে করিরা গ্রীনের বাধীনতা বোবণা করিলেন। পারে ৫ বংসর গ্রীসে অবস্থানপূর্বক শাসনসূত্রণা সংস্থাপন করিরা অরোরালে মহাসমারোহে রোমে প্রত্যাগমন করিলেন গ্রবং সর্বাধন কর্তৃক বিপুল সন্মান প্রাপ্ত হইলেন। এই সমরে সিরীরারাক্ল অভিওক্ষাস্ প্রসিগ্গ মাইনর অবরোধ করিয়া গ্রীস আক্রমধের উদ্যান করিতেছিলেন।

अवित्य श्रीतम बेट्डालिसामश्रम खेसका सम्रक: किनिश छ অভিওকানকে রোমের বিলকে উদ্ভেজিত করিছেছিল। ক্লিড কিলিপ পুনরার রোমের বিক্লচ্ছ জ্বন্তুখান করিছে সাহসী क्टेरनन ना । **अक्षि**श्रकान धक्त स्निवित **केरफानिशानक्रित्रत धा**र्थ-नाव नवाज वरेरनन । अरे नगरत हासियन चानन हरेराज निसी-সিত বইয়া সিরীয়ার রাজসভার উপস্থিত ব্রুলেন। কারণ তিনি পুনরার রোদের বিরুদ্ধে অন্যুখানের উত্যোগ করাম তত্ততা रगरन है है। हो कि निर्माणिक करवन । निर्वादांबा यहासरम হানিবলকে অভিনদ্দন করিয়া সেনাপতিত্বে বরণ করিলেন। অত্তিওকান্ ১৯২ খুঃ পুঃ খেনালীর স্থপ্রসিদ্ধ নিমেতিয়ান নামক ত্বক্তি হর্নে উপস্থিত হইলেন। ১৯১ খঃ পু: ব্লোমকগণ তাঁহার বিহুছে বৃদ্ধ খোবণা করিল। কব্দল এসিলিরাস মেত্রিও থেসালী যাত্রা করিলেন। অভিওকাস থার্দ্রোপলি নামক গিরিপথে শিবির সমিবেশপুর্বক রোমক-সৈঞ্জের মধ্যগ্রীদে যাইবার পথ আটকাইয়া রাখিলেন। কিন্তু রোমকগণ আর একটা গিরিসমটের সমান পাইয়া ক্রেই পথে অবিলয়ে সিরীয় সৈজের পশ্চান্দেশে আদির। উপত্বিত হইল। তাহাতে সিরীর সৈক্ত রণে ভঙ্গ দিয়া পলায়ন করিল। অন্তিওকাদ্ গ্রীদ-বিজয় নিফল মনে করিয়া এশিরায় স্বরাজ্যে প্রস্থান করিলেন। ১৯০ খঃ পঃ হানিবলজেতা সিপিও আফ্রিকেনাসের ভ্রাতা এল-সিপিও এবং সি লেলিয়াস কন্সল নিযুক্ত হইলেন। এল-সিপিও অস্তি-ওকাদের বিজকে যদে যাইবার প্রার্থনা করার, সেনেট তাঁহার कार्यामकका मदाइ मिल्हान इट्डा मधाक प्रान गाँछ। किन्द সিপিও আফ্রিকেনাস, ভ্রাভার সঙ্গে যাইবেন শুনিয়া সেনেট পরে অনুমতি প্রদান করিলেন।

এদিকে অন্তিওকাস্ এক বিরাট্ সৈল্লেল সংগঠন করিরা
পার্গামাস্রাজ্যে সুঠন ও অত্যাচার করিতেছিলেন। রোমকসৈল্ল হেলেস্পন্ত অতিক্রম করিরা তাঁহার সমূখীন হইল।
সিপাইলাস্ পর্কাতের পাদদেশে মাগ্নিসিরা নামক স্থানে যুদ্ধ
চলিল। রোমকনিগের লোকভরত্বর বীরত্বে অশিক্তিত সিরীরসৈল্ল একেবারে ধ্বংস পাইল। ৩০০০ সিরীর-সৈত্তের
রক্তে যুদ্ধক্রের রিপ্তিত হইল। রোমকনিগের কেবল ৪০০
মাত্র সৈল্ল হত হইরাছিল। অন্তিওকাস্ গত্যন্তর নাই
ব্রিরা সন্ধির প্রার্থনা করিলেন। রোমকাল সর্ত করিলেন বে,
(১) তিনি টরাস্ পর্কাতের পশ্চিমত্ব সমন্ত প্রদেশ রোমকনিগকে
প্রদান করিকেন অর্থাৎ তিনি কেবল এসিরা নাইনরের রাজা
থাকিবেন, (২)১১ বংসরের মধ্যে ১৫০০০ বুলা বুল্কের ক্রিত
প্রণ অরপ প্রধান করিকেন, (৩) ব্রণহাতী এবং রাল্ডব্রী সকল
রোমকনিগকে প্রদান করিকেন (৪) এবং বানিবলকে রন্দী

করিরা রোমকবিগের হতে সমর্শণ করিবেন। অভিওকান্ নিরুপার হইরা সন্ধিশতে বাক্র করিকেন। ইানিবন বৈগতিক দেখিরা তৎক্ষণাৎ ক্রীতবীশে প্লাইন করিকেন, তৎপরে তিনি বিখ্যাইনিরার রাজ-সভার গমন করেন।

वान जिभित अपून धनमन्त्रम् नरेवा महानगाँदबाटर अवपृथ ফারে রোমে প্রবেশ করিলেন ি তাঁহার অপ্রম্ন বেমন আফ্রিকা জর করিয়া আক্রিকেনাস উপাধি পাইরাছিলেন, জিনি ভবত্তকরণে ্ এসিরা মাইনর জন করিরা'এসিরাতিকাদ' উপাধি লাভ করিলেন। এক্ষণে রোমকর্গণ বিজোহী ইভোলিরানদিগকে শান্তি দিতে वर्षवान इंहेरनन । ১৮৯ थुः शूः क्कान कानिखत्रान् स्माविनिधत्र ্ত্রীলে গ্রনপূর্বক ভত্রতা প্রসিদ্ধ নগর এবে দিয়া অধিকার 🗠 ক্রিলেন। ইতোলিয়ানুগণ নিরুপার হইরা দক্রির প্রার্থনা করিল। স্থির স্প্র অনুসারে ভাহারা স্বাধীনতা হারাইয়া সর্বতোভাবে त्तारमञ्ज्ञ क्यीम हरेन अवरे वृत्कत वात **प**त्रण ८०० हालाने आहान করিল! এই রূপে প্রাসিদ্ধ ইতোলিয়ান্লিগের ক্ষমতা বংবীক্তত হইল। নৌবিলিওরের সক্ষাণী^{কি}কলন মাননিয়াস্ ভল্সো একণে এসিলামাইনরের সন্নিহিত রাজ্য সমূহে শান্তিহাপনের জ্ঞ প্রেরিভ ইইরাছিলেন। কিন্ত তাঁহার জনরে বিজিগীযা এবং অর্থলালসা বলবতী হইয়া উঠিল, তজ্জ্ম তিনি সেনেটের আদেশের অপেকা না করিয়াই একেবারে গালেশিয়ানদিগের সহিত বুদ্ধে প্ৰবৃত্ত হইলেন। তৎপূৰ্ণে কোন কখাল সেনেটের বিনামুমতিতে যুদ্ধ করিতে সাহস করেন নাই। মানলিয়ান প্রবল বিক্রমে গালেশিয়ন্দিগকে পরাজয়পুর্বক প্রভূত ধনরত্ব লাভ করিলেন। কিন্তু রোমকগণ এখন এলিয়ার বিজ্ঞিত প্রদেশে কোন মুখ্য শাসনপ্রণালী প্রবর্তন ছারা রোমের অধীন করিলেন না। তাঁহারা পার্গামানের রাজা ইউমিনসকে চার্সোনিজ, মাইসিয়া এবং লিভিয়ার শাসন ভার প্রদান করিলেন এবং কেরিয়ার অধিকাংশ রোডিয়ান সাধারণতত্তের অধীনে স্থাপন कतिराजन । यानजित्रात् ১৮१ शुः शुः यहात्रमारतीरह द्वारम প্রবেশ করিলেন। বিশ্যাত ঐতিহাসিক্সণ রোমের এই সমস্ত বুছবিগ্রহকে (প্রলতান মাজাদের ভার) কেবল অর্থলুপ্তনের অভতর পছা বশিরা নিদ্দা করিয়াছেন।

ষৎকালে রোমকগণ এসিরা খণ্ডে কুদ্র কুদ্র বৃদ্ধে বিপুল অর্থ লুঠনে ব্যাপ্ত হিলেন, তৎকালে পশ্চিম মুরোপে উপরোক্ত গালিক-দিরারিরান্ এবং পোনীর বৃদ্ধ ইইরাছিল। ইতালীর উত্তরে পো নদীর (২০০-১৭০ বৃং প্রঃ) জীরবর্তী বৃদ্ধবিশারদ গল এবং লিগারিও লাতিগণ হামিলকার নামক আন্যা এক কার্বেলীর দেনানীর উত্তেশনার্থ রোমের বিক্লে অন্ত ধার্বে সক্তে ইইরাছিল। ২০০

শৃঃ শৃঃ গলগণ রোমাধিকত সাবে কিয়া ও তৎশারিক্ত কএকটি স্থান দুর্গনপূর্বক বৃদ্ধ বোবণা করিল। রোমকাণ এই পার্বভা বর্ষর জাতিগণকে সম্পূর্ণরূপে পরাজিত করিতে মনস্ব করিবেন। প্রথমে পো নদীর উভরত্ব ইনস্থবার এবং সিনোমনিগণ পরাজিত হইয়া বঞ্চতা খীকার করিল। পরে ১৯১ ধৃঃপৃঃ ক্র্নিলিয়াস নি-সিণিও বো-আইগণকে সম্পূৰ্ণপ্ৰণে পরাজিত করিলেন এবং বালক ও বৃদ্ধ ব্যতীত সমস্ত বৃষক্ষিগকে তরবারি মুবে লিহত করিলেন ৷ এই সময় হইতে দিসাল্পাইনগণ সম্পূর্বরূপে রোমের अधीन हरेन। এই পাर्सका जािजिशत्क नमत्न त्राधिवात कना বোনোনিয়া এবং বোলন নামক স্থানে চুইটা উপনিবেশ সংস্থাপিত হইল এবং বড ব্ৰান্তা নিশ্বাণ বাবা ঐ সকল স্থান ব্লোমের সহিত সংযক্ত হইল। ১৮০ খঃ পৃঃ কলল ইমিলিয়ান্ লেপিডান এই প্রকাণ্ড পথ নির্দ্ধাণ করেন। কিন্তু লিগারিরান্দিগকে পরাজয় করিতে আট বংসর দাগিয়াছিল। কারণ ইহারা প্রকাশ্ত ভাবে বৃদ্ধ না করিয়া পর্বত গছবরে ও বনান্তরালে পুরুষিত থাকিত। এই সকল যুদ্ধে রোমের রাজ্যনীমা আপিনাইন পর্বভঞান্ত পৰ্য্যন্ত বিস্থৃত হইয়াছিল i-

বিপিওকর্তৃক স্পেনদেশে অধিকারের পরে তথার রোমক:-শাসন প্রবর্ত্তিত হইয়াছিল। স্পেনদেশ উত্তর ও দক্ষিণ এই গুইভাগে বিভক্ত গুইজন রোমক প্রিটর বা মাজিট্রেটকর্তৃক শাসিত হইরাছিল। কিন্তু উত্তর ও পশ্চিমে অনেক যুদ্ধপ্রিয় জাতি তথনও রোমের অধীনতা স্বীকার করে নাই। মধ্যে স্পেনের কেল্ডিবেরিয়ানগণ, পর্ত্তগালের শিউসেটেনিয়ানগণ, এবং কেন্টেব্রিয়ান ও গালেশিয়ানগণ তথন পর্যান্ত স্বাধীনভাবে রাজত্ব করিতেছিল। রোমকগণ শান্তিস্থাপনের জন্ম পরাক্রান্ত চারিদল দৈন্ত রোমে রাখিয়াছিলেন এবং ইহাদিগের ব্যয়-নির্বাহার্থ অধিবাসিদিগের নিকট হইতে সর্বাপ্রথমে করগ্রহণ-প্রথা প্রবর্ত্তিত হয়। রোমকশাসন স্পেনে স্থায়ভিাবে বন্ধমূল হইতেছে দেখিয়া অধিবাসিগণ বিদ্রোহী হইল। কন্সল, এম্ পোর্সিয়াস কেটো বিজ্ঞোহদমনের জঞ্চ স্পেনে প্রেরিত হইলেন (১৯६ वृ: भृ:)। ममख (सन (तास्मत विक्रांक व्यवसातम कतिम ! কিন্তু কেটোর শাসন-কুশলতা এবং ক্লানৈপুল্যে পুনরার রোমক-শাসম দৃঢ়ীকৃত হইল। কেটো যেরপ বস্তত্যা করিয়াছিলেন ভাষা গুনিশে ভীড হইডে হর। তিনি নগরধাংস ও নম্নহত্যায় ষ্ণতান্ত গৌরব অমুভব করিতেন। কিন্ত তাঁহার নিষ্কুর ও मुम्प्त्रवावहारत मकरनाहे स्तारबद माजरम विक्रक रहेता केंठिन । ভংগুৱে কলণ নেজ্যোনিয়াস প্রাকানের শান্তিময়ী নীতিতে ন্দোনবাদিগণ পুনরায় রোমক্লাসনের অন্তল্ভী হইডে লাগিল (३१३ मृः शृः)।

এই সমরের রোমের কেনটিটিউশন বা শাসনব্যবস্থা অভি-সংক্ৰেপে বলা উচিত। পূৰ্বে প্লিবিয়ান পিটি শিবান পক্ষের বিরোধ ব্যাপার উলিখিত হইরাছে। এখন রোমখ-শাসনপ্রণালী প্লিবিয়ালগৰ লক্ষ বিষয়েই খেটি শিলাল-'क रेगक्कवर्ण দিগের সমকক্তা লাভ করিয়াছিলেন। দ্বিতীর পিউনিক যুদ্ধের পর হইতে উভয় দলে আর কোন বিরোধ ঘটে নাই। কারণ প্রতি বংসর চুইজন কলাল এবং চুইজন সেন্দর প্লিবিরান পক্ষ হইতে নির্মিতরূপে নির্মাচিত হইতেন। পেটি শিরানদিগের কোন কোন কারনিক উৎকর্ব ভিন্ন অন্ত কোন স্থবিধা ছিল না। প্রত্যেক রোমবাসী ভিন্ন ভিন্ন সরকারী কার্যা করিবার পরে কলল হইতে পারিছেন। কিছ যাহারা নিম্নতন পদে কার্য্য করিতেন না, ভাঁহাদের গুণাধিক্য থাকিলেও কদান হইতে পারিতেন না। সিপিওর নিয়োগবিষয়ে এই নিয়মের ব্যভিচার ঘটরাছিল। ১৭৯ খু:পু: 'লেম্ম আনালিদ'নামে এক আইন প্রণীত হয়, ভন্ত-সারে 'কোমেইরশির' বা নিয়তম মাজিটেট্ পদে অধিষ্ঠিত ব্যক্তির বয়স ২৮ ৰংসর নির্দিষ্ট হয় এবং তদুর্কতর ইডাইলশিপের ৩৭, প্রিটরশিপের ৪০ এবং কন্সাল পদের জন্ম ৪৩ বংসর বয়স নির্দিষ্ট ছটল। যাঁহারা উক্ত পদে ক্রমান্ত্রে কার্যা করিতেন জাঁহারাই যথাকালে কদাল পরের প্রার্থী হইতে পারিতেন। উপরোক্ত মাজিটেট্টাণ গুটভাগে বিভক্ত ছিলেন—রাজচিক্তালয়ত কিউরিউল

>। কোরেটরগণ রাজ্যের বেতন প্রদানের এবং রাজত্ব-সংগ্রহেন্ন কর্ত্তা ছিলেন। তাঁহারা রাজত্ব আদার এবং সাম্বিক ও দেওয়ানী কার্য্যের কর্মচারীদিগকে বেতন দিতেন। তাঁহাদের অধীনে কোবাগার থাকিত।

যথা কলল, প্রিটর ইত্যাদি এবং নন-কিউরিউল মাজিট্রেট বা

- ২ 1 ইডাইলগণ ঠিক পাব্লিক ওয়ার্কন্ ডিপার্টমেন্ট বা সরকারী পৃর্ত্তকার্যের নির্কাহক ছিলেন। ইহাদের ফ্লবাবধানে সরকারী অট্টালিকা-নির্দ্ধাণ ও মেরামতানি হইত, পথ প্রস্তুত, নর্কামা নির্দ্ধাণ প্রভৃতি সমস্ত কার্য্য ইহাদিগের ক্ষরীনে থাকিত। এতদ্বির ইহারা প্রনিদের পরিরক্ষক ছিলেন। সরকারী ক্রীড়া কৌতুক, আমোদপ্রমোদ ও উৎস্বাদি ইহাদিগের পরিচালনে নির্কাহিত হইত।
- ৩। প্রিটর ও কলন (বা রাজকীর ম্যাজিট্রেট) প্রিটরগণ দেনেট-দভা আহ্বান, বাবহার-শাক্তপ্রণরন এবং সামরিক শাসন বিহরে অধিকারী ছিলেন। প্রেড্যেক প্রিটরের ৬ জন লিউর থাকিত। প্রথমে দিবিল বিচার যা নাগরিক বিচার-কার্যোর জন্ত একজন প্রিটর নিযুক্ত হইতেন। ২৪৬ গ্রঃ পুঃ হইতে অন্ত

একজন প্রিটর নিরোগের ব্যবস্থা হয়। ইনি বৈদেশিক শাসনের বিচার-নির্বাহক ছিলেন। কিছ ২২৭ খা পা সিসিলি ও সার্ভি-নিরা-শাসনের জন্ত জন্ত চুইজন প্রিটর নির্ক্ত হন। পরে ১৯৭ খা পা শোনের জন্ত আর ২ জন প্রিটর নির্ক্ত হল। পরে ১৯৭ থা পা শোনের জন্ত আর ২ জন প্রিটর নির্ক্ত হলৈন। এই থাকারে প্রিটরের সংখ্যা ৬টা হর, তর্মধ্যে চুইজন রোমের ও অপর চারিজন বিদেশক রাজ্যের।

- ৪। কললগণ উচ্চতন মানিট্রেট ছিলেন। তাঁহারা রাজ্যলাসন ও সামরিকবিভাগের পরিচালক ছিলেন। তাঁহারা সেনেট
 আহ্বান এবং সাধারণ সভার অধিবেশন করিতে পারিতেন।
 তাঁহারাই লেনেটের সভাপতিরূপে কর্তৃত্ব করিতেন। এতন্তৃতীত
 সাধারণের সন্ধতিক্রমে ইইারা সৈপ্রবিভাগের সর্ধমর কর্ত্তা
 ছিলেন। তাঁহারাই প্রকৃত প্রস্তাবে সৈপ্রগণের দশুমুন্তের কর্ত্তা
 ছিলেন। তাঁহারের প্রস্তোকের অধীনে ২২ জন লিক্টর থাকিত।
 উপরোক্ত মান্তিট্রেট্রাণ প্রতি বংসরেই নৃতন করিয়া নির্বাচিত
 হইতেন। ইইানের অন্তিনে ক্রথন কথন প্রো-কলল ও
 প্রো-প্রিটরগণ নির্ক্ত হইতেন। সাধারণ ভরের পারবর্ত্তিকালে
 কন্সলগণের শাসনকাল ক্রাইলে তাঁহারাই প্রো-কন্সলরূপে বৈদেশিক শাসনকর্তা নির্ক্ত হইতেন।
- ৫। বিতার পিউনিক যুক্কের পূর্ক পর্যন্ত ডিক্টেরনিপের বিশেষ প্রচলন ছিল। কিন্ত রোমের প্রাধান্তবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে এই অসাধারণপদের ভত আবশুকতা হইত না। তবে কন্সলগণ কোন যুক্তবিগ্রহের সমর ডিক্টেটরের ক্ষমতা প্রাপ্ত হইতেন।
- ৬। সেন্দরগণ—প্রত্যেক ৫ বৎসরে ছুইজন সেন্দর নিযুক্ত হইডেন। কিন্তু ১৮ মাসের অধিক কেহ উক্ত পদে কার্য্য করিতে পারিতেন না। ইহাঁদিগের কার্য্য বিশেষ প্রয়োজনীয় ও দায়িত-পূর্ণ ছিল। ইহাঁদিগের কার্য্য ও ভাগে বিভক্ত ছিল—
- (>) ইহাঁদের সর্বপ্রথম কার্য্য মান্তব গণনা এবং তৎপরে ইহাঁরা গণনাতালিকা প্রাক্তপূর্ব্বক প্রত্যেক অধিবাসীর সম্পতির মূল্য নির্দ্ধারণ করিতেন, আনকর ও রাজস্বনির্দ্ধারণের জন্তই সম্পতির মূল্য নির্দ্ধারিত হইত। পরে সম্পতির পরিমাণ অনুসারে অধি-বাদিগণের শ্রেণীবিভাগ হইত। পূর্ব্বে উক্ত হইয়াছে যে, সার্ডি-য়াদ্ টালিরাদ্ এই প্রথা সর্ব্বেথমে প্রবর্ত্তিত করিয়া যান।
- (২) সেন্দর্মগণের বিতীয় কার্য্য অধিবাসিগণের চরিত্র ও ব্যবহারের প্রতি দৃষ্টি রাখা। এ বিবরে তাঁহারা নিজের কর্ত্তব্য জ্ঞানের উপর নির্ভন করিছেন, কাহার অস্থরোধাদি ও প্রদংসাপত্র মানিতেন না। তাঁহারা ব্যক্তিগত ও সাধারণ অসহাবহারের জন্ত শান্তি বিধান করিছেন। ইইাধিগের শাসন মতে সকলেই প্রাচীন রোমকের জাতীয় ধর্মরক্ষা করিছে বাধ্য

ডিক্টের প্রস্তৃত।

হিলেন। অনুসারে সকলকেই বিবাহিত জীবন বাপাস্থাক বিলাদিতা ত্যাগ এবং মিতাচার করিতে বাবা হইতেন। কেইই অনুচু তাবে বাকিয়া বিলাসে এবং অবিভাচারে তীবন বাপন করিতে পারিতেন না। শৈলাক্ষণ উচ্চতালয়ে সৌকতে নির প্রেণিতে আদরন, সেলেটের সক্তাপনকে লোকের অভ ব্রীকরণ, এবং সাধারণকে রাজকীয় স্থাবিধা ইইতে ব্যক্তিক করিতে লাভিতেন।

(৩) এতত্তীত ইহারা সেনেটের শরাসর্প মতে রাজ্যশান-নের ও রাজবসংগ্রহের ব্যবহা করিতে পারিতেন। পূর্তকার্ত্যের উন্নতিকরণার্থ ইইানিসের হতে নির্দিষ্ট পরিমাণ টাকা ব্যক্তিত। ভাহাহারা বড় বড় রাজপথ নির্দিত হইত।

CHICAGE I

দেনেট প্রথমে একটা ক্র মন্ত্রিসভা মাত্র ছিল, কিছ ক্রমে ক্রমে ইহা রাজ্যের পাসন্ধরের একমাত্র পরিচালক হইরা উঠে।
মাজিট্রেটগণ কেবল সেনেটের কার্ক্তরারকরণে পরিণত হন।
৩০০ সম্বস্ত লাইরা সেনেটসভা গঠিত ক্রেট । বিশেষ কারণে কোন
সমস্ত অভিযুক্ত না হইলে সকল সভাই আজীবন সভারপে
নির্কাচিত হইতেন। কিছ এই সভাপদ প্রস্কার্ক্তমিক
হইত না। প্রত্যেক ৫ বংসর অন্তর নির্কাচন হারা শৃত্য
সভ্যের পদ পূর্ণ হইত। সরকারী মাজিট্রটগণের মধ্য হইতেই
অধিকাংশ সভ্য নির্কাচিত হইতেন। রাজনীতিবিভার
প্রবীণছ ও বিক্রভা লাভ করিতে না পারিলে কেহ সেনেটের
সভা হইতে পারিতেন না।

সেনেটের সর্ব্বভোম্থী ক্ষমতা ছিল। সেনেটের ক্ষমতি হইলে কোন কোন আইনে সাধারণের সন্ধতি গৃহীত হইত। কিছু জনেক বিষরে সেনেট সাধারণের সন্ধতি ব্যতীত আইন প্রচলন করিতে পারিতেন। যুদ্ধবিগ্রহ বিষরেও সেনেটের নির্দেশ অন্থসারে কললগণ কার্য করিতেন। পররাত্রের সহিত যুদ্ধ ও সন্ধিয়ালন বিষয়েও সেনেটের সার্ব্বভোম প্রভাব ছিল। এওজির কমিশিরা কিউরিরাটা, কমিশিরা টেবউটা পপ্লি প্রভৃতি কএকটী সাধারণ সমিতিও সমরে সমরে পঠিত হইরাছিল।

(तारमा काकावतिक करता ।

মাকিবনীর বৃদ্ধের পরে রোমে নানা বিবরে নানা পরিবর্তন ঘটিরাছিল। এলিরাখণ্ডে অরলাভ করিবার পর হইতে রোমের লাভীর চরিত্রে বিবিধ পরিবর্তন লাভিত হইতে লাগিল। ইহার পূর্বে রোমফগণ উভয়নীল, গরিপ্রানী, ধর্মজীক এবং সংবত-চরিত্র বলিরা অগতে বিখ্যাত ছিলেন। বিভাচার ভাহাদের প্রধান তব ছিল। বড় বড় মাকিট্রেটগণ পূর্বে প্রভাগত হইয়া অহতে ইলচালনা করিতেন এবং ক্ষমণ ও সেলবুগণ

দ্বাধীৰ পাৰ্ছয়কাৰ্য ক্ষৰে সন্দানন করিছে কুটিড বইডেন কা। সাহিত্য ও নিমে রোনকনিগের কছমান ছিল কা। কোন কোন বিষয়ে আহারা উচ্চ ও নিষ্ঠানগ্রহতি ছিল।

বিদ্ধ আর্থের এবনি বহিলা বে, এসিরাবতে কর্মণাজপুর্কক বনসকর হইবানাত্র রোমের কাতীর চরিত্রে মহাপরিবর্তনের লক্ষণ প্রাকৃতিক হইবা পঞ্জিল। বারারা জ্যাধ্যকেই ধর্ম বলিরা কানিজেন, জাহারা কর্ম পাইরা ভোগতেই প্রধান ধর্ম বলিরা বিবেচনা করিছে লাগিগেন এবং ইন্তিরস্থাকেই মন্তব্যভোগের চরমোৎকর্ম মনে করিরা ভংসাধনে প্রভৃত্ত হইলেন। সিলিও আক্রিকেনাস্ এবং ক্রেমিনিরাস্ গ্রীক শিল্প ও সাহিজ্যের রসাম্বানন করিছে ভাল বাসিতেন, কিন্তু সাধারণ ব্যক্তিকর্গ গ্রীকগণের বিলাসবাসনা ও গোবের অন্তক্ষণ করিছে লাগিগেন। বাহারা বহুতে রক্তন ক্রিতেন, ভারারা পাচক নির্ক্ত করিলেন। পাচকের সংখ্যা আর বলিরা পাচক মহার্য হুইরা উর্ত্তিল এবং অন্নাহিনেই রোমক নরনারীর নৈতিক চরিত্রে সানা দোব স্পার্শ করিল।

वाकारमनिदान् वक्ष्यः ।

কোন লাতির উত্থান-পতনের সলে সলে—লাতীর চরিত্রের উরতি অবনতির সলে সলে—লাতীর দেবনেবীগণের উরতি ও অবনতি হইরা থাকে। ছন্দিশ-ইতালী হইতে বেকাল নামক মদিরা ও মদদের অধিচাত-দেবতা রোমে ছাণিত হইলেন। মদিরাবোগে মদদচতুর্দশী প্রতের অস্তঠান হইতে লাগিল। ক্রমে ক্রমে গৃহে গৃহে মদিরা ও মদনদেবতা বেকালের পূজা বাপ্ত হইরা পড়িল। ছণিত ও পার্হিত ব্যতিচারের প্রোত দেবপুলার অল বিলরা উক্তরবে উলেবাবিত হইল। শেষে পক্ষমার তাত্তিক পূজা সামানিক শৃক্ষালার গওীরেখা উল্লেখন করিতে লাগিল। তথন সেনেটের তৈতক্ত হইল। ব্যতিচারিগণ প্রাপদতে দণ্ডিত হইল—দেবতাও রোম হইতে নির্মানিত হইলেন।

বিদাসলোভ অন্ত প্রধানীতে প্রবাহিত হইল। বড় বড় রলালরে অন্তন্দ্রীড়ার আবোদ সথকে উঠিল। নরহত্যা কৌতুকহাকের চরমসাধন বলিরা গণ্য হইল। এটারান্গণ সূর্বে আত্মীরবজনের অভ্যাইক্রিরার উৎসবে বনিগণকে বলিরান করিরা আমান উপভোগ করিতেন। এই প্রথা ২৬৪ খুঃ পুঃ রেইনে প্রচলিত হর। কিন্তু জখন কেবল অভ্যাইক্রিরার উহার প্রচলিত হর। কিন্তু জখন কেবল অভ্যাইক্রিরার উহার প্রচলন ছিল। খেনে ধনর্ভির সলে করিলেরা। এই হানে প্রাভিরেটর বা অন্তন্তীড়কবিগের ক্রীড়া হরিকেন। এই হানে প্রাভিরেটর বা অন্তন্তীড়কবিগের ক্রীড়া হইত, ভাহা সুলনে ও নির্ভ্রপ্রধার পরাকার্ডাপ্রকাশক।

ক্ষান্ত কি নাল কৰে কৰিকাৰোর অবনতি বাটক। পূর্বে ধনী করিজ প্রকাষ্ট করিবারাই করীর নিবাস বলিরা গণনা করিজেন। পেট্রিনিরান ও রিবিরান উত্তর স্প্রার হিতে এক স্তুন অভিয়াতগণের উত্তর হইল। ইইারা প্রকার্যক্রমে সাজ্যের বড় বড় কার্য্যে বনসক্ষর করিতে লাগিণেন। ইইানের বংশাবলী শেষে সরকারী কার্য্য সক্ষয় একচেটিরা করিরা পাইলের এবং বনিরাধি ক্ষ্মীন বলিরা প্রানির্দ্ধি লাভ করিলেন। যালানের পিতৃপিতারক কোন সরকারী কার্য্য করে নাই, ভারাবের রাজকারী পাওরা ক্ষর ইইরা উঠিল। অর্থবান্ ব্যক্তিগণ অর্থবার করিরা উৎকোচ দিরা সরকারী পদগ্রহণ করিতে লাগিলেল। এই কারণে সর্কপ্রথমে (১৮১ খুং পৃং) ওইবংকাচগ্রহণনিবিত্ব' এই মধ্যে আইন প্রচারিত কইল।

বীর্থকাল বড় বড়ু বুছব্যাপার এবং বিলাসের আবর্জনের ফবকসমালের অবলজি ঘটিল। ক্রীভদানপ্রধার প্রবর্জনে আবীন প্রমজীবিগণ অর্লাজাবে কর পাইতে লাগিল। এইরূপে দরিক্রের সংখ্যা বিল বিল বুজি পাইতে লাগিল। বুজে বলীক্রত ব্যক্তিগণের সংখ্যাবিক্যে ক্রীভদান প্রচুর পরিমাণে পাওরা গাইতে লাগিল। বড়পোকের ক্রবিক্তের ক্রীভদানেরা কর্বণ করিতে লাগিল। এই প্রফারে রোম্বাসী ক্রব্ ও প্রমজীবি- গণের অর্লাংখান করা কঠিন হইরা উঠিল। 'ভোট' দিরা অর্থপ্রাধি ব্যতীত ভাহাদের কর বিলে গারিতেন, ভিনিই সকল 'ভোট' পাইতে লাগিলেন।

এই সমরে যে সমন্ত প্রসিদ্ধ ব্যক্তি রোমের ভাতীর চরিত এবং প্রাচীন গুণাবলী অকুর রাখিতে প্ররাস পাইয়াছিলেন, তথ্যগে এম-প্রোসিরাস-কেটো সক্ষ্রধান। পূর্বে ইহার কথা কিছু বলিয়াছি। কেটো প্রাচীন রোমের জাদর্শ চরিত্র ज्वर ज्वाम महार्थम् । वागाकारम इमधानमा ज्वर विविध ব্যারামে তাঁহার আছা খুব ভাল ছিল। তিনি ধনীর সম্ভান ছিলেন, কিন্তু তাঁহার প্রানাদের জনতিদূরে বিখ্যাত্বীর কিউরিয়াস ভেন্টাটাসের কুটীর ছিল। বিশাসবিবেবিতা এবং স্ক্রিত্তার অস্ত ডেক্টাটাল্ রোমের কুটাক্রশানীর বলিরা লোকমুৰে কীৰ্ত্তিত হইতেল। তাঁহার স্থ্যাতিভাষণে কেটোর অবঃকরণে তেন্টাটানের গুণাবলীর অনুচিকীর্বা বলবতী হইল। ভ্ৰম্বৰি ভিনি বিশাসবৰ্জন এবং স্থাচারপ্রতে আলীবন শীক্ষিত इहेलान । ১৯৮ वः शृः देनि गार्डिनियात्र क्रिकेत व्हेला श्रमन करता । छवात छिमि रवेन्नल छारव कार्या कनिनाहिरणन, ভাচা আহর্শহানীর। ভিনি প্রেচিড বিলাস এবং গাঁভীর্য পরিত্যাগপূর্বক धक्कन बार्ख छछ। ब्रीविश्र क्रिलन। আপলপাত বিচারের বান্ধ কিনি নক্ষণের আপংলাভাকন হইরা-হিলেন। কুনীন (জ্ব) একাকে তিনি ক্যাপাশ স্বল্প বিবেচনা করিরা হ্রবথোর মহাজননিগতে বিশেষ পার্টি প্রধান করিতেন। ১৯৫ খা প্র ইনি কলন নিযুক্ত হইরা প্রাচীন হৈল্পের ভাতীব-বর্তের প্রক্থানের জন্ত প্রাণ্যণে চেটা করিছে লাক্ষিকা।

ं अर्थ नेपाद द्वारमं धाक काशूर्स चंग्रेना चरिन । १७४ कृत सूर शृह অবম পিউনিক বুছের সময়ে টি বিউন ওপিরাসকর্ত্তক "লেক্স-खिला।" मार्ग धन चाहेन विशिवह इटेबाडिश, एक्ट्रांटि कान গোমকরমান আই আউলের অধিক ক্ষবর্ণ ব্যবহার, বিভিত্রসঞ্জিত ব্য পরিধান এবং নগরের বাহিতে অব্যথচালনা প্রাঞ্চি কার্যা कतिएक शांतिएक मा । धार्करण शांभिवरणत शतांकरत कार्यरवात ধনতাভার দুঠন ক্রিয়া দাধারণ কোবাগার কীত হইরাছিল, क्षक्रदार विमानिनी दशस्त्रीमिकिनीशंग अक्तरन देखा चाहेन हरिक क्तिवात अञ्चावार्थ प्रदेशन हैं विकेत्मत मिक्ड आर्थमा क्तिरामन । ইটারা উক্ত আইনর্ম্মিক্রনের প্রাক্তার করিলেন, কিছ ভাঁহাদের সহযোগিখন ভাহার বিরোধী হইপেন। রোমকরম্থা-গণৈর ধর্মবর্ট রোমে হলমুল পড়িরা গেল। বংকালে সমসাগণ সজ্জিত হইরা কোরাদে গমন করিবেন, তৎকালে রম্বীগণ প্রত্যেকপথ অবরোধ করিরা অবস্থান করিতে লাগিলেন। সকলে তখন তাহাদের প্রার্থনার সম্মত হুইলেন, কিন্তু কেটোর मध्यक्रमस्य काम विमानिमीत विलाग करे।के विश्रम केश्मान कतिएछ शातिन मा । किस शतिरमाद ननमाकूरनबरे अब रहेन । তাঁহারা বিচিত্ররঞ্জিত বল্লে সন্দিতা এবং স্বর্ণালভারভূবিতা হইয়া স্বছন্দে বেডাইডে লাগিলেন।

এই সময়ে গিণিও আক্রিকেনাস্ এবং সিণিও এসিরাটিকাস্
হাই সংহারে অনেকের বিরাগভাজন হইরা উঠিকেন। কেটোর
প্ররোচনার নেতিয়াস্ নামক একজন ট্রিকিন ক্লিট সিণিওর
নামে সৃষ্টিত অর্থের অসবাবহার সবঁকে অভিযোগ আনয়ন
ক্রিকেন। তিনি হিসাব প্রস্তুত্ত করিরা ট্রিকিনগণের হতে
প্রদান করিতে ঘাইবেন, এমন সমরে তাহার অগ্রজ সিণিও
আক্রিকেনাস্ হিসাব-পত্র বও করিরা হিডিরা ফেলিলেন।
এবং রাগাহিত হইরা কহিলেন—"বে কোটি কোটি মুদ্রা আনিরা
কোরাগার পূর্ব করিয়াছে, কএক সহল টাকার জন্ম তাহার
নিক্ট হিসাব গ্রহণ।" কিন্ত তাহার এই গহিত ব্যবহারে
জনেকে বিরক্ত হইল এবং এই অপরাধের বিচারে ক্রিট সিণিও
ক্রক্তর ক্রিমানা দিতে আবিট ইইলেন। তার্কাবে ক্রিয়াক্র
হিবেন, ইহাও প্রচারিত হইল। যুক্ত ট্রিকিনের র্কিবর্গ
ক্রিট সিণিওকে ধরিরা কার্যাগারে ক্রিমা বাইভেছিল, জাট
সিণিও তবন ব্যবকারী ক্রেটারিগণের হব হুইতে প্রতিবেক

হিনাইরা গইলেন। এই রাজলোহিতার জন্ত তাঁহার গুলুতর কও হইড, কিছ প্রসিদ্ধ প্রাকালের বুছিবলে প্রবং বুক্তিকোলনে ক্রিষ্ঠ সিশিও বৃতিত পাইলেন।

•পুনরার ট্রিউনগণকর্তৃক সিণিত ভারিকেনাক কভিযুক্ত হটলেন। বংকালে **ভারাকে অভিযোগের লভ প্রথ জিজা**লা করা হইন, তিনি তাহায় উত্তর না দিয়া রোমের লাধারণতত্ত্বর জন্ত তিনি বে অভ্ৰত কৰ্ম ক্রিয়াছেন তাপে জ্বাহিনীতাবার वर्गना कतिएक नाशित्नम । वक्कका त्यव ना बहेरछहे लेका बहेन। পন্নবিম বিচারপঞ্জিগণ বিচানাদলে উপবিষ্ট ক্টনা সিপিওর নিকট অভিযোগের উত্তর চাহিলেন। সিপিও উচ্চকর্চে বলিতে লাগিলেন, "ৰে ভুৰনবিধ্যাত জেমায় বুৰে আমি হানিকাকে পরাজিত করিয়াছিলাম, অন্ত ভাহার সাধংসরিক বৃতি-দিন! বড়ই আশ্চার্য্যের কথা বে, অন্ত আপনারা সেই গৌরবাহিত यूक्तिटम काशिटोटन याहेश स्वर्णाम्दशत्र फेल्म्स्थ श्रष्टवान ना দিয়া যুদ্ধকেতাকে দইয়া প্রশ্নোন্তর ক্রিক্সাদা করিতেছেন!! আপনারা অবিলবে যাইয়া দেবতার নিকট প্রার্থনা করুন, যেন রোমভূমি সিপিওর ভাষ ভূবনবিখ্যাত পুত্র ভবিষাতে প্রস্ব करत ।" भिभि ७ व. और कैमी भना मत् वारका विठाता नग्रह नमछ ব্যক্তি ভাঁহার সঙ্গে সঙ্গে কাপিটোলে যাইয়া কেবারাধনা করিতে नाशिन। विठातक अकाकी विठातामरन विमिन्न। त्रिशिकार्यमा এই প্রকারে সিপিও বিচারালয়ের নিরম শৃত্রক পরিহার করিয়া অক্তজ্ঞ রোম পরিত্যাগপূর্বক লিটার্ণাদ নামক খীর পরীভবনে গমন করিলেন। রোমের সম্পর্কবিরহিত হইয়া এইস্থানে শহান্তামলা কাননকুম্বলা ভূমিতে তিনি অবশিষ্ট জীবনযাপন করিয়াছিলেন। ১৮৩ খঃ পুঃ তাঁহার মৃত্যু হর। তিনি মৃত্যুকালে বলিয়াছিলেন যেন অভূতজ্ঞ রোমের ক্ষেত্রে তাঁহার দেহ সমাহিত মাহয়।

হানিবলও এই বৎসর মানবলীলা সম্পন্ন করেন। বংকালে সেনেট হানিবলকে হনন করিবার চেটা করেন (সিরিয়ারাজের সহিত মুক্ত) সিলিও কেবল সেই আদেশের প্রত্যাহার করিরাছিলেন। সিলিও আত্মিওকাসের সভার হানিবলের সহিত বে কথোপকথন করিরাছিলেন, তাহা ইতিহাসপ্রসিদ্ধ। সিলিও হানিবলকে জিজ্ঞাসা করিলেন, "কাহাকে আপানি প্রেট্ট সেনাপতি বলেন?" হানিবল কহিলেন, "কাহাকে আপানি প্রেট্ট সেনাপতি বলেন?" হানিবল কহিলেন, "উত্তর হইল "পিরহাস্থা"। সিলিও কহিলেন, "তাহার ছিতীর কে?" উত্তর হইল কহিলেন "বরং আমিই কৃতীয় সেনাপতি"। সিলিও বিভিত্ত হইরা কহিলেন, "বহি আপানি আমাকে পরাজর করিতেন, তবে কি হইতেন?" হানিবল হাসিরা উত্তর দিলেন, "আপানাকে পরাজর করিতেন, ক্রানিবল হাসিরা উত্তর দিলেন, "আপানাকে পরাজর করিতেন, ক্রানিবল হাসিরা উত্তর দিলেন, "আপানাকে পরাজর করিতেন, হবানিবল হাসিরা উত্তর দিলেন, "আপানাকে পরাজর করিলে,

জাসি আলেকসালার ও পিরহাস্ অপেকা উক্তর সোপানে আরোহণ করিতে পারিতাম।" তাঁহারা উক্তরে উভয়কে লাইরণে বৃথিতে পারিরাছিলেন। পূর্বে উক্ত হইরাছে, হানিবল বিধাইনিয়ার রাজসভার বাস করিতেছিলেন। কিন্ত সেধানে রোমক্ষিপের আগমন সম্ভাবনা বৃথিয়া বিবপানে প্রাণত্যাগ করেন।

এই সমূদ্রে ১৮৪ খুঃ পূঃ, কেটো সেলারের পদলাভ করিরা व्यनिष्क रूम । এवा द्यारम मानाविध मध्याद्वद । व्यवस्त कद्वम । বিলাসিভানিবারণের জন্ম ডিনি বিলাসপঞ্চের উপরে গুরুতর এতথাতীত তিনি সেনেটেয় খনেক क्ष क्षेत्रम करतम । অবর্ণা সভানিগকে বিদ্রিত করেন। কিন্তু বরোবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার রক্ষণশীগতা ব্রস্থীভূত হয়। ভক্ষম্ভ ডিনি গ্রীক সাহিত্যের আলোচনায় মনোনিবেশ করেন। তিনি নিজে এক-খন ঐতিহাসিক এবং বিখ্যাত বক্তা ছিলেন। ডিমোম্বিনিস্ এবং থুকিডাইড্সের এছ পাঠ করিয়া রাজাদিগের প্রতি তাঁহার বিশাতীর দুণা জারিরাছিল। বধন পার্গামানের রাজা ইউমিনস রোমে আগমন করিয়া সেনেটকর্ত্ক অভিনন্দিত হইয়াছিলেন, কেটো ভাহাতে কৃষ্ক ও বিরক্ত হইয়াছিলেন এবং দ্বণাকুঞ্চিত मृत्थ विवाहित्वन, "ब्राकांत्रा मारमानी हिरव्यक्त वित्नव" (kings are naturally carnivorous animals) এত্যাতীত চিকিৎসকদিগের প্রতি তাঁহার বিজাতীর মুণা ছিল। কারণ তাঁহাদের অধিকাংশই গ্রীক ছিলেন। কেটোর চরিত্র প্রাচীন রোমকদিগের সর্বতোভাবে আদর্শস্থানীয় ছিল। কিন্ত ক্রীত-দাসগণের উপর তিনি নৃশংসরূপে নির্ভুর ছিলেন।

তৃতীয় মাকিদনীয় যুক্। রোম পশ্চিম রুরোপে প্রাধান্ত সংস্থাপন ও এসিয়ার পশ্চিমাংশে প্রতিনিধিত্ব করিয়া শান্তির আশার কাল কাটাইতেছিলেন, এমন সমরে পুনরায় যুক্ক বাধিল। ১৭৯ খৃঃ পৃঃ মাকিদনপতি ফিলিপের মৃত্যু হইলে তৎপুত্র পার্সিয়াস্ সিংহাসনে আরোহণ করেন। ফিলিপ রাম ভাতিদিক বৃদ্ধ মৃত্যুর পূর্ব্ধ হইতে রোমের সহিত পুনরায় (১৭৯-১৯৬ খৃঃ পৃঃ) বৃক্কের আরোজন করিয়াছিলেন। পার্সিয়াস্ বধন রাজা হইলেন, তথন তাঁহার কোবাগার ধনপূর্ণ। বিপুল সৈঞ্জ-সংগ্রহের নিমিন্ত এসিয়ার রাজগণ, গ্রীকণণ, হেসিয়ান, ইনিরিন্রান্ এবং কেন্টিকজাতি সকলের সহিত সংগ্রহাপন করিয়াছিলেন। রোমকগণ এ সকল আয়োজন লক্ষ্য করিতেছিলেন। এই সমরে পার্সিয়াস্ রোমের মিত্ররাজ্ব পার্গামাসপতি ইউমিন্সের প্রোগনাশের তেই। করায় ১৭২ খঃ পৃঃ প্রকাক্ত বৃক্ক উপস্থিত কুইল।

পার্নিরাসের মধীনে প্রকাঞ্জ সৈঞ্চল সক্ষিত বুইল, ওড়িসিরা-

ব্লাজা কোটান তাহার আধান সহার হইলেন। রোমকলৈছও ্ৰুৱাৰত কবিল। কিছু প্ৰথম ডিমবংসয় হোমকলণ বিলেষ কিছু করিতে পারিবেন না, বরং পার্নিয়ান্ট অনেকাংশে কর্লাভ ক্ষরিতে লাগিলেন। এইবক্ত নানাক্রাতি আসিরা পার্সিরাসের সৈম্ভন্ন বৰ্দ্ধিত করিতে লাগিল। অবশেবে ১৬৮ খু: পু: রোম হুইতে কলল এমেলিয়ান প্লান বুদ্ধার্ম প্রেরিত হুইলেন। উভর সৈল্লদল পিড্না নামক ছানে সমুখীন হইল। ভীম আক্রমণে পার্দিরাস প্রথমে পেলা ও পরে আক্রোপোলিস এবং তথা হইতে **म्हिलाट्य में भगाइम कब्रिटनम । किन्ह व्यवस्थित श्रेता श**िका রোমকগণ প্রথমে তাঁহার প্রতি आधारमध्य कविरमम्। विरुप्त क्रमुख्यां क्रिजाकिरम्। द्रामकश्य माकिन्नीवात বিপ্র ধনভাঞার লঠন করিলেন, কিন্তু নাকিদনীরা অবিপদে রোমক-শাসনের অন্তর্ভুক্ত হইল না। মাকিলনীয়া ও ভাগে বিভক্ত হইল এবং উহার অর্দ্ধেক রাজ্য রোমের জন্ত নির্দিষ্ট ছইল। ঐ সময়ে নেনেট পলাদকে এশিরাদ রাজান্থ অধিবাসিগণের প্রতি শান্তি-বিধান করিতে আদেশ করিলেন। ৭০টা স্থরম্যনগর তিনি এপিরাস রাজ্যের পরিণত করিলেন, অগ্নি এবং তরবারি দিগ্দিগতে ক্রীড়া করিতে লাগিল। লক্ষ লক অধিবাসী স্ত্রীপুত্রের সহিত অকারণে নির্দয়-রূপে নিহত এবং ১৫০০০ দাসরূপে বিক্রীত হইব। প্রাচীন স্থসমূদ্ধ এপিরাস্নগর স্বগটাসের স্মন্ন পর্যান্ত বহাসাশানে পরিণত ছিল।

১৬৭ খু: পু: পদাস্ ইতালীতে উপস্থিত হইলেন, তিনি বিপুল ধনভাঞার আনিল্লা রোমের কোষাগার পূর্ণ করিলেন। তৎপরে ওদিন প্রয়ন্ত মহাভূম্বে বিরাট সমারোহ সহকারে **তাঁ**হার বিজ্ঞােণ-দৰ সুস্থার হইল। বিজিত মাজিদনীররাজ পার্দিরাস তাঁহার ক্ষরপতাকা ধরিয়া সঙ্গে চলিলেন। ইহার পর প্রবল পরাক্রান্ত মাকিদনীরপতি পার্দিরাস কারাক্রক হইরাছিলেন. তিনি অবশিষ্ট জীবন আলবার বাপন করেন এবং তাঁহার পুত্র আলেক্সান্দর কেরাণীগিরি করিয়া উদরালের সংস্থান ক্রিরাছিলেন। মাকিলনীরা জর করিরা রোম ভূমধ্যসাগরের পূর্ব-উপকৃলেও সার্বভৌম প্রাধান্ত লাভ করিলেন। তথানীস্তন শরাক্রমণালী সমাট্রগণও রোষের নামে কম্পিত ও শবিত হইতে বাগিলেন। অন্তিওকাস্ এপিফেনিস্ মিসয় আক্রমণের উচ্ছোগ করিতেভিলেন, কিন্তু রোমের নিবেধাঞ্জার আর তিনি মিসর অরে সাহসী ছইলেন না। বিধাইনিয়ার রাজা ফেসিয়াস্ মুক্তিতমন্তকে চীববাল পরিধান করিবা রোমের প্রাভুত্ব শিরোধার্থা করিলেন। পার্গামানপতি ইউমিননের রাজ্যের কিয়দংশ রোমকগণ অধিকার क्रिजिन । धारे नमात्र जाम धीक्मणत नकाम वादीमछा रत्र করিয় রোমকশাসনের অভত্ ক করিলেন। এবলতর একিয়ান্লিম পার্সিরাসের পলাবলবনের লক বিজ্ঞ হইলেন। > হাজার
সম্রাভ একিয়ান্ >৬ বংসরকাল রোমে কল্টী থাকিলেন।
১৬ বংসর পরে যথন তাঁহারা মুক্তি পাইরাছিলেন, তথন কেবল
৩০০ বারে ক্রীবিভ ছিলেন। অবলিট ৭৮০ অবাস্থিবিক অভ্যাচারে
আগভ্যাগ করেন। এই ঘটনার বিরক্ত হইরা অনেকে বিজ্ঞাহী
হইরা উঠিল। ভরবো আজিখান্ নামে একজন বানীপুর
আগনাকে পার্সিরাসের বংশধর বলিয়া পরিচর দিরা মাকিদনীরায়
নিংহাসন নাবী করিলেন (১৪৯ খ্রঃ পুঃ) এবং ফিলিপাস্ নাম
গ্রহণপূর্বক সিংহাসনে আরোহণ করিলেন। প্রথমে ইনি
অন্যেকাংশে সকলভা লাভ করিয়াছিলেন। রোমক প্রিটর জ্ফেগিটরাস্ ইহার হত্তে পরাজিত হইলেন। কিছ এক বংসর রাজড
না করিতেই মেটালাসকর্ত্তক ইনি পরাজিত এবং বলী হইলেন।

আজিছালের ক্ষণিক ক্লডকার্য্যভার একিরান্গণ উত্তেজিভ হইরা উঠিল এবং স্পার্টা আক্রমণ করিল। কিছ ১৪৭ খং প্র ছুইজন রোমক কমিশনার এই বিষয়ের মীমাংসার ভাল গ্রীসে প্রেরিভ হইল। কিন্ত অবিদৰে করিছ প্রাকৃতি স্থানে বিলোহ ঘটল। স্পার্টা একিয়ানগণকর্ত্তক আক্রান্ত হইল। কমিশনারগণ পদাইরা প্রাণ রক্ষা করিলেন। তথন সেনেট একিয়ান-লিগের বিরুদ্ধে বুদ্ধ ঘোষণা করিলেন, মেটালাস সদৈত্তে গ্রীদে পৌছিলেন, একিয়ান-দেনাপতি ক্রিটোলস যুদ্ধকেত্রে উপস্থিত হইতে সমর্থ হইলেন না। পরে স্বার্পিরা নামক স্থানে ধৃত ও বন্দী হইলেন। তৎপরে ডিরাস্ একিয়ান-সিগের অধি-নায়ক হইয়া করিছ নগরে সৈন্তগণকে স্মর্কিড করিয়া किছुकान युक्त ठानारेरनम । क्लान माधियान कवित्र जनरताथ कतिरागन । ডিয়াস্ পরাজিত হইয়া প্রায়ন করিলেন, অধিকাংল অধিবাসীও প্লায়ন করিয়া প্রাণ রক্ষা করিল। মাত্রিয়াস্ নগরে धारवनशृक्षक अवनिष्ठे शूक्रवशनाक छत्रवाक्रि मृत्य निरक्षण कत्रितनन এবং জীলোক ও বালকগণকে ক্রীডদালরূপে বিক্রয় করিলেন। ভৎপরে তিনি প্রাচীন করিছমগরের বিপুল ধনরত্ব লুঠন করিয়া নগরে অগ্নিপ্রদান করিলেন। করিছ নগরে প্রাচীন পৃথিবীর শিলৈখার্য পরিপূর্ণ অভিতীয় চিত্রশালিকা ছিল। সমস্তই প্রভিয়া ভদ্মত্রপে পরিণভ হইল। ভূবনবিখ্যাত করিছ বিধ্বন্ত হইয়া গেল। গ্রীস স্বাধীনতা হারাইরা রোমকশাসনের অন্তর্ভু জ হইল।

ছানিবলের নির্বাসনের পর কার্থেনীরগণ ২০১ খ্বঃ পূর্বাংক্রের পৰি অপ্রধারী কার্য্য করিরা আসিতেছিলেন। কার্থেকীরগণ লা পিউনিক বুৰ ও রোমের সহিত সন্ধির সর্ভ বজার রাখিয়া কার্থেক্রের ধাংনদাধন (১৫০-১৪০ খৃঃ পুঃ) অনেশীর বিপুখা গৌরবের পুনক্ষার করিভেছিলেন। ভক্ষত ভাঁহারা রোমক সেনেটের চকুংশূল হইবা পঢ়িলেন। সেনেট বৃত্তর হশ ক্ষরণ করিছে লাগিলেন।

মটনাক্রেন নিউমিডিরার রালা মেনিনিনার সহিত কার্থেরীরগণের বিরোধ হইতে লাগিল। কিন্তি রোনের মিক্তরাল ছিলেন।
কলক কেটো কার্থেরকে ধ্বংন করিবার করে স্বিলাম বৃত্ত বোহগার পরামর্শ দিলেন, কিন্তু কেনেট ভারাতে ক্রমত হইলেন না।
কণন কেটোপ্রার্থ ক্ষরেক্রমণ মুক্ত কার্থেরের স্বব্ধা কানিতে
তথার গনন করিবেন। বাংস্টা হন্তান এবং কার্থেরের ক্রম্বা
লেখিরা কেটো গারেকালার ব্যথিত হইলেন এবং কার্থেরধন্যসের
নিবিত্ত রোমবানীকে প্নঃ প্রঃ উত্তেবিত করিতে লাগিলেন।
স্বিশ্বের রোমবানীকে প্নঃ প্রঃ উত্তেবিত করিতে লাগিলেন।

কার্থেনীরগণ রোনে দৃত প্রেরণ করিয়া সেনেটের সমত্ত
কথার সংগতি প্রধান করিল এবং সেনেটের আনেশাহসারে

০০০ সরাত্ত ভাগের ব্যক্তে প্রতিভূপরণ রোনে রাথিতে
সরাত্ত হইল । সেনেট তাহাতেও তুপ্ত হইলেন না, পুনরার
হলাবেবণ করিতে লাগিলেন এবং তাহারা কার্থেজে গমন
করিয়া কার্থেজীয়িরিগকে ভাহাদের সমত্ত জন্ত্র পপ্র রোনকবিগের
নিবিরে সমর্পণ করিতে কহিলেন। কার্থেজীয়গণ ভাহাতেও
সন্মত হইল এবং ২০০০০ জন্তুলর ও ২০০০ প্রাচীরভঙ্গ ও
নগলাবরােথ করিবার এক্লিনানি সমত্তই রোনকবিগকে সমর্পণ
করিল। ভাহারা ভাবিল রোমকগণ ভাহাদের জন্তুলারি
লাইয়াই কান্ত হইবেন। কিন্তু রোমকগণ তথন কহিলেন—
"ভোময়া কার্থেজনগর পরিত্যাগ করিয়া অভ্যন্থানে যাইয়া বাস
কর—কার্থেজ বিধ্বত হইবে।"

নিৰ্দোষ কাৰ্থেজীয়গণ তখন হতাশ ও নিৰুপায় হইয়া বীরের ম্পার মরিতে সম্বন্ধ করিল। অবিলব্দে নগরছার রুদ্ধ করিয়া তাহারা সমস্ত ইতালীয়দিগকে নিহত করিল এবং এই অস্তার শক্রর স্থিত যুদ্ধ করিতে ক্রন্তস্কর হইয়া অদেশবৎসল কার্থেনীয়দিগকে উত্তেজিত করিতে বাগিল। কর্মকারগণ দিবারাত্র অন্তনির্মাণ করিতে লাগিলেন, রমণীগণ কেশচ্ছেমন্পূর্বক ধছকের গুণ মিশ্বাণে নিরতা হইলেন, আবালর্ড্বনিতা খদেশবাংসলাের নোষ্ঠময়ত্ত্ৰে দীক্ষিত ও প্ৰধোদিত হটৱা অবিৱাম অন্তৰিকা করিছে লাগিল। কার্থেজ যেন একটা প্রকাণ্ড আর কার্থানার পরিবস্ত হইলাঃ এগরবাদী ৭০০০ নরনারী বৃদ্ধশিকা করিতে লাগিলেন ৷ ইমিলিয়াস্ পলাসের ব্যেতপুত্র কর্পেলিয়াস্ সিপিও সলৈত কার্বেকে ধানন করিলেন। ছাস্ট্রেল নামক এক নিৰ্মাসিত সেনানী কাৰ্থেকীৰ সৈজের অধিনারকতা প্রচণ कतिराज्य । कार्थजीवितरात इन्हेरी जाकमान त्रामकरेना कित-ভিন্ন হইল, কেবল সিপিওয় রূপকৌশলে সৈম্ভবল ধ্বংসমুধ হইতে ক্লকা পাইল। সিপিও মিশর অধিকার ক্রিয়া কার্থেজের শান্তাদির সংগ্রহ-পূথ অবরোধ করিনেন। সার্থেরীরগণ অধিতীয় ৰীৰূদ্ধে আত্মৰকা করিতে লাগিল এবং অবিলাৰে ৫০ ৯ বুণভৱী নির্ম্মাণ করিয়া অলপথে। সমরসজ্ঞা করিল। তক্ষপন্ত ছোমকগণ ভীত হইবেন, সিপিও প্রমাদ গণিলেন। অবলেবে ও দিনের অবিশ্রাক্ত যুদ্ধের পর রণতরীসমূহ বিন**ট হইস**া ভবন রিগিও मुख्याल कार्यक क्यादाध कवित्तम व्यवः द्यामकरेमक ब्राधिव অঙ্কারে কথন-বন্দর অধিকারপূর্বক কার্থেকের উচ্চ প্রাচীর উল্লক্ষ্য করিব। নগর মধ্যে হানরবিদারক দুল্লের অভিনয় হইতে লাগিল। থাঞ্জাভাবে অধিবাদিগণ শ্বমাংস ভক্ষণপূৰ্বক রোমকদৈন্তের হল্ক হইতে নগররকা করিতে লাগিল, সর্বতেই শন্ত্ৰপদ্ধের বনংকার ও ভীষণ যত। প্রত্যেক রাজপথে সপ্রতল প্রাসাদের কলে কলে কার্থেকের নরনারী অভূতপূর্ব অনুষ্ঠচর অন্তৰ্কীড়া ক ব্ৰয়া প্ৰাণভ্যাগ ক্রিভে লাগিল। বহিন লেলিহান জিহবা শিরেশ্বের্যাবিমণ্ডিত স্মচাকভাস্কর্যাবিশোভিত সহস্র সহস্র শ্রেণীবন্ধ সৌধমালা ভন্মসাৎ করিয়া ফেলিল ৷ নরমারীর বক্ত-লোতে দমুদ্র পর্যান্ত ভীষণ রক্ততরঙ্গে প্রবাহিত হইতে লাগিল। দিপিও অঞাপূর্ণ নরনে এই ভয়াবহ দুখা দেখিয়া হোমারের ইলিয়াড হইতে শ্লোক আবৃত্তিপূর্ব্বক ("সে দিন আসিবে যথন পৰিত্ৰ টুয় বিধ্বস্ত হইবে") কহিতে লাগিলেন, 'হার! একদিন রোমের ভাগোও এই অভিনয় ঘটিবে।।' ৫০০০০ कार्ट्सबीत नवनात्री मश्चमिन व्यानिक्नांश हरछ कविश সিপিওর নিকট জীবন ভিকা করিল। সিপিও তাহাদিগকে ক্রীতদাসরূপে বিক্রম করিলেন। হাস্<u>ড্</u>রল ইন্ধাদেশিয়াদের মন্দিরে আত্মরকা করিতে লাগিলেন। পরে তিনি ভীত হইর। দিশিওর নিকট আত্মসমর্থণ করেন। কিন্তু তাঁহার বীরণত্নী নিভীক্ষদয়ে অন্তের শিশুসন্তানদিগকে একে একে বৃহিমুখে আহতি দিয়া শেষে আপনাকে পূর্ণাছতি দিয়া স্বদেশবাৎসল্য-যজ্জের পরিসমাপ্তি করিয়াছিলেন। এই সাধ্বীরমণী পতিপুত্রের শোকানলে দ্বগ্ন হইয়া অগ্নিতে জীবন বিস্ক্রান করিবার পূর্বে রোমের প্রতি যে অবস্ত অভিসম্পাত করিয়াছিলেন, ভাহা ৫০০ শত বংসর পরে কলিয়াছিল। এই প্রকারে ঐত্বর্যাশালী বিশাল কার্থেক মহাকাশানে পরিণত হইল। অভাপি ভাছার ধ্বংসাবশ্বে দর্শক্ষিগকে সেই অভ্ততপূর্ব ভরাবহ ঘটনার ভীষণ-চিত্ৰ শ্বরণ করাইয়া দের।

১৪৬ খৃ: পৃ: কুলাইমানে কার্থেক বিধ্বস্ত হইল। সিপিও রোমে প্রভাগমন করিয়া মহাসমারোহে বিশ্বরোৎসব সম্পন্ন করিবেন এবং তিনিও হানিবলক্ষেতা সিপিওর স্লায় আফ্রিকেনান্ উপাধি ধারণ করিবেন। অবশিষ্ট কার্থেকরাক্য আফ্রিকা নামে রোমক-শাসনের ক্ষরীন হইল। প্রাচ্যবাদিক্যের প্রধান ক্ষেক্ত করিছ এবং প্রাতীত্য বাদিজ্যের নিগর ভার্বেজ এই ছই বাদিজ্যপ্রেমান নগর রোমকগণকর্ত্ব বিদাই ছইল। এই সমর হইতেই
করাম বিবিত্তনেশ সকলে সারাজ্যের স্ত্রপাত করিতে লাগিলেন।
এই সমরে স্পোন্দেশের শাসনকর্তা সেম্পোনিরাস্ প্রাভাসের
সক্ষরহার ও স্পাসনে তথার পাত্তিমর শাসন প্রবর্তিত হইরাছিল।
কিন্ত ১৫০ বাং গৃং সেগ্রেডা নগরের অধিবাসিগণ নগর প্রাচীর
নির্মাণ আরক্ত করিলে রোমকগণ ভারতে
শ্বেরীর মুছ
(১৫০-১০০ বাং গুং) বাধা প্রাণান করিলেন। ভক্ষর স্পোন

वस्ववंगानी मृत्यत স্ত্রপাড ইহল। কেপ্টেবেরিরগণ সেগেডার পকাবলখন করিল। কালবিয়াস নোবিলিওর বৃদ্ধে তাহাদিগের কিছু করিছে পারিলেন না। পরে ক্লডিরাস মার্সেলাস ভাহাদিগকে পরাজিত করিরা সন্ধিতাপন তৎপরে সালপিসিয়াস গলবা লিউসিটানিয়া আক্রমণ করিলেন, কিন্তু তিনি স্পেনিরার্ডগণকর্ত্তক বিশেষরূপে পরাজিত হইলেন। পরে লিউসিনিয়াদ্ লুকালাদ্ তাঁহার সহথোগী হইরা পুনরার লিউসিটানিয়া আক্রমণ করিলেন। কিন্ধ তাহারা সন্ধির অন্ত গল্বার নিকটে দূত প্রেরণ ক্রিলেন। তথন গলবা লিউসিটানিয়দিগকে অভয়দানপূর্বক সপরিবারে তাঁহার নিবিরে আদিতে আদেশ দিলেন। তাহারা তাঁহার কথার বিশ্বস্ত হইয়া সপরিবারে আগমন করেন। শিবিরে পৌছিবামাত্র গলবা বিশ্বাস্থাতকতাপূর্ব্বক অমান্থবিক অত্যাচারে তাহাদিগকে সপরিবারে তরবারিমুথে প্রেরণ করিলেন। বছসংখ্যক নির্দায়রূপে হত হইল। কেবল ভিরিমেখাস ও অফ্টান্য কএকজন পলাইরা প্রাণরক্ষা করিল। ভিরিয়েথাস্ রোমক-দিগের এই নুশংসব্যবহার ও বিশাস্থাতকতার প্রতিশোধ লইতে বন্ধপরিকর হইলেন। তিনি প্রথমে মেবপালক ছিলেন, পরে ডাকাতি করিরা জীবিকা নির্মাহ করিতেন। কিন্তু রোমকদিগের এই অত্যাচারে তিনি ছাদেশবাংসলো প্রাণোদিত হইয়া উঠিলেন। লক লক ব্যক্তি তাঁহার অধীনে যুদ্ধ করিতে প্রস্তুত হইল। ভিরিরেখাস্ রোমকনিগের সহিত প্রকাশ্র বৃদ্ধ পরিত্যাগ করিয়া খণ্ড বৃদ্ধ আরম্ভ করিলেন, তাঁহার বিক্রমে রোমকলৈর বছবুদ্ধে পরান্তিত হইল। পরে ১৪৫ কুঃ পুঃ রোম হইতে কেবিয়াস্ মান্তিমান তাহাদের নহিত বুবার্থে প্রেরিত হইলেন। তিনি ভিরিরেথাসকে বিশেষরূপে গরাজিত করিলেন। এই বৃদ নিউমান্টিয়ান বুছ নামে খ্যাত।

বাহা হউক, ভাহাতেও বৃদ্ধের বিরাম হইল না, একদণ রোমক-সৈত উত্তর-স্পেনে কেন্টিরিরদিপের সহিত এবং অত দল দক্ষিণ-স্পেনে ভিরিরেখান্ ও লিউনিটেনিরার সৈতের সহিত বৃদ্ধ ক্রিতে লানিলেন। ১৪১ বৃং পৃঃ ভিরিরেখান কেবিরাসক

धक्की विकित्करि वह कविहा विकित्तन नथ कह कविरास । **क्विताम् चेनामाचत्रहीम स्वेता विविद्यानाएक विवसावकारम** শীকারপূর্বক সন্ধি করিয়া পরিত্রাণ পাইলেন। কিছু সেনেট धारे निक बाक कतिराम मा। शूनवाद वृद भावक व्हेन। অবশেবে ভিরিয়েখালের বৃভাতে শোমিরার্ভগণ হীসকল হটরা শড়িশ 🕴 তৎপত্নে জুনিরাণ জ্রটাস্ এই সক্ত্র স্থানে শাক্তিয়াপন ক্রিণেন। কিছ কৈশ্টিবেরিরনিগের সহিত, তথন্ত বুচনের निवृत्ति वरेन ना । ১৩१ सूर शूर रहिनिवान माननिमान मिखेया-কীইন সৈত্ৰকৰ্ত্বৰ বেটিত হইলেন, এক গতান্তৰহীন হইয়া ভাহাদের সহিত সন্ধি করিলেন। কিন্তু সেনেট এই সন্ধি জগ্রাস্থ করিলেন। অবশেষে ১৩৪ খুঃ পূঃ সিশিও আক্রিকেনাস্ লেনে প্রেরিড হইলেন। দিশিও ভাহাদিগের নগর অবরোধ করিলেন। ম্পেনীরলৈনা ভীমবিক্রমে নগর রক্ষা করিতে লাগিল। অফলের পাছাভাবে বহুসংখ্যক লোক শ্ৰমাংস খাইরা জীবনধারণ করিল এবং পরিশেবে আত্মসমর্পণ করিল। সিপিও মগরপ্রাচীর সমস্থমি করিরা অধিবাসীদিগকে দাসরূপে বিক্রন্ন করিলেন।

নিউমান্টাইন যুক্ষের সমরে রোমে ভীষণ সমাঞ্জ-বিপ্লবের স্ত্রপাত হইল। পূর্ব্বে উক্ত হইরাছে যে, ক্রীতদাসের প্রায়ঞ্চাবে রোমের ক্রবক ও প্রমঞ্জীবি-সমাজ আগঃ-क्षाच्या मामगुष्क বোতে ু পতিত হইয়াছিল। (308-308 4: 9:) পক্ষান্তরে ক্রীডদানগণও নির্দর ব্যবহারের অধীন হইরা ধ্বংসপ্রায় হইতেছিল। বিভাজিত দাসগণের জীবিকার্জনের কোনরূপ উপার ছিল না। সিসিলিতে দাসসংখ্যা সর্বাপেকা অধিক হইমাছিল। তথার এরা প্রদেশের ভূস্বামী ডেমোফিলাস নাসগণকে অত্যস্ত নির্দর্রূপে শান্তি দিয়া-ছিলেন। ভাহাতে প্রার ৪০০ ক্রীভদাস ইউনাস নামক এক সিরীয় ক্রীতদাসের নেতৃত্বে মিলিত হইয়া এরা আক্রমণ ও ভীবণ অত্যাচার সহকারে নগরবাসিগণকে নিহত করিল। ইউনাস মন্তকে রাজসুকুট ধারণ করিয়া সিংহাসনে আরোহণ করিলেন। সংবাদ পাইয়া ৭০০০ দাস আসিয়া তাঁহার দলপুষ্ট করিল। রোমক প্রিটরগণ একদল সৈম্প্রসহ ভাহারের বিরুদ্ধে ধার্বিত হইলেন. কিছ দাসগণের বিক্রমে সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইলেন। অবশেষে ১৩৪ भू: भू: क्कान कान्छित्रान् क्रिकान् छाहात्तत्र नहिष्ठ युक्तार्थ প্রেরিত হইলেন। কিছ তিনি বাসগণকে পরাজিত স্বরিতে क्षमभर्व इंडेरनम । क्षवरमस्य ५७२ थुः शूः क्षमण मिशिनोम वृत्क গমনপূর্বক টরোমেনিরাম্ এবং এরা আক্রমণ করিরা বিজোহী দাসগণকে পরাজিত করিলেন। ২০০০ বাস হত এবং অবশিষ্ঠ কুশাবাতে বিনষ্ট হইল। ইউদান বলী হইরা রোমে এপ্রবিত श्रेरणम । किन्द्र शिवास्था छ। होते मुक्ता हेव ।

ট সমরে রোম অসিরাখন্ডের এক আকাত রাজ্য লাভ করিলেন। পার্থানাসের হালা ক্ষমান্ত ক্রিলোমেটর অপুরকো-বহার সৃত্যকালে আপনাম নিবলৈক্ষাত 🛎 বিপুদ্ধ বনভাভার त्त्रारमत्र मारम शामनाम कतिक विरामन (५०० क्र. शूर)। किन्ह তাহার পিতা অবিটোমিয়াল অবিবাহে বিবাহ লোকলোগ উপস্থিত বরিলেন। শ্রোবক কলল নির্দিনাল জেলাস কথকর্ত্তক পরাজিত थ निरुष्ठ रहेरतम् (३०० कः गृहः)। किन्द शत बद्दमहः चत्रित्हे।-निकान कार्यक देशकाईक नवाकित व क्कीकर क्षेत्रमा कारा পাৰ্থাৰ বাৰ্য এনিয়া নামে ছোময়ালের অভ্যত কটন (>२३ पः गः)। वह नगरा इरतान, वनिया । । बाक्षिका वह ভিন নহানেশে রোমের রাজাপরিধি প্রদারিত হইল। এই প্রভাও রাজ্য একণ ১০টা প্রাবেশে বিভক্ত হইল ৷ ১ নিসিলি ৷ ২ সাডি নিবা ও কাৰ্নিকা। ৩-৪ স্পেনের চুই প্রবেশ। ৫ গলিয়া নিবাল-निमा । ७ माकिनमित्रा ७ व्यक्तिया । १ हेन्नियिकाम । ৮ जाकिका (कार्यक्र)। > এসিরা (नार्गायाम)। > । ট্রাননালপাইন গল বা প্রভিনসিয়া ৷ রোমের সাধারণতত্র এই বিশাল রাজ্যলাভ করিলেন বটে, কিছ ধনবৃত্তির সলে সঙ্গে বিলাসবৃত্তিতে রাজ্য-সমুদ্ধি নষ্ট হুইছে লাগিল। রোমের রাজ্যলাসনবিবরে আভ্য-স্তরিক বিপ্লব সমূখিত হইতে গাগিল। রোমবাসী বে স্বদেশ-বাৎসদ্যপ্রভাবে বিধিক্ষর করিতে সমর্থ হইরাছিলেন, একণে সেই ধর্মা ভোগবিলাসে পরিণত হইল। তাঁহারা ত্যাগের ধর্মা ছাড়িয়া ভোগের ধর্মে রভ হইলেন। বীরব্রড রোমকগণ অসি ছাডিয়া বাঁলী বাজাইয়া গান করিতে শিখিলেন।

রোমের এই বিষম অস্তর্বিপ্লবের সমর টাইবেরিরাস ও কেয়াস প্রাকাস বিশেষ প্রাসিদ্ধি লাভ করিয়াছিলেন। এই রুই সহোদর বিখ্যাত নেত্যোনিয়ান গ্রাকানের পুত্র এবং হানিবলজেতা নিপিও आखिरकनारमञ्ज सोरिक। देशांसत्र बनमी क्विंत्रा श्रुविमत्क সর্বতোভাবে সুনিক্ষা প্রদান করিরাছিলেন। তব্বস্ত গ্রাকান ভাতৰর ত্বামীন্তন রোমক ব্যক্তমহাজে শিক্ষা ও সভাডোর উক্ত नमरी थाल स्टेबाहित्तन। टेटेंग्लब ब्लाई है।टेरविवान গ্রাকালের গুণে মুর্ম হইরা সেনেটের প্রধান সমস্ত এপিরাস ক্লডিরাস উহার সহিত খীর ক্লার বিবাহ দিরাভিলেন। আবার টাইবেরিরানের ভাগনী নেত্যোনিয়ার সহিত কনিষ্ঠ নিশিও पांजिरकनारमत विवाह हरेबाहिन । क्वारा धरे जाउनक निका ও কৌনীয় উভৰ স্পাৰ্কেই হোনের স্বাজে শ্রেষ্ট বলিয়া অভিহিত হটতেন। টাইবেলিয়াস[্]১৩৭ খ্য**ুণা কোনেট**র পরে নিতুক হন। এট্রিবার মধ্য দিয়া বাভারতি শমরে তিনি রোমের ক্রবক সম্মান্তবের চুর্দশা ও অধ্যপত্তন অবলোকন করিয়া ভাষার সংখ্যারে अरमानियन करतम । जनसभारत छिमि ३७७ कु: शुः के विकास

नाम बार्च रहेता छक नाम निवृक्त रून । किनि क्यांत्रिनी ভাষার ভ্রম্ভুলের চুক্না সেনেটকে আনাইজেন এবং ১৯৭ খ্রঃ गुर व्यवसिंख निमिनियान वा "कृषिनक्कीय भारेन" नःसाद कतिया বিষয়ক করিছে জার্মনা করিলেন। সেনেটের বিজ্ঞাও দেশ-হিতিৰী সভাগৰ এবং নাধাৰণ ব্যক্তিবৰ্গ ভাৰাৰ প্ৰভাবিত আইনের অন্নােচন করিলেন, কিছ সেনেটের বে সক্ষ সভা कृषाशिक्षमीत महिक मन्त्र क अवः मःवात्रविद्वारी हिरमन, জাহারা টাইবেরিরালের বিরুদ্ধে আপত্তি উত্থাপ্রনের নিমিত্ত অক্টে-ছিলাস নামৰ এক সৰত নিবুক্ত করিলেন। অক্টেভিরাস प्रेरियदिवारमञ्ज मध्यारवद विकास मधावमान स्टेरमन । जनन টাইবেরিয়াস অক্টেভিয়াসকে প্রচাত করিতে মনত করিলেন এবং ড**ভান্ত** সাধারণের 'জোট' বা সন্মতি গৃহীত হইল। ৩০টী জাতির মধ্যে ১৭টা প্রথমে অক্টেভিরাসের পরচ্যুতি পক্ষে ভোট দিল ৷ পরে অভাদশ ভোট অক্টেভিরাসের বিহুদ্ধে দীছাইশ। তথন অধিক ভোটের বলে টাইবেরিরাস সেনেটের উপবেশনমঞ্ হইতে অক্টেভিয়াসকে বলপুৰ্বক স্থানান্তরিত করিতে **আছেল করিলেন। ই**হাতে গ্রাকানের শত্রুপক্ষ অভান্ত উত্তেজিত হইরা উঠিল এবং তাঁহাকে রাষ্ট্রবিপ্লবের পক্ষপাতী বলিয়া অভিযুক্ত করিতে চেঠা করিল।

বাহা হউক "ক্লবিসম্বন্ধীর আইন" তৎকালে প্রবিষ্ঠিত হইল। তথন গ্রাকান প্রস্তাব করিলেন বে, পার্গামানের রাজার দানপত্রে রোম বে বিপুল ধনভাঞার প্রাপ্ত হইরাছেন, ভাষা ক্রবক্লের সাহায্য এবং ক্রবিভাগুরিভাপনের জন্ত ব্যবিত হউক। এইক্লপে প্রাকাশ সেনেটের সভাদিগের অধিকারে হতকেপ করিলেন। প্রদেশশাসন এবং কোবাগারের ব্যবস্থা সম্পূর্ণরূপে তাঁহাদের বিধিবদ্ধ অধিকার বলিরা বিষেঠিত হইত। কিন্তু প্রাকালের এই প্রান্তাবে সমান্ত ধনিসম্প্রদার বিরক্ত হটরা উঠি-লেন। এদিকে প্রাকাদের ট্রিউন পদের সময় শেব হইবার केनळम हरेन. किन्र किमि नदक्षी वरमददर सङ्घ आर्थी स्टेरनन । ক্ষিত্ৰ ধনিগাণ চুইবংসৰ উক্ত পাৰে থাকা আইন-বিৰুদ্ধ বলিয়া খোর প্রতিবাদ করিতে লাগিলেন। টাইবেরিয়ান খীর পুত্রকে কোলে করিয়া সাধারদের সহাত্ত্বতি প্রার্থনা করিলেন, সকলে ভাঁহাকে সাহায্য করিছে ক্রভিলন্ত হইল এবং পাছে ভাঁহার জীবন হানি হয়, এইজন্ত সকলে সমস্ত রাত্রি উচ্চার বাটী ক্লো করিতে লাগিল। পর দিন ভূপিটারের মন্বিরের সমক্ষে কাপি-টোলে পুনয়ার বিচার-স্মিভির অধিবেশন কইল। সিপিও নেলিকা টাইবেরিয়ানের প্রাপনাথের করু বছবর করিছে লাগি-লেন এবং লেনেটের সংক্রিগকে উত্তেজিক ভাবে করিতে जानितान.- वाकान वाकानात्कर तही विश्वतक्त । बाहात

পবিত্র সাধারণতত্ব রক্ষা করিতে চাহেন, ভাঁহারা আমাক্ষে অনুসরণ করুল।" তাহাতে দেনেটের সভ্যগণ ও অভিজ্ঞাতগণ সক্ষাক্ষি হৈনেটে গৃহের বেকের পারা ভঙ্গ করিরা ও লাঠা লইরা টাইবেরিরানের পক্ষর সক্ষাক্ষ করিবান। ট্রিকিউনের সভ্যগণ টাইবেরিরানের সহিত পলারনপূর্বক কুপিটারের মন্দিরে আত্মর লইলেন। কিন্তু মন্দিরে অবেশকালে টাইবেরিরান্ পড়িরা পোলন এবং উথানের সমরে শক্ষণক লাঠার আবাতে তাহার মাধা তালিরা দিল ও তৎক্ষণাৎ তাহার মৃত্যু হইল। তাহার পক্ষীর ৩০০ ব্যক্তি লগুড়াবাতে গতাত্ব হইল। তাহারের সভ্যের টাইবার নদীর অলে নিকিপ্ত হইল।

এই প্রকারে রোমে সর্বাপ্রথমে আত্র্যাতিক বিবাদ বা গ্রহ-বছের পুরপাত হইল ৷ ব্লোদের রাজাকে নির্বাসন করিবার পরে এরণ ঘটনা পূর্বে আর উপস্থিত হয় নাই। রোমের অভিছাত সম্প্রদার এইরূপে মরলাভ করিলেও তাঁহারা প্রাকাস-প্রবর্ত্তিত "এগ্রেরিরান" আইন রহিত করিতে সাহনী হইলেন না। প্রাকাসের পদে কার্বো নামে একজন নিযুক্ত হইলেন। এই সমরে গ্রাকানের ভগিনীপতি কনিষ্ঠ দিপিও আদ্রিকেনাদ স্পেন হইতে প্রত্যাগত হইরা স্থানকের মৃত্যতে বিশেষ সম্বোবপ্রকাশ করিলেন। ভালতে সাধারণে ভাঁছার প্রতি বিরক্ত হইল। সিপিও একণে সাধারণের হিভার্থে প্রবর্ত্তিত এগ্রেরিয়ান আইনের বিপক্ষতা করিতে লাগিলেন এবং প্লিবিয়ান সম্প্রদারের অধিকারে হস্তক্ষেপ করিতে লাগিলেন। প্রাকালের পদত্ব কার্বো কোরামে দাঁড়াইরা তী বভাষার দিশিওকে প্রজাপক্র বলিরা তিরুছার করিলেন। দিপিও পুনর্কার প্রাকাদের মৃত্যুতে আনন্দ প্রকাশ করিবামাত্র সন্মিলিত প্ৰজাবৰ্ণ উত্তেজিত হইয়া বলিল, "অভ্যাচারীকে দুর করিয়া দেও"। পরদিন প্রাতঃকালে দেখা গেল, সিপিওর সূত্রনহ শ্যান পতিত রহিরাছে, কার্বো সিপিওর আগসংহার করিরাছেন বলিয়া অভিজাতগণ সন্দেহ করিতে লাগিলেন। কিন্তু এই সংবাদে ধনিসম্প্রদারণণ ভীত হইলেন। স্থার্থো এই সমতে সমত ইভালীবাসীকে সভানিৰ্বাচনে বশ্বতি দিবার অধিকার প্রদানে কডসভর হইবে অক্সান্ত ভানের অধিবাসীরা ১২৬ খু: পু: রোমে সমাগত হইল। কার্বোর প্রকাব বার্থ ক্রিবার অভিপ্রারে ট বিউন স্থানিরাস পেলাস রোমের প্রবাসি-গলকে অবিদৰে ব্যেষ পরিত্যাপ করিয়া বছত যাইছে আদেশ করিলেন। কিন্তু টাইবেরিয়ান আকানের কনিঠগ্রাভা কেয়ান श्राकाम देशा अधिवाप स्तितमा । जिन, सार्थ धवर ঠাতাবের অঞ্জ বন্ধুসৰ ইভালীবাসায় পঞ্চে নির্বাচনাধিকার অলানে ৰছণ্ডিক্য খইলেন ৷ পেলাস্ ইহার প্রতিভূলভাচরণ ভারতে লাগিলেন দেখিয়া ইতালীবাসিগণ উত্তেজিত হইয়া উঠিল

এবং ফ্রেকিনি নামক স্থানের অবিবাসীরা অন্তব্যরণ করিছ। কিন্তু প্রিটার প্রশিমিরাস্ অবিগবে সেই বিজ্ঞান্তব্যন ক্রিলেন (১২৫ বঃ পুঃ)।

এই সময় इंटेंट्ड गांधात्रश्य बड़ क्यांग आकारमत्र मृष्टि चाकडे रहेन । किनि नार्किमिनान नानत्न निश्च वार्किन करेंड कु পুঃ অক্তাৎ রোমে কিরিয়া আসিলেন এবং ১২৩ খুঃ পুঃ টি বিউন নিযুক্ত হইলেন। তিনি সাধারণের বিভার্থে সেবেটের ক্ষতা ধর্ম করিয়া সমাজ ও রাজ্যপাসনের আমৃল সংভারে मरमामिरवर्ग कतिरमम । विक्रमारगत विविधित वक्त ध्वर स्ताम ও রোমবাসীর হিতার্থে কেরাস প্রাকান অনেকণ্ডলি আইনের পাও নিপি প্রস্তুত করিরা ভাষা বিধিবত করিয়াছিলেন। তিনি খীর প্রাভার এপ্রেরিরান বিধি পুনঃ, প্রবর্তিত করিরা সাধারণের অভ্যন্ত প্ৰিৰ হইবা উঠিলেন। ভজাত ভিনি ১২২ বৃঃ পুঃ পুনরার টি বিউন নিবুক্ত হইলেন। এই সমূৰে কালভিয়ান ক্ৰেকান কলল নিযুক্ত হইরা কেরানের সহারতা করিতে লাগিলেন। তাহাতে কেরাস আকাস সমস্ত ইতালীবাসীকে রোমের স্লার নির্মাচনাধিকার প্রদান করিলেন। সেমেট গ্রাকানের প্রতিপত্তি দেখিরা তাঁহার বিরুদ্ধে বিভিয়ার ভাষার নি নামক একজন ধনী সদস্তকে নিযুক্ত করিবেন। ভাসাস প্রথমে গ্রাকাসের মভাত্ববর্ত্তী ছইরাই কার্য্য করিতেছিলেন। কিন্তু কেরাস্ আফ্রিকার উপ-নিবেশহাপনে পুমন করার, অবসর বুঝিরা ডাসাস অনেক লোককে কৌশলে কেয়াসের বিহুদ্ধে ইতেজিত করিলেন। কেয়াস প্রাকাস বধন রোমে ফিরিলেন, তথ্ন আর পূর্বের ছার সাধারণের সহামুভতি পাইলেন না। তিনি e তাঁহার বন্ধ ক্লাকাল পুনৰ্বাত্ত ইংৰাজ চুঠা করিলেন, কিছ তাহাতে কুতকার্য্য হইদেন না। তাঁহার শত্রণক প্রাথান্তলাভ कतिन धरा कनान नियुक्त रहेन। ३२३ थुः शुः क्यारनय গক্তপক প্রাধান্তলাভ করিরাই গ্রাকাস-প্রবর্ত্তিত জাইন সকল রহিত ক্ষ্মিক শারিলেন এবং সেনেটের অভিকাত সভাগণ গ্রাকাস এবং ক্লাকাসকৈ সাধারণভৱের শত্রু বলিরা ঘোষণা ক্রিলেন। এছিকে কললবর ডিটেটরের ক্মতালাভ করিবাই প্রাকাস ও ক্লাকালের বিরুদ্ধে সাধারণকে উত্তেমিত করিলেন। ক্লাকান্ও স্থবোগী প্ৰাকানের সহিত নিলিত হইবা অক্লধারণ করিলেন। এই প্রকারে গৃহবিবাদের প্রপাত হইব। তথন কুলাব্যু স্পত্নে আভিন্টাইনে ক্লাকান্তে আক্রমণ ক্রিডে অগ্ৰসৰ হইদেন। ক্লাকাদ খীৰ পুত্ৰকে স্থিত্ন কল লেনেটে পঠোইলেন। কিছু সেনেটের সম্ভাপণ জীহাকে বধ করিলেন। ভংগরে কললগণের আক্রমণে স্লাক্ষান হ'ড হইলেন এবং প্রাকান পৰাৰণ সৰহত্যা হইছে বিশ্বত হইলা একজন বিশ্বত কডোৰ

জর্গান্ত করিরাও যুদ্ধার্থ রোমে অগ্রসর হইল না, কারণ দেশ জর করা তাহাদের উদ্দেশ্ত ছিল না । কিছু সম্প্র ইতালীবাসী উক্ত যুদ্ধের সংবাদে ভরে কম্পিক হইকে লাগিল।

রোমকগণ এই বিপদের সমনে মেরারাসকে ভূডীরবার কলল নিযুক্ত করিলেন (১০৩ খুঃ পুঃ)৷ কিন্ধ বাবাবরগণ ইতালীর वित्र अ**ध्यान ना रहेना त्यादन अदिन क**िन्न व दिनश्वराज প্রবৃত্ত হইন। এদিকে মেরারাস্ এক নৃতন সৈঞ্জন সংগঠন করিরা ভাষাম্বিগকে স্থানিকিত করিতে লাগিলেন এবং সৈত্ত-विकारन विविध मध्यात अवर्कन कतिरमन । भरत ১०२ थ्वः भृः মেরারাস্ ৪র্থ বার কন্সল নিযুক্ত হইলেন। এই সময়ে সিখি,গণ পুনরার গলপ্রদেশে বাত্রা করিল। মেরারাস সসৈতে তথার উপস্থিত হইলেন এবং এই স্থান স্থাক্ষিত করিবার অভ ভূমধ্য-সাগর হইতে এইস্থান পর্যান্ত একটা থাল খনন করাইলেন। যাবাবরগণ চুইদলে বিভক্ত হইরা ইতালী বাতা করিল। টিউটন-সৈম্ম মেরারালের অভিমুখে ধাবিত হইল। একুই সেকুসটিআই নামক স্থানে ভীবণ যুদ্ধ সংঘটিত হুইল। মেরায়াসের স্থাশিকিত সৈক্লাল পূৰ্ব্বে গুপ্তভাবে লুকারিত ছিল। টিউটনগণ সেইস্থান দিয়া গমনকালে ভীমবেগে রোমকদৈক্তক তাক্রান্ত হইল। নৈদাখলুর্য্যের প্রথর কিরণে অসভাগণ বৃদ্ধ করিতে সমর্থ হইল না। নতুবা মেরায়াস সনৈক্ত বিধ্বস্ত হইতেন। রোজের উত্তাপে টিউটন সৈত্র পলায়ন করিল। তথন রোমকসৈত্র তাহাদিগকে বীভংসভাবে আক্রমণ করিয়া সংহার করিতে লাগিল। যাহারা অবশিষ্ট থাকিল, তাহাল্পাও অস্ত্রাখাতে আত্মহত্যা করিতে লাগিল। গোলকটম্ব ভাহাদের রমণীগণ পতিপুত্রের পরাজয় দর্শনে শাণিত আন্ত্রে শিশুসন্তানদিগকে সংহার করিয়া আত্মহত্যা করিতে লাগিল। নরশোণিতের স্রোভ বছকোশ-দূরবত্তী ভূমধাদাগরে যাইয়া मिनिङ इटेन। त्मत्रात्रीन् युक्त अन्न कतिन्ना निविदन किनियन, এমন সমরে অধারোহী দৃত আসিয়া সংবাদ দিল বে, তিনি ৫ম বার কলল নিযুক্ত ইইয়াছেন।

এনিকে সিখিনাণ বজালোতের জার আরস্ পর্মত হইতে
ইতালী অভিমুখে বাবিত হইল। তাহারা টিউটনগণের ধ্বংসবার্তা
অজ্ঞাত থাকার তাহাদের সহিত মিলিত হইবার আশার মিলানের
মধাবরী ভার্সেলি নামক ছানে শিবির সন্নিবেশ করিল। ১০১ খৃঃ
পৃঃ ৩০এ জুলাই লোকভরম্বর যুদ্ধ উপস্থিত হইল। মেরারাসের
কূটকৌশনে সিখিনা পারাজিত হইল। তাহাদের ১৪০০০ সৈল
মণক্তেরে ধরাশারী হইল এবং ৩০০০০ সৈল বন্দীরুত হইরা
ক্রীভ্যাসরূপে বিক্রীত হইল। কিছু শোর্যাশালিনী সিখি রম্পীগণ
ভাহাদের পভিপুত্রের জার বন্দী হইল না। ক্রিক্র শাণিত
ছুরিকাবাতে লক্ষ্ শক্ষ রম্পী আছহত্যা করিল। মেরারাস্ এই-

রূপ অসামান্ত প্রতিভাবলে এবং অভ্তপূর্ব রুশন্দৌশলে রোমের সোভাগ্য-পর্যাকে রাহ্যাস হইতে রক্ষা করিবেন। রোমবাসী বেবারাধনাকালে তাঁহার পূলা ও তর্পণ করিছে বিশ্বত হইল না। তিনি রোমের ভৃতীর উদারকর্তা বলিয়া লোকসুথে কীর্তিত হইলেন। পরে মেরারাস্ অপূর্ব আড়বরে বিয়াট সমারোহে বিজরোৎসব সমাধাপূর্বক গৌরব দৃশুচিছে রোমে প্রবেশ করিলেন এবং ৬৯ বারের ক্ষন্ত কলল নিযুক্ত হইলেন। ইতঃ-পূর্বে এত সন্থান কোন রোমবাসী প্রোপ্ত হন নাই। বড় বড় ঐতিহাসিকগণ বলেন বে, এই যশংস্ব্যের মধ্যাক্ষকালে মেরারানের মৃত্যু হইলে বড় ভাল হইত, তাহা হইলে সেই যশোরবির অন্তগ্রমন রূপ চুর্দ্ধিন অবলোকন করিতে হইত না।

এই সময়ে সিসিলিতে ভয়ন্বর দাসবিদ্রোহ উপস্থিত হইল। চারিবৎসরব্যাপী এই যুদ্ধে দেশের বিষম অনিষ্ট ঘটিল। শুকালাস্ ও সার্ভিলিয়াস্ কন্ধার অধীনে विजीव मानगुक (३-७-३-३ पृ: गृः) छ्टेमन द्यामक्टेनछ नामनित्शव পরাজিত হইল। সালর্ডিয়াস্ নামক এক দৈবজ্ঞ স্বীয় অসামান্ত প্রতিভার অবিলম্বে ২০০০ পদাতিক ও ২০০০ অখারোহী সৈত্ত স্থানিকত করিয়া লইলেন এবং ট্রাইফন নাম ধারণপূর্ব্বক মহাড়ম্বরে রাজ্যাভিষেক সম্পন্ন করিলেন। এদিকে দাসগণ ছুইদলে বিভক্ত হুইল এবং আথেনিও পশ্চিম দলের রাজা হইয়াও টাফনের প্রাধান্ত স্বীকার করিলেন। ট্রাফনের মৃত্যুর পরে আথেনিও দাসরাজ হইলেন। একুই-লিয়াদ্ দিসিলিতে প্রেরিত হইলেন। তিনি যুদ্ধে জয়লাভ করিয়া স্বহত্তে আথেনিওকে রোমের আক্ষিথিয়েটারে সিংহ-শার্দ,লের সহিত যুদ্ধ করিতে নিযুক্ত করিলেন। কিন্তু তাহার। হিংশ্রন্তর সহিত যুদ্ধ করিয়া নিষ্ঠুর রোমবাসীর চিত্তবিনোদন অপেকা আপনারা পরস্পরের অস্তাঘাতে আন্ফিথিয়েটারে বিনম্ভ हरेन (२२ थः शः)।

এই সময় রোমের শাসনপ্রণালীতে পুনরার বিপ্লবের স্চনা উপহিত হইল। মেরারাস্ শাসন ও সৈপ্রবিভাগে একাধিপতা করিবার সক্ষা করিতে লাগিলেন, কিন্তু তাঁহার শাসনক্ষমতা ও বক্তৃতাশক্তি আদৌ ছিল না। তক্ষপ্র সাটার্নিনাস্ ও মিরার নামে ছইজন বাগীকে হতুগত করিয়া ক্ষার্যাসাধনে প্রবৃত্ত হইলেন। সাটার্নিরাস্ ট্রিক্টিন পদে নিবৃক্ত হইলেন এবং এগ্রিরিরান আইন প্রবর্তনাস্থাক গল প্রদেশের ভূমিপত সক্ষাকে মেরারাসের সৈক্ষাগণকে বিভাগ করিয়া দিতে ইক্তা করিলেন। এই আইনের একটা সর্ভ ছিল বে, বহি এই আইন নর্জ্বসম্বিভক্ষমে বিধিবছ হয়, তবে সেনেটের সন্ত্যাপন উহা পালন করিতে শণথবছ হইবেন এবং বিনি অসম্বত

ক্ষুক্তন তিনি স্বত্ত পদ হইছে বহিষ্ণত হইবেন। মেটাশাস্
নেরাষ্কাস্ উভ্নের কেনেটরগণ স্ক্সেক্তিতে এই "প্রেজাবিনি"
গ্রহণ ক্রিশেন, কেবল মেটেলাস্ আপ্রন প্রক্রিক্ত লগপ
পালন করিতে চাহিলেন লা। এই প্রের মেটেলাস্ ও
নেরারাবের পক্ষীরগণের মধ্যে যোরতের মনোবার উপস্থিত
ইইল। বিরোধিনজের ক্ষতাচারে ক্ষনাচারে রোমরারাধানী
,তীবণ মূর্ত্তি ধারণ ক্ষরিল। এইরপ রাইবিগ্নবে ক্ছিলাল
ক্ষতীত হইবার পর, প্রধান প্রধান নেতৃবর্গের প্রাধিকারকাল
সংক্ষেপ হইরা আসিল। তথন সকলের প্রনির্কাচনে ব্যক্ত
হইরা পড়িনেন। নির্কাচনস্ত্রে ঘোরতের লাক্ষা হালামা
ঘটতে দেবিরা সেনেট ক্ষল মেরারাস্কে বিরোধিনলের বিরুদ্ধে
দণ্ডারমান হইরা রাল্যরকা ক্রিতে আবেশ ক্রিলেন, তথন
সাটার্নিরাস্থ মৌনিয়া হতাশ্রিত্তে আব্রুদ্ধান বিরুদ্ধে
হইলেন। সেনেট তাহানের রাজল্যেছিতার বিচার ক্রিবার
ক্ষব্যর সাধারণ লোকে তাহানিগ্রেক বিরিয়া নিহত করে।

সেনেটের সহিত বিবাদে, প্রজাদলের পরাজরে এবং
নেরারাস্কে ছয় বার কজাল পদনানে, প্রজাদর্গের আধিকারহাসের সঙ্গে রোমীয় প্রাচীন প্রজাতদ্রের অনেক পরিবর্জন
হইয়া গেল। মেরারাসের ৬ বার কজাল পদপ্রাপ্তি সেনেটের
অমুমোদিত উপর্যুপরি নেতৃশ্বিবর্জনের অন্তরার হইয়া
দাঁড়াইল। এই দীর্ঘকাল নেতৃত্বে মেরায়াস্ সাটার্ণিনাস্-প্রবৃত্তিত
সাময়িক' সংস্কারপদ্ধতির অমুকরণ করিয়া এক এক জন
সেনাপতির অধীনে সাধারণ সেনাদল নির্ক্ত করিলেন।
ঐ সকল সেনাদল আপনাপন সেনাপতি বা অধিনায়কের বাক্য
মান্ত করিবে। সাধারণ সেনাদলের মধ্যে বংশাভিমান বা অর্থগরিমার কোনকই স্বাভন্তা থাকিবে না। বিস্তৃত রোম-চম্ বা
দিক্সন' (Legious) ইইতে সম্পূর্ণ বিচ্যুত রহিল।

খঃ পূর্ব ৯০ অলে এসিরাখ্যেও পি, কটিনিরাস্ ক্রমান্
আবলা প্রজার রক্ষ পোবণ করিরা রোনীর ধনান্তসমাজকে
কলজিত করেন। তাঁহার এই রুশিন্ত অভ্যানারার্তা রোনকসমিতিতে লওলীর হইলা। অর্থনানের অভ্যানার-বন্দনেনেটা
ধনহীন রোমক প্রজানারারণের মধ্যে ক্রকণ অনেরন করিল।
রাজনীতির আমুল্লংকার আবন্ধক হইল বটে, কিন্তু ধনশাণী
ক্রেমীর সাজপ্রবস্পান্ধ বিকাদে ক্রেমান হইয়া কার্যাপরিচালনা
কর্ম ক্রেমানার্ত্তির লা। যুদ্ধ ও করের একমান সহযোগী
ইতাসীরাগণ ক্রিমানার বিভাগিশ আবদ্ধ থাকিরার পর একণে
রোম-বর্মানের ক্রিড একর সিলিবার বাহণ প্রকাশ করিলেন,
ক্রিমান্ত পরায়ন্ত্রণ তাঁহাদিনকে সভাসমিতির অধিকার
বার্ম ক্রিড পরায়ন ইইলেন, ক্রম্নাই র্থন তাঁহারা ব্রিক্নে

যে, এই সোমীর দৈত্রতার কেবল হানেক বোজার রাছ ও রাণের বোজার ছাস হসতেছে এবং উহালেক বালাল করিছা বামিক রাজাসমূহের ক্ষমভাগে উহালিপকে বালিক করিছা বোমক-গবনেটেই একাবিশতা বিভাগ করিছেন; ক্ষম ক্রোকে ও সন্দেহে রোমের রাজশক্তি থকা করিবার লভ উল্লিখ্ন ক্রোমের বিক্ষভাচরণে প্রবৃত্ত হইলেন।

মার্কদ্ কাল্বিরাদ্, লেরাদ্ প্রাকাদ, সাটার্শিনাদ্ প্রাঞ্জি ৪০ বংশর ধরিয়া ইতালীরগণকে সন্ধিলনের আবা দিরা আসিরাছিলেন, কিন্তু তাঁহারা তাহা কার্য্যে পরিণত করিতে পারেম নাই। বতবারই ইতালীরগণ আবন্ধ হইরা রোমে দমবেত হইরাছিলেন, ততবারই তাহারা কললের কঠোর আহেশে নিগৃহীত হইরা রোম হইতে বিতাড়িত হইরাছেন। এই সকল অবভাবহারে ইতালীরদিগকে উত্তেজিত দেখিরা ট্রিউন্ মার্কাদ্ লিভিরাদ্ ড্রান্ কহতে সংঘারের ভার প্রধান করিলেন। তিনি দেনেট-সভার রাজবিধি সংখারের প্রভাব উপাপন করিলে সল্লাভ সন্ধান্ম (• quentrian order) স্বাজ্বে তাঁহার উপার ক্রোধে অগ্নিশ্মা হইরা উঠিলেন। ডুসাসের প্রভাবিত বিধিগুলি সাধারণে গৃহীত ইইলেও সেনেট ভাহা আগ্রাভ করিলেন, ডুসাস্কে ইতালীয়দিগের সহিত বড়্যম্মে লিপ্ত ও রাজনোহী ববিয়া সেনেট-সভা বোবণা করিলেন। সভাগৃহ হইতে অগৃহে প্রত্যাবর্ত্তনকলে ডুসাস্ প্রপ্ত বাতকের হত্তে নিহত হইলেন।

ভূসাসের গুপ্তহত্যার ইতালীবাসিগণ সেনেটের বিশ্লছে উত্তেজিত হইয়া উঠিল। তদানীস্তন ট্রিবউল ক্ষিউ-ভেরিবাস্ বড়বন্ধকারীদিগের শান্তিবিধান নিমিত্ত একটা সমিতি গঠন করিলেন। এই সমিতির বিচারে বছসংখ্যক বড়বন্ধকারী প্রাণদণ্ডে দণ্ডিত হইল।

ইতালীবাদীদিগের নির্নাহনাধিকার লইরা এক মহাযুদ্ধের
প্রাপাত হইল। এই যুদ্ধে ইতালাবাদী অভিজাতসভাদারের
ত লক্ষ লোক যুদ্ধে প্রাণত্যাগ করিয়াছিল। ৯৫ বুং পৃং লিদিনিয়াস্ ক্রেলান্য-প্রবর্তিত আইন অভুলারের
লাগিত বুধ প্রাণানী ইতালীবাদী রোমবাদীর লমভ্ত
(১০০-৮ বুং গৃং) অধিকার হইতে বঞ্চিত হইলেন। ভাতাতে
সমগ্র ইতালীগণ উত্তেজিত হইয়া এবং মার্দিয়ান্, পেলিগুরিয়ান্,
মেরিউলিনিয়ান্, ভেটিনিয়ান্, সাবেলিয়ান্, পিরেন্টাইন্দ্র, সাম্নাইটন্, আগুলিয়ান্ ও লুকানিয়ান্, প্রের্ডিত পরাজ্ঞাক, লাতির
ক্রিহিত গলবহু হইয়া রোদের প্রাংশনার ক্রক্ত একক নিলিত
হইয়া অল্লবার করিলেন। ইকালের মধ্যে মার্দিলাতি অধিনারক্র
লহণ করার উক্ত বুধ মার্দিল বুধু বিলিয়া কথিত হয়। এই সংয়ে
লাটিনগণ কোন পক্ষে বেগেনান না করিয়া নিরপেক্ষভাব ধারণ

করিরাছিলেন। স্থিনিত ইকালীরগণ, রোম্বানিগণের গৃহিত
সম্ভাবে নির্মাচনাথিকার না নাইবার জাশার ইতালীলেনে এক
নূতন রাজ্বানী শ্বাপন ও রোম্মণর বিশ্বত করিছে নন্দ করিল।
পালিরাতির বাস্ত্রী ক্রিনির্মনগরী এই নব প্রবৃত্তি নাবারণতরের রাজ্বানী ইক্রানিকা নামে বাৈহিত হইল। এখানে
ে সম্ভ গঠিত এক সেনেট ও এসেরি প্রতিতিত ক্রিল। এই
নাধারশভারের প্রতি বংগর রুইস্ম ক্র্রান এবং ১২ জন প্রিটর
নির্কা হইতে কালিলেন। সিলোপপিডিয়ান্ নামক একজন
নার্নিরান্ ইছার প্রথম ক্রাপ নির্কা হইলেন।

এল-স্থানিয়াস নিজন এবং স্থাটিলিং স ক্লাস ব্যোদের ক্লাল मियुक हरें वा वृक्षार्थ या का कडिएनमा स्मर्शायाम् अ अएन निवान् साहा क्षेत्रांट्यंत्र क्योनं इवेंद्रा वैद्यार्थं मन्द्रिक वेवेट्यमे । क्षेत्रमे वेयम् गार्निया क्यानां छ केतिएछ नानिन । क्यानियान क्यानि स्वयंत्र गृह कतिवास विशरकेष इरक एक इर्डेडमेन अर्थ भार्मिया क्यान কেটো যুক্ত অর্থীজি করিলেন। কিন্তু রোমকগণ চিত্ত হারাইলেন। না ৷ বিশেষ দৃঢ়ভার সহিত যুদ্দাশনা করিয়া দেরায়াস ও সালা केंद्रात क्षेत्र क्ष्मणनियात, काट्न्नथियात, मानि अपू के नक्षणगरक পরাকৃত করিলেন। শেরারাসের পরিচালনার রোমকলৈত সুর্কিতভাটে অবস্থান ক্রিতে লাগিল। এই স্মতে রোমকগণ विभाग जानका क्षिया कृतियान निकारक भवामें अक्नादत 'লেক্স ভুলিরা'নামে এক আইন প্রচলিত ক্লুরিলেন (৯০ খৃ:পু:)। ভদমুসায়ে রোমের পক্ষে বিশক্তাবে যুদ্ধকারী ও শান্ত প্রভাবর্গতে রোমবাসীর সহিত সমভাবে নির্বাচনাধিকার (Franchise) দিবার ব্যবস্থা হইল। এই খটনায় রোমের পক প্রবল হইয়া উঠিল, এবং মুদ্ধের হিডীর বংসরে রোমকলৈন্ত কুতকার্যাতা লাভ করিছে আরম্ভ করিল। भिक्तिशाम् द्वारता अवर लिपियाम् क्यंति कमन निगुक बहुया युद्धास्त्र व शयम क्रिएनम । युद्धत श्रावरक क्रिएस मुकुा रहेरन (बारकरेंके हीनवन इहेन ना । (क्ट्रोड़ (नेन्ह्रेनोन्डे नाहा धावन পরাত্রটো যুক্ত করিছে লাগিলেন। তাঁহার বলংশুর্যার প্রথর কিরণে নেরারাদের খাতি দক্ষ প্রভ ব্রুরা উঠিল। তিনি সার্সিয়া-সেনাপতি মিউটিলাস্কে গ্রাজিড করিয়া বভিয়েনাম্ নামক ক্ষর্ফিত চুর্গ অধিকার করিলেন।

এনিকে পশ্দিরাস্ ব্রাব্যে উত্তর ইতালীতে অরলাত করিতে লাগিলেন। প্রবল বৃদ্ধের পরে আছালাম নগর অধিকৃত হইল। বিপক্ষাণের অধিকাংশ অপ্রত্যাগপুর্বক অধীনতা স্বীক্ষর করিল। দেই সমরে দেই হাই নিল্ডেনাস এবং পেপিরিরাস কার্বে নামক দি বিউন্তর "লেক মৌটিয়া-পেপিরিরা" নামক আইম প্রশারন করেন (৮৯ খঃ প্:)। ইহাছারা বে কারণে বৃদ্ধের উৎপত্তি

ইবাহিল; সেই কাৰণ বিনাধ ধইল। প্ৰকাৰ কৰিকাংশ বিজ্ঞোহী নহবাৰ পূলৱাৰ বোৰোই প্ৰকাৰকাৰ কৰিকাও এই মুখে ইভালীৰ সম্ভাৱ কৰিকাত সভাৰাৰ আৰু নিৰ্মাণ ইইয়া-ছিল। অবং নামাৰ কৰিব হোনেই তেনী আভি এবং নামাৰ ১০টা ইভালীবালী আভি লোমবালীৰ জান বিজ্ঞাননাৰ্থকীৰ আও ইইল। উভাৱে পেভাল ইইভে কজিবে মেলিমাজালালী পায়ত ক্ষিত্ৰ ইভালীবালী বোনেই কছিত সমানাৰ্থকীৰ আও ইইল। ইহাৰ পাৰে সামাৰ্থীই ও প্ৰানিধান্ত্ৰণ কিছুৰ্ম প্ৰতি বোনেই বিজ্ঞাননাৰ্থকী কৰিবাহিল। ভাৰনিহৰ্ম কৰেবে সামাৰ্থকীৰ প্ৰতি হাল কৰিবা বিজ্ঞান ও তথ্য বিভাল বিজ্ঞান কৰিবাহিল। তাৰনিহৰ্ম কৰেবে সামাৰ্থকীৰ প্ৰতি হাল কৰিবা বিজ্ঞান ও তথ্য বিজ্ঞান কৰিবাহিল। তাৰনিহৰ্ম কৰেবে সামাৰ্থকীৰ কৰিবাহিল ও তথ্য বিজ্ঞান বিজ্ঞান কৰিবাহিল বিজ্ঞান বি

এই অপ্তবিশ্লবৈর (The Social war) অবসাম ইইলেও রোমে লাজি হালিত হইল লা। পূক্তল কলহুত্তে পুলরার বাগবিস্থান চলিতে লালিক। প্রানিকার-প্রাপ্ত নবীন ইতালীর সম্প্রদার রোমক সমস্তবর্গের শক্ষণাতিতা ও নির্বাচন বিষয়ে নিরুপকে রাজকীয় শক্তির পর্যাবিকা উপলব্ধি করিছা ঘোরতর প্রতিবাদ করিতে লালিলেন। সমস্তবর্গের খোর প্রতিবদ্দিতার সৈনেট সভা বিহত ইইরা পড়িরাছিল। সাম্প্রদারিক বাদবিস্থান, পরশ্রের প্রতা এবং প্রজালাবার্নের চিন্নরম প্রান্তিও রাজ্যবাপ্ত করেছেল। মর্থনীজার বিষয়েন সমগ্র রোমরাজ্য পীড়িতের আর্তনাদে পরিপূর্ণ ইইরাছিল। অর্থনাল ও অল্লাভাব হেত্ সম্প্র রোমক প্রজাবর্গ কটের মুখ চাহিতে চাহিতে বংগে পথে আলিয়া মিপ্তিত হইল। প্রজার এই সর্বাচাশ রাজ্যের সকল প্রেণার লোককে সংক্রমণ করিবাছিল।

এই গোলবোগের শাভি হইতে সা হইতেই মিথি দেভিসের विकटक युक्क दर्गावमा कर्ता रहेन । এই नमस्त्र भागितन ताका ই নিশ্বিদেতিস বা ইউল্লেক্স সহিত রোমের বৃদ্ধ অনিখার্য্য হইরা উঠিল। পূর্বাযুদ্ধে সালা যেরপ এখন আন্তর্জাতিক পরাক্রম এবং রণপ্রতিভা অবর্ণন করিয়া-ছিলেন, তদ্যুদারে মিৰিংগভিক বুরে गांधाक्रत्य जांदारक्ये कप्पन निवृक्त कक्किन्य (क्षेत्रं श्रुर १)। কিছ সপ্ততিপর বৃদ্ধসেনাগতি দেৱায়াসু উক্ত পালের বস্তু প্রাণ-পূপে চেটা করিতে শাগিশেন ৷ এওছাতীক ছিনি আলুসিসিয়াস क्रमान् नामक अक्रमन बक्रुकाकूनन अवः क्रमकातानी हिल्हिमरक বুৰের দৃষ্টিত ধনরত্বের প্রণোক্তন প্রদর্শনপূর্বক ক্রান্ত্রপ্রচ করিব: बीत উरम्ब निषित अप्रकृत नहां स्टापन वृत्तिक लागिरमन । নালপিলিবান নেরাবান্কে নির্দ্ধিরেডিক মুক্তের ক্ষমিনার্কক প্রধান করিবার বভ এক নৃতন আইন প্রথম্ভন করিবের। সেলেটেয় मफाश्र देश निवादन कविदाद स्टब्स्ट "बाहैनिहान" त्यानन कवि- লেন তিন্তু নারে সেই স্মার্ত্ত হোন আইন-গঠত কার্য বিশ্বনবিল্লু বলিয়া বিদিত হিল । ভিল্লু নান্ত্রিনাস্থল ইহা
সহিত করিতে ক্তসভল হইলেন । তিনি বার অধীনত্ব ও সহত্র
হানিভিত অন্তর্জীতক লইবা একটা "আনি-সেনেট" গল
সঠন অনিকোন এবং ইহাবিলের সাহার্যে তিনি বলপুর্কক
কলন্দিগকে কোরাম হইতে বহিন্তুত করিবা দিয়া নিজ
অভীত সাধানে উভত হইলেন। পালিয়াস্ পলাহন করিলেন।
তাহার প্র এবং সালার আনাতা কুইতান নিহত হইলেন।
সালা নিজে কোরামের নিক্টবর্তা মেরাবালের সূহে আপ্রস
লহরা রকা পাইলেন। এবং প্রাণের তরে ভীহান্যা প্রের্ভাক
"আইনিরাম" প্রভাবার ক্রিটেনন।

সামা রোম পরিভাগেশুর্মক কান্দিনিয়ার অন্তর্মত নোলা নামক তালে অব্যক্তি খীর নৈজদলের পৃথিত খিলিত খইলেন। এদিকে সালপিনিরান্ ও মেরারান্ রোম অধিকার করিলেন। নেরারাদ মিথি দেভিক যুদ্ধের কলাল নিযুক্ত ক্টলেন এবং সালার সৈলদলের নেতম গ্রহণ করিতে দৌলার লোক প্রেরণ করিলেন। কিছু মেরারাস প্রেরিভ প্রতিনিধিগণ সালার সৈত্যগণের ইটকাখাতে হত হটল। তথন সালার সৈভাগণ তাঁহার আদেশানুসারে রোমের বিশ্বরে যাতা করিছে সন্মত চটল। সালা সলৈতে রোম অধিকার করিতে চলিলেন। বোরালাস ভাহার গভিরোধ করিছে নানা চেই। করিলেন, কিন্তু সকল চেটাই বিষদ হটল। সালা রোমে প্রবেশ করিলেন, স্বীর মেরারাস পুত্র ও সম্ভারবর্দের পহিত পদারন করিলেন। সামা রোম অধিকার করিলেন বটে, কিছ मगत मुक्रेमश्रक्षक काशवानीतिगरक मिर्ड कतिराम मा। দালপিসিয়াস্ স্বীয় ক্রীতনাসের বিশাসবাতকভায় বরা পড়িরা ু হত হইলেন।

দেরারাস্ আহানে চড়িরা আইরা এবং তথা হইতে
দক্ষিণ ইতাদীতে গমন করিলেন। কিন্তু তাহাকে ধরিবার
অন্ত আবারোহিগণ চন্ট্র্নিকে প্রেরিড হইল। মেরারাস্
প্রের দক্তি হর্গন অরপ্যে অবেশ করিরা বৃক্তকাটরে রাজিযাপন
করিলেন। তাহার পুত্র নিপকে অভিভূত হইল, মেরারাস্ আয়ত্তচিত্তে এই বলিক্তা পুত্রকে জরুলা বিলেন যে, তিনি সপ্তমবার
রোমের কজল হইবেন, ইবা সৈবজ্ঞগণ গণনা করিরাছিল। মিন্টার্নি
নামক হানে অন্থানোহিগণ ভাহাবের পশ্চান্তী হইলে ভাহারা
সম্প্রে অন্ত প্রদানপ্রকি গরুল করিরা এক আহাকে উঠিলেন।
ক্রিত্ত আহালহ লোক সকল ভাহাদিগকে লিরিস্লীর মোহানার
ভীবন জনলৈ নিক্ষেপ করিরা সেল। ক্রিভ্রত্তার ধরা পড়িরা
কিন্টার্নির মালিরেইটগণ করিক করিরাত্তে ইলেন। রোমের

আবেশ পাইরা তাঁহারা দেরারাস্থ বর করিবার সক্তর করিবেন। কিছ কেইই মেরারাসকে বধ করিছে সাইসী ইইস মা। অবসেবে धक क्रीडमान बर्मिस्टल ब्याबाम्टक वस करियान क्रम कानानारत অবেশ করিল। কিছ বোর অক্কারারত কারাগ্রেই কেরারালের চত্যু অলব প্রবীলের ভার রখি বিকির্ণ করিতে লালিল, ভর্নানে বাতক বিশ্বরে ভঙ্জিত হইলে, বেরারাস সন্তীর বরে কহিলেন, "ভূমি কি কেরাস মেরায়াসকে হত্যা করিতে সাহসী হইবে"। উত্ত ৰূপে ঘাড়ক ভটুৰারি কেলিয়া প্লারম করিল। ভবন মিন্টার্ণির माजिएक्वेकेशन वक्षानवनन रहेका ल्याकारतारल महाबागरक আক্রিকার ত্রেরণ করিলেন। তথার উপস্থিত হইবামাত্র ভত্ৰতা ত্ৰিটৰ নেৰুষ্টেলিয়ান ভাষাকে নে স্থানে ভাগে কৰিছে भारतम कतिराम । जप्रसनेत्व र्यात्रीयाम क्लरक चीनवाहिराम-"দুও তুনি প্রিটয়কে বাইয়া বল বে, নেয়ারান্ পলায়নপর ক্ইয়া कार्वरकात्र कार्गावरनात्वम छेनात्र छैनविष्टे कार्यन ।" छर्नात्त्र रमप्राप्तान न्यूटवार नहिन्द मिनिए इट्रेस किनिस बीटन किनिस भित्रांशस हिल्लो ।

এই অবসরে রোমের রাজনৈতিক ঘটনাপ্রোভ ভিন্ন প্রণালীতে প্রবাহিত হইল। এই সময়ে ৮৭ খৃঃ পৃঃ সিদ্ধা এবং অক্টেভিয়াস্ কলল নিবৃত্ত হইলেন। সালাও কলল নির্মাচন-যাাপার সমাধানাতে উক্তে বর্ষের প্রথমেই প্রসিদ্ধার প্রস্থান করিলেন।

সামা জনসাভ করিলেন ঘটে, কিন্তু ভারাতে রোমকসভা বিলেষ লাভবান হইলেন না। যথন তাঁহারা দেখিলেন যে রাজ-কীর মেতবর্গের অমুমোদনে যে কাণ্ড সম্পর হইত, এখন তাহা নৈষ্ঠগণের অন্তৰ্যেই সকল নির্ব্বাহিত হুইতে পারে এবং দেনাদলও তাহাদের অধিনায়কের আনেশ বাতীত জার কিছই মাল করিত না, তথন তাঁহাদের মনের থারে বুচিল। লালার রোমত্যাগের অবাবহিত পরেই কন্সল সিন্না সালপিলিয়াসের প্রস্তাবিত ৩৫টা জাতিৰ মাধ্যে সম্ভাবে নিৰ্মাচনাধিকাৰ বিধি প্ৰচলন কৰিতে কুতসভগ্ন হুইলেম ৷ যে সমস্ত নৃতন নাগরিক এই বিষয়ে অভি-মত দিবার জন্ম কোরানের সন্মধে সমবেত হইরাছিলেন, সিল্লার श्रीज्यानी काक्षेत्राम् जारामिन्यक निरुष क्रियम । निर्मा উপারান্তর না দেখিয়া পলাইলেন এবং রোমীর লিজনে আসিরী আশ্রর চাহিলেন। সেনেট তাছাত্তে কলাপদবৃদ্ধ করিলে जिनि कार्ल्यमित्रात्र रानावृत्मरक धाकावर्रज्ञ विश्विकाच नार्लव কৰা জ্ঞাপন করিয়া উত্তেজিত করিলেন। কেখিতে দেখিতে সহস্র সংস্র লোক সামার ভার তাহার প্রাক্তসরণ ক্ষতিত অল্ল-नत्र रहेगा। निक्षिवछ। हेर्सनीत श्रेष्टानाम् खहे नाश्रामकणात् ৰ্যাপানে বিশেষ কৃষ্ণ হইনাছিলেন। তাহারা সিরার ধশভক্ত

ইইর। সৈত ও অর্থ সাহায্য পাঠাইলেন। এদিকে সারার অক্যান্তরে রোম হইতে পলারিত দেরারাস্ এক সহস্র নিউমিডিরা অধারোহী সেনা কইরা ইউুরিরার উপনীত হইলেন। তথার , আহার দলত্ব প্রাচীন বোদ্ধৃত্ব তাহার ছত্রতলে যাইরা সংমিতিত হইল। আরক্ষাল মধ্যেই ভিনি ও সহস্র সেনা সংগ্রহ করিরা কেনিকিউনাম অবরোধ করিলেন ও পরে রোমের প্রবেশহারের স্কুথে সিয়ার সহিত মিলিত হইলেন।

্দেনেট প্রথমে যুদ্ধি প্রস্তুত হইলেন, কিন্তু চ্রস্ট্রশতঃ
আধিককণ যুদ্ধ করিতে পারিলেন না। কাজেই পরাত্তর শীকার
করিতে হইল। সিলা পুনরার কজল পদ লাভ করিলেন এবং
রাজনোহিতাদভে নির্বাসিত মেরায়াস্ পুনর্গহীত হইলেন।
তথ্য নির্বা

মেরায়াস্ নগরে প্রবেশ করিরাই তাঁহার প্রতিহিংসা পিপাসা
শাস্ত করিলেন। প্রসিদ্ধান্তী আন্টোনিয়াস্ ও আক্তরিয়াস নিহত
হইলেন। বিবেবিদলের রক্তপাতে রোম-রাজ্পথ রঞ্জিত হইল।
এই জরাবহ হত্যাকাণ্ডে রোম জীবণমূর্ত্তি ধারণ করিয়াছিল।
এবার শক্তপ্রত রোমে মেরায়াসের অপক্ষীয়গণ তাঁহাকে এই
বৃদ্ধাবস্থার ৭ম বার কন্সলপদে বরণ করিলেন, কিন্ত কএক সপ্তাহ
রাতীত তিনি প্রশ্বাসন্তোগ করিতে পারেন নাই। ৪৬ খুই
পূর্বাব্দের প্রারম্ভেই তাঁহাকে ভবলীলা শেষ করিতে হয়। সিয়া
উহার পর ও বৎসর কাল পূর্ণ প্রতিপত্তির সহিত রোমশাসন
করিলেও বাস্তবিক পক্ষে রোমের শাসনসম্পর্কীয় উয়াতর পথ
সম্মক্ ক্ষম হইয়াছিল। তিনি সায়ার আগ্রমনভরে সর্বনাই
শক্তিত ছিলেন। এই জন্ত ৮৬ খুঃ পুঃ কন্সল ভালেরিয়াস্
ফ্রাকাস্ সায়াকে ক্বানভ্রই করিবার ক্ষতিপ্রারে প্রেরিত হন,
কিন্ত গ্র্ভাগ্যক্রমে তিনি বীয় সৈত্ব দ্বারা নিক্রোমিডিয়া নামক
স্থানে নিহত হন।

কৃষ্ণসাগন-তীরবর্ত্তী এসিয়া-মাইনরের মধ্যে মিথি দেতিসের
সমৃত্তিশালী রাজ্য অবহিত ছিল। ৫ম মিথি দেতিসের গুপ্তহত্যার
পরে ষষ্ঠ মিথি দেতিস্ ১২শ বৎসর বরুসে সিংহাসনে আরোহণ
করেন। ইনি শার ও শার পাণ্ডিত্যে ভ্বনপ্রথম মেথি বেভিক
বৃদ্ধ (৮৮-৮৪ খং পুঃ)
তীহার বিশেষ বৃৃৎপত্তি ছিল। তিনি
ক্রমে ক্রমে বীর বাহবলে চারিদিকে রাজাসীমা বাড়াইতে
আরক্ত করিলেন। এই সমরে বিধাইনিয়ার রাজা ২র
সিনকামিডসের মৃত্যু হইলে তৎপুত্র প্র নিকোমিডাস্ সিংহাসনে
আর্রোহণ করিলেন; কিছু মেথি দেতিস্ উক্ত বংশীর শান্ত এক
জনকে সিংহাসন দিতে ক্রতসভার হইয়া একদল সৈল্প প্রেরশ
করিলেন। তাহাতে ওর নিকোমিডস পলাইয়া রোমের শরশালা

হইলেন। রোমকগণের সাহাব্যে নিকোমিন্তাস্ পুনরার স্বরাজ্য প্রাপ্ত হইরা রোমকগণের প্ররোচনার মিথিনেতিসের রাজ্য স্থাক্রমণ করিলেন। কিন্ত মিথিনেতিস্ স্থাবিলয়ে তাঁহাকে স্থাক্রমণ করিলা পরাজিত করিলেন এবং বিখাইনিরা হইতে তাডাইরা বিলেন। তদনস্তর তিনি ক্রিজিরা ও গালেসিরা স্থাকিরাস্থাক এদিরাত্ব রোমক প্রদেশ স্থাক্রমণ করিলেন।

তংপরে মিখিনেতিস্ পার্নামাস্ অধিকারপূর্কক আধিকত প্রদেশসথাছ সমস্ত ইতালী ও রোমবাসীবিগকে বধ করিতে আজা নিবেন। তবছসারে ৮০০০০ রোমক একদিনে নিহত হইল। মিথিনেতিসের জরলাতে গ্রীসবাসিগণ বিজ্ঞাহী হইলা রোমের অধীনতা অভীকারপূর্কক তাঁহার সাহায্যার্থ অগ্রসর হইল। এমন সমরে সালা সসৈম্ভে গ্রীসের অন্তর্গত এপিরাসে আগমন করিকেন এবং আবেদ্স ও পিরিরাস্ অবরোধ করিলেন। সালা অর্দিনের মধ্যে আবেক্সঅধিকার ও লুঠন করিলেন।

মিথি দেতিসের সৈক্তাধ্যক্ষ আর্চেলাস্ বিশাল সৈতদল লইয়া ৰিওটিয়ার সালার সন্থান হইলেন। চেরোনিরা নামক স্থানে क्षम्बत युक्त इटेग! किन्तु आरे नमन्न अक नुष्टन विभएमत স্ত্রপাত হইল। মেরায়াস পন্দীর ব্যক্তিগণ ভালেরিয়াস ক্লাকাসকে একদল সৈম্ভসহ গ্রাসে মিথি দেতিস ও সালার সহিত ষুগপৎ যুদ্ধ করিতে প্রেরণ ক্রিয়াছিলেন। ফিদ্মিয়া নামক সেনা-পতির ষড়যন্ত্রে ক্লাকান্ নিহত হইলেন। পরে ফিস্কিয়া সেনাপতি হইরা মিথি দেভিদের বিরুদ্ধে কএকটা যুদ্ধ করিরা তাঁহাকে পরাস্ত করেন (৮৫ খৃঃ পুঃ)। এদিকে অর্কোমেনাস্ নামক, স্থানের যুদ্ধে সালা স্মার্টেলাস্কে সম্পূর্ণরূপে পরাজিত করিলেন। তথন মিথি দেতিস নিরুপায় হইয়া সন্ধির প্রার্থনা করেন (৮৪ খঃ পুঃ)। তদমুসারে মিথিনেতিস্ এসিয়া থণ্ডের বিজিত প্রদেশ সকল রোমকদিগকে প্রত্যর্পণ করিলেন এবং ৭০ খানি স্থসক্ষিত রণতরী রোমকদিগকে দিলেন ও যুদ্ধের ব্যয়ম্বরূপ ২০০ টালেণ্ট প্রদান করিশেন। সালা সন্ধি স্থাপিত করিয়া মেরায়াস পক্ষের প্রেরিত ক্লাকাসের হত্যাকারী সেনাপতি ফিবি রাম বিরুদ্ধে সৈন্য চালনা করিলেন। তাহাতে ফিম্মিরার সৈত্তগণ তাহাদের সেনা-পতিকে পরিত্যাগপুর্বাক সালার আশ্রর গ্রহণ করিল। ফিষিরা আন্মহত্যা করিবেন। সাল্লা তখন ইতালী-বাত্রার উদ্যোগ করিতে লাগিবেন। সাল্লা এসিরা-বিজয়কালে অপরিনিত ধনরত সম্পর্ করিয়াছিলেন। এতহাতীত তিনি বৃদ্ধে ব্যাপত থাকিয়াও গ্রীস হুইতে টিওস নগরের 'এপেলিকন' নামক বিরাট গ্রহালর রোমে আনরন ৰরিয়াছিলেন, ঐ পুত্তকালরে আরিইটল এবং থিওফ্রান্টা-সের গ্রন্থনিচর স্থরক্ষিত ছিল।

৮০ খা পার বনস্কালে ৪০হাজার সৈয় এবং বহসংখ্যক পারিবনসহ সালা প্রাপ্তসিরামে অবতীর্ণ হইলেন। তথন এল-সিপিও
এবং নোর্বানাস্ কলল ছিলেন। সিরা ও সিসাল্পাইন গলের
প্রোকলস কার্বো সালার সহিত বুদ্ধার্থ সৈয় সংগ্রহ করিতেছিলেন। কিন্ত সিরা নিজ বিদ্রোহীসৈঞ্জের হাজে নিহত হইলেন।
মেরারাসের পক্ষ নেতৃহীন হইয়াও সালার প্রতিরোধের
নিমিন্ত আরোজন করিতে লাগিলেন। ২০০০০ সৈন্ত
মেরারাসের পক্ষে যুদ্ধ করিতে অন্তধারণ করিল। কিন্ত
সালা কেবল মাত্র ৪০০০০ সৈন্তসহ প্রাপ্তসিরামে উপস্থিত
হইলেন। কিন্ত মেরারাস্পন্দীর সৈন্তদল অধিনায়ক এবং
স্থানিকা অভাবে কাপুরা, টিনাম ও প্রিনেটির যুদ্ধে পরাজিত হইরা
চর্জিক হইল।

কলল নোৰ্বানাস কাম্পিনীয়ার স্বৰ্ণক্ষেত্ৰ পরাজিত হইয়া রোডস হীপে প্রস্থান করিলেন। সাল্লা কাম্পিনীয়ার শিবির সন্ত্রিবেশ করির। রহিলেন। এদিকে কার্বো ও কনিষ্ঠ মেরায়াদ द्वारमञ्ज कमान नियुक्त **इट्टनन । ८२ थुः शृः नाजाः रे**नस्छत्र সহিত কনিষ্ঠ মেরায়াসের সাক্রিপোটাস নামক স্থানে বৃদ্ধ হইল। মেরারাদ পরাস্ত হইরা প্রিনেটি নামক স্থানে আপ্রর লইলেন। **প্রিনেষ্টি উদ্ধারের জন্ত ২টা বৃদ্ধ করিলেন। এই সময়ে প্রশিশ এবং** কাৰ্বো মেটালাদ সালার পক হইরা কার্বোর সহিত যুদ্ধ করিতে नाशितन । माहा निर्कितास त्राप्य थात्य क्रियन । कार्या পরাজিত হইরা আফ্রিকার পলাইলেন। কিন্তু সামনাইট ও লুকানীয়গণ সালার বিক্লছে বৃদ্ধার্থ রোমের অভিমূপে ধাবিত হুইল। কলিনগেট নামক স্থানে ভীবণ বন্ধ ঘটিল। সামনাইট-দেনাপতি পণ্টিয়াস ক্রাদের অন্তত বীরছে পরাভূত ও নিহত হইবেন। কাম্পাস মার্শিয়াস নামক রক্ষকেতে সালার নৃশংস আদেশে বহু সহত্র সামনাইট এবং লুকানিয়ান বন্দিগণের শিরক্ষে সাধিত হইল। এই ঘটনার প্রিনেটি ছর্গন্থ সৈভাগণ আয়ুসমর্পণ করিল, কনিষ্ঠ মেরারাস্ আত্মহত্যা করিলেন। লুকানিয়ানগণ নির্দরভাবে হত হটল। সালা এখন ইতালীর দর্বময় কর্ত্তা, তিনি মেরারাদ পক্ষীর বাবতীর ব্যক্তির ছিলমুখ আনিতে আদেশ প্রচার করিলেন ও পুরস্কারের লোভ তদমুসারে ভীষণ লোমহর্ষণ দক্ষের অভিনর इटें लाशिन। २०० तिति त्रित नम्छ, ४७ बन कमन, ১७०० বিচারক, এবং ১৫০০০ রোমবাসীর শোণিতলোতে রোম বীভংস মক্ত ধারণ করিল।

এই লোকভর্মর নৃশংস কার্য্যের সমরে সালা রোমের ডিক্টেটর বা সার্মভৌম কর্ত্তা হইলেন ৷ কলল-নির্মাচন বিলুপ্ত হইল, ভাহাতে রোমে সালার বধেজ্বাচার শাসন প্রচলিত হইতে

तिभिन्नो ৮> थुः शृः इटेसन क्लाम निवृक्तः इटेलन । किन्दुः मान्नाः অনির্দিষ্টকালের জন্ম ডিক্টেটর রহিলেন। প্রকৃত প্রস্কাবে রোমের সাধারণতম শাসন তিরোহিত হইয়া ব্যক্তিগত যথেকা-চারের প্রতিষ্ঠা হইল। সালার অর্ণময় আরাহেলাহি-মুর্ভি সেনেটে ভাগিত হইল। এই সমরে নামা শাসনপ্রণালী লগুভগু ভরিরা নানাপ্রকার পরিবর্তন করিরাভিলেন। তিনি তাঁহার **সৈভা**ষিগকে নানাম্বানে জারগির দিয়া অধিবাসীদিগকে বিভাডিত ভরিলেন এবং ১০০০০ জীতদাসকে কণিলিও নামে রোমের ৩০টা জাতির অন্তর্নিবিট করিলেন। ৭৯ খু: পু: পর্যান্ত সালা শাসনপ্রশাসীর নানা পরিবর্ত্তন করিয়া হঠাৎ বিশাল রোমসাদ্রাজ্যের রাজদণ্ড পরিত্যাগপূর্কক প্রব্রজ্যা পরিগ্রহ করিলেন এবং স্বীয় জীবনের अ भागनकारनत्र निकानी हिमांव श्रष्टक कत्रिएक नागिरनत। १४ पु: भू: ७० वरम्य वहरम माज्ञा भगममहरम शमम करवम। সালার আদেশ অভুসারে কাম্পাস মার্শিরাস্ নামক স্থানে তাঁহার শবদ্ধ করা হইরাছিল। তাঁহার স্বরচিত একটা কবিতা ভাঁহার শ্বভিত্ততে উৎকীর্ণ ছিল, ভাহার মর্শ্ম এই যে, "মিত্রের উপকার ও শক্তর অপকার সালা শভধারে পরিশোধ করিয়াছিলেন।" তৎপ্রবর্ত্তিত শাসনের মধ্যে সেনেটের পুনর্গঠন, প্রাদেশিক শাসন-ব্যবস্থা এবং কৌজদারী আদালভের সংস্থার, তাঁছার প্রভিন্তার পরিচারক। সেইগুলি রোমে ভারী হইয়াছিল।

সালার মৃত্যুর পরে চারিদিকে বিলুখনতা উপ্রস্থিত হইন। ডিনি ক্রবক্তুলকে নির্দ্ধ,ল করিয়া সৈঞ্জদিগকে আর্গার দিরা-ছিলেন। সেই সকল লোক একণে উত্তেজিত হইতে লাগিল। সালার সহবোগী ইমেলিয়াস লেপিডাস সালা-প্রবর্ত্তিত শাসনব্যবস্থার মুলোচ্ছেন করিতে সম্ম করিলেন, কিন্তু তাহাতে অক্নডকার্যা হইয়া এটান্ধান বিজোহীদিগের সহিত মিণিত হইয়া রোমের বিরুদ্ধে অন্তথারণ করিলেন। সালার লেপ্টেনান্ট কেটালাস মাণভিয়ান সেতু নামক স্থানের যুদ্ধে গেপিডাস্কে পরাজিত করিলেন। মেরারাস পক্ষীর শাসনকর্ত্তা কিউসাটোরিয়াস ম্পেন দেশে স্বীয় প্রাধান্ত স্থাপন করিতে চেষ্টিত ছিলেন। ৭৯ খঃ প: মেটালাস ভাঁহার বিরুদ্ধে বৃদ্ধার্থ প্রেরিত হইয়া পরাজিত ও অবংশৰে প্রো-কন্দল পদে উন্নীত হইয়া পশ্লি (গ্রেট) স্পেনে প্রেরিত হইলেন। সাটোরিয়াস অনেক খুদ্ধে পশ্পিকে পরাত্ত করিলেন। ছইবর্ষ পরে সার্টোরিয়াস্ খীর বিজ্ঞোহী সৈক্ত পার্পার্গকর্ত্তক গুপ্তভাবে নিহত হইলেন। পার্শার্থী ভাবিয়া-ছিলেন যে, তিনি পশ্পিকে পরাত্ত করিবেন। কিন্তু প্রথম বুদ্ধেই তিনি পশ্পিকর্তক পরাজিত ও বদ্দীকৃত ইইলেন। পশ্পি অবি-লবে স্পেন জয় করিয়া ইডালী যাত্রা করিলেন। এই সমরে রোমে বিষম বিপদের স্থচনা হইল। ম্পার্টীকাস নামক এক

প্রেসিরান জীতদাস যুদ্ধে বন্দিরতে ধৃত হইরা কাপুরার অন্তজীড়া-গারে (Gladiator's training school) শিক্ষিত হইভেছিল। **আন্দিথি**য়েটারে এই **অন্তর্কীডকগণ পরম্পরকে বধ** করিয়া রোমক-দর্শকদিগের শোণিত পিপাদার শান্তি করিত। ৭৩ ধৃ: পৃ: স্পার্ট।কান্ ৭০ জন অন্তক্রীড়কের সহিত ব্যারামমন্দির হইতে প্লায়ন করিয়া বছ অমুচরবুন্দের সহিত বিস্থবিয়াস্ পর্বতে আশ্রয় লইরা দলপুষ্টি করিয়াছিলেন। বহুসংখ্যক व्यवक्रीपृक ও ক্রীতদাস অবিশবে ম্পার্টাকাসের দলভুক্ত হইল। ছই বংসরের মধ্যে স্পার্টাকাদ্ ৭০ হাজার সৈম্পাংগ্রহপূর্বক সমগ্র দক্ষিণইতালী অধিকার করিলেন (৭২ খুঃ পুঃ)। কন্সল-ষর পুনঃ পুনঃ তাঁহার নিকট পরাজিত হইলেন। স্পার্টাকাস সমগ্র ইতালী দুর্গন করিতে আরম্ভ করিলেন। সেনেট এই বিষম বিপদের সময় (৭১ খু: পূ:) প্রিটর ক্রাসাস্কে ও দল সৈত্যের অধ্যক্ষ করিয়া যুদ্ধক্ষেত্রে প্রেরণ করিলেন। পুকানিরার পৈটিলা নামক স্থানে স্পাটীকাসের সৈন্ডের সহিত ক্রাসাসের ভয়ন্বর যুদ্ধ হইল। স্পার্টাকাস্ প্রাজিত ও আপুলিয়ার নিহত হন। বন্দীকৃত ও হাজার সৈম্ম কাপুয়া হইতে রোম পর্যান্ত রান্তার হুই পার্ব্ধে শ্রেণীবদ্ধভাবে শূলে আরোপিত হুইল। অবশিষ্ট সৈক্ত সকল পশ্লি কর্ম্বক বিনষ্ট হইয়াছিল। পরে পশ্লি ও ক্রাসাস্ উভয়ে কন্সল পদের প্রার্থী হইলেন। নির্মানুসারে তাঁহারা উক্ত পদের যোগ্যপাত্র না হইলেও সেনেট জাঁহাদিগকে কন্সল নিযুক্ত করিলেন। ৭১ খঃ পুঃ ৩১ এ ডিসেম্বর পশ্পি জ্বোরাসে মহাসমারোহে রোমে প্রবেশ করিলেন। কার্য্যকালে সামার শাসনবাবস্থা অনেকাংশে পরিবর্তিত হইল। এই সময়ে অরেশিয়াস্কটা লেক্স অরেশিয়া নামক আইন প্রবর্তন করেন।

সালা এসিয়া হন্টতে ইতালীতে প্রত্যাগমন করিবার পরে
রোমক সেনাধ্যক্ষ মরেনা আটেলাসের প্ররোচনায় মিথি দেতিসের
রাজ্য আক্রমণ করিবেন। তাহাতে মিথি দেতিস্ রোমীয় সেনেট
সমক্ষে মরেনার নামে সন্ধিলত্মনের অভিবিত্তীর মিথি দেতিক
বৃহ (৮৩-৮২ খৃ: পু:)
করিতে লাগিলেন, কিন্তু কোন ফল হইল
না, বরং মরেনা উত্তরোত্তর মিথি দেতিসের রাজ্য আক্রমণ করিয়া
তাহাকে ব্যতিবাস্ত করিয়া তুলিলেন। তথন নিরুপায় হইয়া
মিথি দেতিস্ একদল সৈক্তসংগ্রহপৃক্ষক হেলিস্ নধীর তীরে
মরেনাকে আক্রমণ করেন। তাহাতে মরেনা পরান্ধিত হইয়া
ক্রিন্ধিয়ায় পলাইয়া বান। তথন মিথি দেতিস্ কাপাডোন্ধিয়া
ক্রেন্তিত্ব রান অধিকার করিয়া লন। এই সমরে ৮২ খু: পু:
গারিনিয়াস সালার আদেশে এসিয়ায় গমন করিয়া মরেনাকে

যুদ্ধ ত্যাগ করিতে বলেন, তন্ত্রসারে মিধিনেতিস পূর্ব্বসদির স্ত্রান্ত্রসারে কাপাডোকিয়া পরিত্যাগপূর্বক স্বরাজ্যে প্রত্যাগমন করেন। এইরূপে দ্বিতীয় নিথি দেতিক যুদ্ধ সমাপ্ত হয়।

কিন্ত নিথি দেতিস্ রোমকদিগের ছুরভিসদ্ধি জানিতে পারিষা গোপনে যুক্তর আরোজন করিতে লাগিলেন। মেরায়াস্পক্ষীয় সেনাপতিগণ,স্পেনের সাটোরিয়াস্ ও বহুশতজ্ঞলদস্য তাঁহার দলে মিলিত হইল। এই সময়ে মিথাইনিয়ার রাজা ৩য় নিকোমিডস্

ষ্ঠাৰ বা মহামিন্দিতিক যুদ্ধ তিপ্ৰের নামে অপণি করিয়া যান। কিন্ত (৭৪-৬১ খৃঃ গুঃ) নিকোমিড্সের নাইসা নামী জীর গর্ভজাত সঞ্জানের সিংহাসনপ্রাপ্তি বিষয়ে মিণ্ডিদেতিস্ সাহায্য করিতে লাগিলেন। এই ক্ত্রে ভীষণ যুদ্ধ বাধিল।

রোমক কলল লুকালাদ্ এবং অরিলিয়াদ্কট্টা তাঁহার বিরুদ্ধে যুদ্ধার্থ প্রেরিত হইলেন। মিথি দেতিদ্ প্রথমে সমস্ত বিথাইনিয়া অধিকার করিলেন, অবশেষে কট্টা কালচেডন নামক স্থানের যুদ্ধে মিথি দেতিদ্কে পরাজিত করিলেন এবং তাঁহাকে মিজিকাদ্ নামক স্থানে অবরুদ্ধ করিয়া থান্তসংগ্রহপথ বন্ধ করিলেন। তথন তিনি স্বীয় রাজ্যে প্রস্থান করিতে বাধ্য হইলেন। কিন্তু লুকালাদ্ তাঁহার ক্ষমুসরণ করিয়া পুনরায় তাঁহাকে পরাজিত করিলেন। মিথি দেতিদ্ স্বীয় জামাতা আর্দ্মেণিয়াপতি টাইগ্রেন্সের মিলিত সৈগ্র লইয়া রোমক-সেনাপতি কেরিয়াদ্কে সম্প্রিরণে পরাজিত করিল। তৎপরে ৬৭ খৃঃ পৃঃ রোমকসেনাধ্যক্ষ ট্রিয়ারিয়াদ্ জেলানামক স্থানে ভয়ত্বর যুদ্ধে পরাজিত হইলেন। রোমক শিবির ও যুদ্ধভাণ্ডার শক্রর হন্তগত হয়।

এদিকে লুকালাদের বিপক্ষণণ রোমে প্রাথান্ত লাভ করার তাঁহারা লুকালাদ্কে রণক্ষেত্র হইতে প্রত্যাবৃত্ত হইতে আদেশ পাঠাইলেন। তাহাতে লুকালাদের সৈন্তগণ বিদ্রোহী হইয়া উঠিল। এই স্থবোগে মিপিনুদেতিদ্ ও টাইগ্রেন্দ্ উভয়ে প্ররায় পণ্টাদ্ ও কাপাডোকিয়া অধিকার করিলেন। লুকালাদের বিপক্ষণণ তাঁহার পরিবর্তে মেব্রিওকে কন্দল নিযুক্ত করিয়া যুক্তক্ষেত্র পাঠাইলেন। কিন্তু তিনি যুক্ত শত্রুপক্ষের কিছুই করিতে পারিলেন না। মিথিদেতিদ্ ৬৭ খৃঃ পু: পুনরায় স্বীয় সি:হাসনে আরোহণ করিলেন। এই সময়ে পশ্পি মিথিদেতিক যুক্তের দেনাপতি নিযুক্ত হওয়ায় লুকালাদ্ স্বপদ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইলেন।

এই সময়ে ভূমধ্যসাগরে অলম্প্রগণের অত্যন্ত উপদ্রব বৃদ্ধি পাইরাছিল। সিরীয়া, সাইপ্রাস্ এবং ক্রীতধীপের লোক সকল প্রধানতঃ এই কার্য্যে লিপ্ত ছিল। ভাহারা বাণিজ্যপোভ বৃঠনধারা বহুধনরত্ব সঞ্চর করিরা ছিল এবং একস্থল রণভরী এবং বহুদংখ্যক স্থাশিকত সৈন্ত ও নাবিক লইনা অভ্যন্ত প্রা-ক্রান্ত হইরা উঠে। ইহারা এই সমত্রে অষ্টিয়া বন্দরে ক্রএক-খানি রোমক জাহাজ দগ্ধ করার এবং লগদখাদিগের সহিত বৃদ্ধ আণ্টোনিয়াদের ক্লা ও পুত্রকে হরণ করার মার্ডিলিয়াদ্ ইহাদিগের সহিত বৃদ্ধ করিতে

রোম হইতে প্রেরিত হইলেন। ৬৭ খৃঃ পুঃ ট্রিউন গেবিনিয়াস্ "লেক্স-গেবিনিয়া" নামক এক আইন প্রবর্তন कतिया ज्ञ्यशामागदतत युक्तानि निर्काटश्त अन्न अकन नर्क्समय শাসনক্ত্র নিয়োগের নিয়ম করিলেন। তদমুসারে ২০০ রণ-তরী যুদ্ধার্থ সজ্জিত হইল। পশ্পি এই সমস্ত রণতরীর অধিনারক হইয়া যুদ্ধার্থ গমন করিলেন এবং ও মালের মধ্যে জলদস্থাগণকে जम्मुर्गद्वारण भद्रान्छ कदिलान । २००० खनमञ्जा वन्नी श्**रे**ल-কিন্তু পশ্লি ইহাদিগকে বধ না করিয়া এসিয়া মাইনর ও অভাত স্থানে উপনিবেশ স্থাপন করাইলেন। তৎপরে পম্পি সিলিসিয়া নামক স্থানে জলদস্যাগণের স্থার্কিত চুর্ভেত চুর্গ সকল ধ্বংস क्तित्नम । ७७ थु: शु: हि विडेन मानिनियाम् लब्ब मानिनिया নামক আইন প্রবর্তন করিয়া পশ্পিকে মিথিলৈতিক যুদ্ধের অধ্যক্ষতা অর্পণ করিলেন। সিসিরো এবং জুলিয়াস্ সিজর পশ্পির পক্ষ সমর্থন করিয়াছিলেন। সংবাদপ্রাপ্তি মাত্র #পশ্পি এসিয়ায় যাইয়া লুকালাদের নিকট হইতে সেনাপতিত্ব গ্রহণ ক্রনিলেন এবং কৌশলে পার্থিব নরপতিকে হস্তগত করিয়া সদৈত্তে মিথি দেতিসের বিরুদ্ধে স্থলপথে যাত্রা করিলেন। মিথি দেতিস সন্ধির প্রার্থনা করিলেন। কিন্তু পশ্পি সন্ধির প্রস্তাবে সন্মত হইলেন না। তখন মিথি দেতিস্ আর্মেণিয়ার পলায়ন করিলেন, এবং পশ্পি কর্ত্তক সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইলেন। পরে সিনোরি-শ্বাদের হর্ভেন্ত হর্নে থাকিয়া তিনি পুনরায় দৈলসংগ্রহ করিলেন। কিন্তু এইবার জামাতা টাইগ্রেনস্ তাঁহার সাহায্য করিলেন না। মিথি দেতিস্ দৈলুসহ বন্দোরদের "নিকটবতী স্বীয় রাজ্যে •পলায়ন করিলেন।

পশ্পি তাঁহার অমুসরণ না করিয়া টাইত্রেন্স্ কে আক্রমণ করিবেলন। টাইত্রেন্সের পুত্র পিতার বিরুদ্ধে বিদ্রোহী হইরা পশ্পির পক্ষ অবলম্বন করিবেলন। সেই সঙ্গে আর্মেণিয়ার নগর সকল পশ্পির বশুতাস্বীকার করিল। নিরুপার টাইত্রেন্স পশ্পির নিকট আত্মমর্শণ করিবেলন। পশ্পি তাঁহার প্রতি সদর ব্যবহার করিয়া ৬০০০ টালেন্ট প্রার্থনাপূর্ব্ধক তাঁহাকে আর্মেণিয়ার রাজা বালিয়া স্বীকার করিতে চাহিলেন। সিরীয়া, ফিনিসিয়া, সিলিনিয়া ও কাপাডোকিয়া রেমকদিগের অধিক্রত হইল। পশ্পি আর্মেণিয়াবিজয় সমাধাপূর্ব্ধক উত্তর্দিকে মিপ্রি-ক্রেলির অন্স্রক্রের ক্রেররান। প্রিমধ্যে আইবেরিয়ান

ও আলবেনিরানদিগের সহিত ভাঁহার মুদ্ধ হইল। উভর জাতিই পরাঞ্জিত হইরা রোমের বশুতা স্বীকার করিল (৬৫ খু: পূ:)। কিন্ত মিথি দেতিদের অমুসরণ কটুসাণ্য ভাবিয়া কিরিয়া আসিয়া পন্টাসে রোমকশাসন প্রতিষ্ঠিত করিলেন। সিরিয়ারাজ্যের ধ্বংসাবশেষ মধ্যে যে সকল স্বাধীন রাজ্য উত্তত হইয়াছিল, সেই সমস্ত অধিকার করিতে লাগিলেন। অন্তিওকান এসিরাটিকান রাজাচাত হইলেন, এবং তাঁহার রাজা অধিকৃত হইল। এই প্রকারে সমগু সিরীয়া এবং তৎসমীপবর্ত্তী দেশসমূহে রোমকশাসন প্রতিষ্ঠা করিয়া ৬৩ খু: পু: পশ্পি किनिकिश ७ शारमखिन थारार गांजा केत्रिरमन। এই नमस्त्र হিকানাস্ ও অরিষ্টোব্লাস্নামক পালেস্তিনের পুরোহিত নরপতি-বর অন্তর্গু কে ব্যাপৃত ছিলেন। পশ্পি হির্কানাসের পক্ষ অবলঘন कतात्र व्यतिरहात्नाम् व्यविनास व्याधाममर्गन कतिरम् । किन्न ताना পরাজিত হইলেও জেলুজেলমবাসী রিক্দী প্রজাবর্গ রোমক অধীনতা স্বীকার করিল না। তিন মাস অবয়োধের পরে জেক-জেলম অধিকৃত হইল। পশ্পি সেই পবিত্রতম মন্দিরে (Holy of Holies) প্রবেশ করিলেন। তৎপুর্কে পবিত্র গ্রিছ্দী পুরোহিত ব্যতীত কোন মহুষ্য এই স্থানে পদক্ষেপ করিতে পারে নাই। পশ্পি হির্কানাসকে পুরোহিত-সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করিয়া অরিষ্টবুলাস্কে বন্দী করিয়া স্থোমে যাত্রা করিলেন। এই সময়ে তিনি মিথি দেতিদের মৃত্যুদংবাদ পাইলেন। মিথি দেতিস মৃত্যুর পূর্ব্বে বিরাট সৈভাবল সংগঠন করিয়া হানিবলের ভায় ইতালী আক্রমণের সঙ্কর করিতেছিলেন, এমন সমরে তাঁহার মৃত্যু হইল। তাঁহার পুত্র ফার্ণাদেন কিছু দিন বিপক্ষত। করিয়াছিলেন। পরে তিনি বন্ফোরাদের রাজা হইরা রোমক অধীনতা স্বীকার করিলেন, ডিওটেরাস্ গ্যালেশিরার, এবং এরিও বার্জেনাস কাপাডোকিয়ার করন রাজা হইলেন। পশ্চি বিজ্ঞিত প্রদেশে ৩৯টী নৃতন নগর প্রতিষ্ঠিত করিলেন। এই সময়ে রোম-রাজ্যসীমা স্থদুর পূর্ব্বে বিস্তৃত হইয়াছিল।

বহিঃপ্রদেশে রোমের বিজন্ধবৈজয়ন্তী উড্ডীন হইলেও রোমে বিশেব কোন উন্নতি সাধিত হয় নাই। গেবিনিয়ান্ ও মানিলিয়ান্ আইনের য়ারা সেনেটের ক্ষমতা থর্ম হইয়াছিল। সাধারণপক্ষ আপনাদের অবনতি উপলব্ধি করিয়া ক্রাসাসের মুথাপেক্ষী হইলেন। এই সময়ে সাধারণ পক্ষের মধ্যে রোমে জুলিয়াস্ সিজারের প্রতিভা পরিব্যাপ্ত হয়। তিনি রোমে প্রাধান্ত লাভপূর্বক গৌরবের সোপানে অবিরোহণ করিতে ছিলেন। তিনি ১০০ খঃ প্রেক্সা গ্রহণ করেন এবং পশ্লি অপেক্ষা ছয়বৎসর বয়ঃক্রিনিষ্ঠ ছিলেন। তাঁহার পিতৃৎসা ক্লিয়ার সহিত বিখ্যাত মেরায়াসের পরিণয় হইয়াছিল। সিজার নিজে সিয়ার কক্ষা কণিলিয়ার

পাণিগ্ৰহণ করিয়াছিলেন। সালা নিজারের প্রাডিভা বেথিয়া বলিয়াছিলেন বে. একদিন অভিজাত সম্প্রদারের প্রাধায় এই বালক হইতে ব্রস্থীভূত হইবে। সিন্দার বোষের তৎসাম্বিক বকৃতাশক্তিতেও বিশেষ প্রাসিদ্ধিশান্ত করিয়া আভাজনিক ইডি-হান (৬৯-৬১^{বৃঃ পু}ঃ) ছিলেন। তিনি রোডদের আলকারিক-থিগের নিকটে বাগ্মিতা শিক্ষা লাভ করিয়াছিলেন। আপলো-নিয়াস ভাঁহার অধ্যাপনা ক্রিরাছিলেন। মেরারাসের পক পুনত্নজীবিত করাই সিজারের আন্তরিক বাসনা ছিল। স্বীয় জমারিক বাবছারে তিনি সাধারণের প্রিরণাত্র হইরাছিলেন। 👐 খুঃ পুঃ, ভিনি কোরেষ্টরের পদলাভ করেন, কিন্তু এই সময়ে ভংগন্ধী কর্নিলিয়া এবং মেরারাসের বিধবা পত্নী ক্রনিরা প্রাণত্যাগ করেন ৷ এই শোকাবহ ঘটনায় তিনি সাধারণ পক্ষকে সংখ্যেধন করিরা কোরামে ওলখিনী ভাষার এক বক্ততা করেন। তিনি গেবিনিয়ান ও মানলিয়ান আইনেয় একজন প্রধান পূর্চপোষক ছিলেন। ৬৫ খু: পু: ভিনি মেরায়াসের প্রতিমূর্ত্তি গোপনে রাত্রিযোগে কাণিটোলে প্রতিষ্ঠিত করেন। পূর্বে এই প্রতিমূর্তি সালা কঠক রিনষ্ট হইয়াছিল। ভাহাতে সাধারণপক আনন্দাতি-শব্যে উত্তেজিত হইরা সিজারের জরধনি করিল। কেটালাস এই ঘটনা সেনেটের গোচরে আনরন করিলে সেনেট উত্তেজিত क्रम-माधातांत्र विक्रम् किङ्क क्रिएंड शांतिकाम मा । अहे अकारत সিজার মেরারাস, সিল্লা এবং সাটার্ণিনাস্ প্রাকৃতি সাধারণ পক্ষের বীরগণের বিশুপ্ত শ্বভির পুনরুথাপনে বছপরিকর হইলেন।

এই সময়ে মার্কাস টালিরাস্ সিসিরো সিলারের সহবোগিরণে অভ্যুথিত হইলেন। সিসিরো ১০৩ খ্বঃ প্রঃ আর্পিনাম্ নগরে জন্মগ্রহণ করেন, এবং খ্বীর অসাধারণ প্রতিভাবলে ২৫ বৎসর ব্যান সের্বাসিরাসের প্রাণদণ্ডাজ্ঞাকালে ডিক্টেটর সালার বিরুদ্ধে ওল্পিনীভাবার হকুতা করিরা সাধারণকে চমৎকৃত করিরাছিলেন। ৭৯ খ্বঃ প্রঃ তিনি রোম পরিত্যাগপুর্বক আথেন্দ ও এসিরামাইনরে বাইয়া অসভার ও দর্শনখান্ত অধ্যয়ন করেন। পরে রোমে প্রত্যাগমন করিয়া তিনি ভ্বনবিধ্যাত এবং সর্বাপ্রধান বালী বলিয়া থাতি লাভ করেন। ব্যবহারজীবি-সম্প্রদারের প্রেসিছ বালী হর্টেন্সিয়াস্ ও কটা তাহার নিকট নভলির হইলেন। বৈবেশিক হইলেও প্রতিভাবলে সিসিরো ৭৬ খ্বঃ প্রং কোরেইরের পদলাভ করেন। তৎপরে তিনি সিসিলিতে গমন করেন। ৬৬ খ্বঃ প্রঃ তিনি প্রিটরের পদলাভ কালে ভ্বনবিধ্যাত বাক্সারিকর অপুর্ব ব্যারামে লোকারণ্যকে ত্তিভ করিয়াছিলেন।

এই সময়ে রোমে কাটালাইনের বড়বন্তের বিশেব আন্দোলন চলিভেছিল। অক্তান্ত শত্রুপাক্ষের সহিত রোম নগরকে অধিবাসী সমেত ধ্বংস করিবার ক্ষম্ভ ভেটাল-কুমারীদিগের সহিত বড়বন্ত্র করিতেছিলেন। কাটালাইন স্বরেলিয়া স্বরেষ্ট্রনা নান্নী এক গণিকার প্রণরদাভার্থ স্বীয় পত্নী ও পুত্রকে স্বহন্তে হত্যা করেন। তাঁহাৰ রোমধ্বংসের বড়বছ সিসিরো কর্তৃক প্রকাশিত এবং সিসিবোর বক্তার বড়বল্পবিগণ প্রাণদণ্ডে দণ্ডিত হয়। 🗝 খুঃ পুঃ সিসিরো কন্সল পদলাভ করেন। সেই সময়ে এক-निटक है विकेन ककान इधिमयकीय अव बाहिन विधिवक कत्रिवाद क्रही भाम এवः पञ्चनिक कांग्रेगाहरूनत विजीत वज्रवह नुजन 'বিপৎপাতের হুচনা করে। সিসিরো কাটালাইনের বিরুদ্ধে অভিযোগ করিরা ৮ই নবেশ্বর কুপিটরের মন্দিরে সেনেটের সমস্ভগণকে লইয়া এক সভা করেন। যড়যন্ত্রকারিগণ এবারেও প্রাণদঞ্জে দণ্ডিত হয়। কাটালাইন এই সময় সৈম্প্রসংগ্রহ-পূর্বক রোম আক্রমণের চেষ্টার ছিলেন। 🖦 খু: পু: তাঁহার সৈন্যের সহিত কন্দল সৈন্যের বৃদ্ধ হয়। কাটালাইন পরান্ধিত ও নিহত হন। সিদিরোর বৃদ্ধিবলে রোম এই বিপদ হইতে মুক্ত হইল। তজ্জনা কেটো তাঁহাকে "রোমের পিতা" বলিয়া অভিহিত করিলেন। সমন্ত দেবমন্দিরে সিসিরোর কল্যাণে পজা প্রদত্ত হইল। কিন্তু বড়যন্ত্রকারিদিগকে বিনা বিচারে প্রাণদণ্ডের জন্য অনেকে সিসিরোকে অপরাধী স্থির করিল।

৬২ খ্বঃ পূ: পশ্লি এদিয়া-বিজয় সম্পন্ন করিয়া ইতালীতে উপস্থিত হইলেন। ৬১ খ্বঃ পূ: ৩০এ সেপ্টেম্বর তিনি মহা সমারোহে বিরাট বিজ্পনোৎসব সম্পন্ন করিলেন। পশ্লির বিজ্ঞান রথের সমূধে বন্দীক্বত রাজগণ পদত্রক্তে চলিতে লাগিলেন।

পশ্পি রোমে আসিয়া উভয় সম্বটে পড়িবেন। অভিজ্ঞাত পক্ষ বা সাধারণপক্ষ, কোন পক্ষ অবসম্বন করিবেন, তাহা স্থির করিতে পারিশেন না। তবে অভিজ্ঞাতপক্ষের বিষেধার্শনে তিনি সাধারণপক্ষ আশ্রয় করিলেন। তিনি এসিরার যুদ্ধে বিশিষ্ট সেনাপতিদিগকে স্বায়গীরদানে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ ছিলেন, একণে সেনেটে ভাহার প্রার্থনা করিলেন। কিন্তু সেনেট ভাঁহার প্রার্থনা-পুরণে অসন্মত হইলেন। তথন পশ্লি কৌশলে স্বীয় প্রতিজ্ঞা পুরণের চেষ্টা করিতে লাগিলেন। এই কারণে তিনি ক্রাসাস ও সিলারের সহিত মিত্রতা স্থাপন করিলেন। সিলার এই সময়ে স্পেন এবং লিউসিটানিয়ার যুদ্ধে জয়লাভ করিয়া রোমে প্রত্যাগত হইরাই কন্সল পদলাভ করিলেন। পশ্পি, সিল্লার ও ক্রাসাস, রোমের এই প্রসিদ্ধ ব্যক্তিত্তরের সহবোগিতা প্রথম "টারান্থিরেট" নামে খ্যাত। প্রক্লুত প্রস্তাবে এই তিন ব্যক্তিই একণে রোমের मार्खाकोम नाइक रहेश केंद्रिलन । किन्द्र वर्छमात्न हेर्हेभिरशद মধ্যে সিক্সারের প্রাধান্ত সর্ব্বাপেকা অধিক ছিল। সিক্সার কলাল পদ লাভ করিয়া পশ্পির প্রার্থনা পূরণ করিলেন এবং কাশ্পিনিয়া প্রদেশের প্রচুর ভূমিখণ্ড পশ্লির সেনাদিগকে বিভাগ করিয়া ছিলেন। সিন্ধারের মধ্যস্থতার সেনেটও পশ্লির এসিয়াবিজ্ঞরকার্য্যের সমর্থন করিতে বাধা হইলেন। তৎপরে সিল্পার পশ্লির
সহিত বন্ধতা চিরস্থারী করিবার জন্ত নিজের একমাত্র প্রহিতা
জ্বিরাকে পশ্লির সহিত বিবাহ দিলেন। সিল্পার ক্রমে সকল
পক্ষের প্রিরপাত্র হইয়া উঠিলেন। সিল্পার রোমসাম্রাজ্যের
প্রাধান্তলাভের জন্ত সেনাবল র্ছির উপার দেখিতে লাগিলেন,
তজ্জ্ঞ্জ তিনি গলপ্রদেশের শাসনকর্তৃত্ব প্রার্থনা করিলেন, এবং
ট্রিকিন ভৌটনিরাসের জন্তক্লতার তিনি সিসাল্পাইন গল ও
ইল্লিরিকাম প্রদেশের শাসনভার ৫৮ হইতে ৫৪ খৃ: পৃ: পর্যন্ত
প্রাপ্ত হইলেন। এইস্থানে তিনি এক স্থবিশাল সৈন্যালল স্থশিক্ষিত
করিতে লাগিলেন। বে গলগণ এক সমরে ইতালীর বহু অনিষ্ঠ
সাধন করিয়াছিল, তিনি তাহাদিগকে দমন করিবার আশা মনে
মনে পোষণ করিতে লাগিলেন।

উক্ত এয়মীর-সমিতি বা টায়ান্তিরেট সিসিরোকে আহ্বান করিলেও সিসিরো তাঁহাদের দলে মিলিড হন নাই। এই সুত্রে টি বিউন পি, ক্লডিয়াস সিসিরোর শক্রতাচরণ করিতে চেষ্টা পাই-লেন। ৬২ খৃঃ পৃঃ সিজারের স্ত্রীর "বোনাডিয়া" ত্রতোপলক্ষে পুরুষের প্রবেশাধিকার নিষেধসত্ত্বেও ক্লডিয়াস্ রমণীর বেশে এই ক্রীদলে প্রবেশ করিয়াছিলেন। ক্লডিয়াসের **অ**ভিযোগ সম্বন্ধে সিসিরোর সাক্ষ্যদানই উভয় পক্ষের বিরোধের কারণ। বিচারক-গণের অবিচারে ক্লডিয়াস্ মৃতিদ লাভ করেন। ক্লডিয়াস্ একণে এক আইন প্রণয়ন করিলেন যে, যাহারা বিনা-বিচারে রোমবাসীর প্রাণদণ্ড করিয়াছে, তাহারা নির্মাসিত হইবে। সিসিরো তজ্জ্ঞ ৫৮ খ্র: প্র: রোম পরিত্যাগপুর্বাক গ্রীদে গমন করিলেন। এই কার্য্য সম্বন্ধে ক্রডিয়াস্ ট্রায়ান্তিরগণের পরামর্শ গ্রহণ করেন নাই। পুর্বে পশ্পিক ইক কারাক্ষত্ক টাইগ্রেনসূকে মুক্তিদান করায় পশ্পির সহিত তাঁহার বিরোধ **উপস্থিত হইল। পশ্পি ই**হার প্রতিশোধ শইবার জন্তু সিদিরোর পুনরাহ্বানের জন্ত চেপ্তা করিতে • লাগিলেন। দেনেট পশ্পির প্রার্থনা পুরণে ক্রতসম্বন্ন হইয়া এই বিষয়ে সাধারণের মত জিল্পাসা করিলেন ৷ অধিক সংখ্যক ব্যক্তিই সিসিরোর পুনরাগমনে সন্মতি জ্ঞাপন করিল। তদম্পারে ৪ঠা সেপ্টেম্বর ৫৭ খ্যু পুঃ সিসিরো রোমে পদার্পণ করিলেন। তাঁহার কল্যাণ কামনায় জুপিটরের মন্দিরে পূজা প্রদত্ত হইল। সিজার ৫৮-৫০ খু: পু: পর্যন্ত গলপ্রদেশে রোমকশাসন বন্ধমূল করিতে নানা যুদ্ধ বিপ্রহে লিপ্ত থাকিয়া সমগ্র ট্রান্সালাইন গলে, রাইন নদীর অপর তীরে এবং বুটেনে রোমক আধিপতা বিস্তার করিতেছিলেন। বুটেন এতদিন পর্যান্ত রোমকদিপের অজ্ঞাত ছিল। সিজার ৫৮ পৃঃ शृः द्गार्किवारे नामक अगिषगरक जिर्चाष्ठे नामक शास्त्र

যুক্তে পরাজয় করেন। এই সময়ে গলগণ অরিওভিটাস্
নামক জর্মণ রাজার বিক্লকে নিজারের সাহাব্য প্রার্থনা করে।

কিলার ভাঁহাকে পরাজয়পুর্ককে রাইন নদী পর্যান্ত রোমের
রাজাসীমা বিভার করেন। ৫৭ খুঃ পূর্কালে মধ্য ও উত্তর গলের
বেলগাও সম্প্রদার সিজারের বিক্লকে ও লক্ষ সৈক্ত লইরা যুকার্থ
প্রেক্ত হইল। কিন্ত ভাহারা ক্রমে ক্রমে নিজ্ট
পরাভূত হইয়া রোমক প্রাথান্ত স্বীকার করিল। নার্ডাই
নামক বেলজিক জাতি সিজারের সঙ্গে ভরত্বর যুক্ত করিরাছিল।

সিজারের বিপুল বিক্রমে জয়লাভ করিলেন। ও লক্ষ নার্ডাই
সৈক্তের রক্তল্রোতে রণভূমি প্রারিত হইয়াছিল। ৫৬ খুঃ পুঃ
সিজার রুটানী প্রদেশে ভেনেটি জাতির বিক্রকে অভিযান
করেন এবং তথা হইতে ক্যালে ও বোলন প্রাদেশের
সমীপ্রতী মরিনি ও মেনাপাই জাতিগণের হুর্ভেন্ত হুর্গ সকল
অধিকার করেন।

এই অভিযানে সিঞ্চার রাইন নদীর তীরবন্ত্রী কেলিটক জাতির সহিত যুদ্ধে লিপ্ত হন। এই যুদ্ধে জন্মণগণ সিজারের নিকট সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইলেন। জয়লাভ করিয়া সিঞ্চার দশদিনের মধ্যে একটা সেতু নির্দ্মাণ করিয়া ee ष्:श्: शिकारतत রাইন নদী অতিক্রম করিলেন এবং 'কোলন ও দেলামী নামক স্থানের অধি-বাসীদিগকে পরাজিত করিয়া গলে প্রত্যাগমন করিলেন। সিজার এই সময়ে বুটেন আক্রমণ করিবার সম্বন্ধ করিয়া ক্যালের নিকটবন্তী ইটিয়াদ নামক স্থানে জাহাজে চড়িয়া দাউথফোরলও নামক স্থানে অবতরণ করিলেন। রুটনগণ ভীম বিক্রমে যুদ্ধ করিয়াও পরাজিত হইল। বাসত্তিক ক্রান্তিপাতের পূর্বে সিজার গ্রন্থ যাত্রা করিলেন। সিজারকর্তৃক জর্মণদিগের প্রাঞ্জর এবং यूनुत्रवर्त्ती वृटिन विकामश्वामान्यवन तामकशन व्यकान উৎসাহিত হইয়া উঠিলেন; কিন্তু কেটো তাঁহার তীব প্রতিবাদ করিয়াচিলেন।

এইবার সিজ্ঞার ৫টা সিজ্ঞন লইয়। বৃটেনে উপস্থিত হইলেন।

রহ প্রণ্য সিলারের বৃটনগণ মিডলসেক্স এবং এসেক্স প্রদেশের

রম অভিযান। অধিপতি কাসিডেলানাসকে সেনাপতি
করিয়া যুকার্থ অগ্রসর হইলেন। বৃটনগণ উপ্যাপরি করেকটী

যুক্কে সিজ্ঞারের নিকট পরাজিত হইল। সিজার কিংসটনের
সালিকটে টেম্সনদী পার হইয়া এসেক্স ও মিড্লসেক্স অধিকার
করিলেন। তথন কাসিডেলানস্ সন্ধির প্রস্তাব করিলেন।

সিলার বৃটনদিপের নিকট বার্ষিক কর ধার্য করিয়া গল য়াত্রা
করিলেন। এই সমরে গলে ছর্জিক্স দেখা দিল, অন্নপ্রীড়িত

এবুরোনস্ ও নার্ডাইগণ বিদ্রোহী হইয়া উঠিল। তাহারা রোমক

শিবির আক্রমণ করিণ বটে, কিন্তু সিঞ্চারের সহিত বুদে পরাজিত হইরা প্রায়ন করিল। কিছু শীগ্রই বিদ্রোহী হইরা স্বাধীনতা লাভের চেষ্টা করিছে লাগিল এবং বছসংখ্যক রোমকeo গু: পু: সিজারের সৈক্ত সংহার করিল। সিঞার দিসায়াইন গল হইতে চুই দল সৈঞ্জ সংগ্রহপূর্কক গল-श्राप्त भवास्त्र कविद्या भूनव्याद चनान आनवन कवितन। कर्यनग्न ग्रनमिट्गब माहाया कतात्र निकात शुनतात्र ताहेननमी উন্তীর্গ হইরা অর্থানিগকে পরাত্তর করিবেন। গলগণ श्चनबाद धार्मरवरंग स्त्रामकपिरगत विकरक व्यवधारण कतिम। ea पु: পু: निवादत्त ভার্সিংগেটোরিক নামক একজন প্রসিদ্ধ বীর গলছিগের সেনানীরূপে সিম্বারের विक्रास ममतमका कतिरन्ता। देशाँत প্রতাপে ও ব্রদেশবাৎসল্যে সিঞারের ৬ বংসরবাপী গলবিজয় নিম্বল হইবার উপক্রম **इहेन।** निकात जनमा छे०नाटक ও প্রবল পরাক্রমে যুদ্ধ চালাইতে লাগিলেন। ভার্সিংগেটোরিক্স গলপ্রদেনের প্রসিক্ষ নগরাদি ধ্বংস করিয়া সমস্ত দেশকে মরুভূমিতে পরিণত করিতে আরম্ভ করিলেন। এভারিকাম নামক অবশিষ্ট হর্ভেড চুর্গ ও স্থারক্ষিত নগর সিঞ্জার অবরোধ করিলেন। অধিকারপূর্ব্বক সিঞ্জার নগরবাসী আবাল-বৃদ্ধ-বনিতাদিগকে নিহত করিলেন। অবলেবে ভার্সিংগেটোরিকা বর্গাঙী প্রদেশের এলেসিয়া নগরের ছর্তেন্ত ছুর্নে আশ্রয় লইলেন। বহুসংখ্যক গলনৈত্র রোমকদৈত্রকে পরিবেষ্টন করিল। এই বিপদে দিজার অত্যন্তত সাহস, রণপাণ্ডিতা ও অতুল বীরত্বে গলসৈম্র ছিন্ন ভিন্ন করিয়া দিলেন। এলেসিয়া সিজারের অধিকৃত হইল। ভার্সিং-গেটোরিল্ল বন্দীরুত হইলেন। এই সংবাদে রোম সেনেটের সদস্তগণ পুনরায় ২০ দিন পর্যান্ত দেবমন্দিরে মাঙ্গলিক ক্রিয়ার অফুষ্ঠান করিলেন :

এই আভিযানে সিলার সমস্ত গলদেশ অবশে আনরনপূর্ব্বক তথার রোমকণাসন প্রতিষ্ঠিত করিলেন এবং প্রত্যেক প্রবেশে শাসনব্যবস্থা ও রাজস্ব নির্দারিক্ত করিরা রোমে প্রত্যাগদনের সম্ভব্ন করিলেন। এই প্রকারে

ত্রত্যাগদনের সন্ধর কারলেন। এই প্রকারে ১ ম শবিধান

ম শবিধান

মান্ত্রাক্তর সিন্তর ক্রিন্তর বহুদ্র পর্যাপ্ত

বিহৃত করিলেন। বছ সংথাক অসভ্যন্তাতি পরাঞ্জিত কটরা শিক্ষা ও সভ্যন্তার আলোক পাইরাছিল। সিসিরোর নির্বাদন হইতে স্বোমে প্রভ্যাগত হইরা পূর্ব্ধপ্রকৃতি একবারে ত্যাগ করিলেন। তিনি একবে সেই ট্রায়ন্তিরেটের পক্ষ অবলখন করিতে লাগিলেন। পশ্দির প্রভাব ক্রমে ক্রমে হুগে হইতেছিল। কারণ ক্রানালের সহিত ভাহার মনোমালিছ

বাটরাছিল। এনিকে সিন্ধারের বিপক্ষণণ ভাঁহাকে ক্ষতাচ্যুত করিতে চেটা পাইভেছিলেন। এই সমরে রিক ইভিহাস সিন্ধার রোমে উপস্থিত হইরা লুকা নামক (৫৭-৫০ খৃ: পু:) স্থানে পশ্লি ও ক্রাসাসের সহিত প্নরায় মিলিত হইলেন। সিন্ধারের প্ররোচনার পশ্লি ও ক্রাসাস ২র বার যুগপৎ কন্সন নিযুক্ত হইলেন এবং ট্রেরোরাশ্ প্রবর্ত্তিত আইন অহুসারে পশ্লি শ্লেনের এবং ক্রাসাশ্ সিরিয়ার শাসনভার প্রাপ্ত হইলেন। এই সমরে পশ্লি মর্শ্বরপ্রস্তরে এক বিরাট রক্ষালর নির্দ্ধাণ করাইলেন। এই রক্ষালরে ৪০০০০ দর্শক ক্ষতন্দে উপবেশন করিয়া সিংক হন্তী প্রভৃতি অন্তর্ম অদ্ধৃত ক্রীড়া সন্দর্শন করিতে সাগিলেন।

৫৪ খ্বঃ পৃঃ ক্রানাস্ পার্থিয় রাজগণের সহিত বৃদ্ধ করিবার
জক্ত সিরিয়ায় গমন করিলেন। কিন্ধ নির্ক্তিকা বশতঃ ২০০০
রোমক তাহাদের হল্তে পরাজিত ও হত হইল। তাঁহার ছিলমৃত পার্থিয়রাজ অরোভেসের রাজসভায় প্রেরিত হইল।
ক্রানাসের কৃত্যুতে পশ্লি ও সিজার রোমের অবিনায়ক থাকিলেন।
অনতিকাল মধ্যেই তাঁহাদের মধ্যে বিরোধের স্টনা হইল।
সিজারের কল্তা এবং পশ্লির পত্নী জ্লিয়ার মৃত্যু হওয়ায় উভয়ের
সম্বন্ধস্ত ভগ্ন হইয়া গেল। সকলের মূথে সিজারের গলবিজয়কীর্ত্তি পশ্লির অসম্ভ হইয়া উঠিল। তথন পশ্লি ডিক্টেটরের
পদলাভ পৃক্ষক সার্কভৌম আধিপত্য লাভের চেষ্টা দেখিতে
কাগিলেন।

এই সময়ে বিষম অরাজকতা উপত্তিত হইল। মাইলো কক্ষলপদ শইয়া ক্লডিয়াসকে নিহত করিলেন। উত্তেজিত সৈহ্যগণ অগ্নিপ্রদানে সেনেটগৃহ জন্মীভূত করিল। সিসিরো ও সেনেটের সদস্যগণ মাইলোর অভ্যাচার হইতে অব্যাহতি পাই-বার জন্ত পশ্পিকে একমাত্র কন্সল নিযুক্ত করিলেন। মাইলো অভিযুক্ত হইয়া বিচারে মেসালিয়া নামক স্থানে নির্মাসিত ছইলেন। সিঞারের ক্লা জুলিরার মৃত্যুর পর পশ্পি মেটালাস সিপিওর ক্লা কর্ণিলিরার পাণিগ্রহণ করেন। चंखद्रारक व्यविनास महासानी कचन नियुक्त कब्रियन। কিছ তিনি সিজারকে কন্দলপদের প্রাথী জানিয়া, এক জাইন করিলেন যে, স্বয়ং উপস্থিত না হইলে কেহ কোন সরকারী পদের প্রাণী হইতে পারিবে না এবং কেহ' সরকারী কার্য্যে **धार्यामन जातिथ ह**ेराज ६ वश्मरतन पाधिक रकान धारमरमत শাসনকর্ত্তা থাকিতে পারিবেন না। পশ্পি সেনেটের সম্ক্রগণের মন্তাত্ববন্তী হইরা চলিতে শাগিলেন। সেনেট এই আদেশ প্রচার করিলেন যে, সিকার অধিলকে তাঁহার শাসনকর্ত্তত পরিত্যাগ করিবেন। কারণ তাঁহার নির্দিষ্টকাল অতীত ইইরাছে। ইহার পদ্ধ সেনেট পার্থির যুদ্ধের ভাপ করিরা
তীহার ছই গিজন সৈপ্ত চাহিরা লইলেন। পরে তাঁহাকে পুনং প্রহারা সৈপ্তাধ্যক্ষতা পরিত্যাগ করিতে বলিরা পাঠাইলে,
সিজার তথন উত্তর ইতালীর রাজেরা নামক হানে অবস্থিত থাকিরা
পরোক্তরে লিখিলেন, "বদি পশ্পি সৈম্পাধিপত্য পরিত্যাগ করেন,
তবে আমিও করিব।" এই সমরে পশ্পির শুন্তর লিখিও আন্তা
দিলেন বে,"বদি সিজার নির্দিষ্টদিনে সৈপ্তাধ্যক্ষতা ত্যাগ না করেন
তবে তিনি রোমের শক্ত বলিরা বিবেচিত হইবেন।" সেনেট
নবনির্কু কজলদিগকে তিক্টেটরের ক্ষমতা প্রদান করিলেন
বটে, কিন্ত ট্রিউন আন্টোনিয়াস্ ও কাসিও এই বিরক্ত
আন্দেশের প্রতিবাদ করিরা রোম হইতে বিতাড়িত হইলেন।
পরে তাঁহারা ছল্লবেশে রাভেয়ার সিজারের শিবিরে উপস্থিত
হইরা সাহাব্য প্রার্থনা করিলেন। ইহাতে পুনর্কার আন্তর্জাতিক
ব্যুব্ধ বাধিরা উঠিল। সেনেট পশ্পিকে বুদ্ধের সেনাপতি করিলেন।

সিজার সেনেটের দৃঢ়সম্বন দেখিরা সৈশুসমাবেশপূর্বক সৈশুদিগের মত জিজ্ঞাসা করিলেন। সৈশুগণ একবাক্যে তাঁহার আদেশ পালনে প্রতিজ্ঞা করিল। ইতালীর উত্তর সীমা রুবিকন

নদী অতিক্রম করিয়া তিনি অল্প সংখ্যক আহৰ্জাতিক বা সৈতা লইয়া ইডালীর অভিমুখে ক্রডবেগে त्रव्या (६৯---88 박: 햇:) অগ্রসর হইলেন। অনারাসে আরিমি-নিয়াম নগর হস্তগত হইলে নগরবাসিগণ সিঞ্চারের পক্ষাবলম্বন-পূর্বক তাঁহাকে নগরহার খুলিরা দিল। সিজারের লোক-त्रश्लकणां अत्। कारम कारम नकन नगत्रहे औहारक विना गुरक আসুসমর্পণ করিল এবং তাঁহার যুদ্ধাতা যেন বিজয়োৎসবের ন্তার প্রতীয়মান হইতে লাগিল। সিন্তারের এই জৈত্রথাতার বোমবাসিগণ জীতি-বিহবল হইয়া পড়িলেন। সিঞ্চার বিজয়লাভ করিতে করিতে পিদেনাম্ ছাড়াইর। কর্কিনিরামে পৌছিলেন। এই স্থানে পশ্লির পক্ষীর ডমিসিরাস্ অহেনোবার্বাস্ একদল সৈলসহ অবস্থিত ছিলেন। তিনি সসৈত্তে বহুসংখ্যক সেনেটের সমস্ত এবং কভিপর প্রাসিদ্ধ ব্যক্তির সহিত বন্দী হইলেন, কিন্তু সিজার তাঁহাদের প্রতি কোনরূপ নিচুর ব্যবহার করিলেন না, তাহাতে সাধারণে সিঞ্চারের প্রতি অতান্ত অভুরক্ত হটরা উঠিল।

নিজারের পূনঃ পূনঃ বিজরলাভে পশ্পি এবং সাধারণ তয়ের প্রতিনিধিগণ তরে কিংকর্জবাবিষ্ট হইরা পঞ্চিলেন। পশ্পির সৈঞ্জাণ তাঁহাকে পরিত্যাগপূর্বক নিজারের দলভূক্ত হইল, এই সমন্ত কারণে পশ্পি ভাপুরুষভাপূর্বক পলারন করিতে সকল করিলেন। সন্ধার অভকারে পশ্পি গোপনে রোম পরিত্যাগ ভরিলেন। ভরে ভিনি ভোষাগার হুইতে অর্থ পর্যন্ত লইতে

পারিলেন না ৷ কন্সদগণ, সেনেটের সমক্ত স্কল এবং বছসংখ্যক বিখ্যাত ব্যক্তি পন্দির সহিত পণারন করিলেন। রোমবাসিগণের মবো বাহারা প্লাইতে অক্ম হইলেন, তাহারা লালা ও মেরা-রালের ৰীভংগকাহিনী পুনরার আগতপ্রার মনে করিয়া ভরবিহ্বল হইয়া পড়িলেন। এদিকে পশ্পি পলায়নপূর্বাক প্রথমে কাপুরা, পরে তথা হইতে বাঞ্সিরামে উপস্থিত হইলেন। সিন্ধার এই সংবাদ পাইরা অবিলয়ে পশ্লিকে ধৃত করিবার জন্ম ব্রাপ্ত সিয়াম অবরোধ করিলেন। কিন্তু পশ্লি অনুচরবর্গের সহিত কৌশলে লাহাজে আরোহণপূর্কক গ্রীদে পলারন করিলেন। জাহাজের অভাবে সিঞার তৎকালে তাঁহার অনুসরণে কান্ত থাকিলেন: স্থতরাং সিঞ্জান্ন তথা হইতে রোমে প্রত্যাগমনপূর্ব্ধক ৩ মাস মধ্যে সমগ্র ইতালীবিজয় সম্পন্ন করিলেন। সিঞ্জার রোমসাম্রাজ্ঞাদাসনের সর্কামর প্রাকৃ হইরা উঠিলেন। কেবল ট্রিউন মেটালাস্ তাঁহাকে পৰিত্ৰ ধনভাগুাৱে হন্তকেপে ৰাধা প্ৰদান করিয়া ছিলেন। তারির নির্মিবাদে দিজার শীন্তই বোমের অভিনীয় অধীশ্বর হইরাছিলেন। সিজার লেপিডাসের উপরে রোমরকার এবং আন্টোনিয়াদকে সৈত্তদহ ইংগুলি রক্ষার ভার দিয়া পশ্পিপক্ষীয় সেনাপতিদিগকে পরাজয় করিতে স্পেনদেশে যাত্রা করিলেন এবং কিউরিওকে ও ভালেরিয়াসকে সিসিলি ও সার্ডিনিয়া রক্ষা করিতে পাঠাইলেন। তাঁহারা উভয়ে উক্ত গুই ত্বান অনায়াসে অধিকারপূর্বক পশ্পিপক্ষীয় সেনাধ্যক্ষ-দিগকে আক্রমণ করিবার জন্ম আফ্রিকা যাত্রা করিলেন। কিন্ত কিউরিও পশ্পির সহযোগী মর্রেটনিয়ার রাজা জুবার সহিত যুদ্ধে নিহত হইলেন।

এদিকে সিঞ্জার মাসেলিয়ায় আলিয়া দেখিলেন, সেই ছানের অধিবালিগণ অধীনতা স্বীকারে অসমত। তথন সিঞ্জার ট্রেবানিরাদ্ ও ক্রটাদ্কে উক্ত ছান অবরোধ করিতে আঞ্জা দিয়া সসৈতে স্পেন্যাত্রা করিলেন। পশ্লির লেপ্টেনান্ট্রয় আফ্রিনিয়াদ্ ও পেটিরাদ্ সিলারের বিহুছে ইলরেডা নামক স্থানে বিশাল সৈঞ্জন সক্ষিত করিলেন। নিজার অন্তুত রণকৌশলে তাঁহাদিগকে পরাজিত করিলেন। নিজার তাঁহাদিগকে মুক্তিনান্দ্রমান ইয়া আম্বামর্শণ করিলেন। সিজার তাঁহাদিগকে মুক্তিনান্দ্রমান ইয়া আম্বামর্শণ করিলেন। সিজার তাঁহাদিগরে মুক্তিনান্দ্রমান তাঁহাদের সৈঞ্জনককে নিজ সৈঞ্জক্ত করিয়া লইলেন। সিজার তথন পশ্চিম স্পোন ভারোর বিহুছে যাত্রা করিলেন। ভারোগ্ অবিলম্বে পরাজিত হইয়া কর্ডোবা নামক স্থানে আম্বামর্শণ করিলেন। এইরলে ৪০ দিনে সমগ্র শোন দেশ লয় করিয়া সিজার গলে উপস্থিত ইইলান। মাসেলিয়া নগর এ পর্যান্ত অধিকৃত হয় নাই। কিন্তু সিজারের আগ্রমনসংবাদে ভীত হয়য়া তুর্গবাসিগণ অবিলক্ষে আক্রমন্দণি করিল।

এদিকে সিম্পারের অমুপদ্বিতিতে লেপিডাস নবপ্রবর্ত্তিত এক আইন অনুসারে তাঁহাকে ডিক্টেটর নিযুক্ত করিলেন। কিন্ত সিঞ্চার ১১ দিন মাত্র এই সম্মানার্ছ পদ লাভ করিরাই স্বেচ্ছায় উহা পরিত্যাগপুর্বক কন্সল নিযুক্ত হইলেন। সার্ভিলিয়াস ভেটিয়া তাঁহার সহিত কন্সল পদ পাইলেন। কিন্তু সিজার ১১ দিন মাত্র ডিক্টেটরের পদ অলম্ভত করিয়া অনেক হিতকর चाहरत्त्र चयुक्तांन क्रियांक्रितातः উত্তমর্ণ ও चरमर्गमिरशंत স্রবিধার অন্ত তিনি এক আইন প্রণয়ন করেন। তৎপরে সামার "প্রস্ত্রিপ্শন" অন্মুসারে যে সমস্ত ব্যক্তি নির্কাসিত এবং সম্পত্তি-চ্যুত হইরাছিল, তাহাদিগের পুত্রাদিকে আনয়নপূর্বক পূর্ব-সম্পত্তি প্রদান করিলেন এবং আরদ পর্যান্ত সমস্ত প্রজাবর্গকে রোমবাসীর স্থায় সমভাবে নির্ব্বাচনাধিকার প্রদান করিলেন। তংপরে তাঁহার সমস্ত সৈত ব্রাপ্তসিরামে সমবেত হইলে, সিজার ৪৯ থঃ পৃঃ ডিসেম্বর মাসে পশ্পির অমুসরণে প্রবৃত হইলেন। এদিকে পশ্লি গ্রীদ, মিদর এবং এদিয়া খণ্ডের নানারাল্য হইতে বছসংখ্যক সৈতা সংগ্রহ করিলেন। বিবৃশাস্ তাঁহার সেনা-পতি হইলেন। নিভীক বীর সিদ্ধার তথাপি সসৈগু বা গুসিয়াম इरेट अभिताम् याजा कतिरागन। जाशास्त्रत अज्ञानियकन সিন্ধার প্রথম-বারে কেবল মাত্র ১৫০০০ ছাঙ্কার পদাতিক এবং অখারোহী লইয়া এপিরাসে উপস্থিত হইলেন ৷ এসিরাসে পৌছিয়া পুনরায় দৈশু আনিতে তিনি জাহাজ পাঠাইলেন, কিছু বিবুলাস এই সমস্ত জাহাজ পথি মধ্যে খৃত করিলেন। ব্রাঙ্গিয়ামত্ব সেনাদলের আগমন অপেকানা করিয়া সিজার যদ্ধ আরম্ভ করিলেন। ক্রমে ওরিকম ও এপলোনিয়া অধিকার-পুর্বাক সিজার পশ্পির আশ্রয়ন্থান ডির্হাচিয়াম অভিমুখে ষ্মগ্রসর হইলেন। আপ সাস নদীর উভয় তীরে সিজার ও পশ্পির সৈতা সকল সক্ষিত হুইল। সিজার অবশিষ্ঠ সৈত্যের জনা এরপ উৰিয় হইলেন যে, একদিন রাত্রিতে তিনি একাকী কুদ্র নৌকা-যোগে স্পান্তিরাতিক সমুদ্রের মধ্যদিরা ব্রাপ্রসিরামে যাত্রা করিলেন। অবংশবে আন্টোনিয়াস অবশিষ্ট সৈন্য লইয়া সিঞ্চারের সহিত মিলিত হটলেন। পশ্পি বহু সৈনাসত্ত্বেও সিঞারকে আক্রমণ করিতে সাহস করিলেন। সিজার অল্পাত্র সৈনা লইয়া পরিখা খননপূর্ব্বক পশ্পিকে বেষ্টন করিলেন। অক্সাৎ পশ্পি শিবির হইতে নিক্সান্ত হইরা অতর্কিত আক্রমণে সিঞ্চারের কএকদল সৈঞ ছিল ভিল করিলেন। তখন সিঞ্জার অগত্যা সে স্থান পরিত্যাগ-भूकंक (थमानी याळा कविरनम । (थमानीव अखवडी कार्मिनाम বা কার্সিলিরা নামক স্থানে ভরত্বর যুদ্ধ সংঘটিত হইল। ৪৮ খঃ পু: ১ ই আগষ্ট বছলৈন্য থাকিলেও সিম্বারের বিপুল বিক্রমে পশ্পি সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইলেন। পশ্পির বিপুলবিলাসবৈভবপূর্ণ

ধনভাণ্ডার ও নিবিরাদি সমন্তই সিঞ্চারের হস্তগত হইল। পশ্পি ভগ্নোংসাহ হইরা কএকটা বন্ধুর সহিত পলারন করিলেন। অবশিষ্ট সৈন্য এবং সেনাপতিদিগের প্রতি সন্থাবহারপূর্ক্ক সিঞ্জার তাহাদিগকে স্বদলভুক্ত করিয়া লইলেন।

এইরপে স্বীর ভূজবলে সিজার উত্তর-পূর্ক ও পশ্চিম রোমসাদ্রাজ্যে একাধিপত্য স্থাপন করিয়া স্বহত্তে স্থ্রহৎ শাসনদও
পরিচালনা করিয়াছিলেন। তিনি বে কুটনীতিবলে রোমের শাসকসমিতিসমূহের সংস্কার ও পরিবর্ত্তন করিয়াছিলেন, সেই
অসাধারণ প্রতিভাবলেই তিনি বিজিত নবরাজ্যসমূহের সীমান্তপ্রদেশে শাস্তিয়াপন করিতে যদ্ধবান্ হইলেন। এই সীমান্ত শাসনে
বন্ধপরিকর হইয়া তিনি আবক্তকীয় হুর্গাদি নির্দ্ধাণে অগ্রসর হয়েন,
কিন্তু রোমের হরদ্ইজমে তিনি সে সীমান্তভিত্তি দৃঢ় করিয়া
যাইতে পারেন নাই। অপরের হল্তে তাহার সমাধাভার অর্পণ
করিয়া তাঁহাকে অকালে ইহলোক হইতে বিদায় লইতে হয়।
তাঁহার বাহবলে অক্ষ্প রোম-সাম্রাজ্য পূর্কে য়্রেক্টিস্ নদীতীর
ও ককেশপ প্রদেশ, উত্তরে রাইন্, দানিউব ও এলব্ নদী এবং
পশ্চিমে আট্লাণ্টিক মহাসাগর পর্যন্ত বিস্তুত হইয়াছিল।

তিনি প্রাদেশিক শাসনকর্ত্তাদিগের কার্যাকাল কমাইরা হানীয় অর্থভাপ্তার লুঠনের পথ রোধ করেন। তিনি আশা করিরাছিলেন বে, অগাষ্টাস্ এই পথামুবর্ত্তী হইয়া উাহার প্রবর্তিত পছতির অমুকৃলতা করিবেন; কিন্তু দৈবছর্ক্সিপাকে অগাষ্টস্প্রতিক্ল গতিতে ফিরিলেন। তিনি স্বাধিকার দান (franchise) দারা সাম্রাজ্যভিত্তি দৃচ রাখিতে মানস করিলেন। প্রাদেশিক শাসনকর্তৃগণকে রাজ্যস্বের অংশাধিকার এবং ট্রাম্সপেডেন গলদিগকে রোমবাসীর অধিকার অর্পণ করিয়া সমগ্র ইতালীকে রোমকাধিকারভূক্ত করিয়া লইলেন। এতদ্ভিন্ন তিনি সমগ্র ইতালীয় প্রাদ্বোধীপে একরূপ স্বান্ধভালানপছতি বিস্তার করিয়াছিলেন। তাঁহার উত্তরাধিকারিবর্গ ক্রমশং ঐ সকল প্রথা বিভিন্ন প্রেদেশে পরিবার্থ করিয়া একটী বিস্কৃত সাম্রাক্ষের পত্তন করিছে থাকেন।

তে খৃট পূর্ব্বান্দে পারদগণ কর্তৃক কড়্ছির যুদ্ধে ক্রাসাসের হত্যার প্রতিশোধ নইতে 'এবং পারদরান্ধশক্তি থর্ক করিতে সিলার খীর বিজয়বাহিনী সইরা রপ্যাআর আরোজন করিলেন। প্রজাতন্ত্রীয় সন্ত্রান্ধ অভিলাতবর্গ পূর্ব্বে সিলারকর্তৃক অপমানিত ও লাছিত হইরা মরমে মরিয়াছিলেন। এই বুদ্ধের আড়ম্বর পেথিরা ভাঁহাদের ক্র্বাক্টাক্ষ আরও যেন কুটিল গভিতে ক্রিতে লাগিল। ভাঁহারা দথক্ষদের সিজারের সর্ব্বনাশ করিতে অপ্রসর ' হইলেন। মে দিন সন্ধ্যার সমর সিজার পূর্ব্বান্ধ্বিকরে গমনার্থ প্রস্তুত হইরা অগ্রসর হইতেছেন, সেই সমরে ক্রটান্প্রস্থ লাশিত অভিলাতগৰ তাঁহার সমক্ষে আসিয়া উপনীত হইল।
বিশাস্থাতক ক্রেটান্ সিলারের কঠোর বক্ষে ছুরিকা বসাইয়া
তাঁহাকে ইইলম্মের মত এই ভবধাম হইতে অন্তর্গত করিল।
(১৫ই মার্চ্চ, ৪৪ খুঃ পুঃ)। এইদিন হইতে অন্তেভিয়ান্
কর্ত্বক এতিয়ান্ রণক্ষেত্রে আকলির পরাভব তারিখ (হরা সেক্টেবর ৩১ খুঃ পুঃ) পর্যান্ত রোমসাম্রাজ্যে ঘোরতর অরাক্ষকতা
বিরাক্ষ করিয়াছিল। অসংখ্য নরম্প্রপাতে রোমরাল্য জনহীন
মক প্রান্তর সনৃশ শক্ষিত হইয়াছিল। শৃগালাদি শবকুক্ করগণের
বিকট চীৎকারে এবং শবরাশির পৃতিগক্ষে রোম শ্রশানসনৃশ
বীভৎসন্ত্রে পরিপূর্ণ হইয়া জনসাধারণের ক্ষর অন্তিত করিয়া
দিয়াছিল। সেই শাসনশৃত্রশাপরিশুভ চতুর্দিশ বর্ষ কাল কি ভয়ানক,
তাহা রোমের ইতিহাসপটে সম্পূর্ণরূপে চিত্রিভ রহিয়াছে।

সিজারের প্রতিনিধি আন্টনি আত্মাবাসূর্ণ রাজনীতি অবল্বনে রোমের প্রাচীন শাসনপ্রভির প্রল্বনাধনে অগ্রসর হইলেও, সিসিরো তাঁহার প্রতিবন্দিভাচরণে পরাত্ম্প হন নাই। তিনি অদম্য উৎসাহে স্বীর ওঅস্থিনী বক্তৃতাদ্বারা সেনেট পূন্র্বাঠন করিতে প্রয়াস পাইতে লাগিলেন। সাধারণ প্রকাবর্গ ও প্রাদেশিক শাসনকর্তৃগণ প্রাচীন নীতির পক্ষণাতী হইরা আন্টনির অবল্ধিত লাসনপ্রথার ঘোরতর প্রতিবাদ করিতে লাগিলেন। সেনেট-মন্দিরে অথবা ফোরামে সিসিরোর বক্তৃতা ও সাধারণের প্রতিবাদ সেই পরিবর্তিত ঘটনাল্রোক্তক ভিন্ন গতিতে ফিরাইতে পারিল না। এইরূপে বিক্লছ পক্ষমের প্রতিপক্ষতার প্রার বর্ষকাল অতীত হইরা আসিলে, ৪০ খ্রঃ পূর্কান্দের প্রারম্ভে পূনরায় অন্তর্কির্যবের স্ট্চনা হইল।

উক্ত বর্ষের শরৎকালে আন্টনি ১৭টা লিক্সন্ সৈম্পদলের অধিনায়ক হইরা ইতালী আক্রমণের উদ্বোগ করিতে লাগিলেন। সকলেই এই অভিনৰ অভিযান ব্যাপারে এন্ত হইরা উঠিল। তাহার উপর ঐ বংসরের অক্টোবরের শেষভাগে আন্টনি সেনেটের প্রতিবন্ধকতা অগ্রাহ্ম করিরা সহবোগী লেণিডাসের সাহারে বিংশতিবর্ষীর কমিষ্ঠ অক্টেভিরানুকে কন্সল মনোনীত করিরা ছিতীর এরন্ধীর-সমিতি সংগঠন করিলেন। ইহাতে সাধারণের ভরের মাআ অধিকতর পরিবর্জিত হইল। এই সমিতির

শাসনকার্যাও তদমুদ্ধণে আচরিত হইরাছিল। সিজারের স্থার সদর বাবহারে প্রজাপ্তকে শ্রীভিপূর্ণ কদরে বাস করিতে না দিরা অরশীরগণ সালার স্থার কঠোর শাসনপ্রধার অবদমন করিলেন। অনন্তর প্রেস্কিশ্ন জাহির করিরা তাঁহারা সিসিরো-প্রমুধ অভিজাতবর্দের ক্রুসামন করিরা আত্মগক স্থান্ট করিণেন। প্রবংসর আন্টনি ও অক্টেম্জ্রিনের মিসিড সৈন্যের সহিত কিলিপিতে ফ্রটান্ ও কেনানের বৃদ্ধ নংঘটিত হইল। এই বৃদ্ধ ফ্রটান্-পরিচালিত নাধারণভত্তপক্ষীর নেনাদলের পরাভব ঘটিলে সাধারণভত্তের পূর্কাতন পদ্ভি-প্রতিষ্ঠার শেব আশা বিনুধ হবরা গোল।

৪০ খা পূর্বাবে উক্ত বিজয়ী সেনানায়কছরের মধ্যে মনো-বাদ উপস্থিত হর, কিছ বাঙুসিয়ামের সহিসর্কে উভরে এক্ষত হওয়ায় সেই ভরাবহ বিহেববহি প্রধূমিত হইয়াই নির্ব্বাণিত হইয়া বার এবং রোমরাজ্য অসংখ্য নররক্তপাতরূপ কলছ-কালিমা হইতে পরিবাণ পার।

এই সম্মিণন হইতেই উভরের মিত্রভাস্ত্র ক্রমশংই স্থান্ন হইতে থাকে। আন্টনি অক্টেডিরানের ভগিনী অক্টেডিরার পাণিগ্রহণ করিরা আত্মীরতা দৃদ্ধ করিরা লইলেন। তথন সেই জরবীরসক্ষ নিরোক্তরূপে রোমসাঞ্রাজ্য বিভাগ করিরা আপনাশন বার্থপহা উন্মুক্ত করিরা লইলেন। আন্টনি রোমসাঞ্রাজ্যের সমগ্র পূর্বাংশ বীর আরভাধীন করিলেন, আইডিরান্ ইভালী ও সমগ্র পশ্চিমাঞ্চলের শাসনকর্ত্ব প্রাপ্ত ইলেন। এবং লেণিডাল্ আক্রিকার বিভিত প্রদেশসমূহ গ্রহণ করিরা সম্ভই থাকিতে বাধ্য রহিলেন।

हेरात शत्रवर्धी चामन वरमदत्र वथन ज्यान्ति ज्यालाक-সামান্ত। স্বন্ধরী ক্লিওপেট্রাকে আছে স্থাপন করিরা আপনাতে আপনি মুগ্ধ হইরাছিলেন এবং সেই অধব্যপ্লের খোরে প্রাচ্য-জগতের সমৃদ্ধিরাশি ও বিলাসবৈভবপূর্ণ একটা স্থবিশ্বত সাম্রাক্তা স্থাপন করিয়া রোমক-ছাল্য উর্বাতরকে আলোড়িত করিতে মন্ত ছিলেন; তথন প্রতীচ্য প্রামেশে তাঁহারই প্রতিযোগী অক্টে-ভিয়ান থীরে ধীরে স্বীয় শক্তিবৃদ্ধিমানসে সেনাদল সংগঠন করিতে বন্ধপরিকর হইলেন। তাঁহার প্রতিযোগী টায়াস্তির-ছরের মধ্যে তিনি ৩৬ খৃঃ পৃঃ লেপিডাস্কে আফ্রিকা হইতে কিসিআই (Circeii) প্রানেশে নির্মান্তিত করেন। মুগুরণ-ক্ষেত্রে পরাজিত সেষ্টাস্ পশ্পিরাস্ বারা প্রভুত ধনরত্ন সঞ্চয় করিরা স্থানীর লোকের ভীতির কারণ হইয়াছিলেন। অক্টে-ভিন্নান লেপিডাস-বিজ্ঞানের অব্যবহিত পরেই তাঁহাকে সমূলে ধ্বংস করিলেন। ৩৫ খুঃ পুঃ পশ্পিরাসের মৃত্যু হর, তদবধি অক্টেভিরান পশ্চিম সাম্রাজ্য ভাগের একমাত্র অধীধর হইলেন। জীহার রাজগঞ্জির কণ্টক স্বরূপ আর অন্ত প্রতিঘন্দী রহিল না।

অচিরে তাঁহার ও আণ্টনির শক্তিণরীকার প্রযোগ উপস্থিত হইল। প্রথ্যালসাপুর আন্টনির বেচ্ছাচারিতা কর্মবীর অক্টেভিয়ানের মনোমত হইল না। ৩২ খ্যু পূর্বাব্দে আণ্টনি অমাপ্রবিক অভ্যাচারে ও ব্যক্তিচারিতার রোমক্ষাত্রেরই হুদরে আর এক দারণ শেলাবাত করিলেন। তিনি মিশর- সিংহানন সমুজ্জনকারিনী টলেমিক্সা বীরাকণা ক্লিপ্রতেট্রার মনোমোহনক্রপে মুগ্ধ হইরা তীহাকে অগ্নালিনী করিবার লক্ষ্য বীর সাম্রাক্ষ্য বিনিমর করিতে কুক্টিত হইলেন না। কাম প্রবৃত্তির কুতদাসরূপে তিনি আপনার অমৃত্য জীবন রাজকুমারীর চরণতলে বিকাইলেন। তাঁহাতে কারমন সমর্শণ করিরা প্রণয় জিলা চাহিলেন। শেবে বিবাহবন্ধনক্রেদন করিরা আপনার প্রিয়তমা পান্ধী অক্টেভিরাকে বিসর্জন করিলেন। একদিকে আন্টেনি বেমন জীবনপণে প্রাণের আরাধ্য প্রণয় প্রতিমা লাভ করিলেন, অপর্দিকে তেমনি তিনি অক্টেভিরার অপমানে ও ক্লুবে তদ্বাতা অক্টেভিরানের হৃদরে দারুণ প্রতিহিংসাবহি প্রজ্ঞাত করিলেন। অক্টেভিরান্ বীর ভগিনীপতি আণ্টনিকে সমুচিত দণ্ড দিতে প্রস্তুত্ত হইলেন।

এই কুকর্মের জন্ত সেনেট আন্টনিকে সেনানায়কত্ব হইতে বঞ্চিত ও পূর্ব্ধ-সামান্দ্যের আধিপত্য হইতে পদ্চাত বলিয়া খোবণা করিলেন এবং রাজী ক্লিওপেট্রের বিরুদ্ধে রোমক অভিযান প্রেরণে আদেশ প্রচার করিলেন। তদগুসারে অক্টেভিয়ান রোমকবাহিনীর অধিনায়ক হইলেন। ৩১ খুঃ পুঃ ২রা দেপ্টেম্বর অভিয়াস রণক্ষেত্রে উভয় পক্ষে ঘোর সংঘর্ষ উপস্থিত হইল। আণ্টনি যুদ্ধে পরাভূত হইয়া প্রাণ লইয়া পলাইয়া গেলেন। কিন্তু শক্তহত্তে সন্মানরকায় অসমর্থ হইয়া তিনি ও ক্লিওপেটা আত্মহত্যা করিয়া ইহজীবনের ভার হরণ করিলেন (৩০ খু: পু:)। তদনস্তর রোমকলৈক্ত ২৯ খু: পুর্বান্দের মধ্যে সমস্ত প্রাচ্য ভূডাগ বলীভূত করিয়া লইলেন। **অক্টে**ভিন্নান বিষয়বৈষয়স্তী উড্ডীন করিয়া রোমে প্রত্যা-বত হইলেন, মহাসমারোহে বিজয়োৎসব সমাহিত করিলেন। ভদনন্তর তিনি এই সুদীর্ঘকালব্যাপী অরাজকতার অবদান দিন জ্ঞাপনার্থ জেনাসের (Janus) মন্দির্ঘার অবরুদ্ধ করিয়া দিলেন। অতঃপর রোম-সাম্রাজ্যের স্থশাসন বন্দোবত্তে কিছুকাল অভিবাহিত করিয়া তিনি পরবর্ত্তী বর্ষের শেষ-ভাগে একটী অমাত্মবিক রাজশক্তির প্রকৃত পত্তন করিয়া লইলেন। ৪৩ খ্র পু: রোমের কলাল হইয়া ট্রায়ভির অভৌভিয়ান সহযোগিবরের স্থিত যে শাসনদও খীর হতে গ্রহণ করিয়া রোমসাঞ্রাঞ্জা-শাসনে অগ্রসর হইরাছিলেন, এতদিনের পর ২৮ খুঃ পুঃ শেষ-ভাগে তিনি এককই পূর্ণ প্রভাবে ও ধর্মবলে সেই শাসনদও পরিচালিত করিয়া প্রকৃত গ্রমে ন্টের প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন।

এতিটার রণক্ষেত্রে আণ্টেনির বর্ণচুর্গকারী ডিউেটার সিজারের প্রাকৃপোত্র আক্টেভিরাস্ সিজার একণে রোমবাসী জন সাধারণের পূজার বস্ত ছইলেন। প্রার বিংশতি বৎসরবাণী মুক্তিগ্রহে ও রাষ্ট্রিসাবে রোমকগণ একরণ জর্জারিত ছইরা উঠিরাছিলেন। শাসনবিশৃথালার রাজ্যমর নানা জনাচার হচিত হইরাছিল। এই সকল বিপৎপাতনিবারণোন্দেশে এবং রোমসান্ত্রাজ্ঞের মৌলকত্ব ও হারিতরকার নিমিত্ত সাধারণ লোকে সাগ্রহে অক্টেভিরাদ্কে আহ্বানপৃত্রক রাজপদে নিয়োগার ব্যবহা করিলেন। তাঁহারা মৃক্তকঠে বলিলেন, একছ্ট্রাণিড্যের পূর্ণপ্রভাব অক্ষ্প রাখিরা এবং সাধারণ তদ্তের সক্ষাননা ও শাসনপদ্ধতি রক্ষা করিরা রাজকার্য্য পরিচালনার কঠোর ভার, তিনি ভিন্ন গ্রহণ করিবার আর ছিতীয় নাই। সমগ্র রোমসান্ত্রালালার আর অকপট্রদরে ক্রভক্ততা প্রকাশপূর্বক আপনার শিরোদেশেই রাজমুক্ট পরাইতে ইচ্ছুক। তথন অক্টেভিয়ান্ সেনেটের অভিমতে রাজাসন গ্রহণ করিলেন। সেনেট তাঁহার মহাম্প্রকৃত্ব কর্মা তাঁহাকে "অগাইদ্," নাম প্রদান করিরাছিলেন।

মহতী শাসন-শক্তি, উদেশুসিন্ধিবিষয়ে গাঞ্চীর্য্যমন্ত্রী দৃঢ্তা, স্থতীক্ষ বিচার-বিবেক এবং সর্কালার্য্য অসাধারণ কৃটবৃদ্ধি ও অদম্য উত্তম প্রভৃতি সন্ধ্রণে ভূষিত হইরা তিনি সাধারণের পূজ্যহইরাছিলেন। তিনি আঁরিকিয়া নগরের একটী নগণ্য পরিবারে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। তাঁহাদের বংশোপাধি অক্টেডিয়াস, তাঁহার পিতামহ তিলোটু নগরের একজন সামান্য নাগরিক বলিয়া গণ্য ছিলেন। পরে তাঁহার থূলতাত তাঁহাকে দত্তক গ্রহণ করিলেন, তিনি তাঁহার বংশগত সিজার উপাধি প্রাপ্ত হন।
তদবধিই তিনি ইতিহাসে অক্টেডিয়াস্ সিজার নামে পরিচিত হইলেন। পূর্ব্বক্থিত ডিক্টোর সিজারের ন্যায় তাঁহার রক্তপিপাশা বনবতী ছিল না। বরং তাঁহার অপেকা কোমলতর হলর লইয়া তিনি সাধারণের হলমে বীয় উচ্চাভিলাবের পরাক্ষিত্র প্রশন্ত ক্রিয়া গিয়াছেন।

২৮-২৭ খৃঃ পৃঃ পর্যান্ত অগাইন রাজতক্তে উপবিষ্ট থাকির।
প্রজাতন্ত্রের পূন্দ-প্রতিষ্ঠানহকারে তদহকরণেই রাজ্য শানন করিরাছিলেন এবং প্রাদেশিক জনপদসমূহে খণ্ডরাজ্য স্থাপন-পূর্বক স্বয়ং সেই সকল রাজ্জভবর্ণের অধিনায়ক হইরা সার্বভৌম আধিপত্য বিস্তার করেন। তাঁহার প্রবর্ণিত এই রাজ্যশাসন-প্রণালী অনুসারে (Constitution of princepate) রোমসান্ত্রাজ্য ২৭ খুট পূর্ব্ব হুইতে ২৮৪ খুটান্ব পর্যান্ত শাসিত হুইরাছিল।

এক বংসর এই বিরাট সামাজ্যের অধীখর হইরা তিনি মনে মনে পূর্ববর্ত্তী অধিনারকবর্গের সার্বভৌম আধিপত্য সরণ করিয়া ব্ঝিলেন বে প্রজ্ঞার মনোরজনই প্রেরোধর্ম। স্বেছা-চারিভার দাস হইয়া প্রজাবর্গের বিষেবভাজন হওয়া নিজান্ত গহিত কর্ম, ইহাতে আপনার অদৃষ্ট অশুভ সংঘটনেরই সন্তাবনা স্বতরাং বাহাতে প্রজাবৃদ্ধ স্কুতে ও নির্বিরোধে কাল্যাপন করে

ভৰিষের লক্ষ্য রাখাই রাজার একমাত্র কর্ম। এইরূপ বিচার ক্রিয়া অগষ্টদ্ স্বেচ্ছার রাজসিংখ্রীদন ত্যাগ ক্রিদেন এবং যে **অলোকিক শক্তিপ্ৰভাবে তিনি ৪০ বৃষ্ট পূৰ্ব্বাক্ত হৈতে রোমের** শাসন লও থারণ করিয়া আসিতেছিলেম, তাহা "রোমের সাধারণ অস্বাপুন্ধের ও সেনেটের সদক্তবন্দের কর্তৃত্বাধীনে সাধারণতত্ত্ব ভারার্পণ করিলান" বলিয়া স্বরং অবসর গ্রহণ করিলেন। তদম্বলে পুনরার রোমরাজ্যে সেনেট,এদেমব্লিও মাজিট্রেসির কার্যা প্রবর্ত্তিত হইল এবং অক্টেভিয়ান রোমের "বাধীনতাদাতা" (Restorer of Common wealth and Champion of freedom) বলিয়া বিবোধিত হইলেন | কিন্তু তিনি প্রকৃতপক্ষে রোম-সাম্রাজ্যের শাসনদণ্ড ৪৩ খুষ্ট পূর্ব্বান্দ হইতেই গ্রহণ করিয়া-ছিলেন। উক্ত বৰ্ষে তিনি "Imperium" শক্তিতে ভূষিত ছিলেন। তৎপরে ৩৩ ধৃ: পৃ: সাধারণের সন্মতিতে "Imperator" रिनिया गृहीज हन। जमनकत २१ वृ: ह्हेरज ३० थ्डांस পর্যান্ত "Proconsulare imperium" শক্তিধারণ করিয়া তিনি সামাজ্যের প্রকৃত অধিনায়ক স্মাটের তুলামর্থাদ হইয়াছিলেন। ২২ খঃ পুঃ তিনি "Cura annonae" এবং লেপিডাসের মৃত্যুর পর ১২ খু: পু: তিনি "Pontifex maximus" পদলাভ করিয়া একাধারে ধর্মা, অর্থ, কাম ও মোক্ষের পূর্ণ প্রভাব লইয়া বিজ্ঞমান ছিলেন। রাজ্যশাসন সম্পর্কীর শ্রেষ্ঠ পদে আসীন হইয়া তিনি বিবিধ সংস্কার হারা রাজ্যের কুশলতা স্থাপন করিয়া-ছিলেন। তিনি রাজ্যের প্রজাবর্গের ক্ষেত্রজাত দ্রব্যাদির হিসাব প্রতিন এবং বাহাতে রোমরাম্ব্যবাদী জনগণ জন্নবিনা মৃত্যুমুখে পতিত না হয়, তদ্বিয়ে বিশেষ লক্ষ্য রাখিতেন। ইহাছারা তাঁহার ধর্ম, অর্থ ও কার্য্যে সাধারণের বিশেব স্থবিধা ঘটিয়াছিল। পণ্টিকের মারিমান হইরা তিনি বিভাশিকার উন্নতিকরে মান-সিক বৃত্তিনিচরের ক্রর্তিদানম্বারা লোকের মোক্ষার্গও স্থসংস্কৃত করিয়া দিয়াছিলেন। তাঁহার স্থসম্বদ্ধ और শাসনপ্রণালীকে লোকে "Maxims of Augustus" বলিত। ডাইওক্লিসিয়ানের রাজত্বাল পর্যান্ত এই নীতিকুশল প্রণালীতেই রোমরাজ্য শাসিত হইরাছিল। জুলিরাস্ সিজার বাহুবলে রোমবাসীর চিত্ত ভীতিবিজড়িত করিরা যাহা করিতে পারেন নাই, অগহাস সিজার অনাবাদে শাস্তি ও সহিষ্ণুতাবলে তাহা স্থসম্পন্ন করিয়া গেলেন। তিনি লোকের চিন্তবিনোদনার্থ যে রাজপদ একদিন ভূচ্ছ করিয়া প্রস্লাভন্তের প্রভাবর্ত্তির জন্ত সেনেট ও এসেম্ব্রির হতে যে শাসন ভার অর্শণ করিয়াছিলেন, পক্ষান্তরে তাহারাই তাঁহাকে অতি-রিক্ত পক্তিদান করাইলেন। কেবল মাত্র "কমিসিরা" जारांत्र जीवनगांत्र बाखविधिश्रगद्रात अधिकात्री हिल्लम, किछ তাঁহার উত্তরাধিকারী টাইবেরিরাসের রাজ্যকালে এই বাবভাপক

সভা ছইটী মাত্র আইন প্রবর্তন করিরাই ক্ষান্ত হইয়াছিলেন। ভাহার পর ঐ সভার ক্ষমতা ভ্রাস হর।

অগান্তান জীবিতকালে যে সকল বিষর কার্য্যে পরিণত করিরা যাইতে পারেন নাই, তাহার চিরপোষিত শেবজীবনের সেই আশাগুলির নিশাদনভার খীয় উপযুক্ত দত্তকপুত্র টাই-বেরিরাদের উপর হান্ত করিয়া যান। তিনি খীর দত্তককে পূর্কারেই রাজশক্তির প্রতিভা দান করিরাছিলেন। আইন প্রবর্তন ও প্রচলিত-বিধির সংখ্যারাধিকার (Censorial and tribunitian) লাভ করিরা অবধি টাইবেরিরান্ রাজসরকারে যথেষ্ট প্রতিপত্তি বাড়াইরা লইরাছিলেন, অগান্টানের জীবংকালে তাহার কার্য্যে প্রতিবাদ করিবার জন্ম একজন লোকও দঙার্মান হইতে সাহস্য করে নাই।

পিতার এই অমান্থবিক শক্তি ও প্রভুম্ব দেখিরা টাইবেরিয়ান্ বীর শক্তি আরম্ভ করিতে চেষ্টা করিলেন। ক্রমশাই তিনি লাজিক ও মদগর্কে মন্ত হইরা পড়িলেন। নির্দুরতা, অত্যাচার, শঠতা, কপটতা প্রভৃতি তাঁহার অঙ্গের আভরণ হইয়া উঠিল। তিনি বীয় শক্তি অক্ষ্ম রাথিতে চেষ্টা পাইলেন। অগান্তাদ্ যে রাজ-শক্তির পরাকান্তায় প্রজাতন্তের অধীধর্মকান্ত করিয়াছিলেন, তাঁহার পুত্র টাইবেরিয়াদ্ বীয় দান্তিক বৃদ্ধির বশবর্তী হইয়া প্রজাতন্তের সমস্ত বাধিকার লোপ করিলেন। দেখিতে দেখিতে কমিদিয়া, মেজিইেশী,কজাল, প্রিটর, ইডাইল, ট্রিকিনেট, কুইইর প্রভৃতি পদ বা তৎপদাভিষিক্তের কার্য্য নাম মাত্র রহিল, কেহ পূর্ক্মত আপনাপন ক্ষমতা পরিচালন করিতে সমর্থ হইলেন না।

টাইবেরিয়াসের মৃত্যুর পর ৩৭ খু টাব্দে কালিগুলা নাম্রাঞ্জা-ধিকার প্রাপ্ত হন। ডিনি হর্ক্,ত, কোপনম্বভার, গর্কিভ ও জ্ঞানশৃত্র উন্মাদপ্রকৃতির লোক ছিলেন। তাঁহার পর ৪১ খু টান্দে यथाकरम निर्कां क्रियाम, ८० वृष्टीत्म नज्ञिनां निर्ता, ৬৮ খৃ: জ: গালবা, ৬৯ খৃষ্টান্দে ওথো এবং পশুপ্রকৃতিক নিচুর অত্যাচারে আমোদ প্রিয় ভিটেলিয়াস রোমের রাজপদ অধিকার করেন। তদনস্কর উক্ত বর্ষের শেষকালে ভেশ্সেসিয়ান মসনদে আরোহণ করিয়া ইতাশীয় নগরবাশী এবং পশ্চিম-সাম্রাজ্যবিভাগের প্রদেশবাসী সাটিন জাতির মধ্য হইতে সেনেটের সভ্য মনোনীত করিবার আদেশ প্রচার করিলেন। ইহাতে রোমক সেনেটের শক্তি অনেকটা বিশ্বত হইয়া পড়িল। তাহার পর ৭১ খুষ্টাব্দে डिकान, ७> ब्हार्स कान्यूक्व ट्डामिडियान, ३७ ब्हार्स तर्जा, ৯৮ बृहोर्स हिजाम ७ ১৭१ बृहोर्स हाजियान वर्षाकरम द्वारमद রাজপদ অবস্থৃত করেন। তাঁহার। স্কলেই ভেল্পেসিয়ানের প্রবর্ত্তিত প্রথার অনুসরণ করিয়া রোমীয় সেনেটের প্রবল প্রতাপ ধর্ম করিয়াছিলেন। রোমকগণ স্বেচ্ছার ও সঞ্জানে যে গবর্নেন্টের অন্ধনোদন করির। একজনের হত্তে লমন্ত রাজ্যভার সমর্পন করিলেন, তাঁহাদেরই অভ্যানেরে ভাষারা অবরে ছণা প্রকাশ করিলেও, বাহিরে ভোষানাদি করিতে বাধ্য হইরাছিলেন, কিছু তাঁহারা শতান্ধ-পুথ স্বাধীনভাস্থতি একবারে বিশ্বত হইতে পারেন নাই।

অগাষ্টানের পর হইতে হাজিরান পর্যান্ত রাজগণের অধিকার-কালে রোমের বাঞ্ছ আড্রুর অনেক পরিমাণে বর্দ্ধিত হইরা-ছিল। এই সময় হইতেই প্রিন্দেশনণ ব্যতীত রোমের অপরাপর শাসকশক্তি ছাল হইতে থাকে। অগাটাল, টাইবেরিরাল্ ও ক্লডিয়ান সম্রাট্রবের পাগনকালে রাজপঞ্জি ও পাসনকর্তৃত্ব দর্মভোভাবে তাঁহাবের উপরই ক্লন্ত ছিল; কিন্তু বধন অভাত শাসকশক্তি শিথিল হইয়া পড়িতে লাগিল, তখন, গ্লোমরাজ্যের একটা আসুদ পরিবর্তন অবশুভাবী হইরা উঠিল। অগাটাস্ ও টাইবেরিয়াস কুটনীতিবলে ও নির্শিপ্তভাবে যে রাজ্পজ্ঞির প্রভাব প্রদর্শন করিতে গোপনে গোপনে চেষ্টা পাইতেছিলেন, কালিওলা, ক্লডিরাস্ ও নীরো সেরপ-শুর্থপ্রবাস স্থার সহিত পরিত্যাগ করিয়া প্রকাশ্ত ভাবে শাসনকার্যে, রাজহবিভাগে, সামরিক বিভাগে এবং বৈদেশিক স্বাঞ্চাশাসন-সম্পর্কে প্রিন্দে-পের সর্কামর কর্তৃত ছাপন করিলেন। লিগেট, প্রিকেট্র, প্রোকিউরেটর ও মৃক্তিপ্রাপ্ত দাসগণ (Freedmen) তাঁহাদের অধীনে গ্রহ্মেণ্টের স্বার্য্য পরিচালনা করিতে আদিষ্ট হইলেন। এইরপ শক্তিবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে প্রিক্ষেণ্যের মর্য্যাদাও সাধারণ অপেকা উচ্চতর হরে হাপিত হইল। তিনিই ক্রমে প্রকৃত রাজ্যেশ্বর হইরা উঠিলেন ৷

আগাইদে নীনহীন প্রজার ছার অপেক্ষারুত ক্ষুত্র অট্টালিকার বাস করিরা সামান্ত ও সরলভাবে জীবন অতিবাহিত করিরা গিরাছেন; কিন্তু পরবর্তী শাসনকর্ত্বগণ ঐশর্যমনে মন্ত হইরা সে সরলতা পদমর্যাদার উপযুক্ত বলিয়া বিবেচনা করিলেন না। উল্লারা সকলেই রাজার ছার জাকজমকের পক্ষপাতী হইরা পড়িলেন। নীরোর রাজত্বলে তাহা পূর্ণমাত্রার প্রকাশ হইরাছিল। রোমক-সমটের রাজতার্যনির্বাহের আবক্তবীর ও উপবােদী সমুদার জবা রাজসরকারে বিরাজ করিতেছিল। তাহার বজ্ব রাজভবন রক্ষা করিত। তিনি পারিবদরণে পরিবেটিত হইরা সম্রাটের ছার সগর্কো বিচরণ করিতেন এবং তাহার প্রাস্থান কর্তিছ হইত। তাহার মৃত্যুর পর, এই অবহার কতক পরিবর্তন ঘটে; কারণ তৎপরবর্তী গাণ্বা ও ক্লাবীরবংশীর ভেল্পেরিয়ান প্রভৃতি সম্রাট্গণ, ট্রালান, হাজিয়ান ও আবেটানিনাস্বর সে ক্রথসমুছির অভৃত্ব-বাসনার

নিম্মিত দা হইরা অপেকারত সর্বভাবেই তীবনবাপনের চেটা করিরাছিলেন। কাঁলিওলা বা নীরোর ন্যার ভাঁছারা অক্লার তোষামোদপ্রির ছিলেন না। তাঁহাবের এই সরল ও সদহভাবের পরিবর্তনে ল্লোমে একটা নুতন বুগের পুত্রপীত হইল। সামরিক ও রাজকীর শাসন পূর্ণভাবে প্রভিষ্ঠিত হইরা উচ্চতর সোপানে আরোহণ করিল। কালিওলা ও নীরো প্রথমে সেনা-বিভাগ কঠক "ইম্পারেটর" বলিরা সন্মানিত হইরাছিলেন এবং পরে সেনেট তাঁহাদের সেই শক্তিদান করেন। অকমাৎ রাজ্য-শাসকরন্দের এই ভাবপরিবর্জনে রোমে কোন ভাবান্তর শব্দিত না হইলেও, রোমবহিন্তু তি প্রদেশে তাহার যথেষ্ট আভাস দেখা গিয়াছিল। স্পেনে শিক্তনকর্ত্তক গাণ্বার সন্মাননা হইতেই রোমে নৃতন যুগের অবতারণা হইল। তথন হইতেই প্রকৃতপক্ষে প্রিলেন্সদিগের নির্মাচনসন্মতি নিজন হইতে গৃহীত না হইলেও বন্ধতঃ তাঁহাদের অভিমতেই রাজা রাজশক্তিসম্পন্ন হইডেন এবং তাহা রক্ষার অন্য তাহাকে সম্পূর্ণরূপে সৈন্যবুদ্দের উপর নির্জন করিতে হইত। এইরূপে জর্মাণ ও সিরির লিজনের অভিমতাহুদারে ভিটেনিরান্ ও ভেলেদিয়ান সম্রাট্পনে অধিষ্ঠিত হইরাছিলেন। ভোমিসিরান বোদ্ধ বেশে সগর্বে সেনেটে প্রবেশ করিয়া খীয় রাজ্যকালের সাম্রিক প্রভাব (Military character) জ্ঞাপন করিয়া যান। সমাট নের্ভার দত্তক বিখ্যাত বীর ও অন্বিতীয় যোদ্ধা ট্রাঞ্চান হইতেই সামরিকবিভাগের সর্ক্ষয় কর্ত্তা বা "ইম্পারেটর" পদ প্রোচীন শাসনপদ্ধতির প্রিম্পের পক্তিকেও অতিক্রম করিরাছিল।

সমাট্ হাজিয়ানের পর যথাক্রমে আন্টোনিনাস্ পায়াস্
(১৩৮ শ্ব: জ:), মার্কাস উরেলিয়াস্ (১৬১ শ্ব: জঃ), মার্কাস্
জান্টোনিনাস্ (১৬১ শৃবঃ জঃ), কোমাডিয়াস্ (১৮০ শৃবঃ জঃ),
থাটিনায় (১৯২ শৃবঃ জঃ), ডিডায়াস্ ক্লিয়ানাস্ (১৯৩ শৃবঃ জঃ),
এবং সেন্টিনিয় নিম্ভেয়াস্ (১৯৩ শৃবঃ জঃ) রোমকনিংহাসনে
উপবেশন করিয়া য়াজকার্য পরিচালনা করিয়াছিলেন। তাঁহায়া
সকলে টাইয়ান্ট নামে অভিহিত ছিলেন।

গান্বা, ভিটেলিরাস্ ও ভেম্পেসিয়ান্ সম্রাট্পদে অভিবিক্ত হইরাই স্ব স্বন্ধভূমি হইতে রোমে প্রবেশপূর্কক সেনেটের অভিমত গ্রহণ করেন। ট্রাজান ও হাজিয়ান ভিন্ন প্রদেশ জাত ছিলেন। তাঁহাদের মধ্যে ট্রাজান সম্রাট্র প্রলাভ করিয়াও এক বৎসরের মধ্যে রোমনগরে প্রবেশ করেন নাই; কিছ হাজিয়ান সেনেটকর্তৃক অভিনন্দিত হইবায় পূর্কে সিরিয়ার "ইম্পেরিয়াম্" গ্রহণ করিয়াছিলেন। ভক্ষ্ম তিনি সেনেটের সমক্তে বিনীতভাবে ক্ষমা প্রার্থনা করিতে বাব্য হন। ট্রাজান ও মার্কাস্ উরেলিয়াসের দিগন্ধ-নিমাদিক বিশ্বরুকীর্তি স্বন্দোবন্ত ও প্রতিষ্ঠান্তোতক হুইমাছিল; স্ত্তরাং আবশ্রক বোধে রোম হইতে ভিন্ন হানে রাজপাটপরিবর্তনের ব্যবহা ক্ষতিত হয়। শুর্টোমিটিয়ান্ ব্যতীত ভেন্দেনিরান হইতে ঔরেলিরান্ পর্যন্ত নরপতিবর্গ সেনেটের সহিত একবোগ হইরা জতীব শুকুতর রাজকার্য সম্পায় সম্পাদন ক্রিডেন। কিছু কালক্রমে গ্রীক দর্শনশান্ত শিক্ষার প্রভাবে যখন রোমকগণের মানসিক শক্তি পরিবর্ধিত হইল, তখন তাঁহারা জ্ঞানাম্পীলনে প্রবন্ত হইয়া সমন্নাম্মরূপ একটা সংস্কৃত রাজকীর শাসনপ্রভিত্র (Imperial System of government) আবশ্রকতা উপলব্ধি করিলেন। তদহুসারে তাঁহারা একমাত্র সম্রাটের হত্তেই সমগ্র শাসনপ্রণালী কেন্দ্রীভূত করিয়া রাখিলেন। হাদ্রিয়ান্ এ বিব্রের উদ্বোক্তা ছিলেন। তাঁহার এই অভীইসিধির দ্বারা রাজ্যের শাসন বিভাগের সমূহ উন্নতি সাধিত হইবার আশা ছিল; কিছু তাহা না হইয়া বরং তদ্বারা সাম্মাঞ্জক্তর অনেক ছাল ঘটিয়াছিল।

মার্কাদ্ ঔরেলিয়াসের মৃত্যু হইতে ডাওক্লিলিয়ানের সিংহাসনাধিকার পর্যান্ত শতাব্দকালেই১৮০-২৮৪ খুঃ অঃ) রোমের প্রাচীন অগাটান-পদ্ধতির সমাক্-বিলয় সাধিত হইরাছিল। পর্টিনক্স সেভেরাস আলোকসালার মাক্সিমাস ও বাল্বিনাস্ এবং টাসিটাস্ প্রভৃতি সমাটগণ সেনেট কর্ত্তক রাজপদে নির্বাচিত হইলেও সেভেরাদ আলেকদান্দার ব্যতীত তাঁহাদের মধ্যে অপর কেইই নিজনের আবশ্রকীয় আমুগত্যলাভ করিতে পারেন নাই। খুষ্টীয় ৩য় শতাব্দের রোমক সম্রাট্গণ প্রধানতঃ সেনা-সভ্যের নির্বাচন দ্বারাই মনোনীত হইতেন। এই সকল সম্রাট-গণ সীমান্তপ্রদেশবাসী নগণ্যব্যক্তির সন্তান। তাঁহার ঐশর্যা-গর্কে মন্ত হইরা পরের মর্দ্মবেদনা বৃদ্ধিতে সমর্থ হইতেন না। অত্যাচার ও নিষ্ঠরতা ভাঁহাদের অঙ্গের আ্ডরণ হইরাছিল। অমান্তবিক অত্যাচারে তাঁহারা সাধারণকে করিয়া আপন আপন পাশবপ্রবৃত্তি চরিতার্থ করিতেন। এই সকল নীচপ্রকৃতিক নুপতিগণের নিকট সেনেট সর্বাদাই অপদস্থ, লাঞ্চিত ও বিভৃষিত ছইতেন। বাঁহারা রাজ্যশাসনের উপযোগী এবং সদাচারী ও দয়াবান ছিলেন, তাঁহারাও সেনেটকে গ্রমেণ্টের কার্য্যে হস্তক্ষেপ করিতে দিতেন না। সেপ্টিমিরাস্ সেভেরাস্ আফ্রিকাবাসী ছিলেন। সেনেটের নিকট হইতে অভিমত (Formal Confirmation) না লট্ডা তিনি রাজকার্যাভার গ্রহণের পথ প্রদর্শন করেন। রোমে থাকিয়াই তিনি "প্রোকলন" উপাধি ধারণ এবং ফোরামে উপবেশনপূর্ব্বক শাসন ও বিচারকার্য্য সমাধা না করিরা প্রাসাদ-প্রাচীরের অভান্তরেই সেই সকল কার্যা সমাধানের বাক্তা করিয়া ্ছিলেন। অবশেষে ডিনি প্রিটোরির-রক্ষিদলের প্রিফেক্টকেই সম্রাটের অধ্তন রাজকর্মচারিক্সপে নিরোম্বিত করিয়া যান।

ইহাতে তাঁহার অসীম প্রভূষের পরিচর পাওরা যার। তাঁহার শিলাকলকে তিনিই প্রথমে সম্রাটুকে, "dominus" শকে উন্নিথিত করেন।

২৪৯ খুষ্টাব্দে ডিসিয়াসের অভাগর ও রোমসাম্রাজ্যাধিকার हरेए समन्ना मानियून धाराहिल धारमभन्युक कथकसन समन्त्र সমাট্রেক উপযুগপরি রোমসিংহাসন অলম্ভত করিতে বেখিতে পাই। সেই নরপতিগণের রাজ্যকাল হইতেই রোম্নাম্রাজ্যের নামরিক ও রাজকীর শুক্তির পূর্ণপ্রতিষ্ঠা হর এবং জমশংই তাহা উত্তরোভর বর্দ্ধিত হইতে থাকে। সেই সময় হইতে "ইম্পিরিয়াল" ও "নেনেটোরিয়াল" প্রদেশ বিজ্ঞাগ বিলুপ্ত হয় **এবং রাজকোব ও সম্রাটের নিজস্বের** পার্থক্য **বৃচি**রা যার। তঘনস্তর সেনেটরগণ সামরিক ও রাজকীরকার্য্যে স্বাধিকার-বিচ্যুত হন। বাহা কিছু অবশিষ্ট ছিল, বিখ্যাত বীর ঔরেলিয়ানের (২৭০-২৭৫ খু: আ:) যদ্ধে তাহা সম্পন্ন হইল। তিনি রাজ্য-नामरनव कर्राव वर्ध वरुए गरेवा श्राहीन श्रवाब मन्पूर्ग विनव সাধন করিলেন। তিনি স্বীয় অধিকারকালে ব্রোম-গর্বমেন্টে ডাইওক্লিসিরানের অভ্রকরণেই রাজশক্তির পরাকার্চা প্রদর্শন कतिवाहित्नन এवः श्रीष्ठा सन्भानमृत्वत नमृद्धि असूकत्रनभूक्तक তিনি স্বীয় রাজসমূদ্ধির গান্তীর্য্য বুদ্ধি করিয়াছিলেন।

পূর্বেই লিখিত হইরাছে বে, জ্লিরাল্ নিজার রোমনাত্রাজ্ঞা লীমা বৃদ্ধি করিয়া, নামা বিষয়ে সংকার সাধন করিয়াছিলেন; কিন্তু মূত্মূহ যুদ্ধবিপ্লবে বিপর্যন্ত রোমীয় জগতের শাস্তি বিভার

রোমসাঞ্রান্ধ্যের তিনি কিছুই করিয়া যান নাই। সংকেশ ইতিবৃদ্ধ মহাস্থাত্তব অগাষ্টাস্ ধীরপাদবিক্ষেপে স্থান্ধিবলে সেই কার্য্য সমাধা করিয়া যান।

রোমীর প্রজাতদ্বের নির্মাচিত দেনাপতিবৃন্দ এবং ব্রাং সিজার দক্ষিণ ও পশ্চিম ভূভাগ জয় করিয়া যাঁন, প্রতরাং আফ্রিকার মকপ্রদেশ ও আট্লান্টিক মহাসমুদ্র ভিন্ন রোমরাজ্ঞানীমা আর অধিক বিষ্ণুত হইতে পারে নাই। সিজার গলরাজ্ঞাজয় করিয়াছিলেন বটে, কিন্তু তাঁহার আতুস্ত্র অগাষ্টাসই এই সকল জনপদে স্থাবন্ধ শাসনপ্রতি বিত্তার এবং রাজশক্তির পত্তন করিয়াছিলেন এবং সেইরূপ রাজকীর বিধিতেই তিনি রোমরাজ্ঞান্ত্রীমারক্ষার তৎপর হইয়াছিলেন।

২৫ খৃ: পৃ: নিউমিডিরারাল্য প্রাচীন আফ্রিকা প্রাদেশের অন্তর্ভুক্ত, এবং তৎসংলগ্ধ ইজিপ্তজনপদ একটা স্বতন্ত্র প্রদেশরণে পরিগণিত হয়। স্পোনের উত্তর-পশ্চিমাংশবাসী অসভ্য পার্ক্ত্য-লাভিকে জয় ও লুসিটানিরার শাসন বিভার করা হইরাছিল। ২৭ খৃ: পু: অগাষ্টাস্ আকুইটানিরা গলডুনেন্সিস্ ও বেলজিকা প্রদেশ রাজাভুক করিয়া ইউরাইন্ হইতে অর্থান্যারতীর পর্যন্ত

রাজ্যসীমা বিস্তার করেন। তৎপরে তিনি তাহার দক্ষিণহিত মিসিয়া (৬ খৃ: অ:), পানোনিয়া (১ খৃ: অ:), নোরিকাম্ (১৫ খৃ: পু:), রিটিয়া (১৫ খৃ: পু:) ও গালিয়া-বলজিকা প্রভৃতি প্রদেশ অধিকারপূর্বক স্থশাসন প্রতিষ্ঠা দারা শান্তিস্থাপন করিতে চেষ্টা পান। 🝃 পৃষ্টাব্দে ভেরুসের পরাজরের পর, তিনি রাইন অতিক্রম ক্রিরা সন্মুধে অগ্রসর হন নাই, ভাঁহার বংশধর টাইবেরিয়াস্ শিল্ভা টিউটোবার্গেসিসের বিপত্তির প্রতিশোধ শইয়া অস্থানিকাস্কে প্রত্যাবৃত্ত ছুইতে আদেশ প্রদান করেন এবং ১৭ খু গ্রাচন উ ওর দানিউবের মার্কোমরি প্রাদেশের রাজা মাবোবোভুরাস্ সহিত সন্ধি করিয়া ডিনি স্বীয় পিতার নির্দিষ্ট আত্মপক্ষ স্থরকার বন্দোবত্তে মনোনিবেশ করিয়াছিলেন। তদস্থ-সাবে রাইন নদীতীরে, উত্তর ও নিম্ন বর্মণিতে, দানিযুব সীমান্তে এবং পানোনিয়া ও মিসিয়ার চারিদিকে রোমীয় শিজন প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। রাজসরকারের নিরোজিত লিগেটগণ ঐ সকল সেনাগলের অধিনারক হইতেন। স্পাবশ্রক-মতে স্থানে স্থানে ছাউনা ও দৈনিকোপনিবেশ স্থাপিত হইরাছিল। নদী-বক্ষে ভিপে চডিয়া সেনাদশ অহরহঃ গমনাগমন করিয়া আততায়ী শত্রু অথবা বিদ্রোহী প্রজার মনে ভীতি উৎ-পাদন করিত।

অগাষ্টাস্ রোমসাত্রাজ্যের শান্তি ও সমৃদ্ধি প্রতিষ্ঠা করিরা যান। পরবন্তী সমাট্গণ সকলেই স্থলক ছিলেন, তাঁহারা অপ্রতিহতপ্রভাবে রাজ্যণাসন করিয়া গিয়াছেন। গেয়াস, ক্লডিরাদ্ ও নীরো চুর্ব্রিবশতঃ ও অত্যাচারনিবন্ধন রোম ও ইতালীবাদীকেই উত্তাক্ত করিয়াছিলেন। রাজ্যের অপর কোন স্থানে তাঁহাদের স্বেক্সাচারিতার বীক্ত অভুরিত হয় নাই। নীরোর মৃত্যুর পর, প্রতিদ্বদ্ধী সমাট্গণের বিরোধন্দনিত যুদ্ধে রোম-সাম্রাজ্যের যে সকল ক্ষতি হইরাছিল, ভেলেসিয়ান তাহার ক্ষতিপূরণ করিয়া যান। ওথো, ভিটেলিরাস্ ও ভেম্পেলিয়ানের পরস্পার বৃদ্ধের অবসরে ৬৯-৭০ খৃষ্টাব্দে সিভিলিসের বিদ্রোহ উপস্থিত হয়। ট্রাজাস্ হাত্রিয়ান্ ও আন্টোনিরাস্থয় স স্থ অসা-ধারণ শক্তিবলে রোমসাথ্রাজ্যের বিশ্ববিজ্ঞারনী শক্তির পুনরাবির্ভাব করিতে সমর্থ না হইলেও, স্থলাসন ও শান্তিস্থাপনে পারদর্গী হইয়াছিলেন। ক্লভিয়াস্ বুটেন জয় করিতে অগ্রসর হন। আগ্রিকোলা (৭৮-৮৪ খু: অ:) তথাকার উত্তর দেশ অর করিরা "হাজিয়ান্-প্রাচীর" **হা**রা রোমকাধিকার নির্দেশ করিরা বান। ১০৭ খুটাবে বর্মরজাতির আক্রমণে ভীত হইরা ট্রাঞ্চান্ নিয় দানিযুব প্রদেশে অভিযান করেন এবং ডাকিরারাজ ডুসে-বালাসকে পরাজিত করিয়া তাঁহার রাজ্য হস্তগত করিয়া লন। क्षराधि २८७ बृष्टीच भग्रञ्ज जेक आतम त्रामाधिकारत हिल। স্ত্রাট্ ,ট্রাজান ,আরাবিরা-পিট্রিয়া প্রবেশ রোমসাত্রাজ্যভূক করিরাছিলেন।

মার্কাস্ ঔরেলিয়াসের রাজস্বকালে (১৬২-১৭৫ খুঃ) মার্কোনরির প্রাকৃতি অসভ্যজাতি সীমান্ত হইতে দলে আসিরা রোম-সাম্রাক্ত আক্রমণ করে। তাহারা ধীরে ধীরে উত্তর দানিত্ব প্রদেশ অতিবাহন করিয়া ক্রমশঃ রিটিয়া, নোরিকাম ও পানোনিয়া প্রদেশ সুঠন ও বিধবত্ত করিয়া আয়স্ অতিক্রমপূর্কক ইতালী প্রান্তে আসিয়া সমুপস্থিত হইল। এই বৈদেশিক বর্করনিগের সহিত রোমরাক্রকে চতুর্দ্দা বর্ষ যুদ্ধ করিতে হয়।

রোমের অদূর পূর্বাপ্রান্তেও এরপ যুদ্ধবিগ্রহ চলিয়াছিল। পার্থিরা, আর্মেণিরা ও ইউফ্রেটিন্ তীরবর্তী প্রদেশে রোমের রাজ-নৈতিক সম্বৰ স্প্ৰতিষ্ঠিত হইয়াছিল। ট্ৰান্ধান যে সকল স্থান অধিকার করিয়া যান, হাদ্রিয়ান তাহা রক্ষা করিতে অসমর্থ হইয়া পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হন; কিন্তু সেপ্টিমিয়াস সেভারাস্ পুনরায় সীমান্ত প্রদেশে রোমীয় প্রভাব বিস্তার করিয়া পূর্কা-বস্থার অনেক পরিবর্ত্তন ঘটান। ১৮০ খুটাবে মার্কান্ উরেশানের মৃত্যু ঘটে। তদবধি ২৮৪ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত উপযুর্গপরি যুদ্ধবিগ্রহ ও শাসনবিশৃথকার রোমসাত্রাজ্যে একটা খোর বিপর্যায় উপস্থিত হয়, কিন্তু দেপ্টিমিয়াল লেভেরাল, ডেলিয়াল ক্লডিয়াল, ওরেলিয়ান ও প্রোবাদ প্রভৃতি রণহর্মদ সমাট্গণের কঠোর শাসনে তাহা ধ্বংসমুখ হইতে অব্যাহতি পায়। কিন্তু স্থবিশাল রোমসামাজ্যে রাজকীয় শক্তির স্থব্যবস্থা-সংস্থাপনার্থ বিশেষ কোন নৈতিক পছা অবল্যিত হয় নাই। খুষ্টায় ২য় শতাবেদ কাৰ্য্যতঃ ও অংশতঃ বাহা কিছু সাধিত হইয়াছিল; ধুষ্টীয় ৩য় শতাব্দে रतामनाञ्चाकाञ्चक विभिन्न अरास्त भागनकर्का वा मिक्रानत अर्थ-নায়কগণের পদ্ধশারের প্রতিষ্কিতার যে ভয়াবহ ধারাবাহিক যুদ্ধবিগ্ৰহ সমুক্ষীত হইয়াছিল, ভাহাতেই রোমসাম্রান্সের বিধি-বন্ধ গ্রন্থি সমূহ শিধিল হইরা যায়। ঐ সকল প্রতিঘন্দী সেনাপতি-গণ রাজসুকুট শিরে ধারণ করিবার জন্ম লোরতর যুদ্ধে লিগু ছিলেন। ২১১ খৃষ্টাব্দে সেভেরাসের মৃত্যুর পর হইতে ২৮৪ **ब्होत्क जो अक्रिमिय्रात्नेत त्राक्यात्त्रार्थ भर्यास्य किंद्र कम २७ कन** সম্রাট্ট অগাষ্টাদের সিংহাসনে উপবেশন করিয়াছিলেন। উহাদের मर्था क्वन मांव जिनमानत्र अजीव लावनीत्र मृञ् स्टेताहिन। ডিসিরাস গথজাতির সহিত যুদ্ধ করিয়া নিহত হন, ভালেরিয়ান্ অনুর পূর্বপ্রান্তে কারাগারে নিক্পি হইরা অককার মধ্যে কলুষ-পূর্ণ জীবনের অবসান করেন এবং ক্লডিরাস্ সেই ছন্দিনের মহা-मात्रीएक कीवन हात्राहेरणन ।

রাজনুকুট-আহরণোদেশে জনসংক্ষরকারী এই সকল অভি-দানী সম্রাট্গণ "চাইরান্ট" নামে পরিচিত ইইরাছিলেন। কোমোডাদ্ নিজ বুছিলোবে ও অভ্যাচারিতার ক্রমণঃ রাজ্যে বিশৃষ্ণলা ঘটাইলেন। প্রথমে তিনি পিতার সমৃদ্ধ সেনাদল লইরা কিংকর্জবাবিমৃত্ হইরা পড়েন। এই সময়ে তিনবৎসরকাল তিনি বীর পিতার বিশ্বন্ত পূর্বতন রাজকর্মচারীনিগের ঘারা রাজকার্য্য পরিচালনা করিরা লইতেন। কিন্তু অচিরে তিনি পারিবদবর্গের প্রেরোচনার উৎসরের পথে প্রেরিত হইলেন। মন্তুনান ও বেখ্যাসক্তি লোবে তাঁহার জীবন কলছময় হইরা উঠিল মিতিছবিক্ততির সঙ্গে তিনি ঘাের জাত্যাচারী হইরা পড়িলেন। চারিনিকে তাঁহার লক্রেলল জীবননাশের চেপ্তার কিরিতে লাগিল। তাঁহারাই ভগিনী লুসিয়াদ্ ভেক্সের বিধবা পদ্ধী ও ক্লভিয়াদ্ পশ্পিদ্রেনাসের ছিতীয়-পরিণীতা রমণী লুসিয়া ল্রাতার প্রাণনাশের বড়যন্ত্র করিতে লাগিলেন। আন্দিথিয়েটার হইতে প্রানাদে প্রত্যাবর্ত্তনকালে সমাট্ কোমোডাল গুপুযাতকের হত্তে নিহত হইলেন। ১০৯খঃ আং ৩১ ডিসেকর লুসিয়া নির্কাসিত হইলেন।

কোমোডাসের মৃত্যুতে সাধারণে শোকপ্রকাশ না করিরা সাধারণের রাজধানীর প্রিফেক্ট পার্টিনাক্সকে তৎপদে অভিধিক্ত করিতে যুক্তিযুক্ত বিবেচনা করিল। তখন অক্ততম কন্সল সোসি রাম ফাল্কো তাঁহার প্রতিযোগী হইরা সিংহাসনাধিকারে প্রদ্ধাস পান। পার্টিনাক্সের অভ্যাদরে তিনি সদলে বিধ্বন্ত হইয়াছিলেন।

কোমোডাদের মৃত্যুর ৮৬ দিন পরে (১৯৩ খু: আ: ২৮এ মার্চ) তশত "প্রিটোরীয় গার্ডদ" নামক রক্ষিদৈন্ত অলক্ষিতভাবে প্রাসাদ আক্রমণ করিয়া পার্টিনাক্সকে নিহত করে। তদনক্তর তাহারা নগরপ্রাচীরত্ব উচ্চভূমে দাড়াইরা উচ্চমূল্যে রোমসাম্রাজ্য বিক্রয় করিতে থাকে। অবশেষে ও সম্রাটের খণ্ডর সার্ভিয়া**স** সাল-পিসিয়ানাস ও প্রসিদ্ধ ধনী সিনেটর ডিডিরাস্ কুলিয়ানাস্ক্রেতা-রূপে অগ্রসর হন। সেই দিনে সেইক্ষণে ডিডিয়াস প্রত্যেক সৈহাকে চুইশত পাউও মুদ্রা দিবার অসীবার্কী রাজপদ গ্রহণ করেন। তৎকালে এই রক্ষি-সেনাদল অর্থলান্ডের আশার জুলি-রানাসকে চারিদিকে বেষ্টিত করিয়া নগর মধ্যে শইয়া চলিল; কিছু সাম্রাজ্যের কেন্দ্রস্থানে সন্নিবেশিত প্রিটোরীয়-গার্ডস দলের এইরূপ অস্তার অত্যাচার সাধারণের মন্তরে অসম্ভোবায়ি জালা-ইয়া দিল এবং ক্রমে ক্রমে তাহা রোমের স্থাপুরপ্রান্তে বাইয়া উপনীত হইল। তখন বুটেন সিরিরা ও ইলিরিকামস্থিত রোমীয় সেনাবুল প্রিটোরীর সেনাদলের পার্টিনাক্স হননরূপ ছণিড বাবচারের জন্ত শোকপ্রকাশ করিলেন এবং এই অস্তপারলব অর্থ বৃক্তিযুক্ত বলিরা স্বীকার করিলেন না। তখন তাহারা স্ব স্ব সশক্ত অধিনারকের অধীনে পরিচালিত হইরা উপরোক্ত হত্যা-কারীদিগকে দওবিধান করিতে অগ্রসর হইল। রুটেনহিত নিজনের নারক ক্লোডিরাস্ আল্বিনাস, সিরিরার সেনাপতি ও পিন্সেরিবান্ নাইগার এবং পানোনিরা মেনাবলের অধ্যক্ষ সেপ্টিনিরান্ সেভেরান্ পার্টিনারের মৃত্যুর প্রতিশোধ লইতে আসিরা পরস্পরের প্রতিযোগী হইরা সিংহাসন পাইবার আশায় ব্রের আরোজন করিলেন। সুগ্ডুনাম্ রগক্ষেত্রে হেলেস্পন্ট ও লাইলিসিরার ব্রুক্ত এবং বৈজয়ঝী নগর অবরোধকালে ভীবণ যুক্তে আল্বিনান্ ও নাইগার-পরিচালিত প্রতিপক্ষ রোমকসৈত্র নারকাহ নিহত হইল। ধরা নররক্তে রঞ্জিত হইরা উঠিল। বীরাঞ্রণী সেপিটিমিরান্ সেভেরাস্ এইরূপে শক্রপক্ষ নাশ করিয়া সিংহাসন অধিকার করিয়াহিলেন। বিধ্যাত নীতিবং পাপিনিয়ান্ তাঁহার অধিকারকালে গ্রোটিনাসের পর প্রিটোরিয়ান্ প্রিকেই" হইরাছিলেন। উক্ত পাপিনিয়ান্ ব্যতীত, তবংশীরগণের অধিকারকালে পলাস্ ও উল্পিয়ান্ নামক অপর তুইজন ব্যবহারবিং সমৃত্রত হন। তাঁহাদের লেখনী হইতে জানা বায় যে, তৎকালে রোমের রাজনীতি পূর্ণতা প্রাপ্ত ইয়াছিল।

প্রথমা পদ্ধীর বিয়োগে সেভেরাস্ এমেসাবাসী স্কুলিয়া ডোলা নামী এক রমণীর পাণিগ্রহণ করেন। ঐ রমণী রোমসাম্রাজী হইরাও এবং নানা সদ্প্রণে ভূষিতা হইলেও চরিত্রহীনতার যথেষ্ট পরিচর দিয়া গিরাছেন। এই রাজমহিবীর গর্ভে কারাকালা ও গেটা নামে ছইটা চরিত্রহীন ও পাশবপ্রকৃতি প্রতিমর্ত্তির আবির্ভাব হয়। ২০৮ খুণ্টাব্দে যষ্টিপরবৃদ্ধ সেডেরাস্ পুত্রন্বরকে সলে লইয়া বুটেনবিজ্ঞারে গমন করেন। কিন্তু রণজ্জয় করিয়াও তিনি পুত্র-ছয়ের অসম্বাবহারে ভগ্নমনোরথ হন ৷ কারাকালা তাঁহার শেষ দিনে তাঁহাকে গোপনহত্যার বড়যন্ত করেন। বিশ্বন্ত লি**জ**নের সতর্কতার তিনি রক্ষা পান। সেভেরাস কঠোর শাসনপ্রথার বশবর্ত্তী হইয়া পুত্রকে নানারূপ পীড়ন করেন ও ভর দেখান। তাহাতেও পুত্রের চরিত্র সংশোধিত হইল না দেখিয়া তিনি অব-শেষে ৬৫ বর্ষ বয়সে ১৮ বৎসর রাজত্ব করিয়া ইয়র্ক নগরে চির-শান্তি ধানে গমন করেন। মৃত্যুকালে তিনি স্বীর পুত্রছয়কে সৈল্পদলে সমক্ষে বলিয়াছিলেম বে, ভোমরা এই সেনাসল্বেরই পুত্র ; কিন্তু হুর্ভাগ্য পুত্রময় পরম্পরে মিল রাখিতে পারে নাই।

সমাটের মৃত্যুর পর, সৈঞ্চদল আত্তরকে রোমের স্মাট্ বলিয়া ঘোষণা করিলেন। তথন তাহারা অর্জনির্জিত কালিডোনীয়-দিগকে শান্তির্মণে পরিত্যাগ করিয়। পিতৃক্ত্য সমাপনাত্তে রাজ-তত্তে উপবেশনার্থ রাজধানী অভিমূথে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন। গল ও ইতালী অতিক্রম করিতে না করিতেই উভয় আতার মনোবিবাদ ঘটিল। এমন কি সেনেট ও সাধারণ প্রজাবর্গ ভাঁহাদের বস্তুতা বীকার করিলেও তাঁহারা পরস্পরে মুখ দেখা-দেখি করিতেন না, স্কুতরাং পিতার আদেশ মৃত তাহারা রাজ্য-বিভাগ করিয়া লইলেন। জােঠ কারকালা মুরোপ ও পশ্চিম জাক্তিকা প্রদেশ পাইলেন এবং গেটা এলিয়া ও মিশর প্রদেশ লইরা আলেকলাপ্রিয়া ও অভিওতি সাজ্যারী স্থাপন করিলেন। তুইটা কেন্দ্রে রাজপাট প্রতিষ্ঠিত ইঞ্জার পুররার আন্তর্জাতিক বিবাদের প্রপাত হুইল। বুরোপীর সেন্দেটর রোমে রহিলেন এবং এবিয়াবানী প্রতিভিত্তির সালাইর পদাস্থারণ করিলেন। যুক্ত অবস্থাবানী ইইরা উঠিলে মাতা ক্লিয়া উভরের করনা বার্থ করিবার অভিন্যারে উভরতে ব্যাহে অবস্থানপূর্বাক প্রতিশিনর করেবার বিক্তার করেবার বিভ্রান করেবার বিভার বিভ্রান করেবার বিলার বিভ্রান করেবার বিভ্নার বিভ্রান বিভ্রান করেবার বিভ্রান করেবার বিভ্রান করেবার বিভ্রান করেবার বিভ্রান বিভ্রান করেবার বিভ্রান বি

প্রতিকে শমনসদনে প্রেরণ করির। স্বারাকারা প্রাণের আশকা আনাইরা সেনাকৃত্ত দেবমন্দিরের সমক্ষে জীবন ভিকাচাহিলেন। সেনেট ও সেনাদলকর্তৃক আখন্ত হইলে তিনি বথা-রীতি মৃত সম্রাটের সংকার করাইরা ২১২ খুলাকে একেশর অধীবর হইলেন।

গেটার মৃত্যুর একবংশর পরে জিনি রাজধানী পরিত্যাগ করিরা পূর্কবিজ্ঞাপীর প্রবেশসমূহের শান্তিবিধানার্থ তদ্দেশে গমন করেন। তাঁহার শাসনে পূর্করাজ্যে জত্যাচার ও জনাচার-ক্রোত প্রবাহিত হইরাছিল। আলোকসাক্রিয়ার ভীবণ হত্যা-ক্রাও সাধিত হইল। ওপিলিয়াদ্ মাক্রিনাশ দেওয়ানী (civil) বিভাগের এবং আড্ডেণ্টাদ্ সামরিক বিভাগের সর্কমের কর্ত্তা হইলেন। সম্রাটের আত্মন্তাই তাঁহার কাল হইল। তাঁহার জনাচারে সেনাদলও ক্রমশং তাঁহার পক্ষ ত্যাগ করিতে লাগিল। মাক্রিনাশ ভবিষাছাণীর বশবর্ত্তী হইয়া সাম্রাক্তা পদলাভে সচেষ্টিত রহিলেন। ২১৭ খু টাব্লের ৮ই মার্চ্চ এডেসা হইতে কড়্হিতে তীর্থবাক্রাকালে কারাকালা মার্সিয়ালিদ্ নামক জনৈক শরীর-রক্ষীর হল্পে নিহত হইলেন।

কারাকারাক্তমৃত্যুর পর তিনদিন পর্যন্ত রোম সিংহানন রাজশৃন্ত থাকে। তৎপরে শ্রেটপ্রিকেক্ট আড্ডেন্টাসের অভিমতে
সকলেই মাক্রিনাশক রাজপদে অভিবিক্ত করেন; কিন্ত তিনি
আতি অরকাল মধ্যেই খীর দশমব্রীর পূত্র ভারাডুমেনিয়ানাস্কে
আন্টোনিনাস্ নাম ও রাজোপাধি দান করিরা রাজসিংহাসনে
আভিবিক্ত করিলেন। তাহার অভিপ্রার ছিল বালকের মোহনম্তিতে সুদ্ধ করিরা সেনার্ন্দের বিত্তহরণপূর্বক খীর সংশরপূর্ণ
সিংহাসন স্থান্ত করিবেন। তিনি এই উন্দেশ্তের বশবতী হইয়া
রাজমাভা ক্লিরা ডোম্বার ভগিণী ক্লিরা মিসাকে অভিওকের
রাজপ্রাসাদ হইতে বহির্গসনের আলেশ দেন। এই রবণী বত্ধনরত্ব ও খীর সোইনিয়াস্ ও মানিরা নার্ক্তি বিশ্বরা ক্রারা
ভলরা এনেসার উপনীত হন এবং অপকা শিরোবার্য্য করিরা
ভলরা সোইনিয়াসের পূত্র বাদিরানাসকে স্বাট করিরা কারা-

কর্মার বিবাহিতাপুরীগর্জনাত পুত্র বনিরা বোষণা করেন।
সেনাগল মিনার ধনে পুঠ হইয়া বানিরানানকে অন্তিওকন্
নামে সমাট বনিরা গ্রহণ করিল। নাক্রিনাস কাঁকরে পভিলেন ।
কুচক্রে পড়িয়া তিনি অন্তিওকের অনুববর্তী ইন্মির মুক্রে পরাজিত
হইলেন। তাহার সঙ্গে, পুত্র ডিরাডুমেনিরানানের অনৃষ্ট বিচুণ
হইয়া গেল। পত্রমিত্র সকলেই বিজেতার ছত্রতলে সমাগত হইল।
কারাকারার ক্রিত পুত্র বাসিরানান্ এমেনার প্র্যামনিরের নেবদ্র্তির নামানুসারে ইলাগাবালান্ অন্তিওকান্ নাম ধারণ করিয়া ইন্মির
বুদ্ধ হইতেই রোম্যামাজ্যেখর হইক্রে (খৃঃ আঃ ২১৮, গই ক্ন্)।

সোইমিয়াসের পুত্র রাজা হইলেন এবং মামিয়ার পুত্র আলেক-সান্দার ভাঁহার সহযোগিরূপে রাজসংসারে পরিচালিত হইতে লাগিলেন। কিন্তু নব্যসমাট্ মাস্তৃত প্রাফ্লার ঈর্বার কাতর ছইরা প্রাণবিদাশের চেষ্টা পান। প্রিটোরিয়ান গার্ডদ দল বালক আলেকদান্দারের প্রাণরকার মন্ত্র অগ্রসর হন। একদিন এই প্রিটোরিয়া গার্ডস দল তাহাকে রাজপথে আনিয়া নিষ্ঠুররূপে হত্যা করে (২২২ খ্র: আ: > । মার্চ্চ)। সেনাদল মাক্রিনাসের প্রাণনাশকারী ১৭খ বর্তীর আলেকসান্দারকে সিংহাসন দান করেন। তদমুসারে আলেকসান্দার সেভেরাস্ নাম গ্রহণপূর্বক সমাট্ হন। আলেকসান্দার ফুর্ভাগ্যব্তঃ পারস্তাভিযান হইতে প্রত্যাবৃত্ত হইরা রাইন নদীতীরে স্বীয় সেনাদল সমবেত ক্রিলেন এবং মাক্সিমিন্ নামক একজনকে নৃতন সেনাদল গঠন ও তাহা-দের শিক্ষার ভার দিলেন। **ঐ ব্যক্তি ক্রমে প্রধান দেনা**নায়ক পদে উন্নীত হইরাছিলেন। এই সমরে সমাটের চরিত্রদোবে ও অত্যাচারে উত্তরোত্তর প্রপীড়িত হইন্না সৈক্তন্ত বড়যন্ত্রপূর্বক তাঁহার জীবন নাশ করিল এবং তদণ্ডেই তাঁহারা মাল্লিমিনকে (२७६ थु: घः ১৯७ मार्क) मसाहिभाग चारतार्व कतारिन ।

মান্ধিমিক্ট্রেসবাসী সামান্ত ক্ষবকসন্তান উচ্চপদে অভিযিক্ত হইরা বেজ্লাচারী 'টাইরান্টের' ভার সাধারনের সর্বস্থ পূর্গনে মানস করিলেন। অর্থলোভের বশবর্ত্তী হইরা তিনি দেবমন্দিরের পূজা-ব্যর ছাস করিরা ও প্রতিমার সঞ্চিত্ত অর্থ কইরা আপনার উদর-প্রণের চেটা পাইলেন। তাঁছার এই ধর্মনাশকর পূঠনকার্য্যে সমগ্র সাম্রাজ্যবাসী ও সেনার্শ্য উদ্ধৃত হইরা উঠিল। থিসভূস্ নগরে আফ্রিকার প্রোক্শন গর্ডিরানাসের অধীনে বড়বত্রকারী ফল স্মাটের ধ্বংস্সাধন করিল।

অন্ধীতিপরবৃদ্ধ গড়িরানাস্ অনিজ্ঞাসত্তেও বিদ্রোহী গলে লিপ্ত হইরা স্বীন পবিত্র জীবন আন্তর্ভাতিক বিপ্লবন্ধনিত রক্তপাতে কলুবিত করিলেন। বৃদ্ধ গার্ডিরান সিংহাসনে অধিনীত হইরা সল্বৃত্তি সহকারে রাজ্ঞাশাসন করিতে লাগিলেন এবং তাঁহার পুত্র কনিও গার্ডিরান বীরন্ধ ও গৃহতার সহিত্ব ভাহা রক্ষার তৎপত্র কার্থের নগরে ওঁহাবের রাজণাট প্রতিষ্ঠিত ইবল । প্রিটোরীর গার্ডন্-সেনার্থনের নারক ভিটালিরানালু নগররকার অন্ত নিবৃক্ত ইবলেন। তিনি স্বীর জ্বজাচারিতার সমাটের প্রিরপাত্র ইবরা নেনেট ও নগরবাসীর উপর কর্ত্ত হাপন করেন। প্রজাবিমারে তাঁহাকে জীবন হারাইতে হবল, তথন গার্ডিরান্বর অর্থনোডে সেনাললকৈ বন্ধভূত করিরা আত্মণক অনৃত্ত করিরা রাথিলেন; কিন্ত ইহাতে বিশেব কোন কলোলর হবলা। ২৩৭ খুটালের ওরা জ্বাই মৌরিটানিরার শাসনকর্তা কার্লিরানান্ অর্কিত কার্থের প্রকেশ আক্রমণ করিলেন। কনিট গার্ডিরান্ রণক্ষেত্রে নিহত ইইরাছেন ওপ্রিরী বৃদ্ধ গার্ডিরান্ আত্মহতা। করিলেন।

এদিকে গর্ডিরান্বরের মৃত্যুতে আসক্ষাঞ্চণাত করিয়া রোমীর সেনেটররগণ মান্ধিমান ও বাল্বিনান্কে একএ সম্রাট্পদে বরণ করিলেন। মান্ধিমান রাঞ্চলকর বিক্তমে যুক্তার্যে লিগুর রহিলেন। মান্ধিমান রাঞ্চলকের বিক্তমে যুক্তার্যে ও কবি বাল্বিনান রাঞ্চলির প্রভাব-বিস্তারে বহবান হইলেন। মান্ধিমান নাের্মজীর ও কর্মণ জাতিকে পরালিত করিয়া সেনানারকদের বংশকৈ পরিচর দিরাছিলেন। কিন্ধ বণন এই সম্রাট্ডয় বিজরোৎসবে মন্ত ইইয়া দেবমন্দিরসমূহে পূলাবানে বাস্ত ছিলেন, তথন অক্ষাৎ একটা জনসক্র সেই স্থাণান্তি তক্ত করিয়া চীৎকার করিয়া বিলিল বে, "গর্ডিয়ান বংশধরকে লইয়া তিনজন সম্রাট্ নির্কাচন করা হউক।" সম্রাট্ দর অরনেনা লইয়া তাহাদের গতিরোধের র্থা চেষ্টা পাইলেন, তাহারা বৃদ্ধ গর্ডিয়নের পোত্র এবং কনিষ্ঠ গর্ডিয়ানরে তাতুস্তা গর্ডিয়ান্কে সিজার নাম দিয়া সর্ক্সমক্ষে সম্পৃষ্থিত করিল। এই বিরোধ উপশ্যাত হইলে রোম আয়রক্ষার লভ প্রেত হইয়াছিলেন।

রণজ্বী উত্কতস্থার মাজিমানের সহিত বিশাল রোমদামাজ্যে স্থাসন বিস্তারকালে বাল্বিনাশের মনোমালিক উপস্থিত হইল। সমগ্র নগর কাপিটোলাইন্-জীড়ার উন্মন্ত হইরাছিল। সমাট্রর রাজ অন্তঃপ্রের নিভ্তকক্ষে বিশ্রামন্থ অন্তব করিতেছিলেন, এমন সময়ে একদল প্রিটোরির গার্ডস্ রাজপ্রাসাধে প্রবেশ ক্রিয়া সেনেটের নির্বাচিত সমাট্ররের অব রাজাতরণশৃষ্ঠ ওপ্রবিধ্ধ করিরা ফেলিলেন (৩২৮ খঃ ১৫ই কুলাই)!

এইরপে একে একে ছরখন ছর্ভাগা স্মাট্ কএকমাসের
মধ্যে বিদ্রোহী প্রজামগুলীর হতে জীবনপ্রদীপ নির্বাণিত করিল,
গর্ভিরান্ প্রজাপুঞ্জের অন্তগ্যহে রাজতক্তে উপবেশন করিলেন
বটে, কিছু ভাঁহার মাজার অন্তগৃহীত খোলা তাঁহার বাল্যবরনে
বিত্তর আধিশত্য করিতে লাগিলেন। ভাহারা প্রজাবর্ণের প্রতি
জক্যাচারপরারণ হইরাও নিশ্চিক্ত হইল না। জবলেবে তাহারা

বালক স্থাটের হুই চকু কৰা করিরাবিল, তথন (২৪৩ খুঃ খঃ)
স্থাট্ প্রাণ্ডরে প্রধান মন্ত্রীর নিকট পলাইরা প্রাণ্ডিকা
চাহিলেন। তাঁহার বিশ্বত পরামর্শলাতা ও প্রেটোরির-প্রিকেট
মিসিথিরাস্থ্যটের পক হইরা মিসোপোটেমিরা-আক্রমণকারী
পারক্রপতিকে পরাশ্বিত করেন করি সেই ঘটনা অরণ রাখিবার
মন্ত তিনি ২৪২ খুটাকে অক্রিসের মন্ত্রিরার খুলিরা
বিলেন।

গার্দ্ধনৈভকে বিভাড়িত করিরা নরাট্ ভাহাদের পশ্চাভাবিত হইলেন এবং ভারাধিগাকে ইউক্রেটিস্ভীর হইতে টাইগ্রীন্
সীমান্ত পর্যন্ত ভাড়াইরা দিয়া সেনেটকে স্বীর সচিবের প্রথর
বৃদ্ধির পরিচর জ্ঞাপন করিলেন্। কিন্ত অকলাৎ মিসিধিরাসের
বৃভ্যুতে সম্লাট্ গর্ডিরানের সমৃদ্ধির অবসান হইল। তিনি
আরব-দেশআত প্রসিদ্ধি কর্যা ফিলিপ্কে প্রিকেট্ট পদে নিরোগ
করিরা আপনার মৃত্যু আপনিই ভাকিরা আনিলেন। ফিলিপ্
সামান্ত্যাতে প্ররাসী হইরা সৈক্তগণকে সম্লাটের বিক্লভে উত্তেভিত করিতে সাগিলেন। উত্তেজিত সৈক্তদল আবোরাস্ নদীতীরে
তাহার মন্তক দেহবাই হইতে বিচ্যুত করিরা অবিনারক ফিলিপকেই রোমসাম্রাজ্যের অধীবার করিলেন।

ফিলিপ পূর্বনেশ হইতে রোমে আসিয়া রাজনিংহাসনে উপবিট হইলেন। তিনি রোমবাসীর অন্তর হইতে খীর নীচ-বংশােরতা লোপ করিবার জক্ত পবিত্র জীড়া-সমূহের প্রচলন করিলেন। অগান্টানের পর ক্লডিরাস, ডােমিসিরান্ ও সেভেরাস রাজীত আর কেহ এই জীড়ার প্রবর্তন করেন নাই। তাঁহার রাজস্ব কালের ২৪৯ খুটাকে মিসিনার লিজনিদিগের মধ্যে ঘাের-বিল্রোহ উপস্থিত হর। মারিনাস্ নামক রাজান্ত্স্ইীত জনৈক সেনাপতি বিদ্রোহিদশের নেতৃত্বগ্রহণ করেন। তথন সম্রাট্ ডিসিয়াস্ নামক জনৈক সেনাপতি বিদ্রোহিদশের নেতৃত্বগ্রহণ করেন। তথন সম্রাট্ ডিসিয়াস্ নামক জনৈক সেনেটরকে বিল্রোহ্লমনে প্রেরণ করিলেন। তিসিয়াস্ অনিজ্ঞাসন্তেও রীজাদেশে সেনাদলের শাসনভার গ্রহণ করিলেন,কিছ মিসিরার লিজনসমূহের অন্তর্রোধে রাজবিক্তরে অন্তর্রোধা সম্বাচন অন্তর্বার হিলান এবং ভেরোণার যুদ্দে কিলিপ্তর পরাইরা সম্বাচন অন্তর্বারীর জগতের সম্রাট্ রিলায় মনোনীত করিলেন।

ডিসিরাস্ কএকমাস নির্কিন্দে রাজত্ব করিরাই সীমান্ত আক্রমণকারী গথ-লাভিকে দশুবিধানার্থ লানিয়ব তীরে উপনীত হইলেন।
এদিকে এক দল ডাকিরা-প্রদেশ নুঠন করিরা অগ্রসর হইতে
লাগিল এবং নিসিরার অভতম রাজধানী মার্সিরানোপোলিস্
অবরোধপূর্বক্রেরগণ বহু অর্থ অধিকার করিরা লইল। গথসেনাগতি নিভা ডিসিরাস্কে সন্তে অঞ্চসর হইডে প্রথিয়া

পৰাৰৰ করিবেন ৷ পৰগণ পশ্চাতে ছুটিয়া বোলের নিকটবত্তী হিমাস্ পর্বতের পাদমূলত্ব ফিলিপোলেনিস-সুসর অবরোধ করিল। ভিসিরাস তাঁহাদের অমুবর্তন করিলাও বুর্বস্রলৈভের ভরে অঞ্চর इंटरनन मा। भक्रपम **अक्रिस अक्रा**र जेंडाटिंद भिवित चाक्रमण कतिन, द्वामक्रेनक क्रुबंधन क्रेटन किनिर्नारमानिन শক্র হতগত হইল। ডিলিয়াস্ স্বীন উভ্যের স্থিত পুনরার সৈহাদল গঠন করিবা <u>ভাতভারী</u>দিগকে শাতিদানে ও রোমের প্রণথগোরৰ উদ্ধান্তে গড়েউত হইলেন; কিন্তু এবার তিনি त्त्राव्यक्षा जित्र अपनि अपनि कात्रन वृक्तिक शातिरेनन। উৎকোচ-প্ৰহণৰূপ মহাকলমসলিলে তথন সমগ্ৰ গ্লোমই নিমজ্জিত, ভাহাদের মন্তিৰ অর্থলালদার বিষ্ণুত এবং রীতি-নীতি হীনাবস্থা-পর। সরাট্ এই জাতীর অবনতির আমূলসংখারের জভ ভালেরিয়ানকে নিবৃক্ত করিলেন। গণ জাতির উপর্তপরি আক্রমণে উত্তাক্ত হইরা তিনি এই জাতীয়-কালিয়া উন্মালন করিতে অবসর পাইদেন না। সিসিরা প্রদেশের কোরাম **८** दानियार नामक नगत नातिरश केन्द्रशतक युद्ध बरिन । नजि সপুত্র এই যুদ্ধে নিহত হইলেন।

রোমীয় লিজন তথন ভশ্নমনোর্থ হইরা ভিসিরাসের প্র হট্টিলিয়ানাস্কে সম্রাট্ করিলেন (২৫১ খুঃ আঃ ডিসেরর) এবং গাল্লাস্ তাঁহার হইরা রাজকার্যা পরিচালন করিতে নিযুক্ত হই-লেন। তাঁহারা গথ-শক্রের বিদ্ধক্তে অরধারণ করিতে অসমর্থ হইরা অর্থদানে ভাহাদিগকে বশীভূত করিলেন। এই ছ্র্দিনের সমন্ন অক্সাৎ হটিলিয়ানাসের মৃত্যু হয়। লোকে গালাসের প্রতি সন্দেহকটাক্ষ নিক্ষেপ করিলেও বিশেষ কোন আগত্তি উত্থাপন করে নাই। তাহারা তাঁহার সদ্প্রণে মোহিত হইরা ভাঁহাকেই সম্রাট্পদে অভিষিক্ত করিল।

গথ-হত্তে রোমক প্রভাব থর্ক ও বর্তমান সম্রাটের দৌর্ক্ল্য অবগত হইরা নৃতীন বর্কারসম্প্রদার পার্কাতীর প্রোতের স্থার রোমসাম্রাজ্যে উপনীত হইল। পানোনিরার লাসনকর্তা এমি-বিরানাস্ রাজার নিশ্চেই তাবকে উপেক্ষা করিরা ত্বয় সেনাদল লাইরা বহির্গত হইলেন এবং বর্কারদিগকে যুদ্ধে পরাজিত করিরা রানির্ব নবীর অপর পারে তাড়াইরা দিলেন। এমিনিরানাসের অহুত বীরম্ব বেথিয়া সেনাদল সেই রণজ্যেতেই তাঁহাকে সম্রাট্ বলিরা বোবণা করিল।

ন্মাট্ গাল্লাস্ এই সংবাদ পাইরা বিজেবিংসনাদলকে ও সহযোগীকে স্মৃতিত শান্তি দিবার অন্ত স্পোদেটো-রগক্তের উপনীত হইলেন। তথন গাল্লামের পন্দীর সেনাদল এমিলিয়া-নালের বনবীর্থ্যের কথা প্রবণ করিলা তাঁছারাই স্থান্থান্যন করিল। নালাস ও তাঁহার পুত্র ভোলুনিরানান বেনাক্ষের হস্তে নিহত হইলেন এবং তাঁহা হইতেই অৱবিগ্ৰহের অবসান হইল (২৫০ বঃ অঃ)।

উক্ত বর্ষের দে মাসে এমিলিরানান রাজসমাম লাভ করিলেন।
তিনি সেনেটের হতে শাসনবিভাগের ভারাশি করিয়া বরং রোমরাজ্য রক্ষার অভিপ্রায়ে উত্তর ও পূর্কদিকে বর্ষারজাতির বিরুদ্ধে
সৈনাপত্য প্রহণ করিরা যুক্ত যাত্রায় অপ্রসর হইলেন ; কিন্ত তাহার
এ উদ্দেশ্য কার্য্যে পরিণত করিতে হর নাই। কারণ গালাস্
ইতিপুর্বেই ভালেরিয়ান্কে সৈলসংগ্রহার্থ গল ও কর্মণিতে প্রেরণ
করেন। ভালেরিয়ান দণবল অইরা প্রভাগ্র হইলেন।
উত্তরের সংবর্ষের পূর্বের সেনাহত্তে এমিলিরানাস্ নিহত হইলেন
(২০০ বঃ অঃ আগষ্ট)।

সেন্সর ভালেরিয়ান্ বাউবর্ব বয়ঃক্রমে সামাজ্যের ছইলেন;
কিন্তু পুত্র গারিরেনাসের হতে রাজ্যার্থের ছতক ভার অর্পন
করিরা নিশ্চিন্ত রহিলেন। ইহাতে রাজ্যমর বাের বিশৃথানা
ঘটতে লাগিল। ফ্রাছস্, গখ, আলেমরি ও পারসিক্রগণ উপর্যুপরি রোমসাম্রাক্ত্য আক্রমণ করিলে রাজা বয়ং বুরার্থ প্রাভিন্তথ
সলৈছে অগ্রসর হইলেন, গারিরেনাস্ রাইন তীরে ছিলেন।
সেনাপতি পস্থাস ফ্রাছাস্দিগকে পরাজিত করিয়া গলরাজ্য
রক্ষা করিলেন এবং আলেমরিদিগকে রোমীয় প্রজাবর্গ পলান্ত
করেম। বর্জরজাতিকে পরান্ত করিয়াও গারিয়েনাস্ বিশেষ
সন্তই হইতে পারেন নাই; কারণ তৎকালে সেনেট মহাবড়বস্ত্রে
লিপ্ত ছিলেন, তিনি মিলান নগর সমিকটে সহজ্য আলেমরি-নৈত
পরাভূত করিয়া মার্কোমরি-রাজতনয়া পীপার পাণিগ্রহণ করেন।

যথন গণজাতি বস্তালোতের ভার গ্রীসের প্রবেশসমূহ ধ্বংসসাধনে প্রবৃত্ত ছিল, তথন পারস্তরাজ সাপুর গুণ্ডভাবে আর্ম্মেনিয়াপতি খুক্রকেনিহত করিয়া তদধিকারভুক্ত প্রেমেশ বীর রাজ্যসীমাভুক্ত করেন। ইহাতে আর্ক্সরাক্ষ্যের পুত্র কুদ্ধ হইরা ইউক্রেটিস নদীর উভর তীর মক্ষুমে পরিগত করেন। ভালেরিয়ান্
ভাহার প্রতিবিধানার্থ ইউক্রেটিস্ তীরে উপনীত হইকেন। নদী
অতিক্রম করিবামাত্রই পারস্তসমাট্ শাহ সাপুরের সৈন্তদন্
ভাহাকে পরাজিত ও বন্দী করিল (২৬০ খু: भः)। এই সময়ে
বিখ্যাত বীর ডিমোন্ডেনিস কাপাত্রেভিয়ার রাজধানী সিজারিয়ারক্ষার ব্যাপ্ত ছিলেন। শাহ সাপুর অক্ষারোহন করিয়া রোমকসত্রাটের কর্চবেশ প্রকশিত করিয়াছিলেন। পরে ভাহার চর্ম্মে
ধত্ব প্রিয়া পারতবিক্ষরের কীর্মি শ্ররণ রাজপথে ত্বাশন করেন।

গানিমেনাস্ শিতার মৃত্যুতে মনে মনে আনন্দিত বইগেন। তিনিই এংন রাজভারাধি। তীহার বাঞ্চিভারতে, ক্ষিত্ব-পার্চে, উভানপারিপাটো এবং উৎকৃত পার্চকতায় সকলেই তাংবি উপর ত্রীত ছিলেন, কিছু তাহার ভার নীচপ্রকৃতির

সমাট আর রোমসিংহাসন কলম্বিত করে নাই। তাঁহার এই **এ**টান রাজ্য জনশঃ বৈদেশিকের বিপ্লকে বীভংগ জাকার ধারণ ক্ষরিক। বর্করগণ রোমরাগ্রাগ্রা আইবাড়িত করিতে লাগিল। আনেক্যান্তিরার আন্তর্জাতিক বিপ্লব সমুপন্থিত হইল। সিসিলি-ৰীপে ৰহাৰ্শের প্রাহ্জাৰ কয় রাজকর রহিত ছইরা গেল। ইবোরিয়ায় টিবেরিয়ানাস্ রাশ্বদ্রোহিতাচরণ করিতে লাগিলেন। बाननवर्व यावर जन्माग्रज अरेक्सन विवाद विवाद अर्थन नवर्व-ব্যাপী মহামারীতে লোমনগর ধ্বস্তপ্ৰার দেখিয়া তিনি বিমর্ব হইরা পড়িলেন। আলেকনান্তিরার প্রার অদ্ধাংশেরও **অধিক লোক চর্ডিকেট্ট প্রকোপে পড়ি**রা প্রাণভ্যাগ করিল। তথন সেনাবৰ্গ "বেজ্ঞাচারী রাজার পাপে রাজ্যনত্ত" জ্ঞান করিয়া লানিয়ব নলীকুলে ঔরেওলালের মন্তকে রাজমুক্ট পরাইরা আড্ডার স্বণক্ষেত্র গালিরেনাস্কে পরাভূত করিল। গভীর রাত্রে গুপ্তচরের দারা তাঁহার নিধন-সাধন হইয়াছিল (२६৮ व: ब: २०७ मार्চ)। মৃত্যুকালে সমাট্ খীয় রাজ-পরিচ্ছন ও বেশভুষা পাভিয়ার দেনানায়ক ক্লড়িয়াস্কে অর্পণ कवित्रा दाज्जञ्चनात्मद्र वावत्रा कवित्रा याम। ইলিবিয়ান সীমান্তের অধিনারক ক্রডিয়াস্ রাজসিংহাসনে উপবিষ্ট হইলেন। মিলান হস্তগত ও উরিওলাস্ নিহত হইলে जिनि रमनामन मःखादा धारुख हरेग्राहित्तन, किन्ह गथ ७ वर्कत-জাতির সহিত সৌরমতীয় ও অন্তান্ত রূর্মণজাতি কল ও স্থলপথে যুদ্ধ করিয়া রোমসাথ্রাজ্য বিধ্বস্ত করিতে ব্যাপৃত হইলে, ক্লভিয়াপ্ সলৈক্তে তাহাদিগকে বিমুখ করেন। পুনরায় নাইসালের বুজে ক্রডিয়াস যুদ্ধবিভার যথেষ্ট পরিচর দিরাছিলেন।

এই সন্দের সমাটের প্রধান শক্ত টেটি কান্ পশ্চিমাঞ্চলে ও জেনোবিরা পূর্বপ্রধানেশে রাজ্যস্থাপন করিতে চেষ্টা পান। প্রথমে উাহাদিগকে দণ্ডবিধানার্থ সম্লাট্ বিশেব দৃঢ্প্রতিজ্ঞ হন নাই। অতঃপর তিনি মিসিরা, খেন ও মাকিডোনিরার বৃদ্ধে জরগাভ করিরা গৌরবের তুক্লুকে আরোহণ করিতে না করিতেই মড়কের রোগে আক্রান্ত হইরা শিরমিরান্ নগরে প্রাণত্যাগ করেন। মৃত্যুসজ্ঞার তিনি ঔরেলিরান্কে রাজতক্ত দানের অভিমত প্রকাশ করিলেও, উাহার প্রাতা কুইন্টিলিরান্ ১৭ দিনের জন্ত আকৃইলেইরা নগরে রাজভ্জ শিলে ধারণ করিরাছিলেন। উরে-লিরানের ওভাগমনে শক্তক্ত দানিযুব নদীর পরপারে বাত্রা

নির্বিরাশ্-নগরবাদী ক্রবকসন্তান দামান্ত সৈনিক হইতে ক্রেটেকে ভুক্লভিরাদের অন্তগ্রহে দারান্তাপদ লাভ করিলেন। তাহার রান্তাব্দানের ও বংসর, ১ মাসের মধ্যে "প্রথিক যুদ্ধের" অবদান হইরাছিল। প্রাক্তনাতি ক্রভার্করের উপত্তুক্ত শাভিলাত

করিল। একুইটেন প্রকেশের শাসনকরা টেট্রকাস্ রাক্ত্রে লাভের প্ররাসে বিজ্ঞানী হইরা উর্নেশিবানের বিজ্ঞান ব্রুসজ্জা করিলে সম্রাট্ট সদলে উপত্তিত হইরা উর্নেশের বন্ধী করিলেন। আন্টোনিনাসের প্রাচীর হইতে হার্কিউলিন্ কর পর্যন্ত সম্রাট্ট পারিবিভার করিরা নিশ্চিত হইলেন (২৭১ বৃঃ)।

অতঃপর উক্ত বর্ষেই তিনি পামিরা ও পূর্ব্বরাজ্যের অধীধরী জেনোবিয়ার বিক্তে অন্তচালনা করেন। ঐ রাজকুলকামিনী জপে ওপে সমল্কতা ছিলেন। ঐীক্, সিরীয় ও মিশর ভাষায় উহায় বর্ষেই বৃংপত্তি ছিল। তাহার খামী বীরপ্রেই ওডেনেথাস্ সেনেটকর্ক সিরিয়ার শাসনকর্ত্ব লাভ করেন। জেনোবিয়া খামীর স্তার পর একক রাজ্যশাসন করিয়াছিলেন। পারভ্রাজ এমন কি, রোমসম্রাট্ গালিরেনাসের সেনাপতিও তাহার হত্তে পরাভূত হয়। এই সমরে তিনি খীয় রাজ্যসীমা বিধিনয়া-সীমান্ত হত্তে ইউক্রেটিস-তীর পর্যন্ত বিত্তার করিয়াছিলেন। শশু-শালী মিসর-রাজ্য তাহার য়াজ্যভূক্ত হইয়াছিল।

সমাট্ ওরেলিরান বিথিনিরার আসিরা পৌছিলে সকলে তাঁহার বগুতাপীকার করিল। স্থান্কিরা ও তিরানা পদামত হইল। জেনোবিয়া যুদ্ধার্থ অগ্রসর হইলেন। অন্তিওক ও এমেসার যুদ্ধে (২৭২ খু: খাঃ) পরাজিত হইয়া জেনোবিয়া পুনরায় ডুতীয়-বার যুকার্থ উদবোগ করিতে লাগিলেন। তাঁহার মিসরবিজয়ী সেনাপতি জাবদাস ও তিনি স্বয়ং রণকেত্রে সৈঞ্চালনা করিয়া-ছিলেন। এদিকে সমাটের বিশ্বন্ত সেনাপতি প্রোবাস একটা বাহিনী লইয়া মিশর জন্ম করিলেন। তখন রাণী জেনোবিয়া রাজধানীর হুর্গ মধ্যে আত্রর লইলেন। তৎকালে পামির। নগরীর সমৃদ্ধিগৌরব রোমের সমকক ছিল। সম্রাট্ পামিরা অবরোধ করিলেন। পারভাগতি সাপুরের মৃত্যুতে বিশৃথলাহেতু সাহাব্যলাভের সম্ভাবনা নাই বুঝিয়া এবং মিশরভয়াত্তে প্রোবাস্ক সদলে সমাগত দেখিয়া জেনোবিয়া প্লায়ন করিলেন: কি অনুসরণকারী সেনানলের হত্তে খৃত হইরা তিনি স্ঞাট স্কাশে আনীত হইলেন। সমাটু রাণীর প্রতি বিশেষ সদয় ব্যবহার ক্রিয়াছিলেন। সম্রাট্ রণজ্বর ক্রিয়া প্রত্যাবৃত্ত হইতে না হইতেই পামিলাবাদী জনদাধারণ বিলোহী হইলা রোমকশাসনকর্তা ও তুৰ্গন্থ দেনাদলকে নিহত কবিল। এই সংবাদে স্মাট্ পুনরায় পামিরার প্রত্যাগমন করিয়া নগর ধ্বংস করিলেন এবং বৃদ্ধ বৃদ্ধা, युरक्युवर्छी ও वामक्वामिका छाँहात कर्छात जात्मान निधनत्या थ हरेन। এथान हरेए आजावृत हरेवा जिनि मिनातक विद्याह দমন করেন। দলপতি-ফার্মাস নিহত হম।

বিজনগোন্তৰে উন্মত হইনাও সন্ধাট, ৰব্বী নাজানিগের প্রতি অস্ত্যবহার করেন নাই। জেনোবিদ্যাকে ভিনি টিভোগীর উভানবাটিকার স্বভনে রকা করিরাছিলেন। তাঁহার কভা-গণের সহিত সন্নান্তবংশীর রোমকগণের বিবাহ দিরাছিলেন। টেট কাস ও তাঁহার পুত্র পুনরার রাজসম্পদ্ ভোগ করিতে अधिकाती इरेबाहित्सम । शृक्षितित्सके विद्यार अभन ७ विकिन শ্বান বিজয় করিয়া তিনি সমগ্র রোমসাম্রাজ্যে শান্তিবিধান করিয়া-ছিলেন। অভঃপর সমাট ২৭৪ বঃ আ অক্টোবর মাসে ভালে-রিরানের কারারোধের অবমাননার প্রতিশোধ কইতে পারভ-বিজ্ঞান অন্তিয়ান করেন। এই সমরে তিনি খীর জনৈক সেক্রে-हातीब अवशा अक्षाहात्त्र ७ अभात नर्सवस्त्रल विव्रक स्टेबा তাঁহাকে জীবননাশের ভয় দেখাইলেন। তথন উক্ত রাজকর্মচারী আশ্রকার বস্তু আরও কতকগুলি রাজকর্মচারীকে বদলে ভুক্ত ক্রিরা লইলেন। সম্রাট্ ভাহাদিগকেও ভর দেখাইবার অন্ত অপ-মাধিমণে বিচামে নিহত ব্যক্তিবর্গের এক তালিকা স্বহন্তে প্রস্তুত क्रिया मक्नारक रमशोहराम । वाहाश जाहा नवनशाहत क्रिन, ভীহারাই বৃথিণ-সমাট্ আমাদের প্রাণনাশের অন্ত এই ভরাবহ স্থতি জাগাইরা দিতেছেন। তথন তাহারা বড়বর করিয়া সমাটকে বিদ্রিত করিবার উপার দেখিতে লাগিল। বৈজন্তী হইতে হিরাক্লিয়ার আগমনকালে ২৭৫ খুটাবের অক্লিয়ারী মানে সমাট্ খীয় বিশ্বন্ত সেনাপতি মুকাপোর হত্তে নিহত হই-লেন। রোমবাসী এতদিনে একজন উদারচেতা রাজকুমার ও যুদ্ধ-বিশারদ সেনাপৈতি হারাইলেন।

সেনাদল ও সেনেট যথন সমাটের অযথা মৃত্যুর কারণ বৃথিতে পারিলেন এবং আপনাদের কতি উপলব্ধি করিলেন, তথন তাঁহারা সেই কপট ও বিশ্বাস্থাতক রাজকর্মচারীকে যথোচিত লান্তিবিধান করিলেন। লিজনদল বোষণা করিলেন "একের পাপে ও নছলোকের প্রলোভনে আমারা প্রিয়তম সম্রাট্কে লোকান্তরে প্রেরণ করিয়াছি; তাঁহার অর্লোকে দেবগণ পার্থে স্থান হউক এবং আপনারা তাঁহার পদে একজন উপযুক্ত অধীপর নিরোগ করন" (২৭৫ খুটার্ল, তরা কেব্রেয়ারী)। তৎপরে সেনাদল তাহাদের মণ্য হইতে একজন সেনানায়ককে রাজপদ দানের জন্ত অন্থ্রোধ করিল। ৮ মাস বিচারের পর রাজতক্ষে উক্ত বর্ষের ২৫ লে সেপ্টের সর্ক্রমাতিক্রমে প্রধান সেনেটের টাসিটাস্ ৭৫ বর্ষ ব্রুসে সিংহাসনে আরোহণ করিলেন।

সমাট্ গ্রৈরেলিয়ান মৃত্যুর অব্যবহিত পূর্ব্বে আলানী নামক শক জাতির সংবোগে পারক্তবিদ্দের প্রভাব চালাইতে ছিলেন। অক্ষাৎ ওাঁহার মৃত্যু ঘটার পারক্রবাত্রা রহিত হইল দেখিরা এবং রোম অরাজক জানিয়। বর্কর্গণ রোমসীমাত্তে আলিয়া উপনীত হইল। আলানীগণ সন্ধির নির্দারিত অর্থনাতে বক্তিত হইতা পন্টাদ, কাপাডোকিয়া,সাইলিদিয়া ও গালাদিয়া প্রদেশ অধিকার করিল। তথন টাসিটাস্ আলানীদিগের সহিত পূর্থসন্ধিসর্ত পূরণ করিরা অপরাপর দকলাতীর আক্রমণকারীদিগকে পরাভূত ও রাজ্য হইতে বিতাড়িত করিলেন। বৃদ্ধরেসে অনভ্যন্ত যুক্ত বিগ্রহে অসাধারণ পরিশ্রম করিরা তাঁহার স্বাস্থ্যভল হইল। তিনি ৬ মাস ২০দিন রাজন্বের পর কাপাডোকিরার দেহত্যাগ করিলেন (২৭৬ খুটাকে ১২ এপ্রিল)।

টাসিটাসের প্রতা ক্লোরিয়ানাস সিংহাসনে উপবিষ্ট হইলেন বটে, কিন্তু পূর্ববিভাগের প্রসিদ্ধ সেনাপতি প্রোবাস্ তাঁহার প্রতিহনী হইয়া উঠিলেন। তিন মাস সম্রাট্পনে অভিবিক্ত থাকিয়া উক্ত বর্বের জ্লাই মাসে ক্লোরিয়ানাস্থীয় উদ্ধৃত সেনা-বৃলের হত্তে টার্সস নগরে নিহত হন এবং ইল্লিরিকামবাসী ক্ষকসন্তান সেনাপতি প্রোবাস্ তরা আগন্ত সম্রাট্নির্কাচিত হইলেন। সৈপ্রগণ আফ্রিকা, পন্টাস, রাইন, দানিয়ুব, ইউফ্রিটিস্ ও নীপনদের তীরবর্ত্তী প্রদেশে তাঁহার বীরম্ব দেখিয়া পূর্কেই তাঁহার প্রতি প্রদাবান্ ছিলেন। তাহারা তাঁহাকে মাস্ত ও ম্পর্কাঞ্জাপক অগাহাস উপাধি দান করিল।

ঔরেলিরানের মৃত্যুর পর, রোমের শক্তগণ সম্রাট্দিগকে বলহীন বানিরা মন্তকোত্তোলন করিতেছিল। অগাহাস প্রোবাস ভাহাদের গর্ম্ম থর্ম করিবার জন্ম সেনেটের হত্তে রাজ্যশাসনভার সমর্পণ করিয়া স্বরং তাহাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধথাত্রা করিলেন। রিটিয়া-বাদিগণ, দৌরমতীয়জাতি ও ইদৌরিয়ানজাতি তাঁহার নিকট পরাজয় স্বীকার করিল। কোপ্টাস্ও টলেনে-প্রদেশের নগর-সমূহ এবং জর্মনির অন্তর্গত ৭০টী সমূদ্ধিশালী জনপদ তিনি বর্ষার জাতির হত্ত হইতে উদ্ধার করিয়া তদেশবাসীদিগকে কঠোর অত্যাচার হইতে পরিত্রাণ করিয়া গিয়াছিলেন। তাঁহার অধীনস্থ त्मनानावक माठार्थिनाम् भूकांकरण এवः भवतास्का दानामाम् ও প্রোকিউলাস্ বিদ্রোহী হইলে তিনি ২৮১ খুষ্টাকে তাহাদিগকে वित्नव निका निशा तात्कात सन्भाना शानान यञ्जवान स्टेटनन । এই সমরে তিনি ক্রবিকার্য্যের সবিশেষ উন্নতিসাধন করিরাছিলেন। ভিনি বেতনভোগী দেনাদল-পালনের অনাবগুকতা জানাইলে, ২৮২ পুটাব্দের আগইমাদে তাহারা বিদ্রোহী হইরা রাজমুও বিখণ্ডিত করিয়া ফেলিল। পরে তাহারা মর্ম্মণীড়িত হইরা যুক্ত সমাটের বিজ্ঞাকীর্তিস্থাপনোন্দেশে কড়কগুলি শ্বতিক্তম্ভ গ্রাথিভ করিরাছিল।

লিজনের আবেদন-মতে প্রিটোরীর-প্রিকেট কারুস্ १०বৎসর বরঃক্রমকালে রোমসাত্রাজ্যের অধিপতি হইলেন। তাহার কারিনাস্ও নিউমেরিরাস্নামক পুত্রের তথন প্রোচাবস্থার উপনীত। এই রণনিপুণ সম্রাট্রাজতক্তে উপর্ক্রেশন করিরাই পুত্র কারিনাস্কে সিক্লার উপাধি দিরা গলের বিজ্ঞাহ-শান্তি অরিতে প্রেরণ করিলেন এবং বরং রোমক জাতির চিরপোবিত পারক্ত-বিজ্ঞানা হলরে পোবণ করিরা. পুত্র নিউমেলিরান্কে সঙ্গে লাইবা পারক্তসারাজ্যদীয়ান্তে উপলীত হইলেন। কিন্তু সন্ধি হার্থার করিরা সিনিউকিরা ও টেলিকোন্ নসর অধিকার করিলেন। তবনতর ভাইগ্রীন নদীতট পর্যান্ত বীর বিজ্ঞানকরী লইরা যান, এই সমরে পারসিক্গণ সদলে ভারতসীমাত্তে আসিরা আজ্ঞরকা করেন। রোমক্পণ আশা করিরাছিলেন, পারক্তসারাজ্যের পতনের সঙ্গে মারক ও মিশররাজ্য রোমের পরানত হইবে এবং শকপ্রভাব ধর্ম হইরা রোম হক্তি পাইবে, কিন্তু অক্সাথ ২৮৩ খুটাকের ২৫এ ভিনেম্বর বজাবাতে স্বাটের মৃত্যু হওরার ভাহানের সে আশাভ্রসা লগু হইয়া গেল।

সৈল্পণ কেল্বপুত্র নিউমেরিরান্ ও কারিনাস্কে একবোগে
সন্ত্রাট্ করিলেন। কিছু বজাবাত নিবছন কেল্বের মৃত্যুতে
ঈশবের ক্রোধ মনে করিরা রোমকগণ আর তাইগ্রীস্ অতিক্রম
করিলেন না। তাহারা পারসিকদিগের পদামুসরণ পরিত্যাগ
করিয়া রণক্ষেত্র হইতে প্রত্যাবত্ত ইইলেন।

কারিনাদ্ গালিক বুদ্ধে জরণাত করিণেও তাঁহার ব্যতিচারিপ্রকৃতি তাঁহাকে সাধারণে দ্বণিত করিয়া তুলিল। তিনি ইলিরলিক্ষা চরিছার্থ করিবার জন্ত কএক মাদের মধ্যে ৯টা রমনীকে
পদ্ধীকে বরণ করিয়া পুনর্কার ত্যাগ করিলেন। তিনি কুসলীলিগের মধ্য হইতে একজনকে পরামর্শনাতা ও মন্ত্রী নিযুক্ত করেন।
একজন জালিয়াত তাঁহার নাম-স্বাক্ষরের অধিকারী হইল। তাঁহার
রাজত্বে আনোদপ্রমোদ, নৃত্যুগীত, ব্যায়াম, ক্রীড়া, সার্কাস ও
আন্দিধিয়েটারে জৈবিক ক্রীড়া সমুদর সমাহিত হইতে গাগিল।
এই সমরে রোম হইতে প্রার ৯শত মাইল দূরে নিউমেরিরানের
মৃত্যু বটে (২৮৪ খুরাকে ১২ই সেপ্টেমর)।

ক্ষেৰপ্ত নিউদেরিরানের মৃত্যুর পর, সকলে মত্রিবর আপোরকে রাজতজ্ঞের আকাজ্জী দেখিরা তাঁহাকেই বড়যত্রকারী ও সম্রাটের হত্যাকারী বলিরা ছির করিলেন। সম্রাটের শরীর রিজিবলের সেনাপতি ভাইওক্লিসিরান্ ছর্ক্তের বিচারভার গ্রহণ-পূর্কক প্রায়ভিত্তস্বরূপ তাঁহার বক্ষে বীর তরবারি আমৃল বসাইরাদিলেন।

কারিনাস্ এখন একমাত্র অধীবর হইবেন। তিনি রোম-সাক্রাজ্যের অতুল এপর্য বলে বলীয়ান্ হইরা নৈজসামন্ত কইরা ডাইওক্লিনিরানের বিকতে মৃত্রে আরোজন করিলেন; কিন্তু নিজের পাপেই নিজের শক্তি ও নীবন হারাইলেন। মিনিরারাজ্যের অন্তর্গত মার্গাস্ প্রায় লবীয়া পূর্ব ও পাতিন সেনারলের অধি-মারক ডাইওক্লিনিরান্ ও কারিনাস্ স্ব ব সেনারল সমবেত ছরিলেন। পারতপ্রজাগত বেবারল রণ্ডিই ছিল। ভাহাবের বৃদ্ধ করিতে হইল না। কারিনাস্ বিরেশ্ব নাগ প্রবৃত্ধ চরিভার্থের ক্ষম বে ট্রিউনের পত্নীর সভীত অপবর্ধ ক্ষমিরাহিলেন, সেই ব্যক্তিই গোপনে ২৮৫ খুটাবের মে মানে শিরির মধ্যে তাঁহার প্রাণ সংহার করিল। এই ব্যভিচারী রাজার মৃত্যুত্ব সলে সজে অপ্রবিশ্বের শান্তি হইল এবং ডাইওলিগিয়ান রাজমুক্ট ধারণ করিলেন।

ভাইওক্লিনিরান্ রাজ্যত হতে লইরা অগারান্ ও মার্কান্ আন্টোনিনানের প্রাত্ত্যরুপ্রক রাজ্যার্য নির্কাহ করিতে মনছ করিকেন । তদাহার হতে রাজ্যানাসনভার দিলেন এবং খবং যুছবিপ্রহ লইরা ব্যক্ত রহিলেন। উভয়ের মানসিক প্রবৃত্তিনিচয় ভির দিকে প্রবৃত্তিক হইলেও কথনও স্থাট্র্যের মধ্যে মনোবাদ উপস্থিত হর নাই।

ডাইওক্লিসিয়ান রোমসাম্রাজ্যেকে শত্রুপদ্ধিবেটিত দেখিরা ইহার চারি অংশেই এক একজন সমকক সম্রাট্ট রাখা আবস্তুক বোধ করিলেন। তদমুসারে তিনি স্বীয় রাজ-শক্তিকে পুনরায় চুইভাগ করিয়া গালেরিয়াস ও কনম্ভান্দিয়াস নামক সেনাগভিষয়কে সমান ভাগ করিয়াদিকেন ৷ তাঁহারা রাজসন্মানের ছিতীয় স্থান (Second honours of the imperial purple) 7/5 করিলেও আপন আপন নির্দিষ্ট বিভাগে পরস্পরে সমান দক্তি-সঞ্চালন করিতে সমর্থ ছিলেন। কনন্তান্দিয়াস স্পেন, গুল ও রুটেনের শাসনভার পাইলেন, গালেরিয়াস্ দানিযুবতীরবর্ত্তী প্রদেশের শাসনকর্তা হইলেন, মাক্সিমিয়ান ইতালী ও আফ্রিকা অদেশে অধিকার বিদ্ধার করিলেন এবং স্বরং ডাইওক্লিসিয়ান থে দ, ইজিপ্ত ও এশিয়াত্ব ধনধান্তপূর্ণ রাজ্যসমূহের শাসনভার শইরা নিশ্চিত্ত রহিলেন। তাঁহারা প্রত্যেকেই স্ব স্থ বিভাগের সমাট্ বলিয়া পুজিত ছিলেন; কিছ ভাঁহাদের মিলিত শক্তিই সমগ্র রোমসাঞ্রাক্ষে প্রভূষবিভার করিয়াছিল। ভাইওঙ্লিসিয়ান্ গালেরিরাস্কে এবং মান্তিমিরান্ কনভান্সিরাস্কে ক্সাদান করিয়া এবং উভয়কে সিম্মার উপাধি দিরা পরস্পরে আত্মীরতা স্থুদুড় করিয়া লইলেন।

ভাইওক্লিসিরান্ আন্তলিনাস্-বংশীর একজন সিনেটরের ক্রীভয়াসপুরে। তিনি বৃদ্ধি ও বাহবলে অতুল সম্পত্তির ক্রীশ্বর হুইলেন। রাজা হুইরা একবর্ষ পরেই ২৮৬ খুরীক্ষে ভিনি মাজিমিরান্কে স্বীর সহযোগী করিবা সন। তৎপর্বজী বর্ষে ভাহারা বাগাভীবাসী বিদ্রোহীদিগকে বন্দ করেন। এই সমর হুইভে রোমনারাজ্যের চতুর্দিকে বিদ্রোহবৃদ্ধি ক্রেজিভ হুইরা উঠে। বর্জর-জাতি, রোমক্সৈভ, রাজস্থ-স্থ্রোহক্ষণ ও স্বর্ধ রাজ্যেরদুর্গিগর

অপূর্ক অভ্যাচারে প্রাণীড়িত গলস্বাভি বিলোহী হইরা উঠিল।
পান্টাস্ উপকৃলে ক্লাছ-উপনিবেশিক্পণ স্বস্থার্ডি অবলম্বন করিল।
আফ্রিকা, গ্রীস্ ও এসিয়ার উপকৃলে অহরহং পুঠন চলিতেছিল।
এরূপ বিশুখল অবলার কুলোঁ নগরে অবহিত নেনাপীর সেনাধ্যক্ষ
কারোসিয়াস্ ইংলিদ্প্রণালীঃ উত্তরণপূর্কক রুটেন অধিকার
করিল (২৮৯ খুঃ জঃ)।

ভাইওক্লিরান্ও মাজিমিয়ান্হতাশ হইলেন, কিন্তু প্ররায় সিধারহত্বের সহযোগিতা লাভ করিরা তাঁহারা নববলে বৃটেন আক্রমণ করিলেন। কনন্তান্তিরান্ত্র অভিযানে নায়ক হইরাছিলেন। ২৯২ খুটাব্বের বৃলোঁ নগরের যুকে কারো-সিয়ান্পরাজিত হইল এবং তাঁহার কতক সৈত্ত আক্রসমর্পণ করিল। অতঃপর কনন্তান্তিরান্ত্র আরোজন করিতে আগিলেন। ইভাবসরে মন্ত্রী আলেগ্রান্ত্র আরোজন করিতে আগিলেন। ইভাবসরে মন্ত্রী আলেগ্রান্ত্র আরোজন করিতে আগ্রিপিওভান্ রণভরী লইরা আলেগ্রান্তে আক্রমণপূর্কক নিহত করিলেন। কনন্তান্তিরান্ত্র আক্রমণপূর্কক নিহত করিলেন। কনন্তান্তিরান্ত্র রাজভক্ত দেখিলেন।

ভাইপ্রদিরান প্রোবাদের স্থায় রোমসামাজ্যনিতি দৃঢ় করিতে সংকর করিরা সীমান্তবিত চুর্গাদি স্থরক্ষিত করিলেন। ইন্দিপ্ত হইল গণ্যন্ত শিবির সরিবেশিত হইল। অন্তিক্ত, এমেসা ও দামান্ধাসে অপ্রাগারে স্থাপিত হইরাছিল। এই-রূপে সামান্ধ্য স্থান্দ হইলে গণ্য, ভাগুলা, গেপিভি, আলেমরি প্রস্তৃতি বর্করেজাতিগণের বলদর্প হত হইল এবং তাহারা রণক্ষেত্রে প্রাণ বিসর্জন করিল। আলেমরিগণ লালে, ও বিন্দেনিসার মুদ্ধে কনস্তান্ধিরাসের হত্তে পরাজিত হইল। গলবাসী আলেমরি জাতির উপদ্রব হইতে রক্ষা পাইল।

রাইন্ ও দানিয়ুব সীমান্ত স্থশাসিত হইল; কার্পি, বান্তাণি ও সৌরমতীরগণ ভির ভির ছানে উপনিবেশ স্থাপন করিয়া শান্তিমর শীবন অতিবাহন করিতে আদিও হইলেন। দক্ষিণ বিভাগে টৌ মূরজাতি বিজ্ঞাহ ঘটাইল। ফুলিয়ান্ কার্থেজে এবং আকিলিয়ান্ আলেকসাজিয়ার রাজহত্র ধারণ করিলেন। ক্রেমাইস্গণ পুনরায় মিশর দুর্গন করিয়া বিধ্বক্ত করিতে লাগিল। ডাইওক্লিসিয়ান আলেকসাজিয়া আক্রমণপূর্বক অভিযানের স্ত্রপাত করিলেন। বুশিরিস্ ও কোপ্টোল্ বিধ্বক্ত হইল। এই অভিযানে ডাইওক্লিসিয়ান পিথাগোরস, সলোমন ও হার্মিস গ্রেজতি পণ্ডিতগণের গ্রন্থ ভন্মীভূত করিয়া কিমিয়াবিভার ইভি-হাসের অনেকটা লোপ করিয়া গিয়াহেন।

মিশর-বিজ্ঞরাত্তে তিনি পারতবিজ্ঞরে যাত্রা করিলেন। রোম-সায়াজ্যের চতুর্বিতাগের সমবেত বাহিনী তাঁহার সাহায্যার্থ

প্রেরিত হইবার ব্যবস্থা হইল। পালেরিয়াস সলে সলে চলিলেন। **অন্তিওকে ছাউনী করিয়া তাঁহার। মিলোপোটেমিরার প্রান্তরে** উপনীত হইলেন। উপযুগিরি তিনটী বৃদ্ধে রোমীর সেনা পরাত্ত হইরাও নিম্নন্তম হইল না। তাহারা পুনরার জীমবেগে আক্রমণ করিল। আর্শ্রেণিয়ারাজ ভিক্লিছেভিদ্ ইউক্রেটিশ্ নদী সম্ভরণপূর্ব্বক অপর পারে পলায়ন করিলেন। এদিকে গালে-রিয়াস নববলে আর্শ্বেণিয়া আক্রমণ করিলেন। পারক্তপতি জয়-গৰ্কে মন্ত ছিলেন, এজভ পূৰ্ক হইতেই যুদ্ধের বিশেব আয়োজন করেন নাই। পারস্থরাজ নারশেষ নানাম্থান হইতে সৈগ্র সংগ্রহ করিরাও কোন শৃত্বলা স্থাপন করিতে পারিলেন না। যুদ্ধে অসমর্থ হইরা তিনি মিসিরার মকদেশে প্রায়ন করিলেন। গালে-রিরাস তাঁহার পদ্মী ও পুত্রকে বিশেষ যদ্মের সহিত ও সসন্মানে রণক্ষেত্রে রক্ষা করিয়াছিলেন। অবশেষে সন্ধির প্রস্তাব হইল। পারক্তরাজ রোমের বখ্যতা স্বীকার করিলেন এবং ইন্থিলিন. জাবদিসিন্, আৰ্জানিন, মোক্সিন ও কার্দ্ ইন প্রদেশ এবং ইবেরিয়ার রাজকর্তৃত্ব রোমসম্রাটের হক্তে প্রদান করিয়া বন্ধুত্ব সূত্রে আবদ্ধ হইলেন। তিরিদেভিদও পিতৃসম্পদ লাভ করিলেন।

রোমরাজ্যকে নানাবিপদ্পাত হইতে রক্ষা করিয়া তিনি ৩০৩
খুষ্টাব্দের ২০এ নবেম্বর একটা বিজয় মহোৎসবের অফুষ্টান
করেন। এই সময়ে তিনি ছই মাস মাত্র রোম রাজধানীতে
থাকিয়া স্বীয় বিভাগীয় রাজধানী নিকোমিডিয়ায় ৩০৮ খুষ্টাব্দে
উপনীত হন। এই দীর্ঘ যাত্রায় তাঁহায় স্বায়্ম ভল হয়। তথন
তিনি অধীনত্ম সেনাগণকে এবং প্রজা-সাধারণকে নিকোমিডিয়ার প্রশস্ত প্রাস্তরে সমবেত করিয়া বলিলেন, "রোমমুকুট
স্বেছয়ের ত্যায় করিয়া আমি অবশিষ্ট জীবন নির্জ্ঞানে বাস
করিতে ইচ্ছা করি।" তদনশুর তিনি ডালমেসিয়ায় অন্তর্গত
সলোনা নগরে গমন করিলেন (৩০৫ খুঃ সলা মে)। ঐ দিনেই
ভাঁহায় সহযোগী অস্ততম স্রাট্ মাক্সিমিয়ান্ ভাহায় মিলান
রাজধানীতে ঐয়প ভাবে ঘোষণা দিয়া স্বয়ং সুকানিয়া লামক
গগুগ্রামে যাইয়া নিশ্বিত্ত হইলেন।

ভাইওক্লিসিরান্ ও মাজিসিরাম্ রাজকার্য হইতে অবসর
গ্রহণ করিবার পর, রোমরাজ্যে প্ররার বিশুঝলা ঘটিতে
লাগিল। কনন্তজিরাস্ ও গালেরিরাস্ সর্বমর কর্তৃত্ব লাভ
করিলেন বটে, কিন্তু স্থাসন প্রতিষ্ঠা করিতে পারিলেন না।
গালেরিরাস্ ও কনন্তাজিরাস্ পূর্বমত অগাষ্টাস্ উপাধি ধারণ
করিলেন এবং গালেরিরাস্ খীর ভাগিনের মাজিমিন্ ও ইতালীর
সেনানারক সেভেরসকে সিজার করিয়া চারিবিভাগে রাজ্য শাস্নর বাবহা বেধিলেন। কিন্তু তাঁহার আশা বিশেব ক্লব্তী হইল
না। পশ্চিম বিভাগে কনন্তাভাইন এবং আজিকা ও ইতালীতে

শাবেশিটরান্ বিজ্ঞানী হইরা তরদ্রাক্ত্য অধিকার করিরা বনিলেন।
কালেডোনিরার বর্জরদিগকে পরাভূত করিরা সম্রাট্ কনন্তালিরান্
কালকবলে নিপতিত হইলেন (৩০৬ খৃ: ২৫০ জুলাই)।
তথন গালেরিরান্ রাজ্যের বিভ্রাট্ উপলব্ধি করিরা তাঁহার পুত্র
কনন্তান্তানিকে সিজার উপাধিসহ তবিভাগের কর্তা করিলেন
এক পূর্কক্ষিত সেভেরাসকে অগাইাস উপাধি দিলেন।

কনতান্তাইনের এরূপ সোভাগ্যবৃদ্ধিত মর্বাবিত হইরা মান্ধিমিয়ানের পূত্র এবং গালেরিয়াসের জামাতা মান্ধেন্টিয়ান্ রাফেন্টগালভের জালানে উক্ত বর্ষের ২০এ আক্টোবর উৎক্টিত রোমকগণকে খণলে জানয়ন করিয়া রোম-নগরে বিজ্ঞোহধ্বজা উজ্জীন করিলেন। প্রত্যের প্রতি রেছাধিকারশতঃ হৃদ্ধ মান্ধিমিয়ান্ বিজ্ঞোহপক্ষ অবলম্বন করিলে অনেকেই প্রদাপৃর্কাক তাঁহার ছত্রতলে আসিয়া উপনীত হইল। সমাট্ সেভেরাস্ বীয় সহযোগীর পরাস্পাহ্মারে সদলে রাজধানী অভিস্থে অগ্রসর ইইলেন। নগরম্বার ক্ষম এবং সৈতালককে তাঁহার পক্ষ ত্যাগ করিয়া মান্ধিমিয়ানের পক্ষাবলম্বনে উত্তত দেখিয়া তিনি রাভেয়ায় পলাইয়া গেলেন। এখানে মান্ধিমিয়ানের অধীনস্থ সেনা তাঁহাকে আক্রমণ করিল। সেভেরাস্ বন্দী ও নিহত হইলেন। অনস্তর বৃদ্ধ মান্ধিমিয়ান্ আরস্পর্কতমালা অতিক্রম করিয়া ৩০৭ খুটান্বের তাধানি প্রত্যাক্ষর্তা করীকে দান করেন।

সেভেরাদের নিধন সংবাদ পাইয়া রোমবাসীকে দওবিধানার্থ গালেরিয়াস ইল্লিরিকাম হইতে সলৈতে যাত্রা করেন। নার্ণি-নামক স্থানে উপনীত হইলে সৈঞ্গণ তাঁহার পক্ষ ত্যাগ করিয়া শত্রুপক্ষে যোগদান করিতেছে দেখিয়া তিনি পলায়ন করিলেন। এই সময়ে রোমসামাজে ছয় জন সমাট্ (মাল্লিমিয়ানের অধীনে কনতাস্তাইন ও মাক্সেণ্টিয়াস এবং গালেরিয়াসের অধীনে লাইসিনিয়াস্ ও মাঝিমিন) রাজাশাসন (৩০৮ খঃ)। বৃদ্ধ সমাট্ মাক্সিমিয়ান খীর পুত্রের জন্ম সমগ্র পশ্চিমবিভাগ হস্তগত করিতে বড়বছ করিলেন, কনন্তান্তাইন ফাৰুজাতিকে পরাম্ভ করিতে রাইন নদীতটে অগ্রসর হইলে বৃদ্ধ সম্রাট অর্থদানে সেনাদলকে বশীভূত করিতে চেষ্টা পান। কনন্তা-ন্তাইনের জন্মপৃথ সৈত্যের সমক্ষে বৃদ্ধ করিতে অসমর্থ হইয়া মার্ক্সিমিয়ান মার্লাএল নগরে আত্রর লইলেন। বিপক্ষরৈত্ত নগর অবরোধ করিলে নগরবাসী ভাঁহাকে শত্রুকরে সমর্পণ করে এবং কনন্তান্তাইনের আদেশে ৩১০ ব্টান্সে কেব্রুয়ারী মাসে ভাছারা ভাঁছাকে ব্যালয়ে প্রেরণ করে। ইহার এক বংসর পরে ৩১১ খুটাব্যে যে মানে অভ্যধিক পানগোৱে পীড়িত হইয়া গালেরিরাস ভবলীলা লেব করেন।

গালেরিয়ানের মৃত্যুতে আধান্ত লইরা লিসিনিয়াস ও মাঝিমিনের বিরোধ বটে। অবশেবে মাঝিমিন প্রাচ্য বিভাগের এসিরা বঙ্গ এবং লিসিনিয়াস মৃরোপথও অধিকার করিয়া লন। হেলেস্পন্ট ও প্রেনীর বন্দরাস, উভরের অধিকারসীমা নির্দিষ্ট থাকে। এই সময়ে রোমসামাজ্যের উন্নতিবিধান জন্ত লিসিনিয়াস ও কনভাভাইন একমত হইলেন, কিন্তু মাঝিমিন ও মাঝেনিট্রাস্ একবোগ হইরা গোপনে আন্তর্জাতিক বিপ্লবের কুটিল কর্মনা পোবণ করিতে লাগিলেন।

সমাট্ মহান্ধা কনতান্তাইন ১ম, ৩০৬ ও ৩১২ খুইাকে ফ্রাক্ক ও আলেমরি-কাতিকে সম্পূর্ণরূপে নির্ভিত করেন। তৎপরে ৩১৫ খুইাকে তিনি ইতালীবানীর বিক্ষের বৃদ্ধ বোবণা করিয়া তুরিপ রপক্ষেরে ভাহািদিগকে পরাত্ত করিয়াছিলেন। অতঃপর তিনি তেরোণা অবরোধ করেন। মান্ধিন্টিরাসের সেনাপতি করিসিয়াস্ পশ্লিয়ানাস্ নগররকার ব্রতী ছিলেন। উত্তরপক্ষে ঘারতর যুদ্ধের পর পশ্লিয়ানাস্ পরাক্ষিত হইলেন। কনস্তান্তাইন স্বীর বাহিনী লইয়া রোমের নিক্টবরী সেক্স-ক্ষ্রা নামক স্থানে আসিলেন, তথন সমাট্ স্থলিক্রার স্থা ছিলেন। শক্রকে অক্সাৎ নগর সমূথে উপনীত বেথিয়া তিনি যুদ্ধক্রা করিলেন। তাঁহার অধীনস্থ সেনাদল তাঁহাকে ত্যাগ করিল, তথন তিনি মিল্ডিয়ান সেতু পার হইয়া পলাইতে উত্তত হইলেন। সমবেত জনতা তাহাকে নদীর জলে ফেলিয়া দিল। বর্মাতারে তিনি অতল জলগর্ডে নিমজ্জিত হইয়া গেলেন। তাঁহার বংশীর সক্ষলে বিজয়ী সমাটের আদেশে নিহত হইল।

সন্নাট্ কনন্তান্তাইন একণে সহবোগী লিসিনিয়াসের সহিত বীয় ভগিনী কনন্তান্দিয়ার বিবাহ দিবার উন্তোগ করিলেন। ৩১৩ খুটান্দের মার্ক মানে উভরে মিলান নগরে সমবেত হইলেন। বিবাহোৎসবে ব্যাপৃত থাকিতে থাকিতেই উভরকেই পুনরায় রণক্ষের গমন করিতে হইল। কনন্তান্তাইন ক্রান্ধলাতির ঔষত্য নিবারণার্থ রাইন-তটে গমন করিলেন এবং লিসিনিয়াস্ বিদ্রোহী মাল্লিমিনের দর্পচূর্ণ করিতে বৈজ্ঞান্তনগর অধিকার-পূর্বক উক্ত বর্ষের ১৩ এপ্রিল ভারিবে হিরাক্লিরার পরস্পারে সম্পুনীন হইলেন। মাল্লিমিন পরান্ত হইরা নিকোমিডিরায় পলাইয় বান। এথানে তাহার মৃত্যু হর।

০১৪ খৃ ষ্টান্দে কনন্তান্তাইন ও লিসিনিরাস্ রোমীর জগতের একমাত্র অধীধর হইলেন। সহবোগী নুল্লাট্ছর বলদর্শে উত্তেজিত হইরা একাধিপত্য লাভের আশার পরস্পরে বুরুবিগ্রহে মাতিরা উঠিলেন। কনন্তান্তাইনের অক্তম ভগিনীপতি বাসিরানাস্ সিলার উপাধি লাভ করিরা ইতালীর শাসনভার প্রোপ্ত ইইলেন। ইহাতে লিসিনিরানের হল্বে বিধেববিদ্ধ জনিয়া

উঠিল। তিনি উাহার অধিকারে আন্তর্মনার আইর্রানীবিগাকে আপর সরাট্যরের অধিকারে বিচারার্থ প্রচ্যাপন করিছে আরীকৃত হুইলেন। এই প্রে বোর যুক্ত বাহিল। ৩১৫ খুটাকে ৮ই আটোবর পালোনিরার অভর্গত কিবালির লগর সন্নিকটে বোর সংঘর্ষণের পর, নিনিনিরান্ পরাজিত হুইরা চ্চাকিরা হুইতে খ্রেসে পলারন করিকেন। শেবোক হানের নার্দিরা রপক্ষেত্রে বিতীয় বুদ্ধ সংঘটিত হুইল। লিনিনিরাসের সেনাবল এবারও রাত্রির অভ্যন্তরে পলায়ন করিল।

ছইবার উপর্গার পরাধরে গিনিনিরাস্কে এই দেখিরা কনভাতাইনের দরা হইল। তিনি দরির প্রভাব বারা উভরের মনোমালিভ দ্র করিলেন এবং ব্রের কতিপ্রণ্যরূপ পালেনিরা, ভালমাসিরা, ভাকিরা, মাকিদোনিরা ও গ্রীস প্রদেশ পশ্চিম সাব্রাজ্যাংশ ভূক করিয়া লইলেন। জীম্পাস্ ও কনিষ্ঠ কনভাত্তাইন পশ্চিমের সিজার নিযুক্ত ইইলেন। এবং কনিষ্ঠ গিসিনিরাস পুর্বরাজ্যের সিজার পদ পাইলেন।

এই ঘটনার ৮ বংসর পরে, ৩২৩ খু ষ্টান্দের ওরা জুলাই কনস্বাস্থাইন সহযোগী বিসিনিয়াদের সর্বানা সাধনে উদ্যক্ত হইলেন। হেক্ৰদ্ নদী উত্তরণপূর্কক তিনি ভীমবেগে খীয় শক্রকে आक्रमण करतन। निर्मिनियाम् आचातकात्र अममर्थ हरेया देशकी कर्ग मत्या जाला गहेला। किस त्रथात जावकर হইয়া পুনরায় কালসিডনে ও পরে নিকোমিডিরায় পলায়ন করিলেন। অবদেবে ভগিনী কনন্তান্তিয়ার প্রার্থনার সম্রাট্ কনভাস্তাইন স্বীয় ভগিনীপতি লিসিনিয়াসের নিকট হইতে রোমনাম্রাজ্যের অধিকার কাডিয়া লইলেন। তাঁহার অধীনম্ব শাসনকর্তা মাটিনিয়ানাসকে ঐ সভে অন্তর্ভিত করা হইল। निनिनिन्नान् (परमानानिका नगरत् नकत्वमी द्रश्रितन, भरत् ताक-দ্রোহিতার অপরাধে ছিনিও শমনভবনে প্রেরিত হইলেন। ডাইও-ক্লিসিয়ান স্থশাসনবাবস্থার জন্ম যে রোমসাম্রাজ্য চারিভাগে বিভক্ত कतिता वान, त्रहे मिन इटेएड ७० ४९मत भारत ७२८ थ होट्स द्याम-সামাজ্য প্রনরার একজ্জাধীন হইল। রাজাবিভাগগুলির একীকরণ-ফলে ও রাজকার্য্যের স্থাবিধার জয় তিনি স্বনামে কমজাজিনোপল नगरी दाशन द्वितन अवः चारनकमामात त्राटकताम त थ है গর্মের প্রপ্রার দিরা গিরাছিলেন, তিনি ভাহার সমাক প্রতিষ্ঠা করিয়া সেলেন।

সমাট কনভান্তাইনের ছই পদ্ধী ছিল। প্রথমা মিলার্ডিনার গতে একমাত্র জীম্পাদ্ এবং দিতীর পদ্ধী কঠার গর্ভে কনজা-ভাইন ২র, কনভান্দিরাস্ ও কনভান্দ লয়গ্রহণ করেন। কনভা-জিলান্কে সিম্লার উপাধিসহ গলপ্রদেশের শাসনভার স্বান্দি করার জিম্পানের ক্ষরে বিবেববহি প্রজ্ঞিত হইরা উঠে। এই সবরে রাজার শীবননাপের সন্তরে বছদারকারী বলিরা ক্রিপাস্থত ও
নিহত হন। নরাট কলভাভাইন ১ম, তাঁহার শীবনে বিশে ও বিংশ
বার্ষিক রাজ্যতোগোৎসব সমাপন করিরা ৩৩৭ খুঁহান্দ, ২২নে,
নিকোমিডিরার আকুইরিরন্ প্রানাবে বেহভাগে করেন। তলমন্তর
তাঁহার করার গর্ভনাত পুত্ররর রাজ্যাধিকারী হন। ক্রেট কনভাত্তাইন্ নৃতন রাজ্যানী; কনভালিরান্ খেল ও পুর্মবৃত্তী জনপদ
সম্পার এবং কনভাল ইতালী, আক্রিকা ও ইরিরিকান্ লাভ
করেন। এই সমরে নারশেবের পোত্র ও করিরাও পারতপ্রাচ্য রোমসাত্রাজ্য অধিকার করিরা অকীর শাসন-প্রভাব বিভার
করিতেছিলেন। কনভালিরান্ প্রাণপণে বৃদ্ধ করিরাও পারতপতিকে হারাইতে পারিকেন না। ৩৪৮ খুটাকে শিলাড়ার বৃদ্ধে
রোমকগণ পরাজিত ইইরা পলারন করিল। এই সমরে ভারতীয়
সৈত্তগণ পারত্বাজ্যের সহারতা করিরাছিল।

ইত্যবসরে মন্সেগেটার অধীনে শব্দগণ পারভের পূর্বভাগ লওভঙ করিতেছিল। পারস্তরাজ উপায়ান্তর না দেখিরা রোম-সম্রাটের সহিত সন্ধি করিলেন। এদিকে ভ্রান্তলোহী কনস্তান্তাইন কনিষ্ঠ প্রাতা কনন্তান্দের ঐশর্যো ঈর্বাপরতম্ভ হইরা তল্লাঞ্চা আক্রমণ করেন। তাঁহার আগমনে ভীত কনন্তান্সের প্রেরিত ইলিরীয় সেনাদল পলায়নপর হইয়া একদিকে কনন্তান্তাইনকে ছলে ভুকাইয়া কইয়া যায় এবং গোপনে তাঁহাকে সদলে হত্যা করে (७८० थु: मार्क)। ইहात ठिक मनवर्ष भरत ७६० व होरक মার্ঘেণ্টিয়াস্ নামক জনৈক রাজজোহী মার্শেলিয়ানাসের উত্তেজনায় কনন্তাপকে নিহত করেন। কনন্তালিয়ান মার্মেণ্টিয়ানকে অব্যা-হতি দিলেন না। ব্রাতুলোহের সমূচিত শান্তি দিবার জন্ম পারভাষত্ত পরিহার করিরা তিনি ভেটানিওর সহিত মিশিত হইতে বাসনা করিলেন। ভেট্রানিও সদলে উপনীত হইলে তাঁহার পক্ষীর সেনা-দল কনন্তান্দিরাসের পক্ষ অবলঘন করিল, তখন তিনি সম্রাটের বস্থতা স্বীকার করিতে বাবা ছইলেন এবং প্রেসার সম্বর্গনিরূপে কালাতিপাত করিতে বাধ্য রহিলেন। সিলিউকাস পর্বতের সমীপত্ব বুৰে মাগ্ৰেণ্টিরাস ৩৫৩ খু টাব্দে নিহত হন।

৩৫ - খুৱালে কনভালিরাস্ একক ছত্রপতি হল। ৩৫১
খুৱালের এই মার্ক তিনি গালাসের সহিত বীর কলা কনভাতিনার
বিবাহ দিরা তাঁহাকে রাজকীরকার্য্যের স্থবলোবভের জন্ম নিরোগ
করেন। ৩৫৩ খুৱালে কনভালিরাসের রাজ্য নিকটক হইলেও
গালাসের জন্তাচার ও আধিপত্য দিন বিন বাড়িতে লাগিল,
কর্মনে সত্রাট্য তাঁহার কমতা ধর্ম করিতে উভত হইলেন।
ভিনি কৌশলে খীর ভনরার আশসংহার করিরা জানাতাকে,
বিনানে সাক্ষাভের আক্ষাভল জানাইরা বার্থানিও নামক সেনাপতির সাহাব্যে তাঁহাকে পেটোভিও নামক স্থানে কমী ভরিসেন।

শ্বনা হইতে যুক্ত ভরিছা দেন। এই সনতে জিনি আছুপুরবের
নক্ষকেই প্রান্ত নিহত করেন; কেবন সারাজী ইউনিনিবার
নধার্তার ভ্নিরান্ আধেক নগরে নির্দানিত হইছা জীবনাতিপাত করিতে আরিই হইলেন। কিছ এখানে তাঁহাকে জ্বিক
কাল বাস করিতে হয় নাই। ইউনিবিবার অহুরোধে তিনি
ক্ষজালিরাসের তলিনী হেলেনাকে বিবাহ করিছা নিজার
উপানিসহ আরস্ পর্কজ্ঞের অপর পার্থবর্তী প্রবেশের শাসনভার
প্রাপ্ত নাজাং করিতে হয়। এখানে মান ২৪ বিন থাকিরা
কিনি গ্রনাজাশাসনে বহির্গত হন। (৩৫০ প্র: জঃ)

তংগ-৫৯ খুটালে সন্ত্রাট্ট কনজালিরাল পূর্ববিভাগ গরিনপনি আসিয়া কাদি, সৌরমজীর ও বিমিগান্তিন্ প্রভৃতি জাতিকে বলে আনরন করেন। শেবাক্ত বর্বে তাঁছাকে পারজ্যার সাপ্রের বিক্লন্তে যুক্ত করিছে হর। এই বুক্ত বক্তে বাণবিদ্ধ হইরা তাঁহার প্রের মৃত্যু বটে, তাহাতে জিনি কতিপূরণস্বরূপ আমিদা নগর লইরা ধ্বংস করেন। ইহাতে রোমকগণ উত্তেজিত হইরা তাঁহার বিরুদ্ধে পূনরার যুক্ত ঘোষণা করে। এই সমরে বর্ষরগণ পারজ্ঞান্তর প্রকার যুক্ত ঘোষণা করে। এই সমরে বর্ষরগণ পারজ্ঞান্তর প্রকার তাহার বলহাল ঘটে। ৩৬০ খুটান্তে রোমকগণ শিলাত্বা ও মিসোপোটেমিরা অধিকার করে এবং তীর্থা যুক্তে পরাজিত হইরা পারজ্ঞপতি পলারন করেন। অভংপর সম্রাট্ কনভালিরান্ শীর সেনাপতির কার্যে বিরক্ত হইরা স্বরং লানির্ব তীর হইতে পূর্বাভির্ধে রওনা হইলেন। বেশান্ত-তুর্গ অবরোধকালে বর্ষাক্তর সমাগত দেখিরা রোমক স্ত্রাট্ট্ সমলে অক্তিপ্রক প্রত্যাগৃত্ত হইরা ছাউনী করিকেন।

রাজনৈতিক বিশ্যালার নিপ্ডিত হইরা সম্রাট্ কনন্তান্তিরাস্ ক্রান্থ আলেমরি প্রান্থতি অব্যথিত অসন্ত অধিবাসির্দ্দকে গল-ক্রান্থ্যের অধিকাংশ প্রদেশ ছাড়িরা নিতে বাধ্য হইলেন। এই সমরে নামালাক্রবিদ্ অনুলিরান্ গলের শাসনকর্তা হন। ইনি যুহবিভার পাঞ্চিত্য লাভ না করিকেও ৩৫৭-৩৫৯ খুটাবের মধ্যে কএকটা বুক্তে অর্থনির বর্ষার্রগিতে পরাত্ত করিরা রাইন নধীর অপর পার পর্যন্ত রোমরাজ্যবীমা বিভার করিরাছিলেন।

ভ্লিরানের এই এডিজ ও বৌভাগ্য সয়াটের চকুংশ্ল হইল। তিনি অবিলবে তাহার নিকট আবেশ পাঠাইলেন যে, বিবিটনের নিকট ভোষার চারিটী নিজন পূর্কাকলে: পাঠাইবে। এই লংবালে সেনাবল উডেজিজ হইল। ভাহারা পারক্তজাতি-বানের জ্বানিক কই নকু করিজে চাবিল না। ভাহারা সয়াটের জাবেশ উপোধা করিলা ভ্লিরানের জভ্তাবিন উৎসর্গ করিতে বিশ্বাক হইল। ভাহারা সয়াট্ ভবনে ভোজনাত্তে রাজিকালে

পরান্ত্র করিয়া আগ্রহে ও উত্তেরে রাজ্ঞালাদ বিরিয়া "ভুলিয়ান अगारीम्" साम উচ্চারণপূর্বক মোরছবে ট্রীংকার করিতে লাগিল। আলাতে ভাষারা বলপুর্বাক প্রাক্তবানাকে আবেশ করিয়া कृतिहान्दक नगवाटन शतिता जानिक धन्द निरहानटन नगारेग्रा ভাঁহাকে নুরাটু-বলিয়া ঘোষণা করিল। এই প্রৱে উভয়পকে বোর বুছ বাধিল। স্থালিরান্ ৩৬১ খুটামে বাসিল লগতের সন্নিকটে শীব সেনাদল কই ভাগে বিভক্ত করিয়া বোমাপতি मिविकारक त्रिकित के स्नाविकारमञ्जू मधा निवा ध्वेतः स्वाकितान् ও জোভিনাসকে স্নারার স্বজিক্রম ক্রিরা উত্তর ইতালীতে বাইতে आदिन अविद्यान । जननकत्र किनि अतः गनिवृद मनी वटक বিপুলবাহিনী বাহিরা শির্মিরামে আদিরা ভাঁহাদের সহিত अक्त नगरक वर्षेक्त । अहिरक कनकानिवान चीव वाहिनी गरेवा भथभग्रित ज्याहारिक आख बरेवा भागितान, नावन পরিশ্রম ও ছতিস্তানিবন্ধন স্বাস্থ্যভঙ্গ হওরার মোপহকীন নগর শিবিরেই ডিনি পীড়িত হইরা পড়িলেন। ২৪ বংসর রাজ্য ভোগ করিয়া ৪৫ বৎসর বয়সে এই রোগে ভাঁহার মৃত্যু ষটে। মৃত্যুর পূর্বে তিনি বুবক জ্লিয়ান্কে সম্রাট্ মনোনীত कविवा वान ।

ক্লিয়ান রাজাসনে আলীন হবরা গ্রমেণ্ট সংক্রান্ত নানা বিবরের সংল্পারে প্রবৃত্ত হেইলেন। তিনি পূর্বতন পৌরলিক মতাবলদী হিলেন, স্থতরাং খৃঠানস-আলার তাহার অধিকার-কালে বিশেব প্রপ্রের লাভ ক্তিতে পারেন নাই। তিনি কের্ক্রনালেনের প্রাচীন মন্দির-সংজ্ঞারাত্তে পারত-বিশ্বরে অপ্রসর হইরা-হিলেন। মাওগামাল্কা হুর্গধ্বংসের পর পারসিকগণ হতাল হইলেও রোমক-সৈল্পের বিপক্ষতাচরণ করিতে ছাড়ে নাই। ৩৬০ খৃঠানে ২৬০ জুন ক্লিয়ান্ স্বরং রণক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইলেন। বিপক্ষ-সৈল্পের নিন্দিপ্ত বড়না তাহার বক্ষণে বিশ্ব হইলে তিনি মূর্জিত হইরা পঞ্চিলেন। সংজ্ঞালাভাত্তে তিনি অবপৃঠে আরোবণ করিরা প্রনার রণক্ষেত্রে চলিলেন, কিন্তু চিকিৎসক্ষপ তাহার মৃত্যু আসের জানিরা তাহাকে সেক্রান্ত হইছে বিরত করিলেন। মৃত্যুর শ্যার তিনি লার্শনিক-শ্রেক প্রিরান্ত ও মান্তিমানের সহিত আন্মার প্রস্তৃতি সম্বন্ধে বিরার করিয়াছিলেন।

ভ্লিরানের মৃত্যুর পর রোমীর সৈতের অধিনেতা বীরবর জোভিরান নেনাবলের আগ্রহে রাজপদ প্রহণ করিলেন, কিন্তু তাঁহাকে অধিক দিন স্থপনাপ্রাল্য তোগ করিছে হর নাই। ৩৯৪ বৃষ্টাব্যের ১৭ই কেব্রুয়ারী ক্ষণান্তিকি পানতোজন-নিধকন নাগাল্পানা নগরে তাঁহার মৃত্যুর রয়। তাঁহার মৃত্যুর পর রোমকসাঞ্জাল্য দপদিব কাল প্রকৃত্ত থাকে। নির্বাচনক্রমে ভালেন্টি-

নিয়াল্ ২৬লে কেব্ৰারী সরাই পদ লাভ করেন । ক্লিনি উক্ত বর্বের মার্ক মানে বীর লাভা ভালেক্ষকে কন্তাভিনোপল রাজ-ধানীসহ রাজ্যভাগ সমর্পণ করিলেন এবং ব্যাং নিলানে থাকিরা ইরিরিকাম, ইতালী, গল প্রস্তৃতি পাল্টভা-রাজ্য শাসন করিতে লাগিলেন। এই সমরে ৩৬৫ খুঠাকের সেপ্টেবর মানে জ্লিরানের নিকটান্সীয় প্রেন্থাপিরাসের বিদ্রোহ এবং তং-সামরিক কর্মণ যুদ্ধ উাজাকে বিশেবরূপ বিত্রত করিয়া ভূলে। পেষাক্ত বুদ্ধের সমর প্রেন্থরের অন্তর্গত ব্রেগেলিও নগরে বীর স্কুনিনিয় সৈক্তগণকে তিরন্ধার কালে মনের আবেগে ভাহার একটী রক্তবলী বিনীপ হইরা যার এবং ভাহাতেই ভাহার মৃত্যু ঘটে (৩৭৫ খুঃ নবেষর)। ভাহার ল্লাভা ভালেন্স আরও তিন বংসর কাল প্রাচ্য সিংহাসনে আসীন থাকিয়া ৩৭৮ খুটাকে গণ-সমরে পরাত হইরা শক্তরে নিহত হন।

ভাবেণিনিয়ানের মৃত্যুকালে, তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র গ্রাসিয়ান্
ট্রিভ্র প্রাসাদে অবহিত ছিলেন। তিনি রাজপদের অধিকারী
হুইলেও সেনাদল ত্রেগেসিও রণক্ষেত্রে তাঁহার বৈমাতের ভ্রাতা
স্ম ভাবেণিটনিয়ান্কে রাজা বলিয়া বোষণা করিল। তথন
গ্রাসিয়ান্ চারি বংসর বয়ক কনিষ্ঠ ভ্রাতাকে বিমাতার তথাবধানে
নিলান নগরে রাখিয়া অয়ং আয়য়্নবিহিভূতি-প্রদেশ শাসনে
অগ্রসর হন। ৩০৫-৩৮৩ খুটাল্প পর্যান্ত গ্রাসিয়ানের, ৩৭৫-৩৯২
গর্যান্ত ভালেণিটনিয়ানের এবং ৩৯৪-৩৭৮ খুটাল্প পর্যান্ত
ভালেন্সের রাজ্যকাল। স্থতরাং ৩৭৫-৩৭৮ খুটাল্প পর্যান্ত
ভালেন্সের রাজ্যকাল। স্থতরাং ৩৭৫-৩৭৮ খুটাল্প পর্যান্ত
বামজগৃথ তিন জন স্থাটের কর্ত্থাধীনে পরিচালিত হইয়াছিল।
ভালেন্সের জীবদ্রশার পূর্কবিভাগে রোমজান্তির প্রাত্তাৰ অল্ব্র
ছিল। তাঁহার মৃত্যু হইতেই প্রকৃত প্রস্তাবে রোমসাত্রাক্রের

গথ জাতির হত্তে ভালেজের মৃত্যুর পর, পূর্ব-রোমরাজা উৎসক্ষপ্রায় দেখিয়া সমাট্ প্রাসিয়ান্ বীয় পুরতাতের সাহায্যার্থ আসিয়া সমৃপছিত হইবেন। তিনি আসিয়াই পুরতাতের মৃত্যুসংবাদে ব্যথিত হইরা তাবী বিপদ্ধ নিবারণার্থ বুটেন ও গলবিক্ষেতার নির্কাসিত পুত্র থিওডোসিয়াস্কে সমাট্পদে অভিবিক্ষ করেন। ৩৯২ খুটাকে ২য় ভালে টিয়ানের মৃত্যুর পর হইতে ৩৯৫ খুটাক পর্যান্ত ১য় থিওডোসিয়াস্ রোম সামাজ্যের এক মাত্র অধীয়র ছিলেন। এই সময়ে, ভিসিগণ, আয়োলাগণ, ভাঙাল, স্করেবী, আলানী ও ছুণ প্রভৃতি বর্ষর জাতি রোমসামাজ্যের বিভিন্ন ছান বিপর্যান্ত করিয়া কেলিয়াছিল। সামাজ্যে স্পাসন-প্রতিষ্ঠা দ্বে থাকুক, ইহাদের সহিত বুছবিগ্যহে বলকর হইরা রোমক্ষাতি ক্রমশ্যই হীনভেক্ষা হইরা পঞ্চিতে ছিলেন।

আর্কোগাঁটিদ্ নামক কনৈক বেনাপতি ১৯৯ ক্টাকে তালে টিনিরান্কে হত্যা করিরা রয়ং ইউজিনিরান্ নাম ধারণপূর্বক পশ্চিম সামাজ্যের অধীখরত্ব লাভ করেন। রাজ্যাপহারক ইউজিনিরান্কে পরাত্ত করিরা পিওডোলিরান্ রোমের এক-চ্ছুমাপিতি হইলেন। তিনি গ্রানধর্মের পক্ষপাতী ইইরা পৌরলিকধর্মের অবসাদ ঘটাইয়াছিলেন। ৩৯৫ খ্টাব্দের ১৭ই আহয়ারী মিলান নগরে স্বাট্ পিওডোলিরানের আগবায়ু বহির্পত হয়। তাহার হই পুত্র, জ্যেট আর্কেডিয়ায়্ পূর্বার্জান ভাগ লইরা কনতাত্তিনোপলে রাজপাট স্থাপন করিলেন একং কনির্চ ওনোরিয়ায়্ পশ্চিম বিভাগের অধীখর রহিলেন।

ত্রু ব শৃষ্টান্দে ওনোরিয়াস্ পশ্চিময়ালপাটে উপবিষ্ট ছইলেন বটে, কিন্তু তাঁহার রাজকীয় প্রতিভা না থাকার রাজ্যে ঘোরতর বিশুখানা ঘটিতে লাগিল। আফ্রিকার গিল্ডোর বিলোহ, আলারিক ও রালগাইসাসের ইতালী আক্রমণ, জ্পাণকর্তৃক গলরাজ্য উৎসাদন, ষ্টিলিকোর ও ক্লিনিয়াসের বড়্যত্ত্বে গথজাতির পরাভ্ব, আলারিকের মৃত্যু, কনন্তান্তাইনের অভ্যুদর ও পতন, ষ্টিলিকোর হত্যা প্রভৃতি কারণে রোমসান্রাজ্যের উত্তর্জ্যের বল-ক্ষয় হইতে থাকে।

ওনোরিরাদের পর হীনবীর্য নিয়োক্ত করজন রাজা পশ্চিমসাম্রাজ্য-সিংহাসন অসম্বত করিরাছিলেন। ৪২৪ খু টাব্দে ওর
ভালেণ্টিনিরান্ রাজাসনে উপবেশন করেন। তৎপরে বথাক্রমে

৯৫৫ খু টাব্দে মাল্লিয়াস, উক্ত বৎসরেই অবিতাস, ৪৫৭ খু টাব্দে

মেজরিরানাস, ৪৬১ খু টাব্দে সেভেরাস, ৪৬৭ খু টাব্দে এছিমিরাস,
৪৭২ খু টাব্দে ওলিব্রিরাস, ৪৭০ খু: আঃ গ্লিসেরিরাস, ৪৭৪ খু টাব্দে
ক্লিরাস্ নেপোস্ এবং ৪৭৫ খু টাব্দে রোম্লাস অগাটালাস্
শশ্চিম রোমসাম্রাজ্যে অধিষ্ঠিত হইলেন। শেবোক্ত সমাট্ পরে
৪৭৬ খু টাব্দে প্রজাতয়ের হতে রোমরাজ্যের শাসনভার অর্পণ
করিলে পশ্চিনসাম্রাজ্য বিলুপ্ত হয়। এনোরিয়াসের শাসনভাল
হইতে অগাটালাসের আধিপত্য পর্যান্ত আটিলা ও হুণজাতির
উপার্রেব সমগ্র পশ্চিম রোমরাজ্য বিব্বন্ত হইরাছিল। প্রজাতয়ের
অভ্যানরে অভ্যান্ত শাসন-মমিতির অপেকা খু ইবর্দ্বাধ্যক্ষ পোশেরই
আধিপত্য বাড়িয়া উঠিয়াছিল। পোপ গ্রেগরি দি গ্রেট বা ২ম
এর সমর ধর্মানিক রাজ্যক্তিকে অভিক্রম করিল।

িশোপ শব্দে বিস্তৃত বিবরণ দেখা

মহাস্থা পিওডোসিয়াসের পুত্র স্থাকেডিয়ান্ ৩৯৫ বুটানে
পূর্ববিভাগের পাসনাথিকার প্রাপ্ত ইইরা ৪০৮ খুটান্দ পর্যাপ্ত
রাজ্যপাসন করেন। এই সমরে গাইনাসের বিজ্ঞোহ সংঘটিত হয়।
তৎপরে তাঁহার পুত্র ২র থিওডোসিয়ান্ ৪০৮ হইছে ৪৫০ খুটান্দ
এবং মাসিয়ান্ ও স্থাকেডিয়ান্-তনয়া সুলচেরিয়া ৪৫০ ইইছে.

৪৫৭ খুঠান পর্যান্ত রাজ্যশাসন করেন। জননন্তর নিরোক্ত রাজ্যশ রোমীর সিংহাসন অব্যক্ত করিয়া গিরাছেন—

योग पट्टाप

- ১ मिख भ्यः ४।१ -- ४१४
- २ निख २ इ. 898 -- 898
- ত জেনো ৪৭৪ -- ৪৯১, ইনি ২র লিওর পিতা।
- ৪ আনাইাসিয়াদ্ ৪৯১—৫১৮ ইনি সাইলেন্টিয়ারি উপা-ধিতে পরিচিত ছিলেন।
- ৫ জাষ্টিনৃ ১ম বা জ্যেষ্ঠ ∵৫১৮—৫২৭
- ৬ জাটনিয়ান্ ৫২৭--৫৬৫, ইনি জাটনের প্রাতৃপুত্র।
- ৭ জার্টিন্ ২র বা কনিষ্ঠ ৫৬৫---৫৭৮, ইহার অধিকারকালে ইস্লাম-ধর্ম প্রবর্তিক নহস্মদের জন্ম হর।
- ৯ মরিদ্ ৫৮২ ৬০২, ইনি কাপাডোকিরাবাসী অবশেষে গুপ্তশক্ত কর্তৃক নিহত হন।
- > ফোকাস্ ৬০২--৬১০, শেষোক্ত বর্ষে শক্রহন্তে নিহত।
- ১১ হিরাক্লিরাস্ ৬১০—৬৪১
- ১২ হিরাক্লিয়াদ্ (২র) ৩৪১—৩৪১, ইনি ১১ সংখ্যকের পুত্র, কনন্তান্তাইন নাম গ্রহণ করেন।
- ১৩ হিরাক্লিওনাস্ ৩৪১—৬৪১, ১২ সংখ্যকের ভ্রাতা, নির্বাসিত হন।
- ১৪ কন্ত্রান্স (২র) ৬৪১—৬৬৮, হিরাক্লিরাস্ কনন্তান্তা-ইনের পুত্র।
- ১৫ कनखाखारेन् ३६ ७७৮—७৮८, छेशापि व्यटगारनिगान्।
- ১৬ আটিনিয়ান্ (২য়) ৬৮৫ রাজ্যাধিকার, ৬৯৫ খৃটান্দে নির্কাসিত ৭০৫ খৃটান্দে পুনঃ রাজ্যপ্রান্তি ও ৭১৫ খুটান্দে নিহত।
- ১৭ লিও কিয়াস্ ৬৯৫ খৃ টাকে শাসনাধিকার ও ৬৯৮ খৃ টাকে রাজ্য হইতে বিতাড়িত।
 - ১৮ আন্সিমার টাইবেরিরাস্ ৬৯৮ খৃটাকে রাজ্যাধিকার ও ৭০৫ খুটাকে রাজ্যচ্যত।
 - ১৯ ফিলিপিকান বার্জেনিন্ ৭১১ খুটালে রাজ্যারোহণ ও ৭১৩ খুটালে নিহত।
- ২০ আনাটাসিরাস্ (২র) ৭১৩ খৃটালে সিংহাসন্থাপ্তি, ৭১৬ খৃটালে রাজ্যচ্যুত ও ৭১৯ খৃটালে শক্ত-হতে নিহত।
- ২১ থিওডোনিয়ান্ (তা) ৭১৬ খৃঠানে রাজ্যপ্রান্তি, কিছ ৭১৮ খুঠানে প্রকার মনোরঞ্জনার্থ নিংবাদনভ্যান।

- २२ निष (अ) १४४-१०२, देनि देरनोतीत सम्मानीत भूता।
- २० क्नखांबाहेन (६म) १८५ ११६ (
- .২৪ লিও (৪র্থ) ৭৭৫—৭৮**০, ইছার উপাধি 'ছাল্লারে' ছিল** ৷
- ২৫ কনজান্তাইন্ (৬৪) ৭৮০ খুটাকে মাজা ইরেণের সহ-যোগে রাজ্যশাসন করেন, অবশেবে ৭৯৭ খুটাকে শুপ্ত বাতকের হত্তে নিহত হন।
- ২৬ ইরেনে ৭৯৭—৮০২, ২৫ সংখ্যকের মাতা, শেবোক্ত বর্ষে রাজ্যবহিষ্কত হন।
- २१ निरिक्ताकाम् ४०२-४७५
- ২৮ টোরেসিরাস্ ৮১১ খুটাব্দে রাজ্যাধিকার, ২৭ স থাকের পুত্র। উক্ত বৎসবেই ছেক্ডার রাজ্যত্যাগ করেন।
- ২৯ মাইকেল ৮১১ খ্টাকে রাজ্যাধিকার ও ৮১৩ খ্টাকে রাজাচাত।
- ৩ লিও (৫ম) ৮১৩ খৃষ্টাব্দে সিংহাসন অধিকার এবং ৮২০ খৃষ্টাব্দে গুপ্ত-শক্রর হল্তে নিহত। ইনি আর্শেণিয়লাতীয় ছিলেন।
- ৩১ মাইকেল (২য়) ৮২০—৮২৯, ইনি 'লি টামারা্র" বা তোত্লা বলিয়া বিখ্যাত ছিলেন।
- ৩২ থিওফিলাস ৮২৯-৮৪২
- ৩০ মাইকেল (৩য়) ৮৪২ গ্ ষ্টান্দে রাজ্যাধিকারপ্রাপ্ত হইয়।
 স্থলীর্থ রাজ্যশাসন করিয়। ৮৬৭ গ্ ষ্টান্দে নিহত হন।
- ৩৪ বাসিল ৮৬৭--৮৮৬, ইনি 'মাকিলোনিয়' বলিয়া পরিচিত।
- ৩६ नि ९ (७४) ৮৮७ ৯>>, हैनि 'नार्नेनिक दनिया' शांछ।
- ৬ আলেকসালার ৯১১—৯১২, ইনি ৬৪ লিওর ভাতা. ভাতৃপুত্র কনস্তান্তাইন ৭মের সহিত মিলিত হইয়া রাজ্যশাসন করেন।
- ৩৭ কনজান্তাইন্ ৭ম 'পোর্ফারিরেজেনিটাস্' ৯১১ খৃটারে রাজ্যাধিকার, কিন্তু পিতামহ রোমানান্ কর্তৃক ৯১৯ খৃটান্দে রাজাচ্যুত, অবশেবে ৯৪৫—৯৫৯ খুটান্দ পর্যান্ত পুনরার সিংহাসনগ্রান্তি ও রাজ্যানাসন।
- ওদ, ৩৯, ৪৽, ৪১, রোমানাদ্ (১ম) বা লেকাপেনাদ্ এবং তাঁহার তিন পুত্র খুটোফার, ইকেন ও কনভাভাইন্ ৮ম, ইহারা বথাক্রমে ৯১৯, ৯২১ ও ৯২৮ খুটাকে শাসমাধিকার প্রাপ্ত এবং ৯৪৪ ও ৯৪৫ খুটাকে রাজ্যচাত।
- ৪২ রোমানান (২র) বা (কনিষ্ঠ) ৯৫৯—৯৩০, ই.মি ৬৪ কন-ভাতাইনের পুত্র।
- ৪৩ নিসেকোরাস্ (২র) বা (কোকাস্) ৯৬৩ খু টাকে রাজতত্তে উপবিত্ত এবং ৯৬৯ খু টাকে গুল্প বাতকের হতে নিহত।

Plan.

७० जम जिमित्यम् ३५३--३५६

৪৫ ৪৬ বাসিল (২র) ও ক্লাডাডাইন (৯ম) ৯৭৬—১০২৫ এবং ক্লাডাউলু ইম, প্রে ১০২৫-১০২৮ খৃঃ।

৪৭ রোসানাস্ (আ) ১০২৮—১০৩, ইনি 'আগাইরাস্' বণিয়া পরিচিত।

हर महित्यम् (६४) "२-७६---२-३२, " हैनि "नाङ्गारशामीत" बीमको विद्यार्थ।

৪৯ বাইকেল (৫ম) ১-৪১ বৃষ্টাকৈ রাজ্যারোহণ করেন ও ১-৪২ থৃষ্টাকে রাজ্য বিভাজিত হল। ইনি 'কালাকেট্' বুলিলা প্রাসিউ ছিলেন।

eo es (बाहि धवः कमखाखरिम् (১०म) >>82-->•88 ।

ee থিওডোরা ১০৫৪—১০৫৬, ইনি সম্রাট্ **লোই**'র ভগিনী।

 এবং ১০৫৬ প্টালে রাজ্যাধিকার প্রাপ্ত হন প্রবং ১০৫৭ প্টালে উহা পরিত্যাগ করেন। ইহার অভ্য নাম ব্রাটিওটিকাস্।

৪৪ আই লাক্ (১ম) বা কোয়েনাস্ ১০৫৭ খৃ টালে রালগদে
 নিরোগ এবং ১০৫৯ খু টালে বেচ্ছার রাজ্যত্যাগ।

৫৫ কনতাত্তাইন্ (১১শ) বা (ভুকান্) ১০৪৭—১০৪৯, ইনি আইজাকের সহিত একবোগে রাজত্ব করেন, ইহার পর ১০৬৭ ব্টাক পর্যাত্ত রোমসাম্রাজ্যে বৈদেশিকের আক্রমণক্ষনিত ঘোর বিশুঝলা আসিয়া সমৃপত্বিত হয়।

eu हेफेटणिकत्रा ७ (त्रामानाम् (७५) >०७१-->०१>।

এবং ক্রডান্তানিকান্ ১য়) এবং ক্রডান্তাইন
 (১২৸) একবোগে ১০৭১ খৃঃ অঃ।

৫৮ মাইকেল ৭ম, উজ বর্গেই একেশ্বর সমাট্ হন। ১০৭৮ শৃষ্টাকে তাঁহাকে বেজহার সিংহাসন পরিত্যাগ করিজৈ হয়।

৫৯ নিসেকোরান্ (৩ব) বা (বোটানিরেটিন্) ১০৭৮ খুটাবে সাম্রাজ্ঞাপদ্যায়ি ও ১০৮১ খুটাবে নিফোসনচ্যতি।

७० जारमञ्जित्राम् २म वा (टकारमनाम्) १०४४--१११।

७) अन कारानाम् ১১১৮--১১৪०

७२ बाह्यान त्कारमान् ३२१०--३५०-

৬৩ আলেজিরাস্ (২র্ছ) বা (কোরেনাস্) ১১৮০ গৃতীকে রাজ্যাধিকার, কিছু ১১৮০ গৃতীকে রাজ্যাত্ত ও নিহত।

৬৪ আজোনিকান্ (১ম)ুকোজেনান্ ১১৮৯ খু^টাখে রাজ্য-গ্রাম্থি ভাচচচচ খুটাখে শতক্তে নিবত।

৬৫ আইজাক্ ১ম (আজেলাস্) ১১৮৫ খুটাকে রাজ্যাধিকার ও ১১৯১ খুটাকে গাজাচাক ; কিছু ১২০৩—১২০৫ খুঃ পর্যাক্ত পুমরার রাজ্যশাসন। এই সমুবে হিন্দুয়ানে वागतःचीत्र नार्कानमधीत कृदय केनीन् कर्ड्य विज्ञी-जावधानीरक नार्कानमध्यान व्यक्तिक वज्ञ ।

আলেদ্বিরাস্ (তর) আরেলাস্ ১১৯৫ খুটাকে সিংহাসনারোহণ ও ১২০০ খুটাকে রাজাচ্যুতি এবং ১২০৫ খৃঃ
পুনর্কার শাসনভারপ্রাপ্তি।

৩৭ আলেভিয়ান্ (এর্ব) আক্রেনান্ ১২০৩ খুটাবে পিত। আন্থেনানের সহবোগে রাজ্যশানন করেন, কিন্ত অচিরে ১২০৪ খুটাবে নিহত হন।

আলেরিরাস্ (এম) রা আজেলাস্ নৌজু ক্লে ১২০৪
পুরাক বিংহাননাধিকার এবং ঐ সমরের অব্যবহিত
পরেই শক্রকর্ভ রক্তিত যাতকের হতে জাঁহার জীবনলীলা শেব হয়।

ক্ষতাভিনোপদের লাটনভাতীর স্রাট্যুক্ত।

৩৯ বল্ডুইন্(১ম) ১২০৪—১২০৬, ইনি ক্লাণ্ডার জাতির একজন কাউন্ট বলিরা পরিচিত ছিলেন।

१० (हन्त्री)२०७--->२>७

१> शिष्टेत्र कूर्वितः >२>१-->२>>

१२ त्रवार्षे ১२১৯-- ३२२४

৭৩ বল্ডুইন্ (২র) ১২২৮ খুটালে রাজ্যাধিকার লাভ করিয়া
১২৬১ খুটাল পর্যন্ত রাজ্যশাসন । অবলেবে মাইকেল
পেলিওলোগাস্ কর্তৃক উক্ত বর্বে তাঁহাকে রাজ্য হইতে
বাহির করিয়া দেওরা হয়।

এই সময়ে নিস্-নগরে রাজধানী ছাপন করিরা চারিজন মাত্র গ্রীক্সপ্রাট্ রোমসাত্রাজ্যের ফডকাংশ অভ্যক্তাবে শাসন করিতে থাকেন ঃ—

विश्वरणात नाकातिन् (>म) >२०६—>२२२ थः। बन प्रकान् जांगिनिन् >२२२—>२२६। विश्वरणात प्रकान् नाकातिन् >२२६—>२२३।

জন নামারিদ্ ১২৫৯ খুটান্দে সিংহাদন পাত করেন এটে,
কিন্তু তাহাকে অধিক দিন রাজ্যৈক্যা ভোগ করিতে
হর নাই। ১২৬০ খুটান্দে তাহাকে রালাচ্যত করিব।
পেলিওলোগাদ্বন্দীর নরশতিগণ রোমনানাজ্যে ঐতাব

श्वितात्रात्राम्यकेत जीवृत्रज्ञाहेत्रवः

बाहरकत ১২৬- গৃত্তীকে রাজা হয়। ১২৬১ গৃত্তীকে
তিনি কনজাজিনোপদ জয় করিয়া ১২৮২ গৃত্তীক পর্যক্
রাজ্যশাসন করিয়াছিলেন।

१६ जारकानिकाम् (२१) ३२৮२-- ३७०२, महिएक पहि

সময়ে ১২৯৫—১৩২০ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত ইছার সহবোগি-রূপে রাজ্যশাসন করেন।

গুড আজোনিকান্ (৩য়) ১৩.৮ ও পরে ১৩৩২ শুটানে ছই-বার রাজপদ লান। শেষাক্ত বর্ষ হইতে ১৩৪১ খ্রঃ পর্যন্ত ইনি রাজন্ত করিয়াছিলেন। ইনি তুর্কজাতির সহিত যুদ্ধে পর্মক্ত ও আহত হন। এই সময় হইতে তুর্কসাল্রাজ্যের প্রভাব বিতার ও প্রতিষ্ঠা হয়। ১৩৪১ খৃষ্টানে তাঁহার মৃত্যুর পর ভলীয় বিতীয়া পত্নী আনের গর্জজাত সন্তান জন পেলিওলোগান্ রাজসিংহাসনের উত্তরাধিকারী হইরাছিলেন।

৭৭ জন (১ম) ১৩৪১--১৩৯১, রাজ্যাধিকার কালে তিনি নবমব্বীর বালক ছিলেন। এই জভ রাজমাতা আন রাজাপরিচালনার্থ স্বীর স্বামীর পরমহিতৈধী বন্ধু জন কান্টাকুজেন্কে রাজপরিদর্শক (Regent) নিযুক্ত করেন। উক্ত বর্ষে তাঁহার প্রভাবদর্শনে ঈর্ষাধিত হটয়া শত্ৰুপক্ষ তাঁহাকে রাজন্যোহী ও ধর্মদ্বেষী বলিয়া ঘোষণা করে এবং তাহারা তাঁহার মাতাকে কারারুদ্ধ করিলে তিনি ডেমোটকা নগরে স্বীয় মস্তকোপরি রাজচ্চত্র ধারণ করিলেন; কিন্তু তাঁহার সেনাদল অচিরে তাঁহাকে পরিত্যাগ করার তিনি অসভ্য সার্কীয় জাতির নিকট আশ্রয় গ্রহণ করেন। এদিকে নৌদেনাপতি আপোকোকাস ও ধর্মাধ্যক अन (John of Apri, the Patriarch) রাজ্যের দণ্ডমুণ্ডের কর্তা হইলেন। রাজ্যে অত্যা-চার ও অনাচার-স্রোত প্রবাহিত হইল। নোসেনা-পতি নিহত হইলেন। রাজ্যময় যোর বিশৃথলা উপস্থিত দেখিয়া রাণী আনু কাণ্টাকুজেনের নির্বাসন-দণ্ডাঞা রদ করিবার জন্ম ধর্মাধাক্ষ জনের নিকট প্রার্থনা করিলেন, পক্ষান্তরে জন তাঁহাকে রাজ্য ও ধর্মচ্যতির ভয় দেখাইলেন। এই গোল-যোগের অবসরে কাণ্টাকুজেন সদস্বলে উপস্থিত হইয়া কনস্তান্তিনোপল অবরোধ করিলেন। রাজী আন সংবাদ পাইয়া তাঁহার পদানত হইলেন। আক্রমণকারী বীর ক্যার সহিত রাজকুমার জনের বিবাহ দিলেন এবং ববং তাঁহাদের অভিভাবক र्हेरनम् (১७८९ व डीस्न)।

> এইরণে ছর বংসর অত্যাচারের পর কাণ্টা-ফুরেনের শাসনে রাজ্যমধ্যে শান্তিছাণিত হইল। কিন্তু আন্রোনিকাসের বংশধর আর রাজা রহিল মা;

কৌশনে কান্টাকুজেনই রাজ্যের হইলেন। তথন জন স্বীয় অধিকারপ্রাপ্তির আশার বিজোহাচরণে প্রের্ড হইলেন, কান্টাকুজেনের জন্মগৃহীত মুরোপবাসী তুর্ক সেনাদল তাঁহাকে পরাজিত করিল। তথন কান্টাকুজেন বালক-রাজের সহিত পুনর্মিলনের আশা জয় জানিরা স্বীর পুর্ম মাথিউ কান্টাকুজেনের সহ্ন্যাগে রাজ্যশাসন করিতে বাসনা করিলেন। ১৩৫৫ খৃঃ তিনি রাজ্বভাগ্য হইতে অবসর গ্রহণ করিয়া স্বীর পুরের হত্তে শাসনভার অর্পণ করেন; কিন্তু মাথিউ কান্টাকুজেন ১৩৫৬ খৃষ্টাকে সিংহাসন ত্যাগ করিতে বাধ্য হন।

৭৮ মাস্থএল ১৩৯১--১৪২৫।

৭৯ জন (২র) মাল্পেলের সহিত ১৩৯৯ খৃটালে শাসনভার গ্রহণ ও ১৪০২ খৃটালে রাজ্যত্যাগ করেন।

৮১ জন (৩য়) ১৪২৫—১৪৪৮।

৮২ কনন্তান্তাইন্, ১৪৪৮ খৃষ্টান্দে সাম্রাক্যসিংহাসনে আরোহণ করেন এবং ১৪৫৩ খৃষ্টান্দের ২৯মে তুর্কদেনা কর্তৃক কনন্তান্তিনোপল অবরোধ ও জয়কালে নিহত হন। রোষসামাজ্যের অধঃপতন।

সমাক সমূরত রোমকজাতির উদ্ধমে এডকাল ধরিয়া ধীরে ধীরে যে বিত্তীর্ণ রোমসাম্রাজ্য পরিপ্তান্ত হইয়া সমগ্র সভাজগতকে আলোকিত করিয়াছিল, বাহার স্থবিমল সভাতা ও বীরন্ধপ্রতিভার অসভ্য বর্ষরগণ এবং সমৃদ্ধিসম্পন্ন আসিরীয়, পারস্ত প্রাভৃতি জনপদবাসিগণ রক্তশ্রোতে ধরা রঞ্জিত করিয়াও পরাভূত হইয়াছিল, সেই স্থাহান রাজতারের কিরুপে বিলরসাধন ঘটিল, রোমের রাজচরিত্র ও ইতিবৃত্ত আলোচনা করিলে তাহার একটা পূর্ণ-চিত্র প্রকাশিত হইতে পারে। «অমায়বিক অভ্যাচার ও অসীম বীরম্বে রোমীয় নেডুবর্গ রাজপদান্ডিয়িক্ত হইয়া প্রজাসাধারণের প্রাণে যে ভব্ন সমুৎপাদিত করিয়াছিলেন, তাহাই রোমসাম্রাজ্যের ভিত্তি স্থান্ট করিরাছিল। সিপিও সালা ও সিজারের অভুত বীরম্ব ও রণজরকালীন নৃশংস্ মরহত্যা তাৎকাশিক সুসভাও অর্দ্ধ-সভা লাতিসমূহের উপর আধিপত্য বিস্তারে সমর্থ হইরাছিল। তত্তপরি রোমের রাজনৈতিক প্রভাব-পূর্বভন সেনেট, এলেরি, কমিসিরা ও মাজিট্রেসি প্রভৃতি রাজকীয় বিধিবলে—অধিকৃত রাজ্যমধ্যে স্থশাসন প্রতিষ্ঠা ক্রিলেও ভজনবিভাগের শাসনকর্ত্তগণ প্রজার সর্বায়সূচনে বিরভ থাকিতেন না। তাঁহারা রোমের অন্তর প্রভাগ প্রজাবর্গকে বিশেষরূপে জানাইয়াছিলেন। ভাংকালীন সমগ্র সভাজগং রোমক্কাতির ভরে সর্বাদাই কম্পিত ও বিচলিত হইয়াছিল।

ীসমাট্ট স্পাহাদের রাজবিধি পরিবর্তন হইতে রোমসাম্রাজ্যে শান্তিরাক্য প্রতিষ্ঠার আশা সমূদিত হইলেও, প্রক্লতপক্ষে অবাধকতা ও অত্যাচার ভিন্ন আর কিছুই দেখা যায় নাই। কারণ তথার রাজবংশ পরন্দারাগত ছিল না। বীরত্বপ্রতিভার লন্ধপ্ৰতিষ্ঠ লেনানায়কগণই অধিকাংশ ছলে সম্ৰাট্ পদে নির্মাচিত হইতেন। বার্ত্তকার বা অণর কোন কারণে তাঁহার সামধ্যরাহিত্য ঘটিলে অর্থলোলুপ সেনাসম্প্রদায় ভাঁহাকে বাজাচ্যত বা মিহত করিয়া একজন প্রতিভাবান নবীন বীর সেনানারককে ভংগদে বরণ করিত। কথন কথন ভাহারা অর্থের লোভে সম্রান্তবংশীর ধনিসন্তানগণকে বাজসিংহাসনে বসাইতে বিকৃত্তি করিত না। রাজসিংহাসনের এইরপ হরবন্ধা দেখিরা সমাট্গণ ধনশালদার অতঃই অেচ্ছা-हादी "Tyrant" इडेबाडिएनम । शत्र छाँदात्रा मुश्रेरनाएमएन मर्सनारे वृद्धविश्राद्ध मिश्र थाकिएकन ध्ववः छाहाएनत व्यथीनञ्च দেনাবৃন্দও রাজ্যজরাত্তে ধনাপছরণের **আশা**র উদ্*শু* হইয়া প্রাণপণে যুদ্ধ করিয়া বীরদের পরাকাঠা দেশাইত। বর্তমান সভাজগতে যুদ্ধসময়ে বা যুদ্ধবসানে যে সকল কুন্তম অত্যা-চারের কথা ওনা বার, রোমীর যুদ্ধের তুলনার তাহা অতি সামান্ত, সে সকল কাহিনী গুনিতে শরীর রোমাঞ্চিত ও মন কলুবিত **ভটয়া উঠে। কার্থেজ ধ্বংস, সাইরাকিউজের পতন এবং এসিয়াস্থ** বিভিন্ন প্রদেশ বিভয়ান্তে যে অত্যাচার স্রোত প্রবাহিত হইবাছিল, তাহা অমাছবিক। নরবক্তে রোমীর জগৎ (Roman world) ও ভূমধাসাগর রঞ্জিত হইরা ভরাবহ নরহতাার ভীষণতম দশ্র প্রকটিত করিয়াছিল।

রোমরাজ্যের এই নিদারণ আধিপত্যকালে টোইক্, প্লেটোনিই, আকাডেনিক্ ও ইপিকিউরিয়ান্ প্রকৃতি বিভিন্ন দার্লনিক সম্প্রদারের অভ্যানর হয়। গ্রাহারা অর্থনিকা ও জীবহিংলা বিসর্জন দিয়া জীবাত্মার নলল কামনার লাভিন্নথের উদ্দেশে প্রধাবিত ইইরাছিলেন। সংসারের বোর ঝয়াবাত হইতে অপস্ত ইইরা উছারা য়াল্যাকাজ্যা ভ্যাগ করিলেন এবং প্রকলন সম্রাট্ মনোনীত করিয়া তাঁহার হত্তে সমগ্র নাম্রাজ্যের শাসনভার সমর্পন করিয়া তাঁহারা নিশ্চিত্ত মনে আপনাপন জ্ঞানচর্চায় কালাভিগাত করিতে লাগিলেন। টোইক্গণ বৈশেষিকের ভ্যায় আনবিক ও জোভিক সিলাত্তে (Contemplation of original matters) মন্ত রহিলেন, প্লেটোর শিবসম্প্রদার আত্মার অবিনম্বরম্বর (Immortality) প্রতিপাদনে সচেটিত ইইলেন, আকাডেরিক্সন সাংখ্যের ভার প্রভাকীত্বত কগতের বন্ধসন্থ বীকার কা করিয়া তর্ক ও নীমাংসার সাগরে নিম্ন্ত্রিক (Lost in scepticism) গ্রহিলেন এবং প্রশিক্ষিত্রীর সম্প্রের চার্মাকের মতাছেন সারী হইয়া পরমেশ্বরে ঐশীপক্তি আরোপ করিতে অস্বীকার (denied the providence of a supreme power) করিলেন। তর্কে পাড়িরা বা সিদ্ধান্ত করিতে গিরা ঈশ্বরের অন্তিভ অস্বীকার করিলেও তাঁহারা কথন দেবমন্দিরের অবমাননা करत्रन नाहे। त्रामीत मासिएहें गण्ड वह नार्णनिक भिकात ফলে দেশ, কাল ও পাত্রভেদে কুসংস্কারের ছায়া লইয়া কার্য্য সম্পাদন করিতে খারম্ভ করেন। বলবতী অর্থ-লালসা নিবন্ধন তাঁহারা দেবমন্দিরাদি শুগন ও ধ্বংস করিলেও কথন দেবমুর্দ্তি ধ্বংস করিতে প্রয়াস পান নাই, কেবলমাত্র তাঁহারা দেব-আন হইতে আভরণগুলি খুলিয়া লইতেন। তাঁহারা দেবপ্রতিমা সমকে নরহত্যা নিবেধ করিয়া যান। ক্রাবিয়বংশীর রা**জ**গণের শাসনকালে বিভিন্ন সম্প্রদায়ের ধর্ম্মন্দিরে উপাসকগণের প্রদত্ত উপহারসমূহ রক্ষার স্থবন্দোবন্ত হইয়াছিল। স্থাতরাং বলিতেই হটবে বে, জ্ঞানবৃদ্ধির সূহকারে গ্রন্ধ ও নৃশংদ-প্রকৃতি রোমক-গণের হৃদরে কোমল ও কমনীয়তা আপ্রয় করিয়াভিল। সেই উগ্র ও প্রচণ্ডপ্রকৃতির রোমকগণ ক্রমশঃ নরহত্যাঞ্চনিত পাপপত্তে নিমজ্জিত হইয়া আপনাদের আত্মা কল্যিত করিতে বিরত হইলেন। তাঁহারা ভার্জিল, সিসিরো প্রভৃতির জ্ঞানগর্ড উপদেশ অতুসরণ করিয়া তাঁহাদের ভাব ও ভাষাত্মশীলনে নির্ভ রহিলেন। চিত্তের শাস্তি হেতু আর তাঁহারা যুদ্ধবিগ্রহে চিত্ত বিক্কৃত করিতে চাহিদেন না। এতম্ভিন ব্যবসা বাণিজ্যে অতুল ঐশ্বৰ্য্যসম্পন্ন হইয়া তাঁহাৱা প্ৰাচ্যসমৃদ্ধি হৃদয়ে পোষণ করিতে-ছিলেন। স্থপসম্পদে মন্ত হইয়া তাঁহারা অলস হইয়া পড়িলেন এবং তজ্জ্ব ক্রমশ:ই জাতীর উত্তম হারাইতে লাগিলেন। রোমীয় নগরবাদীর অপরিমিত সমৃদ্ধিরাশি অবলোকন করিয়া বৈদেশিক বর্ষরগণ উপর্যুপরি সেই সকল স্থান ধ্বন্ত করিয়াছিল। ইতালী আলভ্রদলিলে নিমজ্জিত হইলেও গল, স্পেন, বুটেন প্রভৃতি যুরোপীর প্রদেশসমূহ শক্তিহীন হন নাই, তথাপি তাঁহারা অর্থের দাস হইয়াও রোমক্লাতির গৌরবরকা করিতে সমর্থ হন নাই। ঐতিহাসিক গ্রিবন লিখিরাছেন :--But though the tranquil and plentiful state of the Empire was felt and confessed by the provincials as well as the Romans, though the latent causes of decay and corruption might escape the eye of contemporaries, yet Rome was gradually declining and slowly verging towards descolution. A secret poison had been introduced by the long peace and lethargic inactivity into the bowels of the Empire. Military spirit no longer existed; the fire of enterprise was extinguished, and the commanding genius of Rome forsook the polluted

habitations of a luxurious and effeminate people. The improvement of arts, whilst it refined, had gradually enervated the country; the splendour of their cities served only to allure the impending rapacity of hardy race of Barbarians.

জ্ঞানোন্নতিসহকারে রোমরাজগণের ছদরেও অজাতি-প্রিরতার প্রভাব বৃদ্ধি হইরাছিল। সমাট্ হাদ্রিয়ান ও আন্টো-নাইনবন্ন দ্যাপরবশ হইয়া হতভাগ্য ক্রীতদাস শাভির মুক্তি বিধান এক্স নৃতন রাজবিধির প্রচার করেন। তৎকালে প্রভূগণ স্বস্থ ক্রীতদাসগণের উপর অযথা অভ্যাচার করিত। এমন कि. जाशारंगत औरनम्जा मक्बर अजत रेकाशीरन किंग। রাবাফশাদনের আশ্রর লাভ করিয়া তাহারা দকলেই মাবিট্রেটের বিচারাধীন হইল, নাধারণ লোকে ভাহাদের উপর কোন আধিপত্য করিতে পারিল না। তাহারা মুক্ত হইয়া রাজামুগ্রহ-লাভের আশার বিশেষ বিশ্বস্তাবে দিনপাত করিতে লাগিল। অনেকে পারিতোধিক স্বরূপ রাজপ্রদত্ত ভূমি পাইয়া গণামান্ত হইয়া উঠিল। শিক্ষাগুণে কেহ কেহ রাম্বনৈতিক সমিতিতে স্বীয় প্রভুর পার্বে উপবেশন করিবারও অধিকার লাভ করিয়াছিল। এইরূপে ক্রীতদাসগণ হস্তচাত হওয়ায় সম্রাপ্ত রোমকগণ হীনবীর্য হইয়া পড়িয়াছিলেন। রাজ্যলিন্দা ও পরস্পারে প্রতিঘন্থিতা আর তাঁহাদের মনকে উদ্বন্ধ করে नाई। अन्हेरुक ७ প্রতিভাবলে যিনি यथनई त्राक्रमुकूरे শিরে ধারণ করিবার অবসর পাইয়াছিলেন, তিনিই তথন সময়োচিত ব্যবস্থা করিয়া গিয়াছেন: সাম্রাজাভিত্তি স্থল্ট রাণিতে কাহারও তানুশ আগ্রহ উপস্থিত হর নাই।

সমগ্র সাত্রাব্দা কাব্য ও সাহিত্যের উন্নতি প্রয়াদে পূর্ব্বোক্ত সত্রাট্রের বথাসাধ্য পোষকতা করিয়াছিলেন। স্থান্তর বৃটেন রাজ্যের উত্তরোপকুলবত্তী প্রদেশ অলঙ্কার-শান্তাধ্যয়নের কেন্দ্রনান হইরা-ছিল। দানিয়্ব ও রাইন্ নদীর কুলে হোমর ও ভার্জিলের ওজ্ববিনী গীতি প্রতিধ্বনিত ইইত। গ্রীকগণ পদার্থবিদ্বা ও জ্যোতির আলোচনার শীর্বহান অধিকার করিয়াছিলেন। টলেমি ও গালেনের নাম আজিও প্রাচ্য ও প্রতীচ্যজগতে তাহার শ্বতি জ্বাগাইতেছে। শুসিরানের কবিদ্বপ্রতিন্তা জ্বার নাই। পূর্বপুরুষগণের দেরাশ জ্যাধারণ প্রতিন্তা লইরা জ্বার রোমে কেহ জ্বর্যাহেল।

খুঞ্জির ভৃতীর শতাব্দের মধ্যভাগে উৎসাহসম্পর পাশ্চাত্য বোষক জাতির বধ্যে অবসাধ ও অধংগভন লক্ষ্য করিরা পূর্বাঞ্চবাসী শিক্ষিত ক্ষীত্যাস লঞ্জিনাস্ ব্লিরাছিলেন;— "In the same manner (says he) as some children always remain pigmies, whose infant limbs has been too closely confined; thus our tender minds, fettered by the prejudices and habits of an unjust servitude, are unable to expand themselves, or to attain that well proportioned greatness which we admire in the the ancients, who living under a popular government, wrote with the same freedom as they acted." (Gibbon Chap, I.)

এইরপে দর্শন ও কাব্যামোদে বতই লোকের মন মাডিরা উঠিল, ততই তাহারা পূর্বাপুরুষবাণের শৌর্যাবীগ্র ছাড়িরা কোমলা কলাবিভাসমূহের আত্রর গ্রহণ করিতে বাধ্য হইল। রোমকজাতি মহ্বাসমাজের নির্দিষ্টত্তর হইতেও অধংপতিত হইল। অভ্রের সহারতা ব্যতীত আর তাহাদের মাধা তুলিরা রাজভ্রসমাজে মূধ দেধাইবার উপার রহিল না।

জ্ঞানসাগর উত্তরণ-কামনার বৈশেষিক সেতু অতিক্রমপূর্বাক আত্মতত্ববাদরূপ ভেলায় আরোহণ করিয়াও রোমকগণ এক-বারে পৌত্তলিকভার আশ্রম-বন্দর ছাড়িয়া দিভে পারে নাই। তাহারা যেমন জাতীয় ইউদেব জুপিটারের (বুহম্পতির) প্রজা-প্রচারমানলে ও বিজিত রাজাসমূহে তদেবের উপাসক বৃদ্ধি সহ-কারে মন্দিরাদি স্থাপনে বন্ধপরিকর হইয়াছিলেন, তদ্রুপ ভিন্নধর্মী পুর্য্যোপাসক পারসিকগণ মিথের উপাসনা-বিস্তার কামনায় পাশ্চাত্য জনপদে আধিপত্যস্থাপনে নচেষ্টত ছিলেন। অত্রমজদের শিধাসম্প্রদায় তৎকালে জ্ঞানালোকের বিমল্ডম জ্যোতি লাভ করিরা জগতের অন্ততম সভা গ্রীক ও রোমক প্রভতি পাশ্চাতা জাতির মধ্যে দেই জানজ্যোতি বিকিরণ করিতে নিরন্তর চেষ্টা করিতেছিলেন। পক্ষান্তরে উদ্ধতমভাব স্কৃপিটার-পুত্রক রোমকসম্প্রদার বাহবলে তাঁহাদিগকে বনীভত করির। স্বধর্মের প্রচার-সম্বর পোবণ করিরইছিলেন। এইরূপ চুটটা ভির্থশাক্রাক প্রস্পার-বিরোধী জাতির অধর্মপ্রতিষ্ঠাপ্রসঙ্গে ঘোর সংঘর্ব উপস্থিত হইরাছিল।

উচ্চশিক্ষাপ্রাপ্ত ও সমাক্ সমুরত পারসিক্গণের সহিত উপর্যুপরি বৃদ্ধে রোমকগণ উত্তরোজ্য বলক্ষর করিরাছিলেন। চিরশক্রতা পোবণ করিরা তাঁহারা উত্তরেই আত্মপক্ষ রক্ষা করিতে সমর্থ হন নাই। পারসিক্ষিগের বীর্য্যবল ও ধর্মবল অপনরমের সক্ষে রোমক্ষাতিরও আত্যন্তরিক প্রভাব ও ধর্মবাণ্ডা ক্রমশংই হীনতেক হইরা পড়িতেছিল। এমন সমরে রোমাধিকত পালেন্তিন ভূমে পুইধর্মের প্রতিষ্ঠাতা মহাত্মা বীত আন্ধ্রাদ প্রচার করিরা ধনলিন্দ্র রোমকগণের হাদরে শান্তিবারি ঢালিরা দিলেন। সমাট্ কনতান্তাইন ১ম ও থিওতোসিরান্ পৃইধর্মের বিমল প্রভিত্তালাত করিরা পৌত্রিক্সতার অনাচার বন্ধ করিলেন। দেব-

মন্দিরে বলি রহিত হইনা গেল। মন্দিরে পূজা ও উৎসবের আরোজন হইত বটে, কিন্তু ভাহাতেও বিশ্বাস বা হাবরের আগ্রহ ছিল না। পৌতলিকপূজা ও আরাধনা ছাড়িয়া বথন তাহারা জ্ঞানমর পরব্রজ্ঞের উপাসনা করিতে নিখিল, তথন তাহারা প্রহত সত্যধর্দের আগ্রর লাভ করিল। ক্রমে তাহারা হিংসা-বেব ভূলিল। পরস্থাপহরণ বা পরের জীবন-নাশ করিরা অতুল ঐপর্যের অধিপতি হইতে আর তাহারা অভিকৃতি প্রকাশ করিল না। বিমল স্থানীর আনন্দ লাভ করিরা তাহারা ইচ্ছামরেরই ইচ্ছাধীন হইরা রহিল। ক্রমে তাহারেদের চিত্তবৃত্তি জড়ের ভার নির্ক্রিকার ও নিশ্চেই হইরা একমাত্র ধর্মারেবংগই ব্যাপ্ত রহিল। বাহারা পূর্ব্ব হইতেই ঐপর্যাহ্রথে মত ছিলেন তাঁহারাও এপিকিউরিরাসের "নাচ গাও পান কর প্রকৃত্তিত মন।" রপধর্মতব্যেই অন্থসরণ করিরা চলিলেন।

খুষ্টায় ৮ম শতাব্দের শেষভাগে সমাট্ সার্গিমেনের অভ্যুদয়ে ও তাঁহারই সহাত্তুতিতে সমগ্র মূরোপ ভূমে খুইধর্ম প্রচারিত হইরাছিল। শৃষ্টধর্মের এই অমিত-প্রভাব পশ্চিম সামাজ্যে যতদুর বিস্তারলাভ করিয়াছিল, পূর্বাঞ্চলে ততদুর পারে নাই। রোমকগণ পৃষ্টধর্মে আস্থাবান্ হইয়া ক্রমশঃই আপনারা ধর্ম-স্রোতে ভাসমান হইলেন। রোমুলাস্ অগাষ্ট্লাসের ৪৭৬ খুঃ রাজাসন ত্যাগ হইতে যতই প্রজাতম্বের প্রসার বৃদ্ধি পাইতে লাগিল, ততই নবধর্ষে দীক্ষিত পৃষ্টান্সপ্রদায়ের আধিপতা রোমে বিভূত হইয়া পড়িল। খুষ্টান্রোমক প্রজারুল স্থালিকা-গুণে লৌকিক-রাজ্যে রাজার পরিবর্তে ধর্মগুরুকেই আধ্যাত্মিক ব্রুগতের সর্ব্যয় কর্ত্তা করিয়া তুলিলেন। ধর্মপ্রচার ও বিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে ক্রমে তিনি রোমক-সমাজে 'রাজগুরু' বলিয়া পুজিত হইলেন। রোমের পোপ খুষ্টান্ জগতের রাজচক্রবর্ত্তী হইয়া বিভিন্ন প্রাদৈশিক নূপতিবর্গের উপর আধিপত্য চালাইতে লাগিলেন। তিনিই নরপতির পতি: রোমের সার্কভৌমত্ব তাঁহার কর্ত্তলগত। তিনি ইচ্ছা করিলে ধর্মবিধি-লজ্মকারী রাঞ্চাকেও রাজাচাত করিতে পারিতেন। এমন কি, স্থপুর ইংল্ডের রাজা বা রাণী একসময়ে পোপের শাসনে ধর্মনীমা विक्कि (Excommunicated) विनिन्ना त्वाविक रहेना-हित्नन। भारीतिक बत्नत चारभक्का अकरन त्रारमत माननिक বা নৈতিক বল অধিক পরিক্ষ্ট হইয়াছিল।

[খুটান, যীও ও পোপ শব্দ দেখ।]

এই নৃতন ধর্মবলে রোমকগণ প্রকাশ্তে হীনবল না হইলেও ধর্মাভিব্যক্তির কোমলভার ভাহাবের উদামচিত্তর্তিসমূহ শিথিল ও নিত্তের হইরা পড়িল। যুদ্ধবিভার ভাঁহারা সম্পূর্ণরূপে জনভাত্ত ও জাশিক্ষিত রহিলেন। এমন সমরে ৫৭০ ধুটালে মকানগরে ইন্লাম্ ধর্মের অভ্যাদর। প্রবর্তক মহম্ম বেরূপে প্রতিহিংসা ও প্রতিছন্দিতা উল্লেখন করিয়া স্বীয় পুণাধর্ম প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন, তাহা রোমক ও মুসলমানজাতির ইতিহাসে লিপিবন্ধ রহিয়াছে।

মহম্মদের মদিনার পলারন হইতেই ইস্লামধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা ।
রাষ্ট্রবিপ্লবের মধ্যে মহম্মদীয়গণ অন্ত্রধারণপূর্ব্ধক আপনাদের
প্যাগদ্ধরকে রক্ষা করিয়াছিলেন। তাঁহারা আপনাদের ইস্লামধর্ম্মে অবিখাসী বা বিরোধীকে শস্ত্রবলে পদানত করিতে কুন্তিত
হন নাই। অচিরে আরববাসী পবিত্র ইস্লামধর্ম গ্রহণ করিল।
স্কুযোগ্য আলী ধর্মপ্রক ও সম্প্রদারের অধিনায়ক হইলেন।
ক্রমে আরবীয় ও সারাসেনগণ ধর্মবলে ও নবীন উদ্প্রমে পারস্ত্র,
সিরিয়া, মিশর, আফ্রিকা ও মৃদ্র স্পেনরাজ্য অধিকার করিল।
হতবীয়্য রোমকগণ ইহাদের সমরে পরাজিত হইলেন। পৃষ্টান্দিগকেও এই সমরে নানা নির্যাতন ভোগ করিতে হইয়াছিল।

[মহশ্বদ ও মুসলমান দেধ।]

মুসলমানসাম্রাজ্য বিস্তারের সঙ্গে প্রতিভাশালী থলিফাগণের আবির্ভাব ঘটিল। থলিফা স্থলেমানের রাজস্ব সময়ে আরবগণ ৭১৬ খুষ্টাব্দে কনন্তান্তিনোপল অবরোধ ও ফ্রান্স আক্রমণ करत्रन। अन्तर्रेष ७ व्याक्वामार्टेमवः नीय थिनकांशरनत यर्फ মুসলমানগণ জ্ঞান ও স্কুথৈছ্ব্যা বৃদ্ধি করিয়াছিলেন ওমার ও হারুণ-অন্রসিদের বীরত্ব ও প্রতিভার পরিচয় ইতি-হাসে বিশদরূপে বিবৃত আছে। থলিফাগণের ভোগবিলাসই মুসলমান প্রভাবের কাল হইল। অর্জিত সামাজ্যের নানা স্থানে নানা বিশৃশ্বলা ঘটিল। স্থানে স্থানে থলিফার স্বধীনস্থ শাসনকর্ত্তা বা সেনাপতিগণ স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র রাজপাট স্থাপনে যত্নশীল হইলেন (৭৮১ হইতে ৯৯০ পৃষ্টাব্দ পর্যান্ত)। দেখিতে দেখিতে বিস্তীর্ণ রোমদাম্রাজ্য থণ্ড থণ্ড মুদলমানরাজ্যে পরিণত হইল। এই সময়ে অর্থাৎ ধৃষ্টীয় ১০ম শতাব্দে তুর্কজাতি মহাপ্রভাব-সম্পন্ন হইয়াছিলেন। তাঁহাদের বলবীর্ঘ্যে রোমসমাট্রণ পুনঃ পুন: বিপগ্যন্ত হইয়া জীত্রই হইয়া পড়েন। সাল্জুকবংশীয় তুর্কসন্দার তুঘরাল্বেগ ও জাফর পারস্ক জর করিয়া খলিফাগণের সহযোগিতা করিতে লাগিলেন। সন্দার আরু আর্লান্ গ্রীক্সাঞ্রাঞ্জী ইউডোসিরাকে পরাস্ত করিরা রাজ্বণ্ড হস্তগত এবং উক্ত সাম্রাঞ্চী ও সম্রাট্ট রোমানাস্ ভাইওজেনিস্কে বন্দী क्तिरान (> ७४ चु:)। छ९ भरत > ०१२ चुड्ठीरस मानिक भारु এসিরামাইনর ও জেরুজাকেম অধিকার করিয়া বসিলেন। ইহার পরে খুষ্টার ত্রয়োদশ শতান্দের প্রারম্ভে মোগলসন্দার চেধিস্ থাঁ ও শেবভাগে তৈমুরলন্ধ রোমসাম্রাক্ত্য লুঠন করিয়া লওভও করিরা দিলেন। তদনস্থর ১৪৪৮ খুষ্টাব্দে তুর্ক হল্তে রোমসমাট্

ক্ৰম্বাৰাইনের মৃত্যুর সক্ষে সংক রোমমান্তালোর ক্ষ্যান কটে।
পারত, ভুক্ত, ক্ষমন্তাভিনোপন, নিরীরা প্রভৃতি কলে বিভৃত
বিষয়ণ জ্বীয়া।

এবিকে ব্রোণ ভ্তাগেও গ্রীক, ফ্রাড, কুলগেরীর, হাকেরীর, ক্রব, লবর্তন, নর্পাণ প্রভৃতি আভি সভ্যভাগোকে ক্রমণাই উরতি-মার্গে পারোহণ করিছেছিলেন। বৃটার ৯ম, ১০ম ও ১১শ শভাক শুইথর্মের প্রাথান্ত (the reign of she gospel and the enpren) বৃশগেরিরা, হাকেরী, বোহেনিরা, বার্লান, ভেনমার্ক, নার ওরে, স্ক্রভেন্, পোলও ও ক্রবিরার প্রভিত্তা লাভ করে। এই বিভিন্ন বর্ষার্ক্তাতি শুইধর্মের আলোক পাইরা প্রাচার ক্রতে বিরত হয়।

শ্রুইংর্শ্বের দীক্ষাগুণে আন্তোক লাজি বা বিভিন্ন নলের পর্কারপাণ রাজা বা কছান্ধা উপাধিকে সন্ধানিত ইইরাছিলেন। তাঁহারাও
পক্ষান্তরে আপনাপন অধীনত্ব প্রালা বা প্রতিকেশিবর্গের অধ্য কার্যালিক মত বিভার করা ধর্মকর্মের অন্তর্কু বলিরাই মনে করিরাছিলেন। হলাইন্ ইইতে কিন্তুও পর্যান্ত বলিকক্সান্তরাপকুলে বস্তুত্ত ধর্মরুদ্ধ সংঘটিত ইইরাছিল। খুঁটার ১৪খ শভাবে লিথুরানিয়াবাসী অনসনের খুইধর্মে লীকা হইতে পোন্তলিকভার রাজত বিন্ধু হর। জানবৃদ্ধি সহকারে নর্মাণ, হাজেরীয় ও ক্ষমিরাবাসী বিভিন্ন জাতির পরত্ত-স্কৃত্তিপাসা বিলর পার এবং ধর্ম্মাজকগনের মন্ত্রে মুরোপজ্বে রাজবিধির প্রতিষ্ঠা সহকারে শান্তিমর ধর্মরালা প্রতিষ্ঠিত হয়। প্রাদেশিক শাসনকর্ম্বণব রাজা উপাধি মাত্র সইরা রাজকার্যা নির্মাহ করিতে থাকেন।

রোমনগর ও ভারার প্রত্তত ।

রোমনগরই রোমনান্ত্রাজ্যের প্রধান রাজধানী। সুরোপের অন্তর্গত ইন্ডালী রাজ্যে প্রবাহিন্ড টাইবার নদীর কৃষ্ণে সমুদ্রন্তট হুইতে প্রায় ১৪ মাইল দূরে অবস্থিত। অক্ষা ও১০ ৫৩ ৫২ উ: গুরু দ্রাফি ১২০ ২৮ ৪০ পু:।

টাইবার মধীর উভরক্লবর্তী ক্রমোচ্চ নিম্ন পার্কত্য প্রজেশো-পরি এই নগর ছাপিত। এখানকার ভূতৰ আলোচনা করিয়া দেখিলে স্পাইই উপলব্ধি হয় বে, এই ছান এক সমরে একটা ছবিত্তীর্ণ সামৃত্য-প্রান্তরে পর্যবসিত ছিল। কালে সমৃত্যের সেই পলিমর বেলাভূমি নিকটবর্তী কোন আলেরগিরির অর্যুগগমে ও গলিত থাতব্যাবে পরিব্যাপ্ত হইরা ইতত্ততঃ অসমানভাবে বিক্তিপ্ত ভূপরাশিতে সমাজানিত হইরা প্রকেট সংক্রমানভাবে বিজিয় প্রস্তর্বর মূপান্তরিত হইরা এক প্রকটি সংক্রমান পরি-পত্ত হয়। এইরাপ কভকতালি শেলশিবরে ও ভাহার পাহ্মর ভূতাণে ইতিহাল-প্রসিদ্ধ রোক বহানগরী প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল। নগরমান্তর্বনি সম্পূর্ণ প্রভিত্তনিক প্রকাছিল। লাব্তিক বীৰক্ষর প্রভাগীভূত ক্ষাল বিষয়ান দেশা বাছ। উহার বারা প্রতিগর হয় কে, নগরনারিয়ে এক নবরে জাত্যর-গিরি অবস্থিত ছিল। এক্ষণে ঐ আরের-পর্যন্তের নাতব্যাব মহিত হইরাছে।

লাগো বাজিয়াগো ও লোমের নিকট্ আল্মান্ কললশ্রেণীর করে কডকওলি আরেরগিরির মুখ (Самана) গৃত্তিগোচর হয়। ঐ সকল পর্বাত হইতে অপেকার্ক্ত সাঞ্জুলিক
ব্লেও কাল্কানি ও থাতবনিঃপ্রাব নির্গত কইরাছিল। অনুপর্তনিহিত তর মুখপাত্র, কোন্ধ থাতুলিখিত বরালি ও সরক্তাল
ভাহা প্রমাণ করিতেছে। প্রথমাক ত্রানি ভুলাক্তর (ইএির প্রমাণ করিতেছে। প্রথমাক ত্রানি ভুলাক্তর (ইএির প্রমাণ প্রবিত্তি । প্রথমাক বেখা মার। এই পাভালোত (ইনিতর্ব বিশ্ব) রোমের ও মাইল ব্রহিত নির্মিনিয়া নেটেলার সমাধিমনির পর্যান্ত বিভার করিরাছিল। ক্রোম-রাম্বরের ক্রমাত ৯ বা ৯০টা পর্কাত বাল্কা, তর ও প্রভর্ক নিপ্রশে (conglomerated sand and ashea) প্রতিত ঃ ক্রতব্ববিশ্বণ প্রস্তা প্রভর্কত্বক্ষেই 'তৃষণ' ব্যিয়া ক্রিকেণ্
করিরাছেন।

রোমনগরের ভূষিভাগ সাধারণতঃ ভিনভাগে বিভজ্জ;—

> টাইবার নদীর বারত্বে অবস্থিত সমতল ও উপত্যক্তা ভূমি।
ভিহা সমূক্রসৈকভন্থ পশিষর আন্তরে পূর্ণ, ২ উক্ত সমতলক্ষেত্রাপরি আধের-গিরিকাত লৈলমর ভূভাগ এবং ও টাইবার নদীর
দক্ষিণভূলে অনিভিউলান্ ও ভাটিকান্ পর্বতমালার মধ্যবর্ত্তী
সাহ্মর সমতল ভূবও।

প্রাচীনতনকালে এই স্থান সমুক্রগার্ড ছিল। এখনও এখানে ভাষার বহুতর নিকর্পন রহিয়াছে। স্থানর স্থাবিধ বাসুকারেণ্ এবং মৃত্যাওপ্রতাপাধানী খেতগুসর সৃত্তিকা ভাষার প্রবাশ ও প্রধান উল্লেখবাগ্য বস্থা। জনিকিউসান্ পর্বাভয়েশীতে প্রচুর পরিবাণে হরিলাগর্গের বাসুকারাশি বিভ্যান পাকার উহা স্থানিকত (Golden hill) নামে ক্ষিত হইরা থাকে। এখনও ঐ পর্বাভনিবাহ মোক্টোরিও বিভাগের ৪. Pietro বিশ্লার স্থাপ্রতিতর (Monte d' Oro.) উল্লেখ ক্ষিরাছে।

উপরোক্ত তিনপ্রকার আন্নেরক্তর (Volcanic deposits)
ও পলিমর ভূমি (Alluvial deposits) অতীত আবেকাইন ও
পিছির শৈলমালার মধ্যে একপ্রকার চূপাপাধরের কর পৃষ্টিলোচর
হয়। পূর্ববর্ণিত ভূফা বা তিউছা শৈবকারপাল রিক্সি লম্বের
বিভিন্নবাদ গঠিত হইরাছে। আন্নেরসিলি উপারিক কানুকা ও তেনতর্ম নীর্বকাল জলবাদ্বর প্রেকোপে এবং উপারিকেক লিক্সি প্রতিব
প্রার্কিন্ত্রের চাপবিস্তের ক্রোকার ক্রাক্সিন্ত ক্রাক্সিন্ত প্রতরে

(Soft and friable rocks) পরিণত হইরাছে এবং কোবাও বা উপরোক্ত কারণে বাসুকণার বিশেব কোন পরিবর্তন ঘটে নাই।

পালেটাইন লৈলের সমীপদেশে বে সকল অগ্নিমন্ন রক্তবর্ণ ভত্মরাশি নিপতিত হইরাছিল, সম্ভবতঃ তাহা একটা বনমালার উপরে নিক্ষিপ্ত হইরা থাকিবে, কারণ সেই দ্বান্ধ তারাশির প্রদাহে বিমাদিত ও দায় হইরা কুক্ষকার্ভ করলার পরিগতি পাইরাছে, এরপ প্রচুর নিদর্শন সেইস্থানে পাওরা বার। এই সকল তুকা পর্বান্ধের স্থানে স্থানে এইরপ পাওরে করলার তার বিয়াজিত আছে। কোথাও কোথাও করলাকারে পরিগত দায় বুক্ষণাথাদিও সাবরবে স্থর্যক্ষিত দেখা বার। রোম্লালের প্রসিদ্ধ রোম-প্রাচীর এইরপ প্রত্যান্ধ (conglomerate of tulis and charred wood) গঠিত। উহার "ম্বালি কাকি" (Soalos caci) বিভাগে বুক্ষাবরবের পূর্ণ নিদর্শন বিভ্যান সহিরাদ্ধে।

পাশ্চাত্য-সমৃদ্ধির কেন্দ্রস্থল এবং পাশ্চাত্য-সভ্যতার মুকুট-ৰণি রোমরালধানী সেই প্রাচীনতম বুগ হইতে কতই প্রাকৃতিক বিপর্যায় সভ্ করিয়াছে, ঐতিহাসিক যুগে প্রভাতকালীন অন্ধণাদরের ফ্রার রাজ্যোরতির ক্রমবিকাশ-সমৃদ্ধির কৃতই বিৰ্ত্তন ঘটিয়াছে, ভাহার একটারও মূলচিত্র অভিত করা কঠিন ব্যাপার। প্রাচীন রোমসামাজ্যের বাণিক্স-সমৃত্তির পরিবৃত্তি এবং রাজাশাসন-শ্রীবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে রোমরাঞ্ধানীর কভ পরিবর্ত্তন ও কত সংস্থার সাধিত হইয়াছিল, তাহা একমাত্র Forum Romanum, Velabrum, Campus Martius (বর্ত্তমান রোমের বছজনতাপূর্ণ জংশ) এবং বিভিন্ন উপত্যকাদির প্রতি লক্ষ্য করিলেই সমাক্ উপলব্ধি হইতে পারে। একসমরে त्व উপত্যকাৰলী জলাভূমিপূৰ্ণ ও হুৰ্গম ছিল (Diouys. ii. 50, Ov. Fast, vi. 401), পরবর্ত্তিকালে তাহাই অলরালিপরিশুভা ক্ষরমা প্রান্তবে পর্যাবসিত হইরাছিল। প্রাচীন রোমরাজ্যের স্থাপত্যবিভার শ্রেষ্ঠতম নিদানভূত ভূগর্ভস্থ বলপ্রণালীর (Cloacse) দারা ঐ সকল দূবিত জলরাশি নিম্নাশিত হইরা সেই-श्रानक कृतिका ও উद्यान উপবনাদির উপযোগী করিয়াছে। (Varro Ling. Lat., IV. 149)। একসমরে চূড়াবিশ্বী বে লৈল্পিওরসমূহ গ্রামাণিতে সমাজাণিত ছিল এবং প্রত্যেক পৰ্বত-শিধরবাসিগণ আপনাশন গ্রামাদি রক্ষার্থ যে পর্বতের অভ্যাচনেশে এক একটা গ্রামাহর্গ (Village forts) স্থাপিত ক্রিয়াছিলেন, ভাহারা তৎকালে শত্রুর আক্রমণ হইতে আপনা-দিগকে নিরাপদ রাখিবার জন্ম সেই পর্বতিগাত গুরারোহ ও প্রশ্ন ক্রিতে চেটা পাইয়াছিলেন। অপেকাক্তত পরবর্তিকালে বধন ু সৰুল প্রামবাসিগণ পরস্পরে ভেরভাব ভুলিতে শিথিল এবং । সমগ্র রোম গ্রামণীগণের সামান্ত্রিক শাসনগণ্ড উদ্ভেশ করিয়া এক রাজকীর শাসনগৃত্যলার (Government) বলবর্তী হইল, তথন হইতেই রোমনগরীর একটা প্রাকৃতিক বিশিষ্ট্রে গরম্পর বিরোধী আবিবাসী প্রজার্ত্রের আত্মজার উপবােদ্রী হইয়াছিল এবং নিরূপদ্রব থাকিয়া নির্বির-রাসের প্রত্যোশার বে সকল পার্ব্রতাল এবং নিরূপদ্রব থাকিয়া নির্বির-রাসের প্রত্যোশার বে সকল পার্ব্রতাল এবং নিরূপদ্রব থাকিয়া নির্বির-রাসের প্রত্যোশার বে সকল পার্ব্রতাল পর্বর্বের শাসনাধীন হওয়ার সেই সকল পার্ব্রতাভূমি আর পরম্পর বিভিন্ন রাখা যুক্তিযুক্ত বিবেচিত হইল না। প্রেণীবদ্ধ প্রকৃত্যমন্ন অটালিকা সমৃদ্ধিতে একণে রোমনগরকে ভূবিত করাই গ্রম্বেরির উদ্দেশ্ব হইল। তাহারা অভীই কার্যাসাধনে স্থাপত্যবিভার পরাকার্যা প্রদর্শনে অগ্রসর হইলেন। ভাহাদের এই অত্বত কীর্ব্রি (gigantic engineering works) জগতের ইতিহাসে একটা অনোকিক ঘটনা।

এই সমরে রোমবাসীর উৎসাহে অভ্যুক্ত পর্বাতশিষস্থলি সমতল হইরা বাসযোগ্য অধিত্যকার পরিণত এবং হুর্গম চূড়া ও পর্বাতগাত্রগুলি কাটিয়া হুগম চালু ও সোপানতরে পর্যাবসিত হইরাছিল। পরে ঐ সকল স্থানও কর্ত্তিত হইরা রোমীর কীর্ত্তি-নালার বিভূবিত হর। ভেলিয়াশুলের সমতলীকরণ (levelling) এবং ট্রাঞ্জান-ফোরামনির্ম্বাণার্থ তথাকার পর্বাতসামু উৎখনন (Excavation) রোমীয় বাস্ত্রবিভার (Engineering) চরম নিম্পর্লন।

মধ্যব্গেও (Middle ages) এই বান্ধবিছার প্রভাব সমভাবে বিছমান ছিল। খৃ ছীর ১৪শ শতাব্দে কাম্পাস্ মার্লিরাসের
সীমানা হইতে কাপিটোলাইন্ আর্কের (Capitoline Arx)
প্রবেশার্থ আরা কিওলীর অন্ধর্গত সেন্ট-মারিয়া পর্যান্ত স্থানীর্থ
সোপানশ্রেণী বিল্পিত করা হইরাছিল। কারণ ইহার পূর্কে
উপরোক্ত কোরামের পার্খদেশ ঘ্রিয়া ভিন্ন এইস্থানে আদিবার
আর অন্ত পথ ছিল না। মধ্যস্থলে কতকগুলি সরল পর্ব্বভচ্ডা
দুপ্তার্মান থাকিয়া গ্যনাগ্যনের পথ রোধ করিয়াছিল।

মধ্যুগে রোম্যান্ত্রাক্ত্যাঞ্জনের স্থাপত্য-নিকেতনে যে সোভাগ্যরেখা সম্দিত হইরাছিল, আজিও তাহা সমস্রোতে ভাসমান রছিয়ছে। বর্তমান রোমগবর্মেন্টের ১৮৮৬ খুটান্দের "piano regolatore" নামক প্রস্তাবান্ত্রসারে স্থাপত্যকার্য্য ধীরে ইসম্পন্ন হইতেছে। মধ্যুগুগে যে শৈলচ্ড়া ভাঙ্গিরা সমতল অধিত্যকার পরিণত এবং প্রণালীপথে ছির-জল প্রবাহিত করাইয়া যে উপত্যকাশ্বলি সাধারণের বাসবোগ্য করা হইয়াছিল, বর্তমান পূর্তবিভাগীর বিশদ-ব্যক্তার তৎসম্পারই একটা সম্পূর্ণ সমতল প্রাক্তরে (uniform level) পর্যবসিত

করিবার আরাস হইতেছে এবং ভত্পরি আমেরিকারেশের নগর-সন্ধ্রের অভুকরণে বৃক্তশ্রেণীসন্ধিত দাবার ছকের (Cheekboard plan) ভার প্রশন্ত চতুত রাস্তার দারা নৃতন রোমনগর গঠনের করনা প্রসিদ্ধ করা হইতেছে।

প্রংপ্নং অঘিসংযোগে রোমনগরী ভরীভূত ও বিধনত হওরার, ইহার প্রান্তসীমা নই হইরা গিরাছে; স্থতরাং প্রাচীন রোমরাজধানী কোন্ হান হইতে কোন্ হান পর্যান্ত বিহুত ছিল, তাহা নির্দ্ধান করিবার কোন উপার নাই। অঘির হারা ভরীভূত হানবিলেবের ঐরপ থবততুপ এবং অপরাপর কারণে বিধনত প্রাচীন নির্দ্দিনসমূহ কোন কোন হানে ৪০ ফিট্ নির ভূপর্ত মধ্যে দৃষ্টিগোচর হইরা থাকে। উপত্যকাদির মধ্যবর্তী হানে ঐরপ ধবতকীর্তিরই অধিক পরিচর পাওরা বার। প্রস্কৃতত্ববিদ্যাণ বছ চেটা সন্থেও উহার প্রকৃত ভবা নির্দশে পরাযুধ হইরাছেন।

্বর্দ্ধমান রোম অপেকা প্রাচীন রোমে শৈত্যের আধিকা ছিল। তৎকালে রোমনগরের মধান্থলে ও চতুস্পার্থবন্তী স্থানে মালেরিরাজরের প্রকোপ অভাস্ত কম ছিল, কিন্তু এখন তাহা পূর্ণমাত্রার প্রান্তর্ভু ত হইরাছে। রোমের উপকৃত্তিত হাজিরানের উভানাবাস (villa of Hadrian) এবং তল্লিকটবর্ত্তী অপরাপর নিকুঞ্জানন যাহা একসময়ে স্বাস্থ্যপ্রদ স্থান বলিয়া কীর্ত্তিভ ছিল, তাহা একণে অত্যন্ত অস্বাস্থ্যকর বলিয়া সাধারণে যোবিত চট্ট্রা থাকে। প্রাচীন কালে একমাত্র স্থপ্রণালীবদ্ধ জলই নাগীর জন্ত কাম্পানার (Campagna) স্বাস্থ্য-খ্যাতি প্রসিষ্ক ছিল। ঐ স্থান তৎকালে বছজনপূর্ণ থাকার স্থানীর স্বাস্থ্যোরভির নানা উপায় অবদ্যতি হইয়াছিল: ক্স্কি তাহা বলিয়া যে তৎকালে আদৌ অররোগের প্রাত্তাব ছিল না, একথা বলা বাম না। পালেটাইন ও অক্তান্ত শৈলচড়া ফেব্রিদ দেবীর উদ্দেশে স্থাপিত বেদীসমূহ এবং একুইলাইন পর্বতোপরি মেফাইটিসের স্বতি ও সন্মানার্থ প্রদত্ত উপবন দর্শন করিলে স্বতঃই মনে রোগ-প্রাবন্যের উদ্বোধন করিরা দেয় ৷ প্রীর ৪র্থ শতাক্ষ হইতেই রোমের জনসংখ্যা ক্রমশঃ বর্দ্ধিত হইতে থাকে। তৎপূর্বে ঐ হান নিতান্ত স্বস্থায়কর ছিল বনিরাই অকুমিত হয়। Monografia di Rome (vol iii, 1878.) পাঠে জানা যার বে, উক্ত শতাবে রোম-নগরে প্রার ২৫ লক লোকের বস্তি ছিল। সেই মহাসমুদ্ধিশালী রোমসগরীও তৎ-কালে ভতুপবোণী সৌধমালার বিভূষিত হইরা সমগ্র সভ্যঞ্গতে রোমসাদ্রাজ্যের কীর্ডিগৌরব বিকাশ করিরাছিল।

ভংকালে রোমনগরে Tufa, Lapis. Albanus, Lapis Gabinus, Silex, Lapis Tiburtinus, Pulvis. Puteolames. (pozzolana) প্রভৃতি প্রস্তরে মন্ত্রানিকাদি, নির্মিত ৰইরাছিল। বিটুরিবান্, মিনি প্রাকৃতি স্থ স্থ প্রত্থে এই সকল প্রত্যে ও তাহার গাঁথুনীর মসলার বিবরণ লিপিব্রু করিয়াছেন।

প্ৰাণৰ ও পাজা-পোড়া ইটকেরও তৎকালে বথের ব্যবহার ছিল। আবার কোন সমরে প্রাচীন রোমের কোন প্রাস্ত अग्रेगिका वा श्राहीत रेडेटक निर्मिष्ठ इत्र नारे, टक्वन खाहीत, খিলান ও গৃহতৰ প্ৰভৃতি কংক্ৰীট্ (concrete) করিতেই কাৰে লাগিত। গৃহতল অনুচ করিবার অভ কুচা ইট, পাধর ও সিমেণ্ট-বিশেষের বাবছার ছিল। রোমকগণ সিমেণ্ট প্রান্ত করিতে বিশেব পারদর্শিতা লাভ করিরাছিলেন। প্রাচীন গ্ৰন্থাৰ পাঠে জানা বাৰ বে, tectorium, opus albarium, Structura testucea প্রভৃতি নামধের সিমেণ্ট, পলন্তারা (Stucco) । श्रीथिनित्र मनना (Mortar) डीहारमञ्ज बाबाहे উত্তুত হইরাছিল। 🤌 মৃদ্জাও-চূর্ণ বা স্থয়কিচুর্ণ ও পোলোলানা নামক লাল বালুর ছার আগ্নেরগিরির নিংলাবছ পরার্থাইলেবের ৰারা প্রস্তত সিমেন্টবং মদলার তাহারা গৃহতলের মর্শ্বর-প্রস্তর আটিরা শইত। প্রাচীরাদির উপর প্রার ৫ ইঞ্চি পুরু ও রা ৪ ভবক পদভারা (Coats of stucco) দেওয়া হইড। প্রথমে পোনোলিনা ও চুগ এবং সর্কোপরি শ্বেডমর্শ্বর-প্রস্তর চূর্ণের (Opus albarium) মস্থপ পালিশ দিয়া বিচিত্ৰ বৰ্ণচিত্ৰ সম্পাদন করিয়া লইত। কোন কোন মর্ম্মরপ্রস্তরনির্দ্দিত **অট্টালিকার এইরূপ তন্ম বেতমর্মর**চূর্ণ পলস্তারার ব্যবহার দেখা গিরাছে। বিটুবিরাস লিথিরাছেন যে, মসলা ও পলভারার জন্ত এখানে সমূত্র ও নদীকুলজাত এবং ভূমিজ (pit-sand) वानुकारे वावक्छ रहेनाहिन।

খুই পূর্ব্ধ ১ম শতাব্দে সর্ব্ধপ্রথমে রোমনগরে মর্মরপ্রভান্তরের প্রচলন হর। বিখ্যাত বাদ্মী ক্রেনান্ গ্রীক্-ভোগবিলাদের রসাবাদনে উৎস্থক হইয় ৯২ খৃঃ পূর্বাব্দে শ্রীর পালেটাইন্ লৈলছ
প্রানাদে হাইমেসিয়ান্ মর্মরের তন্ত প্রথিত করিয়াছিলেন।
উাহার এই বিলাসবলবর্তিতাকে উপহাস করিয়। প্রানিদ্ধ প্রজানতর্ত্তাপ্রণী মঃ ক্রটান্ তাঁহাকে 'Palatine Venus' নামে অভিহিত করিয়াছিলেন। তৎপরে ৫৮ খুইপূর্বাব্দে এমিলিয়াস লাউরাসের কার্চনির্দ্ধিত রক্তমঞ্চের ও৬০টী তন্ত ও 'সিনা'র নিম্নতাগ গ্রীক্দেশীর মর্শ্বরপ্রত্তরে নির্দ্ধিত হইয়াছিল। ইহার কিছুকাল পরে,
সম্রাট্ অগাইাসের পাসনকালে মর্শ্বরপ্রত্তরের আদর সর্ব্ধত্র
বিভ্ত হইয়া পড়ে। কি সাধারণ ও সন্ধান্তব্যক্তরের আদর সর্ব্ধত্র
ক্রার্থান্তর বা প্রাসাদ সকল খানেই চাক্চিকামরী; মক্ত্ন মর্শ্বর

গুরুদি নির্মাণার্থ এখানে প্রধানতঃ বেতমর্থন প্রগ্রেরেরই
অধিক প্রচলন ছিল ।... ঐ প্রার্থনমূহ পাত্রবর্গের জ্বং পার্থকা

অভ্যাতে ভামবিশেতে পথক পুথক নাৰে প্ৰবিচ্চিত, ক্ষিত্ৰ লেখের वा प्राप्तक नामास्त्रादर देश हात्रिके विलिट विकारन विकल perity 1 > not affoly with Marmor Lunense. —লোগনা ডি টেরার করিছিয়ান ক্ষম্বলি এই প্রাক্তরে নির্দিত। ২ আবেলের নিকটবর্তী হাইবেটাল লৈকজাত Marmor Hymottium,- शिरकांनीय S. Pietros प्रकारित जनर S. Maria Maggiore मिन्सिकाकास्त्र क्रेडी क्ष और श्रीका स्टेटिंड খোষিত হইবাছিল 🖟 ইহার গালে খনর 😉 নীলবর্ণের সক্ষ লক ক্ষেম্বা আছে। সুনার বর্গার পাধর অপেকা ইয়ার খানা অনেক হোটা। ৩ আখেল বগরের নিক্টর শেক্টেলিকান পর্বভন্নত Marmor Pentelicum, - ইয়ার গানা কল ও পরিষার কেত-का । त्यांविकात्मव क्यांव चगांद्रीरगत चारक-व्याणिगर्वि करे প্রান্তরে কৃষ্টিত হয়। ভাতবেরা কেব্যুর্তি বা বছবাস্তি খোবাই ক্ষরিকার কল্প এই দেশীর মূর্যারের আকর ক্ষিত্রা থাকে ৷ ৪ পেরোস बीटनश क्रमक Marmor Parium,- देशांत्र गर्दन Orvetal পাধ্যের ভার ।

এত জিল বেই প্রাচীনকাসে রোমনগরে নানাবর্ণের কর্মর প্রান্তরের ব্যবহার দেখা বার, তক্মধ্যে সিনি, ট্রাবো, ট্রাটিরাস্ প্রান্তি বর্ণিত নিরোক্ত নর প্রকার মর্মারই প্রধান। রোমের কোন্ কোন্ স্থানে উক্ত নরটা প্রেণীর কোন্ কোন্ বর্ণের প্রান্তর প্রথিত হইরাছিল, তাহার নাম ও নির্দাদ অতি সংক্ষেপেই উদ্লিখিত হইল।

> Marmor Numidicum '9 M. Libyenm wiels মর্মারের বর্গ উচ্ছাল ও গাচ হরিদ্রাবর্গ, জোন কোন স্থলে কমলা-লেবর স্থার লোহিতাভও দেখা যার। কনতান্ধিনের প্রসিদ্ধ বিখান সংযুক্ত **পট্ট ক্লেন্ড ও পাছিয়ানের ভটাতে নিবর্ণন রহিয়াছে**। » M. Carvatium কর্মরের বর্ণ প্রকা ও সাধা মিল্লিড ক্টি আলের প্রারঃ ক্ষিনার সন্দির ক্তত্তে ইহা প্রথিত আছে। o.M. Phrygiam & M. Synnadicum was waren, for वर्व त्यान त्याची कटेरफ क्रमणः नारमञ् चाविकानकः। वरश सरक्षा जिल्हातक राजावीयां नारक । ध्येतान Atve ध्येत क्रकांकिक खेशास्त्र माथान किन, छात्रा जाविश्व त्रश्तिरहः (Siat. Sitv. i. 5. 86. 44 S. Lorenzo fuori Mura & S. Paoli fuori करक देशक अकि विद्यान ! 8 M. Insium क्रकांड जान, প্রনিত কলের জার সমূজ ও নালা মতের চত্রনবিশিষ্ট। গ্রীকোঞ্চানিদ ७ प्रताप अधिम जिलाएक हेजाब निवर्णन क्योंगियामा । 4 M.Chium বৰ্ণ আৱাশিরাম-মন্ত্রের জার, কিন্ত অপেকারত উচ্চল : কসি-ালিকা কুলিয়া ও লেক পিটার্স মন্দিকে এই প্রথমের পাটান্তম ও . संशामि निर्मिक रामा गांत । . ७ Basso agrition, कारणक साव केवाम नाजवन । G. Prassedes केव (की अन Rospigliosi Casino dell' Amoras >३ किए केल प्रदेश कर धारे केलन লশ্বৰে নিশিক ক্ষুৱাছিল : ই Nero antico বা M. Tsonsrium म्लाडी बारबाद हिनावान चन्द्रील रहेरच नवानीच. Ara. Ocale দীৰ্জাৰ উপাসনান্বাসে (Ohoir) ইয়ার নিয়ৰ্পন আছে । b Lapis Airacius—খেলেলির অর্থেড আটার নারক ভানে भारता बाद । वर्ग-रेवहिकानिक्यन जाभकाकार्या हैराद बस्थिक নুসামন। বেটাৰ্থ বাসিলিকার (Lateran Basilica) ২৪টা का बदर (नाका निक (niches in the nave) पनि অই জন্মবন প্রভাৱে গৃথিত। > The oriental Alabaster ৰা onyx নামক কৰুৰ আৰুৰ, নামান্তান ও *নীলনক-*জীৱনতী শেবিদ নায়ক অনপাদের নিকট হটতে রোবে জানীত रुहेराकिण । हेरा चार्कचक्क अवर कारांत्र महश्च महश्च नवहक्क ভক্রাবলী ও ভরজারিত তরবেখা (Marks of wavy strata) ষ্ট হইরা থাকে। পালেটাইন লৈলে এবং কারাকারার সাকালারে के अध्यातन निवर्णन आहा । अवश्वित बानाबात (Granice and basalts) পাথৰ শ্ৰেণীৰ মধ্যে আলেকসান্তিৰাভাত Opus Alexandrinum, লাগিডিয়োনিয়াকাত Lapis Lacedemonius an L. pyrrho paecilus & L. psaroaius নামক গোহিত্বৰ্ণ প্ৰক্তব্যেই অধিক ব্যবহার দেখা বার ।

ঐ সকল প্রায়ের লইয়া স্থাপতাকার্যে যে সকল নিম্নবিদ্যার প্রছোগ হইয়াছে, ভাষা পর্যালোচনা করিলে বোধ হর খে, রোম-নগরে তিনটা বিভিন্নবুগে তিনটা বিভিন্নদেশীয় বা জাতীয় আপভাবিভার সমাধর বাডিয়া ভিলা রোমনগত কাপনেত প্ৰথম কয়েক শভাৰ ধরিছা বে সকল অট্রালিকা মিন্মিত ও ভাষাতে বে সকল কার্মিক স্থাপতাকৌশল চিত্রিত ক্রয়ছিল, ভৎসমুদারের গঠন ইট ছোন-ধরণের : ভৎপরে রোমে ঞ্রীক বঠন-প্রাণালীর প্রকর্ষন হর। সেই প্রাচীনতম কালে রোমকরাজগণ পালেটাইন শৈলোপরিত বন্দিরার্থি এবং অপরাপর ভানেত্র অন্দিরাদি নির্দাণকরে গ্রীক্ষেণীর ভাষর নিবৃক্ত করিয়াছিলেন। ক সকল ভাগতাবিলগণের বিকট হউতে রোমকলণ্ড-প্তাপতাবিদ্যা অভ্যাস করে। ক্রমে ভাহারা <mark>কাভীর উন্</mark>তির সজে সঙ্গে ভাগতাবিভা-বিষয়ক নানা শ্ৰীবৃদ্ধিনাখন করিয়া আন্টীয় জীবলের গৌরববর্ডক রোমীরস্থাপত্য (Roman ambitecture) नारम चण्ड निराविधांत धावर्तन करतन । धडेनार्क उप निराविधांत বিট্ৰিয়াস ও সি-বিট্টিয়াস; নীলোয় জাকাকাৰে কেকোস ও বেলার এবং ভোষিনিয়াদের যাত্রাকাল্যে চারিরিয়ার প্রভতি নক্ষতঃ আংগলনগরে স্থাপতালির দিকা করিয়া অকটেতর - भरताचान ं सहिताकिरणयः। विश्वविद्यातः **अवित्य-धार्मामवि**रस

রোমকদিগের বিবেৰ গুণপনা না থাকিলেও, ইঞ্জিনিরারী কার্ব্যে জাহারা বেশ স্থক ছিলেন। এই কারণে ছাপড্যভাগুরে জত্যরকালের মধ্যে নৃতন ও বিশুদ্ধ রোমীয়-প্রথার পূর্ণ বিকাশ ঘটে।

প্রথমে তৃহান্তরের Opus quadratum পাধরে রোমুলালের আচীর প্রথিত হইরাছিল। ভংপরে প্রেট্ট সার্থির আচীরে অপেকাঞ্চত কঠিন Peperino প্রান্তরের গাঁধনী চলিরাছিল। ঘটপূর্ম ২র শতাব্দে বর্দ্ধর প্রথমের স্থার গৃহাদির নির্মোভানম্পাদনার্থ travertine প্রভারের কর্ণিন, খিলান প্রভৃতি নির্মাণ হটতে থাকে, পরে খুইপূর্ম্ম প্রথম শতাব্দের মধ্যভাগে তেম্পেনিরান্ মন্দিরের ও কোলোনিউম্ (Colosseum) নামক ক্যাহিখাত অটালিকা প্রভৃতির গৃহভিত্তিও কেওবাল নির্মাণ কার্য্যে এই প্রভার প্রভৃত পরিমাণে ব্যবহৃত হইরাছিল।

উপরোক্ত বিভিন্নশ্রেণীর প্রস্তরসমূহ একত্র গ্রাথিত করিতে রোমক রাজমিল্লিগণ বে মসলা ও সিমেণ্ট ব্যবহার করিত. ভাহা অমুধাবন করিলে বিশ্বিত হইতে হর। একপ্রকার পাথরের প্রাচীরের বা গৃহভিত্তির কোন স্থানে গুরুভার আবশ্রক হুইলে, ভাহারা সেই স্থানে তদমুত্রণ গুরুছের পাথরই বসাইত। পূৰ্ক্কথিত কোলোদিয়াম প্ৰাসাদে চাপের আবক্সকতা নিবন্ধন जाथ निरकोनाम क्षेत्रल जानक अधिनका महे रहेशा शास्त्र। এডব্রির সেই সমরে ইউক গাঁথনীর পরাকার্চাও প্রদর্শিত হইরা-ছিল। ২৭ খুইপুর্কান্থে পাছিওন প্রাসালের গৃহতলে অথবা শেওৱালবিলেতে মৰ্পন ৰসাইবার জন্ত ত্রিকোণাকার ইট-ক্ষেপাটাতন বা অমি করা হইরাছিল। সেভারাসের সমরে ভৎপরবর্ত্তী কালে ক্লাবীর বুগাপেক্ষা ক্লোকার ইপ্রক ব্যবহৃত হটরাছিল, ঐ কুদ্র ইটকের গাঁথনি মদলার গুণে এতাদুল ষ্চুত্র হইরাছিল বে, অভাপিও তাহার নিদর্শনগুলি প্রত্নতব্বিদ-প্ৰাৰে চিত্ৰাকৰণ করিছে সমূৰ্য হইবাছে। নিয়ে ইটকনিৰ্শ্বিত শ্রীর্মিঞ্জিত একটা সংক্রিয় ভালিকা প্রদত্ত চটল :---

क्षांबिव हेरेक-शाम বাদ কুলিয়াস সিক্ষারের রোট্টা 88 약: 약: >३० हैं कि এক্সিমার পান্তিওন >#• টাইবেরিরাসের প্রিটোরীয়শিবির २७ 31-3he मीरबाद सम्राथनामी 98 >->10 টাটটালের স্থানাগার >10 ভোমিনিয়ানের আসাহ 3. >10 ্র হাজিয়ানত্বত ভিনাস ও লোমের মন্দির ১২৫ 👊 নেভেরাসের আদাদ শ্বলেকীয় প্রাকার 🐩 31-3h+

মনলা ও নিমেন্ট ছারা সর্বস্থপ্রস্তরের গাঁধনী ব্যক্তীভ রোমকেরা অভাভ গাঁথনির উপরও অক্সরের পাত (Marble lining) बनाहरू बानिक। खाडीन Concord मन्सित्त्र পর্জগৃহের তুলানির্ন্মিত অভ্যন্তর ভিত্তিপ্রাচীর স্থবঞ্জিত নর্মর বারা জুসন্দিত করিবার কর ভাহারা নানা ত্রবার মিল্রিড প্রভারা প্রান্তত করিরা বেওয়ালের গারে লাগাইরা দিত। 🗳 concrete coment backing লাভা, কুচাইট, মন্ত্রথত, ভুকাথত ও টাজাটাইন প্রকৃতি জবোর মিপ্রণে (অর্থাৎ মিল্লির বরে কারা কিছু থাকিত, ডাহাই একত্র করিবা) উহা প্রস্তুত হইত। কথন ক্থন গৃহভিত্তি অথবা প্রাচীরাদি এই মিশ্র মসলার পরিমাণমঙ ছালাই করিয়া লইড। তরনভর ঐ পলতারার উপর মার্থক-পাত বদাইরা আঁক্ডীবুক্ত থাতৰ বন্ধনী (Clumpes of metal, hooked at the end) ছারা দেওরালগাতে সংগ্র করিরা দেওরা হইড। ৬৪ খু টাবে নীরোর রাজবভালে অরি-সংযোগে সমগ্র নগর ভত্তীভূত হইলে তিনি নগরবৃহিঃপ্রাচীর महनमहिक नेपार्थ (Fireproof materials) बाजा निर्नारनज জন্ত একটা বিধি প্রবর্তন করেন, ভাগাতে পোড়া ইট অথবা পেপারিগো পাথরে গাঁথনীর ব্যবস্থা হর ৷ তৎকালে পাকা রাভা নির্ন্বাণেরও বথেষ্ট প্ররাস চলিরাছিল। লাভা-নতুত লুটীভূত বেলান্ট পাথরের চতুছোণ টুক্রা কাটিয়া ডভারা রাভা বীধান হইরাছিল। উহার উপরিভাগ বৃদ্ধাকার এবং **উভদ্দ পার্বে** খাদ কাটিয়া বারিপাভজ বা গৃহনি:স্ত জলধারাগ্যনের প্রোনালী প্রস্তুত হয়। সেই প্রাচীন কীর্ন্তির নিমর্শন ক্ষতাপিও পনিমন্দিরের সন্মুখন্থ Clivus Capitolinus নামক স্থানের ক্ষকাংশে বিখ্যমান আছে ৷

রোমরাজধানী হইতে বিভিন্ন প্রদেশে গ্রনাগ্রন্তর স্থাবিধার্থ গ্রাচীন রোমক-সমাজ ঐত্তপ কএকটি প্রবৃহৎ দ্বান্তা নির্দাণ করিয়াছিলেন। ঐ সকল রাস্তা যে যে স্থান দিয়া রোমের প্ৰাসিদ্ধ প্ৰাচীরগুলি ভেদ করিয়া গিয়াছে, ডব্ৰুং স্থানে এক একটা প্রবেশহার নির্নিত ছিল। ঐ সকল ডোবণহার ভয় ও বিধবত হইলেও তাহাদের নিম্পন একবারে দৃষ্টিবহিভূতি হয় নাই। সেই গ্রাচীন কালে বিভিন্ন গ্রাদেশে গমনার্থ সর্বাসমেত ১৯টা ছাজা ভত্তদদেশাভিমবে প্রসারিত হইরাছিল। ভন্মধো আপিয়া, লাটনা, লবিকানা, টাইবায়টনা, নোমেন্টানা লালারিরা, इम्मिनिया, गाविना खेरविनया, गर्हे स्वन्तिम, व्यक्किस्वनिम 😉 আর্ডিরাটানা প্রভৃতি বারটা রাস্তা প্রধান। টাইবার নদী অতিক্রম করিয়া পশ্চিম ও পশ্চিমোভরাভিয়বে গিয়াছে, সেই সেই পথের সন্মধে নদীর উপর এক একটা কেড নিশ্বিত হইরাছিল।

উপরে বে রোমের সীবার প্রাচিরের উল্লেখ করা হইবাছে তর্মধ্য রোমক ইতির্ভের ক্ষারিক্তা রোম্কানের ক্ষিত্র প্রান্তিরের (Wall of Bossains) নির্কান সর্বাদেশ প্রাচীন। তৎপরে রোমপতি লার্মিরান টালিরানের ক্ষ্ত্থ ও অন্ত প্রাচীর (Wall of Services Tulline) উল্লেখবোদ্য। এই অতীত কীর্মির ব্যক্তনিক্র অধুনা ভূমির্গর্ভ ইতে বাহির হওরার সাধার্মের মূর্ট ক্ষাকর্ষণ করিবাছে। ইহার পর ২৭২-৭৬ ক্ষাক্ষের মধ্যে ক্ষ্তিক্রাক্ত উরেলীর ও প্রোবাদ্ প্রাচীর (Wall of Aurolina and Probus) নির্দ্ধিত হয়। তদলক্ষর ৮৫০ ক্ষাক্ষে বাদ্য ক্ষিক্র করার নথীর পশ্চিম পারে একটা নির্দ্ধান করান। তৎপরে ১৫৬০ ইউতে ১৬৪০ ব্রাক্তির মধ্যে মধ্যে করান। তৎপরে ১৫৬০ ইউতে ১৬৪০ ব্রাক্তির মধ্যে মধ্যে করার পশ্চিমক্লবন্ধী ভাটিকানাস্ ও জেনিক্টিলাস্ পর্যাত্র পরিক্রিপ্ত রোমস্থাট্গণ এক সূত্ত ও স্থ্রহৎ প্রাচীর নির্দ্ধান করাইরা নগরের পশ্চিমপার্থ স্থরক্ষত করিবাছিলেন।

স্থাপড়াবিভার প্রভাব-বিভারের বঙ্গে সঙ্গে রোমকগণ

দিরবিভারও বথেই উরভিসাধন করিরাছিলেন। রোমক-প্রকাতর
ও রাজতরের আধিপতাকালে রোমনগরে যে সকল অভুত
কীর্ত্তিক স্থাপিত হইরাছিল, ডাহার ভরাবদিই নিহন্দন অভাপিও
ছম্মকিত থাকিরা প্রাচীন নিরের গৌরব জ্ঞাপন করিতেছে।
এডজির মৃত্তিকাভ্যম্বর হইডেও প্রকা ও রাজতরীর উক্ত বুগছরের
পূর্কবত্তা ফালেরও বথেই নির্মানদর্শন পাওরা গিরাছে। ঐ সকল
জব্যের প্রাচীনছ নিরুপণের কোন বিশেব প্রমাণ পাওরা বার না।

আবেণ্টাইন ও একুইলিনাস বিভাগের সাক্ষীর প্রাচীরের নমীপে ও তলদেশে প্রাচীন ব্রোঞ্জ-মুগের চক্মকী নির্মিত যুদ্ধার ও চাক্লচিত্রসবলিত বিশেব বিশেব মুৎপাত্র নিহিত ছিল। ১৮৭৪ খুটাবে এছুলাইন পর্বতোপরিত্ব স্থুবুহৎ গাল্লিরেনাস-থিলানের महिक्टि मृश्विका मधा रहेटल এकी। প্রাচীন সমাধি-প্রাক্ত (neoropolis) আবিষ্কৃত হইয়াছে। উহাতে প্রাচীন ফিনি-कीव या हे हैं। कानमिरण नाना ध्यकां विक्रपूर्व नमारिखक छ मुद्रशाकाषि यद्यष्ठे शतिमार्ग विश्वमान আছে ৷ কতক্তলি দথ মংপ্রলির প্রতিকৃতি মিশর, জাসিরীয়া, প্রস্তৃতি প্রাচ্য জনপদসমূহের প্রাচীন পুত্রনীর অভুকরণে নিশ্বিত বলিয়া অনুমিত হয়। এই সকল নিম্পন দেখিলে শ্বাই প্রতীয়মান হর যে, ইভিহাসোক্ত প্রাচীন রোমকজাতির পুর্বেও এখানে আর এক্টা প্রাচীনতম লাভি বাস করিত। ডিওন কেসিরাসের লেখনী হইতে স্থানা বার, 'রোমা কোরাড্রাটা' স্থাপিত হইবার পূর্বে পালেটাইন শৈলে আরও একটা নগর বিভয়ান ছিল।

প্রাচীনবুগের কীর্ত্তি ও বৃতিচিক্সমৃহের বিশেব উল্লেখ নিআছো-

কর ; কেন না, ভাহার কোন ধারাবাহিক ইতিহাস উত্থানের উপার নাই। রোকক্ষাতির ইতিবৃত্তের প্রারম্ভ হইতে বে স্কল্পীণ স্থৃতির নিধর্শন অভাপি রক্ষিত রহিরাছে, অথবা প্রস্কৃত ভ্রহিরাছে অথবা প্রস্কৃত ভ্রহিরাছে অথবা প্রস্কৃত ভ্রহিরাছে অথবা প্রস্কৃত ভ্রহিরাছে কিবো কিবেমজীপরস্পরা বা ঐতিহাসিক আখ্যান বাহা আজিও লোক-সমাজে প্রচারিত রাখিরাছে, নিমে ভার্যারই সংকিশ্র বিবরণ উল্লিখিত হইল; ঐ সকল পবিত্র অতীত কীর্তিসমূহের প্রভ্রেকটীর আমূলর্ভাত্ত সম্বলন করিছে এক একখানি স্বস্কৃহৎ গ্রহ্

পালেটাইন লৈলোপরিত্ব কীর্তিনিদর্শন।

সর্বপ্রথমে পালেটাইন্ শৈলোপরিছ রোমা-কোরাড্রাটার বিষ্কৃত ক্ষরেমান প্রাচীর উলেখবোগা। এই প্রাচীর-পরিবৃত্ত বিষ্কৃত ক্ষরেমানাম, নগরধার, ক্লিটার ভিউরের মন্দির, সার্কাশ নালিমান, নাল্লিমান রিছিল বিষ্কাশ সার্কাশির প্রাচীর প্রবিশ্ব ক্লিলানাম্ বা মামেটাইন ক্লারাড়হ (Tullianum or Mamertine prison), ক্লরপ্রাচীর (the great quay wall) প্রভৃতি প্রভিতিত হর। কোরাম্ রোমানাম্ ও তাহার চতুর্দিকে বে ক্রেকটা পরিত্র মন্দির ও অট্টালিকানির চিক্ বিষ্কাশন আছে। নিরে তাহার নাম্মাত্র উদ্ধৃত করা গেল:—

I Basilca Julia, ইহার নিকটে Tabernæ Veteres नायक माकानदानी ও ভাহার अमृत्य Tabernae Argentariae বা নেক্রাপটা এবং Tabernse Novæ, 2 Altar of Saturn, 3 Altar of Vulcan, 4 Curia of Diocletian, 5 Comitium, 6 Original and existing Rostra, 7 Grescostasis, 9 Basilica Porcia, Æmilia, 10 Temple of Janus, 11 Umbrilious Rome, Milliarium, 12 Temple of Saturn, 13 Vicus Jugarius, Vicus Tuscus, 14 Temple of Castor (এখানে সেনেট ও ত্রিবিউনাল সভার অধিবেশন হটত) ইহারই পার্বে Tribunal Aurelium প্রতিষ্ঠিত। 15 Temple of divus Julia, Temple of Vesta, 16 The Regia or the residence of the pontifex maximus, I7 Palace of Caligula, I8 Atrium Vestee, 19 Arch of Fabius, 20 Temple of Faustina, 21 Temple of Concord, 22 Temple of Vespesian, 23 The Portions xii. Deorum Consentium 24 Arch of Severus.

25 Temple of Jupiter Victor, 26 Statue of Oybela, 27 Temple of Jupiter Stator, 28 Demus Tiberiana, 29 House of Livia 80 Palace of Augustus and Area Apollinis, 31 Temple of Victory, 32 Flavian Palace, 32 Demus Gelotiana, 33 The great Stadium, 34 Hudrian's Palace 95 Palace of Severus, 36 Velia and Germalus, 37 Summa Sacra Via নামৰ পাৰের ক্যান্তান্ বারা সংক্রম Ædes Larum ও Secellum Larum. 38 Velabrum,

काणित्हानाहेन न्यानाशिक वाहीन कीचि ।

1 Temple of Jupiter Capitolianus, 2 Tabularium, 3 Forum Jullia 4 Forum of Augustus, 5 Forum Pacis, 6 Forum Nerva, 7 Forum of Trajan. 8 Trajan's column, 9 Temple of Trajan, 10 Temple of Fortuna Virilis, 11 Portions Octavise, I2 Temple of Neptune 13 Temple of Venus and Rome. এই সকল বন্দিরের সংস্পর্ণে আরও অনেকওলি মন্দির আছে। উহালের প্রত্যেকটাতে ভিন্ন ভিন্ন দেবসূত্তি প্রতিষ্ঠিত দেখা বার।

কিলিয়ান লৈলন্থিত ধ্বন্ত স্ত পরালি পর্যাবেক্ষণ-পূর্ব্বক বুনলেন প্রভতি প্রস্কৃতভ্বিদগণ এখানকার অট্রালিকাদির বেরূপ পরিচর প্রদান করিরাছেন তাহাই প্রকৃত বলিরা শাধারণে গৃহীত হই-বাছে। নিমে তাহার সংশিপ্ত ইতিবৃত্ত প্রাণত হইল :--> তে छि-টিয়ালের প্রাসাদ বেম্বানে নির্ম্মিত ছিল, তচপরে সম্রাট কোমোডাল একটা সংস্কৃত ও পরিবর্দ্ধিত প্রাসাদ নির্দ্ধাণ করাইরাছিলেন। প্রাসার হইতে স্থবিখ্যাত 'ক্লোসিরাম' বাটকার বাতারাতের জন্ত কুড়ক ছিল। এখানকার মিনার্ডা-মেডিকার মন্দিরের গঠন দেখিয়া মনে হর, উহা কোন সমরে কোন প্রাচীন প্রাসাদের লানাগারের অংশবিশেষ ছিল। ঐ লান ভবনে মিনার্ডা দেবীর একটা প্রতিমৃত্তি ছিল, পরবর্তিকালে তথার সেই মৃত্তি প্রতিষ্ঠা क्तिज्ञा (मरीत नात्मरे मिन्स्त्रत नामकत्रण सरेवाटसः। এडित সালাষ্ট্রে বাসভবন, সন্ত্রাট টাইবেরিয়াস্ ক্লভ সেনানিবাস (Praetorian camp), ২৭ খুই পূর্বাদে এগ্রিয়া বিনির্দ্বিত अञ्जलिक 'Pautheou' ध्यानांव वा (प्रवस्थित ও छं९नाःवध স্থ্যুহৎ থালান (Thermae of Agrippa) এবং Firemen's barracks, Golden House of Nero & স্থিয়াস্ সিকার প্রতিষ্ঠিত Septa Julia প্রভৃতি আরও বহুতর অট্টালিকার जिल्लीन शांख्या शिवारक। त्यरवाच्य ग्रंटक व्ययरव Comitia Conturiata मधा-निर्सातमार्थ नग्रहिश्रम् (vote) क्या रहेफ । शतकती नवाहिशासक कार्यक्रमारम के बारन कीर्यक्रान-विकासक सक्यों रह ।

রোদের প্রাচীন ক্রীড়ামগুপ ও রক্ষালয় লয়ুহের বিষরণ প্রসক্ষনে উলিখিত হওরার এখানে আর বিশেবরূপে আলোচিত হইল না। সার্কান্ মাজিমান্, সার্কান্ মাঝিনিরান্, কালিগুলার সার্কান্, হারিয়ানের সার্কান্ প্রভূতি দুরার্বর্তনে উল্লেখ করা গেল। লিভি ১৭৯ খৃইপ্রান্ধে বিরচিত এম, এ মিলিরান্ লেলিগুলের মজালারের উল্লেখ করিবাছেন। ২৬—২২ খুইপ্রান্ধে পশ্লি প্রস্তর্তনিবিভ রক্ষাক প্রভিন্ন করেন। ভিনান্ ভিকুল্বের সম্পি প্রস্তর্তনিবিভ রক্ষাকর সংলগ্ধ ছিল। ইহার পর মার্নোলানের রক্ষাক ১৩ খুইপ্রান্ধে বিরচিত হয়। এত্তির কলোসিরশ্ প্রভৃতি বিভিন্ন আন্দিখিরেটারের নির্দান রোমরান্ধানীতে দৃষ্টিলোচর হইরা থাকে। [রক্ষালর বেখ।]

প্রাচীন কীর্বির গৌরববর্জক ইইলেও আমরা রোদের ইতত্ততঃ বিক্তি খিলান, তত্ত, সমাবিত্ত ও সেতু প্রভৃতির বিভ্ত আলোচনা করিলাম না। ১৯৬ ধৃইপূর্জাকে কোরাম -বোরারিরাম ও সার্কাস মাজিমানের বিভ্ত ভোরবহার (Triumphel Arches) স্থাপিত হইরাছিল।

প্টান সম্প্রদারের অভ্যানরে প্টার ৪র্থ হইতে ১২ দ প্তাক মধ্যে নানাস্থানে খুইধর্ম-মন্দির প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল। কটালার গোলাকার ধর্মন্দির রোমের তাৎকালীন ভাপতাশিরের চরম নিদর্শন। ইহার পর অর্থাৎ ১২০০ হইতে ১৪৫০ খু हो খ পর্যান্ত রোমীর শিরের সম্যক্ উন্নতি সাধিত হর। এই সমর্কে ঐতি-হাসিকগণ কসমতিবুগ (Era of Cosmati) বলিরা থাকেন। কারণ ঐ বৃগে কসমতিবংশীয় ৭ জন উপবৃক্ত কারিকর বংশাসুক্রমে রোমের নানা মন্দির স্বস্থ শিরচাতুর্যো পূর্ণ করিয়া গিরাছেন। রোমের ধর্মান্দির সন্থপ্ত মণ্ডপ (Campanili) ও ধর্মবাঞ্জ-গণের প্রাসাদগুলি একবারে শিরনৈপুণাহীন নছে। দেশীর শিরের, পরাকাঠাত্তরপ সম্ভি নিরোর রাজ্যকালে ম্রোটিরাস লটারানাস্কৃত 'লেটারন প্রাসাধ'—নির্থিত হর। (সম্রাট ক্নক্তাস্তাইনের রাজ্যকালে ভেটিকান প্রাকাদ গ্রের পত্ন হইরাছিল: পরে আলুমানিক ১২০০ খঃ পোপ ৩র ইনোলেন্ট **७ भटा ১२११ -- ১२৮० थ होट्स ७३ निटकानाम वह वटम खेवाब** আকার পরিবর্ত্তিত করিয়াছিলেন ;) কুইরিনাল-প্রাসাদ---ইহাই বর্তমান ইতালীপতি ইমাসুএলের রাজভবনক্সলে গুলীত रहेबारक। ১৫98 थ डोरम अब ८१११दी जामिनिक श्लोकिका বারা উহার কার্যারত করান, কিছু পরবর্তী পোপগুরের অধি-কারে ৰুটানা ও মদার্গা নামক স্থপতিদিলের বারা উত্তান কার্যা नवावां स्त्र ।

স্থোনেটাইন মুগ।

১৪৫০-১৫৫০ গৃত্তীক্ষ পর্যন্ত রোমের ক্লোরেন্টাইন বুগ।

এই সমরে মিনো গা ফিলোলে বা Mino di giovanni,

Bramante, Baldassare Peruzzi প্রভৃতি প্রসিদ্ধ হৃণতিগণের আবির্জাব ইইবাছিল। ইহাদের জীবছণার রোমীর-শিল্প

কলাবিদ্যার শীর্বছান অধিকার করে। ইহার পর ভিগ্নোলা
(১৫০৭-১৫৭০), ফার্লো মদাণা (১৫৫০-১৬০১), বার্ট্রিনি
(১৫৯৮-১৬৮০), ফার্লো ফটানা (১৮০০-১৭১৪ খুঃ) প্রভৃতি
ক্লোভিগণ স্থাপত্যবিভার উৎকর্ব সাধনে অগ্রসর হইলেও
ভাহা রক্ষা করিতে সমর্থ হন নাই। তথন রোমবানী হাণত্যসৌল্র্র্যা বিশ্বত হইরা মাইকেল আজিলোর চিত্রনৈপ্রণা মোহিত
হইতেছিলেন। তৎক্তে স্থক্ষ রাক্ষেন, কনিষ্ঠ আণ্টানিও
হা সালালোক্সক, সালোভিলো প্রভৃতি চিত্রকরণণ (artist)

অ্ব মনোমত করনা চিত্রে প্রাসাদ নির্দ্যণ করার প্রাচীন স্থাপত্য

वर्डमाम यून ।

ক্লোরেন্টাইন্ যুগের জবসানে ধীরে ধীরে কএকজন স্থপতির জাতার ঘটিলেও চিত্রবিদ্যার প্রাধান্য ও উৎকর্ষতা নিবছন রোমক স্থলনিয়ের পরিবর্তে কল কলাবিদ্যার আশ্রম গ্রহণ করিবলা। সঙ্গাত শান্তের ও চিত্রবিদ্যার যথেষ্ট আদর বাড়িতে লাগিল। নানা বাছ্যন্ত করিয়া রোমকগণ মোহন বাঁশরী নিনাদে জনসাধারণের চিত্ত হরণ করিয়া লইলেন। আর কেহ প্রাচীন স্থাপতা শিরের পক্ষপাতী রহিলেন না। এই সময়ে যে সকল অট্টালিকা নির্মিত হইরাছিল; তাহা ক্ষান্তার ও শ্রীহীন।

খুঁইার ১৭শ ও ১৮শ শতাব্দে রোমকদিগের পছল্প করিবার শক্তি লোপ পার। এই সমরে Cosmati বা Renaissance খুগের শিরচাত্ত্য আলে অট্টালিকাদি পরি-শোভিত করে নাই—সামান্তরূপে অট্টালিকাদি প্রথিত হইলেও তাহাতে বাসিলিকাসমূহের সরল গান্তীর্য রক্ষিত হর নাই।
১৯শ শতাব্দে উহার কতক পরিবর্তন দুই হইতেছে। ১৮৭০ খুইালে রোমরাজ্ঞধানীরূপে পুনর্গ ইতি হইবার পর, রাজকর্মচারিগণ স্থাপতাশিরের উন্নতিসাধনে বন্ধপরিক্তর হন। কোসোপরি স্থাপিত Cassa di Risparmio নামক প্রালাদ ও টাইবার নদীতীরত্ব ক্রক্টী অট্টালিকা প্রালাকা প্রয়াল পিরোক্তা কর্মান লিকোসিরার একটা অট্টালিকা ব্রামান্টের পালাজ্যো পিরোল প্রালাদের এবং বিপ্রত হেটেল ভিনিসের একটা মূক্ষর প্রালাদের অম্কর্মপ প্রথার নির্দ্ধিত ইইবাছে। এতারির বর্তমান রাজপুরুবগণের বত্বে

S. Paolo fuori le Mura র বাসিদক। প্রভৃতি প্রাচীন কীর্তির জীর্থসংস্কার সাধিত হুইতেছে।

এখানকার নিউজিরন ও চিত্রদন্দির (galleries) দেখিবার জিনিস। নিউজিরন গৃহে ভাঙর শির্মনৈপুণাপূর্ণ প্রতিস্কিন্স্থ এবং চিত্রদন্দিরে নানালেশীর স্থানিত চিত্রাবানী আছিত রহিরাছে। বিভারতির প্রতিজ্ঞান্ত্রক এখানে কর্মী সুন্দর পাঠাগার নির্মিত ইইরাছে। প্রকাশর দেখ।

দ্বামবিধি ও সাহিত্য।

রোমক্লাতি সভাতামার্কে আরোহণ করিরাই সভালাতির গৌরবজ্ঞাপক কতকগুলি রাজবিধির প্রবর্জন করিরা বান, উহাই ইতিহাসে "Roman Law" নাম পরিচিত। প্রথমে পেট্র-সিরান, মিবিয়ান ও ক্লারেন্ট এই তিনটা বিভাগে রোমকলিগকে বিভক্ত করিরা রাজশাসনপ্রথা প্রচলিত হইরাছিল। যথন রোমীর সৌভাগ্যমার্জও বিমলজ্যোতিতে মধ্যগগনে আসিরা সমুপর্থিত হইরাছিল, তথন আগাঠাস্-কেন্তভূত রাজনীতি রুরোপীর সমগ্র সভ্য জগৎকে আলোকিত করিতে সমর্থ হইরাছিল। কমিসিরা, ট্রিউন, মেজিট্রেসি, প্রিটর, কুইইর প্রভৃতি রাজবাবস্থাম্পারে রোমরাজ্য শাসন করিয়াছিলেন। সেই রোমীয় জ্রিম্পুডেল আজিও সংস্কৃতরূপে সমগ্র মুরোপীর সভ্যজাতির শাসনপ্রকৃতিতে বিরাজিত রহিরাছে।

রাজবিধিপ্রণয়ন সাপক্ষে রোমীয়-সাহিত্যের (Roman Literature) অভালয় হয়। খুটপুর্ম ২৪০ হইতে ৮০ অব্ধ মধ্যে লিভিয়াস আন্তোনিকাস, নিভিয়াস, প্রোটাস, ইয়িয়াস, পোর্সিয়াস, কেটো, টেরেন্স, লুসিয়াস, প্রভৃতি আবিভূতি হইয়াছিলেন। বিভীয় বুলে অর্থাৎ ৮০ হইতে ৪২ খুই পূর্বান্সের মধ্যে সিনিয়ো, সিব্লায়, হটেন্সিয়াস, ও সালাই, লুক্রেসিয়াস ও কাটুলাস প্রভৃতি প্রনিম্ধ বান্মিগণ অন্তগ্রহণ করিয়া রোমীয় সাহিত্যের উরতি সাধন করিয়া বান। তদনস্তর অগাইান যুগে (৪২ খুঃ পুঃ হইতে ১৭ খুঃ আঃ) তার্জিল, হোরেশ, টাইবুলাস, প্রোপার্সিয়াস, ওভিন্ প্রভৃতি ক্ষকবি ও ঐতিহাসিক লিভি প্রায়্রায়্ প্রতিহাস, নেনেকাছয়, সুকান, কুই কিলিয়াস, মার্লাল, সেনেকাছয়, সুকান, কুই কিলিয়াস, মার্লাল, ভালেরিয়াস্, মার্জিয়াস, পেট্রোনিয়াস, ক্রাসিয়া, ভেলেরিয়াস্ য়াকাস, মিনি প্রভৃতি বহু ঐতিহাসিক, পদার্থ-বিন্দ, ক্রিমাছিত্য লেথক অন্তগ্রহণ করিয়াছিলেন।

ট্রাজান ও হান্তিয়ানের রাজ্যাবসানে রোমক-নাহিত্যরও একরণ অবসান ঘটে। ক্জিনালের মৃত্যুর পর ধুরীর ২র শতাকে ক্ষটেনিয়ান্ অলাস পেলিয়ান্; ৪র্থ ও ৫য় শতাকে ডোনেটান, সার্জিয়ান্ ও মাক্রোবিয়ান্ নাহিত্যভাগুার অলম্ভত করিয়াহিলেন। একটা সাধিকভাব।

শ্রোজহুরণ (রী) ব্রিভাগ। (রনেক্রসারক)
রোজহুর্ব (সং) সোহাং হবং। রোজাক।
"বেপপুক পরীরে মে রোজহুর্বক আহতে।" (বীড়া ১/২১)
সোকাহুর্বক (রী) রোজাং হবঁগং। ১ রোজাক। (অলা)
"বাংলাবিনমন্ত্রীলনভুতং রোজহুর্বক ।" (বীড়া ১৮/৭৪)
(সং) ৩ প্ত, ইনি ব্যাসাহেবের শিবা।
"অল তে সর্বারোজনি কচনা ছবিভানি বং।
বৈপারকত ভগবংস্কতো বৈ রোজহুর্বপঃ।
ভবস্কমেন ভগবান্ ব্যাজহার ব্যবং প্রাকৃঃ।" (কূর্বপু৽ ১ আঃ)
[রোজহুর্বপ পল মেপ।]
৪ বিভীতহুরুক। (বৈভক্তনি)

রোমাঞ্চ।
কোমাঞ্চ (ক্লী) রোম ইতি জাখ্যা বহা। শাক্তবলবণ।
কোমাঞ্চ (পুং) রোমাং জকঃ উদ্গমঃ। রোমহর্বণ। ইহা

ব্লেম্ছবিত (নি) রোমহর্ব লাডার্থে ইডাচ্। স্লাড়পুরুক,

"দ্বস্তঃ বেদোহধ রোমাঞ্চঃ শরক্তমোহধ বেণধুঃ। বৈবর্ণ্যমশ্রপার ইত্যথে বাদ্বিকাঃ মৃত্যঃ এ" (সাংদং অ১৬৬) হর্ষ, অমুত ও ভরারি হইতে রোমাঞ্চ হইরা থাকে। "হর্ষামুতভরানিভ্যো রোমাঞ্চো রোমবিক্রিরা।"

্নামাঞ্চ কী(ন্) (পুং) নাগভেদ।
রোমাঞ্চ কী (ন্) (পুং) নাগভেদ।
রোমাঞ্চিকা (ত্রী) রোমাঞ্চ উৎপাঞ্জনোঞ্জন্ম ইতি রোমাঞ্চ

ঠন্। কলজীবৃক্ষ। (রাশনি॰)
রোমাঞ্জিত (জি) রোমাকঃ সঞ্জাতোহজেতি, রোমাক (তদত সঞ্জিত তারকাদিতা ইতচ্। পা ধাহাতে) ইতি ইতচ্। আতপ্নক, রোমাকবিশিষ্ট, পর্যার—ছইরোমা। (জিকা॰)

> "দ চ শান্তিৰ্গতে বক্ষৌ পরিস্থাইন চেডসা। হর্ষরোমাঞ্চিতভম্ম প্রবিবেশাশ্রমং গুরোঃ॥"

> > (মার্কণ্ডেরপু• ১০০।২০)

রোমান্ত (পুং) হতের উপরিভাগ।
রোমান্ত্রীস্কুর (পুং) জরবিশের। হামজর। এই করে প্রতি
রোমকুশে হাম নির্গত হইরা থাকে। ইহাতে কফ ও পিত্তের
আধিষ্য এবং কার ও জনতি হর।

"রোবকুণোরতিনমা রোগিণাঃ কমপিওলাঃ। কাসারোচকসংখুকা রোনারো অরপূর্বিকাঃ।" (মাধুরনি॰) ব্রোমানী (বী) রোনাং জানী-ব্রেণিগ্র। ১ বরংস্থি। (প্রদানা) রোনাং জানী। ২ রোধাবনী। "নিধিনিঃকেশহানজোশরি জিলাগনিব দ্বতা নিহিতা।
লোভয়তি তব তন্দরি অধনজনীয়ণনি রোমাণী।"
(আজানগুণতী ৮০৮)

রোমানু (গুং) রোমবিশিষ্ট শ রোমন্-আল্যা । শিঞ্চানু। রোমানুবিউপী(মৃ) (গুং) রোমানুরিব বিটপী বৃষ্ণঃ। কোষণ-সেশগ্রসিদ কুষীগুল। (রাজনি)

স্করামানলী (জী) রোমাং আবলী ha নাভির উর্জ লোমশ্রেণী,
পর্যার—স্কোনলভা, রোমালী, গোনলানি। এই রোমানলী, থোকনের প্রারম্ভে হইরা শাকে।

শনীরাভীরবৃশাগভা প্রবণরোঃ গীরি ক্রুর্মেররোঃ
প্রোক্তে নয়নিদং কিবৃৎপলমিছি কাড়ং কর অতি।
কৈবালাব্রশকর শনিবৃধী রোমাবলীং গ্রোছতি
প্রারাশীতি মৃহং সধীমবিদিডপ্রোণীভরা পৃক্তি ৪" (রুমমন্তরী)
রোমাপ্রের্মকলা (ত্রী) রোমাত্রবং কর্মমন্তাঃ। বিভিন্তির পুণ।
রোমোলগতি (ত্রী) রোমাত্রবং কর্মমন্তাঃ। বিভিন্তির পুণ।
রোমোলগতি (ত্রী) রোমাত্রবং ক্রেমাক।
রোমোলগতি (ত্রী) রোমাত্রবং ক্রেমাক।
রোমোলগতি (ত্রী) রোমাত্রবং। রোমাক।
রোমোলগতি (ত্রী) রোমাত্রবং। রোমাক।
বোমোলভা (ত্রী) রোমাত্রবং। রোমাক।
বোমোলভা (ত্রী) রোমাত্রবং। রোমাক।
বিভারের্মাত্রবংশতির্মাত্রবাসক্রতগঙাঃ।" (প্রবোধচজো। ১ অ০)
বোজিত্রবেক্সট্রের ভক্তবোক্তর্যভার ব্রেশেতা।

রোম্বিল্পবেক্ষটবৃধ, তর্কভাষাভাষত্রণেতা। রোমাফ্ (আরবী) গৃহের ছার্দ। (দেশল) গৃহের চতুপার্শহ চত্তর। রোম্ববণ (মী) অভিশন শব্দ, ভীষণ শব্দ।

ব্লোক্তক (क्री) জনপদভেদ।

ব্রোরুদ্ (জী) স্থ-বঙ্রোর্থ-জ-টাপ্। অভিশন্ন রোধন । ব্রোলা (পুং) > পানীরামলক। (শক্ত>) ২ আন্তেট্টা। ৩ তালীপপত্র।

সোলাদেশ (পুং) একজন চিত্রকর। (কথাসরিৎসা• ৫০।৩৭) রোলান্থ (পুং) রোতীতি ক-বিচ্, রেট কুলন্ সন্ সর্তি স্থানাৎ স্থানান্তরং গচ্ছতীতি রো-লম্মচ্। এমর। (একা.৮)

(ब्राम्परमा (ब्री) रेक्स ।

(त्राभनाहि (शावनी) सारनाक्यानांत वाक्सा ।

রোপান আরা (বেগন) নাগলস্থাট্ পাংলহানের কনিচা কল্পা। ১৯৬৯ গুটালে নিলীবালধানীতেই তাঁছার সূত্য হয় এবং পাংলাধানাবাদের স্বরচিত্ত রোগন সারা উভানে জাছার স্মাধি বিভয়ান সাছে।

(त्रांतान केटकोला त्रख्य कल, तमारे नरका गांत्स व्यागृशील अवका अवतातः देशव ध्यक्त नाम व्याप्त की देनि २१२२ थः विकी अवस्थानीय व्याणकारी क्यूबांत क्रिकारे त्यांत्रकी मन्तित् निर्माण क्यारेवाधितानः। क्युब्याव ३,२२० क्षरेटल देनि उनग- মানগণের শিক্ষার্থ দিল্লীর কাজিশাখার নিকটে মন্জির নির্বাণ করান। উচা রোপন উন্দোলা মনজিন নামে থ্যাত ও সোণার পাত দিরা মন্তিত ছিল। এই বিজ্ঞামন্দিরের ছাদে দীড়াইরা পারত-পতি নাদিরশাহ দিলীবাসীর ইত্যাকাপ্তসাধন করিতে আদেশ দিরাছিলেন। ১৭৩২ খুটাকে রোপন উন্দোলার মৃত্যু হটে। রোশন উদ্দোলা (নবাব), হার্লরাবাদের নিজামের প্রাভা, ইনি স্থান্দিত ও সদাচারী ছিলেন। ১৮৭০ থ্যা তাঁহার মৃত্যু হব। শ রোশনচৌকী (পারশী) সানাই প্রভৃতি বর্র্যোগে ঐক্যতান বাদন। নহবৎ বেমন এক্ছানে পাটাতনের উপর বসাইরা বাদিত হয়, রোপনচৌকী সেইরপ বর্ষাত্রা বা দেব্যাত্রার সন্থুথে একটা চৌকীতে বাজাইতে বাজাইতে গমন করে। রাজারা বিপ্রামার্থ অন্তঃপ্রে গমন করিলে সেই গৃহহর চতুর্দিকে রোপন-চৌকী বাজান হয়।

বোলেনাব্দে, বালালার বিপ্রাজেলার অন্তর্গত একটা ভূসলাভি। ভূপরিমাণ ৫৮> বর্গমাইল। ৫০টা পরগণা লইয়া এই বিভাগ গঠিত। পার্বাভারিপ্রার রাজা ইহার অধিকারী। ইংরাজগবর্মেন্টকে বার্ষিক ১৫০৯১০ টাকা রাজ্য দিতে হয়।
রোলেনীয়া, মুসলমানধর্ম্ম-সম্পারভেদ। বরাজিদ্ আন্সারী নামক জনৈক মুসলমান লাধু ইহার প্রবর্তক। তিনি পীর-ই-বোশান নামে আফগান সমাজে পরিচিত ছিলেন।

বয়াজিদ কান্দাহার সীমান্তর্বতী কানিগুরম জেলার বুমুদ্-বংশীর আফ্গান জাতির মধ্যে আবহুলা নামক একজন বিঘান ও স্বধর্মনিরত মুগলমানের পুত্ররূপে জন্মগ্রহণ করেন। পিতার যদ্ধে উপযুক্ত শিক্ষা লাভ করিয়া তিনি গর্বিত হইয়া উঠিলেন এবং অর্থচিন্ডায় অখব্যবসায়ী হইয়া সময়কল রাজ্যে গমন করেন। এখান হইতে হিন্দুখানে প্রত্যাবর্ত্তনকালে কালিঞ্জরে মোলা স্থলেমানের সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হয়। তথন হইতেই তাঁহার ধর্মবিশাস পরিবর্তিত হইতে থাকে। পিতা পুত্ৰের এই অধর্মাচরণে ক্রম হটরা তাঁহার গাত্রে অস্তাবাত করেন ও পুত্রকে ইসলামধর্মের আদেশসমূহ পালন করিতে প্রতিশ্রুত করাইরা লন, কিন্তু ভারাতেও প্রত্যের বিক্রুত চিত্ত পরিবর্ত্তিত হর নাঃ ক্ষতভান আরোগ্য হইবামাত্র ডিনি জন্মভূমি পরিত্যাগ করিয়া নিন্গহর নামক ছানে আসিয়া ধর্মত বিভারে আয়াস পান। ডিনি হুমায়ন পাতশাহের পুত্র মীর্জা মহত্মদ হেকিমের সমসামরিক ছিলেন। মোগলসমাট অকবর খারের সমকালে ১৪৯ হি: ডিনি প্রাধান্তলাভ করিরা শীর ধর্মত হাপন করেন। খাঁ দৌরানু ইহার পূর্কে কার্লে দীর্জা মহন্দ্রৰ হেকিমের সভার মিঞা বরাজিদের সহিত বিচারে ছৎকালীন মুসলমান সাধুগণকে পরান্ত হইতে পেখিয়াছিলেন।

अवान, वहासिन भार्रभागांव वर्गविष्ठांमध भिका करवन नारे, কিছ পূর্বজন্মের অ্রুডিঙণে দর্শনাদির মীমাংসাত্র ভীহার ক্ষাত্রে ছিল, তিনি কোরাণের প্রসিদ্ধ বাক্যসমূহের অতি লর্গ ব্যাখ্যা করিরা সাধারণকে ব্যাইরা দিতেন। তাঁহার প্রতি-কথার জ্ঞানগর্ড উপজেশ বিরাজ করিত। তিনি 'আত্মবাদ' প্রচার করিরা গিরাছেন। তাঁহার মতে বে হিন্দু আত্মার স্বরূপ ব্রিয়াছে, সেই ব্যক্তি মুসলমান স্থাপেকা পুঞা। যে ব্যক্তির আত্মান উপন্থিত হর নাই এবং যে আত্মার অবিন-খরত খীকার করে না, সে জঞ্জ: স্কুতরাং সেই জহত্বারবিষ্ট ব্যক্তির ঐশিক ঐশর্যোর কোন অধিকার নাই। ঐরপ অজ্ঞ ও জীবনাড ব্যক্তির বংশধরেরাও বধন মৃতবং আচরণ করিবে, তথন জীবিত ও জানীরাই ঐ সম্পত্তির প্রকৃত উত্তরাধিকারী বলিরা গণ্য হইবে। এই সংস্কারের বলবন্তী হইরা তিনি অনেকগুলি অঞ্জলোকের প্রাণ সংহার করিতে আদেশ দিয়া ছিলেন এবং তিনি ও তাঁহার পুত্র চতুইর প্রথমে দল্লাবৃত্তির ছারা আমীর ওমরাহ প্রভৃতি ধনাত্য মুদলমানগণের যথাসর্কান্থ হরণ করিরাছিলেন। লব্বসম্পত্তির এক পঞ্চমাংশ ডিনি একস্থানে সঞ্চর করিয়া রাখিতেন এবং আবক্তক মতে শীয় বিশ্বস্ত অক্সচরবর্গের মধ্যে বিতরণ করিতেন।

দস্যবৃত্তিতে শিপ্ত থাকিলেও বয়াজিল্ বা তাঁহার পুত্র চতুইর
কথনই ধর্মপথন্তই হন নাই। তাঁহারা সংযমী ও জিতেন্ত্রির
ছিলেন, কথনও কোনরূপ কুকার্য্যে নিরত হন নাই। তিনি
একেশরোপাসনাকারীর ধনলুঞ্চন বা তাহাকে কোনরূপ
অবথা পীড়ন করিতেন না। তিনি এই সমরে ইস্লামধর্মের
ক্রিরাকর্মের্য বিশেষ আহাবান্ ছিলেন। নিত্য ৫ বার নিমান্ত্র
করিতেন। এমন কি, একেশরে বিশাসী তির অস্ত কাহারও
হত্তে নিহত পশুমাংস ভোজন করিতেন না। তিনি একদিন
আপনার পিতা আবহুরাকে বলিলেন যে, পরগন্ধর মহন্মনবণিত সরিয়াৎ রাত্রির স্তার, তরিকাৎ তারকার স্তার, হকিকৎ
চক্রের স্তার এবং মারিকৎ প্রত্যের স্তার। আত্মাকে উজ্জল করিবার
মারিকৎ তির আর অস্ত উপার নাই। ইসলামধর্মের সরিরাৎ বা
পঞ্চাল সাধন মুসলমানমাত্রেরই কর্তব্য। নিত্য ঈশরের নামক্রপ,
ভক্ষনগান এবং তসবিরা ও তহনীল্ করা মুসলমানমাত্রেরই কর্তব্য।

বরাজিদ্ রচিত কএকখানি উপদেশ গ্রন্থ পাওরা বার।
উহা আরবী, পারদী, হিন্দী ও পেশু (আফ্গানী) ভাবার
লিখিত। তাঁহার "মক্তদ-অল্-মুমেনিন্" গ্রন্থ আরবী ভাবার
রচিত। ঐ গ্রন্থে লিখিত আক্রু, পরম পিতা পরমেখর মিঞাজী
অব্রাইলের খারা তাঁহাকে ঐশ-প্রেম জ্ঞাপন করিরাছিলেন।
তাঁহার 'ধারর-অল্-রিধান্' নামক গ্রন্থানি উপরোক্ত চারিটা

ভাবার দিখিও। ইহাতে বরাজিদের প্রতি স্বরং প্রমেশ্বরের উপরেশের কথা আছে। হাল্নামাথানি তাঁহারই ধর্মতের ইতিরুত্ত। এই ধর্মত অনেকটা স্থাক্ষিতের অফুরুণ।

বর্ষাঞ্জিদের এই অভিনব ধর্মতে বিশ্বস্ত হইরা দলে দলে আফগানগণ তাঁহার শিবাদ গ্রহণ করিল। আব্ল, কালাহার, রুস্কলৈ প্রতৃতি প্রদেশবাসী তাঁহার লভ গ্রহণ করিরা একটা শক্তিসম্পন্ন আফগান সম্প্রদারের স্পষ্ট করিল। সেই উজত সাম্প্রদারিকগণ ভগানীক্রন সমূদ্ধ মোগলসারাজ্যের বিদ্ধাচনণ করিতে কুটিত হর নাই। স্রাট্ অক্বর্গান্তের রাজক্ষাল হইতে শাহজহানের সমৃদ্ধির অবসান পর্যন্ত রোলোনিরাগণ দিরীখরের প্রতিপক্ষভাচরণ করিরাছিল। বরাজিদের শীবিতাব্যার এই সম্প্রদার শক্তির শীব-সীমার উপনীভ হয়। তথন ভাহারা ধর্মগঞ্জ বরাজিদকে আপনাদের অধিনারক করিরা অক্বরের শান্তিমর রাজ্যের শান্তিজ্ঞ করিরাছিল। আফগানি-ছানের অন্তর্গত ভাতাপুরে ভাহার সমাধিমন্দির বিশ্বমান আছে।

বরাজিদের ওমারশেও, কামালউদ্দীন, নুরউদ্দীন ও জেলালউদ্দীন নামে চারিপুত্র এবং কামালথাতুন নামে কন্তা ছিল।
মিঞা বরাজিদের মৃত্যুর পর জলালউদ্দীন ধর্মগুরু হইরা গনিতে
উপবেশন করেন। ১০০৭ হিজিরার তিনি গিজনী অধিকার
ক্ষরিলে অক্ষর-প্রেরিত সেনাপতির হত্তে নিহত হন। তাঁহার
মৃত্যুর পর ওমারশেওর পুত্র মিঞা আহাদাদ গদীতে উপবেশন
করেন। তিনি ১০৩৭ হিজিরার জাহালীরের সেনাপতির হত্তে
নবাগড় মুর্গে নিহত হন। তাঁহার শিব্যমগুলী আহাদ্ বা ঈশ্বের
জ্বতার বলিরা বিশাস করিতেন।

অতঃপর আহাদাদের পুত্র আবহুল কাদের গদীতে আরোহণ করেন। তিনি শাহজহানের সন্তার বিশেব সমাদৃত হইরাছিলেন। ১০৪৩ হিজিরার তিনি কালকবলে প্রতিত হইলে পেশাবরে সমাধিত্ব হন। ইহার পর মোগলের বড়বত্তে একে একে বরাজিদবংশ লোপ পার। শাহজাহানের রাজতকালে নৃরউদ্দীনের পুত্র মীর্জা দৌলভাবাদ বুদ্ধে নিহত হন। জালাল উদ্দীনের এক পুত্র করিমদাদ মোগল-সেনাপতি সৈরদ খাঁর কৌশলে ১০৪৮ খুটাকে তবলীলা শেব করেন এবং অপর পুত্র আল্লাদাদ্ খাঁ রনিদ্ধানি উপাধি সহ দাকিশাতোর ৪ হাজারি মন্সব্দার হন। ১০৫৭ হিঃ ভারতে তাঁহার মৃত্যু ঘটে।

জোষ (পুং) কব্-খঞ্। ১ ক্রোব।

"মুখ্সি কিং সানবতীং ব্যবসায়াদ্ খিওপমস্থাবেগেতি।

ক্রেছতবং প্রসাধিং সাব্যেকুক্র রোব-উন্মিখতি।"

্ (আহ্যানগুণতী ৪৪৯)
স্থোষ্ণ (পুং)রোহতি ভঙ্কীলঃ কব (কুণ্মঞ্জার্থতাত । পা

ভাষা-২১) ইভি যুচ্। ১ পারন। ২ হেমবর্ষণোপল। (মেনিনী)
৩ উবরভূমি। (ত্রি)৪ ক্রোধন।
ক্রোধণতা (ত্রী) রোবণত ভাবা ভল্-টাপ্। রোবণের ভাব বা
ধর্ম, ক্রোধ।
রোধময় (ত্রি) রাগম্জা।
রোবাক্রেপ (পুং) ভীতিপ্রদর্শন।
রোবাব্রোহ্ (পুং) দেবাহার ব্রকালে দেববোর্ভেল।
রোবিন্ (ত্রি) কব-ইনি দ রোবর্জ, কর।
রোহাই (পুং) রোহভীতি কর-আচ্। ১ অকুর। (ত্রি) ২ রোহনীর।
পভেন রোহমারর প নেধ্যাসঃ (শুরুবর্ক্ ১০)৪১)
রোহং রোহনীরস্বর্গং (বেনদীপণ)

রোহক (পুং) কহ-বুল্। > প্রেডভেন। (বি) ২ রোটা।
"নিনীবালীমন্ত্মতিং কুহুং রাকাঞ্চ প্রব্রতাং।
বোজ্যাণি চকুবাহাণাং রোহকাংক্তর কন্টকান্ ॥"(ভারণ ৮০৩৪।৩২)
রোহগ (পুং) পর্ব্বতভেদ। (কটাধর)

রোছণ (রী) রোহত্যনেনেতি কহ-করণে দ্যুট্। > ৩ফ। (রাজনি॰) ২ জন্ম। ও প্রান্থজাব। (পুং) রোহত্যমিরিতি কহ অধিকরণে দ্যুট্। ৪ পর্বাতবিশেব, পর্যার—বিদ্রাজি।

"অপারপুলিনস্থাীভূবি হিমালয়ে মালয়ে নিকামবিকটোরতে হরথিরোহণে রোহণে। মহত্যমবভূধরে গহনকলরে মন্দরে ভ্রমন্তি ন পতস্তাহো পরিণতা ভবংকীর্জরঃ॥"

(त्रारक्ककर्णभू • ६२)

রোহণাদ্রুম (গং) > চলনবৃক্ষ। ২ মগরাগুরু । (বৈছক্ষি॰)
রোহণা, মধ্যপ্রদেশের বর্জান্তেলার অন্তর্গত একটা নগর।
আক্ষা৽ ২০° ৩২ ৩০ উ: এবং জাঘি৽ ৭৮° ২৪ পু:। নগরের
সন্মুখে একটা কুদ্রনদী প্রবাহিত আছে, উহাতে সমর সমর
ভরানক বস্তা হর বলিরা, তীরভূদ্দে একটা বিভৃত বাধ আছে।
ঐ বাস্কামর তীরে প্রতিস্থাহে হাট বসে। প্রতিবংসর
মাবমাসে এখানে একটা মেলা হর। শতান্ধ পূর্বের ক্রম্ভলী
সিন্দে নামক জনৈক ব্যক্তি এথানকার হুর্গ নির্মাণ করান।
তিনি হারদরাবাদ ও ভোঁস্লে গ্রহর্মেন্ট হইতে ২০০ শত
আখরোহীসেনা পালন করিবার আলীকারে এই নগর নিম্মন
ভোগ করিবার অধিকার প্রাপ্ত হন। এখানে অহিকেন, ইকু
ও এলাচাদি চাসের উভান আছে।

ব্যোহৎপর্ববা (বী) বিলিদ্বা। (রাজনি॰) ব্যোহতক (রোহিতক), পঞ্জাব প্রনেশের হিসার বিভাগের অবর্গত একটা বেলা। তথাকার হোটলাটের শাসনাধীন। জন্দা॰ ২৮০১ন ছইতে ২৯০১৭ ডিঃ এবং আছি॰ । ৭৬০১৭ ছইতে ৭৭০০- পুঃ মধ্য। ভূপরিমাণ ১৮৯৯ বর্গমাইল।

গোহানা, ঝালর, শাঁপনা ও রোহতক নামক চারিটা উপবিভাগ নইরা এই জেলা গঠিত। ঝালর, শাঁপনা ও রোহতক তহদীলের সংখোগের মধাহলে গুলানা ও মহরাণা নামক সামস্তরাজ্যবন্ধ অবস্থিত। রোহতক নগরে জেলার বিচার-স্বর প্রতিষ্ঠিত।

বধুনা ও শতক নদীর উপত্যকা দেশকে বিচ্ছিন রাখির।
বৈ বিভ্ত অধিত্যকা ভূমি বিভ্নান রহিরাছে, তাহারই ঠিক্ নধ্যক্ষেপে এই জেলা অবস্থিত। এখানকার প্রাকৃতিক সৌল্প্র্যশোভা সাধারণের চিত্ত হরণ করিতে পারে না। তবে পার্বত্য
ভূমের ক্ষ্তে জলনে বহুশ্কর, হরিণ, খরগোস এবং বহুকুট,
পেক প্রভৃতি পণ্ড ও পক্ষী প্রভৃত পরিমাণে বিভ্যান খাকার
মুগরাপ্রিয় শিকারীদিগের বিশেষ আনন্দবর্দ্ধক হইরাছে।

পূর্বে এই স্থান প্রাচীন হরিরানা রাজ্যের অস্তর্ভুক্ত ছিল अवर मिंह शाहीन कारण ममुद्रिमाणी महीम मगत्रहे हेहात ध्राधान বাণিজ্যকেন্দ্র ছিল বুলিয়া সাধারণের বিখাস। প্রসিদ্ধ সাহাবুদীন খোরী ভারতবিজয়কালে এই স্থান অধিকার ও ধ্বংস করেন। তদনস্তব ১২৬৬ খুপ্তাব্দে উহা পুনরার সংস্কৃত হয়। বংসর হইতে ১৭১৮ খুটাম্ব পর্যান্ত এই স্থানের কোন ঐতি-হাসিক প্রসিদ্ধির কথা গুনা যার নাই। শেষোক্ত বর্ষে সম্রাট ফরুথসিয়ার সমগ্র হরিরানা বিভাগ স্বীয় মন্ত্রী ককন উদ্দৌলাকে দান করেন। অমাতাপ্রধানও পক্ষান্তরে ঐ সম্পত্তি ফৌজদার খাঁ। নামক এক জন বেল্টী ছানবাসী ওমরাহকে দান করিয়া ১৭৩২ খঃ অ: তাঁহাকে ফরুক নগরের নবাবী মসনদে অভিবিক্ত করিলেন। নতন নবাব রাজতত্তে উপবেশন করিয়া বর্তমান হিসার, রোহতক ও গুরগাঁও কেলার কতক অংশ এবং পাতিয়ালা ও ঝিল রাজ্যের কঁতক অংশ শাসন করিতে থাকেন। তাঁহার পুত্র ১৭৬০ খুটান্দ পর্যান্ত উহা নির্বিরোধে ভোগ করিয়াছিলেন। তদনস্তব দিলী সামাজ্যের অধঃপতনের সঙ্গে তাঁহারও অদৃই-চক্র ভালিয়া পড়িল আলমগীর-হত্যায় ও সম্রাট্ট পাহ আলমের মাম মাত্র সিংহাসনাধিকারে রাজ্যে অরাজকতার লকণ স্থাচিত इहेट नाशिन। भन्नवर्षी वरमात्र भागिभथ त्रगत्कात्व महानाहे-শক্তির অধঃপতনের সকে মোগলশক্তিও হতবল হইল। ফরুখনগরের নবাব প্রতিপালকের প্ররক্ষার জ্ঞাপনাকে চুর্দ্ধণা-গ্ৰন্থ বলিরা অভুযান করিলেন। ভিনি সামর্থারীন হইরা নাম মাত্র মসনদের শোভাবর্জন করিতে লাগিলেন। এই সমরে সোভাগাৰেৰী শিথসদাৱগণ সম্ভাবৃত্তি ও অর্থলাসসা ছাড়িয়া ब्राबा व्यवभूर्सिक बांबनाठ दानात मामामित्वन क्राबन, छाहारक উত্তরোত্তর সবাব বিপর্যাত হইরা অবশেবে ১৭৬২ প্টালে ভরতপুরের জাটনর্জার জরাহির নিহে কর্ক রাজ্যবহিছত হইরাছিলেন।

ইহার পর প্রার ২০ বংসরকান উত্তর ভারতের অরাজকতানিবছন হরিরানার মানারপ বিশুখনা আনিরা সম্পৃথিত হয়।
নবাব কৌজলারের পূজ কিছুকালের অন্ত গৈতৃক নুল্পতি অধিকারপূর্থক প্ররার রাজ্যশাসনে প্রের্ড হন। অতঃপর নজফ্বাঁ এই স্থান অর ভরিরা আপনার অনৈক অন্তরমে দান
করেন। তাহার পর সর্গানারাজী বেগম সম্প্রর ভাগ
ভরতে থাকেন। ১৭৮৪ খৃটাকে মহারাইগণ এই সকল
বিশ্রুলা হইতে রাজ্যরকা করিতে সমর্থ ইলেন বটে, কিছ
ক্রস্ত্র নিল্লোজি শিথদিগকে কমন করিতে পারিলেন না।
শিখাল উপর্যুপরি আক্রমণ করিরা হানীর অধিবাসির্ক্রমে
উত্তাক্ত করিয়া তুলিক। অবশেবে সিক্রেরাজ হরিরানা বিভাগের
অধিকাংশ কৈথান ও বিন্দের স্কারকে সমর্থণ করিরা উপত্রবের
হত্ত হউতে পরিত্রাণ লাভ করিলেন।

ইত্যবসরে সোভাগ্যাহেষী সৈনিক কর্জ টমাস হরিয়ানার অপরার্জ হতপত করিয়া একটী জলপথ স্থাপনান্তর স্বরং রাজ্য শাসন করিছে লাগিলেন। তিনি খাজরের নিকট জর্জাগড় নামক স্থানে ও হিসার জেলার হাঁসিতে চুইটী তুর্গ নির্ম্পাণ করাইয়া আপনার অধিকার স্থান্ত করিয়াছিলেন। ১৮০২ খুটাকে করাসী সেনানায়কেয় অধীনে পরিচালিভ মহারাষ্ট্রদল টমাস্কে রাজ্য হইতে বহিদ্ধৃত করিয়া কেয়। তৎপদ্ম বর্ষে ইরোজ সেনাপতি হওঁ লেক শতক্র হইতে শিষালিক পাদমূল পর্যাপ্ত ইরোজশাসনভুক্ত করেম।

এই সমরে কৈথন ও নিজের শিথসর্চারগণ এই জেলার উত্তরাংশ অধিকার করিরাছিলেন। ইংরাজ্জাজ ঝাজরের নবাবকে বন্ধিণ, লাড়ি ও বাহাত্রগড়ের নবাবকে পশ্চিম এবং কুজানার নবাবকে মধ্যতাগ শাসনার্থ তাগ করিরা দেন। শেবাজে নমাব শিব ও ভট্টজাতির উপর্গুপরি আক্রমণে উজ্যুক্ত হইরা রাজ্ঞাশাসনে অসমর্থ হইলে ১৮১০ খুটালে সেই রাজ্যে অভ্যান জেলার ক্রেটা পরগণা ইংরাজের অধিকারভুক্ত হইরাছিল। ১৮১৮ খুটালে কৈথল-রাজের মৃত্যুর পর এবং ১৮২০ খুটালে বিজ্যের স্থানির নিকট কভক ভূতাগ কৌশনে হত্যাত করিরা রোহতক জেলা গঠিত হয়। শেবাজ্ঞ বর্কেই হিসার ও নির্বা বিভাগ লোহতক হইতে বিভিন্ন এবং ১৮২৪ খুটালে পাণিপথ (মর্জমান কর্গাল) জেলা স্বতর নাসনভুক্ত করা হয়।

১৮৩২ পৃষ্টাৰ পৰ্যান্ত দিলীবাৰুধানীত ইংবাৰ বেসিডেন্টের অধীনে একজন পৰিটিকাল এজেন্ট এম্বান শাসন করিতে थारकन। পরে উহাকে যুক্তপ্রদেশের সাধারণ রাজনিরমের भागनाशीन कदा इत । ১৮৫९ थं होत्सद जित्लाही विद्यारहद नमत **এই জেলা ইংরাজরাজের হস্তচাত হয় এবং ফরুখ নগর, ঝাঝর,** ও বাহাছরগড়ের নবাবত্রর শুরগাঁও হিসারবাসী বিভিন্ন মুসল-মান সম্প্রদারের সহিত মিলিত হইরা এইস্থানে আধিপত্য করেন। পরে শির্বা ও হিসারের ভট্টিসর্দারগণ তাঁহাদের সহিত মিলিত হইলে তাঁহারা রোহতক আক্রমণ ও সুঠন করেন। দিল্লী ইংরাজের হস্তগত হইবার পর পঞ্চাবী সেনাদলের সাহায্যে ইংরাজরাজও এখানে শাস্তিভাপন করিতে সমর্থ হইরাছিলেন। ঝাঝর ও বাহাছর-গড়ের নবাবদ্বর ধৃত হইরা ইংরাজবিচারে দণ্ডিত হইলেন। দিলী-নগরে ঝাঝরপতির ফাঁাসী হইল। তাঁহার আত্মীয়গণ লাহোর নগরে বন্দী রহিলেন। ঝিন্দ, পাতিরালা ও নাভা রাজবিজােহের সময় ইংরাজরাজের সহায়তা করায় পারিতোধিকস্বরূপ কাঝর রাজ্যসম্পত্তির ভাগ পাইলেন। ইহার পর রোহতক পঞ্চাৰগব-মেণ্টের অধীন হয় এবং ১৮৬০ থ ছালে বাঝর জেলার কতকাংশ বোহতক জেলার অস্তর্ভুক্ত হয়।

এখানকার মধ্যে রোহত, ঝাঝর, বতানা, গোহনা কালানোর, মহীম, বেরী, বাহাছরগড়, বরোদা, মওলানা, কান্হৌর, সিংহী, ঝড়থণ্ডা প্রভৃতি নগর প্রধান। রোহতক সদরের লোকসংখ্যা প্রায় ১৬ হাজার।

ব্যবসা বাণিজ্য ও ক্লষিকার্য্যের বর্ণেন্ট উন্নতি দেখা খায়।
ভারাচারা ও ভঙ্গাদারী নামে ছুইটী জমি জমার প্রথা আছে।
যে সকল প্রজারা ক্লষিকার্য্য করে না, ভূমাধিকারী তাহাদের উপর্
একটী স্বতন্ত্র কর ধার্য্য করিয়া থাকেন। উহাকে "কমিনি"
বলে। জনার্ষ্টি জন্ম এখানে প্রান্তই ছর্ডিক্ষ দেখা দিরা থাকে।
১৮২৪, ১৮৩০, ১৮৩০, ১৮৩৭, ১৮৩০-৬১ ও ১৮৬৮-৬৯ প্টান্দে
এখানে ছর্ডিক্ষ উপস্থিত হয়। শেষোক্ত বর্বে এই ক্লোম প্রায়
৯০ হাজার লোকে জনাহারে ও মহামারীতে কালকবলে পতিত
হয়, তাহার উপর গোমহিযাদি বিনত্ত হওরার প্রজাবর্গকে খিশেষ
ক্ষতিগ্রন্থ হইতে ইইয়াছিল।

১৮৭৭-৭৮ খুটাবে পুনরার ছর্তিক দেখা দেয়। এবার ক্লাভাবে বাদ পর্যন্ত জলিরা বায়। হংতরাং গোমহিবাদি থাভাভাবে মরিতে আরম্ভ করে। ছর্কর্ব কাট, ভাই ও মুদলমান প্রকার্থ আরম্ভ করিছ। ক্রিছার ভাকাইভিতে পরিভ্র লা হইরা অবশেবে জাটগণ বাদ্নীর বাজার দুঠন করিল। এই দমর লোকের ছর্দশা এক্লপ হইরাছিল বে, ভাহারা এক পর্যার ক্লপ্ত উইবিক্লয় করিতে এবং একবেলার

কটার অস্থ্য একটা গোন্ধ বেচিতে কুক্টিত হর নাই। একে একে জেলার সকল গো মহিব নই হইরাছিল। ৩৬টা জাতির মধ্যে ৩৪টা জাতি প্রায় লোপ পাইল, রহিল এক কনাই জার ব্যবসারী। বাহার বাহা ছিল একজন ছুরি বসাইয়া তাহা জাত্মসাৎ করিরা লইল এবং অপর পণ দিরা পালার প্রায়গণ্ডা ওজন করিরা জণগ্রস্ত অধিবাসিরুদ্ধকে ফাঁকি দিল।

২ উক্ত জেলার একটা তহলীল। ভূপরিমাণ ১৮৭ বর্গমাইল। এখানে বিলক্ষণ ইক্ষুর চাল আছে।

🗢 🛡ক জেলার প্রাচীন নগর ও বিচার সদর। দিলী হইতে হইতে ৪২ মাইল উত্তরপশ্চিমে হিসার ঘাইবার পথে অবন্থিত। জকা∙২৮*৫€ উ: এবং দ্রাবি॰ ৭৬°৩৮ পূ:। এই নগর জতি প্রাচীন, কিন্তু ছ:খের বিষয়, ইহার সেই প্রাচীন ইভিহাস উদ্বারের উপার নাই। বর্ত্তমান নগরের অনুরে উত্তর্গিকে टथाक्त्रादकां नाम द्वारत वह व्यां नित्वत निवर्णन तथा यात्र । এক সময়ে এই স্থান যে বিশেষ সমৃদ্ধিশালী ছিল, ধ্বন্ত স্তুপগুলি তাহা সপ্রমাণ করিতেছে। কিংবদন্তী 🐗 শ্বন্ধ ১১৬০ খুটান্দে দিলীখর পৃণীরাজের রাজডকালে এই সৌন্দর্য্যভ্রষ্ট নগরের পুনরার জীর্ণসংস্কার হইয়াছিল; মতান্তরে প্রকাশ খুষ্ট পু: ৪র্থ শতাব্দের মধ্যভাগে ঐ স্থান সংস্কৃত ও সমৃদ্ধিসম্পন্ন হইয়াছিল। মোগল সাম্রাজ্যের অধ:পতন সময়ে এই স্থান উত্তরোত্তর ভিন্ন ভিন্ন সন্দারের অধীনে হস্তান্তরিত হয়। ১৮২৪ भृष्टीत्म रेटा देश्तामाधिक्राच अवगै स्माक्रात्म পরিগণিত হইতে थात्क। जनविध छैहा है दाखाधिकात्त्रहे त्रहिन्नात्ह। বৎসর অক্টোবর মাসে এখানে একটা ঘোডার মেলা হয়।

রোহতকী, উত্তরপশ্চিম ভারতবাসী বেণিরা স্থাতির একটী শাখা।

 ्त्रिशानिति। केन् था>२१) देखि कार् > तृकारका। १ तृक्षमाता। (केक्सन)

রোহস্তী (ত্রী) নহ-বছ,, বিশ্বাৎ শ্রীব্। ১ লতাজের। ২ লভামাত্র।
রোহরি, (লোহজী) দিল্লপ্রনেশের শিকারপুর জেলার অন্তর্গত
একটা উপবিজ্ঞান। কোহিছান লইরা ইহার ভূপরিদাণ
৫৪১০ বর্গমাইল। ইহার পশ্চিম ও উত্তরে দিল্লন্দী, উত্তরপূর্বন
এই পূর্বে বহারলাগ্র ও জরশালমীর রাজ্য এবং দক্ষিণে ধরেরপুরজেলা। মীরপুর নগর ইহার বিচার নদর।

ব্ৰেজিডাৰ নামক ৰফুপ্ৰদেশ ও শিকারপুরের সমতক প্রান্তর লইয়া এই বিভাগ গঠিত। মধ্যে মধ্যে বনমালাপরিলোভিত ৰাতিশৈলভেণী বিয়াজিত। ঐ পৰ্যাতগুলি বানুকাত,পমাতা। কালবলে গৃহুণুঠ ও অরণামপ্তিত হইরা স্থানীর শোভাবর্জন করিতেছে। একসমরে সিদ্ধনদী ঐ সকল গণ্ডলৈলের পার্ছ দিরা অরোর নগর পর্যান্ত বিভূত ছিল। পরে কোন প্রাঞ্চতিক পরিবর্ত্তনে স্রোভোগতি ব্ধর শৈলের মধ্য দিরা কিরিয়াছে। সম্ভবতঃ সিম্প্রিক্সক্রিক্স বালুকারাশির বিকারেই ঐ শৈলমালার উৎপত্তি। রেজিভান বিভাগের রেন্ নদী একসময়ে মূল-সিম্বরূপে থরত্রোতে প্রবাহিত ছিল। একণে মন্দগতি হওরার উহার পরিসর ক্ষিয়া গিরাছে এবং উভর পার্থ বাসুকাপূর্ণ মক্রপ্রান্তরে পর্যাবসিত হইয়াছে। এডম্কির চাসবাসের স্কুবিধার্থ এখানে কএকটা কাটা-খাল আছে, তন্মধ্যে পূর্বনারা ১৩ মাইল, লুপ্তি ১৬ মাইল, আরোর ১৬ মাইল, দহর ২৬ মাইল, ম্ব্র ৩২ মাইল, কোরাই ২৩ মাইল, মহারো ৩৭ মাইল ও দেল্রো ১৬ মাইল লখা। এই লকল থাল হইতে স্থানীয় ভূম্যধিকারীরা আবার ৫৭টা খাল কাটিরা স্ব অলাকা মধ্যে লইরা গিরাছেন। এখানে দহরি (২০ মাইল লখা), গরবার (> महिन नषा), कारनत्रभूत (> महिन नषा) ध्वर प्रध्यान (২০ মাইল লখা) নামক করটী বিত্তত বাঁধ আছে।

এখানে মৃত্যাও, কার্ণাসবল্ল ও চুণের বিভূত কারবার আছে। বোট্কী ও ধরেরপুর ধর্কি নগরে উৎকৃত্ব কর্সি, নজনাম, কাচী ও রন্ধনপাত্র প্রেছত ক্রিরা থাকে। রোহরি হইতে নানাবিধ দক্ত, সাজিয়াটী, চুব, তৈল, পদম, রেশমীকাপড়, নীল ও খাজোপরোগী কলাদি বিভিন্ন হানে রগ্তানী হইরা থাকে। নর্থ ওলেন্তার্গ হৈট রেলপ্রের রোহরি, সন্দি, পামো-অফিল, মহান্দের, বোট্কী, নিরহদ্-নীরপুর, খরেরপুর-ধর্কি ও রেহতী-ট্রেসন এই উপবিভাগে বিভূত থাকার ছানীর বাণিজ্যের বিশেষ স্থবিধা হইরাছে।

 ২ উক্ত উপৰিভাগের একটা ভালুক। ভূপরিমাণ ১৫৫০ বর্গ-মাইল। ইহাবের মধ্যে কোছিভানবিভাগ ১১৩৫ বর্গমাইল। ভউজ জেলার একটা, নগর। বিদ্ধানের গশ্চিমকুলে
একটা পর্বতসাহার উপরি অবছিত। অকান ২৭ ৪২ ডি:
এবং লাখিন ৬৮ ৫৬ পু:। প্রবাদ ১৯৯৭ পুরীকে সৈরদ ক্ষমন্
উদীন পাহ এই নগর হাপন করেন। মুস্কমানগণের অধিপত্যের সমর এখানে অনেকগুলি মস্বিহ নির্মিত হয়। তক্সধ্যে
১৫৬৪ খুরীকে সন্ত্রাট্ অকবরপাহের অধীনস্থ পাসনক্তা
ক্ষেত্র বা নানা পির ও কার্কার্থ্য-সম্বিত জ্বা-মস্বিদ এবং
১৫৯০ খুরীকে মীর মুশাস পাহ ইনগাছ, মস্বিদ্ প্রতিষ্ঠা
করাইরা হিলেন।

১০৪৫ খুটাবে হানীর কল্ছোরা-রাজ মীর মক্ষদ বীর বন্ধ খরেরপুরাধিপতি মীর আলীনুরাদের নিকট হইতে পরগথর মক্রদের একগাছি বাড়ির চুল পান। তিনি নেই দেবস্থতি-রক্ষার্থ নগরের উত্তরাংশে "বার-ম্বারক" নামক এক চতুকোণ ধর্মজ্বন নির্দাণ করান। এ মন্তিবের মধ্যত্তে চুলী ও পারা-বিম্তিত একটা বর্ণ কৌটার সেই ক্ষক্রকেশ স্বদ্ধে রক্ষিত আছে। প্রতিবৎসর চৈত্রমাসে এ কেশ দেখাইবার সমর এখানে একটা ক্ষে নেলা বনে।

১৮৫৫ খুষ্টাব্দে এখানে মিউনিসিণালিটা স্থাপিত হয়।
তদধি এখানে স্বাস্থ্য ভাল হইরাছে। নর্থ ওরেষ্টার্প প্রেট্ট
রেলপথ বিত্তারে বাণিজ্যের বৃদ্ধিসহকারে নগরেরও সৌন্দর্য্য ও
সমৃদ্ধি বৃদ্ধি পাইরাছে। রেলপথ গমনার্থ নগরের সমুখেই
সিদ্ধবন্দে একটা স্থানর লোহ-সেতু নির্মিত হইরাছে। কলিকাতা
হইতে কন্নাচীবন্দর গমন করিতে হইলে রোহরির মধ্য দিরা
গমন করিতে হয়। রোহরির অপর পারে সিদ্ধবন্দক্ চরের
উপর পীর খালা খিজিরের শীঠছান আছে। এ স্থানে হিন্দু
ও মুস্লমান একত্ত শুলা বিরা খাকে।

রোহস্ (রী) উচ্চ আদেশ। (রুক্ ৬।৭১।৫)
রোহসেন (পৃং) মৃক্কটিক নাটকোক ব্যক্তিকের।
রোহা, বোঁবাই প্রেসিডেলীর কোনাবা জেলার একটা উপবিভাগ।
ভূপরিমাণ ২০০ বর্গমাইল। এই সহকুমার অধিকাণে ছানই
পর্যভমর ও জললার্ড, কেবলমাত্র ভূওলিকা নবী প্রবাহিত
উপত্যকাপ্রাধেশই ক্র্যোগ্রেণী ও উর্জর।

২ উক্ত উপবিভাগের প্রধান নগর। রোহা-জঠনী নামে
পরিচিত। কুওলিকা নদীর বাবকুলের নোহানা হইতে ১২ ক্রোক্
দ্বে রোহানগর অবহিত। ইহার অপরতীরে অষ্টনী প্রাম।
অকা- ১৮*২৫ বি উ: এবং স্রাবি- গণ্ড ২৫ বিশু। এই হুইটা
স্থানই রোহা বিউনিনিপানিটার অধীন। রোহার শভভাগার
হইতে বোহাই নগরে চাউনাদি সরবরাহ হইরা খাকে।
১৬গণ পুটাকে অব্যোধন এই স্থানকে "Rathomy" নামে

উল্লেখ করিরা গিরাছেল। তৎকালে ইহার বালিকালযুদ্ধিও বংগঠ ছিল।

রোহার, বোদাই প্রেনিডেনীর ক্ষপ্রবাদেশর আধার বিভাগের আবর্গত একটা প্রবান বদর । আধার নগর হইতে ১২ মাইল প্রে আবৃত্তি । ১৮১৮ মুটাকে ২ হাজার মণ বোঝাই কাহাজানি এই বন্ধরে আনারানে আনিজে পারিত, কিছ একলে নর্ভতটের আবহা পরিবর্তিত হওরার বাণিজ্যের অনেক হাল হইরাছে। সেইজভ হানীর ক্র হর্গ পরিভাকে হওরার ভানীর পরিভার বিশ্বিত হওরার হানীর পানীর অলের বিশেব ক্রবিধা হইরাছে।

রোহি (পুং) রোহতীতি ক্লম্ (রূপিবিক্টীতি। উপ্৪১১৮) ইতি ইব্। ১ বীজ। ২ বৃক্ষা ও বার্মিক।

রোছিক (পুং) বনরোধি নামক মৃগ, বনরোধ। ওপ—ইহার নাংস হিত ও বলকর, যাত ও শ্লেমবর্দ্ধক। (অত্রিস॰ ২২ অ॰) রোহিকাপ্রিয় (পুং) মহাকরম। (বৈভক্তি।)

রোছিণ (পুং) রোহতীতি কহ (কহেন্চ। উণ্ ২।৫৫) ইতি ইনন্। ১ কালভেদ, দিবাভাগের নবম মুহুর্তের নাম রোহিণ। এই সমরের মধ্যে একোদিইখ্রাদ্ধ করিতে হয়। কুতপমুহুর্তে খ্রাদ্ধ আরম্ভ করিয়া রোহিণকালের মধ্যে শেষ করিবে।

°জারন্ড্য কুতপে প্রান্ধং কুর্য্যানারোহিণং বৃধঃ। বিধিক্ষো বিধিমান্থায় রোহিণন্ড ন লব্দরেৎ ॥" (প্রাদ্ধতন্ত্র) ইহার নামান্তর রোহিণ্ড লিখিত আছে।

(পুং) ২ ভূত্ণ। ৩ বটর্জ। ৪ রোহিতকর্জ। (রাজনি •) ৫ শাক্ষণবীপত্ব পর্কতবিশেষ। (মৎসাপু • ১২১।৯৬)

৬ কট্ফলবুক্ন। (রছমালা)

রোহিণি (ত্রী)রোহিণীনক্ষর। (শঙ্গরয়া॰)

রোহিণিকা (ত্রী) রোহিণ্যের স্বার্থে কন্টাপ্, হস্ক। কোপাদি ছারা রক্তবর্গা ত্রী। (স্কটাধর)

রোহিশিনক্ষম (পু:) রোহিশীপুত্র, বলরাম।

রোছিশিসেন (গ্রং) রোহিনী নক্ষত্রের চড়র্দ্ধিকে কর্বছিত ভারকামগুলী।

রোহিণী (ত্রা) ক্ল-ইনন্, গোরাদিষাৎ ভীব্ ৷ ১ ত্রী-গৰী।

শ্লীত্যা নিৰ্কালিংকীঃ কৰ্মনা-নিগৃহ পাৰীস্কৰেন ৰাছনোঃ। বৃদ্ধিকুধারাধনি রোহিনীঃ পর-

न्डिक्ट निक्रको **इक्ट** न श्लोइकः ॥" (माष ३०।३०)

্ ১ ডড়িং। ত কটুভরা। ৪ নোনবছ। ৫ মহাবেতা।
(বৈর্ত্তকরত্বান) ৬ জোহিতা। (মেবিনী) ৭ জিনদিগের
বিভা কেবীবিশেষ। (হেম) ৮ কাশ্রী। ১ হরীকবী।

১০ শবিষ্ঠা। (রাজনিও) ১১ কশিলবর্ণ বর্ত্ত লাকার বিরেচনে প্রশন্ত হরীডকী। (রাজবং) ১২ বছরেবের ভার্তা, ইনি কর্ত্তপদারী হরেডির কংশে জরপ্রহণ করেন। ইবার প্র বলরান (হরিবংশ) ১৩ হরেডিক্তা। (কালিকাপুও) ১৬ নববর্ষীরা করা।

"শাঠবর্বা কৰেদেশারী সববর্বা চ রোহিনী।" (উবাহতক্ষ)
১৫ পঞ্চবর্বারা ক্ষান্তেও রোহিনী করে, রোনীনিবদর
রোগনানের ক্ষা এই কুমারীকে পূজা করিবার ব্যবহা বেধিতে
পাওরা বার।

"রোহিণী পঞ্চবাঁচ বড়্ববা ফালিফা খুডা।"
(বেৰীডাগ• ৩২৬।৪২)

"त्वास्तिर त्वाजमानाव ज्ञातिविवन्नतः।"

(বেবীভাগ- অংশঃ৮)

রোহিণীকে পূজা করিতে হইলে নিরোক্ত করে পূজা করিতে হর।

মত্র—"রোহরতী চ বীজানি প্রাগ্তমস্কিতানি বৈ ।

বা দেবী সর্বভূতানাং রোহিণীং পুলরাব্যব্দ্ ॥"

(দেবীভাগ॰ ভাইভাইভ

এই কুমারীপুলার মানাবিধ ক্রথসন্দার লাভ হইরা থাকে।
১৬ হিরণাকশিপুর কলা। (ভারত ৩/২২০/১৮) ১৭ অখিনী
প্রভৃতি সপ্তবিংশ নক্ষত্রের অন্তর্গত চতুর্থ নক্ষত্র। পর্যার—
রোহিনী, রাকী। এই মক্ষত্র শক্টাকার এবং পঞ্চারাম্বক,
ইহার অধিভাত্তী দেবতা একা, এই নক্ষত্রে ব্যরাশি হয়।

রোহিণী নক্ষত্র চল্লেম অতিশন প্রিরতমা, চল্লেম সপ্তবিংশতি পদ্ধী হইলেও চল্ল রোহিণীর নিকট থাকিতেন, নক্ষত্রপদ্ধীগণ ইহাতে অসভট হইরা দক্ষের নিকট এই বৃত্তান্ত বলেন, দক্ষ ইহাতে কৃত্ব হইরা চল্লকে অভিশাপ দেব, রোহিণীয় কন্ত চল্ল দক্ষেম অভিশাপে বর্মরোগাঞান্ত হন। (কালিকাপুত)

এই নক্ষত্র উর্জ্বণ, সর্বলাভি, শতপদ চক্রান্থসারে এই নক্ষত্রে নামকরণ হইলে এই সক্ষত্রের চারিপালে "ও; ব, বী, বৃ" এই চারিটা কক্ষর আদি নাম হইবে।

"কৰ্কটি! পকুলায়তো নতো মধ্যমাসভৰতি প্ৰজাপতে। পক্ত গৰাকুপকলিডিকা নিংহতাঃ স্বস্থি। সিংবলগ্ৰভঃ ॥"
(কালিগাসকত সাজিলগ্ৰনি»)

পাঁচটা নক্ষরত্থ শক্ষাকার রোহিণী নক্ষর আকান গথে . মতকের উপর প্রকাশিত হইলে, নিক্ষেরের ভিনমও ৩৮ পদ অতীত হইরাছে ভিন করিতে হইলে ৷

वरे नक्त्व क्य रहेल कांच नानक, कूनन कूनीन, क्रांक्रम, ननी, नानी च जांक्च रहेता वार्ट्स (दलाक्रव-) আটোন্ধানী মতে এই সক্ষরে কর্ম বৃহত্যে ইত্যের ইলা এবং বিলোন্ধানী মতে এই সক্ষরে কর্ম বৃহত্যে চক্রের বলা হর। সক্ষরের পরিমাণাদি ক্ষমেন্ত্রে ক্রেন্সকুত্যাদি নির্মাণ করা বাইতে পারে।

ভাত্র নাসের ক্লাইনীতে অবাৎ অসাইনীর দিন লোহিনী
সকলের বোল ক্ষাইনে অবস্থাবোল হইনা থাকে। এই রোহিনী
সকলে রাজিভার্ল লাইনা বানি প্রান্তিনেও থাকে, ভাষা হইলে
ব্যাহন প্রান্তিনী বানে, ভতকন উপবান ক্ষিতে হয়। রোহিনী
বাকিতে পারণ ক্ষিতে নাই। [অসাইনী বেশ]

্টিহার নিধান ও চিকিৎসার বিষয় ভাবপ্রকাশে এইরপ জিবিত আছে। প্রসারোগ ১৮ প্রকান্য ভাষার বরের রোহিনী ও প্রকার।

নিধান—প্ৰিত বায়, পিজ, কৰু ও বক্ত গৰাবেশই নাংসকে
প্ৰিত করিরা কঠরোধকারী বাংসাজুর উৎপাদন করিলে
ভাহাকে রোভিদী রোগ করে। এই রোগে প্রাক্তি রোগার
ভীবন নই হইনা থাকে।

বাতৰ রোহিশীর লক্ষণ— বাতৰ রোহিণীরোগে জিহবার চারিবিক্তে অভিশর বেদনাবিশিষ্ট কঠরোধকারক, মাংসাত্র উৎশন্ত হয় এবং রোগী গুল্প প্রভূতি বাতল্পনিত উপান্তবসমূহে শীভিত হইনা থাকে।

গিওৰ লকণ—পিও ৰস্ত রোহিণীরোগে মাংলাছুর শীব উলাত হয়, এবং অতিশয় দাহ ও পাক্যুক কইয়া বাকে, ইহাতে রোগীর অতি প্রবদ্ধেশে লয় হয়। ক্ষুলাক্ষ্য—ক্ষু বস্তু রোহিণীরোগে নাংলাছুর ভক্, স্থিয় ও অৱপাকবিশিষ্ট হয়, এবং কঠলোত ক্ষুত্ব হইয়া থাকে।

সন্নিপাতৰ ক্ষণ—বিবোৰৰ মোহিনী বোগে উপন্নি উক্ত তিনটা বোৰেঃ সমন্ত গৰুণই প্রকাশ পাইরা থাকে প্রকা বাংলাভুর গভীরণাকী হয়, এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পাইকে এই রোগ প্রকিষিৎভ হইরা থাকে, প্রান্তই ইহাতে জীবনের হানি বটে।

রভজ গলন স্বভজ্জ রোহিনী রোগে বিহার্গ কোটক বারা পরিস্থ এবং শিতম রোহিনীয় জান লালা হইরা বাবে, এই রোগ নাব্য।

হৈলোধিক রোইনী রোগ রোকীর কীনন সভং দুই করে, ক্ষক রোহিনী ডিনা নীনের ক্ষো, গৈছিক রোহিনী ও কিনের সংখ্য ও বাতক রোহিনী ও বিলের ক্ষেত্র কাবন নই ক্ষিয়া থাকে। ইহার চিকিৎনা—নাথ্য রোহিনী রোকো রভকনাক্ষা, বনন, মুন্নান, গভুষধারণ এবং নায় হিতকারক। বাতকাংরাহিনী রোলে রাজনোক্ষণ করিব। দৈক্ষণ বার্রা: আভিনারল করিবে।
এবং কিঞ্চিৎ উচ্চ ক্ষেত্র বারা পুন: পুন: গণ্ডুৰ বারণ করিবে।
শিক্ষণ রোহিনী রোগে রাজনোক্ষণ করিবা প্রিরন্তুর্গা, চিনি ও
বধু নিশিত করিবা: বর্থণ এবং প্রাক্ষণ ও পরব কলের ভাগবার।
করল করিতে হইবে। করুক রোহিনীকে গৃহধুন, গুরু, শির্মনী।
ও বরিচ চুর্পবারা প্রতিনারণ করিবে।

বেত অপরাধিতা, বিভ্ল, দত্তী, ও নৈৰ্ববারা তৈল পাক করিরা নদ্য ও কবল করিলে কবল রোহিনী রোগ প্রশমিত হয়। পিডলানিডেনে পিডানিনাশক উবধ ব্যবহারে ঐ গকল শক্ষণ নিরাকৃত হইরা বাবে।

(ভাবতা রোহিণীরোপটি)

১৫ শরীরের বর্তমূদ। (জ্ঞাত শারীরহা। ৪ অ॰)

া ১৬ অবৈর বৃধরোগভেদ।া (অরণত ২৯ আ•)

১৭ অনচর পদিবিশেষ। (চরক হত্তহা । ২৭ অ॰)

(बि) अम्मा

শনৈৰ হ্ৰমান মহজী ন ক্লশা নাপি রোহিণী। নীলকুঞ্চিত-কেনী চ ভরা নীর্যামাহং স্বা^ন (ভারত ২৮১১৩৩) রোহিণীকান্ত (পুং) রোহিণ্যাঃ কান্তঃ। রোহিণীপতি চক্র।

রোহিশী চন্দ্রতে (ही) এডবিশেষ।

রোহিণীচন্দ্রশয়ন (দ্রী) বভবিশের।

রোহিণীতনর (খং) রোহিণ্যাক্তনরঃ। রোহিণীর পুত্র। বলরাম। রোহিণীতীর্থ (ক্লী) তীর্থজ্ঞো।

রোছিণীজ (ক্লী) রোহিণী ভাবে ছ। রোহিণী নক্ষত্রের ভাব বা ধর্মা। (শতপথত্রা• ২াসং। •)

নোহিণীপত্তি (শ্ং) রোহিণ্যাঃ পতিঃ। চক্র। (হেন) জ ২ বন্ধৰেব। ৩ বৃষ**ভ**া

রোহিণীপ্রের (প্রেই রোহিণ্যাঃ ব্রিরঃ। রোহিণীপতি।
রোহিণীভ্র (প্রে) রোহিণীর পুত্র, বলরাম। ২ বৃধগ্রহ।
রোহিণীযোগ (প্রে) রোহিণা বোগঃ। রোহিণীসক্ষের
বোগ, ক্যাইমীর দিন রোহিণী সক্ষত্র হইলে রোহিণীবোগ হর,
এই রোহিণী সক্ষত্রের বোগ হইলে ভাহাকে ক্যান্তীবোগও
কহে। বিজ্ঞাইনী দেও]

द्वाहिनीत्रमन् (ग्रः) कारियाः इत्यः। > व्यक्तः। (ब्राक्तिः) २ वश्रप्रदः। ७ छ्यः।

দ্যোহিণীবল্লভ (গুং) বোহিণ্য ক্ষাতঃ । ই ক্ষা হ বছসেব। রোহিণীভাত (রী) বজ্ঞতা।

রোছিণান (পুং) রোহিনা স্বন্ধ । ২ জর । ২ বরজে । । রোছিনীকো (পুং) রোহিনীন ক্ষেত্র চমুর্কিকে স্বন্ধিত্ত নক্ষর্থক।

```
রোহিণীছত (খং) রোহিণাঃ হচঃ। > রোহিণীর গুল, বন্ধান।
২ ব্ধরহ।
```

द्वांहिरगङ्ग (११ः) त्रोशिया, मनक्षमि। (न्नांकि ।)

রোহিণার্কী (ঝী) রোহিণার্কা অট্নী। রোহিণী নক্ষরত্বা ভারক্ষাইনী, ক্যাইনীর দিন রোহিণীনক্ষরের বোগ হইলে ভারকে রোহিণার্টনী কছে।

ঁকুকাইয়াক রোহিণ্যাসর্জনাক্রেন্ডনং হরে:। কার্জা বিভাগি সথস্যা হস্তি পাগং ত্রিকজনন্।" (গ্রুকুপু- ১৩২ জ-) [ক্রাইনী কর বেখ]

রোহিণ্যাদ্যন্ত (রী) খবাধিকারে ছভৌবধবিশেব। (চরক চিকিও অও)

ব্যোছিৎ (গ্ৰং) রোহতীতি সহ (ক্তকহিব্ৰিডা ইডি ড। উণ্ ১১৯৯) > প্রা। (মেদিনী) ২ বর্ণজ্যে। ও মৎস্যজ্যে, কই মাছ। "ক্কণিরকরা মৎতা রোহিজং বলগুরং বিনা।" (বৈদ্যক্ষ) মৎত্যমাত্রই ক্ষ ও পিডবর্ছক, কিছু রোহিত ও মন্ধ্রমাছ ক্ষ ও পিডবর্ছক নহে। ৩ ক্যামুগ।

"মন্থব্যরাজার মর্কট: শার্দ্ লার রোহিং" (গুরুবজু • ২৪।৩•)
'একো রোহিং গুরু:'(বেলশীপ •)

(ত্রি) ৪ রোহিতবর্ণবিশিষ্ট।

"রোহিৎখ্রাবা স্থমদং" (ঋক্ ১।১••।১৬)

'রোহিৎ রোহিতবণা' (সারণ)

(जी) ६ मृत्री। ७ नाजारक्यः। १ वर्षाः।

"वृक्ष्मस्यो तरथ दक्षिरणा स्वता त्त्राहिणः" (चक् ১१১৪।১২)

'রোহিতঃ রোহিচ্ছপাভিধেরাক্ষীয়া বড়বাঃ' (সারণ)

৮ নদী। 'রোহত্তি আভিবীকানি জন্মদেন হি বীকানি প্ররোহন্তীতি তথাক্ষ।' (নিঘণ্টু ১৮৮৮১৮) এই অর্থে এই শক্ষ নিগমে প্রারহ বছবচনাত্ত প্ররোগ আছে, এই লক্ষ এই শব্দ বছবচনাত্ত।

রোহিত (রী) কহ-(কহেরণ্ড লোবা: উপ্ ৩৯৪) ইভি ইডন্। ১ কুছুর । ২ রক্ত। ৩ বকু শত্রুপদ্ধ:

"ৰিল্পতোহশনিষেবাংশ্চ ৰোহিতেজ্ঞখন্থি চ।
উন্ধানিৰ্বাতকেজুংশ্চ ৰোজীংখাচাৰচানি চ ॥" (মছ ১।৬৮)
(পুং) ঃ শীনবিশেৰ, বোহিতমংখ্য (Labris Robita)
ফুইমার।

"ইরীলো বিজ্ঞীকুরে বাচাবাচানগোচনঃ
রোহিতো নো হিডঃ প্রোকো নবনুরো নবনুরো প্রায় ॥"
ইহার সক্ষা—এই বংজ ক্ষেত্রি শমস্ক, কুদিনেশ
ব্যভ্রম এবং বজু হভাজার ও গোহিতবর্গ, নংজের মধ্যে ইহা
ভোগ । তাল ক্ষর্ক, বস্কর, বাতনাপক এবং বীর্থবর্ধক ।

"इक्श पदी বেতকুলিক সংক্রো বঃ ভ্রেটোহনৌ লোহিতত্ত্ববক্ত । কোকং বল্যং নোহিততাশি মাংসং বাতং হতি মিওমুগ্রাতিবীর্যাদ্ ॥" (গ্রালমি॰) ভাব-প্রকাশ হতে পর্বাহি ও খণ—

রকোদর, রজমুণ, রজাক, রজপক্তি, রক্ষপক্, ক্রান্তর্ত্তর্ত্ত ও রোহিত, এই মংজ বকল নংজ অংশকা তেওঁ। অন্-ওক্রবর্ত্তক, অন্ধিজরোগনাশক, জীবংক্যার সংযুক্ত, মধুররস, বাহুনাশক ও জীবং শিক্ষবারক। (ভাবএ০)

হারীতে গিমিত আছে বে, এই মংজ শৈবাল ভোজন করে এবং অন্নর্মক বলিরা বীগনীর ও লবুণাক।

"শৈৰালাহারভোলিছাৎ স্বশ্নত চ বিকর্মনাৎ। রোহিতো গীণনীয়ল্চ লযুণাকো মহাবলঃ॥"

(হারীভ ১৷১১ দ:)

ং ক্ষামখ্যাত হরিশ্বর রাজারপুত্র। (দে<mark>বীভাগ</mark>- ৭।১৫।১৫)

৬ মৃগতের। ৭ রোহিতকর্ক। (বেদিনী)

৮ जबिरगंहे ।

"রোহতি আরোহতি রখং বহত্যাদিবসিভি রোহিতঃ"

(निष्कु २।५६)

» त्रक्रवर्गः (बि) ३० प्रकर्वाविभिष्ठे।

"নমো রোহিতার ছপততে বৃহ্ণাণাং পতরে নবঃ"

(४८१७६ - ३७१३३)

>• नगीरखर । (देवनहत्रि ¢शक्री)

রোহিতক (প্ং) রোহিত এব আর্থে কন্। (Amoora Rohitaka syn Andersonia Rohitaka) বৃক্ষবিশেব, নাড়িসপুলক নামক কনামখ্যাত বৃক্ষ। এই কুল হুই প্রকার, কেত ও রক্তবর্ণ। চলিত রোয়া, রকনা, কড়ার। পর্যার রোহী, রীহনক্র, নাড়িমপুলক, রোহীতক, রোহিণ, কুলাকলি, নাড়িমপুল, ননাঞ্জম্প, ক্রীড়ল, ক্রমি, ক্রণ, রীহা ও রক্তনেঞ্রোগ্যালক। (রাহানি॰) ২ হরিণবিশেব। ও কুল্ডবৃক্ষ। ৪ বেলাকে। [রোহতক দেব।]

রোহিতকারণ্ড (हो) ছানজে। (ভারড উলোগণ॰)

রোহিত্তকুট, পর্মতভেষ। (জৈনহরি ৫১।১১২)

রোহিতকুল (রী) ক্ষণগড়েন। (পক্ষণিকা • ১৪০০১২) রোহিতকুলীয় (রী) গামভেব।

রোহিতগিরি (গং) পর্মজন্ম।

রোহিতপুর (রী) রোহিতক নগর। হরিতরের পুরা রোহিতক এই নগর প্রতিষ্ঠা করেন। [রোটাল্যক নেব।] ब्रांबाद शूज। (यमिनी)

রোহিতবং (আ) রক্তাক্তব্জ । (লাট্যারণ সাচার)
রোহিতবস্তু (ক্লী) নগরতেন । (লাট্ডারণ সাচার
রোহিতা (জী) রোহিত-টাপ্, (বর্ণাবস্থলাভাভোপধাডো নঃ।
পা ৪।সা০৯) ইতি পান্ধিকো জীব্, ককারত নকারাবেশন্ত ন।
রাগাদি বারা রক্তবর্ণ। পক্ষে জীব্ ও জন্মান ন করিরা
রোহিণী পদ হয়।

'রোহিনী রোহিন্তা রক্ষা লোহিনী লোহিন্তা চ সা।'(ৰাটাধর)
রোহিতাক্ষ (প্রং) রক্তচক্ষ:। রক্তলোচন।
রোহিতাক্স, দেশতেন। [রোহতক্ষ দেখ।]
রোহিতাক্সি (বি.) রক্তচিক্বিশিষ্ট।
রোহিতাক্ম (প্রং) রোহিতাধ্যো বক্ত। ১ পায়। ২ হরিশ্চক্র

রোহিতিকা (বী) রোহিজো বর্ণোহতাতা ইতি রোহিত-ঠন্, টাপ্। রাগাদি বারা রক্তবণ। (কটাধর)

রোহিতেয় (প্ং) রোহিত এব স্বার্থে চ। রোহিতবৃক্ষ।
"দীহারী রোহিতেনঃ তাৎ নক্তপুষ্পক রোহিতঃ।"

"প্লাহারী রোহিতেরঃ ক্রাং রক্তপুশান্ত রোহিতঃ।"
রোহিদাশ্ব (পুং) অধি। (অক্ ১।৪৫।২)
রোহিন্ (পুং) অবশ্যং রোহতীতি কহ আবশ্যকে ণিনি।
১ রোহিতকরক। ২ অবশ্বরক। ও বটরক। (মেদিনী)
রোহিনেথপ্ত, যুক্তপ্রদেশের ছোটলাট বাহাছরের অধীন একটী
শাসনবিভাগ। বিভাগীর ক্মিসনের কর্ত্যাধীন। অক্তাং
২৭°৩৫ হইতে ২৯°৫৮ উ: এবং দ্রাঘিং ৭৮°২ হইতে
৮০°২৮ পুঃ মধ্য। ভূপরিমাণ ১০৮৮ও বর্গমাইল। বিজনৌর,
মোরাদাবাদ, বুদাউন, বরেলী, শিলিভিং ও শাহরুহানপুর ক্রেলা
ইহার অস্তর্ভুক্ত।

এখানে সর্কাশমেত ১১৩২৭ থানি গ্রাম ও নগর আছে, ভর্মধ্যে বরেলীর জনসংখ্যা লক্ষাধিক, শাহজহানপুর প্রার ৭৫ হাজার, মোরদাবাদ ৬৭ হাজার, আমরোহা ৩৬ হাজার, বৃদ্ধাউন্ ৩৪ হাজার, পিলিভিৎ ৩০ হাজার, চম্দোনী ২৮ হাজার, শস্কুল ২২ হাজার, নাগিনা ২০ হাজার, নজিবাবাদ ১৮ হাজার, তিলহার ১৫ হাজার, নিজবাবাদ ১৮ হাজার, তিলহার ১৫ হাজার, দাসাবান্ ১৫ হাজার, আওনলা ১৩ হাজার, ক্রিরভেগুর ১৩ হাজার, সরাইতর্গী ১১ হাজার ও চালপুর প্রার ১১ হাজার ও ওই ১৮টা প্রধান নগর বাতীত আরও ২৮টা ক্রম্ম নগর আছে। নগরসমূহে হানীর বাণিজ্যের প্রভাব নিতান্ত মন্দ নহে। আউধ-রোহিল-ধণ্ড ও কুমায়্ন-রোহিলধণ্ড রেলপথ এখানে বিভূত থাকার হানীর ব্যবসার বিশেব স্থবিধা হইরাছে।

রোহিলা আফগান জাতি এক সমরে এই বিস্তৃত বিভাগে বাস করে এবং তাহারা অকীয় বীর্যা-বলে এইস্থান অধিকার করিরা আকগান শাসন বিতার করিরাছিল। তদব্ধি এই স্থান রোহিলথণ্ড নামে আখ্যাত হর। ছর্ম্বর রোহিলালাতির বীরপ্রকৃতি ও মুম্বিগ্রহের পরিচর রোহিলা শল্পে এবং বিভাগীর ইতিস্তু প্রতি কেলার তত্তরামক শলে বিবৃত ইইরাছে।

ব্রোহিল্লা (রোহেলা), ভারতবাদী আমগান (পাঠান) ভাতির একটা শাখা। ইহারা প্রধানতঃ যুস্কলৈ আক্সাননামে পরিচিত। দিলীতে পাঠান-আধিপত্যকালে ভারতে আসিয়া ইহারা নানা রাজ্যে ছড়াইরা পড়ে। সেই সমরে আক্যান-স্থারগণ জারগীর ৰা শাসনকঠন কইয়া দ্ব দ্ব প্ৰাধান্তভাপনে বন্ধবান ছিলেন। পঞ্জাবের পেশবার বিভাগে ভারতাক্রমণকারী কএকদশ আকগাদ উপনিবেশ স্থাপন করিলেও, ভারতের অক্সান্ত স্থানে আফগানগণ বসবাস করিবার স্কবিধা পান্ত নাই। ১৫২৩ খুটান্দে মোগল-সম্রাট বাবরণাহ বখন ভারতে রাজণাট স্থাপন করেন, তখন (হইন্ডে অরম্বলেবের শাসনকাশ পর্যান্ত ভারতে পাঠানদিগের ৰিলের, আত্মভাৰ ছিল। প্রতিষ্ঠাপন্ন ও প্রতাপশালী বোদা রাজ-পুত বা হিন্দু-রাজ্যগণের শাসনসময়ে আফগানগণ মন্তকোন্ডোলন করিতে পারে নাই। অরদবেরে মৃত্যুর পর, মোগল-প্রভাবের উত্তরোত্তর অবসান হইতে দেখিয়া পুঠন ছারা धनार्त्रागत क्रिक्ष या रिमिक्द्रिक नास्त्र जानात्र मरन मरन আফগানজাতি পার্বত্য-অধিত্যকা ছাড়িয়া কর্মাবেষণে ভারতে আসিয়া পদার্শণ করিল। ছঞ্জজন রাজকার্য্যে নিয়োজিত इरेटन अधिकाश्मरे मञ्जातृति बाता जीविकार्कन कतिप्राधिन।

হিন্দুখানবাসী এই আফগানজাতি তৎকালে রোহিলা নাম পরিচিত ছিল। হিন্দুগণ কেন তাহাদের রোহিলা নাম দিরাছিলেন, তাহার কারণ নির্দেশ করা বায় না। পশ্বভাষায় রোহণদে পর্মত এবং রোহেলাই শব্দে পর্মতবাসী বুঝায়। এতরির তারিখ্-ই-শাহী ও ফিরিভার আফগানস্থানের অস্তর্গত রোহ নামক জনপদের উল্লেখ পাওরা যায়। ঐ স্থান স্থাত ও মান্দোর হইতে ভকরের অস্তর্গত দিবি নপর পর্যান্ত এবং হাসন-আবদাল হইতে কাব্ল পর্যান্ত হিলা। সম্ভবতঃ এই রোহ নামক জনপদ যা পার্মত্যপ্রদেশ হইতে সমাগত আফ্-গানজাতি ভারতে রোহিলা নামে পরিচিত হইয়াছিল। উত্তরভারত আপেকা দক্ষিণতারতে বিশেষতঃ হারদরাবাদে আফগান উপনিবেশিকগণ "রোহেলা" নামে কথিত হইয়া থাকে। উত্তরভারতবাসী আফগানজাতি সাধারণতঃ পাঠান নামেই পরিচিত।

অরক্তকের মৃত্যুর পর মোগলসাম্রাজ্যে বিশৃথালা বটিলে, নানাছানে নেতৃগণ আপন আপন প্রতৃত্ব-সংস্থাপনে সচেই ছিলেন। এই সমরে উত্তর-পশ্চিমপ্রাফেশবাসী আফগানগণ শব্দার্থি থারা উদর প্রশ করিতে ছিলেন। সৌজাগ্যাবেরী আক্সানসেনানী রাউদ মোগদসরকারে ক্রীড্রাসার্রণে নিযুক্ত থাকিরা বীর সন্তলে প্রতিষ্ঠাসার্ভ করেন। অবশেবে সেই ব্যক্তি বীর প্রভু শাহ আলম্কে নিহত করিরা কাতিহর নামক স্থানে প্রাথাক্তনাভের প্রবোগ কেথিতে লাগিলেন। এই সমরে তাঁহার প্রকারে বিমোহিত হইরা আক্সানগণ তাঁহার বলীভূত ও ঘলভূকে হইতে লাগিল। রাউদ প্রথমজীবনে সুঠনকালে একটা জাট-বালককে অপহরণ করিরা লালনপালন করেন। ক্র বালকের নাম আলী মহম্মদ। আলী প্রতিপালক মাউনকে নিহত করিরা স্বরং আক্সানসম্প্রদারের অবিনেতা হইলেন এবং বীর সাহস ও কার্য্যতৎপরতাগুলে লীব্রই কাতিহরের সর্কমর কর্তা হইরা উঠিলেন। তিনি বহলত আফ্গান বোডাকে শ্বরার্য অবিনার বলর্থি করিরাছিলেন।

দিলীর রাজসরকারের ছরবছা দেখিরা ১৭৩৯ খুটান্দে নাদিরশাহ মোগলসম্রাটের গর্ম্ম আরও ধর্ম করিবেন। ভাহাতে আলী মহম্মদের ক্ষমতা আরও বাড়িরা গেল। অনেক লিক্ষিত আফগানসেনা ও সেনাপতি তাঁহার পক্ষে আসিয়া যোগ দিল। মহম্মদ এইরূপে বলীয়ান্ হইয়া ভাবী প্রতিযোগীর বিরোধের আশস্কা অপনোদনার্থ বীর খুরতাত রহমৎ থার সহিত মিলিত হইলেন। রহমৎ ভৎকালে রোহিলখণ্ডের সর্মপ্রধান আফগানস্দার, তিনি আলীর নিকট হইতে কিছু আরগীর লইয়া তাঁহার সহযোগে কার্য্য করিতে স্বীকৃত হইলেন। রহমতের পিতা শাহ আলম্ বাদললৈ আফগান। তিনি কান্দাহার ত্যাগ করিয়া কাতিহরে আসিয়া বাস করেন। ১৭১০ খুটান্মে রহমতের জন্ম হয়।

১৭৪০ খুটান্দে রোহিলখণ্ড নামক স্ন্ত্হৎ দেশভাগ আনী মহম্মদের অধিকারভূক্ত হর এবং সম্রাট্ তাঁহাকেই তথাকার লাসনকর্তা বলিরা স্বীকার করিতে বাধ্য হন। ৫ বংসর নির্মিররোধে রাজ্যশাসন করিবার পর ১৭৪৫ খুটান্দে অবোধ্যার স্থবাদার সক্ষরজন্তের সহিত তাঁহার যুদ্ধ বাধে। এই সমরে সম্রাট্ মহম্মদশাহ উলীরের পক্ষাবল্যন করার আলীমহম্মদ বক্ততাশ্বীকার করিতে বাধ্য হন। তিনি মজর-বন্দিরপে দিলীতে রক্ষিত হইলেও তাঁহার অধীনত্ব ভূদ্ধর্ব আক্রগানগণ ক্রমশাই অভ্যাচার ও উপদ্রব আরম্ভ করিল। তথন সম্রাট্ আলীকে সরহিন্দের শাসনকর্ত্ব দান করিয়া তাহাদিগকে নিশ্বিত করিলেন।

১৭৪৮ বৃত্তীপে আৰম্বালীর ভারতাক্রমণে ক্রোগ পাইরা আলীমহত্মন পুনরার রোহিলখণ্ড হন্তগত করিরা লইলেন এবং অভি সতর্কতার সহিত রাজ্যশাসন করিতে লাগিলেন। শাসন- শৃথলা অন্দ করিবার জভার কাল পরেই ১৭৪৯ খুটাকে ভিনি কালগ্রানে নিগভিত হন। তথন তাঁহার জাের ও মধ্যম পুত্র কমক্রা বাঁ ও জাক্ররা বাঁ জাবদালীর সহিত কাল্যাহার বাত্রা করিবাহিলেন। অভরাং জপর নাবালক চফুইরের উপর রাজ্যভার না দিরা আলী বীর খুরতাত রহমৎ বাঁকে 'হাফিল' অর্থাৎ রাজ্যের প্রবান অভিভাবক ও রহমতের ক্লাভিভাতা চঙীবাঁকে সেনাপতি করিবা যান।

আলীমহমদের মৃত্যুর পর, তাঁহার বিখ্যাত সেনাপতি ও বিশ্নোরের জারগারদার নাজির বাঁ চণ্ডীবাঁর ক্লাকে বিবাচ क्रिजा नाजिय উल्लोगा नामग्रहग्र्यक विकासीरद चण्डा রাজপাট স্থাপন করিলেন। মধ্য অস্তর্কেদীতে বন্ধসবংশীর আফগান কাএমজন করখাবাদে খীর গ্রেভাব বিস্তার করিয়া আফগানশাসন বিভার করিরাছিলেন। এই সময়ে উক্তীর সক্দারজন তাহাদের দর্শ থক্ক করিবার মান্সে প্রথমে সেনা-পতি কুতৰ উদীনকে প্রেরণ করেন। হণ্ডী খাঁ-পরিচালিত রোহিলার হতে কুতবের পরাজয় ও প্রাণবায়ু বহির্গত হইলে সফনর কাএমজন্তের সহায়তার ১৭৫০ খুটানো রোহিলখন্ত আক্রমণ করেন। বদাউনের যুদ্ধে হাফিজ রহমৎ ও চুতী খাঁর হল্তে কাএমজন নিহত হইলে তিনি আর রোহিল্পঞ আক্রমণ না করিয়া কাএমের পুত্র আদাদ খাঁকে কভেরাবাদে আক্রমণ করেন। এ যুদ্ধে বিশেষরূপে অপমানিত, লাঞ্চিত ও পরাজিত হওয়ার দক্ষর প্রাণ লইয়া প্রায়ন করেন এবং আফগানগণ আলাহাবাদ পর্যান্ত দুর্গন করে।

এই অপমানে কুছ হইরা সফদর মহারাট্রসেনাপতি মলহর-রাও হোলকর ও জরামাসিন্দের সাহায্যে প্নরার রণক্ষেত্রে উপ-ছিত হইলেন। আদ্দে বাঁ রহমৎ ও হুণ্ডীবাঁর সাহায্য লাভ করিয়া বুদার্থ প্রস্তুত হইতে লাগিলেন। ১৭১৫ পুটালে মহারাট্রসেনা রোহিলথণ্ডে প্রবেশপূর্কক আদ্দেগাকে পরাজিত করিল। আদ্দে বাঁ পুনরার ক্ষণাবাদ সিংহাসন পাইলেন।

এই সমরে কর্ম্পার্থা, আবত্রা থা, হাফিকরহমৎ ও ছণ্ডী থার মধ্যে রাজ্যবিভাগ লইরা গোলযোগ বটিল। অবশেবে চারিজনেই আলীর সম্পত্তি বিভাগ করিরা লইকেন। ১৭৫৪ খুটান্দে
মন্ত্রী গালীউদীন্কর্কুক সম্রাট্ আন্ধান্দাহের রাজ্যচ্যুতি এবং সফ্ষরজন্তের মৃত্যু ও ক্ষলা উদ্দোলার অবোধ্যা-মসনদ্ প্রান্তিতে রোহিল্লা
জাতির অগৃইরবি ক্রমশংই তিমিরার্ত লইরা আসিতে লাগিল।
১৭৫৬ খুটানে আবদালী ৩র বার ভারত আক্রমণ করিলেন।
এবার তিনি প্রক্ষিতি নাজিব উদ্দোলাকে সেনাপতি ও প্রধান
মন্ত্রী করিরা গেলেন। গালি উদ্দীনের এ ক্ষমতান্ত্রাস ভাল লাগিল
না, তিনি মহারাত্রীরের সহবোধ্য তাঁহার স্বর্ধনাশে সমুত্তত

হইলেন। ১৭৫৮ গুটানে মহাবাট্ট-কেনা নালিক উলোলাকে বোহিলবতে ভাড়াইবা দেৱ । ইয়েকেন স্বস্থা না হইবা ক্ষরতাকে ভাহারা ১৭৫৯ গুটালে বালিক্ষে ক্ষরাআনেই ক্ষরেন । হাকিল-রহমৎ ও অভাভ ভোছিলা ক্ষরিভালন স্বাটাদিলের বভিনোধ ফরিতে অসমর্থ হইবা অলা উলোলার নাহারা আর্থনা করেন। উক্ত বর্বে ন্যেক্সর বালে ক্ষিতিক ব্যোক্ষাের নিকট পরাভ হইবা মহাবাটীর কল প্রাইবা বাব।

ক্রান্ত্রীন্দেশের প্রাইণার আরও ভারণ ছিল। ১৭০ন

ক্রান্তের নেপ্টেম্বর বাবে আক্রানী এর্থ বার ভারভাক্রমণার্থ
পরাবে প্রাপ্তিরর বাবে আক্রানী এর্থ বার ভারভাক্রমণার্থ
পরাবে প্রাপ্তির বাবে আক্রানী এর্থ বার ভারভাক্রমণার্থ
ছিলুও রাজ্যরকার্থ বহারাইগণ রোহিলাদিগকে হাড়িরা আবকারীর সম্বুখীন হইবার উচ্বোগ্যেণিতে লাগিলেন। ১৭০০ গুরীকে
আক্রানী নাজিব উলোগা, হাজিল রহমৎ ও অক্রান্ত রোহিলা
সর্ভারণ সমবেত হইরা দিরী অভিনুধে অঞ্চার হইলেন। ওই
ভাল্যারী ১৭০১ গুরীকে পাণিপথমুদ্ধে মহারাইগভি বিষরত
হইলে আক্রানাত করিরা নাজিব উলোগাকে প্রধান মন্ত্রী ও
জ্বলা উলোগাকে উলীর করিরাহিলেন। তিনি হাজিল রহমৎ ও
জ্বী থাকে বথাক্রমে এতাবা এবং আগ্রা ও কাল্পী প্রদেশ নান
করিলেন। অস্তান্ত রোহিলা সর্ভারগণ অন্তর্কেদীর মধ্যবর্ত্তী প্রদেশ
ভোগ করিবার অধিকার পাইলেন। এই সমরে কঞ্ববংসর
মাত্র রোহিলাগণ শান্তিমর স্থবান্ত্য ভোগ করিবাহিল।

১৭৬৪ খুঠানে হ্রজা উদ্দোলার সহিত ইংরাজের বিরোধ ঘটে এবং ১৭৬৫ খুঠানে বজারের যুক্তে তাহা কতকটা ছগিত থাকে। ১৭৬৯ খুঠানে আফগানগণ পুনরার এতাবা ও লোরাবের মধ্যবর্ত্তী জেলা সমুদার আজমণ করিলে ক্লাইবের মনে নানা কুচিন্তার উদর হইতে থাকে,কিন্ত ১৭৭০ খুঠানে নাজিব উদ্দোলার মৃত্যুতে তংপুত্র জাবিতা খাঁ রাজা হইলেন বটে, কিন্তু রোহিন্না জাতির লর্জা জনেকাংশে থকা হইনা গেল। উক্ত বর্বেই রোহিন্নথণে ছতীখার মৃত্যু হওরার রোহিন্নাগণ আর মহারাষ্ট্রীর গতিরোধ করিতে পারিল না। ১৭৭১ খুঠানে তাহারা দশবর্ষ পরে পুত্ররার দিলী আজ্মণ করিল। জাবিতা খাঁ বিপদ্ধ নিক্টবর্ত্তী জানিরা রাজ্য ছাড়িরা পদারন করিলেন। উক্ত বর্বে ২৫এ জিনেখর মহারাষ্ট্রের সহিত একটা চুক্তি করিরা সমাই নগরে প্রেবেশ করিলেন।

১৭৭২ খুটাকে মহারাষ্ট্রকল রোহিলথও আক্রমণ করিকেন। জাবিতা বাঁ ও হাকিজরহমৎ প্রাকৃতি রোহিলা স্থান্তমণ এবং স্বরং কুলা উন্দোলা মহারাষ্ট্রার সেনার গতিরোধ করিছে স্কলমর্ব হই-কেন। মহারাষ্ট্রকল পাণিপথবৃত্তর প্রাতিহিংলালক্ষীমার্ব রোহিল- ক্ষণ উৎনাধিত করিছা অবোধাালুইনে অরাণর হইলে উলীর
ছলা উদোলা কলিকাভার ইংরাজগবর্নেটের সাহাব্য প্রার্থনা
করেন ও রোহিলখণ্ড বিভাগের কভকালে ক্ষিপুরণ সরুপ
ইংরাজহাকে স্মর্ণাণ করিবার অলীকার করেন। ভবতুরারে
সভার প্রেসিডেন্ট কার্টিরারের আবেশে সরু রবার্ট কেলার মধ্যক্
হইল মহারাই, রোহিরা ও ছলা উদোলার সন্মিননের চেটা পান।
উক্ষ বর্ষের ২০০ মে পর্যন্ত সন্ধির প্রকাশ চলিল, কিছ বিশেব
কিছু হইল না। বর্ষারন্তে মহারাহীরদল গলা পার না হইরা
কিরিয়া গেল। রোহিরাপণ এবং জাবিত্যা বা পারীপুরে লইরা
রাজ্যে প্রবেশ করিলেন। উলীর বেকার সাহেবকে লইরা
অবোধাার চলিবেন।

এদিকে হেরীংস মালাক হইকে আসিয়া উক্ত বর্বের এপ্রিল মাসে বালালার গবর্ণ র হইলেন। মহারায়, রোহিলা, উজীর ও মোগলসঞ্জাটের পরশারের স্বার্থ ও সম্বন্ধ রক্ষা করাই ওাঁহার মূল করনা হইরা উঠিল। মহারায়গ্রগণ রোহিলথও পরিত্যাগে বীক্বত হইরা রোহিলথও আক্রমণে বিরত থাকিকেও তদ্দেশে শান্তি স্থাপিত হইল না ৷ রোহিলাদিগের মধ্যে গৃহবিবাদের স্কান ইইল। রোহিলাসদিরে সদার বা বিশ্বর মৃত্যুতে তাঁহার প্রাণা উত্তরাধিকার লইরা গোলবোগ উত্থাপন করিল। হাফিজ্বরুমতের পুত্র ইনারং বা পিড়ার বিরুদ্ধে অস্তর্ধারণ করিলেন। এই সমরে অক্সতম রোহিলা সদ্ধারণ করেলেন। এই সমরে অক্সতম রোহিলা সদ্ধারণ করিলেন, ফরুথা-বাদের মূলক্ষরক্ষ অকর্ষণ্যতানিবন্ধন মূর্কল হইরা পড়িলেন এবং আবিতা বা ক্ষাতির সহায়ভূতি হারাইয়া কিংকর্জব্যবিমৃদ্ হইলেন। তিনি দিলীবরের প্রধান মন্ত্রিছের আশার ১৭৭২ খুটা-কের কুলাই মানে মহারায়্রাধনে মিলিত হইলেন।

উত্ত বর্ষের শেকভাগে মহারাত্রীরগণ বিলীপ্রবেশ করিলে,
নজক্ থাঁ বিশেষ চেটা করিরাও আত্মরকা করিছে পারিলেন
না। মহারাত্রকণ তথন আর প্রকাজ্ঞতঃ স্রাট্টকে কোনরপ
সন্মান না দেখাইরা তাঁহার নিকট হইতে আলাহারার ও
কোরা প্রদেশ বিজির করিরা সইলেন। এই সংবাদে তীত
হইরা হলা উদোলা ইংরাজগবর্মেন্টকে সাহায্যপ্রার্থনাপূর্কক পত্র
লিখিলেন। কোড়া ও আলাহারার লইরা ইংরাজের সহিত
মুদ্ধ বাধিবার সভাবনা ধেশিরা মহারাত্রীক-লেনাপ্তি হাম্পিরহবতের বহিত স্থিতিত হইবার আপার গলা পার হইরা
রোহিলপতে প্রবেশ করিলেন।

হাবিষয়ক্ষতের সহিত বহারাইকলের সন্ধির প্রভাব চলিতে গেবিয়া কেটানে চিন্তাবৃক্ত কইলেন। তিনি আবোধার উলীরের শব্দ ও ইবোজের স্বার্থ সংস্থাপার্থ সেনাপতি সক্ষাট বেকারের

অধীনে একদল ইংরাজনৈত প্রেরণ ক্রিলেন। মহারাইনিসক রোহিলখণ্ড হইতে তাড়ানই মুখ্য উদ্দেশ্ত রহিল। দেনাখ্যক বেকার ক্লা উদ্দোলার নহিত সর্ভ নাব্যক্ত করিছা চুই বল ইংরাজ, ছরণল নিপাহী ও এক্লল কামানবাহী লৈক লইরা ১৭৭७ थुडोरमञ मार्कमारन **ज**रनावा **र**्टेर७ स्त्राहिनवश्व जि मृत्यं यांकां कतिरामन । आरवांशांत्र रमनामम । हेरतांकरमञ्ज द्राविज्ञाविशतक जाराचा कवित्व जामादेवा, छूजा-फेटकोना शांकिक রহমৎকে পত্র লিখিলেন এবং মহারাবীয়গণের বিক্লকে যুক্তবোষণা ক্রিতে হতসভন হইদেন। এ প্রভাবে হাক্তির রহমৎ সমত रहेरनन ना ; जिन साविष्ठा वा ७ महाजाड्ड-शकावनवन कतिरानन বেধিরা সেনাপতি বেকার সদলে রামঘাট অভিসুখে অঞ্চসর হইলেন। এইছানে নদীর অপরপারে মহারাষ্ট্রগণ সদলে অবস্থান করিতেছিলেন। হাকিজ রহমৎ শঠতাপুর্বাক এতদিন মহারাই বা স্থজার দলে বোগদান করেন নাই, মহারাষ্ট্রসেনাপতি জার বিলব মা করিরা বলপূর্বক তাঁহাকে বশীভূত করিবার চেটা পাইলেন। মহারাট্রগণ নদী পার হইরা হাজিজ রহমতের শিবির-সন্মধ্য রোহিলাহর্গ আক্রমণ করিলেন, কিন্ত ইংরাজের সহিত যুদ্ধার্থ প্ৰস্তুত হইলেন না।

এদিকে ২১ মার্ক হাফিল রহমৎ উপারশৃক্ত হইরা স্কলার প্রভাবে সম্মতিদানপূর্কক তাঁহার দলে আসিরা বোগ দিলেন। ইহাতে মহারাব্রগণ পশ্চাদপদ হইলেন। কএকবার আক্রমণের তর দেপাইরা তাহারা ইংরাজ ও স্কলাকে উৎকৃষ্টিত করিরাছিলেন, অবশেবে মে মানে দান্দিপাত্যে মহারাব্র-স্কারগণের পরশার বিরোধ উপহিত হওরার, তাহারা বাধ্য হইরা উত্তর-ভারত ত্যাগ করিল। তাহাতে উলীর ও ইংরাজের অনৃষ্ট-লন্মী স্প্রেসরা হইলেন এবং মহারাব্রগজি জ্বের মত লোপ পাইল। এই তীবণ বিবাদে মহারাব্রীর স্কারগণ ছিন্ন তির হইরা পড়িলেন। তাহারা একত্র বে শক্ষাবিক অধারোহী সেনা ও ১০ কোটা ভল্বা রাজস্ব আমার করিরা মহারাব্র-শার্রাজন গউরা করিরা লইরা নিশ্বিত হইলেন। এই সমন্ব হইতে মহারাব্র-শক্তির অব-শান ঘটে।

এই বৃছবিপ্রাহে উজীবের বিশক্ষণ বাব হওরার তিনি রোহিলাদিপের নিকট হইতে প্রাণাস্কার নাবী করিবা পাঠাইলেন।
হাকিল রহমৎ অর্থপ্রদানে অবীকৃত হওরার, তাহার বিক্তে
বৃছবোরণা করিবার আনেশ হইল। কিছু জ্লা প্রথমে বৃছ করিবা
রাজকোর পুঁচ করিছে চান নাই। জ্বন ক্টেগে বারাণসীর
সবি অস্থলারে উহিছে ৫০ লক নিকার্ত্রার আনাহাবাদ ও
কোরা বিক্রম করিবেন। সভাপর রোহিলানিকাকে ভাড়াইবার

ৰশোৰত চলিতে লাগিল। উনীয় ভাষাতে নায় বিলেল ৰচে, কিত সৈচনাহারা করিতে চাহিলেন না।

১৭৭৪ বুটাকে ক্লা মহারাইদিগকে বোরাব হইতে ভাড়া-ইয়া নিরা জাবিতা খাঁ ও অভাভ রোহিলা সন্ধারগণের সহিত বিজ্ঞতা স্থাপন করিলেন। কিছ অচিরেই তাঁহার বলের গৃতি কিরিল। ভিনি রোহিলাবিগকে বমন করিবার **অভি**ঞাতে পুলরার হেটিখনের সাহায্য প্রার্থনা করিলেন। সেলাগভি বেকারের উপদ্ধ বধারীতি আবেশ থোরিত হবল। বেখিতে দেখিতে ইংরাজনৈত অবোধ্যাপ্রাতে উপনীত হইগ। কর্পেন চাল্পিরাদের নিকট সন্ধির গুজাব পাঠাইরাও হাকিজ রহমং-প্রার্থিত অর্থকানে অসমতি জাপন করিলেন। তথ্য বৃদ্ধ অবস্তাৰী হইরা উঠিল। উক্ত বর্ষের ২৩এ এপ্রিল সাইজহান-পুর জেলার মিরাণপুর কাট্রার বুছ রাধিল। রণ্ডেতে হাফিলরহমতের সঙ্গে প্রার ছই সহল রোহিলা প্রাণবিস্থান করিল। ইহার পর করকুলা থা রোহিলাদিগের নেতৃক্তাহণ করিলেন বটে, কিন্ত যুদ্ধে অসমর্থ হইরা রামপুর, তরাই ও অবলেবে গড়বালের পর্বতসামূদেশে পলাইরা আত্মরকার্থ সঞ্জির প্রকাব পাঠাইলেন। স্থুনমাসে ইংরাজ ও উলীর্নৈভ পর্বভ-সীমান্তে আসিরা উপহিত হইল দেখিরা ভরে ভিনি সন্ধির সর্ভে অমুমোদন করিলেন।

ইংরাজনৈক্ত ও উজীর তদনত্তর নেই হান ত্যাগ করিলে পাঁচ সহত্র রোহিরা কর্মা কর্ম্বলা রামপুরে আনিরা রাজ্যশাসন করিতে লাগিলেন এবং অবলিষ্ট রোহিরানৈক্ত সর্দার সহ রোহিলাখণ্ড পরিত্যাগ করিরা আবিতা বার এলাকার আনিরা বাস করিল। এই বৃদ্ধে রোহিরাজাভির উপর বে অত্যাচার হইরাহিল, তাহা মহামতি বার্কের ১৭৮৬ বৃটাব্বের ৪ঠা এপ্রিল তারিখের বক্তৃতার ও লর্ড মেকলের ও বিবরণীতে বথাবধ বিবৃত হইরাহে।

রোছিশা, বোঘাই প্রেসিডেনীর কাঠিরাবাড় বিভাগের জুমাগড় রাজ্যের অন্তর্গত একটা গগুলাম। সমুদ্রভট হইতে একগোরা গ্রে ও উনামগরের ৪ জ্যোশ পূর্বে অবস্থিত। পালিডানা রাজবংশের মধ্যে এইরপ একটা আচার দৃষ্ট হর বে, বখন কোন সন্ধার গবিতে আরোহণ করিবেন, তখন তিনি তাঁহার কোন পূর্বপুরবকর্তৃক বিভিত এই রোহিশা নগরী হইতে একথও প্রেত্তর সইরা বাইবেন। ইহার ১৪০ জ্রোশ উত্তরে 'চিআসর' নামক একটা স্থবিস্থত বাধ। ইহার চারিদিক্ জন্তালিকাদি পরিশোভিত।

রোহিশাল। বোষাই প্রেসিডেনীর কার্টিরারাড় বিভাগের গোহেলবার্ট প্রাক্ত একটা সাম্বরাক্ত। এখান্তার স্থারের ভূনাগড়ের নবাব ও বজোবার নাইফোরায়কে কর দিরা থাকেন।

রোহিব (রী) > কর্ণ, গৰহণ । বিশী অগিরাবাস।
(পুং) ২ রোহিকমুক । জি রক্তরিক । (বাহাত)
রোহীতক (পুং) রোইত এক বার্থে কর। রোহিতকরক ।

রোহাতক (ম.) ক্রেন্ড ক্রেন্ড কর্ বাবে কর্ । ক্রেন্ড কর্ক ।
রোহাতকর্ত (রী.) ক্রেন্ড ক্রেন্ড কর্ থবর ছিবিধ
পর ও বছর। ইহার আন্তভ্রেনালী—ন্ত ও বের, ভাষার্থ
রোহাতক ছাল ২০ পল, কুল ওঁটা ৩২ পল, পাকার্য জল
এপ লের, পেল ১৯ সের ২ পল। ক্রার্থ পিপ্লন্ল, চই, চিতান্ত্র, বঁট প্রভেক্ত সপল, রোহাতক ছাল ৫ পল, পাকের জল
১৬ লের। পরে বর্ধাবিধানে এই বুজ পাক করিবে। এই
বুজ পাল করিলে মীহা ও জন্ম প্রভৃতি বিবিধ রোগ লাও
প্রাপমিত হর। (ভৈবজারছাত মীহাবর্কাবিত)

নহারোহীতবন্ধত। প্রভতপ্রণালী হত ৪ দের, কাথার্থ রোহীতক ছাল ১২৪০ দের, কুল উঠা ৮ দের, কল ১২৮ দের, শেব ৩২ দের। ছাগহুর্থ ১০ দের। ক্যার্থ জিকটু, জিকলা, হিন্দু, যমানী, থনে, বিটুলবণ, জীরা, ক্ষুণ্ডল্প, বাড়িমবীজ, দেবদারু, পুনর্ণবা, রাধালশনার মূল, ববকার, কুড়, বিভুল, চিতামূল, হর্বা, চই ও বচ প্রভ্যেকে ২ ভোলা, পাকের জল ,১৬ দের। বথাবিধানে পাক শেব করিয়া নামাইতে হয়। এই স্বতের মাত্রা ৪০ জানা হইতে হই বা তিন ভোলা। অহুপান মাংসরস, যুব ও হুর্থ প্রভৃতি। এই স্থত বিশেব ক্ষুক্র প্রবং ইহা দেবনে শীহা, যকুৎ ও ভক্তক শুল, কুক্লিশ্ল, হুক্ত্, পার্থপ্ল প্রভৃতি বিবিধ রোগ আন্ত প্রশমিত হইয়া থাকে। গ্রাহা যক্তম্বিকারে ইহা একটা উৎকৃষ্ট স্বত। (ভিষক্তারন্ধান শীহাযক্তম্বিক)

রোহীতকলোহ (রী) ঔষধবিশেব। প্রস্তুতপ্রণালী— রোহীতক ছাল, বিঁকটু, বিফলা, বিড়ল, স্তা, চিতাস্ল, এই সকল জব্য প্রভাবেক সমভাগ; এই সকল জব্যের সমান লোহ। এই সমস্ত উত্তমরূপে মর্থন করিরা ঔষধ প্রস্তুত করিতে হইবে। অস্থপান লোবের বল বিবেচনা করিরা ছিত্ত করা আবশুক। ইহা সেবনে সীহা, অগ্রমাল ও শোৰ বিনত্ত হয়।

(ভৈৰজ্যরত্বা॰ শ্লীহাবস্তুদ্ধি৽)

রোহীতকলোহ (हो) শীহাধিকারে লোহভেদ।

প্রস্ততপ্রণালী—রোহিতক, তাঁঠ, লিপুল, বরিচ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, বিড়ক, চিড়া, ও বৃতা এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং এই সকলের সমান লোহ একএ বিপ্রিত করিয়া ইহা প্রস্তুত করিছে হইবে। সাত্রা ও অকুপান রোগের বলাবল অন্থলারে হিন্ন করিছে হইবে। ক্রিক্টাইনগ্রেগাধিন)

রোহীভকান্যচূর্ণ (রী) চ্ণোবধনিশের। প্রভক্ষবাদী— রোহীতক ছাল, বৰকার, চিরতা, কট্কী, বৃতা, লিশাবল, আতইচ, ওঁঠ, প্রত্যেক চূর্ণ সমভাগ, এই বারল উভানারেশ চূর্ণ করিরা একত্র বিভিন্ত করিবে। এই ঔবধের মাত্রা চমারা। অস্থপান শীতন কল। এই ঔবধ সেবনে সম্বর বৃহুৎ শীড়া উপশ্বিত হয়। (তৈবলার্যাণ গ্রাহাব্যুদ্ধিক)

রোহীতকারিক (গুং) দরিষ্ট উবধনিশের। অন্তর্জনানী—রোহীতক হাল ১২৪০ সের, লগ ২৫০ সের, শেব ৩৪ সের। এই কাথ উভমরেশে হাকিরা গইরা ইহাতে ২৫ সের ৩৬ প্রসরাদিতে হইবে, পরে ধাইকুল ১০ পল, পিপুল, পিপুলমূল, চই, চিতামূল, উঠ, অভবক, এলাইচ, ডেজপত্র, হরীতকী, বহেড়া ও দামলা প্রত্যেক ১ পল পরিমাণ চূর্ণ করিরা উহাতে নিক্ষেপ করিতে হইবে। ইহা একটা ভাঙে করিরা ভাহার মুখ উভম্বাসে পর করিয়া এক মাস কাল রাখিরা লিতে হইবে। এক মাস পরে এই সকল এবা উভমরেশে আলোড়ন করিয়া ছাকিরালইতে হইবে। এই দরিষ্ট দরি ছারি পরিমাণে সেবন করিছে হর। এই দরিষ্ট দিবাভাগে ২ বার বা ০ বার সেবনীর। ইহা সেবনে সাহা, ওল্ম, উদরী গ্রেছতি বিবিধ রোগ গ্রেশমিত হয়।

রৌরু (ি) কল- শণ্। কলনির্বিত। স্বর্ণনির্দিত।

"বজোপবীতং দেবক গুডে নোলে চ কুরলে।" (মা ৪। ৩৬)
রৌরি(ণার (গং) কলিবীগর্ভসম্ভব। ২ প্রাত্তম।
রৌক্ষাক (গং) কন্দের গোতাপত্য কবিভেল।
রৌক্ষারণ (গং) কন্দের গোতাপত্য কবিভেল।
রৌক্ষারণ (গং) কন্দের গোতাপত্য কবিভেল।
রৌক্ষারণ (গং) কন্দের গোতাপত্য কবিভেল।
রৌক্ষারণ (গং) কন্দের কোতাপত্য কবিভেল।
বিনিক্ষারণ বিশ্বাস্থানীর ভিলাং বছ্যান্তবং স্বতং।
বিনিক্ষারণ বাস্থানীর ভাগনাত্যমন্তিবাদ্য

्यारपार्यः (स्वीपुः व्हानवमीत्रानधः)

রোচনিক (ি) > রোচনাধারা রঞ্জিত। হরিত্রাজ। (রী) ২ বন্ধ-মূলে অভিবং কঠিন মল। রোচ্য (পুং) কচেরপভাষিতি ক্রতি-বাণ্। ক্রাবিশেব, রোচ্য

ব্লীচ্য (পুং) ৰুচেরপতারিতি কচি-বাণ্। ৰছবিশেষ, ব্লোচ্য মন্ত্র। কচি প্রভাপতির পুত্রের নাম রোচ্য।

"রোচ্যাদরতথাক্তেংশি দনবঃ সংপ্রকীর্জিভাঃ। হুচেঃ প্রজাপতেঃ পূত্র রেচ্চাে দাদ ভবিভাভি 🕫

'('বংজপুঞ্জ'জ+')

রোচ্য অরোকশ মস্ত, এই মবন্ধরে স্থপর্বা প্রভৃতি বেশ্বা, ইর দিবশ্যতি প্রবং ধৃতিমান্, অথ্যর, তথ্যপী, নিরুৎস্থপ, নিরোধ, স্থতপা, নিভাকশা, চিত্রনেন, বিচিত্র, নরস্থাৎ, নির্ভাৱ, বৃহ, স্থচনত, অনুবৃদ্ধি ও স্থরত এই সকল মন্তপুত্র। (মার্কডেবর্মাণ) ২ বিশ্লাচনও। (হেন) রোচ্চভেদ্নিতি অন্। ৩ সম্বত্তর্থিনের।

শ্রুপতিভাঠো খণেবুঁজো দক্ষসাবর্ণিকে প্রতে । দিশাসরভাবিরলং রোচাং প্রকা মধ্যোভক: ॥"

(মার্কভেরপু• ১০০।৩৯)

ব্রেটি, জনাগর। ভাষি পরবৈশ দক্ষ দেই। লই রেটিভি। লোট রোটজু। লিট্ করোট্র সূত্র্ অরোটিং। লিচ্ রোটরভি। সূত্রকরোটং।

ব্রোড়, অনাদর। জ্বাকি পরজৈ সক্ষাকট্। লট্রোজ্তি। পুড, অরোড়ীং।

(त्रोष्टीस, (१९) विवाकत्त्र-जन्मनावरकतः।

রোদ্রে (রী) করতেলং বা করে দেবতা বত কর্ম-মাণ্। পুলারাদি রনের অন্তর্গত রদবিশেব, পর্যার উরা। এই রস ক্রোধের
আরা। এই রনের বিবর সাহিত্যবর্গণে এইরূপ বর্ণিত
হইরাছে,—এই রনের ছারিভাব ক্রোধ, রক্তবর্ণ, ইহার
অধিষ্ঠারী বেবতা করু, শক্র ইহার আলখন, পর্যানিগর চেটা,
উদ্দীপন, মৃষ্টিপ্রহার, পতন, বিক্লডছেদ, অবদারণ, সংগ্রাম ও
সম্মাদি বারা এই রস উদীপ্ত হইরা থাকে। ক্রবিক্লেপ,
ওটনির্দিংশ, বাহুক্লোটন, তর্জ্জন, আত্মাবদানকথন এই সকল
এই রসের অন্তভাব। আক্লেপ, ক্রুবসন্দর্শনাদি, উগ্রতা,
বেগ, রোমাঞ্চ, স্বেদ, বেপণু, মন্ততা, বোহ ও অম্বাদি ইহার
ব্যতিচারিভাব।

"রৌল: কোধঃ ছারিভাবো রজো রজাবিদৈবভঃ।

আলমনং রিপুত্তর ভচেটোদীপনং মতন্ ॥

মৃটি প্রহারপতনবিক্বভাজনাব্যারগৈলৈব।

সংগ্রামসন্ত্রমাজৈরভাদীপ্রির্ভবেৎ ক্রোলা ॥

ক্রবিজ্ঞলোচনিদ গেবাছন্দোটনতর্জনাঃ।

আল্মাবদানক্র্যনমার্বোৎক্ষেপানি চ ॥

অল্ভাবত্তথাকেপক্র রসন্দর্শনাবরঃ।

উপ্রভাবেপরোমাক্ষ্যেদবেশ্যবা মদঃ।

ক্রোহামরাদ্রশাক্ষ ভাবাঃ স্থার্ব্যভিচারিলাঃ॥" (সাংশংশুহের্থ)

রৌলরসের সহিত হাস্ত, পৃশার ও ভ্রামক্রসের
সহিত ক্রোমা।

"রোজ হাজ্যুলারভরানকরনৈরপি। ভরানকেন শাঁজেন ভবা বীর্মন: বৃতঃ ঃ"(সাহিত্যুদ ও ৩২৪২) (বৃং) নজভারনিতি কজ-অন্ । ২ মজভেলঃ, শ্বাম কর্ম, ব্যেকান, ভোভ, আভদা । (অম্ম) ইহার ভান-কট্ট কল, ক্ষে, বৃদ্ধি ও ভূজানানক, বাহ ও বৈষ্ণাজনক এবং ভলুমোগবৃদ্ধি । (রাজ্যুক) ব্যোতিৰে হোঁতের পটা নাম বোনিকে নাজো নাম। কঠন, পিলন, হোঁত, বোরাখ্য, কালনংক্রিড, করিনানা ও হড এই ৭টা থেকি।

অভিবংশন একএকটা রোল অবিশক্তি ছবীয়া পাছে। বেমণ, রালা, নত্তী গুড়েতি অভিবংশন এক একটা হইরা থাকে, তজ্ঞপ এই সথ রোজের মধ্যে এক একটা হইরা থাকে, ভেলান বংশন কোন রোজ অধিশক্তি হইবে, ভাষা গণনা বালা ছিন্ন করিতে হয়।

"ৰঠয়: পিৰলো মোঁতো ৰোৱাখ্য কালগঞ্জিত। । কৰিনাৰা হতে বোজ লও রোজাঃ অকীর্বিভাঃ ॥"(জ্যোতিং) কোন কোন এছে 'হক' এই নাম কলে আলবাহ এই নাম দিখিত আছে।

এই রোজের ফল এইরাপ লিখিত আছে, —বে বংলর পিলল রোজ হর, সেই বংগর প্রালাক্ষর, বক্তরাপ ও নর্পানীতবর উংপতি হইরা থাকে; অঠর রোজ হইলে প্রণানি পিতরোগ ও বাদবদিগের নানাবিধ ক্লেপ; ক্ষরি নামক রোজ হইলে উন্তাপ বারা পৃথিবী ওকা এবং জীবসন্হের নানাবিধ রোগ; রোজনামক রোজে চিভোবেগ, নালা রোগ ও প্রণানি দীড়া; বোরনামক রোজে অতিশর উত্তাপ এবং বছবিধ রোগ; কালনামক রোজে জীবসকল উত্তাপে অভিশর পীড়িত এবং প্রণাদি নানাবিধ রোগ তোগ করিরা থাকে।

ও হেমন্ত গড়। (ক্ষেত্ৰ) ৪ যম। (ধরণি) ৫ কার্ডি-কের। (ভারত ১৷৩৮৷১৩) (বি) ক্ল-জণ্ । ৬ তীব্র। "জরবিপাদরিশিরাঃ বড়্ড্জো নবলোচনঃ। ভশ্বপ্রহরণো রোক্ত্র কার্ডান্তক্যমোপনঃ॥"

(বিজয়রক্ষিতথৃত হরিবংশবচন) ৭ ভীবণ। (মেধিনী)৮ ক্ষয়সম্বন্ধী। ৯ ক্ষয়ের উপাস্ক।

শণিদলো রোত্রনাম। চ ফাললণ: এফাক্ষর্।

শর্ণনি মহলোগ্য তাৎ সর্বাধীনসমূহক। ৪

অঠরো রোত্রনামা চ বোর্থ্যক কারবেং।

অগালিপিড্যোপক নানাক্রেশকরো পুণার ৪

শরিনামা বলা বর্বে রেট্রো ভর্মান নালাল। তব্ধং ৫

রোত্রনামা বহারোলো ব্যাবে চ তব্যব্ধনম্।

চিন্তোবেলং এবং কুর্যারানারোপনম্বিতর্ভ ৪

বোরনামা বহারোলো বোর্থ্যক কারবেং।

উভাপের নাল করং নানালোপনম্বিতর্ভ ৪

কানবলো বহারোল উভাপে শীর্ডনং স্থা।

নানালোক্যান্ত্রনামান্ত্

इङ्ग्लिख बहैनःवरनदात जवर्गक চকুঃশঞ্চাশং বর্ব।
 इङ्ग्लिख। ১২ জাগদেৰজাকের। এই জর্বে রৌজনন বহুবচনার। ১৩ জাভিবিশের। ১৪ জাজানক্ষর। ইহার অধিঠারী নেবজা ক্ষর। এই লভ রৌজনামে অভিহিত।
 ১৫ সামজের। ১৬ লিক্টের।

রোদ্রেক (রী) করেন কতং কর-((কুলালাদিতো বৃঞ্ । পা ৪০০১১৮) ইভি কুঞ্ । করকর্ত্বক হত।

ক্লোনেকৰ্মন (জি) রোজং কর্ম বস্ত। ভীবণকর্মা, রোজকর্মন কারী। (জী) ২ ভীবণ এইমাণ কর্ম।

ব্লোদ্রেগণ, ক্ষিত-জ্যোতিবোক গণডেন। এই গণে কম হইলে নেই ব্যক্তি প্রতিদিন পাপাচারী হর। (কাঞ্চিপ্রদীপ)

রোদ্রেতা (ত্রী) রোদ্রত ভাবং তল টাপ্। রোদ্রত, রোদ্রের ভাব বা ধর্ম।

द्रितोत्समर्भन (बि) द्रोत्यः मर्भनः वस्त्र। श्रीवनाङ्गितः । द्रितोत्सद्रानी, देवनमध्यनात्रःस्त्र। (इविता॰ ১१९৮)

রোদ্রেপাদ (শ্লী) রোক্ত নক্ষত্রবিশেষত পাদং। আজানক্ষত্রের পাদক্ষে।

রোদ্রেমন্ (ঝি) রোজং মনোবছ। ভরানক মনোবুজ। নিছুরচিত্ত। জ্ব।

(त्रीतांश (बि) क्य ७ व्यानप्**री**त।

ব্লোদ্রায়ণ (গুং) ক্লের গোত্রাপত্য।

রোদ্রা (পুং) পুরুর পুত্র ও তার্মশীর একজন রাজা।

রৌদ্রি (পুং) ক্ষমের গোতাপতা।

রৌদ্রী (জী) রৌজ-জীপ্। ১ ক্রম্মনটা। (মেদিনী) ২ চণ্ডী।

মহামারা চামুগুদেনী ক্রমনামক মহামৈত্যকে বিনাশ করিয়া

गहात्त्रोजी अरे नात्म विशां हरेबाहित्नम।

"এक এव महारेनरका कक्क उन्हों महामृश्य ।

স চ মারাং মহারোঞীং রোরবীং বিসনর্ক হ ॥° ইত্যাদি।

(বরাহপু• ত্রিশক্তিমা•)

त्रोतिकाव (११) शत्त्वत्र भर्त ।

দ্রৌধ (পুং) রোধভাপত্যং রোধ (শিবাদিভ্যোধন্। পা ৪।১।১১২)

ইতি অণ্। রোধের অপতা।

त्रोशांषिक (बि) स्थापिशशतप्तीत ।

(त्रीधुत (बि) क्रिश्त-चन्। क्रिश्त मच्चीत।

(द्रोश्र (ही) क्रगटमर चन्। क्रग्र, क्रगा। (वास्ति•)

চণিত দ্বপা বা দ্বপো। ইহা একটা খনিজ পরার্থ এবং আই থাজুর মধ্যে গণ্য। এই থাজু হইডে নানাদ্রপ অলভার ও ঔবথাদি প্রেছত হইনা থাকে। সান্ত্রিক বৌধালাভানিত রোগে আনুর্বেদ মতে স্বর্ণ বা লোহবোগে রৌপালটিত ঔবধ

প্ররোগের বিধি আছে। ডাক্সার এবার্স ন ঐ ঔর্বের উপ-কারিডা সক্ষে প্রেশংসা করিরা গিরাছেন।

এই বাড় নানাছানে নানা নাবে পরিচিত। হিন্দী, বাজনা, নরাঠা, দক্ষিণী, জলাতি তেটে—টালী, রূপা ও রুমা; নিরু প্রবেশ—কপো, ডামিল—বেরী, বেঙি; তেলগু—বেরী, লাগাড়ী—বেরী; আরব—কমা, কিলা; পারত—নিন, রুক্-রাহ; সংস্কৃত—বেড, রুক্ত, রৌপা; নিলাপুর—পেটা, রিছি; ক্রক্ষ—নোরে, চীন্—বিন, পেকিন্; মলর—পেরাক্, শলকা; ববরীপে—লাকা; মলরালম্—রিরাকি; ডুকা—বুন্মুন; ইংরাজী—Silver; দিনেমার—Solva; ওলনাক—Silver; কর্মি—Silber, করানী—Argent, ইডালী—Argento, লাটিন্—Argentum; পোলিস্—Srebro; পর্কু নীক্ষ—
Prate; ক্রম—Serebro, শেলন—Plate; ক্রমেডিস্—
Silfver, হিক্ত—কেনেক।

কি প্রাচ্য কি প্রতীচ্য ক্ষগতে বহু পূর্ককাল হইতেই ক্ষণার আদর ও ব্যবহার চলিয়া আনিতেছে। কুক্সংহিতার (৮।২৬।২২) এবং বৈদিক ব্রাক্ষণাদির্গেও ক্ষবিগণ খর্ণ ও রৌপ্যের ব্যবহার ক্রানিতেন। পূরাণাদি এবং ম্বাদি স্থতিতে ক্ষপার উদ্রেখ দেখা বার। স্থতিকারগণ ব্রাক্ষণের পক্ষে শৃদ্রের নিকট রৌপ্যদান-গ্রহণের ব্যবহা দিরাছেন। ইহাতে ভাঁহারা পতিত হইবেন না। এই সকল রম্ব তৎকালে ব্রাক্ষণগণ দেবসেবার ক্ষন্ত নির্দিষ্ট রাথিরা-দিতেন। [রক্ষত দেখ]

প্রতীচ্য ভূমেও প্রাচীনকালে রূপার প্রচলন ছিল। মোজেনের লেখনীতে তাহা বির্ত রহিরাছে। খুইংর্ম পুতক বাইবেল গ্রন্থের জেনেসিস্ বিভাগে (xx.16) প্রথমে রূপার উরেখ পাওরা বার। উক্ত বিভাগের xxiii. I5, জংলে রূপার বাগিলাপ্রভাবের কথা আছে। জহুরার (vi 18-19) লিখিত আছে "এই সকল অভিশপ্ত বন্ধ হইতে সর্জান নুরে থাকা কর্তব্য; কিছ বর্ণ বা রোপ্য বাহা আছে এবং গোহ ও পিন্তল নির্দিত পাত্রাদি ভোগবিলানের সম্পতিরূপে সঞ্চর না করিরা দেবার্থে নিরোগ করাই সর্জতোভাবেই উচিত।" বাত্তবিক বাইবেল গ্রন্থের বহু পূর্জবর্তী সংহিতা মুগ হইতে আদ্বাধর্মনেবী নানাস্থানের হিন্দুগণ এই আচার বেদবং পালন করিরা আনিতেছেন।

খনিতে দ্বপা কথন সুনধাতুরূপে, কথন বা ক্লোরিন্, সাল-কাইড্ নিপ্রণে অথবা সীসক, অপ', রসারন, সেঁকো ও ভারাদি-বোগে বিশ্রধাতুরূপে বেখিডে পাওরা বার। ঐ বিশ্রধাতুর্কে বে প্রধার পরিকার করিতে হয়, সেই প্রণাশীকে ইংরাজীতে Process of Amalgamation বলে। পরিষ্কৃত রৌণা চাঁদি নাবে অভিহিত। ইহাতে বাদ (Alloy) বোগ দিরা সাধারণতঃ
দুরা ও অলভারাদি প্রভত হইরা থাকে। কবন কবন কোন
ভিন্ন পদার্থের সহযোগে (Afficted by re-agents) উহার
প্রকৃতি পরিবর্তন করিরা উহাদারা অলব্যবক্ষেদ কার্ব্যের উপবোদী
অস্তাদি (Surgical instruments) ও রসায়নকার্ব্যের
আবশুকীর পাত্র-বিশেব প্রস্তুত করিতে দেখা হার।

ভারতবর্বের নানাছানে, বিশেবতঃ কর্ণ্রজেলা মধুরা ও মহিল্প প্রদেশে এবং লাসা, সানঠেট, মার্ভাবান, জাসাম, কোচিন-চীন, বুনান, ফিলিপাইন শীপপুঞ্জ প্রভৃতি স্থানে মিশ্র অবহার ক্লপা পাওরা গিরাছে।

রোপ্যের দর সকল সময়ে সমান থাকে না। পূর্কে রূপার দর অধিক ছিল, কিন্তু আমেরিকাতেও সোণা ও রূপার থনি আবিষ্কৃত হওরার পর হইতে রূপার বালার নরন পড়িরাছে। ১৯ব শতানীর প্রারক্তে ১ তোলা (১৮০ প্রেণ) সোণার নাম ১৫ বা ১৬টা তুলামান রোপ্যসুত্রা থার্য ছিল, কিন্তু ১৮৭০ হইতে ১৮৮৩ খুটাকের মধ্যে ২৩ তোলা রূপা=১ তোলা সোণার দাম চড়িরাছিল, পরে এক সমরে ২৭, হইতে ২৯, কোল্পানীর মুলার ১ ভারি পাকা সোণার দাম হইরাছিল। সোণার বালার প্রারির থাকার একলে রূপার দর জনেকটা ভির হইরা পড়িরাছে। ইংরাজরাজ্যের প্রচলিত ২২০/০ রোপ্যসুত্রার সভ্রেণ গিনীর ১ ভারি জর্বাৎ পাকা ১৫, তথার ১ থানি গিনী। মুসলমানরাজ্যনের রাজতে প্রচলিত সিকা মুলার তুলনার বর্তমান মুলা ৴০ এক আনা কম।

ইংলক্তের তর এড্ওরার্ডের শাসনকালে রূপার দাম কম
ছিল। রাণী এলিজাবেণের রাজ্যকালে তাহা প্রার হিপ্তপ
বাড়িরা বার। তৎপরে মেরিকোও পেলরাজ্যে রূপার ধনি
বাহির হওরার ক্রমশঃ দর নামিতে থাকে এবং ১ম চার্গসের
রাজ্যসমরে তাহা এলিজাবেণির যুগের এক্তৃতীরাংশ মূল্যে
বিক্রীত হর। এইরূপে ইংলপ্তেও টিউডরগণের রাজ্যকালের মধ্যভাগে রূপার যে দর ছিল, তাহার পাঁচ আনা
আন্দাল দর বলবং থাকে এবং ক্রেসির সমর্কার ইরের অর্জ্বক
হঠবা বার।

পূর্বেই উল্লেখ করিবাছি বে, ইংলাণ্ডে মধাব্দো রূপার গর
অধিক ছিল। তৎকালে > ওঁকা নোপা > ওঁকা রূপার বিনিমরে পাওরা বাইত। ১৭৯২ বুটাকে আনেরিকার ব্তরাকা
ডলার মূলা আচলিভ হওরার উহার পরিবাপ > : >৫ অর্থাৎ

> ১৫টা অর্থভনার পরিবিভ অক্টা রৌপাডলার নির্দারিত হয়।
আনেরিকার এই ন্তন বিধিতে রূপার বর অন্তাধিক বর্তিত
হুইতে দেখিরা ১৮০৩ বুটাকে করানীগণ কাভ মূলা প্রচান

रुरत्न । जारारण क्यांनी नदी अविकृत्यात शाम क्यारिया উহার পরিমাণ ১ : ১e॥ • क्षित्रा क्षित्र। 'काहारक नाकारत' স্থাৰ খেলা চলিতে লাগিল। ১৫টা ওলার পরিমিত ক্রণা বিরা কেই ১ ভবার পরিমিত সোণা ক্রম করিছে পারিত না। मूजांबरणंत्र शत केश "Stundard coin" वा त्यान्तिक मुंजाबरण गृरीक रक्षात्र अरुवारे लाटक ३६० छनात्र मुलाविनियस স্বৰ্ণমূলা ক্ৰম স্বিতে পাছিল। এই রোপ্যমূলার কর্মচারীদিগের বেতন দিবারও বেল প্রবিধা হইল। কারণ বাঁটিরপা ১৫ ডলার भेत्रिमान ७ ३० है। जनात्रमुखात मूना जात्मक चळत रहेन। লোকের ঘরে যত ক্লপা ছিল, তাঁহারাও টাক্লালে আনিরা টাদিরপার বুলা গড়াইরা শইলেন, ইহাতে বাজারে রোণ্য-মুদ্রার অধিক প্রচলন হইল। ত্রবাদি ক্রের করিবার পক্ষেও রৌপ্যমুদ্রার প্ররোজনীরতা অধিক উপলব্ধি হইতে লাগিল। কেন না একটা স্বৰ্ণমূজা না ভালাইলে অথবা ভন্নলোর এবা ক্রের না করিলে অর্ণমূজার বিনিমর সহজ্ঞসাধ্য ছিল না। त्त्रोगामुलात बाठनामं धरे अञ्चितिश अनामानिक इर्हेन वर्छ. কিছ অধিয়ার প্রচলন অনেক কমিয়া আসিল।

রূপা ও সোণার মূল্য আইনমতে ধার্য করিরা আমেরিকার যুক্তরাজ্যে উক্ত উভরপ্রকার মূলার বিনিম্মই সাব্যন্ত করা হইল। কিন্তু লগ পরিলোধ কালে বর্ণমূলাদানে ক্ষতির আধিক্য দেখিরা তাঁহারা এই bi-metallic system রহিত করিরা দিলেন এবং সমগ্র বর্ণমূলা ক্রান্সে প্রেরণ করিলেন। করাসী-রাজসরকারে পূর্ব হইতেই রূপার দর কম (nuder-valued) ধার্য হওয়ার, তাঁহারা আমেরিকার bi-metallism প্রথা অবলম্বন করিতে বাধ্য হইলেন। স্নতরাং তাঁহারা দেশের রৌপায়ুল্যা আমেরিকাকে প্রত্যাপ্র করিলেন।

আমেরিকা হইতে বর্ণ হানান্তরিত হইতে বেধিরা তদেশবাসীরা ১৮৩৪ খুটাবো প্নরার উত্তরপ্রকার মূল্রাপ্রচলনের
প্রভাব করিলেন। তর্হুলারে রূপার দর ১:১৬ ধার্য হইল।
ইহাতে পুনরার গোল বাধিল, রাজ্য পুনরার রৌণ্য বা রৌণ্যমূল্রাপুত্ত হইল এবং বর্ণমূল্র তাহার হান অধিকার করিল।
১৮৫৪ খুটার পর্যন্ত আমেরিকার টাকলালে একটাও রূপার
মূল্রা প্রস্তুত হর নাই। ১৮৭০ খুটারু পর্যন্ত আমেরিকার
৪৫০৫০ চন নামক রাজবিধিতে স্কুর্রাকে লোগার সমস্ল্য
(silver a logal tender equally with gold) বলিরা
নির্দিষ্ট থাকিলেও বিশেব কোন কল হর নাই, কারণ তৎ
পরবর্তিকালে লোগারপার দর বাজারে ইটিজেন্তে ও নামিতেতে।
জর্মপান্ত ১৮৭০ খুটাবের পর কর্মনুত্রার ফ্রেন্টাল্যরার ও
ব্যক্তর বৌণ্যমূল্যর প্রচলন কর্মিরাছিলেন। ক্রিন্টাল্যনার ও
ব্যক্তর বৌণ্যমূল্যর প্রচলন কর্মিরাছিলেন। ক্রিন্টাল্যনার ও

আষ্ট্রেলিয়ার অর্ণধনি আবিষ্কৃত হওরার পর হইতে অর্ণ ও রৌপ্যের বাজারে যুগ-প্রশন্ন ঘটিরাছে।

শোধিতরপা রূপার পাত বা রূপানি (Silver leaf) माधातगढः आयुर्व्सनभा**टक क्षेत्रधार्थ आदा**न हरेबा थाकि। হেকিম্লণ আমলকীফলের (Pnyllanthus Emblica) সহিত রূপার পাত **অজীণ অথবা সার্বিক দৌর্ক**ণাজনিত রোগে সেবনের ব্যবস্থা দিয়া থাকেন। বোককস্বগোষরোগে (Conjunctivitis) Argentum Nitrus > গ্ৰেণ কলে মিশাইয়া कञ्चल प्रिटल উপकात्र पटर्न । जाना अधिक त्वाथ इटेटल यस्त्रगाद्यात्न লবণজল লাগাইয়া দিলে বেদনার উপশম হয়। কচ্ছপ্রদেশের ভূজনগরের স্থাসিত্র চিকিৎসক বেরেন্ সাহেব লায়ুর বলকারক প্রষধরূপে রোপাভন্মের উল্লেখ করিয়া যান। উহার প্রস্তত-প্রণালী-একভাগ সেঁকোবিষ অন্ধরোণ নেবুর রস ও 🗸 ভাগ রূপার পাত খলে উত্তমরূপে পেষণ করিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। পরে তাহা নববন্ধ ও মৃত্তিকা ছারা লেপন করিয়া অগ্নিতে দগ্ধ করিবে। যথেষ্ট উত্তাপে অভ্যন্তরন্থ ঔষধ ভন্মীভূত হটলে তাহাকে পুনরায় লইমা ঐ রূপে বন্ত ও মৃতিকালেপন হারা চতুর্দশবার দথ্ম করিলে রৌপ্যভন্ম প্রস্তুত হয়।

রাসায়নিক প্রক্রিয়া ধারা রূপার অনেক পরিবর্তন সাধিত
হয় । রূপার বাসন বা খেলানা প্রস্তুত করিতে ক্ষার বিশেষ
কার্য্য করে । নাইটিকএসিড্ রূপার উপর বিশেষ কার্য্য
করে, হাইড্রোক্লোরিক ও উত্তপ্ত সাল্ফিউরিক এসিড্ এবং
উত্তপ্ত লবণজল ও একোয়া-রিজিয়া কতক পরিমাণে রূপান্তর
ঘটাইতে সমর্থ।

নাইট্রকএসিডে বাজারে দ্ধপা (Commercial silver) ছুবাইলে বিশুদ্ধ দ্ধপা পাওয়া যায়। পাত্রে যে হাইড্রোক্লোরিক এসিড্ থাকে, তাহা জাল দিলে ক্লোরাইড্ অব সিল্ভার বাহির হয়। রাসায়নিক প্রক্রিয়ায় রূপার যে কয়টী মিশ্রপদার্থ আবিষ্কৃত হইয়াছে, নিয়ে তাহার একটী তালিকা দেওরা গেল,—

Suboxide of silver, Molybdate of Suboxide of silver, Protoxide of silver, Peroxide of silver, Sulphide of silver, Sulphide of silver, Sulphide of silver, Iodide of silver, Sulphate of Silver Nitrate of silver বা Luner caustic. এতভিন্ন রোপা হইতে triphosphate, pyrophosphate, metaphosphate, Carbonate, borate, chlorate, monochromate, bichromate ও arseniate প্রকৃতি শবণ বাহির ইইয়া থাকে!

ঔষধাদি প্রস্তুত করিতে হইলে লোধিত রোপ্যের জভাবে কাস্তুলোই দেওয়া বাইতে পারে। "স্বৰ্ণনথবা রৌপাং মৃতং বত্ৰ ন শভাতে।
তত্ৰ কান্তেন কৰ্মাণি ভিষক্ ক্ৰ্যাৰিচক্ষণঃ ॥" (ভাৰপ্ৰ•)
(ত্ৰি) ২ রৌপাবিশিষ্ট।
"ম্প্রোপাান্ত্রীয়া শৃলৈঃ সম্পাং সর্বাতো গৃহিঃ।"
(ভাগবত ৪।২৫।১৪)

রোপ্যগিরি, প্রাচীন বিদেহরাজের অন্তর্গত একটা শৈল। রোপ্যমায় (ত্রি) রোপ্য-স্বরূপে মন্ত্রট রোপ্যস্বরূপ, রোপ্যনির্শিত।

রৌপ্যমুদ্রা, (Silver coinage) রৌপ্য ধাড়ু হইতে প্রস্তুত রাজচিকান্ধিত রৌপাচক্র বা চতুহোণ থগু। ইহা মূলা বা তথা নামে রাজাদেশে কার্যাব্যাপারে বিনিমন্ত্রন্তপ গৃহীত হইতে থাকে। ইংরাজরাজতে বর্তমান যেরূপ রোপ্যমূদ্রা বা টাকা = বোল আনা বা ২৪টা ভাত্রমুদ্রা প্রচলিভ আছে,মুসলমান অধিকারে সেরূপ সিঞ্চা প্রভৃতি মূল্রা ছিল, এ মূল্রার পরিমাণও স্বতন্ত্র। প্রাচীন হিন্দ্রাজ-গণের অধিকারে নানারূপ স্বর্ণ ও রৌপামুদ্রা প্রচলিত ছিল। ভারতবর্বে বিভিন্ন রাজগণের অধিকারে ছেনী কাটা বা ছাঁচে ঢালাই যে সকল মূলা প্রচলিত হইয়াছিল, তাহার সকলগুলিই কিছু কিছু খাদ মিপ্রিত। ১৮৬৮ খুষ্টাব্দে সার্জন মেব্রুর সেকণ্টন (Surgeon Major Sheklton) এক থানি পত্ৰিকায় ১০২ প্রকার স্বর্ণ মোহর, ৩২ প্রকার হুণ বা পাগোড়া, ১ প্রকার অর্দ্ধপাগোড়া, ২৪ প্রকার সোণার ফানম্ (পরিমাণ ২.৬ হইতে ৫০৯ রেগ্রণ) ও ২১ প্রকার বৈদেশিক স্বর্ণমূলা, এবং রোপ্যের মধ্যে ৪৫৬ প্রকার রূপী, ২৩ প্রকার আধুলী, ৬ প্রকার ফানম ও ১টা দাম্ডী মুদ্রার খাদের পার্থক্য নির্দেশ করিরা যান।

আবৃলক্জলের লেখনী হইতে জানা যায় যে, ১৫৪২ খুঠাজে হ্যায়নের নিকট হইতে দিল্লীসিংহাসন অধিকার করিরা শেরশাহ প্রথমে ভারতে অনামে মুলাছণ করেন। ঐ শেরশাহী মুদ্রার এক পৃঠে ইস্লামধর্মের নিশানা ও অপর পার্মে পারক্তভাষার শেরশাহের নাম লেখা ছিল। তাহার পূর্ব্মে ভারতে আরব-দেশীর রূপার দর্হাম, অর্থ দিনার ও তামার ফুলাস্ প্রচলিত থাকে। পাঠান ও মোগলের আধিপত্য বিস্তারের সঙ্গে সকল মুদ্রাও এদেশে আনীত হয়। প্রাচীন হিন্দু ও শক্রাজগণের নামাছিত মুদ্রা সেই বিশ্লবের দিনে একরূপ লোপ পাইয়ছিল। বিশ্বত বিবরণ মুদ্রাত্ত শক্ষে দেখ।

সমাট অকবর শাহ শেরশাহীমূলার দংশ্বার করিয়া চতুকোণ রৌপা জালালীমূলা প্রচলন করেন। উহার ওজন ১১।০ মাবা। ইহাকে 'চারি-ইরারী' মূলাও বলিত। কারণ ইহার চারিকোণে মহম্মদ, আব্বকর, ওমার ও ওস্মানের নাম এবং কিনারায় জালীর নাম ধোদিত ছিল। তৎকালে ভারতের নানাস্থানে

नानात्रत्र मायात्रिमांग अविनिष्ठ शाकात्र मूलाविरनद्वत्र असन-निर्दम्भानत वर्षे अञ्चित्री किंग। अधानक कानज्ञक अकरत-শাহের রাজ্যকাশের বছসংখ্যক পরিষ্কার স্বর্ণ ও রৌপ্যমুদ্রার अंजन वहेन्ना > e-e cale मार्वात्र शक् धार्याः करत्रन । **अ**र्धार এক একটা বিভন্ধ রোপ্যমূলা ১৭৪.৪ গ্রেগ পরিমাণে অকবর-শাহের বারা নির্মিত হইরাছিল। জাহালীর, শাহজহান ও অরক্তেবের সমরে বে সকল মুদ্রা অন্ধিত হইরাছে, ভাহার পরি-মাণও ১৭৫ গ্রেণ। মহমদশাহের রাজম্বকালে জুরাটু, দিলী, আক্ষণবাদ ও বাঙ্গালার ঐক্তপ ওলনের মুলাই ঢালাই रहेशाहिल! ऋषताः सांगनाधिकारतत चाक्वती, चाहानीती. मारबरानी, जानमित्री, मरप्रमारी, जाक्रमारी, मार्जानमी (১৭१२ थु:) मूला अक्त्रभट हिल। महाताहै ও पाछाछ हिन्सू-রাজাধিকত প্রদেশে মোগলসমাট্গণের নাম রাধিরা খতর মুদ্রামণ চলে। ইংরাজের আধিপত্য-বিস্তারের সঙ্গে প্রচলিত মুদ্রারও অনেক পরিবর্তন সাধিত হয়। নানাশ্বানে নানার্রপ মুদ্রা প্রচলিত থাকার ও জবাবিনিময়ে মুদ্রার মূল্যবিভাট ঘটার ইংরাজকোম্পানি ১৭৯৩ খ্টাব্দে ৩০ ধারা বারা শাহআলমের রাজত্বকালে ১৯ বর্ষে সিভামূদ্রার সহিত দিল্লীর প্রাচীনমূদ্রার সমান করিয়া লন। মোগল সম্রাট্গণের স্থরাটী মূড়ার পরিমাণ ১৭৮-৩১৪ গ্রেণ ছিল। উহাতে ১৭২-৪ গ্রেণ বিশুদ্ধ রূপা থাকার উহার মূল্য দিল্লী মূলার সহিত সমান ছিল। পরে ১৮০০ খুষ্টাব্দে হ্রোটী মূদ্রা ১৭৯ গ্রেণ ওজন ১৬৪-৭৪ विश्व क्रभाष भूनताब छालाहे ह्या। ३৮२२ बुट्टारम हेट्टेखिया কোম্পানীর ডিরেষ্টারগণ বোষাই ও মাল্লান্সের মোহর ও টাকা ১৮০ গ্রেণ ধার্য্য করিয়া ঢালাই করান। ১৭৮৮ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত আর্কটী টাকা ১৭০ গ্রেণ বিশুদ্ধ রূপায় প্রস্তুত হইত, তৎপরে ১৬৬-৪৭৭ গ্রেণ বিশুদ্ধ বা ১৭৬-৪ গ্রেণ ওলনে ঐ টাকা প্রস্তুত হয়। পরে ১৮০ গ্রেণ ওজনই চলিত হয়।

ইইভিন্ন কোম্পানী কলিকাতার প্রথমে যে দিলা মুলা ঢালাই করেন, তাহার এক পৃষ্ঠান্ন "হমি-ই-দিন্-ই-মহন্দদ, দরা-হি ফলসউলা দিলা জাদ বরহফত কিদ্বর শাহত্যালম বাদশা," এবং এবং অপর পৃষ্ঠে 'মূর্লিলাবাদ' ও মোগলসমাট্ শাহত্যালম্ বাদশাহের 'সোভাগ্যশালী রাজ্যের ১৯শ বর্ব' অভিত হন। পশ্চিম-ভারতের ফরুধাবাদ, বারাণসী ও সাগর নগরের টাকশালে যে মুদ্রা প্রস্তুত্ত গ্রুত, তাহার এক পৃষ্ঠে প্রক্রপ নাম ও উন্টাদিকে 'করুধাবাদ' নগর এইক্লপ মূলাজণ আছে। মাল্রাজ ও বোষাই মিন্টের টাক্লাদ্ম প্রক্রপ স্থানের নামের পরিবর্ত্তন ঘটিরাছিল। ১৮৪০ খুপ্তাক্ম অভিত মুদ্রার এক পার্ছে রাণী ভিক্টোরিরার মৃকুট্ইনি মৃত্তির দুই ধারে Queen Victoria লেখা এবং উন্টাদিকে

One Rupee এক রপেরা। সিপারী বিজ্ঞান্তর পর ভারত ইংরাজ-নাম্রাজ্যভূক্ত হইলে ১৮৩২ খৃঃ যে রৌপাস্ত্রা প্রচলিত হর, ভারতে ভারতসম্রাজী ভিক্টোরিরার মৃকুট মণ্ডিত আবক মৃর্জির পার্বে Queen Victoria এবং উন্টা পিঠে One Rupee India 1862 লেখা হইরাছিল।

পূর্বেই উল্লেখ করিরাছি যে, ১৬ আনার এক টাকা হর। কিছু রূপা বা ভাষার আনা মূল্য হর নাই। ভাষার আরু আনা বা হই পরনা, এক পরনা, আরু পরনা ও পাই পরনা প্রস্তুত হইরাছিল। উহাতে সিংহ ও ইউনিক্রণ মূর্ত্তি এবং Auspicia regis at Senatua Anglae লেখা ছিল। উহার অপর পার্বে 'East India Company—Hulf anna, লো পাই'লেখা থাকে। ঐ ভাত্র মূল্য ওলির পরিমাণ—

ডবল পরসা—২০০ গ্রেগ (Troy)

এক পরসা—১০০ "

অৰ্দ্ধ পরসা--- ৫০ " "

পাই পর্দা—৩৩১ 🦼

বাঙ্গালার প্রথমে যে স্বর্ণমোহর প্রচলিত ছিল, তাহাতে ৯৯। তাগ সোণা ৮ পার দেখা যায়। ১৮ খুটানের ১৪ ধারা অসুসারে 🛶 সোণা ও 🔑 থাদ মিশাইবার বাবন্ধা হয়। ১৮৩৫ খুষ্টাব্দে ১৭ বিধিতে ঐ খাদ ধার্য্য করিয়া ৩০ টাকা মূল্যে এক থানি ডবল মোহর, ১৮০ গ্রেণ ওলনের ১৫ টাকা মূল্যে মোহর, > • টাকা মূলো হু মোহর এবং ৫ টাকা भূলো হু মোহর প্রস্তুত করিরাছিলেন। ১৮৭০ খুষ্টান্দের ২৩ নং মুদ্রাধারা (Indian Coinage Act XXIII of 1870) রাশবিধি রূপে গৃহীত হইয়া ঐশ্প মোহরাঙ্কই প্রচলিত হয়। কেবল ডবল মোহরের মূল্য ৩২ টাকা ধার্য্য থাকে। মূদ্রার পরিমাণ মোহরের ষিগুণ অর্থাৎ ৩৬০ গ্রেণ ও ৯১৬-৬৬৬ কস্ (touch)। মূর্ণিনাবাদে বে আসরফি মুদ্রা প্রচলিত ছিল, তাহার পরিমাণ ১৯০-৮৯৫ গ্রেণ (troy) সিন্দে ও হোলকর-রাজ প্রাচীন উজ্জরিনীতে রৌপ্যযুদ্রা চালাইতেন। হায়দরাবাদে আসফ্জাণী রাজবংশের অনুধিপত্য কালে সামসিরি ও হালী সিকা ও তামার ঢেবুরা চলিত^{্র}টিল। ত্রিবাস্থ্রে ফানম্ ও চক্রম্ মূলা চলিত।

আসামে ছই প্রকার রোপামূল। প্রচলিত আছে। তলাগে একটার ওজন ৫৬৯ রোণ ও জপরটা ৫৮৯৫ প্রেণ। এরকা বৃহৎ মুল্রা পৃথিবীর আর কোন দেশে নাই।

রেপ্যায়ণ (পুং) রূপ্যের গোত্রাপত্য।

রৌপ্যায়ণি (গং) রুপোর গোত্রাপতা।

রোম (রী) সমারাং লবণাকরে তবং, সমা-খণ্। শান্তরিলবণ।
(অমরটাকার রামাশ্রম)

রেমিক (রী) শাস্তরিলবণ। স্নমনদী হইতে এই লবণ জন্ম, এই জন্ত ইহার নাম রৌমক হইরাছে।

শাকন্তরীয়ং কথিতং গুড়াখ্যা রৌমকস্তথা।" (ভাবপ্রত)
রৌমকীয় (ি ক্রি) রোমক চড়ুর্ছ্ অর্থের্ (ক্লশাখাদিভাল্কণ । পা
৪।২।৮০) ইভি ছণ্। > রোমকদেশবাসী। ২ রোমকদেশ।
৩ রোমকদেশের অদুরভব। ৪ রোমকদেশ ইইতে নির্ত্ত।
রৌমলার (ি ক্রি) রোমণদেশবাসী বা রোমণসন্তব। (পা০ ৪।২।৮০)
রৌমলার (ি ক্রি) রোমণ চড়ুর্ছ অর্থের্ (ক্লশাখাদিভাল্কণ্।
পা ৪।২।৮০) ইভি ছণ্। > রোমল দেশবাসী। ২ রোমণভব।
৩ রোমলদেশের অদুরভব। ৪ রোমল দেশবাসী। ২ রোমণভব।
৩ রোমলদেশের অদুরভব। ৪ রোমল দেশবাসী। ২ রোমণভব।
৩ রোমলদেশের অদুরভব। ৪ রোমল দেশ ইইতে নির্ত্ত।
রৌমহর্ষণিক (ি ক্রি) রোমহর্ষণ খনির গোত্রাপভা।
রৌমহর্ষণি (পুং) রোমহর্ষণ খনির গোত্রাপভা।
রৌমার্যারণ (ি ক্রি) রোমণসন্থভীয়। (পা০ ৪।২।৮০)
রৌমার্যারণ (ি ক্রি) রোমণ্যভারত ১৩।১৭) বছবচনপ্রযোগে
অলির অস্কচর অপদেবভাবিশেবত্বভার্যারিভ ক্রন্থ-অণ্। > যোর।
রীরব (পুং) ক্রমভার্ত্বিশেবভারামিভি ক্রন্থ-অণ্। > যোর।
স্বারব্বিশেব ব্রিব্র ব্রহ্ম।

ম ব ক্রিকেবিশেব, রৌরব নরক। (মেদিনী) এই নরক ছই
হাজার যোজন বিল্পুত। এই নরক অতি ভয়ানক, বাহারা কৃটসাক্ষী এবং মিথাবাদী, তাহাদের এই নরক হইয়া থাকে।
"রৌরবে কুট্দাক্ষী ভু যাতি বল্চানৃতী নরঃ।

"রোরবে কৃত্যাকা তু যাতে যশ্চানৃতা নর: ।
তক্ত শ্বরূপং বদতো রৌরবন্ত নিশাময় ॥
যোজনানাং সহল্রে দ্বে রৌরবো হি প্রমাণত: ।
জাত্মাত্রপ্রমাণস্ক তত্ত্ব শ্বরং স্কৃত্তরম্ ॥" ইত্যাদি ।
(মার্কপুণ পিতাপুত্রনামাধ্যায়) [নরকশ্বে দেখ]

(বি) ৩ চঞ্চল। ৪ ধূর্ত্ত । ৫ ঘোর । (শব্দরত্বা•) রুরো-মূলিভেদমিতি, অণ্। ৬ মূলস্থলী।

"কাষ্ণ রৌরববান্তানি চর্মাণি ত্রন্ধচারিণঃ। বসীরশ্লমপুর্বেণ শাণকোমাবিকানি চ ॥" (মহু ২।৪১)

রে রী) ৭ সামভেদ। (এত- আ- ৩।১৭)
রোক্তব, শৈবধর্মপ্রবর্তক আচার্যভেদ। অভিনবগুপ্ত ইহার
নামোলেখ করিয়াহেন।

রৌরবক (ক্লী) করণা কৃতং (কুলালাদিভ্যো বৃঞ্। পা ৪।৩। ১১৮) ইতি কর-বৃঞ্। কর কর্তৃক কৃত।

রৌরুকিন্। (পুং) রুকুকপ্রবর্তিত সম্প্রদায়ভেদ।
রৌশর্মন্ (পুং) আত্তর্দর্শণপ্রণেতা বাচস্পতির প্রাতী ও
প্রমোদের পুত্র। ইনি একজন অহিতীয় পণ্ডিত ছিলেন।
রৌহিক (ত্রি) কৃষ্ট ইব (অসুল্যাদিভাইক্। পা এ।৩।১০৮)

देखि देवार्थ ठेक्। कारहत्र स्नातः ; करुपूना ।

রেছি। (ক্লী) রোহিণমেব স্থার্থে অণ্। দিনমানের নবম সুহুর্ত্ত, একোদিইপ্রাদ্ধে পূর্ব্বাহ্রকালে একোদিইপ্রাদ্ধ আরম্ভ করিয়া রোহিণকাল লজ্জ্বন করিতে নাই, অর্থাৎ ঐ সময়ের মধ্যে প্রাদ্ধ সমাপন করিতে হইবে। যদি সঙ্গব সুহূর্ত্তের পর রোহিণ পর্যান্ত তিথি লাভ হয় এবং পর দিন তিন মুহূর্ত্ত পর্যান্ত ঐ তিথি যদি থাকে, তাহা হইলে পূর্ব্বাদিনে প্রাদ্ধ হইবে। কিন্তু উভয় দিন যদি সঙ্গব মুহূর্ত্ত লাভ হয়, তাহা হইলে কিন্তু পর্যাদিনে প্রাদ্ধ হইবে।

শততক পূর্বাদিনে সঙ্গৰাৎ পরং রৌহিণপর্যন্তং তিথেল'তে পরদিনে মুহূর্পত্রমাত্রে তত্তিথিলাভে পূর্বাদিনে প্রাক্ষ: ।"(প্রাক্ষতন্ব)

(পুং) क्रष्ट-ইনন্ স্বার্থে অণ্। ২ চন্দন বৃক্ষ। (ত্রিকা৽)

রৌহিণ্ক (ক্নী) সামভেদ। (বাট্যা॰ ১াঙাও৫)
রৌহিণায়ন (পুং) রোহিণান্থ গোত্রাপত্যং রোহিণ অখাদিত্যঃ
কঞ্। পা ৪।১।১১৽) ইতি অপত্যার্থে কঞ্। রোহিণের
গোত্রাপত্য।

রোহিনি (পু১) > সামভেদ। ২ রোহিণের গোত্রাপত্য।
রোহিনের (পুং) রোহিণ্যা অপত্যমিতি রোহিণী (শুল্রাদিভাল্চ।
পা ৪।১।১২২) ইতি চক্। ১ বদদেব, (ভারত ১।১৯২।১৯)
২ ব্ধগ্রহ। (অমর) ৩ পুরুষোত্তমন্ত্রিত তীর্থপঞ্চকের অক্যতম
তীর্থবিশেষ। পুরুষোত্তমে ঘাইয়া পঞ্চতীর্থ করিতে হয়,
পুরুষোত্তমন্ত পঞ্চতীর্থ করিলে তাহার পুনর্জন্ম হয় না।

"মার্কণ্ডেরে বটে ক্লফে রৌহিণেরে মহোদধৌ। ইন্দ্রত্যায়সরঃ স্নাথা পুনর্জন্ম ন বিছাতে॥" (তীর্থতত্ত্ব) (ক্লী) ২ মকরত মণি। (রাজনি•) (ত্রি) ৩ গোবৎস। (মেদিনী)

রৌহিণেশ্বরতীর্থ (ক্লী) তীর্থভেদ। রোহিণ্য (পুং) রোহিণের গোত্রাপত্য।

রৌহিত (ত্রি) > রোহিতমংক্ত সম্বন্ধীয়। ২ রোহিতমমূর পুত্র। ৩ ক্লফের পুত্রভেদ।

রৌহিতক (ত্রি) রোহিতক,কাঠসভূত।

রৌহিত্যায়নি (খং) রৌহিত্যের গোত্রাপত্য।

রৌছিদ্রখ (পুং) বস্তমনার বংশধর। রোহিদথের গোত্রাপত্য।
রৌছিষ্ (ক্লী) রোহতীতি ক্লহ—(ক্রেহের্ছিল । উণ্ ১।৪৮)
ইতি টিষচ, ধাতোশ্চ বৃদ্ধি:। কতুণ, রোহিষতুণ, পর্যায় দেবকর্ম, সৌগন্ধিক, ভৃতীক, ধ্যাম, পৌর, শ্তামক, ধূপগন্ধিক।
খণ—তিক্ত, কটুপাক, হাম, ও কঠব্যাধি, পিন্ত, অল্ল, শূল, কাস
ও জরনাশক। (ভাবগ্রহ)

(গুং) ২ মৃগৰিশেব। (অমর) ৩ রোহিতমংশু। (অজয়পাল)
রোহিষী (জী) রোহিব-ভীপ্। ১ মৃগী। ২ দুর্কা। ,
(দংক্ষিপ্রদার উণাদির•)

(त्रीही (बी) बी मृग।

ल

উন, লকার। ববর্গের ভৃতীর এবং ব্যঞ্জনবর্ণের অষ্ট্রান্তিংশ বর্ণ।
ইহার উচ্চারণহান দক্ত। এই বর্ণ উচ্চারণে অভ্যক্তর প্রযক্ত,
জিহবাগ্র ছারা দক্তমূলের জ্ববং স্পর্ল, এইজন্ত এইবর্ণের দ্বিবং
স্পষ্টতা, বাহ্যপ্রযক্ত সংবার, নাদ ও বোব, অর প্রাণ।

বঙ্গভাষায় ইহার লিখনপ্রণালী-

ৰামদিক হইতে দক্ষিণ দিকে তিনটা কুণ্ডলী করিয়া উর্জাধো-ভাবে একটা রেখা করিলে এই অক্ষর হইয়া থাকে, এই তিনটা কুণ্ডলীতে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর এই ত্রিশক্তি অবস্থিত আছেন।

"কুণ্ডলীত্ররসংযুক্তা বামাদকণতা ঘণঃ।
পুনর্ক্রণতা রেখা তান্ত নারারণঃ শিবঃ।
ব্রহ্মপক্তিশ্চ সন্তিষ্টেৎ ধ্যানমন্ত প্রচক্ষতে॥" (বর্ণোকারতন্ত্র)
ইহার নাম বা পর্যায় চন্দ্র, পৃতনা, পৃথী, মাধব, শক্র,
বলায়ুরু, পিণাকীশ, ব্যাপক, মাংস, থড়্ণী, নাদ, অমৃত, দেবী,
লবণ, বারুণীপতি, শিথা, বাণী, ক্রিয়া, মাতা, ভামিনী, কামিনী,
প্রিয়া, জালিনী, বেগিনী, নাদ, প্রত্যয়, শোষণ, হরি, বিশ্বায়া,
মন্দ্র, বনী, চেতঃ, মেরু, গিরি, কলা ও রস।।

ইহার ধান--
"চতুত্ আং পীতবন্ধাং রক্তপকজলোচনাম্।

সর্মনা বরদাং ভীমাং সর্মালকারভূষিতাম্॥

যোগীক্রসেবিতাং নিত্যাং যোগিনীং যোগরাপিণীম্।

চতুর্ম্বর্গপ্রদাং দেবীং নাগহারোপশোভিতাম্।

এবং ধ্যাত্বা লকারন্ত তর্মন্তং দশধা জপেৎ ॥" (বর্ণোক্ষারতন্ত্র)

এইরূপে ধ্যান করিয়া লকার দশবার জপ করিতে হয়।

এই লকার কুণ্ডলীত্রমসংযুক্ত, পীত বিহালতাকার, সর্মরন্তর্পার্যারক, পঞ্চদেব ও পঞ্চ প্রোণময়, ত্রিশক্তিও ও ব্রিক্তিম্নর এবং

আন্ত্রাদি তব্বের সহিত এই বর্ণকে ভ্রদর্যক্রমণি ভাবনা
করিতে হয়।

"লকারং চঞ্চলাপান্তি কুগুলীত্ররসংখ্তম্। পাতবিহালতাকারং সর্বরম্প্রদায়কম্।

পঞ্চলৰমন্ত বৰ্ণং পঞ্চপ্ৰাণ্মন্ত সদা।

বিশক্তিসহিতং বৰ্ণং ত্ৰিবিন্দুসহিতং সদা।
আন্ধাদিতৰসহিতং কদি ভাবদ পাৰ্কতি ॥" (কামধেন্তত)
মাতৃকাঞ্চানে এই বৰ্ণ—ককুদ্ দেশে ভাস করিতে হয়।
কাৰ্যের আদিতে এই শব্দের প্রয়োগ ক্রিতে নাই, প্রয়োগ
করিবে বিপত্তি ঘটিরা থাকে।

"ব্যসনঞ্চ লবোঁ ল' (বৃত্তবন্ধা তীকা)
ল, (রী) লীরতেহত্তেতি লী অভিধানারিরূপপদেহণি ড:।
১ পৃথিবীবীজ। 'লমিষ্ঠি পৃথীবীজং' 'লং' এই মন্ত্র পৃথিবীর
বীজ। ভৃতগুদ্ধিকালে এই মন্ত্রারা জ্ঞাস করিতে হর। ২ অদ্
ধাতুর অপ্নবন্ধবিশ্ব। "অদ্ লৌ ভক্ষণে", এইন্থলে ল অম্বন্ধ
অর্থাৎ "ইৎ"বিশেষ, কেবুলু অদ্ধাতুই ব্যাইবে। ৩ ছন্দঃশান্ত্রোক্ত লঘু সংক্তক গণবিশেষ। ছন্দের লক্ষণে লকার বলিতে একটা

লঘু বৰ্ণ ব্ৰাইবে।

"গুলুবেকো গকারন্ত লকারো লঘুরেকক:।" (ছন্দোম॰)
(পুং) ৪ ইক্রা। ৫ মেদিনী)
লা' (ইংরাজী Law শব্দ) রাজবিধি, আইন।
লাই (হিন্দী) নেওয়া। প্রহণ।
লাওন (দেশজ) > গ্রহণ। ২ অবনত হওন।
লাওয়াজিমু (আরবী) আবশ্রকীয় বন্ধ। গুহের আদ্বাব্।
লাওয়াজিমু (আরবী) আবশ্রকীয় বন্ধ। গুহের আদ্বাব্।
লাওয়ালিমু (আরবী) আবশ্রকীয় বন্ধ। গুহের আদ্বাব্।
লাওয়ান (দেশজ) > চাড়রীপূর্বক ভুলাইয়া আনয়ন। ২ তোষামোদছারা মতান্থবর্তন করণ। ৩ মনোরক্তব বাক্রে রমণীকে
কুপথে প্রবর্তন।
লাক্ (দেশজ) > রেশমী হ্রে।
লাক্, রুলোগাদান, আন্রুরসাম্বাদন। চুরাদি৹ পর্বামে। সক৹
সেট্। লাই লাকরতি। লোট্ লাকয়ত্। স্ভ্রুলীসকৎ।
লাক্লাক্ (দেশজ) মুখবাদানপূর্বক জিহনাকম্পন ছারা অব্যক্ত

লক্চ (পুং) লক্চ বৃক্ষ। (শব্দর ছাও)
লক্তাই, বলের পার্বত্যত্রিপুরার অন্তর্গত একটা নিক্লিপ্রনী।
পার্বত্য অধিবাসীদিগের দেবতা বিশেষের নাম হ**ইতে এই** পর্বকতর নামকরণ হইরাছে। ইহা পার্বত্য ত্রিপুরার উত্তরদিকে
ক্রমাগত প্রসারিত হইরা প্রীহট্টের সমতলক্ষেত্রে মিলিরাছে।
দিরিশুল থেল্পুই ও সিম্ বাসিরা বথাক্রমে ১৫৮১ ফিচ ও

M47 |

১৫৫৪ ফিটু উচ্চ। এই পাৰ্কত্য ভূতাগে বাঁস ও শালবন আছে। বৰ্ত্তমান মানচিত্ৰে ইহা লাগতারাই নামে দিখিত।

লকবল্পী, মহিত্মর-রাজ্যের কদ্র জেলার অন্তর্গত একটী তালুক।
ভূপরিমাণ ৫০৪ বর্গ মাইল। ৭৯৯ খালি গ্রাম লইরা এই উপবিভাগ গঠিত। চল্লজোণ ^{ক্ষ্}রা বাবাবুদন শৈলমালা এই উপবিভাগের দক্ষিণাথলৈ বিশ্বত আছে। বাবাবুদন শৈলের সর্ব্বে
এবং বনমালা-সমাকীর্ণ জাগর উপত্যকার কাফিচাবের বহু বিভ্ত
উদ্ধানরাজি বিরাজিত দেখা যার। পশ্চিমাংলে ভ্রানদীর উভর
কুলে গকবারী গ্রাম পর্যান্ত বিভ্ত শাল ও সেঞ্ধণ বন।

২ উক্ত উপৰিভাগের অন্তর্গত একটা গগুগ্রাম। অক্ষণ ১৩° ৪২´৪০´উ: এবং দ্রাখি ৭৬° ৪১´৪০´৾। রাজা বজ্রমুক্ত রাবের অ্প্রাচীন রাজধানী রত্নপুরী ইহার সন্নিকটেই অবস্থিত। যেবেপারী নগরে বিচার সদর প্রতিষ্ঠিত আছে।

লকার (গুং) ল-স্বরূপে কার:। লক্ষরপবর্ণ, লকার এই অক্র।
ত্রুক্তর্নাং বিমলালীং কুললাং কুশলাং মুশীলসম্প্রাং।

পঞ্চলকারাং ভার্যাং পুরুষং পুণ্যোদরাল্লভতে॥" (উয়ট)
লাকি, পঞ্চাবপ্রদেশের বনুজেলার এঁকটা তহসীল। ভূপরিমাণ
১২৬৯ বর্গ মাইল। অক্ষাও ৩২° ১৬ ইইতে ৩২° ৫১ উই
এবং জাবি° ৭০° ২৫ ১৫ ইইতে ৭০° ১৮ ৪৫ পু: মধ্য।
কুরাম ও তোচী-বিধোত উপত্যকার দক্ষিণ প্রান্তর কাইয়া এই
তহসীল গঠিত। এখানে মারবাত্ নামক একটা জাতির বাস
আছে। তাহাদের প্রাধান্তহেতু পার্মবর্তী স্থানবাসী লোকে
ইছাকে মার্কাৎ বিভাগ বলিয়াই উল্লেখ করিয়া থাকে। কিয়
লাকি নগরে রাজকীয় সদর প্রতিষ্ঠিত থাকার সর্কারী বিবরণীতে
উহা লাকি নামে গৃহীত হইয়াছে।

এই স্থান বালুকাপূর্ণ বলিয়া ক্লষিকার্য্যের বিশেষ স্থবিধা নাই।
গঞ্জীলা প্রভৃতি পর্বভগাত্রবাহী কএকটা প্রোভিষিনী ভিন্ন
এখানে ভালরূপ জল সরবরাহ হয় না। অধিকাংশ নদীতেই
বর্ষা বাতীত অপর ঋতুতে জল থাকে না। কেবল বালুময়
জলখাত পতিত থাকে মাত্র। যেখানে বালুয় মাত্রা কম, সেই
খানে অধিবাসিগণ একত হইয়া বাল করে। উহাই এক একটা
গ্রামর্মপে গণ্য। বর্ষার সময় জলপ্রবাহ গ্রাম সন্নিকটক্থ নিম্নভূমে
সঞ্চিত হইবার জল্প গ্রামবাসিগণ নালা কাটিয়া দেয় এবং সেই
খাতে বাধ দিয়া জল বাধিয়া রাখে। অনেক গ্রামে তাহায়
এক একটা ক্র পৃক্রিনীও কাটিয়া লয়, কিন্ত বালুকাময় মৃত্তিকায়
তাহা অধিককাল স্থায়ী হয় না। তখন অধিবাসিগণ একমাত্র
গঞ্জীলা নদী হইতে অথবা ১০ হইতে ১৫ মাইল পর্যান্ত দূয়বর্ত্তী
পর্বত মধ্যত্বিত জলপাত বা প্রামী ইইতে জল আনমন করিয়া
থাকে। গাবা বা বলদের পুঠে জলের মণক চাপাইয়া রমনীয়াই

জল আনে, কখন কখন তাহারা নিজেও হিছু বিছু সলে লয়।

২ উক্ত জেলার একটা নগর এবং মার্কাৎ বা লবি ভচ্নীলের গম্ভীলা নদীর দক্ষিণকূলে এড্ওরার্ডসাবাদের ১৬ ক্রোল দূরে অবস্থিত। অক্ষা° ৩২°৩৬'৪৫' উ: এবং ক্রাক্তি° ৭০°৫৭´ পুঃ। এই নগরের অপর পারে পূর্বতন ঈশানপুর নগর ছিল। ১৮৪৪ থুটান্দে শিথগবর্মণ্টের রাজস্বসংগ্রাহক ফতে খাঁ ডিবানা এখানে ত্বৰ্গ স্থাপন করিয়া ধীরে ধীরে তাহার পার্বে একটা নগর প্রতিষ্ঠা করেন। গঞ্জীলা নদীর প্রবেদ বস্তার নগরভাগ জলপ্লাবিত হওরার এবং কুরম ও গম্ভীলা-সঙ্গমন্থ পাড়ি-জাত মশকের দৌরাজ্যে স্থানীর রাজকর্মচারী ঐ রাজধানী পরিত্যাগ শ্রের: বিবেচনায় ১৮৬৪ খুটান্দে অপর পারস্থিত বালুকাপূর্ণ উচ্চ বেলাভূমে নগর পরিবর্ত্তন করেন। এখানে शृद्ध गीगायन, थाद्यमाम्यन ७ देनश्रम्थन नारम छिन्ही গ্রাম ছিল, ঈশানপুরের অধিবাসীরাও পরে নৃতন নগরে আসিরা সমবেত হয় এবং কয়টী গ্রামের লোক একত্র হওয়ায় একটা সমৃত্তিশালী নগর গঠিত হয়। মিউনিসিপালিটার অধীন থাকায় এই নগর অপেকারত শ্রীসম্পর।

লাকি, সিদ্ধপ্রদেশের করাচী ফেলার অন্তর্গত একটা গিরিপ্রেণী।
[লখি দেখ ।]

লকি, বোমাই প্রেসিডেন্সীর শিকারপুর জেলার একটা নগর।
[লখি দেখ :]

লকুড় (পুং) লক্যতে ইতি লক স্বাদে + বাহলকাছচ:। বৃক্ষ-বিশেষ। চলিত ভহরা, মাদার। পর্যায় — লিকুচ, শাল, ক্যায়ী, দ্চবৰল, ভহ, কাশ্য, শুর, স্থুলম্বন। ইহার গুল-তিক্ত, ক্যায়, উষ্ণ, লযু, ক্ঠদোষহর, দাহজনক ও মল-লংগ্রহকারক।

ভাব প্রকাশমতে পর্যায়—ক্ষুপ্রনাস, তহ। আমগুণ—উঞ্চ, গুরু, নিইছকর, মধুর, আয়, ত্রিনোবর্ত্ধক, রক্তকর, গুরু ও ক্ষমিনাশক, চক্ষর অহিতকর। স্থপকগুণ—মধুর, আয়, বায় ও পিতবর্ত্ধক, কফ ও অগ্নিবর্ত্ধক, ক্চিকর, ব্যা ও বিইছক।" (ভাবপ্রাণ)

লকুচপ্রাম, বিশ্বপাদমূলত্ব একটা প্রাচীন গ্রাম।

(ভবিষ্যবন্ধ খ° ৮/৬২)

লকুট (পুং) লগুড়।
লকুটিন্ (তি) লগুড়-হতা। লগুড় লইরা গমনকারী।
লকুল (পুং) ল অক্রের অহপ্রাস্কুরা ল বছল।
লকুলিন্ (পুং) মুনিবিশেষ।
লকুলার্ (তি) লকুনসম্বীর।

লক্ষা (আরবী) ১ বিহৃতপৃক্ষ পারাণততেন (Fantailed pigeon)।

২ লকা পাররার মত ফিট্ফাট্ অর্থাৎ নির্পুণ ব্যক্তিকে ব্যার।

লকাপারেরা (দেশল) কপোততেন। ইহাদের পুক্ত প্যাথম

ধরা মর্রপুক্তের মত। বর্ণ নানা প্রকার দেখা বার।

লক্ষ্ ক (পুং) রাজতরনিবী-বর্ণিত ব্যক্তিতেন। (রাজতর ৮৪৩৪)

লক্ষ (তি) রক্তবর্ণ, লাল।

লক্ত্রুক (পুং) রক্তেন রক্তবপেন কারতীতি কৈ-ক রস্ত লখং, বা লক্যতে হীনৈরাখাছতে অন্নভ্রতে লক কর্মণি ঞ, ততঃ খার্থেক:। ১ অলক্তক, আলতা।

শ্রপ্রকৃত্যা লক্তকরসপ্রাধ্যে তত্রসবর্জিতে।

তথৈব রেজত্ততাল্রণৌ পদ্মবর্জনৌ ॥" (রামারণ ২।৩০।১৬)
২ জীর্ণবন্ত্রপঞ্জ, চলিত-নেকড়া, পর্যার—কর্ণটি, নক্তক। (ভরত)
লক্তেকর্মান্ (পুং) লক্তং রক্তবর্ণং করোতীতি রু-মনিন্। রক্তবর্ণ লোঞ্জ। (শক্ষচন্ত্রিকা)

লাক্তনচন্দ্ৰ (পুং) রাজভরনিশীবর্ণিত ব্যক্তিভেন।

(রাজ্তর° ৭।১১৭৪)

লক্ষ্ক, ১ দর্শন। ২ আছে। চুরাদি॰ উভর॰ সক৽ সেট্।
লাট্ লক্ষরতি-তে। লোট্-লক্ষরতু-তাং। লুঙ্ আললক্ষৎ-ত।
ল্ফ্ে (ক্লী) লক্ষ্যতীতি লক্ষ-অচ্। ১ ব্যাজা। ২ল্বব্য, লক্ষীভূত।
"মৌলান্ শান্ত্রবিদঃ শ্রান্ লক্ষলন্ কুলোদগতান্।
সচিবান্ সপ্ত চাষ্টো বা প্রকুর্নীত পরীক্ষিতান্ধ" (মহু ৭)৫৪)
ত পদ। ৪ চিক্ল। ৫ সংখ্যাভেদ, লক্ষসংখ্যা, একশত
হাজার লাক্, দশ অযুত সংখ্যা।

"তকৈবাদশভিমিত্রৈঃ সহাবাতৈর্ভন্ত চ। লক্ষমভাধিকং দেব বর্দ্ধতে বরবাজিনাম্॥"

(কথাসরিৎনা • ৪৩١১ • ৯)

সংখ্যাভেদ অর্থে লক্ষণন ক্লীব ও স্ত্রী এই ছই নিদই হুইরা থাকে।

লক্ষক (ক্লী) লক্ষতীতি লক্ষ-ধূল্। লক্ষণের নিমিত্ত অর্থ-বোধক শব্দ।

"হানৃশার্থন্ত সম্বন্ধবিত শক্তর বন্ধবেং।
তক্র তল্পকং নাম তচ্ছক্তিবিধুরং বদি॥" (শব্দশক্তিন্দ্র)
লক্ষণ (ক্লী) লক্ষাতেখনেনেতি লক্ষ-ন্যুট্। বহা লক্ষেট্চ।
উপ্থাপ) ইতি নপ্রতারত্তভাত্যাগস্পা। ১ চিছা। ২ নাম।
(মেনিনী) লক্ষাতে জারতেখনেনেতি লক্ষণং। বাহাছারা
জানা বার, তাহাকে লক্ষণ কহে। এই লক্ষণ হিবিধ ইতর্তেলায়-

 ন্ধৎ, তছিত ও সমাসের নিরামক অভিধান এবং অনভিক্র-দিগের অভিক্রানহচকট লক্ষণপদবাচ্য। লক্ষে লক্ষার্থের অভিনিবেশকে লক্ষণ করে। সমাস্কৃতি অসমানজাতীর ব্যব-ক্ষেদ্র লক্ষণার্থ।

"সমানাসমানজাতীরবাৰচ্ছেন্তে কন্ধণার্থঃ" (সাংখ্যতন্তন্তন) ও দর্শন। (পুং) ৪ সৌমিত্রি, লক্ষণ। ৫ সারসপন্দী। (পন্মন্তমাঁ) ৬ চামচ। (দিবাাঁ ৫১৩১৫)

৭ রোগবিনিন্চারক শারীরিক চিহাদি। জর বা কোনরূপ ব্যাধি হইলে মন্তব্য শরীরে কডকগুলি চিহ্নের বিকাশ
হইরা থাকে। সেইগুলি লক্ষ্য করিরা চিকিৎসক ঔবধাদি
প্রেরোগ করিরা থাকে। শারীরিক, মানসিক, আগত্তক ও
সহজভেদে রোগ চারি প্রকার। ইহাদের লক্ষণও খতত্ত্ব।
ইংরাজীতে ইহাকে (Symptoms) বলে।

लक्कनक (गूः) नक्कनवूकः।

লক্ষণন্ত (ত্রি) লক্ষণং জানাতীতি জ্ঞা-ক। লক্ষণবেত্তা, যিনি লক্ষণ অবগত আছেন।

লক্ষণ (ক্নী) লক্ষণ ভাব: प। লক্ষণের ভাব বা ধর্ম।
লক্ষণলক্ষণা (ন্ত্রী) লক্ষণভোদ। [লক্ষণাদেখ]
লক্ষণবৃহ (ত্রি) লক্ষণং বিভাতেহন্ত মতুপ্ মন্ত বঃ। লক্ষণবিশিষ্ট,
লক্ষণযুক্ত।

লক্ষণসন্মিপাত (পুং)> অৰুণাত। ২ দ্ৰবাবিশেৰে কোন চিচ্চ বা নিশানা অন্ধিতক্রণ।

লক্ষণা (ক্নী) লক্ষ (লক্ষের্ট্চ। উণ্৩। ৭) ইতি দ-স্তস্তাড়াগমন্চ, লক্ষণমন্ত্রেহেডতি অচ্, ডভটোপ্। ১ হংসী। ২ সারসী। ও অধ্পরোবিশেষ।

"অধিকা শক্ষণা কেমা দেবী রম্ভা মনোরমা।"

(ভারত ১৷১২৩০৯)

৪ পক্যসম্ম।

তাৎপর্য্যের অমুপপত্তি হেতু (তাৎপর্য্যের বোধ হয় না, এই জ্লন্ত) শক্যাথের যে সম্বন্ধ তাহাকে সক্ষণা কহে।

"লক্ষণা শক্ষমঘদ্ভতাৎপর্যায়পপত্তিতঃ।" (ভাষাপরিচ্ছেন)
কেবল শবার্থ ধ্রিরা অর্থবোধ বা শালবোধ করিতে হইলে ,
অনেক হলে তাৎপর্য্যের উপপত্তি হর না, অর্থাৎ তাৎপর্য্য বোধ হর না, এইজন্ম লক্ষণা খীকার করিতে হর। লক্ষণা খীকার করিলে তাৎপর্য্যবোধের জন্ম আর কোন কটি হর না, অতিসহজেই এই লক্ষণাশক্তিবলে তাৎপর্য্যের বোধ হইরা থাকে। সিক্ষান্তম্যুকাবলীতে লিখিত আছে যে, "গলারাং যোষ ইত্যাদৌ গলাগদন্ত শব্যার্থে প্রবাহরূপে ঘোষতাবরাক্ট্পপত্তিশ্বাৎ-পর্যান্ত্রপত্তিশ্বা বর প্রতিস্থীরতে তত্ত লক্ষণরা তীরতা বোধঃ, গা চ শক্ষান্ত্ৰয়পা, তথাহি প্ৰবাহরপশক্ষার্থ্যক্ত জীরে গৃহী-তথাৎ তীয়ক্ত শ্বরণং ততঃ শালবোধঃ" (বিশ্বাক্স্কাবনী)

" शृद्धारि । विश्वाहि । **कार्यकार्यकाराम् । जक**्षकामकास নাম লকণা। এখন ইহার উদাহরণ ছারা দেশা ছাউক। 'গলারাং বোৰঃ প্রাতিকালি' সলাতে বোৰ বাস করে, এই একটা বাক্য, গাৰী কলিলে প্ৰবাহাদিনত লললপতে ব্ৰার। প্রবাহময়লনে কোৰ বাস করিছে পারে না, লোক ভূমিতেই বাস করিয়া থাকে, জালে বাস করা অসম্ভব, অভএব এই হুলে শ্বাথের কোন প্রতীতি হর না, গ্লার বাস করে, ইহাতে কোন অর্থ বোধই হুইল মা, অভএব ইভ্যাদিরপ হলে অর্থবোধের ৰায় সক্ষণাশক্তি শীকার করিতে হয়। সক্ষণা শীকার করিবে অনায়ানেই তাৎপৰ্যাহের বোধ হইরা থাকে। 'গলার বোব বাস করে' এই শব্দ বলিয়াছি, জলমর গলার বাস বর্ধন অসম্ভব, তথন গলার সমীপে কি আছে ? ইহার অনুসন্ধান করিলে প্রথমেই তীর দেখিতে পাই, অতএব গদা শব্দের অর্থ সক্ষণা-হারা গঙ্গাতীর বলিলে আর কোন গোল থাকে না, এবং ইহাতে তাৎপর্যোরও উপপত্তি হয়; অতএব এইস্থলে তাৎপর্যোর উপপত্তি হওরার শার্কবোধেরও কোন ব্যাঘাত হইন না। অত্তর এইস্থলে গলাতীরে শক্যসম্মরপা লক্ষণা হইল। এই-রূপ যে যে স্থলে তাৎপর্য্যার্থ ধরিয়া অর্থ প্রতীতি হইবে, তথায় লক্ষণা হইবে ৷

শক্ষণজিপ্রকাশিকার লিখিত আছে যে,

"জহৎ স্বার্থা হজহৎ স্বার্থা নির্মাণ ধূনিকাদিকা: ।

লক্ষণা বিবিধান্তাভিল ক্ষকং স্তাদনেকধা ॥" (শক্ষণজিও)

শক্ষণজিপ্রকাশিকার মতে এই লক্ষণা জহৎ স্বার্থা, অজহৎ
স্বার্থা, নির্মাণ ও আধুনিকাদিভেদে অনেক প্রকার ।

সাহিত্যদর্পণে লিখিত আছে যে,—

"ম্থার্থবাধে তদ্যুকো যরান্তোহর্থ: প্রতীরতে ।

রুড়ে: প্রয়োজনাহাসৌ লক্ষণাশ্জিরপিতা ॥"

(সাহিত্যদ্ধ হা১৩)

বে হলে মুখ্যাৰ্থের বাধ হইনা তদ্যুক্ত অৰ্থাৎ মুখ্যাৰ্থ্যুক্ত হইরা রুঢ়ি (প্রসিদ্ধ) বা প্রবোজনসিদ্ধির জন্ত যে শক্তি দারা অন্ত অর্থের প্রতীতি হয়, তাহার নাম সক্ষণা।

শব্দের ভিনপ্রকার শক্তি—লক্ষণা, ব্যশ্বনা ও অভিধা। এই তিন প্রকার শক্তি হারা সকল স্থলেই অর্থবোধ হইরা থাকে। অর্থবোধের জন্ত এই ভিন্ন প্রকার শক্তি বীকার না করা বার, ভাষা হইলে কিছুভেই সকল স্থলে অর্থ প্রভীতি হয় না। এই জন্ত শক্ষান্ত্রবিদ্ধ পিউতাণ শব্দের ভিন্ন প্রকার শক্তি বীকার করিরা-

ছেন । সভিধা ও ব্যক্তমান বিবহ অভ্যানত আছবা । এইছলে অভ্যান বিবন ভিত্ন লেখা হইডেছে। লক্ষাৰ্থই অভ্যান পতিত বালা বোধ হইবা থাকে। বভাৱ বাহা লক্ষ্য, জাহাই মূল ফরিরা বে শক্তি বারা ঐ মূল ফরের প্রাক্তীতি হইবে, সেই স্থলেই সক্ষা হইবে।

"বাচ্যোহর্থোহন্তিগরা["]বোধ্যো সক্ষ্যো সক্ষরা মত: । ব্যক্তো ব্যক্তনরা ডাঃ স্থান্তিলঃ শব্দু শব্দুরঃ ।"

(সাহিত্যাণ ২।১১)

কাব্যপ্রকাশে লক্ষণার লক্ষ্য এইরূপ লিখিত আছে— "মুখ্যার্থবাবে ভল্বোগে রুদ্নিভোহও প্রয়োজনাও। অক্টোহর্থো লক্ষ্যতে বং সা লক্ষ্যা রোগিতা ক্রিয়া ॥"

(কাত্যপ্ৰকাশ ২০৯)

মুখ্যার্থ্যের বাধা হইলে ভাহার বোগে প্রাসিদ্ধ পদ্মের বা প্রারোজনসিদ্ধির জন্ম যাহা হারা জন্ত অর্থ নিকিত হয়, তাহাকে লক্ষণা কহে। "না শব্দস্রার্শিভা স্বাভাবিকেতরা ঈশ্বরাহ্তাবিভা বা শক্তির্শকণা নাম" (সাহিত্যদ৽ ২ পরি৽)

শব্দ সহক্ষে অর্পিত স্বাভাবিকেতর অর্থাৎ স্বাভাবিক হুইতে ভিন্ন, বা ঈশ্বনাস্থ্যাবিত শক্তিবিশেষই লক্ষণাপদবাচা। কেছ কেছ বলিতে পারেন, এই লক্ষণা পণ্ডিতগণ-কন্নিত, কিন্তু বান্ত-বিক তাহা নহে—এই শক্তি স্বাভাবিকী ও ঈশ্বনাস্থ্যাবিতা। বিহনগণ শব্দের শক্তি কন্ননা করিলেই যে তাহা প্রহণীয় হইবে তাহা নহে। লক্ষণা অবিধা ও ব্যঞ্জনা এই তিনটী শক্তি ঈশ্বনাস্থ্যাবিতা হইনাছে। অতএব এই শক্তি হারা তাৎপর্য্যার্থের প্রহণ করিতেই হইবে। ইহা স্বীকার না ক্রিলে কিছুতেই সকল স্থলে তাৎপর্য্যার্থের বোধ হইবে না।

'কলিজা সাহসিকা' কলিজ সাহসিক, এই বাক্য বলিলে কলিজ শব্দ দেশবাচক, কলিজ বলিলে কলিজ দেশকে ব্যাস, কলিজদেশ সাহসিক, এই অর্থ সক্ষত হয় না, অতএব এইছলে 'কলিজদেশ সাহসিক' এই সুখার্থের কামা। এই হলে কলিজকে যোগ করিয়া কলিজ শব্দে কলিজদেশবাসী এইরূপ অর্থ করিলেও অনারাসেই প্রয়োজন সিদ্ধির জন্ত যে অর্থ প্রজীতি হয়, সেই অর্থপ্রহণ করিতে কেন না হইবে, অতএব এই ছলে লক্ষণাশক্তি বারা কলিজ শব্দে কলিজদেশবাসী লোকসমূহ সাহসিক ব্যাইতেছে, এবং সেই লক্ষণাশক্তি বলেই এখানে এরূপ অর্থ প্রতীতি সহকারে বজার প্রারোজন সিদ্ধি হইতেছে। অতএব এইছলে লক্ষণার বারা প্রয়োজন নিদ্ধি হওয়ার ইহা প্রয়োজনসিদ্ধির উদাহরণ ব্রিতে হইবে।

র্মান উনাহরণ—'কম্মণি কুশনঃ' কর্মেতে কুশন, এইছলে কুশন শব্দের মুখ্যার্থ কি ? 'কুশং নাতি ইভি কুশনঃ' বিনি কুশ- প্রথণকারী ভিনিই কুশন, ইহা ভিন্ন কুশন শব্দের আর একটা আর্থ কলে, এই অর্থটি রচার্থ, এই রচার্থ নিছিত্র অন্ত কুশপ্রবেশকারী এই কুশার্থির বাবা অবাইরা নক্ষণাশক্তি হারাই বন্ধ এই অর্থের প্রহণ হইন এবং ইহাতে অনারানেই তাৎপর্বাহর্থকও নিছি হইন। কর্মবিবরে দক্ষ এইরাশ ক্ষরীবাধ হওরার রচি বা প্ররোক্ষন নিছি হইরা তাৎপর্বাহর্থর বেশ্ব হইরাকে।

রাট্র সিথি ও এরোজনের সিথির বস্ত সক্ষণা খীরুত হই-রাচ্ছে, অর্থাৎ সক্ষণা খীরুর না করিলে রক্টার্থেরও সিথি হর না এবং প্ররোজনের সিথি হর না। অতএব এই চুই চুইটা বিশেব প্রারোজন সিথির বস্তু ইহা খীকার করা হইরাছে।

এশন রাড় শব্দের বিষয় একটু আলোদনা করিয়া দেখা বাউক। সভেতবৃক্ত নামকে রাড় করে। যে নাম প্রকৃতি প্রত্যানের অর্থ অস্থারে প্রস্তৃত্ত হর না, সম্পারের অর্থ অস্থারে প্রস্তৃত্ত হর না, সম্পারের অর্থ অস্থারে প্রাহার বাংশন্তিসভ্য অর্থ গৃহীত না হইরা সম্পারের অর্থ অস্তীকৃত হর, তাহাকে সভেতবৃক্ত রাড় করিরা গোলফা নিশার হইরাছে, গন্ থাতুর অর্থ গতি বা গমন, ভোগ্ প্রভারের অর্থ কর্ত্তা। স্থভরাং গোলফের বাংশন্তিসক্ত অর্থ কর্তা। স্থভরাং গোলফের বাংশন্তিসক্ত আর্থ কর্তা। স্থভরাং গোলফের বাংশন্তিসক্ত আর্থ কর্তা। স্থভরাং গোলফের প্রব্যোগ হর না, কারণ তাহা হইলে গমনকর্তা। মহন্যাদিতেও গোলকের প্ররোগ হইতে পারে এবং শ্রম ও উপবেশন অবহার অর্থাৎ বে অবহার গ্রমনক্রিরা থাকে না, সেই অবহার প্রকৃত গোতে গোশফের প্রয়োগ হইতে পারে না।

এই ছুইটা নোবের যথাক্রমে দার্শনিক নাম অভিবাধিও অব্যাধি। অভিবাধি—অভিশ্ব সৰম্ব বা অভিবিক্ত সহজ্ঞ। সম্বন্ধবোগ্য হলকে অভিক্রম করিরা অর্থাৎ বাহার সহিত সম্বন্ধ হওরা উচিত, তাহাকে অভিক্রম করিরা অক্তের সহিত সম্বন্ধ হউলে অভিবাধি দোব হয়। সম্বন্ধবোগ্য হলকে অভিক্রম করিরা বলাতে এইরল মুঝিতে হউবে না বে, সম্বন্ধবোগ্য হলে আলে) সম্বন্ধ থাকিবে না। সম্বন্ধবোগ্য ছলে সম্বন্ধ থাকিবাও সম্বন্ধের অবোগ্য হলেও বদি সম্বন্ধ হয়, তাহা হউলেই অভিবাধি দোব হইয়া থাকে।

উক্ত ছলে বৃহণ্ডি অনুসারে গমনশীল গো পড়তে গো গৰের প্ররোগ হইবার কোনও বাধা হর নাই, অথচ গমনশীল সমুখ্যানিতেও গো শব্দের প্ররোগ হইতে পারিতেছে। গমনশীল সমুখ্যানি গো শব্দের সম্বন্ধের বোগাছল নহে। এই • অবোগ্য ছলে সম্বন্ধ হইজেছে যদিরা অভিন্যান্তিনোম বাটভেছে। অব্যান্তি শব্দে অস্থন্ধ মুখ্যার। কোন অব্বের সহিত পশ্যের সম্বন্ধ থাকিবে মা, ইয়া অন্তর্ক। স্কুডরাং যে হলে স্বন্ধ থাকা উচিত, দেখনে সময় না থাকিকেই জন্মত বৃথিতে হইবে।
বেনদ পদান যা উপনিত গো পদ্ধত লো ক্ষেত্ৰ কৃষ্ণিত ভাষার
নিতি গো পদের সময় থাকা উচিত, ক্ষিত্র গো পদের বৃহণিতিপত্য অর্থ অহসারে পদ্ধনাধি জনহাত্র গো করের সহিত গো
লম্ম থাকিতে পারিতেহে না, এইকন্ত অবাধি দোর হইতেহে।
গো শক্ষ বৌদিক বলিলে উক্তমণ অভিযাধি ও অব্যক্তি দোর
হর, স্কুতরাং গো শক্ষ বৌদিক নতে; রচ্।

কোন কোন প্রভার জিরা করিবার বোগ্য পর্যন্ত ব্রার বটে, কিন্তু প্রকার জিরা করিবার বোগ্য পর্যন্ত ব্রার না। নাধারণতঃ জিরাকর্তাকেই ধুরিরা থাকে। এছলে ভোস্ প্রভার করিবার বোগ্য পর্যন্তই গুরিরা থাকে। এছলে ভোস্ প্রভারের কর্ম জিরার বোগ্য পর্যন্তই ভোস্ প্রভারের কর্ম, ইহা মানিরা লইলে আপত্তি হইতে পারে বে, বে পাচক ব্যক্তি বে সমরে পাক করে না, সৈ সমরের ভাষাকে পাটক বলা বার। কেননা তৎকালে পাক না করিলেও ভাষার পাক করিবার বোগ্যভা আছে। এইরূপ পরান বা উপবিষ্ট গো পশু তৎকালে সমন না করিলেও গমন করিবার বোগ্যভা ভাষার রহিয়াছে বলিরা পরনাদিকালেও গোদকের প্রয়োগ হইতে পারে। স্নভরাই গো-শক্ষ বৌগিক হইলেও অব্যাবিদাের হইতেছে না, এভচ্ছতরে বক্তব্য এই বে, উক্তরূপে কথকিৎ অব্যন্তিলাবের পরিহার হইতে পারে লা স্বভরাং গোরণেও কিছুতেই অভিবাবিদােরের পরিহার হইতে পারে না। স্বভরাং গো পক্ষ রচ্চ ইহা বীকার করিতে হইবে।

গমনকর্তা এই অবরবার্থ (গমধাতু ও ভোদ্ প্রভারের কর্ব)
গোলনের বাংপতিনিমিত বাত্র, কিন্তু প্রবৃত্তিনিমিত নতে। গোলনের বারতিনিমিত গোছ জাতি। যে কর্ব অবলবন করিয়া লব্দ বাংপর হর, বা লন্দের বাংপতি অকুসারে বে কর্ম পাওরা যার, তাহাকে বাংপতিনিমিত এবং বে কর্ম অবলবনে লন্দের প্রবৃত্তি কর্মাং প্রেরাগ হর, তাহাকে প্রবৃত্তিনিমিত বলে। ক্ষতএব গোছজাতি বা গোছজাতিবিলিট ব্যক্তিকে গোলনের প্রবেরাগ হর বলিয়া ঐ কর্মে গোলনের সক্ষেত্ত ক্ষীকার করিতে হইরাছে, ঐ সক্ষেত গোল-এই বর্গাবলীগত গোলনের ঘটক, গম্ ধাতু বা ভোল্ প্রত্যারগত নতে। পাচক শল যৌগিক রচ নতে। কারণ পাচক এই বর্গাবলীর কোন কর্মবিশেবে সক্ষেত্ত লাই। ক্ষরবা সক্ষেত্ত কর্মাং পচ্ ধাতু বৃণ্, প্রত্যারের সক্ষেত্ত হারাই গাককর্ত্তারূল কর্মের অবগতি হইতে পারে। সমুনারের সক্ষেত্ত হারাই পাককর্ত্তার ক্ষরবার কোন কারণ নাই। এইকল্ক পাত্রের সক্ষেত্ত হারাই পাককর্তার ক্ষরবার কোন কারণ নাই। এইকল্ক পাত্রের প্রক্তে

পূর্ব্ধে বে সক্ষেত্রের উরোধ করিরাছি, ঐ সক্ষেত্র কুই প্রকার কালানিক ও কাধুনিক। বে সক্ষেত্র কালানিকান ভূলিয়া আনিতেতে, বাহা নিত্য, তাহা আআনিক এবং বে সকেত আনামিকাল চলিয়া আনিতেত্ত না, কালনিশেৰে প্ৰবৰ্তিত হইয়াহে, তাহা আধুনিক। আআনিক সকেতেয় অপন নাম পজি । আধুনিক সকেতের অপন নাম পরিভানা। নো পবরাদি সকেত আলানিকা প্রকেত অভি অহুসারে বে লব বে অর্থ প্রতিশাদন করে, অনামিকাল হইতে লেই খবের সেই অর্থে প্রবেশাদন করে, আধুনিক সকেতে বা পরিভাবা অহুসারে বে লব বে অর্থ প্রতিশাদন করে, সে আর্থ্যনিক সক্তেত বা পরিভাবা বিলেবের ইক্লাকুসারে প্রবর্তিত হইয়া থাকে। পরিভাবা ব্যক্তি বিলেবের ইক্লাকুসারে প্রবর্তিত হইয়া থাকে। পরিভাবা ক্টি হইবার পূর্বে পারিভাবিক অর্থবাধ একান্ত অসন্তর।

[क्रष्ट भक्त (पर्य ।]

এইরপ রুচ্পন্ধ সিদ্ধির জন্ত সক্ষণা স্বীকৃত হইরাছে। গোপদ বৃহপত্তিগভ্য অর্থ গমনন্দীল মন্ত্রাদিকে না বুবাইরা গোপভ এবং কুশলশন্ধে কুশগ্রাহী অর্থ না বুঝাইরা দক্ষ এইরপ অর্থ প্রতিপাদন করিতেছে। এইরূপ যে যে হলে রুচ্শন্দের সিদ্ধি হইবে, ভথার লক্ষণা হইবে। প্ররোজন সিদ্ধির বিবর পূর্বের অভিহিত হইরাছে।

সাধারণ ভাবে লক্ষণার লক্ষণ বলা হইল। এই লক্ষণা আবার নানা প্রকার। সাহিত্যদর্শণ, কাব্যপ্রকাশ ও সরস্বতী-কণাভরণ, প্রভৃতিতে ইহার বিবর বিশেষভাবে পর্য্যালোচিত হইরাছে। উপাদান লক্ষণা ও লক্ষণলক্ষণা প্রভৃতি ভেদেও এই লক্ষণা অনেক প্রকার।

"মুখ্যাৰ্থকেতরাক্ষেণো ৰাক্যাৰ্থেইৰন্ধনিকরে। ভালান্মনোহপ্যুপাদানাদেযোপালানলক্ষণা।।" (সাহিত্যদ ২।১৪) বাক্যার্থে অবয়বোধের জন্ত অর্থাৎ বাক্যের অর্থবোধক অবর-সিদ্ধির জন্ত যে হলে মুখ্যার্থের ইতর অর্থের গ্রহণ হয়, সেই হলেই ইহা মুখ্যার্থের উপাদান হেডু হইয়াছে, এইজন্ত ইহাকে উপাদানলক্ষণা বলা হয়।

"অৰ্পণং খন্ত ৰাক্যাৰ্থে পরভাষয়সিম্বরে। উপলব্দণহেতুদ্বাদেবা লক্ষণলক্ষণা ॥" (সাহিত্যদ॰ ২০১৭)

বে ছলে পরের (ভিরার্থের) অবয়িদির অন্ত মুখ্যার্থ নিজের
অর্পণ অর্থাৎ স্বার্থপারিত্যাগ করে, তথার এই লক্ষণা হয়। এই
লক্ষণা উপলক্ষণ হেডুই হইরা থাকে। এই অন্ত ইহার নাম
লক্ষণলক্ষণা। এই লক্ষণা সারোপা ও অধ্যবসানা ভেলে ছিবিধ।

"আরোপাধাবসানাজ্যাং **প্রত্যেকং** তা <mark>জনি হিধা।"</mark>

(সাহিত্যদ• ২।১৬)

এইরপে লক্ষণা সকল চন্দারিংশন্ভেরবৃক্ত।
"তদেবং লক্ষণা ভেদানভারিংশন্তা বৃধৈঃ।"(সাহিত্যর• ২।২১)

এই সকল লক্ষণার ভেষ শক্ষ ও শক্ষার্থ লইরা আলোচিত হইরাছে। [পক ও শক্ষণতি মেখ]
লক্ষণা (লখনা), বৃক্তপ্রদেশের এতাবাজেবার তর্মানা তর্মানা তহানীলের অর্থান্ত একটা নগর। অক্ষা ২০°০৮ ৫৫ উ: এবং প্রাথি ৭৯°১১৩০ পূ:। নগরনীয়ে রাজা বলোকত নিছে C. আত্রা রাজা বলোকত নিছে C. আত্রা রাজা বলোকত নিছে C. আত্রা রাজা বলোকত নিছে C. আত্রা রাজা বলোকত নিছে C. আত্রা রাজা বলোকত নিছে তালিকারীর মন্দির প্রতিষ্ঠিত হয়। নগরের পরিজ্ঞানতা রক্ষার্থ কর আলারের ব্যবহা আছে। এখানে ঘৃত ও তৃলার বিভূত কারবার চলিরা থাকে। এখানে পূর্বের তহনীলী কাহারী ছিল। ১৮৬০ খুটাকো তর্বানার তহনীলি স্থানাক্ষরিত হওরার, পূর্ব্বের কাহারী গৃহে একটা বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হইরাছে।

লক্ষণাদ্ৰোন, মধ্যপ্ৰদেশের সিওনীবেলার একটা তহসীল।
ভূপরিমাণ ১৫৮০ বর্গমাইল। ২ উক্ত ভহসীলের অন্তর্গত
একটা গওগ্রাম।

লক্ষণালোহ (क्री) ঔবধবিশেব। প্রস্তুতপ্রণালী—লক্ষণামূল, হত্তিকর্পসান্দুল, ত্রিকটু, ত্রিফলা, বিড়ল, চিতামূল, মূতা,
অবগন্ধানূল প্রত্যেকে > তোলা, লোহ >২ তোলা, এই সকল
উদ্ভেমরূপে মর্দন করিরা এই ঔবধ প্রস্তুত করিবে। অমূপান মৃত্
ও মধু। এই ঔবধসেবনের পর চিনির সহিত হুয় পান বিধেয়।
এই ঔবধবিশেষ বলকর। এই ঔবধসেবনে জীনিগের ফ্যাপ্রস্বুব নির্ভু হইয়া পুত্রপ্রস্বুর্গ বাজীকরণাধিকারে ইহা
একটা উদ্ভম ঔবধ। (তৈমজ্যরন্ত্র্গ বাজীকরণাধি

मक्किनिय् (बि) > मक्कि वा क्रियुक्त । २ मक्कि ।

लक्कप्तिय़ (बि) नक्क्षा बाता कांच्या वा त्वाथरा । लक्करुशांकु (बि) फेक्स्प्रतम हिन्द वा नक्क्षयुक्त । (११० ८।১।१०)

লক্ষ্যে (অ) স্বাহন । ২ লক্ষ্য । ৩ বৈৰ্শক্তিসম্পন্ন আনৰ্শ পুৰুষ। (নিব্যা ৪৭৪।২৭)

লক্ষদন্ত (পুং) রাজভেদ। (কথাসরিৎসা^{*} ৫০৮)

লক্ষপুর (রী)প্রাচীন নগরভেন। (ঐ ১৩৯)

লক্ষ্যসিংহ (রাণা), মিবারের এক জন রাণা। বীরবর হামিরের পৌত ও ক্ষেত্রসিংহের পূতা। তিনি আলুমানিক ১৩৮৩ খৃ ষ্টাক্ষে পিতৃসিংহাসনে সমার্ক্ষ্য হন। রাজ্যশাসন ভার প্রহণ করিরাই তিনি পিতৃপুরুবনিগের পদাধান্তসরণ করিয়াই বিজ্ঞাবিলাসমুখ উপভোগ করিবার নিমিত অখনে মারবার রাজ্যের উপর দৃষ্টি নিক্ষেণ করিবার নিমিত অখনে মারবার রাজ্যের উপর দৃষ্টি নিক্ষেণ করিবার নিমিত অখনে মারবার রাজ্যের উপর দৃষ্টি নিক্ষেণ করিবান। তিনি বিজ্ঞাগড়ের পার্কাত ছর্ম অধিকার-পূর্কাক ধ্বংস করিয়া কেনিলোন এবং বীর বিজ্ঞাবীর্ত্তির অক্ষয়তন্ত অরপ তত্ত্বপরি বেদনোর হুর্গ নির্দ্ধাণ করাইলেন। এই সমরে তাঁহার অধিকৃত ভীলা প্রবেশের অস্কর্যত জাবুরা নামক স্থানে

রোপ্য ও টনের থনি আবিহৃত হয়। তিনি বছ বয়ে ঐ থনিজ রোপ্য উত্তোপন করিবা খীর রাজ্যের সমৃদ্ধি গৌরব পত ৩০েশ অজিত করিবাভিলেন।

আনতর রাণা লক অবর রাজ্যের অন্তর্গত বগরাচলনিবাসী পালগ রাজপুতবিগকে পরাজিক "ব বন্ধুত করিরাছিলেন। সম্রাট্ মহক্ষদশাহ গোণী এই সমরে রাজপুতনা আক্রমণ করিলে রাণালক তাঁহার বিরুদ্ধে আরু ধারণ করেন। বেলনাের হুর্গ সক্ষ্প স্বাদ্ধান সেনার সহিত রাজপুত সৈক্তের বাের সংবর্গ উপস্থিত হয়। ইহাতে বহু সংখ্যক পাঠানসেনা ভূপতিত হইল এবং অবশিঠ পরাজর বীকার করিরা প্লারন করিলা।

লক্ষের রাজ্যকালে বিধর্মী মুসলমানগণ হিন্দুর পবিজ তীর্থ গরাধান আক্রমণ করে। ধর্মক্ষেত্র গরাপুরী মুসলমান কবল ছইতে উদ্ধার করিবার মানলে তিনি সনৈক্তে তৎপ্রকেশাভিমুধে যাত্রা করিলেন। এই মুদ্ধাত্রার সন্দে রাজার তীর্ধযাত্রাও উল্লেখ্য ছিল।

তিনি স্থলীর্থ কাল রাজ্যস্থ সংস্থাগ করির। বার্ধকোর চরম
সীমার উপনীত হইরাছেন এমন সমর মিবারের ভাবী রাণা
চণ্ডকে জামাতৃষে বরণ করিরা মারবারপতি রগমর বিবাহের
প্রস্তাবদহ নারিকেল প্রেরণ করিলেন। তৎকালে চণ্ড রাজসভার উপন্থিত ছিলেন না। কার্যা-বাপদেশে স্থানাস্তরে যাইতে
বাধ্য হইরাছিলেন, স্নতরাং বৃদ্ধ রাজা রণমজের রোবোৎপাদনের
ভয়ে স্মাং সেই নারিকেল গ্রহণ করেন। সেই কল্পার গর্ভে মৃকুলজীর জন্ম হয়। মৃকুললী পঞ্চমবর্ষে পদার্শন করিলে রাণা তাঁহার
উপরে প্রজাপালনভার প্রদানসূর্কক স্বয়ং বানপ্রস্থ প্রবল্ধন
করেন। তাঁহার রাজ্যভারপরিত্যাগের পর পূর্কপ্রতিশ্রুতি মত
জিতেপ্রিয় বীর চণ্ড বালক মৃকুলের পক্ষ হইরা রাজকার্য্য নির্কাহ
করিরাছিলেন।

লক্ষ্ বৃদ্ধকালোচিত ধর্মপ্রতাচরণে সম্বন্ধ করিয়া সনাতন হিন্দুধর্ম্মের বিক্ষাচারী ইস্লাম ধর্মাবলম্বিগণের বিক্তে গ্রাধানে
গমন করিলেন। এখানে মুসলমান-হত্তে তাঁহাকে জীবন উৎসর্গ
করিতে হয়।

মহারাণা লক্ষ শিয়োরতির বিশেব সহারতা করিয়া যান।
আলাউদীন বিজাতীর বিঘেবে বে মিবার রাজ্য শর্মানভূমে পরিণত করিয়াহিলেন, রাণা জাবুরার আক্রমন উপসত্ব হইন্ডে সেই
মরুপ্রেদেশ অমরাপুরীসদৃশ এক নগরী নির্দ্ধাণ করিলেন। লোকমনোহর সৌধমালা ও মন্দিরনিচর মিবারবক্ষ পরিশোভিত করিয়াভিল। তিনি বছ অর্থবারে একটা ক্ষর প্রানার নির্দ্ধাণ করাইয়া
ছিলেন। এতলাতীত তিনি একেখরের উপাসনার জন্ত একটা
ক্ষুবৃহৎ ভশ্বনমন্দির ভাসন করেন। উহা এবনও বিভ্যান

আছে। স্থানীর লোকের লগাভার বৃদ্ধ করিবার লভ ভিনি উচ্চ প্রাচীর পরিবেটিড কএকটা করিবাল নামা ক্রিয়া রাজ্যের লোকব্য কনে কমেন।

1.00

তীহার অনেকথনি সন্তান সন্ততি ছিল। চথাই তাহার মধ্যে সর্ব জ্যেত্র; কিন্তু তিনি পিতৃসিংহাসন প্রাপ্ত হল নাই। অধুনা অখণা, পালোর ও আরাবারীর নানা প্রান্তবাসী সুণাবং ও হলাবং বংশীর স্থারগণ সক্ষের বংশার বলিরা পরিচিত।

লক্ষা (ত্রী) লক্ষতীতি লক অচ্-টাপ্। লক, বশাব্তলংখ্যা, একশতহালার। (মেধিনী)

नकांखभूदी (बी) थातीन नगतरक्य।

नक्किछ (बि) नक्का अवासाहिष । २ हुई।

"देवः नाविका निकक्पूर्यरककृत्

তানেব সামর্বতরা নিজগু:।" (রবু १। १৪)

ও অভিত। ৪ লকণাশ্ৰর। **৫ লকণা পজিবারা** বোধিত অর্থ। ৬ অসুমিত।

লক্ষিতব্য (তি) নির্দেশ্য।

লক্ষিতলক্ষণা (ত্রী) সন্দিতে সন্দর্শ। সন্দর্শন্তের, বে ছলে সন্দিতার্থে সন্দর্শ। ইয়, তাহাকে সন্দিতসন্দর্শ। করে।

[मक्स्मा भस (स्थ ।]

লক্ষিতা (ত্রী) লক্ষ-জ, দ্বিরাং টাপ্। পরবীরাতর্গত নারিকা-ডেম, এই নারিকা প্রকাশীভাবনিপুলা। উমাহরণ---

> "যহুতং তহুতং বহুরাৎ তদশি বা ভূরাৎ যহুবতু তহুবতু বা বিষ্ণান্তৰ গোণনোপার: ॥" (রুশমঞ্জরী)

"পন্নপতি রতিচিক্ত চাকিতে বে নারে। লক্ষিতা করিয়া কবিগণ বলে ভারে॥

ন্দানি প্ৰস্কু দেশে এলে, রতিচিছ কিনে পেলে, নোহাগ পড়ুক মরে সতিপনা হরিলে।

ভূমি এলৈ বার্তা পেরে, দেখিতে আইছ ধেরে, আছাড় থাইমু পথে সে ভন্ত মা করিলে।

মুখে বল দস্তচিছ বুক বল নথে ভিল, জাল্থানুবেশ দেখি বুঝি লভা ধরিলে।

मंडे हहे, इंडे हहे, ट्लामा विमा कांत्र महे,

্কলম্ব এড়াবে নাহি সেজন না মরিলে।""

(ভারতচন্দ্র-রদমন্তরী)
লক্ষ্মীসরাই (সন্ধানরাই), বালালার মূলেরজেলার অন্তর্গত
একটা রেলটেসন। এথানে ইট ইন্ডিয়া রেলগথের 'কর্ড' ও 'লুপ' লাইন মিলিত হইরাছে। কলিকাতা হইতে এই স্থান ২৬২ মাইল। এথানে কিউল মধীর উপরে একটা স্থানর সেতু নির্মিত আছে। সেতুর পশ্চিম পার্মে ক্ষ্মি-লুরাই নগর ঃ वर्जवादमः मधिनप्रार्थे-वरममः विश्वेण-सप्पनः विभिन्नः विश्वेषः विश्वेषः विश्वेषः

লক্ষ্যে, ব্ৰু প্ৰদেশের প্ৰকৃত্তি এবটা সেখা ও নপর।

[मन्दर्भे तम ।]

লক্ষান্ (রী) পদয়কালের ক্ষমতে ইছি বা গম্মনিন্। ১ চিত।
"গমনিনক্ষেণিক শৈকলাণি মন্য মনিনকণি বিমানেন্দ্রকারীং অনোতি। ইয়মনিক্ষানোক ব্যৱসানি তবী ভিমিব হি মধুমাণাং মঞ্জনং নাক্ষমীনান্।" (শক্তলা ১৯০) ২ প্রধান। (ভাষা)

লক্ষ্মণ (क्री) ১ চিছ । (শবর্ষাণ) ২ নাম। (ছব্রত)
লক্ষ্মণ (ক্রি) তারিশিষ্ট। (পুং) লক্ষ্মণক্ষান্ততি অর্শ
আদিখান্চ। ৪ নারন। (হেম) ৫ জীরামন্রাতা, স্থানিকানন্দন।
৬ কুরুরাজ হুর্যোধনের পুত্র।

লক্ষাণ, রামারণোক্ত একজন অধিতীর বীর ও রযুকুস্তিগক জীরামচজ্ঞের ক্ষনিষ্ঠ বৈষাত্রের জাতা। ছমিআগর্জসম্ভূত বলিরা তিনি সৌষিত্রি লামেও খ্যাত। স্বভাব্দে তিনি ইক্রবিন্ধরী ধ্যেনাথকে নিহত করিরাছিলেন।

অধ্যান্ধরামারণে নিখিত আছে বে, মতিশর স্বলকণবিশিষ্ট ছিলেন বলিয়া লক্ষণ এই নাম কইয়াছিল।

"ভরণাত্তরতো নাম লক্ষণং লক্ষণাবিভ্যু।

শক্তম্ম শক্তহস্তার্মেবং গুরুরভারত ॥"(অধ্যান্মরামা[©] ১।৩।৪৫) ন্নামারণের বালকাঙে লক্ষণ নামচক্রের অপর গ্রাণের ফ্রার विश्व । के इहेबाइइन । ब्राम अभावभन कवित्व अभविष्ठ इहेरजन. গমনোল্পত হইলে পশ্চাদগমন করিতেন, শরান হইলে পাদদেশে উপবেশন করিতেন, তিনি আজন ছারার স্বার ভ্রাতার অনুগানী ছিলেন। রামের প্রসাধ ভিন্ন কোন উপাধের থাতে তাঁহার তৃত্তি ছইত না। রাম ধ্বন অখারোহণে মুগরার বাত্রা করেন, অমনি লম্মণ ধছুর্বত্তে ভাঁহার শরীররকা করিয়া বিশ্বত অসুচররূপে कांशांत श्रशांवर्की स्टेटकन । एवं पिन विश्वामित्यत गरक ताम তাভকাদি রাক্ষ্যবহন্তরে নিবিড় বনপথে বাইতেছেন, সে দিনও কাকপক্ষার লক্ষণ সলে চলিয়াছেন। শৈশবনুপ্রাবলীর এই সকল চিত্রের মধ্যে আত্মহারা লক্ষণের ভ্রাভৃতক্ষির ছবি भोनजादव कृष्टिया **फेटिबास्स्। धारे नगरब रमगरब बाय-**ত্তব্যের অভাবহেত মহাযুনি বিশামিক বালক্ষরকে জনাহার-ক্রেশ অপনোধনার্থ একটা মন্ত্রান করেন**া ভদনতার উভা**র হাজার খোতমাশ্রমে উপনীত হইরা অহল্যা উভারাতে রাজবি বন্দতন্দে আসিলেন, হ্রথমুডলাব্রে রাম সীভার এবং লক্ষণা উপিকাৰ উপাণি এবল াক্ষিতিন এই কিবিবাৰ ভাৰতে লক্ষণার পাৰ্বৰ ও ক্ষাৰেছ নামে ছই পুঞালকে ভাৰতে

রাদের অভিবেকনবোদে সকলেই কভ করোনরাক্ষালার এক
কভ হইবেন, কিভ লক্ষানের মুখে লাক্ষালার ক কথা নাই, নীরবে
রাবের হারার ক্লার লক্ষণ পাকাকটা। বিজ্ঞ রাম ক্ষানারী
রাজার করে লানিকেন, অভিবেক শংবারে ক্লারী হইরা নর্করেখনে
প্রথম কঠনর হইরা বলিলেন, "লানি রীর্ন ও রান্য জোনার করে লানিকেন করি।" এই কথা প্রথমে রাবের প্রথম
ভারার করেই কাননা করি।" এই কথা প্রথমে রাবের প্রথম
ভারার "র্বর্কছেবি" লক্ষানার প্রথম বাহুন্তভার রাজিনাত
হইরা উঠিল। জিনিক ক্ষানারী ছিলেন মন্ত্য, তথালি রাবের
প্রতি কেব ক্ষানার করিবে ভারা করা করিকে জানিকেন না।
বে বিন ক্রেক্রের করিবে ভারা করিকে জানিকেন না।
বে বিন ক্রেক্রের করিকেন ব্রহ্ম রাক্ষান্তকে নৃত্যুভূল্য
বনবালাক্রা কনাইলেন, প্রানের বৃত্তি বহনা বৈরাগ্যের ক্রিকে
ভূবিত হইরা উঠিল। ক্ষান্য তথা অভিনাত্র ক্ষান্ত হইরা ব্যাপাপূর্ণ
নরনে প্রভারে পশ্চাৎ পশ্চাৎ বাইতে লাগিলেন।

এই শুক্তার আংশে তিনি সক্ করিছে পারেন নাই।
রাম্চত্ত বাহাদিগকে অকুটিডটিডে কমা করিরাছেন, গল্পণ তাঁহাদিগকে কমা করিছে পারেন নাই। রামের বনবাস সইরা তিনি
কৌনল্যার সমুখে অনেক বাখিতভা করিয়াছিলেন, অবশেষে
কৃষ হইরা তিনি সমুক্ত অবোধ্যাপুরী নাই করিছে চাহিরাছিলেন।
তিনি রামের কর্তব্যবৃদ্ধির প্রশাস্য করেন নাই, এই গহিত আদেশ
পালম ধর্মকন্ত নহে, ইহাই রুষাইতে চেইা করিয়াছিলেন।

শক্ষণ সলে চলিলেন। এই আত্মত্যানী দেবতার ক্রন্ত কেছ বিলাপ করিল না। এমন কি, স্থমিত্রাও বিধারকালে প্রতের ক্রন্ত ক্রন্থন করেন নাই, তিনি চুচু অবচ সেহার্ক্রফাঠ লক্ষণকে বলিরাছিলেন, 'বাও বংস, অফ্রন্সমনে বনে বাও, রামকে দশরবের ভার দেবিও, সীতাকে আমার ভার মনে করিও, এবং বনকে অব্যোধ্য বলিরা গণ্য করিও।' স্থমিত্রা লক্ষণকে বনসমনে বাধা না দিয়া বরং তাঁহাকে ক্রন্ত ক্র্রন্থগালনের জন্ত আগ্রহসহকারে করাবিও করিয়া দিলেন।

আরণালীবনের বাহা কিছু কঠোরতা, ভাহার সম্থিক ভাগ লক্ষণের উপর পড়িরাছিব,—কিংবা ভাহা তিনি আছ্লাদনহকারে মাধার তুনিরা লইমাছিলেন। গিরিসাছদেশের প্রশিত বস্ততক্র-রাজি হইতে কুক্ষদেলন করিবা রামচক্র নীভার চুর্কুক্তনে পরাই-ভেন; গৈরিকরেণু ঘারা নীজার হুলার লগাটে জিলাক রচনা করিরা বিভেন; পল ভুলিরা নীজার হাক নলাটে জিলাক রচনা করিবা বিভেন; পল ভুলিরা নীজার প্রতি নলাক্ষিতীতে অব-গাহন করিতেন, কিংবা পোহাববীতীরক বেভসকুতে নীভার, উৎসক্ষে নতক রকা করিবা ক্ষতিবা ধনন করিবা পর্ণশালা নির্মাণ

ক্ষরিকেন, ক্রমণ্ড পরতক্তে ক্রাল্যাথা কর্তন ক্ষিকেন, ক্ৰনও বা মহিব ও বুৰের করীৰ সংগ্রহ করিবা আরি আলিবার বাবদা করিতেন। কথন শীভকালের ছবারম্বান জ্যোৎসার শেষরাত্রিভে ব্রগোধুনাদ্র বনপছার নাগ-নের মণিনী-শোভিভ সর্সীতে কলস লইরা ভিনি খল ভুলিভেন। ক্ষমন্ত চিত্রকৃটপর্কতের পর্ণশালা হইতে সরসীভটে বাইবার পথটি চিহ্নিড করিবার জন্ত ডিনি পথে পথে উচ্চ তরুণাধার চীরবন্দ্র বন্ধ করিরা রাখিতেন। কথনও বা ভিনি কোমদ বর্ডাভুর ও বৃক্ষপর্ণ দারা রামের শব্যা প্রান্তত করিরা অপেকা ক্রিভেন, ক্থনও বা দেখিতে পাই, তিনি কালিন্দী উত্তীৰ্ণ হইবার অন্ত বৃহৎ কাঠগুলি গুৰু ও বস্ত ও বেতসলতা দাবা অসংবদ্ধ করিরা মধ্যভাগে জমুশাখা দারা সীতার উপবেশন জম্ভ क्रथानन त्राप्ता कतिराज्यक्त । এই সংयमी जिस्सीत आफुरनराव জীচার নিজস্কা হারাইরা কেলিরাছিলেন। রামচক্র পঞ্চরটিতে উপন্থিত হট্যা লক্ষণকে বলিয়াছিলেন.—"এই স্থন্দর তল্পয়াজি-পূর্ণ প্রদেশে পর্ণশালা রচনার অস্ত একটা স্থান পুঁজিরা বাহির করিরা লও।" লক্ষণ বলিলেন, "আপনি যে ছানটি ভালবাদেন, তাহাই দেখাইরা দিন, সেবকের উপর নির্স্কাচনের ভার দিবেন না।" প্রভবেষার এরপ আস্থহারা ভূত্য কুমাপি দৃষ্ট হয় না। রামচন্দ্র স্থান নির্দেশ করিয়া বিলে লক্ষণ ভূমির সমতা সম্পাদন করিয়া খনিত্রহন্তে মৃত্তিকাথননে প্রবৃত্ত হইলেন।

আর এক দিন ক্লকসর্গসন্থল গভীর অরণ্যে অনশন ও পর্যাটনক্লিষ্ট সীতার ফলের মুখখানি একটু হত আ দেখিরা রামচন্দ্রেরও সেই ছংখমরী রজনীর কট অসম্ভ হইয়া উঠিল, তিনি লক্ষণকে অবোধ্যার কিরিয়া যাইবার জন্ম বারংবার বলিতে লাগিলেন, "এ কট আমার এবং সীতারই হউক, তুমি ফিরিয়া যাও, শোকের অবস্থার সাজনাদান করিয়া আমার মাতাদিগকে পালন করিও।" রামের এববিধ কাতরোজিতে ছংখিত হইয়া লক্ষণ বলিলেন—"আমি শিতা, স্থমিত্রা, শত্রুর, এমন কি বর্গও তোমাকে ছাড়িরা দেখিতে ইছে৷ করি না।"

এইখানে দ্বাননভগিনী শূর্ণণথা আসিরা রামের প্রেম-ভিধারিকী হইলে রাম তাহাকে লক্ষণের সমীপে প্রেরণ করেন। সংব্দী, জিতেজির ও অনাহার্ক্লিই লক্ষণের রম্পীপ্রেম আদৌ ভাল লাগে নাই। তিনি স্পাণধার নাক কাণ কাটিরা ভাহার নির্দ্ধকার প্রকার দিলেন। স্পাণধার প্রার্থনার রাক্ষদ-সেমাপতি ধরদ্ধণ আসিরা উপছিত হইলেন। উভর প্রাতার লাণিত শরে রাক্ষসকুল নির্দ্ধ হইল। স্পাণধার বাক্ষে নীভার রুপলাবণ্যের কথা ভনিরা দ্পানন ক্ষাপর ও কুছ হইরা মীভাহরণ করিলেন। স্পানুক্রপধারী মারীচ রামণরে নিহত হইল। ব্যান বিন্তুল করিব । করিব আহরণসূক্তিক করিব আহরণসূক্তিক করিব আহরণসূক্তিক করিব আন্তর্না করিবেন । বিবারাত্র তাহার বিপ্রাব করিবেন লানিবার সমস্ব তাই ডিনি বলিরা আসিরাছিলেন—"দেবী জানকীর নকে আসনি গিরিসাছদেশে বিহার করিবেন, জাগরিত বা নিত্রিভই থাকুন, আপনার সকল কর্ম আহিই করিরা লিব। খনিত্র, পিটক এবং ধছর্হতে আমি আপনার সকল সকে করিব।" বনবাসের শেব বংসর বিপদ্ আসিরা উপস্থিত হইল; রাবণ সীভাকে হরণ করিরা লইরা গোল। সীভার শোকে রাম কিন্তুপ্রার হইরা গড়িলেন, প্রাতার এই লাকণ কই দেখিয়া লক্ষণণ্ড লাগালের মন্ত সীভাকে ইতন্ততঃ খুঁজিরা বেড়াইতে লাগিলেন। রামের ক্ষম্প্রভার তিনি বারংবার গোলাবরীর তীরক্ষি খুঁজিরা আসিলেন।

অতঃপর দত্নামক শাপগ্রক ফকের নির্দ্দেশায়লারে রাম লক্ষণের সহিত পশ্পাতীরে স্প্রতীবের সন্ধানে গেলেন। তথন হনুমান স্থাীবকর্ত্ক প্রেরিড হইয়া সেখানে উপস্থিত হইলেন এবং তাঁহাদের পরিচয় জিজাসা করিলেন। হনুমান সম্বয় ও আদরের সহিত বলিলেন, "আপনারা পৃথিবীঞ্জে সম্পন্ত, আপনারা চীর ও বন্ধল ধারণ করিরাছেন কেন ? আপনাদের বুতায়িত মহাবাহ সর্বভূষণে ভূষিত হইবার যোগ্য, সে বাহ ভূষণ-হীন কেন ?" এই আদরের কঠবর গুনিরা লক্ষণের চিরক্ষ হংশ উচ্ছ দিত হইয়া উঠিল। যিনি চিরদিন মৌনভাবে স্বেহার্ড্র-হুদর বহন করিয়া আসিয়াছেন, আজ তিনি স্লেহের ছুন্দ ও ভাষা রোধ করিতে পারিলেন না। পরিচয় গুদানের পর তিনি বলিলেন—"দমুর নির্দেশে আজ আমরা স্থগীবের শরণাপর হইতে আসিয়াছি। যে রাম শরণাগতদিগকে অগণিত বিভ অকুষ্টিতচিত্তে দান করিয়াছেন, ত্রিলোকবিশ্রতকীর্ত্তি দশরণের জ্যেষ্ঠ পুত্ৰ আমার গুরু সেই কাৎপূজা রামচন্ত্র আৰু বানরাধি-পতির শরণ লইবার জন্ত এখানে উপশ্বিত। সর্বলোক বাহার আপ্রবাভে কৃতার্থ হইত, বিনি প্রভাপুঞ্জের রক্ষক ও পালক ছিলেন, আৰু তিনি আশ্রয়ভিকা করিয়া স্থগ্রীবের নিকট উপদ্বিত। তিনি শোকাভিত্বত ও আর্ড, স্মগ্রীব অবশ্রুই প্রসন্ন হইয়া তাঁহাকে শরণ দান করিবেন।"---বলিতে বলিতে সন্মণের চিরনিক্স অঞ্ উচ্ছ নিত হইয়া উঠিল, তিনি কাঁদিয়া মৌনী ছইলেন। রামের গুরবস্থাদর্শনে লক্ষণ একাস্তরূপে অভিভূত হইরাছিলেন, তাঁহার দৃঢ়চরিত্র আর্দ্র ও করণ হইরা পঞ্জিরাছিল। অশোক্রনে হনুমানের নিকট শীতা বলিরাছিলেন, লক্ষণ আমা আপেকা রামের নিয়ত প্রিয়তর। রাবণের লেলে বিশ্ব লক্ষণ বেদিন যুদ্ধকেত্রে যুতকর হইরা পড়িয়াছিলেন, সেদিন রাম আহত শাবদকে ব্যালী বৈদ্ধনে রলা করে, ক্রিক্রিক নেইকা আন্তলিরা বিশ্বা আছেন ; নাবনের ক্রেক্রেক বিদ্ধানিক বিদ্ধ

রামারণী যুক্তে বীরবর লক্ষণ বিশেব বলবীর্য ও সাহসিকভার পরিচর দিরা গিরাছেন। সহবোগী সেনাপতিরূপে যুদ্ধ করা ব্যতীত তিনি স্বীর তুক্তবলে অতিকার, ইন্দ্রজিং প্রভৃতিকে স্বরং শ্রনভবনে প্রেরণ করিয়াছিলেন। মেখনাদ নিধনে তাহার ছতিত্ব ছিল। চতুর্জশবর্ব অনাহারী ও জিতেজিরে না হইলে ইন্দ্রজিংকে কেই নিধন করিছে পারিবে না এইরূপ বর ছিল। লক্ষণ বনবাসকালে সেই ব্রত পালন করিয়াছিলেন। তাড়কানিধনকালে বিশ্বামিত্রপ্রেক্ত মন্ত্রই তাহা অনশনক্রেশ নিবারণের সহার ছইরাছিল।

রামের আক্রাপাণনে শক্ষণ কোনকালে দ্বিকৃত্তি করেন নাই. স্তারসঙ্গত হউক বা না হউক, দল্প সর্বাদা মৌনভাবে ভাহা পালন করিরা গিরাছেন। রক্ষোকুলের বিনাশ্যাধন ছইলে বে ৰিল রাম শীতাকে বিপুল নৈজসংখৰের মধ্য দিয়া শিৰিকা জ্যাগ ক্ষরিরা পদত্রকে আসিতে আজা করিলেন। শত শত দৃষ্টির ্গোচরীভূত হইরা সীতা লক্ষার বেন মরিরা যাইতে ছিলেন, ত্রীড়ামরীয় সর্বাদ কম্পিত হইতেছিল: বন্ধণ এই দুরা দেখিরা বাথিত হইলেন, কিন্তু রামের কার্য্যের প্রতিবাদ করিলেন না। ধধন সভীত পরীকার সময় সীতা অভিতে প্রাণবিসর্জন দিতে ক্লভসংক্ষা হইয়া অন্তৰ্গকে চিতা প্ৰস্তুত ক্ষিতে আদেশ করিলেন,—তথ্ন লক্ষণ ছামের অভিআছ বুৰিয়া সম্বলনেত্র চিতা প্রান্থত করিলেন, কিন্তু কোন প্রতিবাদ করে নাই। প্রাত্ত-লেহে তিনি খীর-কল্পিয়পুত্র হইরা গিরা-ছিলেন। দীতাকে উদ্বাহ্ন করিরা রাম জবোধ্যার আবিরা শন্ত্রভিভিবশতঃ তাঁহার মাণার शाका रुरेरनन।

ছত্ৰ ব্যৱসায়িলেনৰ - ডিলি স্বাসকাৰে প্ৰাভাগ সহায়তা কৰি-তেন। বিভূমিন পারে প্রকারুল ক্রীয়ার চরিত্রসকলে নতেছ-क्रमक क्रमत केवाशन कक्रिक दाव डीहाटक क्रमतान विवास পরাদর্শ করেব । লক্ষ্মণ এই শুরুজার লইরা পর্যারাধ্য ক্ষীভা-দেবীকে সামীকিক লাক্সমে প্লানিয়া আনেন ৮ এই সময় কইতে লক্ষণের চিত্তবিদ্ধতি বটে। অব্যাহণ ক্ষত্তের সময় ভিনিই সহ।-बुनिव चाटाम रहेएक नौकारमधीरक चामकर्माच अमन करतन। গীতার পাতালপ্রবেশের পর, একদিন কালপুরুষ জাসিরা সামচলের সহিত সাক্ষাৎ করেন। ঐ সমরে মরণাগ্যহে কাছাকেও গ্রেৰেল করিতে বিৰে না অনুমতি দিয়া বাম লক্ষণকে ছারপাল-ৰূপে ক্লম্ম করেন। অক্সাৎ রোবদর্ভি চর্কানা আসিরা রামের সাকাৎ জন্ত অপ্ৰসন্ন হইলে ডিনি আদেশ জানাইরা ভাঁহাকে নিরম্ম করেন, কিছ ছর্মাসার শাণের ভবে জ্যোঠের নিকট প্রবেশাধিকারের অভুমতি সইবার অস্ত গ্রহে প্রবিষ্ট হন। প্রভিক্ষাবন্ধ রাম লক্ষণকে বর্জন করিলে, তিনি সমযুসলিলে **जीवन विगर्कन** करत्रम ।

অধ্যাত্মরামায়ণের মতে লক্ষণ "শেষ" নাগের অবভার।

শক্ষণের চরিত্রে আত্তন্ত পুরুষকারের মহিমা দৃষ্ট হয়। একদা লক্ষ্ণ রামকে বলিয়াছেন, "জল হইতে উদ্ভূতমীনের স্থায় আপনাকে ছাড়িরা আমি এক মুহূর্ত্তও বাঁচিতে পারিব না।" বনঝারা অত্যন্ত অস্তার এবং রামের পিত-আদেশ-পালন তিনি ধর্মবিক্স বলিয়াই মনে করিয়াছিলেন। তাহাতে রাম লক্ষণকে বলিয়াছিলেন, "তুমি কি এই কাৰ্য্য দৈবশক্তির कन बनिया मत्न कतिरव ना ? जातकवादी नहे कतिया विन কোন অসংকল্পিড পথে কার্য্যপ্রবাহ প্রবর্ত্তিত হয়, তবে ভাহা দৈবের কর্মা বলিয়া মনে করিবে। দেখ, কৈকেয়ী চির্দিনট আমাকে ভরতের স্থায় ভাল বাদিয়াছেন, তাঁহার স্থার अन्मानिनी महरकुमबाजा ताबभूजी जामात्क नीकानाम कतियात অন্ত ইতর ব্যক্তির ভার এইরূপ প্রতিশ্রতিতে রাভাকে কেনই বা आवद कतित्वन । देश व्यक्ति रेस्टवत कर्षे, देशरूक मासूरवत रकान । হাত নাই।" পদ্মণ উভরে বলিলেন, "অভি দীন ও অগত याक्तितार देशायत लाहार निता थाटक, शूक्तकात बाला वाहाता দৈবের প্রতিকৃলে দণ্ডারমান হন, তাঁহারা আপনার স্থার অবস্ত্র रहेना भएएम मा । मृद वास्तिवार मर्बाम निर्माणम व्याश रून-"মুছার্হি পরিভূমতে।" ধর্ম ও নজ্যের ভাগ করিরা পিছা যে বোরতর অভার করিতেছেন, তাহা কি আগনি ব্রিতে পারিতে-ছেন না ? আগনি দেবতুল্য, কছু ও লাভ এবং দ্বিপুরাও আপ-নার রোপংসা করিয়া থাকে। এমন পুত্রকে ছিনি কি অপরাধি বলে ভাড়াইরা বিজেছেন ৷ আপনি ৰে বৰ্ণ পানন ভ্ৰিতে

ভাকুল, এ বৰ আনার নিকট নিভাত অবৰ আনীয় কলে হব।
আীর বস্তিত্বত বইরা নিরপরাধ প্রকে কাবাস বেজা—ইহাই কি
সভ্য, ইহাই কি ধর্ম । আনি আনাই বাছবলে আপনার অভিবেদ সম্পাদন করিব। বেশি, কাহার সাধ্য আনার কজি প্রভিন্নোধ
করে । আন প্রবিধারের অভুপ বিরা উদান দৈবক্তীকে আনি
ববলে আনিব। বাহা আপনি বৈদ্যক্তার অভিহিত করিভেছেন,
ভাহা আপনি অনারাসে প্রভাগ্যান করিভে গারেন, ভবে কি
নিমিত ভুছ অভিকিৎকর বৈবের প্রশংসা করিভেছেন ৪"

লক্ষণের এই ওল্পবিভাপুর্ণ পুরুষকাভিবাজিতে করতের
মত করণরসের বিশ্বতা ও ব্রীলোকস্থলত ধেনপূর্ণ
কোমলতা নাই। উহা লভত নৃত্ব, পুরুষোচিত ও বিলবে নির্কৃত্ব।
কোমলতা নাই। উহা লভত নৃত্ব, পুরুষোচিত ও বিলবে নির্কৃত্ব।
কোমলপ অবহাবিশব্যরে লক্ষণ নমিত হইরা পড়েন নাই।
বিরাধরাক্ষণের হতে নীতাকে নিঃসহারভাবে পভিত দেখিরা
রামচক্র শহার, আন মাতা কৈকেরীর আশা পূর্ব হইল" বলিরা
অবসম হইরা পড়িলেন। লক্ষণ ব্রাভাকে তদবহু দেখিরা ক্রৃত্ব,
সর্পের স্কার নিবাদ ত্যাগ করিরা বলিলেন—"ইক্রত্বলা পরাক্রান্ত
হইরা আপনি কেন অনাথের স্কার পরিতাপ করিভেছেন।
আরেন, আমরা রাক্ষণকে বধ করি।"

শেশবিদ্ধ লক্ষণ পুনর্জ্জীবন লাভ করিরা কথন দেখিতে পাইলেন, রাম তাঁহার শোকে অধীর হইরা সজলচক্ষে শ্রীলোকের
মত বিলাপ করিতেহেন, তথন তিনি সেই কাতর অক্ছাতেই
রামকে এরপ পৌরুবহীন মোহপ্রাপ্তির জক্ত তির্ব্বার করিয়াছিলেন। বিরহের অবহার রামের একান্ত বিহুলেতা দেখিরা
তিনি ব্যথিতচিত্তে রামকে "আপনি উৎসাহশৃত্ত হইবেন না"
"আপনার এরপ দৌর্কাল্যপ্রেদর্শন উচিত নহে" "পুরুবকার
অবলধন কর্মন" ইত্যাদির্গ উপদেশ দিরা বলিরাছিলেন—
"দেবগণের অমৃতলাতের ক্রার বহু তপক্তা ও ক্লছু সাধন করিরা
মহারাজ দশরথ আপনাকে লাভ করিরাছিলেন, সে সকল কণা
আমি ভরতের রূপে শুনিরাছি—আপনি তপক্তার কলত্বরপ।
বিনি বিপদে পড়িরা আপনার ক্রার ধর্মাত্মা নহু করিতে না
গারেন, তবে অর্মণত ইতর ব্যক্তিরা ক্রিকেশ সহু করিবে ?"

রামের ক্রাজনারে হউক বা অক্রাজনারে হউক, বে কেহ অক্রার করিরাছে, লক্ষণ ভাষা ক্রমা করেন নাই, এ কথা পূর্বেই বলিয়াছি। ললরবের ওপরালি ভাষার সমন্তই বিনিভ ভিল, ক্রোধের উত্তেজনায় তিনি বাহাই বলুন না কেন, সপরথ বে প্রশোকে আগত্যাল করিবেন, এ কথাও তিনি পৃত্রেই জন্ম বান করিরাছিলেন, তথালি তিনি ললরবকে কনে মনে ক্যা করেন নাই। স্বায় বিষয়কালে বধন লক্ষণকে ক্ষিক্রালা করি-লেন, ক্রার, পিতৃস্কালে আপনায় কিছু বক্তর্য আছে কি ?" জ্বন প্ৰথ বলিলেন, "রাজ্যক বলিত্র, বানকৈ তিনি ক্রের বলে পাঠাইলেন, নিরপরাধ আঠপুরুকে ক্রের প্রতিভাগ করিলেন, ভাষা বাধি বহু চিন্তা করিবাও বুক্তিক সামি মাই। আনি মহা-রাজের চরিত্রে পিতৃত্বের কোন নির্দেশ প্রতিভাই লা। আনার আকা, বন্ধু, তর্তা ও পিতা, স্বক্রই রাজ্যার।

ে ভয়তের প্রতি ভাঁহার গভীর সন্দেহ ছিল। কৈন্দেরীয় পুত্র ভরত বে নাভার ভাবে অন্ত্রাণিত হইবেন, এ সক্ষে ভারের জটল বারণা ছিল, কেবল ছানের তৎ সনার তবে তিনি ভয়টের অতি কঠোৰণাক্য আহোগে নিবৃত্ত থাকিতেন। কিন্তু বধন ৰটাৰছকেশকলাশ অৰশনভ্ৰশ ভৱত ছামের চরণ প্রাত্তে পড়িয়া ধূলিপুটিভ হুইবেন, তথন লক্ষ্মীহাকে চিনিতে গারিয়া সলজ-বেহণরিভাপে ক্রিবাণ হইলেন। ^ঠ এক্রিন শীভকালের রাত্রে বড় তুবার পড়িভেছিল, শীভাধিক্যে পশ্চিগণ জুলারে গুষ্টিত হইরা-ছিল, ভরতের জল্প সেই সময় লক্ষণের প্রাণ কাদিরা উঠিল, তিনি রামকে বলিলেন—"এই ভীত্র শীত সভ করিরা ধর্মান্মা ভরত আপনার ভক্তির ভপস্যা পালন স্বরিভেছেন। রাজ্য, ভোগ্য মান, বিলাস, সমস্ত ত্যাগ করিয়া নিয়তাহারী ভরত এই জীবণ শীতকাশের রাত্রিতে মৃত্তিকার শরন করিডেছেন। নিয়ম পালন করিয়া প্রভাহ শেষরাত্রিতে জরত সর্যুতে অবগাহন করিরা থাকেন। চিরহুথোচিত রাজকুমার শেষরাত্রের তীব্র শীতে কিন্নপে সর্বৃত্তে দান করেন।"

এই লক্ষণ পূর্বে ভরতের প্রতি অভিজ্ঞাধ প্রকাশ করিরাছিলেন। কিছ বেদিন বৃথিতে পারিলেন, তিনি বনে বনে যুরিরা রামের বেরূপ দেবার নিরত, আবোধ্যার মহাসমৃদ্ধির মধ্যে বাস করিরাও ভরত রামভক্তিতে সেইরূপ কৃচ্ছুসাধন করিতেছেন, সেই দিন হইতে তাঁহার শ্বর এইরূপ কেহার্ক ও বিনম্ন হইরা পড়িরাছিল। কিছ তিনি কৈকেরীকে কথনই ক্ষা করেন নাই, রামের নিক্ট এই ধিন বনিক্লাছিলেন, "দেপর্ব্ধ বাহার স্বামী, সাধু ভরত বাহার প্রত্ন, সেই কৈকেরী এরূপ নির্ভূর হইলেন কেল।"

শরৎকাল উপ্ছিত হইল, কিছ প্রতিপ্রতির অন্থারী উদ্যো-গের কোল চিছ না পাইরা প্রাম প্রপ্রীবের প্রতি কুছ হইলেন,— প্রামান্তবে রত বূর্ব প্রতীব উপকার পাইরা প্রত্যুপকারে অবহেলা করিতেছে। রাম লক্ষণকৈ প্রতীবের নিকট পাঠাইরা বিকোন— বছকে কীর কর্তব্যের কথা অরণ করাইরা উল্বোসে প্রবর্তিত করিবার লক্ষ্য বে সকল কণা কহিরা নিলেন, জন্মধ্যে ক্রোধস্চক করেকটি কণা ছিল—

'বে পথে বালী পিরাছে, লে পথ সন্তুচিত হর নাই ; অগ্রীব, বে প্রতিজ্ঞা করিবাছ, ভাষাতে ক্ষেতিট হও, কালীর পথ জুকু সরণ করিও না ।' কিন্তু লক্ষণের চরিত্র জানিয়া রাম একটা
"পুনক" কুড়িয়া লক্ষণকে সাবধান করিয়া বিলেন। আজ নেই
মিধ্যাবাদীকে বিনাশ করিব, বালীয় পুত্র অক্ষম এখন বানরগণকে
লইরা জানকীয় অবেবণ করুন।"

नकान

লক্ষণের তীক্ষ অক্সারবোধ রামের কথার প্রাপমিত হয় নাই। তিনি স্থাীবকে জুম্বকণ্ঠ ভং দনা করিয়া রোকক্রিভাধরে ধস্ লইয়া দাঁড়াইয়া ছিলেন। ভয়ে বানরাধিপতি তাঁহার কঠবিলম্বিত বিচিত্র জীভাষাল্য ছেদনপূর্বক তখনই রামচজের উদ্দেশে বাতা ক্ষিলেন। প্রভানে তেজনী বুবককে তেজনিনী সীতা বে ক্ষ্মেটার বাক্য প্রান্ত্রোগ করেন, সে কঠোর বাক্য তিনি ক্রিমণে সম্ভ করিরাছিলেন, তাহা জানিতে কৌতৃহল হইতে পারে। মারীচরাক্ষস রামের স্বর অমুকরণ করিয়া বিপন্নকঠে "কোথা রে ্লন্মণ" বলিরা চীৎকার করিরা উঠিল। সীতা ব্যাকুল হইরা ভখনই লক্ষণকে রামের নিকট যাইতে আদেশ করিলেন ৷ লক্ষণ রামের আদেশ দক্ত্যন করিরা ঘাইতে অসম্মত হইলেন এবং মারীচ যে ঐক্লপ স্বর্যবঙ্গতি করিয়া কোন গুর্ভিসন্ধিসাধনের চেষ্টা পাই-তেছে, তাহা সীভাকে বুঝাইতে চেষ্টা করিলেন। কিন্ত শীতা তথ্ন স্বামীর বিপদাশকায় জ্ঞানশৃষ্ঠা, লক্ষণকে সাশ্রনেত্রে ও সজোধে "তুমি ভরতের চর, প্রচ্ছন্ন ক্লাতিশক্র, আমার লোভে রামের অনুবর্ত্তী হইয়াছ, রামের কোন অভভ হইলে আমি অগ্নিতে প্রবেশ করিব।" এ কথা গুনিয়া লক্ষণ কণকাল ভভিত ও বিমৃত হইয়া দাঁড়াইয়া রহিলেন, ক্রোধে ও লজ্জায় ভাঁচার গণ্ড আরক্তিম হইয়া উঠিল। তিনি বলিলেন—"দেবি! তমি আমার নিকট দেবতাম্বরূপা, তোমাকে আমার কিছু বলা উচিত নহে ৷ স্ত্রী-লোকের বৃদ্ধি স্বভাবত:ই ভেদকারী ; তাহারা বিমৃক্তধর্মা, জ্বা ও চপলা। ভোমার কথা তপ্তলোহশেলের মত আমার কর্ণে প্রবেশ করিতেছে,—আমার নিশ্চরই মৃত্যু উপস্থিত, চারিদিকে অভভনকণ দেখিতে পাইতেছি"—এই বলিয়া প্রস্থান করিবার পূর্ব্বে সীতাকে বলিলেন, "বিশালাকি! এখন সমগ্র বনদেবতারা তোমাকে রক্ষা করুন ।" ক্রোধক্ষুরিতা-ধরে এই বলিয়া বচ্ছণ রামের সন্ধানে চলিয়া গেলেন।

লন্ধণের পুরুষোচিত চরিত্র সর্বাত্ত সভেষা, তাঁহার পৌরুষদৃথ্য
মহিমা সর্বাত্ত জনাবিল,—গুল্ল শেকালিকার ভার অনির্মাণ ও
অপবিত্র । সীতা কর্তৃক বিন্দিপ্ত অলভারগুলি অগ্রীব সংগ্রহ করিয়া
রাখিরাছিলেন , দে সকল রাম এবং লন্ধণের নিকট উপস্থিত
করা হইলে লন্ধণ বলিলেন, শ্লামি হার ও কেনুরের প্রতি লন্ধ্য
করি নাই, স্বতরাং তাহা চিনিতে পারিতেছি না । নিত্য পদবন্ধনাকালে ভাষার নৃপ্রবৃদ্ধ দর্শন করিয়াছি এবং ভাষাই চিনিতে
পারিতেছি।" কিন্দ্রিয়ার গিরিশ্বহাছিত রাজধানীতে প্রবেশ

করিয়া সিয়িবাসিনী রমনীগণের নৃত্র ও কাকীর বিলাস
যুধরনিক্ষন তনিরা লক্ষণ, চরিত্রবান্ নায়ু পুরুবেরাই এইরূপ

লক্ষা দেখাইতে পারেন। বধন মদবিক্ষণাকী নমিতাক্ষাই
তারা তাঁহার নিকট উপস্থিত হইল,—তাহার বিশাল শ্রোণীক্ষণিত কাকীর হেনপ্রে লক্ষণের লম্বুধে মৃহতর্মিত হইনা

উঠিল, তখন লক্ষণ লক্ষার অধােমুখ ইইলেন। এইরূপ হই

একটা ইন্সিতবাক্যে পরিব্যক্ত লক্ষণের নায়ুদ্বের ছবি আমাহের

চক্ষের নিকট উপস্থিত হর। তখন প্রকৃতই তাঁহাকে দেবতার

ছার পূলার্ছ মনে হয়।

লক্ষাণ, কএকজন গ্রহকার ও পশ্চিত। ১ শ্বরুবংশটীকা-রচয়িতা। ২ চুড়ামণিসার, দৈবজ্ঞবিধিবিলাস ও রমলগ্রছ নামক তিন খানি জ্যোতিগ্রন্থপ্রণেডা। ৩ পরমহংসসংহিতা-ব্লচন্নিতা। ৪ সমস্তাৰ্ণবপ্ৰণেতা। ৫ বৈশ্বকবোগচন্দ্ৰিকা বা যোগচন্দ্রিকা নামক গ্রন্থ-রচন্ধিতা। ইনি দছের পুত্র এবং নাগ-নাথ ও নারারণের শিষ্য। 👲 মহাভাষ্যাদর্শপ্রণেতা। পাঠকের পুত্র। ৭ প্রামৃতভরঙ্গিণীগৃত একজন কবি। ৮ মুচ্ছ-কটিকটাকা-প্রণেতা লল্লা দীন্দিতের পিতা ও শঙ্কর দীন্দিতের পুত্র। লক্ষাণ্ > একজন হিন্দু মহারাজ ছিলেন। কোসামন্থ শিলাফলকে ঐ সম্বত উৎকীর্ণ দেখা যায়। ২ কচ্ছপদাত বংশীয় একজন রাজা বন্ধদামনের পিতা। ইনি খুষ্টার ১০ম শতাব্দীর শেষ ভাগে বিদ্যমান ছিলেন। ও বালালার সেনবংশীয় একজন কার্ড রাজা। রাজা কেশব সেনের পৌত্রও নারায়ণের পুত্র। ঐতি-হাসিক আবুলকজ্বল এই নারায়ণকে "নৌজেব" নামে ও সেন বংশের শেষ স্বাধীন রাজা বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন।

লক্ষাণ আচার্য্য, ১ চঙীকুচপঞ্চশতীপ্রণেতা। ২ জগম্মোহন নামক জ্যোতিপ্রস্থি-রচরিতা। ৩ পাছকাসহস্র, বিরোধপরিহার ও বেদার্থবিচারপ্রণেতা।

লক্ষ্ণক্বচ (ङ्गी) > লক্ষণের স্থতিজ্ঞাপক স্থোক্তেদ। ২ ধরণীবিশেষ।

লক্ষ্মণ কবি, ১ ক্লক্ষ্বিশাসচম্পুরচরিতা। ২ চম্পুরামারণ নামক গ্রন্থের যুদ্ধকাপ্তপ্রণেতা।

লক্ষাণকুগুক (দ্লী) তীর্থভেদ।

লক্ষাণগড়, রাজপুতনার জরপুর রাজ্যের শেধাবতী জেলার অন্তর্গত একটা নগর। জরপুর রাজ্যের অধীনত্ব সামত্ত শীকর বংশীর সন্ধাররাও রাজা লক্ষণসিংহ কর্জুক ১৮০৬ পুষ্টাকে এই নগর ত্বাপিত হর। এই নগর ত্বাদি ত্বারা পরিবৃদ্ধিত এবং জরপুর নগরের অন্তক্ষণে নির্মিত। এখানে ধনী মহাজনদিগের ক্রেকটা ভ্লার ক্ষার অ্যানিকা আছে। লক্ষ্মণগড়, রাজপ্তনার আলবার সামস্ত-রাজ্যের অন্তর্গত একটা নগর। আলবার নগর হইতে ২০ বাইল দক্ষিণপূর্বে অবস্থিত। পূর্বে এই হান তৌর নামে পরিচিত ছিল। রাজা প্রতাপ সিংহ হুর্গনির্মাণাত্তে এই হানের নাম পরিবর্তন করেন। নজক বাঁ এই হুর্গ অবরোধ করিরাছিলেন।

লক্ষ্মণ গুপ্ত, কাশীরবাসী একজন লৈব-নার্শনিক। উৎপল ও ভটনারারণের শিবা। তিনি ৯৫০ বুটাকে বিদায়ান ছিলেন। লক্ষ্মণচন্দ্র (পুং) কীরপ্রামের একজন হিন্দু সামন্তরাজ। উপাধি রাজানক। ইনি প্রিগর্ভ (জাগদ্ধর)-রাজ জরচন্দ্রের অধীনে রাজত্ব করিতেন। ইহার নাতা লক্ষণিকা ত্রিগর্ভ-রাজপুদ্ধ ক্ষরচন্দ্রের কলা। কীরপ্রামের শিববৈদ্যাশাথ মন্দিরে ইহার প্রশন্তি উৎকীর্ণ দেখা বার।

লক্ষাণঠাকুর, মিথিলার একজন রাজা। মহারাজ শিবসিংহের পূর্বপুরুষ।

সক্ষমণতীর্থ, প্রাণোক্ত একটা প্রাচীন তীর্থ। এই নদীর প্তস্থিনে অবগাহন করিলে অপের প্ণাসকর হইরা থাকে। নার্দপুরাণ উ ৭৫ অধ্যারে এই তীর্থমাহান্তা বর্ণিত হইরাছে।

ইহা দক্ষিণভারত-গুবাহিত প্রাপদ্ধ কাবেরী নদীর একটা লাখা। কুর্গ রাজ্যের গ্রহ্মগিরিসন্নিহিত কুর্ছিগ্রামের পার্থ-দেশ হইতে সমৃত্ত হইরা উভরপূর্বাভির্থে মহিন্দ্ররাজ্যের মধ্য দিরা সাগরকটে নগর সমুখে কাবেরীসদমে মিলিড হটরাছে। এখানে নদীবকে ৭টা বাঁধ বাঁধিরা জলপ্রণালীযোগে শক্তক্ষেত্রাদিতে জলসরবরাহ করা হইরা থাকে। এই সকল বাঁধের মধ্যে হানাগোদ বাঁধই প্রধান।

উৎপত্তি-ছান হইতে পর্বতবন্দে কির্দুর অতিক্রম করিয়া আদিলে ব্রদ্ধণিরিতে একটা প্রবৃহৎ জলপ্রপাত দৃষ্ট হর, ঐ প্রপাতই প্রদিন্ধ লক্ষণতীর্থ নামে প্রদিন্ধ। এখানে প্রতিবংসর মাঘমাসে সানোপলন্দে বহু তীর্থবাত্রীর সমাগম হইরা থাকে। বে পথ দিরা এই তীর্থে আদিতে হর, তাহা অতীব বিষয়াবহ। পথের রক্ষিপার্থের হ্রারোহ পর্বতশৃত্ব এবং বামপার্থে প্রগতীর মধীবাত। এতত্তবের মধ্যবর্ত্তী স্থাঁড়-পথে বার্ফিগণ গমনা-গমন করিয়া থাকে। অক্তমনন্ধ হইলেই পতনের সম্ভাবনা। বীত্তংস দৃষ্ঠ ভিক্ষুক ও স্ক্রাসিকৃত্ব পথের ধারে স্থানে হানে তীর্থ-বার্ফিগের আরম্ভ ভরোৎপারনের কারণ হইরা থাকে।

লক্ষণদাস, অংকভাষা-নারমন্ত্রী-প্রণেতা মাধবদেবের পিতা।
লক্ষণদ্বেনিক, থাকজন প্রণিত তারিক পথিত। বারের বারণ
বিষয় জাচার্যের পৌত ও জীরক্ষের পূত্র। ইনি ভার্ডবীর্যার্জ্নবীগদানপ্রতি, কুওনগুপবিধি, ভারাপ্রদীপ, শার্বাভিনক,

শব্যপতিভাষণিনামী শারদাভিলকটাকা ও তন্ত্রপ্রবীপ নামে ভারা-প্রবীগটীকা প্রাণমন করেন।

লক্ষণন্তি বিদিন্, উপনৰ্গভোতকথবিচার, বিকর্ত্তবাদ ও নারকথ্যত্ত নামক ব্যাকরণপ্রণেতা।

লক্ষণনায়ক, কনক নায়কগদার। ইনি ১৮১০ খুটাকে বালবাটের অন্তর্গত পরনবাড়া নামক দানে একটা ক্ষপদ দাপন করিয়াছিলেন।

লক্ষণপ্ৰিত, সারচন্দ্রিকা নামে রাধ্যপাণ্ডবীর টাকা ও পজিমুক্তাবলী-রচরিকা :

লক্ষ্মণপতি, সৌরীবাতকপ্রণেড়া।

লক্ষাণপ্রসূ (রী) সন্ধান প্রস্থেজননী। স্থানিরা। (শবরুরা•) লক্ষ্মণস্তম্ভ (গুং) গীতগোবিন্দটীকা-প্রশেতা।

লক্ষাণভট্ট, ১ কাব্যপ্রকাশটীকাপ্রণেতা চঙীবাদের এক্ষন স্থান্ত। প্রস্থান বীর টীকার বন্ধবরের পাণ্ডিত্যের পরিচর দিরাছেল। ২ পায়রচনা ও রন্ধনানাপ্রণেতা। ও মহাভারত-টীকা-রচরিতা। ইনিই সভবতঃ ভারতভাবদীপ প্রণেতা মীকাকঠের গুরু। ৪ হোত্রকরক্ষমপ্রণেতা নারারণভট্টের পুত্র। ইনি বাদেলসন্দার রাজা ভাবসিংহদেবের অভ্যন্তস্থারে উত্তর প্রধানি সকলন করেন। ৫ আচাররন্ধ, আচারসার, গুরুশতক্ষণির প্র গোত্রপ্রবর্গরর্গরিতা। রামক্ষভট্টের পুত্র, নারারণভট্টের পোত্র ও রামেশ্বর ভট্টের প্রেণোত্র। ৬ সন্ধণভট্টীর মামক বেদান্তগ্রহ্বরিতা।

লক্ষাণ্মাণিক্য, বালালার প্রসিদ্ধ বারভূঁমার একজন, ভূনুয়ার ইহার রাজধানী ছিল, ভূম্যধিকারত্ত্তে ইনি মেঘনার পূর্কাবর্তী জনেকগুলি পরগণার উপর বীর আধিপত্য বিস্তার করিয়াছিলেন।

ৰাজানায় এই ভূঁ মাবংশের প্রভাব ও প্রতিষ্ঠা প্রদক্ষে পুরুবপরপারার নানারপ কিংবদত্তী প্রচলিত ক্লাছে। ঐ দকল
অন্নরণ করিলে জানা বার বে, আদিশুরবংশীর বন্ধকার হুলেণীসমূহত রাজা বিষত্তর রাম চটাপ্রামের অন্তর্গত সীতাকুগুতীর্থোন্দেশে বাত্রা করিয়া পথিমধ্যে রামি হওয়ার মেখনার একটা
চোরাবালুর চরে নজর করিয়া দেই রাজি তথায় বাদের
বন্দোবস্তা করেন। রাজা নিগ্রাবস্থার স্থপ্ন দেখেন বে,
ভগবান্ বলিতেছেন, "তুই বে স্থানে অভ নিত্রিত রহিয়াছিল,
ভাহার চতুর্দিক্ছ সমুদার স্থানেরই তুই একমাত্র অধীবর হইবি।"
রক্ষনী প্রভাতে নিত্রাভালের সলে প্রেকই তিনি স্থান্থবিরণ
আলোচনা করিয়া উহাকে ঈশরের আবেশ বলিয়াই প্রহণ

এবালদ নিতের বন্ধেও, ইবি আদিশ্যবদ্দীর কারস্থ গারাই । এবনও
স্থাপ্র পারবদার জীরাবপুর আনে এই বংশীর আনক হায়িরকারস্থের বান আছে ।



করিলেন এবং সেই স্থান অধিকারে ক্রন্তস্কর হইরা অরুণোদরেই রওনা হইলেন। প্রভাতে তিনি প্রশাস্ত নদীবকৈ
দিও নিরূপণ করিতে না পারিয়া ভ্রমক্রেমে ইভন্ততঃ বুরিয়া
বেড়ান। এইজন্ত তিনি সেই স্থানের নাম ভূলুয়া রাখেন।

প্রবাদ, ১০ই মাধ ক্ষাধবা ১২০০ খুঠানে এই ঘটনা ঘটে।
তৎপূর্বেই মহন্মদ-ই-বধ্ তিরার খিলিজি বালালা আক্রমণ
করেন। প্রবাদ-বর্ণিত কার্লীনর্ণরে আহা ছাপন না করিয়াও
আমরা লন্মণাণিক্যের বংশলতা হইতে জানিতে পারি বে,
রাজা বিশ্বভারের ১১শ পুরুষে রাজা লন্মণমাণিক্য প্রান্তভূতি
ইইরাছিলেন। বিশ্বভারের মৃত্যু ও লন্মণের জন্ম এতহভারের
মধ্যে ৩৫০ বংশর।

এদিকে ঐতিহাসিক প্রসাণেও জানা যায় যে, ১৫৮৬ थ्ट्रास्य ह्याबीপণতি त्रामा कम्पर्यनातात्रम मीविष्ठ हित्नन। রাজা লক্ষণমাণিক; তাঁহারই সমসামরিক। মৃত্যুর পর, বালক রামচক্র রায় রাজা হন! বালক রামচক্রকে লক্ষণমাণিক্য বিশেষ কুচ্ছতাচ্ছিলা করিতেন। এই শ্লেষোক্তি চন্দ্র-ছাপে বামচক্ষ বারের কর্ণে উপনীত হইলে তিনি ক্রোধে অধীর হইয়া ভূমুয়া আক্রমণার্থ রণতরীসমূহ সক্ষিত হইতে আদেশ দেন। ভদমুদারে তাঁহার দলবল অন্ত শস্ত লইয়া মেঘনা অতিক্রম করিয়া এবং ভল্যায় উত্তীর্ণ হইয়া রাজা লক্ষণকে সংবাদ প্রেরণ করিল। ভুলুয়ারাজ কোন আশকা না করিয়া প্রতিবেশী রাজার সম্বর্জনার্থ শ্বয়ং উপস্থিত হইলেন, তাঁহার শরীররক্ষী প্রহরিদল কেইই সলে আসিল না। শত্রুর নৌকায় আরোহণ করিবামাত্রই তিনি বন্দিভাবে চন্দ্রহীপে আনীত হইদেন। এখানে কারাগৃহে অবস্থানকালে একদিন রামচক্র তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করেন। ঐ সময়ে লক্ষণমাণিকা তাঁহাকে নিষ্ঠুররূপে আহত করার তিনি त्कार्थ व्यशीत कहेता मन्तरांत्र প्राणिकारमंत्र व्याप्तम श्राहत করেন। রাজাদেশ অচিরেই প্রতিপালিত হইল।

[विष्ठ विवत्रण वात्रज्ञा भरम रमथ ।]

শক্ষান্মাপুরকায়ত্ব, লক্ষণোৎসব ও বৈভসর্বত্ব নামক বৈভক-গ্রন্থপ্রকায়ত্ব, অমরসিংহের পুত্র।

লক্ষমণরাজনেব (পং) চেনীরাজ্যের কণচ্ডিবংশার একজন রাজা।
কেন্তুরবর্ধ ১ম যুবরাজনেবের পুত্র। পিতার মৃত্যুর পর ৯৫০
খুটাকে পিতৃসিংহালনের অধিকারী হন। ইনি রাজকল্যা রাহড়ার
পাণিপীড়ন করেন। তদীয় তনয়া বোছাদেবীর সহিত পশ্চিমচালুক্যরাজ বিক্রমাদিত্যের বিবাহ হর। রাজ-দৌহিত ২য় তৈলপ
৯৭৩-৯৯৭ খুটাক পর্যান্ত প্রভূত প্রভাবের সহিত রাজ্যশাসন
করিয়াছিলেন।

विनर्वि-स्नक हरेट काला यात्र त्य, त्रांका नन्त्रशतकात्र

কোনদাঁধিপতিকে পরাজিত করিয়া পশ্চিমপ্রদেশ জয় করিতে গমন করেন এবং গুলয়াতে সোমেধরদিকের উপাসনা করিমাছিলেন।

লক্ষাণবন্দ্যোপাধ্যায়, একজন বালানী কৰি। ইনি ন্দ্ৰবতঃ
বশিষ্ঠকত অধ্যান্ধরামারণের বলাহবাদ সন্ধান করিরাছিলেন।
এই রামারণ গ্রন্থের হুইশতবৎসরের প্রাচীন পূঁথি পাওয়া গিরাছে।
লক্ষাণবেলাস্তাচার্য্য, ছারপ্রকাশিকা নায়ী জীভাবাটীকা-রচয়িতা।
লক্ষাণশাস্ত্রিন্, অমরকোষব্যাখ্যাপ্রণেতা। বিশেশর শাস্ত্রীর পুত্র।
লক্ষাণসিংহ, শতকোটীমগুলপ্রণেতা।

লক্ষ্মণ্টেন্সন (পুং) বাঙ্গালার সেনবংশীর একজন রাজা। বল্লাল-সেনের পুত্র। ইহার সময়ে মুসলমানসৈত্য বাঙ্গালা আক্রমণ করে। যাজ্ঞববাদীপকলিকাপ্রণেতা শূলপানি, হলার্ধ, পশুপতি, জয়দেব ও ধোরীকবি তাঁহার সভা উজ্জল করিরাছিলেন। এই সকল পণ্ডিতগণের সহঁবাসে তিনিও একজন স্থকবি হইয়া উঠেন। পদ্যাবলীতে তাঁহার রচিত কতকগুলি কবিতা উদ্ধৃত হইরাছে। প্রাচীন তামলিপিতে তিনি দক্ষিণান্ধিবিজয়ী বলিরা উল্লেখ দেখা যায়। মহম্মদ-ই-বথ তিয়ারের আগমনে উৎকোচগ্রাহী পণ্ডিতগণের প্ররোচনাম বৃদ্ধরাজা কিরপে রাজ্য ছাড়িয়া জগলাথ-দর্শনছলে পণাইয়া যান, তাহাও সাধারণের অবিদিত নাই। ফুলশাস্ত্রে তিনি কুলপজ্জিসংকারক বলিয়া প্রসিদ্ধ।

[সেনরাজবংশ দেখ]

লক্ষ্মণসোম্যাজিন্, সীতারামবিহারকাব্যপ্রণেতা। ওর্গন্টি-শঙ্করের পুত্র।

লক্ষ্মণসামিন্, বাশীরহ মনিরে প্রতিষ্ঠিত সন্মণ-মূর্ভি।
(রাজতর ৪৪২৭৬)

লক্ষ্মণা (স্ত্রী) লক্ষণমন্ত্রস্তা ইতি অর্শ আদিখাদচ্, টাণ্।
> খেতকটকারী। (রাজনি॰) ২ সারসী। ৩ ওষধিভেদ। (মদিনী)
পর্যার — লক্ষণাকন্দ, পুত্রকন্দা, পুত্রদা, নাগিনী, নাগাহার,
নাগপত্রী, তুলিনী, মজ্জিকা, অপ্রবিদ্দুছ্না, পুছ্না। ৩৭—
মধুর, শীতল, স্ত্রীবদ্ধাতানাশক, রসায়ন, বলকর ও ত্রিদোষনাশক। (রাজনি॰)

২ মদ্রাধিপতির এক কলা। (ভাগবত > । ৫৮। ৫৭)

ও ছর্ম্যোধনের কন্তা, এই কন্তা যথন স্বন্ধরা হর, তথন প্রক্ষপুত্র সাম এই কন্তাকে হরণ করিয়া বিবাহ করেন।

"হুর্য্যোধনস্থতাং রাজন্ শক্ষণাং সমিতিপ্রয়:।

স্বরম্বরমামহরৎ সাম্বো ক্লাম্বতীস্থতঃ 🗗 (ভাগবড ১০০৮০১)

৪ জবাগাছ। ৫ মুচুকুন্দর্ক। (বৈশ্বকনি॰)

লক্ষণাচার্য্য (পুং) গ্রছকারভেদ। [লক্ষণ জাচার্য্য দেখ।] লক্ষ্যণাজট্য (জী) লক্ষ্যামূল। শক্ষাণাদিত্যরাজপুত্র, কনৈক কবি। ইনি কেনেজের দিয় ছিলেন। কবিকগাভরণে ইহার রচিত প্লোক উদ্ভ আছে। লক্ষণাব্তী, ৰাশনার প্রাচীন রাজধানী। ইহার অপর নাম গৌরু। গৌড়েখর মহারাজ লক্ষণদেন (মতান্তরে দেনবংশীর শেব রাজা লছমণিয়া) গৌড় রাজধানীর নানাবিধ সংস্কার শাবন করিয়া "লক্ষণাবতী" নাম রাখিরাছিলেন। তৎপরবর্তী মুসলমান ঐতিহাসিকগণও এই নগরকে "লখ্নোতী" নামে উল্লেখ করিরা গিয়াছেন। ১২৪৩ খুষ্টাব্দের কিছু পরে মিন্হাজ এই নগরে বাস করিরাছিলেন। সন্মণাবতীর তোরণহার এবং অস্তাক্ত হিন্দু ও মুসলমান কীর্ত্তির নিদর্শন স্বরূপ অস্তাপি বাহা পৌড़রাজধানীতে বিভ্যমান আছে, তৎসমুলায়ের সংক্ষিপ্ত বিবরণ গোড় শব্দে আলোচিত হইয়াছে। বর্ত্তমান প্রস্নতত্ত্বিদ্গণের অধ্যবসারে এই প্রাচীন জনপদের লুপ্ত ইতিহাসের জনেকাংশ বল্লালনেন ও লক্ষণদেন প্রভৃতি দেনবংশীয় রাজগণের জীবনেতি-বুর আলোচনার সঙ্গে সঙ্গে উল্লাটিত হইতেছে, তাহার বিশ্বত বিবরণ বাঙ্গালার ইতিহাসে বিরুত হইবে।

[গৌড়, বাঙ্গালা ও দেনরাজ্বংশ দেখ]

লক্ষাণোর (ত্রি) [লকণোর দেখ।] লক্ষাণ্য (পুং) লক্ষণপুত্র। (ঝক্ এ৩ গ্র>•) লক্ষাবীথী (ত্রী) লক্ষ্যপথ।

লক্ষ্মবাথা (জা) গণ্যগণ্য।
লক্ষ্মবাথা (জা) গণ্যগণ্য।
লক্ষ্মবাথা (জা) গণ্যগণ্য।
লক্ষ্মবাথা (জা) গণ্যগণ্য কল্প্ৰা (লক্ষ্মই চ।
উণ্ ৩০১৬০) ই প্ৰত্যয়ো মুড়াগমশ্চ। ১ বিষ্ণুপত্নী। পৰ্যায়—
প্ৰালয়া, পন্না, কমলা, শ্ৰী, হরিপ্ৰিয়া, ইনিবা, লোক্ষাতা,
মা, ক্ষীরাজিতনয়া, রমা, জলধিকা, ভাগবী, হরিবল্লভা, হুগাজিভনয়া, ক্ষীর্মাগরস্থতা। (কৰিকল্লভা)

ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণে লন্ধীর উৎপত্তির বিষয় এইরূপ লিখিত আছে,—কোন সমরে নারদ নারারণকে লন্ধীর উৎপত্তি ও পূজাদির বিষয় জিজ্ঞানা করিলে তিনি বলিয়াছিলেন যে, স্প্রের অগ্রে রাসমণ্ডলন্থিত পরমান্ধা শ্রীক্ষকের বামভাগ হইতে লন্ধীদেবী উৎপত্ন হন। তিনি অতিশন্ন অন্দর্মী ও তপ্তকাঞ্চনবর্ণাভা, তাঁহার অক্সমকল শীতকালে অপজনক উষ্ণ এবং গ্রীয়কালে শীতল, কটিদেশ কীণ, অনহর কঠিন ও নিতৰ অতি বিশাল। এই দেবী ন্থিরবোরনা এবং তাঁহার বর্ণনেত্রতম্পকত্লা। তাঁহার মুখমণ্ডল শারদীর কোটি পূর্ণচল্লের প্রভাকে পত্মকেও তিরন্ধার করে। এই দেবী উৎপত্না হইরাই সহলা ঈশবরের ইচ্ছান্ধ করে। এই দেবী উৎপত্না হইরাই সহলা ঈশবরের ইচ্ছান্ধ করে। এই দেবী উৎপত্না হইরাই সহলা ঈশবরের ইচ্ছান্ধ করে, প্রথম, ক্ষান্ধে, প্রথম, প্রথম, প্রথম, প্রথম, প্রথম, মধুরন্ধরে, নীভিত্তে ঠিক সমান। এই কুই মূর্চ্চি

রাধিকা ও লন্ধী। ক্লকের বাদাংশস্কৃতা মূর্ব্ডি লন্ধী এবং দক্ষিণাংশস্কৃতা দেবীই রাধিকা। রাধিকা উৎপন্ন হইরাই জীক্তকে কামনা করেন। পরে লন্ধীও ক্লকেকে প্রার্থনা করেন। পরে লন্ধীও ক্লকেকে প্রার্থনা করেন। জীক্তক এইরূপে উভরকর্তৃক প্রার্থিত হইরা উভয়েরই অভিলাব পূরণ করিরাছিলেন। তথন জীক্ত দক্ষাংশ হইতে ছিভুক্ত ও বামাংশ হইতে চড়ুড্র্জ এই চুইভাগে বিভক্ত হন। পরে ছিভুক্ত মূর্ব্ডিতে ক্লক্ষ রাধিকার্লে গ্রহণ করেন এবং বীর চড়ুড্র্জ নারারগমূর্ব্ডি লইরা লন্ধীর প্রার্থনা পূর্ণ করিলেন। লন্ধীনেবী মিয় দৃষ্টিতে সমূদ্র বিশ্ব লক্ষ্য করেন বলিয়া তিনি দেবীগণের মহতী—্র এই জন্ত মহালন্ধী নামে খ্যাডা। এইক্রপে ছিভুক্ত ক্লক্ষ রাধিকাকান্ত এবং চড়ুড্র্জ নারারণ লন্ধীকান্ত হইরাছিলেন।

জীকুক্ষ রাধিকা ও গোপগোপীর সহিত গোলোকে থাকি-ু লেন এবং চতুত্বি নারায়ণ লন্ধীদেবীর সহিত বৈকুঠে গমন कतिरणन । क्रथ ७ मात्रायण উভয়েই मर्बारण कृणा। এই শন্দ্রীদেবী গুদ্ধস্বস্থান্ত। বৈকুণ্ঠধাম্ট ভাঁহার পুর্ণাধিষ্ঠান নির্দিষ্ট হইল। তিনি প্রেমে নারায়ণকে আবদ্ধ করিয়া সক্ষ त्रमगीशागत अधाना इटेरनन। এই नन्तीराची हेरस्त मन्त्रकि-রূপিণী স্বর্গলন্দ্রীরূপে, পাতালে ও মর্ত্ত্যে রাম্বর্গণের নিকট রাজলন্দ্রীরূপে, গৃহিগণের গৃহে গৃহলন্দ্রীরূপে, কলাংশ ছারা গৃহিণী ও সম্পদ্রপে, গোগণের প্রস্থৃতি স্করভিরূপে, যুক্তকামিনী निक्नाजर्भ, कीरतानगागरतत्र क्याकर्भ, ठक्क्य्रामधरम, बर्फ, ফলে, নূপপন্নীতে, দিবান্ত্রীতে, গুহে, সমস্ত শত্তে, বল্লে, পরিষ্কৃত-স্থানে, দেব প্রতিমাতে, মঙ্গলঘটে, মাণিক্যে ও মুক্তা প্রস্তৃতিতে শোভারূপে অবস্থান করিতেছেন। যেখানে যেখানে সামাল্ররপও শোভা দেখিতে পাওয়া যায়, তথায় লন্দ্রীদেবী অবস্থিতা ন্ধানিতে হইবে; কারণ দল্মীদেবীই একমাত্র শোভার আধার। তাঁহার অবস্থান ব্যতীত শোভা থাকিতে পদরে না। লল্মীদেবী যেখানে বিরাজিত থাকেন না, তাহা হতঐী হইয়া থাকে।

লন্ধীদেবী প্রথমে বৈকুপধামে নারারণ কর্তৃক পৃঞ্জিত হন।
পরে ব্রহ্মা ও মহাদেব তাঁহাকে পৃঞ্জা করেন। অনস্তর
কীরোদসাগরে বিষ্ণু, ভারতে স্থারভূব মহ, মানবেল্রগণ, ঋষীল্রগণ, ম্নীল্রগণ, সাধুগৃহিগণ ও পাতালে নাগগণ বগাক্রমে তাঁহার
পূজা করিয়াছিলেন। পূর্বে ব্রহ্মা ভাজমাসের শুক্লাইমী হইতে
সমন্ত পক্ষ ভক্তিপূর্বক তাঁহার পূজা দিরাছিলেন, তদবধিই
বিলোক মধ্যে সেই পদ্ধিভি প্রচলিত রহিয়াছে।

চৈত্র, পৌষ ও ভাত্তমানে গুদ্ধ ও মন্ত্রজনক দিনে বিষ্ণু ভাঁহার পূলা করেন, পরে ত্রিলোকবাসীও এই তিনমানে লক্ষীদেবীর পূলা করিয়া গাঁকে। সন্থ পৌষমানের সংক্রান্তিদিনে আন্ত্রণ-মধ্যে লক্ষীর পূলা করেন, ক্রেমে ইন্তাও অগতে প্রচারিত হর। পরে রাজেল, দল্প, কেরার, বলবেব, প্রবণ, ক্রব, ইল্র, বরি, কপ্রপ, দল প্রভৃতি সকলে তাঁহার পূজা করিবাছিলেন।

এইরপে সেই সর্বস্থাৎস্বরূপিনী সকল ঐবর্থ্যের অধিষ্ঠাত্রী
ুনবী দল্লী সর্বানা সর্বান্ত সর্বান্তন কর্তৃক বন্দিত ও পূলিত
হইতেছেন। কল্পীবেদী বৈকুঠে পূর্ণভাবে এবং চরাচর ব্রন্ধাণ্ডে
অংশভাবে বিয়ানিত আছেন।"

নারৰ মারারণের নিক্ট লন্ত্রী দেবীর উৎপত্তি প্রভৃতির বিবরণ জনিরা তাঁহার মনে একটা মহা সংশর উপত্তিত হর, এই সংশর নিবারণের জন্ত তিনি ভগবানের নিক্ট প্রের করেন বে, 'লক্ষীদেবী রাসমঞ্জলে আবিভূতা হন, কিন্তু লোকে তিনি সিন্ধুতনরা নামে কিরপে খ্যাতা হইলেন ? সাগরমহন করিরা বেবগণ কিরপেই বা গল্পীকে লাভ করেন ? আসমি আমার এই সংশর নিরাকরণ করিরা ক্লভার্থ করুন।'

তথন ভগৰান্ নারদের প্রশ্নে উবদ্ হান্ত করিরা কহিলেন, নারদ! পূর্বে ছর্কাণা মূনির অভিলাপে দেবরাজ, দেবসমূহ ও মর্ত্তাবাসী সকলে জীত্রই হইলে লক্ষীদেবী কঠ হইরা পরম ছংখিতান্তঃকরণে অর্থাদি পরিত্যাগপূর্বক বৈকুঠ-ধামে গমন করিরা মহালক্ষীতে নীন হইলেন। একদা দেবরাজ ইন্ত্র অতিশব্ধ কামোলান্ত-ভাবে রক্তাকে লইরা পূলারে প্রবৃত্ত কিলেন। এমন সময়ে অকমাৎ ছর্বাসামূনি শহরকে পূজা ক্রিবার জানশৃত্ত অবহার তাহাকে প্রশাম করাতে মহামূনি ছর্বাসা তথন জান্ত্রত আশির্বাদ করিরা পারিজাতপূপ্প প্রদান করেন এবং বলিয়া দেন বে, এই পূক্ল সকল পাপনাশক ও সকল প্রকার মঙ্গলনিলান। তিনি আরও বলেন যে, যিনি ভাত্তপূর্বক গ্রহিরির চরণে নিবেলিত এই পূক্ল মন্তকে ধারণ না করেন, তিনি অগণের সহিত প্রীত্রই হন।

ইক্স তথন ক্ষতিশন্ধ কামোন্মন্ত ছিলেন, তাঁহার কর্ত্তবাকর্তবা বোধ ছিল না। ক্ষতরাং হ্রন্ধানা প্রস্থান করিলে পর ডিনি ভ্রম-ক্ষণতা ঐ পূপা লইমা ঐরাবতের মতকে প্রদান করেন। ঐরাবত ঐপুপা মন্তকে থারণ করিরাই ইক্সকে পরিত্যাগ করিরা বনে গমন করিল, ইক্স ডৎক্পাৎ প্রকাগনের স্থিত প্রীভ্রই হইল, ইক্সকে প্রীভ্রই হইতে দ্বেখিরা রন্ধাঞ্জ তথন ভাহাকে পরিত্যাগ করিরা গেল, তথন ইক্সের চমক ভাকিল।

ইক নিরানকভাবে আমরাবতীতে গমন করিবেন ৷ আনরা
করীতে যাইরা তিনি পুরী আনরাবতী নিরাক্তন্ত, শক্তান্ত
পরিপূর্ণ, নীনভাবাপর এবং ব্রুরাক্ত্রাক্তি বেশিক্তা, পরে

ক্তর্বে সমত হতাত প্রকাশিক্তর বেশিক্তা কতিও ব্রুরাক্তর
নিকট গমন ক্তিকেনা ব্রুরা সম্পন্ন স্ভাক্ত করিবা

ইত্রকে কহিছে লাগিলেন, দেকেন্দ্র । জুমি আমার প্রপৌত্র, নিরন্ধর প্রীর আপ্ররে তুমি উদ্দানা নীথি ধারণ করিরাছিলে, তুমি গদ্মীনদৃশী গদীর ভর্ত্তা, "তথাচ সর্বালা তুমি পরস্তীতে লোভ করিরা থাক, পূর্বের্জ তুমি গোতমের অভিশাণে ভগাল ইয়াছিলে, পুনর্বার লজাবিহীন হইরা পরস্তীরমণে লোভ করিরাছ। বে পরস্তীরমণ করে, তাহার প্রী ও বশ নত্ত হয়। ইত্যাদিক্ষণে ইত্রকে ভিরন্ধার করিরা লোকপিতামহ ব্রদ্ধা ইপ্রকে কহিলেন, এখন ভগবান বিক্রকে আরাধ্যা কর, তাহা হইলে ভিনি ভোষাকে পুনরার শদ্মীপ্রান্তির উপার নির্দ্ধারণ করিরা দিবেন।

অনস্তর ইক্ত অতি কঠোর-ভাবে নারারণের উদ্দেশে ওপজারস্ত করিলেন। নারারণ ইক্তের তপজার সন্তই হইরা গান্ধীকে দিব্রু-কজারণে জন্ম লইতে আদেশ করিলে দেব ও দানবগণ মিনিরা সম্জ্র-মহন করিরাছিলেন। এই সম্প্রমহনে ইক্ত সম্প্রমন্ত্রণী লন্ধী লাভ করেন। নারারণের আঞ্চার ভাঁহার নিজাশে হইতে নিজ্বজ্ঞারপে গান্ধী প্রাচ্ছুত হন। সম্জ্র হইতে উৎপন্ন হইনা লন্ধী দেবগণ প্রভৃতিকে বরদান করেন, গান্ধীর রূপায় ইক্ত রুফ্লা ও শ্রীযুক্ত হইরাছিলেন। তথন সকলে মিনিরা গান্ধী দেবীর স্তব করেন। (ব্রুবৈর্বর্জপুত ৩০-৩৬ অত)

লক্ষীচন্দ্রিত।

শন্মী কোন্ কোন্ ছানে অবস্থান করেন এবং কোথার বা অবস্থান করেন না, তাহার বিষয় প্রাণাদিতে এইরূপ বর্ণিত ইন্থাছে;—এই লন্মীচরিত্র পরম পবিত্র, বিনি ভক্তিপূর্বক প্রবণ করেন, তাঁহাঁর অশেব প্রকার কল্যাণ সাধিত হয়। লন্মী দেবী সমুত্র হইতে উৎপন্ন হইলে পরে অদিরা, মরীচি প্রভৃতি অবিগণ তাঁহাকে পূজা ও তাব ছরিরা বলিয়াছিলেন, মাতং! আগনি দেবতাদিগের পূছে ও মর্ত্তালোকে গমন করুম। অগ-অননী লন্মী মুনীজ্বদিগের সেই বাকা গুনিরা তাঁহাদিগকে কহিলেন, আমি ব্রাহ্মণদিগের অস্থ্যতি ক্রমে দেবগণের গৃছে ও মর্ত্তালোকে গমন করিব। হে মুনীজ্বগণ! ভারত রুখে আমি হাহাদিগের গ্রহণ গমন করিব। হে মুনীজ্বগণ! ভারত রুখে আমি হাহাদিগের গ্রহণ গমন করিব। তাহার বিষয় প্রবণ কর ।

আমি পৃথাবান ক্লীডিক গৃহত্ব এবং রাজাবিগের গৃহত বির ভাবে বাছিক তাহাদিগকে পুরের ভার প্রতিপালন করিব। অলু দেবতা, নাভা, শিল্প, বাছক, অভিবি এবং পিতৃত্বাক বাহাদিগের প্রতি লই বাকেন, ভালি ভাহাদিগের পুরে গ্রন ভরিব না। বে বাজি সর্বান চিল্পা করে এবং পরা ভরতীত, লক্ষরত, বা অভি পাত্রবী, বে বন্ধান বা অভিশান ক্লাণ; লেই সকল পালিটের পুরে পরাজি ভরিব লা। বে বাজি নীকা ক্লান নাই, বৈ নালক লোকাবিভিক, ক্লাক্তি, বে

नर्वतमा जीत वनीकृष्ठ, याशांत जी ও मांछ। विश्वा, व शक्ति करें ভाষী, नित्रस्त्र केनर करत, यारांत्र शृंदर नित्रस्त्र कनर रहा, वारांत्र শ্বাহে ত্রীলোক প্রধান, তাহাদের গৃহে প্রবেশ করিব না। বে ব্যক্তি धंत्रिभूमा ७ रतित छन कीर्जन करत ना, अथवा गांशांत रतित প্রাশংসা করিতে ইচ্ছা নাই, যে ব্যক্তি ক্সা-বিক্রয়, আত্ম-বিক্রয়, ও বেদ-বিক্রর করে, যে নরহত্যাকারক, হিংসক, তাহাদিগের গৃহ নরক তুলা; তথার আমি যাইব না। যে ব্যক্তি কার্পণ্য-নোবে দ্বিত হইরা মাতা, পিতা, ভার্যাা, গুরুপত্নী, গুরুপুত্র, অনাৰা, ভগিনী, ক্যা এবং আশ্ৰয়রহিত বান্ধ্বদিগ্ৰে পোষণ না করিয়া সর্ব্যদা ধনসঞ্চয় করে, আমি কদাচ তাহাদের নিকট গমন করিব না। বে ব্যক্তির দন্ত অপরিষ্কৃত, বস্তু মলিন, মন্তক ৰুক্ষ, গ্ৰাস ও হাস্ত বিৰুত এবং যে মন্দৰ্ভি মৃত্ৰ-্বিষ্ঠা ভ্যাগ করিবার সময় মূত্রাদি ভ্যাগ-কর্তাকে দর্শন করে, যে ব্যক্তি আর্দ্রপদ ধুইয়া শরন করে বা চরণ না ধুইয়া শয়ন করে, পুষ বস্ত্রহীন হইরা নিদ্রা যার, সম্কাকালে বা দিবাভাগে শরন করে, ভাহাদিগের গৃহে আমি কথনও চরণ অর্পণ করিব না। বে ব্যক্তি অত্যে মন্তকে তৈল প্রদান করিয়া পশ্চাৎ অস্ত অঙ্গ ম্পর্শ করে বা গাত্রে তৈল প্রদান করে, ভৈল মর্দন করিয়া যে বিষ্ঠামূত্র-ত্যাগ, প্রণাম বা পুষ্প চয়ন করে, যে ব্যক্তি নথ ছারা তুণ ছেদন এবং ভূমি খনন করে, যাহার গাত্রে ও পদে মলা থাকে, তাহারা আমার রূপা পায় না। বে ব্যক্তি জ্ঞানপূর্ব্বক আত্মনত কিংবা পরদত্ত প্রাহ্মণের বৃত্তি বা দেবতার বৃত্তি হরণ করে, তাহার গৃহে े আমার স্থান নাই। যে মন্দবুদ্ধি, শঠ, দক্ষিণাবিহীন, ইয়ঞ্জকারক, পাপী এবং মন্ত্র ও বিষ্ঠা দারা জীবিকানির্বাহ করে, যে ব্যক্তি গ্রাম্যালী, চিকিৎসক, পাচক ও দেবল, যে ব্যক্তি ক্রোধবশতঃ 'বিবাহকর্ম বা অক্ত ধর্মকার্য্যের ব্যাঘাত করে এবং দিবাভাগে মৈথুন আচরণ করে, আমি এই সকল ব্যক্তির গৃহে গমন कति ना । (उन्नरेक्चर्युः गर्गमयः २०, २२ व्यः)

পন্মপুরাণে লিখিত আছে বে, একদা কেশব মেরুপুঠে
স্থানীনা লন্ধীকে জিজানা করিয়াছিলেন বে, দেবি! তুমি
কোন স্থানে নিশ্চল হইরা অবস্থান কর, লন্ধী তত্ত্তরে বিষ্ণুকে
এইরূপ বলিয়াছিলেন—

"মেরপূর্তে স্থাসীনাং গৃন্ধীং পৃচ্ছতি কেশবং । কেনোপারেন দেবি মং নৃণাং ভর্বতি নিশ্চনা ॥

- শ্রীরুবাচ ।

গুক্লা: পারাবতা বত্র গৃহিণী বত্র চোজ্জণা।
জ্ঞানতা বসতির্বত তত্র কৃষ্ণ বসামাহম্ ।
বাজ্ঞা সুবর্ণসদৃশী তপুলা রক্তোপনা:।
জ্ঞানৈকবাতৃদ্ধ বত্র কৃষ্ণ বসামাহম্ ।" (কৃষ্ণা) লক্ষীদ্রমিত্র)

যে হলে শুরুবর্গ পারাবত সকল থাকে, যে ছলে গৃহিনী স্থানী ও কলহ-হীনা, তথার আমি অবস্থান করি। বে বে হলে ধান্ত প্রবর্গন করে। বাহারা প্রেরবাক্যভাবী, বহরাপানেরী, প্রেরবাক্যভাবী, বাহারা পর্মানির, প্রিরবাক্ত নামিরা, বাহারা পর্মানিক, জিতেপ্রির, বিভাবিনীত, অগর্মিত, জনাগুরাণী ও যাহারা পরেরপতালী নহে, আমি সর্ম্বার্গ এই সকল প্রথমে অবস্থান করি। বাহারা দীর্ঘকাল ধরিরা লান ও ক্রন্ত ভোজন করে, স্থান্ত পূশা পাইরা প্রাণ করে না, নয়া-ব্রীকে দর্শন করে না, সেই সকল শোক আমার প্রির। বে পুরুবে ত্যাগ্, সত্য ও পৌচ এই তিনটী মহাওণ আছে, তিনি আমার প্রির।

আমলক ফল, গোমর, শৃত্য ও শুক্র বন্ধ, পালোৎপল, চন্দ্র, মহেশ্বর, নারায়ণ, বস্থদ্ধরা ও উৎসব-মন্দির এই সকল স্থলে লক্ষী নিত্য অবস্থান করেন।

বে সকল স্ত্রী গুণভজিযুকা, পতির আক্রান্থবর্ত্তনী, এবং পতির ভূকাবশেব ভোজন করে, সদা সম্ভষ্টা, ধীরা, গ্রিরবাদিনী, সৌভাগ্যযুক্তা, লাবণ্যময়ী, প্রিরদর্শনা, ভাষা, মৃগান্ধী, স্থান্ধী, পতিব্রভা এই সকলগুণযুক্তা স্ত্রীতে আমি সর্ব্বদা অবস্থান করি।

পৃতি ও প্যাৃষিত পুস্থাণ, বছবাজির সহিত শয়ন, ভ্যাসনে উপবেশন এবং বিনি কুমারীগমন করেন, লন্ধী তাহাকে দ্র হইতে পরিত্যাগ করেন। চিভাঙ্গার, জন্ধি, বহি, ভন্ম, হিল, গাভী, তুব, গুরু এই সকল ক্রব্য পাদ দারা সংশ্পর্শ-কারী লন্ধীহীন ইইরা থাকে।

(ঋনপু• লশ্বীকেশবসংবাদে লন্দ্রীচরিত্র)

গরুত্পুরাণ ১১৪ অধ্যায় এবং মার্কণ্ডেয়-পুরাণ প্রভৃতিতেও এই লক্ষীচরিত্র বিশেষরূপে বর্ণিত হইরাছে। বাহুল্যভন্নে তাহা এই স্থলে লিখিত হইল না।

गन्दीगृजात वायदा ।

স্থান দেবগণ ফর্ড্ক লন্ধী পৃঞ্জিত হইরাছিলেন, এইজন্ত ভারতেও তিনি লোক কর্ড্ক পৃঞ্জিত হইরা থাকেন। পৌব, চৈত্র ও ভাজ এই তিনমানে লন্ধীপূলার বিধান আছে। বিশ্ব এই তিনমানে লন্ধীপূলা করিরাছিলেন, এইজন্ত এই তিন মানেই লন্ধীপূলা বিধের। এই তিনমানে কে তিনবার পূজা হইরা থাকে, চুলিত কথার তাহাকে লন্ধীর 'বন্দপানা' পূজা করিরা তহুদেশ্যে হবিশ্বাপী হুইরা নির্মাণানন বিরুত্তে হর। ইহাকে,চলিত কথার 'পান্নী' কহে।

ভ্রমণকে বৃহস্পতিবারে শলীপুলা করিতে হর। গুরুপলীর বৃহস্পতিবারে গুরু তিথিনক্তের বনি বোগ না হর, কইনে রবি ও সোমবারে পূজা করা বাইন্ডে পারে, এই পূজার বৃহস্পতিবার মৃথ্য এবং রবি ও সোমবার গৌণ। বৃহস্পতিবারে বিদি পূর্ণা অর্থাৎ পঞ্চমী, দলমী রা পূর্ণিমা তিথি হর, তাহা হইলে ঐ তিথিতে পূজা করাই বিশেব প্রালম্ভঃ। ইহার মধ্যে আরও এক টু বিশেব আছে বে, পৌবমারে দলমী, চৈত্রমানে পঞ্চমী এবং ভাজমানে পূর্ণিমা তিথি বিশেব উপযোগী। তিথি প্রতিপদ, একাদনী, বন্ধী, চতুর্পা, নবমী, চতুর্পানী, বাদশী, ত্রয়োদলী, আমাবহা ও অইমা তিথিতে কন্ধীপূজা নিবিদ্ধ। সংক্রান্তি, প্রথমমাস, অপনাক্রমাল, ত্রাহম্পার্শ দিন, ও রাত্রিকালে এই পূজা করিতে নাই। হবণা, ধনিষ্ঠা, শতভিষা ও পূর্বভালেশ্য এই চারিটা নক্ষত্র ও স্ক্রপক্ষে কথন পূজা করিবে না।

একটা আচকবাতা পূর্ণ করিরা তাহা, নানাভরণভূষিত করিবে, পরে ঐ আচক স্থান গুরুপুলারার পূজা করিতে হয়। এই পূজার পোষমাসে পিটক, চৈত্রমাসে পরমার এবং ভাদ্রমাসে পিটক ও পরমার এবং নানাবিধ উপহার হারা পূর্বমূথে পূজা করিতে হইবে। যিনি যথাবিধানে এই, লক্ষ্মীপূজা করেন, তিনি ইহলোকে নানাবিধ স্থথসোভাগ্য ভোগ করিয়া অন্তকালে বিশ্লুলোকে গমন করিয়া থাকেন। লক্ষ্মীদেবীর পূজা স্ত্রীলোকে করিবে, এইকপ বিধান দেখিতে পাওয়া যায়। যে স্থলে লক্ষ্মীপূজা হইবে, তথার ঘণ্টাবাত্য করিতে নাই। ঝিন্টী ও কাঞ্চন পূল্যারা লক্ষ্মীপূজা করিবে না। পাছবারা লক্ষ্মীপূজা বিশেষ ওভজনক। *

 "পৌৰে চৈত্ৰে তথা ভালে পূজনেয়ু: খ্রিয়: খ্রিয়সৃ । সিংছে ধনুবি মীনে চ স্থিতে সপ্ততুরজনে । প্রতাদং পুরুরেরদ্বীং শুরুপক্ষে **গু**রোর্দ্ধিনে। নাপরাছে ন রাজৌ চ নাসিতে ন ত্যহস্পুলি 🛭 षाप्रशास्त्रिय सम्मात्राः विकाशक निवानस्य । क्रांत्रिकाः ज्याहेमाः क्यनाः मिन शुक्कात् । ৰ পুজয়েৎ খনে) ভৌষে ৰ ৰূখে ৰৈক ভাৰ্সবে। পুলবেত, শুরোর্থরে চাঞাপ্তে রবিদোসরো: 🛊 শ্বস্থান্নে হি পূৰ্ণা চ বল্পেন বদি লভাতে। कत भूका कू कपना धमभूत्रविवर्षिमी ह म कृर्वतार अथरम मानि देनव कृर्वताविनर्वतनम् । म क्लोर वाबराव छा देमय क्लिंग अवागराव । পৌৰে চ দশমী পক্তা চৈত্ৰকে পক্ষমী ভথা। ষ্মতক্তে পূর্ণিম। জেরা শুরুবারে বিশেষতঃ 🖡 चाइकः शक्तरम्भूतः नामाकत्रगङ्गिकम् । चर्चिक्षक्षपूर्णां कन्नगर्क व्यक्तस्र । পৌৰে ভূ গিষ্টকং দল্যাৎ প্ৰথমন্ত্ৰক চৈছেকে। পিইকং পরবারক নততে জু বিশেষতঃ।

এই লন্ধীপৃক্ষার লন্ধী, দারারণ, ও কুবের এই তিনজনের
পূজার বিধান নেখিতে পাওরা বার। এ দিনৈ সরস্বতীয় পূজা
এবং সরস্বতী পূজার দিনও লন্ধীপুজা হইরা থাকে।
ব্রহ্মবৈর্বপুরাণে লন্ধীদেবী স্বেডবর্ণা বলিয়া কীর্ত্তিত ইইরাছেন।
"স্বেডচম্পকবর্ণাভা স্থপদৃশ্চা মনোহরা
দরৎপার্বাণকোটীলুপ্রভাপ্রজাবিতাননা ॥"
(ব্রহ্মবৈর্ব্তপুত্র প্রস্কৃতির্ধত ৩৫ অ০)

কিন্তু অক্ত ছলে ইনি গোরবর্গা বলিরা বর্ণিত হইয়াছেন। বে ধ্যানে সন্ত্রীপূজা হইরা থাকে, সেই ধ্যানাল্লসারে ইনি গোরবর্গা।

ধান-

"পাশাক্ষমানিকাজোক্ষণিভির্বাম্যনৌম্যরোঃ।
পুলাসনস্থাং থ্যারেচ্চ প্রিরং কৈলোক্যমাতরম্॥
গৌরবর্গাং হ্ররপাঞ্চ সর্বালকারভূষিতাম্।
রৌক্ষপন্নব্যগ্রকরাং বরলাং দক্ষিণেন তু॥"
জন্মপুরাণোক্ত ধ্যান——
"হিরণ্যবর্গাং হরিণীং হ্রবর্গরজতপ্রস্তম্ ।
চক্রাং হিরণ্মনীং লন্ধীং জাতবেদসমাবহাম্॥
গৌরবর্গান্ত দিভূজাং সিতপল্লোপরিহিতাম্। "
বিক্টোর্বকংহ্লন্থাঞ্চ জগদ্দোভাপ্রকাশিনীম্॥"
'শ্রীং লক্ষ্যে নমঃ' এই মন্ত্রে পূজা করিতে হয়। পরে লন্ধী,
পল্লালয়া, পল্লা, কমলা, শ্রী, ধৃতি, ক্ষমা, ভূষ্টি, পৃষ্টি, কান্তি, মেধা,
বিজ্ঞা, রমা, শ্রুণিত, হরিপ্রিয়া, বিক্সপ্রিয়া ও নারায়ণপ্রিয়া
ইহাদিগকে লন্ধীবীলা, শ্রীং' এই মত্ত্রে পূজা ও লন্ধী নারায়ণ

এবং বৃহস্পতি কুবের ইহাদিগেরও পূজা বিধেয়।
"ধ্যায়েদাফাং সদা দেবীং পূজাকালে বিশেষতঃ।
ততঃ পূজাদিকং কুর্যাৎ শ্রীং লক্ষীং নম ইড়াচা॥

श्वनवात्रमावृत्वा नव्यक्त शृतिया श्ववा । क्रमणाः शृत्यव्यक्त स्वत्यव्यक्त न विवाद्य ॥ व्यक्त क्रमणांत्रम् क्रमणाः शृक्यव्यक्ति । हेहरणांक स्वयः व्यागा शत्रक्ष क्रमण्यः ब्यक्तः ॥ व्याचुची शृक्यव्यक्ताः शिक्तमाननगः विकाद ॥ श्रक्तमण्यश्योगरेत्यवयाञ्चलात्रक्ते ॥ श्रक्तवात्रक्ति व्यक्तवार्याव्यक्तरम् ॥ व्यवद्यक्ताः व्यक्तवार्याव्यक्तरम् ॥

म क्षणारकं विकाशाः मनमी वांगीत् है । संकाशाः विकाशाः मनमी वांगीत् है । संकाशि व्यक्तिकं नमीलुंगाः मः साहत्वतः ह (कांकासिकः) শন্ধীঃ পরাশরা পরা কমলা প্রীধৃতিঃ ক্ষা।

তৃষ্টিঃ পৃষ্টিস্তথা কান্তিমেধা বিভা রমা ক্রতিঃ॥

হরিপ্রিরা তথা বিক্ষোঃ প্রিরা নারারণক্ত চ।

অতাভিঃ সপ্তদশভিলন্ধীবীজ্ঞাদিনার্চরেৎ॥

শন্ধীনারারণাভাকে নমাহন্তেন প্রপুত্তরেৎ।
ধীবণক কুবেরক পূজ্যেন্তদনস্তরম্॥" (ক্ষপ্ • সন্ধীচ•)

তর্সারে শন্ধীর মন্ত্র ও পূজাদির বিবর এইরূপ বর্ণিত

ইরাছে।

ংকাত্ত্ব । "অথ বক্ষো প্রিরো মন্ত্রান্ শ্রীসোডাগ্যফলপ্রদান্। বস্তাঃ কটাক্ষমাত্রেশ ত্রৈলোক্যমণি বর্দ্ধতে॥" (ভর্নার) 'প্রাং' এই একাক্ষর বীজই লক্ষীর মন্ত্র, এই মন্ত্রে পূজা

পূজাপ্রণালী — প্রাতঃক্ততাদি সমাপন করিরা পূজা প্রণালী জনুসারে পীঠন্তাসাদি সকল কর্ম করিবে। পরে লন্মীর ধ্যান করিকা পীঠপুজাদি করিতে হইবে। ধ্যান যথা —

कवित्न नानाधिव ज्ञथरमोडागा नाड रहेवा थाकि।

"কান্তা। কাঞ্চনসন্ধিতাং হিমনিরিপ্রবৈশন্তর্ভিনিক-ইন্তোৎক্ষিপ্রহিরগ্রামৃতবটেরাবিচামানাং প্রিয়ন। বিভাগাং বরমজ্ঞগ্রমভয়ং হত্তৈঃ কিরীটোক্ষলাং কোমাবন্ধনিত্দবিদলিতাং বন্দেহরবিদ্দান্তিতান।।" এই ধ্যানে যথাবিধানে পুলা করিয়া বিসর্জনাদি কর্ম সমাপন ক্রিবে। লন্ধী মন্ত্রের প্রশুরণ বাদশ লক্ষ জপ।

মন্ত্রান্তর—'ঐং শ্রীং শ্রীং শ্রীং' এই লন্ত্রীর মন্ত্র চতুবর্গ ফলপ্রদ।
এই মন্ত্রে পূজাদি করিলে স্থানোভাগ্যাদি সম্পদ্ লাভ হয়।
ইহা ভিন্ন 'নমঃ কমলবাসিজৈ স্বাহা' এই দলাক্ষর মন্ত্রও সকল
ক্ষতীই সিকিপ্রদ।

মহালন্দ্রীমন্ত্র—'ওঁ ঐং হ্রীং শ্রীং ক্লীং হেলা ৰূগৎপ্রস্থতিত। নমঃ' এই বাদশাক্ষর মত্ত্রে মহালন্দ্রীর পূজা করিতে হর।

এই সকল পূজার পছতি ও নিরম তন্ত্রসারে বিশেষ ভাবে বর্ণিত হইরাছে, বাহল্যভরে তাহা লিখিত হইল না। (তন্ত্রসার) তন্ত্রপারে লন্ধীদেবীর তব ও কবচাদির বিবয় বির্ত হইরাছে, বিনি প্রতিদিন লন্ধীদেবীর তব ও কবচ পাঠ করেন, তাহার দরিজতা থাকে না এবং নানাবিধ ক্রখ-সোভাগ্য লাভ হইরা থাকে। [শ্রী দেব।]

আধিনী পূর্ণিমার দিন কোজাগরী সন্মীপূলা ও কার্ডিকী অমাবস্তার দিন দীপাহিতা সন্মীপূলা হইরা থাকে।

[দীপাৰিতা ও কোলাগরী দলে বিশেষ বিষরণ এইবা]

• ২ ছগী।

শ্বতি: সিদ্ধিরিতি খাতা শ্রিরা সংগ্রবণাক বা। সমীর্বা সসনা বাণি ক্রমাৎ সা কান্তিকচাতে ॥" (বেবীসু॰ ৫৫৯॰) ও সম্পত্তি। ৪ শোভা। ৫ শক্তোবধ। ৬ বৃদ্ধিনাবোৰধ।
৭ ফলবান্ বৃক্ষ। (মেদিনী) ৮ সীভা। ৯ বীরপত্তী।
(শন্ধরক্তা॰) ১০ ফলপত্তিনী। ১১ ছরিছা। ১২ শমী।
১৩ দ্রব্য। ১৪ মুক্তা। (রাজনি॰) ১৫ মোক্ষপ্রান্তি।
(চণ্ডীটীকার নাগেশভট্ট) ১৬ পত্ত। ১৭ বেডফুলসী।
১৮ মেবশুলী। (বৈছক্লি॰)

লক্ষী, একজন বিছবী ত্রীকবি। [লক্ষীদেবী দেখ।] লক্ষীক (ত্রি) লক্ষীবস্তু। সোভাগাযুক্ত।

লক্ষীক্বচ, ধারণীর মত্তোবধভেদ। আগমসার, কুর্মপুরাণ ও ক্ষপুরাণে ইহার বিষয় শিখিত আছে।

লক্ষ্মীকান্ত (পুং) লক্ষ্যাঃ কান্তঃ। ১ নারারণ। ২ কলোলেশ-লক্ষীকান্ত নামক দেবভান্তেদ।

লক্ষীকান্ত স্থায়ভূষণ (ভটাচার্য), রণশছতিপ্রণেতা। ইনি কক্ষনগরাধিপ রাজা গিরীশচক্রের প্রার্থনাত্মসারে প্রায় ৬৫ বৎসর পূর্বে এই গ্রহথানি রচনা করিয়াছিলেন।

লক্ষাকুমার তাতাচার্য্য, শবুভাবপ্রকাশিকা ও সারচল্রিকা-রচমিতা।

লক্ষীকুলার্ব (গুং) তছভেদ।

লক্ষীগৃহ (ক্লী) লক্ষাঃ গৃহং আবাসহানং। ১ রজোৎপল। ২ লক্ষীবেগা, লক্ষীর আলয়।

লক্ষীচন্দ্র মিশ্র, শৈবকরক্রমপ্রণেতা।

লক্ষ্মীজনার্দিন (পুং) লক্ষ্যা সহিতো জনার্দ্দনঃ। শালগ্রাম-শিলা বিশেষ। ইহার লক্ষণ—এক্ষান্ধে চারিটী চক্রে বিছমান, নবীন নীরদত্ব্য অর্থাৎ খোর ক্রক্ষবর্ণ এবং বনবালারহিত শালগ্রাম্ শিলাকে লক্ষীজনার্দিন করে।

"একছারে চতুশ্চক্রং নবীদনীরদোপমম্। লক্ষীজনাদিনো জ্ঞেরো রহিতো বনমালরা ॥"

(ব্ৰহ্মবৈৰ্ত্তপু• প্ৰব্ৰুতিখ• ও দেবীভাগ• ৯।২৪।৫৯) ২ শন্ধী ও নাৱায়ণ।

লক্ষ্মীতাল (গুং) শন্ধীযুক্তবাদঃ । > শ্রীতাগর্ক। (রাজনি•) ২ তাদভেদ, তৌর্ঘাত্রিকের পরিক্ষেদ্ধিশেষ।

> "ৰৌ লো পূৰৌ বিয়ামাত্তী দলৌ পূৰ্বিয়ামকঃ। বিয়ামাত্তী ক্ৰতোঁ লক্চ ক্ৰতোঁ লগুৰিয়ামকঃ॥"

(সলীতদানো • নশ্বীতান) লক্ষ্মীত্ব (ক্লী) নন্ধীভাবে ত্ব। নন্ধীৰ ভাব বা ধর্ম। সৌন্ধর্য, ঐবর্য। লক্ষ্মীদন্ত, ১ সহমচজিকাটীকা ও হিরাননীশিকাটীকা-রচন্ধিতা। ২ পাশুবচরিতকাব্যপ্রপেতা। নন্ধীনারারপের পুত্র।

লক্ষ্মীদন্ত আচাৰ্য্য, আকাশনিরপণ নামক ভারগ্রহ, বচনভূবণ (বেগান্ত) এবং পদার্থদীপিকা ও সংগ্রহ নামক ব্যাকরণগ্রপেতা। লক্ষীদাস (গুং) যোগশতকগ্রন্থপ্রণেতা।

লক্ষীদাস, ১ অনুমান-লন্ধণপ্রণেতা। ১ বোগশতক নামক গ্রন্থ-কর্তা। ০ কেরলবাসী একজন কবি। ইনি ক্তক্সন্দেশ কাব্য রচনা করেন। ৪ ভান্বরাচার্যক্ষত সিভাকশিরোমণি গ্রন্থের গণিত-তন্ধচিন্তামণি নামক প্রসিদ্ধ টীকাকার, বাচস্পতি মিপ্রের পুত্র ও কেশবের পোত্র। ইনি ১৫০১ খুষ্টাব্দে স্বীর গ্রন্থ সমাপন করেন।
লক্ষীদেব, মন্থের সমসামন্ত্রিক একজন পণ্ডিত। শ্রীকর্গচরিত কাব্যে ইহার উল্লেখ আছে।

লক্ষীদেবী (জী) মিথিলারাল চক্রসিংহের মহিবী। লছিমা ও লখিমা নামে প্রসিদ্ধ। বিবাদচক্র প্রভৃতি গ্রন্থপ্রণেতা মিলক্ষিপ্র ও মিতাক্ষরা-টীকারচয়িতা বালস্কট্ট তাঁহার আপ্ররে প্রতিপালিত হন। রাণী বরং পণ্ডিতদিগের যত্তে মিতাক্ষরাব্যাখ্যান নামক প্রসিদ্ধ মিতাক্ষরা-চীকা রচনা করেন।

লক্ষ্মীধর, ১ একজন কবি। প্রভাবলীতে ইঁহার উল্লেখ আছে।

३ দ্রাবিড্বাসী জনৈক ব্রাহ্মণ । ভোজপ্রবন্ধে ইহার বিবর
বর্ণিত হইরাছে। ৩ অলঙ্কারমুক্তাবলীপ্রণেতা। ৪ চক্রণাণিকাব্য
ও নলবর্ণনকাব্যরচন্নিতা। ৫ পিললটীকাপ্রণেতা। বৃত্তরত্নাকরাদর্শে
ইহার নামোল্লেখ আছে। ৬ শ্বতিকরক্রম বা গৃহস্থকাওরচন্নিতা।
৭ গণিতপ্রদীপপ্রণেতা। ইনি নাগনাথের ভ্রাতা ও নিম্পেবের
পূত্র। ৮ বড্ভাবাচন্দ্রিকা-রচন্নিতা; ইনি কোওভট্টের শিষ্য
এবং যজ্ঞেখর ভট্টের পূত্র। ১ ইষ্টিকারিকা-প্রণেতা। শ্রীকণ্ঠের
পূত্র ও বিভাবরের পোত্র। ১০ বিরুদ্ধবিধিধ্বংস নামক গ্রন্থের
রচন্নিতা। মল্লেবের পূত্র ও বামনের পোত্র।

লক্ষমীধর আচার্য্য, নামচিন্তামণি, ভারভান্তর ও ভগবরামকৌমুণীরচয়িতা। বিট্ঠলাচার্য্যের প্রতা অনস্তানন্দ রঘুনাথ
যতি ও শ্রীক্ষক সরস্বতীর নিকট ইনি শিক্ষা সমাপন করেন।
লক্ষমীধর কবি, স্বাইভমকরন্দ ও ভারমকরন্দ-রচয়িতা।
লক্ষমীধর দেশিক, আনন্দলহরীটীকাপ্রণেতা।

লক্ষ্মীধর ভট্ট, > কুওকারিকা-রচরিতা। ২ কুত্যকরতক্ষ-প্রণেতা। ইনি কাস্তকুজাধিপতি রাজা গৌবিল্লচন্দ্র দেবের মন্ত্রী ও মহাসন্ধিবিগ্রাহিক জন্মগণেরের পুত্র। দানকরতক, রাজধর্ম্ম-করতক্ষ ও ব্যবহারকরতক্ষ নামে ইহার রচিত আরও তিনখানি গণ্ডগ্রন্থ পাওয়া যায়। উহা সম্ভবতঃ উক্ত কুত্যকরতক্ষরই অস্তর্ভক।

লক্ষ্মীধরসেন, একজন বৈশ্ব পশুত। কাকুৎস্থানেনের পুত্র ও সাল সেনের পৌত্র। তবচন্দ্রিকা নামী চিকিৎসাসংগ্রহটীকা প্রণেতা পিবদাসনেন ইহার প্রপৌত্র।

লক্ষীনরসিংহ, > বিলাস নামক ব্যাকরণ প্রণেতা। বিশেষণবর্ষবৈহর্থ্য নামক ছারশান্তপ্রণেতা।

লক্ষীনাথ (গৃং) বিষ্ণু। লক্ষ্মীনাথ, গোণালার্চনচন্দ্রিকা রচয়িতা।

লক্ষীনাথ ভট্ট, পিৰলাৰ্থপ্ৰদীপপ্ৰণেতা রারঃ ভট্টের পুত্র ও নারারণের পৌত্র। ১৬০০ খুষ্টাব্দে উক্ত গ্রন্থ সমাপন করেন। ২ একজন পণ্ডিত। বৃদ্ধনৌক্তিকপ্রণেতা চক্রশেথর ইহার পুত্র। লক্ষ্মীনাথ মিশ্রা, লীলাবতীটীকা ও সিদ্ধান্তশিরোমণিটীকা নামক ছইখানি টীকা ইহার রচিত বলিয়া প্রকাশ।

লক্ষ্মীনাথ শৰ্দ্মন্, শিশুপালবধব্যাখ্যা রচয়িতা। নারারণ শর্দ্ধার পুত্র ও বংশীধর শর্মার পৌত্র।

লক্ষ্মীনারায়ণ, > উপশমার্য্য, কাশীন্তোত্র, ক্ষাইক, দেব্যাইক,
নীরাজনপত্যালিলকণবিবিজি, পাংগুলার্ত্তিপ্রকাশ, প্রাতঃশ্বনাইক, ভারতীনীরাজন, মঙ্গলদশক, মদনমুখচপেটকা, রামচক্ষপঞ্চনশা, রামপঞ্চদশাক্ষলতিকা, বিদ্যবাসিনীদশক, বিশ্বের,
নীরাজন, বিশ্বুনীরাজন, শঙ্করাইক, শিবদশক, শিবন্তোত্র, প্র্যাষ্ট্রপদী প্রভৃতি গ্রন্থপ্রণেতা। ২ তত্তপ্রকাশিকাব্যাখ্যা নামক
বেদাস্তগ্রন্থর্যার ৩ দারাধিকারিক্রমপ্রণেতা। ৪ লঘুসংগ্রন্থ

লক্ষ্মীনারায়ণ, কুর্গরাজ্যের দেওয়ান। ইনি জাতিতে ব্রাহ্মণ।
১৮৩৭ খুষ্টাব্দে তালুপ্রদেশবাসী গৌড়গণ বিদ্রোহী হয়। ক্রমে
সেই বিদ্রোহবহ্নি দক্ষিণ-কাণাড়া হইয়া কুর্গরাজ্যে বিস্তারলাভ করে। এই সময়ে অভ্রম্মর নামক একজন রাজ্যোহীর প্ররোচনায় দেওয়ান লক্ষ্মীনারায়ণ ইংরাজের শক্র হইয়া উঠেন। কিস্ক বিশ্বস্ত কুর্গসেনার সাহায্যে শীঘ্রই দেওয়ানজীর উভ্রম ব্যর্থ হয়।

লক্ষমী নারায়ণ (গং) লক্ষ্যান্তিতো নারায়ণ:। শালগ্রাম-শিলা-বিশেষ। ইহার লক্ষণ,—যে শালগ্রাম শিলার একদ্বারে চারিটী চক্রা, ঘোর কৃষ্ণবর্ণ ও বনমালাবিভূষিত, অর্থাৎ বনমালা চিহ্নযুক্ত। "একদ্বারে চতুশ্চক্রং বনমালাবিভূষিতম।

নবীননীরদাকারং লক্ষীনারাস্থণাভিধম্ ॥" (ব্রন্ধবৈবর্দ্ধপু•) লক্ষী ও নারায়ণ !

লক্ষীনারায়ণ ন্যায়ালক্ষার, ব্যবহারত্বমালা নামক দীধিতি-কার। নবদীপের স্থাসিদ্ধ নৈয়ায়িক গদাধর তর্কবাগীশ ভট্টা-চায্যের পুত্র।

লক্ষীনারায়ণ যতি, জারাম্তরচয়িতা ব্যাসতীর্থ বিন্দুর শুরু।
লক্ষীনারায়ণ (রাজা), কোচবিহারের একজন রাজা। বালগোলানীর পুত্র ও নরনারারণের পৌত্র। ইনি রাজা মানসিংহকে

>০০ হি: সম্বর্জনাপূর্বক স্বরাজ্যে সইয়া বান। ১৬১৮ খুটাক্ষ
পর্যান্ত ইনি রাজসিংহাসন অসক্কত করিয়াছিলেন।

লক্ষীনারায়ণত্রত, বতবিশেষ। লক্ষীনিবাস, শিষ্থিতিবিশী নানী মেগদ্ভীকাঞাণেভা। রাত্রপ্রতাস্থ্রির শিবা ও গ্রীরন্সের পুতা। ইনি ১৪৫৮ খুঁটান্সে উক্ত প্রস্থান্য করেন।

লক্ষীনিবাস (পুং) শক্ষাঃ নিবাসঃ। লক্ষীর নিবাসছান। শক্ষীনৃসিংহ (পুং) লক্ষীযুতা দুসিংহঃ। শানগ্রামনিলাবিশেব। শক্ষ-দিচক্র, বিশ্বভাস্ত ও বনমালাবিভ্বিত, এই শানগ্রাম গৃহীদিগের প্রফো বিশেষ ওভঞ্জ।

"বিচক্রং বিহুতান্তঞ্চ বনমালাবিভূবিতপ্।
লক্ষীনৃদিংহং বিজ্ঞাং গৃহিণাঞ্চ হুৰপ্রদেশ্।" (ব্রশ্ববৈষ্ঠপু॰)
লক্ষীনৃদিংহু, > পর্কতোবিলাদ শামক সভানিধিবিলাদের
টীকাকার। হ অনন্ধ-সর্কায় ভাল-রচরিতা। নৃদিংহাচাধ্যের পুঁত্র।
ত অমলানন্দক্ত বেদান্তক্ষতক্ষর আভোগ নামক টীকা ও তর্কলীপিকা প্রণেতা। কোও ভটের পুত্র।

লক্ষীনৃসিংহ কবচ, (ফ্রী) ধারণীয় মন্ত্রোব্ধবিশেষ। লক্ষ্মীনৃসিংহ ভট্ট, একজন প্রসিদ্ধ পণ্ডিত। রমললার-রচয়িতা খ্রীপতির পিতা।

লক্ষ্মীপতি, ১ একজন প্রসিদ্ধ জ্যোতির্বিদ্। ইনি ইইনর্পণোদাহরণ, জাতকচিন্তামণি, জৈমিনিস্ত্রটীকা, শ্বব্রন্থন, নীলকন্তিটীকা,
পল্মকোষপ্রকাল, পারাশরী-টীকা, মকরন্দসারিণী, মুহুর্পনংগ্রহটীকা,
লক্ষ্বিচার, শীল্পবোধটীকা, ষোড়শযোগব্যাখ্যান, সম্রাড়্যন্ত্র, সারণী,
হিল্লাজনীপিকাটীকা প্রভৃতি গ্রন্থ প্রথমন করেম। ২ নৃপনীতিগর্ভিত নামক বৃত্তকার। ৩ শিক্ষানীতি নামক কার্যপ্রণেতা।
৪ প্রাদ্ধরদ্বর্যন্ত্রিতা। ইনি ইক্সপ্তির শিষ্য। ৫ ছন্দোদাম বিচরণাপ্রণেতা রামচক্রের গুরু।

লক্ষ্মীপৃতি (পুং) লক্ষ্যাঃ পতিঃ। > বাস্থদেব। ২ নরপতি, রাজা।
"অথ ক্ষমানেব নিরস্তবিক্রমন্তিরায় পর্যোগি স্থখন্ত সাধনন্।
বিহার লক্ষীপতিলক্ষকার্ম্ কং জটাধরঃ সন্ জ্হধীহ পাবকন্॥"
(কিরাত ১)৪৪) ৩ লবক বৃক্ষ। ৪ পূগ।

লক্ষ্মীপাশা, ৰাজানার যশোহরজেলার অন্তর্গত একটা গগুগ্রাম।

• মধুষতীর তীরে অবছিত। এখানে রাচীয়শ্রেণীর বহু কুলীন
ব্রাশ্বনের বাদ আছে।

লক্ষ্মীপুত্র (পুং) লক্ষ্মাঃ পুত্রঃ। > কামদেব। ২ বোটক।
৩ কুন। ৪ লব। ৫ (দেশজ) ধনবান্ ব্যক্তি। লক্ষ্মীপুত্র (ক্লী) প্রাচীন নগরভেদ।

লক্ষ্মীপুর, দালাজপ্রেনিডেন্সীর বিজাগাগাটান জেলার অন্তর্গত একটা পিরিপথ বা বাট । সম্প্রপৃষ্ঠ হইডে ও হাজার ফিট্ উচ্চ। জ্বজান ১৯° ৬ জি: এবং প্রাধিন ৮৩° ২০ পৃথ। এই পথ দিয়া পার্মতীপুর হইতে জরপুর বাউরা বার।

শক্ষীপুর, একটা আটাদ দেবতীর্থ। বন্ধাওপুরাণে গরীপুর-মাহান্যে এই তীর্থের বিবরণ দিখিত আছে। লক্ষ্মীপুষ্প (খং) লক্ষীযুক্তং সৌন্ধারিনিষ্টং পুন্দারিবাত।

> পদ্মরাগমণি। (ক্লী) লক্ষীপ্রিবং পুন্দা। ২ পদা।

লক্ষ্মীপুঞ্জা (ত্রী) লক্ষ্মাঃ পূঞা। ২ লক্ষ্মীদেবীর পূঞা। ২ প্রস্তবিশেষ। [লক্ষ্মীনন্ধ দেখ।]

লক্ষীপেঁচা, পেচকজাতীয় ক্ষ্যাকার পক্ষিতের (Btrix flammes)। ইহালের গাতাবর্গ হরিলারজিত সিন্দ্রবর্ণ ও মধ্যে মধ্যে ছাপ আছে। [পেচক শব্দ দেখ।]

লক্ষীফার্ল (পুর্ন) গর্পনাং ভনজং কলং যতা। বিশ্বক্র (রাজনি)
লক্ষীরপ্ল (লেওরাদ), একজম দিখসর্জার। সিজ্প্রেনেশে
দিখাধিকার প্রতিষ্ঠিত ইইলে তৎপ্রেনেশ শাসনার্থ নানাস্থানে
শাসনকর্তা নিম্নোগের খাবন্থা হর। সাধ্যমন্ত্র ও মূলরাজ্
বে সময়ে মূলতান প্রেনেশের শাসনকর্ত্ব লাভ করেন, সেই
সময়ে সন্ত্রীমন্ত উত্তর-দেরীজাতের শাসনভার প্রাপ্ত ইইলাছিলেন।
তৎপরে তাঁহার পুত্র দৌলত রায় উক্ত প্রেনেশ শাসন করেন।
লক্ষীয়জুস্ (রী) মন্তব্দ।

লক্ষীয়া, বাদালায় প্রবাহিত বন্ধপুত্র নদের একটা পাধা।

মরমনসিংহ জেলার উত্তরশীমান্তবর্তী তোক প্রামে মূল নদকে
পরিত্যাগ করিয়া দক্ষিণাভিদুবে মেখনা-ধলেধরীসকমের অদ্রে

ধলেধরীতে আসিয়া মিলিত হইয়াছে (অক্ষা° ২৩ ৩৫ উ: ও

ক্রাথি ৯০° ৩৪ পু:)। ঢাকা জেলার প্রসিদ্ধ নায়ায়ণগঞ্জ বন্ধর

এই নদীর কুলে অবহিত। এই নদীর কল পরিছার ও স্থাতিল,
উত্তর তীরে বনরাজি বিরাজিত থাকার তটশোভা বিশেষ

মনোহারিশী হইয়াছে। বংশরে পাঁচ মাস মাত্র এই নদীতে ক্রায়
ভাটা থেলে। এক মাত্র একদালা নামক স্থানে এই নদী পার

হওয়া যার। বর্তমানে ব্রক্ষপুত্রের স্থানে হানে চর পড়ার এই

নদীর জললোতেরও একার অভাব ঘটিতেছে।

লক্ষ্মীর্মণ (পুং) লক্ষাঃ র্মণং। নারারণ । লক্ষ্মীবং (পুং) লক্ষীঃ শোভাহতাতেতি মতুপ্, মন্ত বঃ। ১ পনসবৃক্ষ। (শক্ষমালা) ই খেতরোহিতবৃক্ষ। (রাজনি॰) ৩ বিষ্ণু। (ভারত ১৩।১৪৯। ৫২) (ব্রি) ই শ্রীযুক্ষ। ৫ ধন-বান। প্রার--লক্ষ্মণ, শ্রীল, শ্রীমান্।

"লেবে ধরাজরাক্রান্তে লেবে বিশ্বস্থয়: জ্রিয়া। লন্ধীবক্তো ন পঞ্চতি জ্বান্তাং পরবেদনাম্ ॥" (উভট) ৩ অপ্রথবৃক্ষ। (বৈশ্বক্রমিন)

লক্ষীবতী, দৌধনীয়াল লবাদৰবাদ নহিনী।
লক্ষীবর্তাদেব (গুং) মালবের প্রমারবংশীর একজন হিল্বালা।
রালা ধনোবর্তার পুতা। ইনি রাজ্যাপহারী জন্মবর্তার নিকট
হইতে মালবরাজ্যের কতকাংশ বিভিন্ন ক্রিরা লইরা স্থানে
রাজ্পাট স্থাপন করেন। ১১৪৪ খুটাকে ইনি উজ্জারনী-সিংহালনে

অধিষ্ঠিত ছিলেন। ইহার মৃত্যুর পর পুত্র হরিশ্চক্র ও পরে পৌত্র উদয়বর্মনেব সিংহাদন অধিকার করেন।

लाक्की বল্লভ (পুং) লক্ষ্যাঃ বলভঃ। ১ বিকু। ২ প্রাচীন প্রছ-কারভেদ।

লক্ষীবসতি (জী) পদ্মপুষ্প।

লক্ষীবহিষ্কৃত (ত্রি) ধনহীন। ঐপর্যাশৃক্ষ। চলিত কথায় 'লক্ষীছাড়া' বলে।

লক্ষীবাঈ, একজন মহারাই ভ্যাধিকারিণী। ইনি ১৮৫৭ খুটাব্দের বিদ্রোভ্রে সমর চান্দার বিদ্রোহী দলপতি বাবু রাওকে কৌশলে ধৃত করিরা ইংরাজকরে সমর্পন করেন। [চান্দা দেখ।]

লক্ষীবার (পুং) রহস্পতিবার—ঐ দিন লক্ষীর পূজা প্রশস্ত। লক্ষাবিলাস তৈলে, বাতবাধিরোগের ঔষধবিশেষ। প্রস্তুত-व्यनानोः - मिक्का, राज्ञकां करी, राज्ञनाक, महनकार्क, वाञ्जी (शक-দ্রব্যবিশেষ), বচ, গুবাকরুকের ছাল, গুড়ছক্, গন্ধতৃণ, শটী, হুৱীতকী, বহেড়া, আমলা ও মুতা প্রত্যেক ২ পদ ; এই গৰকেই দ্বারা তিল তৈল ৪ দের প্রথম পাক করিবে। পরে জটমাংসী. मुत्रामाश्मी मना, हल्लक्पूल, श्रिवक, खड़क्, टगॅट्टेना, बाना, কুড়, মরুবকপুপা, পিড়িংশাক প্রত্যেক ২ পল এবং গন্ধবিরাজা. कूम्त्र(शति, नशी, नानुका खन्का প্রভ্যেক > পল ; ইহার ছারা দ্বিতীয় কম্ম পাক করিবে। অতঃপর এলাইচ, লবজ, শিলারস, মেতচন্দন, জাতীপুষ্প, থাটানী, কাঁকলা, অগুরু, লতা-কস্তুরী, কুম্কুম্ প্রভাক ৪ ভোলা, মুগনাভি ২ ভোলা, কৰ্পুর > তোলা বা ৬ মাষা ৪ রতি এই সকল দ্রব্য দারা তৃতীয় কৰু পাক করিবে। পাক সাঙ্গ হইলে তৈল হইতে খাটাশা উদ্ভ করিয়া উত্তমরূপ শিলাপেষিত করিয়া তৈলে মিশ্রিত করিয়া দিবে। অন্তবিধ—বিবাদি পঞ্চপল্লব কাথ দারা প্রথম কর্ম পাক করিবে, গন্ধাপু দারা দিতীয় কর্ম এবং व्यक्त ধূপিত গন্ধবারি দারা তৃতীয় করু পাক করিবে। এই তৈলেও গন্ধ দ্ৰব্য সকল শোধন করিয়া লইতে হইবে। ইহা ব্যবহারে বিবিধ বাতব্যাধি প্রশমিত হয়। ইহা মহাস্থগদ্ধি তৈল নামে খ্যাত।

উন্নিখিত সমস্ত দ্রব্য দিগুণ পরিমাণে তৈলে নিরা পাক করিলে উহাকে লদ্মীবিলাস তৈল কছে। (ভৈবজ্যরত্না° বাতাধি°) লক্ষ্মীবিলাসরস (পুং) ঔবধবিশেব। প্রস্তুতপ্রণালী;—অভ ৮ তোলা; পারদ, গদ্ধক, কর্পুর, জৈত্রী, জারফল প্রত্যেক ৪ তোলা; র্ছনারকবীল, সিদ্ধিবীল, ভূমিকুল্নাগুমূল, শতমূলী, গোরক্ষচাকুলেমূল, বেড়েলামূল, গোক্রবীল ও হিজলবীল এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক ২ তোলা করিয়া লইতে হইবে। পরে এই সকল দ্রব্য উত্তমক্রপে চূর্ণ করিয়া একত্র পানের রঙ্গে মাড়িয়া ৩ গুলা প্রমাণ বটী করিতে হইবে। অনুপান চুগ্ধ, দ্বি ও কাঁজি প্রভৃতি। এই ঔষধসেবনে সকল প্রকার জর, প্রমেহ, নাড়ীবরণ প্রভৃতি বিবিধ রোগ আও প্রশমিত হয়। (ভৈষকারম্বা• জরাধি•)

২ কাসাধিকারে ঔষধবিশেষ। প্রস্কাতপ্রশালী;—পারদ, ইরিতাল প্রত্যেকে ছই ভাগ, ধর্পর, বন্ধ, কান্তলোই, অঞ্জ,
তাত্র, কান্ডে, গৰুক এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক ৮ তোলা
লইয়া উত্তমরূপে মর্দন করিয়া কেণ্ডরের রুসে ভাবনা
দিবে, পরে উহা কুলথকলারের রুসে ৭ বার ভাবনা
দিয়া এলাচি, জাতীকল, তেজপাতা, লবন্ধ, যমানী, জীরা,
ত্রিকটু, ত্রিফলা প্রত্যেকে এক একভাগ মিশাইয়া চলক
পরিমাণ বটিকা করিয়া ছায়ায় শুকাইতে হইবে। অমুপান
লীতলকল। এই ঔষধসেবনে সকল প্রকার কাস আশু প্রশমিত হয়। ঔষধসেবনকালীন পথ্য—মংস্ক, মাংস, ছয় ও
রিয়্মভোজন। শাক, অয়, ভাজা ও পোড়া জিনিস নিষিদ্ধ।
এই ঔষধ ক্রেরতাস, খাস, হলীমক, পাপু, শোপ, শূল, প্রমেহ,
ও অর্ল প্রভৃতি রোগেও বিশেষ উপকারক।

(त्रत्मञ्जगात्रमः कामाधिः)

৩ বাতব্যাধিনাশক ঔষধবিশেষ। প্রস্কাতপ্রণালী;—কৃষ্ণঅত্র, পারদ, গন্ধক, বেড়েলা, নাগবলা, শতমূলী, ভূমিকুমাণ্ড,
কৃষ্ণধৃত্ববীজ, হিজলবীজ, বৃদ্ধনারকবীজ, গোক্ষুরবীজ, ভালের
বীজ, জাতীফল, জৈত্রী, কর্পূর প্রত্যেকে ২ তোলা; স্বর্ণভন্ম
২ মাঘা এই সকল দ্রব্য একত্রে উত্তমরূপে মর্দন করিয়া
চণক পরিমাণ বটী করিতে হইবে। অন্থপান ত্রিকলার জল বা দোবের বলাবল অন্থপারে স্থির করিতে হইবে। এই ঔষধ পৃষ্টিকারক, বলকর এবং বাতবাাধি, কুষ্ঠ, পাণ্ডু, প্রমেহ প্রভৃতি রোগনাশক। (রনেক্রসারসক বাতব্যাধিরোগাধিকাক)

৪ রসায়ন ও বাজীকরণ রোগাধিকারে ঔবধবিশেষ। প্রস্থাত-প্রণালী—ক্ষণাত্রচূর্ণ ৮ তালা, পারদ, গছক, কর্পূর, জায়ফল, দৈত্রী; রজনারক বীজ, ধৃত্রবীজ, ভালের বীজ, ভৃমিকুয়াও, শতমূলী, বেড়েলা, গোরক্ষচাকুলে, গোকুর, হিজাবীজ, প্রত্যেকে ২ তোলা, এই সকল স্রব্য একত্র চূর্ণ করিয়া পানের রসে মর্দ্দন করিয়া তিনরতি পরিমাণ বটী প্রস্তুত করিতে হইবে। এই ঔবধ সেবনে ঘোর সরিপাত, অষ্টাদশ প্রকার কুঠ, বিংশতি প্রকার প্রমেহ, নাড়ীত্রণ প্রভৃতি রোগ প্রশমিত হয়।

ঔষধ সেবনানস্তর হুড, দধি, মাংস, স্থরা প্রান্থতি পানে কাম-বৃদ্ধি ও বৃদ্ধ যুবার জ্ঞার হয়। কদাচ শুক্রন্থ ও লিল শিথিল হয় না। মন্তহন্তীর জ্ঞার বলী হইয়া নিতা শত ক্রীসংসর্গে সুক্ষম হয়। নেত্রের ভেজোবৃদ্ধি হইয়া থাকে। মহাস্থা নারদের উপদেশে জগৎপতি ভগবান্ বাস্থদেব এই রস সেবনে লক্ষ নারীর বল্লন্ড হইয়াছিলেন। (য়েবেজসারসত রসারনাধিকাত) লক্ষীবেষ্ট (পুং) লন্ধীয়ুকো বৈষ্টা। শ্রীবেষ্ট নামক স্থগদ্ধ দ্রব্য, নবদনির্বাস। (রাজনি•) চলিত তার্পিন্ (Turpentine) লক্ষ্মীশ (পুং) লক্ষ্মাঃ ঈশঃ। > বিষ্ণু। ২ এখব্যশালী ব্যক্তি। ত আদ্রবৃক্ষ।

লক্ষ্মীশ সূরি, জৈনস্বিজেদ। পরমারাধ্যের পুত্র ও মন্ত্রদেবতা-প্রকাশিকা নামক গ্রন্থরচয়িতা বিকুদেবের পিতা।

লক্ষীভোষ্ঠা (গ্রী) হলপদিনী। (বৈভক্নি•)

লক্ষ্মীশ্বর সিংহ, মিথিলার একজন রাজা। ইনি উবাহরণ নাটকপ্রণেতা হর্বনাথের প্রতিপালক ছিলেন।

লক্ষীস্থ (পুং) > লক্ষীর প্রিরপাত্র বা বরপুত্র। ২ রাজা বা ধনী ব্যক্তি।

লক্ষীসনাথ (ত্রি) রূপ ও ঐপার্যাশালী।

লক্ষমীসাগর সূরি, জৈনস্বরিভেদ। ইনি ১৪০৮ খুটান্দে জন্মগ্রহণ করেন, ইহার শিশু শুবশীল গণি পঞ্চশতীপ্রবন্ধদমন্দ্র ও লাভূ-পঞ্চাশিকা প্রভৃতি গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন।

লক্ষী সিংহ, রঙ্গপুরের একজন রাজা। রাণী কমলেখরীর পুত্র। (দেশাবলী)

লক্ষমীসিংহ নরেন্দ্র, আসামের ইক্সবংশবংশীয় একজন রাজা। ১৭৫১ খুষ্টালে সিংহাসন্চাত হন।

লক্ষ্মীস্মাহ্বয়া (স্ত্রী) লক্ষ্যা সহ আহবেরা যতা:। সীতা। (শপর•) লক্ষ্মীস্মৃত্জ (পুং) লক্ষ্যা সহ জাতঃ ইতি জন-ড, ক্ষীরানিজাত-ছান্ত তথাতং। চক্র । শব্দর্শা•)

लक्षीमृद्ध (क्री) औरक। [औरक तथ]

লক্ষ্মীদেন (পুং) কথাসরিৎসাগরবর্ণিত ব্যক্তিভেদ। (৬৬)১৭৩) লক্ষ্মীদেস্তাত্রে (ফ্লী) লক্ষ্মীদেবীর ন্তব।

লেক্মেশ্বর (লক্ষীখর), বোদাই প্রেসিডেন্সীর দক্ষিণ-মরাঠা এজে-ন্সীর মিরাজরাজ্যের অন্তর্গত একটী নগর। অক্ষা ১৫° ৭ ১০″উ: এবং ৭৪° ৩০′ ৪০ পু:। এথানে কএকটী প্রাচীন দেবমন্দির বিভ্যমান আছে।

লক্ষ্যারাম (পুং) সন্মা আরামঃ। বনভেদ। (প্রক্ষা॰)
লক্ষ্যা (ক্লী) লক্ষ্যতে ধদিতি লক্ষ-গাৎ। শরবেধ স্থান। পর্য্যার—
লক্ষ্যা, শরবা, প্রতিকার, বেধা, বেধ। (ত্রি) ২ দর্শনীর। ও ব্যাজ।
রোমাঞ্চলক্ষ্যেণ স গাত্র্যন্তিং

ভিল্লা নিরাক্রামদরাশকেশ্র: ॥'' (রবু ৩। ৮১)

৪ অসুমের।

। ককণাশক্তি হারা বোধ্য সর্থ ।

শ্বৰ্থো বাচান্ত লক্ষান্ত ব্যক্তশেতি ত্ৰিধামত:।"(সাহিত্যদ ০ ২০)
বাচা, লক্ষা ও ব্যক্ত এই তিন প্ৰকাৰ অৰ্থ যে দ্বলে লক্ষণাশক্তি দাৱা প্ৰতীত হয় তাহাকে লক্ষ্য কৰে। [লক্ষণান্দ দেখ]
লক্ষ্যক্তমু (ত্ৰি) ১ বে অজ্ঞাত প্ৰণালীদাৰা উদিই বস্তৰ আকাৰ

ও ইলিত উপদক্ষি হয়। ২ কাৰ্যোক্তিতে অনির্দেশ্রবোধক জ্ঞান, যাহা প্রকাশ করিবার আবশ্রক থাকে না।

লক্ষ্যাত্ত ভূ (দী) ২ চিহ্নাগুনীলন জ্ঞান। ২ দৃষ্টাভাষারা যে জ্ঞান লক্ষে।

লক্ষ্যতা (ব্ৰী) শক্ষাত ভাবং তল্টাপ্। লক্ষ্যে ভাব বা ধর্ম, শক্ষাৰ।

লক্ষ্যান্তেদ (পুং) চিহ্নিতন্থান বিচ্ছিন্নকরণ। অর্জুন আফাল-মার্গে প্রস্ত মৎক্ষচিক্ চক্রপথে বিশ্ব করিয়াছিলেন।

লাফ্র্যুবীথী (ত্রী) শক্ষ্যাবীথী। > মন্ত্র্যঞ্জীবনের উদ্দেশ্র্যাধক পছা। ২ ব্রন্ধলোক্ষার্গ, দেব্যান পথ।

लक्षार्विभृ (वि) हिन्दिक्षकाती।

লক্ষ্যস্থ (ত্রি) নিজার ভানকারী।

লাফ্যান্তন্ (ত্রি) লক্ষাং হরি হন-কিপ্। সক্ষাডেদকারী। ২ তীর। লথা, গতি। ভাদি পরক্ষো সকা সেট্। লট্ লথতি। ইদিং লথি লথগাতু সম্ভি। সুঙ্জাসমীং।

লথ তার (থান্-লণ্ডার), বোদাইপ্রেসিডেন্সীর কাঠিরাবাড় বিভাগের অন্তর্গত একটা দেশীর সামস্তরাজ্য। অক্ষা• ২২° ৪৯´ হইতে ২২° উ: এবং দ্রাঘি• ৭১° ৪৬´ হইতে ৭২° ৩´ পৃ:। থান্ ও লণ্ডার নামক ছইটা ভূসম্পত্তি ও আন্ধাবাদ জেলার কএকটা গ্রাম লইরা এই রাজ্য গঠিত। ভূপরিমাণ ২৪৭ বর্গমাইল।

এখানে নদী বা শৈল নাই। অধিকাংশস্থানই সমতল অথচ পর্ব্বতসায়ন্থিত উপলথতে পূর্ণ। তুলা ও শত্তাদির চাসই অধিক। ধের ও বোরাশ্রেণীর মুসলমানগণ স্থানীয় কার্শাস হইতে একপ্রকার মোটা কাপড় প্রস্তুত করে। থানের কুস্তার জাতির মুৎ-শির প্রশংসাযোগ। জররোগ বাতীত এথানে জার অভ্য পীড়ার প্রাহুর্ভাব নাই। স্থানটি বেশ স্বাস্থ্যপ্রদ।

এখানকার সন্ধারগণ তৃতীয়শ্রেণীর শামস্ত বলিয়া গণা।
১৮০৭ থুপ্টান্দের সন্ধিসর্তে ইহারাও ইংরাজরাজের অধীনতা
শ্বীকারে বাধ্য হন। বর্ত্তমান সন্ধার ঠাকুর কর্ণসিংহজি (১৮৮৪)
ঝালাবংশীয় রাজপুত। ইনি শ্বরং রাজকার্য্য নির্ব্বাহ করিয়া
থাকেন। ইহার সেনাসংখ্যা ৪০০। ইনি শ্বরাজ্যে পণ্যন্তব্যের
কোন শুক্ গ্রহণ করেন না। জুনাগড়ের নবাব ও ইংরাজরাজকে
কর দিতে হয়।

লথন্দৈ (লন্ধণদই), বালালার প্রবাহিত বাঘমতীনদীর একটা
শাধা। নেপালের পর্কতমালা হইতে উত্ত হইরা ইতাবা গ্রামের
সরিকট দিয়া মুল্ল:করপুরলেলার মধ্যে প্রবাহিত হইয়াছে।
শৌরান্ ও বাসিয়াড় নামক হইটী জলধারায় পুটকলেবর হইয়া
দক্ষিণাতিম্ধপতিতে বারবল-মুল্ল:করপুর রাত্তার ৭৮ মাইল
দক্ষিণে বাবমতী নদীতে মিলিত হইয়াছে। উক্ত রাত্তা নদ

উপন্নিত্ব লোকনেভূর উপর দিয়া পিয়াছে। কর্বাকালে এই নদীতে দীতামাঢ় হী পর্যান্ত নোকাবোগে বাধরা বার। রাজাপতি, ছম্ডা, বেলাহী, পেরপ্র ও রাজ্যও নীলক্ষী এই নদীর ডীরে অবস্থিত।

লখ নোর, রোহিলগণের রাজপুর রাজের অবর্গত একটা নগর। পূর্বে এই হান কাটারিরা জাতির রাজধানী ছিল। বর্তমান কালে শাহাবাদ নামে অসিদ্ধ হইয়াছে। এখানে প্রাচীন কীর্তির অনেকগুলি ধ্বস্ত নিদর্শন পড়িয়া আছে।

ন্ত্রপ্তি (শব্দাবতী), যুক্তপ্রদেশের শাহারণপুর বেলার
নাকুর তহসীলের অন্তর্গত একটা প্রাচীন নগর। একণে
ধ্বংসাবস্থায় পতিত ও শ্রীন্তই। অক্ষা ২৯° ৪৬ উ: এবং
দ্রাবি ৭৭° ১৬ পৃ:। প্রাচীন কীর্তির নিদর্শনম্বরপ একটা
ভগ্নহর্গ এখানে বিশ্বমান আছে।

এই নগর ও তাহার উপকঠন্থিত পাঁচবানি গ্রামে পূর্ব্ব হইতে তুর্কজাতির একটা উপনিবেশ ছিল। বহুকাল বলবীর্য্য ও সমৃদ্ধি-হীন হইরা তথার বসবাস করিলেও, খুটীয় ১৮শ শতাব্দের শেষভাগে তাহারা ক্রমশঃ দলপুই হইরা শক্তিসঞ্চারে প্রয়াস পায়। ১৭৯৪ খুটান্দে শাহারাণপ্রের মহারাষ্ট্রীয় শাসনকর্তা বাপু দিন্দে তাহানের উদ্ধত্য দমনে বদ্ধপরিকর হন। অবশেষে জর্জ টমাসের অধীনে প্রেরিত সাহায্যকারী সেনাদল উপনীত হইয়া তুর্গপ্রাচীর ভঙ্গ করিলে তুর্কগণ আত্মসমর্পণ করিতে বাধ্য হয়।

লথ হা গুরি, বালালার ত্রিহতজেলার প্রবাহিত একটা ক্র নদী।
লথাত, আসামপ্রদেশের প্রীহটজেলার সীমান্তহিত একটা
গওগ্রাম। ্রথসিরা শৈলের পাদমূলে অবস্থিত। এখানে প্রতি
সপ্রাহে হই দিন হাট বলে। পার্কাত্য থশ ও সন্তেদ লাভি
ত্থায় পর্কাতলাত নানাদ্রব্য লইরা আইসে।

ল্থি, বোখাই-প্রেসিডেন্সীর সিদ্ধ্রপ্রদেশান্তর্গত একটী গিরিশ্রেণী!
বল্চহানের হালা বা ত্রাহই পর্বতশ্রেণীর সহিত সংযোজিত।
ইহা প্রায় ৫০ মাইল লখা। উচ্চতা ১৫০০ হইতে ২ হাজার
ফিট্। জকা (মধ্যের) ২৬° উ: এবং ক্রাঘি০ ৬৭° ৫০ পূ:।
এই পর্বতে জনেকগুলি উষ্ণ প্রত্রবণ আছে। সেবান্ নগর
সারিধ্যে এই পর্বতাংশ ক্রমণ: সিদ্ধনদের সমতল বেলাভূমিতে
পরিণত হইরাছে। পর্বতবংক স্থান বিশেষে সীসক, রসাঞ্জন
ও তাত্র পাওলা যার।

লেখি, দিক্তাদেশের করাচীকেলার সেবান উপবিভাগের অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম। দিক্নদের পশ্চিমকুলের অনুরে ও লখি-গিরিসহটের প্রবেশপথে অবস্থিত। দিক্ক, পঞ্জাব ও দিল্লী রেশপথ শধিনগর হইলা গিরিপথের মধ্য দিল্লা গিরাছে। এথানে উক্ত রেলণথের একটা টেলন আছে। এখান হইতে প্রসিদ্ধ ধারাতীর্থ চুই মাইল। ঐ উক্ত প্রচারণে গ্রমনার্থ প্রাণত রাজা আছে ঃ

লেখি, সিছ্প্রদেশের শীকারপুর জেলার অন্তর্গত একটা নগর।

আকা ২৭° ৫১′ ৩০ উঃ এবং দ্রাধি ৩৮° ৪৪′ পুঃ। এই নগর

হইতে সিদ্ধ, পজাব ও দিল্লী রেলপথের ক্লক্-জংসন ৩৯০ মাইল

মাত্র। এই নগর বহু প্রাচীন। ববন কর্তনান শিকারপুর বিভাগ

বনমালার লমাজ্যে তথন সিদ্ধুপ্রদেশের প্রসিদ্ধ বর্দ্ধিকা ও

লখানা বিভাগের প্রধান কেন্দ্র বলিয়াই ক্লি-নগর পরিগণিত

হিবা। এখন সে সৌক্ষ্ম জনেক নই হইরা গিরাছে।

লখিমপুর, আসামপ্রদেশের পূর্বসীমান্তহিত ইংরাজাধিকত একটা জেলা। ব্রহ্মপুত্রনদের উজয় জীরবন্তী ভূতাগ লইয়া গঠিত। অক্ষা॰ ২৬° ৫১ হইতে ২৭° ৫৪ তঃ এবং দ্রাঘি৽ ৯৩° ৪৯ হইতে ৯৬° ৪ পুঃ মধ্য। ভূপরিমাণ ১১৫০০ বর্গমাইল। ইহার অধিকাংশস্থানই জললাহত ও পর্বতময়। মধ্যে মধ্যে পার্বত্যজাতির বাস আছে। ইংরাজরাজের বর্ত্তমান জারীপে বাস্থোগ্য ভূমির পরিমাণ ৩৭২৩ বর্গমাইল নির্দিষ্ট হইয়াছে। ডিক্র নদী ও ব্রহ্মপুত্র নদের সক্ষমন্থলে অবন্থিত ডিক্রগড় নগর ইহার বিচার সদর।

এই জেলার উত্তর সীমায় দফ্লা, মীরী, আবর ও মিশ্মী লৈলশ্রেণী; পূর্ব্বে মিশ্মী ও সিদ্ফো-লৈলমালা, দক্ষিণে পাটকৈ পর্বত ও নাগালৈলের অববাহিকাপ্রদেশ এবং পশ্চিমে দরঙ্গ ও শিবসাগর জেলার প্রান্ত-প্রবাহী মরা-মরণাই, দিহিন্ধ ও দিসদনদী। উত্তর ও পূর্ব্বপ্রান্তিতির শৈলমালায় তত্ত্বামীর পার্বত্যজাতির বাস থাকায় অভাগি পর্বতপ্রান্তে ইংরাজাধিকারের সীমা নির্দিষ্ট হয় নাই। দক্ষিণসীমা লইয়া ইংরাজার্জি ও ব্রহ্ম-গবর্মেন্টের বন্দোবন্ত হইয়াছিল। এখন ব্রহ্মরাজ্য ইংরাজাধিকত হইলেও তদ্দেশবাসী বহুসংখ্যক পার্বত্যজাতি আজিও স্বাধীনভাবে পর্বত্যক্ষে বিচরণ করিতেছে।

বন্ধপুত্রনদের উত্তর তীরবর্তী সমতল প্রান্তর প্রামল শহু-ক্ষেত্র মণ্ডিত। ইহার উত্তর, পূর্ব্ব ও দক্ষিণ সীমার চূড়াবিল্বী পর্বতসমূহ বনমালার বিভূবিত হইরা আসাম-উপত্যকার এই শ্রেষ্ঠ স্থানকে নানা মনোরম দৃশ্রে পরিপূর্ণ রাধিরাছে। ব্রহ্মপুত্র নদ মানাশাখা বিভারপূর্বক হিমালয়-কন্মর পথে নির্গত হইরাই আসাম-উপত্যকা বিধোত করিরা নিরাভিমুখে প্রধাবিত হইরাছে। নদীকুলবর্তী স্থানসমূহ স্থবিভূত ধাঞ্চক্ষেরে পরিপূর্ণ। বাশবন ও ফলর্ক পরিবেটিত গ্রামসমূহ সেই শ্রামল প্রান্তরের মধ্যে মধ্যে বিয়াজিত থাকিরা প্রামবাসী প্রভাবর্গের স্থবসমূত্তির পরিচর প্রদান করিতেছে। ব্রহ্মপুত্রনদই এখানকার প্রধান। বর্বার সমন্ত্র এই নদে সদিরা
পর্যান্ত স্থানার যাতায়াত করে, কিন্তু অস্তান্ত অক্তর্যুত ডিব্রুগড়
পর্যান্ত যান্ত্র। ঐ সমরে ক্রুত্র ক্রুত্র নৌকাগুলি "ব্রহ্মকুগু"তীর্থ
পর্যান্ত গমন করিতে পারে। দিবঙ্গ ও দিহঙ্গ নামক শাধানদীন্তর হিমালয়পাদনিঃস্ত হইয়া এখানে ব্রহ্মপুত্রে মিলিত
হইয়াছে। দিংকই তিব্বতের প্রসিদ্ধ ৎসান্পুনদী। এতারির
হবর্ণন্ত্রী নব-দিহিক, ডিব্রু, বৃড়ী-দিহিক, তিকরাই নদী ও
লোহিতনদী ব্রহ্মপুত্রের কলেবর বৃদ্ধি করিয়া এই জেলার মধ্যে
প্রবাহিত আছে।

ক্ষিকার্য্যের উন্নতি ও বৃদ্ধির জন্ম এখানকার কোন নদী বা জলার বাঁধ দেওয়া হয় নাই। প্রাচীন আসামরাজগণ রাজ্যের মঙ্গলার্থ যে সকল স্থান বাঁধ দারা রক্ষা করিয়াছিলেন, তাহাই অভাপি সেইভাবে রক্ষিত আছে। উহার কোন কোনটী সামান্ত-রূপে সংস্কৃত হইয়াছে মাত্র! বন্সবিভাগের উৎপদ্ধ জ্বেরের মধ্যে "রবার" নামক প্রসিদ্ধ বৃক্ষনির্যাসই প্রধান। এতদ্ভির রেশম, মোম ও নানাবিধ ওধধি পাওয়া যায়। হন্তী, গণ্ডার, বন্তমহিব, মিথুন নামক বন্তগোরু, হরিণ ও ভল্লক প্রভৃতি পশু ও নানা জ্বাতীয় পক্ষী বনপ্রদেশে ব্চহুনে বিহার করিতে দেখা যায়।

ব্রহ্মকুগু বা পরশুরামকুগু এখানকার প্রধান তীর্থ। এখানে ব্রহ্মপুত্রের একটা শাথা প্রবাহিত। প্রতি বংসর বহু তীর্থ-যাত্রী পর্ব্বতোপরিস্থ এই তীর্থসন্দর্শনে আসিয়া থাকে। নিকটম্ব প্রাসিদ্ধ দেও ভূবি (রাক্ষসকুগু)—একটা গভীর পর্ব্বতগছরে। দিসক নদী যেখানে নাগাশৈগ পরিত্যাগ করিয়াছে, সেইস্থানে অবস্থিত।

এই স্থানের ইতিবৃত্ত অনেকাংশে আসামের ইতিহাসের সহিত * সংশ্লিষ্ট। আসাম অধিকার-মানসে পূর্ববাঞ্চলবাসী রাজ্ঞতবর্গ ব্রহ্মপুত্র বাহিয়া প্রথমেই লথিমপুরে প্রবেশলাভ করিয়াছিলেন। কিংবদস্তী এই, বাঙ্গালার পালরাজগণ এক সময়ে এতদেশে প্রভাববিস্তারপূর্বক হিন্দু-উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিলেন। তৎপরে বাঙ্গালার বারভূঁয়ারাজগণ আত্মকলহে প্রশীড়িত হইয়া বিবাদবিবৃহিত এই নিবিড় প্রদেশপ্রাস্তে আসিয়া আর একটা উপনিবেল স্থাপন করেন। অত্যাপি বাঁলকাটা ও লখিমপুরনগর-সন্নিহিত দীর্ঘিকাদ্ম তাহাদের কীর্তিশ্বরূপ বিশ্বমান রহিয়াছে। मानवः मीत्र চृष्टिद्यानगरे अथरम शृद्ध रहेरा आमाम आक्रमण करत । তাহারা বারভূঁরাদিগকে এথান হইতে তাড়াইয়া দিয়া স্থবাঞী নদীতীরে বাস করিয়াছিল; কিন্তু এই রাজ্যসভোগ তাহাদের অনুষ্টে অধিক কাল ঘটে নাই। খুষ্টীয় ত্রয়োদশ শতাব্দে আহম রাজগণ আসাম অধিকারপূর্বক প্রাধান্ত স্থাপন করেন। চুটিয়া-জাতি ঐ সময়ে কিছুকালের জন্ত আপনাদের প্রভাব জকুর রাখিতে চেটা করে, কিন্তু অক্নতকার্য্য হইয়া পার্শবন্তী দরক্ষেলার

পদাইরা আইনে। এখানে ভাহারা বে ছানে বাস করিয়াছিল ভাহা অভাপি চুটিয়া নামে পরিচিত।

এই আহনগণও শানস্রাতীয়। তাহারা পোল-রাজ্যের পার্লজ্যছূভাগ হইতে দলবলে অগ্রসর হইরা পশ্চিমাজিমুখে আসামে
আসিরা সমুপন্থিত হর এবং বলসঞ্চর করিরা ক্রমে একটী হর্জর্ব
আতি হইরা উঠে। এই সমরে তাহারা বাহবলে উদ্পূথ হইরা
বক্ষপুত্র প্রবাহিত উপত্যকাভূমে আপনাদের আধিপত্য বিস্তার
করে। মোগলসম্রাট্ অরক্ষরের প্রেরিত সেনাপতি সীরজ্মাকে
তাহারা পরাভূত করিরা বলসীমান্ত হইতে তাড়াইরা দের।
এই বংশীর মহাপ্রতাপাবিত রাজা ক্ষপ্রসিংহের শাসনকালে
আসামরাজ্যে শান্তি ও সমৃদ্ধি বিরাজ করিয়াছিল।

[আহম ও আসাম দেখ।]

রাজা গৌরীনাথের রাজ্যকালেই লথিমপুরে আহমবংলের শাসকশক্তির লোপ হয়। প্রবল রাজা গৌরীনাথ বিজ্ঞোহিদলের বড়্যন্ত্রে পড়িরা রাজাচ্যত ও নিম আসামে নির্কাসিত হন। তদনস্তর শত্রুপক্ষীয়েরা সেই সমৃদ্ধ রাজধানী ধ্বস্ত করিয়া দেয়। এই সময়ে মোয়ামারিয়া বা মরনজাতি ব্রহ্মপুত্র নদের দক্ষিণকূলে স্বাধীনতা স্থাপন করিয়া স্বাপনাদের প্রভাব বিস্তার করে এবং খমতীরা সদিয়া-বিভাগ সুঠন করিয়া উৎসাদিত করিতে থাকে। সেই অরাজক রাজ্যে কোনরূপ শৃত্যলা স্থাপিত হয় নাই, রাজ্যাপ-হারক বড় গোঁসাঞী কিছুতেই স্থশাসনব্যবস্থা করিতে পারিলেন না। প্রভাবর্গ উপদ্রব ও অত্যাচারের হন্ত হইতে পরিত্রাণ পাই-বার জ্বন্ত রাজ্য ছাড়িয়া পলায়ন করিল। অবসর বৃথিয়া ব্রহ্মরাজ উপযুত্তপরি লখিমপুর আক্রমণ করিলেন,যুদ্ধবিগ্রহে আরও জনকর ঘটিল। জনশৃত্ত প্রজাবর্গ নিরুপায় হইরাও লথিমপুর নগরের मण्डल भूनवात्र युकार्थ चारमाञ्चन कतिन, प्रकर्ष जन-निरम्भ সমক্ষে হতবল আসামীগণ দাঁড়াইতে পারিল না। ভাহারা পরাত্ত হইয়া পলাইতে চেটা করিল, কিন্তু বিব্দেত্যল পশ্চাদ্ধাবিত হইরা ভাষাদের সমূলে নিহত করিল।

১৮২৫ খুঠালে তক্ষসৈত্য লথিমপুর হইতে বিভাড়িত হইল বটে, কিন্তু লথিমপুরের অদৃষ্টে অভ্যাচারশ্রোত সমভাবে প্রবাহিত হইতে লাগিল। ইংরাজরাজ নামে মাত্র আসাম প্রদেশ অধিকার করিলেন। তাঁহারা তথনও এতদ্দেশে স্থশাসন ব্যবস্থা করিতে পারেন নাই। ডিব্রুগড় উপবিভাগের অন্তর্গত মটকবিভাগ তৎকালে দেশীর সর্দারের অধীনে শাসিত হইত। ১৮৩৯ খুঠালে বৃদ্ধসদারের মৃত্যুর পর, তাঁহার বংশধরগণ ইংরাজরাজের প্রভাব্যত রাজ্যশাসন করিতে অনীকৃত হওরার পদ্যুত হন। এই বংসরে ইংরাজরাজ উত্তর-লথিমপুর ও শিবসাগর-বিভাগ রাজ্য পুরন্দর সিংহের নিকট হইতে কাড়িয়া লন। কারণ ঐ রাজ্য

রাজ্যশাসনে অকর্মণ্য ছিলেন এবং তাঁহার অধীনত্ব কর্মারবর্গ
অথবা অত্যাচারপূর্কক করসংগ্রহ করির। এজাবর্গ প্রপীড়িত
করিতেছিল। এই অন্নাজকটার বংগ পার্কতীর অসভ্যক্ষাতিরা
দলে লনে অবতীর্ণ হইরা রাজ্যপূর্ঠনপূর্কক অনপৃত্য করির।
কেলে। এই সময়ে সহিরা-নপরে একজন বন্দুত্য করির।
কাসনকর্তারণে রাজকার্য পরিচালনা করিতে থাকেন। ১৮৩৫
মুটাকে ইংরাজরাজ একজন সেনালারকের অধীনে সদিরা নগরে
একলন সিশাহী স্থাপন করেন। উহার চারবৎসন্ন পরে অক্যাৎ
একদিন পার্কতীর অন্তীগণ পর্কত হইতে সমতলক্ষেত্র অবতীর্ণ
হইরা ইংরাজনেনানী ও পলিটিকাল একেন্ট নেজর হোরাইট্সহ
সিপাইাদিগকে নিহত করে। তবন ১৮৩৯ স্টাকে ইংরাজরাজ
আসামপ্রনেশের পূর্ণ-শাসনভার গ্রহণ করিরা পার্কতীর শক্রর
আক্রমণ নিবারণের বিধিষত চেটা করেন। তদবধি এখানে
শান্তিরাজ্য স্থাপিত হর।

আবর, আহম, বকলা, কাছাড়ী, বম্তী, ছুবী, লালস,
মণিপুরী, মটক, চুটিয়া, ঘিকিয়, ঘিশামী, দাগা, দেশালী, রাভা,
সাঁওতাল, নিশ্লো প্রভৃতি অসভ্যমাতি এই জেলার পার্বত্য-প্রারেশে বাস করে । ঔপনিবেশিক ছিলুর মধ্যে ব্রাহ্মণ, রাজপুত,
কারত্ব, আগরবালা বেণে ও কলিতা (ইহারা অসভ্য ও পার্বতীর আসাম-রাজগণের পৌরোহিত্য করিত, বর্তমানকালে সকলেই কৃষ্কিত্তি অবলম্বন করিরাছে । ইহারা এথানে সংশ্রুদ্ বলিয়া গরিগণিত।) প্রভৃতি জাতি বিভ্যমান আছে।

এই স্থান্ত পূর্মপ্রান্তে ইন্লামধর্ম বিভৃতি লাভ করে নাই। মোগল-সমাটের অধিকারকালে মুসলমান সৈন্ত আসামপ্রান্তে প্রান্ত করিলেও জলবায়ুর প্রকোপ সহু করিতে না
পারিরা এতকেশ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইরাহিল। আহম
রাজগণ রাজসূম্দ্রি বৃদ্ধিমানসে করেক ঘর মুসলমান কারিকর
রাজধানীতে আনরন করিয়া স্থাপন করেন, ঐ সমঙ্গে ঢাকা
নগর হইতেও করেক ঘর মুসলমান লোকানদার লখিমপুরে
আসিয়া বাস করে; উহারা সকলেই করাইজী মতাবলম্বী। মরন
লা মোরামারীগণ বর্তমান সমরে বৈক্ষবধর্শে দীক্ষিত হইরাছে।
শক্তিউপাসক আসাম-রাজগণের অত্যাচারে এই বৈক্ষবসম্প্রদারের মধ্যে কএক বার বিজ্ঞাহ উপস্থিত হয়। অবশেবে
বৈক্ষবগণেই প্রাধান্ত লাভ করে।

এখানকার অধিবাসীদিগের অবস্থা নিভাত কম্ম নহে। লবণ, অহিকেন প্রকৃতি কএকটা দ্রন্য ব্যক্তীন্ত ভাহারা আপনা-দের আবগুকীর সকল দ্রব্যই পরিপ্রমন্তর্যা প্রকৃত করিরা লইতে পারে। কার্পান-বত্রাদি ব্যতীত প্রধানকার লোকে রেশদীবিত্র বর্ম করে। এখানে চই প্রকার রেশন প্রস্তুভ হয়। উহার কীট এড়িরা ও মুগা নামে প্রাসিক। ত্রীলোকেরাই প্রধানতঃ রেশনীকাগড় প্রস্তুত করে। পুরুষরা বাগানে পোকা পালন কার্য্যে ব্যস্ত থাকে। এতগ্যক্তীত ক্রবিকার্য্য ও সরিবা হুইতে তৈল প্রস্তুত করা পুরুষদিগের অপর জার একটা প্রধান কার্য।

এখানকার চা-ৰাগানে উৎক্ষী চা প্রস্তুত হইরা থাকে।

ঐ চা এবং কার্পাস বস্ত্র, মৃগা ও এগু-রেশনের কাপড়, মাটির
বাসন, পাচী, মাত্র, রবার ও মোম এছান হইতে প্রভূত পরিমাণে
বাঙ্গালার রপ্তানী হইরা থাকে। সদিরার গবর্মেণ্টের ভরাবধানে
প্রতিবংসর একটা মেলা অন্তুতিত হইরা থাকে। কলিকাতা
হইতে ধূবড়ী, ডিব্রুগড় ও কাছাড় বাভারাতের জন্ত রেলপথ
বিস্তুত হইরাছে। ঐ রেলপথে এবং হীমার ও নৌকাবোগে
নকীপথে এথানকার বাণিজ্য চালিত হইতেছে।

২ উক্ত কেলার উত্তরত্ব একটা উপবিতাগ, উত্তর-লবিষপুর নাবে খ্যাত। ভূপরিমাণ ৭৭৫০ বর্গমাইল। ইহার উত্তরে কক্লাও মীরীলৈল এবং দক্ষিণে ব্রহ্মপুত্র নম। লখিমপুর নগর ইহার সদয়।

৩ উত্তর-লখিমপুর উপবিভাগের অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম। স্বর্ণজীনদীর গড়িরাজান শাখার কুলে অবহিত। জকা। ২৭°১৪'e''উ: এবং ক্রাঘি• ৯৪°৭'১০' পু:। এখানে ইংরাজ-রাজের একটা ছাউনী আছে।

লখিমপুর, অযোধা প্রদেশের থেরী জেলার একটা তহসীল।
আকা° ২৭°৪৭'১৫" উ: ছইতে ২৮°২৯'৩০" উ: এক দ্রাঘি
৮০°২০ ইইতে ৮১°৪ পু: মধ্য। ভূ-পরিমাণ ১০৭৮ বর্গমাইল।
ধেরী, শ্রীনগর, ভূর, গৈলা ও কুক্ড়া-মৈলানী পরগণা ইহার
অন্তর্কা।

২ থেরীজেলার প্রধান নগর ও লখিমপুর তহলীলের সদর। উল নদীয় দক্ষিণকূলে > বাইল দূরে অবস্থিত। আকা° ২৭° ৫৬ ৮৫ উ: প্রবং প্রাধি° ৮০° ৪৯ ২০ শৃং। এই নগরটী বাণিক্যবাহলাহেত্ ভিশেষ সমৃদ্ধিসম্পার।

লখীপুর (গভীপুর), আসানের গোরালগাড়া জেলার দক্ষিণছ্
একটা গগুপ্রাম । গারোলৈলের উভরপাদন্তে অবস্থিত ।
অলা ২৬° ২´ ৫´উ: এবং দ্রাহি° ৯০° ২´৫০´শু: । এবালে
দেচগাড়ার প্রাসিক জমিদারের প্রাসাদ বিজ্ঞমাল । ইলি ছানীর
বাদক ও বালিকা বিভালরের বারভার বহন করিরা আসিতেকেন ।
লখীপুর (গলীপুর), আসাদপ্রদেশের কাছাড় জেলার পূর্বদিক্ছ একটা গগুপ্রাম । বর্মাক্ ও বিরী নদীর সক্ষম্বলে অবস্থিত ।
প্রামপ্রাক্তে মণিপুর-মহায়ানের প্রকটা কাছারী আছে ।
লাখেরা, লাকা বা গালা হইতে চুরি প্রভৃতি জনভার ও কোনা
প্রভক্ষী আতিবিশেষ । সক্তর্যতঃ সংস্কৃত লাকাকার প্রক্র

অপএংশে লখেরা শব্দের উৎপত্তি। এই জাতির উৎপত্তি সবছে নানাপ্রকার কিংবনন্তী প্রচলিত আছে। ইহারা আপনাদিগকে পটবাস জাতির অন্ততম শাখা এবং তাহাদের ভার কারছজাতি হইতে সমৃত্যুত বলিরা বীকার করে। অন্ত প্রকটী উপাধ্যান হইতে জানা বার বে, পার্কতীর বিবাহকালে, দেবাদিদেব মহাদের হিমালর-কভার হত্তের বলর প্রস্তুত করিবার নিমিত পার্কতীর গাত্রমল লইবা এই জাতির ক্ষেষ্ট করেন। এই জাত ইহারা দেববংশী নামেও খ্যাত আছে। আর একটী উপাধ্যান হইতে জানা বার বে, প্রীকৃষ্ণ গোপীবিগের বলর প্রস্তুত করিবার জন্ত এই জাতির ক্ষেষ্ট করেন। তাহাতে প্রসন্ধানের বর্ণিত আছে বে, ইহারা প্রথমে বহুবংশীর রাজপুত ছিল। পাশুবদিশের বিনাশনাধন মানদে কুরুরাজ বে জভুগৃহ নির্মাণ করাইরাছিলেন, ইহারা সেই গৃহনির্মাণ-কার্যে তুর্যোধনের সহারতা করার মিন্দিত ও সমাজচ্যুত হয়। ভদববি ইহারা সেই গালার ব্যবসা ছারাই বীবিকানির্বাহ করিতেছে।

ইহাদের মধ্যে বিধবাবিবাহ প্রচলিত আছে। ইচ্ছা করিলে ইহারা বিবাহবন্ধনও ছেদন করিতে পারে। সকলে মন্ত ও মাংস খায়। বিহার অঞ্চলে ইহারা লহেরী জাতি বলিয়া প্রসিদ্ধ।

লগ, ১ থক্স। ২ গতি। ভাদি॰ পরক্তম • থক্কার্থে অক • গতার্থে সক • সেট্। লট্লগতি। নিট্ললাগ। লুট্লগিতা। লুঙ্অলগীং। ণিচ্লগয়তি। ইদিং লগি লগখাতু লট্লক্তি। লগ্ড (ত্রি) চাক। (ত্রিকাণ)

লগতে (পুং) বেদাঙ্গজ্যোতিষপ্রণেতা জ্যোতির্বিদ্ভেদ। লগধ এইরূপ নামও পাওয়া বার।

লগরি, পার্মতীয় জাতিবিশেষ।

লগা (দেশজ) বাঁশের ধ্বজা, নদীতে নৌকা চালাইতে ইহা ব্যবছত হয়। কোনস্থানে নৌকা বাঁধিতে হইলে লগা পুতিরা ভাহাতে
নৌকা বাঁধা হইরা থাকে। লগার মাধার "আঁকসী" বাঁধা হয়।
লগালিকা (স্ত্রী) চারিচরণাত্মক ছন্দোভেদ। ইহার প্রভি চরণে
চারিটা অক্ষর। প্রথম ও তৃতীর বর্ণ গুরু এবং অপর তুইটা ল্যু।
ফ্রানিভ (মি) লগ-কর্মণি কে। সক্ষুক্ত, চলিত লাগা।
লগী (দেশজ) লগা।

লাপ্ত ড় (পুং) দও, চলিত গাঠী, বংশাদিমর দওকে লগুড় করে।
(স্বাহমর সম্প্রতেদ। (স্বভৃতি)

ইহার আরুতি ও পরিমাণাদির বিবর গুল্লনীতিতে এইরপ * নিধিত আছে।

> শনপ্ৰতঃ স্ক্ৰপান্বঃ ভাৎ পূণ্;শঃ ছুলনীৰ্বকঃ । লোহবদ্ধাগ্ৰভাগত ছম্বৰেহঃ মুশীৰরঃ ।

কথাকারো দ্লাকত তথা কথেরোরতঃ।
উথানং পাতনকৈব পেবশং পোখনং তথা
চতকো গতরতত পক্ষী নেছ বিহতে।
দূদকার: পত্তিবর্গতেন যুখ্যেত শক্ষতিঃ ॥" (ধক্রনীতি)

লওক্ষের পাললেশ ক্ষা, জাংশ পৃথু এবং শীর্ব স্থাল ছইবে, ইহার অপ্রভাগ লোহবারা বন্ধ, অপীবর ও হ্রব্যেক, লভের জার আরুতিবিশিষ্ট, অল অভিনৃত এবং পরিমাণ চুইরাত। নৃচ্কার পদার্কি ককল এইরূপ লওক্ষের বারা শত্রুদিগের সহিত যুদ্ধ করিবে। উত্থান, পাত্তন, পেষণ ও পোধন ইহার এই চারি প্রকার গতি।

ज्**र**ा (प्रथम) गरम । गम्मर्स्क ।

লগ্ন (क्री) লগতি কলে ইতি লগ লক্ষে (ক্ষুন্ত থ্যান্ত গা । । । । ১৮) ইতি নিপাতনাং লালুং। রালিদিগের উদর।
আহোরাত্রের মধ্যে যাদল রালির উদর হয়, প্রভরাং আহোরাত্রে
যাদলী লগ ক্ষিত হইরাছে। "রালীনামুদ্রো লগ্নং" (দীপিকা)
আতিদিবারাত্রের মধ্যে যথাক্রমে যাদলী রালির উদর হইরা
থাকে। এই এক এক রালির উদিতকালের মানকে লগ্নমানকহে।

পৃথিবী ৬০ দণ্ড একবার আপনার কক্ষে আবর্তন করে।
ইহাকেই পৃথিবীর আছিকগতি বলা বার। এই এক আছিকগতিবশতঃ পৃথিবী মেবাদিক্রমে খাদদ্দী রাশি অভিক্রম করে।
স্লভরাং ইহাবারা সহজেই বুঝা বার বে, একরাশি অভিক্রম
করিতে প্রার ৫ দণ্ডকাল লাগে, কিন্তু প্রার্জনে গণনা করিতে
হইলে সকল লগ্নের লগমান সমান হর না, ইহার কারণ পৃথিবীর
আকাশ সম্পূর্ণ গোল নহে, সেই জন্ম লগমানের ক্রান বুদ্ধি হইরা
থাকে। প্রব্যার উদরকালে যে লগ্নের উদর অর্থাৎ পূর্বাকাশে
প্রকাশ ইইরা থাকে, ভাহাকে উদর্শর এবং পূর্বার অন্তগ্ননকালে যে লগ্নের উদর হর, ভাহাকে অক্সশা কহে। এই
লগ্নমান সকল দেশে সমান নহে।

কলিকাতা ও তাহার পশ্চিমন্থ দেশসমূহের অন্ননাংশ-লোধিও লগমান—

রাশি	দ৽ প৽ বি৽	য়ালি দুং পুং বিং		
মেব	8141*	क्रूमा	র দ ৩৭ র জ	
বৃষ	8-1.62 6+	বৃশ্চিক	4 8 + 4 +	
মিপুন	E 25 8+	ধক্ষ	415114.	
क्की	¢ 8 • 2 •	म्क्र	8 00 2.	
শিং ছ	61001.	रूष	01491.	
কন্ত্ৰ(612010	मीन	01811.	

20071271428	विक्रित	सारियाज	অ রুনাংশশোধিত	অধীয়া <u>তি</u> নাম	কোজিকা	,
यज्ञ (भ(नद्र	াব। ত্য	अधिनश	অর্লাংললোয়ত	<i>ભાગમા</i> (ન દ્ર	ा न का	1

ज्ञाबित्र नाथ।	নব্দীপ, ব্ৰুষান, চাকা ও তংস্ত্ৰ সমপাতদ্ভিত পূৰ্বপাশ্চম দেশের লগমান।	মূরশিদাবাদ ও তাহার সম- ফুর পাডিহিভ পূর্ধপশিচম দেশের লয়মনি।	চট্টগাম ও ভাষার সম্থ্র- পাতফ্তি পূর্বপশ্চিম দেশের লগুমান।	রক্ষুর ও তাহার সমহত্র- পাতহিত পুর্বপশ্চিম (শংশর লগুমান।	কুচবিহার ও তৎসমস্ত্র- পাত্রিত পূর্বপিশিচম দেশের লগ্নমান।
	দ° প° বি°	দ° প° বি°	দ° প° বি°	দ° প° বি°	দ° প° বি°
মেৰ	81 616.	81 4102	8 1 1 8	81 >100	6146145
त्र	P8 68 8	००। दश । ३	৩ ৫৪ ৪	8 । 8७ । २৮	8144145
মিপুন	@ 25 85	৫।२৮।8 %	८।२०।२	¢ २२ २२	@120125
কৰ্কট	द। ८०। ७€	¢ 8 • 8>	€ 8≥ 8•	¢ 188102	¢ 80 00
নিং হ	৫। ७७। २२	८ । ७० । ७७	६।७ २। 8	(10910)	4 85 89
কন্তা	¢ ₹≈ 8°	e e •	€ ₹৮ ₹°	८ ।७७।२•	¢ ৷ ৩৮ ৷ ২০
<u>তুলা</u>	8 64 80	∉ । ७৮ । ১∉	€ ⊘8 २ •	६।७३।२१	६। ७৮। ১७
বৃশ্চিক	8 8> 04	8 8 = 1 8 }	€।७ ৯। २€	¢ 69 89	€ 8b Ob
शश्	@ >9 Z	¢ >9 20	৫ ৷ ১৬ ৷ ৩২	८।२७।२ ६	€ २२ २৮
মকর	৩।৫৭। ৩	8100180	8 । ७ ६ । २७	81७३।२७	€ । ७ ८ । २७
কুম্ভ	8 8 8 8	0166189	७। ६৮। ३৮	७। ६७। ६	0169180
मीन	◆ 89 ≥∘	ଓ । ୫୫ ଜ	0 89 05	0189180	ଓ । ଓ । ୫୦

এই তালিকার যে লগ্নমান লিখিত হইল, এই সকল লগ্নমান যে সকলকালেই সমভাবে থাকিবে, তাহা নছে। পূর্য্যের অন্তর্নাতবিশতঃ ইতার পরিবর্ত্তন ত্তরা থাকে। ৬৬ বৎসর ৮ মাসে পূর্য্য এক অংশ সরিয়া যার, স্থতরাং লগ্নমানেরও কিঞিৎ প্রভেদ ত্তরা থাকে। প্রতিবৎসরের পঞ্জিকার অন্তনাংশ-শোধিত লগ্নমান দেওরা হয়, তাহা দেখিয়া লগ্নমান দ্বির করা ত্তরা থাকে। ৬৬।৮ মাস পরে সূর্য্য এক অংশ সরিয়া গোলেও এই লগ্নমান অন্তসারে লগ্ন স্থির করিলে প্রারহী ঠিক হয়। সামান্ত ২।> গলের তারতম্য ত্ততে পারে।

প্রাচীন লগ্নমান-

রামোগবেদৈর্জনধিস্ত মৈত্রৈবাঁণোরদৈঃ পঞ্চধসাগরৈক ৷ বাণঃ কুবৈদৈর্কিবল্লেম্যুদ্যঃ ক্রমাৎ ক্রমাল্লেমতুলাদিমানম্ ॥* (জ্যোতিঃসারস•)

		ছ- প-		(0-131	₹• ¶•
(मर्थ,	मीन	9 89	কৰ্কট,	ধস্তু	¢ 8+
বৃষ,	क्ष	8139	কর্মট, সিংহ, কঞ্চা,	বৃশ্চিক	¢ 1 85
विथ्न,	মকর	619	ক্ডা,	তুলা	¢ 1 2>

প্রাচীন শগ্রমানের সহিত বর্ত্তমান কালের লগ্রমানের কন্ত পার্থক্য হইয়াছে, তাহা পুর্ব্বোক্ত তালিকা দেখিলেই অনায়াসে ব্যিতে পারিক্সে।

নগ্যনিরূপণপ্রণালী—কোন নির্দিষ্ট সমরের লগ্যনিরূপণ করিতে হইলে অর্থাৎ কোন একটা বালকের জন্ম হইলে কিংবা কোন ব্যক্তিকর্তৃক একটা প্রশ্ন করা হইলে বালকটার কোন লগ্নে জন্ম হইরাছে অথবা কোন লগ্নে প্রশ্ন হইরাছে, ইহা জানিতে হইলে নিয়োক্ত প্রণালী অন্থসারে লগ্ন স্থির করিতে হয়।

লগ্ন ছির করিতে ইইলে প্রথমে সেই দিনের রবিভূক্তি ছির করিতে হয়। সাধারণঃ রবিভূক্তি অর্থে রালিমান বা লগ্নমানের যত অংশ রবিকর্তৃক ভূক্তি হইয়াছে, বা যতখানি অংশ রবি ভোগ করিরাছেন। রবি এক এক মানে এক এক রালিতে অবস্থিতি করিয়া ছাদশ মানে ছাদশটা রালি ভোগ করে। যে মানে যে রালিতে তুর্য্য উদিত হয়, তাহার সপ্তমরালিতে রবি অন্ত যায়। যেমন বৈশাথমানে তুর্য্যের মেবরালিতে উদয় ও তাহার সপ্তম ভূলা, তাহাতে অন্ত হয়। তুর্য্য প্রভাহ রাশির কিঞ্চিদংশ করিরা অপ্রসর হইরা বালান্তে রাশির সীবান্তপ্রবেশে উপনীত হর। এইরলে সমস্ত রাশিটী রবিকর্তৃক ভুক্ত হইরা থাকে, স্থান্তর পূর্ব্বোক্ত প্রকারে প্রকার রাশির কিছু কিছু করিরা অগ্রসর হইতে বে পরিমিতকাল অতিবাহিত হর, তাহাকে স্থান্তর দৈনিক রবিভূক্তি করে। উদর-সম্মের রবিভূক্তিকে গ্রান্তর বা হর।

লগমানকে মাসের খিন-সংখ্যাবারা হরণ করিলে লব্ধ ভাগ-ফলই দৈনিক রবিভূক্তি হইবে। অন্ত উপার বারাও রবিভূক্তি কানা বার, কিন্ত এই উপার বারাই ক্ষেরণে রবিভূক্তি হির হইরা থাকে।

"লয়দপ্তপলং ছিন্নং তৎসংখ্যা ক্রমতঃ'প্লন্ । বিপল্ক রবের্ডোগ্যমেবং করনসক্তভে ।" (শীপিকা)

লগমানের বশুপলকে বিশুণ করির। তাহার মশুকে পল থাবং পলকে বিপল করিলে নৈনিক রবিভূজি ছির হইবে। বেমন থেমব লগমান ৪। ৭ পল, ইহার বিশুণ করিলে ৮। ১৪ পল ইইবে, গ্রন্থলে ৮ লশুকে পল করিলে ৮ পল ১৪ বিপল লৈনিক রবিভূজি হইবে, ইহা ছির করিতে হইবে। এই বে মিল্লম বলা হইল, ইহা ৩০ দিন মাস ছলেই ঠিক ক্ষাহল। মাসের ক্ষিকেশীতে সন্বের্গ্ড গ্রন্থ ইছা। থাকে।

রবিভূক্তি ছির করিবার সারও একটা নিয়ম সাছে।
"লগ্লক বিশুণং কৃষা গণনীয়ক্তথা দিনৈঃ।
বাইভাগেন দশুঞ্চ শেষক পলমূচ্যতে।" (স্যোতিঃসায়ক)
বে মাসের যে লগ্লের বতদিনের রবিভূক্তি গণনা করিতে
বি, সেই লগ্লকাকে বিশুণ করিয়া শুণফলকে মাসের স্কতীত

বে মাসের যে পায়ের বাজাধনের রাবভূতি সাধনা কারতে হইবে, সেই লগ্নকাকে দিওপ করিয়া ওপকলকে মাসের জতীত দিনসংখ্যাখারা পুনরার ওপ করিয়া ও০ দিয়া ভাগ করিবে, পরে ভাগাকলকে দও ও ভাগাবশিষ্টকে পল মনে করিতে হইবে। এইরূপে প্রাপ্ত লাক্ষক বাধ্য দওপল জভীই দিনের রবিভূতি হইবে।

এই রূপে রবিভূকি ছিল্ল ক্ষরিরা দিবাভাগে জন্মগ্রহণ করিলে বা প্রেল্ল হইলে উদর লগ্নের রবিভূকি জানিতে হল এবং রামি-কালে জন্ম বা প্রেল্ল হইলে জন্তলরের রবিভূকি জানা জাবশুক। এই রূপে নির্দিষ্টদিনের উদর বা অন্ত লগ্নের রবিভূকি বাদে লগ্নের অবশিষ্টভোগ্য জংল বাহা থাকিবে, ভাহার সহিত পর পর লগ্নের মান ক্রমানরে বোগ করিবে, বখন দেখা যাইবে বে ইই বস্তপাদি সমন্ত্রীকৃত লগ্নমানের মধ্যে শেব লগ্নের বস্তপাদির মধ্যে অন্ত-নিহিত হইলাছে, এবং শেব লগ্নের পূর্বের লগ্নের বস্তপাদিকে জাতিক্রম করিবাছে, তথ্ন জানিবেন বে, উন্ত শেব লগ্নাই ক্রমান বা প্রেল্ল করিবাছে, ক্রমান জানিবেন বে, উন্ত শেব লগ্নাই ক্রমান বা প্রেল্ল হাটিই ইইনেপ্রের উন্তিত লগ্ন জ্বাং উক্ত লগ্নেই জন্ম বা প্রেল্ল হাটিই ইইনপ্রের উন্তিত লগ্ন জ্বাং উক্ত লগ্নেই জন্ম বা প্রেল্ল হাটিই

अक्टी केमांस्त्रन निरम हिरा केस्वमारत निरम्हे शहरव।

১২৯২ লালের ২২পে জাঠ রাজি ৯ বটকার একটা লিওর কর হইবাছে, ঐ শিশুর কোন লয় ক্রছে, ইরাজিরির করিতে হইলে প্রথমে রবিভূজি হির করিছে র্ইরে। ক্রৈট বানে ব্বরাশিতে স্থ্য উদর এবং বৃশ্চিক রালিতে অভানিক হইরাছেন। এই শিশুর রাজিভালে জন্ম হওরার অভানার হইছে ধরিতে হইবে। বিবাভারে জন্ম হইলে দিবালয় এবং রাজিতে অক্সলয় ধরিতে হর ইহা পুর্বেই বলা হইরাছে।

বৃশ্চিক লাগের মান ৫। ৪০। ২০ বিপল, ঐ সালের জ্যৈতি মাস ৩২ দিনে শেব হইরাছে, ক্ষতনাং উক্ত লগ্নমানকে ৩২ দির। তাগ করিলে আড্যেক দিনের স্থবিভূক্তি প্রাপ্ত হওরা বাইবে। এক মাসের দিনলংখ্যা বত হইসাছে, দেই সংখ্যা হারা উক্ত হৈনিক স্থবিভূক্তিকে ঋণ করিলে দেই দিনের স্থবিভূক্তি পাওরা হার। এই স্থলে কৈনিক স্থবিভূক্তি বাদ দিল্লা নির্মেক্ত প্রকারে লগ্নমান বির করা বাইতে পারে।

यथा---

বৃশ্চিক লগ্নমান—ধ। ৪০। ২০ মানের দিনসংখ্যা তং

দৈনিক রবিভূজি । ২০।। ৩৮ । বিপল। × দৈনিক রবিভূজি ২২ জন্ম তারিখ = ৩। ৫৪। ৫৮। এ৫ অছপল। ঐ দিন
ইংরালী ৬। ৩৭ মিনিট গতে প্র্যা—অন্ত গিরাছেন, অভএব
রাত্রি ৯ টার সমর জন্ম হইলে ২। ২৩ মিনিট রাত্রির সমর জন্ম
হইয়ছে, ত্বির করিতে হইবে। এবং ইহাকে দওপলাদিতে পরিগত করিলে ৫। ৫৭। ৩০ বিপল হইবে। স্বভরাং ঐ সমর রাত্রিজাত দওপলাদি হইবে।

পূর্ব্বাক নিরমান্ত্রারে বৃদ্ধিক লগ্পমান ৫। ৪০। ২০ ছইতে উক্ত ২২শে জ্যৈর তারিবের রবিভূক্ত ৩। ৫৪। ৫৮।৪৫ বান নিলে ১।৪৫। ২০। ১৫ বুল্চিক লগ্পের অবলিট ভোগ্যমান থাকিবে, তাহার সহিত পর পর লগ্পমান যোগ করিতে ছইবে। এইরপে বোগ করিতে করিতে বখন দেখিতে পাওরা বাইবে বে, সমন্ত্রীকৃত লগ্পমানের মধ্যে বে রাশিতে লাভ কও প্রভিত হইবাছে, তখন সেই রাশিতে লগ্প ইরাছে ত্রির করিতে হইবে। যদি বৃদ্ধিক লগ্পের অবলিট ভোগ্যমানের মধ্যে লাভ লওের সমর পভিত ছইত, তাহা হইবে ইবার পরবর্তী লগ্পমান আর বোগ করিতে হইবে মা।

ध रहत वृन्धिकरकांशा नशमान->। वट । २>। >८

यस्र्वध्यान-१। २११२ । • नम्हि-१। २१६२ । ५६

পূৰ্বে ৫ । ৫৭ । ৩০ বিশল জাজনাও নিৰ্দীত ক্ষয়াকে। ব্ৰক্তিকভোগ্য লগনান স্মাভিক্তন জবিলা প্ৰস্তু সম্মাভনৰ মধ্যমান্তি- কালে স্বান্তক ভূমিষ্ট হওরার ধ্যুর্জন্মে ভাছার জন্ম হইরাছে
দ্বিরীকৃত হইল। যদি জাভক রাত্রি ৯ টার সময় না জন্মিরা
রাত্রি ২ টার সময় জন্মগ্রহণ করিন্ত, ভাহা ছইলে পর পর লগ্নমান
ক্রেমণ: যোগ করিতে হইত ।

এইরপ নিরনে লগ্নস্থির করিতে হয়। দিবাভাগে জন্ম হৈলৈ প্র্যোদরকাল হুইতে ধরিরা লগ্ন দ্বির করিতে হয়।

লগাছির না হইকে জাতকের ফলাফল কিছুই নিণীত হর
না, এইজন্ম বিশেষ ব্যৱসহকারে লগ্ন নিরূপণ করা আবত্তক,
লগ্ন নিরূপিত হইলে নিঃসঙ্গের পাজ্যেক ফল ফলিয়া থাকে।
জনেক জ্যোতির্দিল লগ্নের প্রতি বিশেষ লক্ষ্য না করিয়া
ফল নির্দির করিয়া থাকেন, কিছু সেই ফল কিছুতেই নিগে
না। এইজন্ম শাস্ত্রে লগ্নপরীক্ষার বছবিধ উপার নির্দিষ্ট হইরাছে, অতিসংক্ষিপ্ত ভাবে ইহার বিষয় আলোচিত
হইতেছে।

অনেক সময়ে এইরূপ ঘটনা কইরা থাকে যে, যথন কোন শিশু জন্ম গ্রহণ করে, তথন সেখানে ঘটকা যন্ত্র না থাকার অথবা নিশ্চিতরূপে সময় নিরূপণ করিতে না পারার আত্মানিক সময় ধরিরা লয় ছির করা হর, কিন্তু আত্মানিক সময় ধরিরা যে লয় নিরূপিত হয়, তাহা প্রকৃত কি না, তাহা পরীক্ষার নানা উপার আছে। যথা---

নন্দেহলগ্ৰপথীকা।

বৃষ, কর্কট, কন্সা, বিছা, মকর ও মীন ইহার অক্সতম লগ্ন ছইলে ধাত্রী দধৰা এবং প্রস্থতি দ্বিক্সা হইয়া প্রস্থত হয়; মেব, মিপুন, সিংহ, তুলা, ধন্ন ও কুন্ত ইহার অক্সতম লগ্ন হইলে ধাত্রী বিধবা এবং প্রস্থতি একবন্তা হইয়া প্রস্থত হইয়াছে জানিতে হইবে।

"যুগো চ সুধবা ধাত্রী ক্ষরুগো বিধবা স্থতা। ক্ষযুগাদ্বক্রমযুগাং যুগাদ্যুগাং ক্রমান্ত থৈঃ ॥ (বুহজ্জাতক)

জাতকচন্দ্রিকায় বর্ণিত হইরাছে বে, মেন, সিংহ ও ধমু লয়ে জন্ম হইলে স্তিকাগৃহ বাটীর পূর্বভাগে ও স্তিকাগৃহের স্ত্রীলোকসংখ্যা ৫ জন; ক্সা, রুব ও মকর লগ্নে স্তিকাগৃহ বাটীর দক্ষিণাংশে ও স্ত্রীলোকসংখ্যা ৪ জন; ক্স্তু, তুলা ও মিথুন লগ্নে স্তিকাগৃহ বাটীর পশ্চিমাংশে ও স্ত্রীলোক সংখ্যা ৭ জন; মীন, কর্কট ও বৃশ্চিক লগ্নে স্তিকাগৃহ বাটীর উত্তরাংশে ও স্ত্রী-লোকসংখ্যা ৩. ৬ বা ৭ জন জানিতে হইবে।

নেব, ককট, তুলা, বিছা ও কুম্ভ ইছাদের মধ্যে একটা অমালগ্র অথবা লথের উদিও নবাংশ রাশি স্বরূপ হইলে বাস্তবাটীর পূর্ববিগ ভাগে; ষয়, মীন, মিগুন ও জ্ঞা লগ্ন হইলে উত্তর্গদিকে; ব্ব লগ্ন হইলে পশ্চিম্দিকে; সিংহ ও সকর লগ্ন হইলে ৰান্তর বন্ধিণভাগে 'প্রভিকাগৃহ হইবে। থিরলারে জন্ম হইলে প্রতিকাগৃহের একটা বার; বাদারক লারে ছইটা বার, এবং চরলারে হইলে বহু বার হয়। বৃহক্ষাতকে জারও উক্ত হইরাছে বে, কেন্দ্রন্থিত বলবান্ গ্রহ বে দিকের অধিপতি, প্রতিকাগৃহের বার সেই দিকে নির্ণর করিবে। কেন্দ্রন্থিত বহু গ্রহ বলবান্ হইলে বহুবার হর, আর যদি ক্ষেত্রে গ্রহ না বাকে, তাহা হইলে অন্ধন্ধ হইতে রাশিদিক্ জন্মপারে প্রতিকাগৃহের বার নির্ণর করিবে।

মেব ও ব্ৰল্মে স্তিকাগৃহের পূর্বজাগে, মিথুন লয়ে জারিকোণে, কর্কট ও সিংহলমে দক্ষিণভাগে, ক্সালয়ে নৈশাত কোণে, তুলা ও বৃদ্দিক লয়ে পশ্চিমভাগে, ধমূর্লমে বায়্কোণে, মকর ও কুন্তলয়ে উত্তরভাগে এবং মীনলয়ে ঈশানকোণে শিশুর প্রস্ব ও শ্যান্তান নিরূপণ করিতে হয়।

শিশুর মন্তক পতন ছারা লগ্ন রাশির যে দিক্, সেই দিকেই
শিশুর মন্তক পতিত হর, অর্থাৎ মেব, সিংহ ও ধন্থ লগ্নে পূর্ব্বশিরা; বৃষ, কন্থা ও মকর লগ্নে দক্ষিণশিরা; মিথুন, তুলা ও
কুন্ত লগ্নে পশ্চিমশিরা; কর্কট, বৃশ্চিক ও মীন লগ্নে উত্তর্নিরা
হইরা ভূমিষ্ঠ হর। কোন কোন মতে লগ্ন্য গ্রহ অথবা লগ্নাধিপতি গ্রহ যদি বলবান্ হর, তাহা হইলে সেই গ্রহের যে দিক্ সেই
দিকে প্রস্বগৃহ বা প্রস্বগৃহের ছার এবং শিশুর মন্তক পতন
নিরূপণ করিতে হইবে। আবার কোনও মতে লগ্নের ছাদশাংশপতির দিক্ হইতে স্তিকাগৃহের ছার নিরূপিত হয়।

রাঞ্চাধিপ গ্রহের স্থিতি অনুসারে লগ্নপরীক্ষা।—চক্র বে রাশিতে থাকেন, সেই রাশির অধিপতি গ্রহ জন্মকুঞ্জীচক্রে যে রাশিতে অবস্থিতি করেন, সেই রাশিতে অথবা সেই রাশির পঞ্চম বা নবম রাশিতে কিংবা সপ্তম রাশি হইতে পঞ্চম বা নবম রাশিতে কন্ম লগ্ন হইবে। এই নিরম প্রায় অধিকাংশ স্থলেই মিলিডে দেখা বার। চক্র রাঞ্চাধিপতির অবস্থিতি কান হইতে উক্ত যে ৬টা কানে অন্মলগ্রের সন্তাবনা লিখিড হইল, ইহার কোনরূপ ব্যতিক্রম হইলে প্রাপর রাশিভেই লগ্ন হইয়া থাকে।

"চক্ৰরাশ্রবিপো যত্র তত্ত্রিকোণমথাপি বা। তৎসপ্তমং ক্রিকোণং বা জাতলগ্রমুলাত্তম্॥"

রবিন্থিত নক্ষত্র অনুসারে গরপরীকা।— যদি দিবা হুই প্রন্তরের
মধ্যে জন্ম হর, তাহা হইলে রবি যে নক্ষত্রে আছেন, সেই নক্ষত্রে
অর্থাৎ সেই নক্ষত্রখনিত বে রাশি অথবা রবিন্ধিত নক্ষত্র হুইতে
সপ্তম নক্ষত্রে বে রাশি হর, সেই রাশি অন্ধার হর। দিবা
হুই প্রহরের পর সন্ধ্যা পর্যন্তে রবিভোগ্য নক্ষত্র হুইতে ভাষশ
বক্ষত্রঘনিত বে রাশি সেই রাশিই অন্ধান্ধ হর। সন্ধ্যার পর

রাত্রি ২ প্রহরের বব্যে জন্ম হইলে রবিভোগ্য লক্ষর হইতে লগুলশ বা উনবিংশ লক্ষর এবং রাত্রি ছই প্রহরের পর কর্যোদরের পূর্বা পর্যান্ত চকুর্বিংশতি লক্ষরবাটত যে রাশি তথার লয় হইবে। চক্সরাশ্রধিপ ও রবিভোগ্য লক্ষর এই বে ছইটী নিরম ক্ষিত হইল, এই ছইটী নিরমান্ত্রসারে প্রারই লগ্ন নিরপণ করিতে দেখা বার। এবং এই অনুসারেই লগ্ন প্রারই দির হইরা থাকে।

"যশ্বিদ্ধ কিতো ভা**ছতদেব সপ্ত**মেছপি বা।

ষাবদিপ্রহার জ্বেরং পশ্চাদ্যাদশতে পুন: ।
সপ্তদশতে তুরান্রৌ যাবদ্যামো ভবেদ্বরম্।
চতুর্বিংশভিতে পশ্চাক্ষাতশগ্রম্বাক্তম্॥" (রহজ্ঞাতক)
ক্ষমণারে যদি শীর্বোদর হয়, তাহা হইলে গর্ভন্থ দিও মায়ক

যার, প্রেটাদর হইলে পাদ হারা এবং উভরোদর হইলে হয় হারা
প্রেস্ত হইয়া থাকে। আর ক্ষম লয়ে যদি ওভগ্রহের দৃষ্টি বা
বোগ থাকে, তাহা হইলে স্থেশ এবং পাপগ্রহের দৃষ্টি বা
বোগ থাকে, তাহা হইলে স্থেশ এবং পাপগ্রহের দৃষ্টি বা বোগ
থাকিলে কটে প্রদ্রম জানিতে হইবে। ইহাতে মনিখনামে এক
জ্যোতির্বিদ্ বলেন যে, লগ্রপতি বা লগ্রের নবাংশপাত যদি বক্রী
হয়, অথবা যদি কোন বক্রী গ্রহ লগ্রে থাকে, তাহা হইলে
বিপরীতভাবে অর্থাৎ হয়পদাদি হারা গর্ভন্থ শিশু প্রস্ত হয়।
বৃহজ্জাতকের টীকাকার ভট্টোৎপল বলেন যে, শীর্ষোদয় লগ্রে
গর্ভক্ষ শিশু উর্দ্ধোদয়, উর্দ্ধ্যপ ও নিমপুর্চ হইয়া এবং প্রেটাদয় লগ্রে

মেব, ব্য বা সিংহ ইহার অভ্যমত লগে যদি জন্ম হয়, এবং বদি তাহাতে শনি বা মজল থাকে, তাহা হইলে গর্জন্থ শিশু নাড়ী-বেষ্টিত হইরা প্রেস্ত হইরাছে জানিতে হইবে। লগ্নের উদিত নবাংশ যে রাশির অরপ কইবে, সেই রাশিতে জাতকের বে অক্সনির্রাপিত হয়, সেই অকেই নাড়ীবেষ্টিত ছিল জানা যায়। জন্ম-লয় রাশি ও লগ্নের নবাংশ অরপ রাশি এই উভরের মধ্যেযে রাশি বলবান্ হয়, সেই রাশির সঞ্চরণ ভানে প্রস্বস্থান কয়না করিতে হইবে। লয় বা নবাংশ রাশি চরসংক্ষক হইলে গৃহের বাহিরে, প্রেলাকে, প্রিমধ্যে বা পরকীয় স্থানে প্রস্ব হির করিতে হইবে।
য়ির্বাংক্তক রাশি ছইলে অগৃহে, অসম্পর্কীয় আজীয়গৃহে, প্রস্ব কয়না করিতে হইবে।

আধামুথ ও উর্জপৃষ্ঠ হইরা প্রস্ত হয়।

নীপ্ৰতি ছারা লয়ের অংশ নিরূপণ।—সেহমর চন্দ্র বনি রাশির
আরক্তে থাকেন, তাহা হইলে প্রদীপে তৈলপূর্ণ ছিল, সেইরপ
মধ্যভাগে থাকিলে প্রনীপে অর্থতৈল এবং শেবভাগে থাকিলে
প্রদীপে স্বয়তৈল ছিল জানা যার। কেহ বলেন, চক্তের পূর্ণাপূর্ণতপ্রতাদ তৈলছিতি নিরূপণ করিতে হয়। কিছু বদি প্রদীপের বর্তি
ক্রের লার্ড প্রথমভাগে করু হইরাছে। সেই ব্রির অর্থেক

কথ হইলে সল্লের মধ্যভাগে এবং বর্ত্তি অধিকাংশ কথ হইলে শেব-ভাগে জন্ম হইরাছে, ছির করিভে ছইকে।

শগ্ৰই আতকের শরীর, এইবস্ত বিশেবরূপে সমপরীকা আবশুক। আতকের পিতৃরিটি, মাতৃরিটি, স্বীররিটি প্রভৃতি বারাও শগ্র নিরূপিত হইরা থাকে। আতকের সম্মে কি কি বিবয় চিস্কা করিতে হর, ভাহার বিষয় এইরূপ নিশীত হইরাছে।

শদরীরবর্ণাঞ্চতিলক্ষণানি যশোগুণহানস্থাস্থানি।
প্রবাসতেলোবলগ্র্বলাণি কলানি লগ্নন্ত বদন্তি সন্তঃ ॥
তনো রূপক জানক ধর্ণ কৈব বলাবলম্।
শ্বীলং বৈ প্রকৃতিকাথ তত্ত্বানারিরীক্ষরে ॥
আরোগ্যপুলাগুণমানর্তমায়ুর্বরোলাতিরপেমসথাং।
কেশাক্ষতী সক্ষণরূপবর্ণান্তভাগিনেরত বগ্ননে। তাৎ ॥
আকৃতিঃ প্রকৃতির্দোবা গুণাগুণব্রোরসাঃ।
পুংগ্রীচেষ্টাবজাবন্দ গ্রামাদি স্থিতিক্র্মি চ ॥
লগ্ননাথবশাবাশি লগ্নগ্রেহাদশি।
বক্তবাং দৈববিহ্বা প্রাচীনস্নিস্মতাৎ ॥"

(পরাশর, শস্কুহোরা ইত্যাদি)

লগ্নে দেহের পরিমাণ, রূপ, বর্ণ, আক্সতি, পরীরচিহ্ন, হলঃ, গুণ ও নিগুণ, সুথ ও হঃখ, প্রবাস ও খনেশবাস, সবল ও হর্মল, জ্ঞান, চরিত্র, খভাব, আরোগ্য, প্রাণংসা, মান, ইন্দ্রির-নিগ্রহ, বরোমান অর্থাৎ আয়ুর ছুল পরিমাণ, জাতি, ক্লেশ, ভাগিনেয়বধ্, প্ংস্ত্রীবিচার, চেষ্টা, কটু, লবণ ও ডিক্টাদিরস, পিতামহী, মাতামহ, পুত্রের ভাগ্য, শত্রুর মৃত্যু, বৈচ্ছ, স্তালকপুত্র, খাভড়ীর মাতা, পিতামহের সম্পত্তি, বনেশভাগ্য ও বিদেশভাগ্য, মন্তক, স্তিকাগার ও কীর্ত্তি এই সকল চিন্তা করিতে হয়। অর্থাৎ এই সকল বিষরের ওভাতত চিন্তা করিতে হইলে লগ্ন ইইতেই দেখিতে হয়।

আতকাশহারে উক্ত হইয়াছে যে, লগ্ন ও লগ্নপতি উভরই বলবান্ হইলে লগ্নভাবোধ ফলের বৃদ্ধি এবং চুর্বল হইলে ফলের হানি হইরা থাকে। এইরূপ অন্তান্ত ভাবস্থলেই ভাবরাশির ও ভাবপতির ওভাওত অনুসারে ওভাওত করনা করিতে হইবে।

শৈৱলয়াধিপৌ স্থাতাং বলাধিকতরৌ যদি।
তৎকলানাং প্রতৃদ্ধি: স্থাদীনো হানিকর: স্বৃতঃ র
এবং ভাবের সর্কের্ ভাবভাবেশরোর্বলাং।
ততো জন্মবি বজবা হানিবৃদ্ধিশ্চ কোবিদাঃ ।"
(কাতকাল্যার)

এক লথের উপরই সমত ভাষকদের নির্ভন্ন করে, লগ্নের গোলবোগ হইলে সমত কলেরই গোল হইরা থাকে। এই-জন্ত লয়ই সর্বাপেকা বিশেষ ভাষে চিন্তনীয়। লগ্ন ভি্ন না হইলে জাতকের জীবনের ওভাওত নির্নীত হর না। লগ্ন হইতে রালিচক্রের হাদল গৃহকে হাদল লগ্ন করে, বধা—লগ্ন, ধন, সোদর, বন্ধ, পার, নিবন, ধর্ম কর্মা, আর ও বার এই হাদল গৃহকে হাদল লগ্ন করে, হখা ধন লগ্ন, সোদর লগ্ন, বন্ধ লগ্ন ইত্যাদি। কিন্ত রালিভে রবির উলর ফালরপ লগ্নই প্রধান। উহাকেই প্রধান লক্ষ্য করিরা অক্সান্ত বিবর চিন্তা করিতে হর। লগ্নভাবকদ্বিবরে অতিসংক্ষেপে আলোচনা করিরা দেখা হাউল।

"বল্বল্ভাবপভিবিলয়ভবনাৎ বটাইরি:ফোপগঃ।
ভাবাল্ভাবপভিবিলয়টরিপ্গভৱাবনাশং বদেং ॥" (দীপিকা)
বে বে ভাবপতি লগ্ন হইতে অথবা ভাবহান হইতে বঠ,
অইম'ও বাদশে থাকে, ভাহা হইলে সেই সেই ভাবোম ফলের
হানি হয়। অভএব কোন ভাবের গুভাগুভ বিচার করিতে
হইলে দেবিতে হইবে বে, সেই ভাবপতি লগ্ন হইতে এবং
সেই ভাবহান হইতে কোথার আছেন, বদি উভর হান হইতেই
গুভ হান ছিত হম, ভাহা তদ্ভাবফলের সম্পূর্ণ গুভ এবং
গুডাগুভ ছান বোগে ক্লেরও গুডাগুভ করনা করিতে হয়।

বৃহজ্ঞাতকের টীকাকার ভটোৎপলের মত এই বে, কেবল বাঁহান ভিন্ন অভ স্থানত্ব ততগ্রহ ভাবত্ত্তিকর হইরা থাকেন। বাঁহত বাঁহ, অইম ও বাদশ স্থান চঃস্থান,এই স্থানত্তি গ্রহ বা এই ভাবপতি অভভগ্রদ হইরা থাকেন। অভগ্রব গ্রহণিগর বাঁহাইম ও বাদশ সম্ম হইলেই ফলের ন্যুনতা করনা করিতে হইবে। ইহার মধ্যে বিশেব এই বে,—

"জরাতিত্রণরোঃ বঠে চাইমে মৃত্যুরজুরোঃ। ব্যরন্থ বাদশন্থানে বৈপরীত্যেন চিন্তনম্।।" (দীপিকা)

পূর্বে বলিয়াছি যে, গুড ও স্বামিগ্রহের যোগে গুডফল হইরা থাকে; কিন্তু বঠ, অষ্টম ও বাদশ স্থানসম্বন্ধ বিশেব বিধি এই বে, উহা বিপরীতক্রমে চিন্তা ক্রিডে হর, অর্থাৎ গুডগ্রহ এই স্থানে থাকিলে অন্তত্ত এবং অন্তত্তপ্রহ থাকিলে শুভ হইরা থাকে।

বাদশ লগ্নরিট ।— মেখ লগে যদি জন্ম হইরা লগে চহা, মলল এবং মকর ভিন্ন জন্ত কোন রাশিতে শনি ও রবি থাকে, তাহা হইলে জাতবালকের ভিন দিন মধ্যে মৃত্যু হর। বদি বুব লগে জন্ম হয় এবং ঐ লগ্ন বুহুস্পতি বা শনি কইতে ষঠন্থানে থাকে, অর্থাৎ শনি ও বুহুস্পতি ধছুরাশিতে থাকে, আর অইমন্থানে মলল থাকে, তাহা হইলে জাতকের চতুর্দশ দিনে মৃত্যু হয়। মিথুনলগে জন্ম ইইরা কর্কটে শনি, সপ্তমে রবি থাকিলে মিথুনলগেরিট হয়। কর্কটলগে জন্ম হইরা তুলার বা কুতে বদি বুহুস্পতি থাকে এবং রাহ্

বা মদল কর্মক দৃষ্ট হয়, তাহা হইলে কর্মটলগ্রিন্তি; বদি নিজেলয়ে লয় হয় এবং চক্র লয়ে অবহিত্তি কয়ে ও মকর তির অঞ্চ
রালিতে লনি ও রবি থাকে, তাহা হইলে সিংহলগরিটি, বদি
কন্তালগ্রে অন্য হর এবং ঐ লগ্নে চক্র আর বৃহল্পতির কেক্রে
পনি থাকে, তাহা হইলে কন্তালগ্রিন্তি, তুলালগ্রনাত ব্যক্তির
বঠে ওক্র এবং লগ্নে চক্র থাকে, তাহাতে তুলালগ্রনিটি, বৃশ্চিকলগ্নজাত ব্যক্তির কর্মটে চক্রা, ধছল গ্রন্তাত ব্যক্তির দেবে চক্রা ও
সিংহে রবি, ক্রুলগ্রনাত ব্যক্তির চতুর্বে চক্রা কন্তা অথবা
তুলার ওক্র, মীনলগ্রনাত ব্যক্তির লগ্নে চক্রা রু বৃশ্চিকে শনি
থাকিলে এই সকল লগ্নরিটি হয়। এই সকল রিটি হইলে
ভাতকের মৃত্যু হইরা থাকে।

প্রত্যেক লয়কে পুল্ল করিরা বড়্বর্গ করা হইরা থাকে, এই বঢ়্বর্গ বথা —লয়, হোরা, দ্রেজাণ, লপ্তাংশ, নবাংশ, বালপাংশ, ও ঝিংশাংশ। ইহা ভিন্ন লয়ের ক্ষুটনাথন করিলে আরও পুল্ল হর। ক্ষুট ব্যতীত অংশ পুল হর না। নিংহলরে জন্ম গ্রহণ করিরাছে বলিলে ক্ষুটনাথন করিলে নিংহলয়ের কত অংশ কত ক্লার জন্মিরাছে, তাহা জানা বার। [ক্ষুটনাথন দেখ]

नवक्तम-यनि तम्द, मिरह वा श्रम्त व ह्य, जात्र त्नहें श्वातन यपि রবি থাকে, তাহা হইলে জাতক গৃহস্থ, ধর্মপালক, বন্ধবর্গের হিত-काती, उक्रज, रनवान, कर्ड्याजिमानी, कमानीन, मानी, छेवांत्रिछ, দান্তিক ও উচ্চাভিলাবী হয়। কিন্তু কৰ্কট, কিংবা তুলা লগ্ধ হইলে আর ঐ লগ্নের ৮ জালের মধ্যে রবি অবস্থিতি করিলে বক্রচক্র, নেত্ররোগ ও শির:পীড়া হয় এক ছাত ব্যক্তি প্রায় আত্মাহী. ম্বুণার্হিত ও পুত্রহীন হইরা থাকে। ঐ রবির উভর পার্বে কিংবা উহার সপ্তমে শনি ও মদল থাকিলে জাতক জন্নাযুও ভাহার भिष्ठतिष्ठि हत । यमि स्मिन, त्रव, किश्चा कर्क**े गा स्म, छ**शांत्र পূৰ্ণ বা বলবান চন্দ্ৰ থাকে, তাহা হইলে জাতক স্পৰান, প্ৰিয়-দর্শন, গুণবান, ধনী, গর্মিত ও ভাগ্যবান্হর। উক্ত ভিন রাশি ভিন্ন লগ্নগত চক্ৰ শীৰ হইলে এবং উহাত্ত সহিত কিবো উহাত্ত সপ্তমে কোন ওভগ্ৰহ না থাকিলে মানব মলিন, অস্ত্ৰহ, ভ্ৰমণনীল, কীণাদেহ ও অবস্থার পরিবর্তন অর্থাৎ কথন ব্রাস বা কথন বৃদ্ধি প্রাপ্ত হর। ঐ চল্লের উভর পার্ষে কিংবা উহার সম্ভব্দে পনি ও মঞ্চল থাকিলে জাতক অৱার ও তাহার সাত্রিটি হর।

ওড়র্ড দৃষ্ট হইরা মলগ সরে বাকিলে লাভক তেলবী, উপ্রবহাবসম্পর, সাহসী, বলবান, গাড়িক ও বীরস্কেন হর এবং ঐ মলনের সপ্তমে বৃহস্পতি বাকিলে সেই লাভক ঐক্যা-গালী ও রাজসদৃশ হর। কিন্তু পালদৃষ্ট কইলে ইবার বিপরীত হইরা বাকে। অর্থাৎ লাভক কলহাগ্রিয়, কভগরীয় বা কর্লোব- ৰিশিষ্ট, ক্রুরচেষ্টাহিত, ইন্দ্রিয়াসক, ক্রোণী, মদ্যমাংসপ্রির, চক্ষণ, বিকলাঙ্গ, মলিন, উদর বা দন্তরোগী ও অর্শাদি গুরুরোগী হইয়া থাকে।

লাগে বিশেষত: মিথুন ও কপ্তালাগে বুধ অবস্থিতি করিলে জাতব্যক্তি দেধাবী, প্রিরংবদ, স্মচতুর, মিষ্টভাষী, বদ্ধবর্গের হিতকারী, কৌতুকী, ধনী, সম্বক্তা, বণিক্ বা শান্তবেত্তা হয়। কিন্তু লগ্নন্থ বুধ শনি বা মঙ্গলের মারা দৃষ্ট হইলে জাভক, বাচাল, মিথাবাদী, মন্দমতিসম্পন্ন, শঠ, অবিশাসী, প্রবঞ্চক, কণ্টছদর, চোর বা উন্মাদ হয়।

মকর জিন্ন অন্ত কোন লগে বৃহম্পতি অবস্থিতি করিলে কাতক বৃদ্ধিমান, অধন্মাসুরত, বিবিধ শাস্তজানসম্পন্ন, সহপদেশ্রা, লোকপ্রা, রাজসমানিত, ভাগাবান্ ও ঐম্বর্গালী হর।

লগ্নে শুক্র থাকিলে জাতক বিলাসী, শুণবান্, ক্ম্মরী স্ত্রী অথবা বহু ললনাযুক্ত, শিরশান্ত্রবিশার্ম, সঙ্গীত ও কাব্যশান্ত্রপ্রির, সদালাপী ও প্রফ্রাচিত্ত হয়। যদি তুলা লগ্ন হয় এবং ভাহাতে শুক্র থাকে, আর কুন্তুরাশিতে বৃহস্পতি থাকে, তাহা হইলে পুরুষ ফ্রন্মর এবং তাহার স্ত্রীগণ সর্কাঙ্গস্থন্দরী হয়। কিন্তু লগ্নত শুক্র পাপযুক্ত বা তৎকর্তৃক দৃষ্ট হইলে মানব নীচসঙ্গ-প্রিয়, নীচামোদরত, অপবায়ী, ক্রীড়াসক্ত ও পরস্ত্রীরত হয়।

যদি তুলা, ধয়, কুন্ত বা মীনরাশি লগ্ন হয়, আর লগ্নে শনি থাকে, তাহা হইলে জাতক দীর্ঘায়্বঃ, ঐশ্বর্যাশালী ও বহু লোকপ্রতিপালক হয়। মতান্তরে ব্ব, মিগুন বা কল্ঞালগ্নে শনি
থাকিলে উক্ত প্রকার ফল হইয়া থাকে। ঐ শনির সপ্তমে
বৃহস্পতি থাকিলে মানব পরম ঐশ্বর্যাশালী হয়। কিন্তু লয়গড়
শনি অন্ত রাশিতে থাকিলে মানব কান্তিহীন, অশোভন, দন্তব্ক,
সর্বনা ব্যাধিপীড়িত, নীচাশয় ও স্থাবিহীন হয়। মেহ হইতে
কল্লা পর্যান্ত এই ৬ রাশির মধ্যে কোন রাশি লগ্ন হইলে এবং
রাহ তথায় থাকিলে মানব অন্ত গ্রহরিষ্ট হইতে মুক্তি লাভ
করে, ইছার বিপরীত হইলে রাহ্ অন্তভকলপ্রদ হয়। কেতু
লগ্নে থাকিলে লগ্নাধীন কল হ্রাস হইয়া থাকে। লগ্নন্তিত গ্রহ
বেরূপ কলপ্রদ হয়, তক্রপ লগ্নাধিপতি শ্বারাও ফল নির্ণয়
করা বায়।

লথাধিপফল—লথাধিপতি লথে অবস্থিতি করিলে জাতক ভাগাবান, রিপুজরী, বহু পরিজনযুক্ত ও বীর বন্ধবর্গের শ্রেষ্ঠ হয় । লথাধিপ বিতীর স্থানে থাকিলে মহম্ম বীর বন্ধ ও পরিশ্রম বারা ধনোপার্জন করে। লগ্নাধিপ ভৃতীর স্থানে থাকিলে জাতক দান্তিক, অভিমানী, ভ্রাতা, জ্ঞাতি বা প্রতিবাসীর বলতাপর এবং ভ্রমণরত হইরা থাকে। চতুর্থ স্থানে থাকিলে জাতক পিতৃ-সম্পত্তি, উত্তম বাহন, উত্তম বাসন্থান ও ভূমিলাভ করে এবং

त्नहें वाक्ति श्राव क्विकार्या मकनकाम इत्र । नवाधिभ भक्षम श्रास থাকিলে মানব সন্ততিমূক, জীড়াসক, অলস, বিলাসপ্রির, কলনাশক্তিবিশিষ্ট ও বৃদ্ধিমান্ হয়। লগাধিপ বর্ষে থাকিলে তদ্বত পীড়া, শত্ৰবৃদ্ধি বা বধ-বন্ধন হয়, কিন্তু শুভগ্ৰহনৃষ্ঠ ছইলো মাতৃল বা পিতৃবাধারা উপকৃত হইবার সম্ভাবনা। লগ্নাধিপ সপ্তম স্থানে থাকিলে যৌৰনাবস্থার একাধিক স্ত্রীলাভ, বাসস্থানের পরিবর্ত্তন, বিদেশ বাত্রা ও শত্রুবৃদ্ধি হয় এবং জাতক প্রায় নিজ বৃদ্ধিদোৰে স্বীন স্পনিষ্ট সাধন করে এবং কোন ব্যবসা দারা ভাহার ধন ও প্রতিপত্তিলাভ হয়: লয়াধিপ অট্ড স্থানে থাকিলে মান্ত রুল, আলায়, শোকার্ত্ত, ভরার্ত্ত,ও সর্বাদা বিপদাপর হর। কিন্ত ল্যাধিপতি গুভ ও বলবান হইলে লীখন বা কোন সম্পত্তি লাভ হইয়া থাকে। লগ্লাধিপ নৰম ছানে থাকিলে জাতক ভাগাবান, বিখান, শান্তাসুরাণী, ধার্শ্বিক বা পোতবণিক হয়: সমাধিপ দশম স্থানে থাকিলে মান্ত, উচ্চপদ, কাৰ্য্যসফলতা ও কোন সমাজের প্রাধান্ত লাভ হয়।. লগ্নাধিপ একাদশ হানে থাকিলে বছ মিত্র, প্রচুর অর্থাগম, উৎসাহ, বৃদ্ধি ও উত্তম বাহন হর। সলাধিপতি वानन ज्ञारन थाकिरन श्रक्तीवना, वस्त्रसम्बद्ध, सन, निर्वरायन, कीन-দেহ, শোক ও গুরু শত্রু হয়।

ছিতীয়পতি লয়ে থাকিলে মহুব্য ধনী ও সোভাগ্যদালী হয়। তৃতীয়াধিপতি লয়ে থাকিলে বছ শ্রমণ ও বাসম্বানের পরিবর্তন ঘটে এবং জাতক পরিজন বেষ্টিত, কুলশ্রেষ্ঠ ও পরাক্রমশালী হয়। ততুর্থাধিপতি লয়ে থাকিলে বন্ধবাহন ও স্থাবর সম্পত্তি লাভ হয়। পঞ্মাধিপতি লল্পে থাকিলে জাতক বুদিমান্, বিভাল্নাণী, পুত্ৰ-বান, বিলাদপ্রিয়, প্রফুরচিত্ত ও স্বীয়বংশের ভূষণ স্বরূপ হয় । বঁচাধিপতি লগ্নে থাকিলে মানব ক্লেশবুক্ত, শক্তদারা পীড়িত, জনায়ু, কিংবা বঁচাধিপতি গ্রহণত পীড়াবারা পর্কনা ক্ষত্ত হর। নপ্তমাধিপতি লগ্নে থাকিলে অল্লবল্লনে বিবাহ, বাণিল্যকুশল ও वितम वाजा इत्र। कहेमाथिপण्डि गर्म थाकित्न विश्रम, त्नाक. অলার, বা সেই গ্রহাছখারী দীর্যহারী পীড়া হয়। নব্যাধিপতি লগ্নে থাকিলে জাতক ভাগ্যবান, বৃদ্ধিমান্, ধর্মপরারণ, বিভা বা বাণিজ্যবারা ধনী ও বহুত্রমণশীল হয়। দশমাধিপতি লগ্নে থাকিলে মানব ক্ষমতাশালী, গণ্য মাস্ত ও কীর্ত্তিশালী হয়। একাদশাধিপতি লয়ে থাকিলে প্রচুরপরিমাণ আর, বছমিত্র ও পদে পদে উৎসাহ বৃদ্ধি হয়। স্বাদশাধিপতি লয়ে থাকিলে অপব্যরী, সভত বিপদা-পার ও অরায় হয়।

লগ্ন ও লগ্নপতি ক্তপ্রহ ধারা বেষ্টিত হইলে জাতক নৌভাগা-শালী ও বশবী হয়। এইরূপ প্রশালীতে লগ্নের ফল বিচার করিতে হয়। (নীপিকা, জাতককৌ। ইত্যানি)

(পুং) নগ-ক মিপাতমাৎ সাধুঃ, বছা নস্ত্-ফ ত্রস্ত সক্ষ।

২ ভডিপাঠক। পর্যার—আডজের, ভডিত্রভ, প্রতঃ (জটাধর) (জ্রি) ০ সক্ত। ৪ লক্ষিত। (মেদিনী) লগ্লকক্ষণ, বোৰাই আদেশের চিৎপাবন প্রাহ্মণগণের বিবাহ কালে বর ও কল্লার হাতের কল্পিডে যে হত বাঁধিয়া নেওয়া যায়। लग्नकाल (११) मध्य कानः। महम्मस्। লগ্নহ (পুং) > দুরুদার্গেষ্ট । ২ লগছিত প্রহ। लग्नि (क्री) नवक मिनर। नदात्र मिन, निर्माशिम, त्य मित्न विवारणध चित्र र्टेशाट्स, छारांटक मधानिन कटर। न्धमुष्टि (जी न् नद्य सक्तवानित मृहि। लश्चित्रम (११) नश्चिम । লয়দেবী (জী) প্রাণবর্ণিত প্রস্তরমর গাভী। লগ্নপত্র (मी) শহন্ত শতং। ্বিবাহের দিনস্থিরকারণ। विवाद्यत अपक श्वित हरेंद्र विवाद्यत हिन था व्यालम श्वित कत्री হয়, তাহাকে লগপত্ৰ কৰে।

"नधभव कतिया नात्रम मूनि गाव" (अवनाम") লগ্ন্তল, শমবিশেষে বস্তাহতু কীবের ওভাওভ ফলভোগ। लश्चित्वा (जी) नधक दन्मा। नधकान, नध नम्मा। लग्नाश्च (क्री , नत्वत्र शतिमागास्त्रात्त्र निर्मिष्ठे चायुकान । (ফলিভ জ্যোতিৰ।)

লগ্নাহ (খং) লগদিন, বিবাহদিন। লগ্নিক। (জী) লগিকা, চলিভ নেঙ্টা স্ত্ৰীলোক। लशिकाञ्चम, मर्राष्ट्रम । (वृश्तीन • २ •) লগ্বগ্ (দেশক) যে সকল ধ্বজাদি দৃঢ় নহে, উচা করিলে হেলিয়া ছলিয়া পড়ে, তাহাকে লগ্বগ্ করা কছে। লগুবগীয়া (দেশজ) কোমল, বাহা দৃঢ় নহে। লেঘ্, লঘি লঘধাড়ু, > শোষণ, অনীকরণ। ২ গতি, গমন। ৩ ভোজননিবৃত্তি। শোষণার্থে জ্বাদি° পরকৈ সক° সেটু। গভ্যর্থে कृति काचान । नहें नज्यकि-एक। निष्टे नज्य-एक। नुहे निक्का। नृष् अनुकी९, अनुक्किश्कार्_{के}नन् निनक्किर्वार-एक। बङ्गानक्यारक। यदमुक् नानद्क्य। ६ मीक्षि। **চুরাদি। লট্ লক্বর্তি। সূঙ্ অললক্ষং।** লঘট্ (পুং) লব্দতে মধ্যস্থানমশ্বী। উত্তরভানে পত্তি প্লতং ইতন্ততো গছতি বা লব্দ (লভেমন লোপক। উণ্ ১। ১৩৪)

ইতি ঘটি, নলোপশ্চ ধাতোঃ। ১ বারু। লঘটি (গং) লঘ-গজে)-অটি, ইম্ভাব:। বারু। लघस्त्री (जी) नगीरकम्। লঘরি, অসভালাতি বিশেষ।

লবিত্র, অন্তবিদের। বৈশন্দারনোক্ত ধলুর্কেনে ইহার আকার, প্রকার ও কার্যকরিতা সম্বন্ধে এইরপ নিধিত আছে।

শিল্পির ভূমকারং ভাৎ পুঠে শুরু পুরু শিভদ্ 🕫 ভামং পঞ্চাসুলিব্যাসং দার্ভবসমূলতন্ । ९ तक्षा अक्षण नक्ष महियानि निक्कनम्। वाहस्त्वास्त्रास्त्रात्मात्मात्मा विषया विषय विषय मार्च ॥ (शक्यका) লবিত্রের কারা ভূগ অর্থাৎ কোলকুঁলো, পূর্বভাগ বুল ও শুক্লভারবৃক্ত, নৰুধভাগ তীক্ষ, ব্যাস পাঁচ অনুনি ও বর্ণ কাল। ইহার মৃট অতি বৃহৎ এবং ইহার খারা সহিব প্রভৃতি কর্মিভ कत्रा यात्र। इन्हें बार्फ केंग्रेस ७ व्यन्तत्र, अन्हें कृत्रे किया जिल्ल ইহার ভূতীর ক্রিয়া নাই।

লবিমন্ (পুং) লবোর্জাবঃ লঘু (পৃথাদিতা ইমনিক্ষীঃ পঃ ৫।১।১২২) ইতি ইমনিচ্। ১ লঘুড। ২ অপিমাদি ঐবর্থ্যের অস্তর্গক্ত 🙀 ঐশ্বর্যাবিশেষ। সাধনা দারা এই ঐশ্বর্যালাভ হইয়া থাকে। "ততোহণিমাদিপ্ৰাহ্ৰ্জাবঃ কায়সম্পদ্ধৰ্ক্ষনভিবাতক ।" (পাভঞ্জনদ° বিভূতিপা° ৪৬)

ৰোগিগণ সংযম সিদ্ধিবারা ক্ষিত্যাদি পঞ্চতুত জন্ন করিতে পারিলে তাহাদিগের অণিমাদি অষ্ট ঐশ্বর্য্যের সিদ্ধিলাভ হুইয়া থাকে। লযুপকে লখিমা বলে, যে ব্যক্তির লখিমা শক্তির সিদ্ধি হন, সেই ব্যক্তি ভূলার জান্ন লঘু হইতে পারে এবং তাহার জলাদির উপরে অনানাসে বিচরুণ করিবার শক্তি জন্মে। ও অবহুমতভ। ৪ হুস্ত।

"অগ্রে শবিমা পশ্চাৎ মহতাপি বিধীয়তে নহি মহিলা। বামন ইতি ত্রিবিক্রমমভিদধতি দশাবভারবিদঃ 🕸

(আর্য্যাসপ্তশতী 🖦)

लचिक्ठ (बि) अन्नमनत्त्रादन्त्रशः वा अजिनदन्तन नवूः, नचू-हर्छ। অতিশয় শঘ্তব্ক। ব্যাকরণোক্ত শ্লেষাত্মক প্রয়োগভেদ। বিদয়-মৃথমণ্ডনে সীতা ও বাবণের উক্তি প্রভূত্তিতে সপ্তমাক্ষর বর্জন দারা "मनवमनभानि" "बाजा यूबि" ७ "फेरेक्टः शक्ष्म्" नत्म मबुरुद्ध भाजाः পুৰ্ণ পরিক ট হইরাছে :

লখিন্ত সাধারণ গুণনীয়ক, অহবিশেষ (Least Common multiple) !

ল্কীয়স্ (এ) জনমনজারেবাং বা অভিশবেন লকু লবু-ঈরহন্। অভিশয় লঘুকুযুক্ত।

"ন বৈ সমৃদ্ধিং পালয়তে লগীয়ান

যথাং সমানেহাতি রাজগুলি।" (ভারত ২। ৬২। ১৪) अपृ (ज्ञी) गन्नफश्तनक्षि गन्न (नन्निक्रद्शान ग्रनाशन्तः। **छ**न् > १ ७०) रेंकि कू, शांरकार्य (मानकाः > मीताः र क्रमां समृत (त्यस्ति) ७ गामक्यर । (त्राजनिर) ७ हत्त्व, व्यक्ति ७ পুস্থানক্ষ্য, এই ভিনটী নক্ষ্য গ্রুপ্র "नष्ट्याचिनश्याः भधत्रज्ञानकृष्यकाछ ।"(वृद्दम" ३००३ ३)

৪ কাল পরিমাণ বিলেব। পঞ্চলক্ষণ পরিমাণ কালকে ল**ব্** ক্তে। পঞ্চলাঠা পরিমাণ কালে এককণ হর। **"কণান্ পঞ্চ বিহুঃ কাঠাং লঘুতা দশ পঞ্** ह। শ্বৃনি বৈ সমায়াতা দল পঞ্চ চ নাড়িকাঃ ॥" (ভাগ° ৩১১।৭) (भूर) ६ ज्ञानाम्रामितिस्य । বে স্থানে প্রাণারামের নিরমান্ত্রনারে বাদশ মাত্রার প্রাণারাম হর, ডাহাক্ষে লঘু প্রাণারাম স্থাহে। ইহাতে পূরক, **কুম্বক** ও রেচক এই ভিনই চ্**ই**বে। "লঘুমধ্যোত্তরীয়াখ্যঃ প্রাণান্নামজিধোদিতঃ। তভ প্রমাণং বক্যামি তদলক পৃণুৎ মে 🛭 পথুৰ দিশীমাজন্ত বিশুণঃ স্তুমধ্যমঃ। ত্রিগুণাভিত্ত মাত্রাভিক্ষরত্ব: পরিকীর্ত্তিত:লা (सर्वरथपु⁹ २३ | ३७-३৪)् (वि) ७ वश्यक, अक्रपरीन । "তৃণাদপি লঘুস্তৃলস্তাদপি চ ভিক্ক:। ন নীতো বাৰুনা কন্মাদর্থপ্রার্থনশবরা ॥" (উড়টে) ৭ মনোজ্ঞ। ৮ ইষ্ট। ৯ নিঃসার। (মেদিনী) "প্রতা রাম: প্রিরোণ্ডং মেনে তৎসঙ্গমোৎস্থক:। মহার্থবপরিক্রেপং লক্ষায়াঃ পরিধালঘুম্॥" (রঘু ১২। ৬৬) ১० ब्याकत्रत्वांक मरकावित्नव, मधूमरका, च, हे, छे, च, अ >কার এই সকল বর্ণ লঘু। "হ্রন্থো লঘু: দীর্ঘো শুরু:" সংযোগের शृद्धि यनि नषुतर्ग शांतक, जाहा हहेरन खक्र हत्र। ३३ हन्नः-भारताक नयूननराज्य। इत्मन नकान 'न' এই नम शांकितन তিনটা লঘু, 'ভ' শব্দে আদিশুরু এবং শেব ছটা লঘু, 'ঘ' শব্দে জাদি লঘু, 'অ' আদি ও শেষ লঘু, 'র' লঘু, 'স' প্রথম হইটী লঘু 'ত' শেষ লঘু 'ল' একটী মাজ লঘু ব্ঝাইয়া থাকে। মন্ত্রিগুরুত্তিলতুক নকারে। ভাদিগুরু: পুনরাদিলঘুর্ব:। জা গুরুমধ্যগতো **রলমধ্য: লোহত্তে কবিতোহস্ত**পঘূ**তঃ** ॥ अक्रद्रादक्ष शकांत्रच नकांद्रा नच्द्रककः।" (इत्साय°) ১২ রোগমুক্ত। (রাজনি°) রোগ শরীর হইতে মুক্ত हरेल भन्नीत नषु हरेना शास्त्र। ১৩ वाषु ७ **भ**न्नि ७ गर्ने (মূঞ্জ) ১৪ আকাশঝণভূরিষ্ঠ। (ত্রী) ১৫ পূজা নামক ঔবধি। পিড়িংশাক। (মেদিনী) লঘু আচাৰ্য্য, ত্ৰিপ্রস্করীভোত ৰা ত্ৰিপ্রাভোত, দেৰীভোত ও লবুক্তৰব্যবেতা। লঘুগণ্ডিত নাবেও প্ৰসিদ্ধ। কাযুক্কোল (গং) বৃক্তেন (Pimenta Acris) ङ्गाचूकन् (ग्रः) **७ इन्हो**त्रकः। (देशावनिः) স্মুক্ট কী (ত্ৰী) শব্দাৰ, শব্দাৰতীগতা (Mimosa pudica)। अध्यक्तं क्षु (११) वृभिवतत्र, (बाडेक्न "Zizyphus)। (रिक्निकि") क्ष्युक्त्वी (जी) वृक्त, वृत्ती । (दिक्क्नि) वजाडी-द्यातदकः ।

लाशुकांत्र (११) गेव्: कारता वर्ज । के बाल । (बि.) २ क्लानतीतः। লাসুকাশ্মর্য্য (পুং) শযুং কাপর্যাঃ । কট্কলবৃন্ধ । (রাজনি•) लचु (को युनी (जी) वतनताबक्च निकाचरकी युनी व नः विष् वाक्षिप्रग्याहः। লঘুক্রেম (মি) জভগৰন। (অব্য) জভপাৰবিকেশে। सपूजिस्ता (जी) क्या वा क्र्क कार्या । "অবায়ৰে কৰিপ্ৰাৰে প্ৰভাতে মেবড়ৰয়ে। সম্পত্যো: কলহে চৈব বহবারত্তে লবুক্রিরা॥" लघुशंष्टिका (जी) नगुर्थकिका । जूज वहा, नगाव-जाननी । লঘুথতির (দ্রী)প্রাচীন বংশভেদ। ধরতর গচ্ছ। [ক্রেনশন্ধ দেখ] লাখুগাঞ্চাধর (পুং) উদরামর রোগে প্রযোজ্য চূর্ণক (ঔবধ) ছেন। लघुन्न (पूर) नवूर्ननः । अविमी, भूना ७ रखानकत । ⁴উগ্রঃ পূর্ব্বমধাতকাঞ্বগণন্তিগুভরাণি সভু-ৰ্ব্বাডাদিত্যহরিত্ররং চরগণঃ শ্বাড়েছিতা লঘুঃ 🗗 (শীপিকা) ল্ঘুগর্ম (পুং) ল্যুর্গর্গ ইব । ত্রিকন্টকমৎন্ত, গর্গর মৎন্ত, চলিত গাঁগড়া মাছ। (হারাবলী) লখুগোধুম (পুং) ছবংগাধ্ম, ছোট গম। গুণ-ছিয়, গুরু, ব্যা, কলম, আমদোষকর, মধুর, বীর্যা ও পৃষ্টিকর। (রাজনি॰) লঘুচম্দন (রী) কাঠাওর। (বৈছকনি॰) लघू हिन्छ (बि) नघू हिन्दः यश्च । क्यु हिन्द, इर्वागिन्छ । লঘুচিত্ততা (ত্রী) চঞ্চন্দনার ভাব ধর্ম। চিত্তের হৈর্ব্যহীনতা। লমুচিন্তাম্পিরস (তি) রসৌবধ বিশেষ। লঘুচিভিটা (বী) লঘুন্চিভিটা। মৃগের্বাঞ্চ, ছোট কাব্দুর (Colocynth) | লঘুচেত্তস্ (ত্রি) শবু চেতো বহু । স্কুটিভ, নীচাশর। ল্ম্ডুচ্ন্ (ত্রী) মহাশতাবরী। (বৈত্তকনি-) लघूटुक्ट्रमु (बि) नहरक वांश कांगे वा ध्वःनै कर्ता बांत । ল্যুজঙ্গল (পুং) নাবকণকী। (ত্রিকা•) লঘুতর (এি) অভিনয়, চলিত হাল্কা। লঘুতা (জী) বৰু ভাবে তল্-টাপ্। বৰুৰ, হীনতা, কুলৰ, অরছ, লঘুর ভার বা ধর্ম। ज्ञाचुल्स्ही (जी) गप्: क्यां नची। क्यनबीद्रकः। क्रांत नची। (ভাবপ্রা) [मखी (मधा] স্মৃত্যুক্ত (প্ং) শ্ৰুহ ক্ভিঃ। ৰাজভেৰ, ত্ৰগড়বাৰ । (প্ৰয়ন্ত্ৰী ল্যুদ্রাক্ষা (ত্রী) নতু: কুলা তাকা। কাকনীয়াকা। (রাজনি-) কিস্মিশ্। লঘুদারবতী (গ্রী)বর্তমান বারবভী নগরী। লঘুনভিমগুল (দী) মগুলামক চক্রডেন। स्युम् म्म् (ही) नव् जव्यप्रिक्र माम वक्ष । अवतः (भन्तः)

मधुट्छाखन (क्री) गरा नराम ७ व्यवनमात्रत मार्था পविशास

लचूनां त्राग्रत्गां श्रीनश्रद्धः । लघुनक्षम्ल (जी) गय् क्षर नक्ष्मार । 'क्षनक्ष्माननाहन, শালপনী, পৃশ্লিপনী, বৃহতী, কটকারী ও গোকুর এই ৫টা লবুপঞ্মূল। এই পাচন-লবু, স্বাহ্ন, বলকর, পিত্তানিলনাশক, নাত্যঞ্চ, বুংহণ, গ্রাহক, অন্ত, খাস ও অপ্তরীনাশক। (ভাবপ্রত) লঘুপণ্ডিত (পুং) একজন নৈরান্ত্রিক। ইনি লঘুপণ্ডিতীয় নামক क्रांत्रनाञ्च व्यनत्रन करत्रन । [नचू व्याठार्ग्य दर्ग ।] স্পুপ্তনক (পুং) > ক্ৰভ পতনশীল। ২ হিতোপদেশোক কাক। ল্মুপ্ত্রেক (পুং) লগ্নি পত্রাণি বন্ধ কপ্। রোচনী, গুঙা-'রোচনী। (শব্দচ । ল্যুপ্তফ্লা (খ্রী) শণ্ উচ্বরিকা। (রাজনি॰) লঘুপত্রী (ত্রী) লঘুনি পত্রাণি বঙ্গা; ভীব্। অখণবৃক্ষ। (রাজনি°) লঘুপরাশর (গুং) শ্বতিশারভেদ। लच्छ्रभूगी (औषी) भूकी। २ भठभूगी। (त्राज्यनि•) ল্পুক (পুং) লগু: পাক: यद्य। পাকে লগু, বাহা শীভ পরি-পাক হয়, তাহাকে লঘুপাক ৰছে। लच्याकिन् (वि) हीनांशाक्ष, हिटन थान । (पर्याप्तम्) লযুপাতিন্ (তি) > শীঘ পতনশীল। ২ কাক। লযুপাণ্ডুরপুষ্পক (গুং) দ্বীপান্তর খর্জুরিকা ! (বৈছছনি •) ল্বপুলিছিল (পুং) শঘু: পিছিল:। ভূকর্কারক, কাঞ্চনগাছ। লঘুপুল্ক্তঃ (পুং) পুলন্তাক্ত ধর্মণারভেন। লঘুপু প্প (পুং) লঘুনি কুদাণি প্রশাণি বস্তু। ভূমিকদৰ। (রাজনি॰) ল্যুপ্রযৃত্ব (তি) অরচেষ্টা আলম্ভপ্রিয় বা কুঁড়ে। ল্মুফ্ল (পুং) লখু উছমর, ছোট ভূমর। (বৈঞ্জনি॰) लाधुवन्त्र (प्रः) नधः कृष्यां वन्तः। कृष्य कून, व्यक्तिकृत। পর্য্যায়—ফুল্ফল, বহুকর, কুল্মপত্র, ফুম্পর্ল, মধুর, দরহার, শিখি-প্রির। প্রকলগুণ – মধুরার, কফবাতনাশক, রুচিকর, স্লিগ্ধ, ঈবৎ পিতার্ত্তি, দাহ ও শোষনাশক। (রাজনি-) लघुरानद्गी (धी) ज्वनदी। (दाजनि॰) ল্যুবুদ্ধপুরাণ (ক্রী) শলিতবিস্তর গ্রন্থের একথানি সংক্রিপ্ত বিষরণ। লখুব্যাস, বৃতিবলভ নাটক-রচরিতা। লঘু বাক্ষী (জী) লঘু: ক্জা রাকী। কুডরাকী। পধ্যায় জলোডবা, কুল্পব্যা। (রাজনি॰) লঘুভক্টী (স্ত্রী) চিকোটক, চলিত চেঁচকো। (বৈশ্বক্রিক) লঘুভব (পুং) > নিমপদ। । নিরুষ্ট জন্ম। লবুভাগবভ (हो) ভাগবভপুরাণের একখানি চুর্বক। লযুভাব (পুং) ১ হাল্কা। ২ গুরুস্থীন ৷ ৩ নহল্পাধ্য ৷ ল্যুভুজ্ (ত্রি) লঘু লঘুলাকদ্রবাং ভূঙ্কে ভূত্ত-কিপ্। ১ লঘু-পাক্সব্য ভোজনকারী। ২ অরভোজী।

হর, এরূপ পথ্য আহার। ল্যুম্ভু (পু:) ল্যু: কুল্রো মছ:। কুল্রারিমছ, চলিত ছোট গনিবারি (Premna spinosa) ৷ (রাজনি৽) লঘুমাংস (পুং) লঘু স্বরং মাংসং যক্ত। (রাজনি৽) তিত্তির-পন্দী। (বিকা•) লঘুমাণ্দী (ত্রী) গৰ্মাংশী, হল্ম জটামাংশী। (রাজনি৽) লঘুমুত্ৰ (ক্লী) বীৰগণিতোক্ত অন্ধবিশেষ (The lesser root of an equation)। २ वाहात जात्रक आक्रम लघुम्लक (क्री) नघु म्नः यञ्च कन्। इत्रम्नक, त्ननानम्बर । লঘুয়ম (পুং) ধযোক্ত শ্বতিবিশেষ। লঘুরাশি (পং) অভ্নাজ্যেক রাশি বিশেষ, বছরাশির বিপরীত। ল্যুল্তা (ত্রী) > কারবেরক, উচ্চে গাছ। जनसमून। (देवसक्ति •) লঘুলয় (क्री) লঘু শীঘং শীয়তে ইতি লী-অচ্। ১ বীরণ মূল ॥ (অমর) ২ পীতোশীর। (বৈদ্যকনি॰) লঘুবাসস (অ) পরিচ্ছর ও ক্রবাসপরিধানকারী ৷ লঘুবিক্রম (পুং) জত গমন। লঘুবিষ্ণু (পুং) বিষ্ণু-কথিত শ্বতি বিশেষ। ল্মুবুদ্তি (আ) নীচ কার্য্যাবলম্বী । নিরুষ্ট জীবনবৃত্তি । লঘুবেধিন (ত্রি) শীঘ্র বেধকারী। বেধকার্যো স্থনিপুণ। লঘুশুমা (ত্রী) শমীরুক্তে । লঘুশৃত্ব (পুং) কুদ্রশঙ্গ, ছোটশাঁক। (বৈছকনি॰) লঘুশান্তিপুরাণ, ক্র উপপ্রাণভেদ। लघू भिवश्रुतान, डेशश्रुतागरका। লঘুশিখরতাল (পুং) সঙ্গীতোক্ত ভাগভেদ। লঘুস্ত্ব (ত্রি) শব্পক্ষতিক। শব্চিত। लघुमन्किला (जी) नच् मना कनः यद्याः मा नयुमनाकना। লবৃহধরিকা, ছোট ভুমুর। (রোজনি৽) লঘুসার (তি) লখু: অর: সারো যক্ত। অরসারযুক্ত। लघू रुपर्भन (क्री) व्याव्यक्तरमांक कृत्र्व विश्वरखन । লঘুস্থান্তা (রী) চঞ্লতা। বাহারা একহানে জধিক সমর থাকিতে পারে না। লঘূহস্ত (পুং) লয়ঃ ক্ষিঞ্চনারী হত্তো বস্ত। শীলবেধী, যিনি অতিক্রত বাণক্ষেপ করিতে পারেন। "ভূয়: **পড়্গাগ্রহারেণ লঘুহন্তো দিধাকরো**ৎ ॥" (কথাসরিৎসা

৪২।১৩৩) লমুহন্ততা (ত্রী) গণুহন্তভ ভাব: ভল্-টাপ্। গণুহন্তভু, লমুহত্তের ভাব, ধর্ম বা কার্য। শীত্র বাগক্ষেপ। ক্ষিপ্রকারিতা।

লঘুহস্তবৎ (ঝি) লঘ্হত সন্দ। ক্ষিপ্ৰকারী। লঘুহারিত, হারিত ক্ষি-প্রবর্তিত দ্বতিশারতেন। লঘুহনর (ঝি) চক্ষল চিত্ত। অছির মতি। লঘুহেমত্ব্রা (ঝী) লঘুর্কেমহন্ধা। লঘুফ্বরিকা, ছোট-ডুমুর। (রাজনিন্)

ল্যুকরণ (রী) > হান্কা কয়ণ, কমান। ২ গণিডোক্ত আছ-বিশেষ।

লমূক্তি (ত্রী) শশুং উজি:। সম্পান, আরক্ষন। লামূখান্তা (ত্রি।) সহজে উখাদ সমর্থ। ২ উত্তম আহ্যসম্পন্ন (Good-health)। (দিবার্গ ১৫৯/১৬)

লযুতুশ্বিকা (জী) ছোট ছুমুর। (রাজনি॰) লযুঞ্জীর (কী) অধীনভেদ। লযুঞ্জি (পুং) অতিধবি-প্রবর্ষিত শ্বতিভেদ। লযুক্তি (পুং) অতিধবি-প্রবর্ষিত শ্বতিভেদ। লযুক্তি ছুমুরাহ্বা (জী) লযু উচ্চবিকা, ছোট ছুমুর। লযুক্তি (তি) লযুং আননো বছা ১ আন আননাৰুক্ত। (পুং) ২ অর-আদন্দ।

লঘুনিনদরস (গং) রসৌবধবিবের। প্রস্কৃতপ্রপানী—পারা, গন্ধক, লোহ, বিব, অন্ত প্রত্যেক ১ ভাগ; মরিচ ৮ ভাগ, সোহাগা চারিভাগ, ভূজরাক ও অরবেভদের রসে সাভবার ভাবনা দিয়া ২ রতি পরিমাণ বটী করিছে হইবে। অন্তপান পাণের রস। এই ঔবধ সেবনে পাণু, অকচি, মন্দানি, গ্রহণী, অর ও বাতপ্রেররোগ আন্ত প্রশম্ভ হয়।

(রনেজ্রসাল্পন পাপুরোগাথি)

২ বাতবাদি রোগোক ঔবধবিশেব। প্রস্তাপ্রশালী—পারা, গ্রহক, লোহ, অন্ত, বিব প্রত্যেক একভাগ, মরিচ ৮ তাগ, সোহাগা চারিভাগ, ভূলরাক ও নাড়িমের রুসে প্রভ্যেকটী পাঁচ বার ভাবনা দিয়া নাড়িমের কাবে বঁটা প্রস্তাত করিতে হইবে। অন্তপান নোধ অন্তসারে হিন্ন করিতে হয়। এই ঔবধে সেবনে ত্রম ও নাহের সহিত বাতবাদি বিনই হইয়া থাকে।

(রনেক্সদারস - বাতব্যাধিরোসাধি -)

লঘার্যাসিকান্ত (গ্রং) আর্থাসিকান্তের সংক্রিপ্ত গ্রন্থ ।
লঘানিন্ (জি) লবু জরং লবুপাকং দ্রবাং বা জরাতি আন-পিনি।
লঘুডোজী, অরভোজী, বাহারা লবুপাক দ্রবা ভোজন করে।
লঘুছার (জি) লঘুং আহারং বসা। লঘুডোজী, বিনি জর
আহার করেন। (গ্রং) ২ লঘু ভোজন।
লঘুী (জী) লঘু-ভীপ্ ২ লাধবন্তা, অভি জুলা।
২ সাক্রভেষ। ও প্রা, পিডিংলাক। ৪ ব্রিকোলী।
লক্ষ্ম (গ্রং) ব্যক্তি বিলেষ। (সানিনি গ্রামান্ত)
লক্ষ্মক, মন্ধের লাতা। পূর্ণ নাম আগ্রারণ (বিকারীক)

লক্ষটকটা (জী) > অংকণ রাজনের মাজা ও বিদ্যাৎকেশের কজা।
(রামারণ গাঙাংও) ২ বছ্যার কজা।

লক্ষা (জী) সমভেৎতামিতি রম্ বাহলকাং কঃ মুক্ত লকং (উণ্ এ৪০) টাপ্। রকঃপুরী, রাবণের রাজ্য।

লোভিংশান্তমতে এই কথা পৃথিবীর মধ্যভাবে ক্ষান্তিত। "কথাকমধ্যে বমকোটিরভাং প্রাক্পশ্চিমে রোমকপঞ্জনক : কথাততঃ কিছপুরং সুধেককোইবাহও বাব্যে বড়বানকভাগ

(বিদ্বান্তশিরোমণি)

অনিপ্রাণে লিখিত আছে বে, স্বাপ্রী ত্রিংশং বোজন বিত্তীর্ণা, এই পুরীর প্রাক্তার সক্ষণ অবলিস্থিত। দক্ষিণসকুত্রের তীরে ত্রিক্ট-নামে একটা পর্বাভ আছে, ঐ পর্বাভের নিখরে মধ্যম সমুদ্র সমীপে কটা বছনিম পরিভ্রম করিরা ইপ্রের জন্ত এই পুরী নির্দাণ করেন। এই পুরীতে পক্ষিণ্যও গামম করিতে সমর্থ মহে। রাজস্যাণ অবে এই পুরীতে বাস করিত। রাজসেরা অনুরাষতী সমুদ্র এই স্কান্যারী প্রাপ্ত হইরা ভ্রানিক হুরাধর্ব হইরাছিল।

"বিংশন্বোজনবিতীর্ণাং স্বর্ণফোলারভোল্পান্ ।
দক্ষিণভোলবেতীরে বিজ্টে নাম পর্কতঃ ।
দিখরে তত্ত শৈলত মধ্যমান্থিস্টিথেনা ।
শতবিভিন্ন ছল্লাপাং টকছিলাং চত্র্কিশ্ন্ ।
শতবিভিন্ন ছল্লাপাং টকছিলাং চত্র্কিশ্ন্ ।
শতবিভিন্ন ছল্লাপাং টকছিলাং চত্র্কিশ্ন্ ।
শতবিভিন্ন ছল্লাপাং ব্যবহাধ বছবংসলৈঃ ।
বসক ভত্ত হর্জবাঃ স্থাং লাক্ষ্যপূল্লাঃ ।
দক্ষাদ্র্গাং সমাসাক শত্ত্ব্পাং শত্ত্বপ্রনাঃ ।
ছরাংবা ভবিবাভি রাক্ষ্যসূবীভৃত্তিরু গোঃ লা

(अधिग्• क्लिननर्गन नाबाशास)

রামারণে দিখিত আছে বে, বিজ্পানাগরের তীরে জিক্ট নামে একটা পর্কত আছে, তাহার নিখরে সমরাবাতীর প্রার বিশালা লভানানে একটা পুরী আছে। ঐ রম্পীরা পুরী ছেরমর প্রোকার ও পরিধার পরিবৃত এবং ভোরণ সক্ষল ক্ষর্প ও বৈদ্ধান্দিরার রচিত ও সকল স্থান বর্ত্তসমূহ অসজিত। রাজ্জনিবার রচিত ও সকল স্থান বর্ত্তসমূহ অসজিত। রাজ্জনিবার বাসের জন্ত বিশ্বকর্ত্তী অভি বন্ধসহতারে এই পুরী নির্মাণ করেন। রাজ্সগণ এই পুরীতে বাস করিরা অভিশর হর্ষ্কর্ব হইরাহিল। পরে বিক্লুর ভরে রাজ্সগণ এই পুরী পরিত্যাগ করিরা পাতালে আল্লর গ্রহণ করে। ক্ষিতুদিন এই পুরী রাজ্তসভূচ ক্ষর্পার থাকে।

পরে কুলের বিশ্রবার আবেশে লকাপুরীর অধীবর হটরা তথার অবস্থান করিছে থাকেন। পরে রাশ্ব ক্ষন তপোবলে বলীবান্ হটরা উঠিল একং জাবিছে পারিল ছে লকাপুরী আমাবের পুর্কাশিকুশ্বরের নিবালকুরিও প্রথম রাবণ এই পুরী ছাড়িরা দিবার জন্ত কুবেরের নিকট এক দৃত প্রেরণ করেন। কুবের রাবণেব্র ভরে ঐ পুরী ত্যাগ করিরা যাইলে রাবণ লভার অধীশ্বর হন। (রামারণ উত্তরকা•)

[त्रावग (तथ !]

'উপনিৰেণ' শক্তে লছার বর্তনান অবস্থিতি নিরূপণ করিবার জন্ত বংকিছিং প্রেরাণপ্রেরোগ উদ্ভ করা হইরাছে। রামচন্দ্র কপিনৈক্ত সলে লইরা সীতা উদ্ধারের জন্ত লছার গমন করিয়া-ছিলেন। নেই লছা কোখার ? তাহার বর্তমান নাম কি ? সেই লভাপ্রীর উৎপত্তি এবং তাহার প্রাচীন ও আধুনিক ইতিহাস সম্বাদ্ধে নিরে ব্যাসন্তব প্রমাণ উদ্ভ ভ ইল ;—

বর্ত্তমান দেশীর ও বিদেশীর ভৌগোলিকগণ একবাক্যে বলেন, এখন বাহাকে আমরা সিংহল বা সিলোন বলি, ভাহারই প্রাচীন নাম লকা। কিন্তু এই সিভান্ত সক্ষত বলিরা বোধ হর না। অতি পূর্ব্বকাল হইতেই আমাদের পুরাণাদি-শাস্ত্রকারণ লক্ষা ও সিংহলকে গুই শুভর বীপ ব্লিরাই জানিতেন। মহাভারত ও পুরাণাদিতে ভাহা বিশেবভাবে বর্ণিত আছে।

"সিংহণান্ বর্কারান্ ক্লেছান্ যে চ লছানিবাসিন:।"

चर्याः तिःश्नारेन्टव ७०॥ काकीनिवानिनः ॥" २०

মুহাভারত বন ৫১ জঃ, ২২ শ্লো°। "লম্বা কালাজিনাশৈতৰ শৈলিকা নিকটান্তথা ॥ ২০

মার্কণ্ডেরপুরাণ ৫৮ অধ্যার।

এতত্তিম ভাগৰত ৫।১৯।৩°, বৃহৎসংহিতা, ১৪।১৫, প্ৰাভৃতি প্ৰাচীন গ্ৰাছে লকা ও সিংহল চুইটী স্বতত্ত্ব দীপ বলিয়াই উল্লিখিত হইয়াছে।

রামারণে দকিণদেশীর স্থানাদির উল্লেখকালে লিখিত আছে—
মলর পর্কতের পরে ভাদ্রপণী নদী, এই নদী সাগরে মিলিভ
হইরাছে। এই নদী উদ্ভীর্ণ হইরা পাঞ্ডানগর, এই নগরের
পুরছার স্থবনির্দ্ধিত। পরে সাগরের নিকটে উপস্থিত হইবে,
সমুদ্র পার হইরা সাগরের মধ্যে অগন্তানিবেলিভ মহেক্স পর্কাত
ছেখিতে পাইবে। অপর পারে শত্যোজন-বিশৃত অতিশর
ক্রাস্থ্য একটি দ্বীপ আছে, এইধানে রাবণ বাস করে।
ব্যান্ত

মলব্রত মহৌজস:॥

ক্রক্যথানিত্যসভাশমগন্ত্যস্থিসভ্ষম ।

তত্তেলাভ্যক্তকাতাঃ প্রসমেন মহান্দনা ॥
ভামপর্নীং প্রাহক্তাং ভরিবাধ মহানদীম ।
না চন্দনবনৈন্দিটক্রঃ প্রাক্তরহীপধারিশী ॥
কান্তেব যুবতী কান্তং সম্ভ্রমবগাহতে ।
ভত্তো হেমমবং বিবাং মুক্তামণিবিভূষিকম ॥

যুক্তং কণাটং পাঞ্জানাং গভা দ্রক্ষাথ বানরাঃ।
ততঃ সমূল্রমাসান্থ সম্প্রধার্যাথনিশ্চরম্ ॥
অগত্যেনান্তরে তত্র সাগরে বিনিবেশিতঃ।
চিত্রসান্থনগঃ শ্রীমান্ মহেলঃ পর্কভোত্তমঃ ॥
আতরপময়ঃ শ্রীমান্ অবগাঢ়ো মহার্ণবম্।
বীপক্তভাপরে পারে শতবোজনবিত্তঃ ॥
তত্র সর্কান্থনা সীতা মার্গিতব্যা বিশেষতঃ।
তে হি দেশান্ত বধ্যক্ষ রাবণক্ষ হুরান্থনঃ।"

किकिकाकाख १० मः। ১६---२६ स्राः। মলর পর্বতের বর্তমান নাম পশ্চিমঘাট, এই পর্বতের বে ত্বান হইতে তাম্রপণী উৎপন্ন হইরাছে, সেই ত্বানকে এখনও অগস্তানি বলে। (Caldwell's Dravidian Grammar. Intro.p.48) ভাশ্রপণা নদী ভিনবেলী প্রদেশের মধ্য দিয়া সাগরে মিলিভ হইরাছে। এই নদীর ভীরে সমুদ্রের নিকটে বে পাণ্ডানগর স্থাপিত ছিল, ভাহাকে প্রাচীন আরব্য ও গ্রীক ভৌগোলিকগণ 'কোলকে' ও 'কোএল' এবং নিকটস্থ সাগরকে কোলজিকদ্ 🛊 বলিতেন। সমুদ্র পার হইয়া মহেন্দ্র পর্কাত। ইহাই সিংহল বীপের বর্তুমান মহিস্তল পর্বত বলিয়া বোধ হয়। বে সমরের কথা লেখা হইতেছে, বোধ হয় তৎকালে তামপ্রী নদী-প্রবাহিত ভূমিথও দক্ষিণাংশে আরও অনেকটা বিহৃত ছিল। এই নদী অভিক্রম করিয়াই সিংহলছীপে যাইতে হইড, এজন্ত সিংহলদ্বীপকে পৌরাণিককালে তামপর্ণ বলিত। গ্রীলের প্রাচীন পুরাবিদ্গণ বলেন, পাণ্ডানগর মৃক্তা আহরণ জন্ম প্রসিদ্ধ ছিল। কিন্তু মহাভারতের মতে, সিংহলছীপে লোকে মুক্তা আহরণ করিত। রাজস্ব-যজ্ঞকালে সিংহলদীপের লোকেরাই রাজা যুধিষ্টিরকে মুক্তা উপহার পাঠাইরাছিলেন।

> "সমুদ্রসারং বৈদ্ধ্যং মুক্তাসজ্যান্তবৈব চ। শতশশ্চ কুথাংক্তত্ত সিংহলাঃ সমুপাহরন্ ॥"

> > मणां शर्व ६३। ७७।

রামারণেই আবার অপর স্থানে লিখিত আছে, হন্মানাদি
বানরগণ সীতাবেবণ করিতে করিতে দক্ষিণদেশ অতিক্রম
করিরা এক অক্তাতপূর্ক পর্কতগন্ধরে উপস্থিত হয়। এই স্থানের
নাম ঋকবিল। ইহার চারিদিকেই ছর্গম পর্কতেজনী। বানরগণ
এইস্থানে আসিরা ক্লান্ত ও পথনান্ত হইল। (তাহারা পূর্কে
স্থানীবের নিকট তনিরাছিল, মহেন্দ্র পর্কতের পরে, সমুদ্রের
পরপারে রাবণনিবাস লছাবীপ; ক্লিক্ত এই স্থানের বিবর তাহারা
পূর্কে কথন অবগত হর নাই।) অনেক অমুসন্ধান করিতে

[•] स्थानिकम् नानरतत पर्वनान नाव मात्रात छेननानतः (Lassen.)

করিতে এই ভয়ত্বর গহার মধ্যে এক বোজন গ্রানের পর তাহারা এক রমণীর ছাল দেখিতে পাইল। সেই হালে নীল, বৈদ্ধা মণি ও পরিনী সকল পতজ্পলে পরিয়ত রহিয়াছে, রজত ও কাঞ্চননির্মিত বিমানসকল শোভা পাইতেছে, মৃক্তা-জালে সমার্ত স্থবর্ণবাক্ষয়ক্ত হেম ও রজতনির্মিত গৃহসকল বিজ্ঞমান রহিয়াছে (ইত্যাদি।) তাহারা জনতিদ্বে একজন তপ্রিনীকে দেখিতে পাইল। এই তপ্রিনীর নিকট হইতেই সকলে জানিতে পারিল.—

"ময়ো নাম মহাতেজা মান্নাৰী বানরর্বন্ত।
তেনেদং নির্দ্মিতং সর্বাং মার্ব্রা কাঞ্চনং বনম্॥
পুরা দানবমুখ্যানাং বিশ্বকর্মা বভূব হ।
স তু বর্বসহস্রাণি তপত্তথু। মহাবনে ॥
পিতামহাদরং সেভে সর্বামেশরক্তদা ॥
উবাস স্থিতং কালং কঞ্চিদ্মিন্ মহাবনে।
তমপ্রসি হেমারাং সক্তং দানবপুলবম্॥
বিক্রম্যোশনিং গৃল্ল জ্বানেশং পুরক্ষরং।
ইদক্ষ ব্রহ্মণা দ্বং হেমায়ৈ বনমুক্তমম্॥
"

মহাতে জা মারাবী ময়দানব মারাবলে এই কাঞ্চনমর বনভূমি
নির্দ্ধাণ করিয়াছেন। তিনি পূর্ব্বে দানবদিগের বিশ্বকর্মা ছিলেন।
তিনি এই মহাবনে সহত্রবর্ধ তপতা করিয়া পিতামহ এক্ষার
নিকট হইতে বরস্বরূপ ঔশনস-রচিত সর্ব্বপ্রকার শিরাশাত্র
লাভ করেন। এইরূপে তিনি সর্ব্বশক্তিসম্পন্ন ও স্বস্ত ভোগ্য
বিষয়ের ভোকা হইয়া কিছুকাল স্থাধে এই বনে বাস করেন।
সেই সময়ে হেমা নামী ক্ষাপরাতে আসক্ত হওয়ার দেবরাক্

ইক্স বন্ধ দারা তাঁহাকে নিহত করিয়াছিলেন। তৎপরে একা

किकिशा ६२ मः । > --- > ६ त्रा ।

ক্রেমাকে এই অমুত্রম বন প্রাদান করেন।

মহাবংশ নামক পালিগ্রছের মতে সিংহলগীপের একটি বিভাগের নাম ময়। বর্জনান আদমপুল বা প্রীপাদলৈল ও তরিকটয় হান ময়রাজ্যের অন্তর্গত বলিয়া অনেকে অসুমান করেন। (Tennent's Ceylon, Vol. I. p. 337 n.) বলিও মহাবংশে সিংহল, নাগদীপ ও তাত্রপর্ণ এক দ্বীপের পর্বাার বলিয়া উলিখিত হইরাছে, কিন্তু এই বৌদ্ধাত অনেকটা অসলত বলিয়া বোধ হয়। কারণ প্রথমেই মহাবংশপ্রণেতা সিংহল এই নাম কুইরাই পোল বাধাইরাছেন। তিনি বলেন, পুর্বে এই হ্বানের নাম সিংহল ছিল না, বলরাজকুমার বিজয়-সিংহ এই দ্বীপ এর করিলে তাঁহারই নামাস্থারে এই হ্বানের নাম সিংহল হিল না, বলরাজকুমার বিজয়-সাহে এই দ্বীপ এর করিলে তাঁহারই নামাস্থারে এই স্থানের নাম সিংহল হিল না, বলরাজকুমার বিজয়-সাহে এই বাণ এর করিলে তাঁহারই নামাস্থারে এই স্থানের নাম সিংহল' হয়। বিশ্বত স্থান বল্প স্থান বিজ্ঞান স্থান বলিছেল' হয়। বিশ্বত স্থান বল্প স্থান বলিছেল পুর্বের বলিছেল পুর্বের বলিছেল পুর্বের বলিছেল পুর্বের বলিছেল স্থান বলিছেল' হয়। বিশ্বত স্থান বলিছের স্থান বলিছেল পুর্বের বলিছেল স্থান বলিছেল হয় বলিছেল স্থান স্থান বলিছেল স্থান স্থান বলিছেল স্থান বলিছেল স্থান স

স্থানকে সিংহল বলিত, ভাহা লহাভারতের অনেকস্থলেই উক্ত ইইরাছে। এ ছাড়া ভারপর্ণ (সিংহল) ও নাগরীপ বে চুইটি বতর, ভাহা সকল পুরাণ পাঠেই লানা বার।

ন্নাম কণিনৈত লক্ষে লাগরতীরে উপনীত হইবার পর নল ১০০ বোজন পরিমিত লেড় নির্দাণ করিরাছিল। ইহাতে জানা বাইতেছে, সেই সমুদ্রতীর ধইতে লয়ায় বেলাভূমি ১০০ বোজন অর্থাৎ ৪০০ জোল।

ক্ষেত্র বিশেল, রামেশ্বরীপ হইতে সেড়ু আরম্ভ হইরাছিল, এবং বর্জমান আদন্দ ব্রিক্তেই কেছ কেছ নল-নির্দ্ধিত সেড়ু বলিরা উল্লেখ করেন। কিছু উহা আধুনিক গোকদিগের করনামাত্র। রামেশ্বর বীপ হটতে নলসেড়ু হইতে পারে, কিছু বর্জমান আদন্দবিরক্তক আমরা নলসেড়ুর নিগলন বলিতে প্রস্কৃত নহি। যে সকল সত্ত্বীপ রান সেই মলসেড়ুর প্রস্কৃত্বও বলিরা অবনা বেলেপাথর (Sandstone) মাত্র। ভূতত্ববিদেরা পরীক্ষা করিরা দেখিরাছেন, ঐ খণ্ড সকল নিতান্ত আধুনিক সমরে গঠিত। (Ouden Nieuw Oost Indien, Ch. XV. P. 218.) ইছার নিকটেই সমুদ্রের ক্ষত্নলিল মধ্যে বিত্তর প্রবাদ দেখা যায়। কালে প্রবাদসমূহ ঐ খণ্ড সকলে মিলিত হইরা বীপাকারে পরিণত ছইবে।— জনেকের মতে পূর্কে সিংহলরীপ ভারতবর্বের সহিত মিলিত ছিল। বিশেষতঃ বর্জমান রামেশ্বর বীপ হইতে সিংহলের বেলাড়মি > ০ যোজন নহে।

খুঁটার ৫ম শতাব্দে পালিগ্রন্থ মহাবংশ প্রথম রচিত হয়।

ঐ মহাবংশের মতে সিংহলের অপর নাম লছা। কিন্তু ঐ
সমরে (খুটের সপ্রম শতাব্দীতে) প্রসিদ্ধ চীনপরিব্রাক্ষ
হিউএন্সিরাং সিংহল-বীপে গমন করেন। তিনি সিংহল
বীপকে ললা বলেন মাই। তিনি লিখিরা গিরাছেন—"সিংহল
বীপের দক্ষিণ-পূর্ব্ধে একটি পর্বত আছে, ঐ পর্বতকে লোকে
ললা বলে। সেধানে যক প্রভৃতি বাস করে।" স্থতরাং শীকার
করিতে হইবে বে, হিউএন্সিরাংএর সমরেও সিংহল-বীপকে
কেহ কেহ ললাকীপ বলিত না। সিংহল-বীপের স্বন্ধর দক্ষিণ-পূর্বে
ললা নামে একটি সামান্ত পর্বত থাকিলেও সমরা সিংহলকে
আমরা রামারণোক্ত ললা বলিতে পারি না। সিংহলে ললাপাহাড় আছে গুনিরাই কেহ যদি সিংহলকেই ললা বলিতে চান,
তাহা হইলে অনেকে কান্মীরের অন্তর্গত লক্ষ্য বীপকে জনারাসেই
রাবণের ললা বলিতে পারেন। ও কেবল একটি নামের মিল
পাইলে প্রাচীন জনপদাদির অবস্থিতি নির্মণিত হুইতে পারে

J. A. S. Bengal, Vol. XXXV., pt. i. p. iii,

না । নেই নেই স্থানের স্কৃতন্, চকুংগীকা ও উৎপন্ন দ্রন্যাদির সহিত কর্মনান নির্দিষ্ট স্থানাধিক স্কৃত্ত্বাদির সৌনানৃত হইলে তবে সেই নেই আটীন ক্ষমপথানিত স্কৃত্ত্বটা সন্ধান পাওৱা বাইতে পারে।

আমরা গড়া-সহকে পুর্বেই বনিরাহি বে, আমাদের প্রাচীন নারীর মভাছনাত্ত কভা ও কিংবল ছুইটি খড়র বীণ। এখন বেখা বাউক, কোন স্থানকে আমরা লভা বনিতে পারি।

শ্বিশ্বাদে বিৰিত আনে—

ত্তিপৰ্বাদ্ধৰিকীৰ্নাং অৰ্থপ্ৰাকাৰতোৱণাম্।

বিশ্বাদ্ধান্তানবেতীৰে ত্ৰিক্টো নাম পৰ্কতঃ ।

শ্বিশ্বে তত শৈক্ষ বধ্যমেংবৃধিসন্তিধা।

শক্তিভিক্ত চুল্লাপাং টকজিলাং চুক্ৰিন্ম্॥

শক্তাৰ্থং মংকৃতা পূৰ্বাং প্ৰবন্ধান্বহ্বংমন্তিঃ।

ৰসৰ তত্ৰ চুৰ্মবাঃ অ্থং রাক্ষসপুস্থাঃ ॥"

বন্ধিশ সাগরের তীরে ক্রিকুট নামক পর্মত আছে সেই পর্মতের মধ্যম শিখরে সাগরের নিকটে ৩০ বোজন-বিজীপা অর্থ-আকার ও ভোরণাদিশোভিত সভাপুরী। এই পুরী পশ্দি-দিখেরও ছর্গম। পুর্মকাণে ইলের জন্ত বহু বংসর ধরিরা কহনতে আনার (বিশ্বকর্মা) বারা নির্মিত হইরাছে। হে ছর্ম্মর্মকরণ। সেই হালে অধে বাস কর।

রামারণেও নিখিত আছে,—
"বন্দিণজোনথেতীরে ত্রিকৃটো নাম পর্যকঃ॥ ২২
ক্ষেত্রতা ইতি চাপাজে। খিতীরো রাক্সনেখরাঃ।
শিখরে ততা শৈলত মধ্যমেংকুদসন্নিতে ৪ ২৩
শক্তরেরণি প্রতাপে উছচ্চিত্রে চতুর্দিশি।
কিংশন্যোজনবিতীর্গা শত্যোক্সমারতা ৪ ২৪
ক্রিয়াকারসংখীতা হেমতোরণসংবৃতা।
নরা লভ্ডে নগরী শত্রাক্সরেরন নির্মিতা ৪" ২৫

(উত্তরকাও ধ্য নর্ব ৷)

হে রাক্ষনগণ। বন্ধিপ্লাগরের তীরে ত্রিকৃট নামক পর্বত এবং জাহার মত আর একটি হুবেল নামক পর্বত আছে। সেই লৈলের মধ্যম শিশর দেখনলুল, বিশেবতঃ পাষাণ সকল চারিনিকে বিকীপ হওরার, উহা পকীদিগেরও হুর্গম। আমি (বিশ্বকর্পা) সেই শিখরে ইন্দ্রের আহেশে লছা নির্দ্ধাণ করিরাছি, ঐ নগরী ত্রিশবোক্ষমবিত্তত, এক্ষমত বোক্ষম আরত, স্বর্ণপ্রাকার-শোভিত এবং হেমমর ভোরণে পরিবৃত্ত।

আবার অপর হানে জিখিত আছে,— শনিধনত ত্রিকৃটত প্রাংও চৈকং দিনিস্পূন্য। সমস্তাৎ পুশনংক্রমে মহারজতসন্থিতম্ । चंकरवाकमिकीर्गः विभनः ठाक्षणम्म ।
निविद्धाः कम्म मिक्दः नक्षाः द्वावगणानिकाः ॥
नगरवाकमिकीर्गः किराम्हरवाकमभावकाः ।
मा भूतिः भाष्ट्रदेवकरेकः भाष्ट्रदाष्ट्रमितिरकः ॥
मकाकरमकः भारतमः द्वावरकन ६ स्थावरकः ।
व्यामारिकः विवारमञ्जा नवा नदमक्षिक। ॥

(नकाकाक ०३ मर्न ।)

যাহার মহোচ্চ শিখর আফাল লার্ল করিরাছে, সেই ত্রিক্ট-পর্বাত পুলাসমাজ্য বস্তবার জ্বর্ণনর বলিয়া বোধ বইয়া থাকে । সেই গিরি শতবোজন শিল্পীর্ণ বিষদ চাক্ষর্শন, ভাষারই শিখরে রাবণপালিতা লঙ্গাপুরী। সেই লঙ্গাপুরী বশবোজন বিত্তীর্ণ এবং বিংশতিবোজন আয়ত। সেই নগরী পাঞ্রবর্ণ মেবসদৃশ স্থবর্ণ ও রজত প্রাসাধ এবং বিমানসমূহে বিভূবিত।

রামারণের মতে লক্ষার নির্মিণিত উদ্ভিদ্ কল্কে---"চম্পকাশোকবকুলশালভালসমাকুলা ।
ভমালপননক্রের নাগমালা-সমাবৃতা ॥
হিস্তালৈরক্ট্নেনীপৈঃ সন্তপশৈঃ অপুন্দিতেঃ ।
ভিলকেঃ কর্ণিকারৈক্ত পাটলৈক সমস্তভঃ ॥"

(লম্বাকাও ৩৯ দর্গ।)

চল্লক, অনোক, বকুল, শাল, ডাল, ডমাল, পমল, নাগ-কেলর, হিবাল, অর্জুন, কমদ, সপ্তপর্ণ, ডিলক, কর্ণিকার ও লাটলঃ

ভাষরাচার্য্য লিখিয়াছেন,---

"লভাপ্দেহক্স বদোদর: তাং
তথা দিনার্ছং বদকোটপ্র্যাস্।
অথকা সিভপ্রেহজাল:
তালোমকে রাত্রিগলং তবৈব ॥
বংগাজরিভাঃ কৃত্তুর্গতাবে
আচ্যাং বিশি জাল্ বনকোটরেব ।
ভতত পশ্চার ভবেববতী
গাকৈব ভতাঃ কক্তি প্রভীচ্যাম্॥"

গোলাখ্যার ৩/৪৪--- ৪৩ /

বধন পদার ক্রোদর কর, তবন (তারার নক্ষই জংশ পূর্কে) করবোটতে বধ্যাক, নিরপুরে প্রেম্যাক এবং রোমকশন্তনে বিশ্বকর রাজিকান। বনকোটি উজ্জিনীর ঠিক পূর্বে নক্ষই সম্পাংশ বুরে অবস্থিত, আবার গরা প্রমান্ধাটির ঠিক পশ্চিমে, উজ্জিনিনী পশ্চিমে নর।

२० **सम्प्रताताः वृत्तवित्ता-४००० गर्कः वृद्धारस्य ७००० वाद वाद्य १** १५ - १९५० _व्य १९७० व्यापः । १९७० "বট ্তিংশত সহস্রাণি সন্ধানেশঃ প্রকীর্তিত।" শানার (কুমারিকার্থত ৩৭ আবার)
কুর্যাসিদ্ধান্তের মতে—"লভা ভারতবর্ধের একটি নগর।"
(কর্মিদ্ধান্ত ২২। ৩৯)

ব্রদাওপুরাণের মতে—ববরীপের পর মসরবীপ, এই মসর নামক বীপের অন্তর্গত পর্যাতের সাহুদেশে সভাপুরী।

"তথাচ মলর্মীপং মেরুমের স্থানাম্বর্জন। মিলির্যাকরং ক্লীতমাকরং কমলন্য চ । আনেকবোজনাবিত্তে চিত্রালাম্বর্দ্ধীপৃত্ত। তদ্য কৃটতটে রম্যে হেমপ্রাকারতোরকে । নির্যাহরহবিচিত্রা হর্ম্মপ্রানাম্বাদিনী। শতবোজনবিত্তীর্ণা ক্লিংশদ্বোজনমারতা । নিত্যপ্রমৃদিতা ক্লীতা লল্ভা নাম মহাপুরী। না কামরূপিণাং স্থানং রাক্সানাং মহাস্থনাম্। আবানো বলদ্বোনাং তিছিল্যাক্রেবিহিবান্। শি

(ব্ৰহ্মাণ্ডে অকুবছপানে ৫৩ জ:।)

সাধারণে লছাকে স্বৰ্ণনছা বিনিয়া থাকেন। রামারণে এক-স্থানে লিখিত আছে,---

"বদ্ধবস্তো বৰধীপং সপ্তরাজ্যোপশোভিতম্। কুৰৰ্ণনপ্যক্ষীপং কুৰ্ণকরমণ্ডিতম্॥" কিঃ ৪০।৩০

উক্ত প্লোকের বারাও জানা বাইতেছে, বববীপের কাছেই স্থবর্গ ও রূপ্যক্ষীণ। অতএব একাওপ্রাপের সহিত রামারণের বিশেষ ঐক্য হইতেছে।

স্ব্যাসিদাকে লক্ষা ভারতবর্বের একটি নগর বলিরা উদ্লিখিত হইয়াছে। পূর্বকালে ভারতমহানাগরীর বীপগুলিও ভারতবর্বের মধ্যেই গণিত হইত। ব্রহ্মাণ্ড প্রভৃতি পুরাণে লিখিত আছে,—

শক্তন্ধনীপং যবদীপং মলর্থীপমের চ।

শৃক্ষানীপং কুশারীপং বরাক্ত্রীপমের চ॥ ১৪

এবং বড়েতে কবিতা অক্ত্রীপাঃ সমস্ততঃ॥ ৪১॥
ভারতন্ত্রীপদেশে বৈ হক্ষিণে বছবিস্তরঃ।"

(ব্রহ্মান্তপুরাণ ৪৮ জঃ)

অতএৰ ব্ৰদ্ধাঞ্চপুরাণের মতাত্মসারে মদরবীশের অন্তর্গত দহাপুরী বলিলে, পৌরাশিক মতে তাহা ভারডবর্ব ছাড়া নহে। ভুতরাং পুর্যাশিদ্ধান্তের সহিত অনৈক্য হইতেছে না।

হবহীপকে এখন সকলে "বাবা" বনিরা থাকেন। ভারতবহা-সাগরে এই বাগটীর অবস্থিতির বিবর অনেকেই অবগত আছেন, • তাহা বলা অনাবশ্রক।

তবে ব্ৰহীণের নিকটেই দে লভা ছিল, তাহার কতকটা আভান পাওরা বাইতেছে। আবার ক্রমাঞ্গুরুণ নির্দেশ ক্ষিতেতে, সভাপুনী মসরবীশের অন্তর্গতী। একনে পূর্ক-উপবীপের অন্তর্গত ভামদেশের সক্ষিপত্তিত বিত্তীপ কৃষিণওতে মসর
আন্নোদীশ বলে, উহা বববীপের পশ্চিমে: অবস্থিত। এখানকার
মসরকাতির প্রাচীন ইতিহাস পাঠে জানা বার, ভাহাজা ক্ষানা
বীপত্ত মেনভাব নামক ভানে পূর্কে থাকিত, উহা ভাহাদের আদিবাসভান এবং ঐ ভানকে ভাহার মসর বনিক। ১

এই নগৰজাতির ভাষা এখনও সুমাত্রা প্রভৃতি বীপ ক্রতে আট্রেনিরা এবং পশ্চিমে মালাগাভার পর্যান্ত প্রচলিত রহিরাছে।। ভারতমহানাগরের বীপনমূহে প্রার এক ভাষা প্রচলিত থাকার সহজেই বোধ হর এই নগরভাবী জ্লি দেশীর বিভিন্ন জাভিগণ পূর্বে একলাভি হিল, কেহ অসভ্যাবভার থাকিরাও কালক্রমে সভ্য হইরাছে, কেহ বা সভ্য হইরাও প্লরার অবস্থাতেকে নিতাত অসভ্য হইরা পঞ্চিরাছে।

এই মলরভাবী আভিগণ দক্ষা বা রাজস আভি বলিরা রামারণাদিতে উক্ত হটরাছে। এখনও ম্বনীপের নিকটবর্তী স্লোরিসবীপে এক প্রকার করাকার ভীবণ রুক্তবর্ণ অসভারাতি বাস করে, ই ভাহাদের সক্ষদকেই রক্ত হু বলিরা থাকে। ভাহাদের অভাবও রাজ্পদের মন্ত। এ বীপের মধ্যেই লরাক্তক নামে একটা নগর আছে, এই নামটিও সংস্কৃত নরাক্তকর্মী পজের বিক্তত পাঠ বলিরা সহকোই অস্থমিত হর। এই এইশিপের নিকটেই এখনও রাম, লক্ষণ, নীল ও মল প্রেক্তি রামারণোক্ত বীরগণের নামানুসারে করেকটি ক্ষুদ্র ক্ষুত্র বীপও রহিরাছে।

বাহা হউক একাওপুরাণের মতাত্মসালে বীক্ত হইতেছে মদরের মধ্যেই লভাপুরী। রামারণের মতে, এই মদরের নাম ক্ষরণ-বীপ, উহার বর্তনান নাম ক্ষরাত্রা।

বর্তমান মানচিত্রে দেখিতে পাই, জ্মাত্রা বীপের উত্তর পূর্মাংশে পর্বতের সাহদেশে ও সমূদ্রের নিকটে 'বোলীলংকা' নামক একটি নগর রহিরাছে, উহা "অর্ণলভা" শব্দের অপপ্রংশ বলিয়াই বোধ হর। আবার এই বীপের অন্তর্মীতী হীরক অন্তর্মীপের (Diamond Pt.) নিকট একটি বৃদ্ধরকে এখনও

Crawfurd's Indian Archipelago, Vol II. p. 871-2
আসনেশীয় প্রাচীন ভৌগোলিকস্থ এই সলগ্ৰেই Chersonosus Area
আর্থাৎ ব্যবিশ বলিতেন।

⁺ English Cyclopaedia, Vol. xi. p. 656.

[‡] English Cyclopsedis (Geography), Vol. II. p. 1045; III, 704,

⁵ সংস্থা রক্ষণাবের এক্সিড রূপ।

শ্ব সমাজক শংখার অর্থও রাজ্যার। রাজ্যার একজন সেন্শিভিত্র লামভ নরাজক ।

'গছা' বলে। এবঁমও এই বীপের উত্তরপশ্চিমাংশে কাঞ্চনগিরি
(Golden Mr.) রহিরাছে। ইত্যাদি প্রমাণের বারা
বোধ হইণেচছে, রামারণোক্ত 'লছাপুরী' অববা 'প্রবর্গনিপ'
বর্ত্তমান প্রমাত্রাধীপকে ব্রাইড। প্রমাত্রা, যবহীপ ও ক্লোরিদ
বীপের দক্ষিণপশ্চিমে প্রবাহিত বিত্তীর্ণ সমূদ্রকে এখনও এখানকার
বৃগী জাতিরা 'লছাই' সাগর বলিয়া থাকে। এতদ্বারাও লছার
কতন্টা স্থান নির্ণার হইতে পারে। বহুবার ভূমিকম্প ও আমেরগিরিয় উৎপাত প্রভৃতি প্রাকৃতিক বিপ্লবে স্নাত্রার দক্ষিণস্থ বিত্তীর্ণ
ভূতাগ লমুন্তগর্জনারী হইরাছে, প্রাচীন লছারাজ্যের সেই অংশই
লক্ষ্যত্র 'গজাই' সাগর নাবে পরিচিত হইরাছে।

বিশুও এই স্থমাত্রাধীপে হিন্দুজাতি এখনও বাস করেন না, বিশ্ব হিন্দুলিবিত মন্দিরাদির কিছুমাত্র ধ্বংসাবশের দৃষ্ট হয় না, কিংবা ইতিহাসেও লিখিত নাই, কিন্তু এমন অনেক প্রমাণ আছে, বন্ধারা আমরা মুক্তকঠে বীকার করিতে পারি যে প্রীরামচক্রের আগমনের পর হইতে ভারতবাসী হিন্দুগণ অর্ণলাভের আশার এই স্থানে আগমন করিতেন। স্থমাত্রার মধ্যস্থল হইতে প্রাচীন হিন্দু রাজগণের নানা শিলালিপি আবিষ্কৃত হইরাছে, ভাহাতেও হিন্দু-প্রাধাজ্যের যথেষ্ট নিদর্শন রহিরাছে।

এই দ্বীপে এখনও মদল, ইস্কগিরি, ইস্কগর ইত্যাদি হিন্দুক্রেকস্ক সংস্কৃত নাম নগর ও নদীবিশেবে রহিরাছে। এথন
সলরজাতি বে স্থানকে আপনাদিগের আদিজন্মভূমি বলির। গৌরব
করিরা থাকেন, পৃথিবীর অপর সকল স্থান অপেকা বে স্থানে
সমধিক স্কুবর্ণ উৎপন্ন হইত, এখনও সেই স্থানরী ভূমির নিকট
দিল্লা ইস্কগিরি নামে নদী প্রবাহিত হইতেছে। উক্ত নামগুলি
পাঠেও স্পাইই হদরক্রম হর, বে এক সমরে হিন্দুগণ এই সুমাত্রাবীপে আসিরা উপনিবেশ করিরাভিলেন।

এই ৰীপে অ্লকেশ্বর নামক:শিবলিঙ্গ বিদ্যমান আছেন।
(সহাস্তিশপ্ত ১৯১৪)

"ভবিবান্তি কলো কালে নরিপ্রা নৃপানানবা:।
তেহত স্বৰ্ণক লোভেন দেবভাদৰ্শনার চ ৪০০
নিত্যাক্রবাগমিষাতি তালু। রক্ষাকৃতৎ তরুম্ ।"১১ নাগরণও ১০জ:
যাম স্বর্গায়োচণ করিলে পর তৎপুত্র কুল লভার আগমন করিয়াছিলেন,
ভাষাও নাগরণও উলিখিও হুইলাছে। [নাগরণও ১৮৮ আ: ১০-১২
লোক দেব]। এই হুমানোর পাবেই ক্ষণ্ড নামে একটি বীপ জাতে, উহা
লাক্ষানোক ক্ষণ্ড বীপ বনিহাই অসুষ্ঠিত হয় ।

হ শাধা। ৩ শাকিনী। ৪ কুলটা। (ফেনিনী) ৫ গ্রন্থানিক। পর্যায়—করালত্রিপুটা, কান্তিকা, ক্ষণাত্মিকা। ইহার খণ—ক্ষতিকর, শীতল, পিন্তনাশক, বাতকারক ও গুরু। (রাজনি॰) লক্ষা (দেশক) কু-মরিচ। [লভামরিচ দেখ।] লক্ষালাহিন্ (পুং) লভাং দহতি তট্টোলঃ দহ-গিনি। হন্মান্। লক্ষান্ত্যিপ, ভারত মহাসাগরন্থিত একটী খীপ। রামারণোক্ত রাক্ষরপতি রাবণ এখানে রাজ্য করিতেন। [লভা দেখ।] লক্ষাথিপতি (পুং) লভারা অধিপতিঃ। রাক্ষরাজ্ম রাবণ। অর্কাক্ষানাথ, লভাইপের অধিপতি। রাক্ষরাজ্ম রাবণ। অর্কাকিৎসা ও নিবন্ধসংগ্রহ নামক হইখানি বৈশ্বকগ্রন্থ তিনি রচনা করিরাছিলেন বলিয়া প্রসিদ্ধি।

(শক্ষরত্বা) লভোপিকা পাঠও পাওরা যার।
লক্ষামব্রিচ, অনামপ্রসিদ্ধ কুপবিশেষ। ইহার ফল বা বীজকোর
'লছা' নামে প্রসিদ্ধ।

ভারতবর্ণের সমতলক্ষেত্রে, কাশ্মীরের নিয়তর শৈলমালাসমূহে এবং চক্রভাগা-প্রবাহিত উপত্যকা ভূমির ৬৫০০ ফিট্
উচ্চ স্থানেও এই বৃক্ষ উৎপন্ন হইতে দেখা যার। পর্ব্যক্ষাত
লক্ষা অভাবতঃই বেশ্ব ঝাল হইরা থাকে। কাশ্মীরের পার্বতঃপ্রদেশে ৭ প্রকার লক্ষা দেখিতে পাওরা যায়। দৈর্ঘ্য, গঠন
ও বর্ণ হারা উহাদের পার্থক্য উপলব্ধি হয়। বালালারও ৫টা
বিভিন্ন জাতীর লক্ষা জয়ে। কিন্তু পার্বতীয় লক্ষার ভার ভাহা
ঝাল হয় না। লক্ষার আক্রতি প্রধানতঃ লখা, কতকগুলি
চেপ্টা, চৌকা, ব্রক্রাকার, তীক্ষমুখ, দিচ্ছিদ্রক, মস্প্গাত্র বা
অমশ্রণ গাত্রবিশিষ্ট, বর্ণ প্রায়ই লোহিত, তবে কোন কোন
স্থানে খেত, হরিদ্রাবর্ণ অথবা লাল, সবৃদ্ধ সাদা বা হরিদ্রাবর্ণ
যুক্তও দেখা যায়।

ভারতের বিভিন্ন স্থানে এবং ব্রোপীর রাজাসমূহে লভামরিচ বিভিন্ন নামে পরিচিত। হিন্দী—মটিশ, বালক, লালমিরিচ, মর্চা, মির্চ্, গাছমিরচ্; বালালা—লালমরিচ, লভামরিচ, গাছমরিচ; ভোট—হক্ত-ক্ষমশা; কুমায়ুল—মাটিংসা-বলক; কান্দীর—মির্ক্ত-আ-বল্থন, মির্চ-বাল্থম; গুর্জন লালমিরিচ, মর্চ্; কছে--মির্চ্; মরাঠী—মির্শিলা; তামিল—মিলগাই, ম্লাগাই, মোর্র্রে, মোরাগু; তেলগু—মির্পাকর, মের্প্লাই; বলবার—কপ্-মোলেগু, ক্ষল-মেলক; ক্ণাড়ী—মেন্দিনা-কান্নি; সংস্কৃত-মরিচ্ফলম্; আরব—কিল্লিলে, অহন্ত্র; পারগু—মিল্লিল-হর্থ, পিল্পিলে-হর্থ; শিলাপুর—মিরিল, রত-বিরিশ; ব্রদ্ধ—নায়ুশি, লা-বোপ; ইংরাজী—Chilly. করানী—Poivre de Guinée, poivre du Brésil,

করণভশ্রাণে ইহাই 'কাঞ্নপাল' নামে সলরবীপের মধ্যেই উক্ত ছইরাছে। "তথা কাঞ্নলালক বলয়কালয়ক হি।" রক্ষাও ৫০ আঃ

ণ প্রশ্নেষ পর হইতে এই সভাইপে অনেকেই বর্ণনাভাশার গ্রনাগ্যন করিতেন। অব্পূর্ণের নাগর্থতোজ নির্নিধিত বচনের দারা ভাহা কছকটা অবাণিত হইতেছে ।

d' Inde. এবং অভান্ত রাজ্যে—Red pepper ও chilly ব Chilensis প্রভতি নামে পরিচিত।

উভিদ্তধের Solanneeæ বিভাগের Capsionm শ্রেণীমধ্যে বৈজ্ঞানিকেরা লক্ষাফলকে অন্তর্ভুক্ত করিয়াছেন। ইহার আত্মাদ বাল ও কটু। চৈ, গোলমরিচ প্রভৃতি বেরূপ থাড়াদির বালআত্মাদ বৃদ্ধি করিতে বাঞ্জনাদিতে দেওরা বার, সেইরূপ লভাও
রন্ধনকালে ব্যঞ্জনাদিতে বাট্না বা কোড়ংরূপে ব্যবহৃত হইরা
থাকে। এই কারণে ইহা বেণেতি মসলার মধ্যে গৃহীত হইরাছে।

উদ্ধিন্গণের বিশ্বাস—লক্ষা আমেরিকার প্রথমে উৎপর হইক। দক্ষিণআমেরিকার চিলিবিভাগে প্রথমে লক্ষা দেখা গিরাছিল, তদবধি উহার ইংরাজি নাম চিলি হইয়ছে। ইহার উৎকট কটুছ দারুণ শীতের ভায় তীত্র বলিয়াও হয় ত Chill শব্দ হইতে Chilly নামকরণ হইয়া থাকিবে; কিন্তু অধিক সম্ভব চিলিদেশ হইতে প্রথমে উহা ভারতীর দ্বীপপুঞ্জে সমানীত হয়। এই দ্বীপপুঞ্জ প্রাচীনকালে লক্ষা ও মহালক্ষা নামে প্রচারিত ছিল। সেই লক্ষাদ্বীপ হইতে উহা ভারতে আইসে বলিয়া উহা এবানে লক্ষা নামেই খ্যাত হইয়াছে। ১৬৩১ খুটান্সে Bontiu চিলি ও ব্রেজিলদেশকাত লক্ষার উল্লেখ করিয়াছেন। (Jac. Bontii, Dial. V. p. 10.) করাশারাক্ষা প্রচলিত লক্ষার নামনৃষ্টে বোধ হয় বে, গিনি, ভারত ও ব্রেজিলই এককালে লক্ষা উৎপাদনের প্রধান স্থান বলিয়া গণ্য ছিল।

১৭৮৭ খুঠান্দে মি: হোভ বোদাই প্রনেশে লক্ষা উৎপন্ন হইতে দেখিরাছিলেন। বিদেশজাত এ দ্রবা ভারতের পশ্চিমপ্রাপ্তে প্রদাণে উৎপন্ন হইতে দেখিয়া তিনি কৌতৃহল প্রকাশ করেন নাই। তৎকালে পোরা প্রদেশে যে মরিচ উৎপন্ন হইত, ভাঙা সাধারণে গোরাই-মরিচ নামে পরিচিত ছিল!

খুঁইীয় ১৬শ শতালে রুরোপে প্রথম লছার চাস হর। তাঁহারা বলেন, উহার পরবর্ত্তিকালে ভারতে লছা আমদানী, হইয়াছিল। সম্ভবতঃ পর্জু গীল নাবিকগণ ওরেই-ইণ্ডিল্ হইতে ভারতীয় খীপ-পুশ্লে ও পরে ভারতে আনিয়া থাকিবেন, কিন্তু এ মীমাংলা মুক্তিনঙ্গত নহে, কারণ যে হিন্দুগণ এক সমরে স্থমাত্রা, বব, বলি ও লছা প্রভৃতি বীপে উপনিবেশ স্থাপন করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন, তাঁহারা কি আমেরিকার সন্নিকটবর্ত্তী মহালছা-বীপলাত 'লছা' নামক এই উদ্ভিক্ষ ভারতে আনম্বন করেন নাই ? গোল মরিচের জার কটু জানিয়া তৎকালীন সংস্কৃত গ্রন্থকারগণ স্থ স্থ প্রছে উহাকে "মরিচ" আভির অন্তর্ভুক্ত বলিয়াই গ্রহণ করিয়া ভিল্লেন এবং অধিক সম্ভব গোলমরিচের জার সদ্প্রণসম্পন্ন সহে দেখিয়া উহা তৎকালে অনানৃত ইইয়াছিল। তাট বৈল্পকগ্রছে স্থারিচ নামে ইহার উল্লেখ দেখা বার। লছাখীপলাত খলিয়া

ইহা লকা বা লকামরিচ নামে পরিচিত। আঁহুর্বেন শান্তে ইহার গুণ-কোপন, বিনাহী, জর্নারিকর, জমকর, গুরুপাক, বিষ্টা ইত্যাদি। মিরিচ শক্ষ দেখ।

লভাচাসের জন্ত মৃত্তিকার বিশেব সার দিবার আবশ্রক জরে না। কোদাল বারা মৃত্তিকা থনন করির। উহা সামান্ত ভাবে সার সংযুক্ত করিলেই যথেষ্ট হর, পরে ঐ ক্ষেত্রে শ্রেণীবভ্ডাবে মেলপুরাকারে মৃত্তিকারালি উন্তোলিত করিরা তাহাতে গাছগুলি রোপণ করিতে হর। প্রথমে একস্থানে বীজ ছড়াইরা গাছ উৎ-পাদন করা হইরা থাকে। ৪ ইঞ্চি হইতে ৬ ইঞ্চি পর্যক্ত চারা বড় হইলে রোপণ করাই নিরম। চারাগুলি ১৯০ বা ২ ইণ্ডি অন্তর পুতিরা সেই ক্ষেত্রে উদ্ভমরপ জলসেক আবশ্রক এবং ক্ষেত্রে অপর কোন আগাছা না লক্ষে তবিবন্ধে বিশেষ পুটি রাখা উচিত।

উপরে লভার আতিবিভাগের উল্লেখ করা হইয়াছে। हेरबाकीए वाहारक Red Pepper वरन, छाहात्र देखानिक नाम Capsicum annuum अवर वाजानात्र छेहा नान शास्त्रविक বলিয়া প্রসিদ্ধ। স্পার একটা স্পাতি C. frutescens ইছার हेरताकी नाम Chilly, Goat pepper, Cayenne pepper, Spur peoper: এই ৰাতীয় বছার গাছগুলি ঝোপা ৰোপা এবং লছা উপয়োক্ত শ্ৰেণী অপেকা ক্ষুদ্ৰাকৃতি। বাৰ্ষালা ও উত্তরপশ্চিম প্রদেশে ইহা গাছমরিচ প্রান্ততি নামে পরিচিত: কিছ হিমালর প্রদেশে "ধর্মানি", মলরালমে "চবে-লোখোক চীনা মরিচ ও লগমের।", শিশাপুরে "বাস মিরিশ' নামে স্বাতি। দক্ষিণ আমেরিকা, বাঙ্গালা, উড়িয়া ও মান্সান্ত প্রেদিভেন্টাতে এই জাতীয় লয়া প্রভৃত পরিমাণে উৎপর হইরা থাকে। ইছাই আমাদের দেশে চীনে লকা বা প্র্যাম্থী লক্ষা বলিয়া খ্যাত। C. grossum (अंगीत नका वाजानात ७ हिन्दुहार कामताजा जडा বা কাফ্রি লক্ষা বলিয়া গ্যাত। ইহা অতিশয় ঝাল। ক্রুকেরা এই জাতীয় লছার চাস করে না। কোন কোন উজানে সংখ্য বশবভী হইরা উত্থানপালক এই লক্ষার গাছ রাণে। ইহার ফল-গুলি সিন্দারের স্থার গাড় লোহিতবর্ণ, দেখিতে ঠিক রাম্রবেগুলের মত ৷ বালের উগ্রতা দেখিরা লোকে ইহাকে কাঁচা বা ব্যঞ্জনা-দিতে দিয়া খার না। বুরোপীরগণ প্রায়ই অন্তের আচারে অথবা বীজ বাহির করিরা অস্তান্ত নদলা তন্মধ্যে পুরিরা এই লছা ভিনি-গারের মধ্যে ভুবাইয়া রাখে। বাঙ্গাগাঁর। "আমতৈল" প্রক্রতি আচারে नवा ভিজাইরা রাথে। C. minimum বা C. fastigiatum वास्त्रत छात्र कृपाकात एव वनित्रा धानी नका नार्य প্রসিদ। এতপ্রিয় বদরী ফল বা বটফলের স্থায় লালকণ ত গোলাকার আর এক প্রকার লক্ষা দেখা যার। উচ্চকে জোতে ৰোঁচ কলের নামাইলারে বুঁচিলছা বা কুলে লছা বলে। চন্ত্রমণি-লছা নাবে ছোট লছার আর একটা প্রেণী বেখা বার।

কাচা, পাকা, ওকনা ও আচাত্তে ভিজান সকল প্রকার ক্ষমই লোকে খার। ব্যঞ্জনাধির বাল ও আচারাদির গব বৃদ্ধি করিছে লভার ব্যবহার অধিক হয় ৷ বাজালার লভার কাথ হইতে (बानाध्यक्त कांत्र अन्ध्यकात समा श्राप्त हरेता थाएक । हरात স্কুৰোৰ স্কাল । স্ক্রেছেকালাড 'আন'ৰা'জেলির' সহিত ইহা মিলাইরা শ্বাইতে জিল্পন লালে। ইংলভেও লছালেবনের বর্থেট সমাদর ক্লাছে। **প্রদান লকা** চেঁকিডে কুটিরা ও জাঁতার পিবিরা পারে মার্ক্স রাজিলা বোজনে লাখিলে নই হয় না। কারি প্লাউভারের সঙ্গে এই শঙ্কারুপ ব্যবস্থাত হয়। নিয়োক্ত দৃষ্টান্ত ম্ভতে ১৮৪৮ বুটালে ইংরাজনাতির লক্ষাপ্রিরতার যথেষ্ট পরিচর भाउता याव :-- "Try a chili with it, Miss Sharpe,' suid Joseph, really interested. 'A chili ?' said Rebecca, meping. 'Oh yes ! ' . . . 'How fresh and green they look,' she said and put one into her mouth. It was hotter than the curry; flesh and blood could bear it no longer."-Vanity Fair, ch. iii.

বৈভক্তাছে লভা কু-মরিচ নামে প্রাসিদ্ধ। ইহা দীপন, ক্ষরিকর ও বলবর্ত্তক। বেদনাযুক্ত স্থানে লক্ষা বাটিয়া প্রেলেপ ब्रिटन तार्ड जान नान इटेबा फेट्रि अवः त्यस्मा नान करता। আলজিকা বাড়িলে অথবা জিকামূলে কাঁটা হইলে সেই স্থানম্বয়ে লক্ষা ঘলিরা বা টিপিরা ধরিলে উপকার দর্শে। সামরিক বা গুবিত গলকতরোগে লভাসিত্র জলের কুলকুচা অথবা কিহ্নামূলে জল রাখিরা কুলকুল করিলে কেনার উপশম হর। চিনি ও কতিলা সহযোগে লছার লোভেঞ্জন প্রস্তুত করিয়া সেবন করিলে স্থরভলদোৰ বিলুৱিত হয়। গান্ধক ও বক্তাদিগের এই লোলেঞ অতি প্রিয়। ইহা ম্যালেরিয়ানাশক ও গলগভনিবারক। কুকুরের কামডানি ক্ষতে ও সর্পদিষ্ট স্থানে লভা বাটিরা প্রলেপ मिट्रण विवसान करत । स्वांकात्राद्यार्थ (Delirium Tremens) ২০ প্রেথমাত্রা দেবনে কল মর্শে। গলক্ষতে একবোডল কলে ৪ ভাষ শভা নিম্ব করিয়া নেই জন লাগাইলে কভড়ান ওকাইয়া আইলে। পাঁচভার নারিকেলতৈলে উত্তমরূপে লছা চোরাইয়া नाशाहरम आरबामा हव। अमीर्गतारम त्रिकेनि, नदा ७ ७ है সমভাগে পেৰণপুৰ্বক ৰটিক। প্ৰস্তুত করিছা সেবন করিবে। বিস্টিকারোগগ্রন্থ রোগীকে অহিকেনমিশিত লছার কাথের সহিত হিন্দুবীক মিশাইরা শ্বর মাত্রার পাইতে বিলে উপকার कर्म। अरबहे देखिक दीशशूरक कांत्रसम्बद्ध (Scarlatina) এটরপ একটা সভার কাথ প্রস্তুত করিরা সেবনের ব্যবস্থা আছে। চা থাইবার চামচের ছই চামচ লভাচুর্ও ছই চামচ ল্বণ থলে উন্তমন্ত্রণে পেবণ করিয়া আহাত্তে এক পাইন্ট (Pint)
উন্তথ জল ঢালিয়া দিবে। ঐ জল দীতল হইলে কার্পাসবল্লে
ছাঁকিয়া ভাহাতে পুনরার অর্জ পাইন্ট মাত্রা ভিনিগার মিশাইরা
লইবে। প্রাপ্তবর্গ্তের পক্ষে চাপামের ১ চামচ প্রতি ৪ ঘন্টা
অন্তর্ম। বালকগণের বর্স ও রোগের বলাবল বিবেচনা করিয়া
নবেয়া করা কর্মব্য।

১৮১৬ খুৱাব্দে অধ্যাপক Bucholz ও Braconnot লছা (capsicum) হইতে রাসায়নিক বিশ্লেবণ ছারা Capsicin নামক একটা পদার্থ আবিদার করেন। ইহাই লছার সার বা কটুড় (acridity)। Capsiacinএর দানা বর্ণহীন Co H14 O2; ২৯° সেণ্টিং উত্তাপে গলিরা বার এবং ১১৫°C উত্তাপে উপিতে থাকে।

লক্ষারি (গুং) রামচক্র।

লঙ্কারিকা (খ্রী) পিড়িংশাক।

লঙ্কাবতার, সমস্বভন্তকত প্রসিদ্ধ বৌদ্ধগ্রহভেদ।

লক্ষাশিজ, বৃক্তেদ (Euphorbia Tirucalli)।

লক্কান্থায়িন্ (পুং) লকাবং তিঠতীতি হা-ণিনি। বৃক্ষবিশেষ, লকাসিল। (শন্ত) লকারাং তিঠতীতি। (ত্রি) ২ লকা-বাসী, বাহারা লকার অবস্থান করে।

লক্ষেপ (পুং) শহারা ঈশঃ পতিঃ। রাবণ। (ত্রিকা•)

লেক্ষেশ্বর (পুং) > রাবণ। কালাগ্রিকজ্রোপনিবৎ, প্রাকৃত কাম-ধেছ ও শিবস্তৃতি নামক তিনধানি গ্রন্থ ইহার বিরচিত বলিয়া প্রকাশ। [লাহানাথ দেখা] ২ লাহানীপত্ব শিবলিক্ষতেন।

লক্ষেশ্বরস (পং) কুঠরোগাধিকারে রসৌধধিনার। প্রস্তত-প্রশালী—পারদ, অন্ত, তাত্র, গন্ধক, হরিতাল, শিলাক্ষত্র, অরবেতস এই সকল তিন দিন মর্থন করিরা হ রতি প্রমাণ বটা প্রস্তুত করিতে হইবে। অনুপান—মধু ও ল্লত। ইহা তির ক্রিকলা, মন্ত্রিটা, বচ, পাটলা, মূলা, কট্কী ও হরিত্রাকাথ অনুপানেও সেবন করা বাইতে পারে। এই ঔবধসেবনে কুঠরোগে বিশেষ উপকার হর। (রসেক্রসারস কুঠরোগাধি) লক্ষেশ্বনারিকেতু (পং) অর্ক্রন। "লক্ষেশ্ব বারির: হন্মান্ স্কেত্রিস্ত্র সং" (ভারত ৪)২২১৪ প্লোকে নীলক্ষ্ঠ)

লক্ষোপিকা (হী) গুৰা। (শণরদা•)

লকোয়িকা (জী)পুৰা। (শক্ষরা•)

लखेबी (जी) अध्वतित अः भटकाः।

লক্ষ (পুং) লকতীতি লক্ষ-গড়ো-আচ্। ১ লক। ২ বিড্গ, জার, উপপতি। (মেদিনী)

लक्क (रामक) गरक मरमञ्जू कर्गक्रभ गरक।

লঙ্গন্ধ (খ্ং) উপগতি। কার।

লঙ্গতারাই, পার্বত্য ত্রিপুরারাজ্যের অন্তর্গত একটা গিরিশ্রেণী। ইহার প্রধান শৃল কেলপুই ১৫৮১ এবং সিম্ বাসিরা ১৫৪৪ ফিট্ উচ্চ। [লক্বাই দেখ।]

बङ्गपञ्ज, একজন প্রাচীন কবি।

বাসফুল (দেশতা) শুন্সভেদ (Lonicera quinquelocularis)।

২ জীলোকদিগের একপ্রকার অবজারতেদ, ইহা কর্পে কিংবা
নাসিকায় ব্যবহৃত হয় ও লবদ ফুলের স্থায় প্রস্তুত হয়য় থাকে।

বাসর (পারসী) লোহনির্মিত বড়লীর স্থায় বক্রাকার শলাকাভেদ। সম্দ্রবক্ষে অথবা নদীতে গোত আট্কাইয়া রাগিবার
নিমিত্ত আবশ্রুক। প্রধানতঃ ইহাতে বড়লীর ফলার স্থায় ছইটী
বা চারিটী বৃহদাকার বক্র শলাকা একক্র গাঁথা থাকে। এক
একটী জাহাজের লক্ষর ৫০।৬০ মণ পর্যান্ত ভারি হয়। ইহার
এদেশে প্রচলিত নাম লোঙড় বা নোঙর।

বাক্সরীন্, আসাম প্রদেশের থসিয়া পর্কতের অন্তর্গত একটী সামন্ত-রাজ্য। ইউ-বোর নামক একজন সন্ধার এথানকার অধিকারী।
চূণের কারবার জন্ম এথানে যে চূণাপাথর উত্তোলিত হয়, তাহার
শুক্তগ্রহণ্ট ইহার প্রধান রাজস্ব। ধান্ত, ছোলা, লল্প ও হরিদ্রা
এথানকার প্রধান ক্ষিজাত দ্রব্য। এথানে কয়লার থনি আছে।

লক্ষল (ক্লী) > লাকল। ২ লাকল নামক জনপদ।

লক্ষাই, আসামের প্রীহট জেলার অন্তর্গত একটা নদী। আসামসীমার বাহির হইতে উত্তুত হইয়া প্রথমে উত্তর ও পরে উত্তরপূর্বগতিতে পার্বতা ত্রিপুরা ও লুদাইশৈলের মধ্য দিয়া এই জেলার
মধ্যে আসিয়া পৌছিয়াছে। এখানে দক্ষিণপূর্বাতিমুখে প্রবাহিত
হইয়া করিমগঞ্জের নিকট শরমা বা বরাক নদীয় কুলায়ারা শাপায়
মিলিত হইয়াছে। এই নদীয় উভরকুলে জায়ল (Lagerstræmia Flos-Reginæ) ও নাগেশ্বর (Mesua ferrea) রক্ষের
বন আছে। এই বনভাগের একস্থানে গবর্মেন্টের হাতী
স্বিবার ধেদা আছে।

লঙ্গিম, লঙ্গিময় (তি) শংবোগের উপযুক্ত। লঙ্গুল (ফ্লী) লাস্থা। (উজ্জ্বা)

লক্ষু লিয়া, দক্ষিণভারতের মধ্যপ্রদেশ বিভাগে প্রবাহিত একটা নদী। সংস্কৃত নাম লক্ষ্য এবং তেলগু ভাষার নাওল নামে ক্ষিত। গোগুবানা পর্কতের কালাওী নামক স্থানের নিকট হুইতে উম্বৃত তিনটা পার্কতা কলধারার সন্ধ্য হুইতে এই নদীর উৎপত্তি। অনস্তর দক্ষিণপূর্কাভিমুখে ক্ষয়পুর রাজ্যের মধ্য দিরা প্রবাহিত হুইরা মাজ্রান্ধ-প্রেসিডেলীর বিশাধপত্তন ও গঞ্জাম ক্ষেলার ভিতর দিরা চিকাকোলের দক্ষিণে সমুদ্রে পড়িরাছে। এখানে নদীবক্ষে ২৪টা থিলানবৃক্ত একটা ক্ষম্মর সেডু নির্মিত আছে। ঐ সেতুর উপর দিরা প্রেট্ ট্রাক্সোড্ নামক রাজা

চলিয়া গিয়াছে। ১৮৭৬ খুঠান্সের জীবণ ঋটিকার দেজুর বিশেষ ক্ষতি হইয়াছে। এই নদীর তীরে শিলাপুর, বিরাদ, রারগড়ড (রারগড়), পার্কতীপুর, পালকোগু। ও চিকাকোল নগর জ্বস্থিত। সালুর ও মকুবা নামক ঘুইটা শাখা নদী ইহার কলেবর পুট ক্রিডেছে।

সাজ্ব, যুক্ত আবেশের গড়বাল জেলার অন্তর্গত একটা গিরিছর্গ।

এখন ভগাবস্থার পতিত। অক্ষা ২৯° ৫৫ জি: এবং জ্ঞাবি ৭৮°

৪০ পু:। এইস্থান সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ৬৪০০ ফিট্ উচ্চ। এখানে
জলসরবরাহের স্থাবিধা না থাকায় ঐ তুর্গ পরিতাক্ত হইরাছে।

ল্ডেফ্রক (ত্রি) > অতিক্রমকারী। ২ নিরম্ভক্রকারী। ৩ সীমা-বহির্গামী।

ল্জ্য্ন (क्री) नञ्च-मृष्ट्रि। উপবাস।

"জরে লজ্বনমেবাদাবুপদিষ্টমূতে জরাৎ।

করানিলভয়কোধকামশোকভামোত্তবাং ॥"(চক্রপাণি জরাধি")
নবজরে প্রথানে লজ্মন দিতে হয়। তাহা দারা বাতপিত্ত কদের পরিপাক, অগ্রির দীপ্তি, শরীরের লখ্তা, জরের উপশম এবং ভোজনে ইছা জন্মিরা পাকে। বাতজজরে ; তম, ক্রোধ, শোক, কাম ও পরিশ্রমজনিতজরে ; ধাতৃক্ষরজনিতজ্ঞরে এবং রাজযক্ষজনিতজ্ঞরে লজ্মন বিধেয় নহে। যাহারা বায়্প্রধান, কুধার্তি, তৃষ্ণার্ত্ত, মৃধুশোব্যুক্ত, শ্রমযুক্ত এবং বালক, বৃদ্ধ, গভিণী বা গুর্মণে এই সকল যাক্তির্প্ত লক্ষ্মন কর্ম্বর্য নহে।

লজ্মনবিহিতজ্জরেও অধিক লজ্মন হারা ছর্বল কওয়া বিধের নহে। বিলেবতঃ অধিক লজ্মন হারা অহিসন্থিতে বা সমস্ত শরীরাবরবে বেদনা, কাশ, মৃথাশোষ, ক্ষুণানাশ, অরুচি, তৃষ্ণা, শ্রবণেন্দ্রিয় ও দর্শনেন্দ্রিয়ের ছর্বলতা, মনের চঞ্চণতা বা ল্রান্তি, অধিক উল্পার, মোহ, অগ্নিমান্দ্য প্রভৃতি নানাপ্রকার উপদ্রব উপস্থিত হয়। উপযুক্ত পরিমাণে যথারীতি উপবাস দেওরা হইলেই সমাক্রপে মল, মূত্র ও বায়ুর নিঃসরণ, শর্মীরের লগুতা, ফর্মনির্গম, মূথ ও কর্গপরিছার, তন্তা ও ক্লান্তির নাশ, আহারে কচি, একসমরে ক্ষুণাভৃষ্ণার উদর, অন্তঃকরণের প্রসরভা এবং বিক্তম উল্পার প্রভৃতি উপকার প্রাপ্ত হওয়া যার। (স্ক্লেড)

২ প্লবন, চলিন্ড ডিলান। শাল্কে লিখিত আছে বে, অগ্নি লক্ষ্যন করিতে নাই।

"न ठामिर नञ्चतन्त्रश्रीमान्त्नाश्रमशाननः किए।

ন চৈনং পাদতঃ কুৰ্ব্যাৎ দুখেন ন ধমেৰু ধঃ॥"(কুৰ্মাণু: উপৰি: ১৫ আ) ত অতিক্ৰম !

শন চাপাধর্ম: কল্যাণ বছপদ্ধীকভা নৃণাং ! জীগামধর্ম: ক্ষহান্ ভর্তু: পূর্বান্ত লক্ষনে ৪" (ভারত ১।১৬৯।৩৬) ৪ অবের গতিভেদ, অবের গুত গতির দাম লক্ষন। 'প্ৰুতন্ত সকলং পক্ষিত্যগত্যক্ষারকন্' (হেম)

क সাহবকর বিধি। ৬ সমূজোজন। ত্রিরাং উপিন্।

প অবমাননা।

"অঞ্চাণি বৰংশ**ঃ গজানা ক্রির**ডে হি যা। তাং নালং ক্রি**রঃ লোচ**ুং কিং পুনঃ ণিতৃনারণুন্ত" (মার্কণ্ডেরপুত ১৩৪।৩০)

লেজ্বন্ধ্ (বি.) > বশ্বারা লক্ষ্ম করা যার। ২ সেতু। (দিব্যা° ৩৪০।২২)

ল্ড্যনীর (এ) লক্ষ-জনীরন। লক্ষনের যোগ্য, লক্ষনার্হ, লক্ষনের উপযুক্ত।

ল্ভ্রনীয়তা (ত্রী) শব্দনীর-তল্টাপ্। সক্ষনীয়ের ভাব বা ধর্ম, সক্ষনীয়ত্ব, সক্ষন।

ল্ডবাল্ডিয় (দেশৰ) > লাকালাফি। ২ পুনঃ পুনঃ আচীর উল্লেখন। ও খুনোখ্নি।

লাভিত্ত (মি) লঙ্গ-কা। স্কুতলভ্যন, যিনি লঙ্গন করিয়াছেন। লভ্যা (মি) লঙ্গ-বং। লঙ্গনীয়।

লছ, নদ্ধ, চিহ্। ভাণি° পরদৈ° সক° সেট্। লট্ সফ্তি। লিট্সনজ্। সৃঙ্ভানহীং।

लक्ष्मम् (हिन्सि) नन्तर।

লছমন্গড়, রাজপ্তনার জরপুর রাজ্যের শেধাবতী জেলার অন্তর্গত একটী নগর। শীকর-সর্দার রাও রাজা লক্ষণসিংহ কর্তৃক ১৮০৬ খুৱালে এই নগর প্রভিষ্ঠিত হয়। [লক্ষণগড় দেখ।]

লছমন্জি, থন্দভাবার একথানি ব্যাকরণপ্রণেতা। লছমিচাঁদ, কুমায়নের টাদবংশীর একজন রাজা।

লছমিনারায়ণ, বারাণদীবাদী একজন ঐতিহাদিক। ইনি খল-এ-রাণা নামক এক ভজকিরা প্রণয়ন করেন।

লছ্মিরাম, একর্মন হিন্দু কবি। ইনি স্বীর কবিছণজ্জির জন্ত স্থার উপাধি লাভ করেন।

লছ্মিবাই, বরদারাজ মদহররাওর মহিনী। ১৮৭৪ খুটালে ই হার একটা পুত্র জন্মে। ঐ পুত্র হাজ্যের উত্তরাধিকারী বলিরা গৃহীত হর।

লাছিমাদেবী, মিধিলার একজন রাজমহিবী। [ললীদেবী দেব]
লক্ষ্য ১ ভংগলা। ২ দীপ্তি। ৩ লক্ষ্য। ৪ ভর্জন। ভাদি।
পরদৈশ দক দেট্। লক্ষার্থে অক আমানে । দীপ্তার্থে অক ।
লট্ লক্ষ্য । ইদিং লক্ষি লক্ষ্য ভূলাক্ষ্য । লিট্ ললাক,
ইদিংপক্ষে লল্ক। নৃত্ অলকীং, অলকীং।

नकार्ष निष्-नक्षरः। निष् (नत्मः। भूष् निक्षः। मृद् क्षनिष्ठे। नन् निनिषयरः। यद् नानकारः। यद्भूक् नानकिः। निष् नामप्रिः। नक्षरः। ननस्कः। नक्षिः।

লক্ষিকাতে। অলক্ষিট। লক্ষ-অন্ত চুরাদি। ভাষণ।
পরকৈ অক সেট্। লট্ লক্ষজি। লক্ষ-জ। লক্ষিত, লয়।
লক্ষকারিকা (ত্রী) লকং লক্ষাং করোভীব ক্ব-গুল, চাপ্
অত ইছং। লক্ষাল্লভা। (প্রবালা)

লজন্ন, গাৰ্কত্য আতি ভেদ। (দেশৰ) নজন, দৃষ্টি। লজবৰ্দ্দ, বংকিসানের অন্তৰ্গত একটা নগন।

লভন্তক (জী) > বনকাপাসী Goesypium ৷ ২ আন্ধ্যপ্ৰেণী ভেষ ৷ (সন্থা• ২)৫১৫)

লভন্তনী (ত্রী.) শব্দাপুকা। (রাজনি°)

লভন্তা (জী) শব্ধনমিতি লস্ক ত্রীড়নে (গুরোশ্চ হল:।
পা ৩।৩।১০৩) ইতি আ টাপ্। আন্তঃকরণবৃত্তিবিশেব,
ত্রীড়া, অস্থচিত কর্ম করিলে পরে জানিতে পারিবে এই বে ভয়।
চলিত লাজ, পর্যায়—মন্দাক, হী, ত্রপা, ত্রীড়া, অপত্রপা, মন্দান্ত,
লক্ষা, ত্রীড়ন। (শব্দর্মা°)

"লজা ভিরশ্চাং বদি চেভনি ভাদসংশরং পর্বাভরাজপুত্রাঃ। তং কেশপাশং প্রসমীক্ষা কুর্বুর্বালপ্রিয়ত্ত নিথিলং চমর্যাঃ॥" (কুমারস° ১।৪৮)

ং লক্ষাপু। (রাজনি°) ও বরাহক্রাস্তা। (চক্রদ°) লক্ষ্যাকর (অি) লক্ষ্যাস্থনক। সক্ষয়াক্ষ্যাক্ষ্যাক্ষ্যাস্থ্যাক্ষ্যাস্থ্য

मञ्जासिक (बि) गब्बमा व्यविज्ञः। गब्बाय्कः। सञ्जाश्यमः (बि) गब्बामानकाती।

লভ্জালু (পং ত্রী) লজ্জেবাস্য অন্তীত্যর্থে আলু:। স্বনামখ্যাত কুপবিশেষ। (Mimosa pudica) লজ্জাবতীলতা।
ভির্নেশীর নাম—হিন্দী—ললালু, লজ্জাবতী; বালালায়—
লালক, লাজ্কীলতা, লজ্জাবতী; কুমায়ন—লালবান্ত্রী; পঞ্জাব—
লালবন্ত্রী; পশু—ঝান্দ; মরাঠী—লালালু, লালরি; শুর্জ্জর—
লালালু-খবাম্নি; তামিল—তোতলবড়ি; তেলগু—পেলনিদ্রাকন্ত্রী, অওপত্তি; কণাড়ী—মুহগুড়বরে; ব্রহ্ম—তকর্ম; সংস্কৃত—
বারাহক্রান্তা, লজ্জালু; পর্যায়—রক্তপাদী, শমীপত্রা, প্রজা,
খনিরপত্রিকা, সঙ্গোচনী, সমলী, নমন্তারী, প্রসারিন্দ্রী, সপ্রপর্ণী,
খনিরী, গগুমালিকা, লজ্জা, লজ্জিরী, স্পর্ণলক্ষ্যা, অন্তরোধনী,
রক্তমূলা, তাত্রমূলা, অগুণা, অঞ্বিদ্যারকা, মহাভীতা, বলিনী,
মহৌরধি।

ভারতের উষ্ণপ্রধান দেশমানেই, বিশেষত: নিয় বলে এই গাছ প্রভৃত পরিমাণে করে। তথার রাস্তার উভর পার্ব ই সপুশা কক্ষাবতীর অঙ্গনে সমার্ত দেখা বার। বদি কোন পথিক ঘটনাক্রমে সেই বনের মধ্য দিয়া গমন করে, তাহা হইকে তাহার পশ্চারাগে সমস্ত পত্রই অবনত হইরা শুনিরা পড়ে।

७१-वर्षे, नीजन, निर्वाजिनात, लान, गार, वन, बान,

প্রণ, কৃষ্ঠ ও কফনাশক। (রাপ্তনি°) ভাবপ্রকাশমতে—শীড়স, তিজ্ঞা, কবার, ককণিত্তনাশক, রক্তণিত্ত, অভীদার ও বোমি-রোগনাশক।

Ainslie বলেন, মলবার উপকৃলবাদী পাথরীর বেদনার ইহার শিকড়ের কাথ পাদ করে! করমওল উপকৃলবাসী বাইতীজাতি অৰ্ণ ও ভগৰুর বোণে ইহার শিকড়ের কাথ এবং হই বা ততোধিক পরিমাণ ছয়ের সহিভ দিবাভাগে ইহার পত্রচুর্ণ দেবন করে। পরি ইহার রস লাগাইয়া দিলে উপকার দলে। পঞ্জাব প্রদেশেও পূর্কোক্তরপে লব্জাবতীর মূল ও পত্রের ব্যবহার আছে। কুসংস্কারাপন্ন লোকে নির্দিষ্ট গড়তে পত্র ও শিকড় তুলিয়া দের। মূলোৎপাটনের গুভ মূহুর্জে ভাহারা একটা উৎসব সম্পন্ন করে। ঐ মাদের প্রথম সপ্তাহে যে মূল উৎপাটন করা হয়, তাহা পিডক পীড়ায় ও অরাদিতে উপকারক। বিতীয় সপ্তাহে উত্তোলিত পত্রমূলাদি কামলা, ঋর্ল প্রভৃতি রোগে এবং ভৃতীয় সপ্তাহের भूनांषि कूर्व, तमल ও मामणी त्त्रारंग (Seab) विराग कलागांवक হয়। কোরণ জেলায় ইহার পত্র বাটিয়া কোরণ্ডের উপর দিবার ব্যবস্থা আছে এবং ইহার রদ সম্মাত্রায় যোড়ার মৃত্রের সহিত মাড়িয়া যে অঞ্চন প্রস্তুত হয়, তাহা চকুপলের স্বগ্রোগে (cornea) नाशाहेशा पिटन विराध कन पान करता ছগুপরি লেপন করিলে প্রথমে জালাবোধ হয় এবং সেই স্থান লাল হইয়া ফুলিয়া উঠে। তথন ঐ ছানে নৃতন বেদনা কলে। এবং পরে ঐ পূর্ব বেদনা নাশ হইরা থাকে। ক্লোটকাদিতে তুলার সহিত ইহার পত্ররস নিষিক্ত করিয়া ক্ষতমধ্যে পুরিয়া দিলে উপকার দর্শে।

রাসায়নিক পরীক্ষার ঘারা জানা গিয়াছে যে, লজ্জালু লতার সরু সরু শিকড়ে শতকরা ১০ ভাগ tannin থাকে। হীরাকসের (Salt of iron) সহিত মিত্রিত করিলে উৎকৃষ্ট কালি প্রেশ্বত হয়।

২ লজ্জানুভেদ। [ছঞ্জিকা শব্দ দেখ] (ত্রি) লজ্জা অন্তার্থে আনু। ৩ লজ্জানীল, চলিত লাজুক।

লভন্নাবং (ত্রি) লব্দা বিভাতেংভ মতুপ্মত বং। লক্ষাযুক্ত। ত্রিরাং ত্রীপ্।

লভ্জাশীল (ত্রি) শক্ষা এব শীলং বছা। শক্ষাযুক্ত। শাভুক। ত্রিরাং টাপ্।

ল্বুক্তাশূন্য (ত্রি) নির্মন্ধ।

लफ्जाहीन (बि) राशंत गण्या मारे। गण्याम्छ।

ল্ভিড়ত (ত্রি) নব্দাবৃক্ত।

লক্ষিতভাব, এহগণের বছ্ভাবের অন্তর্গত এক ভাব।

"পুজগেইগত: বোটো রাহ্বুজো বঞ্চ জঞা।
রবিননার্কের কো লজিতো এই এব ছ।" (ফলিড জ্যোতির)
কোন এই বহি লগ্ন ইইতে পঞ্চন গৃহে রাহর সহিজ বিলিত
ভাবে অবহান করে, অথবা রবি কিবো শনি বা নলকের সহিত
মিলিত ইইরা লগানি বালন জান মধ্যে বে কোন হানে অবহিত
হয়, ভাষা ইইলে সেই এই লজিত বলিরা বিখ্যাত ইইরা থাকে।
বে নল্লের পুত্র (পঞ্চম) হানে লজ্জিত কোন এই থাকে,
ভাষার সকল সন্ধানই নই হয়, কেবল একটামাত্র কীবিত থাকে।
লাভিনেরী (ত্রী) গজ্জানুকা। (রাজনি")

লজ্জিকা (জী) নজানুকা নভা। নাজ্কা। (রাশনি')

शक्रा (जी) गम्बा। (मनतवा°)

লঞ্ছা (ব্রী) ১ উপহার, উপঢ়োকন। ২ উৎকোচ।

লপ্তন (রী) শতকে (Eleusine coracana)

লক্স, ভাসন, দীঝি। অদতত্রাদি পরতৈর অক নেট্। গঢ় নক্ষতি। লঙ্জন্নথং।

লপ্ত (পং) লগরতি শোভতে ইতি লগ্ধ-আচ্। ১ পদ, চরণ। ২ কছে, কাছা। ৩ পুছে, লেজ। ৪ অনিজ্ঞা। ৫ লাম্পট্য। ৬ লন্ধী। ৭ স্থোত।

লঞ্জিকা (ন্ত্ৰী) নম্বৰ্থতি শোভতে ইতি লম্প-ধৃন্ন, টাপ্ অভ ইছং । গণিকা, বেশুা। (হেম)

লেট, ম্বাল্য। ২ উক্তি। ভাগি পরত্রৈ অক উজ্জ্যর্থে সক নেট্। লট্লটভা লোট্লটভূ। লুভ্অলটাং।

লাট (পুং) লাটতি বথেচ্ছরা বদতি লাট্-আচ্। ১ প্রমানবচন, আনবহিত হইরা বাক্যকথন। ২ দোব। (বিশ্ব) ও পাগল। ৪ নির্বোধ। ৫ চৌর।

লটক (পুং) শটতীতি লট্ (জুন শিলিসংজ্ঞারেশুর্বজ্ঞাপি। উপ্২।৩২)ইতিজুন্। হর্লন, অসাধু যাজি।

ল্টকন, ওকৰাতীয় পৰিতেদ (Psittacus minor)

ল্টপূর্ণ (ক্লী) লটমূগ্রং পর্ণমন্ত । ঋড়স্বৰ্ । (রাজনি")

লট্, বাকরণোক্ত সংখ্যাবিশেষ। ব্যাকরণমতে লটের ১৮টা বিভক্তি আছে, ইহার মধ্যে ৯টা পরস্থৈপদ এবং ৯টা আত্মনে-পদ। এই লট্ বর্তমানকালবোধক, 'বর্তমানে লট্' বর্তমান-কালে লট্ বিভক্তি হইরা থাকে। স্থাবোধমতে ইহার নাম কীও কলাপমতে বর্তমানা। [ধাছু দেখ।]

লট কান (দেশল) > বৃক্ষবিশেব (Bixa orelland ক্রিকার ক্রের বীবে একপ্রকার লাল রল পাওরা বার। উহাকে 'দটকানের রক' বলে। বুলাইরা দেওন। ৩ বাঁদি দেওন।

लाउँ थाउँ (रिनी) > वज्ञात्रात्न याहा निकाहरताना मध्यः २ विक्रिकि-

লটি থটিয়। (দেশজ) ১ গোলমালযুক্ত। ২ বাছা সহজ্ঞসাধ্য নহে।
লাট পাট (দেশজ) ১ অব্যক্ত শক্তেদ। ২ বৃহৎ বন্ধ পরিধান
করিলে থড়মড় শক্ত হন্ধ বিদিন্না লোকে বলে 'বড় কাপড় লটপট
করে'। ৩ দীর্ঘ জিলবিচ্চ ও পরস্পারের সংস্পর্শে অব্যক্ত শক্তকারী। "লট্পট কটাক্টজাল"। ৪ বেননার বন্ধশার ছট্কট্
বা এপিট ওপিট পড়া। বেমন কাটা ছাগলের মত লটপট
কো'ছে।

লটাপাটি (দেশৰ) পরস্পারে বিবাদকালে বাছতে জড়াজড়ি করিরা ভূমিতে পড়ন। ২ ঝুটাপুটি।

ক্ষুট্ৰা, লটুক্খুরে (দেশজ) লপ্ট। (লোচ্চা পুরুষ)
লট্ট (পুং) হুৰ্জান। (শন্তরাং)
লট্টনভট্ট, একজন প্রাচীন কৰি।

লাট্ব (গং) লটতীতি লট (অঞ্প্রেষিণটীতি। উণ্ ১।১৫১) ইতি কন্। জাতিবিশেষ, নেটুয়া, এই জাতি সম্বরজাতি। ২ রাগভেদ। ৩ তুরক্ষম। (উজ্জ্বন)

मार्वेका (श्री) गर्वा।

লাট্বা (ব্রী) লাট্-কন্-টাপ্। > করঞ্জেদে, চলিত নাটাকরঞ্জ।
২ বাগ্যভেদ। ৩ পন্ধিবিশেষ, গ্রামচটক পন্ধী। (মেদিনী)
৪ কুস্কতা। ৫ ভ্রমরক। ৬ শিলী। ৭ ত্লিকা। ৮ দৃতে।
"লাট্বা তু তুলিকা থাতা লাট্বা দৃহতেহিপি দৃশ্যতে।" (ব্যাড়িরন্তসৌ)
১ চূর্ণকুস্তল। ১০ ছন্চরিত্রা ব্রী। ১১ মিট্ট থাগ্যন্তবাবিশেষ।
লাট্বা (হিন্দী) লাল্টাশলের অপভ্রংশ। বাঙ্গালায় লাট্রা বলে।
লাড্, > বিলাস। ২ উৎক্ষেপণ। ৩ উপসেবা। ৪ বীঞ্চা।
৫ উন্নয়ন, পীড়িতীভাব ও উৎক্ষিপ্তাভাব। ৬ ভাষণ। বিলাসার্থে
ভাদি পরদ্বৈ সক সেট্। ভাষণার্থে চুরাদি পক্ষে ভাদি
পর্বে সক সেট্। উপসেবার্থে চুরাদি গরিকা
লাগ্রনে কেপার্থে অদন্ত চুরাদি । উন্নন্তনার্থে ভাদি পরদ্বৈ
সক সেট্। লাট্ লড্তি। লোট্ লড্তু। লিট্ ললাট।
লুঙ্ অলড়ীং। চুরাদি লট্ লাড্রতি, লুঙ্ অলীলড্ং। চুরাদি আছ্মনে লট্ লাড্রতে। লুট্ অলড্টি। উপসেবার্থে লট্
লাড্রতি।

লড়ক (গ্রং) জাতিবিশেষ।

লড় চড় (দেশজ) বিভিন্ন প্রকার, পরিবর্তন, অভারপ। বথা— কথা যেন লড়চড় হর না। ইত্যাদি।

लफ़्न (ही) गफ़-गाउँ। न्यासन, प्रांगन।

লড়ন (দেশৰ) যুদ্ধ বা কুন্তি কাৰ্য্য।

ল্ড্হ (আ) > মনোজ্ঞ। স্থনর (আকা") ২ লাভিবিশেষ। লড়হচন্দ্র, একজন প্রাচীন কবি।

হ্বড়া (দেশজ) ১ যুদ্ধকার্যা। ২ কম্পন।

লড়াই (দেশৰ) বৃদ্ধ।
লড়াক (দেশৰ) বোদ্ধা।
লড়াক কুকড়া (দেশৰ) বে সকল কুকুড়া লড়াই করে।
লড়াক কুকড়া (দেশৰ) নড়াচড়া, সঞ্চলন।
লড়ান (দেশৰ) ২ নড়ান। ২ যুদ্ধ করান।
লড়ালড়ি (দেশৰ) গরম্পার যুদ্ধ।
লড়ি (দেশৰ) গাঠি, যটি।

লডোলে (লাটোল), বড়োদা রাজ্যের বিকাপুর উপবিভাগের অন্তর্গত একটা নগর। গাইকবাড়ের শাসনাধীন।

লডে (ত্রি) হর্জন। (ত্রিকা৽)

लएपु (प्रः) वष्ण्रक, वाष्ट्र।

লেডডুক (পৃং) পিষ্টকবিশেষ, চলিত লাড়। গুণ— হুর্জার ও গুরু।
"তৈলেন হবিষ পকং ভবেৎ চুর্ণঞ্চ লডডুকঃ।" (শব্দচ•)

ছত বা তৈলদারা পক হইয়া চূর্ণ হইলে লড্ডুক হয়। লেড্ডুকেশ্বর, শিবশিলভেদ। (শিব°৫৪।১।৯)

লড়্বড় (দেশজ) নড়্বড়, অস্থির, অস্থায়ী।

লণ্ড (ক্লী) লণ্ডাতে উৎন্দিপাতে ইতি লণ্ড-ঘঞ্। পুরীষ, চলিত ল্যাড়।

"সমেধমানেন সক্ষধাহনা নিক্জবায়ুশ্চরণাংশ্চ নিক্ষিপন্। প্রস্থিরগাত্রঃ পরিত্তলোচনঃ পপাত লঙং বিস্জন্ কিতৌ ব্যস্থঃ॥" (ভাগ০ ১০।৩৭।৮)

ল্ভন, ইংলত্তের রাজধানী। টেম্নদীর তীরে অবস্থিত। প্রাসাদতৃল্য নানা অট্রালিকায় ও কলকারথানায় এই নগর বিভূষিত রহিয়াছে। [ইংল্ড ও রুটেন্দেখ।]

म् ७ ७ (प्रमण) > नष्टे, स्तःम । र नृष्टेभाषे ।

লণ্ড্র জ (করাসী শব্দ) লণ্ডু জাত, ইংরেজজাতি, লণ্ডনজাত।

শপূর্ব্বান্নারে নবশতং ষড়শীতি: প্রকীর্ত্তিতা:। ফিরুজভাষরা তন্ত্রান্তেবাং সংসাধনাৎ ভূবি॥ অধিপা মণ্ডলানাঞ্চ সংগ্রামেশপরাক্ষিতা:।

हेरद्रका नव वष्ट्रं शक मञ्जूकान्त्रांति जाविनः ॥"

(মেকতন্ত্ৰ ২৩ প্ৰকাশ)

ল্ক (ত্রী) লততি বেইরতে বাগুমিতি লত পচাছচ্টাপ্।
শাধাদিরহিত ওড়্চাদি, বততী। পর্যায়—বন্ধী, বন্ধি, বেনি,
ক্রতি। লতা বদি শাধা ও পত্রসমানুক্ত, হন্ধ, তাহা হইকে
তাহাকে প্রতানিনী করে, ইহার পর্যায় বীক্রধ, গুঝিনী, উলপ।
(অমর) অমাবস্তার দিনে লতা ও বীক্রধ ছেদ করিতে কাই,
করিলে ক্রক্রহতার পাতক হন্ধ।

শ্বশ্স ভক্ষিহোৱাতে পূৰ্বং বিশতি চক্ৰমা:। ভতে বীকংক বসতি প্ৰৱাত্যৰ্ক ভড়া ক্ৰমাং ॥

```
ছিনতি বীৰুধো যন্ত বীৰুৎসংক্তে নিশাকরে।
পত্রং বা পাতরত্যেকং ব্রন্ধহত্যাং স বিল্পতি ॥"

(বিকুপু• ২০১২ অ• )

২ শাধা। ৩ প্রিয়ন্ত্ । ৪ পূকা, পিড়িংশাক। ৫ অপনপর্ণী।
• জ্যোতিমতী। ৭ গতাকত বিকা। ৮ মাধবীলতা। ৯ দূর্কা।
১০ কৈবর্ত্তিকা। ১১ সারিবা। ১২ বৃহতী। (রাজনি• )
১৩ ক্ষমরী নারী, গ্রীলোকমাত্র।
```

শনগ্রাং পরলতাং পশুন্ অযুতং যন্ত সাধকঃ। প্রজপেৎ স ভবেৎ শীলং বিভারা বল্লভঃ স্বরং ॥"

(তছুদার খ্রামাদা•)

১৪ অপ্সরোবিশেষ। (ভারত ১।২১৭।২•)

>৫ খেতসারিবা। >৬ খেতবৃথিকা। ১৭ জাতীফুলের গাছ।
>৮ রক্তপটল গাছ। (বৈছফনি॰) >৯ মেরুর কন্তা ও ইলাবৃত্তের পদ্ধীডেদ। ২০ ছন্দোডেদ। ইহার চারিটা চরণ। প্রতিচরণে ১৮টা অক্ষর। ১, ২, ৩, ৪, ৫, ৬, ৮, ১৯, ১৪, ১৭ গুরু
ও তদ্ভির লঘু।

প্রভার গণু।
লতাকর (পুং) নর্জনকালে নর্জকীগণের হস্তবিক্তাসভেদ।
লতাকদম (দেশন) লতাবিশেব (Urtica naucliffora)
লতাকরপ্র (পুং) লতারপঃ করন্ধ:। করন্ধবিশেব (Guilandina
Bonduc)। হিন্দী—কণ্টকরেন্ধ। সংস্কৃত পর্যায়—হস্পর্দ,
বীরাখা, বন্ধবীন্ধক, ধনদাক্ষী, কণ্টকল, কুবেরাক্ষী। ইহার
পত্রপ্তল—কটু, উষ্ণ, কর্ম ও বাতনাশন্ধ। বীন্ধপ্রশান,
পথ্য, শুল, গুল্ম ও বিবনাশন্ধ। (রান্ধনি৽)

ল্ভাকস্ত্রিকা (রী) লভারণা কন্ত্রী, তবং গৰ্ষাং, ততঃ
স্বার্থে কন্। লভাকস্ত্রী, সংস্কৃত পর্যায়—কটু, দক্ষিণদেশলা।
ইহার গুণ-ভিক্ত, স্বাহ্ন, বৃহ্ম, শীতল, লম্ব্ন, চক্ষ্র হিতকর,
প্রেমা, তৃষ্ণা ও মুধরোগনাশক। (পথাপথাবি॰)

লতাগৃহ (খং क्री) গতানির্মিতং গৃহং। গতাৰারা প্রস্তত গৃহ, নতা ৰারা যে ধর প্রস্তুত করা যায়।

লতাঙ্গী (ত্ৰী) কৰ্কটশৃঙ্গী। (বৈশ্বকনি॰)

লতাজিহব (পু:) লতেব জিহবা বস্ত। সর্ল। (শব্দা)

লতাভূমুর (দেশৰ) ভূমুর বৃক্তেল (Ficus vagans) ।

লতাতিক (পুং) গতেব দীর্ঘকঃ 1 > নারদ বৃক্ষ। ২ ভালবৃক্ষ।
(শক্ষালা) ও শালবৃক্ষ। (ত্রিকা•) ৪ পুশলভিবাভেন, ভরু-

লতা নামে অসিছ।
লতাতাল (পুং) হিন্তানরক, হেঁতানগাছ। (রাজনিন্)
লতাত্তেম (পুং) নতের ক্রমঃ নীর্বছাং। লতাশান, সংক্রত
পর্যায় তাক্র, অবকর্থ, কুলিক, বছ, নীর্ব। (রাজনিন্)
লতামন (পুং) নৃত্যকালীন হওবিভানতেন।

লভাস্ত (রী) > পূলা। ২ লভার ডগা।
লভাপনস (পং) লভারাং পনসমির কলমছা। কল-লভা
বিশেব, চলিভ ভরবুল। পর্যার চেলাল, চিত্রকল, ছখান,
রালভেনিব, নাটার,। সেচ। (ত্রিকা)
লভাপর্কটীভূমুর (দেশল) ভূম্বভেদ (Ficus hederacen) ।
লভাপর্কটীভূমুর (দেশল) ভূম্বভেদ (Ficus hederacen) ।
লভাপর্কটিভূমুর (দেশল) ভূম্বভেদ (Ficus hederacen) ।
লভাপর্কটিভূমুর (দেশল) ভূম্বভেদ (Ficus hederacen) ।
লভাপর্কটিভূমুর (স্থা)

লতাপূৰ্ণী (ত্ৰী) > ভালমূলা। ২ মধুরিকা, মউরি। (বৈশ্বক্তনি) লতাপূকা (ত্ৰী) লভাপ্রভানা পূকা। সম্জানা, চলিভ পিড়িংশাক। (শক্ষমা •)

ল্ডাপ্রতানিনী (রী) কডাপ্রভানোহত্তাতেডি ইনি। শাধা-প্রচয়বভী কডা। পর্যায়—বীক্ষধ, গুলিনী, উলপ, বীক্ষা, বক্ষধ্, প্রভানা, ককঃ (জটাধন্ন)

ল্তাফ্ল (ক্লী) শতারাং ফলমত। গটোল।
"বাত্ক্রকারবেল্ল বার্ডাক্ল গুডপ্রদা।
শতাফলক গুডনং সর্বাং সর্বাত্ত নিশ্চিতম্।"
(ব্রহ্মবৈবর্ত্প্ জীক্ষজ ১০২ জা)

লতাবৃহতিকা (ত্রী) বৃহতীলতা। (পর্যায়মু৽)
লতাভদ্রে (ত্রী) পতরা ভদ্রা বজা: । ভদ্রাণী বৃক্ষ । (পদ্মান)
লতাভ্রন (ক্রী) পতানির্দ্ধিতং ভবনং। পতাগৃহ।
লতামউয়া (দেশক) গুলাভেদ। (Achyranthee alternifolia)
লতামনি (পুং) পতাসদৃশো মিশি: । প্রবাদ। (ক্রিকা•)
লতামগুপ (পুং) পতাগৃহ।
লতামগুপ (পুং) পতাগৃহ।
লতামগুপ (ত্রী) পতারাং মকং বজা: । পূকা। (পদ্মক্রা•)
লতামগুরী (ত্রী) পতারাং মকং বজা: । প্রা। (পদ্মক্রা•)

লভামাধ্বী (জী) গভাপ্ৰধানা মাধ্বী। মাধ্বীগভা। লভামাল (দেশৰ) গভাবিশ্ব (Uvaria Fornicata)। লভাম্গ (পুং) শাধাস্গ, বানর। লভাম্ব্ৰ (জী) শনাভেদ।

লভায়ন্তি (গ্ৰী) লভা বটিরিব: মজিটা: (শলমা°.)

লতায়াবক (পং) লতানাং যাব ইব যত কন্। এবাল। লতারসন (পং) শতেব নসনা যত। সর্গ। (হারাবলী)

ল্ভার্ক (গ্ং) শতা অর্ক ইব তীব্রা বক্ত। হরিৎপলাপু, হুক্রম। (অমর)

मठानक (११) रखै। (विका°)

ল্ডালয় (গুং) শতানির্বিতঃ স্থানরঃ। স্বতাগৃহ। ল্ডাব্লয় (গুং) > স্তাগৃহ। ২ খিনি হতে স্পন্নস্থারে স্তা

ৰড়াইরাছেন। ল্যক্তাবুক্ত (পুং) শঙ্গৰী বৃক্ষ। (, ক্লছনি°.)

লতাবেক্ট (গুং) লভবেৰ: আবেটো বেট্টৰং ক্ষ্ম ৷ বোড়গঞ্জকার রতিবনের অন্তর্গত ভূতীর প্রকার রভিবন্ধ ৷ "বাহজ্ঞাং পাদবৃদ্ধান্ত্যাং বেইনিকা জিলা নম্থে। সাধুলিকতা চলং বেটেনী সকালেটো চন্দ্ৰহাতে ॥" (রতিমধারী) ২ পর্কাতবিশেষ এই পর্কাত বারকালগনীর দক্ষিণ-দিকে অবহিত। "পঞ্চিপতাং সভাদেশ্রীঃ পঞ্চালগোঁ বিবাক্তে।

বিজ্ঞান কাৰ্টেক শাক্ষা ক্ষিত্ৰ বিজ্ঞান কৰি কৰা বিজ্ঞান কৰি কৰা কৰি কৰি বিজ্ঞান কৰি কৰা কৰি কৰি বিজ্ঞান কৰি বিজ্ঞ

সভাবেছিডক (রী) গভারের বেটিজং বেটনং যত্ত। কন্। আলিক্সভেদ।

ভিত্তবৈং পীড়িতকং লতাবেষ্টিতকং তথা।' (শলমা')
লতাশক্ষ্ত্রে (গুং) লতাশালবৃদ্ধ। (বিদ্ধা')
লতাশক্ষ্ (গুং) শালবৃদ্ধ। (শল্মব্রা')
লতাশৈল, নামরপের অন্তর্গত একটা গিরি। (ভবিষ্যব্রহ্মথ'১৬৫১)
ল্ভালাখন (রুই) গতরা নাখনং। তদ্ধেক্ত সাধনবিশেষ।
এই সাধনের প্রধান অধিকরণ রী, এইরম্ভ ইংাকে লতাসাধন
করে। এই সাধনের বিষয় তত্রে বর্ণিত হইরাছে—এই
সাধন করিতে হইলে একটা রী আনিরা প্রথমে যথাবিধি
ইইদেবীর পূলা করিরা এ রীর কেশে শত, কপালে শত,
সিন্দুর্মত্বলে শত, হই তনে হই শত, নাভিবেশে শত এবং
খোনিলেশে শতবার ইইন্ড রূপ করিবে, পরে উথিত হইরা
প্রভার তিনশত রূপ করিতে হয়। এইরণে সহম্রন্থপ করিবে,
ইউন্ড সিক্ হইরা থাকে।

অভ্যান্ত্র — মহারাত্রিতে একটা অভ্যুমতী নারী লইয়া ভাষার বোনিদেশে ইউদেবতাকে পূজা করিয়া লগ করিতে হাইবে, এই-রূপে তিন দিন পূজা ও লগ বিধেয়। তিনশত করিয়া লগ করিতে হর, পর পর দিবস ইউতে ৬০ করিয়া অধিক লগ বিধেয়। পরে চক্রেবাক্তে, আউাত্তম শতলপ করিয়া নবপুশাললি দিরা পুনরার আউাত্তম শত লগ করিবে, তৎপরে পূর্ণাহতি দিয়া আবার আউাত্তম শত লগ করিবে, তৎপরে পূর্ণাহতি দিয়া আবার আউাত্তম শত লগ করিতে হইবে। এই রূপে লগানি করিবে ইউমত্র সিত্ত হয়। এই মত্রে সিত্তি লাভ করিবে ধনবান, ব্যান্থা এবং বোবিংদিগের প্রিয় করিয়া খাকে।

শ্বভাৱাঃ সাধনং বজ্ঞে শৃথ্য ইরবর্তন ।
প্রভা কেবে প্রভঃ ভাবে প্রভং নিজ্বন্ধকে ।
ভানহন্দ্রে শতহর্ত প্রভং নাতে মহেবরি ।
প্রভং বোনো বহেশানি উপার চ শভরেরন্ ॥
এবং দশ্বভং কর্ম্বা সর্বনিদ্বীবরো ভবেৎ ॥
ব্যবাস্তং সংগ্রবক্ষাবি লাখকং ভূবি ক্রব্ডন্ ।

রলোংৰতাং সমানীর ভদ্বোনো বেইলেবভাষ্ ।
পূল্যিকা নহারাজে ত্রিদিনং পূল্যেকার্য ।
শত্র্যক বট্তিংশ্বধিকং প্রত্যহং কাপন্ ।
আটোভরশতং পূর্কং চক্রবজ্যে অপেদৃর্য: ।
ভক্ততাং নবভিঃ প্রশ্বেদেটোভরং শতম্ ॥
ভতঃ পূর্ণাহিতিং দরা অপেদটোভরং শতং ।
ধনবান্ বাগ্যী সর্ক্যোবিৎপ্রিয়করঃ ।
বোড়পাহেন চ ভবেৎ সতাং সতাং ন সংশবঃ ॥

(মারাতন্ত্র ১২শ পটল)

এই সাধনের বিষয় অন্তলাকরে ১৬শ পটন এবং গুপ্ত-সাধনতত্ত্ব এর্থ পটলে বিশেষ ভাবে বর্ণিত হইয়াছে। বাছল্য-ভরে তাহা আর নিধিত হইল না।

লৈডিআম (দেশৰ) আমলতিকা (Willough bein edulis)।
এই লডার বে আমফল উৎপন্ন হয়, তাহার আখাদ বৃক্ষ আন্তের
ভাষ নতে।

লতিকা (রী) শতা।

"ইনং সন্ধা দ্বাবহম্পগভা হত্ত মলয়াং-ভলেকাং দদগেহে কিলম্বতি কেব্যামি রন্ধনীম্। সমীরেণোক্তৈবং নবকুস্মিতা চূতলতিকা-ধ্নানা মুদ্ধানং নহি নহি নহীত্যের কুম্বতে ॥" (উভ্ট)

লভু (পং) না-কড় (উণ্ ১) ৭৮)
লভোদগন (পং) লভারা উলগন:। অবরোহ। (বিকা॰)
লভিকা (বী) লভ-মতে (ক্তিভিদিলতিভা কিং। উণ্
৬) ১৪৭) ইতি তিকন্টাপ্। গোধা। (উজ্জ্ল)

লেখিলা, ব্রুক্ত থেপের গালিপুর জেলার অন্তর্গত একটা গওগ্রাম।
কারানিরার > মাইল দক্ষিপূর্বে অবস্থিত। এপানে প্রাচীনকের
নিগর্দন অরপ ২৬ ফিট্ উচ্চ একটা ব্রস্ত আছে। ঐ ক্সন্তের
কিরোদেশ নানা শিরনৈপ্যাপূর্ণ। যাখার বে ছইটা নারীমুর্তি
স্থাপিত ছিল, তাহা ভয় হওরার একণে ক্তরের পার্ছরেশে
রক্ষিত ইইরাছে।

লদনী (জী) একজন বিছ্ণী শ্লীকৰি।
নদান, কাজীবের পূর্বাংশন্তিত একটা প্রবেশ। মুহারাজের
অধীনস্থ একজন শাসনকর্তার নায়া পরিচালিত । [লাগক দেখ।]
ক্রমী (বেশক) ননী, নবনীত, মাধন।

লেদোর, যুক্ত প্রবেশের বেশ্রাল্ন জেলার অন্তর্গত একটা লৈলাবাস । এই নগরে ইংক্রাম্বরাজের একটা ছাউনী লাছে।
নর্ত্রপৃষ্ঠ মইতে ৭৪৫৯ কিট্ট উচ্চ, হিমানবের সাহবেশে অবস্থিত।
অক্ষা ১০০৭ গত ভিড এক ত্রাবিত ১৮৯ তেওঁ পুঃ। সম্রী
শৈক্ষালার সম্বর্গত মইবেও ইয়া ক্ষম্ক ক্ষেত্রটা বাবিত্রেটের

শাসনাধীন। আই নগন ১৮২৭ গুটাকে নীড়িত ইংস্লাজ-সেনার স্বাস্থ্যান্ত্রাসকলে পরিগণিত হন। সক্ষরী নগর ও গাজোর আখন একটা নগর বলিয়া গণ্য। [বস্থানী দেখা]

জ্যুদ্ধেরা, যুক্ত প্রদেশের শাহাররাপপুর জেলার রচ্নী ভহনীলের 'জর্গত একটা নগন। রচনী হইতে ২৯০ জোপ দক্ষিপপূর্বে 'জর্গত একটা নগন। রচনী ইতে এবং জাবি '৭৭' ৪৮' হর্ব প্রশান পারেরেতি একটা প্রাচীন হর্ম জাহে। উক্ত পরিখা এখন নগরের জাবর্জনা বারা ভরাট করা হইতেহে। ছর্জর্ম স্পান রামদ্যাল সিংহের 'জন্ম জাতীর আদ্বীন শ্বন্ধনের এখানে বাস। সিপাহী বিজ্ঞোহের সমর ঐ গুজ্মগণ বিশেষ জন্যান করার নগর ভ্রীভূত করিরা দেওবা হয়।

ক্পে, ভাৰ, কথন । ভৃষি পরবৈ সক সেই। কা কণ্ডি।
লোট্ লণ্ড়া লিট্ ললাণ। পৃঞ্ অলাপীং, অকপীং।
ল্ট্ লণিডা। ল্ট্ লণিয়ডে। সন্ লিলপিয়ভ। বঙ্
লালণাডে। বঙ্পুক্ লালিষ্টা গিচ্ লালয়ভি। পৃঙ্
অলীলণং। অপ + লণ = অণলাণ, অণ্ড্ব। আ + লণ =
আলাণ, আভাবণ। অহ + লণ = অহলাণ, প্নং পুনং কথন।
প্ৰ + লণ = প্ৰলাণ, নির্বিক্ষণন। বি + লণ = বিলাণ,
প্রিদেবন। লং + লণ = সংলাণ, প্রশার কথন। আই + লণ =
অনুলাণ, বারবোর কথন।

লেপন (हो) লপ্যতেজনেনেতি লগ করণে লুট্। ১ মুখ। ভাবে জাট্। ২ ভাবণ, কথন।

শ্ৰেকটয়ন্তি ব্লাগমধিকং লগমনিকং বজিনুমাণসাৰহতি। প্ৰাণয়তি চ প্ৰতিপক্ষ কৃতিগুকজ্ঞেৰ বহিতত ॥"

(আর্য্যানগুলতী ০৮১)

'ওকভেব দ্যিতত লগনং সভাববং গব্দে বনমন্' (ভট্টীবা)
লাপিত (ক্লী) লগ-ভাবে জঃ ১ মচন। (বি) ২ কবিত।
বাণিতমগ্রান্তীতি অচ্ছ ৩ বচনমূক। (অবর্ক ৪০০০৯)

লাপিতা (বী) দার্দ্ধিকা নাম পানীকোন। (ভারত জানিগর্ক)
লাপেটা (বেশক) পরশারে সংগার করিবা বছন। সহবৃক।
লাপেটা (বেশক) বরির চিব্রকার্যসূক্ষ বিদানা বিশেব।
লাপেটাক্র (বী) পবিত্র ক্রীব্রেল। (ভারত বনপর্ক)
লাপেত (পৃথ) বালরোধ্যে অধিকারী বেষতাতেল।(পার্যমর্গ্রুণ)১৬)
লাপিকা (বী) পাত্যক্রবিশেষ, পানী।

"अविकार गर्नियां क्**टा**र भक्तार भवति किरमर ।

ভাতিন্ খনীক্লতে ভাতেৎ লক্ষমত্তিক্তিক ।

নিহৈনা সন্দিল জাজা জনালভা কাম্যন্ন।

সন্দিল কুন্দী দুৱা কথা শিক্ষমিলালনা ।" (ভাৰতা)
প্ৰান্ধত প্ৰণানী—দুক্তে ক্ষিতা (গ্ৰাণ্ড) জিঞ্চন্ত ভালিয়া

হতে পর্করা ও কুই সনিতা নিজেশ করিছে ক্রিবে । বার উহা
আল দিয়া বনীভূত হইলে ভাষাতে লবক ও প্রবিচারি নলয় বিতে
হর, অনবার ইহা হানিত্র হইলে সালাইকে হয়। অইলপ
প্রণালীতে প্রস্তুত হইলে তাহাকে সন্দিলা করে। অধ—সুংহণ,
বলকর, হ্রা, পিড ও বার্নালক, ভিঙ্ক, প্রেরবর্তক, অকপাক ও
স্বিভিন্ন। এই পাভরবাকে প্রক্রার ঘোষনভোগ কলা রাইতে
পারে। নোহসভোগ ক্রমী দিয়া প্রস্তুত করিতে হয়। গালী
সনিতা (গোণ্নভূপ) দিয়া প্রস্তুত করিবার বিধান আহে।

লম্পু ল (রী) কূর্চ, নাড়ি (ছাগলপ্রকৃতির)। (ছালো° রা° ১৬।১।৩৮) লম্পু নিত্র (বি) কূর্চবৃক্ত (ছাগাধি) ।

লব, ১ বংশন। ২ শব। ভাগি- আমনে সক পৰাৰ্থে কক দেই। এই ধাড় ইনিং, লখি সৰধাড় সই নথডেন নোট্ গৰতাং। গিট্ লগৰে। সূত্ৰলখিই। প্ৰিচ্ নৰম্ভি-তে। গুড় অলগৰং-ভঃ অধ+গৰ অবস্থন। আধ্যনত্ত। বি+লব — বিলখ, বিলৰ্ভরণ। আ+লব — আব্যন, আশ্রম ন

"জনভাগৈৰ জিলোত শব্দ বাজেৰণকভাৰ। ব্ৰক্তিতং বৰ্মবেৎ সমাকৃ বৃদ্ধং তীৰ্মেবৃ নিক্ষিপেং ॥" (ছিতোপ') ২ উপাৰ্ক্তিত।

লক্ষ্ ক (মি) প্ৰাপ্ত। বিদি গাইগাছেন। লক্ষকাম (মি) স্বভাইনিদ। বাহাগ থাগা পূৰ্ণ হইগাছে। লক্ষকীৰ্ত্তি (মি) বণৰী। প্ৰতিষ্ঠাবান্।

ক্ষাচ্চতস (বি) প্ৰঃপ্ৰাপ্তচিত। বিনি প্ৰকাৰ জানগাও ক্রিয়াছেন।

मक्कमान् (वि) वाशिषदाः वयश्रहनः।

লাক্ষান্ত (পুং) বাজিনিশের। (ক্যালরিংয়াঁ ৬৩৮)

नक्षथ्न (बि) धनवान्।

हाज्ञनाञ्चन् (वि) नकः नाम यञ्च। शाण्यमाना, विशास्त्र सक्ति । हाज्ञनाम् (प्रः) व्याख यस्त्र मान १ - भूजीयत्मत्र विनाम ।

লকপ্রতিষ্ঠ (বি) লক্ষা অতিষ্ঠা কেন। বিনি প্রতিষ্ঠা গাস্ত করিরাহেন, বিধ্যান্ত ব্যক্তি।

লব্ধপ্রশাসন (জি) সংগাতে অর্ণণ। "লব্বচ ধনত সংগাতে প্রতি-গালনম্"(মছ ৭।৫৬ কুর্ক)

লব্ধলকে (ত্রি) অভিনৰিত বন্ধ প্রাপ্তি। বিনি নাম্য বন্ধ লাভ করিয়াছেন। শরবোর ভেদনার্থ প্রাপ্ত বানারি ।

मञ्जूरात् (जि) नकः बरता स्वर्गः। विनि बन्नेमाण विज्ञारक्ष्मः, वत्रश्राद्यः।

 লক্ষবিদ্য (তি লক্ষা বিশ্বা বেন। পঞ্জিত, বিনি বিশ্বালাত ক্ষিয়াছেন। লক্ষব্য (তি) লভ-তব্য। লাভার্ত, লাভের উপযুক্ত। "লক্ষবা-বর্ধং লভতে মহুয়ং" (হিজোসকেন)

ল্কাশ্ফ (তি) গ্রনাম। খ্যাত।

লক্ষসিদ্ধি (আ) শক্ষা সিদ্ধিঃ বেম। বিনি সিদ্ধি লাভ করিরাছেন। লক্ষা (আ) লভ-জ-টাপ্। নারিকাভেন।

'শণিত তাৎ করিতা লক্ষা তথা প্রোবিত ভর্কা।
কলহার্ত্তিত বাসসক্ষা বানীনভর্কা॥'(কটাধর)
এই লক্ষা শঙ্গে বিপ্রলক্ষা ব্রিতে হইবে। [বিপ্রলক্ষা দেখ]
লক্ষাস্থাত্ত (ত্তি) লক্ষা অন্তত্তা বেন। যিনি অন্তৰ্জা লাভ
করিরাছেন।

ল্কাবকাশ (ত্রি) লক্ষঃ অবকাশঃ যেন। যিনি অবকাশ প্রাপ্ত হইয়াছেন।

লক্কাবসর (ত্রি) যিনি কার্য্য হইতে অবসর গ্রহণ করিরাছেন, অর্থাৎ পেন্সনপ্রাপ্ত।

লব্ধি (ন্ত্রী) লভ-ক্তিন্। ১ লাভ, প্রাপ্তি। ২ গ্রহণ। লেক্ষোদয় (ত্রি) লব্ধ: উদয়: উৎপত্তিবঁত। ১ জাত, উৎপন্ন। (কুমারস° ১৷২৫) ২ বিনি সৌভাগ্য অর্জন করিয়াছেন।

লক্ম (ত্রি) প্রাপ্ত , উপার্জিত। (ভট্টি ৭।৬৫)
লভ, প্রাপ্তি, লাভ। ভাবি॰ আত্মনে॰ সক৽ অনিট্। লট্
লভতে। লোট্ লভতাং। লিট্লেডে। সুট্লকা। লুট্
লপ্যতে। সূঙ্জলক, অলপ্যাতাং, অলপ্যত। সন্লিপতে।
যঙ্লালভাতে। যঙ্লুক্লালভীতি, লালকি। ণিচ্লভয়তি
লুঙ্জললভং। আ+লভ আলালভ, ম্পর্ধ। উপ+লভ
ভউপলিকি, অহতেব। উপ+আ+লভ ভংগনা। সম্+
আ+লভ ভস্পাল, অহতেব। বি+প্র+লভ ভবিপ্রলভ,
প্রভারণা, বঞ্চনা।

লভন (क्री) প্রাপণ।

ল্ভস্ (গুং) বক (অতাবিচনীতি। উপ্ ৩০১১৭) ইতি অবচ্।
১ বালিবন্দরক্ষ্ । ২ ধন । ৩ বাচক । (উজ্জ্বন)

ল্ভা (ত্রি) লভাতে ইতি লভ (পোরছপধাৎ। পা তাসকি)
ইতি বং। ১ ছাব্য। (অমর) ২ লক্ষ্য, লাভের বোগ্য।
"নারমান্ধা প্রবচনেন লভ্যোন,নেধরা বহধা-ক্রভেন।
ক্রেমবৈষ বৃগুতে তেন লভাত্তকৈব আন্ধা বিবৃগুতে তন্ং ছাং॥"
(স্প্রকোপনি৽ অং।৩)

ন্মক (খং) রমতে ইতি রম (রমেরণ্চ লোপঃ । উপ্ ২০৩০) ইতি কুন্ রভ লকং । ১ বিড্গ, জার, উপপতি । ২ তীর্থলোবক । (উজ্জন) ৩ বিলাসী ।

্লেমান, বোধাই প্রেসিডেন্সীর আছদনগর, ধারবাড় প্রভৃতি

কোবাসী আতিবিশেষ। চারণ-বঞ্জারি নামে প্রসিদ্ধ। রাজপুতনার নারবাড় প্রদেশ হইতে এখানে আসিরা বাস করিরাছে। ইহা-দের মধ্যে চারম হোলকর, মধু, পবার, রতবার ও সিল্পে প্রভৃতি উপাধি দৃষ্ট হর। বর ও পাত্রপক্ষের উপাধি সমান হইলে ইহারা বিবাহ দের না, ভরির বিবাহ সম্বদ্ধে ইহাদের মধ্যে আর কোন বাধা নাই। ইহারা হিন্দু, সকলেই টিকিরাখে, কিন্তু বেশভূষা ও পরিছেলাদি বড়ই অপরিছের। এমন কি, সপ্তাহে গুই বারের অধিক পরিধেয় বস্তু ত্যাগ করেন মা।

গোকুলাইমী: শিমগা, দশেরা ও দিবালী উৎসবে ইহারা বিশেষ সমারোহ করে। বিবাহকার্যো গ্রামস্থ যোবীরাই ইহাদের পুরোহিতের কার্য্য সম্পন্ন করিরা থাকে। বিবাহ ও অস্ত্যোষ্টি ভিন্ন ইহাদের মধ্যে জার অঞ্চতম সংস্কার নাই। বিধবা-বিবাহ ও বছবিবাহ প্রচলিত জাছে। সন্তানাদি হইলে প্রস্থৃতির ৪০ দিন অশোচ থাকে।

বিবাহসখনে পাকা করিবার সমর বরের পিতাকে কন্সার হত্তে ১০ হইতে ১০০ টাকা, জামা, কাপড় বা ঘাঘরা ও ১টী হইতে ৪ টী রাঁড় দিরা থাকে এবং কন্সার পিতার নিকট হইতে বর একখানি উড়ানি ও পাগড়ী পার। বিবাহের দিন বর কন্সালরে যার, বরষাত্র সলে যার না। কেবল একটা বা ঘইটীমাত্র লোক সলে যার। যাত্রাকালে প্রথামত বরকে ধর্ম-শুন্দর প্রণামী অরূপ ১টী টাকা উড়ানির কোণে বাঁধিয়া লইতে হর। বস্তুতঃ তাহাদের কোন ধর্ম শুন্দ নাই, উহা সংস্কারমাত্র। বর কন্সাগৃহে উপস্থিত হইলে কন্সাকর্জা পাত্রকে সন্তামণপূর্বক গৃহে বসার এবং ব্রাহ্মণ আসিরা সম্প্রদান কার্য্যে বতী হন। বথারীতি সিন্দুরদানাদি সমাপ্ত হইলে দেবতা ও শুরুজনদিগকে প্রণাম করিয়া বর ও কন্সা বাসরগৃহে গমন করে। তদনস্তর উপস্থিত আত্মীয়েরা নাড়ু ভক্ষণ করিয়া গৃহে যার। বর শুণ্ডগালরে গুই তিন মাস বাস করে। বর পিতৃগৃহে সন্ত্রীক উপস্থিত হইয়া বিবাহের ভোজ দেব।

বিবাহিত পুরুষ বা রমণীর মৃত্যু হইলে ইহারা শব বাহ করে।
আবিবাহিত ব্যক্তিমাত্রই সমাহিত হইরা থাকে। অন্ত্যেষ্টিক্রিরা
সমাপনান্তে সকলে লান করিরা বল্পরিধানপূর্কক গৃহে
ফিরিরা আইনে। মৃত্যুর পর আত্মীর অব্দনের অলোচ হর
না। তৃতীর দিনে আতিকুটুবের ভোজ হর। কোনরূপ
প্রাথাদি হর না। সামাজিক কোন বিবরের মীনাংসা করিতে
হইলে আতীর পঞ্চারতের হতে তাহা নির্বাহিত হইরা থাকে।
ক্রমেতাঘাট, বর্জনা তীর্বর্জী লৈগভেছ।

লম্বন্, কাব্দের অন্তর্গত একটা প্রদেশ, সংগত নাম সম্পাক ও সুক্ষা । (দেশ্বনী) [সম্পাক দেখ ।]

লম্ব (🏋) জাতিবিশেষ। ब्लान्त्रक (पूर) टेकन-मध्यमात्रराजम । [टेनम रमस ।] লম্পট (জি) ধিড় গ, উপপতি। "অথেতরাত্রবীনৈমবং যন্তপি স্ত্রীবু লম্পট:। তথাপি ন স হৃঃথেহতিল্লী কি: ভাতথাবিধঃ ॥"(কথাসরিৎ ৪৭।>٠১) ২ আসক। "যথৈহিকমূত্মিককামলপাটঃ স্থতেবু পারেবু ধনেবু চিন্তর্ব ॥" (ভাগ - ৯।১৫ জ -) ৩ কামুক, লোজা। ट्राञ्ञा (क्वो) > नगत्राज्यः । २ व्यनभग्राज्यः । ন্তাম্পাক (গ্রং) > লম্পট। ২ পুরাণোক্ত দেশভেদ। জ্ঞার নাম সুরও। (ভারত দ্রোণপর্ব ১১৯।৪২) ভারতের উত্তরপন্তিম দীমান্তে অবস্থিত ও কাব্ৰের অন্তর্গত বর্তমান লম্খন প্রদেশ প্রাণীন লম্পাক জনপদ বলিরা অনুমিত হর। ৩ পদ্মনাভক্ত স্বরশাস্তভেদ। **अनम्भा**টিছ (পুং) পটহবান্ত। (হারাবলী) লম্ফ (পুং) গ্লুডগতি, চলিত লাৰ্। লম্ফ থাম্ফ (দেশজ) লাফান ঝাপান, অতিশর আন্দালন করা। लन्कन (ज्ञी) गांकान। লম্ব (পুং) লমতে ইতি লবি অবক্রংসনে আচ্। ১ নপ্তক। ২ অঙ্গ । ৩ কান্ত। ৪ উৎকোচ। প্রামৃতং চৌকনং লবোৎকোচঃ কোশলিকামিষে। উপাচ্চারঃ প্রদা নন্দা হারো গ্রাহারনেহপি চ ॥' (হেম) ৫ অঙ্গভেদ। 'চরলম্বর্গমাভেদাঃ পাটকোহকাদিচালনে।' (শব্দমালা) ক্ষেত্রাদিতে শব্দমান রেখা বা ক্রে। ত্রিভূ**লক্ষে**ত্রর লম্মানরেখা, লব্দলরেখার উপরে ঠিক খাড়া হইরা বে রেখা থাকে। [®]বিভূজে ভূজরো বোগন্তদনন্তরগুণোভূবাল্পতো লক্ষ্যা। ষিষ্ঠা ভূকণবৃতা দলিতাবাধে তল্পে: ভাভাং 🛭 স্বাবাধাভূজকতোরস্তরমূলং প্রজারতে লয়:। লম্বৰণ ভূমাৰ্কং স্পষ্টং ত্ৰিভূজে কলং ভবতি ॥" (লীলাবতী) 'मिळावित्सव।' (इतिवर्भ ४० । २२) (कि) ৮ मीर्च । **"দুরতঃ শোভতে মূর্যো লব্দাটপটা**রুড: । ভাৰক্ত শোভতে মূৰ্বো বাৰং কিঞ্চিল ভাৰতে ॥" (চাপকা) ज्यान। "পাঞ্জো>রমংসার্শিতলবহার:।" (রবু ७। ७०) > ब्याजित्याक विव्यत्त्रथात्र नमाखन्नत्त्रथात्कः । ১১ मूनि-্রেডদ i >২ জ্যোতিবোক্ত গ্রহদিগের গতিভেদ।

लञ्चक्र (थर) मत्त्रो कर्णी रक्त (अहाम । २ व्यक्तिमृत्रक ।(व्यक्ति)) ও রাজস : ৪ হতী। « শ্রেনপজী। (রাজনি°) 🖫 শশ্কী ধরগোৰ। "লম্বকৰ্ণঃ দাদাঃ দ্ৰী লোমকৰ্ণো বিলেন্তঃ" (ভাৰঞ্জী) লখা কর্ম কর্মা°। ৭ দীর্ঘশোর । (ত্রি) ৮ তদ্বুক, দীর্ঘ কর্মদিনিট। "লবোদৰ্ব্যো লবকণাস্তথা লবপায়েধরা: ॥" (ভারত ৯।৪৬।৩৪) লম্বকেশ (গুং) লন্ধ কেশ ইৰাপ্ৰভাগে। বন্ধ। দীৰ্ঘাপ্ৰসূক্ত कुणमन विहेन। "উৰ্কেশে। ভবেৎ ব্ৰহ্মা লখকেশন্ত বিষ্টরঃ। निक्तिगावर्त्तका जन्मा नामावर्तक विदेतः॥" (नःदाज्ञकः) विवाहकारण वरत्रत जैशरवनारमत क्षक विहेत वर्षकु स्त्र। কতৰ ওণি কুনা গইরা ভাহার অগ্রভাগে বামারর্ভে নাইবিতর (चाफ़ाइट्लिह) त्वहेन क्रिया च्याचनि निस्त्रव विरक् नक्सान করিরা নিলে বিঠর হর। [বিটর বেখ] (জি) ২ বীর্বকেশ্যুক্ত। লম্বকেশক (খং) মুনিভেগ। লম্বজঠর (অ) গৰোদর, লখা লেটা। লম্বজিহ্ব (মি) রাক্ষসভেন। লম্বজ্যা, লম্বজ্যকা (ত্রী) জ্যোভিষোক্ত জ্যা-রেখাভেদ। Sine of co-lutitude नाचमन्छ। (जी) नवा नखा हैव कमानि व्याः। ১ निरहनी भिन्नगी। (तासनि°)(बि)२ दृश्कगनविभिष्ठे। मञ्चन (ज़ी) नवरण देखि नव-न्र्हे। > नास्त्रिनविक कडिकानि, নাভিদ্যবিত্যার, পর্যার প্রসন্ধিক। (অমর) ২ অবস্থন, আপ্রর। ও ঝোলান, দোলন। ৪ আপ্ররপ্রহণ। (পুং) नप-न्। ६ करु। (अस्प्र[©]). লম্বপয়োধরা (ত্রী) > লংদান অন্যুক্ত ত্রী। ২ রন্দান্তচর মাতৃতেদ। লন্দ্ৰবীজা (ত্ৰী) नदानि বীলানি বজাঃ। সৈংহলী/পিয়লী। (স্বাজনি°) लख्यांन (वि) नष-भामह्। नषात्रमान वस्त्र । लखद्भ (मन्छ) > जाएचत्र । २ हेरदाजी number नंदक्त जनस्थ । লম্বিক্চ (অি) নৰা কিক্ বন্ত। বিপুশ্নিভছ। লন্দ্ৰ (বী) > শন্ধী। ২ গৌরী। ৩ ভিক্তভূপী। (মেদিনী) ৪ দক্ষকজ্ঞাবিশেব। (হরিবংশ) ৫ স্থাবরবিবের অন্তর্গত পত্র-विव। (ऋक्षण्डक्ष) ७ हिमानवक्षा। "ততক্সক্ৰচ: প্ৰস্থা দেবীসন্ধামথাত্ৰবীৎ। शंक्ष्य नत्य नीवः घः यांन नःत्रकनः क्रूकः॥" (दक्षितःम) (रामक) । शीर्षः मश्चीरम, ब्लाजिरबाक जन्मारम तथा वित्मव हेरबाकीरक हेहारक Complement of latitude वा Co-latitude वरन। मञ्जाहि (प्रमक्ष) गयमान । वाकाहे ।

ৰোক্ত পঞ্চদশবোগ।

क्रमुक (পুং) नव-वार्थिक्न्। > नव । २ वहतिनव । ৩ জ্যোতি-

লম্বাই চৌড়াই (নেশৰ) > ৰৈখ্যে আছে বিছত। ২ বেশী বাগাড়ক্ষ্মী

লম্বাকাঁটা ছরিণাবাটানা (সেশৰ) মুক্তক। লম্বাক্ত (প্:) মৃনিজে।

লম্বানটীজাম (বেশৰ) বৃক্তের। (Eugenia claviflora) লম্বানি, বেংবাই প্রেসিডেন্সীর ধারবাড়জেলাবাসী ভ্রমণশীল জাতিবিশের।

লক্ষামুখ (গেশৰ) বাহার মুখ একটু দখা অর্থাৎ দীর্ঘ।
লক্ষালন্ত্রি (বেশৰ) সোলাক্ষম । সমান লবমানভাবে ।
লক্ষিক্ষা (বী) লবডে বা লখা-ধূল্-টাশি অত ইন্ধ । তালুর্ম স্ক্রান্তিকা, চলিড আলজি, পর্যার ঘণ্টিকা, প্রধানবা, গলগুণ্ডিকা, অলিজিকা, অলিজিকিকা। (শক্রমাণ্ড)

निष्यकारकांकिना (बी) (मन्डास्डम ।

मिश्चिन् (वि) नवयुक्त । नविष्ठ ।

লশ্বিত (ত্রি) শ্ব-ক্তা ১ অংশিত।

শ্বদধরচ্থনলখিতকজ্ঞলমূজ্ঞলর প্রিরলোচনে।" (শীতগোবি° ১২। ১৮) ২ মাংল। বৈভক্তি।

লিছিয়া, পঞ্চাৰপ্ৰদেশের বুসাহর রাজ্যের অন্তর্গত একটা গিরিপণ।
কুনাবর হইতে ক্রমশঃ উত্তরে হিমালরপৃষ্ঠ অতিক্রম করিরা
গিরাছে। অক্ষা• ৩০°১৬ উ: এবং জাখি• ৭৮°২• পৃ:। এই
স্থান সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ১৭ হাজার ফিট্ উচ্চ।

লমুক (পুং) > নাগভেদ। ২ জ্যোতিবোক্ত পঞ্চল বোগ। লমুষা (স্ত্রী) সাতনল হার।

লেদ্রোদর (পুং) লখমূদরং বক্ত। ১ গণেশ। (অমর) ২ নৃপ-বিশেষ। (ভাগৰত ১২। ১। ২২) (ত্রি) ৩ ঔদরিক, পেটুক।

"ভতো লখোদরেণেত্য পুংসারোপিতবাছক:।

সম্পাদিত: স যাতত্ত্বনং কেশরিণীরুতে ॥"

(কথাসরিৎসা[°] ৩• । ১०২)

লেখোষ্ঠ (পুং) লম্ব ওঠো বস্ত, ওবোইনোঃ সমাসে ইতি অকার-লোপেন সাধুঃ। ১ উট্ট। (রাজনি[°]) (ত্রি) ২ লম্মান ওঠযুক্ত। ৩ ক্ষেত্রপাল দেবতাবিশেষ।

"বুগান্তো ৰাহ্ককাথ সংখাঠো বসবন্তথা।"

(প্রয়োগনার ব্দেরণালপ্র°)

লক্ষেতি (পুং) > উট্ট। (জিকা°) (জি) ২ নীৰ্ব ওটবিনিট। লক্ষ্য (পুং) > নাভ।

লম্ভক (তি) প্ৰাণৰ।

লক্তন (রী) গতি গতধাতৃ নুট্। ১ প্রতিগত। ২ কবি। ৩ গাহনা।

ল্ক্রা (বী) লভি লভ-অচ্ টান্। বাটলৃথলা। (হারাখণী):

লস্তাড়ি, দান্দিণাত্যের আর্কটবিভাগবাসী এক প্রমণশীস আতি। লস্ত্ব্ক (বি) নিতাগ্রাহী, বে প্রতিদিন প্রহণ করে। লয়, গতি। ভাদি আন্তনে সক' সেট্। সট্সরতে। সুঞ্

লয়, গতি। ভাগি আকানে° সক° সেট্। সট্সয়ডে। সূঞ্ অসমিট।

লার (পুং) নী-জাচ্। ১ বিনাশ। ২ সংশ্লেষ। ৩ প্রানয়। বেদান্তসারে নিখিত আছে যে, অথক বস্তু অক্সম্মন করিয়া চিন্তর্ভির বে নিজা, ভাষাকে লয় কছে।

"অখণ্ডবন্ধবলধনেন চিন্তবৃত্তেনিক্ৰা" (ৰেলান্ডসা°)

স্থবোধিনী-টীকা-মতে—এই লয় চুই প্রকার, প্রথম প্রকার
লয় বথা—শমদমাদি জন্তাই যোগাস্তান হারা নির্বিকরক সমাধিতে
পরমানক্ষরেপ ব্রহ্ম চিত্তর্তির লীনতারপ বে অবহা, তাহাকে
লয় কহে। অভিশন্ন উত্তপ্ত লোহতলে ক্ষিপ্ত জলবিন্দ্র ক্লম্ম
অর্থাৎ ঐ লোহপাত্রে জলনিক্ষেপ করিবামাত্র তাহা যেরূপ:
তক্ষ হইরা হার, সেই রূপ বোগালাদির অমুঠানে নির্বিকর
সমাধিলাভ হইলে চিত্তর্তির ধর্ম হুংখাদি হইতে পারে না।
জল যেরূপ লোহাগিতে গুকাইয়া যায়, তত্রপ চিত্তর্তিও
পরমানক্ষরেক্ষ লীন হইরা যায়, স্থতরাং চিত্তর্তিই হখন লীন
হইরা গেল, তখন চিত্তের বৃত্তি যে বিকেপাদি তাহা আর
উপস্থিত হয় না। মূর্জাবন্ধার জায় আলভাদিতে চিত্তর্তির
বাহ্ শলাদিবিবর গ্রহণ করিতে না পারিয়া প্রত্যক্ আত্মস্বরূপে
অনবতাসন হেডু চিত্তর্তির যে গুকীভাব, তাহাই দিতীয় লয়,
তামসিক যে কোন বিকার হারা চিত্তর্তি যথন গুক্ম হা অড়
হইরা থাকে, তথনই এই লয় হয়।

৪ তৌর্যাত্রিকের সাম্য, নৃত্য গীত ও বাছাদির যে সমতা তাহাকেও লয় কছে। যে খনে গীতাদি সমতা পার, গীতবাঞ্চাদির তাল বা সমান সময়। সলীতদামোদরে দিখিত আছে যে, হৃদর, কণ্ঠ ও কপাল এই তিনস্থলে লয়ের ছিতি। কোন কোন পতিতের মতে, লয় ৪০ প্রকার, ভগবান্ একমাত্র লয়ের বশীভূত এবং জনার্দ্দন ইহাতে লীন আছেন।

লর যথা—ছিগদী, বলতিকা, ঝল্লিকা, ছিল্লখণ্ডিকা, বামক্রব, ছিলা, খণ্ডধাবা, ফড়কক, অন্তটিকা, কলতিক, খণ্ডক, থরিক, চতুরত্র, অর্কচতুরত্র, নর্জক, আত্র, বল্লী, উলালনা, অবক্রতী, নন্দবটী, কাদৰ, চর্করী, বটা, মিত্র, অর্কবনিতা, অতিচিত্র, সমর, বলিত, অর্কদল, আবিহ্ব, টঙ্কবক, চিত্র, বিচিত্রিক, আরী, বিক্রতধাবা, বুকুল, বিলোলক, রমণীর ও ক্রক্টক, এই ৪০ প্রকার লয়।০ (সলীডলামোঁ)

অথ লয়া: কবিছিতি: কঠিছিতি: কণালছিতিয়িতি লয়য়য়ং। অপয়য় ড়ু—

বিপদী ভাষণতিকা বয়িকা ছিয়্বাটিকা।

য়ায়য়ব্যতবিয়া বঙ্গাবা কয়য়ব: ঃ

"यहां बदब्रजनः नकः जत्यामृहः नकः क्रम्।

बुद्बाज (नाक्त्माहाछा: निज्याहिश्त्रयान्य ॥"(छात्रः >>।२६।>६)

(রী) ৬ লামজক। (ভাৰপ্র°)

কায়ন (क्री) > ৰিশ্ৰান, পান্তি। ২ ৰাটা, বিশ্ৰানন্থান। ও আশ্ৰয়-গ্ৰহণ।

লায়পুত্রী (ত্রী) লায়ত পুত্রীব। নর্জনী। (শল্বরদ্রাণ) লায়যোগ (পুং) তত্ত্বোজনাধন বোগজেন। (প্রাণজোণ ২৪০।১।১) লায়ল্যীমজন্মু, পারজোপাধ্যানোজ নারক নারিকাজেন। ইহাদের প্রেমের চিত্র অবলম্বন করিরা বাদালা ভাষার কএকখানি গ্রন্থ রচিত হইরাছে।

ব্যাদা, বালালার হোটনাগপুর বিভাগের অন্তর্গত একটা লৈল-শ্রেণী। সিংহত্ম জেলা পর্যন্ত পূর্ব-পশ্চিমে বিস্তুত। জারারস্ত্র (পুং) লয়স আরস্ত্রো যথাং। নট। (ক্রিকাণ) লারাবার, মধ্যভারতের ভোগাল এজেন্সীর ধার ও বেবান্রাজ্যের অন্তর্গত একটা বিভাগ। ভূপরিমাণ ৩০ বর্গমাইল। ১৮৮০ খুটালে স্থানীর আয়গীরদার রামচন্দ্র রাও পোবারের মৃত্যুর পর, ভাহার আতুস্ত্রকে মাসিক র্ডিদান ক্রিলা ঐ সম্পত্তি ধার ও

দেৰাস্রাজ্যের অস্তর্ভুক্ত করিয়া শওয়া হয়।

লারেক্স (গর্জ Sir John Lawrence Bart. K.C.B) ভারতের একজন ইংরাজ রাজ প্রতিনিধি। ১৮৬০ খুটাকে অক্সাৎ ধর্মণালার লর্জ এল্গিনের (Alexander Bruce Earl of Elgin and Kincardine) মৃত্যু হওয়ায় এবং ওহাবী নামক মৃসলমান-সম্প্রদারের বিজ্ঞোহিতার বড়্যত্ব লক্ষ্য করিয়া লগুনত্ব মহামতি সরজন লরেক্ষকে ভারতের গ্রন্থি জেনারল ও ভাইদ্রর নিযুক্ত করিয়া পাঠান। তদমুসারে ১৮৩৪ খুটাকের ১২ই আছয়ারী কলিকাভার পদার্পণ করিয়া লর্জ লরেক্ষ রাজকার্যভার গ্রহণ করেন। ভারতে আসিয়াই তিনি

ন্ধক্তিকা ক্লতিক: বন্ধক: বৃদ্ধিক্তবা।
ক্ষিত্ৰকুল্পনাং ক্ৰিক্তুল্পনাংশ নৰ্থক: ঃ
আন্ত: বন্ধুলালনাবকুটা নক্ষ্যীভাগি।
কাৰক্ষ্যী বটা নিজাংগ্ৰনিতা ততঃ ঃ
ক্ষাতিভিত্ৰ: সমন্ত বনিতোংগ্ৰনিতা ততঃ ঃ
ক্ষাতিভিত্ৰ: সমন্ত বনিতোংগ্ৰনিতাকা।
ক্ষাতিভিত্ৰ: সমন্ত বনিতোংগ্ৰনিতাকা।
ক্ষাতিভালি চমুক্লোংগ বিলোকক: ।
সম্পান্তভালি ক্ষাত্ৰালি বন্ধুলাইক: ।
ক্ষাত্ৰিক্ষেক্ত ক্ষাত্ৰীক লাজ্যাভালৈ: ।
ক্ষাত্ৰিক্ষেক্ত ক্ষাত্ৰীক লাজ্যাভালি: ।
ক্ষাত্ৰিক্ষাত্ৰীক বাৰ্মান্ধনে নীৰো ন্ধাৰ্মা: ।
ক্ষাত্ৰীক ক্ষাত্ৰীক বাৰ্মান্ধনে নীৰো ন্ধাৰ্মা: ।

আবালা অভিবানের অবনান দেখিয়া কডক নিশ্চিত্র হইলেন, কারণ তৎকালে চীনের আতর্জাতিক বৃদ্ধ ও ধর্মোক্ষক কুল্লনান-গণের বিজ্ঞোহিতা ইংরাজের বাণিজ্যার্থের অভ্যার হইবাছিল। তিনি উক্ত বর্ধের অভ্যাবর মাসে মহাসমারোহে লাহোরে ব্রবার করিয়া ও শত রাজভবর্গে পরিবৃত্ত হইরা ভারভরাজ্যে পাত্তি বিধান করিয়াছিলেন।

এই সমরে বালালা-গবর্মেন্ট ভোটান লাতির উপদ্রবে
বিশেবরূপ উভাক্ত ইইরাছিলেন। এই চুর্বুভ বস্থাবিগবে গমন
করিবার অভিপ্রারে ভিনি মালকাটার, ডাক্সফোর্ড, রিচার্ডসন্,
গাক্, পিউ প্রভৃতি লেনামারকের অধীনে ইংরাজসেনাদলকে
নানান্ত্রিক ইইডে ভোটাম আক্রমণ করিতে আদেশ বিলেন।
ডদমুসারে ইংরাজসৈন্ত ভোটান অভিমূপে প্রধাবিত হইল।
নানাহানে বুভ করিরাও ভোটানরাসী ইংরাজ-বাহিনীকে পরাত্ত
করিতে পারিল না। অবশেবে ভাহারা ইংরাজের সহিত সভি
করিল। ইংরাজ-রাজ ভোটানের দেবরাজের তে সকল প্রদেশ
ভারতসীমাত্তমুক্ত করিয়া সইলেন, ডক্কছ তিনি ভোটান-পতিকে
বার্ষিক ২৫ হাজার টাকা নিতে বীক্রত হন। ইহা হইতে
রক্তক্ষরকারী ভোটানবুরের অবসান হয়।

এই সমরে ১৮৬৫ খুটানে প্রধান সেনাপতি সর হিউরোজ পদত্যাগ করেন এবং তৎপদে সর উইলিরম্ রোজ মান্সফিন্ড কে, সি, বি, নিযুক্ত হন। ইনি শক্তক্র, প্রধাব, সিপাহীবিজ্ঞাহ ও ক্রিমির যুদ্ধে বিশেষ বীরম্ব প্রদর্শন করিরাছিলেন।

উক্ত বৰ্ষেই রাজপ্রতিনিধি লয়েক্স গঞ্জাৰ ও অবোধ্যার প্রজ্ঞান রুক্সের অর্থিরক্ষার বন্ধবান্ হইরাছিলেন। ১৮৬৬ শৃষ্টাক্সে উড়ি-ব্যার মহা ছর্জিক উপস্থিত হর এবং ক্রমশঃ ৪ শত মাইল দৈর্ঘ্য ও ৭০ মাইল প্রস্থ স্থানে বিস্তৃত হইয়া পড়ে। মাক্রাজের লাট হারিশ এই সমরে বিশেষ বলাক্সভার পরিচয় দিয়াছিলেন। এই মহামারীতে প্রায় ৮ লক্ষ লোক কালকবলে নিপ্তিত হইয়াছিল।

এই সমরে ১৮৬৭ খুরীকে মহিন্তরন্নাক্তর রাজ্যাধিকার লইরা মহিন্তরে গোলমাল উপত্তিত হয়। মহিন্তররাক উপযু গুপরি আপনার প্রার্জনা জানাইরা লও ভালহোঁদী, কানিং, এল্পিন্ ও লাকেলকে আবেদন পাঠান। লরেক বীরভাবে ও বিচক্ষপতার সহিত লে কার্য্যের মীমাংসাভার ভারতসচিবের (Conservative Secretary of State for India?) হতে সমর্পন করেন। ভারতসচিব মহিন্তররাক্তের লভ্তকপ্রেকে রাজ্যের কর্তৃত্ব দান করিতে বীরুত হইরাছিলেন। তাহার অধিকারভালে মিশর ও আবিসিনীর বুঙ্কে ভারত হইতে দেশীর সেরাক্তর প্রক্রিক আবিসিনীর বুঙ্কে ভারত হইতে দেশীর সেরাক্তর প্রক্রিক। উক্ত করের ভারত-প্রতিনিধি

লখ্নো নগরে একটা রাজনরবাজের অন্তর্ভান করেন। তাহাতে তথাবালে উত্তরপশ্চিম-ভারতবালী তালুকনার, অমিনার ও অবাধ্যার প্রকাশাবারণ ভারতেখনী ভিত্তোরিয়ার প্রতি স্থাননা ও ইংরাজ গমর্মেন্টের প্রতি স্থাজতভিত্র চরম নিদর্শন প্রদর্শন করিয়াছিল।

এই বৎসত্ত্বে ক্ষরাজ-সেনাগতিগণ মধ্য এসিয়ার বোধারা-ুরাজ্যে 😘 উজুবেকিছান প্রানেশে আসিয়া তথাকার আমীরকে আশ্রম দান করের। আমীরপুত্র বিজ্ঞাহী প্রকাবর্গের সহিত बिनिष्ठ इरेब्रा निष्कृतिःशाम अधिकात्त्र मटाई हिल्लन। ্ৰৰদেশার আত্ৰরপ্রাপ্তিডে খীর রাজপদ স্থূদ্য করিয়া আমীর ক্লভক্ষতা স্বরূপ ক্রমিগকে বোধারার স্থান দান করিলেন। ক্লবের আগমনে ভারতের বিপদের কারণ হটবে লানিরা লর্ড লয়েক্স আফগানপতি ও ইংরাজমিত্র লোক্ত মহন্মদের পুত্র শের-**ভাগীকে** কাবুল-সিংহাসনে <u>ৰ্যাইয়া ইংরাজজাতির</u> ও রাজ্যের মঙ্গলবিধানে তৎপর হইলেন। শের-আলী রাজ্য হইতে विठाफिक इहेरनम ध्वरः धक्कम आंकशानतालपूक्क कररमनामरन মিশিত হইরা রাজ্যধিকারে বড়্যর করিতে লাগিলেন। এই দারুণ গোলবোগের সময় মহামতি লবেন্স বিশেষ গাজীর্ব্যের সহিত নিরপেক্ষতা অবলম্বন করিয়াছিলেন, তাঁহার এই नित्रत्भक्त त्रांबनीजित्क त्रांबनीजित्कता "as masterly inactivity" विश्वा धाभः मा कश्चित्रा शास्त्रन्।

তিনি ভারতে প্রথার স্থর্ছির জন্ম থাল বিস্তার করিয়া
যান। তৎকালে তিনি ভারতের সর্বর থালবিস্তারের (complete
canalisazation of India) প্রস্তাব করিয়াছিলেন, কিছ
চোহা বহবোটী টাকা ব্যর্মাধ্য হওয়ার এবং রাজকোব হইতে
অর্থের সঙ্গান না হওয়ায় সে প্রস্তাব স্থগিদ হয়। তাঁহার
আাদেশে ভারতের গ্রহেশ্ট স্থল সমূহে বাইবেল গ্রন্থ পাঠ্যপৃত্তকরূপে ব্যবহৃত হইয়াছিল।

১৮৩৯ খুটাবে তিনি ভারতের প্রতিনিধিছ জ্যাগ করির।
, ২৭শে মার্চ তারিখে বুটেনরাজ্যে কিরিরা যান। ভারতসামাজী
ভারতে (Baron Lawrence of the Panjab and Grately
in the county of Southanton) মধ্যাদা এবং নানাবিধ
মান্তত্তক উপাধি ও পারিভোধিক প্রদান করেন। ১৮৭৯ খুটাবে
ভাঁচার মৃত্যু ঘটে।

লারেক্স (সর-ছেনরী), একজন ইংরাজ সেনাপতি। তিনি
সিপাহীবিল্রোহকালে, অযোধ্যার বিদ্রাহিদলের সহিত বৃদ্ধ
করিরা বিশেষ বীরত্ব প্রদর্শন করেন। নথ্নৌ অবরোধকালে
ও চিন্ততের বৃদ্ধে তিনি ইংরাজের স্বার্থরকার ক্রম্ত আত্মোৎসর্গ
করিরাছিলেন। চিন্ততের বৃদ্ধে বিদ্রোহিদক ক্ররণাত করিরা

বীরদর্শে রেসিডেন্সী আক্রমণ করে। তাঁহানের একটী গোলা হেনরী লরেন্সের কক্ষমধ্যে তারিষ্ট হয়। তাহার আঘাতে ্ঠা জুলাই ভাঁহার মৃত্যু ফটে। ল্রড (ইংরাজী) ১ খনাচ্য ব্যক্তিদা সন্মানস্টক উপাধি। ্ব মহাপ্রভু, খুইধর্মপ্রথার্থক যীওখুই ইনি Lord, the saviour অর্থাৎ মহাপ্রভু ও পরিত্রাতা বলিরা খুটানসমাজে পুঞ্জিত। ত পরমণিতা পরমেশ্র। मर्फ शांक , जक्कन रेश्ताकरमनाপिक । [शांकरम्थ ।] ল্ড লেক, একজন ইংরাজসেনাপতি। [দেক দেখ।] লুকুর্ গতি। ভারি পরতৈ সক সেট্। লট্লক্তি। বৃঙ্ अनक्तो**ः। नि**ष्ठे नमर्का। नुष्टे नर्किछा। ललं ने भा। अमलक्तामि छे छत्र नक तनत्। निर्मनश्कि, লালয়তি-তে। ललिए क्य (१११) ननहीं बिस्ता रहा 🔰 छेट्टे। २ कुक्या (বি) ৩ হিংল। (মেদিনী) ৪ চলদরসনাযুক্ত। "ভাষক প্রকটীভূর ভগবান ভৈরবারুভি:। উদ্বতাসিল শক্তিব: কৃষা ভ্রমারমভ্যধাৎ 🗚 (কথাসরিৎ ১০৬/১২৭) लल् (जि) नफ़ नफ़ फ़क्र न। > विनामयुक्त । २ छेनाइविनिष्टे। ৩ জিহ্বাক্রিয়াবিশিষ্ট। ৪ জক্ষণবিশিষ্ট। ৫ উৎক্ষেপবিশিষ্ট। ललामचु (भूर) मन ९ ठनमच् रख । > निम्लाक । (क्रोधत) ল্লন (ক্রী) লল-ল্টাট্। ২ কেলি। (হেম) ২ চালন। (নাগোজীভট্ট) **"বীপিচর্ম্মপরিধানা শুক্ষমাংসাতিভৈরবা।** অতিবিস্তারবদনা জিহবা ললনভীষণা ॥" (দেবীমাহান্যা) (পুং) লল্যতে ঈপ্যাতে ইতি লল-কর্মণি ল্যাট্ । ৩ বাল । ৪ সাল। ৫ প্রিরাল। (রাজনি॰) ললনা (বী) লগরতি ঈশতি কামান লল-লাট্-টাপ্। কামিনী। "রতিলুলিতললিতললনা ক্লমজললববাহিন মুছর্বতা। শ্লথকেশকুস্মপরিমলবাসিতদেহা বহস্তানিলাঃ ॥" (কলাবি » ১/৫) ২ নারীভেদ। ৩ জিহবা। (মেদিনী) ৪ ছলোভেদ। এই ছম্পের ২, ৩, ৭, ৮, ১০, ১১ জ্বজর শুরু, ভ্রির বর্ণ ল্ডু, এই ছন্দের প্রতি চরণে ১২টা করিয়া অকর আছে। । অন্ত প্রকার ছন্দোভেদ, এই ছন্দের প্রতি চরণে ১২টা করিয়া অকর चाहि, जनासा २, ७, ७, १, ४, ৯, ১०, ১১ वर्ग सक, उद्धित नच् । ৬ গাথাভেদ। ललनां शिव्र (क्री) नननानार थिवर । > द्वीरवव्र । (क्रांकनि॰)

(গুং) ২ কদৰ। ৩ কামিনীবল্লভ, জীবিগের প্রির।

ललस्तिका (जी) नगरकार बार्स कन्। > नाक्षिमक्रिकापि.

সংয়ত প্ৰায় লখন, নাভিল্পিড্ছার। ২ গোলা। (প্ৰমালা)

ল্লনিকা (রী) শ্লনা।

*ब्ह्नां*क (११) (महन।

ব্লাট (ফ্লী) লগং ঈখাং অটডি আগরতি অট-অন্ঃ অবরব-় বিশেৰ, চলিত কপাল। সংস্কৃত প্ৰ্যাস্ক—অলিক; গোধি,মহাশুম, নাম, ভাল, কুণানক, অলীক, নলাটক। ালভুপুরানে লিখিত च्याटक रप, याकारनत ननावे **जेवक; विश्व अ** विवयः, छाकाबा निर्धन ध्येवः वारात्मत्र ननाउँ व्यक्तिकाहर्गक, काराज्ञा धनवान्। धनेक्रभ 🕶 ভক্তিবিশাল হইলে থার্থিক ও:শিরাল হইলে পাপকারী, ব্যৱসাদি--মেখা ও উন্নতশিরা *থাকিলে: মনবাদ*্ধ সংবৃত হুইলে ভূপণ, ও উন্নত হইলে নৃপ এবং নিম হইলে পাপকারী হইরা থাকে। শলাটের উপরি বাহার জিনটা রেখা আছে, ভাহার শভবর্ব পরমায়, এইরপ চারিটা রেখা থাকিলে ৯৫ বংবর পরমায়ুও - काळा, त्रिशां ना शांकिरन »• वरमन्न भन्नमामू, त्रिमां हिन्न खिन्न হুইলে পৃংশ্চল, কেশান্ত পর্যাক্ত থাকিলে ৮০ বংসর পর্মায়, a, o, a वा वहरतथा थाकिएन e बदमत, बक्क हरेएन se वद-সর এবং জলরগামী রেখা হইলে ৩০ বংসর এবং বামনিকে ু ব্রুচরেথা হইবে বিংশভিবৎসর পর্মায়ু হইরা খাছে। রেথা : कुल হইলে অলারু হয়। । (গরুড়পু •)

দামুদ্রিকেও ইহার বিশেষ বিবরণ বর্ণিত হুইয়াছে, বাহারা সামুদ্রিকশাস্ত্রে অভিজ্ঞ, তাঁহারা ললাট দেখিরা মানবে আয়ুও শুভাওত প্রভৃতি নির্দেশ করিতে সমর্থ হইরা থাকেন।

স্লাটক (মী) নুলাটনের দলাট-কন্। > প্রশন্তল্লাট। (শন্তর্গা) ২ ল্যাটনাত্র (খনঞ্জ)

ক্লনাটস্তপ (বি) ক্লকটিং তপতীতি দ্লাটস্তপ (অহ্যালনাটয়ো-দু শিতপো: । াৰা ও হি । ১৯) ইতি এস্ মৃম্। ১ ললাট-তাপক, নলাটতাপকারী ১ । ই হুৰ্যা ।

শ্হবিভূ লামেঘবতাং চতুর্বাং মধ্যে ললাটক্তপসপ্তসপ্তি:।"(রঘু ২৩।৪১)

"উর্নের্নিপ্লৈ: শুন্ধেল লাটে বিবনৈত্বা।
নির্দ্ধনা ধনবন্ত্বল আর্কেলুস্থুনৈর্নিরঃ র
আচার্যা: উত্তিবিলালৈ: নির্দ্ধিন গাণকারিশ: ।
উন্নতাতিঃ নিরাছিল অতি কারিতির্ধনেবরাঃ র
নির্দ্ধিলাটির বার্থ। কুরুক্তরতাতবা।
বংরুতক্ত কলাটেক কুল্পা উর্নেত্র্পাং ব
ক্রান্ত্রটাপার চা-ভিত্রো রেখা: হ্লা: শুক্রমিনার ব
নুশান্ত ভাত্তত্ত্বভিনার্: গক্সবক্তাব র
অর্থেনার্ত্রবিভিন্নাতিক পুশ্কার।
কলাক্রোপ্রতির্দ্ধিলাভিক পুশ্কার।
কলাক্রোপ্রতির্দ্ধিলাভিক প্রতির্দ্ধিলার।
কলাক্রিপ্রতির্দ্ধিলাক্রির বিশ্বিক্রাতির র
বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্রাতির প্রত্নাতির বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তার বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তির বিশ্বিক্তার বিশ্বিক ব

मन्छिश्रत (ही) नगतर**्य**ा (श्राव्यक्षात्र । ल्लां हे एलक (जी) क्यान। ললাউন্মেখা (ত্ৰী) কপালের রেখা। ললাউলেখা। ধারার আছে বে, বিধাতা ভাতকের বট্টা ভাগন্ধ-থাসমে ভারীর ভারিকের া দিনা রাজে ললাটে জকর নমূহের ওভাওত নিশিরা বিদ্বা শ্বাহক্ষা। ल्लाहिक (बि) मनारहे कालिये ग्रम। निव। जिल्लार बीन्। হুৰ্গা (ভারত সভাপর্ক) हालां हिन्दा (बी) ननारहे स्टबारनवातः (क्रननाहार क्रमनवाटत । পা৪। ৩। ৩৫) ইভি কন্। স্প্রিরটিভ স্লাটাভরণ, ক্পালের গহন।। পর্যায় প্রথাঞ্চ। (সমর) ২ লগাট্য চন্দন। পর্যায় শৃথচারী। (পর্যায়াণ) ও জিল্ল। °তথা অভুত্যবহনা শিতৃণ্'হে ললাটকা চলনগ্ৰয়াকক। : ন জাতু বালা গভডেম নিবু ডিং-ভূবারসংখাতশিলাতলেখণি ి (ভূমার 🕫 । 🚓) সভাতি ল (মি) উচ্চ কণাববুক। ললাটেন্দুকেশ্রী, উড়িকার কেশরীবংশীর একজন রাজা। [कें क्रिया (मर्थ :] ललां हेर (कि) नगांवे नवकीय। ললাম (দী) বড় বিবাবে কিণ্, তম্ আমতি প্রায়োডীতি অম-গতে অনুভ্যালয়ং। ১ চিহ্ন ২ ধ্ৰক। ৩ পুল। 8 ध्रांबान । द कृषा, कृष्ण । "পৌত্ৰন্তৰ জীললনাললামং अंक्षे फ्तर कूसनमिककानार ।" (काम • 1 > 8) श्रार ७ रामधि। १ मूख्या ४ फूबल । ३ व्यक्तव । (स्रविनी) অখণণাটে অক্তৰণচিক। ১১ গৰাণির ললাটচিক।

ন্ত্ৰা দ্বং কুৰান্যখিতানাং।" (তাপ ০। ১৪। ৪৮)
৬ বালধি। ৭ পুঞা ৮ ডুনজ। ৯ প্ৰভাৰ। (মেনিনী)
১০ অখণনাটে অন্তৰণচিহ্ন। ১১ গৰানির লনাটচিহ্ন।
১২ অখের ভ্ৰণ। এই শব্দ পুং ক্লী এই ছই লিকই ব্রাণ
"ললামোখন্তী ললামাণি প্রভাবে পুক্তবে ধ্বান্তে।
শ্রেইভ্ৰাপুঞ্ পুলপুঞ্চিকাখনিলিছ্ ৪"
(রমুনীকার নজিনাগমুক্ত বান্ত্ৰ)

(বি) ১৩ রবা, শ্রেষ্ঠ গ্র শন্যাগৈর্ছার কিব্ কাং নর্কাশনহৈর্থ থি। রাজাং মর্যে মহেশানঃ শারতীরভাবর্তত গ্র'(ভারত গ্রাহহা১৩) ললামক (রী) পুরোলতদালা র নাগাটোপরি লবরার ক্ষারা। তিনেব নালাং পুরং নমুবভাবে ক্তম ন্যালিপিড্রার্ক্তির রাজ্যকরং তিনক্ষিব ইতি ইবার্থে কর্ম । (ক্ষার্ক্ত)

ললামণ্ড (গ্ৰং) শিলা। ললামন (রী) শুলামন

"दार्थान सम्मृतम् कृष् नानविष्णाक्षः। जूनासमिद्धान्यस्य सनामः स्वादः जलानः कृष्णः (कृष्णः) ২ পুরুষ। (রম্বটীকার সরিনীবিশ্বত বাধব)
লালাম্বং (জি) হানার অলম্বত ।
লালামী (জী) কর্ণভূষণবিশেষ, কামের গ্রনা। পর্যার উৎকিপ্তিকা। (পক্ষালা)
লালিত (রী) গ্ল-কাঃ ১ প্রারকাবন জিরাবিশেষ। স্কুমার-

রূপে জনেত্রাধির জিলার সহিত করচরণাধির অক্বিস্তাস।

"ক্রনেতাদিকিয়াশালিস্কুমায়বিধানতঃ।

ছব্দপদাদবিভাগতকণ্যা লণিতং বিছঃ ॥" (অমরটাকা ভরত)
স্ক্মারদ্ধে ক্ষবিভাগ ক্ষে হইলে তাহাকে লণিত কছে।
"ক্ষ্মারাকবিভাগে মক্শা লণিতং তবেং।" (ভরত)

উজ্জননীলমণিতে লিখিত আছে, বে ছলে জলসমূহের বিক্তাসভালি অসুমার এবং ক্রিবিলাসাধি বারা মনোহর হয়, তথার ললিত হইরা থাকে।

"বিশ্বাসভন্দিরন্ধাশাং ক্রবিলাসননোহরা।
বহুনারা ভবেদ্ বত্র ললিতং তছনীরিতন্॥" (উচ্ছাসনীলমণি)
"সক্রতকং কর্মিললারার্জনেরাপতত্তী
লা লিম্পন্তী ললিতললিতা লোচনতার্মনেন।
বিশ্বতারী চরণকমনে লীলরা স্বৈর্বাতে—
নিঃপন্ধা চ প্রথমবরসা নর্জিতা পদ্মান্দী র"(মারটীকার ভর")
(গৃং) ললাতে ঈশ্পতে ইতি লল কর্মণি জ। ২ রাগবিশেষ।
এই রাগ প্রাতঃকালে গান করিতে হর। ইহার রূপ—এই রাগ
প্রস্কৃতিত সপ্তক্রন (প্রশান্যধারী, ধ্ববা, অতিশ্ব গৌরবর্ণ,
লোচনত্ত্রী অলস, (ভাবে চলচল) বিলামবেশে বিভূষিত হইরা

"প্রকুলসপ্রজ্বমাণ্যধারী ব্যাতিগোরোংশসংশাচনঞী:। বিনিঃসরন্ বাসগৃহাৎ জভাতে বিলাসিবেশো শ্লিতঃ প্রদিষ্টঃ।" গানসময়—

প্ৰভাতকালে গৃহ হইতে বিনিৰ্গত হইতেছেন।

°প্রাতর্গেরান্ত বেশাগো ললিড: পটমধ্বরী। বিভাষা ভৈরবী চৈব কামোদা গোওকীর্তালি "(সলীতদামো") (ত্রি) ৩ প্রকার, মনোহর, মনোহর।

"ৰূপ ডান্ত বিবাহকৌছুকং ললিজ বিভ্ৰন্ত এৰ পাৰ্থিবঃ।"(রগু ৮০১) ৪ ঈশ্বিত। (মেধিনী) ৫ চলিজ। (বিশ্ব)

নলিভক (हो) প্রাচীন তীর্থভেন।

ললিত কাস্তা (ত্ৰী) গলিতা কাস্তা চ। মালনচতিকা, ছৰ্গা। লোকে মালনামানাম এই বেশীর পূজা করিরা থাকে।

"বৈধা দলিভকান্তাখ্যা দেবী সক্ষণচন্তিকা । বরদাভরহতা চ ছিড়ুকা খৌরবেহিকা । রয়কোবেরবন্তা চ শ্বিভবজুণ গুভাননা । নবরৌক্ষশক্ষা চার্কাদী দলিভগ্রভা ॥" (ভিথিতৰ) ললিত চৈত্য (গং) চৈত্যভেদ। ললিত তাল (গং) সনীতের ভানভেদ। ললিত পদ (ত্রি) সন্দর পদস্কা। ২ ছন্দোভেদ। এই ছন্দের প্রতিচরণে ১২টা করিরা অব্দর আছে। তন্মধ্যে ১, ২, ৩, ৪, ৬, ৭, ৯, ১০ বর্ণ শুরু, ডব্রির বর্ণ লবু।

ললিতপুর (রী) নগরভেদ। (রাজতর্মন্দী হা১৮৭)
ললিতপুর (গালিতপুর), যুক্তপ্রবেদদের ইংরাজাবিকৃত একটা
জোলা। বাঁাদি-বিভাগের অন্তর্গত ও ওথাকার ছোটলাটের
শাসনাবীন। ভূপরিমাণ ১৯৪৭ বর্গমাইল। অক্ষা• ২৪°৯৩০০০
ইইতে ২৫°১৪০ উ: এবং ক্রাঘি৽ ৭৮°১২/২০০০০ ইউতে ৭৯°২/১৫০০০
পূ: মধ্য। ইহার উত্তর ও পশ্চিমে বেতবা (বেত্রবতী) নদী,
দক্ষিণশিদিমে নারারণ নদ, দক্ষিণে বিদ্যাচল ঘাটমালা ও সাগর
জোলা, বক্ষিণপূর্বে ও পূর্বে উচ্ছেরাজ্য ও ধসান নদী। এবং
উত্তরপূর্বে বামুনী নদী। দলিতপুর নগর ইহার বিচার সদর।

বুন্দেলখণে র পার্কত্য প্রবেশ লইয়া এই কেলা গঠিত। সেই কেনোচনির পার্কত্য ভূমিভাগে বেএবতী ও বামুনী, নদী প্রবাহিত। দক্ষিণের বিদ্যাচল-শীমান্তর্বতী প্রবেশ কমমালাসমাজ্ঞে লালবর্ণের কছর পূর্ণ ভূমিভাগে চাসবাসের বিশেব প্রবিধা হয় না। মধ্যে মধ্যে ক্ষবর্ণ পলিমাটি দৃষ্ট হয়; উহা ত্বানবিশেবে মোড়িও মার নামে খ্যাত।

এই সমগ্র জেলাই নদীমালার পূর্ব। বিদ্যাপাদনিঃক্ত নানা গিরিনদী পর্বতগাত্রবিধোত করিয়া এই জেলার মধ্যদিয়া বমুনা নদীতে মিলিয়াছে। ঐ সকল ক্ষুদ্র ক্লাডিখিনী এই জ্রুমোচ্চনিয় অববাহিকার মধ্যদিয়া প্রকাহিত হওয়ায় সমগ্র জেলাটী বেন নদীসমূহে সমাচ্ছয় হইয়া পড়িয়াছে। প্রধানতম নদীর মধ্যে বেত্রবতী, ধসান ও ধ্যুনা উল্লেখবোগ্য।

নদী ভিন্ন এখানে অনেকগুলি বড় বড় বাঁধ ও দীর্ঘিকা আছে।
তর্মধ্যে তালবেহাত সর্বাপেক্ষা বড়, উহার অলকর প্রার ৪৫৩
একার। ধোরীসাগর, হুধী, বাড় প্রভৃতি কতকথালি প্রাচীনদীর্ঘিকা আজিও স্থানীর কীর্তির পরিচয় দিতেছে। স্থানীর বনমালার মধ্যে বালাবহৎ ও সন্ধালীর বন উল্লেখবোগ্য। প্রধানে
সহারিয়া নামে এক পার্কভিজাতির বাস আছে। ভাহারা বনভাত মহরা, চিরোজী, লাক্ষা, মধু, মোম, গাঁদ ও অক্সান্ত মৃলাদি
নিকটবর্ত্তী কারাদিতে আনিয়া বিক্রের করে। এই সকল বনে
ব্যার, চিতা, ভঙ্কু ক্,হারনা, সেকড়ে, বনবরাহ, বলকুমুর ও লাজর,
চিতল, চৌলিলা প্রভৃতি হরিণ দেখিতে পাধেরা বার।

ললিতপুরের আচীন কোন ইতিহাস নাই, পুর্বে এবানে অনতা গোঁড় বাতির বাব ছিল। এখনও বিক্তাশৈলানার চুড়ালেলে নেই পার্বতালাভির প্রতিষ্কিত বেবলন্দ্রাদি নেই অভীত

স্থাতির পরিচর প্রধান করিতেছে। বর্ত্তমান সময়েও পর্যান্ত প্রান্ত-স্থিত ক্রেক্টী গ্রামে এখনও গৌড়জাতির বাস দেখা বার।

পরবর্ত্তিকালে এখানে আর্থ্য উপনিবেশ স্থাণিত হইলে সেই
গৌড়গণ ক্রমশং হিন্দুধর্মে আত্মাবান্ হইরা ভাহারই অন্থ্যানী
হর এবং অতি অরকাল মধ্যেই ভাহারা শিক্ষা ও সভ্যতা গুণে
সমূরত হইরা উঠেঃ ভাহানের স্থাপত্যবিভার পরিচর স্বর্ধ আজিও অট্যালিকা ও জলনালীসমূহ এখানে বিশ্বমান রহিরাছে।
ভাহানের অধংপতনের পর মহোবার চন্দেশবংশীর রাজগণ এখানে
আধিপত্য বিস্তার করেন। বাজা ও হামীরপুরে ভাঁহানের রাজধানী
ছিল। তংগ্রসকে এই রাজবংশের সংক্ষিপ্ত পরিচর বিবৃত
হইরাছে। [বাজা ও হামীরপুর দেখ।]

শুরীর ঘাদশ শতাব্দের শেবভাগে এই চব্দেশ রাজবংশের অধঃপতন ঘটে। তথন এই জনপদ ক্ষুত্র ক্ষুত্র সামস্তরাজগণের আসনাধীন হর। ঐ সামস্তরাণ দিল্লীর সুস্লমান-রাজগণের প্রাথান্ত স্থীকার করেন নাই। তাঁহারা সম্পূর্ণ ঘাধীনভাবে রাজ্য শাসন করিয়াছিলেন। খুরীর ১৪শ শতাব্দে ছর্ক্ব ব্বেশা জাতি এই প্রদেশ আক্রমণ ও অধিকার করে। তাহারা প্রথমে কাঁসীতে ও পরে সমগ্র ব্বেশগণওে আপনাদের প্রভাব বিভার করিয়াছিল।

বর্ত্তমান ললিতপুর জেলা চলেরীর বুলেলরাজ্যের অন্তর্গত এবং এখানকার রাজবংশ রাজা ক্ষত্রপ্রতাপের বংশধর। ১৭০২ बहास इहेट २१৮৮ थुट्टोस नध्य छवः नीत्र नद्रमन त्रामा हत्स-नीए त्राक्य कतित्राहित्तन। এই छ्लीर्च माननकात्त्र मस्य দিলীর মোগলসমাটগণও মধ্যে মধ্যে এইস্থানে আধিপত্য বিস্তার করিরাছিলেন। অবশেষে নবম রাজা রামটাদ তীর্থযাত্রা উপলক্ষে আবোধ্যার গমন করিলে, ভাঁহার অস্ত্রপত্তি লক্ষ্য করিরা মহা-বাটারগণ এই প্রদেশে প্রভাব বিস্তার করেন। কিন্তু তাঁহারা ্ অধিক দিন এদেশে প্রতিষ্ঠা লাভ করিতে পারেন নাই। ১৮০০ • শুষ্টান্দে তৎপুত্রকে তাঁহারা অধিকাংশ সম্পত্তির উত্তরাধিকারী क्रिएक वांधा हम । हेरांत्र छूटे वर्शत मत्था क्रिक क्रमात्राज्ञ আরোচনার রাজকুমার গুণ্ডভাবে নিহত হন এবং তাঁহার ভ্রাতা मृत्र**ाहला**म जिःहोज्ञत् अधिरत्नाहण करतम । जिमि **फे**न्ह् अन ध्वरः শাসনকার্যে অকর্মণ্য ছিলেন। তাঁহার অধীনত্ব ঠাকুর সামস্ত-গণ পূর্বাভাত দুঠনপ্রবৃত্তির দাস হইরা পার্থবর্তী রাজ্যসমূহে উপত্ৰৰ ক্ষিতে থাকে। স্বাকা স্বপ্ৰহণাদ কিছুতেই তাহাদিগকে ৰণে রাখিতে পারিলেন 🚛 উপযুগিরি এইরপ আক্রমণ ৬ খুন করিতে করিতে বধন জাঁহারা ১৮১১ খুটাকে গোনালিয়ার শীমান্তে উপস্থিত হইরা সিন্দেরালের প্রজাবর্গের উপর অভ্যাচার ু আরম্ভ করিলেন, তথন গোরালিরারণতি ভারার প্রতিহিংসা নাধনে অগ্রন্থর ইংলেন। মহারাজের আনেশে নিন্দে-নৈত চন্দেরী আক্রনণ করিল। গোরালিরর-নেনাপতি জিন্ম্ বান্তিতে (Joan Baptiste) সদলে অগ্রন্থর ইইরা ক্লোট্রাইন্দ্রে, রাজবাড়া ও লনিতপুর হুর্গ অধিকার করিলেন। মূরপ্রহলাদ কাঁসীতে পলাইরা গেলেন, কিন্তু ভাঁহার সেনাপতিগণ নগররকার অপ্রনম্ভ ইংলেন। কঞ্জ সপ্তাহকাল অবরোধের পর ভীনবেগে মুক্ত করিরা চন্দেরী-নৈত আন্ধানমর্শণ করিল। একজন ঠাতুর নামত্তের বিধানবাভকভার চন্দেরী শক্রহত্তগত ইইল। বেখিতে রেখিতে ভালবেহাৎবাসীও নিন্দের নামকরে আন্ধানমর্শণ করিলেন। নিন্দে মহারাজ তথন সেই প্রাদেশের শাসনভার গ্রহণ করিরা কর্ণেল বান্তিত্তেকে তথাকার পাসনকর্ত্তা নিরোগ করিলেন।

গোরালিরার-মহারাজ অহকেন্সা করিরা পূর্বতন আরশীরনার-দিগকে তাঁহাদের আরণীর ফিরাইরা দিলেন এবং রাআ বৃত্ত-প্রকাল বীর ভরণপোবণের অস্ত ৩১ খানি গ্রাম পাইলেন।

ইবার পর ৩৫ বংসর কাল এই আদেশে দান্তি বিরাজিত ছিল। সিন্দেরাকের নির্দিষ্ট শাসনপ্রশালীতে এখানজার লাসনকার্য্য নির্দিষ্টের সম্পাদিত হইতে লাগিল, কিন্তু অক্ষাং বুলেলানগণ পূর্ব্ধরাজকে নারক মনোনীত করিরা বিদ্রোহী হইরা উঠিল। তথন সিন্দেমহারাজ পুনরার কর্ণেশ বান্তিন্তেকে রাজ্যে দান্তি বিধানার্থ প্রেরণ করিলেন। তাঁহার বন্দোবভায়সারে ললিত-পুররাজ্য তিন ভাগ হইল। একভাগ রাজা মূরপ্রহলান পাইলেনও সুইভাগ সিন্দেরাজ্যের রাজ্যভুক্ত রহিল, রাজা মূরপ্রহলান পাইলেনও সুইভাগ সিন্দেরাজের রাজ্যভুক্ত রহিল, রাজা মূরপ্রহলান এই ক্ষুত্র রাজ্য লইরাও আপনার অধীনত্ব ঠাকুর সামন্তবিগের সহিত বিবাদ করিতে করিতে ১৮৪২ খুটালে শ্রীর কলহপূর্ণ জীবনের অবসান করিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর তৎপুত্র মর্দ্দন-সিন্হে রাজা হইলেন। উক্ত ঘটনার ছই বংসর পরে মহারাজপুর্ব্দের অবসানে সিন্দেরাজ গোয়ালিরার-সেনাদলের জন্মণ পোষণ-ব্যরভার-বহনের জামিন শ্বরণ ইংরাজ-রাজ-করে চন্দেরী-রাজ্যের নিজ অংশ সমর্পণ করিলেন।

ইংরাজগবর্মেন্ট ঐ সম্পত্তি লাভ করিরা উহাকে একটা
শ্বতত্র জেলারূপে গঠিত করিরা লইলেন, কিন্তু সন্ধির মর্শ্বাহ্যসারে
সিল্লে মহারাজের প্রভুত্ব অক্ষুর রাখিতে ও প্রজাবর্গের শ্বাধিকার
রক্ষা করিতে ইংরাজগবর্মেন্ট শীক্ষভ রহিলেন। সিপাইনিজ্যেহ
পর্যন্ত এই প্রজাব মতে কার্য্য চলিরাছিল। বাণপ্ররাজ মর্দ্দনসিংহ আপনার সন্মানহালে হংগিত হইরা এই স্মরে বুলেলাসন্ধারনিগকে ইংরাজরাজের বিককে অভ্যাথিত করেন। ১৮৫৭
বুরাজের ১২ই জুন ভারিখে রাজা মর্দ্দন সিংহ বিজ্ঞাহিবলে
পরিবৃত হইরা বাঁলী ও গোলালিরার বিজ্ঞাহীনিগের সহিত
বোগদান করেন। এইরূপে কছলভ বিজ্ঞাহীনিগের সহিত

हिर्द्वार्क्षेत्र राज्ये अत्यक क्ष्ममानाव्यक्त जीएक जामहन केंद्रिया होजा मुक्तिनिश्द जानमार्कि बानगुरम्ब बाबीन द्राका ৰ্ণিয়া ঘোষণা কলিলেন। তিনি ইংরাজ-গালের সহিত বুদ করিবরি মানসে বার্ণপুরে কামান অন্ততের অন্ত একটা কারণানা দ্বাপন কর্মেন । বাজা জেমল: সাগ্র জেলার উত্তরাংশে আপনার व्यक्षिकात विकास क्रिएएएकेन द्वावता हैरताक्रायर के निकित्व ेथाकिट नाविष्याम मा। १५०५ वृहारमत बाह्याती मारन সেমাপতি সর হিট রোজের অবীনত সেমাদল তাঁহাকে আক্রমণ করির পরাও করিল। রাজা মন্দলসিংহ বনববিদার বুঁছে পরাজিও ইইরা চনোরী অভিমূখে পলাইরা আসিলেন। মার্চ্চ মাসে ইংরাজ-নৈত ভাষাকে ললিভপুর হইডে বালপুর ও তালবহৎ অভিমূৰে পুরুষেশন করিতে বাধা করিল। রাজার িপরীক্সরে অধীনত্ব সেনীবল তীত হইয়া শান্তভাৰ বারণ করিল। के नमदब श्रीवानिवरत्व विद्वारममनार्थ हरवास-रेन्छ हरमात्री পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হওয়ার বিদ্রোহিদল পুনরার চন্দেরী-রাজা হতগত করিরা লইলেন। অতঃপর উক্ত বর্ষের অক্টোবর मार्ग हैश्त्राकरेंगेक भूनतीय ननिष्युत्र खाउन्यन कतिन। व्यन्तना-গণ ভীমবিক্রমে বৃদ্ধ করিরাও আত্মরকা করিতে পারিল না। ' अवरमद ভাষারা ললিভপুর ইংরাজদিগকে ছাড়িরা দিল। এই বিজ্ঞোত্তর সময় বুন্দেল ঠাকুর সন্দারণণ পরস্পারের প্রতি বিজ্ঞা-ভাব প্রকাশ করিয়া জাপনাদের সর্জনাশ সাধন করিল। সিপাঁহী বিল্রোহের পর এখানে শাস্তি স্থাপিও হয়। অশিকিত সঁদারণ ইংরাজগবর্মেন্টের কঠোর শাসনে নিয়ন্তিত হইরা শান্তিময় জীবন বহন করিতে বাধ্য হইল। তদব্ধি আর এবানে কোনরপ গোলবোগ ঘটে নাই।

এই জেলার প্রায় প্রত্যেক গ্রাম ও নগরের নিকট ঠাকুর
সন্ধারদিগের নির্মিত বাসভবন ও চর্গ দৃষ্ট হর। সকল
চর্গের অবিকাংলই ধ্বংলাবস্থার পভিত। ১৮৫৮ খুটান্দে লালিভপুর-বিজয়ের পর সেনাপতি সর হিউ রোজ উহার জনেকগুলি
ভার্লিয়া দেন। এখন আর ঐ ঠাকুরেরা পথিকের নিকট
অবধা কর আলার করিতে পারেন না। বিজ্ঞানৈলক্রেণীর সম্রুঙ পৃত্তে অনেকগুলি প্রাচীন মলিবের ক্রেনাবনের দৃষ্ট হর।
ঐ গুলি প্রাচীন গোঁড় অধিবাদীদিগের কীর্ত্তি। ক্রেমান জৈন
অধিবাদির্দেশ্র উদ্বোধে এখানে একটা স্ক্রার মন্দির
নির্মিত হইয়াছে।

২ উক্ত জেলার অন্তর্গত একটা তহসাল। লালিতপুর, বংশী, ভালিবেহাৎ ও বালাবৈহাৎ প্রগণা ইহার অন্তর্ভুক্ত । ভূমিনাণ ১০৫২ বর্গনাইল।

ত উক্ত জেলার প্রধান নগর ও বিচার সর্বরণ কাঁসী

হইতে লাগর বাইবার পথে সন্ধান নদীর পশ্চিম কুলে অবছিত ।

এই নদী বামুনী দদীর একটা শাখা । রাণী ললিতা দেবীর
নামাহদারে এই নগরের নামকরণ হইরাছিল । প্রবাদ — একদা
রালা ক্ষেলিনংহ জলোনরীরোগে আক্রান্ত হইরা সপত্নীক ক্ষেলিব্যার তীর্থানা করেন । বর্তমান ললিতপুরের সরিধানে আলিরা
রালা ও রাণী রাত্রিবাস করিলেন । রাত্রে রাণী পার দেখিলেন
বে, "নিকটবর্তী জলাপর হইতে কাই (Conferve) উজোলন
করিরা ভক্ষণ করিলে রোগ আলোগ্য হইকে।" তদক্লারে
প্রাতে রালা রাণীর স্বাধানেশ পালন করিলেন । রালা রোগমুক্ত হটলেন । তিনি রাণীর স্বপ্রের ক্তক্ততা রক্ষা করিরা
রাণীর নামান্সারে সেই স্থানে পলিতাপুর নগর স্থাপন করিলেন ।

এখনও রালার প্রেভিটিত "ক্ষ্রেকস্নাগর" বিভ্লান রহিরাছে ।

এখান খার একটা মসজিকে হিন্দুকীর্ত্তির নিদর্শন দেখিয়া মনে হয় বে, মুসলমানগণ হিন্দু মন্ত্রিকে সামাক্ত পরিবর্তন মারা মসজিকে রূপান্তরিত করিয়াছেন। এই মন্ত্রির নাগরী অকরে একথানি শিলাফলক উৎকীর্ণ আছে। তাহাতে ১৯১৫ সম্বৎ দৃষ্ট হয়। উক্ত কলকে পাঠানরাজ ফিরোজ শাহ "য়াজাধিরাজপতে প্রীস্থরতান পেরোজশাহী" নামে বর্ণিত হইয়াছেন। অধিক সন্তব, মালবের থিলজিবংশীয় য়াজগণ হিন্দুকীর্ত্তি নাশ করিমাছিলেন।

ললিতপুরাণ (রী) বেদ্ধিগুরাণভেষ। [ললিতবিতর দেখ] ললিতপ্রহার (পুং) জয় প্রহার।

ল্লিভেল্লিভ (🏚) অভি হুন্দর।

ললিতলোচন (ত্রি) হুন্দরচন্ধ্য। (ত্রী) বিভাষর বাণদত্তের ক্ঞা। ললিতবনিতা (ত্রী) হুন্দরী ত্রী।

লালি তবিস্তার (গং) বুদদেবের (শাকাসিংখ) স্কীবনচরিতবিষয়ক অ্থাটীন বৌদগ্রহডেদ। [গাথা দেখ।]

লালিতবাহ (পং) > বৌদনতে সমাধিভেন। ২ নেবপুত্রভেন। ৩ বোধিসবভেন।

ললিতা (জী) গলিত-টাপ্। > কন্ত্রী। ২ দারী। (রাজনি•) ৩ নদীবিশেষ। কালিকাদ্রাণে লিখিত আছে—

পুরাকালে প্রশ্ন-নন্ধন বশিষ্ঠ নিমিরাজার নালে দেহহীন এবং রাজর্থি নিবিও বশিষ্ঠশালে দেহহীন হল। তথ্য ব্যক্তি প্রভার উপাদেশে কানন্ধপনীঠে সম্ভাচনে কঠোর তপোহসুক্তান করেন। বিক্ তপভার তুই হইবা ভাঁহাকে বর দেন, বশিষ্ঠ এই ব্যক্তজাবে অনুভক্ত নামে এক মহাকৃত বিশ্বাপ করেন, এই কুতের পূর্কে নালিতা নামে মনোহারিনী ও বন্ধিপানাগরগামিনী এক ননী আছে, সহাবেব এই নবীকে অবভাৱিত করেন। স্কোশার্থ নালের অসাভৃতীরার দিন এই নবীকে বান ক্রিকে লান ক্রিকে শিববোক

আতি হব। শলিতানদীর পূর্বতীরে ভগবান নামে এক পর্বত
আছে, এই পর্বতে ভগবান বিফু নিজরণে বিরাজিত আছেন।
বাহারা গুলাবাদশীতে দলিতালান করিরা এই পর্বতে, ভগবান্
বিক্রব পূজা করে, তাহাবের ইহলোকে নানার্থ ও পরলোকে
বিক্রবোকে গতি হইরা থাকে। (কালিকাপ্ ৮১ জ০)

বৃহমীণততেরর ২০ অধ্যারে এই তীর্থের বিষয় বর্ণিত আছে।
২ গোপীবিশেষ। এই গোপী প্রীরাধিকার দ্বী। প্রীমতী রাধিকার প্রধানা অন্তর্গনীর মধ্যে একজন। গোলোকে রাসমণ্ডলে শ্রীমতী রাধিকার নোমকূপ হইতে এই সকল গোপীর উৎপত্তি হয়। (ব্রক্ষবৈবর্ত্তপূণ)

পদ্মপুরাণে পাতাদখণ্ডে দিথিত আছে বে, বিনি দলিতা, তিনিই চুগা এবং রাধিকা, ইহাতে কোন তেম নাই।

"ৰা হুৰ্গা সৈব লশিতা লশিতা সৈব নাধিকা। এতাসামস্তবং নাতি সত্যং সত্যং হি নাবহ #"

(পদ্মপু• পাতালখ• বাসলীলা)

ত রাগিণীভেদ। সঙ্গীতদামোদরের মতে এই রাগ মেদ-রাগের পত্নী।

"ললিতা মালসী গোড়ী লাটী দেবকিরী তথা।
বেষরাগন্ত রাগিণো ওবস্তীমাঃ ক্মধ্যমাঃ ॥" (সলীতহামোদর)
হন্মরতে এই রাগিণী হিন্দোলরাগের পারী, লোকেররতে
বসম্ভরাগের পারী। এই রাগিণী বথা—স, গ, ম, ধ, নি, স।
অথবা স, রি, গ, ম, প, ধ, নি, স ইহা আথম। ধ, নি, স, গ,
ম, ধ ইহা হিতীর। ইহার বরুপ ও ধ্যান—

"রিপুবর্জন চ ললিতা ঔড়ৰা সত্ৰয়া মতা। মুদ্ধনা গুৰুমধ্যা তাৎ সম্পূৰ্ণাং কেচিদ্চিয়ে। বৈবতত্ৰয়সংযুক্তা দিতীয়া ললিতা মতা॥

₹

প্রকৃত্তনগুজ্নমান্যক। স্থানিকারিয়্বতী স্থৃষ্টি: । বিনিশ্বসন্তী সহসা প্রভাতে বিলাসবেশা দলিতা প্রদিষ্টা ।
(সঙ্গীতরত্বাকর)

ললিতাতন্ত্ৰ (রী) তরভেদ।
ললিতাত্তীয়াত্ৰত (রী) বোৰিদ্বতভেদ।
ললিতাদিতা (পুং) লালীরের কর্কোটবংশীর একজন বিখাত
রাজা। ইহার উপাবি মৃক্তালীড়। চুর্যন্তবর্ধনের পুত্র। মহারাজ
ভারালীড়ের পর নিংহাননে আরোহণ করেন। মহারাজ চত্রাশীড় ইহাকে চীনসবাট্ ক্রেক্ সন্দের সভার ক্তরণে পাঠাইরা
হিলেন। ইনি কনোজরাজ ক্যোবর্দাকে পরাজিত করিরাছিলেন। ২২০-৭০- বুটাক পর্যন্ত ইনি রাজ্যশাসন করেন।

ললিতাদিত্য (২ম), কামীরের একজন মাজা। [কামীর কেখা] ললিতাদিত্যপুর (কী) গলিতাদিত্যকর্ত্ব প্রতিষ্ঠিত নগরকে। ললিতাপঞ্চমী (প্রী) আমিন মাসের ওক্লাপক্ষী ভিন্দি, এই কিলে ললিতাপেক্ষমী (পার্মতী) পূলা হইরা থাকে।

সলিতাপীড় (পুং) কানীররাম গলিভাদিভা।

ললিতাপুর, আচীন নগরভেষ। এধানে গনিতাদেবী বিরাজিত আহেন। (রুহন্ত্রীল০ ২২)[লনিতপুর দেখ।]

ললিভাত্রত (हो) বতকে।

ললিতায়ন্তী (জী) বডজে।

ললিভাসপ্তা (ত্রী) ললিভাগা সপ্তমী। ভাজনাদের পদ্ধস্থামী রভবিশেব, এই সপ্তমীভিশ্বিভ ঐ রভের অভ্রচান করা
হর, এই বছ ঐ রভের নাম ললিভাসপ্তমীরভ, ইহাকে কুছুটারভও কংহ।

লালিখ, আচীন জনগৰভেদ। (মার্ক- ৫৭৩৭) বামনপুরালে (২৩৩৮) নালিক এবং জগরাপর পুরাণে কণিক পাঠ দৃষ্ট হয়। লালিখ (পুং) জাতিবিশেব।

ললীতিকা (ত্রী) তীর্বভেদ। চন্দারনপটে অবস্থিত।

(ভারত আচ্চাচ্ছ)

লল্যান (রী) জনপদভেষ। (রাজভন্ন- ৬।১৮৩)

महा (११) प्याणिर्षित्रच्यः। महाशयाः।

লক্ল, বিধাননালাপ্রণেতা। চুণ্টিরাল গলোপাথ্য নামে আৰু

একলন প্রতিকার দৃষ্ট হর। তাঁহার রচিত মৃতপদ্মীকাধান,

বর্গহারেটসত্রপ্ররোগ ও কৌত্রসামান্ত গ্রন্থ বেথিলে বোধ হয় কে

উভরেই এক ক্যক্তি।

ল্লে, জ্যোতিবরম্বকোব, গণিতাধ্যার ও গোলাধ্যার এবং লিব্যবী-বৃদ্ধি-সহাতত্র নামক জ্যোতির্ফা হুরুমিতা ত্রিবিক্রম ভটের পুত্র। ভাহরাচার্ব্য নিছার্জনিরোমণিতে শেবোকে ত্রাছের উল্লেখ করিবাছেম।

লক্ল(ভূন্য), ছিন্দাংশীর একজন রাজা। মন্ত্রের পূত্র ও বৈর্ বর্ষার পোত্র। ইহার মাজা অগহিলা চুলুকীধরবংশীর হিলেন। লক্লবারাহস্ত (প্ং) > লক্ল এবং বারাহের পূত্র। ২ নক্ত্র-সমুক্রপ্রশেকা।

ল্কাদীক্রিত, কৃষ্কটিকটাকা-রচরিতা। সন্মণের পুত্র এবং শব্দ বীন্দিতের পৌত্র। ইনি ১৮২১ খুটাকে উক্স প্রয় রচনা করেন।

নালিয়াশাহী, ভাগুনের গাহিববীর একরণ বিশু রাজা। ইরার অপর নান কমন্ত। উন্ভাজপনে ইহার রাজধানী ছিল। রাজ-ভরত্তিক (বা১২৪) বর্ষি আছে, মহারাজ আজাকরনেকের মন্ত্রী নোপানবর্ধ। ইহার পুজ ভোরনাবাকে নিকোননাচ্যক ভরিবা- ্ছিলেন। খোরাসানপতি আমক ইবন্ সেইর স্বসামরিক (৮৭৪-৯০১ খ্রঃ) ছিলেন।

मह्योगाग (११) अववन धर्कात।

न्द (ही) न्-धन्। ३ जाजीकनः (भन्छ) २ नदमः।

• नामकः । • जेव९ः। (न्दः) नवगमिणि न्-धन्। । । । ।

"वरक्षकादिवदनदेककनगुर्कृतिकनान् वाहिनवान् वमिष्ठः।"

(রঘু ১৬।৬৬)

 বিনাশ। १ ছেল। ৮ কালভেল। অটাংশ নিমেবে এক কাটা, এই কাটার এক লব।

'আটাদশ নিমেবান্ত কাঠা কাঠাৰরং লব:।' (হেম)

৯ পক্ষিতেদ, লাবানামক পক্ষী। (রাজনি॰) > কিল্কম !

১১ পক। > ২ গোপুছলোম। (র্যুটাকার মনিনাথখুত বৈজরতী)

> ২ রামচক্রের পূত্র। রামারণের উত্তরকাতে লিখিত
আছে বে, রামচক্র দীতাদেবীর গর্ভাবহার লোকাপবাদভরে ভীত হইরা তাঁহাকে বর্জন করিতে লক্ষণের প্রতি
আদেশ দেন, লক্ষণ দীতাকে লইরা গিরা বাবীকির তপোবনে
রাখিরা আইসেন। দীতা বাবীকির আলরে বমল হইটা

সম্ভান প্রস্কাবন, এই প্রেছরের নাম লব ও কুল। বাবীকি
এই প্রেছরকে ক্রিয়োচিত সংস্কৃত করিরা রামারণ গান
শিক্ষা দেন। লব ও কুল রামচক্রের সভার রামারণ গান করিলে
রামচক্র তাঁহাদিগকে পুত্র বলিয়া জানিতে পারিরা প্রেছরকে
গ্রহণ করেন। (রামারণ উত্তরকাণ) দীতা ও রাম শব্দ দেখ।]
লবক্র প্রং) ১ ছেলক। ২ জব্যভেদ।

লবঙ্গ (রী) সুনাতি প্রেয়াদিকমিতি লু (তরত্যাদিত্যক। উণ্
১০০০ চিপু: বনামখ্যাত বণিক্তর্তেদ। (Caryophyllus aromaticus = Cloves) হিন্দী—লোঙ, লোজ,
মহারাই ও কলিক—লবজকলিকা, লবিজ; তামিল—কিরম্বের,
কিরাম্, ইলবজ-অল্লু, কর্মবাল্লুড্ডেম্; তৈলজ—লবজ্প,
আবিড্—লবঙ্! মলরালম্—ছভি, নিলাপুর—বরল; পারভ—
মেথক্; বালালা—লল, লবল। সংক্রভ পর্ব্যার—দেক্ত্মেন,
অন্ত্রুম, ক্রিক্রুম, লবজক্ল, নবজকলিকা, দিব্য, লেখর, লব্
জীপুন্স, কচির, বারিসভ্ব, ড্লার, গ্রীর্থাপ্রুম্ম, চন্দনপূন্দ।

এই বৃক্ষ মালাকা খীপে প্রাভূত করে। ওলন্দান বণিকেরা ধণন আখ্যনা খীপে লবদের চাস একচেটিরা করিতে সচেই ছিলেন, তথন কোন স্থাবাগে বিক্ষিণভারতে ও অঞ্চান্ত প্রীয়-প্রধান স্থানে উহার চাস বিস্থৃত হইরা পড়ে। বাজারে বাণিজ্যার্থ আনীত বে লবক স্থামরা দেখিতে পাই উহা উক্ত বৃক্ষের মূল-কলিকামাত্র।

केवम गांत्रकुक वृक्तिकात भवन जांग्य कताई निवन । धाराम

ৰথারীতি মৃত্তিকার পাট করিয়া ১২ ইঞ্চ অস্তর এক একটা ক্ল পুতিতে হয়। ৫ সপ্তাহের মধ্যে গাছের কলা বাহির হইরা থাকে। ঐ সমরে গাছের উপর আন্তপতাপ না লাগে, এই-রূপ ভাবে আফ্রাদন দেওরা আবস্তক। সময় মত জমিছে জল না দিলে গাছ নষ্ট হইবার সম্ভাবনা। গাছ ৪ ফিট স্মান্দাক बढ़ रहेरन अब अवधी केंग्रोहेश ७० किंहे बढ़त श्रृजित्त हम। ৰালুকাময় অথবা আগ্নেন্ন-লৈলোদ্গারিত মৃত্তুমে রোপণ করিলে ইহার ফল অধিক হয়। রক্ষরোপণের ছব বৎসর পরে ফল হইতে আরম্ভ হর এবং ১২ বৎসর পর্যান্ত পর্যান্ত পরিমাণে লবজ উৎপন্ন হইয়া থাকে। তদনস্কর বৃক্ষের প্রোঢ়াবস্থা। ঐ সমরে এক একটী বুক্তে বংসরে 🗸৩ হইতে 🗸 পা• পর্য্যস্ক ফুল পাওরা বার। ভৎপরে ক্রেমণঃ কমিতে থাকে। স্থমাতা ছীপে প্রায় এক বৎসর অন্তর ফুল হয়। সেধানে ২০ হইতে ২৪ বৎসর পর্যন্ত গাছ জীবিত থাকে। ঐ সময়ে গাছের भक्तवश्रामिक विश्वित सरेवा श्रीजंडे सरेवा वात । श्रामत्रना **गी**रण ১২ হইতে ১৫ বৎসর পর্যান্ত গাছের ফুল ধরে না। তার পর প্রাচুর ফুল হয়। ৭৫ হইতে ১৫০ বৎসর পর্যান্ত ফল হইডে দেখা যায়। এই কারণে প্রতি ৮ বংসর অস্তর তথায় লবলের চাস হইয়া থাকে। তাহাতে ফুলক্লিকার হ্রাস উপলব্ধি হয় না।

मूनक्रिकाश्वनि छेळान नानवर्थ हरेरानरे वृक्त इरेरा जुनिया লওরা হর। হাতে করিরা এক একটী কলিকা উত্তোলন করাই প্রকৃষ্ট উপায়, কারণ ভাহা হইলে ফুল নষ্ট হইবার কোন ভয় পাকে না। উচ্চ ডালে যে ফুল থাকে, তাহা ছিড়িয়া লইবার জন্ত একস্থান হইতে অপ্তত্তানে লইয়া ঘাইবার উপযোগী সিঁডি ব্যবহৃত হয়। অনেক সময় গাছের নিমে কাপড বিচাইয়া ব্রকোপরি বংশবৃষ্টি দারা আঘাত করা হইরা থাকে। এই প্রথার গাছের ডালপালা ভাঙ্গিয়া গাছ নষ্ট হওয়ারই সম্ভাবনা। ইছার পর উত্তোশিত কলিকাগুলিকে নির্মিত প্রণালীতে ওকাইরা কটাশেবৰ্ণ (Brown) হইয়া আসিলে ধলিতে ভরা হয়। ভুমাত্রা খীপে মাহরের উপর কলিকা বিছাইয়া পূর্য্যভাপে গুকান হইয়া থাকে, কিন্তু অস্তান্ত ছানে চেটাইর উপর মাতুর বিছাইয়া তত্তপরি লবন-কলিকা ছড়াইয়া দেয় এবং তাহাই মৃতু জয়ির উত্তাপে রাখিয়া কলিকাগুলিকে ধুমনিবিক্ত বা খেনবুক করিয়া লয়; কিছ এই গুমনিবিক্ত করিবার পূর্বে কথনই গরন জলে সিছ कतियां नद ना । गथन नवकश्रीन अनुनव्दात्र मध्या विभिद्रन लाकिया यात्र, जथनहे जाहा वानिरकात छेनावानी हरेता बारक।

লবদের কনিকা ও ভাহার বোঁটা জলে চোঁরাইলে এক প্রকার অগত তৈল পাওরা বার। উহা বর্ণহীন এবং কথন কবন নাবাল হরিতাবর্ণের হুইতে বেধা বার। সুপৃতি জন্ত (perfumery) এবং বনা, সাবান ও মভের গছরুদ্ধি করিতে উহা সাধারণতঃ ব্যবহৃত হর। অর্থণরাজ্যে কার্কালক এসিডের সহিত উহা মিশান হইরা থাকে। ৪ উক্ত লবক তৈল এক গালন স্পিরিটে মিশাইরা লইলে লবকসার (essence of cloves) প্রস্তুত হয়।

বেনকুলেন, শিনাং, আষদ্বনা ও জাঞ্জিবর জাত লবজুই সর্কোংকুই। ঔবধার্থ বৈ সকল লবল ব্যবস্তুত হয়, তাহা উগ্রগন্ধ-বিশিষ্ট ও তীত্র কটু এবং নখাগ্র দারা শেষণ করিলে তৈল বাহির হইরা থাকে। ভারতবর্ধের মাজারে বে সকল লবল পাওয়া মার,উহা পুরাতন বৃক্ষজাত, উহা বিশেষ কোন কার্য্যে লাগে না। আফতি, বর্ণ ও আভাস্তরিক তৈল পরীকা করিলেই লবকের প্রতেদ সহক্ষে নির্ণীত হইতে পারে।

শ্বিষ উত্তেজক, বায়ুনাশক ও উৎকট গ্ৰুপুক। বীর্থকালশ্বামী উদরাময়ে, পাকস্বাদীর বেদনার ও গর্ভাবহার নিরতিশর
বমন হইতে থাকিলে ইহা বিশেব উপকারক। ডাঃ ঐলসি,
শারীরিক অবসরতা ও অলীর্ণ রোগে দিবসে হই বা তিনবার
লবলের কাথ নেবনের ব্যবহা দিরাছেন। তাঁহার মতে
আর্দ্ধ পাইন্ট উত্তর্গুজনে ১ ডাম লবল্কর্ সিদ্ধ করিরা
ভাহার ১ বা ২ ঔল প্রতিবার নেবনীর। মারবিক দৌর্কলাে
ও অগ্রিমান্দ্যে চিরতা ও লবলের কাথ বিশেব উপকারপ্রদ।
ইহাতে গিপাসা, ব্যন্ন, উদরাগ্ধান ও পেটের বেদনা উপশম
হয়। গেঁটেবাত, লিরঃপীড়া ও দত্তপুলে স্বক্ষতিল গাগাইলে
উপকার দর্শে। হেকিমী মতে ইছার ওণ—উত্তেজক ও প্রেমনাশক, বিষনাশক ও মন্তিক প্রিক্ষারত। ইহা ক্রুরোগে
হিতক্বর, হ্রদরের বাডনা-নিযারক, বলকর ও প্রির্দ্ধিক।

তাত্রপাত্রে অথবা পাথরে পদ্মধ্যু গইরা লবল বিরা চক্ষের পাতার গালকে করিরা প্রদেপ দিলে চক্ষের জ্বাপড়া ও বোজকন্বগোব (Conjunctivitis) নিবারিত হয়। লবদ প্রাদীপের শিথার পূড়াইরা ভক্ষণ করিলে খুস্খুনে কাসি বিদ্রিত হইরা থাকে। ব্যঞ্জনাদিতে গরম নগালার সঙ্গে ও পাণে লবল সিদ্ধ করিরা থাইবার ব্যবহা বালালার অধিক প্রচলিত।

ইংরাজী ভৈষকাভবে স্বশ্ন-ভৈদ-বিশেষ Oleum Carysphylli নামে পরিচিত। রাসারনিক প্রক্রিয়ার বিশেষ পরীকা ছালা ইহাতে Engenol বা Engenic acid, Salicylic acid, Caryophyllic acid, Carmufellic acid ও সামান্ত নাজার taunic acid পাওলা সিলাছে।

প্রতিবংসর ১১০৯৮৪১ টাকার স্বস্থ আজিবর, আদেন ভারতীর বীপপুর হইতে বালালা, বোঘাই, ও নামোনে জানদানী হয় এবং প্রতিবংসর এবান হইতে কায় ৩৬৭২৪২ होका मृत्यात गरम हेश्नक क प्रहेनक, क्रकर, ८ड्डेट्रनहेन्त्वन्ते, धनिवाद पूरक, चारमन, क्रांच क च्यांक स्वरंभ स्वरंभी क्षेत्रा थारक।

বৈশ্বক্ষতে ইহার গুণ-শীতল, ডিজ, কটু, নেন্নহিতকর, দীপল, পাচল, কচিকর, কক, শিশু ও অন্তবোৰনাগক, ছুঞা, হর্দি, আগ্নান, শুল, আগুবিনাগক, কাল, খাস, হিঞা ও ক্ষমালক। (ভাবঞ্জা রাজনি৽)

"বিরহানশসভাগ তাশিনী কাপি কামিনী।
লবকানি সম্ৎক্ষা গ্রহণে রাহবে দলৌ॥" (উডট)
লবক্ষক (রী) লবক খার্থে কন্। লবক। (প্রথমনি")
লবক্ষকন্দপত্রী (রী) শন্ত ভালীনপত্র। (ইবছকনি")
লবক্ষকন্দিকা (রী) শন্ত। (রাজনি")
লবক্ষকন্ত্রা (রী) প্রশাতাবিশিষ্ট।

শ্লণিতগ্রক্লতাপরিশীলনকোষ্ণ্যলয়প্রীরে। মধুক্রনিকরকরভিতকোকিলভূলিতভূষভূটীরে॥" (জর্কের) ২ রাধার সধী বিশেষ।

লবঙ্গাদি (পু:) স্থাণাধিকারে উবধবিশের। প্রস্তুতপ্রণাদী—
লবল, উঠ, মরিচ ও সোহাগা একত্র সম্ভাগে উত্তমরূপে চূর্ণ করিবে। পরে ইহা স্থামার্গ ও চিভার রুদে ৭ বার ভাবনা থিবে। স্মান্তির বলাবল স্মন্ত্রনারে উপনুক্ত মাত্রার এই ঔবধু লেবন করিলে স্পনীর্ণরোগ স্থাপ্ত প্রশমিত হয়। (রুদেস্ক্রদার্স স্পনীর্ণাধি)

ভৈষকারতাবলীতে ইহার মাত্রা এক রতি নির্দিষ্ট আছে। क्षतक्रामित्र (क्री) धार्वीरतांगाधिकारताक वृत्नीवधित्व । এই চুর্ণ আর ও বুহন্ডেলে ছই প্রকার। প্রস্তুত প্রণালী-पत्तनवनाति हुर्ग--नयन, आछारेह्, मूथा, द्वन्वं र्व, आकनावि, মোতন্ত্ৰৰ, জীৱা, ধাইকুল, লোধ, ইক্সৰৰ, বালা, ধনে, খেডখুনা, কাঁডড়াণুলী, শিপুল, ওঁঠ, বরাক্রাঞ্চা, ঘবকার, সৈম্বর্জন ও র্নাঞ্জন এই সকল এবা সম্ভাগে লইয়া উত্তমন্ত্রণে চর্ণ ও মিল্রিড করিবে। এই চুর্ণের সাত্রা > রতি **হই**তে ২০ রতি, অন্থপান फड्रामिक, मधु वा छांभछ्य। और हुई जावत्न व्यक्षिमान्ना, গ্রহণী ও অভীসার প্রভৃতি উদররোগ আন্ত প্রশমিত হয়। वृरुव्यक्तारिहर्न-लयम, चाफरेह, मुखा, शिशून, मतिह, देनस्व, रद्रा, धान, करे एन, कुछ, क्षित्री, कांत्रकन, कुक्कीवा, जहन লবৰ, বসালন, ধাইকুল, নোচরস, আক্নাবি, তেলপত্র, ভালীল-পত্ৰ, নাগেৰৱ, চিতামূল, রিট্লবণ, তিতবাউ, বেলওঁঠ, অভয়ক थनाठ, निश्नमून, बनवमानी, बमानी, बहायमुख, हेळहरू, 🕉 🥉 वाफिय करनत वान, यरकात, निमहान, त्वकपुना, नाकिकात, नमुख्यस्मा, সোহাগার वरे, वाला, कृष्टेस मुरगत हान, सामहान, भागशान, कोबी, भार, त्योर, शहर ७ शास बारहारक সমভাগ চূর্ণ। এই সকল এবা উদ্ধনরশে চূর্ণ করিরা একত্র মিজিত করিবে। অহপান মধুও ততুলোদক। ইহা সেবনে এহনী, অতীসার ও প্রদর প্রভৃতি রোগ নই হয়।

অভবিধ — লবল, জীলা, রেণুক, সৈকৰ, ওড়ংক্, তেজপত্র, এলাচি, বনবজানী, বনাদী, সুধা, ত্রিকট্ট, ত্রিফলা, ওল্ফা, আকনাদি, চিল্লডা, গোক্লল, জৈত্রী, ভারদল, লালহরিত্রা, ললদ (অটালাগী), রক্তচলন, মুরালাংগী, শটা, মউরী, মেথি, সোহাগার বই, ক্লুজীরা, ববকার, সাচিকার, বালা, বেলওঁঠ, কুড়, চিতা-মুল, লিপুলমুল, বিড়ল, ধলে, পারদ, ক্লন্ত্র, গাকক ও লোহ প্রত্যেক সমভাবে চুর্ল ও মিশ্রিত করিরা লইবে, মাত্রা এক মাবা হইতে আরম্ভ করিয়া ক্রমণাং অর্কডোলা পর্যান্ত বাড়াইতে ছইবে। এই চুর্ল অত্যন্ত অগ্নির্ভিকারক ও প্রহণীরোগনাশক। ইহা ভিন্ন অল্লান্ত উদররোগেও বিশেষ উপকারী।(ভৈনক্যরলা গ্রহণীরোগানি)

৩ খ্রীরোমাবিকারোক গ্রহণভেদ। প্রস্তুত প্রণালী—লবল, লোহাগার খই, মুণা, ধাইকুল, বেলওঁঠ, গ্রনিরা, জারকল, খেত-ধুনা, গুল্ফা, দাড়িমকলের ছাল, জীরা, লৈকব, মোচরল স্থানিস্কল, রনাজন, অন্ত্র, বল, বরাক্রান্তা, রক্তচন্দন, গুঁঠ, আতাইচ, কাকড়া-পুলী, গ্রির ও বালা প্রত্যেক সমতাগ চুর্গ করিরা দিল্লিত করিবে। অন্থান ছাগহুড়। গর্ভাবহার সংগ্রহগ্রহণী অতিসার, অর ও আনরক্তাতিসার হইলে ইহা প্রেরোজ্য। এই চুর্গ ভূলরাজরসে ভিজাইরা তিন্দিন ভাবনা দিতে হয়।

৪ গুলরোগাধিকারোক্ত ঔষধভেদ। প্রস্তুতপ্রণাদী—লবদ, ভেউড়ীমূল, দন্তীমূল, যমানী, তুঁঠ, বচ, ধনিয়া, চিতামূল, ত্রিফলা, পিপুল, কট্কী, আন্দা, চই, গোলুর, যবন্দার, এলাইচ, বনযমানী (অন্ধনোলা) ও ইক্রয়ব সমভাগে চুর্ল করিয়া ২ ভোলা পরি-মাণে উক্ত আলের সহিত্ত দেবন করিবে। ইহাতে সকল প্রকার গুলা, আর্ল, শোষ প্রাকৃতি বিনাই হয়।

লবঙ্গাদিমোদক, অনিমান্দ্যরোগাধিকারোক ঔষধভেছ।
(চিকিৎসাসার°)

লবঙ্গাদিবটা, অনিযাল্যরোগাধিকারোক ঔবধন্তে । প্রস্তত্বাদানী—লবঙ্গ, তাঁঠ, মরিচ ও নোহাগার থই প্রত্যেক সমত্যাগে চূর্গ করিয়া লইয়া এরং অপানার্গ ও চিতামূলের কাথে ভাবনা দিয়া > রতি প্রায়াণ করিলা প্রস্তত্বাধান হিছা সেবনে প্রভ্ মাংলাদি আর্শ হইয়া থাকে ৷ (তৈত্বজ্বরাণ অনিমান্যাধিণ) করেলাদিবটা (য়) অনীর্ণরোগাধিকারোক ঔবধ্বনিশেষ ৷ প্রস্তৃত্বাদানী—লবঙ্গ, আতিবল, মুনে, কুড়, নামানীরা, কাল-ক্ষেত্বা, এবাচি, দাক্ষচিনি, নোহাগা, হহিডভ, মুখা, বচ, বমানী, বিচলবণ, লৈহবনুরা, ক্ষান্তাহে প্রব্রাহাকে প্রব্রাহাক প্রায়া, গলক, লোহ, ক্ষান্ত্রাহাক প্রব্রাহাক প্রব্রাহাক প্রবেশ ক্ষান্ত্রা প্রায়া, গলক, লোহ, ক্ষান্ত্রাহাক প্রবেশ ক্ষান্ত্রাহাক প্রবেশ ক্ষান্ত্রা প্রায়া, গলক, লোহ,

রসে মর্দন ব্যরির বটা প্রস্তুত করিবে। অনুপাদ উক্তরণ। ইহা সেবনে গ্রহনী, আমদোব, পেটবেদনা, প্রবাহিকা, জর, কক্তনিত-পুল, কুঠ, অর, পিন্ত, প্রবলবার, মন্দায়ি ও কোঠগতবাড প্রস্তুতি আন্ত প্রশমিত হয়। (রসেক্সার অঞ্জীর্ণরোগারি) লবট (পুং) কাদীরহ এক্সন প্রসিদ্ধ ব্যক্তি।

(রাজতরজিণী ধা২৭৬,২০৪)

ল্বব (রী) পুনাতি স্বাডামিতি পু-নন্দ্যানিরাৎ প্যু, পুবোনরাদিরাৎ াক্ষ। কাররসকুক ত্রব্য।

বিদ্ধির হানীর নাম। হিন্দী—লোগ, নমক, নূন, লবণ,
নিমোক; বোহাই—নমক, নিমক; মরাঠা—মীঠা, ভর্জন—মিঠু,
তানিল—উমা; তেলগু— লবণম,উমা; কণাড়ী—উরা, নলরালম্—
উমা, লবণম; ব্রহ্ম—ল; শিলাপুর—লুগু; আরব—মিলালুল মাজিন,
পারত—নমক, নমকে, ব্র্নানি, হুমকে তারাম্; বব—উরা; চীন—
রেন; ইংরাজী—Sea-salt, common salt, table-salt,
করালী—Sel Commun, sel de Cuieine, sel Marin;
জর্মণ—Chlorantrium Kochsalz, বিনেমার ও স্ক্রিডিন্—
Salt, ইতালী—Chloruro-di-Sodio, Sal commune,
শোন—Sal.

ভারতে প্রধানতঃ হুই প্রকার লবণের ব্যবহার দেখা যার।
প্রথম সালা লবণ (Sodiam Chloride) এবং ভিতীর ক্লকলবণ বা বিট্লবণ। বিট্লবণে সাধারণ লবণের ভাগ থাকিলেও
উহাতে অভ্যান্ত ভ্রের মিশ্রণ থাকার উহা অনেকাংশে ভ্রেকগুণযুক্ত হইরাছে। গুনিবিশেবে ঐ গুণের অনেক ভারতম্য লক্ষিত হয়। সাধারণতঃ বিট্লবণে Sulphuret of iron
পাওরা বার। অনেক গুলে ক্লোরাইড্ ও কার্কনেট অব সোডিয়াম্
উত্তঃ করিয়া ভাহাতে আমলকী ও হরীতকী মিশাইলে বে গুণ
পাওয়া বার, কিট্লবণে প্রধানতঃ সেই গুণ থাকে।

হিন্দ্ৰ বল্পতিভাগ ক্টাতেই গ্ৰণের ব্ৰহার জানি-ভেন। অবর্থকে হাব্ছাস, আবলারনভৌত্তর হাত্ছাহে, ছান্দোগ্য উপ্লিক্ত জাইয়াৰ, লভপথবাজন ১৪। ৫। ৪। ১২, আবলারনক্তরে ইন্টেস্ড, গোভিল হাত্মত প্রভৃতি প্রাচীন গ্রহে গ্রক্তে ব্রক্তিয়ার দেখা বার। মহাস্নি হলেভ ব্রুভ আর্বেশসালে, গ্রণের নিরোভ কর্টী ভেদ নির্দেশ ক্রিয়াছেন।

ক্ষাতে দিবিত আছে বে, নৈজন, সামুৱা, বিট, নৌকৰ্চস, হোমক ও উত্তিৰ প্ৰাকৃতি লবণ বৰুল পথ গছ ক্ষাত্ৰ উক্ত, বান্-মানক, এবং কক ও পিডকর এবং পূর্বা, পূর্বক্রেমে নিবা, আছু ও মনস্ক্রের সক্ষকর। নৈজন, ক্ষাড়, বিট, পাক্য, নাজার, সামুৱা, পাঁতু ব, বৰকার, উম্কার ও স্থানিকা প্রভৃতি লক্ষবর্ম। ইহাদের র্পণ লবণরন, পাচক ও সংশোধক। ইহা বারা রসসর্ক্তর বিলেষণ এবং শরীরের ক্রেম্ব ও শৈথিকা সাধিত হয়।
ইহা সকল রনের বিরোধী উক্তর্থপযুক্ত ও মার্গবিশোধক এবং
সকল পরীরাংশের কোমলভানাধক। এই রল অধিক্যাত্রার
সেবন করিলে গালে কওু, মওলাকার ত্রণ, শোক, বিষর্গভা,
মুখে ও নেত্রে ত্রণ, রক্তাণিত, বাতরকা, পুরুববহানি ও অল্লোকার
ব্রেস্ত নেত্রে ব্রণ, রক্তাণিত, বাতরকা, পুরুববহানি ও অল্লোকার
ব্রেস্ত লীড়া হয়।

লৈম্বৰ লবণ---চন্ধুয় হিউক্য়, মুখজিয়, ক্ষচিক্য়, লঘু, আমি-কৃষিক্ষয়, মিথ, মধুন্তমল, ত্বা, শীতল, লোবনাপক এবং উক্ত লকল লবণ অংগকা উৎকৃষ্ট ও কল্যায়ক।

সামুদ্র লবণ—পরিণাকে মধুর, অমতি উঠ, অবিবাহী, ভেদক, লবং মিল্ল, শুলনাপক এবং নাতিপিত্তবৰ্ত্তক।

সৌবর্চন নবণ—পরিপাকে নতু, উষ্ণবীর্ব্য, বিনদ, কটু, গুল্ল, শুল ও'বিবন্ধনাশক, মুখপ্রিয়, প্রবৃত্তি ও কটিকর।

রোমক (পাংগুলবণ)—তীক্ষ, অভিশব্ধ উষ্ণ, স্ত্রীসংসর্থ-লক্ষিত্র বর্জনকর, পাকে কটু, বার্নাশক, গলু, বিস্ফলী, পুলা, মলভেদক ও মূত্রকর। ওডিল্লবণ লগু, ভীক্ষা, উষ্ণা, হুলর ও প্রেম্নকর্মকর, বার্র অহলোমকারী, ভিজ্ঞা, ও কটু। ওটিকালবণ ক্ষা, বার্ ও ক্রমিণান্তিকর, লেখনকর, পিত্তর্জক, অন্নিকর, পাচক ও ভেদক। উষকার (ক্ষারম্ভিকাসভূত লবণ)—ইহা বাশ্-কের অথীৎ বাশ্কালাত পর্বাতের মূলদেশত্ব আকর হইতে উৎপল্ল, কটু ও ছেদনকর। [এই সকল লবণের বিবন্ন তত্তদ্শক্ষে বিশেষ বিবন্ন গ্রেষ্ঠা।]

এই সকল লবণের মধ্যে সৈত্বৰ, লৌবর্চন, বিট্,
সাম্প্র ও সাজার এই পাঁচটাকে পঞ্চলবণ কছে। একলবণ
বলিলে সৈত্বৰ, ভিলবণ বলিলে সৈত্বৰ ও সচল, ত্রিলবণ বলিলে
সৈত্বৰ, সচল ও বিট্, চতুলবণ বলিলে সৈত্বৰ, সচল, বিট্ ও
সাম্প্র এবং পঞ্চলবণ বলিলে পূর্বোজ্ঞ পাঁচটা ব্রিভে হইবে।
চরকে কিন্তু পঞ্চলবণ খলে সাজার লবণের পরিবর্জে ওঙিদ লবণ
সুহীত হইরাজে (ক্ষেত্রুত স্কেছা ও ৪৬ জা ০)

সংশ্বত প্রছে বেমন সৈদৰ অর্থাৎ সিদ্ধপ্রবেশবাত পার্কত্য স্বৰণ ('Book-Sale'), সামৃত্র অর্থাৎ স্বর্থোডাণে ওক সম্প্রক্রেল পার্ক পরণ বা কর্কচ, রোমক অর্থাৎ ক্ষানদীলসভাত এবং পাকজনী বা পাছর প্রক্রাত গবন, পাংতক ও উমাহত অর্থাৎ স্বলাক মৃত্তিকা হইতে উৎপন্ন স্বৰণ, বিটুলবণ, সৌবর্কস বা সোকল অর্থাৎ কালামিকক, ওটিল অর্থাৎ রেহা বা কালার ক্রেলা অর্থাৎ বালিক প্রকৃতি প্রশেষ উল্লেখ আছে, সেইরণ ব্রক্তান স্বাধ্যম-বিজ্ঞানে স্থায়েশ স্বৰ্ণান্ত (Sodium delivation সম্প্রতি স্কর্তান আছে, সেইরণ

Rock-Salt e Sea Salt नार्य गृहिहिंछ । क्षि कांत्रर किंद्र कांत्रर किंद्र क्षित्र Marsh Salt e Earth salt नार्य कांत्र क्षेत्री ट्यापी-

ভারতবাসী কনসাধারণ থাছজবোর সহিত প্রথমিতঃ যে কর প্রকার লবণ ব্যবহার করে, নিরে ভারার একটা ভালিকা দেওরা গেল:—

- ১ পঞ্জাবী-সৈত্র (লাহোরী ও সৈত্র-লবণ)—ইহা সিত্ত্রনরের বিদ্ধানিকে উৎপত্ন হয়। "কোহাটী" ও নিমক-স্বক্ত নামক লবণবর সিত্তনারের পাতিনোরেরভাগে পাওরা বার । এতত্তির হিমালর প্রদেশের মতিরাল্য হইতে জার একপ্রকার লবণের আমধানী হইরা থাকে।
- দিলীর "অ্লডানিপুরী" লবণ—ইহা দিলীর লবণাক মৃত্তিকা বনি (Pit-brine salt) হইতে প্রস্তুত হর'।
- ৩ শাভরণবণ—রাজপুতনার শাভরন্নর জগ হইতে প্রভত হইনা থাকে।
- বিশ্বন্থ রাজপুতনার বিশ্বানা বিভাগের বৃত্তিকা হইতে প্রস্তুত হয়।
- কৌনিয়া-লবণ—য়াজপুতনার পঞ্চত্রা (পচবত্রা) নামক স্থানের মৃত্তিকা হইতে উৎপন্ন। মধ্যভারতেও এই লবণ প্রচলিত।
- কলোড়ী-লবণ—রাজপুতানার কলোড়ীপ্রদেশের মৃত্তিকালাত।
- বরাগড়া-লবণ—বোৰাই প্রেনিডেলীর অভরাত-বিভাগে প্রস্তুত হয়।
- কাৰণী-লবণ—বোশাই-উপকৃললাত।
- কর্বচ ও বনবার (কর্বচ) লবগ—মাস্রাজ উপকৃলে প্রান্তত হইরা থাকে।
- পলা (পাংগু)-লবণ—বালালার সমুল্লোপকৃলে বে লবণ সাধা-রণতঃ প্রস্তুত হয়।
- >> খারি (কার) লবণ—লবর্ণাক্ত সৃষ্টিকা হঠিছে বে লবণ প্রবন্ধ করা হয়।
- ১২ পাক্ৰা বা নিমক্-পোর—পোরা (Salispetire) কইডে বে স্বৰ্ণ পাগুৱা বার ।
- ১০ নেক্রক্লী অর্থাৎ লিভারপুল-লবণ—ইংলও, জর্মী ও
 ক্রালরাল্য হইছে বে লবণ ভারতে আমলানী হইরা থাকে।
 উহা প্রধানতঃ Liverpool Sult নামে কথিত। বর্তনানকালে এই পরিষ্ণত লবণ ভারতবাসী জনসাধারণের
 ব্যবহার্য হইরাছে। তবে কোন কোন খানে কর্মান্ত নৈজবের প্রচলন আছেও লোভা-হিন্দু ও হিন্দু-বিধ্বাসণ
 নৈজব ব্যবহার করিয়া বার্কেন।
- >८ प्रक् दी-मदन--- निरहमबीटन व्य**ष्ट्रक हम** 👫

- ১৫ অর্ণিয়াপ্রী-লবণ---লোহিতসাগরের উপস্কে প্রস্তুত হইরা থাকে।
- >৬ আদেন-লবণ---আদেন নগরের নিকট এছত হয়। এই লবণ প্রায় প্রেতিবৎসর ৩০ ছাক্লার টন্ আমদানী হয়।
- ১৭ মন্বট ও মন্বটুসেন্ধা—পারস্ত উপদাগর উপকূলে প্রস্তত।
- ১৮ লেন্চা লবণ—ভিব্বতদেশে উৎপন্ন।
- ১৯ মণিপুর প্রভৃতি কুদ্রদেশজাত বিভিন্ন প্রকার লবণ।

এই সকল লবণ ভারতে প্রচলিত থাকিলেও লিভারপুল সহর হইতে যে 'Cheshire Salt' কলিকাতা, চট্টগ্রাম, রেকুন ও ব্রন্ধের প্রসিদ্ধ বন্দরে আমদানী হয়, তাহার পরিমাণ সর্ব্বাপেকা অধিক।

ভারতবর্ষের ভূতম্ব আলোচনা করিলে, মৃত্তিকান্তর বিশেষে লবণের অবস্থান নির্গর করিতে পারা বার। ভূতম্ববিদ্ ব্লানকোর্ড ও মেড্লিকোট — কোহাট, কাঙ্ডা, বাহাত্রখেল, মণ্ডি, লবণপর্মত ও হিমালয়-সন্ধিতি লিবালিক পর্মতভাগে প্রচুর লবণের অন্তিম্ব লক্ষ্য করিরাছিলেন। তাঁহারা ইওসিন বা নিউম্লিটিক্তরে-সিলিউরীয়-যুগত্তরে, পেলিওজোইক্-ত্তরে, জ্পিসাম্-ত্তরে এবং প্রাচীন ও আধুনিক টার্সিয়ারি-যুগত্তরে সৈদ্ধব লবণত্তর (beds of rock-salt) প্রাপ্ত ইইরাছিলেন। এখনও কোহাট প্রভৃতি স্থানের লবণ-ধনি হইতে সৈদ্ধব লবণ উদ্বোলিত হইতেছে।

যুগান্তরীয় মৃৎস্তর হইতে প্রাপ্ত লবণ ব্যতীত ভারতের বিভিন্ন স্থানের সাগরোপকৃলে ও ব্রুলতীরে স্থানীয় লোকের ব্যবহারার্থ যে সকল লবণ প্রস্তুত হইয়া থাকে, তাহার সংক্ষিপ্ত পরিচম নিম্নে প্রদন্ত হইল ;---

মান্ত্রাজ-এই প্রেসিডেনীতে পূর্বে সমুদ্রের লবণ-জল বালাকারে পরিণত করিয়া লবণ প্রস্তুত করিত। স্থানবিলেবে লবণাক্ত মৃত্তিকা অথবা ক্ষায়ত্ত তম জলনিবিক্ত করিয়া সেই লবণাক্ত জল হইতে লবণ প্রস্তুত করিয়া লইত। লেবোক্ত প্রথা একবারে পরিত্যক্ত হইয়াছে। প্রথমোক্ত প্রণালীতে যে লবণ প্রস্তুত হয়, তাহাই স্থানীয় লোকে ব্যবহার করিয়া থাকে। এডজির বোধাই হইতে কতক লবণ এথানে আমন্ত্রানী হয়।

বাঙ্গালা—পূর্ব্বে মেদিনীপুর ও বশোহর জেলার লবণ প্রস্তুত্বর প্রধান কারখানা ছিল। বেহার, ভাগলপুর ও মৃদ্দের বিভাগে কতক পরিমাণ লবণ উৎপন্ন হইত। কলিকাতার সন্নিকটবর্ত্তী লোরার কলসমূহে নোরা হইতে লবণ বাহির করিয়া লঙ্গা হইত। উড়িয়ার এখনও পুর্য্যোত্তাপে লবণজন শুকাইয়া লবণ প্রস্তুত্ত হইরা থাকে। পূর্বে ক্লিমে উত্তাপ বারাও পালা-লবণ প্রস্তুত হইত।

বেরার—এথানে গোণার-ব্রন্থের ফল হইতে এবং আফোলার অন্তর্গত পূর্ণা বিভাগের লবণজলপূর্ণ কূপ হইতে লবণ ভৈরারী। হইত। এখন আর এখানে লবণ প্রস্তুত হর না।

রাজপুতনা—শাস্তরহদ, দিদ্বানাহ্রদ ও কাচোর-রেবাদা হুদের জন হইতে প্রভূত লবণ প্রস্তুত হইরা থাকে।

বোষাই—সমূদ্রের সরণজন কর্যোজাপে গুকাইরা উপকৃনদেশে বহপুর্ব হইতেই সবণ প্রস্তুত হইরা আসিতেছে। কাষে
উপসাগর তীরে, কচ্ছের রূপপ্রদেশে ও সিদ্ধুপ্রদেশে এবং ঠানার
লবণ প্রস্তুতের কারখানা (Thank sele-works) আছে।
ইংরাজরাজ্ম লবণের বাবসা একচোটার করিবার অভিপ্রারে কাষের
নবাবকে বার্ষিক ৪০ হাজার টাকা ক্ষতিপূরণ সরুপ দিয়া ঐ
লবণের বাবসা রহিত করিয়া দেন।

পঞ্জাব—এথানে প্রথানতঃ সৈদ্ধক লবণই উত্তোলিত হয়।
সিদ্ধনদীর অপর পারে বরুজেলার কোহাট ও কালাবাগ প্রবং
লবণগিরিতে (Salt-range) প্রভৃত্ত সৈদ্ধব উৎপর হয়।
কালাবাগ ও লব্দগিরির সৈদ্ধব সিলিউরীর যুগন্তরীয়, কাভড়ায়ও কোহাটে মণ্ডিন্তরের (Mandi deposits) অন্তর্মা ।
এতত্তির এথানে গুরগাঁও জেলার লবণাবাদযুক্ত কুপজ্জল হইতে
লবণ প্রশ্বত হইয়া থাকে। উহা শাস্তর-ক্রদজাত লবণ
হইতে নির্স্ট।

যুক্ত প্রদেশ—লনগাক্ত কুপবারি হইতে এই বিভাগের নানা-স্থানে লবণ প্রস্তেত হয়; কিন্ত ইহা অপরাপর স্থানজাত লবণের স্থায় বিশুদ্ধ নহে। এখানকার লবণে Sodium Sulphate, magnisium sulphates, sodium carbonate ও nitro মিশ্রিত দেখা যায়। বুলন্দ্রহয় ও মুক্তঃক্রনগরে সামান্ত পরিমাণ লবণ প্রস্তুত হয়।

আসাম—লবণাক্ত কুপ এবং জোরহাট ও দদিয়ার লবণ-প্রভ্রবণ হইতে প্রভূত পরিমাণ লবণ প্রক্তত হয়। কাছাড়, মণিপুর ও চট্টপ্রামের পার্ক্তত্য প্রদেশেও এরপ কৃপের লোণাজন হইতে লবণ প্রস্তুত হইয় থাকে। অশিক্ষিত ও অর্দ্ধ সভ্য-জাতিরা বাঁশের চোলে লবণজন কৃটাইরা লবণ প্রস্তুত করে।

বন্ধ-শেশুর টার্সিরারি বুগতরীর পর্বতসমূহে বহুলত লবণ-প্রবাহণ আছে। উহা হইতে স্থানীর লোকে লবণ প্রস্তুত করে। আকারাৰ হইতে মার্শ্ব ই পর্যন্ত সমুদ্রোপক্ষে সমুদ্রজন হইতে সামুদ্র লবণ প্রস্তুত হর।

ভারত গবর্মেন্ট শবণের বাণিজ্য একচেটির। করির। ১৮৮২ খুটাকে লবণের প্রতিমণ ২০ টাকা ওক ধার্য্য করেন.। খুটীর বিংশশতাব্দের প্রারম্ভে ঐ শুক্তের হার ২ টাকার কম হর। বর্তমান সমরে ১৯০৬ খুটাকে কলিকাতার বাজারে ৴৽ আনা সের লবণ বিক্রের হইতেছে। পূর্বহারে প্রতি সের ৴>৫ লরে বিক্রের হইত। তথন প্রতি মণের প্রকাণ গ্রার নির্দিষ্ট ছিল। বর্তমান হারের লবণ উহা অপেকা প্রার ১১ টাকা কম হইরাছে। পূর্বহারে ভারতের নানাস্থানে ধ্বরপ হারে লবণ বিক্রের হইত, নিয়ে ভাহার ভালিকা দেওরা গেল—

ছাদের নাম স্থানের নাম **डी**श्हे লাহোর কামরূপ <u>ৰুগতান</u> ক্লিকাডা >8 ক্রাচী কটক স্কর বোদাই পাটনা স্থরাট কাণপুর মীরাট হোসন্ধাবাদ ব্যপুর জ্বলপুর আবু আকোলা লাখ্নৌ সিকন্দরাবাদ **দীতাপুর** মহিন্দর ইন্দোর **লিমো**গা গোয়াকিয়র মাক্রাজ >2 বেরেলি

মুসলমান-রাজগণের অধিকারকালে লবণের উপর শুক-ज्यानादात वावष्टा हिन । ১৮०७ थृष्टोत्सत्र ७৮ शाता असूनादत ইংরাজ-গ্রমেণ্ট সর্ব্বপ্রথম প্রতি মণ (৮২% পাউও) লবণের উপর ১ টাকা শুরু ধার্য্য করেন। ক্রমে প্রতিমণের শুরু ু ৩।০ তিন টাকা চার আনা পর্যান্ত উঠে। ১৮৮২ খুটাব্দে অফ্রান্ত প্রদেশ অপেকা বালালার লবণগুর অধিক বর্দ্ধিত হইরাছে দেখিয়া ভারতরাজ-প্রতিনিধি ভারতের সর্বজ্ঞই সমান ওম গ্রহণের ব্যবস্থা করিরা প্রতিমণ ২॥• ধার্য্য করেন ; কিন্তু দীমান্ত প্রদেশে গোলমাল ঘটিবার ভরে কোহাট ও মঞ্জির লবণ-ধনির উপর তিনি কোন কর ধার্য্য করেন নাই। কেবল কোহাট-খনি হটতে হে লম্বৰ আকগান নীমাত্তে বাইত, ভাহার প্রতি ম**ৰ** (শিকা ওজন=>০২ পাউও) ॥• আনা ধার্য্য হইরাছিল। মণ্ডির খনিজাত হৈন-লবণের তলপেকা অধিক ওক নির্দিষ্ট হইরাছিল। किस हेरबासी जबन जाराका छाहां छ जानक कम । नवरानंत्र धरे · शुक्क श्रेक्ट एवं व्यास - श्रेक्ट के स्थाप ने स्थाप ने स्थाप अस्ति । अस्त দিগ্ৰীকে ক্ষতিপূরণ স্বশ্নশ রাজন্বের কডকাংশ মনুব করিয়া দেন।

বাণিজ্য ও কারবার কপ্ত ভারতে যত প্রকার লবণ প্রচলিত আছে, ভারত গ্রহেণ্টের রাজবিবরণীতে তাহার একটা আলিকা দৃষ্ট হয়। ঐ সকল বিভিন্ন প্রাকার লবণ বিভিন্ন শ্রেণীতে নিবদ্ধ হইয়াছে:—

- > ধনিজ বা দৈছৰ লবণ (Rook-salt)—কোহাট, মঞ্চি প্ৰভৃতি ছানের ধনি হইতে এই লবণ বিক্রমার্থ নানাছানে আনলানী হয়।
- ২ ছদ ও কৃপজ লবণ (Lake and Pit salt)—শাস্তর, দিদ্বানা, পচড্ফা ও দিলীর লবণের কারখানার ইহা প্রেক্ত হর।
- ত সামূল লবণ (Sea salt ও Pit salt)—ভারতের সমূলোপ-কুলবর্ত্তী বিভিন্ন স্থানে প্রস্তুত হইরা থাকে।
- ৪ আনৃপ লবণ (Marsh salt)—লবণাক লল হইতে উৎপন্ন। দিল্লী প্রভৃতি হালের লোণানাটী ধৃড়িরা লওরার যে খাত হইরাছে, দেইল্লপ খাত-লল হইতে প্রস্তৃত।
- ৫ থাড়িজ লবণ (Swamp salt)—সমুদ্রোপক্লবর্তী জলথাড়িসমূহের লবণাক্ত কর্দম হইতে গৃহীত। সমুদ্রজল ঐ সকল
 থাড়িতে প্রবেশ করিরা আর বাহির ইইতে পার না, পরে
 বভাবতঃ গুকাইরা মাটির উপর দানাকারে নিপতিত থাকে।
 উহা বিশুদ্ধ। উহাতে প্রায় ৯৭ ভাগ Chloride of sodium থাকে।
- ৬ ক্ষিতিজ-লবণ (Saline efflorescence) বর্ণা ঋতুর পর স্থানবিশেষে নূন ফুটিয়া উঠে। যে স্থানে এরপ লবণ ফুটিয়া উঠে, দেই সকল স্থানে কখন কুক্ষাদি জয়ে না। এই জাতীয় লবণ উত্তর-পশ্চিমপ্রাদেশে খরিয়ায়, লোণহা, রেহ্ ও কল্লার-সোরা (সোরার কলে যে মাটিতে সোরা শুকান হয়, সেই মৃত্তিকা হইতে প্রস্তুত)বলে।
- ৭ কারলবণ (Earth salt)—হিন্দুছানে ইহাকে খারি নিমক বলে। গোয়ালিয়ার, পাতিরালাও মধ্যভারতে এই লবণ উৎপর হয়।
- ৮ নিমক সোর (Saltpetre salt)—সোরা হইতে যে মিল্র-লবণ প্রস্তুত হয়।

উত্তর ও পশ্চিম-ভারতে যতগুলি লবণধনি আছে, তংসমূহের মধ্যে ধেরূপ তরে লবণ অবস্থিত থাকে, তাহা বিশেষ
আলোচনার জিনিব। এই সকলের মধ্যে লবণগিরির তরসমূহ বিশেষভাবে উরেধযোগ্য। এই শৈলমালা ৭১°৩০ হইতে
৭৩°০০ জাবিমা পূর্বে এবং ৩২°২০ হইতে ৩০° উত্তর জক্ষাংশ
মধ্যে অবস্থিত। সিদ্ধুনাগর লোরাবের ক্ষরিত্যকান্ত্রমি ও ক্যোহিস্থানবিভাগ লইরা লবণশৈন গঠিত। ইহার একপ্রাত্তে বিলাম
নদী ও অপরপ্রাত্তে সিদ্ধুনর। প্রায় ১৫২ মাইল বিত্তীর্থ এই
বার্ম্বত্যপ্রেদেশে বেরুপ স্থান্তীর ভবে সবণরাশি নিহিত রহিরাছে

रुटेबा बाटक।

্নিমে বাধারণের শাবগতিক	ৰভ প্ৰাই া	ज्याग ्रह	াশ্ৰাত
छेड् ७ वरेग-	. y . t :		
ा ः गांग । । । । १९५७ १८ १८	4 225	- CSD	ব্দশ্ব
বর্তবাদ গঠিত কর-	$K_{e_{i},a_{i}} = \sum_{i \in \mathcal{I}_{e_{i}}} c_{i}$	14	
Debris of gypsum	***	36.	व िष्
চুৰাপানৰ জন—			
Numeralitie limert	OH0 ***	₹••	बिह े
करनायर			
Coal alumebab mat	ļ •**•	20	निक
বেলে পাধরতর			
. Green andetone		***	100
Blue marl	* ***		बिह
Red madstone	***	*** *********************************	क्छि
্লৰণন্তর	4		
Upper layer of whit	e gypenm	6:	PP.
Brick red marl	jane	200	किंग्र
Brown gypaum		380	ক্ট ্
Lower layer of white	е дурната	₹•.•	ফিট ্
Salt marl and salt	•••		কি ট ্
এই শবণগিরিবিভাগে	প্ৰধানতঃ	মেও-ধনি,	ৰাৰ্চ্চ-খনি,

কোহাটের সবণমর প্রবেশ সিন্ধনদের পশ্চিমে অবস্থিত।
আকা
৩২°৪৭ হইতে ৩৩°৫২ উ: এবং স্রাঘি ৭•°৩২
হইতে ৭২°১৮ পৃ:। এখানে কুটা, মান্সিন, নড়ি, খরক ও
বাহাছর-খেল নামক ছানে খনি আছে। ভারতের প্রার ৩০
হাজার বর্গমাইল হান এবং কাজাহার, বাল্ধ ও প্রমনি প্রভৃতি
ভূতারে এই লবণ প্রচলিত।

কালাবাগ-ধনি ও নুরপুর ধনি হইছে সৈত্তব লবণ উভোলিত

মজিল লবণথানি হিমালয়নেপের যথিলাজে অবছিত।
আকা ৩২° উ: এবং তাথি ৭৭° পৃ:। গুমা ও তাল লামক ছানে
ছুইটা থনি আছে। ইংরাজনাজতে মণ্ডি-লবণ বিক্রের হর বলিয়া
মণ্ডিরাজতে ইংরাজ-সরকারে কার্বিক কর অরপালবণের লজ্যাংশ
বিতে হর। এডারিল Delhi salt works, Sambhar saltluke, Didwana salt marsh, Pachbudra salt works,
Luui and Falodisalt ও Tibet or Leucha salt লামে
ক্ষেত্রতালি বিশিষ্ট ছালীয় লবণের প্রচলন সেখা বার।

এতবির সার্থেটে নার্কি-শার প্রাকৃতি আরও কতকওনি লবণ (Sodium salts:) ঔবধার্কে ব্যবস্থত ক্ষরা বাবে। ঐ লকলের বিবরণ ভক্তং শঙ্গে মুক্তির। [কাম ও প্রাক্তা বেধ i]

पानासाय मत्रन व्यवस्था वातानी ।

জনপের বাণিজ্য ইংল্লাভ গবর্বে**টে**ইর **বরুত্তে পরি**চালিত হঠজেছে: ভাঁচাৰিগের অভ্যবতি ভিন্ন কেছ লবণ প্রস্তুত করিলে তৎক্ষাৎ লে রাজ্যারে বঞ্জিত হয়। কাবেশে যে সম্বল নবণ व्यक्क रहेता थाएक, ज्यमक्षात हेरबाकताल कर कतिया गरेता. লাট বা ভড়োধিক ওপ মূল্যে ভাহা প্রজাদিলের ব্যবহারার্থে বিক্রম্ম করেন । এই একচেটিয়া বাশিক্ষ্যে গবর্মেণ্টের বার্ষিক প্ৰায় ৩ কোটি টাকা লভা হইয়া খাকে। এই সকল কাৰ্যা-সম্পাদনার্থ ভাঁহারা বিপুল অর্থব্যর করিরা বহু সংখ্যক স্বার্য্যালয় সংস্থাপন ও অনেক কর্মচারী নিযুক্ত করিরাছেন এবং ভাহাদের স্থাসন জন্ত ছানে হানে জনেক ইংরাজরাজপুরুব নিযুক্ত আছে। বলদেশীর লবণের কার্থানার ব্যবস্থাপক সাহেবেরা কলিকাভার অবস্থিতি করেন এবং উচ্চারা বেধানে একত হইরা মন্ত্রণা করেন, ঐ গৃহ "দণ্টবোর্ড" নামে খ্যাত। অধীনস্থ সমস্ত কার্যালরে একট নির্মে কার্য্য সম্পন্ন হটরা থাকে। বাহল্যভরে দক্ত স্থানের লবণপ্রস্তভপ্রশালী না লিখিরা কৈবল প্রস্তুত বিষয়ে প্রশিদ্ধ ভমপুকেরই উল্লেখ করিলাম।

তম্পুক নগর কলিকাতার ২২ ক্রোশ বলিগে রূপনারারণ নদীতটে অবস্থিত। পূর্ককালে এই নগর সমৃদ্ধ ও বাণিজ্য-কার্য্যে বিখ্যাত ছিল; সম্প্রতি সে খ্যাতি পুথপ্রার; কেবল নাম মাত্র অবলিট আছে। কিন্তু লবণ সম্বন্ধে এই নগর সামান্ত নছে। এখানে বে কুঠি আছে, তাহা হইতে প্রেক্তি বৎসর ১০০ লক্ষ্য মণ লবণ প্রস্তুত হয় এবং উহা হইতে কোম্পানির প্রায় ২৫ লক্ষ্য টাকা লাভ হইরা থাকে।

ভদপুকের সমরকুঠার অধীন পাঁচটা কার্য্যালয় নির্দিষ্ট আছে, ভন্নধ্যে ভন্নুক, মহিবাদল, জলামুঠা, আর্জাবাদ ভূম্ভুড়ের আড়লই প্রধান ও বিলেব বিখ্যাত; স্পাবার প্রড্যেক আড়লের অধীনে কুল্ল কুল্ল কার্য্যালর আছে। কার্যালয়ের নাম "ভদা"। এই সক্ষা চকায় সারোগা, মোহরব, আমল্যার, জেল্যার প্রাকৃতি ভিন্ন ভিন্ন নামবিশিষ্ট অনেক কর্মকর্তা নিযুক্ত থাকে; তাহারা কার্ত্তিক মাস হইতে বৰ্ষার প্রারম্ভে পর্যান্ত লবল প্রস্তুত সম্বন্ধীয় কার্য্য নিকৃক্ত থাকে। কার্ডিক মানের প্রারম্ভে সবশসমিভির (সন্ট-বোর্ড) নাছেবেরা কোৰ আড়কে কড লবণ প্ৰান্তত করা কর্মনা ভাহার পরিমাণ निर्मिष्टे कविषा (एन) (नके शविषारमञ्जामा "छाष्रमाष"। धी ভারদান অরুলারে প্রভাক রুদার কার্যকারকেরা নিজ নিজ হুমার সম্ভর্গত এজানিগতে ভাকাইরা কে: কড পরিয়াচণ" নবণ আছত স্বায়িৰে ও কি প্ৰকাৰে কুণা স্কৰি, ভাষা নিৰ্দ্বাহিত ্করে এক তবিবরপূর্ণ এক এক বৃত্তিত কাগত কেববা হয়। এই নির্দারণ-ক্রিয়ার নাম "সওলাপত্র" এবং বে ফাগজে তাহা
লিখিত হর তাহার নাম "হাতচিটা"। বে সকল বাজিরা
এইরূপে সওলাপত্র দ্বির করিয়া হাতচিটা লয়, তাহারা "মলদ্র"
লামে খ্যাত। লবণ-প্রস্তুত্রের কার্য্যে অতার লাভ। স্বতরাং
কেবল এই কার্য্যে কেবই দিনপাত করিতে পারে না, মলদ্রী
লাত্রেই লবণ প্রস্তুত করা বাতীত ক্রবিকার্য্যর করে, পরস্তু
এ উত্তর কার্যাও তাহাদের লারিত্রা দূর হয় না, সকলেই বিপূল
খণগত্বও অত্যক্ত দরিত্র।

ত্ম্পুকের লবণ তত্রতা ভাগীরথী, হলদী, টেলরাখালী, রারখালী প্রভৃতি কএকটা নদীর জলে প্রস্তুত হর, কুতরাং লবণ
প্রস্তুত-করণের কার্যালর সকল ঐ নদীতটে নির্মিত আছে।
দলগীরা বথোপযুক্ত হান নির্দিষ্ট করিরা ভাহা চারি জংশে
বিভাগ করে। ভাহার প্রথমাংশের নাম "চাভর"; উহা সর্কাপোকা বৃহৎ এবং তাহাতে লবণের মৃত্তিকা প্রস্তুত হয়;
দ্বিতীয়াংশের নাম "ফুরি" অর্থাৎ কুশু; লবণাক্ত জল রাখিবার
জক্ত উহার প্রয়োজন; তৃতীয়াংশের নাম "মাদা" অর্থাৎ লবণ
ছাঁকিবার হান; চতুর্থ "ভূঁরি ঘর" অর্থাৎ লবণ পাক করিবার
পৃহ; এই জংশ-চতুষ্টরের সমষ্টির নাম "থালাড়ি" বা "মলল।"
এইরূপ এক এক থালাড়ির জক্ত হই তিন বিঘা জমির

পুর্ব্বেই কথিত হইয়াছে যে,থালাড়ির অক্তান্তাংশ হইতে চাতর বৃহৎ : ভজ্জন্ত এক বিঘা বা ভতোধিক স্থান আবশ্যক হয়। মলঙ্গীরা তাহা অতি সাবধানে পরিকার করে, তথা হইতে কয়েক অঙ্গুলীপরিমিত মৃত্তিকা খনন করিয়া ভাহার মধ্যে মধ্যে ও চতর্কিকে বাঁধ দিয়া ঐ স্থান তিন অংশে বিভাগ করে। তৎপরে ঐ ক্ষেত্রত্তর খনন করিয়া তত্তপরি মই দিয়া ভূমি চৌরদ করিয়া লয়। ঐ চৌরাস করা ভূমি ৮৷১০ দিবস রৌদ্রে ভকাইলে তাহার উপরিভাগের মৃত্তিকা, ইষ্টক-প্রাচীরে লোগা লাগিলে বে প্রকার চূর্ণ জন্মে ডক্রপ, চূর্ণ হইরা বার । চূর্ণ প্রস্তেভ হইলে ভত্নপরি পাঁচ ছয় জন মনুষ্য ইতন্ততঃ শ্রমণ করিরা সেই সমন্ত উত্তমরূপে দলিত করে, পরে এক সপ্তাহ তাহা রৌদ্রে তক হইলে ঐ ভূর্ণ গুরীবারা চাঁচিরা একত্র করে। অনস্তর কোটালের জলে চাতর সিক্ত থাকিলে ও রোজের সাহাব্য পাইলে লবণ-মৃত্তিকা উত্তমরূপে উৎপন্ন হয়। অপর বস্তান অবে চাতর থোত হইলে তথা কাৰ্ত্তিক বা অপ্ৰহাৰণ মানে অত্যন্ত বৰ্ষায় বা কোৱানায় অথবা মেষে আঞ্চাল সর্জনা আজ্ঞর বাহিলে লবণোৎপভির ॰ * इसि জন্মে। পৌৰ ও মাৰ মানে জোরারের জলে। জুরি নামক ্ৰুও সকল পল্লিপূৰ্ণ না ছইলে লবণ-প্ৰান্তত-স্বাহৰ্য্যর হানি বটে। ্ একটা কুরি নির্দাণ করিছে চারি কাঠা কুষির আনচক। ঐ

ভূমিতে ৫ কি ৬ হন্ত গভীর এক হান্ত দৈবাঁ ও এক হাত প্রস্থ একটা গৰ্ভ খনন করিয়া এক পরোনালী বারা কোন কোন নদীর দহিত সংযুক্ত করিলে উক্ত ভুরি প্রস্তুত হয়। কোটালের विवन केंक नामा वित्रा नहीत नवशापूरक कृति अञ्चितृर्व स्ट्रेटन, भगनीता नामा क्रम कतिता मराप्त के सम प्रका करता। वर्षाकारण জুরি বৃটির জলে পরিপূর্ণ হইরা থাকে; কার্ডিক-মানে সেই লল সেচনপূর্বক স্থারি পরিকার করে। কোটালের লবণাপু খারা তাহা পুরণ করাই লবণ-প্রস্কৃত-করণ কার্য্যের এক প্রধান উপাধান; সাৰধানে এই কাৰ্য্যটা সম্পন্ন না হইলে সকল প্ৰম বার্থ হইবার সম্ভাবনা। চাত্তর জোরারের জলে সিক্ত করিয়া রোদ্রে ওকাইবার নাম "সাজন"। স্বার্ত্তিক মাসে চাতর প্রস্তুত ক্রিলে ক্রমাগত তিন মাস ভাহাতে স্বণ-মৃদ্ভিকা জ্মিতে পারে, দাবের শেবে বা কান্তনের জারতে ভাকা পুনরার জোরারের জলে সিক্ত করিরা খনন না করিলে ও ভতুপরি ভার ও মাদার অকর্মণা মৃত্তিকা না ছড়াইয়া দিলে ভাহাতে লবণ-মৃত্তিকা উত্তমরূপে জন্মে না।

থালাড়ির ভৃতীরাদের নাম মাদা; এই মাদা প্রস্তুত করি-বার জন্ত মললীরা বাদশ হস্ত পরিধি ও ৪৪০ হস্ত উক্ত এক মৃত্তিকা তুপ প্রস্তুত করিরা তহুপরি ১৪০ হস্ত গজীর ও ৫ হস্ত পরিমিত মালসাবরব এক গর্ভ খুঁড়িয়া রাখে এবং মৃত্তিকা, ভদ্ম, বালুকাদি বারা তাহার তল এইরূপ স্থান্ট করে বে, ভাহা জলের অভ্যন্ত ভালার তলে "কুড়ি" নামক একটা মুৎপাত্র স্থাপন করিরা এক বংশ-নল বারা ভাহার সহিত স্তুপের সরিকটম্ব এক প্রকাশ্ত জালার সংযোগ করিরা দেয়। ঐ জালার নাম "নাদ", এবং ভাহাতে ৩০।৩২ কলল জল ধরিতে পারে।

চাতরে লবণ-মৃতিকা প্রস্তুত হইলে বললীরা প্রেজ্ঞিক কুঁড়ির উপর বংশনির্দ্ধিত একথানি ছাকনি ও তহুপরি কিঞিং ওড় রাখিরা ঐ মৃত্তিকার মাদার গর্ড পরিপূর্ণ করিয়া পাদ বারা তাহা উত্তমরূপে চাপিরা দের ও ক্রি হইতে কলনী কলনী লবণ-লগত চুগরি ঢালিতে থাকে। এইরপে ক্রমাবরে ৮০ কলন লগ চালিলে তাহা লবণ-মৃত্তিকা-থোক্ত করিয়া ক্রমান্ত বংশনল বারা নালে আসিরা পতিত হয়, কিন্তু তংসমুদার জল লবণ-মৃত্তিকা হইতে পুথক্ হয় না। উক্ত ৮০ কলন জলের ০০।৩২ কলন মাত্র নালে আসিরা পড়ে, অবশিষ্ট ঐ জল মৃত্তিকার সহিত সংলগ্ধ থাকে। নালে জল পড়া রহিত হইলে মলজীরা ঐ লবণ-জল এক পৃথক্ কলনীতে রাখিরা দের এবং মালার-থোক্ত মৃত্তিকা চাতরে নিক্রেণ করিবার জভ স্থানান্তরে রাখিরা নৃত্তন লবণ-মৃত্তিকা বির্থিক। বিরাধি ও ধাদার পূর্ণ করিবার অভিনামে প্রেরার নৃত্তন স্থান ই ক্রিতে আরম্ভ করের।

नवन करन पिवात यरतत नाम क्रुन्ति चत्र; छाश ठाउरतत गतिकरहेरे निर्मिष्ठ रहा। छारात रेन्द्रा भतिमान २०। २७ हाछ, এবং প্রায়ণ বা ৮ হাত। মন্দ্রীমাত্রেই ঐ মর উত্তরদক্ষিণে দীৰ্য, এবং তাহার বিশ্বিৰ ভাগাণেকা উত্তর ভাগ অধিক উচ্চ করিয়া নির্দ্ধাণ করে টুড়াহার কারণ এই যে দক্ষিণ ভাগ তাহাদিগের আবাসস্থান, ভাষা অধিক উচ্চ করিবার প্রয়োজন নাই, কৈছা উত্তর-ভাগে লবণজালের উত্তন নির্মাণ করিতে হয়; ভজ্জাত-ধুমনির্গমনের নিমিত্ত উহা উচ্চ না করিলে গৃহমধ্যে অৰ্থিতি করা কঠিন হইরা উঠে। উক্ত উন্থন মৃত্তিকাছারা নির্দ্ধিত হর; ভাহা তিনহত্ত উচ্চ। ঐ উননের উপরিভাগে কর্মন দিয়া তত্পরি ছই শত বা ছই শত পটিশটী নিছরির কুন্দাকার ছোট ছোট মৃৎপাত্র স্থাপিত করিতে হয়; ঐ পাত্রের নাম "কুড়ি", ভাহার প্রভােকটীতে বেড় সের জিনিস আঁটে। তৎসমূদায় উন্থনের উপর কাদার স্থাপিত করিলে বে অবরব হর, তাহা পার্বে ঠাদশিত হইল ; মলজীরা তাহাকে "ঝাট" এবং বে মৃৎপিতের উপর ভাহা স্থাপিত করে, ভাহাকে "ঝাঁটিচক্ৰ" কছে।

উন্ন অগ্নি প্রজ্ঞানিত করিলে কর্দম শুক্ষ হইয়া তত্রস্থ সমস্ত কুঁড়ি-পাত্রের এক পিশু হইয়া উঠে। চারি পাঁচ বা ছর ঘন্টাকাল তাহাতে মাদের লবণ-ক্লল পাক করিলে ছই ঝোড়া লবণ প্রস্তুত্ত হয়। ঐ ঝোড়া উন্নের পার্ষে স্থাপিত থাকে, এবং তাহা হইতে বে

জল নিঃস্ত হর, তাহা ঝোড়ার নিরন্থ ভূণের উপর পড়িরা লবণের ছুল-পিওরপে পরিণত হর। ঐ লবণ-পিডের নাম "গাছা-লবণ" > অন্ত লবণাপেকার তাহা বিশেষ নির্মাল; কিন্তু মলঙ্গীরা ঐ লবণ কোম্পানিকে না দিরা অনারালে গোপনে অক্তকে বিক্রের করিতে পারে বলিরা গাছা-লবণ প্রস্তুত করণের নিষেধ আছে।

লবণপাকের অস্ত আর একটা নাম পোন্তান। কার-ধানার এই পোন্তান শব্দটারই ব্যবহার হইরা থাকে। ছই ঝোড়া লবণ পোন্তান হইলে কোম্পানীর আদলদার নামক কর্মচারী আসিরা ভাহা কার্চ্চে মুদ্রা (মোহর) দারা চিহ্নিত করিরা দের। ঐ মুদ্রার নাম আদল, ঐ আদল হইতে আদল-দার নাম হৃষ্টি হইরাছে।

লবণের মোহর ছইলে উহা মললীর খটিতে রাখা হর,

তথার একদিন ও একরাত্তি থাকিরা তকাইলে গোলাখরের

কৃতিকার উপর তুপাকারে রাধিরা বের। ক্পাকিবার দিন

সোলাঘরে রাথির। পরে বাহিরে আনিরা গোলাঘরের সম্মুখে তুপাকার করিরা রাখে। ঐ তুপের নাম "কহির কাঁড়ি"। ১০।১৫ দিন ঐ কাঁড়িতে থাকিরা লবণ তক হইলে পর পোক্তান দারোগা আসিরা উক্ত লবণ মললীর নিকট ছুইতে ওজন করিরা লর ও উক্ত পরিমাণ মললীর হাতচিঠার তুলিরা দের। লবণ ওজন করিবার সমন্ধ ওজনদার (করাল) অনবরত নিম্নোক্ত প্রকার নৃতন পদ বলিতে থাকে,—

"রামগোপালে পঞ্জে মাল বিতে হবে পঞ্জে ॥ অল্বি চলো ভইরা রে । এক পাও বিতে হবে পঞ্জে"॥

শোক্তান-দারোগা কর্জ্ক লবণ ওজন হইকে তথন তাহ। কোম্পানির হইল। তাঁহারা ঐ লবণ ঘটনারারণপুর নামক স্থানে আনরন করিয়া আপনাদিগের গোলা পূর্ণ করেন; অবকাশ-মতে তাহা লবণবিজেভাদিগকে আপনাদিগের নির্দিষ্ট মূল্যে বিজেম থাকেন। মললীরা কোম্পানির নিকট লবণের মূল্য আড়েল তেদে মণ করা ।০/০ আনা বা ।০/০০ আনা করিয়া প্রাপ্ত হইয়া থাকে; পরে কোম্পানির ঐ লবণ ৩০০/১৭।০ করিয়া বিজেয় করিয়া থাকেন। স্বতরাং ক্রেয়বিজ্রয়ের মূল্য কর্মকর্তাদিগের বেতন ও অস্তান্ত সমস্ত ব্যয় ব্যতীত তাঁহারা মণ করা অন্যুন ২॥০ টাকা লাভ করিয়া থাকেন।

লবণ, অন্তর্বিশেষ। রামারণে লিখিত আছে,—সত্যব্গে দৈত্যবংশে লোলার মধুনামে একপুত্র জল্মে, এই মধু মহালেবের উদ্দেশে কঠোর তপশ্চরণ করিয়া এক শৃললাভ করে। মহালেবের শৃলপ্রাপ্ত হইয়া মধু অতিশর বলীয়ান্ হয় । কিন্তু মধু দৈববলে বলীয়ান্ হইয়াও পরমধার্মিক ছিল, কাহারও কোন অনিষ্টাচরণ করিত না। পরে মধু পুনর্বার তপশ্চরণ করিয়া এই শৃল যাহাতে বংশপরশ্বাক্রমে থাকে, মহাদেবের নিকট এই বর প্রার্থনা করে, কিন্তু মহাদেব তাহাকে এই বর না দিরা তাহার জ্যেষ্ঠপুত্র এই শৃলপ্রাপ্ত হইবে, এইবর দেন।

বিখাবস্থা কলা অনলার গর্ভে কুন্তীনসী নামে এককলা হয়।
মধু কুন্তীনসীকে বিবাহ করিলে বনীর গর্ভে লবণের ক্ষম হয়।
ক্রমে লবণ অভিশন্ন হর্বা, ভাইলা উঠিল। মধু পুত্রকে ছর্বিনীতদেখিয়া রুঠ ও শোকাবিট হইয়া ভাইলা হতে পুল দিরা ইহলোক
পরিভাগে করিল। লবণ এই পুলত্রভাবে ত্রিলোকের অবধ্য
হইয়া পড়িল। লবণের ভীবণ অভ্যাচারে শীড়িত হইয়া
ধাবিগণ রামচক্রের শরণাপক্র হন। তবন ভগবদবভার
রামচক্র ইহাকে বধের ক্ষম্ভ ভরতকে আবেশ করিলে শক্রম
বরার ভাইকে বধ্য করিবার ক্ষম্পর্যানা করেন। শক্রমের

প্রার্থনায় রামচক্র ভাষাকেই লবণবধার্থে প্রেরণ করেন।
"লবণের হত্তে শূল থাকিলে দেববানবাদি বে কেই যুদ্ধার্থ ভাষার
সম্মুবে উপস্থিত হইবে, সেই ভন্মীভূত হইরা যাইবে" শক্রম
ইহা অবগত হুইরাঃ বখন ভাষার হত্তে শূল ছিল না, সেই সময়
ভাষার সহিত যুদ্ধ করিয়া ভাষাকে নিংভ করেন। শক্রমের
হত্তে লবণ নিহত হইলে দেবগণ ভাষার ভূরনী প্রশংসা ও
ভাষার মন্তকোপরি পুলার্টি করিয়াছিলেন।

পরে দেবগণ তৎসমীপে উপস্থিত হইয়া তাহাকে বর প্রোর্থনা করিতে বলেন, তথন শত্রুম দেবগণের নিকট এই বর প্রোর্থনা করেন, "দেববিনির্মিত এই লবণাস্থরের মনোহারিণী মধুপুরী (মধুরা) অবিলম্থে জনসমূহে পরিপূর্ণা হউক" দেবগণ ভাহাই হইবে, এই বর দিয়া প্রস্থান করেন। পরে শত্রুম এই নগরীতে হাদশবর্কনাল অবস্থিতি করিয়া অবোধ্যা-নগরীতে প্রভারত্ত হন। (রামায়ণ আঘোধ্যাকা৽ ৭০-৮৪ জ৽)

২ রাক্ষসবিশেষ। (মদিনী) ৩ সমুদ্রবিশেষ, লবণ-সমুদ্র। এই সমুদ্রের উৎপত্তিবিবরণ ব্রহ্মবৈবর্ত্ত-পুরাণে এইরূপ আছে,— 🗃 ক্ষেত্র প্ররেস বিরজার গর্ভে সপ্তপুত্র হয়। বিরজা এই সপ্তপুত্রের সহিত অবস্থিতি করিতেছিলেন, একদা বিরঞা भुकारत जामकारिका इटेग्रा औहतित महिक भूनतात्र विहात ক্রিতেছিলেন, এমন সময় তাহার কনিষ্ঠপুত্র অপর ভ্রাতৃগণ কর্ত্তক পীড়িত হইয়া ভয়ে তথায় জননীর ক্রোড়ে আগমন করিল। হরি নিজপুত্রকে ভীত দেখিয়া বিরজাকে ত্যাগ করিলেন। বিরজা পুত্রকে ক্রোভে করিয়া তাহাকে সাম্বনা করিতে লাগিলেন, ইত্যবসরে জ্রীকৃষ্ণ বিরন্ধাকে ত্যাগ করিয়া শ্রীমতী রাধিকার নিকট গমন করিলেন, বিরঞ্জা পুত্রকে সান্ধনা করিয়া প্রিয়তম হরিকে নিকটে দেখিতে পাইলেন না, তখন বিরজা শৃঙ্গারে অভৃপ্রমনা হইয়া অতিশর রোদন করিতে লাগিলেন এবং পুত্রের প্রতি অতিশয় ক্ষা হইয়া তাহাকে শাপ দিলেন যে, তুমি লবণ সমুদ্র হইবে, কোন প্রাণী স্থার ভোমার জনপান করিবে না, অপর পুত্রগণ ইকু প্রভৃতি সমুদ্র হইবে। বিরশ্বার শাপে ভাহার কনিষ্ঠ পুত্র লবণ সমূজ হইরাছিল। বিরন্ধার সপ্তপুত্র সপ্তবীপে সপ্তসমূত্রে পরিণত हरेबाहिन। (उक्तरेवर्ज्जू श्रीकृक्षस्त्रवं ७ व)

(ব্রি) লবণেন সংস্টঃ লবণ-ঠক্ (লবণাৎ ঠক্। পা ৪।৪-২৪) ছতি ঠকোন্ক্ বৰা লবণো স্ননোংক্তানিমিতি অর্শ আছচ্। ৪ লবণারসক্ক। ধ লাবণাব্ক ।

কাবণ, চট্টলের অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম। (ভবিষ্যবন্ধণণ ১৫।৪৫) কাবণকিংশুকা (নী) সহাজোভিন্নতী। (রাজনি°) কাবণকার (পুং) গ্রণস্য কার: । শোণার কার। (রাজনি°)

জ্বপৃথ্যনি (পুং) লবগাকর, লবণের খনি, বেছান হইডে লবণের উৎপত্তি হয়। लदनक्कल (वि) नवगर बनार यगा। > नवगमगुद्धा (क्री) नवगर জলং। ২ লবণাক্ত জল, লোণাজল। ৩ লব্ণমিশ্রিভ জল। ল্বণজ্ঞাধি (পুং) লবণনমুদ্র। (ভাগবত ৫।১৭।১১) ল্বণজ্ঞলনিধি (খং) লবণসমুদ্র। (রামায়ণ ৫।৩১।৬২) লবণ্ডা (জী) বৰণসা ভাবঃ তল্-টাপ্। লবণের ভাব বা ধর্ম, লবণদ্ধ, লবণাক্তা, লবণরসমূক্তা। লবণ্ডুণ (क्री) লবণরসবিশিষ্ট্য ভূগং। ভূণবিশেষ। চলিত লোণা যান। সংস্কৃত পর্যায়---লোমভূণ, ভূণায়, পটুভূণক, অন্নকাও। গুণ —অন্ন, কর্বার, গুনমুগ্ধনাশক, অন্নবৃদ্ধিকর। (রাজনি৽) लवन्रकाञ्च (जि) गवन्यम्, गवन्यम् । (त्रामा^० ८।५१२०) लदर्शक्का (क्री) नवनमा खबर । विविधनवन, रेमबव, विष्ठे, मध्न । লবণ্ড্ৰ (ক্লী) লবণধৰ্মাবিত। লোণা। ल्या (क्री) विविध गर्ध, महन ७ रेमबर । ল্বণ্মিত্য (ত্রি) প্রতিদিন শবণরসাম্বাদনশীল। (শব্দচ°) -ল্বণ্ট্ৰেফু (জী) লবণনিৰ্দ্মিতা ধেছঃ। দানাৰ্থ লবণাদি-নির্মিত ধেম। বরাহপুরাণে এই ধেমুদানের বিধান এইরূপ আছে—মহীতল প্রথমে গোমরাদি বারা উত্তমরূপে লেপন করিরা তাহার উপর কুশচর্শ্ম আন্তরণ করিতে হইবে, ঐ চর্ণের উপর বোড়শপ্রস্থ পরিমাণ লবণের বারা একটা করিভ ধেয় প্রস্তুত করিবে। চারিপ্রস্থ বারা ইহার বংস প্রান্তত করিতে হয়, ইকুলও ছারা এই ধেমুর পান, স্থর্ণছারা মূধ ও শৃক, রৌপ্যবারা পুর, গুড়বারা মুখ, ফলমর দক্ত সকল, শর্করা দারা জিহনা, গদ্ধদ্রব্যে আণ, রম্বদারা নেতাবর, পতাদারা কর্ণধর, নবনীত বারা তন, প্তথারা পুত্, তারময় পৃষ্ঠ, কুশময় রোম, কাংস্যের খারা দোহনীপাত্র করিবে ; পরে এই ধেমুকে খন্টাভরণে ভূষিত করিতে হয়। তদনস্তর স্থগন্ধ পুশাদি বারা যথাবিধানে পূজা করিয়া এই ধেন্থকে যুগাবত্তবারা আজ্ঞাদন করিয়া ত্রান্ধণকে দান করিবে। সংক্রান্তি, গ্রহণ, ব্যতীপাভাদিয়োগ ও উত্তম-कारण मान कता विरथत । यथाविश्वारन रथक मान कतिता हैशात দক্ষিণা কুৰণ দিতে হয়। দানাত্তে এই মন্ত্ৰ পাঠ করিবে-

"পূর্ব্বোকেন বিধানেন খণত্যা কনকেন তু।
ইমাং গৃহাণ ভো বিপ্র ক্যারূপে নমোহত তে ।
ক্যান্ত ক্রান্ত ক্যান্ত ্বরাংপু॰ খেতোপা॰ দর্শদেশ্বরা॰)
ব্যাবিধানে এই দর্বধ্যে দান করিলে ইহলোকে বিবিধক্রম ও অন্তকানে ক্রমেনাকে গতি হইরা থাকে।

শ্বনগ্দেশ্ব নক্যাদি তাং নিবোধ কহীপতে ।

অন্বলিথে মহীপুঠে ক্লুকাজিনকুলোজনে ॥

থেলং লবণমন্ত্ৰীং ক্লো বোজনপ্ৰেল্ডান্ ।
বংসং চতুতী ভালেল ইক্পালাংশ্চ কারবেং ॥
সৌবর্ণস্থপূলাদি ক্লো মৌপাননাতথা ।
নুধং গুড়মনং তল্যা বস্তাং ক্লমনা নূপ ॥

জিহ্মাং শর্কনন্ত্রা রাজনু আগং গন্ধমনতথা ।
নেত্রে রন্তন্তর কুর্তাং কর্ণে । পত্রমন্ত্রো তথা ॥

ক্রীধান্তং পূলকোটোচ নবনীতমনাং তলাং ।
প্রেপুক্তাং তাত্রপূচ্চাং লর্ডনোমাং পদ্ধবিনীম্ ॥
কাংল্যোপথোহাং ভালেল বন্তাত্রণভূষিতাম্ ।
স্থাকপুলাংগৈশ্চ পূজনিত্রা বিধানতং ।
আচ্ছোভ বত্রবুয়েন ত্রাজণার নিবেদরেং ॥" ইত্যাদি ।

বেরাহপ্৽ খেতোপাথ্যানে লবণধেন্ধ।
লবণপান্তন, চট্রের অন্তর্গ ত একটা নগর। (তবিষ্যবক্ষথ° ১৫।১৪)
লবণপাটলিকা, লবণপালালিকা (ত্রী) লবংর থলী।
লবণপুর (ক্রী) নগুরভেদ।
লবণভেদ (পং) লবণভার, লোণার কার। (বৈছকনি°)
লবণমন্ত্র (পুং) লবণভ মদং। লোণার কার। (রাজনি°)
লবণমন্ত্র (পুং) লবণ উৎসর্গকালীন মন্ত্রবিশেষ।
লবণমেত্র (পুং) মেহরোগবিশেষ। এই মেহরোগে রোগীর
লবণত্রলা প্রস্রাব হয়। (ক্ষুত্রত নি° ৬ ক্ষ॰)
লবণযুক্তর (ক্রী) ঔষধণাকের জন্তা লবণপূর্ণ যন্ত্রবিশেষ।

"উর্জং তক্ষণহীনং চেৎ যন্ত্রং তমক্ষণায়সম্। ভদ্যন্ত্রং লবগৈঃ পূর্ণং লবণাধামিতীরিতম্ ।" (বৈছক) ডমক্ষণায়র উর্জনেশে জলহীন করিয়া উহা লবণয়ারা পূর্ণ করিলে এই বন্ধ হইবে।

লবণবর্ষ, কৃশবীপের অন্তর্গত বর্ষভেদ। (লিছপুণ ৪৬০৩৬) লবণবারি (জি) শবণজন, লবণসমূদ।

ল্বণ্ব্যাপ্ত (ত্রী) অবের অত্যন্ত লবণভক্ষণজনিত পীড়া-বিশেষ।

"প্রভূতং লবণং বস্য ভোজনে বাজিনো ভবেৎ। কেবলং বাততশ্চাস্য ব্যাপৎ স্থমহতী ভবেৎ ॥" (জয়দ• ৬° অ•)

আৰ সকল যদি প্ৰভূত লবণ ভক্ষণ করে, তাহা হইলে ৰায়ু কুপিত হইনা ভাষার প্ৰমহতী পীড়া হইনা থাকে, এই পীড়াকে লবণব্যাপং করে।

লবণসমৃদ্ধে (পুং) লবণসাগর। (তিকা॰) লবণস্থান (জী) অনপদভেদ। লবণা (জী) লুনাই মানুল্য-টাপ্। ১ নদীভেদ। ২ দীয়ি। (মেদিনী) ও সহাজ্যোতিক্ষতী। (রাজনি) ৪ চুক্রিকা। ৫ চাজেরী, আমকল। ৬ লবণশাস্থা

লবণাক্তর (পুং) শবণস্য আকরঃ। শবণের খুনি, বে স্থান ২ইডে শবণের উৎপত্তি হয়।

লবণাখ্যা, চট্টগ্রামের অন্তর্গন্ত একটা লাবণ-প্রস্রবণ।
লবণাচল (পং) লবণনির্দ্ধিতা অচলঃ। দানার্থ লবণাদিনির্দ্ধিত
পর্বত। লবণের পর্বত প্রস্তুত্ত করিয়া দান করিতে হর,
তাহাকে লবণাচল কহে। মৎসাপুরাণে এই পর্বত্তশানের
বিধান আছে।

"অথাতঃ সংপ্রবক্ষামি লবণাচলমুক্তমম্। বংগুলাতা নরো লোকং প্রাপ্নোতি শিবসংযুতম্ ॥" ইত্যাদি। (মৎস্যপু॰ ৭৭ অ॰)

বোড়ল দ্রোণ পরিমাণ লবণ লইয়া ভাহার পর্কাত করিছে হইবে, অর্থাৎ পর্কাভানেরে স্থাপিত করিতে হইবে, এই পরিমাণ লবণে প্রস্তুত্ত করিলে তাহা উত্তম, যদি কেই ইহাতে সমর্থ না হয়, তাহা ইইলে তদর্দ্ধ পরিমাণ বারা করিলে মধ্যম, ইহাতেও অলক হইলে তাহার অর্দ্ধপরিমাণ বারা অধ্যম পর্কাত প্রস্তুত্ত করিবে, কিন্তু বিভাইন ব্যক্তি দ্রোণ পরিমাণের উর্দ্ধ যথাশক্তি তাহার বারা এই পর্কাত করিতে পারিবে। যে পরিমাণে পর্কাত প্রস্তুত্ত হইবে, তাহার চতুর্থভাগের বারা বিক্ষন্ত পর্কাত করিতে হইবে। পর্কাতদানের বিধানাম্পারে স্থবর্ণাদি বারা ব্রহ্মাদি ও লোকপালাদি নির্দ্ধাণ করিয়া যথাবিধানে তাহাদের পূজা করিয়া দান করিতে হইবে। দানের সমর এই মন্ত্র পাঠ করিতে হয়। মন্ত্র যথা—

"দৌভাগ্যরসসভ্তো যতোহরং লবণো রসঃ।
তদাক্ষকদেন চ মাং পাহি পাপারগোত্তম ॥
বন্ধান্বরসাঃ সর্বো নোৎকটা লবণং বিনা।
প্রিরঞ্চ শিবরোর্নি তাং জন্মাং শান্তিপ্রদো ভব ॥
বিকুদেহসমূত্ তং বন্ধানারোগ্যবর্জনম্।
তন্মাৎ পর্বাত্তরপেণ পাহি সংসারসাগরাং ॥"(মৎক্রপু°৭৭ অ°)
এই মদ্রে ব্রাক্ষণকে দান করিবে। এই পর্বাত দান করিয়া
দক্ষিণাদান ও ব্রাক্ষণজোজনাদি করাইতে হয়। এইরূপ বিধি অফুসারে বিনি লবণপর্বাত দান করেন, তিনি ইহলোকে বিবিধ অ্থসোজাগ্য ভোগ করিয়া উমালোকে করকাল বাস করেন, তৎপরে
মৃক্তিলাভ করিয়া থাকেন। (মংক্রপু°৭৭ অ°)
লবণাদ্যমোদক, লবণবোগে প্রভত মোদকৌবধবিশেষ। ইহা
উদরাদয় ও অগ্নিমান্ধ্যরোগে হিতকয়। (চিকিৎসাসায়) ক্রেরণান্তরক (গ্রুং) লবণান্ত অভকং। শক্রম, ইনি লবণাস্থরকে

वर कतित्राहित्यन। (त्रव् ३६।॥०)

কার্বণান্ধি (খং) লবণসমূত। (মার্কণ্ডেরপু° ৫৪।৭) কার্বণান্ধিজ (ফ্রী) লবণান্ধো লবণসমূতে জায়তে ইতি জন-ড। শসামুক্ত-লবণ। (রাজনি°)

লবণামুরাশি (শ্বং) লবণভ অম্রাশিঃ। লবণসমূদ্রের জল-সমূহ। (রযু ১২।৭০)

स्यत्नां स्त्रम् (११) नवनम्ब । अभूम ।

লবণার (ङी) লব্দকার, লোণার কার।

লবণারজ (ক্রী) লোগার ক্ষার। (রাজনি°)

ভাবণার্পব (পুং) লবণসমুদ্র। (রামা ১/১৭০)

লবণালয় (পু:) লবণক্ত আলর:। লবণাহরের আলর, মধুপ্রী।
শক্রর লবণাহ্মরকে বধ করিরা এই নগর মধুরা নামে আখ্যাত
করেন। (রামা° ৪।৪১।৩৪) [লবণ দেখা]

জ্ববাশ্ব (পুং) ভারতবর্ণিত জ্বনৈক ব্রাহ্মণ। (ভারত বনপর্ক) জ্ববিনিমন্ (পুং) লবণক ভাবং (বর্ণস্চাদিভাঃ ষ্যঞ্চ্ পা ৫।১।-১২৩) ইতি ইমনিচ্। লবণের ভাব বা ধর্ম।

লবণোত্তম (ক্লী) লবণের উত্তমং। সৈশ্ব, সর্ব্ধপ্রকার লবণের মধ্যে সৈশ্বৰ সর্ব্বোৎক্ষ্ট।

লবণোক্তমাদিচুর্ণ, অর্ণোরোগে বিশেষ উপকারক ঔষধভেদ।
প্রস্তাতপ্রণালী: — সৈদ্ধবলবণ, চিতামূল, ইক্স্রথব, ঘবের তণুল,
ভহরকরঞ্জবীক্ষ ও বোড়ানিমের ছাল প্রত্যেকের সমভাগ চুর্ণ
একত্র করিয়া উত্তমদ্ধপে মিলাইয়া লইবে। ঔষধের মাত্রা ২ মাষা
পরিমাণ। ইহা তক্রের সহিত পান করিলে অর্ণোরোগ আরোগ্য
ছয়। (ভৈষক্যারত্না অর্ণোরোগাধিকার)

লবণোত্তমাদ্য চূর্ণ (क्री) অর্ণোরোগাধিকারে চূর্ণ বিধবিশেষ।
প্রস্তুত্রপালী—সৈদ্ধর, চিত্রক, ইক্সম্বর, করঞ্জমূল ও মহাপিচ্মর্দ্দমূল, এই সকল মূলের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ তোলা লইয়া একত্র
উত্তমরূপে চূর্ণ করিলে এই ঔষধ হয়। এই ঔষধের পরিমাণ
৮ মাবা, অমুপান বোল। অর্ণোরোগে ইহা বিশেষ উপকারী।
(চক্রদন্ত অর্ণোরোগাধিণ)

শবদোগ্ধ (ক্লী) লবণাহত্তিষ্ঠতীতি উদ্-হা-ক। লোণার ক্ষার। লবদোগ্ধা (স্ত্রী) হ্রন্থ ন্যোতিম্বতী লতা, ছোট লতা, কট্কী। লবদোৎস (পৃং) নগরভেদ। (রাজভর সাত্র)

লবিশোল (পুং) লবণং উদকং যন্ত, উত্তরপদন্ত চেত্যুদকত্যো-দ্যাদেশঃ। লবণসমূল। (অমর)

লবণোদক (ত্রি) > শবণমিত্রিত লগ। ২ সমূদ।

व्यवत्नोमिथ (गूर) नवनमम्ब । (द्रामा व ११८१) के

लातुन (ही) न्-जारव मृत्। (क्रमन। (क्रमन)

জ্বৰী (ত্ৰী) ১ ফলকুক্বিশেষ। (Anone Reticulata) লোপা, গৰ্যায় —গ্ৰায়জা, অগ্ৰিমা। (শক্চ°) लवनीय (बि) नु-यनीयम् । (इनमीय।

লবস্যু (পুং) জাতিবিশেষ। (রাজতর॰ ৭১২৪১)

লবরাজ (পু:) কাশীরস্থ একজন ব্রাহ্মণ। (রাজভর° ৮।১৩৪৭)

ल्यली (জী) লবং দেশং লাতীতি লা-ক, গৌরাদিছাৎ ঙীব্। কলবৃক্ষবিশেব, চলিত নোরাড়। পর্যার—স্থাক্ম্লা,শন্দু, কোমল-

বৰলা। ফগগুণ—ছভ, সুগৰি ও ককবাতনাশক। (রাজনি°)

लववर (बि) क्नश्री।

ल्यभ्रम् (व्यरा) शक्ष शक्ष । प्रूर्वित क्छा ।

লবাক (গং) লবাৰ্থং ছেদনাৰ্থং অফতীতি অক-অচ্। ছেদন ত্ৰবা। (উক্তৰ)

ल्यांगक (পুং) नृत्रत्व्रस्तितिष्ठ नृ (चागरका-नृ-ध्-मिक्रिधाঞ छाः। উণ্ ৩৮৩) ইতি ভাগক। দাত্রাদি ছেদনদ্রবা।

লাবি (আ) ল্মতেখনেনেতি লু (আচই:। উপ্ ৪।১ :৮) ই। ছিত্র। লবিক্র (ফ্লী) ল্মতেখনেনেতি লু (আর্ডি-লু.ধৃ-ছখনসহচর ইক্র:। পা এ২।১৮৪) ইতি ইক্র। দাক্র।

লবেরণি (পুং) ঋষিডেদ। (সংস্কারকৌমুদী)

লব্দরিয়া, সিদ্ধাদেশের, শীকারপুর জেলার অন্তর্গত একটা তালুক। অক্ষা ২৭°১৫ হইতে ২৭°৩১ উ: এবং দ্রাঘি° ৬৮°২ হইতে ৬৮°২৩ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ২০৭ বর্গমাইল।

২ উক্ত ভাৰুকের একটা নগর। এথানে হুইটা ফৌলগারী আদাশত আছে।

লবিদাগর, শ্রীপালকণা প্রণেতা। লব্য (তি) ছেদনযোগ্য।

ল্যব্যা, মালাজ ও বোধাই-প্রেসিডেলীবাসী মুসলমান জাতিবিশেব। মলবার উপকৃলেও ইহাদের বাস জাছে। ইহারা
জারব ও পারক্রদেশীর ঔপনিবেশিক মুসলমানগণের সন্তান।
জাধিক সন্তব, গুহাঁর ৭ন শতাক্ষে ইরাকের শাসনকর্তা হাজাজ্ ইবন্
রূহকের জত্যাচারে উত্তাক্ত হইরা তদ্দেশবাসী জারব ও পারসিকগণ এদেশে জাসিরা বাস করে। এতদ্বির যে সকল জারব
ও পারক্তদেশীর মুসলমান বণিক্ পশ্চিমভারতের বাণিজ্যের জল্প
সর্বদা ভারতে যাতারাত করিত, তাহাদের জনেকেই এ স্থানের
জাধিবাসী হইরা পড়ে। ঐ বণিক্সম্প্রামর পর্যান্ত পর্যান্ত পর্যান্ত প্রামান বণিক্সম্প্রামান বণিক্সম্প্রামান বণিক্সম্প্রামান বণিক্সম্প্রামান বণিক্সম্প্রামানর
বাণিজ্য জন্মশাই ধর্ম হইরা জাইসে। ভারতবাসী ঐ সকল
মুসলমান-বংশধরগণই বর্জমানে লক্ষর নামে পরিচিত। ইহারা
প্রধানতঃ মনবারী ও হিক্স্থানী ভাষার কথা কহিরা থাকে।

ইহাদের মুখাকৃতি ও কুক্ষর্ণ চন্দ্র মেখিলে অন্তমান হর যে, নানা বৈদেশিক রজের সংমিশ্রণে এই কাভির উৎপঞ্জি। ইহারা স্বভাবত: কুদ্রকায়, কিন্তু বলিষ্ঠ গঠন। আচায়-বাদহারে বেশ পরিকার পরিচ্ছের। চর্ম, মুকা, মুবাবান পাশ্বর, চাউল ও নারি-কেল বিক্রেই ইহানের আতীয় বাবসী।

ইহারা দাকা । সম্প্রদার ও প্রত্তীমভাবলমী। ধর্মকর্মে ইহানের বেশ আহ্বা আছে। অধিকাংশ লোকেই চর্মের ব্যক্তা করিয়া থাকে। অবদার অভ তাহারা প্রদূর দিংক্লমীপে গমন করে।

লশ, শিরবোগ। চুরারি পরত্তি অক' সেট্। লট্ লাশরতি।
নুত্ অলীলশং।

লেশ্যন (ক্লী) সভাতে ভূজাতে ইতি অল (অনের্গণচ্। উণ্ এংণ)
ইতি উনন্, লণাদেশত ধাতোঃ, রহন। প্রার—মহৌষধ, গৃজন,
অরিষ্ট, মহাকল, রসোনক, রসোন, ক্লেফলন, ভূতপ্প, উপ্রগন্ধ।
গুণ - অয়রস ধারা উন, গুল, উফ, কফবাতনাশক, অগুচি, ক্লি,
কুলোগ ও শোফনাশক, রসারন। (রাজনি°) তাবপ্রকাশে
লিখিত আছে যে, যখন পক্ষীরা গমন করেন, তখন ঐ অমৃত হইতে
এক বিলু অমৃত ভূমালি নিপতিত হয়, ঐ ভূপতিত অমৃতবিশ্
হইতে অমৃত হরণ করিয়া গমন করেন, তখন ঐ অমৃত হইতে
এক বিলু অমৃত ভূমালি নিপতিত হয়, ঐ ভূপতিত অমৃতবিশ্
হইতে লগুনের উৎপত্তি হইয়াছে। এই লগুন মধুর, লবণ, তিন্তা,
কটু ও ক্লার এই পঞ্চরসমূক, কেবল ইহাতে অয়রস নাই।
'রসেন উনঃ' অর্থাৎ অয়রস ধারা উন বা অয় এইজন্তা পণ্ডিতগণ ইহার 'রসোন' এইরপ নাম নির্দেশ করিয়াছেন। ইহার
মূলে কটুরস, পত্রে তিক্রেস, নালে ক্লায়রস, নালের অগ্রভাগে লবণরস এবং বীজে মধুর রস।

লগুন--মাংসবর্দ্ধক, গুক্রবর্দ্ধক, লিশ্ব, উক্তবীর্য্য, পাচক, সারক, কটুনধুর রস, কটুবিপাক, তীক্ষ, ডগুসদানকারক, কণ্ঠ-শোষক, গুরু, পিন্ত ও রক্তবর্দ্ধক, বলকর, বর্ণপ্রসাদক, মেধাজনক, চক্ষুর হিতকারক, রসায়ন, ফ্লোগ, জীর্ণজ্ঞর, কুক্ষিশূল, বিবদ্ধ, গুরু, অফ্লমিনাল্য, ক্রমি, বাদ্ধ, আম্বেনি, কুঠু, অফ্লিমাল্য, ক্রমি, বাদ্ধ, গ্রাস ও কন্দনালক। লগুনসেবনকারী ব্যক্তির পক্ষে মগু, মাংস এবং অমুদ্রব্য হিতক্রনক; কিন্তু ব্যায়াম, ব্লোজ, জোধ, আত্যন্ত ক্রন, চুগ্ম ও গুড় বিশেষ অহিতক্রনক। লগুন জ্যোক্ষনকারীর এই সকল দ্রব্যভাক্ষন বিশেষ নিষিদ্ধ। (ভাবপ্রত)

ধর্ম্মশার মতে, লগুন ভক্ষণ বিশেবরূপে নিবিদ্ধ হইরাছে, মৃত্রাং দ্বিজাতিনিপের ইহা জভক্ষ। এান্দশ, ক্ষত্রির ও বৈশ্র এই ক্রিজাতি ক্যাপি লগুন ভক্ষণ করিবেল না।

"গণ্ডনং গৃঞ্জনং চৈৰ পৰা পুং কৰকানি চ। অভন্যাণি বিজ্ঞাতীনামমেধ্যপ্ৰভাগি চ।" (মসু ধাএ) গণ্ডন, গৃঞ্জন, পৰা পু, কৰক ও অমেধ্যপ্ৰভৰ অৰ্থাং, বিঠা দি-ভাত বস্ত ধিৰাতিদিগের অভন্য। কুলুক্তট্ট এই স্লোকের টাকার নিধিরাছেন বে, 'বিক্লাভিগ্রহণং শুল্লপর্গাদার্গং' বিক্লান্ধি পদবারা পর্যাদার্গার্থ অর্থাৎ অপ্রশস্তার্থ বুঝাইতে শুলুও ভক্ষণ করিবে না; যদি করে, ভাহা হইলে বিশেব দোবাবহ হইবে না, ইহাই ভাৎপর্যার্থ। লক্তন বিক্লাভিদিগের অভক্ষ, শুদ্র বিক্লাভি মধ্যে পরিগণিভ নহে, অভঞ্জ শুদ্র করেত পারিবে, ইহা শাস্তের অভিনত নহে।

মন্থ ও বাজ্ঞবদ্ধা উভরের মতেই যদি কোন দিলাতি জ্ঞান-পূর্বক লগুন ভক্ষণ করেন, তাহা হইলে তিনি পতিত হইবেন। জ্ঞানতঃ ভক্ষণ করিলে তাঁহাকে কেবল চাক্রারণ এবং জ্ঞানপূর্বক ভক্ষণ করিলে চাক্রারণাদি করিরা পুন:সংক্রার জ্ঞাবশুক, নচেং তিনি জ্ঞাবহার্য্য ও পতিত থাকিবেন।

"ছত্ৰাকং বিজ্বরাহক লগুনং প্রাম্যকুত্ন। পলাকুং গ্রুনকৈব মত্যা কথা পতেদ্বিকঃ ॥ অমতিয়তানি বজ্লধা কুজুং নাম্বপনং চরেও। যতিশ্চাক্রারণং বাপি পেবেষ্প্রসেদহঃ ॥" (মহ ৫।১৯-২০, বাক্তব্যাসত ১।১৭৬)

[পলাণ্ডু শব্দে দেখ।]

লশুনাতাতৈল, কর্ণরোগে উপকারক ঔষধভেদ। প্রস্তুত-প্রণাগী—তিল তৈল > সের, ছাগহ্ম ৪ সের। করার্থ—লশুন, আমলা, ও হরিতাল মিলিত ২ পল। ইহা কর্ণরাজ্মে দিলে বধিরতা নিবারিত হয়। (ভৈষ্জ্যরাজা°)

লশূন (পুং) রদেন উনঃ, রদ্য লন্ধং, প্রোদরাদিছাৎ সদ্য শঃ অকারলোপশ্চ। লশুন।

লেষ, ১ কাঝি। ২ ইজো। ৩ ম্পৃহা। ৪ শিরবোগ। ভাৃদি°
উভয়° পক্ষে চুরাদি° পরস্থৈ অক°। ম্পৃহাও কাঝ্যুথে দক॰
দেট্। লট্ লবভি-ভে। লিট্ ললাব, লেষে। দুঙ্ অলধীৎ
অলাবীৎ। অলমিষ্ট। লুট্ লবিভা। চুরাদিপকে ণিচ্
লাবয়ভি। দুঙ্ অলীলম্বং। সন্ লিল্যিবভি-ভে। মঙ্
লালয়তে। মঙ্লুক্ লাল্যিত। অভি+ল্য=অভিলাম।

ल्यन (ही) वाशन। लयनावकी (बी) धानिन नननरण्डर। लयमन (ग्रः) नन्तन।

ল্বমাদেবী, রাজকভাভেদ। অপর নাম ল্রীদেবী। ল্বল্ব (পুং) লাবরতি নৃত্যে শিক্ষ যুনকীতি লব (স্ক্রিপ্টের-রিবেতি। উণ্-১০১০) ইতি বন্প্রভারেন সাধুং। নর্তক। (উজ্জ্ব)

লুস, > লেবণ। ২ ক্রীড়া। ও শিরবোগা ভালি পরতৈর অক সেট্। শিরবোগার্থে চুরানি পরতির অক কেট্। লট্ লস্তি। নিট্ লনাসা। সৃত্ অসসীই অসাসীই। স্থাদিপকে নট্লাসয়তি। লুঙ জনীলসং। উৎ+নস = উল্লাস,
লম্ং+-লন = সম্লাস, ফ্রিঁ। বি+লন = বিলাদ।
লাস্ক (পুং) নর্তক। নট।
লাস্ক (বী) লসভীতি লস-অচ্, টাপ্। হরিছা। (হারা°)
লাসিকা (বী) লসভীতি লস-অচ্ ভতঃ কন্ ভতঃ টাপ্ অত
ইংং। লালা।

"ৰাৰায়াং পিচ্ছৰা থ্যাতা ৰসিকা ৰাসিকা তথা ॥" (শব্দচ°) সেসীকা (ত্ৰী) > ইক্রস । ২ স্বঙ্শংসমধ্যগত রস ।

"লদীকা উদকবিশেষঃ, যথাহ চরকঃ— ষভু মাংসম্বসম্ভরে উদকং তল্পনীকালকং লভতে" (বিজয়রকিতক্ত প্রমেহরোগব্যা") ল্প জ্ব, ব্রীড়া। ভাগি আম্বনে স্ক সেট্, নিঠায়ামনিট্। লট্ লজ্ভে। লঙ্ অলজ্জিই।
লাট্ লজ্ভে। লঙ্ অলজ্জিই।
লাট্যাফরঞ্ (ক্লী) নগরভেদ।

লুক্ষর, অর্ণবপোতাদি-পরিচালক কর্মচারিভেদ।

লক্ষরপুর, উত্তরবঙ্গের অন্তর্গত একটা বিভাগ। মুসলমান অধিকারে পুটিয়া ভূম্পতি এই নামে অভিহিত ছিল। মুর্লিণ-কুলী খাঁর সমরে ১৫টা পরগণা লইয়া এই বিভাগ গঠিত হয়। রাজস্ব ১২৫৫১৬ টাকা।

লক্ষরী, বৈশুব-সম্প্রদায়তেন। ইহারা রামাৎ সম্প্রদায়ের অন্তর্নিবিঠ। রামানন্দীদের মত ইহারা তিলকে সিংহাসন করে, কিন্তু তাহাদের মত রক্তবর্ণ শ্রী না করিয়া খেতবর্ণ শ্রী (উর্জ্ব-পুত্রের মধ্যরেখা) ধারণ করিয়া থাকে। অযোধ্যায় এই সম্প্রদায়ী বৈশ্ববদিগের একটা আন্তানা আছে। এই সম্প্রদায়ী বৈশ্ববদিগের একটা আন্তানা আছে। এই সম্প্রদায়ী বৈরাগীরা কথন কথন সাম্প্রদায়িক তিলকের পরিবর্তে ললাট-দেশে গোপীচন্দন, কথন বা সমগ্র মুথমণ্ডলে আপন আপন ইচ্ছা-মত রামরজোনামক মৃত্তিকা বিশেষ লেপন করিয়া থাকে। ইহাদের অন্তান্ত আচার-প্রকর্ণ রামানন্দীদিগের মত। [রামাৎ দেশ।]

লস্ত (বি) লগ-ক। ১ ক্রীড়িত। ২ শিরযুক। লস্তক (পুং) ধছকের মধ্যভাগ। (অমর)

লস্তাকিন (পুং) লন্তকোহস্তান্তেতি লন্তক-ইন্, ধরুঃ। (শনসালা) লক্ষ্য জনী (বী) বড় স্টী। (শন্তপধরা প্রাণ্ডাই)

লাস্বারী, (নাসবারি), রাজপুতনা আগবার-রাজ্যের অন্তর্গত
একটা গণ্ডগ্রাম। রামগড় নগর হইতে ৪ ক্রোল দক্ষিণপূর্বের
এক আগবার রাজধানী হইতে ১০ ক্রোল দক্ষিণপূর্বের অবহিত।
অক্ষা ২৭°০০'৩০''উ: এবং দ্রাঘি ৭৬°৫৪'৪৫'' পুঃ। এই
হানে ১৮০৩ খুটালে বিখ্যাত লস্বারীর বৃদ্ধ হয়। এই বৃদ্ধে
ইংরাজের হত্তে প্রসিদ্ধ মহারাষ্ট্র শক্তির পরাভব ঘটে।

মহারাষ্ট্র-সৈন্ত গোপনে অগ্রসর হইতেছে সংবাদ পাইরা ক্রেমাণ্ডি লও লেক ভাহাদের গতিরোধ করিবার অভিগ্রাহে অখারোহী সেনাদল লইরা গভীর রন্ধনীতে এই গ্রামে আলিরা উপনীত হন। ১লা নবেশ্বর হুই বলে বােরতর যুদ্ধের পর, ইংরালপক্ষের পরাজর অবশুস্তাবী দেখিলা লর্ড লেক প্রতাাবর্ত্তন করেন। ঐ পদাভিক সেনাদল জাঁহার সাহাবা্যার্থ উপনীত হইলে, তিনি কএক দণ্ড বিশামের পর পুনরার যুদ্ধার্থ রণক্ষের অবতীর্ণ হইলেন। এবার সিন্দে সৈন্ধ ভাঁমবিক্রমে ইংরাজ-দিগকে আক্রমণ করিল। মহারাত্ত্ব সৈন্ধ পের পরাত্ত যুদ্ধ করিরা ভারতে গােরব রক্ষা করিরাছিল; অবশেষে তাহারা বহু সৈন্ধ করে ভীত হইরা রণক্ষের পরিত্যাগ করিল। ৭১টী কামান ও রলহাদি লাভ করিরা ইংরাজ কোম্পানী রণজয়ী হইলেন।

লহড় (ক্নী) > কাশ্মীরের অন্তর্গত একটা জনপদ। বর্ত্তমান লাহোর বলিয়া অন্তমিত হর। ২ তদেশবাসী। (বৃহৎস• ১৪।২২) লহুনা (দেশজ) বাকী পড়া বা ধার পড়া টাকা (Outstanding)। লহুর (সুং) > জাতিবিশেষ। ২ কাশ্মীরান্তর্গত লোহর জনপদ। লহুর (দেশজ) জলপ্রণালী। নহর।

লহরা, উড়িব্যার অন্তর্গত একটা প্রাচীন নগর। পাল-লহরা রাজ্যের রাজধানী। [পাল-লহরা দেখা]

লহরি (রী) (রী) মহাতরক। পর্যার—উল্লোল, কল্লোল। (হেম)

"সরিত ইব যন্ত গেহে শুষ্যন্তি বিশালগোত্রজা নার্যাঃ।
কারান্ত্রেব স তুপ্যতি জলনিধিলহরিষু জলদ ইব ॥"

(আর্ঘাদপ্তশতী ৬১৪)

লহার, মধ্যভারতের গোরালিয়র রাজ্যের অন্তর্গত একটা ছর্গাধিন্তিত নগর। সিদ্ধু নদের দক্ষিণকুলের ৩ ক্রোমণ পূর্ব্ধে অবস্থিত। অক্ষা ২৫°১১ ৫০ উ: এবং দ্রাঘি ৭৮°৫৯ ৫ পূ:।
১৭৮০ খৃষ্টাকে ইংরাজনৈত্য এই ছর্গ আক্রমণ করিলে উত্তর্ম পক্ষে ঘোরতর যুদ্ধ হয়। তথন ছর্গ মধ্যে ৫০০ সেনা রক্ষিত
ছিল। কর্ণেল পপহাম ছর্গাবরোধের পর ছ্র্রের উপর গোলা
মৃষ্টি করিতে থাকেন। এই সংঘর্ষে কিল্লাদার ও তাঁহার কয়
জন অম্চর মাত্র জীবিত ছিলেন। সেনাদল প্রাণের মমতা না
করিয়া রণক্ষেত্রে প্রাণ বিস্কুল করিয়াছিল।

লহারপুর, অবোধ্যা প্রদেশের শীতাপুর জেলার অন্তর্গত একটা পরগণা। ভূপরিমাণ ১৯২ বর্গমাইল। লহারপুর নগরের ২ মাইল পশ্চিমে অবস্থিত কেশরীগঞ্জ নামক নগর এখানকার প্রধান বাণিজ্যকেন্দ্র। এই পরগণার মধ্যভাগে ১০ হইতে ৩০ ফিট্ উচ্চ একটা অবিত্যকা ভূমি বিলম্বিত দেখা বার। এ উচ্চ ভূমির উদ্ভরাংশ তরাই নামে খ্যাত। এখানকার মুক্তিকা কঠিন 'বাটিরাড়'। উহার দক্ষিণভাগের ভূমি উর্জয় 'বোমাট'।

মোগল-সত্রাট অকবর শাহের রাজগুলালে রাজা টোডর

মল ১০টা তথা শইরা এই পরগণার গঠন করেন। গোড় ও জানবার রাজপুতগণ এখানকার বছাধিকারী। ১৭০৭ খৃটান্দে মোগল-সমাট্ অরলজেবের মৃত্যুর পর, রাজ্য অরাজক দেখিরা গোড়রাজ চক্রনেন গাঁতাপুর আক্রমণ করেন। তাঁহারই বংশধরগণ এই সম্পত্তির অধিকারী। ছানীর জানবার রাজপুতগণ কুশী পরগণার সৈল্পুর গ্রাম হইতে এখানে আসিরা বাস করার সৈল্পুরী নামে খ্যাত হইরাছে। ইহারা গোড়রাজবংশের পুর্ব্ধে এখানে সমাগত হইরাছিল।

২ উক্ত পরগণার প্রসিদ্ধ নগর। ঘর্ষরনদ-তীরবর্তী মরা-পুর নগর ঘাইবার পথে অবস্থিত। অক্ষা° ২৭°৪২'৪৫''উ: এবং জাঘি°৮০°৫৬'২৫'' পু:। এই নগরে প্রায় ১১৫০০ লোকের বাস আছে। তন্মধ্যে হিন্দু ও মুসলমান আধাআধি।

এই নগরে ১০টী মসজিদ, ২টী মুসলমানের সমাধিমন্দির, ৪টী হিন্দ্দেবমন্দির ও ২টী শিথদিগের মন্দির বিভ্রমান আছে। রবি-উস্-সানি মাসে এখানে একটী মেলা হর এবং মহাসমারোহে মহরম-পর্কা নির্কাহিত হইরা থাকে। ১৩৭০ খুটান্দে সমাধিমন্দির সন্দর্শনে আসিয়া এই নগর স্থাপনপূর্কক স্থনামে প্রতিষ্ঠিত করেন, উহার ৩০ বৎসর পরে লহরী নামক একজন পাসী এই নগর অধিকার করিয়া উহার লহারপুর নাম দেন। ১৪১৮ খুটান্দে কনোজ হইতে প্রেরিত মুসলমান সেনাপতি শেখ তাহির গাজি পাসীদিগকে সমূলেনিহত করিয়া এই স্থান অধিকার করেন। ১৭০৭ খুটান্দে গৌড় রাজপুতগণ মুসলমানদিগকে সগর হইতে ভাড়াইরা দিরা আপনারা রাজ্যশাসন করিতে থাকেন। সম্রাট্ অকবর শাহের রাজ্বসচিব ও সেনাপতি রাজা টোডর মল এই নগরে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন।

লেন্দ্রল (লাহল), পঞ্জাবপ্রদেশের কাঙড়া জেলার অন্তর্গত একটা উপবিভাগ। অকা• ৩২°৮ ছইতে ৩২°৫৯ উ: এবং দ্রাঘি• ৭৬°৪৯ হইতে ৭৭°৪৬'৩০ প: মধ্য। ভূপরিমাণ ২২৫৫ বর্গমাইল। উত্তর-পশ্চিমে বিভূত চদা পর্বতমালা ও দক্ষিণ-পূর্ব্বে কঞ্জামগিরিমালার মধ্যবন্ধী উপত্যকাভূমি লইরা ইহা গঠিত। ইহার উত্তর-পশ্চিম সীমার চদাশৈল। উত্তর ও পূর্বে লাদকের অন্তর্গত রূপত্র উপবিভাগ, দক্ষিণপশ্চিমে কাঙড়া ও কুলু এবং দক্ষিণপূর্বে শ্লিভি বিভাগ।

হিমালরের সাল্লেশস্থিত এই উপত্যকা ভূমি গওলৈলে পরিপূর্ণ। তাহার মধ্যদিরা ভূষারমণ্ডিত হিমালিথর-বিগলিত চন্দ্রা ও তাগা নামক নদীঘর পার্কাত্য বেলা ভূমি ভেদ করিরা ধরজাতে প্রবাহিত রহিয়াছে। ঐ নদীঘর বড়-লাচা গিরিসকটের চালু প্রদেশে সমৃত্রপৃষ্ঠ হইতে ১৯৫০০ কিটু উচ্চহান ইইতে

উড়্ত হইরা তাঙী গ্রামের নিকট মিলিত হইরাছে, পরে চক্রতাগা নামে চম্বার মধ্যে প্রবেশ করিয়া পঞ্জাবের সমতল ক্ষেত্রে প্রবাহিত হইরাছে।

এই নদীঘরের অববাহিকা প্রদেশের উভর পার্থেই চিরত্বারাবৃত ও সমুত্রত হিমালয়নিধর বিরাজিত রহিয়াছে। দেখিলে
বাধ হর যেন সেই ভয়াবহ ও বনমালা-সমাজ্রর পর্বাতকদার
ভেদ করিয়া নদীঘর এই ক্ষুদ্র উপত্যকা মধ্যে প্রবাহিত হইতেছে।
বড়-লাচা গিরিপথ সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ১৬২২১ কিট্ উচ্চ এবং
তাহার উত্তরপূর্ব্বে যে পকল শৈলমালা সমূত্রত নিরে দণ্ডায়মান রহিয়াছে, উহারাও ১৯ হইতে ২১ হাজার ফিট্ পর্যাস্ত
উচ্চ। এই নদীঘর পরিবেটিত ভূথওেও একটী বিভূত পর্বতপঙ্কি দৃষ্ট হয়। উহার শিথরদেশও বরকে আর্ত।
দক্ষিণদিকের শৃক্ষটী ২১৪১৫ ফিট্ উচ্চ। এই স্থানের চঙুম্পার্থে
প্রায় ১২ মাইল স্থান ব্যাপিয়া বরক জমিয়া থাকে, ঐ বরক্রাশি
ধীরে ধীরে বিগলিত হইরা চক্রা ও ভাগার কলেবর পৃষ্টি
করিতেছে।

এই পার্কত্য উপত্যকার অধিকাংশ স্থানই লোকালয়শৃত্ম। মহুব্যের বাসোপধোগী নগর বা গ্রামাদি দেখিতে
পাওয়া যায় না। গ্রীয়কালে কুলুবাসী রাথালেরা এই
বিভাগে মেষচারণে আসিয়া থাকে। তৎকালে তাহারা
আপন আপন বাসোপধোগী গৃহাদি নির্মাণ করিয়া থাকে।
হিমালয়ের পুশ্পমালমণ্ডিত পার্কতীয় শিথরের সৌন্দর্যারাশির
মধ্যে রাথালদিগের কুটীরগুলি বড়ই মনোরম। এইরূপ
কতকগুলি কুটীর যেথানে আছে, সেইখানেই এক একটী
নদীপ্রবাহিত, মধ্যে মধ্যে লামা বা বৌদ্ধ সয়্যাসীদিগের স্থতিরক্ষার্থ প্রতিষ্ঠিত কোণাকার গৃহ ও বৌদ্ধসন্থারামাদি হানীয়
বস্তাল্ভের মধ্যভাগে দণ্ডারমান থাকিয়া সাধারণের চিত্ত আকর্ষণ
করিতেতে।

চক্রাতীরবর্ত্তী কোক্সার হইতে ভাগাতীরে অবস্থিত দার্চা পর্যান্ত প্রারই বাসোপযোগী স্থান নাই। এই উপত্যকাভূমের ' নিম্নভূভাগে অর্থাৎ সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে প্রার ১০ হাজার ফিট্ উচ্চ স্থানে মানবজ্ঞাতির বাসোপযোগী গ্রামাদি দৃষ্ট হয়। ১১৩৪৫ ফিট্ উচ্চ অধিত্যকাভূমে ফাঙ্লের নামক গ্রাম অবস্থিত। ইহাপেক্ষা উচ্চ স্থানে আর কোন প্রাম নাই। রোহ-তঙ্গ ও বারলাপ গিরিপথ দিরা লাকক ও ইরারধন্দ বাইবার প্রান্ত পথ এই উপত্যকাদেশে বিভ্নত রহিরাছে। এখনও বণিকেরা এইপথ দিরা বাতারাত করে।

বিখ্যাত চীনপরিব্রাজক হিউএন্সিরাং খুটার গম শতাকে এই স্থান পরিদর্শনে স্থাগমন করেন। পূর্কবাদে এখারে ্ৰেৰীৰধৰ্মের আছ্ডাৰ ছিল এবং এইস্থান তিব্বভরাকোর ্ ক্রেড ছিল। খৃঠীর ১০ম শতাবে ভেটিরাজ্যে রাইবিপ্লব সমুপস্থিত হইলে এই স্থান ডিব্ৰুতীয় অধিকার হইতে বিভিন্ন ভ্**ট্রা খা**ৰকেক্ক[্]শাসনভুক্ত হয়। কোন্ সময়ে এই স্থান ভিকাতীয় অধিকার হইতে মূক্ত হইরা বাধীনতা গাভ করে, তাহা জানি-ৰাব্ৰ উপায় নাই। তবে ১৫৮০ খুৱান্ধে লাদকের শাসনপ্ৰতির লংকারসংঘটনের পূর্বে যে এই ঘটনা ঘটরাছিল, ভাছাতে কিছুমাত্র সদেহ নাই। কিছুকাল এইছান ঠাকুরসামস্ভগণের व्यदीत नामिक हरेब्राहिन। शनीय छैक मधावनन नकतनहे চ্ছারাজকে কর দিতেন। এখনও ঐ সন্দারদিগের ৪।৫টা বংশ তৎপ্রদেশ শাসন করিতেছে। তাঁহারা পুর্বপুরুষদিগের 🕰 সম্পত্তি জারণীরদাররূপে দখল করিয়া জাসিভেছেন। খুটার ১৭০০ অবেদ রাজা জগৎসিংহের পুত্র বৃধসিংহের রাজস্বকালে ইহা কুলুরাজের অধিকারভূক হয়। রাজা জগৎসিংহ মোগল-<u>नशांष्ट्रे नारकरान ७ व्यतकाकात्वत नमनामित्रक हिर्मिन।</u> বুধসিংহের অধিকার হইতে ১৮৪৬ খুঠান্দ পর্যান্ত লাছল কুলু-त्राटकत व्यक्षिकारत थाटक। उपनक्षत्र छेरा देश्त्राकताटकत भागमाधीन इत्र ।

অধানকার অধিবাদীদিগের মধ্যে ঠাকুর উপাধিধারী সামস্তগণই প্রধান। ইহার আপনাদিগকে রাজপুত বলিরা পরিচিত করিলেও ভূটিরা বা তিবৰতীর রক্ত ইহাদের পরীরে প্রবাহিত রহিরাছে। কুনেত নামক পার্বত্য জাতি ভারতীর ও মঙ্গোলীয় জাতির মিশ্রণে উৎপর। ইছারা সকলেই বৌদ্ধর্মাবলম্বী হইলেও বর্তমান ঠাকুরদিগের উদ্বোগে এখানে স্থীরে ধীরে হিন্দুধর্মের প্রতিষ্ঠা হইতেছে। নিয়তম উপত্যকা-স্থাগে কএক্ষর ব্রাহ্মণ-ধর্মধাজকের বাস আছে, কিন্তু অধিকাংশ স্থলেই পুরোহিতেরা উভয় ধর্মাবিত। অনেক স্থলেই তিব্বতীয় প্রাথার ধর্মচক্র দৃষ্ট হয়। পর্কজোপরি অনেকগুলি বৌদ্ধর্যত প্রতিষ্ঠিত রহিরাছে। তর্মধ্যে চক্রা ও ভাগা নদীর সদমস্থলে অৰ্শ্বিত গুরুপ্তাল-মঠই প্রধান। এথানকার অধিবাদীরা মন্ত্ৰণারী ও লম্পট। কিলাং, কার্দ্দোগ ও কোলগ আমই এখারকার প্রধান বাণিজান্থান। অধিবাসীরা পশম, সোহাগা, পৰ্দক্ত ছাগ, ভেড়া ও বোড়ার ব্যবসা পইয়া জীবিকা নিৰ্বাহ করে। এখানে অভিলয় দীত বিভ্যমান। টেএমানে কার্জালের নামূল ভাগ ৩৬° F., হৈল্ডে ৫৯° F., এবং আখিনে ২৯° F., **्रहरूश्रद्ध क्रमन्द्र क्रम क्हेटक शास्त्र ।**

প্ৰাক্তিক (পুং) ব্যক্তিভেল। [লংহাড় কেখ+]
প্ৰাক্তিভিল্ (পুং) গাণিহাক ব্যক্তিভেল। (পা হাঞ্চক)
প্ৰাক্তিভিল্ (পুং)» গুৰিভেল। ২ কন্ধণগৰাল। (কুৰবান্ধাক ভাঙা)

XVII

লা ও এহণ। ২ দান। আলাহি" প্রতির সক' অনিট্। লট্ লাভি। লিট্লনো। সূত্ আলালীং

লাইৎ-মাও-দো, আনামের বনিরা-শর্কভ্যালার অন্তর্গত অকটা সিরিলেনী। সমুলুগৃষ্ঠ হইতে ৩০৭৭ কিটু উচ্চ।

লাইরা, (লেহিরা), সম্প্রামেশের স্বলপ্র জেলার অন্তর্গত একটা ভূ-সম্পতি। স্বলপ্র নগর হইতে ৮॥। জেশে উত্তর-পূর্ব্বে অবহিত। লেহিরা গণ্ডগ্রাম (অক্ষা ২১°৪৪ উ: এবং জাবি°৮৪° ১৭ পু:) এথানকার অধান বাণিজ্যকেন্দ্র। সম্প্র সম্পতির ভূপরিবাণ ৪৬ বর্গমাইল।

লেছিরা-দর্জার কোন বুদ্ধে সম্বলপুররাজের সহায়তা করিরাছিলেন। তলস্থারে ১৭৭৭ খুটালে সম্বলপুররাজ লাহিরার
বর্তমান সন্ধারবংশের সেই পূর্জপুরুবকে এই সম্পত্তি লান করেন।
এই সন্ধারগণ গৌড্জাতীয়। ১৭৫৭-৫৮ খুটান্সের সিপাহীবিজ্যানে
এখানকার সন্ধার শিবমাথ সিংহ ইংরাজরাজের বিক্লছে বোগদান
করেন নাই। ১৮৮৪ খুটান্সে তাঁহার মাবালক পূত্র কুলাবন
সিংহ জার্থীরী-মন্নদে অধিষ্ঠিত হন।

লাউ (দেশৰ) অলাবু।

লাউমাচা (দেশৰ) লাউগাহ উঠাইবার বংশমক।

লাওবা, আসামবিভাগের ধনিরাও জরতী পার্কতা জেলাবরে অবহিত একটা শৈলপ্রেনী। সম্প্রসূত্র হইতে ৪৪৬৪ কিট্ উচ্চ। লাও-বের-সাৎ, ধনিরাও জরতী-পার্কতা জেলার অবহিত শৈলভের। ইহার সর্কোচ্চ শৃদ্ধ সমৃত্রসূত্র হইতে ৫৪০০ কিট্। লাও-সিজিয়া, আসামের ধনিরাও জরতী পার্কতা বিভাগে অবহিত একটা গিরিমালা। ইহার সর্কোচ্চশিধর সমৃত্রসূত্র হইতে ৫৭৭৫ কিট্।

लांक् (तमक, गक भरमत्र क्रमक्रम) गक ।

লাক্সাম, অপুরার অভগত একটা গওগাম। এই ছানে আসাম-বেলল রেলপথের একটা জংসন আছে।

লাকাদোল, আসামপ্রদেশের লরতী শৈলমালার দক্ষিণে লবছিত একটা প্রাম। এই ছান সরমার শাখা হরিনদীতীরবর্তী বোরঘটি হইতে ৬ মাইল দূরে ও সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ২০০০ ফিট্ উচ্চে অবহিত। এবানে একটা ক্ষুদ্র করলার খনি আছে। এই খনি হইতে উজোলিত করলা প্রায় ইংরাজী উৎক্রই করলার অন্তর্জা ইংরাজগবর্মে ট এই খনির অভাধিকারী। লাকাদোল, হইতে কুলীটানা গাড়ীতে খোরঘাটে আনিয়া করলা নৌকা বোরাই হইত। ভারাত্তে আনেক খরচ পত্তে বলিয়া এখন করলা উজোলনকার্ত্য বন্ধ ইইরাছে।

লাকাবাদর, বোবাই থেনিভেলীর স্বাটরাবাড়-বিভাগের বালাবাড় আভয় একটা ক্ষুবান্ড-রাজ্য। ভূ-নরিবাণ ৫ বর্গ- মাইল। এথানকার সন্ধার বড়োলার গাইকবাড়কে বার্বিক ১৫৯ টাকা ও জুনাগড়ের নবাবকে বার্বিক ২৪ টাকা সাক্ষর দিয়া থাকেন।

লাকিনী (জী) যোগিনীভেক। ভৱে এই বোগিনীর বিষর
বর্ণিত আছে। ছুর্নোংসবপদ্ধতিতে 'লাং লাকিনীভ্যো নমঃ'
এই ময়ে পূলা করিতে হব ।

লাকুচ (वि) गक्চ-दृक्छ।

লাকুটি (খং) লকুচের গোত্রাপতা।

লাক্ষ (कि) লাক্ষ বা লক্ষী শদের অপপ্রয়োগ।

লাক্ষকী (গ্রী) গীতা।

"রাথব তে ইরং সীতে। হারকেশত কল্লিণী। বিকোহকতারমাত্রত লল্লীগা কমলালয়। ।। লক্ষণ: কমলা হাত্রে। যতাঃ সা লাক্ষকী মতা। ॥ এবং শতসহস্রাণামীশরী রাধিকাধিকা। ॥"

(প্রপুরাণ উত্তর্থ ও ৫৫ অধ্যার)

লাক্ষণ (ত্রি) ১ লব্ধণসৰ্কীয়। ২ লব্ধণবিৎ। লাক্ষণি (পুং) লব্দুগুর গোত্রাপত্য।

লাফ্রিন (পুং) লক্ষ্পমিটতে দেবা বা লক্ষ্য (ক্তৃক্থাদিস্থ্রান্তাৎ ঠক্। পা ৪।২।৬০) ইতি ঠক্। > লক্ষ্ণাভিজ্ঞ,
লক্ষ্ণবেক্তা। ২ লক্ষ্ণা শক্তি দ্বারা প্রতিপাদক অর্থ।
'লক্ষ্ণয়া প্রতিপাদকঃ লাক্ষ্নিকঃ' (সাহিত্যদ°) লক্ষ্ণাত্মক
রৃত্তিমৎ পদত্তই লাক্ষ্ণিকছ। 'লক্ষ্ণাত্মকরৃত্তিমৎ পদত্তং
লাক্ষ্ণিকছ। বিভক্তিত্ত্বার্থবাদে লিখিত আছে
বে, শক্ষ্ ও প্রকার শক্ত, লাক্ষ্ণিক, রুঢ়, যোগরুঢ়, যৌগিক,
ছে যৌগিকরুচ়।

"শক্তো লাক্ষণিকো রুঢ়ো যোগরুত্বত যোগিকঃ।

কচিৎ যোগিকরুত্বত শব্দঃ যোড়া নিগন্ততে #"

(বিভক্তিত্বার্থবা°) [লক্ষণা দেখ]

লোক্ষণ্য (তি) লক্ষণবিং।
লোক্ষ্যা, কামরপের দক্ষিণে প্রবাহিত একটা নদী। (কালিকাপুণ
১৭ জঃ) রামপালের দক্ষিণেও এই নদী প্রবাহিত। (দেশাবদী)
লোক্ষা (ত্রী) লক্ষ্যতেহনরেতি লক্ষ (গুরোল্ড হলঃ। পা তালা১০৩)
ইতি অ-টাপ্ বছা-বাহলকাং রাজতেরপি সং' কপিলিকাদিয়াং বা লছং (উণ্ প্রথ২) রক্তবর্ণ রক্ষমির্যাস বিশেষ, চলিত
লাহা, গালা। সংস্কৃত পর্যার—রাক্ষা, রক্ত্, বাব, অলক্ত, ক্রমামর,
থদিরিকা, রক্তা, রক্তমাতা, পলস্করা, ক্রমিহা, ক্রমব্যাধি, অলক্তক,
পলান্দা, সৃত্রিনী, দীথি, অন্তক্ষা, গছমাদিনী, নীলা, ক্রবরুনা,
পিতারি।

विकित तरण नाका विकित नारम शतिहिक। हिन्ही-नाका,

লা, লাহা; বালালা—গালা; গুলরাত—লাক্; তামিল— কোবুরুকী; তৈলল—কোনলক, লভুক, লভ; মলরালম্— অনুনু; ব্রদ্ধ—খেলিজ্ক; শিলাপুর—লক্ষ; মহারাট্র—লাথ্; কলিল—অবগুঃ

আশনা, বট, মহরা, পলাশ প্রভৃতি বৃক্ষ-উকে লাক্ষাকীটের (Coccus lucca) অবস্থানহেতু যে রক্তবর্ণ নির্ঘাদ উৎপন্ন হয়, ভাহাই লাকা বা গালা নামে পরিচিত। কেহ কেহ বলেন, লাক্ষাকীট বৃক্ষবিশেষের ত্বক্ ভক্ষণ করিরা যে মল ত্যাগ করে, তাহাই জলবায়ু ও বুকের রসগুণে লাক্ষায় পর্য্যক্ষিত হয়। এই লাকা বা গালা উৎপাদনের জন্ত ভারতবর্ষের স্থান-বিশেষে চাস হইতে দেখা যায়। তত্ত্বংস্থানের অধিবাসীরা এক বৃক্ষ হইতে লাক্ষা কীট লইয়া অপর বৃক্ষে ছাড়িয়া দেয়, त्मेरे कींग्रे हरेएक वृक्ष्यक न्जन कींएँ प्र उपलब्ध हरेएक थाएक। ক্রমশঃ এই নৃতন কীটবংশ বৃক্ষকে ছাইরা ফেলে। যথন লাকা-কীটে বুকের আপাদ-মন্তক আচ্ছন্ন হয়, তথন আর বৃক্ষটী দলীক থাকে না, বরং রসহীন হওয়ার ভাহার পত্রাদি ঝরিয়া যায় এবং আইড়ি হইতে সমগ্ৰ পল্লবাদি লাক্ষামলে আবৃত হইয়া মলসংযুক্ত হরিদ্রাভ লোহিত বর্ণে রঞ্জিত হইয়া উঠে। লাক্ষাপালনকারি-গণ উপযুক্ত সময়ে ঐ লাক্ষামল স্থপরিপক হইয়াছে জানিয়া ভাহা ভাঞ্জিয়া বাজারে বিক্রন্ন করিতে আনে। ঐ লাকা দেশীয় ৰাণিজ্যের একটী পণ্যদ্রব্য মধ্যে পণ্য। উহা হইতে নানাপ্রকার থেলানা প্রস্তুত হইয়া থাকে। থেলানা প্রস্তুত করিবার পূর্বে উহাকে জলে ভিজাইয়া রাখিতে হয়। তাহাতে সেই জল ক্রমশঃ লাল হইয়া উঠে। সেই লোহিতবর্ণ জল ওকাইয়া গাঢ় হইলে পর ফে লাল রঙ্ তলার জনে, তাহা পুনরার ওকাইয়া লইলে 'Lac dye' প্ৰস্তুত হইয়া থাকে। তাহাই বাণিজ্ঞা-দ্রব্যরূপে বাজারে বিক্রীত হয়। আমাদের দেশের অলক্তক নামক কার্ণাস-পত্র (তুলার পাত) এই লাক্ষার রবেই প্রস্তত ।

ময়লাব্রু লাক্ষাকে সাধারণতঃ লোকে খাম্লাথ বা লাক্ষার খামি বলে। লাক্ষা ভিজাইরা পরিষ্কৃত করিবার পর উহা এক ' একটী কৃদ্র বীজের স্তার চূর্ণ হইরা বার। উহা লাক্ষানা বা Seed-lac নামে পরিচিত। এই দানাগুলি অগ্নির উত্তাপে দামান্ত পরিমাণ রক্ষন বোগে গলাইরা বে পাতগালা (Shell-lac) প্রস্কৃত হর, বালালার ও হিল্পুখানে তাহা চাপ্ডা-গালা বা চাঁচ্-গালা বলিয়া প্রাসিক্ষ। বোভামের স্তার ক্ষুত্র ও গোলাকার মোটাগুলি বড়া-গালা বা Button-lac মামে প্রচলিত আছে।

ভারতবর্ষের স্থানবিশেবে লাক্ষার উৎপত্তি ও পরিমাণ মতন্ত । পশ্চিমবলের ও আসামের পার্ব্বত্য-প্রাদেশে এবং মধ্যপ্রাদেশের মানাস্থানে প্রচুর গালা করে। মুক্তপ্রাদেশে তর্গেক্য আনেক কম। পঞ্জাব, বোঘাই ও মাস্ত্রাজ বিভাগে তত অধিক জৈনে না। ব্রন্ধের কোন কোন হানে পর্যায় ও কোন কোন ছানে অন্ন উৎপন্ন হয়। শুাম, নিংহল, পূর্বভারতীর দীপ-প্রজের কোন কোন দীপে এবং চীনসামাজ্যে অন্নবিত্তর লাক্ষা জিমিরা থাকে। ঐ সকলের মধ্যে শ্রাম, আসাম ও ব্রন্ধ-গেশজাত লাক্ষাই সংব্রোৎকুট।

মইকংহিতা ও মহাভারতে লাকার উল্লেখ আছে। চুর্য্যোধন কর্ত্তক পঞ্চপাশুবের জতুগৃহদাহকণা কাহারও অবিদিত নাই। তৎকালে উত্তর-পশ্চিম ভারতে লাকার যে বছল প্রচলন ছিল, ভাহা এই সূর্হৎ অট্টালিকা-নির্মাণেই উপলব্ধি করা যায়। এই জতুগৃহই তৎকালীন লাকা-শিল্পের (Lac-industry) প্রেক্ষণ্ট নিদর্শন।

ভারতীয় লাক্ষার ইংরাজী নাম Lac এবং লাক্ষাজাত প্রব্য-শুলি Lacquer ও Lackered ware" নামে পরিচিত, ইতিহাস অনুসরণ করিলে জানা যায় যে, ভারত হইতে এই দ্রব্য আরবীয় বণিকদিগের ছারা স্থদর পশ্চিম এসিয়াপণ্ডে मील हरेल। छाँहाता এই जुना लाथ, नारमेह निजन क्तिएन। আফুমানিক ৮০-৯০ খুষ্টাব্দে পেরিপ্লাদের লেপনী হইতে জানা যায় যে. Ariake দেশের মধ্য হইতে বহু প্রকার লাক্ষাঞ্জাত দ্রব্য পশ্চিমোপকৃষস্থিত Barbarikē বন্দরে লোহিত-দাগরের আমদানী হইত। উক্ত গ্রন্থকার অলক্তক বর্ণেরও (Lac-dye) উল্লেখ করিয়া গিরাছেন ৷ Ælian-কৃত প্রাণিতত্তে (২৫০খুটান্দে) লাক্ষাকীটের উল্লেখ আছে। তিনি লিথিয়াছেন, ভারতীয়গণ বৃক্ষে ঐ কীট পালন করে। তাহারা উহা যথাসময়ে ধরিয়া ৰ্জ্ড করে এবং সেই গুঁড়া জলে ভিজাইয়া যে রঙ্পায়, তাহাতে গৈরিক বসন ও জামা প্রাভৃতি রঞ্জিত করিয়া থাকে। এরপ রঞ্জিত বস্ত্রাদি তৎকালে পারস্তরাজনমীপে বিক্ররার্থ প্রেরিত হইত। (Nat. Animal Vol IV. 46) গাৰ্সিয়া বলেন যে, আরবীয় বণিকৃগণ লাক্ষাকে 'লাক্ স্থমুত্ৰী' বলিতেন, অধিক সন্তব, পেগুজাত শাক্ষা প্রথমে সুমাত্রার বাণিজ্ঞাতাগ্রের আনীত হইত। উক্ত দ্বীপের বন্দর হইতেই মারবীয় বণিক্গণ উক্তদ্রব্য ক্রন্ত করি-তেন বলিয়া তাহারা উহাকে লক্স্মুহী নামে অভিহিত করিয়া-ছিলেন। ১৩৪৩ খুষ্টাব্দে Della Decima (III 365), ১৫১০ খু: (Varthema, 238), ১৫১৬ খৃষ্টাব্দে Barbosa, ১৫১৯ খৃষ্টাব্দে Correa প্রভৃতি গ্রন্থকারণণ ভারতীয় এবং পেঞ্চ, মার্কাবান্ ও ক্রমওল উপক্লজাত লাকার উল্লেখ ক্রিয়াছেন। গার্দিয়া ১২৬৩ খুটান্দে পত্রাদি জাঁটিবার জন্ম গালার বাতি এবং আবুল কলল লাইন্-ই-অকবরীতে গালার পালিশের কথা লিখিয়া-हिन । ऐक महारम अभनकाती निन्ताएंन (Liuschoten)

মলবার, বাদালা ও দাক্ষিণাড্যের লাকার বিষয় কর্ণনা করিয়া গিরাছেন।

উত্তরপশ্চিম প্রাদেশের গড়বাল জেলার বিভূত বনভূমে ও व्यायाशांत विकाश्यर्कविভाগের বনরাভিতে আহুর লাকা ভংগ। বৃত্তাপুরের গালার কারখানায় অবোধ্যালাত লাকারই অধিক আমদানী হইয়া থাকে। পঞ্চাবে দামান্ত মাত্রার গালা উৎপন্ন रते। मिक् अरमरण रात्रमतावारमत अत्रगाविकारण रा गामा सरना, তাহার অধিকাংশই স্থানীর প্রাসিগ্ধ খেলানাদি নির্মাণ-কার্য্যে বাৰত্বত হয়। মধা প্ৰদেশের পাক্তিয় ব্নভূমে যে প্রিমাণ গালা উৎপদ হয়, ভাহার ছারা স্থানীয় লোকে গালার চুড়ী প্রভৃতি প্রস্তুত করিয়া থাকে। উহার অধিকাংশই রেলপ্থে চালিত হইয়া কলিকাতা ও বোখাই সহয়ে আনীত হয় এবং তথা हरेट काराब्य **दापारे हरे**ना बूटनाट्य गांत । मधा शास्त्रण वाहर-লিয়া, রাজহোড়, ভিরিমা, কুকু, ধায়ুক, নহিল ও ভোই প্রভৃতি অসভ্যন্তাতিরা এক স্থানীয় নিয় শ্রেণীর মুসলমানরণ লাক্ষা সংগ্রহ করিয়া পটুরাদিগের নিকট বিক্রম করে। লাক্ষাবৃত বুক্ষপল্লৰ যাহা বনাস্তরাল প্রদেশ হইতে সহরে বিক্রয়ার্থ আনীত হয়, তাহাকে শাকাদণ্ড বা Stick-lue বলা যায়। মহিসুরে এবং বন্ধরাজ্যের শানষ্টেট ও উত্তরবন্ধবিভাগে প্রচর লাকা উৎপন্ন হয়। এখান ইইতে শাক্ষাদণ্ড কলিকাতায় আনীত হয়, পরে তথা হইলে চাঁচগালা প্রস্তুত হুইয়া মুরোপে রপ্তানী ब्बेग्रा थाटक।

ভারতবর্ণের মধ্যপ্রদেশলাত লাক্ষার বৈদেশিক বাণিজ্যই প্রধান। তবে বাঙ্গালা, আসাম ও প্রক্রদেশ হইতে তদ-পেকা অনেক অন্ন-পরিমাণে লাক্ষা দেশাস্তরে প্রেরিড হয়। দেশীয় লোকের ব্যবহারার্থ কতক পরিমাণ এদেশে থাকে। বাঙ্গালার বীরভ্ম, ছোট-নাগপুর ও উড়িব্যাবিভাগে বিভর লাক্ষার চাস আছে। সিংহভূম, পুরুলিয়া ও হাজারিবাগ হইতে প্রতি বংসর অনেক লাক্ষা কলিকাতার আমদানী হয়। বার্ক্ষার অন্তর্গত সোণাম্থী, বালিলা প্রভৃতি হানে বড়াগালা এবং মৃজ্ঞাপুরে চাঁচ্গালার কার্থানা আছে। কলিকাতার উপকঠে গাণেট গালা প্রশ্বতের হুইটা কার্থানা দৃষ্ট হয়। অধুনা ছুইটাই যুরোপীয় বণিক হারা পরিচালিত।

বাজালার বৎসরে ছইবার গালা সংগৃহীত হইয়া থাকে। প্রথম কার্ষ্টিক হইতে পৌব পর্যান্ত এবং দিতীরবারে বৈশান্ধ ও জ্যৈষ্ঠ মাস পর্যান্ত। সময়ের তারতম্যান্ত্সারে ইহা কুল্লমী, রজিণ, বৈশাধী, জলচালা প্রভৃতি বিশেষ বিশেষ নামে প্রাসিদ্ধ।

বনে দাবানল, জনাবৃষ্টি জথবা অত্যধিক কুরারা হইলে লাকা-কীট নই হইরা থাকে! এত্রিম শিলীলিকা মাত্রই ইহাদের বিশেষ অপকারক। ইহারা রুক্ষে উরিরা লাক্ষাকীটের স্থী-কোটর-(Female cell)গুলির মধ্যে প্রেক্টি হব এবং ক্রমণঃ তছপরি হাত প্রতির্বসসম্পন্ধ বোদকং সাধার্যাল ধাইতে আরম্ভ করে। তাহাতে কোটরছ কীট পরিপ্রেট হইতে না হইতেই বায় ও উত্তাপের প্রথমতার নাই হইতা বার। বে রুক্ষে লিগ্ডা ধরে, সে গাছের গালা আর প্রই হইতে পারে না। এতভির Galleria ও Tinea প্রেনীর আরম্ভ হই প্রকার কীট ইহাদিগের অপকার করে। উহারা কেবল স্ত্রী-লাক্ষাকীটের রভের অংশ ও শিশু কীট গুলিকে ধাইবা থাকে।

ব্লাসারনিক পরীকা ভারা লাকার বিভিন্ন পদার্থের সমাবেশ নিৰ্নীত হইরাছে। ঐ সকল পদার্থে বিশেষ বিশেষ ঋণ থাকার এবং উহা স্বতম্ভ স্বতম কাৰ্যো ব্যবহৃত হয় বলিয়া,উহা এত অধিক স্মাগ্রহের সহিত পণ্যক্ররাপে বান্ধারে বিক্রীত হইরা থাকে। অধ্যাপক হাচেট্ বিল্লেষণ দারা দেখিয়াছেন বে,পল্লবমণ্ডিত লাক্ষার (Stick lac) ৬৮ ভাগ রখন, ১০ ভাগ রঙ, ৬ ভাগ নোম, ে। ভাগ আটাবং পদার্থ, ৬॥ জাগ মাড় ও ৪ ভাগ ধুলাওঁড়া ইত্যাদি আছে। লাক্ষাচর্ণে (Beedlac) ৮৮° রক্ষন, ১২॥। রঙ, ৪া মোন ও ২ ভাগ আঠা এবং চাঁচ গালার (Shell-lac) ৯০ ভাগ রজন, ৪০ ভাগ রঙ্, ৪ ভাগ মোম এবং ২ ৮ ভাগ নাইটোজেনসম্মীর পদার্থ থাকে। উন্ভারভোর্বেন বলেন, চাঁচগালার রজন নামক পদার্থ আলকোহণ ও ইথারে দ্রবীভূত হয়। আবার ঐ ধুনাবৎ পদার্থের কতকাংশ স্থাল-काहरन अवीष्ट्रण हन्न, किन्न हेशारत हन ना । **छे**हा नाना वाद्य । উহাতে লাক্ষাকীটের বলা (unsaponified fat) এবং ওলিক ও মার্গরিক এসিড্ আছে। কতক পরিমাণে মোম ও laccine পাওয়া যায়।

গালার পাত প্রস্তুত করিবার প্রণালা।—প্রথমে পরবমতিত লাক্ষাগুলিকে জাঁতার পিবিয়া চূর্ণ করিতে হর, তদনন্তর বড় কাটিকূটা বাছিরা কেলা হর। পরে সেই লাক্ষা থওগুলি ক্রমশঃ কল-বীলের স্থায় ক্ষুত্রতম করিবার জন্ত তিন বা চারিপ্রকার জাঁতার উপর্গুপরি পেবিভ ও চূর্ণ করিরা ছাঁক্নী দিরা ছাঁকিয়া লওরা ছইরা থাকে। এইরপে ছাঁকিতে ছাঁকিতে বখন কেবল গালাচূর্ণ মেলের উপর পড়ে এবং কাটিকূটা ছাঁক্নীতে আলাহিদা থাকে, তখন সেই কাটিকূটা কেলিরা দিরা লাক্ষাচূর্ণগুলি উঠাইরা খ্রীলোকেরা কুলার ঝাড়িরা পরিকার করে। কুলার পরিকার করিবার সময় আক্রানামিলিত লাক্ষাচূর্ণগুলি একধারে রাখিরা পরিকার লাক্ষাক বালাগুলি পরিকার করিবার সময় আক্রানামিলিত লাক্ষাচূর্ণগুলি একধারে রাখিরা পরিকার লাক্ষাক বালাগুলি সাজ্যালা প্রস্তুত্র কন্ত সরাইরা রাধে এবং ঐ আর্ক্রনামিলিত অপরিকার লাক্ষাচুর্ণ চুড়ীওরালানের নিকট বিক্রম করে। ভাষারা উহা

গলাইরা ভারতীর রমশীগমণের ইম্বারন্ধার প্রস্ত**ু** করিরা থাকে।

অতংশর নেই পরিষ্ণত বানাগুলি ক্রয়া একটা লব্মান নলের মধ্যে পুরিরা অলে কচ্পান হইরা থাকে। নলের ভিতর লল থাকার গালার রঙ্ক্রমণা জলে মিলিত হইরা লালিবর্ণ থারণ করে। এ লানাগুলি উত্তরেজর জল-আলোড়নে চুর্ণ ইইরা ক্ষুদ্র হইতে ক্ষুত্রন নালার পরিগত হর এবং বর্ণপার্মর্থ (Colouring matter) একবারে লাকা হইতে বিযুক্ত হইরা পড়ে। তথন সেই রঙ্গিপ জল থিতাইবার জন্ম একটা বড় চৌবাচ্ছার মধ্যে ২৪ ঘন্টাকাল রাঝা হর। নীল গাঁজাইবার মত চৌবাচ্ছার তলে রঙ্ লক্ষিত হইলে একটা ছিত্রপথে উপরের জল চালিত করিয়া চৌবাচ্ছার বাহির করা হইয়া থাকে। পরে সেই সন্ধিত রক্ষিপ পনার্ম উত্তরমন্ধপে ছাঁকিয়া একটা পাত্রে রাখা হয়। এ স্থানে উহা তকাইয়া গাঢ় হইলে জাহাকে বর্কীর আকারে থণ্ড থণ্ড করিয়া কাটিয়া রৌদ্রে পনার্মর গুকাইমা লওয়া হইয়া থাকে। উহাই বাণিজ্যের গাক্-ভাই নামক পণ্যক্রয়।

উপরোক জুলধোত লাক্ষাকণাই "Seed-lac" নামে পরি-চিড। উহাকে আরুত পাত্রে বাশোদ্ধাপে তরল করিয়া লইরা পাত্রগাত্রন্থ উত্তপ্ত নালীপথ দিয়া রজন মিশ্রিত করা হয়। তাহা হইলে অভ্যন্তরন্থ লাক্ষা আরপ্ত তরল হইরা পড়ে। উহা আর পাত্রের গাত্রে কাক্ষাইরা ধরে না, বরং অগ্রির উত্তাপে থাকিয়া সুটিতে সুটিতে কিছুকাল পরে ঐ রক্ষন উপিরা বার।

পূর্ককথিত ভাণ্ডের চারিপার্থে ম্ব্রানির্ন্থিত কতকগুলি নল সক্ষিত থাকে। উহার শিরোদেশ ৪৫° কোণে বক্র। উহাদের ভিতর ফাঁপা এবং অভ্যন্তরে নিরন্তর উষ্ণ জল রাখা হয়। তাহার তাপ অভি সামান্ত, কারণ অধিক তাপ হইবে গালা ঈৰৎ ঠাওা হইতে পার না, স্থতরাং জমিতেও পারে না, আবার একবারে ঠাওা হইলে গালা শীঘ দুঢ় হইরা যাইবার সভাবনা। ঐক্লপ অবস্থার ভাষাকে ভরল গালা লাগাইয়। টানিলে সহলেই। জাহা 🕭 দ্বান্তকে আটকাইয়া বাইবে। অতএব নিৰ্মিত উদ্ধেদ্ধৰে के बचान চোলাগুলি পূৰ্ণ হইলে, এক্ষম ব্যক্তি কলার পেটোতে খানিকটা গণিত গালা লইয়া একটা স্বস্কের শিরোদেশে লাগাইয়া দেয় ৷ গোলাকার ও মন্তণ ঐ লতের উপর লমানভাবে উত্তাপ প্রাপ্ত হইরা সালা সরল ও পাতলাভাবে ছডাইয়া পড়ে, ভখন একব্যক্তি আমারস, ভাল বা নাবিকেল্পত ছুই হাতে চুই কোণে ধরিরা দলের মাখা ছইতে কেই ভরল গালা টানিরা ৰাজাইতে থাকে। থালাৰ উদ্ধাপ ও তরলভা কমিবা বাহতে জ্বদঃ ওকাইরা আসিলে উপরের মোটা অংশটুকু তালিরা

কেনিরা দিয়া অবশিষ্ট চাদরের জার পাতলা অংশটুকু একটা বডের উপর কুলাইরা দেওরা হয়। ঐ দণ্ড লাধারণতঃ ব্রী-লোকেরাই ধরিরা থাকে। তাহারা সেই গালা কাপড়ের জার কুলাইরা সেই হাল হইতে অজ একটা গৃহে দওসহ র্যাকের মধ্যে শ্রেণীবদ্ধ আকারে সক্ষিত করিরা রাখে। এই হালকে 'Drying shed' বা ওকাইবার বর বলে। উহা কভকালে তামাক-কুঠার (Drying-houseএর) মত। পর বিল সেই ওক গালার পাত ভালিরা বাজের মধ্যে পুরিরা নালা হাদে বিক্ররার্থ শ্রেণিত হয়।

কণিকাতার হাতিবাগানে অধিকাকুমারের গালার কল প্রাসিদ। বুরোপে তাহার O. C. C. মার্কা গাণেটি গালার মথেষ্ট আদম ছিল। অপ্রসিদ্ধ বণিক রেলীব্রাদার ঐ কল কিনিরা গলাইন্ লাহেবকে বিক্রম করেন। উহা এখন উন্টাতিদিতে হানা-ভরিত হইরাছে। কলিকাতার উত্তরউপকণ্ঠহিত এজিলো ব্রাদারের কলেও গাণেটি গালা প্রস্তুত হয়। দন্দমার নিকটে পিট্রোকচিনো ব্রাদারের বড়া গালার একটী কারখানা আছে।

গাঁলার রঙ্ চিরপ্রসিদ্ধ। পদতলে আল্ডামাধা হিন্দুবালার বড়ই আলরের জিনিস। মুর্শিবাল, রঘুনাথপুর প্রভৃতি হানে রেশনী বল্লের প্তা আল্ডার রঙে রঞ্জিত হইরা থাকে। এই আল্ডা চর্দ্মরোগেও বিশেষ উপকারী। পারে পাঁকুই বা হাজা হইলে অথবা গারে চুলকনা হইলে তাহার মুখে আল্ডা শুলিরা গাঁছ রঙ্ টিশিলা দিলে উপকার দর্শে। হিন্দুর আয়ুর্কেন-শাল্তে লাক্ষাবি-তৈলে ইহার ভেবজ গুণ উল্লিখিত হইরাছে। ইহার বর্গ সর্কাপেকা আলর্ণীর। কাপড় হোগান ব্যতীত পূর্কে এই বর্ণের সাহায্যে অপরাপর রঙ্ প্রেছত করা হইত, ইহার রঙ্ পাকা।

গালা হইতে চুড়ী, ছড়ি, নানা গহনা এবং বাগানাদি অতি
মনংকার বেলানা দ্রব্য প্রস্তুত হইরা থাকে। কুন্থনী গালার
ব্যভত গলার হার ঠিকু গিনি-লোণানির্মিত হারের ভার বোধ
ইয়। একটা কলকুলগরিশোতিত উভান-বাটকা প্রস্তুত করিতে
ইছা হইলে সহজেই গালার হারা সালান হাইতে পারে।
গালার উপর বেখানে বে রঙ্ লাগান আবক্তক, তাহাও ঠিক
নেইবানে বেওরা বার এবং উহার গাল পালিনের ভার
বন্ধান বেওরা বার এবং উহার গাল পালিনের ভার
বন্ধান বেওরা বার এবং উহার গাল পালিনের ভার
বন্ধান বেওরা বার এবং উহার গাল পালিনের ভার
বন্ধান বেওরা বার এবং উহার গাল পালিনের ভার
বন্ধান বার্ভিত হানে গালার অলভার ও বেলানাদি প্রস্তুত
ইয়। কলিকাতা সহরেও কোন কোন কারিগর গালার বেলানা
ব্যভত বার্ভিত হানে পালার বিরুদ্ধি ও পাক্তব্যর প্রনিভ্ত
বালার ব্যভত গালার কারবানা (Lac-turnory) আছে। কারবালার প্রস্তুত গালার কারবানা (Lac-turnory) মান্ধান বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধান বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধান বিরুদ্ধিত সালার কারবানা (Lac-turnory) মান্ধান বিরুদ্ধিত সালার কারবানা (Lac-turnory) মান্ধান বিরুদ্ধিত সালার কারবানা (Lac-turnory) মান্ধান বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধান বিরুদ্ধিত সালার কারবানা (Lac-turnory) মান্ধান বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধান বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধান বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধানা বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধানা বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধানা বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধানা বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধানা বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধানা বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধানা বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধানা বিরুদ্ধিত সালার বারবানা (Lac-turnory) মান্ধানা বারবানা
অভিহিত। অপর কাঠের উপর গালা জনাইরা ভাহাকে বে কোন কাঠের আকারে পরিণত করা বার । কাপীতে নালা বাঁথারিতে প্তার গাঁট বাঁধিরা চীনা বাঁশের লাটি প্রভত করিছে দেখা বার। এইরপে সুক্ষর স্থানর বার, কুলন্ত্রী, টেপারা প্রকৃতি ১তৈরারী হয়। অর্থানভারাদিতে গালা ভরিবার প্রচলন আছে।

ভারতীর লাকাকার হইতে জাপানী লাকালির খড়ত।
তাহারা কাঠের উপর গালার পরিবর্তে Rhus Vernicifers
নামক রক্ষের আটার পালিস দিরা থাকে। গালার পালিস
বডঃ। আল্কোহলে চাঁচ গালা, খুন্থারালী, লোবান্ ও কুইসূত্রকী বোগ ক্রিলে গালার পালিশ প্রস্তুত্ত হয়। সাধারণতঃ
বার, আলমারী, বরজা জানালা প্রভৃতিতে ইহা লেশন ক্রিরা
চাক্চিকা সম্পাদন করা হইরা থাকে।

সাক্ষা ও সাক্ষারতের বাণিজ্য পূর্কাপর সমভাবে চলিরাছিল।

১৮৬৫ ঘুটাকে চাঁচগালা অপেক্ষা নাক্ষাবর্ণের লাম বিপ্তল
বাড়িরা উঠে। এই সমর নীলের চাস চলিতেছিল, নীলে
রতের উৎক্রই অনি হওয়ার লাক্ষারতের পরিবর্ণ্ডে তাহাই ব্যবহৃত
হতত থাকে। নীলের আফারে সাক্ষারতের হতালর বাড়িরা বার।
১৮৭২ খুটাকে উহার ধর এক্ষারে কমিরা বার। ১৮৭৪
খুটাক্ষের ২৭এ নবেদ্বর ভারত-গবর্মেন্টের বিজ্ঞাপনে উহা
রথানীর তালিকা হইতে উঠাইরা পেওরা হর। কারণ ওপম
ব্রোপীর বাজারে উহার বিজ্ঞান না থাকার আলৌ ওপ
আলারের সভাবনা ছিল না। এখনও লাক্ষার বাণিজ্য
চলিতেছে। বুটেনরাজ্যে ও আমেরিকার ব্রুলরাজ্যে প্রভৃত
গালা রথানী হইরা থাকে। ফ্রান্স, অক্রীরা, কর্মণি, ইভালী,
অক্রেলিরা, বেলজিরম, চীন, ট্রেট্নেটল্মেন্ট, স্পেম ও হলও
রাজ্যেও বালালা হইতে লাক্ষা রথানী হইরা থাকে।

সমূত্রগর্জে বে তাড়িড-বার্ডাবহ-তার পরিচালিড হইরাছে, তাহার উপর লাক্ষার আতরণ দেওরা হয়। কারণ জল ও মৃত্তিকা সংবোগে গালা নই হয় না। স্মৃতরাং ভাহার অভ্যন্তরত্ব ভারও নই হইতে পার না।

देशंत्र ७१--कर्डू, छिख्न, क्वांत्र, त्राच्न, निखरतांत्र, त्नांक, विवरतांत्र, त्रक्रातांत्र ७ विवसकातमानक अवर वनकत्र।

ভাৰপ্ৰকাশ মতে, গাকা বৰ্ণকর, শীতদ, বগকর, বিশ্ব, লয়ু, ক্ষ্, শিভ, ক্ষম, হিঞা, কাল, হ্বর, ত্রণ, উরক্ত, বিনৰ্গ, ক্ষমি, ও কুষ্ঠ-রোগনাশক। (ভাৰপ্র°) ভৈৰল্যবন্নাবলীতে দিখিত ক্ষাছে বে, গাকা নৃতন প্রহণ করিতে হুইবে এক্ উষ্ণাবেন নৃত্তিকানি-বোৰবির্কিত হয়।

"नामा ह मुख्ना बांका वृष्टिकाविदिवर्षिका।" (टक्कानका)

২ শতপত্ৰী। ৩ দেবতী। (ভাৰপ্ৰ°)

লাকা গুণ গুলু, আয়ুর্কেলোক উবধবিশেষ। প্রস্তুতপ্রণালী—
লালা, হাড়জোড়া, অর্ক্নছাল, অবগন্ধা, গোরকচাকুলে প্রড্যেক
এক তোলা এবং গুণ গুলু েতোলা একত্র মর্দন করিরা লইবে।
তম হানে ইহার প্রলেপ দিলে তম ও স্থানচ্যুত অহির বেদনা
নিবারিত হইরা অল সকল বজের স্থার দৃঢ় হর।

কেহ কেহ বলেন, উক্ত পাঁচ প্রকার চুর্ণের ভুল্য পরিমাণ শুগু শুলু মিশাইলে বথেষ্ট হর।

লাক্ষাতক্ত (পং) লাক্ষোৎপাদকতক্ষ:। পলাশ বৃষ্ণ। (শনমা°)
লাক্ষাতিকা (ক্লী) লাক্ষাদিভিঃ পকং তৈলং। পকতৈলবিলেব,
লাক্ষাদি দ্বারা এই তৈল প্রস্তুত হয়, এজন্ম ইহাকে লাক্ষাতৈল
কৰে। এই তৈল দিবিধ স্বন্ধ ও বৃহৎ। প্রস্তুতপ্রণালী—

শ্বর লাক্ষাতৈল — সমপরিমাণ লাক্ষা, হরিদ্রা ও মঞ্জিষ্ঠা ছারা তৈল পাক করিয়া পাক শেব হইলে উহাতে গন্ধপ্রত্য মিশাইয়া নামাইতে হয়। এই তৈল লাহ, শীত ও জরনাশক। (স্বথবোধ)

২ বালরোগাধিকারে তৈলতেন। প্রস্তেপ্রণালী—তিল তৈল ৪ দের, লাক্ষার কাথ ৪ দের, লিধির মাত ১৬ দের। ককার্থ—রালা, রক্তচন্দন, কুড, মুথা, অখগন্ধা, হরিদ্রা, লাক্ষহরিদ্রা, ভলদা, দেবলারু, ষ্টিমধু, মুগরাম্ল, কট্কী ও রেণ্ক মিলিত ১ সের; এই সকল কর হারা যথাবিধানে তৈল পাক করিতে হয়। এই তৈল মর্দনে বালকের অরাদির উপশম হয় ও বলর্দ্ধি পার।

(তৈৰজারত্বা॰ বালরোগাধিকা॰)

অস্থাবিধ—কৃটিত লাকা ০ শরাব, জল ১৬ শরাব, ২১ বার দোলাযন্ত্রে পরিশ্রুত করিরা ১৬ শরাব গ্রহণ করির। অথবা লাকা ৮ শরাব, জল ৬৪ শরাব, পাক করিরা শেষে ১৬ শরাব গ্রহণ করিরে। লাকারস বা কাথ ১৬ শরাব, দধিমন্ত্র ১৬ শরাব, করার্থ গুল্ফা, হরিদ্রা, মূর্জামূল, কুর্চ, রেণুক, কটুকী, যষ্টিমধু, রামা, অখগন্ধা, দেবলারু, মুখ্রা ও রক্তচন্দন প্রত্যেকে ২ তোলা, যথাবিধানে পাক সিদ্ধ হইলে কর্পুর, লিলারস ও নথী প্রত্যেকে ২ তোলা করিয়া উহা মিপ্রিভ করিতে হইবে। এই তৈল জরাদি রোগনাশক। (রসব৹) লাকা দিতিতল, জররোগে উপকারক তৈলোবধবিশেব। প্রস্তবত্রণালী—মূর্ক্তিত তিলতৈল ৪ সের, পুরাতন কাঁজি ২৪ সের; কথার্থ—লাহা, হরিদ্রা, মজিটা মিলিত ১ সের। এই তৈল-মর্দনে জর এবং তজ্জনিত লাহ ও শীত নিবারিত হর।

মহালাক্ষানি তৈল নামে ইহার আর একপ্রকার তৈল প্রস্তত হইরা থাকে। প্রণালী—মূর্ক্তিত তিলতৈল ৪ সের, লাক্ষার কাথ ১৬ সের (লাক্ষা ৮ সের, ১৪ সের জলে নিদ্ধ করিয়া শেষ ১৬ সের।) দধির মাত ১৬ সের। ক্রার্থ—শুল্ফা, হরিদ্রা, মূর্কা-

মূল, কুড়, রেণুক, কট্কী, ষষ্টিমধু, রাসা, অখগন্ধা, দেবদাস্মুথা, রজন্দন প্রত্যেক ২ তোলা। পাক নমাপ্ত হইলে কপুর ২ তোলা, নিলারন ২ তোলা, ও নধী ২ তোলা ঐ তৈলে মিপ্রিড করিবে। এই তৈল মর্দনে বিষম-জ্বাদি নানারোগ বিনষ্ট হয়।

লাক্ষার ছয় গুণ জলে অর্থাৎ ১৮ সের জলে ৩ সের লাক্ষা কুটিয়া নিক্ষেপ করিবে। তদনস্তর ঐ জল দোলাযম্বসাহায্যে পরিপ্রাবিত করিয়া সেই জল ১৬ সের গ্রহণ করা যাইতে পারে, উহার অবশিষ্ট ভাগ পরিত্যাগ করা কর্ত্ব্য। অথবা ৮ সের লাক্ষা ৬৪ নৈর জলে পাক করিয়া তাহারই এক পাদ কাথ ঔষধ-প্রস্তুতকালে প্রেরোগ করা যাইতে পারে।

(ভৈষকারত্না॰ জরাধিকা॰)

লাক্ষাদিবর্গ (পুং) স্থপ্রভাক্ত লাক্ষাদি গণভেদ। এই গণ যথা — লাক্ষা, রেবভ, কৃটজ, অখমার, কট্ফল, হরিদ্রা, দান্ধ-হরিদ্রা, নিম্ম, সপ্তছেদ, মালতী ও গ্রায়মাণা। (স্থপ্রভ স্ত্র-৩৮অ-৩) লাক্ষান্তাতৈল, ম্থরোগে হিতকর ঔষধবিশেষ। প্রজভ-প্রণানী—তিলতৈল ৪ সের, লাক্ষারস ৪ সের, হুল্প ৪ সের, থদিরের কাথ ১৬ দের। ক্রার্থ—লোধ, কট্ফল, মঞ্জিছা, পল্লকেশর, পল্পকার্ছ, রক্ষচন্দন, উৎপল, যষ্টিমধু, প্রভ্যেক ১ পল। এই তৈলের গণ্ডু্য করিলে,দালন, দন্তচাল, দন্তমান্দ্র, কপালিকা, শীতাদ, মুধদোর্গন্ধা, অক্ষচি ও মুথের বিরস্তা নই হইয়া দন্ধ সকল স্থান্ন হয়।

লাক্ষাছীপ, দক্ষিণভারতের মলবার উপক্লের অদ্রবর্ত্তী একটী
দ্বীপপ্ঞ । ভারতমহাসাগরে অবস্থিত । অক্ষা° ১০° হইতে
১৪° উ: । এবং প্রাঘি° ৭১°৪০ হইতে ৭৪ পু: মধ্য । ভারত
উপক্ল হইতে প্রায় ২০০ মাইল ব্যবধান । ১৪টা দ্বীপ লইয়া
এই দ্বীপপ্ঞ গঠিত । উহার ১টাতে লোকের বাস আছে ।
২টাতে আদৌ বসতি নাই এবং ৩টা কেবলমাত্র সাগরজলের উপর ভাসমান রহিয়াছে । ইহার উত্তরাংশ দক্ষিণকণাড়ার কলেন্টারের অধীন এবং অবশিষ্ট দক্ষিণভাগ কোরন্রের
আলীরাজার শাসনাধীন । উহা মলবার জেলার একটা অংশ
বলিয়া পরিগণিত ।

এখানে একত্র বহসংখ্যক বীপ থাকার লক্ষণীপ শব্দ হইতে লাক্ষাবীপ শব্দের উৎপত্তি হইরাছে। সম্ভবতঃ একসমরে মালবীপ ও লাক্ষাবীপপৃঞ্জ একযোগে শ্রেণীবদ্ধভাবে গঠিত হইরাছিল।
তখন লোকে কুদ্র কুদ্র লক্ষ্মীপ দেখিরা উহার নাম লাক্ষাবীপ
রাখে। আবার অনেকে বলেন, প্রবালসমন্তিযোগে এই বীপের
উৎপত্তি। প্রবাল ও লাক্ষার আক্রতিগত সাদৃষ্ঠ দেখিরা লোকে
ইহাকে লাক্ষাবীপ বলিরা থাকে। অধিক সম্ভব, আরবীর ব্লিকগণ

বঁহকাল হইতে লাক্ষার বাণিজ্যের জন্ত মলবার উপকূলে যাভারাত করিত। তাহারা লাক্ষার নাম হইতেই এই বীপের নাম লাক্ষাবীপ বলিরা বোষিত করিরা থাকিবে। ১৫১৬ খুটালে বার্বোলা লাক্ষাবীপকে মলনবীপ ও মালবীপকে পলনবীপ শব্দে অভিহিত করিয়া গিরাছেন। তুহকং-উল মজাহিদীন্ গ্রন্থে ইহা মলবার-বীপপুঞ্জ বলিরা বর্ণিত হইরাছে।

নিয়ে বর্তমান খীপপুঞ্জলির নাম প্রদত্ত হইল,---দকিণ কণাড়া বা আমীনদীবি দীপাবলী-লোকসংখ্যা আমীনি বা আমীনদীবি 2.00 চেৎলাৎ 499 কদম ₹8¢ কিল্ডান 93. বিত্রা (বসবাস নাই) কোরনুর দ্বীপাবলী-**ত্মগত্তি** 3094 ক্বর্ত্তি 2223 २৮৮৪ অন্ত্ৰোপ কালপেণি >>> 26.60 মিনিকোই (মীনকট) ম্বহেলী (বসবাস নাই)

মিনিকোই দ্বীপবাসীরা লাক্ষাদ্বীপবাসীর স্থায় মলগালম্ ভাষার কথা কয় না। ইহাদের কথিত ভাষার লাক্ষাদ্বীপি ভাষার অনেকটা পার্থক্য ও মালদ্বীপবাসীর ভাষার সহিত অনেক সাদৃশ্র দেখিয়া এই দ্বীপকে মালদ্বীপপুঞ্জের অন্তর্ভুক্ত করা ছইয়া থাকে।

ইহার প্রত্যেক দ্বীপগুলিই প্রবালসমৃষ্টির সংযোগে উৎপন্ন।
সকলগুলিই সমৃদ্রপৃষ্ঠ হুইতে ১০ বা ১৫ ফিট্ উক্ত এবং
ভূপরিমাণ ২ হুইতে ও বর্গমাইল। ইহাদের চারিপার্থে ই
প্রবালন্ধ পর্কতিশিখন দৃষ্ট হয়। পূর্কাংশের প্রবাল গিরি
পশ্চিমের অপেক্ষা কম। পশ্চিম দিকে উহা ৫০০ গল হুইতে
কোন কোন স্থানে এক মাইলের তিন পোন্না ভাগ পর্যান্ত
বিছত। ঐ স্থানের স্বন্ধ-গভীরতা নিবন্ধন জল 'লেগুণের' মত্ত
স্থির। এমন কি, ভীষণ ঝটিকার সমন্ধ সেই জলে নির্ভবে ক্রার
(নারিকেলের ছোবড়া) ভিলান বাইতে পারে। ভাসিরা
নাইবার কোন ভর থাকে না। ভ্রারের সমন্ধ এই স্থির ভাগ
জল পূর্ণ থাকে, ভাটা পড়িলে খাতের মধ্য দিরা জল ক্রমশঃ
নিকাশ হইরা ধার। তথন উহার উপরি ভাগ তক দেখার
এবং সেই নালী দিরা দেশীর বড় বড় নোকান্ডলি চালিত হইরা
লেগুণের বন্ধরাংশে বেখানে অধিক জল আবন্ধ থাকে, সেই

আংশে দরিরা আইনে। উক্ত ছীপসমূহের পশ্চিম ভাগে বেরূপ প্রশান্ত প্রবাদন্ধ গিরি বিভ্যমান, পূর্বভাগে সেরূপ নাই। সেদিকের উক্ত পর্বভগাত্র একেবারে সমুদ্রগর্জে নামিরা গিরাছে।
ভূতবের আলোচনা হারা জানা হার বে, পশ্চিম অপেকাা
পূর্বাদিক্ অনেক পূর্বে গঠিত হইরাছে। এইক ছীপপুঞ্জের
প্রত্যেকের উপরি ভাগে চুণা পাধর বা প্রবাদন্ধান্তর দৃই হয়।
উহার উপর কথন জল উঠে না। এ তার ১ হইতে ১॥০ কুট
পর্যন্ত নোটা। ইহা খনন করিলে নিমে বালুমাটা পাওরা হায়।
কোদালে করিরা এ বালুকা তুলিরা ফেলিলে সেই গর্জে
জলে পূর্ণ হইরা পড়ে। এইরূপে কুপ, তড়াগ ও পুছরিণাদি
ফাটিরা অল উৎপর হইলে কয়ার ভিজান হইয়া থাকে।

এখানে প্রভূত পরিমাণে নারিকেশ বৃক্ষ জন্মে। অন্ত কোন প্রকার সবলি সেরূপ উৎপার হয় না। ইন্দুর ব্যতীত অন্ত কোন চতুপান পশু নাই। ইহারা নারিকেশের পরম শক্র। কচ্ছপ ও মৎক্ত প্রচুর পাওয়া যায়।

প্রায় সার্ক দিশতাব্দ কাল এই দ্বীপপুঞ্জ কোরন্য-রাজ্যের শাসনাধীন রহিয়াছে। ১৫৫০ খুটাব্দে কোলন্তিরী-রাজ ক্ষপ্রসিদ্ধ চিরক্তল এখানকার সন্ধারকে জারগীর অরূপ দান করেন। ইহার জনেক পরে মালদ্বীপের অলভানের নিকট হইতে মিনিকোই দ্বীপ অধিকার করিয়া লওয়া হয়। ১৭৮৬ খুটাব্দে উত্তর শ্বীপ-বাসিগণ বিদ্রোহী হইয়া রাজার অধীনভাগাশ ছিল্ল করিয়া মহিন্দ্ররাজের বপ্রভা শ্বীকার করে। ১৭৯৯ খুটাব্দে কণাড়া বিভাগ ইট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর করতল গত হয়, তদব্ধি এই সকল দ্বীপ কোরন্রের নবাব-জাদীকে আর প্রভাপিত হয় নাই; কেবল ভাহার রাজব্বের ২২৫০ টাকা ইংরাজরাজ কমাইয়া দেন। সেই সমর হইতেই এই শ্বীপমালার দুইটা বিভাগ হইয়াছে।

১৮৫৫ হইতে ১৮৬০ খুটাল প্রান্ত দক্ষণ দ্বীপাংশের থাজনা বাকী পড়ার উহার রাজস্ব-সংগ্রহের জন্ম ক্রাসী নিযুক্ত হয়। তদনন্তর ১৮৭৭ খুটালে পুনরার রাজস্বের জনাদার ঘটলে উক্ত বিভাগ মলবারের রাজস্ব-সংগ্রাহকের (Collector of Malabar) জ্বীনে ছাপিত ইইরাছিল। ইহাতে প্রজাবর্গের মধ্যে অসজ্যোষ্ ঘটে। ইংরাজ গ্রমেণ্ট উক্তর বিভাগে এবং কোরন্রের জ্বালী রাজা শীর অধিকৃত বিভাগে উৎপর ক্যারের উব্ত হইতে রাজস্ব আদার করিয়া থাকেন। তাহারা উভরেই প্রজাবর্গের নিকট নির্দিট খুলো ক্যার ধরিদ করিয়া উপকৃষ্য বাজারে জ্বিক্ত মূলো বিক্রম করেন। মূশধনবাদে যাহা শভা হয়, তাহাই উভরে রাজস্ব বাদে বাণিজ্যের গভাগে বিদ্যা গ্রহণ করিয়া থাকেন। আলীরাজা স্বরং যে অংশ শাসন ক্রেন, তাহার জন্ম ইংরাজ গ্রমেণ্টকে বার্ষিক ১০ হাজার টাকা পেস্ক্স দিল্ল থাকেন।

ইংরাজরাজনাসিত কণ্ডার অধীন বীপভাবে করারের নূল্যের বৃদ্ধি বা হাস হর নাই। ইংরাজ-কর্বচারী চাউল ও লগদ চাকা বিরা উচার হল্য পরিলোধ করিবা কেন। আলীরাভার অধিকৃত ভূতাগে ভারার ঠিক বিপারীত। তথাকার বেশীর নর্কারণাপীকরারের সূল্য করিবা রাজার সহিত নালা গোলবোগ উবাপিত করে। ভারতে রাজার একচেটিরা বাণিজ্যের বিশেব ব্যাবাত বটে। মারিকেল, কড়ি, কছেপের বোলা প্রভৃতি ত্রতে রাজার একচেটিরা বাণিজ্য বাণিজ্য চলিতেছে।

কণাড়ার অধীন ধীণসন্থ একজন সন্মাজিট্রেট ও মুনসেকের ধীরা এবং কোরন্র-বীণপুর আমীন্দিসের অধীনে পরিচালিত হুইতেছে। এখানকার অধিবাসিগণ পাতিপ্রির। কোন বার্বিস্থান উপস্থিত হুইলে তাহারা প্রায়ম্ব অধ্যক্ষের নিক্ট ভাহার মীনাংসা করিবা লব।

অধিবাদিগণ সকলেই মুসলমান । উপজ্লখাসী নাশিলাছিগের ভার তাহারাও পূর্ন্দে হিল্ ছিল । তাহারের মধ্যে এইরূপ একটা কিংবদত্তী আছে বে, তাহারের পূর্নপুরুষণণ থার্দ্দিক
প্রধান রাজা চেরমান্ পেরুমলের অভুসন্ধানার্থ মলরাল হইতে
কর্মান্তিমুখে অভিবান করেন । পথিমধ্যে এই বীপে আট্ ভাইরা
ভাহাল তথা হইলে তাহারা এখানে উঠিত বাধ্য হয় ।
বাভবিকই এখানকার অধিবাসীরা প্রথমে হিল্ ছিল । আছুমানিক ভিন গত বর্ব পূর্ন্দে তাহারা ইসলাম ধর্মে বীক্ষিত হইরাছে। তথাপি তাহারা লাতিগত কএকটা চিরন্ধন প্রথা বিসর্জন
করে নাই । তাহানের ক্যারাই পিতৃসম্পত্তির অধিকারী হইরা
থাকে । প্রক্রেরা বাণিত্য বাপদেশে অথবা রাজকর্শের অবেয়ুক্র
মলবার উপক্লে আলিরা থাকে। বালকেরাও পিতার সক্ষে
বিবেশে আইনে। এই কারণে বীপসমূহে রমণীকুলেরই বাহল্য
দৃষ্ট হর ।

রমনীগণ নির্ভবে নগরে বিচরণ করিয়া থাকে। নৌকা-চালন ব্যতীত তাহারা ত্রী ও পূর্ববের অন্তর্ভের বাবতীর কার্য্য সম্পাদন করে। কেহ মাথার বোমটা দের না। তাহাদের কবিত ভাষা মলরালম্ কিছ আরবীর বর্ণমালার তাহারা লেখা লক্ষা করে। বিনিকোই বীপের ভাষা মালবীপী ও মলরালম্-মিপ্রিত।

লাক্ষাপ্ৰসাদ (বুং) নালারাঃ প্রলাগে ব'রাং। পটকা লোৱ। (রাজনি॰)

লাক্ষাপ্রসাদন (পুং) নাকাং আনাবন্ধতীতি আনাব-পিচ্ রা। বক্তনোত্ত, পর্যার জনুক, পটকা, পটী । (ভাবআন)

রাক্ষারস (গৃং) দাকারাঃ রনঃ। দাকারস বা কাশ। দাকার রন। প্রভত প্রদাদী— শ্ৰভূ বলেনাভ্যা সাদা বোলাক্ত্ৰহাণহিতা ৷

জিনগুণা পরিলাব্য সান্দারস্থিক বিহুঃ 🕯 (পরিভাবাঞ্জ ২ ব॰)

বে পরিমাণ সাক্ষা ভাষার ও তেওঁ জল বিরা গোলাবার জিলপ্তবার পরিজ্ঞত করিরা গইলে ভাষাকে সাক্ষারণ করে।

লাক্ষাবটী (জী) উৰধৰিশেৰ। প্ৰভাগুণালী—লালা, ভেঁলা, ব্যালী, খেত লপরাজিতার ছাল, অৰ্জুন কল ও পুলা, বিভল, নান্দিক ও ওপ্তৰ্থল এই সকল জ্বা একজ চুৰ্ল করিব। এই উৰধ গৃহে থাকিলে সৰ্ল মুবিকাধি গৃহে পালারন করে। (মনেজসামনত পাড়েরোগাবিকাত)

লাক্ষাবৃক্ষ (প্ং) খোনাত্ৰবৃদ্ধ, চলিত জনপাই গাছ। ২ পদাশ বৃহ্ণ। (রাজনি•)

লাক্ষিক (বি) नाकानवर्षी। ২ দাকাভাৰ।

লাক্ষেয় (পুং) শব্দের গোরাপভা।

লাক্ষণ (পুং) > সন্মণের গোত্রাপত্য। ২ সন্মণার্থসংখীর। লাক্ষাণি (পুং) সন্মণের গোত্রাপত্য।

লাক্ষাণের (পৃং) > পদ্মণের গোত্রাপতা। ২ বাদানার সেন-বংশীর একজন রাজা। [সেনরাজবংশ বেধ।]

লাক্ষ্যিক (বি) সম্প্রমনীতে বেদ বা (ক্রুত্থাদিহবাস্থাৎ ঠক্।
পা ৪ । ২ । ৬০) ইভি সম্পা-ঠক্। বিনি সম্প্রাজ্যাস করেন
দা বিনি তেদ করিতে পারেন ।

লাখ, ১ শোৰণ। ২ ভূষণ। ৩ সামৰ্য্য। ৪ নিৰায়ণ। ভূানি' প্ৰথম' অহ' সেট্। লট্ লাখডি। নিট্ ললাৰ। সূঙ্ অলাৰীং। নিচ্ লাখয়ডি। সূঙ্অললাৰং।

লাপ্ত (বৈশব) লক্ষণকের অগব্রংশ ।

লাখনে (গখনে), লজে)), অবোধ্যা প্রদেশের ক্ষিণনরের অধীন একটা বিভাগ। বৃক্তপ্রদেশের হোটলাটের লাসনাধীন। অকা- ২০°৩ হিছে ২৭°২১ ৫ তিঃ এবং জাবি- ৮০°৭ হিছতে ৮১°৫০ পৃঃ নবে।। লাখনৌ, বারাবাধী ও উপাও কেলা লইরা এই বিভাগ ঘটিও। ইহার উভরে হার্নেই ও সীভাপুর কেলা, পূর্কে বরাইচ ও সোভা কেলা, বৃক্তিন কৈলাবাদ, অ্লভানপুর ও রাম্বরেনী কেলা এবং পশ্চিমে গলানহী। ছু-পরিমাণ ৪৫-৪-৫ বর্ষ মাইল। এখানে স্ক্রিন্তে ১৮টী নগর ও ১৬৭৬টা প্রাক্তিয়া

লাখনো, ব্জঞানেশের অন্তর্গত একটা জেলা। তথাকার ছোট-লাটের শাসনাধীন। অকান ২৬'৩০ ইইডে ২৭'৯০০ উঃ এবং আদিন ৮০'৪৪ ইইডে ৮১''১২'৩০ পুঃ বব্য। ভূপারিমান ৯৮০৬ বর্গ মাইল। ইহার উক্তরে হারেছি ও দীতাপুর, পুতর্ক বারাবাদী, যদিশে রারবরেলী এক পিনিলে উপাও জেলা। লাখু দৌ নগর ইহার বিচার-সর্ব। এই জেলার অধিকাংশ স্থানই উর্কার ও খ্রামল শক্তে পরিপূর্ণ।
মধ্যে মধ্যে গ্রাম ও বনমালাবিরাজিত বিস্তীর্ণ প্রান্তরসমূহ রণক্ষেত্রের অতীতস্থতি বহন করিয়া সাধারণের হৃদয়ে বীরকীর্তির
উলোধন করিয়া দিতেছে। স্থানীয় নদীমালার বালুকাময়
সৈকতভূমি ভূর নামে এবং অমুর্কার লোণাজ্বমি উষর নামে পরিচিত। গোমতী ও সাইনদী শাথা প্রশাধা বিস্তারপূর্কাক এখানে
প্রবাহিত আছে। তয়ধ্যে বেহতা, নাগবা, লোনী ও বাকাঁ
নদীই প্রধান।

এথানকার বিশেষ কোন প্রাচীন ইতিহাস নাই। সাহাব্-উদ্দীন্কর্ত্ব বিজিত (১৯৯৪ খঃ) প্রসিদ্ধ কনোলরাজ জয়টাদের রাজত্বকালের পূর্ব্বে লখ্নী নগর প্রতিষ্ঠিত হয় নাই। এই বিভাগে ঔপনিবেশিক রাজপ্তগণের আগমনপ্রসঙ্গ আলোচনা করিলে জানা যায় যে, মুসলনান আক্রমণের পরই এথানে নানা রাজপুত শাথার বসবাস ঘটিয়াছে।

মুসলমান জাতির অভ্যদয়ের পূর্কে জানবার, পরিহার, ও গৌতমগণ এখানে আসিয়া বাস করিয়াছিল। জানবার জাতির ইতিহাস ভর ও বহরাইচ জাতির সহিত সংমিশ্রিত। গৌতমদিগের প্রাচীন কিংবদস্তী অমুসরণ করিলে জানা যায় বে, তাঁহারা কনোজরাজবংশের সহিত সংশ্লিষ্ট এবং বাঈজাতি এদেশে আসিয়াও কনোজরাজের প্রাধান্য স্বীকার করিত। পণবার ও চৌহান রাজপুতগণ দিলীখরের অধীনে এই প্রদেশ আক্রমণের জল্প আসিয়া নানাভাবে উপনিবেশ স্থাপন করে।

পাঠান-রাজগণের আক্রমণে ও রাজ্যজরে গৃহত্রই হইয়া
ধর্মনাশভয়ে অনেকানেক রাজপ্ত পরিবার এখানে পলাইয়া
আইসে এবং তাহারা ক্রমশ: এক একটী স্থান অধিকারপূর্বক
তথাকার প্রভূ হইয়া পড়ে। মোহল, লালাগঞ্জ ও নিঘোহান
পরগণার আমেঠীয়া ও গৌতমগণ এইরপে প্রভূত্বলাভ করিয়াছিল। খুয়য় ১৬শ শতাব্দের মধ্যভাগে শেষগণ অমেঠী পরগণা
হইতে অমেঠিয়াদিগকে তাড়াইয়া দিরা আপনারা প্রভূত্ব বিস্তার
করে। তাহাদের অধীনে ইকোনাবাসী জানবারগণ এখানে
আসিয়া উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিল।

বাজ ও চৌহানগণ বিজ্নোর অধিকার করে। তদনত্তর বাজগণ কাকোরী অধিকার করিয়া আপনাদের প্রভাব বিভার করিয়াছিল। জানবার ও রাইকবাড়গণ মোহন-ওরদ্ নামকছানে আদিরা বাদ করে। অতংপর নিরুজ, গাহরবাড়, গৌতম ও জানবারগণ মলিহাবাদ পরগণার জনশং বিভ্ত হইয়া পড়ে। প্রণবার ও চৌহানগণ মহোনা আজনণ ও অধিকার করিবার প্রান্ধরারগণ উত্তরের কুসাঁ ও দেবা আর করে। তদনত্তর ভাহারা কুসাঁ হইতে কল্যাণী নধীর উত্তর তীর পর্যন্ত ভূভাগ

অধিকার করিয়াছিল। পরে বাল্পগণ ভাষাদের নিকট হইতে দেবা অধিকার করিয়া লয়।

ইহার পর মুসলমানদিগের অভিযান আরম্ভ হয়। ১০৩০ খুঠান্দে সর্বপ্রথম সৈয়দ মসাউদ্ এই হান আফ্রেমণ করেন, কিন্ধ তিনি এখানে মুসলমানপ্রভাব বিত্তার করিতে পারেন নাই। তবে কোন কোন পরগণার প্রাচীন নগরাদিতে মুসলমানপ্রণর ভয়প্রার কীর্তি নিদর্শন দেখিরা মনে হয় যে, তিনি যে যে ছান দিয়া এই জেলা মধ্যে গমন করিয়াছিলেন, তথার তাঁহার অফ্রেচরগণ কর্ত্বক মহল্লাদি নির্মিত ইইয়াছিল। মোহনলালগন্ধের নগ্রাম ও অমেঠা গ্রামে তিনি ছাউনী করিয়া সদলে কিছুদিন বাস করেন। স্থিখ নগরে তাঁহার সদর ছিল। সেনাদল ছাউনী পরিত্যাগ করিবার পর, সন্তবতঃ আর সদর হইতে তথার আসিয়া বাস করিতে সাহসী হন নাই।

অনন্তর শাহাবৃদ্দীনের অধিকারকালে ১২০২ খুষ্টান্দে থিল্ড্রীপুরুব মহল্পদ-ই-বণ্ তিয়ার এই স্থান আক্রমণ করেন। উহার সাময়িক কোন মুসলমানকীর্ত্তি এখানে নাই। অধিক সম্ভব, তিনি মলিহাবাদের নিকটবর্তী বখ্ তিয়ার নগর প্রাতিষ্ঠা করিয়া এই নগরে একটা পাঠান উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিলেন। কিন্তু সেই পাঠানগণ কাকোরীর বাঈ-য়ালা সাখ্নার বিহুদ্দে বৃদ্ধ করিয়া এখানে পাঠানপ্রভাব বিতার করিয়া অঞ্জ্র উপনিবেশ স্থাপন করিছে পারে নাই।

গৃষ্ঠীর ১৩শ শতাব্দের মধ্যভাগ হইতেই এখানে মুসলমানের উপনিবেশ প্রভিন্তিত হয়। ঔপনিবেশিকের মধ্যে পর্গণার ফ্রস্মনীরবাসী শেখগণ ও সলিমাবাদের সৈর্দগণই প্রথম।

অসমস্তর কিদ্বাড়ার শেখগণ আসিয়া প্রভাব বিভার করে।
ইহার পর, অক্তান্ত মুসলমান-সম্প্রদার কুসী ও দেবার মধ্য দিয়া
এখানে আসিয়া নানাস্থানে বাস করিয়াছিল। এখানে প্রবাদ
এইরূপ যে, ঐ মুসলমানগণ সত্রিখ্ হইতে এখানে আইসে।

সত্রিখ্ হইতে মুসলমানগণ উপর্গারি এই জেলার নানাক্বান আক্রমণ করিরাও হারী প্রভুত্ব লাভ করিতে পারে নাই।
তাহারা সালর মসাউদের সেনাসতি লাহ বেগের অধীনে প্রথমে
দেবা নগর আক্রমণ করিরা ক্রমলঃ লাখনৌ অভিমুখে
আসিরা মন্তিরাওন পর্যান্ত অপ্রসর হইয়াছিল। এখানে
লাহবেগ হিল্পগণের নিকট পরাভূত ও নিহত হন। নিকটবর্তী
একটী প্রামে তাহার সমাধিমন্ত্রির বিভ্রমান আছে। উহার
চূড়ার উচ্চতানিবন্ধন লোকে উহাকে নৌ-গলালীর বলিরা
অভিহিত করে। অনত্তর, এখানে স্বল্যান্য পাল্যকর্তা
নিব্তুক হইবার পর, ক্রমলঃ নেবাস, কুর্মী ও লাব নৌ হইতে
কাকোরী পরগণা পর্যন্ত বিভূত স্থানের প্রামাধিতে স্ব্যুক্তানের

উপনিবেশ ঘটে এবং ডাহার। ক্রমণ: এক একটাবাৰ অধিকার করিরা ততন বিভাগের অহাধিকারী ক্রমণা গুটাত হয়।

ছানীর প্রবাদ হইকে জালা বাছ বে, রাজপুত ও বুসলমান উপনিবেশিকগণের পূর্বে এখালে তর, আর্থ ও পালী নামক নিরপ্রেণীর কওকার আজির বাল ছিল। অবোধার প্রথাকানী রাজগণের প্রভাক বিশ্বর মার্হকে, ভরগণ এই প্রদেশ কুঠন করে। এখানকার কহন আজকে আরি কার্যান্তরিগণ তপভার নিরপ্ত পাকিকেন, এইজভ কোন কোন কন ছানীর লোকের নিরপ্ত পাকিকেন, এইজভ কোন কোন কন ছানীর লোকের নিরপ্ত পার্বির প্রথানান বিশ্বর কবির কানে বালাকের প্রথান নাম এখন নগরন্ধণে পরিণত হইলেও সেই সেই ববির কানে বাধারণে প্রশিক রহিরাছে। মন্তিওয়াওন্—মত্তল খবির নামে, বোহন—মোহনগিরি পোখামীর নামে, কগোর জগদেব যোগীর নামে এবং দেবা—দেবল খবির নামে থাত হয়। তর্নজ্যাণ সেই সকল খবির আজন স্থান করিয়া খুটীর ১২শ শতাকে সই মনীর তীর পর্যন্ত বিক্তিপি ভূতাগে শাসনস্থ পরিচালিত করিয়াছিলেন।

ইহাল্প কিরাত নামক পার্কত্যন্তাতির স্থার তরাই এদেশ হইতে এখানে আগমন করে। এখনও তরতিহির ভয়াবশেষ এখনকার নামা গ্রামে নিপতিত রহিরাছে। কনোজ-রাজবংশ অধংপতনের পূর্বে ভর্মিগকে উৎসাদন করিতে প্ররাস পাইরাছিলেন। রাজা জয়টাল অলা, উদন ও বণাক্ষর রাজপুত জাতির সাহায্যে বিজনোরের নিকটছ নাখবদ আক্রমণ করেন। তিনি এখানকার পাসীরাজ বিগ্লীকে পরাজিত করিয়া সদ্বি। ও দেবা পর্যান্ত অগ্রসর হন। পাসী ও অরখ্বাণ মজিহালা এবং কাকোরী ও বিজ্লোরের দক্ষিণে সইতীর্বভা সাইনকী পাতীক করিয়াছিল। ইহারই পূর্বে ভরজাতির অধিক্রমানিপত্য বিভার করিয়াছিল। ইহারই পূর্বে ভরজাতির অধিক্রমানিপত্য বিভার করিয়াছিল।

পালী ও জন্তথ্যণ এখানকার আদিক অধিবালী। ইছারা ছর্ছার্থ ও মহাপ। জন্তান্ত অধিবালীকে মন্ত্রপাদেন ভূলাইরা জাহানের সর্বাহ্য অপহরণ করিত। ভরজাতির সক্ষম্পত্র পূর্বাপের ইদ্ধাপ একটা কিংবদন্তী প্রচলিত আছে। ১১৮ খুঠাকে রাজা তিলকটাল হইডেই এখানে ভরন্নাজবংশের প্রভাব বিতৃত হয়। বরাইচ নগরের জাহান্ত রাজ্যধানী ছিল। তিনি দিলীপতিকে পরাভূত করিরা বিশ্বী অধিকার করেন। তাঁছার বংশে ৯ জন রাজা দিলী হইজে অবোদ্ধান্ত পর্বাহ্য পর্বাহ্য রাজ্যখানন করিরাছিলেন। এই কলের রাজা গোকিক টাবের মহিবী তীমাদেবী রাজ্যখানন করিছা ১৯৯০ খুটাকে কুরুত সমান্ত্র খীর সম্পর্কি আপন ধর্মগুরু হরুগোবিক্ষকে লান করিছা নান। উক্ত

লাখ নৌ নগৰ ও সেনাবাস, কাকোরী, মলিকাবাদ ও অমেঠী <u>अथानकाइ ध्रामा नगद्र ७ सानिकारकटः</u>। द्रवि, शांत्रिक ও হৈমন্ত্ৰিকামি নানা শক্ত এখানে উৎপন্ন হইরা খাকে। নৌকাশ্যম এখানকার বাণিজ্য বড চলে না। অধিকাংশই রেলগথে ও পাক। রাতার গোলকটে পরিচালিত হইডেছে। শীতাপুর, দৈলাবাদ ও কাণপুর যাডারাতের জন্ত বে পাকা রাভা আছে, উহা প্রায় ৫ শত মাইল লখা, এতভিন কুনী, দেবা, স্থলতান-পুর, গোঁদাইগঞ্জ ও আমেঠা হইয়া স্থলভানপুর; মোহন-লালগঞ্চইরা রাম্বরেলী; সই নদীর ফুলর সেতু পার হইয়া মোহন ও উণাও জেলার রম্মলাবাদ ও মলিহাবাদ হইতে হার্দোই জেলার শাঙিলা নগর পর্যান্ত বিশ্বত। এই সকল রাভা ধরিয়া ৰাখ্নৌ নগরে আসা যার। এডভিন্ন কএকটা রাভা এখান হইতে অস্তান্ত জেলার প্রধান প্রধান নগরে গিয়াছে। তন্মধ্যে মহোনা হইতে কুৰ্মী ও দেবা অতিক্ৰম করিয়া বারাবাকী পর্যান্ত. গৌলাইগঞ্জ ও মোহনলালগঞ্জ হইরা কাণপুরের রাজবন্ধ পর্যান্ত বনি সেতু হইতে মোহন ও ওরদ পর্যন্ত, সই নদীর পাকা পুল পার হইয়া যোহন-প্রয়সের উত্তর হইতে রহিমাবাদ পর্যান্ত এবং শাধ্নী হইতে বিজনৌর পর্যান্ত কর্মনী রাভা প্রধান। জেলার উপরোক্ত কর্মনী রান্তাই উত্তমরূপে বাধান। বর্ষাকালে পথ ধারাপ হর না। সকল ছানেই ুন্দীর উপর পাকা সেতু মিশ্রিড আচে**া**

অবোধ্যা-রোহিলগও-রেলপথ এই জেলার মধ্যে বিহুত।
ইহার জিনটা লাথা পূর্ব্ব-দিলপপশ্চিম ও উত্তরপূর্ব্বে গিরাছে।
একটা লাখনো হইতে বারাবারী ও ধর্ববা-তীরবর্ত্তী বহরামঘাট
শর্মক গিরা কৈনাবার হইতে বারাপদী পর্যান্ত আসিরাছে।
ক্রাক্ত গিরা কেনাবার হইতে বারাপদী পর্যান্ত আসিরাছে।
ক্রাক্ত গাখনো হইতে কাণপুরু এবং শেবোকটা কাকোরী
ক্রাক্তবার লগর হইরা হার্দেই লগর অভিক্রমপূর্ব্বক শাহক্রাক্তবার্দ্বন্দ্র বরেলী ও মোরালাবার পর্যন্ত গিরাছে। এখানকার
বাশিজ্যের লখনো নগরই সবিশেব প্রসিদ্ধ। অপরাপর নগরে
ক্রাক্তবাশিজ্যকার্যা সরিচাণিত হইরা থাকে।

লগ্নী সহর ব্যক্তীত কাকোরী, মলিহাবার, আমেঠী, বিজনৌর, চিনহাট, আমানীগঞ্জ, ইত্যোঞ্জা ও গোঁসাইগঞ্জ নগরে বিউনিদিপালিটী হাশিত হওরার নগরের তীর্ত্তিসাধিতহইরাছে। ১৮০১, ১৮০৬, ১৯০৬, ১৮০৬, ১৯

ত উক্ত জেলার উপৰিভাগের অন্তর্গত একটা পরগণা লাখনোঁ সহরের চতুপার্থ লইরা গঠিত। ভূপরিমাণ ১৬৫ বর্গমাইল। লাখনোঁ নগর বাতীত এই পরগণার মধ্যে উলারিরাওন্,
জাগ্যম, চিন্হাট্, মহাবলিপুরওধাবাড় নামে পাচটা নগর আছে।
লাখনোঁ লিখনোঁ বিলিপ্নে পানর), অবোধ্যা প্রদেশের রাজধানী।
সোমতী নদীর উত্তর্গলে অবস্থিত। অকা° ২৬°৫১৪০° উঃ
এবং জাখি° ৮০°৫৪১০° পৃঃ। কলিকাতা হইতে এই নগর
৬১০ মাইল এবং বারাণ্সী হইতে ১৯৯ মাইল দ্রবর্তী।
নগর ভাগ ও সেনানিবাসের লোকসংখ্যা সর্কাসমেত প্রায় ২
লাক ৮০ হাজার। নগরের ভূপরিমাণ ১৩০ বর্গমাইল এবং
সম্ত্রপৃষ্ঠ হইতে ৪০৩ ফিট উচ্চ।

ইংরাজাধিকত ভারতীয় নগরসমূহের মধ্যে ইহা চতুর্থ।
সৌবমালা ও বিপণিসৌন্দর্যো ইহা অপরাপর নগর অপেকা
মনোরম; কেবল কলিকাতা, মাল্রাক্স ও বোদাই দহর
ইহার স্থাপত্য বৈভবকে অতিক্রম করিয়াছে। মুসলমান-রাজত্বের লেষ সময়ে ইহা উত্তরপন্চিম ভারতের রাজধানীয়পে পরিগণিত হইয়াছিল। ইংরাজাধিকারে আদিবার পরও এথানে

তবিতাপীর বিচার সদর প্রান্তিত্তি থাকে। এবানে সভাতা ও উন্নতির পরাকার্চা যথেইই বিভাগন আছে। সদীতবিভাগর, ব্যাক্তরণ-শিকাস্মিতি ও ইস্লামধর্ণের আবোটনার কভ কঞ্চী। সাম্রেদারিক বিতাশন অভাপি হানীর সমৃত্তির পরিচর নিতেতে।

গোমতী নলীর উত্তর তীর্ভ্বি নানা সৌধ্যালার পরিবৃত্ত
হওরার নগরের সৌন্দর্যা অতীব মনোরম হইরাছে। নগরসীমা
অতিক্রম করিলে, নলীতীরে দ্রব্যাপী উন্নানহাটিকাসমূহ
ছানীর সৌন্দর্ব্যের নাত্রা আরও বর্দ্ধিত করিতেছে। নগরের
পারাপার ইইবার কল উভরতীরম্পনী চারিটা সেকু গোমতীবক্ষে
ভাসমান আছে। উহার ছইটা হানীর মুসলমান রাজগণের
বহে এবং ১৮৫৬ খুটাকে ইংরাজাধিকারে আসিবার পর,
ইংরাজরাকের উন্ভাগে অপর ছইটা সেকু নির্দ্ধিত হইরাছিল।
নদীবকে নবনির্দ্ধিত সেকু অভিক্রম করিলে আর জ্যোৎলাকে
সমৃত্রাসিত মর্ম্মরারিভ হরেয় হর্ম্মানালা পৃষ্টিগোচর হয় না।
তথন ক্রমণ:ই ফলফুলভারাবনত প্রামল-বৃক্ষরাজি সমাণ্ড উন্থানবাটিকাই সাধারণের মনোরঞ্জক হইয়া উঠে। এইরূপে কভকলুর
নদীবকে অভিক্রম করিলে মবাব আগক উন্দোলার প্রাচীন



লাগ্নো দেছু

প্রস্তরদেকু দৃষ্টিগোচর হয়। উহারই বামভাগে মহিভবন হর্ণের মর্বহৎ প্রাচীর, তাহার অভান্তরে লক্ষণ-টলা নামক প্রাচীন নগরভাগ। ইহারই পার্ধদেশে নানা অট্টালিকাদি-পরিশোভিত আসক্ উদ্দোলার প্রতিষ্ঠিত প্রাস্থ ইমামবাড়া। প্রধান হইতে কিছুদ্রে ইতিহাসপ্রসিদ্ধ ক্ষমা-মস্ক্রিল উচ্চচ্ছা ছুলিয়া মেন নগরভাগ পরিদর্শন করিছেছে। ইহারই সনিকটে নদীর তীরে বেসিডেলী ভবনের ভয় প্রাচীর। তথাকার স্থতিকৃশ প্রিলোগানী বিদ্ধান করিছের ক্রমে ১৮৫৭ খুগান্তের প্রিক্রাহকণা ও ইংরাকের বীর্দ্ধকাহিনীর পরিচয়

দিতেছে। এই স্বৰিষ্ঠ প্ৰাঙ্গণের সন্মুখডাগে নদীলৈকতোপরি ছাণিত ছামজিল লামক বিখ্যাত প্ৰাসাদ। ঐ প্ৰাসাদো-পরিছ খর্ণমন্ত্র কুর্যালোকে প্রতাবিত হুইরা দ্রন্থানবাসীকেও প্রাসাদ্ভভার উক্ষলা প্রদর্শন করিতেছে। ইহারই কিছু দ্বে বামজিকে ছুইটা মসজিল। উহারই স্থা বিলা কৈসরবাগ নামক প্রাসাদ। এখানে অবোধ্যারাজকানের সিংহাসনচ্যুত বংশক্ষরণ বাস করিতেন।

মোগল-সারাম্ব্যের শেষ সময়েও অবোধারি উলীরকংশের প্রাথান্তসময়ে, লক্ষ্মে রাজধানীরণে প্রতিষ্ঠা লাভ করে। উক্ত মুসলমান রাজবংশ বথাক্রমে রোহিলবণ্ড, আলাহাবার, কাপপুর, গাজিপুর ও এই বিভাগে শাসন বিভার করিরাছিল। তাহার পূর্বে সরাদং থাঁর বংশপরস্পরা এই নগরে আধিপত্য বিভার করে। তাহার পূর্বে এখানে ব্রাক্তাও কারস্থগণের প্রভাব বিভাত ছিল। মজিভবন কর্ণের প্রাকারমধ্যক লক্ষণটালা নামক উচ্চভূমিই সেই প্রাচীন জনপদের নিদর্শন। প্রবাদ, এই হানে অবোধ্যারাজ রামচক্রের ভাজা লক্ষণ শেষনাগের পবিত্রতীর্থের নিকটে স্বনামে লক্ষণপুর নগর হাপন করিয়াছিলেন। সেই পবিত্রতীর্থের উপর মোগলস্মাট্ অরলজেব একটা মস্জিদ স্থাপন করেন, কিন্তু লক্ষণপুরের পবিত্র স্থতি আজিত লক্ষোবাসীর ক্ষর হাইতে অপক্তত হর নাই।

শেখ বা লথ্নোর শেথজাদা নামে গুসিদ্ধ মুসলমান রাজ-ষংশই প্রথমে অযোধ্যা জন্ন করিয়া এথানে প্রতিপত্তি লাভ করেন। তদনস্তর রামনগরের পাঠানগণ গোল-দর্বাঞ্চা পর্যান্ত মুসলমান শাসনদও পরিচালিত করিরাছিলেন। ইহার ঠিক পুর্বেই শেণ-দিগের অধিকারদীদা। তাঁহারাই ধ্বস্ত প্রায় মক্ষিভবন চূর্গ নিশ্মাণ করাইয়াছিলেন। ক্রুমে ঐ চূর্পের চতু-স্পার্থে জনসমাগম হইতে থাকে। মোগলসমাট অকবরশাহের রাজন্সময়ে উহাই লাথ্নো নামে গ্রাসিদ্ধি লা কেরে। রাজা টোডরমলের জরিপ-বিবরণীতে গোমতী-তীরবর্তী সমৃদ্ধির উলেখ আছে। আইন-ই-অকবরী পাঠে জানা যায় যে, এথানে মুসল-মান সাধু শেথ মীনা শাহের সমাধিমন্দির ছিল, লোকে তাঁহার পুজার জন্ত এথানে আসিয়া ভজনাদি করিত। তৎকালে এখানে বচুসংখ্যক ত্রাহ্মণের বাস ছিল, সমটি অকবরশাহ তাঁহা-দের ভূষ্টিবিধান জন্ত লক্ষ টাকা দিয়া বাজপেয় যজের অন্তর্চান করেন। তাঁহার পূর্মের এইছানের বিশেষ কোনরূপ সমৃদ্ধি ছিল না। তাঁহার উদবোগে ও পরে সয়াদংআলী খাঁ ও चामक् উत्कोगात चधावमात्त्र এर नगततत উछत्ताछत जीतृकि সাধিত হইয়াছিল। প্রাচীন নগরভাগ যেথানে বর্তমান চক ও চক্ষের সংলয় নগরের দক্ষিণাংশ সম্রাট্ অকবর পাহ বিশেষ যত্ত্বে নিশ্বাণ করান। তাইন তিনি অহান্ত ভানের অল-সোইব সম্পাদনার্থ বিশেষ অর্থব্যর করিরাছিলেন। তৎপুত্র মীর্জা সেলিম শাহ (ভাহানীর) বর্তমান হর্ণের পশ্চিমপার্থে মীর্জমণ্ডি স্থাপন করিয়াছিলেন। তদনস্তর অযোধ্যা-রাজবংশের পূর্বে আর কোন মোগলসম্রাট্ট প্রাসাদাদি স্থাপন হারা এই नगरत्त छे ९ कर्य-माथन करतन नारे।

নৈশাপুরের স্থপ্রসিদ্ধ পারসিক বণিক্ সরাদৎ বাঁ বাণিজ্য-ব্যপদেশে ভারতে উপনীত হইরা যুদ্ধ ব্যবসারে স্বীর সোভাগ্য কার্জন করিয়াছিলেন। তিনি মোগল-স্ত্রাটের অন্তথ্যহে ১৭৩২ খুটাবে অবোধ্যার শাসনকর্তা নিযুক্ত হন এবং লাখ্নে।
নগরে স্বীর রাজপাট-স্থাপন করেন। তদবধি অবোধ্যার এই
স্বাধীন রাজবংশের প্রতিষ্ঠা হয়। এই বংশই পরে অবোধ্যার
উলীর-বংশ বলিয়া খ্যাত হইমাছিল।

সয়াদতের বংশধরগণ রাজ্যসমৃত্তিতে গৌরবাহিত হইরা লাখনৌ নগরী বিচিত্র চিত্রসম্পন্ন নানা অটালিকার ভূষিত করিরাছিলেন। আয়ং স্থানার সরাবং ধাঁ মন্দ্রিভ্রনের পশ্চায়ারে একটা সামান্ত অট্টালিকার বাস করিতেন। হুর্নের দক্ষিণ-পশ্চিমে যেখানে ইংরাজরাজের অস্ত্রাগার (orduance stores) প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে, সেই স্থানে এখানকার সেধরাজ্ব-গণের নির্দ্ধিত হুইটা স্থপ্রাচীন অট্টালিকার নির্দ্দেন পাওয়া যায়, সয়াদং ধাঁ স্থানার হইয়া আসিয়া উহার একটা ভাড়া লন। তিনি মাসে মাসে উহার নির্দ্ধিত ভাড়া দিতেন, কিন্তু তাহার বংশধরগণ আর অধিকারীদিগকে ঐ অট্টালিকার কোনরূপ থাজানা দেন নাই। সফ্রর জঙ্গ ও স্ক্রাউন্দোলা ঐ অট্টালিকার একখানি বন্দোবন্তী খত লিখিয়া মাসিক ভাড়া ধার্য্য করিয়াছিলেন বটে, কিন্তু তাঁহারা তাহা কার্য্যে পরিগত করেন নাই। অবশেষে নবাব আসফ্ উন্দোলা ঐ অট্টালিকার রাজসম্পত্তি বলিয়া বাজেয়াপ্ত করিয়া লন।

সন্নাদৎ খাঁ প্রথমে যথন এখানে আসিয়াছিলেন, তথন সেখগণ উপর্যুগরি তাঁহার প্রতিদ্বিতাচরণ করিতে কাতর হন নাই, অবশেষে তাঁহারা সেই বীরবরের বলবীর্যা দেখিয়া নিজে নিজেই বলীভূত হইতে বাধ্য হন। মৃত্যুর পূর্ব্বে সন্নাদৎ খীর শক্রকুল নির্মুল করিয়া অযোধ্যাবিভাগে একটা স্বাধীন জনপদ প্রতিষ্ঠা করিয়া যান। বৃদ্ধবন্ধসেও তাঁহার বলবীর্য্যের কিছুমাত্র হ্রাস ঘটে নাই। হিন্দুগণ তাঁহার যুদ্ধকোশলে প্রাক্তিও ভীত হইতেন। প্রসিদ্ধ হিন্দুবীর ভগবস্ত সিংহ বীচি তাঁহার সহিত দ্বন্ধুক্ত নিহত হন। তাঁহার অধীনস্থ সেনাদল ও অধ্যক্ষের শিক্ষাগুণে তৎকালে বিশেষ প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছিল।

তাঁহার স্বামাতা ও উত্তরাধিকারী নবাব সফ্দরক্ষ
(১৭৪০ খুটান্বে) দিল্লীতে উত্তরাধিকারী নবাব সফ্দরক্ষ
(১৭৪০ খুটান্বে) দিল্লীতে উত্তরাধিকারী দিলুক ছিলেম। তিনি
বাইসবাড়ার ছর্ম্বর বাইজাতিকে ভীত রাধিবার জন্ম নগরের
ত মাইল দক্ষিণে জলালাবাদ ছর্ম স্থাপন করেন এবং লক্ষণপুরের প্রাচীন ছর্মের পুনঃসংখার করিয়া মন্তিভ্যন নাম দেন।
ঐ হর্ম বাটিকার চূড়ানেশে একটা মৎক স্থাপিত থাকার উহা
মন্ত্রিকান বা মটাভ্রম নামে খ্যাত হয়। তিনি নগরগাত্রবাহী
নদীবক্ষে ছুইটা সেতুনিস্থাপের উদ্বোগ করিয়াছিলেন,

কারণ ডংপুত অলা উদ্দোলা (১৭৫৩ খুঃ) বর্রার বৃদ্ধের পর, কৈলাবাদেই বাস করিতেন। ডিনি লাখ্নৌ লগরে না বাকার নগরের কোনরূপ বেটিব সাধিত হয় নাই।

আনাধার এই নবাববংশের প্রথম ডিনজন রাজাই বোদা ও প্রসিক রাজনৈতিক ছিলেন। তাঁহারা ইংরাল, মহারাষ্ট্র ও রোহিরা এবং নিরীর প্রথমন প্রথম জনাছিলেন। বিকলে মুক্ত করিরা বিশেব খ্যাতি জর্জন করিরাছিলেন। নিরস্তর বৃদ্ধবিগ্রহে লিশু থাকার তাঁহারা রাজ্যশাসন ব্যতীত রাজ্যের হাপতাশিরের কোনরূপ ঔৎকর্ম সাধন করিতে পারেন নাই। কেবলমাত্র সামরিক বিভাগের উপযোগী ত্রমালা, কৃপসমূহ ও সেতু প্রভৃতি নির্মাণে তাঁহাবের চিত্ত আরুই ভিল।

চতুর্থ নবাব আসক্ উন্দোলা হইতে লাখুনোর রাজনৈতিক - চিত্ৰ পরিবর্ত্তিত হটল। তিনি ইংরাজরাজের বন্ধত লটয়া সুখী হইলেন। ইংরাজ-সেনার সাহায্যে তিনি রোহিলখঙ অধিকার করিয়া বারাণ্দী পর্যন্ত আপনার শাসন বিভার कतिएक मटाई इटेरनम। धरेकरण मम्ब मध्य कतिहा তিনি মনে মনে খীর শক্তির শুরুত্ব উপলব্ধি করিয়া লইলেন এবং বিশেষ উন্থমসহকারে ও বছল অর্থব্যক্তে নানা সেতু ও মসজিদ এবং লাখনৌ সহরের গৌরবকীর্ষি ও ছাপতা-বিভার প্রকৃষ্ট নিদর্শন প্রাসিদ্ধ ইমানবাড়া নামক প্রাসাদ ক্লাপন করিরাছিলেন। এই প্রসিদ্ধ স্ট্রালিকা দিল্লী ও সাগ্রার ইমাম্বাড়ার ভার বাঁটা মুসলমান ধরণে সঠিত না হইলেও 'ক্লমিদরবারা' নামক মসজিবের সংলগ্ন থাকার সৌন্দর্যোর পরাকাঠা লাভ করিয়াছে। ইহার গঠন সাধানিধা ও গান্তীর্ঘ্য-পূর্ব, ইহাতে গ্রীক ও ইডালীর গঠনের অনেক সৌসাগৃত্ত আছে। ১৭৮৪ শ্বন্তাব্দের মহামারীতে অরাহারক্রিট প্রকাবর্গকে পারি-প্রমিক বিয়া তবিনিমরে এই ইমাশ্বাড়া নির্দিত হইয়াছিল। এবার, অনেক মালগণ্য নগরবাদী অর্থাভাবে ইযামবাড়া-নির্দ্ধাণকার্য্যে যোগদান করিয়াছিলেন। ভাঁহাদের পারিপ্রামিক अधीव बार्ख क्षमान क्या रहेक, काश्र विवासाल अक्य বেক্তর লইকে আনিলে অপরের চিনিবার সম্ভাবনা ছিল। এ क्योगिकाड अवधी धारकाई 201 किहे × 11 किहे नवा, উহাতে প্ৰাৰ এক কোট টাকা ব্যৱ হয় ৷ এই গৃহের দেওবালে চাকুটিকাশানী ও প্রক্রাসক্ষা বে সকল চাক্রশির চিত্রিত হইয়া-জিল, একবে কেবল ছোৱার চিত্তনাত মহিরাছে, নুদলবা স্থান-🛍 🛪 অপক্ত হইরা সারাব্যানর 🗗 বহিতু ত হইরা পাড়িবাছে। স্থান ক্ৰিনীয়াৰ মধ্যে থাকাৰ ইংয়ালবাৰ একংশ ভাহাতে क्षाति क्षात सम्बा कतिहास्तत । सामार्थात दिसा धरे ८९, আইলিকার কার্ডের কোনজ্ঞশ বিজ্ञ খোরিত হর নাই । কার্ডসিন সাহেব ইহার ধিলানাদির বিশেষ প্রাথসা করিয়া সিরাছেন।

ইমানবাজা বাতীত রুনীদরবাজাও আদক্ উর্জোলার একটা প্রধান কীর্তি। তৎপরে হুর্গের পশ্চিমন্থ মনীতীরবর্তী বৌলংগানা নামক প্রানাম। উহাই পরে ইংরাজরাজের রেনিডেলীজে পরিপত ইইরাছিল। গোমতী-তীরবর্তী এই প্রবৃহৎ অন্ধিপত ইইরাছিল। গোমতী-তীরবর্তী এই প্রবৃহৎ অন্ধিপত ইইরাছিল। গোমতী-তীরবর্তী এই প্রবৃহৎ অন্ধিপত বার্নার একটা গোমতালার নামক লানা বানতবন লানা-তরিত করিলে, এই অন্তানিকার ইংরাজ রেনিডেন্টের বাসক্তমন নির্দিষ্ট হর। মগরের মহির্তাগে ও ননীর অপরণারে নবাব আসক্ উন্দোলা-প্রতিষ্ঠিত বিবিরাপুর নামক প্রানাম নবাব বাহাছর বৃগরার বহির্গত হইলে প্রথমে এই প্রানা-তবনে আসিরা বাস করিতেম। এতারির নগরের অপরাণর স্থানেও এই নবাবের উন্বোগে নির্নিত আরও অনেক অন্তানিকা বিভ্যান আছে। সেওলির গঠনপারিপাটা ও দ্ভা-গাভীর্তা লাখনৌ নগরের মহন্ত আপন করিতের।

এই সময়ে সেনাপতি ক্লড্ মার্টন্ Martiniere নামক

স্থাসির বিভালর স্থাপন করেন । উক্ত প্রুহৎ উভানবাটিকা

সম্পূর্ণরপ ইডাইট্র পিনে বিনির্মিত হইরাছিল। পাছে মুনলমানরাল ঐ অটানিকা হত্যাত করিরা লনা, এই তরে তাহার

মধ্যে স্থাপরিতার অন্থি সমাহিত করা হর, কিছ সিপাহীবিদ্রোহের
সমর : মুনলমানগণ নেই সমাধি পুঁড়িরা অন্থিলনি বাহিরে

ছড়াইরা কেলে।

व्यानक् छेटमोनात बांबक्काटम नाथ्टनी-बांबक्रव्यात बांक-জনকের শীর্বসীমার উরীত ব্টবাছিল, এই সমরে রাজাসীমার वृद्धि गरकारत ताबरचत्रक सर्वहै वृद्धि चरित्राहित, जनान আস্ফ উন্দোসা বীর ব্যাজ্তা ও জাক্তমক্ষের ব্লব্র্ডা ইইরা রাজকোবে শক্ষিত সেই প্রভুত রাজস্ব প্রাচ্যসম্ভাৱ উপকরণ-সংগ্ৰহে ব্যন্ত করিয়া গিরাছিলেন। পাশ্চাক্তা ঐতিহাসিকগণ বলেন বে, মুরোপে বা ভারতবর্বে আসক্ উদ্দৌলার গৌরব্যয় ৰীৰ্ষিক্লাপের সমক্ষতা বেধাইতে কোন রাজাই এতাধিক ব্দৰ্থবাৰে বৰাকো স্থাপভাগোৱৰ দন্দাধন করিতে পারেন নাই। ভাঁহার উচ্চাভিলাৰ জাঁহাকে সাধারণ সীমার বহিত ভ করিছা-ছিল। তৎকালীন আনিছ মুন্নমানদাল টিপু ভুলভান বা নিজাম বাহাতে ৰক্ষী বা হীরকাদি সম্পত্তিকে জীৱার ভার ঐপর্যান্ত্রাল না रदेरच शांदबन, कविवद कीवांत विरमन गमा हिना। कीवांत বিখ্যাত পুত্ৰ উজীয় সানী বাঁর (বিনি নিঃ চেরির জ্যাপরাধে ह्नाव हर्ष तथी शांकिश क्यमीला तक्क्ष करास) क्लिक तमा-বোদে ভিনি বরণারীছিণের সঙ্গে ১২লছ বন্ধী পাঠাইরাছিলেন।

তাহার যুবক পুত্রের গাত্রে তৎকালে প্রার ২০লক টাকার হীরা-কহরতের অলভার শোভিত হইরাছিল।

তাহার এই অত্ন সম্পত্তি তিনি যে ভারতীর প্রজার রস্ত-শোবণ বারা সংগৃহীত করিরাছিলেন, তাহা Tennant এর বিবরণী পাঠে জানা বার। তিনি বাধ্নৌ সম্বন্ধে নিধিরাছেন— "I never witnessed so many varied forms of wretchedness, filth and vice," অর্থাৎ এরপ তীবণ পাপকলক-কানিমানিশ্র নগরী আমি আর কুরাপি দেখি নাই। তৎকালে খোলামিকো আল্মানের শাসিত প্রদেশ ভির আসফ্ উদ্দোলার অধিকৃত সমগ্র অবোধারাক্য ক্ষণানভূমে পরিণত হইয়াছিল।

আনক্ উদ্দোলার পুত্র সরাদং আলী খাঁ (১৭৯৮ খুঠান্দে)
ইংরাজরাজের আহগতা খীকার করিরাছিলেন । তিনি ইংরাজসেনার আশ্ররছারার নির্কিছে নিজিত থাকিরা ঐখর্যক্ষের
তোগবিলাস খ্রা দেখিতেছিলেন । সরাদং পূর্বপূর্বদিগের প্রার
বলবীর্যে জাতীর গোরবের প্রীয়সাধন না করিরা ভোগবিলাসে
উন্মন্ত হইরাছিলেন । তিনি ইংরাজকরে খীর সম্পত্তির
আর্ক্রেশংশ সমর্পন করিরা অবশিষ্ট লইরাই আত্মন্তবির পথে
অগ্রসর হইলেন । মন্জিন্, কুপ, ছর্গ, সেতু প্রভৃতি নির্দ্ধাণ হারা
রাজ্যের শীর্কি লাখন না করিরা তিনি
ক্রাগবিলাসের জন্ত
উপর্গ্ পরি কএকটা প্রানাদ নির্দ্ধাণ করান, ঐ প্রানাদগুলি
উত্তরোত্তর নৃত্র ভাবে ও নৃত্রন প্রণালীতে গঠিত হইরাছিল।
তৎপরবর্তী রাজানিগের অধিকারকানেও প্ররপ প্রানাদনির্দ্ধাণেরই প্রয়াস বাড়িরাছিল। অট্টালিকার অধিকাংশ হলেই
যুরোপীর হাণিত্য-শিরের অন্তক্রেণ দৃষ্ট হর।

বে সয়াদং খাঁ ও তাঁহার বংশধর্বর সামান্ত একটা বাসভবনে থাকিরা এই সোভাগ্য অর্জন করিরাছিলেন; ইমামবাড়া,
চক্ ও বাজারাদির প্রতিষ্ঠাতা জাকজমকপ্রির বে আসফ্ উদ্দোলা
একটা মাত্র প্রাসাদ লইরা সভাই ছিলেন, সেই বংশে সয়াদং
জালী বহুসংখ্যক প্রাসাদ নির্মাণ করিয়া ভোগবিলাসের পরাকান্তা বেথাইয়া গিয়াছেন। এই বংশে নশীর্ উদ্দীন্ ছাইদার
অপরিমিত অর্থবারে রাজপরিবার ও রাজমহিবীগণের ক্ষন্ত
ক্রকটা অত্যুৎকট প্রাসাদ প্রস্তুত করাইয়াছিলেন। তাঁহার
বিবাহিত-পদ্মীগণ ব্ল প্রাসাদে বাস করিতেন, তাহা ছত্রমঞ্জিল
নামে খ্যাত। কৈসর-পসন্দ ও অক্তাক্ত জালরে তাঁহার রক্তিতা
রমনীর্ক হান পাইরাছিল। শাহমঞ্জিল নামক প্রসিদ্ধ ভবনপ্রাস্থাত বিবাহিত করিছেন। নবাব স্বয়ং কর্হংবল, হকুর বাস, বিবিদ্ধাপ্র
ও অক্তান্ত প্রাসাদে বাস করিতেন। ওয়াঞ্জিল আলী শাহ ৩৬০
জন রমণীকে পদ্মীতে বরণ না করিয়া আপ্রিতারণে স্বীর বেগম

মহলে রক্ষা করিয়াছিলেন। উহাদের প্রত্যেকের জন্ত প্রাসাদ তুলা জট্টালিকা নির্দ্ধিত হইয়াছিল।

সয়াদৎ আলী খাঁ ফর্হৎবঁক্স নামক প্রমোদভবন নির্দাণ করাইয়া রাজপ্রাসাদ পরিবর্ত্তন করিয়াছিলেন। তিনি হিন্দ-গণের বাসবিভাগের (হিন্দু টোলার) পূর্ব্বাংশ হইতে দিল্থুস পর্যান্ত নগরবহিঃপ্রান্তে কডকগুলি কুদ্র কুন্ত প্রাসাদ নির্দ্বাণ করাইয়াছিলেন। ঐ গুলি বর্তমান সেনানিবাসের উত্তরাংশে অবস্থিত। উহাৰাগ নদীকূল, নগন্ন ও তাহান চতুপাৰ্থবন্তী স্থানের সৌন্দর্য্য দ্বিশুণ পরিবর্দ্ধিত হইরাছিল। তৎপরে ওয়াজিদ আলী নদীতীরে কৈসর-বাগ নামক নন্দনকাননে দেবপুরী সদৃশ নানা শিল্পপূর্ণ অত্যুৎকৃষ্ট অট্টালিকা নির্মাণ করাইয়া ভাহাই খীয় বাসভবনরূপে পরিণত করেন। তিনি পূর্ব্বোক্ত জেনারল মার্টিনের নিকট হইতে এই প্রাসামের নদীতীরবর্তী কতকাংশ ক্রন্ত করিরা লন। পরে বছ অর্থবারে সেই স্থরমা হর্ম্মের সংখ্যারসাধন করিয়া তাহাকে অভিনব ও স্থীর অভিলয়িত প্রাসাদে পর্য্যবসিত করিয়াছিলেন। উহার রাজদরবার গৃহ, অর্থাৎ বেধানে স্থবিস্থত নানা শিল্পনৈপুণ্যমণ্ডিত রাজসিংহাসন প্রতিষ্ঠিত ছিল, উহা লালবার বারী বা কসর উষ্ স্থলতান নামে পরিচিত। ওরাজিদের রাজছকালে লখ্নো নগরী চিত্র-বৈচিত্রোর চরম শীমা প্রাপ্ত হইয়াছিল। এই মুসলমান-রাজবংশ ইংরাজরাজের আত্মগত্য স্বীকার করেন এবং বে সময় হইতে শুখুনৌ নগরে ইংরাজ রেসিডেণ্ট থাকিবার যাবস্থা হয়, তৎপরবর্তিকাল হইতেই কোন নবীন নবাবের দ্বাজ্যাভিষেক সময়ে ইংরাজ-রেসিডেণ্ট আসিরা তাঁহাকে সিংহাসনে বসাইতেন এবং এই প্রদেশে তাঁহার রাজশক্তির প্রাধান্ত-জ্ঞাপনার্থ তাঁহাকে রাজনজর দিতেন।

সন্নাদং আলী খাঁর পুত্র গান্ধি উদ্দীন্ হাইদার ১৮১৪ খুটান্ধে আঘোরার রাজপদে অভিধিক্ত হন। তিনিই এ বংশে প্রক্তত রাজনামের অধিকারী হইয়াছিলেন। তিনি খাঁর পিতার অফ্রেটিত মোতিমহল গণ্ডাবে চতুপার্থে মোতিমহল প্রাসাদ নির্মাণ করান। নদীর প্রাচীন নৌকা-সেতুর উভর তীরবর্তী মুবারক মঞ্জিল ও শাহ মঞ্জিল নামক প্রাসাদ তাহার আগ্রহে সংস্কৃত হইয়াছিল। এই লেবোক্ত প্রাসাদে তিনি রোমক-স্মাট্ গণের স্পার হুরস্ত বস্তু পশুদিগের রাণকোতুক সম্মর্শন করিতেন। লখ্নো-রাজনংশের অবসান পর্যন্ত এই প্রাসাদে ভরাবহ পাশব বৃদ্ধ সংঘটিত হইয়াছিল। এতিউর গান্ধি উন্ধীন্ হাইয়ার চীনি-বাজার, প্রপ্রসিদ্ধ ভ্রমঞ্জিল কলান্ ও তৎপশ্চাতে 'হত্রমঞ্জিল খূর্দ্ধ' নির্মাণ করাইয়াছিলেম।

তাঁহার সমাধির বভ তিনি গোমতীতীরে শাহ নবফ্ নামে

একটা মন্দির নির্দ্ধাণ করাইরাছিলেন। তাঁহার বাল্যাবছার তিনি

বাঁহানে বাস করিতেন, তাহার উপর তাঁহার শিতা ও নাতার

জন্ম চুইটা সমাধিমন্দির ছাপন করেন। জনসরবরাহের প্রবিধার্ক
তিনি একটা থাল কাটাইতে চেটা পান। উহার নিম্পন্ন নগরের পূর্ব ও দক্ষিণে রহিরাছে। অর্ধাভাব বলতঃ তিনি উক্ত
কার্য্য সম্পাদন করিতে পারেন নাই। তিনি কম্ম-রহল অর্ধাৎ

মহন্মদের পদচিক্রাপিত কুত্রিম জুপোপরি একটা প্র্যুহৎ অটালিকা নির্দ্ধাণ করিরাছিলেন। পূর্বে একজন মুসলমান ঐ পদচিক্ষ্ আরব হইতে এদেশে আনরন করেন। তিনিই উহা উচ্চ
ভূমে স্থাপন করিরা উহাকে একটা মুসলমান তীর্ষরূপে বোবিত
করিয়া যান। গাজি উদ্দীনের আগ্রহে উহার মাহাত্ম্য বাড়িয়া
উঠে। ১৮৫৭ বুটান্দের শিপাহীবিজ্ঞান্তের সমর ঐ প্রত্তর
স্থানাত্তরিত হয়, তদবধি উহা আর কদম্বস্থল মন্দিরে প্রতিষ্ঠিত
হয় নাই।

গাজি উদ্দীনের পুত্র নাসির উদ্দীন্ হাইদার ১৮২৭ খুটান্থে পিতৃসিংহাসনে অভিষিক্ত হইরা রাজকার্য্য পরিচালন করিতে থাকেন। জ্যোতিঃশান্তে ঐকান্তিক আসক্তি বশতঃ তিনি বছ অর্থব্যরে 'তারাবালী কোঠা' নামক একটা বেধালর স্থাপন করেন। বিখ্যাত ইংরাজ জ্যোতির্ব্বিদ্ কর্ণেল উইল্কল্প তাঁহার কর্মাচারিরূপে নিযুক্ত থাকিরা উক্ত বেধালরের যন্ত্রাদির পরিদর্শন করিতেন। ১৮৪৭ খুটান্তে কর্ণেল উইল্কল্পের মৃত্যুর পর, ওরাজিদ্ আলীশাহ এই বেধালর বন্ধ করিরা দেন, সিপাহীবিদ্রোহের ঘোর-বিপ্লবে বিজ্যোহীদিগের উপদ্রবে উক্ত বেধালরন্থ যঞ্জাদি নই হইরা বার। বিজ্যোহিদ্পের নেতা ও পরামর্শনাতা কৈল্পাবাদবাসী মৌলবী আক্ষল উল্লাশাহ সেই সমন্ত্রে এথানে আসিয়া বাস করেন। তিনি বিজ্যোহীদিগকে উৎসাহদানার্থ ইহার প্রাঙ্গণ মধ্যে সমর সমর এক একটা সভার অন্তর্ভান করিতেন।

নাসির উদীন হাইদার উপরোক্ত বেধালর ভিন্ন ইরাদৎ নগরে একটী মহতী 'কারবালা' নির্মাণ ক্রাইরাছিলেন, উহার মধ্যে তাঁহার মৃতদেহ সমাহিত বহিয়াছে।

নাসির্ উদীনের মৃত্যুর পর, তাঁহার খুরতাত মহমদ আলীশাহ ১৮৩৭ খুটানে সিংহাসনে আরু হইরা খীর কীর্তিতত্ত
হলেনাবাদের ইমামবাড়া প্রতিষ্ঠা করেন। ইহা ছই ভাগে
বিভক্ত। লাখনৌ ছর্গের প্রসিদ্ধ রুমী দর্বালা ছাড়িয়া গোমতীতীরবর্তী প্রশন্ত পথ দিরা এই ইমামবাড়ার বহিঃপ্রালণে
আসা বার। এই হানে রান্তার একটু পশ্চিমে দীড়াইরা দেখিলে
দক্ষিণদিকে আসক্ উদ্দোলার ইমামবাড়াও ক্লমীদর্বালা এবং
ক্ষমভাগে হলেনাবাদের ইমামবাড়াও ক্লমীদর্বালা এবং
ক্ষমভাগে হলেনাবাদের ইমামবাড়াও ক্লমীদর্বাল বেং

বিং মৃত্যাকঠে বলিয়া গিয়াছেন বে, স্থাপত্যশিরের এক্সপ অফুাংকুট নিম্পন জগতে অভি বির্ধা।

রালা মহলদ আলীলাহ খীর ইমাসবাড়ার খানিবার জন্ত হলমঞ্জিল হইতে হর্মধন্য দিরা ইমামবাড়া পর্যান্ত একটা প্রাপত পথ বাহির করিরা দেল। এই পথের ধারে উহার বত্তে একটা নীর্ষিকাও কাটা হইরাছিল। তিনি দিরীর কুমামস্থিকের অপেন্দা অধিকতর উৎকৃষ্ট প্রশালীতে খনির্নিত ইমামবাড়ার পার্থে একটা মস্কিবের পত্তন করিরাছিলেন। অকালে তাহার স্কুত্ হওরার, তাহার নির্দ্ধাণকার্য্য সমাধা হর নাই। তদবধি উহা অর্ক্তর্থিত অবহার নিপ্তিত রহিরাছে। তিনি "সাতথ্ত" নামে আর একটা হুর্গজন্ত নির্দ্ধাণের উদ্বোগ করিরাছিলেন। উহার চারিপত নির্দ্ধিত হুইবার পর তিনি মৃত্যুমুধে পতিত হন, তাহাও ঐরপে অসমাধ্য হইরা বহিরাছে।

তদলন্তর লাখ্নোর চতুর্থ রাজা আম্লাদ্ আলীশাহ
(১৮৪১ খুটাজে) কাণপুর পর্যন্ত পাকারান্তা, হজরৎ গজের
বীর সমাধিমন্দির ও গোমতীর লোহসেতু নির্দাণ করান।
রাজা গাজি উদ্দীন্ হাইদার এই সেতু ইংলও হইতে জানারন
করিবার আদেশ দেন। উহা এখানে পৌহিবার পূর্বেই তাহার
মৃত্যু ঘটে। তাহার পূত্র নাসির উদ্দীন্ রেসিডেলীর সমুর্বে
উহা স্থাপনের চেষ্টা করিরাছিলেন, কিন্তু নদীগতে তত্ত নির্দাদ
সহজ্পাধ্য না হওরার সে প্রভাব স্থািত থাকে। অবলেধে
আমলাদ্ আলী তাহার প্রতিষ্ঠা করিরা থান।

অবোধ্যারাজবংশের শেবরাজা ওরাজিদ্ আলীশাহ ১৮৪৭ হইতে ১৮৫৬ খুটাল পর্যন্ত লাখনোসিংহাসন অলম্বত করিরা-ছিলেন। তাঁহার নির্মিত কৈসরবাগ নামক প্রমোদান্তান নগর মধ্যে সর্বাহৃৎ ও মনোজ্ঞ অট্টালিকা হইলেও অমার্ক্তিত কচিনিবন্ধন উহার নির্মিতা বলিয়া তিনি সাধারণের নিকট প্রশাসালালন হইতে পারেন নাই। ১৮৪৮ খুটালে উহার কার্যারক্ত এবং ১৮৫০ খুটালে উহার নির্মাণকার্য সমাধা হয়। উহাতে প্রায় ৮০ লক্ষ টাকা ব্যয় হইয়াজিল।

বেধালরের সম্পৃত্ব উত্তরপূর্কবার দিরা প্রবেশ করিলে দর্শক প্রথমে জিলোখানা নামক প্রাসাদবার অতিক্রম করিবেন। এই প্রাসাদ হইডে রাজকীর বাত্রোৎসব সাধিত হইড। এই স্থান হইডে দক্ষিণে দিরিরা একটী আক্রাদিত বার অতিক্রম করিলে চীনিবাগে আসা বার। এখানে চীনে কাচের পাত্রাদিতে উত্তানভাগ অলম্ভত করিরা রাখিরাছে। তথা হইডে নথাকৃতি রমনীস্তিপরিশোভিত একটা প্রবেশবার অতিক্রম করিলে হক্ষমং-বাগে উপনীত হওরা বায়। ঐ নর প্রতিকৃতিসমূহ অটাদশ শতাকীর অমার্কিত বুরোপীর ক্রিপ্রস্ত । ক্রম্ভ্রম্বান্ত ক্রিন্ত লাভানী, নার্থারী এবং থাস বুকান কা বালশাহ বজিল। এই বার্থারীর বেজে একসমনে রেপ্ট্রম্পিক হিলা। বার্ণাহমজিল সরাবং জ্বালী বার প্রাক্তিত হুইলেও জ্বালিক আলী শাহ তাহা আলমার মনপ্রানায়ভিজ্ঞের অন্তর্ক করিয়া লন। উহার বামভাগে আর কভকজি লাইলিকা আছে, ক্রথো রাজকৌর-জার আলমার উল্লেখনোয়। লীবার গুরাক আলী ও লক্ষ উল্লেখনোয়। লীবার গুরাকিকার প্রধানারের ও রাজমহিবীয়া বাস করিছেন। এই আটালিকার প্রধানারেরণ ও রাজমহিবীয়া বাস করিছেন। লিগাইবিজ্রাহের লম্ম এই প্রানাবে থাকিয়া উহার একজন ওবেগ্য বিজ্ঞোহিদলের সাহায়ার্থ সম্বানের অস্কান করিয়াহিদলে। ইংরাজ্বনী রক্তি হইমাহিল।

ইহার পার্বন্থ রাজার ধারে মর্মরগ্রেজরে বাধান একটা বৃক্ষ-ভবে মেলার দিন নবাব ককিরের জার হরিদ্রারজিত পরিক্ষণে অবস্থান করিজেন।

পূর্কদিকের সাধীয়ার সক্ষ টাকা বাবে নির্নিত্ব হইরাছিল।
উহা অভিক্রম করিরা আসিলে কৈসরবাগের প্রাকৃত উজানআলপ দেখিতে পাওরা বার! ইহার চারিদিকে রাজায়ঃপুরকামিনীগণের প্রাসাম। এই প্রাসাম-প্রাক্তণ প্রতিবৎসর ভাজ
য়ালে একটা থেলা হর, ভাহাতে লাখ্নোবাসী সকলেই স্মবেত
হইরা থাকে। ইহার পর প্রভরনির্নিত বার্লারী, উহা একণে
রক্তমকে পর্যাবসিত হইরাছে। পশ্চিমের লাখীয়ার অভিক্রম
করিলে "কৈসর-প্রকল" নামক প্রসিদ্ধ প্রাসাম। উহা
মাসির উন্ধীন্ হাইদারের মন্ত্রী রৌপন উলোলা কর্তৃক্
বিনির্দ্ধিত হইরাছিল। উহার উপরিভাগ অর্ক্তগোলাকার অপয়য় আবরণে আজ্ঞানিত। নবাব ওয়াজিল্ আলীলাই উহা হত্তগত
ক্ষরিয়া বীর প্রিয়ভ্তম মহিনী মন্তব্-উব্-ম্লেভানাকে বাসার্থ ধান
করেন, তৎপশ্তাৎ আর একটা জিলোধানা অভিক্রম করিলে
পুলরার রাজপথে সমুপন্তিত হওয়া বার।

সাধ্নী ইংরাজ অধিকারে আসিরার পর, এথানকার স্থাপত্যনিরের সৌরবজাপক আর কোনরূপ স্বট্টানিকাই কিবিজ হর নাই। কএকটা বাতব্য চিকিৎসালর, বিভালর ও রাজকার্যালর আন নির্বিভ ক্টরাছিল। বলরামপুরের মহারাজ সর্ব বিভিজ্ঞানিথ কে নি এস্ আই রেসিডেন্সীর পার্বে একটা ইাস্পাতার প্রক্ষিষ্ঠ করিয়াছেন।

উপরোক ইমানবাড়ারর, ছবরজিন, কৈন্তরাগ ও অবোন্যার রাজজন্দধরগণের অভাত আলাব ব্যতীত এবানে নরাবং আলী থা, ব্লিব্লাবি, বহুবার আবী বাহ ও বাজি উনীন্ হাইবাবের সমাধিনবিদ্ধ স্থাপত্যশিক্ষের পরাক্ষার্থ পুরুষ করিবাতে। এত্তরির অনেক তলি উভানবাচিকা, হাজাবালা, সম্মানিত্র, নগ্ৰিৰ ও ধনাত্য নগরবাসীখিগের বাসভবনও ছাগভালিরে পরিপূর্ণ। বুটার ১৮ল শভাবের ছণিভ বাগভারতি ইংলও হইতে চুরীক্বড হইলে ভারতে আনিরা প্রবেশ লাভ করে এবং ভাহারই ক্ষর্য প্রতিকৃতিসমূহ ভোগবিনাবলোলুণ মুসলমান-রাজগণের পরাপ্রের পরিবৃদ্ধি প্রোপ্ত হয়। প্রেরভবারস্থিৎস্থ ভারত্সন এই নগরের ছাগভালিকের উল্লেখ করিয়াছেন;—
"No caricatores are so ludicrous or so bad as those in which Italian detail are introduced."

১৮৫৬ খুটাবে १ই কেব্রুয়ার ইংরাজরাক্ত অবোধ্যাপ্রদেশ ইংরাজসাত্রাজ্যভূকে করিরা লাখ্নের রাক্তা ওয়াজিল্ আলী শাহকে কলিকাতার জালিয়া গলাতীরবর্তী মৃচীখোলা নামক স্থানে নজরবন্দিরূপে রাখিয়া দেন । উক্ত বাসভবনেই খুটীর ১৯শ শভাব্দের শেব ভাগে লাখ্নের শেব নবাবের প্রোণবায়ু বহির্গত হয়।

निगांदी विद्यातः।

মিরাট নগরে বিপাহীবিদ্রোহবলি প্রজ্ঞবিত হইবার মাস্বর পরে, ১৮৫৭ গুটান্দের ২রা মার্চ্চ সন্তেনরী সরেন্স নবাধিকত व्यायाश आम्प्रता किंक क्रियमात्र नित्रुक रन । तारे नगरत नाथ ्तो इटर्ग ७२ मरथाक है रहास त्मनायन, अकमन इट्डानीय কামানবাহী সৈম্ভ, ৭ম সংখ্যক দেশীর অখারোহী সেনাদল এবং ১৩4. ৪৮4 ও १১ मरश्रक मिनीन शशकि स्मामन अवर सग्र সন্নিকটে ছুইণল স্থানীয় ইরেওলার পদাতিক, একলল সামরিক পুলিশ সেনা, ছইনল দেশীয় কামানবাহী ও এক্ষল অবোধ্যার ইরেওলার পদাতিক অবস্থান করিতেছিল। সোট কথার তৎকালে তথার ৭৫০ জন ইংরাজ ও প্রার ৭০০০ ভারতীর লেনা ছিল। এপ্রিল মানের প্রায়ন্তেই দেশীর সিপারীহিগের মধ্যে বিষেষভাব পরিক্ষিত হয়। ঐ সমূহে ভাতিনালের অপরাধের অভিশোধ স্বরূপ নিপাহীগণ ৪৮ সংখ্যক পদাভিক बरमत गार्कारमंत्र श्रेष्ट कांगारेडा स्वतः। मह रहमती गरतका উপন্থিত বিপদের আশকা করিয়া ব্লেসিডেন্সী ছার্ক্তিক করিয়ার ও খাছাদি সংগ্রহের ব্যবস্থা করিয়া লইলেন। ৩০শে এপ্রিল ভারিখে ৭ম সংখ্যক জবোধ্যার ইরেঞ্চনার নেনারল নো-মুনা বিভিত জানিয়া কাট্ডিক কাটিছে লখীকার করিল। তথাপি माना व्यद्धांक्रमात्र काशांत्रिशस्य श्रमताद शारितः सानिया द्वीपित्रक क्रियाणाक्राशास्त्र तांच स्त्रा दरेत। अहा ता क्राह्मिय হেব্রি করেল বিরোধী বেনাধনকে সামচাক করিছে সমস ক্ষরির পদিরে পরশন্ত কাড়িরা দুইতে লাকের প্রচার ক্রিনের। कारकर तारे भारतकार कार्य रहेगा।

ा अने ता माहितीय तमनी नदान अनी प्रशास महिन

माधात्रण लाक्टक हिम्मुहानी ভाষाद्य व्याहेद्या लग एए, हेश्ताब-শাসন হিন্দু ও মুসলমানের পক্ষে বিশেষ হিডকর; স্থতরাং সকলেরই ইংরাজনাসনের প্রাক্ষণাতী হইরা তাহারই অনুগামী হওয়া কর্ত্তব্য। উক্ত তারিখের পরদিন প্রভাতে মিরাটের হত্যা-कारशत मश्वान नाथ रनी नगरत जानिया भौहिरन, अधारम समा-দলের মধ্যে বিপ্লবের স্ট্রনা হইতে লাগিল। ১৯শে তারিখে সর হেনরী লরেন্স অবোধ্যাত্ব সেনাদলের সর্ব্ধময় কর্ডুছ লাভ করিয়া বেসিডেন্সি মধ্যে মুরোপীর নরনারী সংস্থাপনপূর্বক ছর্গ এবং মচ্ছিভবন হুরক্ষার ব্যবস্থা করিলেন। ৩০শে মে রজনীতে লাখ্নো নগরে বিদ্রোহী সেনাদলের স্কুদরনিহিত অমি ধুম উদ্ধীবন কবিতে লাগিল। ৭১ সংখ্যক সেনাদলের ও অস্তান্ত দলের কতকগুলি লোক একতা হইরা অধ্যক্ষগণের বাঙ্গালায় অগ্নিপ্রদানপূর্বক জালাইয়া দিল এবং গৃহস্থিত ব্যক্তিবর্গকে নিহত করিল। পরদিন প্রাতে রুরোপীর সেনাদল তাহাদিগকে আক্রমণ করিয়া হটাইয়া দিল। কিন্তু ৭ম সংথ্যক অখারোহিদল বিজোতিদলে যোগ দিয়া একতা সীতাপুর অভিমুখে প্রস্থান করিল। ১২ই জুন পর্যান্ত লাখ্নৌ নগর ইংরাজ অধিকারে থাকিল বটে, কিন্তু অযোধ্যার অপরাপর অংশ বিদ্রোহীরা অধিকার করিয়া লইল।

১১ই জুন সামরিক পুলিশ ও দেশীয় অখারোহী বিজ্ঞোহী সেনাদল প্রকাশ্রে ইংরাজদিগের প্রতি গোলাবর্ধণ করিতে লাগিল। প্রদিন দেশীয় পদাতিক দল তাহাদের সহিত যোগ দিয়া নগর ভাগ আলোড়িত করিয়া ফেলিল। ২০এ জুন কাণপুর বিদ্রোহিদলের হত্তগত হইয়াছে সংবাদ পাইয়া সিপাহী-গ্ৰ উৎফুল হইরা উঠিল। ২নএ জুন ৭০০০ হাজার বিদ্রোহী ফৈলাবাদ পণে অগ্রসর হইরা রেসিডেন্সীর আট মাইল অদ্রবর্ত্তী কিনহাট গ্রাম আক্রমণ করিলে সর হেন্রী লরেল যুদ্ধার্থ অগ্রসর হইলেন, কিন্তু তিনি শক্রর সন্মুখে অধিক-ক্ষণ থাকিতে না পারিরা পরাজর স্বীকারপূর্কক প্রভাারত ছইলেন। তিনি শত্রুপক্ষের বল অধিক দেখিরা মচীভবন পরিত্যাগ করিয়া রেসিডেনীর বলপৃষ্টি করিতে তথার সমস্ত रिमक नमस्यक कतिस्त्रम । >ना क्नारे भक्तम दत्रनिरक्षणी অৰ্ব্যোধপূৰ্বক গোলাবৰ্ণ করিছে লাগিল। ২য়া শত্ৰুপক্ষের একটা গোলা নত্ৰ হেনতীয় শহনককে প্ৰবিষ্ট হইয়া উাহাকে আহত করিল। নেই আঘাতের বন্ধণার অন্থির হইরা তিনি 🐒 ভারিখে পঞ্চৰ প্রাপ্ত হইলেন। তথন মেজর বাছস, সিভিল বিভাগের ও ব্রিসেডিয়ার ইন্মিন্ নামরিক বিভাগের অধ্যক্ষ इंटरजन । २००० क्यांट नक्यन न्मतात हैरताकरिनटक चाकमन ভবিল। প্রদিন নেজর বাছদ্ নিহত হইলো, বিগেডিয়ার। ইন্মিদ্ সর্ক্ষয় ফর্জা হইলেন । ১০ই ও ১৮ই আগষ্ট তারিথে উপর্গাপরি গুইবার আক্রমণ করিরাও শক্রমল ইংরাজনিগকে বিশর্যন্ত করিতে পারিল না । রেসিডেল্টীছিড ট্রংরাজাগওও পূন: সাহাব্যলাভের আলার ক্রমণই হতাশ হইরা পজিতেছিলেন । এমন সমরে আউট্রাম ও হাবেলকের আগমন বার্তা শুনিরা ভাঁহারা কিঞ্চিৎ উৎকুর হইরা উঠিকের ১২শে সেপ্টেম্বর হাবেলক আলমবাগে উপনীত হইরা ভথাকার বিজ্ঞাহীদিগকে বিশব্যন্ত করিলেন এবং ২৫এ পর্যান্ত শক্রদিগের সহিত থও্যুক্ত করিছে করিছে বীরনর্দে ২৩শে রেসিডিলার বারনেশে আসিরা সমুপহিত হইলেন । তৎপুর্কেই শক্রপক্ষের আক্রমণে জ্ঞানিরা সমুপহিত হইলেন । তৎপুর্কেই শক্রপক্ষের আক্রমণে জ্ঞানিরার পরিচর পাইরা পুনরার নগর আক্রমণ করিল, আউট্রাম ও হাবেলক বিশেষ বিচক্ষণভার সহিত দিবারাত্র যুক্ত করিরা নগররক্ষার নিযুক্ত হিলেন ।

অক্টোবর মাদ প্র্যান্ত ইংরাজগণ বিশেষ বীরত্বের সহিত আত্মরক্ষা করিতে লাগিলেন। ১০ই নবেম্বর সর কলিন কান্ডেলের অধীনস্থ সেনাদল কাপপুর হইতে আলমবাগে আসিদ্ধা উপনীত হইলে তিনি কলিকাতার উপনীত হইয়াই লাখ্নৌ উদ্ধারমানদে নানাস্থান হইতে সৈক্তসংগ্রহের ব্যবস্থা করিয়া-ছিলেন। ১২ই নবেম্বর ডিনি সদলে আলমবাগ আক্রেমণ করিলেন। ক্ষণকাল যুদ্ধের পর শত্রদল পরাস্ত হইল। তদনস্তর তিনি দিলপুস প্রাসাদ অধিকারপূর্বক মার্টিনেয়ার অভিমুখে অগ্রসর হইলেন। এখানে কামানাদির বারা স্থরকিত হইরা বিদ্রোহী সিপাহী দল অবস্থান করিতেছিলেন। উক্ত স্থান অধিকার করিয়া তিনি থাল উত্তরণপূর্বক ১৬ই তারিথে শক্রদলের প্রধান কেন্দ্র সিকেন্দরাবাগ আক্রমণ করিলেন। এখানে উভন্ন পক্ষে ঘোরতর যুদ্ধের পর বিদ্রোহিন্নর পরাজিত रुरेन । देश्ताकत्मना दुर्ग अधिकातात्त्व नवर्गन वनीयान रुरेश মোতিমহল পর্যাস্ত অগ্রাসর হইলে হাবেলক রেসিডেন্দী হইতে বহির্নত হইরা ভাহাদের সহিত সদলে মিলিত হইলেন।

এইরপে বিজয়ী বিজীয় সাহায্যকারী সেনাদল লাখনৌ
নগরে উপস্থিত হইলেও ইংরাজের পক্ষে নগর-রক্ষা
অসন্তব হইরা উঠিল। তথন সর্ কলিন্ কাবেল পফেপক্ষের
প্রেতিপক্ষতাচরণ ছরুছ বিবেচনা করিয়া ইংরাজ পুরুষ,
রুমনী ও বালকবালিকাদিগকে এখান হইতে উভারপূর্কক
কাণপুরে লইরা কলিকাভার পাঠাইতে মনস্থ করিলেন।
ভদমুসারে তিনি ২০এ নবেষর সদলে অওলের ইইলেন।
রেনিডেকী পুনর্কার শক্রয় হতগত হইল। প্রিমধ্যে সর হেনরী
হাবেলকের মৃত্যু হওরার আলমবানে ভাহার সমাধি হয়।

সঞ্চলই কাণপুর অভিমুখে চলিলেন, কেবল সর্ জেমন্
আউট্রাম ৩২০০ দৈও লইরা আলমবার্গ রক্ষা করিছে লাগিলেন, তিনি নগর উভাবের আবা পোষণ করিরা প্রধান সেনাপতির আগমন প্রতীক্ষা করিতেছিলেন। এই সমরে অবসর
ব্বিরা বিল্লোহিনল নগরের চতুংগাঁমা বিরিয়া কেলিল এবং আয়রক্ষার জন্ত চারিনিক্ অনুভ করিছে লাগিল। প্রায় ৩০ হাজার
শিক্ষিত সিপাই। ও ৫০ হাজার ভলানিট্রার একত্র হইরা নগরের
চারি,নক্ষের প্রায় ২০ মাইল খান আন্তর করিয়াছিল। ভাহাদের
নিকট ১০০ কামান ছিল।

সচনচ খুটানের হরা মার্ক্ত সর কলিনু কাবেল পুনরার লাগনে আভমুবে বাত্রা করিলেন। জিন , দিলখুস অবিকার করিরা মার্টানিরার রকার করু কামান সক্ষিত করিরা সইকেন। এই রিগোডয়ার আক্রন নেপালরাকের প্রেরিত ত হাজার গোখা ও ত হাজার ইংরামনৈক্ত লইরা সনুস্থিত হইলেন, আউট্রাম জখন সদলে পোমন্টী অভিক্রম করিয়া ফৈলাবাদ অভিমুখে বাত্রা করিলেন। এই সমরে নিপাইছিল দক্ষিণপূর্ক হইতে উছাকে আক্রমণ করে। এক সপ্তাহ কাল বোরতর যুক্তর পর (মই হইতে ১০ই পথান্তা) নিপাহীছল পরাধিত হইল। ইংরাজনগণ একে একে তাহাদের সমন্ত স্থাকিত স্থানই অধিকার করিয়া হইলেন। সিপাহীছল লাগনে হাড়িরা পলায়ন করিল। তলন সেনাপতি কাছেল অযোধার সেনাছলকে বিভক্ত করিয়া তাহার সংস্থারকাথ্যে এতী হইলেন। উক্ত বর্ষের ১৮ই অক্টোবর লঙ্ক কানিং সরীক এখানে আসিয়া ধনত্ত নগরের পুনঃসংস্থার কাগ্য সন্দর্শন করিয়াছিলেন।

এই নগরে নানা প্রকার শিক্ষের বাণিকা পরিচালিত হইতেছে, তল্পগো পরি, রেশম ও অহরতের কার্যাই প্রসিদ্ধ। কএক যর কাশ্মীরীবণিক্ এখানে শাল প্রস্তুতের কারথানা স্থাপন করিয়াছে। কাচের বাসন ও কাগক প্রস্তুত্তের কল প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। কাতেগঞ্জ, দিছিলরগন্ধ, সন্নাদংগঞ্জ, শাহসন্ধ, চিক্মণ্ডী ও নখাস্ প্রত্তি স্থানের বিশ্বত হাটে স্থানীর শক্ত, তুলা, চর্ম প্রভাবে বিক্রেরার্থ আমনানী হইরা থাকে।

শিক্ষাবিভাগে মাটিনেরার ব্যতীত লাখ্নোর কানিং কলেজ প্রাসিদ্ধঃ বিভাগীর কমিনসর পেবোক্ত কলেজের সভাপতি। এতান্তর আমেরিকাল মিসনের অধীনে ৭টা ও ইংলিস চার্চ নিসনের অধীনে ৫টা বিভাগর আছে। হিক্স্থানীবিগের বাছ্যবন্ত্র ও সলীতশিক্ষার লগু এবানে অনেক ওভাবের অধীনে বিভাগর পরিচালিত কইতেতে লাখ্নোর দেশীর বল্পক সাধারণের আদরের বিভিন্ন। এ রকালন্তের অভিনীত প্রকর্মক সাধারণের বাসী ইংরাজগণের বীবনী লইয়া সাধারণতঃ রচিত। লাখ্পতি (সেশৰ) > ধনশালী ব্যক্তি। যিনি লক্ষ্যুৱার অধিকারী।

্লাথ রাজ (সারবী) নিষর ভূমি বে কমির কোন বাজনা দিতে হয় না।

लाश् ताङी (भावनी) नाश्ताककृष्ठ समि।

লাথেরী, বোধাই প্রেনিডেন্দীবাসী স্থাতিকিশেষ। লাকা হইতে চ্ডি প্রভৃতি গ্রন্থত করাই ইহাদের উপজীবিকা। তাহারা বলে বে, তাহাদের পূর্বপুরুষণণ মারবাড় হইতে আফ্রনগর, ধারবাড় প্রভৃতি দাক্ষিণাতোর প্রধান প্রধান মগরে আসিয়া বাস করিয়াছে। সকলেই হিন্দুধর্মাবলনী। তাহাদের মধ্যে শ্রেণিগত কোনরপ বিভাগ নাই। এক উপাধিবিশিষ্ট বাজির মধ্যে আহাম প্রদান চলে না। বালাজীর প্রতিস্থিতি ও তিরুপতির বাজোবা মৃথিই তাহাদের প্রধান উপাত্ত দেবতা। বিবাহাদিতে তাহারা মত্রপান করে।

ৰমণীগণ ও ৰালকেরা পুৰুষের সহিত একতা চুড়ি প্রস্তুত करत। फारावा हानीय कूनविनिरंगत खरणका नामाजिक मधानाम डेक जवर बामनियरात चरशका हीन। जिमना, नरमता, निवानी, अकाननी । भिवताजि शद्य हेशता उभवागानि कतिया থাকে। কাতকর্ম ও অস্ত্রোষ্ট ব্যতীত ভাছাদের আরু অন্ত কোন শংখার নাই। আতকর্ম অনেকটা উচ্চ হিন্দুর মত। বিবাহকার্ঘো রমণীরা মারবাড়ীভাষার গান করিয়া থাকে। ব্রাহ্মণ আসিয়া সম্প্রদান করে। সিন্দ্রদানই বিবাহের বিবাহাত্তে বর কম্ভাকে স্বগৃহে লইয়া বায় প্রধান অস। এবং আশ্বীরকুটুখনিগকে একটা ভোজ দের। বালিকাবণু अफुम की स्टेटन जिन निन कारनी । शास्त्र । চতুর্থ দিনে তাহার গাত্রে হরিদ্রা শেপন করিয়া উষ্ণ জলে মান করান হয়। পরে ब्रम्भीता व्यानिकां वानिकांत्र ब्र्काएक हार्डेन, नातित्वन, नक् कन ও পাণ দিয়া থাকে। তদনস্তর সে স্বানিসহবাস করিতে পার। একবৎসরের অনধিক বর্ব বয়স্ক শিশুদিগের মৃত্যু ঘটিলে ভাহাদিগকে পৃতিরা ফেলে; তদুর্ছ সকলেরই সাহের ব্যবস্থা আছে। মৃতের পুত্র বা নিকট আত্মীয় দাহাস্তে ক্রৌরকুর্দ্ধ করিয়া ওছ হয়। সেই ধিন লে খহন্তে পাক করে না। কোন আন্মীরের বাটাতে খিচুড়ী বাইরা থাকে। ভৃতীয়দিনে ভাহারা মুতের ভ্রুরাশি একত করে এবং দ্বি ও ত গুল থার। স্প্রিনে ভাহারা ব্রাহ্মণ ডাকিরা মুডের উদ্দেশে গৃহে বসিরা পিঞ্জ এবং ৰাৰণাহে আন্ত্ৰীয় কুটুৰ্ঘানগৰে একটা ভোল দেৱ। ছয় মানে ৰান্ধাদিক প্ৰাছে ও বংসরাজে বাংসন্তিক প্ৰাছেও ভাহাৱা স্কাতি-জ্ঞোন বিবা বাকে। মহালয়া পক্ষেও ভাষামা পিচুগণের উদ্দেশ্যে आह स्टन । बाजी नकावक नावासिक विवादक विवादि

कतित्रां थोटक । जांशांपनत्र मटश वांगांचिवां , बह्मिवां । विश्वां-বিবাহ প্রচলিত আছে।

লাগ লাগ, পকিবিশেষ (Oiconia alba)।

লাগা (দেশপ) ৷ কোন এব্যের সহিত মিলিভ হওরা 🕯 ২ বাদ-विगयांन क्या।

मार्गाष्ट्र (प्रमन्न) मरावांग भरी छ।

লাগাইদ (হিন্দী) সেই সমর পর্যান্ত।

লাগা ইল্ (দেশজ) নিৰুট পৰ্বান্ত। ঠিক্ পশ্চাতে। হেরাহেরি। লাগাও (দেশজ) > বেত্রাবাতের আব্রা। । ই মারা। ৩ পার্বস্থ।

লাগান (দেশজ) এক বাক্তির নিকট অক্ত ব্যক্তির নিন্দাবাদ গুনিবা নিন্দিত ব্যক্তির নিকট তাহা কহা।

লাগানঘাট (দেশক) নদীর বে ছালে নৌকাদি বাজা হয়, সাধারণ লোকে বে স্থানে নৌকা হইতে উঠিয়া ও নামিয়া বাজা-য়াত করে, তাহাকে লাগান-বাট, খেরাঘাটা বা পার্ঘাটা ক্তে। ্রাগাম (পারদী) অধবন্ধনরজ্।

লাগালাগি (দেশজ) একজনের কথা আর একজনের নিকট বলা। কোন লোকের একজনের কুৎসাদি ওনিয়া আবার তাহার निक्रे प्रिष्टे कथा वना।

লাগুড়িক (আ) > লগুড়বুক । ২ প্রহরী।

লাগোয়া (দেশন) পাৰ্যস্থিত।

লাঘ, শক্তি, সামর্থা। ভাদি আক্লান জক নেটু। লট্ লাখতে। লিট্ ররাখে। লুট্ রাঘিতা। লুঙ্ ক্ষরাণিই। गिठ् नापद्रिः । नृङ् अननापं ।

লাঘরকোলস (পং) কামলা রোগের প্রকারভেদ।

लाचित (क्री) नाताकारः कर्या वा (हेनखाक नवृश्कारः। भा द। ২।১৩১) ইভি অণ্। ১ জারোপা। (রাজনি^{*}) ২ শত্ত, লবুর ভাব। ৩ অবরত। ৪ ক্লৈব্য।

"ৰমোহপি বিশিখন ভূমিং দণ্ডেনান্তমিভত্বিবা। क्र्याजश्चित्ररमारपश्चि निक्सागागाजगाप्यम् 🗗

(東村市 87 | 54)

লাঘবারন (পুং) গ্রহকর্তজ্ঞ। ইনি একথানি প্রোভহত ও ভাহার ভাষ্য গ্রেগরন করেন।

लाचिवक (बि) मः भिश्व।

^{র্ষ} লাক্ষাকায়নি (গ্রং) লক্ষার অপজ্ঞানী (পা° ৪)১/১৮)

লাক্ষারন (প্:) নৰের লোত্রাণভ্য ; (পা° ৪৮১)>৯) লাক্ষল (গং) নদতীতি দলি গতে বাহনকাৎ কলচ্। (বৃদ্ধিত

ধাতোঃ। উণ্ ১ । ১০৮) খনামধ্যাত ভূমিকর্গবর। প্রধার— रण, त्त्रांसांत्रण, नीत, संग, नीत । (न्यांत्रफ) २ गिम । (जिक०)

७ गूर्णवित्मय । । । जानवृष्ण । । १ शृहशृष्टि । (अविनी)

লাক্সনক (পু:) নাক্সনাকার জননরছেদ বিশেষ। ভগনররোগ হইলে অস্ত্ৰহারা লালদের ভার বে ছেদ করা হর, ভাহাকে লাকলক कटर। "कृष्ठा प्रहिष्ठः स्नाकातः शार्षक्रतः सम्बन्धः स सम्भून-হলাকার:"(ৰাভট উ°২৮ অ°) প্ৰশ্নত মতে, ছই পাৰ্ব সমান-ভাগে ছেন করিলে ভাগাকে নাঞ্চলক কচে।

"ৰাজ্যাং সমাজ্যাং পাৰ্যাভ্যাং ছেনো **নাকনকো মভঃ**।'

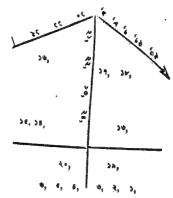
(ব্ৰুত চি• ৮ **ছ**•)

नांजनकी (जी) नावनीक्न, विवनांज्निता।

লাঙ্গলগ্ৰহ (পুং) নামনং গৃহাতি (শক্তিনামনামূশ্যটিডোমর-ধটধটীবস্থ:বৃ। পাও।২।৯) ইত্যক্ত ৰাৰ্ডিকোক্ত্যা আচ্।

लाञ्चल शहल (जी) नाक्यशंत्र।

लाञ्चलठाक (क्री) नामनाकात्रः ठक्कः। क्वतिकारगित्र ७४०।७४-काशक ठळविटलय। धहे ठळाछ्याद्व शंगमा कक्किन क्विकाद्या ণ্ডভ বা অণ্ডভ হইবে, তাহা জ্ঞানা যায়।



শাঙ্গলের আরুতি অভিত করিয়া ঐ রূপে নক্ষএবিভাস ক্রিয়া গুভাগুভ নির্ণয় ক্রিভে হয়।

"गात्रमः पश्चिकायुनारमञ्ज् वत्रमसविष्ठम् । निष्कानि निरुष् छानि दित्नभाकाविकाविकः॥ ৰভিকাহলবুপানাং বিৰিশ্বানে একং ত্ৰিকন্। বোক্ত রোশ্চ ত্রিককৈব মধ্যে পঞ্চাগ্রকে বিকম্ । **দশুখে চ গৰাং হামিব্পক্তে স্বামিনো ভরন্।** मन्त्रीमीनमध्यारकः मार क्वात्रहमिनकं क ॥"

(সোডিখৰ)

धारे ठक नामनाकात कतिएक वृहेरन, धारे सक देवांत माम লাললচক্র হইরাছে। বে দিন গণনা করিতে হইবে, সেই দিন সুজাক্রান্ত নক্ষত্র ধরিরা গণনা করিবে। সক্ষত্র সক্ষণ क्शाकारम विकास कविवा स्वितिक क्षेट्र एक, स्वर्ध विस्तान सम्बद्ध

কোন স্থানে আছে, যদি দণ্ডে থাকে ভাহা হইলে গোহানি,
মূপত্ব হইলে আমিভর, নালন ও বোক্তে হুইলে লন্ধীনাভ হর।
প্রভাগে নালন ও বোক্তান্থিত নক্ষত্রে ক্ষেত্রকর্ম করিলে
ক্ষিকার্য্যে ওভকন হইরা থাকে।

লাক্সলন্ত (পুং) নালনত নতঃ। নালনের জীন, পর্যার জীনা, জীবা। (শবরত্বা°)

লাক্লপ্ৰজ (পুং) > বলরাম। (ত্রি) ২ লাজল হাহার বংশচিত। লাক্লপদ্ধতি (ত্রী) লাজলভ পছডি:। লাজলরেধা, চলিত নিরাল। পর্য্যায়—শীতা, নীতা। (খন্দরত্বা°)

লাক্সলফাল (পং রী) লালনের অগ্রভাগত্ব লোহফলক।

लाक्ताधा (वि) विवनावृतिया नामक वृक्तास्त्र ।

লাঙ্গলাপক্ষিন্ (তি) > লাক্ল অপক্ষণকারী । (পুং) ২ বৃষ ।

লাকলায়ন (প্রং) লাজনের গোত্রাপত্য।

नाक्रमाध्यश (जी) नाक्रमिश क्र्म।

लाक्रिल (११) नावनी।

লাক্সলিক (পুং) নাদনবং আক্তিরভাভেতি। নাদন-ঠন্। স্বাবর্ষিকভেদ। (হেম)

লাঙ্গলিকা (ত্রী) লাঙ্গলমিবাকারোহন্তান্তা ইতি ঠন-টাপ্। লাঙ্গলীবৃক্ষ। (শক্ষরত্বাণ)

> "ক্রলান্সলিকামূলং হিজ্জনন্ত তথৈব চ। তেন ব্রণমূপং লিপ্তং শল্যো নিঃসরতি ক্রণাৎ ॥"

(গঙ্গড়পু: ১৯২ **অ**°)

লাঙ্গলিকী (ত্রী) লালল-ঠন্-ঙীব্। বৃন্দবিশেষ। লাললিয়া,
চলিত বিবলাললিয়া, পর্যার—অগ্নিশিখা, অগ্নিজ্ঞানা, লাললিয়া,
লাললী, গৈরী, দীখা, হলিনী, গর্ভথাতিনী, অগ্নিজ্ঞা, ইন্দ্রপূলা,
অগ্নিম্ধী, বহিশিধা। ইহার গুণ— কুঠ ও ছইরণনাশক।(রাজনি)
লাঙ্গলিন্ (পুং) লাললমন্তাভেতি লালল-ইনি। ১ বলরাম।
(শলরত্বা) ২ নারিকেল।

"নারিকেলো গৃঢ়ফলো লালনী কুর্চনীর্বক: ।
তুলম্বন্ধনালৈ তুলরাক্ষ: সনাফল: ঃ" (ভাবপ্রণ)
৩ সর্প। (শব্দচ°)(ত্রি) ন লালনবিনিষ্ট।
"ভত্রানীৎ পিল্লো গার্গারিকটো নাম বৈ ছিল:।
ক্ষত্রবিব্দে নিভাং ফালকুফাললালনী ন"(রামারণ ২০২।৩০)
ত্রিয়াং ভীষ্। ৫ নদীবিশেষ। (মার্কণ পু° ৫৭।২৯)

লাক্সলী (ত্রী) লাক্ষণাকারোহতাতাঃ ইতি লাক্ষণ-কচ্-তীব্। লাক্ষণাকার পূপ্য, ক্ষণজ্ঞপাকবিশেব। এই শাক কলে করে এবং ইংার পূপ লাক্ষণাকৃতি, চলিত কাঁচড়া শাক্ষ। পর্যায়—শারণী, তোরশিয়লী, শকুলাবনী, ক্ষণাকী, ক্লণিয়লী, পিত্রলা, ভামাদিনী, মংত্রগরা, ক্লিকারী। (রাজনি°) ২ শালপনী।

"দ্বিরা বিদারীগন্ধা চ শালপর্ণান্তমতাপি।

লাগনী কনসী চৈব ক্রোষ্ট্রপুছে। গুহা মতা ॥"(গরুড়পু• ২০৮অ•) লাগ্রনীশা, নিবনিসভেদ। (সৌরপুরাণ ৬অঃ)

লাঙ্গলীয়া (জী) (এডি পররূপং। পা ৬।১।৯৪) ইতি স্থত্ত বার্ডিকোজ্যা সাধুং। জব শব্দ পরে লাঙ্গলন্দের অকারটা লোপ হইরা এই শব্দী সাধু হইরাছে। লাঙ্গলের জীবা বা দশু।

লাকুল (ক্রী) পৃদ্ধ। (অমরটীকা সারন্ত্•)

লাকুল (রী) গল (ধর্জিপিঞাদিড্য উরোলচৌ। উণ্ ৪।৯০)
ইতি উলচ্, বাহলকাৎ বৃদ্ধিত। পশুদিগের পশ্চাহর্তী লখমান লোমাগ্রাবরর বিশেব, চলিত লেজ। পার্যার—পুচ্চ, লুম, বালহত্ত, বালধি, লঙ্গুল, লাকুল, লুলাম, আবাল, লঞ্জ, পিচ্চ, বাল। (জটাধর) গোলাসুলের জল মন্তকে দিলে পাপ বিনষ্ট হয়। এই জল তীর্থজনের স্লার পবিত্র।

"লাঙ্গুলেনাদ্ভং ভোষং মৃদ্ধৃ গৃহান্তি যো নর:। দর্মতীর্থফলং প্রাণ্য সর্ম্মণাপৈ: প্রমৃচ্যুত্তে॥" (বরাহপু॰) ২ শেষ। (মেদিনী) ও কুশুল।

লাকুলিন্ (পুং) প্রাপতং লাকুলমন্ত্যভোতি লাকুল-ইনি।
> বানর। ২ ঝবভ নামৌবধ।

লাঙ্গুলিয়া, মধ্যপ্রদেশে প্রবাহিত একটা নদী। সম্ভবতঃ ইহাই
প্রাণোক্ত লাঙ্গলিনী নদী(?)।

লাঙ্গুলীকা (শ্রী) লাঙ্গাক্তরন্তান্তা ইতি লাঙ্গ-ঠন্। পুলিপ্নী। (রান্ধনি•)

লাঞ্, নক্ষ, চিহু। ভাদি পরত্তে সক' সেট্। কট্ লাঞ্ডি। নুঙ্খনাহীং।

লাজা, ১ ভং সন। ২ ভর্জন। ভালি° পরত্মৈ সক্° সেট্। লট্ লাজতি। শুঙ্জলাজীং।

লাজ (क्री) লাজ-অচ্। ১ উধীর। (মেদিনী) ২ ভূইধান্ত। চলিত ধই, সকল ধান ভাজিলেই বে ধই হয়, তাহা নহে। কনকচুর প্রভৃতি কএক প্রকার ধান আছে, তাহা ভাজিলেই ধই হয়।

"বেবাং স্থান্ত পুলান্তানি ধাঞ্চানি সত্যাণি চ।

ভূষাৰি "ফুটিতাছাহৰ্শাজানীতি মনীবিদঃ ॥" (ভাৰপ্ৰাণ)

বে সকল থান্তে তণ্ডুল আছে, সেই সকল সত্ব-থান্ত ভাজিলে কৃটিরা বে জক্য প্রস্তুত হর, ভাহাকে লাজ এবং চলিভ কথার থই কহে। খণ^{ক্র}ন্মধুররস, শীতবীর্য্য, লঘু, জরিসলীপক, মলমুত্রের অরভাজারক, কক্, বলকারক; পিভ, কক্, বিন, অতীসার, লাহ, রক্তবোব, প্রমেহ, মেল ও পিণাসানালক। (ভাবপ্রত) (গৃং) লাজ-জচ্। ২ আর্ম্য ভঙ্গুল। (মেনিনী) লাজভর্পণ (মী) লাজকুতং ভর্ণণং। লাজ-ক্ষুদ্ধ ভর্ণাকিনের। "নাহবম্যন্দিতং কামং নিরন্ধ তৃষ্ণরাবিতম্।
শর্করামধুসংযুক্তং পাররেরাজতর্পন্ম।" (ভাবপ্র° জরচি॰)
দাহ ও বমিতে রোগী অভিশন কাতর হইদে শর্করা ও
মধুসংবোগ করিয়া লাজতর্পন প্রয়োগ করা বাইতে পারে। ধই
উত্তমক্রপে চূর্ণ করিয়া ইহা প্রস্তুত করিতে হয়।
লাজস্পায়া বিশী লাজেন ক্যা পেরা। ধ্রীয়ার মঞ্চ

লাজপ্রা (জী) গাজেন হতা পেরা। খইরের মঙ। "লাজপেরা প্রনন্ত্রী তু ক্ষামকণ্ঠক্ত দেহিনঃ।

क्ष्य्यामिति विनाक्कितागविनानिनी॥" (ताकव)

লাজভক্ত (পুং) লাজত ভক্ত:। ধ্বিভক্ত, ধইরের ভাত। গুণ--লবু, লীতল, অগ্রিনীপ্তিকর, মধুর, বলকর, নিজা ও কচিকর,
কফ ও পিত্তনাশক এবং ব্রগণোধনকারী।

"লাজভক্তো লঘু: শীতশাঘিনীপ্রিকরো মধু:।
বুবো নিজারুচিকর: কন্দপিত্রবিনাশক:।
বুণশোধনকারী স্লানুবিভি: পরিকীর্তিত:॥" (বৈশ্বক্রিক)

লোজমণ্ড (পুং) লাজজ মণ্ডঃ। খইরের মণ্ড। লাজবর্গ (স্ত্রী) লাজজ বর্গ ইব বর্ণো বজাঃ। অসাধ্য লুভা-বিশেষ। (স্কুজ করহাণ ৮ অণ্)

লাজশ[স]ক্তু (ত্রী) লাজত শক্রঃ। খইরের ছাতু, খই উত্তমরূপে চূর্ণ করিলে লাজপক্তু হর।

লাজহোম (ङी) লাজ্বারা কৃত হোমবিশেব।

লোজা (রী) লাজ-বঞ্-টাপ্। ১ অকত। ২ ভৃষ্ণান্ত, থই।
পর্যার — অকত, অকতা। গুণ — তৃঞা, ছর্দি, অতীদার, প্রমেহ,
মেদ ও কফনাশক, কাদ ও পিরোপশমক, অগ্নিকারক, লগু
ও শীতল। ইহার মণ্ডগুণ — অগ্নিকারক, দাহ, তৃঞা, জর ও
অতীদারনাশক, অশেষ দোষনাশক ও আমপাচক। ইহার পেরাগুণ — কামকঠের শ্রমনাশক, কুধা, তৃঞা, গ্লানি, দৌর্বল্য ও
কুকিরোগনাশক। (রাজনি॰) (পুং) ও ভূমা।

सांक्र्क (तनव) नकानीन।

লাঞ্ন (জী) লাখ-পুট্। > নাম। ২ চিছ। (মেদিনী) "দিবাপি নিষ্ঠ্যতমন্ত্ৰীচিতাৰা

বালাদনা বিষ্ণতলাস্থনেন।" (কুমার গাওং)

পুং) ও রাগীধান্ত। (রাজনি) কোন কোন পুত্তকে লাজনী এইরূপ পাঠান্তর দেখা যার।

লাপ্তি, মধ্যপ্রদেশের বালাষাট জেলার বৃহ্ তহসীলের অন্তর্গত
ক্রিকটা নগর। অক্ষা ২১°৩০ উ: এবং ক্রাঘি ৮০°৩৫ পূ:।
ক্রেই নগরের চারিদিক্ পুছরিদী ছারা পরিবেটিত এবং উত্তরাংশ
পতীর জগলে সমাজ্বাঘিত। ঐ বনাস্তরাল মধ্যে একটা প্রাচীন
শিব্যুম্মির ও কতকগুলি থবত অট্টালিকাস্তুপ দেখা বার। তাহা
ক্রাচীন লাগ্রি নগরের অবশেষ বলিয়াই মনে হয়। এখানে

XVII

একটা হুৰ্গ অসংস্কৃত অবস্থান্ধ পতিত রহিরাছে। সম্ভবতঃ ১৭০০ খুটান্দের নিকটবন্ত্রী, কোন সময়ে গোঁড়-রাম্বগণ ঐ চুর্গ নির্দ্ধাণ করাইরাছিলেন। ঐ চুর্গ পরিধার প্রাক্তভাগে লাম্বন্ধাই নামে কালীনুর্দ্ধি প্রতিষ্ঠিত একটা দেবালর আছে। উক্ত দেবীমূর্ত্তির নামানুসারেই এই নগরের নামকরণ হুইনাছে।

লাটি (গ্রাং) দেশবিশেষ। বর্তমান গুলরাট প্রদেশের প্রান্তভাগ।
শদদৌ তকৈ সপ্রায় প্রীতীন বীরবরায় চ।

লাটদেশে ততো রাজ্যং সকর্ণাটযুতে নূপ ॥"(কথাসরিৎসা"৭৮/১১৯)

লক্ষ্মানদীর মোহানা ও মহী নদীর তীরত্ব গুজরাত এবং খান্দেশ বিভাগ লইরা এই প্রাচীন জনপদ গঠিত ছিল। **लाहीन मरङ्गा श्राह्य हैश नाह नात्म लामिक।** मूमनमान ভৌগোলিক মহাণী (A D. 940 Vol. 1. 381), অন্ विक्रनी (A D 1020 in Elliot. I. 66) aqt छटनिम AD. 150, VII. ii. 63), পেরিপ্লাস প্রভৃতি ইহাকে লাড়, লারিদ বা লারিয়াক নামে উল্লেখ করিয়াছেন। তাঁহারা এই জনপদের স্থাননিশর সম্বন্ধে নানা স্থানের নাম নির্দেশ করিয়া थारकम । अनिविक्रनी, आंदून कामा ७ हेरम् रेनग्रम रामन राम, ঠানা ও সোমনাথ পত্তন লইয়া এই লাটদেশ গঠিত হয়। মুসলমান বণিক স্থলেমান কাৰে উপসাগর হইতে মলবার উপকৃল পর্যান্ত সাগরাংশকে লাটসমূদ্র বলিয়া লিখিয়া গিয়াছেন। মহুদী দৈম্ব, স্থপার, ঠানা ও অফ্টান্ত নগর লইয়া লারিয়া (লাট) প্রদেশের সীমা নির্দেশ করিয়া যান। বর্ত্তমান প্রত্নতত্ত্ববিদ্যণের সিদ্ধান্ত ভারাট, ভারোচ, কৈরা ও বড়োদার কতকাংশ শইরা এই লাট দেশ গঠিত হইয়াছিল।

এই স্থানের অধিবাসিগণ লাট (লাড়) জাতি নামে পরিচিত।
ইহারা অন্হিলবাড়রাজের অধীন ছিল। কোন কারণে
তাহাদের প্রতি অসস্তই হইরা রাজা কুমারপাল লাটদিগকে রাজ্য
হইতে বহিছত করিয়া দেন। তদবধি তাহারা ভারতের নানা
স্থানে যাইয়া বাস করিয়াছে। রাজপুতনার মরুদেঁশে, বেরারের
মৈকের বিভাগে এখনও এই জাতির বাস আছে। তবে
তাহারা আর সেরপ প্রবিস্তুত ভাবে ও প্রাচীন নামে পরিচিত
নহে। ইহারা সকলেই হিন্দু, আবার অনেকে জৈনধর্মাও
গ্রহণ করিয়াছে। রাজপুতনার লাড়গণ ব্যবসা-বাণিজ্যে লিপ্ত
আলে, বেরারের লাড়েয়া রেশমী বন্ধ বয়ন করে। বিখ্যাত
শ্রমণকারী টাভার্ণিয়ায় মলবার উপকূলে এবং থুনবার্গ সিংহল
দ্বীপে লাড়ী নামে এক প্রকার পাকান ধাতব মুদ্রার প্রচলন
দেখিয়াছিলেন। সম্বরতঃ ঐ মুলা শ্র্প্রাচীন লাট দেশে
প্রচলিত ছিল এবং পরে সেই নামের শ্রপত্রংক রাট্টী
নামে গ্যাত হইয়াছিল। [শ্রামাবর্ত্ত ও লাহমী বন্ধর দ্বের।]

২ বন্ধ। (মেদিনা) ও লীর্ণভূষণাদি। (শক্ষরা।)
লাট (ইংরালী Lord শব্দের অপ্রংশে)। বালাগার লাট
সাংহৰ অর্থে গ্রব্র-জেনারল এবং ছোট লাট সাংহৰ আর্থ লেক্টেনান্ট গ্রব্রকেই ব্যার। কথন কথন সাম্রিক ও রাজকার বিভাগের প্রভিনিবিদ্যকে অলীগাট সাংহৰ ও মর্কী লাট সাংহ্র ব্যাহর। হিন্তুলীরা চিক্লাষ্টিস্কে লাট ফাষ্টি সাংহ্র এবং লও বিশপ্কে লাট পাক্রি সাংহ্র বংগন। ১৮২৪ খুটাক্ষে বিশপ হেবার লাট সাংহ্র ও লাট পাত্রি শব্দের উলোথ ক্রিয়া গ্রিছেন।

দেশার ভাষায় লাট শব্দে লর্ডের ছায় স্থানস্চক ক্ষর্থ প্রকাশ করে, যেমন, বাবু যেন লাট। কথন কথন লাট শস্ প্রেষাত্মক ক্ষর্থে বাব⊲ত হইয়া থাকে; যেমন, মেরে লাট কেরের দিব।

লাট (ইংরাজী Lot শক্ষ)। নিলামের সময় উঠ মূল্য বিশ্লবার্থ প্রবাসমূহের বিভাগ।

লাটি (হিন্দী ও সংস্কৃত) স্তম্ভ। উত্তরপশ্চিমভারতে বহু প্রাচীন কাল হইতে কতকগুলি প্রস্তরম্বন্ধ বিরাজিত রহিয়াছে। প্রাচীন কার্তির আদেশ বলিয়া ঐগুলি বিশেষ বিখ্যাত ও সাধারণের আদেরের আদিন । ইংা ভিন্ন এই সকল স্বস্তের উপর অতি প্রাচীন অকরে যে সকল ইতিবৃদ্ধ উৎকীর্ণ রহিয়াছে, তাহা প্রস্কৃত ব্যবিদ্যাণের বড়ই চিত্রাকর্ষক, তাহারা বহুপরিশনে ও আলোচনা আরা ঐসকল লি,প্রাণা পাঠ করিয়া উহার প্রস্কৃতত ই নির্দিয় করেয়া নিরাছেন। মহামাত কেম্ম প্রিলেপ প্রথমে এই বর্ণমালা আবিদ্ধার করেন। উহা এখন লাট বর্ণমালা (Lat Charata) বিলয়া পরিচিত।

ভারতবর্ষের বিভিন্ন জনপদে এইরূপ লাট-ভন্ত উন্নতন্তকে দণ্ডায়মান আছে, তরাপো আলাহাবাদের লাটই হপ্রাসিক। ঐ ভাত্তের একপার্থে গুরারাবংশের সাময়িক অক্ষরে এবং অপর পার্থে একপার্থে গুরারাবংশের সাময়িক অক্ষরে এবং অপর পার্থে বৌক্ষরাট্ অলোকের প্রশান্তির অন্থরপ অক্ষরে থোদিত বিপি উৎকীর্থ ইইয়াছে। দিল্লীর লাটের লিপির সহিত কটকের বৌলানিপির ও গির্গরের পার্ব্বত্যালিপির বর্ণমালার অনেক সান্ত্র্যালার অন্থর ও গির্গরের পার্ব্বত্যালিপির বর্ণমালার অনেক সান্ত্র্যালার অন্থর ও গির্গরের তাহাতে কপদাগিরির সেমিতিক অক্ষর-মালার অন্থরণ লিপিও নুই ইইয়া থাকে। ঐ লাটে ২৬টা মাত্র রোক উৎকীর্থ আছে। তাহাতে ভারতবর্ষহিত অনপদাধির বিভাগ ও তাহার নাম, ওৎকালীন রাজবংশের বিবরণ এবং পারত ও শক্ষাতির বিবরণ লিপিত ইইরাছে। হত্তিনাপুরে চন্দ্রংনার রাজগণের রাজধানী প্রতিষ্ঠিত ইইলেও এবং মনুসংহিতা বা মহাভারতে শ্রনেন (জেনার) বিশেব কোনরূপ উল্লেখ না ঘাছিলেও আম্বা এই লাট হইতে জানিতে পারি বে, খুইপূর্ক

থম্ম শতান্দে বৌশ্ধস রাট্ অংশাকের রাখন্দকালে এই আলাহাবাদ ভূন্ডাগ একটি প্রাসিদ্ধ স্থান বলিরা গণ্য হইরাছিল।

২ ভিতরী লাট— গাঞ্জিপুর জেলার অন্তর্গত একটা ভত। উহাতে আলাহাবাদ লাটের অন্তর্গ রাজবংশের পরিচর ও বংশ-তালিকা বিভাগন আহে।

ও দিল্লীলাট — ক্লিরোজন্তম্ব নামে পরিচিত। পাঠানরাজ্ব ফিরোজ তোগলক (১৩৫১-১৩৮৮) ইহার শিরোভাগে স্বর্ণমন্ত্র একটা কলস লাগাইয়া দেন। তদবধি উহা স্বর্ণলাট বলিয়া খ্যাতি লাভ করিয়াছে। পূর্ব্বকালের স্থ্যাসিদ্ধ ভারতীর রাজধানী সমগ্র দিল্লী বিভাগে ইহাপেকা আর কোন প্রাচীন নিদর্শন নাই। ইহাই কোটিল্য বিষয়ের অন্তর্ভুক্ত একটা অন্তর্ভ কীর্ত্তিম্ভ। পূর্ব্বকাল হঠতে এই কন্ত সম্বদ্ধে নানা কিংবদন্ত্রী প্রচালত ছিল,— হিনুগণ উহাকে ভীমসেনের গন্ধা, মুসলমানেরা সম্রাট্ ফিরোজের প্রমণবৃত্তি প্রবং কৈছ কেছ উহাকে মহাক্সা আলেকসান্দারের পূর্ববিজয়ন্ত্রিন্ত এবং টম কোরিয়েই প্রভৃতি প্রাচীন ইংরাজ ভ্রমণকারিগণ উহাকে অশোকন্তম্ভ বিলয়াই জানিতেন। পরবর্ত্তিকাকে মুরোপায় প্রমুভ ব্রিল্গণের চেটার উহার প্রকৃত পাঠ উদ্ধৃত হওয়ার সাধারণের প্রমুজ মুসল্পানিত হইয়াছে।

ঐ স্তম্ভ পূর্বের যমুনার জ্বপর পারে সালোরা জেলার শিবা-লিক পাদমূলত্ব থিঞ্জিরাবাদের সন্নিকটে ছিল। পরে উহা দিল্লী-হারের বহিতালে আনিয়া স্থাপিত করা হইয়াছে। ডাঃ কানিংহাম বলেন যে, ঐ স্তম্ভ প্রাচীন জ্ঞার রাজধানীর কোনখানে ছিল, চীনপরিব্রাব্রক হিউএন্সিয়াং উহার পার্যবন্তী থৌদ্ধবিহার ও বুদ্ধ-শ্বতি সংগুক্ত সন্রাট্ অশোকের সমকালীন স্ববৃহৎ ত,পের উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন। স্থানীয় প্রবাদ, উক্ত প্রাচীন জনপদ হইতে এই স্তম্ভ শক্টসাহায্যে খিঞ্জিরাবাদে আনীত হয়, পরে তথা হইতে নদীবকে নৌকার উপরি স্থাপিত করিয়া নৃতন দিল্লী রাজধানী किरत्राञावारम नमानीज श्रेत्राहिन। व्यान्नमानिक ১.৫% श्रीस ফিরোজশাহ হিন্দুর মূথে উহার নিশ্চলতা অবগত হইয়া বহু অর্থ-বাবে উহাকে দিল্লীতে আনয়ন করেন। তিনি উহার শিরো-দেশ খেত ও রুক্তবর্ণ প্রস্তারে ফুলোভিত করিয়া স্বর্ণকলস স্থাপার করিয়াছিলেন। তৎকালে উহা নিনার জরিন নামে প্রাসদ্ধ ছিল। ১৬১১ धृष्टीरम উইলিয়ম ফিঞ্ দিল্লী নগরে আসিয়া ইংার স্বর্ণময় কলস ও অন্ধচক্রাক্রতি চুড়ার উল্লেখ করিয়া গিয়া-ছেন। তাঁহার মতে উহার নিম কএকতলের উপরিভাগ ভীম-সার প্রস্তবন্ত বলিয়া কথিত।

ইহা অক্তান্ত অশোকন্তভের ন্তার গাঢ় লালবর্ণ প্রন্তরে গঠিত। উচ্চ ৪২ নিট্ ৭ ইঞ্চ। উহার উপরিভাগ ৩৫ নিট্,উৎক্সুট পালিশ-বুক্ত ও মন্তণ,নিমভাগ বস্থসে। উহার পরিমাণ প্রায় ৮ দর্ভ মণ।

এই স্তম্ভগাতে ছইটা প্রধান ও কতকগুলি কুদ্র কুদ্র লিপি উৎ-কীর্ণ আছে। তন্মধ্যে শৃষ্টপূর্ব্ব ৩র শৃতান্দের শেষভাগে বৌদ্ধসমাট আশোকের প্রশন্তিই নর্কাণেকা প্রাচীন। উহা পালী অকরে निविक । छेरात वर्गमाना छात्रजीव वर्गमानात मर्स शाहीन निवर्गन. এখনও উহার অকরাবগী পরিষ্ণার থোদিত রহিয়াছে, কেবল মাত্র ছএকটা স্থানে পাথরের চটা উঠিয়া যাওয়ার সেই স্থানের লিপি নষ্ট হইরাছে। উহার শেষভাগে একটা ছত্রে সমাট্ অশোকের এইরূপ অমুজা উৎকীর্ণ আছে:- "ধর্মের রক্ষা হেত শিলান্তভোপরি এই শিলাফলক উৎকীর্ণ কর, যেন ইহা আবহমানকাল বিশুমান থাকে।" উহার উপরিভাগের চারিপার্মে চারিখানি ও নিম্নে একথানি শিলালিপি দেখা যায়। পূর্ব্বমুখী হুলকের শেষ দশ ছত্র ও অক্তান্ত ফলকগুলির লিপি এই দিল্লীন্তন্তের পার্থকা জ্ঞাপন করিতেছে । দ্বিতীয় একথানি ফলকে চৌহানরাজ বিশাল (বিগ্রহ) দেবের বিজয়বার্তা উৎকীর্ণ রহিয়াছে। উহা পাঠে জানা যায় যে, তিনি হিমাদ্রি হইতে বিশ্বাগিরি পর্যাস্ত সমুদায় ভূভাগ একছ ত্রাধীন করিয়াছিলেন।

চৌহান-রাজবংশের গৌরবজ্ঞাপক এই লিপি চুইথণ্ডে বিভক্ত। উহার অর্জাংশ প্রাচীন অশোকলিপির উপরে এবং শেবার্দ্ধ তাহার নিমে উৎকীর্ণ। উভন্ন লিপিথতেই ১২২০ সংবৎ লিথিত আছে। নিমথতের বর্ণমালা আধুনিক সংস্কৃত। উহাতে লিথিত আছে, শাকস্তরীরাজ বিশালদেব ১১৬৯ খুটান্দে এই শিলাফলক নৃতন খোদিত করিয়া দেন। ঐরপ আর একটা লাটস্তম্ভ মীরাট হইতে আনীত হইয়া দিল্লীনগরে হাপিত হইয়াছিল। সমাট্ অশোক তাহার স্কপ্রসিদ্ধ অন্তশাসন রাজ্ঞান্থের বাজন্ত ও বৈদেশিক ভ্রমণকারিবর্গ আপন আপন বীরক্ষীন্তি উৎকীর্ণ করিয়া গিরাছেন, তাহান্দের আর নৃতন কম্ভ নিশ্বাণের কন্তগেগ করিয়া গিরাছেন, তাহান্দের আর নৃতন কম্ভ নিশ্বাণের কন্তগেগ করিয়া গিরাছেন, তাহান্দের আর নৃতন কম্ভ নিশ্বাণের কন্তগেগ করিয়া গিরাছেন, তাহান্দের আর নৃতন কম্ভ নিশ্বাণের কন্ত্রভাগ করিতে হয় নাই।

৪ দিল্লীর লোহস্তম্ভ ন্মন্জিদের মধান্তবে স্থাপিত। উচ্চতা ২২ ফিট্ এবং বাাস ১৬ ইঞ্। প্রস্নুতব্বিৎ প্রিলেশ উহাকে খুগীর তর বা চতুর্থ শতাব্দে নির্দ্ধিত বলিয়া অন্থমান করেন। উহার গাত্রন্থ লিপি "কনোন্ধী নাগরী" ও অন্থান্ত মিল্লবর্ণমালার গোহ-গাত্র খোদিত। ইহাতে হতিনাপুর-রাজ্যাপহারক রাজা ধব এবং বাহ্লিকাদি জাতির উল্লেব থাকার উহাকে খুটীর পঞ্চম শতানীয় পরবর্ত্তী বলিরাই মনে হর।

লগমবোধ—বম্নাতীরবর্তী একটা তীর্থস্থান, দিল্লী ইইতে
ক একমাইল দক্ষিণে স্থাপিত। চাঁদ কবির বিষরণী হইতে
লানা বার বে, চৌহানরালকংশের গৌরবপ্রকাশক একটা শুন্ত
এথানে বিক্রমান ছিল। কালবণে উহা নাল প্রাপ্ত হইরাছে।

বারাণদীয় অংশাকের প্রশক্তিবৃক্ত ক্তম্ত । উচ্চতা ৪২ ফিট্
 ইঞ্চ । ইফার গাত্রে নানা প্রকার কার্যকার্য আছে ।

৭ গাজিপুরওড —গাজিপুরে স্থাণিত একটা বৌদস্তম্ভ । উহার বর্ণমালা পূর্ণসংক্বত নহে, এই কারণে সাধারণের পক্ষে সহজ্ববোধা নহে। ইহার গাত্রে যে শিলাক্ষণক খোদিত আছে, তাহা আলাহাবাদ, দিল্লী প্রভৃতি শুপুর ভার বৌদ্ধত্তশাদির স্থাপিত হইরাছে। উহাতে গুপুরংগায় সমুদ্রগুর ইইতে যুবরাজ মহেক্ষপ্রপ্রের নাম পাওরা যায়।

৮ রূপবাস-শৈগস্তম্ভ — ভরতপুর রাজ্যের রূপবাসবিভাগের একটা গণ্ডশৈলোপরি স্থাপিত। ইংা বেলেপাধরে নির্মিত এবং অসম্পূর্ণ অবস্থায় নিপতিত রহিয়াছে। উহার বৃহৎ হুইটার একের উচ্চতা ৩৩। ফিটু এবং অপরটার ২২। ফিট্।

৯ ধোলী তম্ব কটকের ধোলী গ্রামে অবহিত। ইহাতে লাটবর্ণমালা এবং মধ্যে মধ্যে বলজীও সিওনী লিপির অক্ষরমালা দৃষ্ট হয়। উড়িয়া-বিভাগে যে সকল অংশাকস্তম্ভ প্রতিষ্ঠিত আছে, তৎসমুদায়ই বেলেপাধরে গঠিত।

১০ জ্নরত্ত - ইহাতে হইখানি শিলাফণক উৎকীর্ণ আছে। নানাখাটের ভড়োপরি উৎকীর্ণ লিপির সহিত দিল্লীভড়তের ও গির্ণর পর্বতত্ব শিলাফলকের সৌসানৃত্ত আছে। গির্ণরের পার্বত্য-লিপিকে জেমদ্ প্রিন্দেশ্ব পালি বলিয়া অনুমান করেন।

नाउँ निर्मि ।

মহামতি কর্ণেল টড ্রাজস্থানের প্রাচীন কীর্ত্তি ও স্তম্ভগোদিত निश्मिना तिथिया मुक्ककार्थ विनियाहित्तन, "आधा हेन अह, প্রয়াগ, মেবার, জুনাগড়ের শৈলমালা, বিজ্লী ও আরাবলী শিখরে স্থাপিত স্তত্তাদির, পর্ব্বতগাত্রপোদিত লিপির এবং ভারতের সক্ষর প্রতিষ্ঠিত জৈন ও বৌদ্ধ্যন্দিরাদিতে উংকীর্ণ শিলাফলকসমূহের প্রকৃত তত্ত্ব অবগত হইন্তে পারিলে, অব্চাই আমরা ভারতবর্ষের প্রাচীন ইতিবৃত্ত আলোচনা করিতে অগ্র-সর হইতে পারি।" সেই মহৎ সন্ধরে এতী হইরা মহামতি জেম্দ প্রিন্দেপ্ গভীর গবেষণার গহিত ভারতীয় প্রত্যান্থ-শীলনে যত্নবান হন। তিনি প্রথমে লাটলিপি উদ্ধারে ক্লত-সম্ভল্ল হইয়া পর্যাবেক্ষণ করিতে করিতে বুরিতে পারিলেন যে, উতা পালী ও সংস্কৃত ভাষার মিশ্রণে গঠিত। উতার বিশেষা ও অপরাপর পদশুলি পালিবিভক্তি ও প্রভারযোগে সাধিত এবং ক্রিয়াপদগুলি প্রায় সংস্কৃত হইতে গৃহীত হইয়াছে। ভিল্সা স্তত্তেও গুপ্তবংশীর ফলকাদির অত্তরণ ভাষার প্রয়োগ আছে: তিনিই প্রথমে ভিণ্যা ভড়ের সংখ্যানিরপণ ছারা কালনির্ণার

সমৰ্থ হইবাছিলেন। বৌষতভাদিতে প্ৰবিক্তাস বারা কাল্যান বৰ্ণিত দেশা বায়।

লাটলিপির অকরমানা প্রাচীন ব্রাক্টীলিপি ভিন্ন আর কিছুই নহে। ক্যজোপরি ভিন্ন অন্তর ঐরপ বর্ণমানা দুই না হওরার উহা লাটলিপি বলিরাই প্রানিক। আক্সানন্থানের কপর্মীগিরির বর্ণমানা উহা অপেকা কিছু বৃহৎ এবং প্রাচীন নেমিভিক-ধরণে অভিত; কিন্তু কটক, দিল্লী, আলাহাবাদ, বেভিরা, খুলটিরা ও রাধিরা প্রভৃতি ভ্রাক্তি ক্সজিলি ভারতীর ব্যামী।

উপরে যজ্ঞান গাঁটজন্তের কথা বিবৃত হইল, তংসমুবারের আকৃতি ভিন্ন ভিন্ন। কোনটা চতুকোণ, কোনটা পলকাটা, কোনটা বা কোনাবার গোল, ঐ সকলের মধ্যে নিরীর কিরোজক্ত লামে পরিচিত লাটই সাধারণে স্পরিচিত। উহা একটা উচ্চ জট্টালিকার উপরি হাপিত। বে হানে এই কত গৃহছাদে সংস্থাপিত হইরাছে, তথার উহার পরিধি ১-॥। কিট্; উহার ৩৭ কিট্ মন্থাংশ একথও করিন গোলাকার প্রস্তার গঠিত। ইহার উপরের লাটলিপি বছপ্রাচীন এবং নিম্নেশে অশেকাঞ্চত শক্ষর্ববিভালের সংস্কৃত অক্ষরে খোনিত আয় একখানি শিলাক্ষক উৎকীপ আছে।

অধুনা বৌদসত্রাট অপোকের প্রতিষ্ঠিত বে চতুর্দশটা লাটতত্ত্ব আবিষ্কৃত হইরাছে, তাহাতে বে সকল রাজার্শাসন বিবৃত
আছে, সাধারণের অবগতির জন্ত নিমে তাহা উদ্ভ হইল:

অপোকের অভাগ্যন ও তাহার বিবর।

১ম---ৰাভাৰ্বে বা বক্সাৰ্থে পশুহিংসার নিবেধ এবং ধর্মনীতির পদ্মিয়ভার্য আদেশ।

২র--রাজ্যমর আরুর্বেদশিক্ষা প্রচার ও বিনানুল্যে ছঃছ প্রজ্ঞারর্গের চিকিৎসাব্যবরা, পথপার্থে কৃপথনন ও বৃক্ষরোপণ।

তর—প্রিরদশীর রাজস্বকালের স্বাদশবাবিক সমারোহপ্রচার ও পঞ্চরবার্থিক রাজান্তগড়ঃ বা রাজস্বক্রিপ্রদর্শন।

৪র্ব – প্রিরংলীর রাজখকালের বিগত বাদশবার্বিক রাজ্য-শাসনের সহিত বর্তমান নির্কিরোধ রাজদের সামজ্ঞ প্রচার।

द्वोद्दर्श्वथात्रार्थं श्वंश्वकः ७ थानाव्यनिद्वातः ।

শক্তবেশক, রাজ্যরক্ষক, ধর্মাধিকরণ প্রান্তৃতি পলে
 কাজিবিশেরকে নির্ক্ত করিয়া রাজ্যের মঞ্চল ব্যবস্থাপ্রচার।

্তৰ—বিভিন্ন ধর্মসভাবারের মত পার্থক্যের সামগ্রত সামন করিয়া ক্রেয়া-মত স্থাপনে মাজার স্থায়ক্ষ্যাপন।

৮ন – পূৰ্বকটা হাৰণবের পাৰ্কি জ্যোক্ষানের সহিত বাহ নিয়াহ আহোকে পাৰ্কানির্দেশ ও পৰি হজি সামুপ্তৰ সন্দান, ভিদাহান ও বর্গজ্ঞ আহুছি মাননীয়গ্রকে ব্যাবোদ্য স্থাননা বানের অনুভা। ১২—বৰ্ণ ও নীতিবিবৰ কথা, ধৰ্ণনাল, বৰ্ণনেৰীয় সুৰ্থ, ভিক্তবিধাৰে সান, সৰ্বাজনে বহা ও অক্লানবিংগৰ তাতি মাজের কলনিৰ্ফোৰ ও ভাহার কর্তবাজা সকৰে আবেশপ্ৰচার।

১০ন—'বশো বা কিভি বা' বাজৰ নীনানো, কৰিছ। সংগারের কবিভাক্ষণিত গর্ভের প্রভ্যাখ্যান ও নীকছ্তির প্রকৃতি পছানির্দেশ।

্ ১১শ—বৌলী ও গির্ণর প্রশন্তিতে বর্ণিভ "শর্বাই ঈশ্বরের সর্ক্ষপ্রেষ্ঠ দান।"

১২শ—বৌধধৰ্ষে অবিধানীদিসের প্ৰতি নামূলৰে মতা-ভিৰাজি।

১৪শ—সমগ্র অপ্নশাসনের সারমর্থ ও সংক্ষিপ্ত উপাদেশ।
লাট্টি(লাড়), কোরাপোক্ত অপদেবতাক্তেম। মংব্রুদের সমরে
বামিরা ও কোরেশ লাতি এই বেবতার উপাসনা করিত।
লাট্টিক (পুং) লাটকাতিসববীর।

লাটি ডিগুীর, একলন প্রাচীন কবি। কেনেজকুত স্থানিতিলকে ইহার উল্লেখ আছে।

লাটাচার্য্য, একজন প্রনিদ্ধ জ্যোতির্বিদ্ পণ্ডিত। লাটিকা (ত্রী) রীতিকে। বৈদতী, পাঞ্চালী, গৌড়ী ও লাটকা এই চারিপ্রকার রীতি। মোটাম্টি রচনাপদ্ধতিকে রীতি বলা বার।

"লাটা তু দ্বীতিবৈদ্ভীপাঞ্চাল্যোরস্করান্থিতা।"

(সাহিত্যদূর্পণ ৯।৬২৯)

বৈদ্বর্তী ও পাঞ্চালী রীতির মধ্যবিতা বে রীতি তাহাকে
লাটী কহে। তাৎপর্যা এই বে, কেবল বৈদ্বর্তী রীতি অমুনারে
রচনা বা পাঞ্চালী রীতি অমুনারে রচনা না হইরা ইহার মাঝামাঝি ভাবে যে রচনা হইবে, তাহাই লাটারীতি। বৈদ্বর্তী ও
পাঞ্চালী এই উত্তর রীতিরই নিরম অমুনরণ করিরা যে রচনা,
ভাহাই লাটা-রীতি। কাহারও কাহার মতে ইহার লক্ষ্

্ৰীয়ণ্ডণদসমাসহজ্ঞগাৰ্কৈৰ দৈনি চাভিভূমিছা। উচিভবিশেৰণপুষিত্বজ্ঞানা জবেলাটা ॥

(বাহিত্যদ° > পরি°)

এই বীতিতে নৃহন্ত পৰবিজ্ঞান হইবে, স্পথ্য নীৰ্থসভান বছল ও নৃক্তৰৰ্থ কৰিক না বাকে এবং উচিত বিধেৰৰ বাজা বছ বিজ্ঞান হইবে এই রীতি হইবে। এইজপ ভাবে বিধেৰণ প্রায়োগ করিতে হইবে বে, বালীয় বছার নহিছা জাবার নাক্তি বাকে। স্ক্তবিধ নাক্ত্ব-

পাকানী নিজভাবের লাই কু বৃহজিঃ পরিঃ ব'(নার্যবিজ্ঞান- এপরি-) ক্রমানকার ক্রমা ক্রমে বৌদ্ধী ইছি, বানিস্থান বিজ্ঞান इहेरन देवनर्खी, मिल्लंखाद शाकानी अवर मृत्र शमविकान कविरन नांकी तीकि इत । जेमांक्त्रण वशा-

> "অর্মুদর্ভি মুদ্রাভঞ্জন: পশ্লিনীনা-भूनवित्रियनांनी यानमसात्रभूनाम्। বিহরবিধুরকোক্ষল, বন্ধুর্বিভিন্দন কুপিতকপিকপোলকোড়ভাত্রভযাংসি **ঃ**"

> > (শাহিত্যদ° ৯ পরি°)

লাটাকুপ্রাস (গুং) অনুপ্রাস অলভারতের। ইহার লক্ষ্য ।---"শৰাৰ্থয়োঃ পৌনক্ষকং ভেদে তাৎপৰ্য্যমাত্ৰতঃ। লাটাত্মপ্রাস ইত্যুক্তোহতুপ্রাস: পঞ্চা মত: #°

(সাহিত্যদ৽ ১০০৬৮)

ভাৎপর্য্যাত্মসারে শব্দ ও অর্থের পৌলক্ষক্ত হইলে এই অলভার হয়। এই অলভার লাটজনপ্রিয় বলিরা ইহার নাম नाठाञ्चान इरेग्राट्छ। उनार्वन-

^{"স্মেররাজীবনয়নে} নয়নে কিং নিমীলিভে। পশ্চ নির্জিতকন্দপং কন্দর্পবশগং প্রির**দ্**॥"

(সাহিত্যদ৽ ১০ পরি•)

नां हो युन (युर) नां हा वन । লাটিম (দেশক) জীড়নকভেন, ছেলেদের একপ্রকার থেনাইবার " क्लिनिम ∤

लागिय (बि) नाउँक।

লাটেশ্বর, পশ্চিমভারতহিত একটা দৈবতীর্থ।

लाष्ट्रि (हिन्ती) नार्षिम।

লাট্যায়ন (পুং) শ্রোভহত্রপ্রণেতা শবিভেদ।

লাঠামাছ (দেশৰ) মংক্তভেন (Nandus murmoratus)।

লাঠি (দেশৰ) লগুড়, বংশবন্তি।

लाठियांन (तन्त्व) याशत्रा गाठि (चटन । गाठिवास । লাঠী, বোৰাই প্ৰেসিডেন্সীর কাঠিয়াবাড় বিভাগের গোহেলবাড় थासक् এकी नामस तासा । अका २5°85 व्हेट २5°86 ৩০ ৺এবং জাৰি° ৭১°২০ ভইতে ৭১°৩২ পৃঃ মধ্য। ভূপরিমাণ ৪৮ বর্গমাইল। এধানকার কতক হান গভলৈলে পূর্ব এবং व्यविनिडीरान इकवर्ग मृखिका गृहे इत्र । थे फैर्सन मृखिकान कृता, ইকু ও কলাই শক্ত প্রচুর কল্মে। নিকটবর্ত্তী ভাবনগর বন্ধরে এখানকার পণ্য ক্রব্যের ক্রন্ত বিক্রের হইরা থাকে।

ভাবনগর-রাজবংশের অভিচাতার মধ্যমন্রাভা শাল জী হইতে व्यथानकात्र गर्भात्रकारम् अधिका स्त्र । वर्षे वस्त्रीत्र वक् सन ঠাকুর-সদার নারাজী গাইকোবাড়কে বীর কলা। স্বর্পণ করেন। ভিনি বিবাহের বৌত্তকল্প বীর কভাকে ছভারিনামক क्रमण्डि गांन कत्रित्राष्ट्रिकत ।

উক্ত সম্পত্তি একণে দামনগন্ন মাথে থাত। গাইকোবাড়-রাজ বামাজী এই সম্পত্তিলাভের পর বীর বতরের নিকট হইতে রাজকর গ্রহণ রহিত করিরা দেন। তদৰ্বি এখানকার সর্কারগণ উক্ত সম্পত্তি প্রায় নিষয় ভোগ করিয়া আসিভেছেন এবং গাইকোবাড়রাশকে অভিবর্বে একটি করিয়া অর্থ পাঠাইডে বাধ্য আছেন। ভাঁছার বার্বিক রাজস্ব 🎭 🧸 টাকা, ভন্মধ্য ভিনি বড়োদার গাইকোবাড়কে এবং কুনাগড়ের নবাবকে এক-বোগে ২০০৭, টাকা কর দিরা থাকেন। ভাছাদের নত্তকগ্রহণে অধিকার নাই। জ্যেষ্ঠ পুত্রই পিতৃপদের অধিকারী। এখানকার সন্দার বাপুভা (১৮৮৪ খুঃ) গোহেলবংশীর রাজপুত। ইনি ইংরাজ-রাজসরকারে এর্থ শ্রেণীর সামস্করণে গণ্য। ইনি খীর রাব্য মধ্যে কোন প্রকার পণাজব্যের ওক্ষগ্রহণ করেন না।

২ উক্ত সামস্তরাক্ষ্যের প্রধান নগর। অক্ষা ২১° ৪৩′ ২০ জ: এবং দ্রাখি ৭১°২৮ ত০ পৃ:। ভাবনগর-গোগুল-রেলপথের ধোরাজী শাখা এই রাজ্য মধ্য দিয়া গিরাছে। নগরের অর্ককোশ দূরে ঐ রেলপথের একটি ষ্টেসন আছে। এখানে ধর্মালালা, চিকিৎসালয় ও বিদ্যালয় বিদ্যমান আছে।

লাড (কেপ) অদত্তমুরাদি পরদৈত সকত সেট্। কট্লাড্রভি, ৰুঙ অললাড়ং।

লাড়, বোৰাই-প্ৰেদিডেন্দীবাদী স্বাভিবিদের। দক্ষিণ গুৰুৱাতী নামেও পরিচিত। সম্ভবতঃ ইহারাই স্থপ্রাচীন লাট-জনপদ-বাসী লাটজাতির বংশধর। ইহাদের মধ্যে প্রবাদ আছে বে, উত্তরভারত হইতে তাহাদের পূর্বপুরুষণণ দক্ষিণভারতে জাসিয়া বাল করিরাছে। ক্লফ ও পাপুরক এবং ভূলজাভবানী ও বেলমা ইহাদের প্রধান উপাক্ত দেবতা।

ইহারা দৃঢ়কার, বলিষ্ঠ ও কুন্দর গঠন। দেখিতে অনেকাংশে শিশ্পিদিগের মত। চকুর্বর বৃহৎ, তকপক্ষীর ভার নাদা উরত, ওঠবর পাতলা এবং মুখাক্লভি ছগোল। আঁচার ব্যবহারে উচ্চ শ্রেণীর হিন্দুর মত ও বেশ পরিফার পরিফলে। ইছারা মঞ্চপান वा माध्य क्लाबन करत्र मा। अधिकारमह नितामियानी। इटग्रंत জন্ত সকলেই গোমহিষ পালন করিয়া থাকে। গ্রীলোকেরা বাদরা করিলা অথবা পশ্চাতে কাছা দিরা কাপড় পরে। चांचिथानश्कात वाकृष्ठि नकन नम्खनहे हेहारमत मरश विश्वमान আছে, কিন্তু সকলেই বিশেব আলক্তক্সির। ইহালের ক্তিত্ত লাড় থাকের জনহা নিতান্ত মন্দ নহে। আডর প্রাঞ্জি গছ जनाविजन है रेशामन अभान छन्जीविका।

हेशालक मत्था नाम बाखील वरणश्रल बाह्न द्यान खेलावि वृष्टे হর না। পুরের বিবাহ অংশকা করার নির্দেই অধিক বরচ হর। কারণ ঐ সমরে আমাতাকে বৌতুক সম্বশ টাকা নেওয়া

হইরা থাকে । ইহারা সকলেই ধার্দ্ধিক, প্রাক্ষণের প্রতি সকলেই বিশেষ জ্ঞান্যান্য বিবাহাদি কার্য্যে প্রাক্ষণেরাই-পৌরোহিত্য করে । পণ্টরপুর ও তুলঝাপুরে গেবছর্শনে যার এবং হিন্দ্র প্রধান প্রধান সকল পর্কাবেই উপবাসাধি করিরা থাকে । বারাণসীতে ইহাদের ধর্মগুরুর বংশ আছে । তাঁহারা জাতিতে গোসাবি (গোঝাই)। তাঁহারা সমর সমর দান্দিণাত্যে শিব্যদিগতে মঙ্জ দিতে আসিরা বাঁকেন । অঞ্চ জাতির শিব্য প্রহণ করেন না।

বালকের অন্মের পদ্ম মাডিছেদ করা হইলে প্রস্তিকে
মান করান হয়। পঞ্মদিবসে বদ্ধীপুলাস্তে আত্মীর ও বর্বাজবগণকে ভোজ দেওয়া হয়। জয়োদশ দিনে সকলে বালককে
ক্রোড়ে দার এবং ঐ দিনেই আতবালকের নামকরণ হইরা
থাকে। উহার পর তিনমাস পর্যন্ত প্রতি সোমবারে প্রস্তি
ব্রীদেবীর পূজা করে। এইরূপে তিনমাস অতীত হইলে প্রস্তি
পূত্র লইয়া নিকটবরী কোন দেবালরে গমনপূর্কক দেবতাকে
পূত্র সন্দর্শন করায় এবং দেবতার তৃত্তিবিধান জন্ত পান ও কদলী
দিয়া পূত্র কোলে লইয়া ঘরে ক্রিয়া আইসে।

ঐ দিন হইতে বিবাহ পর্যস্ত আর কোনরূপ সংকার নাই।
বিবাহের পুঞ্চিন "দেবঞ্জা", ঐ দিনে কুলদেবতার পূঞা দেওরা
হয়। বিবাহদিনে বর ও ক্লাকে হরিলা মাধাইরা মান করান
হইরা থাকে। বিবাহের সময় বর ও ক'নেকে একত্র বসাইরা
যাজক ব্রাদ্ধণ মন্ত্রপাঠ করে এবং তাহার মাথার সিন্দুর্মাথা চাউল
হড়াইয়া দিলেই বিবাহকার্থা সম্পন্ন হইয়া যায়। বিবাহাত্তে
একটা ভোজ হয়।

ইহারা মৃতদেহ সমাহিত করে এবং দশদিন মাত্র অশৌচ
পালন করিবা থাকে। পাঁচ দিন হইতে অরোদশ পর্যায়
মৃতের প্রেডক্লডা হর। শেব দিনে জ্ঞাতিকুটুখের ভোজ
হইবার পর সকল চুকিরা যার। ইহাদের মধ্যে পরম্পরে বেশ
মিল আছে। সামাজিক কোন গোলবোগ ঘটিলে জ্ঞাতীর প্রধানগালের বিচারে ভাহার নিশান্তি হইরা থাকে। ভদপেকা গুরুতর
জ্ঞপরাধের নিশান্তি গুরুর বারাই হর। বদি কেই এই বিচার
লক্ষ্যন করিবা কার্য্য করে, ভাহা হইলে ভাহার জ্ঞাতিচ্যুতি পটে
এবং দশুস্করপ দশ টাকা দিলে পুনরায় স্বঞ্জাতিসমাজে
আসিতে পার।

লাড় কসাব, বোৰাই-প্ৰদেশবাসী মুসনমান-শ্ৰেণীভেন। ভেড়া ছাগ প্ৰান্ত কিছত কৰিবা বিজ্ঞান কৰাই ইহাদের জাতীয় ব্যবসা। ইহারা পূর্বে হিন্দু ছিল। মহিজ্ঞান টিপাস্থলতানের (১৭৮৫-১৭৯৯ গৃঃ) প্রভাবে সকলেই ইস্গামধর্মে বীন্দিত হইয়াছে। জী ও পুরুবদিগের বেশভ্যা স্থানীয় হিন্দুদিগের মত। কোন কোন পুরুব কেবল মাত্র দক্ষিপকর্থে একটা বড় কাপবাসা ঝুলাইরা থাকে। ত্রীলোকেরা পুরুষের জপেকা কুলারী, তাহারা রাভার বাহির হইতে কক্ষা বোণ করে না। অক্তন্তে নোকানে বসিয়া নাংস বিক্রন্ত করে। ইহারা মিতবারী, কর্মাঠ, চতুর ও বিনয়ী, কিন্তু সভাষতঃ কিছু আপরিকার ও অপরিক্রা।

ইহারা আপনাদের সমাজেই বিবাহাদি করে। 'পাটিক' নামক নির্কাচিত সমাজের অধ্যক্ষের আদেশ সকলেই পালন করিরা থাকে। কোনরপ সামাজিক গোলমাল উপদ্বিত হইলে পঞ্চারতে তাহার নিশ্পত্তি হয়। পঞ্চারতে দোবীর অপরাধ সাবাত্ত করিলে, পাটিল তাহাদের ইচ্ছামত অর্থদণ্ড করিরা থাকেন। ইহারা হিন্দুদেবদেবীর প্রতি বংগ্রু ভক্তি দেখাইয়া থাকে। হিন্দুর দেবতার প্রাদিতে এবং পর্কোৎসব পালন করিতে ইহারা বিশেব সমারোহ ওউপবাসাদি করে; কেহই গোমাংস ভক্ষণ করে না। কাজির ছারা বিবাহকার্য্য ও সমাধি সম্পাদন ব্যতীত অস্তান্ত সকল বিষয়েই ইহারা হিন্দু থেবার অন্ত্যুসর্গ করিরা থাকে। ইহারা কোরাণ বা কল্মা পড়ে না অথবা মস্তিদে বার না। অস্তান্ত মুসলমান-সন্তানারের সহিত একত্র ভোজন করিতে ইহারা ঘণা বোধ করে।

লাড়খান, একজন মুসলমানরাজ। ইনি অনকরপ্রপ্রেণতা কল্যাণ মরের প্রতিপালক।

लाफुवानी, वाषार-अल्पनानी जाणिवित्नव । ताजा क्यांत्रशान-কর্ত্তক দক্ষিণ-গুল্পরাতের লাটদেশ হইতে বিভাড়িত হইলে ইহারা সম্ভবতঃ এথানে আসিয়া বাস করে। ইহারা হিন্দ। ইহাদের মধ্যে অগন্ত্য, ভরন্বাঞ্জ, গর্গা, গৌতম, জমদন্ধি, কৌশিক, কাশ্বপ, নৈজৰ ও বিশ্বামিত্ৰ গোত্ৰ প্ৰচলিত। অথবা একপদবীযুক্ত ব্যক্তির মধ্যে ইহাদের বিবাহ হয় না। ইহারা প্রত্যহ লান ও কুলদেবতার পূজা ক্রিয়া থাকে। এতত্তিয় তুলজাপুরের ভবানীদেবী, সাভারার অন্তর্গত সিদ্দনাপুরের মহাদেব, পশ্চরপুরের বিঠোবা প্রাভৃতি দেবতীর্থে ইহারা সচরাচর গমন করে। ইহাদের লৌকিক আচার খ্যবহার ও নেশভ্যাদি স্থানীয় আত্মণগণের মত। ইহারা পরিষার পরিজ্ঞা, কর্মঠ. আতিথের ও চতুর। চাউল, কাপড় ও নানা মসলা বিক্রয় করাই ইহাদের জাতীর ব্যবসা। গ্রামবাসী লাভগণ জনেকেট ক্লবিকার্য্য করে। বর্তমান সময়ে আনেকে শিক্ষালাভ করিয়া গৰমেন্টের অধীনে কর্মা করিতেছে। স্ত্রীলোকেরা পুরুষানগের সহিত আপন আপন দোকানে বিজের কার্ব্য করির। থাকে। ভব্যতীত তাহারা গৃহস্থালীর সকল কর্মই করে।

ইহার। ছানীর প্রাঞ্চণগণের অপেকা স্বাজে নীচ এবং কুন্বি-লিগের অপেকা উচ্চ। নেশহ প্রাঞ্জনগণ ইহাদের স্কল কাঠে।ই পৌরোহিত্য করেন। হিন্দুর স্কল দেববেবীর পূজার ইহাদের বিশেব ভক্তি দেখা বার। ইহারা হিন্দুর সকল পর্কাই পালন
থাকা প্রতিবংসর প্রাবণী পোর্মাসীতে (নারিকেলপূর্ণিমা নামে
ব্যাত) সকলে জনাও বা যক্ত্রপরিধান করিরা থাকে। বাল্যবিবাহ ও বহবিবাহ ইহাদের মধ্যে প্রচিণিত আছে, কিন্তু বিধ্বাবিবাহ নিষিত্র। বালকের অপ্তমবর্বই উপনরনের প্রশান্তকাল।
১৫ হইতে ২০ বৎসরের মধ্যে বালকের বিবাহ দেওরা হর।
বিবাহের মন্ত্র বিদক্ত, সংস্কৃত নহে। উহা দেশীর ভাষায় অনুদিত।
ইহারা শ্বদাহ করে। ১০ দিন মাত্র অশোচ থাকে। তদনত্তর
প্রাভাত্তি তচ হইরা জাতিভোল দের। সামাজিক গোলবোগ
জাতীর পঞ্চারতের ছারা নিশান্তি হইরা থাকে। অপরাধী ব্যক্তির
অর্থদপ্তই ব্যবহা। কথন কথন সে জাতিভোল দিরা পরিত্রাণ পার।
লাভুসূর্য্যবংশী, বোখাই-প্রদেশের ধারবাড়-জোবাসী নিমপ্রেণীর
জাতিবিশেষ। ছাগাদি নিহত করিয়া বিক্রের করাই ইহাদের
জাতীর ব্যবসা। ইহারা অন্তম হিন্দুস্থানী ভাষায় কথা কয়।

ইহাদের মধ্যে কোনরূপ শ্রেণীবিভাগ নাই। পুত্র জন্মিলে মাভিচ্ছেদের পর ইহারা জাতবালকের মূথে কএক বিন্দু রেড়ীর তৈল ঢালিয়া দের এবং পঞ্চমদিনে একটা ছাগহত্যা করিয়া আত্মীর অজনকে ভোজ দিয়া থাকে। ত্রহোদশ দিনে জাতাশোচান্তে সকলে বালককে ক্রোড়ে লয় এবং নামকরণ করে। তাহার পর বিবাহ পর্যস্ত আর কোনে সংস্কার নাই। বিবাহের দিন বর ও কন্তাকে একটা উচ্চ বেদীর উপর বসাইয়া প্রাম্যজ্যোতিবী কতা সম্প্রদান করেন। মন্ত্রপাঠকালে তিনি উভ্রের মন্তকোপরি হরিজারঞ্জিত চাউল ছড়াইয়া দেন। তদনস্তর বর ও কতা পরস্পরের কপালে হরিজা মাথাইলে পুরোহিত বর্ত্তিকা আলিয়া উভয়কে নীরাজন করেন। বিবাহান্তে আত্মীয় অজনের ভোজ হইয়া থাকে।

মৃত্যুর পর ইহারা শবদেহ মান করাইরা উপবিপ্রভাবে রাখিরা দেয় এবং নৃতন বস্ত্র পরিধান করার। তার পর তাহাকে পুস্পানাল্য ও অলজারাদিতে স্লোভিড করিরা সমাধিক্ষেত্রে লইরা সমাহিত করে। তৃতীর দিনে ইহারা সেই কবরে আসিরা হুয় ঢালিরা দেয়। যদি কোন অভভদিনে মৃত্যু হয়, তাহা হইলে সেই বাজীর সকলে তিনমান কাল ঐ গৃহ পরিত্যাগ করিরা অভ্যন্ত্র বাইরা বান করে। তৎকালে ঐ বাটীতে চাবি দিয়া হারদেশে ইহায়া-কাটা ছড়াইরা রাধে। ইহাদের বিশান এই বে, অওভ-কবে মৃত্যু আভ বে দোর হয়, তাহা ঐ বাটীতে বাকিলে গৃহস্থিত অপর ব্যক্তিকে নিঃসন্দেহই স্পূর্ণ করিতে পারে।

ইহাদের মধ্যে বাল্যবিবাহ ও বছৰিবাহ প্রচলিত আছে। বিধবাহিবাহ নিবিদ্ধ। সামাজিক কোন বিবরের মীমাংসা পঞ্চারতের ছালাই নিশালিত হয়। বহি কেই ভাহাদের বাক্য অমাজ করে, ভাহা হইলে সেই ব্যক্তি সমাজচুত হইলা থাকে। ইহারা বার্দ্দিক, ধর্মকর্মেও ইহাদের মন্তি আছে। কেলগান-কেলার সবদ্ধি নগরন্থ বেল্লমা দেবীজীর্থে এবং নবসগুওের মুসলমান সাধু দবদ-মালিকের সমাধি-সজ্জানে ইহারা আসিরা থাকে। রাজ্যাদির প্রতিও ইহাদের ভক্তি জন্তলা। বিবাহাদি ক্রিয়াকর্মে ব্রাজ্পেরাও বাজকতা করে। ইহাদের কোন ধর্ম-শুরু নাই।

नांकु। (तनक) जानाकुन।

লাডালাডি (দেশৰ) ছানান্তরিত করণ।

লাড়ি (গং) পাণিনীয় ক্রোড়্যাদি গণোক্ত একটা শব্দ। (পা ৪।১।৮০)

লাভূ (দেশক) লড্ডক্, লড্ডক্ শলের অপরংশ।

लार्श्वी (जी) क्राण जी। (दश)

ला९ (हिमी) गाथि।

লাতব্য (গ্ং) বিক্রমোর্কশীবর্ণিত রাজপুররক্ষিভেন।

লাতি) (দেশন) পদাযাত।

लाशि ∫ (तमक) भनावाछ।

লাখালাথি (দেশজ) শরম্পরে পদাঘাত।

লাদ্থ (লদাক্), কাশ্মীর-মহারাজের অধিকৃত হিমালয়সীমান্তবর্তী একটা বিভাগ। ইহা কাশ্মীরের পূর্কাংশে স্থাপিত
এবং একজন শুতত্র শাসনকর্তার ধারা পরিচালিত। হিমালয়শৈলের চিরত্বারারত শৈলশৃকে অবস্থিত থাকার ইহার সীমা
নির্দেশ করা স্থকঠিন। এইস্থান দিয়া সিদ্ধনদ ও তাহার শাধাপ্রশাধাসমূহ প্রবাহিত থাকার ইহাকে সিদ্ধনদের উপত্যকা
ভূমি বলা বার। অক্ষা ৩২° হইতে ৩২° উ: এবং দ্রাঘি
৭৫° ২৯ হইতে ৭৯°২৯ পূ: মধ্য।

রপস্থ ও নিওএ। নামক মধ্যভাগের ছইটী জেলা, হিমালংরের ভ্রারাত্ত প্লসমূহ এবং জনপ্ত কুএন্ল্নের অধিত্যকা ভূমি ও লিন্মিথলের পার্কাতা প্রান্তর লইয়া এই বিভাগ গঠিত হইয়াছে। ডাঃ কনিংহামের মতে জানহর সহ ইহার ভূপরিমাণ ৩০ হাজার বর্গমাইল।

হিমালর পর্বতের মধ্যাংশবর্তী স্থবিত্ত শৈলপুঠে হাপিত
হওরার ইহার জনতানিরপণ করা প্রকঠিন। উক্ত মহাঝার
গণনাগুসারে এধানকার লোকসংখ্যা ১৬৮০০০, কিন্তু মুরক্রফ্ট
১৬৫০০০ ও ডাঃ বেলিউ ২০০০০০ সংখ্যা নির্দেশ করিরাছেন। লানকের বর্তমান ইতিবৃত্ত-সকলরিতা এক্ ভুর ১৮৭৩
খুষ্টাব্বের আনমস্থমারি মতে লোকসংখ্যা ২০৬০১। ডাঃ বিলিউ
ও মিঃ ভু একই বংসরে এরপ লোকসংখ্যার পার্থক্য নির্দেশ
করিরাছেন দেখিয়া মনে হয় যে, সন্তব্তঃ ঝিঃ ভু নির্দিষ্ট
জ্বোলাক্রেরই লোকসংখ্যা প্রহণ করিরাছিলেন।

লাদকের স্কার পৃথিবীর আর কোবাও এরাণ উচ্চ ভানে

মন্থব্যের বাস নাই! এখানকার অধিত্যকা ও উপত্যকামাত্রই
সম্ত্রপৃষ্ঠ হইতে ৯০০০ ও ১৭০০০ কিটের মধ্যবর্তী এবং
তত্মধ্যবর্তী অনেকগুলি পর্বতেশৃক্ত ২৫ হাজার ফিটের কম নর!
এখানে সিদ্ধ এবং তাহার সারক, নিওবা, চান্চেল্মা ও
ভানকর লাখা প্রবাহিত। পার্বত্য খাতবিলেব লবণজলে পূর্ণ,
তক্মধ্যে পালকোল ও ছোমোরিরি প্রধান।

এই জনপদের প্রাক্তিক পরিবর্তন ও অসাধারণ তুষার-শীতল হিমালর শিরে স্থাপিত হইয়াও এখানে গ্রীত্মের মাত্রা অভাধিক বলিয়া বোধ হয়। দিবাভাগে এখানে দাৰুণ উঞ্চতা এবং বাত্রিতে মর্বাডেদী লৈতা। শীতের আধিকা এবং বায়ুর क्रफ्लानियक्कन अधारन वित्यव स्कान क्ष्मणापि উৎপन्न रुग्न ना। স্থানীয় ত্বারমণ্ডিত শৈল্পন্ন ব্যতীত এখানে আর কোন বিষয়েই প্রাক্তিক সৌন্দর্য্যের গান্তীর্যা পরিলক্ষিত হয় না, কেবল মাত্র প্রত্তিপ্রজাত বাড়ি, কএকপ্রকার ফল বুক্ত ও কোন কোন কলাই স্তানবিশেষে জন্মিতে দেখা যায়। এই প্রদেশের উত্তরপূর্ব অধিত্যকায় এবং পর্বাতের ঢালু সামুদেশে मर्गा मृत्भा बनमाना मुद्दे इस । किन्तु तमहे तुक्छिन आग्रहे পত্রহীন এবং সেই স্থমিতে কোন প্রকার সব্জিই উৎপন্ন হয় না । এখানকার বস্তু জন্তর মধ্যে কিয়াক নামক বস্তু-গর্দভ, ভেড়া, ছাগল, গরগোষ ও Marmot এবং পক্ষীর মথ্যে ঈগল, পেরু, পার্টি ব্ল ও বাল-হাঁস প্রধান। পালিত পশুর মধ্যে সচরাচর পনিখোড়া, গৰ্মভ, গোফ, ছাগল, ভেড়া ও কুকুর দেখা যায়। লারকবাসীর পালিত ভেড়ার লোমে শাল প্রস্তুত হয়। ঐ লোম প্রধানত: কাশ্মীর, নেপাল ও ইংরাজাধিকত ভারতে প্রেরিত हहैं बा थारक। ১৮৫० शृहोस्स छाः किनःहाम नामक हहेर्छ কাশ্মীরে ২৪০০ মণ পশমের রপ্তানীর বিষর উল্লেখ করিয়াছেন। এখানকার ছাগই সাধারণের বিশেষ উপকারে লাগে। ঐ সকল বুহদাকার পার্বতীয় ছাগলের ছগ্ন ভাহারা পান করে এবং ছাগলের পুঠে পণাদ্রবাসমূহ চাপাইরা স্থানান্তরে লইরা যায়। কনিংহাম একদিন ঐরপ ছয় হাজার ছাগপুটে শাল, প্ৰম, সোহাগা ও গন্ধক প্রাকৃতি পণাদ্রবা বহনের উল্লেখ করিয়াছেন। नानकवानी वर्णिक् मच्चामात्र के मकन सवा नहेन्ना भार्काकाभारध দক্ষিণপশ্চিম প্রদেশভাগে অবভরণ করিত।

এগানে যে সকল প্রবা উৎপন্ন হর, তাহার মধ্যে পশম, সোহাগা, গন্ধক ও গুৰু ফলাদি প্রধান। ঐ সকল প্রবা তাহার। কাশ্মীর ও নিকটবর্তী হিন্দুছান, ইরারকন্দ, খোটান এবং উত্তর ও পূর্বেং তিহ্বতীর প্রবেশতাগে বিক্রয়ার্থ লইরা বার। ঐ সকল প্রবাবিক্ররে তাহাদের যথেষ্ঠ লাভ হয়। তাহারা সেই মুলার বিনিমরে ভারত হইতে কাশ্যিবন্ধ, কীচা চামড়া, পরিছত চর্মা, নানাপ্রকার শস্তা, বন্দুক, কামান ও চা প্রভৃতি ক্রব্য এবং চীনসাম্রাজ্য হইতে ছাগ ও ভেড়ার পশম, চা, অর্পরেণু, রূপা, নানারূপ প্রাচীন মূলা, রেশম ও চরস প্রভৃতি দ্রব্য আমদানী করিয়া থাকে। এই প্রদেশের মধ্যবর্ত্তী রূপস্থ জেলার আসিতে চুইটা উৎকৃষ্ট পথ আছে। রূপস্থ হইতে বড়ালারা গিরিসক্ষট দিয়া ইংরাজাধিকত ভারতে উপনীত হওয়া যায় এবং পরঙ্গ-ঘাট দিয়া লাছল ও সিমলার শৈত্যাবাসে যাতায়াতের স্থবিধা হয় বলিয়া জনেক ক্রমণকারী বণিক্ ঐ পথে ভারত হইতে রূপস্থ ও সিমলা প্রভৃতি স্থানে গমন করিয়া থাকে। লাসা-নগরবাসী চা-ব্যবসারিগণ লে প্রদেশে গমনকালে রূপস্থর মধ্য দিয়া যাতায়াত করে।

100

এথানকার অধিবাসিগণ লাদ্ধি নামে পরিচিত। ইহারা বৌদ্ধর্ণমাবলম্বী। ইহাদের থব্বাকৃতি ও দৃঢ গঠন দেখিলে কদ্যা ত্রাণীয় জাতির শাখাভুক্ত বলিয়াই মনে হয়। ইচারা সাধারণতঃ নির্বিরোধী। দলবদ্ধ হইয়া একত্র গ্রামে বাস করে. চাসবাসই তাহাদের প্রধান উপশীবিকা। সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ৯৫০০ নাগাদ ১৩৫০০ ফিট্ উচ্ন স্থানে ইহাদের বাস আছে। ইহারা সর্বাদাই মনের আনন্দে বিভোর : কোন বিশেষ কারণে. मितित्रापि मानकस्त्रका वो ठक्क्शारन উन्नयख्यात ना इटेटन टेकावा ক্থন ও কাহার সক্তে বিবাদ করে না। ইহাদের বেশভ্যার বিশেষ পারিপাট্য নাই। পশমনির্মিত চোগা, পায়জামা, কোমরবন্দ ও পায় মোটা জুতা ব্যবহার করে। পুরুষেরা এবং স্ত্রীলোকেরা ঘাঘরার স্থায় এক প্রকার অঙ্গরাধায় সর্বাঙ্গ আরুত করে, ক্ল-দেশে সলোম চশ্চছন ও মন্তকে কড়ি বা শামুক হারা অলম্ভ বস্ত্র আচ্ছাদন করিরা থাকে। ঋতুর পরিবর্ত্তনামুখারী ইহাদের বেশপরিপাট্য বা কোনরূপ পার্থক্য লক্ষিত হয় না। সকল লাদ্ধী পরিবারেই অর বিস্তর কৃষিক্ষেত্র রাখে। এখানে যবেরই অধিক চাদ হয়। কোথাও কোথাও নিমুক্তমিতে গ্রম ও কলাই বোনা হয়। খনদ্ৰথে যব সিদ্ধ করিয়া ইহারা খাইতে ভালবালে। চঙ্গ নামক মদ্য সাধারণের প্রির। অপেকারত ধনবান ব্যক্তিরাই চা পান করিয়া থাকে। ইহারা স্বল্কায় ও কর্মাঠ। অনারাসেই বড় বড় বোঝা উচ্চ পর্কতোপরি কুইরা বাইতে পারে। জীলোকেরা পুরুষের স্থায় বলিষ্ঠ ও কর্ম্মপটু। हेरारमत गरश व्यवसाधकाथा नाहै। हेराता हेक्सामक वर्णाचारम বিচরণ করিয়া বেড়ায় ৷ ধনবান্ ব্যক্তি ভিল্ল সাধারণতঃ রমণী-দিগের একাধিক সামী দৃষ্ট হয়। ইহাতে তাহারা কোন দোষ বিবেচনা করে না। সম্ভবতঃ প্রত্যেক পরিবারের নির্দিষ্ট পরিমাণ ভূমি থাকার, তাহার উৎপন্ন শভাদি হইতে ইহারা আপন আপন পরিবারদিগকে লালন পালন করিতে গারে

িনা। এই বস্তু রমণীগণও বছবামিকর্তি অবলখন ভরিতে াবাব্য হইলাছে।

আৰি প্ৰভোক গ্ৰামেই এক একটা বোহনঠ বা বিহার
আহে। প্ৰভোক গ্ৰামেই অদ্বে একটা কনশৃন্ধ শৈলপুলোপরি

ঐ বঠগুলি হাপিত। ঐ সকলে প্ৰান্তই এক বা ফুইটা দামা
এবং কখন কখন বহুসংখ্যক বৌহবতি বাস করে। এখানকার
বঠাবিকারী উপান্ধারের কখন অভাব ঘটে না। ছানীর
অধিবাসীর মধ্যে এক এক পরিবারের বাসক পর্যারক্রমে ঐ বত
গ্রহণ করিরা থাকে। মঠে ব্রহ্মর্য্য অবদ্যুক্ত বৃদ্ধমূর্তি, প্রভারবৈদ্যাভাস করে। পর্বভগাত্রখোদিত স্থরহৎ বৃদ্ধমূর্তি, প্রভারবৃদ্ধ, নিলাকলকোৎকীর্ণ প্রাচীর এবং অভাভ পবিত্র প্রভিত্নতি
দেখিলে স্বতই মনে হর বে, এখানে ধর্ম পূর্ণপ্রভাবে বিভ্যান
রহিরাছেন।

খুঁটার ৪র্থ শতাবে চীনপরিব্রাক্তক কাহিয়ান ফিএ-ছ শৃংক এই জনপদের বিবরণ প্রকাশ করিয়াছিলেন। সিনি Akhassa Begio নামে এখানকার অধিবাসির্ক্তের কতক ইতির্ভ্ত প্রদান করিয়াছেন। খুঁটার ৭ম শতাবে চীনপরিব্রাক্তক হিউএন্সিয়াং এই স্থান পরিবর্ণন করিয়া এখানকার বৌদ্ধর্মঠাদির উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন।

পূর্বে এই স্থান স্থপ্রসিদ্ধ ভোটরাজ্যের অন্তর্ভুক্ত ছিল, তৎকালে একজন রাজকুমার স্থাধীনভাবে এই প্রদেশ শাসন করিতেন এবং লাসার প্রধান লামা এথানকার বৌদ্ধিগের মধ্যে সর্বপ্রেট গুরুত্বপে পৃথিত হইতেন। স্থারীর ১০ন শতাকে বখন স্থারহৎ তিব্বত-নাপ্রাক্ত অন্তর্বিপ্রবিধ্বে বিভক্ত হইরা পড়ে, তখন প্রাক্তিশীমান্থিত জনপদসমূহ এক একটা স্থাধীন রাজ্যরূপে পরি-গণিত হইরাছিল। তৎকালে পাল্গ্যিগোণ এখানকার রাজা ছিলেন।

শুঠীর ১৭শ শতাব্দের শেবভাগে ছার্ডোর সর্দার শেরখানী এইবান খাক্রমণ করিরা মঠ, বন্দির ও বিবারাদির বাবতীর বজনিখিত পুথিসমূহ অন্নিবোগে জনীভূত করিরা দেন। তদবধি এধানকার ইতিহানে একটা স্থাপ অবচ্ছেদ শটিরাছে। এখন প্রস্থাভাবে ভাবার একটা স্থাপ্ত উদ্ধারের উপার নাই।

রাজা নিউকে নামগ্যনের রাজকালে পাংকরাজ্যের
আনেক শ্রীবৃদ্ধি নামিজ হয়। তিনি মোগলসরাট্ জাহালীরের
নাহায়গুরাঝ কণ্ডি-সর্বায়কে পরাকৃত করিরা লাকনী জাতির
বলবীর্যার পরাকার্য প্রকর্মন করিরাভিকেন। ক্রমজর নোক্শো
ও লাকনী লাভির মধ্যে উপ্যুগ্রার ক্রমজী বৃদ্ধ নংবটিত হয়।
ভারপেরে বোক্শোরণ গরালিত করিরা প্রশার্ক করে। থা সমরে
ক্রার্বানী মুস্প্রান্ধার লাকনীনিককে নাহার্জা করিবাছিল।

নোক্পোগণ তৎকালে বানের বস্ত মবোধ বিভাগ প্রাপ্ত হইবাহিলেন । সুসন্মানগণের সাহাবালাকের রুভক্তা প্রকাশার্থ
সভবতঃ সেই সমরে সাহক্রাজ ইস্লামধর্শে বীক্ষিত হইবাহিলেন এবং ভদবধিই তাঁহারা কান্দ্রীররাজকে রাক্ষর দিরা
আসিতেহেন।

১৮২० चुंडीट्स वृत्रक्रक है नागक शतिमर्न्टन चांत्रसन करत्रन। ভৎকালে গালিলো বা লানকের শাসনকরা ইংরাজনাজের অধীনতা স্বীকার করিতে মনত্ব করেন, কিছু গাদকের তৎকালীন সমূদ্ধি দেখিয়া ভিনি সেই প্রস্তাব কার্য্যে পরিণত করেন নাই। ১৮০৪ বুটালে কান্দ্ৰীরয়াজ গোলাব সিংহ স্বীর প্রসিদ্ধ দোগ্রা নৈত দইরা দারক আক্রমণ করেন। সেনাপতি জোরাবর সিংহ ध्ये द्याक महत्र मात्रक रहेता वशाक्त्य हुईंगे प्रक्रियास्त्र शत्र, লাগক ও বল্ডি প্রদেশ অধিকার করিয়া লন। জরলাডে ল্পর্জিড হইয়া শিথসেনাপতি রুদোধ আক্রমণ করিলেন, কিছ এই বুদ্ধে কোন কল লাভ হইল না। সমবেভ চীন ও লোক্লো নেনার সহিত যুদ্ধে এবং দারুণ পার্কত্য শীতে শিখলৈজ সমূলে নিহত হইল। উক্ত বৰ্বে আফগানস্থানে একদল ইংবাজ-**নৈত**ও ঐক্রপে বিপর্যান্ত ও নিহত হয়। ইংরাজ-সৈম্ভের পঞ্চাববিজ্ঞানের পর, কাম্মীর ও জদধীন প্রদেশসমূহ ইংরাজরাজের হন্তগত হয়। ১৮৪७ यहीरमञ् ১७३ मार्कत्र मिक अञ्चलारत हेरताक श्वर्राने পুনরার ইহা গুলাব সিংহকে প্রত্যর্পণ করেন।

সচত৭ খুটালে ইংরাজ-গ্রমেণ্ট এখানকার বাণিজ্য বিবরণ সংগ্রহ করিছে Dr Cayleyকে লাগকে পাঠাইরা দেন। ১৮৭০ খুটালে আখার মহারাজের সহিত ইংরাজরাঞ্জপ্রতিনিধি পর্জ মেও'র একটা সন্ধি হর। তদলুসারে এখানকার বাণিজ্যকার্য্য পরিবর্শনার্থ একজন ইংরাজ ও একজন বেশীয় ক্ষিসনর নিরোগের ব্যবহা হর। তাহারা উভরে একবোগে এই কার্য্য নির্বাহ করিয়া আলিডেছেন। (Dr Aitchison ক্বৃত Trade Products of Leh 1874, নামক গ্রন্থে এখানকার পণ্যপ্রব্যের প্রবিশ্বত বিবরণী প্রবন্ধ আছে।)

লাদ্বা, পঞাৰএবেশের অবালা জেলার পিণ্লী তহসীলের অব্যাত একটা নগর। পিণ্লী হইতে রলোর বাইবার পথে অবহিত। অকা" ২৯°৫৮'৩০° উঃ এবং ত্রাবি" ৭৭°৫ পৃঃ। ইবা পূর্বে একটা সামতরাজ্যের রাজধানী হিল। ১৮৪৩ গুটাকে শিক্তবের সমর এবানকার স্বার রাজা অবিংসিংহ বিস্পৃত্য আচরণ করার, উক্ত সম্পত্তি বাজেবাও হইরাছে। এবলও মুর্গ ও রাজ্ঞানার এবং অভাভ প্রধান প্রধান করালিকা বিশ্বনান আছে। নিউনিসিণানিটার অধীন বাজার স্থান্তর স্কান্যভিত্র কোনকার রাম হর নাই।

লান্ত (পুং) তরোক্ত সংক্ততেশ, এই শব্দ বলিলে 'ব' ব্যার।.
লান্ত কল্প (পুং) জৈননতে দেবগণজেন। (লৈনহরিবংশ ৯০)
লান্দীখানা, আনগানহানের অন্তর্গত শ্থাইবার-পান" নামক
প্রানিধ গিরিপথের একটা অংশ। এরপ কঠিন ও গুর্গমন্থান
আর কুরাণি দৃষ্ট হর না। পূর্কমুবের কদম নামক স্থান বইতে
এই হান ২০ নাইল এবং পশ্চিম বৃথ হইতে ৭ নাইল। গিরি-সকটের এই হলেই কাম্মীথানা নামক প্রান। অকা" ০৪°০ উ:
এবং লাখি" ৭১°৩ পুং। সমুক্রপৃষ্ঠ হইতে ২৪৮৮ ফিট্উন্ড।
এই গিরিপথের সর্ব্বোক্ত শুল লান্দীকোটাল ৩০৭৮ ফিট্উন্ড।
এই গিরিপথের সর্ব্বোক্ত শুল লান্দীকোটাল ৩০৭৮ ফিট্উন্ড।
এই গিরিপথের সর্ব্বোক্ত শুল লান্দীকোটাল ৩০৭৮ ফিট্উন্ড।
এখানে একটা হুর্গ আছে। খাইবার গিরিপথ দিয়া ইংরাজনৈত্ত
গমনকালে ঐ হুর্গে আশ্রম লইয়া থাকে। হুর্গ-পরিধার নিমন্থ
বপ্রস্থান একটা সরাই আছে। শ্রমণকারিগণ এবং বণিক্রণ
গমনাগ্যনকালে ঐ হানে থাকিয়া আহারাণি করেন।

লাশীকোটালস্থ ইংরাজরাজের একজন কর্মচারীর (Political officer) অধীনে এই সকট রক্ষিত হয়। পার্কত্যজাতি হইতে
গৃহীত একটা সেনাদণ (Irregular Levies) এই স্থান রক্ষা
করিতেকে। লাশীকোটালের অদ্দের পিদ্গাহ, নামক পর্কতশৃত্র।
বিগত আফগানবৃদ্ধের সময় এই শিপরে আরোহণ করিয়া স্থানীয়
ইংরাজকর্মচারী জালালাবাদ পর্যন্ত আফগানস্থানের সমতলক্ষেত্র
পর্যাহকশ করিরাছিলেন।

লান্দীকোটাল অভিক্রম করিয়াই গিরিপথের পরিসর ক্রমন্ধ:ই ক্রমিরা গিয়াছে, সেই ক্লরমূথেই লান্দীথানা গ্রাম। তথা হইতে ক্রেক মাইল অগ্রসর হইলে আফগানস্থানের সমতলক্ষেক্র আসা যার। আকগানসীমান্ত-রক্ষিগণ বণিক্রিগতে এই সঙ্কটমূথে আনিরা দিলে ইংরাজরাজের রক্ষিত ইরেগুলার লেভি নামক সেনালল তাহাদের লান্দীধানাত্ব ইংরাজ অধিকারে আনিরা ছাড়িরা দেয়।

লাক্র, গাণিনীর আবাদিগণোক্ত একটা শব্দ। (পা° ধা৪।২৯)

मान (पूर) गन-चक्। क्यन, जनन।

लोशिन् (वि) नश-शिनि । अथननीन ।

स्नाभ्यः (वि) नगार७ देखि नग-गार । कथमीह ।

क्षांक (तनक) गफ।

लाह्न (समक) > गकः। २ पत्रणाम।

লাক।, মধ্য প্রনেশের বিদাসপুর-রেশার অন্তর্গত একটা জমিদারী সম্পত্তি, ভূপরিমাণ ২৭২ বর্গমাইল। ৯৩৬ খুষ্টান্স ক্রতে এবাল-কার অমিদারবংশ এই সম্পত্তি অধিকার ক্রিভেছে। স্থানীর অধিকারী কুন্বার বংশীর।

লাফাগড়, মধ্যপ্রদেশের বিদাসপুর জেলার অর্থত একটা দিরি-হর্গ। বিদাসপুর নগর হইতে ২৫ মাইল উর্বরে লাক্টশলোপরি দ্বাপিত। অকা° ২৬°৪১' উঃ এবং প্রাধি৽ ৯১°৮' পৃঃ। সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে এইস্থান ৩২০০ কিট্ উচে। হুর্গের চারিপার্বের অধিত্যকা-ভূমির পরিমাণ ৩ বর্গমাইল। একণে উহা কুল্ল অলনে আর্ড হইরাছে।

এই সুখনীতল অধিতাকান্ত্ৰে এক সমরে ছত্রিলগড়ের হৈহর-বংশীঘরানাগণ বাস করিতেন। পরে তাঁছারা রন্ধপুরে রাজধানী। পরিবর্ত্তন করেন। এখনও হুর্গ ও ভাছার প্রাচীরাদি অভগ্ন-অবস্থার রহিরাছে।

লাফালাফি (দেশজ) লাফাইরা বেড়ান।

লাভ (পুং) গভ-করণে খঞ্। মৃলধনের অধিক উপার্জিও ধন। পর্যায়-কল, লভা, র্জি। (শব্দর্জা•)

"ऋषदः ए अहत्कार्यो नाजानारकी खवाकरवो ।

যত্র কিঞ্চিত্তথাভূতং নতু দৈবত কর্ম তৎ ॥" (রামারণ ২।২২।২২) ২ প্রাপ্তি। সপ্তপ্রকার ধর্মজনক বিস্তাগমের মধ্যে একপ্রকার!

"সপ্রবিত্তাগমা ধর্ম্মা দারো লাভঃ ক্ররো জয়:।

প্রয়োগ: কর্মযোগন্চ সৎপ্রতিগ্রহ এব চ ॥" (মহু > 1>>৫)

লাভক (গং) লাভ ৰাৰ্থে কন্। লাভ।

লাভলিপ্সা (রী) লাভের ইচ্ছা ।

লাভলিপ্সু (বি) লাভ করিতে ইচ্চুক।

লাভবং (বি) লাভঃ বিভতেহত মতুপ্ মন্ত বং। লাভযুক্ত, লাভবিশিষ্ট।

লাভিন্থান (ফ্লী) :লাভত স্থানং। স্পাতবালকের তথাদি
থানশভাবের মধ্যে লগাবধিক একাদশ স্থান, এই স্থানে লাভের
বিষয় বিচার করিতে হয়, এই জত্ত ইহাকে লাভন্থান কহে।
বিষয় দাতভাবে নিয়নিথিত বিষয় চিন্তা করিতে ব্লিয়াছেন—

শগজাৰবানবস্তাণি শব্যাকাঞ্চনকন্তকা:।

আর্বিভার্থনাভঞ্চ নকরেলাভনগ্নতঃ ॥" (বঁচীদাস)

হতী, অখ, যানবাহনাদি, উত্তমভূষণাদি, শ্যাা, ধনরত্নাদি, কন্তা, আয়ু, বিভা ও অর্থলাভ এই সকল বিবয় লাভস্থানে অর্থাৎ লয়াবধিক একাদশ স্থানে চিন্তা করিতে হয়।

লাভ্য (রী) গভ-গাং। লাভ। (শধরদ্ধা•)

লামকায়ন (পং) > শমকের গোত্রাপণ্ডা। (পা॰ ৪।১।৯৯) ২ স্নাচার্যভেদ।

লামকায়নি (খং) শমকের গোত্রাপভা।

लामकारानिम् (प्रः) नामकावन नाषाधाती ।

লামজ্জক (মী) বীরণমূল। [বীরণ শব্দ দেখ] ২ উশীরবং শীতচ্চবিত্পবিশেষ। পর্যায়—অনাল, অমৃণাল, লব, লভু, ইটিকাপথিক, শীল, বীর্ষ্ণ, জলালর। তপ—হিম, ডিজ, বাড, পিন্ত, ভুকা, বাব, এম, মুর্জা, মুক্ত ও অর্মাণক। (রাজ্মি) লামা (ব্ৰাণা+), তিক্ষতত্ব বৌদ্ধবিতিভেদ। উচ্চানের বধ্যে সর্কাশের বৌদ্ধবাদানা বা কালে পরিচিত। মোললীরগণ বৌদ্ধবাদ্ধবাদ কিছে হইরা তিকাতত্ব শ্রের্চ ধর্ম্ববাদ্ধককে এই নামে অভিহিত করিরাছিলেন। তিকাতীর ভাষার ব্রাণা শ্রেকর অর্থ শ্রেষ্ঠ এবং মোললীর দলই শব্দে সমুদ্র বুঝার।

রাজা থিলোকদে-ৎসান্ (৭২৮-৮৬ খুৱাক) ভিকাতীর বৌশ্ববতিদিশের মধ্যে শ্রেণীবিভাগ করিয়া তাঁহাদের আচার वावरात्र अनानी निकातिक कत्रिका स्वत । कारन राहे आहीन পদ্ধতির বিলোপ বটে এবং ধৃষ্টীর ১৫শ শতাব্দের প্রারম্ভে বর্জনান ধর্মপদ্ধতি সম্পূর্ণ পৃথক্ ও বাধীনভাবে গঠিত হয়। ছঞাসিদ্ধ লামা ৎসেন্ধাপা ১৪১৭ খুষ্টাব্দে লাসা নগরীতে গাংল্ছন সভ্যারাম স্থাপন করেন এবং বরং সেই মঠের সর্বভ্রেষ্ঠ অধ্যক্ষ হন। সাধা-রণে তাঁহাকে বিশেষ শ্রদ্ধাভক্তি করিত, এই জন্ম তিনিও সকলের উপর মহতী শক্তি সঞ্চালন করিতে সমর্থ হইরাছিলেন। তাঁহার প্রতি লোকের এরপ অচলা ভক্তি জন্মিরা ছিল যে, তাঁহার সন্তানসন্ততিদিগকেও তাহারা সেই দেবাংশ-সমৃত্ত বলিয়া বিবেচনা করিত। সেই বিশাসবলেই, তাঁহার পুত্রপৌশ্র-গণ অন্তাপি দেই মঠের অধ্যক্ষ হইয়া রহিয়াছেন; কিন্তু লাসা নগরের সর্বভার্ত বৌদ্ধব্যাচার্য্য দলই লামা এবং ত্যিলহণপোর পঞ্চেন্-ঝন্-পোছের ধর্মপ্রভাব সাধারণের চিত্ত আকর্ষণ করিলে, शृद्धीक गाः-न्मन् मंशिधकात्रिगणंत्र समञ्ज প্রভিপত্তি নই হইয়া যায়। শেষোক্ত লামান্বয়কে দেবাংশে অবতীর্ণ জানিরা তাহারা দেহতারণে পূজা জ্ঞান করে।

দলই লামা সাধারণের নিকট থানী বোধিসক চেন্রেশীর আংলসভূত বা তাঁহারই অবতার বলিরা গৃহীত। তাহাদের বিশ্বাস, বোধিসক চেন্রেশী বখন যে মন্থবোর দেহে প্রবিষ্ট হইরা ধরাধামে অবতীর্ণ ইইতে ইচ্ছা করেন, তখনই তিনি স্বীয় শরীর ইইতে একটা অপুর্ব্ধ জ্যোতিঃ বিকাশ করিরা তাহাই সেই মন্থবোর দেহে দেবভাবের আবির্ভাব হইরা থাকে। তাহাতে সেই মন্থবোর দেহে দেবভাবের আবির্ভাব হইরা থাকে। পক্ষেন্-অন্-পোছে নামধের লামা চেন্রেশী বোধিসন্ধের পিতা অমিতাতের অবতার বলিরা প্রিত।

কিংবদন্তী আছে, ৎসোন্ধাপা তাঁহার চুইটা প্রধানতম নিব্যকে পুনঃ ক্ষম-পরিপ্রহ করিরা বৌদ্ধর্মের পবিপ্রতা ক্ষমা ও পরিপালন ক্ষম আদেশ দেন। তিনিই প্রথমে তাঁহাদের আচার্য্যমর্য্যাদার পার্থক্য ও প্রোধান্ত নির্দেশ করিরা কেন ভন্তসারেই উপরোক্ত দেবাংশসভূত লামান্ত্রের উৎপত্তি অটিয়াছে। আবরা Coomaর বংশতালিকা হইতে আনিতে

্পারি বে, গেচন্ প্রুব্ (জন্ম ১৩৮১ খ্বঃ, মৃত্যু ১৪৭৩ খ্বঃ) সর্কান প্রথমে গোল্ব খন্-পোছে উপাধি গ্রহণ করিয়াহিলেন। জন্তানি দলই লামাও সেই উপাধিতে পরিচিত আছেন ; স্কুডরাং ইহাছারা স্তিই অফ্মান হয় যে, গেছন্ গ্ৰুই প্ৰথমে স্বাই লামায়ণে সাধারণের নিকট গৃহীত হইয়াছিলেন; গাংল্লন্ সভ্যা-ब्राप्तित मेठीशाक परमान्थाभात यः भवत धर्म-भारत केक मर्गामा नाज करत्रन नारे। >884 बुद्देशस जिनि जित्तिहरून-শোর অবৃহৎ সম্থারাম অভিন্তা করিরা বান। উক্ত সঠের উপাধ্যারই সম্ভবতঃ পঞ্চেন্-ঝন্-পোছে নাম ধারণ করিরা দলই লামার ভার স্বীয় ঐশী শক্তি বিভারে হন। তিনি আপনায় দৈবশক্তি সাধারণকে জ্ঞাপন করিলা পূর্ণ মনোরথ হইলেও, ফলই লামার ভার ধর্মরাজ্যে উাহার তাৰুল প্ৰভাব বিশ্বত অধবা ভদধিকৃত ভূভাগে তাঁহার বাক্য বা উপদেশ ততদুর দেববাক্যবং সম্মানিত ও প্রতিপানিত হয় নাই। কেবলমাত্র ডিফা ভড়মে দলই লামার জার ভিনি লমভাবে রাজশক্তিবিক্তারে সমর্থ হইরাছিলেন।

৫ম গোল্ব-ঋন্পোছে লথক লোব জল গাাম্ৎসো উচ্চাভিলাবী ছিলেন। তিনি ভোটরাজের সহিত বিরোধকালে কুকু-নোর
নামক ব্রুলতীরবর্ত্তী কোবোৎ-মোললীরদিগের নিকট দ্ত প্রেরণ
করিরা ভোটরাজধানী দিগাটী আক্রমণার্থ তাহাদের সাহায্য
প্রার্থনা করেন। দিগার্চীয় ভোটরাজের সহিত তাহার যুদ্ধে
মোললীরগণ তিবত অধিকার করিয়া লথক লোব জলকে
সমর্পণ করেন। ১৬৪০ খুটানো এই ঘটনা ঘটে। স্প্তরাধ
তৎকাল হইতেই সমগ্র তিববত রাজ্যে দলই লামার অধিকার
(tamporal government) বিস্তৃত হয়।

পূর্বেই উরেধ করিয়ছি বে, লামাগণ বোধিসবের অংশসঞ্ত। তিবেতীরগণের বিশাস, তাঁহাদের কেহ কেহ নয়দেহে ভূতলে অবতীর্ণ, কেহ বা স্থগীর জ্যোতিঃ লাভ্যারা • অংশাবতাররূপে প্রিত। বৌদ্ধর্মণাত্র-প্রসিদ্ধ বোধিসবর্গণ বেরূপ সংসার-ধর্ম পরিত্যাগপূর্বেক প্রক্রলাব্রত অবলম্বন করিয়াছিলেন, এই লামাগণও ভলম্ব্রবেশ প্রাচীনতম বৌদ্ধর্যতি(ভিক্স্)দিগের সক্ষ্য, শ্রমণের ও অর্হং-ধর্ম পালন করিয়া থাকেন। মঠবিহারিণী বৌদ্ধতিক্র্নীগণ লামাদিগের সহিত সমধর্মায়্মীগনে রত থাকিলেও সাধারণের চক্ষে সেরূপ সম্বানমার সহিত গৃহীত হন না। তাঁহারা সাধারণের চক্ষে সেরূপ সম্বানমার বহিত গৃহীত হন না। তাঁহারা সাধারণ উপাসক বলিরা পরিগণিত হইয়া থাকেন।

সংসারধর্মনিরত গৃহিব্যক্তির ধদি পবিত্র বৌদ্ধদের বিশ্বাস থাকে, তাহা হইলে তাঁহারা থার্মিক গৃহত্ব বিদরা কথিত হন। ধর্মোপদেন প্রবণে তাঁহাদের ক্ষিকার আছে। তাঁহারা পঞো-পদেন পালন করিয়া সংসার-কার্য-নির্মাত্ত ক্ষিপ্রেক বা

ক্রিনাভভাগার শগ্রবর্তী 'ব' শহকার্য।

উপাদিকা', ব্ৰহ্মহাধাৰণৰ না ক্রিলে 'প্ৰিত্ৰকন্মা' (স্ৎসান-মৃত্যাদ) এবং চারিটী উপদেশ পালন ক্রিলে ঞেন্-খো বা ঞেন্-না নামে অভিহিত হইরা থাকেন।

ধৰ্মপ্ৰাণ ডিফাডীয় সমাজে শামাগণ পাৰ্থিব ও আধ্যান্মিক শক্তির আধারতৃত একং সর্ক্ষ্মশাদের ভোগাধিকারী জানিরা-সাধারণে সেই আচার্য্যপদের প্রার্থী হইরা থাকে। এই কারণে তদেশবাসী অধিকাংশ লোকেই বাল্যকালে সংসাৰ এক্ষে জ্বলাঞ্জলি দিরা লামার শিব্যন্ত গ্রহণ করে। পক্ষারতের, রাজনীকৈ ও ধর্ম-শক্তিবলে অন্ত্রাণিত এই আচার্যাগণ লামাপদ্ধারী রালক্দিগের উপর যথেচ্ছ অর্থদণ্ডও (বৃৎস্থন প্রাণ) করিন্ধ স্বার্থন । শিক্ষা-মবিশী কালে তাহাদিগকে যথেই কারিক ক্লেণ ক্লোল করিতে হয়। এই সকল অমাত্মৰিক কঠোৱতা সল্লেক্ত ক্লিক্ষতবাসী প্ৰত্যেক গুচ্ছুই আপন আপন প্রথম বা প্রিয়তম পুরুষে লামাপদে নিরোগ করিবার অক্ত তথাকার মঠে পাঠাইরা দেন। তাহাদের অক্তান্ত সম্ভানসম্ভতিরা বিবাহিত হর এবং গৃহছের ভরণপোষণার্থ নানা কার্য্যে ব্যাপত থাকে ৷ বাহার প্রথম পুত্র ব্যক্তীত অপর পুত্রও লামা হইবার জন্ত আগ্রহ প্রকাশ করে, সেই ব্যক্তি ছই বা ভভোধিক পুত্র পাঠাইতে পারে। এই কারণে বৌদ্ধপ্রধান ভোটছাজ্যে প্রতি ছর বা আট জনের মধ্যে একটা লামা হইরা পড়িরাছে। সিফিমে ঐরপ ১:১০ জন, লাদকে ১:১৩, ভোটানে ১: ১০, ম্পিডিডে ১: ৭, সিংহলে ১: ৩০ বেমায় ১: ৩-, এবং উত্তর এদিরার কালমক জাতির মধ্যে ১৫- হইতে ২০০ ভাষুতে ১টা মাত্র লামা বিশ্বমান দেখা যার।

নাগিন্ট্ইট, ডাঃ কনিংহাম, ডাঃ কাবেগ, দুরক্রফট, মিড্ট্ ছক্ প্রভৃতির তিকাত ও লাদক এমণ বিবরণী পাঠ করিলে জানা বার বে,তিকাত রাজধানী লাগা নগরীর বাদশটী মঠে এবং তাহার সমিহিত ভূভাগে প্রায় ১৮৫০ - লামা আছে। পশ্চিম তিকাত বা লামক বিভাগের বর্তমান জনসংখ্যার প্রায় প্রভাগেই লামা।

সাধারণ সন্ন্যাসাশ্রমে পারমার্থিক উৎকর্ম সাধনের জন্ত > শিব্য
বা শিক্ষানবিশ, ২ বীক্ষিত শিব্য । ইহারা প্রেভিতগরতাপ্ত
এবং ৩ মহামান্ত আচার্য্য বা ধর্মপ্তরু পহাধিকারী হইবার ব্যবস্থা
আছে । ভারতীর বৌহসমান্তে শ্রমণের, শ্রমণ বা ভিক্ত এবং
ক্ষির বা উপাবান্ত প্রভৃতি পদ দৃষ্ট হব ; তিব্যতীর লামা-সম্প্রদার
মধ্যেও সেইরূপ সামান্ত বালক কইতে মহামান্ত জাচার্যপদ লাভ
করিবারও চারিটা ক্রম আছে । ভাহাদের শিক্ষানবিশকাল
চইভাগে বিভক্ত ।

> 'গে-ক্রেন্' বা উপাসক। ধর্মজীবন অভিবাহনের অভি-প্রাবে বাহারা মঠে প্রবেশপূর্বক বিকাকার্য্যে ব্রক্তী হয়। এই উপাসক বিবিধ,—সক্ষ-মহাপাতক প্রিক্সিলপূর্বক বর্মকাছ- বর্ত্তনকারী ব্যক্তিমাত্র এবং ২ সন্ধানাত্রমাবলবী শিবা। শেবোক্ত শ্রেণীর মধ্যে বাহারা >•টী উপদেশ পরিপালন এবং নাম্প্রবাহিক পরিজ্ঞবাদি পরিধানপূর্বাক এই ধর্মপথের পথিক হইতে প্রস্তুত হন, তাঁহারা 'রম্বুড়' নামে খ্যান্ড। মোক্লেরা তাহাদিগকে কাবি, বন্দি, বন্দ বা বব্তে বলে। কালমাকগণ তাহাদিগকেই মাঝি বলিরা ধাকে।

২ গো-ংবুল বা শিক্ষাজীবনের প্রাথমিক পর্যার। এই সমরে ভাহাদিগকে ৩৬টা ধর্মনিরম পালন করিতে হর। মঠের জপ-রাপর লোকের নিকট ভাহারা তথন কর্মকটা উপধর্মাধ্যক্ষ বলিরা বিবেচিত, কিন্তু বৌদ্ধবিদ্ধর ভার সন্মানিত নহে।

ত গে-লোক—ধর্মাচার্য ও ভিক্ । ২৪ বংসর বরক না হইলে কেহই এই পদমর্যালা পাইবার অধিকারী নহেন। এই সমরে তাহারা প্রকৃত দীক্ষিত-যতি বলিয়া গণ্য হয়। এরপ অবস্থার তাহাদিগকে ২৫৩টা নিরম রক্ষা করিতে হয়।

৪ থান-পো-মঠাধাক বা উপাধার। ইহাই লামা-সন্নাস-ব্রতের চরম সীমা; কারণ 'ধান্-পো'ই নিক্ষিত, দীক্ষিত ও ষতিদিগের প্রকৃত শুরু। ডিনি একণে উপরোক্ত সাম্প্রদায়িক বিভাগতবের শিক্ষকভাকার্য্যে ব্রভী থাকিবেন। কেবলমাত্র বাঁহারা ঐশীশক্তির হারা অন্প্রপ্রাণিত বা বোধিসন্বাবতার, 'ছুত্ক্ত', এবং আচাৰ্য্য-দেব বশিয়া ব্লাক্সক্তিতে ভূষিত এরপ লামাই খান-পোদিগের উপর রহিলেন। বাস্তবিক, ইহারাও পূর্ব-ক্থিড উপাধ্যার বা শুরু ভিন্ন আরু কিছু নহেন। বহু প্রাচীনকাল হটতেই এই রাজশক্তিসম্পর দেবরূপী ধর্মবাজকগণই লামা বা আচার্য্য বলিয়া সন্মানিত হইয়া আসিতেছেন। অস্তান্ত মঠাধিকারী হইতে তাঁহার পার্থক্য নির্দেশ ক্ষম্ভ তাঁহাকে শ্রেষ্ঠ লামা (Grand Lama) नात्यक अधिविक कहा व्हेंगा शांतक। त्कवन वक पड़ मार्टरे এक अब बन बान-त्या बारकन । निकार कुछ कुछ লামান্তান ও মন্দিরাদির পরিদর্শকরণে তাঁহারা তথাকার ঘারতীর कार्यामि नर्यातकन कतिता शास्त्रम, छारामित धरे नम कछकारम ভাখনিক বিশপদিগের হত।

जामात्र शीफां-धनानी ।

বেপুন্ন, সেরা, গাং-দ্যন ও তবিন্ত্ন্পো প্রস্কৃতি ভোটরান্তর্ হুপ্রদিত সন্ধানাপ্রমে যে প্রণাদীতে (গো-দুগ্-প) সামা-পিয় গৃহীত হুইরা থাকে, নিয়ে ভাষার নংকিপ্ত পরিচর বিবৃত হুইল। তিকাতের অভাভ মঠাথাক্ষণণও ঐ সক্তম মঠের আচরিত প্রথা অন্তুসরুণ করিরা কার্য করিয়া থাকেন।

বে বালককে (ব্ৰস্-ছউছ্) শিক্তাৰাজা লালা জড়িবেন বলিয়া মনত করিয়াছেন, লে বীল ভবনে আইন ব্ৰস্তু(ছড় হইতে বাহ প্ৰভেও) জাল বান কয়িবে, ক্তি সেই লম্বে নে ষঠে বাইরা বিভাত্যার্গ করিছে পারে। মঠে রাইরার সমর আহাকে সভকে লাল বা হরিরাবর্ণের টুলি নিরা রাইছে হর। এখানে পাঠাত্যানফালে শিকাভিন্যারী ছাত্রকুল নিকাল্যান্দেশ উত্তরোভর উক্তপ্রেখিতে উত্তীত হইরা খাকে। ঐ প্রেখীগুলি ভাষা, গো-২ন্-উল্ ও গো-লোড্ ক্ষর্যান ব্যাত্রহার শিকাল্যানিশ-লিষ্য, বীন্দিত শিরা একং বভি। ভাষারা ব্যাত্রস্থিতপানর অধিকারী হইরা শিকাফিলানীর কোন একটা বিশেব বিজ্ঞানের উত্তিতাবনে বন্ধপার হইতে পারেম।

অনেক বালকই প্রবাদ মঠে বা সন্থারামে সামা-পদ ও তদত্তরপ শিক্ষালাভার্থ প্রবিষ্ট ক্ষ্টবার পূর্ব প্রানাস্ক্রমঠ আবিষ্টিকপাঠ শিক্ষা সমাপন করিয়া থাকে এবং নীক্ষালাভের সমর মঠে আসিরা সমাপত হর । সিক্ষেমর পেরিওসছি মঠে এবং মিন্দোলিলের নিঙ্মা-সভ্যারামে যেরূপ প্রধান বাসক্রিগতে শিক্ষা দেওয়া ভ্রয়া থাকে, নিরে ভাছাই প্রকাশিত হুইন।

উক্ত মঠবরে কোন বালক শিকার্য আসিরা উপস্থিত হইলে, প্রাথমে তাহাকে তাহার পিতার নাম, কুলমর্ব্যালা ও প্রমন্ত্রালা বিজ্ঞাসা করা হয়। কোন কোন মঠে পিতা বনবান হইলেই ভাহায়া ভনয়কে মঠে রাখিয়া দেয়, কিন্তু লাধারণতঃ সকলকলিই আবল্লক। বাল্ডের আভিজাত্য পরিজাত হুইবার পর, তাহার পারীদ্বিক বল भन्नीका करा इह: रकन ना, जाहात मन्नीत हर्सन हंहेरन रह कवनहें এতাদশ কঠোর ত্রতপালনে সমর্থ হইবে না। প্রথমে তাঁহারা বালক খঞ্চ, ব্ধির, মুক বা তোভ্লা কি না, তাহা ভালকপে भद्रीका करत्रन । यमि वांगक शास्त्रिक एतोर्कागानि कान साध-মকে হর, তাহা হইলে লে কথমই মঠে প্রবেশ করিতে পার দা। লারীরিক পরীক্ষার উপযুক্ত বলিছা নির্বাচিত হইবার পর, বালকের পিজা বা অভিভাবক মঠত কোন বভি বা লামার সিকট ৰীর পুরুষে রাধিরা আইনেন। যে যতি বালকের পক্লির্লক ও উপদেষ্টা হব, ডিনি প্রারই উছোর নিষ্ট আছীর। যেখানে এটকণ জোন নিকট আত্মীরের অভার বটে, সেইবালে বালকের কোরী-ফল বিচার করিয়া মঠত কোন বন্ধ যতির হতে বাল-ক্ষেত্ৰ ভাৱাৰ্ণন করা হয় ৷ তখন দেই বৃদ্ধ বৃদ্ধিই বালকদিগের উপরেষ্টা হল। ওলা হতে সম্পূর্ণকালে নাসকের পিতা প্ৰতিকে সন্ধান প্ৰদৰ্শনাৰ্থ বিদ্ধু টাকো; পাছসামগ্ৰী ও মন্ত क्षित्रा कारकन । क्याविरमस्य वर्षः विका विकासः गार्थकः चारकः। দিবিহুলর শেশিকাছি আনারাচন আন জেকুলা টাকা এবং रक्षकारमः उच्च रक्षकिमी कृता किरक स्थाः। 'क्या कृत कर्र ७०० काला अवस्य त्मलका रहेका नाएक।

্রেন্স্-কান্ত্ কা উদ্যোগ কথো প্রকৃত কর্ম ও পান্ধ নামবী গাত করিয়া বালককে মঠের মধ্যে কবির মান। পান্ধকে বিশ্বক ককে ৰভিন্ন প্ৰবেভ হট্না বলিয়া থাক্সে, নেই গৃহে নাজককে আনিরা নকলের সমূৰে তাহার কংশানিকা এবং তাহার বিভার এবং ভাষার বিভার এবং ভাষারাখিয়োধির কথা জানাইরা এবনের বভিন্ন বা প্রভিন্নপরের নিকেট বালককে নিবামে নিরোম করিবার করেনে এই বালক নিজার্মনার করিকে এই বালক নিজার্মনার করিকে এই বালক নিজার্মনার করিকে এই বালক নিজার্মনির করিকে এই বালক নিজার্মনির করিকে এই বালক নিজার্মিরকের কুইটিড হয়।

'বিকানবিশ অবছার ঐ বালকের কেশ ছাঁটিরা দেওরা হয়। ভাষন সে শিশক্ষের ক্ষরীনে আধারণ হাস পরিধান ক্রিয়া পাঠা-ভ্যাস করিতে পার। ক, ধ ও প হইতে আরম্ভ করিয়া ক্রমণঃ লে কঞ্জবানি কুত্র কুত্র ধর্মগ্রহ কঠছ করিয়া লর। এতহাতীত তাহকে নীতি-উপদেশ ও ব্যাকরণের কতকাংশ শিক্ষা এবং णांशात **रुद्रिय मरत्नाथमार्थ अहे ममरत छालात्म-न**ननिथ स्वसर्ग. নীচনত্মের লক্ষ্ণ, সভ্যের উদ্দেশ্য ও বাক্যকথনপ্রণালী বিষয়েও নানারণ উপক্ষেশ দেওরা হাইরা থাকে। এই পাঠ্যাবস্থার প্রথম বৎসন্তে বালকের পিতা বা আন্তীরবর্গ হাসে একদিন মাত্র দেখিতে আইসেন এবং শিক্ষকের বেতন ও বালকের ধোরাকী খরচ দিরা ভাহারা কতদুর শিক্ষাপ্রান্তি হইরাছে জানিরা চলিরা যান। এই-ৰূপ অবস্থাৰ চুই বা জিন বংসর মধ্যে বালৰ আক্ষাকীয় সকল পাঠ্য কঠছ এবং জাহা পুনঃ পুনঃ পাবৃত্তি করিতে অভ্যন্ত হুইলে শিক্ষক তাহাকে গে-ংব্-উল পদের উপযুক্ত জানিরা প্রধান বভিন্ন (শ্ল্যি-মুগন) নিষ্কট আবেশাধিকার আর্থনা করিয়া পাঠান। পর্থন্ত পাঠাইবার সময় বালককে একথানি উওরীর ও > । টাকা পাঠাইতে হয়। প্রধান যতি পুনরার ভাহার শারীরিক ও মাননিক শক্তির পরীকা লন, তদনত্তর ভাহাকে গে-ৎব্-উল্পদের উপবোগী জানিরা তৎপদে নিরোগার্থ একগানি জামিদ-নামা শিখাইয়া বুকাতুলির ছাণ দিয়া লন। পরে শাখা- 🚁 রিশেনে শিক্ষা সমাধানার্থ শিক্ষক খীর ছাত্রকে তথাকার প্রধান मक्रीशास्त्रम् (क्रेनाशांत्र) निक्षे गहेत्रा यामः। 🛍 क्रेनाशांत्रहरू তৎকালে প্রাণামী স্বরূপ ১১ টাকা ও একথানি উত্তরীর বিতে হয়।

ভাল শিবাসদে উপাধ্যায়ের সমকে উপানীত হইলে উপাধ্যার ভালতে এই করটা প্রাপ্ত করেন। "লামা-বার্ব গ্রহণ করিতে ইহার নালবতী ইচ্ছা আছে কি লা ? এ বালক ক্রীতদাল, করী কিবো লৈকবৃত্তিধারী কি লা ? ইহার বংলমার্বারা কিরাণ, কেই ইহার এই বার্ত্তিধারী কি লা ? ইহার বংলমার্বারা কিরাণ, কেই ইহার এই বার্ত্তিধারী কি লা ? ইহার বংলমার্বারা কিরাণ, কেই ইহার এই বার্ত্তিধারী কি লা ? ইহার বংলমার্বারাহি হালান্তিবার আগতেলা করিরাছে লা করিরাছে লা ক্রান্তিবার কর্মান্তিবার কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্তর কর্মান্তর কর্মান্ত্র কর্মান্তর কর্মান্তর কর্মান্তর কর্মান্তর কর্মান্তর কর্মান্তর করিতে কলন। বিভাগার ক্রান্তর কর্মান্তর কর্মান্তর করেনার প্রক্রমান্তর করেনার করেনার কর্মান্তর করেনার কর

মুখ হইলে মঠের নাম-তালিকার ঐ শিব্যের ও গুরুর নাম লিখিরা মুখাপুলির ছাপ দিরা রাখেন এবং আলককে একখানি উত্তরীর পারিতোধিক দেন। তদমন্তর ভাষাকে শাকাম্নির সংসারত্যাগ ও সর্যাসাশ্রমগ্রহণকালীন বাসধারণের অফ্রপ লাল বা হরিদ্রা-রন্ধিত বন্ধ পরিধান করান হয়। বালক উপাধ্যারের পরীক্ষার লামা ধর্মগ্রহণের অঞ্পানোধী হইলে ভাষাকে মঠ হইতে ভাড়াইরা দেওরা হর এবং ভাষার শিক্ষক দণ্ডনীয় হন। উপাধ্যার তাঁহাকে বেত্রাখাত করেন এবং ঐ শিক্ষক মঠে আলোক জালাইবার জন্ত ক্রেড সের মাধ্য দিতে বাধ্য হন।

উপাধ্যারকর্ত্ক অন্নোদিত হইলে, শিক্ষক প্নরায় ঐ বালককে
লইরা মটত্ব 'ঞাল্-ভো' বা শ্রেষ্ঠ লামার নিকট লইরা যান এবং
ভাঁহাকেও একথানি উত্তরীর ও একটা টাকা প্রণামী দিরা বীয়
বক্তবা জ্ঞাপন করেন। শ্রেষ্ঠ লামা তাহাকে মঠবালের অধিকরে ও ত্থানদানপূর্কাক প্রনরার, একথানি খাতার তাহার নাম
ণিখিয়া রাখেন। এই বালক যদি ভবিষ্যতে কোন অপরাধ
করে, তাহা হইলে দে ও তাহার গুকু শগুনীর হইয়া থাকে।

জাল্ডো-লামা কর্ত্ব নাম লেখা হইবার পর, সেই বালক
ড়াপা পদাভিষিক্ত হইরা মঠে ফিরিয়া আইলে। অবস্থামুসারে সে
সেই মঠের অপরাপর সহাধ্যায়ীদিগকে চা পান করাইয়া থাকে।
যদি সেখানে ভাহার কোন আগ্রীয় না থাকে এবং খাঞাদি রন্ধনের
অস্থাবিধা ঘটে,তাহা হইলে মঠের ভাণ্ডার হইতে সে খাঞাদি পায়।
ভাহার আগ্রীয়েরা খাভহিসাবে যাহা কিছু পাঠাইয়া দেন,
ভাহা ভিনভাগ করিয়া ভাহার একভাগ মঠ-ভাণ্ডারে গৃহীত হয়
এবং অবশিষ্ট হইতে সে ভ্যোল্-গগ, ব্র্ম-ঠাব্স্, গ্রুন, ল্লা-গম,
বাব--সর, স্য়ো-পুগ্স্ প্রভৃতি যভির উপযোগী বন্ধ, পানপাত্র,
মরদার থলি ও একছড়া মালা পায়। অভংগর প্রক্রারত
অবলন্ধন করিয়া সে যত দিন না সন্নাসিবং আচারাম্ছান করিতে
পারে, তত্দিন সে গেংযুল বা শ্রমণপদ পার না এবং মঠের ধর্মকাথ্যে যোগ দিবার অধিকারী হয় না।

ড়াপা পদাভিষিক্ত ৰাগক কর্মনিষ্ঠার পারবর্শী হইরা ধর্মকার্য্যে কিপ্ত হইবার আশার মঠাবিকারী শ্রেষ্ঠলামাকে (দ্গেলদেন্-খু-খন্-পোছে) খীর অভিলাব জ্ঞাপন করেন। ঐ সমরে
ভাহাকে একথানি উত্তরীয় ও সাধ্যমত অধিক টাকা (পূর্বাপেকা
বেশা) প্রধামী দিতে হয়। শ্রেষ্ঠ লামার অভিনন্ধন অস্থসারে সে
গেংমুল-পদলাভ করিরা থাকে। বালককে গেংমুল পদাভিষিক্ত
করিতে একটা দিন নির্দিষ্ঠ হয়। সাধারপতঃ 'উপোসথ' বা
উপবাসদিনই প্রশন্ত। ঐ দিনে ভাহার মন্তক মুন্তন করিরা
দেওয়া হয়। কেবগমাত্র মধান্তলে একটা শিধা থাকে। ভদনত্তর
ভাহাকে সংক্রম্ম প্রধান প্রক্রোক্ত উপাধ্যারের সন্ত্রক আনিরা

সন্ন্যালীর বেশধারণ করান হয় । একটী মন্ত্র পাঠের পর, শ্রেষ্ট্র লামা অথবা মঠাধ্যক্ষ লামা তাহার সন্ন্যালাশ্রমের একটী বতন্ত্র নামকরণ করেন । তৎপরে ঐ বালক সন্ন্যালধর্ম্ম সেক্টার ও লামদে গ্রহণ করিরাছে জানাইলে মঠাধিকারী বা দীক্ষাক্ষার্যের সমর উপদ্বিত লামা সেই শিখা কাটিরা দেন । তথন সেই গেৎবুল ৩৬টা ধর্ম্মোপদেশ ও ৩৬টা নির্ম পালন করিতে বাধা হয় । সে প্রধান লামাকে নরদেহী বৃদ্ধ বলিয়া জ্ঞান করে এবং তাঁহার কথিত "আমি বৃদ্ধ, ধর্ম্ম ও সক্ষের আশ্রম গ্রহণ করিলাম ।" এই মহামন্ত্র তিনবার উচ্চারণ পূর্কক অলীকার করিলে সংশ্বারকার্য্য সমাধা হইয়া যায় । সংশ্বার-সমাধানাস্তে সে লামাকে একথানি কাপড় ও ১০টা টাকা প্রণামী দেয় । এখন হইতে সেই গেৎবুল লামাপ্রদন্ত নাম ও উপাধিতে মঠমধ্যে পরিচিত থাকে।

ইহার পর তাহাকে সজ্থের দালানে আনিয়া 'মঠের সহিত তাহার বিবাহরূপ' একটা প্রক্রিয়ার অনুষ্ঠান করা হর। তথন তাহার মাণার টোপর এবং হল্তে প্রজ্ঞান্ত ধূপ থাকে। তদনস্তর তাহাকে নির্দিষ্ট আসনে বসান হর। যে বৌদ্ধ যতি এই সমরে তাহাকে যতিধর্মের রীতিনীতি প্রভৃতি শিক্ষা দের তিনি ব-গ্রাগ্ নামে অভিহিত। বক্লাচার্য্য-সম্প্রকার ভুক্ত তান্ত্রিক-বৌদ্ধার্য্য-গণের এই দীক্ষাপ্রথা কতক্তা নেপাদী "বাঢ়া"দিগের মত।

[त्नशान (नव ।]

যতিরূপে দীক্ষিত এবং তৎসাম্প্রদায়িক সমুদায় কর্ম্মে অধিকারী হইলেও, সে ড়াপা বা ছাত্র বলিয়া গণ্য হইরা থাকে। এ সময়েও প্রায় ও বৎসর কাল তাহাকে বিছাভ্যাস করিতে হয়। তদমস্তর সেই বালক যতিধর্ম্মের 'ঝগ্-ছ'উন' শিক্ষাকাল অভিক্রম করে। তাহার পর সে বতন্ত্র বাসের অন্ত একটী কুড় প্রকাষ্ঠ পার। এইরূপে শিক্ষার পারদর্শিতামুসারে সে পর্-পা ও গো-লোঙ্ (পূর্ণ যতি) পদে উন্নীত হয়। তিক্তীয় প্রধান প্রধান সক্ষারামের অধ্যক্ষ যতিরাই কেবলমাত্র কামা উপাধি লাভ করিয়া থাকেন।

ঋগ্-ছ'উন পদাসীন হইলেও সে শিক্ষাকাল অতিক্রম করিতে পারে না। এখন হইতে তাহাকে কঠোর পরিশ্রমের সহিত ধার্মণাল্রাদি অধ্যয়ন করিতে হর। শাল্রাশোচনা ব্যতীত সেই শিব্য কোনরূপ শিন্ন বা চিত্রবিভা অভ্যাস করিতে পারে। তখন পাঠে অবহেলা করিলে তাহাকে বেত্রাবাত করা হইরা ধাকে। এই সময়ে বে আচার্য্য গেংব্লুলকে বেছিমর্শ্বের গৃঢ়-রহস্ত উত্তেদন করিয়া দেন, তিনি 'ং'স-বৈ-লামা' নামে ঐ বালুকের নিকট চিরদিন পৃত্তিত হন। এই সময়ে প্রাছই তাহাদিগকে পরীক্ষা করা হইরা ধাকে।

একটা সক্ষারামের অস্কর্ক প্রত্যেক মঠেই এক একজন ধর্মাচার্য্য থাকেন। তাঁহারা তথার প্রেষ্ট-লামার পদে অধিষ্টিত। ত্র, বিনর ও অভিধর্ম নামক ধর্মণাথার একটা বিবরে পারদর্শিতা লাভ না করিতে পারিলে কেহই লামা পদ পান না। লামাদিগের মধ্যে যিনি বত অধিক প্রা । এই কারণে গেংখ্ল-গণও ব উপাধ্যারের অধ্যাপনার এক একটা বিবরে পারদর্শিতা লাভ করিরা থাকেন। প্রত্যাহ পাঠের সময়ে ঘন্টা-শব্ম হয়। এ শব্ম শুনিয়া তাহারা পাঠ গৃহে গিয়া পাঠাভ্যাস করে এবং বীর আচার্য্যের নিকট নৃতন পাঠ লয়। এইরূপে আবশুকীর পাঠ সমাপ্ত হইলেই তাহাদের পরীক্ষা লওরা হইরা থাকে। প্রথমে এক বংসর পরে এবং তদনন্তর এক বা ছই বংসর পরে পরীক্ষা গৃহীত হয়। এই ছইটী পরীক্ষার উত্তীর্ণ হওরা পর্যান্ত ভাহাদিগকে চা প্রন্তত্ব ও সভ্রের হয় যতিদিগের আজ্ঞাবহন করিতে হইরা থাকে।

পরীক্ষাকালে প্রত্যেক সক্ষারামের সর্কশ্রেষ্ঠ উপাধ্যার ও ব্যতিগণ একটা প্রকোঠে সমবেত হন। তথার সকলেই নিজক্ধ ভাবে বনিয়া থাকেন এবং তাহার মধান্তলে গেৎবুল দীড়াইরা শীর নির্দিষ্ট পাঠ আর্ত্তি করে। যদি সে কোন স্থান ভূলিয়া যায়, তাহা হইলে তাহার পাঠ শ্বরণার্থ অপর একজন তাহার পার্শে দীড়াইয়া দেই স্থানবিশেষ ধরাইয়া দেয়। প্রথম পরীক্ষায় সমস্ত পাঠ্য-পৃত্তকগুলি এইয়পে আর্ত্তি করিতে প্রায় ০ দিন লাগে এবং প্রত্যেক দিনে সেই বালক নয় বার বিশ্রাম করিতে পার। ঐ অবসরে সে পরবর্তী গ্রন্থথানি পুনরায় দেখিয়া লইতে পারে।

বে সক্স যুবক এই পরীক্ষার উত্তীপ হইতে না পারে, ভাহাকে বিশেষ লাঞ্চনার সহিত ঐ গৃহ হইতে বাহিরে আনিরা 'ছ'ওদ্ গুনস্পা' উত্তম-মধ্যম প্রহার করিয়া থাকে। যদি এক বালক উপার্যাপরি তিন বংসর পরীক্ষার অঞ্জীপ হর, ভাহা হইলে ভাহাকে মঠ হইতে বাহির করিয়া দের। কেবলমাত্র ধনী সম্ভানেরাই এরুপ ছলে অবিক অর্থনপ্ত দিয়া মঠে লামাপদ প্রার্থী থাকিয়া বিদ্যান্ত্রাস করিতে পারে। নির্ধনীপুত্রেরা এরুপ অবস্থার ধর্মজীবন অভিবাহন করিতে প্রয়াসী হইলে সাধুচেভা গৃহীজপে দিনপাত করিতে পারে; কিব ভাহাকে সভ্যারামের কোন কোন মঠের দাস্থান্তি করিতে হয়। যদি দে পরে পার-দর্শিতা লাভ করে, ভাহা হইলে ভাহাকে কোন গ্রাম্য মঠের লামাবার্য্য করিয়া দেওরা হয়। কিব ভ্রমন দে লামার প্রার্থীবার্ম্বক হরিলেও ভংশদাবিকারে প্রকৃত অধিকারী নহেন।

উপরোক্ত পরীকা অপেকা ছাত্রসক্ষের পরস্পর বিচার বড়ই

মনোরম। উহাতে ছাত্রের শিক্ষা কিল্লপ চইরাছে তাহা বিশেষ ভাবে পরীক্ষিত হইয়া থাকে। ভিকাতের স্থপ্রসিদ্ধ দে-পুক, তৰিল্ছুণ্পো, সের ও গাংল্লন স্ব্যারামে সময় সময় ঐরপ বিচার-সভা আহত হইরা থাকে। এ স্থলে প্রার ৪ হইতে ৮ হাজার পর্যান্ত বৌদ্ধ-যতি সমবেত হয় ৷ ইহাকে তিকাতীয় ভাষার 'मৃৎধান-ঞিদ্' বলে। শিষ্যগণ ধর্মপান্ত ও ধর্মতদ্বের সারমর্থ অবগত হইরাছেন কি না, তাহা এই বিচার সভার আলোচিত হয়। যেহানে এই সভা হর, ভাহা শালগাছের ষ্ট ডি ও পাথর দিয়া বেরা। বৌদ্ধযতি ভিন্ন অপর লোকের তথার প্রবেশ নিবেধ। উহার মধ্যস্থিত সর্ব্বোচ্চ প্রস্তরাসনে স্থাবদ-মগোন, তল্লিয়ের কুদ্রাসনে ম্থান-পো এবং তদপেকা নিয়তম নির্দিষ্ট আগনে প্রধান গায়ক উপবেশন করে। তাহার চতুর্দ্দিকে সাতভাগে বিভক্ত দর্শকরন্দের বসিবার স্থান। প্রশ্ন-কারী হরিদ্রাবর্ণের উষ্ণীব পরিলোভিত হইয়া দর্শকমগুলীর সমক্ষে কর্যোড়ে শীয় প্রশ্ন উত্থাপন করেন। সমবেত ছাত্র-মগুলীর মধ্যে যে কেহ ঐ প্ররগুলির সমাক উত্তর দান ক্রিতে পারে, দেই ছাত্র শামার আদেশে উক্ত শ্রেণাতে উন্নীত क्ट्रेग थाटक।

বংসরের মধ্যে গ্রীয়, শরৎ, শীত ও বসম্বকালে চারিবার এই বিচার-সভা আছত হইয়া থাকে। এইরূপে ছাদশবর্ষকাল শিক্ষা করিয়া অপশুত হইয়া থাকে। এইরূপে ছাদশবর্ষকাল শিক্ষা করিয়া অপশুত বলিয়া পরিচিত হুইতে পারিলে, অন্তত:পক্ষে বিংশ হুইতে চতুর্বিংশতি বর্ষের পর গেৎধূল খ্রীয় অধ্যবসায়বলে গে-লোভ, পদ প্রাপ্ত হন। গেংধূল হুইবার সময় যেরূপ প্রথার অস্পরণ করিয়া উপাধাায় ও শ্রেষ্ঠ-লামার অভ্যমত গ্রহণ করিতে হুইয়াছিল, এবারও ভাহাকে সেইরূপ করিয়া মঠের তালিকার নাম লিখাইয়া প্রকৃত যতি হুইতে হয়। যে যতি খ্রীয় অধ্যবসায় বলে প্রকাশ্র বিচার-সভায়, অথবা মঠের প্রধান পরীকার উত্তীর্ণ হুইতে পারেন তিনিই বৌহ ধর্মতবের শ্রেষ্ঠ উপাধি লাভ করিয়া থাকেন। উপাধি প্রাপ্তির পর তিনি সকল প্রকার আচার্য্যমর্য্যালা লাভের অধিকারী হন।

গে-বে এবং রব্-জম্-পা বৌহধর্মের শ্রেষ্ঠ উপাধি। গে-লোঙ
শিক্ষা বলে 'গে বে' হইরা কোন এক বৈজ্ঞানিক তরালোচনার
নিযুক্ত থাকিতে পারেন, কিন্তু যতদিন না তিনি ঐ পদে
উন্নীত হইবেন; ততনিন তাহাকে ধর্মশান্তই আলোচনা করিতে
হইবে। গে-বে উপাধি প্রাপ্ত অনেক বৌহবতি তিক্কত, মোল-লিরা, আম্লোও চীন-রাজ্যের গবর্মেন্টের পরিদর্শনে পরিচালিত
সভ্যারামের প্রবান লামা বা দ্বাবস্-ম্গোন্ পদে অতিবিক্ত
আছেন। বাঁহারা মঠাচার্যের পদগ্রহণ করেন না,
তাহারা মঠে থাকিরা তর্মশান্ত অধারনে রত হন। পরে তর্মশান্তের

বক্ষমান পরীকার উত্তীর্ণ হইবা সর্বাক্ষমান্ত নাঃ স্থান বক্ষারাদের 'ধুপ' পদ লাভ করেন।

মৃত্-অন্-প পরীকার উত্তীর্থ ছাত্রের সাধার্থে লামা বলিরাই পৃথীত। তাঁহারা প্রকাভিছানে প্রকাশে কেঁহবর্গের উপলেব দিরা থাকেন। তিকাতের বাববরী প্রেসির সক্ষারাম ব্যতীত অন্ত কোন মঠাধ্যকের এই উন্পান ক্রিন্তার করিবার নাই। ধেবাংশসভূত লামাগণের কর নির্দ্ধি শব্দ ও কার্যাবদীতে তাঁহাদের অধিকার লাছে। রাজশক্তিধারী মনই লামা এরপ ছাত্রদিগকে 'ছ'ওলে' ও 'পত্তিত' উপাধি দিরা থাকেন। এতহ্তরের মধ্যবত্তী উপাধির নাম লো-ৎস-ব। 'রব্-অম প' ও 'ছ'ওলে' উপাধি প্রার সমান। ইহারা তৈ-কী বলিরা সন্মানিত। স্তরাং দেবাংশসভূত লামা-দিগের নিরে বথাক্রমে খান্-পো, ছ'ওলে এবং রব্-অম-প পদাধি-কারিগণ মর্য্যালাসম্পার। ছ'ওলে ও রব্-অম্-প শ্রেণী হইতে খান্পো নির্কাচন হটয়া থাকে। কোন কোন মঠে খান্-পো'র সহকারিরণে ছ'ওলে নিযুক্ত দেখা যার। ছোট ছোট মঠে প্রধান লামার কার্য্য ছ'ওলে বা রব্-অম-প-দিগের হত্তে ভাতে আছে।

রমো-ছে ও মো-ফ নামক মঠে ভোজবিয়া ও ভৌতিকবিয়া লিক্ষার জন্ত অত্য লাখা প্রতিপ্তিত আছে। বাহারা এই বিল্যালয়ের থাকিয়া এই বিজ্ঞানের গৃঢ় রহস্তের মর্ম্ম অবগত হইরা পরীকার উত্তীর্ণ হন, তাহারা ওগ্-রম্-প নামে অভিহিত। ভাহারা আর্কেণ, রসারন, ভূততব প্রভৃতি আলোচনা করিরা থাকেন। শৈবসন্তালারের ন্তার তাহারা বেশভূবা ধারণ করে। সন্তবতঃ তান্তিক কাপালিক-মত অন্তসরণ করিরাই এই সন্তালারের উত্তর ইন্যা থাকিবে। এই প্রেণির অজ্ঞ ব্যক্তিরা গৈগ্-লা অবিবাদকা বিল্যা পরিচিত। তাহারা ঝাড়ন, মুক্ল ও ভূক্তনালান প্রকৃতি কার্যা দেখাইরা থাকে।

মঠেয় দাসম বাবভা।

এক একটা অরুহৎ সজ্বারাম সহস্র কাক্স বৌদ্ধতি বাস করে। একটা অনিরম-সম্বদ্ধ শাসনপ্রশালী ব্যতীত উহার কার্য্য-পরস্পরা অচাক্সরপে পরিচালিত হইতে পারে না পেথিরা লামাগণ তথাকার কার্যাবলী নির্কিরোধে নির্কাহ করিবার লভ একটি শাসনতত্র প্রতিষ্ঠা করিবা লইরাক্ষেন। তথার একলপ রামত্রেই বিল্যমান দেখা বার। এই পদ্ধতি পরিচালন লভ পরিকর্শক রূপে কএকলন কর্মচারী নিযুক্ত আছেন। ভীহারা ভথাকার হিসাব পেথকের কার্যা করেন এবং আক্রেকরকে কুর্ম্ম ছাত্র-সক্রেরও অপরাধাত্ত্রপ কপ্রথিনা করিবা বাক্ষেন।

कू ता, रूग-कू टाएकि जेनाविशाती स्वयास्त्रहीक मामात्राहे

এই সকলের সক্ষারালের একষাত্র কর্তা। লোকগীর বৌদ্ধ সকলের জাহারা প্রিলিঘন সানে ব্যক্ত। কোন কোন সক্ষান্তরের বাজ। কোন কোন সক্ষান্তরের বা জাগোলাই ক্ষথক। এই সকল খান্-পো ললই লাবার ক্ষত্মতিক্রমে বা প্রাকেশিক লাবা-প্রধানসংগর ক্ষানেশাত্রগারেই নির্ক হইরা থাকেল। জাহারা একক্রমে সাতবংসর মাত্র প্রকটি সঠের ক্ষয়ক থাকিতে সাজেন। জাহা-বেশ্ব ক্ষরিনে নিরোক ক্ষতিরিগার মঠের ক্ষ্যুক্তনা ও ক্ষান্তন রক্ষা করিতে ব্যাপ্ত আছেন। উহারা একরের ক্রিকিনের অভিনতাঞ্জারে নির্বাচিত প্রকা সকলেই বঠবাসী দ্বিনিগের অভিনতাঞ্জারে নির্বাচিত প্রকা করিতে বাধ্য।

- গোৰ্-পোৰ্বা অক্ষাপক-—ইনি সক্ষারাবের ধর্ম ও বিভাশিক্ষার পরিবর্শক।
- २ ¥ग्-न्रा— रकावांकाक ७ **बांकाकी**।
- ৩ কেন্-প বা পিয় কেন্-ভাণ্ডারী।
- ৪ গো-কো এবং ঝাল্নো—হাকিম ও কেনাখ্যক। ইহারা গৃই ব্যক্তি, পুলিল কর্মানরির ভার ইতততঃ প্রহরীরূপে পরিত্রনণ করেন এবং মঠবাসিগার্কের বোৰস্থানের কিনার করিয়া থাকেন। ইহালের সহকারীরূপে ফুই জন হগ্-কের আছেন।
- উথ্-স্লে—প্রাধান গান্ত ।
- ফু-ঞেন্—ধর্মালরের গরিচারক।
- ৭ ছ'অব্-ত্রেন্--জলদামকারী।
- ৮ অ-ম-- চা-সরবরাককারী।

ইহা ভিন্ন প্রভাবে মঠেই সম্পাদক ও পরিন্নর্পকগণ, পাচক্ষাল, পুদ্যবন্দী, অভিথি-সংকারক, হিনাববন্ধক, কর্মগ্রোহক, চিকিংসক, চিত্রকর, বণিক্-যভি,ভূতের রোঝা ও সাক্ষ্য-দশুরাহী প্রভৃতি নিযুক্ত আছেন।

সভ্যায়ামসমূহের ভাষ্যায়লী শ্বনিরলে পরিচালিত করিবার
অক্ত খতর বছর বিদ্ধাস নির্দিট্ট হাইবাছে। লে-পুল সভ্যায়ায়
৭৭০০ বতি বাস করেন। জাহারা ব্লো-গ্লাল-মিড,, স্গোমঙ,ব্লে-বঙ্গ ও স্থগদ প নামক হারিটাবিববিভালরের অধীন।
প্রত্যেক বিভালরই এক একজন উপায়ারের কর্মুছে পরিচালিত।
বতিলাণ প্রাদেশিক ও জাতীর বিভাগাহসারে বিভিন্ন মঠাবাসে
হান পাইরা বাবে। সেই বিভিন্ন লেনীলাক বাসাখলি ক্স্প্বন্ধ (Provincial messing প্রায়ট) একং বিভালরগুলি
প্রব্-৭বন্ (College) নামে ব্যাভ। প্রথমেনাক হানে বভিগণ
আহাদ, শরম ও অধ্যান করে প্রাম্ভ । প্রথমেনাক হানে বভিগণ
আহাদ, শরম ও অধ্যান করে প্রাম্ভ করেনাক টোকে মাইরা
ভাষারা থ খ বন্ধন নির্দ্ধ করেনাক করেনাক করেনাক, স্থাবার্যার ব্যক্ত

সের সঞ্জারামে ৫১০০ যতি বাস করেন! তদ্মধ্যে বরেরা, স্ভগ্স-প শাদ্-প বিভাগরের প্রত্যেকের অধীনে এক একটা শাধাসমিতি আছে। গাং লদ্ন্ সন্তারামে ৩০০০ বৌদ্ধ বতি থাকেন। ব্যঙ্-ংসে ও বর-ৎসে নামক ছইটা লাখা বিভাগর ইহার অন্তর্ভুক্ত এবং তৎ সংস্পর্লে বাসা আছে। তিবিল্যুণপোর প্রেসিদ্ধ সন্ত্যারামে তিনটা 'ত-ৎবক্ত' বা বিভাগর আছে। তদধীনে প্রায় ৪০টা থমৎবন্ বা নিব্যাবাস দেখা যায়।

বঙ্গের প্রাদিদ্ধ পরিব্রাজক শ্রীযুক্ত রায় শরতক্র দাসবাহাতর স্থাসিত্র তবিলয়ণপো সজ্বারাম পরিভ্রমণ করিয়া ভাহার ব্থায়থ বিবরণ সংগ্রহ করিয়াছেন। (উহা তৎসম্পাদিত Jour. Bud. Text. Socy, India IV, p. 14 (1893) and Journey to Lhasa and Central Tibet নামক গ্রান্থ বিশদরূপে বিবৃত আছে।) শেবোক্ত গ্রন্থের ৭৬পৃষ্ঠার লিখিত আছে—তু-খম প্রদেশ-বাসী ত্যিলগুণপোর একজন দেবরূপালত্ক নবীন লামা ১৮৮১ শুরীন্দের ১৫ই ডিসেম্বর উপবাস ও পর্কাদিন জানিরা বৌষ্বতি-দিগের তু-থম্ৎসন্ পদলাভের ইচ্ছা করেন। তদমুসারে তিনি কুন্-খ্যব লিকু হইতে পঞ্চেন্তে নিমন্ত্রণ করিয়া পাঠান। তিনি উক্ত স্ক্রারামের মধ্যন্থ ৩৮০০ বতির প্রত্যেক ব্যক্তিকে এক টাকা, শ্রেষ্ঠ লামাকে উপহার ও প্রণামী এবং লামাবিদ্যালয়ে (College of Incarnate Lamas) বিস্তর অর্থ দান করিয়াছিলেন । পঞ্চেন আসিলে সকলে বাস্তোভ্যমসহকারে তাঁহাকে অভার্থনা করিয়া মঠের প্রধান প্রকোষ্টে লইরা আদেন। তিনি এই উপাসনা-গুরু (ংসো-বন্ধ) আসিরা বেনীর উপর উপবিষ্ট হইলে এই উৎসবের ক্রিয়াকাও আরব্ধ হয়। তাহা সমাধা হইতে রাত্রি ১ টা হর। তৎপরে ভোজান্রবা, মাল্য ও অপরাপর ত্রবা শইরা বতিগণ স্ব স্ব মঠাবাদে ফিরিয়া আইদেন। এই যঞ সমাপনের পর উক্ত নবীন লামা তৃষিলহুণপো সভ্যায়ামে শিকা-নবিশরণে থাকিয়া পাঠাভ্যাস করিতে খাঁট্রেন। পরে তিনি পরীকা দিয়া লামাপদ লাভ করিয়াছেন। তিনি এদেশে তবিলামা নামে থাতে। সম্প্রতি তিনি বৌষতীর্থদর্শনোপদকে ভারতধর্ষে আগমন করিয়াছিলেন।

উপরোক্ত সভ্যারাম-সংশিপ্ত ছাজাবাসসমূহে ছই জন করিরা লামা থাকেন। তাঁহাদের মধ্যে জার্চ লামাই ছাজাবাসসংলগ্ন মঠের পরিদর্শক ও মন্দিরের পূজক এবং ছাজমগুলীর উপদেরা। ভামির্ক লামা কেবল ভাগ্রারগৃহের ভন্মাবধানে ব্যাপৃত থাকেন। বৃদ্ধি তাঁহাদের জ্বীনত্ব মঠের কোন ছাজ অসদাচরণ করে, ভাহা ইইলে ভাহারা দগুলীর হইরা থাকে। প্রতি বংসর এই ছই ক্রুটারীর পরিবর্তন হয়। এই সকল ক্রুটারিনিরোগ্লালে ক্রুল প্রক্রিয়ার অন্তর্ভান হইতে দেখা বার। প্রভাত সমরে অর্থাৎ ৪টার সমর একজন বাসক মিলিরের চুড়ার উঠিয়া ছ্হোস্বল্ গান করে। ঐ শীত ক্রত হইবামাত্র ছাত্রাবাসস্থ ছাত্রমগুলী শ্যা পরিভাগপূর্বক জাগিরা উঠে এবং স্ব স্থ আবাসস্থ ঘণ্টাশন্ধ করিয়া সকলকে প্রবৃদ্ধ করে। তদনন্তর ভাহারা মুধ ও হন্তপদাদি প্রকালন করিয়া রাত্রিবাস পরিভাগপূর্বক ধৌতবন্ধ পরিধান করে ৮ পরে মাথার জ্পা-গম্ চাকা দিয়া এবং হরিজাবর্ণের টুপি মন্তকে দিয়া একটা বাটা ও মরদার থিল হল্তে লইয়া ভাহারা ভাগারীর নিকট মরদা আনিতে বাহ। পরে তাহারা মন্দিরের প্রাক্ষণে প্রণত হইয়া মঠপ্রদক্ষিণ করে এবং কেছ কেছ মঞ্জীমন্দিরে বাইয়া ওম্-য়্র-প-ৎচ-নিদ্ধর পাঠ করিয়া বাকে।

বেলা ১টার সময় মিগ্- থলে-ম লামা লিগ্থলেম ভোতা উচ্চস্বরে গান করিতে থাকেন। তথন ছাত্রগণ সেই ভানের ৰারদেশে আসিয়া লিরে হরিলাবর্ণের উষ্টীয় ধারণ করিয়া সমস্বরে সেই স্তোত্র গান করে। কিছুক্রণ পরে হত্রিল আসিরা দার পুলিরা দিলে তাহারা মন্দিরে প্রবেশপূর্কক পরস্পর মুখোমুখি করিয়া বথাযোগ্য আসনে উপবেশন করে ও মাথার টুপি খুলিয়া রাখে। उৎकारन जाशासत्र थनि ७ वाँगे शैं हेतू नीता नुकान थारक। অতঃপর প্রধান গারক কর্ত্তক দেবপদাশ্রমণীতি গীত হইবার পর, কনিষ্ঠ মঠপরিদর্শক হরিলা-উক্তীয় মাথায় দিয়া দণ্ডার্মান হইয়া লোহনপুরায়া ভঙ্গাত্রে আঘাত করিলে ছাত্রগণ জল থাবার ঘরে ঘটিয়া চা পান করে এবং তাহার পর পুনরার ফিরিয়া আসিয়া স্ব স্থাসনে উপবিষ্ট হর ৷ এই জলধারার ঘরের মতম ব্যবস্থা আছে। যে প্রণাণীতে ছাত্রগণ চা পান করে বাহলাবোধে তাহা এথানে উলিখিত হইল না। চা ৰণ্টনকাৰ্য্য পরিদর্শনার্থ ৫ জন কর্মচারী নিযুক্ত আছে। গুই জন জদপোন রাজদন্ত চা-পরিবেশক ও পরিবর্জক, একজন মঠাধ্যকের चामिटे ठा-वर्णेरनत कर्षकर्छ। अवः इटेसन ज-म ও এकसन পরিদর্শক ঠব গ্যোগ্রি দূপোন পো ও তদবীন ২৫ জন পরিবেশক ব্দহরহঃ এই কার্য্যে ব্যাপুত রহিরাছে। মঠস্থ যতিগণ দিবনে তিন ৰার (প্রত্যেক বারেই ও বাটী) চা খাইছে পার। অধি-কাংশ চা'ই চাঁদার প্রাপ্ত। কোন কোন ধনী ব্যক্তি, প্রাদেশিক भागनकर्का ও हीरनत्र महाहे विस्मय विस्मय मिरन नामामिशरक চা পান করাইরা থাকেন। লামামঠের বে কটাছে চা'র জল গ্রম হয়, ভাহাতে প্রায় ২০০ মণ জল ধরে।

মঠের প্রচলিত প্রথা উলন্দন করিলে, কোন প্রকার
আসোলন্ত বা অসন্থানহার প্রকাশ করিলে অথবা ব্রন্ধচর্যা ভল্ করিলে প্রতিনোক্ষরিধি অনুসারে ভাষার বিচার ও সালা হইরা থাকে। সামান্ত অপরাধে ভিরন্ধার বা লালুনা খারা অব্যাহতি পান, কিছু যদি কোন বাজি একই অপরাধ বারংবার করে; ভাহা হটলে অপরাধ ওকতর বলিরা গণ্য হর এবং অপরাধীর ভদত্তরপট শাসন হইয়া থাকে। বদি কোন ছাত্র উপর্পরি মত্তপান বা চুরি করে,ভাহা হইলে সেই অপরাধীর শিক্ষক ও ছাত্রাবাস-পরিপর্ক বিচারসভার সমবেত যতিমঙলীর সমক্ষেনিক্ষাভাত্রন হইরা বাক্ষেম। পরে হইরুন লোকে এ ছাত্রের পার দড়ি বাধিরা মন্সিরের বাহিরে গইরা যার এবং তাহার দক্ষিণ ও বাম পার্কে উপর্পুপরি বেরাঘাত করিতে থাকে। এক সমরে ভাহার উপর প্রায় সহভাবিক বেরাঘাত হয়, ভদনত্তর তাহাকে মঠের সীমাবহির্ভাগে টানিরা কেলিয়া আইসে। ঘাহারা বেজনার অন্তর্গা ভল করিয়া মঠ পরিত্যাগ করে, ভাহারা বন্লোক নামে থাতে।

মঠের বহিঃ প্রদেশেও শামাদিগের প্রভাব বিশ্বত আছে। কোন ব্যক্তি কাহার উপর অহিতাচরণ করিলে হেই-হো-সঙ্গ বা কপালে ক্রক্তবর্ণ রেথাধারী গেকোর লামাগণ মঠপ্রাচীরের বহিন্তাগে আসিয়া সেই মুর্বান্তকে দমন করিতে পারেন। এই গেকোর লামাগণ মঠাধাক অপর প্রতিযোগিছরের সাতায়ে লামা বা ত্রন্তব্যাপ্রমের নিরম বক্ষা করিয়া থাকেন। এই সামাগণ প্রাচীন বৌদ্ধসন্ন্যাসীদিগের ছার স্থধস্থাবর্জিত নহেন। সন্ন্যাসীর জ্ঞায় তাঁহারা অর্থলাল্যা ও ভোজনলিপ্সা ত্যাগ করিতে পারেন নাই। সাধারণ লোকে তাঁহাদের ভোক্তা এবং চল, চা প্রমৃতি পানীয় যোগাইতে যোগাইতে উৎকণ্ঠিত হইয়াছেন। গে-লুগ-প প্রভৃতি তিকাতীয় প্রধান সন্মারামের অধীনে অনেক ভদম্পত্তি আছে। উহার আরে তাঁহাদের ব্যর্ভার চলিয়। থাকে। এত দ্বির শরতের শক্তকর্ত্তনকালে বহুণত লামা মঠের ৰাহির হইরা ভিক্ষা করিয়া শশু এবং চা, নবনীত, লবণ, মাংস প্রভৃতি ভরণপোষপৌবোণী প্রবাদি সংগ্রহ করিয়া ভাগের পূর্ণ করেন। কোন কোন লামা পুতুল গড়িয়া বা প্রতিমূর্ত্তি কাটিয়া, ছবি আঁকিয়া, কোটা প্রস্তুত করিয়া, বুজরুকী দেগাইয়া, চিকিৎসা ক্রিরা ও ঝাড়া ফুকা দিরা নানা উপারে অর্থ সঞ্চয় করিয়া মঠের বার সম্ভলান করিরা থাকেন। যে সকল লামা ভারণ প্রথম বৃদ্ধি-मन्नात अथवा शिक्षक नटरन, कौशात्रारे मटरेत प्रश्नास कार्या करतम । त्कर त्कर वाणिरका शिक्ष रहेवा गन्यातासम क्षेत्रश् वृद्धि करिया थाटकन। अहे मकन धर्माहायाग्य वावमा वाभारता হুদ গ্রহণ করিতে কুটিত হন না। বাস্তবিক পকে তীহারা প্রবাবদারী এবং দেশের মহাজন বলিরা পরিগণিত।

ভারতীয় বৌদগণের বেশভ্যাদি ভারতীয় করুত্বনির অন্ত-ভূগে নির্মিত হইরাছিল: যখন বৌদধর্ম ভিন্তত প্রভৃতি ভূষারময় প্রদেশে বিভার লাভ করিল, ভখন ভ্ইতেই বেশ দূষার পরিবর্তন ঘটতে থাকে। তিববতীর লামা বা বৌদ্ধযতিগণ দারুণ শীত ও মলকদংশনাদি শারীরিক পীড়াদারক
যত্রণা ছইতে পরিত্রাণ পাইবার অস্ত জুতা, মোজা ও গাত্রবস্ত্র প্রভৃতি শীতপ্রধান দেশের উপযোগী করিয়াই নির্দ্ধাণ
করেন এবং ক্রমশং তাহার পরিচ্ছরতার দিকে দৃষ্টি পড়ে।
প্রাচীন বৌদ্ধগণের চীরবাস ও বর্তমান লামাদিগের জপমালা,
শিরস্তাণ, আল্খালা, কোমরবন্দ, (ছাটজামা, চোগা, ডোরাকাটা
পশ্মী জোবনা, ইজার, পারজামা এবং জুতা প্রভৃতি আবভ্রুতীয়
উপাদানসমূহের তুলনা করিলে বুঝা যার যে, বর্তমান মৃগে বৌদ্ধধর্মে কি বিপ্লব উপস্থিত ছইরাছে।

তিব্বতীয় সামাগণ শিরোদেশে বে বিভিন্ন প্রকার উঞ্চীয় শোভিত করেন, তাহার প্রার সকলগুলিই ভারতীয় অনুকরণে গঠিত, কএকটা মাত্র চীন ও মোঙ্গলীয় ধরণে নির্মিত দেখা বার । তিব্বতীর সামাগণের বিশ্বাস এই বে, সামা-ধর্ম্মমতের প্রতিষ্ঠাতা বৌক্তিকু প্রসম্ভব এবং তাহার সহযোগা শান্তর্মিক খুইয় ৮ম শতাব্দে ভারত হইতে বে শির্ত্রাণ পরিধানপূর্বাক ভিব্বতে পদার্শণ করেন, তাহারই আক্রতি অনুসারে বর্ত্তনান টুলীগুলি গঠিত হইয়া থাকে। পঞ্চেন্ত্রেল্যর নামক লাল উঞ্চীব দিয়া অয়ং শান্তর্মিকত তিব্বতে আসিয়াছিলেন। গোলুগ্লপ বাতীত ভিব্বতের সর্ব্ত্রেই ঐ টুলীর প্রচলন ছিল। উহা ভারতের শীতপ্রধান দেশে ব্যবহৃত ভূলার 'কাণ ঢাক্য' টুলীর মত। ৎসোঙ্ক-থাপা সেই লাল বণ-টুলীর পরিবর্ত্তে হরিদ্রাবর্ণের উঞ্চীয় (খ-সের) প্রচলন করিয়া যান। উহাই গেলুগ্লপ সম্প্রদারের পরিবর্ধয়।

মঠবিহারিণী বৌদ্ধভিক্নীগণ পশমী বন্ধ বা লোমের ছারা প্রস্তুত একপ্রকার শিরন্ধাণ ব্যবহার করেন। সম্প্রদায়ভেদে উহা লাল ও রুঞ্চবর্ণের হয়। সিকিম, ভোটান ও হিমালয়ের প্রাক্ত্ত্ আনেক জনপর্দে বৈধানে রৃষ্টিপাত হয় না, সেই সকল প্রবেশ-বাসী বৌদ্ধলামাগণ গ্রীমকালে খড়ের টুপী পরিধান করিয়া, থাকেন। কেহ বা আবে টুপী পরেন না। চীনবাসীর ছায় উহারা টুপী পূলিরা আগস্কককে অভিবাদন করেন, এই কারণে দেব-মন্দিরে প্রবেশকালে কেহই মাধায় টুপি রাখেন না, কেবলমাত্র ক্রকটী ধর্মকার্যে টুপি পরিধানের বিধি আছে।

তাঁহাদের গাত্রবন্তেও উক্ত ছই প্রকার বর্ণ দেখা যার।
গো-লগ্-প সম্প্রদারের আচার্যাগণ কুদুমর্ম্নিত হরিদ্রাবাদ
ধারণ করেন। বদি কেই গো-লৃগ্-প আচার্য্যের নিকট কোন
উপটোকন দিতে আনে, তাহা হইলে নে প্রেম্নপ হরিদ্রাধান
পরিধান করিতে পারে, তাহা বদি অপর কোন ব্যক্তি ঐ বাস
পরিধান করে, তাহা হইলে ধ্যুনীর হর। প্রাচীন বৌছদিগের

সক্ষাটি, অন্তর্গাসক ও উত্তরাসক্ষাটির সহিত তিব্বতীর সামা-দিগের জান, নম্জার ও ব্লুগোম্নামক গারবক্তাদির জনেক সৌসানুশ্র আছে। এতত্তির শাক্ত ও বৈক্ষবদিগের স্থার তাহারা মালা জপ করে। ঐ মালার ১০৮টা দানা থাকে এবং উহার ছুই পার্শ্বের হতে ১০টী করিয়া 'সাব্দী' রাখে। ১০৮ বার মালা-জ্ঞাপের পর এক একটী সাক্ষী ধরিরা ভাহারা মন্ত্রসংখ্যা নিরূপণ করে। এইরূপ চুই দিকের ১০×১০ সাকীতে তাঁহাদের ১০৮০০ জপসংখ্যা হয়। এই সকল মালা দানাও বিভিন্ন প্রকার হইয়া থাকে। সর্ব্ধপ্রধান তবিলামার নিকট মুক্তা, চুনি, পান্না, নীলা, প্রবাল, ক্ষটিক প্রভৃতি মুল্যবান প্রস্তব্যে নির্দ্ধিত মালা দেখা যার। এতদ্বির সম্প্রদায়তেদে ও দেবারাধনা বিশেষে মালার দানা পুণকৃ হইয়া থাকে। গেলুগ্প সম্প্রনার মধ্যে ছরিল্রা বর্ণ কার্চের মালা প্রচলিত। তম্-দিন পূজার লাল চন্দন-কার্চের এবং ছ-রশী উপাসনার খেতশন্মের মালা, তান্ত্রিক উপ-নেবভাগণের পূজার রুদ্রাক (Eleocarpus Janitus), সাপের হাড়ের মালা, অবলোকিতের পূজার কটিকের মালা, পদ্মসম্ভবের ও তাম দিনের পূজায় প্রবাল এবং বজ্রভৈরবের উপাসনায় নুকরোটি ব্যবহৃত হইয়া থাকে।

লামারা যথন মালা জপ করেন না, তথন তাহা গলার বা দক্ষিণ হত্তে জড়াইরা রাথেন। মালা-জপের সময় প্রত্যেক দানা ধরিবার অত্যে তাঁহারা ওম্ প্রণব উচ্চারণ করেন, পরে দানা ধরিরা মনে মনে মন্ত্র পাঠ করিতে থাকেন। ভিন্ন ভিন্ন দেবতার জপমন্ত্র বিভিন্ন। এই সকল লামাগণ সচরাচর আরও কএকটা দ্রবা ব্যবহার করিয়া থাকেন। তন্মধ্যে ভজনচক্রা, বজ্বদণ্ড, বন্টা, করোট-নির্ম্মিত ঢকা, ধঙ্কানী, কবচ, পুথি ও অলকার প্রধান। ত্যিল হুণপোর প্রধান লামা সময়ে সময়ে জহরতাদি গঠিত কর্পহার ধারণ করেন। কাহার কাহারও ভিকাপার ও স্বান্ত্রদণ্ড আছে।

তিকাতবাসী লামাগণ ধর্ম্মের জন্ত প্রেশি বিসর্জন করিলেও কর্মকানেও তাঁহাদের বিশেষ আসক্তি দৃষ্ট হয়। মঠবাসী যতি, গ্রাম্য পুরোহিত, গুহাবাসী তপংপরারণ লামা ভিক্ অথবা ক্রবি-বাণিজ্ঞাদি কর্মে লিপ্ত লামাগণ পৃথক্ পৃথক্ কার্যো ব্যাপ্ত থাকিরা জীবনবাত্রা নির্মাহ করিতেছেন। এই বিভিন্ন শ্রেণীর লামাদিগের নিত্যকর্মপর্ষতিও স্বতন্ত্র।

লামানগরীর পোডল পর্বাডক প্রেষ্ঠ লামাসক্ষারামে বৌদ্ধ-যতিগণ বে প্রবা অবলবনে বৈনিক কার্য্য সমাধা করিয়া থাকেন, ভারাই নিমে কাক্ষিপ্রভাবে উদ্ধৃত ক্ইল,—

শ্রাত্রিকালে বধনই নিজাভন হইবে, তথনই বভিগণ শ্রাত্যাগ করিরা বাকেন । পরে গাত্রোখানপূর্বক পরিজ্ঞা পরিধান করিরা িনাকে ক্ষামে পৃহম্বাছ কেন্দ্রীর সমক্ষে ভিন্তার দেবোদেশে প্রাণাম করিবেন। তদনস্তর ক্রীবনষাত্রানির্কাহের উপার প্রার্থনা করিরা বৃদ্ধ ও বোধিসবনিগের উদ্দেশে শুব এবং সক্রে সঙ্গে স্ত্র-প্রন্থ হইতে কএকটা মন্ত্র পাঠ করিবেন। স্তম্ম ও মন্ত্র পাঠান্তে "ওঁ প্রেচরগণর স্ত্রী স্ত্রী আহা" নদ্র তিনবার পাঠ করিরা যতিগণ আম পদতলে প্তৃ প্রদান করিবেন। তাহাদের বিমাস, দিবা-ভাগে ভৃপ্তে ত্রমণ করু যে সকল ক্রীব পদদলিত হইরা পঞ্চত্ব প্রাপ্ত ব্যাপ্ত হর, এই মন্ত্রবেল তাহারা আমরাবতীর ইন্ত্রপুরে দেবরূপে করু পরিগ্রহ করিয়া পাকে।

এই সকল দেবারাধনার পর, যদি রাত্রি প্রভাত হটতে অধিক ৰিলম্ব থাকে, তাহা হটলে লেই যতি পুনরায় শ্যালারী इटेश निजा गाँडेएक शारतम, किन्ह यमि छुटे वा ठावि मण वाकी থাকে, তাহা হইলে তিনি আর নিট্রিত হইবেন না, সেই স্বর-কাল "স্বোন লম্" ভজনগীতি বা মন্ত্ৰ পাঠ করিয়া রাত্রি যাপন ক্রিবেন এবং ঘণ্টাধ্বনি হইলে যখন সকলে স্থাপ্তে হটবেন. তথন তিনিও শ্যা তাগি করিয়া শৃত্যধানি ও শিক্ষাধানি পর্যন্ত আপনার বেশ পরিধানাদি কার্য্যে ব্যাপ্ত থাকিবেন। শিলা-ধ্বনি হইবামাত্রই সকলে আ আ মঠকক পরিত্যাগ করিয়া 'দেনি-ব্ছল' নামক প্রস্তর মশুণে উপাদনার্থ সমবেত হইবেন। ঐ সকল প্রস্তরাসনে দণ্ডায়মান থাকিয়া তাঁহারা "ওঁম্ অর্থং চার্থং বিমন্দে! উৎস্থা মহাক্রোধ হংকট্" মন্ত্র পাঠপুর্বাক মনের পাপ ও কলুষাদি চিন্তা করিবেন। উহার বারা তাহাদের চিত্তপাতক বিদ্রিত হইয়া থাকে। তদনন্তর স্থপ্র পা নামক ক্ষারমৃত্তিকা বা সাবান যোগে স্ব স্থ তাম ঝারিছ জল ছারা হল্ত পদাদি প্রকা-লন করিবেন। হত্তপদের স্থান বিশেব প্রকালনকালে তাঁহারা বিশেষ বিশেষ মন্ত্র পাঠ করিয়া থাকেন। মুথাদি প্রকাশনের পর শৌচ দেহে জাঁহারা হত্তে মালা লইয়া অপ করিতে করিতে তারা দেবী ও মঞ্জীর উদ্দেশে মন্ত্র পাঠ করেন, সমন্ত্র থাকিলে কেহ কেহ স্ব স্থ কুণাধিষ্ঠাত্রী দেবতার স্বতি পাঠও করিয়া থাকেন।

এই সকল কার্য সমাধান করিতে প্রার ১৫ মিনিট সময়
লাগে। ভাহার পর বিতীর বার শত্মধানি হইলে গে-লোভ
বভিগণ মন্দিরঘারের সমক্ষে যাইরা এবং গেৎবুলেরা মন্দিরসমূবস্থ প্রাকণে দীড়াইরা দেবোদেশে প্রণাম করেন। তাহার পর
মন্দিরঘার উন্তুক্ত হইলে একে একে সকলেই মন্দিরে প্রবেশ
করেন। ঐ সমরে দগুহতে গেকো হারগথে দগুরমান থাকেন।
সকলে নিজ নিজ মাছরে প্রেণীবছভাবে ও মর্যালাছরূপে বুদ্ধের ভার
আসনপিড়ি হইরা উপবিষ্ঠি হইলে ভৃতীরবার শত্মধানি হর। তথন
সকলে সমস্বরে ঐ সমরকার কএকটা নির্দিষ্ঠ মন্ত্র পাঠ করেন।
তাহার পর চা পান করেন। চা পান করিবার পুর্বের অধ্যক্ষ লামা
সমবেত সকলের বৃত্তি রাক্য উজ্ঞারণ করিবার আপন আপন চা-

পাদপাত্র বাহির করেন। বঠছ বিকানবিণ বা কোন ভূচা চা আঁলিরা বিরা বার। পানের পূর্বে বভিগন অনুনী বারা হুই কোঁচা ভূমিতে নিক্ষেণ করিরা বৃদ্ধ, অপরাপর ধেবভা ও পিতৃপুরুবিগকে নিবেশন করিরা পরে ব্যবং পান করেন। মিটার ও নাংসভোকনের সমবেও ঐরূপ নিবেশনমন্ত্র-পাঠের ব্যবহা আছে।

নাধারণের কৌকুহল নিবারণার্থ নিমে কেবলমাত্র সম্ভালির ভাষার্থ উদ্ধৃত হইল,—

চৰ্য চৰ্য লেছ পেরাণি ঋণযুক্ত এই আত্মাণমধুর ভোজ্য जवा जामना शामी वृद्ध ७ वर्गन्न ताधिमचनिगदक निर्वयने স্বরিভেছি। তাঁহারা এই ধাছোপরি করণা বিভার করুন। "अम् चः हर।" छन्नखन्न वश्रोक्रास "अम् खन्न वज्र निविध चः हुर। अभू नर्का युक्त त्वाधिन क वस्तुरैमविष्ठ का हर। अभू मिव **जाकिमि औश्चिमान जनविवात बक्षरेमविका भा हर**ः" ख्राउचरत्रत উদেলে—"ওম্ভাগিও অসিডাঃ বাহা। ওম্ হারিতে মহা ৰক্লয় ক্লিপি হর হর সর্বাপাপবিমোক্লি আহা" ইত্যাবি। শীৰ্মাংস হইলে জীবহিংলা ও তল্মাংল জন্মণ আত পাপকালনের নিমিত এবং পশুর অর্থকামনার "ওস্ অবির খেচর হুং" মন্ত্র পাঠ করা হইয়া থাকে। তদনত্তর মঠ ভাগুতের পাছদ্রব্য প্রদাতার মঙ্গণ-কামনার এই মন্ত্র পঠিত হর—"নমো। সমস্তপ্রভরাগার তথাগতার অধ্যুতে স্মাক্র্কার নমো মঞ্জিরে। কুমারভূতার বোধিসভার মহা সভার । তদ্বথা । ওদ্ রলভ্ডে নিরভনে জনে জরে লৰে মহামতরক্ষিণলৈ পরিশোষার আহা।" ইহার পর তাঁহারা আরও কতকংশি ছতি পাঠ করিয়া থাকেন। ঐ গুলি ধর্ম, নির্মাণ, চিস্তামণি, করতজ, মঙ্গণ ও প্রবৃত্তিনিবৃত্তির প্রার্থনা মাতা।

চা-পানের পর, ধর্মাছবেদকগণের অর্চনা, স্বিরগণের প্রা, মণ্ডলার্পন, তৈরব এবং তারা, দেম-ছোগ্ ও সন্তত্ন প্রভৃতি কুলদেবতাগণের প্রা বথাক্রমে অন্তর্ভিত হব। এই সকলের পূজা সমাধান করিতে অনেক সমর লাগে বলিরা মধ্যে মধ্যে চা পানের বিধি আছে। কুলদেবতার পূজাকালে মধ্যে মধ্যে মৃত ব্যক্তির প্রেতান্থার এবং পীড়িতের রোগস্কি-কামনার নাম "কু-রিক্" পূজা। অনন্তর অবনিষ্ট কুলদেবতাগণের পূজা সমাও করিরা তাহারা চা ও ভূপ পান করেন। তাহার পর সকলে থেক রাখ্ সঞ্জি-শো পান করিয়া লভাজ্ঞ করেন এবং একে একে মন্দিরের বাহির হইরা অ অ প্রেক্টের সমন করিয়া থাকেন। প্রথমন সামা সর্কাশেরে মন্দিরের বাহির হইরা অ অ প্রেক্টের সমন করিয়া থাকেন। প্রথমন সামা সর্কাশেরে মন্দিরের বাহির হইরা অ অ প্রেক্টের সমন করিয়া থাকেন।

গৃহে আসিয়া উাহারা আপন আপন অতীই সম অপ ও কুল-বেৰভার পূজা করেন। তাহার পর উক্ত কেবভারিগকে ভোগ বিরা

থাকেন। পূজাকালে "ভজনচক্ৰ" ছুয়াইরা সকলে সমর নিরূপণ করিয়া লর। এই সমরে স্ব্যুদেব আকাশচন্দ্রে দৃষ্টিপথারচ হইলে তাঁহারা স্ব স্থ প্রকোর হইতে বাহির হইরা তুই হল্প উত্তো-লনপূৰ্বক "ওম্ মরীচীনাং স্বাহা" মন্ত্র পাঠপূৰ্বক ভড়ি গান করেন। তদনস্তর প্রাতে বেশা নহটার সমর বধন স্থ্যাসোকে দিগন্ত উত্তাসিত এবং আডপ তাপে শীতল বাৰু অপেকাকত উত্তপ্ত হইলে পুনরার একবার শথাধননি হইরা থাকে। তথন मर्ठवाणी गक्न नज्ञामीहे मनखांशार्व निर्दिष्ट द्वारन शमन करतन এবং পৌচ কর্মাদি সমাধানাত্তে প্রত্যাবৃত্ত হন। দ্বিতীয় শৃত্যধ্বনি হইলে সকলে পাঠার্ব প্রস্তৱপ্রাঞ্গে সমবেত হইরা থাকেন। ঐ সময়ে ৰদি বৃষ্টি পড়ে ভাহা হইলে সকলে একটা বিস্তৃত ককে আসিরা পাঠ করেন। পনের মিনিট পরে ভৃতীর শৃথধ্বনি হুইন্দে সকলে তথা হইতে মন্দিরে ঘাইরা প্নরার উপাসনার প্রবৃত্ত হন। ষিপ্রহরের পর পুনরার শ**খ**নাদ হইলে তাঁহারা ঐক্তপে প্রথমে প্রাদণে ও পরে মন্দিরে সমবেত হইরা উপাসনা করেন। এই সমন্ত্রে তাহার! তিনবার চা পান করিতে পারেন।

অতংশর সকলে স্ব স্ব কক্ষে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া ফুতা খুলিয়া অভীষ্ট দেবতার পূজা ও ভোগ দান করেন। তাহার পর মঠের ভূত্য আসিরা তাঁহাদের খান্ত সামগ্রী দিরা বার। ঐ থান্ত ত্রব্য হইতে কিছু কিছু তাহারা পিতৃপুরুবগণকে এবং হারিতী ও তাঁহার পুত্রদিগকে অর্পণ করিরা আপনারা ভক্ষণ করেন। তার পর যতিরা কতককণ পর্যান্ত নিজ নিজ কর্মে ব্যস্ত থাকেন। বেলা তটার পর, তাঁহারা চতুর্থবার মন্দিরে সমবেত হন। 🔄 সময়েও পূর্বের মত তিনবার শব্দধনি হইয়া থাকে। এবার দেবতাদিগকে ভোগদানের সময়ে ডিনবার চা থাইরা গুহে কিরিরা আইনেন। শিক্ষানবিশ ও পার-পা যতিগণ এই সমরে ষয়ে আসিয়া পাঠাভ্যাস করিয়া থাকেন। বেলা ৭টার সমর পঞ্চমবার সাদ্ধ্যসন্মিলন হর। ঐ সময়ে ভিনবার শৃথ্যনাদের পর সকলে পূজাদি সমাপন করিয়া ওবার চা পান করেন এবং ভদনস্তর গৃহে প্রত্যাবৃত্ত হন। রাজিকালে বিজীয়বার কটা নিনাধিত হইলে শিক্ষানবিশ ও ধীক্ষিত বতি সম্প্রদায় বা স্বাস্থাপ্তরে নিকট ধর্মপ্রছ পাঠ ও আর্ডি করে। ভূতীর বার ক্টা নিনারিত ছইলে সকলে ওইতে বার।

ক্রিঙ্ক-না স্থানারের মঠসমূহে আর এক্রণ প্রাণাই আচরিত হইরা বাবে। পার্থক্যের মধ্যে ভঙ্কং সাংখ্যাবারিক বঠে সকল সময় পঞ্চরনি হর না। বেলা দ্বীয়ে সময় পঞ্চন্দী বাজিলে সকলে মন্দিরে সমবেত হইরা প্রাণি উৎসব স্বাণান করেন এবং ভখার বানিবা চা ও মুড়ি বান। আতে ১-টার সময় চীনবেশীর হকুতি বাবিত হয়। ঐ সময়ে সকলে সন্ধারাবের স্কুর্থ করেন সমবেত হইয়া ভোজন করেন। সকলেই ভোজাদ্রব্য দেবতাদিগকে নিবেদন না করিয়া থান না, বৈকালেও তাঁহারা শব্দমিন
শুনিয়া একত্র সমবেত হন ও চা পান করেন। তদনস্তর টীন
চকা নিনাদিত হইলে সকলে চক্ষ মন্ত্র পান করিতে পান।
এই সমরে মহাকালের পূজা এবং তাহার পর সাধারণের
মক্ষলকামনার দেবপূজা হইয়া থাকে। সন্ধার সময়
১০৮টা প্রদীপ আলিয়া তাঁহারা রঙ্-বাগ্ পূজা সমাধা করেন।
শুরু পদ্মসন্তবের পূজাই ঞিঙ্-মা সাম্পারিক মঠের প্রধান
অঙ্গ পদ্মসন্তবের পূজাই ঞিঙ্-মা সাম্পারিক মঠের প্রধান
অঙ্গ। এথানকার যতিরা দিবসে নয়বার চাও থাত্র পান।
সান্ধ্যসন্মিলনের পর চকানিনাদে আর একবার বতিগণ একত্র
আহ্ত হইয়া থাকেন। রাত্রিকালে একত্র হইয়া তাঁহারা অয় ও
মাংস ভক্ষণ করেন।

গ্রাম্য পুরোহিতগণ সম্পূর্ণরূপে লাসার মহামঠের অন্তকরণ করেন। তবে পূজা ও কর্মকাণ্ডের অন্তর্ভানে কতকটা পার্থক্য দৃষ্ট হয়। রাত্রিকালে নিদ্রাভলের পর ভঞ্জনকালে অনেকে হঠ-যোগ অভ্যাস করিয়া থাকেন। বাহাদের রাত্রে নিদ্রাভক্ত হয় নাই, তাঁহারা প্রাভংকালে মুখাদি প্রকালনের পর উপরোক্তরূপ আচারাম্মন্তান করেন। তদনস্তর দেবার্চনা, প্রেভার্চনা ও ভোগ দিয়া ভাঁহারা চা মুড়ি প্রভৃতি হারা জলযোগ করেন। বেলা ২টার সময় সকলে উদরপূর্ত্তি করিয়া আহারাদি করিয়া থাকেন। সন্ধ্যা ছয়টার সময় তাঁহারা পুনরায় কুলদেবতা প্রভৃতির পূজা ও স্তবাদি পাঠ করেন। রাত্রি ৯টা হইতে ১০টার মধ্যে তাঁহারা শ্রন করিয়া থাকেন।

তপংপরারণ লামা যোগীদিগের ঐরপ ক্রিরাকাণ্ডের অন্থ-ঠান নাই। তাঁহারা পর্কাতগুহার মধ্যে থাকিয়। নিরস্তর ক্ষীমরচিন্তার নিমগ্র থাকেন এবং প্রাকৃত সন্ন্যাসীর পালনীয় আচারাম্প্রঠান করিতে বাধ্য হন। এই যোগাভ্যাস তিন মাস তিন দিন ধরিয়া করিতে হয়। ঐ সময়ে 'মূলযোগ স্কোন গো'র চারিশাথাই তাঁহারা লক্ষবার জপ করেন এবং আলমে ভিক্ষা-মন্ত্রপাঠকালে লক্ষবার দেবোক্রেশে নত হইয়া থাকেন। তাঁহারা ব্রক্রবান-মতাবলম্বী এবং সন্ন্যাসীর হঠযোগসাধনকারী। ইঁহারা সিদ্ধিলাতের আশার এই কার্য্যাক্রঠান করিয়া থাকেন।

পশ্চিম ভোটরাজ্যবাদী অধিকাংশ দামাই বাণিল্য ও শিম লইরা ব্যাপৃত। তাঁহারা ক্ষেত্রকর্ষণ ও ধাঞ্চাদি বিক্রন করিরা বাহা লাভ করেন, তংসমুদারই মঠের জন্ত ব্যরিত হইরা থাকে। অনেকে মঠের লামাদিগের পরিধের বাস প্রস্তুত কর্মণাভিপ্রাবে দক্ষি, মৃচী ও চিত্রবিভাদি শিক্ষা করিরাছে। কেহবা প্রানে প্রামে ভিক্ষা করিরা মঠের ভাঙার পূর্ণ করিভেছে। লামাণণ প্রধানভঃ চাউল, হয়, নবনীত, খুণ, চা ও মাংস খান। মাংসের মধ্যে ছাগ, ভেড়া, ও চমরী গো ভাহানের সেবনীর, মংস্ত এবং কুরুটমাংস নিবিছ। গে-লোভ্গণ কোলরপ মাংসই ভক্ষণ করেন না। তাঁহারা সম্পূর্ণরপে ব্রহ্মচর্যা-বলখন করিরা থাকেন। তবিল্হুগুপোর প্রথান লামা মাংস ভক্ষণ করেন। প্রসিদ্ধ লাসা-মঠের লামাগণ সাধুপ্রকৃতিক, তাঁহারা মন্তপান করেন না। স্বভান্ত ছানের লামানিগকে চল মন্ত পান করিতে দেখা যার, লাসা-মঠের লামারা ভূতাদির তৃত্তির অন্ত মন্ত উৎসর্গ করিরা থাকেন।

লামাধর্শের উৎপঞ্জি।

কিরূপে ও কোন্ সময়ে ভোটরাজ্যে বৌদ্ধর্শের প্রতিষ্ঠা-সহ তন্ত্রমতপ্রস্ত এই লামাধর্শের উৎপত্তি, শ্বিতি ও প্রতি-পত্তি বিস্তারশাভ করিরাছিল, তাহার বিশেব বিবরণ সংগ্রহের উপায় নাই। খুটীয় ৭ম শতাব্দে এখানে প্রকৃত পক্ষে বৌদ্ধ-ধর্ম্মের বীল উপ্ত হইলেও তিকতে-জনপদবাসিমাত্রই বর্কারতার ঘোর অন্ধকারে আক্ষর ছিল। ভোটরাজ প্রোঙ্-ৎক্সান গস্পো (৬৩৬-৪১ খুঃ) খীর ভূজবলে চীন-রাজ্যের পশ্চিম সীমা পর্যান্ত জর করিরা একটী বিভূত রাজ্য জয় করিয়াছিলেন। প্ল-বংশীর চীনসমাট থৈৎস্ক স্বীয় ক্সা বেন্ছেকের সহিত তাঁছার বিবাহ দিয়া মিত্রভাপাশে আবদ্ধ হইয়াছিলেন। চীন ইতিহাসে ভোটরাজ প্রোঙ্ ৎসান গম্পো ছিৎকল্প পুঙ্সান নামে পরিচিত। ৬৪১ খুষ্টাব্দে এই ঘটনা ঘটে। ইহার ফুইবৎসর পূর্বে তিনি নেপালরাজ অংশুবর্দার কন্তা জরুটী দেবীর পাণিপীড়ন করেন। উভয় রাজকন্তাই বৌদ্ধর্মে বিশাসী ছিলেন। স্থতরাং পত্নী-দিগের অন্তরোধে রাজাও অচিরে বৌদ্ধর্মাসক হইয়া পড়েন। কোন কোন গ্রছকার বলেন যে, তিনি বৌদ্ধ-थर्म्ब मैक्किंछ हरेबा शास तोकताजकशास्क विवाह करतन। তিনি শীয় মহিধীদয়ের সাগ্রহ প্রার্থনায় এবং তিব্বত রাজ্যে বৌদ্ধদর্ম বিস্তার কামনার বৌদ্ধ ধর্মগ্রন্থ সংগ্রহে ক্লভসংকর হন। ভাহারই উদ্বোগে ভোটরাজ্যে বৌদ্ধ ধর্মাচার্য্য আনরনের ব্যবস্থা ঘটিরাছিল। ভারত, নেপাল ও চীন-রাজ্যের নানাস্থানে ভোট-রাজদৃত গমন করিয়া গ্রন্থাদি সংগ্রহকার্য্যে ব্যাপৃত ছিলেন।

ভাঁহার আদেশে যে দৃত ভারতে আসিরাহিল, ভাহার নাম থোন্ মি সজাট। এই ব্যক্তি ৩৩২ খুটালে ভারতে আগমন করেন এবং ৩৫০ খুটালে ভোট রাজ্যে ফিরিয়া বাম। তিনি ভারতে থাকিয়া আদ্ধণ লিপিদত্তের এবং পণ্ডিত দেববিৎ সিংহের (সিংহবোব) নিকট বৌদ্ধধর্মণাত্র অধ্যয়ন করিয়া ছিলেন। অদেশ-বাআকালে তিনি বহু শভ বৌদ্ধগাহ সজে লইয়া বাম। তিনি উত্তর ভারতীয় কুটিল কর্মানা মিশ্রিত বে অকরে পৃথিখনি লিবিয়া নইয়াছিলেন, সেই অকরে তিকতীর ভাষার ব্যক্তিরণ প্রেণরন করিরা প্রচার করেন। কেবল তিবাজীর বর্ণমালার স্বরনামঞ্চ ১ ছ তিনি নেই স্বন্ধরনানার আবন্ধক মন্ত্র স্কৃতিক চিছ আবিষার করিরাছিলেন। ইহাই পরবর্ত্তি-কালে ভিষ্যতীর বর্ণমালা বলিয়া পরিচিত হর।

বোদ্ধি বৌৰধৰ্ষগ্ৰহের অন্ধ্রাণ কার্য্যে জীবন অভিবাহিত করিলেও, প্রাকৃত ধর্মপ্রচারক বা বৌৰ্যভিরশে আসনাকে প্রাভিন্ন করিছে পারেন নাই; কিছ রাজা প্রোঙ্-২সন্ পল্লো বৌৰ্ধপ্রের প্রভিন্নতা বলিয়া বোধিসক অবলোকিতের অবভার-রূপে পূলিত হইরাছিলেন। তাহার পরী চীনরালছ্ছিতা নেন্ছেল অবলোকিতের পরী তারাদেবীর নামে বেতাদিনী ভারা এবং লেশালরাককতা করুটী ভারা দেবী বলিয়া পূলিতা হন। ক্রকুটী ভারার বর্ণ নীল এবং মূর্ত্তি অতীব ভীবদা। তিনি অহরহঃ খীর ব্লপন্নী বেনছেন্দের সহিত কলহ করিতেন বলিয়া তাহার উপ্রাভৃতি করিত হইরাছে।

আহ্মানিক ৩৫০ খুইাকে রাজা লোঙ্-ংসন্ গল্পো পরলোক গমন করিবে তৎপৌত্র কলেলাও মল-ৎসন রাজার বৌষধর্মবাজক দ্গরের প্রতিনিধিছে রাজ্য দাসল করেন। উহার পরবর্তিকাল হইতে তিব্দতে কুসংখারাজ্য ভূতোপাসক বালান ধর্মের প্রভাব হবি হয়। প্রায় দাতাক পরে উক্ত বংশে রাজা থি-লোঙ্-দেংসানের রাজ্যকালে প্রায়ার বৌষধর্ম প্রাথান্ত লাভ করে। চীনস্মাট্ ছল-ৎসালের পালিতা কল্পা হিন্ ছেকের গর্তে এই রাজকুমারের লম হয়। বৌষধর্মে মাতার আসক্তিবশতঃ পুত্রও বৌষধর্মে দাতার আসক্তিবশতঃ পুত্রও বৌষধর্মে দাতার আসক্তিবশতঃ পুত্রও বৌষধর্মে দাতার আসক্তিবশতঃ প্রস্কার বিশ্বনিত লাভ্যানিতে দ্ত প্রেরণ করেন। পারসভ্তব হইতে ভক্ত পায়সভ্তবকে আনিতে দ্ত প্রেরণ করেন। পারসভ্তব ভারতীর বেলিব প্রতিন্তা লাভ্যাকর বিশ্বনি প্রতিনি বাগাচার্য্য শাখার বিশেব প্রতিন্তা লাভ্যকরিরাহিলেন। প্রবাদ, ভঙ্গ পারসভ্ব দাত্রক্রভিতের ভাগনী নক্ষারবাকে বিবাহ করেন।

রাজার আহ্বানে উৎজুল হইরা পল্লসভব নেপাল রাজ্য মধ্য দিরা তিবাতে যাত্রা করেন। ৭৪৭ গুটান্দে তিনি রাজধানীতে উপনীত হইরা রাজসভালে যাত্রা বিবরণ প্রাক্তাপ করিয়াহিলেন। পরি নধ্যে তিনি ক্রিলাল তাহিনী ও যক্ষিণালয়ে প্রতাব ধর্ম করিয়াহিলেন, তাহাও রাজস্মীনে নিবেষন করিয়া বলেন বে, তাহারা ব্যার প্রতাব প্রকাশ করিবাত, আর কাহারও অপনার করিবে না। আনিও তাহারিলন্তে অভ্যার বিরা বলিয়াহি থে, তোমরাও আনার আহলে পূজা ও বলি পাইবে। ই ইলভে পাইই ব্যা বার বে, তাল্লভের অর্থ-সভ্যা ও অসতা আনিক বেরিপের্যে বীক্ষিত করিতে প্রবাস পাইরা বর্ষন বোজাতার্যার ক্রিপ্রান্ত বিনালয়ের এবং পর্যাত, মুক্ত ভুতারির উপান্তার

শইরা এতই বোহাভিতৃত হইরা সহিবাহে বে, ভাষাদের ব্যৱ वरेटफ धरे कुमरकामज्ञल कृषा बाँठका जलाताविक कतिया निर्वात-মৃক্তি ও প্রতীত্য-সমুৎপালয়ণ মহাধর্মনীক ভাহাতে বশন করা নিভার্তই চুন্নহ ব্যাপার, তবন জাহারা সেবরণে পুরা নেই नकन कीमगुष्ठ कानत्त्वकाषिशत्य व्यञ्चक त्यवस्ता शना कतिसा শন দেবাঃ ক্টিনাশকাঃ" বাক্যের নার্বক্তা রক্ষা করিতে প্রছাক गाहेरनम । छोहात्रा ध्यकात कतिरक माशिरमम, "धहे अवम শিশান, বৰু, ভাকিনী, বোগিনী অভৃতি বৃদ্ধের নলসার কলগায় মন্দ্রারী পঞ্জি বিসর্জন করিয়া একণে জীবের মূল্য কামনার व्यक्ष रहेशाहम । छारात्रा आत सीत्वत्र अभकात अतित्व मा। বল্লং ৰাহাতে জীবসভেবর মকল ও সুক্তিলাত হয়, তাৰিবরে সহারতা করিবেন; স্থতরাং তাঁহারা সাধারণের পূজ্য, তাঁহাদেরও বলি দেওরা ফর্জবা।" এইয়াপে বেমন ভারতে বৌদ্ধ-ভাত্তিক-ৰুগে সাধারণের চিত্তবৃত্তি আকর্ষণ স্বরিবার অভিগ্রায়ে দুলবাত-শালিনী ছুৰ্গা, লোলরসনা ক্যালবদনা কালী, বিক্লারিডনেত্র বিরণাক, রক্তবণা ভীষণদৃশ্বা শীতলা, করালদংট্রা বারাহী প্রভৃতি ৰেৰ বেৰীয় আবিভাৰ হইয়াছিল, বৌদ্ধ শুক্ল প্ৰাসভ্যৰ ভিন্সতে উপনীত হইয়া কুসংখ্যাসাফ্র ভিন্সতবাসীকে পূর্বতন ৰশে বিশ্বত রাখিরা ভাহাদের জ্বরে বৃদ্ধের প্রাথাভ ভাগনপূর্বক ৰৌঙৰৰ্শ্বৰীজ বপন করিয়াছিলেন। এই পৌতলিকমিপ্রিত বৌদ্ধর্ম বৃলধর্মের সহিত মিলিত হইরা লামা (ব্লম) বা ব্রহ্মধর্ম নামে প্রসিদ্ধি লাভ করিল। ভিক্ষতীর ভাষার লা-ম খাকে পর্ম পুরুষ বুঝার; বুজুই পরম পুরুষ অর্থাৎ বাঁহার মহীর্মী শক্তি-প্রভাবে অপকর্মা ভূডগণও ব্লীভূত হইরা নাধারণের মন্ধ্রণার্থে প্রশোষিত হইরাছিল। সেই পর্য-পুরুষার্থ ক্রমে শ্রেষ্ঠ মঠাধ্যক উপাধ্যার বাবে ও বৌদ্ধতি সাধারণে আরোশিত হইল।

ভদ্দ পদ্মসভবের নিকট বৌদ্ধবর্ণের প্রাকৃত মর্ম ও প্রভাব অবগত হইরা এবং তিকাতীয় প্রাচীন ভৌতিক ক্রিরাকাণ্ড-ভলিতে তাঁহার সবিলেব আহা দেবিরা রালা থি-শ্রোঙ্-বেংসন তৎপ্রবর্তিত লামা বা প্রেট্ঠ বর্ণের পক্ষপাতী হন। তাঁহারই আগ্রহে এবং উৎসাহে ৭৪৯ খুটাকে তিকতের বদ-বাস্ মসবের প্রথম বৌদ্দার্ভ হইল। উহা মসবের প্রথক্ত্রীর ক্র্প্র-বিছ বৌদ্দার্ভর অক্তর্করণ নির্ভিত হর, স্বরং গদ্মসভব ঐ সঠের ভিত্তিপ্রভাব স্থাপন করেন। বাভিবর নাজ্যভিত প্রতিটাকার্ত্বা ভঙ্গর করেই সহায়তা করিয়াহিকেন। ঐ কঠেই প্রথবে আমা-ক্রানার্ভার প্রতিটা হর প্রবং বাভ্রমিত ভবালার প্রথম আচার্ত্বা বা বিলাধ্যার হইরা ক্রেম্বরণ বর্ষকার ক্রিমান্ত ক্রিয়াহিকেন ক্রিমান্ত ক্রিমান্ত্রক ক্রিয়াহিকেন। ভিত্তি প্রকৃতি ক্রিমান্ত ক্রিমান্ত্রক নাগাৰ্জ্ন, ওভয়ন, **উত্ত**ও ও জানগৰ্ড প্ৰভৃতিৰ ভাষ তিনি উত্তৰ সম্পাদক্ষক ছিলেন বলিনা ভাষাকের ধানুলা ।

ভিন্নত্বানিগণ এই নৰপ্ৰবৰ্তিত লামান্তকে ধৰা বা বৌদ্ধধৰা বলিয়া থাকে; কিছ প্ৰকৃতপক্ষে ভাহাতে প্ৰকৃত বৌদ্ধথৰ্মেৰ ছামানাত্ৰ বিভ্যান আছে। ভাত্ৰিক বীরাচারে উহা
সম্যক্ কণে বিপ্লাবিত। লানাদেবভার উপাসনা এবং ভৌতিক ক্রিয়া ও ভৌত্রবিভা নেই প্রাচীন স্কৃতম ধর্ম্মভন্তকে আশ্রম ক্রিয়া ভাহাকে নবভাবে গঠিত ক্রিয়াছে। এই ধর্ম্মবিবানিগণ "নঙ্গ" এবং বাহারা এই মতবহিছ্তি ভাহারা
"পা ভিঙ্ক" নামে কথিত।

উপাধ্যায় শাস্তরক্ষিতের পর "পল বঙ্ন" আচার্য্যের আসন প্রহণ করেন; প্রছত প্রভাবে "ব্য বুগ্ জিগ্ন্" সর্ব্ধপ্রথম দীক্ষিত লামা হইয়াছিলেন। শিক্ষানবিশ শিবাগণের মধ্যে লামা সগোর বৈরোচনই সর্বাপেক্ষা স্থপণ্ডিত হইয়াছিলেন। তিনি লামা-সমাজে ব্রেরর প্রাভা ও সহচর আনন্দের অংশাবতাররূপে সন্মা-নিত। বৈরোচন ভিক্কতীয় ভাষার অনেক সংস্কৃত গ্রন্থের অন্থ-বাদ করিয়াছিলেন।

শুক্ত পদ্মসন্তব গামাবর্দ্ধ প্রতিষ্ঠা ও প্রচারপ্রসঙ্গে যে সকল আচারাস্থ্রীন বিধিবন্ধ করিরাছিলেন, তাহা জানিবার উপার নাই। তৎসম্প্রনারভূকে পঁচিশ জন শিব্য তাঁহার তিরোধানের কঞ্জ শতান্দ পরে তৎপ্রবর্ত্তিত প্রকৃত ধর্মমত ও পদ্ধতি বলিরা যে সকল গ্রন্থ সকলন করিরা সিরাছেন, তাহা সম্ভবতঃ তৎকালীন আচারবিদিশ্রিত বলিরাই বোধ হয়। তবে আদি পদ্ধতি অন্তম্মত এবং ভৌতিকবিস্তাসমাপ্রিত ক্রিঙ্ক্ত্-ম-শ সম্প্রনারের আচার পদ্ধতি লক্ষ্য করিলে সহজ্যে উপলব্ধি হয় যে, পর্ত্তীক্তব তাহার জন্মভূমি উত্তান এবং কান্দীরে প্রচলিত বোর তারিক ও তোজবিস্তাপ্রস্তুত মহাযান-সম্প্রদারের বৌদ্ধতই স্থাপন করিরাছিলেন। তাহাতে মরমূলক শৈবধর্ম ও ভূতোপাসক বোন-শা ধর্ম মিপ্রিত ছিল।

শ্বন্ধ পদস্থবের বে পঞ্চবিংশতি শিব্য ছিলেন, তাঁহারা সকলেই ভৌতিক ও ভোতবিভার পারবর্ণী। তাঁহারা মন্তবনে ভূতগণকে বনীভূত করিরা তিবাত ভূমে তৎপ্রবর্তিত বর্মহাপনে বছপরিক্র হন। তিবাতবানী বৌছগণ পদস্থবের জনামান্ত তিরোধান ও জাঁহার ভোতবিভাগ্রেলাৰ সক্ষা করিরা তাঁহাকে বিতীর বৃহত্তপে পূজা করিরা আসিতেহেন। এবনও প্রাচীন লাবানেতাবারবিনের মতে জাঁহার আট প্রকার মূর্তির উপাসনা কুইরা প্রাক্তে কিন্তান্তবিদ্ধানিক বিভাগ্রেলারীর বিভাগ, কর প্রস্তাহর সমরে সমরে বিভাগ্রেলারীর বিভাগ্য করিবাতাবারবিন্তবিদ্ধানিক।

सावा कि आहे. तरमन् के दीवात हुई बन क्लब्स्स वागाह

উৎসাহে ভিনতে গামাধর্ম ভ্রাডিটিড বুইয়া উভয়োভয় বিভত ষ্ট্রা পড়িল। বোন্-পা ধর্ণাঞ্জি ভিকভেবানী আচরিত व्यक्ति गामकक्रगाथक धरे नरीन मटकत व्यक्तिकत्री ना रहेशा बता রাজার ভবে ভাহার পোবকতাই করিরাছিল। ভাহারা ব্রিয়া-हिंग कि और बटक विशे जीविशेश क्लान कार्य माहे, जिसक ইহাছে নুজন শক্তি নকারিত হইয়াছে। তাই শস্ত্যাত্ত্বক নৰধৰ্মে ভিন্দভবানী অভ্যান হওয়ার নামাধর্ম নভই পৃষ্টি ও বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইণ ৷ বিশ্ব শিক্ষাবলে ভিকাতবাদী বতই মানসিক উন্নতি সাধন ক্ষিতে লাগিল, তত্ত ভাষারা গামাধর্ণ-সংখারের আবস্তকতা অস্থাত্তৰ ক্ষিত্ৰ ৷ আসৱদ্ধির সজে সক্ষে ধর্মপদ্ধতিরও সংখার হইরাছিল: এই কারণে ভিন্নতীয় বৌদধর্মের ভিন্তী গুগ নিরূপণ করা বার। ১ন আদি সুগ অর্থাৎ রাজা থি-ছোঙ দেৎসনের রাজ্যকালে নামাধর্মের প্রতিষ্ঠা হইতে বৌদ্ধবিগের তাড়না পর্যান্ত। ২র মধ্যবুগ বা লামাধর্মের সংস্থার কাল পর্যান্ত এবং তদ্ম বর্ত্তমান লামা ধর্ম বা গুরীর ১৭শ শতাব্দে ধর্ম্মাচার্য দলই-লামার প্রাধান্ত ও রাজঘবিস্তার কাল।

৮২২ পৃষ্টাব্দে উৎকীর্ণ লাসানগরীর লাটব্যক্তের অন্ধুলাসনপাঠ্রে জানা বার বে, ভিকাত ও চীনবাদিগণ ভিনটা পরম পুরুষ এবং পবিত্রচেতা সাধুস্থ পর্য্য, চক্র, এহ ও ভারাগণের উপাসন। করিভেন। উহাই প্রকৃতপক্ষে ভথাকার আদি-লামাবুগের নিদর্শন বলিয়া গণ্য করা বায়।

৭৮৬ খুটাকে থি লোড দেৎসনের মৃত্যুর পর তৎপুত্র মৃতিৎসান পো রাজা হন। ইনি রাজ্যাধিকারের পর বিষ্ণপ্রারাগ
নিহত হইলে তদীর প্রাজা সদ্ ন লেগ্স্ সিংহাসনে আরোহণ
করেন। ইনি বৌদ্ধর্শ্ববিদ্ধারার্থ ক্ষলশিলাকে তিকাতে আনয়ন
করিয়াছিলেন। তৎপুত্র রালপছন ৮১৬ খুটাকে (মতান্তরে
খুটার ৯ম শতাব্দের শেগভাগে) সিংহাসনে আরুচ্ছ হন।
ভাঁহার রাজ্যকালে নাগার্জন, বস্থবন্ধ ও আর্বাদেবের প্রাসিদ্ধার ও ধর্মপ্রহাসমূহ ভোটভাবার অনুদিত হন। এতারির
তিনি ভারতবাসী ক্রক্তর্জন বৌদ্ধতিকে ধর্মপ্রহাসমূহের
অন্থ্যাক্ষার্থে বিশ্ব করিয়াছিলেন; তন্মধ্যে স্থ্রিরমতির শিব্য
জিনমিত্র, নামজিলেবাধি, ক্রেরেবেন্ত্রি, প্রজাবর্শন্, নানশীল এবং
বৌধিনত্রের নাম উল্লেখবোগ্য।

রালা রালপঞ্চনের বৌদধর্মাহরাগে ইবাপয়তয় হইরা ভালীর বিনিঠ প্রাতা লগু -লগ বৌদধর্মদেবী হইরা পঞ্চেন এবং ৮৯০ পৃঠাকে বীর প্রাতাকে নিক্ত করিরা বরং নিজোনন হজনত করেন। তিনি মাজপণারজ হইরা লালানিবের উপায় বংগজ্জাচার করিতে বাকেন। এমন কি, তিনি মাজির ও মঠ করেন করিয়া লামান্যানীনিবাকে জীব্রিংনাজায়ী কনাইর ভার্যা

করিতে বাধ্য করাইরাছিলেন। তাজ্জ তাঁহার আদেশে অনেক বৌত্তান্থ ভাষাব্য হইরাছিল।

স্থাধর বিষয়, তাঁহার বৌদ্ধান্তে বিদেব বছকালভায়ী হয় নাই। তাঁহার রাজ্যকাল ভূতীয়বর্ষ অতিক্রম করিতে না করিতে লালুঙ-বাসী লামা পাল-দোর্জে মুখোন প্রভৃতি ভয়াবহ বেশভূষা পরি-ধান করিয়া ভাঁহাকে নিহত করেন। লামা পাল দোর্জে বাউলের স্থায় কিছুত কিমাকার বেশভুষার সঞ্জিত হইয়া রাজপ্রাসাদের नमत्क कानिहा नुष्ठा कत्रिएक शास्त्रमः। ताका रकोकृहनार्विष्टे হুইয়া সেই মুর্ত্তি দর্শন করিতে আসিলে তিনি তাঁহাকে বাণবিদ্ধ করেন। পরে রাজসৈত্র তাঁহাকে ধৃতকরণ মানসে পশ্চাদাবিত হইলে তিনি একটা কৃষ্ণবর্ণরঞ্জিত অখপুর্চে আরোহণ করিরা নদী সম্ভরণপূর্বক পলাইয়া যান। জলমগ্ন হওয়ায় অখের কৃত্রিম গাত্রবর্ণ বিধেতি হইয়া মূলবর্ণ বাহির হয় এবং তিনি ভাঁহার ছন্মবেশ ফেলিয়া দিয়া নৃতন শ্বেতবন্ত্র পরিধান করিয়া অপর পারে উঠেন। কুসংস্থারাচ্চয় তিব্বতবাসী তাঁহাকে অপর ব্যক্তি মনে করিয়া অথবা দৈবশক্তিসম্পন্ন জানিয়া আর তাঁহার পশ্চাৎ অফু-সরণ করে নাই। তীরের আঘাতে রাজা পঞ্চত্ত পাইবার কালে বলিয়াছিলেন যে, "বৌদ্ধশ্ব উৎসাদনদ্ধপ পাপপক্ষে লিগু হুইবার পুর্ব্বে তিন বৎসর অগ্রে কেন আমাকে নিহত করা হয় নাই।" রাজা লঙ্ দর্শের মৃত্যুকালীন এই বাক্ষে বৌদ্ধর্শে ভাছার বিশ্বাস দেখিয়া তাঁহার বালক পুত্র আর লামাদিগের প্রতি বিরুদ্ধাচরণ করিতে সাহসী হন নাই। স্থতরাং লামাগণ ধীরে ধীরে আপ-নাদের নষ্টশক্তি পুনরুদ্ধার করিয়া প্রতিপত্তি বিন্তার করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন।

খুইার ১১শতাব্দের প্রারম্ভে ভারতের নানাস্থানে বিশেষতঃ কান্দীর হইতে কএকজন বৌদ্ধতি তিব্বতপ্রিদর্শনে আগমন করেন। তাহাদের মধ্যে শ্বতি, ধর্মপাল, সিদ্দপাল, গুণপাল, প্রজ্ঞাপাল এবং প্রজ্ঞাপারমিতার অমুবাদক মৃভূতি, শ্রীশান্তি প্রভৃতি ব্যতিগণের নাম উল্লেখযোগ্য। তাহার পর ১০৩৮ খুইান্দে লামাধর্মসংখ্যারক স্কুপ্রসিদ্ধ বৌদ্ধতি অতীশ তিব্বতে পদার্পণ করেন। তিনি লামাগণের নিকট "জো-বো-র্জে-দৃপাল-ল্দন্ অতীশ" নামী পরিচিত ও দেবতার ভার স্থানিত।

ভায়তে তিনি বীপকর বীজ্ঞান নামে পাঁওচিত ছিলেন৷ তাঁহার পিতার
নাম কলাগনী এবং নাতার নাম প্রভাবতীঃ ভোট-ইভিবুওবতে বাজানাম কোড়কাল্যের অন্তর্গত বিক্রমপুরের মান্তবতে ১৮০ খুটাকে
তাঁহার কয় হয়৷ তিনি ভবতপুরিবিহারে আনিয়া বৌহবভি-বর্ফে বীক্ষিত
হইয়৷৷হলেনঃ অ্বব্রীপ বা অ্বর্জ-নগরের বৌদ্ধাতার্গ্য ক্পরিচিত চল্লকীর্তি,
য়হাবোধিবিহারের উপাতায় মতিবিভর এবং মহাসিলি নারেয় নিকট
ভিনি নহাবানবত ও বহাসিকি অভান করিছাহিলেনঃ তিবভবা্নাকালে

অতীশের প্রধান শিব্য ড়োম্টোন্ সংস্কৃত কদম-সম্প্রদারের প্রধান মোহস্ত হইরাছিলেন। উহাই সাদ্ধি ত্রিশতাব্দের পরে তিব্যতের স্থপ্রসিদ্ধ গো-লুগ-প সম্প্রদারে পর্যাবসিত হইরা তরামেই প্রতিষ্ঠিত হয়। অতীশের প্রবর্ত্তিত বাদম-প সম্প্রদারের অনুকরণে অর্দ্ধ সংস্কৃত কর-খ্যা-প এবং শক্যা-প সম্প্রদারের উৎপত্তি হইয়াছিল।

খুইীয় >> শ শতাব্দের শেষভাগে লামাধর্ম তিব্বতে দৃঢ়মূল হইয়া প্রতিষ্ঠিত হইলেও শক্য প্রভৃতি স্থানে তাহার প্রতিযোগী সম্প্রনায়সমূহ উত্ত হয় এবং তাহারা স্বতন্ত্রভাবে পারমার্থিক মণ্ডল স্থাপন করিয়া আপনাদের পৌরোহিত্য শক্তি বিন্তার করিতে থাকে। ধর্মবাজকগণের শক্তিবৃদ্ধিসহকারে স্থানীয় সর্দারগণের শক্তি হ্রাস হইতে থাকে। সেই স্থ্যোগে চীন ও মোললজাতি তিব্বতের নানা স্থানে আসিয়া প্রতিপত্তি বিন্তার করে।

থুটীয় ১২০৬ অবদ থাকনমোগল বংশধর জ্বেন্থিজ্ (জেলিন্)
থা তিব্বত অধিকার করেন। তাঁহার বংশধর প্রানিজ চীনসমাট্ খুবিলই (কুব্লাই) থা বর্ব্বর অশিক্ষিত ও অসভ্যপ্রধান চীন ও মোললীয় রাজ্যে একটা সন্ধর্মপ্রতিষ্ঠার
উদ্দেশে প্রসিদ্ধ শাক্ষের প্রেষ্ঠ লামাকে (শাক্য পণ্ডিত বলিয়া
পরিচিত) স্বীয় রাজসভায় আহ্বানপূর্বক স্বয়ং বৌদ্ধর্মপ্রহণ করেন। তদবধি উহা একটা নৃতন শক্তি প্রাপ্ত হইয়া
রাজধর্মরিপে সর্ব্বর প্রচারিত হইতে থাকে।

খ্বিলাই থা স্বীয় ধর্মোপদেষ্টা শাক্যপণ্ডিতকে লামাধর্ম-

তিনি নগংগর বিক্রমণিল। সজ্বারাষের অধ্যাপক-পানে নিযুক্ত থাকেন। রাজা মহীপালের পুত্র নরপাল ওঁছোর সমসাময়িক।

১০৩৮ ব টাবে লামা নগ-৭তোর সহিত যথন তিনি নারি বোহে ন পথে তিবাতে আইনেন, তথন উাহার বরঃক্রম বৃদ্ধি বংসর। তিনি এখানে আসিরা লামা-বর্গের সংকারভার্ব্যে এতী হন। ১০০২ ব টাবে লামানগরীর নিকটবর্ত্তী ল্ডেডাঙ্ সক্ষারাখে তাঁহার দেহাবসান হয়। সামানভের সংকারভার্ত্যে কিন্তু হইলা তিনি অযত এতিপাদক করখানি এছ সক্ষান করেন, নিরে তাহাবের নাম প্রণক্ত হইল :—বোধিপথপ্রবিশ, চর্গ্যাসংগ্রহপ্রদিপ, সভ্যবন্তার, নথানাদেশ, সংগ্রহ-পর্জ, কদরনিন্তিত, বোধিসম্বন্ধারণা, বর্গাসেক্তরাল, নরণানতোলদেশ, সহা্যানপথস্যাধনবর্ণসংগ্রহ, সহা্যানপ্রসাধনসংগ্রহ, প্রার্থসমূতরোপ্রেল, কর্মাহিমার্গারতার, পোনোভারর সপ্রকাশির, লোভোত্রর সপ্রকাশির, ভক্তরোক্রম, চিতোৎপাদ-সভ্যাবিসভ্যপরিমর্জ, লোভোত্তর সপ্রকাশির, ভক্তরোক্রম, চিতোৎপাদ-সভ্যাবিসভ্যপরিমর্জ, লিক্ষাসমূত্যে-অভিস্বর (স্থবর্গীপারিপতি রাজা বর্গপাল, নীপকর ও ক্ষলহে বে ধর্মান্দিল হিলাছিলেন, ইহাই ভাহার সার্ব্যর্গ ও বিষ্কালয়লোক। তিক্তবারাক্রাক্তর হিল বের্গিসম্ব সম্বন্ধীর অস্বতার বিলয়ে পুরিক।

মপ্তলের সর্বন্দ্রেট গুলুপনে অতিবিক্ত করিয়া তাহাকে চীনরাজপৌরোহিত্যের প্রকার বরূপ ভিক্ততাব্যের পাসনকর্তৃত্ব লান করেন। তদনত্তর ১২৩১ খুটান্দে তাঁহারই বন্ধে
উক্ত পাঞ্জিতের প্রাতৃপ্ত মতিগবন্ধ (ভোটনাম লোনোই গাল্১বন্) ফার্স্ন-প উপাধি সহ শ্রেট ধর্ম্মাচার্ব্যের পদে প্রতিষ্ঠিত
হম। ইনি রাজামুগ্রহে রোমক পোপের স্থার শক্তিসম্পন্ন
ইইরাছিলেন্।

নমাট্ খ্বিলাই খাঁ লামাধর্মের উরতিনাধনার্থ বছ
পরিপ্রমে ও অর্থবারে মোললীরার নানাস্থানে এবং পেকিন্
নগরে সর্ব্বাপেকা বৃহৎ একটীমাত্র সজ্যারাম প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন। তাঁহারই উৎসাহে শাক্য-পণ্ডিত মতিধ্বল পণ্ডিতমণ্ডলে সমার্ত হইয়া লামাধর্মের প্রসিদ্ধ কর-স্থার গ্রন্থ মোললীর ভাবার অন্তবাদ করেন।

পরবর্তী মোগলসম্রাট্গণের অধীনে শাক্য-পুরোহিভগণের রাজকীর প্রাধান্ত ক্রমশংই বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হর এবং তাঁহারা প্রতিহন্দী লামাসম্প্রদারের বিরুদ্ধাচারী হইরা তাঁহাদের উপর জভ্যাচার করিতে আরম্ভ করেন। ১৩২০ খুইান্দে তাঁহারা দিকুলের অপ্রাদিদ্ধ কর-খ্য-প সক্রারাম ভর্মীভূত করিয়া ফেলেন। ১৩৬৮ খুইান্দে মিলরাজবংশ চীনসাম্রাজ্য-সিংহাসনে অধিন্তিত হন। উক্ত বংশীর সম্রাট্গণ শাক্য-পণ্ডিভদিগের ক্ষমতা থর্ক করিবার উদ্দেশে কর-খ্য-প দিকুল ও ক-দম-প-ৎবল সক্যা-রামের আচার্যাক্রবন্ধে ভদস্করণ শ্রেষ্ঠ পৌরোহিত্য শক্তি দান করিবাছিলেন।

খুঁহীর ১৫শ শতাব্দের প্রারম্ভে লামা ৎসোভ-খ-প অতীল-প্রবৈজিত সংস্কৃত-লামাধর্মের প্র-সংকার সাধন করিরা উহাকে সৌনুগ-প নামে পরিচিত করেন। এই সম্প্রধার উত্তরোভর শ্রীর্দ্ধি লাভ করিরা ভিকাতে প্রচলিত অক্তান্ত সম্প্রদারকে হীনতেক করে এবং পাঁচ পুরুবের মধ্যে এই সম্প্রদারের প্রধান ধর্মধাকক ভিকাতের প্রোহিতরাক বলিরা বিধ্যাত হন। উক্ত সাম্প্রদারিক প্রধান ধর্মাচার্য্য আজিও সেই সন্মানে ভূবিত আছেন।

গানা থনোভ-খ-প'র বাজুপুরে গেলেন-মূব্ উজ সন্মাধারের ব্যানা বর্থারাইট (Grand Lome) হল। তিনি সাধারপের নিকট অবতাররপে গুলীত হইয়াছিলেন। পরে উাহার প্রথম প্রথম অধ্যান শেষ্ট লানা বোধিসভ অবলোকিতের বিশ্বসক্রাতি ক্রান্ত ইনিয়া বিবোধিত হরেন। ১৯৪৬ খুটাকে নোকল্যান্ত ক্রান্ত ইনিয়া বিবোধিত হরেন। ১৯৪৬ খুটাকে নোকল্যান্ত ক্রান্ত বাল ক্রেন। ত্রাবৃত্তি প্রথম প্রথম স্থানের নামান্ত্রিপ রাজ্যান্তিতে ভূবিত হল। ১৯৫০ খুটাকে বালের নামান্ত্রিপ রাজ্যান্তিকত ভূবিত হল। ১৯৫০ খুটাকে

চীনশত্রাট্ তাঁহাকে ভিন্সতের প্রিরাজ বলিরা শীকারপূর্বক যোলনীর 'বলই' (সন্ত্র) উপাধি বান করেন; ভদবধি
রুরোপীর পরিবাজকগণের নিকট ভিনি এবং জাঁহার বংশধরগণ
নলই-লামা বলিরা পরিচিত হইরাছেন। ভিন্মজীর নলাকে
ভিনি গণ্-ব-রিণ-পোছে নামে অভিহিত।

১৯৪৩ খুঠান্দে ভিনি লাসানগরের সন্নিকটে লৈলোপরি হুত্রনিত্ব পোতন প্রাসাদ-মন্দির স্থাপন করেন। ভিকাতের অপরাপর লামা সাজ্ঞানিকগণ তাঁহাকে ও তরংশ্বর-দিগকে অবলোকিতের অবতার বলিয়াই খীকার করিরা থাকেন। কিন্তু রাজশক্তিপ্রাপ্ত লামা ওগ-বঙ শেবলীবন শান্তিতে অতিবাহিত করিতে পারেন নাই। প্ৰভূত্বাপনে উদান সাকাজ্যা এবং মাঞ্লাতির বিজ্ঞোতে প্রাপীড়িত কইরা ভিনি লীলাবসান করেন। বর্চনামা চীনসমাটের আদেশে নিহত হন। তদনস্তর তিনি স্বহন্তে তিব্বতের কর্ত্তুৰ গ্রহণ করিয়া সমগ্র রাজ্যে ধর্মনীতি ও রাজনীতির নামজন্ত বিধান করিরা তথাকার মোহস্ত-নিরোগের ব্যবস্থা দেন। কিন্তু গে-লুগ্-প সভাবার পঞ্ম লামার প্রণোদিত প্রথার দিন দিন উরতি লাভ করিতে থাকে। এ সময়ে কএকজন মাত্র চীনরাজকর্মচারী ভিকাতে উপস্থিত থাকিলেও এই সাম্প্রদারের লামাচার্য্যগণ প্রাক্তত পক্ষে রাজ্যের অধীশ্বর বলিরা গণ্য ছিলেন এবং সকল সম্প্রদারভুক্ত লামাগণ তাঁহাকেই প্রধান বলিয়া গণ্য করিছেন।

এই লামাধর্ম ক্রমণঃ তিকাত অতিক্রম করিরা গ্রালেশে
বিভ্ত হর। বর্তমান সমরে উহা পশ্চিমে যুরোপীর ক্ষেপ্রস্
হইতে পূর্বে কামশ্রাট্কা এবং উত্তরে বুরিরাৎ লাইবেরিরা হইতে
কৃষ্ণিং সিকিম ও যুন্-নান্ পর্যান্ত বিভ্ত হর। এই স্থবিভূত
ভূতাপে লামাধর্ম বিভূত হইলেও, তথাকার অধিবাসিসংখ্যা
নিতার্ত্তই কম; কিন্তু সকলেই লামাকে রাজা ও ধর্মক্রম বলিরা
মান্ত করে।

সমগ্র তিক্ষতরাজ্যের লোকসংখ্যা ৪০ সজের অধিক নতে। উহিদের মধ্যে অনেকে লামাধর্শোপাসক, পূর্ক-ভোটবাসিগণ বোন্ ধর্মসেবী এবং কতকাংশ উভরধর্মই মান্ত করে। বোন্ ধর্মাচারিসণ লামাধর্মের পূর্চপোক্কতা ক্ষিতে বিশ্বত হন না।

হুলোপে কালবাক্ তাভার জাতির বাসভূমি তল্গা নবীতীর পর্যাক্ত লাবাধর্ণের শেব নীনা। তোরগোৎ জাতির প্রপা-রনের পরেও ঘুরোপের ক্বরাজো তল ও বৈক নবীর বধ্য-বর্তী তালে ২০ হাজার বর কালবাক্ ভাভারের বান ছিল। ভাহাদের বংগা আমি লক্ষ্ণ লোক পাবাধর্ণে বিকল্প বৃদ্ধিবিদ্ধ। উক্ত পলারনের পর হুইতে ভাহারা আমি বেধক্ষী পুর্বেশিক লাবাকে তোক-লাবা বলিয়া স্বাল বা ভাহার আন্তর্ণ পাত্র করে না এবং কখনও কোন উপর্টোকনারি পাঁঠার না;
তাহাদের মধ্যে এক শ্রেষ্ঠ প্রোহিত আছে। আলিও তিনি
গোপনে তাহাদের ধর্মারকার বাবস্থা দিরা আসিতেছেন।
আভাপি তপ্গাতীরে তাঁহার ধর্মানকি বিভারিত হইতেছে।
কালমাক্গণের শ্রেষ্ঠ-পুরোহিত আলিও লামা নামে প্রতি।
নলই লামাকে সর্বশ্রেষ্ঠ বলিরা গ্রহণ না করিবেও ক্ষণবর্মে প্রের
নির্বাচিত এক শ্রেধান লামার উপদেশাস্সারে তাহারা আপন
ধর্ম রকা ভরিতেছে।

ইতিবৃত্ত অস্থসরণ করিলে জানা যার বে, পূর্ব্বে সুদ্র ভল্গা-তীর পর্যন্ত দলই লামার অধিকার বিভুত ছিল। তাঁহার নিকট অন্ত্ৰিছগ্ৰন্ত অনেক বৌদ্ধ-পুরোহিত বৎসর বৎসর তাঁলাকে লাসা-নগরীতে রাজকর পাঠাইতেন। ঐ সকল লামা-পুরোহিত একণে স্থাবিনার নামে পরিচিত। তোরগোৎদিগের পদারনের পর হইতে আর শ্বাবিনারগণ ঐ কর পাঠান না। অবশিষ্ট উল্লনের (Ulluse) স্বাধিনারগণ এখন বিভিন্ন চুফুরে বিভক্ত। ১৮০৩ খুষ্টা-त्मत्र विवत्री इटेट्ड बाना यात्र त्य, कानमाक्जां जित्र कनमःशात দশমাংশ পুরোহিতপ্রধান হওয়ার এবং ভাহায়া স্বলাতি-সন্নামে প্রভাব বিস্তার করিয়া ভাষাদের অর্থে প্রতিপালিত হইত विनिधा क्वशब्दम के ३४०४ थ होटल ध्यथान-नामा करपानम्दकत्र সাহাব্যে উক্ত অযৌক্তিক প্রভাব ধর্ম করিরা দেন। পুর্বে হুষ্ট ও অলস লোকে অর্থোপার্জনে অক্ষম হইরা এই পুরোহিত-সম্মানারের আশ্রম লইত এবং ধর্মপ্রাণ নিরীছ বৌদ্ধ কাল্যাক-দিগের নিকট হইতে বঁর্মের ভান করিয়া অর্থ সংগ্রহ করিত। इत-अवर्ध के महत्व महत्व व्यक्षिण भूरताहिलक मध्यमात्र हहेरल বিভাডিভ করিয়াছিলেন। ক্ষুব্যায়াকোর আদমকুমারি इंडेएड कामा गांव एवं, उशांव ४२ होकांत किर्किक, ১১৯৯७२ कानमाक ७ ১৯٠٠٠ वृतिवार नामार्थ्यानरी विश्वमान आह्य। অপরাপর স্থানের লামা ও লামাচারী বৌদৰভাদারের তালিকা भूटक्रे डिविधिङ श्रेगाए ।

নেপালে গোর্থাজাতির প্রাক্তাবে শৈবহিন্দ্ধর্গ প্রভারিত কর। তাহারা জনেকাংশে বৌদ্ধেরী হইলেও, অধিকাংশ নেপানীবেক্তি লামানতাবলরী। বর্তমান ভোটান (ভোটান্ত) জনপলে লামাধর্ম পূর্থমাত্রার বিরাজিত। তথাকার তাসিহদন জেলার ৬শত, প্রাথার ৬শত, পারোজেলার ৩শত, তোলসারে ৩শত, টাগ্নার হর•শত, ও বলীপুরে (জন্মিপুর) ২শত লামা-প্রোহিত আছে। এ ছাড়া স্থানে স্থানে পর্বতগুহা মধ্যে জসংখা লামাসল্লাসী এবং মঠে বৌদ্ধতিক্তব্দী বেখা যায়। মঠবাসী ভিন্ন প্রার্থ হালার লাঘা-পুরোহিত রাজকর্মে ও ব্যবসাবাধিজ্যে নিশ্ব বহিনাছেন।

সিকিমে লামামতই রাজধর্ম। তথাকার লামা ও সাধারণ লোকের বিখাস, ধর্মাত্মা পদ্মসত্তব (গুরু রিম্-বো-ছে) লামামত-ত্মাপনার্থ তিকতে গমনকালে এই জনপদ দিরা যাত্রা করিরা-ছিলেন। খুটীর ১৭শ শতাব্দের লামাপরিব্রাজক ল্হা-ৎস্থন-ছেখা তিকতে হইতে সিকিমে আগমন করেন। আঁহার বিবরণী হইতে জানা বার যে, তৎকালে তক্ষেশবাসীরা অজ্ঞানাক্ষারে নিম্মজিত ছিল, সন্তবতঃ তাঁহার আগমনের পর সিকিমবাসী লামাধর্মে দীক্ষিত হয়। তিনি এখানে পরিত্রাণকর্ত্রা ধর্মাত্মারেপ পুজিত হইরা থাকেন। •

খুঁইর ১৭শ শতাব্দের শেষভাগে ল্হা-ৎস্ন ছেখোর মৃত্যুর পর হইতে সিকিনে লামাধর্ম ক্রেমণঃ বিস্তারলাভ করিতে থাকে এবং অতি অ্রকাল মধ্যেই বৌদ্ধবিত ও সক্ষারানে সিকিমরাজ্য আছের হইস্ক পড়ে; স্নতরাং সিকিমবাসীর সভ্যতা ও সাহিত্যে এবং লেপ্ছা জাতির বর্ণমালার উৎপত্তিকাল লামাধর্মের সাহাব্যে পরিপুই হইরাছে বলিরা গণনা করা যার। সিকিনে ক্রিঙ-ম-প ও কর-জ্ঞ-প (কর-ম-প) সম্প্রদায়ের প্রভাবই অধিক। তথার ত্ক-প সম্প্রদারের কোন মঠ দৃষ্ট হয় না।

পূর্বেই উল্লেখ করিরাছি যে, তিববতে লামাধর্শের বিস্তারের সলে সলে তাহার কতকগুলি সাম্রাদায়িক বিভাগ গঠিত হর। ভারতীর মহাযান ও তান্ত্রিক বৌদ্ধ মত এবং ভোট-জনপদস্থ প্রাচীন বোন্ ধর্ম একত্র করিয়া তথাকার লামামতের উৎপত্তি ঘটে। ৭৪৭খু ইালে ওগ্যেন বা উদ্ধানবাসী গুরু পদাসস্কবের চেষ্টায় পরিবর্দ্ধিত হইলেও তাহা সেরপ প্রতিষ্ঠা লাভ করিতে পারে নাই। ৮৯৯ খু ইান্সে রাজা লগু-দর্শ্ধ বৌদ্ধধর্শের উচ্ছেদকামনার বৌদ্ধান্তর প্রতিষ্ঠিত বিশেষ আতাচার আরম্ভ করেন। সেই সময়ে তিববতে প্রতিষ্ঠিত বৌদ্ধ মত ক্রমশংই হীনপ্রভ হইতে থাকে। তৎপরবর্ত্তিকাল হইতে মহান্ত্রা অতীশের গুভাগমন পর্যান্ত লামাধর্শ্ম আর কোনরূপ পৃষ্টি প্রাপ্ত হয় নাই। ১০৫০ খু ইান্সে আতীশ ও তাহার শিষ্য ব্রেন্ড্রেন্ড্র ক্রমন প সম্প্রদায় স্থাপন করিয়া আদি লামাধর্শের সংস্থারক বিদ্যা পৃঞ্জিত হন। এই শাধামতাবদ্দী স্থপ্রসিদ্ধ লামা ৎসোল-খ-প ১৪০৭খুইান্কে গাংল-

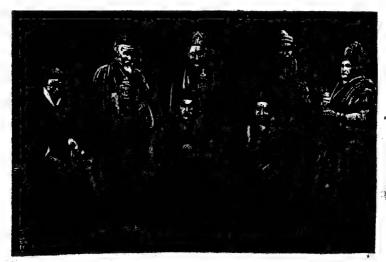
ক ল্ছা-ংখন হেখো বলিপপ্ক তিকত ভ্ভাগের কোন বু জেলার ংসদ্পো
(রক্ষপুর) উপত্যকার ১৫৯৫ খু ইাজে জন্মগ্রহণ করেন। তিনি তথা হইছে
সিকিম আসিবার সময় পথিমধ্যবর্ত্তী নানা বৌদ্ধ সক্ষারাকে উপনীত হইনা ১০৪৮
খু ইাজে সাক্ষানগরে সম্পত্তি হন। ক্রান্তন প্রথম বলই-লানা তথ্-বঙের
স্বিভ জাহার সাক্ষাৎ হর। তিনি ভারতীর বৌদ্ধাহার্ত্ত সহাজা ভীন্তিব্রের
অব্ভার বলিয়া প্রসিদ্ধ। বর্ত্তমান পোনিভক্তি সক্ষারাক্ষের প্রতিষ্ঠাতা লি ক্রি-লা-রো উল্লেক্ত
ক্রান্তর্কীর অব্যাহর অব্যাহর ক্রান্তর্কার বির্বাহিকেন ৪

দন সভারাম স্থাপন করিয়া বৌদ্ধ ধর্ম্মের বিস্তারে মনোযোগী হনা ১৬৪০ খুঁটাকে উহাই তিকাতের পারমার্থিক-মওলরপে পরিগণিত হইরা সংস্কৃত গেলুগপ (কদম-প শাখাস্তর্ভুক্ত) সম্প্র-দার নামে প্রতিষ্ঠা লাভ করে। ১৬৪০ খুটাক হইতে এই পারমার্থিক মওলেখর বর্তমান সময় পর্যান্ত সাম্প্রদারিক মত ও আপনার প্রভাব সমভাবে রক্ষা করিয়া আসিতেছেন ট

ত্র ৩২ থ টাবে ক্রিঙ্-ম শাখা প্রতিষ্ঠিত হয়। উহা ১০শ শতাব্দের শেষভাগ পর্যান্ত নানারূপে সংস্কৃত হইয়া পরিদেবে ক্রিঙ্-ম-প সম্প্রদায়রূপে প্রাধান্ত লাভ করিয়াছে। খৃষ্টীয় ১৫শ শতাব্দের শেষার্জ হইতে ১৭শ শতাব্দের মধ্যভাগ পর্যান্ত এই সম্প্রদায়ের শাখান্ত্ররূপে যথাক্রমে ওর্গোন-প, বোর্ক্সে-তক্-প, মিলোলিন্-প, ও-দক্-প, কর্তোক্-প ও, স্হা-ৎস্ক্ম-প প্রভৃতি সম্প্রদায়ের স্থিট হইরাছে। এই সকল সম্প্রদার ক্রিঙ্-ম-প বা প্রাচীন ক্ষম্প্রত লামা মতসম্বন্ধীয় শাখা বলিয়া ক্রিঙ্-ম-প বা

১০৭২ খৃষ্টান্দে শাক্য মোন্ যে শাখা প্রবর্ত্তিত করেন, তাহা শাক্য-প শাখা নামে সমভাবে প্রনার লাভ করিরাছে। তাহা হইতে খৃষ্টার ১৩শ শতানের মধ্যভাগে জোনঙ-প শাখার উৎপত্তি হয়। খৃষ্টার ১৭শ শতানের মধ্যভাগে তারনাথ জোনঙ-প শাখার মতপ্রাধান্ত হাপন করেন। খৃষ্টার ১৫শ শতানের প্রথমার্কে শাক্যপ শাখা হইতে নোর-প নামে আর একটা শাখা গঠিত হয়, কিন্তু তাহা প্রাধান্ত্রলাভ করে নাই। প্রীয় ইঁ শ শতাবের শেবজাগে মন্প ও মিল-রন্প করপ্রাণ লাখার পত্তন করিরা বান। লামা বগ্-পো-ল্যকে উক্ত লাআদারিক মত প্রতিষ্ঠা করিরা লাধারণে উহার প্রবর্তকরপে পরিচিত হইরাছিলেন। অন্তমান ১১৪২ পৃষ্টাক্ল হইতে ১২২০ প্রইাক্ষের মধ্যে কর-প্রাণ সম্পান হইতে পৃথক ও সংস্কৃতভাবে বিক্ন্-প, কর্মণ এবং প্রাচীন বা উত্তর হক্-প (১১৬০ খঃ) লাখার উৎপত্তি হর। পরিশেবে ১২১০ থুটাকে উক্ত হক্-প প্রমান হইতে সংস্কৃতভাবে মধ্য ও লক্ষিণ ভোটাস্তের হক্-প এবং প্রারা ১২২০ পুটাকে উক্ত ভোটাস্ত হক্-প হইতে আধুনিক বা লক্ষিক হক্-প লাখার উত্তব হইরাছিল। খুলীর ১২ল শতাক্ষের শেবভাগে বিক্ন্-প লাখা হইতে তল্ন-প নামে আর একটা স্বত্তর লাখার উৎপত্তি হয়। কর্প্ত্য-প ও লাক্যপ সম্প্র-দারাপ্রতি শাখাপ্রি কর্মগংলত-লামামত বলিরা প্রসিদ্ধ।

বর্তমান সময়ে কোন কোন সামা গুরু পরস্ক্তবের গুহার পূর্ভান্নিত প্রাচীন ধর্মগ্রহের লোহাই দিয়া বে সকল শাখা মত প্রচার করিতে চেঠা পাইতেছেন, তৎসমূদ্য "তের-ম" বা গুরুর অভিব্যক্ত সাম্প্রদারিক মত ঞিও-ম-প সম্প্রদারের অবভূ কি বলিরা গৃহীত হইয়া থাকে। ইহাতে শামানী বোন্-প ও ভূতাদির উপা-সনার সহিত বিশুদ্ধ সামা মতের সমবর সাধিত হইয়াছে। উপ-রোক্ত বিভিন্ন সম্প্রদারের পাছতি পরম্পর পূথক্। তাহাদের পরিছে ও শির্মাণ অনেকটা বিভিন্ন। নিম্নিচত্রে তাহা বিবৃত্ত হইল।



বোলননাৰা শে-লাৰ্। কৰ্-ভা নাৰা। পাৰা উপোন্-গা-ংগো। কিঙ্-ৰা নাৰাৰঃ।

শক্ষ্যদাবা। কর্মনাবা।

্ষ্টপরেরাক্ত শব্দানারসমটির বিভার ৩ অভিঠানহকারে। সামাধার্মাক্তে জসংখ্য মঠ ও সক্ষারাবের অভিঠা হয়। ঐ সক্ষ বিভিন্ন শাধা-সন্মানার ও তবন্ত র্ভু ভি বিভিন্ন নঠানিক বিবর্গণ এবং ততন্মতপ্রতিঠাকুদিশের নীবনেভিত্ত স্বদান বাক্ল্যনোত্র দিশি- বছ চ্ছল লা। সাংসারিক অবোভন ইইভে নির্দিণ্ডভাবে অবস্থান করাই বৌহনভিদিগের প্রধান কর্ম, কেন না ভাষা চইলে তাহারা নিশ্চিত মনে ক্রীবারর উপাসনা করিছে পালের; এই কারণে তাহারা নির্দ্ধিন ও প্রলোভনশৃভ বিজন প্রদেশে আসিয়া বাস করিরা থাকেন। এ সকল বাসভূমিই বৌহানিগের সভারাম বা মঠ নামে খাভ। লামাণ্যবিভারকমে ভিষতে রাজ্যে এবং তৎপার্ম্বর চীন, মোলগীর, ক্ষম প্রভৃতি বিভিন্ন দেশে নানা সক্রারাম ও মঠ প্রতিষ্ঠিত ইইরাছে। এ সকল ভান ভোটভাষার পোন-প (নির্দ্ধিন ভান) নামে পরিচিত। নিরে ক্রেকটা বিভিন্ন দেশির প্রসিদ্ধ সক্ষারামের নামমাত্র উদ্ধৃত হইল,—

फिक्क - छवित्रहू गरमा, भाषा, भिरमाणिङ, है भिम् (नांवक्), সঙ ও ছো-শিঙ্, পন্ম-যঙ-ৎসে (পেমিওকছি), ভ-ক-তবি मिड, का-मड, म-जह, पार्क्समिड (मार्क्सिनर), प्रशेष, वि-গোন, তৃ-পুঙ্, এন্-চে, ছব্-দে, ফেনজঙ, ফচো-পশ-রি, মণি, टम-त्मान, वड शड, ल्हन्-९८म, नम-९८म, ९व्यन-शिंड, तद-লিঙ, তুব্-লিঙ দে-ক্যি-লিঙ। এই গুলি স্থানের নামাস্থ্যারে প্রসিদ। এডছির সম-বাস্, গাংল্লম, দে-পুন্দ, সের্-র, নম্-গ্যাল-ছোই-দে, রমো-ছে ও কর্মক্য, দেবেরিপ-গর, জন-লছে, इमनमतिन (১१२२ कृष উक्ति), लोका-नृथ-लांड, भाका वा শক্ষ্য, র-দেল, ভিল-গে, ফুন্-ংযোগ্স্মিভ, সম-দিঙ**্ (১৪**৫১২ ফিট্ উচ্চ), দি-কুল (ব্ৰি-গুঙ্,) খিন্-গ্ৰোল্ মিঙ (মিলোলিল), रमार्ख-मग्, मुशन्-त्रि, यान्, श्वत्न द्वा-वर्ड, नन्-स्क्र-श्व-(थाक्, कडूड, गान-रित, तर्क, शावम्तन, कार्याक, विकट लाएक गू, मत्र-शूढ लक्-शूढ, सम्राल्लामम्, क्-श-रतीम्, कान्-तम, (छा-नून, इम्नक, क्जान्-न, मर्ल्डान्, त्रिन-ह्रम-হুন, ংনেনচুক্, গ্যপুন্, গিলিন্ ও দেয়ু প্রভৃতি প্রধান প্রধান কএকটা সঞ্জারাম বিদ্যমান আছে। সমগ্র ডিক্সডের মঠাশ্রম বা সভ্যারাম শইরা গণনা করিলে প্রার ও হাজার হইবে ৷ এই সকল প্রসিদ্ধ সভ্যারাদের পার্ছে পবিত্র ছোর্ডেন (চৈড্য বা খুপ) এবং মেনদোভ (শ্বতিভক্ত) বিহামান দেখা সার।

চীন—বুন-হো-কুল বা প্রাসিদ্ধ পেকিন-স্কারান, বৃ-তৈ-বান,
কুষ্ম (প্রথানে অব্দ বেডচন্দন বুক আছে। প্রবাদ বি বুক
ৎলোও-খ'পার ক্যাকালীন নিংলাবিত ক্রেক উৎপদ বইরা
ছিল। উহার প্রভাগতের বৃতি অভিত আছে। পাশ্চাতা
প্রায়ত্ববিং হক্ বি পত্র পর্বাবেক্ষণ ক্ষরিয়া নিবিরাহেন বে,
উহার পত্রে ভিক্কতীর বর্ণনালা বিভক্ত রহিরাহে। এই
আনস্থিক ব্যাপার উপেকার বিষয় বহুই।) এবং বোবো-ব ও সামক প্রমুবং ব্যালার।

বোৰণীরা তর্ণা কুলেন্ ও ছারানাধ্যনিক এবলৈ ক হাজার বৌৰবভি এবং কুকু-জোড়ুন বিভালের হটার স্কারানে আর ব ২০ হাজার পাবার বান আছে।

নাইবেরিরা—বৈকাণ হলের নিকটবর্তী লেলিক্রিন্তের উত্তর-পশ্চিমে অব্যিত একটা সক্ষারাম। এধানকার বঠাচার্য্য বুরিরাইনিকের মধ্যে থালুলো শক্তিত নামে পরিচিত।

শ্বেশি—ভণ্ণা নদীতীরবর্তী কাগমাক্ ভাতার্রনিগের দঠ ছুনরা নামে কথিত। উহা নাধারণতঃ তাঁব্তেই নিশ্বিত হইরা থাকে। ঐ সকল তাব্ প্রধানতঃ স্ইভাগে বিভক্ত :— বে হানে পরোহিতগণ বাস করেন, ভাহার ছুনল্ল্-ভএগো এবং বেথানে দেবম্ভি ও বর্ণসংক্রান্ত চিত্রাবলী স্থানিত ধান্দে, ক্রাহা ভিতানী বা বৃদ্ধান্ন্-ভএগো নামে প্রসিদ্ধ। এক একটা ছুনল মধ্যে শতাধিক পুরোহিত থাকিতে দেখা যার।

লদাক্ বা ছোট ভিবৰত—হেমি বা হীমিস, লম-বুর ক্ষ, ম্থো-মিগু (তুর্কিস্থানের মানচিত্রে খোৎলিক্ষর্য), থেগ্-ছোস, কোর্ বজোগ্স, বম্ লে, মধো, স্পিথ্গ; স্বের-গল, কিয়-লঙ, শু-গে, কল্পম হ্ব-লিঙ, পোয়ি ও পঙালি।

নেপাল-এখানকার নিম্ন উপত্যকার কোন সম্বারাম দৃষ্ট হর না। উত্তর্গিয়র্জী অধিত্যকাবিভাগে আছে কি না তাহাও জানিধার উপার নাই। এখানকার বৌদ্ধতীর্থ-সমূহে কতকগুলি লামার বাস আছে।

ভোটান-ভাবি-ছো-ল্সোল, পুণ-বাও, উ-র্যান-র্থস, বাক্রো, বাহ, ত দ্ছোগ-র্লন, জে-ছ-নি, সম-বিন, থা-ছাগ্স-র্গন-থা, ছাল্-ছুগ্, কালিমশোল, পেছোল অভৃতি। ভোটানের অহালামা ধর্মরাল ও দেবরাল ভাবিছোল্যকা সক্ষারামে বাস ক্রেন।

নিকিম--সন্তেলিও, প্রব্-বি, শেষিগ্রন্থরি, গণ্টোক, তবিবিল, লেমন্, দিন্টিন্শোল, জলোল, মণি, রম-থেক্, ফর্ল (কোন্তেও), গ্রেক্টিলিলা, কেটছণেরি, লচ্নুল, তল্ল (কোন্ত্ও), গ্রেক্টিলিলা, কেটছণেরি, লচ্নুল, তল্ল (কোন্ত্ও), গ্রেক্টিলিলা, ক্ষেত্র, লচ্নুল, ন্তন্-থ্নে, সিনিক্ (ক্ষিন্ত্র), নিকিম (ক্ষ্ত্রান্), নিক-থেম, থ্নগ্-নেন, লচ্ছেন, নিজোল, ক্ষ্তুল (ক্স্ত্র্ন্তিল), নোরিল (প্রব্-রিগ্রু), নিম্নিংলি), শ্রিকা শেল ক্ষিক্ট্), নম্ব ল্ডান্।

এই সকল সক্ষাৱাৰণানী খোচবাতিগণ ভিৰাকীয় বিভিন্ন সংক্ষাব্যক্ত আত্ৰৱ কৰিব। আগল আগল নাজাবাবিক যক বকা কৰিব। আনিতেহেন। বৰ্ষসজ্জাবাবের নাৰ্যকা অনুনাৱে উহাবের আল ও ব্যৱহাৰণ উক্তীৰ বেখা বাব। নিভিন্ন কৃত্তভানি এঠ আছে, তাহার অধিকাংশই ক্রিঙ্-ম সম্প্রদারভূক। কেবল
নমছি, তাধিদিক, সিনোন ও পঙ মোছে সক্ষারামে ওদক প এবং
কতে কি ও দোলিক মঠে কতে কি-প শাধামত বিস্তারিত
দেশা যার।

পূর্ব্বকথিত সজ্যারাম ও মঠ বাতীত তিব্বতের নানাস্থানে मिलित विदाक्षिण जाए। धे नकरनत गएए नानानगतीत স্থাবৃহৎ মন্দিরই দর্কপ্রধান। মন্দিরের দার হইতে গর্জপীঠ পর্যান্ত স্থানে সানে নানা দেবমূর্ত্তি দেখা যায়, তক্মধ্যে ছার-পালগণের আকৃতি অতীব ভয়াবহ। লামারাজ্যের পশ্চিম দিকপতি বিরূপাক্ষ্ দক্ষিণ দিকপতি বিরূধক, ভূতগণের ঈশ্বরী দেবীমূর্ত্তি, হাদল তান মা ভূতিনী মূর্ত্তি, বল্লপাণি মূর্ত্তি; প্রকাদিকপতি গতরাষ্ট্র এবং উত্তরদিক্পতি যক্ষেশ্বর বৈশ্রবণ; যম, অগ্নি বায়ু, বরুণ, যক্ষ, রক্ষঃ, সোম, এক্ষ, ইক্স ও ভূপতি মামক দশলোকপালমূর্ত্তি প্রভতি দেবচিত্র বিশ্বরপ্রদ। এতজ্জি ভুপায় অমিতাভ, অমিতায়ঃ, নাগাৰ্জ্ন, মঞ্লী, সমস্তভ্র, একাদশশিরস্ক, অবলোকিত, নারো, একবিংশ তারামূর্ত্তি, পদ্ম-সম্ভব, শান্তরক্ষিত, অতীশ, বন্ধধর, মরপ, মিল-রঃ প, শাক্যবদ্ধ, অক্ষোভ্য, অমোঘসিদ্ধি, বৈরোচন, রত্নসম্ভব,মরীচী বা বারাহীমূর্ত্তি, বক্সতৈরবমূর্ত্তি, হয়গ্রীবমূর্ত্তি, বিভিন্ন শক্তি (কালী) মূর্ত্তি, বিভিন্ন ডাকিনী, যক্ষিণী, গন্ধর্ব, অস্থর, কিরর, মহোরগ, গরুড় প্রভৃতি অসংখা বৃদ্ধ, বোধিসৰ, বৌদ্ধাচাৰ্য্য, কুলদেবতা, গ্ৰাম্যদেবতা এবং ডাকিনী, ভূতিনী ও ভান্ত্রিক হিন্দু-দেবদেবীমূর্ত্তি তিব্বতীয় লামা সমাজে পুজিত দেখা যায়।

লামাগণ পিতৃপুরুষগণের প্রেতােদিট শ্রাদ্ধ ও পিওদানাদি বিশেষ ভক্তিসহ করিয়া থাকে। তাঁহারা যমরান্ধকে নরকের অধিপতি বলিয়া বিশ্বাস করেন। সঞ্জীব, কলাহত্র, সভ্যাট, রৌরব, মহারৌরব, তালন, প্রতাপন ও অবীচি নামক ৮টা অগ্নি-ময় এবং অর্ক্ দ, নির্ক্র্ দ, অতত, হহব, অহব, উৎপল, পদ্ম ও পুগুরীক নামক ৮টা শীতময় ও তদ্ভিয় পূথীপুটে, পর্কতে, মক্রদেশে, উষ্ণ প্রস্তাবন ও হুদাদিতে প্রায় ৮৪ হালার নরক নিক্ষপিত আছে। এই সকল নরক 'লোকান্ধরিক' নামে কথিত। নরক হইতে উচ্চে এবং সিতবন হইতে নিম্নে তাঁহােরা প্রেতলােক ক্ষমনা করিয়া থাকেন।

লামাযতিগণের মৃতদেহ খ্যানিব্রের স্থার আসনে বসাইরা সমাধিত্ব করা হর। বে স্থানে তাঁহাদের সমাধি হর, ঐ স্থান •তীর্থরণে গণ্য হইরা থাকে। নিম্নেশীর লামাগণের দেহ দাহ করা হর এবং সেই ভক্ত বা অভি সমাধি দিরা ভক্তপরি এক একটা বৃহস্থি স্থাপিত করিরা দের। সাধারণ ব্যক্তির মৃত্যুতে ঐরপ কোন উৎস্বই হর না। কোন কোন কলে তাঁহারা মৃত্যুত পর্মতোপরি লইয়া ফেলিয়া আঁইসেন। স্থানে স্থানে ব্রুজনেহ
নিঃক্ষেপের স্বস্তু প্রাচীরবেটিত সমাধিকের বিবাসান আছে। মোললীর লামাগণ কথন কথন মৃতদেহ প্রোথিত করেম ও তত্ত্বপরি
প্রস্তুর্বর্ধও স্থাপন করিয়া জন্মমৃত্যুর সংক্রিপ্ত ইতিহাস লিখিয়া
রাখেন। কখন বা শীতপর্কতিশিখরে ফেলিয়া দেন। মাংসালী
পক্ষী পশু প্রভৃতিকে সেই শবদেহ ভক্ষণ করানই তাঁহাদের
উল্লেপ্ত। স্থলবিশেবে তাঁহারা শবদেহ ভন্ম করিয়া থাকেন।
শিশু সন্তানাদির মৃত্যু হইলে শিতামাতা পথের ধারে ফেলিয়া
দেয়। স্পিতিতে লাহ, সমাধিত্ব বা নদীর জলে ভাসাইবার
নিরম আছে। মৃত্যুর পর প্রেতের মঙ্গলকামনায় তাঁহারা
মত্র পাঠ করেন। একমারে লাল উকীবধারী সামানি গে-লোঙ
লামারাই বিবাহ করিতে পান।

তিব্যতীর বৌদ্ধর্মের অপরাপর বিবরণ পরিব্রাক্তক বৌদ্ধা-চার্য্যগণের জীবনী প্রসঙ্গে এবং বৌদ্ধর্ম্ম, প্রতীত্য সন্ত্র্পান, ভবচক্রে, ভৌতিক্বিছা, ভোজবিদ্ধা ও তিব্বত শক্ষে সংক্ষিপ্তভাবে বিবৃত হইয়াছে, স্মৃত্যাং এখানে পুনরার উল্লিখিত হইল না।

তিত্তৎ শব্দ দেখ।

ও তিরোভাবকাল

SPEC

ৰৰ্তমান

সাধারণের অবগতির সম্র নিমে তিববতের কএকটা প্রসিদ্ধ সম্বারামের মঠাধ্যক প্রেষ্ঠ আচার্য্য লামাগণের বংশতালিকা ও তাহার সংক্ষিপ্ত ইতিবৃত্ত প্রদত্ত হটল:—

> मनहे लामा-वःण।

আবিৰ্জাৰ

>	দ্গেছন গুৰ্প		2022	১৪৭৫ খৃষ্টাব্দ	
ર	দ্গেছন ব্যশ্ৎৰো		3896	>480	
•	ৰ্দোদ্ নম্স্		>489	3649	
8	যোন্ তান্		>649	3659	
•	ঙগ ৰঙ ব্লোব্সন্ ৰ্গ্যম্পৰো		5659	১৬৮২ প্রথম'দলই'	
•	ৎবঙৰ দ্বান্ব গ্যম্ৎবো		2000	>100	
9#	क्ल् अन्	,,	>9.6	>94	
ъ	ঝম্দ্পল	,,	>964	>br+&	
۵	শুঙ তেগিন্	,,	>b. 6 4	3536	
٥٠	ৎৰূল খুমস্	**	2424	১৮৩৭	

এই বংশের প্রতিষ্ঠাতা মহালামা গেছন গুরু শ-ক্যের নিকট
কোন হানে নকপ্রহণ করেন, পরে ডিনি ভবিল্ ছ্ণগো সভ্যারাম
হাপন করিয়াছিলেন ৷ বই লামা চরিত্রলাকে রাজ্যচ্যুত ও নিহত
হইলে ভাতাররাজ পিরির বাঁ পোতলের মঠের অধ্যক্ষপদে

26.46

मःचा

>>

>2

ম্থস্ গুৰু

ফ্রিন্ লস্

পুব ব্ভান

নাম

ছগ্দোরিলান ভগ্বঙ্ বেবে গাঁলথবোদে নিরোগ করেন, কিব আচিরে রটনা হইল বে, লিখক নগতের জেপুল সভ্যারামের একজন বৌদ্যভির পুত্ররূপে কললাভ দামে বঠ লাখা কল্পারিগ্রহ করিরা-হেন। তথ্ন চীলনারাট্ ঐ বালককে কারাক্রছ করিরা ১৭২০ মুদ্রাব্যের যুদ্ধ পর্যন্ত আভার-রাজের নিরোজিত লামাকেই লাসা মগারীর ধর্মপ্রকাশকে পদ্যুক্ত করেন এবং ছোতিন সভ্যারামের কেলরী রিন্পোছে তাঁহার পদে অভিবিক্ত হন। ইহার কিছু পরে তিনি পুনরার শীর শক্তিয়ারা প্রাধান্ত অর্জন করিয়াছিলেন এবং তাঁহার রাজস্কালের ১৭৪৯ খুটাকে চীনরাজশক্তি ভিবত হুইতে অপক্তত হুইরাছিল।

নবম, দশম, একাদশ ও বাদশ মহালামা বাল্যাবছাতেই ব ব অভিভাবক কর্তৃক কৌশলে বিষপ্ররোগ অথবা ঘাতক্যারা গোপনে নিহত হন। শেবোক্ত লামা ১৮৬৬ খুষ্টান্দে ত্রয়োদশ বর্ষীয় বাদক ছিলেন। ১৮৭৪ খুষ্টান্দে তিনি কালকবলে পতিত ক্ইলে ১০শ লামা খুষ্-ৎসান্ তৎপদ অধিকার করেন।

च्यानिक ''छावि"-गाम।वरम ।

- খুগ-প ল্ছদ্ ৎদদ্—ভ নগ সক্ষারামের একজন বৌদ্ধ্যতি।
- २ माका मखिछ (১১৮२-- ১२৫२ चुः)।
- ৩ যুন্ জোন দোলেপাল (১২৮৪—১৩৭৬ খৃ:)
- ৪ খদ্গুৰ গোলেগপালজঙ্গা (১৩৮৫---১৪৩৯ খৃ:)
- शरकन् त्नावनम त्कार्श (५८००—५६०६)
- ७ (वन् न भ लोखन् लोक शूव (১६०६— ১৪१०)

উপরি উক্ত বৌদ্ধতি বা লামাগণ 'তবি' বা 'তাবি' লামা নামে প্রাকৃতি লাভ করিয়াছিলেন কিনা বলা বায় না। কেননা ভাবল্য্গণোর প্রসিদ্ধ সম্বারাম খুটার ১৫শ শভালের প্রথম-ভাগে প্রতিষ্ঠিত হয়। স্থভরাং উক্ত ভালিকার শেব ছুইজন লামাকেই ভংগামন্ত্রিক বলিয়া গণ্য করা বাইতে পারে। "পক্ষেন্ রিন্পোছে উপাবিধারী নিয়োক্ত লামাগণই প্রক্লভ ভাবি-লামারপে সর্ক্তর পুলিত ছইয়া শীকেন।

		सम् पृ	ভিয়োভাব	
>	लारबढ रहान् कि ग्रीनन्दनन	>645	3665	4:1
2	,, বেচৰ দৃপদ মঙ পো	3000	2909	
9	,, भूभग स्वम् (वर्षः	3900	>11.	
8	র্জে তাদ পহি ঞিদ	A THYS .	a tes	
•	ৰে দ্পালাদন হোস্ক্টি	3748 ×	3664	
•		3664 WAS	שלעו	ब्डाटन
	কেন্দ্ৰবারী মাদের শেবে ভিনি ৰ	ग्रमाथम व्यास	स्म ।	

শাৰাসাত্ৰদায়িক লামাচাৰ্য্যপ্ৰ

১ শাক্য ৰ্লভগো ১২ ওদ্-লের-লেভগে

ং ষঙ-বৃৎজ্ন ১৩ কুন্রিন্

৩ বন্-করপো ১৪ দৌন,চৌদ-দ্পন

৪ ছাওরিন্ স্থ্যোম্প ১৫ বোন-ব্ৎস্থন

কুল্বঙ
 ১৬ ওল্-সের সেঙগেহেয়

৬ বঙ-বঙ ১৭ গাল্-ব-সঙ্গো

৭ ছঙ দেরি ১৮ ছঙ-ফ্যঙ্গ দ্পল

৮ অঙ লেন ১৯ সোদ-নম-দ্পল

৯ লেগদ্-প-দ্পল ২• র্গ্যব্-ব-ৎসন পোয়ের

> সেঙ-গে দ্পল ২> ছঙ্-ব্ৎস্ন।

३३ अम् स्वत्र म्लन

এই মঠাচার্য্যগণ স্ব্রাপিও "লাক্য পন্ ছেন্" নামে পরিচিত ।
ভোটানের মঠাচার্য্য মহালামাগণ কর-গুঃ-প সম্প্রদারের দক্ষিণছক্-প লাথার অস্তর্ভুক্ত। এই ভোটানীগণ লতান্ধ্রর পূর্কে
বালালার উত্তরসীমা কোচবিহার স্বাক্রমণ করে। ভোটানীদলে কতকগুলি তিববতীয় সৈন্ত ছিল, তাহাদের স্বধিনারক
ছপগণি বেপজুন নামক একজন লামা ক্রমশঃ সেনাদিগের উপর
স্বাধিপত্য বিত্তার করিয়া ধর্ম্মরাজয়পে গণ্য হইলেন। তাহার
দেহত্যাগের পর তলীর স্বান্থা লাসানগরীর যে বালকের দেহে
প্রবেশ করিয়াছিল বলিয়া সাধারণের বিশ্বাস ইইয়াছিল, তাহাকে
ভোটানে স্বানা হয়। এই লামাবতার 'রিন্পোছে' ও 'ধর্মরাজ'
নামে পরিচিত। বালক লামা রাজ্বন্থ পরিচালনের জন্ম যে
স্ব্রিভাব্ন নিযুক্ত করেন, তিনিই দেবরাজ নামে পরিচিত।

क्लिडिन्द्र नामानवान्।

> ঙগ বঙ্ৰম গাল-ছদ্ঝোম পোর্ডে।

২ " ঝিগ্মেদ তঁগস্পা।

৩ ,, ছোল্ ফি। গ্যাল ম্ৎলান।

৪ 🚜 ঝিগ মেদ্ হঙ্গ পো।

< ু, শাক্য সেও গো।

,, क्य शंख्य भीण म्थ्यान ।

৭ ু, ছোল কিয় ৰঙ ফুগ।

৮ ু, বিগ মেদ ড'গদ্ প (বিতীয়বার অবতীর্ণ)

a ,, के के त्मान्

> " ﴿ वे दिश्त ग्रीम

(क्लांगानव महानामा ১৮৯২ वृद्धीरम)

এই ১-জন লামাৰভাৱের খডজ জীবনী আছে। এখন লামা বিবাহিত ছিলেন। তিনি মৰালামা লোনৰ গাক্ষােল শ্বনামরিক। অবশিষ্ট সামাগণ ব্রহ্মার্থার্থী। ধর্ণরাজ শ্রীমকালে তবিছো হুর্নে অবস্থান করেন। ঐ প্রাসাদ প্রস্তর-নির্মিত এবং সাত তোলা উচ্চ। এখানে প্রার ৫ শত বৌচ্বতির বাস আছে। নেপালবাসী লামাদিগের উপর ইনিই কর্তৃত্ব করিয়া খাকেন। গোর্থা গবর্মেণ্ট ভাহার বিরোধী নহেন।

খকপ্রবেশবাসী মোললীরদিগের প্রধান ধর্ম্মাধ্যক উর্গ্য-কুরেন নামক স্থানে বাস করেন, তাঁহারা জেৎস্থন-দম্প নামে পরিচিত। খকবাসী মোললগণের বিশাস বে. স্থপ্রসিদ্ধ ঐতিহাসিক লামা তারনাথ তাহাদের জেৎস্থন্ দম্পদিগের শরীরে পুনঃ পুনঃ অবতীর্থ হইয়া ধর্মবিস্তার করিতেছেন। মোললীয়দিগের উর্গ্য সক্ষারাম প্রথমে শাকাসম্প্রদায়ভূক্ত ছিল, পরে উহা গে-লুপ সাম্প্রদারিক মঠাশ্রমে পরিণত হইয়াছে।

সমাট্ কন্দ হ'ব রাজ্যকালে (১৬৬২-১৭২৩ খৃঃ) পীত নদী তীরস্থ কোকৌ-খোতোন নগরে ধর্মাচার্য্য ভেৎস্থন-দম্প বাস করিতেন। ঐ সময়ে কাল্মাক বা সি,উথ জাতির সহিত খৰদিগের বিরোধ উপস্থিত হয়। খৰগণ পরাভূত হইরা চীন-রাজের আশ্রয় গ্রহণ করে। তথন কালমাকৃগণ চীনসমাটের নিকট জেৎজন দম্প ও তাঁহার ভ্রাতা রাজকুমার তুম্ভেতু খাঁকে প্রতার্পণ করিবার প্রার্থনা জানাইলেন। সমাট্উভন্ন ভ্রাতাকে কালমাকদিগের হন্তে প্রতার্পণ করিতে অধীকৃত হইলে, তাহারা দল্টলামাকে মধান্ত মানিলেন। দল্ট লামা বা তাঁহার প্রতি-নিধি বিচার করিয়া উক্ত রাজকুমারদ্বয়কে প্রত্যর্পণের আদেশ করিলেন, ইহাতে সমাটের সহিত কালমাক্ জাভির যুদ্ধ বাধিল। এই সময়ে একদিন সম্রাটু জেৎস্থন দম্পের সহিত দেখা করিতে যান এবং তৎকর্ত্তক অপমানিত হইয়া তাঁহার শিরক্ষেদ করিতে আদেশ দেন। এই ঘটনার ধরণে বিদ্রোহী হইরা উঠে এবং **ক্রেংফুন দম্প তাঁহার অকারহণ**ত্যার প্রতিহিংসাসাধনার্থ অবতীৰ হইয়াছেন বলিয়া ঘোষণা করেন। চীনসমাট্ বিজ্ঞোহের স্কুচনা দেখিয়া দলই শামার শরণাপর হইলেন। তাঁহার বিচারে দ্বিরীক্ষত হুইল যে, ক্লেৎস্থন দম্পের পরবর্ত্তী অবতারগুলি ভিন্মতেই হুইবে। পদ্ধবাদিগণ ঐ সময় হুইতেই ব্দেশগ্রেমিক শ্ৰেষ্ঠ পুরোধিত হইতে ৰঞ্চিত হইল।

একৰে মধ্য বা পশ্চিম তিমত হইতেই সাধারণতঃ তেংহন দশ্যের অবতার আবিতৃত হইরা থাকেন। বর্তমান তেংহন কল লামানগরীর বাজারের নিকট অব্যাহন করিরাছিলেন। তিনি আচার্য্য তালিকার ৮ম রানীর ক্লীতিনি বেশুল সকারামে গোলুল্ লামা-শিক্ষার্থিকাশে আবিট হন, ক্লিড তিনি পঞ্চম বর্ষে পলার্শন করিতেই করেরা ভাষাকে উর্গায় লইরা বার, সত্রে এক অন বেশুক বামার শিক্ষকরশে গ্রমন করেন। অবতাররূপে পূল্য পূর্ব্বোক্ত ধর্মাচার্য্যগণ ব্যতীত তলপেকা হীনপ্রভাবসম্পন্ন আরও কতকগুলি লামাচার্য্য আছেন, জাঁহারা জ্যোতিঃপ্রাপ্ত বা দেহান্তরধারী বলিয়া পুলিত। এই প্রেণীর লামাচার্য তিব্বতে ৩০টা, উত্তর মোললীরার ১৯টা, ক্ষিণ্যমোলশীরার ৫৭টা, কোকোনোরে ৩৫টা, ছিরামদো প্রক্রেছ্বনে ৫টা এবং শেকিনে ১৪টা আছেন। এ সকল দেহান্তর-প্রবিষ্ট লামার মধ্যে পশ্চিম-তিব্বতের সেওছেন রিণপোছে, বঙ্গিন্দ্র পো প, বিষ্কুড, লো ছেন, কিয় জর তিছি, দে ছম জলিগ, কঙ্গা ও কোন্ত এবং শামবিভাগে তু, ছম্দো লোক্তে প্রভৃতি প্রধান।

পেকিনের লামামগুল তিকাতীর ভাষার ছঙ্-কা (শাক্) ।
বিলরা কথিত এবং এধানকার লামাচার্য রোল পহীর অবভাররূপে পুজিত। সম্রাট্ কল-ছি'র রাজক্ষালে ১৬৯০ হইতে
১৭০০ খুঠালের মধ্যে তিনি দৈবশক্তিসম্পার হইরাছিলেন।
সম্রাট্ তাঁহার প্রতি বিশ্বাসনিবন্ধন ভাহাকে মধ্য মোল্লীয়ার
ধর্মাধ্যক্ষ পদ দান করেন।

লাদকের অবতীর্ণ লামাগণ স্কু-বৌ নামে পরিচিত। ১৮৯৩ খুটালে যে লামাবতার ছিলেন, তাঁহার বয়স ২৬ বৎসর। ইনি ১৪শ বর্ষকাল তিকাতে থাকিয়া বিভাজ্যান করেন। লামাচার্য্য তালিকায় ইনি সপ্তদশ।

যন্দোক ছণতীরত্ব সক্ষারামে একজন বৌদ্ধ রমণী আচার্য্যাণী পদ পাইয়াছেন। তিনি বক্সবারাহীর অবতার বলিরা সন্মানিত। মিঃ বোগল্ তাঁহার সাক্ষাৎ লাভ করিয়াছিলেন।

শামাচার্য্যণ দেহত্যাগ করিবার সময়, স্থ স্থ পুনর্জন্ম প্রকটন করিয়া যান। তাঁহারা কোন্ গ্রামে ও কোন্ পরিবারে জন্মপরিগ্রহ করিবেন, তাহাও নির্দেশ করিরা থাকেন: কিন্তু ৰৰ্জমান সময়ে সেই লামাবতারের নির্মাচন ও পরীকা খতত্ত প্রথার গৃহীত হইরা থাকে। 'মৃত লামাচার্য্য কি নামে অবতীর্ণ हहेरड शारतम, व्यथरम >>१ जन विश्वकृत्रका मामा अकवा हहेग्रा ভাহার নাম নির্দ্ধারণ করিয়া লম। নামনির্দ্দেশকালে ভজনা ও পঞ্জা হর। বতগুলি পবিত্র নাম তাঁকাদের মনে উঠে, তাহাই ভাঁহারা এক এক খণ্ড কাগজে লিখিয়া একটা স্বৰ্ণণাত্তে রাখেন, পরে তাঁহারা সকলেই ভোত্রগান করিতে করিতে ৩১ম হইতে ৭১ম দিন পর্যান্ত তাহার মধ্য হইতে থাকিয়া থাকিয়া এক একথানি কাগক উঠাইরা লন। ঐ কাগকগুলির মধ্যে নৰ অবভারের নাম পাওরা বার। পেকিনরাজ "নঁ মুতে"র ভবিবাহাণী বিশাস করিরা নহালামা নিরোগ করিরা থাকেন: কামাচার্য্য নির্কাচন-প্রশালীর গৃঢ় রহত ও ভাহার প্রকৃত ভলের মর্গোদ্যাটন चनावक्षकरबार्य छेव छ रहेन मा।

লায়ক (গুং) সংলগ্ন।

লার্কানেল, পশ্চিমবালালার পার্কান্তাঞ্রদেশবাসী প্রসিদ্ধ কোলআতির একটা শাখা। ইহারা অভিলয় ছর্ক্র। [কোল দেখ।]
লার্থানা, বোঘাই-প্রেসিডেন্সীর সিদ্ধপ্রদেশের শীক্ষারপুর জেলার
অন্তর্গত একটা উপবিভাগ। লার্থানা, লব্ দরিরা, কমর,
রাজদেরো ও সিজ্ঞাবল নামে এটা তালুক লইরা গঠিত। ভূপরিমাণ
১৮৯৪ বর্গনাইল।

ইবার উত্তরদীমার বিলাতের খাঁর অধিক্বত প্রদেশ, পূর্বে সিল্প ও শক্তর নদী এবং শীকারপুর উপবিভাগ, দক্ষিণে ও পশ্চিমে মেহর, খেলাথ এবং খীরখর পর্বতমালা। খীরথর পর্বতের নিকটবর্ত্তী হান ভিন্ন অপর সকল হানই সমতল। এই বিজীপ সমতল প্রান্তরে দৃষ্টি আকর্ষণকারী কোনরূপ প্রাক্তিক শোভা নাই; কেবলমাত্র সিল্পনদ ও পশ্চিম নারানদী এবং নারা হইতে গার-খাল পর্যান্ত ভূভাগ শ্রামল শহ্মক্ষেত্র পরিপূর্ণ। এখানেই ধনজনপুর্গ গ্রামাদি আছে, অপর সকল হান "কালর" বা লবণমর উবর ভূমি। সিল্পক্লের বাস্কামন্ত প্রদেশের হানে হানে বাব্লা প্রভৃতি বৃক্ষের ক্ষুত্ত জলল দৃষ্ট হয়।

এখানে অনেকগুলি খাল আছে। উহার জলেই স্থানীয় চাসবাদের প্রবিধা হইয়া থাকে। ঐ সকল থালের কতকগুলি স্থানীয় জমিদারদিগের মত্ত্বে এবং কতকগুলি ভারত গবমে টের বারে সাধিত হইয়াছে। গবমে টের থালের মধ্যে পশ্চিম নারাই সর্ব্ধ প্রধান, উহা ৩০ মাইল লম্বা ও প্রায় ১০০ ফিট প্রস্থ। এতদ্ভির গার-(২২ মাইল, ৮০ ফিট্), নৌরঙ্গ (২২ মাইল-২০ ফিট্), বীরে-জ্ব-কুর (২৭ মাইল ও ৪৮ ফিট্) এবং ইলেনবাহ ২৩ মাইল লম্বা। জমিদারী খালের মধ্যে শাহজিকুর এবং দাতেজি কুর ২২ মাইল এবং মীর্থাল ২০ মাইল লম্বা।

লার্গানা এখানকার প্রধান নগর ও বিচার সদর। এখানে হানীয় প্রাচীন কীন্তির নিদর্শনস্বরূপ একটা পুরাতন কেলা, দাহাল মহন্মদ কল্হোরা এক উচ্চার প্রধান মন্ত্রী দাহ বাহরার সমাধিমন্দির বিদ্যমান আছে। দাহাল মহন্মদের পোত্র আদম দাহ একজন প্রসিদ্ধ ফকির ছিলেন। উচ্চার কংশধরগণ পরে সিদ্ধপ্রদেশের অবীশ্বর হন।

রতো দেরো ও কম্বর নগর এখানকার অস্থতম প্রধান নগর ও প্রসিদ্ধ বাণিজ্যছান। ১৮৪৭ খুষ্টাব্দে মেজর গোল্ডন এখানকার জরিপ ও রাজবেশ্বর বন্দোবস্ত করেন।

২ উক্ত উপৰিভাগের **অন্তর্গত একটা তালুক। ভূপ**রিমাণ ২৯০৬ বর্গমাইল।

০ উক্ত উপবিভাগের প্রধান নগর। গারখালের **বন্ধিণকুলে** জবহিত। অকা• ২৭° ৬০´ উ: এবং ক্রাযি• ৬৮° ১**ে পু**:।

এই স্থানের প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্য অতীব মনোরম দেখিয়া ইংরাজ-ভ্রমণকারিগণ ইহাকে সিদ্ধপ্রদেশের নন্দনকানন (Eden of Sind) বলিয়া বর্ণনা করিয়া থাকেন। এখানে ৩টা বাজার ও কডকগুলি রাজকার্য্যালয় আছে। তালপুর মীর রাজগণের অধিকারকালে পূর্ব্বকথিত চুর্গ অস্ত্রাগাররূপে ব্যবস্থত ছিল। ইংরাজাধিকারে আসিবার পর হইতে উহার কতকাংশ হাসপাতাল ও কতকাংশ কারাগৃহরূপে ব্যবহৃত হইতেছে। শাহ্বহারার সমাধিমন্দির ও পূর্কোক্ত হুর্গ এখানকার প্রাচীনত্বের পরিচায়ক। লার্থানী (লাড়খানী), রাজপুতনার প্রদিদ্ধ দহ্যসম্প্রদায়। শুরীর ১৯শ শতাব্দের প্রারম্ভে উহারা দ্রস্কার্তির ছারা বিশেষ প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছিল। ক্রমে পেন্ধারি ও কজক দস্ত্য-সম্প্রদায়ের স্থায় একটা স্প্রপালীবদ্ধ দলগঠন করিয়া তাহারা নিকটবর্ত্তী অনপদবাদীর ভীভির কারণ হইয়া উঠিয়াছিল। এই দলে প্রায় ৫ শত অখারোহী দম্যু সৈম্ম এবং বহু সংখ্যক পদা-তিক ও লাঠিয়াল ছিল। তাহায়া যথন ভীমবেগে কোন স্থান আক্রমণ করিত, তথন তথাকার অধিবাসিবর্গ খরবাড়ী ছাড়িয়া প্লাইত। লার্থান মারবাড় রাজ্যের সীমান্তভিত শম্বরাজের - অধীনত্ব বস্তরামগড় ভূভাগ কর করিয়া ক্রমশ: একটা কুদ্র সামস্ত রাজ্য বিস্তারে অগ্রসর হইয়াছিলেন। উক্ত দস্তরামগড় ব্যক্তীত এই দত্মসম্প্রদায় নত্মল তপ্পা ও ৮০টা মৌজা লাভ করিয়াছিল। এই দহ্যসম্প্রদায়কে শাস্ত রাখিবার জগু মারবাড় ও বিকানের-রাজ তাহাদিগকে অনেকগুলি মৌজা প্রদান করেন।

লোল (পারদী) > রক্তবর্ণ। ২ রৌপ্য। ৩ কুদ্র পক্ষিবিশেষ। (Fringilla Amendava)

লাল উদ্দীন্, নাজিবাবাদের নবাৰ প্রাতা। ইনি ১৮৫৭
খুটান্বে সিণাহীবিদ্রোহে যোগদান করিয়াছিলেন বলিয়া ১৮৫৮
খুটান্বে এপ্রিল মাসে ইংরাজরাজের বিচারাধীন হইরাছিলেন।
লালে (পুং) ১ একজন জ্যোতির্বিং ও স্থপ্রসিদ্ধ পণ্ডিত। দেবীদাসের পিতা, কাঞ্চকুক্ত ইহার জন্মস্থান। ২ একজন সুসাই দলপতি। ইনি ইংরাজ বিপক্ষে যুদ্ধ করিয়া বিশেষ বীরদ্বের পরিচর

দিয়াছিলেন। (ত্রি) রক্তবর্ণ।
লোলক (ত্রি) লালনকারী, বরকারক। (পুং) একজন হিন্দ্
রাজা। ইঁহার পৌত্র হখিসিংহের ক্টাকে কলিজরাজ ধারবেল
(ডিপুরাজ) বিবাহ করেন।

नांशक्क, नांश्किन क्षकाकीत निकटका (Ardea purpurea)।

লাল্কর্বী (দেশৰ) রক্তক্ষবীর বৃক্ষ।
লাল কবি, বৃদ্দেশগণ্ডবাসী একজন হিন্দুকবি।
লালকাটাবাটানা (দেশক) দেবলক্ষতেদ (Quercus armata)

লালিকেশূরিয়া (দেশজ) গুলজেন, রক্তকেশ্র।
লাল থাঁ, ভারতের একজন ক্পাসিক গারক। ইনি দিলীখর
অকবর শাহ ও জাহালীর বাদশাহের সভার বিদ্যমান ছিলেন।
১৯০৯ খুঠাকে ইহার মৃত্যু হর।

লোলখানি, উত্তরপশ্চিমভারতবাসী মুসলমান-সম্প্রারভের।
ইহারা পূর্কে রাজপুত ছিল, পরে ইস্লামধর্মে দীক্ষিত হইরা
আপনাদের সন্ধার লাল খার নামান্ত্রারে "লালখানি" নামে
পরিচিত হইরাছে।

ইহারা আপনাদিগকে রাজপুতনার অন্তর্গত রাজোড়ের বড় ভজরবংশীর ঠাকুর-সামম্ভ কুমার প্রতাপসিংহের বংশধর বলিরা স্বীকার করে। কুমার প্রভাপসিংহ মহোবা-যুদ্ধে দিলীখর পৃথীরাজের সহায়তা করেন। যুদ্ধযাত্রা কালে তিনি পথিমধ্যে মীনাকাতির বিদ্রোহ দমনকার্য্যে কৈলা ও মালীগড়ে ডোর-রাজের সাহায্য করার রাজা সানন্দচিত্তে রাজকভার সহিত ভাঁহার বিবাহ দেন এবং পুরস্কার বা বৌতুক স্বরূপ ভাঁহাকে বুলন্দসরের নিকট ১৫০ থানি গ্রাম দান করেন। উক্ত প্রভাপসিংহের অধন্তন একাদশ পুরুষে রীজা লালসিংহ জন্মগ্রহণ করেন। মোগলসম্রাট্ অকবরশাহ লালসিংহের বীর্যা ও রাজভক্তি দর্শনে প্রীত হইরা তাঁহাকে খাঁ উপাধি দান করেন। তদবধি এই রাজবংশ লালথানী নামে পরিচিত হয়। লালখানের পৌত্র ইতিমদ রায় মোগলসমাট অরঙ্গলেবের রাজহকালে ইস্লামধর্মে দীক্ষিত হন। ইতিমদ্ রাম হইতে সপ্তম পুরুষ অধস্তন নহর আলী থাঁ ও তাঁহার ভ্রাতুপুত্র দূলে থাঁ বুলন্দসহরের কুমোনা कृत्र् शिकिया देश्ताकरमनात्र विकृत्क युक्क कवित्राहित्यन । उाँशात्रा পরে আপনাদের অধিকৃত প্রদেশ হুর্গাদি দারা স্থরক্ষিত করেন। ইংরাজরাজ পরে এই সম্পত্তি আলীমর্দন খাঁ। নামক এই বংশের একস্তনকে দান করেন। একণে ছিতাবী, পহাস্থ ও ধর্মপুর প্রভৃতি স্থানে এই সামস্তবংশ বিশেষ প্রতিষ্ঠার সহিত বাস করি-ভেছে। ইহারা এখনও আপনাদের হিন্দ্যগ্রাদা ভূলিতে পারেন নাই। কুমার ও ঠাকুরাণী উপাধি এবং বিবাহ কার্য্যে হিন্দু পদ্ধতি অন্তাপি ইহাদের মধ্যে প্রচলিত আছে। ছিতারীর শাধাবংশ বর্জমান সময়ে গোঁড়া সুসলমান বলিয়া পরিচিত হইবার চেষ্টা করিতেছেন।

অনেকে ইহাদিগকে নৌ মুস্লিম নামেও অভিহিত করে।
ইহাদের আচার অন্ধর্ভান হিন্দু ও সুসলমান উভর প্রতি-বিজ্ঞিত,
ইহারা ইস্লামধর্মে নীক্ষিত ঠাকুরবংশ জিল্ল অক্ত ভাহারও সহিত পুত্রক্তাদির আলান প্রথম করে না। বিবাহকালে সুসমর্যাদা ও ব্যোত্রাদির উপর লক্ষ্য রাখে। বিবাহ, কল্প ও মৃত্যু সংকার মুস্করানদিশের মত। বিবাহে কাজি পৌরোহিত্য করেন এবং শবদেহ সমাধিত হয়। কেহই কল্মা পাঠ বা 'সিক্ছা'
করে না। ইহারা হিল্ব দেবদেবীরও পূলা বিরা থাকে। হিল্
কাতিকুট্বের বিবাহাদি সামাভিক ক্রিরার বোলনান করে এবং
পূথক আসনে উপবেশন ও পূথক হানে ভোজনারি করিতে পার।
লালকুমারী, দিরীবর আহাদের পাহের এক প্রিরভা রাজভার
রমণী। নর্ভলীকুলে ইহার জয়। বর:প্রাপ্ত হইরাও লালকুমারী
বেশার ভার প্রকাশ্র হানে মৃত্যণীতাদিতে সমাগত অভ্যাগতরদ্দকে পরিত্ই করিত। মোহনক্রটনিংসত অলানত সলীত ও
অতুলনীর রপমাধুরীতে বিমুগ্ধ হইরা আহাদের পাহ ইহার পদতলে
আত্মনীর লাকীক্রের ওমরাহিণিতে অব্যাননা করিরা অব্যাহতি
লাভ করিয়াছিল।

লালথলিশা, একপ্রকার ধণিশা লাছ। (Trichogaster Inlian)
লালগঞ্জ, বালালার মুলঃকরপুর জেলার হালীপুর তহনীলের
অস্তর্গত একটা নগর ও বাণিলাক্ষেত্র । গওক নদীর পূর্বাতীরে
অবস্থিত। অকাণ ২৫° ৫১′ ৪৫″ উ: এবং জাবিও ৮৫° ১২′
৫০″ পু:। এখান হইতে চামড়া, তৈলশন্ত, লোরা প্রভৃতি
ক্রব্য প্রভৃত পরিমাণে রপ্তানী হইরা থাকে। নগরের এক
মাইল দক্ষিণে যে গল্পটাট হইতে মালপত্র নোকা-বোঝাই হর,
তাহা বসস্তব্যট নামে খ্যাত।

লালগঞ্জ, যুক্তপ্রদেশের গোরক্ষপুর জেলার অন্তর্গত একটা কুল নগর। কুয়াছ নামক একটা কুদ্র নদীতীরে অবছিত। গোরখ-পুর-দেনানিবাদ হইতে অলতানপুর ঘাইবার রাজা এই নগর দিরা গিয়াছে। এখানে একটা অক্ষর বাজার জাছে। অক্ষা ২৬° ৪০ ডি: এবং ৩২° ৫৬ পুঃ।

লালগঞ্জ, যুক্ত প্রদেশের মীর্লাপুর জেলার অন্তর্গত একটা নগর। গালের উপত্যকার ভারাঘাট লৈলের সাহুদেশে অবস্থিত। অক্ষা ২৫° ১´উ: এবং দ্রাঘি ৮২° ২৫´ পু:। এখানে একটা বাজার আছে। সমুন্তপৃষ্ঠ হইতে এই স্থান ৫০৪ ফিট উচ্চ।

লালগঞ্জ, অবোধ্যা প্রদেশের রারবরেনী জেলার নাল্নী তহসীলের অন্তর্গত একটা নগর। অলা ০২৬° ৯´৫´ উ: এবং ত্রাধি ০
৮১° ০´ ৪৯´ পৃ:। এই নগরে নিকটবর্তী হানের শন্তাদি
বিক্ররার্থ সন্তাহে তুইবার হাট বনে। পূর্ব্বে এবানে ভহনীলী নদর
ছিল। ১৮৭৬ খুটালে ভাহা বাল্মৌ নগরে স্থানান্তরিত হুইরাছে।
লালগড়, বালালার বিনালপুর (?) জেলার অন্তর্গত একটা গশ্তপ্রাম। এবানে একটা প্রাচীন নীরহান বিভ্যান আছে।

(ভবিষ্য বন্ধ ৪৮/১২৫)

লাল্গরাণিয়া (দেশক) বৃক্ষভেদ (Dioscores purpuria)
লালগলা, উড়িবা প্রবেশে প্রবাহিত একটা নদী। জনপুর
লামব্রাজ্যের উত্তরাংশে (জকা ১৯° ৩৫ উ: এবং জাঘি • ৮৩°
১৮ পু:) উত্ত হইরা জরপুর ও বিজাগাণাটম জেলার মধ্য দিরা
প্রবাহিত হইরা বলোপদাগরে (জকা • ১৮° ১২ উ: এবং জাঘি •
৮৪°) পতিত হইরাছে।

লালগুলি, বোৰাই প্রদেশের চেল্লাপুর উপবিভাগের একটা প্রাস্থ্য স্বলপ্রধাত। চেল্লাপুর নগর হুইতে ৮ মাইল উত্তরে স্থালী নদ্মী প্রায় ৩০০ ফিটু উচ্চ স্থান হুইতে নিম্নাভিমুখে নিপতিত হুইতেছে। এই প্রপাতপার্বে একটা প্রাচীন হুর্গ আছে। স্থানীর প্রবাদ, গোঁড় সন্দারগণ হুর্দান্ত শক্র বা বন্দীদিগকে হুর্গের ছাদ হুইতে এই গভীর ক্লাম্রোতে নিক্ষেপ করিত।

লালেণ্ডক, উত্তরভারতবাসী ভঙ্গি জাতির প্রিত দেবতাভেদ। ইনি রাজস আরণ্ড-কিরাত নামে পরিচিত।

লালগোরি, পকিবিশেষ (Himantopus Candidus)
লাজগোলা, বালালার মূর্ণিনাবাদ জেলার অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম। পদ্মানদীর কূলে অবস্থিত। ইহা একটা স্থানীয় বাণিজ্ঞাকেন্দ্র বলিয়া পরিগণিত।

नान्चड़ी (तनम्) अग्रस्म ।

লালক, আদামের পার্কতবাদী জাতিবিশেষ। [আদাম দেখ।] লালচুম্ব (পুং) ভাষাদীদাবতীপ্রণেতা।

জ্যাল্টাদ, উত্তরপশ্চিম-প্রদেশবাসী একজন হিন্দু কবি। ইনি পারক্ত ভাষার একখানি দিবান্রচনা করেন। ১৮৫২ খুটাজে ইহার মৃত্যু হয়।

लालह (तनम) वानमा।

লাল্টাদা (দেশৰ) ক্ষমৎভবিশেষ। এই মংভ অতি প্ৰযাদ। লাল্টিতা (দেশৰ) রক্তচিতা।

लाल्हिया ((पनम) > नानमा । २ त्रकां छ ।

मान्टिज्या (तमक) मरश्चितित्तर, त्रक्तर्ग टिन्दामाइ।

লাল্যাতি (দেশৰ) রক্তবর্ণ বাউগাছ।

লালত ক্লেলতা (দেশৰ) লতাভেদ (Ipomæa quamoclit)।
লালনক, যুক্ত বেশের বিজনৌর জেলার অন্তর্গত একটি গগুপ্রাম
আন্দা• ২৯° ৫২´ উ: এবং ব্রাধি• ৭৮° ২০´ পৃ:। এখানে ১৭৭৪
খুটাকে রোহিরাস্পার কৈক্লা খা তেকুনার মুক্তে ইংরাজসেনার
নিকট পরাঞ্জিত হইরা আপ্রর লাভ করেন। ইংরাজ ও অবোধারাজনৈত্য তাঁহার পশ্চাছাবিত হইলে তিনি উপার্যন্তর না দেখিরা
এই স্থানে ইংরাজের সহিত সন্ধি করিরাছিলেন।

লালদর্বাজা, উত্তরপশ্চিমপ্রবেশের শাহারাণপুর ও বেহরাদ্ন বেশার মধ্যবর্তী শিবালিক গিরিমালাত্ব একটা গিরিপথ। সমুজ- পৃষ্ঠ হইতে ২৯৩৫ ফিট্ উচ্চে স্থাপিত। স্বহ্ণাও ৩৩° ১৩´ উঃ এবং দ্রাঘিও ৭৭° ৫৮´ পৃঃ।

লালদাস, আগবারবাসী মেওলাতীয় একলন সাধু। লালদাসী
নামক বৈঞ্ব-সম্প্রদার প্রবর্ত্তক ; ১৫৪০ খুটালে বিভ্যমান
ছিলেন। তিনি কিছুকাল ধাওলীধুব, বাজোলী ও গুর্গাও
জেলায় ডোড়ী প্রামে বাইয়া স্বমত প্রচারের চেটা পান। বান্দোলীতে বাস কালে তাঁহার এক প্রের মৃত্যু ঘটে। তথায়
তাঁহাকেও সমাহিত করা হয়। ১৬৪৮ খুটালে তাঁহার মৃত্যুকালে
তাঁহার এক পুরু ও এক কক্সা জীবিত ছিলেন।

লালন (রী) লল-ণিচ্-ল্যট্। অত্যন্ত মেহকরণ। প্রেমপ্র্রক বালকদিগের আদরকরণ, চলিত লোহাগ।

"লালনে বহবো দোবাস্তাড়নে বহবো গুণা:।

তন্মাৎ পুত্ৰঞ্চ শিষ্যঞ্চ তাড়বের তু লালরেং ॥" (চাপক্য)

লাল্নটিয়া (দেশজ) রক্তবর্ণ নটেশাকবিশেষ। লালনপালন (কী) লালন এবং পালন, যত্তপূর্বক প্রতিপালন, ভরণপোষণ।

লালনীয় (ত্রি) লল-ণিচ্ অনীয়র । লালনার্ছ, লালনের যোগ্য । লালপুঁই (দেশজ) রক্তপৃতিকা ।

লালপুর, বালানার পূর্ণিয়া জেলার অন্তর্গত একটা নগর। আকা° ২৫° ২৯´ উ: এবং জাঘি৽ ৮৭° ২০´ পৃ:। পূর্ণিয়া নগর হইতে ২১ মাইল উত্তরপশ্চিমে অরম্বিত।

লালপুর, যুক্ত প্রদেশের মোরাদাবাদ জেলার অন্তর্গত একটা গগুগ্রাম। মোরাদাবাদ হইতে আল্মোরা বাইবার পথে অব-স্থিত। জকা ২৯° ৫ উ: এবং দ্রাঘি • ৭৮° ৫৪ পু:।

লালপুর, শুলরাত প্রদেশের স্বাঠিরাবাড় বিভাগের হালর জেলার অন্তর্গত একটা নগর। অক্ষা° ২২° ১২´ উ: এবং দ্রাঘি॰ ৭৪° ৬´পু:।

লালপুর, ব্কপ্রদেশের কাণপুর জেলার অন্তর্গত একটা গশুগ্রাম। কত্যেড় সেনানিবাস হইতে কাণপুর আসিবার পথে অবস্থিত। অক্ষা° ২৩° ৪৭' উ: এবং দ্রাঘি• ৮০° ৯' পূ:।

লালমণি, আরম্থাকর ও মৃহর্দদর্শণপ্রণেতা।

লালমণি ত্রিপাঠিন্, পরিভাবাদিরোমণি ও বিবাদকৌমুদীনামক ব্যাকরণপ্রণেতা।

লালমণি ভট্টাচার্য্য, নির্ণরনাররচরিতা।

লালমণির হাট, বাদানার রলপ্র জেলার অন্তর্গত একটা নগর ও প্রসিদ্ধ বাণিজ্ঞাহান। এখানে পাট, ভাষাক প্রভৃতি ক্রব্য পর্যাপ্ত পরিমাণে বিক্রবার্থ জানীত হইরা থাকে।

লালমাই, বালানার পার্কত্য ত্রিপুরা জেলার অন্তর্গত একটা গওলৈন। কুনিয়া নগরের এ মাইল পশ্চিমে ও উত্তরদ্বিশ্বে ১০

বিভূত। এই শৈলপ্রেণী কোধাও ১০০ ফিটের অধিক উচ্চ नार । हेशत अधिकाः न वान भजीत वनमानाममाञ्चत । খানে ছানে ত্রিপুরাবাদী বৃষ প্রধার চাদ করে। এখানে দৌহ ও রৌপ্য ধনি আছে। ইংরাজ-গ্বরেণ্ট ২১ হাজার টাকার মরনামতী ও লালমাই শৈল ত্রিপুরারাক্তক বিক্রের করেন। এই শৈলপৃঠোপরি অসলারত স্থানে একটা প্রাচীন চুর্য ও কতক শুনি প্রক্তর প্রতিমূর্ত্তি নিপতিত আছে। ভাররখোদিত প্রান্তর চিত্রের মধ্যে নাগ ও বরাহসৃত্তি দেখিরা মুরোপীরগণ অমুমান করেন যে, ঐ সকল ধ্বস্ত নিমূর্ণন পর্বাতবাসী অসভ্য অহিন্দু জাতিরই কীর্ত্তি, কিন্তু ত্রিপুরা রাজধানী কুমিলার এতাদুশ নিক্টবৰ্ত্তী ভানে স্থাপিত থাকার স্পষ্টই অনুমান হয় যে, উহা ত্রিপুরারাজবংশের কোন প্রাচীন রাজারই কীর্ত্তি, মূর্ত্তি শেব-লাগের এবং বরাহ অবতারের প্রতিপাদক। ভারতের স্থানর পূর্বের পার্কত্যবিভাগে যথন প্রথম হিন্দুধর্ম বিস্তৃত হয়, তথন সম্ভবতঃ ঐ হর্গ ও দেবালয়সমূহ স্থাপিত হইরাছিল। ত্রিপুরার বৈষ্ণবধর্ম্মের প্রতিষ্ঠাপ্রসঙ্গে শাক্তধর্মের বিলোপ সাধিত হয়, বোধ হয় সেই সময়ে ত্রিপুরাবাসী শক্তি উপাসনার সেই পুজা স্থান পরিত্যাগ করে এবং ক্রমশহ তাহাই জললে আরুত হইয়া যায়। সম্ভবতঃ এই শৈলশিখরে লালমাই নামক শক্তিমূর্দ্তি ও তাঁহার মন্দির প্রতিষ্ঠিত ছিল। কালে সেই মন্দির ও দেবমূর্ত্তি নষ্ট হটয়া গিয়াছে। কিন্তু আঞ্চিও দেবীর নামে ঐ পৰ্বতপীঠ ঘোষিত হইতেছে। কেহ কেহ বলেন ত্রিপুর-बाककुमात्री नानमारेत्र नामाञ्चनारत्र এरे পর্বতের नामकत्रः। হইয়া থাকিবে। অনুমান হয়, উক্ত রাজকলা অনামে পর্কতো-পরি দেবমন্দির ও ছুর্গাদি স্থাপন করিয়া থাকিবেন। তাঁহারই ষেই কীর্ত্তির নিদর্শন নানা প্রস্তর-প্রতিমৃত্তি আজিও ইতস্ততঃ বিক্লিপ্ত রহিরাছে।

লালমাটি, (হিন্দী) মৃত্তিকাভেদ। চলিত কথার গেরিমাটা বলে। সংস্কৃত পর্যার—গৈরিক মৃত্তিকা। ভূতরের বেধানে গ্রিন্টোন (greenstone) অর্থাৎ চুর্ণিত ট্রাপরক্ (traprock) থাকে, তাহার উপরেই প্রধানতঃ লালমাটী পাওরা বার। বর্জমান ও রাজগৃহের স্থানে স্থানে লালমাটী দেখা বার, উহা গৈরিক মৃত্তিকা হইতে স্বতর। আমাবের দেশে প্রবাদ আছে—"বর্জমানের রালামাটী।"

লালমূনিয়া, ক্র স্নিরা পদিভেদ (Estralda amandera) লাল্যুর্গা (পাক্ষী) ভবতেদ।

লাল্লফামরিচ (দেশৰ) লয়া (Red pepper)। আল্লভাকদম (দেশৰ) লভিকাডেদ (Urtica globultora) লালবাকা, নাদালার নিম্ভ জেলার প্রবাহিত একটা শাধানী। আনৌরী প্রানের নিকট বাষমতী নরীতে আসিরা মিলিত হইরাছে। বর্ষার সমর মূর্পা পর্যান্ত এই নদীবক্ষে নৌকা গমনাগমন করিতে পারে।

লালয়িতব্য (ত্রি) লল-ণিচ্-তব্য। লালনের বোগ্য। লালবং (ত্রি) লালা।

লালবাঁধ, বালালার মলভূমির অন্তর্গত একটা প্রাচীন নগর।
 এখানে একটা প্রাচীন হর্গ ও দেবমন্দিরাদির ধ্বংসাবশেষ
বিভয়ান ছিল। (দেশাবলী)

লালবাগ, মুর্শিনাবাদ জেলার একটা উপবিভাগ। ইহা মুর্শিনাবাদ সেরবিভাগ নামেও পরিচিত। জ্বলা ২৪°৬'২৬ হইতে ২৪°২০ উ: এবং দ্রাঘি° ৮৮°৩'৫৫ ইইতে ৮৮°৩২'৪৫ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ২৫০ বর্গমাইল। মাহারাবাদার, শাহনগর, ভগবান-গোলা, সাগরদীঘী, মহিমাপুর ও আসনপ্তথানা ইহার জ্বজ্জ। লালবাগ, (হিন্দি ও পারসী) ভারতীয় মুসলমান-রাজগণের প্রসিদ্ধ প্রমোদোভান। প্ররাগ মণির ভায় ইহা সর্ব্বদাই উল্লাসে প্রদিশ্ব থাকিত বলিয়া উহার নাম লালবাগ হইয়াছে। ক্রমে এই উভ্যানবাটকার চারি ধারে লোকাদ্য স্থাপিত হইয়া ভাহা এক একটা ক্ষ্ম নগরে পরিণত হইয়াছিল। দাক্ষিণাত্যের আন্ধানগরে ও বঙ্গলুরে ঐরপ সোধমালাসভূল স্থপ্রসিদ্ধ উভ্যাননগরী বিভ্যমান আছে।

লালিবাগ, থান্দেশ জেলার অন্তর্গত একটা নগর। সৌধমালা ও বাণিজ্য সমৃদ্ধিতে এই নগর পূর্ণ।

লালবাজার, বাঙ্গালার দিনাজপুর জেলার স্বন্ধতি একটা বন্ধর। লালবাছাত্রর, মহিমত্তোত্র ও শুদ্রক্ষত্যপ্রণেতা। ইনি লাল পণ্ডিত নামেও পরিচিত।

लाल्विছूটि (तम्ब) त्रक्रवर्ग विष्ट्रेषे । लालविद्यादिन, गतिसादम्यन्यत्रकोकाधारगण ।

লালবেগী, ঝাড়্দার মেহ্তর সম্প্রদারভেদ। ইহারা মুসলমান বলিরা পরিচিত, কিন্তু কেহ অক্ছেেন করে না। নিষিক শুকর-মাংস ভক্ষণে ইহাদের কোল কোন বিধাই নাই। মুরোপীর রাজপুরুষ অথবা বণিক্দিগের গৃহে এবং সিপাহীবারিকে ইহারা প্রধানতঃ ঝাড়্দারের কার্য করে। পরিছার পরিছের থাকে বলিরা অপরাপর ভ্তোরা ইহাদিগকে জনাদার বলিরা ডাকে।

ইহারা র্রোপীর মনিবের উদ্ভিষ্ট প্রব্য এবং সকল প্রকার মহিরা পান করিরা থাকে। মৃতদেহ স্পর্ল করিতে ইহারা অগুচি বোধ করে। ইহাদের আচরিত ধর্ম ও ক্রিরাপম্বতি অনেকাংশে হিন্দু ও স্সলমান রীতির অনুবারী। মুস্লুমানগণের ভার ইহাদের সধ্যেও এক বৃদ্ধা রমণী ঘটকী হইরা পার্ক্তিশ্ব না বিবাহসম্বদ্ধ হির করে; ক্রিভ"কানীন্" বা বিবাহের চুক্তিপ্র না লিখিরা ইহারা একরার দের, তাহাতে বিবাহিত পত্নীকে জালবাসিবার ও লালন-পালন করিবার একং প্রায়ার বিবাহ করিরা বিতীরপত্নী বরে না আনিবার অলীকার থাকে।

বিবাহের পূর্বনিদ ইহারা "খদুরী" উৎসব ও সুসলমান সম্প্রান্তের আচরিত অভাত কর্ম সম্পন্ন করে, বিদ্ধ ঐ সমরে ইহারা আচার্য্য আমার্শ ভাকে না। বরের গৃহে কভাকে আনিরা বিবাহ বেওরা হইলে গঞারভকে ১০ সিকা এবং কভার গৃহে হইলে ।/০ আনা সেলামী দিতে হয়।

কোন কোন গালবেদী রমজান পর্বে উপবাস করে, কিছ অধিকাপে লোকেই তাহা পালন করে না। ইহারা মস্জিলে অবেশপূর্বক উপালনা করিতে পায় না।

रेराप्तत्र चार्काहै अथा चल्डा। मूननमारमत्र 'निर्मिष्टे नमाधि-ক্ষেত্র ইহারা মৃতদেহ গোর দিতে পারে না। মধ্যে অথবা জনমানবপরিশৃষ্ঠ কোন অন্তর্মর ভূপতে ইহারা শব শইরা গিরা গ্রোখিড করে। মৃতদেহ সমাধিত্ব করিবার পূর্কো ইহারা পাঁচথানি বজে সেই দেহ আরুড করে, গুই বাছর নীচে হুইখানি ক্লমান বাঁধে, সম্ভক্তে একথানি ক্লসাৰা বা গামছা জড়াইয়া দের এবং ভাহার পর একথানি "ধির্কা" (জামা বিশেষ) পরাইয়া গহ্মর মধ্যে স্থাপন করে। পরে ঐ কবর মৃত্তিকা দারা পূর্ণ করিয়া তত্তপরে একখানি চাদর বিস্তার করিয়া त्मम, छेशांक "मून का ठामम" वर्ण। धे वरताम ठामि कारन চারিধানি অশুক্র কার্ন্ন পুঁতিয়া আশুন লাগাইয়া ভত্মসাৎ করে। ইহার পর মুসলমানদিগের আচরিত বাবতীয় সংকারপ্রথারই অষ্ঠান করে। মৃত্যুর পর চার দিন পর্যান্ত মৃত ব্যক্তির গৃহে কোনরূপ আলোক বা অগ্নি প্রঅলিড করা হয় না। ঐ চারি দিন তাহারা প্রতিবেশী বা কোন আসীরের গৃহে ভোজনাদি कतितां शाँक। शक्तम मिरन हेराता मृटकत गृह अनूरंथ धक থালা স্থপারী রাখিয়া তচ্পরি ফুল দিয়া ঢাকা দেয় এবং সেই দিনে অনাতীয় ব্যক্তিগণকে আহ্বান করিয়া ভোজ দিয়া থাকে।

ইহারা হিন্দুর অনেক পর্কাই পালন করিরা থাকে এবং অনেক বিবরে হিন্দুর আচারপদতি অন্তসরপ করিরা কার্য্য করে। বিবালী ও হোলী পর্কে ইহারা বিশেষ সমারোহ করিরা থাকে। ঐ সমরে ইহারা আপনালের আহিপুরুষ বালাকেগের উদ্দেশে মুন্তিকা হারা পক ওবেঅসুক একটা মসজিব বা স্বাধিন্যনির স্থাপন করিয়া ভাহার সন্ত্রে গুরণী বলি এবং শ্রীহার নামে পোলাও, সরবং ও মিষ্টার প্রকৃতি উৎসাধী করিয়া পুরা বের।

ঐতিহাসিক ক্লুনিরট বলেন, ইহাদের উপাত আবিপুকর বা কুলবেবতা লালবেন সভবতঃ উত্তরণতিন ভারতীর লালওক '(রাজস আবল্য কিরাত) হইবেন। ক্লিভারাগনীনানী লালবেনীরা লীর অহরকেই (চিভিরা সাধু সৈরদ শাহ জ্হর) লালবেগ বলিরা জন্মনান করেন, পঞ্চাবের কামারগণ কেনন হজরৎ বাউদ ও রক্তর-গণ বেনন পীর আলী রঙরেজের পূজা করে, সেইরপ তথাক্তার মেখরেরা লালপীর বা বাবা ক্কিরের উপাসনা করিরা থাকে।

লাগবেদীরা ইন্লানধর্মে দীব্দিত হইবার পরই কোন ছুস্ল-মান সাধুকে আপনাদের কংশপ্রবর্জক বলিরা গণ্য করিয়া আদি এ তেছে। উত্তর-ভারত হইতে ইহারা বালালার কর্মান্তেবণে আদিরা বাদ করিয়াছে।

লালবেগী; ৰাসাশার জিহত জেলার প্রবাহিত একটা নদী। লালবেড়েলা (দেশৰ) সক্তবেড়েলা।

লালবেহারী দে, (রেভারেও), ইংরাজী শিক্ষিত এক জন বল সন্তান। তিনি খৃষ্টধর্মের আশ্রের গ্রহণ করিয়া রেভারেও উপাধি লাভ করেন। ইংরাজ-গ্রমেন্টের স্থাপিত হগলী কলেজের ইংরাজী অধ্যাপকের পলে নিযুক্ত থাকিয়া তিনি খীর জীবন অভিবাহিত করেন। গোবিন্দসামন্ত ও বালালার গর গাথার (Govinda Samanta, a Bengal Peasant life ও Folktales of Bengal) নামক গ্রহ্মর তাহার ইংরাজী জ্ঞান ও রচনাশক্তির চরম নিদর্শন। এত্তিরে তাঁহার স্কলিত আরও কএকথানি অ্লপাঠ্য ইংরাজী গ্রহ আছে। ১৮৯৪ খৃষ্টান্দে ভাঁহার মৃত্যু হয়।

লাল্শর্করাক্ষন (দেশজ) শকরকল আনু।
লাল্শাক (দেশজ) রজশাক।
লাল্শাক (দেশজ) রজশাক।
লাল্শোকেকি (দেশজ) গালোপবোদী শাকবিশেব।
লাল্শানা (দেশজ) গালবর্ণের স্থানাদান।
লাল্শ (পুং) লাল্না।
লাল্লা।
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্লানা
লাল্

(অ) ৬ লোলুগ। "তরিন্ মুহুর্তে প্রস্কারীগামীশান-সন্দর্শনালসানান্।" (কুষারগাৎ৬) লালসাত, রালপুতনার অরপুর রাজ্যের বৌধা জেলার অর্জাত একটা নগর। এথানে প্রায় ৯ হালার লোকের বার্কীলাছে। লালসাবনী (বেশল) ভবতেম (Trianthoma oboordata) লালসাহ্বাজ, এক জন স্বলমান মহাপ্রকা। সেহ্বানে তীহার সমানিমন্তির বিভয়ান আছে। স্বলমানগণ প্রারই এই প্রির তীর্ব সন্দর্শনে আলিয়া থাকে। ১০০৬ খুটাকে উক্ত মন্দির ও তাহার চ্ড়া নির্দ্ধিত হইরাছিল বলিরা সাধারণের ধারণা। ১৬৩৯ খৃত্তাব্দে তর্থান রাজবংশীর মীর্জা জানি এই সাধ্র উদ্দেশে আর একটা স্থরহৎ সমাধিমন্দির নির্দ্ধাণ করেন। সিদ্ধান্ত মীর করম জালী থা তালপুর ইহার বার ও চ্ড়ার ওবেজ রূপার পাত দিরা মুড়িরা দেন। এই মন্দিরে আরবী ভাষার উৎকীর্ণ কএকথানি শিলাফলক জাছে।

লাসসিংছ (রাজা), এক জন শিধসর্দার। তিনি রাণী চাঁদ কুমারীর প্রেম্বপাত্র ছিলেন। এই ক্রে রাজসরকারে তাঁহার প্রতিপত্তিও অক্সঃ হইরা পড়িরাছিল। রাজা জবাহির সিংহের মৃত্যুর পর, ১৮৯৪ খুটাকে তিনিই প্রধান মন্ত্রীর পদ প্রাপ্ত হন। সিপাহীবিল্রোহের পূর্বে তিনি কিছুকাল আগ্রা নগরীতে নজর-বন্ধিরপে বাস করিয়াছিলেন।

লালসিংছ (পুং) একজন প্রসিদ্ধ জ্যোতির্বিদ্। লালসীক (ক্লী) পিচ্ছিল। (শনরত্বা°) লালা (ব্লী) লল—পিচ্ অচ্টাপ্। মুখডবজল, চলিত নাল্।

পর্য্যায় ---স্থানিকা, শুনিনী, প্রায়িকা, স্থানীকা, মুখপ্রার। (রাজনি*)

"হীনছেলাৎ ভবেছোপো লালানিপ্রান্রমন্তমঃ।" (স্থশ্রুত ৪।২২)
লোলা, উত্তরপশ্চিম ভারতবাসী কার্যজ্ঞাতির সম্মানস্টক উপাধি।
কথন কথন বিদ্যালয়ের শিক্ষক, কেরাণী বা হিসাব রক্ষকনিগকে
সম্বম প্রদর্শনার্থ লালাজী বলিয়া সংখাধন করিতে দেখা যার।

লালা জয়নারায়ণ, চণ্ডীকাব্য ও হরিলীলাপ্রণেতা। ইনি লালা রামপ্রসাদের পুত্র। [রামপ্রসাদ দেখ।]

लालां (वि) > ननावेनस्की व ।

लालां हि (पूर) ननाटें ब গোত्राभे छ। (मरबाबरकी)

লালাটিক (ত্রি) লগাটং পশ্রতীতি লগাট (সংজ্ঞারাং লগাটকুরুটৌ পশ্রতি। পা ৪।৪।৪৬) ইতি ঠক্। প্রভূর কপালদশী,
কার্য্যাক্ষম, বে ভৃত্য ক্রোধ ও প্রসাদাদি চিক্ক জ্ঞানের জন্ম
প্রভূর ললাট অবলোকন করে। "লালাটিকঃ সদালতে প্রভূতাবনিম্পিনি।" (অজয়) (পুং) ২ আল্লোবণবিশেষ। (ত্রি)
ত ললাটসম্বন্ধী। বধা প্রাধ্রিক লালাটিকী

लालांकी (जी) नवांके।

লালা ঠকুর, আহিকসংকেশ-রচরিতা বামদেবের প্রতিপালক। লালাভিক্ষ, (বি) > লালা-ভোজনকারী। ২ নরকভেদ। শ্বাহারা দেবজা, শিভূগণ ও অতিথিকে ভোজা বস্তু নিবেদন না করিক্সীভোজন করে, ভাহারা এই বোর নরকে গমন করে।

লালামিক (ब्रि) ললাবগ্রাহী, সৌন্দর্যগ্রাহী।

লালানেই পেং) দালারৎ নেহতীতি মিহ-জচ্। প্রমেহ বিশেষ। এই নেহরোগে লালার ভার ওক্ত ব্যু, এই জভ ইহাকে লালামেহ,কহে। "লালাভ পুযুতং মৃত্রং লালানেহেন পিছিলম্।" (ভাৰএঃ)
[প্রমেহ রোগ শব্দ দেখ]

লালায়িত (ত্রি) লালা-"নমন্তপো বরিবঃ কণ্ডাদিড্যঃ কঁকুতৌ" ইডি-কা, লালায়-ক্ত। লালাখিশিষ্ট, কাতর। অত্যন্ত কাতর হইলে মুখ হইতে লালাম্রাব হইতে থাকে।

लोलांबांबु, अक्चन अनिष वानानी माधू ७ शहर देवकद। মূর্লিদাবাদ জেলার কালী নগরের প্রপ্রসিদ্ধ উত্তররাটীর কারস্থ ভূম্যধিকারী হরেক্ক সিংহের বংশে তাঁহার ক্রম। কলিকাভার উত্তর উপক্ষিতি পাইকপাড়া গ্রামে তাঁহাদের একটি বাস্ভবন আছে। এইজন্ত তাঁহারা পাইকপাড়ার রাজা বলিয়া খাত। জীবনে পরছঃখে কাতর হইরা মুক্ত হল্তে অর্থব্যর করিতেন বলিরা লোকে ভাহাকে লালাবাবু বলিয়া সংখাধন করিত। ভাঁহার শিতামহ দেওয়ান গলাগোবিন্দ দিংহ ভারতপ্রতিনিধি ওয়ারেন হেটিংসের শাসনকালে ইট ইন্ডিয়া কোম্পানীর দেওয়ান নিযুক্ত হন। গলাগোবিন্দের পুত্র প্রাণক্তক (পরে দেওয়ান) স্বীর জ্যেষ্ঠতাত রাধাগোবিন্দের (বলেশ্বর নবাব সিরাক উদ্দোলার প্রধান রাজ্য-সংগ্রাহক) তত্মাবধানে থাকিয়া বিষয়কর্ম্মে বিশেষ দক্ষতা লাভ করেন। তিনি পিড়সম্পত্তির অধিকারী হইয়া খীর স্বভাবদাত দরার্ক্রতানিবন্ধন যথেষ্ট উদারতার পরিচয় প্রদান कतियाहित्यन ।

এই মহাস্থত্বের প্র দেওয়ান রুক্চন্দ্র সিংহ ওরকে লালাবাব্ পিতার স্থার সদ্গুণশালী ছিলেন। প্রথম জীবনে তিনি
বর্জমান ও কটকের কলেক্টারীর দেওয়ান হইয়াছিলেন। পরে
তাঁহার বিষয়তৃক্ষা ক্রমশঃই নির্মাণিত হইয়া আইসে। শুনা
যার, একদিন সন্ধ্যাকালে তিনি বীয় প্রাসাদোপরি বায়সেবনার্থ
প্রচালনা করিতেছেন, এমন সমরে অদুরস্থ রক্তরুগৃহ হইতে এক
রক্তনিনী তারস্বরে বলিয়া উঠিল, "ও বেলা গেল গেল বাসনা
শুলা আলিরে দে।" সাধকের প্রাণ অকস্মাৎ ঐ কথায় চমকিয়া
উঠিল। রক্তকের ব্যবহারের কলার বাস্না ভাহার মনে হইল
না, তিনি মনে করিলেন কে বেন তাঁহাকে বিষয়দল মন্ত দেখিয়া
বিজ্ঞপ করিয়া বলিতেছে, "সময় অভিবাহিত হইয়া চলিল, বাস্না
শুলি আলাইয়া লাও।" তথন তাঁহার জ্বলের দাবায়িয়গ্র বৃক্ষাভাকরন্থ কীটের পীড়ার স্থার বিষম আলা উপস্থিত হইল। তিনি
বৈরাগ্যাবলন্ধন করিলেন।

বৈরাগ্যোদর এইলৈ তিনি বিষয়-ভোগলালনা পরিত্যাগ করিরা পশ্চিমাঞ্চলে তীর্ষবাজার বহির্গত হল। এখানে আসিরা প্রতি তীর্ষেই তিনি বীর গাঁলীলভার যথেষ্ট পরিচর দিরা গিরাছেন। বুন্ধাবনে আসিরা ভিনি রাজপুতনার মর্শার-প্রভাবে একটি হারহৎ মন্দির প্রতিষ্ঠা করেন। উহা
অভাপি 'লালাবাব্র কুঞ্জ' নামে পরিচিত আছে। রাজপুতনার
মর্শারপ্রভার ক্রয় করিতে আসিরা তিনি করেকটি রাজকীর কার্যো
বিপ্রত হইরা পড়েন, পরে তাহা হইতে নিম্নৃতি লাভপূর্বক
প্রনার বৃন্দাবনবাদী হইরা ঐকান্তিকচিত্রে ভগবান্ নারারণের
ধানে নিরত হন। বৃন্দাবনবাদীর বিধাস, তিনি আফ্রিকের
সাক্ষাংলাভ করিরাছিলেন, কথন কথন প্রেমোরাদে ভাষার
মোহন মুরলী ধননি প্রবণ করিরা বমুনাকৃলে প্রধাবিত হইতেন।

বৃন্দাবন-বাসকালে তিনি মধুরা জেলার অন্তর্গত "রাধাকুও"
নামক তীর্থের চতুর্দিক বেভপ্রতারসোপানধারা বাঁধাইর।
দিয়াছিলেন। শ্রীক্ষকের চরণধান করিয়া বৃন্দাবনেই তিনি
দেহত্যাগ করেন। যে হানে তাঁহার সমাধি হইয়াছিল, ব্রজবাসীয়া
তাহা একটি তীর্থ বলিয়া যাত্রীদিগকে দেখাইয়া থাকে।

তাহার মৃত্যুর পর ত্বীর বাদকপুত্র দেওরান এনারারণ-সিংহ ঐ সম্পত্তির অধিকারী হন।

লালাবিষ (পুং) गानाबार विवः বহু। লুতাদি, ইহাদিগের নানার বিষ।

লালা <u>অব (পং) > লালা-নিঃসরণ। ২ ল্</u>ডা, মাক্ড্সা। লালা <u>আবি (পং) লালাং আবর</u>তীতি জ্ল-ণিচ্-স্বণ্। > উর্ণনাভ। (হেম) (ত্রি) ২ লালান্দারক।

"লালাপ্রাবী স বিজ্ঞেয়ঃ কণ্ডুমান্ শৌবিরো গদঃ।" (স্থক্ত ২।১৬) লালাপ্রাবিন্ (ত্রি) লাল-আৰকারী।

लालिक (%) महिव। (१६म)

লালিত (ত্রি) খাহাদিগকে লালন করা হইয়াছে। (ক্লী) ২আফলাদ, উরাদ।

লালিতপুর, যুক্তপ্রদেশের একটা নগর ৪ জেলা। [ললিতপুর দেখ] লালিত্য (ক্রী) ললিত-ব্যঞ্। ললিতের ভাব বা ধর্ম, ললিত-গুণবিশিষ্ট।

শনবিধান্দরকোমনামলপদৈর্গানিতালীনাবতীং।" (লীলাবতী)
লালিয়াদ, কাঠিরাবাড়-বিভাগের ঝালাবারপ্রান্তত্ব একটা
সামস্ত রাজ্য ও ভববীন গওগ্রাম, ভাবনগর গোণ্ডাল রেলপথের
চূড়া প্রেসন হইডে ১৯০ মাইল উত্তরপূর্ব্দে অবস্থিত। বর্তমান
সম্পত্তির হুই জন অংশীদার। তাঁহারা ইংরাজগবর্মে ন্টকে বার্বিক
৩৬২, টাকা ভর দিলা থাকেন।

লালী, একজন করাসী সেনাপতি। সমগ্র নাম কাউণ্ট গাণী টেরেওগ। করাসী রাজাধিকত ভারতীর ক্রানেশসকুকের প্রধান সেনাপতি হইরা ইনি ১৭৫৮ বৃষ্টাব্দে ভারতে প্রার্শণ করেন। ইহার পিতা সর্জির্মার্ড ও'লালী আর্থপত্বাসী হিলেন। নিমান রিক্ মুদ্দে বিশেব বীরত্ব কেথাইরা তিনি করাসী সেনার অধিনায়ক

হইরাছিলেন। ভিনি ভূপাকার সামরিক বিভাগে থাকিরা "আইরিশ জিগেড" নামক সেনারল সংগঠন করেন এবং তাহার পুত্র টমাস আর্থার এফ বংসর বরষেই (১৭০২ খঃ) ফরাসী <u>সেনাদলের আইডেট্ পদে মনোনীত হন। ৪৩ বৎসর বরঃক্রম</u> কালে.(১৭৪৫ শুঃ) তিনি শীষ জোঠতাত কাউন্ট ডিয়োঁর পরিচালিত ত্রিগেড় বেনাদলের অধিনারকম্ব লাভ করিরা ফণ্টিনর রণক্ষেত্রে অমিত বিক্রমের পরিচর দিরাছিলেন। অটল ইংরাজ-ৰাহিনী তাঁহাৰ আক্ৰমণ-বেগ সম্ব করিতে নাঁ পারিয়া পরাজিত হয় এবং সেই দিন হইডেই করাসী সৈজের রণপাভিত্য-খ্যাতি ক্সপ্রতিষ্ঠিত হর। অতঃপর লালী ক্ষযুদ্ধে বিশেষ বীর্ঘ দেখাইরা খীর খণে করালী রাজপুরুষদিগের চিতাকর্বণ করিয়াছিলেন। তৎপর তিনি করাসী সেনাপতি Marshal Sexcএর অধীনে বেরপ যুদ্ধকৌশল ও কার্য্যভংপরভার পরিচয় দিরাছিলেন, তাহাতে তিনি এই বীর পুরুষকে প্রক্রতই ফ্রান্সের ভাবী সেনা-নায়ক (Marchal de France) জ্ঞান করিয়া মনে মনে শ্রদ্ধা ক্রিতে অবসর পাইরাছিলেন।

ইহারই কিছু পরে ১৭৫৬ খৃষ্টাব্দের ৩১এ ডিসেম্বর চুয়ার বৎসর বয়সে তিনি এসিয়াস্থ ফরাসী অধিকারসমূহের (French possessions in the East) প্রধান সেনাধাক হইয়া ভারতদীমান্তে আদিরা উপনীত হইলেন ৷ তিনি নীতি-তন্ত্রের পক্ষপাতী ছিলেন। ভারতে আদিয়া সেই স্বভাবদিদ নীতিমার্গের অন্মসরণপূর্ব্বক ভিনি ভারতীর ফরাসী সেনাদলের निका ७ मः बादकार्या बजी हरेरान । এই ममरद मनगर्स এবং স্বীয় শক্তিপ্রাধান্তে মন্ত হটয়া তিনি যথেষ্ট হঠকারিতার ও শক্তিচালনার পরিচয় দিরাছিলেন। তাঁহার বীরত ও দাভিকতা ষ্কচিরে ভাঁহাকে অবনভিন্ন পথে আনিয়াছিল। ভারতে স্থাসিলা তিনি রাজনীতিবিশারদ ডুঁপ্লের সাম্যবাদ বিসর্জন দিলেন এবং রাজা শ্রেজা সৰ্ভ কাপন করিবার উল্লেখে করাসীর অধিকৃত প্রদেশসমূহে খীর প্রভাব বিভার মানসে, প্রজাবর্গের উপর কঠোর শাসন প্রবর্ত্তিত করিলেন। বাহা স্পূৰ্ণ করিলে পরীর অণ্ডচি হয়, এরপ নিষিদ্ধ বন্ধও ব্রাহ্মণকে বহন করাইতে অথবা শুক্রবিগের সহিত ভাঁহাদিগকে একা গাড়ী চানাইতে বাণ্য করিবাছিলেন। এইরপ বথেককাও লক্ষ্য কৰিয়া De Layrit ও মন্ত্ৰিস্ভা (Council) ভাৰাত্ৰ অস্থৃতিত কাৰ্য্যবলির নিকাৰাদ করিবা বথেষ্ট প্রাক্তিবাদ করি-লেন। তাহাতে ভিনি বিশ্বক হইরা তাঁহাদিগকে উৎকোচগ্রাহী অপরাধে অভিবৃক্ত করিয়া ভাহাদের প্রতি ভরুপবোদী বাষ্ঠারে क्रफनका श्रेरणमः।

শাসালে বৃহকালে নাজাল নগরের সমূপে আনিরা ভাঁচার

অধীনস্থ সেনাপতিগণ তাঁহার ব্যবহারে বিশেষস্কণে উদ্ভাক্ত হইরা-ছিলেন। তাঁহারা স্থার সহিত তাঁহার আদেশ উপেকা করিয়া মাজান আক্রমণে বিরত হইলেন। তিনি প্রভ্যেক সেনাকর্তৃক স্থাপিত ও লাছিত হইলেন এবং তাঁহার উপর বিল্লোহী সেনাদলও খীয় নৌবাহিনীকৰ্ত্তক পরিভ্যক্ত হইয়া আপনাকে বিশেষরূপে অব-মানিত বোধ করিতে লাগিলেন। উপস্থিত বিপদ হটতে উদ্ধার-লাভের আলায় তিনি বাধ্য হইয়া বুলিকে বুকের অধিনায়কপদে বরণ করিরা যুদার্থ অগ্রসর হইতে আদেশ দিলেন। বন্দিবাস রণক্ষেত্রে কর্ণেল কুটের নিকটে ডিনি সমূলে পরাজিভ ছইরা-ছিলেন। অভঃপর বিদ্রোহী সেনারুদ ও অভ্যাচারী প্রস্লাবর্গের মধ্যে থাকিয়া তিনি পুঁদিচেরী রক্ষার দৃচ্সঙ্গ হরেন। ক্রমণঃ পাঞ্চাভাবে যথন মূর্ণবাসীর জীবনকাল কুরাইভে লাগিল, (১৬ই জাতুয়ারী ১৭৬১ খৃ:) তথন তিনি আত্মসমর্পণ করিছে বাধ্য হইয়াছিলেন !

এই অবরোধকালে করাদি-সৈত্ত ও নগরবাদিগণ হত্তী, অখ, উট্ট প্রভৃতি নিহত করিয়া তাহাদের মাংস দ্বারা উদর পূর্ত্তি করিত। এমন কি, তৎকালে ২৪ টাকা মূল্যে একটী দেশী কুকুর ফরাসীদিগের থান্ত সামগ্রীরূপে বিক্রীত হইয়াছিল।

তিনি ফ্রান্স রাজ্যে প্রত্যাবৃত্ত হইলে, তাঁহার ভারতীয় কার্য্যাবলির ভরামুসন্ধান ও বিচার আরম্ভ হয়। ভাহাতে তিনি রাজদ্রোহী ও সেনাপতিবৃন্দের উপর অবধা অত্যা-চারী বলিয়া প্রতিপন্ন হন। ভজ্জন্ত তাঁহাকে মর্গার গাড়ীতে বদাইয়া প্রকাশ্র রাজপথে লইয়া বধ্যভূমিতে আনয়ন করা হইয়াছিল। তথাম তিনি তারশ্বরে চিৎকার করিয়া বলিরাছিলেন, "জগদীবর বিচারক্দিগকে ক্ষমা করিবার জন্ত তাঁছাকে যথেষ্ট অনুগ্রহ দান করিয়াছেন। যদি তাহাদিগের সহিত পুনরায় সাক্ষাৎ আমার সম্ভব হইড, তাহা হইলে আমি ক্রনই সে কার্য্য করিতাম মা।" এই কথা বলিবার পর জ্লোদ - ব্যাসিরা ভাঁহার শেষ কার্য্য করিরা গেল।

लाली (१९७०) केवर नानवर्गपुक । वाशास्त्र नालव वाश्व नाहर । मानीनमी, जागात्व व्यवाहिक अक्षी नमी। निश्रवद गहिक मिणिक हरेंबाका। अवन १४ केंद्र अवर जाविः ३८ र त्र्र्स আৰৱৰাডিত্ব বালভূমি অসলায়ত পৰ্বতেপত হইতে উহুত।

লালীল (পং) শনি। (তৈতিয়ীর শারণ ১০।১।৭) मामुका (बी) स्केशक्रका

লালুনন্দ্রাল, একলন ক্বিওরালা। ইহার রচিত অনেক *****কৰি' পাল পাওৱা বাছ ।

लाटनद्र-(कार्षे (नानात्म इन"), युक्त-अरागरमंत्र युनमानवर त्वनात्र चढगँ छ अवही गंकशाव । चला । २৮७०० छैः अर । लाग्नामर्ज्ञन, नान्गामर्ज्ञ छ नक्नथंवीन अर्गका ।

আৰি॰ ৭৮°৭ পু:। থাসগঞ্চ হইতে নীরাট থাইবার পথে অব-ছিত। এথানে একটা ভয় হগ ছিল। **क्लांब्रु** (बि) नन-शिठ्-गार। नाननीत्र, नाननार्थ। **লাব (পং ত্রী) পঞ্চিবিশেষ, লাওয়া। ইহার মাংসঞ্চল—লগু, কটু,** मनवडकात्रक, चाह्र, नीखन, ও जिल्लावनामक। (द्वाक्वव°) ভাৰপ্ৰকাশনতে ৩৭—অগিকর, লিগ্ন, লেগ্নবৰ্দ্ধক, উষাবীৰ্য্য, ৰাছ্নাশৰ, লখু, ক্ৰিলোৰজিৎ, শীতল, হ্বনুরোগ ও রক্তপিত্ত-রোগনাপক। (ভাৰঞ°)

লাবিক (পুং) নাৰ এব স্বাৰ্থে কন্। > নাৰপন্ধী। পৰ্যায় নযুজালন। (जिका॰) সুনাভীড়ি সু-ধুল্। ২ ছেদক।

"যথা প্রাগকঃ কেত্রী পাসকো সাবকত্তথা।"(মার্ক°পূ•৪৬।১৬) लांचन (कि) नवन-व्यन्। नवन बाज्ञा मरव्रक, त्य वस्त्र नव्य चात्रा मरकात कता रुव ।

'नार्शिकः नाधिकः नर्शिन धिन्छार नःष्ठ्रकः क्रमार । नवरगामका आयुमकः नावगिकयुमविकि । উদ্বিতমৌদ্বিৎক: লবণে ভাতু লাবণম্ ॥' (ट्रंस) (ত্ৰি) ২ লবণ সম্বন্ধী। "न मार পরিভবরেব স্বাং বেলাং नम्পাক্রমন্। ক্লেদয়ামাস চপলৈর্লাবণৈরক্ষ বিভাবৈঃ॥" (হরিবংশ ৫৩।২০) (রী) ৩ নভা। (রক্সনালা)

नाविनिक (वि) नवन-र्रव्यः। नवन बाजा मःक्रुक, नवरनामक ৰারা সংস্কৃত। (হেম) ২ লবণ সম্বন্ধী। (পুং) ৩ লবণ্বিক্রেতা। "শীলরৈব স্থতনোন্তলরিছা গৌরবাচ্যমপি লাবণিকেন।"(মাখ>০।৩৮)

(क्री) ৪ লবণপাত্র।

লাবণ্য (ক্লী) লবণ-ব্যঞ্। ১ লবণত্ব, লবণের ভাব বা ধর্ম। **লৰণা দিট্ বিগতে যজেতি লবণঃ অৰ্প্লাদিদাদচ্তত** ভাবঃ मृहामिषां प्यार्थ यान्। त्रोन्मर्यावित्यव, नतीरत्रत्र काश्वि, চাক্চিক্য। ইহার লক্ষণ---

"মুক্তাফলেবু ছায়ারাজরলম্মিবাজরা। প্রতিভাতি যদ**লেবু তল্লাবণ্যমিহোচ্যতে ॥" (উক্ললনীল**মণি) মুক্তাকলের মধ্যে ছায়ার জরলতার স্থায় অলে বাহা প্রতি-ভাত হর, তাহাকে লাবণ্য করে। শরীরাবয়বের যে প্রস্কৃত্ত *(नोन्दर्य),* काहारकहे नावश्य वरन ।

"নীভিড় মিডুজাং নতিও প্ৰতাং হীরলনানাং ধৃডিঃ ক্ষপত্যো: শিশৰো গৃহস্ত কৰিতা বুঙ্কে: প্ৰসাদো গিরাং। লাৰণ্যং বপুৰঃ স্বৃতিস্থ সনসা পান্তিমিকত ক্ষমা লক্তজ প্ৰবিশং গৃহাজ্ঞমৰতাং আত্মং সভাং মঞ্চন্দ্ ॥" (অমনুসিংহ) **० मैनटेमश्रामि**।

লাবণ্যাজিত (हो) গাবণোন অবিভিন্ । বিবাহকাশীন খণ্ডর ও পান্তরী কর্তৃত প্রবেদবিশের । বিবাহের নমর খণ্ডর ও শান্তরী বে ধন বৌতুক বরূপ কেন।

> "दीका प्रक्रम वर्षाचिक बाबू वा वंश्वत्वन वा । नापरमानिकः वक्कांक्कांच्याक्तारक ।"

> > (বিবাধচিন্তানশিশ্বত কাড্যয়নবচন)

লাবা, পঞাৰজনেশের বিলাম্ বেলার অন্তর্গত একটা নগর।
ক্ষেত্র ও লবন পর্বতের উত্তরে অবহিত। অকা° ৩২°৪১′৪৫″
উঃ এবং প্রাবি' ৭১°৫৮′৩৬″ পূঃ। ইবা একটা ক্রবং 'আবান্'
প্রাব বলিরা ক্ষিত। ইবার চকুলীনাহিত কুটার লইরা ভূপরিরাণ ২৩৫ বর্গনাইল।

লাহা, রাজপুতনার অন্তর্গত একটা দেশীর সামত-রাজ্য। ত্-পরিষাণ ১৮ বর্গনাইল। অৱপ্রেরাজ কোন সমরে তাঁহার কোন নিকট আজীরকে লাবার সামত্তপদ প্রদান করেন। পরে মহারাষ্ট্র-সর্কার আমীর বাঁ লাবা অধিকার করিরা তবাকার ঠাকুরকে মহারাষ্ট্রের পর্যামত করিরাছিলেন। উহার পর লাবার ঠাকুরপণ তোজের সামত্তরাজের অধীন হইরা পড়েন। ১৮৪৭ বুটাকে ইংরাজগ্বরে কি এই অধীনতাপাল হির করিরা দেন।

লাবা নগর ভোষের ১০ ক্রোণ উত্তরপূর্বে অবস্থিত।
লাবা (বী) লাব-টাপ্। পজিবিশেব, পর্যার লাবক, লাব, লব।
লাবাড়া, ব্রুত্রেদেশের বীরাট জেলার অভ্যাত একটা নগর।
নীরাট সবর হইতে ৬ ক্রোণ উত্তরে অবস্থিত। এখানে মহলসরাই নাবে একটা স্থলর প্রানাব বিভ্যান আছে। এই প্রামাবসংগর স্থবিভূত উভান একণে ভ্যাবহার পতিত। নীরাট নগরের
নিকটহ স্থীর্ব প্রাক্ত্র-বীবিভার প্রতিভাতা বণিক্সের ক্রাহির
সিংহ অভ্যান ১৭০০ বুটাকে এই অট্টালিকা নির্মাণ করাইরাভিলেন।

এখানে কর্মার খনি আছে। তাহাতে উৎক্রই কর্মা পাওরা বাব। খানে খানে অবিভঙ্ক পৌত্রর খনি মূই হব। বীপ্রানীরা সেই নৌহ গ্লাইরা পারাবি প্রায়ত করে। পূর্ব ভারতীর বীপপুঞ্জে ইংরাজের বে নক্স উপনিবেশ আছে, ভাহার বধ্যে ইহা স্কাপ্রেল খুল। ১৮৩৬ পৃত্রীকে ইহা ইংরাজের হত্তে স্বর্শিত হইরাছিল।

লাবুর্দ্ধনে, এক জন করানী শাসনকর্তা। ইনি খুটার ১৮শ শতাব্দের মধ্যতাগে ভারত মহাসমূলত্ব করানী অধিকারসমূহের শাসনকর্তা হইরা পূর্ববেশে আগবন করেন। তিনি ভারত উপকৃলে করানীবাহিনী আদিরা নারাজ অধিকার করিবাছিলেন। লাবেরনি (পুং) গবেরনির সোত্রাপতা।

লাবের দীর (বি) লাবেরণির গোতাপত্য। লাব্য (বি) লু-গ্যং। ছেন্য, ছেন্সববোগ্য।

नांत्रक (वि) गव-डेकन्। शृश्, लाडी।

লাল (পুং) লস-বঞ্। ১ নৃত্যমাত্র। ২ রীদিগের নৃত্য।

"মদনজনিতলালৈ দ্ উপাতৈকু নীজান্।

তনভরনতনার্য্য কামরন্তি শ্রেণান্তান্ ॥" (প্রতুসংহার ৬।৩১) ২ ব্ব । (প্রতে)

লাস (দেশৰ) সৰব। ২ আটা। (হিলি) ও নিজুই জমি।
লাস, আফগানছানের হিরাট বিভাগের নিকটছ একটা প্রদেশ।
সিভানের উভরে অবছিত। কামরান্যখন লাস নগর আক্রমণ
করেন, তথম এখানকার হুপ্রাসী সেনাগণ কথেই বীর্ডের
প্রিচর বিরাছিল।

লাস, বস্চহানের অন্তর্গত একটা প্রবেশ। আরব্যোপসাগরের উপকৃষে অবহিত। নিজুনবের "ব'রীপভূমি ও হালাপর্কত্যালা বারা ইহা নির নিজুপ্রকেশ হইতে বিজিল হইরাছে। এই সমুল্লোপফুলবর্তী প্রবেশ লয়ে প্রায় ১০০ নাইল এবং প্রছে ৮০ বাইল।
ইহার উত্তর নীরার বালবাম পর্কত ও কুবলাল্য, পূর্বে ও পশ্চিমে
উত্তর্ভুত্ব পর্কত্যালা এবং বক্তিশে ভারত মহালাগর। এবানকার,
ভাসনকর্তা ভাম (সর্কার) নামে খ্যাত।

अपान जारबंडे, नांव्या, जांव्या, धरमंत्र, कर्मात्रव, क्यां, क्यां, क्यां, क्यां, क्यांन, त्यांन, क्यांन, त्यांन, त्यांन, त्यांन, क्यांन, क्यांच, व्यांचित्र वांचनी वांचनों वांचनों वांचनों वांचनों वांचनों वांचनों वांचनों व्यांचन क्यांचन क्य

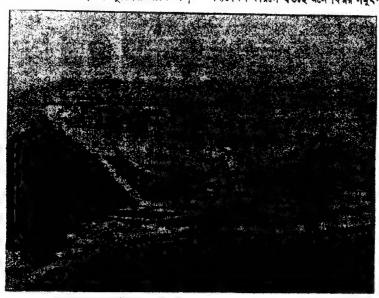
বাণিজ্য প্রচলিত ছিল। মেক্রান ও সিদ্ধারেশে মুসলমান্ সমাসনের সমকালে এখানে সম্ভবতঃ জারববাদী মুদলমান বণিক্গণ উপনিবেশ স্থাপন করিরা থাজিবেন।

লাসক (ক্লী) লসতীতি লস-খুল্। ১ মট্টক, চলিত মট্কা।
(পুং) ২ লাজকারী। ৩ মর্র। ৪ লসক। ৫ বেট।
৬ দীপ্রিকারক। "নবজনকণ্সেকাছীতভামাদধানঃ

কুল্লনভানাং লালক: পালপানাম্।" (ঋতুসংহার ২০২৬)
লাস কী (রী) লালক-ভীব্। নর্ত্তকী। (অনর)
লাসা, (Ishanna) হিনালরের উত্তরপার্শন স্থবিস্তৃত তিকাতরাজ্যের রাজধানী। এই জনপদ ভোট ভাবার খ ভন্-প বা তুবার
প্রদেশ নামে অভিহিত। আবার তিকতীর ভাষায় লহা শক্ষের
অর্থ দেব এবং সা শক্ষে বিশ্রাম-নিকেতন। লাসা অর্থাৎ দেবস্থান।
স্থতরাং নহাসা বা লাসা শক্ষে দেবস্থানই বুঝাইরা থাকে*।

এই নগরবাসী জন সাধারণ বৌদ । বৌদ লাশচার্য ও রঞ্জি প্রকৃতি ধর্মকর্মনিরত থাকিরা এখানকার মঠে জবছান করিয়া থাকেন। ভারতবাসীর পূজ্য ও প্রসিদ্ধ বুভাক্তার শাকায়নির প্রসাদে এখানকার ধর্মমঞ্জল আজিও খৌদ্ধপ্রের উদার মত পালন করিয়া আলিতেছে, তবে বর্তমান আমাধর্মে পার্কাত্তা জাতির বোন্পা ধর্মের জনেক প্রভাব ওত্তবোত ভাবে মিলিত হইরা রহিরাছে। এই নগরে তিকাতের সর্কপ্রধান লামাচার্বা শিলাইলামাশ রাজলন্তির সম্পার হইরা রাজনত্তের প্রভাবে ধর্ম্বরাজ্য ও কর্মরাজ্য করিয়া আলিতেছেন। [তিকাত ও লামা দেখা]

বর্ত্তমান লাসা নগরীর উত্তরে শৈল শৃলোপরি পোতল গুদ্ধা নামক দলই লামার রাজপ্রাসাদ অবস্থিত। উত্তার গঠন-বৈচিত্রা এবং তথাকার অপর চুইটা প্রাসিদ্ধ সন্দারামের প্রস্তুত প্রধালী পর্যাবেক্ষণ করিলে স্বতঃই মনে বিশ্বর সমূৎপাদিত হর।



ৰবাইলামার গোডল আসাল।

দলই দারা এখানকার রাজ্যপাসন-কার্য্যের এবং ধর্মরকা ও প্রচার-বিবরের সর্কারর কর্তা হইলেও এই নগরে চীনরাজের কুইলেন জন্মন রাজন্ত বাস করেন। তাঁহালের পরামর্পমতে সাসাপতি হল্ট-সারা বাকতীর রাজকীর কার্য্য নির্মাহ করিরা বাক্ষেন। লাসাবালী উক্ত চীন-রাজকর্মচারিবরের জবীনে কসু-হে নামে কুইলেন প্রধান সোপতি আছেন। তাঁহারা ও জ লাম ও সর্বাার্য্যারে ভিজাতরাজ্যের স্থাসন ব্লোব্যের জন্ত সক্ষা বিবর্গই পরিক্ষিন করিবা বাক্ষেন। বস্তুহের নির্মন ভীনকর্মচারিকর কোসুল করিবা বাকেন। বস্তুহের নির্মন বেতনদাতা বন্ধী ও ইংরাজদেনাবিভাগের এড্জুটেন্ট ও কোরা-টটার-মাটার জেনারলের ভার কার্য করেন। একজন লসুছে ও একজন কোপুন দীবার্টাতে থাকিরা তিবাতীর নেমারলের নাধারণ পরিবর্শকের কার্য করিয়া থাকেন।

এই হই কৰ্মচারী বা সেনাধ্যকের নিজে ভিনন্দ ত্রেছে বল্প আছেন। ভাষারা চীনলাভীর এবং এক একটা সেনাবিভাগের নাবক নাত্র। ইয়াবের নধ্যে একজন বীবাইটেড ও অপন্ধ এক জন নেপান নীনাভবর্তী টিভ,রি নগরে নানৈত অব্যক্তি থাকিরা ভিন্তত নীনাভ সকা ভরিতেছেন। উক্ত দেরানারকত্রের

[🔸] এছভৰ্ষিত্ হব্ গলেন, সানা পৰে ধোজতুনি বুধার। বোজনীবার "মোজেত থেতি" বা করীয় নেবনীয় এবং ছেবু সামারণ ইয়াজে দেবনার মনে।

অধীনে ও জন চীনজাতীয় 'তিজ্পুন্' বা 'নন্কমিসন্ড অফিসার' আছেন। এতথ্নি তিবতবালোর সামরিকবিভাগে আর কোন চীন কর্মচারী নাই। রাজকীয় লাসন ও বিচারবিভাগীয় ধাবতীয় কাথা তিবতবাসী ভদ্রলোক হারা পরিচালিত হইয়া গাকে। সম্প্র (তবততে চীনরাজের প্রায় ৪ হাজার সেনা আছে। তাহার মধ্যে লাসানগরে ২ হাজার, দীবাচততে ২ হাজার, গ্যান্থগিতে ৫০০ শত ও টিভ্রিতে ৫ শত মাত্র।

लाजिका (क्री) नारमारकाछ। हेडि नाम-र्वन्। नर्खकी। ,ष्यमत्र) लाभिन् (जि) नम पिनि। नईक। जिवार छीय्। वानिनी। লাসেন (Lussen), জর্মগরাজ্যবাদী একজন প্রদিদ্ধ পণ্ডিত ও শব্দবিৎ। স্প্রোতিষ, বিজ্ঞান প্রভৃতি বিষয়ে তাঁহার অসাধারণ বাৎপত্তি ছিল। তিনি ১৯শ শতাব্যের প্রারম্ভে বিগুমান ছিলেন। সংহত, আরবী, পারদী, প্রীকৃ, হিন্তু, লাটন প্রভৃতি প্রাচ্য ও প্রতীন্য ভাষাসমূহ জালোচনা করিয়া জত্তদেশের প্রাচীন গ্রন্থাদি এবং ভারতীয় শিলালিপি ও আসিরীয় কোণাকার লিপি হইতে প্রত্তত্ত উদ্ধার করিয়া ডিনি জগদাসীকে স্বীয় গবেষণায় চমৎক্ত করিয়াভিলেন। তাঁহার রচিত যে গ্রন্থগুলি সে সময়ে মুদ্রিত হটমা মুরোপে প্রচারিত হইয়াছিল, নিমে তাহার একটা তালিকা দেওয়া গেল:—Commentario Geographica atque Historica de Pentapomia Indica 5539 থুষ্টাব্দে, বর্ নগরে; Die Altpersischen, ১৮৩৬ খুষ্টাব্দে, কায়েল নগরে; Die Taprobane Insula ১৮৪৪ খুটাব্দে, Indische Alterthum Skunde ৰা ভারতীয় প্রভত্তত্ত্ব-১৮৪৭ হটতে ১৮৬১ খুষ্টাব্দ মধ্যে ৪ খণ্ড মুদ্রিত ও প্রকাশিত হয়।

এড দ্বির তিনি গভীর অনুসন্ধিৎসাবলে তদানীস্থন আবিষ্কত কোণান্ধার শিলাকলকসমূহ হইতে ৩৯ প্রকার বিভিন্ন বর্ণনালা নিরূপণ করিয়া সাধারণের সমকে তাগার একটা তালিকা উপস্থিত করিয়াছিলেন এবং যে করপ্রকার লিপি তৎকালীন সুরোপীয় প্রেরুত্তব্বিল্ সমাজে প্রচলিত ছিল, তাহার অনেক ফলকাদি তিনি অনুবাদ করিয়া সাধারণের বোধগম্য করিতে প্রয়াস পাইয়াছিলেন।

লাক্ষোটনী (জী) > আক্ষোটনী। ২ বেধনিকা। (রারসূত্ট)
লাক্ষ্য (ক্ষী) সদ (অহলোগ্যং। পা অসাস্থ টিড গৃং।

স্তা। ২ ভৌগ্যত্তিক। (মেদিনী) ভাৰাশ্ৰর ও তালাশ্রর
নৃতা। ভাৰ ও তালের সহিত বে নৃত্য তাহাকে লাভ্য করে।

(ভরত) সঙ্গীতনারায়ৰে দিখিত আছে বে, জীগণ বে নৃত্য করে
ভাগাকে লাভ্য করে।

"প্ংনৃতাং তাওবং প্রাক্ত: স্থীনৃতাং লাজমূচ্যতে।" (সলীতনারারণ নারদস') "সন্তোগবেহচাত্ই এই বিলাক্তননোহরৈ:।

রাজনাং রমরামাস তথা রেমে তথৈব সং॥"(ভারত ১১৯৮১০)
সাহিত্যদর্শনে হাজের দশবিধ অল বর্নিত হইরাছে—

"গেরপদং হিতপাঠ্যমাসীনং পূজগন্তিকা।

প্রভেদকরিগুড়ক সৈন্ধবাধাং হিগুড়কম্॥
উত্তযোগুমককাক্তহত প্রত্যুক্তমেব চ।

লাক্তে দশবিধং হেতদলমুক্ত: মনীবিভি: ধ"(সাহিত্যদ" ৬।৫০৪)
মনীবিগণ—গেরপদ, হিতপাঠ, আসীন, পূজগন্তিকা,
প্রভেদক, ত্রিগুড়, সৈন্ধবাধা, হিগুড়ক ও উত্তযোভমক এই
দশবিধ লাক্তের অল নির্দেশ ক্রিয়াছেন।

পুং) লাভ্যব্যভেতি লাভ্-অচ্। ৪ নর্থক। (শন্র্রা°) লাখ্যক (ক্নী) লাভ্যমেব স্বার্থে কন্। নৃত্যা (শন্র্রা°) লাখ্যা (ব্রী) লাভ্যমন্ত্যভা ইতি লাভ্-অচ্-টাপ্। নর্থকী। (শন্র্রা°) লোহা (দেশজ) লাকা। লোহ্ন, পঞ্চাবের লাঙ্ডা জেলার অস্তর্গত একটী উপত্যকাও

উপবিভাগ। [লছল দেখ।]

লাহেরী (লাহেরা), বেহারবাসী জাতিবিশেষ। লাকার চুড়ি
(লাহ কা চুরি) প্রস্তুত করিয়া বিক্রয় করা ইহানের জাতীয়
ব্যবসা। ইহারা একটা স্বতন্ত্র জাতি নহে, নিয় শ্রেণীর বিভিন্ন
সম্প্রদায় হইতে গঠিত। এই অভিনব বৃত্তি অবসম্বনে "লাহা"
হইতে ইহারা লাহেরী নামে অভিহিত হইয়া থাকে। গঙ্গানদীর
উত্তর ও দক্ষিণকুলে বাসনিবন্ধন ইহাদের মধ্যে ত্রিছতিয়া ও
দক্ষিণিয়া নামে হইটী স্বতন্ত্র থাক আছে। নুরী জাতির একটা
শাথা গালার গহনা প্রস্তুত করে বলিয়া তাহারও লাহেরা শ্রেণীর
একটা থাকরণে গণ্য হইয়াছে। [লাথেরী দেখ।] ত্র

ইহাদের মধ্যে কাশী ও মছরিরা নামে হুইটী গোত্র বা প্রেণীবিভাগ আছে। সপিও সাতপুরুষ বাদ দিরা ইহারা পুত্রকভার বিবাহ হুইলে কোন দোষ হয় না, কিন্তু বালাবিবাহই প্রশন্ত। বিবাহ-প্রথা স্থানীয় সাধারণ হিল্দের মত, কেবল ব্রের পিতাকে তিলকদানের ব্যবস্থা নাই। ইহাদের মধ্যে বছবিবাহ প্রচলিত আছে। প্রথমা রী বন্ধ্যা হুইলে পুরুষ দিতীয় দার পরিগ্রহ্

বিধবারা সাগাই মতে বিবাহিত হয়। এরপ ছলে দেবরকে
বিবাহ করাই বৃক্তিসিদ, কিছ বিধবা রমণী তাহার ইচ্ছামত অল্প
পুরুষকেও বরণ করিতে পারে। স্ত্রী অসচ্চরিত্রা হইলে পঞ্চারজ্ঞের
সমক্ষে তাহার অপরাধ প্রমাণিত বা সাব্যক্ত করাইরা আমী
ভাহাকে ত্যাগ করিতে পারে। অলাতির মধ্যে বদি কেছ কোন
রমণীকে কুপপে লইরা বার, তাহা হইলে সে খীর সমাজের

প্রধানদিগকে ভোজ দিয়া অব্যাহতি পার, কিন্তু ভিন্ন-সম্মাদারের অপর পুরুষে আসক্ত হইয়া যদি ঐ রমণী পাপপত্তে লিপ্ত হয়, ভাহাঁ হইলে ভাহাকে সমাজ হইতে দুর ক্রিয়া দেওয়া হইয়া থাকেল

বেহার প্রাদেশের প্রকৃষ্ট হিন্দুর মধ্যে পুত্রকন্তার উত্তরাধিকার
মিতাক্ষরা মতে প্রচলিত আছে। ইহারা মুখে সেই মত অনুসরণ
করিনেও কার্যতঃ পঞ্চারতের আদেশেই যথাকর্ত্ত্য নির্দ্ধারণ
করিয়া থাকে। ইহাদের মধ্যে পঞ্চাবের "চূড়াবন্দা" প্রথা প্রচলিত দেখা যায়। তাহাতে স্ত্রীসংখ্যাত্মসারেই স্বামীর সম্পত্তি
বিভক্ত হয়, অর্থাৎ প্রথমা স্ত্রীর যদি একমাত্র পুত্র জন্মে এবং
বিতীয়া স্ত্রীর যদি বহ পুত্র থাকে, তাহা হইলে মৃত পিতার সম্পত্তি
ইইভাগ করিয়া প্রথমার একমাত্র পুত্র অর্জাংশের অধিকারী
হইবে এবং বিতীয়ার সন্তামগণ অপরার্দ্ধ সমভাগে বাটন করিয়া
লইবে। সম্পত্তিবন্টনকালে বিবাহিত ও নিকা-পদ্ধীর কোন
রূপ পার্থক্যধ্বাকে না।

ইহারা আপনাদিগকে গোঁড়া হিন্দু বলিয়া জানে। ভগবতীকে আরাধা দেবী জানিয়া তাঁহারই উপাসনা করে,

"কুজ হিন্দ্র অপরাপর দেবতাকে অবজ্ঞা করে না। ত্রিছতীয়
রোক্ষণগণ ইহাদের বিবাহাদি কর্মে যাজকতা করেন, তাহাতে
তাঁহারা সমাজে নিন্দনীয় হন না। বন্দী ওগোরাইয়া নামক গ্রামা
দেবতাকে প্রত্যেক গৃহস্কই পূজা করে। তাহাতে রাক্ষণের
পৌরোহিত্য আবশ্যক করে না। এই তুই দেবতাকে গৃহক্তাই
ছাগ, তুম্ব, কুটী ও মিষ্টালাদি নিবেদন করিয়া দের।

ইহারা সমাজে কোইরী ও কুন্ম,দিগের সমশ্রেণী বলিয়া বিবে-চিত ক ব্রান্ধণেরা ইহাদের জল স্পর্ল করিয়া থাকেন। গালার চুড়ী ও ধেলানা প্রস্তুত ব্যতীত ইহারা চাসবাস করে।

লাহোর, পজাবের অন্তর্গত একটা বিভাগ। লাহোর, ফিরোজপুর ও গুজরান্বালা জেলা লইরা গঠিত। ইহার উত্তরসীমা
শাহপুর ও গুজরাত জেলা; পূর্বে শিরালকোট ও অমৃতসর
জ্বো, কপূরথলা রাজ্য ও লাশ্বর জেলা। অক্ষাও ০০° ৮
ইইতে ৩২° ৩০ উ: এবং জ্রাধিও ৭৩° ১১ ৩০ ইতি ৭৫° ২৭
পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ৮৯৮৭ বর্গমাইল। এখানে ২৬টা
নগর ও ৩৮৪০টা প্রাম আছে। ছানীর কমিসনরের কর্তৃথাধীনে
পরিচালিত। [লাহোর, গুজরাণবালা ও ফিরোজপুর দেখা]
লাহোর, পলাব প্রদেশের ছোটলাটের শাসনাধীনে পরিচালিত
একটা জেলা। অক্ষাও ৩০° ৩৭ ইইতে ৩১° ৫৪ উ: এবং
জ্রাখিও ৭০° ৪০ ১৫ ইইতে ৭৫° ১ পু:। ভূপরিমাণ ৩৬৪৮
বর্গমাইল। লাহোর বিভাগের মধ্যাংশ লইরা এই জেলা

গঠিত। ইহার উত্তর পশ্চিমে গুজরান্বালা, উত্তরপূর্বে অমৃতসর দক্ষিণপূর্বে শতক্ষ নদী এবং দক্ষিণপশ্চিমে মন্টগোমরি জেলা।

সমগ্র পরাব প্রদেশের ৩২টি জেনার মধ্যে লোকদংখ্যান্ত্র্সারে ইহা তৃতীর এবং ভূমির পরিমাণান্ত্র্সারে একাদশ স্থানীর। ইহা চারিটি স্বতন্ধ তহসীলে বিভক্ত। শরণপুর তহসীল ইরাবতী নদীর বহিভূতি প্রদেশ লইয়া গঠিত। দক্ষিণান্তিমার্কের চূনিরান তহসীল ইরাবতী ও শতক্রর মধান্ত্রলে অবস্থিত, কহন তহনীল শতক্রন কুলে বিস্তৃত এবং উত্তরপূর্ক্সার্কের লাহোর তহসীল ইরাবতীতট ইইতে শতক্রতীরবর্ত্তী কহন উপ্রিভাগ পর্যন্ত পরিবাণ্ড।

এই জেলার প্রাকৃতিক সৌল্প্য বছই মনোরম। শতক্র হইতে ইরাবতী এবং তথা হইতে রেক্না-দোয়াব নামক শতক্ষ্ক অন্তর্কেদীর মধ্যত্বল প্রান্ত এই জেলা বিস্তৃত। শতক্র, ইরাবতী ও দেখ নামক নদীত্রয় প্রভৃত ক্রমিষ্ট জল বহন করিয়া এই জেলার অবিকাংশস্থান, বিশেষতঃ উক্ত নদীত্রয়প্রবাহিত অববাহিকা ও উপত্যকা প্রদেশ উর্ব্বর করিয়া তুলিয়াছে। ঐ শ্রামল শতক্রেন সমূহ যেন সমান্তর্মাল বন্ধনীর স্তার উপত্যকাভূমের স্থানে স্থানে এক একটী গণ্ডশৈল বেইন করিয়া আছে। প্রত্যায়ন্ত উর্বরতার সাবারণের নিক্ট স্প্রিচিত মহিলাছে।

শতদ্র ইরাবতী নদীর মধ্যন্তলে মাঝা নামক অধিত্যকা বা উচ্চভূমি অবস্থিত। উহা একসন্মে শিথকাতির আদি বাস-ভূমি বলিয়া প্রাসেক হিল। সেই বিশ্বত প্রদেশের উত্তরাংশ উক্সার শভক্ষেত্রপরিশোভিত রহিয়াছে, কিছ তাহারই দক্ষিণাংশ ক্রমণঃ ক্ষীণকলেবর হইয়া অনুস্বর মরভুমে পরিণত হইয়াছে। উহার नर्कात्मसारत्न नामान्य माजात्र चान कात्म बटले, किन्छ भारत ता নদীতে জল নাথাকায় তত বেশী তুল গজায় না। বৰা ভিল অভান্ত ঋতুতে তথার যে তৃণ ও গুলাদি বিরাজিত থাকে, তাহা ভক্ষণ করিয়া উট্টুগণ জীবন ধারণ করিয়া থাকে। ব্র্ধার জ্লে সেই সকল ভূণ সঞ্জীব হইয়া আবার বাড়িতে থাকে। তথন সেই अत्र९ ज्नपूर्व आखत गर्नामित्र **ठाउनार्थ वात्युङ २हेगा** शारक। मत्था मत्था এक এकটी शंख्याम वृष्टे दत्र वत्छ, किन्न এই উচ্চভূমির অধিকাংশ স্থানেই প্রাচীন পুষ্টরিণী, কুণ, নগর ও তুর্গাদির ধ্বস্ত নিদর্শন নিপতিত দেখিয়া অনুমান হয় যে, এই অধিত্যকা ভূমিতে এক সমরে একটা অসমূদ্ধ জাতির বাস ছিল। সেই আতীত গৌরবন্ধতি আজিও ভগ মটালিকাসমূহ বহন করিয়া আস্থি-তেছে। শতক্র নদী হইতে কিছু দ্রে পূর্বাপশ্চিমে বিশ্বত একটা উक्त वीथ नृष्टे रह, देश (बरे'म वा' कृषित निक्निमीमा निर्देश कृषि-তেছে। এই বাধ इंटरफ मंगीकीत পर्यास्त दय बिटकांगाकात উর্বরভূমি পভিত রহিরাছে, তাহা হীতার নামে খ্যাত। ইরাবতী নৰীর পৰিষয় কুৰাংশে নানা হৃক্ষ এবং ফল ও ফুল জয়িতে

দেখা যার। তাহার উত্তরপশ্চিম অভিমূখে দেখ নদী তীর পর্য্যস্ত বিস্তীপ ভূপণ্ড জনসারত।

উপরোক নদীসমূহের অববাহিকা প্রদেশ এবং থালপ্রবা-হিত স্থান ব্যতীত এই স্থেলার আরু কোথাও পর্যাপ্ত শশু উৎপর হয় না। জলের অভাবই তাহার একমাত্র কারণ। বেখানে কুপ থনন করিয়া জল পাওয়া যায়, অথবা থাল হইতে বা অশু কোন করিম উপায়ে শশুকেত্রে জলসেচন করা যায়, তথার অভাশু জেলার সমান শশু উৎপাদন করিতে পারা যায়; কিন্তু বিশেষ চেটা করিলেও তথায় শিয়ালকোট, হিসিরারপুর বা জালজরের ভালে শশুভাৎপাদন করা যায় না।

हेतावडी नहीं এই क्षिणांत्र मधा निम्ना এवः लाट्यांत्र नशस्त्रत স্মিকট দিয়া প্রবাহিত। মধ্যে মধ্যে ইহার জলগতি পার্কতা ভ্নিতে বাধা প্রাপ্ত হইয়া নানা শাথা-প্রশাথায় বিভক্ত হইয়াও পুনরায় কিছু দূরে আসিয়া পরস্পরে সন্মিলিত হইয়াছে। শৃতক্র ও বিগাশা নদী একণে জেলার সীমাস্তভাগে পরস্পারে মিলিত হইয়া প্রবাহিত রহিয়াছে। এক সময়ে উহা স্বতন্ত্র শাথায় এই জেলার মধ্যে প্রবাহিত থাকিয়া সিদ্ধনদে মিলিত হইয়াছিল। এখনও মাঁঝার পূর্ব্বোক্ত বাধের নিকট বিপাশা নদীর পূর্ব্বতন খাত দৃষ্ট रुत्र। **आम्यामीनिट**शत्र गर्टमा किःवमञ्जी चार्ट्स रा, ১৭৫० থপ্তাব্দে কোন অনৈসর্গিক কারণে এই নদীর গতি পরি-বর্তিত হয়। লোকে বলিয়া থাকে, বিপাশা নদীর প্রথবস্তোত প্রবাহিত হইয়া এইম্বানে তপস্থানিরত শিথগুরুর কুটার ভাসাইয়া লইয়া যায়। সাধকপ্রবর তাহাতে কুপিত হইয়া অভিসম্পাত করেন। তদবধি তৎপ্রদেশে বিপাশার গতিরোধ হইয়াছে। কস্র ও চুনিয়ান নগর এবং বহুসংখ্যক প্রাচীন গগুগ্রাম এই পুরাতন নদীগর্ভের পার্বে অবস্থিত।

চাসবাসের স্থবিধার জন্ম এই জেলার চড় দিকে থাল কাটিয়া ভূমির উর্পরতাশকি বৃদ্ধি করা হইসাছে। তদ্মধ্যে নানা শাথা বিস্তৃত বড়িদোরাব থাল বিশেষ উল্লেথযোগ্য। ইহা শতক্র হইতে আরম্ভ করিয়া লাহোর নগর ও মিঞান্ মীরের সেনানিবাসের মধ্য নিয়া প্রবাহিত হইয়া নিয়াজবেগের নিকট ইরাবতীতে সংযুক্ত হইয়াছে। ইহার কস্থর শাখা ও সোব্রাওন শাখা পুনরায় ঘুরিয়া শতক্রতে মিশিরাছে। মোগলসম্রাট্ শাহজহানের প্রসিদ্ধ স্থাতি জালীমর্দ্দন খাঁ এখানকার হস্নী খাল কাটাইয়াছিলেন। উহা পুর্কে শালিমারের বিখ্যাত উদ্যান ও কোয়ারার জল সরবরাহ করিত, কিন্তু এক্ষণে বড়িদোরার খালের কলেবর প্রই করিভেছে। এতত্তির কটোরা, খান্বা ও সোহাগ নামকু তিনটী খাত শতক্রর গর্ভ হইতে কাটাইয়া মান্যা ও উক্ত নদীর মধ্যবত্তী ব্রিকোণ্যকার ভূমিভাগে জলগান ক্রা হইতেছে।

এথানে কীকর, সিরীষ, তুখ, ঝন্দ, বান, ফুলাহি, করীল, শিশু, আম, বকাইন, আমলতা, বর্ণা, পিপুল, বট প্রভৃতি বৃক্ষ প্রধানতঃ জরে । বনভাগে অস্তান্ত নানালাতীর বৃক্ষ এবং নেক্ডে চিতা, নীলগাই, বনবরাহ ও হরিণাদি পশু এবুং নদীতীর প্রভৃতি স্থানে নানালাতীয় পক্ষী বিচরণ করিতে দেখা বায়।

বহু পূর্ব্বকাল হইতে এই জেলা আর্যা-সভাতার কেন্দ্রহল ছিল। এখনও জনশৃত্য বনাস্তরাল-প্রদেশত্ব ধ্বস্ত নগর এবং কৃপত্যগাদি ভাষার পরিচয় প্রদান করিতেছে। ঐ সকল প্রাচীন কীর্দ্তি অপেক্ষাকৃত উচ্চভূমে অবস্থিত থাকায় অমুমান হয় যে, তৎকালে এখানকার জলরাশি অপেক্ষাকৃত উচ্চ স্তরে প্রবাহিত ছিল এবং অধিক সম্ভব ভৎকালীন ফ্রশিক্ষিত ও সভ্যাদেশবাসিগণ স্থাকৌশলে আপনাদের প্রতিষ্ঠিত নগরাদিতে জলান্যনে সমর্থ হইয়াভিলেন। এখনও সেই প্রাচীন আর্যান্সভ্যতার কএকটী মাত্র নিদর্শন এখানে পরিলক্ষিত হইরা থাকে।

এই জেলার ইতিহাস লাহোর নগরের ইতির্ত্তর সহিত সর্ক্তোভাবে সংযুক। উক্ত নগরের নামাহসারেই এই জেলার নামকরণ হইয়াছে। আফগানস্থান পর্যান্ত বিস্থৃত একটী স্থ প্রশক্ত রাস্তার উপর অবহিত হওয়ার, এই নগর মাকিদনবীর আল্লেক্ট্রন্টালারের ভারতাক্রমণের পূর্ব্ব হইতেও পাশ্চাতা বৈদৈশিক শক্ত হত্তে আক্রান্ত হইয়াছে। পঞ্চনদের সহিত গান্ধারাজ্যের সমন্ধ মহাভারতাদি প্রাচীন গ্রন্থে বির্ত দেখা যায়। ইস্লামন্ধর্মপ্রোত রোধ করিবার জন্ম এক সময়ে এই নগরে হিন্দুধর্মের একটী প্রবল কেন্দ্র হাপিত হইয়াছিল। তদনস্তর গজনীরাজ্ব বংশ এখানে রাজধানী স্থাপন করিলে, ধীরে ধীরে মুসলমান ক্লেউ তিনিবেশ স্থাপন করিতে আরম্ভ করে। অতঃপর মোক্সমাটিত্বন গল কিছুকালের জন্ম এখানে রাজপাট স্থাপন করিয়াছিলেন।

মহারাজ রণজিৎ সিংহের অভাসরে এই স্থান উর্নতির উচ্চতর সোপানে আরোহণ করিতে আরম্ভ করে এবং ক্রেনে উহা
পঞ্চনদ রাজ্যের রাজধানীরূপে পরিগণিত হয়। বর্ত্তমান সমন্ত্রে
উহা ইংরাজাধিক্ত একটা স্থবিস্ত্ত প্রদেশের বিচারসদ্র্রূপে

তথাতিত রহিয়াছে।

মাকিদনপতি আলেকসান্দার যে সমরে ভারত আক্রিক্সাকরেন, সেই সমরে লাহোর জনপদের প্রসিদ্ধির বিশেষ কোক্সাপরিচর পাওরা যার না। খুঁহীর ৭ম শতাব্দে বখন চীন-পরিবাজক বৌদ্ধতীর্থ পরিদর্শনে ভারতবর্থে আগমন করেন, তখন জিনি এই স্থান অতিক্রম করিয়া জালদ্ধরে উপস্থিত হইয়াছিলেন। তংকালে লাহোর নগর বাদ্ধণাধর্মের কেক্সন্থান ছিল। উক্ত শতাব্দের শেষভাগে বখন মুসলমানগণ সর্বপ্রথম ভারতবর্ধ আক্রমণ করেন, তখন লাহোর নগরে আজ্বনীর রাজবংশের এক্সন রাজা

রাজ্য করিভেন। সেই সময় হইতে প্রায় ভিন শভাব্দ কাল এখানকার হিন্দুরাজগণ মুসলমান আক্রমণ হইতে পঞ্চনত আছেশ রক্ষা করিরা আসিতেছিলেন। বৃষ্টীর ১০ম শভাকের শেবভাগে গজনীপতি ফুলভান সৰজ্গীন প্ৰবল ৰভাৱ ভাৰ খীৰ বিশুল भूगनमानवाहिनौ गहेबा हिन्तूकानविकात अञ्चन बन । नारहाबताक ব্দরপান মুদলমানদেনার হতে পরাজিত হইরা হতাবহুদরে অগ্নি-कूए आन विगर्कन करतन । हेरात किंद्रकान भरत गंबनीताब হুৰতান মাজুৰ ভারতবুৰ্গনে আসিরা পেলাবর সলিকটে জর-পালের পুত্র অনঙ্গপ্রালকে পরাস্ত করিয়া। সমলে অগ্রসর হন এবং পঞ্চনদের সমীপত্ব অভান্ত প্রদেশ জর ও লুঠন করিয়া বছ ধনরত্ন সঞ্জপুর্ক্ত স্বরাজ্যে প্রত্যাবৃত্ত হন। অনদ্রণাদকে জন্ন করিবার অমোদশবর্ষ পরে তিনি পুনরায় ভারতে আসিয়া লাহোর অধিকার করেন। তদবধি ঐ স্থান কোন না কোন মুদলমান-রাজবংশেরই অধিকারে থাকে। শিধজাতির অভ্যূদরে এধানকার মুসলমান-রাজবংশ হীনপ্রভ হয় এবং শিধসর্দারগণ এই স্থানে স্মাধিপত্য বিত্তার করিয়া ক্রমাররে রাজাশাসন করিতে থাকেন। পঞ্চাব-दक्लेती महाबास त्रशंकिर जिरहत जमत जारहात बासशानी निध-্রগারবের পরাকাষ্টা প্রদর্শনু করিয়াছিল।

স্বিত্তণীন, মাজুদ, জরণাল ও জনজপাল দেও। স্বিত্তান মাজুদের অধন্তন আটজন গজনীরাজের রাজত্বালে লাহোরনগর মৃসলমান রাজ-প্রতিনিধির ছারা শাসিত হুইরাছিল। ১০২ প্রতালে সেলজ্ক্-(তাতার) গণ গজনীর স্বলতানকৈ পরাজয় করিরা তাঁহার সিংহাসন অধিকার করিলে, তিনি ভারতে পলাইয়া আইসেন। তদবধি মহম্মদ ঘোরীর জারজবিজ্লয় পর্যান্ত লাহোর নগর উক্ত রাজবংশের এবং ভারতীর মুসলমান-সাম্রাজ্যের রাজধানীরূপে পরিগণিত হুইতে থাকে। মহম্মদ ছোরী ১১৯০ পুরীলে দিল্লী অধিকারপুর্ক্ক তথার রাজপাট ও রাজধানী হানান্তরিত করেন। বিললী ও তুগলকবংশীর পাঠান রাজগণের রাজফ্বলৈ লাহোর নগরের উল্লেখযোগ্য কোন পরির্ভ্বন সাধিত হল্ব নাই।

কুও৯৭ খুটালে মোগলী সন্ধার তৈম্ব ভারত আক্রমণ করেন।
ত্রীহার একজন সেনাপতি অরং এই নগর পূর্কন করেন।
তৎকালে লাহোর দম্পূর্ণরূপে প্রীহীন হইরা পড়িরাছিল। ১৪০৬
ভুটালে বহুলোল গোলী ভারত-সাত্রাজ্যের জ্বীবর হইরা সাহোর
আক্রমণ ও অধিকার করেন। তাঁহার পৌত্র অপতান ইত্রাহিম
গোলীর রাজ্যকালে এখানকার আক্রমান পাসনকর্তা রাজ্যেহী।
ভ্রীর বোগল-সত্রাট্ বাবর পাহকে ভারতাক্রমণে আমন্ত্রণ করিলে,
কাবর ১৫২৪ গুটাকে লাহেরিপ্রাক্তে আসিরা উপনীত হন।
লাহোলের নিকটে ইত্রাহিনের সেনাদলের স্থিত বাবরের বৃদ্ধ

হর। বাণর ইত্রাহিমকে পরাভ করিরা পাংহারনগর পুঠন করিরাছিলেন।

১৫২৬ খু টান্দে বাবর প্নরার ভারত আক্রমণ করেন।
পাণিপথের প্রসিদ্ধ বুদ্ধে পাঠানরালকে পরাস্ত করিরা তিনি দিল্লী
অধিকারপূর্কক ভারতে মোগদ-দান্তাল্যের প্রতিষ্ঠা করিরাছিলেন।
ভারত সামাল্যে এই রাজবংশের প্রভাব স্থপ্রতিষ্ঠিত হইবায় সলে
সলেই লাহোর নগরের প্রীর্দ্ধি সাধিত হর। মোগদসমাট্ গণের
রাজপ্রাসাদ এবং রাজপুলবগণের নানা শিরসম্বিত অটালিকা
ও স্বাধিমন্দির প্রভৃতি অভ্যাপি মোগদকীর্ভির গৌরব জ্ঞাপন
করিতেছে। [লাহোর নগর দেখ।]

১৭০৮ খুষ্টাব্দে পার্যাপতি নাদির শাহ অপ্রতিহত গতিতে এই জনপদের মধ্য দিরা ভারতে আগমনপূর্বক মোগলরাজপজিকে পদদলিত করিরাছিলেন। তাঁহার অকসাৎ আক্রমণ ও বিজয়-লাভ সন্দর্শন করিরা বলবীর্যাসন্পন্ন শিথকাতি আপনাদের হুদরে অভাখানের এক অভিনব আশা সঞ্চারিত করিতে লাগিল। 🖦 इस नानरकत्र धर्म्मण भूर्याहे छाहारवत ह्याव वृष्मृत हहेग्रा সমগ্ৰ পঞ্চাবে ধীরে ধীরে একটা জাতীর শক্তি বিভার করিয়া-ছিল। শিখগণ দেই ধর্মান্ত্রের ক্ষত্বলে ক্রমণঃ একভাবদ্ধ ও বলাবপ্ত হইয়া বৈদেশিকের পদাযাত আগত জ্ঞান করেন এবং সাগ্রহে সকলে বৈদেশিক রাজার অধীনতাপাশ উচ্ছেদের প্রয়াস তাঁহারা প্রথমে দম্যুর জান দলবদ্ধ হইরা ইতগুত: লুঠন হারা ধনরত্ব সঞ্চরপূর্বকে পঞ্চাবের এক একটা প্রদেশে স্থাররূপে শাসন বিভার করেন। পরে তাঁহারা পরস্পরে স্থি-লিত হইবা চুই বা ভিনটী মিশ্লে এক একটা শক্তিপঞ্জ সংগঠন-পূর্ব্বক প্রবল শত্রুর আক্রমণ হইডে খনেশ রক্ষা করিতে অগ্রসর হইরাছিলেন। [পঞ্জাব ও শিধ দেখ।]

১৭৪৮ খু টাকে হ্রাণী সন্ধার আন্ধণাই আরেলালী লাহোর আক্রমণ করেন। এই সম্বে মুসলমান শত্রুগাণের উপযুস্পরি আক্রমণ ও লুঠনে লাহোরনগর ও তাহার চতুশাবিবর্তী হান উৎসর বার এবং জনশৃত্র হইরা পড়ে; শিখগণ এই সমরে বথেই বীরত্ব প্রদর্শন করিয়াছিলেন। ১৭৬৭ খু টাকে আজ্মন লাহ শেববার ভারত লুঠন ও বিজ্ঞর করিয়া হলেশে প্রত্যাগমন করেন। ভাহার পর প্রার্থ ৩০ বংসর কাল লাহোর নগরে আর কোনজ্লপ জ্ঞাচার ও জবিচার ঘটে নাই এবং উভত শিখসভ্রালয় এই সমরে কোনজ্লপ যুদ্ধিপ্রহে ক্লিট্ট না ইইরা বয়ং ক্রমণঃ বলপুই ইইতেছিল। সমগ্র লাহোর জেলার তৎকালে ভলী মিশ্লের ভিন জন সন্ধার জাসন আপন প্রভাষ বিশ্বার্থ করিয়াছিলেন।

স্থান্ত প্রীপে শিগস্থার স্থানিৎসিংহ আঞ্চলন-আক্রমণ-কারী জনান শাহের নিকট হইতে সাহোর সম্প্রিক্তি লাভ করিবা খীর স্থান্ত করে প্রতিষ্ঠার সভান করেন । আহলে আনি খীর বৃদ্ধি ও
ভুক্তকে সমগ্র পঞ্জাব প্রেরণের স্থানীবর্গতে উরীজ করিব। "পঞ্জাব কেন্দ্রী নহারাজ রপজিৎ সিংল" বসিলা বিলোধিক হইরাছিলেন ভাষার বিপুল উভানে স্কানীরক্তরেভিজার স্পর্কিত এই পঞ্চনদ-রাজ্য ভবংশধরগণের পারক্তাভিজ স্পকাবে এবং গৃহবিপ্পরে অচিরে জানে প্রাথা হয়। তৎপত্তই লাবোরে বৃট্টিশ শাসনাধিকার স্থানক ক্ষ্মান । রিজ্জিৎসিংহ ও পঞ্চাব দেও।]

পঞ্চাৰ-অলেশ-শাসক্ষয়ে ১৮৪৩ খৃ টানের ডিসেম্বর মাসে
ইংরাক্সাক্ষ কাহোর ক্রমতে প্রতিনিধিসভার (Conneil of Regency) প্রতিটা করেন একং ইংরেক রেসিডেন্টই প্রকৃতসক্ষেত্র তথেলে লাহোরের প্রধান শাসনকর্তা হইয়াছিলেন।

তীহার অনভিনতে কোন নিধস্কারই রাজ্ঞানাসনস্কোন্ত কোন
কার্যাই সম্পাদন করিতে পারিতেম না। ১৮৪৯ খৃ টানের ২৯এ
মার্চ বিতীর নিধযুদ্ধের অবসান হয়। যুবক মহারাজ দলীপ
সিংহ ইংরাক্সেরে লাহোর রাজ্যের শাসনভার সমর্পন করিয়া
করং রাজ্পন ত্যাগ করেন। তদববি এই জেলার শাসনকার্যা
ইংরাজের শাসনপ্রণালীতে পরিচালিত হইডেছে।

[अफ़्रांजिंद, नरानहान जिंद अ नवील जिंद (मर्थ ।] ১৮৫९ मुडोरम निभारी विख्लारित नमन अधानकात मिळान-মীর সেনাবাদের দেশীর সেনাদল বিজ্ঞোহী হইরা লাহোর তুর্গ আক্রমণের ষড়বন্ধ করে। সৌভাগ্যক্রমে তাহাদের গুপ্তকল্পনা ব্ৰটীশ গৰমে কট আনিতে পারেন। ইংরাজসেনাপতি: তথাকার ইংবাল-কামানবাহী ও পদাতিক সেনাদলের সাহায়ে সেই বিদ্রোহী সেনাদলকে बनीकृष कतियां छाशांसत्र निक्षे हरेए खन्न नेन কাজিয়া শম। তাহাতে তাহাদের পোবিত আশা বার্থ হইলেও লাহোর রাজ্যের বিজ্ঞোহবন্ধি উপশ্যিত হয় নাই। দীর্ঘকাল-बाती निभारी-विद्याद्वत नमन्न ज्थाकान निथ्नाव मत्या मत्या ইংরাজরাক্তক সশক্ষিত করিরা তুলিরাছিল। উক্ত বর্বের জুলাই मारन मिकान-मीत्रक २७ नःशाक देवनीत श्रवाधिक वन विकाशी हरें बा कथक कम मानाबकरक निरुष्ठ करत थवा बाष्णानसूथिक ধুলিরাশির মধ্য দিয়া গোপনে পলাইরা বার। অযুক্তস্রের एए पृष्ठी क्रियमञ्ज सिः कुशान-शतिहानिक धक्यन है श्वासताना हेबाव्छी नहीं करें काहारबढ़ नचूचीन शहेबा यूक करता। अहे वृद्ध तिनीद भवां जिक्का राज्युर्गक्ररभ विभवां छ इत । जवनखत विद्वी-নগরের অধঃশন্তন পর্যন্ত ইংরাজরাজ লাহোর রক্ষার বেশ অৰন্দোৰত কৰিয়াছিলেন। বিদ্ধী মাজধানী ইংয়াজের পদানত रुरेन (पश्चिम अथानकात विद्वारी यन देश्वाद्वम यनगीर्थ ७ বীবৰ বেধিয়া ক্ষিত্ৰ ও আসৰুক্ত হটয়া পড়ে 🗓 ভছৰত্বি এখানে আর কোনরণ বিপদের সূচনা হয় নাই।

লাহোর নগন্ধ ও দিঞ্জান্দীর-গোলাবালার, কহন, ব্লিন্দিন পর্টি, ক্ষেম্বর্ণ, রাজা করু ও প্রান্থিকে নগর এবানকার অংসের বাণিলাছান। খুদিরান্ ও শর্মপুরে নিউনিসিপালিটী থাকিলেও লোকসংখ্যা সর্বাপেকা অর। প্রমেন্ট সাহারো এবং দেশীর লোকের যত্ত্বে প্রতিষ্ঠিত বিভালর রাজীত্ত্ব এই সকল নগরে আমেরিকান বাধিত মিসন, চার্চ মিসনরি সোনাইটা ও ক্রেনানা দিশন শিক্ষা-বিত্তার ও খুইপর্ম্মধ্যার্মকরে বিভালর প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। ১৮৬৩ খুঠাকে লঙ্কন রিশিলস্ টুক্ট সোনাইটার সহবোগে পঞ্চার রিশিলস্ টুক্ট সোনাইটা এখানকার আর্ণাহ্যাণী বাজারে একটা প্রকাগার হাপন করিয়াছে।

ইংরাজরাক পঞ্চাব বিভাগে স্থাশিকা ও স্থান্ত্রন বিস্তাকে প্রস্থাসী হইরা স্থানে স্থানে বথারীতি রাজকর্মচারী নিয়োগ করিয়াছেন। শিকাবিস্তারপ্রসঙ্গে তাঁহারা পঞ্জাব ইউনিভার্নি টা প্রতিষ্ঠা করেন। বাহোর নগরের ওরিএন্টাল কলেজ. গ্ৰমেণ্ট কলেজ, ট্ৰেনিং কলেজ, নাৰ্যাল বিভালর সমূহ, ৰুল অব্-আট (চিত্ৰ বিভালর), ল' বুছু, ৰেমানা-মিশনের व्यशीत ७ व्याप्यितका अभितिहित्रान विज्ञान क्रीत পরিচালিত বিভালয়সমূহ, চার্চমিসনারি সোসাটীর কর্তৃত্বাধীনে রক্ষিত সেন্ট্রনস্ ডিভিনিট স্থ্য এবং রুরোপীর দেশীর ৰালকবালিকাদিগের শিক্ষার্থে নানা বিভালর এই ইউনিভার্মিটীর নিয়মাধীনে চলিতেছে। কমরবিভাগে ১৮৭৪ খ্র: আ: একটা শ্রমজীবী বিভালর (School of Industry) স্থাপিত হয় । উহাতে এথনও কাৰ্পেট ও বস্ত্ৰবয়ন, সলমা চুমকীর কাল, দক্ষির কাৰ, চৰ্ম ও ধাতুর শিক্ষাভূষ্য প্ৰভৃতি শিক্ষা ছেওৱা ছব্ৰ-ছ এডব্রির মেডিকাল কলেজ, মেওহাসপাতাল, ভেটারিলারি কুল (পণ্ডচিকিৎদার বিভালর) ও বুনাটিক এদাইলাম (পার্টিলা-গারহ) এখানকার রোগবিঞানশিক্ষার বিশেষ উপযোগী হইরাছে।

এই বেলার অথিবাসীদিগের মধ্যে জাট জাতির সংখ্যাই অথিক। উহারা প্রথমনতঃ ক্রবিজীবী। উহারের প্রায় মর আনা তাগ অর্থাৎ ৮০ হাজার লোক পূর্বাপক্ষরিগের আচরিত হিন্দু বা শিথধর্ম পালন করিতেকে এবং অবশিষ্টাংশ ইস্লায়ুরবর্মর আন্তর প্রহণ করিবাছে। অপরাণক্ত অধিবাসিগন হিন্দু হইলেও সুস্পমানজ্ঞক্তির সাহচর্যা হেন্তু অবেকাংশে আপনাবের বর্ষাক্তরে মুন্লমানের আচারাদি মিল্লিড করিরা কেনিতেকে; কোন কোন আভির লাখা ইস্লায়বর্ষদীক্ষিতের বংশবর বলিরা পরিচিত হইবা রহিবাছে। এই পেরোক প্রেমীর মধ্যে হ্বরা, অরাইন, রাজপ্ত, জুলাহা, অরোৱা, করি, কুরার, তর্গান, মিল্লি, কেলী, বিন্বার, রাজপ্ত, স্থানা, ব্যরারা, করি, ক্রার, তর্গান, ব্যরার, করিনানা, ব্যর্কা, ব্যোগাহ, করের ও ব্যেরারা জাতিই

केंद्राबटराना । हैशायत बरवा हिंगू ७ ज्यमधान ट्या दिवर ७ नाश्रत रात । श्रक्त प्रनमामकारण त बरवा ट्या , एवाचा, वाजीरात्रत रेमतक, नाठीन, क्यूरी ७ त्याधनहे श्रधान । हैशाता नकरण निता, श्रति वा श्रमाची वश्रावनही ।

জ দক্ষা অধিবাসীর মধ্যে নিজেবিকাংশই ক্ববিজীনী।
কচকাংশ নিজা ও সভ্যতাগুলে রাজকার্যে অথবা অব্যাপনা
কার্যে নিযুক্ত আছে। নিয়ক্তর প্রজাবৃদ্ধ গৃহকর্মে নিয়ন্ত বাকিরা
অব্যাপরের বাসক অব্যাদন করিয়া জীক্ষা অভিযাহিত করে।
অন্তেশকাক্ষত বনী লোকে ব্যবসা বাণিত্য অব্যাদন করিয়া কেহ
বা সুটোগিরি করিয়া দিনপাত করিতেছে।

এখানে রবি 'ও ধরিফ ছুই প্রকার শু**চুই উৎপন্ন হর। তর্ন**ধ্যে গম, যব, ধান্ত, জোয়ার, বঞ্রা, মনা, ছোলা এবং তৈলশন্ত ও অস্তান্ত শক্ত প্রধান। তুলা, ভামাক ও শণ এবানে পর্যাপ্ত উৎপन्न इत्र । यह नकन मच त्मोकांशरव, तनशरव अवर यांना-রোচণে নানা দুরবর্তী ছালে রপ্তানী হইরা থাকে। সিদ্ধ-প্লাব-দিল্লী এবং ইণ্ডাস্ভেলী রেলপথ দিল্লা এই জেলার প্ৰান্তব্য রার্থিক হইয়া করাটী ৰক্ষরে স্মানীত হইয়া খাকে। অপর দিকে নদান পঞ্জাব ষ্টেট্ রেলগথ পেলবার ও উত্তর-পশ্চিম সীমান্তে এখানকার মাল পত্র লইরা ঘাই-তেছে ৷ গ্রাণ্ডটাক্রোড নামক পর্থ ইরাবতী ও শকক নদীর ্দেত অতিক্রম করিয়া লাহোর নগর হইতে উত্তরাভিমুধে পে প্রার প্রান্ত গিরাছে। ঐ পথে এবং জেলার অপরাপর নগর-সংযুক্ত পৰে এবানকার পণ্যস্রব্য গোশকটে নিরন্তর বাতায়াত कतिराज्य । स्वितिहे ७ धारतासनीत करनत नरशा धार्थान आज, क्मनारमंद, कृषेकम, कून, मकाह, ध्रात्मा, त्मनात्रा, ज्ञानात्रम, কল্সা, দাড়িম, সরবতী দেবু ও কম্বনী প্রচুর পাওয়া বার।

২ উক্ত জেলার একটা তহসীল। বড়িলোরাবের উক্তরপূর্ব-বিভাগ লইনা গঠিত। ভূপরিমাণ ৭৪॰ বর্গমাইল। অক্ষা ৩১°১০ ৩৬ হইতে ৩১°৪৪ টা এবং জাবি ৭৪°২'৪৪ হইতে ৭৪°৪২' পু:। এখানে ৭টা খানা, ৪৯৬ রেওলার প্রিক্ত ৩২২ জন-এক্ষে চেইবান কাছে।

লাহোরনগার, পঞ্জাব আবেশের রাজবানী ও নাবোর বিভাগের বিচার সদর। ইরাবতী নধীর অর্ডকোশ রাজবানী (অবলা ৩৯° ০র্গ টে॰ এবং রাখি° ৭৪°২১' পৃত্ত) অর্জবিক। প্রাচীন লাবোরনগরের ব্যাবশেষের উপর বর্জনাম নগার হাপিত হুইলেও এখন ভাষার স্কুলক প্রাচীন বীর্কি প্রাস্থান করিছে পারে নাই। অভাপি ইতভাতঃ বিভিন্ত নানা প্রাচীন নির্দ্ধি অতীত স্থানির ক্রীবিশাসা সাধারণের নরনগণের সমুখিত রবিরাহে।

नार्राक्ष मन्द्रत्व स शामिन सेविन्छ क व्यवस्थ नवरक वानिक

কোননাশ লখিলের এনাথ পাওরা বার নাই। জানীর বিন্দৃত্যনার
কিংববর্তী অনুসরণ করিলে জানা বার যে,রাহারপোক্ত অবোবাধিপতি আরালচন্ত্রের রাজভকালে লাহোর জনপর কর্জনালে প্রালিজ
লাভ করিরাছিল। ভাহার ছই পুত্র গম ও কুণ শ্ব শ্ব নানার্জারে
লবাবাড় ও কুণর নগর হাপন করিরা ভদেশে আলনাক্তর লানে
বিভার করিরাছিলেন। উহাই পরে লাহোর ও কন্তর লাহে
গ্রাভ হর। কোন কোন প্রালীন সংস্কৃত গ্রহে এই হান লবারণ
(লবারন্য) নামে উলিধিত হইরাছে।

উপরোক্ত কিংবদর্ভী ব্যতীত লাহোর নগর প্রতিষ্ঠার আর কৌনরূপ অমাণ পাওয়া যায় না। আলেকসান্দারের সমসাম্যিক ঐতিহাসিকাণ এই অনপদের কোনমূপ উল্লেখ করিয়া যাম নাই. अथवा वास्थिक-यवनवःनीत्र (Green Bactrian) त्रांकगर्रभत्र অচলিত কোন প্রকার মূলা এখানকার ধ্যক্ত জুপ মধ্য হইতে আলিও ৰহিৰ্গত হয় নাই। এই সকল লক্ষ্য করিলে সহজেই অঞ্-মিত হয় যে, ভারতেতিহানের প্রাণমিক ক্ষরতায় লাহোর নগরের কোনসাপ সমূদ্দির পরিচয় ভারতবাদী অবগত ছিলেন না। খুটীর ৭ম শতান্দের প্রারম্ভে বৌধ-ধর্ম্মতত্তামুসদিৎস্থ চীম-পরি-वायक रिजेशन्तियाः चीव समनव्यातक धरे नगरवव नम्कित উল্লেখ করিয়া গিরাছেন। তাহাতে ৰোধ হয় যে, খুটার ১ম হইতে ৭ম শতান্দের মধ্যে লাহোর নগর শ্রীসমৃদ্ধিপূর্ণ থাকিয়া नाधातरणत नवन चाइडे कतिवाहिल। (श्लीव हिन्मूताअन्न धावर প্রাচীন মুসলমান-রাজগণের অধিকারকালে লাহোর নগরের धार्थिक व्यवहां कित्रण हिन, जाहा नारशत स्ननात देखिहारन ক্তকাংশে বিবৃত হইরাছে। आसमीत बांबरशीय এक सम চৌহানরাজপুত এখানে রাজক করিতেন। তথংশীর সর্গাল ও অনলপালের শাসনকাল পর্যান্ত এই স্থানে হিন্দুরাক্তপ্রভাব প্রতিষ্ঠিত ছিল। ভদনত্তর যথাক্রমে গঞ্জনী 🔉 যোরীবংনার মুদ্ৰমান অ্ৰতানগৰ পঞ্চনৰ বিজয়ের পত্ন এখানে বাজধানী স্থাপন করেন। ভাঁহারা যে স্কৃষ ক্রৌধমালার এই নগর বিভূবিত করিয়াছিলেন, ভারাদ্ধ অধিকাংশ একাণে ধ্বজাব্ছার পত্তিত।

মোগল-সন্তাট্গণের রাজ্যকালে লাহোর নগরের বীমা পরিবৃদ্ধিত এবং নানা প্রবৃহৎ অট্টালিকার ইহার প্রসম্পানিত হইরাছিল, মোগলরাল হুমায়ুন, অক্বর শাহ, আহালীর, আহ জহান ও অর্লনের এবানকার স্থাপত্য শিরের প্রাক্তি। সম্পাবন করিবাছিলেন। তাহাদের অধিকারকালে আহোর নগরের ইতিহানে প্রকৃতপক্ষে করিব উপস্থিত হুইরাছিল।

সমাট্ অক্ষয় এথানকার জর্মের আকার পরিবঞ্জিত করিয়া ভাষার সংকার সাধন করেন। ভিনি এই মগুরের চতুর্দ্ধিকে বে গ্রাচীর নির্মাণ করাইরাছিনেন, ভাছার কভকাংশ জভাপি বিভয়ান জাছে। মহারাজ রণজিংনিংছ সেই প্রাচীরই বর্তমান প্রাচীরের মধ্যে গাঁখাইরা লম। হিন্দু ও মৃসলমান-শিরের অসংখ্য নির্দদি অকবর পাছের প্রতিষ্ঠিত লাহোর হুর্পে বর্তমান দেখা বার। বর্তমান সমরে হুর্পের স্থানবিশেবে পরিবর্তন করিছে গিরা ভাহার কভকাংশ বিলোপ প্রাথ ইইরাছে। মহাজ্মা অকবর শাহের রাজ্যকালে লাহোর নগরে জনতার বৃদ্ধিন সহকারে নগরের পরিসরও বর্জিত হয়। বেখানে বহসংখ্যক লোকের বসতে ইইরাছিল, ভাহাই বর্তমান লাহোর নগর বলিরা খ্যাত রহিরাছে। প্রাচীন নগর-প্রাচীরের বহির্ভাগন্থ বর্তমান জনশৃত্ব প্রদেশে প্রকণে স্থ্রহৎ বাজার এবং বহলোকের বসতি হুইরা একটী উপক্ষ গঠিত ইইতেছে।

মোগল-সন্ত্রাট্ জাহালীর সমর সময় এখানে জাসিরা বাস ক্রিতেন। তথন লাহোর নগর সমৃদ্ধিতে ভূষিত ছিল। এখানে থাকিরা তাঁহার পুত্র খুক্ত শিভার বিলক্তে অসি ধারণ করেন। জাহালীরের রাজত্ব কালে "আদিপ্রত্থ"-সভলরিতা শিখঞ্জ অর্জুনমন্ত্র এখানকার কারাবাসে থাকিরা জীবন বিসর্জন করেন। মোগলরাজপ্রাসাদ ও রগনিৎ সিংহের ভজনমন্দিরের মধাত্বলে ধর্মার্থ জীবনদানকারী ঐ শিখগুরুর সমাধিমন্দির বিভামান রহিয়াছে। বাদশাহ জাহালীর এখানকার স্থপ্রসিদ্ধ ধার্গা (বিল্লামনিকেতন), মোতি মসজিদ ও আর্ণাকালীর সমাধিমন্দির নির্মাণ করান। জাহালীরের প্রাসাদ ইরাবতী-তীরে অবন্ধিত।

শাহরা পরীতে নির্দ্মিত জাহালীরের ওজনাগার লাহোরের একটা প্রধান ভূবণ। মুসলমান-রাজগণের ও শিথদিগের উপক্রেবে ঐ স্থ্রাসিছ সমাধিত্বন একণে জীপ্তই হইরা পড়িরাছে।
উক্ত মন্দিরের সমাধিত্বনের উপরিদেশে মর্দ্মপ্রতারনির্দ্মিত
বে স্থ্রাসিছ গব্দ ছিল, বাদলাহ অরন্ধ্যেব তাহা ভালিরা স্থানাভরে লইরা যান। জাহালীরের প্রিরতমা পত্নী ন্রজহান ও শ্রালক
জাসক ধার সমাধিমন্দিরের মর্দ্মর-প্রভরসমূহ এবং নানা বর্ণের
মীনার শিক্ষাক্ষসমূহ শিবদিগের বারা সৃষ্টিত হওরার উহা
সর্বতোভাবে জীবীন হইরা রহিরাছে।

উপরোক্ত জাহালীর-প্রাসাবের পার্যবেশ তৎপুত্র পাহজহান বাগবাহ অপেকায়ত কুলাকার আর একটা প্রাসাদ নির্বাদ করাইরাছিলেন। এখন ঐ প্রাসাবের শিরণোভা বিভয়ান আছে। উহার দর্শরপ্রায়ণ্ডলির উপর এক প্রকার কঠিন চুপকাম আঞ্চাদিত থাকার শিধস্য প্রবে পভিত হইরা সেই দর্শর-ভলি উঠাইরা লইতে পারে নাই। উক্ত সন্তাই, "ধাব্গা" প্রাসাবের বামপার্যে বারিকের ভার প্রবিধ অট্টালিকাপ্রেন্ট নির্নাণ করাইরাছিলেন। উহার মধ্যভাগে 'সমান বৃক্ক' নামে একটা অইকোণ হর্গ আছে। তাহার মধ্যপ্রাকণের বিছ্ত চাদনী নানা মুল্যবান্ প্রেয়রে খোদিত পুস্মালাদি পিরচাতুর্ব্য পূর্ণ। উহা নর লক্ষ টাকা বারে নির্দ্মিত হইরাছিল বলিরা সাধারণে "নোলাখ্" নামে প্রাসিদ্ধ। উহারই পার্থে "পিন্ মহল" নামক প্রাসাদাংশ। মহারাক্ষ রণজিৎসিংক ঐ ছানে কসিরা বৈদেশিক ও সামস্তরাজগণকে অভ্যর্থনা অথবা তাঁহাদের প্রেরিত ভূতদিগের সহিত সাক্ষাৎ করিতেন। ঐ গৃহে বসিরাই তাঁহার প্রে দলীশ সিংক ইংরাজ-গ্রমে ক্রিক হত্তে পঞ্জাবের রাজ্যভার সমর্পণ করিয়াহেন। এই কারণে উহা ইংরাজের বিশেষ আদরের জিনিব হইরাছে।

অরলজেবের চিরপ্রসিদ্ধ অত্যাচারে উৎকৃষ্টিত হইরা লাহোর-বাদী ক্রমশঃ নগর ছাড়িরা পলারন করে। তাঁহার রাজ্যাধিকারের পূর্বে জাহানাবাদ (বর্তমান দিল্লী) নগর স্থাপনকালেও কতক (রাজকর্মচারী ও রাজান্তগৃহীত ব্যক্তি) লাহোর নগর শৃক্ত করিয়া তথার বাইরা বাস করে। জাহানাবাদ-প্রতিষ্ঠার পর মোগল-সম্রাট্ গণ প্রায়ই লাহোর-রাজধানীতে পদার্পণ করিতেন না, স্থতরাং সম্রাটের স্থানত্যাগে এই নগরের ভাবী উন্নতির আশা কম জানিয়া ধীরে ধীরে জনেক নগরবাদীই লাহোর ভ্যাগ করিতে বাধ্য হইরাছিলেন।

১৮৪৬ খুটান্দে লাহোর নগরে ইংরাজরাজের Council of Regency সভা প্রতিষ্ঠিত হয় এবং ১৮৪৯ খুটান্দে মহারাজ দলীপ সিংহ ইট উন্থিয়া কোম্পানীর হত্তে পঞ্চাবের শাসনভার অর্পণ করিরা রাজসিংহাসন ত্যাগ করেন। তদবধি লাহোর ইংরাজাধিকত পঞ্চাব-প্রদেশের রাজধানীরূপে গণ্য হইরা আসিতেছে। পঞ্চান্তরে ইংরাজরাজপুরুষগণ্ও এখানকার শ্রীবৃদ্ধিন্দিন বন্ধশীল হইরা জনশা নগরভাগের উন্নতি বিধান করিতেছেন।

১৮৪৯ খুটাব্দে ইংরাজাধিকারে আসিবার পরও এই নগরের চতুপার্থবর্তী হান ভর অট্টালিকার তুপরালিতে পরিব্যাপ্ত ছিল। পূর্বতন রুরোগীরদিগের বাসগৃহ নগরের হক্ষিণছ নিরভূমে প্রাচীন গোরাখালারের চারিদিকে খাপ্ত ছিল। পরে ক্রমশঃ উহা পূর্বাই বিভ্ত হর এবং বে ছান পূর্বে ধ্বতগ্রোর অট্টালিকার ও ক্রুলে সমাজাধিত ছিল, ক্রমে মেই সফল হাম নামাবিধ সৌধনালার সমাজ্র কইরা পড়ে। তদমন্তর প্রতি বংসরে ন্তন অট্টালিকারি বিমিশ্রিত হইরা নগরের নৃতন শ্রীসম্পাদন করিতেতে।

বৰ্তমান গাহোদ্ধ নগৰ আৰু ৬০০ একন্ত কৰি কৰিব। ব্যাহা আছে। উহা পূৰ্বে আৰু ৩০ কিট্ উচ্চ ইউক্যাটীৰে পৰি- বেইত এবং ভাহার চতুন্দার্থে পরিধা ও নগররক্ষণাপবোণী হর্গ বুকুকাদিও বিনির্দ্ধিত হইরাছিল। পরে ঐ পরিধা ভরাট করিরা দেওরা হর এবং পূর্বভন ু০ কিট্ উচ্চ প্রাচীর ভগ্ন হওরার সংকারকালে উহার চতুর্দিকে ১৬ কিট্ উচ্চ প্রাচীর প্রথিত হইরাছে। প্রাচীরের চতুনার্দ্ধিক পরিধার পরিবর্ধে এক্ষণে নানা জাতীর বৃক্ষপূর্ণ উদ্ভাবে পরিশোভিত হইরা নগরের চতুর্দিক্ বেইন করিতেছে, কেবল মাত্র উত্তর্নিকের কতক স্থান থালি আছে।

ইরাবতী নদীর পলিমর সৈকতোপরি এই নগর স্থাপিত ইইলেও কালবলে বর্তমান নগরন্থান উচ্চ ন্তুলে পরিণত হই-রাছে। নগরের বপ্রস্থানের বহির্ভাগে একটা পাকা রাজা নগরকে বেষ্টন করিরাছে। ঐ পথ দিয়া প্রাচীরগাত্রন্থ ১৩টা দারপথে নগরে প্রবেশ করা যার। নগরের উত্তরপূর্ককোণে প্রাচীন নদীবাত পর্যান্ত গাহোর হুর্গ বিস্তৃত। হুর্গের সমুবন্থ ময়দান দক্ষিণ ও পূর্কদিকে বিস্তৃত রহিরাছে।

লাহার নগরের রাজাগুলি সরু ও বক্রাকার হওরার এবং
তথাকার অট্টালিকাগুলি উরত মন্তকে ও শ্রেণীবদ্ধতাবে বিশ্বিত
থাকার নগরের কোনরূপ শোভা সম্পাদিত হর নাই। ঘেঁসা
ঘেসী বাড়ী থাকার রাজাগুলি স্বভাবতঃই দেখিতে কদর্য্য,
কিন্তু মোগলসম্রাট্গণের রাজ্যকালে যে সকল অত্যুৎকৃষ্ট ও
শির্মনপুণ্যসম্বিত প্রবৃহৎ অট্টালিকা নির্মিত হইয়াছিল,
তাহা স্থানীর সাধারণ অট্টালিকাদির স্থাপত্যশিরের অভাব
ঘূচাইয়া চিত্তবিনোদনে সমর্থ হইয়াছে। মোগলকীর্তির মধ্যে
নগরের উত্তরপূর্ব্ধকোণে স্থাপিত 'স্বরন্ধকেবের মস্ক্রিদ ও
রণজিৎ সিংহের সমাধিমন্দির বিশেবরূপে উল্লেখবোগ্য। মস্জ্বিদের খেত মর্ম্মর নির্মিত গুরুত্ব ও চূড়াক্তগুর্গি; রণজিতের
সমাধিমন্দিরের বারাপ্তা ও গোল ছাদ এবং অপব্যবহৃত ও
স্পাবিত্রীকৃত মোগলপ্রাসাদের সম্মুখদেশ ভারতীর স্থাপত্যশির্মেনান্দর্যের উৎকৃষ্ট নিদর্শন।

নগরপ্রাচীরের বহির্ভাগে লাহোরী খারের সমুথে একটা রাজা দক্ষিণাভিম্থে আসিরাছে। উহা আর্থাকালী বা সদরবাজার রাজা নামে থাত। ঐ পথ দেশীর নগরভাগ রুরোলীর নিবাসের ও আর্থাকালীর পূর্বতন সেন্তানিবাসের সহিত
লংযুক্ত। লাহোর নগরের রুরোপীর বিভাগে রাজকীর কার্যালরলম্হ, আলালত ও ষ্টেশনচার্ক বিভ্নান আছে। আর্থাকালী
হইতে পূর্বাভিম্থে লরেক উভান ও গ্রমেন্ট হাউন্ পর্যার প্রার
ত মাইল বিভ্ত হানে বুরোপীরগণের বে নৃতন বসতি হইরাছে,
ভাহা ভোনাভটাউন বাবে পরিচিত। হানীর ছোটলাট সরু

মণ (Mall) নামক প্রাণত রাজা এই রুরোণীর নগরভাগের
মধ্য দিরা আর্ণাকালী পর্যান্ত গিরাছে। এই রাজার উত্তরাংশে
রেলটেসন ও রেলওরে কর্মচারীদিগের বাসস্থান এবং উহার
দক্ষিণে মুক্তক নামক নগরোপকঠে রুরোপীরগণের বাসভবন
দৃষ্ট হয়।

লাহোর নগরে নিমোক্ত কয়টা রাজকীর ও শিক্ষাবিভাগীর প্রধান অটালিকা দৃষ্ট হয়; তয়৻ধ্য পঞ্জাব-ইউনিভার্সিটা ও সেনেট হল (দেশীয় রাজা ও নবাবর্জের টাদায় প্রতিষ্ঠিত), ওরিএন্টাল কলেজ, লাহোর গবর্মেন্ট কলেজ, মেডিকাল ছুল, সেন্টাল-ট্রেনং কলেজ, ল'ভ্ল, ভেটারিনারী ছুল, লাহোর হাইছল, মেও হাসপাতাল, মিউজিয়ম, য়বাট্ল ইনিষ্টিটিউট্,লরেজ ও মন্টগোমরী হল এবং এগ্রিহটিকালচারাল সোসাইটা গৃহ দেখিবার নামনী ১৯

এখানকার প্রস্তুত রেশমিবক্ত, শাল, সোণালী ও রূপালী দাঁচ্চা জরি, ধাতব পাত্র, পাথরের খেলানা ও শক্তাদির বিস্তৃত কারবার আছে। রেলপথে করাচী বন্দরে আনীত হইরা অনেক মাল পত্র পোত যোগে বিদেশে রপ্তানী হইরা থাকে। কলিকাতা, অম্বালা, পেশবার, মূলতান ও দিল্লী প্রতৃতি ভারতের প্রস্তুত্ত কারতের প্রস্তুত্ত হানীর এবং যুরোপীর বণিক্সমিতির অর্থসমাগমের সচ্ছলতা নিবন্ধন এখানে বেক্ল ব্যাহ্ব, আগ্রা ব্যাহ্ব, সিমলা ব্যাহ্ব ও এলায়েন্দ ব্যাহ্ব অব্ সিমলা প্রভৃতি আনেকগুলি ব্যাহ্ব প্রতিষ্ঠিত আছে।

লাহোরিবন্দর, বোষাই-প্রসিডেন্সীর সিদ্ধ প্রদেশের করাচীর অন্তর্গত একটা প্রাচীন ও প্রসিদ্ধ বন্দর। সিদ্ধ নদের পশ্চিমান্তিমূথে প্রবাহিত বাবিরার নামক শাখার বামকৃলে অবস্থিত। অক্ষা২৪°৩২ উ: এবং জ্রাথি° ৬৭°২৮ পু:। শিতি মোহানা হইতে
১০ ক্রোশ অদ্রে অবস্থিত। সমুদ্রের এই থাড়ির মূথে মৃত্তিকা
পড়ার থাতের গভীরতা ক্রমশঃ কমিয়া আসিতেছে। এক্ষণে
পণ্যদ্রবাবাহী ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পোত সকল সেই থাড়ি দিরা বন্দরে
আসিতে পারে না। মর্ণটন বলেন, ১৬৯৯ খঃ অন্দে ইহা সিদ্ধপ্রদেশের একটা প্রসিদ্ধ বন্দর বলিরা পরিগণিত ছিল এবং ২০০
টন বোঝাই এইরূপ পোতগুলি ক্রনারাসে এ বন্দরে প্রবেশ
ক্রিরা মাল পত্র লইরা হাইত। ক্রাইল শতাব্দের শেবভাগে
এথানে ইংরাজ বণিক্দিগের একটি কুঠা প্রতিষ্ঠিত ছিল।

এই স্থানের প্রকৃত নাম লাড়ী-বন্দর, কারণ ইহা প্রাচীন লাট বা লাড়দেশের অন্তর্ভুক্ত বলিরা ঐরণ নামকরণ হয়। পরে মুসলমান ঐতিহাসিকণণ উহাকে পঞ্চাবের নিকটক্ত্রী জানিরা লাহোর নগরের নামান্থ্যারে উহার লাহোরী বন্দর নাম দেন। ১০৩০ শ্রীকে আল্বিকণী এই নগরকে লহরাণী এবং ১৩০৩ খৃষ্টাৰে ইবন্ বতুতা সাহরি নামে উলেখ করিছাছেন। ভারিব্ ই-তাহিরি নামক ইডিহাসে লিখিত আছে,
১৫০৫ খৃষ্টালে কিরিলীগণ "লাহোরী বন্দর" আক্রমণ করে।
১৬১০ খৃষ্টালে সেন্দবারি, ১৬৬৫ খৃষ্টান্দে থেবেনেঁ এবং ১৭২৭
খৃষ্টানে আলেক্সান্দার হামিন্টন এই নগরকে লোরে বন্দর ও
লাভিবন্দর বলিরা উল্লেখ করিছাছেন। ইবন্ বড়তা বলেন, তিনি
আমীর আলাউল্ মূল্কৈর নিকট গুনিরাছেন যে, তৎকালে
এই স্থানের বার্থিক রাজস্ব ৬০ লক্ষ্টাকা আদার হইত।

লাফু (গুং) গছের গোরাপত্য।

লাভারনি (পু:) ভূজার গোরাপত্য। (শতংরা ১৪।৬।৩১) লি (পু:) ১ লান্তি, ছাতি। ২ কডি, ধ্বংস। ও শেব। ্রু সমতা। ৫ হন্তালখারভেদ।

লি, একজন চীন পার্শনিক। খৃষ্টপূর্ব্ব ৫ম শতাব্দের শেবভাগে
কর্থাৎ কনক্চির প্রায় শতাব্দ পরে বিশ্বমান ছিলেন। তিনি
ক্যানোরতিবিবরে যে মত বিস্তার করিয়া যান, তাহাই পরে চীনসামাজ্যের বৌদ্ধধ্যবিভারের পরিপোবক ইইয়াছিল।

हिंग (हैंगिन) > हीनामिशीय मूजारङम । > • निष्ट > कान्नातीन, >•• निष्ठ > मण, >••• निष्ठ > छारत्रम ⇒हेश्ताकी ६ मिनिश ।

ছ্মির প্রছঞ্জাপক মানভেদ। ২৯৩ গল বা ইংরাজী
মাইলের ফ্রাংশ। চীনপরিব্রাজক হিউএন্সিয়াং এই দৈর্ঘ্যমানে
ভারতীয় নগরাদির দুরছ জ্ঞাপন করিয়াছেন।

লি, পুলাবের কাঙ্যা জেলায় প্রবাহিত একটা নদী।[পিতি দেখা]
ভিত্তি, পলাবপ্রদেশের বসহর রাজ্যের অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম।
নাবারের অন্তর্গত পিতি ও লিপক নদীর সক্ষমন্তলে পিতির
ছব্লিণকুলে একটা গণ্ড লৈলোপরি হাণিত। অক্ষা° ৩১° ৫৩´
উঃ এবং ল্লাঘি॰ ৭৮° ৩৭´ পৃং। গ্রামের পূর্কাংলে লৈলনিখরোপরি
একটা ভগ্নগের নিদর্শন আছে, সমূলপৃষ্ঠ হইতে ৯৩৬২ ফিট্
উচ্চ। এখানকার অধিবাসিগণ ভোটলাতীর ও বৌদ্ধর্শাবলম্বী।
লিকুচ (রী) লক্ষাতে আমান্ততে ইতি লক্ষ-বাহলকাৎ উচ্
প্রোদ্রাধিদাদিক। ১ চুক্র। (রাশ্বনি॰) ২ ভহ। ভেহ্যা
কল। গুণ—পিতরেয়বর্জক।

"পিক্সেলপ্রকোশীণি কর্কদ্বলিকুচাঞ্চণি।" (চরক ক্রন্থা" ২৭অ০)
(পুং) লকুচ । (অমর)

লিকুচি, একজন পণ্ডিও। ইনি শিবস্ততিপ্রণেতা নারায়ণ পণ্ডিতের পিডা।

तिका (जी) निशा। (भनतका)

লিকা (জী) নিশ-গভৌ বাহনকাৎ শ, সচ কিং। (উণ্ ৩)৩৬)
১ মৃকাও, চলিভ নিকি। প্রায়—নিজা, সীকা, দীকা,
নিকিকা। (শসরশা•)

শ্বহণাৰাত স্থাত মৃকা লিকাক নামতঃ।" (বাভট নি৽ ১৪অ॰) ২ পরিমাণবিশেষ।

'ৰাণান্তরগতে ভানৌ বন্চাপুদৃ স্ততে রজ:।

ুভেল্ডভূভিৰ্ভবেক্লিকা নিক্ৰীয়ড়্ভিল্ড সৰ্বপঃ 🖫 (শব্দচ •)

বিধার আলোক প্রাদিতে পতিত হইলে বে কুল কুল রজাকণা বেখিতে পাওরা বার, তাহাকে অণু কহে, চারিটা অপুতে এক শিকা এবং ৬ শিকার এক সর্বপ হর।

লিফ্রিকা (খ্রী) শিকা। (শবর্ত্বা৽)

লিখ, গতি। ভাৃদি° পরতৈ সক° সেট। এই ধাতু ইদিব। লট্ লিমাভি। লুঙ্জলিমীং।

লিখা, লেখন, অক্ষরবিশ্বাস। তুলাদি° পরকৈ সক° সেটু।
লট্ লিখতি। নিট্ লিলেখ। লুট্ লেখিডা। লুট্ লেখিছাতি।
লুঙ্ আলেখীৎ, আলেখিষ্টাং আলেখিষ্:। সন্ নিলিখিষতি,
নিলেখিষতি। যঙ্ লেলিখাতে। নিচ্—লেখছতি। লুঙ্
আলীলিখৎ। উদ্+লিখ=উল্লেখন, কর্ষণ। বি+লিখ=
বিলেখন, ভেদ।

লিখ (জি) লিখতীতি লিখ (ইগুপধজ্ঞেতি। পা ৩।১।১৩৫) ইতিক। লেখক।

লিখন (क्री) লিখ-লাট। ১ লেখন, লিপি। বিধিলিপি অথগুনীয়, বিধাতা যাহা অদৃষ্টে লিখিয়াছেন, তাহা থগুন করিবার কাহারও সাধ্য নাই।

"যন্ত যদ্বিথনং পূৰ্বং যত্ৰ কালে নিদ্ধণিতম্।
তদেব পণ্ডিত্ং রাধে কম্যে নাহঞ্চ কো বিধিঃ ॥
বিধাতৃশ্চ বিধাতাহং বেষাং যদ্বিথনং ক্ৰতম্।
বন্ধাদীনাঞ্চ কুডাগাং ন তৎ পণ্ডাং ক্লাচন ॥"
(বন্ধবৈৰ্ত্তপূণ্ডি জ্ৰীক্ষকম্মখ ১ ৫ অ ০)

লিখা (দেশজ) নিধনকার্য। লিখাবং (হিন্দী) ১ হন্তনিপি। ২ নিধিত দনিলপত্র। লিখিথিক্ল (পুং) মন্ত্র।

লিখি, বোধাই প্রেসিডেনীর মহিকাছা এজেনীর অন্তর্ভুক্ত একটা কুল সামন্ত রাজা। এথানকার স্থারগণ ঠাকুর উপাধিধারী মুক্বানা কোলীবংশোত্তব। ইহারা ইংরাজরাজ অথবা কোন নেশার রাজাকে কর বেন না। জ্যেষ্ঠপুত্রই রাজ্যাধিকার পাইরা থাকে। ইংরাজ গ্রমেন্টের অন্তর্মাণিত স্তক্তরহণের কোন ব্যবস্থাপত্র বা স্ক্রীইহাদের নাই।

লিখিত (নী) নিখ-ভাষে জ্ঞা > নিসি। ২ নেখম।
(ভয়ত) নিখ—কৰ্মনি জ্ঞা (ফ্লি) ও নিখিত প্ৰাদি।
"প্ৰমাণং নিখিতং ভূজিণ নামিকক্সি নীৰ্ভিন্ন।"

(নিভাকরামুভ বাজন্য)

৩ ধর্মপানের প্রবোধক ক্ষিতেল ৷ ইনি বে সংহিতা প্রপরন করিরাছেন, ডাহাকে দিখিতসংহিতা কছে ৷ এই সংহিতা উনবিংশসংহিতার মধ্যে একখানি

শপরাশরব্যাসশন্ধলিবিতা দক্ষগোত্তরী।

শাতাতপো বশিষ্ঠন ধর্মনাত্ত্রপ্রবিজ্ঞানী । শিক্তপুরুষদিগের প্রান্ধকালে, ধর্মনাত্ত্রপ্রবান্ধক এই সকল
ক্ষির নাম উচ্চারণ করিতে হয়।

লিখিতরুদ্রে, একজন প্রাচীন বৈরাকরণ। রারমুক্ট ইংার মত উক্ত করিরাছেন।

লিথিতন্মৃতি, একথানি প্রাচীন স্থতি। বাজবদ্য প্রান্ততি ইঁহার উল্লেখ করিরাছেন।

লিখ্যা (ন্ত্রী)> কীটবিলেবের ডিব। ২ পরিমাণবিলেম, লিকা পরিমাণ। [লিকা শব্দ দেখ।]

লিগা, গতি। ভাগি পরদৈ সক সেট। এই থাড় ইদিং।

লট্লিলতি। নিট্লিলিল। নৃঙ্ অলিলীং। নিগ—চিত্ৰণ,

চিত্ৰক্রণ। চুরাদি পরদৈ নক সেট্। লট্লিক্রতি, নৃঙ্
অলিলিকং।

লিগ্ (ইংরাজী) ভূমির দ্রস্থজাপক পরিমাণভেদ (League)। তিন মাইলে ১ লিগ্ হয়।

লিও (রী) নিক্তি বিষয়াৎ বিষয়াস্বরং গছতে নিগ (অফশং-কুপীবৃনীলকুলিও। উণ্ ১০০৭) ইতি কুপ্রত্যায়ন সাধু। ১ মন। (উজ্জ্বল) (পুং) ২ মুর্থ। ও ভূপ্রাদেশ। ৪ মুগ। (নানার্থরক্রমালা)

লিঙ্, তিঙ্ ভেদ। পাণিনিজে ধাতুর উত্তর লিঙ্এই ১৮টা প্রতার হয়, তর্মধ্যে পরকৈপদী ধাতুর উত্তর পরকৈপদ, আত্মনেপদী ধাতুর উত্তর পরকৈপদ, আত্মনেপদ ও পরকৈপদ এই ছইই হয়। এই বিভক্তি বথা, পরকৈপদ—যাৎ, যাতাং বৃদ্। যাদ, যাতং, যাত। যাং, যাব, যাম। ঈত, ঈরাতাং, ঈরন্। ঈথাদ, ঈরাথাং ঈথবং। ঈর, ঈবহি, ঈমহি। এই ১টা করিয়া বিভক্তি তিনটা পুরুষে বিভক্ত, প্রথমপুরুষ, মধ্যমপুরুষ ও উত্তরপুরুষ। এই এক এক পুরুষ একবচন, ছিব্রচন ও বছবচনক্রপে বিভক্ত। বথা—যাং, যাতাং বৃদ্। ইহা পরক্ষেপদের প্রথমপুরুষ এবং বাং এক যচন, যাতাং বৃদ্। ইহা পরক্ষেপদের প্রথমপুরুষ এবং বাং এক বচন, যাতাং ছিব্রচন ও বৃদ্ বহুবচন বিদ্যা জানিতে ছুইবে। লিঙ্কে সাধারণতঃ বিধিলিঙ্ করে। বিধি অর্থে শাতুর উত্তর বিধিলিঙ্ হয়। বিধি বিবিধ—প্রবর্কবিধি ও নিবর্তবিধি।

্রিবনেষ বিবরণ বাজুপালে দেখ।]
লিক্স (জী) নিজাতে জনেন ইতি নিজ-বঞ্ । 'প্যুনি বঞ্চপ'
ইতি নির্মেছণি অভিধানাৎ জীবনিজয়ং। ১ চিক্ত।

"ৰেম লিলেন যো দেশো যুক্তঃ সমুশ্লক্মকে ।
তেনৈৰ নাৰা তং দেশং ৰাচ্যমান্ত্ৰনীবিশঃ #"গ্ৰান্ত ১৷২া১২)
২ অন্থান । ৩ সাংখ্যাক প্ৰকৃতি ।
"তত্ৰ জনামনগৰুতং হংখং প্ৰায়োতি চেভনঃ প্ৰকৃষঃ ।
লিক্তাবিনিবৃত্তেভ্যাদ্যুংখং বভাবেন ॥" (সাংখ্যকা" ৫৫)
সাংখ্যমতে মূল প্ৰকৃতিই লিল এবং প্ৰকৃতির বিকৃতিকার্যাও
লিক সামে ক্থিত ।

"হেতুমদনিত্যমব্যাপি সক্রিয়মনেকমাশ্রিতং নিক্ষ: ।
সাবদ্ধং পরজ্ঞাং ব্যক্তং বিপরীত্মব্যক্তম্ ॥" (সাংখ্যকা" >•)
কিকৃতি ভাহার প্রকৃতিতে দীন হয় বলিয়া ভাহাকে নিক্ষ
করে। সাংখ্যতত্তকামুদীতে নিধিত ভাছে বে 'লয়ং গছতীড্রি নিক্ষং' লয়প্রাপ্ত হয় বলিয়া উহাকে নিক্ষ করে। বিকৃতিশব্দ দেখ

৪ ব্যাপ্য। ৫ বাক্ত। ৬ পুংস্থাদি। "একা নিলে গুলে তিল্লন্তথৈকত্ৰ করে দশ।

উভয়ো: দপ্ত লাভব্যা মূল: গুদ্ধিমন্তীপাতা ॥" (মহ ৫।১৩৬) > ৬ সামর্থ্য ৷

"থাৰতামেৰ ধাতৃনাং লিঙ্গং ঋড়িগতং ভবেৎ। অৰ্থনৈত্বাভিধেয়ন্ত তাৰ্বিভিগ্নিগ্ৰহঃ॥" (তিথিতন্ত্ৰ)

৭ শেক। পর্যার—শিল্প, অরবস্থা, উপত্ব, মদনার্শ, কল্পমুবল, মেহন, শেকন্, মেতু, লালু, ধ্বল, রাগলতা, হাল, লালুল,
সাধন, সেফ, কামার্শ। (জটাধর)

তত্ত্বে লিখিত আছে বে, লিজমূলে স্বাধিষ্ঠান নামক মুদ্দুৰ্গ প্ন আছে, এই পল্লে বকার আদি করিয়া লকার প্রীয়েত্ব বৰ্ণ থাকে।

শ্বাধারে ত্রিকোণাথে ইজাজানক্রিয়াপ্তক।
মধ্যে স্বরন্থনিকত্ত কোটিস্থাসমপ্রভন্॥
ভবাজে হেমবর্ণাভং ব স বর্ণচতুর্দলম্।
তদুর্কেংমিসমপ্রথাং বড় দলং হীরকপ্রভম্॥
বাদি লাক্ত বড় বর্ণেন যুক্তঞাধিষ্ঠানসংক্রকম্।
স্বাদেন পরং লিকং স্বাধিষ্ঠানং ততো বিছঃ ॥" (তম্ম)

লিকের গুড়াগুড় কক্ষণ সামুদ্রিকে এইরূপ বর্ণিত হইরাছে;—লিক বড় হইলে গীর্থজীবী, ক্ষুদ্র হইলে ধনী এবং হুল হইলে নিঃসন্তান ও দরিক্র হর। লিক বামদিকে নগু হইরা থাকিলে মহুবা নিঃসন্তান ও নির্ধন, কক্ষিণদিকে বক্র হুইরা থাকিলে প্রবান ও নির্বিক্ত নত হইরা থাকিলে প্রবান ও নির্বিক্ত নত হইরা থাকিলে প্রবান ও নির্বিক্ত নত হুইরা থাকিলে প্রবান ও নির্বিক্ত নত ক্রী থাকিলে প্রবান ও নির্বিক্ত নত ক্রী থাকিলে প্রবান ক্রিক্ত হুইলে প্রাদি, নানাবিধ প্রথমন্দদ্র হুর। গীর্ষালক হুইলে প্রবাদ, হুল্লিক হুইলে ক্রিক্ত, হুল্লিক হুইলে ক্রিক্ত হর। লিক হুইলে ভার্যাবান এবং লম্বুলিক হুইলে রাক্তা হর। লিক

কঠিন ও কৰ্কণ হইলে প্রস্তীরত; লিক ফুফবর্ণ, স্ক্র বা রক্তবর্ণ হইলে অ্থী, পরস্তীগামী ও কামিনীজনপ্রির হয়। কুল বা রক্তবর্ণ লিক হইলে মন্তব্যের উদ্ভব্য স্ত্রী, রাজ্য ও অ্থ সম্পদ্ হইরা থাকে।

৮ শিবমূর্ত্তিবিশেষ, শিবলিজ। হিন্দুমাত্রেরই এই লিজপুরা অবশু কর্ত্তব্য। পাত্রে শিবলিজপুরার অনস্ত ফল ক্থিত হইরাছে। এমন কি আক্ষণের শিবলিজপুরা না করিরা জল-গ্রহণও করিতে নাই।

মহাদেব কিকল্প এই শিল্পন্নপ প্রাপ্ত হইরাছিলেন, তাহার বিষয় পালোত্তরে এইরূপ নির্দিষ্ট হইরাছে,—

"বেশ্বিমাহং দিলপ্ৰেষ্ঠ কজজিপুরহস্তকঃ ।
কন্মাদিগাহিতং জপং প্ৰাপ্তবান্ সহ ভাব্যনা ॥
বোনিসিন্ধজপঞ্চ কথং ভাবে স্মহান্ধানঃ ।
পঞ্চবক্ত শুভুৰ্কাহঃ শূলপাণিজিলোচনঃ ॥
কথং বিগহিতং জপং প্ৰাপ্তবান্ দিজপুঞ্চৰ।
এতৎ সৰ্কাং সমাচক্ষ্ মিত্ৰাবঞ্গনন্দন ॥"

(পদাপু° উত্তর্থ° ৭৮ অ°)

দেবাদিদেব মহাদেব ভার্যার সহিত এই বিগহিত রূপ কেন প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, দিলীপ বলিঠের নিকট এই প্রশ্ন করিলে, ভগবান্ বলিঠদেব ইহার উত্তরে বলিয়াছিলেন যে, পূর্ব-কালে স্বারস্ত্র মন্বস্তরে মন্দরপর্কাতে অধিগণ এক দীর্ঘলত্রের অনুষ্ঠান করেন, সেই যজ্ঞে সকল মুনি সমাগত হইলে মুমিগণ পরস্পারে কালোচনা করিয়াছিলেন যে, বেদবিদ্ আক্ষণদিগের মধ্যে কোন্ দেবতা পূল্য, তাহা আপনারা নির্দেশ করন। তথন ঋবিগণ সকলেই একবাক্যে বলিয়াছিলেন, আমাদের এই সংশ্রচ্ছেদ করি-

বার জন্ম ব্রহ্মা বিষ্ণু ও মহেশবের নিকট গমন করা কর্ত্তব্য। অনস্তর ভাঁহাদিগকে অবলোকন ও প্রণাম করিলে যিনি বিশুদ্ধ সম্বপ্তণ-व्यथान विनित्र त्वाथ रहेरव, किनिहे भागामत शृक्षनीत्र रहेरवन । তথন श्विशन ममत्वे रहेवां खालाम देकनातम त्रवानित्वव महा-দেবের নিকট গমন করিলেন। ঋষিগণ ছারদেশে উপস্থিত হইয়া দেখিলেন বার রুদ্ধ, निम श्रांत्रांस রক্ষা করিতেছে। তথন ঋষিগণ নন্দিকে কহিলেন, তুমি শীঘ্র গিয়া মহাদেবকে আমাদিগের আগমনবুত্তান্ত নিবেদন কর। আমরা প্রণাম করিবার জন্ম উপ-স্থিত হইরাছি। নন্দি তখন পরুষ বাক্যে অবজ্ঞার সহিত অমিত-তেজাঃ প্রবিগণকে কহিলেন, তোমাদের যদি জীবনের ভর থাকে. ভাহা হইলে এখনই প্রস্থান কর, দেবাদিদেবের সহিত সাক্ষাৎ হইবে না. তিনি দেবী পার্বতীর সহিত ক্রীড়া করিতেছেন। নন্দি এই কথা বলিলে ঋষিগণ বছদিন তথার অবস্থান করিলেন. তথাচ তাঁহার সাক্ষাৎ লাভ হইল না। তথন প্রবল তপোদৃপ্ত মহর্ষি ভৃগু অতিশন্ন ক্রোধপরারণ হইরা মহাদেষকে নিয়োক্ত ন্ধণ শাপ প্রদান করেন,"হে শন্ধর ! তুমি নারীসঙ্গমে প্রমন্ত হইয়া श्रामामिशत्क श्रवमानना कृतिशाह, ञ्रख्ताः (यानिनिक्रयत्रभ ভোমার মূর্ত্তি হইবে। ভোমার নিকট ব্রাহ্মণগণ উপদ্ভিত হই-রাছে, তাহা তুমি জানিতে পার নাই, এইজ্বন্ত তোমায় নিবেদিত জল, অন্ন, পুষ্প, পত্র প্রভৃতি সকলই অগ্রাহ্ন হইবে এবং ব্রাহ্মণগণ ভোমার পূজা করিবে না, যদি পূজা করে, তাহা হইলে অব্ৰহ্মণ্যত্ব প্ৰাপ্ত হইবে। ভত্মলিকান্থিধারী যে সকল লোক ক্সভক্ত হইবে, তাহারা পাষ্ঠত্ব প্রাপ্ত হইবে।" ভূগু এইরূপ শাপ দিয়া মুনিদিগের সহিত ব্রহ্মলোকে ব্রহ্মার নিকট গমন कदिरलम् ।

"এবমুক্তভতত্ত্বং কৈলাসং মুনিসভমঃ।
জগাম বামদেবেন যতাতে ব্যভধবকঃ।
গৃহ্যারম্পাগম্য শহরক মহাদ্দনঃ।
শ্লহতং মহারোজং নন্দিং দৃষ্ট্যারবীদ্বিজঃ।
সংপ্রান্তো হি ভৃগুর্বিশ্রো হরং দ্রষ্ট্রং ব্রোভমম্।
নিবেদয়প মাং শীজং শহরার মহাদ্দনে॥
তত্ত ভহচনং শ্রুমা নন্দিঃ সর্বাগশেবরঃ।
উবাচ পদ্রমং বাকাং মহর্ষিমমিতোজসন্॥
অসারিধাঃ গ্রেভোতত দেবা ক্রীড়ভি শহরঃ।
নিবর্জপ নিবর্জপ বদি জীবিভূমিছেনি॥
এবং নিরাক্তভেন তত্তাভিক্রহাতসাঃ।
বহুনি দিবসাক্তিনি গৃহ্যারে সুনীবরঃ॥
ততঃ ক্রোধসমাবিটো ভৃগঃ প্রোবাচ শহরন্।
বিনইত্বস্যান্তা মাং ল জানাভি শহরঃ॥

 [&]quot;সহতিরার্রাখ্যাকং ক্ষমিলকে ধনী নরঃ।

 বাল্ডারহিতো লোকে খুললিকে বিপথারঃ

 মেচে বামনতে তৈব বাতাররহিতো কবেং।

 মক্রেডার্থা পুরবান্ তাবে গামিত্রাং বিনতে হবং ।

 মক্রেডার্থা পুরবান্ তাবে গামিত্রাং বিনতে হবং ।

 মুলার্থিতি লিকে কবেবং পুরালিনিয়েতঃ
 রীবলিকেন বার্থিয়াং স্থানিকেন বির্ধানঃ।

 রুনলিকেন সৌভাগাং ক্রমনিকেন কুশতিং ।

 রুনলিকেন সৌভাগাং ক্রমনিকেন কুশতিং ।

 রুনারে চ নবা বানীং নির্ধানো কর্মিক ক্রমন্ ।

 রুনারিকেন ক্রেমনেন ক্রমিকেন কুশতিং ।

 শর্মারে রিভাবে নার্মীনাং ব্যাভার ক্রমন্ ।

 রুনানিকেন সংক্রমন্ত্রাকার্যাং ব্যাভারের ।

 রুনারিকেন সংক্রমন্ত্রাকার্যাং প্রক্রমন্ত্রাকার্যাং

 রুনারিকেন সংক্রমন্ত্রাকার্যাং প্রক্রমন্ত্রাকার্যাং

 রারাং ব্যাক্রমন্ত্রাক্রমন্ত্রাক্রমান্ত্রাক্রমান্তর্যাক্রমান্তর্যাক্রমান্তর্যাক্রমান্তর্যাক্রমান্তর্যাক্রমান্তর্যাক্রমান্তর্যাক্রমান্তর্যাকরমান

নারীসলসমত্তোহসৌ বন্ধালামবমন্ততে।
বোনিলিক্তরূপং বৈ রূপং তন্ধাৎ ভবিত্যতি ॥
বান্ধণং মাং ন জানাতি তমলা চাপ্যপাগতঃ।
আবন্ধনাপরো ন প্রোহসৌ বিজ্ঞানান্ ॥
তমার কলমন্ত তমৈ দত্তং হবিতথা।
বিশ্বভারং জলকৈব পত্রং পূর্ণাং কলাদ্রিকন্।
নির্মাল্যানভ চাগ্রাহং ভবিহাতি ন সংশলঃ ॥
এবং শশুনা মহাতেজাঃ শহুরং লোকপ্রিতন্।
উবাচ গণমত্যগ্রং নুনিং শূলভ্তং নূপ॥
কন্দ্রভক্তাশ্চ বে লোকে ভন্মনিলাহিধারিলঃ।
তে পাধগুছমাপরা বেদবাহন ভবিত্ত বৈ ॥"

(পদাপু • উত্তর্থ • ৭৮ অ°)

নিপ্রপ্রাণপাঠে জানা যায় যে, দেবর্ধি নারদ কলেদেবের প্রিত্র তীর্থক্ষেত্রসমূহ সন্দর্শন করিয়া তত্তৎস্থানে নিপ্রপৃত্ধা করিয়াছিলেন। (১।১২) ঐ নিপ্ল কি, এবং কেনই বা তাহা সংসারে সকলের পূজ্য হইয়াছে, তাহা স্ততের অভিব্যক্তিতে স্পষ্টই প্রতীয়মান হয়।

শশ্বস্থাত গ্ৰহণ শেষ্য স্থান শ্ৰহ্ম প্ৰকাশকম্।
বৰ্ণবিষমব্যক্তলক্ষণং বছণা স্থিতম্।
অকারেকারমকারং স্থলং স্কাং পরাংপরম্।
ওকাররপম্থক্ত: সাম জিহবাসম্বিতম্।
অধানপুরুষাতীতং প্রলুরোংপত্তিবর্জিতম্
॥
তমসা কালক্ষণাথাং রজনা কনকাগুলম্।
সাহ্মে সর্কাং বিষ্ণুং নিশু পদে মহেশ্রম্।
প্রধানবিরবং ব্যাপ্য সপ্তধাধিষ্ঠিতং ক্রমাং।
পূলং বােড়শধা চৈব বড় বিংশক্মজােভবম্।
স্প্রিতিষ্ঠাসংহারলীলাথং লিক্সনিণ্ম।
প্রশায় চ বথান্তারং বক্ষো লিজােভবং গুড়ম্॥

(निष्मपुः भूका)। ১৮-२०)

এই লিজরূপ সাধারণতঃ ছই প্রকার। নিজির ও নির্গণমর নিব অলিল এক্সলগৎকারণরূপ দিবই লিল। এই অলিল
নিব হুটতে লিল শিবের উৎপত্তি; তিনি রুল, ক্ষম, ক্ষমরহিত,
মহাভূতস্বরূপ, বিশ্বরূপ ও জগৎকারণ। লিল বলিলেই শিবস্বন্ধীর লিল ব্রিতে ইইবে। (নিজপু ৩। ১-১০) আবার
ক্রিক্স প্রাণের সপ্তলশ অথারের হ প্লোকে "প্রধানং লিল্লাখাতং
নিজী চ পরবেশ্বরঃ।" বছন মৃত্তে অছ্মান হয় যে, লিলই প্রধান
এবং সেই প্রধানের প্রকৃতি বা নিবশক্তি বিশেবকেই লক্ষ্য
করিয়া বহেশ্বরকে লিজী প্রবাচ্য করা হুইরাছে। উক্ত

অধ্যানের অপরাপর ক্থাপ্রসকে ব্রক্ষা ও বিভূর বিরোধ তথ্যনার্থ শতসংখ্যক কালানলসদৃশ নিজন্ধী মহাদেবের আবিভাবের কথা আছে (১৭।৩১-৩২)। নিজন্ধণ দর্শনে বিভূ ও
ব্রক্ষা বিহবল হইরা পড়িপেন। তথন অক্সাই ওঁকার বাকী
সম্বিত হইল। এই ওকারের তাৎপর্য কি তাহা নিয়োক্ত
প্লোকে বিরুত হইরাছে—

"অন্ত গিশাণভূষীজমকারং বীজিনঃ প্রভো:। উকারবোনো বৈ ক্ষিপ্তমবর্জত সমস্কত: ॥" ৬৪

অর্থাৎ বীজি মহেশ্বর নিক্ন হইতে অকার বীক্ন উৎপন্ন হইল, এবং তাহা উকারক্রপ বোনিতে নিক্নিপ্ত হইরা চতুর্জিকে বৃদ্ধি পাইতে লাগিল। এই শ্লোক বিলেষভাবে পর্য্যালোচনা করিলে স্পষ্টই বৃষা যার যে, নিক্নই স্পষ্টশক্তির পরিচারক। এই শিব-শক্তির উত্তরসাধক নিক্নপূর্তিতে যেমন শিবপূজা বিহিত হইয়াছে, সেইরূপ শক্তিবোধক যোনিমূর্তিতেও শক্তিপূজার ব্যবহা দেখা যায়।

"পীঠাকতিকমাদেবী শিক্ষপশ্চ শৃষ্করঃ। প্রতিষ্ঠাপ্য প্রয়দ্ধেন পূক্ষরন্তি স্কুরাস্করাঃ॥"

(লিলপু ৽ উত্তর্থণ ১১।৩১)

উক্ত অধ্যায়ের ৩৭ হইতে ৪০ প্লোকে লিখিত আছে বে, ব্রহ্মাদি দেবগণ, ঐশর্য্যাশালী রাজগণ, মানবগণ ও মুনিগণ সকলেই শিবলিকের পূজা করিয়া থাকেন। ভগবান বিষ্ণুপ্ত ব্রহ্মার বরপুত্র রাবণকে নিহত করিয়া সমুদ্রতীরে বিশেষ ভক্তির সহিত বিধিবৎ লিজারাধনা করিয়াছিলেন। লিলার্জনা করিলে শত ব্রাহ্মণবধন্তনিত মহাপাতক বিপুরিত হর।

একবিংশ অধ্যারের ৭৯—৮৩ লোকে লিখিত আছে বে, অলিহোত্র, বেলাধারন, বহুদক্ষিণক যজ্ঞাদি লিবলিছার্চনার এক কলাংশেরও সক্ষুল্য নহে। দিবদে একবার্মাত্র নিছার্চন-কারীও সাক্ষাৎ রুদ্র বলিরা ক্ষতি। শিবপূর্ণার ধর্ম অর্থ কাম ও মোক্ষকণ প্রান্তি ঘটে।

নির্মাণের পূর্বভাগে ২৫-২৭ অধ্যারে নিবপুলার স্থান নির্বাচন ও পূজোপকরণাদির বথাযথ বিবরণ নিপিবছ হইয়াছে। লক্তি বিনা লিবপুলা করিতে নাই। একমাত্র লিবলিল পূজার নিব ও লক্তি উভরের পূজা বনিরা পূরাণে ও তত্ত্বে তৎপূজার বিধিই কীর্ত্তিত হইরাছে ।

"দিল্পেনী বছাবেনী নিজং সাক্ষাৎ বছেন্ছঃ।
 ভ্যো: সংপূলনান্তিতাং দেবী বেক্ত পুলিতেই।"
 (প্রাণ্ডোনিন্ধার নিজপুরাণ্যচন)

আৰাঃ নিৰাৰ্চনতত্তে অভিষ্ঠিত বইনাহে বে,— "পঞ্জিং বিনা বাহেণানি প্ৰেভছঃ ডক্ত নিশ্চিতন্ত্ৰ। লিকপুলাপ্রবর্তন ও লিকোৎপত্তি বিষয় বিভিন্ন পুরাণে বিভিন্ন ক্রপ বর্ণিত হইরাছে। বামনপুরাণের ৬ট অধ্যায়ে লিকোৎপত্তি-প্রকরণে লিখিত হইরাছে, ক্রক্ষা শিবলিকমূর্ত্তি ধারণ করিরা খীর উপাসনা প্রচার জন্ম শৈব, পাশুপত, কালবদন ও কপালী নামে চারিটা দৈবসম্প্রদায় প্রবর্তিত করেন। বলিটপুল্ল শক্তি ও তাঁহার শিশ্য গোপায়ন প্রথম শৈব, তপখী ভারহাক ও তাঁহার শিশ্য সোমকাধিপতি রাজা শ্বরত পাশুপত, আপত্তম্ব ও বক ক্রাপেষর নামক বৈশ্র কালবদন, ধনদ ও তাঁহার শুদ্রবংশার শিশ্ব কন্দোলর কপালী হইরাছিলেন, ইহাতে স্পাইন্ট বুঝা যার, লিকো-পাসনাপ্রসক্ষে কালে শৈবসম্প্রদারে চারিটা শাথাবিভাগ ঘটিয়া-ছিল এবং চারিজন প্রধান যোগী ঐ বিভিন্ন মত প্রচার করেন।

কশপুরাণে বিদশনের বাৎপত্তি সম্বন্ধে বিথিত আছে;
"আকাশং বিদ্যাহিতাহে পৃথিবী তক্ত পীঠিকা।
আব্যাং সর্বাদেবানাং ব্যুনারিক্সমূচ্যতে॥" (কলপু°)
"গেহে বিস্কর্যং নার্চ্যং শাবগ্রাম্বয়ং তথা।
বে চক্রে হারকায়ান্ত নার্চ্যং ক্র্যাব্রং তথা॥
অভকাং নিবনির্দ্যাব্যাং পত্রং পূশং ফবং জনন্।
শাবগ্রামিক্যাযোগাৎ পাবনং তদ্ভবেৎ সদা॥"

আকাশ শব্দে লিক্ন এবং পৃথিবী তাহার পীঠিকা। ইহা সকল দেবতার আলার। ইহাতে সমস্ত লয়প্রাপ্ত হয় বলিয়া ইহাকে লিক্ল কহে। একগৃহে লিক্লয় পূজা করিতে নাই, এইরূপ শালগ্রাষ শিলাধ্যেরও পূজা নিষিদ্ধ। শিবের নির্দ্ধাল্য গ্রহণ করিবে না, কিন্তু শালগ্রাম শিশার যোগে নির্দ্ধাল্য গ্রহণীয়।

লিকশন্তে সাধারণতঃ শিবলিকট ব্রায়। দেবাদিদেব মহাদেব হিন্দুজগতে কি কারণে লিক্রণে প্রকটিত হইরাছিলেন এক কেনট বা হিন্দুপ্রধান ভারভভূমে তাঁহার প্রভিষ্ঠা ও পূজা আচারিত হইরাছিল, লিকপুরাণ, শিবপুরাগ্ধ ও পালোভরগওও ভাহার যথাযথ বিবরণ লিপিবছ রহিয়াছে। হিমালয় হইতে সিংহল পর্যান্ত প্রবিত্তীর্ণ ভারত-সাম্রাজ্ঞা আড়াই হাজার বর্ধের পূর্ব্ব হইতে এই লিক্ষ্তির উপাসনা প্রচলিত দেখা যার।

মতুসংহিতায় শিবশক্তি ভদ্রকালী এবং বিকুশক্তি শ্রীর উল্লেখ আছে (মতু ৬৮৯)। উজ এছের ৩১৫১-১৫২ প্লোকে বছ যাজক ও দেবলদিগের নিন্দাবাদ এবং দেব-প্রতিমার (মতু ৯২৮৫) প্রসক্ষ থাকায় মনে হয়, উহা রচিত হইবার পূর্বে প্রতিমাপূলা প্রবর্তিত হইরাছিল। রামায়ণ ও মহা-ভারতের প্রসলাধীন আখারিকা ঐতরেয় (৮২১-২৩) ও শতপগ্রাহ্মণে (১৩/৫1৪1১) থাকায় এবং মন্ততে রাম ও

শক্তিসংবোগমান্ত্ৰণ কৰ্মকৰ্ত্তা সমালিবঃ। অভএৰ মহেশানি পুলবেজিহুৰলিককৰ্ ৫° ক্ষেত্র নামোরেখ না দেখিরা অহুমান হর বে, মন্থুসংহিতাখানি অপেকারত প্রাচীন। মন্থুসংহিতা-কালে দেবগণকে স্বতাহতি দিবার বিধি ছিল, এখনকার স্থার পূল্চন্দনলিপ্ত নৈবেদ্যাদি লানের ব্যবহা ছিল কি না বলা বার না। যে বিষ্ণু ও লিব মন্থু-সংহিতা-সঙ্কলনকালে পদ ও বলের অধিষ্ঠাতা বলিরা পুজিছ ছিলেন, রামারণ, মহাভারত, পুরাণ ও তন্ত্রাদি গ্রহে তাঁহাদের মহিমা পরিবর্দ্ধিত হইমাছে; তদবধি তাঁহারা পরাৎপর পরমেশ্বর রূপে পুজিত হন।

রামারণ (৭।৩১।৪২) ও মহাভারতে সৌথিক পর্কে ৭ম জঃ
শিবলিক্ষের পরিচর জাছে। রাজতর্ত্তিনী (১।১৯৪ ও ২।১২৯-১৩০) পাঠে জানা যার যে, জলোক (Selenkos) রাজার জাধকারকালে বিজয়েশর, নন্দীশ ও ক্ষেত্রজােটেশ নামক শিবলিক্ষের পূজা প্রচলন ছিল। স্থতরাং স্বীকার করিতে হইবে যে, বৃদ্ধদেবের পূর্ক হইতেই ভারতবর্ষে গিঙ্গপূজা প্রচলিত ছিল। স্থতপুর্কে শককুষণ ও খরােষ্ট্রী রাজগণের সম্বীও লিজাপাসনার যথেট আদের ইইয়াছিল। গুপুরাঞ্চগণের শিবভক্তি কাহারও অবিদিত নাই। তাঁহাদের মুলার ক্ষিতে ব্য, ত্রিশ্ব ও শিবশক্তি সিংহবাহিনী প্রভৃতির প্রতিরূপই তাহার সাক্ষাদান করিতেছে।

কেবল উত্তরভারত বলিয়া নহে, দক্ষিণভারতেও খুইপুর্ব মে
শতাব্দে লিঙ্গারাধনা প্রচারিত ছিল। ট্রাবোর বর্ণনা হইতে
জানা যার, পাণ্ডারাজ রোমকসমাট, জগাইাসের সভার দৃত প্রেরণ
করেন, খুইপুর্ব ৩৫০ হইতে ২১৪ অন্দ মধ্যে পাণ্ডা ও চোলরাজ্য
এক হইয়া যায়। উভয় রাজ্যের প্রথমকার ভূপতিগণ লিজস্বাপক
ও শিবভক্ত ছিলেন *। দাক্ষিণাত্য হইতে লৈব ধর্মক্রোত খুষ্টীয়
ধম শতাব্দে যবহীপ ও বালিহীপে স্প্রতিষ্ঠিত হয়। তথাকার
প্রথমন নামক হানে ছইশত জ্ঞাপেকা অধিক দেবমন্দির এবং
শিব, হুগা, গণেশ, স্থ্য প্রভৃতির পাষাণ্ময় ও পিত্তলময় প্রতিমুর্ব্তি জ্ঞাপি বিথমান আছে। বি থি ও বালি দেখ।

গ্রীক্ ভৌগোশিক আরিয়ান্ কন্তাকুমারীর বর্ণনান্তলে লিথিয়া-ছেন, কুমারীনামী দেবীর নামে ঐ স্থানের নামকরণ হইয়াছে।

[•] former Sonnerat foresters,—The lingam may be looked upon as the phallus or the figure representing the virile member of Atys, the well-beloved of Cybele, and the Bacchus which they worshipped at Heiropolis. The Egyptians, Groeks and Romans had temples dedicated to Priapus, under the same form as that of the lingam. The Israelites worshipped the same figure, and erected statues to it."

[!] Vide Journal of the Indian Archipelego, vol. iii.

ইগার একটা নাম কুমারী। স্মারিরানের সমস্ব (২ন গুটান্সে)
তথার ঐ দেবীর একটা প্রতিমূর্ত্তি ছিল। সম্ভবতঃ নান্দিণাত্যপ্রাসিদ্ধ কোন শিবলিক্ষেরই উহা শক্তি চটবেন।

শ্বগৎস্টির আদিভূতা প্রকৃতিপুক্ষান্থিক। উৎপাদিকা শক্তিই স্টেতিছের মূল উপাদান আনিয়া শৈবগণ হরযার্বাজীর লিকশক্তিকেই জীবোৎপত্তির মুখ্য কারণ বলিয়া
নির্দেশ করিয়া থাকেন। যোনি ও লিকের অর্থাৎ প্রকৃতি
ও প্রবের সক্ষেই স্টেটী সাধিত হর বলিয়া তাহারই
চিহ্নস্করপ লিক্ষমূর্ত্তি সংগঠিত হইয়াছে। একটী মঞ্চলময়
ইচ্ছায় প্রণোদিত হইয়া পরমপিতা অগতের হিতসাধনার্থ
ক্রেক্তিপুরুষ্সঙ্গমে স্টেকার্য্য আরম্ভ করেন। সম্ভবতঃ
প্রকৃতির উপাসকগণ সেই লিকরপেই শিবম্ব আরোপ করিয়া
থাকিবেন। তদবধি শৈবসম্প্রদায় সেই লিকরপী যুয়মূর্তিই
শিব নাহে উপাসনা করিয়া আসিতেছে।

প্রাচীন ভারতবাদীরা সেই স্টেক্টিভিলয়ফারী অবায়ায়ার নিরাকারত্ব অপনোদন করিয়া ক্রমে লিলরপে তাঁহার সাকারত্ব করনা করিয়া আদিতেছেন এবং তাহাই ক্রমণঃ জগদাদীর উপাস্ত বিলয়া গৃহীত হইয়াছে। তথু ভারতে নতে, স্প্র্রোচীন চীন, গ্রীক ও রোমকজাতির মধ্যেও নিলোপাদনা প্রচলিত ছিল। ধরামকদিগের মধ্যে "প্রিয়াপস্" এবং গ্রীকগণের মধ্যে "কালাদ্" নামে লিলম্তিসমূহ পরিচিত ছিল। তিব্বতীয়দিগের উপাস্ত লিলম্তিভিল চীনভাষায় হবঙ্-হি-মূহ্ নামে কথিত। ইদ্রাইলগণও পূর্ব্বে লিলপ্রা করিত। মকায় যে মকেশ্বর লিলম্তি আছে, তাহা এক সময়ে ইদ্রাইলগণের উপাস্ত ছিল। ভবিয়পুরাণে ব্রালপর্ব্বে এই মকেশ্বর লিলের উল্লেখ পাওয়া যায়।

বাইবেল পাঠে জানা যায়, রেহোবোরামের পুত্র আণা তাহার মাতা মারাকাকে লিক্ষ সমক্ষে বলি দিতে নিষেধ করিয়াছিলেন। পরে তিনি কুক হটরা ঐ লিক্ষমূর্ত্তি ভার্কিয়া দেন
(1 Kinga xv. 18)। রিহুদীগণ সোৎসাহে লিক্ষরণী দেবতা বেল্ফেগোর গুপুমদ্রে দীক্ষিত হইতেন। মোরাবীয় গু মদিনাবাসিগণ কেগোর পর্বতিশ্বিত এই লিক্ষেরই উপাসনা করিতেন

তাহাদের উপাসনাপ্রতি সর্ব্বত্তাতাবে

মিশরীর্দিগের বেলকেগোর উপাসনাপ্রতির অন্তর্কণ ছিল।

ক্ষা-(Judalı)বাসিগণ পর্বতিশ্বস্ক বন চাগে এবং স্বর্হৎ বৃক্ষভলে দেবর্দ্দির ও দেবমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠা করিয়া গরম পিতার অপ্রিরভলে দেবর্দ্দির ও দেবমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠা করিয়া গরম পিতার অপ্রিরভলে হুর্মান্তিনেন। বাল্(Baal) ভাহাদের উপাস্ত ছিল এবং শিকাকার প্রস্তরগ্রন্থই উছোর মূর্তির চিক্তররূপ গৃহীত হইরাছিল। তাহারা এই দেবতার বেলী সমক্ষে ধূপ ধূমা জালাইত এবং প্রতি জমাবতার সেই শিক্ষমূর্তির সমুখন্থ এই বৃবত্ত-সমক্ষে পুলোপহার দিত। ইন্রাএল শিক্ষমূর্তির সমুখন্থ এই বৃবত্ত-মূর্তি হিন্দুর সম্বত্তগপ্রধান বালেখর শিবলিক্ষসমুখন্থ ধর্মারূদী বৃব-মূর্তির জানুরূপ। মিশরীয় ওসিরিস্ মূর্তির এপিনের সহিত্ত ইহার বথেই সাদৃশ্য জাছে। পাশ্চাত্য লেথকগণ ভ্রমক্রমে ঐ বৃবমূর্তিকে শিবায়নের নন্দী। বিশিরা উল্লেখ করিয়া থাকেন। কেহ ক্রেছ উহাকে শিবের বাহন বলেন।

কর্ণেল উড ্বলেন, আরবীয় দেবমুর্কি লাত বা অন্হাভের সহিত হিন্দুর লিকমুর্কির যথেও লাল্ভ আছে। রোমক্লাতির প্রভাববিত্তারের সহিত এই লিলোপাসনা ও মুর্ক্তিপ্রতিষ্ঠা ফ্রান্দা-রাজ্যে বিস্তৃত হয়। নিস্মেস্ নগরীর প্রসিদ্ধ সার্কাসগৃহে, ইতালীর স্থপ্রাচীন ধর্মমন্দিরসমূহে, টোলোস্ নগরের গীঞ্চার এবং বৃদ্দার কএকটা ধর্মমন্দিরে অভাপিও ঐ শিবলিকমুর্কি বিভ্যান দেখা যায়।

রাজস্বানের ইতিবৃত্তে মহাত্মা টড় লিঙ্গোপাসনার তথ নির্ণয়-প্রসঙ্গে লিখিয়াছেন.-মিশর, গ্রীক, রোমক, এমন কি, খুষ্টান-দিগের বারা বংশপরস্পরা ক্রমে শিকপুরু। সাধিত হইলেও গ্রীক phallic শব্দের বাৎপত্তিগত কোনরূপ পরিক্ষাট অর্থ নিরাক্লড হয়। অধিকসম্ভব, দেবভাষা সংস্কৃতের জনস্থিতা আদি আর্যা-ভাষা হইতেই এই শন্দের ব্যুৎপত্তি সিদ্ধ হইরা থাকিবে। সর্ব্ধ-সিদ্ধিপ্রদাতা ফলেশ শব্দে ঈশবের শিক্ষ আরোপ ক্রিরা গ্রীক ফালাশ শব্দের উৎপত্তি করনা করিলে শব্দার্থের প্রকৃতি-প্রত্যন্ত্রসাধ্য কোনরূপ বৈষম্য ঘটে না, বরং তাহা হইলে ওসিরিসের সহিত শিবশিক্ষের অভান্ত বিষয়ে অনেক সামঞ্জত সাধিত হইতে পারে। উভয় দেবতাই নদীর অধিষ্ঠাতী। ওসিরিস যেমন ইথিওপিয়ার অন্তর্গত চন্দ্রটেশ্লনিঃস্ত নীল-নদের (Nile) অধিষ্ঠাতা, ঈশরও সেইরূপ সিন্ধুনদ (ইহার অপর নাম নীল-ফিরিস্তা) ও চম্রগিরিনি:স্থত গলার পতি। এই চক্রপিরিভ্যারারত কৈলাসশিখনে শিব পার্বভীসহ বিবাজিত বলিয়া পুরাণে বর্ণিত হইয়াছে। গ্রীকবাসী মিশরীয়দিগের নিকট ছইতে, অথবা তাহাদের অনুরূপ উপারেই এই ফলেশ *শিকপুর*ার

W. Taylor's Ex. & Analy. of Mack, Manus, and Jour. Roy. As, Soc. vol III. & 202-218.

[#] ছাঞ্চিণাতে। শিৰবাছন বুণের অপর একটা নাম নলী।

[&]quot;छेनुकर वृष्कर त्रवि मात्रा नमी अमीर्विकः !" (निमार्कतकरम् ६५ गहेन)

[†] মুতাৰ্কের লেখনী হইতে জানা বার যে, নিশরীর দেখা। গুনিরিল্ সঞ্চাত্তি লিসমণে বিমালিত (with the Prinque exposed) ছিলেন। Ptah Bokari সৃত্তিও নিমাণ আকারে অধর্ণিত ইইরা বাবে। এইমাণ নিমমূর্ত্তি সকল তংকালে Ptah Sokari Osiri নাবে আগ্রেছিম।

পছতি প্রাপ্ত হইয়া থাকিবেন। তাহায়া কলের আকারে কিলমূর্তি
দাপন অথবা কথন কথন সেই কলকেই দেবতারূপে পূজা
করিতেন। ইহাতে স্পাঠই উপলব্ধি হয় বে, সংস্কৃত সকল
ফলেশ (ফল+ঈশ) হইতে প্রীক্ত Phalins শল গৃহীত
হইয়াছে। ফাস্কনে নবপল্লব, পূলা ও কলভারে অবনত
কুল্মাজি যথন ধরিত্রীকে নবাধরে ভূবিত করিয়া শোভা দান
করে, তথন জগদ্বাসী আপনাপন ইউনেবভাকে অভীপ্ত কলপূপাণানে তুই করিতেন। আবহমান কাল হইতে কাল্পনাবে
এই প্রোৎসব বিহিত হইয়া আসিতেছে ।

বাসস্তীনেধীর (Goddess of the Spring Saturnalia) এই ফাল্কন মহোৎসব, প্রীক্লিগের ডাইওনিসেরাসের ফালো-সিরা উৎসব, মিসরের ফাল্লিফা (Phulles) এবং হিল্লুছানের ফল্গুংসব বা হোলিফার সহিত যথেষ্ট সাদৃশু আছে। বসস্তোৎস্বরে পর ফাল্কন মাসে শিবরাত্রিতে পর্বে এবং চড়ক সংক্রান্তিতে শিবকে বিহুফল, নারিকেল প্রভৃতি ফলনানের বিধি আছে। [মদনমহোৎসব ও বসস্তোৎসব দেখ।]

আর্যাক্সাতির ও ভারতীয় আর্যাসমাজের প্রথমারক লিকপুরার চিরন্তন পক্ষতি, উৎপত্তি ও বিস্তারের সমাক্ ইতির্ভ বিল্পু
হইয়া মিশরবাসীর ছায় ক্রমশঃ কিংবদন্তীমূল হইয়া পড়িতেছে।
পরবর্ত্তিকালে লিক্সাদি মহাপুরাণে এবং তদ্মাদি শান্তে লিক্সার্চন
বিধি শতমভাবে ও তৎসামন্ত্রিক রীতি অনুসারে লিপিবক
হইয়াছে বলিয়া অনুমিত হয়। সেই আদিম উপাসনাশক্ষতির
কতকাংশ অর্থাৎ লৌকিক ও কৌলিক আচারাদি বে উহাতে
গৃহীত হয় নাই, এয়প সিদ্ধান্ত করা কোন ক্রমেই যুক্তিসিক
মাহে। রাজা কাম্বিশ্ পৌত্তলিক ধর্ম্বের বিরোধী হইয়া
পুরোহিতদিগকে দণ্ড দেন এবং পবিত্র এসিস্ ধ্বংস করেন।

দেৱণ কঠোরাচার অবশ্যন করিয়াও তিনি লিলোপাসনা উচ্ছেদ করিতে পারেন নাই। পরবর্ত্তিকালে প্রীক্ ও রোমকজাতি নীলনদের অববাহিকা প্রদেশ জর করিয়া নিশরীর দেবমগুলী রক্ষা করিয়াছিলেন। ভাঁছারা ভক্তিচিন্তে দেই সেই দেবতার বন্দির সংকার করিয়া তাহা স্থাপত্যশিরে পরিলোভিত করেন ।

খৃষ্ঠানধর্মের অভ্যুদরে এবং প্রভাববিস্তারে ক্রমণঃ পাশ্চাত্য জনপদবাদিগণ পৌতিনিক উৎসব ও আড়ম্বর পরিত্যালা করিতে অভ্যাস করিল। নীলনদের কেঁইনত্ব, রোমের দেবলোক এবং আখেল নগরীর দুবসমার কিছুতেই খুষ্ট-ধর্মের গৌরব অতিক্রম করিতে পারিল না। পারিপাটাহীন ও আড়ম্বরশৃষ্ট উপাসনার লিপ্ত হইয়া ভত্তদেশবাদিগণ পৌতলিক উপাসনার হতাদর করিল। দেবতা ও মন্দিরাদি অনাদরে ভূমিসাৎ হইয়া গেল। বিরোকিলাস কর্ড্ক আলেকমান্দ্রিয়ার সিরাপিসের মন্দিরসমূহ ধবংস হয়। কালে মেন্দ্রিসর ওসিরিস্ মন্দিরও লিক্ত্রপ্ত ইইয়া শুষ্ট ধর্মমন্দিরে পর্যাবসিত হইয়াছিল।

এই সকল আলোচনা করিলে নিঃসন্দেহে বলা যাইতে পারে বে, জগতের আদিকারণস্বরূপ প্রকৃতিপুরুষাত্মক লিক ও यानिष्टे जीतारপञ्जित व्यवास्तर कार्यन सानिष्ठा सगराजी साजि-মাত্রই পরমণিতা মহান ঈশ্বরের সেই মুখ্য শক্তির উপাসনঃ করিতে থাকে। প্রাচীন সার্য্যসমাজে সমাদৃত ও পুজিত সেই মহেশ্বের শিক্ষর্কি আর্য্য জাতির প্রতীচ্য ও প্রাচ্য উপনিবেশে ক্রমশঃ বিস্তার লাভ করিয়াছিল। সম্ভবতঃ এই কারণেই ভারতীয় ও রোমীয় লিঙ্গমূর্ত্তির এত অধিক সৌদাদুর্গু পরিলক্ষিত হইয়া থাকে। প্রাচীন হিব্রুগণ যে "বাল" দেবতার উপাসক ছিলেন, তাহা ভারতীয় বালেখনের অভিন্ন লিক ভিন্ন আরু কিছুই নহে। बाहेरवनशरहर धरे निम्मुसि Chiun वा निष्ठेन मारमहे खेळ হইরাছে। ভারতবাসী হিন্দুমাত্রই এই মূর্ত্তিকে শিব, শিউ, প্রভৃতি শব্দে উল্লেখ করিয়া থাকেন। প্রতীরমান হর বে, খুষ্টধর্ষের বছপুর্বের অব ও শাক্দীপের আর্থাসমাজে শিব্লিজের উপাসনা প্রচলিত ছিল। প্রাচীন ভারতীর আর্যান্ডাভি বে সময়ে শিবলিক্ষের উপাসনাপছডি অব-

[&]quot;I have derived Phallus from Phalisa the Chief fruit. The Greek, who either borrowed it from the Egyptions or had it from the same source, typified the fractifier by a Pine apple the form of which resembles Sitaphala, * *. In like manner Gouri the Rajpoot Cores is typified under the coco-nut or sriphal, the Chief of fruit or fruit sacred to Sri or Isa (Isis), whose other elegant emblem of abundance the Camacampa is drawn with branches of palmyra, or coon-tree gracefully pendent from the vase (cumbha).

The sriphala is accordingly presented to all the votaries of Iswara and Isa on the conclusion of the spring festival of Phalguna, the Phagasia of the Greeks, the Phamenoth of the Egyptians and the Saturnalia of antiquity, a rejoicing at the renovation of the powers of nature, the empire of heat over cold—of light our darknes." Tod's Rajasthan, Vol. 1, p. 603.

a "Isis and Osiris, Serapis and Oanopus, Apis and Ibis adopted by the Romans, whose temples and images yet preserved, will allow full scope to the Hindu antiquary for analysis of both systems. The temple of Berapis at Parsouli is quite Hindu in its ground plan."

Tod's Rajassban vol I. 606 n.

^{*} Ezekiel xvi. 17. Amos. v. 26-27. পাঠে জানা বায় প্ ৯০০ খুই পূৰ্ব্যালেও বৰ্তমান শিবনিক মুৰ্ডিছে নিজোপানৰা ও কপাৰে ভিন্তকবাৰণ জনবিত ছিল ৷

গত ছিলেন, সেই সমরে হিব্রুগণও বালু মেবের নিলব্ধণ উপাসনা করিছেন ; কিছ কোন সময়ে এবং কাহার ছারা এই লিলোপাসনা ভারতে অথবা ফুদুর পশ্চিম রুরোপ খণ্ডে প্রচারিত হুইরাছিল, ভাষা জানিবার উপার নাই। পাশ্চাতা প্রত্নভাষ্ট্রকাণের ধারণা, যখন হিক্রজাতি অথবা ব্রীক ও রোমক্রিগের মধ্যে প্রথমে নিলোপাসনার প্রভাব দেখা যার, তখন অবস্তই স্বীকার করিতে ছইবে বে, ভারতবাসী উহা প্রাতীচ্যের নিষ্ট হইতে গ্রহণ করিয়া-ছেন। কিছু এ কথা কতনুর বৃক্তিসিদ্ধ তাহা সক্লেই অনুমান कता यात्र। यस्म त्राम-नामारकात छेपान इत्र नारे, यथन यील-शृष्टे जालो कचार्रातथर करतन मारे, वारेखन अएवत शरूना रहेश-ছিল কি না সন্দেহ, তখন হইতেই ভারতে আখ্য সভাতালোত-পূর্ণশক্তিতে প্রবাহিত ছিল। বুদ্ধনির্বাণের শতাব্দ পরে বুদের প্রতিকৃতি বৌদ্ধদিগের যান্ত্র সমগ্র ঋষ্ বীশে এবং উত্তর-শশ্চিম এসিরা থণ্ডের নানাস্থানে প্রতিষ্ঠিত ও পৃত্তিত হয়। দলিতবিত্তর হইতে জানিতে পারি বে বৃদ্ধের পূর্ব্ধ হইতেই শিব, विकृ ७ स्याभूमा धार्मण हिन! देनव, देवकव ७ मोत्रिमरशत निक्**छ (बोल्ब**ज़) मर्खिगर्रम निका कतित्रा शांकिरव । [निव तत्र ।]

আমেরিকা মহাদেশের পেরুভিয়া নামক স্থানে 'রামসীতোরা' মহোৎসব এবং তথাকার নূপতিবংশের সূর্য্যবংশোদ্ভবভার
প্রবাদ প্রচলিত আছে। ঐ স্থলের মধ্যবর্ত্তী কতকগুলি জাতির
ভাষার ঈশরের নাম সিব্। আসিয়ার অন্তর্গত ফ্রিজিয়া নামক
জনপদবাসীরা সেবা বা সেবাজিয়াল্ নামক দেবতার উপাসনা
করে। ঐ দেবোপাসকগণ দীকাকালে সর্পাটিত কএকটী
অমুষ্ঠান করিয়া থাকেন। মিশরবাসীর বাকাল্ (ব্যাজেণ ?)
ভিন্ন অপর একটী দেবতার নাম সেব্, সেব্বা বা সোবক্ দেথা
যার; এই নামসাদৃশ্য এবং সর্পাত প্রক্রিয়াদি অমুধাবন
করিলে, আমাদের ব্যালমালবিভূবিত ও ব্যাজাম্বপরিহিত শিবের
কথাই মনে পড়ে।*

পাশ্চাত্য পশ্চিতগণের বিধাস, বিষ্ণুর উপাসনাপদ্ধতি প্রাচীন তাতাররাজ্য (শাক্ষীপ ?) হইতে ভারতে সমানীত হইরাছে; কিছু সৌভাগ্যের বিষর, তাঁহারা দিবপুলা সন্থকে ঐরপ কোন একটা অনুত মীমাংসার উপস্থিত হইতে সমর্থ হন নাই। তাঁহারা বলেন বে, খুইলুমানের প্রথম হইতেই এই শিবোপাসমা-পদ্ধতি সিদ্ধাসকত হইতে রাজপুতনার মধ্য দিরা আর্থাবর্তভূমে বিস্তার লাভ করে। কালিলাসের বর্ণনা হইতে জানা হার বে, খুইলুর্ক প্রথম শতাকে উজ্জারনী নগরে মহাকাল এবং ওচারে-

বরের মহোৎস্য সাধিত হইত। মুস্লমান আক্রমণের পুর্বেত হিল্পালগণের অধিকারে ঐ স্থানে লিলোপাসনা প্রথণ ছিল। তথনকার বিলুখর্ণ নামক শিবলিক অতি প্রসিদ্ধ।

আমানের নেশে এক খণ্ড লখনান গোলাকার বা কোণাকার প্রেরেরন্তর লইরা সাধারণতঃ শিবলিক গঠিত হইরা থাকে। উহার নিরভাগ অপেকারুত ছুল ও আসন নামে অভিহিত; বক্তঃ এই আসন রাধিবার আবশুক নাই। তন্তের মধাখনে কোবার আকার বোনিগট্ট বা গোরীপট্ট থাকিত। উহা ছুল-বিশেবে প্রণালিকা বলিরা গৃহীত। এই গোরীপট্ট পার্কতীর বোনি বা মূলপ্রকৃতির শ্রী-চিক্ল এবং উহা ভেল করিরা তত্তপরিস্থ উর্জারত শলাকা বা লওস্বল প্রকারের কিলরির বিবেচিত। একবোলে এতত্তভর্তর, অথবা বোনিপট্টের উপরিস্থ প্রংচিক্ট শিবলিক নামে কথিত; এই কারণে প্রধান প্রধান শৈবলীঠে আসন না রাধিরাই বোনিপট্টের উপর লিক স্থাপিত দেখা যার।

ভারতবর্বে প্রার অন্যুন আট কোটি লোক শিবলিন্দের পূজা করিয়া থাকে। হিমালরের অত্যুক্ত পূজ বদরিকাশ্রম ও পশুপতি-নাথ হইতে স্থান বন্দিশে রামেশ্বর সেতৃবন্ধ পর্যান্ত পর্যুবেক্ষণ করিলে অসংখ্য শিবলিন্দ নয়নপথে সম্দিত হইবে। গলার্ম উভর কূলে বিশেষতঃ বারাণসীক্ষেত্রে ও বালালার মন্দির-প্রতিষ্ঠার সলে সলে লিলম্র্ডিরাপনের বাহল্য দৃষ্ট হয়। বারাণসীর বিশেষরাদি মন্দির, উড়িব্যার ভ্রুনেশ্বর, সেতৃবন্ধে রামেশ্বরমন্দির, সোমনাথের সোমনাথমন্দির এবং বালালার অন্তর্গত বৈভানাথ এবং কাল্না নগরে বর্জমানরাজের প্রতিষ্ঠিত ১০৮টা মন্দির শৈবকীর্ত্তির নিদর্শন। এত্তরির কাঞ্চীপুর, জব্বুর্বেশ্বর, ভিরুমলর, চিন্দ্বরন্ ও কালহন্তী প্রভৃতি হানে প্রসিদ্ধ ও স্থপ্রাচীন শৈব কীর্ত্তি দেখিতে পাওরা বার।

শিবপুরাণ (৩৮ অধ্যার) এবং নান্দ উপপুরাণে শিব বলিভেছেন বে, 'আমি সর্ব্বস্থাপী, কিন্তু সৌরাষ্ট্রে—সোমনাথ, রুঞাতীরছ শ্রীপৈলে—মলিকার্জ্বন,উজ্জারনীনগরে—মহাকাল,ওছার,ও অম-রেষর, চিতাভূমে—বৈজ্ঞনাথ, বজ্জিণে সেতৃবজ্জে—রামেষর, বারা-পদীক্ষেত্রে—বিষেধর, গোমতীতীরে—এব্যক, হিমালর পুর্চে— কেলারনাথ,লারক্ষবনে—নাগেল,শিবালরে—গুল্মেল,ডাকিনীভে— ভীমশন্তর প্রভৃতি বিশেব বিশেব মূর্জিতে আমি বিশ্বমান আছি।'

১০২৪ খুটালে বা ৪১৫ হিজিরার প্রস্তান মাজুদ গ্রুনীতে আনিরা সোমনাথ নিজ ধাঁনে করেন। ১১৫২ শকে প্রস্তান আন্তামান্ উজ্জিনীর মহাকাল দুর্তি তালিরা নিরীতে লইরা বান। হিমালরত কেবারতীর্থে জন্তানি হিস্তীর্থবাত্তী সমন করে। বিজবে রাজমহেন্দ্রীর অন্তর্গত প্রাক্ষারাম তীর্থে জীনেরর দুর্তি

Serpent and Siva worship and Mythology in Central America, Africa and Asia, by Hyde Clarke. p, 10-11.

বিশ্বমান, উহা পুরাণোক্ত ডাকিনীছিত জীমশবর বলিরা উক্ত।
নর্মানীরে ওবারমানাতা নামক স্থানে ওবার শিব বিভ্যান।
কাশীতে বিশেষর, বৈজনাথে ও সেতৃব্বে রামেধর অভাপি পুলিত
হইরাহেন। অধ্যক, ঘূরেণ, ও নাগেশ লিক কোথার কিরণে
অবহিত আহেন, তাহার কোন নিম্পান পাওরা বার নাই।

গ্রীক ঐতিহাসিক আরিয়ানের বর্ণনার জানা বার বে,
মাকিদনবীর আলেকসান্দার পঞ্জাবপ্রান্তে নিবপূজা ও লৈবােৎসব
দেখিরা গিরাছিলেন। তাহার বহুপূর্ব হইতেই উত্তরপল্টিমতারতে
নৈবসম্প্রদারের প্রান্তর্ভাব ঘটিয়াছিল। খুটীর এর শতান্দীতে অনুর
পূর্বে জানাম ও করােজে শৈবপ্রভাব বিভূত হইয়াছিল। খুটীর

> ম বা ১১শ শতাবে লাক্ষিণাত্যে লিল বা মন্দ্রোপাসক শৈবসম্প্রদারের পূন: প্রান্তর্ভাব হয়। তাঁহায়া বােছদিগকে উৎসয়
করিয়া ভারতে হিন্দুপ্রাধান্ত ত্বাপনক্রে শৈবধর্ণের প্রতিচা
করেন। এই বােছশাক্ষবিরোধ ভারতীর হিন্দু-ইতিহাসের একটা
প্রসির ঘটনা।

দান্দিণাত্যের তেলিক রাজ্যে তিলিক বা ত্রিমূর্ত্তি, ইলোরার শুহার ও অক্তান্ত হানে চৌমূর্ত্তি বা চতুর্মুধ, মধুরাসরিহিত স্থানে পঞ্চমুধ এবং উনরপুরের উত্তরন্থিত ইতিহাসপ্রসিদ্ধ একলিজনাথ মূর্ব্তি ভারতের বিভিন্ন সাম্প্রদায়িক শিবলিকের নিদর্শন।

একলিক মূর্ত্তি একখণ্ড নলাকার অথবা কোণাকার প্রান্তরে গঠিত। এরপ কোন কোন লিক্ষের চারি পার্ছে এবং উর্দ্ধদিকে চারিটা বা পাঁচটা মুখ খোদিত করিয়া চতুমুখি বা পঞ্মুখ শিবমূর্ত্তি কল্লিভ হইয়াছে। এভব্লি অগণিভ মূর্ত্তিবিশিষ্ট আরও কএকপ্রকার শিবলিল দৃষ্টিগোচর হইরা থাকে। তর্মধ্য শেষশিদ, কোটাশর প্রভৃতি উল্লেখযোগ্য। একটা স্থবহৎ প্রস্তব-**ঁপ্তত্তে সহস্ৰ হইতে লক্ষাধিক কুদ্ৰ কুদ্ৰ লিল খোদিত ক**রিয়া উক্ত মূর্তিধন গঠিত হইরাছে। সিন্ধুনদের পূর্বভাগে এরূপ একটা क्यांतियत्र निरमत कथातीन मनित्र धवर त्नीताहेबनशाम त्यव-গিলের কএকটা মূর্ত্তি ও মন্দির বিভ্যমান আছে। গ্রীস ও মিশর-দ্বাক্ষ্যে ব্যাকান্ (Bacchue) দেবের চক্রপীঠন্ব বে নকল লিক্ম্র্ভি আছে, ভাহার সহিত কোটাবরের বধাবধ সালুগু দুই হয়। ব্যাকাসকে ব্যাদ্রেশ শব্দের অপত্রংশ বলিয়া গ্রহণ করিলে হিন্দুর ব্যান্তেশ শিবমূর্তির অভ্যকরণে ব্যাকাদের শিলমূর্তিছাপনার করনা করা বাইতে পারে। বেহুছু উত্তর মূর্ডিই সর্কভোভাবে এক এবং गांधापत्रगाती। धातीन छानभूत्वः (वर्डमान वांद्राज्ञी नामक হানে) বোনিচকে আমামাণ একটা দিবসূর্বি হাণিত আছে। ঐ মূর্তি গাটেশর মহাদেব নামে খ্যাত। বহু জীর্থবাত্রী কৌতূহক भारत रहेश विक्रम अवग्रमशात्रिक **এই गाटियवकीर्यह निक्रमू**र्वि नवर्गत जानिश बार्कम ।

পূর্বকালে দিলোপাসনা কেবল ভারতবর্ব মধ্যে আবদ্ধ ছিল না। এখান হইতে প্রার ১৮ শত ক্রোশ পশ্চিমে মিশর দেশে ওদীরিস্ দেবের দিলপুলা বিশেষরূপে প্রচলিত ছিল। ওদীরিস্ তথাকার একটা প্রেচ্চ দেবতা বলিরা পরিগণিত। এই ওদীরিস্ ও তাঁহার ভার্য্যা আইসীস দেবীর সহিত শিব ও শক্তির আনক বিবরে ঐক্য দেখা বার। ভগবতী বেমন বিশ্বরূপা, আইসীস দেবীও সেইরূপ পৃথিবীরূপা। তরোজ শক্তিবন্ধ বেমন ত্রিকোণাক্তি, আইসীস্ দেবীর পরিচারক সেইরূপ একটা ত্রিকোণ্যক্র ছিল। শিব বেমন সংহারকর্তা, ওসীরিস্ সেইরূপ প্রাণসংহারক ব্যবস্বাধ। শিবের বাহন ধর্মরূপী ব্র্ব ব্যমন পৃত্তনীর, ওসীরিস্ দেবের এপিস্ নামক বৃষ্ও সেইরূপ তাঁহার অংশস্করূপ বলিরা পৃত্তিত।

পাশ্চাত্য স্বগতে প্রচলিত একটা উপাধ্যান হইতে জানা বায় त्व, वााकाम् त्वय ভातज्वर्व रहेर्ड इहें वृत्रत्क मिनत त्वरन লইয়া বান, ভাহারই একটীর নাম এপিন্। শ্রিব ও ওসীরিন্ উভর দেবতারই শিরোভূষণ দর্শ। শিবের হস্তে বেমন ত্রিশূল, ওশীরিস দেবের হস্তে সেইরূপ একটা ত্রিফলকয়ক্ত দশু বিলম্বিত দেখা যায়। মিশর দেশের ওপীরিদ্ দেবের অনেক পাবাণময় প্রতিমূর্ত্তির সহিত ব্যান্তচর্মপরিহিত শিবমূর্ত্তির সাদৃশ্য রহিয়াছে। মি: উইলকিন্স ক্বত প্রাচীন মিশরবাসীর ইতিহাসে ওসীরিস দেবের চর্ম্মপরিপ্রত প্রতিরূপ বিস্তমান আছে। শিবপ্রিয় বিশ্ব-বুক্লের ভার তাঁহার একটা প্রের বুক্ষ ছিল, এই বুক্লের পত্র विदशदात्र मक जिथा विकक्तः। कामीशांम त्यमन महाराहतत्र প্রধান তীর্থ,—মেফিস্ নগরও সেইরূপ ওদীরিস দেবের সর্বাল্ডের মাহাত্মকেতা। হয় দিরা বেমন শিবের অভিবেক করা হইয়া থাকে, ফিলিছীপে ওসীরিস দেবের পীঠস্থানেও সেইরূপ প্রতিদিন ৩৬০ পাত্র হয় অর্পণ করা হইত। মহাদেবের সহিত ওসীরিস দেবের বিভিন্নতা এই যে শিব খেতবর্ণ, ওসীরিস क्रकवर्ग। किन्न बहाकांग नामक निवमुर्किविटनवं क्रकवर्ग । এ ছাড়া ভারতের নানা তীর্বে কটিপ্রস্তরনির্দ্মিত যোর ও উচ্ছক क्रकवर्णत निविधक विश्वमान स्था यात्र।

ভারতবর্বের নিবলিক পূজার ভার মিশরনেশেও ওপীরিস্ দেবের লিকপূজা অভি প্রবল ছিল। এই পূজাবিভার প্রসক্ষে এইরপ একটা কিংবদন্তী আছে বে, টাইকন্ নামক দেবতা মন্ত্রশাপূর্কক ওপীরিসকে নষ্ট করিরা তাঁহার দেহকে থও বও করেন। এই অভজ সমাচার প্রাপ্ত হইরা তাঁহার ভার্যা আই-সীস্ দেবী সেই সমক্ত দেহবাও সংগ্রহপূর্কক বিশেব বিশেব হাবে

 [&]quot;वर्गणानः ग्रस्टक्शांवित्तः वृत्रवर्गकत् । विकास वक्षविद्याने वर्द्वाणीवनुषरः विकास व्ये (क्षातातः)

প্রোধিত করিরা রাখেন। কিছ তিনি নিজদেশ না পাইরা প্রতিবৃদ্ধি নিজ্ঞাশপূর্থক তাহার পূজা ও মহোৎসব প্রচলিত করেনা।
বিদ্ধান দেশের স্থানে স্থানে তও নামে এইরূপ একটা নিজবৃদ্ধি দেখিতে পাওরা গিরাছে। ইহা এ দেশীর বোনিনিজের
প্রতিজ্ঞাপ
তারতবর্ষীর শাস্তকারেরা বেখন শিবলিজকে শিবের
ক্ষিশক্তির বিজ্ঞাপক বনিরা উল্লেখ করিরাছেন, মিশর দেশীর
ইতিহাস্বিৎ পশ্তিতেরা ওপীরিস্ ফেবের নিজপ্লার বিব্রেও
ক্ষবিক্লাসেইরূপ মীমাংসা করিরা গিরাছেন।

ধর্মতন্ত্রামুসন্ধিংযু বাঁস কেনেডি এ দেশীর লিক উপাসনার সহিত মিশর দেশীর লিকপুজার ছইটা পিবরে পার্থক্যনির্দেশ করিরাছেন। তিনি বলেন, মিশর দেশের স্থার ভারতবর্ষে লিজ-মূর্ত্তির গ্রাম্বাত্রা বা নগর্যাত্রা প্রচলিত নাই!। তাঁহার এক্পাটা নিভান্ত অমূলক: বালালা দেলে চৈত্রোৎসবের সমঙ্গে সন্মাসীরা সমারোহপূর্বক জলাশর হইতে শিবলিককে পূজার স্থলে আনমন করে, পরে মুক্তকে করিয়া গ্রামন্থ লোকের গৃহে গৃহে শইয়া বার এবং নির্দিষ্ট স্থানে স্থাপনপূর্বক তাঁহার অর্জনাদি করিয়া থাকে। ব্ছদিন হুইতে উড়িয়ার ভূবনেশ্বকেত্রে চৈত্রমাসে শিল্বাজের রথযাত্রা চলিয়া আসিতেছে। চৈত্রমালে নবন্ধীপে শিবের विवाह नात्म এकी मत्हादमव हन्न, छोहाट महारमव বাঞ্ডাণ্ডাদি সহকারে মহাসমারোহপূর্মক ভগবতীর বাটীতে যাত্রা করেন, এবং বিবাহক্রিয়া সম্পন্ন হইলে, তথা হইতে স্বীয় মন্দিরে প্রত্যাগত হন। এই উপলক্ষে সাত আট ফ্রোশ হইতে অনেক লোক নবহীপে আসিয়া থাকেন। কেনেডি সাহেব আরও বলেন যে, ওসীরিনের শিলপুজার ভার শিবলিক্ষের অর্চনার মছপানাদি প্রচলিত নাই। বাবহার প্রচলিত নাই বটে, কিছ বীরাচারীরা অপ্রকাশ ভাবে কুলাচারের অনুষ্ঠান সহকারে শিবলিক্ষের অর্চনা করিয়া

থাকেন। বোগসারে এবিবরের প্রতিপোষক কুলাই প্রমানুত্র বিভ্যান আছে।»

ত্রীকদেশেও এক সমরে নিজপুলা অভি প্রবল ছিল।
ভবাকার নগররাজির প্রার প্রভাকে পথেই বছমাজির ও পিবনিজমুর্জি প্রতিষ্ঠিত ছিল। উক্ত নিজসমূহের মধ্যে কএকটা
প্রধান ও প্রানিক নিজের উদ্দেশে সমর সমর নানা অন্ধর্টানের
সহিত এক একটা উৎসব সম্পান হইত। ব্যাকাস্ দেবের
কেলিকোরিরা নামক মহোৎসবে তথাকার লোকেরা মেরচর্দ্র পরিধান ও সর্বাজে মনীলেপন এবং একটা স্থবীর্ব কার্চনতে
চর্দ্মালিক বছন করিয়া পথে পথে নাচিরা বেড়াইত। ব্যাকাসের
প্রে প্রারেপানের উৎসব কুৎনিত ও বীভৎক্তবাপার। তাঁহার
প্রধান প্রধান মহোৎসব কেবল জীলোক লারাই সম্পানিত
হইত। ঐ রমণীমগুলী তাঁহার অর্চনাকালে গর্কত বলি দিত
এবং মন্ডাদি বিবিধ উপচারে পূলা করিয়া নৃত্য নীত ও বাভসহ
তাঁহাকে পরিত্র করিত।

ব্যাকাস্ ও প্রারেপানের পূজা এবং মহোৎসব প্রসঞ্জে তদেশবাসীর কুৎসিত জাচার ও জহুঠানাদি সন্ধ্য করিলে বেশ প্রতীয়মান হর বে, হুদুর র্রোপ মহাদেশেও বহুকাল পূর্ব্বেজ তব্যাক্ত বীরাচারের জহুরূপ জাচার প্রচলিত ছিল। জামাধের দেশে চড়ক-পূজার সমর ধূলিক্রীড়া ও বাণকোঁড়ার সমর সন্মাসিগণ এবং গ্রামন্থ জপরাপর লোকেরা নীলোৎসবের জিন গাত্রে ধূলি, কর্দম, মসী, চূর্ণ প্রভৃতি সর্বাবেল লেগন করিয়া প্রামের মধ্য দিরা নানা কুৎসিৎ ব্যবহার করিতে করিতে গ্রমন করে। এতহুত্ব দেশবাসীর এই জাচার এতই লজাকর, বে তাহা কোনকমেই ভন্তকুলাজনাবিগের দর্শনীর নহে।

আবেনিরাসের দেখনী হইতে আমরা জানিতে পারি থে,
গ্রাক্বাসিগণ ব্যাকান্ দেবের মহোৎসব বিশেবে ১২০ হন্ত দীর্থ
একটা অধ্যার নিলমূর্তি বহন করিরা লইরা বাইতে। আলোকসাজিরারাজ টলেমি এই উৎসবের অছ্ঠান করিরাছিলেন।
(Athenseus, lib. v.)

[†] এই ঘটনা হইতে হিন্দুগাল্লোক বন্ধের বড়বর, বিনা নিররণে সতীর শিলাসের গমন এবং দিবের নিশালেবণে সতীর দেহত্যাগ, সকলই মনে পড়ে। পরে শিক্তবছিত সেই সতীবের বিক্লকর্ত্বক ক্ষণনি চক্র সাহাব্যে ৫১ বঙে বিকক্ষ হয়। সেই সতী-কল্প হইতে ৫১ কিঠের উৎপত্তি। এবনও কামলেগে বোনিনীঠ বিলামান। ঐ সকল সতীনীঠের প্রা ও উৎসব এচলিত আহে। লানিনা গুনীয়িসের ক্ষণপুঞ্জনি বভ্য নীঠলেশে গৃহীত হইবাছিল কি না প্ এই পাশ্চাত্য উপাব্যানে সতী পতিকে সঙ্গান্ত বিশ্বার সাধিত হইবাছে। নামন-ক্ষণের সমন্ত ক্ষতি কামলেবের ক্ষণ্ড সংক্রান্ত বিশানীর উক্ত কিংবদক্তী বিশ্বত হইনা বাক্ষিতে ।

Vans Kennedey's Researches into the nature and affinity of Ancient and Hindoo Mythology, p. 305.

 [&]quot;বাণলিজং সদারাধ্যে ঘোলিনাং বোলনাথনে।
কৌলিজানাং কুলাচারে পণুনাং শত্রুনিক্তরে।"
বাণলিজভোত্তেও এই বিধয়ের আসক্র লাছে—
"পরিকাণার ঘোলিনাং কৌলিজানাং আিয়ার চ।
কুলাজনানাং ভজার কুলাচাররতার চ।
কুলাজনানাং বালার নমে নারামণার চ।
য়মুলালক্রমন্তার বোলেনাং।"

⁽ শ্ৰম্ম বৃত বোদান্ত্র) + G. A. St. John's Hist. of the Manners and Customs of ancient Greece, Vol I. p. 411.

প্রাচীন ফিনিকীরা রাজ্যেও (কানানরাজ্য) অতি জ্বর্ন্ত-ভাবে লিলপুলা প্রচলিত ছিল। লুসিয়ানের বর্ণনা হইতে জানা যার, সিরিয়ার একটা স্থবহৎ মন্দিরে ৩০০ ফাদম্ (?) উচ্চ লিক ছিল। প্রাচীন আসিরীর ও বাবিলন রাজ্যবাসীরা ৩০০ হন্ত দীর্ঘ লিম্পৃত্তি নিশ্বাণ করিয়া উপাসনা করিত। বাবিলন হইতে যে সকল পিত্তলনিশ্বিত পুরাতন লিক্ষমূর্ত্তি আবিষার হইয়াছে, তাহা অবিক্ল ভারতীর শিবদিলের অফুরপ≠। খুঁটীয় ৭ম শতাব্দে চীন-পরিবাজক হিউএনসিয়ং কাশীধামে আসিয়া ১০০ ফিটু উচ্চ ভাত্রময় শিবলিক এবং ন্যুনাধিক ৬৬ হন্ত দীর্ঘ একটা পিত্তলময় শিবমূর্ত্তি ও ২০টা অক্ষর মন্দির দেখিয়া গিয়াছেন। কাশী দেখ। কোন কোন প্রক্লতন্ত্রিদ ৰিশেষ প্রমাণ প্রয়োগ সহকারে প্রতিপন্ন করিয়াছেন যে, পূর্বাকালে খুষ্টানদিগের মধ্যেও একরূপ নিঙ্গপূজা প্রচলিত ছিল, এখনও ইতালীর রোমান কাথলিক সম্প্রদায়ে তাহার অঙ্গবিশেষ বিভ্যমান আছে কি না. তাহা বিশেষভাবে আলো-চনা করিলে বুঝা যাইতে পারে। মিশরদেশীয় প্রথম খুষ্টানগণ লিক্ষাকৃতিমূলক পুর্ব্বোক্ত 'তও' নামক বস্তু গলে ধারণ ক্রিতেন। পূর্বভন খুষ্টানদিগের অনেকানেক সমাধিমন্দির বা ভাছে ঐ তওমূর্তি অকিত আছে। ঐ তও-লিক পরে ক্রেশ-চিলে রূপান্তরিত হইয়াছে কি না বলা যায় না। ভারতীয় হিন্দুদিগের এবং পাশ্চান্ত্য খুষ্টান্দিগের মধ্যে লিলোপাসনার সামগ্রন্থ লক্ষ্য করিয়া মূর সাহেব লিখিয়াছেন,---

"This last lingering relic of a very ancient rite—Phallic, Lingaio, or Ionian, as one may be differently disposed to view it—in Christendom, has been thought to deserve a separate and somewhat lengthy discertation. I have compiled such a one from sources not mentionable, with a running commentary showing its close correspondence with existing Hindu rite"—Moor's Oriental Fragments, p. 147.

ভারতে শিবলিকপৃঞ্জার চারি বর্ণেরই সমান অধিকার আছে। শিবলিকের মধ্যে পার্থিব শিবলিকপৃঞ্জাই বিশেষ প্রাণত । ইহা ভিন্ন, অর্ণ, রক্ষত, ভাত্র, ক্ষাটক ও পারদাদির লিন্দ নির্মাণ করিরা পূজা করিবাল বিধান দেখিতে পাওয়া বার।

লিলমহিমা—লগতে বে সকল পুণা কাৰ্য্য আছে, ভাহার মধ্যে শিবপুনা প্রধান, আধ্মেধ ও বালপেরাছি বন্ধ অপেকা শিবপুনার অধিক কল হইরা থাকে। বথা— "অধ্যেখসহজ্ঞাণি বাজপেরশতানি চ।
মহেশার্জনপুণান্ত কলাং নাইন্তি বোড়শীম্ ॥"(মণ্ডজুং ১৬প°)
শিবলিক পূজা করিলে যে কল হর, অগ্নিহোক্লাদি যক্ত
ভাহার কোটি ভাগেরও এক ভাগ নহে। যিনি শিবলিক্
পূজা করেন, তিনি সকল পাপ হইতে মুক্ত হইরা থাকেক্ষণ এই
জগতে জীব নানা খোনিতে ভ্রমণ করিরা একমাত্র শিবলিক্ষ
পূজার বারাই মুক্তি লাভ করিরা থাকে।

"অগ্নিহোত্রান্তিবেদান্য যক্তান্ত বহুদক্ষিণা:।

শিবলিলার্চনস্থেতে কোটাংলেনাপি তে সমা: ।

হিছা ভিছা চ ভূতানি হিছা সর্কমিদং জগং!

যজেদেবং বিরূপাক্ষং ন স পাপেন লিপ্যতে।

অনেকজন্মনাহন্তং ত্রামামাণ্ট জন্ম ।

কং সমাপ্রোতি বৈ মুক্তিং বিনা লিলার্চনং নরঃ॥"(স্কল্পুরাণ)

লিলপুরাণে লিখিত আছে যে, একমাত্র শিবলিলপুজনে
চতুর্বর্গ ফল এবং অষ্টেখর্য্য সিদ্ধি হইরা থাকে।
ভ্রমণ নারায়ণ
বিনিয়াহেন যে স্থর্গ, মর্ত্য ও পাতাল প্রভৃতি স্থানে বে সকল দেবতা আছেন, একমাত্র শিবপূজা ক্রিলেই সেই সক্কল দেবতার
পূজা হইরা থাকে।

"শিবত প্রনাদেবি চতুর্বগাধিপো তবেৎ।
অতিমর্যায়তো মর্ত্ত্যঃ শস্তুনাথত পূজনাৎ ।
ব্যং নারায়ণেনোক্তং যদি শস্তুং প্রপূজরেৎ।
বর্গে মর্ত্ত্যে চ পাতালে যে দেবাঃ সংস্থিতাং সদা।
তেষাং পূজা ভবেদেবি শস্তুনাথত পূজনাৎ ॥" (নিলপুরাণ)
ক্ষমপুরাণে নিখিত আছে যে, নিলার্চন বাতীত হাহার কাল
অতীত হয়, তাহার মহা অমলন হইয়া থাকে। একদিকে সকল
প্রকার দান, বিবিধ যাগ যজ্ঞাদি আর একদিকে নিলপুজা এই
উত্তরই তুল্য। নিলারাধনা ব্যতীত যাগ যজ্ঞাদি বিকল হইয়া
থাকে, এতএব নিলপুজা ভুক্তিমুক্তিগ্রদ ও বিবিধ পাপনাশক,
শিবনিলারাধনাবলে অস্তকালে শিবদাব্দ্য লাভ হইয়া থাকে।

"বিনা নিজার্চনং বন্ত কালো গছেতি নিত্যশং।
মহাহানির্ভবেতত তুর্গতত তুরান্ধনং॥
একতঃ সর্বানানি ত্রতানি বিবিধানি চ।
তীর্থানি নিরমা যজা নিজারাধনমেকতঃ॥
ন নিজারাধনাধন্য পুরা বেদে চতুর্য নি।
বিভতে সর্বানারাধানের এব স্থানিনিতঃ॥
ভূতিমুক্তিএবং ক্রিট্রেই এব স্থানিনিতঃ॥
ভূতিমুক্তিএবং ক্রিট্রেই বিবিধাপরিবারণম্।
পুরুষিরা নরো নিতাং শিবসাস্ক্রামাধ্যরাং॥
সর্বামন্তং পরিতাক্তা ক্রিয়াকান্সনেবতঃ।
ভূতা পরমন্ন বিবান নিজানেকং ক্রেস্করেই॥
ভূতা পরমন্ন বিবান নিজানকং ক্রেস্করেই।
ভূতা প্রমন্ন বিবান নিজানকং ক্রেস্করেই।
ভূতা প্রমন্ন বিবান নিজানকং ক্রেস্করেই।

Jour Roy. As. Soc. of Great Britain and Ireland, Vol. 1, p. 91-92,

নিলার্চনতর মতে, নিলপ্রা ব্যতীত অন্ত প্রাদি নিজন হইরা থাকে, এই অন্ত যে কোন প্রাদি করিছে হইবে, ভাহার প্রথমে নিলপ্রা করিতে হর।

শসক্ষপৃদ্ধান্ত দেবেশি নিজপৃদ্ধা পরং পদম্। বিদ্পৃদ্ধাং বেনা দেবি অঞ্চপৃদ্ধাং করোতি বং ॥ বিফলা তত্ত পূদা ভাদত্তে নেরকমাগ্ন রাং। ত্রালিকং মহেশানি প্রথমং পরিপৃদ্ধরেং ॥"

(লিঞ্চার্চনতত্র ১ প°)

ঘে রাজ্যে শিবপূজা হয় না, সে রাজ্য পতিত বলিয়া স্থির করিতে চইবে, সেই স্থানে বাস করিতে নাই।

মৎস্তাহক, স্বন্ধান, বীরমিরোদর, নিজপুরাণ, শিবপুরাণ, স্থাতি ও তন্ত্র প্রভৃতি সকল ধর্মপান্তেই শিবনিক পূজার অবশ্রকর্তব্যতা প্রতিপাদিত হইরাছে, এই জয় রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশু, শুদ্র এবং সৌর, গাণপত্য ও বৈশুব প্রভৃতি সকলেরই শিবনিক পূজা অবশ্রক্তব্য। শিবপূজা না করিয়া জল গ্রহণ করিলে প্রত্যাব্যতাগী হইতে হয়, অতএব সন্ধ্যা বন্ধনাদির স্থায় শিবপূজা নিত্যকর্ম। স্থতিনিবন্ধকার রঘুনন্দন অষ্টাবিংশতি স্থৃতির মধ্যে আছিকত্বে পার্থিব শিবনিক্সপূজার: অবশ্রক্তব্যতা প্রতিপাদন করিয়া পূজার মন্ত্র ও বিধি ব্যবহাদি নির্দিষ্ট করিয়া দিয়াছেন। বাছলাভয়ে তাহার প্রমাণাদি উক্ত করিলাম না।

ভারতের প্রায় দর্কত্রই পার্থিব শিবলিঙ্গপৃঞ্জার ব্যবহার দেখিতে পাওয়া যায়, ইহা ভিন্ন যে দকল স্থলে অনাদি লিঙ্ক বা প্রতিষ্ঠিত লিঞ্ক দেখিতে পাওয়া বায়, তাহা পাষাণময়।

যে সকল দ্রবা ছারা লিঙ্গ নিশ্মাণ করা ঘাইতে পারে, তৎ-সৃত্বকে গরুত্পুরাণে এইরূপ লিখিত আছে—

"কন্ত রিকারা ছো ভাগো চ্ছারশন্দনত চ।
কুদ্দত এরনৈচব শশিনা চ চতুঃসমন্॥
এতবৈ গদ্দিলন্ত কুছা সংপ্রা ভক্তিতঃ।
শিবসাযুজ্যমাপ্রোতি বদ্ধুভিঃ সহিতো নরঃ॥" (গরুড়পুরাণ)
গদ্ধান্ত—চুই ভাগ কন্ত রিকা, চারি ভাগ চন্দন এবং তিন
ভাগ কুদ্দ ইহা বারা লিক্ষ নির্দাণ করিলে তাহাকে গদ্ধান্দ কহে, এই লিক্ষ ভক্তিপুর্কাক পূজা করিলে শিবসাযুজ্য লাভ হয়।

পুন্দার নিক-নানাবিধ স্থাক পুন্দা বারা নিক নির্মাণ করিলে তাহাকে পুন্দার নিক কছে। এই নিক পুরা করিলে পৃথি-বীর আধিপত্য লাভ হর এবং অক্তেগ্রাধিপতি হইরা থাকে।

গোশক্রিজ—(গোবরের শিব) আছে কণিল বর্ণ গোমর বারা লিজ নিশ্মাণ ক্রিরা পূজা করিবে, এই লিজপুজনে ঐবর্য লাভ হয়। এ খিবকে একটা প্রবাদ প্রচলিত আছে বে, বাহার জন্ত লোবরের শিবপূজা করা হয়, তাহার মৃত্যু হইরা থাকে। গোৰনের শিবপুঞ্জার একটু বিশেষ এই বে, মৃত্তিকাপডিছু গোৰনের ছারা শিল নির্দাণ করিতে নাই।

রজোমর লিজ—রজঃ হারা নিজ নির্দ্ধাণ করিয়া ভাহার পূজা করিলে বিভাধরত্ব এবং তৎপরে শিবসাযুজ্ঞালাভ হইয়া থাকে।

যবংগাধ্মশালিজ-ব্ব, গোধ্ম ও শালিজ তপুলের লিজ নির্মাণ করিয়া পূজা করিলে শ্রী,পৃষ্টি ও পুত্রাদিলাভ হইয়া থাকে।

সিতাথশুমর লিক্স—সিতাখণ্ডে লিক্স নির্ন্থাণ করিয়া পূজা করিলে আরোগ্য লাভ হয়।

লবণজ্ঞলিক—হরিতাল ও ত্রিকটু লবণের সহিত মিশ্রিত করিয়া লিক নির্ম্মাণপৃথ্যক পূজা করিগে উত্তম বশীকরণ হয়।

লবণজনিক সৌভাগ্যপ্রদ, পার্থিবিদিক সকল কামনাসিদ্ধিদ, তিলপিটোথ লিক অভিলাবসিদ্ধিদ, তুরোখ লিক মারণশীল, ভ্রময় লিক সর্কাকলপ্রদ, গুড়োখ লিক প্রীতিবর্দ্ধন, গদ্ধয়রালক গুণনায়ক, শর্করাময় লিক প্রথপ্রদ, বংশাভ্রনির্দ্ধিত লিক বংশকর, গোময়লিক সর্কারোগপ্রদ ও কেশাছিসন্তব লিক সর্কার্জনাশক। এ ছাড়া ক্রমোভ্ত লিক নারিক্রপ্রদ, পিষ্টময় লিক বিভাপ্রদ, দাবিত্রমান্তব লিক কীর্ত্তি, লক্ষ্মী ও প্রথপ্রদ, ধান্তজ্ঞ লিক ধান্তপ্রদ, কলোখ লিক ফলপ্রদ, ধাত্রীফলজাত লিক মুক্তপ্রদ, নবলীতজাত লিক কীর্ত্তি পোভাগ্যবর্দ্ধক, দুর্ক্ষাকাতলিক অপমৃত্যুনাশক, কর্প্রজাত লিক মুক্তিপ্রদ। ক্ষোভণ ও মারণ কার্য্যে পিষ্টময় লিক প্রশন্ত।

অয়রান্তমণিজ লিক সিদ্ধিপ্রদ, মৌজিক লিক সৌভাগ্যপ্রদ, অর্থনির্দ্মিত লিক মহামুজিপ্রদ, রাজতলিক ভূতিবৰ্দ্ধক, পিতল ও কাংস্তজ লিক সামান্ত মুজিপ্রদ; অপু, আয়স ও সীসকজাত লিক শক্রনাশক; মিশ্র অপ্তথাতুনির্দ্মিত লিক সর্ব্ধসিদ্ধিপ্রদ, অপ্তলোহ-কাত লিক কুঠরোগনাশক, বৈদ্ধ্যমণিজাত লিক শক্রদর্শনাশক, কাটিকলিক সর্ব্ধকামপ্রদ। উপযুক্ত থাতু ও দ্রব্যাদি হারা লিবলিক নির্দ্মাণ করিয়া পূজা করিলে ঐ সকল কল লাভ হইয়া থাকে।

শকার্য্য পুল্দার লিক্স হরগজনসাধিতর।
নবধরাং থরাং ভুজ্বা গণেশাহবিশতিপতির্ভবেৎ ।
রজোতিনির্দ্রিতং লিক্স বং পুরুরতি ভক্তিতঃ।
বিদ্যাধরণদং প্রাণ্য গলাক্রিকার ক্রেরা ভবেৎ ।
ইকানো গোলকুরিকার ক্রুরা ভক্তা প্রপ্রমেৎ ।
ব্যক্তেন কাপিলেনের গোনবেন প্রকর্মেৎ ।
কার্য্য বহিচানা লিক্স বংগোধুনপালিজার।
ক্রীকানা পৃত্তিকানত প্রকানত্তর্ভবেৎ ।
নিভাগর্ভবন্ধ নিক্স কার্য্যারোগার্ভনর্
।

পূর্ব্বে যে সকল লিঙ্গপুৰার কথা লিখিত হইরাছে, তাহার
মধ্যে কলিকালে তান্রাদিনির্দ্ধিত লিজপুর্বা করিতে নাই। বথা—

"তান্রলিঙ্গং কলৌ নার্চেৎ হৈত্যক্ত নীনকত চ।
রক্তচন্দ্রনলিজ্ঞ শন্ধকাংতারসং তথা ঃ

তৃষ্টিকামন্ত লক্তং লিজং শিল্তলসম্ভবন্ ।

কীপ্তিকামো যজেরিতাং লিজং কাংতসমূভবন্ ।

শক্রমারণকামত লিজং লৌহমরং সলা।

সদা সীসমরং লিজমার্কামোহর্কারেরঃ ॥ (মৎক্রস্কে মহাতত্ত্র)

তান্রনির্দ্ধিত লিজ, রৈত্যে, সীসক, মক্তচন্দ্রন, শন্ধ, কাংত,
লৌহ এবং সীসকনির্দ্ধিত লিজ কলিকালে পূর্বা করিতে নাই।

পারর বারা লিবলিজ নির্দ্ধাণ করিরা পূর্বা করিকে মহা এবর্ষা
লাভ হয়।

ৰভে লৰণৰা লিকা ভালতিকটুকাৰিতৰ্ গ্ৰাত্তৰ্থং লিজং সংপ্ৰাঃ বৃদ্ধিৰ্দ্ধনৰ্ 🖡 लब्द्रभव ह जोडानार भार्नियः मर्क्कामनम् । কামদং ডিলপিট্টোবং ডুবোখং সরণে স্বতন্ ঃ स्त्याचर स्र्नार कृति गर्कताचर स्थ्यम् । यःभाष्ट्रताथा यःगमकः शामकः नन्धानम् ॥ (क्यांश्रिक्षयः निकः गर्वमञ्जविमानमम्। কোভাৰে মারণে পিইসভবং লিজমূদ্ধমন্ & দারিক্রদং ক্রমোডুডং পিটং সারস্বত এদশ্। मधिष्टाकाढ्यः निकः कीर्जिममीर्थयमम् । शास्त्रकाः शास्त्रकः विकः करनाथः कनकः खरमः। পুলোবং দিয়াভাগায়ুর্জ্জ ধাত্রীফলোভবন্ 🛭 नवनीरणाद्धवः निजः कौर्तिरमोणागायद्यनम्। দ্ৰাকাওসম্ভূতমপণ্ডানিবারণম্ । कर्भृतमध्याः निकाः तमः देव कृतिमृत्तिमृत्। खब्दाकाखः हजूनां जू (काबः नामास्तिषित् । यहाम् किथार देहमः ताक्षकः कृष्ठिपर्कनम् । व्यादकुरे: उदा कां:कः मृत् नामाक्रम्किनम् ह অপুনীসায়সং জিলং শত্রুপাং মাদনে হিডম্। कीर्खिनः कारकबर शिकर बाबाउर पृष्टियर्कनम् ह গৈছলং ভুক্তিমুক্তার্থং বিজ্ঞাং সর্বাসিক্ষিত্র ঃ **लिख्नाः मूक्टन जिलः ल्**काः त्रबण्नकन् । रेएमक्त मक्तरमाक्छ वाश्वतः भूकतः भूमान् । **कै**टावर पक्षकः शिक्तर निकाकः नर्गनिकितन् । शाकुकः शनतः जाकाकाजकः (कांत्रजिकत् ह जिक् (नांद्रांक्टनांचक क्काकांवड न्यट्वर । কাভিকামত সভতং নিজং কুছুৰসভবৰ ॥ (बलाक्षक्षममूक्कः महायूकिविवर्कमन्। थात्रपानकिमः शिक्षः कृषाक्षममम्बूष्ठम् ॥"

(বংকত্ত, মাতৃকাকেবতর)

"পারদক্ষ মহাতৃতৈত সৌভাগ্যার চ মৌজিক্ষ্।" (পরপ্রাণ)

কিল নির্মাণপূর্কক ভাহার সংস্কার করিয়ে পূলা করিতে হয় ।
কেবল পার্থিব লিক্ষের সংস্কার করিতে হয় ন। নিরোক্ত প্রাণাণী

অন্থসারে সংস্কার করিবে। রৌলা বা অর্ণনির্মিত লিক্ক অর্থপারে তিন দিন হয় মধ্যে রাখিরা দিতে ক্ইবেঃ পরে
'ত্রোক্ষং যজামহে' ইত্যাদি মন্ত্র দারা লান করাইরা কালকল্লের পূজা করিবে, পরে বেদীতে বোড়শ উপচার দারা পার্কতীর
পূজা বিধের। তৎপরে ঐ পাত্র হইতে লিক্ তৃশিক্ষা গলাজনে
তিন দিন রাখিরা দিতে হয় । পরে বথাবিধি সংস্কার অর্থাৎ
প্রতিষ্ঠা করিয়া ঐ লিক্ক হাপন করিতে হইবে ।

শনংখারং সংপ্রবন্ধ্যামি বিশেষ ইহ যন্তবেৎ।
রৌপাঞ্চ স্বর্ণালক্ষ স্বর্ণপাত্রে নিধার চ।
ভদ্মান্তবোল্য তল্লিলং হুগ্ধমধ্যে দিন্ত্রম্।
ত্রোত্তবেণ মাপদ্বিদ্ধা কালকক্রং প্রপ্রন্থে ।
বোড়লে নোপচারেগ বেছান্ত পার্কতীং যন্তেগ্ধ।
ভদ্মান্তবোল্য তল্লিলং গলাতোরে দিনত্রম্।
ভততা বেদোক্তবিধিনা সংখারমাচরেৎ স্থাঃ।"

(মাতৃকাভেদভন্ত ৭ পটল)
পার্থিব শিবলিকপৃদ্ধনে মৃত্তিকা ২ তোলা বা ২ তোলা
পরিমাণ লইয়া তাহার ছারা লিক নির্মাণ করিয়া পূজা
করিতে হয়।

"নিদ্ধপ্রমাণং দেবেশ কথয়ন্ত মন্ত্রি প্রভো।
পাথিবে চ শিথাদৌ চ বিশেষো যত্র যো ভবেৎ র্য্ মৃত্তিকাতোলকং গ্রাহ্মথবা তোলকদ্বয়ন্। এতদক্তম কুর্ত্তীত কদাচিদপি পার্কতি ॥"

(মাতৃকাভেদতন্ত্র ৭ পটল)

পার্থিব লিকপুজনে মৃত্তিকান্ডেদের ব্যবস্থা দেখিতে পাওরা যায়। লিক নির্মাণ কালে ব্রাহ্মণ শুক্রবর্গ মৃত্তিকা, ক্ষত্রিয় রক্তবর্ণ মৃত্তিকা, বৈশ্র পীতবর্ণ মৃত্তিকা এবং শুদ্র ক্ষত্রবর্গ মৃত্তিকা ছারা লিক নির্মাণ করিয়া পূজা করিবে। যে হুলে ঐরপ মৃত্তিকার অভাব হইবে, তথার বিভিন্ন বর্ণের মৃত্তিকা ছারা লিক নির্মাণ করিলে দোষ হইবে না।

"চতুর্ধা পার্থিবং নিশং সৃৎস্থা ভেনেন পার্কডি। শুরুং রক্তং তথা পীতং রুক্তঞ্চ পরমেবরি॥ শুরুত্ব ব্রাহ্মণে শুক্ত ক্ষাবিরে রক্তমিব্যতে। শীতত্ব বৈশুলাতৌ জ্ঞাৎ রুক্তং শুক্তে প্রকীর্তিতম্।"

্বিল্লাকনতম তপ্)
লিন্দ নির্মাণ করিতে হইলে নিন্দের কেন্দ্রা বিভার ও পুরিমাণ
শাস্ত্রে নির্দিষ্ট হইরাছে সেইরপ বিভার ও পরিমাণ করিতে ইইবে ।



লিক্সের ছিবলা বেদী এবং তদ্ধ পরিমাণ বোনিপীঠ করিতে হুইবে। নিদ অনুষ্ঠ প্রমাণ করিতে হুইবে। ক্সির পাষাণাদি নিদ্য নির্দ্যাণ করিতে হুইলে ছুল করিতে হুইবে। রক্ষাদি থাতু-নির্দ্মিত নিদ্য স্থলে পরিমাণ ইচ্ছান্ত্রন্থ হুইবে।

শীলকত বাদ্যিতারঃ পরিণাহোহপি তাদৃবঃ।
বিক্ত বিশ্বপা বেদী বোনিত্তদর্কস্মিতা ॥
কুবাঁতাকুঠতো দ্রবং ন কলাচিদপি ক্ষচিং।
রক্ষাদিশিবনির্দাণে মানমিজাবশার্ডবে।
শিলাদৌ চ মহেশানি স্থলক কলদারকম্।
অকুঠমানং দেবেশি যদা হেমাত্রিমানকম্।

(লিলার্চনতন্ত্র ও তন্ত্রান্তর)

লিক স্থলকণযুক্ত করিতে হয়। অলকণ লিক অণ্ডভকর, এই জন্ম উহা পরিত্যাগ করা বিধের। লিকের দৈর্ঘাদীন হইলে দক্র বৃদ্ধি হইরা থাকে। পরিমাণের ছব্ব দীর্ঘ করা উচিত নহে। যোনিপীঠ এবং মন্তকাদিহীন করিয়া লিক করিবে না। তাহাতে নানাবিধ অমকল হইয়া থাকে। পার্থিব লিকে স্বাস্থৃঠ পর্ব্ব প্রমাণ লিক নির্মাণ করিয়া পূজা করিবে।

শিলকং স্থলক্ষণং কুর্যাৎ তাভেলিকমলক্ষণম্।
দৈর্ঘাইনে ভবেদ্যাধির্ধিকে শত্রুবর্দ্ধনম্ ॥
মানহীনে বিনাশঃ ভাদধিকে চ শিশুক্ষঃ।
বিস্তাবে চাধিকে হীনে রাষ্ট্রনাশো ভবেন্ধ্রুবম্ ॥
পীঠহীনে তু দারিত্রাং শিরোহীনে কুলক্ষঃ।
ব্রহ্মস্ত্রবিহীনে চ রাজ্ঞাং রাষ্ট্রক্ষ নশুতি।
তত্মাৎ সর্ক্রেথফ্রেন শিকং কুর্যাৎ স্থলক্ষণম্ ॥

(মাতৃকাভেদত° ৭ প°)

"স্বাস্থ্র পর্কমানত কথা লিক্ষং প্রপ্রকাষে ।
মূদাদিলিক গঠনে প্রমাণং পরিকীপ্তিতম্ ॥" (যটক র্মদীপিকা)
এক লিক্ষ পূলা করিলে দেব ও দেবী এই উভয়েরই পূলা
করা হইরা থাকে। লিকের মূলে ব্রন্ধা, মধ্যদেশে ত্রিভূবনেশ্বর
বিষ্ণু, উপরে প্রণবাখ্য মহাদেব অবস্থিত। লিক্ষবেদী মহাদেবী
এবং লিক্ষই সাক্ষাৎ মহেশ্বর। অভএব লিক্ষপূলার সকল
দেবতার পূজাই হইরা থাকে।

"মূলে ব্রহ্মা তথা মধ্যে বিষ্ণুক্তিভ্বনেশর:।

কলোপরি মহাদেব: প্রণবাধ্য: সদানিব: ৪

কিলবেদী মহাদেবী কিলং সাক্ষাব্যহেশর:।
তর্মো: প্রপুজনান্নিতাং দেবী দেবক প্রতিতে ॥" (কিলপ্রাণ)
পারদ-বিশ্বকিলপ্লার বিশেষ প্রদাংসা দেখিতে পাওয়া বার,
যথন পারদ কিল নির্দাণ করা হয়, তখন নানাপ্রকার বিয়
হাটবার সন্থাবনা। এই জন্ত সেই সময় শাস্তি কভারন করা

আবশ্বক। পকার শব্দে বিষ্ণু, আকার অর্থে কালিকা, রকার
শব্দে শিব, এবং বলার ব্রহ্মা, গুডরাং পারদ শব্দে ব্রহ্মা, বিষ্ণু,
মহেবর ও কালিকা বুঝিতে হইবে। অতএব ব্রহ্মবিষ্ণুশিবাদ্মক
পারদ লিক বিনি পূজা করেন, তিনি শিবতুলা হইরা থাকেন এবং
ধন, জ্ঞান ও অণিমাদি ঐবর্থা লাভ করিরা থাকেন। যদি
জীবনকালে এক দিনও পারদ লিক পূজা করা যার, তারা
হইলেও উক্তর্মণ কল হইরা থাকে।

শ্বনারং বিজ্ঞাপশ আভারং কালিকা অন্নং।
রেকং শিবং বভারক ব্রদ্ধারণ ন চাঞ্চথা
লারদং পরমেশানি ব্রদ্ধবিজ্ঞানিবার্থকম্।
বো ঘজেৎ পারদং লিকং স এব শহরেহিবারঃ
আজন্ম মধ্যে বো দেবি একদা যদি প্রত্যুক্ত ।
স এব ধঞাে দেবেশি স জানী স চ তত্ত্বিধি ॥
পারদে শিবনির্দ্ধাণে নানা বিন্ধং যতঃ প্রিরে।
অতএব মহেশানি শান্তিবন্তাননকরেং॥"

এই বে সকল লিজের বিষয় বলা হইল, এই সকল লিজ নির্মাণ করিতে হয়, ইহা ভিয় নর্মাণাদি নদীতে এক প্রকার লিজ পাওয়া যায়, তাহাকে বাণলিজ কহে। এই লিজ ছুক্তিমুক্তি-প্রদায়ক। নর্মাণা, দেবিকা, গলা, যমুনা প্রভৃতি পূণ্য নদীতে বাণ-লিজ সকল আছে, ইক্রাদি দেবগণ এই লিজের পূজা করিয়া-ছিলেন। স্বয়ং মহাদেব এই লিজে সর্মাণা অবস্থিত আছেন।

"বাণলিঙ্গং তথা জ্ঞেয়ং ভূক্তিমুক্তিশ্রদারকম্। উৎপত্তিং বাণলিক্স সক্ষণং শেষতঃ শৃণু॥ নশ্মদাদেবিকায়াঞ্চ গলাযমূনরোত্তথা। সন্তি পুণানদীনাঞ্চ বাণলিক্সানি বন্মুখে॥ ইন্সানি পুজিভাক্তত্ত ভচ্চিক্তে বিহিতানি চ। সদা সন্নিহিত্তত্ত্ব শিবঃ সন্বার্থদায়কঃ। ইন্সালিক্সানি ভাক্তাহঃ সামাজ্যার্থপ্রদানি চ॥"

(বীরমিত্রোদম্বপুত কালোভর)

বাণলিক পূকা করিতে হইলে তাহার বেদিকা করিরা তাহার উপর এই লিক হাপন করিরা পূকা করিতে হর। তাত্র, ক্টিক, বর্ণ, পাবাণ, রক্ত বা রৌপোর বেদি করিবার বিধান আছে।

"ভাত্ৰী বা কাটিকী স্বাণী পাবাণী রাজতী তথা। বেদিকা চ প্রকর্ত্তব্যা ভত্ত সংস্থাপ্য পুরুষেৎ ।"

(হেমান্তিগৃত বচন)

নর্মানি পুণানদী হইতে বাণশিক উত্তোলনপূর্বক পরীক্ষা করিয়া পরে সংস্কার করিবে। পরীক্ষার নিরম—প্রথমে তুলাদণ্ডে একদিকে বাণশিক, অপরদিকে তণুল সমান করিয়া দিয়া একিবার ওক্তন করিবে। পরে আবার ঐ তণুল বারা ওক্তন করিলে যদি ঐ তপুল অধিক হয়, তাহা ক্টলে ঐ কিল সুক্ষ্বিগেয় পুলনীয়।
ওলন ৩, ৫ বা ৭ বার ক্রিডে কর। বিদি তুলার প্রভাবে
বারই বদি সমতা হয়, অর্থাৎ এক ওলনই বাবে, তাহা ক্টলে
ঐ লিল ললে কেলিয়া নিতে ক্টলে। তপুল জলেকা বদি
লিল অধিক হয়, তাহা ক্টলে ঐ লিল উবাসীন্দিগের
পাকে বিতক্ষ।

শ্বিত্যেভন্তকশং প্রোক্তং পরীক্ষাভন্তকোবিলৈ:।

ক্রি:সপ্তপঞ্চবারং বা তুলাসাম্যং ন জারতে।
ভন্না বাগং সমাধ্যাতং শেবং পাবাণসম্ভবম্।"

(বীর্মিত্রোদরধৃত রোক)

'কুলাকরণত তপুলেন, অপরতুলাদির তপুলা বছধিকা: স্মান্তর্গা তারিকং গৃহিণা পুলামবধার্যাং লিলফেদধিকং তদোলাসীনপুলাং তদিতি কিংবদরীতি হেমাদ্রিগত লক্ষণাক্রান্তম্।'

"সপ্তক্নতান্ত্ৰদারড়ং বৃদ্ধিমেতি ন হীয়তে। বাণলিজমিতি খ্যাতং লেবং নাৰ্শ্যনমূচাতে ॥ ব্ৰিপঞ্চবারং যত্তৈব তুলাসাম্বং ন জারতে। ভদা বাণং সমাখ্যাতং লেবং পাবাণসম্ভবম ॥"

(স্তসংহিতা)

বাণলিক কি না এইরূপ প্রণালী অনুসারে পরীকা করিয়া ভাহার সংস্কারপূর্বক পূজা করিবে।

শিক্ষপূজাবিধি। বাণনিক পূজা করিতে হইলে প্রথমে সামান্ত পূজাপছতিক্রমে গণেশাদি দেবতা পূজা করিয়া বাণনিক্রকে লান করাইতে হইবে। পরে নিয়োক্ত ধ্যান পাঠ করিয়া মানসোপ-চারে পূজা এবং পুনরায় ধ্যান করিয়া পূজা করিতে হয়। পূজা বথাশক্তি বোড়শাদি উপচারে করা বাইতে পারে। ধ্যান—

ওঁ প্রমন্তং শক্তিসংযুক্তং বাণাখ্যক মহাপ্রভন্।
কামবাণাখিতং দেবং সংসারদহনক্ষমন্।
শৃলারাদিরসোলাসং বাণাখ্যং পরমেশ্বরম্ ॥"
এই খ্যানে পূলা ও জ্ঞপাদি করিরা তাব পাঠ করিতে হয়।
বাণালিকপূলার আবাহন ও বিস্কলন নাই।

বাণলিক বছ প্রকার,—আগ্রেয়নিক, বাম্যনিক, নৈথ তিনিক, বার্ণলিক, বার্ণিক, কুবেরনিক, রোম্যনিক, বৈক্যনিক, অর্কুনিক, মৃত্যুঞ্জরনিক, নীলক্ষ্ঠ থিক, মহাদেবলিক, অল্প্রিক, ত্রিপুরারি-লিক, অর্কুমারীখন লিক ও মহাকাল নিক প্রভৃতি। ই হাদের প্রভেত্যকটার পৃথক্ পৃথক্ লক্ষ্ণ শাস্ত্রে নির্দিষ্ট হইরাছে, সেই লক্ষণ বারা উক্ত লিক হির্ম করিতে হয়। বাণলিকের ওভা-ওভ লক্ষণ বিশেষ করিয়া পরীকা করিয়া লইতে হয়।

নিন্দালিক—বাণলিক কর্কন হইলে প্রনারাদিকম, চিপিটা-কার অর্থাৎ চেণ্টা হইলে গৃহভক্ত, এক পার্শবিভ হইলে প্রধারাদি বনকর, শিরোদেশ ফুটিত হইকে বাাধি, নিল ছিল হইলে বিদেশগদন, এবং নিলে কর্ণিকা থাকিলে ব্যাধি হর, ক্রেডরাং এই সকল লোববুক বাণনিল পুলা করিছে নাই। ইহা ভিন্ন তীক্ষাগ্র, বক্রশীর্ব, এবং ত্যান্ত (ত্রিকোণ) নিল পরিবর্কনীর। ইহা ভিন্ন অতি মূল, অতিক্লশ, বন্ধ ও ভ্ৰণবৃক্ত নিল গৃহী পূলা করিবে না, এই নিল বাহারা মোকার্থী ভাহাদের পক্ষে হিতকর।

"কর্মনে বার্ণলিকে তু প্রজারক্ষরো ভবেং।

চিপিটে প্রিতে তমিন্ গৃহভয়ো ভবেদ্ধবন্ ॥

একপার্যন্তিতে বাংল ব্যাধির্মন্তমেব চ ॥

ছিত্রলিকেইচিতে বাংল বিদেশগমনং ভবেং।

লিকে চ কর্নিকাং দৃষ্টা ব্যাধিমান্ আরতে পুমান্ ॥

তীক্ষাগ্রং বক্রনীর্বক ব্রাপ্রাধিমান্ আরতে পুমান্ ॥

তীক্ষাগ্রং বক্রনীর্বক ব্রাপ্রাদিকা বিবর্জনেং।

অতিত্বলক্ষাতিক্রশং স্বরং বা ভ্রণান্থিতম্ ॥

গৃহী বিবর্জনেস্তাদৃক্ তিন্ধি মোকার্থিনো হিতম্ ॥" বীর্মিব্রোদর

ভভলিক—ঘনাভ ও কপিল বর্ণ লিক বিশেব শুভ, এই লিক
পূজার শুভ হইরা থাকে। লঘু বা ছল কপিল বর্ণ লিক গৃহী

ক্যাপি পূজা করিবে না। ভ্রমরের ন্তার ক্ষাবর্ণ লিক স্পীঠ জ্পীঠ
বা মন্ত্র সংস্কার রহিত হইলেও তাহা গৃহস্থ পূজা করিতে পারে।

"অর্থনং কপিলং লিঙ্গং ঘনাভং মোক্ষকাজ্জিন:। লঘু বা কপিলং স্থূলং গৃহী নৈবার্চ্চরেৎ কচিৎ॥ পৃত্তিব্যাং গৃহস্থেন বর্ণেন ভ্রমরোপমম্। তৎসপীঠমপীঠং বা মন্ত্রসংস্কারবর্জ্জিতম্॥" (বীরমিজোদর)

বাণলিক্ষের আফার পদ্মবীজ্বের সদৃশ। এই বাণলিঞ্চ ভূক্তিও মৃত্তিপ্রধানক। পক অব্ কণের স্থায় ও কুকুটাও সমাকৃতি হৈ লিক তাহাও বাণলিক নামে খ্যাত, এই লিকও পূজার বিশেষ প্রাণ্ড। মধুবর্ণ, গুরু, নীল, মরুকত মণির বর্ণ এবং হংসভিবের আরুতিবিশিষ্ট বে লিক, তাহা স্থাপনে প্রাণ্ড। এই লিক নর্মনানি নদী কলে পর্কতে হইতে স্বর্হই উত্তুত হন। স্মৃত্তরাং নদী হইতে তুলিরা আনিরাই সংখ্যার করিরা পূজা করিতে পারা বার। পূর্বে বাশ তপতা করিরা মহাবেরের নিকট বর সইরাছিল বে, ডিনি সর্কাণ পর্কতে লিকরণে আবিভূতি থাকিবেন, এইজভ জগতী তলে ও লিক বাণলিক নামে খ্যাত। একটী বাণলিক পূজার ফললাভ হয়।

পৰজন্ম কৰাকারং কুৰুটাওসবাকৃতি।
ভূতি-মৃত্তি-এবটকৰ বাগলিলমুবাকৃতন্ ।
পৰজন্মলাকারং কুকুটাওসবাকৃতি ।
গপ্রসং নার্থবং লিকং পৰজন্মলাকৃতি।
নমুবর্গং তথা গুরুং-নীকং সরকভগ্রতন্ত্র।

হংসভিষাকৃতি পুন: হাগনায়াং প্রাণকতে।
বরং সংস্রুবতে নিজং গিরিতো নর্ন্নাতটে ।
আবিরাসীৎ গিরো তত্ত্ব নিজন্ধনী মহেখর:।
বাগনিজমণি খ্যাতমতোহর্ধা জগতীতলে।
অভ্যোং কোটনিজানাং পূজনে বং কলং ভবেং।
তৎ কলং গভতে মর্জ্যো বাগনিকৈকপুজনাং।

(হেমাজিগুড পুরাণবচন) পার্থিব নিদপুজা-পার্থিব নিদপুজা করিতে হইলে প্রথমে লিক্স নির্ম্বাণ করিতে হয়। 'ওঁ হরার নমঃ' এই মধ্রে এক তোলা বা চুই ভোলা মুক্তিকা লইয়া 'ওঁ মহেশবার নমঃ' বলিয়া অনুষ্ঠ পরিমিত লিঙ্ক নির্মাণ করিতে হইবে। মৃত্তিকা সমান তিন ভাগ করিরা উপরের ভাগে লিক, মধ্যভাগে গৌরীপীঠ একং শেষ ভাগ দারা বেদী অর্থাৎ আসন প্রস্তুত করিতে হয়। উপরের ভাগকে শিদ্ধ, মধ্যভাগকে গৌরীপীঠ এবং নিম্নভাগকে বেদী কহে। তুই হাতের মধ্যে যে কোন হন্ত ছারা লিক নির্মাণ করা যাইতে পারে, এক হন্ত ছারা লিঙ্গ নির্মাণ করাই প্রশন্ত। নিতান্ত অসমর্থ হইলে চুই হস্ত দারাও লিক গড়ান যাইতে পারে। এই-রূপে নির্মাণ করিয়া একটী কুদ্র গোলাকার মৃত্তিকা লিক্ষের মন্তকোপরি দিতে হইবে। ইহার নাম বঞ্জ। অপরে শিক্ষ নির্মাণ করিয়া দিলে পুত্রক শিবের গাত্রে হাত দিয়া 'ওঁ হরায় নমঃ' ও 'ওঁ মহেশ্বরায় নমঃ' এই মন্ত্র পড়িবে। পূজার সময় শিবলিকের পিণাক উত্তরদিকে করিয়া বিশ্বপত্রের উপর বসাইতে হয়। সামাক্ত পূজাবিধি অনুসারে আসনগুদ্ধি, জলগুদ্ধি, গণেশাদি প্রভৃতি দেবতা পূজা করিয়া দিলপূজা করিতে হইবে। পূজার সমন্ত্র ললাটে ভত্ম বা মৃত্তিকার ত্রিপুঞ্জু এবং গলদেশে কলোক-মালা ধারণ বিধের।*

পরে শিবের ধান করিতে হইবে । ধান বধা—

"ওঁ ধারেরিজ্ঞাং মহেশং রক্ষতগিরিনিজং চাকচজ্রাবতংসং
রন্ধাকরোজ্ঞাশ পরগুমৃগবরাজীতিহন্তং প্রসন্তম্ ।

পদ্মাসীনং সমন্তাৎ অতমমরগগৈর্ গ্রাজ্বন্তিং বসানং

বিশ্বাজং বিশ্বীজং নিশিশভ্যবরং পঞ্চবক্তং ত্রিনেত্রম্ ।"

এই ধান পাঠ করিরা মানলোপচারে পূলা করিরা পরে ধান

পাঠ করিরা শিবের মন্তকে কুল দিতে হইবে । পরে 'ওঁ পিণাক
শ্বক্ ইহাপজ্ঞ, ইহাপজ্ঞ, ইহ তিঠ ইহ তিঠ, ইহ সন্নিধেহি, ইহ

সন্নিধেহি, ইহ সন্নিক্ষাম্ম ইহ সন্নিক্ষাম্ম, অত্রাধিঠানং কুক মম

পূলাং গৃহাণ ।' এইরূপে আবাহনাধি করিবে । আবাহনী প্রভৃতি

পাচটী মুলা দেখাইরা আবাহনাদি করিতে হর । পরে 'ওঁ শূল-

পাণে ইং হ্পাডিরিভো তব' এইরপে পিদথেডিরা করিরা 'উঁ পণ্ডপভরে নুমঃ' এই মত্তে ডিনবার শিবের মন্তকোপরি রুল দিরা শিবের মন্তকের বন্ধু কেলিরা দিরা ভত্নরি চারিটা আছপ ভঙ্গ বিতে হয়। পরে পাছাদি বংশাপচার বারা পূলা বিবের। 'উ এতৎ পাছং উ নুমঃ শিবার নুমঃ।'

"रेप्तर्याः 🤏 नमः निवात नमः" रेजापिकारम शास्त्र, अर्चाः चाठमनीव, सशुनर्क, वासीव, शक, भूम, विवशव, शुनं, मील ७ देनदरकामि मिटक स्टेटर । निटवह व्यट्स कमा ७ বিৰপত্র দিতে হয়। পরে শিবের অষ্টমূর্ত্তির পূজা করিতে হয়। পূর্কদিকে-এতে গন্ধপুলে 'ওঁ সর্কার কিভিমূর্তরে নমঃ' জ্বপান-কোণে 'এতে গৰুপুলে ওঁ ভবার জলমূর্ত্তরে ন্মুঃ' উদ্ভৱে 'এতে গৰপুলে ও কজাৰ অধিনূৰ্ত্তৰে নমঃ' বায়ুকোলৈ 'এতে গৰপুলে ওঁ উগ্ৰায় বায়ুমূৰ্ত্তে নমঃ' পশ্চিমে 'এতে গৰুপুষ্পে ওঁ জীমার আকাশসূৰ্তহে নম:' নৈৰ্ঘতে 'এতে গ্ৰন্থপে ওঁ পণ্ডপত্তহে বজ-মানমূর্ত্তরে নমঃ' দক্ষিণে 'এতে গৰুপুলে ও মহাদেবার সোমমূর্ত্তরে नमः' अधिरकारण 'এতে গৰপুশে ও ঈশানার পূর্যামূর্ত্তরে নমঃ' এইরূপে অষ্টমৃত্তি পূজা করিয়া বথাশক্তি জল ও গুঞ্চাতিগুঞ্ মন্ত্রে জপ ও বিসর্জ্ञন করিতে হইবে। তৎপত্নে দক্ষিণকরের বুদ্ধাকুঠ ও তৰ্জনী যোগ করিয়া তত্বারা বন বন শক্তে দক্ষিণ গাল বাড় করিতে হর। এই সমর মহিমা তবে প্রভৃতি শিবের ভবকবচ পাঠ করা আবশুক। অসমর্থ হইলে অভাবপক্ষে ২।১টী লোকও পাঠ করা বিধেয়। পরে নিয়োক্তমত্তে প্রণাম করিতে হইবে :

মত্র—ওঁ নমস্বভাং বিরপাক্ষ শমতে দিব্যচকুবে।
নম: পিণাকহন্তার দশুপাশাসিপাণরে।
নমক্রৈলোক্যনাথার ভূতানাং পতরে নম: ॥
বাণের্বার নরকার্ণবতার্গার জ্ঞানপ্রদার কর্ম্পামর্মাগরার।
কর্প্রকুম্পবলেক্জ্টাধরার দারিত্রাহংখদহনার নম: শিবার॥
নম: শিবার শান্তার কার্পত্রহেত্বে।
নিবেদরামি চান্ধানং স্বং গজিঃ গর্মেশ্বর॥
নমতে স্বং মহাদেব লোকানাং স্কর্মীশ্বর্ম।
পুংসামপূর্শিমানাং কামপুরামরাজ্যিপম্॥

এই মত্রে প্রণাম করিরা দক্ষিণহত্তে অর্চাঞ্চল গ্রহণপূর্কক নিয়োক্ত মত্রে আত্মনমর্শন করিরা শিবের মন্তকে একটু জল দিতে হইবে।

মন্ত্ৰ বধা — 'ইড: পূৰ্কাং প্ৰোণবৃদ্ধিকহণগাধিকারতো জাপ্রং-গুলাহ্বপ্রাক্সান্ত্র মনসা বাচা হজাভাগে পত্তামূলরেণ শিরা বং-গুভং বংকজং কছকাং জংনর্কাং শ্রীশিবার গাহা, মাং মনীরং সক্ষনং সমাক্ শ্রীশিবচরণে সমর্শরে।'

 [&]quot;বিদা ভগজিপুতে ব বিদা ক্ষক্রবাদ্যা।
 বিদা নাসুরপজেশ নার্চনেৎ প্রাথিক লিখন।"
 XVII

এইরণে আব্দমর্শণপূর্কক রুভারতি হইরা ক্ষমা প্রার্থনা করিতে হঠবে।

"ওঁ আবাহনং ন জানামি নৈব জানামি পূজনং। বিদর্জনং ন জানামি ক্ষমত্ব পর্যমেবর ॥"

এইরপে ক্ষমা প্রার্থনা করিরা বিসর্জন করিতে হর। জিলান-কোণে জলের বারা একটী ফিকোণ মওল করিয়া পরে সংহার-মূল্রা বারা একটী নির্মাণ্য পূজা লইয়া আত্রাণ করত ঐ ত্রিকোণ মন্তলের উপর দিতে হর, এই সময় চিন্তা করিতে হয় বে, পূজিত কেবতা আমার হাৎপদ্ম মধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন। পরে 'এতে গছলুক্ষে ও চতেশ্বরার নমঃ' ও মহাদেব ক্ষমত্ব' বলিয়া শিব লইয়া ঐ মন্তলের উপর কাত করিয়া দিতে হয়।

প্রস্তরময় শিবলিলপুলায়—আবাহন, বিসর্জন ও গঠনাদি
নাই। পূলাপ্রণালী সমস্তই পূর্বরূপ, কেবল লানের সময় 'ওঁ নমঃ
শিবার নমঃ' মছে লান করাইতে হইবে। জলে শিবপুলা
করিলে আবাহন ও বিসর্জনাদি নাই। ধ্যান পূর্বেই দেওয়া
হইরাছে। 'হোঁ বালেশরার নমঃ' এই মছে উপচারাদি দিতে হয়।
সকল পুলেশ শিবপুলা করিতে নাই। মল্লিকা, মালতী, জাতী,
শেকালিকা, জবা, বকুল ও কাট টগরপুলা নিষিদ্ধ।

বাণলিক প্ৰার পর নিয়োক্ত তব পাঠ করা বিধেয়, তব যথা,
"বাণলিক মহাভাগ সংসারান্তাহি মাং প্রভা ।
নমতে চোগ্রহ্মপার নমতেংব্যক্তযোনয়ে ॥
সংসারকারিণে তুভাং নমতে ক্ল্রপ্রত্ ।
প্রমন্তার মহেক্লার কালরূপার বৈ নমঃ ॥
দহনায় নমন্তভাং নমতে যোগকারিণে ।
ভোগিনাং ভোগকর্তে চ মোক্লাত্রে নমোনমঃ ॥
নমঃ কামপ্রণাশার নমঃ ক্ল্রহারিণে ।
নমো বিশ্বর্লাত্রে চ নমো বিশ্বর্রপিণে ॥
বাপক্ত বরলাত্রে চ রাবণক্ত ক্লরার চ ।
রামকান্ত্রহার্থার রাজ্যার ভরতক্ত চ ॥
মূনীনাং বোগদাত্রে চ রাক্লানাং ক্রার চ ।
নম্ভভাং নমন্তভাং নম্ভভাং নমো নমঃ ৪°

ইত্যাদি।

শিবপুরাণে বাদশটী জ্যোতির্দিকের উদ্রেখ আছে, এই জ্যোতির্মিল সকল লিল হইতে শ্রেষ্ঠ। এই বাদশ জ্যোতির্দিকের মধ্যে কাশীক্ষেত্র প্রথমন। এই স্থলের বিশ্বের নামক লিল প্রথম, বদরিকাপ্রমে কেলারেশ্বর, প্রীশৈলে মল্লিকার্জ্ক্ম নামক লিল ও ভীমশব্দর শিল, ওঁকারে অমরেশ, উজ্জ্বিনীতে মহাকালেশ্বর, স্থরাটে লোমনাথ, পারলীতে বৈক্তনাথ, উভূদেশে নাগ্যমাথ, শৈবাকে স্থবমেশ, ব্রক্তিরিতে ত্রাম্বক এবং সেতৃবন্ধে রামেশ্বর

নিক এই বাদশ জ্যোতিৰ্নিক, এই জ্যোতিৰ্নিক কর্মনপুক্ষনাদিতে ইহ ও পরলোকে অশেষ ফল্যাণসাধন হইয়া থাকে।* লিঙ্গক (পুং) নিঙ্গেন কায়তীতি কৈ-ক। কণিখ বুক। লিকজা (গ্রী) নিকিনী নতা। (রাজনি°) -লৈঙ্গগুমরাম, শৃকাররসোদর নামক মিশ্রভাণপ্রণেতা। লিঙ্গতোভদ্ৰ (ক্লী) > তৱোক্ত মন্ত্ৰাত্মক চক্ৰভেদ। ২ দীধিতিভেদ। লিক্সত্ব (ক্লী) শিক্ষ ভাবঃ। শিকের ভাব বা ধর্ম। *लिऋ* (न्ह् (शूः) रुक्तापर, निक्रभंत्रीत । লিঙ্গদাশত্রত (ক্নী) বতভেদ। लिक्रधत (जि) हिरूधात्रशकात्री। धनवान्। "ধর্ম্মাৎ পরিচাতো রামো ধর্মনিক্সধরত সন।"(রামা° ৩/১৬/২०) "সুষ্ক্রিক্ধর" (ভাগ • ৭।৫।১৮) লিজধারণ (জী) বংশ বা ধর্মসম্প্রদায়ের পার্থকাহচক চিছাদি ধারণ। লিক্লধারিন (তি) > চিহ্নধারিমাত্র। ২ বাহারা শিবলিক ধারণ करतः। रेगव वा अवस्मामस्थानाग्रज्ञ माधुता भनरनरम व्यथवा বাহতে মহাদেবের লিঙ্গমূর্ত্তি ধারণ করিয়া থাকে। लिक्सादिनी (जी) निमस्य नाष्पात्रनी मुर्डिएकन। লিঙ্গনাশ (পুং) শিঙ্গং ইন্দ্রিয়শক্তিং দৃষ্টিং নাশয়তীতি > নেত্ররোগবিশেষ, নীলিকা নামক নেত্ররোগ। ইহাকে চলি

> "কাচে উপেক্ষিতে তৃতীয়ং চতুর্থং পটলং বা গতে লিঙ্গনাশো জায়তে"

কণায় তিমির, বা ঝাপ্সা বলে।

"কুত্ৰ কৃত্ৰ ছলে লিক্কং ভবেংজ্যাতিৰ্দ্ধিং ভব।
 শীপদ্দৰ উবাচ।
 জাল্যছালং প্ৰবক্ষামি কশীক্ষেত্ৰং মন্ব প্ৰিকৃত্ব।

তত্ত বিবেশবরং নামা জ্যোতিলিলং ভবিষ্যতি ।
ব্লিনিকাম্মানে পূণ্যে বিভীবং লিক মুন্তমন্ ।
কেলারেশমিতি থ্যাতং মম জানীছি স্বত্ততী।
তৃতীবং বিদ্ধি মলিলং জীলৈলে মনিকার্জ্যন্ ।
চতুর্বং শুণু মন্তবং জীমশঙ্করমূন্তমং ।
গুলারে অন্যরেশক পক্ষম লিজ্বীনিতন্ ।
পাত্তাব্দিকাং বর্তক মহাকালেবরং হ্রম্ ঃ
সৌরট্যাং নোননাথক সন্তমং লিজ্মীরিতন্ ।
পারল্যামন্তমং লিজ্ম বিদ্যানাথং স্বামিরতন্ ।
গারল্যামন্তমং লিজ্ম বিদ্যানাথং স্বামিরতন্ ।
বিদ্যালে স্থাবেশক গশমং লিজ্মীরিতন্ ।
একাদশং ব্রহ্মপিরৌ ত্যাক্ষমং নামমুন্তমন্ ।
সোনো স্বামেশক গশমং লিজ্ম থানশং পরিকীন্তিতন্ ।
ইমানি ল্যোতির্মিকালি ভূতিস্কিত্বাদিনি ছে ।
অস্ত্রহার সম্প্রীক্ষম কবিভানি ভ্রান্তাহ্য ।
ব্যাহার্য বিশ্বানিক কবিভানি ভ্রান্তাহ্য ।
ব্যাহার্য বিশ্বানিক কবিভানি ভ্রান্তাহ্য ।
বিশ্বানিকারীক কবিভানি ভ্রান্তাহ্য ।
বিশ্বানিকারীক কবিভানি ভ্রান্তাহ্য ।

লোৰ ভূতীয় বা চতুৰ পটল প্ৰাপ্ত হইলে এই রোগ উপস্থিত হয়।

স্ক্রতে এই রোগ সম্বন্ধে এইরূপ পরিচর পাওরা বার—দৃষ্টিবিশারদ পণ্ডিভেরা বলেন বে, মানবের দৃষ্টি পঞ্চ্যুভের শুল
হইতে সমূত্ত, বাঞ্পটল অবার তেজ কর্তৃক আর্ড, শীতলপ্রক্রতিবিশিষ্ট এবং থডোতের বিচ্চুলিকর্মে নির্মিত মস্রদলপরিমাণে বিবরাক্তি দোর সকল বিশুণ হইরা শিরাসমূহের
অভ্যন্তরে গমনপূর্বাক দৃষ্টিশক্তির ব্রাস করিয়া থাকে। দোর
চতুর্ব পটলে অবন্ধিতি করিলে তিমিররোগ হয়। ইহাতে এককালে দর্শনিশক্তির রোধ হইলে লিজনাশ করে। এই রোগ
অতিগভীর না হইলে চক্র, স্বর্যা, বিহাত্ত ও নক্ষর্যবিশিষ্ট
আকাশ দেখিতে পাওরা বার এবং নির্মালতেজ ও জ্যোতিঃপদার্থ দৃষ্টিগোচর হয়। লিজনাশরোগের এই অবস্থাকে
নীলিকাকাচ করে।

এই লিঙ্গনাশরোগ বাডাদি দোবে ছাই হইরা নানাবিধ হইরা থাকে। লিঙ্গনাশরোগ বার্কর্ড্ক জারিলে সকল পদার্থ জারণ বর্ণ, সচল ও আবিল দেখার। পিত্ত কর্ত্ক হইলে আদিত্য, থড়োড, ইক্রধন্থ, তড়িৎ ও ময়য়পুচছের ভার বিচিত্র নীল অথবা ক্রফবর্ণ দৃষ্ট হয়, অথবা সমস্ত জলারাবিতের ভার দেখার। রক্ত কর্ত্ক জারিলে সমস্ত রক্তবর্ণ ও আছকারমর দেখার। ক্রফজন্থ এই রোগ জারিলে—সমস্তাই বৈতবর্ণ ও লিগ্ধ দেখার। সারিপাত্ত কর্ত্ক হইলে সকল পদার্থ হয়িত, ক্রফা, প্র প্রভৃতি বিচিত্রবর্ণবিশিষ্ট ও বিহাতের ভার বোধ হয়। সকল পদার্থ ই ছিধা বা বছধা দৃষ্ট হয়, জ্বথবা রুম্ব, দীর্ম, বা জ্যোতিঃমারুপ দৃষ্ট হয়া থাকে।

দিল্পনাশরোগে ছয় প্রকার বর্ণ ইইরা থাকে। বাযুজরোগে দৃষ্টিমগুল রক্তবর্ণ, পিত কর্তৃক পরিমারিরোগ বা নীলবর্ণ, সেমকর্তৃক কেতবর্ণ, শোণিত কর্তৃক রক্তবর্ণ এবং সরিপাত কর্তৃক বিচিত্রবর্ণ হয়। পরিমারিরোগে দৃষ্টিমগুলে রক্ত জন্ম অন্তবর্ণ মগুলাকার স্থানকাচ জায়ে, অথবা সমস্ত মগুল ঈবংনীলবর্ণ হয়। এই রোগে কথন কথন আপনা ইইতে দোব কর ইইরা দৃষ্টি-শক্তি প্রকাশ বায়। (স্কেশ্ড উত্তরত নেক্রেরোগার্ধি)

ইহার চিক্ৎিসাদির বিবর নেএরোগশন্দে দেখ।]

ই নিজন্ত নালঃ। স্থাদেহের বিনাশ, মোক। "বল্পেথা
বোনিসভক্ত বৃর্তিন দৃক্ততে নৈব চ নিজনাশঃ।" (বেভাখতর

উপ' ১১২০) শিক্ষনাশঃ স্থাদেহত বিনাশঃ।' (শছর)

ে ৩ ব্যৱত্য বোগ। শিলোখানশন্তির রাহিত্য। ৪ পরিগৃত মুর্ব্যালক চিক্টাবির বিশ্ব ।

বিক্লপরামর্শ (বং) ভারোক লক্ষ্মনিক শীমাংলার প্রকার-

জেল। বেমন গ্ৰাছ, গ্ৰাচিক্ট আগ্নির উলোধক। গ্ৰাচিক্রে অল্পান বারা অন্তি প্রতিপাদিত হট্যাছে বলিয়া উহা লিক্পরামর্শে সিদ্ধ হট্যাছে বুঝিতে হটবে।

লিক্সপীঠ (রী) মন্দির মধ্যে যে চৰরোপরি দেবনিক প্রাভিত্তিত থাকে, উহাকে গর্জনীঠও বগা যার। (রাজতরক্ষিণী ২০১২৬) লিক্সপুরাণ (রী) মহর্ষি বেদব্যাসপ্রণীত একথানি পুরাণ প্রস্থ। ইহার বিশেষ বিবরণ পুরাণ শব্দে দিখিত হইরাছে।

[পুরাণ দেখ।]

লিঙ্গপ্রতিষ্ঠাবিধি (পুং) শিবাদি শিল্মাণনপদতি। লিঙ্গতট্ট, অনৈক অমরকোবটাকা-রচমিতা। লিঙ্গমাহাত্ম্য (ফী) দেবলিকের মহন। পুরাণাদিতে জীর্বজ্ঞান তত্তপ্রানের দেবলিকের মহিনা কীর্ম্ভিত হইরাছে। কলপুরাণের অবস্থিধতে ইহার বিশেষ বিবরণ পাওয়া যায়।

লিক্সমূর্ত্তি (পং) গিলরণা মৃত্তিবঁত। শিব। লিক্সমৃদ্রি, অমরকোষণদবিবৃতিপ্রণেতা। বললকামর ভটো-পাধ্যারের পুত্র।

লিস্করোগ (পং) নিক্ত রোগ:। নিকের রোগ, উপকংশরোগ, চলিত গরমির পীড়া।

"হস্তাভিঘাতারথদস্তবাতাদধাবনাদত্যুপসেবনাদা।
যোনিপ্রনোষাক্ত ভবস্তি শিল্পে পঞ্চোপদংশা বিবিধোপচারে:॥
(ভাবপ্রত উপদংশরোগাধি•)

লিকদেশে হন্ত, নথ বা দন্ত বারা অভিবাত হইলে, শিশ্নপ্রকালন না করিয়া অপরিকার রাখিলে, অভিরিক্ত ক্রীপ্রসঙ্গ
করিলে, দৃষিত যোনিতে উপগত হইলে এবং অফ্রাক্ত নানাপ্রকার
অপচার বারা শিশ্রদেশে বাতিক, লৈমিক, সামিপাতিক ও রক্তক
এই পাঁচ প্রকার উপদংশ রোগ হয়। [উপদংশরোগ শব্দ দেখ।]
লিক্সলেপ প্রং) রোগভেদ।

লিঙ্গবং (ত্রি) > চিল্মুক। (ভাগ গাংহে৪), নিলোপাসক বা শিবনিলগারী শৈব সম্প্রদারভেদ। অধিকসভব এই নিলবং শন্দ হইতে দান্দিগাত্যের নিলারত সম্প্রদারের নামকরণ হইরাছে। নিঙ্গবর্দ্ধ (পুং) নিলং বর্দ্ধতীতি বুধ-নিচ্-অচ্। > কণিখ-বুক্ষ। (শন্দেট) ২ নিলবৃদ্ধিকরণ, নিলের বর্দ্ধন। গরুড় পুরাণে নিধিত আছে—

"কটুতৈলং ভ্রাভকং বৃহতীকলনাড়িমন্। বৰলৈঃ সাধিতং লিখাং নিজং তেন বিবৰ্জতে ॥ অলিচ— কুঠমাবনমীচানি তগজং মধুলিয়ানী। অলামার্গাখগলা চ বৃহতীলিতসর্বলাঃ ॥ ববাতিলং নৈজবক গাণিকোর্জনং ভ্রুতন্। নিজবাহতনানাক কর্মবাধ ভিত্তন্তবেং ॥" (গ্রুকুস্থ ১৮০ছ) ৰুষ্ঠ, মাব, মরীচ, তগর, মধুপিশ্ললী, অপামার্গ, অখগদা, বৃহতী, সিতসর্বপ, যব, তিল ও দৈদ্ধব এই সকল দ্রব্য একত্র চূর্ণ করিয়া লিল ও জনাদিতে মর্দ্দন করিলে উহার বৃদ্ধি হর।

लिइन वर्ष्क्रम (वि) नित्त्रम वृष्क्रिक दृष

লৈক্বৰ্দ্ধিন্ (অ) > নিক্বৃদ্ধি। বিষাং ভীপ্। নতাভেদ (Achyranthes Aspera)।

লিক বিদ্ধিনী (ত্রী) লিকং বর্ণ্ণরতীতি বৃধ্-ণিচ্ ইনি, ভীপ্। অপামার্গ। (শব্দচ°)

লিক্সবিপ্রয়য় (পুং) ব্যাকরণোক্ত পুংস্ত্র্যাদি লিক্সের পরিবর্তন। চিন্দের বৈপরীত্য।

ক্রিবৃত্তি (পুং) বিঙ্গমেব বৃত্তির্জীবনোপারো যক্ত। জীবিকার্থ জটানি চিক্তধারণ। পর্যায়—ধর্মধ্বজী।

"জীবিকাদিনিমিওস্ত যো বিভর্তি জটাদিকম্।

ধর্মধ্বকী শিঙ্গরভিদ্ন যাং তত্র নিগছতে ॥" (শব্দরত্না•)

লিঙ্গবেদী (জী) দেবমূর্ত্তি স্থাপনের চত্তর।

लिक्नभादीद्व (क्री) विकास । रक्तभादीत्र, सृङ्ग्रवाता यादात्र ध्वः न इस्र ना । [श्रक्ति भन्न स्मर्थ ।]

লিক্সশান্ত্র (ক্রী) ব্যাকরণোক্ত শব্দসমূহের নিজাদিনিপায়ক নিয়মা-বলী। ২ ব্যাকরণ গ্রন্থভেদ।

লিঙ্গসন্ততা (ত্রী) লভাবিশেষ, নিদিনী।

লিঙ্গস্থ (গুং) লিজে বন্ধচর্য্যে তিষ্ঠতি স্থা-ক। বন্ধচারী।

"ন সাক্ষী নুপতিঃ কার্য্যো ন কারুককুশীলবৌ।

ন শ্লোতিয়ো ন শিক্ষাে ন সক্ষেত্যাে বিনির্গতঃ ॥" (মনু ৮৷৬৫) 'লিক্সঃ একচারী' (কুলুক)

लित्रह्मी (श्री) भ्रता।

লিঙ্গাগ্র (हो) মেটাগ্রভাগ।

লিক্সাকুশাসন (ক্লী) > শিলব্যবহারপ্রণালী। ২ ব্যাকরণোক্ত শ্লাদির শিল্পনিরূপণার্থ যে নিয়ম বিহিত হইরাছে।

লিঙ্গায়ৎ, দক্ষিণ-ভারতের প্রপ্রসিদ্ধ শৈবসন্তাদার। লিলমূর্তির উপাসনা তাঁহাদের ধর্ম এবং স্বর্ণ বা রোপ্য কোটার কবচরূপে স্বর্ণ বা প্রস্তরনির্মিত শিবলিক্ষমূর্ত্তি বাহতে বা গলদেশে ধারণ তাহাদের প্রধান কর্ম। এতবির তাঁহাদের মধ্যে বিবাহ, অস্ত্রেষ্টি প্রভৃতি বিষয়েও নানার্নপ বিভিন্ন আচারপদ্ধতি প্রচলিত আছে।

দান্দিণাভোর নিজারৎ সম্প্রদার ভারতের নানাছানে ক্রম, নিজধারী, নিজধার, নিজধার, নিজধার, নিজধার, নিজধার, নিজধার, নিজধার, বাহুতে নিজধারণ ও তাঁহার বিশাসনাধি বাতীত তাঁহারা বিশেষ কোন ধারণ প্রতাহর ক্রম্পরণ করেন না। তাঁহারের মধ্যে জাতিতের নাই।

ব্রাহ্মণদিগকে তাঁহার জাতিশ্রেষ্ঠ বলিয়া স্বীকার করেন না। ক্রিফার্য ও বাণিজ্যপরিচালনই তাঁহাদের জীবিকার্জনের এক-মাত্র অবলম্বন। তাঁহারা সাম্প্রাদারিক পদ্ধতির বাফ ক্রিয়া-কাণ্ড বিশেষ শ্রদ্ধার সহিত সম্পাদন করিলেও, নীতিসম্পর্কে তাঁহাদের বিশেষরূপ উচ্ছ্ শ্র্মানতা দৃষ্ট হয়। বেদ ও ব্রাহ্মণে তাঁহাদের কোনরূপ আস্থা নাই।

পূর্ব্বে উক্ত ইইয়াছে যে, দক্ষিণভারতে শিবলিঙ্গের উপাসনাঃ
প্রচলিত ছিল। তথাকার বর্ত্তমান লিফোপাসক সম্প্রদার লিফারৎ
নামে প্রসিদ্ধ। কল্যাণপত্তনের অধিপতি বিজল রাজার সময়ে
ঐ অঞ্চলে জৈনধর্মের সমধিক প্রাহুর্ভাব ছিল। ১১৬০ খুটাব্বের
পর, বাসব নামক এক ব্রাহ্মণকুমার জৈন ধর্ম্মত নিরসন
করিয়া শিবপূজা প্রচার উদ্দেশে দাক্ষিণাত্যভূমে জলম-সম্প্রদার
প্রবর্তিত করেন। মহারাষ্ট্রের অন্তর্গত বেলগাম্ জেলার
মধ্যবর্ত্তী ভাগোয়ান গ্রামে এক শৈব ব্রাহ্মণ-বংশে তাঁহার জন্ম
হয়। তিনি স্বীয় মতবিস্তার ও তৎসংক্রান্ত নানাকার্য্য সাধন
করিয়া ১১৬৮ খুটাব্দে পরলোকে গমন করেন। বাসবপ্রাণে
তাঁহার চরিত্র সবিশেষ বর্ণিত আছে। জলমেরা উক্ত প্রাণ ও
সাম্প্রদায়িক অন্তান্ত গ্রছাম্বারে তাঁহাকে শিবান্থচর নন্দীর
অবতার বলিয়া বিশ্বাস করেন।

উক্ত পুরাণে লিখিত আছে যে, উপনয়নের সময়ে স্থানি-পাসনা করিতে হয় বিলয়া বাসব বাল্যকালে ্যুক্তোপবীক্ত্রা-প্রহণ করিতে অধীকার করেন এবং বলেন, 'আমি দিব ভিন্ন অন্ত গুরুষ উপদেশ গ্রহণ করিব না। পরে তিনি শীন্ন মত-প্রতিপোষক একটা অভিনব উপাসক সম্প্রদান্ন প্রবর্ত্তিত করিতে প্রবৃত্ত হন।'

বাসব হিন্দু ধর্ম্মের অন্তর্গত সূর্য্য, অগ্নি ও অস্থান্ত দেবদেবীর পূজা, জাতিতেদ, মরণান্তর যোনিভ্রমণ, ব্রান্ধণেরা ব্রহ্মসন্তান এ ও ওলাল্বা, তাঁহাদের অত্তর প্রভাব ও অভিসম্পাতের জাপদ্ধা, প্রার্মিন্ডর, তীর্থভ্রমণ, স্থানবিশেবের মাহাল্ব্য, ব্রীলোক্দিগের অপ্রাথান্ত ও অপকস্থতা, নিকট সম্পর্কীর কন্তার পাণিগ্রহণ-প্রতিবেদ, গঙ্গাদি তীর্থক্ষণ সেবন, ব্রাহ্মনভোজন ও উপবাস, শোচাশোচ, স্থাক্ষণ, কুলক্ষণ, অব্যেষ্টিক্রিয়ার জাবশ্যকতা প্রভৃতি বিষয় ভ্রমান্থক বিদিরা অগ্রাহ্ম করেন এবং তাহা পরিবর্জন করিতে আদেশ দেন।

তিনি ক্র ক্র নিজম্বি প্রস্তুত করির। ব্রী ও পুরুষ শিষাগণের হত্তে ও গলদেশে বারণ করিতে উপদেশ দিরাছিলেন। তাঁহার মতে ওঁম, শুরু, নিজ, ও জলম এই চারিটা প্রমেধর-কৃত পবিত্র পদার্থ। নিজারতগণ ঐ নিজ ব্যতিরেকে বিভূত্তি ও ক্রয়ান্দ নামক শৈষ্টিক ছুইটা ধারণ করেন। এই সম্মানরের মধ্যে ব্লী পুরুষ উত্তর জাতিরই ওঞ্চপদান্তহণের
অধিকার আছে। বীক্ষাকালে ওঞ্চ নিব্যের কর্ণজুহন্তে মন্ত্রোপদেশ
দান করেন এবং ভাষার পদাবেশে কিবো হত্তে নিজমূর্ত্তি বীবিরা
বেন। গুরুর পক্ষে মন্ত, মাংস ও ভাষার ব্যবহার নিবিধ।

বাসৰ নিজ সত্মদান্তের সধ্যে বিধবাবিবাহ প্রচলিত করেম ! এই বিধবাবিবাহের জিরাপদ্ধতি শ্বতম্ন ! ইহাতে বিশেব ধরচ নাই। পাত্র বিধবাকে ৫ হইতে ১০ টাকা দিলেই সম্বন্ধ হির হইরা বার। এই সমন্ত্র বিধবা কলাকে শ্বামিগৃহ হইতে পিত্রাজন্মে আসিয়া বিবাহ করিতে হয়। প্রামাধ্যক্ষিণের পুত্রের প্রথম বিবাহে ২০০, টাকা লালে, কিছু জ পুত্র বদি বিধবাবিবাহ করে, তাহা হইলে ৫ হইতে ১০০, টাকা পর্যন্ত ধরচ হয়। এই বিবাহের উদ্দেশ্জ ভাল ধাকিলেও, তক্ষেশ-প্রচলিত শতক্ষিণ কুৎসিত প্রথা ইহাকে শার্মার ক্ষম্ম বলিরা তুলিয়াছে। দক্ষিণাপথের দক্ষিণ-পশ্চিমান্ধণে বিবাহের পর, ত্রী শীর শামীয় সহবাস না করিরা ইচ্ছামত শ্বভার্ম প্রক্রের আসক্ষ হয়। ক্ষম্মরাও এই প্রণিত প্রথার শ্বন্ধরণ করিরাছে।

বাসব শবদাহপ্রথা পরিত্যাগ করির। বীর সাজ্ঞারিকদিগকে সমাহিত করিবার ব্যবদা বিরা বান। সহমরণেচ্ছু সতীদিগকে তিনি জীবিতাবহার প্রোথিত করিবার প্রথা প্রবর্তিত
করেন। তীর্থবাঞ্জানিবেধাধি এবং জীবিত-সমাধি প্রভৃতি
তংপ্রতিষ্ঠিত কতকভলি কদর্যা নিজের জার তাহা পালন করে না !
বরং ভাহারা একণে শিবরাঞ্জাদি শিবরত পালন এবং শ্রীলৈগ,
কালত্তী প্রভৃতি প্রসিদ্ধ শৈবতীর্থে গমম করিরা থাকে; দাজিপাত্যের কোন কোন নিবমন্দিরে তাহাদিগকে পূজারি কার্য্যে
নিঘৃত্ত দেখা বার । কালীভ কেদারনাথ লিকের পাণারা জলম ।
প্রোহিত্তগণের জলম উপাধি হইতেই সাজ্মানিকগণ জলম
নামে অভিভিত। বারাণ্যীর বে অংশে ভাহারা বান করে,
জানা ক্রমবাতী নামে থাতে।

অনেকেই ভিন্দাবারা শীবিকার্জন করে, কোন কোন ভিত্তুক হত্তে ও পরে বঞ্জী বাঁবিরা পথে পথে প্রমণ করিরা বেড়ার। গৃহত্ব লোকে সেই বভীঝানি গুনিরা ভাষানিগকে গৃহত্ব আহ্বান করে অথবা পথে আর্নিরাই ভিন্দা দিরা বার। হানে হানে এই নতাবারের এক একটা মঠ আছে। ঐ মঠে অনেকে পরিচারক বন্ধপ অবহিতি করে। মঠবানীরা কডকওলি পিয় রাখেন এবং মৃত্যুকালে ভাষাবের রখ্যে এক ব্যক্তিকে আপনার উত্তর্যাধিকারী হিম্ন করিয়া বান। ০

Wide Buchanan's History of Mysore, vol. I. and Jour. Roy. As. Soc. Vol V. pt 1. art. 6th.

ইইরা ক্রমণ: মহারাই, ভলরতি, তারিল ও ওেলও নেলে বিভূত ইইরা ক্রমণ: মহারাই, ভলরতি, তারিল ও ওেলও নেলে বিভূত ইইরা পড়ে। কিছু আর্যাবর্তে এই স্প্রাহারের সেরুপ প্রাথান্ত হালিত নাই। তবে কানী প্রভৃতি প্রসিদ্ধ লৈবতীবের হালে হালে এই সাজ্যদারিক সাধুসুরুবনিগের স্বাহার নেরিতে পাঙরা বার। এই স্প্রাহারের জন্ত কোনও একটা দাখা বালালার জন্ত রতি বৈভ্নাধ জনলে আসিয়া বাস করিয়াছে। তাহারা কলমিতানি বারা স্ক্রীভূত হইরা সুব-বিশেবকে সলে লইরা বেড়ার। এনেশের লোকে ঐ গোলকে বিভ্নাগ্রের বাঁড় বলে।

তেলৰ, কণাকী প্ৰাকৃতি ভাষায় এই সাম্প্ৰমায়িক নতের
আনেক এব বিভ্নান আছে। নেকেন্ত্ৰী সাহেবের স্কুণ্টীত
প্ৰক-ভালিকান বাসবেবর প্রাণ, প্রকৃতিন লীলা, নাম্বিলীলাকৃত, বিন্নকার কাব্য প্রকৃতি প্রহের পরিচর পাওরা বার্ম। উত্তর
পশ্চিম ভারতে নীলকা রচিত বেলাকস্মভাবাই এই সম্প্রদারের
এক বানি প্রামানিক গ্রহ।

মতপ্রবর্ত্তক বাসবের উপদেশাল্পারে জাডিভেন, প্র-ত্রী-ভেন, প্রাক্ষণক্ষরিরভেন এবং বেনাদি শান্তবাক্য প্রামাণ্য বিশিন্ন গৃহীত না হইলেও ভাহাদের মধ্যে প্রাক্তত পক্ষে জাডিগভ, সম্প্রারগত ও সমাজগভ বা বাণিজ্যগভ মানা পার্থক্য দেখা বার ।

ধর্মপ্রথর্জক বাসবের আদিট উপনেশ পাসন করির। তাহারা লাতিগত ও সমালগত অথবা সম্প্রদারগত সকল তেল-জানই বিসর্জন দিরাছে। আর্থানিবিদিসের আদি ধর্মপ্রছ লগ্ বেলনি সংহিতা তাহারা বেমন বিবাস্ত বলিরা বীকার করে মা, রামাণিবিদের প্রতিও তাহারের সেরপ তক্তি বা প্রজা নাই। লিলারত রাম্মণ-জনরগণ আরাধ্য নামে সমালে পরিচিত থাকি-লেও প্র প্রেমীর লিলারত সন্তানগণ তাহানিগকে সেরপ সমাননার চক্তে নেথে মা। আরাধ্য লিলারতেরাই প্রধানতঃ সংস্কৃত শার্মচর্চা করিরা থাকেন। এতারির সামান্ত তক্ত ও বিশেষ তক্ত নারে তাহারের মধ্যে ছইটা স্বতম্ব বিভাগ দুই হয়।

সামাত তত্তের সহিত সামাত নিজারতবিগৈর বংগট প্রতিত্ব
আছে। এই শেবোক্ত সন্দ্রীয়ার পরশারের বিভাগগত স্থানাক্রিক মর্যায়া ও আতিতেক সম্পূর্ণভাবে বিভাগন আছে। বিশৈষ
তক্তসদ সর্বতোভাবে খুটান্ পিউরিটান্বিগের মৃত। তাঁলারা
আতিকে রানে না। তাইারা কবট মধ্যে পুরিরা, গলবেশে
বে দিক ধারণ করে, তাহা অরিগণ্ নামে পরিচিত। নিবের
এই সূর্বি অবন দিল ও মন্দির মধ্যে হালিত মুর্বি স্থাবর্ম দিক্
ক্রানে ক্ষিত। তাহাবের ব্যালারতিতে আতিস্ক পার্যভানি
বিচার রহিত হইলেও, অসরাপর হিন্দু স্থাবার্ম অন্তেলা ভাহা-

দের মধ্যে জাতীয়তার গোঁড়ামী অধিক্ষতর পরিসন্ধিত হয়।

এতরিবছন তাহারা অতর্ভাবে ব্যবসা বাণিজ্যে নিপ্ত থাকিরা
আপনাপন ধর্মকর্ম পালন করে, কথনও বিভিন্ন সাম্প্রদারিক
লোকের সহিত মিলিত হইরা আহারাদি করে না। মাস্রাজের
দেশীয় সেনাবি গাগে নিজারৎ সম্প্রদারী বিরল। তাহারা
নিরামিবাশী, কথনও ভোজনার্থে হস্তব্য পশু বিক্রম করে না,

এমন কি বীর প্রাকৃত্ত্ক আদিই হইলেও উহা বাজার হইতে

ক্রম করিরা আনে না।

ভাষার মন্ত্রদাতা শুরুকে যথেষ্ট তক্তি ও মাশু করে।
ওঁম, শুরুক, লিল ও জলম ভিন্ন তাহাদের ধর্ম কর্মের আচরণীর
আরু কিছুই নাই! ব্রহ্মণ্যধর্মের আচরিত পৌরোহিত্যে তাহাদের
ক্রিশাল নাই। ব্রহ্মণ্যরা পাছে গ্রাম মধ্যে আসিরা বাস করে,
এই ভবে তাহারা গ্রাম মধ্যেও কুপাদি খনন করে না। ঘাটপ্রতা
নদীর অদ্রবত্তী কালাদগি নগরের নিকটবত্তী একটা গ্রামে ইহার
নিদর্শন পাওরা যায়। তথাকার লোক্টেরা গ্রামমধ্যে কুপ বা
তড়াগ খনন না করিয়া ঘাটপ্রভার জল ব্যবহার করিয়া থাকে।
সাম্মায়িকস্বাত্র্যানিবন্ধন প্রতিমূর্ষ্টি-উপাসক পৌতলিক ব্রহ্মণ
যাজকগণের পৃষ্ট লল গ্রহণীয় নহে বিচার করিয়া ভাহারা এই
বিছেব কর্মনা করিয়াছে।

দাক্ষিণাতোর সমগ্র মহারাষ্ট্ররাজ্যে বিশেষতঃ কর্ণাটকবিভাগে এই সম্প্রদায়ের অধিক বাস আছে। তাহারা লিক্ষোপাসনা ভিন্ন অন্ত কোন দেবভাই পূজা করে না; কিন্ত হিন্দুর অপরাপর দেব-মূর্ব্ভি প্রভিষ্টিত মন্দির, মুসলমানের মস্ক্রিদ, অথবা খুষ্ঠানের গিজ্জার সন্মুথ দিয়া গমনকালে, তাহারা নিবের উদ্দেশে প্রণাম করিয়া থাকে। ভাহাদের বিশাস, ঐ সকল ধর্মগৃহে স্বয়ং মহাদেব লিক্ষাপে বিয়াজিত আছেন।

বাম বাহতে অথবা গলদেশে কৌটায় করিয়া লিক্সমূর্ত্তি ধারণ এবং কপালে ওলাছলেপন সাম্প্রদায়িক পুরুষ ও রমণীগণের প্রধান কর্ম। তাহারা সাধারণতঃ আতিথেরী ও মিতবারী, ধীরপ্রকৃতি, কর্মাঠ ও হসভা। সকলেই বাণিজ্যবাবসায় জীবন পাত করে। তাহাদের মধ্যে জাতিগত শ্রেণীবিভাগ নাই, কেবল গলকর, হিল্মীরে, জীরে, জীরেলল, কালে, মিতকর, পরমালে, ফুটানে, বৈকর ও বীরকর নামে করটী উপাধি আছে। ভির ভির উপাধিগত ব্যক্তির মধ্যেই আদান প্রদান হইরা থাকে। পুরুষ ও রমণীগণের নাম প্রধানতঃ হরপার্বজীর নামেই রাথা হয়। সকলেই গৃহে কণাড়ী এবং বাহিরে মরাঠী ভাষার কথা কহিরা থাকে। বেশভ্রা মরাঠীদিগের ভায়, সকলেই নিরামিবালী। তাহাদের পুরোহিত ক্ষম নামে থাতে। এই পুরোহিতদিগকে তাহারা বিশেবরূপ ভক্তি করিরা থাকে।

পুত্রবধ্ গর্ভিণী হইলে ভাহাকে তাহার পিত্রালরে পাঠাইরা।
দেওয়া হন এবং সেইপানেই সে প্রসব করে। বালকের
জন্ম হইবার পর, ধাত্রী নাভিরক্জু ছেদন করিয়া দিলে, পুত্রের
জন্মবার্ত্তা তাহার পিত্রালয়ে পাঠান হয়। সংবাদ পাইয়া জাত
বালকের পিতা বীয় আয়ীয়, বদ্ধ বাদ্ধব ও প্রতিবেশীদিগের গৃহে
পাণ ও চিনি পাঠাইয়া থাকে। প্রথম, তৃতীয় বা পর্কমদিনে
মাতার গলদেশে এবং জাত বালকের মাথার বালিসের নীচে
একটী লিঙ্গ রক্ষা করা হয়। পর্কমদিনে সন্ধ্যা কালে স্তিকাগৃহহের
এক কোণে একটী চতুলোণ বর আঁকিয়া তাহাতে চাউল, ময়দা
ও বালুকা স্থাপন করে, পরে তাহার উপরে একথণ্ড কাগজ ও
একটী কলম এবং তাহার নিমে নাভিকর্তন ছুরিকাথানি রাথিয়া
দেয়। তাহাই বর্তীদেবী জানিয়া প্রস্তিত প্রথাম করিয়া থাকে।

বঠ রাত্রে তাহারা একটা রৌপ্যানির্মিত পার্কাতীমূর্ত্তি স্থতিকাণ্
গৃহে কাঠের চৌকিতে স্থাপন করে। তদনস্তর ধাত্রী তাহার
সন্মুথে ফুল ছড়াইয়া দের এবং কপুর ও ধূনা জালাইয়া থাকে।
প্রস্থতি সেই দেবীমূর্ত্তিকে পূজা ও প্রণাম করিবার পর, স্থতিকাণ
গারের সন্মুথে জঙ্গমকে জানিয়া উক্ত চৌকীতে বসান হয়।
বাতীর গৃহকত্রী তথন একথানি থালে পুরোহিত্তের পদন্বর প্রকাশন
লন করিয়া দেন। সেই পাদোদক পরে বাতীর সকল ঘরেই
ছড়াইয়া দেওয়া হয় এবং সকলে পান করে। ভোজনাস্তে দক্ষিণা
লইয়া জঙ্গম বিদায় হয়
ক্রারজ প্রস্ত হইলে লাদশ দিনে
এবং পুত্র জয়িলা ত্রেরাদশ দিনে জাত বালকের নামকরণ
হইয়া থাকে। নামকরণ দিনে পাঁচটা সধবা স্ত্রীলোক (এয়োন)
জাসিয়া বালকের নামকরণাস্তে সমবেত কুটুল্বয়মনীগণের সহিত
একত্র ভোজন করে।

অশৌচান্তদিনে প্রস্তি দানান্তে নিকটস্থ কোন মহাদেবমন্দিরে প্রস্থ গমন করিয়া থাকে। তাহার পর পূত্র কোলে
করিয়া সে পৃতদেহে গৃহকর্মে লিপ্ত হইতে পারে। ছয় মাসে
অন্ধ্রাশন দিবার বিধি আছে। এক বৎসর বয়সে শিখা রাথিয়া
জাত বালকের মন্তক্ম্পুল করিয়া দেওয়া হয়। বালিকা হইকে
তাহার মাতুল আসিয়া সম্প্রেশ্বেশাগ্র ছাঁটিয়া দের। ইহাই
সম্ভবতঃ তাহাদের চূড়াকরণ।

বালক পঞ্চম বৎসরে ক্লাণণি করিলে তাহাকে বিভাগরে পাঠান হইরা থাকে এবং হাদশবর্ষে তাহাকে শৈব মত্রে দীকা দিয়া স্তোত্রাদি পাঠ করিতে শিকা দেওয়া হর। বালিকা বোড়শ-ববীর না হইলে কথনই শিব-মত্র অভ্যাসের অধিকারিশী হর না শি বালিকার ৮ হইতে ১২ বৎসর এবং যুবক্দিগের ১২ হইতে ২৫ বৎসরে বিবাহ হইরা থাকে। বালকের পিতাই প্রথমে কল্লাকর্ডার নিকট বিবাহের প্রস্তাব পাঠান। বরক্তা, জলম

ও বরপকীর নিকটান্ধীরের। কঞাগৃহে বাইরা বিবাহ লক্ষ হির করিয়া আলেন। কথা পাকা হইলে, তাহারা কঞাকে নব বন্ধ ও অঙ্গরাখা পরিধান করাইরা তাহার মুখে চিনি দের এবং কঞা-কর্তা অতিথিদিগের হস্তে পাণ দিয়া বিদায় দেন।

জঙ্গম বা স্থানীয় আচার্য্য ত্রাহ্মণগণের সহিত পরামর্শ করিয়া বিবাহের শুভ দিন ধার্য্য হয়। ঐ দিনে ব্রগ্নহে ও ক্ঞালয়ে একটা চাঁদোরা গাটান হইয়া থাকে। ক্সাগৃহে বিবাহের জন্ম একটা বেদী বা মগুপ বাঁধা হয়, ঐ বেদীয় উপর সিন্দুর চিত্রিত চারিটী সাদা মাটার ঘটা পাঁচ থাকে উপরি উপরি সাজান থাকে। বর অখারোহণে বাছাদি সহকারে সদলে কল্লাগৃতে গমন করে। তথন কম্মাপক্ষীয়েরা বরকে শইষা যায় এবং উভয়কে হরিদ্রা মাধাইয়া পরস্পরের বস্তাঞ্চলে গাঁইট বাঁধিয়া দেয়: তদলস্তর তাহার৷ দেই নবদম্পতীকে লইয়া নিকটস্থ महाम्हिपसम्मित्त व्यनाम कत्रादेश व्यातन। जाहात शत्र निर्फिष्टे চতকোণ শিলার মধ্যভাগে স্থাপিত কাঠের চৌকীতে তাহা-দিগকে আনাইয়া বদান হয়। উহার চারি কোণে চারিটা ও সশ্বথে একটা পিত্তল কলস জলপূর্ণ থাকে। অনস্তর বর ও কল্তা জন্মের সাহায্যে সম্পন্থ ব্যভবাহন শিবমূর্ত্তি পূজা সমাপন করিলে, জন্ম বিবাহের মন্ত্র পাঠ করিতে থাকেন। ঐ সময়ে আত্মীয়ের। সকলে উভয়ের মন্তকের উপর চাউল ফেলিতে থাকেন। জন্ম কর্তৃক বিবাহমন্ত্র পাঠ সমাধা 🛊 ইলে বর ও কন্তা উভয়ে সন্মুখত্ব শিব ও নন্দীকে প্রণাম করে। তথন হইতেই তাহারা স্বামিস্ত্রীরূপে পরিগণিত হয়। অতঃপর ক্যাকর্তা বর ও ক'নেকে উপরোক্ত বেদীতে বসাইয়া স্বীয় জামাতার হতে একটা তামা (তাম্রনিশ্বিত কলস) ও পিত্তলের থাল (পিতালী) উপহার দিয়া থাকে। ভাহার পর জাতি কুটুম্ব ও বর্ষাত্র-গণের জোজ হয় এক একটী পাণের থিলি লইয়া সকলে চলিয়া ষার। বিবাহের পর দিন উভয় পক্ষে নমন্বারী বত্তের উপহার বিমিমরের পর বরক্তা পুত্রবধু সঙ্গে লইয়া গৃহে প্রত্যাবৃত্ত হন এবং নৰবণু সন্দৰ্শনাৰ্থ আগত বন্ধবান্ধবকে পাণ দিয়া বিদায় করেন।

কোন শিলারতের মৃত্যু সময় উপস্থিত হইলে, আগ্রীয় শব্দনেরা মরণাপর ব্যক্তির আগ্রার শুভকামনায় ভিন্দাদান করিরা থাকে। ঐ ব্যক্তির প্রাণবায়ু দেহত্যাগ করিলে গৃহত্ব অপর আগ্রীরেরা সেই শবদেহ একথানি কাঠচৌকীর উপর বসাইয়া ভাহার পৃঠদেশ গৃহপ্রাচীরে ঠেসাইয়া রাথে এবং শুই জনে ছই পার্বে ধরে। ভার পর সেই চৌকীর চারি- জিকে বালের বেড়া দিরা উহার চারি কোণে চারিটী কলাগাছ বাধিয়া দের এবং ঐ বেড়ার তিন দিক্ রালাবত্বে আচ্লানিত করিয়া শবসহ ঐ কাঠচৌকী গৃহহর বাহিরে আনে। এথানে

শীতন জলে স্নান করাইয়া ঐ মৃত ব্যক্তিকে নববন্ধ পরিধান করার। তাহার কপালে, বলে ও বাছতে ভত্ম মাথাইরা দের এবং কণ্ঠদেশ পুস্পমালায় স্থুশোভিত করে। তদনত্তর একটা প্রদীপ আলিয়া তাহার মুখমওল ও শরীরে আর্ডি সমাপন করিয়া চারি জনে সেই চৌকী খন্দে করিয়া সমাধিক্ষেত্রে লইয়া বায়। শবের সমুখে এক জন জলম মৃত্যুত: শম্ভ বভীগবনি এবং অপরাপর স্ত্রীপুরুষণণ তাহার পশ্চাতে "হর, হর, মহাদেব" শব্দে চীৎকার করিতে করিতে গমন করে। সমাধিকেত্রে উপনীত হইয়া তাহারা সেই বাঁশের বেড়া খুলিয়া ফেলে এক বে স্থানে শবদেহ প্রোথিত করিতে হইবে, সেই স্থানে জল ছিটা-ইয়া চারি হাত গভীর একটা গর্ত খনন করে। ঐ গর্তে ভাহারা শবদেহ স্থাপন করিয়া ভাহার গলদেশ হইতে পুর্বান্ত বিশ খুলিয়া লইয়া হস্ত তালুতে রক্ষা করে এবং সেই লিলোপরি বিৰপত্ৰ দিয়া মৃত ব্যক্তির নিকটান্থীর স্বীয় সাধ্যান্তসারে শবদেহ লবণ দারা আচ্ছাদিত করিয়া উপস্থিত ব্যক্তিগণের সাহায্যে পুনরায় দেই গর্ত্ত মৃত্তিকা ছারা পুর্ণ করিয়া থাকে। তৎপরে সেই গর্তের উপর এক খণ্ড প্রস্তের স্থাপন করা হয়, জলম সেই প্রস্তবে দাড়াইরা প্রেতের মঙ্গলকামনার মন্ত্র পাঠ করিতে থাকেন। মন্ত্র পাঠ শেষ হইলে জন্সম সেই প্রস্তরনির্দিষ্ট স্থানে বিৰপত্ৰ দিয়া পূজা করেন। অবশেষে সকলে মৃত ব্যক্তির গুছে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া যে স্থানে ঐ ব্যাক্তর মৃত্যু ঘটিয়াছে, তথাকার প্রজ্ঞানত ত্বীপ বন্ধি সন্দর্শন করিয়া স্ব স্ব গ্রহে চলিয়া যায়, তথন ঐ প্রদীপ নিবাইয়া দেওয়া হয়।

ইহা ভিন্ন তাহাদের শোক প্রকাশের আর কোনরূপ ক্রিরাই পরিলক্ষিত হয় না। সমর্থ হইলে তাহারা মৃতের সমাধির উপর লিক্ষ ও নন্দী সমেত একটী সমাধিক্ষন্ত নির্দ্ধাণ করাইয়া থাকে। তৃতীয় দিনে তাহারা আরীয় অঞ্জনকে একটী ভোজা দের, বাৎসরিক শ্রান্ধ দিনে তাহারা ঐরূপ আর একটী ভোজা দিয়া থাকে,তদ্রির মৃতের প্রেতান্ধার উদ্দেশে আর কোন কর্দ্দই করেনা। তাহাদের সামাজিক দলাদলি পঞ্চায়ত হারা নিশ্পত্তি হইয়া থাকে। লিক্সার্চন (ক্রী) লিকপুলা।

লিঙ্গার্চনতন্ত্র (ক্লী) তন্তভেষ। ইহাতে শিবলিজের উপাসনা-প্রতি বিয়ত আছে।

লিঙ্গালিকা (ত্রী) কুল মৃথিক, পর্যায়—দীনা। (হারাবলী) লিঙ্গিন্ (পুং) লিজমন্তাভেতি ইনি। > হন্তী। (লটাধ্র) (ত্রি) ২ ধর্মধনলী, কপট ধার্মিক।

^बजनिको निकरवरनन ता निक्रमुलसीविड ।

স লিকানাং হরেদেনং তির্যাগ্যোনো চ গচ্ছতি ॥" (কুর্থাপু° ১৫ ছ°) ৩ বাসনাপ্রয়। "ডেনাভ তাদৃশং রাজন্ শিক্তিনো মেহসভবন্। প্রথমবাসক্ত্তোহর্থো ন নদভাই, নিজ্জি ৪" (ভাগ° ৪।২৯।৬৫) এ সায়াসাদি চিক্থারী।

লিজিনী (বী) দিল-ইনি, জীপ্। সভাবিশেব, হিন্দী পঞ্চরিয়া, পর্যার—বহুপত্রী, জবরী, শিববিদ্ধিলা, অরন্ধু, দিদসভ্তা, দেলী, চিত্রকলা, চাপ্রালী, নিদলা, বেবী, চপ্তা, আগতভিনী, শিবলা, শিববদী। ইহার গুণ—কটু, উঞ্চ, হুর্গভ, রুসারন, সর্বসিদ্ধিকর, গু কুসনিরামক। (রাজনি°)

> ২ সন্মাসাদি চিক্থারিশী। ধর্মধানী ত্রী। "লিনিনীং ঋকপত্তীঞ্চ সগোত্তামধ পর্বত্ত ।

কৃষ্ণত সন্ধারোতালি গছতো জীবিতখন: ॥" (প্রক্রত ১।২৪)
সিসিবেশ (পুং) অজিন, দণ্ড ও পানপাত্র প্রভৃতি সন্ধানার্ত্রমা-চারীর চিহ্ন।

লিচছবিরাজবংশ, ভারতের একটা আট্টাল রাজবংশ। নেপাল হইতে আবিষ্কত লিছবিরাজ জরবেবের শিলালিপিতে বর্ণিত আছে—

শ্রীমত দর্শব্যতো দশরশঃ পূর্বৈশ্ব পৌত্রৈঃ সমং রাজ্যেশ্রীবশরান বিহার পরতঃ শ্রীমানভূরিচ্ছবিঃ ॥*

উভ্ ত প্রমাণ হইতে জানা বার বে, প্রথেসিভ প্র্যাবংশীর দশরণের অধ্যান আইন প্রবে লিজ্বি জার গ্রহণ করেন, তাহা হইতেই লিজ্ববিংশ সমুত্ত।

এই দিছৰি পৰা প্ৰাচীন সংস্থৃতে নিছৰি, নিছিৰি এবং পালিভাৰার নিছৰি নামে ব্যবহৃত। মুমুসংহিতার মডে—

"কলো মলত রাজভাৎ ব্রাত্যান্নিছিবিরে চ। মটত করণতৈব খণো ত্রবিড এব চ চ" (> ।২২)

অধীং ত্রাত্য ক্ষত্রির হইতে স্বর্ণা ভার্যার (দেশতেদে বিভিন্ন নামে) বার, মরা, নিজিবি, মট, করণ ও প্রবিড় জাতির উরব। কিছা পালিগ্রহে উৎপত্তি আন্ত প্রকার। পালিগ্রহ মতে কালীরাজের পূলাবলী মাথে এক মহিবী ছিলেন, ভিনি একটা মাংস পিও প্রস্তার করেন। নেই মাংসপিও লইরা কোন প্রবাজন নাই ভাবিরা ধালী আনিরা গলার কলে কেলিরা গোল। গলার প্রবল লোডে ভাসিডে ভাসিডে নেই মাংসপিও বিধা বিভক্ত চইল এবং ভাহাতে একটা বালক ও একটা বালিকা দেখা দিল। জনৈক কবি ভাবাবিগ্রকে কল হইতে ডুলিরা আনিরা লালনপালন করিতে লাগিলেন। উভর পিও ছবি বা সূর্ভিতে কোন রকম ভেল ছিল মা, একারণ ভারারা নিজ্ঞবি নাম পাইল।

এবেশে সাধারণে ন স্থানে ল উচ্চারণ করে, বেমন 'নবীন' হানে 'লবীল' 'নৌকা' স্থানে 'লৌকা'। ঐক্সণ নিচ্ছবি স্থানে পাণি নিচ্ছবি হটরাছে। অতি পূর্বাকালে কোশল ও মিখিলার নিজ্ঞবি ক্ষত্রিরগণ অতিশর প্রবল হইরা উঠিরাছিলেন। এই বংশেই জৈনদিগের শেব তীর্থকর মহাবীর ও বৃদ্ধ শাকাসিংহ আবিভূতি হন। মিখিলা অঞ্চলে নিজ্ঞবিগণ এক সমর এতই প্রবল হইরাছিল বে, মিখিলা-রাজাও একসমধ্যে নিজ্ঞবি নামে পরিচিত হইরাছিল। নিজ্বি-বংশ বৈদিকক্ষবিধা।

জ্ঞানবীর তীর্ষদ্ধর ও বৃদ্ধদেবের আবির্ভাব হওরার এবং ভাঁচাবের সাম্যবাদে জন সাধারণে ব্রহ্মণ্যধর্মের প্রতি আস্থাপুস্ত হইয়া পভার, বৈদিক ও স্মার্ক ব্রাহ্মণগণ প্রায় সকলেই লিফবি লাভির উপর বিবেশভাব প্রকাশ করিতেন, সেই কারণেই তাঁচারা প্রবর্মীকালে নিজবিশাসিত মিধিলার অংশ বিক্তি ভরাজা ৰলিয়া আখ্যাত করিয়াছিলেন। লিজ্জবিতক পালিগ্রন্থকারগণ ক্ষে ভাষার উদ্ধরে বর্জিভরাজ্যের ভিন্নরূপ নামোৎপত্তি ৰীকার করিরা গিয়াছেন। পালিপ্রছের মতে, বে পবি প্রভাবলীর পুত্রকভাকে আনিয়া বিছ্কি নাম দেন, কিছু দিন পরে তিনি প্রতিশালন করা ক্টজনক মনে করিয়া শিশুষয়কে একজন গৃহস্থকে অর্পণ করেন। গৃহস্থ ভাছদিগকে অভিযন্তে পালন করিতে লাগিল। ভাছারা ৰড হইরা অপরাপর বাসক বাসিকার সহিত খেলা করিত। লিচ্চবি পিডমাড্ডীন বলিরা, তাঁহাদের সলিগণ তাঁহা-দিগকে 'বজ্জিভক' অর্থাৎ কেলানে বলিয়া ডাকিত। উত্তর-কালে সেই 'বজিতকোঁর বংশধরগণ ৩০০ বোজন বিশ্বত একটা পরাক্রমণালী রাজ্য স্থাপন করিল। সেই রাজ্যই 'ৰজ্জি' (স্বর্গাৎ বর্জিত) আখ্যা পাইরাছিল। তাছাই মিধিনারাজ্যের অধিকাংশ।

লিক্ষ্বিদিগের এক শাখা বৈশালীতে, এক শাখা নেপালপ্রাক্তে মিথিলার এবং এক শাখা পুশপুর বা পাটলিপুর অকনে
বিত্ত হইরা পড়িরাছিল। বৈশালী শাখার মহাবীর বামী, ও
নেপালপ্রাক্তে পাক্যশাখার বৃদ্ধের আবিভূতি হইরাছিলেন।
বস্থুসংহিতার এই লাতি রাত্য অর্থাৎ সংলারহীন ক্ষত্রির বলিরা
চিহ্নিত হইলেও সকল প্রাচীন কৈন ও বৌদ্ধগ্রহ হইতে জাঁহাদের
উপনর্ম সংলারের পরিচর পাওরা বার। আকর্ত্ব শক্ত শক্ত
প্রাচীন বৃদ্ধর্তি বজ্ঞোপবীত চিহ্নিত রহিরাছে। পর্বর্তিকালেও
নেপালের প্রবল্প পরাক্রান্ত লিক্ষ্তি রাজ্যপত সকলে বিতত্ত
ক্ষত্রির বলিরাই পরিচিত হইরাছেন। একজ্যারা মনে হয় বে,
বস্থুসংহিতারচনাকালে লিক্ষ্তির্গণ রাত্য ক্ষত্রির বলিরা নির্দিষ্ট
হইলেও ওৎপরবর্তিকালে সংলারানি হারা জাঁহারা বিতত্ত
ক্ষত্রির ইন্ধুক্তিকেন। নচেৎ অধ্যেধ্যক্তরারী পরম রাজ্যক্তক
ক্ষত্রারাটি সমুস্থিতা আপনাকে লিক্ষ্তিরাজ্যকার পর্করাত্ত
ক্ষত্রারা পোরবাহিত বোধ করিবেল কেন ?

নিক্ষবিদণ নাবাছণভত্ক আৈছ ছিলেন। কোন কোন বৌধ-

ব্রাছে বিজ্ঞি রাজ্য ৭৭০৭টা কুল রাজ্যে বিভক্ত এবং অধিপতিগণ আবীন বলিয়া বর্ণিত হইরাছে। বহি:লক্ত উপস্থিত হইলে সকলে সম্মিলিত হইয়া এরপ সিংহনাদ করিতেন বে, তাহাতে সমত উত্তরভারত অন্তিত হইত। এ কারণে মগথের মহাবল পরাক্রান্ত সমট্টগণও তাঁহাদের সহিত বিবাদ করিতে সাহসী হইতেন না। সম্মিলিত লিফবিরাজ্যের লাসনবিধিব্যবস্থাপনের জন্ত বৈশালী নগরে একটা মহাসভা ছিল। সেই মহাসভা বাহা ব্যবস্থা করিতেন, তদমুবর্ত্তা হইরাই সহক্র সহন্দ্র ক্তরেবিরাজ্য স্থাসিত হইত।

লিছেবি-স্থাজের ইতিহাস আলোচনা করিলে মনে চইবে তাঁহাদের কেহ জৈন, কেহ বৌদ, আবার কেহ কেহ পূর্ব্যপ্রধা-চরিত জন্মবানী চিলেন।

মগধপতি বিধিসার বৈশালীর লিচ্ছবিরাজকুলে বিবাহ कतिग्राष्ट्रितम । वृक्षाप्त भगंधशिक्ष '(महनक' नाम এक প্রকাও হন্তী এবং অষ্টাদশরত্বপচিত একছড়া হার প্রদান করেন। বিশিসার সেই হন্তী ও হার প্রিয়তম কনিষ্ঠ প্রত্ন বেহলকে দিয়া-ছিলেন। ভাহাতে তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র অজাতশক্র পিভা ও কনিষ্ঠ প্রতার প্রতি বড়ই অসম্ভই হইয়াছিলেন। তাহারই ফলে বন্ধনির্ব্বাণের ৮ বর্ষ পুর্ব্বে পিতাকে বিনাশ করিয়া অঞ্চাতশক্র নগধ সিংহাসন কলন্ধিত করেন। আত্মরক্ষা করিবার জন্ম বেহল্ল বৈশা-লীতে গিরা মাতামহকুলে আল্রর লইলেন। তথন জাতীয় একতা-সূত্রে সন্মিলিত মাতামহকুলকে কি রূপে শাসন করিবেন, অস্তাত-শক্র সেই ভাবনার কাতর হইলেন। বৌদ্ধদিগের মহাপরিনির্কাণ-সত্রে লিখিত আছে-নির্মাণের অবকাল পৃর্বে বৃদ্ধদেব যথন রাজগুছের নিক্টবর্দ্ধী গৃধকুট পর্বতে অবহান করিতেছিলেন, দেই সময় মগধরাজ অজাতশক্র তাহার প্রধান ত্রাহ্মণমন্ত্রী বিখা-করকে ডাকিয়া জানাইলেন, মিল্লিন! আপনি ডগবানের নিকট গমন ক্রুন, তাঁহাকে জানাইবেন বে, মগধরাজ প্রবল পরাক্রম-শালী লিচ্ছবিদিগকে সমূলে উৎপাটন করিবেন। ভগবান গুনিয়া कि वरमन, जारा विस्ति कतिया मान दाविया स्नानारेखन। তাহার কথা অগ্রথা হইবার নহে।'

মন্ত্রিবর বৃদ্ধ সনীপে জাসিরা অভিবাদনপূর্থক সমস্ত নিবেদন করিলেন। তাঁহাকে উত্তর দিবার পূর্বেই তগবান আনন্দকে বলিলেন, "তুমি জান, বজ্জি (লিজ্বিগণ) সর্বাদা সাধারণ সভার লমবেত হইরা একভার সহিত সকল বিষয় সীমাংসা করেন। তাঁহারা বয়োবৃত্তের প্রতি উপবৃত্ত সমান দেকাইয়া থাকেন। তাঁহারা প্রাচীন প্রধাপ্তলি নই করিতে বিষয়প ও প্রাচীন প্রধাপ স্থানের সহিত গ্রহণ করেন। নারীলাভির প্রতি তাঁহারা কথন অভ্যাচার করেন নাই । তাঁহারা চৈভোর স্থান ও পূলা ব

করিয়া থাকেন। বিশেষতঃ অর্হুৎদিগকে বথেট সন্ধান ও ব্লকা कतिया थारकन !" जानमा উखत कतिरामन, "हा क्रमधान ! जानि এ সমন্তই জানি।" বৃদ্ধ তথন পুনৱার **ক্তিলেন, "ডাই কে**ইই ভাহাদিগকে বিনাশ করিতে পারিবে না।" পরে তিনি দ্বালমনীকে শক্ষ্য করিয়া উত্তর করিলেন, হে ত্রাঞ্চণ। আমি বৈশালী-নগরীয়িত সারন্দদ চৈতো থাকিবার সময় লিচ্চবিদিগ্রেক বে লাভটা উপদেশ দিয়াছিলাম, যতদিন তাহারা সেই সকল উপদেশ ৰজ্মে সহিত পালন করিবে, তত দিন কেইই তাঁহাদিগতে ধাংস कतिएक शाहित्व मा. ७७ मिम छाहातमत छैन्द्रत्वाखत श्रीवृक्ति হইবে।' রাজমন্ত্রী ফিরিরা আসিরা মগধপতিকে বৃদ্ধবাক্য জানাইল। মগধপতি আপাতঃ বিবাদে জান্ত হইলেন। উক্ত ঘটনার কিছু দিন পরে বৃদ্ধদেব বৈশালী বাত্রা করেন। তিনি গলাতীরত্ব পাটলী । গ্রামে আসিরা দেখিলেন যে, লিচ্ছবিদিগকে উৎপীড়ন করিবার অভিপ্রায়ে বিশ্বাকর ও সিদ্ধু নামক মগধরাজের প্রধান মন্ত্রিছর এক ছুর্গ, নিশ্মাণ করাইতেছেন। বৈশালীতে আসিয়া আত্রপালীর উত্তানে কিছুকাল অবস্থান कतिरक्त । निक्वविश्व मरन मरन जानिया काँहारक नर्मन कतिया কৃতাৰ্থ ইইল। ভাছাদিপের সমক্ষেই বৃদ্ধদেব প্রাকাশ করেন যে, আর তিন মাস অতে তিনি কুশীনগারে মহানির্বাণ লাভ कत्रित्वन । ७९ भरत तुम्न देवनां में भतिष्ठां श्राम क्रमान-গরাভিমুখে অগ্রসর হটলেন। লিছেবি ক্ষত্রিয়গণ তাহাদের প্রাণ অপেকা প্রিয়তম বৃদ্ধকে চির্নিনের মন্ত কেমন করিয়া विनास मिटवन १

তাঁহারা উচ্চৈ: বরে কাঁদিতে কাঁদিতে সকলেই বৃদ্ধের অমুগ্যন করিতে লাগিলেন। বৃদ্ধদেব তাঁহাদিগকে ফিরিয়া যাইতে বলিলেন, কিন্তু তথাগতের এ নিলারুণ আদেশ তাঁহারা রক্ষা করিতে পারিলেন না। 'এ দেহ কণহারী, সকলকেই মরিতে হইবে' এইরূপ বৃঝাইর্রা বৃদ্ধ আবার ফিরিতে কহিলেন। কিন্তু ভক্ত লিচ্ছবিগণ কিছুতে নিবৃত্ত হুইলেন না। সমুখে এক গভীর নদী আসিয়া পড়িল। তথন নদী অতিক্রম করিতে অসমর্থ হইয়া লিচ্ছবিগণ আর্তনাদ করিয়া উঠিলেন। বৃদ্ধদেব মধুর বাক্যে তাঁহাদিগকে সান্ধনা করিয়া তাঁহার জীবনের একমাত্র সমল জিক্ষাপাত্র দিয়া চলিলেন। সেই ভিক্ষাপাত্র লাইয়া লিচ্ছবিগণ বৈশালীতে ফিরিয়া আসিলেন এবং এক প্রকাত মন্দির নির্দ্ধাণ করিয়া ভন্মধ্যে সেই পবিত্র ভিক্ষাপাত্র রক্ষা করিলেন।

কুলদেবের পরিনির্ন্ধাণের পর তাঁহার দেহাবলেব সইরা তুমুস্যুদ্ধ বাধিবার প্রেপাত হইরাছিল। এ সমর কুশীনগর পাবার মল্ল-ক্ষত্রিররাজগণের অধিকারভুক্ত । তাঁহারা ঘোষণা ক্রিলেন ক্রেগাড়গছেব হুংচেই ভালে বিবনিস্কাভ পাটনীপুদ্ধ ক্রমীর স্কাট বে, ভগবান্ যথন আমাদের অধিকার মধ্যে দেহ বিসর্জন করিরাছেন, তথন আমরাই দেহাবশেষ পাইবার একমাত্র অধিকারী। এদিকে বৈশালীর লিজ্বিরাজ্ঞগণ, মগধপতি অকাতশক্র, অলকাপুরের বালের ক্ষত্রিরগণ এবং উট্ট্রবীপের প্রান্ধণগণ
দেহাবশেষ পাইবার জাল্প মন্তরাজ্ঞবিগের বিরুদ্ধে উপস্থিত। অবশেষে জ্রোণ নামক এক বৌদ্ধ প্রান্ধণের পরামর্শে ভগবানের
দেহাবশেষ ৮ ভাগে বিভক্ত হইল। লিজ্বিগণ তাহার এক ভাগ
পাইলেন। তাঁহারা সেই অপার্থিব পদার্থ মহাসমারোহে
বৈশালীতে আনিরা তাহার উপর এত বৃহৎ তুপ নির্মাণ
করিরা দিলেন।

অথকথা নামক পালি বোজগ্রছে লিখিত আছে, যতদিন ভগৰান্ ধরাধামে ছিলেন, ততদিন অজাতশক্ত লিজ্ছবিগণের কিছুই করিতে পারেল নাই। মগধরাজস্বী বিশ্বাকর বৃদ্ধের নিকট লিজ্কবিদিগের সাধারণতন্ত্র অবগত হইরা তাঁহাদিগের মধ্যে ভেদ ঘটাইবার স্থানাগ পুঁজিতেছিলেন। পরিনির্কাণের ৩ বর্ষ পরে বহুকাল চেষ্টার পর তিনি ক্লুতকার্য্য হইলেন। তাঁহার কৃটনীতিগুণে লিজ্কবিদিগের মধ্যে আল্মকলহ উপস্থিত হইলে অজাতশক্ত লিজ্কবিদিগের মধ্যে আল্মকলহ উপস্থিত হইলে অজাতশক্ত লিজ্কবিদ্যোর স্থার বৈশালীনগর ধ্বংস করিলেন এবং তিন শত লিজ্কবিদ্যে স্পরিবারে বন্দী করিয়া রাজগৃহে ফিরিলেন।

আজ্ঞাতশক্রর নির্যাতনে লিচ্ছবিরাজগণ জন্মভূমি পরিত্যাগ করিয়া কেহ নেপালে, কেহ তিবতে, কেহ বা লাদকে আশ্রয় লইলেন। পরে সেই সেই স্থানে এক একটা লিচ্ছবিরাজবংশের প্রতিষ্ঠা হইল।

বৌদ্ধগ্রছের মতে মগধণতি নাগালোকের ঔরদে লিছবি-ক্ষার গড়ে স্থ্যনাগ (প্রাণোক্ত শিশুনাগ) রাজার জন্ম। তিনি মাতামহকুলের কিছু পক্ষপাতী ছিলেন। তাঁহারই যত্নে বিধাত বৈশালী নগরী পুনর্নির্দ্ধিত হইয়াছিল। তৎপুত্র কালাশাকের সময়েই বৈশালী নগরে দিতীয় বৌদ্ধ মহাসমিতি আহুত হয়। যাহা হউক, মগধসমাট্গণের প্রতাপে আর লিছবিরাজগণ একতাপ্তরে সন্মিলিত হইডে পারিলেন না। তন্মধ্যে যিনি একটু প্রধান হইরা উঠিতেন, মগধপতি তাঁহার সহিত বৈবাহিকপ্রে আবদ্ধ হইরা তাঁহাকে আপনার করিয়া লইতেন;—বলিতে কি এই রাজনীতি মগধপতিগণ পুরুষপরস্পারার রক্ষা করিয়া আসিয়াছেন। বরাবর মগধরাজ্যের সহিত সম্বন্ধ প্রে লিছবিরাজগণ পাটলিপুত্রের সভার বিশেব সন্মানিত ছিলেন;—এই কারণেই বাধ হয় পাটলিপুত্রে অধিষ্টিত শ্বপ্তসমাট্ সমুক্তপ্তর লিছবিরাজক্ষার গর্ভে ক্ষম বলিয়া আপনাকে গৌরবাহিত মনে করিয়াই নিজ মুলার "লিছবেরঃ" ইত্যাদি স্বতি রাধিয়া গিয়াছেন।

(नशास किकवि-शक्तवःग ।

পূর্ব্ধে বিদিয়াছি, মগধণতি অলাতশক্তর নির্যাতনে লিছবিগণ নেপালেও পলাইয় গিয়াছিলেন। লেপালে গিয়াও তাহারা
আধিপতা বিতার করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। এই স্থান হইতে
লিছবিরালগণের বহুতর শিলালিপি আবিষ্কৃত হইয়াছে। তয়াধ্যে
স্থপ্রসিদ্ধ পশুপতিনাথের মন্দিরের ঘারদেশে উৎকীর্গ ২য় জয়দেব বা
পরচক্রকামের শিলালিপি হইতে জানা যায় যে, স্থপ্রসিদ্ধ রঘুবংশে,
এখানকার লিছবিরালগণের জন্ম। লিছবির বংশে স্থপুশ্প
নামে এক রাজা পৃশপুরে (পরে পাটলিপুরে) থাকিতেন, তিনিই
নেপালে আগমন করেন। মহাপরিনির্বাণস্ত্রেও লিখিত
আছে, তগবান্ বৃদ্ধদেব যথন পাটলিপুরের নিকট দিয়া যান,
তৎকালে মগধরাজমন্ত্রী বিশ্বাকর লিছবিদিগকে উৎপীড়ন করিবার জন্ম এখানে দুর্গ নির্দ্ধাণ ক্রাইতেছিলেন। এই দুর্গ
নির্দ্ধাণের পর যে লিছবিপতি স্থপুশ বিতাড়িত হইয়াছিলেন,
তাহাতে সন্দেহ নাই।

উক্ত জয়দেবের শিলালিপিতে লিখিত আছে বে, স্থপুলের পর ২৩জন রাজা ক্রমান্তরে রাজত করিয়া গেলে তৎপরে স্থপ্রসিদ্ধ জয়দেব নামে এক নূপতি আবিভূতি হইলেন। ইনিই নেপালের লিছেবি ইতিহাসে প্রথম জয়দেব নামে খ্যাত।

ধর্মদেবের উরসে মহিধী রাজ্যবতীর গর্ভে নিদ্ধলক্ক শারদীয়
শশাক্ষসদৃশ স্থন্দর রাজা মানদেব জন্ম গ্রহণ করেন। নেপালের
চঙ্গুনারায়ণের মন্দির্ঘারে এই মানদেবের ৩৮৬ সংবতে উৎকীর্ণ
একথানি শিলালিপি আছে। প্রস্কৃতত্ববিদ্ ক্লিট সাহেব এই
আক্ক গুপ্তসংবৎজ্ঞাপক বলিয়া ছির করিরাছেন। । কিন্তু মানদেবের লেখমালা আলোচনা করিলে উহা কোন মতেই এত
আধুনিক বলিয়া মনে করিতে পারি না। তিনি আপন গ্রছে
সমূদ্রগুপ্ত প্রেভ্তি প্রথম গুপ্তসমাট্নিগের যে সকল শিলালিশি
শুরীয় ৪র্থ ও ৫ম শতান্দীর লিপি বলিয়া গ্রহণ করিয়াছেন,—সেই
সকল আদিগুপ্তলিপির বর্ণবিক্লানের সহিত উক্ত মানদেবের

^{*}Fleet's Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol.p. 182.

লিপির বিশেষ পার্থকা নাই, উত্তর লিপি মিলাইলে এক সমরের বিলার প্রহণ করিতে কাহারও সন্দেহ থাকিবে না। উত্তরভারতে গুপ্তসমাট্দিগের পূর্ক হইতে যে সকল 'সংবং' নাম নামধের লিপি প্রচলিত ছিল, তাহা প্রধানতঃ 'শকসংবং' জ্ঞাপক বিলার পুরাবিদ্গণ বীকার করিয়াছেন। এরপ হলে আমরাও মানদেবের উক্ত লিপিথানি ৩৮৬ শক সংবংজ্ঞাপক অর্থাৎ ৪৬৪ খুটান্দের বলিয়াই গ্রহণ করিলাম। লিপির বর্ণবিস্থাস ঘারাও মানদেবকে খুটার ৫ম শতানীর লোক বলিয়া গ্রহণ করিতে কেইই আপত্রি করিবেন না।

নেপালের পার্ব্বতীয় বংশাবলিতে লিখিত আছে যে, ভারত হইতে বিক্রমাদিতা নেপাল জয় করিতে গিরাছিলেন। সমুদ্র-অথের পিতা ১ম চক্রগুপ্তও বিক্রমাদিত্য উপাধিতে ভূষিত ছিলেন। স্বয়ং সমুদ্রগুপ্ত প্রয়াগের স্থপ্রসিদ্ধ স্তম্ভলিপিতে ^बनिक्वितिरमोरिञ्च महारम्यार कुमात्रस्यामुरुभन्नच महातास्राधि-রাজনীসমূদ্রগুপ্তত্ত" ইত্যাদি পরিচয়ে মুপরিচিত। অধিক সম্ভব চক্রগুপ্ত ভারতসাম্রাজ্য অধিকার করিবার পর শৈবধর্মপ্রচার, ব্রাহ্মণ্য-প্রাধান্তস্থাপন ও দিখিলয় উপলক্ষে নেপাল যাত্রা করেন। তৎকালে নেপালে বন্ধভক্ত বুষদেব অধিষ্ঠিত ছিলেন। লিচ্ছবিপতি ১ম গুপুসমাটের নিকট যুদ্ধে পরাঞ্জিত ও আপনার কলা বা আত্মীয়া कुमात्राप्ति विभाग कतिया व्याद्यभाष्ठा कतिएक वांधा श्रेया-চক্রগুপ্ত বিক্রমাদিত্যের প্রভাবে নেপাল-রাজ-কুমার শৈবধর্ম স্বীকারের সহিত শহরদেব নাম গ্রহণ করিয়া-ছিলেন। নেপালের পার্ব্বতীয় বংশাবলিতেও লিখিত আছে যে, মানদেবের পিতামহ শঙ্করদেব পশুপতিনাথের ত্রিশূল প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন। পশুপতিনাথের মন্দিরের উত্তর দারে এফ প্রস্তরবেদির উপর প্রায় ১৪ হাত উচ্চ শহরদেবের প্রতিষ্ঠিত দেই ত্রিশুল বিভ্যমান। সেই প্রস্তরবেদিকার মানদেবের সময়কার ৪১৩ (भक) সংবতে উৎকীৰ্ণ খোদিত লিপি রহিয়াছে। এই নিপি পাঠে জানা বার যে, জরবর্মা নূপতি মানদেব ও জগতের ছিতার্থ জয়েশ্বর নামক লিকপ্রতিষ্ঠা করিয়া তাঁহার সেবানির্ব্বাহার্থ 'অক্স্যুনীবী' অর্থাৎ চির্ম্মায়ী সম্পত্তি দান করিয়াছিলেন।

মানদেবের পর তৎপুত্র মহীদেব নিংহাসন লাভ করেন।
মহীদেবের পুত্র বসস্তদেব। কাটমাপুর লগনতোলস্থ ল্গালদেবীর মন্দির হইতে বসস্তদেবের ৪৩৫ (শক) সংবতের লিপি
আবিদ্ধুত হইরাছে, এই শিলাফলকের উপর শহ্মচক্র চিল্ডিভ
থাকায় বসস্তদেবকে বিক্রুভক্ত বলিয়া মনে হয়। ২য় জায়দেবের
শিলালিপিতে ইনি 'শাক্তারিবিগ্রহ' ও 'উদ্যান্তসামন্তবন্দিত'
ইত্যাদি বিশেবণে বিশেষিত হইরাছেন। বসস্তদেবের পুত্র উদয়দেব। ২য় জায়দেবের লিপি মতে, উদয়দেবের পর তহংশীয় ১৩

জন রাজ্য করেন। এই এরোগণ নৃপতির নাম পাওয়া যায় নাই।
তল্মধ্যে কেবল মাত্র জবদেব নামক এক রাজার নাম বাহির
হইরাছে। এই জবদেবের সময়ে মহালামন্ত আংগুবর্দার অভানয়।
নেপালে বর্ত্তমান কালে জল বাহাছর যেমন কতকটা সর্কো
হইরা পড়িয়াছিলেন, জবদেবের পর আংগুবর্দা কতকটা সেইরূপ
কর্তত্ব পাত করিয়াছিলেন।

আংশুবর্দ্মা প্রথমে মহাসামন্ত বলিয়া পরিচিত হইলেও তিনি আনেক শ্রেষ্ঠ নরপতির সহিত আশ্বীরতাহতে আবদ্ধ হইয়াছিলেন । তাঁহার ভগিনী ভোগদেবীর সহিত শুরুসেন-নূপতির বিবাহ হয়। আংশুবর্দ্মার শিলালিপিতে লিখিত হইয়াছে যে, তাঁহার ভগিনী শ্রুসেন-মহিষী ভোগদেবীর গর্ভে রাজা ভোগবর্দ্মা জন্ম গ্রহণ করেন। ভোগদেবী নিজ পতির পুণ্য কামনার (দেবপাটনে) শুরভোগেশ্বর মৃত্তি প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন।

ভোট ও চীনের ইতিহাস হইতেও আমরা জানিতে পারি যে, ভোট (তিকাত) দেশের প্রসিদ্ধ নূপতি প্রোন্ৎসন্ গম্পো
৩০৭ খৃষ্টাব্দে নেপালপতি অংগুবর্মার কল্পা ক্রকুটী দেবীকে
বিবাহ করেন; আলও ভোটদেশে ক্রকুটী দেবী প্রিত হইতেছেন। [শামা দেখ।]

অংশুবর্দার সময়েই শিচ্ছবিকুলে নরেক্রনেব ও তৎপুত্র শিব-নেব আবিভূতি হন। নেপালে গোলমাঢ়িটোল হইতে শিবদেবের এক গানি শিলাফলক পাওয়া যায়। তাহাতে ৩১৬ বা ৩১৮ সংবৎ অন্ধিত আছে। এই লিপিতে মহাসামস্ত অংশুবর্দার প্রসঙ্গ থাকায় ঐ লিপিকে আমরা খুঠীর ৭ম শতাব্দীর বলিরা অনায়াসেই গ্রহণ করিতে পারি। গুপ্তসম্রাট্দিগের সহিত নেপাল রাজগণের বছকাল হইতে সম্বন্ধ ছিল, এরূপ স্থলে উহা গুপ্তা সংবৎজ্ঞাপক ব্লিরা স্বীকার করিলেও ৩১৯+৩১৮=৬৩৭ খুপ্তাব্দের সমসাময়িক হইয়া পড়ে।

লিছবিপতি শিবদেৰের সহিত মৌথরিপতি ভোগবন্ধার কল্পা ও মগধপতি মহারাজ আদিত্যসেনের দৌহিত্রী শ্রীমতী বৎসদেবীর বিবাহ হয়। সেই বৎসদেবীর গর্ডে লিছবি-কুলকেড় পরচক্রকাম উপাধিধারী ২য় জয়দেব জন্ম গ্রহণ করেন। এই ২য় জয়দেবের শিলালিপি হইতে জানা যায় যে তিনি গৌড়, ওড়, কলিজ ও কোললপতি ভগদভবংশায় শ্রীহর্ষদেবের কল্পা রাজ্য-মতীকে বিবাহ করেন। তিনি শিলাকলকে ত্যাগী, মানধন, বিশালনয়ন ও সৌজপ্ররত্বাকর বলিয়। পরিচিত ইইয়াছেন।

২য় জয়দেবের খণ্ডর শ্রীহর্বদেবকে লইয়া বহুদিন হুইতে গোল চলিতেছিল। ভগদত্তবংশীর রাজগণ প্রাণ্ডোতিবে (আসামে) রাজস্ব করিতেন। পুটার ৭ম শতাকে বাণ্ডট্ট হর্ব-চরিত রচনা করেন। তিনি এইরূপ পরিচর দিয়া গিয়াছেন— "নসংকা নাহান্তনাহতাদ্ধে তগদত্ত-প্রকাত পুলাদ প্রপ্রতিব্ বতম্ সরমহিতের মহৎস্থ মহীপালের প্রপৌত্রো মহারাজ ভূতি-বর্মণঃ পৌত্রক্ত সুমুখবর্মণঃ পুত্রো দেবতা কৈলাসন্থিতেঃ তলবর্মণঃ স্থানবর্ম নাম মহারাজাধিরাজ জ্জে ততা চ প্রগৃহীতনামে। দেবতা মহাদেবাাং ভাষানেব্যাং ভাষার্ডাতিভান্ধরবর্মাপরনাম। শত্তনোত্তনয়ে তীয় ইব কুমারঃ সমতবং।"

(শ্রীহর্শচরিত ৭ম উল্লাস)

নরক মহান্ধার বংশে ভগদত, বন্তুদত্ত, পূশ্পদত্ত প্রকৃতি বহু
মহীপাল রাজন্ব করিবান্ধ পর (ঐ বংশে) মহারাজ ভৃতিবর্মার
প্রশেষিত্র, চন্দমুথ বর্মার পৌত্র এবং কৈলাসবাসী দেব শ্রীস্থলবর্মার
পূত্র স্থারবর্মা নামে মহারাজাধিরাজ জন্ম গ্রহণ করেন। এই
স্থারবর্মোর ওরঙ্গে মহাদেবী শ্রামাদেবীর গর্ভে শাস্তম্বর পূত্র ভীন্দ্রসনৃশ ভাস্করের ভাষ তেজস্বী ভাস্করবর্মা কুমার জন্ম গ্রহণ করেন।

চীনপরিরাজক হিউএন্ সিয়ং এই ভাস্করবর্দ্মাকে রাহ্মণবংশীয় লিথিয়া ত্রমে পতিত হইয়াছেন। আশ্চর্যের বিষয় পাশচতো আনেক পুরাবিদ্ও চীমপরিরাজকের অন্থসরণ করিয়াছেন। মহাভারতে ভগদত্ত ক্ষত্রিয় বীর বলিয়া পরিচিত। বন্ধা উপাধিও ক্ষত্রিয়-নির্দেশক। এরূপ হলে বাণভট্টের অন্থবর্তী হৃইয়া আমরা নিঃসন্দেহে প্রাগ্রোভিব-রাজবংশকে ক্ষত্রিয় বলিয়াই গ্রহণ করিলাম।

ভাষরবর্ত্মী একজন অতি পরাক্রান্ত ও ধার্ম্মিক নরপতি ছিলেন। সমাট্ হর্ষবর্দ্ধনের মৃত্যুর পর তাঁহার বন্ধুপুত্র আদিভাসেন মগনে মহারাজ্ঞাধিরাজ উপাধি গ্রহণ করিলে সেই ক্ষোগে ভাষর বন্ধার বংশবরও গোড়, ওড়ু, ক লিঙ্গ ও দক্ষিণ কোশন অধিকার করিয়া একজন রাজচক্রবর্ত্তী ইইয়া ছিলেন। এই সময়ই ভগদত্তবংশীয় কামদ্রপপতিগণ গোড়াড়ু কলিঙ্গকোশনপতি" বলিয়া প্রসিদ্ধি লাভ করিয়া থাকিবেন। লিছ্কবিপতি ২য় জয়দেবের শ্বন্তর ভগদত্তবংশীয় হর্ষদেব উক্ত ভাষরবর্দ্ধার পুত্র অথবা পৌত্র ছিলেন। তৎকর্ত্তক গোড়োড় কলিঙ্গবিজয় কিছু অসম্ভব নহে। আসামের তেজপুর হইতে আবিষ্কৃত ভগদত্তবংশীয় বনমানবর্ণ্যদেবের তাম্রশাসনে উক্ত শ্রীহর্ষদেব শ্রীহর্ষির নানে প্রসিদ্ধ হইয়াছেন ও। হয় জয়দেবের সহিত শ্রীহর্ষদেব কিরপে সম্বন্ধ হুব্র আবন্ধ হইলেন ও ব্যবহার শ্রীহর্ষদেব কিরপে সম্বন্ধ হুব্র আবন্ধ হুব্রদেন প্রস্ক্র ক্ষিত্র শ্রীহর্ষদেব কিরপে সম্বন্ধ হুব্র আবেদ্ধ

"অঙ্গন্রিরা পরিগতো জিতকামরূপঃ
কাঞী গুণাঢাবনিতাভিরূপাক্সমানঃ।
কুর্কান্ স্থরা ষ্ট্রপরিপালনকার্যাচিত্তাং
যঃ সার্কভৌমচরিতং প্রকটীকরোতি 🕬

* Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. IX. p, 768. উক্ত লোকটার দ্বার্থ থাকিলেও উহা হইতে ইহাও জানা যায় বে, ২য় জয়দেব অঙ্গ, কামরূপ, কাঞ্চী ও প্ররাষ্ট্রদেশের রাজগণকে জয় করিয়া রাজচক্রবত্তী হইয়াছিলেন। কামক্লপ জয়কালেই সম্ভবত: তিনি কামরূপপতি হর্বদেবের ক্লার পাণিগ্রহণ করিয়া ছিলেন। ২য় জয়দেবের পর শিচ্ছবিবংশীয় আর কোন্ রাজা নেপালের সিংহাসন অলক্ষত করিয়াছিলেন, তাহা জানিবার উপার নাই। পার্ক্ষতীয় বংশাবশীতে কতকগুলি নাম থাকিলেও সাময়িক শিপির সহিত তাহার পৌর্কাপিয়্য রক্ষিত না হওয়ায় গহীত হইল না।

অধিক সন্তব, ২য় জয়দেবের পর লিচ্ছবিবংশধরগণের প্রভাব ছাস হটয়া পড়ে এবং তাঁছাদের অধীন ঠাকুরীবংশীয় সামস্তগণ শেষে নেপালের অধিপত্য লটয়া বসেন।

লিচ্ছবি-দংবং।

নেপাল হইতে মহাসমান্ত অংশুবর্ম্মা, লিচ্ছবিপতি ২র শিবদেব ও ২য় জয়দেবের যে সকল শিলালিপি পাওয়া গিয়াছে, তর্মধ্যে জংশুবর্মার নামাজিত শিলাফলকে ৩৪, ৩৯, ৪৫ ও ৪৮ সংবৎ, ২য় শিবদেবের শিলাফলকে ১১৯, ১৪৩ ও ১৪৫ সংবৎ এবং ২য় জয়দেবের শিলাফলকে ১৫

পণ্ডিত ভগবান লাল ইক্সজী, প্রসিদ্ধ প্রত্নতব্বিদ্ বৃহ্লর ও
ফ্রিট্ সাহেব অক্সগুলি শ্রীহর্ষগংবৎ জ্ঞাপক বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন! কিন্তু আমরা এই মত সমীচীন বলিয়া মনে করি না।
কারণ নেপালে সম্রাট্ হর্ষদেবের প্রভাব কোন কালে যে গিয়া
ছিল, তাহার সম্পূর্ণ প্রমাণাভাব। নেপালপতিগণের তাঁহার
সহিত কোন কালে সমন্ধ ঘটে নাই। এরপ স্থলে নেপালপতি
হর্ষগংবৎ ব্যবহার করিবেন, তাহা সন্তবপর নহে। উত্তরভারতে শকাধিপত্য বিস্তারের সহিত সর্ব্বত্র শক্সংবৎ প্রচলিভ হইমাছিল। এইরপ প্রথস্মাট্ কর্ত্ন নেপালবিজয় ও
লিভ্রিরাজগণের সহিত সম্বভ্রুত্র তথার প্রথসংবৎ প্রচারিত
হওরা কিছু বিচিত্র নহে। কিন্তু কনোজপতি হর্ষদেবের প্রবর্তিত
সংবৎ নেপালে প্রচলিত হইবার পক্ষে সেরপ কোন স্ববিধা
ঘটে নাই।

৬০৬ খুটান্দে হর্বসংখিৎ আরম্ভ। এরপায়লে অংশুবর্দ্মার দালালিপি ধরিলে ৬০৬+৪৮=৬৫৪ খুটান্দে অংশুবর্দ্মার অন্তিত্ব বীকার করিতে হয়। ৬০৭ খুটান্দে চীনপরিব্রান্ধক হিউএন্ সিন্ধ নেপালে যাত্রা করেন। তাঁহার বর্ণনা হইতে জ্বানা যায় যে তৎকালে অংশুবর্দ্মার রাজ্যাবসান ঘটিয়াছিল। † চীন-পরিব্রান্ধকের উক্তি হইতেও আমরা অংশুবর্দ্মা প্রভৃতির অভ্যতিন হর্বসংবৎজ্ঞাপক বলিরা গ্রহণ করিছে পারিলাম না। আমাদের

⁺ Beal's Si-yu-ki, Vol. II. p. 18.

বিখাস, উহা কোন পরাক্রান্ত শিক্তবিয়াজের প্রবর্তিত অব । উপ-যুক্ত অসুসন্ধান ও আলোচনা হইলে সেই ব্যক্তার নাম ও বিষয়ণ পরে বাহির হইতে পারে।

লৈট, ব্যাকরণের পরোক্ষার্থবোধক বিভক্তিসংজ্ঞাতের। লিট্য, অন্ন চিন্তা করা। নিটাভি।

লিদর, (লদর), পঞ্চাব-প্রদেশের কান্সীর রাজ্যের অন্তর্গত একটা নদী। বিভব্তার শাখারূপে প্রবাহিত। কাস্তীর উপ-তাকার উত্তরপূর্বে সমুদ্রপূর্চ হইতে ১৪ হান্সার ফিট উচ্চ হইতে নিৰ্গত। অকা° ০৪°৮ উ: এবং দ্ৰাঘি° ৭৫°৪৮ পূ:। ফ্ৰডপাদ-বিক্লেপে পর্বতের ঢালু প্রাদেশ অতিক্রম করিরা কাশ্মীর উপ-ভাকার ইচা ধীরগতি প্রাপ্ত হইরাছে এবং অব্দা^ত ৩০°৪৫ উ: धावः लाचि १६° ३६ शृद्धं हेमनामवारम्य ६ मार्डेन निकर्भ বিলাম নদীতে আদিয়া মিশিয়াছে।

লিধ্ ব্যাকরণোক্ত নামধাতুর সংজ্ঞাভেদ। নিদ ও ধাতু ব্যাইতে मः त्करण "निधू" **এই**क्रण खारतांग हरेता शास्त्र ।

लिन्म (११) शिष्टिन । (हारमांशा उँ १ ° ८। ১ ८)

লিন্সোটেন, (Jan Hugo Van Linschoten) এক জন পাশ্চাত্য ভ্রমণকারী। ইনি ১৫৮**ঁ->**৫৮৯ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত ভারতে থাকিয়া একথানি ভারতবর্ষবিবরণী সম্বলন করেন। ঐ গ্রন্থ-ধানি "Voyages into the East and West Indies" নামে খ্যাত। উহাতে তৎকালীন পর্ক্ত গীল্প ও ওলন্দাল বণিক্-গণের পরস্পর বিরোধবৃতান্ত এবং ভারতভাত বৃক্ষ ও ধনিজ ধাতু প্রভৃতির পরিচয় স্থচারুরূপে বির্ভ আছে।

লিপ্, উপদেহ। ২ বৃদ্ধি। ৩ লেপন। ভুদাদি[©] উভয় সক[°] অনিট্। লট্লিম্পতি-তে। লিট্লিলেপ, লিলিপতুং, निनित्। नृष् ्नश्चा। नृष् ्तन् अवि-एक। नृष् अनि-পং, অনিপত, অনিপ্ত। অনিপাতাং, অনিপ্, সাতাং অনিপত্ত, অলিপ্সভ, সন লিলিপ্সভি-ভে। বঙ্ লেলিপাতে। বঙ্ ৰুক্ लालिशि। निह्लाभविष । नृह् भनौनि १९ । अव + निश = चर्तन्त्र, नर्का । चा + निल= चारन्त्रन । छेशरन्त्र, रन्त्रन । লিপ (গুং) শিশ্বতীতি শিশ-ক। শেপনকর্তা।

लिशि (औ) निश (देखनधार किए। छैन् ६१३५३) देखि हेन् দ চ কিং। শিখিত বর্ণ ; পর্যায়—শিখিত, অক্ষরসংহান, শিবি, লিখন, লেখন, অক্ষরবিজ্ঞাস, লিপী, লিবী, অক্ষররচনা, লিপিকা। (শব্দর্মা°)

"অবং দরিলো ভবিভেতি বৈধনীং

ে লিপিং লগাটেংবিজনত জাগ্ৰতীম্। মুবা ন চক্রেছলিডকলপাদপঃ প্রাণীর দারিক্রদরিক্রতাং নৃপঃ ॥" (নৈষ্ধ ১**।১৫**)

তত্ত্বে লিখিত আছে বে, লিখি পাঁচ প্রকার, বধা মুক্তালিখি, শিল্পলিপি, শেখনীসম্ভবা নিপি, শুভিকালিপি ও বুণলিপি।

"মূজালিপিঃ শিল্পলিপির্লেখনিসম্ভবা।

শুক্তিকা বুণসভূতা দিশর: পঞ্চণা দ্বতা:।" (বারাহীছত্র) এই সকল বিভিন্ন প্রকার লিপির উৎপত্তি-বিবরণ দেবনাগর শব্দে আলোচিত হইরাছে। তারতবর্বের নানা স্থানে এবং স্থানুর পশ্চিমে বাবিলোনীয়, আসিরীয়, কাল্টীয়, মিসর ও পুর্বেচীন প্রভৃতি রাজ্যে বহু প্রাচীনকাল হইতে বিভিন্ন প্রকার লিপি প্রচলিত দেখা বার। তর্মধ্যে ভারতীর লাটলিপি, বাবিলোনীয় ফলকলিপি, আসিরীয় কোণাকার লিপি ও মিশরীর হাইরোমি-ফিক্ বর্ণ-লিপিই সর্ব্ধপ্রাচীন। [দেবনাগর ও বর্ণমালা দেখ।] লৈপিকর (গং) লিশিং করোজীতি লিশি-ক্ল (দিবানিলেভি। পা এ২।২১) ইডি ট। ১ লেখক। (অমরটীকা) যিনি লিপি প্রস্তুত করেন। ২ খোলাইকর। ৩ লেপক।

লিপিকা (ত্রী) নিপিরের খার্থে কন্-টাপ্ । নিপি। (নক্ষম্ভা, লিপিকার (গুং) লিপিং করোতীতি ছ-খণ্। লেখক, লিপি-কারক। (অমর)

লিপিছর (আ) স্থলেধক।

লিপিত্যাস (পুং) শেখনী ছারা মসীবোগে পত্রাদিতে বর্ণবিদ্যাস। লিপিফলক (পুং) যে পত্রে শেখা যার। প্রস্তার ভারপত্র বা বুক্ষপত্রাদি যাহাতে শিপি ভাস করা হইরা থাকে।

लिशिमाला (जी) निशीमाः भागा। निशिश्वह, त्रशास लिश বা অক্সরবিস্তাস শিকা দেওরা হয়। (ললিভবি •)

লিপিস্ভলা (ত্রী) দিপিকরণোপযোগী বন্ধ বা এব্যাদি।

लिनी (बी) निनि क्तिकातानिष्ठि **डी**र्। निनि। (अस्तप्रा•) लिश्व (बि) निर्श-क । > छक्छ । २ क्छान्स्म, भर्गाञ्च-দিয়, বিশিশ্পিত, চর্চিত। (জটাধর)

"তরিপ্তাশ্চেলথগুণ্ড চম্বারো বিহিতান্তথা।"(কথাসরিৎসা^{*}৪।৪৮) ০ মিলিত, সংযুক্ত, বন্ধ। ৪ বিবদিয় । (মেদিনী)

লিপ্তক (পুং) লিগু এব স্বার্থে কন। বিৰাক্ত বাণ। (অমর) লিপাহস্ত (बि) রক্তাক বা ব্রন্ধিত হন্ত।

লিপ্তা (ত্রী) জ্যোতিষোক্ত ৬০ ডিগ্রীর একাংশ, এক মিনিট। লিপ্তাক্ত (তি) বাহার শরীর অগন এবাদির বারা দেশা হইয়াছে लिशिका (जी) निरंशन चार्थ कन्। मण्ड।

"বৈশ্বন্ত চতুর্যোহংশঃ প্রবণাদৌ নিপ্তিকাচভূকং অভিক্রিং"

(বংকুতামুক্তাণ)

लिल्ला (जी) नक् निका नष्-नन, च-गेन्। देखा, अखिनाव. লাভ করিবার ইচ্ছা।

"লিপাং চক্রে প্রদেশভ, মণিরত্বে প্রমন্তকে।"(হরিবংশ জনং৬)

XVII

লিপ্সিডব্য (জি) নিশ্ব-তব্য। নাভার্ছ, লাভ করিবার উপযুক্ত।

লিপ্ত (তি) বহুনিজ: বছ বন, সমন্তাহ:। বাভ করিতে ইদ্ধুক, পর্যার গৃহ, পর্জন, ভৃষ্ণক, বৃদ্ধ, অভিনাযুক, লোল্প, লোপ্ড। (তেম)

"উপঅলানং गिन्न् नारमकः काकर्वरगीवथम्॥"

(क्थामविष्मा[°] २८। ১১৯)

লিপ্সু ডা (জী) লিপ্সু-ডল্-টাপ্। লিপ্সুর ভাব বা ধর্ম, লাভ ক্রিবার ইচ্ছা।

লিপ্যা (এ) পাইতে বাহনীয়। যাহা লাভ করিতে খতঃ ইকা লয়ে।

লিবি (জী) লিপ-ইন্, বাহনকাৎ পশু বন্ধ: লিপি। (জ্ঞার) লিবিকার (খুং) লিবিং করোতীতি ক্ল-(দিবাবিভানিশেতি। পাত। ২। ২১) ইতি ট। লিপিকার।

লিবিক্ষর (পুং) নিবিং করোতীতি ক্ল-ট, পুবোদরাদিখাৎ বিতী-মারা অনুক্। নিশিকার। (অনরটীকা ভামনীকিত)

লিব্ৰ (ত্ৰী) निविक्वनित्रामिणि ভীব্। निপি। (শব্দর্গণ) লিবুজা (ত্ৰী) নতিকা।

লিম্প (পুং) দিন্দতীতি দিন্দা-(অন্নপ্রগাৎ দিন্দাবিন্দেতি। পা ৩ ৷ ১ ৷ ১৩৮) ইতি শ ৷ লেপনকর্তা।

লিম্পট (পুং) বিড্গ, লম্পট। (হারাবলী)

লিম্পাক (ক্লী) নিশ্কবিশেষ, পাতিলেব্। গুণ—স্বভি, স্বান্ত, নাডান্ন, অন্নকচিকর, বাতলেমহর, হয়, ছর্দিনাশক, ঈবং পিতত্ত্বৰ্দ্ধক। (রাজব°) (পুং) নিশ্কবৃক্ষ, পাতিলেব্র গাছ। ২ ধর। (শশব্দ্ধা

लिष्मि (शूर) निशि।

লিম্রা, বোদাই-প্রেনিডেন্সীর গোবেলবাড়প্রাক্তর একটা ক্র সামন্ত রাজ্য। একণে এই রাজ্য তিন জন আংশীলারের মধ্যে বিভক্ত হইরাছে। বার্বিক রাজত্ব ২৫ হাজার টাকা, তত্মধ্যে বড়োলার গাইকোবাড়কে বার্বিক ৯৩৪ এবং জ্লাগড়ের নবাবকে ২৭৮ টাকা রাজকর দিতে হয়। নিম্রী নগর শোণগড় হইতে ৯ জোল পশ্চিমোন্তরে অবস্থিত। ভাবনগর গোপ্তাল রেলপথের ধোরাজী শাখার জানিরা টেসন এই নগর হইতে ১৯০ মাইল দুরে অবস্থিত। নগরভাগ সমৃদ্ধিশশার।

লিম্রী, (শিষাড়ী), বোষাই ক্রেসিডেন্সীর শুলরাত-বিভাগের ঝালাবারপ্রাক্তর একটি দেশীর সামস্করাল্য। অক্ষা° ২২°৩০ ১৫ হিটতে ২২°৩৭'১৫ পু: এবং জাবি° ৭১°৪৪'৩০ হিটতে ৭১°৫২'১৫ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ৩৪৪ বর্গবাইল। এখানে সর্বসমেত ১টা নগর ও ৪৩টা গ্রাম আছে। এই স্থান স্বভাবতঃই সমতল। বালুকাময় ভূমিভাগে চাস্বাদের বিশেব স্থাবিধা হয় না। স্থানে স্থানে রুক্ত ও লালবর্ণ মৃতিকা দৃষ্ট হয়। ঐ স্থানে তুলা এবং অস্তান্ত নানাজাতীয় শক্ত উৎপন্ন হইরা থাকে। এথানে ভোগবতী নামে একটা কুজ নদী প্রবাহিত, গ্রীমকালে উহার জল লবণাক্ত হয়। সময় সময় নদীতে বল্লা আদিয়া স্থানীয় শক্তাদিয় বিশেষ ক্ষতি কয়ে। এথানকার সামস্তরাজ অর্থের পরিবর্ত্তে শক্তাদি ছারাও রাজকর গ্রহণ করিয়া থাকেন। এই স্থান উষ্ণপ্রধান হইলেও বিশেষ স্থান্তপ্রদ। লিম্রী নগরে এক প্রকার মোটা কার্পাস বস্ত্র প্রস্তুত হয়। ভাবনগর-গোওাল রেলপথ বিস্তৃত হইবার পূর্কের এখানকার উৎপন্ন দ্রব্যাদি ধোলেরা বন্দর হইতে বিভিন্ন স্থানে প্রেরিত হইত।

লিম্বী রাজ্য কাঠিয়াবাড় বিভাগের মধ্যে দ্বিতীর শ্রেণীর সামস্তরাজ্য বলিয়া গণা। এথানকার সন্ধার ইংরাজ-গবমে নিটের সহিত ১৮০৭ পুষ্টান্দের সন্ধিত্তর আবদ্ধ। জ্যেষ্ঠ পুত্রই রাজসিংহাসনের অধিকারী, কিন্তু দত্তক গ্রহণের জন্ম তাঁহারা কোন সনন্দ পান নাই। ঠাকুর সাহেব ঘশোবস্ত সিংহজী ফতে-সিংহজী ঝালাবংশীয় রাজপুত। ইনি রাজকোটের রাজকুমার-কলেজে শিক্ষাপ্রাপ্ত হন। ১৮৭৬ পুষ্টান্দে বয়:প্রাপ্ত হইয়া ইনি শাসনশক্তি লাভ করিয়াছিলেন। পলিটিকাল এজেন্টের বিনা পরামর্শে ইনি স্বীয় অপরাধী প্রজাতৃন্দকে প্রাণদত্তে দণ্ডিত করিতে পারেন।

রাজার বার্ধিক রাজস্ব ২২১৩৭ ্ টাকা। তন্মধ্যে ৪০৫৩ ্ টাকা ইংরাঞ্জরাজকে ও জুনাগড়ের নবাবকে কর দিতে হয়। রাজা প্রণ্য দ্রবোর উপর কোনরূপ কর গ্রহণ করেন না। তাঁহার উৎসাহে এখানে ১৭টা বিভালর স্থাপিত হইয়াছে।

২ উক্ত সামস্ক রাজ্যের প্রধান নগর। ভোগবতী নদীর উত্তর কুলে অবস্থিত। অক্ষা ২২°৩৪ উ: এবং দ্রাঘি ৭১°৫৩ পূ:। এই নগর পূর্বে ধনজনপূর্ণ ও সমৃদ্ধিসম্পন্ন ছিল। এথান-কার প্রাচীন ছুর্গাদি এক্ষণে ভয়াবস্থায় নিপতিত।

লিম্বভট্ট (প্রং) একজন সংস্কৃতজ্ঞ পণ্ডিত। 🐙 প্রিনন্দ প্রবন্ধ-প্রণেতা নারারণের পিতা।

লিন্তু, নেপাল ও সিকিনের সীমান্তবাসী জাতিবিশেষ। পার্কাত্য কিরাত জাতির একটী শাখা বলিয়া গণ্য। বৌদ্ধর্মাবলখী হইলেও ইহারা জনেকাংশে ব্রহ্মণাধর্মদেবী। ইহারা দৃঢ়কার, বলির্চি ও কর্ম্মঠ; গো, শৃকর ও পালিত পশুপক্ষিরকা এবং পার্কাত্য ভূমে শক্তাদি উৎপাদন ভিত্র ইহারা অন্ত কোন কার্যাই করে না। অধিকাংশ সমরই ইহারা আলত্যে দিনুপাত করিয়া থাকে। ছেঁচা বালের বেড়ার উপর বন আলা ও এলাটী গাছের পাতা দিরা ইহারা আপনাপন বাসগৃহ নির্মাণ করে। লার্জিলিকের সমীপবাসী লিজ্সণ অতিরিক্ত মন্ত পান করে এবং দেবোদেশে উৎস্ট পশুমাংস ভোজন করিয়া থাকে। ইহাদের বিমাস, বলিরণে নিহত পশুর প্রাণবার্ই দেবতার গ্রহণীর এবং ভাহার মাংসপিও মন্তব্যেরই উপভোগ্য।

ডাঃ কাৰেণ ইহাদের ভাষার শিক্ষামূলীর ও তালব্য বর্ণের আধিক্য লক্ষ্য করিরা বলিরাছেন, লেপ্ছা লাভির ভাষা অপেক্ষা লিছ্ ভাষাই অধিকভর শ্রুভিমধূর। ভারতীর ও তিব্বতীর ভাষার সহিত উক্ত ভাষার অনেক সাদৃশ্র দেখা যার। লেপ্ছা-দিগের নিকট ইহারা ছুল নামে পরিচিত। ইহাদের শারীরিক গঠন অনেকাংশে মোললীর।

লিশ্, > তৌচ্চা, অনীভাব। ২ গতি। দিবাদি আছনে আক আনট্। গতার্থে তুদাদি গরু আক আনট্। লট্ লিখতে লিশতি। লিট্ লিলেশ লিলিশে। লুট্ লেটা। লুট্ লেফাতি-তে। লুঙ্ অলিকং-ত। সন্ নিলিক্ডি-তে। বঙ্ লেলিখতে। বঙ্ লেলিখতে। বঙ্লেলিখতে।

লিম্ব (গুং) লব-কর্তনি বন্, নিপাতনাৎ সাধুং, উপধায়া ইছং।
নর্তক।

লিস্ত্রি, হিমালয়-পর্কতপ্রাস্তবাসী লাতিবিশেষ। মিণুনকোটের অদ্রম্থ গুর্চানি শৈলের নিকট লিসরি শৈলে ইহাদের
বাস। ইহারা গুর্চানি লাতির একটা শাথা বলিয়া পরিগণিত
হইলেও তাহাদের অপেকা বলহীন। ১৮৫০ ও ১৮৫২ খুটান্দে
ছইবার এবং ১৮৫৩-৫৪ খুটান্দে উপযুৰ্গ পরি আটবার ইংরাল সৈশ্
ইহাদিগকে আক্রমণ করিয়াও পরালিত করিতে পারে নাই।

निह, आयामन, लाहन। जामामि छेखा नक प्रतिहै। नहें लिहि, नीह, निहरिंद्ध, लिकि। नीहि। लाहे लिहा, नीहि, लिहाने, नीहि। निह निहार, निहीं । नहें जातने, जानि। निह निहार, निहीं । नहें जातने, जानिक, जानिक, निहार। निह जातने, जानिक, जानिक, जानिक, जानिक, जानिक, जानिक जाति । निह लाहि। नहें जातिक जाति । नहें जातिक जाति । जाति । निह लाहि। निह लाहि । नहें जातिक श्री जाति । यह मिर्टा जाति । दे जाति । जाति भारति । निह जाति । निह लाहि
ল ট লেষ্ডি, লাভডি। লেষ্ডে, লাভডে। লোঙ্ লীরাং, লেষীষ্ট, লাসীষ্ট। লুঙ্ অনৈসীং, অলাসীং, আনৈষ্টাং অলাষ্টাং আনৈৰ্ অলাসিৰ্ অলেষ্ট, অলীভ, অলেষ্ডাং অলাসাতাং। আলেষ্ড, অলাস্ড। সন্ লিশীৰ্ডি। ৰঙ্ লেলীয়তে। যঙ্গুক্ লেলরীতি, নেলেডি। চুরানি পক্ষে লাপন্নডি, লারর্ডি। জুানি পক্ষে লয়তি।

लीका (जी) इत्यम्बिकमाती। ^{क्रि}हिनिक दश्हों हेन्न् बमाती।

लोका (जी) निकाः (भनतकाः)

मीक्का (जी) निका। (भसतका)

লীন (এ) শী-জ (ওদিডক। পা ৮ । ২ । ৪৫) ইতি নিষ্ঠাতক ন। ১ লয়প্রাপ্ত । ২ রিষ্ট।

শিদবাকরান্ত্রক্ষতি বো গুরুত্ব দীনং দিবাভীতমিবাদ্ধকারম্। ক্ষুদ্রেহিণি নুনং শরণং প্রণামে মমন্ত্রম্টিটা শিরসামতীৰ ॥"

(कूमान्नग[°] > । २>

লীলা (গ্ৰী) লয়নমিতি লী সম্পদাদিখাৎ ৰিপ্, লিৱং লাভাঁতি লা-ক। ১ কেলি। ২ বিলাস। ৩ পূলারভাব চেঠা। (মেদিনী) ৪ খেলা। (বিশ্ব)

"লীলাবিদধতঃ বৈষ্কমীশ্বক্তাস্থনায়দ্ধা ॥" (ভাগৰত ১। ২। ১৮)

৫ নারিকাদিগের প্রিয়তমের সমাগন লাভ না হইলে স্বচিত্ত-বিনোদনের জন্ত প্রিয়তমের বেশ, গভি, দৃষ্টি, হান্ত ও ভণি-তাদির অনুকরণের নাম লীলা।

"অপ্রাপ্তবন্ধসমাগমনারিকারাঃ

নথাঃ প্ররোহর নিন্সচিত্তবিলোদবৃদ্ধা।
 আলাপবেশগতিহাক্তবিলোকনাছৈঃ

প্রাণেশ্বরাহকতিমাকখন স্থানী লাম্।" (সমর্টীকার ভরত) ৬ জগবানের ক্রীড়া বা কার্য্যাবলীকে লীলা কছে। চলিত প্রবাদ আছে যে,—

"ভগবানের বেলা লীলাবেলা,
পাপ লিখিছে মানবের বেলা।"
প্রকট ও অপ্রকটভেদে ভগবানের লীলা দিবিধ।
"প্রকটা প্রকটা চেতি লীলা দেবং দিখোচাতে।" (পদ্মপুরাণ)
ভগবান অবতীর্ণ হইরা বাল্যক্রীড়া বার্গদেশে যে সকল
অলৌকিক ক্রিয়া প্রদর্শন করিয়া থাকেন, তাহাই প্রকট লীলা,
এবং যে লীলা অব্যক্ত থাকে, তাহাকে অপ্রকট লীলা বলা যায়।
ব্রীভাগবতামূতে শ্রীক্তকের উভরবিধ লীলার এইরূপ পরিচয় আছে—

শদানকৈঃ প্রকাশেঃ বৈদীলাভিন্চ স দীব্যতি।
তবৈকন প্রকাশেন কদাচিজ্ঞগদকরে॥
সহৈব কপরীবারৈর্জন্মাদি কুরুতে হরিঃ।
রুক্তভাবারুসারেণ দীলাখ্যাশভিবেব সা॥
তেবাং পরিকরাশান্ধ তং তং ভাবং বিভাবরেৎ।
প্রশক্ষপোচরছেন সা দীলা প্রকটা স্বভা॥
অভাত্তবেটা ভাবি তাদৃভাব্বেগাচরাঃ।
তব্ব প্রকটনীলারানেব ভাতাং গ্যাগমৌ ॥

जीलांचा (ही) ब्लाकांत्र गंबरका ।

रगोक्टल मनुषायाक पातकायाक नाकिनाः। বাতৰ ভৱাপ্ৰকটা-কৰ কৰৈৰ সন্ধিতাঃ 🗗 (বীভাগৰভাৰত) १ इत्यांत्व्य । देशक कार्यो क्या, बारकाय क्यान १, ६, १, >•, >१ छ >७ वर्ग श्रम खना स्था, ह, क, अ, अ, >, >>, >१, >६, >६, >६ वर्गे गयु । शीनांकवन (क्री) गीनांस्र क्यान् । कीशांग्य । (स्वर ४७) जीजांकद (ग्रः) सम्बद्धाः । मीनाकार् (ग्रः) क्याप्त कान। जीजार वेज (वि) कीकृषिन । जिनार गेल् । ছলোডেन । উरात প্রাক্ষ্যেক চরবে ১৫টা অক্ষর আছে, সকল ওলিই ওর । সীলাগার (क्री) নীনার্বং আগারং। দীনাগৃহ, ক্রীড়াগুহ। जीजांश्रह (जी) द्यनाया। লীলাগেছ (ही) জীড়াগার। লীলাজ (বি) চৰল বা নিরম্বর জীড়েন্দ্র অবস্কু । (বুবানি) जीजाहत्स, अक्लम आहीम कवि। লীলাক্তন, (নৈর্থন) বাদালার হালারিবাগ জেলার প্রবাহিত একটা নদী। গৰাধামের ৩ ফ্রোপ বন্ধিবে যোহনায় সহিত মিলিত হইরা কল্প নামে গলার মিলিত হইরাছে। नीमांहन (प्र) जनभरक्त । [नीमांहम तथ ।] দীলাভন্ত (বী) শীলাপ্রকটনার্থ গুডরেই। शीलांजायपुत्र (ही) कीशंक्यन, नीनांक्यन। লীলাদ্রপ্র (বি) খেলার ভগীভূত। লীলানটন (मी) কোতৃকাবহ মৃত্য। सीमाजि (११) नीना**ञ्**न। लीलांशत्र **छ**ष्टे, राष्ट्रिगाणाचानी बर्टनर यदि। क्वीक्रस्टापद हेशात फेलाब चारक। जीजांशमा (ही) भीनार्थर नवर । *जी*कारममा। लीलाशक्षक (११) गीनावन। जीजाक (तो) गीगांक्**म**ण। লীলাভন্ত (ही) পদ্মালার নিশিত অল্ডার। लीलांबकुरा (११) इकारने नहरा। महत्ताकात किन्न महत्त मरह अवेक्टन रहहाक्रकिविनिक्रे। लीलाग्रह (वि) गीलापद्यप्य महरू । गीलापत्रभ । লীলামাত্র (चरा) খেলিছে খেলিছে। लीलामाञ्चितिक (बि) > इक्टनी नहस्र । १ विरूप । लीलाच्यः (जी) गीगानवः (क्यानविध्यान २७। ५৯) मीलाञ्चर (११) काव्यविष्य । [मीलाक्स दस्त ।] লীলারতি (জী) জীয়া लीलांद्रविक्य (क्री) नीणांक्यल ।

লীলাবভার (পুং) শীলাপ্রকটনার্থ বিষ্ণুর অবভার। লীলাবং (নি) শীলা বিভাছেন্ত সভুপ মন্ত বঃ। শীলা-বিশিষ্ট, ক্রীড়াবুক। नीनावर्की (बी) नीनावर-क्रितार **दी**र्। > द्वनिवृक्ता। ২ বিনাদৰতী। ৩ পূলারভাৰচেষ্টাছিতা। ৪ খেলাবিশিষ্টা। বিখ্যাত জ্যোতির্বিদ্ ভাত্বরাচার্য্যের পদ্ধীয় নাম দীলাবতী। धरे गौगांवछी धक्यांनि चढ्अंड धानुन क्टब्रन, छारांत्र नायक সীলাবতী। সীলাবতীনললাচরণ গ্লোকের টাকার গণেশ লিখিরাছেন বে.---"গোদাবরীতীরনিবাসিন: বহারাইদেশোরবত এভাররা-চার্যান্ত প্রছক্র্য: ক্রপ্রিয়া দীদাবতী বিরহবিক্রিঞ্চন্ত্রন্ত ভাং পরে-শীলাৰত্যা শীলাৰতীমিষ" (শীলাৰতীটাকার প্রনেশ) ভাষরাচার্যাও দীলাবভী নামে একথানি অন্তর্গ্রহ প্রেবন করেন। ঐ গ্রাছের মললাচরণ প্লোক এইরপ লিখিত আছে---"প্রীভিং ভক্তজনত বে জনমতে বিশ্বং বিনিম্ন শ্বভ-অং বৃন্দারকবৃন্দবন্দিতপদং নথা মতলাননম। পাটীং সদৃগণিভক্ত বচ্মি চতুরপ্রীভিপ্রদাং প্রক্ষ্টাং সংক্ষিপ্তাক্ষ্মকোষণামলপদৈর্গালিত্যলীলাবতীম ॥"(গীলাবতী) অবিকিৎ নূপতির স্ত্রী। (মার্কঞ্জেরপু
 ১২৩)১৭) ণ বেঞ্চাবিশেষ। (মৎক্রপুরাণ) ৮ স্থারগ্রন্থ বিশেষ। "ত্ৰব্যং ৰাজুলমূজ্মলো গুণগণঃ কৰ্মাধিকং প্লাখ্যতে লাভিবিদ,ডিমাগতা ন চ পুনঃ প্লাখ্যা বিশেব ছিভি:। সম্মান সহকো ভণাদিভিবন্ধ বতাত সংগ্রীভন্নে गारीकानपरकार्क्यक्रमण खेळाप्रणीगारकी॥" (अक्रमिख) লীলাবধৃত (बि) বছদে বিচয়ণীক। লীজাবালী (ত্রী) জলকেলির নিষিত্ত পুডরিবী। मोमार्यभूव (ही) गीगागृर । লীলাশুক (গুং) ডক্তক্ৰি বিষয়সনের নানান্তর। शीशोगांश (वि) नरवगांश। वांश व्यवस्थान निश्वा क्यां गांच । লীলাস্বাত্মপ্রায় (গৃং) ডান্নিক স্বাচার্জভেষ 🖯 পঞ্জি 🕻 🕬) ক্তক্ষণণের মধ্যে কুণরিচিত। শক্তিরভাক্তর ইতার ইয়ের আছে । मीटमाधान (मी) गीनाबंद्धानः। अववन । (विका) শ্বৰ বানসমূহত দেবৰি আছদেবিভাৰ मकीका गक्टननक मीटनावांगर झटनाविकाम् ।" (कवामूबिरमा •). লীলোপথতী (মা) হলেন্ডের। ইয়ার আছি চরুর ১৫টা ক্ষাৰ্থ প্ৰাকে।

লুজাড়ি (দেশৰ) বৃক্ষবিশেষ। (Phylanthus longifolius) লুই (দেশৰ) লোমবারা প্রস্তুত বন্ধভেদ। স্থনানপ্রসিদ্ধ পশ্মী বন্ধ।

লুকু (পুং) নোগ, বাকরণের সংজ্ঞান্তেন, নৃত্ ও লোপে প্রভেদ আছে।

জুক, ক্লম্ভ প্ৰভাৱভেদ। এই প্ৰভাৱবোগে ধাতৃত্ব বিশেকাল্লপ হুইয়া থাকে।

জুকা [ন] (দেশৰ) গোপন।

লুকা (গুবা), আসাম প্রদেশে প্রবাহিত একটা ক্রনদী।
পর্কাতগাত্র-বিধোত কতকগুলি সরিংমালার প্রইকলেবর হইরা
ইহা উত্তর-কাছাড় ও লরত্তী শৈলবিভাগের মধ্য দিরা প্রবাহিত
হইরাছে। লরত্তীর পার্কাভালেলা অভিক্রম করিরা ইহা
জীহট্টলেলার মূলাগুল গ্রামের নিকট প্রমা নদীতে মিলিত
হইরাছে।

লুকাচুরি (দেশক) বালকদিগের জীড়াবিশের। ইহাতে এক-জন চোর সাজিরা অপর সলীদিগকে খুঁজিরা বেড়ার।

লুকিবিদ্যা (ত্রী) > খণ্ডবিছা। ২ রহন্তপূর্ণ ভৌতিক প্রক্রিরা। লুকোলুকি (দেশন) পুনঃ পুনঃ গোপনের ছলনা।

লুকায়িত (ত্রি) শুক-কারগু যন্ত তাদৃশ ইবাচরতীতি নুরার-কিপ্ততঃ ক্ত। অন্তর্হিত।

मुरुकश्रुत (क्री) जीर्थरण ।

ৰুপ্ত, বালানার হাজারিবাগ জেনার মধ্য-অধিত্যকা ভূমির দক্ষিণস্থ একটি গগুলৈন। অকা • ২৩°৪৬'৪৫' উ: এবং প্রাণি • ৮৫° ৪৪'৩০' পৃ:। এই শৈলধণ্ডের উত্তর মুধে ২২০০ ছিট্ উচ্চে একটি প্রাচীন হর্ন প্রতিষ্ঠিত আছে। উহা স্থানীর প্রাচীন সমৃদ্ধির একমাত্র পরিচর স্থল। এই পর্ব্বতাংশের সর্ব্বোচ্চ শিধর সমৃদ্রপৃষ্ঠ হইতে ৩২০৩ ফিট্ উচ্চ।

লুখাসী, বুন্দেলখণ্ড বিভাগের অন্তর্গত একটা দেশীর সামন্তরাজা। ভারতগবর্মেণ্ট ও মধ্যভারত একেনীর ভন্ধাবধানে
পরিচালিত। ইহার দক্ষিণালিক হইতে দক্ষিণপূর্বাসীমা পর্যন্ত
ভ্রপুর রাজা, এবং পূর্বা, উত্তর ও পশ্চিমাংশ হামীরপুর রাজা
বারা পরিবেটিত।

ইংরাজরাজ বধন ব্লেলখণ্ডের আধিপত্য লাভ করেন, তথন এখানকার সর্কাহেরা ১১ থানি প্রামের অধিকারী ছিলেন। তিনি বধারীতি ইংরাজরাজের আছুসত্য স্বীকার ও বলোবতীগত্তে বাজর করাহ বীর সম্পত্তি ও সামস্তপদ লাভ করিয়াছিলেন। ১৮৫৭ খুটাজের সিপাহীবিত্রোতের সময়, এখানকার সামস্ত সন্ধারসিংহকে ইংরাজরাজের প্রতি বিশেব অন্তর্ক্ত দেখিরা বিত্রোহিদশ সুবাদী সুঠন করিয়া বহু ক্ষতি করিয়া ছিল। রাজা বিদ্রোহীর অত্যাচার সক্ত করিছাও অবিচলিত ভাবে ইংরাজের পক্ষ সমর্থন করিরাছিলেন। ইংরাজরাজ উর্লাধ এই রাজতাজির প্রকার অরপ তাঁহাকে রাও বাহালর উপাধি, রাজপরিজন এবং ২ হাজার টাকা আবের একটি আর্থীর লাম করেন। এতির সনন্দের বারা তাঁহাকে দত্তক প্রহণেরও অধিকার লাম করা হর। তাঁহার পোত্র রাও বাহালর ক্রেনিংই ১৮৮৬ খুটাকে পৈড়ক রাজপনে অধিটিত ছিলেন। তাঁহার নাবালক অবস্থার ইংরাজ গ্রনে কি রাজকার্য্য পরিচালন করেন। এই সম্বে পূর্বাসী রাজ্যের বথেই উর্লিড সাধিত হইরাছিল। রাজক প্রার ১০ হাজার টাকা।

কাল্ণী হইতে জব্দগগুর বাইবার পথে কাল্ণী হইতে ৪৩ কোল দক্ষিণে পুদাসী নগর অবস্থিত। এখানে একটা স্থান্দর বাজার আছে। নগর মধ্যে রাজপ্রাসাদ ও স্থান্দ ও কামান-হর্ণে রাজার ৯০ জন প্রাতিক সৈচ্চ এবং ৭টা কামান ও কামান-বাহী সেনাদল বাস করে।

नुक् (११) माष्ट्रमुक वृक्त, চलिछ ছোলছনেবৃদ্ধ গাছ । (বৈধ্যক্ষিণ) नुक्रभारम (ज्ञौ) माष्ट्रमुक्सारम । (विश्वक्षिण) । नुक्रभाम्न (ज्ञौ) माष्ट्रमुक्षात्र । (ज्ञानक्षमात्रमर)

जूजात (११) क्लिन लाव्। (तप्रमा•)

লুচি (দেশৰ) গোগ্মচ্গ (মরদা) বলে মাথিরা ও পিণ্ডাকৃতি করিয়া চাকী ও বেলন সহবোগে বেলিরা যে চক্রাকার মরদার পাত উত্তথ্য স্থতে ভালা হর, তাহাই সুচি। ইহা উৎকৃত্ত থাছা বলিরা গণ্য। গ্রমন্চি লবণ বোগে ভক্ষণ করিলে রক্তামাশর আরোগা হয়।

লুচ্চা (পারদী) > কামুক। ২ পরত্রীগাৰী। ৩ বেশাদি ৰারা রমণীর চিন্তহরপঞাৰাদী।

লুচ্চাপনা (পারনী) কায়কের হাবভাব বা কাঠা। এই আর্থ নুচ্চাম ও নুচ্চামী শব্দেরও প্ররোগ হইরা থাকে।

জুজ, দীথি। চুরাদি পরতৈ অক নেট্। এই ধাকু ইদিং।
লট্ লুঞ্বতি। লুঙ্ অফুলুঞ্বং।

লুক্, ১ অপনরন, অপসারণ। জাদি। পরজৈ নক। সেট। সুক্তি। নিট্সুনুক। সুট্সুকিতা। নুত্অস্কীং।

লুঞ্জিতকেশ (গুং) কৈন নাজ্যনারিকজে। তাহারা ঔষধানি বোগে নাথার কেল ও পাত্রদোম নই করিরা কেলে বলিরা এইরুল নামকরণ হইরাছে।

লুট, বিলোড়ন। ভাবি-, পজে বিবাধি- পরত্থৈ- নক- নেট্্র নট্লোটভি। বিবাধিপকে নুটাভি। নিট্লালাই, বুনুটুড়ঃ। নূট্লোটভা। নূত্ অলোটাৎ, অনুট্র। বিচ্লোটভাটি। নূত্ অনুন্টং। নূট প্রতিবাত। ভাবি- আল্পনে- সক-

त्रहे। नहे लाग्टिक। नृहे लाग्निका। नृह व्यटनाव्रिः। वानुष्टे, - इ. कि, चनक्ष, क्रीयाः। क्रापि नवत्व नक क्रि। धारे बाजू देविश। नहें मुखेकि। नूद चनुके रेश धारे चर्छ मू हे (दिश्य) मूर्जन नदस्य चानकरने । अवदानस्तर । मुछेश्राष्ट्र (अन्य) मुकेन। লুটু পুট্টান (বেশব) গোলে পড়া। বিশৃথবার মধ্যে হাভড়ান। जुष्टा (दनक) ३ शकाशकि । २ गूर्वम क्या । मुहेर्न (तमन) > मूर्धनकार्या । २ ध्नात विनृष्ठिक कत्रण । **লুটিয়ারা** (বেশৰ) ডাকাইত। ব্টেরা। জুট্টা (বেশল) > গোলাকার স্ভার শিশু। ২ জড়ান বস্তবগু। লুটীস্কৃটী (লেক্ষ) গোলবোগ । বিশৃষ্ণা। मुट्टेन ख्रुद्ध (जनन) न्र्रेनवात्रा नव भवार्थ। লুঠ, ১ উপৰাত। ২ আলভাত তেৱে। ছ খোড়ন । ৫ প্ৰতীয়াত। লোট। উপবাতার্থে ভারি॰ পরত্বৈ॰, প্রতীবাতার্থে আত্মনে চৌব্যার্থে চুরাদি পরত্বৈ লোটার্থে জুদাদি পরত্বৈ উভ- সেট্। লট্ বৃহ্ছি, লোঠতে, বৃঠভি। বৃঙ্ জলোঠীৎ, चनूनुकेर । সূঠন (क्री) বৃঠ-ভাবে ব্যাট্। ভূমিতে অখের প্নঃ প্নঃ শ্রমোপহনন, চলিত লোটা, গড়াগড়ি মেওয়া, পর্যায়

(बका । (बिका) লুঠনেশারভীর্থ (क्री) তীর্ঘজন। ইহাকে পুঠেবর বা পুকেবর

তীর্থও কছে। ছেমচজ্র এই তীর্থের নাম উল্লেখ করিরাছেন। সুঠিত (অ) পুঠ-জ। মৃহমূহ: ভূমিডে পরাবৃত্ত হওরা। শ্রম-শান্তির জন্ত যে সকল আৰ ভূমিডে বারবোর গড়াগড়ি দের, ভাহাকে সুঠিত কৰে। পৰ্য্যার বেল্লিড, অপার্ড, পরার্ড। (হেম)

> "লিলাকলাপো লুঠিডঃ ক্মঞ্নগিরেবরং। কিষ্তাকালকলাজনেবৌবঃ পতিভো ভূবি।" (क्थान्तिरमा० ३०२। ११)

লুড়, ১ মছন, আলোড়ন। ২ সংবৃতি। ৩ মেব। মছনার্জে— জ্বাদি। পরবৈ। কক। কেট্,কংর্তি ও রেবার্থে ভূবাদি। পরবৈ। নট ৰোড়ভি। নুট্ লোড়িতা। নুঙ্ আলোড়ীৎ, ক নোড়িত, निष्ठ् (बाक्विकि । जा + मूक् = जारनाक्न । वि + मूक् - विरना-क्त। क्राविभाक मृष्ट्र सुक्षि। मुक् कम्कीर। मृद्धु दु (त्यनंत्र) समहत्त्व (Cancaria glomerata) मुफ् बुफ् (रम्भ) अविक असिक मिना रनकान । मुद्धी (प्रमम) डेनेशर्थ । 🛒 🖹 🖄 🖄 🖄 🕬 ज्ञुष ((रामक) नदम 🚛 मूर्वायापु, त्यापारे व्यक्तित्वनीय क्यमान व्यवस्था व्यवस्था

পলিটিকাল একেশীর অন্তর্ভ একটি দেশীর সামন্তরাকা। ইহার উত্তর সীমার রাজপুতনার অন্তর্গত হুজরপুর সামন্ত রাজ্য, পূর্বে রেবাকাছার অন্তর্গত ভূ'ব ও কছানা রাজ্য, ক্ষিণে শঞ্চ মহলের অন্তর্গত গোধ্ড়া উপবিভাগ এবং পশ্চিমে মহীকাছার ইনর রাজ্য ও রেবাকাছার **স্বত্ত**র্গত বালাসিনোর রাজ্য। অক্ষা[°] ६२°६० व्हेरछ २७°३७ के: अक्त सांवि° ५०°२ ५ व्हेरख १७७८ १ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ৩৮৮ বর্গমাইল। এথানে দর্কদমেত ১টি নগর ও ১৯৫টি খানি আম আছে।

महीनमी धरे त्राकामध्या श्रवाहिछ। मध्या मध्या विज्ञुक বাঁধ আছে। কুপাদি ধনন করিয়া তথাকার লোকে চাসবাস করে এবং তাহাই স্থানীর অলাভাব দুরীকরণের এক মাত্র উপার। গুলরাত হইতে মালব পর্যান্ত একটি বিভূত পথ লুগাবাড় নগরের পার্থ দিরা গমন করার এখানকার বাণিজ্যসমৃত্তির বথেষ্ট উরতি হইয়াছে। গম, কলাই এবং সেগুণ কাঠ এখানকার প্রধান বাণিকা দ্রব্য। ওলরাতের অস্তাক্ত স্থানাপেকা এই স্থানের জলবায়ু অপেকাফুড শীতল। অর ভিন্ন এখানে সাধারণতঃ **जन्न दाशि पृष्ठे दक्ष**ा।

অন্হিলবাড়পত্তনের-রাজপুত রাজবংশ হইতে এধানকার बाजवरन উৎপन्न। धावान, अहे बाजवरणाब পूर्वाभूक्रवर्गन ३२२८ খুটান্দে বীরপুর নগরে রাজধানী হাপন করিয়াছিলেন। তদনন্তর ১৪০৪ খুটান্দে ঐ বংশীর কোন রাজা সুণাবাড়ে রাজপাট পরিবর্ত্তন করেন। অধিক সম্ভব,গুজরাত প্রদেশে মুস্সমান-রাজগণের প্রভাব विच्छ इटेरमू, छाराता ताबालहे रहेगा महीनमी अञ्जिमभूक्क এখানে আসিতে বাধ্য হন। অতঃপর এখানকার সামন্তরাজগণ গাইকোবাড় ও সিন্দেরাজের অধীন নামস্করণে রাজ্যশাসন করিতে থাকেন। ১৮১৯ খুটাজে ইংরাজগবর্মেন্ট নিলেরাজের कर्ष्य अस्त्यावन कविवाहित्वन। ১৮২৫ बृहोत्स मूनावाफ মহীকাছার পলিটিকাল এজেন্দীর **অন্তর্ভু ড** হর। ১৮৩১ খুটাজে নিলেরাজ পক্ষম্বল জেলার সহিত এই রাজ্যের পাস্মকর্ত্বও ইংরাজগৰমে প্রের হতে সমর্পণ করেন।

महात्रामा वयर (७क) निरम्बी २৮৮० वृद्दीदम त्राव्याचितिक হন। তিনি লোলাকীক্ষীর রাজপুত। পলিটিকাল এজেন্টের বিশেষ অন্নয়তি ব্যতীত ভিনি স্বীৰ অপৰাধী আলাধিগকে আগ-ৰঙে ৰঞ্জিত করিতে পারেন। ইংরাজরাজের নিকট হইছে জিনি মাজস্বক 🔊 ভোগ পান। জ্যের পুজুই রাজ্যাধিকারী হইরা পাবেল। রাণার বক্তকপ্রবংগর ক্ষমতা মাই। মেটি রাক্তম ১৯২২৯১১ টাৰ্কা, তৰ্মধ্যে ইংরাজয়ালকে ও বড়োলার গাইকোবাড়কে বার্ধিক bores होका विरष्ठ रहा। बाबरेनडनरकी २०३ वसा। खनाइक **३२डी विज्ञानम् जारह**।

২ উক্ত সামস্বরাজ্যের অধান নগর। স্থা ও আঠীরাধি
নারা পরিরন্দিত। নধী ও পনাম নধীর সক্ষমের ছই জোশ
পূর্বের এবং পনাম তীর হইতে অর্ছ জোশ উত্তরে অবস্থিত।
অকাশ ২৩°৮'৩০' উ: এবং তার্ঘি ৭৩°৩৯'৩০' পৃ:।

১৪৩৪ খুটাব্দে রাণা ভীষসিংহ**নী এই নগর গুভিন্না করে**ন। चानीत ध्ववार, এक रिन तार्श महीनरी छेखत्र कतिया मृशवाय বহিৰ্মত হন। ঘটনাচক্ৰে বনপথে সক্ষ্যন্তই হইরা তিনি খীর मन **कांका क्रेडा পড়েন। जलनी সমাগ্যে क्रियासकार**न পথ হারাইরা তিনি নিকটছ এক সাধুর জাপ্রনে উপনীত হন। রাজা সেই বোগনিরত নাধু নমক্ষে উপনীত হইয়া সুনুরৰে তাঁহাকে গ্রাণিপাতপূর্বক কুটারের একপার্বে লগুরমান মহিলেন। সাধু বোগবলে রাজার দৈক্ততা জানিতে পারিরা মনে মনে তাঁহার সাধুতাকে ধন্তৰাদ দিলেন এবং বোগভন্ন হইলে বাল্পাকে আসন পরিগ্রহ করিতে আদেশ করিয়া বলিলেন—তোমার ও তোমার বংশধরণণের অদৃষ্ট বড়ই স্ক-প্রসন্ন; ভূমি এই বনে একটা নগর স্থাপন করিবা রাজাশাসন কর। কল্য প্রভাবে এই স্থান হইতে পূর্কাভিসুখে গমন করিয়া বেধানে তোমার সন্মুধ দিয়া একটা শশক গমন করিতে দেখিবে, সেই ছানেই নগর স্থাপন করিবে। রাজা সর্যাসীর বাক্ষান্ত-সারে পথ অতিবাহিত করিয়া পার্যস্থিত গুরুসভাচ্যস্তর इहेरड अकरी नमक निर्मेड इहेरड दिशियन अवः बहारमद्र -আঘাতে ভাহাকে সেই স্থানেই নিপাত্তিত করিলেন। সেই ছানেই পরে ভিনি রাজপ্রাসাধ নির্দ্ধাণ করান। যোগিবর পুণে-ব্দরের উপাসক ছিলেন। রাজা সেই সাধু ও[®]লেবতার প্রতি **क्रियान् हरेवा नगरतत नाम नुगावाक् त्राध्यम । नगरतत पत्रकृती** বারের বহির্ভাগে আজিও সুণেখরের মন্দির বিভয়ান আছে।

বৃষ্টীর ১৯শ শতাব্দের প্রারম্ভে এই নগর গুজরাত ও নাগবের বাণিজ্যসমূদ্ধিতে পূর্ণ হইরা উঠে। ঐ সমরে এখানে উৎকৃষ্ট জন্তুশন্ত প্রস্থাত হইত। বোবে-বড়োলা-মধ্যভারত রেলপথের গোধ্জা শাখার শেব টেসন শেরা নগর হইতে সুণাবাড় পর্যন্ত একটা পাকা রাজা আছে, এই পবে এখানকার নালপন্ত পোধ্জার আলীত ও বিক্রীত হয়। এখানে করেমধানা, বিভালর ও চিকিৎসালর আছে।

সূথিয়া (तनम) > चनत्त्रतः। (Portulace oleraces) २ जननगरमात्री।

পুন্ট, অবজ্ঞা, চৌর্য। চুরাবি॰ পক্ষে জাবি॰ পরীমে৽ সক্ষ সেট্
পুন্টরভি, পক্ষে পুন্টিও। পুক্ অনুস্কীং, পক্ষে অপুন্টীং।
পুন্টক (পুঃ) সুন্টভীজি পুন্টী-বৃস্। ১ শাক্ষিপের। চলিত
নটেশাক।

লুকী (জী) বৃক্ট-জঙ্-টাপ্। বৃষ্ঠন। (শক্ষরাণ)
লুকীক (প্ং) বৃক্টভীতি বৃক্ট-(জন-জিল-কুটব্টবৃক্টর বাদন্।
পা ভাষাবহর) ইতি কন্। ১ চৌর।
লুকীকী (জী) বৃক্টাক-বিছাৎ উপি। জীচৌর।
লুকীক (জি) বৃষ্ঠভীতি বৃষ্ঠ-বৃদ্। ভেরকারক, বৃষ্ঠনকারী, চলিত
লুঠেরা।
"বে চৌরা বহিনা হাই। গরনা গ্রামন্ট্রাঃ।
সারমেরাদনে তে বৈ পাভাতে পাতকাবিভাঃ।" প্রপ্ত-পাভালধ্য)
লুক্টন (রী) বৃষ্ঠ-বৃষ্ট্। স্ট্রন, বৃঠ করা।

"हत्रगः मुक्रेनर **७६९ ७९१क्वी**मार नहाविशः।"(त्वरीष्ठांश॰ क्षात्रात्रकः)

ং গড়াগড়ি দেওন।

নুষ্ঠানদী (প্ৰী) নদীভেদ।

নুষ্ঠান (প্ৰী) নৃষ্ঠ-অঙ্ প্ৰিয়াং টাপ্। নুষ্ঠন। (শক্ষয়াঃ)

নুষ্ঠাক (প্ৰং) লুষ্ঠ-ৰাকন্। > কাক। (বিকা॰) ২ চোর।

"বিয়োহতিসারিকাণাং ভবনগণকাটিকবেডানিকায়ঃ।

বত্র বিরাজতি রজনীতিনিরপটগ্রকটসূর্তাকঃ ॥" (কলাবি: ১।৩) সুন্ধি (ত্রী) বহার্ডি। অপবরণ। সুঠী (ত্রী) সূঠন, সুট হওরা।

লুণ্ড, চৌর্য। চুলাদি পরত্রৈ লক্ত বেট্। লট্ লুঞ্চতি পুঙ্জপুপুঙ্গ।

পুঞ্জিকা (ব্ৰী) পৃথী স্বাৰ্থে কন্, ততন্তাপ্। > জানসানিশী।
(হারাবনী) একতা বেটিত নেবলোনাদি, নেবলোনাদি একতা
ক্রিরা বে দলার মত হর, তাহাকে পুঞ্জিকা করে। চলিত
ইহাকে স্থাড়ি কহে।

"নৈৰব**ক ছতাভ্যকং তাত্ৰভাজনমাতণে।** প্ৰতিশ্ৰমূৰ্ণনা স্তৱং তত্মলক সমাৰ্থেৎ ব্ৰ

ভাত্ৰভাজনে শ্বভং সৈৰবং নৰা রৌত্রে ভথাং ক্লপা নেবলোম-নৃত্তিকরা ঘট্টা মনগ্রহং ক্লবা ভেন অক্ষরেং।" (ভৈষ্ণারপ্লা») সৃত্ত্বি (ত্রী) ভারনারিণী। (ত্রিকা») স্বায়া, কুম্বন, ব্যাও ক্লোনা ভাবিত পরবৈত সক্ষত সেটা স্বভতি।

भूष, क्षम, २४ ७ क्रम । जादि शतदेष मध्य एके मृहि। मृद् चन्दीर।

সুদ্ধু, (গাৰ্ক্), চীন ও ভারতনীয়ান্তবাদী পার্যতীর লাতি বিশেষ। নৌবিরাং নামক হানে পালিনে বৃত্তকু নামক হানে ইহাবের বাস। আচার ব্যবহারে ইহারা সম্পূর্ণ কর্মন। কতকওলি কাটের পুটা পালাগালি পুটিবা ভাহারা গুড় নির্বাণ করে। আভাবি স্বাংক ভাহারেটিবির্গান বিচার নাই। সাবান্তবাদ ভাহারা চিতাবাদ, ভাগল, বেঁক্লিয়াল প্রান্তবিধ্যালয় কালালাকের পাত্র আহুত করে। বোজারা চর্ববানেটি বের্যান্তাদন করে, বিজ কৃত্ত ভ কালীর বর্ণবাহার কালাবাহার আহুতির ক্রান্তাদন

করিরা থাকে। রাহারা খুইধর্মের জ্বালের লাভ করিরাছে, ভাহারা চীনবাদীর অক্সমুগ পরিক্ষম পরিধান করিভেছে।

ইহানের গাত্রবর্গ পারবর্জী অপরাপর লাতি হুইতে অপেক্ষারুত রুক্তর্প। নাধার তাহারা চীনবাসীর স্তার দড়া বিনাইরা
বড় চুল রাখে। বুছ কার্য্যে তাহারা হানিপুণ। পার্ববর্তী দেশবাসীদিগকে, বিশেষতঃ বুল্-নান্ লাতিকে নিরস্তর উপদ্রবে
উৎক্ষিত করিতে তাহারা কাতর হর না। বড় চুরি, বড়পা ও
ধন্কও তাহারের এক নাত্র অল্প্র। আসাম সীমান্তহিত থামতী
লাত্রির বাসভূমি হইতে তাহারা ঐ সকল অল্পাদি লইরা যার।
চীনরাজকে তাহারা কোন কর দের না অথবা তাহার রাজপজ্জির
ক্রীভূত বলিরা বীকার করে না; কিন্তু চীনরাজের আলেপ
পাইলে তাহারা বেজার পূঠনের লোতে বুলার্থ অগ্রসর হইরা
থাকে। তাহারের মধ্যে প্রান্থ ১২ শত হর্ছর্ব বোদ্ধা আছে।
ভূতাদির ত্রিসাধনার্থ তাহারা মুর্নী বলি দিরা থাকে।

সৃথিয়ানা, গঞাৰ প্ৰদেশের অন্তর্গত একটা জেলা। হোট লাটের লাসনাবীন। ইহার উত্তরে শতক্র নদী, পূর্বে অবালা জেলা, দক্ষিণে পাতিবালা, বিন্দ, নাতা ও মালের কোটুলা সামন্তরাজ্য এবং পশ্চিমে কিয়োজপুর জেলা। জ্বজা ৩০°৩০ হইতে ৩১°১০ তঃ এবং লাখি ৭৫°২৪ ৩০ হইতে ৭৬°২৭ পুঃ মধ্য। ভূপরিমাণ ১৩৭৫ বর্গমাইল। সরমালা, সৃথিরানা ও জগরাওন তহদীল লাইরা এই জেলা গঠিত।

এই কেলার সর্ক্র সমতল। কোথাও একটা গওলৈল দূই হর না। নদী না থাকার জলকট বিশেবরূপে অস্কুভূত হর। দক্ষিণনীমার শতক্র নদীর একটা প্রাচীন থাত আছে, তাহার নিকটবর্তী হান অপেকারত উর্কর। বর্ধান্ততে বিশেবতঃ বৃষ্টিপাতের পর এই থাত পূর্ণ হইরা উঠে। গ্রীছের সমর জলাতাবে তাহা ওকাইরা বার। অথালা হইডে সর্হিল-খাল এই জেলার পূর্বাংশে প্রবেশ করার হানীর জলাক্সাব কভকাংশ বিদ্রিত হইরাছে। ঐ থালের অপর চুইটা দাখা জেলার পশ্চিম প্রগণান্তর্ক্ত থানারিত থাকার চাসবালের বিশেব হৃথিধা বৃটিয়াছে। জেলার অধিকাংশ হানই বালুকামর মহন্তর্ক। বথ্যে মধ্যে স্তিজ্বাপূর্ণ ভূমিণ্ড ক্লাবল শতে পরিবৃত হইরা হানীর শোভা সম্পার্ম অন্তিভছে।

এবানে বছলবস্থুল সেরুপ গভীর বনতাকেশ নাই। শতক্রর প্রাচীন গর্ভ সনীপবর্ত্তী 'বেং' বিভাগ ব্যক্তীত কেলার আর লোখাও কুলকিরা, শিশুলালীকট, লব্ধ প্রকৃতি বড় বড় গাছ বেখা বার না, কেবল প্রভ্যেক প্রাধের প্রকৃতিতি এক একটা লব্ধ ও বট কেখিতে পাওরা বার। পাছের অভাব পূর করিবার বছা এখন রাভার উত্তর পার্থে বড় কাডীর কুলসমূহ রোপিত

হইতেছে। এখানে স্থানবিশেষে মৃত্তিকা হইতে কাঁকর উদ্বোশিত হয়। উহা রাভার ছড়াইয়া দেওবা হয়। কাঁকর গোড়াইয়া চুণ প্রস্তুত হয়, তাহা বিক্রীত হইয়া থাকে।

বর্জমান স্থিয়ানা নগর খুটীর পঞ্চমশ শতাব্দের অধিক প্রের্বি গঠিত হর নাই, কিন্তু এই জেলার অন্তান্ত স্থানে অনেক প্রাচীন নগরের ধ্বংসাবশেষ দেখিরা মনে হর, ঐসকল নগর বহুকাল পূর্বে প্রেসিদ্ধ ছিল। ফালসহকারে ও দৈবছুর্জিলাকে তাহা ধ্বংসমুখে নিশতিত হইক্সাইছ। বর্তমান স্থিয়ানা নগরের সন্নিকটে স্থানেত নামক ছানে একটা স্লুক্ বিভূত ও ইইক্সিম্পিত অট্টানিকাদিপূর্ণ প্রোচীন নগরের ধ্বংসাবশেষ দৃষ্ট হয়। ঐ ধ্বত্ত তুপ্রাশি আজিও তাহার প্রাচীন সমৃদ্ধির পরিচর দিতেছে। ভারতে মুসলমান সমাগমের পূর্বে ঐ জনপদের গৌরব ও কীর্ত্তিকলাপাদি বিষ্টর ধীরে অন্তর্হিত হইরাছিল। তদপেকা পূর্বতন হিন্দু-রাজধানী মংজ্বাট নগরীর পূর্বসোন্দর্যোর নিদর্শন মাত্র পরি-রাজধানী মংজ্বাট নগরীর পূর্বসোন্দর্যোর নিদর্শন মাত্র পরি-রাজধানী মংজ্বাট নগরীর পূর্বসোন্দর্যোর নিদর্শন মাত্র পরি-রাজধানী মংজ্বাট নগরীর পূর্বসোন্দর্যোর নিদর্শন মাত্র পরি-

মুসলমান অধিকারে এই হানের রাজকোটের রাজপুত রারবংশ প্রবল ছিলেন। পরে ইস্লাম্ধর্মে দীক্ষিত হইরা রাজাত্মগুহভাজন হন। ১৪৪৫ খুটান্দে এই রাজবংশ দিল্লীর সৈরদ রাজবংশের নিকট হইতে এই প্রদেশ জারণীর স্বরূপ প্রাপ্ত হন।
১৪৮০ খুটান্দে দিল্লীর লোনীবংশীর রাজগণের উত্যোগে পৃধিরানা
নগর হাপিত হর, পূর্কোক্ত স্থনেত নগরীর ইটকাদি লইরা
মুসলমানগণ এই নগর পত্তন করিয়াছিলেন, জনেক জ্ট্রালিকার
আজিও জি-জ্লুলিচিক্যুক্ত স্থনেত নগরীর প্রাচীন ইটক দেখিতে
পাওরা বার।

সম্রাট্ বাবর পাহ কর্ত্ব লোদীবংশের অধঃপতন সাধিত হইলে, এই নগর মোগলরাজবংশের অধিকৃত হয়। জনবধি ১৭৬০ খুটান্দ পর্যন্ত উহা মোগলবাদশাহগণের শাসনাধীনে থাকে। তৎপরে রাজকোটের রারবংশ প্নরার উক্ত নগরের শাসনাধিকারী হইরাছিলেন।

বোগল অধিকারে এই ছান দিরী হ্বার সর্হিন্দ্ সরকারের অবস্থাক ছিল। রাজকোটের রারবংশ তংকালে এই জেলার পশ্চিমাংশের ইজারাধার ছিলেন। মোগলসাঝাজ্যের অধ্যপতনে মোগলরাকশক্তি হতবল দেখিরা রার রাজগণ ছাবীনতা অবলবন করেন। তাঁহারা এই জেলার বর্জমান অধিকৃত বিভাগ ও কিরোকশ্রের কতকাংশ লইরা একটা স্বতন্ত্র রাজ্য ছাপন করিরাছিলেন।

১৭৬০ বৃত্তীকে শিবস্থ সর্ভিক্ কর করেন। তৎকালে কঞ্জকন ক্য ক্য শিবস্থারের হতে এই কেলার পশ্চিমানে নিশক্তিত হইরাছিল। বৃত্তীর ১৮শ শতাবের শেবতানে রারকোট- রাজনিংহাসনে বালক রাজাকে উপবিষ্ট বেখিরা শিথসর্থারগণ রাজকোটরাল্য আক্রমণ করেন। ঐ সমরে রাজকোটরাল্য উপা-রান্তর না দেখিরা সোভাগ্যাবেরী ভারতীর সামস্তরাল্য লক্ষ্ম ইনাসের সাহায্য ভিক্ষা করিরাহিলেন। ১৮০৬ পুষ্টাকে মহারাল্য রগজিৎ সিছে সিছু নদ অভিক্রম করিয়া এই বিভাগের অপরাপর শিথস্কারিদিগকে পরাল্যর করেন। ঐ সমরে রাজকোটের রান্তর্গের অধিকৃত রাজ্যও রগজিতের করকবলিত হইরাহিল। রগজিৎ সিংহ রাজকুমার ও তাহার হুইটা বিধবা মাভার ভ্রমণ-পোরণার্থ হুইটামাত্র গ্রাম দান করিরাহিলেক

১৮০৯ খৃষ্টাব্দে রণজিতের তৃতীর অভিযানের পর, ইংরাজগবর্মে ন্টের সহিত পঞ্চাবপতির যে সন্ধি হর, তাহাতে রণজিৎ
লতক্র পার হইরা আর অধিক রাজ্য হস্তগত করিতে পারেন নাই।
উক্র সন্ধির পর, ইংরাজরাজ স্বাধিকাররক্রপমানসে সৃধিরানার
একটি নেনানিবাস স্থাপন করেন। তৎকালে ঐ নেনাবাস
ঝিন্দারাজ্যের অধিকার মধ্যে স্থাপিত হওরার, ইংরাজগবর্মে ন্ট
ক্ষতিপূরণ স্বরূপ বিন্দারাজ্যকে কর দিতে বাধ্য হইরাছিলেন।
১৮৩৫ খৃষ্টাব্দে ঝিন্দারাজ্যকে কর দিতে বাধ্য হইরাছিলেন।
১৮৩৫ খৃষ্টাব্দে ঝিন্দারাজ্যকে ইংরাজাধিকারে আইনে,
ভাহা হুইতেই বর্ত্তমান সৃধিরানা জেলার উৎপত্তি।

১৮৪७ थृष्टीत्म ১ম निषयुष्कत व्यवनात्न नात्हात त्रांत्मात কতকাংশ এট জেলার অন্তর্ভ ক করিরা লওরা হয়। তদবথি এই নগরের উত্তরোত্তর শ্রীবৃদ্ধি হইতে থাকে। অতঃপর শিখ-कांकि नांखकांव धात्रण कतिरण हैश्त्राक्शवर्र्म के ১৮৫৪ धुंहीरस এখানকার সেনানিবাস উঠাইরা লন। ১৮৫৭ খুটালের সিপাহি-বিজ্ঞোত্তের সময় স্বরসংখ্যক সেনা লইরা এথানকার ডেপুটা ক্ষিণনর দিল্লী অভিমূখে বাত্রাকারী জালন্ধরত বিজোহী সেনামলের গতিরোধ করিতে চেষ্টা পান। কিছু সিপাহী-দলের নিকট তিনি সম্প্রংপ পরাজিত হইরাছিলেন। ১৮৭২ খুটানে কুকাসভাদারের কভকওলি ধর্মোরাও ব্যক্তি রাজনোহী হইরা এখানে বোরতর অনিষ্ট করে। ইংরাজ-রাজ সেই বিল্লোহিদলকে বথোপবুক্ত শান্তি দিরা তাহাদের মুল্পতি রাম্সিংহকে ইংরাজাধিকত ব্রহ্মরাজ্যে বন্দিরূপে ব্যেরণ করেন। সিদ্ধ পঞাব, নিদ্ধী রেলপথ ও সর্হিন্দ ধাল বিস্তারের সঙ্গে এধানকার শান্তি ও সমূদ্ধি উচ্চরোতর বৰ্ত্তিভ হইরাছে। ১৮৩৯-৪২ বুটাকে প্রথম আক্লান বুছের পার কাবুল য়াল্য হইছে বিভাড়িত খুশভান শাহস্কার বংশধরেরা এই নগরে বাস করিতেছে।

 সুধিরানা, জগরাওন্, রার্কোট, নক্ষিবাড়া, ধারা ও বহুলোল-পুর নগরে সাধারণতঃ এধানকার বাণিক্ষকার্ক পরিচালিত হব। অধিবাদীদিদের মধ্যে হিন্দু ও বুদ্দমান লাট লাভিই গ্রেরান। রালপুত, ভলর, কালীর প্রাকৃতি বিভিন্ন স্থানবাদীর সংব্যাও নিভাক কম নহে। ব্যবসাধীপ্রেক্তির মধ্যে কথী ও বেশিরার সংব্যাই অধিক।

এবানে পশ্বী কাপড়ের প্রভৃত কারবার আহে। শাল, মোলা, বভানা, রামপুরী চালর প্রভৃতি নানাপ্রকার পশরী বস্ত্র এবং খেল, লুকী, গাব্দশ প্রভৃতি বিভিন্ন রক্ষের কাশান বস্ত্র এবানে প্রভৃত হইরা বিক্রীত হর। এতরির আসবাব, গাড়ী ও কামান বন্দ্র প্রভৃতি প্রভাতের কচ এবানে বড় বড় কারবানা আহে। পাকা রাভার ও রেলপথে প্রধানভঃ এধানকার বাণিজ্য-কার্যা পরিচালিত হইরা বাকে।

২ উক্ত জেলার অন্তর্গত একটি তহনীল। স্থারিমাণ ৬৭৮ বর্গনাইল। অঞ্চাণ ৩০°৪৪ হ ° হইতে ৩১°১ উ: এবং জাবি॰ ৭৪°৫০ ত ° হইতে ৭৬°১২ পু: মধ্য।

ত উক্ত জেলার প্রধান নগর ও বিচার সদর, শতক্রনদীয় বন্ধিণ উচ্চকূলে বর্তনান নগীখাত হইতে ৪ ক্রোশ লূরে অবস্থিত। জব্দা ত ৩° ৫৫ (২৫" উঃ এবং ক্রাখি • ৭৫° ৫০ ত পু:। এখানে সিদ্ধ-পঞ্জাব-দিল্লী রেলপথের একটা টেসন থাকার স্থানীর বাণিজ্যের বিশেব ক্রবিধা ঘটরাছে।

নগরের উদ্ভরাংশে প্রাণক প্রান্তরে এখানকার কেরা অবহিত। সিগাহীযুদ্ধের পর ঐ স্থান পরিকার করিরা একটি বিস্তৃত মরলানে পরিণত করা হইরাছে। দিরীর গোলী রাজ্বংশের কুসুক ও নিহল নামক হই জন রাজকুমার ১৮৪০ খুরীকে এই নগর স্থাপন করেন। ১৭৬০ খুরীকে বোগাল রাজসরকার হইতে ইহা রারকোটের রারনিপের অধিকারে আইসে। ১৮শ শতাকের শেবভাগে রপজিৎসিংহ এই নগর অধিকার করিরা বিক্রের রাজা ভাগসিংহের হত্তে অর্পণ করেন (১৮০৯ খুরীকে)।

শতক্রপ্রাহিত সামন্তরাজ্যসর্বের পশিটিকাল-একেন্ট জেনারল অন্তার্গনী এই নগর বধন করিরা অন্থারী সেনাবাস স্থাপন
করিরাছিলেন; কিন্তু ভারত-প্রক্রেক্ট এই অবৈধ আচরণের
ক্ষতিপূরণস্থরণ বিন্দরাজ্ঞকে উপনুক্ত অর্থনান করিরাছিলেন।
১৮০৪ ব্রান্দে বিন্দরাজ্ঞকণেধরের প্রকৃত উন্ধরাধিকারীর জভাবে
ভাঁছার রাজ্য ইংরাজ-গবর্দে তের শাসনভূক্ত হয়। তব্ধবি এই
নগর ইংরাজ-সেনার একটা কুল্ত ছাউনীরণে পরিসালিত ছিল।
১৮৫৪ ব্রান্দে এবান হইতে সেনাবল অন্তল পরিসালিত হয়,
ক্রেল একবল মাল্ল সৈত্ত প্রক্রিকার অন্তল রাজিরাছে।
রুসন্মান সাধু শেব আক্রিকার কাহিনর-ই জলানীর পরিক্র
ভীবে আগ্রন করেন। এবানে প্রক্রিকারী এবানে

লদক্তে ব্টরা থাকে। এখানে সুস্তমাল, শাঠার ও কারারী-নিগের বাসই অধিক। কারীরীলগ ক্ষমের ১৯০ লক্ষ টাকার শাল প্রস্তুত করে।

সূপা, > ছেদন, উজেদন। ২ মোপ। তুনানি উজা। সক।

আনিই। নই পুনাজি-ছে। নিই কুলোপ, ন্নুপে। নৃট্
লোগা। নৃট্ লোপ জজি-ছে। নৃত্ অনুপং, অন্ধ্, অনুপ্
নাজাং, অনুপ্ৰত । কুল-বিমোহন, বাাহুলীকরণ। নিবাদি।

শাইবে অক। নেই। নাই, নুশাভি। নিই নুলোপ, নৃট্
লোপিছা। নৃট্ লোপিকাভি। নৃত্ অনুপং। নন্ লূনুপ্লতি
জোপিছা। নৃট্ লোপিকাভি। নৃত্ অনুপং। নন্ লূনুপ্লতি
জোপিছা। কুট্ লোপিকাভি। নৃত্ অনুপ্র লোলোভি।

শাহুর উজা ভাবনাহা অর্থে বঙ্হর। বঙ্কুক লোলোভি।

শিল্ লোগাছভি, নৃত্ অনুপ্রং, অনুলোপং। অব+

নুশ্ ভ্রু, হেছ।

मून् (ग्रः) नून् (इप्त-किन् । मान ।

লুপ্ত (দী) সূপ-জ-। > চৌৰ্য্যধন, চলিড লোভ। (শল-বন্ধা-)(জি)২ লোগবুজ।

"পরিবৃত্তনাভিপ্রতিবলিক্তামন্তনাগ্রমণসান্দি।
বহুধব্দক্রবনরেখং বপুন' পুরুবারিতং সহতে #"
(আর্থানপ্রশাতী ৩৩০)

নুপ্তবিসর্মতা (ত্রী) নাহিত্যদর্শগোক্ত দোবভেদ।
"বর্ণানাং প্রভিক্ষমং নুপ্তাহত বিদর্মতে।
অধিকন্যনক্ষিতপদভাহতেমৃত্তভা ॥"

(সাহিত্যদ+ १। ६०१)

খিসপের লোপ হইরা এই দোব হর, এইজন্ত ইহার নাম সূথেখিসগভা হইরাছে। 'গভা নিশা ইমা বালে' এইছলে সমস্ত অনে বিসর্গের লোপ হওয়ার এই দোব হইরাছে।

मृरुक्षाभ्य (बि) डेनमान्छ।

मृ(श्वाभा (,वी) केनमानकाष्ट्रकः। देशत नकन-

"পুঞ্জা সামাজধৰ্মাদেরেকজ বলি বা ৰছোঃ। অমাণাং বাহুপান্দানে ভ্ৰোজাৰী সাণি পূৰ্ববং ॥"

(সাহিত্যদ ২০ ৷ ৬৫১)

বেখানে উপমান বা উপমেবের সামান্ত ধর্মাদির এক বা হুইটা বিষয়ের লোপ করিয়া সাধর্ম্ম হয়, তথার এই অলভার হয়। [উপমা শব্দ বেখ]

লুক্ক (বি) পুত-কা। আতাজনী, আতাজানুক, পর্যায় গুয়ু, গর্কন, অভিনায়ুক, কুকক্। (অময়)

> "পুৰো বশলি নৰৰে তীক্তং পাপাক্ষকতঃ। মুৰ্থঃ পৰাপৰাবেধু ন চ পাল্লেবু বোৰকৰং ॥"

> > (क्यानविश्तान वट । ००)

পূক্ক (গুং) গুৰু এব স্বাৰ্থে কন্। ১ ব্যায়। (অনর) ২ সম্পট। "নির্দ্ধতিনাম পশ্চাব্যান্তথা বাজি পুরস্তম:।

বৈশসং নাম বিষয়ং পৃষ্ককেন সময়িতঃ হ'' (ভাগহ' ৪।২৫।৫৩) পুষ্কান্তা (ত্ৰী) পৃষ্কপ্ত ভাবং ভল্-ট্ৰপ্ । পুষ্কেয় ভাব বা ধৰ্ম-পৃষ্কত, শোভ ।

লুভ, গান্ধ্য, আৰাজ্ঞা, লোভ। নিবাদি৽ পর্যাক নক বেট্।
লট্ লুভাভ। নিট্ লুলোভা গুৰুভত্ব, নুলোভিথ। নুট্
লোকা, লোভিভা। নূট্ লোভিয়ভি। নুভ্ অনুভং। সন্
লুল্ভিয়ভ। কিট্—লোভয়ভি। মুভ্ আনুভড়। যুভ্
লোলোকি। পিচ্—লোভয়ভি। নুভ্ অনুভঙ্। নুভ
বিমোহন, আহুনীকরণ। তুলাদি৽ পর্যাক অক সেট্।
লট্ নুভভি। নিট্—নুলোভ। নুভ্—আলোভীং, আলোভিয়ং।

লুভিত (ত্রি) বুজ-জ। > বিমোহিত। ২ বিরক্ত। লুদ্দিকা (ত্রী) বাছবন্ধভেদ।

পুষিনী (জী) রাজকভাজের। ইনার নামে একটা বিহার নির্দিত ছিল। (ললিভবিত্তর)

লুরিন্থান, পারতের অন্তর্গত একটা প্রেৰেণ। কার রাজ্য নীমা হইতে পশ্চিমে কর্মাণ্শা পর্যন্ত বিষ্ঠ । অকা° ৬১° হইতে ৩৪°৫ ডি:। ইহার মধ্য দিরা বিজকুল নামক ননী প্রবাহিত। ঐ ননীর বিক্পিছিত বধ্ ডিরারীর পার্কাত্য ক্ষেত্র পুরি-বৃজ্জুক নামে খ্যাত।

এই বিত্তীর্ণ ভূখণ্ডে পুর নামক একটা পার্কাত্য জাতির বাস আছে। তাহাদের মধ্যে কোবিলু লেক ও খুর্দ নামে করটা লাখা আছে। কিছ শীতকালে ডাহারা পর্কাতকক পরিত্যাগ করিরা দির কুল অথবা আসিরীর সমতল প্রাক্তরে অবতীর্ণ হয় এবং তথাকার ভূকিছানের শীমান্তহিত ভ্রমণকারী আরব ও ভূকিজাতির সহিত তাহারা এরপভাবে মিলিরা থাকে যে, দেখিলেই তাহারিগকে আরবীর অথবা ভূকিজাতীর বলিরা মনে হয়, কিছ বাডবিকই তাহারা আরব বা ভূকিজাতীর বহে। তাহারা মহম্মদ এবং তাহার আরবিক কোরাল শারকে মান্ত করে লা। তাহারা এক মাত্র বাবা বৃক্ল ও অপর সাত্রটি পবিত্রাক্ষার উপাসনা করিরা থাকে। তাহাকের জনেকজালি জিরাকলালে মহম্মদের প্রকারী সংখারের বিশ্বন পাওরা বার। ভাছাবের মধ্যে প্রকাতির উপাস মিণ্ড ও অধ্যাহিতা কেবতার উপাসলা রূই হয়। এ পূর্বার অন্ত তাহারা রাজিকানে সম্বত্তর উপাসলা রূই হয়। এ পূর্বার অন্ত তাহারা রাজিকানে সম্বত্তর উপাসলা রূই হয়।

बूबि सुरू वा जेवा विकारण त्या त्या त्याच निगानिस्त,

নিলক্ল, আমলহ ও বালধেরিবে (বালজীব) নামক চারিটি লাখার বাস আছে। উহালের মধ্যে প্রথমোক ছইটি লেক লাখা সমূহত এবং লেখেক ছইটা লুর বলিয়া থাকে। শিলা-শিলে ও বিল্ফুল্নিগের মধ্যে প্রোর ৩০ হাজার বরের বাস বেখা বার। শিলানিলেগণ অভিশব পরাক্রমণালী ও মুছবিভার স্থমিপুণ। সহজে ভাহাদিগকে বল করা বার না।

বর্তমান কাজর বংশের প্রতিষ্ঠাতা জালা করেব বাঁর জানেশে জামলাহগণ খনেশ পরিত্যাগ করিরা কার রাজ্যে উপনিবেশ স্থাপন করিরাছে। তদবধি তাহাদের সংখ্যা করেব কম হইরা পড়িরাছে। জালামহলদের বৃত্যুর পর তাহাদের জনেকে উপনিবেশ পরিত্যাগ করিরা জনেশে চলিরা বার। কিন্ত তাহারা জার পূর্ববং বীর্যাশালী নহে। ত্রমণকারী De Bode পার্সিপোদিন প্রান্তরহ ইন্তাথর পর্বতপানমূলে জামলাহ, শাখার একটি বিতাগের বান দেখিরাছিলেন। তিনি তাহাদিগকে বীভংগ ভৌতিক জাচারের উপানক বলিরা বর্ণনা করিরা গিরাছেন। তাহারা কোন রাজপত্তিক বস্তুত করিরা বে কার্যো তাহাদের ত্রতী করা বার, তাহারা জনারানে তাহা পালন করিরা থাকে।

লুর শাখাও অপর কাহারও অত্যাচার বা উৎপীড়ন সহ করিতে চাহে না। বদি কোন রালা তাহাদের উপর বলপ্রয়োগ করে, তাহা হইলে তাহারা তদণ্ডেই তাঁহার বিরুদ্ধে বৃদ্ধ করিতে অগ্রসর হর। বালগ্রীব শাখার মধ্যে প্রায় ৪ হালার ঘর লোকের বাস আছে। তাহারা বিশেব অত্যাচারী ও হুর্দ্ধব। পার্শ্ববর্তী অমপ্রবাসীদিগকে তাহারা নিরস্তর উৎপীড়িত করিরা থাকে।

পৃত্ত-ই-কোহ্ বা জাগ্রোস শৈলবাসী সুরজাতির একশাথা কাইলি নামে পরিচিত। তাহাদের মধ্যে খুর্দ, দিনারবেদ, স্বহোন, কলহর বদ্রাই, ও মকি নামে করটি বিভাগ আছে। খুজিনান প্রেদেও কেইলি জাতির বাস আছে। ঐতিহাসিক রলিনসনের মতে, এই জাতির মধ্যে ২২ হাজার বর লোক আছে; প্র-কোহ এবং পৃত্ত-ই-কোহ্বাসীরা বিখ্যাত দক্ষা। তাহাদের উপদ্রবে প্রমণকারী, খ্যবসারী অথবা তীর্থ্যাত্রিগল নিরাপদে গমনাসমন করিতে পার না। পবিকের নিকট একটি কপর্দক থাকিলেও তাহারা অকুটিওচিতে গ্রহণ করে, কখন কখন তাহাদিগকে শমন সদনে প্রেরণ করিরা তবে নিশ্চিত হয়। সমগ্র পুরিভানে প্রোর হাজার ব্যারাহী ও ২০ হাজার বস্ক্থারী সেনা আছে, এই সক্ষা পার্কতীর সৈত্র আবস্তক হইলে এক্ত হইরা আততারীকে আক্রমণ করিরা বাকে।

ক্টেলিগণ বধ্ডিয়ারীদিলের স্থার নরমক্তে ধরা কলুবিত ক্তিতে ও পাপণতে লিও চইতে চাহে না ৮ তাহারা কপেকা- কত সভ্য ও বরাসু। পেব্-কোহ ও পুত্-ই-কোহ পর্যাক্ষানী।
ব্যতীত বৃহত্তিপু ও থোরেববাদের বন্ধকরী ক্র্ আত্তর ব্যাক্ষানী
ও বেইবানেবেনের নামে হুইটি কাভির কাস আত্তর। ভাষা
কাক শাবা সমুহপর।

জুল, বিলোড়ন। জ্বানিং পরতৈর সমন সেট্। কট্লোজজি। সূত্রকলোলীং।

সূলাপ (গ্ৰং) গুলাজে ইতি স্ল বিদৰ্শনে ভিৰাদিকাৰ আৰু স্লাং আহোতীতি আপ-অণ্ ঃ মহিব।

শন্ধিবা বেটকারিঃ ছাৎ কাসরভ রক্ষণঃ ।
শীনকম রক্ষারো দুসাপো নববাধনঃ ।" (ভাবঞ্জু)
দুলাপ্রকল (প্ং) গুলাপপ্রিয়ঃ কলঃ, মধ্যপদলোপিকর্মা।
মহিবকল । (রাজনি)
দুলাপ্রকান্তা (রী) প্লাপভ কালা। মহিবী। (রাজনি)
দুলার (প্ং) মহিব।
দুলাত (এ) স্ল-ক। আলোলিত।

'প্রেক্ষোলিততরলিতো প্লিডানোলিতাবপি।' (ছুরিঞারোগ) ২ বিকীপ। (ভাগৰত) ২।৬৫।১৯) ৬ ব্যাস্থা।

শন স বিভাৰতে বেবী শোকাঞ্জনুলিভাননা ।"(সামা বাগ্যা>৯) ৪ মান ।

"প্রাতনিজ্ঞতি বধা বধাস্থলা স্লিডনি:সহৈরলৈ:।

লামাতরি ম্লিডমনাতথা তথা সাদরা স্থাঃ ॥"(আর্থাসপ্রশতী)

৫ উন্ন্লিড। (ভাগবড ৩। ১৯।২৪) ও মঞ্চিড।
(ভাগবড ৪।৯।১০) ৭ বিধবত।

"যেহস্বংপিতৃঃ কুপিতহাসবিজ্ ভিতজ-

বিন্দু (জাঁতেন সুনিভা: নতু তে নিরন্ত: ॥"(ভাগৰত ৭।৯.২৩)
সুবানা, মধ্যভারতবাদী কবিনীৰী লাভিবিশেব। ক্ষেত্রকর্ষণ এবং
শন্ত বপন, কর্তন ও বহন তাহাবের প্রধান কার্য। ভালাভা প্রদেশ হইতে তাহারা গক্ষিকারতের নানাত্বানে এবং শলাব-বিভাগের ইরাবতীতটে বাইরা বাল করিরাছে। ভালাভা লাভ ও নির্কিরোধ এবং শ্রপ্রেশী মধ্যে পরিগণিত।

সুশ (গ্ৰহ) ব্যৱস্থাই কৰিছেন, ১০।৩৫-৩৯ স্কুল-সংল্যক্ষা। সুশাক্ষপি (গ্ৰহ) আটান কৰিছেন। (পঞ্চৰিংশআক্ষণ ১৭।৪।৩) সুষ, তের। ত্যাদিং পরকৈং সক্ষণ সেট্। গট্লোবজি। পুড, আলোবীং। হিংসার্মে পুষ' এই বাড় সৌত্রধাড়।

পূষ্ভ (পুং) রোষতীতি ক্রম হিসোদাং (ক্রমেরিক্র্চ: উন্ ২ : ১২৪) ইতি অভচ্, সুবাবেশন ধাডোঃ। মন্তর্জী।

সুসাইপৰ্বতমালা, ভাৰতের উল্লেখ্নগীমান্তরিক একটা পাৰ্কত্য এবেশ। আসাম প্রবেশের কাছাড় কোনার ক্রিক ক্ষতে চট্টথাম কেবার পূর্ক দীলা পর্কত বিক্ত চাঞ্চী পার্কত্য বিভাগের পূর্কদিকে একরাজ্যের অন্তর্গত একটা অবিষ্কৃত পর্কত-মর ভূপও। উহার মধ্যক্ষে কোন্ কোন্ জাতির বাস আছে, ভাহা আজিও জানা বার নাই। কোন প্রমণকারী সেই বনমালাপূর্ণ ও বল্ল জন্তসমূল পার্কাভাপথে অগ্রসর হইরা হর্কর্ম পার্কাভীরগণের সহিত মিশিতে সাহসী হন নাই।

এই লুগাই পর্কতে নানা বস্তু জাতির বাস আছে। তয়৻ধ্য বলবীর্ঘাসম্পদ্ধ কুকী ও পুসাই জাতি সমধিক সাহসী। তাহারা ইংরাজরাজের বিরুদ্ধে অন্ত ধারণ করিতে ভীত হর না। কুকী-দিগের বছবিক্রম ও তীরের অব্যর্থ সন্ধান ইংরাজনৈত্য আসাম ক্ষাস্থাক উপশন্ধি করিরাছিল। ১৮৭১-৭২ খুঠাকে পুসাই অভিবানে ইংরাজ সেনাদগকে বেরূপ বিত্রত হইতে হইরাছিল, তাহা ইতিহাসপাঠকবর্গের অবিদিত নাই।

এই পর্বতবাসী আদিম লাতি প্রধানতঃ লুসাই নামে পরি-চিত। পর্বতের অংশবিশেষে বাসহেতু তাহারা ভিন্ন ভিন্ন জাতীয় অভিধা প্রাপ্ত হইয়াছে। ঐ নামগুলি প্রধান স্পারদিণের নাম হইতে গৃহীত হইরাছে। সুসাই পর্বতের সর্কোত্তরভাগে অর্থাৎ মণিপুর ও নাগালৈলের কোইরেরিং জাতির বাস। তাহার দক্ষিণাংশে কুপুই জাতি, ইহারা মণিপুররাজের প্রজা বলিয়া পরিগণিত ছিল। ইংরাজ-রাজ মণিপুর হস্তগত করিবার পর ইহারা ইংরাজগবমে ন্টের व्यक्षीन रुरेग्नाहर। काहारज़त मिक्किन्य পर्वाउजारा श्राकुछ শুসাইদিগের বাস। ঐ শুসাইগণ তিনটা প্রধান প্রধান সর্দারের অধীন ও তিন্টী স্বতন্ত্র নামে পরিচিত। চটুগ্রাম সীমান্তে এই ৰুসাইজাতির যতগুলি শাখার বাস আছে, তাহাদের मर्था रहोरनाम, माहेन ७ धन्नरनावागगहे अधान। हेहात्रा मकरमहे जमनीम, कथनहे अक शास वात्र करत सा। मक्स-পক্ষীয়ের আক্রমণ নিবন্ধন, অথবা ভূমির উর্ব্বরতাদি সম্বন্ধে অস্থবিধা 'বোধ করিলে তাহারা বাসভূমি পরিত্যাগ করিয়া चष्क्रत्म অন্ত স্থানে বাইয়া বাস করে। সুসাই সীমান্তে জনরব এইরূপ যে, ব্রহ্মরাজ্যের পূর্ব্বকথিত পার্ব্বত্য প্রদেশবাসী সোক্তি স্বাতির আক্রমণে ও উপদ্রবে প্রাপীড়িত হইরা সুসাইগণ পর্ব্ধতের পূর্ব্বাংশ পরিত্যাগ করিয়া দক্ষিণাভিমূথে ইংরাজা-ধিকারে সীমান্ত প্রদেশে আসিয়া পড়িয়াছে।

আসাম-দীমান্তবাদী অক্সান্ত পার্কতা জাতির সহিত দুসাইদিগের অনেক বিষয়ে পার্কতা লক্ষিত হর। তাহাদের মধ্যে
এক এক জন সন্ধার থাকে। ঐ সন্ধারবংশ পুরুবান্তক্রমে
ভাহাদের রাজপদের অধিকারী। প্রত্যেক দুসাই-প্রানেই এক
এক জন 'লাল' থাকে। তাহারাই দলের নেডা হইরা বিপক্ষের
লহিত যুক্ক করে। লাল সন্ধারগণ সাধার্মণতঃ কোন রাজবংশ-

নমুক্ত, গুলা সাধারণ ইচ্ছাপূর্মক তাহাদের আবেশ মান্ত করির।
থাকে এবং তিনিই প্রানের হর্তাকর্তা বলিরা বিবেচিত। এই
সকল লাল সর্দার সীমান্ত হইতে লুঠন করিরা যত অধিক অর্থ
সংগ্রহ করিতে পারে, তাহার দলে তত অধিক অন্তরসংখ্যা
বিদ্ধিত হয়। সন্দারেরা অবস্থান্তসারে ক্রীতদাস রাখে, তাহারা
এই সকল লোককে যুদ্ধকালে বিপক্ষপক্ষ হইতে বন্দী করিয়া
আনে। ক্রীতদাস ব্যতীত গ্রামন্থ অপরাপর প্রজাবর্গও আপন
আপন পরিশ্রমলক্ষ অর্থের কতকাংশ সন্দারকে তাগ দিরা থাকে।

লুসাইগণ জ্ঞাল কাটিয়া ঝুম প্রাণার ধাস্তাদির চাস করিরা থাকে। যুদ্ধবিগ্রহ ও বস্তপশুশিকার তাহাদের অস্ততম উপজীবিকা। তাহারা গ্রাল নামক বস্তু গোরু, পার্ক্তীয় ছাগ, শৃকর ও অস্তাস্ত গৃহপালিত পশু পালন করে। ঐ গ্রাল ভাহারা দেবপুজার উৎসর্গ করিরা থাকে।

পুরুষেরাই গৃহস্থালীর যাবতীয় কর্ম্ম করে। তাহারা ধদির, গাঁন, হান্তদস্ক, বনজ তুলা ও মোম লইরা পর্ব্বতপ্রস্থিত ইংরাজাধিকত নগর বা বাজারে বিক্রম্ম করে এবং তৎপরিবর্ত্তে চাউল, লবণ, তামাক ও পিতলের বাসন, কার্পাস বস্ত্র এবং রোপ্য কিনিয়া লইরা যায়। তাহারা পুরী নামক এক প্রকার মোটা কাপড় প্রস্তুত্ত করিয়া আপনারা পরে এবং তাহা বাজারেও বিক্রম্ম করিতে আনে। স্ত্রীলোকেরা অলম্বার পরিতে ভাল বাসে। কর্ণালম্বারের পক্ষপাতী হইয়া রমণীরা কর্ণের নিমন্থ মাংসথওে হন্তিদস্ত বা গোলাকার কার্ন্তথ পুরিয়া রাখে। এই ছিল্ল সময় সময় এয়প বাড়িয়া পড়ে যে, তাহাতে তাহাদের মুথাক্রতি কদাকার দেথা যায়। পুরুষেরা দৃঢ়কায় ও মাংসল, ক্রিম্ভ তাহাদের মুথাক্রতি সর্ব্বদাই বিরক্তিকর ও উগ্রভাববাঞ্কক।

বহুকাল হইতে লুসাইজাতি ইংরাজাধিকার মধ্যে আসিরা দুস্থার্ত্তির পরাকাঠা প্রদর্শন করিয়া আসিতেছে। লুঠনকালে তাহারা অসংখ্য নরহত্যা করিয়া তাহাদের মৃত্ত কাটিয়া লইয়া যাইত। অন্তোষ্টিক্রিয়ার সময় নরম্তালনে প্রেতাআর সদ্গতি হইরে, এই ল্রান্ত বিশ্বাসের বলবর্তী হইয়া তাহারা এরূপ অমাস্থাবিক অত্যাচারে ব্রতী হইত। কাছাড়, প্রীহট, ব্রিপুরা, চট্টগ্রাম, পার্কত্য ব্রিপুরা ও মণিপুরের অধীনস্থ সামস্ত রাজ্যসমূহে তাহারা সমরে সমরে দলে দলে নামিয়া আসিয়া নররতে ধরা প্রাবিত করিয়াছিল। ১৭৭৭ খুট্টাকে ভারতের সর্ক্রেথম গবর্ণর জেনারল ওয়ারেগ হেটিংসের রাজ্যকালে কুকীদিগের এইরূপ প্রথম উপদ্রবের কথা ওনা বায়। তৎকালে চট্টগ্রামের একজন সন্ধার কুকীদিগের অত্যাচার হইতে স্বীর প্রজ্যারকণে অসমর্থ হইয়া ইংরাজগ্রতিনিধির নিকট এক্ষল সিপাহী সেনার সাহায় প্রার্থনা করিয়াছিলেন। ১৮৪৯ খুটাকে

কাছাড় সীমাতে আসিরা একখন সুনাই খাবীন আতিবর্গ

কর্তৃক আকাত হইরা ধরাক্ নবী অভিজ্ঞেনপূর্বাক উত্তর্বনিকে

বাইরা মান করিতে বাধ্য হর। ঐ সুনাইবন দাভভাব ধারণ

করিরা এখন ইংরাজরাজের প্রজা মধ্যে গণ্য হইরাছে। ঐ

সক্ষর নুসাইগণ অভাণি পুরাজন কুবী' নামে অভিহিত।

১৮৬০ স্থানৈ তাহারা পুনরার বিপুরা বেলার নামিরা
১৮৬ জন বালালী গ্রামবালীকে নিহত করে এবং প্রার
শতাধিক লোককে বলী করিরা লইরা বার
ইংরাজ গবরে কি
এই উপজ্রব-নমনার্থ সময় সময় সিপাহী সেনালল প্রেরণ করিতেন
বটে, কিছ পার্কত্যপথ হুরারোহ হওরার ও পক্রবল পর্কত
গহুরে নুকাইতে অভ্যন্ত বাকার সিপাহী সেনা ভাহালের
পশ্চাৎ অন্তগমন করিরাও বিশেব কোন কলসাধন করিতে
পারে নাই।

সীমান্ত প্রদেশে দুসাই জাতির উপদ্রবের শান্তিবিধান করিতে না পারিরা ভারত-গবমেন্ট বিশেষরূপ উৎক্ষিত হটরা পড়ি-লেন। ১৮৬৯ খুটাজে ভাছারের বিরুদ্ধে একটা অভিযান প্রেরিভ চইলেও কার্যাভ: কোন কল চইল নাঃ পার্বাভা প্রবেশ শক্রর অগম্য জানিরা এবং ইংরাজনৈত ভাহাদের পশ্চাদ্ধাবিত হইয়াও কিছু করিতে পারিতেছে না দেখিরা, লুসাই মল ক্রমণঃ পর্দ্ধিত হটরা উঠিল। ১৮৭১ বর্তাব্দের জাতবারী মানে ভাছারা বিভিন্ন দলে বিভক্ত হইরা কাছাড়, প্রীকৃট্ট ও জিপুরা জেলার এবং ডদানীক্তন স্বাধীন মণিপুর রাজ্যের নানা প্রাম আক্রমণ করিল। কাছাড়ে একদল হৌলোল আলেকলান্তা-পুরের চাৰাগান বুর্ছন করে। উভরণকের বিরোধে চা-কর है:बाब-अधाक निरुष्ठ रून धवर छारांत्र क्छा सित्र फेरेस्कडांत ৰক্ষিতাৰে অপত্তত হন। নণিয়ার খাল থানার প্রহরীদিগের স্থিত আর এক সুসাই দলের ছইদিন ধরিরা যুক্ত হয়। অবশেবে রণজরী হইয়া সুদাইগণ ধনরত্ব, বসুক, কামান ও বছসংখ্যক क्रमीरक विमन्नत्थ गरेवा ध्यक्तम करत् ।

এই সংবাহ পাইরা ভারত-প্রতিনিধি গর্ভ মেও বিশেষ
উদ্বেজিত হইরা পড়েন। তিনি সুসাই-উপলেব হইতে ইংরাজনীরাজ্ঞানেশ নিক্টক করিবার অভিয়োরে বৃহবালার আরোজন
করেন। ভবছুসারে প্রধান সেনাপতি গর্ভ নেপিয়ারের অধীনে
ক্রেন। ভবছুসারে প্রধান সেনাপতি গর্ভ নেপিয়ারের অধীনে
ক্রেন। ভবছুসারে প্রধান সেনাপতি গর্ভ নেপিয়ারের অধীনে
ক্রেন। ভবছুসারে প্রথম ব্যাতিক সিল্লার অইবল
বাল প্রতিরার কার্ছাভূপথে প্রথম ক্রেনারল বাটিসলো চট্টপ্রাম
পথে উক্ত বাহিনী ইইভাগে কইরা অপ্রকর হইতেল। কাছাভনেলারল উক্ত বর্ষের নবেশ্বর মানে শিক্টর ইইতে অপ্রসর হইরা

ভিগাই-দুৰ্থ নামক হানে স্নাই গৰ্বতে প্ৰবেশ কৰিল। ভাকাৰা

১১০ নাইল পৰ্যান্ত বনভাগে অপ্ৰসন্ত হইবা পুনাই লাভিকে পুনঃ
পুনা মুক্ত বিপৰ্যান্ত করিবা কেলে। চইপ্রাবেশ বাহিনীও ঐদ্ধশে

৮৩ নাইল অপ্ৰসন্ত হইবা পুনাই সৰ্ভাৱবিপ্তকে ব্যান আনামন
করিবাছিল। পুনাই স্ভাৱবাণ ইংরাজের আক্রপন্তা বীকার
করিবে, সেনাবিভাগের অরিপনান্তিগণ প্রায় ৩০০০ বর্গনাইল
হান ক্রিকোপমিতি প্রথার অবধারিত করিবা লইবাহিলেন,

এই সমন্ত হইতে চট্টপ্রাম ও কাছাড়ের সংবোগ পথ পরিকৃত্ত
হব। চাকর-কভা মেরি উইকেটার ও প্রায় ভভাবিত্ত ইংরাজপ্রবাবিভালনা হইতে মুক্তি প্রাপ্ত হব। এই মুক্ত ইংরাজপ্রবাবিভালনা হইতে মুক্তি প্রাপ্ত ভবহান কালে বহুসংখ্যক
সৈল্ড বিস্তিভারোগে আক্রান্ত হবা প্রাণভ্যাগ করে।

এই বৃদ্ধের পর হইতে সুনাই জাতি শাস্তভাব ধারণ করিরাছে। তদবিবি ভাষারা সমতল ক্ষেত্রবাদী জনগণের সহিত
নির্মিরোধে বাণিজ্য চালাইরা আনিতেছে। এই বাণিজ্যবিভার বাণবেশে তিশাই-মুখ, লুনাইহাট ও কালুরাচারা
নামক্রানে তিনটা প্রেসিক্ষ হাট স্থাণিত হইরাছে। ঐ
ভিনটা নগরই পর্যভগাত্রবাহী এক একটা নরীতটে জবছিত।
ঐরপে চট্টগানদীনাজেও দেমাগিরি, ক্সলক ও রাজানাটা নামক
স্থানে বাজার বোলা হইরাছে। লুনাই সন্ধারগণের সহিত
এক্ষণে সন্থাবের সহিত বাণিজ্যভার্য পরিচালিত হইতেছে।

১৮৮৩ বটালে চটগানের পার্বতা সীমাত্তে লুসাইলল ব্লালামাটা নদীতে নিপাহীবিগের চুইখানি নৌকা আক্রমণ করে। একজন নিপাহী আহত ও একজন নিহত হয়। তাহার। নৌকান্বিত অর্থ ও ব্যাদি পইরা পলারন করে। লুনাইজাতি ভাষাদের চিরলক্র হোলোদ লাভির উপর ইংরাজরাজের বিবেনটি আকর্বণাডিপ্রারে নেনুজাতিকে এই জড়াচার করিতে উল্লেজিড করিরাছিল বলিরাই অনেকের ধারণা। ইংগ্রাজরাজ গোপনে এই সংবাদ জানিতে পারিরাও তাহাতে বিশ্বাস স্থাপন করিতে পারেন নাই। এই বিরোগী জাতি হইতে অব্যাহতি গাতের আশার তাঁহারা কেবল সীমান্তভিত পানার বলর্ডি করিরা এবং ইংয়াল-পঞ্জীর গ্রামবাসীদিগতে বন্ধুক ও বাক্ত দান করিয়া আত্মকার উপার নির্ফেশ করিরা বিরাছিকেন। ১৮৮৪ বুটাব্দে আন্তরারী মানে চটনাম পাৰ্কতা ক্ৰমেশের ডেপ্টা ক্ষিণনার স্বাদায়টিতে একটা হরবার ও মেলার অন্তর্ভান করেন। ভারতে প্রার সকল লুলাই স্থান্তই স্মাগত হইবাছিলেন, কেবল চুইজন মাত্র প্রধান হেউলোজ সর্দার উপস্থিত হর নাই। উক্তনতে জাসাম ও চইপ্রায়-দীনাত্তে দুলাইখিলের পুলরাক্রমণের ভবার উঠে, কিছ ভাহার আর উপত্রৰ ক্ষিতে সাহসী বহু সৃষ্টি। ক্রিকিবর বেব ।) नूर, गोर्फा, नारकको। खुनि । शहरेत्रकः समिरे,। नहे नारकि। नृहं, जनुसर।

मु, क्यान कार्ति - केवन न्यन लालिके सके स्वाधि, स्वीरक।
निक् ग्रीतार, स्वेकन नाक सन्योक सक्षेकः। निक्-ग्राय,
ग्रीता । मृष्ठे निविद्यक्तिः स्व स्वाधिः स्वाधिः स्वाधिः स्वाधिः स्व स्वाधिः रक्षः।
सर्वनारक नाक ग्रीताकः स्व मुक् स्वाधानि । तम् ग्रीतिः रक्षः।
सक् स्वाधानि । सक् मुक् स्वाधानि । निक् मानविक । मृद्
सम्बोक्यकः । सिक्-मुक् स्वाधानिविकः।

পুকা () কল, গভ বন । রক।

বুজা (নি) পুনাতীতি গু-বাহগকাৎ তন্, গুণাভাবত । ১বীটবিবেহ, চলিক নাকড্না। পর্যায়—তত্তবার, উর্ণনাত, মর্কটক,

মর্কট, বুতিকা, উর্ণনাত, শনক, গুরুষার।

"নৃভাতস্থনিকম্বনার: শৃস্থানর: পতৎপত্যা:।
পথিকে ডানিরঞ্চলিনিভিমুখে রোমিতীব সখি।"
(আর্য্যারপ্রমতী ৫০৪)

থ রোগনিশের, ইহার পর্যার—মর্ম্মরণ, বুরু। (রাজনি॰)
ল্ডার বংশন অভ বিবে এই রোগের উৎপত্তি হর বলিরা
ইহা ল্ডারোগ নামে কথিত। এই রোগ বর্থনা প্রসাদে বৈপ্রভাত্তে
ল্ডার (রাকড্সা) উৎপত্তি, দংখন এবং ঔবধাদির
বিবর নির্দিষ্ট হইরাছে। একদা রাজা বিধামিত্র বশিষ্ট
সুনির আশ্রমে গমন করেন, তথার বশিষ্টের সহিত
কথোপকথন সমরে বশিষ্ঠ বিধামিত্রের প্রতি অতিশর কুপিত
হয়। তথন বশিষ্ঠবেবের কপোলদেশ হইতে তীক্ত তেলোবিশিষ্ট
বর্মবিদ্দু সকল পতিত হইতে লাগিল। গাতীর নিমিত্ত বে
হিন্ন ভূপরাশি ছিল, সেই ভূপরাশিতে বর্মবিন্দু পতিত হইরা
কিবিধ প্রকার মহাবিববিশিষ্ট জরম্বর স্তা উৎপন্ন হইল। মুনির
ক্রেরবিন্দু সকল ভূপরাশিতে পতিত হইরা এই কীট জারারাছিল, এই কয় ইহাবিগের নাম লুভা হইরাছে।

এই স্তার বিব অভিশর ভরানক। মলস্থি চিকিৎসক
ইয়ার গভি সহসা ব্বিতে পারে না। বিব আছে কি না
এরাণ সংশ্ব উপছিত হইলে, এইরপ ঔবধ সেবন করাইতে
হইবে বে, বাহাতে অভ কোন দোব না করে। বিবার্ড
রোগীর পজেই ঔবধ প্রপত্ত । বিষয়ীন শরীরে হ্লখনের ঔবধ
প্রবোগ করা অভ্যতিত। অভ্যত্তৰ বিব আছে কি না, আরে
নিশ্ব রূপে আনা আবভাক। ইয়া নিশ্ব না আবিরা
উবধ প্রবোগ করিলে রোগীয় শীক্ষনাবেদ্য সভাবনা।

বেরণ অভ্যাত উৎপতি বইলে জোন কালীর বৃদ, তাহা লানা বার না, নেইরণ পূজীবিদ নরীয়ে বিজীপ বইবা-যাত্র কোন্ লাভীয় পূজার বিব জাহা নির্মিত করা নায়, না।

A Bear

প্ৰথম দিনে শৰীরে কপুষ্ঠ প্রসারণদীৰ, মঞ্চলাকার 🕫 জন্মত্ত वर्गविभिष्ठे अहे. सक्ना सक्का हक्ष- क्रिकेशः विदल दगहेः नकक মওলাকারের মধ্যমূল নির ও চতুর্দিকের অন্তর্জাগ কুলিরা ক্রিটে এবং বে রূপ বর্ণ হয়, ভাহা স্পট্ট জানা নাম ৷ তৃতীয় দিনে কোন্ জাতীৰ পূতার বিব তাহা জানা নার 👃 চতুর্থ দ্রিনে বিবের व्याकां न इत्र । शक्तमाचन क्रेट्ट विद्वत ध्याकां मञ्ज विकास नकन् अभिरक्त थारक। यक्षेत्रिस्न विव नश्चादिक व्हेदा नकन মর্ম্মান আয়ুত করে। সপ্তমধিনে বিদ অভ্যন্ত রুদ্ধি ও সর্মান শরীরে ব্যাপ্ত হইরা প্রাণ নাশ করে। এইরূপ স্থরাতের মধ্যে প্রোণনাশ হওরা কেবল নৃতার তীক্ষ বিবেই ঘটিরা থাকে। বে সকল লুভার বিব মধ্যমবীধ্বিশিষ্ট, ভাষাদিগের জংশনে সপ্তরাত্ত্রে অধিককালে প্রাণনাশ হয় ৷ যাহাদিগের মল্বিয় ভাহাদের দংশনে একপক কাল মধ্যে মৃত্যু হয়। এই সকল कांत्रत्न पर्यन व्यवता मंत्रीद्व विव मः मध इस्ता व्यविध यक्षभूक्तक বিবনাশক ঔষধ প্ররোগ করা আবশুক। লালা, নখ, মৃত্র, ৰংট্ৰা, র**জঃ**, প্রীষ ও **ভা**ক্র এই সপ্রথপ্রকারে লৃতার বিষ নিঃস্ত হয়। এই বিষ তিন প্রকার বীর্যাবিশিষ্ট, উগ্র, मधा ७ मना।

ল্তার লালা বারা এই সকল লক্ষণ হয়, ইহাতে কণ্ড এবং এই মান কঠিন, অন বেদনাবিশিষ্ট ও অরম্প ছর। নথের দংশনে মূলিয়া উঠে, কণ্ড ও পূলালিকা (ক্ষুদ্র লাড়) জন্মে এবং এই স্থান হইতে অমিশিখার ভার উঠোপ উঠিতে থাকে। মূল্র কর্তৃক ঘট মানের মধ্যত্বল ক্ষুবর্ণ হর এবং অন্তর্জাগ রক্তবর্ণ ও বিশীণ হইরা থাকে। দংট্রা বারা দংশনে দইত্থান কঠিন ও বিশ্বর্ণ হর এবং পরীরে মঞ্জল (চাকা চাকা লাগ) স্বব্ধে ও এ সকল মঞ্জল প্রসারেত হর না। ল্ভার রক্তঃ প্রীব্ ও অক্রের সংস্থেবে পক্ষ পিল্কুলের ভার শ্লেটিক স্বশ্রে।

সাধারণতঃ লৃতার বিব ছই প্রকার, কইসাধ্য ও অসাধা।
অসাধা লৃতাবিবে কোনরূপ চিকিৎসা করিবে না, ইহাদিগের
বংশনে চিকিৎসার কোনরূপ ফল হর না, এই জক্ত উহা অসাধা।
বিমঞ্জনা খেতা, কপিলা, পীতিকা, অলিবিরা, মূর্বিরা, রক্ষা ও
কলনা এই আট প্রকার পুতাবিব কইসাধ্য। ইহাদের বংশনে
বজকের বাতনা, কওু ও বঠছানে বেদুলা হর এবং বাজনেরবক্ত অক্তান্ত রোগ করে।

সৌবৰ্ণিকা, সাজবৰ্ণা, জালিনী, এপীপন্ধী, ক্লকা, আমিৰণা, কাকাপ্তা ও মালাপুৰা এই পত্ন প্ৰকাৰ সুভাবিৰ অসাধ্য। ইবাহিংগৰ বংশনে বইছাল ক্ষত ও ভাষা হইতে ব্ৰক্তনিঃসভগ হব। বেং, বাহ, অভিসাৱ ও সমিশাত লগু অভান্ত বেলা কৰে, বিবিধ আকার বিনিট সীক্ষা ও বৃহদাকার দুওল সক্ষা হয় এবং রক্ষ বা ভাষবর্শের আহত ও কোনল শোদ সক্ষ অভিয়া ক্ষানং অসাহিত হয়।

ল ভাবিবের চিকিৎমা ৷

নিব্ৰতণা দংশন করিলে সেই দইকান হইতে কুক্বৰ লৈপিত নিংকত হয় এক ববিরতা, নেত্রকারের দাই ও বৃত্তির কল্যতা কলে, ইহাতে কর্কন্ন, হরিপ্রা, নাকুলী, পৃত্তিপশিকা এই সকল ক্রয়া নত, পান ও দইকানে মর্থন করিলে উপকার হয়।

খেতার বংশনে কণ্ডুক্ত খেতনীক্কা, ভজ্জা লাহ, কুছা, ও আর হর এবং সেই সকল পীড়কা প্রসারিত ও ক্লেশক্ত হর ও ভাহাতে অভিশন বরণা হইতে বাকে। ইহাতে চন্দন, রালা, প্রলাইচ, রেণ্কা, নল, আনোক, কুই, বেণান্ল ২ ভাগ, ও চক্র এই সকল প্রবা একর বাটিরা প্রবেশ বিবে আরোগ্য হর।

ক্পিলার দংশলে দইহান ভাত্রবর্ণ হর, অপ্রসারণনীল
প্রীড়কা জন্মে এবং মন্ডকের ভার, দাব, তিমিররোগ ও অম
এই সকল উপত্রব জন্ম। ইহাতে পদ্মকার্চ, কুঠ, এলাচি, কর্মান,
অর্জ্জ্নবৃক্ষের মৃত্, অপামার্গ, দ্র্মা, ব্রাক্ষী, ইপের মৃত্য ও খালপর্ণী
এই সকল দ্রব্য একত্র পরিমিত মাত্রার সেবন করিবে।

অলিবিবের দংশনে দ্বইয়ানে রক্তবর্ণের মণ্ডল হর ও এই মণ্ডলে সর্বপাকার পীড়কা জন্মে, এবং তালুশোৰ, ও লাহ এই ছুইটা উপত্রব হর। ইহাতে প্রিরন্থ, কুই, বেণামূল, আশোক, বালা, গুল্কা, পিরলী ও বটের অনুর, এই সকল দ্রব্য একত্র ক্ষিরা প্রব্যোগ করিবে।

মূত্ৰবিবের ছারা দটছান পচিরা ক্রমণা প্রানাতিত হর ও তাহা হইতে রক্ষবর্ণ শোণিত নিঃস্থত হটতে থাকে এবং কাস, খাস, বমি, মূহ্মা, অন্ন ও লাহ এই সকল উপদ্রব ঘটে। ইহাতে মনঃশিলা, এলাচি, বউমধু, কুঠ, চন্দম, পদাকাঠ, মধু ও বেশাস্থ একত্র সেবন করিবে।

রক্তন্তার বিষকর্তৃক গ্রীয়ানে গাহ ও ক্লেববৃক্ত পাপুকা শীক্ষা করে এবং ভাষার অক্তভাগ রক্তবৃক্ত হইরা রক্তবর্গ হর, ইহাতে বালা, চন্দদ, বেগামূল, পরকার এবং অর্ক্নবৃক্ষ, শেলুর, ও আরাভিক্সের বন্ধ একর করিয়া প্রারোগ করিবে।

কসমার বিবে দইছান হইতে শীতল ও পিছিল ফবিরসোব হর এক কান, বান ও উপত্তৰ কলে, পূর্কোক রক্তন্তার বিবের ভার এই বিবের চিকিৎসা করিবে।

কুমার বংশনে পুরীবের গ্রাবিশিট আর রক্ত নিংস্ত হয়।
ব্রুব, বৃদ্ধা, বাহ, বাহ, কাল ও বাল এই সকল উপত্রব
করে। ইহাতে এলাইট, চক্র, রাঘা ও চলান এই সকল ত্রবা
বহাক্সমি নামক করম স্ব্রেটারে সেকল করিব। কলাধা

ग्डावित्तव चरण त्वापेत जाना अक्रियाम अक्रिया विकित्त अविक्रम

অনিবর্ণার বংশবে অভিনর বাহ ও বনরকারির আব বর্ত্ত এবং জন, কওু, রোমাঞ্চ, বাহ ও পারীরে কোউকের উৎপত্তি এই সকল উপায়ন হয়। ইহাতে পূর্বোক কুকান বংশান বেরাল প্রতীকার কবিত হইরাছে, অবহুরুণ চিকিৎসা করিবে । ভাষা-লতা, বেগার্ল, বাইমধু, চলনা, উৎপান, পদ্মভাঠ ও রেয়াউকের মক্ এই সকল প্রয়োগ কর্তব্য। ক্রিনিয়ালীও সকল প্রকার সূতাবিবে বিশেষ উপাকারী।

অসাধ্য স্ভাবিষের বিবর এইরূপ বর্ণিত হইরাছে।
সৌবর্ণিকার সংশনে বইন্থান ছলিরা উঠে, ভাহা হইতে কেনাবৃক্ত
আমিবগৰবিশিষ্ট আমাধ নির্সূত হর, এবং অভিশর খাল, ভাগ,
অর, নৃত্যা ও ভূকা এই সকল উপত্রম উপত্রিভ হর। আলিনীর
সংশন অতিশর তয়ানক, বীবিষান্ ও বির্গি হর এবং অভ্যাস,
অতিশর তয়োগৃষ্টি ও তালুলোব এই সকল উপত্রম হর।

এণীপদের দংশনের আরতি রুক্ষতিবের ভার। ইহাতে
ভূষা, মূর্য্যা, জর, বনি ও কাস প্রাকৃতি উপায়ৰ করে। কাকাগুরি
দংশনে দইবান পাঞ্ ও রক্তবর্ণ হর, অভিশর বেদনা ক্ষমে,
চারিদিক্ বিশীর্ণ হইরা যার এবং নাহ, মূক্ষ্যা প্রস্তৃতি উপায়ৰ হয়।

অসাধ্য সূতাবিবের চিকিৎসা কালে লোব ও তাহার প্রকোপ বিবেচনা করিয়া চিকিৎসা করিবে, কিন্তু সকল অবস্থার ट्रिंगन कतिरव ना। य नक्न नृष्णत्र विष नांश, खांशांविरणत्र লংশনমাত্র বৃদ্ধিপতা লামক শজের ধারা বটকান ছেনন করিবা তুলিরা কেলিবে এবং জাববোর শলাকা জরিতে তথ্য করিরা সেই হান বয় করিবে। রোগী বভক্ষণ নিবেধ না করে, ভভক্ষণ বন্ধ করিছে থাকিবে, মর্মন্তাল লা হইলে লুভার বংশনে কর कूनिया छैठिरगरे महेश्न कर्यन कतिया कृतिया मध्या कर्यया । किन दानित यनि वह रह, जाहा हरेटन वहेहान वर्जन कतित्व না। কডিভহানে মধুও দৈশ্বৰ সহবোধে নিয়লিখিত জগদ रननम क्तिर्द। जन्म वर्षा—शिवकू, **रविक्रा, कूर्ड,** मश्रिष्ठा ७ बहिनधु अरे जकन जया अकब कविता बहेदारन अरमन विरक् हरेटन । अथवा क्रांबानका, बढिवनु, जाका, कीवनाटनानी, ইকুৰুল, ভূমিকুলাও, ও গোকুল এই কএকটা জব্য মধুনহবোগে পান করিব। পর্ক প্রভৃতি কীরবিশিষ্ট বুক্তের স্বক্তের শীক্তন কাথ বালা সেবস করাও কর্তব্য। উপত্রব সকল সোৰ অঞ্নানে विदय क्षेत्रपत्र वात्रा व्यक्तियाम क्या जावक्रका मञ्जूलक्षमः मछाबन, गान, रूप, अवनीएन, स्वमक्ष, वस्त अ विदन-क्रम और मक्सक त्यांव क्रम्माहत वावशात क्रमा क्रिकेश आर्ट्साकान ৰাম্বা মতানোকন কৰাৰ কিনে। (ক্ৰতকৰ প্ৰায়া) ।

• Profile I

পূতাতত্ত্ব (বী) পূতারাজকা। বুকার কর, সাক্ষ্যার বাদ। পূতাবর্কটক (বংগার বিষয়ের করন ২ পারবলেশীর ব্যিকাপুল, পূরী।

न्छाति (तः) क्यांक विदेश है क्यांकी क्रां (सर्वार') न्छिका (बी) क्रिका व्यक्ति क्यू आणि वय हरा। वर्षकः। (क्यां)

সূত্ৰ (কিট স্কাৰ্ড বৈভি স্কুক্ত (বাৰিজ্য: । পা ৮/২/৪৪) জিয়। জিলাই সৰীজ্যাই অদিশাভস্কাই বহতসূত্ৰ: শিলিয়াজ্যয়ত ।" (কুনায় ৩ / ৬১)

मूनक (ग्र) मून धन पार्च कन्। > त्कविक। २ शका (त्वविमी) मूनि (वी) मृश्विम् (क्वात्वविकातिकतिकेरवरकीकि वक्तवर। भाष्ट्रा ११ । ११ । हेवाक व्यक्तिकाका कक्त मा । > त्वव। २ वीरि।

तृती, तृत नवार्ष। (स्वानसम् ७) ७३ वस्त अहे ैन्स नारिवारकम्

नूब (जी) न्राप्क देखि न्-रावनकार वस् । नाम्मः (स्वतः) नूबिति (ग्रः) नृत्व नाम्युग विवयकः। वृत्तिकारिः। (द्यः) न्युवनिव्यतः

सूर, ३ परा २ एकः। हत्रापिः शब्देषा सकः स्मिष्टः। सहे स्वत्रकिः। सूर् व्यस्कारः।

नूरुइम्ड (११) (बीक्टलम् ।

ক্রে (দেশক) কুকুমকে তাকিয়া কোন একানি বেশাইরা নিবার সময় এই শব্দ ব্যবহৃত হয়। "ফু ফু সে" এই শব্দে লও বা এইশক্ষ পুমার।

লেই (দেশক) ভাগ ব্যাদিশের, ফুলট কাগক প্রভৃতি প্রস্তুত কৰিবার অফু ভেড়ুগের বীজের দেই প্রস্তুত করিবা ভাগতে ক্রাক্তিত হয়। বহুরা ভবিরা অগ্নির উদ্ভাগে নিম্ন করিলে বে ভারণ প্রার্থ উৎপদ্ধার্থই, ভাগতেও সেই করে।

লেইরা, শঞাৰ আনোনের দেরা ইন্মাইন থান্ জেলার জন্তর্গত একটা জন্ত্রীল । জন্তা ত-"তহ'তহ' ক্ইছে তঃ"হর টা এরং বার্ত্তি গত'রম' কুইডে ৭১"হর্তত-"পুঃ ব্যক্তা। সুপরিবাণ ২০২৮ বর্ষধাইন।

वरे वाम वानुकावक कैनव कृतिन्त । नित्त-शानाहिक आरम्पारन ब्यावर कृत्यान । वर्ष केळ कृतिर पानावन किन वाम कावका कृतिकारी नामाविक वर्षणी । वानुकावक क्या कृतिर कृत्यासम्बद्धी कार्रत करूत अस्तिक क्याविक क्षेत्राक । कार्यका नित्त कार्ति वा निक्कितकारको अस्तिक कृतिकारण वामिक महिमारन क्षाव कर करें, किन निक्कितकारकारिका क्षेत्राक क्ष त्रकम द्यान आदिक मा कविरण व्यक्ति सम्बद्धिक हुए मा। कोर्ट विकारन व्यक्ति दुवसान व्यक्तिमा व्यक्तित कालाव

২ উক্ত জেতার একটা করে এক উপারিকানের জ্যার করে।
পির্বাধের প্রোটন বাতের ছারছুকে অবঞ্জি এই করের করক
পশ্চিমে প্রবাহিত হইতেছে। অকান কর্পত্র করি প্রবাহর
বাবিং 1-*বর্দ হল পুর মধ্যে। বিভারিকার্যানিটা বাকার
কর্মমের প্রোটন সৌন্দর্যের বিশেব হানি হল বাহি, হল উভবোভর
জীর্ভি সাহিত হাইতেছে।

ক্ষীর ১৯শ শভাবে দেরাগালী বাঁর প্রাস্ক্র দীরবাণীবংশীর বন্ধানতীর নর্দার কমান বাঁ সভবজ্ঞ এই নগরের
প্রতিষ্ঠা করেন। উাহার বংশবরুপণ প্রান্ত বিশ্বভাক্ষণান এই
নগরের চতুশার্থবর্তী হানে শাসন বিশ্বার করিয়াছিলেন। এই
হানই তথন উাহারের রাজধানীরূপে পরিগণিত ছিল। প্রয়ে সিদ্ধ্ প্রান্ত তথন উাহারের রাজধানীরূপে পরিগণিত ছিল। প্রয়ে সিদ্ধ্ প্রান্তেশের কন্ত্রেরাবংশীর রাজপার কর্তৃত্ব উাহারা আবিকার্জ্যত হন। ১৭১২ খুটালে নহস্বদ বাঁ সংলাজৈ নানগেরার রাজপাট পরিবর্তন করেন। নিধ-শাসনাধিকারে এই নগরে চতুশার্থবর্তী ভূতাগের শাসনক্ষ্যে প্রতিষ্ঠিত হইরাছিন। ১৮৪৯ খুটালে ইংরাজরাক এই নগর অবিভার করিরা এখানে লেইরা জেলার বিচারসম্বর হাগন করিরাছিলেন। ভ্রমক্রর ১৮৬১ খুটালে সেই জেলা ভালিরা ভর্কর নহ লেইরা ভ্রমীর বেরাইস্নাইন বাঁর অভত্ ক হইরাছে। জাক্গানভালের সহিত এই প্রার্থেণ্ড বাবজীর বাণিত্য এই নগর হইতেই পরিচালিত হইরা থাকে।

লেওড়া (হিনী) নির।

(ताक) नकत्क, देशक।

लारके। (जनक) २ सबस्य । २ हेन्द्र तकर, जारके हेन्द्र। लारके|जवानकी (-जनक) - तिगस्य सहाजि-जवानक।

নেক (গং) সাধিবাতের কিলেন জন্ম প্রচন

লেকড়া (সেনা) বজা ইনার সেক্ষিক (সং) মৌনমে।

লোক বৃত্ত, জালাৰ আহমের ব্যৱধিনাআছে ও সংগাহ শীবাৰটিক একটা গুজান । জী হাতন প্ৰকৃতি হাট লাহে। কৰাহ পৰ্যক্ষাণী দল ক্ষেত্ৰক কাছি প্ৰকৃত্যক কথাৰি বিজয় কাহিক সাবে।

(PIN (PT) PRODUCT STREET, 15-201 1-5-201 (PT)

THE PRODUCT STREET, 15-201 1-5-201 (PT)

COMPA (R) PRODUCT STREET, 15-201 1-5-201 (PT)

PRODUCT STREET, 15-201 1-5-201 1-5-201 1-5-201

PRODUCT STREET, 15-201 1-5-201

PRODUCT STREET, 15-201 1-5-201

PRODUCT STREET, 15-201

ं देशांत्र शक्तन-

"নৰ্মনেৰাক্ষরাভিজঃ সর্মণাজবিশালয়। বৈশক্ষা কৰিছো রাজঃ সর্মাধিকরবেৰু হৈ ॥ শীৰ্বোপেতান্ অসম্পূর্ণান্ সমলেদিগভান্ সমান্। অক্ষয়ন্ বৈ নিধেৎ বন্ধ কোকাঃ সাৰয়ঃ স্বভঃ ॥ উপায়বাক্যকুশনঃ সর্মণাজবিলাগ্রহঃ। বহুবর্ষবক্তা চারেন লেককঃ ভাক্তস্থ্য ॥ বাক্যাভি প্রায়ভন্ধলো দেশকাকবিভাগবিদ্। অনাহার্যো নূপে তক্তো দেশকা ভাক্তস্থ্য ॥ ॥

(අදකරු[®] ১৮৯ 약)

বিনি সকল বেশের অক্ষয়ভিক্ষ এবং সর্কশান্তার্থকর্নী, ভিনি
রাজার সকল অধিকরণছলে লেখক হইবেন। বিনি অক্ষয় সকল
সমানভাবে সমানশ্রেণিতে উত্তররূপে লিখিতে পারেন, অর্থাৎ
সে সকল অক্ষর লিখিবেন, ভাছা সমান হইবে, পঙ্জি ঠিক
থাকিবে, এবং অক্ষয় সকল কেখিতে ক্ষমায় হইবে, ভিনিই
লেখকশ্রেষ্ঠ।

চাপকাসংগ্ৰহে দেখকের লক্ষণ এইরপ বর্ণিত হইরাছে।
"সক্ত্রকণ্ইীতার্থো লযুহতো জিতাকর:।
সর্ব্ধানারসমালোকী প্রকৃটো নাম দেখক:॥" (চাপকাসংগ্রহ)
বিনি একবার বলিলেই তাহার কর্ম গ্রহণ করিতে পারেন
এবং তাহা তনিয়াই বিশুক্তাবে ফ্রন্ড ও ফুলাই রূপে লিখিতে
স্কর্ম এবং সর্ব্ধান্তগার্কনী, তিনিই উত্তম লেখক।

"अवीरण महणाखिरका **बाक्रमीकिविनाबदः** ।

রাজনেখকের লক্ষণ----

নানালিণিজো দেবাৰী নানাভাৰান্যৰিতঃ ।

য়য়ণাচত্রো বীমান্ নীতিশাল্লার্থকোৰিবঃ ।

স্থিবিগ্রহতেদকো রাজকার্টো বিচক্দঃ ॥

সলা রাজহিতাবেবী রাজসারিবিসংছিতঃ ।

কার্যাকার্যাবিচারকা সভ্যবাদী জিতেলিবঃ ॥

য়য়পবাদী ওডালা বর্গকো রাজবেশবং ।

কুণাছবর্জী সভতং সুপরিবাসরক্ষরঃ ।

সুপাছবর্জী সভতং বুলিবাসরক্ষরঃ ।

বিহরে অভিল, নেধাবী, নালা ভাবার পভিত, সভিবিগ্রহ ও জেলাবিতে

সুপাল, রাজভারের বিচক্ষর, সর্বাধা রাজার বিভালনারী,

নালার সমীপে অব্যক্তি, বর্জনারী, বিভালনারী,
পদ্মপদ্দবিভার বিধিত আছে বে, যেওকা কান্ত্রক কার্ড।

্র্তিলেশকানশি কার্যুন্ লেখ্যকজে বিচলপান ("

(পরাপরক্তিভা ৯৮ স্ক")

"কটাৰ আজাংক ধৰ্মজান বিপ্তান মুখাকরামিভায়। নেধকানশি কারহান নেধাকত হিতৈবিধঃ ॥" (বৃহৎপরাশর সং ২০॥ ৩০)

বৃহৎ পরাশনের এই বচলাছনাত্র বিধান ভারত্ই লোশক হইবে। এজনীভিতে লিখিত আছে বে---

"গণনাকুশলো বস্তু দেশভাবাঞ্জভেষ্বিং। অসমিয়ানগুঢ়ার্জ্য বিদিখেৎ ন চ দেখকঃ॥"

(अवनीकि १। ३१०)

যিনি গণমাকুশন, বেশভাষার আভেষারিভে অভিজ্ঞ এবং নিঃসন্দেহ ও সরগভাবে নিখিতে পারেন, ভিনি লেখক হইবেম। ভিন্ননীতির মতেও কারছ লেখক হইবেম।

> "আমণো ভাজণো গোজাঃ কাছছো গোণকভাগ।। গুৰুগ্ৰাহী ডু বৈজ্ঞো হি অভিহান্ত পাদজঃ ॥"

(क्यामीकि २। ३१०)

ব্যামণতি ব্রাহ্মণ, কারহ লেখক, ওক্তরাহী রৈপ্ত এবং পুত্র প্রতিহার হঠবে।

মহাভারতের লেখক গণেশ। ব্যাস মহাভারত রচনা করিবা গণেশকে ইহা লিখিতে বলেন, গণেশ ইহা ওনিরা বলিরাভিলেন বে, যদি আমার লেখনী কণবালও নিবৃত্ত না হয়, ভাষা হইলে আমি ইহা লিখিতে পারি। ভাষাতে ব্যাস বলিরাভিলেন, ভাষাই হইবে, বিত্ত ভূমি না বুবিরা লিখিতে পারিবে না।

> শ্ৰেইছতৎ আহ বিছেশো যদি মে দেবনীক্ষণন্। দিখতো নাৰভিঠেত ভয়া ভাং দেখলো হৃত্যু ॥ ব্যালোহপুগোচ তং দেবনবুছা নাগিথ ভচিই। ভাৰিত্যুক্তা গণেশোহণি বৃত্যুক্ত কিল দেখকঃ ॥"

লেখন (দী) লিগ-লাই। ১ ছর্মন ঃ ২ ছর্মনত্ব। ৩ সকর-বিভাগ, দলিভ কোবা, সকর নাজান ঃ ভারে লিখিভ স্নাছে হে, স্থানতে নিবিডে নাই।

"म कृत्यो विनित्यं वर्तः गक्षः न गूककः नित्यः।"(विनिनीकाकाकः) १ जनसाममः। (कावा") (क्षः) ७ वापः। (बाह्मिन")

লেখনগড়ন (সেগা) গেবা ও গড়া। লেখনি (খ্রী) ক্রম । [সেখনি কেব ।] লেখনিক (গুং) লেখন নিমাত বি । ২ সেখনের ।

श्वानकः । १८) जनस्य जनसङ्ग्रहः स्त्रीः ३ जनस्यानः ४ नवस्य सारा जनस्य । ० तस्य नारा जनस्य । (अर्जनी) লেখনিকা (বী) বীচিনকর।
লেখনী (বী) নিগতেহনরা নিথ-কুট্-তীপ্। নেধন-নারন
বয়, চনিত কলন, পর্যায় বর্গনুবিকা, বর্গনুনী, কলন, অকর-ভূলিকা, করাত্রর, চিম্মক । (প্রবন্ধা:)

লেখনীর বজাততের বিজ্ঞ আইরণ লিখিত আছে, বাঁশের কলম প্রেয়ত করিরা আইরেছ লিখিনে অগুত ভারনির্নিত কলনে লিখিনে বর্তমান কলনে বভিনুতি ও চিজ্রভারের কলনে লিখিনে বর্তমানি লাভ হর। কৈন্তা কলনে লাভী অসুলি পরিনাশ কলনে লিখিনে না, ভারতে আরু কর হয়।

শবংশহাচা লিখেবৰ্গং তত হানিতবৈদ্ধাৰণ্ ।
তামহাচা তু বিভবো তবের তংকরো তবেব ॥
মহালনীর্ভবিনিভাং ত্বৰণিত পালকা ।
মুহরণত হচা বৈ মভিমুদ্ধি প্রশাসতে এ
তথা অনিনিরেরে বি প্রশোক্ষমাগকঃ ।
বৈজ্যেন বিপুণা লন্ধীঃ কাংতেন নরণং তবেব ।
আইন্ত্রাল্পহানা বাবা লিখেব প্রতক্ষ ওতে ।
তর্মপ্রসংগ্রে তু স্বান্ত্র্গতি বৈ নিনে ॥"
(যোগিনীত্র ও পটন)

২ খটকা, চলিত খড়ি, খড়ি দিরা লেখা বার, এইজন্ম ইয়াকে লেখনী করে।

"ৰাটকী কঠিনা বাপি লেখনী চ নিগছতে।" (ভাৰপ্ৰ") সরস্তী পূৰার দিন লেখনীপূজা করিতে হর। লেখনীয় (ত্রি) নিধ-স্থনীয়র। ১ লেখ্য, লেখিত্য।

"খেহনো দেখনীরক রোপনীরক স বিধা।" (পুশ্রত ৬০১৮)
লেখপাত্র (ক্রী) ১ চিঠি। ২ বিবরসংক্রান্ত দেখাপড়ার কাগল।
লেখপাত্রিকা (বী) দিখিত আবস্তবীর কাগলপত্র।
ক্রেখপ্রেকিলি (বী) দেখনপ্রধাতের। (দিশিতবিজ্ঞর)
লেখর্মিক (গ্রং) নোধের দেবের ধ্যক্তা প্রেক্তা, দেখ-ক্যজ্ঞানিক বা। ইত্র। (শ্রমর)

(मधन्तिम् (वि) भवनारकः। (क्यानिवर्ताः ১०२।२७०) (मधनातः (११) (नवः स्तवि क्यः। भवनारकः।

"निगृहर म नृगक्त रमस्त्राक्त शमक्तर।"

(क्यांत्रविदना द। ५६)

टिम्बर्शतक (११) राज्यसम् अव बार्ज कन्। श्रवतास्य । टिम्बर्शतिन (वि.) राज्य स्वक्ति व गिति। श्रवतास्य । লেখা (ত্রী) নিখাতে ইতি লিখ বাহলকাৎ আগ্নীম বি কালিনি, পঙ্জি ৷ ২ রেখা ৷ সমনেটেরভাঃ ৷
লেখাখিকারিন্ (গ্রং) রাজকর্মনারিজের ৷ ইনি স্বায়নানার সম্পাদক (Socretary) ৷

লেখাভ (খং) গাণিয়ক ব্যক্তিকো। ক্ষ্ণকনে ভরণেধরগণ বুবার। (পা ৪।১।১২৩)

লেখান্দ্ৰ (খ্ৰী) নিবাধিগণে উক্ত আমীন ব্ৰন্ধীকো। (পা ৪১১। ১২০)

লেথাৰ্ছ (পুং) লেখে অৰ্ছ:। ১ গ্ৰীআনত্তক। (রাজনি°) (আ) ২ লেখনবোগ্য, লিখিবার উপযুক্ত।

লেখাবলম্ব (থং हो) পৰিতঃভ।

লেখিন্ (জি) > অন্ধন । ২ লিখন । জীরাং জীপ্। ৩ চামচ, হাতা। লেখিত (জি) নিখ্যতে বং লিখ পিছ্-জ । অপ্রের ্বারা লিখিত।

কোধ্য (বি) লিখ-পাৎ। > লেখিতব্য, লেখনীয়, লেখনযোগ।

২ ব্যবহারীক ক্রিরাপাদাক। মিডাক্তরা ও ব্যবহারতত্ব

শাসন ও ক্রানপদ। ইহার মধ্যে ক্রানপদ আবার ব্রিবিধ—

ক্রেক্ত ও অন্তর্ভুত, ব্যব্দুক্ত ক্রাক্তিক, আর প্রহত্তকৃত স্যাক্তিক।

"সাত্যতং লেখাং নিরূপাতে। তত্র লেখাং দিবিংং শাসনং জানপদক। জানপদমভিধীরতে। ততে দিবিংং সহত্তক্ত্যস্ত-হত্তক্তক্তে। তত্র সহত্তক্তমসান্দিকং অক্সক্তং সুসান্দিকং।" (বাবহারতের) ছধ্যাস সমরের পর ত্রান্তি হইতে পারে, এই অস্ত বিধাতা অক্ষরস্থাই করিয়াছেন, এই অক্ষর ছারা পত্রে লিখিরা রাখিলে, তাহাকে লেখা ফহে।

> "বাধাসিকেএপি সমরে শ্রাবিঃ কংকারতে কতঃ। ধার্যাক্ষরাধি স্বরীন প্রার্হাক্সকঃ পুরা । দেখ্যর বিবিধং প্রোক্তং সমুদ্রাক্ষকতকথা। ক্ষমাক্ষিকং সাক্ষিক্ষ সাক্ষিক্ষ বিশ্বতেকরে। ॥"

> > (ব্যবহারকার্য বৃহস্তি)

पांकरपानर्शिकात करें श्राह्म निवत करेंडन विधिष्ठ पांक्क निवत्र करेंडन विधिष्ठ पांक्क निवद्य करेंड कर्म कर्मिकार होते क्ष जनवानि विस्तान होते कर्मा कर्मिकार होते क्ष जनवानि विस्तान कर्मांड देशनीका मा बाहे, क्ष्मेंच्या करेंडन विश्वपाद कर्मिका कर्मांड देशनीका मा बाहे, क्ष्मेंच्या करेंडन विश्वपाद कर्मिका कर्मांड कर्मांच कर्मांड पांकरपांकर कर्मांड कर्म

আবাদিন ইত্যাদি) ও নিম পিতৃনানাধি বারা টিকিড বঙ্বা আবজন। অনতর ভাহাতে নাবছিত বিনর লিখিত হইবে।
অনমর্থ আনি অনুকের পূত্র, অনুক ইহার উপরে বারা লিখিত হইদ, ভাহা আনার সমত। এই কএকটা কথা বহুতে লিখিতে হইকে। এবং এই লেখাপত্রে নাকিগণ পিতার নান লিখিরা লিখিবে বে, আমি অনুক এই বিক্রের সাকী হইলাম। সাকিগণ সংখ্যার ও ৩০০ সমান হইবে। অনতর শেখক আমি অনুকের পূত্র অনুক ধণী ও ধনীর প্রার্থনাসুসারে ইহা লিখিলাম।

ৰাকী ভিন্নও সহতানিধিত দেখা প্ৰমাণ হইবে। কিছ ৰুলাংকার বা লোভপ্ৰদৰ্শন ও জোধাদি প্ৰকাশ বারা নিপাদিত প্ৰমাণ হইলে ঐ লেখা প্ৰমাণরূপে গৃহীত হইবে না। লেখা-লিখিত খণ ভিন পুক্ষবের দেয়। খণগৃহীতা বদি পরিশোধ ক্ষরিতে না পারেন, তাহা হইলে ভাহার পুত্র বা পৌত্র পরিশোব করিবে।

লেখ্য দেশান্তরত্ব, কলক্ষরণিখিত, নই, সুপ্তাক্তর, অপক্ত, আর্থিত, বিদলি, দ্বাং কিংবা ছিন্ন হইলে অক্স^{*}লেখ্যপত্র করিতে পাল্লিবে। নিজ নিক হস্তাক্ষর, রক্তি, তত্তৎসাক্ষিনির্দেশাদিক্রিয়া, অসাধারণ 'শ্রী' কারাদি চিক্ত, অব্দী প্রত্যাধীর চিরাগত বাবান ও বাণ গ্রহণরূপ সম্বন্ধ এবং এতৎ সংখ্যক অর্থপ্রাপ্ত্যুগার এই সক্তন হেতু সংদিশ্ধ লেখ্যপত্রের গুলি হইবে।

অধমর্গ সময়ে সময়ে যে ধন অর্পণ করিবে, তাহা ঐ লেখ্যের পৃঠে নিজ ক্রিকের প্রাথির মাথিবে অথবা উত্তমর্গ ঐ লেখ্যের পৃঠে নিজ ক্রিকের প্রাথির শীকার করিয়া রাখিবে। সমত ঝণ পরিশোধ ক্রিকেল ঐ লেখ্যপত্র ছিল করিয়া ক্রেকেনে, কিংবা গুড়ির নিমিত্ত ক্রিকেলার একথানি লেখ্যপত্র প্রস্তুত করিবে।

(বাজৰকাসংহিতা ২ **অ**°)

বিশ্বশাহিতার নিথিত আছে বে, নেখা ত্রিবির রাজসান্দিক,
লগান্দিক ও অনান্দিক। এই বেখানে বর্তমান দলিল বলা
থাইতে পারে। রাজার নিজারালরে রাজার নির্ভ কারছ
লিখিত এবং বিচারখনিক হক শারাদি চিক্তৃক বে শেখা
ভাহাকে রাজনান্দিক কহে। (এই রাজনান্দিক দলিল বর্তমান
কবল ক্রেজারী হলিলের লাইজন)। বে কোন হালে বে কোন
ব্যক্তির নিথিত লাখিলাবের কর্তনিখিত বেখা নান্দিক। পরহত্তনিখিত লেখা অনান্দিক। এই লেখা বলপূর্বক হত ইইলে
ভাষা অন্তমান হইলে এবং হলপূর্বক হত ইইলে
ভাষা অন্তমান হইলে কর্বমই আর্থাং বে বাজি হ্বার্থ করার মোরী
বিভান প্রিক্তিক, কুটনাকী প্রান্তিক, অথবা প্রবিত্ত এবং কর্বছেই,

क्रियान, नामक, नशानीन, मब, क्रेन्स, जीत, अवर काविक

য়জির কৃষ্ণ যে লেখা জারা ক্ষরাবার । রেশাচারের ক্ষরিকার, ক্ষরাধী ব্যতিকে চিকিত, অনুধান্ত বর্ণনালার্ক স্থাবাধান্ত ক্ষরোধানাত্ত্বিক প্রেমাণ । তৎক্ত বর্ণ চিক, ও প্রায়ন্ত, বৃক্তি এবং লেখাছিত নিধনপরিপাটীর ভার নিধনপরিপাটী এই স্কৃত বারা দেবির লেখা সঞ্জনার কারা ক্ষরেও লেখা নালান নহে, তাহা হইলে ভাহাবিরের ক্ষরাবির বারা লেখা সঞ্জনার হবে। বেখানে ক্ষরি ধনী, নাকী কিলো লেখক মুক্ত হয়, সেই কলে সেই লেখা ভাহাবিরের স্বহারিক বারা সঞ্জনার হবে। (বিক্লাংহিতা ৭ আ:)

লেখ্যপ্রত (ঝি) স্টানিজ (২ বিশিষ্ক) ত শকিত। লেখ্যচূর্নিকা (ঝী) লেখাজ কুর্নিকা। তুলিকা। (খলর্ছা) লেখ্যপত্রে (পুং) লেখাং লেখার্থং প্রক্রং স্কর্যার ও ভালবৃক্ষ। (ভাৰপ্রা) (জী) ২ লেখনীয় প্রা

(त्रथासम्म (ति) > चारमधान्छ । हितिष्ठ । (त्रथान्द्रास (में) (मधाक चांगर । दमरधान चांग, ≈ द्रथारम त्मधान्द्रास (में) (मधाक चांगर । त्मधान व्यक्ती । (त्महे, वर्गयकम चांकिरका ।

(ल ७ (जी) श्व, इनिष्ठ नाष्ट्र ।

"উৎসদৰ্শ্ব বৃহজেঞ্চং মূমক ভরষাণর।"(রন্ধবৈ^{*} জীক্ষকন^{*} ২২ আ) লেপ্ত (বেশন) প্তাহিনিন।

লেভ (গুং) সঞ্জবিদ্। [নোড মেখ ।] লেম্ব্রা (ন্ত্রী) নগরভেষ। (রাঞ্চর° ১৮৭)

লেপ, গভি, থমন। জ্বাদি আন্তনে সক সেই। নই লেপতে। দুই নেপিডা। নিই নিলেপে। নৃত্তলেপিট। লেপ (পং) নিপ-ৰঞ্। > লেপন।

"ভূমিবিভগতে কালাৎ গামনার্ক্সনগোক্রটায়।

লেপরাছক্রেখনাৎ নেকারেখনগোর্জনার্চনাৎ॥"(মার্কড়ের পূ"৩৫।১৫)

ং ভোজন। (মেনিনী) লিপ্যতেহরেনেভি। ০ প্রথা,
চলিভ কলিচ্ব। (বিশ্ব)

লেপক (গং) লিশতীতি লিপ-ৰুল্। > জাতিবিশেষ।
পৰ্যায় পলগঞ্জ, লেপী, লেণাকং। (হেন) (বি) ং লেপনাৰী।
লেপ্ ছা, হিমালয়-পৰ্যাতপূচ্চৰাসী আতিবিশেষ। সিকিন, পূৰ্জনেপাল, পল্চিমভোটান ও হাজিলিছ নামক পৰ্যাতালে এই
পাৰ্জতা আতির বান আহে। ইবা নাধায়ণতঃ লেপুছা আতির
বাসভূমি বলিয়া কীর্তিত। ঐ ছানেত হাছ ব্যায় ৬০ মাইছা। ইহারা
কোট জাতীয়, নেপানে নেবায় ৬ সপ্রালয় আজি এবং জোটানের দেকা আজির সন্ধিত ইবারা বিশেবকাকে মান্তিই। সুবাস্থাতি
ও অব্যব্যাহির গঠন পর্যাক্ষকে করিলে, ইহারিকার্জ সেই নোলশীর আতির শাসাসভূজ বলিয়াই বিশেচিক করে।

केर रम्भहा खाछित मरश स्त्राम ७ बांचा नारम स्रेडी बाक আছে। প্রথমোক্ত লেপছা সম্প্রদার আপনাদিগকে সিকিনের आपिम अधिवानी विश्वता चीकांत्र करता नावातरात विचान, ৰাষাগণ চীনসামাজ্যের অস্বৰ্গত ৰাম প্ৰাদেশ হইতে এখানে সাসিয়া বাস করিয়াছে। কিংবদন্তী এই-এগর আড়াই শতবংসর পূর্ব্বে অর্থাৎ সিঞ্চিত্র বৌদ্ধধর্মবিভারের পর বৌদ্ধলামাগণ দিকিমজনপ্ৰের একজন রাজা নির্বাচন করিবার জন্ম উক্ত ধাম আদেশে পৃত্ত প্রেরণ করেন। থাখারা রাজা নির্মাচিত করিরা প্রিক্টি ডিনি ও উছোর আত্মীরগণ এখানে আদিরা বাস ক্ষিরাছিলেন। ভাঁছাদেরই বংশধরগণ এখন পূর্বতন বাসহানের নামে এখানে পরিচিত রহিয়াছে, বাস্তবিক পক্ষে তাঁহাদের মধ্যে ভাতিগত ভোই পার্থকা নাই ৷ উতর থাকের পরস্পরের মধ্যে অবাধে আদান প্রেরান হইরা উভরে একণে একটা ভাতি বলিরা পণ্য হটরাছে। বর্তমান জাতিতত্ববিদ্বগণ বলেম বে, ছইটা নোলগীর উপনিবেশ **শার্ক্তা**রক্রমে সিকিমে আসিরা বসতি করার সম্ভবতঃ এই নামপার্থক বটিয়াছে।

ডাঃ কাৰেণ তিব্বতধাত্তা উদ্দেশে সিকিমে অবস্থানকালে এই আতির আকৃতি প্রকৃতি সম্বন্ধে বে বিবরণ প্রদান করিরাছেন, তাহা পাঠ করিলে এই আতির আচারনীতি সম্যক্ উপলচ্চি ছইতে পারে। লেপ্ছাগণ ধর্মাকৃতি, লাধারণ দৈর্ঘ্য ৪ ফিট্ ৮ ইঞ্চি, কদাচ ৫ ফিট্ ৬ ইঞ্চি লখা লোক দেখা হার। পুরুষের অস্থরণ রমণীগণও ধর্মান্ধার। লেপ্ছারা লৃঢ়কার, বলিচ এবং বিস্কৃতবক্ষ, লেহে মাংলের আধিক্য হেতু তাহালের গঠন স্থবলিত ও কমনীয় ছইরাছে। গাত্রবর্ণ হথের স্কার লালা, চকুর্বন্ন কর্ণারত, চলিত কথার বাহাকে পটোলচেরা বলে। শীতপ্রধান স্থানে বাসনিবন্ধন তাহাদের গওবর, এমন কি, সর্মান্ধীর গোলাপের জার গুজাত হইরা থাকে। মুখাকৃতি মোললীয় চঙ্গের চেপ্টা ও পোল এবং নাক ধালা না ছইলে তাহাদিগকে সর্ব্বাসমূল্যর বলা বাইত।

লেপ্ছা ত্রী ও পুরুষদিগের মধ্যে এই সৌন্দর্যাপ্রভা এতই বলবতী বে, সহত্তে তাহাদের মধ্যে পার্থকা নির্দেশ করা বার না। অবরবাধির ক্ষবশিত গঠন, মাথার মধ্যন্থানে দীঁতি, আলগালার ভার পরিক্রেদ, মরনকোণে বিমল হাভারেখা, বিমান চুল ও কমনীয় স্বভাব দেখিলে বাত্তকিই ব্বক্ষিগকেও ব্বতী বলিরা এন হর। প্রাপ্তবন্ধ পুরুষ ও রম্মীদিগের মধ্যেও প্রায় ক্ষমণ, বিশোবের মধ্যে এই বে, পুরুষের রাখার একটা বিনানী ও জীলোক্ষিগের মধ্যে ভইটা বা তিন্টা বিনানী থাকে।

ইহারা অভাবতঃ অপরিকার। গ্রীম ও শীতের সমর ইহারা কবনই গাল খেড়ি করে লা। এই সমরে ইহাদের গাত্রে প্রচুর মরলা জয়ে। তথন ইহারা কাছে আসিলে এব প্রকার ভেপ্যা গদ্ধ পাওয়া ধার। বর্ষান্ধানে বধন বারিপাত হইতে থাকে, তখন ইহারা কার্য্য উপলক্ষে বাটীর বাহিরে আসিলেই ঐ গাত্রমল ধৌত হইরা বার। এই সমরে ইহাদের পরীর হর্গদহীন হর এবং কমনীর কান্তির সহিত রূপ-প্রভা উথলিরা উঠে। ধর্মজীকতা ও লোকরঞ্জ্তা-খণে ইহ্নদের এই সৌন্ধায় আরও বৃদ্ধি পাইয়াছে।

পার্থবর্তী স্থানবাসী ভোটিরা, লিম্ব, মুর্ন্মি ও গুরুল প্রভৃতি লাতি অপেক্ষা লেণ্ডাদিগের জ্ঞানবৃদ্ধি অধিক। বিনরাদি সদ্পুণে ইহারা অপরের চিত্ত সহক্ষেই আরুষ্ট করিতে পারে। কথন ইহারা অলাতির সহিত বিবাদ করে না। অক্সাৎ কোন কারণে ক্রোধের উদ্রেক হইলে, ইহারা রাগিয়া উঠে বটে; কিছ সময়ান্তরে ইহাদিগকে সেই অ্লার ক্রোধের কারণ নির্দেশ করিয়া ব্রাইয়া দিলে, ইহারা পরিতাপ করে। ইহাদের সকলের নিকট ভোলালী নামক ছুরিকা থাকে বটে, কিছ ক্রোধের উল্লেক্ষ হইলে কথনও কাহারও বক্ষে বসার না। আহার, বিহার, বাক্যালাপ ও পানাদি বিবরে যোর সামাজিকতা দৃষ্ট হয়। ইহারা পর্বভলাত কলমূল ও শাকশব্দী থাইতে বরং ভালবাসে, তথাপি কাহারও অল্লার ব্যবহার সন্থ করিতে চাহে না। নার্জিলিকে ইহারা ইংরাজের আদালতে আসিয়া বিচার-প্রার্থী হয়।

উপরোক্ত শ্রেণীবিভাগ ব্যতীত ইহাদের মধ্যে বংশগত কর্মটা বিভাগ আছে, উহা পর নামে থ্যাত। তাহার মধ্যে বরকুলপুরোও অনিমপুরো বংশীরগণ সর্বাপেকা সন্মানিত এবং সিওছঙ্, তিলিলমুল, রলোমুঙ্, তাকু কমল, স্বঙ্গুট্মুল, মামজিভবুঙ্, পূক্সোম ও সলমি সামক অপর আটটা পর সমাজে অপেকারছ হীনমর্বাদ বলিরা গণ্য। উপরোক্ত বরকুলপুরোও অনিমপুরোরা নিরোক্ত আটটা পরের মধ্যে আলান প্রদান করে মা। পকাভরে অপর ৮টা পরের লোকেরা পরস্কান করে মা। পকাভরে অপর ৮টা পরের লোকেরা পরস্কান করে মা। পকাভরে অপর ৮টা পরের লোকেরা পরস্কান করে মধ্যে এক পরের মধ্যেও বিবাহ হইতে দেখা বার। ক্ষম কথম মধ্যেরা, চাচেরা প্রভৃতি প্রথার ও বা ৪ পুরুষ বাদ দিয়া বিবাহ সম্বন্ধ ছিয় করে। যেখানে পাক্ত শিক্ষা নক্ষম কর্মক ব্যু থানে সরপুক্ত বাদ চলে।

বিবাহকালে দামারাই পৌরোহিত্য করে। ছই মদ বন্ধর
পত্নী আদিরা বিবাহকালীন অপরাপর আরোজন ও ক্রিরালি
দাল্যা করিরা থাকে। বালিকাবিগের প্রধানতঃ ১৬ ইইডে
১৮ বংসরের মধ্যে বিবাহ হয় প্রবং বৃহক্ষেয়া অর্থসমূলন করিছে
পারিনেই বিবাহিত ছইডে পারে। ক্রাপন বিবার শক্ষি

থাকিৰে অৱবরদৈই বিবাহ ছব, নচেৎ ঐ ব্যক্তি অর্থনংগ্রহ ছবিরা বরসকালে বিবাহ করিতে পারে। ক্ষাপণ ৪০ ছইতে ২০০ টাকা লাগে।

ৰিবাঁহের পূর্বে ক্যা ভাষার মনোনীত ভাষিণভিত্ন সহিত একত্র আহার বিহার করিতে পারে। এই অবস্থার সহবাসাদি দোব ঘটিলেও ভাষারা কিছু মাত্র ছিবা করে না। ক্যা বদি গর্ভবতী হইরা পড়ে, ভাষা হইলে ঐ ব্যক্তি ভাষাকে বিবাহ করিতে বাধ্য, কিছু যদি কোন কারণ বশতঃ সে ঐ ক্যার পাণিগ্রহণ না করে, ভাষা হইলে সে ক্যার পিভাকে ক্তিপূরণ স্বরূপ কিছু অর্থবণ্ড দিয়া নিছতি পার। ঐ ক্যার সহিত অপরের বিবাহ হইলে ক্যার পিভার আর পণ পাইবার আশা থাকে না।

সাধারণ বিবাহে ক্সার পিতা পাত্রের নিকট একজন পিব (ঘটক) পাঠাইরা খাকে। বিবাহের প্রস্তাব পাত্রের পিতা, কর্তৃপক্ষ, অথবা শ্বরং পাত্র কর্তৃক অমুমোদিত হইলে পিবু কন্তার পিতার নিকট হইতে ৫১ টাকা, ১০ সের মউরা মদ ও একথানি উত্তরীয় বক্ত লইবা পাত্রকে দিয়া আলে, উচাতেই বিবাহ সম্বন্ধ পাকা হইরা বার। অতঃপর লামাকর্ত্তক নির্দিষ্ট ওডিগনে ध्यथरम कञ्चानरत ও পরে বরগৃহে বিবাহের अञ्चविर्ध्य नन्भाषिछ হয়। বিবাহের মন্ত্র তার বিশেষ কিছু নাই। যাহা আছে, তাহাও অতি সামাল। বর ও কলাকে একখানি আসনে উপ-বেশন করাইরা লামা ভাহাদের উভয়ের গলদেশে এক একখানি রেশমের উডালি বাঁধিরা দেও। পরে "মালাবদল" স্বরূপ তাহা-রই বিনিমর হইরা থাকে। তদনস্কর তাহাদের মাথার চাউল ছডাইরা দেওরা হয়। ইহার পর বর ও ক্সা একপাত্রে ভোজন ও মউরা মন্ত পান করে। প্রথমে কন্তালরে পরে তথা হইতে প্রত্যাবৃদ্ধ হইয়া বরের বাটীতে এইরূপ ক্রিয়ার পর বিবাহকার্য্য শেষ হইয়া থাকে। বিবাহাত্তে ফাতিকুটুমের ভোজের পর উপত্বিত সকলে সানন্দ্রিতে আপন আপন গুহে গমন করে। কভা তিন দিন মাঞ্জু ক্রান্তান্তরে থাকিয়া এক নাসের জন্ত পিত্রালয়ে চলিয়া আইনে

বে ব্যক্তি ক্লাপণ দিতে অসমর্থ, দেও বিবাহ করিতে পারে, কিন্তু যত দিন না তাহার ঐ পণের টাকা পোধ বার, তত দিন ভাহাকে বীর খণ্ডরালরে থাকিরা বণ্ডরের আমিট কর্ম করিতে হর। ঐ সমরে সে তাহার বিবাহিতা পদীকে বীর গৃহে কইরা বাইতে পারে না।

বছবিবাহ ও বছখামিকর্তি ইহাদের মধ্যে প্রচলিত দেখা

বার । বিধবা রমশীগণ খেজামত বিবাহ করিতে পারে, কিছ

কি রমশী খীর মেবর তির অগর ব্যক্তিকে বিবাহ করিলে, দেবর

ক্রি প্রাকৃষ্ণারার গর্তজাত অবংশীর সভানসভতিদিগকে পালন

कतिया बारक धार आकृषायात्र विकीय वागीत निकी हहेरक পূৰ্বপ্ৰায়ত কল্পাপ আলায় কলিয়া লয় ৷ বিধ্যাবিশাইকালেও প্ৰভিম্ভ বিবাহক্ৰিয়া সম্পাদিত হইতে পাৱে, কিছু অধিকাংখ-कृरमहे मामा छेखरदत विवाहमः वाम मृत्य त्यावना कतिवा बिरमहे विवाह स्टेबा यात्र । मण्याजीत मत्मागं जाव विवस स्टेबा फेट्रें, कांश क्रेंटन निवृत्तिगटक क्षांकांहेबा विमःवास्त्र कांत्रन निटर्कन मह-कादत मीमाश्या बाजा शत्रप्यादतत्र मदनामाणिक मृत कतिवात हाँहो হইরা থাকে। উপর্যাপরি ছই বা জিন বার এইরপ চেঠার পর বদি छारायत मरमत्र मिन मा एत, छारा रहेरन छारायत विवाहकारन বে লামা থাকে,ভাঁহাকে ডাকাইরা ভাঁহার অন্তমতিক্রমে ঐ বিবাহ-रक्षम क्रिन क्रिना (क्ष्या क्रेना थारक । जनम क्रे जी चामिन्नक ত্যাগ করিবা শিত্রালয়ে চলিরা আইলে এবং ঐ স্বামীকে ক্তিপুরণ স্বরূপ পুনরার স্বীয় পদ্ধীর শিতাকে কিছু সর্থবঞ্জ দিতে হয়। জী বাজিচারিণী হইলে পঞ্চায়ত ভাহার বিচার করিবা উপপ্তিকে অর্থদণ্ড করিরা থাকে। যদি পঞ্চারতের বিচারে খ্রীর সভীত্তানি প্রকাশ হর, তাহা হইলে স্বামী ভাহাকে ভ্যাগ করিতে পারে। এই পদ্মীত্যাগের নিমিত্ত তাহাকে ক্তিপুরণ বন্ধণ পদ্মীর শিতার रूट कर्थमान कतिए इस मा, यहार त्म चमख क्षमक्षातामि भन्नीत গাত্র হইতে উন্মোচিত করিয়া লইরা ভারাকে গ্রহ হইতে বহিন্নত করিয়া দেয়। এইরূপ ব্যক্তিচার্নদোব্যন্তী জীও পুনরার বালিকা কল্লার বিবাহপদ্ধতি অনুসারে বিবাহিত *হইছে* পারে।

বিবাহপ্রথার এইরূপ বিপর্যার হেতু ইহাদের মধ্যে উভরাধি-কারের বিশেব কোন বিধি নাই। পঞ্চারতগণ :আতীর অধামত মৃত ব্যক্তির পুত্র বা ক্যাদিগকে গৈড়ক সম্পতির বেরূপ বিভাগ মীমাংসা করিয়া দেন, সাধারণে তাহাই গ্রাহ করিতে বাধ্য, কেহ তজ্জা রাজ্যারে উপনীত হয় না। যদি কোন ব্যক্তির একাধিক পুত্র থাকে, তাহা হুইলে সকল পুত্র সমান অংশ পায়, ভবে বিধবা মাতা ও অবিবাহিতা ভগিনীগণ থাকিলে জ্যেষ্ঠ পত্রকেই পালন করিতে হয় বলিয়া জ্যেষ্ঠ পত্রই সর্ব্বাপেকা অধিক ভাগ পাইরা থাকে। আবার পুরুদিগের মধ্যে বাহারা রাজকার্য্যে নিযুক্ত, তাহারা অক্তান্ত প্রাতৃগণ অপেকা অধিক সম্পত্তি পার। কনিষ্ঠ ভ্রাতা জ্যেষ্ঠের সম্পত্তির অধিকারী হইতে পারে না, তবে বদি পঞ্চারত অন্থগ্রহ করিবা তাহাকে অংশ দের, তাহা হইলে সে সম্পদ্ধির অংশদাণী হইতে পারে। ইহাদের মধ্যে মৃত্যুকালীন দানপত্র লিখিয়া দিবার ব্যবস্থা নাই, ভবে মুৰুৰ্ ব্যক্তি শব্তিৰ শ্বাৰ শান্তিক থাকিলা স্বীয় সম্পত্তির অংশ বাহাকে বেশ্বপ দিতে হইবে, পঞ্চারতের সমক্ষে সেইরূপ ইচ্ছা প্রকাশ করিলে, প্রকারত মুক্ত ক্ষ্যক্তিয়া ইচ্ছা অনুসারে কার্যসম্পাদন করিতে বাধ্য থাকে।

পূর্কেই উল্লেখ করিয়াছি বে, অবিবাহিতা কন্তাগণ পিতার মৃত্যুর পর জ্যেষ্ঠ প্রাতার বারা প্রতিপালিত হইরা থাকে। ঐ কন্তান দিপের বিবাহ না হওরা পর্যন্ত, প্রাত্ত্বর্গ অথবা বিবাহিতা কন্তারা পিতৃসম্পত্তির উত্তরাধিকার পাইবে না। পূলাদি না থাকিলে বিবাহিতা কন্তাই পিতৃসম্পত্তির অধিকারিণী হইবে, কিছ ঐ সম্পত্তিলাভের পর শিল্লালরে বাস করাই ইহাদের জাতীয় বিধি। সাধারণতঃ এই নির্মে উত্তরাধিকারিছ নির্দিষ্ট হইলেও, অনেক সমরে পঞ্চারতের অতিপ্রায়ন্ত্রসার্থে কার্য্য পরিচালিত হইরা থাকে।

ৰৰ্ত্তমান সময়ে অধিকাংশ লেপ্ছাই বৌদ্ধৰ্মের আশ্রয় গ্রহণ করিয়াছে, তণাপি ইহাদের মধ্যে সামানী পখাচারের অভাব নাই। ইহারা পর্যতাংশ বিশেষ ও তথাকার স্রোত-चिনীদিগকে রোগাদি অমন্তব্য উৎপাদক আনিয়া পূঞা করে। ভুষারাবৃত কাঞ্চনজ্ঞা পর্বতকে ঝড়, ভুষার, বৃষ্টি ও বরফ পাতের একমাত্র অধিষ্ঠাত্রী দেবতা এবং শাক্য বৃদ্ধের শিক্ষাগুরু বলিয়াও উপাসনা করিয়া থাকে। ঐ পর্কতগাত্রন্থ ত্যাররাশি পুৰ্যোত্তাপে বিগণিত হইরা সমর সমর ইহাদের বাসভূমি ও শশুক্ষেত্রাদি পরিপ্লাবিত করে। এতত্তির এলেগেওপু, পালদেন, লছামো, লাপেন বিন-পোছে, গেঙ্পু-মালেও ঞাগুপু ও বহুলমা প্রভৃতির উপাসনাকালে ইহারা মাংস, মহরামদ, ফল, তণুল, পুষ্প ও ধূপধূনা প্রভৃতি গৰ্জব্য দিয়া পূজা করিয়া থাকে। ইহারা চিরেক্সী বা লছেন-ওঁম-ছুপ্-ছিমুকে মহাদেব বলিয়া শ্বীকার করে। তাঁহার পত্নীর নাম উমাদেবী। অধিক সম্ভব দিকিমে বৌদ্ধর্মবিস্তারের পূর্বে ইহারা এই শল্পরমূর্ত্তি ও উমাদেবীর উপাসনা করিত। লিামা দেখ।]

বৌদ্ধর্ম সম্বন্ধীয় ক্রিয়াকলাপে তিব্বতীয় লামাগণই ইহা-দের যাজকতা করে। ইহাদের মধ্যে কেহই লামাধর্ম গ্রহণ করে নাই। অনেকে ভৌতিক বিদ্যা অভ্যাস করিয়া "বিজুরা" (প্রঝা) ইইয়াছে। ভূতপ্রেতাদি অপদেবতাগণের প্রকোপ উপশ্মনার্থ ইহারা নানা ভৌতিক ক্রিয়া কলাপের অবতারণা করিয়া থাকে।

ইহারা প্রধানতঃ শবদেহ পূর্ব্যুখী রাথিয়া কবর মধ্যে গোর দেয়। সমাহিত করিবার পূর্ব্বে তিন দিন ঐ মৃতদেহ গৃহে বসাইরা রাথে এবং তাহার সমুখে নিরম মত ভোজাদি স্থাপন করে। গর্জমধ্যে মৃতদেহ স্থাপনের পূর্ব্বে উহার চতুর্ফিক্ পাথর দিরা দেরা হর, পরে তম্মধ্যে শবরকা করিয়া চাপা দেওয়া হইয়া থাকে এবং তাহার উপয় একটা গোলাকার পাথরের কম্প্রকাশন করিয়া তহুপরি নিশান কেওয়া হয়। রোজ-লেপ্ছাগণ মৃত্যুর একমাস পরে ওঝা ডাকাইয়া প্রেতের

শান্তি ও মঙ্গলকামনায় একদিন শ্রাদ্ধ করে। ঐ সমরে একটী বস্থু গোরু বা ছাগ মারা হর এবং সকলে মউরা পান করিরা নেশার বিভার হইরা থাকে। ইহারা ঐরপে বাংসরিক শ্রাদ্ধও সম্পন্ন করে। নবশস্ত ছেদনের সময় প্রত্যেক গৃহক্তর্গাই পিতৃ-পুরুষগণের উদ্দেশে নৃতন তণুল, মউরা ও নানা প্রকার খাক্সম্বা সজ্জিত করিয়া উৎসর্গ করিয়া থাকে।

উচ্চশ্রেণীর থাখা লেপ্ছাগণের মধ্যে শবদেহ দাহ করিবার্ত্তী প্রথা আছে। দেহ ভত্মীভূত হইবার পর, শবের দগ্ধ অস্থি সকল চূর্ণ করিয়া নিকটবর্ত্তী কোন নদী বা জোয়ারের জলে ভাসাইয়া দেওয়া হয়। এই সম্প্রদারের মধ্যে অবস্থা বিশেষে প্রাদ্ধ প্রক্রিয়ারও তারতম্য আছে। ব্রহ্মচারিণী রমণীদিগের প্রাদ্ধ প্রবিভ্রারও

সিকিম রাজ্যের একচারিণী এক রমণীর আছে যেরূপ প্রক্রিয়া অবলম্বিত হইয়াছিল, তাহা নিয়ে বিবৃত হইল;—

আদ্ধকালে মৃতার একটা প্রতিকৃতি নির্মাণ করিয়া তাহার সন্মুখে একথানি মেন্তের উপর নানা খান্ত সামগ্রী, অপর এক থানিতে তাহার ব্যবহাধ্য দ্রব্যাদি এবং তৃতীয় টেবিলে ১০৮টা পিত্তলের প্রদীপ সারি দিয়া সাজাইয়া রাখা হইয়াছিল। উষ্টীয-ধারী ও রক্তাম্বরপরিহিত অনেকগুলি লামা ঐ সময়ে কএকদিন ধর্মান্দরে সমন্বরে ভোতাদি পাঠ করিয়াছিলেন। তার পর পেমিওঙ্গছি সঙ্ঘারামে আনিয়া ঐ প্রতিকৃতিকে বেদীতে বসান হয় এবং তিন দিন প্রেতের মঙ্গল কামনায় উপরোক্তরূপ স্তোত্রাদি পাঠ হইয়া থাকে। শেষ দিনে মৃতার আত্মীয় ও বদু বান্ধবৰ্ণণ বন্ধ্ৰ. অৰ্থ ও থাছাদি উপহার যাহা পাঠাইল, তাহা ঐ প্রতিকৃতির সম্মুখে সাজাইয়া দেওয়া হয়। ঐ সময়ে মঠের প্রধান লামা সেই মূর্ত্তির সন্মুখের আসনে উপবেশন করিয়া ভতুদ্দেশে প্রদত্ত প্রবাদি ও দাতার নাম জ্ঞাপন করিয়া থাকে। সন্ধার সময় ব্রন্ধচারিণীর সমক্ষে চা ও মউয়া পানপাত্রপূর্ণ করিয়া দেয় এবং লামারা আসিয়া ঐ সমরেই মূর্ত্তির সমক্ষে চা ও মউরা পান করে। তার পর নের বা রমণীর পরিচিত ও আত্মীয়েরা সেই স্থানে উপস্থিত হইনা প্রেডান্মার উদ্দেশ্তে সেই মর্ত্তিকে সাষ্ট্রান্ধে প্রণিপতি করিয়া থাকে এবং তাহার বস্ত্রাঞ্চল চুখন করিয়া ভাহাকে চিরদিনের মন্ত বিদায় দিরা আইসে। ঐ সময়ে স্মবেত লামাগণ প্রেতাস্থার বিদারকামনায় সর্বোচ্চস্বরে স্তুতি পাঠ করিতে আরম্ভ করে এবং প্রধান লামা স্বীয় আসম হুইতে গাত্রোখান করিয়া একটা মেজের নিকট আসিয়া কএকটা ঋপ্ত প্রক্রিয়া সাধন করেন। রাত্রি ≥টা বাজিলে স্বতিপাঠ-সমাপ্ত হয়। তথন প্রধান শামা আপনার আসন সমক্ষে **দঙারমান হইয়া একটা স্থীর্থ বক্তৃতা করিয়া থাকেন।** ভাহার

মর্শ্ব এই বে, "তোমার তবণারে পমনের ক্রবিধার্থ বাবতীর প্রক্রিরাই অন্নটিভ হইল। একণে তুমি স্বজ্বলে একাকী ধর্মরাজ বনের নিকট গুমন ক্রিতে পার।" ইহাই তাহাদের বৈভরণী-পারের বাবস্থা বলিতে হইবে।

অপ্রধান লামার বক্তব্য শেষ হইলে, অপরাপর লামাগণ আদিয়া সেই মুর্ত্তিকে বল্লহীন করিরা কেলে। ঐ সময়ে অপ-রাপর লোকে শমা, শিলা, ঢাক, করতাল প্রভৃতি বিবিধ বিকট বাপ্ত করিতে করিতে মঠের বাহিরে আদিয়া মৃতব্যক্তির আস্তাকে অন্ধকারময় স্থানে লইয়া নিক্ষেপ করণানন্তর পুনরায় মঠমধ্য ফিরিয়া আইসে।

পুর্কেই বলিয়াছি, লেপ্ছাদের মধ্যে কোনরূপ জাতিবিচার नारे। याराजा त्नशानजाका मत्या हिम्मुजाकात अधीतन বান করে, তাহারা সেইরূপ রাজনিয়মের বশবর্তী হইয়া আপন আপন ধর্ম পালন করে। নেপালে ইহারা গোহত্যা করিতে পারে না। দার্জিলিঙ্গে কিন্তু ইহারা গো শৃকর প্রভৃতি যাবতীয় পশুমাংসই ভক্ষণ করে। বনমধ্যস্থ মৃত পশাদিতে हेहारनत अक्ठि नारे। मृठ रुखीत नहा मारन रेहाता विरमय আদরে ভক্ষণ করিয়া থাকে। এতন্তির পর্ববিজ্ঞাত ফল. মল, চাউল ও ময়দার কটা প্রস্তৃতি তাহাদের ভক্ষা। চাউল, ও ময়দার জন্ম ইহারা ধান্ত, গোধুম, যব, ভূটা প্রভৃতি শক্তের চাদ করিয়া থাকে ৷ এই চাউল, ভুটা বা মউয়া হইতে ইহারা মন্ত প্রস্তুত করিয়া পান করে। যথন কোন দূর স্থানে গমন করে, তথন ইহারা বাঁশের চোকায় মদ লইয়া যায়। পথিমধ্যে বালের চোলার চাউল সিদ্ধ করিয়া ভোজন করিয়া থাকে, কিন্ত ঘরে থাকিলে সাধারণতঃ লৌহ কড়াতেই ভাত রাঁধে। খাজাদি সম্বন্ধে ইহাদের বিশেষ কোন পারিপাট্য নাই।

লেপন (ক্লী) লিপ-লাট্। লেপ, চলিত লেপা।

"বৈশাপন্ত সিতে পকে তৃতীয়াক্ষমগঞ্জেতা।

তক্ৰ মাং লেপদেশ্পৰলেপনৈরতিশোতনম্॥" (তিথিতর)
গোমমাদি দারা দেশক লেপন বিক্রিল ইহলোকে বিবিধ
ক্রম ও পরলোকে কর্মনাত হইয়া থাকে। প্রাণাদি ধল্লশাক্রে
লেপনের বিশেষ প্রশংসা লিখিত আছে—

শুৰ্ তৰেন মে দেবি লিপামানত বং ফলম্।
লৰ্কাং তে কথারিয়ামি যথা প্রাপ্নোতি মানবঃ ঃ
গোমরং গৃহ্ব বৈ ভূমে মম বেন্দোপলেপরেং।
ভাজানি তত্র বাবস্তি পদানি চ বিলিম্পতঃ ॥
ভাববর্ষসংক্রাণি দিব্যানি দিবি মোদতে।
বনি বাদন বর্বাণি লিপ্যতে মম কর্ম্ম ॥"(বরাহপ্রাণ)
২ গাত্রে লেপগুলান, গাত্রে চন্দানি লেপন। স্ক্রেত

লিখিত আঁহি বে, নামের পর লেপন বিধের, এই লেপন অংশ প্রয়োগ করিলে সৌজ্বলা এবং দেহের লাবণা রুদ্ধি হয়। ইহা বেহের দৌর্গদ ও প্রমনাশক। বে সকল অবস্থায় স্থান নিবিদ্ধ, দেই অবস্থায় লেপনিও নিবিদ্ধ।

ত্বপৰ তিন প্ৰকার, দোষ ওঁ বিবনাশক এবং বর্ণ্যকর।
ইবং আবার ২ প্রকার, প্রদেহ ও আলেপ। ইহার মধ্যে
আলেপ পিন্তনাশক এবং প্রদেহ বাতরেমনাশক। গেপ রাত্রিকালে নিষিদ্ধ। কিন্তু ত্রণাদিতে লেপ দিতে হইলে রাত্রিকালেও
দেওয়া যাইতে পারে।

*লোবস্থা বিষহা বর্ণ্যো লেপত্ত্বেবং ত্রিধা মতঃ।

ৰৌ তম্ম কথিতো তেনে প্রলেহাথ্য প্রকেইকো ॥" (স্কুঞ্চ)
ভাবপ্রকাশে লিখিত আছে বে, প্রতিদিন গাতে আমলন্ত্র
লেপন করিয়া লান করিলে বলিপলিত রোগ হইতে মুক্ত হইয়।
শত বংসর কাল জীবিত থাকিতে পারা যায়।

মানের পর পরিষ্কৃত বক্ত পরিধান করিয়া অংগন্ধি ক্রব্য নারা গাত্রে লেপন করিবে। শীতকালে চন্দন, কুছুম এবং ক্ষাণ্ডক একত্র মিশিত করিয়া গাত্রে লেপন করিবে, ইহা উষ্ণ বায় এবং ক্ফনাশক। গ্রীয় ও শরৎ কালে চন্দন, কপূর্ব ও বালা মিশ্রিত করিয়া লেপন করিবে, ইহা হুগন্ধি ও অতি শীতল। বর্ষাকালে চন্দন, কুছুম এবং কন্তুরী মিশ্রিত করিয়া লেপন করিবে, কার্মণ এই লেপ উষ্ণও নহে, শীতল ও নহে।

উপসূক্ত পরিমাণে লেপন প্রয়োগ করিলে পিপাসা, মৃদ্ধা,
হুর্গন্ধ, ঘর্ম ও দাহ বিনষ্ট হয় এবং সোভাগ্য, তেন্ধ, বর্গ, প্রীতি ও
বল বৃদ্ধি হইয়া থাকে। স্নানের অযোগ্য ব্যক্তির পক্তে লেপন
নিষিদ্ধ। স্নান না করিয়া লেপন প্রয়োগ করিবে না।

এই লেপন ককর, মেদোনাশক, শুক্রজনক, বলকারক, রজ-বর্জক এবং চর্ম্মের প্রদর্গতা ও কোমলতাকারক। মূথ লেপ ছারা চকু স্থির, গগুংল স্থূলতর এবং বদন স্থুল, কমনীয়, বাদ ও পীড়করহিত ও কমল সদৃশ হট্যা থাকে। ুশরীর-লেপনের পর ভূবণ পরিধান বিবেয়। (ভাবপ্র পূর্বার্থ)

ফুঞ্তে নিখিত আছে, লেপ তিন প্রকার, প্রলেপ, প্রদেহ ও আলেপ। ইহার মধ্যে গুছ হউক বা না হউক, শীতণ বা আর হইলেই তাহাকে প্রলেপ কহে। উষ্ণ অপবা শীতপ, অনেক বা অল্ল এবং ওছ এলপ হইলে প্রদেহ, এই উভন্ন প্রকারের মধ্যবতী হইলে তাহাকে আলেপ কহে।

রক্তপিত জন্ম রোগে আলেপ বিশেষ এবং বাতরেমজন্ত রোগ হইলে অথবা তম অন্থির সংযোগ করিতে হইলে অথবা অনের শোধন বা পূরণ করিতে হইলে বা ফুলা স্থানে বেদনা হুইলে প্রদেহ বিধেয়। ক্ষত বা অক্ষত এই উত্তয় স্থানেই প্রদেহ ব্যবহার করা যায়। যাহা কত স্থানে প্রয়োগ করা যায়, তাহাকে নিমন্ত্রা কেপন করে, ইত্রা থারা ত্রণের প্রাব রুজ ও প্রণ কোমল এবং তাহা হইতে প্তিগছুরুক মাংসনির্গম হইয়া থাকে। যে লোফ করের বারা লগ্ধ করা না হয়, তাহার পকে আলোপ হিতকর। যে এবা ভক্প বা পান করিলে শরীরের অভাস্থরত্ব ধে লোবের শাস্তি হয়, সেই প্রব্যের প্রশেপ দিলে শরীরে ফক্সিত সেই দোবের শাস্তি হয় এবং এণের আলা ও চুলকনাও নির্ভ হয়। শরীরের ফক্ সংশোধন ও এণের নাহ শাস্তি করিতে হইলে ক্যালেপনই প্রধান উপায়। ইহা থাকে। মাংস ও রক্ত সংশোধিত হয় এবং শোফের চুলকনার শাস্তি হইয়া থাকে। শরীরের মর্মন্থানে বা গুছারানে যে সকল রোগ জালা, তাহার সংশোধনের নিমিত্ত আলেপন বিধেয়।

আলেপন প্রস্তুত করিতে হইলে পিত্তন্নন্ত রোগে সকল আলেপন দ্রব্য মিলিয়া যে পরিমাণ হইরে, ভাহার বোড়শ ভাগের ছয় ভাগ স্নেহ দ্রবা (মৃত তৈলাদি) সংযোগ করিতে হইবে। বায় ক্রন্ত রোগে চারি ভাগ পরিমাণে এবং শ্লেমজ রোগে অর্জ পরিমাণ সংযোগ করিয়া প্রযোগ করিবে। মহিষের চক্মজ করিছেল যে পরিমাণ উচ্চ হয় (মূলিয়া উঠে), শরীরের আলেপও সেই পরিমাণ বেধবিশিষ্ট (পুক্) হইবে। আলেপন রাত্রিকালে প্রযোগ করিবে না এবং যে পর্যান্ত ত্রণ হইতে উত্তাণ নির্গত হইতে থাকে, সে পর্যান্ত তাহাতে শীতল আলেপন প্রযোগ করিবে না। করিব রূগের উষ্ণতা নির্গত না হইলে সেই উষ্ণতা বন্ধ থাকিয়া প্রণের মধ্যে বিক্লতিভাব ক্ষমার।

শরীরে প্রদেহ লেপন করিতে হইলে দিবাভাগে লেপন করাই হিতকর, বিশেষতঃ পিত্তন্ধ, রক্তন্ধ ও অভিঘাত জন্ম অপবা বিষ জন্ম রোগে দিবাভাগেই লেপন করা কর্তবা।

যে প্রবেশ পূর্ব্ব দিন প্রস্তুত করা থাকে, তাহা কর্নাচ বারহার করিবে না। কারণ সেই প্রলেপ গাঢ় হইরা যার এবং তাহা প্রয়োগ করিলে উষ্ণতা, বেদনা ও দাহ জ্বন্ধে। প্রলেপের উপর প্রলেপ দিবে না। যে প্রলেপ একবার শরীর ছইতে মোচন করা যায়, তাহা পুনর্কার শরীরে প্রয়োগ করা কর্ত্বরা নহে। ইহা গুরু হওয়া প্রযুক্ত অক্মণ্য হইরা পড়ে।

(সুশ্রুত স্ত্রন্থা° ১৯ অ°) ২ সুধা, কলিচুণ। ৩ ভোজন। (পুং) ৪ তুজ্জ নামক

গৰ্ভব্য। (রাজনি°) ৫ সিহনক, শিলাবস।
লোপাপৌচা (দেশজ) দেলালাদির গাত্রাদি হইতে কোন

्तर्भार्त्याक्ष्य र प्रकार प्रकार ।

লেপিন্ গং) লিম্পজীতি লিপ-নিনি। > লেপক। (এ) ২ লেপকঠা, লেপবিশিষ্ট। লেপ্য (ত্রি) নিশুনাং। বেপ্রনীয়, নেপ্রয়।

"নৈলী দাকময়ী লোহী লেপ্যা বেখ্যা চ সৈকতী।

মনোমরী মণিমরী প্রতিমাষ্টবিধাশক্তা।" (জুগ্রব ১১)২৭)১২)
লেপ্যকুত্ (পুং) লেপ্যং করোজীতি ক্ল-ন্ধিপূ তুক্ চ। লেপ্ফ।
লেপ্যনারী (ত্রী) ১ অগুক্চন্দনচর্চিত রম্পী। কেপ্যত্রী।

২ প্রত্তর বা মৃদাদি ধাবা নির্দ্ধিত রম্পী মৃষ্টি।
লেপ্যনায়ী (ত্রী) লেপ্য-ময়ট্, ঙীপ্। কাষ্টাদি ঘটিত পুত্রিকা,
পর্য্যায় অঞ্জিকারিকা। (হেম্)

লেপ্যযোষিৎ (ত্রা) লেপ্যনারী।

লেপ্যস্ত্রী (জী) লেপা জী। হৃগদ্ধবাদিখা জী। (শব্দর্দ্ধা •) লে কৃফি (আন্ত্রী) খাম, যাহার মধ্যে চিঠিপত্র প্রিদ্ধা দেওয়া হয়।

লেম (হিন্দী) ১ একতা। ২ হ্যমিলন। ৩ স্থাব, সম্প্রীভি।
লেম্রো, নিমন্ত্রের অন্তর্গত একটা নদী। আরাকান প্রদেশের
উত্তরস্থ জঙ্গলাবৃত শৈলমালা মধ্যে ইহার উৎপত্তি। পর্বত্বক
অবতরণকালে এই নদী শৈলগাত্রবাহী নানা স্রোতোমালার
পৃষ্টকলেবর হইয়া আকায়াব জেলার সমতলক্ষেত্রে পড়িয়াছে
শরে তথা হইতে সম্জাভিম্থে প্রবাহিত হইয়া নানা শাখা
প্রশাধা বিত্তারপূর্বাক হান্টাদ্বি নামক সাগরোপকৃলে সম্জবক্ষে
মিশিরাছে।

লে-ম্যোৎ-হ্না, বন্ধবাজ্যের ইরাবতীবিভাগের বেসিন জেলার অন্তর্গত একটা নগর। বেসিন বা ঙ্গা-ব্না নদীতটে অবস্থিত। অন্ধা ০ ১৭°৩৪ (০ ° উ: এবং দ্রাঘিত ৯৫°১৩'৪০'' পৃ:। নদীতে বন্ধা হইলে এই নগরের পথখাট সমন্ত্র সমন্ত্র ৩ ফিট্ জলে ভুবিয়া যায়।

লেয় (খং Leo) সিংহরাশি। (জ্যোতিস্তৰ) লেয়াকৎ (আরবী) > খণ। ২ সামর্থ্য। ৩ দুক্ষ। ৪ কুশলবৃদ্ধি। লেয়াকতী (আরবী) ১ দক্ষতা, নিপুণতা। ২ যোগাতা। লেলয়া (স্ত্রী) কম্পুমুনা।

লোলিহ (ত্রি) লিহ বি , যঙ্ পুক্, লে ক্রিছ-মাচ্। পুন: পুন: পেনা। লোলিহান (পুং) পুন: পুনরভিদরেন বা লেটাভি লিহ-যঙ্, শানচ্ বা। ১ শিব। (শন্তর্জা•) ২ স্পা। (হেম)(ত্রি) ও পুন: পুন: লেহনকর্জা।

"সপ্তজিহ্বাননং কুরো দেশিহানো বিদপতি।"(ভারত ১/২৩০/৫) লোলিহানা (জী) তরোক মুলাবিশেষ। মুখ বিবৃত করিরা অধােমুখে জিহ্বা পরিচাশিত করিবে, এবং উভর হত্তের মুষ্টি উভর পার্ছে ত্রাপন করিলে ভাহাকে ক্লোনিহান মুলা কহে। শ

অন্ত প্রকার-তর্জনী, মধ্যমা ও জনামিকা সমভাগে

আধায়থ কজিলা অনামিকাতে বৃত্তকুলি কিন্দা কছিল। কমিঠাকে সরলভাবে নামিলে এই লেলিহান মূলা হয়। এই মূলা জীবভাবে বিশেব প্রশস্ত।

"বক্ত্ৰং বিভাৱিতং কথাপ্যধোজিকাঞ্চ চালবেং।
পাৰ্থান্থ মৃষ্টিযুগলং লেলিহানেতি কীৰ্জিতা ।
এবাভাৱারাধনেহক্তা লেলিহা বক্তব্যা—
যোনিম ঘোধরং সেন্দ্র্রপ্থ কুঠেং ক্রমান্থিইং।
ব্লীজানি চোচ্চরেমান্ত্রী মূড়াবন্ধনমাচরেং ॥
তর্জনীমধ্যমানামাঃ সমং কুর্যাদধোম্পন্।
আনামারাং ক্রিপেন্ধ্রাং ক্রমীং ক্রম্বা কনিষ্টিকান্।
লেলিহা নাম মূদ্রেরং ক্রীবন্তালে প্রকীর্জিতা ॥" (তর্জনার)

লেবার (পুং) অগ্রহারতেল। (রাজতের° ১৮৮৭)
লেবোর, যুক্তপ্রদেশের কুমায়ন জেলার অন্তর্গত একটা গিরিশেণী, হিমালয়-পর্কাতের অংশ বলিয়া পরিগণিত। অক্ষাও
৩০°২০ উ: এবং জ্রাঘিত ৮০°৩৯ পু:। এই গিরিশাথা বিয়ান্
ও ধর্ম উপত্যকার মধ্য দিয়া বিস্তৃত জ্ঞাছে। পর্কাতের উপর
দিয়া একটা পথ অপর দিকে গিয়াছে। ঐ সক্টের সর্কোচ্চ
হান সম্ত্রপৃষ্ঠ হইতে ১৮৯৪২ ফিট উচ্চ এবং চির্ভ্যারায়ত।
লেশ (পুং) লিশ-খঞ্। কণা। (অমর)

ত্রাজধর্মাণাং লেশঃ সমন্থর্নিতঃ।"(ভারত ১২।৫৮।২৫) লেশোক্ত (ত্রি) সংক্ষেপে বর্ণিত। ২ আভাস কবিত। লেশ্যা (ত্রী) দীপ্তি, আলোক।

লেফব্য (ত্রি) ১ নাশবোগ্য। ২ ছিন্নকরণোপবোগী।
লেফ্ট্র (পুং) নিপ্ততে ইভি নিশ্-বাছলকাৎ তুন্। লোই।
শ্বথ যো ত্রান্ধণান্ কুই: পরাভবতি সোহচিরাৎ।
যথা মহাণবে কিপ্ত আমলেই বিনপ্ততি।"

(अद्भार २०१०६। १७)

লেফ তুল (পুং) লেই ং হান্ত হল- চক্। লোই তৈদন। (শব্দর্যাণ)
লেফ তুলেন (পুং) লেই ং ডিনান্তীতি, ডিল-সূটে। লোইডলসাধন মুলনর, পর্যার কোটাল, লেই মু, লেই ডেলী, চূর্ণলণ্ড।

লৈচ পুং) হন্তারোহক, পর্যার কটিরোহক। (শব্দমাণ)
লেহ (পুং) লেহনমিতি লিহ-বঞ্। আহার, ভক্ষণ। পর্যার—
বালন, রসন, স্থলন, স্থলি। (রাজনিণ) লিহ-কর্মণি বঞ্ । ২ রস।

"পচেরেহং সিতা ক্লোক্রং পলার্জকুড়বাবিতম্।"
(স্থলত ১।৪৪) লেটাতি লিহ-বঞ্। (জি) ও লেহনকর্তা।

"দভ্ষ্যং মধুনো লেহের্জাবৈক্সগ্রৈর্জ্থা গিরিঃ।" (ভাট ৬৮২)
৪ অবলেহ, চলিভ জটা। লোবের বলাবল অস্থলারে হানক্রিশেরে জাবলেহ প্ররোগ বিধের। অবলেহ প্রারই উর্জ্জক্রণত

রোগ নট করে, এ কারণ করি সার্থকারে করেরাগ করিতে হয়। এই অবল্পের অধান ও চত্রক প্রকৃতি ভেষত্তক।

অধীলাবলেহ —কায়কল, পুরুষ্ট্য, অভাবে হুড়, কাকডাশূলী,

মান্তি, পিপুল, ওঁঠ, ছরালভা এবং হুল, ইহাকে অধীলাবলেহ
করে। ইহা লেহন করিলে সমিপাত, হিকা, খাস, কাস এবং
কর্মরোগ উপশম হয়। কফপ্রধান সমিপাতে ইহা আদার মসের
সহিত প্রয়োগ করিবে। মতাজ্বরে—লেহিক মধুর সহিত বা
আদার মসের সহিত সেবন করিলে তন্ত্রা ও কাসযুক্ত লারণ

মোহ বিনট হয়।

চত্রকাবলেহ—সিদ্ধ আমলকী পেষণ করিয়া আকা ও ভাঠের সহিত মিলিত করিয়া মধুর সহিত লেহন করিলে খাস, কাস, মৃত্যু ও অরুচি নষ্ট হয়। (ভাবপ্রত মধাণ।)

দ্রব ও কন্ধ প্রস্তুত করিতে হইলে বেরূপ ভাগ নির্দিষ্ট আছে, অবলেহের ভাগ ডক্রগ জানিবে।

"লেহে যত্ৰান্তি যো ভাগো নিৰ্দ্ধিষ্টো দ্ৰবক্ষদ্ৰোঃ। ভত্ৰাপি পাদিকঃ কৃষ্ণ দ্ৰবাৎ কাৰ্যো বিজানতা॥" (বাভট) [ক্ষবদেহ শব্দ দেখ। }

লোহ, গঞ্জাবপ্রদেশের কাশ্মীর রাজ্যের অন্তর্গত লাদশ্ রাজ্যের প্রধান নগর। সিদ্ধনদের উত্তর কৃল হইতে ১॥ ০ ক্রোশ দূরে অবস্থিত। অক্ষা ০৪°১০ উ: এবং দ্রাঘি০ ৭৭° ৪০ পূ:। এই স্থান সিদ্ধনদ ও পার্থবর্ত্তী পর্যাক্তমালার মধ্যন্থিত সমতল প্রাপ্তরোপরি স্থাপিত। নগরের চারিদিকে প্রাচীর, ঐ প্রাচীর পর্যাক্তমাত্র পর্যান্ত বিস্তৃত। তাহার স্থানে হানে গোলাকার স্থানিকা নির্দ্দিত আছে। কাশ্মীররাজ গোলাব সিংহ এখানকার রাজাকে রাজাক্ত করিয়। এই স্থান কাশ্মীররাজাভুক্ত করেন। লালখ্ দেখ।

নগরের দক্ষিণ-পশ্চিমে একটা হুর্গ আছে। প্রাচীন রাজ-প্রাসাদ ত্রিতল ও সামাগু ধরণে গঠিত হুইলেও উহার কাষ্ট-নির্শ্মিত বারাগুদি দেখিবার সামগ্রী। চীন, ডাতার ও পঞ্জাব-প্রদেশের বাণিজ্যকেন্দ্র বলিয়া পর্মতবক্ষন্থিত ভুবারব্যাপ্ত এই নগর সাধারণের বিশেষ পরিচিত। এখানে শালনির্দ্মাণার্থ পশম বিক্রয়ের বিস্তৃত কারবার চলিয়া থাকে। একটা বেধালয় এধানে স্থাপিত আছে।

লৈহন (ক্লী) লিহ-পুটে। জিলাছারা রসাম্বাদন, চলিত চাটা। প্র্যার—জিলাম্বাদ। (হেম)

-লেহরা, বালানার বরভালা জেলার অন্তর্গত একটা গঞ্জাম। মধুবন হইতে বহেরা যাইবার পথে অবহিত। পঞ্জোল নীল-কুঠার অধীনে এধানে একটা নীলের কারধানা গাকার স্থানীয় নত্তি বাহিকী স্থানিক প্রতিষ্ঠিত করিছে এই প্রাথেক অবশাস্থা ভটা বৃহদাকার দীর্ঘিকা আছে । তথাকে বোড়বোড় নামক দীর্ঘিকা চই নাইল বিভূত। এই দীর্ঘিকার জীলে প্রায় ১৫ বিঘা লমি ব্যালিরা ইইকত্প পড়িয়া আছে। উহা এখন জনলে আবৃত। হানীর প্রবাদ, ত্রিহুত্রাক্ষ শিবসিংহ ঐ হানে বাস করিতেন, ঐ তৃপ তাহারই প্রাসাধের স্বংসাবদের মাত্র।

(लहाई (जनक) मननात कारे।

লেহিন্ (মি) > দেহবৃজী। ২ দেহনকারী।

লেছিন (পুং) লিহ-বাহণকাদিনন্। ট্রুণকার, চলিত সোহাগা, সোহাগার থৈ। (হেম)

লেক্স (ক্লী) লিহ-লাং। ১ অমৃত। (লক্ষমালা) ২ অই-বিধ অরের অক্ততম। (রাজনিং) ৩ বড়্বিধ আহারের মধ্যে আহার বিশেষ।

"আহারং বড়্বিধকোব্যং পেরং লেহং তথৈব চ। ভোজাং ভক্ষাং তথা চর্ক্যাং শুরু বিদ্যাদ্ বংগাভরুম্ ॥"(ভাবপ্র°) (ব্রি) ৪ দেহনীর, দেহনবোগ্য।

"ভজ্ঞানাবিধং ভক্যভোক্যলেকাদি বড়্রসম্।

विदासक्षः दुर्ज्ञादक्षः পশुः পানমধোত্তমम् ॥"(কথাসরিৎসা° ৪৫।২৩०)

লৈখ (পুং) লেখের গোত্রাপত্য। (পা[°] ৪।১।১১২)

লৈখাভের (পুং) লেখাত্র বা লেখাত্রর গোত্রাপত্য।

লৈগবায়ন (খং) লিখন গোত্রাপভা।

লৈগব্য (পুং) লিশ্বর গোত্রাপতা।

লৈক (রী) লিকম্থিকতা কতো গ্রন্থ ইতি লিক্তেদমিতি বা লিক-অণ্। লিকপুরাণ। [পুরাণ দেখ।]

"মাৎজং কৌৰ্দ্ধং তথা লৈখং শৈৰং স্বান্দং তথৈব চ।"

(পায়োত্তরপত ৩৪ জ:)

(कि) २ निजनवरीत ।

লৈজিক (জি) > লিলসৰ্থীর। ২ লিল বা প্রতিস্তি-নির্মাণ-ভারী।

লৈজিকী (জী) ব্যন ও বিরেচনের শোধনবিশেব।(চক্রন-ব্যনাধিও) লৈজী (জী) > শিশিনী লতা। (রাজনিও) ২ নিলসবদ্দিনী। লো (পুণ) থলো শব্দর্থ। নিরশ্রেণীর জী লাতিকে ভাকিবার শব্দ। লো-জাজিয়া (জারবী) লাবক্তবীর জবাদি।

লোক, নৰ্শন, অবলোকন। ২ নীথি। ভূলি আন্ধনেত সকত সেট্। নীপ্তাৰ্থে চুরালি পাইছেত অকত সেট্। লট্ লোকডে। লিট্ প্ৰোকে। পূট্ লোকিজা। পূঞ্ অলোকি কিষ্ট। চুৱালিপকে লট্ লোকছডি। পূঞ্ অপ্লোকথ। অব+লোক অবলোকন। আ+লোক আলোকন, নৰ্মন। বি+লোক = বিলোকন। লোক (বং) লোকতে ইছি লোক-বঞ্জ ভ্ৰন, গুলাক ৭টা, নথলোক, ভূলোক, ভ্ৰলোক, প্ৰলোক, মহলোক, জন-লোক, অপোলোক ও সভ্যলোক।

"ভূড়্ব: স্বৰ্গহদৈৰ জনক তপ এৰ চ। সত্যলোকত সথৈতে লোকান্ত পরিকীর্ত্তিতা: দ" (জন্মিপু•) [বিশেষ বিবরণ কত্তৎ শব্দে দেখ্]

প্রশ্রুতে লিখিত আছে বে, লোক হই প্রকার স্থাবর ও জলম। বৃক্ষ, লভা ও তুল প্রাভৃতি স্থাবর এবং পশু, গল্পী, কীট, মহুবা প্রভৃতি অকম। এই স্থাবর ও জলম রূপ লোক্ষর উষ্ণ শীত ওপভেবে পুনরার আগ্রের ও সোম্য এই হুই প্রকারে বিভক্ত। অথবা ক্ষিতি, জল, অধি, বার্ ও আকাশ এই পঞ্চভুত ভেবে পাঁচ প্রকারে বিভক্ত। এই লোক্ষরের মধ্যে ভূতের উৎপত্তি চারি প্রকার—বথা স্বেদক, অথক, উদ্ভিক্ষ ও জরার্জ। একমাত্র পুরুষ এই সকল লোকের অধিচাতা।

(হ্ৰন্সত হত্তহা• ১ অ০)

বাঁহারা পুণান্ধারী তাঁহাদিগের উত্তমলোক এবং বাঁহার।
পাপকারী তাহাদিগের অধমলোকে গতি হইরা থাকে। পুণ্যাত্মাদিগের জন্ত নানাপ্রকার অতি বিচিত্র ও পবিত্র লোক আছে।
এই সকল লোক কামমর অতি বিচিত্র।

"এবং বিভন্ন রাজ্যানি পুরা প্রোক্তানি বানি চ।
লোকাংশ্চ বিদ্যান্ দদাবথ পৃথক্ পৃথক্ ॥
কন্তচিৎ প্রাস্থাশান্ কন্তচিষ্টিনির্মান্।
কন্তচিদ্ধিবিয়োতান্ কন্তচিচন্দ্রনির্মান্।
নানাবর্ণান্ কামমরাননৈকশতবোজনান্।
সতাং স্কৃতিনাং লোকান্ পাবনার চ সংস্থিতান্।"
(অধিপুত বরাহ-প্রান্তবাৰ নামাধ্যাত)

২জন। (অমর)

লোককণ্টক (ৄয়) > মন্দ লোক। ২ দোবী ব্যক্তি। ৩ লছে-খন নাবণেন নামীৰীয়।

লোককথা (ত্ৰী) প্ৰচলিত প্ৰবাদ, কিংবদন্তী। ২ নীভিমূলক গঞ্চ। লোককৰ্ত্ব (পুং) লোকত কৰ্ত্বা ৮ ১ বিষ্ণু। ২ শিব। ৩ ব্ৰদ্বা। লোককম্পু (ত্ৰি) মানবের জীতিকর।

লোককল্প (অ) > ৰগৎ সদৃশ বা অন্তন্ত্ৰপ । ২ ৰগৎছিছির তুল্য ;া লোককান্ত (অ) শোকানাং কাৰঃ। লোকপ্ৰিয়, সৰবিয়ে ।

> "নোককারং প্রিরং পূজং কুশচীরাদরং বনস্। অছিতং পঞ্জানেহত ব্যবহা কিং ন বীর্যতে ॥"

> > (लाः प्रामापन २ । कर । कर्

বিবাং টাশ্। লোককান্তা, লোকপ্ৰিয়া । ২ বভি নামক ওবধ। লোককান্ত্ৰ' (পুং)লোককৰ্ম। একা, বিহু ও নিবকে ব্ৰায় ।

লোককুৎ (ত্রি) ২ স্টেকারী। স্টেক্রা িং রুগকারী। লোককুত্বু (এ) স্টেক্টা। লোকক্ষিৎ (তি) স্বৰ্গগানী, আকাশচারী। লোকগতি (রী) শীবনবাতা ৷ লোকগাথা (বী) লোকপরস্পরাশ্রত গাথা। লোকগুরু (गুং) বগৰাসীর উপদেষ্টা আচার্য্য। লোকচকুস্ (हो) गোकानाः চকুরিব। ১ হর্ষা। "লোকপ্রকাশক: শ্রীমান্ লোকচকুর্গ্র হেম্বর:।" (সূর্যান্তব) ২ লোকদিগের চকুঃ, জনসমূহের লোচন। লোকচর (এ)> শীব। ২ শগৎত্রনগকারী। লোকচরিত্র (দ্রী) জীবনবাতা। মানবের জীবনেভিরম্ভ। লোকচারিন (ত্রি) লোকচর। (लाक्जनमी (जी) नची। লোকজিৎ (পুং) গোৰু বিভবানিতি বি-বিপ্তুক্ চ। ১ বুদ। (ত্রি) ২ লোকজেতা। "বং কামং কামরতে তমাগারতি তবৈ তল্লোকজিদেব" (শতপথবা • ১৪।৪।১।৩০) লোকজ্ঞ (ত্রি) মানবতবদর্শী। লোক্জ্যেষ্ঠ (ত্রি) > নরশ্রেষ্ঠ। ২ ব্রুভেন। লোকতত্ত্ব (ক্নী) মানবতত্ব। লোকভন্ত্র (ङ्गी) জগতের ইভিবৃত্ত। লোকতস্ (অব্য) লোকাম্বরণ। পূর্কোক্তরণ (ভাগব° ৪।২৪।৭) লোকতুষার (গং) লোকে তুবার ইব। কপুর। (রাজনি) লোকত্তম (क्री) স্বর্গ, মর্ব্য ও রসাতল। (वाकमञ्चक (बि) धावकका লোকভার (क्री) অর্গদার। লোকছারীর (क्री) শাশভেদ। লোকধাত (পুং) লোকত ধাতা। শিব। লোকধাতু (পুং) বৌদ্ধমতে, জগতের স্ক্লংশবিশেব। लाकनाथ (पूर) लाकानार नाथः। [®]> त्क। (बिका°) "লোকে ভগৰতো লোকনাথাদায়ভা কেচন। বে জন্তবো পতক্লেশান্ বোধিসম্বানবেহি তান্ ॥" (রাজ তর° ১/১৩৮) ২ ব্ৰহা। (শক্ষরত্বা°) ও বিকু। ৪ শিব। "অবিশ্বনঃ সন প্রভবঃ স সম্পর্নাং স লোকনাথঃ পিতৃসন্মলোচরঃ। স ভীমন্নপঃ শিব ইভাৰীৰ্যাতে দ শক্তি বাধাৰ্থাবিদঃ পিণাকিমঃ ॥" (कुमायमध्य) (बि) & लांट्यत थांचू। (त्रामात्रम २१००) ७ शात्रम।

্লোকনাথ, > কবৈত্যুকানাম্মচয়িতা। ং মন্ত্রকানপ্রণেতা।

ে মলোহরা নারী রাম।রণটীকারটরিভা ।

লোকনাথ চক্রবতী, কর্ণপ্রয়ত অগভারকীভাতের টাকা ও

লোকনাথ ভট্ট, কলাড়াবর নামক প্রেক্তর্নবালেতা।
লোকনাথরস (পং) মীহারোগাধিকারে উমধ্যিশের, লোক,
নাথরস ও বৃহজ্ঞোকনাথ রস তেকে ইহা চুই প্রকার। প্রভেজপ্রণালী—পারা, গভক, অন্ত, প্রভেজক এক ভাল, লোহ চুইভাগ,
ভাত্র চুইভাগ, কড়িভন্ম চরভাগ, এই সকল ক্রব্য এক্তর করিরা
পাণের রসের সহিভ মর্কন করিরা গলপ্টে পাক করিরে।
শীতল চুইলে চুই রভি পরিমাণ এই ঔবধ সেবন করিরা পিপুলচুপ ও মধু, বা শুড় ও চুরীভকী কিংবা গোনুত্র ও গুড়ের সহিভ
লীরা সেবল করিবে। এই ঔবধ সেবন করিলে হরুৎ, প্লাহা,
উদরী, শুল ও শোধনাশ হর।

বৃহলোকনাথরস—পারদ একভাগ ও গন্ধক তুইভাগে কক্ষণী করিবে, একভাগ অন্ত উহার সহিত মিশাইরা শ্বতকুমারীর রসে, পরে বিগুণ তামা ও লোহ মিশ্রিত করিরা কাকমাচীর রসে প্নঃ পুনঃ মর্দন করিয়া গোলক করিবে। পরে গন্ধক ২ ভাগ ও কড়ি-ভন্ম ২ ভাগ জবীরের রসে মর্দন করিয়া, মৃযাবরের মধ্যে ঐ ঔবধ গোলক রাথিয়া দিবে; তদনস্কর উক্ত মুবাদ্ধর শরাবসম্পূট করিয়া উক্ত শরাবের সন্ধিয়ান পোড়ামাটী, লবণ ও জলে লেপিয়া গর্জপুটে পাক করিতে হইবে। শীতল হইলে ছয়য়তি পরিমাণ বটা প্রস্তুত করিতে হয়। এই ঔবধ পিপুলচ্র্ণ, মধু, হয়ীতকীচ্রণ, গুড়, সোয়ান বা গোম্ত্র অন্তুপানে সেবন করিলে বয়ুৎ,
য়াহা, উদরী, শোথ, বাত, অভালা, কমেটা, প্রত্যঞ্জলা, কাসর,
অগ্রমাস, শ্বন, ভগন্দর, অমিনাল্য ও কাস আন্ত প্রশম্ভি হয়।
(রসেক্সনারন্য সীহ্বক্লধি°)

অতিসার রোগাধিকারে রসৌষধ বিশেষ। প্রস্তুতপ্রণালী—
রসসিন্ত্র একডাগ, গদ্ধক চারিভাগ, কড়ির মধ্যে প্রিরা
সোহাগা দারা মুথ বন্ধ করিরা দিবে, পরে ইহা মুৎপাত্রে রুদ্ধ
করিরা পুটপাকে পাক করিবে, এই ঔ্তর্ধের মাত্রা ৪ রতি।
ইহা মধুর সহিত সেবা এবং ক্সী, আতইচ, মুতা, দেবলাক ও
বচ ইহাদের ক্ষার অন্ত্রপানে সেবন ক্ষিকে স্ক্রিধি অতীসার
রোগ আত প্রশম্ভ হয়। (রসেক্রসারস্থ অভিসাররোগাধি)
লোকনাথ শশ্রা, অমরকোবটাকা প্রস্ক্রীপ্রণেতা।

লোকনিন্দিত (ত্রি) লোকের নিন্দিতঃ, জননিন্দিত, বিনি জনসমাজে নিন্দিত।

লোকনেত (পুং) লোকানাং নেতা। > পিব। ২ জন-সমাজের প্রভূ। সমাজপতি।

লোকপ (গ্ৰং) লোৰণাল।

লোকপত্তি (গ্ৰী) নম্ম, খ্যাতি, বশং। লোকপতি (গ্ৰং) শোকানাং পড়িং। বিছু (- জ্বান ২।৪।২০) জনসমাজের পতি অর্থাৎ পালক।

লোকপথ (গুং) সাধারণ পথ বা উপায়। লোকপছতি (খ্ৰী) চিন্তৰ পছা। **(माक्शान (ग्र) मानाम् गानवजीकि गान-निर्-वन्**र। > त्राजा। (श्लाइ्थ) २ तिक्लाल। ''লোনাক্যকানিলেজাণাং বিভাগভোর্যকভ চ। षडीनार लाक्नानामार क्यूबांबहटड वृगा ।" (म्र elab) ত শিষা ৪ বিযুগ লোকপালক (প্ং) লোক্ড গালক:। লোকগান। (স্ত্ৰী) লোৰপালক ভাবঃ ভল্-টাপ্। লোকপালভা লোকণালম্ব, লোকণালের ভাব বা ধর্ম, লোকণালের কার্যা। লোকপিতামহ (পুং) একা। লোকপুণ্য (ক্নী) প্রাচীন নগরভেদ। (রাজভর• ৪ ৷ ১৯৩) লোকপুরুষ (গুং) বন্ধাওদেব। লোকপ্রিক্ত (অ) গোকের প্রিক্তঃ। অনপ্রিক্ত। क्रमगारक माछ। লোকপ্রকাশক (খং) লোক্ত প্রকাশকঃ। খ্র্যা। ''লোকপ্রকাদক: ঞ্রিমান লোকচক্ত্র্য হেশর:।'' (স্থান্তব) লোকপ্রকাশন (পুং) পর্য্য, বিনি অগৎকে আলোক দান করেন। লোকপ্রভায় (প্:) লগনাথ, চিরপ্রসিম্ব (আচারাদি)। (माकश्रमीश (श्र) व्हालम। লোকপ্রাদ (পুং) লোকে প্রবাদ:। অনপ্রবাদ, অন-সমালে প্রচলিত প্রবাদ। লোকপ্রসিদ্ধি (ত্রী) খ্যাতি। (मिक्वसू (गूर·) > निव। २ ग्र्या। লোকবাদ্ধব (পুং) পোকানাং বাদ্ধবঃ। ১ প্র্যা। (কটাধর) २ कमनम्ट्न वर्षे । লোকবাছ .(পুং) লোকাৎ লোকসমাভাৎ বাহ্য। সর্বাচার-वर्ष्कितः "(बाक्वाक्ष वाकिश्वाबीतात्रवर्ष्कितः।" (क्रोधित) **ल्याकिविन्यू मात्र** (ही) ऋत्याठीन अपूर्णन रेकन मृत्यीत त्यवारण। লোকভর্ত্ত (পুং) ক্ষমসাধারণের অরলাভা। লোকভাজ (বি) शमाविकाती। शमवानी। (শভগখরা°ঀ৻রাস৮) লোকভাষন (ত্রি) কগতের সকলবর্ছনকারী। (ভাগ° ৩১৪।৪০) त्नाकक्षांचिन् (बि) वनश्चर्काः (त्रावा 8। 88। 8१) লোক্ষয় (বি) স্থাননর। কালাধার। (ভাগ° বাবাহার) লোকমর্য্যাদ। (খ্রী) > চিরতন পছতি। ২ ব্যক্তিবিলেবের সম্বাদনা। লোকমাত (ত্ৰী) লোকানাং ৰাভা। > সন্ধী, ক্ৰমা। ২ গোকের জননী। "প্রতিষ্ঠাকান: পুরুষো রোধনী লোকমান্তরো।" (ভাগৰ্ভ ২১৪৫) (लाकमार्ग (११) > व्यव्यविख्यक्ति । स्यापाल शहा ।

लाकः नुन (a) » काशानी । र नर्सगामी । "लाक्श्यूरेनः পরিমলৈ: পরিপ্রিতভ কাশ্রীয়কভ" (ভাদিনীবিলান) জ্রিরাং (नाक्श्र्रणा-इंडेकार्चम। (नाक्श्र्रणा, मञ्ज्रार्थ गहकारत এই रेडेक बाता रखीत विषी निर्धाण कतिए इत । (वाक्नरामक्रमः शिखा २२। ६४) লোক্ষান্ত্রা (জী) লোকানাং বাত্রা। সংসারবাত্রা, জীবন। লোকযাত্রাবিধান (দী) (Political Economy) সংসাদ-যাত্রানির্কাহের বিধিদর্শক নীতিশাস্ত্রবিশেব। লোক্যাত্ৰিক (a) শীবনযাত্ৰা নৰ্মীয়। লোকরক (খং) রাজা, নরপতি। লোকরপ্রন (জী) লোকত নধনং। লোকের প্রীতিসম্পাদন. লোককে সম্ভষ্ট করা। লোকরব (গুং) জনরব। (लाक्टलथ (११) ब्राव्यविकाशि। (वाक्टनाइन (११) लाकानाः लाउनमिव । > १र्यः । (भवत्रक्रा°) (क्री) २ लात्कत हमू, सममम्दर लाहन। "সেহস্বত্তৎপাক্ষিবাতেন ব্দ্রেণেবেরিতঃ শরঃ। জগাম কাপ্যতিজবাদলক্ষো লোকলোচনৈ: ॥" (क्थानविष्ना[°] >৮। ৯২) (ल)क्वठ्य (हो) बनवर। লোকবৎ (ত্রি) লোক সদৃশ। লোকবর্ত্তন (ক্লী) মহবাচরিত্র। রীভি-নীভি। লোকবাদ (পং) লোকত বাদ:। লোকপ্রবাদ, জনশ্রুতি, যাহা সচরাচর লোকে বলিয়া থাকে। লোকবার্ন্তা (ত্রী) জনরব। (लाकवाञ्च (बि) > लाकविश्च ७, भागवदे। २ लाक-বহনীয়। ৩ জাভিচ্যুত। লোকবিক্রেফ্ট (জু.) যে ছলে লোকসমূহের বিজ্ঞোশ হয়। লোকবিষ্টি। "পরিভালেদর্থকামৌ বৌ স্থাভাং ধর্মবর্জিভৌ । धर्मकानाञ्चरधापकः (नाकविक्हेरम्व ६ ॥" (मझ ॥।३१७) 'लाकविक्डेर वय लाकांबार विद्यानाः' (कृत्र्क) লোকবিজ্ঞাত (জি) বিখাত, লোক জানিত, প্ৰসিদ্ধ। (माक्विम् (११ः) व्राप्य । (लाकविश्विके (बि) लाकनिक्षिक, बनगगुरुद निकंप्रे दिस्त-ভাৰাপর। **"অনা**রোগ্যবনার্শ্যব**র্থাক্তিভোত্তনর্**। मन्पार लाकविकिः छत्राचर नतिवर्करार ह" (यह शहर)

(लाक्कविशि (ग्रंर) > एविनक्क । २ वनस्कत्र निवका ।

লোকবিনায়ক (পৃং) লোকে বিনায়ক ইব। একবিশেন। ইবানা রোগের অধিঠাতা বদিনা ক্রিভ।

শ্বন্দথানারে বে চ পার্যক্রাসকাষর: ।
কৌমারাকে তৃবি জেরা বে চ লোক্ষিনারকাঃ।
সহলেশতসংখ্যাতা মর্জ্যনোক্ষিরারকাঃ ॥
(অনিপ্
)

লোক্বিন্দু (তি) > शानकाती। । ২ মূকি বা শাৰীনভাঞান্ত। শোক্বিল্রেন্ড (তি) বিশাতঃ

লোকবিশ্রুনতি (খ্রী) লোকে বিশ্রতিঃ। জনপ্রতি, কিংবক্রী। লোকবিসূর্ব (খুং) কগংখন্ট। প্রজাসর্জন।

লোকবিস্তার (গং) লোক্ব্যাণৃতি।

লোকবীর (গ্রং) পৃথিবীয় প্রপ্রসিদ্ধ বীরর্শ। **এই** শব বহুবচনার।

লোকবৃত্ত (রী) > জন্ন কথোপকথন। ২ নৌধিক জাচার। লোকবৃত্তান্ত (গ্ং) > সহবাচন্তিত্র। ২ জীবনের ঘটনা-নিচর। প্রাচীন ইতিস্তা।

লোকব্যবহার (গৃং) সাধারণে প্রচলিত রীতিনীতি। লোকব্রত (ক্লী) মহব্যসমাজের প্রচলিত ক্রিরাপছতি। লোকপ্রেড (ব্রী) > জনস্রতি, কিংবদরী। ২ খ্যাতি, প্রসিদ্ধি। লোকসংব্যবহার (গৃং) বৈদেশিক বাণিকা।

লোকসংস্তি (বী) অনৃষ্ট। "স্বীবনোকস্ত লোকসংস্থতিঃ" (ভাগ- অ২৯৩)

লোকসক্ষর (গুং)> জাগতিক বিপ্লব। ২ জনসমাজে মিধ্যা-চরণকারী। (রামারণ ২ং১০৯াও)

লোকসংক্ষয় (পুং) > জনক্ষয়। ২ জগতের ধ্বংস।

লোকসংগ্রহ (গ্ং) > লোকসনবর। ২ বাংবারিক অভিজ্ঞান। ৩ জগবাসীর পরস্পারের সম্মীতি ও সন্তারণ। ৪ সমগ্র জসং। ৫ জাগতিক মঙ্গল।

লোকসনি (গুং) > ছানকারী। ২ নির্বেগমার্গসাধক। (গুরুবকুঃ ১৯৪৮)

লোকসাক্ষিক (জি) > স্বগদ্বাসীর সহবোদিত। (স্বন্ধ) সান্ধি-সমকে।

লোকসাক্ষিন্ (পুং) > রক্ষ । ২ জরি। (রানারণ ৬)১০১।২৮) ৩ প্রা

"লোকণাকী ডিলোফেশ: কর্জা ক্রমিলবাঃ" (ক্র্যুক্তর) লোকসাথ (জন্য-) নাবায়ণের নালার্থে। (ক্রমারিংনা"৯০।০০) লোকসাথ কুক্ত (জি) লোকের নালার্থে জন্ত্রীত ।

(माक्नावक (वि) मनरशहराती।

লোকসামশ্ (जी) गावरण्य : (সাঁচাত সংবাচত) ব্যোকসিদ্ধু (বি) ১ অসিদ। ২ আগেত। ত সাবারণে গ্রীত। লোকসীমাভিবর্তিন্ (বি) ১ সাধারণ দীনার পবিস্থাত। ২ অসোদিদ, সম্বাভাবিক।

লোকস্পার (পুং) > ব্যক্তের। (লনিডবিভর) (জি) ২ লাখা-সংগ বাছাকে স্থান বনিরা এবন করে।

লোকস্থল (দী) দৈনন্দিন বটনা ৷ (সুস্থান্ধলি ৫৯৮)

লোকান্থিতি (খ্রী) > প্রচলিত পদ্ধতি। ২ জাগতিক নিরম।

লোকস্পৃৎ (बि) লোকসনি। (ভৈত্তিরীরসং গণেংগ্রহ)

লোকস্মুৎ (বি) সগতের মাল অস্থানকারী।

"লোকস্থ পৃথিবীলোকত পর্তা" (দৈকেরোপনিবদ্ ৩৩৫ ভাষ্য)
লোকস্থান্ত (জি) ১ জগতের হাজান্দদ। ২ নাধারণের উপ-হাস্য (বটনা বা বস্ত)।

লোকহিত (বি) লোকন্য হিডা । জনসমূহের বন্ধ। নামবের হিডকর।

লোকাকাশ (গ্ং) > আকাশ, শৃতহান । বৈননতে, জগতের সংশ বিশেষ, এইহান অমুক্ত জীবসক্ষের বাসভূনি।

লোকাক্ষি (গ্রং) আচার্যাজ্যে। মন্ত্রসংহিতার ৩১৯০ চীকার কুলুক্তট ইহার উরোধ করিরাহেন।

লোকাহ্নি, ৰান্দিণাড্যের কান্দিপ্রনিবাদী চিত্রক্ত্র পুত্র।
তিনি জানোপার্জনের পর রাজধানী পরিত্যাগ করিয়া ইনিকে
আনিয়া বাদ করেন। "মহাজনঃ বেন গডঃ দ পছা" এই
নীডি বাক্য তাঁহার জীবনের দুল মঞ্জ ছিল। ডিনি
একধানি জ্যোতিব, স্থতি ও তরুগ্রহ রচনা করিয়া বান।

[লোগান্দি নেব।]

লোকাক্ষিন্, লোগান্দির নামান্তর। [লোগান্দি বেখ।] লোকাচার (প্ং) লোকন্য আচারঃ। অনসন্হের আচার, নাধারণ লোকে যে আচার পদ্ধতি অন্তর্গারে চলিয়া বাবে,ভাহাকে

লোকাচার কৰে। অনেকছলে লোকাচার শার্রবৎ মায়া।

লোকাচার্য্য, অটাক্ষমন্তব্যাখ্যা, ওক্ষম ও বচনক্ষণটাকা-প্রপ্তো। লোকাচার্যাসভাত নামক বেলাভ প্রক্থানি ইবাদ মচিত বলিরা বোধ হয়।

লোকাতিপ (গুং) > অনানান্ত। ২ অভ্ত । ও নাধারণ নিরমের বহিত্ত ।

লোকাভিশন্ন (পুং) > লোকাভিগ। ২ নিজসাধ্য প্রথাবহিছ্ জ।
লোকাজ্বন্ (পুং) > কগতের আজা। ২ বিছু: (রাষা- ১)৪৪।৩১)
লোকাদ্বি (পুং) কগংস্টার আদিকর্জা। বজা। (ভারত- ৭পর্জ)
লোকাদ্বিপ (পুং) লোক্সা অধিপঃ। ১ লোকপান। ২ রেবতঃ
নাব।

ক্ নরপতি।

লোকাবিপতি (খং) > লোকশার। । ই মেরুর। লোকানন্দ, কিরাকার্ক্টিন টাকান্সরিক।

XVII

লোকানু প্রহ (পুং) > কগমসন। ২ প্রকাবর্ণের উরতি।

ত সাধারণের প্রতি অন্তক্ষণা।

লোকাসুরাগ (পুং) জনসাধারণের প্রতি দেহ বা দরা। লোকাস্তর (রী) জন্তৎ লোকং। পরনোক। অন্তলোক। (ভাগ- গাং৮।১৮)

লোকান্তরগ (ত্রি) লোকান্তরং বাতি গচ্ছতি বা লোকান্তর-গম-ড। > মৃত, লোকান্তরগত বা প্রাপ্ত। ২ লোকান্তরগামী। লোকান্তরিক (ত্রি) লোক্ষরের মধ্যে অবহানকারী।

লোকাপবাদ (পুং) লোকে অপবাদ:। জনাপবাদ, লোকনিলা।
"লোকাপবাদে ছনিৰ্বায়া (উত্তয়চ°)

লোকাভিভাবিন্ (ত্রি) নর্মব্যাপী (আলোক)।

ুলোকাভিভাষিত (aি) > ৰগৰা**ছিত। ২ বৃদ্ধভে**দ।

লোকাড়াদয় (গৃং) লোকসা অভাদরঃ। লোকসমূহের অভাদর, জনসমূহের উন্নতি।

লোকায়ত (ক্লী) লোকের আরতং বিত্তীর্ণমিব। তর্কভেদ। চার্যক্রার। (অসর) "প্রারেণের হি মীমাংসা লোকে লোকায়তী ক্লতা" (কুমারিলভট্ট)

লোকায়তন (পুং) > চার্লাক। ধাহারা চার্লাকের নান্তিক্মত অন্তুসরণ করিয়া চলে।

লোকায়তিক (পাং) লোকারতং শারমন্ত্যস্যেতি, লোকারত-ঠন্। চার্কাক।

"ঐকানামাস্থানংযোগসম্বাহবিশারলৈঃ। লোকায়তিকমুখ্যৈত ওজবুঃ স্বন্মীরিতম্ ॥"

(হরিবংশ ২৪৯।৩০)

২ বৌদ্ধভেষ। ই হারা নাত্তিক লোকারত মতাস্থপারে চলেন, এইজন্ত ইহাদিগকে লোকারতিক কছে। "নাস্থ্যানং প্রমাণ-মিতি বদজা লোকারতিকেন" (সাংগাতবকো)

(माकाग्रन (प्रः) नातावन ।

লোকালোক (পং) লোকাতেহলৌ ইতি লোকং, ন লোকাতে

হলৌ ইতি আলোকং ততঃ কর্মধাররং। স্থনামধাত পর্কতবিশেষ। পর্যায়—চক্রবাড়। এই পর্কত সান্ধিবীশা পৃথিবীকে
বেষ্টন করিয়া প্রাকারের স্লায় অবস্থিত আছে। এই পর্কতের
কোন স্থলে প্র্যালোক পরিদুশ্রমান হয়, এইজন্ত লোক এবং
কোন স্থলে প্র্যালোক ক্ষেত্তে পাওয়া যায় না এই জন্ত অলোক;

অতএব প্র্যালোক দেখিতে পাওয়া যায় অথচ বায় না, এইজন্ত
লোকালোক নামে খ্যাত ইইয়াছে।

"নোহৰমিজ্যা বিভৰাত্বা প্ৰজালোপনিৰ্বীলিতঃ। প্ৰকাশভাপ্ৰকাশভ লোকালোক ইবাচলঃ ॥" (রমু ১١৬৮) এই পর্কতের বিবর বেবীভাগবডে এইরূপ নিবিভ আহে—

क्षर्गवान् नात्रम्टक विनिष्ठाहित्मन (य, नात्रमः। ७६ माशस्त्रत्र हत्त्र লোকালোক নামে পর্বাত অবস্থিত। ঐ পর্বাত লোক (প্রকাশ-মান) ও অলোক (অপ্রকাশমান) এই উভর স্থানের বিভাগের জ্ঞ ক্রিত হইয়াছে বশিয়া উহার নাম লোকালোক হইয়াছে। মানসোত্তর ও মেক উভরের মধ্যবন্তী সমত্ত ভূভাগই ত্বর্ণমন্ত ও দর্শণের স্থার নির্মাণ। ঐ স্থানে দেবতা ভিন্ন অক্ত প্রাণীর সমাগম নাই। ঐ স্থানে যে কিছু বন্ধ স্থাপন করিলেই তাহা স্বৰ্ণ হইরা বার, এইজন্ত ঐস্থলে কেহ আলে না। পরমেশ্বর ঐ পর্বতকে তিন লোকের দীমান্থানে রাথিয়াছেন, পূর্য্য প্রভৃতি ঞ্বাব্ধি জ্যোতিমান্ গ্রহগণের কিরণসমূহ উহার অধীনেই চতুর্দিকে শোকত্রয়ে প্রকাশ পাইয়া থাকে। কদাচ উহাকে পশ্চাৎ করিয়া বাহির হইতে পারে না। এই পর্বত এত উচ্চ ও বিস্তৃত বে, গ্রহদিগের গতি ততদূর যার না। ঋষিগণ এই लाकालात्कत्र পরিমাণ এইরূপ নির্দেশ করিয়া থাকেন যে, পঞ্চাশৎ কোটি যোজন পরিমিত এই ভূমগুলের চতুর্থাংশ। আত্মযোনি ব্রহ্মা এই পর্বতের উপরিভাগে চতুর্দিকে ঋষভ, পুসচ্ড, বামন ও অপরাজিত নামে চারিটী দিগ্গজ স্থাপন করিয়াছেন, এই দিগ্গজ **দকল দম**গ্র জগৎ রক্ষা করিতেছে। ভগবান্ হরি এইস্থানে সকল লোকের মঙ্গলের জন্ম নিজাংশসভুত দিক্পালদিগের বীর্যা, সম্বত্তণ ও ঐশ্বর্যা বৃদ্ধি করিয়া বিদ্দক-সেনাদি অমুচরগণের সহিত চতুত্বি মূর্ত্তিতে বিরাজিত আছেন। সনাতন বিষ্ণু নিষ্ক মায়ারচিত বিশের রক্ষণ নিমিত্ত করাস্তকাল পর্যান্ত এই মৃর্ত্তিতে অবস্থিত থাকেন। (দেবীভাগ• ৮।১৪ অ•) লোকাবেক্ষণ (क्री) জগতের মললসাধনার্থচিন্তা।

লোকিন্ (ত্রি) > লোকপ্রাপ্ত। ২ লোকপতি। ৩ জ্বগন্ধাস্থ মাত্র, এই অর্থে কেবল বহুবচনেই প্রয়োগ হইয়া থাকে।

লোকেশ (পু) লোকানামীশ:। > এক্ষা। (অমর) ২ বৃদ্ধভেদ।
(একা॰) ৩ পারদ। (রাজনি॰) ৪ ইক্র।

"বথাচ বৃত্তান্তমিমংসদোগতত্ত্বিলোচনৈকাংশতরা গুরাসদ:।
তথৈব সন্দেশহরাদিশান্পতিঃ শৃণোতি লোকেশ তথা বিধীয়তাং ॥"
(রঘু ৩।৩৬)

ৎ লোকপাল। (মন্থ ১৯৭) (বি) ৬ লোকাধিপতি। (ভাগবত ৩৬।১৯)

লোকেশকর, তব্দীপিকা বা ওন্ধবেধিনী নারী রামাশ্রমঞ্জত সিছাস্কচন্ত্রিকার টাকা-রচরিকা। ক্ষেমকরের পুত্র।

লোকেশপ্রভবাপ্যয় (ত্রি) লোকপালগণ হইতে উহুত এক তাহা হইতেই প্রতি নিহত্ত।

লোকেশ্বর (প্:) গোকানাধীবয়:। ১ বুছদেব। (বিকা°) ২ লোকের গ্রন্থ। ৩ লোকপাল। "গ্রহনক্ষত্রতারাভিন্টব্রচিক্স নভন্তলম্। স্থরাধ্প্রেতবিস্তানাং পতীন্ লোকেবরান্ হরান্।" (ভারত ৮।৩৪।২৯)

লোকেশ্বরাজ্মজা (ত্রী) লোকেশ্বরত ব্ছত আদ্মজেব।
বৃদ্ধান্তিভেদ। পর্যায়—তারা, মহাত্রী, ওদ্ধার, স্থাহা, ত্রী,
মনোরমা, তারিণী, জরা, জনস্তা, শিবা, থদ্রবাসিনী, জন্তা,
বৈশ্রা, নীলসরস্বতী, শন্মিনী, মহাতারা, বস্থারা, ধনন্দদা,
ব্রিলোচনা, লোচনা। (হেম)

লোকেন্তি (ত্রী) ইউডেদ। (আৰ° শ্রৌ° ২। ১০। ১৯) লোকৈকবন্ধু (পুং) গোকানাং এক এব বন্ধঃ। গোতম বৃদ্ধ বা শাকাম্নি।

লোটক্ষণা (খ্রী) স্বর্গপ্রান্তির ইচ্ছা।

লোকোক্তি (ত্রী) প্রবাদ, কিংবদন্তী। প্রচলিত বাক্য।

লোকোন্তর (ত্রি) > অসামান্ত, অলোকিক। ২ আদর্শ পুরুষ। ওরাজা।

লোকোত্তরবাদিন্ (পুং) বৌদ্দশ্রদারভেদ।

লোকোদ্ধার (ক্লী) তীর্থভেদ। এই তীর্থ তিলোকপুজিত, এই তীর্থে স্থান করিলে স্থীয় সকল লোক উদ্ধার হয়।

(ভারত এ৬•۱১১ শ্লোক)

লোক্য (ত্রি) > লোকান্বিত। ২ বিস্তৃতস্থানযুক্ত। ৩ যুদ্ধার্থ পরিকৃত স্থানযুক্ত। ৪ জগদ্বাধি।

লোক্যতা (স্ত্রী) শ্রেষ্ঠ লোক্স্প্রাপ্ত। (শতপথবা^প ১০।৩)২।১৩)

লোগ (পুং) > মৃৎপিও, লোষ্ট।

লোগাক (পুং) পণ্ডিতভেদ। [লোগাকি দেখ।]

লোক্সর (পারদী) নদী বা সমুদ্রক্ষে আহার আটকাইয়া রাথিবার জন্ম অভ্নীর আকার লৌহশলাকাবিশেষ।

সোগেষ্টকা (ত্রি) মৃত্তিকানির্দ্মিত ইইকভেন।

(শতপথব্রা° ৭। ৩। ১। ১৩)

লোচ, > ঈক্ষণ, দর্শন। দীপ্তি। ভাদি আয়নে সক সেই।
দীপ্তার্থে চুরাদি পরকৈ অক সেই। লাই লোচতে। লিইসুলোচে। লুই-লোচিতা। লুঙ্ অলোচিই, অলোচিযাতাং
অলোচিযত। সন্ শুলোচিয়তে। যঙ্ লোলোচাতে। চুরাদিপকে
লাই লোচয়তি। লুঙ্ অপুলোচং। আ+লোচ = আলোচন।
লোচ (ক্লী) লোচাতে পর্যালোচরতি স্থত্ঃখাদিক্মিতি
লোচ-আচ্। অক। (জাটাবর)

লোচক (পুং) লোচতে ইতি লোচ-ধূল্। ১ মাংসণিগু।

' ২ অভিভারকা। ৩ কজন। ৪ ব্রীদিগের ললাটাতরণ।

৫ কলনী। ৬ নীলবত্তা। ৭ নির্ক্তি। ৮ কর্পপূর। ১ সুর্বী।

১০ ক্রাবচর্ষ। (মেধিনী) ১১ নির্কোক। (প্রবর্মা)

লোচন (য়ী) লোচাতেখনেনেতি লোচ-ল্যই । চকুঃ।
গক্ষপুরাণে লিখিত আছে,—বজান্ত ও পল্লাভ লোচন হইলে
ক্লখ, বিড়ালের ভার চকু হইলে পাণী, মধুণিজলবর্ণ হইলে মহাশর,
কেকরাক্ষ (টেরা) হইলে জেরুর, হরিণের ভার হইলে পাণী,
কুটিল হইলে জেরুর, গলচকু হইলে সেনাপতি, গন্তীর লোচন
হইলে প্রেড়ু, মূলচকু হইলে মন্ত্রী, নীলোংপলাক্ষ হইলে বিছান্,
ভাবচকু হইলে সোভাগ্যশালী, রক্ষভারকাবিশিষ্ট হইলে চকুর
উৎপাটক, মণ্ডলাক্ষ হইলে পাণী ও দীর্ঘলোচন হইলে নিঃম্ব
হইরা থাকে।

"বজাকৈ: পদ্মপত্রাইডলে চিনেঃ স্থখভাগিনঃ।
মার্জারলোচনৈঃ পাপো মহাত্মা মধুপিকলৈঃ ॥
জুরাঃ কেকরনেত্রাশু হরিণাক্ষাং দ কথাবাঃ।
জিকৈশু লোচনৈঃ জুরা সেনাজ্যোগজলোচনাঃ॥
গঞ্জীরাক্ষা ঈশবাঃ সুমন্ত্রিণঃ স্থলচক্ষ্বা।
নীলোৎপলাক্ষা বিবাংসঃ নৌভাগ্যং ভাষচক্ষ্বাম্॥
ভাৎ কৃষ্ণতারকাক্ষাণামক্ষাম্ৎপাটনঃ কিল।
মণ্ডলাক্ষাণ্ড পাপাঃস্থা নিঃবাঃ স্থান্থলোচনাঃ॥"

(গরুত্পু° ৬৫**অ**°়)

২ জীরক। (বৈছক্নি") ৩ গৰাক। (বাভট উ"৩৯ আ")
লোচনগোচর পুং) দৃষ্টিপথ। দিঘলর। (আ) দৃষ্টিপথারুড়।

লোচনকার (গং) লোচন নামক প্রসিদ্ধ অলন্ধারপ্রণেতা। সাহিত্যদর্পণে (২২। ১৫) ইহার নাম উল্লেখ আছে। অনেকে ইহাকে অভিনবগুণ্ণ বলিয়া মনে করেন।

লোচনপথ (পুং) লোচনশু পছাঃ। নেত্রপথ, দৃষ্টিমার্গ।
লোচনপুর, বালালার বালেরর জেলার অন্তর্গত একটা বলর।
কাঁসবাল নদীতীরে অবস্থিত। বর্ত্তমান কালে নদীর মোক্ষনা
পলিময় চরে পূর্ণ হওয়ার ঐ নগরের চারি পার্ম একণে জললাবৃত হইয়া পড়িরাছে। ৪৫ টনের অধিক বোঝাই লইয়া
নৌকানি এই নদীবক্ষে এখন আর ভাসিয়া ঘাইতে পারে না;
স্থতরাং কুত্র পোতসমূহে মাল লইয়া অদ্রে সমুদ্রবক্ষে রাখিয়া
আসিতে হয়। চাউল ও অগ্রাম্ভ শহাদি অপেক্ষারুত বৃহৎ
নৌকার বোঝাই হয়। ভাঁটার সময় জল সরিয়া গোলে
বড় নৌকাগুলি কাদার পলির উপর আটকাইয়া থাকে।
স্থতরাং সমুদ্রোপক্লবন্তী রড়ে ভাহাদের বিশেষ ক্ষতি ক্রিছে
পারে না। ইহার পার্শে চূড়ামণ নামক বলর অবস্থিত।
নদীর মোহানা ভরিয়া উঠার ক্রমণঃ বাণিজ্যের ক্ষতি
হইতেছে।

লোচনহিত (ঝি) চকুর হিডকর (অঞ্চনাধি)।

লোচনাইক্তা (বা) লোচনাজ্যাৎ বিক্ষঃ তৃথাক্ষ। লোচনা (বা) লোচতে পৰ্বালোচৰকীকি লোচ-গ্ৰু-টাপ্। লোচনা, বৃহণকিংকৰ। (বেম):

লোচনাসর (প্র:) লোচনবোলানর:। চক্রোগবিলের, পর্যার অভিনত্ন। (জিকা")[চক্রোগ কর বেখ]

লোচনা (বী) লোচাজ্ঞেনী লোচ-বুটে, তীপ্। বহাপ্রাবিদিহা, চলিড মুখ্রিমি। (রাজনি*)

লোচনোৎস (ক্লী) নগরভেষ। (রাজভর' ৪। ৩৭২) ইহার অগর নাম নবগোৎস।

লোচমর্কট (গং) গোচমক্তক। (অমরটাকার বানী)

লোচমন্তক (পুং) লোকং দৃশ্তং মন্তক্থ মনুর্নিথেব বহা।
মনুর্নিথোবৰ, চলিত ক্তকটা, কাহারও কাহার মতে ক্ষেত্রব্যানী। পর্যার ধরারা, কারবী, দীপা, মনুর, লোচমর্কট।
(জমর) ২ জনমোরা। (ভাবপ্রাণ)

লোচিকা (খ্ৰী) থাজ্জবাৰিশেৰ, নুচি, দধি ও মৃত হারা মার্দিত এবং উন্দোদকের সহিত ধনিত ও মঞ্চনা গারে নিশ্বিত স্বতহার। ফুট্রসমিতা। (পাক্রাজেবর)

লোট, উনাদ। জাদি° পরত্বৈ- অক- সেট্। লট্ লোটতি। ুল্ড অলোটাং। পিচ্লোটছতি। লুড্অলুলোটং।

লোট, পাণিয়াক বিজঞ্জিক। লোটের বিভক্তি বথা—তুপ্,
তাম, জন্ত। হি জং ত। আনি আব আম। তাং আতাং
আতাং। আ আথাং ধাং। ঐপ অবহৈণ আমহৈপ্। এই
১৮টা বিভক্তি, ইহার প্রেবিজে ১টা গরদৈপদ এবং শেবোজ
১টা আত্মনেপদ। ঐ সকল বিভক্তি প্রথমপুরুব, মধ্যমপুরুব ও
উত্তম প্রক্রেকে ভিন প্রকার। অন্তল্ঞা ও আলীকালার্থে
লোট্ প্রয়োগ হর। [ধাজুলক্ষ দেখ]

লোটন (রী) ইতত্তঃ চাগন। ধৃগার সৃষ্টিত হওন। গোটনপারর। (বেশ্ব) গারাবতত্তের, ইহাদের যাথা নাড়িরা বাটতে ছাড়িরা বিশে পুনঃ পুনঃ ডিগ্রাব্রী থাইতে থাকে।

ट्यांछे। (बी) ह्वागानः नावः।

লোটা (দেশৰ) > গড়াগড়ি। (ছিলী) ২ ঘট, অলগানগাত্র। লোটান (দেশৰ) > বলপূর্ণক লুটিত কয়ান। ২ লুঠন। লোটা (দেশৰ) ক্রকার্ট গোলক, জীড়ানামগ্রী।

(ताष्टिका (जी) ह्यांनामरनायः।

লোটুল (পুং) শোটডীডি গোট বাহণকাং উন্চ্। অভি-গোটক। (সংক্ষিয়ার উনা^{*})

লোঠিক, হইজন কৰি। ১ উপাৰের পূবা। ২ জন্নাগদের পূবা। লোড়, উন্নাগ। জ্বাবি পরশৈ অব্ব সেট্। লট্ সোড়ভি। লঙ, অলোড়ীং। বিচ লোড়রভি। সূক্ অনুলোড়ং। লোড়ন (রী) ইতকতঃ চালন, চালা, লোটা। (মাধননি°) লোড়া (কেশৰ) > প্রক্তরপঞ্জ। লোড়ী (কেশৰ) বৃক্তেদ (Phyllanthus longifolius) লোণক (রী) লবণ। (বৈয়ক্তনি॰)

লোণভূপ (জী) লোগং লবপরসর্জ্ঞং ভূগং। লবণভূপ। (রাজনি°) লোগা (জী) লবণমত্যতা ইডি অচ্-টাশ্। পুৰোদরাদিছাং নাধুঃ। ১ ক্লায়িকা।

"লোণা লোণী তু কথিতা বৃহল্লোৰী তু বোটিকা।" (ভাৰঞ")
২ চালেরী, আমরলপাক। লোগিকাকা, ছোটনুণী ভ্ বছনুণী। (রাজনি")

(लांग) (लनम) नवनाक नवनयूक।

লোণাভাটী (দশব্দ) কুপবিশেষ (Solanum pubascens)
লোণামান্ত (দশব্দ) > লোণাবদে বে নাছ ব্যন্তে, ভাহাকে
লোণামান্ত কৰে। ২ ইলিলাদি নৎক্ত। সৰণ নধ্যে জৱাইয়া
বে নৎক্ত বন্ধিত হয়, ভাহাকেই সাধারণতঃ লোণামান্ত বলিয়া থাকে।

লোণার, মধ্যভারতের বেরার বিভাগের বৃদ্ধানা জেলার জান্ত-গত একটা নগর। জক্ষা ১৯°৫৮'৫০'' উ° এবং ত্রাঘি° ৭৬° ৩০' পৃঃ। এখানকার অধিবাদিগণের মধ্যে ব্রাক্সপের সংখ্যাই অধিক।

এই হান অতি প্রাচীন। পর্বাতের ক্রমনির্মেক্ত পাদমূলে অবহিত। এখানে লোগার নামক লবণ-জলসূর্থ একটী ব্রদ্ আছে। কিবেদরী আছে বে, ঐ হদগর্তে লানবপ্রের্চ লবণাস্থর বাস করিত। গোলোকবিহারী বিষ্ণু অলর বালকের রূপ ধরিরা ধরার অবতীর্ণ হন। বাসকের মোহনারপে মুগ্ধ বইরা লবণাস্থরের তগিনীঘর তাঁহার প্রথমে আক্সই হইরাছিল। পরে বিষ্ণুর মোহজালে জড়িত হইরা, তাহারা বিষ্ণুর নিকট প্রাতার নিজ্ত নিকেতনের সন্থান বিদিয়া বের। তথন বিষ্ণু পারন্দর্শন বেই গুপ্ত বাসতবনের আবরণ প্রতার উর্বোচন করিবা ভূতলে প্রবেশসূর্বাক গৃহমধ্যে নিজিত লবণাস্থরকে নিহত করেন। বিষ্ণু কর্ত্বক লবণাস্থর নিহত হইলে নেই ছুল্বপ্রেই তাহার সমাধি হর এবং তাহার রক্তে ঐ বর্গ্ধ পূর্ণ হইরা। এবনও হানীর লোকে লোগার ক্রমের বর্ণায়ে জন্মক লবণাস্থরের রক্ত এবং বিষ্ণুপাদম্পর্যাণ প্রবিদ্ধ ব্যবিদ্ধা আন

ক্রিয়া থাকে। নিক্টবর্জী ধাকেরাল নামক স্থানে একটা গওলৈল আছে। উহার বিভৃতি ও লোগান্তদের বৈড় প্রার সমান। লোকে ঐ লৈলকে লবগাস্তর-ভবনের আহ্হাদনপ্রস্তর বলিরা মনে করে। বিফুকর্তৃক ঐ প্রস্তর পানাস্থ্য লাকে উৎক্ষিপ্ত হইরা এথানে নিক্ষিপ্ত হইরাছিল।

এই ব্রুদের প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্য বড়ই মনোরম, ইহার চারিদিকে ব্রাকারে ৪০০ ফিট্ উচ্চ পর্বতসাত্ম বিরাজিত। এই
সাহদেশে অসংথ্য মন্দির ও কীর্তিক্ত ধ্বংসাবত্বার পতিত
রহিয়াছে, এখন সে সম্দার প্রার জললে আবৃত। উহার
উপরের পাড়ের পরিধি প্রার ৫ মাইল এবং জলের সমীপবর্ত্তী
স্থানের পরিধি প্রার ০ মাইল। এতত্তির পাড়ের খাড়াইএর কোণ
৭৫° হইতে ৮০°। ব্রুদের গভীরতা ও তাহার ঢালু পাড়ের
অবহা পর্যাবেক্ষণ করিয়া ভূতত্ববিদ্গণ বলিয়া খাকেন বে, উহা
এক সময়ে কোন আলেরগারির মুখ ছিল। পার্থবর্ত্তী পর্যতের
প্রেত্তররালি আজিও তাহার সাক্ষ্য দিতেছে। এ ঢালু পাড়ভূমি
বনসমাকীর্ণ হইলেও, স্তর্বিশেষে বিভিন্ন জাতীর বৃক্ষ উৎপন্ন
হওরার উহার সৌন্দর্য্য আরও চিন্তাকর্থক হইরাছে। সর্ক্মিন্তস্তরে প্রার ৬০০ গল বিভ্নত বেইনী মধ্যে কেবল তেঁতুল ও
বাব্লা গাছের সার দেখা যায়। তাহার উপরে সেগুণ গাছের
বন, মধ্যে মধ্যে অস্তান্ত গাছও আছে।

ব্রদের দক্ষিণস্থ পর্বতপৃষ্ঠে একটা ক্ষুদ্র গর্ত্ত বা প্রপ্রবণ আছে।
ঐ স্থান হইতে নিরস্তর স্থমিষ্ট জলরাশি উল্লাভ হইরা প্রোভো-বেগে ব্রদগর্ভে আসিরা পড়িভেছে। ঐ প্রপ্রবণের সম্পুথে একটা মন্দির আছে।

হুদের ঢালু দেশের বনপ্রদেশ ও জলগর্জের মধাবর্ত্তী স্থানে একটা বিস্তৃত কর্দমাক্ত ভূমিভাগ দৃষ্ট হয়। বর্ষাঞ্চুতে উল্লাক্ত জলমার হইয়া যায়,কিন্ধ অপর সমরে জল গুকাইয়া বা সরিয়া গোলে চতুপার্ঘেই একটা বিত্তীপ ক্ষেত্র পতিত থাকে, উল্লাক্ত কথনও কোন শস্তানি উৎপর হয় না। ছুদের জল লবণমিপ্রিত থাকায় ঠা কর্দমাক্ত ক্ষেত্রও লবণরসসিক্ত হইয়া থাকে। এই জস্ত সামাক্ত ওকাইয়া আসিলে উল্লাক্ত হইয়া থাকে। এই জস্ত সামাক্ত ওকাইয়া আসিলে উল্লাক্ত থাকার। তথন ঠা মুক্তিকা হইতে লবণ সংগ্রহ করা হইয়া থাকে। তথাকার লবণে শতকরা ৩৮ ভাগ অঙ্গারায়, ৪০ ৯ কার (Soda), ২০ ৬ জল ও ০ ৫ কঠিন পদার্থ এবং সামাক্ত মাত্রায় সল্ফেট পাওয়া যায়। এই ক্ষায় সাবান প্রবৃত্ত কার্যেই ব্যবহৃত হয়।
লোণিকা (ব্রী) লোলীশাক, খ্লেল্বী, বনলুনী। (পর্যায়সুর্ণ) ২ চাজেরী, আবদ্ধন ও ওচিক্তান, চুকাপালং। (বৈভক্তি)

লোণী (রী) প্রশাক্ষিণেক, (Portulace quadrifida)

वफ वा वन नृती, भूरमनृती। हिमी---नृतिश्वानांक वा नृतिश्वा, बुक्का, रिकनक-गरेनकृत, वरच-कृति, कामिन-कातिनकीतहे। हेरा **१६ धनात क्म ७ तृहर । कृत्मत थन---क्क, श्रक्न, वाजरक्षश्रहत.** অর্শের, দীপন, অয় ও মন্দারিনাশক। বৃহত্তের গুণ--করে, উঞ্চ, বাতবৰ্ত্তক, কফপিত্তনাশক, বাগ্লোবনাশক, ত্ৰৰ, গুৰু, খাস, কাল ও প্রমেহনাশক, শোধনাশক এবং নেত্ররোগে হিতকর। **লোণী, বুক্ত প্রদেশের মিরাটু জেলার গাজিয়াবাদ ভহনীলের** স্তর্গত একটা প্রাচীন নগর। এখন সীত্রই ও জনপুর হইরা পড়িয়াছে। দিলীখন পৃথীরান্দের প্রতিষ্ঠিত একটা প্রাচীন ছর্গের জন্নাবশেষ জন্মাপিও সেই কীর্ত্তিশ্বতি বহন করিতেছে। মোগলসমাট্যাণ মুগন্ধার বহির্গত হইরা প্রারই এখানে স্মাসিডেন। তাঁহাদের প্রাবাদ শ্রীহীন অবস্থার পতিত রহিরাছে। ১৭৮৯ श्रद्धात्म मुमारे मरुवानभार अशास अकरी छेनवन ७ हीविकी হাপন করান। ঐ দীর্ঘিকা ও উপবনে জল আনাইবার জন্ম প্রথমে তাঁহারই উভোগে পূর্ব-বমুনা-খাল কাটা হইরাছিল। বাছাছর শাহের মহিনী জিনাৎ মহল উল্দীপুরে প্রাচীর-পরিবেটিত ও প্রবেশছারাদি-পরিশোভিত একটা ফুলর উন্থান নির্দাণ করাইরাছিলেন। উহার মধ্যে উজ্জল লোহিভবর্ণ প্রাক্তরনির্দ্ধিত খ্যবেলগোভিত প্রসিদ্ধ বারদোয়ারী বিশ্বমান। এভন্তির ভথার মোগল-রাজবংশধরগণের আরও অসংখাকীর্ত্তি পরিলক্ষিত চটনা থাকে। সিপাহী যুদ্ধের পর ইংরাজরাজ এই নগর মোগলাধিকার হইতে কাড়িয়া লন। এই স্থান এখন লৌদ্র্যাহীন।

লোত, (পুং ফ্লী) সুনাতীতি লু (হিসিমূগ্রিণিতি। উণা° ৩৮৬) ইতি তন্। ১ ভেরধন। ২ লোগু, লোত্র, কুম্প। ৩ নেত্রাধু। ৪ চিহ্ন। ৫ লবণ। ৬ অঞ্পাত।

লোত্র (রী) লুনাজীতি লু-(সর্বধাত্জাট্রন্। উণ্৪।১৫৮) ইতি ট্রন, যবা লা (অনিত্রাদিভা ইত্রোত্রো। উণ্৪।১৭২) ইতি উত্র। লোভ, নেত্রকল।

লোদী, প্রাচীন রাজবংশভেদ। ২ দিরীর খনামপ্রাসিক সুসল-মান রাজবংশ। [ভারতবর্ধ দেখ।]

লোধ (পুং) কথ-অচ্, রক্ত লঃ। স্থলামধ্যাত বৃক্ষ।
লোধরান্, পরাবপ্রদেশের মূলতান জেলার অন্তর্গত একটা
তহদীল। অক্ষা° ২৯°২১ ৪৫ হিটতে ২৯°২৯ ৪৮ উ: এবং স্রাঘি°
৭১°৪ হিটতে ৭১°৫১ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ৭৮১ বর্গমাইল।

এই লেশভাগ শতক্রনদীকুলে অবহিত। অধিকাংশ স্থানই পর্কত ও বালুকামর হওরার এখানে শতাদি উৎপাদনের বিশেষ স্বিধা নাই। গম, স্থার, বজুরা, তুলা, বব ও নীল এখান- কার প্রধান পণ্য দ্রব্য। লোধরান্ নগরে একজন ভব্নীজনার থাকেন। তিনি এখানকার দেওয়ানী ও কৌজনারী বিভাগের

বিচার করেন। এই তহসীলে সর্কসনেত ১৭৯টা নগর ও গ্রাম আছে।

লোধা, ঠনী দহাসভাদানের মুসলমানবিভাগের একটা দাখা।
ইহারা অবোধ্যার সুসলমান ঠনীবংশসমূত্ত। নেপালের তরাই
প্রবেশে ও অবোধ্যার সীমান্ত প্রবেশে ইহাবের বাস আছে।

লোধি, ক্ষিজীবী হিন্দু জাতিবিশেষ। মধ্যভারত, বৃজ্ঞপ্রদেশ ও ভরতপুরের সমীপবজী স্থানে ইহারের বাস দেখা যার। জাচার ব্যবহার ও সামাজিক প্রথার ইহারা কুম্মী জাতির জন্মরূপ। এক সমরে ইহারা জববসপুর ও সাগর জেলার বিশেষ প্রতিপত্তি বিভার করিয়াছিল। সম্ভবতঃ ইহারা ধৃষ্টীর ১৬শ শতাকে বৃন্দেলথও হইতে মধ্যভারতে আসিরা বাস করে। তৎপরে কুম্মীরা জন্মনান ১৬২০ গুরাকে লোরাব হইতে তলেশে গমন ক্রিরাছিল। মহারাইদেশে এই কারণে উত্তরভারতের লোধিরা 'লোধি পরদেশী' নামে ক্থিত। তথার ইহারা রাখাল ও বরামীর কার্য্য করিরা থাকে।

ইহারা দৃঢ়কার, বলি । ও কর্ম্ম । ক্লবিকার্য্যে কুর্মীদিগের ছুলা; কিছ তাহাদের স্থার শান্তিপ্রিয় নহে। ইহারা দান্তিক, জ্বত্যাচারী, পরস্বাপহরণপ্রিয় ও প্রতিহিংসাপরারণ। নর্ম্মদা সিরিছিত প্রদেশে ক্লবিকার্য ব্যতীত ইহারা দস্থার স্থায় অপরের অর্থ দুঠন করিরা আত্মসাৎ করে। বিজ্ঞোহের স্ট্রনা দেখিলে সর্ক্লান্তে বিজ্ঞোহি-দলে বোগ দিরা আপনাদের অর্থাপহরণম্পৃহা চরিতার্থ করিরা থাকে। মৃগরার ইহারা বিশেব পটু। ইহাদের অব্যর্থ সক্ষ্য হইতে দ্রম্থ শিকার পরিত্রাণ লাভ করিতে পারে না। তীর অথবা বন্দুক-চালনার ইহারা বিশেব ক্লিপ্রহত্ত। এই কারণে ইহারা সর্ব্বতোভাবে সৈনিকের কার্য্য করিবার উপর্যুক্ত। দক্ষিণভারতে এই জাতীরের অনেকেই সৈনিকর্ত্তি অবলম্বন করিয়াছে।

ইহাদের মধ্যে বহবিবাই ও বিধবাবিবাই প্রচলিত আছে।
বিবাহিত বিধবা পদ্ধী ও পাস্তমতে পরিণীতা ভার্যার কোনরূপ
পার্থক্য নাই। সাগাই মতে বিবাহিতা বিধবা স্বজাতীর না হইলে
ভামী গ্রহণ করিতে পারে না। অধিকাংশ স্থলে বহু দূরসম্পর্কীর
ইইলেও বিধবাগণ দেবরকে বিবাহ করিরা থাকে। এইরূপে
বিবাহিতা পদ্ধীর সন্তানাদির পিতৃসম্পত্তিও যেরূপ অধিকার,
অগ্নিসাক্ষাতে পরিণীতা পদ্ধীর প্রগণেরও সেইরূপ সমান
অধিকার।

লোধিকা, বোধাই প্রেসিডেন্সীর কার্টিরাবাড় বিভাগের হলার প্রার্থিত একটা কুল সামস্তরাজ্য। এই সম্পত্তি এখন হই সংশে বিভক্ত হইরাছে। উক্ত উভর সামস্তরাজ্বংশের মোট স্পার ২৫ হাজার টাকা, তশ্বধ্যে ইংরাজরাজকে বার্বিক ১২৮৭ ও জুনাগড়ের নবাবকে ৪০৫ টাকা কর দিতে হর। লোধিকা গ্রাম রাজকোট হইতে ১৫ মাইল ও গোগুল হইতে ১৫ মাইল উত্তরপশ্চিমে অবস্থিত।

লোধিখেরা, মধ্যভারতের ছিন্দবাড়া জেলার সৌসর তহসীলের অন্তর্গত একটা নগর। অন্তর্গ ২১°৩৫ উ: এবং জাদি ১৮° ৫৪ পূ:। মিউনিসিপালিটা থাকার নগরে রাজকীর সমৃদ্ধির অভাব নাই। হানীর শিরের মধ্যে উৎকৃষ্ট পিত্তলের বাসন ও তামার হাঁড়ি পাওরা বায়। এতদ্কির এখানে এক প্রকার মোটা কাপড় প্রস্তুত হইরা থাকে। নিকটবর্ত্তী স্থানবাসীরা উহা পরিধানার্থ ক্রের করিয়া থাকে।

লোধ (পং) কণজীতি কথ-বাছৰকাৎ রন্ রশু লছম্। লোধবৃক্ষ।
(Symplocos racemosa) লোধকাঠ। হিন্দী—লোধ, তৈলক—
তেললোটগাচেটু, গর্জ, লোদর, লোদ্দুগ। মহারাট্র—হরা।
সংস্কৃত পর্যার—গালব, শাবর, তিরীট, তিব, মার্জ্জন, এই ৬টী
খেত লোগ্রের পর্যার। রক্ত লোগ্রের পর্যায়—লোগ্র, ভিল্লতক, ও
তিবক, কাস্তকীলক, হেমপুশাক, ভিল্লী, শাবরক। ইহার ভণ
ক্যায়, শীতল, বাড, কফ ও অন্তনাশক, চক্ষুর হিতকর, বিধনাশক। (রাজনি°)

এই বৃক্ষ নেপাল ও কুমায়ুনের পার্কান্ত প্রদেশে, কোটার ক্ষলনে, বাঙ্গালার সমতলক্ষেত্রে বিশেষতঃ মেদিনীপুর ও বর্জমান জেলায় এবং বোখাই প্রেসিডেন্সীর ঘাট পর্কাতমালার জত্যুচ্চ ক্ষল মধ্যে এই বৃক্ষ জন্মিতে দেখা যায়। এই কুল বৃক্ষ ১০ হউতে ১২ ফিট্ পর্যান্ত উচ্চ হয় এবং গুঁড়ির পরিধি ২০ ইঞ্জির অধিক হয় না। ইহার কাঠ দৃঢ়, খেত বা ঈবৎ হরিদ্রান্ত। ইহাতে উৎক্লই পোদাই হইতে পারে।

লোধ গাছের শিকড়ের ছাল হইতে এক প্রকার লাল রঙ্ পাওয়া যার। তৈল, বত্র ও অস্তান্ত ক্রবার করিতে ইহার বছল ব্যবহার আছে। ঐ শিকড় এখানে সাধারণতঃ প্রতি টাকার /৪ সের মাত্র বিক্রীত হর। শিক্ত চূর্ণ করিয়া আবীর প্রস্তুত হর। হিন্দুমাত্রেই দোলপর্কে ঐ কাগ ব্যবহার করিয়া থাকে। [আবীর দেখ।]

উত্তেলক, বলকর ও রেচকাদি গুণমুক্ত হওরার বৈশ্বকে এই ভেরজের যথেষ্ঠ ব্যবহার দেখা যার।

লো প্রকর্ক্ষ (পুং) লোগ্র এব লোগ্রক স এব বৃক্ষ:। লোগ। লোধপুষ্প (পুং) মধ্কর্ক, চলিত মউল গাছ। (বৈভক্নি°) লোধ পুষ্পক (পুং) শালিধান্তবিশেষ। (ভাবপ্রঃ)

লোধ পুলিপণী (ত্রী) হস্থগাতকী, কুড গাইকুল। (বৈদ্যক্রি") লোনারা, অবোধা আদেশের হার্দেটি ফেলার অন্তর্গত একটা, নগর। আর সার্দ্ধলিভাক পূর্বে নিকুভগণ মুহম্কী হইতে দক্ষিণাভিমুখে আসিরা এই স্থানের আধিম অধিবাসী কামান্গার-দিগকে বিভাড়িত করিরা আপনারা এই নগর অধিকার পূর্বক বাস করে। এখনও নিকুত্বগণ এই স্থানের স্থাধি-কারী রহিরাছে।

লোনেলী, বোদাই প্রেসিডেন্সীর পুণাজেলার অন্তর্গত একটা
নগর। ভোর গিরিসকটের সর্কোচ্চ ছানে অবস্থিত। গ্রেটইণ্ডিয়ান্ পেনিন্ফলার রেলপথের দক্ষিণপূর্ব্ব লাখার মধ্যে ইহা
একটা প্রধান ছান। এখানে রেলকোম্পানীর কারখানা থাকার
বহু রুরোপীর ও দেশীর লোকের বাস হইরাছে। নগরের ২
মাইল দক্ষিণে রেলকোম্পানীর একটা হ্মম্মর গাধনীকরা
বাধ আছে। ঐ বাধের জল নগরবাসীর গৃহে গৃহে পরিচালিত
হইরা থাকে। এখানে অনেকগুলি হ্মম্মর অট্টালিকা,
প্রোটেষ্টান্ট ও রোমান্ কাথলিক ধর্মমিদার, মেসনিক লজ,,
রেলওরে কুল, কো-অপারেটিভ ষ্টোর প্রভৃতি বিভ্যমান দেখা যার।
নগর পার্শ্বে একটা হ্মম্মর বন আছে।

লোপ (পুং) দুগ-ঘঞ্। > ছেদ। ২ আকুশীভাব। ৩ অভাব। "দোহহমিক্সা বিশুদ্ধাত্মা প্রকালোপনিমীলিতঃ।

প্ৰকাশতা প্ৰকাশত লোকালোক ইবাচল: ॥" (রঘু ১١৬৮)

ব্যাকরণমতে বর্ণনাশ, যাহাতে বর্ণের লোপ অর্থাৎ নাশ

হয়। সকল বিধি অপেক্ষা লোপবিধি বলবান্।

"সকলেভা বিধিভ্যঃ স্থাদলী লোপবিধিত্তথা। লোপস্বরাদেশয়োক্ত স্বরাদেশো বিধিব'লী ॥" (হুর্গাদাস)

লোপক (ত্রি) নাশকারী, বিশ্বকারী।

লোপন (क्री) नूপ-न्गु । मानन।

"কন্তারা দৃষ্ণকৈব বার্ক্ বাং ব্রতলোপনম্। ভড়াগারামদারাণামপতাস্ত চ বিক্রের: ॥" (মহু ১১।৬২)

লোপাক (পুং) লোপং শীষমদর্শনমকতি প্রাপ্নোতীতি অক-অণ্। শৃগাল ভেদ। চলিত লেয়ে, খ্যাক্শিয়াল, ইহাকে লাললকম্গও কহে। (ত্রিকা°)

লোপাপক (পুং) লোপং জ্বতমদর্শনং আপ্রোতীতি আপ-গুল্। শৃগাল ভেদ। (শব্দমালা)

लোপাপিকা (ত্রী) লোণাপক-ত্রিরাং টাপ্, অত ইম্বং। শূগালী। (শন্ধমানা)

লোপার্দ্রা (ব্রী) লোপরতি বোবিতাং রূপাভিধানমিতি লোপা পচান্ত্রণ, আমুদ্ররতি ব্রষ্ট্রং স্টীমিতি আ-মৃদ্রা-অণ্, ততঃ কর্মধাররঃ, কিংবা ন মৃদং রাতি অমুদ্রা পতিওখ্রবারা লোপে অমৃদ্রা। অসন্তামুনির পত্নী।

শ্বভিতে নিধিত আছে বে, ভাত্রমানের শেষ ভিন দিনে অগস্তাকে ও তৎপরে লোপায়ক্রাকে সর্ব্য দিতে হয়। "অপ্রাথে ভাষরে কন্তাং শেবভূতৈত্তিভিনিনৈঃ ॥

অর্থ্য বছারগন্ত্যার গৌড়দেশনিবাসিনঃ ॥" (মলমাসভন্থ)

এই অর্থ্য বন্ধিগনিকে শথে জল রাধিরা বেতপুন্দ, অক্ষত
ও চন্দনাদি রচনা করিরা নিরোক্ত মন্তপাঠপূর্বাক দিতে হয় ।

"শথে তোরং বিনিন্ধিপা সিতপুশাক্ষতৈয় তম্ ॥

মত্তেগানেন বৈ দভাদ্দক্ষিণাশামুপন্থিতঃ ॥"

অর্থানেন বৈ দভাদ্দক্ষিণাশামুপন্থিতঃ ॥"

অর্থানিমন্ত্র—

"কালপুন্পপ্রতীকাশ অধিমান্ধতসম্ভব ।

মিত্রাবন্ধণরোঃ পুত্র কুন্তবোনে নমোহন্ত তে ॥"

প্রার্থনিমন্ত্র—

"আতাশির্ভাক্তিতা যেন বাতাপিশ্চ মহাক্সরঃ ।

সমুল্রং শোবিতো বেন স মেহগন্তাঃ প্রসীদ তু ॥"

লোপামুদ্রার অর্থাদানের মন্ত্র—

"লোপামুদ্রার মহাভাগে রাজপুত্রি পতিরতে ।

গুহাণার্থ্যং মহা দত্তং মৈত্রাবঞ্গণিবল্পতে ៖" (মলমাসভন্থ)

মহাভারতে লোপামুদ্রার জন্মাদির বিবরণ এইরূপ লিখিত আছে। মহর্ষি অগন্তা একদা তাঁহার পিতৃগণকে এক বিবর মধ্যে লম্মান দেখিয়া জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন যে, আপনারা কি জন্ম এইখানে অতিকটে এরূপ ভাবে অবস্থান করিতেছেন, তাহাতে তাঁহারা বলিয়াছিলেন যে, পুত্র অগত্য! তুমি পুত্র উৎপাদন করিয়া আমাদের এই নিরব হইতে উদ্ধার কর, ইহাতে তোমারও মদল হইবে। তথন অগন্তা তাঁহাদিগকে কহিলেন, আমি আপনাদের এই অভিশাব পূর্ণ করিব। তৎপরে অগন্ত্য আপনি পুত্ররূপে জন্ম গ্রহণ করিবেন স্থিন করিলেন, কিন্তু মনোমত কলা দেখিতে পাইলেন না। পরে তিনি মনে মনে বিবেচনা করিয়া যে প্রাণীর যে অঙ্গ প্রত্যঙ্গ অতি উৎকৃষ্ট, সেই সেই প্রাণীর সেই সেই অঙ্গ প্রত্যেক মনে মনে সংগ্রহ ক্রিয়া তৎসদৃশ অঙ্গ প্রত্যন্ন বারা একটা কন্তা নির্মাণ করি-লেন। এই সময়ে বিদর্ভাধিপতি অপত্যের নিমিত্ত তপত্তা ক্রিতেছিলেন। ভাগন্তা আপনার জন্ত নির্ন্মিতা এই কন্তা বিদর্ভরাক্তকে প্রদান করিলেন। দ্বাকা এই ক্যার নাম লোপামূলা क्वाशित्वन । जन्म धरे क्ला योवनत्रीमात्र अधिदार्ग कतिन।

মহর্ষি অগত্য লোপামুজাকে যথন গার্হস্থের উপযুক্ত বোধ করিলেন, তথন তিনি বিদর্জনাথের নিকট গিয়া কহিলেন, রাজন্। পুত্রের নিমিত্ত আমার গার্হস্থ ধর্মে রতি হইরাছে, অতএব আপনি আমার লোপামুজাকে প্রত্যাপণ করুন। তথন রাজা কিংকর্জব্যবিষ্ট হইরা রাজীকে এই কথা বলিলেন, রাজীও কোন সন্তত্তর করিতে গারিলেন না, তথন লোপামুজা রাজা ও রাজীকে কাতর দেখিরা কহিলেন, পিতঃ! আপনি আমার থবিকে স্থাবান কলন। অনপ্তর বিংগগান কলন বাকাছিলারে বিধিপূর্বক অসভাকে এই কলা স্থাবান করিলেন। তখন অসভা লোপানুরাকে জার্যালাভ করিরা কহিলেন, ভূমি এখন কহ্ম্যা রনন ভূমণ পরিত্যাগ করিরা চীর বহন পরিধান কর। লোপানুরা স্বামীর আজ্বাহ্নারে বসন ভূমণ পরিত্যাগ করিলা চীর-বহন পরিধানপূর্বক অগত্যের অহগমন করিলেন।

অপত্য পদাতীয়ে আসিয়া অনুকূলা সহধর্মিণীর সহিত 🕏 🐃 উপজ্ঞা করিতে লাগিলেন। এইরপে বছকাল অতীত হইলে একলা অগন্তঃ তপঃ প্রদীয়া লোপামূলাকে খড়লাডা ৰেখিতে পাইবেন, এবং তাঁহার পরিচর্য্যাভিজ্ঞতা, জিতেজিরতা 🗖 ও রূপদাবণ্যে সম্ভষ্ট হইয়া রতিমানসে তাঁহাকে আহ্বান করিলেন। তথন লোপামুদ্রা অভিশন্ত লজ্জিতা হইরা কহিলেন, আপনি অপত্যার্থে ভার্যা পরিগ্রহ করিরাছেন, কিন্তু আমার অভিনাব এইরূপ বে, আমার পিতৃগুক্তে বেরূপ শব্যা, বসম ও ভূষণাৰি ছিল, ডক্ৰপ পৰ্যা ও বসনভূষণে বিভূষিতা হইয়া আমি আপনার সহিত সমত হই। তথন অগত্য কহিলেন, আমি তপত্ৰী, ব্লাজোচিত বসন ভূষণ ও পথা কোথাৰ পাইব ? ভাহাতে লোপাযুদ্রা হুহিলেন, আপনি তপোধন, তপংপ্রভাবে ক্ষণকাল বধ্যেই সমন্ত সংঘটিত হইতে পারে। অগন্তা কহিলেন, ইহা সভ্য, এক্লপ করিলে আমার তপোবিদ্ন ঘটবে, অভএব বাহাতে আমার তপোবির না হয়, এইরপ আদেশ কর। তখন লোপামুলা কহিলেন, তপোধন। একণে আমার ঋতুকাল ৰোড়ণ দিবদের স্বরমাত্র অবশিষ্ট আছে, কিন্তু অলভারাদি বাডীভ আপনার নিকটবর্ত্তিনী হইতে আমার কোন প্রকারে ইচ্ছা হইডেছে না, এবং কোনরূপে আপনার ধর্মলোপ করি-ৰারও আমার ইচ্ছা নাই; অতএব বাহাতে ধর্মলোপ না হয়, এরপে আপ্রি, আমার অভিলাব সম্পাদন করুন। ইহাতে ব্দগতা কহিলেন, ছডগে। বৰি ডোমার এই প্রকার অভিলাব দৃষ্ হইরা থাকে, ভাষা হইলে আমি ধনাহরণ করিভে বাতা করি, এখানে থাকিয়া তুমি যথাভিগবিভ আচরণ কর।

ভখন ভগতা প্রভর্গ দহীপানের নিকট গদন করিরা কহিলেন, রাজন্ গানি ধনার্থী কইয়া ভাগনার নিকট ভানি-রাছি, ভাগনি ভানাকে ভড়ের ব্যাখাত ব্যতিরেকে এক বিভাগাল্লারে কর্মান্তি ধনদান করুন। তখন রাজা প্রভর্মা ভাগনার আহ্বারের ন্যুদাধিকা না থাভার উল্লাকে কহিলেন, আমার এই আর ও বার পরীকা করিয়া বাবা ভাগনার ভঙ্গিত হয়, তাহা প্রকণ করুন। তথ্য ভারতার লার ও বার সমান ধেবিরা এবং ভাহা হইতে বন প্রকণ করিবে নাজা ও প্রকার রেশের সভাবনা বিবেচনা করির ব্যাহ্রণ করিলেন না
এবং রাষা প্রভাগর সহিত ব্যাহের নিকট গমন করিলেন,
তথার কৃতবার্ত্ত না হইরা প্রকৃত্ত্ব এলাকার প্রভাগির নিকট
গমন করিলেন, তথারও অপরিনিত অর্থ না থাকার বাতাপির
প্রাতা ইবল দানবের নিকট গমন করিলেন। ইবল মেমরূপধারী
বাতাপির মানের ব্যাহ্রিক পরিকৃত্ত করিলেন। অনতর ইবল
বারবোর বাতাপিকে আহ্বান করিতে লাগিলেন, তথন অগত্ত্য
কহিলেন আহি বাতাপিকে আর্থ করিরাছি, তথন ইবল অতি
বিবার ও ভীত হইরা করিকে প্রকৃত্ত ধন দিলেন।

ভগন রাজ্ঞাণ স্থা ব হানে প্রহান করিলেন। অগভ্যা
কর্ম বিরা লোপাস্ত্রার নিকট উপছিত হইলেন।
ভগন লোপাস্ত্রা কহিলেন, ভগবন! আপনি অভি পবিত্র প্রবং
বলবান একটা পুত্র উৎপাদন করুন। অবি ভগান্ত বলিরা
লোপাস্ত্রার সহিত বর্ধাসমরে সঙ্গত হইলেন। লোপাস্ত্রা
গর্ভবতী হইলে, স্বাধি বনগমন করিলেন। লোপাস্ত্রা
ব বংসর গর্ভধারণ করিরা একটা পুত্র প্রসেব করিল। এই
পুত্র সালোপান্ধ বেদজ্ঞানসম্পার এবং অভিশর রূপরান্। অবিগণ ইহার নাম ইয়বাহ রাখিলেন। এই ইয়বাহও ভপঃপ্রভাবে
পিতারই অল্পন্স হইরাছিলেন। (ভারত বনপর্ব ৯৪-৯৮ জঃ)
লোপাস্ত্রান্থিতি (গং) লোপাস্ক্রাহার পতিং। স্ক্রাক্রা

লোপামুদ্রাপতি (গং) লোপাযুত্রারাঃ পতিঃ। অগন্তা। লোপাশ (গং) ঝাক্শিরানের অন্তর্মণ আকৃতিবিশিষ্ট শুগানভেদ।

লোপাশক (গং) লোপং আৰুলীভাবং চকিতমন্নতি অন্-ধূল্। শুগালভেদ। (হারাবলী)

লোপাশিকা (প্রী) লোগাশক-জিলাং টাপ, অভ ইছং। শৃগালী। লোপিন্ (ত্রি) ক্তিকারক। মন্কারী। বিলোপকারী।

লোপ্ত (অ) নিরম্ভদকারী। ক্ষতি-ভারক। লোপ্ত (জী) লগ-ইন। ১ অব্ধন লোক।

লোপ্ত (क्री) শূপ-ট্রন্। ১ জেম্বন, লোড। "তে ভজাবসথে লোপ্তঃ দক্তবঃ কুক্রসন্তম।

নিধার চ ভরাত্মীলান্তরৈবানাগতে বলে ॥" (ভারত ১।১-৭।৫) লোপ্ত্রী (ব্রী) লোপ্ত্-বিশ্বাৎ ভীব্। লোপ্ত্রা (নমরন্ধা -) লোপ্য (ব্রি) লোপবোগ্য ।

লোভ (পুং) নুভ-ৰঞ্। > আকাজন, প্রৱস্থাতিসার, পরের জিনিস সইবার ইছো। পর্যায়—ভুকা, শিলা, রণ, পুহা, কাজন, লংসা, গার্ছা, বাহা, ইছো, তৃব, মনোরখ, কাম, অভিনাব। (হেয়)

ইহার গ্লপ---

"পদবিভাদিকং দুই। লেকুং বো ৰবি বারতে। অভিনাবো বিষয়ের্ড ন লোভঃ পরিকীর্তিতঃ র"

(প্ৰস্থান ক্ৰিয়াহোগনা - ১৯ অ -)

শমবিভানি ক্রিবিয়া আহা দুইবার বাত হাবরে বে অভিদাব হয়, তাহাকে লোভ ফরে। এই লোভ রম্মার অধন্ন দেশ হইতে উৎপন্ন হইরাছিল।

জনব্যাগভবং ক্রোধো লোভভাষরসম্ভবঃ ॥" (সংস্তপূ° ৩ আ°)
গীতার দিখিত আছে বে, সরকের ডিনটী বার, কাম, ক্রোধ
ও লোভ, এইজন্ত সর্বতোভাবে লোভ পরিহার করা কর্তব্য ।
"ত্রিবিধং নরক্তেদং বারং নাশনমান্দমঃ ।

কাম্য ক্রোথকথা গোভকরাবেতত্ত্বরং ত্যক্ষেৎ ॥" (গীতা ১৩৯০)
ক্রগতে একমাত্র লোভ হইতেই বন্ড অনিষ্ট বটিরা থাকে,
লোভই পাপের প্রকৃতি, লোভ হইডেই ক্রোথ, কাম, মোহ ও
নাশ হইরা থাকে, অভএব একমাত্র গোভই পাপের কারণ,
ক্রগতের লোক লোভে পড়িরা বামী, ত্রী, পুত্র ও সহোধর
প্রভূতিকে বিনাশ করিরা থাকে।

"লোভঃ প্ৰতিষ্ঠা পাপক প্ৰস্তিৰ্লোভ এব চ ।
বেবকোধাদিৰনকো লোভঃ পাপত কারণম্ ॥
লোভাৎ ক্ৰোধঃ প্ৰভৰতি লোভাৎ কামঃ প্ৰজারতে ।
লোভান্মাহত নালত লোভঃ পাপত কারণম্ ॥
লোভেন বৃদ্ধিত লোভো কনরতে ভ্বাং ।
ভূকার্ভো হংবমাগ্রোভি পরত্রেহ চ মানবং ॥
মাতরং পিতরং পূবং প্রাভরং বা স্ক্রমম্ ।
লোভাবিশ্রো নরো হত্তি বামিনং বা সহোদরম্ ॥
ইত্যাদি ।
(নানা প্রাণাদি নীতিশাত্র)

লোভন (ক্নী) পুড-কাট। > লোভ। ২ মাংস। (বৈছকনি•) লোভনীয় (বি) পুড-জনীয়র। লোভার্ম, লোভের উপযুক্ত। লোভয়ান (বি) লোভোৱেককারী। লোভা (দেশক) লোজী।

লোভিন্ (ত্রি) লোভোংসাতীতি লোভ-ইনি। লোভব্জ, সূত্র। পর্যায়—গুয়ু, গর্ছন, সূত্র, অভিলাব্ক, ভৃষ্ণক, লোল্ড, লিন্দু। (বেম)

লোভ্য (বি) मृভাতে ইতি দুভ-বং। > লোভনীন, লোভার্ব। (পুং) ২ মূলা। (বেষ) ৩ হরিভাল। (বৈফকনি॰)

লোম [নোমন্] (क्री) > লাল্ল। ২ রোম। পর্যায়—তন্ত্র,
নরীয়ত্ব কেল। ক্ষুদ্রকে এবং জ্ঞান্ত জীববিশেবের পাতচলোপরিত্ব ক্ষা ক্ষা বিবর হইছে বে সকল ক্ষা ও বৃহৎ প্রচারা
ও প্রদা ক্ষা ক্ষালা লারীয়া কেল বিনির্গত ইইছে দেখা বার,
ভাহাই সাধারণতঃ লোম, রোম বা রোমা বলিরা বাচলিত।
ভবের উপরিচানে উৎপন্ন হত্যার ইহার অপর একটা নাম তন্ক্ষা বা অফুলট্ ইইয়াছে। বে বিবরে ক্লনেল রাবিয়া এই সকল
নরীয়ত্ব ক্লেচন পরিবর্তিক হয়, আহা নোকস্প নামে কবিত।

जीवरक्षित्रारं धरे लाग विकित धालात करणा वर्षेत्रा থাকে। পরীর বিভিন্ন অংশে অভি করা হইতে অংশকার্ড স্থাকার ও বুহবারতন লোমরাজি বিরাজিভ বেখা বার। স্থান পার্থক্যাত্মারে উহাবের বর্ণও ভিন্ন ৷ বিশেষ করিয়া পর্যায়েক্তৰ क्तिरण, बहुश भरीरत्रत्र मधक, रूक, शृंह, केन, भागमूल आहुन्दि বিভিন্ন হালে বোর রক্তর্ভণ হইতে ক্রমে রক্ষমিতা গোহিত ও লোহিভাভ লোমরানির সমাবেশ দৃষ্ট হইরা থাকে। 🗳 ভালি नाशात्रभणः क्लम वा क्लान, हुन, लाय, स्त्रांदा अवृष्टि विराद বিশেষ পর্যাবে সমিবদ্ধ। বিভিন্ন বেশীর ভাষারও মাধার**্**কেশ शांकरणारमञ्ज्ञ शृथक् माम निर्विष्ठ इहेन्नारङ् । मङ्गरखन्न शांक-নোম অলেকাক্সত কুন্তভর বঙরার ভাষা বিশেষ কোন কাব্দে আইনে না। মন্তব্য জাতির কেশচর বিশেষতঃ রনগী-কুলের আসুলায়িত কুম্ভলয়াম বেশবিশেষে বিশেষ বিশেষ কার্য্যে ব্যবহৃত হইরা থাকে। উদ্ভর ভারভের *প্র*প্রাচীন প্রদাগতীর্থে পুরুষ ও রমণীগণের মতকমুগুনের বিধি আছে, ঐ সকস ত্বদীর্ঘ কেশচর তথার রক্ষিত ও বিক্রীত হইরা থাকে। উহাতে দড়ি প্ৰভৃতি ব্যবহারোপথোনী মানা **বস্তু প্রভাত হইভেছে।** এতদেশে "চুলের দড়ি" দিয়া বেশী বিনাইবার ব্যবস্থা দেখা বার ৷ ইতিহাস পাঠে জানা বার বে, রোমন্থ কর্তুক কার্বেজ নগরী অবলভ হইলে কার্বেজনিবাসিনী বীরনারীগণ রাজধানী রক্ষা কামনার স্বাস্থ্য শিরোভূষণ স্থাচিত্রণ কেশপ্তক ছিল্ল করিয়া দড়ি প্রস্তুত করিরাছিলেন। [রোম-নারাকা দেখ।]

দারীরিক রোমসংস্থান লক্ষ্য করিয়া চতুল্<mark>যার পশুভোশীকে</mark> আবার বরলোমা ও অভিলোমা নামক বুইটা শ্রেণীতে বিভক্ত করা বার। তিকতে দেশীর ছাগ, ভেড়া, কাবুলী চুবা, চানরী-গো (yak) এবং আইবেক ও লাইলের ংলোদ্কি লাক্ক হরিণজাতির লোম পশম বলিয়া থাতি। কোন কোন কেন্দ্র কুকুর, বিড়াল প্রাড়তি গৃহণালিত জল্প গালে বছল পরিমাণে लाम बरमा। धैकवाशाम जल्मा का चन्नुत्वन व्यक्त प्रकार প্রদেশ ও শীভপ্রধানদানবানী খেডকার ভর ক্লাভিয় গাত্রেও পৰ্যাপ্ত পরিমাণে লোম হইরা খাকে। মহিন্দু বরাহ এড়ডি चंद्रारमाना, भक्षत्र त्याम विरमेष त्याम कार्यक आहेरम मा । ব্যাহের পুঠবেলে শীর্ষাকার বোঁচা বোঁচা এক প্রকার কঠিন लाम छेरला इम, छेरा "मृक्तात कृति" नाटम व्यानिक। छेराटक क्य क्षणि क्षण रहेश थात्य। निरहर मार्थात त्रम स ৰটা ভলি কেশর ; অবের সক্তক ও ব্রীবাসেশহ বিশ্বিক কেশ-য়াৰি চুল, বুটি এবং পুলেষ কেৰঞাৰ বালাব্চি; একজি ব্যায় জগর সকল গভর গানোবরণ চুলজলি "বাল" যা প্রোয মানে পরিচিত।

র্ষিপাদ ও বেচর পশ্দিলাতির ডিখোরেদনের পর পাবকণ্ডনির সাত্রককে ক্ষুদ্র কুল্ল রোমাবলী বেধা বার । পরে ক্রমণঃ তাহা পালকে পর্বাবনিত হইরা বাংসলিশুকে আর্ড করিরা ফেলে। তথন আর বড় সেই লোমগুলি দৃষ্টিগোচর হর না, কিব ব্র শ্রেণীর অন্তর্গত বাহুড় জাতির গাত্রে পালক জানিয়া ক্রমণঃ লোমের পরিবৃদ্ধি পরিলন্ধিত হইরা থাকে।

উভচর অর্থাৎ ছলচর ও জলচর জীবজাতির নথা বিষর, জলইলুর, ডোঁগড়, উদ্বিভাল প্রাকৃতি চতুস্পদ প্রাণীর গাত্রে লোম বেধা যার। ইহাদের লোম এতালুল মক্ষণ যে, জলমগ্র হইয়া উপরে উরিলে গাত্রলোম ক্ষাচ জলসিক্ত হয়। পগ্রানদীতীরবাসী জালিকেরা "উদ্বিভাল" পোবে। উহারা নদীবক্ষে নামিরা মাছ ভাডাইয়া আনে।

মহত্যের কেশ, সিংহের কেশর এবং ঘোড়ার গ্রীবালোম ও বালাম্চী মোটা হর বলিয়া তাহা প্রকার্যের উপবােগী নহে, উহাতে দড়ি, চেন, চেটাই প্রস্তুতি বয়ন করা বাইতে পারে। উরর-পশ্চিম ভারতে চুলের কাছিতে নৌকা বাধা হইয়া থাকে; কিছ তিব্বত, কাব্ল, কালাহার, সমরকল, কির্মাণ, বোথারা প্রকৃতি শীতপ্রধান দেশলাত ছাগাদি পশুর গারলাম প্রকৃত্য এবং অপেক্ষাক্ষত নিবিড় হওয়ার শাল, রামপুরী চালর, পটু, নামলা, সুই, মলিলা, কখল প্রভৃতি উৎকৃত্ত পশ্মী শীতবন্ধ প্রভাগেরালী হইয়াছে। ছাগাদির গাতে ঐ ঘন সন্নিবিত্ত ক্ষেত্রেপ্রামী বিশ্বতাণ ছাগাদি পালন করিয়া বৎসর বৎসর পশ্ম ছাটিয়া লইতেছে। চাল্বান, তুর্জান ও কির্মাণের সালা পশ্ম সর্বাপেকা উৎকৃত্ত, উহাতে একমাত্র কাশ্মীরী শাল প্রস্তুত্ত ইইয়া থাকে। উট্রের লোমেও একপ্রকার মোটা চোগা নির্মিত হইতে দেখা বার।

পটি, লণ বা কাপীন প্রের সহিত রন্ধীণ পদম বিনাইর।
ব্নিলে 'কার্পেট' নামক আসন প্রেছত হর। পারত ও তুর্কিহানে পাটযুক্ত কার্পেট-বরনের বিস্থৃত ব্যবসা আছে; কিন্তু
ভারতে পাকান কার্পাস্থ্র সংবোগ ছারা উক্ত ক্রব্য প্রস্তুত
ছইতেছে। বহু প্রাচীনকাল হইতে কান্দ্রীর, পঞ্জাব, দিন্ধু,
আগ্রা, মীর্কাপুর, অব্দলপুর, বন্নকা, মসলিপত্তন ও মলবার প্রভৃতি
হানে লোমমিন্রিত কার্পেট ব্নিবার কার্য্থনা ও বাণিজ্ঞানে লোমমিন্রিত কার্পেট ব্নিবার কার্য্থনা ও বাণিজ্ঞানে প্রতিন্তিত ছিল। এখন প্রায় অনেক হুলেই সেই প্রাচীন
পদমী নিরের অবন্তি ঘটনাছে। বারাণ্সীক্ষেত্রে এখনও
মধ্যনের কার্পেট ও মুর্নিহাবাদে রেশ্মী কার্পেট প্রস্তুত
হইতেছে। বিস্তৃত বিবরণ পশ্ম ও শাল শব্দে দেখ। ব্রামাক্ষ

লোমকরণী (ত্রী) মাংসজ্জন, মাংসরোহিনী ক্রান্থ । (রাজনি)
লোমকর্কটী (ত্রী) অজনোলা। (বৈভ্রুক্তি)
লোমকর্ক (পুং) লোমযুক্তী কর্ণো বহু । > লাক ।
"গদকণ শশং শৃলী লোমকর্ণো বিলেশর: ।" (ভাকপ্র)
(ত্রি) ২ লোমযুক্ত কর্ণবিশিষ্ট ।
লোমকাগৃহ (ক্রী) স্থানভেদ। (পা ভাওভ্রুত)
লোমকিন্ (পুং) পক্ষী।
লোমকটি (পুং) উকুণ নামক কীট।
লোমকুপ (পুং) উকুণ নামক কীট।
লোমকুপ (পুং) তুক্রজু, লোমের গোড়ার ছিন্ত। শরীরে বভ্রু

"সন্তি যাবন্তি রোমাণি তাবন্তি লোমকৃপকা:।" (ভাবপ্র•)
লোমগর্ত্ত (পুং) লোমকৃপ।
লোমগ্র (মী) লোমানি হরীতি হন-টক্। > ইন্দ্রপুরক, চলিত
টাক্। (ভ্রিপ্ররোগ)(ত্রি) ২ লোমবাতক, লোমনাপক।
লোমদ্বীপ (পুং) নোপিতক কমিভেদ। (চরক চি৽ ৭ অ॰)
লোমদ্বি (পুং) রাজপুরভেন। (ভাগবত >২।১।২৫)
লোমন্ (মী) ল্রতে ছিন্ততে ইতি ল-(নামন্ দীমন্ ব্যোমন্
রোমন্ লোমন্ পাপান্ ধ্যামন্। উব্ ৪।১৫০) ইতি মনিন্ প্রত্যান্
রেন সাধুং। > শরীরন্থ কেশ, পর্যায় তন্কহ, তন্থকহ, রোম,
তন্থকট্। (শব্দর্জা৽)
"যথোননাভি: ক্ষতে গৃহতে চ যথা প্রিব্যামোষধন্ম: প্রভবন্তি।
যথা সতঃ পুরুষাৎ কেশলোমানি তথাক্ষরাৎ সম্ভবতীত বিশ্বম্ম"

মুগুকোপনিবদে ১০১৭।
গর্জন্ত বালকের বর্তমানে লোম জন্মে। এই জন্ত ভ্যান গর্জবতী নারীর বৈণিকাদি কর্মে অধিকার থাকে না। "বর্চে মাসি চ নারীগাং বৈদিকেনাধিকারিতা। উদরহত্ত বালস্ত নথলোমপ্রবর্তনাৎ॥" (শ্বৃতি) অস্থির মল লোম, ইহা শরীরে অসংখ্য হয়।

"আছে। মলানি লোমানি অসংখ্যানি ভবন্তি ছি।" (বৈশ্বক)
লোমন (পং) পাণিনীয় অধ্যুচাদি গণোক্ত শব্দ। (পা॰ ২৪৪০১)
লোমপাদ (পং) লোমানি পাদরোর্যক্ত। অব্দেশীয় রাজবিশেষ। ইনি ক্ষরাপুরুম্নির বক্তর। মহাভারতে নিখিত আছে
যে, অসলেশাধিপতি লোমপাদ রাজা দশরথের বন্ধু ছিলেন।
কোন সমর রাজা লোমপাদ রাজা দশরথের বন্ধু ছিলেন।
কোন সমর রাজা লোমপাদ রাজা দশরথের ক্যু ছিলেন।
কোন সমর রাজা লোমপাদ রাজাগদিগকে অব্দাননা করেন,
তাহাতে রাজাগদিশ সেই রাজা পরিত্যাগ করিরা চলিয়া যান্,
এইজন্ত তাহার রাজ্যে বহদিন ধরিরা আনার্টি হয়। এই
আনার্টি নিবারণের ক্যু তিনি হশক্রমে বেঞ্চাহারা বিভাতকপূত্র খবাপুলকে ভুলাইরা ব্রাজ্যে আনর্ন করেন, একং নিজ
ক্যা শানাকে ইবার হতে সন্ধানন করেন। ব্যাপুর

অকরাজ্যে অনুষ্ঠান করিবামাত্রই পর্জন্তদের কামব্রী হইরা ছिলেন। (ভারত বনপর্ব ১১০-১১২ অ০) (लामशानश्रुती, लामशापत त्रावशानी, हन्ना। লোমপাদপ (ত্রী) লোমপাদত পৃ:। পুরীবিশেষ, পর্যায় চম্পা, मानिनी, कर्पपू। (द्रम) श्रम्भ इतिहाला । এই मधनीटक वर्समान ভাগলপুর ও তৎসমীপবন্তী বলিরা অনুমান করেন। লোমপ্রবাহিন্ (a) লোমং প্রবাহতীতি প্র-বহ-ণিনি। रनामयुक्त नजानि। লোমফল (ক্লী) লোমগুকং কলং। ভবাফল, চলিত চালতা। লোমমণি (পুং) বোমনিশ্বিত কবচ, পোটুলি। লোময়ুক (পুং) ১ উরুণ। ২ রোমনানক কীট, পদমীনালের মধ্যে পুত্রাকার যে সকল কীট জন্মিয়া পশম কাটিতে থাকে। লোমবৎ (ত্রি) রোম সরুশ। রোমযুক্ত। লোমবাহন (জি) > লোমবছল। ২ রোমযুক্ত। লোমবাহিন্ (ত্রি) রোমবাহী (শরাদি)। লোমবিবর (ক্লী) লোয়াং বিবরং। লোমকৃপ। লোমবিধবংস (খং) রুনি। (বৈগ্রহনি৽) লোমবিষ (পুং) লোমি বিবং যন্ত। ব্যান্তাদি। (হেমচ৽) লোমবেতাল (পুং) অপদেবতাভেদ। (হরিবংশ) লোম্শ (পুং) লোমানি সম্ভাষ্ঠেতি লোমন্ 'লোমাদিভাঃ শঃ' ইতি শ। ১ মুনিবিশেষ। যুধিষ্ঠির বনবাস কালে এই মুনির নিকটে সমন্ত তীর্থের বিবরণ প্রবণ করিয়াছিলেন। (ভারত বনপর্ব লোমশগুধিষ্টিরস০) (ত্রি) ২ অতিশয় রোমাধিত, ৰাহাদের গাত্রে অতিশব রোম আছে। সামুদ্রিকে গিথিত আছে ষে, লোমশ ব্যক্তি কদাচিৎ স্থুৰী ছইয়া থাকে, অৰ্থাৎ লোমশ राक्ति आवरे दःशी रव । "কদাচিদন্তরো মূর্ব: কদাচিল্লোমশঃ স্থী।" (সামুদ্রিক) বে ধাঁত চুরি করে, পরজবেম সে লোমশ হইয়া জন্মগ্রহণ করে। "ধাক্তং জ্বা তু পুরুষো লোমশং সংপ্রজারতে।" (ভারত ১৩।১১১।১১৯) ৩ মধ্বালু, চলিত মউ আলু। ৪ ধাতুকাণীশ। ৫ মেষ। ७ (कांकड़ नामक विरागमा मृग। (त्रामिन) লোমশকর্প (গুং) শশক। (ক্লেড হং ৪৬ অ॰) লোমশকান্তা (জী) লোমশঃ কান্তো যস্যাঃ। কৰ্কটা, কাকুড়।

লোমশচ্ছদ (গুং) দেবতাড় বৃক্ষ, চলিত দেরাভাড়া। (পর্যার-

(माम्यम्थिनी (क्री) लामनाः नर्गमखामा देखि देनि हीन् । मादन्नी।

মুক্তা॰) ২ পীত দেবদালী। (ত্রিকা°)

লোমশপত্তিকা (গ্রী) লোমশপত্রা।

লোমশপত্রা (খ্রী) পীত দেবদানী। (বৈছক্দি")

লোমশপুত্পক (পুং) লোমশানি পুশাণি কর, কণ্ঃ निद्रीववृक्तः। (व्राक्रनिः) লোমশমার্ক্জার (পুং) লোমশো লোমবছলো মার্ক্জার:। মার্জার বিশেব,গন্ধমার্জার, গন্ধনকুল। পর্যার—পৃতিক,মারজাতক, च्राची, मृत्रপाञन, शक्यामात्रकः (त्रामनि) रेटात मूक्थन-रीधानक्रक, क्ष्मवाङमानक, क्रमू ७ (कार्ड-পরিষারক, চকুর হিতকর, হুগন্ধ, স্বেদ ও গন্ধনাশক। "গৰমাৰ্জারবীৰ্য়ন্ত বীৰ্য্যক্লৎ কফবাতহৃৎ। क भू रकां ब्रह्म र त्यार क्ष्मं स्थापन प्रश्न (कार अवान) লোমশ্বক্ষেদ (बि) লোমাজাদিত বন্ধ বা বপুঃ। লোমশ্সকৃথি (বি) পশ্চারাগে লোমবুক্ত ৷ শুরুবজু: (২৪١১)-ভাষো মহীধর "বহুরোমপুদ্ধিকা' অর্থ করিরাছেন। লোমশা (ত্রী) লোমানি সম্ভাস্যা ইতি লোমন্-টাপ্। ১ কাকজকা। २ मारती, जोरामारती। ७ वटा। ८ भूकमिषि। ४ महास्मरा। कानीन। १ नाकिनी (छन। (दमिनी) ৮ प्रक्रियना। (विष) व भनपूर्णी। ३० धर्साकः। ३३ शक्सारमी। ३२ कारकानी, कांकना । ১৩ मिधी, চলিত मखेती । (द्रावनि •) লোমশান্তন (क्री) লোমাং শাতনং। লোমণান্তন, লোমনান্ত। ঔষধবিশেষ, এই ঔষধ লোমস্থানে লাগাইয়া দিলে লোম আপনি উঠিরা বার। গরুড়পুরাণে লিখিত আছে যে, হরিতাল ও শৃষ্ট্র্, কানীনগভন্মের সহিত একত্র করিয়া লোমকুলে প্রবেপ দিলে উত্তম লোমশাতন হয়। লবণ, হরিতাল, ভণুলীফল এবং লাক্ষারদ এই সকল জব্য একত্র করিয়া প্রলেপ দিলেও লোমলাতন হয়। কলিতৃণ, হরিতাল, শৃষ্ণ, মন:শিলা, সৈদ্ধব এই সকল দ্রব্য ছাগমূত্রের সহিত পেবণ করিয়া উদর্ভন ক্রিলে তৎক্ষণাৎ লোমশাতন হয়। "হরিতালং শব্দুর্গং কদলীদলভন্মনা। এতদুবোণ চোষষ্ঠা লোমশাতনমুক্তমম্ ॥ লবণং হরিতালঞ্চ ত পুল্যাল্ড ফলানি চ। লাকারসসমাযুক্তং বোমশাতনসূত্মম্ # স্থা চ হরিভালক শব্দকৈব মন:শিলা। সৈশ্বনে সহৈকতা ছাগসুত্রেণ পেধরেও। ख्दकर्गावर्डमाराव रनामगाउनम्ख्यम् ॥" (शक्क्रू १ अ० व्यः) বৈশ্বকে লিখিত আছে যে, ভলাতক, বিড়ন্স, যবন্দার, সৈন্ধর, মনঃশিলা, ও শৃষ্ট্র এই সকল ত্রব্য তৈলপক করিয়া ভাষার প্রলেপ দিলে লোমশাতন হয়। (ভৈষমাধ্যস্তরি ৰশীকরণার্ধি) लाजनी (जी) क्रकी वित्यमः (देवछक्ति•)...

লোমশ্য (क्री) লোমক্লতা।

লোমসংহৰ্ষণ (ক্লী) লোমহৰ্ষণ 🕒 💮 💮

লোমসার (গ্রং) মরকত মণি। লোমসিক (বী) লোগাসিকা, পুগালী। লোমহর্ষ (গ্রং) লোরাং হর্ষঃ। ১ রোমাঞ্চ, প্রক। ''বেণথুন্চ শরীরে মে লোমহর্ষন্ড জারতে।" (গীভা ১ অ॰) २ ब्राक्कनविद्यव । (ब्रामाद्रम ४।১२।১०) লোমহর্ষণ (ক্লী) লোরাং হর্ষণনিব। ১ রোমাঞ্চ। লোরাং হর্ষণ-মত্মানিতি। (বি) ২ লোমহর্বকারক। **"ভদ্মিন্ মহাভরে যোরে ভূম্বে লোমহর্বণে।** ষ্বৰু: শ্বলাদানি ক্ৰিয়া যুদ্ধুৰ্মদা: ॥" (ভারত ভাৰণা১৩) (भूर) विष्ठिजभूतानकवाज्यवनाद मात्राः हर्वनः উन्शरमा वश्वाद । ত হত। ইনি ব্যাসের শিষ্য, ব্যাসদেৰ পুরাণসংহিতা গ্রেণরন করিরা প্তকে শিকা দিয়াছিলেন। "পুরাণসংহিতাং চক্রে পুরাণার্থবিশারদঃ। প্ৰখাতো বাদশিযোহভূৎ শতে। বৈ লোমহর্বণঃ। পুরাণসংহিতাং ডলৈ দদৌ ব্যাদো মহামুনি: ॥"(বিষ্ণুপু° ৩) ৭ অ°) ক্তিপুরাণে দিখিত আছে বে, লোমহর্বণ বলরাম কর্তৃক হত হইরাছিলেন। "তণা ক্ষেত্রে স্তপুত্রো নিহতো লোমহর্বণঃ। ৰলরামাল্লব্কাত্মা নৈমিবেংভূৎত্ববাছরা ॥" (কঞ্চিপু ৽ ২৭জ •) লোমহর্বণক্বত সংহিতাকে লোমহর্বণিকা সংহিতা বলা বার। লোমহর্ষণক (बि) লোমহর্ষণ সম্বীয়। लामहिरा (वि) लामहर्वकात्रक। (लामहादिन् (वि) लामवाहिन्। লোমহৃৎ (পুং) লোমানি হরতি নাশরতীতি ছ-কিপ্। হরি-তাল। (হেম) লোমা (খ্রী) বচা। (বৈছকনি•) **লোমা**য়য়ণি (পু:) লোমারণের গৌজাপত্য। প্রবরাধাাছে লোমারণের অপত্যবাচক লৌমারন বা লৌতারণ শব্দ আছে। লোমালিকা (ত্রী) লোমাল্যা লোমশ্রেণ্যা কারতীতি কৈ-ক-টাপ্। भृगानिकाः जारनद्रा, शाक्निद्रानी। (विका॰) **ट्लामा**न (११) भृगान । লোমাশিকা (রী) শৃগানী। (लाम्ब्री (नूर्षि), मशा शरनरमत्र विनामभूत क्लात **क्षत्र**कं **এक्টो बनिमात्री। अहे गण्यक्ति व्यक्तिकी अक्वन** देवताने। ১৮৩০ খুষ্টান্দে ভীছার পূর্বপুরুষকে এইছান জারণীর স্বরুপ দান করা হইরাছিল। ভূপরিবাণ ৯২ বর্গমাইল। লোকীগ্রাব এখনকার अधान वानिकादाम । अधारम मानाविध नक केरशा बहेबा धारक । লোল (ত্রি) লোড়ডীডি লুড়-বিলোড়নে আচ্। ১ চৰল।

नामाक्य । (यमत) (पूर) ७ क्वाननम् । (याक्टक्षपुर १८१८) । ।

লোলা (বী) गোন-টাপ্। > জিলা। ২ লখী। ৩ চঞ্চা বী। "नर्सात्रमर्गप्रस्त्री लाना द्रश्तः खरमन नवाताः। অনসমণি ভাগ্যৰতং ভন্নতে পুৰুবায়িতেব 🕮: #" (স্বার্যাসপ্তশতী ৬০৯) 🛮 ছন্দোভেদ। এই ছন্দের প্রতি চরণে ১৪টা করিয়া অকর थांकित्व व्यवः ১, २, ७, ७, १, ४, ৯, ১०, ১৩ ও ১৪ ज्यक्त **শুল, ভারির বাবু। এই ছন্দের** ৭ **স্বক্ষরে বতি।** ইবার লক্ষণ—''বিঃসপ্তছিদি লোলা মৃসৌ জ্বৌ গৌ চরণে চেৎ।" উদাহরণ---"মৃধ্যে যৌবনলন্দীবি গ্রুৎ বিভ্রমলোলা। ত্রৈলোক্যাভুতরূপো গোবিন্দোহভিছরাপ: । **उ**न्तृमार्गक्ष **अव**न्वन्नार्थ শ্রীনাথেন সমেতা স্বচ্ছন্দং কুরু কেলিং॥" (ছন্দোমঞ্জরী) লোলাক্ষিকা (জী) पूर्निতলোচনা। লোলার্ক (খং) লোলনামা অর্কঃ। স্থা। "ততো দিবাকরং ভূষः পাণিনাদার শব্দর:। ক্ষা নামান্ত লোলেতি রথমারোপয়ৎ পুন: 1"(বামনপু° ১৫ অ°) মহাদেব স্থা্যের লোল এই নামকরণ করেন, এইঞ্চন্ত স্থাকে লোলাৰ্ক কছে। (কুৰ্মপু°ও কাণীৰ°) লোলিক। (ত্রী) লোলতীতি দ্ব-গুব-টাপ্ অভ ইস্থ। চালেরী। 'কুডাদন্তশতাষ্ঠা চালেরী লোলিকা চ সা।' (अটাধর) লোলিত (বি) নুন-বিমর্দে বঞ্লোনঃ সোহন্ত জাতঃ ইতি। #ৰ্থ, চলিত ঝোলা। লোলিম্বরাজ (পুং) বৈছকনিষ্টুপ্রণেতা। দিবাক্ষরের পুত্র ও হরিহরের শিব্য। ইনি চমৎকার-চিস্তামণি, রত্মকলাচরিত্র, বৈশ্ব-बीबन, देवधविनाम वा हत्रिविनाम, देवधावज्रः भ, हत्रिविनामकांबा छ লোলিখরাজীর নামে আরও করখানি বৈশ্বক গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। লোলুপ (এ) গহিতং শৃষ্ণতীতি নৃভ-বঙ্ আচ্। অতিশব সৃত্ধ। লোলুপতা (ব্রী) নোলুপন্ত ভাবঃ তল্-টাপ্। নোলুপন্ধ, লোলুপের ভাব বা ধর্মা, অভিশন্ন লোভ। লোলুভ (অ) ভূপং শুভাতীতি সুভ-ষঙ্ অচ্। লোলুপ। ' অভিশর পুৰ। "ব্রিরোহণীছবি পৃংস্তাবং বং দৃষ্টা রূপলোপুডাঃ।" (কথাসরিৎসা° ১১৭।৪৬) (स्नामुद (वि) श्नः श्रनः कर्दननीन । লোপুয়া (রী) কর্জনে দৃঢ়প্রতিক্ষা। [ला[लांद्र (हो) नगबरच्य ! (त्राव्यखत्र ° ১।৮७) लाहारे, क्यर्क्का नायक शैथिष्टिकारिका। লোক্লটভট্ট, কাৰ্যপ্ৰকাশমূত আলভাৱিকভেই। লোবা, সংগোগাপ্রদেশের উনাও কেলার অন্তর্গত একটা সলব, ১

नरे मगैकीरत अवश्वित। अका २६° २५ केंद्र अवर क्षांचि

৮১° ১´ পৃ:। পৃৰ্বা ও উনাও নগরের সহিত **এখানকার** বাণিজ্যকার্য পরিচালিত হইতেছে।

লোবাগড়, শঞ্চাব আদেশের বন্ধু জ্বনার অন্তর্গত একটা পর্বত।
[ক্রেনানী দেখ।]

লোশশরায়নি (গং) একজন প্রাচীন গ্রন্থকার।
লোক, সংহতি। ভাদি আত্মনে সক' দেউ। নউ লোইতে।
লিট্ লুলাটে। লুট লোইতা। লুঙ আলোটিই।
লোই (গং ক্লী) লোইতে ইতি লোই-বঞ্, ববা লুয়তে ইতি লু
(লোইপলিতো। উণ্ অ৯২) ইতি ব্ধ প্রতারেন নিপাতনাৎ
সাধু:। > মৃত্তিকথণ্ড, চলিত ডেলা। পর্যার লোই, দলি।
(হেম) ২ লোইমল। (রাজনি) ০ লেই,। (অমর)
লোইক (পুং) > মৃৎপিণ্ড। ২ তিলকাদি ধারণবোগ্য পদার্থবিশেষ।

লোকিন্ম (প্ং) লোষ্টং হস্তীতি হন-টক্। লোষ্টভেদন। ক্লবক-দিগের ভূমাদির মৃৎপিগু-চূর্ণকারী বন্ধবিশেব। (অমরটীকা ভরত) লোকিদেব, শীনাক্রন্দনন্তোত্ররচিরিতা। রম্যদেবের পুত্র। ইনি শ্রীক্ঠচিরিতপ্রণেতা মন্থের সমসাময়িক ছিলেন।

(लाकिनर्खक, वक्कन आहीन करि।

লোফ্টন্ (ক্নী) মৃৎপিণ্ড।

লোকভেদন (পুং) ভিনতীতি ভিদ্-ল্যু, লোইছ ভেদন:। লোইভদসাধন মুল্যুর, পর্যায় লোইড্ডদন, লোইম, লোই্মু, কোটিশ, কোটাশ। (অমরটাকা)

लाक्यमिन् (बि) लाहे हा।

লোক্টময় (এং) লোইস্বরূপে মরট্। লোই স্বরূপ।

লোক্টবং (ি) মৃষিকার। মৃত্তিকা-নির্ম্মিত। লোই স্করপ।

লোক্টাক্ষ (পুং) ঋবিভেদ। (সংশ্বারকৌদুনী)

লোষ্ট্ (পুং) লোষ্ট। (হেম)

লোষ্ট্ৰ (পুং) লোষ্ট-রন্। লোষ্ট, ডেলা।

স ''মাতৃৰৎ পরদারেষু পরন্রব্যেষু লোষ্ট্রবৎ।

আৰুবং সর্বভূতের বং পশ্যতি স পণ্ডিতঃ ॥" (চাণকা)
লোসর, পঞ্চাব প্রদেশের কাঙ্ডা কোরা শিপতিরাজ্যের অন্তর্গত
পর্বতপৃষ্ঠত্ব একটা গণ্ডগ্রাম। সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে এই ত্বান
১৩৪০০ কিট্ উচ্চ। পৃথিবীপৃঠে আর কোণাও একপ উচ্চ
ত্বানে স্প্রমূভ গ্রাম দৃষ্ট হর না। আক্ষা ৩২°২৮ উ: এবং
দ্রাধি ৭৭০ ৪৬ পৃঃ।

লোহ (পুং ক্লী) পৃষতেখনেনেতি প্ বাহলকাৎ হ।
(Ferrum, Iron) স্থানমখ্যাত ধাকুবিশেষ, লোহ ধাকু, চলিত—
লোহা, হিন্দী—লোওৱা, তৈলক—ইমুম্। সংস্কৃত পৰ্যাৱ—লোহ,
লোহক, সৰ্বতেজন, স্থাবির। তীক্ষ, মুগ্ধ ও কান্তভেলে লোহ

তিন প্রকার। মৃতলোহের পর্যার—মৃত, মৃতারস, দৃশংসার, দিলাবাল, অবাল। কারলোহের পর্যার—আর, ফুকারস। তীক্ষ লোহের পর্যার—তীক্ষ, পরারস, শস্ত, পিও, পিওারস, শঠ, আরস, নিশিত, তীত্র, থড়াা, মৃওজ, অরস্, চিত্রারস, চীনজ।

[रेवळानिक विवत्रण लोह भएन खडेवा ।]

বৈশ্বক্ষতে ইহার শ্বপ রক্ষ, উফ, ডিজ, বাত, পিন্ত, ক্ষক, প্রমেহ, পাপু ও প্রনাশক। (রাজনি°)

মহতে দিখিত আছে বে, স্পা (প্রস্তর) হইতে গৌচহর উৎপত্তি হর।

"অন্জ্যোষ্ট্র-এ জতঃ ক্ষত্রমশ্বনো লোহমুখিতম্।
তেবাং সর্কাত্রগং তেজঃ স্বাহ্ম বোনিষু শাম্যতি ॥" (মন্ত্রমাং ৭২)
বৈশ্বকে লোহের উৎপত্তি, গুণ ও মারণাদির বিষয় এইরূপ
বর্ণিত হইরাছে—

শপুরা লোমিলদৈত্যানাং নিহতানাং স্করৈষ্ বি। উৎপন্নানি শরীরেভ্যো লোহামি বিবিধানি চ"। (ভাৰঞা)

পুরাকালে যুদ্ধে দেবগণ কর্ত্ব লোমিল নামক কৈতা নিহত হইলে তাহার পরীর হইতে বিবিধ প্রকার লোহের উৎপত্তি হয়। লোহ বিশেব উপকারক, ইহা সেবন বা ঔবধে ব্যবহার করিতে হইলে, লোধন করিতে হয়। লোধিত গৌহই বিশেব উপকারক। আশোধিত গৌহ সেবন করিলে বণ্ডলা, কুঠ, ফলোগ, শ্ল, অশারী, হলাস প্রভৃতি রোগ উৎপার হয় এবং মৃত্যু পর্যান্তও হইতে পারে। এইনান্ত উহা সংশোধন করিয়া লাইতে হইবে।

লোধনপ্রণালী—লোহের হল্ম পাত করিরা জরিতে পোড়াইতে হইবে, পরে ঐ লোহ জত্যন্ত উত্তপ্ত অবস্থার বথাক্রমে তৈল, ভক্রে, কাঁজি, গোমূত্র ও কুলখ কলারের কাথ এই সকল দ্রব্যে তিনবার করিরা নিক্ষেপ করিলে লোহ শোধিত হয়।

মারণবিধি—লোহ শোধন করিরা পরে উহার মারণ করিবে। বিশুদ্ধ গোহের চূর্ণ পাতাল-গঙ্গুড়ীর রস ছারা পেবণ করিরা পুটে পাক করিতে হইবে, পরে ছুডকুমারীর রসে পেবণ করিরা তিনবার ও কুঠারছিলিকার রস ছারা মর্দন করিরা ও বার পুটে পাক করিবে।

জন্ত প্রকার—লোহচ্পের দশ অংশের এক অংশ হিকুল নিক্ষেপ করিরা মুভকুমারীর রসে মর্দন করিরা চ্ই প্রবয়কাল পুটে পাক করিবে, এইরপে ৭ বার পুটে পাক করিলেই লোহ মারিভ হর।

অন্তবিধ—পারদের সহিত বিকণ গৰক মিণাইরা কক্ষনী করিতে হইবে। পরে কক্ষনীর সমান পরিমাণ লোহচূর্ণ নিক্ষেপ করিরা শ্বতকুমারীর রস দিয়া ছই প্রেছর কান পেবন করিতে হইবে। বধন উহা শিঞায়তি হইরা আসিবে, তধন

লোহ

ঐ গোহণিও একটা ভারণাতে হাগন করিরা হই গ্রহরকান রেটালে রাখিবে, পরে এরও পরে হারা আচ্চাদন করিছে হইবে। ছই গ্রহর পরে ঐ পৌহণিও উক্ত ইইবে। ছিন করিয়া পরা বিরা আক্রাদন করিছে হইবে। তিন কিন পরে ঐ আক্রাদন ভূমিতে হইবে। তিন কিন পরে ঐ আক্রাদন ভূমিতে হইবে। পরে ঐ পৌহনুর্গ চতুর্গ করিরা ছাকিয়া লইছে হইবে। পরে ঐ পৌহনুর্গ চতুর্গ করের সহিত হাড়িমের পাড়া পেবর্গ করিয়া সেই রসে গৌহনুর্গ ভিলাইরা রাখিতে হইবে। তৎপরে রৌলে ওক করিয়া প্রেট পাক করিবে, এইরপে একবিংশতি বার পাক করিবে পোই নিশ্বদাই বারিত হয়।

ৰান্তিত লোহগুণ—তিক ও ক্যারমধুর রস,সারক, শীতবীর্য্য,
জক্ষ, কৃষ্ণ, বন্ধ:বাণক, চকুর হিতকারক, বার্বর্দ্ধক; কৃষ্ণ, পিত্ত,
গরবোব, শৃণ, শোণ, জর্ল, প্লাহা, পাতু, মেহ, মেহ, কৃষি ও
কুষ্টরোগনাকক। ইহার মাত্রা জন্মির বলাবল বিবেচনা করিরা
এক্ষতি হইতে সররতি পর্যাক্ত সেবন করা বাইতে পারে।

(ভাৰত্ৰ' পূৰ্ব্বৰ')

স্থান ক্ষার্থ বিষয় মতে শোধন প্রণালী।—কান্তলোহকে পাত করিলা অন্যাক্ষিক, ত্রিকলাচূর্প এবং সালিকালাক্ষের স্থান মাধাইরা ক্ষমনঃ অনিতে পোড়াইতে হইবে, উহা
স্কের্প হইলে কলে নিক্ষেপ করিবে, পরে হতিকর্ণ, পলাণ,
ত্রিকলা, ব্রলারক্ষ্ণ মান, ওল, হাড়জোড়া, ডল্লী, দশবূল,
বৃত্তিরী, ভালমূলী, ইহাদের প্রত্যেকের কাথ বা রসে প্ট
দিলে দৌহ শোধিত হয়।

লোছজন--বিশুক পারদ একতাগ, গছক হই তাগ, লোহ ডিন ভাগ, শুতকুষারীর রসে মর্দন করিয়া তাশ্রপাতে রাখিরা এরও পাতা আছোলন করিয়া হই প্রছরকাল পুটপাক করিতে কুইবে, তৎপরে তিনদিন ধান্তরাশির নধ্যে রাখিরা পরে পুদ্ধতুর্ণ করিবে। এইরপে লোহজন্ম হর।

আন্তবিধ—লোহের বারভাগের একভাগ হিছুল একত্র নিপ্রিত করিরা ত্বতকুলারীর রবে মর্ফন করিবে, পরে উহা ৭ বার পুটপাক করিবে লোহতক্ষ হর।

আন্তৰিধ—গৰান্নত, গৰুক এবং লোহ তথ্যবোলার হত-কুমারীর মদের সহিত একদিন মর্থন এবং কর করিরা গলপুটে পাক করিলে লোহতম হয়।

ন্নসান্ধনে লোহ ব্যবহার করিতে হইলে নিরোক্ত নিরবাস্থসারে করিতে হয়। স্বত, বহু, কুঁচ ও সোহাগা এই সক্ষণ ক্রব্যের ক্ষিত লোহতত্ম মর্কন করিবা ক্ষিতে পোড়াইতে হইবে, এই সকল প্রত্য উত্তৰপ্রশে বিভিত্ত হইলে বসায়নে প্রবোগ করিবে। তালক্ষক-নোহ পোধ, স্কু, কর্মি, সাহু, প্রবেহ, বিবাদের, মেদ ও বার্নাশক, বরংহাপক, ওরু, চাকুব্য, আরু, ওরু, বল ও বীর্ঘর্বরুক ও রুসারনশ্রেষ্ঠ। গোহ সেবন-কালে কুলাও, তিলতৈল, সর্বপ, রন্তন, মন্ত এবং আরু প্রব্য-ভোজন বিশেব নিবিদ্ধ।

্বে সকল উবৰে লোহ ব্যবহৃত্ত হয়, ভাহাদের নাম।

वृश्नृशंशनञ्चलत, क्रवाानतम, सवात्रमृत्, क्रहाननाक्रतोह, ৰওধান্তলোহ, অনিরস, ভূতভৈর্বরস, লোহরসায়ন, স্বায়-স্কব গুণ্গুলু, গলংকুচারিরস, রভিবলভ, গদমুরারি, পর্ণ টারস, বাতপিভাতকরন, বিখেবররন, চিন্তামনিরন, জয়সঙ্গলরন, নস্ত-टिजर्व, व्यक्षनटेजर्व, त्रमत्राद्यस्य, मृजमञ्जीवनीत्रम्, कख्रुतीटेजर्व-त्रम, दृह९कछ,त्रीटेछत्रव, ऋक्यनाग्रक, बत्रामनित्रम, ठ्यामि लोह, वृहৎनर्ककत्रवृत्र लोह, भरातावर्षी, विलाकािकसामित्रम, महा-অরাত্মণ, বৃহজ্জরাস্তকলোহ, চূড়ামণিরস, ভীমচূড়ামণি, বৃহচ্চ,ড়ামণি, व्यमुडादर्शवन, व्यक्तिग्रवरावनवन, कनाचात्रीह, भर्वकना वधी, প্রহণীগব্দেক্রটী, পীযুষবন্ধীরস, পঞ্চামুভপর্ণটী, গ্রহণীকপর্ক-পোট্টলী, গ্রহণীকপাট, অমিকুমাররস, নৃপতিবল্লভ, রাজবল্লভ, বৃহর প্রলভ, তীক্ষম্পরদ, অর্শঃকুঠাররদ, চক্রবদ, নিত্যোদিত-त्रम, हज्जव्यकाश्विष्ट्रका, यानाश्वरनोट, हक्षुरकूर्वात्रत्रम, भक्तानन-বটী, পাওপতরস, রসরাক্ষস, ত্রিফলাছলোহ, শথবটী, বিড়-भामित्नोर, निभात्नोर, शांजीत्नोर, धानवज्ञ उत्रन, मार्कामि-लोर, मत्यार-लोर, नगुनिस्त्रम, स्थानिधित्रम, त्रक्रभिखासक त्रम, भक्ताकारमोह, त्राचानिरमोह, काकनाजतम, वातिरमारग-রস, সর্বাতোভদ্রস, ত্রিকটাছ লোহ, কটুকাছলোহ, কুমণাছ लोह, च्यवक्रमाञ्च लोह, निजानमञ्ज्ञ, क्रामाबहब्रव्य, कूर्छ-কালানলরস, মহাতালেশ্বররস, অমণিভাত্তকরস, লীলাবিলাসরস, পানীয়ভক্তবটকা, ক্থাবতীবটা, কালাগ্রিক্টরস, নেত্রাশনিরস, নরনামুতরস, তিমিরহরলোহ, শিরোবজ্ঞরস, চক্রকান্তরস, মহা-नभीविनामत्रम, अमन्नाखकरणोर, मरानाबनुभाजवहाउनम, तुरुमधि-কুমাররস, বুহল্লবজাদি বটী, কুমিকালানলরস, কুমিবিনাশরস, ক্লমিরোগারিরল, ত্রিকতারাভ লোহ, ত্রৈলোক্যস্থলাররল, চক্র-প্রাাত্মকরস, আমলক্যাভলোহ, শতমুলাভলোহ, রত্তর্গর্ভ-পোট্রণীরস, সর্কাক্ত্মশার রস, রহৎকাঞ্চনাত্র দৌহ, মৃত্যুঞ্জরস, মহামৃত্যুঞ্ধবরদ, প্রদরাক্তক রদ, ক্তিকামরদ, মহাত্রবটী, রদ-नाष्ट्रन, दृश्कननाष्ट्रन, जीमकक्षत्रन, सीमचार्थ द्वन, मरहचन-त्रम, भूर्गाञ्चत्रम, काञ्चरत्रामोर, दृहर भूर्गाञ्चत्रम, सकत्रश्राम, বসত্তিসক রস, বসত্তুত্মাকর রস, নীগক্ষরস, মহানীলক্ষ্ঠ-त्रम, निर्मायकामि त्मोर, रक्तत्वनविद्यम, दूरकञ्चायुख्यम, क्य-কেশরী, বুহত্রসেক্সগুড়িকা, সিত্তকারাত্তক রন্, কাসসংহার-रेक्टर, नचीरिनागड़न, नार्करकोमहन, यरश्यश्वित, सहा-

चिवना, विवता विवता, वस्त्राहेकत्व, जैठकानुक लोश. বিজয়াবটা, লোহপৰ্ণটারদ, পিপুলাকলোছ, খাদকাৰ্যটভা-মণি, ভূতাভূপরস, উন্নাহতপ্রনী, ইত্রভ্রন্থনী, ৰাভগলাভূপ, বুহৰাতগৰাত্ৰ, বাতনাশনরস, বাভক্তকরস, গগনাদিবটা, শ্লেছালৈলেক্সরস, গুড়্চ্যাদি লৌহ, পিডাক্সরস, মহাপিতাত্তক রস, লালপ্যাত লৌহ, বাতরকাত্তকরস, আম-বাতারিবটিকা, আমৰাভেশবরদা, বৃহদারাও লোহ, আমৰাভ-शंकिशः हरमानक, नश्चामृक्तनीह, ह्यूःनमत्नीह, भृनन्नांकत्नीह, विकाधताल, तृरविकाधताल, मृनविक्षि विका, अञ्चकानामनवन, महा अञ्चलानाननत्रन, अञ्चलार्क्, नृत्र्यचन्नत्रम्, दक्ष्णाण त्रोह, दृरुक्तिभक्तत्रज्ञ, स्वर्मुन्गत्रत्रम, स्वनामत्रम, हज्ज्ञश्राधारेही, মেহবজ্ঞ, মেহকেশরী, যোগেশররস, ভালকেশররস, গগনাদি-लोह, लामनाध्रतम, तृह (लामनाध्रतम, लात्मध्रतम, कृताधि-লোহ, বৈখানরী বটা, রোহিডক লোহ, লোকনাথ রস, রুহল্লোক-नाथतम, ভাল্মেখরবর্তী, अधिकूमातलोह, वक्कबिलोह, मृञ्जाबत-लोह, ब्रीहानार्फ, न, प्राहातित्रम, चल्लाहत्रम, शकामृज्यम, च्यायूच-লৌহ, চব্যাদি লৌহ, পঞ্চামৃতত্ত্ব, নবারদ লৌহ, যোগরান্ধলৌহ, শোহামৃত, পঞ্চাক্তরদ, মৃগজ রদ, বজেমরস্কন, প্রাণরাণরদ, कामकनातम, विज्ञकाच हुर्न, जूनात्रतम, श्रीफ़ातम, क्रकांच लोह, दृरख् मनाय लोह, लोहखिएका, कनायस्य एका, लोहस्य स्वन्, भूजकुळुहत्रत्नोर, चनः द्वोपि त्नोर, सम्बद्धत्रम, स्पवित्रपत्रम, গুক্রমাতৃকা বটিকা, উদরারিরস, উদকারিলোহ, শোথোদরারি लोर, अधिशक्षविका, वक्ष्यत्रीत्रामत्रस्त्रत्नोर, श्रीनमात्रित्नोर, ত্রণগঞ্জাছুশ, কাকপন্নবটী, লভেশ্বর রস, কুষ্ঠান্তকরস, বেতালরস, कुर्केटेनरणक तम, नर्सममरागोर, अमृजाक्तरगोर, गोरामृज-লৌহ, কালকচূৰ্ণ, রসাভ্রহণ, ভক্তপাৰকগুড়িকা, ধাতুবদ্ধরস, ञ्चक्कवी ७ ज़िंका, मृज्यबीचनी ७ ज़िका, महाकारमच द्रामक, तृह९ कारमधन्नरमामक, मननमनीभर्ग, कामम्खन्न, मननञ्चनन त्रम, तन्नगितित्रम, नरब्बदब्धिनारः, भीगृदिनमूत्रतम, वकाननत्रम, ভন্নাতক লৌহ, পাপুগন্ধকেশরী, পাপুনিগ্রহরুস, লৌহস্থন্সর-রুস, বিহরিদ্রাক্ত লৌহ, কালকন্টকরস, লৌহাভরাতূর্ণ, রুহৎ পানীর ভক্তগুড়িকা, অগতিরস, বৈধানমরস ও পুটাছুন।

রনেক্রমারনংগ্রহ মতে, সামান্ত লৌহ অপেকা ফ্রোকলোহ বিশুণ গুণবৃক্ত, ক্রোক হইতে কালিল ক্ষ্তুগুন, কালিল ক্ষতে ভক্ত শতগুণ, তত্র হইতে বক্স সহস্রাধণ, বন্ধ হইতে পাত্তি লভগুণ, পাত্তি হইতে নিরন্ধ দশগুণ, এবং নিরন্ধ হইতে কান্তু-লোহ সহস্রাকাটি গুণবৃক্ত। গোহার উপন্নিভাগে নে মহলা গড়ে, ভাহাকে হওুর ক্ষেত্র, এই মধ্যুরগু গুনবে গ্রাবৃক্ত হইরা গাকে। (রসেক্রসারনত) [মধ্যুর শক্ষ ক্ষেত্র।] ভাষণের লোহপাত্রে ভোজন করিছে নাই, বলি কেছ লোহ-পাত্রে ভোজন করে, ভাহা হইলে ভাহার রোরহ নামক নরক প্রাপ্তি হইরা থাকে।

শ্বনা ভূ আরসে পাজে পক্ষরাভি বৈ বিভঃ।

ন পালিচোঁহলি ভূঙ্কেঞ্জং রৌরবে পরিপচ্যতে ॥"(মংভত্কভঙ্ক)

"জন্মপাত্রে পরংপানং গব্যং সিদ্ধার্মের চ।

कृडीनिकः सभू अकः नातित्करनावकः छथा।

क्नाः मृगक स्टिकिन्डकाः मृनित्रववीर ॥"

(उषारेववर्षभ् • जीक्कसम्बन्ध •)

ও লক্ষণাৰিত ক্ষম্বৰ্ণ বা রক্তবৰ্ণছাগৰিশেব। (মছ ৩)২৭২)
৪ পাৰ্কত্য জাতি বিশেষ।

°লোহান্ পরমকাখোলান্বিকার্জরান্পি।

সহিতাংকান্ নহারাল ৷ ব্যক্তরৎ পাকশাসনিঃ #"(ভারত হাং গাং৫)

(ত্রি) ৎ রক্তবর্ণ। (ভারত সমত্রাহত) (क्री) ৬ অঞ্চল। লোহক (প্রংক্রী) লোহ শহার্থ।

লোহকণ্টক (পুং) লোহঃ কাজোহন্ত। অনুভাত্ত। (রাজনি॰) লোহকান্ত (রী) লোহঃ কাজোহন্ত। অনুভাত্ত। (রাজনি॰) লোহকার (পুং) লোহং লোহমরং শুলাদি করোজীতি ব্ল-জ্বশ্। লোহকারক, যাহারা লোহার দ্রব্যাদি প্রস্তুত করিয়া জীবিকা নির্বাহ করে।

"প্রথ্যাতাশ্রন্থকারাশ্চ লোহকারাত্তথৈব চ।" (রামারণ ২১৯০।২৩) লোহকারক (পুং) লোহং তত্মরশন্তাদি করোতীতি ক্ল-গুল্। বর্ণসম্বর জাতি বিশেষ, চলিত কামার, পর্য্যার ব্যোকার, লোহ-কার, জরম্বার, বর্মকার, কর্মার। (জমর্ভরত) স্বাভিমালার মতে, গোপালের ঔরবে ও তত্ত্বারীর গর্তে এই জাতির উৎপত্তি। "গোপালাত্ত্রবায়াং বৈ কর্মকারোহপাভূত্ হতঃ।"(পরাশরণভৃতি)

লোহকারী (খ্রী) ভরোক্ত অভিবলা দেবী। লোহকিট্ট (শ্রী) লোহন্ত কিটং। লোহমল, পর্বাায়—কিট, লোহচূর্ণ, অরোমল, লোহন, ফুফ্রুর্ণ, লোষ্ট। গুল—মধুন, কটু, উঞ্চ, কমি, বাত, পঞ্চিশূল, মেহ,গুল্ম ও শোক্ষমাণক। (রাজনি')

[मध्त भन (तथ ।]

লোহগড়, বোৰাই প্রেসিডেনীর প্ণারেলার অন্তর্গত ভার-গিরিসভটের সর্ব্বোক্ত লিখনে স্থাপিত একটা নগর ও হর্গ। থগুলার ছইকোশ দক্ষিণপদ্দিনে অবহিত। ১৭১৩ খুটাজে মহারাই-কাশহা কান্হোলী অনুরা এই হর্গ অধিকার করেম। শতাব্দ পরে, পের মর্নাঠা পেশ্বা বালীরাঁওর সহিতঃ ইংয়াজের বৃদ্ধকালে ১৮১৮ খুটাজে ইংরাল-সেনাপভি কেন্ট্রাক্ট-কর্মেল প্রোধার এই স্থান অধিকার করেন। ১৮৪৫ খুটাজ ইইডে এখানে একজন সেনানারকের অধীনে ইংরাজসেনাগপ রক্ষিত হইরাছে।

এই গণ বধা—ত্রিদলা, তেউড়ী, দস্তী, ত্রিকটু, ভালমূলী,

লোহগিরি (গং) পর্মতভেদ। লোহঘাতক (পুং) কর্মকার। বাহারা উত্তর সৌহে আৰাত করে। লোহচারিণী (জী) নদীভেদ। (ৰায়পুরাণ) লোহভারণী পাঠও দেখা বার। লোহচুৰ (ক্লী) লোহক চুৰ্ণং। লোহকিষ্ট। (রাজনি°) লোহজ্ব (क्री) লোহাজ্ঞারতে ইতি জন-ড। লোহকিট, মণ্ডুর। (রাজনি°) ২ কাংজ। লোহজভা (পুং) ১ একমন ব্রাহ্মণ। (কথাসরিৎসা° ১২৮৪) ২ জাতিবিশেষ। (ভারত সভাপর্ম) লোহজাল (রী) > লোহনির্দিত বাল। ২ বর্ম, সাঁকোরা। ও লোহার পাত। 'রথং লোহজালৈচ্চ সংহরম্' (হরিবংশ) লোহজিৎ (পু:) হীরক। লোহতারিণী (বী) নদীভেদ। (ভারত ভীমপর্ক) লোহদারক (পুং) নরকভেদ। "লোহশভুমুজীব**ক** পছানং শাল্মলীং নদীম্। জনিপত্রবনকৈব লোহদারকমেব চ ॥" (মতু ৪।৯٠) লোহদ্রাবিন (খং) গোহানি জাবরতীতি ক্র-ণিচ্-ণিনি। > টব্দণক্ষার, সোহাগা। (রাজনি°) ২ অন্নবেতস। (পর্যারমুক্তা°) লোহনগর (ক্লী) প্রাচীন নগরভেদ। (কথাসরিৎসাণ ২৭।১৮৮) (नाइनाल (पूर) लाहक नानर मरखा बद्ध। नाताह। (विका°) লোহপঞ্জ (ক্লী) স্বৰ্ণ, রৌণ্য, ডাম্র, ব্লঙ্গ সীমক বা স্বৰ্ণ, রৌপা, তাম্র, অপুও কান্তলৌহ। বৈছক মতে পঞ্লোহ বলিলে উক্ত পাচটী ধাতু লইতে হয়। লোহপাল (পুং) লোহদুমল। (হরিবংশ) লোহপুর (রী) একটা প্রাচীন নগর। লোহপুষ্ঠ (পুং) লোহভেব কঠিনং শ্লামলং বা পৃষ্ঠং বজ। ১ কছপকী। (জমর)(ত্রি) ২ লোহমর পৃঠবুক্ত। লোহপ্রতিমা (জী) লোহত অভিমা। লোহমন্ত্রী অভিমা, পর্যার --ক্রী, ছুণা, পূর্মি, পূর্ম, পূর্মিকা। (শব্দরত্না•) লোহবন্ধ (ত্রি) লোহমণ্ডিত। লোভমর (অ) লোহ-বরণে নরট। লোহাত্মক, লোহ নির্দ্দিত। লোহমারক (পুং) লোহং মারম্ভি স্বারম্বতীতি মৃ-ণিচ্-ব্ল। ১ শালিক পাক (Achyranthes Triandra) (বিকা•) २ ब्राम्जनाबनः आहाक जनाभगत्कव। धरे भरगांक जना वाता লোহে পুট দিলে লোহমারণ হর, এইবাস ইহাকে লোহমারক करह, এवर हेहारक जिक्नाविशन करह। "মাণঃ বভিতকর্ণত গোজিহ্বাং লোহমায়ক:।

গিরিশান্তনক: এোক্ত: ত্রিকলাধিররং গণ: 🗗 (রসেক্সারদ°)

বৃদ্ধনারক, পুনর্ণবা, বাসকপত্র, চিতা, আদা, বিড়ল্ল, ভূসরাজ, ভেলা, শুরী, লাড়িমপত্র, শলুফা, তুলসী, সুতা, ওল, গুড়,চী, মণ্ড কপণী, হত্তিকর্ণপলাস, কুলিশ, কেশরাজ, মাণ, খণ্ডিত-क्न, ও पाक्तेभाक, এই जरून ज्वा बाता लाह्य भूठे দিতে হয়। (রুসেক্সপারস°) লোহমুক্তিকা (জী) नानवर्णत्र মুক্তা। লোহমেখল (অ) > ধাতুনির্ন্দিত মেধলাধারী। ক্রিরাং টাপ্ লোহমেথলা, ক্ষ্ণাকুচর মাতৃভেদ। (ভারত ৯ পর্বে) লোহয়প্তি (বী) প্রাচীন নগরভেদ। লোহর (क्री) জনপদভেদ। সম্ভবতঃ লাহোর। (রাজ্তর° ৪।১৭৭) লোহরজস্ (দী) লোহকিট্ট। মরিচা। লোহরাজক (ङ्गी)রোপ্য। রূপা। লোহল (ত্রি) লোহমিব লাতীতি লা-ক। ১ অব্যক্ত বাৰু। ২ লোহগ্রাহক। (অমর) (পুং) ৩ শৃঝলাচার্য্য। শৃথলের প্রধান আচার্য্য বা বন্ধনীর বৃহদাকার গোলকড়া। (মেদিনী) লোহলৈক (हो) রক্তপূর্ণ ক্লোটকাদি। লোহবৎ (তি) লোহার সদৃশ। লোহবর (ক্লী) লোহেবু সর্বতিজ্ঞানেবু বরং। স্বর্ণ। লোহবর্দ্মন (রী) লোহার সাঁলোয়া। লোহবাল (পুং) ধান্ত বা তণুল স্বাতিভের। হোত্শক্ত (পুং) নরকভেদ। (মহ ৪।৯০) ২ লৌহ্নিশ্রিত कीनक। লোহালার (পুং) লোহানি সর্বতিজ্ঞসানি লেবয়তি যোজ্ব-ভীতি শ্লেষি-ব্যু। ট্ৰণক্ষার, সোহাগা। (হেম) লোহসঙ্কর (মী) লোহানাং সম্বরো ব্রন্ত। ১ বর্জনোহ। ২ মিশ্রিত তৈজন। লোহসিংছ (নোহসিং), মধ্যপ্রদেশের সম্বন্ধুর জেলার অন্তর্গত একটী ভূ-সম্পত্তি। ভূপরিমাণ ৬০ বর্গমাইল। এখানে ২৬খানি গ্রাম আছে। অধিকাংশ প্রজাই গোঁড় ও ধনকাতীর। গ্রামন্দীপবন্তী স্থানে ভাহারা চানবান করে। ভত্তির অপর সকল স্থানেই শাল ও সর্জ্ব গাছের নিবিভূ বন। ১৮৫৭ খুটান্দে সিপাহীবিজ্ঞোহের সময় বিজ্ঞোহিদলনেতা স্থারেক শার অধীনে এবানকার অধিবাসিবর্গ ভরানক অভ্যাচার করিরাছিল। স্থানীর সন্ধার চন্দর্পর প্রাভা মধু ডাজ্ঞার সূরকে নিহত করার অপরাধে প্রাণদণ্ডে ছভিত হন। বিল্লোছ-শান্তির পর, ইংরাকরাক্তকে পাত্তিরকার অসীকারপত্র লাল করার সর্কার **एक्टर त्राव्याधिकांत्र व्याख इटेबाहिएन**न ।

লোহাকর (নী) গোহত আকরং। গোহের আকর, গোহার বনি।

লোহাক প্ৰি) লোহতবৰ্ণ কৰ্ণ বিশিষ্ট। (কাডাণ প্ৰৌ ং হা ৯ ৯ ২২৯)
লোহাখ্য (ক্লী) লোহতেব আখ্যা বছ । ১ অঞ্চল । এ কোহ ।
লোহাগ্য দু, বাজালার বলোর উজ্লোর অন্তর্গত একটা নলর ।
নধুমতী নলীকুল হইতে অনুরে অবস্থিত। অক্লাণ ২৩° ১১ ৪৫ উচন বিকরের বিহৃত কারবার আছে । থাকুরা প্রভৃতি নিকটবর্তী প্রামবালিগণ এখানে চাউল ধরিকের কছ ওড় বিজের করিতে আনে । ঐ গুড় হইতে এখানে পাকা চিনি প্রান্তত হয়। ঐ চিনি কলিকাতা ও বাধরগঞ্জে রপ্তানী হইরা থাকে। এখানে এক কালী মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত আছে । বছ দ্রন্ধেশ হইতে জনেক বাত্রী ভক্তির সহিত্ত তাহার পূঞা দিতে আইনে।

লোহাঘাট (ৰন্দেৰর), বৃক্তপ্রদেশের কুষায়ুন জেলার

মন্তর্গত একটা সেনাবাস। ক্ষা লোহানদীর বামকুলে অবস্থিত।

ক্ষা ২৯° ২৪´ ১৫´ উ: এবং লাঘি ৮০° ৮´ ১০´ পৃঃ!

সম্জ্রমুষ্ঠ হইতে ৫৫৬২ কিট্ উচ্চ। এই গোরাবারিকের

চারি পার্থ উচ্চ পর্কতপৃদ্দে পরিবেটিত। পূর্ব্ধে এই নগরের ৩

মাইল দক্ষিণে চম্পাবং নগরে গোরাবারিক ছিল। তথাকার

বাহ্য ভাল না হওয়ার এই হানে স্থানান্তরিত হয়। ঐ সেনা
বাস ১৮৮৩ খুটাক্ষে পরিত্যক্ত হইয়াছে। এক্ষণে এখানে

চা'র চাস হইতেছে। আল্মোরা হইতে এই নগর ৫৪ মাইল

দক্ষিণপূর্ব্বে অবস্থিত।

লোহাগাঁও, বৃক্ত প্রদেশের বৃদ্দেশণত বিভাগের অক্সরণড় রাজ্যের অন্তর্গত একটা গগুপ্রাম, আলাহাবাদ হইতে ১৯৮ মাইল দক্ষিণপশ্চিমে সাগর যাইবার পথে অবহিত। অক্ষাও ২৪° ২৯'৩০' উ: এবং দ্রাঘি ৮০° ২২'২৫' পৃ:। পারা ও বালের-লৈম্যালার মধ্যবন্ত্তী নিয় স্থানে সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ১২৬০ ফিট্ উক্তে এই গ্রাম স্থাপিত। পৃর্ব্ধে এখানে ইংরামরাজের একটা সেনানিবাদ ছিল, পরে উহা পরিত্যক্ত হওরার স্থানীর সমৃত্তির অনেক ব্রাদ্য ঘটিরাছে।

লোহাঙ্গারক (পুং) নরকভেন।

লোহাচল (পং) পর্বতভেদ। মহিন্দরের অন্তর্গত সন্দ্ররাজ্যে অবস্থিত একটা তীর্থ। গোহাচল বা কুসার মাহাজ্যে এই স্থানের বিষরণ উদ্ধৃত আছে।

লোহাজ (খং) নানবৰ্ণ ছাগজাতি।

লোহাজ-বস্তু (শং) স্থলাস্কুচর মানুকেন। (ভারত ৯ প°) লোহান্ত (ত্রি) লাণ্যর্থ অপুরুক্ত জীব বিশেব। ত্রিরাং ত্রীপ্। পোলিনি পৌরান্থিপৰ ৪২১৪১) লোহাভিসার (পং) গোহানাং শ্রাধীনাং শ্রিনারো শ্র । গোহাভিহার। (ভরড)

লোহাভিহার (গ্রং) লোহানামভিহারো বন্ধ। শারধারী রাজাবিগের নীরাজনা বিধি। 'মহামব্যীলীকারাং অবাদীনিং' নীরাজনে সভি পশ্চাৎ শন্তগারিপাং রাজাং বঃ শাজোকো নিশ্বহুম-প্রাথানো বিধিঃ প্রায়ানাৎ প্রাক্ স লোহাভিহারঃ' (কর্ম্ব)

লোহামিষ (क्री) লাল লোমযুক্ত ছাগদাংল।

লোহায়স (हो) তাত্র সংবৃক্ত মিল্ল গাতু।

লোহারভাগা, পশ্চিম বালাগার অন্তর্গত একটি জেলা। ছোট
নাগপুর বিভাগে অবন্ধিত ও পর্যাতমর ভূতাগে ভূবিত। অক্ষা

২২° ২৪ ছইতে ২৪° ৩৯ উ: এবং ক্রাবি ৮৩° ২২ ইইতে
৮৫° ৫৫ ৩০ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ১২০৪৫ বর্গনাইল।
ইহার উত্তরশীমার শোপ নদী হালারিবাগ, গরা ও শাহাবাদজেলাকে পুথক্ রাখিরাছে; উত্তরপশ্চিম ও পশ্চিমে বীর্লাপুর
জেলা এবং সরগুলা, যশপুর ও গালপুর সামস্বর্গলা;
বন্ধিণে ও পূর্বে সিংহভূম ও মামভূম জেলা। ইয়ার পূর্বেসীমার একপার্ব বিচারস্বর। বজেবর ছোট লাটের অধীন
ছানীর ক্মিস্বর কর্ত্ব পরিচালিত।

প্রাক্তিক গঠন-বৈশক্ষণ হেডু এই জেলা প্রধানতঃ তিন-ভাগে বিভক্ত হইরাছে। উহা আসল ছোট নাগপুর, পঞ্-প্রগণা ও পালামৌ উপবিভাগ নাবে খ্যাত।

এই জেলার মধ্য ও দক্ষিণ অধিত্যকা লইরা ছোট নাগপুর বিভাগ গঠিত। এথানে জেলার বিচারসদর স্থাপিত হওরার, উহা আসল ছোট-নাগপুর নামে থ্যাত। এই অধিত্যকা পশ্চিমাভিমুখে জ্রমোন্নত ও বিস্তৃত হইরা মধ্যভারতের সাভপুরা দৈলশ্রেণীতে মিশিরাছে। উহা সমুদ্রপৃত্ত হইতে সর্ব্বএই ২০০০ কিট্ উচ্চ। উত্তরদিকে ইহা ভোজী পরগণার মধ্য দিরা বিস্তৃত হইরা হাজারিবাগের মধ্য অধিত্যকার মিলিত হইরাছে। এই কারণে সমগ্র ছোট নাগপুরবিভাগ পার্বত্য জ্বমোচ্চ নির ভূমিতে পরিণত। ঐ ঢালু ভূমিতে স্তর কাটিরা ধাত্তের চাস হইরা থাকে।

দিল্লী, রাহী, বৃশু, বরোদা ও তমাস কইনা পঞ্চপরগর্ণা ভূতাগ গঠিত। এইবান উপরোক্ত মধ্য অধিত্যকার বাট প্রদেশ হইতে পূর্বাংশে সানভূম পর্যন্ত বিহুত। এতভিন্ন বাসিরা পরগণার বন্ধিনাংশ, চীরুণরগণা ও টোরী পরগণা ছোট লাগপ্রের উত্তর ও মধ্য অধিত্যকার দক্ষিণে, সুমুগ্রপুঠ হইতে ১২০০ কিট্ উচ্চে অবহিত।

হালারিকাগ ও ছোট নাগপুরের পুর্ব ও বন্দিশাভিদ্বী

অধিত্যকা শাধা শইরা অেলার উত্তর-পশ্চিমাণে বে উপবিভাগ হইরাছে, তাহাই পালামৌ নামে পরিচিত। অবলিট সমগ্র জেলাভাগ জনমানবপরিশৃত্য উন্নত পর্কতিনিবর অপবা ইতভতঃ বিকিপ্ত গণ্ডলৈলে পূর্ণ। এই সকল শৈলমালা প্রধানতঃ পূর্বপশ্চিমে বিহুত, কিছ স্থানবিশেষে তাহারও বৈলক্ষণা দৃষ্ট হয়। সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে এই পর্কতমর প্রেদেশ সর্কারই প্রার ১২০০ কিটু উচ্চ, স্থল বিশেষে শৈলোক শিপরভূমি ৩০০০ কিটেরও অধিক উর্জ দৃষ্ট হয়। বাঁচী নগরের পশ্চিমন্থ সারুশৃত্য ১৯১৫ এবং উত্তর্গিক্স ব্বোগাই বা মরঙ্গবরুত্যা ৩৪৪৫ কিটু উচ্চ।

প্রকৃত ছোট নাগপুর উপবিভাগ অপেকা, পালামে বিভাগে অধিকতর পর্কতমালা দৃষ্ট হয়। এখানকার ভূমিভাগ এতেই ক্রেমান্তনির যে, কোথাও সমতল ক্লেত্রাদি দৃষ্টিগোচর হর না। উত্তর কোরেল ও অমানং নদীঘর প্রবাহিত-উপভাকা প্রদেশ জির অক্তর ধার্চাদি উৎপর হর না। এই জেলার স্বর্ণরেথা এবং উত্তর ও দক্ষিণ কোরেল নদী প্রধান। তভিন্ন কার্ফী, অমানং, উরলা, কারু ও দেও নামক শাখা কর্মী উপরোক্ত নদীত্ররের কলেবর পূর্ত্ত করিরা এই জেলার মধ্যে প্রবাহিত আছে।

ভোট নাগপুদার উক্ত পর্কত্বর বাতীত পালামৌ বিভাগে বুলবুল্ (৩৩২৯ ফিট্), বুরী (৩০৭৮ ফিট্) ও কোতাম (২৭৯১ ফিট্) নামে আরও ভিনটা উচ্চ লৈল আছে। এই সকল পর্কাতের নিয়্দেশ বনকুন্দে ও প্লাশবনে পূর্ণ। বরাসৌদ, পালামৌ প্রভৃতি বনভাগে শাল, মহরা, জামুন, করঞ্জা শুভৃতি কৃক্ষ উৎপন্ন হর। শালকাই চেরাই ইইয়া নদীবক্ষে ভানাইয়া নানা স্থানে বিফ্রার্থ প্রেরিভ ইইয়া থাকে। বনভাগে কাই বাতীত মহরামূল, আম ও তুথফল, ক্রঞ্জবীত্র, লাক্ষা, ভণর (গুটী), রজন, মধু, গদ ও আরারট প্রভৃতি করো। সেই বনপ্রাস্থানী আদিম ক্ষিবাসিবর্গ প্রী সকল দ্রব্য সংগ্রহ করিয়া নিক্টব্ডা হাটে বিক্রের করিতে আনে।

শনিক পদার্থের মধ্যে এখানে লোহ ও চুণা পাথর প্রধান।
পলাশে বিভাগে তার এবং সিংহভূম সীমান্তবিত সোণাপেট
উপত্যকার নদীর বাসুকাকশা বিবোত করিরা অর্ণ আছত
হবা থাকে। কোরেল হইতে জনানৎ নদীর উপত্যকার
কতকাংশ পর্যন্ত এবং প্রায় পূর্বপশ্চিমে ৫০ নাইল বিশ্বত
আহমানিক ২০০ বর্গনাইল স্থানে করলার খাদ আছে। উহা
ভাল্টনগঞ্চ করলার খনি নামে প্রসিদ্ধ। এতত্তির কর্পপুর
ক্মণার খনি দক্ষিণে ভোনী পরগণা প্রায় বিশ্বত রহিরাছে।
এখানকার বনহিতাগে ব্যান্ত, ভিডা, নেকডে, ভক্ত, ক্ষুক্ত, বনবরাহ,

হারনা, বিভিন্ন জাতীয় হরিণ ও নীলগাই পাওরা বার। অপরা-পর কুল জত এবং নিকারবোগ্য পারাবত, হংসানে পক্ষীরও অভাব নাই। নদী ও পার্কত্য খাদ সমূতে নানাজাতীয় কই, কাতলা প্রভৃতি সংস্ত জন্মে, তন্মধ্যে মহাশীর মংস্ত বিদেব উল্লেখবোগ্য।

বাঙ্গালার সীমাভূক্ত হইলেও এই স্থানের কোন প্রাচীন ইভিহাস পাওয়া যায় না। অধিক সম্ভব, পূর্বে এই স্থান পর্কাতময় ও গভীর জললে আবৃত ছিল। উহায় প্রাচীন নাম "ঝারপড়" আজিও সেই খাপদসক্ত্র বিজন অরণ্যপ্রনেশের পরিচর দিতেছে। সেই বিজন বনবাদে বাঙ্গালার আদিম অধিবাসী মৃত্যাগণ ও পরে ওরাওন্গণ বহুপ্রকাল হইতে বাস করিতেছে। এই হুইটী জাতি একস্থানে বহুবাল আবদ্ধ থাকিলেও পরস্পরে বিবাহাদি বৌবনসম্বন্ধ আবদ্ধ হয় নাই। পরস্পরে জাতীর পাথকা রক্ষাপ্রক আজিও স্থ স্থ জাতীয় ধর্ম্ম ও কুলপ্রথা পালন করিতেছে; কিন্তু ইহাদের উভয়েরই খাসননীতি প্রায় এক প্রকার। গ্রামা মত্তনের প্রবৃত্তিত "পর্হা" প্রথায় ইহারা এক একটা গ্রামক্তা বা সন্ধারের অধীনে থাকিয়া তাঁহারই আদেশ পালনপূর্বকে রাজনিয়ম রক্ষা করিতে বাধা।

বাত্তবিক পক্ষে বহু পূর্বকাল হইতে এই বনান্তরাল প্রদেশে পার্বত্য অনাধ্যগণ স্বাধীন ভাবে ও সানন্দচিত্তে স্বেত্যা-বিহারী হইয়া বসবাস করিয়া আসিতোছল। তাহাদের এই নৈস্গিক শান্তিস্থ নাশ করিয়া কোন রাজাই তাহাদিগকে শাসন্প্রান্ত আম করিছে চান নাই। তাহারা পার্থবিত্তী রাজভাগণকে রাজমান্ত দান করিছে শিশিলেও, সভ্যতার কুটিল সামাজিকতার পদার্থণ করিতে চাহে নাই। তাহারা আনন্দ্রদ্বের বনবিহলমের ভার ইতততঃ বিচরণ করিয়া বেড়াইত এবং কুটার বাবিয়া একত্র এক একটা গ্রামে দলবন্ধ হইয়া বাস করিত। গ্রামন্থ এক এক জন দলপতি সমগ্র গ্রামবাসীর নেতৃত্ব গ্রহণ করিত। তাহার আনেশ গ্রামবাসীরা রাজান্তা বলিয়া পালন করিত, এমন কি, ইহারা আপন আপন গ্রাম্য মন্তবের আনেশ বা পর্মান্থিয়ের দূরত্ব কোন শক্তর সহিত যুদ্ধ করিতে কাতর হইত না। তীর ধন্ধক ক্ইয়া ইহারা যুদ্ধ করিত।

জনার্ঘ প্রাম্য দলপতিগণ কাণে সভ্যতার সংমিশ্রণে সামস্ত-রাজরপে পরিগণিত হইরাছে। ইহাদের জ্ববীনে ক্রমণঃ জনেক গ্রাম্য দলপতি সন্মিলিভ হইরা এক একটা রাজপতি সংস্কৃত করিয়াছে। ঐ সকল গ্রাম্য দলপতির মধ্যে বাহারা দলবল লইরা পর্যাওকজ্ঞত্ব ঘাটা বা প্রদাপথ শুক্তর আগস্ত্রন হইতে মুক্ষা ক্রিড, তাহারা ঘাটবাল বা স্থান্তর নামে প্রাকৃতিত। ঐ সকল সন্ধারের। এখন বলেশে ও বসমাকে পূর্কবৎ
পূকা। তবার ইংরাজরাজের অশাসন বিভূত হইলেও, মুখা বা
ওরাওন-নেভূগণের কর্ডুছের বিশেষ কিছুই থক্তা ঘটে নাই।
তবে ইংরাজরাজ্যতে বাস করিয়া আর ভাষারা পূর্কবং রগজ্জর
অধবা লুঠন হারা লভ্ক বলীকে মূলংসভ্কপে হত্যা, ও আমাত্তবিক
মহিবোৎসর্গ প্রভূতি পাশবিক অভ্যাচারের অভ্যান করিতে
সমর্থ নহে। বুটীশ গ্রেণ্মেন্টের কঠোর শাসনে ভাষারা এখন
শাস্ত শিষ্ট।

অস্থ্যান ১৬১৬ খুষ্টাব্দে যোগালসম্ভ্রতি, আহাজীর বাদশাহের রাজ্যকালে মোগল-সৈক্ত কোক্রা (আসল ছোট নাগপুর) অধিকার করে। ঐ সমরে এখানকার কোন ফোন নদীতে হীরক পাওরা গিয়াছিল। যুদ্ধবিজ্ঞর এবং হীরকপ্রান্তির সংবাদে দিলীর রাজ্বরবারে মহাসমারোহে আনন্দোলাল হইয়াছিল। ইতিহাল হইতে জানা বার বে, উক্ত ঘটনার পর ১৬৪০-৬০ খুষ্টাব্দের মধ্যে মুলন্মানগণ কএকবার উপ্যুগিরি পালামো আক্রমণ করিলে বিক্লামনোরথ হন, অবশেরে পেবোক্ত বর্ষে লাউদ বা পালামো হর্গ আক্রমণ ও অধিকার করেন। তাঁহার বংশধরগণ ঐ হুর্গ মধ্যে ৩০ × ১২ ফিট্ আল্পতন একথানি স্কুর্হৎ চিত্রপটে ভাঁহার আক্রমণ-কৌশল বিবৃত করিয়া রাখিয়াছেন। উহার অক্রন-পরিপাট্য সাধারণের দেখিবার জিনিব।

माउँम कर्जक भागारमी धर्ग-सरम् त भन्न इटेटड >१२२ शृष्टीस পর্যান্ত এখানে আর ঐতিহাসিক উল্লেখযোগ্য ঘটনা দেখা যার না। শেষোক্ত বর্ষে স্থানীয় সামস্তরাজ রণজিৎ রায় গুপ্তভাবে নিহত হন এবং তাঁহারই কনিষ্ঠ ভ্রাতৃপুত্র জন্মরুঞ্চ রায় গদীতে উপবিষ্ট হইয়াছিলেন। কিছুদিন রাজ্ঞান্ত্রণ সম্ভোগ করিয়া জন্মকৃষ্ণ একটা কুদ্রবুদ্ধে প্রাণ বিদর্জন করেন। তদনস্তর তাঁহার পদী ও পরিবারত্ব সকলে বেহার প্রদেশের অন্তর্গত মেগ্রা নামক স্থানে আসিয়া তথাকার কাতুনগো উদবস্ত রায়ের আশ্রয় গ্রহণ করেন। উদবস্ত রার ১৭৭০ পুষ্টাব্দে মৃত রাজা রণজিৎ বাবের পৌত্র গোপাল রায়কে পাটনার আনিবাছিলেন, পরে তিনি গোপাল রায়কে সঙ্গে লইবা তথাকার ইংরাজ এঞেট ভারেন কার্ণাকের সমকে উপিচিত হইরা তাঁহাকে পালামৌ-बाद्धद रवार्थ छेउदाधिकाती रनिया त्वारण करवन । कार्यनत्मात्र প্রার্থনার কাণ্ডেন কার্ণাক গোপাল রারের রাজাপ্রাপ্তি লকে ইংবাঞ্গবর্ণমেন্টের পকে সাহায্য করিতে খীকত হন। তিনি ভংকালীন পালামৌ-রাজকে পরাজিত করিয়া গোপাল রার ও তাহার অপর ছই প্রাতাকে পাঁচ বংগরের সনদ দিয়া তদ্দেশ পরিত্যাগ করেন। তবৰবি পালামৌ বিভাগ ইংরাঞাবিহত অমুসাড় জেলার অভ্যন্ত হয়। এই বটনার ছই বংসর পরে, কাছনগো উদ্বত্ত রারের হত্যাকাণ্ডে লিও থাকার কালাবে বিবাসণাতক গোপাল রার কারাকত্ত হন এবং বসত রার সহীতে আরোহণ করেন। ১৭৮৪ খুগালে, পাটনানদলে পোপালরারের মৃত্যু বটে; ঐবংসরই রাজা বসত্তরার পরলোক্ষাত হইকে মুক্তামণ রার রাজ্যাধিকার লাভ করেন। তিনি ১৮১৩ খুটাকে অপলাকে কড়িত হইরা পড়েন। তজ্ঞত বাকী থাজনার দাবিতে পালামৌ সম্পত্তি বিক্রর হইরা যার এবং বৃটাশ গ্রণ্মেন্ট রাজত্ব বাবত উচ্চ স্বয়ং ধরিক করেন।

গরাকেলার অন্তর্গত কেওবিভাগের রাজা ফতেনারারণ সিংহের সাহাযালাভে উপরুত হইরা ইংরাজগবর্গমেন্ট প্রত্যুপকার ও প্রয়ার অরপ দান করেন। রাজা ফতে নারারণ অ্লুমালে রাজ্যর আলাঃ করিছে পারেন নাই। তিনি বলপূর্কক নানা অত্যাচার করিরা প্রজার সর্কার অপহরণ করিলে প্রজাবর্গ উহার বিজ্ঞাহী হইরা উঠে। ১৮১৮ প্রটাক্ষে ইংরাজগবর্গমেন্ট নানপত্রের সর্ভ্ত রহিত করিয়া ঐ সম্পত্তি পুনরার গ্রহণ করেন এবং রাজাকে কভিপূর্ণঅরূপ উহার বেহারত্ব সম্পত্তি হইতে বার্ষিক গ্রহম্ব রাজ্যর ক্যাইরা দেন।

ইংরাজ-গবর্ণমেন্টের শাসমাধীনে আসিবার পর, পালামৌ শাস্কভাব ধারণ করিরাছে। ১৮৩১ খুটান্দে ছোট নাগপুরে কোল-বিজ্ঞোহ উপস্থিত হর। ইহাই ইতিহাসে "চুয়াড় বিজ্ঞোহ" নামে খ্যাত। ছোট নাগপুরের মহারাজের আয়ীর ও অম্পুচর-গণের অভ্যাচারই এই বিজ্ঞোহের কারণ। ১৮৩২ খুটান্দে মার্চ্চ নাসে ইংরাজের যত্তে উহা থামিয়া বায়। [মানভূম দেশ।]

এই ভীষণ বিদ্যোহে কোলগণ এরপ উত্তেজিত হইরাছিল
যে, অসংখ্য নরশোণিত পাতে ভাহা প্রশমিত হর নাই। বহসংখ্যক গ্রাম পৃষ্ঠিত ও দ্যা এবং নররতকে কল্যিত হইবার পর
গঙ্গানারায়ণ প্রভৃতি দস্থানগনেতা ইংরাজহন্তে পরাজিত হইবার পর
গজানারায়ণ প্রভৃতি দস্থানগনেতা ইংরাজহন্তে পরাজিত হইবার পর
গজানারায়ণ প্রভৃতি দস্থানগনেতা ইংরাজহন্তে পরাজিত হইবার পর
ভাষাব্যক্ত পরাজিতা করে নাই। এই বাের সংখ্যের সম্ম কোলগণ
উন্মত্ত পাদবিক্ষেপে এথানকার পার্কতা প্রদেশ আপোড়িত
করিলেও পালামে বিজ্ঞানিকার কোন ক্ষতি হয় নাই; কিন্তু এই
বিল্লোহের পর, ইংরাজ-গবর্গমেন্টের শাসনবিভাগীর বে সকল
পরিবর্জন লাধিত হইরাজে, তাহা হাজারিবাগ জেলার বিবর্গী
মধ্যে বিবৃত্ত হইল। [হাজারিবাগ দেও।]

উপরোক চুরাড-বিলোবের অবাবহিত পরেই চেরে। ও ধরবার আতি বিলোহী হইরা উঠে। ১৮৩২ পুঠানে অবিস্থে তাহা ধানিরা বার। তদবনি ১৮৫৭ খুটাজের নিপাহী বিজ্ঞাহ পরিত্ত এখানে আর কোনরপ বিপৎপাত হর নাই। উক্ত বর্বে ধরবার আতি স্থানির রাজপ্ত ভূদাবিভারীর বিক্তর অভ্যাবিত হব। ভোগ্ভারণ এই বিল্লোহে বোগনান করার ক্রমণঃ তাহারের বল বল পুট হইতে থাকে। ঐ সমরে রামগড়ের বিল্লোহী সেনাবল পালামৌ নগরে আশ্রম লাভ করিরা তথাকার রাজহেবী ভূমাধি-ভারী নীলামর সিংহ ও পীতাকর সিহেরে সাহায়ে বিল্লোহের মাত্রা ক্রমণঃ বৃদ্ধি করিরা ভূমে। ২৬ সংবাক মাশ্রাজ পরাতিক নল এবং রামগড়ের ক্রমণ্ডলি ক্রমভক সেনার সাহায়ে ঐ বিল্লোহ প্রেণভি হয়। সাজ বারওরা হর্গ সমলে বিল্লোহিণল পরাজিত হইলে নীলামর ও পীতামর বলিরণে কারাগারে প্রেরিভ হন, জরণেহে ইংরাজনবর্গনেশ্রের বিচারে ভারানের কাঁসি হর।

এই পর্বাচনর জেলার সর্বসনেত ৪টা নগর ও ১২১২৬ থানি প্রান্ধ আছে। আদমস্থনারির তালিকা হইতে জানা বার যে, ঐ হানে প্রার ১৬০০ লক্ষ লোকের বাস। ঐ সকল অধিবাসীর মধ্যে আদিন কোল ও ওল্লাওনদিগের সংখ্যাই অধিক। তারিরে হিন্দুধর্মাবলখী ও কর্ম সভ্য ভূঁইরা, খরবার, দোরাক, গোড় প্রভূতিকে গণনা করা কার। আদিন অসভ্য লাভির মধ্যে অনেকেই খুইধর্মের আলোক লাভ করিরা সভ্যতা লোপানে আরু হইতেছে। মুখা বা ওল্লাওন্দিগের মধ্যে অনেকে খুইধর্মের বিহণ না করিলেও তথাবেবণতংশর হইরা আপনাদিগকে খুটান্ বলিরা অভিবিত করিতে ভূতিত হর না। ১৮৪৪ খুটাকে বাভেরিরাবাসী গ্রোস্নার সর্বান্ধের প্রথমে এখানে খুইধর্ম বিদন প্রতিষ্ঠা করিরা ধর্মপ্রভার করেন। তাহার পর কর্মাণ লুলারণ ইভারেলিকান মিসদ ও চার্চ্চ অব্ইংগাও মিসন পরস্পারে খুইধর্মের মাহান্মাবিতারে ব্যাস্ত রহিয়াছেন।

১৮৪০ খুৱাৰ পৰ্যন্ত লোহান্বভাগা নগৰে এথানকার বিচার
সনম প্রতিষ্টিউ ছিল। পরে ভাগা বাঁচিতে হানান্তরিত হইয়াছে।
বাঁট্রিনগরের কম্পিনে বোরেন্সার: গোরাবান্তার। মিউনিসিগালিটা
লা থাকিলেও এখালে প্রায় ১৮ হালার লোকের বাল আছে।
বাঁচি লগবের ২ মাইল পূর্বে ছুটিয়া নামক গগুরাম, ঐ প্রামের
মাবে এই বান ছোট নাগপুর নাবে প্রসিদ্ধ হইরাছে। পালামৌ
উপবিভাগের বিচার সনম ভাল্টনগর উ উত্তর কোঞল নবীতীরবর্তী গ্রহ্মা নগর বাণিভাক্তের বলিয়া পরিগণিত। বাঁচী
মগবে বিউলিনিপালিটা থাকার হানীর বাহ্য উভরোত্তর বহিত
হইতেছে। লোহান্তভাগা, গড়্বা ও বোরেন্সার একএকটা
চৌকি আছে।

ৰ চী নগরের ও হাইল বজিলগান্তিরে ক্ববিক ক্সমাণপুর গ্রাহে একটা গগুলৈলের নিবোনেশে একটা মন্ত্রং মনিত্র বিধানান আছে। উহা পুরীবাদক ক্সমান্ত্রের অনিভ ব্যক্তির অনুষ্ঠা আলালীতে গঠিক। মোইনা আদ এক সমরে বিশেষ সন্থানিশালী নক্ষমণে পরিগণিক ছিল। এথানকার রাজপ্রাসাধির ধাংলাবলের অভাণি সেই আতীত সমুদ্ধির পরিচর দিতেছে। ছোট নামপুর রাজকালের পূর্বতন রাজসণ এখানে বাল করিছেন। ছিল্লী প্রাকে ছোট নামপুর রাজকালের অভকা দাধা ও ঠাকুর উসাধিয়ারী সামস্ত রাজগণের বাল ছিল। আজিও তথার তাহাদের নির্দ্ধিত প্রাচীন হুর্গের ধ্বংসাবলের পতিত রহিরাছে। জেলার বজিলগণিক্ষাংলে ছোকাল্ট্ গ্রাম। এখানে মুগুদিগের একটা বিস্তুত সমাধিক্ষেত্র বিভ্রমান রেখা বার। উহা সাধারণের বেথিবার জিনিস। ছুটিরা গ্রামে ও ডাপ্টনসঞ্চ নগরে বংসরে হুইটা মেলা হয়।

এখানে প্রধানতঃ গম, বৰ, মন্ধা, কাঙনিবানা, মটর, ছোলা ও অক্সান্ত তৈলকর শক্ত, ধান্ত, লাগ, তুলা, ভামাক, তিল, চা প্রকৃতি প্রবান চাল হইরা থাকে। ঐ গকল প্রবা রাচী, লোহারভাগা, পালকোট, গোবিন্দপুর, বুলু, গড়বা, নাগর, উভারি, লাভবারওরা ও ক্রারাজপুর প্রভৃতি বানিজ্যকেপ্রে আনীত হইরা নানা ছানে প্রেরিভ চইরা থাকে। এভবির এখানে গালা, রজন, ধূনা, তলরের শুটা, চামড়া ও ব্যক্ত পাভরালার কারথানা আছে। পূর্বে এখানে গালা রঙেরও কারবার ছিল। এখনও এখানে মোটা কাপড় এবং শিক্তর ও লোহনির্নিত পাতারি নির্মাণের যথেষ্ট কারবার চলিয়া থাকে।

২ উক্ত কেলার সদর উপবিভাগ। ভূপরিমাণ ৭৮০৪ বর্গমাইল। বালুমাৎ, বারোরা, বালিরা, বীরু, ছোরিরা, কোরখে,
লোধমা, লোহারভাগা, পালকেটে, শীরি, ভমাক, ভোরপা ও
রাচী থানা ইহার অবভাক।

ত উক্ত জেলার প্রধান নগর। জলাত ২৩°২৫'৪৮' উঃ
এবং লাবিত ৮৪°০৩'১৬'' পূঃ। ১৮৪০ খুটাল পর্জন্ত এবানে
জেলার বিচার সদর প্রতিষ্ঠিত ছিল, পরে জ্বা হইকে ৪ার মাইল
পূর্বের গাঁটা নগরে স্থানাস্থরিত হয়। বিউনিলিপালিটা থাকার
এই নগরী বেশ স্বাস্থ্যকর, পরিকার পরিচ্ছর এবং বিলেব
মনোরম। এখানে স্থানীর বাশিজ্যের বিহুত কারবার আছে।
লোহারা, মধ্যপ্রদেশের রারপুর জেলার ধামতারি তহসীলেও
ভারণিত একটা ভূসাশান্তি। ১২০ বালি প্রাম্ব ও ৩৬৮ বর্ষমাইল
ভূমি লইরা এই বিবর সাক্ষর।

ইবাৰ পূৰ্ব ও পদ্চিৰ দীৰাত ভাগে তেবুলা ও কৰ্ণনা নই। প্ৰবাহিত। এতজ্ঞি দৈলগাৱৰাকী বহু নহী নালাৰ পাণা প্ৰশাৰা এই খানে বিশ্বত থাকাৰ এবালে আকৌ অলাভাব ঘটেনা। উক্ত পৰ্যাক্ষালাৰ একাংশ ব্যৱস্থায়াত্ব নাবে ব্যাত। উবা আৰু ২০০০ কিট্ উচ্চ। এই পৰ্যাক্ষালয়ত্ব মন একাংশে নেজণ, বীৰ, শাল, মহরা ও কুম্ম বৃক্ষ পাওয়া বার। নেজণ কার্চ কাটিয়া নই হওরায় অনেক কম হইরা পাড়িয়াছে। এই সকল বনে লাক্ষা, মোম ও মধু সংগ্রহ ক্ষরিয়া গৌড়গণ বাজারে বিক্রের করিতে জাইলে। বজারাগণ এখানে আদিরা দণ ও ভূলা ক্রম করে। এখানে ধনিজ লোহ গালাই হইয়া থাকে। এখানকার অবিকারী গোড় জাতীর মুক্তপ্ররাজের জ্বীনে বৃহ্ববিগ্রহে বিশেব সহারতা করার এই বংশের কোন রাজা ১২৩৮ গুঠাকে এই সম্পত্তি জারগীর স্কর্ম প্রার্থ হন। লোহারা গণ্ড-প্রামধানি বেশ সমৃত্বিসম্পর, এখানে গ্রহমন্ট্রের সাহাব্যক্রত বিভালয়, জমিহারের স্বব্যরে রক্ষিত থানা ও সাধারণের বায়্নসেবনার্থ স্লেমর উভান আছে।

লোহারা সাহস্পুর, মধ্য প্রদেশের রারপুর জেলার হর্প
তহদীলের অন্তর্গত একটা ভূসশান্তি। ভূপরিমাণ ১৯৭ বর্গ
মাইল। এখানে সর্কা সমেত ৮৫ খালি গ্রাম ও প্রার ৫॥• হাজার
ঘর গোকের বাস আছে। লালেটিক্রী লৈলের জললার্ত
নির্ব্ধ প্রদেশ নইরা এই জমিদারীর অধিকাংশহান গঠিত। প্রসিদ্ধ
ও পন্টারিরা বংশের সহিত এখানকার ভূমধিকারীদিগের
কুট্বিতা আছে। এই ছান সমধিক উর্বরা। এখানে মানারূপ
দক্ত পর্যাপ্ত পরিমাণে উৎপন্ন হইরা থাকে। লোহারা-সাহস্পুর
এখানকার প্রসিদ্ধ বাণিজ্য ছান।

লোহারি নাইগ, যুক্ত প্রদেশের গড়বাল কেলার অন্তর্গত একটা ৰদপ্ৰপাত। অকা• ৩৭°৫৭ টিঃ এবং দ্ৰাবি• ৭৮°৪৪ পূ:। কএকটা পর্বাভন্তর ভীমবেগে অতিক্রমের পর এই বিপুল জনরাশি ভাগীরথী বক্ষে জাসিরা নিপতিত হইরাছে। এখানে ভাগীরধী-তীরে একটা প্রশন্ত রাস্তা আছে। প্রশাত হইতে ১০ মাইল দক্ষিণ পর্যান্ত নদীতীরত রাতার ধারে ৬টা দড়ির ৰোলা সেতু আছে। উহা সমূত্ৰপূষ্ঠ হইতে ৭৩৮৯ ফিট উচ্চ। জাতাক পঞাৰ প্ৰদেশের হিসার বিভাগের ক্ষিসনরের রাজকীর ভত্বাবধানে পরিচালিত একটা ঞ্লেইর সামস্ক রাজ্য। व्यक्षा अरे २5'००" हहेए अरे 84' कें: अवर व्यक्ति १६"२२ हरें एक १६°६५ शेर मधा। जाकर रख वी नामक अक्बन स्थानन **এই রাজবংশের প্রভিষ্ঠান্তা। ইনি ১৮**০৬ বৃ**টান্দে জাগবাররাজের** মৃত বন্ধল ইংরাজ সেনাপতি মর্ড লেকের নিকট গিরা পরস্পরের ब्राजकीय नक्कनिर्वद्वत व्यक्तां मीमारमा कवित्रा शाम । वह কার্য্যের পুরকার স্বরূপ ইনি আনবারণতির নিকট হইছে লোহার सम्पार गांच कराम अवर गर्ड (गर्क क्रफ्क सरदा छीवादक विरयाज्यम् नेकामात्रं नागमध्येष् गर्मानं करतमः। हैरशास्त्रम সহিত সন্ধি অভুসারে ইনি বিশান রকাপুর্বাক বুভবিপ্রতে পাছাব্য ভবিচে প্ৰতিক্ৰত বাবেস।

আকৰের মৃত্যু হইলে জােঠ পুত্র লামন উন্ধান বা পিক নশ্পৰির অধিকারী হন, কিছ ১৮৩৫ খুৱান্দে বেসিছেন্ট সিঃ জেলারের হত্যাকাণ্ডে লিপ্ত থাকা অপরাধে বিশ্লীসগরে জীয়ায় व्यानिक रहा। हरतानहान छोठात चाठहरू विकास बहेता क्रियाबगुत शत्रभग गांक्यांश करतम । जन्माद जातीम केतीम् ৰাঁ ও বিভাটকীন বাঁ নামক সামস্টকীনের অপর চুই প্রাক্তাকে লোহাক সম্পত্তি বিভাগ করিরা দেওরা হয়। ১৮৫৭ খুটাকের সিপাহিবিলোহের সময় উক্ত প্রাভবর বিল্লীতে বাস করিতে शिरानम । विद्धारीकर्कुक विश्वी जवात्राधकारम हैरताब शिष्ट-নিবিগণ ভাঁহাবের উপর কভা পাহারা বিরাহিলেন। ভাঁহার। विद्यारह दर्गामाम मा क्यांत्र हैश्यांक संबंदम के विद्याह থামিলে পর জাঁহারিগকে মুক্তি বিরা পুনরার রাজপদ জোগ स्तिए निर्वाहित्सम । ১৮५> चुडीत्स सामीम केनीत्मन मुखा হয়। ঐ সমরে ভাঁহার পুত্র আলা উদীন গোহায়র নবাৰী मन्नाम जारतार्य करतन । शृट्क हैरताकतारकत बह्नावक जन-नारत भागीत्नत आठा बिता डेकीन नहकाती मनाव इंडेरनक বাডবিক পক্ষে তিনি এই রাজ্যের দাসন্বিবরে কোনস্কুণ হস্তক্ষেপ করিতে পারেন নাই। তিনি ইংরাজয়াজের নির্মিষ্ট ১৮০০- তাকা বার্ষিক বৃদ্ধি লইয়া সন্তই ছিলেন।

ইংরাজ গবর্ষে তেঁর বিধাসভাজন হওরার এবং ইংরাজরাজের আর্গতা বীকার করার, ভারত গবর্ষে উ ১৮৭৪ খুটান্দে আলা-উদ্দীন্তে নবাব উপাধি ও বস্তকপ্রহণের অবিভার দান করিরা একথানি সনক্ষ দেন। ১৮৮৪ খুটাকে এই রাজা অবজালে কড়িত হইলা গড়ার সম্পত্তিরক্ষার ক্ষা ১২ বংসরে পোধ ভরিবার মিরাদে হানীর গবনে তেঁর নিকট বণ প্রবণ করেন। এই সম্বের লোহার রাজ্যের পরিচালনভার আলাউদীনের পুজের হতে তর এবং নবাব আলাউদীন্ অভ্যত্ম সামস্ত ভিরাজনীনের ভার বার্ষিক ১৮ হাজার টাকা বাসহরা পান। এই সম্পত্তির ভূপরিয়াণ ২৮৫ বর্গবাইন। এথানে ৫৪টা প্রায় আছে।

লোহাক নগর এবানকার এখান বাণিজ্যছান। গুরুগাও কেলার করণনগরে এখানকার নবাবগণ আরই বান করেন। লোহার্গলি (দী) লোহত অর্থদানিব। তীর্থ বিশেষ। ব্যাহ-প্রবালে এই তীর্থনাহান্ত্য বর্ণিত ভাতে।

"ভতঃ নিভবটে গছা জিংশগ্রোজনন্তত। ।

রেজনংখ্য বরারোহে বিষয়ত্ত সদালিতন্ত্র

তথ্য গোহার্সিক সাম নিবাসো মে বিবীরভে ।

তথ্য পাশবাং বন সম্ভাব গাববোজনৰ ॥"

(नगरपुर ट्याटसिकासम्ब

২ লোহখীলছ।

লোহাস্থর (পং) অহরভেদ। লোহাস্থর-মাহান্দ্যে ইহার বিষয় লিখিত আছে। লোহি (রী) বেডটৰণ। (মান্সনি°) লোহিকা (ত্রী) লোহমন্তাত্রেভি লোহ-ঠন্। লোহপাত্র। পর্য্যার--থরদেনি, থরপাত্র। (ত্রিকা•) লোহিত (ङ्री) ऋছতে ইতি কহ (রুহেরণ্চ লো বা ৷ উণ্ ৩।৯৪) ইতি ইতন্রভ লক্ষং। ১ রক্তগোশীর্ব। ২ কুস্কুম। ৩ রক্তচনান। ৪ পতাক, পিতক। ৫ হরিচন্দন। ७ তৃণকুছ্ম। ৭ রুধির। "मान्धुमृजः भूतीवः वा श्रीवनः वा अम्रश्राज्यः। অনেধ্যলিপ্তমন্তবা লোহিতং বা বিবাণি বা ॥" (মহু ৪।৫৬) ७ युक्त। ([®]ट्ट्स) ≈ गत्त्रायत्र वित्यव। (स०ळाश्र० ३२०।३२) > भागिका। "মাণিকাং পদ্মরাগঃ স্থাচ্ছোণরত্বঞ্চ লোহিতং।" (ভাষপ্র°) (পুং) ১০ নদবিশেষ। ইহা ত্রহ্মপুত্রের একটা শাখা। [লৌহিতা দেখ।] ১১ সাগর বিশেষ। এই সাগরের জল রক্তবর্ণ, এইজন্ত ইহার নাম লোহিত সাগর। "ডভো রক্তৰণ ভীমং লোহিতং নাম সাগরম্। গছা প্রেক্ত তাঞ্চৈব বৃহতীং কুটশাব্দলীম্। "(রামায়ণ ৪।৪০।৩৯) এই স্থান বৰুণের স্থালয়। (ভারত বনপর্ব) ১২ ভৌম। (বুহৎসংহিতা ৬৮) ১৩ রক্তবর্ণ। (মেদিনী) ১৪ রোহিত-मरख। > स्मृगवित्मव। (भक्तका°) > ७ मर्गर्छन। "বাস্থকিক্তক্ষকশৈচৰ লাগশৈচরাবণত্তথা। ক্ষকত লোহিডতৈব পদ্মতি ক্ৰত বীৰ্যাবান্ ॥" (ভারত ২৷৯৷৮) ১৭ স্থরভেদ। খাদশ মধস্তবের দেবতাভেদ। ১৮ মস্র। (भक्तप्र) ১৯ त्रकान्। २० त्रक्रमानि । "বৃষ্টিকা ব্ৰগোধুমা লোহিতা বে চ লালয়ঃ। মুদ্দাঢ়কী সম্রাশ্ট ধাঞেবু প্রবন্ধাঃ স্বভাঃ 🕫 (স্থলত ১।৪৬) ২১ বলভেদ। (হেম) ২২ পর্বাতবিশেষ। (মৎগুপু° ১२•।>>) २७ कूनबीशक् वर्वास्त्र । (स्टक्क्यू° ১२১।७६) २८ চজুরোগ বিশেষ। (শার্ক ধরদ ১١৬৮৭) ২৩ নাগভেদ। (তি) २६ ब्रस्टर्ग वृक्त । "लाहिकान् वृक्षनिर्वामान् वक्तनव्यक्षवाः खथा ॥" (मस् ६।७) २७ द्वष्विरमय । (इत्रिवरम) লোহিড্ৰক (क्री) লোহিডনিব ইবার্ধে কন্। ১ রীডি। ২ কাংগু। (রাজনি°) (পুং) গোহিত এব স্বার্থে কন্। ও মুল্ল-এছ। ৪ পদ্মরাগমণি। "লয়নেৰু লোহিডকমিৰ্শ্বিডা ভুষঃ লিভিবন্নরন্মিহরিতীরুভাক্তরাঃ 🛭 (মাখ ১৩/৫২)

৩ ধান্তভেদ। ৪ বৌদ্ধন্ত পভেদ। চীনপরিব্রাক্তক হিউএন্-সিরাং এই স্তুপ দেখিয়া গিয়াছিলেন। লোহিতকল্মাষ (অ) নালবর্ণ চিহ্ন (ছাপ) যুক্ত। লোহিতকুট, প্রাচীন জনপদভেদ। সম্ভবভঃ লোহিত পর্বত-माञ्चलनम् स्थान । (हत्रियः न) লোহিতকৃষ্ণ (ত্রি) রুঞ্চাত লালবর্ণ। গাঢ়লাল। (খেতাখ-তর উপ° ৪।৫) উক্ত গ্রন্থে "লোহিত শুক্রকৃষ্ণা" শব্দে মিশ্র বর্ণের উল্লেখ আছে। লোহিতফ্য় (পুং) ১ রকক্ষ। রক্তারতারোগ। ২ রক্তনাশ। ৩ রক্তক্ষরণ বা মোক্ষণ। (স্থ্রুত) লোহিতক্ষয়ক (ত্রি) রক্তারতা রোগগ্রন্ত বা তলোগ-ভোগকারী। (भाक्त धव्रमः २।१।३ • २) লোহিতক্ষীর (ত্রি) রক্তবর্ণ গাড় ছগ্ধক্ষরণশীল। (जावर्ष[°] ३३।३।৮) লোহিতগঙ্গ (क्री) প্রাচীন জনপদভেদ। (হরিবংশ) 'মধ্যে লোহিতগঙ্গস্ত (সিন্ধোঃ) প্রদেশবিশেষত্ত' (নীলকণ্ঠ) (अया) २ यथान शका नानवर्णत प्रथा यात्र । (পাণিনি ২৷১৷২১ ভাষা) লোহিতগঙ্গক (क्री) প্রাচীন স্থানভেদ। লোহিতগ্রীব (পু:) লোহিতং রক্তবর্ণ গ্রীবা ষশু। অগ্নি। (মার্ক°পু° সমাধ্য) লোহিতচন্দন (ক্লী) গোহিতং চন্দন্মিব। ১ কুছ্ম। জাফ্-রান্নামে প্রচলিত। ২ রক্তচন্দন। "পরিভ্রমন্ লোহিতচন্দনোচিতঃ পদাতিরস্তর্গিরিরেণ্রুংসিত:।" (কিরাতার্জুনীয় ১।৩৪) লোহিতজ্ঞ (পুং) প্রাচীন ঋবিবিশেষ। (আখপ্রো° ১২।১৪) লোহিতত্ব (क्री) > লোহিতের ভাব বা ধর্ম। ২ লোহিতবর্ণ। লোহিতথ্যজ্ঞ (ত্রি) > লালবর্ণ পঙাকাযুক্ত। (ভারত উভোগপর্ম) (পুং) ২ সম্প্রায় ভেন। ৩ পুগ। (পা ৫।৩।১১২) লোহিতপাদদেশ (পুং) দেশভেদ। লোহিতপুর (খং) নগরভেম। শোহিপিন্তিন্ (এ) রক্তণিভরোগী। (ক্লভ) 🌋 লোহিপুল্প (ত্রি) লালবর্ণ পুলাধারী, রক্ত কুন্থমসমবিভ। লোছিতপুষ্পক (গং) গোহিতং গুলম্ভ ৰণ্। शक्रि-বৃষ্ণ। (ভাবপ্রকাশ) লোহিতমুক্তি [মৃকা] (জী) লালবর্ণের মৃকা। লোহিতমৃতিকা (ত্রী) শোহিতা সৃত্তিকা। ১ গৈরিক, গিরি-यांने। (त्रक्रयांना) २ त्रक्कवर्ण मृखिका, ताकामांने। লোহিতরাগ (গং) শালরঙ্।

লোহিতবং (ত্রি) রক নৃশ, রক বৃক্ত। (তৈভিরীরশ°৭।৫১২।২) লোহিতবাসস্ (ত্রি) রক্তবর্ণ ব্রবৃক্ত।

"অনুষ্য যদ্ভি যোদিতো হিরা লোহিতবাসস:।" (অথকা ১০০)

'লোহিতবাসস: লোহিতবর্ণবন্ধা:। লোহিতবর্ণ ইজ্যর্থ:।

বহা লোহিতত কবিরস্ত নিবাসভূতা: বস আছোদনে, বস

নিবাসে। ইত্যনরো: অসতরত্মাৎ বসোণৎ (উপ্ ৪০২০৭)

ইতি উপাদিক: অস্থন্প্রত্যয়:। তক্ত শিশ্ভাবাৎ উপধাব্দি:।' (ভাষ্য)

লোহিতশতপত্ৰ (রী) রজোৎপদ। সাদ পদ। (ভাগবত ধাং৪।>•)

লোহিতশবল (ত্রি) লালবর্ণের চিহ্ন বা ছাপযুক্ত।
লোহিতসারক্স (ত্রি) লাল বিন্দ্বিশিষ্ট ।(শতপথবা° অএা নাংত)
লোহিতা (ত্রী) লোহিত-দ্রিয়াং টাপ্। > ক্রোধাদিক্স
রক্তবর্ণা। (ক্রটাধর) ২ বরাহক্রাস্তা। (শক্ষচ°) ৩ রক্তপ্নর্ণবা। (রাজনি°) ৪ অধির জিহ্বান্ডেদ।

লোহিত কি (পুং) লোহিতে অক্ষিণী যন্ত (সক্থাকো: স্বাঙ্গাং ষচ্)। > বিষ্ণু। (শক্ষালা) ২ কোকিল। (শক্চ°) ও লালবর্ণ অক্ষ বা পাশাভেল। মুধিষ্টির বৈদ্ধ্য ও কাঞ্চনমর ক্ষাক্ষ ও লোহিতাক্ষ প্রস্তুত করিরাছিলেন। (ভারত ৪।১।১২) ৪ সপ্ভেল। (স্ক্রশ্রুত) ৫ কন্যাসুচর ভেদ (ভারত ৯ পর্ব্ব)

৬ ঋবিভেদ। (আৰ' শ্রেণ ১২।১৪) (ত্রি) ৭ রক্তবর্ণ চক্ত্যুক্ত।

"ঘণা স্তো লোহিতাকো মহাত্মা পৌরাণিকো বেদিতবান্ পুরস্তাৎ॥" (ভারত ১।৫৬।৬)

লোহিতাকী (স্ত্রী) লোহিতাক্ষ-স্তিরাং তীপ্। ১ রক্তলোচনা।
২ স্কলাস্ট্র মাতৃভেদ। (ভারত শন্য পর্বা) ও জাম্বনদ্ধি ও বাহসদ্ধি (কম্বই) হিত রক্তবাহী শিরাভেদ। (ক্লী) ৪ জাম্ব ও
বাহর সদ্ধি-স্থান। (স্কুশ্রুত)

লোহিতাগিরি (পুং) পর্মাতভেদ। (পা ৬।৩)১১৭)

লোহিতাক (পুং) লোহিতং অধ্য 🐞। > মদৰগ্ৰহ। (হারবংশ ২২৮/১২) ২ কম্পিলকবৃক্ষ। (রাজনিং)

লোহিতানন (পুং) গোহিতমাননং মুখং যন্ত। ১ নকুল। (রাজনি°) (অি) ২ রক্তবর্ণ মুখ।

লোহিতামুখী (ত্রী) অন্তভেদ। (গৌণ রামা° ১।৩০।৯) লোহিতায়ন (গুং) গোত্রপ্রবর্তক কবিভেদ, লোহিতের গোত্রাপত্তা। (সংবারকৌমুদী) ছরিকশে 'লোহিতারন-পুতাক্ত' প্ররোগ দৃষ্ট হর।

লোহিতারনি (রী) লোহিতারনত গোত্রাপতাং রী। লোহি-তারনের বংশোরবা। সম্ভবতঃ লোহিতারনি শব্দের অপপ্ররোগ। শ্লোহিতভোদধেং করা ধাত্রী ক্ষমত সা স্বতা। লোহিডারনিরিডোবং বদধ্য সা হি পৃষ্ঠাতে ।" (ভারতবনপর্ম) লোহিডায়স্ (রী) লোহিডমন্থঃ। ভার। (বিকা°) লোহিডায়স্ (রী) লোহিডং আরসম্। ১ রক্তবর্ণ লোহ-লাভি। (মুখবোধ ব্যাকরণ) ২ ভার। (বি) ৩ ভারনির্মিত (প্রাদি)। (ভৈডিরীয়রা ১)৪।৬।৫)

লোহিতার্প (পুং) দ্বন্ধ্রপ্রের পুরভেন। (ভাগ° ৫।২•।২১) লোহিতার্ম্ম (ব্রি) রক্তাক্ত (শরাদি)। ২ ক্ষরির্ম্ম । (রা ৬৯২।৫৯) লোহিতার্ম্মন্ (ক্লী) চকুগোলকের পার্ববর্ত্তী খেত দকের উপরিভাগে দে দক্ষগুটিকা বা ক্ষীতি উৎপন্ন হন্ন। (স্কুশ্রুত)

লোহিতাবভাস (ি) রকাড। (হলত)

লোহিতাশোক (পুং) রক্তাশোক। ক্যানির্প পুশবিশিষ্ট অলোকরৃক। (কথাসন্নিৎসা• >-৪।৯১)

লোহিতাশ্ব (তি) লোহিতবর্ণ স্বধারোহী।

লোহিতাস্থ (ত্রি) > রক্তবর্ণ মুখবিশিষ্ট। ২ রক্তাক্ত মুখ।
(অধর্ক ৮৮৬)২২) 'লোহিতাজান্ সর্কাণা নবমাংসভক্ষণেন লোহিতোপেতমুখান্ লোহিতবর্ণমুখান্।' (ভাষ্য)

লোহিতাহি (পুং) রক্তবর্ণ দর্শ। (গুরুষজ্ব: ২৪।৩১)

লোহিতিকা (গ্রী) রক্তবহা নাড়ী।

লোহিতিমন্ (পুং) লোহিত্য। লালবর্ণ। (শাৰ্মা°আ°১৮।১১)

লোহিতীভূত (ি) বক্তবৰ্ণতাপ্ৰাপ্ত।

লোহিতেফণা (গ্রী) রক্তচন্থ। লোহিতলোচনা।

লোহিতৈত (ত্রি) রোহিতৈত, লালচিহ্বিশ্লিই।

লোহিতোৎপল (क्री) রক্তপন্ম। (ভাগবত এ২এ৪৮)

লোহিতোদ (ত্রি) লোহিতং উদকং বত্র। > লালবর্ণ উদকবৃক্ত। রক্তবর্ণ জলবিশিষ্ট। (রামা° \$1881%) ২ রক্ত।
(পুং) ৩ রক্তপূর্ণ নরকভেদ।

লোহিতোর্গ (এ) লোহিতানি উর্ণানি বন্দিন্। সাসবর্গ উর্ণানিবিছি। (গুরুষক্ষ্ ২৪।৪) 'লোহিতোনী রক্তলোমবতী (বেদদীপ) লোহিত্য (পুং) লোহিত-ছাঞ্। > ধান্ত বিশেষ। (হেম) ২ ব্যক্তিভেদ। (হরিবংশ) ও ব্রহ্মপুত্রনদ। [লোহিত দেখ।] ৪ প্রাচীন গ্রামভেদ। (রামা থাব) ১২৫) ক্রিরাং টাপ্। লোহিত্যা—বর্গহ দেবীসৃষ্টিভেদ। "লোহিত্যা জনমাতা"

(হরিবংশ)। 'লোহিত্যারনমাতা' এইরূপ পাঠাব্তরও আছে।

৫ নদীভেদ। (ভারত ভীমপর্ম)।

লোহিত্যায়নমাতৃ (ঝী) দেবীজেদ। "গোহিত্যা জনমাতা।" লোহিনিকা (ঝী) > মজবর্ণা। ২ দিরাজেদ। [গোহিত্র দেব।] লোহিনী (ঝী) গোহিতা-(বর্ণাদহদাভাদিতি। পা ৪০১০১) ইতি ভীপ্। তকারত নকারাদেশত। > রক্তবর্ণা শ্রী। ফোধে রক্তবর্ণা রমনী।

"রোহিণী রোহিতা রক্তা লোহিনী লোহিকা চ সা **ঃ" (ক**টাধর) লোভিনীকা (বাঁ) রক্তবর্ণ দীথৈবিশিষ্টা । (তৈভিনীরব্রা°২াসাস্থাই লোহিন্য (পুং) গোত্ৰপ্ৰবৰ্তৰ ধবিভেষ। (প্ৰবরাধ্যার) সম্ভবতঃ ইহা গৌহিডোর প্রামাধিক পাঠ। लाट्यांख्य (जी) लाट्य् नर्बटेक्स्टन्यू केंब्यम्। वर्ग। (ट्य) লৌকাক্ষ (পুং) ধর্মশাখাভের। পাণিনি ভাষাত্র হত্তের কাৰ্ডকৌৰপাৰিগণে "কৌৰুম লৌকাকাঃ" শব্দে শাখা বিশেষের উল্লেখ করিয়াছেন।

লৌকায়ভিক (পুং) লোকারডমধীতে বেদ বা লোকারড-(ক্রতুৰ্থানিসুত্রাস্তাৎ ঠকু। পা ৪।২।৬০) ১ তার্কিকভেদ।

"কশ্বিদ্যুট্গীকায়তিকান্ ত্রান্ধণাছপদেবনে। অনর্বভূশলা ছেতে মৃঢ়া: পণ্ডিডমানিন: n" (রামা°২।১০৯)২৯) ২ চার্মাকশান্তবেডা। লোকায়তং বেন্ডি ইভার্যে কিক্ প্রজ্ঞারেন নিশরোধয়ম। [লোকারতিক দেখ।]

লৌকিক (এ) লোকে বিদিতঃ প্রসিম্বো হিতো লোকং বেছি বা। লোক-ঠঞ্। লোকব্যবহারসিদ।

"বৈদিকা গৌৰিকজৈত বে যথোজাতথৈব তে। নিৰ্ণীতাৰ্থাত বিজেয়া লোকাত্তেবামসংগ্ৰহ: #°

(কলাপব্যাকরণ সন্ধির্ত্তি)

দুর্বোধমতে,—লোকার হিত ইতার্থে চ ঠক্-প্রত্যর-নিলায়: ইভি। লৌকিক শব্দে পার্থিব বা লোকাচার সম্বভীর বুঝার, ইহা বৈদিক আর্ব বা শাস্ত্রীর হইতে ভিন্ন।

২ কাশ্মীরের অবভেদ। (রাজতর° ১।৫২) [কাশ্মীর দেধ।] ৩ ভারভেদ। দ্রিয়াং ভীপ।

লোকিকজ্ঞান (দী) শাত্রাদিকান। (মুদ্রুক) নেথাডিখি লিখিরাছেন—'লোকে ভবং লৌকিকং লোকাচারশিক্ষণমথবা गैज्यारिज्यनामार स्नामः वारशायमविभाषिकनाविषयाशस्त्रामः वः।' (ম্ছু ২০১৭ ভাষা)

লোকিকভা (রী) লৌকিক্স ভাষঃ। লৌকিক্-ডল্ টাপ্। ১ লোকব্যবহারনি**দদ। ২ শিষ্টা**চার (ভূরিপ্ররোগ) আত্মীর ক্তম মধ্যে সামাজিক কাৰ্যবিশেৰে বন্ধ মিষ্টানাদি উপঢৌকনের পদ্ধশন্তের আহান প্রদান। চলিত কথায় ইহাকে "লোকলোকভা वा मोक्किका" नना स्हेता थाएक।

লোকিকড (দ্লী) লোকিকডা। লোকপ্ৰসিছৰ। "পারিমিত্যাল্লৌকিক্ছাৎ সাম্বরায়তরা তথা। অভুকাৰ্য্যক ব্ৰজ্যাবেকৰোখোন বলোভৰং হ" (নাহিডাহ' ৪৯) লোকিকবিষয়বিচার (গং) আচলিভ নাবারণ বিষয়ের मीमारमा ना नामाञ्चाम । লৌকিকাগ্নি (গুং) নৌকিকোধবিঃ। অসংমুক্ত অবি।

"ন পৈত্র্যজ্জিরে হোমো লৌকিকে২মৌ বিধীরতে।" মহ ৩/২৮২। 'লৌকিকে শ্রোভন্মার্ভব্যভিত্নিকার্মো শান্ত্রেণ বিধীয়তে। তত্মাৎ ন লৌকিকাগ্নাবগ্নৌকরণহোম: কর্ত্তব্য:।' (কুলুক) লৌকিকাচার (রী) > লোকাচার। ২ কুলাচার। **লৌকিকী (জী) > শাত্রগ্রসদ্ধা। ২ প্রধ্যাতা।** "ত্মিন্ যুক্ততৈভি নিভাং প্ৰেভকুত্যৈৰ গৌকিকী ॥"মভু ৩১৩৭ : **লৌ**কিকীযাত্রা (জী) > শোক্ষাবহার। ২ বিবাহাদি সাংসারিক কার্য্য।

"দারাম্ভ গ্রেমান# বাজা চৈব হি লৌকিকী ॥" (মনু ১১৷১৮৫) ্লৌকিকীবাত্রা সঙ্গতরো: কুলনপ্রান্নাদিকা বিবাহাদৌ নৈমিছে গৃহানরনং ভোজনঞ্চেত্যেবমাদি।' (মেধাডিখি)

লৌক্য (এি) লোকভব ইতি ব্যঞ্। ১ লোকসৰ্মীর। ২পার্থিব। ৩ সাধারণ। (পুং) ৪ ৰবিজেদ। (শাঙ্খা° ব্রা° ১৫।১।৭২) লৌগাক্ষি (গুং) > লোগান্দের গোত্রাপত্য। ২ বৈদিক আচার্য্যভেদ। ইনি ধর্মস্তব্রপ্রণেতা বলিয়া বিখ্যাত। ইহার শিয়সম্প্রদার ভরামক খডর শাখাধাারী বলিরা কথিত।

"শৌগাক্ষিম দ্বিল: কুলা: কুলীন: কুক্ষিরেব চ। পৌশলিকা জগৃহ: সংহিতাত্তে শতং শতম্ ॥"(ভাগ°১২।৬।১৯) কাত্যায়ন শ্রোতহতে (১।৬।২৪) লোগান্ধির **উল্লেখ আছে**। আর্বাধ্যায়, উপনয়নতন্ত্র, কঠিকগৃহুত্ত্ত্ব্, প্রবরাধ্যায় ও শ্লোক-তর্পণ নামক কয়ধানি তাঁহার রচিত বলিয়া প্রকাশ। পৈঠানসী. বিজ্ঞানেশর ও হেমাজি লোগান্দি শ্বতিরও উল্লেখ করিরাছেন। লোগাফিভাস্কর, অর্থসংগ্রহ নামক মীমাংসাশাক্ষগ্রন্থপ্রণেতা। ইহার রচিত আরও কতকগুলি দর্শনশাস্ত্রসম্বনীয় গ্রন্থ পাওয়া বার। লৌড, উন্মাদ। ভাদি পরকৈ'। লোড, রোড়। চতুর্দ্রশ স্বরী। নট্ নোড়ডি, নোডডি, নোটডি। 🛊 অনুনোড়ং। *(क्वोच्न (क्री) नाम*ए७४ ।

লৌম (ত্রি) লোম সুম্বীর। লোমজাত। লৌমকায়ন (বি 🚉 লোমক সম্বন্ধীয়। (পা ৪।২।৮০ পঞ্চাদিগ্ৰ) লৌমকায়নি (পুং) লোমকের গোত্রাপত্য।(পা ৪৷১৷১৫৪ ভিকাদিগণ) লোমকীয় (তি) লোমক সম্বীয়। (পা ৪।২।৮০ ক্লাৰাদিল) ক্রোমন্য (ত্রি) রৌমণা। রোমবছল। (পা ৪।২।৮০ সন্ধাশাদিগণ) লোমনীয় (এ) লোমণনভূত। ২ লোমণনভার। (श शराहर जनायारि)

লৌমহর্ষণক (बि) লোমহর্ষণক্বত (সংহিতা)। লোমহর্ষণি (পুং) লোম্বর্ণের গোত্রাপভা। (ভারত ১/৫) লৌমায়ন (कि) শোৰ সম্বীর, রোমক্ষণ। রোমারণ। (পা ৪।২।৮০ পঞ্চাহিন্ন) (পুং) লোমনের গোত্রাপ্রভা । লোমারভা। क्षरे पर्दा करे पण वस्त्रामा । (शा अध्यक्ष कृषावित्रम्)

লৌমারস্থা (গ্রং) লোমনের কংশধর মাত্র।
লৌমি (গ্রং) লোমের গোত্রাপত্য। (পা ৪।১।৯৬ বাহরাদিসশ)
লৌলাহ প্রাচীন স্থানভেদ। (রাজতর ৭।১২৫২)
লৌলিক, একজন প্রাচীন কবি।
লৌলার (ক্রী) লোলভ ভাবং। ১ চাঞ্চল্য, অন্থিরতা। ২ অস্থানিও,
লোপত্ব। "ধর্মনোল্যেন সংয্তাং" (হরিবংশ) 'ধর্মলোশেন'
নীলকঠ। ওইজা, ফলম্পৃহা। ৪ শৈথিল্য। (ভাগবত ৭।১৫।১৯)
লৌল্যতা (ক্রী) দৈভতানিবন্ধন বন্ধ বিশেষে বনবতী আবাজনা।
"গৃহস্কৃত ক্রিয়াত্যাগো ব্রত্যাল্যো বটোর্মি। তপ্রিনা গ্রামনের ভিজ্পারিব্রিম্নলোল্যতা। মা

(ভাগবছ ৭।১৫।৩৮)
লোল্বেং (ব্রি) ১ অতিশয় স্পৃহাশীল। ২ অর্থগৃয়ু। ৩
আকাজ্জাযুক্ত। (কথাসরিংসাং ২১।২০০)
লোশ (ক্রী । কএক প্রকার সাম।

লোহ (গং) লোহ এব। (প্রজ্ঞান্তণ্। পা° ৪।৩)২৪ প্রে রাজতাদিগণে এই পদের বৃংপত্তি সিদ্ধ করিবাছেন)। স্থান-প্রসিদ্ধ লোহ নামক ধাড়। ভূগতে এই থাড়ুর উৎপত্তি। বিশেব বিশেব গুণ থাকার, বিভিন্ন দেশীর চিকিৎসক ও বৈজ্ঞা-নিকক্ষণ ইহার রাসারনিক্ষ বলাবল পরীক্ষা করিরা ঔবধরূপে ইহা সেবন করিতে আলেশ দিরাছেন। খনিজ লোহ সংবারারে বথাবিধি প্রহণ করিরা অভাভ ঔবধের বোগে পাক করিতে হর। বৈভক্ষ মতে লোহের ব্রারোদশ প্রকার সংবার সাধিত হইরা থাকে—১ শালিঘর্বণ, ২ উত্তর্জন, ৩ অন্নভাষন, ৪ আতপশোব, ধ নিবেক, ৬ মারণ, ৭ নলন, ৮ ক্ষালন, ৯ স্ব্রাপাক, ১০ স্থালীপাক, ১১ চুর্গন, ১২ প্রট্পাক, এবং ১৩ পাকনিশার।

বর্ত্তমান সময়ে পৃথিবীর বিভিন্ন দেশে লোহের আকর দৃষ্ট হইলেও, প্রাচীন ও আধুনিক ভারতে মৃদ্তর বিশেবে বে সকল বিভিন্ন প্রকার লোহ পাওরা বাইত বা যার, তৎসমুদার লোহেই সংস্থানাত্তমারে বিভিন্ন গুণ ও বলপ্রাক্ত্রী আরুর্কেদপ্রবর্ত্তক র্যায়গ্র কারী, পাওি, কান্ত, কালিক ও বক্তর নামে লোহের পাচটী ভেদ নির্দেশ করিরাছেন। উক্ত পঞ্চ নামধের লোহই শ্রেষ্ঠ এবং ব্যবহার করিলে বিশেব ফলদারক হর। ইহার গুণ-আরু, বল, বীর্য় ও কামদ, মোগনালক এবং প্রেষ্ঠতম রলাম্বন। ক্রমবর্ণ লোহের গুণ-শোণ, শৃল, অর্ণাঃ, কুই, পাপু, প্রমেহ, মেন্ড ও বার্নাশক, বরঃইর্য্য ও চক্ত্রেকারী, সারক ও গুল। শোধিত লোহের গুণ-শর্করোগনালক, মরণরোধক। অন্তর্ক্তর লাহের গুণ-শ্রারণারোগাঁ ও আরুর্নাশক। লোহের জ্বা-শ্রারণারির সংক্রিপ্র পরিচর বধারানে বর্ণিত হইরাছে।

[जनावम ७ लाह राष"।]

ভারতের বিভিন্ন হানে এবং ভিন্ন ভিন্ন নালে এই বাকু পুন্দ পুন্দ নামে পরিচিত। হিন্দী লোহা, লোহা, লোহা বালালা—লোহা, লোহ; মন্ত্রী—রোখও; ওজনাটী—লেবু; ভামিল—ইক্ছু; ভেলও—ইহুমু; ফনাড়ী—কবিনা; মলনালম্—ইক্ষা, ব্রহ্ম নান, থান; জানব—হুনিল; গারভ—আহন; নিলাপুর্ক—বকল; ইংরাজী—Iron; লাটিল—Ferrum; করালী—Fer; ক্ষালী—Eisen; পর্চু গারভ ইতালী—Ferro, শোন—Hierro; দিনেনার ও হুরেডিন্—Jern; ওলনাজ—Jiser, Yzer; গার্থ—Ain; প্রীক্—Sideros; তৃক—লেনির, ভিমুর, পোলও—Zelaso; ক্ষ—Scheleso; পর্তু—অরন্পা।; মলর—বিন, বেনি। নানানমিকদিকের ক্ষেত্রী থাড়ু মলন্বহের প্রভাবনশনর।

ভারতের ভূপজন আলোচনা করিলে দেখা বার বে, বিভিন্ন
তরে বিভিন্ন পার্থিব পদার্থের সহযোগে লৌহধাড় নিপ্রভাবে
বর্তমান আছে। বৈজ্ঞানিকগণ ঐ সমন্ত বিভিন্ন তরের কানিছত দৌহ (Irviz cres) বিশেষভাবে পর্যাবেকণ করিরাছেন।
তাঁহারা বলেন বে, প্রান্ধত অযন্থার ধাতুবিশেবের সহিত স্বর বা
অধিক পরিমাণে দৌহ মিপ্রিভ বাকে। আবান কোন কোন
হলে লোহের সহিত অভ ধাতুর সংল্রব থাকে না, কেবল
কতকভালি পার্থিব পদার্থের সমাবেশমাত্র বেখা বার। যৌগিকরূপে এই লোহ প্রচুর পাওরা বার। মুক্ত দৌহ অপেঞ্চারুত
হল্লিভ পদার্থ। লোহের স্বাভাবিক যৌগিক ক্ষাংখ্য প্রকার।
ইহার জন্ধাইত, কার্মনেই, কার্ম্যাইত, প্রভৃতি রানারনিক
পরীক্ষা ও বিপ্লেষণ বারা অবগত হওরা বার।

কতকগুলি অপরিষ্ণত বৌগিক লোহকে পরীক্ষা বারা বিশুভ করিয়া দেখা গিরাছে যে, ঐ সকল খনিক পদার্থে লোহের পরিমাণ অস্তান্ত জরীর মৃথিকারাদির লোহ-সংহান অপেকা অনেক অধিক, নাধারণের অবগতির কন্ত নিয়ে কএকটা বিশুভ ও পরীক্ষিত লোহের ভালিকা প্রায়ন্ত হইন ঃ—

চুখক-প্রতার বলিরা বে প্রবাটী সাধারণে প্রচলিত আছে, ভাষা লোহের একটা অস্কাইড মাত্র, ইহান্দে Ferroso-ferric বা Magnetic Oxide (FesO4) বলে, ইহার অপন মাম Magnetice or magnetic iron, ইহাতে প্রায় ৭২.৪ অংশ বিশুদ্ধ লোহ বালে। বৈজ্ঞানিক ভাষার এই বৌলিজকৈ Protoseaquioxide বলা বায়। বিশুদ্ধ লোহপ্রান্তির আলার ভারতের নানা খানের লোকেরা ক্রুক্তর্প বালুকা বিশেষ (Black sand) অন্তির উত্তালে গলাইস্কা লয়। উল্লাভে Magnetice ও গ্রাহ্মনার্গরণালয়ে লোহ মৌলিজকণে ক্রিপ্রিভ বাকে। বিশ্বিমাটিন বৈজ্ঞানিক ভাষার Bed hamatics ও

ইংরাজীতে Red ochre (Fe2Os) নামে পরিচিত। ইহা Sesquioxide ও ইহাতে ৭০ জাগ লোহ পাওরা বার। এলাবাটী বা Yellow ochre (2 Fe 2Os, 8H2O) রাসারনিকের নিকট Brown hæmatite or Limonite নামে প্রসিদ্ধ। ইহাতে সাধারণতঃ ৫৯-৯ লোহ বিভয়ান আছে।

ভার্মনেট্ অব্ আর্রপতে Spathic iron ore বা Siderite বলা বার। উহাতে ৪৮-৩ ভাগ লোহ থাকে। এই ভার্মনেট্ বা স্পাধিক লোহের সহিত কর্দম মিপ্রিত থাকিলে ভারতে Clay-ironstone বা Argillaceous ironstone ore বলে। Black-sand নামক মৃত্তিভাতের ভার্মন্ দিপ্রিভ ক্লে-আর্রপ টোন্ লইরা গঠিত। Hæmatite শ্রেণীর অন্তর্ভুক্ত বা ভারার সমপ্রেণীর বলিরা ক্রিভ Ilmenite লাবে আর একপ্রকার রুত্তিকা পাওরা বার। উহার কতভাবে Titanium থারা খানচ্যত হওয়ার রাসারনিকগণ উহাকে Tatiniferous iron বলিরা থাকেন। এই সকল বৌলিক পদার্থে লোহের মানা সর্বান্ত নামের।

ভূগর্ত-মধ্যে অতি প্রাচীনবৃদীর তারে লোহধাতুর সংস্থান
লেখিরা অন্থান হর যে, অতি প্রাচীনকাল হইতেই এই গাড়
লাধারণে প্রচলিত ছিল; কিন্ত কোন্ সমরে ও কাহার ধারা
এই গাড় আবিষ্কৃত হইয়াছিল এবং কোন্ স্থপণ্ডিত ইহার
ধ্যবহারোপবােগিতা নির্দেশ করিয়া গিয়াছিলেন, ডাহার কোন
বিষরণই ইভিহাসে বির্ত নাই। তাবে আর্থ্য-হিন্দুগণের
সর্ব্বপ্রাচীন অনুসংহিতা গ্রন্থ পাঠ করিলে বুঝা যায় যে, আর্থাভ্রিমণ বৈদিক ব্রেও লোইহের নির্দ্বশীকরণবিথি (অনু ৪)২।১৭),
ভাহার কাঠিত (অনু ১)১৬০১৯) এবং ভীক্ষধারত (অনু ৬০১৫)
অবগত হইয়াছিলেন। গুরুযকুর্বেদেয় "মেহরল্ড মে স্থামঞ্জ্য মের্লাছ্ক মে সীলঞ্জ মে অপু চ মে বজেন করন্তাম্ ॥" (১৮।১৩)
মন্ত্রাংশ পাঠ করিলে স্পাইই বুঝা বার বে, ডৎকালে আর্থাহিন্দুগণ
লোইক প্রধারাহিত অবগত হইয়াছিলেন। অবর্ধবেরের
হাহলাও ও১১।৩০২ মন্তে লোইহের উল্লেখ আছে।

বৈষিক সংহিতাবুদের পর, রাজণ ও প্রেবুদের পোহের জনেকান্তক অধিক প্রচলন হইরাহিল। শতপথ-রাজণ ভানারন গ্রাজন-ক্রোক্তক গালাওর, ২০াগান, ২০াগান, আর্থলারন গৃক্তর ১াগান প্রকৃতি পাঠ করিলে আরস ক্রাধি ব্যবহারের নিকর্মন পাওরা বার। বহুসংহিতার ৫০১১০১৩ প্রোক পাঠ করিলে পাইই প্রভীয়মান হয় বে, জৎকালে ক্রমণারাধিও পৌহারি বাজুবোরে নির্মিত কৃষ্টিত। তাহারা করে ও জ্যান্তানে পৌহণার বার্মনা করিয়া কলবারা বেটত করিয়া করিবল, ভার্মনেই জিপার কর বলির করা করিবল করিবল। আহার

উক্ত গ্রন্থের ১১৷১৬৭ স্লোকে লৌহপাত্রহরণের নিষেধ বচন লক্ষ্য করিলে মনে হর, মানবজাতি আনিমহুগে লৌহকে একটা সুল্যবান ধাতু বলিয়া লানিয়াছিলেন। অভঃপর যাক্ষৰড্য-সংহিতার (২০১৭) গৌহপিও, মহাভারতের বনপর্কে লোহভাজন, রামারণে (১৷৬০৷১২) লোহমর আভরণ, সুক্রতে (১৷২৩৷২০) কুম্ব এবং শ্রীমন্তাগৰতে (১১৷২৭৷১২) লৌহী (সুষ্ণাদি স্বষ্ট্ধাতুম্বী)-প্রতিমা নির্মাণের ব্যবস্থা দেখিরা মনে হর, আর্য-হিন্দুগণ দর্মাগ্রেই দৌহের ব্যবহার অবগত হইরাছিলেন এবং তাঁহারা সেই ধাতু হইতে প্রকৃষ্ট দেবদেবী-অতিমা বিনিশ্বাণ করিয়া শিরনৈপুণ্যের পরাকার্চা প্রদর্শন করিরা গিরাছেন। সেই প্রাচীন পিছকীর্মির বেধায়াত্র আমাদের দৃষ্টিগোচর না হইলেও, আমরা আঞ্জিও ভদশেকা পরবর্ত্তিবুগের কীর্ত্তিতত্ত লইয়া গৌরবাধিত রহিয়াছি। দিলীর স্থাসিদ্ধ লোহত্তম্ভ (পূৰ্যান্তম্ভ) সেই প্ৰাচীনকালের শিৱকীৰ্দ্ধির পরিচর দিতেছে। ১৫শ শতাব্যধিককাল জুলবারুর প্রকোপ ভোগ করিয়াও উহা নষ্ট হয় নাই। [দিল্লী দেখ।]

কাহারও কাহারও বিধান, গৌহধওসমূহ কোন সমর আকাশ হইতে উঝাণাতরূপে পৃথিবীবক্ষে নিপতিত হইরাছিল, কেন না প্রারুতাবহার লোহ বেরপ বৌগিকভাবে অবস্থিত দেখা যার, উঝারও প্রারু তক্রপভাবেই বিমিপ্রিত থাকে। ইহাতে বত:ই অলুমান হর বে, উহা প্রধানত: উঝাল-(Meteoric origin) পদার্থ তির আর অপর কিছুই নহে। বিশেবরূপে আলোচনা করিরা দেখিলে জানা যার বে, উহাতে নানা আরের (acids) কার-(soda) রূপে পর্যাপ্ত পরিমাণে অক্সিজেন ও গক্ষক মিপ্রিত আছে; তব্রির তাহাতে অক্সাক্ত থাতু ও বিভিন্ন প্রকার বৃত্তিকার সমাবেশ থাকার সাধারণ দৃষ্টিতে উহার গোহ-সংস্থান নির্দির করা স্ক্রিন। [উঝা দেখ]

চিরপ্রসিদ্ধ এই লোহধাড়ু ভারতের যে বে বিভাগের ভূতকে বৌগিকভাবে অবস্থিত আছে, সাধারণের অবগতির বাচ নিম্নে তাহার সংক্ষিপ্ত পরিচর প্রধান করা গেল:—

বাজান্ত-বিভাগ।

স্থানের দাব	लोश्यकात्र	গদাইবার ছান
তিবাকোর	ज्ञाक्यात्त्रवाहे ७ नाटिशहे	শ্ৰেনকো টা
ভিৱেৰণী	যায়েটক আরমণ ভাও	বজকুলম্
मक्त्रा	नाटिबार्वे	এবন হ্নাপ্য
পূহকোট্টই	मारब छ। विष्	
ৰিচী শশৰী	কেলজিনাস্ নডিউস্	manus.
কোরবাডোর	রাক্ ভাগ্ড	,
मीजतिव	दिवांगारेष्ट्रे ७ बादबंगारेष्ट्रे,	

शास्त्र गांव	দৌহ প্ৰকাৰ	গলাইবার ছাব
মলবার	मारबंधारेष्ट्रे । नारवेबारेष्ट्	কৰ্মনাড়, শেরনাড়,
		বলবনাড় এরনাড় ও
		তেমেলপুর ভালুক।
সালেষ •	শাখেটাইট্	পোটো-নভো
দক্ষিণআৰ্কট	होग	তিৰূপন্দর,ক্রকুর্চি
উত্তৰ	ব্লাক-জাও	-
চেক্সপৎ	माप्त्रिकोहें । श्रिमाकोहें	Water
নেল্ব	गामिकारेषे अ स्मिकारेषे	Works.
কোড়গ	ৰিমাটাইট্	Menta
কৰ্ণ	a	qualipa
বেলগী	ঠ	-
কৃ ক(-	শুন্টুর, মুসলীপস্কন
গোদাবরী	লাইমোনাইট ও হিমাটাইট	down
বিজাগা	ণ্টম্, গ্ৰাম, অন ভণ্ র ও দ	ব্দিশ-কানাড়ায় স্থানে

বিজ্ঞাগাপটম্, গ্রাম, অনজপুর ও দক্ষিণ-কানাড়ার হানে হানে অম্বিভর সৌহ সংগৃহীত হইরা থাকে।

মহিশ্ব-রাজ্য মইগ্রাম মাজেটাইট — বঙ্গপুর ব্লাক-সাও চীনপত্তন † নাগর ঐ ও হিমাটাইট বাবা-ব্লন,চিত্তলছুর্গ,

উপরোক্ত তিনটী বিভাগের বিভিন্ন কেলার পর্যাপ্ত পরিমাণ লোহ উৎপন্ন হইরা থাকে। নাগন-বিভাগের অবর্গত কছর নামক স্থানের চতুলার্থে প্রচুর লোহ পাওরা যায়। তথাকার ওব্রাণী নগরের চতুলার্থে ও বাবাব্দন গ্রামের পূর্কহিত লৈলপাদ-সুলে থনিত্ব লোহ গালাই করিবার কারধানা আছে। তত্তির এধানে ইল্লাভ প্রস্তুত হইরা বাকে।

হাইদরাবাদ বিভাগ

এখানে হিমাটাইট, টিটানিকেরাস্ সাও এবং বরদলে হরিদ্রাবর্ণ এলামাটী ও লাল গিরিমাটীতে লৌহ দেখা বার। লিজসাগর
' জেলার প্রকৃত ধারবাড়-শৈলমালার পেরার-হগ্গেরী-শৈলত্তরে
মায়েটাইট্ লৌহেরও সংস্থান আছে। তথাকার সিংহরেণী
ক্রলার থনিতে অপেকারত উৎক্রই লৌহ পাওরা বার।
আনন্তগিরি, কলুর প্রভৃতি পরগণার লোহা গালাই করিবার
কারধানা আছে। বেলগগুলের অন্তর্গত ক্এক্থানি প্রামে
ইন্পাত প্রস্তুত হর। এখানকার কোপসমূলমের ইন্পাত-

কারণানা বছকাল বইতে প্রসিদ্ধ । পাকাশ বংসরের পূর্বালিখিত একথানি বিবরণী বইতে জানা বার বে, পার্ক্তশালী বণিক্সপ্রদার কোপসমূতে আসিরা এখানকার সর্কোৎকুট ইস্পাত কর করিয়া লইরা বাইত । উহাতে লানাভাসের চিরন্তন প্রসিদ্ধ তরবারির কলক প্রভাত বইড়। ঐ ইস্পাত সাধারণতঃ বিটপরীয় Iron-eand এবং শিক্ষ্তির magnetite লোহ বইতে পরিগৃহীত বইরা থাকে।

वश्याक्त

বতার, স্বলপুর, বিলাসপুর, রারপুর, চালা, বালাবাট, ভাওারা, নাগপুর, মঞ্চল, শিওমী, ছিল্লবাড়া, নিমার, হোসভাবাৎ, নরসিংহপুর ও কবলপুর প্রভৃতি কেলার বিভিন্ন ছানে হিমাটাইট্, নাংগ্রাইট্, লাইবোনাইট্, লাটেরিটিক্ প্রাকৃতি প্রেলীর বােলিক-লোই পর্যাপ্তভাবে বিশ্লিপ্ত আছে । ঐ সকলের মধ্যে সকলপুরের অন্তর্গত গড়জাত-বহলসমূহে, রাররাখোলে , রারপুরের অন্তর্গত কতী-লোহারা, বৈরগড়, বোরার-বাধ, গঙাই, ঠাকুরজলা ও নলগাও ভূতাগে; বালা-কেলার মধ্যে লোহারা, কেলগাঁও, পিরলগাঁও, গুরুবাটা, ওগোলপেট, মেটাপুর ও ভানপুর এবং লোরা পর্বতের অন্তর্গত মোগালা, গোগ্রা, লানবাই ও ঘোষালপুর প্রভৃতি হানে প্রচুর লোহ উৎপন্ন হয় । উমারিরা-করলার খনির কারখানার, জব্বলপুরের উত্তরপশ্চিমত্ব বাবতার হানের খনিক লোহ রুরোপীর প্রথার পরিষ্কৃত হইরা ব্যবহারোলহেলগী লোহে পরিণত হইতেছে ।

রেবা, ব্লেলখণ্ড, গোরালিয়র, ইলোর, ধার, চক্রগড় ও
আলি-রাজপুর প্রভৃতি ভূভাগে হিমাটাইট্ ও মালানিকেরাল্
বৌগিফ-লৌহ পাওয়া বার । ঐ সকল লৌহ অধিকাংশই Coalmeasure strata' ও 'metamorphic rocks' নামক জরে
বিক্তন্ত রহিয়াছে। গোরালিবরের অন্তর্গত সাজান, বৃাইশোরা,
গোকুলপুর, ধরৌলী, বানবারী, রায়পুর পার-শৈল, মালোর,
বিনাওয়ী, বরোলা, ইমিলিয়া গুলায়ী, ও বায়োন্ প্রভৃতি প্রামে
হিমাটাইট্ ও লাইমোনাইট্ শ্রেণীর লোহায় ধনি আছে।
ইলোর হইতে ৩০ মাইল লন্ধিন-পশ্চিমে অবস্থিত বাম-প্রামের
Transition rocks জরে চিমকন প্রাস্থিত হিমাটাইট্ লোহের
ভাকর বিশ্বান।

त्वावार

উত্তর-কানাড়া, থারবাড়, কালালন্তি, বেসগার্, গোয়া, সাবক্তবাড়ী, কোল্লাপুর, রয়ণিরি, সাভারা, ক্বাট, রেবাকাছা, পঞ্চরলাল, কাঠিরাবাড় ও কল্প-আবলে নাম্রেটাইট, সাটেরাইট্ ও হিনাটাইট্ শ্রেণীর লোহ বেধিকে পাওবা বার। জন্মধ্যে রন্তানির অভর্গত নাজুবান্ পর্যক্ষের নিকট্য-ক্রোকাছার অস্কু-

এবানকার নৌহ অভি উৎকৃত্ব এবং তার্ডব্যাল্লারে লাকিট নেই বিভক্ত;
 ববা,—১ গোহ্বলা জুল, ২ ভূলজান-কোলিবলা জুল, ৬ নিলীপট জুল,
 তীর্থবলী জুল;

নাগাব্যের ইপাতের ভারের হাত এই ছান বহ আমিন কান হইতে
লানিতি নাভ করিবাছে।

বোড়া, নিমোড়া ও লাগকেখর মামক স্থানে এবং কাঠিরাবাড়ের ওমিরা-শিখরে জ্বাসিক-তরে প্রচুর লৌহ আছে; কিন্তু এখন জনেক স্থানেই লোহা পলাইবার বস্তু চুরীতে আগুন বলে না।

অরপর, মেবার, আলবার, রারবাড়, আজমীয়, বুলী, কোটা ও জরতপুর রাজ্যের বিভিন্ন তরে যৌগিকভাবে লৌহ বিভ্যান আছে। তর্মধ্যে আরাবলী-পর্বতের ট্রাজিশন্-তর, নির্প্রদেশের কীরপর ও রাণীকোট-শ্রেণী, মেবারের গলোর ক্টিগের নিকটবতী হান এবং আলবার-রাজ্যের রাজগড়ের নিকটন্থ বিস্থৃত লৌহ ধনি উল্লেখবোগ্য। এখানকার লৌহ মাগ্রেটাইট্, হিমাটাইট্, ও মালানিক্ অরাইডের বৌগিকরণে অবস্থিত।

পঞ্জাব

বরু, পেশাবর, ঝিলাম্, কাঙ্ডা, মণ্ডী, সিমলা-শৈলরাজ্যসমূহ ও গুরগাঁও জেলার নানা ছানে লোহ দেখা বার। তর্মাধ্যে
কাঙড়ার magnetic ironsand বিশেব প্রশন্ত। কাশ্মীর রাজ্যের
পঞ্চ নামক নদীতীরবত্তী পার্কাত্য-প্রেদেশে, পঞ্চলিরের উত্তরত্বজাগড়-শৈলের নিকটে, ভীমবারা নদীর ভীরবত্তী ক্ষকাহন্ গ্রামে;
কাশ্মীর উপত্যকার সোপুরে ও পামপুর নামক স্থানের নিকট
দেশে এবং লাদধ্যের অন্তর্গত বান্লা-গ্রামে পৌহ সংগ্রহের
কারধানা আছে।

वृक्त असम

কুমাবুন, দলিত, বান্দা ও মীর্জাপর জেলার প্রচুর লৌহ পাওরা বার। তর্মধ্যে কুমারনের অন্তর্গত রামগড়, পহলী, লোলগিয়ানী, নাত্না-খা, পারবাড়া, বৈরানা এবং নিবালিক তরের কালধুলী ও দেচৌরী নামক স্থানের লৌহ শ্রেষ্ঠ। এই ভানের লৌহ সকল micaceous hæmatite and limenite বলিয়া প্রসিদ্ধ।

বাহালা

বাদালা-এবেশের মধ্যে ব্যাকরের বোহার কারখানা (Barakar Iron-works) সর্বভ্রেষ্ট । রাণীগঞ্জের করলার ধনির মধ্যে Ironstone shules ও nodules of clay-iron stone পাওলা বার । বীরভূম, ভাগলপুর, মুদ্দের, গলা, মানভূম, লিংকভূম, লোহারভাগা, উড়িবাা, হোটনাগপুরের নামস্তরাভ্রা সমূহ এবং বার্কিলিও লোহ-সংহান দেখা বার । Birbhum Iron-works Company চুলীতে কাবা মাখা প্রথার (a sort of puddlingspeccess) বৌলিক লোহ পালান হইলা থাকে।

খনিয়া ও কৰতী শৈলে, নাগা শৈক্ষাভায় এবং যদিপুর মাজ্যে সাধারণতঃ টাবিয়ানি কয়ল-করে titaulforous magnetite, pisolitic m-dulo of limenite ও nodules of clay ironatone কোনা নায় : খনিয়া ক্ষেত্ৰাতী নিৰ্দেশ্য যোগ্য- ন্তরে দৌহ পাওরা বার, তাহা ভঙ্গপ্রবণ হওরার তথাকার লোকে উহা উন্তমরূপে চূর্ণ করিরা লর। পরে একটা মালীপথে বথার প্রবলবেগে জলধারা প্রবাহিত হইতেছে, সেই স্থানে ঐ চূর্ণগুলি লইরা ধূইতে থাকে। তাহাতে মৃত্তিকা ও তদমরূপ লল্প পদার্থগুলি জলকোতে ভাসিরা বার এবং অপেক্ষাক্রত গুরু লোহকণাগুলি নিমে সক্ষিত হয়। এইরূপে উপর্যুগরি প্রক্ষালনের পর বখন সেই বোলিক লোহচূর্ণ মৃদাদি পার্থিব পদার্থ হইতে বিযুক্ত হইরা পড়ে, তখন তাহারা তাহা অম্যুত্তাপে গলাইরা লোহ বাহির করে। এইরূপে উপর্যুগরি লোহ গলাইলে উহা পরিয়ত হয়। পরে তাহা পুন: পুন: অমিবং উত্তপ্ত করিয়া হাতৃড়ী দিরা পিটিলে উৎকৃষ্ট লোহে পরিণত হইরা থাকে।

<u>রক্ষরাক্য</u>

উত্তর্জন, শেশু ও তেনাসেরিন বিভাগে এবং শানরাজ্যের নানা স্থানে, মাপ্ত ই নগরের ১০ নাইল দক্ষিণপদ্দিনে এবং উহার ৪ মাইল দক্ষিণে অবস্থিত হুইটী দ্বীপে লোহের নিদর্শন পাওয়া গিয়াছে। বলোপসাগরত্ব আন্দামান দ্বীপের পোর্টব্রেয়ার নগরের কএক মাইল দক্ষিণে 'রল-উ ছাল' নামক্ষানে প্রচুর পরিমাণে hematite বৌগিক আছে, কিন্তু উহা কোরাট্র ও পাইরাইট্ মিশ্রিত থাকার কোন কাব্রে আইসে না।

এই বিশাল ধরিতীবক্ষে লোহ প্রধানতঃ তিন অবহায় বিরাজিত দেখা বায়:—> Sulphide or Iron Pyrites = FrS2; ২ Carbonate FeCO3; ৩ Oxide ৷ এই অক্সাইড, সাধারণতঃ তিন প্রকারের হইয়া থাকে; বথা,— Anhydrous ferri-oxide = FeO3, hydrated ferri-oxide = Fe2 O3 এবং ferrous and ferric oxide ! এই শেষোক প্রেণীতে magnetic oxide of iron = Fe3O4 এবং উহার প্রথমশ্রেণীতে গিরিমাটা Red bæmatite and apecular ores ও খিতীরশ্রেণীতে একামাটা (Brown hæmatite, bog-iron ore or limonice) অক্সাক্তি

প্রধানত: Sub-metamorphic or transition rocks মধ্যে; বিদ্যাপর্বতের বিভিন্ন তরে (অর্থাৎ Conglomerates, Sandatones and shales of Gondwans system); রাণিগল-থামঠা ও বার্বর-উপত্যকাভাগে; কর্লার থনি মধ্যে, বাহ্মিপাত্রের বিচীনপল্লী ক্লোর cretaceous rocks নামক তরে এবং ভারত বহিত্ত দেশে অর্থাৎ উত্তরপাতিম হিনালয় প্রদেশে, আক্লান-হালে, পূর্ববর্তী ক্লেরাজ্য Tertiary formation ও older metamorphic rock-ভরে এই নকল লোহন্দেশীর স্বাহ্মেশীর স্বাহ্মেশ বেধা বাহা।

আছত-গ্রশালী।

বাণিজ্যার্থ বাজারে বে লোহ দেখা বার, তাহা হইতে ঐ
প্রাক্তত লোহ সম্পূর্ণ স্বতর ৷ পাগুরে করলার একটা প্রকাপত
চুলী প্রস্তুত করিরা তাহাতে পোহের ধনিজ বৌরিকদিগকে
সর্কপ্রথমে দল্প করিরা লইলে পোহকে মুক্তাবছার আনরম করা
বার ৷ এই প্রক্রিয়ার জল, কার্কাণিক্ আন্হাইড্রাইড্ ও
প্রক্রাণি অক্সিজেনকর্তৃক সাল্কার ডাইঅক্সাইড্রুপে বহিপ্রত হর এবং লোহ প্রার কেরিক্ অক্সাইড্রুপে পরিবর্তিত
হইরা বার ৷ এই কেরিক্ অক্সাইডের সহিত করলা, কিংবা
কোক্ এবং লাইম্ প্রোন (কার্কণেট্ অব লাইম্) মিপ্রিত
করিরা রাই, ফার্পেস্ (Blast furnace) নারক বিস্ত্রীণ চুলার
উত্তর্গ করিলে লোহ অক্সিজেনবিহীন হইরা আইসে ৷

ক্ষ্টভেন, ক্সিরা ও পূর্ব ভারতীর ক্ষমপদসমূহে এই প্রথার লোহ গালাই হইরা থাকে। নিয়ে লোহ গলাইবার চুরী এবং লোহের পর্যারিক পরিণতির বিবর উদ্ধৃত হইল:—

ब्राहे, कार्लन-हेंडेक बाजा और इना गठिल रजा। रेरा প্রার ৮০ ফিট্ উচ্চ। উহার উর্ক এবং নিমদেশ মধ্যদেশাপেক। আর বিস্তীর্ণ। নিরনেশে বায়ু প্রবেশ করিবার জন্ম নল এবং ধাড় গশিরা বাহির হইবার নিমিত্ত ছিল্ল থাকে। চুলীর **উর্জ**দেশ দিরা উপরোক্ত কেরিক অকুসাইডের মিশ্রণ প্রবেশ করাইরা দিতে হর। ব্লাই ফার্ণেদ্ ব্যবহার করিবার তাৎপর্যা এই বে. চল্লীর নিয়দেশভিত নশের খারা যে বায় প্রবিষ্ট হয়, তত্মারা কোক দথ इटेबा कार्कानिक चानहारेखारेख छेरभन्न करत । ये वान्य यखरे छेई-গামী হইতে থাকে, অজারের হারা উহা ততই অকসিজেনবিহীন হইরা কার্কাণিক অক্সাইডে পরিণত হইরা বার। পরে এই কার্মণিক অক্সাইড উত্তর কেরিক্-অক্সাইডের অক্সিজেন আকর্ষণ করিরা লর: তখন লৌহ মুক্ত হইরা পড়ে। লৌহ বে সময় স্তবাভূতাবস্থার নিমনেশে সমাগত হয়, সে সময়ে উহা কিঞিৎ আলারের সহিত মিলিত হইয়া থাকে। লাইস্ টোন ব্যবহার স্বরিবার তাৎপর্য্য এই বে, ইহা উত্তথাবদ্বার কার্মণিক আনহাই-ভাইড বাল বিবৰ্জিত হইরা কাল্সিরান অক্সাইডে (চুণে) পরিণত হর এবং এই অবস্থার কঠিন কর্মনাদির সহিত সমিলিত হুইরা ভরলাকারে লোহের উপর ভাসিতে থাকে। ইহাকে সাুগ্ (Slag) কৰে। চল্লীয় নিমনেশন্থিত ছিত্ৰবিশেষ দিয়া ইহা বাহির হইবা বার এবং লৌহ জপর ছিত্র বারা বাহিরে জাইনে। बारे करण लोट कड़िन स्टेल फाराटक कांडे वा निश् (Cast or pig) ৰলে। ভারতের নানা স্থানে সাধারণতঃ ৩। ৪ কিট্ इंडेट्ड २० किंहे नक्ष केंद्र कार्यन तथा यात्र।

कांड्रे जातपुरन नकसमा २ हरेएक ८ कांन जलात्र व्यवर

গিনিকা, গৰক, কন্দরান, আস্মিনাষ্ শ্রন্থতি নামাবিধ ধাড় বিভিত্ত থাকে।

লৌহকে বিভন্নবিহার পরিণত করিতে হইলে, উহাকে পুনর্কার গলাইতে হর এবং সেই সময়ে বাছুর অফ্সিজেনের বারা অফ্লান্ড পরিরা, পরে উহাকে পিটিরা বে অবস্থার আনরন করা বার, ভাহাকে রট্ (Wrought) আররণ করে। রট্ আররণে শতকরা ০৩২৫ হইতে ০০৫ ভাগ অলার বাকে। বখন শতকরা ০৩ হইতে ২০ ভাগ অলার রাসারনিক বোগে লৌহের সহিত অবস্থিতি করে, তখন ভাহা ইল্লাভ (Steel) নামে উল্লোখিত হইরা থাকে।

ইম্পাত প্রস্তুত করিতে হইলে রট্ আর্রগ্রে করনার আরিতে দীর্ঘনান উত্তপ্ত করিতেইর। পরে লোহিতোপ্তর নেই লোহপণ্ড শীতন জনে কিবে তৈনে সহনা নিমজ্জিত করিলে জডিশর কঠিন ইম্পাতে পরিণত হর। ঐ ইম্পাত জন্ম এবং ছিডিশ্রাপক ধর্মানাত করিরা থাকে। যে যে পরার্থ প্রস্তুত্ত করিরা আরক। ইম্পাত প্ররোজন হর, তাহাতে মেইরাপ পান মেওরা আরক। ইম্পাতকে ২২১° মেন্টির উত্তাপে উত্তপ্ত করিরা ক্রমে ক্রমে শীতন করিলে অভিশর কঠিন হয় এবং তন্থারা ছুরি প্রভৃতি অরাদি প্রস্তুত হয়রা থাকে। যভাগি ২৮৭° সেঃ পর্যাক্ত উত্তথ্য করিরা শীতন করা যার, তাহা হইলে ইহা অভিশর ছিভিছাপক ধর্মানাত করে। ইহার খারা হড়ির প্রাং প্রভৃতি গঠিত হয়।

বেপুর, সালেম, পালদ্কোট, পেণাডুর ও পুরুকোট্ট নামক ছানে লোহের বে magnetic oxide বৌলিক পাওরা যার, পার্থিব পনার্থ হইতে বিযুক্ত করিলা Blast furnace মধ্যে তাহা গলাইলে উৎক্রই লোহ প্রক্রম্ভ হর, উহাতে শতকরা প্রায় ৭২ ভাগ লোহ থাকে। উহা গন্ধক, আর্সেনিক, অথবা কন্ডরাস-বিবর্জিত। পানপাড়া ও হোনোর নামক স্থানের গুনিজ গোহই ইম্পাত প্রক্রম্ভ কার্য্যে বিশেব প্রাপত।

বেপুর লোহার কারথানার ভারতীর কাই-টাল (cast-steel)
প্রস্তুত করিতে বে প্রথা অবলম্বিত হইরা থাকে, ভাহাকে

Bessemer-process বলে । প্রইডেন প্রভৃতি পাশ্চাত্য
জনপরে প্রায় উহার অভ্রেপ প্রথারই ইম্পাত প্রস্তুত হইরা
থাকে; কিছ প্রেট-বৃটেন রাজ্যের বিভিন্ন হানে বিশেষতঃ
নেক্তি নগরের ভ্রেসিভ গোহার কারথানার বে উপারে ইম্পাত
প্রস্তুত হর, ভাহা উপরোজ্য প্রথানী হুইডেইনমূর্য ব্যক্তর।

নোক্তের ধুরী কাঁচি (Ontlery) প্রায়ত করিবার উপবোগী ইল্পাত নির্বাণপ্রশালী অভি অ্কটিন ও অহ ব্যরণাধ্যবেধে এ কেন্দ্র লোহার কারখানাসকূল পরিত্যক্ত হইরাছে ও তথার শিগ্-আররণ প্রায়ক স্কুরণার্থ একট্টী আলোক্তন বা প্রতিবাতকারী

চ্নী (reverberatory furnace) পাৰে। ঐ জনীর উত্তাপে কাষ্ট-আয়ুর্ণ গলিয়া নলপথে চালিত হইরা Converter বা Bessemer vessel নামক পাত্রে সঞ্চিত হয়। সুইডেন वा भाषात्वत त्वभूत-कात्रशानात्र त्यक्तभ इती नारे । वे छ्रे श्रात्म ব্ৰাষ্ট ফাৰ্ণেস হইতে অসংস্কৃত লোহ-ধাড়ু ক্ৰাবিত হইয়া হাতার স্থায় পাত্র বিশেষে (ordinary founder's ladle) পরিচালিত হয় ! পরে ন্রামামাণ উত্তোলক বন্ধের (travelling crane) সাহায্যে ঐ লোহপূর্ণ হাতা উর্দ্ধে তুলিয়া কনভার্টার নামক পাত্রে দ্রবলোহ ঢালিয়া দেয়। উভয়ের মধ্যে বিশেষত্ব এই যে, ইংরাজী প্রধায় রক্ষিত কনভাটার পাত্র চক্রদণ্ডোপরি (axlee) স্থাপিত, উহা ইচ্ছামত ঘুরাইতে পারা যায়; কিন্তু এ দেশীয় ও স্থইডেনের উক্ত কনভাটার-গুলি একস্থানে স্থিরভাবে ক্সন্ত থাকে এবং উহার চারিদিকে অধ্যত্তাপসহ ইইকচ্ণ (Fireclay, sand and pulverized english fire-bricks) প্রভৃতির প্রবেপ দেওয়া হয়। তৎপরে বয়লারে আমুমাণিক ৫০ পাউগু বান্স সম্থিত ক্ষরিয়া ঐ গলিত ধাতুর প্রতিবর্গ ইঞ্চ স্থানে আ হইতে ৭ পাউও পরিমাণ চাপ দেওয়া হয়। কনভাটারে বার্বিতাড়নার্থ 🖁 ইঞ্ ব্যাস্থ্ত ১১টা নালী (tuyeres) উক্ত পাত্রের তলদেশে সোজাম্মজি ভাবে সংক্তম্ত থাকে। এ পাত্রত্ব ছাঁল নরম করিতে মাঙ্গানিজ বা অপর কোন ধাতৃ-মিশ্রণ আবশ্রক করে না। কেবলমাত্র মূভ্মূ ছ বাভ্যা-সন্তাড়ন দারা চাপ দিলে ও আবভাক-মত অধিকক্ষণ আৰু মুদ্ৰভাবে আৰু দিতে থাকিলে ঐ ষ্টাল বিশেষরূপে পরিষ্কৃত হইয়া আইসে।

যথন ঐ উত্তপ্ত ও অবীভূত লৌহধাতু প্রায় সম্পূর্ণরূপে কার্ব্বণ বিদ্বুক্ত (decarbonized) হয়, তথন ঐ পাত্রন্থ নালীর ট্যাপ্ খুলিয়া দিলে তরল ইম্পাত ক্রতবেগে বাহির হইয়া তলন্থ ladle নামক পাত্রে আসিয়া পড়ে। ঐ পাত্রেরও তলদেশে তরল ইম্পাত গড়াইয়া পড়িবার ছিদ্র আছে। তরল ইম্পাত পূর্ব ঐ লাড্ল পরে তুলাইয়া ছাঁচের (Cast-iron ingot moulds) উপর লইয়া যায় এবং তথায় ছিদ্রের ছিপি (fire-clay plug) খুলিয়া দিলে ইম্পাত জলপ্রোতের জায় সেই ইাচের মধ্যে নিপতিত হয়। উহা শীতল হইলে পর ছাঁচের খামিগুলি উঠাইয়া Nasmyth hammer নামক হাতুড়ী যজের নীচে রাখিয়া পিটিয়া লয় এইরপে বিভিন্ন আকারের ইম্পাতের পাত প্রস্তুত করিয়া জাছায়া বিক্রয়ার্থ বাজারে প্রেরণ করিয়া পাকে।

উপরোক্ত ইংরাজী প্রথায় লোহ গলাইতে হইলে, জপেকা-ক্ত বৃহৎ চুলী জাবশুক এবং উহাকে পর্যাপ্ত পরিমাণে কার্টের ক্যনা সংযোগে উত্তরোত্তর উত্তাপ বৃদ্ধিসহকারে তাপের মাত্রা স্থান রাখিতে হর; এই জম্ববিধা নিবছন এবং কার্টের প্রচ

অড্যন্ত অধিক দেৰিয়া এখানকার কারখানাসমূহে ইংরাজী প্রথায় আর দৌহ-গলার হয় না! ১৮৩৩ খুটানে দক্ষিণ আর্কটের সালেম জেলার পোর্টো-নভো নগরে এবং মলবার উপকূলে বেপুর নামক স্থানে কার্থানা স্থাপিত হয়। সালেমের কার্থানা হইতে পিগ-আরমণ গালাই হইরা ইংলতে প্রেরিড হইত। পরে তথা হইতে ইম্পাতে রূপান্তরিত হইরা উহা উচ্চ মূল্যে বিক্রীত হয়। ঐ ইম্পাতে বুটানিয়া ও মেনাই-সেতু নির্মিত হইয়া-ছিল: বেপুরের কারথানায় উৎকৃষ্ট ইম্পাত প্রস্তুত হইয়াছিল वर्छ, किन्न छेटा वह वाग्रमाश इश्यात्र धवर करनीमात्रगम किन्नुमाज লাভ না পাওয়ার, তথার উক্ত প্রধায় আর ইম্পাত প্রস্তুত করা হয় না। ১৮৫e এইান্সে বীরভূম-আয়রণ-ওয়ার্কস্কোম্পানী কার্যারভ করেন। ১৮৫৭ খুটানে কুমায়ুনের লোহার কার্থানা প্রতিষ্ঠিত হয়। ১৮৭১ খুষ্টান্দে ইন্দোররাজ্যের **অন্ত**র্গত বারবাই গ্রামে একটা লোহার কারখানা স্থাপিত হইয়াছিল, কিন্তু ভাহাতে কার্যারম্ভ হয় নাই। ১৮৮০ খুষ্টাব্দের কোন সময়ে পঞ্জাব প্রদেশের দিরমূর রাজ্যের অন্তর্গত নাহন নগরে একটা কার-খানা স্থাপিত হয়। কিছুদিন কার্য্যারত্তের পর পরিচালকগণ বায়বাচলা দেখিয়া কার্যা স্থগিত করিতে বাধ্য হন ।

১৮৭৪ গ্র্টান্সে রাণীগঞ্জের কয়শা-ক্ষেত্রের অন্তর্গত বরাকর নগরে 'Bengal Iron Company' গোহা গলাইবার জন্ম একটা কারখানা ভাপন করেন। এই সময় পর্যান্ত কার্ছের ক্ষুলাই জালানী-কাঠলপে ব্যবহৃত ইইতেছিল ৷ ১৮৭৫ খুপ্তাকে চালা জেলায় লোহা গালাই করিবার জন্ত কার্ডের করলার পরি-বর্জে পাথরে কয়লা ব্যবহৃত করিবার ব্যবহা হয় ৷ সেই সময় বরা-করের লোহার কারণানায়ও কোককয়লা জালাইবার ব্যবস্থা হই-য়াছিল। ঐ কারখানায় ১২৭০০ টন পিগ্-আয়রণ প্রস্তুত হইলেও বাণিজ্যের ক্ষতি দেখিয়া ১৮৭৯ খুষ্টাব্দে কার্থানা বন্ধ রাখা হয়। উহার তিন বংসর পরে ইংরাজ গ্রন্মেন্ট স্বহস্তে কার্ণানার পরিচালন-ভার গ্রহণ করিয়া Ritter von schwartz নামক একজন হুদক্ষ বৈজ্ঞানিককে তথাকার পরিদর্শক নিযুক্ত করেন। ১৮৮৪ খুষ্টাব্দে ১লা জামুন্নারী একটী রহৎ চলি (ব্লাষ্ট কার্ণেস) লইয়া প্রথমে কার্যাারম্ভ হয়। ১৮৮৮ খুষ্টান্দের শেব ভাগে উহাতে ০০৩১৬ টন মাল প্রস্তে হইতে দেখিয়া সংস্কৃত প্রধায় আর একটী ব্লাষ্ট ফার্নেস স্থাপন করা হইল, তাহাতে ১৮৮৯-৯০ থুষ্টান্ধে ১৫০০০ এবং তৎপরবর্ষে ২০ ছাজার টন পিগু-আররণ গুলান হইয়াছিল। ঐ কারধানায় প্রতি বৎসর প্রায় হুই হাজার টন পিল-আয়রণ গলাইয়া Pipes, sleer era, bridge-piles railway axle-boxes এবং নানা ফুলের কাজ ও কৃষিকার্য্যের উপযোগী যন্ত্ৰাদি প্ৰান্তত হুইতে থাকে ৷ শেষোক্ত কৰ্মে ইংরাজ গ্ৰণ্মেন্ট ব্যাক্র আয়মণ গুয়ার্কণ একটা স্বতম্ব কোম্পানীকে বিক্রের করেন। উপরোক্ত পাশ্চাতা বৈজ্ঞানিক এখানে সর্বা-व्यथरम श्रुतां भीत्र व्यथात्र लोह गमारेवात्र को मन व्यनमान করিরাছিলেন।

লোচ এবং ইস্পাতের পার্থক্য-নির্দেশ করিতে হইলে, এক বিন্দু তীব্ৰ নাইটিক এসিড্ উহাতে নিঃকেপ করিবে; যথপি ভাহাতে ক্লফবর্ণের দাগ হয়, ভাহা হইলে উহাকে ইস্পাত বিশ্বরা জানিবে, আরু লৌহ হইলে সবুজ চিহ্ন দেখিতে পাইবে।

বিশুদ্ধ লোহ রূপার ভাষ সালা, পালিশ করিলে উজ্জ্বন দেখার। লৌহকে ঘর্ষণ করিলে এক প্রকার গন্ধ পাওয়া যায়। পুত্রগুচ্চের ল্লায় ইহার গঠন, এই নিমিত ইহা ভারবহন করিতে সমর্থ। আপেক্ষিক গুরুত্ব-৭.৭। লৌহ চ্ছকশক্তি ধারণ ক্রিতে পারে। ইহা অক্সিজেনের বিশেব পক্ষপাতী, এইজন্ত ইচাকে অভি কটে রক্ষা করিতে হয়। ক্লোরিণ, ব্রোমিণ এবং আইওডিনের সহিত সহজে যৌগিকভাব লাভ করে। জল-মিশ্রিত সাল্ফিউরিক এবং হাইড্রোক্লোরিক এসিডে গলিয়া যায় এবং সেই সময়ে হাইড্রোজেন বাপ্প বহির্গত হইয়া থাকে। > ৪৫ আপেক্ষিক গুরুত্বের নাইট্রিক্ এসিডে লোহের কোন পরিবর্ত্তন হয় না, কিন্তু জলমিশ্রিত নাইটি ক এসিডে ইহা সহজে গলিয়া যায়। ইহার আণবিক গুরুত্ব ৫৬।

ব্যবহার

লোহের ব্যবহার সম্বন্ধে বর্ণনা করা অত্যক্তি মাত্র। বালক, বৃদ্ধ, ঘুৰা সকলেরই লোহের উপযোগিতা বিষয়ে জ্ঞান আছে। লোহ প্রচুর পরিমাণে ও নানাবিধ রূপে ঔষধে প্রযুক্ত হইয়া থাকে। এলোপাথিক মতের ঔষধাদিতে লৌহের যে যৌগিক-গুলি প্রধানত: ব্যবশ্বত হয়, তাহার বিবরণ নিমে প্রদত্ত হইল। বৈশ্বক্ষমতের ঔষধাদি ও পৌহের গুণাগুণ যথাস্থানে বিবৃত इटेग्नाइक [त्रुनाग्नन ७ त्नाट्यन (नथ ।]

त्लोत्हद्र योशिकवन्त ।

লৌছ প্রধানত ছই শ্রেণীর যৌগিক উৎপাদন করিয়া থাকে। যথা,—ফেরাস্ এবং ফিরিক।

Ferrous oxide FeO Ferroso-ferric OxidePesO4 Ferrous chloride FeCl2

Ferrous hydrate Fe (OH)2

Ferrous iodide FeI2 Ferrous carbonate FeCOs Ferrous Phosphate Fe3P2

Ferrous sulphide FeS

Ferrous sulphate FeSO4 Ferric oxide Fe2O3

O8, 8H2O - FePO4, 2H2O.

Ferrie Chloride Fe2Cla

Ferric hydrate Feg(OH)6 Ferric sulphide FeS2

ক্ষেরাস অকসাইড। -ইহা কণস্থায়ী পদার্থ। হিরাকসের **জনে কার্যটিত দ্রাবণ মিশাইলে খেতবর্ণের হাইডেট অধ্যন্ত** হয়, কিন্তু উহা তৎক্ষণাৎ বায়ুর অক্সিজেনের হারা ফেরিক্ অবস্থায় পরিণত হইয়া থাকে। শ্বেতবর্ণ ইইতে ক্রমে ক্রমে সবস্তবর্ণ এবং পরে গোহিতাভাযুক্ত হয়।

ফেরাস্ ক্লোরাইড।—লোহকে হাইড্রোক্লোরিক এসিডে দ্রবীভূত করিলে প্রস্তুত হয়। ইহা অতিশয় জলশোয়ক পদার্থ। দেখিতে স্বুল্ল, জলে এবং আল্কহ্লে দ্রাবণ উৎপাদন করিয়া থাকে। বায়তে ইহা বিকৃত হইয়া দেরিক্ ক্লোরাইড্ এবং অক্সাইডরূপ ধারণ করে।

ফেরাস আইওডাইড।—আইওডিনের জাবকের সহিত লোহ মিশ্রিত করিলে ইহা প্রস্তুত হইয়া থাকে। ইহা বায়তে বিক্লত হইয়া যায়। এই নিমিত্ত চিনির রসের সহিত ঔষধ ব্যবহার করিবার বিধি আছে।

ফেরাস সালফাইড।—হিরাকসের জাবকে ক্ষারঘটিত সাল-ফাইড সংযোগ করিলে ক্ঞবর্ণের সালকাইড অবঃহ হয়। ইহাকে বায়তে রাখিয়া দিলে কেরিক অক্সাইড এবং গদ্ধক উৎপদ্ম হয়।

ফেরাদু সাল্ফেট বা হিরাক্স।—জলমিত্রিত সাল্ফিউরিক এসিড দারা লোহকে দ্রবীভূত করিলে ইহা প্রস্তুত হইয়া থাকে। ইঙা সবজবর্ণ ও দানাদার পদার্থ। ইহার এক অণুতে ৭ অণু জল সংযুক্ত করিলেও দানার আকার নট হয় না। জ্লে এবং আলুকহলে সহজে গলিয়া যায়। লোহিতোভাপে হিরা-ক্স বিকৃত হইয়া সাল্লার ডাইঅক্সাইড ও ট্রাইঅক্সাইড বাষ্প এবং ফেরিক্ অক্সাইডে প্রাথসিত হয়। নর্তসন্ (Nordhausen) দালফিউরিক্ এসিড্ প্রস্ত করিতে ইহা বাবহুত হয়। হিরাকদের জাবণ বাযুম্পুষ্ট হইলে বেসিক্ ফেরিক সালফেট জন্মিয়া পাকে।

एकताम् कार्क्स ११ । — हिताकरमत जावरक कार्क्स ११ जिल् वास्त्राम् कार्क्स ११ जिल्लामा अस्ति । — हिताकरमत जावरक कार्क्स ११ जिल्लामा अस्ति । — हिताकरमत जावरक कार्क्स সোডা সংযোগ করিলে শ্বেতবর্গের কার্কণেট্ অবঃস্থয়, কিন্তু शहरपुरवेत छात्र वायुष्ट अक्निएक्सनत्र मःरगारंग स्मितिक् शह-ডে ট হইয়া থাকে।

ফেরাস ফক্ষেট্। -- ফক্ষেট অব্সোডার দ্রাবণ হিরাকসের স্তাবণে ঢালিয়া দিলে শ্বেতবর্ণের ফেরাদ্ কক্ষেট্ অধঃপতিত হয়।

ফেরিক অকুদাইড।—কেরিক ক্লোরাইডের জাবকে কার-ঘটিত দ্রাবক মিশ্রিত করিবামাত্র পাটকিলা বর্ণের গুড়াবৎ পদার্থ নীচে পড়ে। ইহাকে হাইডেুট কহে। হাইডেুটের জল বিদুরিত করিলে অক্সাইড পাওয়া যায়। ফেরিক অক্সাইড কারাদি भूमार्थ् अतीषुष्ठ इम्र मा । देश अभिरक्ष शनिवां थारक ।

ক্ষেত্রা-ক্রেডিক অবুসাইজ্ঞান নামজান ক্ষেত্রাণ এক ক্রেডিক নান্ত্ৰটের তাবকে আচনানির বিজিক ক্ষিত্রা উত্থান করে। ক্ষাত্রিক ক্ষমক্ষ্য ক্ষাত্র ক্ষাত্র ক্ষাইট্র ক্ষাক্ষ ক্ষাইছে।-ক্রোডিক এলিচে ক্ষাক্ষ্য স

ক্ষেত্ৰ লোৱাইড। ক্ষেত্ৰ কলাইডকে হাইডোলোরিক ক্ষিতে ক্ষ্মীকুত ক্ষিত্ৰ ক্ষা ক্ষেত্ৰত হয়; পথবা গোহকে হাইডোলোরিক ক্ষাত্ত ক্ষিত্ৰ, পরে উহার সহিত ক্ষাইউ্ক ক্ষাত্ত ক্ষিত্ৰ ক্ষাত্ৰ হুটাইলেও ক্ষেত্ৰ লোৱাইড্

ক্ষণপুত কেরিক্ দ্রোরাইড প্রস্তুত করিতে হইলে লোহিজে।
ক্ষেত্র ক্ষেত্রিক করিতে হয়
ইহা ক্ষতিপর জনপোষক। জনে, আন্ফোহনে এবং ইথারে
ক্রবীভূত হয়।

কেনিক্ সান্কেট্।—হিনাকনের নহিন্ধ সান্কিউনিক্
এনিজ বিপ্রিক্ করিনা এই বিপ্রথেক সহিন্ধ স্কানার নাইট্রিক্
এনিজ নংখাল করিনা এই বিপ্রথেক সহিন্ধ স্কানার নাইট্রিক্
এনিজ নংখাল করিনা কুটাইলে কেনিক্ সাল্কেট প্রেল্ড হইবে। হাইছেট্র, কার্প্রেট্র, কম্ফেট্র এবং নাল্কাইড
নাজীজ কেনো-সানানাইজ কর পোটানিরানের বালিকরপে ক্ষান্ত হব।
নায়র নংখালে উহা ক্রনে নীলবর্গে পরিমর্থিত হইতে থাকে।
কেনিজনানাইজ কর পোটানিরান্ নিপ্রিক্ত করিলে লাচ্
নীলবর্গের ক্ষাংপাতন বটে। ইহাকে টার্গ্র্লু র বনে। সাল্কোনানানাইজ কর পোটানিরানের নহিন্দ কেনান্ প্রেণীর
লবপ্রিক্তর কোন রাকার পরিবর্জন কেনা না।

কেনিক্ ত্ৰেণীৰ বেধিকবিংগৰ কাৰাছি পৰাৰ্থেৰ বারা বাইডেট বছঃ কাৰণ্ডিত সাল্কাইডের বারা কুকবর্ণের সাক্কাইড স্থাত্ম বহু এবং ভাষার সহিত গ্ৰহ নিত্রিত থাকে। কোনে ভাষা বাকে রাঃ

কোনারানাইড অব্ পোটানিরানের সহিত্য গান্ধ নীলবর্ণ অবাস্থ রব। ইহাকে কানিরান্ ব্লু কছে। কেরিড সাহালাইড অব্ পোটানিরানের করোলে কোন প্রকার পনিকর্তন সংঘটিত রব্লু রাঃ এই সক্ষরের হারা কেরান্ এবং রৌধিক্ষিগকে পুনক্ করা বার। নালুকো-নার্যাইডের বহিত গান্ধ রক্তবর্ণ উপস্থিত কইয়া বাকে। কোনে আহা হর রা।

Control of the second s

ক্ষ্য আছুত আহিনাত ও অসমাধ্যোগনেত্রিয়াত নাম নদেই বনসবালে ইবার রাখিনা বিশ্বত এইরান্তির ও আর্থনানিগণ নৌবশানের বাবহার জানিজেন। আনবালে ভারতীয় নৌব-শানারি বেশাক্তর পঞ্জিনিক জ নিজিক মুক্তি বিংক্তি ভাগ বালিবার বিশেষ উপায় বাই। বাংকুছ আইনকাল হইতে কৈনেদিকের সহিত আরজনালীর বালিবান্ধরা থাকার অনুনান হর বে, আসিন নভাভার আর্থকের ভারত হইতে লৌহ-নির্বিত পারাধি, অধ্যা ইস্পান্ত এক্তি ভারত হইতে সূদ্র হ্রোপথতেও র্থানী হইত।

মহিছাৰ, সালেৰ প্ৰভৃতি ৰাজিশান্ত্য প্ৰবেশে বছপ্ৰাচীৰ ভাৰ হইতে[া] ইন্সাত*্* প্রথাত_া কুইত_{া স}ভথাকার প্রসাতে । খনিজ Magnetite সৌহ গলাইয়া আৰাম সহনশীল (Maileable) একএকার সর্য সৌহ ঢালিরা সইডা এবনও ভবার সেই প্রথা চলিতেছে। ঐ লোহ শীতন হইলে ভাহারা পুনঃ পুনঃ ভাহাকে পৰিবৎ তথোজন করিয়া হাতৃতীবোগে পিটিয়া একখানি চৌকা থানি প্রস্তুত করে। ঐ থানি খলি সাধারণতঃ ১২ X ১১×২ পরিসরবৃক্ত হইরা বাবে। পরে ঐ থামিগুলি অভিবোগে উপর্পেরি শিটিবার পর উপর্ক্ত অবস্থার আসিলে, ভাষ্ঠেক বঙ বঙ করিয়া কাটিয়া লয়। অনন্তর ভালারা সেই বঙ শুলি বিভিন্ন সূচীতে পুরিয়া, প্রত্যেক সুচিন্ন মধ্যে লৌহ-পরিমাণের দশমাংশ Cassia aurioulata বুদ্ধের एक क्रिकेश মিশ্রিত করিয়া বের। মৃচীতে লোহ ও কার্চখন্ত রাখিবার পূর্বে ভাহারা অভ্যন্তরের চতুর্দিকে Asclepias gigantes, অথবা Convolvulus laurifolia নামক বুক্ষুত্রের কাচা পাতা পাতিয়া তহপরে দৌহ ও কার্রখণ্ডখলি ভাপনপূর্বক উপরে মান একখানি পাতা চাপা বিবা সুচীয় মুখে সৃদ্ধিকার প্রলেপ বিতে হর। পরে একটা কুল চল্লীতে ঐ মুচী স্থাপন পূর্বক ক্রমাররে বান্দভাতৃনার করিতে হয় 🕦 আড়াই বন্টাকাল এইরূপ অথর উভাপে সুচিওলি রক্তবর্ণ হইরা উট্রিলে সুচী নামাইরা রাখে। উহা স্থিত্ত হইলে পদ্ধ, মুচী আদিয়া ভদভাততে বে ইন্শাতণিও থাকে ভাষা বাহির করিয়া পুনরার অগ্নিতে বিজেপ করে। অভ্যণর ভাহারা ঐ ইন্যাভণিগুকে কএক কটা অৱ জাণে शांचिता त्रत राहे, क्षित्र मात्र का श्वानाताना कानाम कात्र मा. वतर छेन्डेरिक लान्डेरिश क्रियंत्र शास्त्र बीकाशास बाहुनकाफन कविष्य शास्त्र । अवेतान तथा वे लोहनिक क्या-कवितान ইন্পাতে পরিণত হব, তথন ভাছাকে হাতুলীয় বারা বিভিন্ন ছোট टहाँके देन्यांक क**रवारन राजारत निकारार्व नाक्षादेश दक्त** । कांकि-्वारका करें रेन्साक 'बुरब' (woors)र नारव गाँविकिक : > १३८

त्रिक क्यांच "काववान" पत्त : त्रमुख व पर्वकातक त्यांच क्यां-क्यांक मान प्रमुख व बोधा विकासका मानावाक क्यां क क्यांक त्यांच वाह नक्यांक प्रविद्य व्यक्ति त्यांच व्यवह माना क्यांच्या !

man gangler als (All'Agel San III, et Alle an althou seen a antigander gall de game depethal met aleman all

কুটাবের ১১ই কুনু George Pearson M. D মনেল সোনাইটার সমক্ষে Experiments and observations to investigate the nature of a kind of steel, manufactured at Bombay and there called woots..... । ইহার পর Mr. Heath একটা বিভূত প্রবদ্ধ লিখিয়া বৃৎক্ষের বাণিজ্য ও উপবোলিতা প্রকাশ করেন। !

আমরা পেরিয়ানের বর্ণনা হইতে জানিতে পারি বে, সেই সমরে ভারতীর ইস্পাতের বহল থাতি ছিল। প্রাচীন আরবীর কবিভানন্তে প্রপ্রমিত ভারতীর ইস্পাত-নির্মিত ভরবারির উল্লেখ আছে। প্রাচীন স্পেনবাসীর নিকট ইলা জল্-হিক্সে নারে, পরিচিত ছিল। পারনিক বণিকগণ উহাকে 'হক্ষ্যানী' বলিতেন। মার্কোপোলের বিষরণীতে উহা "ওক্ষানিক্" (ondaoique) শব্দে বিয়ত রহিরাছে। খুরীর ১৬শ শতাকে পর্কু গীরু বণিক্গণ কানাড়া উপকৃষ্তি ভাউকল প্রভৃতি হান হইতে লোহ লইরা হুরোপে রস্তানী করিতেন। ১৫৯১ খুরীকে পর্কু গাুলরাজ গোরার নবর্ণরকে প্রকাশি আবেশপত্রে লিখিরা পাঠান বেন ভিনি প্রচুর লোই ও ইম্পাত চেউল বন্ধর হইতে আফ্রিকার উপকৃলে এবং লোহিত-নাসরতীরবর্তী ভূক্জাতির মধ্যে বিক্ররার্থ প্রেরণ করেন। (Archivo Port. Orient, Fasc. 8, 318)

Wilkinson কৃত Engines of war (১৮৪১ খুঃ) নামক প্রকে এবং Percy রচিত গাতববিজ্ঞান (Metallurgy, Iron and Steel) গ্রহে "বৃৎক্" নামক ইম্পাতের বিশেষ প্রশাস আছে। তাঁহারা লিখিরা গিরাহেন বে, ডামাছাসের বিখ্যাত তরবারির ক্লক ভারতীয় বৃৎক ইম্পাত হইতেই নির্মিত হইত।

বর্তনান সমরে ভারতীর লৌহ অপেকা বুরোপীর পৌহরই আবর অবিক। ইহা হইতে গৃহত্বের নিভাবাবহার্ব্য হাতা, বেড়ী, খৃবি, বাঁবেরী, কড়া, তস্গা প্রস্থৃতি পাত্র এবং কড়ি, বরুগা, বার, কল, কলা প্রস্থৃতি সকলই প্রস্তৃত হইতেছে। রেগ-পথ, সেড়ু প্রস্থৃতি অনেকানেক অবৃহৎ অক্সনাহসিক কার্যাও লৌহের হাত্রা সম্পাধিত হইতে ধেশা বার। লৌহের ইম্পাত হইতে ইন্ধিন প্রস্তুত হর।

২ ছাগৰিলের। "জজেন বাণি লৌহেন নগাবের ব্তব্রতঃ।" (ভারত ১৩৮৮১১০)

लोहकहुर्न, हिक्श्निनाताक हत्नी वशतका

বাজিবে। অধিক সভব, ইশাভার্থবোধক এই উদু শবাই পরে ইশাজন, উলো নামক অসমণে শ্যাকত ব্রীয়াক।

- + Philos. Transactions for 1795, pt II.
- 1 Journ. Roy. As. Soc, Vol. V. p. 200.

(मोहकासुक (जी) नाम्याहि (अमिनिः) स्मोहकिछे (जी) नवुष ।

লোহচারক (পুং) গোহেন পৌহনিগড়েন ভারঃ আচারো বর। নরকজেন। বেধানে নিগড়ে বছন করিয়া সাজা কেওরা হয়। [বোহনারক বেধ]

লোহজ (রী) দৌহাৎ বারতে ইতি জন-ড। > মঙ্র। (রজনানা) ২ বর্জনোহ, চলিত বিদরী। (রাজনি°)

লোহদাহ (পুং) অৰচিকিৎসাতের। বাছ্একোণারি হেডু অবশরীরে রোগ অন্মিলে গৌহনলাকা বারা বর্তমন্ত্রন ব্যাপারতের।

লোহনিক্লখীকরণ (ক্নী) সম্মন্ত্রণে লোহভাইনক।।
লোহনিক্লখীকরণমিত্রেপঞ্চক (ক্নী) হড, মধু, ইচ,
নোহাগা ও খণ্ডপু পাঁচটা পদার্থ বাড়পনার্থে সংবৃত্ত হয়
বিন্যা মিত্রপঞ্চক নাবে অভিহিত। মিত্রপঞ্চকসহ বিপক্ক ও বৃত্ত
লোহ সংবৃত্ত না হইলেও ৪ রতি মাত্রা সেবন করা বাইতে পারে।
(সংস্ক্রসায়সা)

লোচপত্ৰী (ত্ৰী) > লোহটকা, লোহাৰ চটা। ২ লোহ মারণ। ৩ লোহপুর, একটা প্রাচীন নগর। (ভবিশ্ববন্ধর ৭।৩২) লোহপূৰ্প টী, ঔৰধন্বিশেৰ। প্ৰছত প্ৰশাদী---পাৱদ ২ ভোলা, গন্ধক ২ তোলা একতা কজ্মলী করিয়া ভাষার সহিত ২ ভোলা লোহ মিল্রিভ করিরা লোহপাত্রে উভ্নরূপে মর্কন করিবে। পরে কোন লোহপাত্রে ছত মাথাইরা তাহাতে কজলী স্থাপন করিয়া দৃহ অধিতে বেদিভ করিবে। ত্রবীভুক হুইলে ক্যুলী পত্রে চালিরা বধাবিধি পর্শ টা প্রাঞ্জন্ত করিবে। পরে চর্প করিরা লইবে। ১ রতি হইতে আরম্ভ করিরা প্রত্যেহ ১ রডি করিয়া মাত্রা বৃদ্ধি করিবে। এক সপ্তাহ বা ২ সপ্তাহ পর্যাত্ত অর্থাৎ আরোগ্য লাভ পর্যান্ত সেবনীর। অভুপান শীক্তন কল कथ्या बीवा ७ थरमद बाच । खेवथ रायमकारम विताही ७ শাকাদি ত্রব্য এবং চিন্তা, মৈথুন প্রাকৃতি বর্ম্মনীর। লোহপর্ণ টা নেষ্ম করিলে এহনী,হডিকা, অভীসার, পাঞ্চ, কাষলা, অন্নিমান্যা ও ভশ্মক প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হর। (তৈমভারত্বা গ্রহণাথি) লোহপূর্ণ টারস, বাসকু ও কানাবি রোগনাবক উম্ব ভেবঃ প্রস্তার্থানী—পার্য ও গর্ক প্রজ্ঞাক হ কাপ এবং লৌছ > ভাগ একত বৰ্ষন করিয়া বুচু পথিয় উদ্বাংশ প্লাইয়া বটা প্রস্তুত করিবে। অনস্তর রক্ষাই, মুভিনী, বক্ষ, विक्ता, वन्ती, निनिना, विक्रे, नानक, क्वनुवादी क जाता এট সকল ক্রব্যের প্রড্যেকের রসে সাভ সাতবার ভাষনা বিশ্বা ওছ হইলে ভাত্ৰণাতে রাখিরা গছ নির্গত হওরা পর্যাত প্রটপাত क्षित्र । इरे प्रकि शक्षिमान और केवन नात्नक सन्द्र निग्रल হয়ন কাৰ, অথবা বাসক পাতার রন অছপানে সেবন করিলে খান কান প্রকৃতি বিনট হয়। তেঁতুল, তৈল, বেগুল, কুয়াও, কুয়াও, কলা, নাংসব্ব ও কক্ষনক ত্রব্য তক্ষণ এবং ত্রীসভোগ নিবিদ্ধ। এই ঔষধে লোহের পরিবর্গে ভাত্র দিরা পাক করিলে তাত্রপপটা প্রেছত হইরা থাকে। [ভাত্রপপটা দেব।]

লৌছবন্ধ (প্রেলী) লৌহত বন্ধনিব বন্ধনং যত্ত। লোহার শৃথক। শিক্ষী।

লোকভাও (গং) গোহত ভাওমিবাক্তিৰ্যত্ৰ। অন্মভাগ। (শক্ষচ•) চলিত ক্থাৰ হামানদিতা বলে। (ক্লী) গোহনিৰ্মিত পাত্ৰ বা ভাও।

লোহভূ (বা) লোহভ ভূমিব। > কটনী নামক লোহপাত্র বিশেষ, চণিত কথায় কটাহ।

'লৌহান্ধা চাবুগা লৌহা লৌহভূ: কটিনীতাপি ॥' (শক্চ•) লৌহভেকীবীক্স (ক্লী) বসম্বারণ বীম্বভেদ।

(রুস° চিন্তা• ৩ জঃ)

লোহময় (আ) > লোহমণ্ডিত। ২ লোহবিনিশ্বিত। লোহমল (জী) লোহত মলম্। লোহকিট, মণ্ডুর। ইহার বিবর ভৈষক্ষ-ধৰম্ভবিতে এইজপ বর্ণিত আছে—

শনভা লোহমলাজ্যমান্দিকসিতাভাগাঃ সমামানতঃ
পাত্রে তাত্রমরে দিনাজ্যমিতিত সংস্থাপরেদাতপে !
পশ্চান্তল্বনতাং প্রাণীর রক্তনীয়েকাং বহিঃ স্থাপরেৎ
পাত্রে তাত্রমরে বিধেরমধবা পাত্রে হবিভাবিতে ॥
পশ্চান্থাবচতুইবং প্রতিদিনং কর্য্য জলং শীতলম্
পেরং ভোজনপূর্ক্মধ্যবিরতোহস্বজ্বভোজ্যৈন হৈঃ ।
জেতুং শূল্ভভাশমান্যক্ষনবাসাম্পতিজ্বরো-

আবাপস্থিমেংসর্বলঠরালীগাঁদিস্বাক্তর: a"(ভৈবলাধ্বস্তিরি)
লোহ মৃত্যুক্তরার্ত্রস্ত্র, সীহারোগনিবারক ঔবধ বিশেষ। প্রস্তিত-প্রধালী:—পারদ, গছক, গোহ, অন্ত, তাত্র, মনঃশিলা, বিবনৃত্তি, কড়ি, ভুঁতে, খঙ্খ,রসাজন, আরক্তন, কট্কী, সাচিক্ষার, ববক্ষার, জারপাল, ওঁঠ, পিপুল, মরিচ, হিছু ও সৈত্বর কবণ প্রত্যেকে সক্তাগ প্রাবর্ত্তর ও বেলপাভার রলে সাভ সাভ বার ভাবনা দিরা পরে পুনরার প্রথাবর্ত্তরে উভ্যান্ত্রপে মর্কন করিবে।
তদ্যক্তর চুই রভি পরিমাণ বটা প্রস্তুত করিরা রোক্টাকে সেবন করাইবে। ইহাতে প্রাহা, বন্ধুৎ, ভক্ত, অজ্ঞীলা, অপ্রমাস, শোধ, উদ্ধী, বাভ্যক্ত ও বিজ্ঞবিয়াগের পাত্তি হইরা থাকে।

লোহ্যন্ত (পুং) লোহেন নিৰ্মিতঃ বন্ধ ইব। > লোহার কণ (ইঞ্জিন প্ৰকৃতি)। ২ রসারনোক্ত ভাগ্ত বিশেষ। ইহাতে ঔবধানি পাক করিতে হয়।

त्नोइत्रमाग्रन, वेक्पवित्नकः। अक्रव्यनानी-अप त्माहेनी-

বছ ভগ্ডল, তালস্লী, বিজলা, ধনিবলাই, বাসক্হাল, তেউড়ী, ভুকদৰ, নিসিলা, চিতাস্ল, সিজসুল প্রত্যেক ১০ পল, পাকার্থ জল ৮০ সের, শেব ২০ সের। এই কাথ বন্ত্রপৃত করিরা তাহার সহিত চিনি ১ সের ও উক্ত ওগ্ডলু ১০ পল মিপ্রিত করিরা লইবে। অনস্তর কোন তারপাত্রে প্রাতন ত্বত ৪ সের ও লোহচুর্ণ ১২ পল দিরা তাহার সহিত চিনি ও ওগ্ডল মিপ্রিত কাথ জল দিরা পাক করিবে। আসর পাকে শিলাজতু ২ পল, এলাইচ ৪ তোলা, ওড়ক্ত্ ৪ তোলা, বিড়ল ২ পল, মরিচ, রসাজন, পিপ্ল, ত্রিকলা প্রত্যেক ২ পল, এই সমন্ত চুর্ণ প্রক্রেপ দিবে। শীতল হইলে মধু ১ সের মিপ্রিত করিরা লিলার গেবল করিরা ত্বত পাত্রে রাখিবে। মাত্রা ৪ মাবা হইতে আরম্ভ করিরা ক্রমে উপস্ক পরিমাণে বৃদ্ধি করিবে। অভ্পান হয় ও ছাগাদি জালল মাংসের যুব। ইহাতে মেদোরোগ প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার উপশম হইরা থাকে। কদলী, কলম্ল, কাঁজি, করম্চা, করীর ও করলা এই সম্দর্বজনীয়। (ভৈবজারয়াণ্ড মেদোহধিকার)

লোহবিশুদ্ধিদ (পুং) উত্থাকার, সোহাগা। (রসেক্রসার°) লোহশঙ্কু (পুং) লোহস্ত শত্কু যতা। > নরকবিশেষ, এখানে পাশীদিগকে স্টীযারা বিদ্ধ করা হইরা থাকে। ২ লোহনির্দ্ধিত কীলক মাত্র।

লোহশাস্ত্র (ক্লী) স্বর্ণাদি অষ্টধাত্র ব্যবহার ও উপবোগিতা-নির্দেশক গ্রন্থ বিশেষ।

লোহদোধন (য়ী) গোহত গোধনং। গোহ নামক ধাড়ু বিশুদ্ধবিষ্যার আনরন করিবার রাসায়নিক প্রক্রিয়াবিশের। গোহকে অগ্নিযোগে গোহিতোভগু করিয়া সাতবার কদলীমূলের রসে নিমজ্জিত করিলে, অথবা অষ্টগুণ জলে বিপক এবং চতুর্থ জাগাবশিষ্ট ২ সের ত্রিফলার কাথে, সপ্তপত্রবিভক্ত ১০ সের লোহ আগুনের উত্তাপে লাল করিয়া সাতবার নিক্ষেপ করিলে গোহ বিশুদ্ধ হয়।

কান্তি আদি লোহকে পাত করিরা স্বর্ণমান্তিক, ত্রিকলাচূর্ণ ও লালিক শাল্পের রস মাথাইর জন্মশং অন্নির উত্তাপে পোড়াইরা লালবর্ণ করিবে। তদনস্তর তাহা অলে ভ্বাইরা হত্তিকর্ণ, পলাশ, ত্রিকলা, বৃহদারক, মাণ, ওল, হাড়বোড়া, ওলী, দশমূল, সুভিরী ও তালমূলী নামক ত্রব্য প্রেত্যেকের কাবে বা রসে বন্ধপূর্কক পূট দিলে লোহ বিশুহ হয়। গলশিয়লী, বেতবেড়েলা, ভড়্টী, অপামার্গ,ক্র ন'টে, পুনর্নবা এই সকল পুরাতন মন্ত্রের উর্জ ও অব্যোদেশে বিক্তর করিয়া গোমূত্র বারা তিন দিন পাক করিয়া চাকা দিবে। তারুবেণ ভিন দিন রাধিয়া দিলে অন্তর্গান্দে তিহা নিবিক হইয়া ক্রমশং ভক হইয়া আনিলে, উহাকে বাহির করিয়া ধুইয়া কেলিবে ও ক্রাইয়া লইবে।

লোহা (ত্ৰী) লোহনু। (পৰচ°) লোহাচাৰ্য্য (গ্ৰু) > ধাতুৰিজ্ঞান-(Motallurgy)-শিক্ষাধাতা। ২ লোহশিয়জ।

লোহাত্মা (ত্রী) লোহ আত্মা বক্সা: লোহতু। লোহায়তলোহ, ঔবণজেন। (চিকিৎসাসার') লোহায়ন (সং) লোহের সোলাপত্য।

(পা ৪।১।৯৯ নড়াদিগণ)

লোহারস (ত্রি) ধাতৃনির্মিত।
লোহাসব, জররোগনাশক ঔষধবিশেষ। প্রেম্বত প্রণালী—
লোহচূর্ণ, ত্রিকটু, ত্রিকলা, যমানী, বিড়ক, মূডা, চিডামূল
প্রত্যেক চূর্ণ ৪ পল, মধু ৮ সের, গুড় ১২॥॰ সের ও বল
১২৮ সের এই সকল একত্র মিল্রিত করিরা মুডকুন্ডে রাখিরা
ভাহার মুখ আফ্রাদিত করিরা এক মাস রাখিবে। ইহাতে ঔবধ
সমস্ত অন্তর্গুণিক্ত হইরা আসবরূপে পরিণত হয়। ইহা সেবন
করিলে অগ্রিস্থি এবং জীর্ণজ্বর ও শীহা প্রভৃতি নানা রোগের
শান্তি হয়। (ভৈবজারপ্রাবলী জরাধিকার)

লোহি (পুং) অপ্তকের পুত্রভেদ। (হরিবংশ) লোহিত (পুং) লোহিতঃ ইতি লোহিতশব্দাৎ স্বার্থে ক (অণ্) প্রত্যায়েন নিম্পন্নঃ। > শিবের ত্রিশূল। (ত্রি) লোহিত-সম্বনীয়।

লোহিতথবজ (পুং) গোহিতথবজের মতান্নবর্তী সম্প্রদায়-ভেদ। (পা° ৻০১১১২)

লোহিতাশ্ব (পুং) লোহিতাশের বংশধর।

লোহিতীক (ত্রি) লোহিত ইব। গোহিত-(কর্ক-লোহিতা-দীক্ক। পা এতা>>০) ইতি ঈকক্। ১ লোহিতবর্ণতুল্য। ২ ক্টিক।

লৌহিত্য (পুং) লোহিতক ভাব:। লোহিত-ব্যঞ্। লোহিতৰ। (মেদিনী)

(পুং) লোহিত ইব। খার্থে ব্যঞ্। > সাগরতেন।
(শব্দমালা) সম্ভবতঃ ইহাই আরব ও আফ্রিকার মধ্যবর্তী
লোহিতোপসাগর (Red sea)। ইহার এন বোর লোহিতবর্প
এবং অলের আভ্যন্তরিক তাপও নিতান্ত কম নহে। স্থরেজথাল কাটা হইবার পর লোহিত-সাগরের সহিত ভূমধা সাগরের
সংবোপ বটিরাছে। [স্থ্রেজ দেখা]

২ নৰবিশেব, ইহার অপর নাম ব্রহ্মপুত্র নদ। কালিকাপুরাণে ব্রহ্মপুত্র লৌহিত্যের উৎপত্তি-বিবরণ এইরূপ লিখিত
আছে—হরিবর্ধে শাব্দুমুনি, বাল করিতেন, তিনিক্রিণাগর্তস্নিক্রা অমোঘাকে পদ্ধীতে বরণ করেন। শাব্দুমু বীর প্রিরতরা পরী লইয়া কথন কৈলানে, কথন চন্দ্রভাগার উৎপাদক

বৃহৎ লৌহিত্য সরোবর তীরে ক্ষান্ত গভগাবন পর্বতে বাস ক্রিডেন। এক্রিন তপ্রী পাত্ত কল পুলা চরলোকেশে, বুনান্তরে গুমন করিলে, অবসর পাইরা লোকপিজানত বার্থা 🐙 শান্তভাষ্যা অযোগার সমূধে উপস্থিত হইলেন। ভিনি পেই अतुरुक्ती (वर्षमध्यामाणां पूर्वणी जावाचात्र जनांबात्र अर्ग-तोक्तर्या नक्त्म कतिया महनशीकात गांकिशत **रे**क्किवन्सित आख **इहेताहित्सन। ७५न कामनात धानीफिछ हेहेता अका**्टनहे মহাসতী অমোঘাকে বলপূৰ্বক আক্ৰমণ করিছে ধাৰষান इंदेरनन । मणी वनारकारत्रत्र करत्र चालम मत्या व्यविहे इंदेश বার ক্লক করিলে আত্রম মধ্যেই বিধাতার রেডখলন বইল, ব্ৰদাও প্ৰস্থান করিলেন। শাতম আগ্ৰন্ধে প্ৰভাৱেত হইরা হংসপদ্চিত্ ও ব্রশ্ববীর্য নিরীক্শপূর্বক জীববরণ জানিবার উদ্দেশে विचानविक्तन क्षरत चीत्र शंतीरक धात्र कतिरागन। অমোধার মূথে ব্রহ্মার আগমনবার্তা জানিতে পারিয়া তিনি ধ্যানত হটলেন এবং দিবা জানবলে জগতের হিভার্বে তীর্বোৎ-পাদন দেবগণের অভীঃ জানিয়া ভিনি বীয় পদ্মীকে সেই ব্রদ্মবীর্য্য পান করিতে আদেশ করিলেন। পতি পদ্মীতে অনেক বাদামুবাদের পর শান্তম পদ্ধীর পরামর্শামুবারে সেই এক্ষরীর্য্য পান করিয়া পরে বয়ং সেই তেল অমোবাগর্ডে নিকেপ করিলে, कारमाया शर्कवर्षी इटेरनन । कारन त्रवे शर्क श्टेरछ अनदानि ' ভূমিষ্ঠ হইল। সেই জলরাশি মধ্যে নীলামরপরিহিত রক্তমালা-বিভূবিত উচ্ছল কিরীটধারী চতুর্জ পদ্মবিভাগবলপতিধারী আরক্ত গৌরবর্ণ ও লিওমার মত্তকার্ক্ত এক পুত্র বিভয়ান রহিয়াছেন। শান্তমু সেই জলমর পুত্রকে কৈলাল (উত্তরে), जबर्खकानि (পूर्व्स), গৰুমানন (निकर्ण) এবং कास्नि (পশ্চিমে) শৈল চতুইয়ের মধাবর্তী উপত্যকাগর্ভে হাপিত করিলেন। বছকাল অতীত হইলে ব্রহ্মপুত্র জলরাশিরণে পাঁচ যোজন বৃদ্ধি পাইলেন। মাতৃহত্তা পাপমোচনার্থ জামদগ্য পরওরাম ঐ বন্ধপুত্র মহাকুতে দ্বানার্থ আগমন করেন। ভিনি স্বরং পাপ নৃক্ত হইবার পর, লোকহিতাভিলাবে পরও-সাহায্যে হেম শূলগিরি বিভেদপূর্কক উপযুক্ত পথ করিয়া লৌছিতাকে অবভারিত করেন। ঐ নদ কামরূপ পীঠের মধ্য দিয়া প্রবাহিত হইল। লোহিত সরোবর হইতে নিঃস্ত ৰ্ণিরা উহার আর একটা নাম গৌহিত্য হইমাহিল। কামরূপ পরিমাবিত এবং সর্কাতীর্ব গোপন করিবা গৌহিতা দিবা-বসুনা নজে দক্ষিণদাগরের অভিমুখে চলিলেন। মধ্যে ব্রহ্মপুত্রকে পরিত্যাগপূর্বাক বাদশ বোকন অতিক্রম করিয়া মনুদা পুনরার ঐ গৌহিতানদে নিলিত হইলেন। বে **ব্যক্তি জিভেন্তি**য় ত্ইরা চৈত্রনালের ওক্লাউনীতে লৌহিত্য কলে কাল করিবা

বাকেন, তিনি কৈবক্ষ ও বন্ধান প্রাপ্ত হন। (কানিকা-প্রাণ জানদট্যাপাখ্যান ৮৪।৪৫ জ:।)

ষর্ভনান লোহিচ্চ নদী ব্রজপুত্রের একটা গাথারণে জাসামের মধ্য দিয়া প্রবাহিত রহিরাছে। শিবসাগর ও লখিনপুর জেলার মধ্য দিয়া এই নদী বিজ্ঞাপন্তিম গভিতে প্রার ৭০ মাইল জতিক্রম করিরা থলেবরী সকলের নিকট ব্রজপুত্রে মিলিত হইরাছে। এই সজমনিবেদন উভর নদীর মধ্যে বীপাকার বে বালুক্রাবর চরভূদি নিপতিত জাছে, তাহা 'মজুনিচর' নামে ব্যাভ। প্রবর্ণন্তী নদী ইহার দক্ষিণকৃতে জাসিরা মিশিরাছে। লোহিত্যায়নী (বী) গৌহিত্যের গোলাপতা স্ত্রী। (পা ১৪৪১৮)

লোহেষ (বি) লোহমন্ত ঈৰাযুক্ত। শৰ্কাদির চক্রদণ্ড-সংলন্ধ লোহমণ্ড। (পা' ৬০০০১)

ল্লী, নিবি। সংলিটকরণ। (কবিকরক্রম) ক্রোদি° পর° সক° অনিট্। ওঁটাবর্গাভোপধঃ। নিনাতি লীনঃ লীনিঃ। "অবঃহাভোপধ ইতি।" (রমানাধ)

স্যুট, ব্যাকরণোক্ত কং প্রত্যের সংজ্ঞাভেদ।

ৰী, গভাদ। গভি:। (কৰিকন্ধক্ৰম) ক্ৰ্যা° পর° দক° অনিট্। বকানোপথ:। বীনাভি বীত: বীভি:। বিনাভি বীনাভি বীন: বীনি:। 'গিনৈব ক্ৰ্যাদিখসিছে। গকরণং পৃঃদিখবিক্লাৰ্থম্।' (গুৰ্গাদাস)



ব

বিদার। ব্যঞ্জনবর্ণের অন্তর্গত উনদ্রিংখবর্ণ, ইহা অন্তত্ত্বর্ণ বিদার প্রসিদ্ধ। 'অন্তত্ত্বা হ র ল বাং।' (কলাপব্যাকরণ)

শ্ৰীমন্তাগৰতে লিখিত আছে বে,—

তিতোহক্ষরসমারারমস্ক্র**ে ভগবানক্ষঃ**।

चन्द्रश्राययप्रमार्नद्रयमैर्वामिनक्रमम् ॥" (छात्र॰)२१७।८०)

'তততেভোহক্ষরাণাং সমারারং সমারারং তমেবাহ— অন্তথা ধরণবাং। উমাণং শবসহাং, গুরা অকারাল্যাং স্পর্নাং কাদরো মাবসানাং। প্রশ্ববিধান্ত, আদিশবাং বিহুলামূলীরাদরং। ত এব লক্ষণং শ্বরূপং বস্ত তম্।' (প্রীধরশামিকত টীকা)

ক্লাপমতে এই বকারের উচ্চারণস্থান দ্ব্যু, কিছু অন্তত্ত্ত্ব দ্ব্যোষ্ঠ বলিয়া সিদ্ধ হইরাছে—

"জিক্ষামূলে তু কুঃ প্রোক্ষো দক্তোরে বং ব্বতো ব্বৈ: ॥"
(শিক্ষা ১৮)

মৃশ্ধবোধটীকার তুর্গাদাস পবর্গীর বকার ও অবস্থ ব'র উচ্চারণত্বান নির্দেশ করিরা লিখিরাছেন—'ববরদীরবকারস্ত প ক ব ভ ম বা ইত্যেকপদোক্তা উৎপত্তিস্থানমোর্চমুক্ত্বা দস্তা-কার্যার্থাং দস্তামধ্যেছপি তথদধনললা ব ইতি ভিরপদে পঠিতবান্। বথা সংবৃব্ধতি ইভ্যাদৌ বকারত ওঠবাং উর্দ্ধস্তাবাং অঞ্পারস্ত মকারো ন ভাং। বৈদিকার্ড অক্তোংশতিস্থানং দক্ত এবেড্যাহং। অভএব ত্রিক্ষোং পরমং পদং ইভ্যাদৌ তথৈবোচ্নারন্তি।"

ৰীজবর্ণাভিধানতত্ত্বে, ক্ষুত্রধানলের মন্ত্রকোবে ও অভাস্থ তত্ত্বশাল্পে 'ব' বর্ণের যে কর্মী পর্য্যার উল্লিখিত হইরাছে, তাহা নিম্নে উদ্ধৃত হইল—

"বো বাণো বাকণী স্কা বৰুণো দেবসংক্ষকঃ।
ভোৱং লাস্ত্ৰণ্ড বামাংশঃ ॥" (বীজবণাডিধান)
"বকারো বন্ধণো বাণঃ ত্বেদঃ থড়গীখরে জ্বিবঃ ॥"
(ক্রন্তবামনে মন্ত্রকোব)

(বো বাণো বান্ধনী কুলা বরুণা দেবসংক্রক: ।

ব্যক্তীশো আলিনীবন্ধঃ কলসংধনিবাচক: ।

উৎকারীশন্ধ নাবীতো বলা দিক্ সাগর: তটি: ।

ত্রিধাকু: লছর: শ্রেচো বিশেবো বমসাবনস্ ॥"(নানা তরুণাত্র)

এই বর্ণ পঞ্চ প্রাণমর, ত্রিবিন্দু ও ত্রিশক্তি সমবিন্দ, চতুর্বর্গকললাতা ও সর্বাসিভিপ্রাদ । শিব আধ্যাশক্তিকে ইয়ার স্বরূপ
নির্দেশ করিবাছিলেন—

"ৰকারং চক্রণাপাদি কুওলী মোক্রমবারন্।
পক্ষপ্রাণমরং বর্ণং ত্রিশক্তিনছিতং নলা ॥ ﴿
ত্রিবিন্দুস্হিতং বর্ণমান্ত্রানিত্রসংবৃত্র ।
পক্ষবেষমরং বর্ণং শীতবিছারতাহ্বরং ॥
চতুর্কার্গপ্রবং বর্ণং সর্কানিছিপ্রধারকন্ ।
ত্রিশক্তিনছিতং দেবি ত্রিবিন্দুস্হিতং নলা ॥" (কামধেছ তন্ত্র) গ্রহাশক্তিসম্পার এই বর্ণের গ্রামপ্রধানীও তন্ত্রপাত্রে
লিখিত আছে ; বথা—

"কুদ্দপুস্পপ্ৰভাং দেবীং দিভুজাং পদক্ষেদ্দণাম্। **अज्ञमाना। प्रत्याः वज्रहाद्याञ्चनाः भवाम् ॥** नाथकाण्डीहेनार निकार निकित्तर निकटनविखाम्। এবং ধ্যাতা ৰকারং ভূ তদ্মরং দল্ধা ৰূপেৎ ॥'' (বর্ণোভারভন্ন) বলীর বর্ণমালার লিখিত 'ব' অক্ষরের লিখন-প্রণালী— "কোণত্ৰদ্বযুভা রেখা ব্রন্ধবিফুশিবান্মিকা। মায়াশক্তি: পরা নিত্যা ধ্যানমক্ত প্রচক্ষতে :^ল (বর্ণোদ্বার্ডন্ত) নাধারণতঃ যে প্রণালীতে ৰাজালা বর্ণমালায় 'ব' অজর 🦥 লিখিত হইয়া থাকে, ভাহা সম্পূৰ্ণরূপে উক্ত ভন্নবৰ্ণেরই ব্দসূস্ত। প্রথমে উর্ছ হইতে বামভাগে কোণাকারে একটা রেখা টানিরা পরে তাহাকে ফ্রেমণঃ দক্ষিণাভিদ্রখে নির্মার্টে নামাইয়া আনিতে হইবে। বখন নিমাভিমুধী এই দক্ষিণরেখা উর্দ্ধরেধার আরম্ভণ ছান পর্যাত্ত আসিরা পৌছিবে, তথন উহাকে প্নরায় লখভাবে উর্জদিকে তুলিয়া ঐ আরম্ভণবিন্দুতে সংযুক্ত করিবে। এইরূপে বামাগ্রচুড় একটা উদ্ধারত ত্রিভূক **অন্বিত হইলে তাহার উর্জকোণে সোলাস্থলি ভারে একটী সরল** রেথা টানিরা লইবে।

ব (খবা) ইব অর্ধবোধক। এইরূপ।
"তাব লীনাং দলৈত্তত্ত্ব রচিডাপানভূমর:।
নারিকেলাসবং বোধাঃ শাত্রবং ব বশঃ পশুঃ ৪" (রবু• ৪।৪২)
ব (ফ্লী) বা ল গমনহিংসরোঃ কঃ। ১ প্রচেডা। (ুবেদিনী)
২ বরুপবীকা। (তন্ত্র)

ব (গং) ৰানমিতি বা ভাবে খং। > সাখন। বাতি গছতীতি বাল-গমনে কং। ২ ৰাষ্। ৩ ৰাশু। (মেৰিনী) এ ৰাছ। ৫ মন্ত্ৰণ। ৬ কলাপ। গ বলবান্। ৮ বস্তি। ই বলপালা। (খলচ০) ১০ শাৰ্ছিল। ১১ বন্তা ১২ শালুক। ১৩ বন্ধা। বৃত্তি বুলান্, বৃত্তাৰ বৃত্তাকৰ শ্বাৰণি বৃত্ত

শক্ষের দিতীয়া, চতুর্থী 📽 বস্তীর ব্রুবচনে এইরূপ হইরা থাকে।

"পৃষ্ণাতু বো নোহপি হরির্ধনং বো। দদাতু নো হয়ণুকানি বো নঃ ॥" (মুগ্ধবোধ)

বৈশ্বাকরণগুণ বলেন, পাদবাক্যাদিতে ইহার প্ররোগ হয় না !
বংকু (বন্ধু) ইকুনদ। বর্ত্তমানে Oxus নামে পরিচিত।
ইহা মধ্য-এসিরার একটা স্থরহৎ নদী। এই নদীর অধিকাংশ
ভাতার-রাজ্যে প্রবাহিত। পানীরের সমুচ্চ অধিত্যকার (জক্ষা
ক্রিভানকে পূর্বা ও পশ্চিম এই চুই অংশে বিভক্ত করিরা
বোধারার বিত্তীর্ণ প্রান্তর ও তাতারের স্থবিত্ত মক্ষ্যে ভেদ
করিরা ১৩০০ মাইল গিরা বহুধা বিভক্ত হইরা আরল সাগরে
মিলিত হইরাছে। প্রাবিদ্গণের বিশ্বাস যে, প্রের্বা এই নদী
কাম্পীর সাগরে মিলিত ছিল, তৎপরে গতি পরিবর্ত্তিত ইহাছে।

অনেকের বিধাস যে, এই অলু (Oxus) বা বংলু নদীর কুলেই আর্যালাভির নিবাস ছিল। এই পুপ্রাচীন নদী দিরাই আর্যা সভ্যতা পুদ্র রুরোপথণ্ডে প্রসারিত হইরাছে। পাশ্চাডা প্রাচীন ঐতিহাসিক ব্রাবা, হেরোদোভাস্ প্রভৃতির বিবরণী হইতে জানা বার বে, পূর্কালাল এখানে শক্লাভির আধিপত্য ছিল এবং এই নদী ইরাণ ও ভ্রাণ রাজ্যকে বিভক্ত করিয়া রাধিয়াছিল। ভুরাণের উত্তরাংশ মংস্প্রাণ ও মহাভারতে শাক্ষীপ নামে প্রথিত হইরাছে। [শাক্ষীপ দেখ] মংস্ত ও মহাভারতে শাক্ষীপের সীমার যে ইলু নদীর উল্লেখ আছে, তাহাই বর্তমান অলু নদী। প্রাণ মতে বংলু নদী অন্থাপের সীমার বে অংশ প্রবাহিত। প্রাণের অন্থবত্তী হইলে মনে হইবে যে শাক্ষীপের সীমার বে অংশ প্রবাহিত, তাহা ইলু এবং জন্মীপের অংশ আসিয়া পড়িরাছে, তাহা বংলু নামে খ্যাত ছিল।

এই নদীতারে "বক্ষ" বা "বথম্" জাতির বাস থাকার ।
ইহার বংজু নাম হইরা থাকিবে। এখানে স্থ্য ও অগ্নি উপাসক
লকগণের অভ্যানরের পর বিশেব বৌতপ্রভাব ঘটিরাছিল।
খুরীর ৭ম শতাকে চীনপরিপ্রাজক এই নদী তীরে বহতর বৌতকীর্ত্তি ও অশোক অুপের নিগর্দান দেখিরা গিরাছিল। তিনিও
এই নদীকে পোৎস্থ বা বকু নামেই উরেখ করিরাছেন। তাহার
বর্ণনার জনবতথ (বর্তমান সরীকুল) হবের প্রাংশ হইতে
গলা, দক্ষিণ হইতে সিন্ধু, পশ্চিম হইছে বন্ধু এবং উত্তরাংশ
হইতে সীতা নদী বাহির হইরাছে। গ্রীনপরিপ্রাজক এই হান
ঘর্ণন করিরা বে বর্ণনা করিরা গিরাছেন, ভার্যার সহিত বিভূ ও

মংগুপুরাণের বর্ণনার সম্পূর্ণ মিল আছে। চীনপরিএাকক বাহাকে "অনবতপ্ত" ছদ বলিরা উল্লেখ করিরাছেন, তাহাই পুরাণে "বিন্দুসর" বলিরা পরিচিত। [বিন্দুসর: দেখ]

বংশ (পুং) বমতি উলিগরিত প্রুষান্ বস্ততে ইতি বা। টু বম উলিগরণে ইতি ধাতোর্ঘবা বন শব্দে ইতি ধাতোর্বাহলকাং শঃ। যবা, বাই উপ্ততে ইতি বা বশ কাস্তো অব যঞ্বা। ততো হৃদ্। ১ প্রপোত্রাদি। পর্যার—সন্ততি, গোত্র, জনন, কুল, অভিজ্ঞান, অবর, অববার, সন্তান, নিখন, জাতি। (জটাধর)

বিভাও জন্মদারা একলক্ষণাক্রণন্ত কুলপরশপরাগত সন্তানই বংশ পদবাচা। ভিন্ন ভিন্ন টীকাকার এ বিবন্ধে ঐরূপ অর্থই গ্রহণ করিয়াছেন,—"কুলঞ্চ বিভায়া জন্মনা বা প্রাণিনামেকলক্ষণঃ সন্তানো বংশঃ।" (জন্মাদিত্য) স্নভূতি বলিনাছেন,—"ধনেন বিভায়া বা খ্যাভস্যাপত্যধারা বংশঃ।" অর্থাৎ ধন ও বিভাগোরবে প্রসিদ্ধ অপত্যধারার নামই বংশ। 'বমতি উলিগরতি পূর্কাপুক্রবান্ বংশনামীতি শঃ।' (অমর্টীকায় ভরত)

"क সূর্য্যপ্রভবো বংশ: क চান্নবিষয়া মতি:।

তিতীৰু ছ'ন্তরং মোহাছড় পেনামি দাগরম্॥" (রঘু ১।২)

ভারতবর্ষের প্রাচীন ইতিহাস আলোচনা করিলে জানা যার যে, পূর্বাকাল হইতে এখানে অনেকগুলি লব্ধপ্রতিষ্ঠ ও বীর্যাপালী রাজবংশের আধিপত্য বিস্তার ঘটিয়াছিল। ঐ সকল বিভিন্ন বংশীর রাজসন্ততিপরম্পরা বিশেষ বিশেষ সময়ে স্থানবিশেষে অপ্রতিহত প্রভাবে রাজ্যশাসন করিয়া গিয়াছেন। পূরাণাদিতে পূথ্বংশ, ভরতবংশ প্রভৃতি অনেকগুলি স্থপ্রাচীন বংশের পরিচয় পাওরা বায়। তয়য়ের স্র্যাবংশ ও চক্রবংশ সর্ব্বপ্রধান। স্র্বাবংশে মহারাজ মান্ধাতা, দিলীপ, রযু ও দশরধান্মক শীরামচক্র জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। রামচক্র কর্তৃক রাবণবিজয় স্র্যাবংশের প্রসিদ্ধির কারণ। চক্রবংশে বহশত নূপতি জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, তল্পধ্য ভারতীয় মহাযুদ্ধের নায়ক মৃধিষ্টিরাদি পঞ্চণাপ্তব হইতেই বংশের খ্যাতি বিশ্বত হইয়াছি।

হ্বি ও চক্রবংশ দেও।]

এই চক্রবংশের অন্ততম শাখা যত্বংশে ভগবনবতার শ্রীক্রক
কল্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। ঐ বংশে দাক্ষিণাত্যের প্রাসন্ধ বাদব
রাজবংশ সমুক্ত। [বাদব রাজবংশ দেও]

তুর্বস্থর বংশে (তুরার রাজবংশ ?) উজ্জরিনীপতি ক্রারাজ বিক্রমাদিত্য প্রান্তর্ভু ভইরাছিলেন।

শক্জাতির অভ্যানরে ভারতে শক্ষ্বণবংশীর বৈদেশিক রাজবংশের অধিষ্ঠান হর। ঐ বংশীর রাজগণ ক্রমে হিন্দু ধর্মা-ক্লান্ত হইরা রাজপুত নালে অতিষ্ঠা লাভ করে। তদবধি রাজপুত সমালে ৮৭ শাধার বিশ্বক অনিকুলের উৎপত্তি হয়। পরমার

[.] Wood's Journey to the source of the Oxes, p. xxili.

পরিহার, চৌনুষ্য ও চাহমান এই চারিটা অগ্নিকুল। ইতিহানে এই চারি বংশের প্রতিপত্তির বংগঠ পরিচর আছে।

খুইপ্র্বান্ধে লৈন ও বৌদ্ধ রাজবংশ ব্যতীত শিশুনাগবংশ,
নন্দবংশ, কৌর্যবংশ, ব্যনরাজবংশ, মিত্র, কার ও আদুবংশ
প্রভৃতি বংশের খ্যাতি ভারত প্রসিদ্ধ । শক্ষবংশের বিলর ঘটিলে
ভারতে গুরুবংশের অভ্যানর ঘটে। দক্ষপ্রকে পরাভূত করিরা
ভোরমাণ ভারতে হুণবংশের প্রতিষ্ঠা করেন। মালবরাজ্ক
বংশাবর্দ্ধদের হুণবংশীর মিহিরকুলকে বিধ্বত করিরা উজ্জরিনী
রাজবংশের গৌরবর্দ্ধি করিয়াছিলেন। তদনন্দ্রর মণাধ, বলতী,
উজ্জরিনী হাখীখর, কনোজ প্রভৃতি জনপদে এক একটা প্রবল
পরাক্রান্ত রাজবংশের প্রতিষ্ঠা হইরাছিল। রাইকুট বা রাঠোরবংশ, ভোজ ও চন্দেল্ল এবং কনোজের আর্ধরাজবংশের প্রভাব
কাহারও অবিদিত নাই। এতত্তির ভারতের নানাহানে বৃশ্দেলা,
জাট এবং নিজামশাহী, কুতবশাহী প্রভৃতি বিভিন্ন হিন্দু ও মুসলমানজাতি হইতে অনেক গুলি রাজবংশের প্রতিষ্ঠা হইরাছে।

উত্তরভারতীর ঐ সকল মহাপ্রভব আয়ুধ রাজবংশের সমস্বালে বালালায় শূরবংশের প্রভাব বিস্তৃত হর । আদিশ্রের ব্রাক্রণানয়ন-বিবরণ বলবাসী মাত্রেরই জানা আছে। তাহার পর এখানে পাল ও সেনরাজবংশের অভ্যুদয় হইয়াছিল। সেনবংশীয় নরপতি লক্ষ্রণসেনকে পরাজিত করিয়া মহম্মদ্-ই-বক্তিয়ার খিলিজি বালালা জয় করেন।

ভারতে মুসলমান সমাগম হইতে এখানে গন্ধনী, বোরী, দাসবংশ, থিলিজিবংশ, ভোগলকবংশ, সৈরদ, লোদী, স্থর ও মোগলবংশ রাজস্ব করেন। ভদনস্তর ইংরাজরাজবংশের অভ্যাদর ঘটিরাছে।

২ পুত্র।

"নৃপস্ত কাশ: স্থাতির্ভুতক্যোতিরতো কয়: ॥"

(ভাগ মাহাস৭)

বংশ (পুং) তৃণজাতিবিশেষ। চলিত কথার বাঁশ বলে।
ভূপ্ঠত্ব বিভিন্ন স্থানীর জলবার্র তারতম্যাস্থলারে বিভিন্ন প্রকার
বাশ উৎপদ্ন হইরা থাকে। উদ্ভিদ্তত্বনিদ্ বেশ্বাম ও হকার
২২ প্রকার বাঁশগাছের উদ্লেখ করিয়াছেন, তর্মধ্য তারত ও
মলর-প্রারোধীপের স্থানে স্থানে প্রায় ৯৪ প্রকার বাঁশ দেখা
যায়। এই বাঁশের মণ্ড, বাখারি, চটা ও চিরাড়ী কাটিয়া ভারতবাসী নানারূপ পৃথকার্যে ব্যবহার করিয়া থাকে। একটা
লব্মান স্থপক বংশ খণ্ডাকারে কাটিয়া ঘরের পুঁটা, চালের বাতা,
ডালাঁ প্রভৃতি প্রস্তুত ইইন্ডে পারে। বাখারি চিরিয়া প্রাস্থপের
বিশ্বতি প্ররের চালের পাটা বেওরা হর। বাশ কাটারি ধারা
লক্ষ্ডাবে বিশ্বিত করিয়াঁ ভছ্পির উপর্যুগরি আঘাত করিয়া
লক্ষ্ডাবে বিশ্বিত করিয়াঁ ভছ্পির উপর্যুগরি আঘাত করিয়া

চওড়া চটা প্রস্তুত করা হয় । উহা করের কেওরালরংশ আটির।
তহপরি মৃত্তিকা লেপন করিলে পরিকার কেওরাল হইতে পারে ।
চিরাড়ীর সক্ষমোটা অনুসারে ঝুড়ী, কুলা, চাটাই বা বর্ষা,
ধুচুনী প্রভৃত্তি এবং অপেকাক্তত মোটা বা সক্ষ গোল ললা
প্রস্তুত করিরা ভাষতে চিক্, ঝাঁপী, মাছধরা খুণী প্রাকৃতি
নির্দাণ করা বাইতে পারে ।

এই বংশ শ্রেণীর মধ্যে বেউড় বাঁশ (Bambusa arundincea) সর্কবিবদ্ধে মন্তব্যের বিশেষ উপকারী! বিভিন্ন দেশে ইহা বিভিন্ন নামে পরিচিত। হিন্দী—বাঁল, কাটাল, মগর বাঁল, নল-বাঁণ; বাঙ্গালা--বেহড় বা বেউড় বাঁণ, বাঁগ; আসাম--ব্রাহ, কোলকতলা; সাঁওতালী—মাট; গাল্গো—বাহ্-কাঞ্চে; চট্টগ্রাম ---विद्याला : शक्षाव -- मगद्र, नाल : अक्षत्राक्ष--- वःभ. (काक्ष्---कनक, (शांतरें ; शंक्रमश्न-वन ; तांचारे-मन्त्, माधाव ; দাক্ষিণাত্য-ভাঁস, ছোট বাঁশ হইলে ভাঁসা ও বড় হইলে বাৰু: গৌড়-কটিবছর; আরব-কাসাব, পারস্ত-মই; ভামিল-ममशन, मन्धिन; उन्ध-मृनकान, क्य, वाका, व्हक, বোল-বেছল, পোল্ডে-বেদেল, বেরেমুক, বের্নুর্লনি, বেড্ ; কনাড়ী-বিহুকুৰু, মৰ-ৰা-নাহ্; ব্ৰন্ধ-ৰ-গাক্যাৎ, ক্যাক- ংবা ; শিক্ষাহর—কাটুউনা, উনা ; চীন—ছুহ , ইংরাজী— Bamboo। বৈজ্ঞানিক ভাষার ইছা উদ্ভিদ্ভবের তুপবিভাগের (Graminem) দক্ত (Bambusem) শেলীর অরম্ভ ত। সংস্কৃত পর্যায়—কীচক[°]; স্বক্সার, কন্মার, স্বচিসার, ভূপধ্যজ, শতপর্বা, যবফল, বেণু, মন্তর, তেজন, কিছুপর্বা, রস্ত, ডুণ-কেতুক, কঠালু, কণ্টকী, মহাবল, দৃঢ়গ্ৰন্থি, দৃঢ়পত্ৰ, ধ্যুক্তম, ধামুষ্য, দুঢ়কাও, কিলাটা, পুপাধাতক।

এই বংশভূগ সাধারণতঃ ৪০।৫০ হাত অর্থাৎ ১০০ হইতে ১৫০ ফিট্ পর্যান্ত উর্জে লখা উঠিয়া থাকে। ক্ষুদ্রজ্ঞাতীয় বালঝাড় গুলি ৩০ ফিটের প্রোর কম হয় না। ভারত এবং পূর্বভারতীয় অনপদসমূহে বিভিন্ন প্রকারের বে সকল বাল গাছ দেখা বায়, পাশ্চাত্য উদ্ভিদ্বিদ্যাণ তাহাদের আবয়বিক গঠন, দৈর্ঘাতা, প্রস্থি ও পত্রপার্থক্য নির্দেশ করিয়াছেন। নিয়ে ভাহাদের বৈজ্ঞানিক নাম, উৎপত্তিস্থান, উচ্চতা প্রভৃতি সংক্ষেপে বিবৃত্ত হইল,—

- > Bambusa affinis—মার্ভাবানে জন্ম, মাথা জাঁক্জা ঝাক্জা, >e হইতে ২০ ফিটু লখা হয়। প্রক্রনেশীয় ভাষার থৈকা ও থিশে বলে।
- ২ B. Agreatie— ৰক্ষ্যান চীন, কোচীন চীন ও সলম্বীলপুছ। বক্ৰাকায় গঠন, ১ ফুট্ মোটা ও ১॥• ফুট্ খাড়াই। ভিতৰ কাপা নহে।

- ও Amahussuna—পূর্বভারতীর দ্বীপপুঞ্জের আদরনা ও মনিপা নামক স্থানে জবা । ছোট গাছ,মাথা বাঁপড়া বোপড়া, ঘন জন্মবা আকারে উৎপন্ন হয়। উপরের পাতাগুলি হলের ভার ওঁরাযুক্ত। গাঁইটগুলি খুব বেঁস বেঁস হইরা থাকে।
- 8 B. Apus— যবনীপের অন্তর্গত শালক পর্কতের উপরি-ভাগে এই লাঙীর বাঁশ করে। গাছগুলি ৬০ ইইতে ৭০ ফিট্ লবা ও মাছবের উক্ল দেশের ভার মোটা হর। পাতাগুলি বড় বড় ও প্রচার।
- ৫ B. Aristata—পূর্বভারতের নানা হানে; সরু ও মক্ত গঠন, কিছ দণ্ডাকার নহে। এই শ্রেণীর বাশগুলি দেখিতে বডই ক্লার।
- ৬ B. Arundinacea—মধ্য, দক্ষিণ ও পশ্চিমভারতে প্রধানত: দেখা যার। দপ্তাকার, ৩০ হইতে ৫০ ফিট্ উচ্চ, ভিতর ততদূর ফাঁপা নহে, গাত্রের আবরণ মস্থপ ও কঠিন এবং দলে প্রদ। পাতাগুলি ছোট ও পাতলা পাতলা। গাছগুলি ত্রিশ বংসরে প্রাচীন হইলে ফুল হর।
- B. Arundo—ছউড়ী বাশ বলিয়া থ্যাত। ইহাতে
 মলাবলেখনের প্রদিছ ছড়ি প্রস্তুত হইয়া থাকে।
- ৮ B. Aspera—আষয়না খীপে উৎপত্তি। গাছগুলি ৬০ হইতে ৭০ ফিট্লখা হয়।
- ৯ B. Atra— আখ্য়না খীপ, বংশদত চিৰুণ ও কুক্তবর্ণ। পাভার ভাঁটার কাঁটার মত ভাঁয়া আছে।
- ১০ B. baccifera—চট্টগ্রামের পার্কত্য প্রদেশে উৎপর হয়।
 চট্টগ্রামবাসী ইহাকে পশুটুরু বলে। দাক্ষিণাতো ইহা বিবা বাশ
 নামে খ্যাত। ইহাতে জামের মত এক প্রকার ফল হয়।
 উহার একটা মাত্র বাঁজ খাকে। এই বাঁশেই প্রচুর পরিমাণে
 তবাশার বা কাশলোচন পাওয়া বায়।
- ১১ B. Balcooa পূর্ব্বন্ধ আসামের স্থানে স্থানে ক্সছে।
 বালালার বাল্কু বাঁশ বা ধুলি বাঁশ এবং আসাম ও কাছাড়
 বিভাগে বেতবা, ভাল্কা বাঁশ নামে পরিচিত। লেপছারা
 বিভাগে বেতবা, এই বাঁশ জীলাতি বলিয়া গৃহীত।
- ১২ B. Bitung বৰ্ষীপঞ্জাত। পত্ৰ চণ্ডড়া ও পদ্ধদে।
 ১৩ B. Blumeana বৰ্ষীপ। মণ্ডাকার, নৰপ্ৰাস্ত শিশুর
 মধ্যের জার সন্ধা
- ১৪ B. Brandissis—ব্রহ্মদেশ ও চট্টগ্রানের ৪ হাজার কিট্ উচ্চ পর্যান্ত পর্যান্ত পর্যান্ত জব্দে। ব্যান্ত ১২৬ ফিট্ পর্যান্ত লালা হয়। কর্মের পরিধি বা বেড় প্রায় ৩০ ইঞ্চ। কচি কচি হর্মির বা পারবাধিতে লালা ও হক্সিরা মিশ্রিত কটা বর্শের ওঁরা বেখা বার। অভ্যন্তর দেশ কুক্তিও। এই বাশ

- ৰাকালার ওড়া, ত্রন্ধে বা বো ও মগদিগের মধ্যে তুওঁবা নামে পরিচিত।
- ১৫ B. Falconeri—উত্তর-পশ্চিম হিমালয় শৈলপুঠে, বিশেষতঃ নিমলা শৈলের পাদমূলে ৫৫০০ ফিট্ উচ্চ স্থানে এই বৃক্ষ জায়তে দেখা যার। ডাঃ ব্রাপ্তিজ ইহাকে বাল্কু বাশের অন্ধন শ্রেনী বলিয়া অনুমান করেন। ইহার স্কৃলপ্তাল প্রার ১ ইঞ্চ লখা হয় এবং আরুতিগত সাদৃশ্রে কতকটা তল্না বাশের ক্লের মত। পার্বতীয় ভাষার ছো, কাগ প্রভৃতি নামে খ্যাত।
- ১৬ B. Glauca—ভারতের নানা স্থানে পত্ত ১ ইঞ্চের বড় হর না। প্রস্তেও চুই স্তার অধিক নহে। গাছ চুই ফিটের অধিক বাড়ে না; কিন্তু ডাল পালার বিজ্ঞাড়িত হইরা থাকে। ইহাতে ক্ষুদ্র ও উজ্জল বর্ণ অনেক ফুল হর।
- ১৭ B. khasiana—খণিরা শৈলজাত। খণজাতি ইহাকে ভূমার বাঁশ বলিয়া থাকে।
- ১৮ B. Maxima—কাশোল, বালি, বব প্রভৃতি পূর্ক্তারতীর দ্বীপপুঞ্জের অন্তর্গত অনেকগুলি দ্বীপে এই বৃক্ষ জন্ম।
 ৬০ হইতে ৭০ ফিট্ পর্যান্ত দীর্ঘ হর। বংশদগুগুলি প্রান্ত
 মন্থবাদেহের ন্থার মোটা। ভিতর ফাঁপা। উহার গাত্র এতাদৃশ পাতলা যে, তাহাতে চেঁচাড়ি, ছিটাবেড়া প্রভৃতি প্রন্তত
 হইতে পারে।
- ১৯ B. Mitis— আষমনাম বন মধ্যেও পর্যাপ্ত ভাবে উৎপন্ন হইতে দেখা যার। কোচীন-চীনে ইহার চাস আছে। গাছ ৩ ফিট্পাস্ত দীর্ষ হয়। কিন্তু দণ্ডগুলি সাধারণতঃ সক্ষ হইরা থাকে। স্থানবিশেষে উহার বেড়ের আয়তন বর্দ্ধিত হইতে দেখা যার। কথন কথন এক একটা বংশবৃষ্টি মান্তুবের পারের মত মোটা হয়।
- ২ · B. Multiplex—কোচীন-চীনের উত্তরবিভাগে বেড়ার লাগাইবার অন্ত প্রধানতঃ এই বুক্সের চাদ হইরা থাকে।
- ২> B. nana—ব্রহ্ম ও চীনরাজ্যে জন্মে। এই বাঁশ ক্ষুদ্রাকার, পাতা ছোট ছোট, নীচের দিক্ সাদা হর,খন করিরা বেড়ার বি সরিবিষ্ট করিলে বড় স্থানর দেখার। চীনবাসীরা ইহাকে
 কিউ-কা এবং ব্রহ্মবাসিগণ পিলবপিনঙ্ব বলে।
- ২২ B. Nigra—চীন-সাত্রাজ্যের ইংরাজাধিকত কান্টন প্রাদেশে এই বাঁশ উৎপত্র হইতে দেখা বার। ইহার, বওগুলি মান্তবের ক্লার দীর্ঘাকার হইতে না হইতেই কাটরা লওরা হয়। উহাতে ব্যবহারোপবোগী উৎকুই বৃষ্টি ও রুমণীগণের ব্যবহার্ত্তা ছাতির সুক্ষর বাঁট প্রস্তুত হইরা থাকে। ইংলপ্তেও এই বাঁশ জ্বানা।
 - २० B. nutans---(नर्गाण, निकिम, प्रिमा र्पणमाना,

আনান, প্রীহট্ট ও ভোটানের প্রাথানির প্রান্তবেশে এই বাশবাড় দেখা বার । ভূপুর্চ হইডে ৭ হাজার কিটু পর্বন্ধ উচ্চ
হালে করে। এই গাছ বেখিতে অনেকটা ওলা বাঁশের বত,
ভিতর কিছ কাঁপা নহে, নিরেট বলিলেও চলে। বোটা বাশভলির ভিতর কিছু কাঁপ হর, খুব শক্ত ও ভারনহ। বালালার
ইহা নল বাঁশ, নেপালে মহল বাশ, লেপছা বেশে মহলু,
ভূটিরা বিউনিল, আনামে বিহলী ও মুকিরাল এবং শ্রীহট্টে
পিছ্লে নামে খ্যাত।

২৪ B. Orientalis-- একমাত্র দক্ষিণভারতেই উৎপঃ হইরা থাকে।

৯৫ B. Pallida — পূর্ববন্ধ ও আসামে জন্মে, ৫০ ফিট্
দীর্ঘ হয় । ধশিরারা ইহাকে উস্কেন এবং কাছাড়ীরা বুর্বাল ও
বধাল বলে ।

২৬ B. Picta—সিরাম, কেললা, মেলিভিস্ ও তরিকটন্থ অন্তান্ত বীপে এই বৃক্ষ প্রচুর দেখিতে পাওরা বার। ছই ইক্ষের অধিক মোটা হয় না। প্রার ছ কিট্ অন্তর এক একটা গাঁইট আছে। কাঠ পাওলা, কিন্তু অভিশর কঠিন। এই কারণে ইহা সর্বতোভাবে লাঠির উপযোগী হইরাছে।

২৭ B. Prava—আঘরনার উপতৃল বেলে ও অভাল স্থানে ইছার বনমালা দৃষ্ট হয়। ইহার পাতা সাধারণতঃ ১৮ ইঞ্চ লঘা ও এও ইঞ্চ চওড়া হইরা থাকে। উহাতে কাঁটার ন্তার গুরা আছে। ঐ বাল বিক্রেরার্থ উপতৃল ভাগে আনা হয়।

২৮ B. Polymorpha—পেশুবোমা শৈলে এবং মার্ডাবান্ বিভাগের পর্বান্ত সামূলেশে এই বাশবন দৃষ্ট হর। বন্ধবাসী ইহাকে ক্যাবৌদা বলে।

২৯ B. Pubesoens—ইহার দশু ৩০ ফিট্ দীর্ঘ হয়, কিছ ১৯০ ইঞ্ ব্যানের অধিক নোটা হয় না। ঝাড় বাধিয়া উৎপর হয় না।

৩০ B. Spina—নান্দিণাতোর গঞ্জাম ও শুদ্রের নেলার উৎপন্ন হয়, এই বাল ৮০ কিট্ পর্যন্ত লখা হইতে দেখা বার। উড়িয়াবাদীরা ইহাকে কাটা বাল বলে।

৩১ B. Spinoea—ভারতের পৃশাক্ষণভাত প্রসিদ্ধ বংশলাভি। হিন্দী—বৃদ্ধ বা কেন্দ্র বাদ; বালালা—বেউড় বাদ;
আসাম—কোটে; কাছাড়—কিতৈট; ব্লছ—বকংবা। বালালা,
আসাম ও ব্রন্ধরাজ্য, সুক্তবেলেন, মালাল প্রেলিভেলীর উত্তরপৃশাংশ এবং ভারতের অভাভ হানে বাড় বাবিরা এই গাছ
উৎপন্ন হইরা থাকে। ইহা দেখিতে ব্লন্ম, গঠন মধ্যনাকৃতির
হইরা থাকে। কলিকাভার নিক্ট স্বর্তনী ও ব্রন্ধরাজ্যে ৩০
হইতে ৫০ কিটের কবিক বীর্ষ বয় না। ইবার ককি এরণ বিশ্বত

ও কঠিন হর বে, সে বাঁশ কলে প্রবেশ করা র্যুগার্য। পাতা কুর ও দীচের দিকে ও রাযুক। জ্যুর রানে ববাঁরক্তর প্রাক্তানে প্রোচীন গাছগুলিতে প্রশোদনম হয়। এই বাঁশ চেমুই ফারিয়া গুহাদি নির্দিত হইরা থাকে। বক্তপ্রে থারণ কালে এই বাঁশের বাই প্রেক্ত করিয়া প্রাক্তা-সক্তানের হতে হও দিবার বিধি আছে।

৩২ B. Striata—চীন বেশে কলো। খাড় হর মা।
ইহার দণ্ড সরু, হরিলাবর্ণ, হুচিকণ ও সবুল ডোরাকাটা, এই
বিচিত্র গঠন নিবকন ইংলণ্ডের ভেবজোভানের উফ-নিক্তেনে
(hot-houses) ইহার চাস হইতেছে। এই গাছ ৩০ কিট্
পর্যান্ত উচ্চ হর।

৩০ B. Stricta—কভনালে বাড় বাবিলা বাকে। হিন্দুছানে ইহা বাড়-বাল নামে প্রসিদ্ধ। বাজিশাভ্যের ভেলগু
ভাবার ইহার নাম সক্ষমপ্রেছর: অভিশার মৃত, নিরেট ও
সরল হওরার ইহা বারা বরশার দও প্রস্তুত হইরা থাকে। ইহা
পুংজাতি বলিরা খ্যাত।

৩৪ B. tabacaria—আখরনা, বৰ ও বনিপা বীপে প্রাকৃত করে। ইহার গাত্রে ৩।৪ কিট্ অগুর এক একটা গাঁইট, প্রারই নিরেট। কনিষ্ঠানুপীর অপেকা কথনও হোটা হর না। এই কারণে ইহার উপর পালিস বিরা উৎকৃত্র বৃষ্টি প্রস্তুত হইতেছে। এ লওের বহিরাবরক এরপ ক্রিন বে, ততুপরি কুঠারাবাত করিলে অগ্নিফ্ লিক নির্গত ক্রার্থাকে।

৩৫ B. teres—বাদালা ও আনাম আদেশে প্রধানতঃ উৎপন্ন হইয়া থাকে।

৩৬ B. trilda—বালাগার সাধারণ বাঁপ। পেশুপ্রাদেশের জনমর বনভাগেও উৎপন্ন হর। বাদালার তল্পা বাল, পিকারীশ, লোবা বা জাওয়া বাশ; মিটেলা, মাটেলা ও ছোবা বাশ : হিন্দী—পেকা, সাঁওতাল—মাক্, কোল—প্রোপেনিমান : शारता-विचि ; मध-मनदेवा (महारमवा १), उच-विदेवा. খৌক্ষা প্রভৃতি নামে পরিচিত। এই বাদ গাছ দীয়া দীয়া वाकिया कर्छ । जिल बिरनव मरशा शूर्नावका ध्याख दव । ध्याव १० किंहे भर्याख बीर्च वर्षेट्ट दिन्ना वात्र । देवात वक ३२ देक পরিধিবিশিষ্ট মোটা হইরা থাকে: পাডাওলি মধ্যমাক্ষতি, কোষণ ও শিরাবিশিষ্ট। গাঁহিটগুলি কিছু উচুঁ উচুঁ, ভাছার চারি পার্বে ভাষার একটা চক্র আছে। এই বাঁপ চিরিয়া কিছ দিন কলে ভুষাইলে অভিনয় শব্দ ও দীৰ্ঘলাগছায়ী হয়। ইহাতে ব্রের বুঁটা, বাডা, ও বেড়ার বাবারি প্রভৃতি এবং বর্ষা, বুড়ি, পাখা ও চিক অভৃতি ত্ৰব্য ইহাতে উৎকুট্ৰাপ প্ৰভাত ক্ট্ৰা बादम । जाउता दीन वह व्यक्तित हहेरलड जानजांकुछ वह হয়। তদ্যা বাশের অপেকা ইহার প্রতিন্ত্রী অবিক্ষের লচ।

এই বাঁশের কচি কোঁড়া অনেকে ধার। গাছ গুই ফিট উর্চে উঠিলে সেই কচি তেউড় কাটিয়া খানে এবং তাহাতে মসলাদি মাধিরা খাচার প্রস্তুত করে। খানেকে বাঁশের কোঁড়ার উপর হাঁড়ি চাপা দিয়া রাখে। ক্রমে নেই বংলাভুর পরিবর্ধিত হইয়া হাঁড়ির খাকারে পরিণত হয়। তখন উহা দেখিতে ঠিক বাঁধা কপির মত দেখার। ঐ কোঁড় কাটিয়া বাঞ্চনাদি রন্ধন করিলে ধাইতে উত্তম লাগে।

৩৭ B. Verticillata—আশ্বরনা শ্বীপে জন্ম। প্রার ১৫।১৬ কিট উচ্চ ছইতে দেখা যার। ইহার পত্র গার লাগিলে এরপ চুলকানি উপস্থিত হয় যে, যে সহজে তাহা নিবারিত হর না। এই কারণে কেহ সাহস করিরা উহা সংগ্রহ করিতে চেষ্টা পার না। Rumphius এই জাতীর বৃক্তকে Leleba alba নামে উল্লেখ করিয়াছেন।

৩৮ B. Vulgaris—ভারতের সর্বতে, বিশেষতঃ শ্রীহট্ট, চটগ্রাম এবং সিংহল খীপের দক্ষিণ ও মধ্যভাগে জন্ম। আমেরিকার ওয়েই ইণ্ডিল বীপপুঞ্জে এবং দক্ষিণ আমেরিকার স্থানে স্থানে ইহার চাস হইতেছে। এই বাঁশ দেখিতে হরিদ্রা-বর্ণ এবং মধ্যে মধ্যে ইহার গাত্তে সবক ডোরা থাকে ৷ বাজালার ইছা বাসিনী বাঁশ নামে খ্যাত। বোশাই--ক্লক, বংশকলক ও শিক্ষাপরে উনা নামে পরিচিত। এই বাঁশগুলি সাধারণতঃ ২০ হইতে ৫০কিটের অধিক লখা হয় না এবং বালকদিগের বাছমূলের স্থার মোটা হইতে দেখা যার। পাতাগুলি মোটা মোটা শিরাযুক্ত : বালের গাঁইটগুলির ব্যাস প্রায় ৪ ইঞ্চ। গারের দল কিছু পাতলা। বর্ষার সময় গোডার জল পাইরা প্রতিদিন প্রায় ১৮ हैक वाफ़िट्छ थारक। शाह व्यत्नक श्रूतांछन इहेरन कुल ধরে। ফুলগুলি বেখিতে অনেকাংলে B. arundinacea শ্ৰেণীর মত ; কিন্তু বহিংপত্রগুলি অপেকাক্কত বড় ও ছুচাল। as B. Beechyana, B. flexuosa, B. marginata. B. regia, B. tuldoides B. Thouarsii প্রভৃতি কএকটা শ্রেণীর নাম করা যাইতে পারে। শেবোক্ত শ্রেণী B. Vulgaris শ্রেণীর সমনামীর বলিরা কবিত। অপর কর্মটা শ্রেণীর বিশেষ কোন বিষয়ণ পাওয়া যায় নাই।

ক সকল বিভিন্ন শ্রেণীর বাঁশ-বাড়ের পরস্পর পার্থক্য লক্ষ্য করিয়া উরিদ্ভব্বিদ্পণ উহাবের আতিগত চারিটা থাক (subtribe)নির্দেশ করিয়া খাঁকেন। ভন্মধ্যে ১ম থাক Arundinariece —ইছার মধ্যে Arundinaria শ্রেণীক বৃক্ট গণ্য হইতে পারে। ২য় থাক Enbambusece — Bambusa, Gigantochloa ও Oxytenanthera শ্রেণী ইছার অন্তর্ক্ত। তম Dendro-calamaco—Deudracalamus, Melocalamus, Pseudo-

tostachyum, Teinostachyum ও Cephalostachyum শ্রেণীভূক বৃক্ষ সম্পার ইহার মধ্যে পরিগণিত হয়। এবং এর্থ Meloconnece—Dinochloa, Melocanna ও Ochlandra শ্রেণিক বৃক্ষই এই থাকের অন্তর্গত।

উপরোক্ত ক্ষুদ্র বা বৃহৎ স্বাতীয় বাঁশগাছগুলির উপরে একটা কঠিন স্বগাৰরণ আছে। তাহার নিমে ও ভিতরের ফাঁক পর্যান্ত বে কাৰ্চভাগ থাকে, তাহাকে 'দল' বলা যার। জাতি বিশেষে ঐ দল মোটা বা পাতলা হয়। দলের মাঝে মাঝে এক একটা নিরেট ও কঠিন মোটা গাঁইট থাকে। কোন কোন বাঁশের গাঁইট এত কাছাকাছি হয় যে, ভিতরের দল বা কার্চ নাই বলিলেও চলে। শিঙ্গাপুর, চীন প্রভৃতি দেশে এই বাঁশের ফুন্দর ফুন্দর ছড়ি প্রস্তুত হয়। উহা চীনে বাঁশের লাঠি বা ছড়ি বলিয়া পরিচিত ৷ কোন কোন শ্রেণীর বাঁপ ৩০ দিনের মধ্যে পূর্ণাবস্থা প্রাপ্ত হয়, কোনগুলি বা ২।৩ মাসের মধ্যে শাখাসহ পরিধর্দ্ধিত হইয়া উঠে। প্রধানতঃ বর্ষা সমাগমেট বাঁশের কলা গজাইতে रमशा यात्र । कारक्षेत्र क्रियान ३৮৩€ शृहोस्त विस्मय ভাবে পর্যা।-লোচনা করিয়া দেখিয়াছেন যে, বর্ষা ঋতুতে বক্সধ্বনির সঙ্গেসজেই বাঁশের কোঁড় বাহির হয়। তদনস্তর উত্তরোত্তর বারিপাতে উহা বুদ্ধি পার এবং ক্রমশঃ কঞ্চি প্রভৃতি দ্বারা বিভূতারতন হইরা উহা প্রকৃত বাশবাড়ে পরিণত হইয়া থাকে। চীন দেশে 'চেকিয়াং' নামে এক প্রকার চৌকা বাঁশ পাওয়া যার। উহা গুহাদি সাজা-ইতে, অথবা আসবাব প্রস্তুত কার্য্যে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। ইহার দারা উৎক্রপ্ত কলম-দানি প্রস্তুত হয়।

বৃষ্টি আরম্ভ হইলে বাঁশের গোড়াকাটাগুলি স্থানাপ্তরে পুতিরা দিলে তথার নৃতন কোঁড় উৎপন্ন হইরা থাকে। কোন কোন স্থান বিশেবরূপে চসিরা তথার ছই বা তিন কুট্ লখা একটা কাটা গোড়া লখভাবে পুঁতিরা দেওরা হর। ঐ গোড়ার দিকড়- বৃক্ত গাঁইট (nodes) গুলি হইতে কিছুদিন পরে এক একটা ফলা নির্গত হর, তথন উহাকে খণ্ড খণ্ড করিরা কাটিয়া নির্দিষ্ট ভূমিতে পুথক ভাবে রোপণ করিরা দের।

কাটা গোড়া ভিন্ন বাশের বীক্ষ হইতেও গাছ উৎপন্ন হয়।
Lodicules ও pulea সংস্কৃত বীজগুলি গাছ হইতে ভূমিতে
গতিত হইবার পর সংগ্রহ মধ্যেই অন্ত্রিত হইনা উঠে।
কথন কথন উহা মূল বুক্লে সংলার থাকিরাই হর ইঞ্চ
পর্যন্ত বাড়িরা থাকে। তথম ঐ কচি কোঁড়গুলিকে
হানার্ত্রে হাণিত করা হর। ঐ অন্ত্রিত বীক্ষণ্ডলি বরকাল
মধ্যেই নই হইরা বার, কিছ বিশেষ মত্তেও লাবধানে সংগ্রহপূর্বক রক্ষা করিলে ভারতের একপ্রান্ত হইতে ক্ষপর প্রান্তে
লইরা গাছ উৎপাদন করা বাইতে পারে। এই গাছগুলি ১০

হইতে ১২ বংসর মতিক্রম ন। করিলে ক্রপক ও কাটিবার উপযুক্ত হর না।

বীশ গাছ প্রধানতঃ বেরপ কোঁড় লইরা অছুরিত হর, পূর্ণমাত্রার পরিবর্জিত হইলেও উহার গোড়ার পরিসর প্রার একরূপই থাকে। দণ্ডের দৈর্ঘ্যতার বৃদ্ধি সহকারে ব্যাস তেমন ছুলতর হর না। বৎসরের পর বৎসর চলিরা বার, কিন্তু উহার দৈর্ঘ্যতার বা আরতনের বিশেব কোন তারতম্য লক্ষিত হর না, কেবল উহার কাই পরিপক হইতে থাকে। নারিকেল, তাল, থর্জুরাদি রক্ষের বেরপ ভালের চিল্ল দেখিরা বরস নির্ণন্ন করা বার, বাশ গাছের প্রস্থি লৃষ্টে সেরপ কোন কাল নির্দেশ করা বার না। উহার পূল্পালাম বা বীলাধান দেখিরা সাধারণে বরস নির্ণন্ন করিরা থাকে। মধ্যভারতের পার্বত্য প্রদেশেবাসী লাতিরা পার্বত্য বালের বীলাধান দেখিরা আপনাদের ব্যুস প্র্যান্থ গানো করিয়া থাকে। যে ব্যক্তি বালের ছই কাটক অর্থাৎ ছইবার বীলাধান দেশন করে, তাহার বরস ৩০ বৎসরের ক্ষ হয় না।

উপরে বাঁলের পুশোদদমের বিষয় দিখিত হইয়াছে। সাধারণত: ২৫ হইতে ৩৫ বৎসরের মধ্যে বাঁল গাছে ফুল ধরে। অনেক সময় ৪৪ বংসর পরে ফুল হইতে দেখা বার। সময় সমর বাঁল গাছের বীজ হইতে চাউল পাওয়া যার। ঐ চাউল অনেকে খাইয়া থাকে। আমাদের দেশে অনেকের বিশ্বাস, তৰ্ভিক বা মহামারী উপস্থিত লইলে সাধারণতঃ বাঁল গাছে চাউল মনো: কিন্তু বস্তুত: সে সংস্কার ভিত্তিহীন। ১৮৩৬ খুষ্টাব্দের Trans, Agri Horti. Soc of India Vol III p. 139-43 গ্ৰন্থে লিখিত আছে যে. ঐ সময় নানা স্থানে বাঁশ গাছে চাউল দেখা গিবাছিল,কিন্ত তথন কুত্রাপি হর্ডিক ছিলনা। কেত্রাদিতেও অপর্যাপ্ত ধান্ত উৎপদ্ন হইরাছিল। ঐ সময়ে ক্ষেত্রজ তওল ১, টাকার ১৬ সের এবং বংশল তপুল ১, টাকার ২০ সের বিক্রীত হুইরাছিল। প্রত্যেক বাঁপ গাছে প্রার ৪ সের হুইতে ২০ সের পর্যান্ত তকুল উৎপন্ন হর। যে গাছ বত বিচ্ছিন্নভাবে ও বত উর্বার ভূমিতে থাকে, তাহাতে ততই অধিক মাত্রার চাউল পাওরা বার। চাউল উৎপত্ন হওরা শেব হইলেই গাছটী আপনা আপনি ওকাইরা আইসে,কিন্ত তাহার গোড়া হইতে পুনরার কলা বাহির হয় এবং কখন কখন বীক্ত হইতেও বুক্ক উৎপন্ন করা হয়।

পূর্বেই উল্লেখ করিরাছি বে, মাস্থবে বাঁলের কোঁড়া বাজনাদিতে রাঁধিরা অথবা আচার করিরা থার। গবাদি লব্ধ বালপাতা থাইতে ভাল বানে। গোলর এনোরোসে বালপাতা বিশেব উপকারী। ১৮১২ খুটাকের উড়িব্যা-ছর্তিকেলক লক্ষ লক্ষ বালের চাল থাইরা আলে বারণ করিরাছিল।

১৮৩৫ খুটান্দের মহামারীতে ধারবাড় ও বেলগাম্-জেলাবাদী প্রার ৫০ হাজার লোক কাণাড়ার আদিরা বালের দীজ সঞ্জনপূর্বক তাহার তপুলে প্রাণ ধারণ করিরাছিল। ১৮৩৩ খুটান্দে মালদহ জেলার ১, টাকার ১৩ দের বালের চাউল বিক্রীত হইরাছিল। ঐ সমর তথার প্রতি টাকার ১০ দের চাউল ছিল। ছর্ভিক্রের লারে পড়িয়। লোকে বালের চাউলে উদর-পূর্ণ করিতে বাধ্য হইলেও উহা বিশেষ স্থকর নহে। 1)৫ Bidie বলেন, উহাতে অস্ত্রীর্ণ ও উদরামর রোগ জল্ম।

বংশদণ্ডের অভ্যন্তর্গ্ণিত কাঁকের মধ্যে সময় সময় কণ পাওরা বার। ঐ লগ বিশেব শৈত্যগুণসম্পন্ন। বান্ধরোগ-গ্রন্থ ব্যক্তিকে ঐ লগ পান করাইলে বিশেব উপকার দর্শে। বাশের উপকারিতা সহত্তে ধনার এইরূপ একটী বচন প্রচলিত আছে,—

> "পূবে হাঁস, পশ্চিমে বাঁশ • • • *। উত্তর বেড়ে, দক্ষিণ ছেড়ে, বাড়ী ক'ৰগে ভেড়ের ভেড়ে।"

অর্থাৎ পূর্ব্ব দিকে কুম্দকজ্লার পরিশোভিত হংস বিরাজিত পুক্রিণী এবং পশ্চিমে বংশবন সমাজ্লাদিত গৃহবাটিক। গৃহত্তের বিশেষ মলব্যাদ।

খাছদ্রবারূপে ইহার উপযোগিতার বিষয় সাধারণে বিশেষভাবে গুহীত না হইলেও, গুহত্বের নানা কালে ইহার ব্যবহার দেখিয়া লোকে বাঁশঝাড রক্ষার ও পালনের বাবন্ধা করিয়া আসিতেছে। স্ত্রতলীর অন্তভুক্তি খাপ্রেলের ঘরসমূহ এবং তছহিভুক্তি পল্লীপ্রদেশে উনু, গোলপাতা, বড় প্রভৃতি দ্রবাছারা নিশ্বিত যে সকল চালা বর দেখা যার, তৎসমুলারই বাঁশ, লড়ি, খড় ও কাদার সাহাব্যে নিশ্বিত হইরা থাকে। এ সকল খরের খঁটা, রোরা, বাতা,টানা প্রভৃতি সকলই বাঁলের খারা প্রান্তত হয়। চারি পার্বের দেওরালগুলিতে বাঁলের টাটা, চেটাই, অথবা ছেঁচা বাঁলের কাচা ৰা চাঁচের বেডা দেওরা হয়। বাঁশের সন্ম গোলকাটী প্রস্তুত করিরা সভার বারা বিনাইরা 'চিক' প্রস্তুত হয়। ঐ চিক দরজা জানালা প্রভৃতির সন্মধে আবরকরণে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। ৰান্তবিক পক্ষে একটা গৃহত্ব পরিবারের আবশুকীয় আসবাব প্রভৃতি সকল পদার্থ ই বাশ হইতে নির্মিত হয়। একটা करवन পরিবারের গৃহের প্রতি লক্ষ্য করিলে, ইহার পরিক্ষ ট চিত্র দৃষ্টিগোচর হইতে পারে। করেণগণ সপরিবারে অর্থাৎ ২০০ হইতে ৩০০ পৰ্যন্ত লোক একত্ৰ একটা বাসভাবনে থাকে। উহা একটা কৃত্ৰ গ্ৰাম বলিলেও চলে। সকলই বংশনিবিত। বাঁশের মাচা বা পাটাতন কৰিল ভাহাতে শ্ব্যাত্ন বিনিশ্বিত হয়। এভব্লি বংশখণে বনিবার মোড়া, কেবারা, ইজিচেরার, ছেলের বোলা, টেগরা প্রতৃতি সন্তার গৃহছের নানা আসবাব প্রক্রেড হইল থাকে। আনিকেরা অলাক্ষ্মির উপর অথবা নবীবক্ষে বালের কুটার নির্মাণ করিরা বাস করে। স্থানে স্থানে নবীথাতের উপর অথবা রাভার মানে যাথে বাঁশের সেতু দেখা বার।

ৰে সকল বাদ অদিক কাঁপা অৰ্থাং বাহার ভিতরের কাঁক অস্তান্ত শ্ৰেণীর ক্রাঁপা বাঁল অপেকা কিঞ্চিৎ অধিক, এইরপ বাঁপ হইছে জলনালী, জলপাত্ৰ, পানপাত্ৰ, রন্ধনপাত্ৰ প্রভৃতি পার্ছত্ত উপকরণসমূহ প্রস্তুত হয়। হিমানরশিখনবাদী অনেক জাতিই এইস্কপ বালের পাত্রে জন ও চাউল দিয়া অর পাক করিরা থার। পার্কাত্য ক্লবাহকেরা মণকের পরিবর্তে ত किंद्र क्रेट्ड क किंद्र गर्याख गया बरमथ्छ गरेता छेख्थ त्मीर-শলাকা বারা উপর হইতে তাহার গাঁইটগুলি ফুটা করিয়া লর। পরে তাহা জল পূর্ণ করিরা পৃঠদেশে সংস্থাপনপূর্বক একণও বড়ি দিরা উহা কপালে বাঁথিয়া রাখে। ইহাতে ভাহা-দের পর্বাচারোহণে বিশেষ ক্ষবিধা হয় এবং ঐ চোলের আভারত-ছিত জগ কএকবিদ পৰ্যান্ত থাকিলেও উত্তপ্ত বা নই হয় না। বৈশাৰে লগসভগাতার সৰৰ অথবা চৌৰাছ্যার উপর হইতে কলের জল অন্তত্ত দইবার জন্ম বালের জলনালীর বাবহার দেখা বাৰ, এখনও ক্লবকেয়া বাঁলে তৈলপাত্ৰ বা ক্লধপাত্ৰ প্ৰান্তত করিয়া ব্যবহার করে। জন্মব্যঞ্জনাধি পাক করিবার ছাতা, মাছকাটা ছবি, লোহনপাত্র, মছান রও, মই, চরকা, লাটা, আনলা, প্রাভৃতি ব্যবহার্য্য সকল দ্রবাই বাঁশে প্রস্তুত হয়।

নাবিরা বা জেলেরা ইহাতে নৌকার দাঁড়, মাল্লল এবং মাত ধরার অভান্ত আবশুকীর উপকরণ প্রেছত করিরা লয়। আসাম ও পূৰ্ববাদ কৰাক্ষমি ও বিল প্ৰাকৃতি হইতে কৈ মাছ প্ৰাকৃতি ধরিবার **অভ এক প্রকার বড়শি গ্রেছত হর**। উহা চিরাড়ীর ক্তার অপন্ন বাঁপের একটা শলাকা যাত্র। উহার মধাছলে হড়ি বাধিরা চুই মুখ নীচু করিলে ইংরাজী ইউ অক্তরের মত হয়, में हरे रहाश मृत्य अरुनि क्कि चाहेकाहेबा खालबा बाल ছাড়িরা বের। বাছ কড়িংএর গোড়ে ঐ বড়নি আসিরা ধৰিলেই বংশনদাকা পূৰ্বাবস্থার বিভূত হইয়া পড়ে, এবং কানকুৱা মধ্যে সম্বেদে আহিছা হাইয়া ভাষা ক'বিছ করিয়া কেলে, তখন আর নড়বার শক্তি থাকে না। এডক্সি হিপ, বড়গা, বছলার দণ্ড, বট্ট গ্রন্থতি অনেক জিনিন ইহা হইতে স্চরাচর প্ৰস্তুত্ব হইবা থাকে। সাগা প্ৰকৃতি পাৰ্মতা ৰাতিয়া বাপের কঠিন আবরণাংশ হইতে ভুরিকা ও বড়লা প্রায়ত করির। शारकः। भव्य वर्षेटक आमावि त्रकाव कक कांचाता 'शकी' नारम এক প্রকার ছুঁডাল ছুব্লিকা প্রছড় করিরা প্রানের চতুন্দার্থবর্ত্তী বনান্তরাল প্রবেশের পথে পথে বিছাইরা রাখে। উহার একটা
শক্রর অভিমুখে ও চুইটা ভাহার বিগরীতে প্রামের অভিমুখে
বাকে। শক্ররা আসিরা অগ্রমুখী কাঁটার বিভ হইলে বেমন
পা পশ্চাদিকে টানিরা লইতে চেটা পার, অমনি অপর চুইটা
কাঁটার গোড়ালী বিভ হইরা বন্ধশার অহির হইরা পড়ে।
নাগারা চিড়া প্রস্তুত করিবার জন্ত এক প্রকার বাঁলের কল
নির্দাণ করিতে জানে। সাঁওভাল কোল, ভীল, নাগা, কুকী
প্রভৃতি অসভ্য জাতিরা এখনও বাঁশের ধন্ধক লইরা বেড়ার।
অতি প্রাচীন কাল হইতে আর্ব্য-বোভ্রর্থের তীর, ধন্নক ও
ছিলা প্রভৃতি বাঁশে নির্দ্ধিত হইত। পূর্ব্যক্তে বাঁশের পাচ্ডা?
বারার রীতি আছে।

এই সকল ব্যতীত, বংশে উৎক্লই ৰাভ্যৱসমূহ প্ৰেছত হইরা থাকে। প্রীক্লকের মোহন বাঁপরী এবং লোকপঁলপরাঞ্রত মিঞা তানসেনস্ট শানাই নামক বাভ্যৱ বেণু নামক বংশ বারাই নির্দ্ধিত। এবেশে সক্ষ তললা বাঁশে বিভিন্ন প্রকার বাঁশী প্রছত হইরা থাকে। মণিপুরবাসী এবং নাগারা এক প্রকার বাঁশের বীণা (Jew's harp) প্রছত করিয়া বাজার। উহার তার-জ্বনিত ভাহারা কাচা বাঁশের উপরের হাল হইতে সক্ষ ও গোসভাবে চাঁচিরা প্রছত করে। মলরবাসীর ওক্লোল নামক বাভ্যৱ আবন্ধক মত ক্রে বা বৃহৎ এক একটা গাঁইটম্ক বাঁশের চোলে নির্মিত। বাজাইবার সমর উহা কতকাংশে জলতরক বাজানার জার বাজান হয়। উহাতে স্বরেরও তারতম্য স্পষ্ট অম্বভূত হইরা থাকে। গোপীবস্ত, সেতার ও একতারা প্রভৃতি ব্যরের পূর্রপণ্ড বাঁশের নির্মিত হইরা থাকে।

উপরোক্ত নিভাবাবহার্য ক্রবাদি ভিন্ন বংশদশু হইতে মন্ত্রাজগতে আর একটা মহত্পকার সাধিত হইডেছে। উহা মন্ত্রাজগতে আর একটা মহত্পকার সাধিত হইডেছে। উহা মন্ত্রাজগতে আর কিছুই নহে। মানবজাভির মনোভাব বা প্রছাদি নিধিবার কল্প কাগজের আবিকার হইরাছে। এই বংশ-বংগ হইডে সেই কাগজের প্রভারবিশেব উত্তুত হইডেছে। ঐ কাগজ অপেকারত দৃঢ় হওরার নিশিকার্ত্তে বহল পরিমাণে ব্যবক্ত হয় না, বরং ব্রবাদি মোড়ক করিরা রাধিতেই উহার অধিক প্রচলন দেখা বার।

Indian forester নামক প্রিকার ৪র্ব তালে চীনদেশীর বাশের কাগল প্রথম প্রথম প্রথম করিরা । উহা প্ররণ সহল বে সকলেই অনারানে সেই প্রথম অবস্থম করিরা কার্য্য করিছে। বাশগাছকে কৃষ্ণি ও পঞ্জ নির্মাণ করিরা, ভিন চারি কিট করা বাবি কাটিছে হয়। পরে সেই ভালি সক সকলেকাকার বাবারিকে পরিপত করিয়া ভাতা বাঁবিয়া করে

ভূৰাইয়া সাধা কৰ্মকাৰ প্ৰজনিবতে বা চৌৰাচ্ছাৰ ৰাধানীয় তাড়া ভিজাইবার সময় একটম জন্মণ বাধারী সাজহিয়া ভাহার উপর পর্যায় চুদ ছড়াইরা বিতে হয়, কো চুলে বাধারিশ্বলি ঢাকা পড়ে। এইরূপে উপয়ু পরি বাধারী ও চুগ চৌবাচ্ছার সাজাইরা উপর হইডে আন্তে আন্তে অর অর রূপ চালিতে হয়। ক্রেমে তন্মধানক্ষিত জলরাশি উপরের বাধারিতরকে ঢাকিরা কেলিলে জল দেওয়াবন্ধ করা হয়। এইয়াশে চুল মিশ্রিভ জল মধ্যে ৩। ৪ মাস কাল নিমজ্জিত থাকিলে বাধারী পঢ়িরা আইসে। তথন উহাকে তুলিরা ঢেকিতে বা উদূধনে কুটিরা ওঁড়া করে। অতঃপর সেই ভঁড়াভলি উত্তমন্ত্রণে পরিছারপূর্বক পুনরার পরিষ্ণত জলে মাখা হইরা থাকে। কাগজের আরতন বা বৈর্বা প্রস্থ ও স্থূলতা অনুসারেই পরিকার জল মাধান নিরম। অনস্তর ঐ জনমাধা কংশ-চূর্ণের মাড় চৌকা ছাক্নীর স্তার আকারের চাঁচে ঢালিয়া বধারীতি কাগজ প্রস্তুত করা হর। কাগজের অনুরূপ ট্রাচে ঐ মাড় সমানভাবে বিভূত হইরা কাগজের আকার গারণ করে বটে, কিন্তু তখনও উহা ভিজা থাকে; ঐ ভিজা কাগজ গুকান আবশ্ৰক। ছাঁচ হইতে ভিজা কাগজ উঠাইরা প্রথমে ঐবহুক একটা দেওয়াল গাত্তে ভাষাকে শুকাইতে দেওয়া হয়। ভদনন্তর পুনর্কার আভপতাপে ওকাইরা লইতে হয়। এই প্রকারে বাঁশের কোঁড়া ফটকিরি মিশ্রিড জলে পচাইরা কাগজ কলিতে পারিলে সর্কোৎক্রষ্ট কাগন্ধ উৎপন্ন হইয়া থাকে ৷ বংশ-বৃষ্টির হরিষ্ণ নাল করিরা বে কাগজ হর, তাহা মধ্যম এবং বংশ-চূৰ্ণ হুইতে প্ৰধানতঃ বে কাগৰ হয়, তাহা নিষ্ণুষ্ট বলিতে হইবে। এক জন পাকা কারিগর প্রতি মিনিটে এইরূপে ছর-খানি কাগৰু শ্ৰেম্বত কয়িতে পারে।

আমেরিকা ও রুরোপবাসী কাগজবাবসারিগণ ওরেই ইণ্ডির রীপপুর হইতে সহল্র সহল টন "বাঁশের আঁইস" (Bamboo fibre) আনাইরা উৎক্রই কাগজ প্রস্তুত করিরাছেন। ব্রেজিল-বাসী বৈজ্ঞানিকগণ ইহার পুন্দ তত্ত্বসূত্র রেশম, অথবা পণবের সহিত বিল্লিত করিরা ব্যবহানের উপবোগিতা প্রতিপাবনে মনোবোগী হইরাছেন। Mr. Bontledge ভারতবর্ধে বাঁশের আঁইসে কাগজ প্রস্তুত করিবার ব্যবহা প্রতিপাদন করেন। ক্রিক কচি বৌদ্ধ ব্যক্তীত, অপর পরিপক্ষ বাঁশে উহার উপবোগিতা অল্ল ক্ষেত্রা এবং তাহাতে ব্যর বাহল্য আনিরা উক্ত প্রভাব পরিকৃষ্টিত হর নাই।

উপরে বংশের সাবাস্ত ভেষকরণ নিশিবত হইরাছে। বৈশ্বক রতে এই বাঁশ বিবিধ-ন্সাবাস্ত ও বভূবংগ। রাজনির্বন্ট সতে এই ছই প্রকার বংশের ত্বণ-ক্ষার, ক্রবিভিজ, শীতন, সুত্রকৃত্ব, প্রবেহ, অর্ণ, নিভবাহ ও জন্নেনাপদারী। সভাভারে আৰক্ষ। সন্মুৰংশের বিশেষ গুণ এই বে, ইহা নীক্ষা, আৰীৰ্থ-নাশিক, কচ্য, পাচন, কম্ব গু পুলন্ধ।

বংশাসুর বা বীশের কোঁড়ের ওণ--কট্, ভিজ, অর, কবার,
বীকন, নিতরকবার-রজুর ও কচিকর।

ণ্য, ।শতারকশাং-রুজুর ও জাচকর। "করীরো বংশবো ককং বাতাশিয়কর: কটু:। স করারো বিবাহী চ রোময়: পাকত: কটু: ॥" (দাল্লনি")

"বংশঃ সরো হিমঃ স্বাছঃ কবারো বভিনোবকঃ।
হেবলঃ কলপিছে কুঁচান্তবালোবজিং ॥
তৎকরীরঃ কটুং পাকে রসে রক্ষো শুরুং সরঃ।
কবারঃ কক্ষণ বাছনিবাহী বাতপিশুলঃ।
তদ্ববাথ নরা ক্ষণাং কবারঃ কটুপাকিনঃ।
বাতপিত্তকরা উকা বভ্সুবাঃ ককাপহা।॥"

ভাৰপ্ৰকাশ নতে, ইহার ৩৭---

অর্থাৎ বাল সারক, নীতবীর্থা, বরুষ ও ক্যায়রস, বভি-লোধক, ছেনন এবং কক, পিছ, কুই, ত্রণ ও লোধনালক; বালের কোড়—কটু, কবার, মধুর রস, কটু, বিপাক, ক্লক, অন্ধ, সারক, বিনাহী এবং কক, বারু ও পিছবর্জক; বেগুক্ল লারক, রুক্ত, কবার রস, কটু, বিপাক, বারু ও পিছবর্জক, উন্ধবীর্থা, মৃত্ররোধক ও কফনালক।

নদ, শন্ন প্ৰভৃতি ভূপৰিশেষও বৈজ্ঞানিক ৰীমাংদার বংশ-লাভীন বদিয়া বৰ্ণিত। প্ৰাচীন বৈভক শান্তেও ইহা ভূপলাভিত্ৰ অভভূ ক বদিরা গৃহীত এবং স্বভন্ন ভাবে আলোচিত ব্যৱহাত।
[নদ ও দার শক্ত বেশ ।]

বালের পাতা ও কচি কোঁড় নিভ করিরা আহার কাথ সেবন করাইলে জীলোকের রজোনির্গন কইরা খাকে। জারভবর্তে ও চীনরাজ্যের হানে হানে জনবের পর প্রাকৃতিকে ঐ কাথ খাইতে দেব। ভারতে রীভিয়ত রক্তরাথ ক্রিয়া করায়ু পরিকার ক্রিয়া বাকে। কলে তার কিন্তুন বাড় বীধিবার কল বালের বিবেব উপরোসিভা দেখা বার। ভারতিদের বাল বিখতিত ও উত্তমরূপে পরিভূত করিয়া কাইলে কর্ম্যা হয়। ভারতের হিরাত্রে বালের চোল প্রিয়া কিলে অথবা পালদভি হেলদের পর বীলের নাক প্রিয়া কিলে অথবা পালদভি হেলদের পর বীলের নাইত নেই হালে আবর করিলে উরা করিয়ানের কার্য্য করে।

২ গৃহেদ উর্জনত । আক্ষাতা। 'বংশঃ পৃঠান্ধি সেহোর্জনতে বেশোনালে কুলে।' (৭০০ সমূচীকার বাইনার বৃত কেশৰ)

৩ পূঠাবছৰ। পিঠের বাড়া। "বৰহিতিনিবিভবংশবংড-মুশং বচা ভোননবৈং পিনকৰ্ ব'' (ভাসা ১০৮৮৩৬)। 8 पर्न ।

"উথাপিত: সংবৃতিরেপুরবৈ:
সানীকৃত: ক্রন্দনবংশচকৈ: ॥" (রবু ৭।৩৯)
বোষভাওবিশেব। চলিত বালী।
"স বীচবৈবাকতপূর্ণরবৈ; কুন্তিরাপাদিতবংশক্তান্।
তথাৰ কুন্তেৰু বলং সমুক্তৈকদনীরমানং বনদেবতাতি: ॥"

(त्रपू श ३२)

[वःनी नत्स वीनीत विवत्रण (सर्थ ।]

ইকু। (রাজনি॰) ৭ দর্জ নামক দালবৃক্ষ। দ্রিয়াং টাপ্।
 (খ্রী) ৮ প্রাধাগর্তসভূত অপ্সরোবিশেষ। (ভারত ১।৬৫।৪৬)
 বংশ (গ্রং) ১ খরুপানধ্যাক্তভাগ। (বু° সং ৫০।০) ১ বৃদ্ধসামগ্রী পরক্ষরা বা সমূহ (রথধ্যজাদি)। ৩ জনসংখ্যা। ৪ অভিথি।
 ৫ লব্মান ভেদ্ধ ২০ হন্ত। ৫ গ্রন্থিবিভৃত হন্তপদাদির অস্থি।
 'বংশ শব্দেন দৈব্যাং বিবক্ষিতং বাহু চ নলকাবৃত্য জভেত্ব চেত্যাইবংশকাঃ। নলকাবৃদ্ধ্যাবিতি।' (রামাণ্ ৫।০২।৪৪ তীর্থ)
 ৬ বিকৃ । ৭ বংশবোচন।

বংশক্ষ্য (পুং) বংশত্রাহ্মণবর্ণিত আচার্যা ক্ষিভেদ।
বংশক্ (क্ষী) বংশ ইব কামজীতি কৈ-কঃ। ১ অগুরু।
(হারাবলী) বংশ ইব প্রতিক্ষতিঃ (ইবে প্রতিক্ষতৌ। পা
ভাত৯৬) ইতি কন্। ২ মংস্ত বিশেষ। চলিত বাঁশপাতা
মাছ। (শন্মালা) ও ইন্দু ভেদ। ইহা বাঁশাই বা শামলাঁড়া
আক বলিয়া পরিচিত। ইহার গুণ—শীতল, মধুর, লিয়, পৃষ্টিকর,
রেম্মল, সারক, অবিদাহী, গুরু, বুয় ও সলবণ।

"বংশকক্ষনভিষ্যন্দী লঘুর্দোবতরাপহ:।" (রাজবর্মন্ত) আবার সংস্কৃত বলিরাছেন— "অবিদাহী শুরুর্ব্য: পৌশুকো জীক্ষান্তথা। আভাং তুল্যশুণ: কিঞ্চিৎ সন্ধারো বংশকো মৃতঃ ॥" (স্কুল্ড ১।৪৫)

হবো বংশঃ (সংক্রারাং কন্। পা এতা৮৭) ৪ কুন্র বীন। বংশকঞ্জ (রী) রকাশুরুকার।

বংশকঠিন (পুং) वश्मा द्यपवः कठिना विज्ञात्मरण न वश्मकठिनः । वामवस, वीमवाफ् ।

বংশক্ষ (हो) > আকাশে উজ্ঞীরমান হব। বৃদ্দ হইতে বারু কর্ত্ব আকাশে নীড পাল্লনীতুলা। বংশতুলা। চলিত বৃত্তির হকা।

"র্ছপ্রক্ষিত্যাহরিক্সকৃথাং মনীবিশ:। গ্রীমহানং বংশককং বাভতৃদাং মক্ষরেন্।" (হারাবলী) বংশকর (পুং) বংশং করোভীতি ক্ল-আচ্ । > বংশের কর্ম আদি পুরুষ, পুরুষ ।

বংশকরা (ত্রী) মহেজ্রপর্মতণাধনি: হত নবীতেম। (মার্কণ পুঁ ৫ ৭২৯) বংশবারাও পাঠ বেখা বার।
বংশকরা, চউগ্রামের ধন্দিণপূর্মে অবছিত একটা প্রাচীন নগর। রামাই বা রামুনামে পরিচিত। টলেমির ভূর্ভাত্তে Barakoura শব্দে এই হানের বাণিল্যপ্রভাব উদ্লিখিত আছে।
বংশকরীর (পুং) কংশাছ্র। বাঁশের কোঁড়। [বংশ দেখ]
বংশকপুর [বোচনা] (পুং ত্রী) বংশত্ত কপুর:। কপুর ইব শোভতে ইতি ক্লচ্-লা। ততঃ বঞ্জীতৎপুরুষ:। বংশরোচনা।
(রাজনি৽) [বংশলোচন দেখ]

বংশকর্ম্মকুৎ (আ) > দরামীর কার্যকারী। ২ বাঁশ কাটিরা যাহারা কুড়ি, কুলা প্রভৃতি প্রস্তুত করে। (রামান্নণ ২৮০। ৩) বংশকর্মন্ (क्री) > বাঁশের কাজ। ২ বংশশিল (ঝুড়ি) প্রভৃতি।

বংশকার (পুং)গন্ধ। (বৈশ্বকনি°)

বংশকার্ত্তি (ত্রি) বংশত কীর্ত্তিঃ। বংশের গোরব, কুলগরিমা। বংশকৃটজা (ত্রী) কৃষ্ণকৃটজ। (বৈত্বকনি)

বংশকুত্ (ঝি) > বংশকারী বা বংশপ্রতিষ্ঠাতা। ২ বাঁশের কার্য্যকারী।

বংশক্রমাগ্ত (ত্রি) বংশক্ত ক্রম: ইতি বংশক্রম: তেন আগতঃ। > পুরুষপরম্পরাপ্রাপ্ত, বংশাগত। ২ কুলপ্রথা-প্রেসিছ। (কামন্দক নীতি ৭৩১)

বংশক্ষয় (গ্রং) বংশক্ত ক্ষয় । বংশনাশ, বংশলোগ। বংশক্ষীব্রী (জী) বংশক্ত ক্ষীরমিবাস্তা অন্তীতি অচ্। গৌরাদি-ছাং ভীষ্। বংশরোচনা। (রাজনি)

বংশগুল্ম (ফ্লী) পৰিত্ৰ তীৰ্থভেদ। এখানে স্থান করিলে বহু পুণাসঞ্চর হইয়া থাকে। (ভারত বনপর্বা)

বংশঘটিকা (ত্রী) জীড়া বিশেষ। (দিব্যা ৪৭৫।১৯)

বংশচিরিত্রে (ক্লী) বংশাখ্যন। প্রসিদ্ধ বংশাদির ইভিত্ত। বংশচিস্তুক (পুং) বংশধারাভিচ্চ। যিনি শীর বংশপরিচয়-দানে সমাক্ অভিক্র।

বংশতেছ্তৃ (পুং) > বংশতেছদক। ২ খরামী। ৩ ধাহা ইইডে বংশধারার ছেল পড়ে। রাজবংশাদির শেব নরপতি, বাহা ইইডে বংশের গৌরব ও পর্যায় লোপ ঘটিরাছে।

বংশজ্ব (পুং) বংশাক্ষায়তে ইতি জন-ডঃ। ১ বেণুঘৰ। (তি) বংশাৎ সহংশাক্ষারতে ইতি জন-ডঃ। ২ সহংশক্ষাত। পর্যার— বীলা, বংশ্ব। ৩ বেণুৎপন্ন (জবাদি)।

> "বলিয়তনি ও'ণং ব্য বংশবং বক্ত নিত্যনির্বাণন্। কিং কুর্বভনিহিতং বহুং পবে বেবরাকেন ॥"

(সার্যান্ধণ্ডী ৪৭৯

৪ বলীর ত্রাহ্মণ ও কারত্ব লাতির কুলীনেতর শ্রেণীকে।
 ইহারা ₂কুলীনসন্তান হইলেও পরে কুল হারাইরা ছিলেন।
 পুত্র, তনর।

বংশজা (জী) কণে জারতে ইতি জন-ডঃ ডতটাপ্। ১ কণে-রোচনা। (পদরভাবনী)

ভাৰপ্ৰকাশে লিখিত আছে, ইহা কৃষণ, বৃষা, বলা, খাছ ও শীতল গুণমুক্ত এবং তৃষ্ণা, কান, জন্ন, গিন্ত, জল্ল, কামলা, কুন্ন, বণ, বাত ও মুত্ৰকুদ্ধুনাশক।

"বংশলা বৃংহণী বৃদ্যা ৰদ্যা স্বাধী চ শীতলা। তৃষ্ণাকাসজ্জরধাসক্ষর্পিতাশ্রকামলাঃ। হরেং কুঠং ত্রণং পাণু ক্ষায়া বাতকুজ্জিৎ॥"

(ভাবপ্রাণ পূর্বারণ ১ম ভাগ)

২ কছা। ৩ ফলিত জ্যোতিষোক ভূমিভেদ।

"পাবকে সোমানৈশ তা ইক্সবায়্যন হার।
জলাগ যুত্তরনৈশ তাে পৃর্কে চিক্রাদিনাসভঃ॥
বংশজেরং মহাভূমিদেডাবংশক্ষয়ত্বরী।
দক্ষপৃষ্ঠগতা যুক্ত জয়দা নাক্র সংশন্তঃ॥

(নরপতিজয়চর্য্যা অরোদর)

বংশত পুল (গ্রং) বংশদাতত পুলঃ। বেণ্যব, বাঁদের চাউন। বংশতৈল (ফ্রী) জরংঘিকা রোগঃ তৈলভেদ।

"কটুতৈলমঞ্চবিল্ল মূত্রে বংশকলো: শৃত্তম্।" (রুসংর°) বংশাদলা (জী) জীরিকা নামক ভূণবিশেষ। বাঁশপাতা ঘাস। [বংশপত্রী দেখ]

বংশাল (ত্রী) প্রক্রপদ্মীভেদ। (নৃসিংহ ২৮।৯) বংশালুব্ব। (ত্রী) ১ কট্কী। ২ শতপ্রবা নামক দ্র্রাভেদ। ৩ কিংক্তক। (রাজনি•)

বংশধর (ত্রি) বংশং ধরতীতি ধ্-জচ্। > বাঁশধারিমাত্র।

২ বংশমর্যাদারক্ষাকারী। ৩ পুত্রপাত্রাদি। ৪ বিভিন্ন

মতাবসধী সম্প্রদার ভেদ।

"একৈ কভাভবত্তেবাং রাজরর্জ্ দমর্ক্ দৃদ্। ভোজ্যতে বহংশধরৈ মহী সমস্তরং পরম্ ।" (ভাগ° ৪।২৮।৩১) "বেবাং বংশধরেঃ বতপ্রবৃত্তিঃ সম্প্রদারতেনৈঃ করা মহী মন্তরং অভঃপরক ভোক্সতে অবিভাকানকর্মভ্যোহিদ রক্ষিত্রতে" (বামী)

ে সন্থান্তিবৰ্ণিত রাজভেদ । (সন্থা তথাকং)
বংশধর্মিপ্রা, একজন প্রসিদ্ধ নৈরারিক। ইনি স্থারতদ্বপরীকা, বোগকচিবিচার প্রান্তুতি করেকথানি গ্রন্থ রচনা কর্তেন।
বংশধ্যান্ত (ক্লী) বংশভ ধান্তুম্। বেগুরব। দেশভেদে ইহা
বিভিন্ন প্রকার হইরা থাকে। (রাজনি°)

বংশধারা (জী) > মহেরপার্নী:স্ট নরীকের। এই নরী নধ্য
আবেশের কালহতী জেলার গোরীগড় জমিরারীর মধ্য হইতে
উত্ত হইরাছে। জক্ষা ১৯° ৫৫ জঃ এবং প্রাধি ৮০° ৩২
পু:। ইহা দক্ষিপপুর্নীভিস্থে বিশাখণাটন জেলার মধ্য দিরা
কিমেড়ী বিভাগের বটটি নগর সরিকটে গঞ্জান জেলার প্রবেশ
করিরাছে। তথা হইতে পুনরার দক্ষিণপুর্ন গভিতে প্রবাহিত
হইরা ক্রিলপভনের নিকট বলোপসাগরে মিশিরাছে। এই
নবী ১৭০ মাইল পর্যান্ত বিভ্ত। উহার প্রার আর্ছাংশে
নৌকাবোগে পণ্যন্তব্য লইরা বাওরা বার।

২ কুলপছড়ি। ৩ বংশবলী।

বংশধারিন্ (ত্রি) বংশং ধরতীতি ছ-ণিনি। বংশরক্ষাকারী।
বংশধর।

বংশনর্ত্তিন্ (পুং) > গৃহনর্ত্তক । ওাঁড়। বাহারা বংশার্থ-ক্রমে কোন এক প্রসিদ্ধ রাজবংশে অথবা দেবালরে নর্ত্তকের কার্য্য করিরা আসিতেছে। (গুরুবস্কু: ৩-।২১)

বংশনাড়িকা (ত্রী) বংশ এব নাড়িকা যত্ত্ব। > বংশনালী। বংশনির্মিত নল। ২ বাঁলী।

वर्णनाथ (भूर) वरानत्र ध्यशान वा ध्यनिक राकि ।

(রামা[°] ৪।২৯।২৬)

বংশনালিক। (ত্রী) বংশনালোহত্যতা ইতি বংশনাল-ঠন্-টাপ্। বংশী। (শক্ষরত্বা)

বংশানাশ (রী) বংশত নাশঃ করঃ। বংশ-নশ-বঞ্। ১ বংশ-বিশ্বনাশ। ২ কলিভজ্যোতিবোক্ত বোগভেদ। গ্রহগণের বে সমাবেশভেদে মাহবের জচিরে মৃত্যু ঘটিরা থাকে, ভাহাকে বংশনাশ-বোগ বলা বার। যদি কয়কালে রবি, শনি ও রাহ একগৃহে থাকে, ভাহা হইলে সেই মহুবের বংশনাশ হইরা থাকে।

"রবিণা সহিতো মন্দো রাহুবুজেণ তবেদ্বদি। .
বংশনাশকরো বোগঃ কথিতো মুনিপুর্কবৈঃ ॥" (কলিডজ্যো")
থনার বচনে আরও কএকটা নাশবোগ বির্ভ আছে।
জ্যোতির্বিদ্পণ সহজেই তাহার অর্থ হুদরক্ষ করিতে সমর্থ
হুইবেন। নিয়ে তাহা উদ্ধৃত হুইল—

শলগনে রোহিত শশিস্থত বার, তার কারা শৃগালে থায়। ১
সাতে কুরা থাকে ববে, বাঁশের আগে ওকার তবে ॥ ২
বংশে পুত্রে দেখে গগ্ন, তাহার কুঠি না কর আগা ॥ ৩
বাবে হর তাহার লগা, তাহার জীবন না কর আগা ॥ ৩
বাবে পুত্রে এক ববে থাকে, চৌর হইরা তার সৌর না রাখে।
সপ্তর কুলা থাকে ববে, ছবেশ কুলী হয় তবে।
তুলাকুলী কিসের কারা, বুগান্গি গড়ুক বাকা।
চালা লগ্ন না বেখে ভভাকতে, তাহার কুঠে পেলার গৃতে।

চান্দে গুৰু ৰেথ এক সন্তু, কুমে জীৱা অতি বড় বল। ইহা ছাড়ি সাতে পাৰ, সে নৱ গলকৰে বাৰ। ছুই কুলা মাখন গাঁ, ভাষার কুঠি ছেলা বোগা। কাকে পুগালে পার ভাকে, সাভ ইন্স না ভার রাথে॥ ৪ মকরে **ভূজা ধ্বল সলে,** নিত্য জীড়ার যার রূপে। বঁট কুটুবে করার কোপ, লোম কুঠি নৃণতি বোগ। সাতে শনি লয়ে পাপ, গীড়ে জননী মরে বাপ ॥ ৫ রাশি লগ্ন সাগরে বান্দ, জলে বসিরা পাতিল কান্দ। লবে থাকে আৰু বাকা, অৱি জলে ক্রিবা শহা। বার মঙ্গল সাডে দেখে, মেবের নাদে পাড়ে তাকে॥ 🌢 রবে ক্লভে না বেখে সাতে, কি করিবে বাপে পুতে। লয়ে কুলা লয়ে কুলা, লয়ে থাকে ভাতুতমুলা। রাকা দিঠে গুকা চার, অষ্টদিনে বম্বরে বায় । ৭ চাইর শাগরে রাছর মেলা, তবে কুঠি না কর ছেলা। আছুক বোগে পায় সিদ্ধি, আপন কালে মিলার নিধি। চাইর সাগর রাহর মেলা, তবে কুঠি ছাদা তোলা। লগনে চান্দ হুর্থকযুতা, অবস্ত হর নৃপতি সমতা। কুলার বলে খেঁড়ার বাসা, গোতা কুটুবের নাহিক আশা।। 🛩 কুলা খোঁড়া থাকে সঙ্গে, এক কাল না জার রঙ্গে। জীবা ধবে নিজ ঘরে, রাজপাশে অবস্ত বরে। রাজভোগে যায় কাল, ভাই কুটুবের অঙ্গে উজ্জাল। কোণে চান্দ সাগরে লগন, সকল রিষ্ট করেন ভগন ॥ ৯ ৰীয়া ভূৱা থাকে ধৰে, রাজা নম হর তবে। জীয়া ভূয়া দেখে এক সঙ্গে, শেষে কুঠি করিব রঙ্গে। সৰ পরিহরি থাকে সাতে, সকল কাল বার ভাতে পুতে। এক পাপে অপরে পার, পাপগ্রহ ববে চাকে পার। চালের সাতে থাকে পাপ, পীছে জননী মরে বাপ॥ ১০ চাইর সাগরে লগন চাব্দ + সাগরে তবে পাতিল কাব্দ।১০ কুৰা খোঁড়া না দেখে বৰে, পানির ভিতর ভূষার তবে।১১ करक ना त्वरच नगन नारक, व्यवस मत्त्र बनाचारक। ১২ नटल थाटक दनीति, इरेनजी खेबाटगीती। এক পতিনী মরে হবে, জিন পতিনী হইবে ভবে। ১৩ শেৰে কৰ্কটে থাকে জীয়া, বন্ধে থাকে লক্ষী বনিরা। शका-गांशव पूर्व्य बोफ, व्यवश्र (बंटब क्शवाय । বিভন্ন এহ দেখে হেলা, ভান্ন কৃষ্টি না করি হেলা। धम कांछ कांश् क्रेंट्रेक निष्कि, व्यवक्र कारन मिनात मिनि।

সরে যদি খোঁড়া বার, শতকুলে রাজ পার।
খোঁড়া যদি দেখে সাজে, রাজহর্মত হর আছে।
তিন পাপ থাকে এক ঠাই, কর্ম ঘরে ববে মলল পাই।
ভঙ গ্রহে দেখে পাপ, তারে না দেখে ভাষার নাপ। ১৪
খোঁড়ার কাছে বোড়ার বাসা, খন পুত্র ভাতে করিব আলা।
শুকা থাকে খন বিনাল, রাহ থাকে বৈরি নাল। ১৫
খোঁড়ার বরে বোড়ার মিলন ।, গলার দড়ি অবস্ত মরপ।>৬
বংশনেক্র (ক্রী) বংশতেব নেত্রাণাক্ত। ইকুম্ল। (রাজনি°)
আক্রের চকু।

বংশপত্রে (পুং) বংশস্ত প্রাণীর প্রাণাস্ত। ১ নল। বংশস্ত প্রম্। (क्री) ২ বংশদল, বাঁশের পাড়া। ও হরিডাল ভেল। ইহা সর্বন্ধেট হরিডাল বলিরা ক্ষিড। রুসেক্সারসংগ্রহে লিখিড আছে বে, বংশপত্রাধ্য নামক হরিডাল কুয়াও সনিলে ও চুণের জলে ডিনবার বা সাডবার নিক্ষেপপূর্কক শোধন করিরা লইবে, পরে সেই শোধিত ভালক তণ্ডুলাক্ষারে চুর্ণ করিরা শরাবে স্থাপনপূর্কক আল দিবে। পরে পাত্র শীতল হইলে মাণিক্যাভ রস উঠাইরা লইডে হয়।

> "তালকং বংশপত্রাধ্যং কুমাগুদলিলে ক্ষিপেং। সপ্তধা বা ত্রিধা বালি ঘধ্যমেন চ বা পুন: ॥ শোধরিতা পুন: গুৰুং চূর্ণরেজগুলাকৃতি। ততঃ শরাবকে পাত্রে স্থাপরেৎ কুশলো ভিষক ॥ বদরীপত্রককেন সন্ধিলেপক কাররেং। অন্ধণাভনধঃপাত্রং তাক্ষালা প্রদীরতে॥ বাদলীতং সমৃদ্ভুত্য মাণিক্যাভো ভবেদ্রসঃ॥"

(রসেক্রলারসংগ্রহ) ইহার বিভিন্ন শোধনপ্রশালী, গুণ ও অপরাপর বিক্স হবি-ভাল শক্ষে দ্রইবা।

৪ ছলোভেদ। সাধারণতঃ কক্ষেত্রতভ ছন্দ বলিরা উক্ত হইরা ধাকে।

বংশপ্রেক (ती) বংশগত্তমের খার্থে কম্। ১ হরিতান। (ছেম)
(পুং) বংশত পত্তমিবাক্তিরভেতি ইবার্থে কন্। ২ ক্র মংশ্রমিশের (Cynoglossus Lingus) ক্রনিভ—বীন-পাতা সাহ। বিশ্বত শক্ত বেশ ্রী

७ मण । **८ एक्टर्व रेष्ट्रक्य** । (दाबनि^{*})

বংশপরেপতিতে (ঐ) কার্যসালয় গান্তবেলারিনের। শবিক্রনিকলেগরপঞ্জিত অরসক্রমন্ত্রীয় । ইয়ার ১,৫,২১১৬ ি১৭ বর্ণ অবং অব্যাহমনি ব্যু । ইয়ারজ্ঞান্তা---

त्यस् कर्वेक श्रूणां जनस्त्रः एनस्त्रः, स्टेश्यः नवीवः। त्यस्यः ब्रह्माः विकतः।
 जनिकृताः वेकसारकः स्थापिकः वस्त्रः, स्थापाः विकातः कारतः कृताः वस्ताः।

ক্ষমতালে পৰিক্ষেত্ৰ একনা ঘটনে, কিন্তু বহি বাকে কাৰা আগন কৰনে বানে বহি মানিশক জোজিয়াক কয়, উন্নয়ৰ চোৰ এই মানিশে কিন্তু

"ন্তনবংশপারপভিজ্ঞং রজনিজ্ঞলনবং !
পশু মুকুন্দ মৌজিকমিবোত্তমমরকতগঙ্গ ।

'এব চ তং চকোরনিক্তরঃ প্রাণিবভি মুদিতো
বাস্তমবেতা চক্তকিরণৈরমৃত্তকশ্মিব ॥"

কেছ কেছ ইহাকে বংশপ্রচন্তিত হন্দ বলিরা থাকেন।
পণ্ডিত শব্দুর মতে, ইহার অপর নাম বংশনল। (ছন্দোমন্তরী)
বংশপ্রিকা (নী) > বেগ্নল, বাশের পাতা। হ বংশপ্রাকার
তণ, বালপাতা যান। [বংশপ্রী দেখা]
বংশপ্রী (পী) ক্রমণ্ড গোলানিকাং নীয়ন ১ নামী-বিজ্ঞা

বংশপত্রী (স্নী) বংশপত্র গোরাদিছাৎ তীব্। > নাড়ী-হিছু।

২ তৃণবিশেষ। পর্যার —বংশদলা, জীরিকা, জীর্গপত্রিকা।

ইহার গুণ—ক্ষুমধুর, শীতল, রুচ্চা, পিড় ও রক্তনোমনাশক এবং
প্রাদির হুধবিবর্দ্ধিনী। (রাজনি°) ভারপ্রকাশে লিখিত হইরাছে
যে, বংশপত্রী, বেণুপত্রী, পিগুা, হিছু ও শিরাটিকা এই করটা
পর্যায়ক শক। বংশপত্রী হিছুপত্রীর স্কুলাগুপলায়ক, জর্বাৎ
ইহা রুচিকারক, তীক্র, উষ্ণবীর্ঘা, পাচক, কটুরল এবং জ্বন্রোগ,
ব্যিগত দোব, বিবন্ধ, জর্গ, কয়, গুলা ও বায়ুনাশক।

(ভাৰপ্ৰ'পু° > ভাগ)

বংশপ্রম্পরা (ত্রী) সম্ভানসম্ভতিক্রম। প্রশৌতাদিক্রম। বংশপাত্ত, সম্ভানিবর্ণিত রাজভেদ। (সম্ভা° ৩৩)>৬৬)

বংশপাত্রকারিণী (রী) ঝুড়ি চুবড়ী কুলা প্রভৃতি পার যে রুমণীবাঁল হইতে প্রস্তুত করিয়া থাকে।

বংশপাল, শিলালিপিবৰিত এ**কজন রাজা**।

বংশপীত (গং) বংশ: বংশপত্রমিব পীত: । গুণ্ গুলু । (রাজনি") বংশপুক্রমা (স্ত্রী) বংশত পুলানীব পুলাণি যক্তা: । সহদেবী বতা!

तः अश्रुद्धक (क्री) वः भक्तिय शृक्षकश्च । हेक्स्न ।

বংশাপ্রতিষ্ঠানকর (গুং) বংশখ্যাতি বা প্রতিপত্তিবিত্তারকারী। বংশের আদিপুরুষ।

বংশবীজ (ক্লী) বংশক্ত বীজং। বেশুনৰ। বাঁশের চাউল। বংশব্রাক্ষান (ক্লী) ১ বৈদিক আচার্যাপরম্পরাজেন। ২ সাম-বেদের একখানি ব্রাহ্মণ।

বংশভার (পুং) বাশের ভার বা মোট।

বংশভূথ (পুং) ১ বংশের তরণপোষণকারী। ২ বংশহ প্রধান ব্যক্তি। বংশভোজা (ত্রি) ১ বংশের উপভোগা। ২ বংশায়ক্রম-

প্রাপ্ত। (শ্লী) ৩ গৈড়ক রাজ্য। (ভারত বনপর্বা)

বংশাসয় (জি) কংশ ইবার্থে মরট্। বংশনির্শ্বিত।

বংশমুগালা (ত্রী) কংশক্ত মধ্যালা। ১ কংশপরশপরাপ্রাপ্ত গৌরব। কুলক্রমাগত মধ্যালা। ২ রাজ্যত উপাধি বা খেতাব। বংশমুলক (ক্রী) তীর্ষকেন। এই তীর্ষে রাম করিলে জলেষ

भूग मक्क इंदेश शास्त्र । (क्षांत्रक वनभूको)

वर्भश्य (श्रः) वात्मत्र हाकेन।

বংশব্লাক (পুং) বংশানাং রাজা ইতি রাজাহণখিতাইচ্

> বাড়ের মধ্যে উৎকট বা সর্কাবৃহৎ বাশ। (হরিবংশ) ২ রাজতেল। (ললিভবিত্তর)

বংশারোচনা (জী) রোচতে ইডি, কচ্ মন্দানিরাথ ল্যে। টাপ্।
বংশক রোচনা। স্নামখ্যতে বংশপর্ক মধ্যত্তি শেক্তবর্ণ
উবধ্বিশের। সাধারণে বংশলোচন নামে পরিচিত। পর্যার—
দক্ষীরা, বংশলোচনা, তুগান্দীরী, শুভা, বাংশী, বংশলা, ন্দীরিকা,
দুগা, দক্ষীরী, শুভা, বংশনীরী, বৈগবী, দক্সারা, ন্দারী, খেতা,
বংশনপূর্রোচনা, তুলা, রোচনিকা, পিলা, বংশশর্কা, বেণ্লবণ। ইহার শুণ-রুক্, ক্যার, মধুর, হিম, খাস্কাসর, ভাপন্নাশক, রক্তগুভিকারক গুপিভোক্তেকপ্রশ্ননকারী। (রাজনি)

ভাষ প্রকাশ মতে ইহার গুণাখলী কংশলা শব্দে বিরুত হইরাছে। [কংশলা ও কংশলোচন দেখ।] বংশল ক্ষয়ী (গ্রী) কুললন্ধী।

বংশলোচনা (জী) বংশরোচনা রক্ত লখন। বাঁলের পর্কষণো নীলাভ বেতবর্ণ পদার্থ বিশেষ। চলিত কথার ইহার নাম বংশলোচন। ইংরাজী ভাষার ইহাকে Bamboo Manna বলে। এই পদার্থ প্রধানতঃ বেছর বাঁশ বা নল বাঁলেই (Bambusa arundinneess) কলো। ভারতের বিভিন্ন হানে এই ঔবধ দ্রার্য তবাশীর্য নামে প্রচলিত।

ভিন্ন ভিন্ন দেশে ইহা ভিন্ন ভিন্ন নামে পরিচিত। হিন্দী—
বংশনোচন, বংশকপুর; বালারা—বাশকপুর, বংশলোচন
আসাম—ক্ভোরিরা; জারব ও পারক্ত—ভবাশীর; নরাঠী—
বংশ-লোচন, বনশনীঠা; ওজির—বাশকপুর বাশ-ভ্-নীঠা;
ভামিল—ব্লপুর, ভেলও—বেলকর, ভবন্দীর; নলারালম্—মোলেউর; কনাড়ী—বিলকর, ভবন্দীরা; নিলাপুর—
উণা, সুণ, উণাকপুর; ব্রজ—বা-হা, বাঠেগা—কিলো বাঠেগনা,
বসন; সংস্কত—পর্যারগুলি বংশরোচনা শলে বিবৃত হইরাছে।

বাজারে এই এবা সাধারণতঃ ছুই একার বেখা বার—
> কর্দী বা নীলান্ত এবং ২ সকেল বা খেতবর্ণ। প্রাচীন বৈথকে
ইহার ভেবজ গুল লিপিবছ হইরাছে—.

"ক্ষারমধুখা রকা বাতরী বংশলোচনা । ভূগাকীরী ক্ষাবাস্কাস্থী মধুর। হিমা ৯" (রাজ্যাত)

গুছ ভারত খণিরা নহে, প্রপুর ভারত ও গ্রীস্থানী ব্রমণ্ণ বছ প্রাচীন কাল হইতে এই বংগল মুখ্রের অণ অবগত হইরা-ছিলেন। ভাওকোরাইডস, সিনি, সাগ্রালিরাস, জ্যেত্রেল জি, ক্লেরে, হাবোণ্ট প্রভৃতি মনীবিগণ এই মহামূল্য এবার উরেব ক্রিরাছেল। সিনির "Saccharon or Arabia fert sed landarius India. E-৫ মাটেলা mel in arundinibus Collectum প্রকৃতি পাঠ করিলে নিঃস্পেতে তবানীরের কলা বলিরা মনে হয়। সাল্যাসিরাস্ প্রকৃতি তর্ক বারা উহাকে ইক্ত পর্করা বলিরা প্রজিপন্ন করেন, কিন্ত হাবোন্ট তাহার নীমাংলা করিরা বলেন, আরবা বা পারত তবানীর পদ পর্করাবাধক নহে উহা সংস্কৃত স্কৃক্ষারা (Bark-milk) প্রক্রে অপশ্রশনাক।

হিল্ আয়ুর্বেলে ও মুস্লমানগণের ছেকিমী লাক্রে তবালীরের বহল প্রয়োগ দেখা বাষ। ইহা লীতল, বলক্ষ, কামোনীপক ও বাসকাসনিবারক, অঞ্জাত উবধের সহিত ইহা ক্রােগে প্রযুক্ত হইরা থাকে। অন্তীর্ণ, আমাশর এবং উনরাগ্রান প্রভৃতিতে ইহা আন্ত কলপ্রন। ইহা লিপাসানিবারক ও কফ্নিংসারক। বিবম জয়ে পিপাসা অত্যন্ত বলবতী হইলে বংশলোচনের একটা চূর্ণক প্রন্ত করিরা প্ররোগ করিলে বিশেব উপকার দর্শে। ৮ ভাগ বংশলোচন, ১৬ ভাগ লিপুল, ৪ ভাগ এলাইচ ও স্থা গাকচিনি একত্র চূর্ণ করিরা ছত অথবা মধুবােগে অবগ্রেহ প্রন্ত করিরা সেবন করাইবে। চূর্ণের মাত্রা ১ ইইতে ২ জুপল্ পর্যান্ত। কক্সিংসারণের নিমিত্ত ৫ ইইতে ২০ গ্রেগ পর্যান্ত বংশলোচন প্রয়োগকরা বাইতে পারে।

বাল গাছের মধ্যে কিন্তপে এই মহতপকারী পদার্থ উৎপন্ন इत, जारा वास्त कि निकातिक एवं नाहे। वामारमय सार्थ किरवनकी चाटक त्य, दीन बाटक बांकी नेकटबर बन लिकटन नः नरमाठम छेरणा इस । छेडिएचिन्नार्गक बात्रमा, बीन गारकत বভাবজাত রস মর্থাৎ পর্কমধান্তিত জলাকার ভরুল প্রদার্থ (Natural sup) विकृष्ठ करेंबा आहे अलामूना लगाई छेर-भागम करता । त्य जकन कहि द्वारफ धारे बनाधिका बारक, ভাষাতে এক প্ৰকাৰ হুমিষ্ট গৰ্ম গাঞ্জা বায়। এ এক পঞ্চিপক হট্যা ক্ৰমে দককীবাৰ পৰিণক্ষ হয়। অহিছেন বিভাগীৰ हेर ताब नाजकर्पाताती Mr Peppe बर्दनान, "जिमि ओक्वान द्वनीह ব্যক্তিক তথাশীর উৎপন্ন করিতে খেখিয়াকেন ৷ এ ব্যক্তি বিশেষ शरीका बाबा जानिएक शाबिकाकिश्यम एवं, वः अराज्यसम्बन्धिकात्री এक आकाम कीरतेष नवारयन रहकू वरनभक्षत्रिक मन वयगानिक হটয়া রাসায়নিক সংবোধে ভিন্ন আকার গারণ করে। ডিনি এক গাছ হইতে এলগু কতকগুলি গোকা আনিয়া অন্ধ্ৰক অপর কতক্ত,ল গাছে ছাডিরা কেনঃ ইহাডেও তিনি महर्म करम्बन आस स्मात केन्द्रांगति असेक्टन रहते। कांश्रा जिमि निकारमादक केहेबाबिरनम, काबारक जिमिक বিগৰণ কৰি লাভ করেন !" কাষার কৈই কেই বলৈন, বাঁণের পাৰ্ভলির ভিতরনিকে আভাবিক স্বসকলয়হত্ নিলিকামিলিভ ক্ষণর একস্ত্রপ পদার্থ ('Silicious concretions, of an opaline untime.) উৎপান হয়, তাহাই ভ্যাণীর নামে ব্যাত ৷ কিছ প্রকৃতপক্ষে কোন্ কোন্ ধাত্র স্বাসায়নিক সংবোধে উহার উৎপত্তি, পরীক্ষা কিন্ন ভাহা জানিবার উপার নাই।

মাস্পো নগরের রসারনাধ্যাপক টি, টম্সম বিশ্লেষণ ছারা অবগত হইয়াছেন যে, ইহার একণত ভাগের মধ্যে ৯০০৫০ অংশ নিগিকা, ১-১০ গটাশ, ০-৯০, পেরস্কাইড্ অব আররণ ০০৪০, আলুমিনিরা ৪০৮৭ জল এবং নাশ—২০০ অংশ আছে। বংশলোচন ভিন্ন বাশের অপরাপর অংশও উব্ধর্মণে ব্যবহৃত হুইরা থাকে। বাশের কোড়ের অথবা অগ্রকলার আবরকের অভ্যন্তরে শিকড়ের ছার সক্ষ সক্ষ বে সকল তাঁরা থাকে, তাহা বিয়াক। ঐ শিকড় সহজে গাভাদির মধ্যে দিরা সেবন করান যাইতে পারে। সেবনের পর ধীরে ধীরে নারদেহে বিবের ক্রিরা চলিতে থাকে। করেক মাসু পরে ঐ ব্যক্তি মৃত্যুমুথে পতিত হর।

বংশ্বৰ্দ্ধন (তি) বংশং বংশমানং বৰ্দ্ধনিত বংশ-বৃধ-পূটে। ১ বংশা-ভিমানরকাকারী, বংশগৌরবর্দ্ধিকারী। (রামারণ ২।২৩।৪২) ২ সহাজিবর্ণিত রাশভেষ। (স্কাণ ৩০।৯৫)

वश्मवस्तिन् (वि.) क्षणः वस्त्रस्थिकः वश्म-वृध्-शिनि । > वश्म-मस्त्राक्षाक्षाक्षमकात्री ासम् स्वत्रमवस्त्रिणः (ভातज वनभकः)

२ बन्नरगाठमा । (देखक्तिः)

বংশবাটী, হগলী খেলার শক্তর্মত একটা প্রাচীন নগর। তাগীরমীতীরে সবিত্তি। সক্ষান ৮০০০ হাজার। এখানে দিতার
প্রথীর নিউনিলিগালিটি ভাছে, বর্তনান বালবেড়ে নামে পরিচিত।
মোলন-সরাট্ শাহক্রানের শানলে বালবাড়িয়া রাজবংশের
পূর্বপূর্ব রাঘব রার কর্ত্ত্ক এই নগর ছাপিত হয়। বালবাড়িয়া
রাজবংশের সহিত এই নগরেয় ইতিহাস ক্ষিত গাকার নিম্নে ঐ
রাজবংশের মংকিশিৎ পরিচর শেশুরা সেল।

এখানকার রাজবংশের পূর্কপুক্ষর দেবাবিত্য দত বন্ধনেশের রাজা বলাগলেনের সমসাধরিক ছিলেন। মুর্নিদাবাধ জেলার বত-বাটা নামক প্রানে ইছাদের আদি দিবাস। বভৰপীর জানগারদের বাসবাটা থাকার জ প্রামটার জীক্ষণ নাম বইরাছে। দেবাবিত্য ক্ষতে চতুক্ত পূক্ত অবজন বারকা নাম বন্ধ বত্তবাটা পরিত্যাগ করিরা বর্জনান কেলার অভ্যন্ত আইববীতীরত পাটুলী নামক ছালে নগরতাপনপূর্কক বাল করেন।

Birdwood's Economic Products of the Presidency of Bombay, pp. 95-96.

ষারকানাথের পৌত্র সহস্রাক দত্ত সন ৯৮০ দালে (১৫৭৩ युः भः) बागम नामगात्र अकन्दन्ता निकेष्ठ अक् क्समान ভাহাতে ভাঁহাকে "জমিনাম্ন" উপাৰি কেওয়া रहेत्राहिन**ा मर**ञाक कांत्रीत चन्नुभ-नव्यानाः कन्नुक्रतानुद লাভ করেন। সহস্রাক্ষের পুত্র উত্তর লয়কে বাললাহ অক্ষর বংশাক্ষ্রক্রমে "সভাপতি রার" উপাধি বিভাছিলেন। সম ১০৩৫ मार्ग (>७२৮ वृ: प्यः) छेमदत्रत त्यांक्रं शृत्य बन्नामम महावि माह-জহানের নিকট হইতে "মজুমনার" উপাধি ও কোটএক্ডিয়ার-পুর পরগণরি জারণীর লাভ করেন। জর্মানক রার মজুম্লারের (कांडे श्रेक तापनरक नागमाह माहकाहाम >२ इति >-७७ हिसंती नटक (१७८२ पु: चः) "मञ्चमनात्र" । "होधुनी" छेनापि धानाम करवन । ता नमरत्र वकरनर्थ ठाविक्रम सङ्घलात्र क्रिलम्, छवारश्च রাঘৰ একজন। এই উপাধির সঙ্গে রাঘৰ নিম্নলিখিত ২১টা প্রগণার জমিদারী ও বিশ্বর নিষ্কু ভূমি উপহার পাইরাছিলেন-স্থাশী, হল্দা, মামদানিপুর, পাঞ্নৌর, বেড়ো, সাহানাবাদ, শারেন্ডানগর, শাহানগর, রারপুর, কোভওয়ালি, পাউনান,

বোসালপুর, বক্স কর্ব, পাইকান, আমিরাবাদ, কর্মনীপুর, बाइरुडि, रावनी प्रदत् प्रकाननमूत्र, राष्ट्रिकानि, दर्गानगत প্রভৃতি। সম্পত্তি শাসনার্থ রাধ্ব বাশবেদ্বিরার একটা প্রাসান নিৰ্মাণ করেন। নদীগতে পাটুলী আসাদ অস্ত্ৰদীন মুট্নার ক্ষাপ্তকা দৈশিয়া স্থাহবর জ্যেষ্ঠ পুরা স্থাচন্দ্র বাশ্রেইড়িয়ার রামশাউ পরিবর্ত্তন করিলেন ৷ তথন উছা একটা গভাগাস মাত্র ছিল। সামেশ্র মানা স্থান হইতে ৬৬০ বর আক্ষণ পভিত, कांबर, देवछ अवर विविध काठवरीय हिन्दक अगर শতাধিক সমন্ত্রন্ত্রণ পাঠানকে জানাট্যা বাশবাড়িয়াতে বাস করাইরাছিলেম। কানী হইতে পণ্ডিত রামণরণ ওক-বাণীৰকে মানাইরা রাজা বামেবর আপন সভাপঞ্জিতগদে নিগ্ত कतिवाकित्सम । किमि এই श्राम मत्या ४५ही টোল ভাপন কবিব। এবং কাৰ্না ও মিথিলা ক্ইতে অব্যাপক আলাইবা ছাত্ৰনিগেব দ্বতি, প্রতি, বেদার, ভাষ, সাহিত্য ও ব্দশভার শার শিথিবার উপাত্ত করিরা নিরাভিলেন। টোলের সমস্ত ব্যত্ত রাজসংসার হইতে দেওরা হইত।



বুলীনিধার অভাচার ভবে রাজা রামেশ্বর বাঁশবাভিয়ার লাফ প্রাসাদ পরিশা দারা ভুরক্ষিত করিয়া কন ৷ রামেবরের গড় হটতে 🔄 রাজনাটী 'গড়বাটী' নামে গাভ হর। এই পরিধার পরিধি প্রায় এক মাইল ৷ ধর্মাণ, ভাল, ভরবারী ও বন্ধ সৰে কইবা পৰাতিগৰ এই পড়ের পাহারার নিযুক্ত शांकिक। वांबक्षक मठ क्यांत्र बार्स्स करतकी कांबामध বাধা হইছাছিল। বনীয়া ত্রিৰেণী পুঠ করিতে আদিলে ভগাকার (शास जरून अरे शासूत किछात चालत गरेवा कान यका ৰগাৰা এই সংবাদ পাইৰা একবাৰ পছৰাটী

व्यवस्त्रीय करम । माना मार्यक्राम गुरु होला तपुरम्य गरिगरश निवास वरेता मिनवृद्ध वातवाति।विनाम भवास अवस् कर्म बहैरक किनुविक कविवा स्थम । तपूर्वक गुक्रगदिनाव वरकात कतिया कारांत प्रकृतित्क गुरवात अवसी सुक्रम लेकिनी असन-क्सहिंग हिस्सा ।

े पाना बारमध्य पार ५०० मध्य ५००० विश्वती व्यक्तितासकात पामान्याचा निकेत अब मनम आधा सम । कार्याक सम्मान कार्ड गुरुक्तरम "तामा महानव" कैगानि (वश्वा क्वेसाहिक त

এই गमरम्बद्ध गरम बाम्मार छीहारक नम्न-माम्न (११६-

পোৰাক) থিলাত নিয়াছিলেন এবং রাজপদবী সন্ধানের সহিত রক্ষা করিবার কন্ম বাঁণবৈড়িয়া প্রামে ৪০০ বিঘা জমি জারণীর এবং কলিকাতা, বালিকা, হাতিরাগড়, আলোরারপুর, সেদননন, মাগুরা, ধার্লা, থালোড়, মানপুর, কুলপুর ও কাউনিরা নামক বাদশটা প্রগণার জমিদারী দিরাছিলেন। উহার একথানি সনক্ষের অভ্যাদ নিয়ে দেওরা গেল:—

"রাজা রামেখন রাই মহাশর বরাবরের্— মোকাম বালবেড়িরা, প্রগণে আশি সরকার সাজগা

পরগণা অধিকারে আনিয়া ও জরিপ জনাবনী করিয়া বে ছেড়ু তুমি রাজাশাসনের সাহায়া করিয়াছ এবং বধন বে কার্য্য ডোমাকে ভার দেওরা গিরাছে, যে হেড়ু তুমি বধেষ্ট বন্ধের সম্ভিত ভারা সম্পন্ন করিয়াছ, এজন্ম ভোমাকে পুরন্ধার দেওয়া উচিত। ভোমার ওণের পুরন্ধার স্থরপ ভোমাকে পঞ্চ পাট্টা থিলাত ও "রাজা মহাশন্ন" উপাধি লেওয়া হইল। পুরুষায়ুক্তমে ভোমার বংশের জ্যেন্ট পুত্র এই উপাধি ধারণ করিবে, ইহাতে কেহ কোন আপতি করিতে পারিবে না। ১০ সম্বর ১০১০ হিকরী।"

বাদবেড়িরার বাহ্নদেবমন্দিরও রাজা রামেশ্বর কর্তৃক স্থাপিত। ইং। ইঠক নির্ম্মিত এবং কচুপরি নানা দিরনৈপুণা শচিত।



चालस्य मन्दिरः।

১৬-১ नकारक (১७१२ मुझ्या: এই मन्तित अ**डिंडिंड** इत :

ঐ মন্দিরের গাত্তে প্রাচীন বাঙ্গালা অব্দরে এই লোকটা অভাপি খোষিত রহিরাছে—

"মহীকোমাজনীতাংক গণিতে লকৰৎসরে। শ্রীরামেশ্বরণজেন নির্শামে বিক্সমন্দিরদ্ ॥"

রাজা রতুদেবকৈ নবাব মুরশীদকুলী বা "শূজমণি" উপাধি বিরাছিলেন। রাজত আলারে মুরশীদকুলীর কঠোর বন্দোবত বালালার ইতিহালে প্রসিদ্ধ আছে। কিন্তু মুরশীদের গুণ-প্রাছিতাও সামাক্ত ছিল না। গুনা বাদ, ব্যাসময়ে রাজত উণ্ডল নিতে সা পারার একজন রাজণ কমিলার নবাব কর্তৃক বৈকুঠকুওে প্রক্রিয়া কাপনি সেই দেনা লোধ করিরা তাঁহাকে মুক্ত করিরা লেন। রতুদেবের এই বদান্ততার মোহিত হইরা নবাব রতুদেবকে "শুজমণি" উপাধি প্রদান করেন। তদবনি ভাহার নাম শশুজমণি রাজা রতুদেব রার মহাশর" হর।

বন্ধত: এক সমরে কি রাজকার্যে, কি সমরকৌশলে, কি
নানধর্মে, কি নীতিনিপূর্ণতার পাঁটুলীর মহালর বংল বালানার
গৌরব স্থান ক্রিনে। বিচক্ষণ অকবর, জ্ননীতি অরকজেব,
লীহালীর ও সম্বিশোভমাম শাহজহান পাটুলীবংলকে গরীয়ান
রাগকলাপটু করিতে সকলেই বুক্তহন্ত ছিলেন। মূর্নীদকুলী
ও মূরাজম প্রকৃতি সকলেই এই তান্ত্রিক হিন্দু কারত্বংশকে
স্থানমনে দেখিরাছিলেন। সুলজী-পভিকার এবং মুসলমান
ইতিহাসে পাইলীবংলের বঙ্গেই প্রশাসা আছে। রাজা
রন্তুদেবের পুঞ্জ রাজা গোবিশাদেব বঙ্গদেশের আন্ধাদিগকে
একসক্ষ বিবা ভূষি ব্রহোজ্যর দান করিয়াছিলেন।

রাজা গোবিন্দদেবের প্র রাজা নৃসিংহদেব পিতার গৃত্যর তিলমার পরে ১১৪৭ রালে (১৭৪০ খুঃ অঃ) পৌবমারে ভূমিট্ট হল। নবাব জালীবন্দী খা তপন বাঙ্গালা বিহারের সসমবে সমার্শীন । বর্জমানের জমিদারের পেজার মাণিকচক্র জালীবন্দী । বর্জমানের জমিদারের পেজার মাণিকচক্র জালীবন্দী থাকের নিঃসন্তান অবহার গৃত্যু হইরাছে। আলীবন্দী খা গোবিন্দদেবের নিঃসন্তান অবহার গৃত্যু হইরাছে। আলীবন্দী খা গোবিন্দদেবের সমুদার জমিদারী বর্জমানের জমিদারকে দান করেন। পাঁচ মাসের পিও নৃসিংহ দেব পক্রের কৌপলে নিমেব মধ্যে বিপুল ধনে বঞ্চিত হইলেন। নৃসিংহদেব অহতে এ কণা লিখিয়া গিরাছেন—"সন ১১৪৭ সালে মাহ আদিনে আমার পিতা গোবিন্দদেব কারের কাল হর, সে কালে আমি গর্জত্ব ছিলাম। বর্জমানের জনিগারের পেজার মাণিকচক্র নবাব আলীবন্দী খার কিন্দট আমার পিতার অপুত্রক কাল হইরাছে খেলাপ জাহির করিয়া আমার পুত্র প্রভানের করব্রিদা সনন্দী জমিদারী আপন মালিকের জনিদারী সামিল ক্রিয়া সন্ ১১৪৮ সালে মাহ বৈশানে

পানাথা দথল করে ও হলদা পরগণা কিসমজের মালওলারী রাজা রুক্ষচক্র রারের সামিল ছিল,তিনিও **ঐ সন কিসমত স্বক্ষ্**র আপন প্রত্ শ্রীশস্কৃতক্র রামের তালুকের সামিল করিয়া দথল করেন। মৌজে কুলিহাও। মক্ষ্যুর তালুক হুগলী চাকলার

সামিল ছিল। পীর বাঁ কোজনার বর্জমানের অমিনাবকৈ লখল দিলেন না, অতএব তালুক মন্তবপুর আমার লখল আছে। ত্বৰৈ বাজালার কোন জমিদার বা তালুকদারের পর এমত বেজাইন সাপি ও বেদারত কথন হয় নাই।"



वान। बुन्सिक् सम्बन्ध

এই ঘটনার অনতিকাল পরে ঘালালার সুস্থানান সিংহাকল ভিনুপু হয়। বোল বৎসরে সাও জন নবাৰ বুস্থানাবাদে
নবারীর অতিনার করেন। তাহাতে বলের প্রেলা ভীতচ্ছিত
ও প্রতিত হইরা পড়ে। কুমার মুসিংহদেব ঐ সময়ে পৈতৃক্
সক্ষতি প্রকারের মন্ত চেটা ক্রিতেছিলেন। ইংরাকাপিকারে
কালালার আরাককভার কথকিও হ্রাস ঘটলা। ভারারেন
হেন্তংল্ আলালার আসনকর্তা হইলেন, নুসিংহদেবও তাহার
লবং লইলেন। ভাহার কল, রালা নুসিংহ দেব বহুতে
লিপ্রিক ক্রিয়া গিরাছেন,—

শ্বন ১১৮৫ সালে গ্ৰনর জনরত প্রীযুক্ত দেয় চিটান সাহেব ও নাহেবান কৌবল হক ইনলাপ নতে তলবীত তংকীক করিরা, আনার নিরাব জানিয়া আনার গৈড়ক অনিদারীর নধ্যে বে লক্ত মহাল বর্জনান জনিশারের ববল হইতে চক্তিল প্রগানীর সামিল হইরাছিল, সেই নহালাতের জনিদারীতে ইঞ্জ স্ন ১১৮৬ সাল আনাকে নরক্রাজ করিরাছেন ও কৌশ্র ও ক্রিট হুইতে সনন্দ নিরাহেন। "

>৭৭৯ খুঠানে ওরারেন হেটিংসের প্রদন্ত সর্বান্ধ অভ্যান্ত্রী নৃসিংহ দেব তাঁহার গৈতৃক ক্ষমিদারীর মধ্যে কেবল নম্বান্তী গ্রগণা পুনঃ প্রাপ্ত হন। নুসিংহবেৰ জাহার পৈড়ক বিপুন অসিলারীর সধ্যে করেকটা নাত্র পরগণা লাভ করিবা সর্বান্ত হইতে পারেন নাই। যথন লও ফর্পপ্রালিস গ্রব্র জেনারল নিবুক্ত হটরা আনেন, নৃসিংছ ভাঁছার নিক্ট সমুলার জমিলারী পুনঃ প্রাপ্ত হইবার জন্ত প্রার্থনা করেন। লও কর্ণওয়ালিস ভাৰাকে বিলাতে কোৰ্ট অব ভিয়েকটারস্থিতের নিকট बारनमम कतिरक वरनम। जुनिस्टरमक विनारक काल्यिक विश्वन वात्र निकारतत अन्न अर्थनक्त्र कतिएक बारकम । ाने **উল্লেখ্য কিছুমিন ৺কাৰীধামে বাস করেন । সেধানে ধার্কিক** ্বাগণধাবলৰী সন্ন্যাসীখিলের সহিতি মিলিয়া মিলিয়া তাঁথার মতি গতি পরিবর্তিত হয়। তিমি এই সময় তাঁহাদিগের সাহায্যে বোগনার্গে শনৈঃ শনৈঃ **উন্নতিলাভ** করিছেছিলেন। তিনি ভাষিলেন, বিলাভ আপিলে বিপুল কর হইছে, অথচ ্রাচার ফল অনিশ্চিত। বে অর্থ সঞ্চিত্ত হইরাছে, তত্ত্বারা ক্ষেত্রও প্রায়ী কীর্ত্তি মন্দির প্রতিষ্ঠিত করিলে অর্থের সহার হইছে। এই মনে করিরা তিনি বট্টজেতের আশালীতে জ্যুসেকরী মন্দির-প্রতিষ্ঠার আরোজন করিছে লাগিলেন। মঞ্জিয়নির্মাণকার্য্য আগত হইল ৰটে, কিন্ত ভিনি ভাছা শ্ৰেণ করিরা বাইছে পারেন नाहे। ১৮०२ बुडीटम जिनि श्रद्धशाक शमन क्टब्रम । नृशिःहत्तव ১৭৮৮ প্রাক্তে লব্যরত্বার মন্দির প্রতিষ্ঠা করেন। মন্দিরগাতে একধানি প্রস্তুর ক্রকে নির্বাদীখন্ত প্লোকটা ক্ষম্বিত আছে ১—

''আলাচনেন্দ্ৰলপূৰ্ণ লাকে শ্ৰীমং স্বয়ন্তবা। বেজে ডং শ্ৰীগৃহক শ্ৰীনৃদিংইগেৰদন্ততঃ ॥''

নৃদিংছ দেব সংস্কৃত ও কারদী ভাষার স্থাপিত হিলেন।

চিত্র ও স্থাতিবিভার তিনি অসাধান্ত নিপ্থাভা লাভ করিয়া
ছিলেন। তিনি উজ্জীপত্ত বাজালা কবিতার অহবার করেন।
তিনি ধর্মনিবহক অতি হক্ষর ক্ষমত্ত বচনা করিয়াছিলেন।
ভূতিকগাস-রার করনারারণ বোলাল তারা লিখিছা গিরাছেন—

न्दर्क निर्यन खारा नमक विश्वत ॥"(क्यमाताग्रद्भत्र कानीथ)

"মনে করি কালীখণ্ড ভাষা করি কিবি ।
ইহার সহার হর কাহারে না নেখি ॥
সভরণ টোক পকে পৌব মাব হবে ।
ভাষার মানস মন্ত বোগ হইল ভবে ॥
প্রস্তাণ কুলে কর পাটুনী নিবানা ।
ভিন্তুক স্নিংই কেব রার্যান্ত কালা ॥
ভাহারে করেন সার ভর্জনা থাকা ॥
রার প্রন্ধার নেই পাত্যা গইরা ।

রাজা নুসিংহ দেবের পত্নী রাণী শছরী স্থবিধাতি ইংসেখনী সন্দির ১৮১৪ খুটালে প্রতিষ্ঠা করেন। ঐ মন্দিরগাতে একগাঁনি প্রস্তুরকলকে নির্দাধিত স্লোকটা উৎকীর্ণ আছে:—

গাকাকে রসবছিনৈত্রসনিতে শ্রীমন্দিরং মন্দিরং মোকদারচতুর্দলেশ্বরসমং হংসেক্ষরী রাজিতং। ভূপানেন নৃসিংহদেবক্লভিনারক্ষং তলাঞ্জাহ্ণগা তংপদ্বী গুরুপানপদানিরতা শ্রীশক্ষরী নির্দাম।

नकामा ३१७७।



क्टरमध्यी मन्दियः

ভ্রংসেশ্বরী মন্দ্রির বাদাশার একটা উৎকট কীর্তি। নানা চান হইতে বহু যাত্রী এই বেশীসূর্ত্তি দর্শনে আগমন করিরা থাকে। একটা ত্রিকোণ বরের উপরে বেবাদিদেব শারিত আছেন। ঠাহার নাভিকৃত হইতে প্রস্কৃতিত পশ্ব উবিত হইমছে, বারুমরী পেরী সূর্ত্তি হংগেশ্বরী ভাহার উপর বিব্যানিত আছেন। ইহার গঠননৈপুণা সাধারণের সৃষ্টি আকর্ষণ করিতে সমর্থ।

খামীর মৃত্যুর পর দাণী শক্ষী বৈধ্যিক কার্য পর্যালোচনার *
অভিনিবিট হল। তিনি সকলকেই সম্ভানের জার কেই করিতেল।
প্রাঞ্জাবর্গ ভারার মধ্য বাবহারে সম্ভট ছিল। তাহারা রাণীমার্থ
নাম শ্রেণ না করিবা অব্যাহণ করিক না। রাণীমাতা সামাত্র
চালচলনের পঞ্পাতী ছিলেন। পুরু কৈলান দেবের সৌবীনতা
ভ বিলাসিতা আবৌ বেণিতে পারিকেন না। ভারা বলিবা

তিনি ব্যরকুর ছিলেন না। দারগ্রন্ত বাজিদিগকে তিনি মুক্তহল্পে বান করিতেন। পূজা পার্কাণ প্রভৃতিতে বিশেব দোলবারার সময় রাণী বালালা নেশের পণ্ডিতমণ্ডলীকে নিম্মুণ
করিয়া এক পরা আবার ও এক পরা টাকা দিরা প্রত্যেক্ষকে
প্রণান করিতেন।

১২৪৪ সালে অগ্রচারণ মাসে পুত্র কৈলাস বেব পরলোক গত হন। কৈলাস দেবের পুত্র বেবেল্ল দেব ১২৫৯ সালে বৈশাণ মাসে প্রলোক গমন করেন। পৌক্রের মৃত্যুর ছর মাস পরে রাণী শকরীর মৃত্যু হর। রাণী স্বীর সমস্ত কমিদারী মৃত্যুর কিছু পুর্বে এক উইল করিয়া ৺হংসেম্বরী ঠাকুরাণীর নামে উৎসর্গ করিয়া বান। নাবালক প্রপৌক্র রালা পুর্বেল্প বেব, হরেল দেব ও:ভূপেল দেবকে বংশাছক্রমিক সেবাইত নিযুক্ত করেন। নাবালকবের মাতা রাণী কালাম্বরী উইলে একজিকিউটার হন। পাইকাশাড়ার স্বগ্রসিদ্ধ লালা বাব্র পুত্র শ্রাভা শ্রীনারারণ সিংহের সহিত রাজা কৈলাস দেবের কল্লা করণাস্থীর বিবাহ হর।

১২৯৭ সালে ৭ই ক্সিন্ট ভূপেক্স দেবের মৃত্যু হর, ১৩-৩ সালের ১১ই প্রারণ বেটের রাজা পূর্ণেল্ছের ইইলোক পরিত্যাগ করেন। মধান প্রেক্স দেব ১৩-৪ সালের ১৬ই চৈত্র মানব-লীলা সম্বরণ করেন। স্ল.১৩-৭ সালের ৬ই মাঘ রাণী কীশাদ্বী এই নশ্বর দেহ ভ্যাগ ক্রিরাছেন।

জোঠের চারি পুত্র—রাজা গতীক্র দেব, কুমার ক্ষিতীক্র দেব, কুমার মৃনীক্র দেব ও কুমার রক্তের বেব।, মধ্যমের এক পুত্র কুমার বীরেক্স বেব ও কলিটের এক পুত্র কুমার কুমারেক্র দেব। বংশবিতি বিলী > বংশগুজুঃ। ২ বাশখন। ৩ কুগজ-বংশ। বংশবিদার বিশ্ব বিশ

বংশবিশুদ্ধ (ত্রি) বংশানি বিশুদ্ধানি বত্র। পরিষ্ঠার বংশ বিনিশ্বিত। ২ বিশুদ্ধ কুলাগত।

বংশবিস্তর (সুং) বংশক বিক্তরঃ। সমগ্র বংশধারা। বংশপর্শসরা।
বংশবৃদ্ধি (জী) বংশক বৃদ্ধি। > পুত্র কলতাদির জন্ম বারা
বংশের বিকার। ২ বংশসকৃদি।

বংশব্যজনবায়ু পুং) বংশনিশিত তালক্তের বাছ। বাশের পাথার বাতান। বৈভকে ইতার গুণ লিখিত আছে। "বংশ-বাজনবো বাতঃ রক্ষোকো বাতনিক্সং।" (বাজ হ পরি") বংশাক্রা (গ্রী) বংশভ শর্করেব। ১ বংশরোজনা। (বাজনি") ২ বংশেক্ষত শর্করা। শানশীকো আবের চিনি। ইতার গ্রাপ-চক্সর তিতকর, বলা, স্মধ্য ও কক্ষ।

বংশশলাক। (রী) বংশক প্রাক্তের নাট্যাই। চ বীগাম্গ।
মডান্তরে বীগা, সেতার প্রকৃতি বাল ব্রের বংশনক। বংশনিশ্মিতা প্রাক্তি ন্যাপ্রকাশী সমাস। ২ বংশনিশ্মিত প্রাক্তা।
বংশসমাচার (বং) বংশক সমাচার:। বংশাবান।
বংশস্তানিত (রী) লগতীছলোভেদ। [বংশহ্মিল দেশ]
বংশক্তি (ত্রি) বংশে ভিউতীতি বংশ-হা-কা। ১ বংশহিত।
২ হলোবিশের।

বংশশ্ব্রিক (রৌ) দাদশাক্ষর পাদ ছলোবিশেব ব্যা,—"বদ্ধি বংশহ্রিকং ক্রডৌ ক্রেরা,এ" ইহার ১,৩,৬,৭,১ ও ১১ বর্গ সমু এবং ক্রবশিষ্টগ্রহণ ভীদাহরণ বধা—

ं पित्रनानवः महस्मिनः पूर्यानिरेनः अपृर्णः तः अस्मतानक्तिमसम् । असासमामामानि जानमानिनार

জগৰ মানং স হরিঃ পুনাজু বং ॥" (ছলোমজরী)
বংশান্থিতি (ত্রী) কংশক বিতিঃ প্রতিপরিরিভি। বংশনযাদা।
বংশগাতি। (বনু ১৮০০)

বংশহীন (জি) » পুত্ৰপৃষ্ণ। ২ জানীয়গরিপৃষ্ণ। বংশাগান্ত (জি) » পুক্ষগরশারাপ্তার। ২ বংশক্রমাগত। বংশান্ত (জী) বংশক্ষ ক্ষর্য। প্রথমকাত্যাৎ। বংশাসূর। বাদের কোড়। (রাজনি°)

বংশাকুর (পুং) বংশত অভ্রঃ। বংশকরীর, বাশের কোড়া।
(হলার্থ) পর্যার—কংশাপ্ত, ববকলাত্র। ইহা কট, ডিন্ত, নি
অন্ন, কবার, লঘু ও শীতল এবং কচিকর ও পিডাল্র-দাহকজ্ম।
বংশাকুকীর্ত্তন (ক্লী) বংশবরী কথন। রাজবংশপরশারার
পরিচর প্রদাল।

বংশাকুজ্রম (পুং) বংশত অহজেম: । বংশগরপর । বংশাকুজেমে (অব) পুরুপৌত্রাদি অহলারে। বংশাকুল (ত্রি) স কংশের জার। ২ তরবারির মধ্যন্থ বজাংশের অন্তর্গত । (বৃহৎস' কল্প) ও একবংশ হইতে অন্তবংশে অন্তর্গমনকারী (শারী)।

বংশাকুচরিত (क्री) বংশক স্মচ্চিত্রতম্। বংশের চরিত্রবর্ণন।
ইহা প্রবেশের পঞ্চলক্ষণাস্তর্গত কক্ষণবিশেষ।

"দৰ্গক প্ৰভিদৰ্শক বংশমৰস্করাণি চ।

ৰংশাস্ত্ৰিতাধেতত প্ৰাণং পঞ্চলক্ষ্য ^এ

বংশান্ধুবংশচরিত (রী) প্রাণোক আজীন, ও নাধুনিক বংশের আখান।

বংশান্তর (প্রং) নশ্য আগড়ান (রাজনি°) বংশাবতা (রী) গাণিনির শরাদি গগোড়ত মুক্রীতেল।

(41" 6101220)

वःभावनी (जी) पूर्वप्रस्थापद मामावनी, कुननी। वःभावत्मक (प्र.) वीरम्ब पर् । বংশান্তি (মী) সৰ্বটাছি৷ (ইবছক্রি°) यः भोट्य (११) त्वन्यव । (सावनिः) বংশিক (সী) কংগ্রেছজাভেডি ঠন্ : ১ অঞ্চলচার্চ । (অমর) (वि) २ वरणतप्रवीतः। ः ७ वरणावस् । : वरमादश्वः । (श्रः) 8 कृष्यर्ग हेक्टलकः। कांबनी आवः। বংশিকা (জী) বংশিৰ-টাশ্। 🗦 মঞ্জন। (ভরত) ২ বংশী, বুরলী, বেশু। (শৃষ্চ°) ৪ পিয়লী। বংশিন (আ) বংশ-ইনি । বংশসপ্তীর, বংশলাত। "বস্তা থপু ভবত্যো বে ছিলাতীনাং শ্বংলিন:।" (হরিবংশ) বংশিবাল্ম (जी) বংশিবাছ, বাশরী। বংশী (রী) বংশকারণজেনাভাঞাঃ অচ, গৌরাদিস্বাৎ ভীব্ > मुज़नी, तरपुर (नक्ड^{*}) ठनिङ कथान्न दीनी वा दीननी दरन र "নিৰ্মিত। কাপি গোপীনাং কুল্ট্ৰুলবিনাশিনী। विधिना भामरतरभक्तः न वाली मुन्नदेवविभाः ।" (कावाठिका) वःश्वरात्मलाष्ट्रे मंत्रकृष्णमणि श्रीकृष्ण त्शालालमाशालात मत्ना-त्रभगोर्थ तृत्मात्ररण वीत्रज्ञी बाकारेबाहिरणम, तृत्मात्ररण "क्रिक्मि" अर्थ मन आनश्त्रभकाती इरक्षत्र तीनती निमानरे अञ्चल्क इरेबा পাকে। এই জন্মই কবিগণ ক্ষণীতে ক্ষতিত প্ৰভাৱ আয়োপ করির। গিরাছেন। বাঁশী বে জীরক্ষের স্পলভূষণ ছিল, ভাষ্ট ্রেমরসাত্মারী বৈষ্ণৰ ক্ষিণণের ভক্তিগাধাতেও সমুদ্রাসিত দেখা যায়। গোন্ধামিবিরচিত নিরোক্ত লোকে ভাচার আক্ষ্য দ্ধান্ত বিশ্বমান---

> "মেরাং ভলিজয়পরিচিডাং সাচিবিত্তীর্ণদৃষ্টিং বংশীক্সভাষর বিশলরাসুজ্ঞলাং চক্সকেন? গোবিন্দাথ্যহরিভন্নমিতঃ কেশিতীর্থোপকর্তে মা অঞ্চিত্তাক্ষর বলি সধ্যে বৃদ্ধুসক্ষেত্তি রকঃ ॥"

সদীতশালে এই বংশীরাছ, বল্লের প্রকার ও প্রস্কৃতপ্রধানী নিশিবদ্ধ আছে।— বেমন তাল না হইলে গানের পোভা হর না। সেইরূপ বাছবর না থাকিলে তাল মহিনা বুঝা বার না; কেন না তাল বাছবর হইতেই সমুর্ভি। তর্মধ্যে মুখে লাগাইরা কুবলার দিরা বে বংশনিশিত তবির বাজান বার, তাহাকে বীশী বলা হটরা থাকে। সদীত হামোনরে এই গুবির বরের ভেদ নিশিষ্ট হইরারে।

"বংশোহধ পারী মধুরী ভিডিরী শব্দকাহ্নাঃ। ভোড়হী মুমলী ব্রা পুজিকা স্বান্ধ্যকার জ পুসং কাগালিকং বংশক্ষরবংশক্তবা স্বান্ধঃ। এতে প্রবিদ্যক্তবাদ্ধ কবিভাঃ পূর্বাস্থিতিঃ ॥" বাদী বে কৰ নিৰ্মিতই কৰিতে হইবে স্পীতশামে এছপ কোন বিধি নাই। ভ্ৰমানাই বৰ্ডুল, সরল ও পৰ্ববেশববিক্তিত্ব কাঠণত বিলেব সইনা নিন্নীয় বাবা তাহায় জতান্তরে কনিঠাসুলি ভূলা ছিন্ত করাইবে। তাহার পর তহপত্তর উপায় হইতে অধোনকৈ অনুদা হাপনবোগ্য করিবা কৌশলে সান্তটী ছিত্র করিবে, বেল ঐ সন্তর্মনু হইতে সন্তব্ম নির্দিত হইতে পারে। আবঞ্জন কর এক বা আর্ক অনুদা আরম ছিন্ত করিবা সেই স্থানী মধ্যম ও জোমলাদি হয় বাহির করা বার। স্পীতশামে বংশের মান ও বিভিন্ন সাম আগত্ত হইরাছে। সাধারণের অবস্থতির অন্ত নির্দ্ধ তাহা উদ্বত করা গোল,—

"वर्ज् मः मन्नमरेन्छव शर्कामाविविक्छिः। देवनदः बानिएता सानि त्रकारन्यमध्या ॥ **औथ अध्यास्य मोदर्श मधिमधमः बार्श वार** রাজতভারতো বাণি লৌহজ: ক্ষটিকোহথবা n ক্ষিষ্ঠাপুলিভূল্যেন গর্ভর্ত্তে গ লোভিড:। निश्चविष्ठाव्यवीरगम वःभकार्या मतारुतः ॥ কলেনৈৰ মতোহপ্ৰীতিমতকমুনিনোদিতম্। ভতোহক্তেশ্পি ভদাকারা বংশা ইব প্রকীর্তিতাঃ চ ভত্র ভাক্তা শিরোদেশামধোমিমিভিমঞ্লম। কৃৎকাররন্ধুং কুষ্টাড মিতমঞ্লিপর্কা।। পঞ্চাসুলানি সংভাজা ভাররত্ব পি কারয়েও। कूर्याख्याक्षतक्षानि नश्च मर्थानि कोमनार ॥ ষদরীবীজতুল্যানি সংভাজ্যার্ছার্ছমন্থলম। **धारतार्वकाः कार्याः चत्रादेश्वर्नाप्रदर्शद ॥** সিক্থকেন কলা দেৱা তেম স্থায়তা ভবেং। পঞ্চালুলোহরং বংশঃ ভাবেকৈকালুলির্ভিক: 🛭 বড়বুলানি নারা ভা**ৎ বাবদ**ইফশাভুলম। ক্ৎকারভাররকু জ বাবন্সুলিমন্তরম্। ভদেব নাম বংশত বাংশিকৈ: পরিকীর্ন্তাতে ॥ একাছুলো ব্যস্তাক আৰুলকত ব্যস্তা: অভিভারতর্তমন বাংশিকৈ: সম্পেক্ষিত: ঃ जरबाक्नाकृरमा वरत्नार्नतः शक्नमाकृतः। নিকিতো ক্ৰডক্তৈৱখা সন্তৰ্শাদুৰ: # नहां ने का जिल्ला निवाद हो के बार कर का । চৰাৰ উভ্যা কশা মন্তক্ষ্মিগৰ হাঃ 🛊 वणाव्या वहानस्का मक अकामनावृज्यः। सावनाकृतवातक विकास निवस्तिका । ক্ষুদ্ৰশাস্থানিক। তথা ইক্ষাভিনীয়তে। ৰকা কলে। ব্যাবিদ্যুঃ ক্ৰমাণ্ড ব্যবস্থিত। ।

নৈৰিভাং প্ৰেক্ষিত্ৰ চাপি স্বস্থানক বীনভা।
নাৰ্কাৰিভি পৰাৰী ক্ষেত্ৰৰ ভগাঃ স্বভাঃ হ'
নবি সুংকাল বৈভাল নাম বাৰী ক্ষুত্ৰ বীংকালক বৰ অববা
ভাষা ক্ষতে সম্পিত সম্পেদ গৰ তথ, বিজ্ঞ, ক্ষুত্ৰ, লব্ ও
অসমুস তনা বাল, ভাষা ক্ষতে নেই বছ্যোবাজিভ কৰী বীজবাদনে জালোস কলা অবৈধা কাৰীবিদ্যাণ জালা বোবাজিভ
বংশীকে নিশা কলিয়া থাকেন। (স্বীজ-সামোলন)

২ কর্মচতুইর ক্লান্ধ তোলা। ৩ বংশলোচনা। ৪ কংগ্রহনী
ু চিকিৎসার জাতীফলাদি চুর্ল।

বংশীদাস, ভেষাভেগৰাৰ নামে বৈধান্তিক প্রছ্প্রথেকা।
বংশীধ্য (৮০१) > বে বংশী ধারণ করে। বংশীধারী । ২ শীরক।
বংশীধ্য, একজন প্রানিভ বৈত্তক গ্রহকার। যিনি বৈভক্তৃত্ব
ও বৈভমহোৎসব নামে কুইথানি গ্রছ রচনা করেন। ইহার পুরা
বিভাগতি ১৬৮২ খুটাকে বৈভরহতগছতি প্রগরম করিরান্তিলেন।
বংশীধ্য, একজন প্রানিভ নৈরান্তিক। ইনি বাচন্দতি নিপ্র-রচিত
তথ্যকাসুবীর টাকা ও পক্স্প্রানাণ্যথম রচনা করেন।

২ ছন্দোষধনী ও শিক্ষনের শিক্ষনপ্রকাশ নারক টাকাকার।

৩ একজন বৈদিক, ইনি কুপপঞ্জিকা ও হোমবিধি নামে চুইখানি বৈদিকপ্ৰায় রচনা করেন।

বংশীধরদৈবজ্ঞ, দৈৰক্ষণাদনিধি নামৰ সংস্কৃত জ্যোভিগ্ৰন্থ নচয়িতা।

বংশীধারিন্ (গুং) বংশীং ধরতীতি ধু-পিনি ৷ > জীকক । ২ বংশীবাদক ৷

বংশীপত্রা (বী) বোনিভের। "বংশাপত্রা ডুক বুরুবংশাপত্রবয়া-কৃতিঃ।" (লোকপ্রে° ৫৭ আঃ)

বংশীয় (a) কলে ভবং ইডি কণ্-ক্য। সন্ধণকাত। কংশোৱন।

বংশীঘট (রী.) কুলারণাড় ছানজেন। **জ্রিছক** এখানে দীনা করেন। [বুলাকন কেওঁ।]

বংশীবদ্দ (বি) ক্ষণীক্তবাধন। বিনি সর্বলা ক্ষণী বাজান।
বংশীবদ্দদ দাস, এক জন বৈক্ষৰ প্ৰকৰ্মা। ছক্তি চটোপাধ্যানের পূজ। ছক্তি পাইগীতে বাস করিছেন, পরে তিনি
নবীরার কুলিরাপাহাতে আসিরা বাস করেন। ১৫১৬ শক্তে
তৈর মাসে প্রিযার বিনে এই কুলিরাপাহাতে ক্ষমীনাসের জন্ম।
এ সক্তে প্রেম্বানের একটা প্রেও আছে ব্যা—

শ্নদীয়ার নাম বাংল, সকল নোকেছে লানে, ভূমিরানাহান্ত নাবে স্থান।

कृतकाताराष्ट्र नाप्य रागः क्याम् कामक शावः, विश्वपिक् इवे वायः, वर्षाःकमः कृतीम गर्वानः। ভাষাৰতী পৰী উদ্ধান কৰা নাম।

তাৰাৰ সংগতিত আনি, সংগ্ৰাম নাম।

তাৰাৰ সংগতিত আনি, সংগ্ৰাম নামনা বানী,
তাৰাৰংশ কৈনা বৰস কাৰ্যনা কৰিছিল।

বানীবৰন আন বৰস কাৰ্যনা কেনালাকতোলের উৎস মুক্টমানিক।

তাৰাৰ অন্টা পদ উদ্ধান কৰিছা নেনাইডেডি,—

"रहन ज्ञान ककू नाकि तथि।

दन करन नवम वृष्टे, तनके कक देशक वृष्टे,

क्रिकारेका कानिएक मात्रि कांगि।

करन माना कांग्रान, साविन्दी कांग्र (कर,

क्रिक विनाह दनन शनिः)

নিশামিশি বইল রূপে, ভূবিভান রূপের কুপে, থাডি অনে হেরি বড পদী।

বিনি বেবে খন আজা, ক্রান্ত নীক্ত বস্ত্র শোড়া, জন্প উদ্ধিয়ে সন্ধ্রায় ৮০০০ চন

क्ति (न म्हिन हुए), साम्र्रिक पूर्वण दक्तं, क्य महत्त्रक्ष कातं ।

গলার কম্বন্দালা, জিনিরা নহন জলা, জনমে মধুর ক্ষুত্ তাস !

ভাহাতে মুন্তী ধানি, আৰফা প্রাণে সুনি,
বলিহারি যাও বংশীকাস ॥"

গৌড়ীর বৈক্তব-সরাজে কংকীবাস জীকুকের বংকীর অবভার বলিরা প্রসিদ্ধ : কুলিরাপানাড়ে বংশীবন্ধ "প্রোণ্যক্তম" বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা করেন । পরে ভিলি বিষধ্রামে আসিয়া বাস করেন। বিষ্ঞামের ভটাচার্যেরা বংশীবন্ধনের আভি।

মহাপ্রভাৱ সন্নামঞ্জবেদর পর বংশাবদন কিছুদিন নববীপে গৌরাল-জবনে অবহিতি করিলাছিলেন। এখানে তিনি "নীপাবিতা" নাবে একবামি ক্ষুয় কাব্য প্রপন্নন করেন। ভীবার নুই পুত্র চৈতক ও নিত্যানক। ক্ষৈতক্রের পুত্র নামচক্র ও গটীনক্ষন বিখ্যাত প্রকর্মা ছিলেন। শহীনক্ষম "গৌরাল-বিজয়" নামক একখানি কাব্যও রচনা করেন।

বংশীবন্দপর্যা, গোরীচন্তের সংখিওসার ব্যাকরণের টাকা এবং নৈবধকাব্যের টাকা-রচরিকা।

বংশীবাদক (গ্ৰং) গুৰিবৰ বাদনাভিত্ৰ, বাহারা উত্তরন্ত্রণ বানী বালাইজে লানে। স্থবজানত বংশীবাবকের প্ৰকর্ণ সকীত-পাত্তে এইরপ বর্ণিত আছে—

প্রদেকাবিদরাভিজ্ঞে রবকায়ঃ পূটাকরঃ। শীক্ষকঃ ক্যাভিজ্ঞে বাংশিকে রক উন্নতে এ

অর্জির্কার্জিক বৃক্তিকেত্যসূলৈর্থ পা: ॥ ত্বহানকং স্বৰুক্ত অসুনীনারণক্রির।। ব্যৱসম্ভানং রাগরাগালবেণিতা ॥ ক্ৰিয়াভাষাৰিভাষাৰ গব্দভা গীতবাদনে। यहात्न हाणि धःहात्न मानमिर्धागरकोणगम् ॥ িগাতৃশাং স্থানদাভূত্বং তন্দোৰাজ্ঞাদনং তথা। বংশকত তথা জিতে মনা সংক্ষিপ্য দর্শিতা:॥" (সলীতদামো") বংশোক্সবা (জী) > বংশরোচনা। ২ বাসাথও। व्राच्या (जि) करान छवः। वरम-(मिगानिएछा वर। श BIMES) ইজি বং । ১ স্বংশলাত । পর্যার—কুল্য, বীল্য । "খারজুৰজান্ত মনোঃ বড়্বংখ্যা মনবোহপরে ।" (মন্ ১।৩১) २ वः त्नार भन्न भाव । ''ৰংখ্যা গুণাঃ ধৰণি গোককান্তা প্রারক্তকাঃ প্রথিমানমাপু: ॥" (রঘু ১৮।৪৯) ৩ গৃহোর্জ কাটবিশেষ। ৪ বালের বালা। ৫ প্রচাবর্ব-বিশেষ।

"বদন্ধিভিনিশ্বিতবংশৰংশ্ৰ-

ছুণং দ্বচা রোমনথৈ: পিনছম্।" (ভাগবত ১১।৮।৩০)
'বংশোনাম ছুণাস্থ নিহিতবির্যাধেণু:। বংখা: তল্লির্ভরতো
নিহিতা বেণব:। স্বস্থিভিরেব নির্মিতা বংশাদরে। যক্মিংস্তং।
তত্ত্ব পূর্তে ধীর্ষমন্থি যৎ স বংশাঃ শার্ষাস্থীনি বংশানি। ছুণা হস্ত-

বংস্থা (পুং) ব্ৰভেদ। চলিত বাঁজ।

'বুৰা বুখে চ বংসগঃ ক্লটীরির্বর্ডি' (ঋক্ ১।৭।৮)

বংহিয়ুস্ (ত্রি) বছল, প্রচুর।

भगाशीन।' (अधक्रवामी)

বংছিষ্ঠ (জি) অভিশয়, অধিক।

বক্, ই ৪ । কোটিলা, ৰজীভাৰ কুটিলীকরল। গাভি। (কবিকর্জম) ভা " আত্ম" অক" ও সক" সেট্। কোটিলার্থে বক্ধাতু কুটিলীভাৰপ্রকাশন বা কুটিলীকরণ ব্যাধ। ই, লট্
বছতে ও, লট্ বছতে কাঠ্য কুটিলং কাদিতার্থা। বছতে কাঠ্য
কুটিলং করোডীভার্থা। (গুর্গাধান) লিট্ ববজে, লেটে বভিতা।
সূত্র আবভিত্ত।

বক্ > খনামগ্রাসিভ জনচর
পঞ্চিজাতিবিশের (Ardea
Nivea) ইহারা জনে নাছ
ধরিয়া উনন্ত পূরণ করে।
২ হয়প্রিয় পূল্যক্তেন।
চলিত বাসকোনা গাছ বা বক
স্থানর গাছ। ৩ বৈতাবিশের।



শ্রীকৃষ্ণ ইহাকে নিহত করেন। । তীম কর্ত্ত নিহত রাক্ষ্যতেন। ৫ কুবের। ৩ বজনিশের। ৭ দাল্ভাগোত্রীর অবিভেন।
৮ রাজতেন। ১ লাতিবিশের। এই অর্থে বহবচনেই ইহার
প্রয়োগ দেখা যায়। [বিজ্ত বিবরণ প্রসীর বকশন্দে জুইবা।]
বক্ষক্তে (রী) প্রাচীন জনপদ তেল। নর্মধার তীরে অবহিত।
উজ্জারনীপতি সাত্বাহন সর্মবর্দ্ধা আচার্য্যের নিকট কলাপব্যাক্রপ অধ্যরন করিয়া এই রাজ্য তাঁহাকে গুরুদ্ধিশাবর্মপ দান করেন।

"রাজার্থরদ্ধনিতরৈরও সর্প্রবর্মা,
তেলার্চিতে গুলুরিতি প্রণতেন রাজ্ঞা।
শানীকৃতক বিবরে বক্ষজ্নামি
কুলোপক্ঠবিনিবেশিনি নর্মারাঃ ॥" (কথাসরিৎসা° ৬তর*)

বককল্প (পুং) থ্গান্তরীয় কল্পভেদ।
বককুণ্ড, বোধাই-প্রদেশে বেলগাম্ জেলার অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম ও প্রাচীন তীর্থস্থান। সম্পর্গাও হুইতে ১২ মাইল দক্ষিণপূর্ব্বে অবস্থিত। এখানে যধনাচার্য্যের একটা স্থানর প্রস্তরমন্দির আছে। এ ছাড়া কএকটা প্রাচীন মন্দিরের ধ্বংসাবশেধ
এখানকার দেখিবার জিনিস।

ব্কচর (বৰ্চর) (পুং) বৰুক্তেব চরতীতি চর-অচ্। ১ বক্ত্রভিন্, বক্তের স্থার বৃতী বা আচারধারী। (ক্লী) ২ বক্কাতির বিচরণ-স্থান।

বক্চিঞ্চিকা (জী) মৎস্যবিশেষ। বক্তিছে (পুং) ২ ভীমদেন। ২ শ্রীকৃষ্ণ।

বৃক্ত (বি) বকের ভাব বা ধর্মা। কুটদতা।

বকজীপ, বিজ্পুরের ৪ কোশ দক্ষিণে মরভূমির অন্তর্গত একটা প্রাচীন প্রাম। এখানে রক্ষরারের প্রসিত্ত মূর্ক্তি বিদামান আছে। দেশাবলী পাঠে জানা বার, এখানে শিলাবতী অবস্থিত। বন্ত-মান এইস্থান বিগড়ী' নামে পরিচিত রহিয়াছে। (দেশাবলী)

ব কথুপ (পুং) গৰু কৰা বিশেষ । বৃক্তৃপ । বক্ক (দেশৰা) ১ ইখা বক্ৰক্করা ৷ অনর্থক ভাষণ । জলন । ২ ভিরন্ধারকরণ ।

বক্রখ (পুং) বিশাসিজের পুক্তেন। বকনক এরপ পাঠও পাওরা বার।

বকনা (দেশৰ) জন্মবন্ধবা গৰী। বে গৰীর এখনও বাছুর হয় নাই।

বকনি (দেশৰ) খনৰ্গদ কথন। বুধা ভিন্নৰার। বকনিসূদ্দ (পুং)বক্ত নিস্থনঃ। ভীনদেন। বক্তপঞ্চ (ক্নী) কাৰ্তিক গুৰুপক্ষের একাদশী হইতে পূৰ্ণিনা পৰ্যন্ত পাঁচটা ভিত্তি। [প্ৰদেষ্টি বক্তপক্ষক ক্ৰাইবা] বকপুন্প (গ্ং) অগতি বৃদ্ধ, বাদনা স্থারে গাছ। (Bachynomeue grandiflora)। (ক্নী) বক্ষ্ণ। ত্রিরাং তীপ্ বকপ্নীর। [অগতি বেখ]

ব কয়স্ত্র (ক্রী) আগবাদি পরিশ্রত করিবার ব্যাবিশেষ। বক্ষগ্রীবার স্থার ইহার উপরিভাগে একটী বক্রাকার নল থাকার
এই নাম হইরাছে। ইংরাজীতে ইহাকে Retort বলে।

বক্ষা, চন্দারণের অন্তর্গত একটা নদী ৷ (ভবিন্য ব্রহ্মণ ৪২।১৪১) বকরাক্ষস, একচজানগরবাসী রাক্ষসভেদ। ভূরীদেবী পঞ্ পাওবসহ একচক্রার এক আদ্ধণ গৃহে বাস করেন। অকদ্মাৎ একদিন ত্রাহ্মণগৃহে আর্দ্রনাদ উপস্থিত হইলে কুরীদেবী স্বরাধিতা হইরা ব্রাহ্মণের অস্তঃপুরে গমন করিয়া অবগত হইলেন, ঐ লগরে বন্ধ নামে এক রাক্ষ্য বাস করিতেছে। নগরবাসিগণ ভাহাকে প্রভাহ পর্যায়ক্রমে আপন আপন পরিবার হইছে এক একটা মহব্য ও ছইটা করিয়া মহিব দিছে বাধা আছে। অন্ধ ব্রাহ্মণের পালা উপস্থিত, তাই ক্রন্সনের কারণ হইরাছে। বদি তাহারা ঐ দিন কাহাকেও না পাঠাইরা দের, তাহা হইলে রাক্ষস আসিরা তাহাদিগকে সবংশে নিধন করিবে। ব্রান্ধণের এবংবিধ বাক্য প্রবণে কাতর হইরা কুঞ্জী বলিলেন, হে ব্রহ্মন্ ! তোমার একটা বালক পুত্র ও একমাত্র বয়স্থা কলা আছে, তাহাদিগকে প্রেরণ কিংবা স্বরং ভূমি অথবা ভোমার পত্নীর উপহার লইরা গমন করা উচিত নহে। আমার পঞ্চপুত্রের একজন তোমার উপকারার্থ উপহার গ্রহণপূর্বক পাপ রাক্ষদের নিকট গমন করিবে। অনেক বাদারুবাদের পর কুতীর কথার আবন্ত হইরা ব্রাহ্মণ কুন্তীর সহিত ভীমদেনের নিকট স্মাসিরা এট চুর্বাহ কার্য্য সম্পাদনে অন্থনর করিলেন। ভীমও মাতার নিৰ্মন্বাতিশনে এই মহাত্ৰত সাধনে উত্যোগী হইলেন।

রঞ্জনী প্রতাতা হইলে ভীষদেন খাছ সামগ্রী দঠয়া রাক্ষদের
আবাস অভিসুখে বাত্রা করিলেন। অনস্তঃ সেই রাক্ষসগৃহে
প্রবিট হইয়া তিনি সেই সমস্ত ভোজা দ্রব্য ভক্ষণ করিতে
করিতে নামোন্ডারণপূর্কক রাক্ষসকে ডাকিতে লাগিলেন।
ইহাতে কুছ হইয়া রাক্ষসকর বক ভীমসেনকে আক্রমণ করিল।
ভীমসেন,রাক্ষসের পৃষ্ঠদণ্ড ভালিয়া দিলেন। তাহাভেই ভাহার
পক্ষপ্রাপ্রি ঘটে। (বহাতারত আদিপর্কা)

বকরাজ (গুং) রাজধর্ষন্ নামক রাজবিশেন, ইনি কল্পার পুত্র ৷ (ভারত শারিপর্ক')

वकत्री (सनक) शंगी। वर्वती नंसक।

বক্তব্ধ (পুং) > বকাস্থরের নিহনন। ২ বহাকারতীর আদি-পর্বের অন্তর্গত একটা পর্বাধ্যার। এই অধ্যারে ভীবনেন কর্ত্তক একচক্রানগরীতে বকাস্থরের নিধনবুরাত বিশ্বত আছে।

वकवृक्ष (११) वक्ष्रत्वत्र शहर । বুকুল (পুং) বৃদ্ধকের জভান্তরম্ব পাতনা বন্ধ। "বঞ্চ বৃক্ত স প্ৰসৰ্বা ৰক্ষাঃ স বৃগাঃ" (সাম্বাণ জ্ঞাণ ১০১২) 🦿 ব্ৰুব্ৰুত্তি (পুং) বৰজেৰ স্বাৰ্থসাধিকা বৃত্তিবঁভ। বক্তিৰ ভাৰ ক্পটাচারী সন্নাদী। [পবর্গে বকর্ত্তি শব্ধ বেখা] वकरैवत्रिन् (११) वक्छ देवते वाष्ठक्यायुः। > क्षेत्ररामः। र जिल्ला ব্ৰুব্ৰুক্ত (ক্লী) বকের ভার কণ্ট বিনীত **আচ**রণ। বকব্ৰতচর (পুং) ৰক্ষ্যন্তিধারী মাত্র। বকত্রভিক, বকত্রভিন্ (পুং। কণ্ট নামানী। নে বাকি স্বার্থসাধনোন্দেশে কণ্টভাবে ধর্মাচার পালন করিভেছে। ব্রুসকুথ (পুং) খবিজেন। বছবচনে বকসক্ষেদ্ধ বংশগর-গণকে বুঝার। বকসহবাসিন্ (পুং) ^{প্র}। বকস্থান, আচীন নগরভেদ। त्का (तनम) > कितकात्कत्रण। २ क्रितिशरिणिष्टे वाकि, কুপথগামী। বকাটে। वकाई (प्रभव) काबिन, रहणारी। বকাচী (খ্ৰী) বৰুচিঞ্চিকা মংক। বকাটা (নেশন্ধ) ভত্তবারদিগের ব্যৱবন্ধনাধনোপযোগী শও-বিশেষ। তাঁত চালাইবার কালে পানতলত্ব লগু সঞ্চালনকালে ইহা ইচ্ছামত সঞ্চালিত হইরা মাকুর পথ পরিকার রাখে। বকাটে (বেশ#) কুপথগামী। বকাগুপ্রত্যাশা (জী) বুধা জাশা। জারোক্ত বিচারবিশেধের मीमारमामाश ग्रह्मविटनव । [क्याय नक स्मर्थ ।] वकान (प्रमंख) > कृष्ण न अज्ञान। २ वृशां कथा क अज्ञान। वकादि (ग्रः) वक्छ षतिः। ३ जैक्कः। २ छीमरमन। ব্কাম (দেশজ) কুপথগামীর জাচার গুনর্শন। জোঠামীকরণ। বকাল (আরব্য) > দোকানী, পণারী, বেণিরা ৷ ২ পূক্বকবাসী চণ্ডালজাতি ভেদ। ইহারা বকালীনামেও খ্যাত। এই জাতি **हिलाग हहे एक वाहित हहे एम अन्यादात मार्था देववाहिक आ**मान-প্রদান অথবা আহায় ব্যবহার প্রচলিত নাই। অথচ একই ব্রাহ্মণ উভয়ের পৌরোহিত্য করে। ঢাকা জেলাছ প্রাকরণা ও মাণিকগঞ্জ উপবিভাগেই অধিকাংশ ৰকালের বাস। ইচারা **हांव करत ना, किंद्र भरनारकत्रहें त्नोका भारक, निरम निरम**हें त्नोका वाहिता शास्क । आस्य आस्य पृतिवा हेशावा हिक्कान<u>ि वश्</u>र-নের মনলা বিক্রের করিয়া বেড়ার। সকলের এক কাঞ্চলপ্রের अधिकारण वाकित क्षेत्रमध्यम कैशानक। वेशावम निम्नान

(व, वायमा बालिका बाला हैराला चानकरे। केनक घरेनाएड, धकानन

চভালের সহিত্ত আরু সংশ্রম নাই ৷ ইহারা চভালের মত খ্রন্থ প্ৰকাশে অথবা মন্ত ব্যবহার করে না ৷ . ব্ৰুভিন্ন, বৈভাবিশেষ। পুডনা নামৰ রান্দ্রীর লাভা ও करतमा अपूर्वत । करमारमा वक इकारक वर्धार्थ जानमन करत এবং তাঁহাকে গিলিয়া কেলে। পরে ক্লফ ঠোঁট চিরিয়া তাহাকে নিহত করেন। (আদিপুরাণ ও ভাগৰত) বকুনা (মেশৰ পিছগনির্নিত রন্ধনপাত্র বিশেষ। दक्षा (रामक) कछात्रकथननीन। বকুল (পুং) স্থনামপ্রসিদ্ধ পুশার্ক। বকুল ফুলের গছি। हेरात पर्भक -७ भूम्म थन--नैकन, क्य, विवत्तायस्त्र, मधूत्र, কৰাৰ, মদাত্য, স্কুচা, হৰ্মন, মিম্ম, মলসংগ্ৰাহী, ক্ষীয়াত্য ও স্থায়তি। ইহার ছাল ওঁড়া করিয়। ভাহাতে দস্তমার্জন করিলে গাঁতের গোড়া দৃঢ় হয়। [বিভূত প্রর্ণে বকুল শব্দে দেখ।] वकुलभूक्भ (क्री) वकुनम्म। वकुल। (त्री) वकुन-ग्रेश्। कर्ड्काः (त्राव्यनिः) বকুলাগ্য তৈল, তৈলোষগভেদ। প্রস্তুতপ্রণালী—ভাবার্থ বকুল ফল, লোধ, হাড়ঞ্চ, নীলঝাটী, লোদালপত্ৰ, বাবলার ছাল, শালবৃক্ষের ছাল, খদিরকার্চ মিলিড ১২৪০ সের। তিল তৈল ৪ সের,পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কর্মার্থ কাথ্য ঞ্জব্য সমস্ত মিলিভ ১ সের। এই তৈল মুখে ধৃত বা নশুরূপে গৃথীত হইলে চলিত দম্ভ দৃঢ় হয়। (তৈম্বজ্যরত্না' মুধরোগাধিকা') বকুলিত (a) বকুলপুলপরিশোভিত। ব্ৰুলী (রী) কাকোনী। কাঁকনা। (শন্চ°) বকুলা (পুং) পর্ণমূগ। (সঞ্জ) वहिक्या (व्यादवी) भूटर्कद वाकी, भारतक । "वहिक्या वनमान" বলিলে পুরাতন অর্থাৎ অতি হুট্টই বুঝার। व्(कक्षकः (जी) बनाका। বলেশ. (পুং) বৰুপ্ৰতিষ্ঠিত শিবলিকভেন ৷ रकां हे (ग्रः) वस नकी। বন্ধ গভি: ভা" আৰু পৰ° সেট। লট বন্ধতে। वक्किन् (११) विराज्य। दक्कम् (गूर) वस्रवित्यव । देशं क्यांग मरस्य स्नात्र । देशांत्र स्थ-"बुद्धः व्यवाहिकारष्ठाशकुर्नामानिकरनाकव्यः।

ৰঙ্গো শ্বন্তসাত্মখাৎ বিষ্টুত্তী ৰাতফোপনঃ।

व्कल, व्योक्रस्थ ।

দীপনস্টবিশ্ব বো বিশবেহরমধাে শুরা: 🛭 (হঞ্জ)

হকুত্ (আরবী) সমর। ছবোগ বা ছবিগা। চলিত ওকা।

বৃদ্ধভূপুর, বোৰাই অেনিভেন্সির বেবাকাহার পাঞ্যেবানের

অৱগত একটা নামভবাজা। এই নাপত্তি বাচন উপাধিধারী

ভিনমন সামক্রের অধীন। ইহারা রড়োবার গাইকোবাড়কে কর বিরা থাকেন। বগরভাগ ১। বর্গনাইল। বস্তেব্য (অ) ক্ৰ বচ্বা তবা। 🕻 🙀 ৎসিভ, হীন। "नाधायीत्मा न क्कार्या न ब्रह्मन दिक्षंद्वर ॥" (मस ৮।७७) २ वहनीब, कथनीब, वहनाई, वनिवाद वांगा। "वरक्यान्धांनि ब्रांबानः गरेर्स गर् स्थब्बरेनः। বৃধিষ্টিরস্যাখনেধাে ভরত্তিরস্কৃষতাম্ ॥" (ভারত ১৪।৭৬।২৩) वह छाद्य छवा। (क्री) > वहन। कथन। ७ निस्।। **ৰম্ভন্যতা, বক্তব্যন্ত (ক্লী) ক্থনবোগ্যতা, নিন্দনী**য়তা, তির-স্থারের উপযোগী। বক্তশালী (পুং) স্বনামধ্যাত মধ্যদেশসভূত শালিধাতা মরাঠী-ধকোই ধান। ইহা লঘু ও স্থপাচা। (বকুকু) (আরি) ৰচ্-ছচ্। ১ বাগ্যী। ২ ভাষণপটু। **ৰাৰ্পটু, বক্তাশক্তিযুক্ত। 'ৰো বক্তুং জানাতি সং'** (ভরত) 'উচিত্যাৎ ক্ষবিশিষ্টং বদতি।' (রারমুকুট) "ভদ্ৰং কৃতং কৃতং মৌলং কোকি**লৈৰ্জ্ন**গণ্যম। দৰ্भুৱা হত্ৰ বক্তারন্তত্ত মৌনং হি শোক্তনম্ ॥" (হিতোপ°) পৰ্যায়—ৰদ, বদাবদ, বদাস্ত, বক্তা, স্মষ্ট্ৰকা, বহুভাষী, ৰাগ্মী, ৰাৰদৃক, ৰচক্ৰ, স্থবচা, প্ৰবাৰু, পণ্ডিত। •वज्कि (बी) फेक्टि, क्था, वांका। (वृहमांव्रगाक फेर्ग° ८।७१२७) বক্তু (পুং) মন্দৰাক্যভাবী। বে কুৎসিত বাক্য প্ৰয়োগ করে। "পুরুষবাক্যানাং বক্তু" ইতি সারুণ ; (ঋক্ ৭৩১)৫) কিন্তু অঞ্চান্ত ভাষ্যকার ইহাকে বচ্ধাতুর "বক্তবে" ক্রিয়া রূপের আর্থ উক্তি বলিরা গ্রহণ করেন। বক্তবুকাম (বি) বক্তবুং কামরতে বং বং বা বক্তবুং কামো বস্ত সঃ। বলিতে ইচ্ছুক বা অভিশাৰী। ব্জ্মনস্(জি) বজুং মনো বছ সং বজুমনা:। কথিত-মানন, বিনি বলিতে মানব করিয়াছেন। व्यक्तु (वि) कथनभागः। वक्ताः। ব্যক্ত ক (বি) বকু-পার্ছে কন্। কথনগটু। সভ্যবাদী। বস্তা (বা) বচ্-ছচ্ ডক্ত ভাবঃ ভণ্-টাপ্। বাৰ্ণট্ডা, বলিবার ক্ষতা। ঝাছিলাস, বাফিছা। ষ্ক্ৰুদ্ধ (जो) বজার কার্য। ্বাহিছালেকি। ব্স্তমন্থল্যক্তি (রী) বলিবার ক্ষমন্তা (Bioquence)। বৃদ্ধে (ही) বজি অনেনেতি ক:্-(গ্রাবীপচিবচিমমিসনিক্ষিতার:। केन् शक्कः) देखि वः। ५ दूषः। "ধৰ্মোগদেশ মূৰ্ণে। বিজ্ঞানাম মুৰ্নজঃ।

कश्चमाल इत्योधकः करक् त्याद्यः इ गाविषः **।"(वद्य** ५।२१२)

वरम, जाञ, जामम, वृशार्यराहकः। अहे वस्तुनास्य वसूरकत्र দুখ, হাতির ওঁড়, পঞ্চীর চকু, তীরের ফলক, ভূলারের নগ প্ৰভৃতিও বুৰার। ২ তগরসূপ। ্ (প্ৰমালা) । ও ব্যৱভেষ । 🖰 (মেৰিনী) ৪ ছব্দোবিশের। ইহা অনুষ্ঠুভের অন্তর্জন। লক্ষণাদি বধা,---"क्वकार्क्तमाः वर्जुः विवसक क्वांहन । তরোর্ঘ রোজপান্তেমত শব্দব্যুনোচাতে 🛭 বকুং বৃগ্ভাাং মগৌ ভাডামকের্ব্যাহনুই,ভিঃ খ্যাতম্ ॥ এখানে ছিরাবর্তা লোক পুরুপ করা হইল— "रुक्ताखानः नमा (जन्नः हनून) लार्थनः कृत्रम् । वज्ञवीनाः ऋत्रात्राराज्यकाला कृतः वहारत्रारेकः 🗗 (इरकामकती) ৎ কার্য্যের আরম্ভ। ৬ বীঞ্গণিতোক্ত প্রথম গৃহীত সংখা। (The initial quantity of a progression)। ৭ জগৰ-পুন্দা, টগর ফুল। (রাজনি°) বক্তৃক (নি) বকুশলার্থ। মুখসৰ্থীর ! বক্তুকটুতা (রী) মুখবৈর। বক্ত কুর (পুং) বজুত কুর ইব। প্রোদরাদিশাং খঃ। দ্ভ। (ভিকা°) বক্তুক্ত (পুং) বন্ধণো বক্তাং লাছতে ইতি। "বান্ধণোৎয মুখমাদীং" ইতি প্রতে:। জন-ড। রান্ধণ। (ত্রিকা°) (ত্রি) সুধবাত। বক্তাল (রী) ৰজুভ তালম্। মুখবাছ। ত্রিকাওপেরে 'মুখবাজং বজুনালমিভি' লিখিত আছে। মুখ হইতে ফুৎকার-मानदात्रा वरन्त्रवापन । (करु त्कर वरनन, मूथविवत्त्र वायु त्राथिया উত্তর গণ্ডে হক্ত তালুছারা আঘাত করিলে শলোচ্চারণের সব্দে বে বাছ সমূৰিত হয়। বক্ত তুও (গং) গণেশ। व्यक्तिम् हु (बि) बटका प्रशासन माड्रामि वक्त मीर्धमत-विनिष्ठे। वक्रमस्रभाती। भूक्तामि। [वक्रमरहे स्मर।] स्कुप्त (ही) जन्मः व्कुषात्र (जी) मूथविवत्र । ব্ৰুপ্ট (রী) মুধাবরণবন্ত। ঘোষটা। ব্ৰক্ত পট্ট (পুং) ৰজ্জু স্থ বট্ট ইব। অৰ্থনিগের চণকভোজনপাত্র। চলিত ভোৰড়া। পৰ্যায়—তলিকা, তলনারক। বক্তু পরিস্পন্ধ (পৃঃ) বক্তাকাদীন স্থকশন। ২ কথন,বাচন। বক্ত ভেদিন্ (গৃং) ক্ত্ৰ: ভিনতীতি ভিন্-পিনি। ১ ভিক্তরন। (बि) २ मृथविशामकः। যুক্ত হোধিন (প্ং) ১ সম্মতের। (হরিবংগ) (তি) ২ মুখ-यात्रा वृष्टकात्री (नक्यापि)।

व्यक्ति हुन्न (जी) न्यन्ति । वस्तुक्रम् (वि) > त्रातरण गांश विश्वा मत्र । नाजावन्याणि । ২ **হজিওওছিত কে**শরাশি। (রুহৎস° ৬৭।১০) वक्टु द्वांभ (११) म्यदान । বক্তে রোগিন্ (ত্রি) রথরোগভোগকারী। (বৃহৎস°) ব্ৰক্তু বাস (গৃং) বজুং বাসরতি হুরতীকরোজীতি বাসি-(কর্মণাণ্ । পা ৩।২।১) ইতি অণ্। ১ নারজ: [নারজ দেখা] वक् अवागः। २ म्यलामः। युक्तुभानाः। (जी) > काकामनी नजा, त्यंजववा। २ वक-ওলা। (বৈভক্সি°) বক্তাপের কৌ) বক্তা শোধনমিব। ১ নিব্যাল, লের্। ২ ভব্য, চাশ্ভা। (রাজনি°) ৩ মুখলোধন। মুখণ্ডদ্ধিকরণ। বক্ত্ৰভাধিন্ (প্ং) বজাং শোধরতীতি ওধ্-দিচ্-দিনি। > লখীর লেব্। ২ মুখলোধক (ভাখুলাদি)। वक्ताधिवान (११) नागननर्कः। वक्कृ वामू (११) वाबारीकम । ব্রক্ত্রাস্ব (পুং)বক্তুত ভাষর:। ভ্রধরমধু। লালা। বক্তশ্ৰি (সী) স্ত্ৰীৰকা। ব্ৰক্ত্ৰ (ত্ৰি) বক্তৰ্য। বেদবাৰ্ক্যাৰ্থোপদেশ ৷ (ঋক্ এ২৬৯) 'वक्नामार वक्रवामार (वनवार्यामाम्' (नावन) বক্সন্ (ক্লী) > মার্গ, মার্গভূত। "বর্জেৰে ভর আগ্রাক্ত বন্ধস্থাৰবুধিঃ" (ঋক্ ১৷১৩২/২) 'বন্ধনি বন্ধনি মার্গভূতে' (সায়ণ) বল্পব্লাক্তসভ্য (অ) ভোড়বর্ডাদিগের বিশ্বন্ত । (শক্ ৬।১১১১) বৈশ্বরাজসভ্যাঃ বন্ধবচনং ভোতাং। ভক্ত রাজান ঈশান। বল্লরান্সানঃ ভোডারঃ ভেবু সত্যা অবিভগাঃ।' (সায়ণ) বৃদ্ধ্য (बि) ১ প্রশংসার্ছ। ২ শ্বভিষোগ্য। "প্ৰ তং বিবন্ধি বন্ধ্যো এৰাং দক্ষতাং মহিমাসতো৷ অভি।" (## >1>++1+) 'ৰক্ষাঃ সৰ্বৈক্য স্বত্যেঃ সজ্যেহৰাধ্যোহসোৰোহতি ভদ্।' (সারণ) वाह्य (जी) वकरफ रेखि निक-र्काणित्ना बन्। शृरवानवानिका॰. ন লোগঃ। বৰা, বৰুতীতি বঙ্গু গভৌ (স্থাৱিভক্ষিব্দীতি। क्षेन् २।১०) ইতি त्रक्। अक्षुतिचाद कूपम्। ১ नदीवकः, নবীর বাঁক। পর্যায়--প্টডেদ, বছ। ২ ভগরপাছকা। "कानाञ्चाति वा वजर फगत्रर कृष्टिनर मर्क्रम् । बरहातभः नकः विषक्षः नीमः छन्त्रभाविकम् ॥" (देवछक्तप्रवामा) চক্রণাণি শিরোরোগাধিকারোক্ত বেভাহনাত্র কৈলে ইহার ন্যবহারোপবোগিতা গিপিবছ করিয়াছেন।

প্র) বঞ্চীতি বক গতে (ক্ষেত্র ক্ষিত্র ক্রিণ্ড । উপ্ ২০০০) ইতি রক্। ভাগাবিদ্ধার ক্ষুত্র ১ নলৈকর। (বেনিনী) ২ মলগঞ্জন। (ক্ষেত্র) ও ক্ষুত্র । ক্ষুত্র ক্রিপ্রাক্তর। ক্রুপ্র প্রকাপি ক্ষেৎপাপড়া (রাজনি') ও বক্ষপতিবিশিষ্ট প্রহ। বে কোন প্রক্রে আপ্রিভই হউক না কেন, সেই গ্রহ হইতে ক্রাধিটিত রাশি নিশোধনের মধ্যবর্তী হালে রবি থাকিবেন। বিক্রপতি দেখ।

ক ক্ষমদেশীর নৃপতিভেদ। (ভারত ২।১৪।১১) (গুং)

 মানুনত ও বক্রীভূত অভিভেদ বিশেব। ৯ রাক্ষসভেব।
(রামারণ ৫।১২।১৩) ১০ জাতিবিশেব। এই অর্থে বহুবচনাত্তে
প্রারোগই হইতে দেখা যার। পুরাণান্তরে 'চক্রা' এইরূপ
পাঠও আছে।

(জি) বছতে ইভি । বকি কৌটলো-রন্। প্ৰোদরাদিয়াৎ ন লোগঃ। যহা বঞ্চি-রক্। ১১ অনুক্, অসরল। চলিত কথার বাঁকা বলে। পর্যার—অরাল, বুজিন, জিলা, উর্নিমৎ, কুঞ্চিত, নত, আবিদ্ধ, কুটিল, ভূম, বেলিভ, বছুর, বেছু, বিনত, উল্ব, অবনত, আনত, ভলুর।

"স বৈ তথা বক্ত এবাভ্যকায়-

দটাবক্ষ: প্রোধিতো বৈ মহর্ষি:।" (ভারত ৩।১৩২।১২)
কবিকরণতার নিরোক্ত কর্মী বক্রচিক্তের নাম উদ্বত
আছে, তদ্যধা—

আলক, ভাল, ত্র, নথচিছ, আছুল, কুঞ্চিকা, ভয়কছণ, বালেল, দাত্র, কুফাল, চক্রক, গুকান্ড, পলালপুন্স, বিহাৎ, কটাক্ষ, শত্রুগর্ম, কণা, প্রবোধ, কর, হজিদক্ত, শূকর-দক্ত, সিংহ্নথাদি। (কবিক্রণভা) ১২ ক্রের। ১৩ পঠ। (মেদিনী)

বক্রফন্ট (গুং) বক্রা: কন্টা: কন্টকা বঞ্চ । ১ বনরবৃন্ধ, কুলগাছ। (রাজনি°)। ২ কুটিলকন্টক।

বক্তক কৃত্যক (পুং) বক্তাং কন্টকা অঞ্চঃ থদিরবৃক্ষ।
বক্তব্যক্তপুত্র (পুং) বক্তং ব্যক্তাং। করবাল। (রাজনি°)
বক্তব্যক্তি (পুং) বক্তং বাজি গদ্ধতীতি গম-ড। সর্প। (বৈভবনি•)
বক্তব্যক্তি (প্রী) বক্তা গভিবভাঃ। ১ বাহার গভি বাকা।
২ সম্পাক্তব্য সভাবি।

থগোলন্থিত গ্রহণৰ এককান ইইতে গমন আরভ করিরা একনির্কিটভাগ বধ্যে পুনরার সেই হালে কিরিরা আইসে। গ্রহগণের এই চিরন্তন প্রনিত্ত গমনের নাম গতি। গমনের কারণ থাকাতেই গ্রহণণ এই গতিস্কিত্য হারা চালিত হইরা থাকে। গ্রহণণ গ্রহণার গতির হারা চালিত হর না। ভাহাবের পরস্পানের আক্রমণে ও অভান্ত শক্তিকভাবে গ্রহটা বক্রসতি উৎপন্ন হইরা থাকে । ক্যোতিককে আটএকার গতির উল্লেখ দেখা বাস—

"হৰ্ষমুক্তা প্ৰহা-শীজান্তথা চাৰ্কে বিভীয়গে। সমাতৃতীৰগে জেরা মন্দাভাত্বতুর্থকে **॥** বক্ৰা: স্থ্যঃ পঞ্চৰঠেছকে ছতিৰকা নগাষ্টগে। নবমে দশমে ভানৌ জায়তে সহজাগতি:। ৰাদশৈকাদশে কৰ্য্যে লভৱে দীঘ্ৰতাং পুনঃ। রবিছিতাংশকব্রিংশাবধেঃ সংখ্যাত্র কর্য়তে। রাহকেতৃ সদাবক্রৌ শীঘ্রগৌ চক্রভাষরৌ ॥" (জ্যোতিস্তব্ধ) ক্যোতিধিকগণ মঙ্গলাদি প্রহের বক্রগতির দিন সংখ্যা নির্দেশ করিয়াছেন। ভাহা হইতে জানা বায় যে, মললের বক্তগতি ৭৬ দিন, বুধের ২১ দিন, বৃহস্পতির ১০০ দিন, গুক্তের >२मिन এবং শनित्र >৮৪ मिन । [दिष्ठ् दिवत्रण श्रह्भास्य प्रष्टेवा ।] বক্রগামিন (এ) ২ অসরল গতি। ২ যাহা সোজ। হইয়া চলিতে পারে না। ৩ জনৎ ব্যক্তি। ৪ শঠ। ৫ প্রবঞ্ক। বক্রগুস্ফ (খং) উষ্ট্র। (বৈছকনি°) বক্রত্রীব (পুং) বক্রা গ্রীবান্ত। উট্র। (ক্রিকা°) বক্রচঞ্ পুर) বক্রা চঞ্গ্র। ওকপক্ষী। চলিত টিয়াপাথী। বক্রণ, বক্রণা (রী, স্ত্রী) বক্রীকরণ। বক্রেন্ট্রেক্ত্র (ত্রী দ্রী) > বক্রের ভাব বা ধর্ম। অনুকৃত্ব। ২ জুরতা, শঠতা। বক্রতাল (জী) বক্রং তালং বক্র। বাছবিশের। পর্যায়—

ক্রেতাল (ক্লী) বক্রং তালং যত্র। বাছবিশেষ। পর্যায়— মুখবাছ। বক্রনাল এইব্লপ পাঠও আছে।

বক্রতালী (বী) বক্রতাল-গৌরাদিছাৎ গ্রীব্। মুখবাছ। (লম্বরমাং) বক্রত্ত (পুং) দেবতাভেদ। (মার্কং পুং ৮০।৬)

বজ্ৰজুপু (পুং) বক্ৰং কুপ্তং যন্ত। ১ তকপকী। ২ গণেশ। (ত্ৰি) বক্ৰোষ্ঠ।

"স পাশহস্তাংস্ত্ৰীন্ দৃষ্ট্;। পুরুষানভিষারণান্। বক্রতুপ্তান্ধরোর আস্থানং নেডুমাগভান্॥"

(ভাগ্ৰত ভাসং৮)'

यक्कमर हु (११) यक्का मरह्रो वश्रः। भूकतः। यक्कमस्त (११) महत्यक नामक त्राक्ताः।

द्रक्षमञ्जी (श्री) इचनची । (देवक्रिन)

दक्कमल (जी) छात्। [वक्क्वन स्वयं।]

वक्रमृष्टि (श्री) > विकार शास्ति । २ क्लाश्मृष्टि । व स्वपृष्टि । वक्तमक्क (श्र) वक्तर कृष्टिनाः सक्त देव दिशान्तः > भिष्म, वग । २ ७ व भन्दी ।

ब्रह्ममानः **(इपे)** ३ प्रशासन्य ः २ वीक नगः।

वक्रमांत्र (बि) > क्ममांगां वा ह्म्यूक 🗁 (ब्रावा॰ व्यंशां)

वक्तमाँ निक (पूर) वज्रा मानिका वज्र १ % (पहेंक्श (विका) (बि) २ कृष्टिम नामावृक्तः।

दक्रश्रीम (बि) रेक्ट शांहर राष्ट्र। रीक्प शांक्युकाः पक्ष। বক্রপুচছ (পং খ্রী) বজং পৃক্ষ বন্ধ। ১ মুদ্র। ২ সলোধ-क्षिननाम्म। राकारनम।

वक्तभू क्रिक (११) क्रून ।

ব্র্কুপুর (क्री) আচীন নগরভেন। (क्थानविश्मा >•१।১৩৬) त्कुल्युक्य (१११) बकानि भूभानाक । ३ वक्यूक । २ भगानवृक्त । ব্দ্ৰুপুতিপ্ৰকা (ত্ৰী) লাক্লিকা। বিবলাস্লিরা।

दक्कदोल्धि (भूर) वरका वानधिः क्मबुक्नान नर वछ। > कूब्र । ২ কুটিলপুছে।

বক্রেভণিত (हो) বক্রং কুটনং ভণিতম্। কুটনবাক্য। পর্যায়—ছেকোক্তি। (ত্রিকা) বজোক্তি, স্লেবোক্তি।

বক্রভাব (পুং) > বক্রতা, বাকাভাব। অসরগভা, কুটলভা। বক্রম (পুং) অবক্রমণমিতি অব-ক্রম-ভাবে বঞ্। অলোপ:। পলায়ন ৷ (শব্বস্থা[®])

ব্রুয় (খং) মূল্য।

বক্রব্রেথা (ত্রী) বাঁকারেখা। বে রেখা দরল নছে, ব্ভাকার অথবা কোণাকার রেখা।

व्यक्तांक्रल (११) वक्तः नाम् नः यष्ट। > क्रूव। (ही) ২ কুটিলপুছে।

रक्रवरुष्ट्_र (१९) वक्र वस्तुषणः।) **भ्**कन्न। (वि) ২ বক্তম্পবিশিষ্ট।

বক্রশল্যা (ত্রী) ৰক্তং শদ্যাদিব পত্রাধিকং বসাং। কুটুদিনীকুপ। ২ কটুতুৰী, ভিৎলাউ। ৩ রক্তনাল নিকা, নানবিবনাল নিয়া। বক্রশঙ্গ (জি) বাহার শৃষ্ণ বাঁকা (মহিবাদি)। প্রবাদ---"মহিবের শিঙ বাঁকা বুরিবার বেলা একা।"

বক্রা (দেশক) ১ বর্করণকর । (পুং) ছাগ । ২ বধরা, योथकात्रवादम् अः ।

ব্যালাপ্র (हो) বক্রং অরং বছ। ক্বাটবক্রবৃক্ষ। চলিত বেতুগাছ।

ব্দ্রাঙ্গ (ফ্রী) ব্রুং আরেং বছা ১ হবো (হেম) ২ সর্প। (রী) ও কুটিল ভাবরবা, বাঁকা আকা। (এটি) এ কুটিল-व्यवप्रविनिष्ठे ।

শুরুত্রবিষয়াপীড়া চক্রবাকোপুরবানী।

(वंशनंडीव्रवज्ञांनी खंडनीमनिष्ट्रगों वं^श (इत्रिवरंग ५ वंशकः)

वक्रांख्य (११) स्क्रांश।

বক্রণতপু (গুঁং) জাতিবিশেষ। (ভারত[ে] তীরণর্জ) বক্রাতি পঠিও দেখা যার।

বৃক্তি ('বি) নিখাৰাৰী, 'অনৃতভাৰী। 'বক ধাড়ুর উত্তর কিন্ প্ৰভাৱ ৰাৱা এই পৰ মিশাৰ হইবাছে 🏳 🦠 🎘

विक्रिक्त (बि.) बक्र-१४४,। ১ বক্রডাপ্রাপ্ত। ৩ বঞ্চগতি অমুখ্ড।

"बावनंत्रनदेमकावनकळांचळिटक कूटकश्चम्बम्।":

(বৃহৎদা খা২)

विक्रिम् (प्रः) बत्का वक्रणाञाचीणि हेनि । देवनिवधवैविक्रक-বাদিখাদক তথাখন্। ১ বৃদ্ধ। (শক্ষর) 🗟 গর্জবিকারজঞ **श्रम्बर्**छन्। वर्षा---

"সাভূৰ্ব্যবারপ্রতিধেন বক্রী ভাষীকলোর্কল্যতরা পিতৃশ্চ।" (ত্রি) ও বক্তভাবিশিষ্ট।

"লখেলো যদি বজী ভাৎ প্রংসঃ কার্বোর্ বক্ততা। नत्धरनरुषः भटक बर्स्का दःश्वनिद्याविमःयुक्तः ॥"

ফ্লিড জ্যোডিৰে লিখিড আছে, বদি বকী কোন গ্ৰহ, ছিডি-রাশি হইতে রাক্সম্বরে গমন করে, তাহা হইলে দেই এহ च्चित्रको वा महावको विश्वा वर्षिक **हरे**वा थाका धारे वका वा अভिवक कुमानि नक धारमधे स्वेता शारक।

विक्रिय (वि) वश-्छारव क्रियत् वर्षा वक्र-हैम । वक्र, कृष्टिन,

विकिश्न (११) वक-देमनिष् । वक्कणा, क्लेषिना, मठणा । বঞ্জী (দেশৰ) বক্রী। ছাণী।

ব্ঞীকুরণ (हो) বাঁকান। কোন সরল বছকে যন্ত্র বা অগ্নিবোগে বাকাইরা কেলা।

বক্রীকৃত (জি) অবক্রী ৰক্রীকৃতঃ অভূততভাবে চিঃ ৷ ১ বক্র ৷ যাহার ৰক্ষতাপ্রাপ্তি বটিরাছে।

বক্ৰীভাব (বি) ১ বঞ্চা। ২ ক্টান্চা। ৩ প্ৰবঞ্চতা। বক্রীভূ (बि) > বক্রতাঞাধ। ২ প্রবঞ্চনার্জ। ৩ অসরণচিত্ত। वृद्धान्तव्य (वि) वाश वक्र मरह पाधीर नवन। "राज्यकारिशन्तरेकः" (त्रष् ४०१००)

यर्खान्युत्र, वीत्रकृष स्वनात वर्षमान व्यथान नवत निकेशी श्रेरण মাইল পশ্চিমে অবস্থিত একটা অভি প্রাচীন তীর্থস্থান। হরিপুর পরগণার জাঁজিপাড়া নামে যে প্রাম আছে, ভাহারই অৰ্দ্ধক্ৰোপ দক্ষিণে "ৰজেৰ্ব্ব" নালার ধান্তে 🗫 প্রাচীন তীর্থ-ভূমের ধংসাবশেষ সাত পড়িয়া আছে। এথানকার প্রাচীন কীর্ডি অধিকাংশ বিশুৱ হইলেও "বজেবর" লোডসভীর বন্ধিশে এখনও ৩০০ শিৰমন্দির ও বন্ধ উষ্ণ প্রেম্বেশ তীর্ষদানীয় নম্মন কন আকর্ষণ ক্ষিয়া থাকে। **গোটান কলেবর ক্ষেত্রের নামান্ত্র্**লালে আছও এই স্থান "ভূম বক্ষের" নামে সর্বাসাধারণের নিকট পরিচিত।

शोक्रासरनम् वरशः वरक्षकः देनवनिस्तवः **अवसे** व्यशनः ७

প্রাচীন জীর্ব। এখানে শাক্ত ও বৈক্তব প্রকারবিভারের সম্প ক্রেবই বে এই হুপ্রাচীন ক্ষেত্র বুর বন্ধবাসীর নিকট অপরি-ক্যান্ত নইরা পড়িরাছে, ভাহাতে সন্দেহ নাই।

ব্ৰদাও উপপ্ৰাণের অন্তর্গত ব্যক্তবর্মাহান্ত্যে ব্যক্তবর
ক্ষেত্রের পূর্ব পরিচর ও মহিলা সবিভার বর্ণিত হইরাছে। বলবালীর এই তীর্বপরিচর সবিশেষ জ্ঞাতব্য মনে করিরাই ব্যক্তবরমাহান্ত্য হইতে এই তীর্বের পরিচর সংক্ষেপে উভ্
ত হইল,—

"গৌড়দেশে মহৎ ক্ষেত্ৰং ব্যৱস্থান্তস্থ। বন্ধানন্তমণেনাপি স্চাডে সর্কবিদিবাং ॥" গৌড়দেশে ব্যৱস্থান মানে এক মহৎ ক্ষেত্ৰ আছে, বাহার নাম শারণমাত্র মানব সর্কা পাপ হইতে সুক্ত হয়।

এই বক্তেখনের উৎপত্তি কিন্নপে হইল,এ সবদে দেখা বার---"পুরা কৃতবুগে বিশ্রা অষ্টাবক্রো মহাতপা:। প্রথমো নাম ভক্তাসীৎ স্কুব্রভো নাম পুলব: ॥ পুরা দেবসভারান্ত নৃত্যমাসীমনোধরদ্। লক্ষীস্বর্ধরে পুলো ত্রৈলোক্যেম্বর্যসংবৃতে॥ ভত্র দেবান্ত গছর্কা মূনর: সিচ্চারণা:। जमानग्राः अतः छहे । कमनाताः चत्रवत्रम् ॥ ভত্রামরেশ্বরো দেবঃ শচীনার্থঃ পুরন্দরঃ। অত্যে দভালোষশার পাভার্যাচমনীরক্ষ্ ।। लामभक महाचानः वृद्धे। ह छशवान् मूनिम्। পুরতো ন শ্বাপেক্তং তপোভদ্ভরান্যুনি:॥ মহাকোপেন চাষ্টাব্দে বক্রত্বমগমন্থনিঃ। অধাৰক্ৰাভিধেরস্বং ততঃ প্রাণ দিলোভ্য: ।। দেবপ্রথা। সমাগতা ক্ষেত্রেছন্মিন ছন্দরং তপঃ। চকার বিপুলং বিপ্রঃ দর্কলোকপ্রভাগনম্।। দশবর্বসহজাণি কেবলাবুলিবক্তথা। পৰ্বাশনন্তভন্দানীৎ ভাৰৎ কালং মহামূনিঃ।। ভাৰৎ কালং তদা বার্ভকামানীক্ষিতেক্রিয়:। **এरम्पर जन्मदाक न मृतिः नारवजान्रवान ॥**... नाजशकः धाराध्यक्ष मूनिः मकनवीतिगय्। ত্রিক থং বিছতে ভত্র পাবকাগার এব চ । मक्तिनाशिर्माईनछाहबनीश्रापाटम्य छ। তদাৎ পাৰাৎ ক্ৰম্মজিকাং ঘৰ্ণপ্ৰবাৰকৰ ৷ অভিনয়ং হি পাডালে অভবাবো ভূ ভিঠতি। **ट्यानवज्ञा क्यार कव विकल्य निवस्करहर ।** राठेकाचार महाराज्य सरवक्षक माहरक म ততশ্চোৰ্জন্মলং ৰাজি বন্ধ চাহিত্ৰক্ষ কুৰা। ত্যালিতা ভড়ভোড়াই ভেরাসা পাবলেন চু ।।

নিপতা খেতগলারামুকজোরং বংশরী ।

কেচিরোগবতীং প্রাহর্গলাক কেচিন্চিরে।
কেচিৎ খেতত নারা তাং খেতগলাং বছরি বৈ ॥
পাতালেশং বটকৈব লাজা চৈব নদীবর্ম।
কেবানিং কজনিলাং লাপরিয়া মহানদীম্ ॥
একাংশেন নিবং রাজা প্রায়াবৈ দক্ষিণাং দিশং।
বক্রেম্বরত পাশ্চাত্যে তাগে পাশপ্রমোচনে ॥
ধন্ত্রিকপ্রমাণা বৈতরণী পাশ্মোচনী।
তামাক্রম্য নরো জক্যা মৃচ্যুতে বমজাররাং ॥
ধন্তঃশতপ্রমাণা বৈ বহেৎ পাশহরা ততঃ।
ততাঃ সন্দর্শনে নাপি অতিরাক্রং কলং লভেং ॥
সর্শাক্রারং বহৎকেক্রং পূণ্যং পাশহরং গুভম্।
তব্র তিটেরহাদেবক্রেলোক্যক্রাণহেতবে॥
তম্দিশ্র তপত্তেপে স চ বক্রো মহাতপাঃ।
তং মৃনিং ক্রপ্রসরোহত্বং স ব্রহং পার্কারীপতিঃ॥"

সভাবুগে মহাতপা অষ্টাবক্ষের প্রথমে নাম ছিল সুব্রত। বৈলোকো ঐশর্যের আম্পদীভূত লন্ধীর স্বর্ধরে দেবসভার মনো-হর নৃত্য হইরাছিল। সেব, গ্রহ্ম, সিম্ব, চারণ প্রভৃতি সকলেই কমলার স্বয়মর দেখিতে উপস্থিত হইরাছিলেন। তথার অমর-পতি শচীনাথ ইক্র লোমশ মুনিকে সর্ব্বপ্রথমে পাছ, অর্ঘ্য ও আচমনীয় অর্পণ করেন। তাহা দেখিয়া ভগবান স্কুব্রত তপো-ভদভরে অভিস্পাত না করিলেও অতিশর ক্রম হইরাছিলেন। এই ক্রোধহেতু তাঁহার অষ্টান্স বক্র হইরা পড়ে, তাহাতেই তাঁহার অষ্টাবক্র নাম হয়; এইরাপে বক্রাক হইয়া সুনিবর এই ক্ষেত্রে আসিরা গ্রুডর তপক্তা আরম্ভ করিলেন। তাঁহার তপক্তার সর্বলোক উত্তপ্ত হইরাছিল। তিনি দশ হাজার বর্ষ কেবল জলমাত্র পান করিয়া, তৎপরে দল হাজার বর্ব কেবল মাত্র গাছের পাভা খাইয়া, ভৎপত্নে উক্ত সংখ্যক বর্ব বারু ভক্ষণ করিয়া জিতেজির মুনিবর কঠোর তপশ্রুয়া করিলেন। বক্ত-শরীরী মুনির নিকট পাব**কাকার ডিন্টা কুও** বিভ্যান হইল, ভাহাই দক্ষিণান্তি, গার্হপভান্তি ও আহবনীরান্তি। সেই অগ্নিত্রয় মতল নামৰ পাভালে মবছিত, সেই স্থাড়ি লগ স্বৰ্গপ্ৰদাৰক, তথার ভোগবতীর ললপ্রবাহিত বাঁহার মতকে সুমের সেই शप्ति नायक वहारावरका बळावाव पार्कना कांत्रराना । ভাহার উদ্ধার্কটা হইডে বল গিরা ডিনটা অধিকুঞ্জের সহিত মিলিভ হইয়াছে ৷ পাৰক নেই জল জালিজন করিয়া উকতোরা ৰেডগলা নৰীব্ৰণে বহিভেছেন। এই নৰীকেই কেহ ভোগবতী, ক্ষেত্ৰ বা থেতের সামানুষ্যারে থেকসভা বলিয়া থাকে। এথানে **लाखारमन, जन्ममुबंहे ७ मनीबरम जाम, लाम अवस्था**मि ७ अव- শিশরে রান এবং নদাতে একাংশে নিবকে স্থান করাইরা দক্ষিণনিকে, বক্রেবরের পশ্চাৎভাগে ভিন বহু নৃত্রে পাপহারিবী বৈতরণীতে সাম ও তাহা হর্দন করিবেও অভিরাজ্যের কল হর । এই পাপহর ক্ষেত্র স্পাকার। ত্রৈলোক্য আপ করিবার ক্ষণ্ণ মহাদেব এখানে অবস্থান করেন। তাহাকে উক্লেশ করিরাই মহাতপা বক্র ভপক্তা করিরাছিলেন। স্বরং পার্ক্রতীপতি সনির প্রতি অতি প্রস্তর হইরাছিলেন। (বক্রেমুনি আরাধনা করিয়াছিলেন বলিরা মহাদেব এখানে বক্রেম্বর নামে খ্যাত হইলেন।) তাঁহার প্রভাবে অহাবক্র মতাই লাভ করেন।

এই ক্ষেত্রের কোথার কোন্ তীর্থ আছে এবং সেই সেই ছলে কিন্নপ প্রাণি করিছে হয়, বক্রেষরের তীর্থপরিক্রমায় এইরূপ বিবৃত হইরাছে,—

'এই বক্রেষর ক্ষেত্রের দক্ষিণ ক্ষারকুণ্ডাদি তীর্থক্রমে বাজা করিতে হর। প্রথমে বজেখরে গিয়া ক্ষোরকর্ম, স্থান ও শিবকে দর্শন ও নমবার করিয়া পঞ্চ তীর্থ বিধানে এইরপে বাজী পরিক্রমা করিবে। প্রথমে ক্ষারকুণ্ডে লান করিয়া কুশোদক ছিটাইরা সম্বন্ধ করিয়া এই মন্ত্র পাঠ করিবে'—

ওঁ সহাক্ষারাজিসংলাতো সহাপাতকবাপন।
কারকৃত হরাত বং বল্লরা মুকৃতং কৃতন্।
পিবজ বৃর্ত্তরে দেব কারোহার হরার চ।
প্রিল্পুর্ত্তরে তুতাং নবঃ পাপান্তকার চ।
ক্রমলক্ষকৃতং পাগং বাপোহর সম প্রভা।
সংমারাশ্বমাক ক্রিয়ার্ক্সারক।

এই ক্ষারকুণ্ডের পূর্বে সিদ্ধনেবিত সর্বাপানাশক ভৈরবকুণ্ড ক্ষাছে। অনন্তর তীর্থবাত্রী ভক্তিপূর্বক এই ভৈরবকুণ্ডে

(>) "অসিন্ করেবরকেরে বনিংশ ক্রমবোগত:।

ফারকুথাবিতীর্বানাং বাঝাং কুর্বাবিচকশং ।

মরো করেবরং কেরং পদা রাজা নতিং তরিং।
কোরং কৃষা হবং দৃই। কুর্বাজীবোগবাসনন্ ।

পঞ্চতীর্বিধানক সূপ্ত মুনিপুলবাং।

পঞ্চতীর্বিধানের কর্তবাং তীর্বুজনন্ ।

হত্তো পানো চ প্রকান্য মনোবাক্কারকর্তিং ।

ক্রেরাপ্রস্কার্ড তিঠেবক্রেপ্রার্ডিং ।

প্রকাল্য মুক্তীপক রাজো কাগরনং চরেং।

বীতৈকাবিভাগে বুলিং ক্রিকার্ডিকারুক্রকানাং ।

অপান্তর্নি সংখ্যাবে ক্রের্ডিকেন্ত্রিকার্ডির ।

প্রবার্থ ক্রির্ভিকারিকার ক্রির্ভিকরে ।

প্রবার্থ ক্রির্ভিকারিকার ক্রির্ভিকার ।

স্বার্থ ক্রের্ডির স্থানিবার্তিরং ৪

স্বার্থা সংক্ররার্ডির স্ত্রেবানেন ক্রেবিজাং । ৬ ৬ ৬

গদন করিবে। ভৈরবভূতের জলপার্থ করিবা এইরাণ মত্র উচ্চারণ করিবে^২---

> অনেকজনসভূতং বাবাবোনির বংকৃতন্। পাতকং বাডু যে সাগং তৈরবাতুনিবেরণাও ঃ

তৈরবকুণ্ডের পূর্বে সর্বাপাদনাদক মহাপুণ্যপ্রার অন্তিকুণ্ড আছে। পরে বাত্রী কুণসংযুক্ত অন্তিকুণ্ডের লল বান্ধী অভিবেক করিয়া ভক্তিপূর্বক এই মন্ত্র পঠে করিবে,"—

ওঁ সহাবৃদিক্ষণোহনি সর্কাণাশবাশালন।
খবাত্তিশর্পনাত্ত্ব বাতৃ সত্র পাদারশেষতঃ ও
উদ্ধান সর্কতৃতানাত্তক্তানি পাষক।
অসক্ষপ সময়তের সর্ক্রেনাকৈক্তীয়ন এ

ক্ষিকুণ্ডের পূর্বে কীবকুণ্ড (কাশর নাম ক্ষম্ভকুণ্ড), সর্বাপাশনাশন ও সর্বারোগনিবারণ ক্ষিকুণ্ড হইন্ডে এই কীবকুণ্ডে আসিরা সর্বাশাশবিনাশার্থ এইরূপ মন্ত্র পাঠ করিরা ছান ক্ষিবে. —

> ওঁ ছাতা ক্ষ্মীখনেৰাক্ষ বাৰ্থ্মীবং ব্যাজিতন্। বালহানি দৰস্বভাং স্ক্রোইকক্ষ্মীবন । ধন চূড়াদশিক্ষং হি আয়ুড ডাং শিকাম্যবং। ক্ষমং নে চূমিডং বাড়ু চুক্তিং কেটি সমায়ুড।

জীবকুণ্ডের দক্ষিণে সর্ব্ধনৌভাগ্যপ্রদ সৌভাগ্য নামক কুণ্ড আছে। সর্ব্ধণাপবিনাশ ও সর্ব্ধনৌভাগ্যলাভের জন্ত বাত্রী। এইরণ মন্ত্র উচ্চারণ করিবা সৌভাগ্যকুণ্ডে বান করিবেণ—

ওঁ সৌভাগ্যাভদি বয়ক সৌভাগ্যসুগৰারতে।
সর্কসৌভাগ্যসংযুক্তা ভবের্: লয় লয়দি র
পার্কতীবেদসংস্কৃত মহেপালসমূত্র।
ভবাহিলানতোহ্মাভং সৌভাগ্যং চাক্ত সর্কদা র + +

- (২) প্রাথা নর্ভোগকেনাপি সর্বাপাপের অমৃচ্যুক্ত র ক্ষারকুওক পূর্বে ছু ভাবে সিধানিবেবিতে। অভি তল্ভেরবং কৃতং সর্বাপাপ্রবাশনার । ভবতা গলেরবার ভক্তা কৃতং ভৈরবনাজৈতন । গুরীছা ভব্দানা কক্তা ব্রানেতর্নীরবেং । ।
- (॰) অগ্নিকৃতং নহাপুনাং নর্মপাণএশাননত্।
 অতি তৈরবকুতক পূর্ববিদ্ বৃদিনস্থনাঃ ঃ
 ভডোঃ নিকৃতপরনা গর্তনাহেন নানবাঃ।
 অভিবেদং প্রকৃতি বল্লেগানেন ভক্তিতঃ ঃ ৬ ৬
- (a) অগ্নিকৃতত পূৰ্বে জু জীবকুতা সুবীবলাঃ ।
 স্কাৰণনৰ চাতি সকলোগনিবালনৰ ৫
 জীবকুতা ডডো গজ্জোপ্ৰোগনেৰ তথা বৈ ।
 স্বানং সুবাং অব্যাহৰ নিয়নেবাৰান্ত্ৰণে ৪ ৫ ৬

অন্তিমূতের নকিবে শাপনোচনী বৈভন্ন, ইবার জলপর্নে পাপসভট হইতে মানৰ মুক্তিপাত করে। এবাচন এইরূপ মহুপাঠ করিয়া বাম করিতে হয়,"—

> र्ज प्रकारक महार्थात एका रेक्ट्रानी मंदी । मा पर वर्षी प्रदारकको धानीन क्रानिक्य । वार वर्षिकाणि क्र्याहर बानीन क्रानिक्य । गामिकाणि मदेसे द्वापि मर्पराग्यर धानाम ॥ महा क्रिनीम दर करक मार धानीन स्टारपति । गूममीहर क्रानिकाणि काक रेक्ट्रमेंट मरोन् ॥

এই ক্ষেত্রে ক্ষারকুণ্ডের বন্ধিবে পাণহরা নামে এক সর্বা-পাণহরা বৃদ্ধিং আছে। বৈভয়নী পার ব্টরা এখানে আসিরা এইরপ বর পাঠ করিবা বান করিতে হর,1—

> ভ ত্রিকুভনিংসতে বেধি ব্রাভিষেকভারিকে। নারা পাণক্রাসি বং নর পাণক্রা কব । লবকোটনক্ত্রেণ বং পাণং সমূপার্জিকর। তরাপরিব। বাং পারি ব্যবস্থারিতে।

তংশবে ত্রমকুণ্ডে আদিবে। জীবকুণ্ডের ইশানে ত্রমকুণ্ড প্রতিষ্ঠিত, এই কুণ্ড মানবের ভোগমোক্ষপ্রায় ও সর্কাণাণ-নালক। ত্রমকুণ্ডে সাম করিয়া এই মন্ত্র উচ্চারণ করিবেণ---

> ভ এজন চড়ুম্বোধনি বং সর্বাদেশক পুজিত: । বেবাবাং জনকঃ জীবান্ সর্বাণাশকাং কুল। করঃ নিবার গাভার সর্বাণাশ্যার চ। এজবিভূষলগার ভূজাং নিতাং নবো নবঃ। স্বদ্ধনা মহানের জবারিভারকারকঃ। বহুবজা ভূজং পাগং ভ্রজাশন নেবনাং।

ত্ৰৰকুণ্ডের পূৰ্ব ভাগে বেডগৰা নামে সৰ্বাণাপনাশৰ একটা কুণ্ড আহে। বেডগৰার আসিয়া বান ও এই মন্ত্ৰটী পাঠ করিতে ব্যা

> ভতঃ সৌভাগালুভেৎশি নয়: স্বানং স্বাচয়েৎ। সর্বাদাশবিদাশার্থ্য সর্বসোভাগালুভয়ে । । ।

- (७) श्रीकर व्यक्त्म्वंदियक्षी नागरमध्यो । वानामना नामा मुख्य नक्ष्रीयमन्त्रीय । • •
- (+) विश्वम् राम्यवादाः गरेया नामा गांगन्ताः महितः । मर्वाणाणस्यां काचि व्यास्त्रप्रस्य प्रित्तः । काकः गांगस्याः सम्बद्धाः वसंगाणस्यक्तोत् । महास्या कार देणक्रमीः सहस्रासम् सागकः ॥ » »
- (>) रण्डमानि निर्मातः पूकः नर्मकानिकः। जवि व्यवसम्बन्धः गुर्मकान् विधाविकः।

ভ বৈভাগে দেবি গলৈ ব্যক্ত চনবলৈককলেকক।
ভূমিটে বং প্রথমেনিচালকুলন কিন্তুলালকলেক।
ভ্রমেনে কর্মেশে ক্ষমেন্দ্রিলায়ে প্রনিষ্কে পর্যনার্গ্রে
করে নির্ভিক্ত ক্ষমেন্দ্রিলায়ে প্রনিষ্কে পর্যনার্গ্রে
করে নির্ভিক্ত ক্ষমেন্দ্রিলায়ে প্রনিষ্কে পর্যনার্গ্রিকরে র প্রেক্তির্বিক্ত বেতাকে সর্ক্রিকালিনি।
ভ্রমেনেট্রকুক্ত পাশং হর বলেনবলতে ।
ভ্রমেনাক্রাম্বতো বাশি ব্যরা ছড়কং কুক্তরু।
ভব সর্বাধ্যে বর বেবি বেভগকে ন্যোন্য ।

খেতগদার উদ্ভৱে পূত্র, ঐপর্যা ও তুপঞ্জে অক্ষয় নামে এক বট আছে। এই বট বৃক্ষ প্রদক্ষিপপূর্বক তাঁহাতে নিবভাকে তক্তি চিত্তে এই মত্রে পূজা করিবে³⁰—

> ওঁ হরিবরত বৃক্তের হরষ্টিধরাক্ষর। করবৃক্তবরণোহনি বর গাগকরং কুর ।

বট বৃক্তের নিকটে মাধক দেব অবস্থিত। তাঁহাকে দর্শন করিলে অনারাসেই মৃক্তি লাভ হয়। '' তাঁহার পূজামন্ত এই---

ওঁ বীৰলাগৰ দেবেল ধৰ্মকামাৰ্থযোজন। সংক্ৰিয় অগন্ধাম দেবদেৰ সম্ভোহন্ত তে ।

মাধবের নিকট বহু দেখতা সমুপন্থিত, গ্রন্থপুশালি ছারা তাঁহাদেরও পূজা করিতে হয়। তৎপরে কালবেশ্বকে পূজা করিবে। খেতগলার নন্ধিণে খেতগলার জন্মের নিকট ব্যরণী ধর্ম অবন্থিত, গ্রন্থপুশালি ছারা তাঁহার পূজা করিলে চতুর্বেদ পাঠের ফল হয়। 'ই মন্ত্র এই——

> ভ কুঞানিবুধরণার ঝানানিরভরণিবে। ধর্মানি কর্মনায় বৃষভার নলো নম:।

পেতৃসভাং ভাতা পাজেক্ষে তুলুলৈর আমুলাভার । ভার সাবং বহা কুর্বাজ্যকার্যানৰ অভিনয় ৪ ক. ৩

- (>) পর বাহে একুবাঁত নিরুদ্ধে বভসাবন: ।

 বধা পজা চ হিবেজাে বানং বলাং নবাবিত: ।

 বটভন নহানকৈ নবান্দন ইউনিজ: ।

 উত্তরে বেডসম্বাল্লা সুনাক্ষ্যক্ষকর: ।

 বিবঁড়া বিভিন্ন কর্ম ক্ষমুখ্য প্রস্কার ।

 কুবা নবান্দনে জন্মা বিশ্বসাধন সংস্কার ।
- (১১) বটবুজনবৈশে জু গালবং বা মাজান্তনাঃ ৷ এগভাতি মুন্দিনভাতেলাং কৃতিত করা কিবা ৪-০ ব
- (२२) नारका व्यक्तिम् इत्योत् तार्वाच्याः । गरम्बा नवस्थानेत्रेत्रः कावस्यक् मूनस्य । व्यक्ति स्वक्रमास्य स्वक्रमान्त्रेतिकः । प्रस्काति अवस्थितकपूर्णस्यम् स्टब्स् । • •

ব্যকে আলিক্স করির প্রে ব্যক্তব্যক্ত করি করিব। পাত অর্থানি বারা অভিবেদ করির ব্যক্তব্যক্ত পূর্বা করিবে। হৃষ
মূর্তির পশ্চিমে কেটী নথো বঠোকার্যকে অবস্থিত। শিক্ষানার মহ—

ভ পার্কটীভাত দেকে তত্ত্বাপ্রার্ক র বল্লের নব্যভাং পরনাক্ষরাদিনে । অধ্যক্ষার্কিভেশান পরনাক্ষরিকান । গোরীশ সর্বারীবাছান্ পাশসংবারকারক। সংসারকারশাতীত ভগাতীত ভগাকর। বিরুপাক নব্যভাং নারভাং বহেবর। সরস্বভাং ত্রিনেরার ত্রিশ্লপাশনে নবং ।

এই অটাবক্র-নির্নিত পরম রমবীর পুণ্য শিবক্ষের বে প্রাণাম করে বা পরণ করে, সর্বাপাপ হইতে ভাহার মুক্তি হব। '' পূর্বে যে সকল কুপ্তের উল্লেখ করা হইল, কিরুপে ঐ সকল কুপ্তের নামোৎপত্তি ঘটিরাছে, ভাহাও বক্রেশ্বরমাহান্যে বিবৃত হইয়াছে। বাহল্য করে ভাহা আর লিখিত হইল না।

বক্তেশ্বরমাহান্ত্যে একটা ঐতিহানিক কথার ইঞ্জিত আছে—
"শেতরালা মহানানীং সভাবকা বিতেলিরঃ।
সভাবকা মহোদারঃ সম্বান্ দানতংপরঃ॥
রাজা কুজবুলে চাসীৎ নিবপানার্চনে রতঃ।
মকলকোটকং মাম পুরং তক্ত প্রতিষ্ঠিতন্ ॥
নিতাং বক্রেশবারাধা ভূত্তকেহসো শেতপার্থিরঃ।
আরাতি নিতাং স রাজা পকবোজনমাত্রকন্।
প্ররেব গৃহং বাতি দিনেনৈকেন ভূপতিঃ।
তমেবাসো বরং প্রালাদ্যক্রেশা ভক্তবংসলঃ।
শক্রন্ জাই ছ্রাধর্ষান্ জ্জবেগা ভব সর্বালা॥
দেবভিজপ্রিরং দবা ভূক্তা, রাজ্যমকন্টকন্।
আর তে বিপুলা কীর্বিরাম্মান্ ধনবান্ ভব।
সর্ব্বের্গ্যমাবৃক্তং ভবনং তেহল সর্বাল।
ইতি বক্রেশবচনং প্রালা ক্রেক্তা, সরাধিপঃ।
ভূতার প্রগতো ভূবা ভক্তিমুক্তান চেত্রসা ॥

জন্ম কানজে ভগৰান্ প্ৰকৃত্ন প্ৰবেশক।
জনাত ত ভগা প্ৰেচং গৃতভক্ত বিভেতিকে ।
বন্ধং বন্ধ ছাজেল যতে বন্দি বৰ্ততে ।
ভাবেৰ তে প্ৰবজ্ঞানি সভাং সভাং বন্ধান্ধং ।
ভাবেৰতে প্ৰবজ্ঞানি সভাং সভাং বন্ধান্ধং ।

বৰি তেমছানো বেব দিনি কুতোগতি হৈ প্ৰছে।
প্ৰথমত তথা মৰং হৌ নরে। কিবলার বৈ।
সমীপে তব বেবেশং শেকেছমিন্ কুকিস্কিকে।
সংভবিবাতি যন্ত্ৰাৰ প্ৰথমং স্থানসভ্য ।
তব সান্তিগানতে ভ বেবি মে কিপুনাক্তম।
ইতি ককা মহাবেশ উবাচ বুপসক্তম।
ক্তিবি ককা

বছকং নৃশতি শ্রেষ্ঠ বজাতে বজানু ।

ন গোকং প্রথবে বজাতর নাজং প্রবজ্ঞতি ।

নূপু বেতমহারাল সংগনীপে জু জাহুবী ।

নানাতীর্থেন সংপ্রাপ্তো জালার মন নিতালঃ ।

ভবিরাতি বিলোকেংশিন্ খ্যাতো নৃশতিসভন ।

ভবিরাতি বিলোকেংশিন্ খ্যাতো নৃশতিসভন ।

ভবিরাতি বিলোকেংশিন্ খ্যাতো নৃশতিসভন ।

ভবিরাতি বিলোকেংশিন্ খ্যাতো নৃশতিসভন ।

ভবিরাতি বিলোকেংশিন্ শ্রাভিতি ন সংগরাঃ ।

ভব বে চরিতং সর্গৈং প্রোভিতি ভূবি ছুর্মভন্ ।

ভব কে জালং পরিভত্তি চ বে নরাঃ ।

ভবিরাজাতে ভবিভত্তি ন বাততি ব্যালরন্ ।

বেভগভাতনে লাভা নংস্কীলে চ বে নরাঃ ।

लिखर गांकवि रक्षार देव अहात्माक्षणमर करवद ॥" (२ अशांत्र) সভারাদী, সভ্যপরামণ, বীর্থাবানু, জিভেক্সিয় ও দয়ানু বেভ नारम अक तांबा हिरणन, जिनि निवशात्रार्कनवक अ वक्तरकार्छ নামক মগরে ভাঁহার রাজধানী এভিটিত ছিল। ভিনি প্রভাহ বোজন পথ জানিয়া বজেকরের পূজা করিয়া করিয়া বরে গিরা আহারাদি করিতেন। ভারাকে ভজবৎস্থ ভগবান্ बट्याचन करे यत वित्राहित्यम त्यु भूमि व्यवसार्य प्रतार्थ छ नर्मरा जनग (ना जानरा जारूबक) रक्षः (मर्विरक्षत्र व्यव বস্ত বান করিলা অকউকে রাজ্যভোগ কর 🕒 জোনার রাজ্যবন गरैक्यक्रानमञ्ज्ञ रहेक, पूति विश्वत क्यान, आयुवान, ६ কীৰ্ডিমান্ হঞ ৷ ব্যৱস্থানের বাল কনিয়া বেভ নরপতি ভক্তি-বুক চিতে প্ৰণত ব্ৰীয়া ক্ষাবানের কৃষ্টিবিধানের মার্ক কর কারত कतिराजन । कानान् नाज्यन्त व्यातं रहेवी कविराजनं, बांटबस्य । ভোষার বাষা ইক্ষা আর্থনা কর। ভোষার বর বিভেম্নি। बाका करिएनम, पनि पूरवात शक्ति करूना हरेंबा पारक, करन क्रोम वर विम । अहे हिनाटकाळ द्यापात विकास भागात

^{(&}gt;+) करता वृषकमानिका मरगरकावनीरम् । क्रम्यक्रिका शासकोवा शृबद्धाः वयाम्यादः । द्योग्यायकः स्वयः वृषकाः कृ गन्दिरः । वकनुन्यविकिर्वकाः वसक्यावारः नियम् । • •

⁽ ३६) चाराम विविधा नवः गरावपरामधाः निष्यः । ग्राह्या मर्वद्वस्यः कृष्यः व्यापः निष्यः विविधः । देशः राज्यसारः वयाः गृहासः नामितिकः, । यः चारासः व्यवस्यः पानिः मर्वामितिकः, ।

প্রাণান্ত হইলেও আমার নাম কেন থাকে এই প্রথম বন্ধ চাই,
এবং তোমার নিকটই কেন আমার অভিন কাল পেব হর, এই
বরও চাই। পিব কহিলেন, মহারাজ! তুনি বন্ধ, কেহেতু তোনার
উদ্দী ইজা হইরাছে; তোমার অভ বর লইতে লোভও হইল
না। মহারাজ বেড পোন, আমার নিকটে বে আহ্বী রহিরাছে,
আমার রানার্থ বাহাতে নানা তীর্থের সমাগম হইরা থাকে,
আজ হইতে তাহা তোমার নামার্থসারে বেডগলা নাবে খাত
হবৈ ও তুনিও অভকালে আমার পদ লাভ করিবে সন্দেহ
নাই। তোনার চরিত্র বে তানিবে ও তোমার ভোত্র বে পাঠ
করিবে, তাহার অর্গাভ হইবে, তাহাকে আর বমালরে বাইডে
হইবে না। আমার নিকট এই খেডগলানলে খান করিবা বে
পিও লান করিবে, তাহার গরা প্রাছের সমান কল হইবে।'

উভ্ত প্রাচীন কাহিনী বইতে মনে হইবে বে, নামা উক্ষ-প্রপ্রবেশগোভিত এই নিভূত হান বহু ধবি তপৰীর প্রির নিকে-তন বলিরা গণ্য হইলেও বেত নামে কোন হিন্দু রাজার যারেই এই পূণ্যকেত্রের প্রতিষ্ঠাও তীও বলিরা পরিচিত হইরাহে। এখনও নানাছাম হইতে বহু যাঞ্জী এই তীর্থ সক্ষর্ণনে গমন করিরা থাকে। এই হান অভি সাহ্যকর, এখানকার কুওরুলী উক্ষ প্রপ্রবেশসমূহের জন প্রকৃতিই নানা রোগনাশক। বা্রোক্তি (খ্রী) বজা কুটিলা উজি:। ১ কাক্জি। হার্থ-উজি:

"অথ বৃত্তে ব্ৰোৎসৰ্গে গাতা বক্ৰোক্তিক্তিঃ পলৈঃ। ব্ৰাহ্মণানাহ বংকিঞ্চিৎ মন্ত্ৰোংস্টেড নিৰ্ম্মনে ॥ তৎকিঞ্চিদক্তো ন নৱের বিভাজ্যং বধাক্রমন্। ন বাবং ন চ তৎকীরং পাতবাং ক্লেনিচিৎ কচিৎ ॥" (কানধেত্বক্রতক্রপুত ব্রহ্মপুরাণ)

২ কুটিলোজি। বাকা কথা।
"বাৰী বাৰেদ্ৰণং বিনৈৰ বিশ্বৰাং ধূটা প্ৰবিষ্টা সভাষ্
সমন্নন্নতি আলাং পটুবটুক্ৰ ভলবক্ৰোভিভিঃ।
ব্ৰীডঃ সন্নুপহাসবেডি গণকো গোলানভিক্ৰতথা
ক্যোডিৰ্কিংসন্দি প্ৰসন্ভলণকঃ প্ৰশ্বপ্ৰপাক্তিভিঃ ॥"

(নিভাজশিরোমণি-সোলাখ্যার)
বক্রা অধীজনগ্রহণের কুটলা উক্তিঃ। শকালভার বিশেব।
কাব্যানিতে গ্রেকাকাগ্রহরোগ বা ব্যক্তোকিক বক্রোক্তি বলা
বার। সাহিত্যকর্শনের ১০ন পরিক্রেকে ইহার বিবর এইরূপ
কালভ আহে—

"অন্তত্তাভাৰ্থকৰ ৰাজ্যমন্তৰা বোৰনেক বৰি।
অন্তঃলেবেশ কাৰা বা সা বনেকাজিকজৈ বিবা ৪"
(সাহিত্যবৰ্ণৰ ১০া৩৪১ প°)

मार्थात्रमण्डः सरकाकिएक इस्त्रीकर्व क्रमान स्विता बारम ।

উহার একটা শ্লেবার্থক ও অগরটা কাছু অর্থবাচক। নিয়োক উদাহরণে তাহা কাইছেত হইরাছে।—

"কে বৃহং বৃদ এব সভাতি বৃহং প্রাম্নো বিশেবাপ্রবঃ
কিং ক্রতে বিহুগঃ স বা কণিপতির্বান্তি স্থাপ্তা হরিঃ।
বালা বৃহদ্রো বিভূষরসিকঃ কীদৃশ্ব সরো বর্ততে
ক্রোমান্ত্র বিবেকশৃভ্যুমসাঃ পৃংতেব বোবিদ্ প্রমঃ ॥"

'কে বৃরং' ভোমরা কে? এই প্রশ্নে উদ্ভরদাতা বলিল, আমরা জলে মহি, সম্রতি দ্বনেই জাছি। এখানে 'কে' টাকে কিম্পালের প্রথমা বিভক্তির বছবচন-নিশার গ্রহণ না করিয়া জলবাচক কং শব্দের সংগ্রমী বিভক্তির একবচন-নিশার 'কে' পদ গ্রহণ করিয়া উদ্ধর সাধিত হওয়ার বজ্যোক্তি ঘটিয়াছে। প্রভাতর—'প্রয়োবিশেষাপ্রয়ং' পদে জ্বিজ্ঞান্ত জ্ঞাপন করা হইয়াছে। এ হলে 'বি' পক্ষী ও 'শেব' জনন্ত (নাগ) এই বিশেব অর্থ গ্রহণ করিয়াই উদ্ভর হইয়াছিল; বিশেব শব্দের সাধারণ অর্থ গৃহীত হয় নাই।—
তবে কি ভোমরা বলিতেছ, জামরা পক্ষী, জথবা সর্প বেধানে হয়ি শন্ধন করিয়া আছেন ? এধানে বিশেব শব্দের সাধারণ অর্থ পরিভাক্ত এবং বি-শব্দে পক্ষী ও শেব শব্দে সর্প অর্থ গৃহীত হওয়ার বজ্যোক্তি হইয়াছে।'

ষিতীয়ার্কে—আহা ! তবে কি তোমরা বামা, অর্থাৎ প্রতিকৃল আর্থ গ্রহণ করিরা থাক, (বামা শব্দের একটা অর্থ প্রতিকৃলবাদী)। কারণ আমরা এক অর্থে প্রশ্ন করিতেছি, তোমরা অন্ত অর্থ গ্রহণ করিতেছ ! উত্তরহাদী বামাশব্দের প্রতিকৃলবাদী অর্থ প্রহণ না করিয়া বামাশব্দে সাধারণতঃ স্ত্রী অর্থ প্রহণ করিয়া বলিল,—ওহে প্রতারণাপট্ট, তোমার ক্ষিত্রপ কামনা হইতেছে, বে কামনোদিত হওরার বিবেকশৃত্ত হইরা প্রকরেতে তোমার নারীভ্রান্তি উপস্থিত ! এ স্থানে বামাশব্দেরও চুইটি অর্থ ১ম স্ত্রী—২র প্রতিকৃলবাদী। প্রশ্নকর্মা প্রতিকৃলবাদী অর্থে প্রয়েগ করিয়াতেন, কিন্তু উত্তরহাতা স্ত্রী অর্থ প্রহণ করিয়া উত্তর নিতেছেন, ইহাই বজ্ঞোভিত্র প্রক্রী অর্থ গ্রহণ করিয়া উত্তর নিতেছেন, ইহাই বজ্রোভিত্র। অক্সপক্ষে হা অক্স।

"কালে কোকিগৰাচালে সহকার মলোহরে। কুতাগদঃ পরিত্যাগাৎ ভক্তাদেতের ন দ্বতে ৪"

কোনিল কল্পৰ পরিপূর্ণ আন্তর্নুক্ল বিকলিত মনোহয় বসত কালে কডাপরাধ কাজকে ভাগে করিবা আমিনীর চিত ব্যথিত হইতেছে না, বস্তুতঃ ব্যথিত হইতেছে। এখানে নিবেধার্থে মঞ্জু শব্দ প্রবৃক্ত হইরাছে, কিত্ত অপরপক্ষে কাজা অর্থাৎ কানি-বিশেষ বারা বিধি অর্থও সংঘটিত ইইতেছে।

ব্যক্তোলক (পুং) একটা লঙ্করার । (ক্থাবরিৎসা প্রাণ১৮) ২ জ্ঞানীর একটা সরর। (ক্থাস্তিৎসা ১০০০) ताक। किंका (बी) नाकार्कारकाका देखि, अन्। वेनदनस्मन হি-ও**টত বক্ৰতা জাৰতে অভোহতাতবাখন্। বল্প কল ওটো** বজাঃ। ততঃ বার্ধে কন্, টালি অভ ইম্বন্। > অনুটারহাত, ঈবদাক্ত। পর্যার---শ্বিত। (ভুর্নাদাস) বরু (এ) ডির্বাগ্পামী। ইডডড: পরিত্রমণশীল । নভাবির ভার বক্রগতিবিশিষ্ট। "প্রাগ্যুবো নন্ধৰোহন ব**দা ধ্বলা" (বন্** ৪)১৯।৭) 'रका न रनना हेर भरता कृषांनाः भरतिका' (नात्रण) বক্ন (ত্রি) খণবকা। ভোতা। "বেপী বন্ধরী যত নৃ গী:।" (পঞ্ ভাংহা¢) 'বেশী বেপো याशांक्रिक्क १९ कर्च । ७६७ वस्त्री खगानाः वस्त्री'; (मात्र) तकती (जी) खनवङ्गी। (अक् अञ्बंध) বক্ষস (পুং) বৈভকোক মছবিশেষ। প্রাচীন গ্রন্থাবিতে ইহার বৰুস ও বৰুস পাঠ পাওয়া বায়। [বৰুস দেখ।] বক্ত্, রোষ, কোপ, সংখাত। ভা° পর• রোবে অক° সংহতৌ সক° সেটু। বক্ষতি। **হৰক, বৰক্ষিণ, বৰক্ষ্য, বৰক্ষে**, वविकटत । বক্ষঃ [স্] (क्री) উচ্যতেছনেনেভি। বচ্ (পচিবচিভ্যাং ক্ট্চ। উণ্৪।২১৯) ইতি অন্ত্রট্র বক্তেরত্ন ইতি রমানাথঃ ধাতৃপ্রদীপক। ১ অঙ্গবিশেষ। কছের অধোভাগে হ্বদরোপরিস্থ বে দেহাংশভাগ তাহা বব্দ বলিরা পরিচিত। ইহাকে চলিভ কথার বৃক বলে। পর্যার ক্রোড়, ভূজাকর, উরঃ, বংস, অহ্ব, উৎসঙ্গ, বক্ষণ, গণদীঠক ও বক্ষহন। গরুতৃপুরাণে বক্ষের শুভাশুভ লক্ষণ লিখিত আছে। ममयाकाविनिष्टे अञ्चवान् नीनवरकावाकि वीत्र ७ नकिनामी अवर विवयक्क निःश्व ७ मञ्जूषात्रा निधनव्याश रुटेर्सन । "অনুবান সমবক্ষা: তাৎ পীনৈর্মক্ষোগভির্মিকিত:। वत्काछिर्क्सिक्टेमिनिः यः नत्त्रन नियमख्या ॥": (গরুড়গুরাণ 👐 ম:) (शूर) वरुकीकि वरु-∰ावरिशाया-क्ष्यान्त्रकानि । 💆 प् ৪।২২০) ইতি অস্ত্র, স্কট্চ। অনজ্যন্। (উচ্ছলদত্ত) বক্ষণ (ত্রি) শক্তিশালী, রলমারী। (क्री) বক্ষতানেনেডি। वक्रद्रावगरहरूजाः नाष्ट्र। > वक्षः (वक्षकः) २ वाहकः। "क्रियान यक्नामि वरेकः " (वक् भर०।)। 'ৰক্ষণানি বাহকানি কোত্ৰাণি ক্ৰিয়াত্ৰ কৰবায়।' 🧸 (সায়ণ) ७ व्यक्ति । (अक् दा>) है विदार गेर्ग् । स्वयना ३ राकृत्। (ब्री) > मरी। (बस् sistion) स्मरीमर्क। (बस्)नारका>>) व क्रिका "जा वः क्षणार जनगर वचनासा" (जनके अधराप्तः) नक्षमि । वि) गविनाचा । "रेद्धा वाक्य क्वनिः" (वर् bistis) | व्यक्तप्रांगच । त्री) क्रिमारक क्ष्मि क्रि

क्कानी (जी) तमन जिलार दीन । अनिक्यांजी । र भागत वर्षिमी । "সরস্বতী সরযুঃ সিদ্ধার্থিভিন হো মহীরবসা বস্ত বস্পরীঃ।" (44 2+40619) विवादनेन्द्र। (जीः) चति मरश क्लिकः। (वक् शास्त्रावः) 'करको क्रिकः' (मापन) **बुक्क (११) > स्नाराम**। २ दृषि अरुण । "হাইছেৰ বলবো ল্যোডিরেবান্।") बाक् शक्का) वास्क । यस्कीक अजीतः "कन्त्रम तृष्ठा वक्त्यत्माण"(बक्छ।<।>) রুহতা প্রভূতভদ কল্পণেন বোচবোন স্বশ্নীরেগোপ। বহা वक्टबरनाक्षणकर्गम कमाविवाहरकम (खाद्रज्य' (गात्र्य) बक्काम् (प्राप्ती) ० सरकारतिष तरकार्य। २ दृष् । [यक्का तथ ।] वक्कः मः समिनी (जी) वक्कि मध्यम् इ है मध्यम् । ব্রী, পদ্মী। **श्रक्षक्रम् (ही) ३ यकः, २ सम्ब**ा বক্ষতীয়াত (পুং) বন্দসঃ ভটঃ বন্দভটঃ ভেৰু আঘাতঃ বন্দঃ ৷ স্থলাপরি সুষ্ট্যাবাত। বশ্বী (খ্রী) স্থাপিধা। "ভা অঞ্চ সভূষৰো ন ডিগ্নাঃ সুসংশিত। বজ্যো ৰজগেছাঃ।" (बक् ८।>>।८) 'व्यक्तिक्खीफि यत्का। जानाः।' (नात्रण) विक्रु, चनामध्यतिक रेक्ट्र (Oxus) नवी। वरक्ट्र वा विक्रु বক্ষোত্রীব (পুং) বিশামিনের প্রক্রেক। (ভারত ১০ পর্বা) ব্যক্তাক্স (क्री) বন্ধনি কারতে ইতি কন-ড। ১ গুন। "ৰধ্যক্ত প্ৰবিদানমেতি জ্বনং বক্ষোজয়োৰ্যসভাং ৰুবং বাজাৰরঞ্চ লোমগতিকা নেঞার্চ্ছবং বাবজি। क्नार्तः निविका कृष्टमबरनात्राकाणिविकः क्रनाः व्यक्तानीय शक्तवेशः विश्वरक स्मृत्रेशः श्रक्तवः ॥" (নাহিভার্লণ ৩ পরি) याकामकाम् (प्र) क्छाकानीम व्यक्तिमरकाः। ब्राप्काद्भष्ट (शूर) वक्षति हाश्यीषि क्षर-कः । सम । (विका") "বা শাবরতকণি **শীকারকো**কহরোর্তরেণ জ্ঞাগর্নন্ । নিশোকৈরণি শোক্ত বহোতু ক্রমীতিকবুকৈঃ 🕊 📑 া (আর্ব্যাস্থপতী ৪৯৬) यक्ताञ्चान (जि) खर्वेकर क्यमीत विका । वह बाटकाः क्याम-অভাবেদ বিশার: । বধা, শার বিশাসাগবিদ্যার বিশারা व्याधारम् सम्बोधम् । (विकासिकम्) २ वास, वक्काः । अध्यक्षित्वस्य । १००० । ४ ४ ४

বখ, কণি, গতৌ। জাৰি" পক্তীৰ সৰু সেটা। লট্ বৰতি।
নিট্—বৰাণ, বৰণজ্ব বিজ্ঞা। সূত্ অৰবীৎ।
বৰ্জা, ই কণি। জা পৰা সৰু সেটা; ইবিং। ই, বভাতে।
কণি গতৌ। (জুৰ্গানাস)
নেগা ই, বজা। জা পৰা অক' সেটা। ই বলাতে।

বগ, ই, ধনে। জা পর জক' সেট। ই কাতে। বধ তিয়ার থিলিকী, ইতিহাসপ্রসিদ্ধ বলবিকেতা মুস্তুমান-সেনাপতি। [মহস্তুল-ই বধ তিরার দেখ।]

বগড়ী, (ৰক্ষীণ শব্দের অপত্রংশ)—প্রাচীন গৌড়রাজ্য ৎ ভাগে বিকক, তল্পধ্যে বগড়ী একটা বিভাগ। বরাহমিহিরের বৃহৎ সংশ্বিতার যে উপবলের উল্লেখ আছে, তাহাই বগড়ী বলিয়া মনে হয়। দিখিকরপ্রকাশে নিধিক আছে—

"শুণীরগাঃ পূর্বভাগে বিবোজনতঃ পরে।
পঞ্চবোজনপরিদিতো জ্পবলো হি ভূমিপ ॥
উপবলে যশোরাদিদেশাঃ কাননসংয্তাঃ।
জ্ঞাতব্যা নূপশার্দ্ ল বহুলাস্থ নদীযু চ ॥"
অর্থাৎ ভাগীরথীর পূর্বভাগে পঞ্চ বোজন বিস্তৃত উপবল।
মশোরাদি দেশ, কানন ও বহু নদী এই উপবলের অস্কর্গত।

সেনবংশের অধিকারকালে ভাগীরধার পূর্ব্ব, পদ্মার পশ্চিম ও সাগরের উত্তরবন্ধী ববীপাংশ বগড়ী নামে থ্যাত ছিল। এখন ভাশীরধার পশ্চিম পার রাড় ও পূর্ব্ব পার বগড়ী নামে থ্যাত। রাড় ও বগড়ী বিভাগের বিশেষত্ব এই বে রাচ় ভূতাগ শৈল ও কল্পরমার, অধিকাংশ হল ভালা ও উচ্চ সমতল, কিন্তু বগড়ী ভূভাগ ইহার সম্পূর্ণ বিশরীত। ইহার সমন্ত জমিই নাবাল। বঞ্জায় সহজে ভূবিরা থার এবং সর্বাংশে উর্ব্বরা।

[রাচ় ও বক্ষীপ দেখ]

বগর, চন্দারণ্যের অন্তর্গত একটা নধী। (ভবিষ্য ব্রন্থপ ৪২।১৪১)
বগলা, বগলামূখী (রী) দশ মহাবিভার অন্তর্গত দেবীবিশেষ।
কিরপে এই দশবিধ শক্তিমূর্ত্তি আবিস্কৃতি হইরাহিলেন, তাহা
দশমহাবিভা শব্দে বিহৃত হইরাছে। পুরাণাদি ব্যতীত তন্ত্রশান্তেও
বগলাদি দেবীর উৎপত্তি বিবরণ দৃষ্ট হর। [দশ মহাবিভা দেব]

এই বহাদেরীর পূলামত্র ও পূলামাছাত্রা তরাদিতে কীর্তিত রহিরাছে। অনুসারে দিখিত আছে, ইহার মন্ত্র সাধকবর্গের হিতকর ও পঞ্জেলের ভত্তমকারী ক্রমান্ত্রমণ। এই মত্রে সকলকে অভিত করিতে পারা বার। এমন কি, বাহুরও গতিরোধ করীর পাকে।

শ্ৰদ্ধান্তং কং প্ৰৰ ক্যামি সভ্যপ্ৰজ্ঞান্তৰকাৰণন্। সাধকানাং হিভাৰীৰ ভতনাৰ চ বৈধিপান্। বতাঃ প্ৰৱন্ধান্তেশ প্ৰলোহণি হিলামতে। বেশ্বং হিৱনান্ত্ৰি ভতত বগ্লামূলিক ভবতে সৰ্বহুটালাং ভভোবাচং মুখং পদম্।
ভভবেতি ততো জিবাং কীপরে ত পদম্ম ।
বৃদ্ধি নাশার পশ্চান্ত্ ছিরমায়াং সমালিখেং।
লিখেচ পুনরোজারং বাহেতি পদমন্তত: ॥
বট্তিংশাকরী বিতা সর্বাসম্পংকরী মতা ॥
ছিরমায়াং হলীং। তথাচ।
বিহুলীনেক্রমায়ার্ক্ ছিরপারা প্রাকীতিতা ॥

শওঁ হলীং বগলাম্থি সর্বহণ্টানাং বাচং মুখং গুরুর: জিছবাং কীলর কীলর বৃদ্ধিং নাশর হলীঁ ওঁ স্বাহা। এই বট্ ত্রিংশদক্ষর মন্ত্র সাধককে সর্বসম্পৎ দান করে। স্থিরমারা শব্দে হলীঁ বৃত্তিতে কটবে।

তন্ত্রাস্তরে চতুত্রিংশদক্ষর অপর একটা মন্ত্রের এইরূপ বিবরণ লিশিত আছে বে,—

"বলিতীনেক্সয়ঙ্মায়া বগলামূথি সক্ষয়ক।

ছষ্টালাং বাচমিত্যুক্ত্বা মুখং গুৰুত্ব কাৰ্ডৱেও ॥
জীহ্বাং কালয় বুদ্ধিং তৎ বিনাশয় পদং বদেও।
পুনৰবাজং ততন্তারং বলিজায়াবাধিউবেও।
ভারাদিকা চত্তিংশদক্ষরা বগলামূথী॥

"ওঁ হলী বগলামুখি সর্বজ্জীনাং বাচং মুখং শুস্তর জিলা কীলয় বৃদ্ধিং বিনাশর হলী ওঁ বাহা।"

উক্ত মন্ত্ৰদের পূজাপ্রণালী এইরপ—প্রথমে সামান্ত পূলা-পছতির নিরমান্ত্রসারে প্রাতঃকৃত্যাদি প্রাণারামান্ত কার্য সমাণন করিরা অ্যাদি স্থাস করিবে। ব্রা—মন্তকে নারদ্রমন্ত্র ননঃ। মুবে তৃষ্টুপ্ ছন্দনে নমঃ। কদরে বগলামুবৈয় দেবতারৈ নমঃ। ভক্তে ক্লী বীজার নমঃ। পাদম্বরে প্রাহা শক্তরে নমঃ। এই মন্ত্রের শ্বি নারদ, তৃষ্টুপ ছন্দাং, দেবতা বগলামুবী, বীজ ক্লী ও শক্তি বাহা।

অতঃপর অক্সান, কর্জান করিতে হইকে। যথা—ওঁ হলী অকুরান্ডাং নম:। বগলামুখি তার্জনীত্যাং আহা। সর্বান্তরানাং মধ্যমান্ত্যাং ববট্। বাচং মুখং তত্তর অনামিকান্ডাং হুঁ। কিহবা কীলর কনিরান্ডাং বৌৰট্। বৃদ্ধি নাশর হলী ওঁ বাহা করতল পৃষ্ঠান্ডাং কট্। এবং হুলবাহিব্।

থিবাতম মতে উক মান্ত্রে গুই, পাঁচ, নাত ও মাইরর্ণ বধাক্রমে করাক্লিতে ভাগ করিরা অবশিষ্টবর্ণ সকল করতলে ভাগ করিবে। এই নির্মে করভাগ সমাপন করিরা উপরোক্ত প্রণাগীতে ক্ষরাধি বঢ়ক ভাগ করিতে হইবে। তৎপরে মূলমন্ত্র উচ্চারক- पूर्वक 'बाश्व हर्गातिना राजापूरी जिलाहकाः भूमश्रामि नयः' रेडापि यदा मृगार्थातानि हात्न छात कर्ता चारक्षकः।

"वृत्रवारमयु मधारि स्ववार्टनक सन्हरेवः । कत्रवार्थास छमरत्राः कत्राक्काममाध्यत्रः ॥"

ততো ব্লাতে আত্মতব্যাদিনী প্রবিগলাম্থা প্রীপাছকাং পূজরামি নমঃ ইতি মূলাধারে। মূলাতে বিভাতবব্যাদিনী বগলা-মূলী শ্রীপাছকাং পূজরামি ইতি নিরসি। বগলাম্থা শ্রীপাছকাং পূজরামি ইতি সর্বালে।"

আনত্তর মত্ত্রবর্ণ জ্ঞান করিতে হর। সাধক বথাক্রমে মত্ত্রবর্ণ তিলি বীর পরীরের অল প্রত্যালে বিজ্ঞ করিবেন; আর্থাৎ মত্তরে ওঁ লমঃ, কপালে জ্ঞাঁং লমঃ, দক্ষিণ লেত্রে বং লমঃ, বামনেত্রে গং লমঃ, দক্ষিণ করে বিং লমঃ, বামগতে সং লমঃ, বাম কর্ণে মং লমঃ, দক্ষিণ করে বিং লমঃ, বামগতে সং লমঃ, দক্ষিণ লাগিকায় ব্যংলমঃ, বামলাদিকার হং লমঃ। উত্তরত্ত্রে স্তাং লমঃ, অধরওঠে লাং লমঃ, মূরে বাং লমঃ, দক্ষিণহজ্ঞের হং লমঃ, দক্ষিণমাণিবত্তে বং লমঃ, দক্ষিণহজ্ঞাসূলিমূলে তং লমঃ, গলে জং লমঃ, দক্ষিণজনে রং লমঃ, বামত্তনে জিং লমঃ, হলয়ে হলং লমঃ, নাভিত্তে কাং লমঃ, বামকুপরে লং লমঃ বামনণিবত্তে লং লমঃ, বামহত্তাসূলিমূলে বুংলমঃ, দক্ষিণ উক্তে ছিং লমঃ, দক্ষিণ জাহতে লাং লমঃ, দক্ষিণজন্ত্রে শং লমঃ, দক্ষিণ পদাস্থলিমূলে বং লমঃ, বামানতে ওঁ লমঃ, বাম-জালুতে জ্ঞাং লমঃ, বাম-গুল্ফে বাং লমঃ এবং বাম পরাক্সিন্তে হাং লমঃ।

শরীরে মন্ত্রণ ক্লাস সমাপ্ত হইলে নিম্নোক্ত ধ্যান পাঠ করিতে হয়। ধ্যান বধা----

"মধ্যে স্থাজিমণিমঙ্গরন্থবেদী
সিংহাসনোপরিগতাং পরিপীতবর্ণাম্।
শীতাখরাভরণমালবিভূবিতালীং
দেবীং স্মরামি হৃতমুন্দরবৈরিজিহ্বাম্।
জিহ্বাগ্রমাদার করেণ দেবীং
বামেন শত্রুন্ পরিপীড়রঙীম্।
গলাভিখাতেন চ দক্ষিণেন
নীতাখরাল্যাং ছিভূছাং নমামি॥"

এই প্রকারে খান এবং মনে মনে বেবীর পূজা করিরা বাছ
পূজা কারছ করিবে। প্রথমেই কর্ম হাপন কাবন্তক। অঠাকুল পরিমিত চতুকোধ মন্তল করিরা ভাষার ঈশানাদি
কোপচতুক্তরে ও পূর্কাদি দিকে সক্তচন্দনচর্চিত পূলা ও তপুল
খারা "মেঁ। সদশতরে নমা" এই মত্তে পূজা করিরা সক্ষমদ বা মর
খারা কর্মাণাত্ত পূল্য করিবে। তৎপরে তিনবার প্রবাম মূল-

নত্রে পূজা করিরা পূর্ব্ধাক্ত প্রকারে বড়সভাস করিবে। তাইরে পর ধেন্ত্র্যুদ্রা ও বোনিযুদ্ধা প্রধর্শনপূর্বক অর্থাপাত্রন্থ জনবারা বীয় পরীয় ও পূজার উপকরণ সামগ্রীতে প্রোক্ষণ করিবে।

বগলামুখী দেবীর পূজার বন্ধ অভিত করিবার নিরস্ক— "ত্যাশ্রং বড়লং বৃত্তমন্তদলপুলজুপুরাবিতন্।"

প্রথমে ত্রিকোণ ও তাহার বহির্জাণে বটুকোণ অভিড ষ্ঠিরা বৃত্ত ও জটদল পক্ল জড়িত ক্রিডে চ্ইবে। তাহার ৰহিৰ্দেশে পুনরার ভূপুর অভিত করিয়া বন্ধ প্রভাত করিয়া মূলমঞ উচ্চারণপূর্বক "ও" আঁধারণক্তিকমলাসনাম নম: এবং শক্তিপক্স-সনার নমং" এই মত্রে পূজা করিবে। পরে পুনর্কার ধ্যান ক্রিরা পীঠে দেবীর আবাহনপূর্বক 'ওঁ ছবরার নমঃ' ইজ্যাদি পূর্ব্বং প্রক্রিয়ার বড়ক্সান করিছে হর! বড়ক্সান সমাপ্ত হইলে পুরোভাগে বড়লমত্রে মণ্ডলের পূজা এবং মূলমত্তে অভিমন্ত্ৰিত করিয়া ধেতুমুলা ও বোনিমূলা প্ৰদর্শনপূর্বাক "ওঁ আয়তবায় স্বাহা, বিভাববাৰ স্বাহা, শিবতবাৰ স্বাহা" মঞ किनवात किनविभू जन मूर्य निर्मा कतिया अनुष्ठे ७ कर्मनी-रपारंग मृजारत 'ताकावत्रगाः वर्गगाम्थीः जनवामि नमः' अहे मर्ड তর্পণ করিতে হইবে। তৎপরে দাধক বধাসম্ভব উপচার স্বারা দেবীর পূজা করিয়া আবিরণপূঞা আরপ্ত করিবেন ৷ তথন যপ্ত বট্কোণের পূর্ব্বদিকে ও স্কুলগালৈ নমঃ, অন্নিকোণে ও ভগ্নপিলাৈ নম:, ঈশানে ও ভগাবহারৈ নম:, পশ্চিমে ও ভগদিহারৈ নম:, নৈখতে ওঁ ভগপাতিলৈ নম:, বাযুকোণে ও ভগমালিকৈ নম:, ইত্যাদি মত্তে পূজা করিয়া অইবলপত্নে আজী প্রান্থতি **অষ্ট শক্তির পূঞা করিবে। পরে প্রত্যেক প**রাগ্রে 'ওঁ জ্যাহে ন্য:, ওঁ বিজয়ারৈ ন্য: ওঁ অবিতারৈ ন্য:, ওঁ অপ্রা-जिलारेव नमः ଓ छडिरेना नमः ७ कक्किरेश नमः, ६ মোহিলো নম: ও আক্ষিণ্যৈ নম:, মত্রে বথোক্ত ক্রমে পুল করিবে। অনস্তর হারদেশে ওঁ ভৈরবাহ নমঃ এবং ভাহার বৃতি-क्षारा रेक्सानि ननविक् भाग ७ रज्ञानि जाउत्तत्र भूका कविएछ १३८० । তৎপরে ধূপাদি দান ও যথাশক্তি মূলমত্র ঋপ করিয়া দেবাকে ত্রিপুলমুদ্রা প্রদর্শন করাইবে এবং তিনবার পুশার্মাণ দিয়া ষেবীকে ধেরমুলা ও যোনিমূলা দেখাইবে। তাহার পর टेडब्रबरक विन ध्यमानशृक्षक विमञ्जनामि काँगा ममाभम कविरव । ভদনন্তর ত্রন্সচর্য্যাবলমী সংযতচিত্ত ও ধ্যানেশ্বর সাধক পূর্ব্যাভিমুখে অব্যত্তিত হইবা পীতৰত্ত পরিধানপূর্বক হরিতাগ্রছিনির্দ্বিত মালা ন্ট্রা একলক জপে বগলামূৰী দেবীর প্রক্তরণ এবং প্রতিদিন প্রিরসূ কুত্র অথবা অঞ্চ কোন পীডবর্ণের পুল দইরা চোন कदिर्यन ।

পূৰ্বে বগণাস্থী দেখীর বে বিতীয় মঞ্জের বিষয় উলিখিত

হট্যাছে, আহার জাসাদি পুরা প্রণালী সকলই পূর্ববং, কেবল ধানে শ্বস্ত । ধান যধা---

"গভীরাঞ্জ মনোক্রভাবে বর্ণকাজিসমগ্রভাব্।
চতুকু লাং বিনয়নাবে কমলাসনসংখিতাব্।
সুদগরং দক্ষিণে পাশ্ব বামে বিহ্বাঞ্ বজকন্।
শীতাশ্বধরাব দেবীং দৃঢ় শীনপরোধরাব্।
হেমকুপুলভ্বাঞ্জ বীব্রচন্দ্রাকেশবরাব্।
শীতভীবণভূবাঞ্জ রম্পুলিংহাসনে স্থিতাব্।
শীতভীবণভূবাঞ্জ রম্পুলিংহাসনে স্থিতাব্।

পূর্ব্বেই উক্ত হটরাছে যে, এট দেবীর পূজার বাক্সন্তন, বৃদ্ধিনাশ ও শক্রক্ষরাদি বটিয়া থাকে। কিরপে এই দেবীমন্ত্র প্ররোগ করিলে এই সকল আধিস্তোতিক ব্যাপার সাধিত হইতে পারে, তাগাই নিম্নে বিবৃত হইতেছে।

দশ সহস্রবার মন্ত্রনাপ করিয়া নিশাকালে ছরিলা ও হরিতালের সহিত লবণ লোম করিলে গুট ব্যক্তির বাক্তন্তন ও বৃদ্ধি বিপর্যার ঘটে এবং ইহা ছার। শক্তসৈম্যকে ভত্তন করিতে পারা বায়। গুড, মধু ও শর্করা বোগে পীতপুলোর হোম গুন্তুক কার্যবিশেষে ফল প্রদ। কার্যাসাধনার্থ প্রধামে একটী বন্ধ প্রস্তুত করা আব-ভাক। তৎপরে স্কন্ধনার্থ হোমাদি পুঝাই বিধি।

যন্ত্ৰ অন্তনপ্ৰশালী---

উকাররোঃ সম্প্ররাজ্জাথঃ শিরসো লিথেও।
মধ্যগং নাম সাধ্যক্ত তহাক্তে চাক্ষরত্রয়ম্ ॥
বীঝং দিতীরবর্গক তৃতীয়ং বিদ্ভৃষিতম্।
চতুর্দশবরোপেতং সংলিণেও পৃথিবীগতম্॥ (জুৌ)
ঠকারেণ সমাবেষ্টা চতুর্জোণপুটং বহিঃ।
তৎকোণরেখাসংসকৈঃ শৃত্তির্মক্রাইকং লিথেও।
ত্রিশ্ব মধ্যরেখারাঃ পৃথীবীজ্ঞানি পার্যরোঃ। (লং)
অইবলি চ কোণেয় তহহির্জগলাং লিথেও ॥
পৃথিবাত্তরিতং বাক্তে মাতৃকাপরিমগুলম্।
আবেষ্টা চাইধা পশ্চাও তহাক্তে ছিরমারয়া ॥
নিক্ষধাাত্র্শবীক্রেম নাদসংমিলিতাত্বিগা।
লিথেও পূর্ববলাচেষ্টা পশ্চাত বগলাম্থীম্ ॥"

শ্বর্থাৎ উদ্ধাধিংক্রমে মৃথ সংবৃক্ত করির। ওঁকারদর অভিত করিবে। তাহার মধ্যদ্বলে সাধ্য বা উদ্ভিই ব্যক্তির নাম এবং উত্তর পার্বে ত্রৌ এই বীজ নিখিয়া লইবে। শবে তাহা ঠকার গারা বেইনপূর্বাক তাহার বহির্দেশ চতুকোশ বারা পুটিত করিবে, এ চতুকোশন্বরের অইকোশে অইবছ্লমহ জিশুল এবং সেই জিশুলের মধ্যরেথার পার্যন্তরে লং বীক্ত আঁকিরা রাখিবে। ভাহার বহি-ভাগে ওঁ ছাঁ ব্যালাড়িবি সর্বাহ্টানাং রাচং মৃথং অন্তর জিহ্বাং কীলর কীলর বুদ্ধিং নাশর ছানী ওঁ স্বাহা। এই বয় বুরাকারে

লিপিবে। তৎপরে একটা বৃত্ত আছিত করিরা মাড়কা বর্ণ ছারা মণ্ডল করিবে। তদনত্তর তাহার বহির্ভাগে এই বীল ছারা আটবার বেষ্টন করিরা ক্রোং এই বীল ছারা একবার বেষ্টনপূর্ব্বক পুনর্ব্বার বগলামূপী মন্ত্রে আটবার বেষ্টন করিবে।

শাতৃদলকে অথবা পাষাগপটে অথবা হরিলা, গুলুর ও ইরিতাল ছারা বছ অবিত করাই প্রশন্ত। দেবতক্তন ও শক্রগণের মুখন্তস্থনার্থ উক্ত বন্ধ লিপিরা গাঢ় আক্রমণ করিবে। ইরিলাদি পুর্বেগক এবের ছারা ভূর্ক্তিপতে যদ্ধ আঁকিরা সেই যদ্ধে কুন্তকার-চক্রের মৃত্তিকানির্দিত বৃষ পুষ্ঠে ছাপন করিরা বগলামুগীর আরাগনা করিলে বিবাদে জয় লাভ হর। ঐ ব্যবের নাসিকান্তে পীতবর্গ রক্ত্ব নিক্ষেপ করিয়া প্রতিদিন পীতবর্গ পুশাদি উপভার ছারা সীয় গৃহে পূজা করিলে তুটের মুখন্তন্তন হর।

ৰগল।মুখীস্তোত্ত ।

"চলৎ কনককুগুলোল্লসিডচারুগগুস্থলীং লসৎ কনকচম্পকচ্যতিসদিন্দ্বিম্বাননাম। গদাহতবিপক্ষকাং কলিতলোলজিহ্বাঞ্চলাং শারামি বগলামুখীং বিমুখসম্মন:গুভিনীম্ ॥১ পীয় ষোদধিমধ্যচার বিলস্থ রক্তোৎপলে মণ্ডপে ষৎসিংহাসনমৌলিপাতিভরিপুত্পেতাসনাধ্যাসিনীম্। বর্ণাভাং করপীডিতারিরসনাং ভ্রাম্যালাবিভ্রতাং ইখং ধ্যায়তি বাস্তি তক্ত সহসা সদ্যোহণ সর্ব্বাপদ: ১২ দেৰি স্বজ্ঞবাৰ্জাৰ্চনকুতে যঃ পীতপুলাঞ্চলিং ভক্তা বামকরে বিধায় চ মন্থং মন্ত্রী মনোজ্ঞাক্ষরম। পীঠখ্যানপর্যোহথ কুম্ভকবশাৰীজং শ্বরেৎ পার্থিকং তক্সমিত্রমূপক বাচি হৃদয়ে জাড়াং ভবেৎ তৎক্ষণাৎ ১৩ বাদী মুক্তি রন্ধতি ক্ষিতিপতিকৈখানর: শীভিডি ক্রোধী শামাতি চুর্জনঃ স্থজনতি ক্ষিপ্রান্থগঃ খঞ্চতি। গৰ্কী থৰ্কতি সৰ্কবিত জড়ভি ত্বন্তপ্ৰিণামন্তিত; জীনিত্যে বগণামুখী প্রতিদিনং কন্যাণি তৃজ্যং নম: 🛊 মন্তস্থাবদলং বিপক্ষদলনে স্থোত্তং পবিত্রঞ্চ তে. বন্ধং বাদিনিবন্ত্রিণং ত্রিঞ্চগতাং লৈত্রন্ত চিত্রং স্থ তে। মাতঃ শ্ৰীবগদেতি নাম শশিক্তং ষ্ম্পাত্তি জন্তোৰ্দ্ধু ধে তরামগ্রহণেন সংস্থি মুখন্তজ্যে ক্তবেছাধিনাম ৪৫ হুঠজন্মুগ্ৰবিশ্বশনং দাক্লিজ্ববিজ্ঞাবণং **क्रिक्**नमार वनका त्रमाः ८०७१ नवाकर्यवम् । সৌভাগ্যৈকনিকেডনং সম দুলো: কারুণ্যপূর্ণামৃতং মুত্ত্যোশ্বারণমাবিকত প্রভোমাঞ্জনীরং বর্ণ: 🕪 আত্তভন্ন যে বিপদম্বনং ক্রিয়াং চলাং কীলয় আঁশীং বুরুর নাশরাক্ত ধিবগার্ত্তাং গভিং কছর।

শ্ব ঃশ্চূর্ণর দেবি ভীম্নগণরা গৌগালি শীভাষ্ট্রে विद्योगः वर्गाम इत्र धार्मणाः काक्गार्श्यकता । মাউটেরবি ভক্রকালি বিশ্বরে বারাহি বিশাগ্রহে শ্ৰীবিভে সময়ে মহেশি বগলে কামেশি রাবে রমে। মাতদি ত্রিপুরে পরাৎপরতত্ত্বে স্বর্গাপবর্গপ্রথ দাসোহতং শরণাগত: কক্ষণরা বিষেশ্বরি আহি মাং ।৮ गःतस्य कोत्रगरूव **अ**हत्रशममस्य वद्यस्य वाशियस्य বিষ্যাবাদে বিবাদে প্রকৃপিতনূপতে দিবা**কালে নি**শারাং। वर्ष्ण वा एखरन वा विश्ववध्यमर निर्मात वा वरम वा शक्करखिकेरखिकानर यनि পঠिष्ठि भितर श्राप्त बानान बीतः ॥> নিতাং স্বোত্তমিদং পবিত্তমিক যো দেবাাঃ পঠডালিরাৎ প্রজা যন্ত্রমিলং তথৈব সময়ে বাংহী করে বা গলে। রাজানো হররো মদাভ্রুতরিণঃ স্পান্ত্রেজাদিকা-ত্তে বৈ যান্তি বিমোহিতা বিপুগণা শন্ধী: দ্বিরা: সিম্বর: ॥১০ জং বিশ্বা পরমা ত্রিলোকজননী বিদ্বোহনংচ্ছেদিনী বোষাকর্ষণকারিণী অনমনঃসম্মোহসন্দারিনী। ভভোৎসারণকারিণী পশুমন:সম্মোহসন্দারিনী জিহবাকীলনভৈরবী বিজয়তে ব্রহ্মাদিমরো যথা ॥১১

বিদ্যা লন্ধীঃ সর্বসৌভাগ্যমায়ঃ
পুত্রৈঃ পৌত্রৈঃ সর্বসাম্রাজ্যদিদ্ধিঃ।
মানং ভোগো বশুমারোগ্যসৌখাং
প্রাথং তৃতত্তুত্তদেহমিন্ নরেণ ॥১২

যৎ কৃতং জপসরাহং গদিতং পরমেশ্বর।
তৃষ্টানাং নিগ্রহার্থার তদ্পুহাণ নমোহন্ত তে ॥১৩
ব্রহ্মান্ত্রমিতি বিখ্যাতং ব্রিষ্ লোকের্ হর্ম ভ্রম্ ।
গুক্তকার লাভবাং ন দেরং বন্ত কন্তচিং ॥১৪
পীতাম্বরাং দিভুলাঞ্চ ব্রিনেত্রাং গাব্রকোজ্ঞলাম্।
লিলামুলগরহন্তাঞ্চ শ্বরেত্তাং বগলামুশীম্ ॥১৫
প্রাতে ও মধ্যাক্ষ্কানে এই ক্রম্পাঠ ক্রিলে কার্যাসিদ্ধি হইরা
পাকে। (ক্সুবামন)

বগদোগ রা, বালানার রলপুর জেলার অন্তর্গত একটা নগর। জন সংখ্যা প্রার ৬ হাজার।

বগন্ন-মা, নিমতক্ষের তানাসেরিম বিভাগের খোন্থ জেলার অন্তর্গত একটা গশুগ্রাম ব-গন্ধ নদীকুলে অবস্থিত। ঐ নদীর উত্তর জীবন্থ উপক্ষতাগ তব্-ত-নো নামে পরিচিত। এখানে ব্যাহেশীর চাউলের বিভূত কারবার আছে।

ব্যাক্ত্র, দক্ষিণপ্রক্ষের ভানাসেরিন বিভাগের আমর্হাই কোন।
আন্তর্গত একটা উপবিভাগ। ইহার পূর্বসীমার ভৌক হা পর্যতমালা এবং পক্ষিমে বলোপসাগর। ভুগরিমাণ আর ২৮ বাইল।

এই উক্ত পাৰ্কতাভূমি বনমালা-সমাজ্য—মধ্যা মধ্যে বাজক্ষেত্ৰ ও গওগ্ৰাম বিরাজিত। বাজালার প্রভারের উক্ত্যুদ্ধর্কাভিনিবনসমূহ সেই প্রাকৃতিক গান্তীটা কেন করিলা উন্নত
মন্তকে প্রথমিক মহিমা বিকাশ করিছেছে। বাত্যান্দোলিত
ক্ষানালির বাতপ্রতিবাতে সমুজোপকৃলে অসংখ্য থাড়ি গঠিত
হইনাছে; উহা প্রশন্ত হওবার এবং সমুজপ্রেই অব্ধিত থাকার
দেশীয় নৌকা-চালমার অহুপ্রোগী হইরা পড়িরাছে।

বগবাড়ী, বোৰাই প্ৰেসিডেনীর কাঠিরাবাড় বিভাগের সোরাত প্রারম্ব একটা কুল সামস্তরালা। এখন গ্রই খাংশে বিভন্ত হইরা পড়িরাছে। ঐ সামস্তবংশবর এক্ষণে গাইকোবাড়কে ১৩৫ টাকা ও কুনাসড়ের নবাবকে ১৯ টাকা বার্ষিক থাজানা দিরা থাকেন। বগবাড়ী গ্রাম ও বর্গমাইল বিভূত।

বগাস্তা, বোৰাই প্রেসিডেন্সীর দক্ষিণ কার্টিরাবাড়ের অন্তর্গত একটা দুশ্র সামন্ত রাজ্য। এখন হর জন অংশীদারে বিজক হইরাহে। বর্তমান অধিবাদিগণ জুনাগড়ের নবাবকে ১৫৪০ টাকা এবং বড়োলার গাইকোবাড়কে ২৫৫০ টাকা বার্ষিক কর দিরা গাকেন। বার্ষিক রাজধ ১০ হাজার টাকা।

২ উক্ত রাজ্যের প্রধান নগর। আক্ষা ২১° ১৯ ট: এবং দ্রাঘি ৭১° পূ:। স্থরাট হইতে ১৬০ মাইল পশ্চিমে কাঠিয়া-বাড় প্রারোধীপের মধ্যবর্তী গীর নামক উচ্চ ভূমির সমীপ দেশে অবহিত।

বগাসপুর, মধ্যপ্রদেশের নরসিংহপুর জেলার অন্তর্গত একটা নগর।

বগাঁহ (পুং) অব-গাই ভাবে খঞ্। অলোপ:। অবগাঁহ।
বিষ্ট ভাগুরিরন্নোপমবাপ্যোরপদর্গন্নো: ভাগুরি দুনি অব ও
অপি উপদর্শের অলোপ ইচ্ছা করিরা থাকেন। (মুগ্ধবোধটী ভরত)
শিক্ষাপরে ডার্ডনিধী বগাছ। (কুমার ১৷১)

বগী (পান্নত) > ভরবানি। (নেশন্ধ) ২ রেশনী ক্রাবিশেষ। বনীলক। ভোজ্যপাত্রভেদ। (ইংরাজী) ও অধ্যানভেদ।

ব্ঞলা, বালানার নবীরা জেনার অর্থগত একটা গভগ্রাম।
কলিকাতা হইতে ৫৭॥ মাইন উত্তরে অবহিত। এখানে ইটারণ
বেলন ঠেট রেলওরের একটা প্রধান ঠেনন আছে। নবীরার
সনর ক্রঞ্জনগর ও নববীশ বাইবার লক্ত এখান হইতে ১১ মাইল
বিশ্বত পাকা রাজা আছে।

বলোপাল্লী (বংগনহলী), নবিহুর রাজ্যের কোলাবা জেলার কলন্য তালুকের অন্তর্গত একটা গঞ্চায়। জন্মা ১৩°৪৭'১৫' উ: একং ব্রাথি" १৭°৫০'৩১'' পূঃ। এথানে বিচার সময় হালিত আছে।

ব্যাপ্তসার, (বৰসর),বৃক্ত-ক্রেলের কুষাযুন রেলার অন্তর্গত এইটা

নগর। সরমূপ্ত গোমতী সঙ্গমে অবস্থিত। অক্ষা° ২৯°৪৯ ২০ উ: এবং দ্রাবি॰ ৭৯°৪৭ পুঃ। কলিকাতা হইতে এই স্থান ৯>> मार्टेन উত্তরপশ্চিমে এবং আল্মোরা হুইতে ২৭ মাইল উত্তরপূর্ব্বে অবস্থিত। নগরটা সমূত্রপূষ্ঠ হইতে প্রায় ৩ হাজার ফি^ট্ উচ্চ। এই নগরের সহিত মধ্যএসিরা ও তিব্বতের বিস্থৃত বাশিক্ষা আছে। প্রতি বংসর মাঘ মাসে এখানে ভূটিয়া ন্দাতির একটা মেলা হয়। ঐ স্থানে সমতল ক্ষেত্রজাত ও হিমালবের অভ্যুক্ত শৃক্ষজাত জব্যসমূহের বিনিময় হইয়া থাকে।

প্রবাদ, মোগল সম্রাট্ তৈম্র প্রথমে বগেসর উপত্যকাভূমে একটী মোগল উপনিবেশ স্থাপন করিরাছিলেন। কিন্ত এক্ষণে সেই মোগল জাতির বাদের চিহ্ন মাত্র নাই। কেবল মাত্র পাৰ্বত্য বেনিয়াগণ বাণিজ্য কাৰ্যো লিপ্ত রহিয়াছে।

ব্রোর, রাজপুতনার উদরপুর রাজ্যের অন্তর্গত একটা নগর। উদরপুর রাজধানী হইতে ৬৭ মাইল উত্তর পূর্বের অবস্থিত। भूर्स देश महात्रांगा माहान निः रहत्र अभिनातीत अवस् क हिन। ১৮৭৫ पृष्टीरक छेरा छारात रख रहेरछ काफिन्ना मधना रहेनारह। বগ্লু (পুং) ৰক্তি ইতি। ৰচ্ (বচেপীন । উণ্ ৩।৩০) ইতি মু: গশ্চান্তাদেশ:। > বক্তা, ৰাগ্মী, কথক। ২ ৰাবদূক। ৩ পথাদির চীৎকার। ৪ ভেকরব।

^{"গ্ৰামাহনমায়্ৰ্ৎসিনীনাং মণুকানাং বগুরুত্রাসমেতি।"} (ঋক ৭।১০৩।২)

'ম পুকানাং বগ্নু: শক্ষ: সমেতি সক্ষছতে' (সায়ণ) বগ্লা (দেশজ) থলি।

বশ্বন (জি) প্রিরবাকাকথনশীল। স্ততিবাকা। (ঋক্ ১০।৩২।২) "ব্যনান বচনেন স্বত্যা" (সাম্ব)

বয়সু (পুং) শক। (ঋক্ নাণাং)

বয়, ই ঙ, গতি নিন্দা গতাারম্ভ আক্ষেপার্থ। ভা° আত্ম° সক° (জবার্থে), আৰু চ সেট্। ই বঙ্গাতে। ও বঙ্গতে। টীকা-কার চুর্নাদাস বলেন যে, কোন কোন ব্যক্তি হব অর্থেও বজ্যতে পদ গ্রহণ করিয়া থাকেন। লিট্ববজ্যে। পুঙ্অবজ্যি ।

বছা (জী) প্তলবিশেষ। শলভ বা তৰৎ অহিতাচরণনাল जीवटङ्ग ।

''ভর্মাপতে ব্যাশতে তৃষ্টকতা আশৃণোত মে। (অথর্ক° ৬/৫/৩) 'ছে ভদাপতে ভদানাং হিংসকানাং আখুনাং স্থামিন ছে ব্যাণতে। অবয়ত্তি অববাধন্ত ইতি ব্যাঃ পতভাদরঃ। অব-পূর্বাৎ হবে: "ভোক্তরাণি দৃষ্ণতে" ইতি ডপ্রতার:। বট্ট ভাগুরিররোপম্" ইতি অবশব্দ আদিলোপ:। প্রোদরাদি-দ্বাৎ বন্ধন। বহানাং পভলাদীনাং অধিপতে ভূষকভাঃ তীক্ষ-परद्वा वृत्तर' (नावन)

বল্বাত, পঞ্জাব প্রদেশের অন্তর্ভু একটা পার্বভীর সামন্তরাজ্য। সিমলা শৈলাবাদের পার্মদেশে অবস্থিত এবং অঘালা বিভাগের কমিসনৱের রাজকীর ভত্বাবধানে পরিচালিত। ভূমি-পরিমাণ ৩৬ বর্গমাইল। এখানে প্রান্ত ১৭৮টা গ্রাম আছে। ব্লাজ্যের मधाङ क्यका° ७०° दर्द छै: ब्यवर ज्ञाचि° १९° १ र्पृः।

এখানকার সন্দার রাণা দলীপ সিংহ (১৮৮৫) রাজপুত-বংশীয়। ১৮৫৯ খুষ্টাব্দে তাঁহার জন্ম হয়। ইনি ইংরাজরাজকে বার্ষিক ২০০০, টাকা কর দিতেন; কিন্তু কাল্কা ও সিমলার মধ্যবর্ত্তী কসোলী ও সোলোন-সেনানিবাসের নিমিক ইংরাজ-গবর্মেন্ট তাঁহার নিকট হইতে স্থান লওরায় রাক্সস্থ হইতে ১৩৯১ টাকা বাদ দেওয়া হইয়াছে। বাঘল-রাজের স্থায় এখানকার সন্ধারগণও ইংরাজ-গবমেন্টের সহিত সন্ধিত্ততে আবদ্ধ। [বাঘল দেখ]

বহার (ব্যব্রাড়), সিদ্ধনদের একটা শাখা। করাটা জেলার ঠাঠা নগরের দক্ষিণে অক্ষা° ২৪°৪ 🗸 🕏: সিদ্ধুগাত্র ইইডে বহির্গত হইয়া সমুদ্রাভিমূথে ধাবিত হইয়াছে। খৃষ্টীয় ১৮শ শতাব্দে এই নদী অতি বিশ্বত ও বেগবতী ছিল। হালোরী বন্দরের যাবতীয় পণ্যদ্রব্য এই নদীপথেই তৎকালে পরিচালিত হইয়া সমুদ্রোপকৃলে সমানীত হইত। ১৮৪০ খৃষ্টাব্দে বালুকার চর পতিত হওয়ায় সিন্ধুর গতি পরিবর্তিত হইয়াছে এবং এই নদীবক ক্রমশ:ই শুক হইয়া পড়িতেছে। এই নদীর মোহানা ন্থিত পিতি, পিতিয়ানী, জুনা ও রেছাল শাথায় এখনও নৌকা-যোগে গ্ৰনাগ্ৰন করা যায়।

ব্যেল, রাজপুত জাতির একটা শাখা। আদি সোলাকী বা রঘুরাজ সিংহ রচিত ভক্তমাল নামক গ্রন্থে এই রাজপুত-শাথার मःकिथ देखिशम विद्रुष इरेब्राए,—णाश इरेए**७ जा**ना यात्र, প্রসিদ্ধ সাধু ক্বীর পশ্চিমসমূদ্রে স্থান করিবার জয় গুরুরাতে যাত্রা করেন। এই সময়ে চৌলুক্য বা সোলাকী দেব গুলুরাতের সিংহাসনে অধিষ্ঠিত। রাজা অপুত্রক ছিলেন,তিনি কবীরের নিকট পুত্রের জন্ত প্রার্থনা করেন। করীরের আশীর্কাচে সোলাভী-রাজের চুইটা পুত্র জন্মিল, তন্মধ্যে একটার আকার ব্যাজের মত ছিল। এই ব্যাদ্রাকার পুরের নাম হইল ব্যাদ্রদেব। রাজপ্রোহিতগণ সেই হর্লকণ পুত্রকে সমুদ্রে কেলিয়া দিবার পরামর্শ দিলেন। রাজাও সমুদ্রে কেলিয়া দিবার জন্ত জন্তুমতি করেন। এ কথা কবীরের কর্ণগোচর হইল। ডিনি কুমারকে ফিরিরা **আনিতে কহিলেন এবং এই কুমারের নামে স্ব**ভন্ন থাকের উৎপত্তি হইবে, ভাহাও নির্দেশ করিয়া দিলেন। দৈব-विकृषमात्र वाात्रासरवत्र भूज हरेन ना, व्यवस्था कवीरतत्र ক্ষয়তে তাঁহার একটা পুত্র ক্ষিত। ব্যারনেবের নামাসুলারেই তাঁহার বংশগরন্পরা "বংশে" বা 'বাংশে" নামে খ্যাত ছইল।

ব্যাছদেবের প্তের নাম অরসিংহ। পিতামহের আদেশে তিনি বছ সৈপ্তসামত লইরা দিখিজার বাহির হইলেন। নার্মান্ত্রণ আদিরা তিনি গোঁড়ারেশ অধিকার করিলেন। এখানে স্থান্ধিরা থেরার বৈশরাজপুতক্সার সহিত তাঁহার বিবাহ হইরা গেল। তাঁহার বংশধর করণসিংহ ও কেশরীসিংহ দিখিজার উপসক্ষে নানা ছান জর করিরা মুসলমান নবাবের অধিকারভ্কা গোরথপুর দখল করিরা বসিলেন। তাঁহাদের পর মলার সিংহ, লারক্ষ দেব ও তীমল দেব বথাক্রমে রাজ্যভোগ করেন। তাঁমলের প্ত বজ্ঞানে গহরবাড় রাজপুতগণের সহিত সন্মিলিত হন। তাঁহার পরবর্তী প্রতাপশালী উত্তরাধিকারীর নাম বীরসিংহ। প্রবাদ, তাঁহার লক্ষ অখারোহী ছিল।

বীরসিংহ মুসলমানের হস্ত হইতে কিছু দিনের জভ্য প্রয়াগ-তীর্থ উদ্ধার করেন। সে সংবাদ পাইয়া বাদশাহ সসৈক্সে চিত্র-কুটে বীরসিংহের সমুখীন হইলেন। বাদশাহ তাঁহাকে ডাকিয়া কহিলেন, আমার প্রজাগণের শাস্তিভন্ন করিতে ভোমার ভয় इरेन ना । वीत्रिंग्ट উख्रत जानारेरनन, क्विरत्रत्र निजाधिकात থাকা চাই। ছটের দমন শিষ্টের পালনই ক্ষতিয়ধর্ম। বাদশাহ তাঁহার বীরত্বে মুগ্ধ হইয়া তাঁহার পুত্র বীরভায়ুকে "রাজা" উপাণি দান কৰেন। বাদশাহের উৎসাহ্বাক্যে বীর্সিংহ > अन तास्राटक स्वत्र करत्रन ७ वाटकाशर शिवा वात्र करत्रन । দক্ষিণে তম্সা পর্যান্ত তাঁহার জয়ধ্বজ শোভিত হইয়াছিল। তিনি অন্তিমকালে পুত্রহন্তে রাজ্যভার দিয়া প্রমাণে গিয়া জীবন বিদর্জন করেন। বীরভাত্ত কচ্ছবছ-রাজকভার পাণিগ্রহণ করিয়া যৌতুকশ্বরূপ রতনপুর রাজ্য লাভ করেন। প্রায়তত্ববিদ্ किमेश्हाम नारहरवन्न मर्छ ४৮० हरेटि ७৮० नःवर পर्याख ৰ্বেলগণ শোণ ও ভমসার উপত্যকায় আধিপতা বিভার করিয়া-**छित्यम । ७९ भरत कम्ब्रि, हरम्मन, हार्मान, स्मनत ७ व्यर्गरा** গোড়গৰ ঐ স্থান দখল করিয়া বলে।

করণাবাদের ববেলেরা বলেন যে, মাধোগড়ে তাঁহাদের পূর্ব পূরুবের বাস ছিল। কনোলপতি জয়চল্লের সমরে তাঁহারা এদেশে আদিরা বাস করেন। এথানকার ববেলপতি ছত্তশাল বৃটীশ গ্রম ন্টের বিরুদ্ধে জয় ধারণ করার ববেল রাজ্য বাজেয়াও হয়। তাঁহাদের বাস হেত্ই রেবারাজ্য "ববেল" বা 'বাবেলথও' নামে খ্যাত হয়।

যম্নার দক্ষিণে ববেলের। পরিহার ও গহরবাড় রাজপুতের ফরে কল্পা দিরা থাকে এবং বৈশ্, গৌতম ও গহরবাড়ের কলা লইরা থাকে। আলাহাবাদ অঞ্চলের ব্যেলেরা অভ্যন্ত অবাধ্য ও প্রত্যভাব বলিরা পরিচিত। স্থবিধা পাষ্ট্রল দস্মার্থি করিতে বিরত হর না।

ব্যেল্থণ, মধ্যভারতের অন্তর্গত একটা বিত্তীর্ণ ভূখণ্ড। বংঘর্ল লাতির বাসভূমি বলিয়া এই বিশ্বত ভূথণ্ড বংঘলখণ্ড। নাম প্রাপ্ত হইরাছে। ইংরালাধিকারে এই সামন্তরালাপুত্র বংঘল-থণ্ড-এক্সেনী নামে পরিগণিত হর। ভারতরালপ্রতিনিধি বড়লাটের অধীনন্থ মধ্যভারতের এলেন্ট, এবং রেবারাজ্যের পরিলর্শক পলিটকাল এক্রেন্টরপে এখানকার শাসনকার্যা নির্বাহ করিয়া থাকেন। ঐ পলিটকাল এক্রেন্ট সাতনা বা রেবানগরে অবন্থিতি করেন।

ইহার উত্তর সীমার আলাহাবার ও মীর্জাপুর লেলা, পুর্কে চোটনাগপুরের অধীনত্ব সামস্তরাজ্যসমূহ, দক্ষিণে মধ্যপ্রান্ধের বিলাগপুর ও মণ্ডলা লেলা এবং পশ্চিমে জবলপুর ও বুলেল-খণ্ডের সামস্তরাজ্যসমূহ। ১৮৭১ খুটাক পর্যান্ত এই বিভাগ বুলেলাওও এলেন্দীর অন্তর্ভুক্ত ছিল। বুলেলাও বংগল জাতির কীর্টিনিকেন্ডন বলিয়া এই ত্থান ভৌগোলিক ও ঐতিহাসিক সংস্রবে একতাবদ্ধ ছিল। কালে বুলেলাপ্রভাব থর্ক হইল। ইংরাজগবর্মেন্ট তাহাদের পরস্পরের বিচ্ছেদ সাধন করিয়া ভবিষৎ শক্তিসংগ্রহের পথ অবরোধের চেষ্টা পান। তল্পদেশ্রেই উক্ত বর্বে ব্যেলগও ভূভাগ লইয়া বতত্র একেন্দী প্রতিষ্ঠিত হয়।

এই সমগ্র দেশভাগের ভূপরিমাণ ১১৩২৩ বর্গমাইল। এখানে সর্বসমেত ৪টী নগর ও ৫৮৩২টী গ্রাম বিশ্বমান। রেবা, নগোদ, সৈহার, সোহাবল, কোঠা, সিদ্ধপুরা ও জগীর রাজ্য লইরা এই এজেলী গঠিত হইরাছে। [তত্তৎ শব্দ দেখ।]

ঐ সকল সামস্তরাজ্যের মধ্যে কেবল মাত্র রেবারাজকেই ইংরাজরাজ সন্ধিপত্র দান করিয়াছেন। অপর সকলেই ইংরাজ-গ্রমেণ্টের সনদ লাভে অমুগৃহীত। এখানকার সামস্তগণ পণ্যন্তব্যের বাণিজ্য জন্ত কোনরূপ শুব্ধ গ্রহণ করেন না।

বৃদ্ধ কৌটলা। বাদীভাৰ ভা° আৰা°। লট্ বছতে, লিট্ বৰছে। বছিডা। লুঙ্অবছিট।

বঙ্ক (পুং) বঙ্কতীতি বঙ্ক জচ্। ১ নদীবক্র, চলিত কথায় নদীর বাঁক বা টোঁক বলে।

বে বংগলা জাতির দায় হইতে এই প্রদেশের নাম করণ হইরাছে।
 ভাছায়া লিগোলীয় রাজপুতলপের একতম লাবা। ঋষরতে প্রবেশ হইতে
পূর্বাভির্বে আদিয়া বাদ করিবাছে, স্রাট্ অকবর লাহ এই বীর জাতিকে
বিশেষ অপুরাহ করিতেম। [বংষদ দেব।]

ব**ৰাটক** (গুং) পৰ্বতভেদ। (কৰাগরিৎসা^e ৪৮।৪৯)

वक्कद्र (११) समीव शंक्

त्क्राप्तन (ग्रः) अभित्रक्र^{क्र} वक्रूकः।

ৰীক্ষা, (খ্ৰী) বন্ধ-টাপ্। বন্ধাগ্ৰছাগ। পদ্যৱন। চলিত পাদান।
'বৰঃ পৰ্যাণকাণে নদীপাত্ৰে চ ভন্নতে" (মেদিনী)

'পর্যাণভাএভাগ:' ইতিশ্বিকাওশেব:।

वक्षांत्रकां हार्वा, थांगिन क्यां किस्त्रिंग्टम

বঙ্কালা ³ (ত্রী) নগরকেন। (রাজতর° ৩.৪৮০) বাজানার ⁸ আট্রিম রাজধানী।

বৃদ্ধিপী (ত্রী) কোননাসিকা নামক কুপভেদ। (হারাবলী)
বৃদ্ধিম (ক্লী) বছ-ইমনিচ্। ১ বক্র। ২ ঈবং বাঁকা।
বৃদ্ধিমচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়—বন্দের প্রতিভাশালী প্রবিভীর
উপজাসিক, চিন্তালীল কবি এবং একজন প্রধান দার্শনিক।
১৮৩৮ খুঠাকে ২৭এ জুন, নৈহাটী কৌনের পার্মন্থ কাঁটালপাড়া
প্রামে সাহিত্যরথী বৃদ্ধিমন্ত ক্ষমগ্রহণ করেন। (কোঞ্জীজন্ম্পারে
লকালা ১৭৬০।২।১২।৩৯।৫০ তাঁহার জন্মকাল।)

বভিমচন্দ্রের পিছা বাদবচন্দ্র লও হার্ডিঞ্জের শাসনকালে ডিপ্টি-কলেটার ছিলেন। তাঁহার চারিপুত্র—ভামাচরণ, সঞ্জীব-চন্দ্র, বভিমচন্দ্র ও পূর্ণচন্দ্র।

বাল্যকাল হইডেই বৃদ্ধিমচন্তের মেখা ও প্রতিভার পরিচয়
পাওরা যায়। পঞ্চম বর্ষ বরক্তেম কালে একদিনেই তাঁহার
বর্ণজ্ঞান জন্মিয়াছিল! কাঁটালপাড়ার পাঠশালার তাঁহার প্রথম
শিক্ষা। তাঁহার বধন অটবর্ষ বয়ক্তেম, সেই সমরে তাঁহার
পিতা মেদিনীপুরের ডেপুটি কলেটর। বৃদ্ধিমচন্তের পিতা পুত্রকে
কাছে মাধিয়া লেখাপড়া শেখান, এই তাঁহার বরাবর ইচ্চা
ছিল। তিনি বৃদ্ধিমন্তরেক মেদিনীপুরের ইংরাজী খুলে দিনেন। এ
সমরে বৃদ্ধিমন্তরেক মেদিনীপুরের ইংরাজী খুলে দিনেন। এ
সমরে বৃদ্ধিমন্তর যেরপ বৃদ্ধিমন্তার পরিচয় নিরাছিলেন, তাহাও
অসাধানণ। প্রতিবর্ষ কুইবার ডিনি উচ্চ প্রেণিতে উঠিতেন,
অখ্য সর্ক্ষোচ্চ স্থান অধিকার করিতেন। মেদিনীপুর ক্লেনার
কাঁথি মহকুমার অন্তর্গত শোভন নদীতটের দৃত্যাবলী—কচ্চ,
বিরশতক, সিক্তাভুলির নির্দ্ধন বতাব-সম্পৎ বৃদ্ধিমন্তরের ক্লরে
চিন্নদিন অভিত ছিল, তাঁহার অপুর্ব কপালকুওনার দৃত্যাবলীতে
সেই আলেখার হারা স্থান্টভাবে পতিত হইরা তাহা পরম
ক্লের করিলা ভূলিয়াছে।

১৮৫১ খুট্টাকে বাগৰচক্র ২৪ পরগণার বদলি হইলেন।
বহিমচক্র এ সমরে হুগলীকলেকে প্রবেশ করিলেন। কলেকেও
উহার গবেবণা ও শিক্ষার পরিচর পাইরা অব্যাপকমওলী
বিভিত্ত হইতেন। ডিনি কেবল পাঠ্য পুত্তক পাঠ করিরা
ভূবিবোধ করিভেন না। কলেকের পুত্তকালরে সিহা সর্মনাই

তিনি ভাগ তাল প্রক সইর। পাঠ করিতেন। ইস্পীক্রেক হইডে তিনি সিনিয়র-কলারসিপ্ পরীক্ষার বিশেষ প্রাক্ষার সহিত উত্তীর্ণ হইরাছিলেন। এই সমরে তিনি কোন অধ্যাপকের নিকট চারিবৎসর কাল সংস্কৃতপ্রস্থ অধ্যান করেন। কলেছে পাঠকালে তাঁহার প্রাদংসা সকল অধ্যাপকের মুখেই ওনা বাইত। সাহিত্য বলিয়া নহে, অক্সাত্রেও তাঁহার অসাধারণ বাংপতি হইয়াছিল।

ছগলীকলেক্সে অধ্যৱন শেব করিরা তিনি কলিকাতার আসিরা প্রেসিডেন্সি কলেক্সে আইন পড়িতে আরম্ভ করেন। এই সমন্ত ১৮৫৮ খুষ্টান্সে বিশ্ববিদ্যালরে প্রথম বি. এ, পরীক্ষা প্রচলিত হয়। তথন বিছমচন্দ্রের বরস ২০ বর্ষ। তিনি আইন পড়িতে পড়িতেই বি, এ, পরীক্ষা দিলেন এবং বিশেষ প্রশংসার সহিত উত্তীর্ণ হইলেন। তিনি কলিকাতা বিখবিদ্যালয়ের প্রথম বংসরের বি, এ। বি, এ উপাধি তথন এ দেশে এমন অপূর্ব সামগ্রী বলিয়া গণ্য হইরাছিল যে বন্ধিমবাবৃক্তে দেখিবার জন্ত বহু জোল পর্যাটন করিয়া লোকজন আসিত, এবং বন্ধিমবাবৃ শিক্ষিতমগুলীর মুখোজ্বল "বি, এ বন্ধিম" বলিয়া সর্বাত্ত পরিচিত হইরাছিলেন।

বৃদ্ধিক ক্রের বি, এ পাশ করিবার অব্যবহিত পরেই ছোটলাট হ্যালিডে সাহেব তাঁহাকে ডেপ্টি মাজিট্রেট করিয়া পাঠাইলেন। কালেই তাঁহার আইন পাশ দেওরা হইল না।

খনেশের প্রতি ভাঁহার বরাবর অন্তরাগ ছিল। পরের জিনিষ হইতে যে ঘরের জিনিষ ভাল, এ কথা ডিনিই সর্বপ্রেম শিক্ষিত-সম্প্রদারের মধ্যে প্রচার করেন। উচ্চ রাজকার্ফে নিযুক্ত হইরাও তিনি মাতৃভাষার - সেবাই জীখনের সর্বপ্রেষ্ঠ লক্ষ্য বলিয়া গণ্য করিয়াছিলেন।

বাদককান হইতে তাঁহার বন্ধভাষার প্রতি অন্তরাগ দক্ষিত হয়। তিনি ঈশরগুপ্তের কবিতামালা আনন্দের সহিত পাঠ করিতেন। অয়োদশবর্ষ বরঃক্রমকালে তিনি "মানস্থ লালিপ্ত" নামধের কবিতা রচনা করেন। ঈশরগুপ্ত তাঁহার কবিতা গুনিরা বড়ই প্রীতিশাভ করেন এবং প্রভাকরে প্রকাশ করিরা তাঁহাকে উৎসাহিত করেন। সেই দিম হইতে বভিষচক্র কবর শুপ্তের শিষ্য হইলেন।

১৮৬১ গুটাকে তাঁহার প্রথম উপজাস রুর্বেশনবিনী বির-চিত ও তৎপর বর্বে প্রকাশিত হইল। বনিও ইংলালী আদর্শ লইরা প্ররেশনবিনী রচিত হইরাছিল বটে, কিছ জাহার এই প্রথম উভমেই তিনি বলভাবার উপর অসাধারণ আধিশতা ও চন্ধিরচিত্রণে অপুর্ব্ধ বলভা বেথাইয়াছেন, উপজাস নিধিরা কাহারও ছার্মেই আরশ সাক্ষ্যালাভ বটে লাই তিংপ্ৰে তিনি Indian field নামক পত্ৰিকার

() CC সক্ষান্ত কৰে জী (Rajinohum wife) নাবে একখানি
উপভাস লিখিতে আরম্ভ করেন, কিছু ঐ পত্রিকাখানি

ক্ষম হইরা বাওরার তাঁহার ইংরাজী উপভাস্থানিও অসম্পূর্ণ
গাকিরা যার।

পূর্ব্দেই পরিচর দিরাছি বে, ইংরাজীভাষার বৃদ্ধিচন্দ্রের ক্ষাধারণ বৃংপত্তি হইরাছিল। তেইদ্যান্ পত্রিকার জেনেরল এপেন্থি র ভূতপূর্ব্ধ প্রিস্পিগাল হেটি লাহেবেন সহিত বৃদ্ধিচন্দ্রের বে ক্ষাদ্গ্র চলিয়াছিল, ভাহাতে তাঁহার ইংরাজী লেখা পড়িয়া সকলেই বিমৃদ্ধ চইয়াছিলেন। এমন কি, তাঁহার প্রতিদ্বী ভেটি লাহেবিও মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করিয়াছিলেন, "এতদিন পরে বালানান একজন উপযুক্ত প্রতিদ্বী পাইয়াছি।"

সরকারী চাকুরী হইতে অবসর গ্রন্থণের কয়েক বৎসর পূর্বে ব্যান্তমান্ত বেকল গ্রন্থে নিটর সহকারী সেক্রেটারীর পদ প্রাপ্ত ভইয়াছিলেন, কিন্তু নানা কারণে তাঁহাকে লে পদ পরিভাগ ক্রিতে হইয়াছিল।



খভিমবাব্র প্রতিস্রি।

তর্গেশন দিনা প্রচারের সহিত ব্যক্ষচন্দ্রের থাতি সর্ক্ষর বিত্তত হটরা পড়িল। তৎপরে ১৮৬৭ খুঠানে কপালকুণ্ডলা ও ১৮০০ খুঠানে মৃণালিনী বাহির হুইল। ১৮৭০ খুঠানে ব্যক্ষণন বাহির হুইল। বঙ্গদর্শন প্রকাশের সহিত যেন বন্ধনাহিত্যে যুগান্তর উপস্থিত হুইল। বঙ্গীর লেখকগণের ক্ষতিও প্রিবর্ত্তিত হুইল। শিক্ষিত বন্ধনাসীর নিকট বন্দদশনের খেরপ আদর হুইয়াছিল, এরপ কোন সাম্য্রিক পত্রের সমান্ত্র পৃষ্টি-গোচর হ্র না। বন্ধনানির সম্পাদকরণে ব্যক্ষিষ্টিত পালক লেকে লেকক লেকক লিবিবার দ্বীতি শিথাইরা ছিলেন থাকা নিকেও বন্ধদশনে বহু প্রক্রম ও উপভাস লিধিরা

নাহিত্যজগতে একাধিপত্য লাভ করিলাছিলেন এ বাঁহারা বজভাবাকে দ্বীর মাতৃতাবা বুলিরা দ্বীকার দ্বিতে লক্ষা-বোধ করিতেন, বটতলার পূঁথি দেখিরা বাঁহারা নানাকুশন করিতেন, ইংরাজীভাবার লিখিত পুত্তকই বাঁহারের একমাত্র বেদবরূপ ছিল, বিদেশীর অভ্যক্ষরণকেই বাঁহারা জীবনের এক-মাত্র হতহুতার্থতার কারণ বলিয়া গণ্য করিতেন—সেই পরম উক্ত প্রাক্রমানী নব্যবহুকে বহিমবাবুই বহুভারতীর মন্দিরে উপত্তিত করিরা ভাতরণে অর্থাপ্রদান করিতে বাধ্য করেন, তদবিধ ইংরাজীশিক্ষিত যুবক্ষপত্তীই বহুভাবার সেবক্সণের নেতা চইরা পাড়াইরাছেন,—বহ্নিমবাবুর এই কার্য্য মাতৃত্বাবা-চর্চাক্রের সর্ক্রমেন্ত্র সার্থকতা বলিয়া গণ্য হইতে পারে, এই জন্মই ভিনি বহুভাবার সমাট্" পদস্কান। তিনি বহুদর্শনেন নিম্নিশিত পুত্তকগুলি প্রকাশ করেন:—

১২৭৯ সালে বিষর্ক ও ইন্দিরা; ১২৮০ সালে চক্সশ্রের ও যুগলান্ত্রীয়; ১২৮১ সালে রন্ধনী; ১২৮০।৮১ ও ৮২ সালে কমলাকান্তের দপ্তর, ১২৮৪ সালে রুক্ষলান্তের উইল, ১২৮৬ সালে রাঞ্চিছে, ১২৮৭ ও ৮৯ সালে আনন্দমঠ, ১২৮৭ সালে মুচীরামগুড়ের জীবনচরিত, ১২৮৮ সালে দুবী চৌধুরাণী। দেবী চৌধুরাণী বলদর্শনে কিয়দংশ বাহির হইয়া শেষে প্রক্রাক্তর সমগ্র প্রক্রাণিত হয়। ১২৮৪ সালে বন্ধিমচক্র বন্ধদর্শনের সম্পাদকতা ছাড়িয়া দিলে তাঁহার জ্যেষ্ঠ সঞ্জীবচক্র সম্পাদকত হন। স্থাবিচক্রের মৃত্যুর পর বন্ধদর্শন উঠিয়া যায়।

ক এক বর্ষ পরে সাধারণী-সম্পাদক শ্রীযুক্ত অক্ষয়চন্দ্র সর্কার
মহাশয়ের চেন্টায় নবজীবন প্রকাশিত হয়। নবজীবনের সঙ্গে
বৃদ্ধিনচন্দ্র যেন নবজীবন লাভ করিলেন। আনন্দমঠের শেষে
এবং দেবী চৌধুরাণীতে তিনি যে জ্ঞান ও কর্মযোগের স্বর্গাত
করেন, সীতাগ্যমে তাহার পরিণতি।

বলের শেষ গৌরবর্ষি সীতারামের প্রকৃত আলেণা তাহার ত্রিকার একটু ভিরন্ধণে চিত্রিত হইলেও, তাহার জীবরে বে সর্গাসিরপী মহাপুরুবের প্রভাব বিশ্বত হইরাছিল, সীতারামে বিজ্ঞাচল সেই চিত্রই দেগাইতে চেন্তা করিরাছিলেন। ঐ সময় বিজ্ঞাচলের আমাতা রাধালচক্র বন্দ্যোপাধ্যায় "প্রচার" নামক এক গালিক পত্র প্রচার করেন। এই মাসিক পত্র থানি বৈ বিজ্ঞান বাবুর সম্পূর্ণ প্রাম্পাত্মনারে প্রকাশিত হইয়াছিল, তাহাতে সন্দেহ নাই। প্রচারে তিনি ক্লক্ষচরিত্র ও গীতামর্ম্ম এবং নবজীবনে ধর্মতের প্রকাশ করিয়া তাহার নবজীবনের প্রকৃত লক্ষ্য সাধারণের চিত্রগোচর করিয়াছিলেন।

ভেপ্টীকার্যে ও বৃটীলগ্যমেন্টির নিকট ক্লাছার বিশেষ ক্র্যাতি ছিল। যথাকালে তিনি পেন্সন্থ্যত্প ক্রিয়া জ্বসর

আলো বলং কলিকত পূঞ্ অকত তে স্থা: ।

তেবাং দেশাং সমাখ্যাতাং অমামগ্রবিতা জুবি ।

আকতালো ভবেদেশো বলো বকত চ স্বত: ॥

কলিকবিবরদৈন কলিকত চ স স্বত: ॥

পঞ্জ পূঞ্া প্রখ্যাতা হলা হকত চ স্থা: ।

এবং বলেং পুরা বংশং প্রখ্যাতো বৈ মহর্ষিক: ।"

(ভারত ১/১০৪/৪৭-৫১)

এই বন্ধ হইতে বালাল। জনপদের প্রতিষ্ঠা হয়।
[বন্ধদেশ শক্ষে গুরাকৃত দেখ]

কাপাস। (মেদিনী) ৩ বান্তারু।
 বক্লফ্র (ক্লী) বক্লাৎ ধাত্বিশেষাৎ জারতে ইতি জন-ড।
 সিন্র। (বি) ২ বক্লেশ জাত। ৩ বক্লেশ্বাসী কারত্ব, বৈছ
প্রভতি জাতির প্রেণীবিজ্ঞাগজেদ। ইহা দক্ষিণ-রাদীর প্রেণীর
প্রভতম শাণা বলিয়া পরিচিত। ঐ শাণা বক্লেশের পূর্ব্যাঞ্চলে
আসিয়া বাস করায় বক্ল আথা। প্রাপ্ত ইইয়াছে।

भ भिख्ना।

বঙ্গজীবন (জী) রৌপ্য।

বঙ্গাদেশ (পুং) স্থনামপ্রসিদ্ধ ভারতীয় দেশভাগ। ভারতের উত্তর প্রাংশে হিমালয় পাদ হইতে দক্ষিণে সমুদ্রতট পর্যান্ত বিশ্বত। বঙ্গভূমি, বন্ধরাজ্ঞা, বাংলা বা বাঙ্গালা নামে পরিচিত। ভারত-নবের পুর্বোত্তর প্রাক্তির পুণাডোয়া গলানদীপ্রবাহিত 'ব' দ্বীপাংশ লইয়া এই রাজা গার্মিত। বচ প্রাচীন কাল হইডেই এই মহাসমুদ্ধ কনপদের বাণিক্যুখ্যাতি স্থান আরব ও চীন-সামালা প্রান্ত ব্যাপ্ত ছিল এবং এতকেশবাদীর জ্ঞানবন্তা ও বন্ধি-মন্তার পরিচয় এবং শিল্লাদি বিভিন্নবিষয়িণী কলাবিভার প্রথর शास्त्राव ठ्विमित्क ताहे हहेग्राहिल। देवरमनिक विनेक-मृत्यापाग्र সম্ভূপথে আসিয়া এখানকার স্থর্বগ্রামাদি বন্দর হঠতে এতকেখ-ভাত বছতের এবা বট্ডা বাইতেন। সেই সময় হইতেই বালাবার গৌরব দিগন্ত বিস্তুত হয়। বলের দক্ষিণপ্রান্তত্বিত সমুদ্রভাগ ও দেশের নামে বজোপসাগর এবং বঙ্গবাসীও ভদবধি বাজালী নামে বিদিত হট্যাছিল। ভারতবাসী অঞ্চাল ভাতি হইতে এই वाकाली काफित विधारशीतव वाकालात्क खळ्ड मधाला ও সমानत शान कतिसार्छ।

मामनिक्षा ।

এই বিশাল বাজালা রাজ্য মহাভারতীর বৃগে ফিরুপ শীমাবদ ছিল, তাহার সঠিক কোন বিবরণ উদারের উপার নাই। তৎ-কালে বজরাজ্য কেবল আজ রাজ্যের পার্থবর্তী জনপদ বলিয়া উজ্জিল। তৎপরবর্তী জালে বগন বজরালী আমমার্গে উরীত হইর। তাত্রিক আলোকলাত করিজাছিলেন, সেই সময় হইতেই তাহার।

তদ্রের মহিমাবিকার এক প্রভাব-প্রচার প্রান্তেই বাজালার দৈর্ঘা ও বিতার করনা করিরা শুন । তাই আমরা শক্তিসঙ্গমতন্ত্র বাজালার একটা সীমানির্দেশ দেখিতে পাই। বিলু দেখ।

তবকাৎ-ই-নাসিরি নাক্ষক মুসলমান ইতিহাস অমুক্রণ ক্রিলে আমরা কামিতে পারি বে. বালালার সেনবংশীয় শেষ নরপতি মহারাজ লক্ষণ দেনকে পরাজয়পূর্কক মহক্ষদ-ই-বধ ভিয়ার বাঙ্গালা জয় ক্রিয়াছিলেন। তাঁহার আগমনে লন্মণাবতী, বেহার, বল ও কামরূপজ্ঞসপদবাসিগণ মহাভীত হইয়াছিলেন।* মার্কো পোলো (১২৯৮ প্র:) লিথিয়াছেন, ১২৯০ খুষ্টাব্দ পৰ্যান্ত বালালা বিভিত হয় নাই। ব**ল উক্ত জ**নপদ চতৃষ্ঠরের দক্ষিণভাগে অব্যহিত ছিল।† **উ**ক্ত হুইটা বিষরণী পাঠ করিলে বেশ বুঝা যায় যে, মুসলমান সমাগমের পুর্বে প্রাচীন বন্ধরাজ্য চারি খণ্ডে বিভক্ত হইয়া পড়িয়াছিল। মার্কোপোলো তাহারই দক্ষিণাংশকে বান্ধানা বলিয়া উল্লেখ করিয়া গিয়াছিলেন। রসিদ্উদ্দীন বলেন, আফুমানিক ১৩০০ খুষ্টাৰশ বঙ্গ দিল্লীখারের অধীন হয়। ১৩৪৫ খুটান্দে ইবন বতুতা বল্লালা (বাঙ্গালা) রাজ্যের ও তথাকার ধায়া-প্রাচর্য্যের উল্লেখ করিয়া-ছেন। তিনি আরও বলেন যে, খোরাসানবাসী এতৎপ্রদেশকে বিবিধ উৎকৃষ্ট দ্রব্য-পরিপূর্ণ নগর বলিত 📭 স্থপ্রসিদ্ধ কবি হাফিজের (১৩৫ • থঃ) কবিতার বাদালার উল্লেখ দেখা যায়।§ ভাষো দা-গামা ১৪৯৮ খুঃ বালালার মুসলমানপ্রাধান্ত এবং এখানকার কার্পাস ও রেশমী বন্ধ, রৌপ্য প্রভৃতির বাণিজ্য দ্রব্যের উল্লেখ করিয়াছেন। তিনি বলেন, স্থবাতালে ৪০ দিনে কলিকট্র হইতে বাকালার আসা যায়। এতিরির ১৫০৬ খুষ্টাকে লিওনার্ফো ১৫১० श्रष्टीरम बार्चिमा ७ ১৫১७ श्रुहोत्म वार्ट्सामा वाकाला রাজ্যের ও তদ্দেশবাদীর বাণিজ্যাদি বিবরণ লিপিবদ্ধ করিয়া যান। আবৃদ কল্লকত আইন-ই-অক্বরী নামক মুসল্মান ইতিহাসে বাঙ্গালা শব্দের একটী বাৎপত্তি প্রদন্ত হইয়াছে। তিনি লিথিয়া-ছেন যে, প্রাচীন কালে এই জনপদ বন্ধনামে উল্লিখিত হইত। বলের পূর্বতন হিন্দুরাক্ষগণ পর্বতপাদমূলত্ব নিম্নুর্ভীতে মুদ্ভিকার বাঁধ বা আল দিতেন। বাঙ্গালার বছস্তানে উক্ত প্রাক্ষজনর্পের বিনিশ্বিত এরণ বছণত আল বিছমান দেখিয়া আলবুক্ত বল অর্থে 'বলাল' নামকরণ হুইরাছে। সত্রাট অর্ভুভের বাজালার

^{*} Tabakat-i-Nasiri Elliot, ii, 507.

⁺ Marco Polo Bk. ii, ch. 55.

[‡] Ibn Batuta, iv. 210.

^{\$} मकत निवस भारक् हात् पुष्किशन्हे-दिक्य।
जीन् भन्न दे-भातनी किट्'च च्याच विश्वस् 1 (शक्ति)
¶ Roteiro de Walla Gama \$26. ed. p. 110.

সমৃদ্ধি লক্ষ্য করিয়া নর্শের কৃষ্টিত ক্রান্ত্রীটি গিরাছেন বে, এই স্থান সকল জাতির পক্ষে স্থান স্থান স্থানী ক্রান্ত্রীটাকে ওভিংটন, নিবিরাছেন বে, বাঙ্গালা ক্রান্ত্রীলানের উত্তর পশ্চিমে অব-স্থিত। চট্টগ্রাম বাঙ্গালান নিকাপুর্বা সীমাত্রে বিভ্যান।

[বিত্ত বিষরণ পুরার্জাংশে স্তর্জা ৷]

বন্ধ নামের উৎপত্তি এবং এই রাজ্যের হিছি অতিষ্ঠা
সক্ষমে প্রাচীন গ্রন্থানিতে বেরূপ বিবরণ পাওরা বিবরণ পাওরা বিবরণ পাওরা বিবরণ পাওরা বিবরণ পাওরা বিবরণ পাওরা বিবরণ পাওরা বিবরণ পাওরা বিবরণ পাওরা পরার্ভিত্র হইরাছে। পূই বার্থেমা এবং বিবরণ পার্ভিত্র বালালা নামে একটা নগরের উল্লেখ করিরাছেন। প্রাচীন মানচিত্রে তাহার স্থান নির্দেশ রহিয়াছে। অধিক সন্তব, বার্থেমা বালালার পদার্পণ করেন নাই, তিনি মলবার উপকূলে থাকিরাই, আরবীর বণিকদিগের প্রথাহ্যবর্ত্তী হইয়া দেশের নামাহাসারে বালালার প্রধান নগরের নাম বালালা লিথিয়া বান; কিন্তু ঐ বালালা নগরের কোন নিদর্শন বিভ্যান নাই। বোধ হর, পর্ত্তুগীজনগণ বালালার প্রধান বন্ধর চট্টগ্রামে আসিয়া তাহার দক্ষিণ উপকর্গন্তিত একটা গণ্ডগ্রামকে বালালীর বাসভূমি জানিয়া চট্টগ্রামকেই বালাল-নগরে নামে অভিহিত করিয়া থাকিবেন। ও

সীমাও বিভাগঃ

ব্ৰহ্মপুত্ৰ ও গলার বহীপ এবং তাহাদের অববাহিকা প্রদেশের
নিয়তম উপত্যকাভূমি লইয়া বস্ততঃ বর্তমান বালালা গঠিত।
১৮৭৪ খুটালে আসাম-বিভাগঞালালার অকচ্যত করিয়৷ স্বতন্ত
শাসনাধীন করা হয়, তদবিধি থাস-বালালা, বেহার, উড়িয়া
ও ছোটনাগপুর বিভাগ একত্র করিয়৷ ইংরাজাবিক্বত বালালায়
সীমা নির্দিষ্ট হইরাছে। অক্ষা ১৯°১৮ হইতে ২৮°১৫ উঃ
এবং দ্রাঘি ৮২° হইতে ৯৭°পুঃ মধ্য। শেষে গত ১৯০৫ খুটাজে

১৬ই অক্টোবর পূর্বীবলকে আসামের সামিল করিরা এককন তির ছোটলাটের কথীনে "পূর্ববল ও আসাম" প্রলেশ অতর পঠিছ কইরাছে। শাসন-সৌক্যাল্লে ইংরাজ-গ্রমেণ্ট ভারতবর্বে বে ছালগটী শাসন বিভাগ সংগঠিত করিরাছেন, তর্মধ্যে বালাসা সর্ক বৃহত। নগী, ব্রদ, গাঁধ, জনীপবিহীন বনমালা ও শর্মতা ভূগগু বাদে এথানকার ভূপরিমাণ ১৮৭২২২ বর্গ মাইল। লোকসংবাণ নানধিক প্রার ৮ কোটি।

ইহার উত্তর সীমা নেশাদ ও জেটান রাজ্য, পূর্বো আদায এবং চীন ও উত্তর-প্রজ্ঞার সীমারখন্তী আমানিকত পার্কতা ধন-ভাগ, ৰক্ষিণে বঙ্গোপসাধু ক্রমান্তার ও মধ্য প্রবেশ; পশ্চিমে মধ্যজ্ঞারতীর একেন্দীর অধিত্যকা ভূমি। এই অণিত্যকা ভূমিই বালানা ও মুক্ত প্রদেশের সীমান্ত রেখারণে করিত হইরা থাকে। বাল্পিয়া বরাবর এক জন ছোটনাটের শাসনাধীক ভিল, বিগত ১৬ই অটোবর হইতে চুই জন ছোটনাটের অধীন ইইয়াছে।

মুসলমানগণ বঙ্গবিজয় করিয়া গালের বঙ্গীপকেই সংক্রেড নামাতুসারে বন্ধ বলিয়া অভিহিত করেন। কোন কোন মুসলম্মান ঐতিহাসিক রাজধানী লক্ষণাবতীর নামান্ত্রসারে এই প্রদেশকৈ লক্ষণাবতী বলিয়া বৰ্ণনা করিয়া গিয়াছেন। গৌড় ও **লক্ষণা**-বতী-ধ্বংসের পর যখন রাজপাট ঢাকা ও নবদীপে স্থানাস্করিত হয়, তথনও নিয়বল বালালা বলির বিগণিত থাকে। তৎপরে মুদলমানগণ পূর্কাঞ্চলে এক্সপুত্রতীর পর্যন্ত অধিকার করিয়া বাঙ্গালার সীমা বৃদ্ধি করেন। দিলীর অধীনস্থ আফগান শাসন-কর্ত্তারা এবং ডৎপরবত্তী স্বাধীন আফগান নুপতিবর্ণের রাজা-শেষে মোগলসমাট অকবর লাহের বিখ্যাত সেনাপতি মানসিংহ বালালা মোগল সামাঞ্জ করেন। রাজা টোডরমনের জরীপের পর ताज्ञय आमारहद সুবিধার कछ वन, বেহার ও উড়িবা गिरेश একটা সুবা গঠিত হয় এবং সেই স্থবেগুলি হইতে আবার জেগা, সরকার ও পরগণা প্রভৃতি বিশেষ বিশেষ বিভাগ নির্দিষ্ট হইয়া-ছিল। এই সুবে বাঙ্গালা শাসনের মস্ত নিল্লীখনের স্বধীন একজন শাসনকর্ত্তা নবাব বাঙ্গালায় থাকিতেন। এই শেষেক্তি নবাব বংশপরস্পরায় মূর্শিদাবাদের নবাব বলিগা পরিচিত। একজন নবাব খারা এই বিহুত ও মহাসমুদ্ধিশালী জনপদের রাজস্ব आपारतत स्विता ना रुखतात, डाहात व्यवीतन त्वहात, छेफिया। क्ष हाकात अक ध्वकान नाट्यन-नावित (Deputy governor) वाश्यिक बावका श्रेत्राणिन ।

[রুসগমান ইতিহাসাংশে বিভূত বিবরণ মেধ]
ইংরাজাধিকারে বালাগার সন্ধিবেশ ধরিলে প্রকৃত বসনামের
আনক বিপ্থায় সাধিত হইরাছে। উড়িয়ার উপ্তৃত্যত্তিত বালে-

[·] Stavorinus, Vol 1. p. 29In.

[†] Warthema লিখিয়াছেন, 'আমি Banghella নগন পৰিবৰ্ণন করিয়াছি।" (Varthema 210) কিন্তু ভিনি যে কালিকট ও কোটান ভিন্ন ক্রেন্ড করেন নাই, ভাষা গার্দিনা ডি ওটান লেখনীতে িবৃত্ত ক্ষেত্রেন (Colleguins, f. 30)

¹ A chart of 1748 in Dalrymples Collection.

^{* &}quot;Arracan......is bounded on the North West by the kingdom of Bengala, some Authors making Chatigam to be its first Frontier City; but Teixeira, and generally the Portugues, writers, reckon that as a City of Bengala; and not only so, but place the City of Bengala itself...... more Shuth than Chatigan. The I confess a late French generally than Chatigan. The I confess a late French generally has put Bengali in his catalogue of imaginary Criminal Orington, (1680) 554.

শর হইতে বেহারের মধ্যকরী পাটনা পর্যক্ষ ছানে ইই-ইপ্তিরা শোশ্যানীর বড়গুলি কুটি ছিল, ভাষা উক্ত ভোগ্যানীর দপ্তরে Bengal E-tablishmeut পুরুৱা বলিত দেখা যার। জ্রাজিস্ দার্গতেক চট্টগ্রামের স্থল্য পূর্ক হইতে উড়িয়ার অন্তর্গত পামিরা পরেন্ট (Palmyra Point) পর্যক্ত উপত্ল এবং গলা-প্রবাহিত ভূমিভাগ লইরা বালালা সীমা নির্দেশ করিরাছেন। পার্কাসের (Purchas) মডে, এই উপত্লভাগ প্রায়ঙ্ভ মাইল।

বাজালার ছোট লাটের শাসনাধীন বাজালা,বিহার ও উড়িয়া ্রাবেশ নবীমাশা ও ভাহাদের অববাহিকা এবং উপত্যকা ভূমিতে পূर्व। द्वां नाशभूत विकाश भव्यक्तमिक केश मधाधामत्मव অধিত্যকা হইতে ৰাদালাকে পৃথকু বাখিবাছে। উড়িয়াবিভাগ মহানদী ও অক্তান্ত কতকগুলি নদীর বহীপে সমাজ্ব। ঐ নদী গুলি প্রধানতঃ উদ্ভরপশ্চিমে করম পার্কত্য রাজ্য (Tributary Hill State) হইতে দক্ষিণপশ্চিমে বলোপসাগর পর্যান্ত আসিয়াছে। উড়িব্যার সমুদ্রোপকুল হইতে ইংলাজাধিকত এন্দের সাগর-সীমা এবং উদ্ধরে হিমালয় পর্যাস্ক বিভাত দেশভাগ প্রকৃত বালালা প্রদেশ পদবাচ্য। ইহার দক্ষিণাংশ গঙ্গা ও ত্রহ্মপুত্র নদের ব্দীপ-ভূমি বশিলা গৃহীত এবং উত্তরাংশ উক্ত নৰীব্যের ও তাহার শাখা প্রশাধার প্রবাহ-ক্ষেত্র বা উপত্যকা ভিন্ন জার কিছুই নহে। বেছার বিভাগ খাদ-বালালার উত্তরপশ্চিমে অব্যন্তিত। উহা গলার উচ্চ উপভ্যক। লইরা গাটী বুক্ত প্রদেশ ও বেহারের সীমার গলানদী দক্ষিণপূর্কাভিমূথে বক্রতা প্রাপ্ত হইয়াছে। বেহার ও উড়িয়ার মধ্যবতী এবং অপেকাক্সত পশ্চিম পার্বত্য ভরত্তই ছোটনাগপুর বলিয়া পরিগণিত।

পূর্বাপর আলোচনা করিলে বেশ ব্ঝাবার বে, বাজালার সীমা কোর, সময়েই একটা হির ছিল না। পার্যবর্তী রাজন্তবর্ণের আন্দর্শিণে সমর সমর ইহার অলচাতি ঘটিরাছিল। বলের শেষ ম্সলমান নবাব সিরাজন্তকোলার হক্ত হইতে বলসিংহাসন চ্যুত এবং বলের দেওয়ানী দিলীখর কর্তৃক ইংরাজকরে সমর্পিত হইলেও আরাকান ও একবাসিগণ বালানার সীমান্তব্যদেশ আলোভিত করিরাছিল। সিপাহীবিজ্ঞাহের পর ইউ-ইভিরা কোম্পানির শাসন অপস্ত হইলে, মহারাণী ভিরোরিরা বহুতে শাসনভার গ্রহণ করেন। তথন স্ক্রীমকোর্ট ও সমর দেওয়ানী আলালত উঠাইরা নিজামত লইরা হাইকোর্ট স্থাপিত হর। ইংরাজগ্রমেন্ট বিশেব নৃতৃভার সহিত্ত বালালার শাসন-ব্যবহা করিতে লাগিলেন। ১৮৭৭ খুট্টাম্বে বহারাণী ভারতস্বাক্তী পরে অভিবিক্ত হইলা, ভারতে ইংরাজ প্রভাব অক্ত্র হইলা উঠিল। ভোটানবৃদ্ধ ও বণিপুরবৃদ্ধাবদানে বালালার সীমা পরিবর্ত্তিত হইল। ইংরাজগরনেন্ট বালালাহে গ্রেসিডেলীভক্ত করিরা লইকোন।

ইংবাৰানিকড এই বাকালা ক্ৰান্ত ক্ৰমে একটা প্ৰেলিডেকী-রূপে বিজ্ঞত হুইনু। তথ্য 🧰 ও জন্মপুত্রপ্রবাহিত সমন্ত অব-বাহিকা প্রয়েশ বলিয়া নহে, শীৰুমুদ্ধর সমগ্র অববাহিকা প্রদেশ ও তাহার হিমানর প্রত্ত শাবী প্রাণাধারাঞ্জান নইয়া প্রকৃতপক্ষে এই বিভাগ গঠিত। মোট কথার, বিশ্বালৈলমালার উদ্ভৱ দিঘৰ্তী প্ৰায় সমগ্ৰ স্বাৰ্য্যাৰৰ্ত্ত ভূমি ৰাদ্বালা প্ৰেসিডেন্সীয় অন্তর্ভু ক্ত। বাঙ্গালা প্রেসিডেন্দীর এই বিভাগ সম্বন্ধে অধুনা কেবল ঐতিহাসিকতাই বিভয়ান আছে, কলে ভদারা শাসনসম্পক্ষ কোন কার্যাই **আর** নিরপেকভাবে পরিচারিত হয় না। ইংবাৰবাহের ভারতীয় সেনাদলের সামরিক বিভাগে Commanders-in-chief for Bengal, Madras 9 Bombay नात्म आधिक (परे विखालित प्राक्त त्रिकाटक । যে পাঁচটী জুরুহৎ প্রদেশ মাত্র লইরা 'বেলল প্রেলিডেনী' গঠিত হইয়াছিল, সেই পাঁচটা প্রবেশেই এখন নিষ্কিষ্ট বিভিন্ন শাসনকর্তার অধীন ; কিন্ধু সকলের উপত্র ভারতরাক্তপ্রতিলিধি কর্ত্ব করিয়া থাকেন। বোলাই ও মান্তার প্রেসিডেকী যতঃ গ্ৰৰ্ণৱের ছারা শাসিড; কিন্তু কেন্দ্ৰ প্রেসিডেন্দ্রীর অধীনক যুক্ত প্রদেশ, পঞ্জাব, আঞ্জান ও আসাম ছঙর শাসনকরার অধীন হইরাছে। বস্তুতঃ ছোটলাটের অধীন সমগ্র বাঙ্গালা-প্রদেশ এখন প্রেদিডেন্সী পদবাচ্য হটরা বভিয়াছে।

>৮৮> খুটান্দের ইম্পিরিয়াল সেন্সাল রিপোর্টেছ ২র খণ্ডে বান্দালা প্রেসিডেন্সীর এইরূপ একটা বিভাগ ভান্দিকা প্রানন্ত হইরাছে,—

গুলেশের সাম				ভূপবিৰাদ বাইদ	
>	লেক্নাণ্ট গ	বর্ণরসিপ্	অৰ বেছৰ	44 COCK	
ર્	3	(a)	যুক্তপ্রদেশ	>>>>	
•	ঐ	(a)	পঞ্জাৰ	>8288>	
8	চিক ক্ষিসন	রসিপ্	আসাৰ	86085	
•	ক্ষিপনরসিং	ત્	जास मी <i></i>	3955	

বাদালা প্রেসিডেনী এই ঐতিহাসিক বিভাপ কংঘটত হইবার বহুপরে অর্থাৎ ১৮৬১ খুটাকে মধ্যপ্রধেশে একটা অভ্যন্ত লাসনবিভাগ গঠিত হইবাছিল। কিন্তু বে বালালা বলবাসীর ক্মভূমি, বালা গলা ও ব্রহ্মপুত্রের উপত্যকা কইরা প্রধানতঃ গঠিত, তাহাই ইংরাফরালের রাক্ষণীয় ধ্রুবে নির বন্ধ (Lower Bengel) নামে বর্ণিত হইবাছে।

আকৃতিক বৃক্ত।

উপরোক্ত দীনা-দরিবিট ুবাজালা আহেতে আক্তিজ দৌলবেঁটার বিশেব জোন আহ্মার্ট বটে নাই। বজিলে জয়ন-সকুল বজোপনাগর উল্লাল উল্লিফালার, নাবম-নৈকজ বিয়েত করিতেছে। উত্তরে হিষাচলনিথর ক্রেমাক্ত পৃত্তমালার স্বারোহিত হইরা বেল একটা অভিমন দৃশ্রপট উলোচিত করিরা
দিতেছে। সেই তুরারমন্তিত শিবরশিরে অফণ্কিরণ
প্রতিকলিত হইরা তুরারমন্তি শিবরশিরে অফণ্কিরণ
প্রতিকলিত হইরা তুরারমন্তি। দিবাভাগে কখন তাহা
প্রাকিরণে সম্ভাসিত হইরাছে। দিবাভাগে কখন তাহা
প্রাকিরণে সম্ভাসিত হইরা দিগভ আলোকে পূর্ণ করিতেছে, কখন বা গাঢ় কুপ্রাটকার সমাজাদিত থাকিরা অপূর্ক
মেঘমালার স্তার নিশ্চন দণ্ডারমান রহিরাছে। ঐ পর্যাতগাত্র বিধ্যাত করিরা কুদ্র কুদ্র প্রোত্বিনীসমূহ প্রথর গতিতে
সমতন উপত্যকা প্রান্তরে অবতীর্ণ ইইরা পরম্পরের সংযোগে
পূইকলেবর হইরা এক একটা প্রকৃত্ত জলধারা রূপে প্রবাহিত
ছইতেছে। উক্ত নদীমালার মধ্যে হিমপাদনিঃস্ত গলা ও
অক্সপুত্রই এথানকার প্রধান প্রবাহ। অপ্রগুলি তাহারই শাখা
বা বাল মাত্র। [গলাও ব্রক্ষপুত্র দেখ।]

এই নদীমালাই বাঙ্গালার শোভা ও শভ-নমৃদ্ধির একমাত্র कात्रण। शिमानत्रपृष्ठं, अथवा छेखत्र वरमत्र छेळद्रानतम्ह विरधोछ করিরা এই নদীমালা নিয়বক্ষের নিয়ভূমিতে একটী নুণ্তার আনিরা সঞ্চর করিয়া থাকে। ঐ স্তরের উর্বারতাশক্তি এতাদুশ অধিক বে, যে হলে ঐরপ তার দক্ষিত হয়, তথার পর্য্যাপ্ত পরিমাণে বিভিন্ন প্রকার শত উৎপদ্ধ হইয়া থাকে। গলাও ব্রহ্মপুরের উত্তর উপত্যকা খণ্ড এবং নিরবদের সমতল প্রান্তর এইরূপে নদী-জালে সমাচ্চর হওরার শহুকেত্রসমূহে জলদানের বিশেষ স্থবিধা ঘটিরাছে। ৰুখন ৰূখন ঐ নদী সকল বস্তাবিতাড়িত হইয়া উভর তীরবর্ত্তী গ্রামসমূহ জনমগ্ন করিয়া ফেলে, ভাহাতে ভূপুঠে এক প্রকার পলি পড়ে। ঐ পলিও শক্তোৎপাদনের বিশেষ উপবোগী। অনেক সময় খাল কাটিয়া নান। স্থানে ও বিল প্রভৃতিতে জল আনিয়া চাসবাসের ব্যবস্থা হইরা থাকে। উক্ত ভূমিতে কুপ বা পুছবিণ্যাদি খনন বারাও কৃষিকার্য্য সম্পন্ন হয়। এই সকল কুবিকেত্রে মধ্যে মধ্যে কুত্র পল্লী, গগুগ্রাম, নগর বা वाशिकाधार्माने वस्त्रप्रमूह विद्राक्षिक । नश्रत महिधारन नश्रत-বাসিগণের বছভারোপিত সুলোভান, অথবা ফলবুকারি পরিশোজিত উপৰ্নসমূহ ও তথ্মধ্যন্থ অট্টালিকাদি স্থানীয় সৌন্দর্য্য বৃদ্ধি করিভেছে। গলাদি নদীতীরণভী প্রাম বা নগরসমূহ, বিশেষক্রঃ স্নানের বাটে বেবদন্দিরাধি প্রতিষ্ঠিত থাকিয়া দেশ-দাসীর ধর্মপ্রাণভার ও স্থাপত্যশিরের পরিচর প্রদান করিভেছে। গ্রাম-মধ্য বা পার্থত্ব এই সকল অট্টালিকা বা মন্দির প্রামল গ্রাম্য বৈচিত্ৰ্যের একাপ্রতা ভঙ্গ করিয়া দিতেছে। কোথাও কোথাও ভয়মন্দির বা প্রাচীন প্রাসাধাধি বিধাত হইয়া অল্পপূর্ণ তুপ-ब्रानिरक गतिनक इरेबारक। जे नक्षण ज्यातीय कीर्किनवर्नन প্রস্তব্যব্দের আলোচনার জিনিস। পার্বত্য বনরালার। ঐ
নকল তুপোপরি গঠিত কগলে প্লাকৃতিক সৌলব্যের বিশেব
বিকাশ না থাকিলেও তাহাতে বিভিন্ন লাতীর হিংশু জীবের বাস
বিটাছে। এই সকল বনরাজির অদ্বেও ভিন্ন দৃশ্ধ কুত্র
প্রাম বিশ্বসান আছে। বাত্তবিকপকে বালালার বিভিন্ন নদীবভী গ্রাম বা নগরসমূহের প্রাকৃতিক সৌলব্যের গ্রেডই
বৈব্যা দৃষ্ট হয়, যে সকল স্থানই যেন নবস্থ্যায় সক্ষিত হইয়া
দশকের চিত্ত আক্রবণে প্রবাস পাইতেছে।

वह वाजाना व्यातल यक्किन मेरी वा'नाचा मेरी संचा'यात्र, তন্মধ্যে গলা ও ব্ৰহ্মপুত্ৰ প্ৰেধান। বৰ্ষরা, শোণ, গওক, কুনা, जिला, जानीतथी, (कनकी-नक्तम हशनी मनी मारम अधूमा चार्छ), নামোনর রপমারারণ ও মহামনী প্রততি অপর কর্মী মনী অপেকা-ক্লত ক্লা ইইলেও প্রধান বলিয়া গণা হইরা থাকে। এভিডিন **অনেকগুলি শাখা नहीं, অথবা नहीं त्र ज्ञर्म विस्मय विक्रित नारम** পরিচিত আছে। বথা—অজয়, আলংখালী, অমানৎ, আঁধার-মাণিক, আড়িয়াল-খা, আড়পালালী, আঠারবাকা, আত্রাই (बार्क्सी), खेत्रका, बहुरमाना, वाज्या, बाग्रावी थान, वायथानिह বাদমতী, বৈটাঘাটা খাল, বৈতরণী, বক্তেখন, ৰক্তা, ৰলবীরা, বলেখর বা হরিংঘাটা, বানর, বনাস, বলদুনী, বলালী, বাণগলা, বাঙ্গারা, বাঁকা, বড়কেনী, বরাকর, বড়কুলিয়া, বড়াল, বড়ানাই, বারাসিয়া, বর্ণার, বরুয়া, বাটী, বয়া, বেন্দাঁ, বেণী, বেতনা বা ব্ধ-হাটা, ভক্রা বা হরিহর, ভৈরব, ভার্গবী, ভোলা, ভোলারী, ভোলা, ভূরেলী, বিভাধরী, বিজয়গন্ধ, বিজাই, বিরুণা, বিষধালী, আন্দর্গা, বুড়ো ধর্লা, বড়ভিস্তা, বুড়ামজেশব্র, বড়বলন্দ, বুড়ীগগুরু, বুড়ীগলা, वृजीशकी, वृजीश्वत, छाटेगा, हरनोनी, हन्मना, ठानशानी, रहक्सारे. চেঙ্গা, ছিরামতী, ছোটতিস্তা, চিংড়ী, চিতা, চিত্রা, চুণী, ডাকা-छित्रा, माक, क्र्यावछी, नाडेन, नन्ना, तन्त्रुति, तन्त्व, शाधात्रं, शत्यवत्री, थनकिटनात्र वा बात्रदक्षत्र, शामका, श्रमाहि, श्रमानि, श्रमाकी, शाना, थर्ना, धर्का, ठाउँन, शावा वा काअनमी, स्वरतम ध्वना. छिम्छा, श्वकुमात, श्र्वा, श्नाहे, गट्डबती, गमाधत, गमधिनता, গগুৰী, গগুৰু, গান্ধনী বা কালিয়া, গাংড়ী গড়াই বা গোড়ু ই, বাবর, গাজীবালী, ঘোড়াথালি, বুগ্রী, গোমতী, গুমানী, खबाद्यता, खब्दिया, खड़, इनहात्र, इनमा, हनमी, हाँछा-काँछोबान, हानता, हानी, हन्, हारताता, हात्रावणी, हत्रगांशत, हांफ्छांना, हरवाता, हाजिता, हैव, हैकांमठी, हेक्ती, अवशाम, अमबक्का, यमूना, यमनी, जामवाफ़ी, वलवलिया, वादाही, विकिदा, विमाह. तोषामधी, कार्गाणक, कार्गाक्षी, कार्गाहे, कार्गामधी, করতোরা, কালীমনা, কালীগাছী, কালীভুগু, কালিকী, কাল-बाबी, कंपना, कानांमरी, काकी, कारमां, कंबाई, काक्या,

कैंक्निवानी, काना, कैंग्निर्शन, काशाह, कर्कती, छेखत ও बक्ति कारता, कामाहे, कप्तानम, कामानम, कखताथाड़ी, कहेकी, कहेना, कबा, त्करना, किडेन, धवतावान, धान्याननी, বারী, বড়িরা, ধরধাই, বর্ডায়া, বাট্দা, বোলপেটুয়া, পুদিয়া, কিমিরিয়া, উত্তর ও দক্ষিণ কোরেল, কোহেরা, কোইনা, कृत्रेवा, कुकूत्रे, कुन्तिशाम, कुमाती, कुन्त, कुनल्ला, कोनिकी वा कुनी, नाकराखार, नक्षीया, नक्षीत्माना, नानवका, नीनासन, ছোট রণজিৎ, ছোট বলান, লোক, লোৱান, মাদারি, মাতামুড়ি, मरहान, महानका, बाहेलाड़ा, बान, बहु, बढ़ा हितन, स्थाना, मनानमी, मता-िखा, मर्खाण वा काळानमी, मतिष्ठाभ-गान, মদান, মাতভালা বা হাউলী, মাতাই, মাণামুড়ী, মাতলা বা ब्राह्मभाजना, मयुत्राच्यी, त्मिती, त्मिलशानी, त्माहनी, मूहर्रा, मुख्नारे, मुत्रस्त्र, मुड़िशाली, नागत, निक्त, नम्माकृष्टा, नातम. नविना, नर्खा, त्नवृत, भीनकूमात, नृत्तनती, सूना, शवा, शाहेका, পণার, পঞ্চান, পাঁচপাড়া, পাগুই, পাঞ্চানী, পর্ব্বাণ, পসর, भाउँ कि, भाउँ त्वा, भड़े यांथानी, कह, रक्षी, कृतवृत, भिन्नानी, শীতাত্ব, শিধ্রাগঞ্জ, প্রাচী, পুণ্পুন্, পুণ্ভবা (পুনর্ভবা), जाबानक, जाब-मा, जाम्मान वा जन्मान, जामजाग्रका, जार्था अक, तः छन्, जगबिए, तारता, तांगमा, त्रज्ता, त्रश्त, तांनी, त्रश-नातात्रम, जनमा, मानसी, भाषी, भाषिशारी, (शखकारम), मसीभ, সম্ভৱ, দক্ষোপ, সরস্থতী, সন্তর্জা, সাত্র্থভিয়া, সৌরা, পাহরাজপুর, निशानकाना, निशानमात्री, निवना, निश्रातना, निका. निश्वतन, দিজিয়া, সিংহীমারী, শোভনাণী, সোণাই, সোণাথালী, শহুয়া, 🖹, স্থবর্ণরেখা, ওল্ক, শুরা, তলাবা, তালেখর, তামলানদী, তঙ্গন, তের্লো, তিলেয়া, তিলাই, তিল্যুগা, তিতাস, তুলসী-গঙ্গা, তুণীনদী প্রভৃতি।

উপরোক্ত নদী বা ভাহার শাধাসমূহ এবং ভাহাদের সংযুক্ত থালগুলি বালালার বিভিন্ন ছানে বিক্তারিত থাকার ক্লবি-**एक शांबरण अनवारनंत्र राक्रण ऋतिश परिवारक, स्नोकारगार्श** প্রাদ্রবা বইরা বাভারতিকরও সেইরূপ স্থাবার আছে। কুংখের বিষয়, প্রাক্তিক পরিবর্ত্তান নদীর গৃছি ভিন্নদিকে চালিও ছওয়ায় মনেক নদীর প্রাচীন পাত প্রায় ওদ হইরা পড়িরাছে। 👌 খাতথ্যনিতে বৰ্ষাথত শতীত জন্ত সময়ে অতি সামাচ্ট জল থাকে। এরপ থাতগুলি মরাভিন্তা, ব্ডীগন্ধা প্রভৃতি নামে পরি চিত। অপর কতক গুলিতে স্থানে স্থানে আছৌ হল থাকে না। ইচার উপর, মাুলাভানে রেলপথ বিশ্বত ছওরার নদীবক্ষে সেত নিৰ্দ্মিত হটৱাছে। ভাছাতে কোন কোন নদীর বেগ ধর্ম হটরা পশিকাত চর ছারা উহার পরিষর ফ্রেমশঃ কম ছইরা পড়িরাছে ৷ **অনেক সন্না নধী জন্নাট করি**রা তত্পরি লৌহব**প**িবভারিত

হটয়াছে। জাবার রাজন্মের স্থাবিধা ও বাণিজ্যের বিভারকরে গবর্মেন্ট বাহাছর স্থানে স্থানে নৃতন খাল কাটিয়া একদেশবাসীর মঙ্গল এবং কোথাও নদীর গতি খালছারা ভিন্ন দিকে চালিত করিয়া অপর প্রকার অমলন সাধন করিয়াছেন। প্রবাতন অনেক নদীগর্ভ শুক্ষ হটরা এথন শহাক্ষেত্রে পথ্যবসিত হইতেছে। তাদেশ-ৰাসী জলকটে হাহাকার করিতেছে। বারিপাতরপ জগদীখনের অফুকম্পা ব্যতীত তথাকার প্রজাবর্গের প্রাণরকার আর অঞ্ উপায় নাই। কোথাও বা লক্ষেট, বাধ প্রভৃতির দারা দেশরকার বিবান হইরাছে; কিন্তু বস্ততঃই সেগুলি ছানীর লোকের উপকারার্থে সাধিত বলিতে চইবে। স্বর্ণপ্রস্থ বাঙ্গালার নদীক বাহলা থাকিতেও এখন জলাভাব বশতঃ গু'ৰ্ভকে ও জন্নকষ্টে প্ৰজাবৰ্গ প্ৰপীডিত।

নদী ব্যতীত স্থানে স্থানে কুপতড়াগাদি হইতে স্থানীয় অলাভাব বিদ্রিত হইতেছে। সিংহভূম, মানভূম, হাজারিবাগ প্রভৃতি ছোট-নাগপুরের নানাস্থানে পার্ব্বভীয় ক্রমোচ্চ-নিম ভূমিতে বাধ দিয়া জলরকার বাবস্থা আছে। তথাকার ক্ষ্ কুদ্র জলধারা বাতীত এই বাঁধগুলিই স্থানীয় লোকের বিশেষ উপকারী। উড়িয়ার চিলকাহ্রদ বাডীত বাঙ্গালার আর সেরূপ প্রাক্ততিক সৌন্দর্য্যপূর্ণ হ্রদ দৃষ্ট হয় না। উহার জল লবণাক্ত থাকায় সাধারণের নিকট তত্ত্বর আদর্ণীয় নছে। কলিকাতার দক্ষিণস্থ বিস্তুত "বাদা ভূমি" গ্ৰমেণ্টের ভালিকার "Sait lake" বলিয়া উক্ত আছে।

মুকের, রাজ্বগৃহ, ভাগলপুর, সিংহভূম, বীরভূম প্রভৃতি নানা স্থানে নানা শীতল, লবণ ও উষ্ণ জলপূর্ণ প্রস্রবণ দেখিতে পাওয়া বার। এ সকল স্থান বহু প্রাচীনকাল হইতেই তীর্থক্ষেত্ররূপে বিদিড হইরা আসিতেছে। আকাশ-গঙ্গা, লবণাখ্যা, মোডিঝরণা, ৰবিকুত, সীতাকুত্ত, সূৰ্য্যকৃত প্রভৃতি নামে এ সকল প্রভ্রবণতীর্থ বিদিত। ইহাদের বিশেষ বিবরণ জেলা প্রাসকে লিখিত হইশ্বাছে 🎉 প্রত্রবণগুলি বে আচীনত্বের পরিচারক, ভাহা বাঙ্গালার পুরুষ্ট আচনা করিলে সহক্ষেই উপদৃদ্ধি হইতে পারে।

A341

ভূতববিদ্যাণ বিশেষ গবেষণা ও আইউনসমার ভইরা ছির ক্রিয়াছেন যে, নিয়বংশ্র অধিকাংশশ্বান সমুদ্রগর্ছে নিহ্ন **किन । कानराम नम्**तरा के बखरे भन्तारक होनेना निवारक, एक हे নিম্বল চররূপে অভাথিত হইরা জনসমান্তের বাসভূমিরূপে পরিণত হইয়াছে। ভুগর্তনিহিত্ত শব্দ সংভাষির প্রস্করীযুক্ত শহি এবং নবীভূত মুদ্তারানি তাহা সংখ্যাণ করিছেছে। মহা-ভারতের বনপর্বের ১১৩ অধ্যায় বুধিষ্টিরের তীর্থবাজাবিবরুশ কৌশিকী তীর্ষের কিছু গৃরে পঞ্চশত নদীবুক গদাসাগরসক্ষ এবং তথা হইতে কিছু গৃরে সাগরতীরে কলিজকেশ থাকার বেশ বুঝা বার বে, সমগ্র তীর তৎকালে উত্তররাচের কিল্লপুর পর্যান্ত বিস্থৃত ছিল। কৌশিকীর বর্তমান নাম কুনী। তারকে-খরের নিক্টবর্তী হরিপাল প্রভৃতি প্রানের নিক্ট কৌশিকীর প্রোচীন গর্ত লৃষ্ট হর। গ্রীক্রাজ্যুত মেগেছনিস পাটনার ০০০ মাইল গৃরে গলাসাগর-সক্ষমের কথা লিখিরা গিরাছেন ।। এই বিবরণগুলি বে প্রাশ্বক ভূপঞ্চর গঠনের সমর্থক, ভাহাতে আর কিছু মাত্র সন্দেহ নাই।

আজকাল বেরপ আমরা নোরাখালি জেলার সমুলোপক্লে
সন্বীপ প্রভৃতি চরজাত বীপের উৎপত্তি দেখিতেই, প্রাচীন
কালেও সেইরপ সমুক্রতীরবর্তী নদী সকলের মোহানার পলি
পড়িরা চর হইতে ক্রমে বীপের উৎপত্তি বটিরাছিল। এই
কারণে আনেক হানের নাম-শেবে বীপ' দিরা'ও 'চর' শব্দ দৃই
হর। চক্রবীপ, নববীপ, অগ্রবীপ, গুকচর, বকচর, কাঁটাদিরা,
রূপদিরা প্রভৃতি হানগুলি সম্ভবতঃ ঐরপেই পলিজ চর হইতে
উত্তত হইরা থাকিবে।

তংকালীন লোকসমাজের প্রথিত চর কালে বৃদ্ধণতাদিতে পরিপূর্ণ হইরা উপবন, গ্রাম ও ক্রমে নগরে পরিণত হইরাছে। কিন্তু আজিও সেই চরাডিধান অপক্তত হর নাই। চক্রদহ, ধড়দহ, বিবাদহ প্রভৃতি বেরপ নলীগর্জ হইতে কালে সৌধমালা-মণ্ডিত প্ররম্ম নগরে পরিবলিত হইরাছে, দেইরপ নলীপ্রোতে সমানীত বালুকণাও মোহানান্থ সমুদ্রতটে সঞ্চিত হইরা চরভূমির উৎপত্তি ঘটাইতেছে। আজ বেধানে মকরসংক্রাজি দিনে নাগরতীর্থবাত্রিগণ সর্বেত হইরা লানাদি করেন, কিছুকাল পরে উহা সমুদ্রগর্জ ভেদ করিরা উপরে উঠিবে এবং ক্রমে প্রামে নগরে পরিপত হইরা বাইবে।

কেবনা নদীর সাগরসক্ষ হলে বাছরা, মানপুরা প্রছতি বীপ বাহা ৭০৮০ বর্ব পূর্বে কেবল জাঁটার সমর জালিরা উঠিত ও জারারের সমর ভূবিরা বাইত, বাহা তথন সম্পূর্ণ বাষার অবশ্বার পরিণত হর নাই, এখন তাহাই উচ্চভূমি এবং বহজনাকীর্ণ প্রামসমূহে পরিপূর্ণ ইইরাছে। তাহার পর নাজীরচর, জান্কন্চর
মানে আরও ছইটা কুল বীণ উদ্ধেশবায়। খুটীর ১৮৬০
সালেও উহা জললপূর্ণ জলাজরি হিল, এখন তবার বহু
লোকের বাসহান হইরাছে। ঐরপ আরও বজিবে এবং
সমূহে মধ্যে রাবণাবাদ নামক করেকটা বীপ, কুক্ডিমুক্ডি চর,
ধোগাচর প্রকৃতি আরও কুল কুল কডকভলি বীপ গত ৩০
হুইতে ৪০ বংসর মধ্যে কল হুইতে জালিরাছে ও তাহাতে

লোকের বাস হইরাছে। তার পর ২৪ পরস্পা, খুলনা ও বরিশালের অতান্ত বন্দিণভাগে, বে সকল হানে শভবর পূর্বে সর্ত্রভরদ বহিত, এখন সে সকল হানে অসংখ্য গ্রাম নগর বনি-রাছে। এখনও নিত্য নৃতন উখিত ভূমি সফল লাটে বিভক্ত হইরা কালেটরী হইতে বিলি হইরা থাকে এবং নৃত্য জলল কাটাইরা আবাদ ও গ্রামাদি প্রতিষ্ঠিত হয়।

নদীলোত:-চালিও বালুকাকণা নদীগর্তে সঞ্চিও হইরা চরের উৎপত্তি বটার, এ কথা সর্কবাদিসমত। এই বল্লভূমিতে প্রবাহিত গলানদী কিরুপ কেগে কড পরিমাণ মৃত্তিকা নিত্য বহন করিরা সমুক্রমুখে চালিরা হিডেছে, তাহা গণনা করিলে চমৎকত হইতে হর।

প্রায় আর্ক শতাক গড় হইন, ক্রুক্তরন আডিজ রুরোপীর পণ্ডিত গালীপুরে বসিরা নানা উপারপ্ররোগ বারা দ্বির করিবাছিলেন, গলা প্রতি বংশরে নাগরসলম হলে ১৭০৮-২৪০০০ নণ মাট বহন করিবা ঢালিরা দিডেছেন ৷ কিন্তু গালিপুরের দক্ষিণে বরং গলা ও তাহার শোণ, অলর প্রভৃতি শাখা নদী, প্রকারবনের মধ্যন্থিত বিপঞ্জত নদী এবং তাহার পর উত্তরপূর্ব্ব-কোঞ্ছাতে আগত ব্রহ্মপুর, ধণেশ্বরী প্রভৃতি নদী, এই হিসাবে আরও কত মাট বাহিরা আনিতেছে, তাহার ইয়তা করা বার না ।

উপরোক্ত মৃত্তিকান্তরের গঠন ও পরিণতি বালালার কোন কোন বিভাগে কিরপ ভাবে সংসাধিত হইরাছিল, নিরে বিভাগ নির্দেশ সহকারে তাহার একটা সংক্রিপ্ত বিবরণ প্রবস্ত হইল:—

প্রথম বিভাগ।-- রাজমহলের পর্কাতশ্রেণী হটতে আরম্ভ করিরা তাদীরথীর উৎপত্তিস্থান ছাপঘাটা পর্যান্ত বডগঙ্গার দক্ষিণে এবং ছাপঘাটা হইতে ভাগীরথীর পশ্চিমদার বাছিরা মেদিনীপুর পর্যান্ত, মোটামোটা প্রায় এক প্রাকৃতির মাটি দেখা বার। ভূতববিদের হন্ম দৃষ্টিতে দেখিলে, ভাহাভেও বিভাগ দৃষ্ট হর ; কিন্তু দুল দৃষ্টিভে উহা প্রার একই প্রকার। ইহার সর্বাএই সমান কাঁকর ও পাধর পূর্ণ, অথবা পাহাড়িরা কঠিন মাটি বিছ-মান। বিদ্যাও পূর্মাঘাট পর্মাডালেণীর মাটির প্রকৃতির সহিত ইহার बातक विश्वतः आरम्भ थाकित्मन वच्चणः अक विश्वतः क्रम्प्यहे সমান-কাৰুর ও পাধর পূর্ণ পাহাড়িরা মাটি। বেধানে কাকুর বা পাধর দেখিতে পাওয়া যায় না, (যেমন বর্জনান জেলার দক্ষিণ ও পশ্চিমাংশ এবং হুগলির পশ্চিমাংশ,) সেখানে মাটি এড শ্রুটিন বে তাহাকেও পাধরের অভ্রম্বভাবস্থা বলিয়া করনা করা ষ্টেডে পারে এক ভাহার প্রকৃতিও এরণ বে, বাদাগার আর কোধারও ভনমূত্রণ মাটি পাওরা বার না। এই ফুডাগের মাটি বহ বুলবুগাভুর হইতে নিশিত, কুভরাং লোজা কথার ইহাকে পাকা ৰাট বলা বাইতে পারে। ইবা নিশ্চিত 🖦 এক নময়ে বনুত্র

Magesthanes Fragmente, vi.

গৌড়ের মিকট পর্যান্ত বিশ্বত ছিল, অধ্য। আরও পূর্মের, গলাসাগর সক্ষম বধন রাজ্যহলের সারিধ্যে অবস্থিত ছিল, সেই সনরে সমূদ্রের জল কথনই এই মাটিকে অভিক্রম করিছে সমর্থ হর নাই। কেহেতু অর্কাল সমূদ্র সরিরা গোলে, বে সকল চিচ্চ পশ্চাতে পড়িরা থাকে এক বে সকল জলজনীবের পঞ্চরাদি মৃত্তিকার অতীচ্ছ হইরা বার, এ ভূতাগের কোথাও তাহার চিচ্ছাত্র নাই।

দিতীর বিভাগ। পদ্ধা বা বড়-গলার উত্তর-তীর হইতে হিমালবের পাববেশস্থ তরাই ভূমি পর্যন্ত সমন্ত ভূতাগ ও হিমালরের
লালু ভূমি। ইহা হিমালরের উচ্চ প্রদেশ হইতে পদ্মার উত্তর তট
পর্যন্ত ক্রমাগত ঢালু ইইয়া আসিরাছে। এই ভূতাগের সর্ব্যন্তই
ক্রমির প্রকৃতি এক প্রকার—সর্ব্যন্তই হিমালরের গাত্রবিধীত
নালুকারাশি বিস্থত। তাহার উপর কিঞ্চিৎ পরিমাণে বালুকামিন্নিত লো-আঁশ মাটি জন্মিরা ঐ মৃত্তিকাকে চাল আবাবাদি
কার্যের উপযোগী করিরাছে। এই ঢালু বালুকামর জনিতে,
সর্ব্যন্তই হিমালরের গাত্র-ধৌত জলরাশি অন্ত:-সলিলভাবে
প্রবাহিত থাকার, সমন্ত দেশের ভূমিই অরপরিমাণে জলসিক ও
আর্ম্র বিহ্রাছে। ঐ মৃত্তিকার বালীর আধিক্যবশতঃ এ সকল
প্রান্তের গেলেই, বালী ভালিয়া গর্ত ব্রিরা যায়। ফলতঃ অতি
বীর্যারতন দীর্থিকা খনন করা যাইতে পারে।

বড়ই আশ্চর্যোর বিষয়, সমুদ্র হুইতে এন্ত দুরে ও হিমালয়-পাদম্লে এত বালুকা কোণা হইতে আসিল? ভূতত্ত্ববিলগণ ৰলেন, পৃথিবীর ভূপশ্লর নির্শ্বিত ছওয়ার "ইওসিন" মুগে, হিমানমের ভাষেশ পর্যান্ত সমূত্র-তর্ম্ব প্রবাহিত ছিল। কেবল ভটভাগ বলিয়া নহে, ভাহার বর্তমান উচ্চতার প্রায় এক-ভূজীয়াংশ পর্যাক্ত তথনও সমুদ্রগর্জে নিমক্ষিত। ইওসিনের পর মিওসিন্, গ্লিওসিন্ এবং ভাহার পরে ভূপঞ্জের চতুর্যযুগের ভর-निर्मान किया हिनाजर । हेरांत्र मध्या मिश्रीन खाराहे अथम মন্ত্রাপ্টির চিক্ প্রাপ্ত হওরা বার ; তাহার মধ্যেও আবার নিয় ৰিওসিনে প্ৰাপ্ত চিহ্নগুলি জড়ি জম্পষ্ট ও সন্দেহজনক। উপর मिक्तिन् इहें एक रे किन मानवीय अखिएयत व्यक्ति किन आध হওয়া বার বলিয়া উহাতে মানবীর যুগের আরম্ভকাল বলা যাইতে পারে। এইরূপ এক একটা স্তর গঠিত হইতে কড লব্দ লক বর্ব গত হইবা বার। প্রভরাং ভত কালের সমুদ্র-পরিভ্যক্ত বালী আৰিও প্ৰস্তৱাৰভাৰ প্ৰিণ্ড মা ৰইবা বে নিজাবভাৰ পতিত बहिबारक, देश कथनरे अञ्चयभन्न दनिया दिव्यवित स्त्र ना ।

বর্তমান বালুকারাণি হিনাগরের গাঞ্জবিধ্যাত প্রভররেণ্ডকা ভিন্ন আর ভিনুই নহেশ একে হিনাগরের চালুগ্রহেশ ভার প্রভর- প্রবণ অববাহিকা ভূমি, স্থভরাং বালী অমিবার পক্ষে অন্থবিধা কোণার ? এ বিভাগের উপর অর্থাৎ উত্তরাংশের অমি, প্রথম বিভাগের সহিত সম-পুরাতন এবং নিরাংশের অমি তমপেকা কিছু আধুমিক হইলেও, অপর চুই বিভাগ অপেকা বে পুরাতন, তাহাতে সন্দেহ নাই। কিন্তু আশ্চর্যের বিষয় এই বে, ভূতীর ও চতুর্থ বিভাগের মৃত্তিভার বে পরিমাণে দ্রুতা বেখা বার, এই পুরাতন অমির কোন অংশে সেরপ দৃষ্ট হর না। এই চাপু ভূমিতে অবঃসলিলের প্রবল প্রবাহকিয়া মিরস্তর সম্পাদিত হওরাই ইহার একমাত্র কারণ; তবে ইহাও অতঃসিক বে, এই সকল ভূতাগ অয়িবার বহুকাল পূর্বে এই ঝুপীরুত অসীম বালুকারানি ভূপ্তে সঞ্চিত হইরাছিল।

ভূতীর বিভাগ। ব্রহ্মপুত্রের পূর্নতট হইছে নওয়াগালি, চট্টগ্রাম প্রভৃতি প্রদেশ এবং পশ্চিমদিকে ডমোলুকের নিকটবত্তী ভানসমূহ। নৈস্থিক স্থারণ বিশেষে সমূদ্র সরিয়া গেলে, ছেরুপ প্রাকৃতির ভূমিভাগ উঠিয়া থাকে, অবিকল সেই প্রকার প্রকৃতিবিশিষ্ট ভূমি নইবাই এই সমস্ত ছানের উৎপত্তি। সমৃদ্র অন্তর্হিত হইবার সময় স্থানবিশেষে যে সকল বালির স্কুপ রাখিয়া গিয়াছে,(যাহাকে বালিয়াড়ী বলা হয়), তাহাই ঐ সকল নবোদিত স্থানের প্রাচীনম্বের হেতু। এই স্কল ভূপ কোথাও খণ্ড খণ্ড পর্বতাকারে বিভ্যান আছে, কোথাও বা কুদ্র কুদ্র অনতি উচ্চ পাহাড়লেণীতে পরিণত হইয়াছে, কিন্ত স্থলবিশেষে এখনও অবি-কল বালিঘাড়ী আকারেই রহিয়া গিয়াছে। তমোলুকের নিকটফ বাশিয়াড়ী সকল এখন অধিকল বালুকাস্ত্ৰপ মাত্ৰ, কিন্ত চট্টগ্রামাদি অঞ্চলে, ভাহা পর্বভাকারে পরিণত। এই সকল পর্মতের বহিরাবরণ ভেদ করিলে অভান্তরে এখনও সেই ৰাশুকান্ত,পের পরিচয় পাওরা বায়, তবে কোথাও কোথাও কিষ্ৎপরিমাণে বালুকান্তর পাথরের স্করে পরিণ্ড হইছে জ্বারস্ত করিবাছে। এই সকল পর্বতের অভ্যন্তর ভাগের সর্বত্তই সামৃত্রিক জনজ জীবের পঞ্চরে পরিব্যাপ্ত। চট্টগ্রাম প্রদেশের সীডাকুও তীর্থের নিকট বে পর্মতমালা আছে, তাহা কিরং-পরিমাণে আলের স্বভাববিশিষ্ট হইলেও ডাহানের উৎপত্মি এবং পরিণতি কতকাংশ উক্ত প্রকারের সামুদ্রিক বালিরাড় হইতে ঘটিরাছে ত্রীকার কুরিজে হইবে। ব্রহ্মদেশের পূর্ক দীলার ৰন্দিণ হইতে উত্তরমূর্ণে বে পর্কতমালা প্রধাবিত হইয়া ছিলালয়ে

সংলগ্ধ ইইরাছে, বে সকল পর্যাত হুইতে এই বালিরাড়ীনির্নিত পর্যা ক্রমালার প্রায়ুক্তি সম্পূর্ণ বতর। সে সকল পর্যাতমালা বহুগ্ পূর্বে স্ট ইইরাছে। সমূত্র এক সমরে ভাহারই পানদেশ ধৌত করিরা প্রবাহিত ছিল। কালে তথা হুইতে সরিরা গিরা এই ভূতীর বিভাগহ ভূমি সকল উত্ত করিরাছে। এ ভূভাগ প্রথম ও ছিতীর বিভাগ হুইতে আধুনিক। কিন্তু আধুনিক হুইলেও, বিতীর বিভাগ হুইতে বহুপরিমাণে দৃঢ়ভা প্রাপ্ত হুইরাছে। কিন্তু বে দৃঢ়ভা প্রাপ্ত বিভাগের সমকক নহে।

চতুর্ব বিভাগ।—এই বিভাগের মৃত্তিকা সর্বার প্রদময়, কোন কোন স্থানে কারণ বিশেষে কিছু দৃঢ়তা প্রাপ্ত কইয়াছে মাত্র। প্রথম ও চতুর্থ বিভাগের মৃত্তিকা পরস্পারে তুলনা করিলে স্পষ্টই পুথক ধর্মাক্রান্ত বলিয়া বোধ হয়। গলার দক্ষিণে রাজমহলের পার এবং উত্তরে মালদহের পার, এ চুইরের মাটি তুলনা করিলে অতি ক্রন্মরভাবে পার্থকা দেখিতে পাওয়া যায়। রাজমহলের পারে গঙ্গার জলের ধার পর্যান্ত পাথর ও কাঁকর-বুক্ত কঠিন রাস্তা ও এঁটেশ মাটি এবং ঠিক তাহার ওপারের সমস্ত জমি, অথবা সমস্ত মালদহ জেলার দোআঁস পলিবুক্ত মাটি বা কেবল রাজমহল ও মালদংহর পার বলি কেন, সমস্ত ভাগীরথীর ব্যাপ্ত ছুই পারের মাটির তুলনা করিলে, তত্রভরের প্রকৃতিগত ভেদ দামান্ত দৃষ্টিতেও পরিদন্দিত হয়। ভাগীর্থীর পশ্চিম পারের নিতান্ত ধারের মাটি লইয়া তুলনা করিলে বিশেষ কিছুই প্রভেদ দেখা বায় না। যে পর্যান্ত নদীর क्रियात्र माणित जाना गड़ा श्रेटरण्ड वा श्रीकारण श्रेया शिवारण, ভাচার সীমা অভিক্রম করিয়া মাটি পরীক্ষা করা আবশুক।

পশ্চিমে ভাগীরথী, উত্তরে পদ্মাও তাহার লাখা প্রশাধা,
পূর্ব্দে ধলেখনী ও মেঘনা এবং দক্ষিণে সমৃদ্র বিস্তৃত এই
গালের বহীপ ভূতাগই চতুর্থ বিভাগের আরতন। গঙ্গা এবং
ভাহার অসংখ্য লাখা নদীসমূহের প্রবাহ হারা আনীত
মৃত্তিকার সমৃদ্র ভরাট হইয়া ক্রমে ক্রমে চর পড়িয়া বরীপের
সমস্ত ভূমিভাগই নির্দ্রিত হইয়াছে। একভ প্রার সমস্ত
ভূমাগেই পলি মাটি সকল অতি অবিক্রভভাবে বর্ত্তমান দেখা
নার। ক্রমতা শক্তিও এত অবিক্র বে তাহার সম্বে
অমির উর্ম্বরতা শক্তিও এত অবিক্র বে তাহার সম্বে
ক্রমেন বিভাগের মৃত্তিকার তুলনাই হইতে পারে না। এখানে
বংসরের মধ্যে একই জমিতে বছবার ক্রমল হইয়া থাকে এবং
ক্রমি পতিত বাক্রিনেও বত নীর ক্রমণে পরিপূর্ণ হয়, এত আর
ক্রেমাও হয় না।

্পূর্ব্ব কবিত জুমিসমূহের মধ্যে প্রথম বিভাগীর জমি সর্বা-শেকা নীরস ; হৈছবিন প্রতিত বালিলেও, ফুর্ক বিভাগের শনির স্থার, কোন কালেই ঘন লখনপূর্ণ ক্ষরতা প্রাপ্ত হর
না; অথবা তথার উত্তিরানির বৃদ্ধি এবং বিকাশণ জানুশ সভেন্দ ব বা শীস্বতর নহে। বিতীয় ও তৃতীয় বিতাশীয় লমির উর্বরেভা ওণ প্রারেই এক সমান এবং প্রথম বিভাগীর ক্ষমি অপেকা বহু-প্রশে সভেন্দ। এমন কি কোন কোন অংশ চতুর্থবিজ্ঞাগের অনেকটা অন্তর্মণ !

চতুর্থ বিভাগের নাটি এবং তৃতীর বিভাগের মাটি বানিও উত্তরই ক্রমে সম্প্র সরিরা বাওয়ার লাগিরা উঠিরাছে বটে; কিছ ইহালের নির্মাণ-প্রকরণে প্রকৃতিগত বিভিন্নতা জনেক। এই প্রকার মাটি নির্মাণে সমুক্রের নিতা জোরার ভাটার সমর জন সরিরা বাওয়ার সলে কতকটা সাক্ষ্য লক্ষিত হয়। ভাটার সমর সমুক্রের ঢাকু তীর ভূমিতে বে প্রকার অবকে তবকে বান রাখিরা জন নীচে গিরা সরিরা পড়ে; এখানেও সেইরপ কোন নৈর্মাণিক কারণবদে কানক্রমে বেমন সমুক্র জন তবকে তবকে ক্রিরা গিয়া পৃথক হইরা পড়িরাছে, ঠিক সেই প্রকারেই এই সকল জমির উদ্য হইরাছে এবং সেই সলে সলে আবার বাহুর প্রবন্ধ আবাতে বালুকারানি ত্রুপীকৃত হইরা ও তথাবিধ কারণে ক্রমোত্তর প্রিলাভ করিরা, প্রকাও প্রকাও বালিয়াড়ী সকল নির্মাণ করিবার প্রকরণ অন্থবিধ।

বাসাগার দক্ষিণস্থ চনিবশ পরগণা, পুননা ও বরিশাল জেলার দক্ষিণভাগ এবং স্থল্লরবনের অবস্থা মনোযোগপূর্বক পরিদর্শন করিলে এই চতুর্থ প্রকার ভূমিনিশ্মাণের কৌশল অতি সহজেই অন্তত্ত্ব করিতে পারা যায়। নদীপ্রবাহে আনীত মৃত্তিকার ক্রিয়ারারা নদীর সঙ্গম-স্থলস্থ সমুদ্রে চর পচ্ছে বটে, কিন্তু ভাষা একেবারে থানিকটা পরিমাণ স্থান চারিদিকে সমানভাবে ভরাট করিয়া জ্বমাট বাঁধে মা বা একবারে সেইভাবে উঁচু হইয়া উঠেনা।

নদীপ্রবাহ সন্তাভিত ঐরপ মৃত্তিকারালি সমুদ্রগণ্ডে বিক্রিপ্ত হইরা প্রথমে কথা ত্রিকোণ ক্ষেত্রের আকারে মোহনাহিত সমূদ্রকে ভরাট করিবার চেটা করে এবং ঐ ত্রিকোণক্ষেত্রের তলদেশ নদীর মূথে এবং অগ্রবর্ত্তী কোণ সমূদ্রের দিকে থাকে। কিন্তু সমূদ্রের প্রবাদ লোতোবেগ, অতি ক্ষর পরিসম্ভূক ছানসমূহকে কাটিয়া বিক্রিপ্ত করিয়া দেয়, এই হেন্তু বথন ভরাট ছান ক্রমে সমূদ্র হাছিয়া উঠে, ভখন এক অবিভিন্ন ত্রিকোণ-ভূথণ্ড নির্নিত হওয়ার পরিবর্তে ক্ষতক ক্ষংশ মূল ভূতাগে সংলগ্ন এবং অবনিষ্ট বহুখণ্ড বীপাঞ্চারে পরিপত ইইয়াছে দেখিতে পাওয়া বার। সেই বীপাঞ্চারে বারিণত ইইয়াছে দেখিতে পাওয়া বার। সেই বীপাঞ্চারর মধ্যে বেটি সকলের মধ্যতলে অবহিত, সেটী ক্ষমবিত্তর কথা আকার

थाथ रत। श्रमक, जे कतांठे कृषक वधन जन हाफारेता লাগিরা উঠে নাই, লখচ লমাট বাঁধিরা গিরাছে, তখন সমুদ্রলগের লোত-ৰেগ আৰু ভাহাৰ পাত্ৰ কাটিয়া বিক্লিপ্ত বা বিধৌত করিতে পারে না। বরং ভাহার মধ্যন্থিত নির ও নরম অংশ সকল কাটিরা তথার গভীর রেখাপাত করিয়া থাকে। অমী কন ছাড়াইরা উঠিলে, এই সকল গভীর রেখাই, তখন বদীপ মধ্যে च्यानक तुरू९ ७ कृष्य मनी ध्वरः थालात चाकात शात्रन करत। এই নবোধিত ভূমিভাগ উহাদের অসক্রিরা ছারা পুনর্কার ভালিয়া গঢ়িৰা ও ক্ৰমাগত কোৱারের প্রবদতার প্লাবিত হইরা, পশিষাটির বারা পুননির্বিত হইলে, একরণ চিরন্থারির গ্রাপ্ত হইছে পারে। তখন অপেকারত পূর্ণনির্বিত মাটি হইতে নবীনালা বিরল হইরা, অপূর্ণ নিমভাগে সরিরা পড়ে এবং ডধার পুনরার তথাবিধরণে নির্দাণের কার্য্য করিতে থাকে। পূৰ্ণনিৰ্দ্মিত অংশে তখন বে কিছু নদী ও থান থাকে, তাহা গণনায় ও আয়তনে সামান্ত এক তত্মারা ভাঙ্গা গড়ার কার্য্যও এত মুত্তভাবে পরিচালিত হয় যে, দেশমধ্যস্থ মৃত্তিকাও বিশেষ রূপান্তর প্রাপ্ত হয় না।

গালের ব্রীপ এইরপেই গঠিত হইয়াছে এবং এখনও উহার দক্ষিণভাগের গঠন-ক্রিয়া উক্ত প্রকারে পূর্ণপ্রতাপে চলিতেছে। নিভাই মন্তুরের বাস ও ব্যবহার উপযোগী নৃতন নৃতন ভূমিথও সমুদ্রজল ছাড়াইয়া উঠিতেছে। উপরোক্ত ভূগঠন প্রক্রিয়ার অভিনরে, এখনও সমুদ্রগর্ভে মৃতিকা-নির্মিত এমন অসংখ্য চর দেখিতে পাওয়া যায়, যাহা জোয়ায়ের সময় জলে ভূরিয়া থাকে, কিছু ভাটার সময় জাগিয়া উঠে। ঐ সকল জমির প্রোভবেগে তথন ভাহাদের উপর নদী ও খালের যে থাতেরেরা পড়িতে দেখা যায়, ভাহাই ভবিষ্যতে অভি স্কল্পরভাবে জাগা জ্বিয় পূর্কে নদী ও খালের আকারে প্রকাশ হইতে থাকে। জালে এ সকল নদীনালাও বিভ্তারতন হইয়া সময়ে শুক্সের্ড হইয়া সরিয়া যাইবে এবং ক্ষে ক্রে বীপ সকল দেশভাগে সংলগ্ধ হইয়া একাকার যাইবে এবং ক্ষে ক্রে বাটাই বাইলা।

গৌড়ের পূর্ব্ধ-বন্ধিণর সমুদ্রভাগও এইরপে ভরাটপ্রাপ্ত ভূমি-থণ্ডের উদরে ক্রমণ: বন্ধিণমূথে সরিরা যার এবং সন্তবতঃ সেই উরভ ভূখণ্ডে বর্ত্তমান ফুল্বরনের ভার অসংখ্য নদী বা থাল পড়িরাছিল। সেই সকল নদী ও খালের মধ্যে গলার মূল-প্রবাহই সর্বাণেকা প্রবল বা ক্রমণারা ছিল। সেই মূলপ্রবাহ আভিও ক্রম্মর পল্লার আকারে ভটভূমি বিপূর্ণ করিরা প্রবাহিত হইপ্রেছে।

কণতঃ সমুদ্র সমিয়া বাওয়ার বধন সমুদ্রগতে প্রথম বরীপ সমূখিত হয়, তথন গলার মুদ্যপ্রবাহ ভারীয়ধী বাত দিয়া প্রবাহিত হইরাছিল এই কারণে চিরন্তন কাল হইছে লোকে গলার নাগর-সলমকে 'গলাসাগরসক্ষ' বলিরা অভিহিত করে। পদা বা বেঘনা সম্ভবতঃ প্রথমে সমুদ্রের খাড়ি ছিল, পরে নদীপর্কে পর্যা-বলিত হইরাছে।

ৰুষ্টাৰ প্ৰথম শতাব্দীতে লিখিভ পেরিপ্ললে বেখা বার বে, বর্তমান রঞ্পুর প্রভৃতি অঞ্চ হইতে তেজপাত ও অপরাপর ৰাণিজ্যদ্ৰব্য গলা বক্ষে নৌকা বা জাহাজ বোগে গাছেছ ৰন্দর অর্থাৎ তমোলুক বা ভাত্রনিস্তিতে আনীত হইড। অবশ্রই স্বীকার করিতে হইবে যে, গঙ্গার মুলপ্রবাহ ভাগীরখীর খাদে গ্রেবাহিত না থাকিলে কিব্লুপে 🕸 স্বক্ষণ বাণিজ্যন্তব্য 🕏ত্তরবঙ্গ হইতে পদার বারা বাহিত হইরা ত্যোপুক্রণে আসিতে পারে না। অথবা এমনও হইতে পারে বে, এখন বেমন মেবনার মুখে বহুদুর প্রবিষ্ট সমুদ্র খাড়ীকেও মেঘনা বলিয়া থাকে: তথনও সেইরূপ গলার মূখে বহুদুর প্রবিষ্ট এবং তমোলুকের ভটবাহী সমুদ্রগাড়ীকে গলা বলিরা ডাকিড। পেরিপ্ল,সে গালের কলরে বাণিক্ষা দ্রব্যাদির প্রসঙ্গে সেই অর্থেই গলার নির্কিশেষত্ব সূচিত হইয়াছে। পেরিপ্র হইতে প্রাপ্ত ইহার আত্মুসঙ্কিক আরও অবধারিত করা যায়;—গঙ্গার উপর বাণিজ্ঞান্তব্য বহনার্থ যে সকল নৌকা ব্যবহৃত হইত, তাহারা সমুদ্রগামী পোত:নদীতে যে সকল নৌকা বাতায়াত করে, তাহারা সম্ভবতঃ তথার বাইতে সাহস পাইত না বলিয়াই সামুদ্রিক পোত ব্যবহৃত হইত। এডপ্তির গঙ্গার মূথে ঘন সরিবিষ্ট জনপদ ও বাণিজ্য বন্দরাদি সহ "ধুসে" নামক একটা প্রকাশু বীপ ছিল। ভুতরাং গলা দক্ষিণভাগে নদীর পরিবর্তে বছবিভৃত সমুজ্রখাড়ী বিভ্নমান না থাকিলে পেরিপ্ল,সের এ ছইটি উজির কোন সৃত্তি থাকে না।

ভাগীরথীর পূর্ককৃশছ মাটি ক্রমে ক্রমে উচ্চ ও অপেক্ষারত কঠিন হইরা উঠিলে এবং বছীপের অপরাংশেও বছল পরিমাণে ভূমিওও সকল নির্দ্ধিত ও জলরেখা ছাড়াইরা মন্তকোন্তলন করিলে বিবিধ নৈস্গিক কারণের প্রবেশতার, গন্ধার মৃল্যমোত ভাগীরথী থার পরিভাগে করিরা, পল্লা নাম গ্রহণ ও বভন্ত থার অবলবনপূর্কক, ভাগীরথীর পূর্কত্লের আরও উত্তরপূর্কভাগে সরিরা গিরাছিল। এবনও পল্লা ক্রমণা উত্তরনিকে সরিরা বাইতেছে। গন্ত পত্ত বংসরের মধ্যে পল্লার গত্তি কভটা সরিরা গিরাছে, ভালা ভাবিলেও আক্রয় হইতে হর। করিলপুর কেলার মান্যরিপুর মহকুমার কাছে বে ছোট খালটি এথন পালঙের নির দিরা বাইরা কীর্তিনাশার গিরা মিশিরাছে, ভবার ৭০৯০ বংসর পূর্কে পল্লার মূল থাত ছিল; কিছ এখন পল্লা ভারার ১৯১৭ ক্রোপ উত্তরে। বে ক্ষুত্র নবী কুবার নামে

করিবপুর জেলার নর্কত কান্তে, অনুমা ১২৩ বংশর পুরর্কা, ভাহার অনেকাংশেই পরার আটীন আবাহ ছিল। ভথা হইভে পরা এখন বহু দুরে সরিরা গিয়াছে।

গালের বন্ধীপের অবহা বধন এইরপই ছিল; তথনকার দেশবিভাগ কিরপ ছিল, তাহার সংক্ষেপ আলোচনা বোধ হর অপ্রাসন্ধিক হইবে না। চীল-পরিবারক ইউএন্-বিরাং কাজিনগড়ের পরেই পৌতুরর্জন রাজ্য দেখিরাছিলেন। বর্ত্তনান ইউ ইতিরা রেপওরের কাহেগজ টেসনের নিকটবর্তী রান কাজিনগড় বালিরা অন্তনিত হর। তথার পর্বতোপরি তেলিরাগড় নামক একটা প্রাচীন কেরা, অনেক ক্ষরা ও ক্ষরে গৃহাদির ভ্যাবদের এবং অনেক ভার দেববেবীর মূর্ত্তি দেখিতে পাওরা বার। বাহা হউক, এই কাজিনগড় ও কুন্দী নদীর পূর্বতিইতে আরম্ভ করিরা ব্রহ্মপুত্র পর্বান্ত পূর্ণিরা, মানদহ, দিনাজপুর, রঙ্গপুর, বঙ্গুল, কোচবেহার প্রভৃতি স্থানির লাইরা প্রাচীন পৌতুরর্জন রাজ্য। পৌতুর্জনের পূর্ব্বে এবং ব্রহ্মপুত্রের পূর্ববিকে প্রধাবিত সমন্ত ভূডাগ লইরা প্রাচীন প্রাক্তির বা কামরপুর।

হিউএন সিরাং লিখিরাছেন বে, কাষরূপ হইতে আর ২৫০ মাইল দক্ষিণে সমতট রাজ্য। এই দুর্ছ নির্নপণে, বোধ হয়, সমতট রাজ্যের পরিবর্তে তাহার রাজধানীর দুর্ঘ মিরু-পণ্ট হিউএন সিরাংএর অভিপ্রেত। বর্তমান ঢাকা, পাবনা, প্রভৃতি কেলা বোধ হর তৎকালে সমতট রাজ্যের অন্তর্গত ছিল এবং পদ্মার বর্ত্তমান খাতের দক্ষিণেও কিছুদুর পর্যন্ত এই রাজ্য বিহুত থাকে। পদ্ম ক্রমণঃ আরও উত্তরে অর্থাৎ ভাহার কর্তমান স্থানে সরিলা বাওলার পর, এই দক্ষিণাংশ, ক্রমে গালের বৰীপের অন্তর্গত হইরা পড়িরাছে। সেকালের সমতট রাজ্যের আরভন পদ্মার প্রসরগদীল গতির দারা অনেক রূপান্তর প্রাপ্ত হইরাছে, ভাহাতে আর সন্দেহ নাই। কেবল সেকালের সমভট কেন ৭--- এ ফালের বিক্রমপুরেরও বহু রূপান্তর খালিছে। পূর্বে উভর বিক্রমপুর ও বন্ধিণ বিক্রমপুর একই সংসধ ভূকও ছিল, কিন্তু একণে মধাৰ্কা দিয়া পদা প্ৰাথাহিত रुखतान, केवन विकामगुत्र रहेरछ पक्लि विकामगुत्र गृथक् रहेता পঞ্জিরাছে। বাহা হউক, সমতটের বিশিক্ষ কুতাগ বে সমুদ্রতটে অৰ্থিত ছিল, ভালা ৰলাই বাহণা। সময়ট এবং ব্ৰহ্মপ্ৰের পূর্মান্থত ভূজাগ সমল, অর্থাৎ আধুনিক ত্রিপুরা, নোধাখালি এবং চট্টপ্রায় অভৃতি স্বাদে তৎকালে কিরাভারি বিবিধ অন্যর্ক্ত-্ৰেপ্ৰিছিৰ নিবাস ছিল।

পূৰ্বোক্ত কাজিলগড়ের বন্ধিশ ক্ষতে একং ভালীরজীর পশ্চিম ভক্ত বাহিমা গোচীল কারাব্য। উহা দলিশে মেদিনীপূরের নীমা পর্যন্ত বিভ্তা নামারণ, মহাভারত ও পুরাণাদিতে বে বল নামক বেশের উরেখ আছে, তাহা সন্তবতঃ এই বলা। ইহা কোন এক সমরে রাচ ও কর্ণপ্রবর্গাদি ভিন্ন ভিন্ন বিভাগে বিভক্ত ইইরাছিল। উহার দক্ষিণভাগন্থিত বর্জমানাদি প্রবেশ রাচ এবং তাহার উত্তরত্ব ভূতাগ কর্ণপ্রবর্গ বিলিয়া নির্মণিত হয়। গৌজ-নগর গোড়ার প্রাচীন পৌতু বর্জনেরই অন্তর্গত ছিল; পরে গৌড়নগরের সমৃদ্ধি চতুর্দিকে ব্যাপ্ত হইলে সমন্ত বলরাজ্য, এমন কি, বর্জমান সমন্ত বালালা দেশই গৌড়দেশ ও গৌড়রাজ্য নামে বিখ্যাত হইরাছিল। মুসলমানাধিকারে লক্ষণাবতীরও প্রাসিদ্ধি ঘটে। গৌড় নাম প্রবেশ হওয়ার, কালে বালালার প্রাচীন ক্ষ কৃষ্ণে বিভাগ ও তাহাদের নাম গুলি বিশুব্দ হইরা গিরাছে।

ভাগীরবীর পশ্চিম কুলছ প্রাচীন বলের লন্দিও হইচত সম্ভবতঃ সমত মেদিনীপুর কেলা এবং বালেবর কেলাক্রণ কিরণণ লইরা তলানীস্তম তাত্রলিপ্তি রাজ্য! বর্তমান তম্পূর্ক নগর উহার রাজধানী এবং বাণিজ্য বন্দর ছিল। মহাভারতের বনপর্কে ১১৪ জধ্যারে উল্লিখিত হইরাছে বে, রাজা বৃধিষ্টির পঞ্চলত নদীসম্বিত গলাসাগরে তীর্থমানাদি করিরা, সমুদ্রের ধার দিরা কলিল দেশে উপনীত হন। ঐ কলিলের মধ্যে বৈতরণী নদী প্রবাহিত। [তাত্রলিপ্তি দেখা]

উপরে বালালার গঠন ও দেশাদির অবস্থান সম্বন্ধে বারা লিখিত হইল, তাহার আন্তপূর্কিক ইতিস্থা বালালার প্রাতম্ব ও প্রস্নতম্ব বিভাগে স্বিতার আলোচিত হইরাছে।

ভূতত্ববিদ্ ব্লানকোর্ড, বাঙ্গালা প্রান্তরের উৎপত্তি সম্বন্ধে বিশেষ আলোচনা করিয়া লিখিয়াছেন যে, প্রথমে বালুকা-কর্ণমমিপ্রিড জীবদেহ ও উত্তিজ্ঞাদিজাও পশিক ভরবিশেব (Loam) রূপান্তরিত হইরা ভূপ্রোপরি জল্ঞ হর। ক্রমে তছপরি নদীবলবিধোত বালুকাৰণা সঞ্চিত হইয়া উহা উচ্চ ভূমির আকারে পরিণত হইরা থাকে। ক্লিকাডা ও ডৎসন্নিহিত প্রনেশ, ২ই পরগণা ও বন্ধের-জেলার নানাছানের পুষরিশী ধননকালে ভূপঞ্জরছ মৃতিকাতর পর্যবেক্ষণ করিরা তিনি তথাকার তরগুলির গঠন পর্যার লিপি-বছ করিরা গিরাছেন। কলিকাভার শিবাদহের নিকটে একটা পুৰ্বালী খননকালে ভিনি ভূপুঠের পর বধাক্রমে 'ছাইনু সাও' লোম, ব্লু ক্লে ও লিটু লেরার (Peat layer) বা অপরিণত পাথুরে ক্রলার সামাক্ত তর দেখিতে পান। নিরবলের স্থানবিশেবে এই পিটু পেরার বা রক্ষবর্ণ করলাজর ২০ বইতে ৩০ কিটু পর্যান্ত নিরে সরিবিট 'আছে। এই কুক্তরের অব্যবহিত পরে প্রায় ১১ কিটু পর্যান্ত বালুকামিলিভ কর্মনতর (Sand colay). ভাহার পর ১৫ ফিট্ পর্যন্ত পুনরার ছু.ফে নামক কর ৷ বেবোক ছাইটা ভারে তিনি অনংখা **ভারতিনাঃ স্থানারি লামের** ভাঁতি,

ৰাল্যন স্থলন্ত বৃজ্ঞানির কল্প ও শাল পুৰু ক শ্রেণীর বছবিধ জীবাহি
নিহিত দেখিরা ছিলেন। তাহাতে বেশ অসুমান হর বে, এক সমরে শিবালহ নদীগর্ভে নিমজ্জিত ছিল, ক্রমশঃ উহা জাগিরা উঠিরাছে এবং ঐ সুক্ষরী ওঁড়িওলি সুক্ষরবনের বিভৃতির সাক্ষ্যান্য করিতেছে।

কিছুকাল পুর্বের, কলিকাতা কোর্ট উইলিয়ম হর্নে ৪৮১ ফিট্ গভীর একটা কুপ কাটা হয়। ভূপুষ্ঠ হইতে বথাক্রমে ঐ কুপগর্ভ रहेए बानुका, कर्मम, शिष्ट्रे थ श्रावत खत्र वारित रहेन्नाहिन। **कृ**शृष्ठे हरेटक ०६० किहे नित्र अथरम कक्टलंद शृष्ठीकि, जमनसद ৩৮০ কিট্ নিমে স্মিট জলজীবী পদ্ক জাতির মৃতান্থি-স্তর এবং ভাছার পর ধ্বন্ত বনমাশার নিদশন (a bed of decayed wood) লক্ষীভূত হয়। ঐ বৃন্ধাবয়বাদি নিরীকণ করিলে উপলব্ধি হয় যে, বৰ্ত্তমান ভূপুষ্ঠ হইতে ৩৮০ ফিটু নিমে অবস্থিত **कृ** शृक्षेत्रवृत्ती वहिष्म शृद्ध निविष् वनमानात्र समाष्ट्रांषिष क्रिन। কিছ ঐ ভূপৃষ্ঠ বর্তমান স্থব্দরবনের সমতল প্রাছরের স্থায় বে উচ্চ ছিল, তাহাতে সন্দেহ নাই। কারণ তাহা না হইলে অবশ্রই উহা সমুদ্রজলে নিমগ্ন হওয়াই সম্ভব। এরপ ম্বলে অবশ্রাই স্বীকার করিতে হইবে যে, এক সময়ে ঐ বৃক্ষাদি প্রাচীন বরুপৃষ্ঠ পরিশোভিত করিরাছিল, কালে উহা ভূমিৰুশাদি কোন নৈসৰ্গিক কারণে ভূগর্ডে প্রোথিত হইয়া গিরাছে। ভাষার পর নদীলোতে এই প্রভূত মৃৎপিও তহুপরি স্ঞিত হইয়া বর্ত্তমান শ্বরগুলি সংগঠিত করিয়াছে; অথবা সেই সমরে ঐ স্থান জ্ঞানণঃ চরক্রণে সমূত্রপৃষ্ঠ হইতে উর্দ্ধে উঠিরাছিল।

ভূপশ্বর মধ্যে নিহিত এই সকল বনমালা কালে ধ্বংস প্রাপ্ত
হইয়া করলার রূপান্তরিত হইয়াছে। বালালার এই করলার
ধনির অভাব নাই। রাণীগশ্বের করলার ধনি বিশেব বিধাত।
এখন বরাকর ও বাকুড়া শ্রেলা পর্যান্ত বিস্তৃত হানে করলার
খাল কাটিরা করলা উন্তোশিত হইতেছে। এই স্থবিভূত খাদ
দৃষ্টে অনুমান হয় বে, প্রাচীনবুণে রাণীগশ্ব হইতে বরাকর পর্যান্ত
একটা নিবিড় কম বিরাজিত ছিল। [করলা ও প্রান্তর শক্ষ দেখ]

কর্মা তির ভূগর্ডে লোহও পাওরা বার। বরাকর ও বীর-ভূমে কারখানা করিরা কোহা গাণাইবার ব্যবহা হইরাছিল। এখনও ভানে স্থানে কেনীর প্রখার লোহা গালাই হইরা থাকে। [বৌহ কেধ ।]

পূর্ব্ধে এখানে সমূত্র-জন হইতে সৰণ প্রক্তত করিয়া বিক্ররের জন্ম একটা বিস্তৃত কামবার ছিল। গবসেন্ট বিগাতী সৰণ-বাণিজ্যের হিতার্থে কেন্দ্রির সবণ প্রস্তৃত প্রধা রহিত করিয়াছেন। এখনও উড়িয়া ও ২৪ পরগণার স্থানবিশেবে রাজকীর বিধি জন্মনারে দেশীর সামূত্র সবধ প্রস্তৃত হইরা থাকে। [লবণ দেখ]

বালানার উদ্রেখযোগ্য কোন পর্কত নাই। উন্তরে একমাঞ্জ হিমাচলপূর্ভস্থ লাজিলিক শৃকভাগ। বালালার হোটলাট বাহছের তথার রাজকার্য্যালরাদি স্থাপন করিরা একটা নগর প্রতিষ্ঠা করিরাছেন। এখন ঐ স্থান ও তৎপানমূল্য কার্নীওল্ নগর আয়াবাসরূপে পরিগণিত। এতদ্ধির পশ্চিমাংশে বাঁকুড়া হইতে হোট নাগপুর বিভাগ এবং সাঁওতাল পরগণার হানে স্থানে গওশৈলমালা দৃষ্টিগোচর হয়। ঐ পর্কাতগুলি বিদ্যাপাদ হইতে প্রস্তুত হইরাছে। বৈজ্ঞাঞ্জিকগণের বিশ্বাস, আয়েরগারির উদ্গারিত গণিত প্রাব গড়াইরা আসিরা এই পর্কাতশ্রেণীতে পরিপত হইরাছে। ঐ সকল পর্কাতের এক একটা অংশ বিভিন্ন নামে পরিচিত। ধশিরা, জয়ন্তী প্রভৃতি পর্কাতমালা এখন আসাম বিভাগের অন্তর্ভুক্ত। উক্ত পর্কাত মালার বিভিন্ন গুরাদির বিষয় স্থানাপ্তরে বিবৃত্ত আছে। [পর্কাত ও প্রস্তর দেখ।]

উৎপদ্ধ ক্ৰয়া ও অধিবাসী।

খুষীয় ১৯শ শতাব্দের শেষ এবং ২০শ শতাব্দের প্রারম্ভ কাশ পর্যান্ত,এই বাঙ্গালা প্রদেশ বুটিশরাজ্যের শাসন-ব্যবস্থার স্থবিধা-করে ৪৭টা কেলার বিভক্ত ছিল। ঐ কেলাগুলির মধ্যে বরি-শাল (বাধরগঞ্জ), ২৪ পরগণা, বর্দ্ধমান, মেদিনীপুর, দিনাজপুর, মুক্ত:ফরপুর, বীরভূম ও হগলী জেলায় প্রভূত ধাতা উৎপন্ন হয়। বাকীপুর বা পাটনা, শাহাবাদ, ভাগলপুর, দরভাবা, মুদ্দের, সারণ, সাঁওতাল পরগণা, নদীয়া, মালদহ ও মুর্লিদঃবাদ জেলায় ধান্ত অপেকা প্রচুর পরিমাণে গোধ্য জন্ম। করিদপুর, পাবনা, हाका, त्रव्रभूत्र, महमनिशरु, त्राक्यारी, क्याशिरु खिए ध्वरः शृक्त-ক্থিত ২৪ পর্যাণা, নদীয়া ও ছগলী জেলার স্থানে স্থানে পাট, ডামাক, ভাট, হরিদ্রা প্রভৃতি উৎপাদিত হইরা তথাকার নানা নগরে বিক্রয়ার্থ প্রেরিত হয়। এডভিন্ন বাঁকুড়া, চট্টগ্রাম, নোৱাধালী, ত্রিপুরা, বঞ্চা, গরা, পুর্ণিয়া, হাজারিবাগ, লোহারডাগা, বালেবর, কটক, দার্জিলিক, বলোর, মানভূম, পুরী, চম্পারণ্য (চম্পারণ), সিংহভূম, ক্রিছত, খুলনা প্রভৃতি 🗅 স্থানেও বিস্তৃত চাস আছে। বর্তমান কালে হাবড়া উপবিভাগে মেজিট্রেসী স্থাপিত হওরার উহা একটা সদর জেলারূপে পরি-গণিত। বাজনৈতিক হিসাবে কণিকাতা মহানগরীও একটা জেলা বলিয়া পরিগৃহীত। এই সকল জেলার বিচার সময় হতেৎ স্থানের প্রধান নগরীজে স্থাপিত। বিশেষ বিবরণ জেলার ইতি-হালে এবং তথাকার নগরসমূহের ভৌগোলিক বিবরণপ্রসংক बितृष्ड स्रेबारह । [छख्य भन्न अहेबा ।]

এই প্রদেশের প্রত্যেক কেলার ও তাহার বিক্রির উপবিভাগে জনেকগুলি নগর আছে, ঐ নগরগুলি প্রধানতঃ তথাকার খাণিপ্রাকের বলিরা পরিগণিত। তর্মধ্যে বে খালি বিশেষ সমূদ্ধ ও ধনজনপূর্ণ, নিয়ে তাহালের নাম উল্লেখ করা গেল—

লগছের ব	राम ८१	गांक	ৰগৱের নাম	লোক	गरपा।
ক্লিকাতা	বহরতলী, ড	গ্ৰানী-	- বৰ্জমান	≎8 ₹	ভা র
পুর কালীঘ	ট এক্র ৮	ণ ক	মেদিনীপুর	ಌ೫	D
পাটনা ১	লক্ষ ৭১ হা	জার	हगनी ଓ हुँ हुड़ा	৩১	10
হাবড়া ১	» e		আগরপাড়া	Ø•	n
ঢাকা	b •	לג	বরাহনগর	9 •	
গরা	99	*	শান্তিপুর	ર આ	39
ভাগলপুর	**		কৃষ্ণনগর	रना	
দরভাঙ্গা	**	20	<u> শীরামপুর</u>	₹₡∦	30
মুঙ্গের	6.0	10	হাজীপুর	₹€	bò
ছাপরা	€ ₹	39	বহরমপুর	২ পা	_B
বেহার	88		পুরী	২ ২	29
আরা	80	y k	নৈহাটী	₹>#	20
ক্টক	89	n	বেতিয়া	63	33
মূজঃফরপুর	6ર∦	A .	শিরাজগ ল	45	20
ম্শিলাবাদ	ଅନ୍ତ	n n	চট্টগ্রাম	२३	30
भानाश्रत	৩৮	,,	বালেশ্বর	₹•	,,

বিগত ১৯০৫ খুটান্দে রাজকীয় নির্মাসুসারে বঙ্গরাজ্যকে বিগত করিয়া উহার কতকাংশ লইয়া আসাম বিভাগের অন্তর্ভূ ক্র করা হইয়াছে। এই মিলিত প্রদেশ একণে 'পূর্ববঙ্গ ও আসাম প্রদেশ' বলিয়া পরিচিত। প্রাচীন বাঙ্গালা হইতে চট্টগ্রাম, নোয়াখালী, বগুড়া, পাবনা, ময়মনসিংহ, রঞ্গপ্তর, দিনাজপুর, করিদপুর ও রাজশাহী জেলা বিচ্ছিন্ন করিয়া এই বিভাগে সংযুক্ত করা হইয়াছে। পক্ষান্তরে সীমা-সামঞ্জ্য রক্ষা হেডু মধ্যপ্রদেশ হইতে গন্ধসুর বিভাগে বাঙ্গালা প্রেসিডেন্দীভূক্ত করা হইয়াছে।

বাঙ্গালার জনসংখ্যা প্রান্ত ৭ কোটি হইবে। এই ৭ কোটির
মধ্যে প্রান্ত ৪ কোটি ৬০ লক লোক বেকার। এই কারণেই বে
দেশের দারিদ্রা উত্তরোজর পরিবর্ত্তিক হইতেছে, তাহাকে সন্দেহ
নাই। ঐ ৪৪০ কোটি লোকের মধ্যে শিশু বালিকা ও রমনীগণ
গৃহীত। তল্মধ্যে ৩ কোটি ৪ লক্ষ ৯৬ হালার লোক গৃহকর্দাদি
ব্যতীত অপর কোন কার্যাই করে না। অবলিপ্ত ৪০ লক্ষ
৫০ হালার স্ত্রীলোকের মধ্যে প্রান্ত ২০ লক্ষ কৃষিকার্যের
সহবোগিতা করে এবং তদবলিপ্ত কলকারখানার ও গৃহত্তের
বাটাতে কার্যো লিপ্ত থাকে। কতকগুলি বা বালের কালে,
ভাকের গহনা ও করি প্রভৃতি প্রেশ্বত কার্যো বা তদক্রশ সামান্ত
শিল্পকার্যা নিযুক্ত রহিয়াকে। ৩ কোটি ৪৭ লক্ষ পুরুবের মধ্যে
প্রান্ত ১ কোটি ৪৮ লক্ষ ৩০ হালার লোক বেকার। ইহাদের

মধ্যে বালক ও বৃদ্ধের সংখ্যাই অধিক। প্রার ১ কোটি ৩৩ লক্ষ ৩২ হাজার লোক কৃষি ও ভূসলাভিভোগী, ২৫ লক্ষ কল-কারখানার ও বিভিন্ন শিরকার্যো নিবৃক্ত রহিরাছে। অভূমান ১০ লক্ষ ঘাণিজ্যকার্যো লিপ্ত। ভদপেকা কিছু ক্ষম লাসক-শৃষ্থলে আবন্ধ। অবশিষ্ট প্রার ৬ লক্ষ ২৫ হাজার লোক গ্র্মানে অবস্থানি কর্ম্মনারী।

হিন্দু, মুস্কমান, খুটান প্রভৃতি বিভিন্ন ধর্মাবল্বী ছাতি লইয়া বালালার এই অধিবাসিসংখ্যা গঠিত ৷ প্রাক্ত বৃদ্ধাসীর মধ্যে লামাজিক মধ্যাদাত্মসারে বে বে শ্রেমীগত বিভাগ হইয়াছে, নিমে তাহাদের নাম বা সামাজিকসংজ্ঞা লিখিত হইল:—

হিন্দু—আন্ধা, কারখ, ক্রির বা রালপুতু, বৈছ, বাজন, বেণিরা, গোরালা, আহীর, ননোপাপ, কৈবর্ত্ত, জেলে, ভিওর, পোদ, ভেগী, কুনার, কামার, গোঁড়, ভাষ্মূরী, কোএরী, কুর্মী ইত্যাদি এবং জনাব্য—সাঁওতাল, কোল, ওরাজন, মুগু, ভুঁইরা, ভূমিজ, বরবার, কোচ ইত্যাদি। অর্জহিন্দু—চণ্ডাল, কোচ, পলী, রাজবংশ, বাগ্দী, বাওরী, চামার, মুচী, দোসাধ, মুনাহর, পাসী প্রভৃতি। ওই সকল ও বন্ধবাসী অভাজ জাতির বিবরণ অভ্যত্র প্রদত্ত হইয়াছে। [ভত্তং শক্ষ দেখ।]

পূর্ব্ধে কণিত হইরাছে যে, ক্লবিকার্যাই এখানকার অধিবাসিবর্গের প্রধান উপজীবিকা। উৎপন্ন দ্রব্যের মধ্যে ধান্ত ও পাট
প্রধান, ভব্লির এখানকার ক্লবকগণ আবশ্রক মত তৈলকর বীজ,
ছোলা, কলাই প্রভৃতি নানা শক্তের চাস করিয়া থাকে। আমন,
আউস, বোরো এবং উরী বা লাড়া (জলা) ধান বিভিন্ন সমরে
উৎপন্ন হয়। সরিষা, তিসি ও কলাই প্রভৃতি রবি শক্ত সময়ান্তরে
উৎপন্ন হইতে দেখা যায়। পাট বা কোষ্টার চাস এখন উত্তরোভর
বাড়িতেছে, কিন্তু নীলের চাস উঠিয়া যাইভেছে। পূর্বব্যের নীলকূটীমাত্রই এখন পত্তিভাবয়ার পড়িয়া নহিরাছে। পল্টিম
ব্যালর কএকটা স্থানে মাত্র নীল পচান হইতেছে। হিমালয়পাদম্লয় লাজিলিল জেলাসমূহে চা ও সিন্কোনা এবং ভাগলপুর
ও বেহার অঞ্চলের নানান্থানে অহিকেনের চাস আছে।

वर्डमान जवदा ।

আবছার পরিবর্জনের সঙ্গে সঙ্গে বলবাসী বালালী জাতির আনৃষ্টও ক্রেমণা মন্দ হইরা পড়িছেছে। বে বালালীর বীরত্ব-কাহিনী চিরন্তন কাল হইতে ইতিহাসের উচ্ছাল চিত্রপটে প্রতিক্লিত রহিরাছে, সেই বালালী আজি অরলারে লালারিত। মহাভারতীর ব্লেও বলীর বীরগণের প্রভাব দিগতে ব্লাব্র হইরাছিল। স্বাধীন বালালী রাজ্পণ লোক্ত প্রভাবে স্বাজ্ঞানন করিরা গিরাছেন। পুরুষণে, পানবংশ ও সেন্ধ্যণীর

^{*} Tribes and Castes of Bengal by Risley.

নরগতিগণের বীরন্ধসৌরৰ শিলালিলিতে ও প্রাচীন কুলগ্রহে বিবৃত আছে। বালালা মুসলবানের পলাবনত হইবার পরও বারন্থ রাম অতুল প্রভাগ সমগ্র বলে প্রতিধ্বনিত হইবাছিল। রালা প্রতালাধিত্য, কংসনারারণ, সীভারাম প্রভৃতির বীর্থাকাহিনী ও যুদ্ধনিপূর্ণভার বিবর কে না অবগত আছেন ? বেশী দিনের কথা নহে, বুরীর অটালশ শভাকের মধ্যভাগে আনকীরাম, বোহমলাল প্রভৃতি বালালী বীরকে আমরা বালালার রশক্ষেত্রে সললবলে অবতীর্ণ দেখিতে পাই। তৎপরে উনবিংশ শভাকে শেক্টেনাণ্ট কাল্যোবও সে বীর্থ প্রভাবের অভুত্র রাশি বহন করিরাছিলেন—আলিও শ্রীমান্ স্থাবাচক ব্রিরাস ব্রেশিক রাক্ষে বালালীর বীর্থ ভাতি উত্তালিত করিতেছেন। কিছ হাথের বিবর, ইংরালরাজের কঠোর পাসনে ও রাজনওবিধির নির্মবশে সকল গৌরব ও থাতি কোথার বিস্তা ইইরাছে, তাহার নিল্পন্নাত্রও বেন নাই।

ছুব্রসিদ্ধ ও প্রাচীন বালাগার বিভিন্ন রাজবংশগুলি আর সেরপ রাজপঞ্জিসম্পন্ন নহেন। দরিক্রতাদোবে তাঁহারাও স্কলে এখন নিব্ৰেজ ও নিশ্ৰম্ভ। তাহাদের বংশধরগণ এব্দণে উপাধিভারমাত্র বহন করিয়াই সম্বর্ট। কোন কোন রাজবংশ গুণজালে জড়িত হওরার গবর্মেন্টের অধীন থাকিরা বুত্তিমাত্রের উপভোগী হইতে বাধ্য হইরাছেন। বর্জমান-রাজ, বিষ্ণুপুররাজ, ছোটনাগপুর ও চল-ভাকরের রাজহর, ধরভাদাপতি, পূর্দারাজ, বশোররাজ, কোচবিহার-রাজ,নদীরারাজ, নাটোররাজ, রামগড়ের রাজা এবং সরগুলা ও উদরপুরের मज्ञ निक्ष क्षा वन, बीवा ७ मामधारीन वरेवा शक्ति वाहन । এডডির সারও অনেক সমিদারও রাজা আছেন, তাঁহারা রাজাত্ত-গ্রহ লাভ ভিন্ন, ক্থমও স্বাধীনতা লাভেচ্ছা প্রকাশ ক্রেন নাই। বরং রাজাত্ব্রহলাডেজার এবং শীর বিবরবাসনা পরিত্তি-কামনার নিরন্তর অবিবেচকের ভার বরিত প্রকার্নের রক্ত-শোৰণ করিতেছেন। অর্থক্যনিবন্ধন প্রজার বাছবল অপ-নোবিত হইরাছে এবং সেই সলে সলে রাজশক্তিরও অভাব ৰটিভেছে। ধনহারা প্রাঞ্চাগণ এইরূপে ভার বিনা মারা বাইডেছে। ভাহার উপর ভগবান করের উপর কট দিতে-एस्म, शैमझःबीत इत्रत्रकेक्ट्य इकिंग्यन भन्न इकिंग्यानिता तथा বিভেছে, অনাবৃষ্টি হেডু জলাভাবে জ্ঞাভাব বটনা প্রভার সৰ্বনাশ সাধিত হইতেহে।

पर्धा

এই সক্ষম অধিবাসীর কথা প্রধানতঃ হিন্দু, বুসলমান, বেশীর ও বৈবেশিক বুটান্ এবং আফিন অনার্থা-কর্মনী দুই হব। । বিশু, বুসলমান ও বুটানধর্মাবলয়ী হুইলেও ভাষারা সভাসার- বিশেবে বিভিন্ন । শৈৰ, শাক্ত ও বৈক্ষব প্রভৃতি বেরণ হিন্দ্র প্রেণীভাগ আছে এবং ভাহার নধ্যে আবার রামানদী, কবীরণহী প্রভৃতি বেরণ সাম্প্রদারিক বিভাগ দেখা বার, মুসলমানের মধ্যেও সেইরপ সিরা ও স্থরী ব্যতীত ওহাবী, ফরালী প্রভৃতি পৃথক্ মত বিভ্যমান আছে । আবার খুটানদিগের মধ্যে রোমান্ কাথলিক, গ্রীকচার্চ ও প্রটেটান্ট সমাজ ব্যতীত মেখডিট চাগেল, ওরেসলিয়ান মিসন, এপিসকোপেলিয়ান মিসন, লুদারন্ মিসন প্রভৃতি সাম্প্রদারিক মতভেদ দৃষ্ট হর । অনার্য্য সম্প্রদারের ধর্মমত স্থানতেদে পৃথক্ পৃথক্ ।

বৌদ্ধ ও হিন্দুধর্ণশ্রেতের প্রবল বস্তা এক সমরে বালালার অপ্রতিহত গতিতে প্রবাহিত ছিল। পালবংশীর বৌদ্ধ রাজ-গণের অধিকারে বৌদ্ধর্ণের বে জন্ম প্রভাব বালালার বিরাজ করিরাছিল, আজিও তান্ত্রিক উপাসনার তাহার প্রভূত নিদর্শন রিছাছে। বৈদিক উপাসনাপদ্ধতি তৎকালে একবারেই বন্ধ-রাজ্য হইতে অস্তর্হিত হয়। তাই মহারাজ আদিশুর কনোজ হইতে পঞ্চ সান্ত্রিক ব্রাহ্মণ আনাইয়া বালালার বেদমার্গ প্রশন্ত রাখিতে চেষ্টিত হন। তাঁহার পরবর্ত্তী সেনবংশীর হিন্দুরাজগণও হিন্দুধর্মপ্রতিষ্ঠাকরে বিশেষ মনোক্রাণী হইর্মাছিলেন। বল্লালের কৌলীস্ত-মর্য্যাদা এই বন্ধা-প্রভাব বিভারের অবাস্তর কল।

বৌদ্ধ ও হিন্দুর সমসময়ে বালালায় জৈনধর্ম্মের বিস্তার ঘটিরাছিল। এখনও নানা হানে জৈন ও বৌদ্ধকীর্ডি পরি-লক্ষিত হইরা থাকে। ঐ সকল কীর্ডির বিবরণ বালালার প্রান্ধতন্ত্র প্রসক্ষে বিবৃত হইরাছে। [হিন্দু, জৈন ও বৌদ্ধর্মের বিশেষ বিবরণ ভত্তৎ শব্দে এইবা ।]

অতংপর সেনবংশের অধংশতনে বালালার মুসলমানের অজুলর ঘটিলে এথানে পাঠান, মোগল প্রভৃতি বিভিন্ন শ্রেণীর ইস্লাম-ধর্মাবলধীর অভ্যুণর হয়। সেই সঙ্গে বলবাসিগণও ইস্লাম-ধর্মে দীকাগ্রহণ করে। সেই সমর হইতে বালালার অনেক মুসলমান সাধু, ককির পীর প্রভৃতির আবির্ভাব হইরাছে। ঐ সকল শীরন্থানে আজিও মেলা হর এবং হিন্দু মুসলমান উত্তর শ্রেণীর লোক তথার বাইরা ভক্তিপূর্কক পূলা দিরা থাকে। বহুকাল মুসলমান সহবাসের কলে, হিন্দুসমালে সভ্যনারারণের (সভ্যুপীর) পূলা প্রবর্তিত হইরাছে। [মুসলমান লক্ষ দেব।]

বালালার মুসলম্নিরাজন্মের মধ্যকালে অর্থাৎ গুটার ১৫শ শতাব্দের দেব সমরে ১৪৮৫ গুটাকে নববীশধানে জ্রীকৈডঞ্চ মধ্যপ্রভাৱ আবির্ভাব প্রটে। বন্দের স্থবিখ্যাত স্থপতান স্থবেনশার ও লন্দরং শাহের রাজন্ধলালে তিনি শীর কৈচব্যত প্রচার করেন।
উচ্চার ভিরোধানের পর, বৈক্ষবর্গ্ধ উভরোভ্যর প্রতিষ্ঠালাভ ক্রিতে থাকে। ভারার স্বস্থাবন্ধিক ও পরক্ষী বৈক্ষব ক্রিগণ

বার্ত্ত এটাছের সহার হইয়াছিলেন। ভাঁহারা উৎকট উৎকট সংয়ত প্রহ বচনা এবং কাহারও কাহারও বার্যানা অনুবাদ করিরা জনসাধারণের নিকট ভাগ্রতানি প্রোক্ত বৈক্তবধর্মের বিশ্বস মর্দ্র
ন্যাখ্যা করিরা বান। ভাঁহাদের সেই ক্লেলিভ পরণহরী পার্ত্ত ভাঁইন করিরা অনেকেই বিমুখ্নিতে জীনৈতক্তের পরে আশ্রম
গ্রহণ করেন। জীজীব গোরামী, রপসনাতন, ক্রুক্তাস করিরাজ,
কবিকণির, নরোভ্য লাস, বাহুলোব, জ্ঞান্যাস, গোবিন্দ্রশ্রাস, নিক্সাপতি, জয়দেব প্রভৃতি বৈক্ষব কবিবৃদ্দের জ্ঞানগাথা
জ্ঞাপিও বালানার এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্যান্ত প্রতিধ্বনিত হইরা থাকে। শ্রীনৈতভ্যন্ত ও অপরাশ্র কবির নাম দেখা।

বৈষ্ণব-ধর্মারক্ষের লাখা প্রালাখারণে কর্তাভজা, ঋরুসভ্য, সাতী-মা, হরিবোলা, রাভভিকারী এবং উৎকলের সংকুলী, আনন্তকুলী, কবিরাজী, নিহন্দ, বিন্দুধারী, আড়িবড়ী প্রভৃতি মতের উদ্ধ কইলেও প্রকৃতপক্ষে তাহা অভিনব ধর্মানত বলিরা গৃহীত হব নাই। খুলীর ১৯ল লভাব্দের প্রারম্ভকালে রাজা রামমোহন রার বেদান্ত মন্ত প্রতিপান্ত ভ্রাক্ষমত প্রচার করেন। তাঁহা ক্রুইতেই আদি-আন্দ্রমান্তের খ্যাতি। তৎপরে জীহার প্রবর্তিত মতের সাকার করিরা মহাত্মা কেলবচন্দ্র সেন নববিধান (আদ্ধা) মত প্রতিষ্ঠা করিরা বান। [রামমোহন রার, কেলবচন্দ্র দেন ও আন্দ্রমান্ত লব্দে বিশেষ বিবরণ প্রতিষ্ঠা।]

মহাত্মা রামমোহন বে সমরে দক্ষিণ-বলে আক্ষমত প্রতিষ্ঠাপ্রসালে সতীবাহাদি নিবারশক্ষণ হিন্দুধর্ম মত বিজক হোরতর
সমাজ বিশ্বকর আন্দোলন লইরা হিন্দু অধিবাসিবর্গকে বিত্রত
করিরা তুলিতে ছিলেন, প্রার সেই সময়েই ১৮২৮ খুইান্থে পূর্ববলে হাজী সরিৎ উল্লা করাজী নামক লংকত ইস্লাম ধর্মনত
প্রথক্তন বারা স্থানী সম্প্রদারের এক অভিনব শাখা বিত্তার
করিরাজিকেন । ি করাজী দেখ।

বঙ্গের পুরার্ভ।

অতি প্রাচীন কাল হইতে বজদেশ নানা জনপদ ও নানা ক্ষেরাজ্যে বিভক্ত। এখন বালালা বলিলে আমরা পশ্চিমে বেহারের সীমা হইতে পূর্বের চট্টগ্রাম ও আলামের সীমা এবং উত্তরে হিলালরের পাদরেশ হইতে দক্ষিণে বলোপদাগর ও উদ্ধিয়ার সীমা পর্যন্ত বৃদ্ধিরা থাকি। কিছ পূর্বেকালে -এরপ ছিল না। কথন ইহার আর্ত্তন বৃদ্ধি হইরাছে, কথন বা নানা রাজ্যে বিভক্ত হইরা একটা ক্ষম বেশ বলিয়া গণ্য হইরাছে। বজের ইতিহাস আলোচনা করিকেই ভাহার বেশ পরিচর পার্ক্তর বাইবে।

CHAP WICHE THE

প্রথম বেখিতে হইবে, বল নামটা কড প্রাচীন ? প্রবং 'বল' বলিলে কোন ছান ব্যার ? জগতের আদি-গ্রন্থ জক্-বংকিডার জনার্থানিবাস 'কীকট' (পরবর্ত্তী নাম মগধ), অথেদের ঐতরের রাজনে 'পুশু' এবং অর্থ্য-সংহিতার 'আরু'' দেশের উল্লেখ থাজিলেও 'বল' নাম নাই। আমরা অধ্যেদের ঐতরের আরগ্যকে (২।১।১) সর্ব্বপ্রথম বল নাম পাই। বথা—

"ইষাঃ প্রকাজিলো অভ্যার মারং স্থানীমানি বরাংনি। বন্ধাবগধানেন্তরপাদাক্তম্যা অর্কমন্তিতো বিবিপ্ত ইতি" 🕫

'বকাং' অর্থাৎ বঙ্গদেশবাসিগণ, 'বগধাং' অর্থাৎ মগধবাসি-গণ এবং 'চেরপাদাং' অর্থাৎ চেরজনপদবার্শিগণ। এই ত্রিবিধ প্রজাই কি ভূর্মণতা কি ভ্রাহার ও কি বহু অপভ্যতার কাক, চটক ও পারাবতাদি সদৃশ।

ৰান্তৰিক বৈদিকবৃগে বঙ্গদেশ অনাৰ্য্যনিবাস বৃণিয়া গণ্য ছিল। এই অনাৰ্য্যক্লাভিদিগকে লক্ষ্য করিয়া প্রাচীন ভাষ্যকারগণ বঙ্গাবগণের রাক্ষস অর্থ করিয়া থাকিবেন। আনন্দতীর্থ সেই প্রাচীন ভাষ্যেরই অনুবর্ত্তী হইয়াছেন।

কেবল ঐভরের আরণাক বলিয়া নহে, ঋক্দংহিতার কীকট বা মগধ অনার্যানিবাস বলিয়া নিন্দিত। ঐভরের ব্রাহ্মণেও 'পুঞাঃ' বা পুঞ্জনপদবাসী 'দস্যনাং ভূরিচা'

শ্বন্ধনতে কতা 'বলাকাবাশ্কেরণাবাং' ইতাক ব্যাখ্যানাবেলুপাং কটকলনং
নিজানোলন ; আদি 'বলা' নলকেশীয়াং 'বগবা' সপথা, 'চেরণাবাং' চেরনাব্যাক্ত-গ্রনাবিন: । তালিবিধা এব এবলাং 'বহাংদি কাকচটকণাবাক্তাবিজ্ঞানঃ ; মুক্তনাবেন ইঞ্জিন্তন । ইবালনেশভাগি সন্ধবেদ পরিভ্রত্তঃ, কলিজনৌরাইবোঃ ক্রিকার্য লোকে কিলোবেন চেরণান ইতি ।" (গুঃ ১৬০)

ন্তিব্যর আরণ্যকের উক্ত অংশবার দেনীকে **পর্ব স্থানি**ন বণিয়া ব্যব্যক্ষিপান।

Bhattacharja's Castes and Scots of Bengal are

⁽২) কক্ সংহিতা ভাৰণাসভা (২) ঐভৱেল ব্ৰাক্ষণ গাস্চা (৩) জগৰ্ক-সংহিতা ব্যবহাসভা

⁽৩) এখানে ভাষাকার 'বজাং বনগতা বুক্কাং' 'অবস্থাং ব্রীহিববালা ওবধনং' 'ইরপালাং উরংপালাং নপাং' এইরপ অর্থ করিয়াছেন। আবার ভাষাটাকালার আনলতীর্থ 'বরাংসি' কর্থে পিলাচ, 'বলাখনধং' কর্থে রাক্ষ্য এবং 'ইরপালাং' অর্থে অন্থর নির্দেশ করিয়াছেন। হুত্যাং ভাষাকার ও টালাকারের মধ্যেও খণেট নতকের দেখা বাইজেছে। ভাষ্যকার বেধানে বুক্ক, ওপথি ও সর্প করিলেন, ওাহারই ইকালার নেই হানে পিলাচ, রাক্ষণ ও অন্থর অর্থ বীকার করিয়াছেন। এইরূপ সভতেক মেথিরা অব্যাপক মোক্ষ্যুলর দিখিলাক্ষেন—"Possibly they are all old etinic names like Vanga, Chara &c." (Sacred Books of the East, Vol I. p.202/;) অধ্যাপক সভ্যরত সামাল্যী নহাণ্যত ভাষ্যর অইটাকার এইরূপ ব্যাব্যা করিয়াহেন—

অর্থাৎ স্থানিগের জনক বলিরা ত্বলিত এবং অথর্কসংহিতার অঙ্গ ও নগধবাসীর প্রতি জনার্য্যোচিত প্লেবোজি দেখা যার।

ঐ সকল প্রমান হইতে মনে হইবে বে, বৈদিকবুগে বর্তমান বেহার হইতে বাজনা পর্যান্ত ভূতাগে জনার্য্য বা আর্য্যেতর জাতির প্রভাব বিশ্বত ছিল। জনার্য্যপ্রভাব হেতৃই ঐ সকল স্থানে আর্য্যগণ বাস করা স্থবিধান্তনক বা নিরাপদ মনে করিতেন না। এমন কি, বৌধায়ন ধর্মস্ত্রে লিখিত আছে যে বল, কলিল, পুঞু প্রস্তৃতি দেশে বেড়াইতে আসিলেও ভ্রমণ-কারীকে পুনস্তোম বা সর্কাপ্তা ইটি করিতে হইত।

মন্ত্ৰসংহিতা-রচনাকালে সম্ভবত: বলের নির্জন বনমধ্যে হই এফজন আট্যিশ্বির আশ্রম গঠিত এবং সেই সঙ্গে ঐ সকল স্থাম তীর্ব বলিরা গণা হইরাছিল। মন্ত্রসংহিতাকার ভাই ব্যবস্থা করিরা গিরাছেন বে, তীর্থযাত্রা ব্যতীত অঙ্গ বলাদি দেশে কোন আর্যাসন্তান বাইতে পারিবে না,—তীর্থযাত্রা ব্যতীত গমন করিলে ছিলাভিকে পুন: সংস্কার এহণ করিতে হইবে।

ঐতরের ব্রাহ্মণে পুশুগণ ° বিধামিত্রের সন্তান বলিরা নির্দিষ্ট '। অথচ মন্থ্যংহিতার পৌপুকগণের ব্যক্তর বা শূরুর প্রাপ্তির কথা আছে। (১০।৪৪) ইহাতে মনে হইবে যে যথন বিধামিত্রের বংশধরগণ এদেশে আসিরা বাস করেন, তথন এদেশে অপর আহা ত্রৈবর্ণিকের বাস ছিল না, একারণ ব্রাহ্মণ অথাবে তাঁহাদের সংস্থার লোপের সহিত তাঁহারা ব্যক্ত ও এখানকার অনার্য্যকাতির সংস্রবে দহা বলিয়া চিক্তিত হইরাছিলেন।

কোন্ সময়ে বহুদেশে আগ্যসভাতা প্রতিষ্ঠিত হইল, তাহা
ঠিক জানিবার উপার নাই। রামায়ণের সমরে স্ত্রপাত ও
মহাভারতীর বুগে আর্থাসভাতা প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল, তাহার
কামাণ পাওরা যার। রামারণে লিখিত আছে যে চক্রবংশীর
অমুর্তরকা নামে এক রাজা ধর্মারণোর নিকট প্রাণ্জোতিরপ্র
রাপন করেন। শতপথবান্ধণ প্রভৃতি বৈদিক গ্রন্থ হইতেই
কামাণিত হইরাছে যে, বহ প্রকাশনে মিধিলার বিদেশ মাধব
কর্ত্ক আর্থাসভাতা বিস্তুত হইরাছিল। বর্ধনান কল্পাই গুড়ী
রন্ধপুর হইতে আনামের প্রকাশীনা পর্যান্ত প্রাচীন প্রাণ্ডোতির
প্রাণ্ডা

(a) "অঞ্বজক নিজেণ্ সৌরাইশগণেণ্ চঃ ভীর্ষাফোং বিদা গক্ষণ পুন:সংবারশহঁতি হ" (সমু) দেশ বিষ্ত ছিল, প্রাস্ জ্যোতিবপুর (বর্তমান সোহাটী) উক্ত প্রাপ্ জ্যোতিবের রাজধানী। এখন কথা হইতেছে যে, মিথিলা (বর্তমান দরভালা) ও আসামে আর্হাসভাতা বিষ্ত হইল, অথচ মধ্যে অঙ্গ, বল ও পোণ্ডে আর্হ্যোপনিবেশ স্থাণিত হয় নাই, তাহা কি কথন সম্ভবণর ? মহাভারতে কর্ণণর্কে (১৫৩%) লিখিত আছে, "পোশু, কলিল, মগধ ও চেদি দেশীর মহাস্থারা সকলেই শাস্থত পুরাতন ধর্ম সবিশেষ অবগত আছেন এবং তদপ্রসারে কার্যা করিয়া থাকেন"।' এই মহাভারত্বের উক্তি হইতে স্পাইই জানা যাইতেছে যে তৎপুর্কেই পোণ্ডে অর্থাৎ এখনকার উত্তর বলে বৈদিক ধর্ম ও আর্য্যসভ্যতা প্রবেশ লাভ করিয়াছিল।

হরিবংশ পাঠে অবগত হওরা যায় বে, য্যাতিপুত্র পুরুর অধন্তন ২২শ পুরুবে মহারাজ বলি জন্মগ্রহণ করেন। ইনি পরম যোগী ও নুপতি ছিলেন। ইহার বংশধর পাঁচ পুত্র অল, বন্দ, স্ক্র, পুঞ্ ও কলিল। ইহারাই মহারাজ বলির ক্রির স্ক্রান, কিন্তু তাঁহাদের বংশধর পুত্রগণ কালক্রমে ব্রাহ্মণত্ব লাভ করেন।

মহাভারতের আদিপর্কো (১০৪ জাধ্যার) বর্ণিত হইরাছে, "ভূলোক পরগুরাম কর্তৃক নিঃক্ষত্রিয় হইলে অনেক ক্ষত্রির-পত্নী বেদপারণ ব্রাহ্মণবারা সম্ভান উৎপাদন করিয়া লইলেন। বেদের বিধান এই, যে পাণিগ্রহণ করে, তাহার ক্ষত্রে যে সম্ভান জন্মে, সেই সন্ভান তাহারই হয়। অভএব ধর্মাচরণ ভাবিয়াই ক্ষত্রিরপদ্ধীগণ ব্রাহ্মণের সহবাস করিরাছিল। এইরূপ ক্ষেত্রর দৃষ্টান্ত দেখাইবার অন্ত মহাভারতকার এই প্রাতন ইতিহাস কীর্ত্তন করিয়াছেন—

'ক্রিররাজ বলির প্রসন্তান হর নাই। তিনি একদিন গলালান করিতে আগিয়া দেখিলেন, এক অভ্যুদ্ধি নদীর লোতে তাসিরা আসিতেছেন। ধার্মিক রাজা অবিলক্তে তাঁহাকে তুলিয়া নিজ প্রাসাদে আনিলেন। সেই অভ্যুদ্ধির নাম দীর্ঘতমা। ধার্মিক নরপতি তাঁহার ক্ষেত্রে পুরোৎপাদন করি-বার জন্ত থবিকে অন্থরোধ করেন। তদত্বসারে তাঁহার মহিনীর

वानवहरसनात्र अपनेक गृकुनत्वत्र पान चार्टि । ृ १७ त्वप]

⁽ ৭) প্ৰতেহৰু ৷ পুৰু ৷: লবখা: পুলিকা দুভিকা ইছুৰিভা কুৰো কুমুভি, বৈখানিতা বপুলা: ভূমিটা: ৷" (বি১৮)

⁽৮) श्रामायम ३।०० मर्गः।

^() अरमन आफीय देतिहान) म काश ०० शृक्षा :

^{(&}gt;) "কোনলাং কাপলোও লক কানিকা মাসধান্তথা চেম্বলক মহাভাগা ধর্মং কানতি পায়তং ৷" (কর্মপুর্ক ৪০/১৪)

^{(&}gt;>) 'বহাবাদী স জু বলিবজুৰ বৃগজিঃ পুৱা ই প্ৰাপ্ৰপাৰয়বাস গৰ্কবলক্ষান জুবি ঃ আলঃ প্ৰথমভা ক্ষা বলঃ কুম্বভাবৰ চ ঃ পুঞু কলিকণ্ড ভথা বালেমং ক্ষানুচ্যতে ঃ বালেমা বালানাকৈব ডঞ বলেক্ষা জুবি ঃ"

গর্ভে থবি দীর্ঘতনা পাঁচ প্রের জন্ম দেন। এই পঞ্চপ্রের নাম অদ, বল, ফলিদ, প্রুও ফলন। তাঁহাদের নামায়দারে এফ এফটী দেশ বিধাত।^{১৭}

ইরিবংশেও লিখিত আছে, পরমবোগী রাজা বলি উর্জরেতা ছিলেন। এজস্ত তাঁহার পত্নী স্থাক্ষার গর্জে মহাতেজবী মূনিবর দীর্ঘতমা হইতে পঞ্চ ক্ষেত্রজ তনম উৎপন্ন হর। যোগাত্মা বলি সেই নিশাপ পঞ্চ পুত্রকে রাজ্যে অভিবিক্ত করিয়া যোগমার্গ আপ্রার করেন। (৩১ অধ্যার)

উদ্ত প্ৰমাণবলে বলিতে হয় যে, বলি অথবা তীহার পঞ্চ পুত্ৰ হইতেই অঙ্গবলাদি জনপদে বৈদিক সভ্যতা প্রচারিত ও চাতুর্বগ্য সমাজ গঠিত হয় । ১৬

মহাভারতকার বলিপুত্র অঙ্গ, বঞ্গাদির নামায়দারে ভিন্ন ভিন্ন দেশের নামোৎপত্তি খীকার করিয়াছেন। কিন্তু পূর্ব্বোক্ত অথর্কবেদ, ঐতরের প্রাহ্মণ ও ঐতরের আরণাকের অসুবর্তী হইলে অবগ্রই বলিতে হয় যে আর্যাদভ্যতা বিন্তারের পূর্বে অঙ্গ, বঙ্গ, ও পুত্রের নাম করণ হইরাছিল। বলিপুত্রগণ যিনি যে রাজ্যে অধিকার পাইয়াছিলেন, তিনি সেই রাজ্যের নামায়-সারেই সম্ভবতঃ বিধ্যাত হইয়াছিলেন। যেমন পোত্রের অধি-পত্তি মহাবঙ্গ বাস্থাদেব নানা প্রাণে কেবল মাত্র পৌত্রক' নামেই পরিচিত আছেন।

বলিপুত্র অলের ষষ্ঠ পুরুষ অধন্তন অলাধিপ দশরথ লোমপাদ নামে বিখ্যাত ছিলেন। ইনি শ্রীরামচন্দ্রের পিতা দশরখের স্থা ও ধাবালুলের শশুর। লোমপাদের প্রপ্রেট্র চম্প ছইতে অল রাজ্যের রাজধানী চম্পা নামে প্রসিক্ষ হয়। অলাধিপ চম্পের প্রপৌক্র-পৌত্র বৃহরলার বিজয় নামে এক পুত্র জয়ে। ছরিবংশে তিনি 'ব্রক্ষক্ষরোভর'' বিশেষণে প্রসিক্ষ হইয়াছেন। এই বিজরের প্রপৌত্রপুত্র অধিরথ স্তত্তি অবলম্বন করায় ক্ষত্রিরসমান্দে নিন্দিত হইয়াছিলেন। স্থত অধিরথ কণ্ডে প্রতিপ্রসমান্দ্রে করিয়াছিলেন বলিয়া কর্ণকে সকলে স্তপুত্র বলিত।'

(১২) ''জলো বল্প: কলিলক পুতু ক্লক তে হ'তা:। ডেমাং দেশা: সমাধ্যাতা: খনামক্ষিতা ভূবি।" (মহাভারত জানি৽ ১০৪।৫০)

- (১৩) "বলে চাঞ্জিনকং বৈ ধর্মজন্ধার্থনৰ্শনন্। চজুলো নিয়ভান্ বৰ্ণাংগু ক স্থাণায়িতেতি হ ।" (হরিবংশ Фээক্ত)
- (১৪) প্রক্ষক্রোন্তর: সভ্যাং বিজ্ঞানার বিজ্ঞান (ছরিবংশ ৬১/৪৭) :
 এবানে 'রক্ষক্রোন্তর: শংলর কের করিবানেন, রাজণ ও ক্ষরির উচ্চা ধর্মাবন্দী, আবার করেকে কর্ম করিবানেন,—"শান্তি প্রভৃতি হারা রাজণ ইইতে উৎক্ট এবং বাঁগানি হারা ক্ষরির হইতে থেঠ ।"
 - (১৫) वृद्धिपान ७১ व्यवप्रास्त्र शूर्व्याणत वात्मावनि ७ व्याणत विवतन अहेगा ।

যাহা হউক, হরিবংশের বিদঃশে বদি কিছুমাত্র ঐতিহাসিকতা থাকে, তাহা হইলে অবশ্রই বীকার করিতে হইবে দে, পৌক্ষ্ণু ক্রিররাক বলির সময় অর্থাৎ মহাবীর কর্ণের সপ্তদশ পুরুষ পূর্ক হইতেই (বর্তমান সময়ের পাচহাত্রার বর্বেরও পূর্ককালে) অকবলে করির সমাজের প্রতিষ্ঠা ঘটিরাছিল। এমন কি, এখানকার অনেক নূপতি বোগবলে বা কর্মফলে ব্রাহ্মণত্ব পর্যান্ত করিরাছিলেন। সেই প্রপ্রাচীন কাল হইতেই বালালীর জন্মভূমি বহু সাথিক বোগী, ঋষি, জ্ঞানী,মানী ও মহাবীরের লীলাফ্রলী হইরাছিল। এই কারণে বৌধারন ধর্মপ্রেও মন্ত্রসংহিতার বে হান আর্যাবাসের অহুপযুক্ত বলিরা ঘোষিত হইরাছিল, মহাভারতে বলপ্রান্ত সেই কলিকদেশ 'ব্যান্ত্র গিরিলোভিত সতত বিজনেবিত' পূণ্যস্থান বলিরা কীর্তিত হইরাছে।'

মহাভারত হইতে আমরা আরও জানিতে পারি বে, মুহারাজ যুগিটিরের রাজহর ব্যুক্তনালে এই বছদেশ নানা কুল কুল রাজ্যে বিভক্ত ছিল। ভীমের পূর্ব দিঘিজয় উপলক্ষে সভাপর্বে লিখিত আছে,—

"ভীমদেন স্থান্ধ হইলেও হান্ধ প্রান্থন্দিগকে গুদ্ধে জয় করিয়া মগধদিগের উদ্দেশে গমন করিলেন। তথার দও, দওধার ও অপরাপর মহীপালদিগকে পরাত্তর করিয়া তাঁহাদের সকলের সমবেত হইয়াই গিরিব্রন্ধে উপনীত হইলেন এবং জরাসক্ষনদান সহদেবকে সাম্বনাযুক্ত ও করারত করিরা সকলকে সঙ্গে লইয়া কর্ণের প্রতি ধাবমান হইলেন। অনস্তর পাওবল্রের তীম চতুরক বলে পৃথিবী কম্পিড করিয়া শত্রনাশন কর্ণের সহিত বোরতর যুদ্ধ করিলেন এবং তাঁহাকে সংগ্রামে পরাজিত ও বশীভূত করিয়া পর্বতবাসী রাজগণকে জন্ম করিলেন। অতঃপর পাওববীর মোদাগিরিস্থ অভিবলশালী রাজাকে মহাসমরে বাছবলে নিহত করিলেন। তৎপরে তীত্র পরাক্রম ও মহাবাহ পুঞ্চাধিপ वाञ्चलव ७ कोनिकीकव्हनिवागी ब्रामा मरहोमा এই छुटै नुপতিকে যুদ্ধে নিৰ্ক্ষিত করিয়া বঙ্গরাব্দের প্রতি ধাবিত হইলেন। সমুদ্র-সেন ও চন্দ্রসেন নরপতিকে পরাজ্য করিয়া ভাত্রলিপ্ররাজ, কর্মটাধিপতি, স্থন্ধাধিপতি, ও দাগরবাদী দকল মেচ্ছগণকে क्य कत्रिवाहित्नन ? 19

- (১৬) "এতে কলিজা: কৌবের যত বৈতরণী নগী। মত্রাঘলত ধর্মেং শি গেবাঞ্রণসেতা বৈ ৪ কণিভি: সমুণাযুক্তং যাজ্ঞা গিরিশোভিতম্। উদ্ভার: তীরমেডজি সভবং মিলসেবিতম্ ৪" (সুক্ষার্ক ১১৪৪০৫)
- (১৭) "ভত: ফুলান্ প্ৰ কাংক বপকানতিবীৰ্ঘান্ত বিজিতঃ বৃধি কৌংভৱো নাগধানভাবাৰণী ১১৩

উদ্ধ বিবরণ হইতে বেশ বুঝা হাইতেছে বে, মহাভারতের

জ অংশ রচনাকালে বর্তমান বালালা প্রেসিডেলি মগধ
(বর্তমান বেহার), কর্মের রাজ্য অল (বর্তমান ভাগলপুর
জেলা), মোলাগিরি (বর্তমান মুলের), পুঞু (বর্তমান মালদহ
হইতে বুঞ্জা পর্যাস্ত্র), কৌলিকীভজ (বর্তমান হগলী জেলা),
বল (বর্তমান ভাগীরখীর পূর্বাংশ), মুদ্ধাণ (রাচ্), প্রাম্পর,
ভারলিপ্ত (বর্তমান ভদ্দুক জেলা), কর্মট ইত্যাদি বিভিন্ন
প্রেদেশে বিভক্ত ও ভর্তংগ্রদেশ বিভিন্ন রাজার অধিকারে বিভক্ত
ভিল। নিরবলের অধিকাংশ লে সমরে সমূলগর্ভশারী ছিল। নদীরা,
বশোস, করিসপুর, বরিশাল, খুলনা, চর্তিমণ প্রগণা ও মূর্শিলাবাদ
জ্বলার কিরদংশ বা বগড়ী বিভাগের তৎকালে অভিন্ত ছিল না।

ব্ধিটিবের রাজস্বে যজের পর পুঞু ধিপ বাস্থাৰে অভিশর প্রকাশ হইরা উঠিরাছিলেন। হরিবংশ ও নানা পুরাণ আলোচনা করিলে মনে হইবে বে, ক্ষত্রির বীর পৌশুক বাস্থানে বর্তমান বাজালা প্রেলিডেন্সীর অধিকাংশ হান জর করিরা একজন অতি প্রতাপশালী রাজাধিরাল হইরা উঠিয়াছিলেন। বহু নরপতি তাহার অধীনতা বীকার করিতে বাধ্য হইরাছিলেন। নিবাদ-পতি অভিতীর বীর একলবা, নগধপতি জরাস্থ এবং প্রাগ্-জ্যোতিষপতি ভগদক্রের পিতা নরক তাহার বন্ধু ছিলেন। শ্রীকৃক্ষ নরককে নিধন ক্রিলে পৌশুক বাস্থানে শ্রীকৃক্ষের প্রতি অভ্যন্ত বিরক্ষ হইরাছিলেন। তাহার রাজা

দশ্তক দশ্বধারক বিজিতা পুষিবীপতীন্ : তৈরের সন্ধিতঃ সর্কৈগিভিজন্মপাজনং ১১৭ कांत्रामिक्तः माच्छिका करत ह विमिरम्छ र । তৈয়েৰ সহিতঃ দকৈঃ কৰিক্যান্তৰকী ৪১৮ স কম্পর্যায়ৰ সহীং বলেন চজুরজিপা। যুৰুণে পাওখনোঠ: মৰ্শেনামিত্রখাভিনা ১১৯ म कर्नर वृथि निर्व्विका यरण कृषा ह कांक्छ । **ष्टा विकाश रतवान् बाकः भर्वक्रशनिनः ॥२०** ব্দথ মোদাসিরে চৈদ রাজানং দলবভরস্। পাওখে বাছৰীব্যেৰ নিজ্বান নহাযুদে ৪২১ **७७: ५७ विनर्भेक्षाः विश्वत्यः वदायनम् ।** (क्लीनिकेक्क्लिक्स अंक्लानक वरहोक्षमन् ३६२ **७८७) नमकुरको नीवानुरको छोउनवाकर**मो । निर्विद्धारको बहाबाक पक्षत्राकपूर्णाजयर ३२० मधुप्रारम्बर निर्व्धिका इक्षरमनक भाविंगम् । ভাত্ৰলিক্তক দ্বাজালং কৰ্মটাখিণজিং কৰা ১৭১ ভূজানাম্বিপকৈন বে হ সাধ্যমালিনং।

নৰ্বান্ত্ৰ ক্লেক্সবাংশৈক বিজিগ্যে জন্মকৰ্মতঃ হবং (সভাপৰ্যন ৩০ জঃ)
(১৮) জ্বান্তে কেছ কেছ' বেছিনীপুর জেলা পলিয়া বৰ্ণনা কৰিয়াজেন।
কিন্তু সহাভান্তৰে ট্ৰান্ডান্ত নীলুকটের মতে "হজাঃ বাটাঃ।"

বিভারের সহিক্ত ক্লুক্তেবিতাও ক্লুক্তণে বর্ত্তিক হইরা
ছিল। শ্রীকুক্তের অনাধারণ প্রভাবে অন্তন্মকই তাঁহার

অন্তর্গুক ভাগবত হইরা পড়িরাছিলেন, অনেকে তাঁহাকে ভগবানের অবতার বলিরা বিধাস করিতেছিলেন, ক্লিড্র পোঞ্জুক

বাজ্পেবের তাহা অসন্থ হইরাছিল। তিনি সর্ব্যসমলেই আর

বলিভেন বে, "সেই গোপনন্দন ক্লুক কি সাহসে আবার বাল্লুদেব

নাম গ্রহণ করিরাছে? সে শুল, চক্রু, গলা, পল্পধারী বলিরা

র্থা পর্কা করিরা থাকে। আমার নিশিভ স্লুদর্শন, আমার
সহলার মহাঘোর চক্রু, আমার শার্ক নামক মহারবসম্পার মহাময়,

কৌনোদকীনামক আমার এই বৃহৎ গলা, ক্লেজর গর্কা থক্র

করিতে সমর্থ। অভত্রব আমি ধন্ত, শুলা, গল্পা ও গলাধর

হইরা ক্লুক্তের লল্পর না বল, তাহা হইলে ভোমানের শভ ভার স্থবর্ণ
ও বহু ধান্ত করিব।" ১৯

উদ্ভ বিবরণ হইতে মনে হইবে যে পৌঞ্ক বাস্থানৰ আপনাকে প্রারুত অবভার করিতে যদ্ধবান হইয়াছিলেন, অথবা তাঁহার অধিকারভুক্ত বালালী সামস্ত ও প্রজাগণ তাঁহাকে ভগবান্ वाञ्चलव क्रक इटेटफ ट्यंब मत्न कतिवाहिन। जाम्हर्यात विषय, পুঙাধিপ ক্লফছেবী হইলেও একজন অসাধারণ বীর, ও ক্ষতিয়কুলগৌরব বলিয়া বিষ্ণুপুরাণ ও হরিবংশে কীর্ত্তিত। স্বয়ং 🗐 রুষ্ণ তাঁহার অভূতপূর্ব বীর্যাদর্শনে বিশ্বরবিদুগ্ধ হইরাছিলেন। আমরা হরিবংশ ও পুরাণ হইতে আরও জানিতে পারি যে, বধন নরকহস্তা শ্রীক্লফের দিগন্তবিন্দারিত বশোগাখা পুঞ্রাধিপতির কর্ণগোচর হইল, তথন এই বলবীর মার কিছুতেই স্থির থাকিতে পারিলেন না। তিনি অই সহত্র রথ, অবৃত হতী ও প্রার অর্ক্র দ পত্তি লইরা শ্রীক্তকের ধ্বংসোদেশে ছারকার বাতা করিলেন ৷ ভারতের এক প্রান্ত হইতে ঋণর প্রান্তে গিয়া বাদালী বীরণণ হে অত্তত বীরম্বের পরিচত্ত দিয়া গিলাছেন, তাহা ক্বকতক প্রাণ-কারের লেখনীডেও সুস্পষ্ট প্রতিভাত হইয়াছে। বলিতে কি, বলাধিপের অসাধারণ শরপ্রহারে শত শত বাদববীর ধরাশারী হটয়াছিল। সেই ভীষণ বুদ্ধে শৌঞ্চকত্ম ক্ষমে নিশ্ব, সারণ. কৃতবৰ্ণা, উপ্ৰদেন, উত্তৰ, অকুত্ৰ, সাভ্যকি প্ৰকৃতি মহারথীগণ আছত হইরাছিলেন। কাশীরকে পরাধার করিতে কোন বাধৰ-বীর সমর্থ ভুন নাই। অবশেষে বর্থন সাজ্যকীর সহিছ বোরভর বুদ্ধ করিয়া বল্পীর নিভান্ত পরিপ্রান্ত, সেই সমর ভগৰান **এক্ষ ব্ৰদ্দেৱে উপস্থিত হইলেন। পুঞ্**পবিশ সমূধে আত-ভাৰীকে দেখিলা সাভ্যাকীকে পরিভ্যাপ করিবা শীক্তকে আক্রমণ করিলেন। কেবকীনকান পুঞ্ছিবিশের শক্তি নিরীক্ষণ করিয়া

^{(:&}gt;) रहिष्य अविदाय - >> भ्रः ।

নবিশ্বরে ধনিয়াছিকেন, "এই গৌণ্ডুকের কি আশ্রুয় বীর্বা!
কি হুঃসহ বৈর্বা!" বাহা হউক অভিনান্ত বলবীরকে নিপাতিত
করাও শ্রীক্রকের সহক্রসাধা হর নাই। হই বাল্লবেরে বর্ত্তকণ
রগন্ধীয়া চলিরাছিল। অবশেবে কেশব সহক্রেজরসংকুক্ত নিশিত
চক্রবারা কর্লাধিপকে নিপাতিত করিলেন। সেইদিন বাজানীর
অপ্রক্রারা কর্লাধিপকে নিপাতিত করিলেন। সেইদিন বাজানীর
অপ্রক্রারা কর্লাহিল। সেই বলীর ও বাধব হুদ্রে মহাবীর
ক্রেক্তবাও বলাধিপের সহিত উপস্থিত হিলেন। তৎপরে
ক্রুক্তক্রের মহান্যব্রেও বজের বীরপুর্বণ বোগ্রান
ক্রিরাছিলেন, মহাভারতে ভাহার উল্লেখ আছে।

ভগবান্ প্রীকৃত্ব অভিশর রাজণতক ছিলেন, এই ভবিনর কারণ তিনি ভারতীর রাজণসমাজের ফ্রনর আকর্ষণ করিরাছেন এবং ভারতবাদীর পূজা পাইবার অধিকারী হইরাছেন। কিন্ত বলীর ক্ষত্রিরগণের মধ্যে বহু পূর্ব হইতেই এরণ নিষ্ঠার অভাব ছিল। উাহারা জ্ঞানীর আদর করিডেন,কেবল লোকের সন্মান বুঝিতেন না। তাঁহারা জ্ঞানিতেন বে তাঁহাদের পূর্বপুরুষণণ অনেকে জ্ঞানবলে রাজণত লাভ করিরাছেন, অনেকে নিষ্ঠাম কর্ম্ববলে রাজণ হইতেও প্রেঠ বলিরা সন্মানিত ও দেবগণেরও পূজিত হইরাছেন, তাঁহাদের পূর্বপুরুষই অল-বল-ক্লিকে চাতুর্বপ্রি-সমাজের প্রবর্তক। ১০

কর্ণপর্কে মহাতারতকার লিধিরাছেন বে, পৌপু-নগথানি নেশের মহান্তারা গরাতন শান্ত ধর্মপালন করিরা থাকেন। সেই শান্ত ধর্ম কি ? তাহা উপনিষদ ধর্ম—তাহাই ব্রহ্মবিদ্যা। আমরা ছান্দোগ্যোপনিষদে পাইরাছি বে, ব্রন্ধবিদ্যা ক্ষরিরের নিজন্ম, ক্ষরিরের নিকট হইতেই ব্রান্ধগেরা ব্রন্ধবিদ্যা ও ও ছার-তহ্ম লাভ করেন। ই উন্নত ক্ষরিয়ন্মান্ত বেদের কর্মকাণ্ডের আবত্তাকতা তত্ত বেশী শীকার করিতেন না, তাঁহারা অন্তর্যক্তর প্রেষ্ঠতা ব্রান্ধগানিকেও শিবাইতেন। ই বলিতে কি ক্ষয়ান্ত্র-হিছার অনেক হলে ব্রান্ধণেরা ক্ষরিয়ের নিকট গরানিত হইরা-ছেন। ই নিথিলার অধ্যান্ধবিদ্যার ক্ষরপাত, নগথে বিভৃতি এবং অন্ধর্মকে পরিপৃষ্টি সাত করিরাছিল। এ দেশের জানিগণ বেনের মন্ত্রতাতা কথবা কৈবল ক্ষিরাভাপন আর্থাকে ব্যান্ধ নিলা পুরা ক্ষিত্তেল না, তাঁহারা ব্যান্ধনিয়া শিনিবদ্ হইতে এই শিক্ষা পাইরাছেন এবং পরবর্তীভাগে করিরজ্ঞানী বৃহদেব ভাঁহার বস্ত্রপদে ভাহারই সমর্থন করিয়া গিরাছেন।

কুলশেওের মহাসমরে আব্যাবর্ত হইতে ক্তিরপ্রাধান্ত বিস্থা ও রাজগঞাধান্ত হালিত হইলেও অল বল কলিলে পূর্বালর ক্তিরপ্রাধান্ত বিস্তু হর নাই। পূর্বভারতে বৃহদের ও জৈন ভীর্বভারগণের আবিভাবে বরং ক্তিরপ্রাধান্ত কুপ্রভিত্তিত হইরা-হিল। এই কারণেই প্রাচীন রাজগসমান্ত অলবন্ধকে হীনচলে দেখিতেন। জৈন ও বৌদ্ধগ্রহসমূহ প্রাধাণ আলেকা ক্তির প্রেট বলিরা কীর্তিত। ইহা বে বছকাল প্রাধাণ ও ক্তির-সংক্ষের কল এবং ক্সমবিভার প্রভাব, ভারতে সন্দেহ নাই।

ব্দনেকে মনে করিছে পারেন যে বৃদ্ধ শাকাসিংহ অথবা জৈনদিগের শেষ তীর্থকর মহাবীর স্থামী হইতেই আঞ্চাবিরোধী মত প্রচলিত হয়। কিন্তু প্রাচীন উপনিবদপ্তলি আলোচনা कतिरण मरन रहेरव, रा युक्त वा महाबीत ज्यात चाफार बालान निर्व পূৰ্ব্বে বে বোধিতৰ প্ৰকাশ করিয়াছেন, ভাছা ভাঁছাৰের নিজস্ব বা কলিত নহে। উপনিবদেই তাহার বীল উপ্ত হইয়াছে।^{১৬} অষ্টক, বামদেব, বিশামিত্র, জমদমি, অঙ্গিরা, ভরধাঞ্জ, ৰশিঙ, ভূগু প্ৰভৃতি মন্ত্ৰদ্ৰটা কবিগণও তাই স্মগাচীন বৌদ্ধ গ্ৰছে বিশেষ সম্মানিত হইরাছেন। " পূর্ব্ব ভারতে ক্ষত্রিরপ্রাধান্তের কলেই ट्वीक ७ टिजनशर्मात अकु। एत। द्वीक ७ टिजनशर्माटक राजन সাধারণে অহিন্দু বলিয়া মনে করেন,আমরা সেরপ মনে করি না। चुथाहीन त्वोक ७ जिम्भूम हिन्सू भर्त्यद्रहे च्यात्र माथा, खेर्नानेवम-ধর্মসভূত! ভাই বৃদ্ধের প্রথম উপদেশে সাধিক ও এক্ষবিদ্ ব্রান্ধণের সন্থান^{২৮} ও সাবিত্রীর শ্রেষ্ঠতা^{২৯} শ্রেডিপাদিড হইরাছে। ভাই আমরা শেষ ভীর্ষন্তর মহাবীর স্বামীকে চতুর্কেদ ও সকল প্রাচীন বন্ধণাল্লে অধীত হইতে দেখি। তাই বান্ধণণাল্প এবং

⁽ २०) । इतिवास का व्यवस्था विवास वाहेगा।

⁽ ६३) कारणांत्राांगमिन्यु अकाअ,वानात ।

⁽ ३३) श्रीत्वारमांगनिवंद शर्पात्रा, त्योगक्यी छन्तिवंद शहा

⁽ २०) क्लेबेडकी डेगबिवए अर-७।

⁽२०) वृषशाजनाम क्रेममिनेष् भागांजी

⁽২ব) জিনসংহিতা, ও আচারাল করে একৃতি জৈন এবং নহাবগুণ, অঘট্ট-পুঞ্চ প্রকৃতি বৌদ্ধগন্ত এইবা।

⁽ ২৬) বৃহদারণ্যক উপনিবদে-১৮।৭ 'শ্রেষণ' এক পৌতনধর্মপথে ৩২৭ 'শ্রেষণ্যক' ভিকৃত্তের প্রসক্ষ রহিলছে। কৃষ্ণের ধ্যাপদ ও আচারাকত্তের প্রকাশন সক্ষণ দেখা। এছাড়া আগভব ধর্মপ্রের ২।১।১০ ও গৌতন-ধর্মপ্রের (৩১৮-১৯) বেরাপ ভিকৃতিগের কর্মবা বর্ণিত রইলাছে, ভাবার সবিত নৈন-বৌদ্ধান্তেক্তি প্রসাধ প্রথান বিভিন্ন কর্মবা বর্ণিত রইলাছে, ভাবার সবিত নৈন-বৌদ্ধান্তেক্তি প্রসাধ পার্থান্ত নাই।

⁽२१) जहांपग्त भण्याय जाडेपाः।

⁽२४) स्थाना वाचा

⁽ah) प्रहारत्न पूर्व विशासिक, "गण्य वस मध्य विश्विक संदान, गण्य त्यापन हरेल गाविनी मज स्थान (" (मश्येन से सेस्कृतः)

^(.) Jacobi's Kalpasuira (Sacred Spoke of the East, Vol. xxii. p. 221)

হইরাছিল। এই স্বরে বসধাধিপ অস্তাতশক্তর পুত্র উবারী গলাতটে পাটলিপুত্র নগরী স্থাপন করেন।

্রাচীন জৈনপ্রছ মতে, বীর মোন্দের ৩০ বর্ব পরে অর্থাৎ
৪৬৭ বৃষ্টপূর্কান্দে ১ম নন্দের অভিবেক। ইহারই চারিবর্ব পরে
প্রাস্কি জৈন গণধর অব্যুখামী মোক্ষণাভ করেন।

প্রথম নম্বের পর আরও ৭ জন নক্ষ রাজত করেন, কলকপুত্র শকটালের প্রাভূগণ উচ্চানের মন্ত্রিত করেন। অবশেবে ৯ম নক্ষ সিংহালম লাভ করেন, ইহারই প্রধান মন্ত্রী শকটাল। এই শকটালের পুত্র ভূলভন্ত।

ছুলভাতের কিছু পূর্ব্ধে জৈনবিগের শেব প্রভাবেবলী জন্তবাহর অনুদর। তাঁহার শিব্য প্রানিধ্যে আরম্ভ পরিবাধ্যে হইরা-ছিল। তাঁহার কাপ্তপ-গোত্রীর চারিজ্ঞম প্রধান শিব্য ছিল, তন্মধ্যে প্রথম লিব্যের নাম গোলান। এই গোলান হইতে চারিটা লাখার লাই,—এই চারি শাবাধ্য লাম তাত্রলিন্তিকা, কোটিবই,রা, পুঞ্জুর্ব্ধনীয়া ও লালী কর্মটিরা। শে এই লাখা চতুইরের নাম হইতে সহজেই মনে হইবে বে, তাত্রলিপ্ত (বর্তমান জনসূক্) কোটিবর্ব (বর্তমান দিনাজপুর কেলাভ দেওকোট পরগণা), পুঞ্জুর্ব্ধন (মালদহ ও বগুড়া কেলার মধ্যে) এবং কর্মটিক (সম্ভবতঃ মানজুম কেলার) অর্থাৎ তুই হাজার বর্বেরও পূর্ব্ধ-জন কালে বর্তমান বন্ধনেশের নানা হানে কৈনদিগের প্রতিপত্তি ও প্রেলিবিভাগ ঘটিয়াহিল।

আন্ত:পর চক্রপ্তথের অধিকার। চাপজ্যের কৌশলে নলকে বিনাশ করিরা চক্রপ্তথে ভারতের একছেত্র অধিপতি ইইরাছিলেন। হেনচক্রের পরিনিষ্টপর্কামতে—বীরমোক্রের ১৫৫ বর্ষ পরে অর্থাৎ ৩৭২ খুঃ পূর্কাকে চক্রপ্তথের অভিবেক।

এ সময়ে বন্ধদেশে ব্রাহ্মণাচার এক প্রকার বিল্পু, সর্বতেই জৈনাচার প্রবল হইরা উঠিরাছে। খবং চক্রওপ্র জন্তবাহর শিব্যস্থ প্রহণ করেন। এই চক্রভপ্রের অধিকারকালেই পাটনিপুত্রে কৈন্দিগের শ্রীসক্ষ আহুত ও কৈন অকশান্তওলি সংগৃহীত হয়।

চক্রভথ এক প্রকার ভারত-সরাট বইরাছিলেন। ভারার পরিকানবর্গ ভারার অধীনে ভারতের বিভিন্ন প্রবেশ দাসন করিছেন। প্রভার পাইলিপ্রবের কৈন অস্থ্রান সহজেই চক্রভথের অধীন সামভগণের চেক্রার নবত ভারতে পরিগৃহীত বইরাছিল।

জৈন-প্রভাববিতারের সহিত সম্প্র ভারত ইইতে ব্রাহ্মণ-প্রভাব অভিশ্ব ধর্ম ইইরা পড়িল। ক্ষত্রির-রাক্যণের চেটার এরপ পরিবর্জন সাধিত হইরাছিল বলিয়া ক্ষত্রিরগণের উপর ব্রাহ্মণাণের জাতক্রোধ হইল, জাহারা পুরাধে রটাইলেন বে আর ক্ষত্রির লাই, ক্ষত্রিরগণে নির্দ্ হইরাছে। চন্দ্রপ্র ব্রাহ্মণবিরোধী ও জৈনবভাবলধী ছিকেন বলিয়াই ব্রাহ্মণের নিকট ভিনি 'বৃহল' বলিয়া লাভিত হইলেন। ৩১৬ খৃঃ পূর্কাক্ষে চন্দ্রপ্রপ্রের বাজ্যসমাধ্রি এবং অলোকের অভ্যানর। ভারত্রপ্রশ্র বিশ্বসাক্রের রাজ্যসমাধ্রি এবং অলোকের অভ্যানর। ক্ষত্রেরগণী চন্দ্রপ্রের অপক্য বলিয়া "চন্দ্রগুর্পে" (Sundrakoptas) নামেও পাশ্যাত্য ঐতিহাসিকের নিকট পরিচিত।

ব্রাহ্মণ-রচিত গ্রন্থে অশোক শুদ্র বলিরা চিহ্নিত হইলেও প্রাচীন বৌদ্ধগ্রহ তিনি ক্ষত্তির এবং বিশুদ্ধ ক্ষত্রিরাচারী বলিরাই পরিচিত। তাঁহার রাজ্যাভিবেকের পূর্ব্ধে তিনি কতকটা ব্রাহ্মণ-ভক্ত হিলেন। তাঁহার ভোজনগালার শত শত পশুবধ হইত। তাঁহার রাজ্যাভিবেকের সঙ্গে প্রথমে তিনি জৈন, শেষে বৌদ্ধগর্মায় রাগ্ম হইরা পড়িরাছিলেন। হিমালর হইতে কুমারিকা এবং চট্টগ্রাম হইতে আফগানভানের সীমা পর্যান্ত তাঁহার সাত্রান্ত বিশ্বত হইরাছিল। স্থল্র রুরোপত্ত আফ্রনার বৌদ্ধপ্রপ্রচারার্থ তিনি উপযুক্ত পরিব্রাহ্মক নিযুক্ত করিয়াছিলেন এবং তথনকার প্রেষ্ঠ ব্রবনরাজ্যণ তাঁহার সহিত আত্মীয়তা ও মিত্রতাণালে আবদ্ধ হইয়াছিলেন। [প্রায়দশী বেখ।]

অপোকের সমরে তাঁহার অধীনে বলদেশ নানা প্রাদেশ বিভক্ত এবং এক এক জন পরাক্রান্ত সামস্তরাজের শাসনাধীন ছিল। তারতের অন্তান্ত প্রকালিক। প্রতিন্তিত হইরাছিল। আপোকের ধর্মান্ত্রপাসন ও ধর্ম্মাজিক। প্রতিন্তিত হইরাছিল। আপোকের সমর বলস্থানে কোন্ রোলা রাজ্য করিছেছিলেন, তাহার নাম পাওরা বার নাই। আবৃসদক্ষণ এখানকার প্রাতন ইতিবৃদ্ধ সংগ্রহ করিয়া বে সংক্রিয় বিবরণ প্রকাশ করিয়া সিয়াছেন, তংপাঠে মনে হইবে বে বলস্থানে ২০১৮ বর্ম করিয়া সিয়াছেন, তংপাঠে মনে হইবে বে বলস্থান ২৪১৮ বর্ম করিয়া সিয়াছেন, তংপাঠে মনে হইবে বে বলস্থান ২৪১৮ বর্ম করিয়া সিয়াছেন, তংপাঠে মনে হইবে বে বলস্থান ২৪১৮ বর্ম করিয়া সিয়াছেন, তংপাঠে মনে হইবে বে বলস্থান ২৪১৮ বর্ম করিয়া সিয়াছে বে, বিলিশ্র অভ বলানি হইকে এখানে করিয়াধিকারের প্রকাশ তাহা মহাবীর কর্পের প্রকাশ পুরুষ পূর্বেম্ব বা প্রচিত্যকার বর্ষেরও পূর্বেকার করা। অর্থাৎ রর্জ্যাক হর্মাছিল। তা এখন আবৃত্যবিদ্ধান করাবিদ্ধার প্রকাশ করিয়াছিল। তার বিদ্ধান করাবিদ্ধার প্রকাশ করিয়াছিল। তার বিদ্ধান ব্যক্তিক হইবার প্রকাশ করিছেল। তার বিদ্ধান ব্যক্তিক হইবার প্রকাশ করিছেল। করিছার বার্মানিক ব্যক্তিক হইবার প্রকাশ করিছার বার্মানিক। করিলাক করিয়াছিল। তার বিদ্ধান ব্যক্তিক হইবার প্রকাশ করিছার বার্মানিক। করিছার ব্যক্তিক হইবার প্রকাশ করিছার ব্যক্তিক হর্মানিক।

⁽ as) পরিশিষ্ট পর্মা এ৬৯ 🕾

^(💶) देवननवपूच क्रोपा :

মৃলে "বানীবর্কটারা" আছে। "কর্বজিয় পার্টে নারু। নবাভারত "কর্বট" নামই আছে। (নভাপর্ব ২৯২০)

^(40)Col. H & Jarrett's Ain-i-Abbari, Vill I p. 148-146, (40) umu utdu Touis, 34 uts co-ce phi ubu :

কলবের গণনা নোটামূটি ধরিরা লইলে বলিতে পারি বে, সরাট্ অশোকের পূর্বেই এখানে কারত্ব অধিকার ঘটরাছিল এবং লেই প্রাকালীন কারত্বরাজগণ উাহাছের অধীবর মগধাবিশ-গণেরট মতাত্ববর্ত্তী ছিলেন।

্ অশোকের পর তৎপোক্ত সমাট্ দশরথ জৈনধর্শাসুরক্ত হুটরাছিলেন। বরাবরের নাগার্জ্নীলৈলে উৎকীর্ণ দশরথের বিশি হুটতে জানা যার যে, তিনি জৈন আজীবকগণের সন্মানার্থ বহুতর দানের ব্যব্ধা করিরাছিলেন।

অশোকণোত্র দলরবের পর মোর্য্যবংশীর পঞ্চ জন বৃপতি
পাটিলিপুত্রে অধিষ্ঠিত হিলেন, তাঁহারের নাম সক্ষত, পালিপুর্ক,
সোমপর্কা, পতথবা ও বৃহত্রথ। এই পঞ্চ নৃপতির সমরে রোর্য্যপ্রতাব অনেকটা থর্ক হইরাছিল। অলোক বে স্থবিস্তীর্ণ
সামান্দের প্রতিষ্ঠা করিরা বান, তাঁহার পরলোকপমনের সহিত
সেই বিপ্ল সামাজ্য রক্ষা করিবার শক্তি তাঁহার বংশধরপণের
ছিল বলিরা মনে হর না। অলোক-দূরদেশে শাসন-স্থনির্কাহের
জন্ম রাজপ্রতিনিধি রাখিরা গিরাছিলেন, ক্রমে তাঁহারা প্রবোগক্রমে স্থাবীনতা অবলবন করিতে লাগিলেন। মোর্যারাজ দশরথ
বে রাজপ্রতার পরিচর দিরা গিরাছেন, তাঁহার বংশধরপণের মধ্যে
তাহার ক্লীণালোকও পাই নাই।

অশোক-প্রিরদর্শী ৩১৫-৩১৬ খৃঃ পূর্জাক হইতে ২৭৫-২৭৬ খৃঃ পূর্জাক পর্যান্ত সাদ্রাক্ত শাসন করেন। [প্রেরদর্শী দেখ] অবলানাদি বৌদ্ধগ্রন্থ মতে, অশোকের পর ১০০ বর্ব মৌর্যাধিকার চলিয়াছিল।

উদর্গারির হাণী শুক্ষার ১৬৪ মোর্যাকে উৎকীর্ণ থারবেলের স্ন্তুহৎ শিলালিশি হইতে জ্ঞানা যার বে, কলিলপতি ভিক্সাঞ্জ থারবেল তাঁহার ১২শ রাজ্ঞাকে (অর্থাৎ ১৬০ মোর্যাকে) গল্পাতীরে লিরা মগ্রথপতিকে বলে আনিয়াছিলেন। মগ্রথপতি তাঁহার ক্সরে মধ্রার পলারন করেন। পুর্কেই লিথিয়াছি বে বীরমোক্ষের ১৪৪ বর্ব পরে অর্থাৎ ৩৭২ খুঃ পূর্বাকে চক্রগুপ্তের অভিবেক হর, ঐ অভিবেক-বর্ব হইতে মোর্যাক্ষ আরম্ভ। এরূপ ক্রের ২০৯ খুট্ট পূর্বাকে কলিলপতি মগ্রথ ক্ষর করেন। তিনি অপর বর্ণে বিদেবী না হইলেও নিজে নিটাবান্ জৈন ছিলেন। তাঁহার প্রক্রাকে মগ্রথ, অল, বল ও কলিলে জৈনাচারই প্রবল হইয়াছিল। কলাধিপ তাঁহার সহিত বৈবাহিক সম্বক্ষ স্থাপন করিয়াছিলেল। কলিলাধিপ শাকপতি হথালাহের কলার পাণিপ্রহণ করেন। তাঁহার অভ্যানরকালে কুসুম্বক্ষরিরগণ ভারাকে করেনীক বারিয়াছিলেন। থারবেল ভিক্সাল বে

ষগধপতিকে আক্রমণ করেন, তিনিই সম্ভবতঃ শেব মৌর্যপতি বৃহত্তথ । ভিজুরাক কলিলে প্রভাবর্তন করিলে বৃহত্তথঞ্জ পুনরার রাজধানীতে ফিরিয়া আসেন।

বৃহত্তখের হর্জণতা দেখিরা তাঁহাকে রাজাত্যুত করিবার বৃহত্ত হর। বাণভট্টের হ্রতিরিতে লিখিত আছে, সৈঞ্জবদ পরিদর্শন করাইবার ছলনার হট পুশমিত্র নিজ স্বামী মৌর্য বৃহত্তখকে পিবিরা কেলিরাছিলেন। ওইরূপে সেনাপতি প্রামিত্র মৌর্যসিংহাসন অধিকার করেন। মৌর্যারাজমন্ত্রী ফারারুছ হুইলেন। প্রামিত্রের সঙ্গে প্রারু ১৭৬ খুই পূর্কাকে শুল-রাজবংশের প্রতিষ্ঠা হুইল।

ত্রাব্দশাভূমার।

পুৰামিত্ৰ দেববিপ্ৰান্তক ছিলেন। প্ৰাহ্মণপুৰোহিছের প্ৰামণে তিনি অখনেধ বজের অনুষ্ঠান করেন।

কালিন্দের বালবিকায়িমিত্র বাটকে এল আছে পুশানিত্র বিলিশার প্রির পুত্র আয়িনিত্রকৈ বে পত্র লিখিরাছেল, ভালতে উছার বজ্ঞের কডকটা পরিচর পাই। বখা—'বাতি, বজ্ঞছল চইতে সেলাপতি পুশানিত্র বৈশিশন্ত আছুমান্ পুত্র আয়িনিত্রকৈ বেদে আলিকন করিয়া সংবাদ দিতেছেল, বিলিত হব, আমি রাজস্ব বক্জে লীক্ষিত হইলা নিশ্বনীয় ও নির্গল কথ ছাছিলা দিরাছি, আলার আদেশে শভরালপুত্র পরিবৃত হইলা জীমান্ বস্থানিত্র অবের রক্ষক্রপে নিমুক্ত। সেই অব নিমুর লক্ষিণ কুলে উপস্থিত হইলে অবালাই। ববননৈত্য ধরিলা কেলে। ভালতে উভর পক্ষীর সৈত্তে ঘোরতর কুল উপস্থিত হইলাছিল। তৎপারে মহাবদ্ধারী বস্থানিত্র তাহানিসকে পরাজ্ঞ করিলা সেই অবলালকে উভার করিলা আনিলাছে। সপরপৌত্র অব্যান্ধি ব্যান করিলা আনিলা বক্জ সমাধা করেল, আনিভাত্রে বাল্যনাক করি। অত্তর্ব কাল বিলহু না ভরিলা ব্যালিক করিলা বাল্যনাক করা। ই

আখনেধসম্পন্ন করিরা পুরামিত্র ভারতের স্থাট হইরা-ছিলেন। বহুকাল পরে তিনি পূর্বভারতে বৈদিক ধর্মপ্রচারে মনোবোগী হন। এই পুরামিতের রাজম্বালে গ্রীকনৃপতি মিনিক (Menander) মধ্যমিকা ও সাক্ষেত জন্ন করিরা পাটলিপুত্র আক্রমণ করেন। কিছু এখান হুইডেই তাঁহাকে

সেলানীরনার্ব্যে ভৌগ্য বৃহস্তবং পিপেদ পুল্পনিজঃ স্বামিনদ্ ।" (ছবঁচরিড)

্ব "পতি ৰক্ষণন্ধণত সেনাপতিঃ পুস্পনিত্রে। বৈদিশস্থা পুত্রবাদুসভামিনিত্রং লোকা প্রনিষ্কাপুনর্শনতি । বিদিন্তবন্ধ । গোচসৌ ভারাবন্ধাণীক্ষিতেন সভা ভারাপুত্রপত পান্ধনিত্রে বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্য বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ

ভতঃ পরাব পরাজিতঃ বহুমিত্রেশ ধর্মিকা। কাসজ ব্রিমনাশ্যে যে বাজিরাকো নিব্যক্তিতঃ ব্

সোহ ছবিলানী বংগুমাজের সমস্পোটের ও প্রভা**হতারো বজো। তিবিনানীত** জালহীবং বিশ্বত্রেবচেত্সা ভবতা ব্যুমালের স্থ আন্তেহসালালভার্টিত।"
(বালবিভাগিনিনান্টিভ)

Actes du Sixieme congres Orient, tome iii. pp. 174-7.

^{† &}quot;अक्टिकाइ स्वान स्मान्त्र वागात नव निकारनवीताः

কিরিতে হর। পাটলিপুরের পুর্বে বরনেরা অগ্রসর হইতে गारुगी रूम मारे। अप्राटक मध्य करम्म त्व. ७९काटन व्यवस्त्र **चार-। क्वीकिंगमूर श्वरत्र कविष्ठा पान । जावात्र (वीद्वश्रह मटक** পুষামিত্রই অংশাব্দের স্থীঠিলোপের কারণ। বৰৰ আক্ৰমণে মগধ রাজ্য অনেকটা বিপুত্রণ হটরা পড়িয়া-ছিক্ষা তৎপত্নে ব্ৰছ মৃণতিয় মৃত্যু হইলে তাহার বংশধরকে ৰ্মানি দিয়া অপরে রাজাগ্রহণের বড়বন্ত করিতেহিল। সেই বভবজের কলে অভিনয় কালে মিত্রনেবের কতে অগ্নিমিত্র ছিল্ললিরা **২ইলেন** । বড়বছকারীরা অন্নিমিত্রের কনির্ভ প্রলো**ডকে রাজা করিলেন । কিন্তু ওল জুজোর্চের ভাগ্যেও বেদ্যাদিন রাজাভোগ** विकास । महावीत वक्षमित्र व्यवस्थित भटतहे टेशकुक निरहानत्त অভিবিক্ত হইলেম। বৈধিক ধর্মপ্রচার করিব দ আছই নহাবীর বল্লমিত্র দান্দিণান্তা ভ্রতে বেলক বিপ্র আনাইয়া তাঁহালিগকে রাজগৃহ প্রদান করিয়াছিলেন। বল্লাভিও ডৎ-পরবর্তী অন্তক, পুলিম্ফক, বোষবস্থা, বস্ত্রমিত্র, ভাগবভ ও দেবভূমি अकृषि एक द्वांकान नकरनहें स्विविश्वक हिरनन। धहे বংশ ১১২ বৰ্ষ অৰ্থাৎ আৰু ৬৪ বুঃ পূৰ্বান্দ পৰ্যান্ত রাজ্যভোগ करतम ।

দেবভূমি অভিলাশট ও ব্যস্নাসক ছিলেম, তাঁহাকে বিমাশ করিয়া গুটার আন্ধামত্রী বহুদেব সিংহাসন অধিকার করেন। বহুদেব হইতেই কাব বা কাধারন আন্ধান-বংশের প্রতিষ্ঠা। বহুদেব, ভূমিষিত্র, নারারণ ও প্রশাল কাব বংশীর এই ৪ জন নৃপত্তি ৪৫ বর্ব মাত্র (প্রার ২০ খৃঃ পূর্বাক্ পর্যন্ত) পাটনিপুত্রে অধিষ্ঠিত ছিলেম।

প্ৰদাও কাৰ্যবিগকে শাক্ষীপী বলিয়া মনে হয়। তাঁহাৰের সময়ে কেবল পূর্বভারত বলিয়া নহে, সমগ্র ভারতবর্ধে সৌরমত ও প্রতিমাপুলা প্রচলিত হয়। সৌর, ভাগবত, পাকরাত্র এবং পৌরাণিকগণেরও অভিনব অভ্যান হইয়াছিল।

ওল ও কাববিদের আবিশত্য কালেই উত্তর পশ্চিম ভারতে শক্তাতির অভ্যুবর : [ভারতবর্ষ শকে দক বিবরণ এইবা :]

বন্ধবিত্রস্থানিত হাজ্যগৃহত্তিত বৈদিকবিত্রগণ বংস, উপময়, কৌভিজ, নর্ম, হারিত, সোক্তর, পার্কিলা, তর্বাজ, কৌনিত, কাঞ্চপ, বনিঠ, বাংজ, সাবর্ধি ও পরাধর এই ২০টা গোত্রে বিভক্ত হিল। পরবর্তীকালে এই সক্ষ্ম বাজিলাকা বিপ্রস্তান বংগর নামাহানে বিহুত হইছা পরিকালিকেন । কিছু তাঁহালাও জৈন-বৌধ প্রভাবরত্ব কর্মের অপবাস্থ্যনে কিছুকার পরে অনেকটা বৈদিকালয়কট হইলা পরেন। এই সমরে বংগর হানে হানে বছ প্রমেশে বেল, ক্ষেত্র প্রভৃতি আভিত্ব আবিশক্তা হইতে বেলা বাব।

দাদিশাত্যের অভুরাজগণের হতে কাথবংশ রাজ্য হারাইন।
উত্তর পশ্চিমভারতে শক্ষঅপগণের আগ্রর গ্রহণ করেন।
আভুগণ পাটলিপুর অধিকার করিলেও এখানকার রাজধানী
টাহাদের বাসপোযোগী হর নাই। টাহারা এখানে প্রতিনিধি
রাখিরা হাজিশাত্যে প্রস্থান করেন। বাহা হউক, তৎকারে
পূর্বভারতে প্রাধিকীর আচার কতকটা প্রবর্তিত হইরাছিল।
কিন্ত প্রতিনিধিগণের বার্থ সাধনহেটার রাজ্য মধ্যে অন্তর্বানরের
স্কুলা হইল; তাহারই কলে জন্ধ, বন্ধ ও মগধরাজ্য ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র
অংশে বিভক্ত হইরা এক এক স্থাধীন নরপতির পাসনাধীন
হইরা পড়িল। এ সমরে পশ্চিম প্রদেশে শক্ষধিপত্য দৃঢ়
প্রতিন্তিত হইরাছে। শাক্ষীণী কাথবাজ্যগদিগের ধর্মোপরেশে
শাক্ষাজগণ ভারতীর দেববিপ্রস্থাক ও প্রভারত্বক হইরা
পড়িলেন। প্রজাগণও তাঁহাদের অন্তর্বক ইইরা পড়িরাছিল।
ক্ষুদ্রাং পূর্বাধিকে আধিপত্য বিভারের সমর তাঁহাদিগকে বেশী
কই পাইতে হর নাই। পক্ষিণের ওতদিন আসিরা পড়িল।

খুটার ১ব শতাংশ শক্ষিণ কনিষ্ঠ ভারত সন্ত্রাট্ হইলেন। সারনাথের ভূগর্ভ হইতে সম্রাভি মহারাজ কনিকের বে বছ দিশি আবিদ্ধত হইরাছে, তাহার জন্মসরণ করিলে বনে হইবে, বে পূর্বভারতও কনিকের সাম্রাজ্যভুক্ত হইরাছিল। তিনি অনেকটা উলারনৈতিক হইলেও তাহার শিলালিশিসমূহ ভাহার বৌহধর্মাল্যমাগ বোষণা করিছেছে। তাঁহার বছে বারাণসীর ভার অল, বল ও কলিকেও মহারাল বৌহমত প্রচারিত হইরাছিল।

মহারাজ কনিকের পুরুষপরে (বর্তমান পেশাবরে) রাঞ্চানী ছিল। তিনি এই ছুদুর পশ্চিম শীমাত্তে অধিটিত থাকিয়াও খাস্থর, সার্কন্দ, খোডন প্রভৃতি মধ্য এসিয়াত্ব ভুতুর উত্তর व्यातम हरेएक शक्तरन विष्णावि व्यवः शृहर्व जन-वन-कनिएन পর্যান্ত আবিপত্য বিস্তান্ত করিয়াছিলেন। 'ধর্মপিটকসম্প্রানার-নিবান'নামক বৌভগ্রহণতে মহারাজ কনিক পাটলিপুত্রে আসিরা এখানকার রাজাকে অর করিয়া বৌদ্বছবির পথবোরকে লইয়া বান। সম্মতি সারনাথ হইতে তথাকার সমতন ভূবির ১০হাত বুজিকা নিবে সম্ভাষ্ট কনিকেয় শিলালিশি ও কীর্ত্তি আবিষ্কৃত হইবাছে। ঐ পিলালিপি হইছে জানা বার, ভৎকালে বারাণদী-क्षारम बहाबांक कमिरकत व्यक्ति वजनवान मानक कर (नक) ক্ষাণয় পাদ্যাধীন ছিল। পাটলিপুত্রের আচীন ভূগর্ড द्वीचित्रक अभिक के केमकिक क्षेट्रम माजनारवज्ञ छात्र क्रवाहीन ক্ষিক্ষীর্ত্তি আবিদ্রত হইতে পারে। ভারা হইলে আমর। বানিতে পারিব, পূর্বভারতে তাঁহার পরীনে কোন করণ (Batrap) আবিপত্তা ক্ষিতেভিলেন।

ক্লিকের প্রভাবেই শক্, ধ্বন, পার্ব ও ভারতীর ভাষরপিরের স্মীকরণ হর। সরাট্ কপোকের সময় ক্ষেবল ভারত
বিরা নহে, স্থাব স্বাত্তির ও ব্রোপথতে বৌদ্ধর্য প্রচারিত
হলত বৃহ্বেবের কোন প্রকার প্রতিষা প্রতিষ্ঠিত হর নাই।
ক্ষেপেরের কোন প্রকার ক্ষাব্রুক্তাও কেই ক্ষরক্ষম
করেন নাই। সামরা পূর্কেই লিখিরাছি বে, গাক্ষীপারগণই
ভারতে দেব প্রতিমা নির্দ্ধাণ করিরা প্রচার করেন। এই প্রথার
ক্ষেত্রতা হইরা মহাবান মত প্রচারের সহিত গাক্পতি বৃদ্ধের
লীগাবিষ্টিণী নানা প্রতিমা গড়াইরা ভারতের নানা পুণান্থানে
প্রতিষ্ঠিত ক্রিতে লাগিলেন। সেই স্কল অপূর্ক ভাষরশিরের
নিদর্শন ভারতের নানা হান হইতেই স্থাবিহৃত হইরাছে। ঐ
সকলের বির্নিস্পাদর্শনে ভারতীর শিরিগণ সম্ভারগতের
প্রশংসাভারন হইরাছেন।

কনিক যে মহাধান মত প্রচার করিরা বান, কালে তাহা সংশোধিত ও পরিবর্তিত হইরা তাত্ত্বিক বৌদ্ধ ধর্মের স্থাই করিয়া-ছিল। একদিন সমস্ত বঙ্গদেশ এই ভাত্ত্বিক বৌদ্ধসাগরে ডুবিরা গিরাছিল, সে কথা পরে লিখিব।

মহারাজ কনিচের পর তৎপুত্র ছবিক বা হক সিংহাসনে অভিষিক্ত হইলেন। পেশাবর হইতে পূর্ব বন্ধ পর্যন্ত তাঁহার অধিকারভূক্ত ছিল। নানাহান হইতে তাঁহার বে সকল শিলালিপি ও মুল্রালিপি আবিকৃত হইরাছে, তাহা হইতে মনে হর খে, তিনি তাঁহার পিতৃদেব অপেকা দীর্ঘকাল সাঞ্জাল শাসন করেন। তাঁহারও সমরে পূর্বভারত শাসন করিবার বন্ধ গাটিলিপুত্র তাঁহার অধীনে একজন করপ অধিষ্ঠিত ছিলেন।

হবিছের পুত্র শকাষিণ বহুবেব বা বাহুবের। তিনি

৭৪ হইতে ৯৮ শকাল পর্যান্ত সাদ্রাক্ষাতোগ করেন। তাঁহার

দুদ্রান্ন নিব, ত্রিপুণ ও নন্দিনৃত্তি জড়িত থাকার তাঁহাকে নৈব

নরপতি বলিরাই গ্রহণ করা বার। কনিক বে ক্রবিত্তীর্ণ সাদ্রাজ্যের পত্তন করিবা বান, বহুবেবের সমর তাহার ধ্বংসের

হরপাত হইগ। সন্তবতঃ তাঁহার ধর্মান্তর গ্রহণে তাঁহার জ্বীন

দূরবেশবাসী ক্ষত্রপাণ বিরক্ত হইরা সকলে ঘাবীন হইতে

থাকেন। তর্মাধ্য উজ্জারিনীপতি ক্রন্তর্মান প্রধান। তিনি

জন্নকাল নধ্যেই জ্বত্তী, জনুণ, নীরুণ, আনর্জ, হুরান্তর, বত্ত,

ভক্তকভ্, সিত্ত, সৌবীর, কুকুর, ক্ষণান্তর, নিবাদ প্রভৃতি কন

পদ ক্ষিকার করিবা বহাকত্রপ উপাধি প্রহণ করেন। পাটলি
স্থানের ক্ষত্রপত্ত ভবত্ববাতী হইরান্তিলেন। এই রাজন্তোহিতার

সমরে পাটলিপ্তেরর নিকট লিক্ষ্তিরণ প্রথম হইরা উঠে।

ক্ষম-বলের সামন্তরাক্ষ্যপত্ত থাবীনভা ক্ষমন্তর করেন।

উত্তরপ্রতির সীমান্তে পার্যিক সাসনক্ষণ ক্রেভাক্ষনন করিতে

থাকেন। ্বলিতে কি, বহুদেবের সৃত্যুর সহিত উভরভারতীর পাকসাক্রাজ্ঞা ধানে হইন এবং আতার, গাঁগুভিন্ন, নিজ্ঞার, নাগ, বৈহর প্রভৃতি লাতি নানাছান অধিকার ক্রিয়া ক্রাক্র রাজার স্টে করিন, ক্রণনাম উভরভারত হইতে বিন্ধা ইইন।

খুটীর ২য় লতাকের শেষভাগে লিছেবিগণ পাটলিপ্র অধিকার করেন। হঃথের বিবর, তাঁহাবের ইতিহাস ছিল্লার উপক্ষণ এখনও যাহির হয় নাই। পূর্কভারতের নানা ছানে কর্তৃথয়াপনে প্রস্থানী সাম্ভগণের হারা অভবিজ্ঞাহ উপত্তিত হয়, ভাহার কলে অনেক রাজভূমার খলেল পরিত্যাগ করিয়া হল্র কথোজ (বর্জমান কথোডিরা), অলবীল (অয়ম্) ও ববহীপে গমন করেন এবং নবজিত কথোল গ্রহুডি হানে লৈব ও ব্যক্ত্রীবি গ্রেডিটিড করেন; বছণ্ড বর্ষ অতীত হর্ত্তে চলিল, প্রথম্ব সেই সকল হিন্দ্বীবি বিভয়ান মহিরাছে।

श्रीत था मंकारक मधाकांत्रफ देजकृतेक वा देश्श्वरण धावन হইরা উঠে। এই বংশীর ঈশব্রদত্ত ২৪৯ প্রতাদে উজ্জারনীর ক্ষঞ্জা-निगर्क भन्नाकत कतिना दहनि वो कमहृति मध्यर धावर्शन करतम । छोहात अकुलरत देरहत्रभः अक्ष्यक अधिकारतत्र छोडो करमम, কিন্ত তাঁহালের উলেক বার্থ হর। পুটার এর শতাব্দের শেষভাগে ভৱ ও তৎপুত্ৰ ঘটোৎকচ নামে হুইজন সামজ-মহাব্রাজ মগুণে প্রবল হইরা উঠেন। ঘটোৎকচের পুত্র ১ম চক্র ওও লিক্ত্রি-রাজ-ক্যা কুমারদেবীকে বিবাহ করিয়া পাটলিপুত্রের সিংহাসন লাভ करतन । अञ्चलिन मरशा किमि आधारार्धन नशा है दहेगा शक्तिना-ছিলেন। তাঁহার সমূহে পুছরাধিণ চক্রবর্ণা বঙ্গদেশ জ্ব বাকুড়ার স্থানিয়া পাহাড়ে চক্তবন্দার শিলানিলি केश्बीर्न चाह्यः। जिनि देवस्य हिरममः। >य व्याखासम गम्लक्ष क्षांत्रभ बरकात कार्याम करतम। धारे क्षांत्रभ উপলব্দে ডিনি মহাৰীয় চজৰৰা, কজদেৰ, সভিল, নাগদ্ধ, গণণভিনাগ, ননী, বনৰত্বা প্ৰকৃতি আহাবিৰ্ডের নরপতিগণকে পরাজর করিরাভিলেন। এছাড়া অচ্যত ও দাগনেনের ধ্বংস-गाधन, धावः क्लानगाधिन मास्ट्र, यहाकांश्वामन्ति यामदास, কেবুলপতি মন্ট্রয়াল, পিটপুরাধিণ সংহত্ত, কোষ্ট্রারপতি আনিক্ত, এরওপরির ধ্যন, কাশীর বিভূগোপ, অবিদ্যক্তর দীলরাজ, दिनित इक्षिक्ती, नगरकत देशरमम, जबतां द्वेनकि कुछका, কুত্বপুরাধিপ ধনকর প্রভৃতি দক্ষিণাপথের নরপতিরগতে পদাৰৰ ও পৰে মুক্তিদান কৰিয়া তিনি ভারতের দার্বাভৌন करीयत हरेशहिल । देनवश्च, मारी, माराइमारी, मक् कुक्क. এবং সিংহণ ও অপর বীশবাসিপণও ভাষার অধীনকা স্বীকার ক্রিয়াছিল। পশ্চিবে আক্সান্তান হইছে পুরে কামলপ চট্টগ্রাম, উভরে নেশাল হইতে দক্ষিণে ক্রিছেল পর্যন্ত ভাতার

অধিভায়নুক হইরাছিল। ঐ সমরে বন্ধদেশে সমতট ও ভবাক রাজ্য গাঁঠিত হইরাছিল। বন্ধদেশের বিভিন্ন ভূকাগ শাসম করিবার অভ সমুস্রগুপ্ত তাহার আন্ত্রীর বন্ধনকে নিযুক্ত করিরাছিলেন। তাঁহারা অভ্যাধীন সামস্তরণে পাটিলিপু রা-ধিটিত ভগুসন্ত্রাট্গণের পরামর্শে অনেক সমর বন্ধরাজ্য শাসন করিছেন। তাঁহানের বন্ধে বন্ধদেশে নানা বৈদিক মিশ্রিত পৌরাশিক ধর্ম্মত শ্রেচারিত হইতে বাকে।

ৰ্টার ৪র্ব প্তাকী হইতে ৭ম প্তাকী প্রায় বলের নানা-चारम अध्यतास्त्रभ धारन किरनम धारः छोडारमत अशीरन कात्रक সামস্ত্রপণ বঙ্গশাসন করিতেছিলেন। কর্ণস্থবর্ণে প্রধানতঃ ওপ্রয়ালগণের রালধানী ছিল। পুর্বেই দেখাইয়াছি, অতি পূর্ব-काम इहेरफड़े बन्नरहरून रेजन अ त्योद्धशर्मा जाधानरणत समय अधि-कांत्र कतिवाहिक । महशा एक ও कांधकरामत वहक उन्तर्भा शर्मा প্রচারিত হইলেও ভাচা সাধারণের ক্রচিসঙ্গত হয় নাই। মহারাজ কনিছের সমর ক্রিরাকাওবচন ওবচ দেবদেবীপুলাস্কক মহাযান মত প্রচারিত হয়, ভাহাই জন সাধারণের মনোমত হইরাছিল। প্রভন্নাং অপ্রবাজগণের ত্রান্ধণ্য-ধর্মপ্রচারে বন্ধ ও আগ্রহ থাকি-লেও বৃষ্টার ৫ম শতাক্ষ পর্যান্ত গৌড়বক্ষে বৌদ্ধ ও হিন্দুগণের সমান প্ৰভাৰ ছিল। ব্ৰাহ্মণভক্ত ওপ্ৰৱাহ্মগণ হিন্দুশাত্ৰামূসাৰে সাধারণের মন্তিগতি ফিরাইবার জন্ত চেটা করিলেও তিনি বৌছ-প্ৰমণ ৰা প্ৰাৰক্ষের প্ৰতি বিছেৰভাব দেখাইতে সাহসী হন নাই। মহাযান মতের রূপান্তর ভাত্তিক বৌদ্ধার্থ-জন-সাধারণের মধ্যে বিলেব স্মান্ত হওয়ায় গুণ্ড নৃপালগণ নিষ্ঠাবান লৈব অথবা বৈক্ষৰ হইলেও সাধারণের মনোরঞ্জনের অস্ত ভাত্তিক বৌদ দেবদেবীর পূজার উৎসাহ দান করিতেন। এমন কি, কোন কোন অপ্রবাজ গোড়া ভাত্তিক হইরা পড়িরাছিলেন। এই সকল গুপুরাজগণের মুদ্রার ডাব্লিক দেবদেবীর মূর্ব্তি উৎকীর্ণ দেখা বার। বলিতে কি, পুটার ৫ম শতাব্দীতে শুপ্তরাজগণের আধিপতা কালেই গৌড়বলে তান্ত্রিক ধর্মের প্রতিষ্ঠা হইয়াছিল। জাতাতের উৎসাহেই গোড়ীর তাত্রিকগণের নিকট হিন্দু ও বৌধ-ধৰ্মের সমন্ত্র সাধিত হইরাছিল। ভাত্তিকগণের প্রভাবে ৰৈছিকভা এক আকান বিশুপ্ত ব্ইয়াছিল। এখানকার ভাত্তিক প্ৰভাৰ কেবল গৌড় ও বদ বলিয়া নহে, হুদূর উভরে কাশ্মীর a हीनामान, भूटर्स हीनममुद्धात केनकृत्वकी जानाम ७ करवाक शांखा अवर बिक्टन बब्दीन, समाजा ଓ निःश्टन नर्वास विश्वक करेंबाडिन । करवास व नवदीश करेंट्ड निर्मान वन मरशा त দক্ষণ প্রাচীন ভাত্মিক কেবনেবীনুর্দ্ধি ও শিলালিপি ভাবিছত হটৱাতে, ভাহা পর্বালোচনা করিলে বুবা বাব বে, ঐ সকল নিল বংধ্য গৌড়-বংলর বৈক্ষয়, দৈৰ অথবা শাক্ত স্বতির অভাব নাই। উক্ত দেবদেবীর উপাসকগণের মূর্ত্তিতে গৌড়ীয় বা বঙ্গীর আদর্শ রহিয়াছে। বর্জমান বীর্জাতির আদর্শস্থান জাপানেও সেই ক্লব অতীত কালে গৌড-বলের ভান্নিক প্রভাবের স্ফুলা দেখা গিরাছিল: মহাবীর জাপগণের পূর্বপুরুবগণ খুষ্টার ৬৪ শতাৰীতে বন্ধীয় তান্তিকতার দীক্ষিত হটরা এবং বন্ধীয় তান্ত্রিক আচার্যাকে ঋক্তমে বরণ কবিয়া অভিনব উর্ত্তির পথে অগ্রসর হইরাছিলেন। ৫২৬ খুট্টান্দে আচার্য্য বোধিধর্ম তমলুক ছইরা সমুদ্র পথে কান্টনে যাত্রা করেন। তথা হইতে তিনি চীন-সমাটের সভার আহত হইরাছিলেন। সেই বোধিধর্ম্মের "কাবায়" ও ভিকাপাত্র স্বাপানের ইকরুগ-মঠে বছকাল রক্ষিত ছিল। তিনি এ দেশ হটতে "প্রস্লাপার্মিতারদরসত্ত" ও "উফীর-বিজয়ধারণী" নামক বে তহুগ্রন্থ লটয়া গিরাছিলেন, বজাক্ষরে লিখিত সেই এছবৰ জাপানের প্রাসিদ্ধ 'হোরিউজি' মঠ হইডে আবিছত হইয়াছে । * আৰুও ভাপানের সিলোন বা ডাব্রিকগণ যে সকল স্তবকৰচাদি লিখিয়া পাঠ বা ধারণ করেন, সে সম্দায় পূর্কোক্ত বঙ্গাক্ষরের আদর্শে লিখিত।

গুপ্তসমাট্যাণ সকলেই দেবগ্রাহ্মণভক্ত, শৈব বা বৈফব ধৰ্মাবলম্বী হইলেও তাঁহারা বিশেব বৌদ্ধ বিষেধী ছিলেন বলিয়া मरन रव ना। धाव ४०१ पृष्ठीत्म अध्यमश्रीष्ट्र रव रख अध বিক্রমাদিত্যের সময় প্রসিদ্ধ চীনপরিব্রাক্তক ফা-হিরান গুপ্ত-রাজধানী পাটলিপুত্রে আগমন করেন। তিনি এখানে অশোকের অহরচ্ছি প্রভৃত স্থাপত্যের আকর বিশাল রাজ-ভবনের ধ্বংসাবশের দেখির। বিশ্বরবিষ্ট হইরাছিলেন। হীন্যান ও মহাবান উভয় সম্প্রদারের স্ক্রাণাম ও মঠ দেখিবা-ছিলেন। এই সকল সম্বারামে আর ছয় সাঞ্চ শন্ত আচার্য্য অব-শ্বিতি করিতেন। তথনও কগতের সকল স্থান হুইতে বৌছতবা-হুরাণী প্রধান আচার্যাগণ এখানে আসিরা সমবেত হুইভেন। ै অমণ ও পণ্ডিতগণ সকলেই এবানে ধৰ্মোপদেশ লাভ করিবাহ জন্ম জাগমন করিতেন। এখানে শা-হিরান বৃদ্ধদেবের রুখ-ৰাত্ৰা মহোৎসৰ উচ্ছল ভাৰায় বৰ্ণনা করিবা গিৱাছেন। এখানে তিন বৰ্ষকাল থাকিয়া তিনি সংযুত ভাষা শিকা করেন এক বুক্তের থর্বোপদেশ নক্ষণ করিব। লরেম। পাটলিপুত্র হুইভে চম্পার আসিরাও তিনি বহুতর বৌশ্বকীর্তি দর্শন করিরাছিলেন। তংগরে সমুদ্রোপভূগবর্জী তাত্রগিপ্ত নগরে আসিহাও তিনি ২৪টা সম্বাদাৰ ও বছতর বৌদ্যাচার্য্য সম্বর্ণন করেন। এখানেও চীনপরিব্রাক্ত চুই বর্ষকাল থাকিয়া বছতর বৌষ্ঠার সকল করেন ७ बोड बनग्रिं चेंकिश गातन । जिनि स्थिपिशक छ्नाव

^{*} Anecdota Oxonianais, Arran series, part iii.

চক্ষে দেখিভেন, সেক্স ঐ সকল স্থানের হিন্দুকীর্তিসমূহ দিপি-বন্ধ করা আবস্তুক মনে করেন নাই।

কৰ্ণস্থৰ্ণ (মূৰ্শিলাবাদ জেলাহু রাজামাটী) ও ভন্নিকটবৰ্ত্তী প্রাচীন ইটকন্ত্রণ মধ্য হইতে সময়ে সময়ে এখানকার ভারাজ-গাণের সমরে প্রচলিত বহু স্বর্ণমুক্রা বাহির হইয়াছে, ভাষা হইডে রবিশুপ্ত, জয়মহারাজ, নরখপ্ত, প্রকটাদিত্য, ক্রমাদিত্য, বিষ্ণুখপ্ত, চ্ক্রাদিত্য প্রভৃত্তি নাম পাওয়া গিয়াছে। এই সকল গুপ্তরাজগণ কে কোন্ সময়ে রাজ্য করেন, তাহা জানিবার উপকরণ এখনও বাহির হর নাই। তাঁহাদের মধ্যে নরগুপ্ত বা শশাক্ষ নরেক্র-শুরের নাম ইতিহাসে প্রসিষ। তিনি এক জন বোরতর বৌদ্ধ-বিষেধী ছিলেন। তিনি বোধগন্নার বোধিক্রম সমূলে উৎপাটিত করিবার আয়োজন করেন এবং গ্রহশান্তিও পৌষ্টক কর্মাদি সম্পাদনের জন্ত বহু শাক্ষীপী ব্রাহ্মণ আনাইয়া গৌড়ে বাস করাইরাছিলেন ৷ প্রার ৬০৬ খুষ্টান্দে তিনি হর্বের জার্চ ভ্রাতা কনোৱপতি রাজ্যবর্জনকে নিহত করেন, তাঁহার প্রতিশোধ লইবার জন্ত সম্রাট্-ইহর্ববর্দ্ধন সদৈতে আসিয়া শশাকের রাজা-ধ্বংস ও তাঁহাকে বিনাশ করেন। শশাঙ্কের সহিত ত্রাহ্মণ্য প্রভাব কিছু দিনের মন্ত এ দেশ হইতে অন্তর্হিত হইল। এমন কি, তৎকালে এ দেশে বেদবিৎ কর্ম্মঠ ব্রাহ্মণ ছিলেন না। তাই जिमूब्रगिक शर्मगामत्क ७४> थ डोस्म मिथिना हरेएक त्यमिर দ্রাহ্মণ আনাইতে হইরাছিল।

হর্বর্জন আর্য্যাবর্ডের সম্রাটু হইলে গৌড়রাক্য তাঁহার খাসনাধীন হইরাছিল। এ সমরে গৌড্বল হিরণাপর্বত (মুলের), চন্দা (ভাগলপুর জেলা), ক্লুখির, পুঞ্বর্জন (মালদহ ও বঙ্ডা (জ্বলা), সমভট (পূর্ক্বজ্ব), ভাত্রলিপ্ত (ভদ্পুক মুহকুমা ও মেধিনীপুর জেলার অধিকাংশ), এবং কর্ণস্থবর্ণ (বর্তমান রাচভূতাগ) এই কর্মী ভিন্ন প্রদেশে বিভক্ত এবং বিভিন্ন সামস্তরাজের শাসনাধীন ছিল। চীন-পরিব্রাক্তক হিউ-এন্সিরং এ সকল জনপদে হিন্দুও বৌদ্ধ উতন সম্প্রদারের সক্ষারাদ, মঠ ও দেবসক্ষির দেখিরা গিরাছেন। তিনি কর্ণ-কুষ্ণবাসী জন নাধায়ণের গৃহ ধনধাজে পরিপূর্ণ, পুঞ্বর্ছনের জনতা ও নানা ফলকুলশালিকা, সমতটে বহু পঞ্চিতের সমাবেশ এক ভাত্রলিত্তে বাণিত্বাসমারোহ বেধিরা চনৎক্ষত হইরাছিলেন। হর্ষবর্তনের সূত্যুর সহিত বর্তন-সাত্রাজ্য ছিল বিচ্ছিল হাইলে বগংগ ঋণ্ডক্ষীয় আমিভানেন প্ৰবদ হইয়া নহারাজাবিয়াক উপাধি র পূর্বা ভারতের অবিকাশে রাজ্য এবংশ করেন ৷ ভিনি ও গ্ৰাহাত্ত বংগধন্নগণের মধ্যে আনেকে লৌর ছিলেন এবং ভাহারের বত্তে পূর্ব ভারতে অনেকেই নৌর কভাবলবী হইরাহিল । ইহারই কিছু কাল পরে ভগরতবংশীর ভাররবর্ত্তার
বংশধর কামরূপপতি হর্বদেব গৌড়, উডু, কলিক ও কোশল কর
করিরা এক কন পরাক্রান্ত অধীবর হইরাছিলেম। তিনি
নেপালের প্রভাগশালী লিক্তবি ও মগধের ভগুরাকবংশের সহিত
বৈবাহিক সম্বদ্ধ হাপন করিয়াছিলেন।

কাপরপপতি হর্বের ভাগ্যে বহু দিন রাজ্যভোগ খটে নাই। ইহারই অভ্যন্ন কালে পরে মগুধে প্রাধান্ত লইরা ভগু ও মৌধরি-বংশে দারুণ বিবাদ উপস্থিত হয়, ভাহাতে উভয় পক্ষ হীনবল হুইরা পড়েন। সেই সমরে কাশ্মীরপতি বলিভাবিতা গৌড় আর্ক্র-মণ করেন। এ সমরে পরাজিত গৌড়পতি ললিভানিত্যের প্রসাদ-লাভাগার কান্মীরে গমন করেন। কান্মীরপতি গৌড়পতিকে বলেন বে, পরিহাস-কেশবের অন্ত্রহে তাঁহার প্রাণ রাখিরাছেন মাত্র। অথচ তিনি ত্রিগ্রামী নামক স্থানে এক নরহস্তা বারা তাঁহার বধ সাধন করিলেন। তৎকালে গৌড়রাজ্যের অভাসাধারণ অতিশর রাজভক্ত ও বীরপুরবাগণ্য ছিল। কএক কন রাজভক্ত বীর কাশ্মীর রাজ্যে এই তুকার্য্যের প্রভিশোধ শই-বার আশার সর্বতীদর্শন্মান্তে উপস্থিত হইয়া পরিহাস-কেশবের মন্দিরাভিমুধে এক দিন সহসা অগ্রসর হইল। ল্লিভাদিতা তথন দেখানে ছিলেন না। গৌড়বীরেয়া মন্দির আক্রমণ করিবে জানিতে পারিরা ব্রাক্ষণেরা পূর্বেই মন্দিরের কবাট বছ করিরা দিরাছিলেন। কিছু গৌড়ীরগণ রাম্বানীর মন্দিরকেই শ্রীপরিহাসকেশবের মন্দির ভাবিরা মন্দির ধ্বংস করিল ও দেবমূর্ত্তি চুণ বিচুর্ণ করিরা কেলিল। अक्षकान মধ্যেই সাগরতরদের মত কাশ্রীর সৈত শাসিরা পড়িল। সুটমের গৌড়ারদিগের সহিত ভাছাদের বোরতর যুক্ক বাঁধিল।

রাজভক্ত গৌড়বাসী একে একে সকলেই প্রাণদান করিল। ধক্ত বাজালীর রাজভক্তি! ধক্ত সাহস! কান্দীরের ঐতিহাসিক কল্হণ সেই ঘটনা উপলব্ধ করিরা লিখিয়াছেন—

"গুণীন্তপিরাসাবৈ: সাক্ত্রশানিক।।
বাবিজ্ঞানাবাজা বজা চেলং বহছর। 1995
ন্বানি গুজতে পূজং রাবখানিপ্রাপান।
ক্রান্তং গৌড়বীরাবাং সবাধং বলসা পূবং ৪" (রারভ্যানিশী ৪।৬৬৫)
ক্রান্তং গৌড়বীরাবাং সবাধং বলসা পূবং ৪" (রারভ্যানিশী ৪।৬৬৫)
ক্রান্তং গৌড়বীরাবাং ক্রান্ত্রশানিক ক্রান্ত্রশান

কাশীরণতির গৌড় আক্রমণ ও গৌড়ণতির কাশীর গদন হেডু গৌড়রাভ্যে অরালক্তা উপত্তিত হয়। এই প্রবাগে

[🕆] কমের নাজীর ইভিয়ান ২র ভান (রাজ্যকাও)০র্ব আন রউবা।

নায়ভাইজগণ খানীনতা অনুন্তমন করেন, তথ্যব্য পূর্কবনে খেছি
থক্ষাবলে ও রাজে বেছবিকতত পূর্বংশ প্রধান। থকাবংশের
বিভি প্রথম খানীন হইলেন, তারার নাম থকোত্য, ও এবং
প্রবংশে বিনি প্রথম মতেকাত্তনন করেন, তারার নাম কবিশ্র।
উক্ত উত্তর ভূপতির শালন বহু বিভূত হইবাছিল বলিয়া মনে
হয় না। থকোত্যন সমতটে (বর্তমান চাকা কেনার) এবং
শ্লীবিশ্য উত্তরভাকে আধিপত্য বিভার করিয়াছিলেন।

া বক্ষোভনের পুত্র ক্ষাভবদুধ এবং জাতবদ্দোর পুত্র দেববদুশ।
ক্ষেবদুকার ভারানাদন হইতে মনে হর, সমস্ত পূর্কবদ তাঁহার
ক্ষিকারভূক্ত হইরাছিল এবং বহু সামস্ত নূপতি তাঁহার
ক্ষিকার করিরাছিল।

পূরবংপের অস্কু।দর।

দেবগড়েগর শমরেই উত্তররাচে বা কর্ণপ্রবর্ণে আধিশুরের অস্কুগর। আধিশুরের প্রকৃত নাম জরত, তিনি পূর্বোক্ত কবি-শুরের পৌত্র ও মাধবশুরের পূতা। তিনি অভ্যান কাল মধ্যে পৌত্রবর্জন জর করিয়া তথার রাজধানী ত্রাপন করিলেন ও ১৮৪ শক্তে বা ৭৩২ খুষ্টাব্দে বধারীতি অভিবিক্ত হুইলেন।

ভাঁহার রাজধানীর গৌরবসমূদ্ধি কাশ্মীরের ঐতিহাসিক কল্হণ উজ্জল ভাষার বর্ধনা করিরা গিরাছেন। আদিশ্রের অভ্য-বরের পূর্ব্বে কাল্তকুজপতি (বৈদিকমার্গপ্রবর্ত্তক) যশোবর্দ্মদেব গৌড় জাক্রমণ করেন। এখানকার গৌড়পতি তাঁহার হক্তে নিহত হন। মহাকবি বাক্পতির গৌড়বধ কাব্যে কমলায়ুধ মশোবর্দ্মদেবের বিজয়কাহিনী বিবৃত হইরাছে।

[सत्मावर्यस्य तम्थ ।]

ব্রাহ্মণতক্ষ মহারাছ ছয়ওপুর গোঁড়ে অভিবিক্ত হইবার পরেই বৈদিক্ষার্গ প্রবর্তনের চেটা করেন। তথন কায়্তকুকেই মহারাছ বশোবর্দ্মবেরের আশ্রারে প্রধান সায়িক ব্রাহ্মণাগ অব-ছান করিতেন, এ কারণ আদিপুর তাঁহার নিকটই ব্রাহ্মণ চাহিরা পাঠান। গোড়দেশ বৌহ্মবিপ্লাবিত ছিল বলিরা প্রথমতঃ কনোঅগতি সায়িক ব্রাহ্মণ পাঠাইতে সম্মত হন নাই। অবশেবে আদিপুর কৌশল করিরা কএক জন বীর সংগ্রাহ্মণ-বাহ্মণের সায়িক ব্রাহ্মণ আলাইতে সার্হাইনেন। গোব্রাহ্মণ-বাহ্মণ্য

ব্যবের আশকা করিয়া ক্রোজপতি কঞ্চ জন সাহিক আত্মণ পাঠাইতে বাধ্য হইলেন। এই সকল আন্দ্রণগ্রন্থ বদ্ধে স্বেটড়ে বৈধিকাচার অনুষ্ঠানের ক্রেপাভ হইতে থাকে। পোঞ্ বর্জনের নমুদ্ধি কালেই কাশ্বীরপতি কারস্থবীর নলিভাগিতোর পৌত্র মহা-দাৰ ব্যাদিত্য নানাহান ব্য করিবা হ্লাবেশে পৌত বর্জনসগরে উপন্থিত হন। রাজধানীর সমৃদ্ধিদর্শনে ডিনি অভিশব্ধ প্রীভ হটবা-क्टिनन। ता नमात्र त्योश वर्षात्मच निकार निराहत छै९ शाल একদিন রাত্রিকালে ছলবেশী জনাদিত্য একটা সিংহ্বধ করেন, এই সমরেই ডাঁহার নামান্বিভ কেরুর পড়িরা বার। পর্যদিন প্রোতে স্থানীয় অধিবালী মৃত সিংহ ও কেরুর দর্শন করিরা তাহা গৌড়পডির নিকট উপস্থিত করিল। কেয়ুর পাইয়া গৌড়পডি স্বানিলেন বে কালীরপতি মহাবীর স্বয়াহিত্য ছলবেশে তাঁছার রাজধানীতে উপস্থিত! অবিলয়ে চর পাঠাইরা কাশারপতিকে বাহির করিবা ফেলিলেন ! জরস্তপুরের এক পর্ম-ছুন্দরী কন্তা ছিল, তাঁহার নাম কল্যাণদেবী। গৌড়পত্তি পরম সমাদরে জনাদিভাকে নিজ আসাদে আনাইরা মহাসমালোহে তাঁহার করে কল্যাপদেবীকে সম্প্রদান করিলেন। এইরূপে কাশীরের কারহুরাজবংশের সহিত গৌড়ের কারহুরাল করন্তপূর বৈবাহিক সম্বন্ধে আমন্ধ হইলেন।

মহারাজ আদিশুরের অভ্যুদরকালে তাঁহার অধিকার মধ্যে नानाविध निव्वधिक এवः टिबन अथवा दोक्काबालव डाकालब बाग हिन, जन्नारा ताएरानवानी मश्चनजी बान्नाराने अधान हिल्ला। পূর্বে বিভিন্ন রমরে বহু সংখ্যক সারস্বত ব্রাহ্মণ এ রেশে আসিয়া ৰাস করেন, তাঁহারা বর্দ্ধনান জেলাছ সপ্তশন্ত ঘত্ন একত্র বাস স্বরিডেন; বে হানে এই সপ্ত শত মর বাস করিতেন সেই স্থান "সপ্তপত্তিকা" নামে অসিছ হইয়াছিল এক এই স্থাননাম হইতে এই শ্রেণির ব্রাহ্মণেয়াও পরবর্ত্তী কালে "সপ্তশন্তী" নামে প্রখ্যাত হইলেন। বারেজ ও রাড়ীয় কুলপঞ্জিকা মতে ভাঁহারা 'বিজবেদ-বক্সরহিত' অর্থাৎ শুদ্রাচারী হইলেও সকলে ফুলাচারী, আভিচারিক ক্রিরার চতুর, শান্তিকার্য্যে পটু ও ঋণবান্ ছিলেন। আহিশুরের অভ্তাহে নবাগভ ্সাধিকজাকশাণের সাহাব্যে ভাঁহায়া আর-শিকাদি খারা প্নংসংস্থত ক্ষরা বিশ্বাজসভার বিজ্ঞান্তম বলিয়া সমানিত হইয়াহিলেন । নিয়লিক বৌদাচালী সম্ভাৰতী বিঞান বৈদিকাচায় এবর্ত্তক আবিশুরের বিকট সন্ধানিত ক্ট্রার কারণ কি 🕈

আটান কুলঞ্চনস্থ আলোচনার ব্যৱস্থিত দে, নোড-ভারিকভার প্রভাবে গোড়বদ হইছে এক কালে বৈচিকাচার বিস্থা হয়, এবং প্রভাগালাল প্রভাগালী অথবা শুল বলিলা প্রভ ক্রমাহিন গ এইলে লাক্সেবলানী প্রকালালাক স্বর্গতী আর্থ-

আগভদশ্ব ক্টতে আবিছক বেৰণকোৰ ভাৰণানৰ।

[🕇] पाठन्पक्ति मिरमात स्वाहान ।

[্]ব কোন বাটার ও বারেল রাজগরিগের সুলকার ০০০ নকে বা ৭০২ ব্ ইাজে কনোল বৃইতে নারিক রাজগান্যনকার্গ নিবিক বৃইরাছে। আবিশ্রের অভিবেকারকেই সভবর্তঃ রাজগান্যন কাল প্রতিরা সুল্পস্কারণ বরিরা গ্রাহিবেন। [কালে লাজীই ইভিয়ান (রাজগর্কার) স্বাক্তার সাবে এইছা]

গণৈর বিশেষ অন্তর্মক ডক্ত ছিল 🎉 তৎকালে গৌড়বেশের अधि शक्षशारम रवीद नर्छ वा विशाम हिन, अधिकारम करन ज्ञान भकी बाषा (भन्नार के जिल्हा का किराया किराया विश्वास । গ্রামবাসী জনদাধারণ ভাঁহাদের উপদেশেই ভার্য্য করিতেন। এই দক্ষ আচার্ব্যের বিনা অসুমভিত্তে ভাহারা কোন কার্ব্য করিতেই नमर्थ हिन ना । कारामित्र छेनत नथनकी वोद्यापार्वाता जनन জটল প্রভূত্ব বিভার করিরাছিলেন। এই সঞ্চল আত্মণের মধ্যে অধিকাংশই বৌৰভাত্ৰিকভার আহ্নর ও বিবর ক্লখে কডকটা মিমগ্ন হইরা পড়িরাছিলেন। তবে আজিচারিক ও শান্তিকার্য্যে विरागन शर्षे हिरमान बनिज्ञा छांशांत्रिशरक छेळ नीठ मकरमहे छन्न ভক্তি করিত। আদিশুরের অভাগরে রাজনৈতিক পরিবর্তন **मिथिया औशामा वृश्यिमाहित्मन त्व, औशामिय वर्श्यमान व्यव**श **ठित्रमिन गयान थाकिरद मा। छाँशात्रा आध्यन मञ्जान इटेरन**७ বেদৰিৎ আদ্দণগণের নিকট হের হইতেছেন। বিশেষতঃ জাঁছারা বুৰিরাছিলেন বে, হিন্দুধর্মের অভ্যানমের সহিত বলি বৌদ্ধাধিকার লোপ হয়, তাহা হইলে হিন্দুসমাজে আর তাঁহাদের স্থান হইবে না: আত্র তাঁহারা যেরপ জন সাধারণের উপর কর্তৃত্ব চালাইতেছেন, এই অসাধারণ প্রতিপত্তি জলবুদ্বুদ্বং বিলীন হইবে। বিচক্ষণ রাজা আদিশ্রও নবলক রাজ্যের সামাজিক অবস্থা দেখিয়া বুঝিরাছিলেন বে, দেলের প্রাচীন ব্রাহ্মণবংলের প্রতি দেলের সাধারণ লোকের জচল অটল বিশ্বাস ও ভক্তি বর্জমান: বাজ-শক্তি বৃদ্ধি করিতে হইলে সমাজশক্তি আরত্ত করা আবশ্রক। সপ্তশতী বিপ্রগণ তৎকালে একরপ সমাঞ্চলক্তির পরিচালক ছিলেন। তাই প্রথমেই মহারাজ আদিশুর সপ্তপতী ব্রাহ্মণ-দিগকে বহু শাসন গ্রাম দান বারা সমানিত করিরা ভাঁছাদিগকে খীর রাজ্যপ্রতিষ্ঠার জন্ত আন্থান করিরাছিলেন ! এই সংবর্জনার সমরেই সপ্তশতীর গাঞিমানার উৎপত্তি হইরাছিল। সপ্তশতী ব্রাহ্মণেরাও পরিণাম চিন্তা করিবাই আদিশুরের আহ্বানে রাচের বীরপুত্রগণকে দইরা গৌড়াধিপের ছত্ততলে উপনীত হইরা-ছিলেন।। সেই বাডীর অভাখান কালে, সেই অসাধ্য সংসাধনে কানীরগতি জয়াদিতা গৌড়াধিণ জাদিপুরের মন্ত্রী ও প্রধান নেনাপতির কার্য্য করিরাছিকেন। ক্লেণ্ড লিখিয়াছেন, মহারাজ জয়দিতা গোড়ের পাঁচ বন দুপতিকে পরাজিত করিয়া খণ্ডর আমিশুরকে তাঁহাদের অধীবর করিরাছিলেন। के পাঁচ धन बाबात नाम जाना वाद ना, थे नीठ धन नहरुष: हित्रगु-পর্বাত, চন্দা, কল বির, ভাত্রলিপ্ত ও সমতট এই পঞ্চ প্রাদেশের श्राचा व्हेरवन । अल्ला कर्

কাৰহ্বীর অবাধিত্য কল্যাপ্রকৃত্তীকে লইবা ননৈক্তে বিশিক্ত হইবা কাৰীয়-বাজাকালে পথে কনোজের নিংহান্দন কর করিবা লইবা বান । এ সমরে মহারাজ কপোকর্মকেবের মৃত্যু বটিরাছে, তথ্পুত্র চফ্রাছ্থ আমরাজ জৈনধর্ম গ্রহণপূর্বাক্ত নিংহান্দনে অধিক্তিত হইরাছেন । বৈধিক বিপ্রগণ রাজপুত্রের বর্মাক্তর প্রকৃত্ত-কর্মনে বাধিত হইরা অনেকে পানন ও সন্ধান লাভের আখার গৌড়রাজাপ্ররে আনিরা বান করিছে লাগিলেন । এ সমর্ক্তি কনোজ হইতে বহু বেহবিদ্ নাথিক বিপ্রের আগমন বটিরাছিল প্রবা মহারাজ আদিপুর সন্তাপতী বাজ্যপের সহিত কনোজীর বিপ্রের বৈবাহিক সবন্ধ স্থাপন করিবা সপ্রশতীধিগকে পূজা-প্রাব হইতে মৃত্তিদান করিবাছিলেন ।

তৎকালে অবোধ্যা, কাছকুল প্রাকৃতি হান হইতেও কারত্বগণ আলিপ্রের সভার আগমন করেন। তাঁহাবের আগমনের অভ্যন্ত কাল পরেই আলিপ্র জরন্তের ইহলীলা শেব হয়। এ সমরে পুণ্ডু-বর্ধনের সভার গোলমাল দেখিরা কতিপর ব্রাহ্ণকারত উত্তরহাটে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। এ সমরে রাচ্চের স্থ্প্রাচীন রাজধানী কর্ণস্থবর্গ পরিভাক্ত ও অকলাবৃত হইয়াছে;—তৎকালে কর্ণ-স্থবর্গের নিকট সিংহেবর নামক স্থানে আলিপ্রের আদীর আদিভাশ্য রাজত করিতেছিলেন। সমাগত বিদেশীর ব্রাহ্ণকারত্বগণ তাঁহার আশ্রন্থ উচ্চ রাজকার্থে নিযুক্ত হইরা উত্তরহাচ্বাসী হইলেন এবং উত্তরহাচ্ বাল হেতু সেই কারত্বগণের বংশধরগণ উত্তরহাট্য বলিরা থ্যাত হইলেন।

যক্ত দিন আদিশ্ব জীবিত ছিলেন, ততদিন কনোজাগত বৈদিক ব্রাজণগণ গৌড়মগুলে বৈদিকধর্মপ্রচারে ক্ষরোগ ও জ্বিধা পাইরাছিলেন। তাঁহার জীবনাবদান কালে পশ্চিমোন্তর গৌড়েও নগধে বৌদ্ধ জন সাধারণ একত্র হইরা বণ্যটের পুত্র গোণালকে অভিবিক্ত করিল এবং তাঁহা লারা পুনরার বৌদ্ধপ্রধান্তর্ভাগনের আবোজন চলিতে লাগিল, কিছ নগধপতি গোণাল ব্যোত্ত ও জ্ঞানবৃদ্ধ আদিশ্বের প্রভাব ধর্ম ক্রিতে সর্বর্থ হন নাই।

দীর্থকাল পঞ্চমীড় শাসন করিরা মহারাশ আদিশুর ইছ-নোক পরিজ্ঞাপ করিলে তৎপুত্র ভূশুর শৌগুরর্জনের সিংহা-সনে অধিষ্ঠিত হইলেন। তিনি পিতার মত সাহসী, রাজনীতি-কুশল ও শক্তিশালী ছিলেন না। তাঁহারই সময়ে সগ্যপতি

January W.

क्षे नवारिका बनाव अवर्थ वर्षनाम स्वयात व्यव्यक "नावनदेवा" [नावना : [नावक वार्षक देवियान (वार्ष्याकाक) अव व्यवस्थ वर्षका :]

থাদিনপুর হইতে আবিশ্বত বর্ষণালের শিলালিপি: সুসের হইতে
আবিশ্বত দেবণালের ভারনাগদ হইতে লাকা বান বে, ধর্ষণাল রাষ্ট্রপুলিত
ক্রিক্তের করা আন্দেশীর পারিগ্রন করেন, ভারারই কর্কে ক্রান্ত, প্রতিদ্ধ
পুরু-দেবণালের করা;

গোপালের পূত্র ধর্ম্মণাল প্রার ৭৮৫ খুটান্দে পিতৃসিংহাসন লাভ করিরা বথেট বলসক্ষম করিতেছিলেন। তাঁহার একান্ত প্রতাপ ও আধিপত্য অর্নদিন মধ্যেই সমস্ত উত্তর গোড়ে বিভূত হইরা পড়িল। তৎকালে দাক্ষিণাত্যে রাইকুট-সিংহাসনে গোবিক্ষা প্রীবর্মভ এবং উত্তরভারতে বশোবর্মপুত্র চক্রায়ধ আমরাক্ষ অধিষ্ঠিত ছিলেন। ঐ গুই পরাক্রান্ত নৃপতির সহিত ধর্ম্মণাল আত্মীরতাস্ত্রে আবিদ্ধ হইলেন। †

এইরূপে বলদুপ্ত হইরা বৌদ্ধভূপতি ধর্মপাল মহারাজ ভূশুরের ষ্মান্ধ্য আক্রমণ করিলেন। ভূপুর বৌদ্ধ অভিযান কিছুতেই নিবারণ করিতে সমর্থ হইলেন না। তিনি ধর্মপালের নিকট পৌগুর্মন হারাইয়া রায়দেশ আশ্রর করিতে বাধ্য হইলেন। রায়বাসী সপ্রশতী ত্রাহ্মণগণের সাহায্যে আদিশুর গৌড়ের অধীর্বর হইরা-ছিলেন, এখন ভাঁহাদের বংশধরগণ ভূশুরকে আশ্রয়দান করিলেন। ধর্মপাল ও তৎপরবর্তী পালরাজ্ঞগণ এক প্রকার পুর্বানারতের অধীশর হইলেও রাচ্দেশ অধিকারে সমর্থ হন নাই। তিনি রাঢ়দেশ অধিকারের জন্ম নিশ্চেষ্ট ছিলেন না। তাঁহার ভামশাসন হইতেই জানা যায় বে, তিনি রাঢ-দেশীয় আহ্মণদিগকে হস্তগত করিবার জম্ম পৌও বর্দ্ধনভূক্তির मर्त्या जाशानिशरक वह अमृद्ध श्राम श्राम कतिवाहिरानन ; किन्द ধর্মপালের সকল কৌশল ব্যর্থ হইরাছিল। রাঢ়ের ক্ষমতাশালী সপ্তশতী ত্রাহ্মণগণই আপনাদের হুদৃঢ় ও হর্ডেছ আগ্রয়ে শূর-রাজবংশকে রক্ষা করিরাছিলেন। এখানে ভূপুর ও তাঁহার বংশধরণণ বছকাল আহ্মণা ধর্মরক্ষাপূর্ব্বক স্বাধীন ভাবে রাজত্ব করিরা গিরাছেন।

পৌজুবর্জন বৌজ নৃপতি ধর্মপালের শাসনাধীন হইলে,
দেশের মধ্যে হিন্দু ও বৌজনংঘর্ষে এফটা আন্তর্জাতিক বিপ্লব
উপন্থিত হইল। এই বিপ্লবের সমর উক্ত সাধিক বিপ্রগণের সন্তানগণ মধ্যে কেই পৌজুবর্জনের নিকটবর্ত্তী
বরেক্রভূমে স্ব আজগণাসনে রহিলেন, কেই বা তাঁহাদের
আপ্ররণাতা ও প্রতিপালক শ্র-নরপতির সহিত রাচ্চদেশবাসী
হইলেন। কেই বাজিপাতা, কেই বা পাল্টাতা সমাজে মিলিলেন।
বে করজন সাধিক বিপ্রসন্তান ভূশ্রের সহিত রাচ্চদেশবাসী
হইরাছিলেন, তাঁহাদের মধ্যে শাভিন্যগোত্র ভট্টনারাম্নণ,
ভাশ্রপগোত্র বন্দর্গর্জ, এই পঞ্চ মহাস্থার নাম রাট্যির কুলগ্রহে
গুরীত ইইরাছে। এই পঞ্চ বিপ্লে বাজীত আরও জনেকে
রাচ্বাদী ইইরাছিলেন, কাছিবিলীর নারারপের ভ্রেশোগ-

পরিশিষ্টপ্রকাশ" ও ক্লাবনের ভটের কুলপ্রাশন্তি হইডেই তাহার আভাস পাওরা যাইতেছে। ভ তাঁহাদের সদাচার, বিদ্ধা, বন্ধা ও কর্মনিষ্ঠার রাচ্দেশে আবার সনাতন হিন্দুধর্ম প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল। ক্রমে এই নবাগত বৈদিক ব্রাহ্মণগণ ও তাঁহাদের কংশধরগণ রাচ্বাসী জন সাধারণের ক্ষম অধিকার করিয়া বসিলেন। এই সময় হইতেই রাটীর ও বারেক্স ব্রাহ্মণের সমাজগত পার্থকা দুচ্ হইরা উঠিতেছিল।

পূর্ব্বেই লিখিয়াছি বে, গৌড়পতি আদিশ্র জয়বেস্তর সময়ে তাঁহার প্রতিনিধিরপেই হউক অথবা মহাসামস্তর্গেই হউক, আদিত্যশূর নামে তাঁহার এক আত্মীয় উত্তররাঢ়ের সিংহেশবে অধিষ্ঠিত ছিলেন। তাঁহারও সভায় ব্রাহ্মণকায়হের আগমন হইরাছিল। বি আদিশ্রের পুত্র ভূশূর পোণ্ডুবর্দ্ধন হারাইয়া আতিবিরোধের আশক্ষায় উত্তররাঢ়ে না থাকিয়া দক্ষিণরাঢ়ে আসিয়া বাস করেন। আদিশ্রবংশ ৭ পুরুষ রাজ্যণাসন করিয়া ছিলেন, রাট্য়ির ব্রাহ্মণ কুলগ্রহে সংগ্রহনের নাম এইরূপ পাওয়া বার—

"আদিশ্রো ভূশুরক্ত ক্ষিতিশ্রোহবনীশ্র:।
ধরণীশ্রকক্তাপি ধরাশ্রো রণশ্র:॥
এতে সপ্ত শ্রা: প্রোক্তা: ক্রমণ: স্বতবর্ণিতা:।
বেদবাণাক্ষণাকে তু নৃপোহভূচ্চাদিশ্রক:।
বস্বশাসিকে শাকে গৌড়ে বিপ্রা: সমাগতা:॥"

(রাড়ীয় কুলমঞ্জরী)

অর্থাৎ ১ম আদিশুর, তৎপুত্র ভূশ্র, তৎপুত্র কিতিশুর, তৎ-পুত্র অবনীশুর, তৎপুত্র ধরাশুরর পুত্র রগশুর শুরবংশে এই সপ্ত নাজত্ব করেন। ই ইচাদের সধ্যে আদিশুর ৬৫৪ শকে (অর্থাৎ ৭৩২ ধুটান্ধে) রাজা হন এবং

[†] ভাগলপুর হুইতে আবিচ্নত নারালাপালের ভারশাসন ও প্রভাবক-চ্যান্ত এইবা ।

বলের লাতীয় ইভিহান (আহ্মণকাও) ১বাংশ ৩৪২ পৃঃ ও ৬ৡ অংশ
 ২০-২০ পৃঠা এইবা।

[†] কুলানন্দ বচিত উত্তরবাদীর কারছকারিকার লিখিত আছে—
"পৌড়বেশে বহারাজা আদিত্যপুর নাম।
পদার সরীপে বাস সিংহেদর প্রাম র
আদের করিরা আনে বিপ্রা পদারন।
সেই করে পদ্দ পোত্র আইল জীকরব ৪
তম কুলবর করা পুরাক্তম।
রাজার সভার ভার্বা করে পদারন ৪
আতি বড় বহারাজ বুদ্ধে বৃহস্পতি।
পদারবার নাম পুইল পদ্দ ধেলাভি ৪° ইন্ডাবি।

[্]ব কেং কেং প্রবাদে প্রয়ারপুর প্রকৃতি কএকজন পূর স্পতির নায় করিবাছেন, কিন্তু কোন প্রাচীন ইতিহাসে বা কুমনুছে প্রয়োজপুরের নাম নাই।

भागमाम्बर्**न** ।

ভঞ্চ শংক (१৪৬ ফুটাকে) উহার জভার ব্রাহ্মণগণ জাগনন শংরদ। কুলমঞ্জরীকার আদিশ্বকে শ্রীক্ষেত্রির প্রথম রাজা বলির। ধোকণা করিরাছেন, কিছ তৎপূর্কে আদিশ্বের পিতা মাধবশ্ব এবং পিতামহ কবিশ্বও রাজত করিরাছিলেন, বাচস্পতি মিশ্রের কুলরাম হইডে তাহার সভান বাহির হইরাছে। জরস্তপ্রই শ্রবংশীর মধ্যে সর্ক প্রথম সমস্ত গৌড়ের অধীখর হইরাছিলেন বলিরা তিনি "আদিশ্ব" উপাধি লাভ করেন।

দান্দিণাত্যের তিরুমদার শৈলে উৎকীর্ণ দিখিলারী রাজচক্রবর্তী রাজেজনোলের শিলালিপি হইতে জানা পিরাছে যে, তিনি প্রার
১০>২ খুরান্দে দন্দিণরাড়ের অধিপতি রগশ্রকে জর করেন। এ
সমরে পূর্ববিদ্ধ গোবিন্দচন্দ্র, উত্তররাড়ে মহীপাল এবং দশুভুক্তি
,বা বেহারে ধর্মপাল রাজত করিভেছিলেন, তাঁহারাও দিখিলারী
রাজেজনোলের নিকট পরাজিত হন।

উক্ত শিলালিপি হইতে দেখা বাইতেছে বে শুরক্ষীর শেষ মূপতি রণশ্তের পূর্কেই উক্তররাঢ় বৌদ্ধ পালরান্তাদিগের অধিকার-ভুক্ত হইয়াছিল! [গৌড় শব্দ দেখ]

এ দিকে আবার প্রসিদ্ধ নৈয়ারিক প্রীধররচিত স্থারকদাণী নারী হস্তলিখিত প্রাচীন টীকা পাঠে জানিতে পারি যে, ৯১৩ শকে (৯৯১ খুঠাকে) দক্ষিণরাচের ভূরিপ্রেটা (হগলী জেলাহ বর্তমান ভূরশুট) নামক হানে পাওুদাস নামে এক কারহ রাজা রাজ্য করিতেন। প্রীধর ভট তাঁহারই প্রার্থনার স্থারকদালী নামে বৈশেষিক স্থানের টাকা রচনা করেন।

ক্সারকন্দলীর উক্ত প্রমাণ হইতে মনে হয় বে ভূরণ্ডটে দক্ষিণ-রাচের রাজধানী ছিল এবং রণশ্রের পূর্বে তথার পাঞ্দান নামে এক বিভোৎসাহী রাজকুমার বিভ্যমান ছিলেন। ইনি ধরাশ্রের কোন আত্মন্ত অথবা কোন আত্মীর হইবেন।

বাহাহউক শ্রহণের বিবরণ আলোচনা করির। এখন আনিতেছি বে, পুটার ৮ব শতাবীর প্রারম্ভে শ্রবংশের অভ্যানর এবল আক্রমণে হতবল হার্কার পুটার ১১শ শভাবে রণশ্রের সহিত শ্রবংশ খাধীনতা বারাইরাছিলেন। বাব্দিশাতা হইতে সম্পাগত সেনবংশ ক্রমে শ্র-সিংহাসন অধিকার করিরা বসিলেন।

* "আধি নহলোভ্যন্ত্ৰণকাকাৰে ভাষকৰণী সচিতাঃ রাজনী গাঙ্গাস-কাল্যাভিত ভটনী অনেগ্ৰন্থ। স্বাহেত্যৰ পৰাৰ্থমেশেভান্তনকানীনিকাঃ"

† বৃষ্টার ১১শ শতাবে বাশ্ব রাজ্যানট হুইলেও ভাষার বংশবরগণ এককালে
রাজনী হারাহিরাভিলেন হুলিরা বংশ বৃদ্ধ কাঃ ভাষণ সাহত প্রথম সুসস্মানক্ষাত্রণৰ কালে আমরা বিশ্বতন পুর সাহে আদিশ্বক্ষীর এক সামার নাম
কার হুইঃ ভাষাকে এক ক্ষম প্রথম কার্যান সামার বাস্কার বুইঃ

প্ৰেই লিখিয়াছি, প্ৰাৰ্থ গুটাবে বৌৰন্থপতি বৰ্ষপালের অভ্যানর। ৭৯০ খুটাবের সমকালে তিনি পৌঞুরর্জনালি
অধিকার করেন। তিনি রাচ্বাসী প্রাক্তণিগকে হতগত করিবার কচ্চ উচ্চাদের হুই এক জনকে পৌঞুরর্জনে আহ্বান
করিয়া পাসন প্রাম বারা সন্মানিত করিয়াছিলেন। কিছ পূরবংশের অহ্বত্ত প্রধান প্রাধান প্রাক্তণিগকে কোন ক্রমে অপক্রে
আনিতে পারেন নাই। উত্তররাচ্নেও এই সকল প্রাক্তণের
প্রভাব ছিল। তাঁহাদের মধ্যে জনেকে "বন্ধান্ত্রত্ত" অর্থাৎ
'ভূম্যধিকারী' বলিয়াও প্রসিদ্ধ ছিলেন। নারারণের 'ছলোগপরিলিইপ্রকাশে' লিখিত আছে বে, ঐ সকল প্রাদ্ধের নিকট
ইইতেই আনিপ্রের সময় কনোজাগত পরিত্রের উত্তররাচ্নে
তালবাটা, চতুর্থও, পিলাচথও ও বাপুলী এই পঞ্চ কুলহান
লাভ করিয়াছিলেন।

যাহ। হউক, ধর্মণাল রাছদেশে নিজ আধিপভ্যবিভারে সমর্থ না হইলেও তিনি পশ্চিমে কাশী হইতে পূর্বে কামরূপ এবং উত্তরবন্দের সকল খান জর করিরাছিলেন। তাঁহার সমঙ্গে গৌড়ে পুনরার বৌকপ্রতিপত্তি ঘটিরাছিল,নানা খানে বৌক্ষিহার প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল এবং বৌক্ষান্তর্কোও বাড়িয়াছিল।

ধর্মপালের পুত্র দেবপালও এক জন মহাবীর, শীল-বিনর-সম্পার ও নিজ কুলধর্মে বিশেষ অন্তরক্ত ছিলেন। তাঁহার প্রধান মন্ত্রী শান্তিল্যগোত্রক দর্ভগাণির কৌশলে দেবপালের রাজ্য বহু বিভ্ত হইরাছিল। দেবপালের খুলভাত বাক্পালের পুত্র জরপাল বহু চেষ্টার পার উত্তর রাড় অধিকার করেন এবং অর্থবলে বহু ব্রাহ্মণ পত্তিতকে হন্তগত করিয়াছিলেন। ছল্মোগপরিশিইপ্রকাশে

(बण्यानगतिनिक्केशकान)

নারারণ লিখিরা গিরাছেন বে, তাঁহার পূর্বপূক্র পরিতোব»

পঞ্চ গ্রামপতি হইরা বিপ্রায় ও অর্থবলে প্রাধান্ত লাভ করেন।

তৎপুত্র ধর্মা, পোত্র ভান্তেম্বর ও প্রপোত্র গদাধর রাজপ্রতিগ্রহে

পরায়ুগ বলিয়া বিশেষ সম্মানিত হইলেও গদাধরপুত্র প্রাভাকরগ্রামণী উমাপতি মহারাজ জরপালের নিকট হইতে প্রভৃত মহা
দান গ্রহণ ক্রিয়াছিলেন।

কেন ক্ষরপাদ উমাপতিকে নানা কৌশলে বন্ধীভূত ক্রিরাছিলেন ? এই উমাপতির বংশধর নারারণই লিথিরাছেন বে 'সেই পণ্ডিতকুলচুড়ামণি উমাপতির নিষ্য ও উপনিষ্যবর্গে স্নাগরা ধরা পরিবাধ্যে হইবাছিল।' স্নতরাং বুরিতে হইবে মে উমাপতি এক ক্ষম লাধারণ লোক ছিলেন না। এরপ লোককে হত্তগত করার বৌদ্ধ নূপতির কত স্থবিধা হইরাছিল, তাহা সহজেই অন্থবের।

দেবপালের পর জরপালের পুত্র ১ম বিগ্রহণাল খ্যোড়-মগধের আধিপত্য লাভ করিরাছিলেন। তিনি মধ্যপ্রদেশের হৈহররাজকক্তা লক্ষাদেবীর পাণিগ্রহণ করেন। তাঁহারই গর্ভে প্রপ্রসিদ্ধ নারারণপালের ক্ষা। এই নারারণপালের প্রধান মন্ত্রী পূর্ব্বোক্ত দর্ভপাণির পৌত্র ও ক্ষোর মিশ্রের পূত্র রামগুরব মিশ্র। ইনিই বদালে গর্মকুক্ত প্রতিষ্ঠা করেন।

নারারণপালের পর তৎপ্র রাজ্যপাল, তৎপরে রাজ্যপালের প্র ২য় বিগ্রহপাল,তৎপরে বিগ্রহের প্র ১য় মহীপালের বিগ্রহের প্র ১য় মহীপালের সময় করেন। এই মহীপালের সময় করেন। অই মহীপালের সময় করেন। অই মহীপালের

দিখিলরী রাজেন্দ্র চোল উত্তর-রাড়ে মহীপালকে পরাজয় করিরাছিলেন। মহীপালের পর তৎপুত্র নরপালদেব রাজা হন। ইনি দীপদ্ধর শ্রীক্রান-স্বতীশের একজন পরম ভক্ত ছিলেন। নরপালের উৎসাহে শ্রীক্রান সর্ব্বত তান্ত্রিক জ্ঞানোপদেশ প্রচার করেন। কি হিন্দু কি বৌদ্ধ সকলেই তৎপ্রচারিত তান্ত্রিক তারাদেবীর (শক্তির) উপাসনার ও তান্ত্রিক গৃঢ় সাধনার অন্তর্মক হইরাছিলেন।

নয়পালের পর তৎপুত্র ওর বিগ্রহপাল রাজ্য লাভ করেন। जिनि (बोक्शर्यायनची हरेटन दनाज, अन्न, मीमाःमा अजि শান্তক ব্রহ্মণকে শাসন ও গ্রাম দান করিয়া সন্মানিত করিয়া গিরাছেন ৷ তৎপুত্র ২র মহীপালের নাম এক সময় বঙ্গবাসীর ঘরে ঘরে গীত হইরাছিল। প্রবাদ এইরূপ,—রাজ্য লাভের অল্লকাল পরেই তিনি সন্নাস ধর্ম অবলম্বন করিয়াছিলেন। মহীপালের পর ভৎপুত্র শূরপাল এবং শূরপালের পর উাহার স্হোদর শামপাল গৌড়াধিপত্য লাভ করেন। ইইারই নামান্সনারে পুর্ববঙ্গে রামাবতী বা রামপালনগরী প্রতিষ্ঠিত হয়। রামপাল मिथिनाधिशिक कीमरक वृत्क अत्र कतित्रा विनाम कतित्राहितन । রামপালের পর তৎপুত্র কুমারপাল, তৎপরে তৎপুত্র ৩য় গোপাল সিংহাসন লাভ করেন। গোপালের পর তাহার পিতৃব্য ও মদনপাল সিংহাসনে অভিষিক্ত হন। রামপালের পুত্র তাহার তামশাসন হইতে জানা যায় যে, রামাবতী নগরে তাঁহার রাজধানী ছিল। তিনি বুদ্ধোপাসক হইলেও আহ্মণ পত্তিতের যথেষ্ঠ ভক্তি সন্মান করিতেন। মদনপালের পর কোন পাল রাজা সিংহাদনে অভিযিক হইয়াছিলেন, তাহা এথমও ঠিক জানা যায় নাই। তৎপরে মহীন্দ্রপাল ও গোবিন্দ্রপাল নামক ছই রাজার নাম পাওরা বায়। নেপাল হইতে যে বছতর বৌদ্ধ ধর্মগ্রন্থ আবিষ্কৃত হইয়াছে, ঐ সকল পুথির শেষে 'গোবিন্দপাল-দেবানাং বিনষ্টরাজ্যে² এইরূপ শিখিত আছে। গরা হইতে গোবিন্দপালের যে শিলালিপি আবিষ্ণত হইরাছে, ভাহাতে >>७> शृहोस्य त्शाविस्पृशास्त्र त्राकावित्रात्नत्र कथा शास्त्रा यात्र ।

[পালরাজবংশ শব্দে বিশ্বত বিবরণ স্বর্থবা :]

তামাদৃগদাধর ইতি বিজ্ঞান্ত্রপূর্তী
রাজ্যতিগ্রহণারাজুব-মাননোহভুব।
পূর্যানি কেবলমহর্নিপ্নর্জনে ব:
শান্তিভিয়ার সমরং প্রমাংক্তুব।
তামানুবিত্নানি ভূমিবলর: শিব্যোপনিবারকৈবিজন্মীসন্তুহ্নাপতিনিতি আভাকরগ্রামনী:।
আপালাক্ষরশাসতঃ ন হি মহাঞান্তঃ অভ্তং মন্দ্রনাং চার্বিস্বার্থার প্রস্তুতং মন্দ্রনাং চার্বিস্বার্থার প্রস্তুতং মন্দ্রনাং চার্বিস্বার্থার প্রস্তুতং মন্দ্রনাং চার্বিস্বার্থার প্রস্তুত্র প্রস্তুত্র বার্বিস্বার্থার প্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্বিস্বার্থার প্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র করা বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বিশ্বার্থ প্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্য্য বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রপ্রস্তুত্র বার্ত্রস্তুত্র বার্ত্রস্ত্রস্তুত্র বার্ত্রস্তুত্র বার্ত্রস্তুত্র বার্ত্রস্তুত্র বার্ত্রস্

(হলোগণরিনিট্রকান)

ইনিই কনোল হইতে আদিয়া উত্তরয়ায়্বাদী হন ৷ স্থাপতী আজ্পপ্রের নিকট হইতে ভালবাটা অভৃতি ৫ থানি কুলছান লাভ করেন ৷

^{† &}quot;আৰতি সহতি বেৰামৰরে সোমণীখী
সমস্থান পরিভোগদশন্য (সহব্জঃ ।
আলভ্ড স হি বিপ্রাচ্ছোসনং ভালবাটাং
ভহিত্তভাতি প্রাস্ভার বেন রাচা ।
ভিজ্ঞানত্ববিধাং পিলাচপথা ভবাচ বাপুলী ।
হিজ্ঞানতবাহিক্সপান বিংশতসন্থং কুলছানত্ ॥
ব্যক্তে বিধা সভভিনর্তারকঃ
আভি বিধা সভভিনর্তারকঃ
আভ্যুক্তিভা বিবিধসংস্থি ধর্মনামা
নামাপুল্লভো বিবিধসংস্থি ধর্মনামা
নামাপুল্লভো বিবিধসংস্থি ধর্মনামা
ভাজ্যাবাহিক স্থারতবাং ভগানাং
ভজ্যাবাহিক স্থারতবাং ভগানাং
ভজ্যাবাহিক স্থারতবাং প্রবাভিবেরঃ
সেবাভিবিভা-ক্ষর প্রবাভিবেরঃ
স্বাভিবিভা-ক্ষর প্রবাভ্যাব্রঃ

নিমে পাশরাজগণের রাজ্যকাশনির্দেশের তালিকা উক্ত চটল—

হইল-	_			
রাশার নাম			রাজ্যকাল	
51	গোপাল	(মগধে) ৭৭৫—৭৮৫ খু	: जः
١ ۶	ধর্মপাল (মগধ ও গৌড়ে) 966-600	19
91	দেৰপাল	o	po-pet	19
8	প্রপাল ১ম	99	P96P96	a)
¢	বিগ্ৰহপাল ১ম	n	۰۰۵ ۱۹۳	,,,
₽ 1	নারায়ণপাল	39	۶۰۰ ۶۲۴	27
9 !	রাজ্যপাল	n	à₹€ > €•	,,
৮	গোপাল ২য়	n	à€•à9•	
> 1	বিগ্রহপাল ২য়		2424.	# 3
201	মহীপাল ১ম	27	>> > • ≪	3.0
221	নয়পাল	*	>-00>-(0	37
३ २ ।	বিগ্রহপাল ওয়	20	>-60>-0	10
201	मशीপांग २ व	10	20847094	ø
186	শূরপাল ২য়		3.42	X)
261	রামপাল (মৃগধ	ও উত্তর গোড়ে)	٥٠٢٢ ۲۵۰۲	"
201	কুমারপাল	*	>>-0->>>>	n
196	গোপাল ৩য়	*	>>>•>>>6	10
: 1	মদন প্ৰ'ল	25	>>>६—>>७०	27
551	মহেন্দ্রপাল	n	>>00>>80	39
ર•	গোবিৰূপাল	10	>>8>>6>	,,

शृद्ध निथिम्रोष्टि, शृष्टीम १म नजादक शृद्धतरक अकृतवः एनत व्यञ्जासम् इटेबाहिल, व्यामिण्टबत व्यञ्जास्ट । এই थङ्गीवः त्यं व শাসন বিৰুপ্ত হয়। আদিশুরের প্রলোক এক শূরবংশের প্রভাব-ক্রাদের সহিত এথানে পুনরার বৌদ্ধগণ প্রবল হইয়া উঠে। তাহাদের আফুকুল্যে বৌদ্ধ পালরাজ্বগণ অলায়ালে সমতট বা পূর্ব্যক্ষ অধিকার করিভে সমর্থ হইরাছিলেন। পালবংশীর কোন্ কোনু রাজা এই প্রদেশ শাসন করেন, তাঁহাদের ধারাবাহিক নাম পাওয়া যার না। গৌড়ের মূল পালবংশীয় রাজা-দিগেরই কোন শাখা পূর্ববঙ্গে হানে হানে শাসনকর্ত্ব লাভ করিবাছিলেন। এখানকার প্রবাদ অনুসারে প্রগণার মাধ্বপুরে বশপাল, ভাওয়ালের অন্তর্গত কাপাসিরার বিশুপাল এবং সাভারের নিক্টবর্ত্তী কাটীবাড়ীতে হরিশ্চক্র রাজৰ করিতেন। হরিশ্চন্দ্রের প্রভাব উন্তরে রক্ষপুর পর্যান্ত বিশ্বত इहेबाहिन। धाराम असूनादत धहे हिन्द्रस्त बर्टनहे विवत-विवानी द्योच नृशक्ति मानिकान । शादिकान अस शहन करतन । মাণিকটাৰ ও গোপীটাদের অপূর্বস্বার্থত্যাগ ও সন্ন্যানের

গাথা আজিও রকপুর ও পূর্কবকে বোগী জাভির মধ্যে গীও হইরা থাকে।

বিষয়বিয়ক্ত এই সকল বৌদ্ধ নৃপতি সম্ভবতঃ পালবংশীর ছিলেন, এই কারণেই বোধ হর গোবিন্দচক্র বা গোপীচক্র প্রাচীন বঙ্গনাছিত্যে "গোপীপাল" নামেও প্রথ্যাত হইরাছেন। ও এই গোবিন্দচক্রের সমরে বিক্রমপুরে বৌদ্ধ মহা-ভারিক ও পরব ক্রানী দীপদ্বর প্রীক্ষানের জন্ম হর। ১০১১ কি ১০১২ খুটাকে দিঘিল্বয়ী দান্দিগাত্য-পতি রাজেক্র চোল গোবিন্দচক্রকে পরালর করেন।

भूकीयाम पर्यावरण ।

জৈনপতি রাজেল চোলের আক্রমণে পূর্ববন্ধ হীনবন হটর।
পড়ে। এই সমরে বিক্রমপুরে বর্মবংশের অস্তাদয়! বর্মবংশীয়
কোন্ ভূপতি সর্ব্ধ প্রথম পূর্ববন্ধ অধিকার করেন, ভাহা এখনও
কানা যার নাই। এই বংশে হরিবর্দ্ধদেব নামে এক প্রবন্ধ
পরাক্রান্ধ বৈক্ষব নূপভির ইতিহাস পাওরা গিরাছে। শিলালিলি,
তামশাসন ও বৈদিক কুলগ্রহে এই নরপালের কীর্ষ্টি ও পরিচর্ম
বিবৃত রহিয়াছে। পাশ্চাত্য বৈদিক কুলগভ্ত রাখবেক্র কবিশেণর হরিবর্মদেবের এইরূপ পরিচর দিয়াছেন—

'বাঁহার প্রচণ্ড ভূজদণ্ডাশন্থত করাল করবালভয়ে দক্ষিণাপথ হইতে সমাগত বহুসংখ্যক শক্ররাজ্বগণ প্রকল্পিত হইত, জৈন ও বৌদ্ধ প্রভৃতি বিধর্মিগণের যিনি শান্তিক্রথ বিদুরিত করিয়াছিলেন. বাঁহার প্রভাবে সমস্ত রাজক্তবর্গের গর্মা ও গৌরব থকা হইরাছিল. যিনি নাগেলপত্তন প্রভৃতি নানাদেশ জয় করিয়া অত্যন্ত যশস্ত্রী হইমাছিলেন, যিনি একামকাননে হরিহর ব্রহ্মা সীতা রাম লক্ষ্য হনুমান্ প্রভৃতি অষ্টোত্তর শত দেববিগ্রহ এবং চারিদিকে অপুর্ব্ধ পতাকা পরিশোভিত, স্থরভিকুস্থমসমূহাদির সৌন্দর্য্যে নন্দন-কানন অপেকা মনোহর অত্যুত্তম আমোদমর উভানসমূহে পরি-বেষ্টিত অত্যুক্ত স্থান্য মন্দির সকল এবং মন্দাকিনীর স্থায় খচ্ছ-তোর কমলকহলার শোভিত বিস্তুত সরোবর সকল প্রতিষ্ঠিত করিয়াছিলেন, যিনি নানাশার ও অন্তবিভার বিলক্ষণ স্থানক, অসাধারণ বালভট্ট, গর্ন, ভট্টাচার্যাও বাচম্পতিপ্রমুখ বিখ-বিখ্যাত সাত জন সচিবের সাহাত্যে শীম এবং পরকীয় রাষ্ট্রের সর্ব্ধ কার্য্য স্থলপন্ন করিতেন, যিনি নিজ জননীর কাণীখর বিৰেখনের পদারবিন্দ দর্শনে বাইবার অভিপ্রায় অবগত হইরা. ভাঁচার বচ্চদ গমনের জন্ত একটা প্রশন্ত পথ প্রবাত করাইরা দিয়াছিলেন: অঙ্গ, বন্ধ, কলিল প্রভৃতি নানাদেশে গাঁহার অভত কর্মকাহিনী বিঘোষিত হইয়াছিল, বিনি আন্ধানিগকে ভূসম্পত্তি

 [&]quot;বোদীশাল গোদীশাল মহীশাল দীত।
 ইহা গুনিতে বে লোক ভানশিত।" (চৈততভাগ্ৰত অন্তাৰ্থ)

লান করিয়া অপেন পূণ্য সঞ্জ করিয়াছিলেন, সেই রাজাধিয়াজ নূপকুস্শিরোমণি রাজাধিরাজ হরিবর্তনেবের জর হউক।+

কবিশেশর প্রাচীন প্রমাণ বলে ভিন শত বর্ষ পূর্বের বে সকল কথা নিধিয়া পিয়াছিলেন, ভাহার একটাও অত্যক্তি নহে। **এकाञ्चकानम् वा कुब्रामक्रवंद्र क्रमञ्ज वाञ्चरगरवंद्र मन्दिद** छवरम्द-ভট্টের বে কুলপ্রশন্তি উৎকীর্ণ আছে, তাহা হইতেও আমর: লানিতে পারি, রাদী শ্রেণী সিম্বল গ্রামীণ অবিতীয় পণ্ডিত ভৰমেৰ ভট্ট বলাধিপ হরিবর্শদেবের একজন সচিব এবং ভব-দেবের কুল প্রশন্তি-রচরিতা বাচস্পতিমিশ্র তাঁহার অন্তরল বন্ধ **हिल्मा ।† जनस्र वाञ्चलदात्र जन्मत्र मन्मित्र खवरमदात्रहे की**र्खि । তিনি ও রাচ্ছেলে নানা পথ ও পাছনিবাস নিশাণ করাইয়া সাধারণের সমূহ উপকার করিয়া গিরাছেন। এক জন বালালী ব্রাহ্মণের কীর্ত্তি উৎকলে কিরূপে প্রতিষ্ঠিত হুইল ? এক সময়ে এই সন্দেহ হইয়াছিল। এখন ব্ৰিভে পারিভেছি বে, উৎকলে হরিবর্ত্মার অধিকার বিশ্বত হইরাছিল বলিয়াই তাঁহার প্রের মন্ত্রী ভবদেব এখানে দেবকীর্ত্তি রক্ষার সমর্থ হইরাছিলেন। ভবনে-খরের বর্ত্তমান বিন্দুছদের অপর পারে বহু মন্দির ধ্বংস অবস্থার পড়িরা রহিরাছে, ভাহার অধিকাংশ আমরা মহারাজ হরিবর্জ-দেৰের কীর্ত্তি বলিয়া মনে করি। তিনি বে উৎকল ও নাগেন্দ্র পত্তন বা নাগপুর জয় করিয়াছিলেন, তাহাতে আর সন্দেহ করিবার কারণ দেখি না। তৎপূর্কে বলে ও উত্তর রাঢ়ে বৌদ্ধ- প্রভাব এবং জৈন নরপতি বিষয়ী রাজেক্সচোলের সহিত অঙ্গ, বল, কলিলে জৈন প্ৰভাৰও বিভ্ৰত হইয়াছিল ;- মহাবীর হরি-বর্দ্ধবে সেই সকল বৌদ্ধ জৈন প্রভাব বর্জ করিতে সমর্থ व्हेराकित्वतः कवित्वधर वृत्रिवर्षामत्तर मध मित्रत मर्धा বে বালভট্ট ও বাচল্ণভিদ্ন কথা শিখিয়াছেন, অনন্তবাহ্ন-দেবের মন্দিরত্ব কুলপ্রশক্তি হুইতে ঐ গুই প্রধান সচিবের নাম বাহির হইয়াছে। বালডট্ট কুলপ্রশন্তিতে "বালবলভী ভুজন **ख्वरास्य छोड्डें नाट्य थाएं । शत्रुय टिक्केट महाब्रोक हित्रदर्गास्**य গৌড, বন্ধ ও রাচনেশে বিশুদ্ধ বৈদিকাচার প্রবর্তনের জয় বত্নবান হইয়াছিলেন। ফরিনপুর জেলাত সামস্ত্রসার হইতে আবিক্লত হরিবর্মদেবের তাত্রশাসন হইতে জ্বানা বার বে. তিনি বেদার্থবাচক ঋথেদী বংস গোত্রজ রুফধর ভটারককে (করিদ-পুর জেলার অন্তর্গত) বেজণিশার প্রভৃতি গ্রাম দান করিয়া-ছিলেন।
এইরূপে তিনি বৈদিক বিপ্রতিলক ভনক ঘশোধর মিল্রকে কোটালিপাড দান এবং অপরাপর বৈদিক ব্রাহ্মণকেও সম্মানিত করিয়া বৈদিকাচার-প্রচারে উৎসাহ দান করিয়া-ছিলেন। এই সমরে সর্ব্ধ শান্তদর্শী মন্ত্রিবর ভবদেব ভট্ট রাটীয় ত্রাহ্মণদিগের মধ্যে বিশুদ্ধ বৈদিকাচার প্রবর্তন করিবার অভি-প্রান্তে "সামবেদীর সংস্থারপদ্ধতি" রচনা করেন। অস্থাপি সেই পদ্ধতি অমুসারেই রাটীর ব্রাহ্মণগণের সংস্থারাদি সম্পন্ন চইরা থাকে।

ভবদেৰ ভট্ট বেমন এক জন জ্যাধারণ মীমাংসক ছিলেম,
তাঁহার বন্ধ বলাধিপের প্রধান মন্ত্রী বাচম্পতি মিশ্রও সেইরপ
এক জন সর্বাদর্শনবিদ্ অ্যাধারণ নৈরারিক ছিলেন। তাঁহার
বন্ধ দর্শন টাকা ও ভারস্কানিবন্ধ সংস্কৃত সাহিত্য-ভাগুরের জ্যপুর্ক
রন্ধ। তাঁহার ভারস্কানিবন্ধে লিখিত আহে বে, এই প্রস্কু শব্দ বংসরে অর্থাৎ ৮৯৮ শক্তে (৯৭৬ খুটাকে) রচিত হন্ধ।
ইহাই তাঁহার প্রথম রচনা বলিরা অনেকে জ্বহুমান করেন।
ইহার পর তিনি বিবিলার রাজ্যভার সন্ধানিত হন এবং ভবার
বন্ধ দর্শনের চীকা রচনা করেন। পালরাজগণের প্রভাবে
মিথিলার বোন্ধানার প্রথম করেন। পালরাজগণের প্রভাবে
মিথিলার বোন্ধানার প্রথম করেন। ক্রেমধর্ম্বাবলনী রাজ্মেন্দ্রনাল্যক সভার আগন্ধন করেন। ক্রেমধর্মবাবলনী রাজ্মেন্দ্রনাল্যক সভার আগন্ধন করেন। ক্রেমধর্মবাবলনী রাজ্মেন্দ্রনাল্যক সভার আগন্ধন করেন। ক্রিমধর্মবাবলনী রাজ্মেন্দ্রনাল্যক আক্রমণে রণশুর রাজ্যপ্রই ছইলে বাচম্পত্তি বিশ্রের
ভীর্ষবাস করিবার অন্ধ্র উৎকল বাজা করেন। ঐ সমরে হরিকর্মবেরের জন্মান্ধর। তিনি বাচম্পতি বিশ্রের জ্যাধারণ পাতিত্যদর্শনে উল্লেক্ট আগনার প্রধান মন্ত্রির প্রহান করেন।

রাঘবেজ কবিশেশর নিধিরাছেন বে, কাঞ্চকুজে ব্যনাগ্য

 [&]quot;ব্যন্তি সমন্ত নরপতিকুললগাম প্রোদ্ধণ্ড ভূত্বদ্ধসন্মণ্ডিত-বিকরালকরবালভর-প্রকম্পিতদক্ষিণাপথাগতাশেববিপুরাক্তর্যুক্তন-বৌদ্ধাদি-বিধৰ্ষি-শৰ্ক-সম্বৰ্জন-ধৰ্কীকৃত-সর্ক্ষোৰ্কীপতি-গর্কগোরবো नाशिक्ष शक्तां श्रामक रम्भविषय ग्राह्मा समय श्रीरव वा स्वास्त्र वा स्त्र वा स्वास्त्र वा स्त्र वा स्वास्त्र वा स्त्र वा स्वास्त्र वा स् ষ্ঠাপিত-হরিহর-বিরিক্ষিবৈদেহীরাখবলক্ষণ-মনুমদান্তষ্টোত্তরশতাম্ভত-বৈজ্ঞান্তীবিভাগিতামন্দর্গন্ধ প্রস্থপ্রপ্রদাসন্যাদিল্লন ত-নন্দর-কাননবৈভবপরমামোদমরোভানসমলক্ষতক্ষরপথসংস্পর্লি ভুন্দর-मिलद-मन्त्राविमी-विमशकीनानकमनकन्त्राद्यसीयद्रदशागद्रविस्तुन्त-সংশোভিতস্থবিশালসরোবরসংহতিঃ েবেশনিবাসনিবিলশান্ত্রান্তনি-পুণপরিস্থানলম্বানস্থবৈচক্ষণ্য-বালভট্ট-ভট্টাচার্য্যগর্বাচন্দভিপ্রমুখ-বিখ-বিখাতে সপ্তস্চিৰ সাহচৰ্যানিৰ্কভিত-সমাক অপর্রাইসর্ক-ব্যাপারে বারাণদীবরবিবেবরপ্রারবিক্সকর্নার্থসমূত্রকন্নী-স্বাদ্ধন্দেপরিচারকতে প্রাবর্ধিতপ্রাশন্তবন্দ্র সিম্মনত প্রতিনিরতসরীতি পরিলেবনস্ত্রাপ্তপরন্ধর্মা বস্তাস্থ দিলান্তনেবজনপ্রবহুসভার ড-কর্মা করার্মচেতা ভূষেবভূষানার্ক্সিডালেবগর্মা কর্মাজিরং রাজাধি-त्राच्या त्वय झीट्तिक्की।" (द्वापत्यक्क कविरमधत)

[†] বংলার লাজীয় ইভিযান (বাজাকাঞ্) ২ বাজো করবেকটোর কুল-বাণান্তি অইবাঃ

বলের বাতীয় ইতিহান (বালান্যাভ) গ্রাংশে হরিবর্তনের ভাষলাকা দেব।

ও রাজ্যনাশ দেখিরা গলাগতি প্রভৃতি বছ বৈছিক ব্রাহ্মণ অবাভূমি পরিভ্যাগ ক্ষিতে যাধ্য হইরাছিলেন।

এই সমগ্রে
পৌতমগোত্তীর গলাগতি প্রভৃতি কএকজন বৈদিক ব্রাহ্মণ বজে
ছরিবর্দ্মরাজ্বের রাজধানীতে আগমন করেন।

তাহারা
কোটালিপাড়ে বাস করিতে থাকেন।

মুক্তমান ইভিহাস হইতে আমরা আনিতে পারি বে, দেব-বেবী স্থলতান মান্দুদ ১০১৯ বুটান্দে বা ৯৪৩ শকে কনোন্দ্ৰয়ে শপ্রণর হইরাহিলেন। তাঁহার আক্রমণে কনোজরাকা শ্রীহীন হটরা পড়িরাছিল। ঐ সময়ে বৈদিকবিপ্রগণের মধ্যে কেহ কেই নিরাপদ হইবার আশাদ্র দেববিপ্রভক্ত বলাধিপ হরি-বর্দ্মদেবের অধিকারে বাসস্থাপন করিয়াছিলেন। তাঁহাদের পদার্শনে বন্ধদেশে বৈদিকাচার প্রতিপালনের যথেষ্ট স্থবিধা হইরাছিল। সম্ভবতঃ ১০১৯ খুটান্দেরও পূর্বে হরিবর্দ্দেবের अक्रामञ्ज वर्षे । ১০১১ कि ১२ थुडोरम शाविमाठक त्रारकक-চোলের নিকট পরাঞ্জিত হটলে এবং বিজেতা বদরাজ্য পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া গেলে হরিবর্দের পিতা জ্যোতির্বর্মদের বঙ্গ অধি-কার করেন। তিনি বেশী দিন রাজ্যভোগ করিয়াছিলেন বলিয়া মনে হয় না ৷ তৎপুতা হরিবর্মদেৰ রাচ়, বল ও কলিল জয় য়িরা প্রার ১•১৫ খুটালে এক জন মহারাজাণিবাজ বলিয়া খ্যাত হইয়াছিলেন। ই হার ৪২ রাজ্যান্থিত তামশাসন পাওয়া পিরাছে। এতদ্বারা মনে হর যে, প্রায় ১০৫৩ খৃটার পর্যাস্ত তিনি রাজ্য করেন।

দেনরাজবংশ।

মহারাজ হরিবর্গদেবের প্রভাব গঙ্গার উত্তরতীরে বিহুত হয়
নাই। উত্তররাচ় ও গঙ্গার পরপারস্থ বরেক্স হইতে গয়া পর্যান্ত
ডথনও বৌদ্ধাধিকার চলিতেছিল। রাজেক্সচোলের রাচ্দেশ আক্রমশকালে দক্ষিণাপথের বহু সামস্ত নূপতি তাঁহার বলবৃদ্ধি করিয়াছিলেন। রাজেক্সচোলের প্রত্যাবর্তনকালে সকল সামস্তই যে
ভাহার অমুগামী হইয়াছিলেন, এমন বোধ হয় না। তল্মধ্যে
সামক্তদেনের নাম শিলালিশি ও তাম্রশাসন হইতে বাহির হইমাক্তে। মহারাজ হরিবর্ত্তাবের অভ্যুদরকালে দাক্ষিণাত্যরাজবংশীর
সামক্তদেন সভবতঃ তাঁহারই অধীন সামক্তরণে ভাগীরথীতীরে

"রাজ্যপ্রদাশং ব্যবস্থানক ভাষাবলং কপ্সভাং বিভাব্য।

এতজি পুতং ধনধর্মনক্রাগাদিরকার্যনিক্ত প্রয়াণ্য :"

(রাক্ষেক্ত ক্ষিপ্রেণ ক্রিপেণর)

বলের বাজীর ইভিহান (বাল্লাকার) পর বলে করে। পুঠা।

ভীৰ্বাদ ক্ষিতে বাকেন। ভাষায়ই পুত্ৰ হেম্ছদেন। क्रेचन বৈদিকের প্রাচীন বৈদিককুলগনীর মতে, ছেমস্ব ওরকে বিদিক্রম व्यथरम चर्गद्रक्षा नहीं छोटत कानी शृती । नामक चारन द्वांक्य कवि-তেন ৷ বাটীৰ কুলপন্ধী মতে, সামস্ত বা হেমস্তবেন ৰক্ষিণুৱাটের পুরবংশীর নুপতির কঞার পাণিগ্রহণ করেন। পুররাজ নিজ বংশ ধ্বংস করিরা অর্গ গমন করিলে রাজ্যে অরাজকতা ঘটে, এই সময় হেমন্তসেন শুররাজ্য অধিকার স্করিয়া শ্রীধরণ নাম এহণপূর্ব্বৰ ৩৪ বর্ব রাজত্ব করেন। কিন্তু আমাদের বিধাস, এই অরাজকতা পুরবংশের রাজ্যহানির কম্ম ঘটে লাই, কারণ রণ-শ্রের পরও বে এই রাজবংশ এক কালে বিনুপ্ত হয় নাই, সে क्था शृद्धि निथित्राष्ट्रि । अधिक मञ्जव, महात्राक हतिवर्षातायत মৃত্যুতে সমন্ত রাচ্বকে অরাজকতা ঘটে, এই স্থযোগে হেমস্কলেন রাচুদেশ অধিকার করিয়া বসেন। ক্ষিত্র সমতট বা পূর্ববিলের উত্তরাংশ পাল রাজাদিগের অধিকারে এবং দক্ষিণাংশ রাজা হরিবর্শের প্রত্রের অণিকারে থাকে। হেমস্কলেনের অসাধারণ বীরছ, অপূর্ক সাহস ও তত্ত্বারা নৃপালবর্গের পরাজয়কাহিনী মহাক্ষি উমাপতিধরের উজ্জল ভাষার চিত্রিত হইয়াছে:

তাঁহার অভাগরের পূর্ব পর্যন্ত উত্তররাচে বৌদ্ধ পালনমণতিগণের রাজধানী ছিল। কিন্ত তাঁহার আক্রমণ সন্থ করিতে না
পারিরা মহীপালপুত্র নরপাল প্রার ৯৬৫ শকে (১০৪৩ খুটাকে)
বিক্রমশিলায়্র রাজধানী স্থানান্তরিত করিয়াছিলেন। পূর্বেই
লিখিয়াছি, রালীয়কুলপুত্রী মতে হেমস্তুলেন ৩৪ বর্ষ রাজত্ব
করেন। এ দিকে বিক্রমপ্রের বৈদিককুলপুত্রী মতে, হেমস্তুল্রের পেত্র ভামলবর্দ্ধা বিক্রমপুর
অধিকার করিয়া ৯৯৪ শকে (১০৭২ খুটাকে) রাজ্যে অভিবিক্ত
হন। এরপ ভ্লে ৯৯৪ শকের পূর্বে হেমস্তুলেনের অভিবেক
হন। এরপ ভ্লে ৯৯৪ শকের পূর্বে হেমস্তুলেনের অভিবেক
হইয়াছিল, বলিতে হল।

বিজন্মনেন প্রায় ৯৯০ শকে পিড়রাজ্য লাভ করেন। বেও-পাড়া হইতে আবিষ্কৃত বিজন্মনেনের লিলালিপিতে লিথিত আছে বে, তিনি মিথিলা হইতে কামরূপ এবং দক্ষিণে কলিছ পর্যাত্ত আপনার অধিকারস্কৃত করিবাছিলেন। "বল্লালোদন" নামক

- वर्षभाग नाम कानीबाड़ी।
- 🕂 বজের লাতীর ইতিহাস (আন্ধণকাঞ্চ) পর আশে ১৪ পৃটা এইখ্য ।
- 🚶 অলের জাতীয় ইতিহাস (ঝাজণকাও) কর সংশ ১৯ পৃঠা ও 🕫 অংশ
- ২৯ পূঠা এইবা।
 - \$ বেহারছ বর্জনান শিলাও নামক প্রান।
- প প্ৰেণ্ডহ্বছমিতে স বস্থুৰ বাজা গোঁড়ে কাং নিজৰণে: গাঁচিকুছ পাঁজুৰ্ ।
 প্ৰাথ্যাসভিষ্যান্ বিজিতাজনালা নাকে পুনা কাজিবনী বিজাল পুনা ।"
 (বলের লাভীয় ইতিহাস, বাজনভাভ, পা পাশে ১৮ পুটা এইবা)

^{† &}quot;শুভাহতাথজ্ঞও কিল ভাষণানীসনন্তরং ঐব্যানিপর্যাজ্ঞঃ।
বাচস্মতিকাল সভাপতিবংঘানৈর দাজো ভববং বিবেশ ও
ভবাশিব। ভূপতিং বছঁবিছা তার ছিতৈবাড়বৈর্থ শিভোহসৌ।
বিবেশ বাচস্যতিনা সনেতা পানস্থার ক্ষেত্রবাছালার ৪"

একখানি প্রাচীন হন্তলিখিত সংস্কৃতগ্রন্থে আছে, মহারাজ বিজয়সেন অফ, বল, কলিজের অধীখর হইরা কুরলেটির আরো-জন করেন, এই সমরেও কান্তকুক হইতে বজে ব্রতী হইবার জন্ত পঞ্চ বৈদিক বিপ্রের শুভাগমন হইরাছিল। বিল বাচম্পতির "বল্ল কুল্লীসারসংগ্রহে"ও লিখিত আছে—

> "নরশ চৌরানই শক পরিমাণে। আইলেন ছিব্রুগণ রাক্ত সরিধানে॥ পঞ্চ কারত্ব সঙ্গে আরোহণ গোবানে। সুমান করিরা ভূপ রাখিলা সর্ব্ধকনে॥"

উক্ত কুলগ্রাছের প্রমাণে ৯৯৪ শকে কনোজ হইতে বৈদিক বিপ্রাগমন এবং সেই সলে দক্ষিণরাটার ও বলজ কারত্ব-প্রধান-দিগের বীজপুরুষগণের গৌড়াগমন সির হইতেছে। পঞ্চ বৈদিক বিপ্র বিনা কারণে গৌড়-রাজসভার আসেন নাই। বলালোদরের কথা মানিলে বলিতে হর, কুরলেটি সম্পন্ন করিবার জন্ম বৈদিক বিপ্রগণ আহত হইয়াছিলেন। এরপ হলে ৯৯৪ শকে বিজয়-সেনের রাজ্যে অভিবেক ও কুরলেটি বজ্ঞ এবং ঐ সমরে বিজয় কর্ত্তক তৎপুত্র শ্রামলবর্ণার যৌবরাজ্যে অভিবেকক্রিয়া স্থসম্পন্ন কইরা থাকিবে।

ধারেক্স কারত্গণের "ঢাকুর" নামক কুলগ্রন্থেও লিখিত আছে—

"पीशांत वःरभत (मारक वलाम गर्गामा ।

অর্থাৎ ৯৯৪ শকে যে সকল কায়ত্ব আগমন করেন, সে সময়ে তাঁহাদের মধ্যে ব্লালম্য্যাদা ছিল না।

নানা কুলগ্রছে ১৯৪ শক দৃষ্টে মনে হয় যে, ঐ অন্ধ বদীয় ইতিহাসে বিশেষ সার্থীর। ঐ বর্বে বিজয়সেনের অধিরাজ-পদে অভিষেক, কুরলেটি যজ্ঞোপলকে বৈদিক বিপ্রা ও পঞ্চ কারত্বের স্থাগমন এবং বিজমপুরের শুমেনবর্দার যৌবরাজ্যে অভিষেক প্রভৃতি সার্থীর ঘটনা ঘটরাছিল।

বিষয়সেন বারেজের দক্ষিণাংশ ষর করিলেও উত্তরাংশ তথনও বৌদ্ধ-পালয়ালাদিগের অধিকারে ছিল। দীর্ঘকাল বৌদ্ধবিদারে থাকার বারেজের সকল লোকই প্রায় বৌদ্ধবিদার থাকার বারেজের সকল লোকই প্রায় বৌদ্ধবিদার হারীন কুলগ্রছে "রাচী-বারেজনোব-কারিকা" হইডে জানা বার বে, বারেজ ব্রাজাদিগের মধ্যেও জনেকে তান্ত্রিক বৌদ্ধানারী হইয়া উপবীতবর্জিত হইয়াহিলেন,—জবশেবে বৈদিক ধর্মান্তরক্ত মহারাক্ষ বিকরসেনের জত্যুকরে উহারা বৈদিক বান্ধপগরের সাহারাক্ষ বিকরসেনের জত্যুকরে উহারা বৈদিক বান্ধপগরের সাহারাক্ষ বিকরসেন ও তৎপুত্র

বল্লালদেনর সমরে দক্ষিণ বারেক্সের বিপ্রগণ পুনরার বৈদিকাচার গ্রহণ করিলেও উত্তর-বারেক্সে বহুকাল বৌদ্ধাচার প্রচলিত ছিল। এই কারণেই বোধ হর, দক্ষিণ-বারেক্সের বিপ্রগণ উত্তর-বারেক্সের সহিত সম্মতাগ করেন। বারেক্সাদেগের মধ্যে বৈদিকাচার ও বেদচর্চ্চা অনেকটা লোপ হইয়াছিল, তাহা হলার্ধের আহ্মণ-সর্ক্স্মর পাঠ করিলেও জানা ঘার। বারেক্স আহ্মণদিগের মধ্যে যজুর্কেদীর সংখ্যাই আ্রধক। তাঁহাদিগকে বৈদিকাচার উপদেশ দিবার অভিপ্রারেই স্থপ্রসিদ্ধ বৈদিক ধর্মাধিকারী হলার্ধ "আহ্মণসর্ক্স্ম" রচনা করেন।

রাজা বিজয়সেনের শাসনকালে মুর্শিনাবাদ জেলার উদ্ভরে প্রবাহিত গলা হইতে দক্ষিণে উৎকলের সীমা পর্যান্ত সর্ব্ধত্র আন্ধণ্য ধর্মপ্রচারের বিপুল আরোজন চলিরাছিল। তিনি দেববান্ধণ-ভক্ত ও বৈদিকাচার প্রবর্ত্তনে বিশেষ উংসাহদাতা ছিলেন বলিরা, কুলগ্রন্থকারগণ তাঁহাকে ২র আদিশ্র নামে পরিচিত করিয়া গৌরবাহিত করিয়াছেন। বলিতে কি, মহারাজ বিজয়সেন ও তৎপুত্র শ্রামলের প্রভাবে গৌড়মগুলের উচ্চ জাতীর জনসাধারণের হৃদয়ে আবার দেবহিল-ভক্তি উদ্রিক্ত হইতেছিল।

১০০১ শকে (১০৭৯ খুষ্টানে) অর্থাৎ মহারাজ বিজয়সেনের কুরঙ্গেষ্টি যজের সত্ত বর্ষ পরে শ্রামণবর্দ্ধা বিক্রমপুরে শাকুনসক উপলক্ষে পুনরায় কর্ণাবতী হইতে শুনক, শৌনক, শান্তিস্যা, বশিষ্ঠ, সাবর্ণ প্রভৃতি গোত্রের বৈদিক বিপ্রগণকে আনাইয়া সম্মানিত করিয়াছিলেন। তাহাদের বংশধরগণ নানা শাসনগ্রাম লাভ করিয়া বন্ধবাসী হইয়াছিলেন। এখনও তাঁহাদের বংশধরগণ পাশতাতা বৈদিকসমাজে প্রধান বিলিয়া সম্মানিত।

মহারাজ বিজয়সেন ও স্থামলবর্দ্ধা তথনকার শেষ্ঠ ব্রাহ্মণ সমাজের হৃদয় অধিকার করিয়া বসিয়াছিলেন । সকলেই বিজয়কে হিল্পগর্দ্ধের রক্ষক বলিয়া মনে করিতেন । উাছারই প্রভাবে তৎপুত্র ব্লালসেন ব্রাহ্মণসমাজের ব্যবস্থাপক হইতে সমর্থ হইয়াছিলেন।

মহারাজ বিজয়ের তিন পুত্র—ময়, শ্রামস ও বল্লাল। ময়
ক্রবর্ণরেখা-তীরবর্তী কাশিপুরী নামক সামস্তরাজ্যে অধিষ্ঠিত
ছিলেন। খ্রামল পিতার সহিত দিখিজয়ে নিযুক্ত হন। বিজয়ের
গোড় বলের অধিরাজ্যে অভিবেককালে খ্রামলও বিক্রমপুরে
অধিষ্ঠিত হইয়াছিলেন এবং বিক্রমপুরের তৎপৃক্ষবরী বর্ণরাজগণের গ্রাম তিনিও বর্ণোগাধিশ গ্রহণ করিয়াছিলেন।

বৰের বাডীয় ইভিহাস (বাঙ্গবাত) ৩৫ অংশ ৩০ পৃথার বিষ্ঠ বিবরণ এইবা।

 [&]quot;কৃণজবেশগালনাসমৰ্গানাং বাতেজক বিভাগীলাং কাৰুশাৰিবালনানিকাং ক্ৰিকুটানাৰ্থ---গাৰ্থ হাকলে।পৰ্কান্তব্যাবা) এটোভব্যা।"—

⁽ क्यांक्श्वर आधानमधीय)

[†] বলের লাতীর ইতিহাস (নাম্পকাত) জ্যাল ২১-৪৪ পুঠার দিলম-পুদ্র ভাষদের "বর্গা" উপাধি ধাংগের কারণ ও ইতিহাস ত্রষ্টবা।

विवादित मीर्वतामध्यान मत्यारे मध्यकः मह ७ छामन हेर-লোক পরিত্যাগ করেন। এই কারণ বিজ্ঞরদেনের মৃত্যুর পরে ভাঁহার অপর পুত্র বলাল ১০৪১ শকে (১১১৯ বৃষ্টাব্দে) পিতৃ-त्रिःशत्रास्य अञ्चिषिकः इटेरनन । विकास्यन श्लीकार्तिश शानताकरक পরাব্দর করিয়া বরেক্ত ভূমে বিজয়চিক্ত অরূপ প্রান্তারেখরশিবালয় প্রতিষ্ঠিত করিলেও তাঁহার নিজ রাজধানীতে প্রত্যাবর্তনের সহিত ভাগীরথীর উত্তরতীরবত্তী অধিকাংশ জ্বনপদ আবার পালবংশের भौजनाधीम हरेग्राहिल। वहानरमन त्रास्त्रभाव जानीन हरेग्राहे গৌড় হইতে পালবংশকে বিতাড়িত করিয়া মিথিলা পর্যাস্ত জয় ক্মিরাছিলেন, মিধিলা বিজয়কালেই তাঁহার প্রির পুত্র লক্ষণ-সেন ভূমিষ্ঠ হন, সেই ঘটনা চিরম্মরণীয় করিবার অক্সই তিনি লক্ষণ-সংবং (ল সং) প্রচলিত করিয়াছিলেন ৷ গৌড হইতে মিথিলা পর্যান্ত এক সময় সর্বাত্ত এই অব্দ গ্রচলিত ছিল, বল্লাল-সেনের পিতা ও পিতামহ সকলেই বেদনিষ্ঠ শৈব ছিলেন। বল্লালও প্রথমে পৈতৃকথর্মে একান্ত নিষ্ঠাবান ভিলেন, কিন্তু সমস্ত গৌডরাজ্য অধিকার ও গৌড় নগরে রাজপাট স্থাপনের সহিত বল্লাল দেখিলেন যে, জাঁহার অধিকাংশ প্রজাই বৌদ্ধ জান্ধিকধর্মান্দরক । বরু চেষ্টাতেও তাঁহার পিতা পিতামহ বৌদ্ধতন্ত্রের প্রভাব এক কালে থকা করিতে সমর্থ হন নাই। পালরাজগণের প্রদক্ষে পুর্বেই লিথিয়াছি, রাঢ়ের পূর্বেতন প্রভাবশালী সারম্বত (সপ্রস্তী) ব্রাহ্মণাদিগকে হস্তগত করিবার জস্ত ধর্মপাল প্রমুখ পালরাজগণ অনেক রাচীয় সারস্বত বিপ্রকে আনিয়া বরেজ-ভ্রমিতে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছিলেন। তাঁহাদের মধ্যে অনেকে পাল-রাজগণের অন্তক্তরণে ও দীপত্তর শ্রীক্রানপ্রমুথ বৌদ্ধ তান্ত্রিকগণের ধর্ম্মোপদেশগুণে বৌষতত্ত্বে অমুরক্ত হইরাছিলেন। বল্লাল এই-হ্মপ বারেক্স সারস্বত বিপ্রবংশসম্ভূত অনিক্ষম ভট্ট নামক এক ষ্যক্তির শিব্যত্ব গ্রহণ করেন, সেই সঙ্গে তাঁহার মতিগতিও কিরিল। তিনি প্রথমে তান্ত্রিক মতেই অন্তরক্ত হইয়া পড়িলেন। ভিনি ভৱোক বিধি অনুসারে অতি নীচলাতীয়া রমণী ও বেখাদি লইরা ভৈরবী চক্রের অমুষ্ঠান করিতে লাগিলেন; তজ্জন্ত ভাঁহার পিতা ও পিতামহের সময়কার নিঠাবানু ব্রাহ্মণ সম্ভানগণ बह्मारमञ्जू काहत्राम काउन्य क्रम स्टेरमन, अष्ट्र दोक्छान বল্লালের হানর ক্ষবিকার করিয়াছে ভাবিয়া বৈদিক আক্ষণনাত্রেই বল্লানের নিন্দা করিতে কাগিলেন। এই উপলক্ষেই তাঁহার চর্মকার ৰা ডোম-কন্তার পাণিগ্রহণপ্রবাদ রচিত হইল। এমন কি, বৈদিক বিপ্রগণের বড়বন্ধে লক্ষণদেন পিতার বিক্লছাচরণ করিতে প্রস্তুত হইরাছিলেন। এই সমর রাজনীতিকৌশল বলাল এক-हिट्रेक निक बाबना बका ब क्राविहरू श्रावाहित्रक मुख् রাখিবার অভিপ্রান্তে প্রিরপুত্র লক্ষণের চরিত্র দোষারোপ করিয়া

কিছুদিনের অন্ত তাঁহাকে রাজ্য হইতে নির্বাদিও করিলেন। ইহার পর তিনি হিন্দু জনসাধারণকে নিজ মতাত্ববর্তী করিবার অভি প্রারে প্রাচীন হিন্দুতরোক্ত ধর্ম আত্রর করিলেন, তথ্যত এ দেশে হিন্দুতন্ত গুলি বৈদিকের নিকট বেদবিকল্প বলিয়াই গুলা ছিল. সেই সমরের হিন্দু ও বৌদ্ধভান্তিকগণের মত কতকটা মহানির্দ্ধাণ-তত্ত্বে বৰ্ণিত হইয়াছে। মহানিৰ্কাণ-তছকার ঘোষণা করিয়া গিয়া-एकन, "এখন বৈদিক মন্ত্ৰ সকল বিষ্ঠীন সংশাह **सीर्याही**न। কণিযুগে একমাত্র তড়োক্ত কার্য্যমাত্রই শীঘ্র ফলপ্রদ"। মহারাজ বল্লালনেন তথ্যান্তৰত্তী হইরা প্রথমতঃ ঐরূপ বেদ্বিরুদ্ধ মৃতই প্রচার क्तित्राष्ट्रिकत, छाराटछ देवनिक विध्ययमान, वद्यानारमानत कान কোন আখ্রীয় এবং উত্তররাচীর ও অভিনৰ বারেক্স কারণ্ড-नमाम बन्नानात्मात्म विद्याधी हरेबाहित्सम । वं मित्य जाविक ধর্ম্মের পক্ষপাতী কনৌজিয়া বিপ্রসন্তান রাটীয়-বারেজ্ঞগণ জনেকে তাঁহাদের অধিপতির পক্ষপাতী হইরাছিলেন। সেনবংশের সম্প্র র্কিত বঙ্গজ কারত্ব-সমাজও বল্লালসেনের পক্ষ সমর্থন করেন। যে বে সমাজ গৌড়াবিপের তাত্ত্বিক ধর্ম অন্তমোদন করিয়াছিলেন, वज्ञानरमन कैशि, नगरक महेना नुकन मधान गर्छन कतिरमन । তাহা হইতেই বল্লাগদেনের অভিনৰ কৌণীক্ত-মর্য্যাদার স্ষষ্ট । প্রথমে বাহারা তাপ্তিক ধর্মাত্মরক, বিধান, বুদ্ধিমান, কুলাচারী ও তাণ্ডিক ক্রিয়ায় স্থদক ছিলেন, তাঁথাদিগকেই গ্রোডাধিপ সর্ব্ব প্রথমে সন্মানিত করেন এবং তাঁহারাই প্রথমে কুলীন বলিয়া বলালসভায় পুজিত হইয়াছিলেন।

যাহা হউক, অলকাল মধ্যে গৌড়বলে সর্বত্তই রাজা বল্লাল-সেনের উৎসাহে হিন্দুভাগ্রিক মত প্রবর্ত্তি হইল, বৌদ্ধভাগ্রিক-গণ সহজেই এখন হিন্দুডাব্রিকগণের সহিত সমিলিত হইতে লাগিল। রাজা বৌরুছেয়ী, তাঁহার প্রধান অসাত্য বৌদ্ধদিগকে অতি ঘুণার চক্ষে দেখেন: সুতরাং রাজভরেই হউক, অথবা রাজার অসুগ্রহলাভাশার হউক, প্রাঞ্জা সাধারণ বৌদ্ধ মত পরি-ত্যাগ করিরা হিন্দুতান্তিকের আশ্রম লইতে লাগিল। যাহারা হিন্দু তন্ত্ৰোক্ত ধৰ্ম না মানিয়া বৌত্তধৰ্মে আত্ম দেথাইতে লাগিল, তাহারা রাজাদেশে অতিহীন বর্ণ বলিয়া গণ্য হইল। পুর্বেই বনিয়াছি,বলালও তাঁহার পিডা পিডামহগণের ছার প্রথমে বৈৰ ছিলেন, ভাতা ভাঁহার "নি:শঙ্কৰরগৌডেৰর" উপাধির মধ্যেই দেখা বার। কিন্তু শক্তিমত্তে দীক্ষার পর তিনি যোর শাক্ত হটরা পড়িয়াছিলেন। সমস্ত বন্ধবাসীকে শঞ্জিমছে बीकिए क्रियात बरा जिनि कूनीन खक नियुक्त क्रात्रम, धावर ভাঁচাদের সমানবর্ধনের অন্ত তাম্রশাসন ছারা ভাঁচাদিগতে বল-প্রামণ্ড দান করিয়াছিলেন। **আগ্রমান্ড প্রমাণ্ডারাও তি**নি

चलाव काफांव देखिदान (अध्ययकाथ) क्षे चला कर द्वरक कर गृष्ठा ।

কুলীন জন্দ্র প্রেটিতা প্রচার করেন। ক্রেন বরাল পুনিত কুলীনগণই পৌড়-বলের বিভ্ত পাক্তসনালের মরগুল হইরা পড়িলেন। বরালসেন উহাদের স্থাতত্তা ও পদমর্ব্যালা অস্থ রাখিবার লক্ত ভাঁহাদের স্থা স্থাক্তরা ও উহাদের মধ্যে পরিবর্ত স্থালা প্রচলন করিলেন।

কিছ বরোর্ডি ও শান্তালোচনার সলে গৌড়াবিশেরও বৈদিক বর্ণের উপর আহা বাঁতে হর, তারা তাঁহার মৃত্যুর কিছু পূর্বে রচিত "নানসাগর" পাঠ করিনে কডকটা আভাস পাওরা বার। মৃত্যুর পূর্বে ডিনি প্রির পূত্র লক্ষণকে আহ্বান করিছা তৎ-প্রবাধিত মূলবিবিশালন এবং সমরোপবাদী বৈদিক্ষিপ্রিত ভাত্তিক্ষার্গ প্রচারের উপদেশ দিরা বান।

১১৭০ খৃঠাকে রাজা লক্ষণসেল পিন্তৃসিংহাসনে অধিরোহণ করেন। লক্ষণসেনের পূর্ক হইতেই ভাত্তিক বর্গে সেরূপ অন্তরাস হিল না, ভাঁহার পিভারছাছির বভ তিনিও বৈদিক কর্দ্ধার্ছানে ভংগর একং হৈছিক বিত্রে অন্তরক্ষ ছিলেন। ভাঁহার প্রধান মন্ত্রী পশুপতি এবং ভাঁহার প্রধান ধর্মাধিকারী (Chief-justice) হলান্ত্র্য বৈদিক প্রাক্ষণ। ভাঁহার বে কর্মধানি ভাত্রশাসন পাওরা গিরাছে, ভাহা প্রভিনাত্রবিং বৈদিকবিপ্রান্থর উল্লেক্তেই নিবছ, রাচীর বা বারেক্সবিপ্রস্থাপের উল্লেক্তে

সিংবাসনারোহণের কিছকাল পরে লক্ষ্পদেন পিতার আদেশ প্রতিপালন করিবার জন্তই পিতৃপঞ্জিত কুলীন-দিগতে সভার আহ্বাদ করিয়া তাঁহাদের সমীকরণ করিলেন এবং হলার্থ ও প্রপতির সাহাব্যে অতি প্রজন্মভাবে সমাজসংখ্যারে অপ্ৰসৰ হইলেন। নে সমৰে সময় গৌভৰত ভাৱিকভাৱ আছের। সাধারণে তম ব্যতীত অপদ কোন শাস্ত্র প্রমাণ্য বলিয়া মনে। করিতেন সা। স্থাতরাং লক্ষণদেনকেও ভরের আল্রা লইতে ছইল। ভীতার প্রধান ধর্মাধিকারী পরম প্তিত হলাহধ ক্রতি, স্বতি, পুরাণ ও ভত্তের লারদংগ্রহপূর্বাক সেই সমধ্যে উপৰোধী 'বংকছক' নামে এক নহাত্য প্ৰচাৱ क्तिरम्भ । हिन्दू नवारकत नवारात्र क्रमा रह, व्यवस्थानाहर छाडिकान वितारी मा रह. तम और मरमिक्यातार मरकरूक जब विक्क करेबारक । कार्याकर मद क्यक्कारक वीताहाजीविदशंत অভিনত ভারাকর, একবটা, উপ্রভারা এক বিশুরা দেবীর शृक्षाक्रम ७ मत्त्राकान, जरशत त्रीकज्ञाहरमानिक नराठीनक्रम, ভারার বীরসাধন ও নীলসাল্লবডক্রন এবং করে। নথ্যে কেরের श्रान्त्रा कविता राम विकासनामारहरे कानाव वर्ष क्या वरेतारह । প্রথমাণে পার করিলে বংকতক কো বীরাচারীর প্রার বর शनिशा मरम स्टेरन। क्षि रीशाहात्र ममर्थन क्या करकरक- তব্ৰদার হলাবুবের উদ্দেশ্ত নহে। প্রতি, পৃতি ও পুরাবে त्व महाठाद्वत्र विधान चाहि, शत्रवर्डी श्रेष्ठ स्टेस्ड औह-সমাথি পর্যান্ত ভাহারই ভিনি সমর্থন করিব। গিয়াছেন। বর্জমান বলীর হিন্দুসমাজ বাহা সদাচার বলিয়া অভাবধি পালন করিতে-ছেন, বর্তমান শান্তা, শৈব ও বৈশ্ববগণের প্রধানতঃ অমুর্চের আহিক ও মাস্কৃত্য, বারব্রত এক দেবদেবীর পুর্বামন্ত্রাদিতে মংক্রপ্রক্রের অধিকাংশস্থল ভূষিত হইরাছে। মংক্রপ্রক্রের ৩১পটল हरेएछ १२ भीन भगांख ज्ञारनाठमा कविरम महरक्षे गत हरेरव বে, মরাদির প্রাচীন স্থতিতে শৌচাশৌচ, ভক্ষ্যাভক্ষ্য, চাতুর্বর্ণ্যের ব্দবস্থ কর্ত্তব্য ও প্রারশ্চিত্তাদি বাহা নিরূপিত হইরাছে, হলারুধ ভাহারই বেন সারসংগ্রহ করিরা সংস্তম্ভে বিধিবন্ধ করিরাছেন। তিনি প্রথমে তারা প্রভৃতি তাত্রিক দেবদেবীর পূজা ও মাহাম্ম-প্রচার করিয়া বীরাচারীবিগকে হাতে আনিরাছেন, ভংপরে মন্ত্ৰ মাংসাধিৰ ব্ৰপ্তেই নিন্দা করিছা ভাচার অসাবিক্তাও প্রারশ্চিত্তার্হতা প্রতিপাদন করিরাছেন। বৌদ্ধানির মধেষ্ট নিন্দা করিতেও মংক্রন্থক কার পশ্চাংপদ হন নাই।

মহারাজ লক্ষণসেন একদিকে যেমন মংক্রন্থেকতার প্রচার করাইরা সাধারণ তাত্তিকগণের কলাচারবর্জনের উপাত্ত করিলেন, অপরদিক্ষেপ্রাবার বারেক্র প্রাজ্ঞণগণের জন্ত প্রধান মন্ত্রী পশুপতি বারা "সংকারপদ্ধতি" এবং রাট্টার ও বারেক্র বিপ্রস্নাজ্যের প্রাজ্ঞণকর্মকর্ম প্রচার করাইনেন। এই সময়েই হলান্থ্যের অপর প্রাতা পশ্তিতবর ঈশান গোড়বলীর প্রাজ্ঞণ-সমাজ্যের জন্ত "আহ্নিকপদ্ধতি" প্রচার করেন। মহারাজ লক্ষণসেন বিরূপে বছের হিন্দু সমাজকে উন্নত করিবার জন্ত বন্ধবান ইইলাছিলেন, তারা উক্ত চারিখানি প্রন্থ পাঠ করিলে অনারাসেই ক্রবলম হহবে। বিশেবতঃ মংক্রন্থক আক্রোচনা করিলে মনে হইবে বে, লক্ষণসেন বে প্রশালী অব্যব্দন করিবালি, প্রান্ধ বেই প্রশালীকেই বনীর হিন্দুসমাজ আক্রপ্রপরিচালিত হইতেছে।

মহারাল লক্ষণসেন বৃদ্ধ বন্ধনে গোড়া বৈক্ষণ ক্টরা পঞ্জিনহিলেন । জনবেরে কোনলভাজনার্লির বহুল আভারনেই
তিনি অনেক সময় অতিবাহিত করিতে লানিকেন । আধুনে
বে হলাবুণ "শৈবসর্বার্গ" লিখিয়া গোড়সালের প্রীভিভাজন
ক্টরাছিলেন, এখন তাহাকেই "বৈক্ষণসর্বার্গ" লিখিতে ক্টল।
ভাগবতগর্গের গুড় রহত নাধারবের সংক্রেন্থান্ত নতে । লাধারবের
লক্ষে তাহার বিশরীত কল উৎপাদন করিছাছিল। এই
স্করের রাজক্বি গোরীর "ব্যান্ত্রার্গ লাঠ করিকে কেরা বার,
কুর সক্ষরেন্দ্রের ভালধানীতে বিভালিভার নোড়া আঞ্চিত
ক্টতিছিল,—একাড হালধান ব্যান্ত্রিনাবিনীকানের নাজিবাহিত্য

মুখরিত, নিশীথে বেচ্ছাচারিণী অভিসারিকাগণের অবাাহত পতিতে সেনরাজধানী চমকিত, নগরের উন্থানসমূহ নাগরদোলার ঘূর্ণামাণা নাগরীগণের উন্মান কলনাদে বিদ্যাবিত এবং প্রণর্ক্তালাল কামিনীগণের প্রেমালাণে সমস্ত বিভাররী যেন উভ্যান্ত ভাষারই কলে গৌড়ীয় সেনাবিভাগে যথেষ্ঠ স্বেচ্ছাচার, বিলাসিভা ও চরিত্রহীনতা প্রতিপত্তিলাভ করিলাছিল এবং ভাষারই পরিণাম ফলে ১১৯৯ খু ট্রান্সে নববীপ-রাজধানী মহারাজ লক্ষণসেনের হস্ত হইতে মুসলমান-কবলিত হইল।

ভান্তিক বৌদ্ধাচার-বিপ্লাবিত হিন্দুসমান্তকে ক্রম্প: উন্নত করিবার জন্ম মহারাজ লক্ষণসেন যে সকল উপার অবলঘন করিয়া-ছিলেন, বঙ্গবাসী হিন্দু সাধারণের গুরুণ্টক্রেমে আর তাহা সমাক পরিপুষ্টি লাভ করিতে পারিল না। বল্লালসেনের সমর তিনটা রাজধানী ছিল। একটা উত্তরবঙ্গে মালদহ জেলার অন্তর্গত গোড় নামক প্রাচীন ছানে, একটা নববীপে ও অপরটা পূর্ব্ববঙ্গর বিক্রমপুরে। লক্ষণসেন মহম্মদ ই-বধ তিয়ারের অকম্বাৎ আক্রমণ-ভরে নবন্ধীপ রাজধানী পরিত্যাগ করিলেও, তৎপুত্র কেশব গৌড়ে সৈক্তসংগ্ৰহ করিয়া একবার মুসলমানদিগের বিরুদ্ধে অন্ত ধারণ করিয়াছিলেন, কিন্তু বিলাসী ও স্বেচ্ছাচারী সৈম্প্রগণ দইয়া তিনি পরাক্রান্ত শত্রুর সন্মুধে দণ্ডায়মান থাকিতে সমর্থ-হইলেন না, কাজেই তিনি গৌড় পরিত্যাগ করিয়া পূর্কবঙ্গে পলাইয়া গেলেন। ভথনও বিক্রমপুরে লক্ষণসেনের অপর পুত্র মহাবল বিশ্বরূপ সেন শাসন করিতেছিলেন। যেরূপ ঘোরতর ষড়যন্ত্রে পতিত হইয়া বৃদ্ধ নপতি লন্ধণদেন নবদ্বীপ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হুইবেন, বিশ্ব-রূপের সভায় সেরূপ কোন বিশ্বাস্থাতকতা বা ষ্ড্যন্তের অভিনয় হয় নাই, অথবা স্বেচ্চাচার ও বিলাসিতার তখনও পূর্ববঙ্গ উৎসর বায় নাই। লক্ষণদেনের সভাদদ ব্রাহ্মণ পণ্ডিতগণ মুসলমানের নিকট উৎকোচ গ্রহণপর্কক ভবিষাপুরাণের দোহাই দিয়া রটনা করেন যে, দীর্ঘশাঞ্জ ও আজামুল্ছিতভূজ মুসলমান শীঘ্ট আসিরা নবধীপ অধিকার করিবে। বৃদ্ধ নরপতিও ব্রাহ্মণের এবংবিধ কথায় বিখাস করিরা প্রাণভরে ছন্মবেশে নবদীপ পরিত্যাগ করিয়া পলারন করেন। কিছু সৌভাগাক্রমে বিশ্বরূপের সভার সেরূপ স্বার্থান্ত ব্রাহ্মণ-পণ্ডিভের অধিষ্ঠান ছিল না, তাই বদেশভক্ত বঙ্গীর বীর-গণকে লইয়া মহাবীর বিবরূপ মুসলমানের করাল কবল হইতে বলরাজ্য রক্ষা করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। তাই বিশ্বরূপ নিজ ভাষ্ট্রশাসনে "গর্গববনায়র-প্রলয়-কালরুদ্র" ইত্যাদি বিশেষণে বিশেষিত হইয়াছেন। তাঁহার সভায় গিয়া কেশবসেন উপযুক্ত আত্রর লাভ করিরাছিলেন। বৃদ্ধ লক্ষণদেন ছন্মবেশে তীর্থযাত্রার প্রকৃত হইলে, ভাঁহার জােচ পুত্র মাধ্বসেনও রাজ্য পরিত্যাগ ক্ষরিয়া হিমালর প্রবেশে যাত্রা করিয়াছিলেন। কুমায়ুনের কেদার- নাপ তীৰ্থে এখনও তাঁহার নাম ও তাঁহার সহচর বন্দাবংকর বান্ধণের নাম তাত্রশাসন হইতে পাওয়া সিরাহে, এখনও তথার উক্ত বন্দাবংশধরগণ বাস করিতেছেন।

লক্ষণদেনের রাজ্য পরিত্যাগ ও তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র মাধ্য रमानत हिमानत्रयाचा चाँग्टन भन्न रक्षतरम् भूर्सराज किहूतिस्मन क्छ नारम माज ताका इहेरनन, किन्त छाहात कनिक विश्वस्थान হত্তেই প্রকৃত শাসনশক্তি পরিচালিত হইতে থাকে। জাঁধার মৃত্যুর পর প্রায় ১২১৫ খু ট্রান্সে বিশ্বরূপ পূর্ববন্ধের সিংহাসনে অভিবিক্ত रहेरान । जिन बाकातकात वाल किरान, तारे कक नमांक-সংস্থারে হস্তক্ষেপ করিতে স্থাবিধা পান নাই। তিনি পিত-প্রবর্ত্তিত তাত্ত্রিক নামধের প্রচ্ছের বৈদিকচারেরই সমর্থন করিছেন, এবং বৈদিক বিপ্রদিগকে বছতর শাসন গ্রাম প্রাদান করিয়া বৈদিকজিরতাই প্রকাশ করিয়া গিরাছেন। তাঁহার সময় হইতেই লক্ষণদেন-সংস্কৃত রাচী ও বারেক্স ভ্রাহ্মণসমাজের স্থার বৈদিক-সমাজেও মিশ্র-বৈদিক-তান্ত্রিকাচার প্রবেশ করিছে-ছিল। বিশ্বরূপ দীর্ঘকাল বঙ্গরাজ্য শাসন করেন। ঐ সমরের মুসলমান ঐতিহাসিক মিনহাজ নদীয়া আক্রমণের ৬০ বংসর পরে শিথিয়াছেন, তথনও লক্ষণদেনের বংশধর পূর্কবন্ধ স্বাধীনভাবে শাসন করিতেছেন। সেই স্বাধীন নুপতিকেই আমরা বিশ্বরূপ বৃশিরা মনে করি। আইন-ই-অকবরীতে দ্বেশা यांत्र, दक्शवरत्रस्वत्र शत्र नमारमन वा भूतरमन नाम्य अकवारिक রাজা হন। ই হার রাজঘকাল ১৮ বৎসর লিখিত 🖦 সম্ভবতঃ মুসলমান ঐতিহাসিক মুসলমানবেধী বিশ্বরূপকে ছাড়িয়া তৎপরবর্তী সদাসেন বা শুরসেনের উল্লেখ করিরাছেন। তৎপরে কুলগ্রছে দমুক্তমাধ্ব বা দনৌকা মাধ্বের নাম পাওরা যার। এই नत्मोका चारेन् जक्रवीएक त्नोबा नात्म केक स्टेबारहन । स्त्रि-মিশ্রের কারিকা মতে, ইনি রাজা কেশবদেনের পুত্র। মরমনদিংহ হইতে সম্প্র পর্যান্ত বিস্তীর্ণ স্থান তাঁহার অধিকারম্বন্ত ছিল। লক্ষণদেনের দমরে যে বৈদিক-তান্ত্রিক মিপ্রাচারের স্বত্রপাত হইমা-ছিল, দনৌলা মাধবের সমর উক্ত মিলাচার পূর্ববঙ্গের ছিলুসমাজে বিভৃতি লাভ করে। বৈদিকসমাজে এই মিপ্রাচার প্রকাঞ্চে স্বীকৃত ना इट्रेलि अट्टे नमद ताही ७ वादबल्यनमादम छाद्रिक ७ देवनिक এই উভরবিধ আচারই *শ্রু*তিসমত বলিয়া গণ্য হইরাছিল। দনৌজা সভার রাড়ীর কুলীন ব্রাহ্মণগণের চারিবার সমীকরণ হয়, তিনি ধার্মিক ও পণ্ডিতগণকে আহ্বান করিয়া কৌনীত-মৰ্যাদা দানে লক্ষানিত করিবাটিলেন। তিনি বল্ল

বলের নাতীর ইচিহান, আঞ্চলভাত, ৩ট আলে, ২র অব্যারে বিভৃত্ত
বিষয়ণ এইতঃ।

কারছ কুলীনপ্রবর পুরবস্থর কল্পাকে বিবাহ করেন+ এবং বলজ-কারছ-সমাজের গোলীপতি হন।† তিনিই গৌড় হইতে প্রধান কারছ কুলীন ও কুলাচার্যাগদকে আনাইরা নিজ রাজ্যে বাস করাইরাছিলেন।

১২৮২ খুটাকে বিশ্লীখন বল্বন্ গৌড়াথিপ অল্ডান মৃথিন্উনীনের বিষত্তে আগমন করেন। তৎকালে দছল রার জলপথে বিশ্লীখনতে সাহায্য করার পশ্চিম বজের মৃন্সমান সর্কারগণ
উাহার উপর অভ্যন্ত কুছ হইরাছিলেন। বল্বনের বিশ্লীঅহানের পর, ঐ সকল মৃন্সমানের সমবেত চেটার অরকাল
পরে বছ্তমাধ্ব অ্বর্ণগ্রাম হারাইলেন, এবং আখীর অলনসহ
সন্তব্বের নিকটবর্ত্তী চক্রবীপে গিরা বাস করিলেন।

পূর্কবন্ধের উত্তরাংশ হারাইলেও দক্ষিণাংশে তাঁহার বংশধরপণ বহু কাল খাবীন ভাবে শাসন বিভার করিতে সমর্থ হইরাছিলেন। দহুজমাধবের পর তৎপুত্র রমাবলভনেব, তৎপুত্র ক্ষুবলভনেব, তৎপুত্র ক্ষুবলভনেব, তৎপুত্র হারবলভ দেব, তৎপুত্র ক্ষুবলভনেব, তৎপুত্র হারবলভ দেব, তৎপুত্র ক্ষুবলভনেব, তৎপুত্র হারবলভাবে চক্রবীপ রাজ্য শাসন করেন।
জরবেবর পূত্র পজান না হওয়ার তাঁহার দৌহিত্র বলভক্র বহুর পুত্র
পারমানক বহুরার চক্রবীপের সিংহাসনে অভিবিক্ত হইরাছিলেন।
বহুবংশীর ৭ জন রাজার রাজদের পর, শেব রাজা প্রেমনারারণের
পুত্র সভান না হওয়ার তাঁহার ভাগিনের মিত্রবংশীর উদরনারারণ
উত্তরাধিকার লাভ করেন, তাঁহার বংশধরগণ অভাপি বাক্লা
চক্রবীপে বিভ্রমান। তাঁহাদের সেই সোভাগ্য-সূর্য্য অন্তর্মিত
হইরাছে, এখন আর রাজবংশধর বলিরা পরিচর দিবার কিছুই
নাই। তবে চক্রবীপ-সমাজের সমাকপ্তি বলিয়া বল্প কারহুসমাজে আরও তাঁহারা বিশেব সমানিত।

[চক্ৰৰীপ শব্দে বিষ্কৃত বিৰৱণ স্তেইব্য ।] বালালাৰ বুসকৰাৰ-প্ৰভাব ।

১৯০১ অব্দের আদ্য-ক্রারিতে সমত বালাসা প্রেদেশের মূসলমানসংখ্যা ২৫,৪৯৫,৪১৬ নির্দিষ্ট হইরাছে: ভ্রমধ্যে পশ্চিম বালাসায় ১০৮৪৮২০; উত্তর ও দক্ষিণ বেহারে ২,৯৯৬,৪৫০; মধ্যবাদে ৩৭৭০০২১; উত্তরবাদে ৫৮৭৬৪০৮ ও পূর্ববাদে ১১২২০৪২৭; প্রেক্তির উড়িব্যাপ্রবাদেশে প্রার সঞ্চাবিক মুস্ক

- পূৰ্বত্ব ক্টাবাৰ্থসূত্ৰ ব্যৱস্থ স্বায়কারিকার লিখিক আছে—
 শক্ষাৰ কাৰ্থকোৱাৰ প্ৰাৰ্থ কীৰ্যন্ত্ৰার চঃ
 - ngalos synis alesis ficers: s"
 - শক্তে বাবৰ বাধা চামবীগণতি।
 নেই বইল গলত কাবছ গোঠাণতি।
 বৌদ বইকে আবিলা কাবছ কুলগতি।
 কুলানার্ক আনাইকি করবলা ক্রিকি ব্লা

(किन पान्यक्रिस पहल कुमजी मानगरवर)

বাদের বাস আছে এক করীর বাটের অধীন করা রাজ্যনতিত, অধাৎ কোচবিহার, কভিণর পার্কভাঞ্জনের এবং উড়িবাঃ ও ছোটনাগপুরের অভর্গত দেশীর সামজরাজ্যসমূহে আরও মুসদ্মানের বাস দেখা বার । বাজালাকাসী হিন্দুলাভির বোট সংখ্যা ৪৯৬৯৮৭০৪ জন এবং অহুবানিক নোট মুস্লমান ২৬ লক। প্রত্তাং এতহুত্রের তুলনার হিন্দু অপেকা মুস্লমানের সংখ্যাই উভরোভর বেশী হইতেছে। হিন্দুপ্রধান বসরাজ্যে এরূপ মুস্লমানাধিকা কেন ঘটিল, বাজালার মুস্লমান রাজ্যের ইতিত্ত অহুসরণ ভির তাহা জানিবার বিশেষ উপার নাই।

স্থবেবালালার বর্তমান আহম-ক্রমারীর মোট ৭৮৪৯৩৪১০ জন সংখ্যা লক্ষ্য করিলে মুসলমান সংখ্যা স্পষ্টভই ভাছার এক-ভূতীরাংশাধিক বলিয়া বোধ হয়। আহানীয় বাহুপারের সময়ে এই জনভার আধিক্য বটিয়াছিল, ভাহা তৎকালে লিখিড এক-থানি বিদেশীর প্রছে বিহুত আছে। সে সমর মুসলমানধর্ম পূর্জ-বালালার সমূত্রকুল পর্যান্ত বিশ্বত হইরাছিল। একে মুসলমান রাজা, তার মুসলমান জমিবার ও জারগীরবার এবং পীর ও ফকীর্দিগের অভুল প্রভাব---এই সকল কারণে জনসাধারণ সহক্ষেই বে মুসলমানধৰ্মের অন্তবর্তী হইতে বাধ্য হইবে, ভাহাতে আর আশুর্য কি ? কিছ গৌড়, বুর্নিনারাদ গ্রভৃতি মুসলমান রানধানী দিরিভিত এদেশ অপেন্দা রান্তনাহী, বভড়া, চট্টগ্রায প্রভৃতি স্থানে অধিবাসীদিগের সংখ্যা অধিক দেখিরা বেশ বুঝা বার বে, বাছবল অণেকা অভাভ কারণেও মুনলমান-ধর্মের পরিবৃদ্ধির স্হারতা বটিয়াছে। বে সকল জেলার মুসলমান অধিক, रम्थानकात प्रमामारनता धात्रहे (इनिकीनी) धनः अभिगत, ব্যবসায়ী ও বিধান ব্যক্তিগণ আর হিন্দু । ইহা দেখিয়া অনুমান হয় যে, বহুকাল হইছে অনাৰ্য্য জাডিগৰ পশ্চিম হইছে তাড়িড হইরা পূর্ববালাবার আত্রর গ্রহণ করিরাছিল ৷ অনার্যবংশসভ ত ৰণিয়া তৎতাদেশহ নেই অধিবানীয়া হিন্দুনবাৰে অভি নীচ দ্ৰেৰীতে হান পাইয়াহিল। প্ৰশক্তিয়ালে ভাহাৱা আপেদাকত সভাতা-লোপানে আরোহণ করিবা সেঙ্কণ হীনাক্য পরিভাগ-পূৰ্ণাৰ মুগলনানাথিকাৰে রাজার সহিত সমধ্যা হইতে উৎসাহ ও আগ্রহ প্রকাশ ক্রিল, রাবাছগ্রহে ভাহায়া ইন্লায়গণে रीकिक रहेग, अथवा अधिक गण्डन, अटमटक त्नारे गमदा नवारक वा बाजनकारण महानकारका जानात हैकानूकी हेन्साकार व **रीकात्ररः कविदा स्थापना समाजनि पित**ा

্বিতীয়তঃ স্থানিকাশ কুন্তন্যনের আনিশত্য হইতেই যালানার পুনশ্বানভাতির একানুশ বিভৃতি গতবশ্ব ব্যিরা কয়না কর। বাব । তাহার স্কুলাঁও বাণিকাম্যানেশে অনেক কুন্ত্যান বণিক্ এবেশে আনিরা বাব কুন্তিরা বাধিবেশ । কুন্তবান-রাজ্যণের [839]

আভাচারতরে, রাজান্ত্রহলাতের আশার, অথবা কোন ক্লপ্রাধ্যে পড়িরা অনেক হিন্দু ইন্লামধর্ণে নীকাগ্রহণ করিতে বাধ্য হইরাছিলেন। আবার কোন কোন হিন্দুসভান মুনলমানের অহবানে আনিরাই অথবা মুনলমান ব্ৰতীর প্রেষণাশে আবদ্ধ হইরা হিন্দুধর্মজ্যোতিঃ পরিত্যাগপূর্কক রাজধর্মের বিমল অগীর ইনলাম-আলোকে আপনার অদ্ধ বিশ্বাসক্রপ কদ্পৃত্তী উল্লেসিড করিলাছিলেন।

ভাল-উল্-মুরালীর, তবকাং ই-নালিরী, তারিখ-ই-ভালিছি, তারিখ-ই-ভিরিতা, অকবর-নামা, জবেনং-অল্-তারিখ, ভাহালীর-নামা, শাহলহান-নামা, জবেনং-আল্মণীর-নামা, মুরালীর-আল্মণীরী, তারিখ-থাকি খাঁ, মুরালার-অল্-ওমরা, রিরাল-উল্-লাতিন প্রভৃতি বিবিধ মুল্লমান ইতিহাল পাঠ ভরিবে, বালালার মুল্লমান স্মাপ্য ও তাহাদের প্রভাব বিভারের বধেই আভাল পাওরা বার।

তবকাং-ই-নাদিরীতে মধ্য-এদিরাবাদী সুসলমানকাতির প্রভাব বর্ণনপ্রদদে দবক্তশীনের অভ্যার ও ভারতাক্রমণ বিবৃত্ত হইরাছে। সবক্তশীনের মৃত্যুর পর, তীহার প্র প্রলভান মাজুদ গলনী রাজধানী হইতে সদলে বহির্গত হইরা পশ্চিম ভারতের দানাক্বান আক্রমণ ও পূঠন করেন। মাজুদ মধ্যভারতের মুন্দেলথও পর্যান্ত বিজয়ার্থ অগ্রসর হইরাছিলেন। কিংবদরী আছে বে, ঐ সময় হইতে প্রলভান মাজুদের বিখ্যাত সেনাপতি দৈরক সালর ম্পাউন গালী উত্তর-ভারত আলোড়িত করিয়া স্প্রপ্রান্ধ ভর লাভিকে বিধ্বত্ত করেন। তাহারই প্রভাবে নানা স্থানে মুস্লমান উপনিবেশ ও মস্বিদ্ প্রভৃতির প্রতিষ্ঠা হর।

[नदसनीम, माक्ष्म ও गानत मगाउँम् (मध ।]

মাজু দের সৃত্যুর পর, ১০০০ বুটান্দে মহন্দদ মসাউদ ১ন

রাজা হল। মসাউদ-পুত্র মোত্দকে হীনবল দেখিরা বিলীপতি

আফগানদিলের নিকট হইতে নাগরকোট কাড়িরা লন। ১০৪৯
বুটাকে মোত্দরের সৃত্যু ঘটিলে বথাক্রমে হর মসাউদ, আলী,
রসিধ ও কেরোখলালা পলনীসিংহাসন অলক্ত করিরাহিলেন।

কিছ তাঁহারা ভাজতে অথিকারবিভারে বিশেব মনোবোদী হন নাই।

১০৪৮ বুটাকে কেরেকের লাভা অ্লভান ইরাহিম রালপদে

অথিবিক্ত হইরা ১০৭৯-৮০ পৃটাকে হিলুহান আক্রমণ করেন।

তাঁহার মুক্তার পর তথপুত্র আর্গিরা রালা হন। আর্গিরার

অভ্যাচারে ক্রেলাবর্গ ক্রেন্টিড়ত হইরা উঠে। তাঁহার খ্রুতাত

বহরার পার সেই সমরে ক্রানের নারার পলাইরা বোরাসানপাতির সাহায়্য লাভ করেন। পরে তাঁহারই সহায়ভার বহরাম
বীর লাজুপুত্র আর্গিরাকেনিহত করিরা অরং পলনী ও লাহোরের

অবিশতি হন। এই সমরে ঘোর-রাজক্বলের অনুসার হইতে

থাকে। বহরামের পরবর্তী খুক্ত দারক রাজবর প্রতিপত্তিরারী বোররাজবংশের সমকজ হইতে না পারিয়া রাজ্যের পক্তিমাংশ পরিত্যাগপূর্বক পূর্বাচ্চাছ লাহোর জনপাদে আদিরা রাজপাট রাপন করেন। ১১৮৯ খুটাকে মহল্পন বারে গুল্চান ২র খুক্তকে বুকে বন্দী করিয়া কিয়োজ-কো নামক স্থানে আদারন পূর্বক তথার উহার হত্যাকাথ্য সম্পন্ন করিয়াছিলেন। জনবিধি লাহোর জনপদ বোর-বংশের অধিকারকুক্ত হয়।

বীর্ষকাল মুসলমান কাতির সহিত বাস করিরা হিন্দুগণও আনেক বিবরে মুসলমান-সংকারাপার হইরাছিলেন। বিধর্মী হই-লেও হিন্দুসমানে তাঁহাদের সংসর্গ তৎকালে ততনুর নিজনীর ছিল না। কেন মা গান্ধারাদি প্রাচীনভম রাজ্যের সহিত বহ্নান হইতে ভারতবাসীর সংক্ষর চলিয়া আসিডেছিল। তথনও পাঠানজাতির ইস্লামধর্মীকা কেনী প্রাতন হর নাই। তাহাদের সংবাও তথন পূর্বভন ভারতীয় ধর্মসংভারের আনেক নিদর্শন বিভয়ান ছিল। তথনও হিন্দু-মুসলমানের প্রহৃত বিধেরতাহ সমৃদিত হর নাই; সত্তবতঃ সেই কারণেই বোধ হর, কনোজপতি ভারতক্র স্বলাতির প্রতি রুর্ব্যাপরত্ত্ব হুইরা বিধেনীকে সাদরে আম্বরণ করিতে কুঠিত হন নাই। [মহন্মন খোরীও ভারচক্র দেখ।]

১১৯০ খুটান্দে তিরোরী রণক্ষেত্র বিরীপতি পৃথীরাজকে পরাভূত করিরা মহমদ খোরী দিরী প্রান্ত পর্যন্ত মুস্সমানরাজ্য-সীমা বিভার করেন। মহমদ তাঁহার বিশ্বত ক্রীতনাস এবং সেনাপতি কুতব্ উদীন্ আইবন্ধে বিনিত প্রদেশের পাসম-কর্তা নিমুক্ত করিরা যান। এই রাজপ্রতিনিধির আন্দেশই মহমদ-ই বর্ধ তিরার বালাগা-বিজয়ে আগমন করেন।

[কুতবউদীন ও মহত্মদ ই-বধ্ তিয়ার দেখ]
কুতবউদীনের প্রেরিত বিজরবাহিনী হইতেই পূর্বাঞ্চল
ক্রেমণ: মুননমানের বনতি বিভ্ত হর; কিছু হুংধের বিবর
বালালী মূননমানের মধ্যে পাশ্চাত্য মূননমান ঔপনিবেশিকের
সংখ্যা অতি অয় । স্থাবিকাল মূনলমান শাননে প্রণাড়িত
এবং রাজকর্মচারিবৃক্ষ কর্ত্ব নিগৃহীত হইরা, অথবা মূনলমান
সাধুগণের ব্লক্ষীর প্রভাবে বিমুগ্ধ হইরা এলেশীয় হিন্দুগণ
জনেকে তৎকালে ইন্লামধর্মের আল্রর প্রহণ করিরাছিল।
সেই প্রাচীন সমরে স্থার স্করবন বিভাগেও ইন্লামধর্মপ্রচারার

খুটার ১২০০ অব হইতে অক্সডণানে বালানার কুলনান-লাসন আয়ত; তবর্থাই জাহারা এ সেবে বসতি কুরির। আনিতেহেন। সেই সমর হইতে আরক্ত করিয়া ইংরাজ-কর্ত্ত বালানার "বেওবানী" প্রক্ষেত্র সময় পর্যন্ত প্রায় ১৬২ বংলয় কুলনান্যন্ত এ দেশে রাজ্য করিয়া নিহাছেন।

লোক্ষের চিত্তরঞ্জনকর বস্থিদ নির্দিত ব্রয়াছিল।

বাজালা রাজ্যের পশ্চিম অংশ হতচ্যত হওরার বছদিন পর পর্যান্তও ছিন্দুরান্তগণ পূর্ব্ব-বালালার দোণারগাঁও প্রভৃতি স্থানে त्राबद कतिशाहित्तन। किन्द्र ১२०३ थुः व्यत्मत्र शुर्व इटेल्डरे সোণারগাঁও নগরে মুসলমানগণের ঘটিরাছিল। সমাগ্ৰ খুরীর অষ্ট্রম শতাব্দীতেও বদোরার আরব স্ওদাগর্গণ ভারত-বর্ষ ও চীনের সহিত বছল পরিমাণে সামৃদ্রিক বাণিজ্যে নিবুক্ত ছিলেন। তাঁহারা যে সকল দেশে পরিভ্রমণ করি-ডেন, তথার এক একটা বাণিজ্যাবাস হির করিয়া যান। ৰাদালায় ৰাণিলাপ্ৰাধান্ত হইতে আমরা বেশ ব্যাতে পারি বে, অতি পূর্মকাল হইতে বাঙ্গালার মুসলমানদের উপনিবেশ স্থাপন করার স্থবোগ ঘটিরাছিল। প্রাচীনকালে পশ্চিম জগতের সহিত এ দেশের বেরূপ ৰহণ পরিমাণে বাণিজ্যাদি চলিত, খুটীর ৯ম শতাব্দে লিখিত তুই জন মুদলমান পরিব্রাক্তকের ভ্রমণরস্তান্তে ভাষার স্বিশেষ উল্লেখ আছে। তাঁহারা "এ নেশকে রামি রাজার দেশ বলিরা" উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন ৷ আরও বলিরাছেন--"তাঁহার অসংখ্য হন্তী আছে। বাঙ্গালার প্রধান রপ্তানি দ্রব্য ক্ষম ভূলার কাপড় (ঢাকাই মসলিন ৫), অগুরু **हम्मन, अक अकार हर्च, गश्राद्यंत थुका है** छा। । अहे जकनहे क्षि विनिमस्य क्षत्र, कता यात्र । क्षिरे এ म्हिन्त श्रामी ।"

মুসলমান রাজদের ইতিবৃত্ত।

(अध्य भागनकान ।)

মহক্ষ-ই-বধ্ ভিরার খিলজী খোরের একজন অমাতা ছিলেন। অলভান গিরাস্ উলীন্ মহক্ষদ শাহের রাজত সময়ে ভিনি গাজনীতে আসেন। সেই স্থানে কিছুদিন থাকিয়া ভিনি ভারতবর্ষে উপনীত হন এবং মালিক মুয়াজ্জিম হিলাম উলীনের অধীনে চাকরী গ্রহণ করেন। ইনি অলভান শাহাব্ উলীনের একজন গ্রসিক্ষ সদক্ষ ছিলেন।

১১৯৯ খা আলে তিনি বালালা আক্রমণপূর্বাক ১২০৩ গৃঃ আন্দের মধ্যে রাচ় ও বরেক্স নামক প্রদেশ জয় করেম। "তবকৎ ই-নাসিরী" নামক ইতিহাসে লিখিত আছে, লখাণা-বতী নামক রাজ্যের অন্ধর্গত নদীরা নগর রার লছ্মণিয়ার রাজধানী। গলানদীর উত্যক্তে ঐ রাজ্যের ছইটা বাত আছে। পশ্চিম বাহকে রাচ বলে। লক্ষণাবতী নগরী এই অংশে অবস্থিত। পূর্জ বাহর নাম বরেক্স বা বরেক্সা, দেওকোট নামক নগরী এই বরেক্সভূষে অবস্থিত। নদীরা এবং লক্ষণাবতী উভয় নগরই রাচ্ প্রেক্সভূষে অবস্থিত। নদীরা এবং লক্ষণাবতী উভয় নগরই রাচ্ প্রেক্সভূষে অবস্থিত। কিরিকার লিখিত আছে, মহক্ষদ-বশ্ভিয়ার নদীরা জরের অব্যবহিত পরেই লক্ষণাবতী ও অভাক্ত রাজ্যগুলি অধিকার ক্রিনেন। তাহার নামে পুংবা

পাঠ এবং মূল প্রচারিত হইল। বে সকল মুসলমান তাঁহার সহিত আসিরাছিলেন, বা পরে বাঁহারা আসিরা তাঁহার সহিত বোগদান করিয়াছিলেন, তাঁহারা এই ন্তন বিজিত প্রদেশ প্রতিষ্ঠিত হইলেন। তাহারা জারণীরস্বরূপ অনেক ভূসম্পত্তি লাভ করিয়াছিলেন। গোড় বা লক্ষণাবতী নগরে বধ্তিরার রাজধানী স্থাপন করেন। [লক্ষণনেন দেখ।]

বরেক্স এবং রাচ ১২০৩ খুঃ অব্দে মুসলমান শাসনাধীন হইলেও, প্রাকৃত বন্ধদেশ বা বালালার পূর্বাংশ মহম্মদ ভোগ্ লক শাহের রাজ্যকালে মুসলমানকর্তৃক ১৩৩০ খুঃ অব্দে অধিকৃত হয় : গোড়, সপ্তগ্রাম এবং স্থবর্ণগ্রাম নগর বা বন্দরে উক্ত সম্রাটের প্রতিনিধিগণ রাজ্ধানী স্থাপন করিয়া রাজ্যকার্য্য নির্কাহ করিয়াছিলেন।

মহম্মদ্-ই-বণ্ তিয়ার থিলঞ্জী হইতে আরম্ভ করিয়া কাদর থার শাসন সময় পর্যান্ত বালালা দিল্লী-সাম্রাক্যভুক্ত ছিল। তৎকালে দাস, থিলঞ্জী ও তোগলকবংশীয় দিল্লীখরগণ আপন আপন প্রতিনিধি হারা বালালা শাসন করিতেন। কিন্তু স্থলতান ফণ্ র উদ্দীনের রাজ্যত সময়ে বালালা দিল্লীর অধীনতা উল্লোচন করিয়া আধীন হইল (১৩৪০ খুঃ আঃ)। তিনি বালালা রাজ্যের সমগ্র শাসনশক্তি স্বহন্তে গ্রহণ করিয়া আপনাকে স্বাধীন বাদশাহ বিলয়া ঘোষণা করেন। যতদিন দা অকবর বাদশাহ দায়্দকে পরাজিত করিয়া খুয়র ১৫৭৬ অব্দে বালালার স্বাধীনতা হরণ করিয়াছিলেন, ততদিন বালালা পাঠানজাতির অক্স্ম প্রতাপ ও অপরিসীম অত্যাচার অকৃষ্ঠিত চিত্তে সহু করিতে বাধ্য হইয়াছিল। কবিকাহিনীতে তাহা বিশেষরূপে বিরত আছে।

মহন্দ-ই-বর্থতিয়ার স্বীয় অধিকৃত বালালা প্রদেশ গুই থণ্ডে বিজ্ঞক্ত করিয়াছিলেন। বরেক্সভূমি ও বগড়ীর কিয়দংশ লইয়া কে বিজ্ঞাগ গঠিত হয়, দিনাজপুরের নিকটবর্তী দেবকোট নামক ফানে তাঁহার রাজধানী ছিল। অপর বিভাগের রাজধানী গৌড় বা লক্ষণাবতী। য়াচ় ও মিথিলার কিয়দংশ তাহার অস্তর্ভু ক্ত। মুসলমানপতি উত্তর-প্রদেশবাসী হিলুরাজগণের আক্রমণ হইতে স্বাধিকৃত গৌড়রাজ্যরক্ষার অস্ত রলপুরে গুর্গ নির্দ্ধাণ করাইয়াছিলেন। অতঃশর কামরূপ ও তিকাত অধিকারে মানস করিয়াছিলেন। অতঃশর কামরূপ ও তিকাত অধিকারে মানস করিয়াছিলেন। অতঃশর কামরূপ ও তিকাত অধিকারে মানস করিয়াছিলেন কামাতপুর-রাজের সহিত সন্ধিলাপন করেন; কিন্তু কামরূপ-শেনার পরাক্রমে পাঠানসৈক্ত সমূলে বিনষ্ট হয়। যুদ্ধে পরাজ্ঞর বীকার করিয়া মহন্দ্র-ই-বধ্তিয়ার দেবকোটে প্রভাারত হই-দেন, তথার বলকরে ও চিক্তাজনিত করে অয়িলনের মধ্যেই

च्याद बाडीवं देखिलान, बाव्यपक्षेत्र, ३४ वरण अद्वेयान

তাঁহার মৃত্যু ঘটে (হি: ৩০২ = ১২০৫ খু: জ:)। তাঁহার শ্বদেহ বেহারে স্থানান্তরিত ও সমাধিত্ব হইয়াছিল।

উক্ত থিল্জী বীরের সঙ্গে আনেক আঞ্চগান,মোগক ও ইরাণীর থাদেশে আসিয়াছিল। তিনি অগণিত মুসলমান সেনাদল লইরা বাঙ্গানা, বেহার ও মগণের নানাছানে মুসলমান-শাসন বিভার করেন। তাঁহার আত্মীর স্বজন ও আমীরগণ যাহারা তাঁহার করেন। তাঁহার আসীর স্বজন ও আমীরগণ যাহারা তাঁহার কিলে বাঙ্গানার আসিয়াছিলেন, তাঁহাদিগকে তিনি জারগীর দিয়া বাঙ্গানার বসাইয়াছিলেন।

মহম্মদ-ই-বথ তিয়ায়ের মৃত্যুসংবাদে তাঁহার বিশ্বন্ত বন্ধু ও দেবকোটের সেনানারক মহম্মদ-ই-সিরান্ থিলজী বিশেষ ক্ষ্ম হন। কিন্তু বথন তিনি গুনিলেন, বগুলের শাসনকর্তা আলীমর্দান খাঁ তাঁহাকে ছুরিকাবিদ্ধ করিয়া তাঁহার প্রাণসংহার করিয়াছেন, তথন তাঁহার প্রতিহিংসা-বহ্নি শতশুনে প্রজ্ঞালত হইয়া উঠিল, তিনি সদলে বর্জ ল অভিমুথে অগ্রসর হইয়া যুদ্ধে আলী মর্দনকে বন্দী এবং বাবা ইম্পাহানী নামক একজন কোতোয়ালের হস্তে ভাঁহাকে সমর্পন করিয়া রাজধানী অভিমুখে বাজা করিলেন।

মহম্মদ সিরান লক্ষণাবভীতে ফিরিয়া আসিবে মুসলমান সেনাধাক্ষেরা তথার সমবেত হইয়া তাঁহাকে একবাক্যে সর্বপ্রধান মুসলমান অধিনায়ক বলিয়া স্বীকার করিল। মহম্মদ সিরান আজা উদ্দীন্ উপাধি সহ গোড়ের মস্নদে অধিষ্ঠিত হইকোন এবং মুসল-মান-সেনাপতিগণকে অধীনস্থ সেনাদলের পোরণার্থ জায়ণীর দান করিবেন।

এদিকে রাজ্যাভিষেকের স্থযোগে আলীমর্দান কোতোয়ালকে উৎকোচ-দানে সন্ধর্ত করিয়া স্বয়ং কারাবরোধ হইতে উন্মক্ত হন। পরে তথা হইতে গোপনে দিলীযাত্রা করিয়া সত্রাট কুত্ব फेक्नीरनत ममक्क वाकामात ताकरेनिक विश्रयत कथा नियमन করেন। এই সংবাদ প্রবণে এবং স্বীয় রাজশক্তির অবমাননা হইরাছে ভাবিরা সম্রাট কুক হইলেন। তিনি তদতেই অযোধ্যার শাসনকর্তা কামার ফুমিকে অবিলবে বাঙ্গালা অভি-মুখে অগ্রসর হইতে আদেশ করিলেন। তদমুসারে কামার ক্ষমি বালালার অপরাপর মুদ্দমান সামন্ত দর্দারদিগকে বশীভূত করিয়া মহমাদ সিরান্কে দশুবিধান করিতে অগ্রসর হইলেন। যুদ্ধে পরাজিত হইয়া সিরান গলবল সহ কোচবিহার অভিমূপে পলাইরা গোলেন। তথার মুসলমান সন্ধারণণ পরস্পারে আত্মকলছ উপস্থিত ক্রিল। এক জন সন্ধারের তরবারির আখাতে গৌডেখর মহন্দ্র সিরান নিহত হইলেন। কামার ক্রমি অবশিষ্ট সন্দারদিগকে ক্ষমা করিরা বালালা রাজ্য তাহাদের সংখ্য বিভাগ করিয়া দিলেন।

আলীমৰ্দান খিললী বছৰিজেতা সহস্মদ-ই-ৰখ্তিয়ায় খাঁর

হত্যাকারী বলিয়া সাধারণে নিন্দিত হইলেও, তিনি বীর, সংসাহলী ও কর্দ্মন্থল ছিলেন। তিনি বাদালা ইইতে দিলীতে
উপস্থিত ইইরা দেখিলেন, দিলীখর কুত্ব সদলে গজনী-বিজয়ে যাত্রা
করিতেছেন। আলীমর্দানও সম্রাটের সহকারিরপে তথার যাইরা
বিলেব কৌশল ও রণপাওিতা প্রদর্শন করেন। তাহাতে সন্তই
ইইরা সম্রাট তাহাকে বালালার রাজপ্রতিনিধি পদ দিরাছিলেন।
রাজাজ্ঞামুসারে হিসাম উদ্দীন অবৃজ্ঞ প্রভৃতি খিললীবংশার সামস্তসর্দারগণ নবীন প্রতিনিধি আলীমর্দানকে অভ্যর্থনার্থ কুন্দীনদীতীরে সমবেত হন। গোড়েশ্বর আলীমর্দান ঐ স্থানে সমাগত
ইইলে পরম্পরের মর্ঘাদাবিনিমরের পর, সদলে দেবকোট অভিমুখে যাত্রা করিলেন। এথানে কিছুদিন মন্দদে উপবিপ্ত ইইরা
তিনি প্ররায় লক্ষ্যাবিভারে প্রতিবন্ধকতা করিল না। তিনি
নির্ক্রিরেধে বন্ধের পাসনদ্রও পরিচালনা করিতে লাগিলেন।

১২১০ খুঁইান্দে যা ৬০৭ হিজিয়ার কুত্ব উদ্দীনের মৃত্যু ঘটিলে আলীমর্কান খাঁ। দিলী-রালসরকারের অধীনতা পাল ছেদনপূর্বক অয়: অলতান আলা উদ্দীন নাম গ্রহণ করিরা আধীনভাবে বাঙ্গালা শাসন করিতে লাগিলেন। বাঙ্গালার মসনদে আরোহণের পূর্বে মর্কানের হৃদয় প্রকৃত বীরপুল্লরের ছাল ছিল। তিনি তৎকালে তীক্ষ বৃদ্ধি ও রাজকীর দ্রদর্শিতার যথেই পরিচর দিয়াছিলেন। রাজভক্তে উপবেশনানস্তর গর্বে মনে মন্ত হইয়া উহার লোর চিত্রবিকার উপস্থিত হইল, তিনি বোরতর অত্যাচারী ও আত্মন্তরী হইয়া উঠিলেন। তাঁহার প্রত্যেক কার্যেই অনৈতিকতা ও অবিম্যাক্রিলা প্রকাশ পাইতে লাগিল। তাঁহার অধীনত্ব ধিনজীর ওমার্লগ প্রবাশ করিরা নিশ্চিত্ত থাকিতে পারিলেন না। তাঁহারা উদ্বোজর বিরক্ত হইয়া অবিশেতে পারিলেন না। তাঁহারা উদ্বোজর বিরক্ত হইয়া অবশেবে ১২১২ খুটানে গৌড়েশ্বরকে গোপনে হত্যা করিল।

রাজহত্যার অব্যবহিত পরেই, মৃদ্দানান সুদ্ধারহৃদ্ধ পূর্কবৎ
সমবেত হইয়া গলোওরী জেলার হুপ্রসিত্ত সামত্ত হিসাম্ উদীন্
অবৃদ্ধ রাজসিংহাসনে অভিবিক্ত করিলেন। তিনি বোর রাজ্যের
কোন সম্লাক্ত স্পারবংশসমূত—অনুটাবেবণে ভারতে আসিরা
মহম্মন-ই-বথ্ ভিরারের অধীনে সেনানারকের পদে নিবৃক্ত হইয়াছিলেন। জেনে বীর প্রভুর অমুগ্রহে গলোওরী বিভাগের
শাসনাধিকার প্রাপ্ত হন। তাহার বীরত, সাহস ও কর্মনিক্রার
অপরাপর স্পারগণ তাহার উপর প্রভাবান্ ছিল। বহুমুদ্ধ
সিরানের রাজ্যকালে কামার ক্ষমির সমক্ষে তিনি বিজীবরের
অধীনতা বীকার করার রাজতক্তির প্রভারবন্ধপ বিশেবন্ধপ
স্কানিত ইইয়াছিলেন।

XVII

নংখান্-ই-ৰথ্ ভিরারের মৃত্যুর পর বিগজীবংশীর বে করেকজন সেনাপতি বলবেশ শাসন করিবাছিলেন, তন্মধ্যে প্রশাতান
গিরাস্উদীন্ট সর্জাপেকা বিখ্যাত। প্রশাতান হিসাম্ উদীন্
জর্জ গৌড়ের মসনকে স্বাসীন হইরা পিরাস্ উদীন্ নাম
ধারণ করেন। তাহার হাপিত কীর্তিমালা জভাপি বলে তাহার
বলং বোৰণা করিতেছে। তিনি গৌড়নগরী নানা জটালিকার ও
ধর্মান্দিরে প্রশোক্তিও করিবাছিলেন। তখন লক্ষণাবতী বা
গৌড়-রাজধানী গলার ছই বিকে বিশ্বত ছিল। বর্বাঞ্চতে
জলমধ্য স্থান দিরা রাজধানী হইতে জক্তর যাতারাতের অস্ববিধা
বৃত্তিরা তিনি বীরভূষের অন্তর্গত নগর (লক্ষণনগর বা লথ্নোর)
সামক স্থান হইতে গৌড় দিরা দেবকোট পর্যন্ত একটা জালাল
(স্ত্তিকাতুপ ঘারা নির্দ্ধিত উচ্চ পর্যা) প্রন্তুত করান। ইহাতে
সাধারণ লোকের ও রাজকীয় কর্মাচারীদিগের বালালার বিভিন্ন
নগরে গমনাগমনের যথেষ্ট প্রবিধা ঘটনাছিল।

মুসলমানবাহিনী সঙ্গে লইয়া ডিনি বরং কামরপ, মিথিলা এবং অগলাথের (উডিবারি) রাজাদিগকে কর দিতে বাধ্য করিয়া-ছিলেন। প্রার দশ বৎসরকাল মহাসমুদ্ধির সহিত রাজ্য করিরা তিনি দেশহিতকর নানা কার্য্যের অনুষ্ঠান করিয়া যান। তিনি সাহিত্য ও শিরের প্রচপোষক ছিলেন। জ্ঞানোরতি করে তিনি শত শত পভিতকে বৃত্তি দান করিয়াছিলেন। বাস্তবিক পক্ষে তিনি হিন্দু, মুসলমান, ধনী বা পরিম্রভেদে কোনক্রপ বিচারের তারতম্য করিতেন না। ১২২৫ খুষ্টাব্দে দিলীখরের বিরোধী হইর। তিনি প্রথমে দিল্লীতে রাজকর প্রেরণ বন্ধ করেন। সম্রাটু আল্-তমাস তাঁহাকে দওবিধানার্থ বাঙ্গালার সমাগত হটলে তিনি ভাহার অধীনতা স্বীকারপূর্বক সৃদ্ধি করিতে বাধ্য হন। সম্রাট প্রত্যাগত হইলে,তিনি বেহারের শাসনকর্তা মূলক আলা উদ্দীনকে রাজ্যন্তই করিয়া পুনরার দিলীখর স্থলতান আলতামানের অধীনতা অধীকার করেন, ভাহাতে অগভান আপনার বিতীর পুত্র মানির উদ্দীনকক তথিকতে প্রেরণ করেন। গিরাস্ উদ্দীন্ সমরে भवाबिक এवः मिरुक रूम (३२२१ वृष्टी म)।

গিরাসের মৃত্যুর পর সন্ধাণাবতীর ক্তনর্কার বিরীরাজধানীতে প্রেরণ করিরা নাসির উদীন্ বালালা ও বেহারের
শাসনকর্ত্তা হন। ১২২৮-২৯ খুটাবে লক্ষণাবতী রাজধানীতে
উাহার মৃত্যু ঘটে। এই ছবোগে ধিলবীবংশীর স্পারগণ
বিল্লোহী হইরা প্নরার বালালা হতগত করিতে ভেটা পান।
ফলতান আল্ভেমাস ৬২৭ হিজিয়ার ব্যাহ বালালার উপনীভ
হইরা বিল্লোহধননপূর্বাক পূর্বাক্ষিত মৃত্যু আলা উদীন্কে
গোড়সিংহাসনে অভিবিক্ত করেন। আলা উদীন্ ও বংসর এবং
তংপরে নৈক্ উদীন্ ভূর্ব ও বংসরকাল রাজ্য করিলে পার বালা-

লার মসনদে জুবান বাঁ আরোহণ করেন। ৬৩৪ ছিজিরার বিষ-প্রারোগে শৈক উদ্দীনের মৃত্যু ঘটে (১২৩৭ খুঃ)।

নাসির উদ্দীনের পর বর্ণার্থ পক্ষে তুবান বাঁই বছরাজ্য শাস্ত্রন করিরাছিলেন। তিনি নানা সন্তথে ভূবিত ছিলেন। হংগতান আল্তমাসের অন্তর্গ্রেছ তিনি ৬৩০ হইতে ৬৩৪ হিঃ মধ্যে বথাক্রমে বুলাউন, বেহার ও গৌড়ের মসনদে সম্বিটিত হইরাছিলেন। বছসিংহাসনে উপবিষ্ট হইরা আলা উদ্দীন তুবান থান্ উপাধি ধারণ করিরা দিরীবরী হংগতান রিজিয়ার সমিকটে উপটোকনাদিসহ একজন দৃত প্রেরণ করেন। তাহাতে তিনি উচ্চ সম্মানলাভ এবং লোহিতবর্গ ছত্র ধারণের অধিকার পান। অতঃপর তিনি ত্রিহতপতিকে পদানত করিয়া কর্ম দিতে বাধ্য করেন এবং বছ ধনরত্ব লাইয়া গৌড় রাজধানীতে প্রত্যাবৃত্ত হন।

সমাট্ মসাউদের রাজছকালে দিলীর রাজসরকার বিশৃথক জানির। তিনি সেই রাজশক্তিকে অবজাপুর্কক বরং বাংনীন রাজরণে সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হন এবং কড়া-মাণিকপুর অধিকার করিরা বীর রাজ্যসীমা বৃদ্ধি করেন (১২৪২ খুটাকে)। তথার বাসকালে ৬৪০ হিজিরাকে তবকং-ই নাগিরী প্রশেতা মিন্হাজের সহিত সুগতানের সাকাৎ হর। স্বল্তান তাঁহাকে সঙ্গে লইরা বালাবার আসেন।

১২৪৩ খুষ্টান্দে উৎকলপতি স্থলতান তুখানের বিরুদ্ধাচরণ করিলে তিনি মুসলমান সেনা লইয়া যাজপুর রাজ্য সীমাস্তহিত কতাসন নামক স্থানে উপনীত হন। উড়িব্যাবাসীর সহিত যুদ্ধে পরাজিত হইরা স্থলতান লক্ষণাবতীতে সদলে ফিরিয়া আসেন। তাহাতে উত্তেখিত হইয়া উড়িব্যাসৈত বালালা আক্রমণ করে (১২৪৪ খু:,৬৪২ হি:)। গঙ্গবংশীর নরপতি অনন্ত্রীমপুত্র মহাবীর নরসিংহদের বরং এই অভিযানের অধিনারক ছিলেন। উডিয়া দৈছ গৌড়নগর ও বীরভূমের প্রধান নগর লখ্নোর আলোড়িড এক তথাকার সেনাপতি করিন্ উদীন্কে বিপর্যন্ত করিলে উপারান্তর না দেখিরা স্থলভান দিল্লীখরের নিকট সাহাব্য প্রার্থনা করেন। তদ্মসারে অবোধ্যার প্রবাদার তৈনুর বাঁ কিরাণ সদলে দল্পণাবতী অভিমূখে অগ্রসর হইলেন। তাঁহার আগমনে ভীত হইরা উৎকলদৈত লক্ষ্যব্যাদি লইরা বদেশাতিমূথে भनावन कविता । रेडवृत की छन्छान दृष्टिन हे छूपानरक हीनवन ছেখিরা শ্বহং বালালার মসনদ অধিকার করিরা বসিলেন। এই পুরে উভয়প্দীর মুসলমানদেনার খোরতর বৃদ্ধ বটে। ১২৪৪ ৰ্ছাৰে উভয়পকে একটা সৃদ্ধি হয়। ভাহাতে ভৈদুর খান পৌড়েয় ৰসনৰে অধিষ্ঠিত হইলেন এক জ্লভান ভূবান বীৰ ধনরত্ন লইবা দিলী রাজধানীতে গ্রন্থান করিলেন। বিলীবর কথোচিত সন্মানবানের পর তাঁহাকে অবোধ্যার স্থাদার পরে নিরোজিত করেন।

ৈ উমুর খান্ প্রকান আল্তমাসের ক্রীতদাস ছিলেন। তাঁহার বীরছাদি সদ্ভণে ও সৌন্ধর্যে মুগ্র হইরা সম্রাট্ তাঁহাকে আবোধার শাসনকর্ত্বপদ দান করেন। তদনস্তর তিনি বাশালার মসনদ অলম্বত করিরা ছই বৎসর মাত্র ক্রীবিত ছিলেন, ৬৪৪ হিঃ গৌড় নগরে তাঁহার ক্রীবলীলা শেব হয়। ঐ রাত্রিতেই প্রকাল তুবান অবোধ্যানগরে দেহ রক্ষা করেন।

অতঃপর ১২৪৬ খুটান্ধে তুর্কবংশীর ক্রাতদাস শৈকউদীন্
যুবন তাঁত বালালার শাসনকর্তা হন। তিনি বিশেষ প্রতিভা
ও বশের সহিত ৭ বৎসরকাল বালালা শাসন করিয়া ১২৫৩
খুটান্ধে (৬৫১ হি:) গোড়নগরে জীবলীলা শেষ করেন,
তাঁহার সমরে উড়িব্যার রাজা গলবংশীর নরসিংহদেব বালালা
আক্রমণ করিয়া, গোড় নগর অবরোধ করেন। যুগন ধাঁর
প্রোর্থনাত্মপারে ও দিলীখরের আদেশে অযোধ্যা হইতে সাহাব্য
আসিয়া উপনীত হইলে উৎকলসৈক্ত স্বদেশে প্রভাবর্তন করিল।

শৈক উদীন্ যুবন তাঁতের পর অযোধার শাসনকর্তা ইংতিরার উদীন্ তুবল খাঁ মুল্ক যুজবেগ বালালার শাসনকর্তা হইরা
আনেন। তিনি বলদর্শিত উড়িয়াবাসীর প্রতিশোধ লইবার ইচ্ছার
উড়িব্যা আক্রমণ করেন। হুইবার যুদ্ধে তাঁহার জয় লাভ
হয়, কিছ ভূতীর যুদ্ধে ভিনি পরাজিত হইরা পলায়ন করিতে বাধা
হম। রাজ্যারোহণের এক বৎসর পরে, তিনি অজমর্দনরাজকে
(সন্তবতঃ প্রীহট্টরাজা) পরাজর করিয়া বহু ধনরত্ব সংগ্রহ করেন।
এইরূপে অতুল এখর্যের অধিপতি হইরা তাঁহার হদয়ে খাধীন
হইবার বাসনা বলবতী হইরা উঠে। তিনি মুদিস্ উদ্দীন্ নাম
ধারণ করিয়া খেত ছত্তেলে উপবিষ্ট হন। পরে ১২৫৭ খুটাক্ষে
ভাষরণ আক্রমণকালে তিনি শত্তহত্তে বন্দীকৃত ও নিহত হন
(১২৭৫ খুটাজা)।

৩৫৬ ছিজিরার মালিক যুক্তবেকের মৃত্যু সংবাদ দিল্লী সরকারে উপনীত হইলে, সম্রাট্ নাসির উদ্দীন্ মহম্মদের মন্ত্রিবর্গ জলাল উদ্দীন্ থানি নামক একজন মুস্লমান সেনাগতিকে বালালার শাসনকর্ত্তবে নিরোগ করিরা তদ্দেশ অধিকারে প্রেরণ করেন।

জলাল্ ৰাজালার উপনীত হইলে তথাকার সুসলমান সামত-গণ তাঁহাকে বাজালার শাসনকর্তা বলিয়া প্রহণ করিল। অতংপর স্থলতান জলাল উজীন্ ৰাজালার রাজধানী লক্ষণাবভীতে পাসন-স্থালা স্থাপন করিয়া পূর্ববিজের বিবেরী রাজগণের স্বাধীনতাহরণে অপ্রনর হইলেন। এই স্থবোগে কড়ার শাসনকর্তা আর্সিলান বাঁ পৌড়সিংহাসন অধিকার করেন। জলাল মুছে নিহত হইলে, আর্সিলান ভবীর সম্পত্তি ও হত্যাবর্থাছির কতকাংশ দিল্লী সর- কারে উপটোকনম্বরণ প্রেরণ করিয়া গ্রেগ্রিকসিংহাসন নিজ্ঞীক করিয়াছিলেন।

সমাট্ আল্তমানের ক্রীজনাস ও সেনাপতি ইবা-উল্
যুল্ক তাজ্ উদীন্ আর্সিলান ধাঁ সঙ্গর খারিজনী ১২৫৮ অব্দে
কড়ার শাসনকর্তা হইরা মালব ও কালিএর আক্রমণের আন্দেশ পান। তিনি ঘটনাচক্রে সন্ধাাবতী অধিকার করেন। এই বংসস্কাল গোড়সিংহাসনে অধিষ্ঠিত থাকিরা তিনি ১২৬০ খুটাকে লোকাত্তর প্রাপ্ত হন।

অতঃপর তৎপুত্র মহলব ডাডার বঁ। বালালার মস্নবে অধি
টিত হইলেন। ইনি উলারচেতা, ধীর ও ধল্মিল ছিলেন। দিলীধর
নাসির উদীন্ ঐ সমরে মোগল আক্রমণ হইতে ভারতপ্রাপ্ত রক্ষা
করিবার লক্ত বাত থাকার গোড়ের দিকে নরন ক্রিরাইতে পারেন
নাই। ১২৩৫ খুটাকে দিলীর পাসনর্যান্ত ক্রমণ সন্ত্রাট্ট বল্বনের
হতে সমর্পিত হইলে, গোড়েখর মহলব দিলীবরের ভৃতিবিধান লক্ত
নানা উপঢ়োকন প্রেরণ করেন। তর্বধি ১২৭৭ খুটাকা পর্যান্ত
দিলীর অধীনত্ব সামস্তরপে বাস করিরা অ্লভান ভাভার বাঁ
লক্ষ্যাবতীতে দেহত্যাগ করেন।

রাজসিংহাসন শুন্য জানিরা সম্রাট্ বল্বন্ খীর জীতদাস ও
প্রিরপাত্র স্থলতান র্বিদ্ উদীন্ তুরলকে বাদালার শাসনকর।
নিযুক্ত করিয়া পাঠাইলেন। তুরল বীরম্ব দেথাইরা উত্তরপূর্কাবলের হিন্দ্ রাজানিগকে বলে আনিরাছিলেন এবং জাহানিগকে করদানে বাধ্য করেন। ইতিহাসাস্তরে প্রফাল, এই
সমরে আমীন নামে এক ব্যক্তি গৌডের শাসনকর্ত্বপদে নিযুক্ত
হন, তুরল নামক তাঁহার একজন নারেব ছিলেন। সম্রাট্
বল্বন্ অত্যন্ত পীড়িত হইরাছেন সংবাদ পাইরা তুরল বিজ্ঞাই।
হন ও বলের শাসনকর্ত্তা খীর প্রভৃকে বল্পী করেন। তংপরে
খবং স্থলতান মুধিস্উদীন্ নাম ধারণসূর্কক বল্পসিংহাসনে অধিতিত হইরাছিলেন (১২৭৯ খুটাল)।

রাজাসনে আসীন হইরা মুখিন বাজনগর (উৎকল)-রাজকে পরাজর করিরা তৎপ্রদেশ সূঠন করিলেন। এই সমরে সম্রাটের শীড়ার সংবাদ পাইরা তিনি গৌড়রাজছ্ত্রতলে উপবিট্ট থাকিয়া আশানাকে বাধীন রাজা বলিরা ঘোষণা করেন। দিরীবর বল্নন্ এই সংবাদে তাঁহার বিরুদ্ধে ক্রেনে ক্রেমে ছুই বল সৈত্র পাঠান। প্রথম অভিযানে তিনি মালিক অবজ্ঞানিকে আমীন বঁট উপাধি দান ও বঙ্গের শাসনকর্তা করিরা অবোধাপেথে বাজালা অভিমূবে অগ্রসর হইতে আলেশ করেন। ক্রাট্শুরাহিনী ঘর্ষরা অভিক্রেম ভরিরা সৌড়লীনাক্রে উপনীত হইলে ত্রনের সহিত বৃদ্ধ হয়। অবজ্ঞানিন পরাজিত হন।

তুর্ক সেনাপতিকে ছিতীরবার গৌড় বিজয়ে প্রেরণ করেন।
এবারও দিল্লী-সৈক্তের পরাত্তব ঘটে। ইহাতে ক্রুত্ব হইরা সপ্রাট্
বল্বন্ স্বরং পুত্র বব্রা ধান্কে সলে লইরা বাদালা আক্রমণ
করেন। তুপ্রল সম্রাটের আগমনে ভীত হইরা ধনরত্ব সঞ্চমপুর্বক
বিপ্রাভিম্বে পলাইরা যান। দিল্লীখর গৌড়রাজধানীতে পদার্শন
করিরা হিলাম্ উদ্দীনকে গৌড়ের শাসনকর্তা নিরোজিত করিয়া
সদলে বিপ্রাভিম্বে অগ্রসর হইরা সোণারগাঁরে শিবির সরিবেশ
করিলেন,এখানকার স্বাধীন হিন্দুন্প দম্জলার (সেনবংশীর দনোজা
মাধ্য) তাঁহার সাহায্যকরণাভিপ্রারে নদীপথ রক্ষাভার গ্রহণ
করেন। মালিক বারিক ও মহম্মদ শের প্রভৃতি সেনানারকের
অধীনে স্বীর সেনাদল বিভক্ত করিয়া সমাট্ ভাহাদিগকে বিজ্ঞোহীর
আবেবণে নিরোগ করিলেন। তুপ্রল পথি মধ্যে আক্রান্ত ও বিনষ্ট
হন (১২৮২ খুটান্ধে)। অনস্তর বল্বন্ স্বীর ছিতীর পুত্রকে নাসির্
উদীন উপাধি দিয়া বাদালার শাসনকর্তা নিযুক্ত করেন।

স্থপতান বছরা খান নাসির উদ্দীন গৌড়সিংহাসনে অধিষ্ঠিত ছইবার কিছুকাল পরে তাঁহার জার্চ ভ্রাতার মৃত্যু হয় এবং তিনি দিল্লীসাম্রাজ্যের উত্তরাধিকারী হন: কিন্তু তিনি উক্ত গুরুতার বহন করিতে অনিচ্ছা প্রকাশ করাতে তৎপুত্র কৈকোবাদ সর্কাসম্বতিক্রমে সম্রাট্পাদে অভিষ্কি হইলেন এবং নাসির স্বয়ং গৌড়ে রাজত্ব করিতে লাগিলেন। কৈকোবাদ ক্রমে অত্যন্ত প্ৰক্ৰিয়াস্ফ হইয়া পড়িলে নাসির্উদীন পুন: পুন: উপদেশপত্র লিখিয়া তাঁহাকে সতর্ক করিতে লাগিলেন. কিন্তু তাহাতে কোন স্থফৰ ফৰিল না, বরং কুমন্ত্রীর প্ররোচনায় ও মন্ত্রণায় উদ্দীপ্ত হইরা কৈকোবাদ পিতার বিক্লে যুদ্ধযাত্রা করিলেন। উভরের সৈত্ত ঘর্ষরা ও সর্কা নদীতীরে পরস্পরের निक्रियर्खी इंडेन। इहे पिन किंदूरे इंडेन ना। जुछीत्र पिदरम নাসির উদ্দীন সমাটের সহিত সাক্ষাভের প্রার্থনা জানাইয়া স্বহস্তে পত্র শিখিলেন। মন্ত্রীর পরামর্শে কৈকোবাদ পদের মর্য্যাদা ব্বকা করিতে পিথিবেন। পুত্র সিংহাসনে আসীন রহিলেন. পিজা আসিয়া বধারীতি ছইবার কুর্ণিস করিলেন, তিনবার कतिएक वाहेराज्यक्रन, अयन नमरब टेकरकावाच निरहामन हुनेटक নামিয়া পিতাকে অভিবাদনপূর্কক তাঁহার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিলেন : জনস্কর পিডাকে সিংহাসনে বসাইরা আপনি নীচে হ্রসিলেন। পিডা পুত্রে মিলন হটল। নালির পুত্রকে সভপদেশ দিয়া গৌড়ে প্রত্যাবর্ত্তনপূর্বক কিরৎকাল রাজ্যলাসন করিয়া प्रामननीना मध्यत्रम कत्तिरानन (३२७२ वृद्धीरक)।

এদিকে জলাল্ উদ্দীদ্ খিলজীর হতে কৈকোবার রাজ্য ও প্রাণ হারাইলেদ (১২১০ খুটাজে)। জলাল উদ্দীন্ এবং তৎপরে জালা উদ্দীনের রাজডেম্ব প্রথমকালপর্যন্ত প্রলভান নাসির উদ্দীন নির্বিদ্নে গৌড়রাজ্য শাসন করিয়াছিলেন, কিন্তু শেব সমরে আলা উদ্দীন্ শক্তিসমূদ্ধিতে পূর্ণ হইরা উঠিলে, তিনি সম্রাটের ভরে বেচ্ছার গৌড়িসিংহাসন ত্যাগ করিয়া লক্ষণাবতী ও দক্ষিণ-পশ্চিম বঙ্কের সামস্তরাজরূপে গৌড়নগরে বাস করিতে অধিকার পান (১২৯৯ খুষ্টান্দে)। এই সমরে কৈকায়ুস এবং ফিরোক্স শাহ নামক নাসির্ উদ্দীনের পুশ্রমর যথাক্রমে গৌড়ে রাক্ষম্ব করেন। ফিরোক্স শাহের সমরে তৎপুত্র বাহাত্র খান্ সমবেত মুসলমানশক্তির সাহায্যে দম্মজারকে পরাজর করিয়া পূর্ববালালার শাসনাধিকার লাভ করিয়া স্থবর্ণ গ্রামে রাজধানী স্থাপন করেন। ১৩১৭ বা ১৩১৮ খ্রঃ অবেদ ফিরোক্স শাহের মৃত্যু ঘটে এবং তাঁহার ব্যাষ্ঠ প্রক্র শাহাব্ উদ্দীন লক্ষ্ণাবতীর সিংহাসনে আরোহণ করেন। কিন্তু অনকাল পরেই বাহাত্র খাঁ শাহাব্ উদ্দীনকে গৌড় হইত্বে তাড়াইয়া দেন।

এই সমরে মুবারক শাহ দিলীর সিংহাসনে অধিষ্ঠিত। বলদর্শিত বাহাত্তর খান্ তাঁহার রাজশক্তিকে উপেক্ষাপূর্বক বাহাত্তর
শাহ নাম গ্রহণ ও স্থনামে মুদ্রান্ধণ করিরা স্বাধীনতা অবল্যন
করেন। মুবারকের অনতিকাল পরেই থিলজীবংশের বিলম্ন
সাধিত হয় এবং গিয়াস্ উদীন্ তোগলক দ্বিলী-সিংহাসনে
সম্ধিতি হয় ।

এদিকে রাজাচ্যত শাহাব্ উদীন্ ভারত-রাজধানী দিলীতে উপনীত হইয়া সমাট্ গিয়াস্ উদীন্ তোগলকের শরণাপন্ন হইলেন। কিন্ত ইহার পরে কি হইল জানা বার না। সমাট্ ১৩২৪ খুটানে বালালায় আসিয়া শাহাব্ উদীনের প্রাতা নাসির উদীনকে শাসনকর্ত্ব প্রদান করেন এবং বাহাছরকে বদ্দী করিরা দিলী লইয়া বান।

যাহাছর শাহকে সলে লইরা দিলীধামে উপনীত হইবা মাত্র সম্রাট্ নাসির উদ্দীনের মৃত্যু সংবাদ পাইলেন। তিনি বদ্ধ পরিত্যাগকালে বহরম থাঁকে স্থবর্গগ্রাম এবং আক্ষদ থাঁকে ত্রিছতরাজ্যে অভিবিক্ত করিয়া যান। এই ঘটনার কিছুদিন পরে ১৩২৫ খৃষ্টাব্দে মহম্মদ তোগলক দিলীখর হন। নাসিরের মৃত্যুর পর, তিনি কাদর থাঁকে লক্ষণাবতীর ও আক্রম্ উল্ মূলককে সপ্তগ্রামের শাসনকর্ত্যাকে নিযুক্ত করেন। ১৩৩৮ খুষ্টাব্দে স্থবর্গগ্রামের শাসনকর্তা বহরম থাঁর মৃত্যু ঘটে। তোগ-লক্ষের প্রস্থানের শাসনকর্তা বহরম থাঁর মৃত্যু ঘটে। তোগ-লক্ষের প্রস্থানের পর হইতেই বাঙ্গালার নানা রাজনৈতিক বিমাব স্থিতি হইকে থাকে এবং ভাহা হইতেই অলকালের মধ্যে বাঙ্গালার স্বতম্ব ও স্বাধীন মুসলমানয়াঞ্জা সংহাশিত হইবার স্ক্রপাত হয়।

মহরম্ শার মৃত্যুতে উৎকুল হইরা তাঁহার কর্মচারী কথর উমীন্ অবর্ণগ্রামের মসনদে আরোহণপুর্বক আগনাকে ভারীম রাজা বলিয়া যোবণা করেন। এই সময়ে সম্রাট্ট মহম্মদ তোগলক দিলী হইতে দৌশভাবাদে রাজধানী হানান্তর করণাভিপ্রারে
বিশেব বাস্ত ও নিযুক্ত ছিলেন। তিনি কথন্ন উদ্দীনের এই
অবিম্বাকারিতার দওবিধানার্থ লক্ষণাবতীর শাসনকর্তা কালর
বাঁকে সদলে অগ্রসর হইতে আলেশ পাঠান। তদস্থারে
কাদর খাঁ অবর্ণগ্রাম অধিকার করেন। রণজরে উৎকুল হইরা
কাদর খাঁ মুসলমান সন্দারদিগকে এবং সেনাদলকে বিলার
দিরাছেন গুনিরা কথন্ন উদ্দীন্ উৎসাহিত হইলেন। তিনি
উৎকোচদানে বিগলীর সেনাদলকে বন্ধিজ্ত করিয়া লক্ষণাবতীর
শাসনকর্তার প্রাণনাশ করাইলেন। তদনস্তর তিনি অবর্ণগ্রাম
রাজধানীতে আসিয়া অলীকার মত রাজকোবের ধনরত্ব বিভাগ
করিয়া দিলেন (১৩৪০ খুটাকে)।

এ পর্যান্ত যে সকল পাঠান-শাসমকর্তাদিগের নাম উল্লিখিত হইল, ভাঁহাদিগের মধ্যে অনেকেই মুখে দিল্লীর প্রভূষ বীকার করিতেন, কিন্তু কার্য্যে প্রান্ত সকলেই স্বাধীনভাবে গৌড়রাক্স শাসন করিয়া গিয়াছেন। কেহ কেহ প্রকাশ্ররূপে সমাটের অধীনতা-পাশ উচ্ছেদ করিছে গিরা বিলক্ষণ প্রতিফলও পাইয়া-ভাঁচাদিচার শাস্নকালে সময় সময় অরাজকভার বিষময় বহ্নি প্রজ্ঞানিত হইয়া উঠিত, কথন বা গৃহবিপ্লবে রাজ-সিংহাসনের সঙ্গে সঙ্গে প্রজাবর্গেরও সর্কনাশ সাধিত হইত, আবার কখনও বা রাস্তা-নির্শ্বাণ প্রাঞ্চতি ওভকর কার্য্যও মধ্যে ৰাঞ্চালার পূর্ব্ব এবং দক্ষিণাংশ মধ্যে অমুষ্ঠিত হইত। তাঁহাদিগের হত্তগত হইলে তাঁহারা সমন্ত প্রদেশটার নাম তৎকালে লক্ষণাবতী, স্থবৰ্ণগ্ৰাম এবং वाकामा ज्ञासमा ।* সপ্রগ্রামে যথাক্রমে পশ্চিম, পূর্ব্ব এবং দক্ষিণ বিভাগের রাজধানী প্রতিষ্ঠিত হর। বধ্তিরার খিলজীর সময় হইতে ১৩৩০ খুটাক পর্যান্ত সমুদার দক্ষিণ বিহার ও কখন কখন সারণ পর্যান্ত উত্তর বিহার প্রদেশ গৌড়ের শাসনকর্তাদিগের অধিকারে ছিল।

विजीय अधीनप्र योजानात गाठीय मानगर्क्वर्ग ।

	*		
ग ृः	शिः चः	मरक पंत	সাসরিক দিলীপর
3,25	494	মহশাদ-ই-ৰখ্তিয়ার	
		খিলঞ্জী (লন্মণাবতী)	শাহাবৃদীন্ ঘোরী
52+ ¢	4+2	মহমদ সিরান	
		चिगजी	কু ভৰ্কীন্ আইবক
25.6		আলী মদান্ খিললী	a
		কুণভাম গিয়াস্ উদীন্	আল্তমাস

গৃহীর একারণ বভাষীর রাজেল্প চোলনেবের একথানি সিরিপাব বোরিত পিলাক্ষকে "বলাল দেশের" উল্লেখ দেবা বার। [সৌড় দেব।]

पृः	શિ જ	राष्ट्रवत् .	সামরিক বিলীবর
> 221	⊕ ₹8	নাসির উদীন্ বিন্ আগত	নাস আণ্ডমাস
3223	6 29	আলাউদীন্ লানি	(a)
2255	911	रिक् जेकीन् आहेरक	(a)
2500	40>	তুখানধান্	স্থলতানা রিজিয়া
>580	482	ড াৰি	আলাউদীন্ যসাউদ
\$288	63 2	তৈমূর ধাঁ কিরাণ্	্র
>388	७ 8₹	মালিক বুজ্বেগ	
		<u> তুজিলখান্</u>	&
\$280	₩88	সৈক্ উদ্দীন	ক্র
३ २८७	662	ইখ্তিয়ারউদীন্ মালিক	যুক্ৰেগ ঐ
३२৫१	444	ৰণাণ্ডকীন্ মসাউদ	নাসিরউদীন্ মাজুণ
>>er	469	हेळ् छेकीन् वल्वन्	(a)
३२ ६৯	664	व्यात्ननाम साम द्वातीक्रियी	(a)
३२७ ०	442	আর্বলান তাতার খান্	A
३ २११	• 9 •	তুলৰ (মৃইজ্উনীন্)	গিয়াস্উদীন্ বল্বন্
>442	447	मानित्रजेकीन् वव्दा था।	
		(বল্বনের প্র	
2525	449	क्रकन्डेफीन् टेककाछैन	
			किरताज भार थिनकी,
			ष्यागांडेकीन् चिनकी
১৩•২	9•2		দিরো জ শাহ ঐ
2024	?	শাহাৰ্ভকীন্ বঘ্রা শাহ	
?	?	গিরাস্উদীন্ বাহাছরশাহ	
?	•	নাসির্উদীন্	মহম্মদ ভোগলক
३७२€	१२६	কাদর খান্	A

(বিতীয় শাসনকাশ।)

ক্বর্ণগ্রামের শাসনকর্তা বহরম বাঁর মৃত্যু হইলে, তদীর অন্তর কথর উদ্দীন কাদর বাঁকে কৌশলে নিহত করিরা পূর্বালালায় স্বাধীনতা-পতাকা উজ্ঞীন করিলেন। এই সমর চর্বল-ছদর ওর মহন্মদ দিল্লীসিংহাসন কলভিত করিভেছিলেন। সম্রাট্হত্তে রাজকীর শক্তির অপলাপ দেখিরা এবং রাজপক্ষ হতবল জানিরা অলতান কথর উদ্দীন বীর রাজার্ত্তি-মানসে স্থালিক্ বাঁকে লক্ষ্মণাবতী আক্রমণে পাঠাইলেন; কিন্তু তিনি মৃতশাসনকর্তা কাদর বাঁর ক্লিক্ষিত সেনাপতি আলী ম্বারক্ষে হত্তে পরাত্ত হইলেন। আলী স্বারক্ষ আপনার বিজয়বার্তা জাপন করিরা সম্রাটের নিকট হইতে বালালার মন্মদ প্রার্থনা করেম। সম্রাটের আলেশপত্র আদিবার পূর্বেই তিনি জালা উদ্ধীন্ মাম

গ্রহণপূর্বক গৌড়সিংহাসনে অগ্রিষ্টিত হইলেন। তবনতর তিনি পূর্ববলে আসিরা হুবর্ণগ্রাবের শাসনকর্তা কথর উদীন্কে আক্র-মণ করিলেন। কথর উদ্দীন্ খুত ও নিহত হইলেন (১৩৪২ খুঃ)।

তিনি কর বংসর মাত্র রাজক করিরা গড়াত্ম চইলে, তংপুত্র মূল্যকর গাজি শাহ পূর্ববিলের (স্থব-গ্রাম) সিংহাসনে আরোহণ করেন। এদিকে পশ্চিম বালাগার আলিউন্সীন্ আলী শাহ আড্রাচ্চ অবলক্ষম করিরা, গৌড়সরিহিত পাঁপুরা নামক স্থানে রাজধানী স্থানন করিলেন। তাঁহার এবর্ধা লেখিরা হাজি ইল্রান্ বা ইলারস্ খালা তাঁহার প্রতিক্ষী হইলেন। এই প্রে উভরে অনেকবার বৃদ্ধ ঘটে, পরিশেবে আলী শাহ পরাজ হইরাও নিয়্কৃতি লাভ করেন নাই। ঈর্বাপরবদ ইলরাল্ গোপনে তাঁহাকে নিয়্কৃতি করিরা বৈরজ্ঞানা শান্তি করিলেন। আলী মূ্বারক এক বংসর পাঁচ মান কাল্যাত্র রাজত্ব করিরাহিলেন।

পাণুরা ইলয়াদের হলপত হইল। ভিনি ইল্রাস্ খাজা সামণ্ উদীন্ ভাললা নাম ধারণ করিবা বালালার মসনদে উপবিষ্ট হইলেন। কল্পেক বৎসন্ন পত্নে সামস্ উদীন্ পূর্ব্যবালালা আক্রমণ ও অধিকার করেন (১৩৫৩ বৃষ্টাক)। এই সময়ে ত্রিপুরারাজও তাঁহার নিষ্ট পরাজিত হইয়া রাজ্যর ও নজর দিতে বাধ্য হন। অমন্তর ডিনি পশ্চিমে বারাণনী পর্যান্ত রাজাবিল্যার করিতে চেটা করেন। ইহাতে সমাট্ তৃতীয় কিরোজ পাহ ক্রু হইয়। ভীহার বিরুদ্ধে বৃদ্ধবাত্রা করিলেন। সম্রাটের সহিত যুদ্ধে ইল্রাস-পুত্র বন্দী ছইলেন, পাওৱা অধিকৃত ছইল: এই সমরে সামস উদীন্ পাপুরা হইতে ১১ জ্বোপ পুরে একডালা নামক চুর্বে আশ্রম প্রহণ করেন। সম্রাট উক্ত তুর্গ অবরোধ করিয়া যথন দেখিলেন যে, সহজে উহা হস্তগত হইবে না. তখন তিনি সন্ধি ক্রিয়া দিলীতে প্রস্থান করিবেন (১৩৫৩ গুরাকে)। ইছার অভায়কাল পরে বাল্লাহ বাল্লার স্বাধীনতা স্বীকার করেন (১৩:१ पुढ़ोट्य)। धुड नगर्मे बांबानातात्वात नीमा উद्धत-विहास গওক নদ পৰ্যন্ত বিভ্ত হইবাছিল।

ক্রক বংসর বিশেষ বলবর্শে রাজালাসন করিরা সান্স্টকীন্
৭৬০ হিজিয়ার গভাস্থ হন (১০০৮ খঃ)। তিনি বীর কুজবলে
সমগ্র বজের অধীখর হইরাহিলেন। তাহার সমরে রাজণাট
গৌড়রাজধানী হইতে মালবহের নিকটবর্তী পাপুরা নগরে হানাগুরিত হইরাহিল। হারীপুর নগর তিনি খনামে প্রতিটা করেন।
প্রাসিদ্ধি আছে যে তিনি হিল্পর্যেরও বিশেষ পক্ষপাতী হিলেন।
একভালার নিকট রাজা তথানী নামে এক সামুহ বাস হিল।
স্মাটু বিরোজকর্ত্ব একভালা অব্যোধকালে ঐ সাধুর স্বৃত্যু হর।
সাধুবরের প্রতি ক্রকান্তিক ভক্তিনিক্তন প্রকানি সাম্প্রিটিলন এবং
ক্রিরবরণে তাহার স্থাধি হলে উপনীত হইরাহিলেন এবং

লেই ছন্ধনেটে ন্যাচ-শিবিকে আনিয়া ন্যাটের গহিত সাকাৎ করিয়া বান।

সামস উলীনের মুদ্রার পর ১৯৮ প্রটান্সে তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র "দেকস্ব শাহ" **উ**পাধি **এহকুপুর্বান্ত রাজা হন** । এই সময়ে কিয়োজ শাহ প্রেক্টার বাজালা জাক্রমণ করেন, কিন্তু গেকনার্থ পিডার অমূবড়ী হইয়া এক্ডালা হুর্গে আর্রাহ কন এবং এরূপ যুদ্ধ-কৌশন দেখান যে, সম্রাট করেকটা হতী ও বিঞ্চিৎ উপঢৌকন সইবাই প্রতিনিবৃত্ত হুইতে বাধ্য হন (১৩৫৯ খুটালে)। সেকদর একটা প্রকাশ্ভ বৌশ্বভূপ খালে করিয়া তাহার উপর বিখ্যাত "আছিনা-মস্ত্রিক" নির্মাণ করেন, পাঞ্যায় উহার ভগাবশেষ অভাপি নৃষ্ট হয়। সেক্ষারের হুই বহিবী ছিল, একের গর্ফে গিরান, উদীন, অপরের গর্ডে ১৬টা দম্ভান করে। গিরাস্ উদীন্ বিমাতার চক্রে আৰু হালাইকার সভাবনা দেখিরা, অবর্ণপ্রামে পলাইয়া আদেন ও দেনাদল সংগ্রহপূর্বক রাজবিয়োহী হন। তথায় কিয়ৎ-কাল স্বাধীনভাবে রাজ্য করিবার পর তিনি সোণার-কোটে আসিরা শিবির হাপনপূর্কক খীর পিভার বিরুদ্ধে গোরালগাড়া পর্যান্ত জগ্রসর হন। পিডাপুত্রের পরস্পরের যুদ্ধে সেকলর খলতমন্ত্রে আহত হইমাছিলেন, তাহাতেই তাঁহার মৃত্যু বটে (৭৬৯ হি: = ১৩৬৭ **খু:**) ৷

গিরাস উদ্দীন রাজা হইরা চিরস্তন প্রথামত আত্মরকার্থে বৈমাত্রের ভ্রান্ডাবিগক্ষে আৰু করিলেন। ইহা বাতীত তাঁহার জীবলৈ আর কোন নিষ্ঠ্রাচরণের উল্লেখ পাওরা বার নাই। তিনি সহিচার হারা সকল লোককে সম্ভষ্ট করিয়াভিলেন। তিনি স্বরং কবি, কবির মহ্যাদা রক্ষার সভতঃ সচেটিত ছিলেন। পূৰ্ববালালার রাজ্যকালে ভিনি পারসিক কবি হাফেজকে আনিরা বাস করাইতে বিধিষতে চেষ্টা পান। কিন্ত উক্ত কবি आश्रमम करवन नाहे। १९४ हि: (३७९० ब्रः) खाँहात मुकुर ঘটে। কেহ কেহ বলেন বে, জিনি বিনাজপুরের রাজা গণেশ কর্ত্ত নিহত হন। এ কথা সত্য হউক বা মিখ্যা হউক, তাঁহার পুত্র ও পৌত্রের রাজ্যকালে রাজা গণেশ বে অভ্যন্ত পরাক্রান্ত হইয়াছিলেন এবং পরিশেবে উক্ত পৌত্তকে বিনাপ করিয়া তিনি य बाक्रिश्हामत्न चारबाहर कतिबाहिएमन, करियस मामह নাই। গিরাস্ প্রসিদ্ধ মুস্লমান সাধু কুড্ব উল্ আলমের সহপাঠী ছিলেন এবং লখুনৌৰ প্ৰসিদ্ধ সাধু হামিদ উদ্দীনের নিকট ভিনি পরমার্থভদ্ব শিক্ষা করেন।

গিয়ানের মৃত্যুর পর, অবাভ্যবর্গ তাঁহার পুত্র সৈক্ উদীনকে স্থানতান উন্ নলাভিন উনাধিনত্ব বালালার বসনতে অভিবিক্ত করেন। লৈক্ উদীন্ নির্মিরোধে ও শান্তিক সহিত বলয়ান্ত্য শাসন করিয়া ১০৮০ পুঠালে গভাস্থ হউকে, তাহার বলক পুত্র ২ব নান্দ্ উন্দীন্ হই বংসর কাল শান্তিমর রাজ্য ভোগ করেন। এই সমরে ভাতুড়িরা পরগণার জমিনার রাজা গণেশ (মভান্তরে রাজা কংশ) রাজন্রোহী হইরা বলসিংহাসন অধিকার করিরাছিলেন (১৩৮৫ খুটান্কো)। বুসলমান সর্বারগণ কেহই তংকালে বলেখরের সহারতা করেন নাই। তংকালৈ অপর কর্মনন মুসলমান রাজার শাসনোর্বের দৃষ্টে অপ্রমান হর, মুসলমান সমাজেও রাজ্যাধিকার বিশ্রাটে বিশেবরূপ বিশ্বব উপত্তিত হট্রাছিল।

দিরীবরের সামর্থাহীনভাই বলীর রাজবিয়াবের একমাত্র ফারণ। ৮০০ হিজিরার তৈস্কলল ভারত আক্রমণ করেন। ঐ সমরে দিরীবরকে হীনবল দেখিরা গুজরাত, মালব, কনোজ, জাবোধাা, কড়া, জৌনপুর, লাহোর, দেবলপুর, কৃলতান, সমানা, বয়ানা, মহোবা প্রভৃতি ছানের মুসলমান সন্ধারগণ স্বাধীনতা অবলঘন করেন। খালা জহানকর্তৃক বেহার অধিভাবের পর বালালার অপরাপর মুসলমান সন্ধারগণও স্বাধীনভাবে শাসন পরিচালন করিতে চেটা করেন। এই প্রোগে দিনাজপুরপতি গণেশ স্বাধীনতা অবলঘন করিয়াছিলেন।

১০৮७ बृष्टीत्म जामा गरान वाकानात व्यथिनिक इन, धवर শাদ বৎসরঃ রাজত্ব করেন। তিনি অপক্ষপাতে রাজাশারী ক্রিরা হিন্দু মুগলমান উভয়ের প্রিয় হইয়াছিলেন। তাঁহার মুলার 'বয়াজিদ্ শাহ' নাম দৃষ্ট হয়। ১৩১২ খুটাবেশ তাঁহার মৃত্যু ঘটিলে, তাঁহার পুত্র জিৎমল 'জলাল্ উদ্দীন্ মহকাদ শাহ' নাম গ্রহণপূর্বক মুসলমান হন এবং গৌড়নগরে পুনর্বার রাজধানী স্থাপন করেন। জলাল গৌড়ও পাঙুরার অনেক স্থরম্য হর্দ্ম নির্মাণ করিয়াছিলেন। তিনি প্রস্থাপীড়ন করি-**८**जन এবং अवर्गस्य कृष्टेकन कीलमारमत शस्त्र (১৪०२ थृहोस्स) निरुष्ठ इस । ज्ञाब्स शर्मन शृक्षराज्य सामा स्वयमित श्रापन করিরা পৌতলিকতার প্রভাব বিতার করিরাছিলেন। কিন্ত ষ্ঠাহার পুত্র ও পৌত্রের ইস্লাম ধর্ম গ্রহণে সে প্রোভ বাধা প্রাপ্ত হয়। গৌড়নগরে তিনি এবং তাঁহার প্তর ও পৌত্র প্রায় **চहिल वर्गत नोक्य करन्त । ध नगरन वोक्रामात गेत्रोक्रम कर्निक** ক্ৰিরাছিল। উত্তরপূর্বে কামরূপ রাজ্য করতোরা পর্যান্ত বিশ্বত হইরাছিল। পশ্চিমে জৌনপুরের ক্লতান খালা জহান্ সমুদার বেহার প্রদেশ অধিকার করিয়াছিলেন। ত্রিপুরার রাজাও মধ্যে মধ্যে বলসীমান্ত আক্রমণ করিরা করণাত করিতেছিলেন।

জনান্ উদীনের মৃষ্টার পর, তাঁহার জাের প্র আদন পাহ বালানার বস্ত্রে উপজি হন (১৪০৯ বঃ)। এই সমরে জৌলপুররাজ ক্লজান ইলাহিন বালানা আক্রমণে উজাের হইলে ক্ষেত্রর তৈত্ত্বপুর পাহজাবের লাহাব্যবার্থী হইলা হিরাটে দ্ত প্রেমণ করেন। তাতার-রাজমৃত গৌড়রাজধানীতে আধানন কালে জৌনপুরপতিকে বীর সরাটের বছবিজর-নিবেধারা আধান করিয়া বান। ১৮ বৎসর রাজছের পর আধান ১৪২০ ভুইাকে গতান্ত হন।

আছনের সূত্রের পর, নুস্নমানেরা প্রভান সামস্ উনীনের বংশবঁরী নালির উনীন্ নামক একজনকে রাজা করেন। বিশ্বনাজকলের অভ্যানরে মুস্নমান সর্কারগণ রাজনৈতিক ব্যাপার হইতে সরিরা পভিরাহিলেন। এখন ভালরাবংলের হস্তে রাজ্যানির নিপতিত হওরার স্থারগণ রাজসংলারের বলর্ভি কামনার রাজস্কাশে আসিরা উপনীত হইলেন। তাঁহাদের সাহায্যে বলীরান্ হইরা নলির পাহ ১৪৫৭-৫৮ খুটাক পর্যন্ত নির্মিরোধে রাজক করেন। উক্ত বর্ধে তাঁহার মৃত্যু বাইলে তৎপুত্র বার্কক পাহ রাজ্যাধিকার প্রাপ্ত হন। তাঁহার নির্মিত গৌড়ের প্রাক্তারাদি ও প্রবেশবার জভালি বিভ্যান আছে।

লির পাবের পুত্র হার্কিছ পাছ বীন্ধ রাজ্য ও রাজপ্রাসাদ রক্ষার্থ জনেকগুলি হাবদী (আবিসিনীর জীতদাস) ও খোজা নিযুক্ত করেন। ইহারা ক্রমে জাট সহফ্র পরাক্রান্ত অধারোহী হইরা উঠে এবং রালায়গ্রহে কেন্দু কেন্দু রাজসরকারে উপ্তেপদ ও সন্মান লাভ করে। স্থলভান বার্কিছ ১৪৭৪ খ্বঃ জঃ পর্যান্ত নির্কিরোধে রাজ্যপাসন করিয়া গতাক্ত হইলে ভাছার জ্যেন্ত পুত্র মুক্তক পাহ রাজা হন। রাজাসনে জাসীন হইরাই তিনি ছার্বিচারের স্থব্যবহা করেন এবং রাজবিধির সংভার জ্বিরা বান। কালী ও মুক্তীগণ ভাহার নিক্ট বিচারে পরাক্ত হতৈন।

৮৮৭ ছিজিরার অপুত্রক রুক্ত গভাস্থ হইবে সুস্লমান ওমরাহগণ রাজবংশীর নেকলর শার নামক একজন ব্যক্তিকে সিংহাসনে অধিটিত করিকেন; কিন্তু সেকলয় রাজকার্য পরি-চাসনে অক্স দেখিরা ভাঁহারা চুইনাস পরে ভাঁহাকে রাজ্যচুত করিরা তবীর খুরুতাত কভেশাইকৈ সিংহাসন অর্পণ করেন।

স্থান কতেনাৰ বিভাগি নানা নদ্পণে ভূবিত ছিলেন।
ভিনি নিংহাননে অধিষ্ঠিত হইয়া দেখিলেন, হাৰণী ও খোলাগণ
পূৰ্ব হইতেই মাজসঞ্জানে আধিপতা বিভাগ করিয়াছে।
ভাহানের অভ্যানারে নিরীহ বলীর প্রজাবর্ণের ওঠাগতপ্রাণ।
ভিনি ইহার প্রভিবিধান জন্ত কপ্রজাবন্দে উপযুক্ত শাভি দিরা
ভাহানের মর্যাদার স্কান করিয়া বিলেন। ইহাতে ভাহারা
স্থাভাবের পরম শক্ত হইয়া গাঁড়াইল। ভাহারা মাজপুর-মুক্তী
শাইক"দিসকে প্রলোভিত করিয়া একদিন গভীর নিশীবে
রাজাত্তপুর মধ্যে স্থাভান কডেশাহকে বধ করিয়া।

রাজসরকারের প্রথানত স্থলতান প্রভাতে রাজ্যভাততে উপস্থিত হইডেজেন না দেখিয়া প্রভাত প্রকাশ কর্মনার ক্রিয়ার পড়িরাছেন, এমন সমরে সাধারণের বিশ্বর সম্থণাদন করির।
থোজা-সর্দার বারিক রাজপরিচ্ছেদে ভূষিত হইরা সিংহাসনে
সমাসীন হইলেন। ঘটনাচক্রে সেই সমরে উজীরপ্রধান খাঁ
জাহান এবং হাবসীপ্রেট্ট সেনাধ্যক্ষ মালিক আপ্রেল রাজধানীতে
উপস্থিত ছিলেন না। তাঁহারা রাজধানী রক্ষার্থ পাইকমাত্র নিবৃক্ত
রাধিরা সমগ্র সেনাদল লইরা কোন হিল্বাজের বিকত্তে বুহুমাত্রা
করিরাছিলেন, পাইক-সর্দারও পূর্ক হইতে উৎকোচ গ্রহণ করিরা
তুকীস্তাব ধারণ করিরাছিল, স্বতরাং বারিকের সিংহাসন গ্রহণে
সে কোনও আপত্তি উত্থাপন করিল না। খোজা বারিক স্থলতান
শাহজালা উপাধি ধারণ করিরা ১৪৯১ খুটালে বাজালার সিংহাসনে
আরোহণ করিলেন।

শাহফালা সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইলেন বটে,: কিন্তু তাহা সাধারণের অভিমত হইল না। মালিক আত্তেল স্থলতান-कर्जक चनारा निरम्नाशिकात मरचल छाहात विस्तारी बहेबा রাত্রিযোগে তাঁহার অন্তঃপুরে প্রবেশপুর্কক সহযোগী যুগ্রিস খাঁর সাহায়ে তাঁহাকে নিহত করিলেন এবং সাধারণের অভিপ্রারামু-সারে উক্ত বর্ষে সৈফ্ উন্দীন্ ফিরোজশাহ হাবসী নাম ধারণ করিয়া ৰাজালার মসনদে উপবিষ্ট হইলেন। তিনি বেরূপ বীর ছিলেন, ভদতুরপ দরাও তাঁহাকে অলম্বত করিরাছিল। তাঁহার উদারতা সম্বন্ধে এইরূপ একটা কিংবদস্তী আছে,— একসমরে তিনি দরিজদিগকে ১ লক্ষ মুদ্রা ভিক্ষাদানার্থ মন্ত্রীর প্রতি আদেশ করেন। মন্ত্রিবর মনে ভাবিলেন, 'লক টাকা মিতান্ত কম নর। ক্রলতান বোধ হয়, লক টাকার পরিমাণ না ভানিয়াই এড অধিক অর্থ বিভরণের আদেশ করিয়াছেন। ভাতরাং এই অর্থ ভাঁহাকে চক্ষে না দেখাইরা বিভরণ করা হটবে না: এই বজি করিয়া তিনি লক্ষ্পরিমাণ রৌপ্যযুদ্রা ক্লভানের বাইবার পথের থারে রাখিয়া দিলেন। স্থলভান তাহাতে লক্ষ্য করিয়া বলিলেন, এ মুদ্রা কিলের ? উজীবপ্রবর ভাহা ভিকার্থ দের বলিরা অভিবাদন করিলেন। ভাহাতে ক্ষলভান বলিয়াছিলেন, "এই সামার মুদ্রা করজনকে দিবে। ইছার দিশুণ পরিমাণ বিভরণ করিরা দাও।"

ফিরোজ পাছ গৌড়নগরে একটা শ্বরুৎ মসজিদ, মিনার ও স্থান্ত বাধা পুত্রবিদ্ধী নিশাণ করিরা বান। ঐ কীউওলি আজিও সাধারণের দৃষ্টিগোচর হইরা থাকে।

প্রায় ৩ বংসর কাল রাজক করিবা ১৪৯৪ বুটান্দে কিরোজ শাহ তবলীলা সম্বরণ করিলে ওমরাহগণ জাঁহার জ্যেষ্ঠপুত্র নাসির্ উন্দীন মাজ দ শাহকে + রাজা করেন; কিন্তু প্রকৃতপক্ষে হবেসী- জাতীর উজীর হাবেশ খাঁই রাজ্যের সর্কমর কর্তা ছিলেন।
মারিবরের অপ্রির আচরণে বিরক্ত ও উজ্যক্ত হইরা অপরাপর
হাবনীগণ ঈর্বাবিত ইইরা তাঁহার বিনাশের চেষ্টা পান। সেই
সমরে সিদ্দি বদর বেওরানে অত্যাচারী উজীরকে নিহত করির।
স্থলতানের বন্ধনদশা মুক্ত করিরা দেন। মান্দ্র শাহের রাজ্যকাল
একবংসর অতিক্রম করিতে না ক্রিতে উক্ত সিদ্দি বদর স্থলতানকে গোপনে বধ করিরা বন্ধসিংহাসন অধিকার করেন।

निक्ति वनत राज्यारम ১৪৯৫ चुडीरक वाकानात अधीयत श्रेता মুক্তংফর শাহ নাম গ্রহণ করিলেন। এরপ অভ্যাচারী ও यर्थफानात्री त्राका कथन ७ वन्निगरहाम् देशस्यनम् करत्रन नाहे। তিনি প্রথমে ভূর্কজাতীয় ওমরাহর্গণের নিধনসাধন করিয়া স্বীয় বিজ্ঞাতীর জালা নির্বাণিত করেন। তদনন্তর তিনি হিন্দুগামন্ত-রাজ ও জমিদারদিগকে নির্জিত, নিহত ও বিধবন্ত করিয়া তাঁহা-**(मत वशामर्काच मुक्रेन क**तिरामन। हेरारक ७ ठाँरात कमुबबय জীবনের বিজ্ঞাতীয় ভঞ্চার বিলয় হয় নাই। তিনি সকল প্রকার অত্যাচারেই স্বীয় প্রজাবর্গকে উত্তাক্ত করিয়াছিলেন। অবশেষে ভাঁহার প্রধানমন্ত্রী মন্ধাবাসী সৈয়দ হুসেন সরিফ মুসলমান ও [ু]হিন্দু সর্দাররন্দে মিশিত হইয়া ১৪৯৭-৮ খুষ্টান্দে রাজ্বধানীতে স্থল-ভানকে অবরোধ করেন। এই সময়ে প্রলভানের অধীনে ৫ হাজার হাবদী এবং ২৫ হাজার পাঠান ও বলীয় দেনা ছিল। ৪ মাস গোড়নগরে অবরুদ্ধ থাকিয়া স্থপতান মনে করিলেন যে. **এই ब्रह्मी वाहिमी गरेबा जिनि जनाबाटमरे विद्धाहिममदक** বিপর্যান্ত করিতে পারিবেন। এই আশার উৎকৃত্ব হইরা ভিনি ছর্গপ্রাকার পাতিক্রমপূর্বাক গৌড়নগর-সন্মুধস্থ স্থুরুছং ময়দানে যুদার্থ অবতীর্ণ হইলেন। যোরতর যুদ্ধের পর স্থলতান রণ্ডেত্রে প্রাণ বিসর্জন করিলেন (১৪৯৮ খঃ)। তাঁহার সঙ্গে গৌত-প্রাঙ্গণে ২৩ হাজার সেনা প্রাণ দিরাছিলেন। কথিত আছে. বিজ্ঞোহিদলের নেতৃষর্গ বন্দীভাবে স্থলতান মুদ্ধঃফর শাহের সন্মধে षानी ७ रहेरन जिन बहर्र जाहारमत्र मित्रस्थम क्तिराज्य । নিজাম উদ্দীন বলেন,মন্ত্রিপ্রধান সৈর্থ হুসেন পাইক্দিগের সহিত ৰড়বন্ধ করিয়া রাজিতে পঁয়াগুহে তাঁছাকে নিহত করেন।

বিগত সাইছিক খডাক কাবের মুদ্যমান ইতিহাস আলোচনা করিলে বেশ বুঝা যার যে, ধর্মারকাকরে হিন্দুগণ এক সমরে বেরপ নির্যাভন ভোগ করিরাছিলেন, অন্ত সমরে আবার তাঁহোরা সভ্যর মুদ্যমান নরপতিবর্গের করণার অধর্মপালনে সেইরপ্রই সামর্থাবান হইয়াছিলেন। ছংখের পর অধ্যাবর, অভ্যাচারের ও অনালরের পর সমালর বেমন হর্বজনক, মুদ্যমান রাজ্ঞ্জগণের এই বিজ্ঞাতীর বিহেবের পর হিন্দুসমালের প্রতি সক্রপ ক্রপাক্টাক্ষণাত সেইরপ ক্রমান্তরর হুইয়াছিল। ইহার উপর মুদ্যমান

সন্ধান্ধগণের পরশার বিষেষ ও বাঙ্গালার মদ্নদ-লাভের আকাজলা পরম্পারের আজীরতাকে শক্রতার পরিণত করিরাছিল। স্বলতান-গণের অপ্রক্তাই সেই বৈজাতা পরিণতির মুখ্য কারণ। পদ্ধা-অরে উপরোক্ত মুন্লমান সন্ধারগণ বা তদধীন সেনাফুল বুছবিছা-বিশারদ ও অর্থগ্যু ছিলেন। তাঁহারা নিরীহ ধর্মজীর বলমানীর অর্থ-লোবণ করিরা, অথবা কৌনলপুর্বক তাহাদের ভূমশাতি প্রভৃতি বাজেরাপ্ত করিয়া আগনাদের উদর পূর্ণ করিতেছিলেন; কিন্তু অর্থহানিনিবন্ধন উপস্থিত দরিক্রতা হিন্দুর অঞ্চ্যুন্থ ইইলেও জাতীর চিরন্তন গোরব বিভাত্বণ হিন্দুদিগকে পরিত্যাগ করে নাই; নববীপের তাৎকালিক বিভা-গোরব জগতে অবিদিত ছিল না। সেই বিভাবলে হিন্দুগণ মুললমান স্বল্ডানগণের পরামর্শনাতা বা মন্ত্রী হইতেন। সেই মেশামিশিতে হিন্দু ও সুললমান সমাজে অনেক সামরিক বিপ্লব সমুপন্থিত হইরাছিল।

প্রোয় খুষ্টীয় ত্রেরাদশ শতাব্দের পূর্বে মুসনমান আধিপত্য বিল্পত হইলেও সে সময় বস্ততঃ পক্ষে পূর্ববন্ধে হিন্দু সমা-জের উপর ব্রাহ্মণগণের অসাধারণ কর্দ্তম ছিল। পুর্কেই বলিয়াছি, রাটীয় কুলীন ব্রাহ্মণগণ বঙ্গের স্থবিস্কৃত শাক্ত সমাজের মন্ত্রপদে অধিষ্ঠিত হতয়াছিলেন, তাঁহাদের হতে সমাজের নেতত্ব ও ধর্মনৈতিক কর্তত্ব ছিল। স্নতরাং এরূপ ব্রাহ্মণকে হস্তগত করিতে পারিলে রাজ্যশাসনের অনেকটা স্থবিধা হইতে পারে, ভাহা মুসলমান রাজপুরুষগণ বিশক্ষণ ব্রিতেন, কিন্ত সাধারণতঃ পশ্চিমাগত মুসলমানগণ বালালীদিগকে যোর শক্র মনে করিতেন, হিন্দু মুসলমানের মধ্যে সম্ভাব ও প্রীতি স্থাপনের পক্ষে এ কারণে প্রথমতঃ যথেষ্ট অন্থবিধা ঘটিরাছিল। যতদিন मिल्लीचंद्रत्व अधीरन भूगनमान नरावशंश वन्नत्रारकात বিভিন্ন প্রদেশ শাসন করিতে ছিলেন, ততদিন হিন্দু ও মুসলমান মধ্যে পরস্পরে শ্রীতি ও সহামুভূতি জরিতে পারে নাই, কিন্ধ যথন বলের মুসলমান শাসনকর্তারা দিলীবরের প্রভাব অগ্রাছ করিয়া স্বাধীন হুইবার চেটা করিতে ছিলেন, তপন হুইডেই বন্ধ-বাসীর সাহাব্য আবশ্রক হইয়া পড়িরাছিল। ৭০৯ হিজিরা সনে (১৩৪৮ थुं होट्स) हिन्मू-मूजनमारनद मिनन हहेंग। धहे वर्रा कथत छेकीन मुलाकत मुतातक भाव नितीधतरक व्यास এवर পূর্কবেলের প্রধান প্রধান হিন্দু জমিদার-সাহাব্যে স্প্রবর্ণগ্রাম অধিকার করিরা স্বাধীনতা অবলম্বন করেন। তাহার অব্যবহিত পরেই লক্ষণাবতীতে শাম্স্ উদ্দীনের প্রাধান্ত, বহুসংখ্যক বাঙ্গালী-কর্ত্তক জলপথে কথন উদীন্তে আক্রমণপূর্বক স্থবর্ণগ্রাম অধিকার, শামস উদীন ইল্যাসকে শাসনোদেশে সম্রাট কিরোজ শাহের বলে আগমন প্রভৃতি ঘটনাপ্রসঙ্গে হিন্দু-মুসলনানের বেশাদিশির यत्यद्वे अजिठय शास्त्रा वात्र ।

म्यात्रक वाराप्तत्र जाञ्जूला चारीन इहेरनम, डाहानिशरक উপবৃক্ত খেলাত ও লাবগীর দিয়া লক্ষানিত করেন, কিছু এ সভাব স্বারী হর নাই। তিনি স্বলাতীর ওমরাহর্গণের পরারশে अब पिम भटतरे शिन् गांगखनर्गत्क अनुका कतिएक गांशित्मम । সেই কারণে অভ্যন্ন কাল মধ্যেই তাহার অধঃপাতের ত্ত্রপাত হইল। ভাঁহারই অভ্যাদরকালে পশ্চিম বলে শাম্প উলীন ইল্যান তাঁহারই নীতির অভুসরণ করিয়া হিন্দু জমিদারগণের সাহায্যে আপনার সৌভাগ্যপথ প্রাণয় করিবার অবসর খুঁ লিতে ছিলেন। মুবারকের হিন্দু বিধেবের পরিচয় পাইবা মাত্র ভিনি খনৰ বৰে ৰালাৰী নোদেনাগণের সাহায্যে মুবারককে আক্রমণ अ अवर्गशाम मधन कतिया नहेराना । उरशुरक्षहे निशीत मश्राहे ফিরোজ পাহ গিরাস্উন্দীন্কে গমন করিবার জন্ত সংস্তে রাচ্দেশে আগমন করেন। এ সমর পশ্চিম বলের ছিন্দ্-जिमितात्रवर्ग जात्मरूके फिरताज भारतत शक जावनसम करतम. ও দিকে পূর্ব্ব বঙ্গের অনেক সম্রাপ্ত হিন্দু জমিদারহর্গ ও পূর্ব্ব বঙ্গের বালালীবীরগণ ইলিয়াদের পক্ষ হইয়া সমাটের বিজদ্ধে রণক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইলেন। দিল্লীখরের সহিত যথন বঙ্গাধিপের খোরতর যুদ্ধ উপস্থিত হয়, তথন সহদেব নামে এক জন বালালী বীর বলাধিপের সেনাপতি হইছা ঘোরতর যুদ্ধ করিয়াছিলেন, তিনি এক লক্ষ্ণ ৮০ হাজার বাঙ্গালীর সহিত রণক্ষেত্রে জীবন वित्रर्व्धन करत्रन । वाकानी वीत्रशरगत्र खीवन भत्रिगाम प्रभंन कत्रिया শামক্লদীন দিলীখনের সহিত সন্ধি করিতে বাধ্য হন: পশ্চিম বল হইতে শাম্স্দীন্ যখন পূর্ব্ব বলে আসিলেন, সে সময় বছ জমিদার তাহার প্রতাধক হইয়াছিলেন, তিনিও কথ্য উদীন মুবারকের ভার তাঁহার পব্দীর হিন্দ্বীরগণকে উপাধিদানে সন্মানিত করিয়াছিলেন। রাটীয় ব্রাহ্মণদিগের প্রধান কুলগ্রন্থ ঞ্বানন্দের মহাবংশ হইতে জানিতে পারি, চট্টবংশাবভংশ কুলীনপ্রবর ভাকরপোত্র মহাধনী মনোহরের পুত্র প্ররোধন "বঙ্গভূষণ" উপাধি এবং মুবারকের পক্ষীর হিন্দু জমিলার-বর্গকে পরাস্ত করার পৃতিতৃগুৰংশীর প্রসিদ্ধ কুলীন চক্রপাণি "বাক্তম্বা" উপাধি লাভ করিয়াছিলেন, এইরূপ অস্ত জাতীর বীরগণও উপাধি পাইয়াছিলেন।

দিলীখন ফিরোজ শাহ বাঁহাদের নিকট সাহাব্য পাইরাছিলেন, তাঁহাদের মধ্যে সাগর্থীয়ার মহাধনী ও কবিক্ষণ
উপাধিধারী উদরন এবং তাঁহার ম্লারি, মাধব প্রকৃতি সপ্ত বীরপ্তের নাম উল্লেখযোগ্য। দিলীখন প্রত্যাগনন ফালে রাড়ীর
বীর্দিগকেও উপস্ক মর্যাদাদানে সমানিত করিয়াছিলেন,
তম্মধ্যে রাড়ীর কুলীনপ্রবর স্বদ্শনপুত্র বিকর্তন চক্ত শ্রাজা
উপাধি এবং মনোহর বদ্ধভূবণের পোত্র প্রীমা শ্রামা উপাধি

লাভ করিরাছিলেন, এতেন্তির আরও অনেকে সন্থানিত হইরাছিলেন। রাটীর অপেক্ষা বারেক্রাদিপের সহিতই অবিক পরিনাপে মৃস্সমান রাজসংশ্রব ঘটিরাছিল; তাঁহারা সৌড়াধিশের
আতি নিকটেই বাস করিতেন; মুস্সমান রাজসভার তাঁহাদের
সর্বানাই গতিবিধি ছিল, এ কারণ তাঁহাদের মধ্যে অনেকেই
মুস্সমান রাজাদিগের নিকট উচ্চ পদ লাভ করিরাছিলেন, তক্ষ্মন্ত
রাটীশ্রেণী অপেক্ষার বারেক্রশ্রেণী ধেণী বিবরী হইরা পড়িরাছিলেন
এবং মৃস্সমান রাজসরকারে তাঁহাদের প্রভাব অভ্যন্ত বৃদ্ধি
পাইরাছিল, তাহারই ফলে খুসীর ১৪ল শভাবীর শেব ভাগে
ভাতৃড়িরার হিন্দু অমিদার রাজা গণেশ মুস্সমান অবিপতির
সর্বান্নর কর্তা হইরা পড়িরাছিলেন। এই গণেশই বারেক্রশ্রী
নরসিংহ নাড়িরালের পরামর্শে মুস্সমান নৃপতিকে বিনাশ
করিরা সম্বত্ত গৌড়ের অধীবর হইরাছিলেন, তিনি হিন্দুধর্ম ও
ছিলুরাঞ্য বিভার করিবার জঞ্জ ব্যানিক্রম হইলেও তাঁহার

চাল চলন ও আদৰ কারদার বথেষ্ঠ মুসলমানী প্রভাব সংক্রমিত

হইরাছিল। তিনি এক জন প্রকৃত হিন্দু হইলেও ভাঁহার

রাজস্কালে যে সকল মুক্তা প্রচলিত হয়, ভাহাতে "বরাজিদ

শাহ" এই মুদলমানী নাম আছিত দেখা বার। তিনিও যে

মুসলমান নুপতিগণের অভুকরণে বাদশাহী নাম গ্রহণ করিয়া

ছিলেন, তাহা তাঁহার প্রচলিত মুদ্রা হইতেই প্রমাণিত

হইতেছে।

রাদীর ব্রাহ্মণপ্রবর 'দমরকোবের স্থপ্রসিদ্ধ চীকাকার বৃহ-শ্পতি গণেশবংশীর মৃসলমান অধিপতির নিকট "রারমুকুট" উপাধি এবং তাঁহার প্রিরপুত্র কবীক্স শ্রীরাম "বিশ্বাদ" উপাধি লাভ করেন।

যাহা হউক, এই সমন ও পরবর্তীকালের ইতিহাস আলোচনা করিলেও বেশ বুবা বার বৈ, হিন্দু ও মুসলমান ক্রমেই ঘনিষ্ঠতা হত্রে আবদ্ধ হইডেছিল, মুসলমান নরপতিগণ হিন্দুর প্রতি অভক্তি বা অবহেলা প্রদর্শন করিছেন না। তাহারা হিন্দু সমাজকে আয়ন্তাবীনে আনিবার কন্ত সমাজকেতা বালগগগকে হত্তগত করিতে সচেই ছিলেন। তাহারা বালালার স্থারিপ্রভাব বিভারোকেলেই মাল, গণা ও বিচক্ষণ বালালীদিগকে রাশ্রকীর উচ্চপ্রে নিরোগ করিছেন। রালস্ক্রের ক্রমণ্টে বিবম হইতে বিবমর হইরা দীড়াইল। মুসলমান বরবারে নিরন্তর গতিবিধি নিক্রম ব্রাক্রপেরাও মুসলমানী আদব্দারলা, চাল্চলন বা রীতি-নীতি জন্তান করিছে বাধ্য হইলেন। ক্রমে এই সংক্রোমক ব্যাধিতে অনেক নির্ভাবন রাশ্রক্ষণভানও আক্রান্ত হরাছিলেন।

हिन्-यूननमात्मवः धरे स्थानिनित्र क्टन बांका भरान कर्ड्क

বৌড়েশবের বিদাশ সাধিত হুইরাছিল। ও উজ্জ বলের বিশেব ঘমিউতা অবুজনই রাজা গলেশের প্র মুসলমানের উদ্ভিত্ত ভাব ল গ্রহণে ও নিভান্ত নম্রেবলাকে পড়িরা ইস্লামধর্মে নীন্দিত হুইডে বার্য হন। গলেশকশেষদ্রগণ ইস্লামধর্মে নীন্দিত হুইজে বির্যাশনাক তৎসালে জাতীর শক্তি হারার মাই। গলেশবংগের গৌরবর্মবি অস্তমিত হুইলে ১০০০ হুইজে ১৪৭০ খৃষ্টান্ধ পর্যন্ত বালালার মসনদে উচ্চবংশীর মুসলমানগণের আবিপ্রতা বিশ্বত হয় এবং বালালার বিধনীয় জত্যাচার-লোতঃ উত্তরোক্তর বৃদ্ধি হুইডে থাকে।

এই অত্যাচারের দিনেও নসির শাহ, বার্কক শাহ, কুছফ শাহ, সেককর শাহ ও কতেশার সামধের করজন ধর্মনিঠ তুলতান শান্তিময় শাসন-পদ্ধতিয় ব্যবস্থা করেল। বার্ককশাহ রাজাশাসনের প্রবিধার্থ হাবদী ও খোজাদিগতে সেনাবিভাগে এবং যোগাভামুদায়ে অক্সান্ত রাজকর্মে নিরোগ করিয়া যে বিষমন বীজ ৰূপন ক্রিয়া যান, ভাহাই অভুরিত হইয়া কালে **ছিকুসমাজের সর্ক্ষনাশ সাধন করে। মুসলমান রাজপুরু**বগণ গ্রাহ্মণদিগকে মুসলমান করিবার অভিপ্রায়ে অভি জ্বয়ন্তরণে নির্ঘাতন **আরম্ভ করেন। উপর্য**ুপরি অভ্যাচারে অনেক হিন্দু वर्ष मूजनमानालांबनरब्रिहे हत्र । बहमरश्रक ब्रान्तन कुन, काणि ও मारनत खरत रक्तन हासिया खित्रपटन ननाहेता याम । चारनरक মানসম্ভ্ৰমকল করিছে লা পারিয়া মুসলমানফোতে জাতিকুল বিসর্জন বিরাছিলেন। এই পাঠান-শাসনকালে হিন্দুসমাজের বিশেষতঃ ব্রাহ্মণ কুলীনসমাজেরও তৎকালে মথেই বিশৃত্বলা সমুৎ-পাদিত এবং ভাষা হইডেই এদেশে খনেক সামাজিক পরিবর্তন প্ৰবৰ্ত্তিত হইবাছিল।

১৪৭৪ খুটাকে বার্কক শাহের মৃত্যুর পর, তৎপুত্র বৃত্তক্ শাহ গৌড়-সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হন! উহার ভারপরতা ও বরাবান্দিণাগুণে হিল্পু-প্রকা শান্তির মুধ বেথিতে পাইল। ১৪০২ শকে অর্থাৎ ১৪৮০ খুটাকে দেবীবর ঘটক, রাটীর কুশীন আন্ধ্রণসমাজের সংকার সাধন করিরা মেলনিরন প্রচারিত করিলেন।

এই ঘটনার কিয়ুকাল পূর্বে বারেক্স কুলশান্তবিশারণ উন্নরনা-চার্ব্য ভাছকী বারেক্স কুলীননমান্তকে আটটা পাটতে বিভক্ত করেন ৷ অদিকে পক্ষিণ-বঙ্গে কেবীবরেদ্ধ পদকালবর্তী পুরুষদ্ধ বহু বক্ষিণরাদীর কারস্থানে পুরু পৌঞানি ক্রমে সমান বার্যারে

[&]quot;शहात बानां पंजा विश्वानः श्रामा । जीवक शहनार गांति जीवक वर्षेण श्रामा है" (पटेकक बानां हें

विवाद निवाप कुनविदि थागानिक कतिपाहित्नम । धार नमात ठळा-দীপেও রাজা পরমানন রার বছল কারস্থদিগের সামাজিক কুলাচার সম্বাদ্ধ কতকগুলি নিয়ম অবধারণ করিয়া বান। ইহারই কিছু পরে নবৰীপধামে প্ৰেম ও শান্তির পূর্ণ মূর্তি জ্রীচৈভক্ত মহাপ্রাকৃ আদি-ভূতি হইরা বৈক্ষবধর্ম প্রচার করেন। হিন্দুসমাজ তথন হরিনামের প্রভাবে মাডোয়ারা হইয়া নগরে নগরে ছরিমাম কীর্ত্তন করিয়া শান্তি ও প্রেমের পীব্রধারা চালিরা দিরাছিল। বুক্লক শাহের পূর্ববর্ত্তী অলতানগণের অধিকারকালে রাজকর্মচারিগণের অত্যাচার এবং তৎসাময়িক শাস্তিভাব স্বয়ানন্দের চৈতভ্যস্ত্র বিবৃত আছে।

তৎপূর্ব্বে হাবদীবংশীয় শেষ স্থলতান মুক্তাদার শাহের শাসন-কালে মুসলমানের অভ্যাচার চরমসীমার উঠিরাছিল। গভবতঃ এই অমাছবিক অত্যাচারের প্রারম্ভ দর্শন করিরাই নবনীপের भनीविमक्षनी नवदील इंफ्डियां नानां चारन लगावन करवन। প্রধান নৈরারিক বাস্থদেব সার্বভৌম এই সমরে সপরিবারে উৎকল যাত্রা করেন।

বলিতে কি. খুটার ১৫শ শতাব্দের শেষভাগে বিভাচর্চা ও গলাবাস উপলক্ষে নানা গোত্ৰীয় বৈদিক ব্ৰাহ্মণ আসিয়া নৰ্বীপে বাদ করিতে থাকেন। খ্রীচৈতন্ত মহাপ্রভর পিতা জগরাধ মিশ্রও দেই সময়ে শ্রীহট্ট হইতে নবছীপে আসিয়া নীলাম্বর मिट्यंत क्छा मही एम्बीटक विवाह कतिया सववीशवारी हत ।

জ্ৰীচৈতক্সদেব নবৰীপধামে বিষ্ণা, বৃদ্ধি ও ক্লানের প্রাথবা দেখাইয়া ভারতবাসীকে মোহিত করেন। ভজের নিকট তিনি व्यत्नोकिक मक्तिव्यञ्च महाभूक्यकारभ व्यक्षे हहेबाहित्नन। প্রীধর, গলাধর ও ঈশ্বরপুরী এবং শ্রীপাদ ক্ষরৈতাচার্ব্য প্রভূ তাঁহার ধর্মকেত্রের সহার ছিলেন। ঈশ্বরপ্রীর ভক্তিমাধা মুধধানি দেখিলে মহাপ্রক পাগলের স্থায় ব্যাকুল হইরা পড়িতেন।

এ হেন মহাপ্রভুর সহপাঠীরূপে নবৰীপধানে আবিভূতি হইয়া ও সেইরূপ জ্ঞানবভার পরিচর দিরা রবুনাধ শিরোমণি ভারশারে আছিতীর প্রতিভা বিকাশ করিরা গিরাছেন। এই সমরেই শ্বতি-নিবদ্ধকার স্বার্তপ্রবয় স্বয়নক্ষন আবিভূতি হইরাছিলেন। এই नमत्त्र नवदीनवादम कप्रनाकात छहाठावा, कानीमाथ विद्यानिवान, ও ভংগত্ৰ বিশ্বনাথ ভৰ্জগঞ্চানন প্ৰভৃতি অসাধারণ ধীশক্তিসম্পান

> "অতঃপত্ৰ দৰবীংশ ক্টল ছাত্ৰতন। স্ত্ৰাহ্মণ ধরিয়া হালা জাতি প্রাণ লয়। বিশারক্তত সার্বভোষ ভটাচার।। बंबारन डेरकाम स्थलां शक्ति निक शक्ता ह ভার আভা বিব্যাবার লাভি গৌড়বারী। विभावर विवास क्षिम बांधांन्सी I" (बंधांनवकुठ के वर)

পণ্ডিতৰঙলী জন্মগ্ৰহণ করিয়া বাজালার মুখোজ্ঞাল করিয়া অথের বিবর—মুসলমানের কঠোর শাস্দ 🗷 শত্যাচার মহাত্রভুর ত্রেমগ্রবাহে ভালিরা গিরাছিল।

িনবৰীশ ও চৈডভচজ দেখ।]

জীতৈতভ মহাএড়ে ১৫০৯ খুটালে কেশৰ ভারতীর নিকট সত্রদীকা ও জীরক-চৈত্ত নামগ্রহণপূর্বক গৃহস্থাপ্রম ত্যাগ করিয়া धाउषाां इक करनवन करतन। धनिन अछ देवस्ववर्त्तत शून-ক্কীপন ও ক্নদ্রালে ভাহার প্রচার, তাহার জীবনের মূল লক্ষ্য ছিল। তীহার পার্বন ও ভক্ত পতিতমগুলীর মধ্যে অনেকেই ত্বৰ ছিলেন। ভাঁহারা মহাপ্রভার দীলা-বর্ণমপ্রসঙ্গে আনেক তৰকথার পরিচর দিয়া দিয়াছেন। প্রভন্নাং স্বীকার করিতে रहेटलट्ड त्व, चारीम नाठाम मजनिक्शालक ब्राज्यकारन वाकामाव সাহিত্য, বর্ণন ও ধর্মনাল্লের বথেষ্ট উন্নতি নাথিত হইরাছিল। হিন্দুগণ ধার্ম্মিক এবর স্থলতান আলাউনীন ইনেন শাহের রাজ্যকালে প্রথে বচ্চলে বাস করিয়া নিশ্চিত মনে প্রমার্থ চিত্তা ক্রিবার অবসর পাইয়া ছিলেন। তৎপূর্বে ভ্রাঞ্গবংশে মুপ্রসিদ্ধ কবি বিস্থাপতি, চণ্ডীদাস ও ক্রন্তিবাস এবং কায়ত্ত-ৰংশে গুণরাম্ব খান প্রাহ্মুত হন। উক্ত ক্বিগণ ৰাতীত অপর সকল পদকর্তাই এটিডেন্স মহাপ্রভুর সমসাম্য্রিক, অথবা তাঁহার পরবর্ত্তী। পদকরতর রসমন্ত্রী, গীতচিন্তামণি, পদকরনতিকা প্রভৃতি সংগ্রহ পুত্তকে বে স্কল পদকর্ত্তা-দিগের নাম পাওয়া যায়, তন্মধ্যে মুসলমানভক্ত অকবর चानी, कमतानी, नानित, माक्ष्म, ककित, हरीय, क'छन्, नान বেগ, শেখ জালাল, শেখ ভিক্, শেখ লাল ও সৈয়দ মূর্তাজার নাম উল্লেখযোগ্য। এতত্তির জ্ঞানদাস, গোবিদ্দ লাস, বলরাম नान, कुकनान कवित्राम अवर त्रामी, त्रनमग्री, मांधवी नागी व्यक्ति নামরিক বছ পুরুষ ও জীকবিগণ ভৎকালে প্রাচ্ছুতি হইয়া বালালা সাহিত্যের শ্রীসম্পাদন করিয়া গিয়াছেন।

িবালালা ভাষা শব্দে বিস্তৃত বিবরণ প্রষ্টব্য।] এককথায় বলিতে কি, খুটার ১৫শ শভাব্যের মধ্য হটতে ১৬শ পতাবের প্রারম্ভকাল পর্যান্ত মুসলমাম-শাসনে বাজালার কি ধর্ম, কি নাহিতা, কি রাজনীতি, কি সমাজনীতি तकन विराहरे अकी कालोकिक गतिवर्तन गांधिक हरेबाहिन। क्रियनाठाया, द्वतीयम, शूनकत वर्ष ७ श्रमानक ग्राप्त नमाव्यविधि मश्यात करतन । ১৫+» श्रेटिक ३६०० बृहीस्य चावर्गान काम পৰ্যাত শ্ৰীচৈতত দেব মুসলমান অত্যাচারে বিশীনগ্রার বিশুখর্শের পুনঃপ্রতিষ্ঠার বভ ভক্তিপ্রধান বৈক্ববর্গের পুনর্বান ও অবুদ্ধি সাধন করেন। জীমৎ অবৈভাচার্য্য ও নিজ্ঞানম প্রভ मराध्यक्त गररवाशिकरभ टेक्कवनमारण विटबंद नवासकासन হন। শ্রীরূপ ও সনাতন বৈশ্ববাচার্য্যগণের অগ্রণী ছিলেন।
এতদ্যতীত বেশ্বটভটের পুত্র গোপালভট্ট, মাধবমিশ্রের পুত্র
গদাধর (১৪৮৬—১৫১৪ খৃঃ), সপ্তগ্রামবাসী কোটাপতি গোবর্দ্ধন
দাসের পুত্র রঘুনাথ দাস (১৪৯৮ খৃঃ জন্ম), এবং শিবানন্দ সেনের পুত্র কবিকর্ণপুর প্রভৃতি বৈশ্ববাচার্য্যগণ মহাপ্রভৃত্র
পার্যনির বলিয়া খ্যাতিলাভ করেন।

যে সকল বৈঞ্চবভক্ত পঞ্জিতমগুলীর উল্লোগে বালালা ও সংশ্বত সাহিত্যের উরতি সংবটিত হইরাছিল, তন্মধ্যে রূপ, সনাজন, জীবগোস্থামী, গোপাল ভট্ট, স্মার্ক্ত রঘুনন্দন ও রঘুনাথ শিরোমণি প্রভৃতি মহাজনগণের নাম প্রথম উল্লেখযোগ্য। চিস্তাম্মণি-লীধিতিপ্রণেতা রঘুনাথ শিরোমণি অসাধারণ বিচারশক্তির পরিচর দিয়া নবনীপে স্থারশান্তের প্রাধান্ত স্থাপন করেন। স্মার্ক্ত রঘুনন্দনের জারীবংশতিতবের ব্যবদ্বাস্থারে আজিও বালালার ধর্ম্মকর্ম্ম চলিতেছে। এই সমরে বারাণসীধানে বারেক্তবংশীর পণ্ডিতপ্রবন্ধ ক্রমুক্তট্ট মন্থসংহিতার টাকা প্রণরন করিয়া পণ্ডিতপ্রবন্ধ স্থাতিশান্তের সমাধ্যর বর্দ্ধিত করিরাছিলেন। ক্রপণোত্মামিকত ভক্তিরসামৃতদিন্ধ, দানকেলিকোম্নী প্রভৃতি গ্রন্থ এবং সনাত্ম-বিরচিত হরিভক্তিবিলাসটাকা ও বৈক্তব্রোদিশী নামী ভাগবতটীকা ভক্তিরসের ও সংস্কৃতসাহিত্যের চূড়ান্ত নিদর্শন।

রগুনন্দন ও কুল ক যে সমরে শ্বতিবাবস্থার প্রতিষ্ঠা এবং রূপসনাতন ও অপরাপর বৈষ্ণব কবিগণ বৈষ্ণবধর্মের প্রোধাক্তর্থাপন ও প্রচারকামনায় বন্ধপরিকর হইয়াছিলেন, ভাহার কিছু পরে ক্লফানন্দ আগমবাগীশ সমগ্র তজ্ঞের সার সক্ষণন করিয়া শক্তিপুশার স্ব্যবহা করিলেন।

[বিভ্ত বিবরণ বালালাভাষা শব্দে এইবা।]
এই সামাজিক ও রাজনৈতিক বিপ্লবের সময় ধর্মপ্রতিদ্ধা ও
আতিগত পার্থকানিবন্ধন বন্ধভূমে নিয়ভই সামাজিক বাদাপ্রবাদ
লইবা বিশেব গোলবোগ উপস্থিত হইত। মুসলমান নরপতি
বা সর্দ্ধারগণের অন্ধগৃহীত ব্যক্তিই তৎকালে সমাজবাফ বলিয়া
নিশ্দিত হইতেন। এই সামাজিক আন্দোলন সময় সয়য়
রাক্যের মহা অপাত্তিকর হইত বলিয়াই মুসলমান স্থলতানগণ
আতিবিচারের কল্প একটা স্বতন্ত্র 'লাতিমালা-কাছারী' নির্দিন্ত
করিরা রাখেন। কুলগ্রহে লিখিত আছে, দেবীবরের অভাদরের
পূর্বের লক্তথাস উপাধিধারী এক ব্যক্তি মুসলমানরাজের মন্ত্রী
ছিলেন। তিনিই ঐ লাতিমালা কাছারির প্রধান বিচারপতি
হন। তিনিই ঐ লাতিমালা কাছারির প্রধান বিচারপতি

হইরাছিল। বালালার বিভিন্ন জাতির সামাজিক ইতিহাসে (কুলগ্রন্থে) ইহার বিস্কৃত পরিচর আছে।

এই স্থাতিবিপ্রাটের দিনে সকলেই দেশ, কাল ও পাত্র বিবেচনা করিয়া সমাজসংগঠনে বন্ধপরিকর হইয়াছিলেন। ঘটক দেবীবর নানা দোবের একত্র সমাবেশ দেখিরা ও রাটার কুলীন-সমাজে পরস্পারের বিবাহজনিত সংস্রব লক্ষ্য করিরা তাঁহাদের মধ্যে এক একটা 'মেল' নির্দেশ করেন। তিনি স্বরং ঐ সমরে 'দোব-নির্দয়' ও 'মেলবিধি' নামে ছইখানি কুল্প্ডছ রচনা করিয়া-ছিলেন। তৎপরে ১৪০৭ শকে প্রবানন্দমিশ্র কর্তৃক মহাবংশাবলী রচিত হর। এতত্তির এই সময়ে আরও কতকগুলি কারিকা প্রকাশিত হইয়াছিল।

খুষ্টীর ১৫শ শতানীর এই সংস্কারযুগে, মুসলমান-রাজত্বের যেরপ রাজনৈতিক পরিবর্ত্তন সংসাধিত হইরাছিল, তাহা আলাউন্দীন্ ভূসেন শাহের রাজত্বকালের ইতিবৃত্ত পাঠ করিলে স্পাষ্টই বুঝা যার।

আলাউদীন্ হসেন শাহ স্বীর প্রতিপালক ও প্রভূ হাবসী-বংশীর রাজা মুজঃফর শাহকে নিহত করিয়া বলসিংহাসন অধিকার করেন। রাজসিংহাসনে সমাসীন হইয়া সৈয়দ হসেন আলা উদীন্ সেরিফ মকা নাম ধারণ করেন। রিয়াজ-উস-সলাতিন্-প্রণেতা বলেন, 'গৌড়ের ভস্তথোদিত লিপিতে তাঁহার হসেন শাহ নাম বিশ্বমান আছে। অনুমান হয়, তাঁহার পিতা বা তহংশীর কোন পূর্বপুরুষ মকার সেরিফ ছিলেন। সম্ভবতঃ সেই বংশগরিমা প্রগ্ করিয়া তিনি ঐ নাম প্রকাশ করিয়া থাকিবেন।'

তিনি পূর্ববর্তী অ্লাতানগণের জ্ঞার হীন-জাতীয় ছিলেন না। ইস্লামধর্মপ্রবর্ত্তক হল্পরৎ মহম্মদের বংশে তাঁহার জন্ম। আরবের মন্ত্রন্মি তাাগ করিয়া তিনি সৌভাগ্যান্ত্রেশে বালালার উপনীত হল। গৌড়পতি তাঁহার আভিজ্ঞাত্যের পরিচয় পাইয়া তাঁহাকে রাজকার্য্যে নিয়ক্ত করেন। তাঁহার কার্য্যক্ষতার ও বিনয়-নম্ম ব্যবহারে সন্তই ইইয়া অ্লাতান তাঁহাকে রাজ্ঞার শ্রেষ্ঠতম উলীরপদ দান করেন। মন্ত্রিপদে অবহানকালে তিনি সকল শ্রেণীর ওমরাহ ও সামন্ত্রদিগের প্রতি বেয়প সদম্ম ব্যবহার করিতেন এবং সকল কার্য্যে বেয়প দক্ষতা দেখাইতেন, তাহাতে সকলেই তাঁহার প্রতি প্রীত ও বিমুগ্ধ ইইয়াছিল। অদৃইচক্রেপাশবপ্রকৃতি মুলঃক্রেয় অসহনীর অভ্যাচার তিনি দির পাভিল্না অহন করিতে বাধ্য হন, অবশেবে বিশেষ সহটে পড়িয়াই ভিনি রাজবিজ্ঞাই। হন। সৌভাগ্যাবলে পরিচালিত ইইয়া অভংগর তিনি বালালার রাজবিংহারনে উপবিষ্ট হইতে সমর্থ হইয়া-

নৃগলমান ছালব্দের অবসালে এবং ইংরালাধিকারের এরেকে কালিন কালাবের ভঞ্জির 'কৃক্কান্ত নদ্দী' লাভিদালা কাছারির স্বক্ত ইইরাহিলের :

नत्मत लाफीत देखिनांत >म ७ २६ छात्म में नव्म आख्य विवाद सदेता ।

ছিলেন। সকল শ্রেণীর মুসলমান-সামন্ত এবং হিল্বাজগণ তাঁহাকেই রাজসিংহাসনের উপযুক্ত পাত্র বিবেচনা করির। রাজপদে অভিবিক্ত করেন। তিনিও পক্ষান্তরে তাঁহাকের মনোরঞ্জনার্থ নির্দিষ্ট সময় মত পৌড়রাজধানী পৃষ্ঠনের আদেশ দেন। ঐ সমরে গৌড়নগরের অনেক ধনশালী হিল্-প্রজা সর্ব্যাক হইরাছিলেন।

পূর্ব্বোক্ত নগর-সূর্ঠন-বাপোর উপর্গেরি কর্মিন অবাধে চলিতে লাগিল। অলতান ইস্লাম-ধর্মের পক্ষপাতী হইরা হিল্পর এই সর্ব্বনাশ দেখিয়াও দেখিলেন না। কিন্তু অচিরেই দীনহীন প্রজার আর্জনাদে তাঁহার ধর্মপ্রাণ বিগলিত হইরা উঠিল, তিনি হিল্পর প্রতি চিরন্তন বিবেব ভূলিরা সূর্ঠন বন্ধ করিতে আবেশ দিলেন। সূত্র সর্দারহৃত্ম ও সৈনিকসম্প্রদার এবং অক্তান্ত মৃস্লমানগণ লোভের বশবর্তী হইরা তথন রাজাদেশ লজ্মন করিল। তাহাদের পরস্বাপহরণপ্রস্তার নিবৃত্তি হইল না। রাজ্য ক্রমশঃই অরাজক ও দক্ষ্য-প্রধান হইরা দাঁড়াইল। তথন উপারান্তর না দেখিয়া স্থলতান সৈরদ আলাউদীন্ হসেন শাহ অত্যাচারী মুস্লমানদিগের নির্ত্তেদের আদেশ দিলেন। দেখিতে দেখিতে ছাদশ সহল মুস্লমান নিহত হইল এবং রাজাক্তার তাহাদের সংগৃহীত অর্থরাশি রাজকোবে সমান্তত হইল।

অভঃপর বধন আলাউদীন্ দেখিলেন বে, হাবসী সৈপ্ত ও দেশীর পাইকগণই দেশে বাবতীয় রাজকীয় গোলবোগের একমাত্র কারণ; তথন তিনি তাহার প্রতিবিধানের উত্তোগী হইলেন; ততুদ্দেশ্য সাধনার্থ তিনি হাবসিদিগকে কর্মচ্যুত করিলেন এবং পাইকদিগকে বাঙ্গালার পশ্চিম দক্ষিণ সীমার অর নিক্র ভূমি দিরা বিপক্ষের আক্রমণ হইতে দেশরক্ষা কার্য্যে নিয়োজিত করিলেন।*

স্নালাউদ্দীন্ স্বেচ্ছা প্রণোদিত হইরাই হাবসী নির্বাসনরপ এই দেশহিতকর কার্য্য সম্পাদন করিরাছিলেন। হাবসী ও খোলাদিগের অন্ত্যাচার হইতে হিন্দু প্রকাদিগকে রক্ষা করার তিনি সাধারণের পূজনীর হইরা পড়েন। অন্ত্যাচারক্লিই হিন্দু-গণের মনিন মুখ সম্পর্কন করিয়া তাঁহার হৃদয়ে অপূর্ব্ব দরার উল্লেক হয়, ভদবিধি তিনি অপত্যনির্বিশেষে ও বিশেষ স্তার-পরতার সহিত বলরাজ্য শাসন করেন। তিনি হিন্দু-মুসলমানে বিশেষ প্রভেদ রাখিতেন না।

এই সময়ে ডিনি একডালা তুর্নের সংস্কার করিয়া তথায় রাজ-

 পরবর্তী সবরে ইংরাজ প্ররেকি রাজকার্য্যে অনুগলোগিতা নিরীক্ষণ করিয়া ইয়াদের জুনিসভ হইতে ব্যক্তি করেন। সেই কারণে ১৭১০ হইতে ১৮০০ ষ্ট্রাক্ষের নব্যে নেদিনীপুর জেলার আন্তরাসী পাইকবংশররগণ কএকবার ক্রিরেক্ছের প্রকাশ করিয়াছিল। আবাদ মনোনীত করেন এবং তথা হইতে রাজ্যশান্স সম্ব্রীর বাবতীর ব্যবহা আজা করিতেন। উক্ত ক্ষেত্র ও সন্ত্রান্ত সৈরদ, নোগণ ও পাঠানদিগকে তিনি রাজকর্মে নিবৃক্ত করিরা আপনায় রাজ্যভিত্তি স্থান্ত করিরাছিলেন। তিনি সন্ত্রান্ত বংশোত্তব হিন্দুদিগকেও বথেই উৎসাহ দিরা তাহাদিগকে রাজান্ত্রহ লান করিতেন। নানা শান্তবিশার্র ও বৈশ্ববৃদ্ধান্ত শ্রীরপ ও স্নাত্তন
তাহার মন্ত্রী হইরাছিলেন।

উড়িয়ার সামন্ত-রাজগণকে বনীভূত করিরা এবং বীর রাজ্য শাসনের স্থবন্দোবত করিয়া স্থালতান হত্যেন শাহ আসাম আক্রমণ ও সূর্কন করেন, কিন্তু তথার বিশেব কিছু করিয়া উঠিতে পারেন নাই। অতঃপর তিনি কামতাপুরে (কোচবিহারের) রাজা নীলাবরকে পরাজিত ও বলী করিয়া তাহার রাজধানী ধবংস করেন (১৯৯৮ খুটাকে)। তৎপরে সেই অধিকৃত প্রারেশে হত্যেন্ আপন পুত্রকে রাখিরা আসিরাছিলেন, কিন্তু কোচবিগের আক্রমণে বছ বলক্ষরের পর তিনি কোচদেশ পরিস্কাণ করিতে বাধ্য হন। তদবধি এই স্থানে বর্ত্তমান কোচবেহার-রাজবংশের পুর্বাপুরবিশিবের রাজ্য সংস্থাপিত হয়।

কামরণ-বিকরে বার্থমনোরখ হইরা অলতান হলেন শাহ রাজধানীকে প্রত্যাবৃদ্ধ হন। তথার অবস্থানকালে তিনি খীর রাজ্যতিত্বি সুকুকরণমাননে গণ্ডকনদীতীর দীমান্তদেশে একটা স্থবিস্থত চুর্থ নির্দ্ধাণ করান। অনস্তর রাজ্যের প্রজাবৃদ্ধি কামনায় তিনি প্রত্যেক জেলার সাধারণের উপাসনার্থ মসজিল, সুশাফির থানা, দাতব্য চিকিৎসালর প্রভৃতি স্থাপন করেন। তিনি জ্ঞানী ও সাধুপুরুষদিগের ভরণপোষণার্থ মাসিক বৃদ্ধি নির্দ্দেশ করিয়া বান। আজিও পাণ্ড্রার কুডব্ উদ্ আগনের আতানার ব্যরাদি তাহারই প্রদেশ্ভ ভূমির আর হইতে নির্দাহিত হইতেতে ।

স্থাতান হসেন শাহ বেহারের কিরলংশ হত্তগত করিয়াছিলেন। দিলীখর সেকলর লোদি জৌনপুর অধিকার করিলে
তিনি রাজাচ্যত স্থাতানকে বথেষ্ট সামান প্রদর্শন করেন এবং
মাসিক বৃত্তি দান করিয়া তাঁহাকে আত্রর দিরাছিলেন। এ
নিমিত্ত স্থাট ্রেহার অধিকার করিয়াই স্থাণতানকে বাজালা
আক্রমণের কর দেখাইলেন। বাজালার সীমার আসিতে
আসিতেই কার্যাগতিকে উত্তর পকে সবি হইরা গেল; এতজ্বারা
বিজিত বেহার প্রদেশ দিলীখরের থাকিল এবং বাজালা আক্রমণ
নিবারিত হইল। উত্তর পকে বন্ধত স্থাপিত হইবার কিছুদিন পরে,
১৪২০ বা ১৫২১ জলে হসেন দাহ মানবলীলা সংবর্গ করেন।
ভিনি বেমন প্রজাদিগের প্রির, তেমনই অপর লোকের প্রভালনা
ছিলেন। ক্রাহার সমরে প্রমন্ত্রণ কলীর ক্রিনিগের প্রতিলারক
সমান্র ক্রিতেন, এখন কি অনেকে ক্রিরিগের প্রতিলারক
সমান্র ক্রিতেন, এখন কি অনেকে ক্রিরিগের প্রতিলারক

হিলেন। প্রাচীন প্রছাদির কবি-তণিতার ঐ সক্ষ ওমরাহবর্গের বদাঞ্জার পরিচর পাওরা বার।

িবালালা ভাষাৰৰে ভাষার বিশ্বত বিষয়ণ এইবা 🕽

ল্পনতান হলেন শাহেল বড়ার পর ১৫২১ খুটাবে ভবীন জেট পুত্র নগরৎ শাহ বাঙ্গালার রাজনিংহাসনে আরোহণ করেন। প্রথমে তিনি অনেক সদশ্ভবের শরিচর বিরাছিলেন। তিনি অভান্ত মুদলমান অনভানদিলের ভার প্রাক্তবর্গকে নিহত বা ভাহা-দের চক্ষ করেন নাই, বরং পিতৃত্ত বৃত্তি বিশুণ করিবা निया गर्थंडे लोक्ड लक्षेत्रेशिक्तमः। কুটবগণের অতি থেছ বেধাইতে তিনি জ**টি করেন** নাই: মোপলপতি বাৰৱেছ আগমন-সংবাদে নিরীবন্ধতে বিভ্রত বেখিয়া ও প্ৰযোগ ব্ৰিয়া ভিনি লেই অবদরে নিবিলা, ছাজিপুর, মুলের প্রভৃতি আগদার রাজ্যভাক্ত করিয়া নইদেন এক ভতৎভাবে বধাক্রমে আগন পুঞ্, আমাতা ও দেলগড়িছে শাননকর্ত্তা নিযুক্ত করিলেন। ঐ সমরে ভারতের অপর জাতে খোগল-जाञ्चाकामस्थानस्य यादत्र भार गोनिगरचत्र युद्ध ১७२७ वृद्धीरम টবাহিম লোমিকে পরাত্ত ও মিছত করিয়া তার বিলীয় অধীপর হইলেন। ইব্রাহিষের প্রাতা সাক্ষ গোদী গৌড়রাজধানীতে আসিরা আত্রর লাভ করিলেন। শত্রুর আত্ররপ্রান্তিতে কৃত্ হইলা বাবর পাত বালালা জাক্রমণের উভোগ জরিলে, সসরৎ পাত বহুমূল্য উপঢ়োক্ম দিল্লা চুইবার মোগলপতির প্রকোপ হইতে পরিত্রাণ পাইলেন।

অভঃপর ১৫২৯-৩০ খুটান্দে হ্লগতান ইত্রাহিন লোদির প্রাতা হার্ম্কুল লাহ প্ররায় আফগান স্কার্ত্তক্ষের সাহাব্যে স্বীয় গৈছক-রাজ্য উদ্ধারের চেটা পান। এই সংবাদে স্রাট্ বাবর স্বলে আগ্রা হইতে আসিরা প্রভাতীনবর্ত্তী হিলেরী নামক স্থানে উপসীভ হন। বৃদ্ধে মাজুদের পক্ষ পরান্ধিত হইরা শোণ নম অভিক্রম-পূর্বক পলায়ন করে। নসরৎ শাহ মোগলস্ত্রান্তের জ্যোব্যোগনো-দ্রন্ধি বৃদ্ধুস্কুতক সন্ধি করিয়া নিম্বৃত্তিগাত করিবেন।

ঐ সভিসতে সদসৎ মাজুদকে সাহায্য করিবেদ মা বলিরা বীফুড হইলেন এবং দরাইও আন বলেবরকে উজ্জেক্ করিবেন না এই অধীকার করিবা আঞা অভিসুবে আহান করিলেন। ১৫৩০-৩১ খুটাকে বাবর পাঁকের কুমুন হয়।

বাৰণ পাৰেণ্ড বৃশ্বাসংগলৈ আক্ষান সৰ্বাৰণ উৎস্ক হইলেন। করিলা পোহানীয় পূজ নাক্ৰ বেহাল পৰিকার করিলেন। বিলীবল ইত্রাইলেন আজা পান্ধ এই ক্লেনে কৌনপুলের বোগল-পাসনকর্তা কুনিক বর্গনিকে পালিত করিলা তৎপ্রাকেশে বীয় পাসনবিকারে ভারতি ক্রিকা ক্রিকা সসরৎ পাই পূর্বা আলীয়ত স্থিক্ত জিল্লেন ক্রিকা প্রাথক্তির ক্ষিকারকার্য্যে নাকু বের সহায়তা করিরাছিলেন (১৫৩২-৩ বুঃ)।
এই সময়ে বাবরপ্তা হুনাভুনকে হীদবল দেখিরা তিনি বিরীবরের
চিরশক গুর্জারপতি কুলভান বাহার্ত্তর বাহের সহিত বন্ধব থাপনে
ইন্দুক হইরা তাহার নিকটে বুত প্রেরণ করেন।

অভংগর কোন অভাবনীয় আর্থে তুলভান নসরভের চিত্ত-বৃত্তি শরিবর্তিত হইল। তিনি উত্তরোজন নিঠুনপ্রকৃতির শরিচর দিত্তে লাগিলেন। দত্তবত: উদীয়মান চৈতন্ত্র-সম্প্রদায়ের উপর অভ্যাচার প্রয়াসী বইয়াই ভাহার চিউবিকার সর্পরিত হইরাছিল। ভাঁহার রাজ্যকার্টে বৈক্ষবস্তালারকে বেরূপ সিগ্রহ সম্ভ করিছে হইবাছিল, তাহা তৎসামন্ত্ৰিক এছারিতে বিবৃত আছে। ওছ हिन् या देवसंद अवा विनेश नरह, छिनि चौत्र पूर्णनेशन अस्त्र, এমন কি, আন্ত্রীর অন্তর্জ ও উচ্চতন রাজকর্মচারীদিপের প্রতি কঠোর অভ্যাচার করিতে কুটিত হন নাই। নিষ্ঠরাচরণে ক্রমশঃই ভাঁহার প্রজাগণ ও কর্মচারিদকল অসভট হইতে লাগিল। পরিলেবে একজন খোজার হতে মগজিদ মধ্যে তিনি নিহত হইলেন (১৫৩৩ প্রান্ধ)। ঐ বংসরেই মহাপ্রভুর শীশাদেহের অবসান হর। সৌড়নগরে স্থপড়ান নসরৎ শাহ বে সকল অট্টালিকা নির্মাণ করান, তথ্যধ্যে সোণা মসন্তিদ ও কদম-রক্ষল অভাপি বিভামান আছে। সাহজাপুরের হউরৎ মধ্রমের সমাধিমন্দির তাঁহারই ব্যবে মির্দ্মিত হইরাছিল।

নসরতের মৃত্যুর পর, ওমরাহ্পণ ৯৪∙ হিজিরায় তৎপুত্র ফিরোজ শাহ্কে বালাপার মসনদে অধিষ্ঠিত করেন; কিছ এই বালক রাজার রাজাকাল তিন মাস অতিবাহিত হটতে না হইতে, স্থলতান আলাউদীনের অস্তত্ম পুত্র মাক্ষ্ লাহ গোপনে তাঁহার আগসংহার করিয়া রাজাসনে উপবিষ্ট হইলেন : প্রাতৃ-পুত্র নিহ্ননর্ম ক্যাচারে বিশু হওরার অনেকেই যাক্ষ্তের আচরণে বিলক্ত হইল। হাজীপুরের শাসনকর্তা মধ্চম আসম প্রকাশ্রে বিরোধী হইরা উট্টিলেম। ভিনি বেহারের ভাৎ-কালিক রাজসভািবক ইভিছাসপ্রসিদ্ধ শের খানের সভিত সংমিলিত হইয়। বলেবরের প্রতিবল্বিভান্তরণে প্রবৃত্ত হইলেন। करें मरवारत कुछ रहेता माख्य नार अविकास नेस इटमें प्रश्न-विश्वामार्थ केट्डांग कडिएक गाँतिरंगम । मुख्यस्त्र भागनकर्ता কুতৰ খান শেরকে শাকি বিনায় লয় কেরিত হইলেন ; ভূতান্য-करम नमीत रामाभक्ति तनरकरक व्यानिकर्मम कविराधन । श्रीक-रिक्ष करन क्याच्या प्रदेश भगातम कविन । बरक्षम वहें भगावरक পুৰামনা বইবা উক্ত ব্যক্তান্য কোলাগড়ির পুত্র ইত্রাহিণ বাঁকে चूनवाद गुवार्थ शक्क व्हेटक मारान किलन ।

াই সাব বেয়াল-মালকুমাৰ স্থান বীন প্ৰতিভাবক পেন-বাবেক কঠোৰ প্ৰজানাত ক্ষতে প্ৰভাৱতি আতের আবাত বলেবদের নিবিতে পলাইরা আইনেল এবং খীর অন্তর্যবর্গকে শের বাঁনের লক ত্যাস করিতে আদেশ পাঠান। শের এইরণে দেনাসংঘার স্তাল হাইতে কেবিয়া ধেহারন্তর্গে আত্রর লইলেন। এ দিকে বলীর সেনা আসিরা হুর্গ অবহার করিল। ক্ষএক নাস অবহারিয়ে পার সেনাগতি ইত্রাহির সাহাযার্থ মৃত্যা সেনালন প্রার্থনা করিবা পাঠাইলেন, কিন্ত এ সেনা আসিবার প্রেই শের এক বিন অকসাৎ হুর্গ সর্বা হুইন্ডে নিক্রান্ত হুইরা তীর্ববেল বলীর সেনাকে আক্রমণ করিব। ক্ষতার্কিত আক্রমণে ধলীর সৈত্র হুর্যক্ত হুইরা পড়িব। সেনাপতি নিহত হুইলেন এবং মধাল্ গোট্য নগরে পলাইরা আত্মরণ করিবেলন ১৯৩৫-২৬ খুঃ)।

পর বৎসর ৯৪০ হিং, শের চুলার হুর্গ অবিকারপূর্বক সমগ্র বেহার প্রবেশে আপনার শাসনদক স্থাপন করিলেন। তদকর ভেলিরাগড়িও শক্ষী-গড়ি সভট অভিক্রম ভরিলা ডিনি জ্লন-ভামের অসুবর্তী হইলেন এবং ক্রমশ: রাজ্যানী অভিসুধে অগ্রসর হইরা গৌডনগর বীর সৈনা ধারা পরিবেটিভ করিলেন। কিন্তু অবিক কাল বলে থাকিতে সমর্থ না হওরার ভিনি থাবাল্ খামের হতে সৈনাপতা প্রদানপূর্বক বরং বেহারে প্রভাাত্ত হইলেন। এই অবসরে মাজুল বাহ নোগল-সমাট্ হুমার্ম এবং পর্কু স্বাধিকত ভারতের প্রতিনিধি জনো-দে কুন্হার সাহাব্য লাভের চেন্তা পান। হুর্ভাগ্যের বিবর, ঐ সহকারিকর আসিরা সম্পন্থিত হইবার পূর্বেই নগরবাসিগণ থাভাভাবে আক্রমর্মণ করিতে বাধ্য হর (হিং ৯৪3 = ১৫৩৭-৮ খ্বঃ)। স্থলভান নাজুদ এই সমরে নৌকারোহণপূর্বেক গোড় হইতে হানিপুরে পলাইরা আইসেন।

বিপক্ষ সৈতা ভাষার পশ্চাদর্শরণ করিল। ত্রণভান বাধা হইরা আত্মরকা করিতে সচেই হইলেন। বোরতর বৃত্ত বাধিল। রণক্ষেত্রে ক্রণভালকে আহন্ত বেধিরা উচ্চার বছুবর্গ ভাচাকে লইরা পলারন করিল এবং ছুদার ভূপী অবরোধকারী সম্রাট্ হ্রান্তনের শিবিয়ে আপ্রর লাভ করিল।

সঞ্জাই ছবাহুল বলেববের গ্রহণার সবিশেব হার্বিভ ইইলেন এবং অবীকার মন্ত চুনার গ্রহণিকারের গর বলাভিবানে উটোগ করিলেন । এই গরতে তাত হিলেন । আহাতীর গুলীবেলের অবীনে নোলনলৈত ক্যাপত হুইলে শেরপুর অবীন বান বীর পাঠান-লৈতন্ত ক্যাপ অবলের ইইলেন । সালেকের নোলন নোলাভি আহত ইইলে নোলনকৈত পলালন করিল। তবললৈ ব্যাক্তনার ক্রিলেন । ক্যাপন বলালাভি আহত ইইলে নোলনকৈত পলালন করিল। তবললৈ ব্যাক্তনার ক্রিলেন । ক্যাপনকারিনী উপনীত হুইলে আরুষ্ অবিভাগ, আঠানেনান উল্লেখ স্বাক্তরত নিহত ক্রিল্লের। এই ব্যাক্তরত নিহত ক্রিল্লের। এই ব্যাক্তরত নাল্য

করেন '(১৫৩৮-৯ ব্য)। তীহার রাজ্যকান ক্রতেই একজন্মে বালালার বাবীন সরগতিবংলের অবলান ক্রল।

ইমাইনকে স্মানত হেবিরা জ্যাল বান্ সীয়াত হান পরি-ভাগেপ্রতি কৌড্নগরে পিড্নরিবার্র স্বিলিভ ইইলেন। স্ত্রাট্ও এই অবসরে পজরীগড়ি সভট অবিভারপ্রতি সৌড্-নগরাভিদ্ধে বীর বাহিনী প্রথাবিত জরিলেন। পের বুঁ। স্লোগল-নৈতের জাসমনে তীত হইরা রাজকোবের সমূরর অবনি সংগ্রহ-পূর্বি সালেরানের অভাত বার্থপ প্রবেশে প্রায়ন জরিলেন প্রথা তথার অভায়ভালের বংলা জভাত্ত হৌশলে ভ্রাসিদ্ধ রোভ্তাস্ ভূব নিশাণ জরহিরাহিলেন।

হ্যাহ্ব বৈভিন্ন স্থাপে উপনীত হাঁকে নগম্পানী সাহলানে বার উন্দুক্ত করিল। তীহার আবেশে রাজ্যের করল ক্ষেতার বাজনাম রাজনানেই পুংবা পাঠ ইইল। তিনি নগম্মের নাম করতবিদ রাজিপেন। তীহার নামে বে বুলাকে হর, তাইাতে নগম্মের নৃতন নাম সমিতি হইরাছিল।

বলগাল্য করের পর ফ্রণভান ছ্নাছ্ন বিলাসফুবে নিমায় হইলেন। তিনমান ভোগস্তবে রস্ত থাকিয়াও ভাছার আছাপ্রনাদ উপস্থিত হইল না, তিনি বলস্থিনিন্দিতনরনা নছরগ্রনা বাগাল্যাকুলের নৃত্যনীতে সর্কাশ বিভোর হইরা রহিলেন।
শক্রদল এই অবসরে পুদরায় বলপাই করিরা কইল। শের খান্
বলগালিত নোগল শক্রার বিলক্ষে যুহার্থ প্রস্তাত হইলেন।

অনতিকালণরেই ওপ্রচরমূপে শত্রণক্ষীরের উর্জেণি ও বর্ত্বপ্র-সংবাদ পাইরা সমাট হ্যান্থনের ক্ষক্তি ভদ হইল। তিনি কভক্টা যেন ভীত হইরাই সেই বর্বা বর্তুতে আগ্রা অভিসুঁথে প্রেল্পন করিলেন। কিছু রাজ্যপাসনার্থ ভিনি ৯৪৬ হিজিয়ার আহানীর কুলীবেগকে বালালার শাসনক্ষা নিশ্বত করিয়া বান, ভাহার আনেশে রাজ্যরকার্ব তবার ৫ হাজার মোগল অধারোহী রক্তিত হইনাছিল।

মোগল গৈছ যালালার জনবাৰ্থাকোনে অনভান্ত ছিল।
ভাহারা নিরন্তর বারিপাতে ক্লিটিভ ও জনেই নানা নোগঞ্জ
হইমা সূত্রত্ব পণ্ডিও হইতে লাগিন। এই প্রবেদী সমাটির
অভতম জাতা বিলোধী হইগোন। শের ঘাঁ লৌপণে রোহতান্
হর্পবিলয়ে সকল মনোরব হইরা প্রায়ার বলরালা উবারে
সভেটিভ হইলোন। ভাহার উভোগে ইভাল আইলাম সৈত্র
প্রায় কর্মনালা ভীরাই উভোগে ইভাল আইলাম সৈত্র
প্রায় কর্মনালা ভীরাই টেগার প্রানে স্ববেভ ইইছা।
সমাই স্বাতীর উত্তরপাশৃনীক আর অভিনান অপ্রায় ইইছে
গারিবেন না। বোগন সেনা বাটান বিভিন্তের ইন্তিয়ে
নাহনী হইন না। অবল সনা ব্রভ্তমণ্ণ্যক আন্তান্ত

[&]quot; श्लीकार्क करा कान, लाव का का का किस काम विकास का

চইতে পারিল না: স্থভরাং অক্তপথে গদনের আশাও রহিল না। তণন সম্ভাট ৰাধ্য হইয়া সন্ধির প্রান্তাবসহ পাঠানশিবিরে দৃত পাঠাইলেন। শের খাঁর ধর্মগ্রহ পবিত্র ধার্ম্মিক দরবেশ খলিল मधाप्त वहेराना। अखिशास वित्र वहेन, शक्षांत लाद थाँएक বাজালা ও বিহার ছাডিরা দিবেন: পকান্তরে শের খাঁও কথন সম্ভাটের পভিরোধ বা তাঁহার শত্রুকে সাহায্য করিতে পারিবেন না। সন্ধির পর উচ্চর শিবিরে আনন্দল্রোত প্রবাহিত হটল: মোগলগণ বাজালার জাসিরা নানা কটের পর আজ আক্রাদ-লাগরে ভালমান হইরা লমন্ত বিপদের আশহাই ভূলিয়া গিয়াছিল: ক্সি বিশ্বাস্থাতক শের খাঁ শত্রুর প্রতিজিঘাংসা ভূলেন নাই। বে দিন সম্লাট্ সমক্ষে সে কোরাণস্পার্লে পপথ করিল, দেই দিনে রঞ্জনীর গাঢ় অভকারে অভর্কিভভাবে সেই আফগানদস্ত্য মোগল শিবির আক্রমণ করিলেন। মোগল সৈন্ত দলে দলে আহত, নিহত ও পলায়নপর হইল। সম্টে প্রাণ লইয়া অৰপুঠে আবোহণপুৰ্বক গলা পার হইলেন, কিন্তু তাঁহার অধীনস্থ আট সহস্র মোগল সৈম্ভ নদীলোভে ভাসিরা গেল (১৫৩৯ খু: च्यः)।

হুমান্ত্ৰের পরাজরে বাজালার প্রবংশীর আকগানগণের প্রতিষ্ঠা হইল। তাঁহার অভ্যানরে তৎকালে সমগ্র উত্তর ভারত প্রকল্পিত হইরাহিল। কোন্ পুত্রে শের খাঁ বেহার-রাজ-সমকারে নিযুক্ত হইরা কিরপ প্রতিভারতে বল ও বেহারের অধীশর হইরাহিলেন, তাহা পুর্কোরণিত হইরাছে।

তিনি রোধ্বাসী ক্রবংশীর আফগান। তাছার পিতার লাম ছসেন। তিনি খীর প্রের নাম ফরিদ রাখেন। এই কারণে শের খাঁ রাজাসনে আসীন হইরা ফরিদ্উদ্দীন্ শের লাহ নাম ধারণ করিরাছিলেন। ফ্লতান বহলোল লোদীর রাজ্য-কালে তাঁহার পিতামহ ইরাহিম জরাভূমি পরিত্যাগপুর্মক দিল্লী রাজধানীতে উপনীত হন এবং সামরিক বিভাগে কর্ম গ্রহণ করিয়া খীর সৌতাগ্যাবেষণে প্রবাস পান।

বহলোগ-পুত্র সিকলর লোলীর শাসন কালে জোনপুরের লাসনকর্তা সর্কার জরমল্ল ইত্রাহিন-পুত্র হসেনকে সঙ্গে আনেন। হসেনের রণণাণ্ডিত্য ও সন্ধাণাদি গল্য করিরা জরমল তাঁহাকে সাসেরাম ও তাঁড়া জেলা জারদীরত্বরূপ ধান করেন। তাহার আর হইতে ৫ শত জ্বারোহী সেনাদল রক্ষা করিরা হসেন রাজার জ্বীন সামস্কর্মণে পরিগণিত হস।

হ্যাব্দের পাঠান জাড়ীর পত্নীর গর্ডে করিন ও নিজানের করা হয়। পিডা পুরের বিভা পিজা বিবরে বিশেব বছ সইতেন না বলিরা করিন ক্ষেত্র-প্রধানিত ক্ষরা জরনজের জনীনে নৈনিকর্কি জয়লম্ম করেন। এই নামরিক শিক্ষাকালে তিনি রাজা জরমরের অন্ধর্তাহে নানাবিছার পারদর্লিত। লাভ ক্রিয়াছিলেন।

তিন চারি বৎসর পরে হসেন স্কৌনপুরে আসির। পুত্রের বিভাবতার পরিচর পাইলেন। তিনি তখন উপযুক্ত পুত্র হস্তে বীর সম্পতির পরিচালন ভার সমর্শণ করিরা নিশ্চিত্ত হন। ইহাতে তাঁহার বিমাতা ও বৈমাত্রের প্রাতা স্কলেমানের ঈর্যা বৃদ্ধি হর। বিমাতার পীড়নে পিতার মানসিক বিপর্যন্ত্র লক্ষ্য করিরা আগ্রা অভিমূথে যাত্রা করেন। এথানে তিনি ইগ্রাহিম বাদশাহের প্রসিদ্ধ ওমরাহ দৌলতের সাহাব্যে সম্রাটের অন্তগ্রহতাজন হন এবং বীর পিতার মৃত্যুর পর পৈতৃক সম্পত্তির উত্তরাধিকারী হইরাছিলেন।

৯৩২ হিজিরার সম্রাট্ ইবাহিনের পরাজর সংবাদে, দিলীখরের অধীনত্ব সামন্তবর্গ অ অ প্রাথান্ত ছাপন করিতে উত্যক্ত হইলেন। শেরও সে অথাগ ছাড়িলেন না। তিনি দরিরা লোহানীর পুত্র পার বাঁর সহিত বোগদান করিয়া বেহার অধিকার করিলেন। পার বাঁ অলতান মাজুদ লোহানী নাম গ্রহণ করিয়া রাজা হইলেন। এক দিন মাজুদের সহিত শের শীকারে বহির্গত হইরা অহতে একটা রহদাকার বাায় বধ করেন। অলতান তাহাতে প্রীত হইরা তাঁহাকে সের আখ্যা দিরাছিলেন। পরে তিনি পাঠানবংশীর চুনারপতি তাজিরের বিধ্বা পত্নীকে বিবাহ করিয়া চুনার গুর্গ হত্তপত করেন।

শের মাক্দের নিকট বিশক্ষণ প্রতিপত্তিলাভ করিরাছিলেন;

এ জন্ত মাক্দের মৃত্যু হইলে যুবঁরাজ জলাল অপ্রাপ্তবন্ধ বলিয়া
শেব বেহারের রাজপ্রতিনিধি হন। কিছুদিন পলে লোহানি
দর্কালেরা শেবের বিনাশার্থ একটা ব্যুব্দ্ধ করে, এবং ইহা
প্রকাশ হইরা পড়িলে, জলাল অপক্ষ ওমরাহপণসহ বাজালার
১৫৩৫-৬ খুটাকে পলাইরা বান ও বক্ষের মাজ্দ শাহের সাহাব্য
প্রোর্থনা করেন। এইজপে শের বেহারের সর্ক্ষমর কর্তা হইরা
উঠেন। অনস্তর তিনি মাক্দ শাহকে গৌড় হইতে ডাড়াইরা
দেন,এবং ছলে ভূলাইরা ও বিশাস্থাতকভাপ্র্কক রাজা ব্রক্তশের
নিকট হইতে হর্তেজ পরোহিতাস্ হর্ন ক্ষিকার করিরা লেখানে
বীর পরিবার ও ধনরাশি নিরাপ্তে রাখিবার উপার করেন।

রাজাচ্যত নাজু দু পাই বিরীখন ইমান্থনের পরণাপর হইলে, ইমান্থন বাজানা আন্তমণ ও গৌড় নগর অবিকার করেন। পের পশ্চিমাভিত্বে বাইরা বারাগণী হত্তগত এবং রাজানা ইইতে ইমান্থনের প্রভাগননের পথ কর করিলেন। বথন ইমান্থন বিরীতে কিরিয়া বাইবার চেটা করিতেহেন, তথন গলা ও কর্মনাপার সক্ষরতার নিকটে পেরের সৈজ্জের নবিত তাঁহার সাঞ্চাৎ হইল। উত্তর বলই পিরিয় স্লিবেশ করিয়া তিন:বাদ ক্ষরিক করিলেন। অবণেবে ক্ষেত্রাথ লার্থ করিয়া শের ক্ষরীকার করিলেন বে, বদি হুদার্থন উহিচ্ছে কার্যালা ও বেহারের ক্ষরীখার বলিরা বীকার করেন, ভাহা ক্ইলে তিনি সম্রাটের প্রতিগমনের কোন প্রতিবন্ধকতা করিবেন না! এই সংবাদ ওনিরা বোগলেরা কিঞ্ছিৎ ক্ষসাবধান হইরা জামোদ প্রমোদ করিতে লাগিল; এবং রাত্রিকালে শের তাহাদিগকে বিবাসবাতকভাপুর্কক সহসা আক্রমণ করিরা পরাজিত করিল। হুমার্ম ক্ষতি কঠে গলা সন্তর্গ করিরা প্রোক্ষণা করিলেন এবং ক্ষতার সহচর সক্ষে আগ্রার উপস্থিত হুইলেন।

জ্ঞতাপর শের খা বাজালার খাসনকার্ব্যের বন্ধোবত করির।

১৪৬ হি: শেষভাগে ৫০ হাজার পাঠান সৈত লইবা হ্যাব্যের
বিক্তম প্ররার ব্যবাতা করিলেন। কনোজের নিকট উভর
পক্ষে বৃদ্ধ বাধিল (১৫৪০ খুটাজে); হ্যাব্য পরাত হইরা পারতে
গ্রেছান করিলেন। শের বিদ্যাধির হইলেন।

শের বধন দিলীখরের বিলক্ষে যুদ্ধোভদ করেন, তথন ডিনি विक्रित वाँ एक वानानात भागनकर्ता नियुक्त कत्रिता वान । विक्रित ৰাঁ এই পদোয়তির পর বঙ্গের শেষ স্বাধীন নরপতি হান্দ্র দ শাহের কস্তার পাণিগ্রহণ করেন। সেই প্রের পূর্ব্য রাজবংশের অকুগুহীত অনেক আফগান তাঁহার দলভুক্ত হয়। তাহাতে ম্পাৰ্ছিত হুইয়া থিজির খীয় প্রাকৃ শের খাঁর অধীনতা জয়ান্ত করিয়া হাজনোহিতার ভাব প্রকাশ করেন। এই বিলোহ নিবাৰণাৰ্থ শেৱ খাঁকে আৰু একবাৰ বালালার আসিতে হয়। তৎপত্নে তিনি এমেশকে করেক থওে বিভক্ত করিয়া, প্রত্যেক খণ্ডের এক এক জন শাসনকর্মা নিযুক্ত করেন। তাঁহাদের সকলের কার্যাবলী পরিবর্ণন করিতে কাজী কলিলাৎ নামে এক-জন উচ্চতৰ কৰ্মচারী নিবুক্ত হন। তননস্তম ১৫৪১ খুটাকে ভিনি আসিরা প্রভ্যাবৃত্ত হইলেনঃ সেধানে ১৫৪৫ গুটালে শেরের মৃত্যু ৰটে। জাঁহার চরিত্র লক্ষ্য করিলে ধর্ম ও পাপের সমলোভ প্ৰবাহিত ৰেখা বার। তিনি একজন সমরকুশন সেনাপতি হইলেও বিধাসঘাতকভার খীয় চরিত্র কলবিত করিয়া-ছিলেন, লোকবিভকর কার্ব্যেও তাঁহার মতি ছিল। তিনি উৎপক্ষের এক চণ্ডবাংশ দ্বাক্ষকর ধরিরা বাকালার ভূমির ্রদোবত করিয়া বান ; এই বনোবত অবলখন করিয়াই অকবর ্লাহের সময় এক্সদেশে রাজত নির্মায়িত হয়। শের শাহ ু স্বৰ্ণপ্ৰায় হইছে শিহুনৰ পৰ্যন্ত একটা ৱাজা প্ৰস্তুত ক্য়াইরা ভাহার ছুধারে হুক্ খনান এবং প্রবোজনাত্মণ পাছনিবাস নির্দাণ ্ত কুশ বন্দ কল্পন। ভিনিই প্রথমে ভারতবর্ধে বোড়ার ভাকের পৃষ্টি কৰেন। জাহার হাজ্যত হস্তাভয় ছিল না। পশ্চিক ও বণিকৃ-ा १९ च च जचा निव साथा निश्लान कतिसा चन्द्रात निर्मा साहेण।

9 °%	<i>a</i>	যাজালার গাবীন পাঠান নহপক্ষিবর্ব।	
42	विः च	R. POPUS	गांगक्रिक विश्वीप्रथ
2000	191	কণ্ৰ উৰীন্ স্বায়ক পাছ	मस्पन ट्यांशनक
2062	182	আলা উনীন্ আলি শাহ (গ্ৰো	क) छे
2080	188	ইল্য়াস্ পাহ (গোড়)	`
>064	. 1	গাৰি শাহ (পূৰ্ববহু)	3
>043	: 2.	ইল্য়াস শাহ (স ৰ্কৰজ)	কিলোক শাহ
>041	943	নেক্ষ ৰ পাহ	4
>06/r	10>	সিলাস উদ্দীন পাহ বিন্ সেকল	T de
3018	114	ट्रेन केनीन बिन् शिवानकेनीन	মহক্ষণ পাত্
>0+8	Tre	হামৰা অলভান উস্-স্লাভিন	নসিরৎ শাহ
1	.1	শাহাৰ উদীন বহাজিল পাছ	নাজুদ পাহ
>000	161	बांबा शरनम	S
2005	128	जनान जेलीन् मरकार भार विन् १	म्या विकिन्न वी
38.3	FSS.	আৰ্দণাহ বিন্ত্ৰাণ	মুখার্ক পাহ
>829	***	'नानित्रं <mark>डेकौन्</mark> मा क् तृ भौर	আল্য পাহ
>849	445	বাৰ্কক শাহ	वश्रामा जाती
3848	レ1 る。	যুক্তকশাহ বিন্ বাৰ্কক	ঠ
7825	**1	সেক্ষর শাহ	S
>864	441	ফতে শাহ	, 3
2892	420	মুলভান শাহলাদা	ঞ
३८३२	৮ ৯٩	रेगक छेनीन् किरताल भार शाव्य	के त
8686	644	নাসির উদীন্ মালুর	লেককর ্
2886	***	মূলংকর শাহ হাবসী	A
7695	200	चाना छेनीन् देशका इत्यम भाव	.
5433	254	নসরত শাহ	ইত্রাইম ও বাবর
5036	606		हमा यून
1408	>8 •	माभूम भाव विन् इत्यन भाववे	·
			হাৰীন নরপতি।
>601	>86	कतिन् छेनीन् त्यत्र गाह	S
2604	264	হুশায়ুন—ইনি গৌড় বা জয়ত	াবাদে বাজগাট
			क्षांत्रन स्टब्स्न ।
2609	384	শেষশাহ (পুনরার)	
>684	≥6 ₹	मश्यम नी	e i gran
		(कडीन भारतकात ।)	

(ভূজীর শাসনকাল।)

পের নার বৃত্যু হইলে, তৎপুত্র ইন্লাস শাহ (সভাভারে সেলিম পাহ), নহস্তব বা বৃত্তকে বাজালার শাসনকর্মী নিযুক্ত করিলেন। ইন্লান্ কানবলীলা সংবরণ করিলে, জীহার তনরকে বিনাপ করিয়া তথীর জানক সাহিত্য পাই বিরীধর

XVII

हरेरानन (>eeo थु:)। आहे भरवाव भारेता महम्बद वाँ चाँदीनका अवगवन कतित्तन अंदर स्त्रोनमृत्तत्र कर्छकारन चिक्शत कतिया गरेरमन । महत्वत की एत चमारम ब्राविक করে। কিংবদত্তী আছে, ডিনি বিশেব ভারণরতার সহিত प्राज्ञामानन कत्रिवाहित्सन । कीशांत करेवथ काठवरण क्रक হইয়া পরবংসর মহন্দ্র আদিল খীর হিন্দুসেনাপতি হিনুকে বালালার প্রেরণ করেন, হিমুর হতে কুল্পীর নিকটত ছাপর-ঘাটার বৃদ্ধে বলেশন পরাজিত ও নিহত হইলেন (>ecc)। মহন্দ্র বার মৃত্যুর পর তৎপুত্র বিভিন্ন বা মুসলমান সন্ধারনিসের ্অভিনতে বাহারর শাহ নাম ধারণ করিয়া বাজালার সস্নদে আরোহণ করিলেন। বাহাছর শাহ সকলে গৌড়ে উপনীও ইইরা লেখিলেন, স্থার শাহবার ব'া বিরীখর মহত্মদ আনিলের পক ছইয়া বলসিংহাসন অধিকার করিয়াছে। তিনি পাহবাককে নিহত করিয়া খীর পিড়শক্তর বিহুদ্ধে বুদ্ধের আর্বোঞ্চন করিলেন। ৯৬৩ হিজিরার মুলেরের যুক্তে আদিল শাহকে সংহার করিলা তিনি ণিতার মৃত্যুর প্রতিলোধ লইলেন (১৫৫৬)। অনস্তর কিছু-কাল রাজপরিবর্ত্তননিবন্ধন বালালার অরাজকতা বঁটিল। মুরেরে সুক্রমনের পর বাহাছর শাহ বালালার এক্ষাত্র ক্ষীবর হইলেন। ভিনি পুত্রনির্বিশেষে কএকবংসর প্রকা পালন করিরা ৯৬৮ হিজিরার (১৫৬০-১ খুটাব্দে) গৌড়নগরে বেহত্যাগ করেন।

অপুত্রক অবস্থার বাহাছর পাঁহের সৃত্যু হইলে, তদীর প্রাতা
কলাল্ উদ্দীন্ বলসিংহাসনে আরোহণ করেন। ১৭১ হিজিরার
গৌড়নগরে উাহার সৃত্যু হইলে উাহার ব্রকপুত্র সিংহাসনে
অধিষ্ঠিত হন। এই বালক রাজাকে পোণনে নিহত করিরা
গিরাল্ উদ্দীন্ বাজালার পাসনভার অহতে গ্রহণ করিলেন।
এইরূপ অরাজকভার ও অভ্যাচারে কিছুকাল অভিবাহিত হইলে
পাঠানজাতীর কিরাপীবংশীর স্লেমান এই সমরে ইন্লান্ লাহ
কর্ত্বুক বেহারের পাসনকর্ত্বুপদে নিস্কু হন, ভিনি বাহাছর
পাহের বন্ধু ছিলেন। স্বলেব-বৃত্তু বলেবরের পৃষ্ঠপোষক হইরা
ভিনি লিলীবরকে পরাজিত করেন। অলাল্ উদ্দীন্ পুত্র গিরাসের
অভ্যাচারে নিহত হইরাছে ওনিরা ভিনি বীর প্রাতা তাক ধান্তে
পাঠাইরা দিরা বালালা অধিকার করেন। ১৫৬৪ অলে ভাকবার
সৃত্যু হর, এবং স্লেমান আনিরা সৌড়ের অপরপারবর্ত্তী উাড়া
নামক স্থানে রাজধানী স্থাপন করেন।

এই সমরে হ্যাখ্য পাহের পুত্র বোগগর্কারও অকবর দিলীর সিংহাসনে আরোহণ করিয়া চমুর্ডিকে আপনার ক্ষরতা বিভার করিভেছিলেন। অলোনা ভাঁহার নিকটে উপহার প্রেরণ করেন, ভাঁহার এই চতুরভার স্রাট্ কুও হইরা পড়িনেন। ভাহাতে সন্তাটের সহিত ভাঁহার সভাব অকুর বহিল। ১০০০-৩০ খুটালে রেহিভাগ্ কুর্ন আক্রমণ ও ১০০৭ খুটালে উড়িব্যবিজয় প্রশোধনের রাজ্য-সক্তরে প্রধান বটনা। সমাট্ অফবর পাবের আগ্রমনে ভিনি রোহভাগ্ করের অবরের জ্যাগ করিরা বীর রাজ্যানীতে প্রভাগ্ত কন। কিন্ত ১০০৭ খুঃ অবল ভিনি বীর বিখ্যাত সেনাগতি ফালালাহাতে (রাজ্) উৎকলে প্রেরণ করেন। কালাপাহাত ভথাকার পের বাবীনরাজা মুকুলবেকে পরাত করিরা উড়িব্যা অধিকার করিলেন এবং অনেক বেবস্থি ভালিরা কেলিলেন। কালাপাহাত প্রথমে রাজ্য ছিলেন; পরে বলীর মুসল্যান রাজ্যবংশীর কোন রমণীর প্রণরে পড়িরা মুসল্যানধর্ম গ্রহণ করেন। কালাপাহাত প্রথমে বাজ্য হইরা উঠেন। ইনি ১০০০ খুটাকে কামরূপ আক্রমণ করেন ও অসংখ্য দেবালর ও দেবস্থি ধ্বংস করেন। উড়িব্যা ও কামরূপের অধিবাসীরা এখনও কালাপাহাতের নাম ভূলে নাই।

ব্টীর ১৫৭৩ অবে প্রলেমানের মৃত্যু হর এবং তাঁহার জ্যেরপুত্র বরাজিদ রাজা হন। জ্ঞাকগান সন্ধারেরা বরাজিদের আচমণে উত্তক্ত হইয়া পৰ ৰৎসৰ ভাঁহাকে বিনষ্ট কৰিয়া ভাঁহাৰ প্রাতা হাউদকে বাজনিংহানন প্রহান করেন। দাউন দাজা-শাসনভার এহণ করিবাই বেখিলেন বে, তাঁহার ১৪০০০০ পদাতিক, ৪০০০ অধারোহী, ২০০০ কামানাদি অন্ত এবং ৩,৬০০ হল্তী ও বহু শত বৃদ্ধ-মৌকা প্রান্তত রহিয়াছে। এই বিশ্বত সেনাদল লইয়া তিনি সম্রাট্ অকবর শাহের সমকক হইতে পারেন ভাবিরা ভাঁহার হুদরে রাজ্যবিন্তারের বাসনা জন্মিল। তিনি বাজালা ও বেহারের দর্মত্র স্থনাবে পুতবা পড়িতে হুকুম দিলেন এবং জমানিয়া নামক গাজিপুর সন্নিহিত একটা মোগল ছর্গ বলপুর্বাক হত্তগত করিলেন। অকবর দাউদের বিহুছে দেনাপতি মুনাইম খা এবং রাজা টোডরমরকে পাঠা-ইলেন। ১৫৭৪ পৃত্তীকে কএকদিন অবব্যোধের পর পাটনা অধিকৃত হইল এবং বালালার মোগল-সৈত প্রবেশ করিল. দাউদ লৌকারোহণে উড়িব্যার পলারন করিলেন। মেদিনীপুর এবং অংশখনের মধ্যবত্তী মোগলমারি (তুকারো) নামক স্থানে মোগল ও পাঠান সৈজের একটা বোরতর যুদ্ধ হয় (১৫৭৫ খুঃ)। প্রাথমে পাঠানবিগেরই করের সভাবনা হইরা উঠে. কেবল রাজা ভোডরমলের অদৃইওণে যোগলবিগেরই জয়লাত হুইল। দাউদ সময়ক্ষেত্র হুইডে পলারন করেন; কিন্তু মোগল-সেনাপজিল্লা কটক পর্যান্ত ভাঁহার অমুসরণ করিলে, তিনি ভাঁহা-দিগের হতে আত্মসমর্শণ করিলেন এবং জাহাদিগের অভ্তাহে সমাটের প্রভাষীন কটক রাজ্যের শাসনাধিকার লাভ করেন।

[ৰাউৰ বাঁ দেও :]
সেনাগড়ি মূনাইৰ বাঁ, জাড়ানপত হইতে প্ৰভাগনন করিবা

শুনার স্বৌড় রাজ্বানী করিলেন। তথক নোর বর্ণাকাল।
দেই সমৃত্তি-পরিবারে মহানগরী ব্যক্তার জনসভূত ও পতিত
বাকার তথাকার জলবার ধারাপ চইরা পড়িরাছিল। তাহাতে
জলবিক ভূমি। উপযুক্ত বাসহান না বাকার জনেকে বৃত্তিকার
পরন করিরা পীড়িত হইরা পড়িল। সহসা বারীতর উপস্থিত
হইল। বেখিতে বেখিতে সহল সহল লোক মরিতে লাগিল।
মুনাইম্ বাঁ কাসগ্রানে পতিত হইলেন; কত নৈনিক ও কর্মারী
আগত্যাগ করিল। এইরণে বে বংসর বালালা মোগল-সারাজ্যভূক্ত হর, সে বংসর আচীন রাজ্বানী সৌড় বিজন আনেশে
পরিণত হইল। (গৌড় দেব।)

एक्करमद चरीन भागमकर्ष्त्रनः।

कृ: व्यः	रिः	वरकंपन	সামরিক দিলীখন
>444	305	থিজির খাঁ বাহাছর শাহ	শেরপাহ্
†	?	मस्याग रुव	সলিম পাহ্
>444	245	বাহাছর শাহ্	মহন্ত্ৰহ আদি
>443	364	जनान् जेजीन् विन् वश्यव	4
>648	295	কুলেমান ক্র্রানি	à
3610	26.7	ব্যাজিদ্ বিন্-ক্লেয়ান	3
>490	かとう	গাউৰ বাঁ বিন্ ক্লেমান অব	দ্বর-সেবাপডি
		কুলাইম খাঁ ইহাকে লোগলগ	দানত করেন।
		(চতুৰ্থ শাসনকাল।)	

১৫৭৫ খুটাজে গৌড়ের মহামারীতে মোগল-সর্কার মুনাইম খাঁ ভবলীলা শেব করিলে অক্তমে মোগল-সেনাপতি সারেম খাঁ কিছুকালের অক্ত বালালার শাসনভার গ্রহণ করেন। মুনাইম খাঁর মৃত্যুর সংবাদ দিল্লীসরকারে পৌছিলে তথা হইছে পাসনকর্তা নিয়োগ হইবার পূর্বেই বালালার পাঠানগণ রাজ্যচ্যুত দাউদের অধীনে বিদ্রোহী হইরা বালালা অধিকার করিল। মোগল-সেমাপতি সারেম খাঁ বৃদ্ধে পরাজিত হইরা প্রথমে হাজিপুরে ও পরে পাটনার বাইরা আল্রব লাভ করিলেন।

ষ্থাসময়ে মুনাইমের মৃত্যুসংবাদ অক্বর পাহের কর্ণে পৌছিল.। তিনি পঞ্চাবের শাসনকর্তা হসেন কুলী বাঁ খানজহান্তে বালালার শাসনকার্য্যে নিবৃক্ত করিলেন। বীর
সৈপ্তসামক সংগ্রহপূর্বক বালালার আসিতে হসেন কুলীর
বিলম্ব ঘটিল। ইত্যবসরে হাউদ বাঁ প্রার ৫০ হাজার জনারোহী
পাঠান ও বছপত প্রতিক সংগ্রহ করিরা অক্বর পাহের
প্রতিক্লী হইল।

ধান্ জহান্ সহলে ভেলিরাগড়ির নিকট উপনীত হইরাই সন্মূৰে আফগান-নেনা বেখিতে পাইলেন (১৫৭৬ বৃঃ আঃ)। উত্তর পক্ষে একটা বঞ্চকুত্ব হইরা গেলঃ স্বটবিত আফগান নেলাকে সন্তে নির্ম্ব্যু করিয় বোগন-শাসনকর্মী ক্রুপণ অগ্রসর হইছে লাগিলের। আগ্রহণের (রার্যহণ) নিকট কর্মীয় বাঁ বরং রোগন-সেনার সহিত বুছার্থ সমুখীন হইলেন। আক্রান ও বোগলে বোর সংবর্থ উপস্থিত হইল, রেখিতে রেখিতে রেখিতে বোগলের গোলাখাতে অসংব্যু আক্রান নিহত হইল। আক্রান-সেনাগতি লাউদের বাতা ক্রিক কর্রাণী ও অভ্যান্ত আনেক সেনাথাক রপকেত্রে প্রাণ বিসর্জন করিল। লাউব ধাঁ বলী হইলেন। রাজনোহিতাপরাধে তাহার প্রাণ কও হইল। খান্ কহান্ তাহার বতক গৃতহতে আগ্রায় অক্রর পাহের সমক্ষেণাঠাইরা বিলেন। রাউব ধাঁর সঙ্গে সলে বাজানার পাঠানরাল্য লোগ পাইল।

১৫৭৬ থুটাকে আগমহলত্তে রণজনী হুইরা হলেন কুলী খাঁ থান্ জহান বাজালার মদনৰে উপবিট হুইলেন। তিনি উক্ত বৃত্তে লব্ধ সম্পত্তি ও হুতী প্রস্থৃতি রাজা টোডরমন্তের তত্বাবধানে ল্যাট্ সকালে পাঠাইরা ছিলেন। অতঃপর বেহার প্রেলেণে ল্যায়িত পাঠানছিগকে পরাত করিরা তাহার প্রেরিত লেনা-পতি মূলঃকর খাঁ রোহ্তাল হুর্গ অধিকার করিলেন। ক্রনে ইড়িরা। ও কোচবিহার প্রেরেপ মোগলের অধীনতা বীকার করিল। ১৮৬ হিজিরার তাঁড়ার নিকট খানু জহানের মৃত্যু হর। এই অত্যয় কালের মধ্যে তিনি বালালা, বেহার ও উড়িব্যার সর্ব্বত্র মোগল অধিকার বিতার করিরাছিলেন।

তাহার মৃত্যুর পর, ১৫৭৮ পৃষ্টাব্দে মূলঃকর বাঁ তরবৃতি বালালার পাসনকর্তা নিযুক্ত হইলেন। তাঁহার সহকারিরপে রার পাত্রদাস ও মীর আদম রাজ্ববিভাগের সহযোগী পরি-क्विक, त्रिक वि थाँ। दक्षी अवर आयुग करण धार्यान विठातक हरेता আসিলেন। সমাটু সামরিক বিভাগের উপর বিশেব দৃষ্টি রাখিবার জন্ত স্বীর প্রতিনিধি সুজঃক্ষরের উপর আদেশ পাচাই-লেন ৷ ভদমুদায়ে তিনি পাঠান্দিগের জারণীর-আত্মসাৎকারী ও টাহার বৃদ্ধিভোগী ক্ষমতাশালী মোগল সন্দার্নদিগের প্রতোকের নিকট হইতে স স জানগীরের আরবারের হিসাব চাহিলেন, ভাৰাতে পৰ্দারেরা ক্লম্ভ হইয়া উঠিল। কারণ তাহারা ঐ সম্পত্তিতে আপন অধীনত্ব ব্যক্তিবৰ্গকে ত্বান দিয়াছিল। ক্ৰোধ ক্ৰমে বিজ্ঞাতে পরিণত হইল। বিল্লোহবন্দি বেহার পর্যান্ত পরিব্যাপ্ত হইরাছিল। তথাকার সেনাধ্যক মক্রমকাব্দীর স্থানে বিজ্ঞোহি-রুল প্রথমে হারাবপরিদর্শক প্রভৃতিকে শমনসদলে প্রেরণ করিল। তৎপর ভাহারা তাঁড়া অবরোধ বরিয়া শাসনকর্ত্তা वृक्षाकतरक निरुष्ठ कृतिन (১৫৮० थुः) धारा निक केवीन इरनम নামক একলন ওমরাহকে সাপনাদের অধিনায়ক বলিয়া সন্থানিত করিল 🎼

এই বিপাৰের দিনে, সমাট্ অক্বর শাহ অহনৈত এবং শালনকর্তা; লাবনীরবার ও অনিদারনিনের আতি আনেশ দিরা রাজা
টোডরমরকে বালালা ও বেহারের শালনকর্তা করিরা পাঠাইলেন। তথম বালালা ও বেহার বিজ্ঞোহি-শলসভূল। বিজ্ঞোহিদল বালালার মোগলামিকার উৎসর করিতে বছনীল। কালেই
চিন্দুরাজপণ হিন্দুর প্রশাবলক্ষন করিলেন। টোডরমর হিন্দু
স্কমিনারদিসকে হজ্জাত করিরা টাহাদের সাহাব্যে বিজ্ঞোহীদিগের
রসম বন্ধ করিরা দিলেন। পরে তিনি মুন্দের ও ভাগলপুর হইতে
বিজ্ঞোহিন্দল বিশেব কর্তে পড়িল। এই সময়ে ক্রেক্শ্লান্বংশীর পাঠান স্কার বাবা বাঁর মৃত্যু হব। বিজ্ঞোহিন্দল ভাহাতে
ভর্মনোর্থ হটরা পড়ে।

এদিকে বসুমকাবৃদী সদলে বেহারে আসিলেন। কক্ষেণ্ লান সর্ভার জেকাবলী থাবাসপুর হইতে উড়ার খদলে প্রভাাবৃত্ত তইলেন। আরচ্ বাহাছর পাটনা আক্রমণের ছবোগ দেখিতে লাগিলেন। রাজা টোডরমল সংবাদ পাইবা মাত্র উছিদের বিসত্তে যুদ্ধ যাত্রা করিলেন। ১৯৮০ খুটান্দে রাজা সদলে হাজিপুরে আসিলা ছাউনী করিলেন এবং উলীর শাহ মনস্বেরর ছ্কাব্হারের কথা স্থাট্কে আনাইলেন। তদস্সারে স্থাট্ আজিম খাঁ মীর্জাকোই নামক একজম ওম্বাহকে বেহারের পাসনক্র্যা করিলা পাঠাইরা দেন।

এই সময়ে বাঁদী ও প্রান্থানের শাসনকর্তা রাজপ্রোহী হইকে টোডরমরা শাহরাজ খাঁকে ভাহানের বিজক্ত প্রেরণ করেন। শাহরাজ খাঁ খাঁদী ও প্রান্থার বিজোহ দমন করিরা অবোধ্যার বিজোহ লাভি করিলেন। ১৫৮১ খুটাকে অবোধ্যার শাসনকর্তা মন্ত্রম ক্রেক কৃষি রাজ্যচ্যুত ও সপরিবারে বন্দী হন। ভাঁহার সমান্তর সম্পত্তি রাজক্ষেবে সংগৃহীত হর।

ন্থইরূপে বিদ্রোহের অনেকটা শাবি হইল বটে, কিছু
বালালার প্রকৃত্ত পাতি হালিত হইল না । মুসলমান সেনাপতিবিপের সহিত হিল্পান টোডরমরের মনের বিল না হওরার
বড়ই বিত্রাট্ বটিতে লাগিল । আজিম ধা বেহারে আসিরা
সমুলার অবলা অবলত হইলেন । তিনি বিল্লোহিললকে বলে
আলিতে না পারিরা ১৫৮২ প্রাক্তে আগ্রার স্কাটের সহিত
ও বিবরে প্রাক্তি করিতে পেলেন । তথার হির হইল বে, রাজা
টোডরমরের ভালে আজিম খানেই বালালার লাসনকর্তা
নিব্দ করা হউম । তর্লুলালৈ জিলি বান্ আজিম নাম গ্রহণ
মরিরা বালালা, বেহার ও উদ্বিয়ার ক্ষ্তিরা আসিনেন ।
রাজা টোডরন্র বেহার ব্রহতে প্রভাবিন্দ ক্ষিত্র নোগলগামালোর একটা রাজ্যহিনাৰ প্রত্ত ক্ষেত্র । তবার নাম

"গুলাৰীন জুনার কৰা।" ইহাতে কাক্সি ১৮টা সর্ভাবে ও
১৮০ নহলে; কেইছ আবেশ গটা সর্ভাবে ও ২০০ পদ্মগণার
এবং উড়িব্যা এটা সর্ভাবে ও ১৯টা পদ্মগণার বিভক্ত হইরাছিল।
তৎকালে বালানার রাজ্য ১০৯৮৫৯৪৪১, টাকা, বেহারের
৫৪৪৭৯৮৪১, এবং উড়িব্যার ৪২৬৮৩৪০১, টাকা বার্ব্য হর।

[किंजित्रमहा (सथ ।]

থান্ আজিন মীর্লা কোকা ১৫৮২ পৃষ্টাকে বাদালার আসিরাই বিদ্রোহী আয়লীয়লারদিগের পদ্মশারের মধ্যে বিবাদ বাধাইলেন। মক্তম কার্লী সীর জধীনত্ব সেনাদল কর্তৃক পরিত্যক হওরার দেশীর অমিলারের অধীনে আশ্রর ডিকা করিতে বাধ্য হইলেন। এইরপে একে একে সকল বিদ্রোহনেভাই বোগল সর্লারের হত্তগত হইল। ৯৯০ হিজিরার থান্ আজিম উাড়া নগরী অধিকার করিলেন। এডবিনে এই তর্ত্তর বিল্লোহের পাত্তি হইল।

নোগল আর্দীরনারদিগের এই বিদ্রোহের সমরে পাঠানেরা আনগান কতনুপার কর্ত্বাধীনে সমবেত হইরা সমুদার উড়িয়ার ও দামোদর নদ পর্যন্ত বালালা অধিকার করিল। আলিমের আদেশে করিদ্ উদীন্ বোধারি কতনু খাকে দমনার্থ অগ্রসর হন। কতনু খা পরাজিত হইরা বন মধ্যে আশ্রর গ্রহণ করেন। এই সমরে সম্রাটের আদেশে খান্ আজিমকে বালালা ভ্যাগ করিরা আগ্রার আসিতে হয়; স্থতরাং বালালার বিদ্রোহাবস্থার বিশেষ কোন পরিবর্তন সাধিত হয় নাই।

আগ্রার উপনীত হইরাই খান্ আজিমকে মোগল-সাত্রাজ্যের সৈনাপত্য প্রহণ করিতে হইল; কাজেই স্ত্রাট্ অকবর লাহ লাহবাজ বঁ। কলোকে বহুসংখ্যক সেনা ও মুসলমান সন্ধারগণসহ বাজালার পাঠাইতে বাধ্য হইলেন। স্ত্রাটের আলেশ হত লাহবাজ বোড়াবাটে ককেশলানবংশীর বিজ্ঞোহী পাঠানদিগকে বিপর্যন্ত করিলেন। বিজয়ী মোগল সেনা ক্রমণঃ অগ্রসর হইরা ব্রহ্মপুত্রতীর পর্যন্ত উত্তর্গক মোগলাধিকারভুক্ত করিল।

এই সংবাদে কটটিত হইরা সন্ত্রাট্ট শাহবাজকেই বাজালার শাসনকর্তা করিরাছিলেন। রাজ্যপরিচাসনভার করে লইরা শাহবাজ বড়ই বিত্রত হইরা পড়িলেন। তিনি কংকণলান্ ও জন্তান্ত বিত্রোহীদিগকে নমন করা অথবা তাহাদের জারদীর বালেরাপ্ত করা একরপ অসন্তব বোধ করিলেন। অবশেবে তিনি বাধ্য হইরাই ভাহাদিগকে র ব অবিকৃত সম্পত্তি নির্বিবাদে ভোগ করিতে আকেশ বিশেন। আক্সান সর্বাধ্র কতসূ খাঁর সহিত ভাহার একটা সন্ধি হইল, ভাহাকে তিনি তাহাদিগকে উড়িব্যা প্রধানের রাজ্য করিছে অভ্যান্তি বিশেন। কর্মা রহিল, গার্ঠানগণ বাজালা পরিভ্যাপ করিরা বাইবে, আর বাজালা আক্রমণ করিবে না।

লাক্থানের এই কাঠা নিরী বর্ণারে অন্ন্রেণিত হয় নাই, ভাহারা বলেগরকে উৎকোচগ্রাহী বিবেচনা করিব। ভংগারে উলীর খান্ হেরেণীকে নিবৃক্ত করিলেন এবং খাচ্বান্তকে লাগ্রার প্রভাার্ভ হইতে আদেশ বিলেন। পাহ্বান্ত রাজধানীতে উপনীত হইলে তিনি তিন বংসরের আন্ত কারান্তক্ষ হন।

উজীর খান্ হেরেবী বালালার মস্নলে আরোহণ করিয়া বেণী কিছু পরিবর্জন সাধন করিতে পারেন নাই, তিনি উজ বর্বে (১৪৮৭ খুটাকে) উড়ো নগরে প্রাণড্যাগ করেন।

উজীর ধাঁর মৃত্যাগংবাদ আগ্রা দরবারে পৌছিলে সন্তাট্

মক্ষর শাহ বেহার ও বালালার শাসনভার রাজা মানসিংহের

হতে অর্পন করিরা খীর উলির চিত্তের পাত্তি বিধান করিলেন,

এই সমরে মানসিংহ পেশাবর প্রদেশে আফগান জাতির বিজকে

র্যাপৃত ছিলেন,তিনি বঙ্গশাসনভার গ্রহণ না করা পর্বান্ত পাটনার
সেনাব্যক্ষ সৈরদ ধাঁর প্রতি বঙ্গরাভারক্ষার ভার অর্পিত হইল।

৯৯৭ হিজিয়ার (১৫৮৯ খুটাকে) মানসিংহ পাটনার পদার্পন করিয়া গুনিতে পাইলেন বে, হাজীপুরের ভূমাধিকারী প্রণমল খেছরিয়া এই ক্রোগে বিলোহী হইয়া বহু অর্থ সূঠন করিয়াছে। য়াজা মানসিংহ ভাঁহার এই ভ্র্রাবহারের জক্ত ভাঁহাকে সমূচিত লাভি নিতে অগ্রসর হইলেন। হাজীপুরে রাজা প্রণমল মোগল-সল্রাটের বক্ততা খীকার করিলে তিনি তাহাকে মুক্তিদান করেন, এই সমরে মানসিংহ খরং বেহারে থাকিয়া সৈয়দ খাঁকে খীয় সহকারিয়ণে ভাঁডার রাখিয়া বেন, এবং ঘোডাঘাটের মোগল-সেনাপভিনিসের অর্থপুরুতা উপশমনার্থ খীয় পুত্র জগৎসিংহকে তাহাকের বিরুদ্ধে প্রেরণ করেন। মোগল-সন্ধারগণ রাজ-সৈজের আগমনে ভাঁড হইয়া বন মধ্যে আগ্রম গ্রহণ করেন।

অতঃপর রেয় তাস্তর্গ-সংখারাতে রাজা মানসিংহ ১৯৮ হিজিরার উড়িয়ারাজ্য প্রক্লভারের সহর করেন। প্রথমে তিনি কড়জার্য্য হইতে পারেন নাই; তাহার পুত্র জগৎসিংহ এই বৃদ্ধে পার্চানবিগের হতে পভিত হন। ইহার কিছুকাল পরে কতপু খার বৃত্যু হইলে পার্চানেরা জগৎসিংহকে প্রভাপন করিরা সন্ধি প্রার্থা হর এবং সরাটের জরীন থাকিতে খীকার করে; কেবল মাত্র পুণাতীর্থ জন্মাধ্যক্তের রাজা মানসিংহের জবিশারে থাকে। ছই রহসর পরে পার্চানেরা জগরাণক্ষেত্র লুট করে; ভাহাকে রাজা মানসিংহে জবিশারে আহাকে প্রার্থা করিরা উড়িয়া প্রান্ধে পুনর্বার বোসলরাজ্যক্ত করেন। জনজর ভিনি জাগ্যহল প্রক্রার বোসলরাজ্যক নামে জভিহিত জরিরা ভবার ছাজ্যবারী হাপন এবং রাজ্যালান ও প্রস্তিনি করিরা ভবার ছাজ্যবারী হাপন এবং রাজ্যালান ও

১৫৯৫ বৃঃ অলে ভাচনেহার-রাজের ভানিরীর সহিত ভাহার বিবাহ হয়। ১৫৯৮ বৃঃ অলে বিশাপনে নোগল-বাহিনীর অধিনারকরণে সলে বাইবার রাজ সরাই উবালে রাজবাদীরে আবার করেন। এই সদরে ভিনি জাগৎসিংহতে আভিনিবি রাখিরা বান। কিছ অরকাণ বাংলার অনীলে উলিবা এবং বালানার কিরবংশ কর করে। এই সংবাদ ভানিরা রাজানার করেন। বার্লানার প্রভাবিনার প্রার্লানার প্রভাবিনার প্রার্লানার প্রার্লানার প্রভাবিনার পরে তিনি করেক বংসর হুচারারণের মানার্লার করেন। ইবার পরে তিনি করেক বংসর হুচারারণের মানার্লার করিয়াহিলেন।

১৬০৪ খুরীকে রাজা নানসিংহ বাজাকার পাসমন্তার জ্যাগ করিলে সরাট্ তৎপবে আবৃল মজিদ আসদ্ থান্কে নিযুক্ত করেন, কিন্ত তাঁহাকে অধিক বিম রাজফার্য পরিদর্শন করিছে হয় নাই। কারণ ১৬০৫ খুঃ অন্ধে অকবর পাহের সৃত্যু বাটলে তৎপ্র সম্রাট্ কাহালীর রাজ্যাধিকার প্রাপ্ত হয় ! অত্যরকার পরেই তিনি মানসিংহকে বড়বক্রকারী জানিরা হানাত্রিত করিবার অভিপ্রারে বজরাজ্য-শাসনে নিরোগ করেন। তথাকার বিজ্রোহী আকগান্দিগকে মোগজ-পরামন্ত রাখিবার কল স্রাট্ তাঁহাকে অবিলবে বাজালার অপ্রসর হইতে আবেল দেন। আহবলিক ইতিহাস পাঠে জানা যায় বে, মানসিংহ এইবার বাজালার আসিরা বাজালার মহাবীর বশোরপতি মহারাজ প্রতাপানিত্যকে পরাজিত করিবা সম্প্র ক্ষের্বন অধিকামজ্বত করিরাছিলেন। প্রতাপাদিত্য ও মানসিংহ দেখ।

১৬০৬ খুরাজে সত্রাট্ আহানীরের আনেশে মানসিংহ রাজধানীতে ফিরিরা বান এবং ধাত্রীপুত্র কুত্ব উদীন কোকল্-তাস বালালার রাজগ্রাতিনিধি হইরা আইনেন। কুত্ব উদীন্ ধাঁ কোকগতাস কোকাকে বালালার শাসনকর্ত্তদান করার উল্লেখ্ট কেবল আলী কুলী শের আক্সানের হন্ত হঠতে লগতের ল্লান্ডুডা হলেরী নেব্দ্ব-উদিসাকে হন্তগত করা। কিরণে বড়ব্দ্রে শের আক্সান নিহ্ত এবং তাহার প্রির্ভনা পদ্দী লাহালীনের অকগত হইরাছিল, ভাহা ইডিহাসে উজ্জ্ব আক্সম্মে লিখিত আহে। [আহালীয়, নুর্জহান ও শের আক্সান দেখ]

শের আক্সাদের সহিত বুবে কুত্ব বা নিহত বাইকে সভাট, বড়ই বারণীড়িত হম এবং অবিদাৰ ১৯-৭ বুটাকে বেহারের শাসনকর্তা আহালীত কুণী বান কাবুনীকে ভালালার প্রতিনিধিকে বরণ করেন। ইনি কোল ক্রিক ক্রিকেন, তবছরণ অভ্যানারেই কেবাকানীকে উভ্যক্ত ক্রিক নিয়াকেন।

বালালার ওতাণৃষ্ট যে, তাঁহাকে বছকাল লীবিত থাকিতে হয়
নাই। গর্বাধিকমাত্র লীবিত থাকিয়া তিনি কালের করাল কবলে
নিগুতিত হইলে সমাট্ জাহালীর ১০৮৭ হিজিরার শেখ জালা
উদীন্ ইস্লাম খাঁকে বালালার মসনদে এবং আফ্জল খাঁকে
বেহারের শাসনকর্পদে নিযুক্ত করেন। ইস্লাম খান্ রাজমহল হইতে ঢাকা সহরে রাজপাট পরিবর্তন করিরা উহার
নাম লাহালীর-নগর রাখেন।

এই সমরে আরাকান ও চট্টগ্রামবাসী পর্কু দীল দহ্যদিগের আত্যাচারে নিম্নক উৎসন্ন প্রায় হইতে থাকে। ১৬০৯ খৃষ্টাকে সিবাটিয়ান গলালে সন্ধীপ অধিকার করেন। তথাকার মুসলমান সেনানারক কতে খাঁ উপারাস্তর না দেখিরা একটা কুম হুর্গে আশ্রর লন।

এই সমরে ওসমান বাঁর অধীনত্ব পাঠানেরা পুনরার অত্ত ধারণ করে। ইস্লাম ধাঁ স্থাত ধাঁ নামক একজন লক সৈন্তাধ্যক্ষকে তাহাদিগের বিরুদ্ধে প্রেরণ করেন। পাঠানেরা সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হয়; ওসমান যুক্তেনিত্ত হন এবং তদীর ভ্রাতা, পুত্র ও আত্মীরকুটুত্বগণ সমাটের বশ্লতা স্বীকার করেন (১৯১২ খুইাক)।

এই বিদ্রোহাবকাশে কুতব নামে একজন রোহিলা আকগান জাহালীরের জ্যেষ্ঠ পুত্র ধনকর পরিচর দিরা বেহারে বিল্রোহ উপস্থিত করে এবং পাটনা নগরী অধিকার করিয়া লয়। শাসনকর্তা আফজ্ল খাঁ তথন গাজিপুরে ছিলেন। তিনি এই সংবাদ ওনিরা সদৈজে পাটনা অভিমুখে যাত্রা করিলেন। ছল্মবেলী ধন্ক পাটনা হইতে করেক ক্রোল দ্রে যুদ্ধার্থ অগ্রসর হইল, কিন্তু বুদ্ধে পরাজিত হওয়ার পুনরার পাটনা নগরীতে আশ্রম গ্রহণ করিল; শাসনকর্তা উক্ত নগরী অবরোধ করিলেন। পরিলেবে দুরস্থ গৃহছাদ হইতে নিক্ষিপ্ত ইউকের আঘাতে কুতবের প্রাণবায় বহিগতে হয়। [পাটনা দেখ।]

ইশ্লাম খাঁর মৃত্যুর পরে (১৬১০ খুটালে) তাঁহার প্রাতা কালিম খাঁ সম্রাটের আদেশে বালালা ও উড়িয়ার প্রবাদার হন। কালিম খাঁর রাজ্যশাসনকালে গঞ্জালে বিখাস্ঘাতকতা হারা আরাকান-রাজের গুরুষাহাজগুলি হন্তগত করিরা আরাকানের উপকৃল প্রদেশ পূর্তনপূর্বাক গোরানগরীয় পর্তৃ গীজাদিগকে আরাকান জর করিতে আহ্বান করে। রাজা ওলন্দাজদিগের সাহাব্যে গর্তৃ গীজাদিগকে পরাজিত করেন; এবং সন্ধীণ আক্রমণ ও অধিকার করেন।

অতঃশর আরাকানের মগেরা বারংবার বাজানার পূর্ব-দক্ষিণ আদেশ সূঠ্ন করিরা বাজালা উৎসর করিতে থাকে। এই কারণে সমাট্ জাহালীর কাশিম খার অতি অসভ্য হইরা তাঁহাকে পদ- চ্যুত করিলেন এবং নূর-জহানের প্রাতা ইব্রাহিম খাঁ। কতে জকলে বালানা ও উড়িয়ার স্ববাদার করিরা পাঠাইলেন (১৬১৮ খুঃ)।

ইরাহিমের সমধে বাদালার বাণিজ্যের বিশেব উরাত হয় ।
আগ্রার রাজসভাসন্মণ্ডলীর নিকট ঢাকার হুচিকণ কাপড় এবং
মালবহের পট্টবন্তের বিশেব আদর হইরাছিল। এই সময়ে
ইংরাজ কোম্পানীর এজেন্টগণ পাটনার আসিরা একটী কুঠী
হুগেন করেন (১৬২০ খুটাজে)। ইরাহিমের শাসনকালে বালালাদেশে পূর্ণ শান্তি বিরাজ করিরাছিল। সহসা (১৬২৩ খুঃ) তাহার
পরিবর্তন ঘটল; শাহ জহান পিতা জাহালীরের বিরুদ্ধে অস্ত্রধারণপূর্বক দক্ষিণাপথে পরাজিত হইরা বালালার প্রবেশ করিলেন।
ইরাহিম খা তাহার সহিত যুক্তে নিহত হইলেন। বালালা
ও বেহারে প্রায় হই বৎসর রাজক করিরা শাহ জহান সমাট্প্রেরিত সৈজ্যের নিকট পরাত্ত হইলেন এবং আত্মসমর্শণ করিরা
পিতার নিকট কমা প্রার্থনা করিলেন। তাহার প্রার্থনা পূর্ণ
হইন, কিন্তু এই প্রদেশে অক্ত শাসনকর্তা নিযুক্ত হইল।

শাহ জহানের পরে, অর্মদিন মধ্যেই (১৬২৪-২৮ খঃ) মহকতে থাঁ, তৎপুত্ৰ ধানুজাদ থাঁ, মকরম থাঁও ফিদাই থাঁ নামে যে কয়-জন ক্রমে ক্রমে বাঙ্গালার শাসনকর্তা হন, তাঁহাদিগের সময়ে উল্লেখযোগ্য কোন ঘটনাই ঘটে নাই। মকরম গাঁর রাজ্যশাসন সমরে সম্রাট্ মীর্জা রুম্ভদ নামক এক ব্যক্তি বেহারের সুবাদার নিযুক্ত করেন। ১৬২৮ অব্দে শাহ জহান সমাট্ হইরা ফিদাই খাঁকে পদচ্যত করিয়া খীয় প্রিয়পাত্র কাশিম খাঁ জব্নিকে वानानात ञ्चानाती भारत नियुक्त कत्रिरानन । अहे नमस्त्र हशनी ও চট্টগ্রামে পর্ব, শীব্দদিগের স্থরক্ষিত কুঠী ছিল। এ দেশে তাঁহাদিগের যথেষ্ঠ ক্ষমতাও বিস্তুত হইয়াছিল। শাছ জহান যথন বাঙ্গালায় ছিলেন, তথনও তিনি পর্ত্ত গীব্দের অত্যাচার লক্ষ্য করিয়াছিলেন, তাহারা এজন্দেশবাদীদিগকে বলপুর্বাক খুষ্টান-ধর্মে দীক্ষিত করিত। ইংাতে বৈদেশিক পর্তুগীকলাতির প্রতি জুদ্ধ হইরা সম্রাটু কাশিম খাঁর প্রতি তাঁহাদিগের সহিত বুদ্ধ করি-বার আদেশ দিলেন। স্থবাদার স্বীয় পুত্র ইনারতুল্লাকে ভদ্মিকদ্ধে পাঠাইয়া ছগলি অধিকার করিলেন (১৬৩২ খুঃ)। সেই অবধি এদেশে পর্ত্তাজিদিগের প্রভাব কমিল, হগলি রাজবন্দর এবং প্রধান বাণিজ্যন্থান হইরা উঠিল। এই সমর হইতেই সপ্রগ্রামের ছঃখের দিন আরম্ভ হইল ৷ রাজকর্মচারিগণ তথা হইতে হগ্রিতে চৰিয়া আসাৰ জমশংই সপ্তগ্ৰাম পরিত্যক্ত হইয়াছিল।

কাশিম খাঁর পরে আনিম খান্ স্থাবার হন, তাঁহাকে বেশ-রকাকার্য্যে অপক্ত বেধিরা সম্রাট্ত তৎপত্তে ইস্বাম খাঁ মণ্ছ বিকে নিযুক্ত করেন (১৯৩৭ খুঃ)। অরকাল মধ্যে (১৯৩৮ খুঃ) চইগ্রামের শাসনকর্ত্তা মুকুট রার আন্তাকান-রাজের অধীনতা পরিত্যাপপুর্বক শোগণগদ্রাটের বশ্রতাবীকার করিলেন। আসাধ্রাসীরা বাদালা আক্রমণ করিরা পরাকিত হইল (১৯৩৮ খুঃ); এবং ইল্লাম খাঁ। আসামে প্রবেশপূর্বক অনেকগুলি হুর্গ হন্তগভ করিলেন। ভিনি কোচবেহার-মুদ্ধে জয়লাভ করিরাছিলেন। কিছু উলিরী শেল প্রাপ্ত হইরা শীঘ্রই আগ্রায় প্রভিগমন করিলেন। তখন সম্রাটের ছিতীয় পুত্র স্থলতান মহম্মদ স্কলা বাদালায় স্থবাদার হুইলেন।

১৬৬৮ অব্দে ভোজপুরের রাজা বিদ্রোহী হন এবং জাঁহাকে শাক্তি দিবার অস্থ্য শাহ অহান খীর প্রির দেনাপতি আবহুলা খাঁকে বেহারের শাসনকর্তুপদে নিযুক্ত করেন। আবহুলা ঘাইরা ভোজপুরের হুর্গ অধিকার করেন ও রাজার ছিন মত্তক সম্রাটের নিকট পাঠান।

হুকা শাসনভার প্রাথ হইয়াই ঢাকা পরিত্যাগপূর্কক প্নরার রাজমহলে রাজধানী করেন। এই সমরে ন্র-জহানের প্রাতুপুত্র সারেক্তা গাঁ৷ বেহারের শাসনকর্ত্বপদে নিযুক্ত হন। স্লজার আমলে বালালায় ইংরাজ-বাণিজ্য বন্ধসুক হয়।

স্থলার রাজ্যশাসনকালে করেক বৎসর প্রজাগণ স্থাপ ব্যক্তান্দে বাস করিয়াছিল। ১৬৭৭ খুঃ আদে তিনি বালালার রাজ্যের ন্তন হিসবে প্রস্তুত করেন। ইহাতে বঙ্গভূমি ৩৪ সরকারে ও ১৩৫০ মহলে বিভক্ত হইরা ১,৩১,১৫,৯০৭ টাকা রাজ্যমনির্দ্ধারিত হয়। অক্বর শাহের পরে এদেশে মোগলদিগের অধিকার বৃদ্ধিই এ প্রকার রাজ্যবৃদ্ধির প্রধান হেতু। প্রার এই সময়েই উড়িয়া ১২টী সরকার ও ২৭৬ মহলে বিভক্ত হইরা উহার রাজ্য ৫৯,৬১,৪৯৭ টাকা নির্দ্ধারিত হয়। ১৬৮৫ খুঃ আন্দে বেহারে বন্দোবন্ত হয়। এতজারা বেহার প্রদেশ ৮টা সরকার ও ২৪৬ পরগণার বিভক্ত হইরা উহার ৮৫১৫৬৮৩ টাকা রাজ্য নির্দ্ধারিত হয়।

সমাট্ শাহ জহানের পীড়া হইলে হুজা সামাজ্য-লোভে জাগ্রা থাত্রা করেন; কিন্ধু বারাণসীর নিকটে দারার তনর স্থলেমানের সহিত যুদ্ধে পরাজিত হইয়া বালালার প্রত্যাযুত্ত হন (১৯৫৮ খঃ)!

আরক্ষণের দারাকে পরাত্ত এবং মূরাদকে বন্দী করির।
মোগল-সিংহাসন হস্তগত করেন । অতঃপর প্রবাসের
(আলাহাবাদের) নিকটে স্থার সহিত অরক্ষণেরের এইটা
মূদ্ধ ঘটে। ঐ বুদ্ধে স্থা আতৃহতে পরাজিত হন (১৬৫৯ খুঃ)।
স্থালা প্রথমে রাজমহলে ও তদনত্তর তাঁড়ার আপ্রর গ্রহণ
করিয়াছিলেন । সেনাপতি মীর স্থান তাঁহার পশ্চামন্তী হইলে
তিনি বাখালা ছাড়িয়া আরাকান রাজ্যে আপ্রর গ্রহণ করিতে
বাধ্য করেন। [স্থানা দেখা]

আনস্তর সেনাপতি মহলদ সৈরদ মীর স্থান নবাৰ মুরাজিম বাঁ খান্ খানান্ সিপা সাগর স্বালার হইরা ঢাকা লগরীতে রাজধানী করিলেন। ১৬৬ অলে তিনি কোচবেহার জয় করেন; এবং পর বংলর আসাম আক্রমণ করিরা উহার রাজধানী হত্তগত করেন। কিছ বর্বাকাল উপত্তিত হইলে, তাহার সৈঞ্গণ শীড়িত হইতে লাগিল দেখিয়া তিনি প্রত্যাগমন করিতে বাধ্য হইলেন। ঢাকার পৌছিয়া অয়কাল পরেই তাহার মৃত্যু হয় (১৬৬৪ খ্রঃ)।

মীর স্থার পরে নূর জাহানের প্রাতৃপুত্র সারেকা থা বালালার স্থালার হন এবং সমাট্ অরলজেবের তৃতীর পুত্র স্পাতান মহন্মদ আজিম বেহারের শাসনকর্ত্বপদে নিযুক্ত হইলেন। মধ্যে তিন বংসর ব্যতীত সারেকা থা ১৬৬৪ ইইতে ১৬৮১ খুটাল পর্যান্ত বালালা শাসন করিমাছিলেন। তাঁহার সমরে করাসিরা চল্দননগরে, (১৬৭৩ খুঃ) এবং দিনেমার ও ওললাজেরা চুঁচুড়ার সুঠী স্থাপন করেন। আরাকানরাজ স্থার প্রতি অসদাচরণ করিয়া যথেপিযুক্ত শান্তি না পাওরার সাহসী হইয়া মধ্যে মধ্যে বালালার দক্ষিণ-পূর্ক প্রদেশ সুঠন করিতেছিল; সারেকা থাঁ আরাকান আক্রমণ করিয়া তথাকার রালাকে ব্যতিব্যক্ত করিয়া তুলিলেন এবং চট্টগ্রাম সম্পূর্ণরূপে বালালাভুক্ত করিলেন।

সারেতা খাঁ বেছার বলসিংহাসন ত্যাগ করিলে, সমাট্
অরলজেবের অভিমতে ফিনাই খাঁ আজিম খাঁ উপাধিসহ ১৬৭৭
খুটালে ঢাকার উপনীত হন। পর বৎসর সেগানে তাহার
মৃত্যু হইলে ১৬৭৮ খুটালে সমাট অরলজেবের হৃতীর প্রত্র হালতান
মহম্মন আজিম বালালার হ্বানার হন। তিনি উক্ত বর্ষের
শেবকালে আসামীদিগের উপদ্রব দমনার্থ সেনাদল প্রেরণ
করেন। ইংরাজ ও ওপন্যাজেরা এই সময়ে ঢাকার হুঠী
নির্মাণ করিরাছিলেন।

বোধপুর-রাজকুমার রাজা যশোবস্ত সিংছের নাবালক পুত্রের রাজানিকার লইয়া সমাটের সহিত রাজপুতদিগের বিবাদের স্ত্রপাত হয়, ঐ সময়ে দক্ষিণে শিবাজীর অধীনে মহারাষ্ট্রীয়ণণ মোগলসমাটের অধীনতা অধীকার করে; এই গোলবোগে বিব্রত সমাট্ শীর পুত্রকে বালালা হইতে নিকটে আনাইয়া রাজপুত সামস্ত্রগণের বিক্তমে প্রেরণ করেন। ভাঁহার আদেশে ন্যাব সাহেস্তা বা আমীর উল্ওমরা বালালার স্থানার হইয়া আইনেন।

এবার সারেকা খাঁর অত্যাচারের মাত্রা বিশুণ বাড়িয়া উঠে।
তিনি জিলিয়া কর আঘারের লগু হিন্দুর মন্দিরাণি চুণ বিচুণ্
করিতে লাগিলেন। তিনি খুটানের নিকট হইতেও বলপুর্কক
জিলিয়া গ্রহণ করিয়াছিলেন। এই সময়ে মিঃ হেজেন্ ইট
ইতিয়া কোম্পানির প্রথম গ্রপ্র মিযুক্ত হন। ওক লইয়া

নবাবের সহিত কোন্দালীর বিবাদ বাবে। ছুঞ্ছট খণ্ডবুছের পর ইরোজগণ সন্ধি করিতে বাব্য হইরাছিলেন। ইংরাজেরা হিজাণী হইতে অভারতীতে প্রভারতীতে প্রভারতীতে হুইলেন। কোন্দানীর সদজ্যের পুনরার বুছার্থ প্রস্তুত হুইলেন। কোন্দানীর সদজ্যের পুনরার বুছার্থ প্রস্তুত হুইলেন। এই সমরে ইংরাজনৈক্তকর্ত্ব বালেবর সৃষ্ঠিত হর। ইংরাজনিগজে মোগল-সাম্রাজ্য হুইতে বহিত্তকরিবার জন্ম সারেবা বা দিল্লী ইইতে পরওরানা আনাইরাছিলেন। উহার কিছু পরে ভিনি বালালার শাসনকর্ত্ব ভাগে করেন। বিশ্ব বিশ্ব পরে ভিনি বালালার শাসনকর্ত্ব ভাগে করেন। বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ভিনি বালালার শাসনকর্ত্ব ভাগে করেন। বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ভিনি বালালার শাসনকর্ত্ব ভাগে

ভদনত্বর ১৬৮৯ খুঃ জঃ নবাব ইত্রাহিম খাঁ বাদাগার শাঁসনকর্ত্বনে নিযুক্ত হন। পর বংসর তিনি স্থাট্ অরলজেবের
নিকট হইতে ইংরাজনিগকে এদেশে প্রভাবর্তন করিবার
জন্মতি আনাইরা দেন। ইহার কারণ এই বে, ইংরাজেরা
মোগলদিগের করেকখান জাহাল হল্পত করেন এবং মুসলমাননিগকে কলপথে ভারত্বর্ব হইতে মন্তার বাইতে ধেন নাই।
ইত্রাহিম খাঁর আহ্বানে চার্ণক ব্যক্তবলে প্রভ্যাগ্যনন করেন
(১৬৯০ খুঃ)। জনত্তর সমাটের হকুম আসিল বে, বাণিল্যার্থ
ইংরাজদিগের বার্থিক ০০০০ টাকার অধিক ওক দিতে হইবে
না (১৬৯১)। ইহার পরে বাদশাহ চুইবার ইংরাজদিগের
বাণিল্য বন্ধ করিতে আদেশ দেন; ইত্রাহিম খাঁর জন্মগ্রেকে
ভাহাদিগের কোন বিপদ খটে নাই।

১৬৯৬ খৃঃ আবে শোভাসিংহ নামে বর্জমানের একজন জমিনার, বর্জমানাধিপতি রাজা ক্ষরামের বিরুদ্ধে অন্তবারণ করেন এবং রহিন বা নামে একজন পাঠান দলপতির সঙ্গে যোগ দিরা রাজাকে নিহত ও চতু-পার্থবর্তী দেশ সুঠন করিলেন। হগলী ভারাদিগের হস্তগত হয়; চুচুড়ার ওলন্দাকেরা, চলননগরে করাসিরা এবং কলিকাডার ইংরাজেরা আত্মরকা করিতে নবাবের অন্তব্যতি পান। এই ত্রোগে ইংরাজেরা "কোর্ট উইনিয়ন" চর্প নির্দাণ করিতে আরম্ভ করেন।

ভগদান্দিগের সাহাত্যে ইতাহিম থী হগদী পুনর্ধিকার করেন। শোভাসিংই বর্জনান রাজকুনারীর ধর্মনান করিতে গিরা উহারই অল্লামানে আদ বিসর্জন দেন। এই রাজ্য বিমানের সমরে সঁরাট অর্থনেরের শৌল্প আজিম উস্নান বালালা, বেহার ও উড়িন্তার নালনকর্তী হইল আগমন করেন। ছবারারের পুত্র অব্যবস্ত থী রাজস্বলের নিকট রহিন থাকে পরাজিত করেন (১৯৯৮ বাং)। পর বংশর বর্জনানির নিকট সংগ্রামে রহিন বার বৃত্যু বটে এবং ভবীর অন্তর্জনানের বর্ত্যে কির্নাংশ নিকট হটকে ইংলাজের হুলাভান, নোকিবলুক এবং কণিকাভা

এই করেকটা বোঁলা ক্রের করিবার করেবাত পান (১৯৯৮ বঃ)।
এই সমরে ভারতবর্বের সহিত বাণিল্য করিবার নিমিত পার
একটা ইংরাজ কোম্পানি স্থাপিত হয়। পুরাতন এবং নৃতৃন এই
ছই কোম্পানির পরম্পার বিবাদে উভরের স্বার্থহানি হয় দেখিরা,
কোম্পানির বিশিত হইল (১৭-৬ বঃ) এবং উভরের হোগে
কোট উইলিয়ান ছর্বে ১৩- জন বুরোলীর সৈনিক রক্ষিত হইল।

আজিন উন্নানের পাসনকালে বুর্গিরকুলি খান্ বালাগার বৈধরান হইয়া আনেন (১৭০১ খঃ)। তিনি বরিত্র আজপন্তান ছিলেন। পরে পারত্রবেশীর বিপিক হাজি প্রকিরা কর্তৃক জৌত ও বুসলমানথর্বে বীজিত হরেন। ইহার পূর্বে অফবর পাহের সমর হইতে বালাগার বেওরান ও নাজিমের পদে তির তির ব্যক্তি নিযুক্ত ছিলেন। দেওরান রাজত্ব আগার করিতেন এবং আরব্যরের প্রতি লৃষ্টি রাখিতেন। নাজিমের প্রতি বেশরকা ও পাত্তিরকার ভার ছিল, এবং তাঁহার অধীনে সৈম্ভ ও শান্তিরক্ষর পাকিত। তিনি সরকারী কার্য্যের জম্ম প্রবারা বখন বে টাকা চাহিতেন, দেওরান ভারা দিতে বাধ্য ছিলেন, কিছ টাকা ব্যরের লারী নাজিম থাকিতেন। বাদশাহের ইহাই আলেশ ছিল বে, বড় বড় কার্য্যে উভরে একমত হইরা চলিবেন। নাজিমের অধীনে ভিন্ন ভিন্ন তানে প্রবেদীর পাসনকর্তা স্বরূপ এক একজন কৌজানে ছিলেন।

মুর্শিদকুলি বঁ। দেওয়ান হইলে তদীয় পরাম্পাত্সারে সম্রাট বালালার আরশীরবারদিগের ভূমি থাল করিয়া লইয়া ভাহার সম পরিমাণ ভূমি উড়িয়া প্রভৃতি বেবলবন্তী প্রদেশে ভারগীরশ্বরূপ প্রদান করিলেন। এইরণে ও অক্সাক্ত উপারে এদেশের রাজস্ব বুদ্ধি করিয়া মুরুশিদ বাদশাহের প্রির হইরা উঠিলেন। কিন্তু ব্যর-বিবদে অভ্যক্ত সভৰ্ক হওয়াভে এবং যুদ্ধক জানুগীরদারদিগকে অ্যব্রট করাতে, তিনি নাজিমের বিব্যুটতে পড়িলেন। আছিম উন্সান একৰাৰ ভাঁহাকে সারিয়া কেলিবার চেষ্টা করিলেন; কিছ ভাহাতে রুডকার্য হইতে পারিলেন না। অন্তর নুরশিদ कृति थैं। प्राप्तात बाबधानी बाधा खरिधा नरह वृत्तित्रा, मुक्छण-বাবে খীর বাগছান ভিন্ন করিরা আপনার নামাছলারে উক্ত নগরেম নাম মুখুলিবাবার মাথিলেন। এই সকল সংখ্য সম্রাটের নিকটে পৌছিলে ছিনি আজিন উস্নানকে ভর্ সনা ক্ষিয়া পত্ৰ নিখিলেন একং ৰালালা পরিস্থাপ ক্ষিয়া ৰেছায় ৰাইবার আবেশ বিলেন। পার বৎসর মুম্বনির বন্দিশাগারে বাইরা সরাটের সহিত সাক্ষাৎ করিরা আর্থানের হিসাব প্রথান করিলেন। ভাতার কার্যেক্তা বেপিয়া বাদনাহ এরপ मक्के इरेरनम (९, क्रीहारक त्रावामा क क्रिकांच (दक्षामी) এক সংস্থায়ী নাজিবগমে নিযুক্ত কমিসেন।

১৭০৭ খা আবে বীর পুত্র করণ নিররকে প্রতিনিধি রাখিরা আজিম উন্নান দিরীতে প্রত্যাগদন করেন এবং তাঁহার অর্থ ও নৈক্তবলে পর বংসর তাঁহার পিতা পাহ আলম্ বাহারর পাহ নাম ধারণ করিরা মোগল-সিংহাসনে আরোহণ করিরাছিলেন। করণ সিরর মুরশিদাবাদ রাজপ্রাসাদেই থাকিতেন, তিনি মুরশিদ-কুলি খাঁর কোন কার্যো বাধা দিতেন না। স্থতরাং ১৭০৬ খা: অক হইতে প্রকৃতই মুরশিদ এদেশে দেওরান ও নাজিম পদের সমুদ্র কার্যাই করিতে আরম্ভ করেন। প্রার এই সমর্যেই সেরদ আব্হুলা খান্ আলাহাবাদের এবং সৈরদ হুলেন আলী থান্ বেহারের শাসনকর্তা ছিলেন।

১৭১২ খা অব্দ বাহাত্তর পাছের মৃত্যু হর; আজিম উপ্সান বাদশার হইবার চেটা করিরা নিহত হন এবং করণ সিরর বালাপা পরিত্যাগ করিরা দিলীতে বাইরা স্রাট্ হন। করণ সিরর বাদশাহ হইরা মূর্নিদ কুলি খাঁকে বালাপা ও উড়িব্যার নাজিমী পদ প্রাদান করেন (১৭১৩)। ১৭১৮ অব্দে মূর্নিদ বেহার প্রাদেশেরও নাজিম ও পেওরান হন।

মুর্শিদ দেওরান ও নাজিম হইরা অস্ত্র লোকের কাছে বেরুপ বাণিজ্যের মাওল পাইডেন, ইংরাজদিগের নিকটেও ভক্রপ মান্তল চাহিলেন। ইংরাজেরা সম্রাট সমীপে দৃত পাঠাইলেন। সমাট কলধ্সিরর তথন পীড়িত ছিলেন। ঐ গুভদলের মধ্যে ডাক্তার হামিণ্টন সাহেবের প্রচিকিৎসার প্রস্থ ভইলে, তিনি সভট হইরা তাঁহাদিগের প্রার্থনামুঘারী সনক बिटनत। এই जनम बाता वित्रीकृष्ठ रहेन (१, (১) हैश्ताब **टकान्लानि विना मास्टरम बाकालाव वानिका क**ब्रिटेड लाबिटवन ; (২) তাঁহারা কলিকাতার নিকটবতী অদ মৌলা ক্রম করিতে পারিবেন; (৩) মুরশিদাবাদের টাকশালে সপ্তাতে তিন দিন छाँशामित्रत अस होका मुजिए हरेटव ; (8) वाशता है वाल-দিগের কাছে গাদী, নবাবের কার্মচারিগণ তাহাদিগকে हैश्ताक्षितिका इत्क नवर्गन कतित्वन । हैश्ताक्षता এहे ननम লইয়া আসিলে সুবাদার কুল হইলেন এবং কলিকাভার সমীপছ अभिशाद्रशितरक हैश्त्रां अविराध मिकारे अभि विकास करिएक निरंदध ক্রিলেন। কিছু অপর তিন্টা সূর্ত স্বত্তে তিনি কোন বাধা দেন নাই। সনন্দ দারা ইংরাজদিগের বাণিজ্যের অনেক স্থবিধা হুইল এবং কলিকাতার সমৃত্তি দিন দিন বৃত্তি পাইতে সাগিল।

মুরশির কুলি খাঁ বালালার রাজবের বে নৃতন হিনাব এছত করেন (১৭২২ খা), ভদারা বার্ষিক রাজস্ব ১,৪২,৮৮,১৮৬ টাকা নির্মারিক হর। তিনি বক্ষভূমিকে ১৬ চাকলা, ৩৪ সরকার ও ১৬৬০ পরলালার বিভক্ত করিরাছিলেন। প্রবাধার অমিনার দিশের নিকট একং অমিলারেরা প্রজাবিগের নিকট হইতে টাকা

আৰাৰ করিতেন; রাজখ-সংগ্রহের জন্ত মুর্নির অমিবার্ডিগাকে অনেক কর্ত থিতেন। তাহার বৈশুঠের কথা কাহারও অধিনিত নাই। রাজখনিতাগের কর্মচারিগণ প্রায় সকলেই হিন্দু ছিলেন। মুর্নির কুলি থান্ প্রমন প্রতাপাধিত হইরাছিলেন বে বিপুরা, আসাম, কোচবেহার ও বিশ্বপ্রের খাধীন রাজারাও তাহার নিকটে উপঢ়োকন পাঠাইতেন। মুর্নির কুলি বাঁ দেখা।

১৭২৫ খাঃ অব্লে তাঁহার মৃত্যু সমন্ন তিনি খাঁর দৌছিত্র সরকরাজ থাঁকে বালানার প্রতিনিধিকে উভরাধিকারী বলিলা বান। ঐ সমরে সরকরাজ থাঁর পিতা নবাব মোতিমন উল্ মৃল্ফ জ্বলা উদীন নহম্মদ থান্ প্রজা উদ্দৌলা আছার জল বাহাত্বর মূর্নিফ-কুলি থার অধীনে উড়িবাার শাসনকার্থ্যে নিযুক্ত ছিলেন; তিনি স্বাট মহম্মদ শাহের নিউট হইতে গোপানে বালালা ও উড়িবাার শাসনাধিকার হত্তগত করিতে চেঠা পান। মূর্নির কুলি খাঁর মৃত্যু হইলে তিনিই প্রথমে তৎপদ অধিকার করেন এবং প্রে সরকরাজ থাঁকে বালালার বেওরানী পলে রাখিরা তাঁহাকু, জোধ শান্তি করিলেন। এই সমরে বাহলাহ নসরৎ থাকে বেহারের শাসনভার প্রধান করেন। তর্গনতর তিনি তৎপদে কথর উদ্দৌলা নামক এক ব্যক্তিকে নিযুক্ত করিরাছিলেন।

রাজ্য বন্ধ করা বোবে যে সকল অমিদার কারাক্ষর হইরাছিলেন, দরাপরবর্ণ ক্ষলা তাহাদিগকে বৃক্তি কেন এবং আলমটাদ নামক একজন হিন্দুকে সহকারী দেওয়ান করিরা তাহার কল দিলী হইতে 'রাম-রামা' উপাধি আনান । আলমটাদ, জগংশেঠ এবং হাজি আদ্ধন ও আলিফলী খান্নামক ছইজন আত্মীর, এই চারি জন লইরা ক্ষলা একট মন্ত্রিসভা গঠিত করেন। তিনি ঐ সভার পদামর্শ প্রবণপূর্কক রাজকার্য্য নির্বাহ করিতেন। এই সকল কারণে করাব ক্ষলা প্রথম হিন্দুদিগের বিশেব ভক্তিভালন ছিলেন।

মুরলিদ কুলীর দোষ্ঠি প্রভাগে বাজালা লগজিড ছিল।
তথন বাজালার সৈভসংখ্যা অনেক কম ছিল। প্রকা বাজালার
সৈভসংখ্যা বৃদ্ধি করেল; এডজির তিনি অভাত লাকজবন্ধেও
মত্ত ছিলেন। তিনি মুরলিদ কুলি গাঁর ভার নিরমিজরূপে বিরীজে
রাজখ পাঠাইতেন। বৃধা আড়বরপ্রিয়তার উথার যায় অভাত
বাড়িরা বার। এই নিমিত্ত ভিনি নির্দিট রাজবের অভিনিজ্জ
আবওরাব নামক কর সংগ্রহ করিছে বার্য হন। আবওরাব
ভাহার সমরে প্রার ২২ লক্ষ্ক ইরা উঠে। আলিবর্দ্ধী ও বীরকাপিবের শাসনকালে উহা ক্রমণা প্রিবিভিত্ত ইউতে বাড়ে।
যবন কোল্গানি বাহাছর ছহতে বাজালার সেওরাবী প্রবন্ধ করেল
(১৭৬৫ খুঃ), তবন বাজালার নোট রাজ্য আর্থানিত
ভাবিত ছিল।

১৭১৯ বা আকে বেহারের নান্তর্ভা কর ব উবেলা প্রচাত হলৈ করা কর্তাকার ক্রানার হন। তিনি আলিবর্দি
বাঁকে বেহারের পান্তর্ভার ক্রানারী ক্রিয়ারিণকে পরাজিত ও
লাসিত করিয়া বেহারের পারিয়াগন করেন। ১৭৩২ অবে
চাকার বেতরান বীর হবিছ বিশ্বাকার বা চাকার ভারার নোলেনামার নার ছারেন। অনভার সমক্রাক্ত বা চাকার পাসনকর্তৃপবে
বিজ্ঞানিক হল। অনভার সমক্রাক্ত বা চাকার পাসনকর্তৃপবে
বিজ্ঞানিক হল। অনভার বিভার বাস করিতেন।
ভারার সেওবান বলোকত রার অচাকরণে রাজকার্য নির্বাহ
ক্রিয়া সভলের ক্রীতিভারন হন। তাহার আমন্তেও সারেতা
বাঁর সমরের ভার প্রমন্ত্রার টাকার ৮ মণ চাউল বিক্রার হইয়াছিল
(১৭৩৫ বাঃ)। ইহার হুই বৎসর পরে সক্রানের ক্রোকার
ভারি আলবের মধ্যমপুত্র নৈয়ন আকর বিনারপুত্র ও ক্রোচবেহার
আক্রমণ করিয়া ক্রমতা রাজান্তিপের ব্রহ্মান স্কিত ধনরাশি
হক্ষাত করেন।

ভাষার পাসনকালে ১৭২ছ খুৱাছে আঠেও বঁট ইভিয়া কোন্দালী বালাবার বাণিজার্থ আগ্রমন করেন। বাকি-বালারে ভাষাজ্যর কুটা কাণিত ছিল। এই অর্থা-বণিকসম্মান্তরের বাণিজ্য বুলিজে স্বাধিজ ক্রা ইংরাজ ও ওলকাজ বণিক্গণ তাঁলালের বিক্তাভারী ক্রন্যান। তাঁলারের অন্তোচনার নবাব স্থলা উদীন্ ১৭০০ খুৱাজে অর্থানিকের কুটা অবরোধ করিলেন। অবশেবে নবাব দেনাপতি বীর জাক্য বাঁকিবাজার ক্তগত করিয়া ঐ কুটা ধ্বংস করেন।

১৭৩৯ থা আৰে হাৰা উদীন মানবলীলা সংবরণ করেন।
মৃত্যুকালে তিনি হাজি আমন, অগৎশ্যে ও আলমটার এই
করেকজনের পরামণ লইবা বীর পুত্র আলা উদোলা সরকরাজকে
রাজকার্য নির্বাহ করিতে আমেশ করিবা বান। কিন্তু সরকরাজ
নিংহান্দের আরোহণ করিবাই হাজি আছব ও অগংশেঠকে
আনালিত করিলেন। তাহাত্তে ভারোরা কুত্র হবরা বিনী হবতে
আলিবর্ষী বার নিবিভ বালালা, বেহার ও উড়িবার সুবাবারী
পরের নিরোগণার সংগ্রেকে করবর করিতে ছিলেন। এই

সহবোদিতা লাভ করিনা আলিবলী দিলৈতে পর্করাজের বিরুদ্ধে বুজনাআ করিলেন। বুরানিবাবার পরিতিত গড়িরা নাবত স্থানে নরকরার পরাজিত ও নিহত হবঁলে (১৭৪০ বুঃ) আলিবলী বালালার ক্যানার পদে অধিকীত হবঁলেন।

আলিবলী ত্ৰাবার হইরা বিলীতে আনেক উপটোকন জোনবারে রাজ্যপানদের নৃতন বংশাবত করেন। তাঁহার জিন কলার সহিত ভাঁহার রাতা হাকি আল্লেবর তিন পুরের বিবাহ হইরাছিল। ঐ আমাত্ত্রর মধ্যে নিবাইল নহক্তরে তিনি চাকার এবং কনিও জৈন উদ্দিনের পুত্র নিরাক উদ্দোলাকে ভিনি অভ্যত ভাল বাসিতেন। জৈন উদ্দিনের পুত্র নিরাক উদ্দোলাকে ভিনি অভ্যত ভাল বাসিতেন। এই কারণ ঐ বালককে ভিনি সর্ক্রাই দত্তর-প্রায়রণ পালন করিতেন; অভ্যাপন সরক্রাক বাঁর ভাগিনী-পতি উদ্বার পালনকর্ত্তর বুলিক ভূগিকে পরাক্রিক করিরা ভিনি বীর মধ্যম আমাতা নৈরক আল্লেকে সে প্রায়েকের খালমভার অর্পা করেন। কিছ আল্লেকের অস্থানকর্ত্তর উদ্বার বিক্রার স্থান করেন। কিছ আল্লেকের অস্থানকর্ত্তর করের। কিছ আল্লেকের করেন। কিছ আল্লেকের করেন। কিছ আল্লেকের করেন। কিছ আল্লেকের আল্লিকর্ত্তী উদ্বিদ্ধার সমন পূর্কক লাবাতার উভার সাধ্য করেন।

এই সময়ে ১৭৪১ খা আলে চৌশের বাবী করিরা মহান্নাইগণ বালানা আক্রমণ করিরা ভারীরণীর পশ্চিমতীরকর্তী প্রদেশ অধিকার ও সুঠপাঠ করিরা প্রকালিগকে বংশরোলাভি কঠ প্রেনা করে। ভাহাবিগের অত্যাচার্যন্তরে কলিকাভাবাদিগণ নগররকার্যে নারহাটা থাড়া কাটিতে আরম্ভ করেন।

নবাব কৰা উদ্ সূদ্দি, হিসাম উলোলা নহমদ আদীঘলী গাঁ নহমদ আদ বাহাছৰ এই সংবাদে উছিবা বিজ্ঞান্তৰ আমোদ-আমোদ ভূলিয়া নহাৱাই বীৰ্য ধৰ্ম ক্ষিমান কভ বৃত্তৰ উলোগে আগত বহিলেন। পৰ বংসৰ তিনি ভাহাধিগৰে কাটোৱার নিকটে পরালিত করিলা দেশ হইছে বহিল্প করেন (১৭৪২ বুঃ)। অসভর আহারা বারংবার এতকেশ আন্তামন করিলা ক্ষানারক ব্যক্তিক করে। পরিশেকে আলিবর্দী ভাহাধিগকে কটক প্রদেশ করিলা এবং বালালার চৌক্তরণ বংসার বংসার বার সক্ষানা করিলা এবং বালালার চৌক্তরণ বংসার বংসার বার সক্ষানা করিলা এবং বালালার চৌক্তরণ বংসার বংসার বার সক্ষানা বিত্তে বীক্তক হবৈর কবি কলেন (১৭৪২)। এই স্কানাই আন্তামণ কালালার "বিস্তিত্ত আলালা বালিয়া আলা।

वर्णित शामामान ज्ञास बदारान किनास किनास केन्स्टिक इत । बाग्नम (ज्ञानोजीक स्थापन की विद्यादी श्रेष्ठा स्वरादास ज्ञानककी देवन केलिन संक्षेत्र स्वरा । ज्ञानका नामानत की विद्यानप्राध्यक्त न्यास देवन केलिन के किरोह निका शामिन ज्ञानकार जिल्ले करत । किंद्र जाविकार्गित सहिक नाहिना स्वराद विश्व तोह नाहक सारत नाहिक के विश्व होते (१९४० कुछ ।)

গুনাবান ঐতিহানিকার কর্মণ ব্যিক্ষাহানের বালাগান লবারিতি
সক্তর একমত গহেব। কেন্দ্র ক্ষেত্র, মুনাবার নুমনিং কুলার নাসনগালেই
কর্মন বালিকানের একান বিলুপ্ত বহু। ঐতিহানিক অর্থি কমেন, ১৭:৮
বুইালে উল্লেখ্য একান ও বংলা আছিত ক্ষেত্রাহানের। কিন্দ্র আছিত লোগানির
বিল্লেখ্যতে একান ও বংলা ক্ষেত্র আছিত ক্ষেত্রাহানের। কিন্দু পানিত অবলং
উল্লেখ্য গানিলাঞ্জনার কর্মা বহুতে আরু একা ১৭০০ বুইনেকা ক্ষুত্র উল্লেখ্য
ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র কর্মা বহুতে ক্ষেত্র কর্মানিক ক্ষর্মন ক্ষেত্র ক্ষরাত্র
ক্ষেত্র ক্ষরা বালাকার্মী ক্ষরাত্র ক্ষরাত্র ক্ষরাত্র ক্ষরাত্র ক্ষরাত্র
ক্ষরাত্র ক্ষরা বালাকার্মী ক্ষরাত্র ক্যরাত্র ক্ষরাত্র
কৃতীর বিজ্ঞানের ইল নিরাক্তনোলা। বাভানতক নিংহাসন্ত্রত করিবার আগার পাটনা আক্রমণ করিতে নিরা তিনি তথাকার পাল্নকর্মা রাজা জানকীরার কর্মক কারারক্ষ হন (১৭৫০ খুঃ)। এরণ আচরণেক নিরাকের প্রতি জালিবর্মীর বিরাগ করে নাই; বরুং নিরাজ কিনে সভই থাকেন কংশতি জ্বাভারের বিশেব গৃষ্ট ছিল। এই কারণেই নিরাজ উল্লেখনার জভ্যাচার বৃদ্ধি পার। জাহার সময়ে নিবাইস মহর্মের প্রিরণাত্র চাকার সহকারী পালনকর্মা হোলেন কৃত্যি বাঁর বিনা জণরাবে বিনাপ সাধিত হয়। [আলিবর্মা, মহারাই ও হোলেনকুলি দেখ।]

১৭৫০ অক্সে আলিবর্দী বেহারের রাজবের নৃতন কলোবত ফরেন। এতছারা বেহার প্রবেশ ৮টা সরকার ও ৩২০ মহলে বিভক্ত ধ্রু, এবং ইহার রাজব ১৫, ৬,০৯৮ টাকা অবধারিত ক্ষাছিল।

১৭৫৬ খুঃ অংশ আলিবর্কী বানবলীবা সংবরণ করেন;
তাহার পূর্বেই সিরাজ-উদোলার পিতৃবাধ্বের মৃত্যু ঘটে।
ইফানের অংখ্য পূর্ণিরার শাসনকর্জা সৈরদ আক্ষরের পুত্র সঞ্জত
ক্রম্ম আলিবর্কার আনেশে পূর্ণিরার শাসনকর্জ্য লাভ করেন।

আলিবলী খাঁ ইংরাজনিগের ক্ষমতা ব্রিরাহিলেন, একভ বালিজ্য গইরা ভাঁহাদিগের সহিত কোমরপ কিরোধ করেন নাই, ভাঁহাদিগকে এবেশ হইতে তাড়াইয়া দিবার পরামর্গ একজন উচ্চশন্ত্র কর্মচারী ভাঁহাকে প্রদান করিলে, ভিনি বলেল বে, শহলের ক্ষমি নির্বাণ করাই কঠিন; জলে আজন লাগিলে কে নিবাইবে?" ফরালী এবং ওলনাজেরা ভাঁহার সমরে ক্ষথে বাণিজ্য চালাইরা ছিল। ভাঁহার বিবাস হইরাছিল বে, অল্লকাল মধ্যে ভারতবর্বে "টুশিওরালা" নিগের প্রাবাভ স্থাপিত হইবে। ১৭৪৬ বুটাকে বিলোমারেয়া শ্রীয়ামপ্রের কুঠা স্থাণন করেন।

নিয়াক উজোলা নিংহাসনে আরোহণ করিরা হুকরিবতা ও
নির্চুয়তানিবছন শীরই লোকের অন্তির হইরা উঠিলেন। সকলে
পূর্বিয়ার শাসনকর্তা সঙ্গত লক্ষণে হুবাবার করিবার উজেলে
একটা বড়বার করিবা। নিয়াক ইহার সঞ্জান পাইরা সনৈতে
পূর্বিয়াজিব্ব অন্তল্য হুইলেন। পবিষয়ে তাঁবার সন্তলর
ক্রিকারিক হুইল—ভাতার জ্যোক ইংরাকবিশের বিক্তমে
বাবিত হুইল।

চাজার সংখ্যারী শাসনকর্ত্তী রাজবন্ধতের মন্দান্তি হজগতকরণ-প্রক্ষে ইংরালের পরিক ক্ষানের বিবোধ কর। আশিনবালারের কোন্দানির মুক্তী ক্ষপত করিবার পর স্থাবলৈক্ত কলিকাভার ইংরাক মুক্ত অধিকার করে। স্থাবল ড্রেক স্থানে জলসংখ আলিয়া কলভার স্থাবিলেন। কলিকাভার ইংরাজবনিকাশ কারাবার বাজিকো। (অভমুগ হাচা সেব।) ক্ষিত্ৰত অবরোধ ও অবিকারের পর নিরাক পাণর প্রথম ক্ষিত্রের। সংগতের নবাব-নেনাপতি রাকা লোক্ষ্যানের ক্তে
নানকর্তা সঙ্কত কল পরাক্তিত ও নিক্ত হুইনের । অক্ষাপর
ক্লাইব, নীর্লাকর, উনিটাদ প্রকৃতির নক্ষোপে নিরাক্তে ক্লান্তচ্যুত্ত ক্ষিবার বর্ত্বর হর এবং তৎপ্রসলে বিভাগত প্রণালিক্তের
ক্ষুত্র বটে। ১৭৫৭ গুরাকে ২০ কুল বুলে ইংরাক্ষের কর ক্ষুত্রে
নবাব ভ্রাবেশ প্লাক্ষ্য করেল ও প্রিক্তো ধরা প্রিকা নীর্লাক্ত প্রাণ্ড হার্মাণ। [বিভ্রুত বিবরণ নিরাক্ত ও প্রাইব প্রে ক্ষ্যান্ত্র

প্রামীর বৃত্তর পর ইংরাজেরাই কালাগার হর্ডাজর্জা, বই-প্রেম ঃ অভগের নীয়লাকর, নীরকানির বা সভার উদোলা প্রস্তৃতি বে কর্মনা নবাব বালালার স্পর্যাধ অভিবিক্ত হইরাছিলেন, ভালা ইংরাজনিগেরই অভ্যাধ-কলে বলিতে হইকে। বালাগার নেওরানী প্রান্তির পর হইতেই অভ্যাপকে বালালার কোগণ কর্মন অপত্ত হইরাছিল।

/		A	
्यम् ण	-সমায়েক স	तानच् जायान	तांश्व जांगमञ्जूष्ट्रम ।

मृत्य	Per	परम्पत्र मानतिक विक्रीन्त्र
3414	X4-10	चीः बदान
>613	351	म्याम्ब वी रिक्त स्थान स्थापित हो।
ser.	446	्याचा देशपुत्र सम्बद्धाः 🗯 🗯 🔻 🖓 🖓
3652	***	चान् चानिय 💎 🔑 🖂 🦓 🥱
>428	>>>	भार्याम वी 💎 🕠 👵 👵
>645	266	য়ালা মানসিংহ 🔻 🕸
36.6	3+36	কুডৰ্ উদিন কোকন্তান পাছালিন
5609	>+>0	बारानित कूनि भी
70.4	>>>	নেৰ ইনলাম বাঁ
>4>4	५०२ १	কাশিদ বাঁ 🔻 🔻 🔆 🧛 🦠
3424	>+24	रेबारिम वी 🛒 👵 👫 🦠
-	3.00	भार बदान वि
SWE	>-00	बाम्बाम् की 💮 🔆 🐧
364	3+46	उक्का वी कार के जिल्ला
3924	3 000	विषादे भी कार्या का कार्या के
>624	3.01	
5000	3684	আজিৰ শী
3001	3+8V	रेम्लाव वी यमस्ति
5440	3.45	चनवार दना
5660	>+9+	नीत रून्स
		भारतका वी
*****	****	विचार में।
CHAR	- 3000	श्वकार मरका लागिक

कृ कः	विः	राज्यम	नावविक विकीयत
>4r.	>+>+	সারেকা বাঁ	à
>445	2.25	रेखारिय वी २व	S
2429	33.4	আজিৰ উদ্সাদ	\$
		बुवनिय कृति थै।	&
		ভুজা উদ্দিদ বাঁ	মহক্ষদ শাহ
3.03	3565	আলা উদোলা সরকরাক বাঁ	3
398+	3660	जानियकी या प्रस्तात कन	&
39.6		সিল্লাক উলোলা	আলম্গীর
2263		नीव कांकत चानी वां	&
> 900		কাদিম জালী ধাঁ	শাহআলম
3100		নীর স্বাকর আলী বঁ।	•
3906	3342		\$

১৭৬৫ খুটান্দে আহরারী মাসে মীর আকরের মৃত্যুর পর, তংগুত্র নৰ্ম্ব উলোলা ইংরাজ কোম্পানীর সহিত সন্ধিত্ত चावक हरेता हैश्ताककरत वनतावा-त्रकाचात नवर्गन करत्रम । তিনি কেবলমাত্র নামে নবাব-মাজিমের পদাভিবিক্ত রহিলেন, বালালার কৌজবারী ও বেওরানী বিচারের পরিদর্শনভার তাহার উপর ছক্ত থাকিল না ; তিনি বস্তত:ই বিচারবিভাগের ব্যবস্থাপকৰ ও সৰ্বামন্ত্ৰকৰ হারাইলেন। তাঁহার অধীনত এক ক্সন ক্ষেত্ৰামের ক্ষরাবধানে নিজামতের কার্যা চলিতে লাগিল। चारवाशांत खेळीत राजा खेटमोगांत शताखरवत शत. हेश्त्रांक কোল্লানী আলাহাবাদ ও কাড়া প্রদেশ দিলীখরকে উপঢ়োকন দিরা তৎপরিবর্তে বন্ধ, বেহার ও উড়িব্যার দেওয়ানী সনন্দ লাভ करतन, जाशास्त्र मनाव-नाश्चित्वत्र "निव्यामर" त्रकांत्र वश्च वार्विक ৫৩৮৬১৩১ সিল্লা টাকা বৃত্তি ধার্যা হইরাছিল। ইংরাজগণ সেই प्रत्व भूर्निमावादम्य नवाविमगरक के वृक्ति मिएछ वाश्रा हन । भरव ইংরাজের কটনীভিতে উহা ক্রমশঃ ছানপ্রাপ্ত হর। বাভবিক পক্ষে এই সময় হইডে ইংরাজ কোম্পানী বালালার প্রকৃত পাসন-কর্তা হইরাছিলেন। নিজামৎ মস্নবের উপসম্বজ্ঞানী বাজালার भन्नवर्षी नवाव नाश्चिमशर्गतन वरण-जानिका नित्र **अन्य रहेण** :---বৃদ্ধিভোগী খালালার স্বাহ্থণ।

১৭৬০ নজন্ উদ্দোলা---নীরজাদর আনীর প্র, ১৭৬০ খুঠানের তরা নে ? ইহার ভৃত্যু ঘটে ৷ ইনি দেওবান ইংরাজ জোন্দানীর নিকট রইজে বার্বিক ৫৩৮৬১৩১ নিজা টাকা বৃদ্ধি গ্রাপ্ত হন ৷

১৭৬৬ নৈক উজোলা—নীয়জাকরের বর পূত্র; ১৭৭০ খুটাবের ১০ই নার্চ সুজ্য হর। ইহার সমর বার্বিক রুতির হার ক্ষিয়া ৪১৮৬১৩১ নিজা টাকা থাকা ক্ইয়াছিল।

- ১৭৭০ সুবারক উদোলা —দীরজাকর থর পুত্র; ১৭৯৩ খুটাকের সেপ্টেবর মানে সৃত্য়! রুদ্ধি ৩১৮১৯৯১ নিজা টাকা প্রাপ্ত হন। ইহারই অবিকারকালে ১৭৭২ খুটাকে উক্ত বৃদ্ধির টাকা ক্যাইরা বার্বিক ১৬ লক্ষ রৌপ্যসূলা ধার্যা হর। সেই হার অভাশিও চলিরা আসিতেছে।
- ১৭৯৩ নাশির উদ্ মৃত্ক উকীর উজোলা বেলবার জল— ম্বা-রকের প্র, ১৮১০ বৃষ্টাবের এপ্রিক বালে ভাঁহার মৃত্যু বটে।
- ১৮১০ সৈরদ জৈন্ উদীন দালী গাঁও ক্লকে দালী লাহ্— নাশির-উল্মূল্কের পুরে।
- ১৮২১ সৈয়ৰ আত্মৰ আলী খাঁ ওয়কে বালা আহ্—আলী আহেয় প্ৰাতা, ১৮২৪ খুঠাকে ব•এ অক্টোবয় কৃত্যু।
- ১৮২৫ সৈয়দ মূৰারক আলী বাঁ ওরকে হ্যায়্ন আহ্—বালা আহের পুতা।
- ১৮০৮ করিপূন্ জাহ্ সৈরদ মনস্তর আসী বাঁ নসরং অক—
 হুমার্ন আহের পুতা। ইনি নানা কারণে বুণলালে
 অভিত হওরার ইংসও প্রবাদী হন।

এই সমরে ইংরাজ-গবর্ষেণ্ট ভাহাকে অর্থসাহাত্য করিতে শীকৃত হওরার, তিনি বার্বিক লক্ষ্ টাকা মানহরা ও ঋণমুক্তির অভ ১০ লক টাকা প্রাপ্তির আশার ১৮৮০ বুরীজের ১লা নবেবর (মতান্তরে ১৮৮৩ খুটানে) চিরপোবিত নবাব নাজিম মর্য্যাল ভাগে করিতে বীকৃত হইরা বীর অভিপ্রার জ্ঞাপন করেন। ১৮৮২ প্রচালে ভাঁহার পুত্র সৈরণ হসন আলী বাঁ সনদ বারা वृर्तिशावात्मत्र नवाव बाराष्ट्रत केशाथि शान । ১৮৯১ ब्रहारक्त ১२६ মার্ক তারিখে নবাৰ সৰু সৈয়দ হসন আলী থা বাহাচর জি. দি, আই, ই ১৮৮০ খুটাব্দের ১লা নবেম্বর তারিখে শীর পিড্রুড নবাৰ-নাজিন প্ৰত্যাগালীকার সাব্যস্ত ও শীকার করিরা সেক্রে-টারী অব্ টেটনের ইণ্ডেঞ্চর পত্তে খীর অভিনত জ্ঞাপন করেন। 🗫 বর্ষের উক্ত নালের ২১এ ভারিখে সকৌনিল ভারতপ্রতিনিধি *** (by the Council of his Excellency the Vicercy and Governor General of India) 2522 শালের >¢ নং দ্বাকবিধিডে (Act XV. of 1891) ভাচা দ্বিৰীক্তক ও পরিপ্রহীক হয়। এই নর্ব্যাণা ত্যাগ করিবা তিনি ভৎপরিকর্তে ইংরাজয়ালের নিক্ট হইতে একটা বংশাছক্রমিক वार्षिक वृक्षि अवर वृत्तिवावाव, क्लिकाका, व्यक्तिगुद्ध, हाका, शानवर, पूर्विता, भाष्ट्रेना, त्रमणूत्र, स्थनी, त्रांबभारी, रीतक्षत्र क নাঁওভাগ-পদ্বপথাদ্ব মধ্যে কডকজনি নিৰ্মিষ্ট আন্তেম ভ্ৰম-পত্তি व्यास रहेबाहिरमन । हेराव शांत्रश्व--वागर कारत रेगडक

बाजिक वानी मीक्स, हेकानव कानव टेनबर नानित वानी मीकी, व्यानक वानी मीकी, टेनबर बाकूद जानी मीकी ও मह्विन् वानी मीकी।

स्मिनमानस्य बोक्चानात्र व्यवद्वा ।

দিলীর মোগলসমাট্গণের অধীন স্বাদার্দিগের শাসনকাল হইতে ইংরাজ কোম্পানিগণের প্রাধান্ত বিভার পর্যন্ত এই স্থাবি কালে বালালার ভাগ্যাকাশে বিশেষ কোন পরিবর্ত্তন সাধিত হয় নাই। বালালার ইতিহাস পাঠে তৎকালীন দেশের অবস্থা সহজেই স্থান্যসম হইতে পারে, নিয়ে অতি সংক্ষেপভাবেই তাহা বিরুত হইল।

দাউদ খাঁর মৃত্যুর পরেও প্রায় ৩৬ বংসর পাঠান**প্র**ভাব বাঙ্গালা হইতে বিদুরিত হয় নাই। তদনপ্তর বাধ্য হইরা তাহার। মোগলশাদনের বনীভূত হয়। এই সময়ে পুর্বদক্ষিণ বাঙ্গালার পর্ত্ত গীজের। বিলক্ষণ উৎপাত আরম্ভ করে। দেশীয় স্থমিদার-দিগের মধ্যেও অনেকে রাজসরকারে নিয়মিত রাজস্ব প্রদান না করিয়া সময় সময় বিদ্রোহ সম্পশ্বিত করিয়াছিল। সম্রাট্ অক্বর শাহের রাজত্বনালে পূর্বদেশে "বারভূঁয়া"র প্রাচ্জাব হয়; তমাধ্যে गर्माङ्द्रतत त्राक्षा প্রতাপাদিত্য, ভূষণার মুকুন্দরায়, চক্রছীপের কলপ্নারায়ণ রায়, ভুলুয়ার লক্ষণ মাণিকা, বিক্রমপুরের চাঁদ রায় কেদার রায়, ভা ওয়ালের ফজল গাজি, থিজিরপুরের ইশা খাঁ. সাতৈবের রাজা রাহরুঞ, চাদ-প্রতাপের চাঁদ গাজি প্রভৃতি নর জনের নাম বিশেষভাবে উল্লেখ যোগ্য। ঐ জমিদারদিগের দেও-য়ানী ও ফৌরদারী শাসন ক্ষমতা ছিল। তাঁহাদিগের স্বতন্ত্র দৈল, গভ ও বিচারালয় ছিল। তাঁহারা প্রজাদিগের নিকটে পাজনা আদার করিতেন এবং স্থবাদার পরাক্রান্ত হইলে তাঁহার সমীপে দেয় রাজস্ব প্রেরণ করিতেন, নতুবা বলপ্ররোগ ভিন্ন জাঁচাদিগের নিয়া হটতে রাজ্য সংগ্রহ হটত না। কথন কখন তাঁহারা বিদ্রোহেরও স্টনা করিতেন এবং স্থবাদারগণ তাঁহাদিগের সহিত ুদ্ধ করিতে বাধ্য হইতেন। [বারভূঁয়া দেখ।]

সরকরাজ খাঁও সিরাজন্দোলা বাতীত বাঙ্গালার অপর সকল স্বাদারই দিল্লীর বাদশাহকর্জক নিযুক্ত হইরাছিলেন; সরকরাজ খান্ও মুর্শিনাবাদের সিংহাসন অধিকার করিয়া দিল্লীর অহমতি প্রার্থনা করিয়াছিলেন; কিন্তু তিনি বাদশাহের মনোনীত আগীবর্দীকর্জুক নিহত হন। নাদির শাহের আক্রমণে দিল্লীখরের ক্ষমতা অনেক থকা হর। ঐ সমরে বর্গির হাঙ্গামার ও রাজকর্মতারীদিগের বিজ্ঞাহে নবাব আলীবর্দী খাঁর প্রভূত অর্থবার হইরা থাকে। এ কারণে কিঞ্চিৎ উপটোকন বাতীত তিনি দিলীতে নির্মিত রাজস্ম প্রেবণ করিতে পারেন নাই। সিরাল উদ্দোশা এক বংসর মাত্র রাজস্ক ক্রিরাছিলেন। রাজস্মক্রাক্ত নালা-প্রকার

কটিল কাৰ্য্যে ব্যাপৃত থাকার লোগল-সম্রাটের সহিত ভারার কোন সম্বন্ধ বটে নাই। [সিরাজ উদ্দোলা দেখ।]

খুটীর ১৬শ শতানীর শেবভাগে এবং ১৭শ শতানীর প্রারম্ভ সমদের এবেশে পর্কু গীজদিগের প্রায়ন্তাব ঘটে। ১৯৩২ খুঃ জন্ম হইতেই জাহাদিগের প্রতাপ হ্রাস হইতে থাকে। ভবনত্তর নিম্পরে বাণিজ্য করিবার অন্তমতি পাইরা ১৯৩৪ খুটান্দ হইতে ইংরাজ-দিগের প্রতাপ উত্তরোদ্ধর বাড়িয়া উঠে এবং ক্রমে জাহারা কর্ম ও ক্ষমতা বলে দেশীর লোকের বোগে এভদেশের সর্ক্ষময় কর্তা হইয়া উঠেন। [ইংরাজ বেধ।]

মোগলিদিগের শাসনকালে কেবলমাত্র রাজা টোডরমল ও
রাজা মানসিংহ নামক ছই জন হিন্দুবীর বালালার ত্বালার
হন। তৎকালে রাজকীর উচ্চতম পরে ও অক্সাক্ত প্রধান কর্ম্মেও
হিন্দুরা নিযুক্ত হইতেন। পরবর্তিকালে হশোবস্ত রাল ঢাকার
দেওয়ান এবং আলমটাদ বালালার সহকারী দেংলান ও মন্ত্রিসভার
সভ্য হইরাছিলেন। জগৎশেঠও মন্ত্রিসভার সভ্যপদ প্রাপ্ত রুম।
যথন সিরাজ উদ্দোলা সিংহাসনচ্যুত হন, তথন রাজা মোহনলাল
সেনাপতি ও পূর্ণিয়ার শাসনকর্তা, রাজা রায়্রায় ভিত্তির দেওরান, ক
রাজা রামনারায়ণ পাটনার শাসনকর্তা এবং রাজা রাম্রাম সিংহ
মেদিনীপুরের শাসনকর্তারশে বর্তমান ছিলেন। ভূতপূর্ব্ব
দেওরান জানকী রাম, রায় রায়া চিয়য় রায় ও রাজা রাজবর্রত
প্রভৃতির পরিচর ইতিহান পাঠকমাত্রেরই অবিধিত নাই।

[তত্তৎশব্দে বিশ্বত বিষরণ দ্রষ্টব্য ।]

ষাণীন পাঠানদিগের রাজত্ব সমরে বলনেপে প্রীচৈতন্ত মহাপ্রভু, রঘুনাথ শিরোমণি প্রভৃতি অসাধারণ প্রতিভাশালী ব্যক্তি জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। মোগলধীন স্থবাদারদিগের শাসনকালে সেরপ কাহারও আবির্ভাব ঘটে নাই। তৎকালে সংস্কৃত কাব্য ও সাহিত্যের এবং স্থারণারাদির বেরপ আলোচনা ও বিভার ঘটিয়াছিল, এ মুগেও তাহা বিশেষভাবে লর প্রাপ্ত হর নাই; বরং সংস্কৃতালোচনার অবনতির স্থাপাত হইতেছিল বলা যার। চৈতন্তসুগের শেব সমরে বালালা পদরচনা ও সংস্কৃত প্রছাদির পতাহ্যবাদ আরক্ত হয়। উহার পরে ক্রমে ফবি-ক্তপের চন্তা, কানাদাসের মহাতারত এবং শেবোক্ত সমন্ত রামপ্রসাদের পদাবলী, ভারভচন্তের অরক্তান্সল প্রকৃতি গ্রহ নির্দিত হইরাছিল। কবিক্তপাদি কর্তৃক বালালা ভারা ক্রমণঃ মার্ক্তিভ হইরা পদরচনা সথকে ভারতচন্তের হুকে উহা বিলক্ষণ উর্লিভ পৃষ্টিলাত করিয়াছিল। দেরারিক্তিগের মধ্যে জগদীল ভর্কাব্যার, গ্রহাবন্ধ ভট্টাহার্যা, মধুরালাথ তর্কবানীল, ভবানন্দ নিছাক্তবালি,

অকৃতগতে ইউ ইভিয়া কোম্পানী ই হারই গব প্রহণ করেন (১৭৬৫)।

এবং দার্জগণের মধ্যে নারারণ বন্দ্যোপাধ্যার ও অপরাধ তর্কপঞ্চানন পূর্জপাক্ষানিধের শেব পৌরব কথাকিং রক্ষা করিরা গিরাছেন ঃ

বিধিও বিভালোচনা সবদে মুসলমান শাসনকর্তৃগণের বিশেষ বন্ধ ছিল না, কিন্তু এ বিবরে তৎকালিক অমিদারনিগের অনেক উৎসাহ বেখা বার। তাঁহারা আক্রণপভিতবিগের অর্থিনা ক্রিকা পিরাছিলেন। তাঁহারা সংস্কৃত শিক্ষার্থী ছাত্রনিগের নিমিত্ত তাঁহানিগকে 'ক্রেমান্তর' ভূমি দান করিবা পিরাছিলেন। তাঁহারা সংস্কৃত শিক্ষার্থী ছাত্রনিগের নিমিত্ত টোল বা চতুপাঠার বার বোগাইতেন। তাঁহারা ঋণীলোক দেখিলে তাঁহাকে আশ্রর বিভেন। কবি রামপ্রসাদ সেন এবং ভারতচক্র রার নদীরার অমিদার রাজা ক্রকচক্রের আশ্রর পাইরাছিলেন। কবিক্রণ মুকুন্দরাম চক্রবর্তী মেদিনী-পুরের অমিদার বাঁকুড়া রার ও তৎপুক্ত রলুমাথ রারের আশ্রিত ছিলেন। প্রাচীন প্রস্কৃতিভার একণ প্রতিপালকের অসংখ্য প্রমাণ পাওবা হার। বিজ্ঞানাভাবা বেখ। টু

रेश्वाकाकुमत्र ।

वालालाव वानित्वााविष्णात्मत वानाव हरवाक हैहे देखिया কোম্পানী মাজাল হইতে সমূত্রপথে বলাভিমুখে আগমন করেন। ১৬১৪ গুটাৰে সর টমাস রো মোগল সমাই আহাজীরের স্থপায় वानिका करिवान जारान श्रीश रून। ১७२० व्हीरक वाजानात যোগল-প্রতিনিধি ইত্রাহিম খাঁ ফতে জলের শাসনকালে উক্ত কোম্পানী পাটনার বন্ধবিক্রারের হস্ত কুঠী স্থাপন করেন। ভদবধি ক্রমণ:ই বাদালার অতি প্রাক্তরভাবে ইংরাজের প্রভাব বিশ্বত হইতে থাকে। কোম্পানীর কর্মচারিগণ কিন্নপে ভাপনাদের কুঠা রকার এড সৈত্র সমাবেশ করিয়াছিলেন, তাহা ইতিহাসপাঠক बारवारे जवश्रक जारहरू । ३७६० चंड्रोरक इश्रमी मश्रम अवर ১৬৪২ খুষ্টাব্দে বালেখনে সুঠী সংস্থাপিত হয়। পুটাম্পে সত্রাট্ পাহ অহানের আলুকুলো ও ডা: সার্ক্তন গেত্রিয়ল बाक्रिहरमञ्ज धार्यमात्र क्लगीरफ केरबाक-विकलकातात्रत धार्क-পত্তি বিষয়ে হইবা পড়ে। ভাৰত্তি উক্ত কোম্পানী জাপনা-त्यत्र चाविकात्र प्रकार विरूप पत्रवान रूम । कांत्रव के সমরে প্রভিক্তী ওল্ডাজ, বিনেমার, ক্যাসী, জর্মণ প্রভৃতি বিভিন্ন ব্যাপুনতাবাহের সহিত প্রতিশক্ষতা করিয়া ইংরাজবিগকে चाननात्त्र चार्यक्रमा कतिएक स्वैदाहिन। धरे नमत्र देशांच-রণ আপ্নাবের বাণিআকুঠা হাবলোবতে পরিচালিত করিবাছ बाह्र अक अक क्या अरक्षके निवृक्त करहनः।

ইংরাজ কোন্দানীর এই প্রফাবয়ুছির সতে সলে ভিরেষ্টরের আহেনে এজেন্টের পরিবর্তে এক এক জন গর্বার নিযুক্ত হইরা-ছিলেন। ১৯৯০ টুরাকে জব চার্থক কলিক।আবাদী হন। ১৯৯২

পুঠাকে ভাষার মৃত্যু হয়। ঐ বৎসরে হগলী হইতে কলিকাডার ইংরাজ কোম্পানীয় এজেনী স্থানাস্থরিত ছইরাছিল ৷ ১৬৯৬ **ब्होरक जन्नक्र-१क्-जाविम केन्**नान बाकानान माननक्र्वा दस। ১৯৯৮ খুষ্টাবে তিনি ইংরাজ কোম্পানীকে কলিকাতা ও তৎ-সন্নিহিত হুণানি গ্রাম দান করিয়া তথাকার প্রকারুম্পের দোহ भारतक जात्रविहात कत्रिवात कम्का स्मन । छाहात्रहे बास्स्टम छेक বর্ষে কলিকাতার 'ফোর্ট উইলিরম' চর্মের ডিভি স্থাপিত হয়। ইংরাজসবর্ণর ডেকের বিসদৃশ আচরণে বিরক্ত হইয়া নবাব সিয়াজ फेलोना ১৭१७ बुहारम कनिकाला जाकमण ए कर करतन। পর বংসর মাজাল হইতে আসিয়া কর্ণেল ক্লাইৰ কলিকাতা পুনরার মুসলমানের নিকট হইতে কাড়িয়া সনঃ ১৭৫৭ খুষ্টাব্দের জুন মাসে সিরাজকে রাজ্যচ্যুত ও নিহত করিরা ক্লাইক মীরঞ্জাকর আলী থাঁকে বলসিংহাসনে অভিবিক্ত করেন। এখান ছইতে ইংরাজ কোম্পানীর রাজ্যের গুত্রপাত। **সীর্জাকর** ইংরাজের অভিমতে বাজালা শাসন করিছে পরাত্মধ হওয়ার মীর কাসিম আলীকে বালালার শাসনভার দেওয়া হর, কাসিম আলী ইংরাজবেদী হইলে তাঁহাকে পদচ্যত করিবা পুনরার মীর-काकत्रक वक्रमिश्हामान बमान हत । >१७८ पृष्टीएक मीत-জারুরের মৃত্যুর পর তৎপুত্র নজম উদ্দৌলাকে বালালার মসনদে অভিবিক্ত করা হইয়াছিল। উক্ত বর্ষের জুন নাস হইতে নক্তম ইংবাল কোম্পানীর বৃত্তিভোগী হন। এ সালের ১২ই স্বাগষ্ট ভারিখে যোগল-সমাট্ ক্লাইখকে আননীরস্ক্রণ বন্ধ, বেহার ও উডিয়ার বেওয়ানী দেন। এই বেওরানী সনন্দই বাঙ্গালার है: ब्राक ब्राक्टपत व्यथान ७ व्यथम मनिन। छनवि है: ब्राक्तशनहे ৰাজালার প্রকৃত শাসনকর্তা হইরা পড়েন এবং মুর্লিদাবাদের मवाबवः म हेरब्रात्कव वृश्वित्कांश क्वित्रक शास्त्रम । शृत्कीक জালিকার জড়ি সংক্ষেপে এই প্রতিভাশালী নবাববংশের পরিচর व्यवस्थ बरेगांदर ।

ইট ইভিয়া ফোম্পানিয় অসীনত বাজালার এলেউব**ণ**।

নাৰ		কা ৰ্যাপ্ৰ	হণকাল
শিঃ	রাশ্ক কার্টরাইট		3400
	অইস		***
	देशार्थ		***
कारतन	वन् अकारकन		>444
विः	বেশন্ ব্রিক্রান		***
	পণ ওরাক্তে গ্রেড		>440
	वर्ष शर्जन		>40
	त्यानायान व्यक्तिया		2445
	क्रेंद्रियम अप		>~~

নাম		কাৰ্য্যগ্ৰহণ কাল		
*	শেষ ত্রিজেগ	>663		
36	ওরাণ্টার দোওরেল 🏶	349.		
10	মাথিয়াস্ ভিন্দেন্ট	3911		
*	यामानात्र अवस्त्रितन् ।			
মিঃ	উইनियम (हरकम्	১৬৮২ জুলাই		
	্ল গিকো র্ড	১৬৮৪ আগষ্ট		
শ্ব	এডওরার্ড নিট্ন্টন	১৬৯৯ জুলাই		
90	চাল্শ আয়াৰ্	১৭০০ মে ২৬,		
नि:	জন বীয়ার্ড	১৭•১ জান্থ ৭,		
মিঃ	আন্টনি ওয়েন্টডেন	२१४० क् नाहे २०,		
,10	জন রাদেল	১৭১১ মা র্চ্চ ৪,		
ы	রবার্ট হেজেশ্	১৭১৩ ডিসে ৩,		
20	সাস্এল ফিক্	১৭১৮ জান্ত ১২,		
30	क न जीन्	>120 , >1,		
	হেন্রী ফ্রাঙ্গ্যাও	>946 . 00,		
n	এডওয়ার্ড টিফেন্সন্	১৭২৮ সেপ্টে ১৭,		
'n	अन जीन्	३१२৮ , ३१,		
यिः	कन डेक्श्डिम्	১৭৩২ ফেব্ৰে ২৫,		
20	টমাদ্ ব্রাডিল্	১৭৩৯ জাতু ২৯,		
	कन् करत्रहोत	১৭৪৬ ফেব্ৰু ৪,		
43	উইলিয়ম বারওয়েল	১৭৪৮ এপ্রিশ ১৮,		
39	এডাম ভূদন	১৭৪৯ জুলাই ১৭		
27	উইলিরম ফিট্কে (Fytche))982 " ¢,		
27	রোকার ড্রেক্	১৭৫২ আগষ্ট ৮,		
কূৰ্ণেৰ	ণ রবাট ক্লাইব	३१६४ स्न २१,		
थ न (ক্ষেড্, হলওয়েল	১৭৬০ জাতু ২২,		
िः	হেন্রী ভাষীটার্ট	> १७० क् मारे २१,		
ap	জন স্পেন্দার	> 168 ডিসে, ৩,		
गर्ड ३	দাই ৰ	১৭৬৫ মে ৩,		
ৰিঃ	হারি ভেরেশেই	>१७१ क्षांस् २१,		
•	জন কাৰ্টিয়াৰ	১৭৬৯ ডিসে, ২৬,		
	अवाद्यन दशक्रि श	১৭৭২ এপ্রিল ১৩,		
माननीत्र अत्राद्यन् द्वविष्ठ व्यथस्य गवर्षत्र हिरणन् । ३११०				
ষ্টাব্ৰে পাৰ্লিমেন্টের বিধি অন্থ্যারে যাজাক ও বোৰাই বালাগায়				
	र रुद्र धनः किनि शर्मात-क्रमात्र			
नवदव	গভৰ্ণর ক্লেনারলের বেকন বা	विंक १६० गम ७		

ভাহার সভার চারিজন সহস্তের প্রজ্যেকের বার্ষিক বেডন > লক

ষ্টাকা বার্ব্য হয়। ভারতবর্ষের ইভিহাসাংশে ভারতের ইংরাল

গৰৰ্ণন কোৰণগণের শাসন-বিষয়ণ গ্ৰেম হওয়ার এখানে বিশেষ ভাবে উলিখিত হইল না। কেবলনাত্র বালালাসংক্রান্ত করেকটা প্রসিদ্ধ ঘটনা লিপিবদ্ধ করিয়া ইংরাজ শাসনপ্রাভাবের সংক্ষেপ পরিচর প্রসন্ত হইল:—

ইউইভিরাকোম্পানীর দেওরানী গ্রহণের পর, গর্জ ক্লাইব কোম্পানীর সেনাবিভাগের সংখার করেন। তাহারা বাণিজাছলে অর্থ-লালসাপরবর্গ হইরা এ কেন্দ্রিরিগের নিকট হইতে অবথা কর্থগ্রহণ করিত। নীরজাকর ও নীর কানিমের সমরে কোম্পানীর কর্মচারীবিগের অর্থগৃর্তা ও অভ্যাচারমাত্রা উভরোভর পরিবর্জিত হয়। কোম্পানীর অর্থপিপালা নিবারণ করিতে নবাবলিগকেও প্রজানীত্বন করিরা অর্থ সংগ্রহ করিতে হইরাছিল। এই অভ্যাচারের দিনে নিঃস্ব প্রজাপণের উপর করিও প্রতিকৃত্ব হইলেন। ১৭৬৯-৭০ খুটানে বালালার ভীবণ মুর্জিক বেথা দিল, বালালা ১১৭৬ সালে এই মুর্ঘটনা ঘটে বলিরা উহা "ছিরাভরের মবজর" নামে খ্যাত।

ওরারেণ হেরিংস বাদালার রাজত্ব সংগ্রহের জ্বিধার্থ কালেন্টর নিরোগ করেন। এই সমরে নিকালী বারে মহত্মদ রেলা খাঁ ও রালা সিভাব রার কারাক্ষর হন। হেরিংস রাজকোর ও রাজকার্যালরসমূহ মূর্লিদাবাদ হইতে কলিকাভার আনয়ন করেন। তিনি বিচারকার্য্যের প্রবিধার্থ দেওরানী ও কৌলদারী আদালত স্থাপন করিরাছিলেন। উক্ত কালেন্টরগণই দেওরানী আদালতের এবং কালী বা মৃক্তীরা ফৌলদারির বিচারক হইলেন। আশীলের জন্ত কলিকাভার শদর দেওরানী আদালত ও পালর কলিকাভার শদর দেওরানী আদালত ও পালর নিলামত আদালতে নামক হইটী প্রধানতম বিচারালর হাণিত হইরাছিল। ১৭৭৫ খুটাকে শসনর নিলামত মুর্লিদাবাদে উঠিরা যার এবং সহত্মদ রেলা খাঁ নাবেব নালিম হইরা তথাকার রোধান বিচারপতি হন।

কোল্পানীর প্রীবৃদ্ধি দেখিরা ১৭৭৩ খুটাকে ইংলণ্ডের পার্লিরামেন্ট বলবাপারে হতকেপ করেন। তাঁহাবের শাননাদেশে
ভরারেন হেটংস গবর্ণরজেনারেল হন এবং সকৌজিল গবর্ণরজেনারলের কর্ত্ত্ব কোল্পানীর ভারতীর অধিকারে ব্যাস্ত হর। এই
সমরে ইংরাজ অপরাধীদিগের লগবিধানের লক্ত ইংলাজীর
ব্যবস্থায়পারে কলিকাভার প্রশ্রীমকোর্ট হাশিভ ইইরাছিল।
ভিরেক্তীরন্দিগের অস্থাভার্যারে হিন্দ্পাল্লামুসালে এবং
স্সলমানদিগের মুস্পমান স্থর অস্থারে বিচারাবেশ প্রচারিত
হর। এই নিমিত্ত হাল্হেভ সাহেব একবানি বাজলা স্থান্ত্রিত
হর। এই নিমিত্ত হাল্হেভ সাহেব একবানি বাজলা স্থান্ত্রিত
ক্রেলা করেন। তাঁহার প্রথম বাজলা ব্যান্তর্গন ১৭৭৮ খুলীকে
ক্রেভ ইইরাছিল। চালস্ উইল্কিল ঐ ছালার জ্বাক্ত্র গোলাই
করেন। ইহাই বাজালা অক্তরের প্রথম স্ট্রা। ১৭৮০

খুঠাকে ২৯এ ৰাত্মরারী কলিকাতার প্রথম সংবাদ পত্র মুদ্রিত হর।

হেষ্টিংসের শাসনকালে ১৭৭৪ খুটাকে মহারাজ নক্মারের কাসী হয়। তাহার পর ক্প্রীমকোট অপিত হইলে ১৭৮৩ খুটাকে সম্ন উইলিরম জোল প্রধান বিচারপতি হইরা আইসেন। ১৭৮৪ খুটাকে তিনি 'এসিয়াটিক্ সোলাইটি অব বেলল' নামক সভা স্থাপন করেন। উক্ত বর্ষে পার্লিয়ামেন্টের আলেশে 'বোর্ড অব্ কন্ট্রেল' অপিত হয়।

লাও কর্ণতরালিসের শাসনকালে ১৭৯০ খুটান্দে সদর নিজামত প্রারার কলিকাতার আনীত হর। ১৭৯০ খুটান্দে নির্দিষ্ট রাজ্যর আদারের জন্ম দশালা বা চিরন্থারী বন্দোবত্ত তাহার সমরের প্রধান ঘটনা। ঐ বর্ষে ইংরাজী লিখিত কতকগুলি ব্যবহা সংগৃহীত ও প্রচারিত হর। মিঃ ফ্রেটার ভাহার বাকাল। অনুবাদ করেন।

লর্ড কর্ণওয়ালিস "কালেন্টারদিগের" হত্তে কেবলমাত্র রাজস্ব সংগ্রহের ভার দিয়াছিলেন। তিনি কাজি, মৃক্তি প্রভৃতির পরিবর্ত্তে প্রতিত্ত ক্ষেত্রতার পরেবর্ত্তে প্রতিত্ত ক্ষেত্রতার পরেবর্ত্তে প্রতিত্ত ক্ষেত্রতার পরেবর্ত্তে ক্ষেত্রানী ও কৌজনারী মোকদমার বিচারভার অর্পণ করেন। কোলনারী কার্যকালে মুসলমান ব্যবহালুসারেই বিচার কার্যা নির্কাহিত হইবে, এইজ্লু একজন মুসলমান কর্মচারী জঞ্চিগের সংকারী থাকিতেন। জেলার জজনিগের হারা নিশাদিত মোকদমার আপিল শুনিবার নিমিত্ত কলিকাতা, মুর্শিনাবাদ, ঢাকা এবং পাটনা নগরে চারিট "প্রভিস্নিয়াল কোটের" উপরে সদর কেওরানী ও সদর নিজামত আলালত রহিল। দেওরানী মোকদমার বিচারের জক্ত প্রতি জেলার জজনিগের জনীনে এক এক জন রেজিরার ও কএকজন মুন্সেক নিযুক্ত হইলেন। স্থানে হানে এক একটা থানা স্থাপিত হইল এবং এক এক জন দারোগা প্রত্যেক থানাল কর্মা হইলেন।

১৭৯৮ খুষ্টান্দে মাজুইদ অব ওয়েলেস্দি বাজনার গবর্ণর জেনারল হন। ১৮০৩ খুষ্টান্দে মহারাষ্ট্রীরের সহিত সহি অনুসারে কোম্পানী কটক প্রদেশ হত্তগত করেন। তদবধি উচা বাজালার অন্তর্জুক রহিরাছে।

তাহার সমর পর্যন্ত সদর দেওবানী ও সদর নিজামতের কার্যভার সকৌদিল গবর্ণর জেনারলের হতে জত ছিল। তাহাতে কার্যের অস্থ্রবিধা বটে দেখিয়া ওয়েলেস্লী তিন জন জল নিযুক্ত করেন। তাহাদের মধ্যে প্রথিতনারা ও বছবিভাবিশারদ কোলক্রক একজন। ইংরাজ সিবিলিয়ান্দিগতে কেনীর ভাষা শিক্ষা দিবার নিমিত্ত লউ ওয়েলেস্লী কোট উইলিয়ন ক্রেজ

স্থাপন করেন। এই উপলক্ষে তথাকার পাঠ্যরূপে কতকগুলি বাজালা পুস্তক রচিত হয়; তন্মধ্যে রামরাম বাব্র প্রতাপাদিত্য-চরিত (১৮০১) ও লিপিমালা (১৮০২), রাজীবলোচনের ক্ষতন্ত্রচরিত, মৃত্যুগ্রর বিভালভারের রাজাবলী, কেরি সাহেবের বাজালা-ব্যাকরণ ও অভিধান উল্লেখযোগ্য। ১৭৯৯ খুইান্দে মিসনরি মার্সমান ও ওরার্ড প্রীরামপুরে আসিরা অবস্থিতি করেন। তাহারা জয়গোপাল তর্কালভার ছারা সংশোধন করাইয়া ১৮০১ খুটান্দে রামায়ণ ও পরে মহাভারত ছাপাইতে আরম্ভ করিয়াছিলেন। এই সময় হইতে প্রের্জই বাজালা-সাহিত্যের আদর বাড়ীতে থাকে।

১৮০৭ খৃষ্টাব্দে লভ মিন্টো গবর্গর-জেনেরল হন। তাঁহার শাসনসমরের শেষভাগে (১৮১৩ থৃঃ) পালিয়ামেন্ট প্রান্ত সনন্দামুসারে এদেশে কোম্পানি একটেটিয়া বাণিজ্য রহিত হইয়া যায়, খুষ্টান মিসনরিরা এ স্থানে ধর্ম প্রচার করিতে অমুমতি পান; সেইহেতু কলিকাতায় একজন বিশপ নিযুক্ত হন। এতিজ্ঞি কোম্পানির এদেশীয় প্রজ্ঞাদিগের বিভাশিক্ষার জন্ম সরকারী রাজস্ব হইতে প্রতি বংসর এক লক্ষ টাকা বাম করিতে আদেশ হয়।

লর্ড ময়য়া বা মাকুইস্ অব হেটিংস ১৮১৩ খ্ব: অবস্থ গভর্ণর জেনারল হইয়া বাঙ্গালার আইসেন। তাঁহার সময়ে নেপাল ও মহারাই বৃদ্ধে ইংরাজেরা জয়ী ইইয়াছিলেন। এই সময়ে কতিপয় দেশীয় সম্বান্ত ব্যক্তির বত্তে ও বায়ে কলিকাতায় "হিন্দু কলেজ" স্থাপিত হয় এবং তাঁহারই উৎসাহ পাইয়া শ্রীয়মপুরেয় মিসনরিগণ "সমাচার-দর্পণ" নামে প্রথম বাঙ্গালা সংবাদপত্ত মুদ্রিভ করেন। (২৩ শেই ১৮১৮ খ্বঃ)।

১৮২৪ খুঃ অব্দের আগষ্ট মাসে বর্ড আমহার্চ গ্রবর্ণর জেনারল হইয়া কলিকাভার আসেন। তাঁহার সমরে ব্রহ্ম যুদ্ধে কোম্পানির রাজ্য বৃদ্ধি এবং ভরতপুরের প্রাসিদ্ধ কেলা ইংরাজনিগের হস্তগত হর। এই সমরে কলিকাভার 'সংস্কৃত কলেজ' স্থাপন বিবরে সংস্কৃতভাষাবিৎ অধ্যাপকপ্রবর উইলসন্ সাহেব বিশেষ উত্যোগী হইয়াছিলেন। লর্ড আমহার্চ ১৮২৭ খুটাব্দে পশ্চিমে ঘাইয়া দিলীর বাদশাহকে বলিলেন যে, কোম্পানিই বাস্তবিক এদেশের সমাট্।

১৮২৮ খা অব্দে লর্ড উইলিয়ম বেণ্টিক গডর্পরজেনারল হন।
তিনি সহমরণথাথা রহিত করেন। রাজা রামকোহন রার,
বারকানাথ ঠাকুর, রার কালীনাথ মুলি প্রভৃতি এতকেনীর অনেক
স্থানিকিত ভদ্রসভান এই মহৎ কার্যো তাঁহার সহারতা করিয়াহিলেন। তথন একেন্দে ঠগ নামে একটা ভাকাইতের দল ছিল।
ভাহারা ভদ্রবেশে গ্রমাপ্যন করিত এবং প্রবাগমতে সহহাত্রী-

বিগতত বৰ করির। ভাতাদের বধাসর্বার আগর্বন করিত। কর্বেন জীনাদের বরে ঠগদিগের ধৌরাদ্যা নিবারিত হয়।

এই সমরে গ্রন্থভানীর লোক্দিগাকে সংস্কৃত কিংবা ইংরাজী ভাষার শিক্ষা বেওরা উচিত কি না, এই বিবরে লোর আন্দোলন উপস্থিত হয়। অধ্যাপক উইলসন্ নাহেব নংক্তের পক্ষ ছিলেন এবং প্রেসিছ লওঁ নেকলেও ও টা বেলিরান সাহেব পাশ্চাত্য জ্ঞান-চর্চার প্রেরাজনীয়তা দেখাইরা ইংরাজীয় পক্ষ সমর্থন করেন। গভর্গর জেনারনের বিচারে ইংরাজীয়ই জন্ম হয়। ১৮০৫ অক্ষে কলিকাতার 'নেডিকেন কনেন্ত' সংস্থাপিত হইরাছিল।

নর্ড বেণ্টিছের সমরে বিচার বিভাগের অনেক পরিবর্ত্তন
আটি—"প্রেচ্চিনাল কোর্টগুলি" উঠিরা বার এবং "রেভিনিউ
ক্রমিননরী"-পদের স্টেই হর। "ফালেক্টরেরা" কৌলবারী মোকক্রমার বিচার ক্রমতা পান এবং অজেরা দেওরানী ও বাররার
বোক্তমা করিবেন, স্থির হয়।

১৭৯৩ খু: আৰে "মুলেকী" এবং ১৮০৩ খু: আৰু "নদর আমিনী" পাদের কৃষ্টি হয়। এপর্যান্ত দেশীর লোকেই ঐ পর পাইতেন। লও বেণ্টিক এদেশীরের নিমিন্ত "প্রধান সদর আমিনী" পাদেরও কৃষ্টি করেন। ঐ পাদের নাসিক বেতন ০০০ টাকা নির্দ্ধারিত হয় এবং প্রধান সদর আমিন সক্ষ প্রকার ক্রেওয়ানী বোকদমা করিতে অধিকারী হন। ১৮৩৩ খুটাকে "ডেপ্টী কলেন্টার" নির্ক্ত হইবার নির্ম হয়। এই কর্মণ্ড প্রতক্ষণার লোকে পাইতেন।

नाई दिन्दिकत पाननकारण कैपनठळ अथ "ध्याकत"
नामक नरवापणंड ध्यान करतन (১৮৩० थः) ध्यान वाना
प्रामस्मादन त्राप्त किनकार्धा वाक्रममान नरवाणंन कित्राहिरणन
(১৮२२ थः)। छात्रज्यांनी हिन्दू फल्यानाकिरणंत्र मध्य द्याप क्त्र, त्राच्या प्रामस्मादन त्राप्तरे ध्यापम हैरनास्त्र व्याप्त (১৮०३ थः)।
क्षान्तर्याहन त्राप्त ध्यानक वानांना श्रव नहना कित्राहिरणन।

[त्रांत्रत्यारम त्रांत ७ वाक्षण्यां (१५ ।]

১৮০৫ খু: অবে দর্ভ বে নিছ খনেশে বাত্রা করেন; এবং খন্ডর গভর্গর কেনারদ না আনা পর্যন্ত মেটকান্ সাহেব তংকার্থে বিরোধিত হন। তাঁহার শাসন সমরে ও তাঁহারই বড়ে ইরোকী ও বাজালা বুলাবতের খাধীনতা সংখাণিত হয়।

३७३७ इरेट७ ३৮৪२ वृद्ध अस नर्याख गर्छ अक्नाथ नवर्गत

ত লার্চ বেকলে একেনে "লাক্ষমিশন" নাথক বিধি অগমন সভার অধ্যক্ষ বহুল আনেন । ভিনিষ্ট "ভারতস্থানি বভাবিধিন" এখন পাতুলিশি একত ভালোজিনান । কোনল ছিলেন। তাঁহার বনুরে কার্লে ইংরাজরিনের নির্মান র্ফনা বটে। বালানার হগনী কলেজ (১৮০৬ বৃঃ) এক চাকা কলেজ (১৮৪১ বৃঃ) হালিভ হর ঃ

১৮৪২ বইতে ১৮৪৪ বঃ আৰু পৰিস্ত লাভ প্রবেদনবারার নাননভাল; তাঁহার ভাষতে ভাবুলে ইংরাজেরা জরী হইরা বালে নানে কিরিরা ভাবেন এবং নির্বেশ কোম্পানির রাজ্যভুক্ত হয়। লাভ প্রবেদনবারা "ডেপ্টা নাজিবেইটা" পবের ক্ষষ্ট করেন। তাঁহার পাসনভালে ভত্বোধিনী প্রক্রিয় প্রভাবিত হয় (১৮৪৩ বঃ) প্রবং অক্সরুষার বস্ত বা প্রিকার সম্পাদক হন।

[वालागाकाया (१४ ।]

১৮৪৪ হইতে ১৮৪৮ বৃঃ অব পর্যন্ত হার্তিক সাহেব গ্রাবর্ণর বেনেরল ছিবেন। জিনি বিধনিগের সহিত বৃদ্ধে অরলাভ করেন। তাঁহার সময়ে "হার্তিক ক্লেল নামে কডকজলৈ গ্রাহারিক সংস্থাপিত হয়। ক্লিয়াক বিভালাগ বিভালাগ কলেক ১৮৪৬ বৃষ্টাকে সংস্থাপিত হয়। ক্লিয়াকে বিভালাগর মহাপার এই সময়ে বেতালগককিংক্তি প্রকাশিত করেন (১৮৪৭ বৃঃ) ।

১৮৪৮ খ্যা অব্যে গর্ভ ভালহোরী এ বেশের গর্ণর বেনের দ্বন হল। তাহার শাসনকালে পরাব, শেগু, সাভারা, নারপুর, বাঁসি, অবোধা ও বেরার কোন্দানীর অধিকারভুক্ত হইরাছিল। বহরসপুর কলের সংস্থাপন ১৮৫৩ খ্যা আং মটে ও ১৮৫৫ খুইাকে হিন্দু কলের "প্রেসিডেন্সি কলেরে" পরিপত্ত হইরা বার। আনেকগুলি গবর্নেট আবর্ণ বলবিভালর এবং বালালার ব্রীজাতির বিভানিকার অভ কলিকাভার বেথুন বিভালর প্রতিষ্ঠিত হর। এই সমরে সর চার্লন্ উড় প্রেরীত ১৮৫৪ খ্যা আকর নিকাবিবরিশী অন্তর্মাতিনিশি আইসে এবং গুরুত্বসারে "কলিকাভা বিশ্ববিভালরের" প্রেণাত হর। ঐ সকে বিভালর গব্দে গবর্মেন্টের "প্রাণ্ট ইন এড" প্রধাণ্ড প্রবর্ধিত হইরাছিল। এই উপলক্ষে শিকাবিবরক কমিটি উঠিরা বার, এবং বিভারা-প্রের "ভাইনেন্টর," "ইনন্দোটর" প্রকৃতি পরের ক্ষি হর।

লর্ড ভালহোলীর মত্তে এ বেশে ইট ইন্ডিরা রেলগুরে এবং ভারের থবর হালিত হর (১৮৫২ খুঃলঃ)। "লোটাল ভিপাটনেউ" সংহালিত হইরা ভাতের নাওল কবিরা বার। ১৮৫০ অতে ইট ইন্ডিরা কোল্গানি পার্লিরানেউ নহালভা হইতে বে লবন্দ প্রাপ্ত হন, তথারা বালালার "লেক্টেনাউ সবর্ণর" নাবে প্রক্রমন বভর লাসনকর্তা নিরোগের আবেল হর এবং প্রভ্রমনানিগণ বিলাভে ঘাইরা "সিবিল লার্কিন" পরীকা বিভে অন্তন্মনি পার্লির হইরা আনেন (২৮ প্রপ্রিল, ১৮৫৪ বৃটার)। ১৮৫৬ অবেশ বিভারনার মহাল্যের টেটার বিধবাবিবার কর্ষণ বিভিন্ন হয়।

১৮৫৬ অবদ পর্ড ভাগহোঁশী খনেশে বাত্রা করেন এবং পর্ড ক্যানিং ভারতবর্বের গবর্ণর জেনেরল হইরা আসেন। পর্ড ক্যানিংএর সমরে ১৮৫৭ খুটান্দে সিপাহীনিগের বিদ্রোহ ঘটে। এই রাল্যাবিপ্রবে তিনি বিশেষ বিচক্ষণতার সহিত কার্য্য করিরাছিলেন, এ ক্স্ম তিনি সাধারণে 'ক্লেমেলী ক্যানিং' নামে পরিচিত হন। সিপাহীবিল্রোহের পর ইংলভেশ্বরী মহারাণী ভিক্টোরিরা কোম্পানির নিকট হইডে এ দেশের শাসনভার খহতে গ্রহণ করেন। তৎকালে তিনি আলীকার করিয়াছিলেন বে, এতদেশীর প্রজাদিগের ধর্ম্ম ও খন্ম রক্ষা করিবেন এবং তাহাদিগকে উপযুক্ত দেখিগেই সকল রাজকর্ম্ম দিবেন (নবেম্বর, ১৮৫৮ খুটান্ধা)। পর্ড ক্যানিভের সমরে "ভারতবর্ষীর দওবিধি", "দেওয়ানী" ও "কোক্ষনারী কার্যাবিধি" এবং শোক্ষনাসম্বন্ধীর ১৬ আইন" প্রচারিত এবং "করেলি নোট" প্রথম প্রচলিত হর।

ক্যানিং এর পরে লর্ড এলগিন্ গ্রথ্রজেনের ল হন। তাঁহার শাসন সমরে পূর্ববালালা ও মাতলা-রেলওরে খুলে এবং সদর আদালত ও স্থাপ্রিমকোট মিলিত হইরা "হাইকোট" নাম ধারণ করে (মে, ১৮৩২)। হাইকোটের বিচারপতিপদে এতদেশীর লোক নিযুক্ত হইবার নিয়ম আছে।

ছই বংসর (১৮৬২—৬৩ খু:) পূর্ণ হইতে না হইতে লর্জ এলগিন্ মানবলীলা সংবরণ করেন। তাঁহার মৃত্যুর পর সর উইলিয়ম ডেনিসন্ কিছু দিন গবর্ণর-জেনারল ছিলেন। আনস্তর সর জন লরেজ (১৮৬৪—৬৯ খু: আ:) এবং লর্জ মেও (১৮৬৯—৭২ খু: আ:) যথাক্রমে গবর্ণর জেনারল হন। একজন নির্কাদিত মুসলমানের অস্ত্রাঘাতে আন্দামান বীপে লর্জ মেওর মৃত্যু হর (৮ই ফেব্রুবারী, ১৮৭২)।

অনস্তর ৯ই হইতে ২৪শে কেক্রমারী পর্যান্ত সর জন ট্রেচি ও ২৪শে কেক্রমারী হইতে ৩রা মে পর্যান্ত লর্ড নেপিরর গবর্ণর জেনারলের কার্য্য করিয়াছিলেন। ১৮৭২ অব্দে ওরা যে গবর্ণর জেনারল লর্ড নর্থক্রক এদেশের শাসনভার গ্রহণ করিয়া কর্প্রশীড়িত প্রজাদিগের কর ভার লাঘ্য করেন এবং উচ্চ আক্রের ইংরাজী শিক্রাবিবরে উৎসাহ দেন।

मर्फ नर्शक्तकम् नगरम् ३৮९६ थुः व्यत्मन भाषकार्श युवत्राक

প্রিক্ষ অব্ ওরেলন্ (বর্তমান ভারত-স্থাট্ ৭ম এডওরার্ড)
বাঙ্গালার গুভাগমন করেন। যুবরাজ ইংলওে প্রভাগত হইলে
মহারাণী ভিজৌরিরা "এক্পেন্স্ অব ইণ্ডিরা" উপাধি গ্রহণ
করিরাছেন (১৮৭৬ খু:)। ১৮৭৭ অব্দের জান্মারিমানে
এই উপাধি গ্রহণ উপলক্ষে দিল্লী নগরীতে মহাসমারোহে
দরবার হর। এই বৎসর দক্ষিণ ভারতবর্বে হর্ভিক্ষ বটে ও
কাব্লের আমীরের সহিত যুক্ত বাঁধে। ভাহাতে ইংরাজপক্ষে
জন্মণাত হয়। ১৮৭৬ অব্দে ভিনি শ্বনেশ বাত্রা করেন এবং
লর্ড লিটন তৎপক্ষে ভভিষিক্ত হন।

লর্ড লিটন দেশীর সংবাদ পত্রের স্বাধীনতাহরণ ও আন্ত্রআইন বিধিবদ্ধ করেন। ইহার সমদ্দে ছর্ডিক্দ নিবারণার্থ
ব্যবসায়িগণের উপর "লাইসেন্স ট্যাক্ষ" নামে কর সংস্থাপিত
হয়। ১৮৮০ খুটান্দের এপ্রিল মানে লর্ড লিটন ভারত
পরিত্যাগ করিলে মার্কু ইন্ অব্ রিপন ভারতের গবর্গর জেনারল
হইয়া আন্সেন। ভাঁহার সমদ্দে ইংরাজেরা প্নর্কার কাব্ল যুদ্ধে
জয়ী হন।

রিপন দেশীর সংবাদপতের স্বাধীনতা পুনঃপ্রাদান এবং "স্বায়ন্তলাসনপ্রণালী" প্রবর্ত্তিক করিয়া বাদালার বিশেষ মৃদ্দদ্ সাধন করেন; এতন্তির বিচ্ছালিক্ষাসম্বন্ধে "এডুকেশন কমিশন" নিযুক্ত হয়। তাঁহার সময়েই জল্প রমেশচন্দ্র মিত্র কিছুকাল চিফ্ জ্ঞান্তিসেরও কার্য্য করিয়াছিলেন।

১৮৮৪ খুঃ অব্দের শেষভাগে লর্ড ডফারিণের হত্তে ভারতশাসনভার অর্পণ করিয়া লর্ড রিপন অবদেশ যাত্রা করেন।
তাঁহার আগমনের কিছুদিন পরে বাঙ্গালার প্রজাসম্ববিষয়ক
১৮৮৫ খুঃ অব্দের ৮ আইন বিধিবছ হয়। ১৮৮৫ খুঃ অব্দের
শেষভাগে ব্রহ্মরাজ থিবকে সিংহাসনচ্যুত ও বন্দী করিয়া তদ্দেশ
অধিকার করা হয়। ১৮৮৬ অব্দের ১লা জামুরারি হইতে
বিজ্ঞীপ ব্রহ্মরাজ্য ভারত সাম্রাজ্যভুক্ত হইয়াছে। উক্ত বর্বের
প্রপ্রিল মাস হইতে 'ইন্কম্ টাাক্স' কর পুনঃ সংস্থাপিত হয়।
ভারতরাজরাজেখরী ভিজ্ঞোরিরার রাজ্যকালের পঞ্চাশং বর্ব
পূর্ণ হওয়া উপলক্ষে ১৮৮৭ খুঃ অব্দের ১৬ই ক্ষেক্রনারি ভারতবর্বে

লর্ড ডফারিণ দেশীরনিগকে অধিক পরিমাণে উচ্চ পদে
নিবৃক্ত করিবার প্রতিপ্রারে "পবনিক সার্মিন কমিনন" নিবৃক্ত
করেন, কিন্ত উহার মন্তব্য অনুসারে এখনও কোন বিশেষ
কার্য্যের অনুষ্ঠান হর নাই। লর্ড ডফারিপের সমরে সিকিম,
ডিকাড ও পরাব নীমান্তবিভ ক্রম পর্বতে বৃদ্ধ হর। ইনি
১৮৮৮ অব্যের ২০ই ডিসেবর লর্ড ল্যালডাউনের হতে শাসনভার অর্পন করিরা বিলাভ বাত্রা-করেন। লর্ড ল্যালডাউনের

সমরে ১৮৯০ খুটাব্দের ডিনেম্বর মানে ক্ষিরার সম্রাটের জ্যেষ্ঠপুত্র দেশ ন্রমণ উপলক্ষে ভারতবর্ধে উপস্থিত হন। মণিপুর রাজ্যে স্থান্থলা জনুসারে রাজকার্যা নির্কাহ না হওয়ার ভারত-গ্রণমেন্ট ত্রিবরে হতকেপ ক্রিতে বাধ্য হন। তহুপলক্ষে প্রেরিত ইংরাজ কর্মচারিগণ নিহত হইলে একদল ইংরাজ-সৈন্ত মণিপুর অধিকারপূর্কক অপরাধিগণকে খুত করে। বিচারে অপরাধিগণের সমূচিত দওবিধান হয় (১৮৯১ খু:)। ব্বরাজ্ টীকেক্সজিব ইংরাজরাজের বিচারে প্রাণ হারান। [মণিপুর কেখ]

শর্জ এশগিন ২৪এ জাত্মারি ১৮৯৪ খুষ্টানে ভারতবর্ষের রাজপ্রতিনিধি ও গ্রণর জেনেরল হন। তাঁহার শাসনকালে "ভারমণ্ড স্কুবিলি" উৎসব মহাসমারোহে নিম্পন্ন হইরাছিল। ১৮৯৯ খুষ্টাব্দে এলগিন প্রত্যাগত হইলে লর্ড কার্জন অব কেডল্টোন ভারত-প্রতিনিধি হইয়া আগমন করেন। তাঁহার শাসনকালে মিউনিসিপালিট ও শিক্ষাবিষয়ক নানা রাজনৈতিক কার্যোর সংস্কার সাধিত হইয়াছিল। তাঁহার শাসনকালে ১৮৯৯ चुहोरस्त २२ ७ जास्याती ভात्र ज्यती ভिल्लोतियात गुजा चरहे। তাঁহার জােছপুত্র ৭ম এডওয়ার্ডের রাজ্যাভিষেক উপলক্ষে দিল্লীতে দরবার হয়। এই সময়ে বাঙ্গালায়ও বিশেষ ধুমধাম হইরাছিল। তাঁহার অবকাশ সময়ে মাস্ত্রাজের গবর্ণর লর্ড আম্পণিল কার্য্য করেন। তিনি পুর্ববলের কতকগুলি জেলা আসাম প্রদেশের সহিত যোগ করিয়া বঙ্গরাজাকে দিগণ্ডিত করেন। ইহাতে বাঞ্চালার রাজনৈতিক ভিত্তি অনেকাংশে স্থুন্ত হইয়াছে, সন্দেহ নাই। ভারতের উত্তরপূর্বসীমান্ত রক্ষা এবং বন্ধ ও ব্রন্ধের মধ্যবর্তী বনাকীর্ণ পার্বত্যপ্রদেশে ইংরাজ-শাসনপ্রতিষ্ঠাই এই জটিল তবের গূঢ় উদ্দেশ্ত ।

এই সমরে সামরিক বিভাগের সংশ্বার গইয়া অলী লাট লর্ড
কিচনার বাহাছরের সহিত তাঁহার বিরোধ উপস্থিত হর।
তাহাতে তিনি ভারত-সচিবের নিকট কর্মত্যাগ পত্র প্রেরণ
করেন। তাঁহার পদত্যাগ পত্র সাধারণে গৃহীত ও অস্থমোদিত হইলেও তিনি ভারতবর্ব ত্যাগ করিতে পারেন নাই।
ইংলগোধীশর ৭ম এডওয়ার্ডের অস্থ্যসত্যসারে তিনি ব্রয়াজ
প্রিক্ত অব ওরেলস্কে অভিনন্ধন দিবার ক্ষপ্ত ভারতে থাকিতে,
বাধ্য হন। ১৯০৫ খুটাকের ১ই ডিসেম্বর যুবরাজ বোম্বাই সহরে
পদার্পণ করেন। ১৭ই ভারিধে লর্ড মিন্টো ভারতে উপনীত
হইলে তিনি তাঁহার হস্তে ভারত-সামাজ্যের কার্যভার দিরা
১৮ই ডিসেম্বর ইংলগু-বাত্রা করেন।

ল্ড মিন্টোর সমরে ২৪এ ডিসেবর যুবরাক বালালার আসেন। ক্লিকাভার তাঁহার গুভাগমনে যথেই আনন্দোৎসব হইরাছিল। ক্লিকাভা মর্লানে তাঁহার শুক্তার্থনা ও্লাভিনন্দনার্ব একটা দরবার আছ্ত হর । ঐ সমরে জোটলাট মাহাছরের বেলভেডিরার প্রাসাদে বলীর হিন্দু মহিলারা যুবরাজপত্নীকে বরণ করিরাছিলেন।

১৯-৫ খুটাবের অক্টোবর মানে বদরাক্য প্রকৃত প্রাক্তাবে विভাগে विভক্ত হয়। कूनात्र সাহেব তথাকার ছোটলাট হম। वश्वांत्री अहे त्रमृह विशासत्र पिटन हैश्त्राक विश्कृतिरान्त्र वानिका शक्ष রোধ করিতে বালালার "বদেশী" বিতার করিতে চেটা পান। তাঁহারা বদেশী বাণিজ্যরকার জন্ম বন্ধমাতার পাদপল্লে লরণ লন এবং ৰভিমচক্ৰের সেই দিগন্ত বিন্দারিত "বন্দে মাতরম" মহামত্রে দীক্ষিত হইরা জাতীর ব্রস্ত উদ্যাপনে যত্রবান হন। এই 'বন্দে মাতরম' মত্ত্রে অচিরে একটা বিল্রোভের আপদা जानिया है रेताक बाककर्षातिश्रं ने निष्ठ हरेया छैठिन। তাঁহারা চারি দিকেই "বন্দে মাতরম্" স্রোভ প্রভিরোধ করিবার জন্তু সাকু সার জারি করিলেন। ধরিত বালালীপ্রজার উপর রাজপুরুষদিগের হত্তে অরবিত্তর অত্যাচারও চলিতে লাগিল। বরিশালেই মাত্রা কিছু অধিক দাঁড়াইল। তথাকার রাজকর্মচারি-গণের মন্তক "বন্দে মাতরম্" ধ্বনিতে বিখুর্ণিত হইল। তাঁহারা বালালীর ঔষত্য দমনের জন্ত তথার গোর্থ সেনাদল রক্ষার ব্যবস্থা করিলেন। অবশেবে ১৯০৬ খুষ্টাব্দে বেদল প্রভিন্সিয়াল কন্ফারেন্সের সময় রাজা-প্রজাবিধেবের চূড়ান্ত ভ্**ইয়া গেল।** বঙ্গের বক্তা ক্ররেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় রাজপুরুষদিগের প্রকোপে অর্থনতে দণ্ডিত হইলেন। প্রস্থামহলে আরও ম্বান্তি মার্ভুত হইতে লাগিল, তথন রাজ্যে শান্তিবিধানের জন্ত পূর্ববঙ্গের ছোট-লাট বাহাতর স্বীয় আদেশ প্রত্যাহার করিলেন। কিন্তু বাঙ্গালার এই সময়ে "বদেশী আন্দোলন" পূর্ণরূপে জাগিয়া উঠিল।

ৰাজালার কোর্ট-উইলিয়ন দুর্গের প্রথবিগণ।

কা ৰ্য্যায় ত	শদভাগ
>११८ करू २०,	১৭৮৫ ফেব্ৰে ১,
३१४६ (कंड ४,	১৭৮৬ সেপ্ট ১২,
১৭৮৬ সেপ্ট ১২	১৭৯৩ অক্ট ১০,
১৭৯৩ অক্ট ২৮,	১৭৯৮ মার্চ ১২,
১৭৯৮ মার্চ ১৭,	219 ET 21,
५१३४ (म ५४,	১৮০৫ জ্লা ৩০
३४०६ ७० ख्नारे	
১৮০৫ অক্ট ১০,	১৮০৭ জুলা ৩১
১৮০৭ স্থাই ৩১,	१४३८ खड़े हैं,
১৮১ ० पांचे 8,	১৮২০ জানু ৯,
১৮২৩ জান্থ ১৩,	১৮২৩ আগ ১,
১৮২৩ আগ ১,	১৮২৮ মার্চ ১০,
२४२४ मार्क २७,	३४२४ क् मा ८,
	১৭৭৪ জন্ত ২০, ১৭৮৫ কেব্ৰু ৮, ১৭৮৬ সেণ্ট ১২ ১৭৯৩ জন্ত ২৮, ১৭৯৮ মাৰ্চ ১৭, ১৮৯৫ ৩০ জুলাই ১৮০৫ জন্ত ১০, ১৮০৭ জুলাই ৩১, ১৮১৩ জন্ত ৪, ১৮২৩ জালু ১৩,

कांक्रवर्षक संबंधि-त्यमात्रम्

SPINE AND गर्छ छैरेगियन विशेष ३४७६ वार्ष २० নর চার্ল মেটকাক, SHOE RIE 20. S gik sout গৰ্ড অক্যাও SHOW WIE 8 31-82 CFE 31 ১৮৪৪ जूनारे २७ गर्छ अलगवरता SHEE CHIEF EN গৰ্ড হাডিৰ ১৮৪৪ জুলাই ২১, ১৮৪৮ জাতু ১২, माबकूरेन चन् छान्यरोनी ३৮৪৮ चार ३२, ১৮৫৬ কেব্ৰু ২৯. আয়ন্ ক্যানিং 3760 (AB 53

ভারতথরের গভর্বর জেনারল ও ভাইসরর।

क्ट शांनिः ३४७२ मार्ड ३२, ১৮৫৮ নতে ১ ু এলগিন ১৮७२ मार्চ ५२, দৰ রবার্ট দেশিয়ার ১৮৬৩ নভে ২১, ১৮৬৩ ডি ২. বৰ উইলিয়ম ডেনিবন ১৮৬৩ ডিলে ২, ३४७३ वांच् ५२, ১৮५৪ स्थि ३२, ३७७३ जोड ३२. नव धम गटक्न गर्ड (नव ३৮७३ जोच ३२, नव बन होति うかりも (幸運 か) ১৮৭২ কেব্ৰু ২৩, লর্ড নেপিয়ার **३४११ (कड़ २७.** 3592 CT 0. পর্ত নর্থক্রক ১৮৬২ মে ৩, ১৮৭৬ এপ্রিশ ১২ লর্ড লিটন ১৮৭৬ এপ্রিল ১২, ১৮৮০ জুন ৮ ১৮৮৪ ডিলে ১৩ ু রিপন ১৮৮০ জুন ৮, ১৮৮৮ ডিসে ২৭ .. ডাফরিন ১৮৮৪ ডিসে ১৩, লালডাউন ১৮৮৮ ডিলে ১০ ১৮৯৪ ছাতু ২৭, ১৮৯৪ আৰু ২৭, ১৮৯৯ আছ ৬ এলগিম লৰ্ড কাৰ্মন ३४३३ जांच ७, ১৯০৫ ডিসে ১৮ লর্ড মিন্টো ১৯০৫ ডিলে ১৮

ক্ৰাট ভাটের পাসন।

(रुनिएक जारहरवन्न भरत जन कम निर्णेत थाने (১৮৫১—
६२), जन जिनिन वीक्रम (১৮৬২—६१), जन केरेनियम द्या
(১৮৬२—१३) ७ जन वर्ष क्रांन्मारक (১৮१১—१३) जारहर
वर्षाकरण वाकाणात मार्लेमांक संवर्षत रहेनाहिराम । आके
जारहरवन नवरत मीनका हैरनाविरासन व्यक्तांकि निर्मातिक
वन्न । बीक्रम जारहरवन व्यामारक केवियान हिंक हरेना व्यामक
राजा बान्न वाह, भीनमान कराव नरवाित हा अवर अक्टूबन
ब्रह्माभागारका जारारा भीनमान केविक कार्या भवन्यमेन
ब्रह्माभागारका जारारा भीनमान केविक कार्या भवन्यमेन
व्यवस्थान करान । ১৮৯৬—६६ के व्यवस्थान स्वामा केविक कार्या भवन्यमेन
विभाग व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान विभागानिक व्यवस्थान व्य

হইবার সঙ্গে সন্দে কলিকাভার ৩ স্বরুগ্রনে রেবিটরি আদিস অপিড হইল।

কাবেলের সময়ে (১৮৭১ বুঃ অব্দে) সর্বাঞ্চৰ বালালার জনসংখ্যা অবধারিত হয়। এই বৎসরেই রাজানির্নাণ 📽 পুন:সংহার এবং থাল প্রভৃতি খনন জন্ত "পথকর" হালিড হয়। এই কাৰ্য্যের স্থবিধার মত ভিনি "সব্ ভিপুটী" ও "কাত্মনগো" পদ ভৃষ্টি করেন। ঐ সময় হইতেই ছুল ও কলেকে ব্যারাম শিক্ষার ব্যবস্থা হইরাছিল। **৭ট কেব্রুরারী আসাম প্রবেশের শাসনভার** লেপ্টেনান্ট গ্ৰপ্রের হন্ত হইতে একজন চিফ ক্ষিণনবের 🖟 হতে অৰ্ণিত হয়। ১৮৭৪ খুৱাদ হইতে ১৮৭৭ অন্ধ পৰ্যান্ত সর রিচার্ড টেম্পল বাঙ্গালার লেপ্টেনান্ট গর্ণর ছিলেন। তাঁহার আমলে শাসনকার্য্যের স্থবিধার জন্ত অনেকগুলি মহকুমা সংস্থাপিত এবং অনেক জেলার সীমা পরিবর্তিত হইরাছিল। ১৮৭৬ খুঃ অব্দে নামস্বারি আইন প্রচলিত হইরা সকলের ভূমি-সৰ্মীয় স্বন্ধ লিপিবছ হয়। এই বংসারে কলিকাতা মিউনিসি-পালিটিতে প্রথম নির্মাচনপ্রথা প্রবর্তিত হর। সর মাসলী ইডেনের সমরে (১৮৮৬—৮২) বেহারের আদালতে ও সরকারী কার্য্যে পারদীর পরিবর্ত্তে "কারেথী" ভাষা প্রচলিত হর। ১৮৭৮ অন্দে বিলাতে না বাইরা বাহাতে অপেন্দায়ুত জন্ম বেতনে এতদেশীর ব্যক্তিগণ সিবিদ দার্কিদে প্রবিষ্ট হইতে পারে. ভবিবরে নিরম প্রচলিত হর। ঐ সমরে করেকজন টোচটারি সিবিলসার্কিন' পরীক্ষার উত্তীর্ণ হইয়াছিলেন! এই সময়ে জনেক ডাক্ষর, সংস্থাপিত হয় এবং ১৮৮০ আনে ডাক্সে 'মনিঅৰ্ডার' ও 'পোইকার্ড' প্রচলিত হয়। ১৮৮১ **অব্দে দিতীয়-**যার বাজালাদেশের জনসংখ্যা নির্মারণ করা হর। বাজালার খোলাভাটী সংস্থাপিত হওৱাৰ এই সমৰে বাদালাৰ স্কুৱাণানের লোভ প্রবাহিত হইতে থাকে। ইহার পরে সর রিভার্স টম্প সর नारहव (১৮৮২-৮१ बृष्टीएक) वांचानात्र रनरकेमान्हे भवर्षत्र सम । ভিনি 'এগ্রিকলচরেল" বা ক্রবিবিভাগ ত্বাপন এবং মক্ত্রেল মিউনিসিপালিটিভে নিৰ্মাচনপ্ৰথা প্ৰবৰ্ষিত করেন। ১৮৮০-৮ঃ चार कनिकालां चारकां जिक टावर्गी (International Exhibition) माथक महात्वमा त्थामा हत् । अहे नमत्त्र বলীর প্রভাসভবিষয়ক আইন বিধিবত হইরাছিল। অনেক ছলে নৃতন রেলওবে এক অনেক ভারু ও ঠেলিয়াক আছিল সংস্থাপিত হয়। এই সময়ে বেখুল স্থল কলেকে প্রায়িশত হয়। ফতিগৰ বেশীৰ ফুডবিবা ব্যক্তি নিনিক হইবা "দেশানাল कन्रतान् न बाजीय नहान्तिकि बारान क्रम । ३৮৮० कु व्यस्य कृतिकाका केंद्रात विकीय प्रतिस्थान रह । क्रेम्प्रेनन नारहरपद

আমলে কেরাণী কমিশন ও আবগারী কমিশন নিয়োজিত হয়, কিন্ত অভাপি তদমুসারে কোন কার্যাই হর নাই। উড়িয়া ⁴কৈটি ক্যানাল" নামক খাল তাঁহার সময়ে কাটা ও খোলা হয়। অতঃপর শর ই,রার্ট কলভিন্ বেলি বাঙ্গালার লেপ্টেনান্ট গভর্ণর হন (৩ এপ্রিল, ১৮৮৭)। তৎপরে সর চার্ল ইলিরট ডিলেম্বর মালে ১৮৯০ খু ষ্টান্দে বালালার লেপ্টেনাণ্ট গ্রণ্র হুইলেন। এই বৎসর ডিসেম্বর মাসে কলিকাভার নেশনেল কন-গ্রেসের বর্চ অধিবেশন হয়। ১৮৯১ খুঃ অব্দের ২৬এ ফেব্রুয়ারি ভূতীয়বার বৃদ্দেশের জনসংখ্যা নির্দারণ করা হয়। সর চার্ল স ইলিয়ট 🛎 মাসের জন্ম অবকাশ গ্রহণ করার ভার এণ্টনি প্যাটি ক মাাকডোনেল বাহেব প্রতিনিধি লেপ্টেনান্ট গ্রণর হইরাছিলেন (জুন ১৮৯৩ খৃষ্টাবে)। ১৮৮৫ অব্দের ডিসেম্বর মাসে সর আলেকসান্দার মেকেজি বাঙ্গালার লেপ্টেনান্ট গবর্ণর হন, তিনি মিউনিসিপাল বিলের খসড়া প্রস্তুত করিরা বান। তাঁহার পীড়ার অবকাশে মহামাগু চার্ল দি দিসিল ষ্টিভেন্স সাহেব প্রতি-নিধি লেপ্টেনাও গবর্ণর হইরাছেন। তদনস্তর উড়বরণ সাহেব বাঙ্গালার ছোট লাট হন। তিনি মিউনিসিপাল বিল অন্ধুমোদন করিয়া তাহা কার্য্যে পরিণত হইতে আদেশ করেন। তাঁহার সমরে বাঙ্গালায় 'প্লেগ' পীড়া দেখা যায়। ঐ প্লেগের সময় তিনি নিজ জীবনের মারা পরিত্যাগ করিরা কলিকাতার লেগ নিপীড়িত পল্লীতে পরিভ্রমণ করিয়াছিলেন। তাঁহার এই উদারতায় সকলে মুগ্ধ হইয়াছিলেন। যে সকল বস্তিতে অনেক লোক মারা পড়িভেছিল, তিনি ভাহা ভালিয়া দিতে আদেশ দেন। তাঁহার পর বর্ত্তমান ছোটলাট ফ্রেন্সার বাহাহর বিভক্ত বালাবার শাসনকর্তা হইয়া ধীর পাদ বিক্লেপে রাজনৈতিক্যার্গ অমুসরণ করিতেছেন।

বাজালার লেপ্টনাণ্ট গভর্ণরগণ

সর ফ্রেডারিক জে. হালিডে ১৮৫৪ এপ্রিল ২৮, জন পি. গ্ৰাণ্ট SHEN CH সেদিল বিডন K. C. S. I, ১৮৬२ এপ্রিল २८, উলিয়ম গ্রো ₹8, >৮৭३ बार्फ वर्ष कार्यन ্ৰ বিৰ্চাড টেম্পল Bart. ১৮৭৪ এপ্রিল माननीइ जान्नी हेएज C. S. I. C.L.E., ১৮৭৭ আছ্বারী ৮, नव है बार्ट नि, दानी K.C.B.I, C.I.E, **>৮१३ क्नारे** ্মাননীর আস্নী ইডেনের বিশেব কার্য্যের অবসরে অহারিরূপে কার্য করেন)

্ অগাটান্ রিভার্ন টব্দানন C.S.I, C.L.E, ১৮৮২ এবিল ২৪, বি: এচ, এ, ককুরেল L.C.B, C.L.E, ১৮৮৫ আগই ১১, XVII (বিভাগ উম্পদনের ছুটার অবকাণে অহারিরণে কার্য্য করেন)

সর টুরাট দি, বেলী ১৮৮৭ এপ্রিল ২,

্ল চাৰ্লদ্ আল্ফ্ৰেড্ এলিরট K.O.S.T, ১৮৯০ জিলেম্বর ১৭, লু আল্টনি পাট্ ক ম্যাক্ডোনেল K.C.S.I. ১৮৯৩ যে ৩০,

> (উক্ত বর্ষের ৩০এ সবেদর পর্যান্ত এলিয়টের ছটীর সমন্ত্র কার্য্য করেন)

মাননীর সর আলেকজান্দার মেকেঞ্চী ম.C.৪.চ, ১৮৯৫ ডিসে, ১৮ মাননীর চার্ল লি, ষ্টিভেন্স C.৪.চ, (আলেকজান্দার মেকেঞ্চীর অবকাশে ১৮৯৭ খুটানের ২২এ ডিসেম্বর

পৰ্যান্ত কাৰ্য্য চালান)

মাননীয় সর জন উড্বরণ I.C.S, K.C.S.E, ১৮৯৮ এপ্রিল ৭,

্ব জে, এ, বোর্ডিলোন্ V.D. I.O.S, C.S.I, ১৯০২ নভেম্বর ২২ একটিং

है:ब्रोक भागाम वाकालांत अवशा।

সর এ, এচ, এল ক্রেক্সার M.A, I.C.S, K.C.S.I,
১৯০৩ নডেম্বর ২, (উাহার অবকাশে ১৯০৬
খুঃ জুন, মাননীর এল, ক্রেরার কার্য্য করেন।

পূর্ববন্ধ ও আসামের লেপ্টেনাক দীবর্ণর।
মাননীয় সর,জে,বি,ফুলার I.C.S., K.C.S.I, C.I.E.১৯০৫ অক্টোবর

ইংরাজদিগের রাজত্বালে এদেশে কতকগুল কুপ্রথা প্রতিষ্ঠিত হয় এবং কতকগুলি কুপ্রথার বিলয় সাধিত হইরাছে। সহমরণ বা সতীদাহ, গঙ্গাসাগরে সপ্তান বিসর্জন প্রভৃতি কুপ্রথা যেমন রহিত হইয়াছে এবং চোর ডাকাইত ও অভ্যাচারী জমিদারদিগের দোরাত্ম্য কমিরাছে; তেমনই নৃতন নৃতন রাস্তা, রেলওয়ে এবং বালায় পোত্যোগে গমনাগমনের ও বাণিজ্যারক্ষাত প্রেরণের স্থবিধা ঘটয়াছে। আবার পোট বা ডাক এবং টেণিগ্রাফ প্রবর্তিত হওয়ার অতি অয় সময় মধ্যে দ্রে সংবাদ পাঠাইবায়ও উপায় হইয়াছে। বিচারালরের বৃদ্ধি হওয়াতে লোকের অয় রক্ষা করিবার পথ প্রশন্ত হটয়াছে। বিভাচর্চা লারা লোকের অনেক মানসিক উন্নতি ঘটিয়াছে, বলবাদীর চক্ ফুটিয়াছে; মু্রায়রের স্বাধীনতা পাওয়ার ভাহারা স্থাজপুরুবদিগক্ষে মনের কথা খুলিয়া বিশ্বার পথ পাইয়াছে।

ইংরাজেরা এদেশে নীল, চা প্রাকৃতি প্রব্যের চাব করিরাও এখানকার কিঞ্চিৎ উপকার করিরাছেন বটে, কিন্তু ভার্ত্তাত বরিপ্রবাদী প্রকার জনেক জনেক বিষয়ে জমলল সাধিত হই-রাছে। এই নীলের চাব বুটার ১৮শ শতাবে এথানে জারভ হর এবং নেই সমর হইতে ধীনহীন প্রজাবর্গ বাদ্দের জর্মের লোভে আপনার সর্বাধ হারাইরা ইংরাজের নিকট প্রাণ ও মান বিকাইতে শিক্ষা করে। নীলকট্টগণ কিন্তাশ আমাছবিক অত্যাচারে বালালার প্রজাবর্গকে নির্মিত করে, তাহা নীলদর্শণ-পাঠকগণ সহজেই উপলন্ধি করিতে পাছেন। এই নীলের চাব একদিন পূর্ব্ব, পান্টিম ও দক্ষিণ বজের সকল ছানেই প্রায় প্রচলিত ছিল। প্রতি ১০ মাইলের মধ্যে নীলকর বণিক্ষিগের একটা না একটা কুটা স্থাপিত হইরাছিল। সেই সকল নীলকুটার ধ্বংসাবশেষ আনিও বালালার সেই অতীত ছংগন্বতি আপন করিতেছে।

বে সক্ষণ প্রান্থে নীলকুঠা স্থাপিত হইরাছিল, সেই সকণ প্রামের অধিকাংশ ধনাতা ব্যক্তিই ঐ কুঠার দেওরান বা দারোগা হুইভেম। তাঁহারাও ইংরাজসংস্পর্শে আসিরা অনেকাংশে ইংরাজের স্তার কঠোর প্রকৃতি হইরা পড়েন। তাঁহাদের স্তার স্কুল্ল ভূমাধিকারীর অভ্যাচারেও বালালার প্রজাগণ সশক্ষিত হুইরাছিল।

বণিকবেশে ইংরাজবণিক বাজালার প্রবেশ করেন। বাজালার উর্জর ও শশুপূর্ব সমতলক্ষেত্র সহজেই তাঁহালের চিত্ত আকর্ষণ করে। এই গাঁজের বরীপ ভাগ দলীলালে সমাকীর্গ চওরার তাঁহারা সহজেই বাজালার অভ্যন্তর ভাগে প্রবেশ করিতে সমর্থ হইলেন। ভারতের অভ্যান্ত প্রদেশে এরূপ সমনাগমনের ক্রবিধা না থাকার এবং তক্ষেশ ভাগ শশুসমৃদ্বিপূর্ণ না হওরার চতুর ইংরাজগণ সে সকল স্থান বিশেব ক্রবিধাজনক মনে করেন নাই। কারণ তথন এদেশে রেলপথ ছিল না! নৌকাপথেই তথনকার পণ্যন্তব্যবহনের একমাত্র উপার ছিল। সেই কারণেই ইংরাজগণ তথাকার অধিবাসীদের সহিত আত্মীরতা স্থাপনপূর্কক মিশিতে পারেন নাই। বাজালার তাঁহাদের সে ক্রবিধা ঘটরাছিল।

নীস বান্ধালা ভিন্ন ভারতের অপর কোণাও প্র্যাপ্ত উৎপন্ন হয় না এবং পণ্যস্তবাবহনের বিশেব স্থবিধা দেখিয়া ইংরাজবণিকগণ নীগকরবেশে বান্ধানার উপনিবেশ হাপন করেন। এখনও নদীরা ও বশোহর জেলার অনেক উপনিবেশী ইংরাজ জমিলারী ক্রম করিরা ভাষার উপসত্ব ভোগ করিতেছেন।

পূর্বাকালে নীলের লাগন উপলক্ষেই ইংরাজের সহিত বলবালীর বিশেব ব্যিইতা বটে। সেই প্রে এবং বাণিজ্য বাপাদেশে
তাহারা বালালার নথাব করকারের অনেক হিন্দুক্র্যচারীর
সহিত নিজ্ঞা করিরা লন। এনন কি, সেই ব্যবসারী ইংরাজ
রাণক্ষরিগের অনারিক্তায় স্থানীর অনেক প্রসিদ্ধ কমিধার ও
রাজায় সহিত তাহারের সভাব কটে, কেই কেলাবেশার তাহারা
তৎকালিক রাজনৈতিক ক্ষেত্রের প্রকৃত অবস্থা অবগত হইতে
বাক্ষেন। সিরাজকে রাজ্যন্ত করিবার ক্ষরের বশন ইংরাজ
বলিকের কর্পে বার, তথন তাহারা উন্তর্নীব হইরা সেই আলো-

লমে বোগদান করেন। বাদাবার প্রজা বা জমিদারেরা তথন ইংরাজকে বিশ্বত বন্ধুর ভার বিবেচনা করিতেন। অস্তাস্ত সূরোপীর বণিকের ভার তাঁহাদিগকে বৈদেশিক বলিরা জ্ঞান করিতেন না। এই বিশাল-বলেই বড়বরকারীরা গোপনে ইংরাজের সাহাব্য প্রার্থনা করে, ভাহারই ফলে ইংরাজবণিক বাদাবার অধীধর হইরা ক্রমে ভারতের শাসনদও পরিচালন করিতে সমর্থ হন।

ইংরাজ রাজা হইলেন বটে, কিন্ত তাঁহাদিগের শাসনে এবেশে তিনটি মহৎ অনিষ্ট সাথিত হয়। নবাব সরকারের ছরবছা লক্ষ্য করেন নাই; বরং ম্যাঞ্চেরনিবাসী ইংরাজবণিকদ্বিগের বন্ধনার রাজার বিজ্ঞান বালার বিজ্ঞান বালার বিজ্ঞান বি

মুসলমান শাসনসমরে জমিদারের। করদ রাজাদিগের ফ্রায় ছিলেন; ইংরাজ-রাজজকালে তাঁহাদিগের সে অবস্থা লয় পাই-রাছে। তাঁহাদিগের আর প্রের মত রাজকমতাস্টক সৈপ্ত, গড় ও খতর বিচারালয়-স্থাপনের অধিকার নাই। নশশালা বন্দোবন্তের পর হইতে নির্মিত দিনে রাজস্ব না দিলে জমিদারী নিলাম হইবে, এই নিরমে প্রাচীন জমিদারদিগের অনেক অপকার হইরাছে। এ প্রকার নির্দিষ্ট নিরমে রাজকর দেওরা তাঁহাদিগের অভ্যাস ছিল না, খতরাং তাঁহাদিগের রাজস্ব বাকি পড়িতে লাগিল এবং তাঁহাদিগের ভূসম্পত্তি বাণিজ্য
বাবি পড়িতে লাগিল এবং তাঁহাদিগের ভূসম্পত্তি বাণিজ্য
বাবি লাকের হাতে ঘাইতে আরম্ভ হইল। এইরপে আর্লিন মধ্যে বহু জমিদার বিব্রহাত হইলা পড়িকেন। নদীয়া, নাটোর প্রভৃতি রাজবংশে এইরপে গ্রহণা বটিরাছিল।

ইংরাজনিগের সমরে বাজালার চিরণান্তি বিরাজনান করি-রাছে; এজন্ত সমাজসংখ্যার ও ভাষার উর্লিড নিকে দৃষ্টি করিতে সকলে অবসর পাইরাছেন ৷ রাজা রামনোহন রার রাজসমাজ সংস্থাপন এবং ইবর্তমে বিভাসাগর প্রহাপর বিধ্বাধিবাহ প্রচলন ও বছবিবাহ নিবারণ স্বামে আন্যোলন করিয়া সমাজসংখ্যারের পথ খ্লিয়াছেন। ঈশ্রচক্র ওও, অক্ষর্ক্যার ওও, লিশ্রচক্র বিদ্যালাগর, মাইকেল নধুপ্রন কর, বীনবদ্ধ কির, বিদিচক চট্টোপাধ্যার, হেমচক্র বন্দ্যোপাধ্যার প্রভৃতি গ্রহ্নারন্ধিগর দারা বালালা ভাষা ও লাহিত্যের বিলক্ষণ উরতি হইরাছে। কবি-ওরালা, পাঁচালীওরালা, কীর্ত্তনওরালা, এবং যাত্রাওরালাদিগের নীতেও বালালা ভাষার মধুরভা বৃদ্ধি পাইরাছে। বলীর রলালর-সমূহেও ইংরাজী অন্তকরণের বথেই প্রভাব লক্ষিত হইতেছে। ইংরাজদিগের আমলেই বোধ হয়, বালালা গম্পগ্রেহর বহল প্রচার আরম্ভ। করেইর লাহেবের ১৭৯৩ খুইাকে বিধিব্যুহের বালালা অন্তবাদের পূর্কে আরও অনেক গম্ভুশ্বির পরিচর পাওরা গিরাছে। [বালালা ভাষা দেখ।]

খু টান মিননরিদিগের বছে করিবানের রামারণ ও কাপীদানের মহাভারত প্রথম মুক্তিত হর। পরে তাঁহারাই বালালা সংবাদপত্র ছাপাইতে আরম্ভ করেন। প্রীরামপুরের কলের, কলিকাতার করেকটী কলের ও স্থানে হানে অন্ত প্রকার বিছালর হাণিত হওরার এতকেনীর লোকের বিভাশিকার বর্ণেই সাহায্য হইরাছে। কেরী, মার্সম্যান ও ডফ সাহেবের নাম এলেশের রুতবিদ্ধ ব্যক্তিনগণ সহজে ভূলিবেন না। তাঁহাদের বছে ও উভোগে বালালার ইংরাজীশিক্ষা দৃচভিত্তি লাভ করে। সেই শিক্ষাকলে ক্রমে এখানে হিন্দু পেটুরট, বেলল হরকরা, ইণ্ডিরান ডেলী নিউস, ইণ্ডিরান মিরর, ইন্টেটন্যান, ইংলিশ্যান, বেললী ও অমৃতবালার প্রভৃতি ইংরাজী সংবাদ পত্র এবং সঞ্জীবনী, বলবাসী, বন্ধমতী, হিত্রাদী প্রভৃতি বালালা সংবাদ পত্র প্রচারিত হইতেছে।

वाक्रामात्र धातीन वाणिकाममृद्धि काशत्र अविषिठ नारे। যে আশায় পর্কুগীজ, ইংরাজ, ওলন্দার, দিনেমার ও জর্মণ ৰ্ণিক্গণ এখানে আসিয়াছিলেন, তাহার প্রভাব তৎকালে बाकानाम किक्रण बनवर हिन, छाहा ३१६० बुढीरम टेंफिटांग-লেখক অশ্মির উক্তিতে স্পষ্টতর প্রতিভাত হইরাছে। তিনি বলেন, ভারতবর্ষের অভাভ প্রদেশপেকা ৰালানার বাণিজ্য ব্ছবিন্তীৰ্ণ ছিল। তখন এখান হইতে সমূদর কার্পাস ও পট্টবন্ত দিলীতে রপ্তানী হইত। এতভিন্ন আরব, পারত ও ভারতবর্ষের অস্তান্ত অংশে রেশম ও রেশমী কাপড়, কার্পাসবস্তু, চিনি, অহিকেন, শক্ত প্রভৃতি প্রেরিত হইত। তথন বাঙ্গানাই वरतानीत्रविद्यात अधान बावनारवत्र दान हिन । अहे वानिका-**ट्या है:बाक्का**ं कार्यनिन्दत गंगकरंग वक्ताका क्रव করিরাছিলেন, তাহা ইতিহাসপ্রসঙ্গে বিবৃত ব্ইরাছে। বাণিজা উপদক্ষে বালালীর দহিত ঘনিইতাই ইংরাজফাতির উর্জিড দুন এবং সেই মেশামিশিই বাজালীর অধ্যপতনের কারণ। তথন এলেশে সৰর রাজা বা কোন প্রধান নগর হইতে কিছু দূরে গদন

করিলে এনন কোন আৰু পাওর বাইজ না, বেধানে প্রজেক প্রকর, ত্রী বা শিশু ব্যবিদ্যাণ কার্য্যে নিযুক্ত বিশ না। অপর বাণিক্যরবাকাত স্থাকে বারা হউক, ব্যবিদ্যাণ সকলে এরেশের তহুবার-প্রতি সভ্য কাতের নীর্বহান লাভ করিবাহিল, কিছ এখন আর প্রের বে করছা নাই, এখন আর ঘরে হরে কর্বা ব্রের না। এখন এখন হইতে বিবেশে কাপড় বার না। এখন ন্যাক্ষেত্ররে প্রতিকোগিভার আনাবেক সে বাণিক্য-গোরব অভমিত হইরাছে। সামাভ পরিরাণে তাঁতের কাপড় বাতীত মতক উরোগন করিতে পারিবে, এরপ সভাবনা নাই। এখানে এবং বোরাই প্রেরেশে এখন অভি অর পরিয়াণেই কলে রোটা কাপড় প্রভত হইতেছে।

১৮১৫ খুইান্দে বলোহরজেনার প্রথম ওলাউঠা দেখা দেয়, পরে উহা ভারতবালী হইরা পড়িরাছে। সমরে সমরে এই রোগের উৎপাতে সকল দেশের অধিবাসীয়াই বাডিযান্ড হইরা পড়ে। করেক বৎসর হইতে নহীয়া, হগলী, বর্জনুল, মেদিনীপুর প্রভৃতি জেলার "সঞ্চারী জয়ে" জনেক লোকের বৃত্তা হইয়াছে। ইন্ত্রুরেয়া ও বোধাই মেগ দেখা দিয়া এখনও দেশের সর্কানান্দরিতেছে। বৈজ্ঞানিকগণ জয়্মান করেন, নদী, খাল প্রভৃতি জেমে পলি মাটি বারা ভরাট হইয়া এবং য়ালে য়ামে প্রয়োলনীয় পয়ঃপ্রণালী না রাখিয়া রাছা নির্দ্দিত হওয়ায় জল নির্গমের বাধা জয়য়য়। এই জরেয় উৎপতি ঘটিতেছে। বর্ষা জত্তে নিমবদের ওকালতাদি পচিয়া এক প্রকায় হুর্গমময় বাশা উথিত হয়। ঐ অবিভঙ্ক বায়্নেবনে রক্ত ক্রিভ করিয়া মাালেরিয়াদি রোগ উৎপাদন করে। জনেকে বিবেচনা করেম যে, তিনশত বৎসর পূর্বের্ব যে মহামারীতে গৌড়নগর জনশৃত্ত হয়াছিল, ভাহাও এইয়প এক প্রকাম জর।

১৮৬৪ খৃষ্টানে এদেশে একটা ভয়ন্তর রাটকাবর্ড উপস্থিত হইরা অনেক অপকার করিরাছিল। বহুসংখ্যক বৃক্ষ ও গৃহ ধরাদারী হইরাছিল, অনেক জাহাজ ও নৌকা ডুবিরাছিল; এবং রড়ের প্রভাপে বলোপসাগরের সনিলরাশি চরিবদ পরগণার দক্ষিণাংশে প্রবেশ করিরা কত মহন্ত, জীবজন্ত ও গোকালার বিমন্ত করিরাছিল, ভাহার ইরতা নাই। ইহা বালালার ১২৭৯ সালের আখিন নালে ঘটে বলিরা আখিনে বড় নামে খ্যাত। তৎপরে ১২৭৪ সালের কার্তিক মানে কার্তিকে বড় হয়। ১২৭৬ সালেও একটা বড় হইরাছিল। এ প্রকার রাটকা একেলের পক্ষে, নৃতন নহে, আইন আক্ররী পাঠে জানা বার বে, ১৬৮০ খুরাকে একেলে একটা বড় ইরাছিল। এ প্রকার রাটকা একেলের পক্ষে, নৃতন নহে, আইন আক্ররী পাঠে জানা বার বে, ১৬৮০ খুরাকে ওবিছেল একটা বড় ইরাছিল। উহার প্রভাবে সর্ক্রমারি উথিত হইরা লেবস্থানির ভূড়া ও জত্যুক্ত হান বাতীত বাধরণার প্রবেশের জনেকাংশ

নিমজ্জিত করিরাছিল। উক্ত ভ্রবটনার প্রার ছই লক্ষ লোকের মৃত্যু হর। ১৮৭৬ বৃষ্টাকে ৩১ এ অক্টোবর বে বাটকাবর্ত ঘটে, তাহা সর্বাপেকা নারাছক। তাহাতে মেঘনা ও বলোপসাগরের জল বাধরপঞ্জ, নোরাখালী ও চট্টগ্রাম প্রদেশে প্রবিষ্ট হইরা প্রার তিন লক্ষ লোক, বহুসংখ্যক গ্রাদি জন্ত, এবং জ্ঞাণ্য নৌকা ও গৃছ বিনষ্ট করিরাছে।

বাজালার জাবন-প্রবারী।

शृद्धिर फेट्सच कतिहाहि (व, ३৮९) बुडीएम वाकानात व्यथम लाक्नरका ग्राना क्या द्या। जननकत्र २४४२ वृहीत्म, २४२२ শুষ্টান্দে ও ১৯০১ খুষ্টান্দে বথাক্রমে বিতীয়, তৃতীয় ও চতুর্থবার লোকসংখ্যা অবধারিত হইরাছে। এই লোকসংখ্যা গণনা উদ্দেশে বালালার গ্রাম, নগর,জেলা ও বিভাগের সীমা ও তত্তদ্বিভাগবাসী বিভিন্ন শ্ৰেণীর হিন্দু, অৰ্দ্ধ-হিন্দু, পাৰ্কাড্য অসভ্যকাতি, মুসলমান ও বট্টান প্রাঞ্জি বিভিন্ন জাতির জাতীর ইতিহাস ও তাহাদের সাম্প্রদারিক, বিবরণ নিপিবত হইতেছে। ওপু তাহাই নহে, **এই बिवर्गीएक वर्समान वालानात्र रकान् रकान् जा**कि-कि कि ৰাৰদাৰ বিশু, ভাহারা কোথার কিরপভাবে কোন্ কোন্ জব্যের বাণিক্ষ্য চালাইতেছে; প্রজাগণ কৃষিকার্য্যের কিরূপ উন্নতি সাধন করিতেছে: কোথায় কড নদী, কড থাল, কড রাস্তা ও ৰত মাঠ কিরূপভাবে বিস্তুত থাকিয়া দেশবাসীর হিত-माधन क्तिएएह, छोहा हैश्त्रांक गवार्यत्नेत्र वह मानवमःथां-বিবরণ গ্রন্থানি পাঠ করিলে সঠিক বুঝা বার। এক কথার ইহাতে বাঙ্গালার ঐতিহাসিক, নৈতিক, সামাজিক ও ব্যবসা বাণিজ্ঞাসম্পর্কীর যাবতীয় বৃত্তান্ত বর্ণিত আছে।

প্রথম ছইবারের মান্ত্র গণনার ইংরাজ গবর্মেন্ট কতদ্র কৃতকার্য্য হইরাছিলেন, তাহা ওডোনেল সাহেবের বিবরণীতে বিস্তু আছে। ১৮৯১ গৃহীলের সংখ্যা গণনার ৭ লক্ষ টাকা ব্যর পড়ে, কিন্তু ১৯০১ গৃহীলে স্বে মাত্র ও লক্ষ ৯০ হাজার টাকা ব্যর হইরাছিল, অর্থাৎ প্রতি ১ হাজার লোকেন হিসাবে ১ টাকা মাত্র ব্যর পড়িরাছিল। যাহা হউক এরুপ বহ ব্যর করিরা ইংরাজ গবর্মেন্ট বে এতালুল মহছদেশু সমাধা করিরা সক্ষল মনোরথ হইরাছেন, ইহা পরম আজ্লাদের বিবর; অধিক্দ্র হংগের বিবর এই যে, এরুপ ব্যরবাছলাসন্থেও সংবাধদাতাদিগের জক্ষতালোবে অথবা প্রমনিবন্ধন এই বিষর্থীতে অনেক প্রমাদপূর্ণ গুরাভ স্মিবিশ্রত হইরাছে।

বিগত ১৯০১ নালের বার্চ বাবে নৌকগণনা কার্য নিশার হর; স্তরাং উহা বর্তনান ১৯০৬ সালের বল-বিজেনের প্রেই সংঘটিত হইরাছিল। এ কারণ উহাতে রাজসাহী, ঢাকা ও চুইগ্রাব বিভাগ বাদ দিরা গণনা করা হর নাই। পূর্বভ্ন বালালার সীমা ধরিরা গণনা হইরাছিল। সংখ্যা-গণনার স্থবিধার জন্ম ঐ সময়ে বালালা ৮টা অভত্র বিভাগে গঠিত হয়; বধা,—

- ১ পশ্চিম-বাঙ্গালা বর্দ্ধমান বিভাগ।
- ২ মধ্য-ৰান্ধালা--প্ৰেসিডেন্সী বিভাগ, খুলনা বাদে।
- ৩ উত্তর-বল-রাজসাহী বিভাগ, মালদহ, কোচবিহার ও সিকিম।
- ৪ পূর্ব-বন্ধ—ঢাকা ও চট্টগ্রাম বিভাগ, খুলনা ও পার্বত্য ত্রিপুরা।
- উত্তর-বেহার—মুক্ত:করপুর, দরভাকা, চল্পারণ, সারণ, ভাগলপুর ও পূর্ণিয়া।
- ७ দক্ষিণ-বেহার-পাটনা, গরা, শাহাবাদ ও মূলের।
- উড়িষ্যা—উড়িব্যা বিভাগ, অঙ্গুল বাদে।

কুণ্ঠাবোধ করে।

৮ ছোট নাগপুর অধিতাকা—ছোট নাগপুর বিভাগ, সাঁওভাল পরগণা, অত্ন, উড়িয়ার সা্মস্তরাজ্যসমূহ ও ছোট নাগপুর। এই ৮টী বিভাগ প্রকৃতিকর্জ্ক যেন পরস্পরে বিবৃক্ত। পশ্চিমবন্ধ ভাগীরথীর পশ্চিম পারে অবস্থিত এবং ইহা প্রাচীন রাচ্ছ্মির অস্তর্জুক। এখানে প্রধানতঃ বাগদী, বাউরী, কোড়া, মাল, কৈবর্জ, সাঁওভাল, আগুরী, গুক্লী, সদেগাপ, কারত্ব ও রাজ্ প্রভৃতি অসভ্য ও হিন্দ্ধর্মাপ্রিত আর্দ্ধ সভ্য-জাতির বাস আছে। এতভিন্ন এখানে ব্রাহ্মণ, কারত্ব, বৈছ এবং নাপিত, স্তর্ধার ও কামার প্রভৃতি জাতিরও অভাব নাই। ইহারা আপনাদিগকে রাচ্দেশী বলিয়া গৌরব করে এবং অ অ

পশ্চিমে ভাগীরণী, উত্তরে পদ্মা এবং পূর্ব্ধে মধুমতীর মধ্যবন্ধী গালের বন্ধীপ-ভাগ মধ্যবন্ধ বলিরা পরিচিত। খুলনা জেলা এই নদী দীমাভূক্ত হইলেও উহার নিরাংশ এখনও পলি দারা গঠিত হওরার উহাকে পূর্ব্ধবন্ধের দীমা দরিবিষ্ঠ করা হইরাছে। এখানে একমাত্র পোদ, চঙাল, কৈবর্ত্ত ও বাগদী ক্লাতির প্রাধান্ত দেখা বার।

পদ্মার উত্তর হইতে দার্ক্সিলিক পর্কাত পর্যান্ত উত্তর বক্ষ বলিরা গৃহীত। মৃত্তিকার প্রকৃতি নির্কিশেবে উত্তর-বঙ্গের সহিত জনেক সৌনানৃত্ত থাকার্যবর্তমান কালে মালনহ জেলা উত্তর-বঙ্গের অন্তর্গত হইরা পড়িরাছে। এথানে মেচ, কোচ, পার্কতীর ভোটিরা এবং দীক্ষিত মুসলমানেরই সংখ্যা অধিক। পূর্কা-বঙ্গে নমঃশূল বা চঙাল, কোচ, গারো, টিগরা, মুকী ও মন্ প্রভৃতি পার্কাত্য অমত্য ও অর্ক্সভ্যকাতি এবং দীক্ষিত মুসলমান, এইরূপে বেহার, ছোটনাগপুর ও উড়িয়াবিভাগে বিভিন্ন প্রেমীর পার্কাত্য অনার্থ্য ভাতিরই বছল বাস বেখা বার।

এই **পাটটা বিভাগের বর্তনান ভূ**পরিমাণ ও গোকসংখ্যা এইরূপ নির্দীত হইরাছে—

আৰেশিক্ষিতাৰ	ভূপরিমাণ	লোকসংখ্যা
পশ্চিম বাজালা	८८६७८	¥2896
म श्य "	*88	7705266
উত্তর "	২৩৬৮•	>*****
পূৰ্ব্ব "	७३ ≥ १७	34264.49
দক্ষিণ বেহার	>6.45	1134836
উত্তর "	₹> 986	১৩ ৮ ৩১১২•
উড়িব্যা 🔓	F36.	8543305
ছোটনাগপুর অধিত্যকা	48666	94670.A
মোট	१०८६४६	96896850

এই সংখ্যা গণনার স্থন্দর-বনবিভাগের পরিমাণ ও লোক সংখ্যা গৃহীত হয় নাই।

এই বিস্তীর্ণ বাদালার বে সকল বিভিন্ন জাতি বাস করিতেছে,
শ্রেণীগত বা বংশগত বিভিন্নতা অনুসারে তাহারা অতন্ত্র অতন্ত্র
জাতীর আধ্যার পরিচিত। ঐ সকল মূলজাতির এবং তাহাদের
সংশ্লিষ্ট শাধাপ্রশাধাসমূহত বিভিন্ন শ্রেণীর সামাজিক ও নৈতিক
ইতিহাস গভরেনেটর উপরোক্ত গণনা বিবরণীতে সমিবিট্ট
আহে; বাহলাভরে তাহা উচ্চ হইল না। ব্রাহ্মণাদি বর্ণচতুইরাত্রগত বিভিন্ন জাতি বা তাহার প্রসিদ্ধ ও প্রধান শ্রেণীর
বিবরণ স্থানান্তরে দ্রাইবা।

বঙ্গন (পুং) বঙ্গতীতি বগি-লা। বার্তাকু। চলিত বেঞ্চণ। বঙ্গজায়া (স্ত্রী) বঙ্গদেশবাসীর কথিত ও লিখিত ভাষা। ইহা সাধারণতঃ বাঙ্গালা ভাষা নামে পরিচিত।

[বাঙ্গালা ভাষা শব্দে বিষ্কৃত বিষয়ণ দ্রষ্টব্য ।]

বঙ্গমল (গং-জী) দীদ ধাতৃ। (বৈছকনি°) বঙ্গবাড়ী, উত্তরবলের একটী গণ্ডগ্রাম।

বঙ্গলা (ত্রী) রাগিণীবিশেষ। ইহার নামান্তর বন্ধালী। (হলার্থ) বঙ্গশুজুজু (ক্লী) বঙ্গগুৰাভ্যাং রন্ধভাঞাভ্যাং কারতে কন-ড। কাংজ ধাতু, রাং ও তামার মিপ্রণে এই ধাতু প্রন্তত হর; এই কন্ত ইহার নাম বন্ধত্বক। (হেম)

বৃদ্ধতেন্দ্ৰ (পুং) বৃদ্ধকৃষণ "বৃদ্ধতেনৰ্গতিকঃ গুৰুনাশো মূনি-ক্ৰমং।" (ক্ৰিকা') স্বাৰ্থে কন্। বৃদ্ধতেনক—বৃষ্ক্ৰ। ২ মুক্ত বৃহ্বকৃষ্ক। (মুদ্ধমালা)

বঙ্গলেন, ১ ধাতুরণ বা আধ্যাতব্যাকরণপ্রণেতা। ২ চিকিৎসা-সারসংগ্রহ ও বলসেন নামক বৈছক্ষচরিতা। ইহার পিতার নাম সলাধর। কাজিকা নগরে ইহার বাস ছিল^{ত্}

বঙ্গাধিকশ্রেমণ, সভীচারহত প্রণেতা।

বঙ্গারি (পুং) বজত রল্থাতোররিঃ অত বল্পাকোর্ল্যক্ষাৎ কথাকং। হরিতাল। (হেন) বঙ্গাল (গ্ৰং) ভৈন্নৰ নাগের পূত্র।

"বঙ্গালঃ পঞ্চনঃ বঠো মধুরৌ হর্বকতথা।

কেশাখ্যো মাধবঃ সিন্ধুঠৈরৰপুত্রাঃ প্রাকীর্বিডাঃ ॥"

ইহার ধ্যান----

"কলানিবেশিডকরগুবরগুপৰী,
ভাৰতি শুলপরিমপ্তিভবামহন্ত:।
ভলোক্ষলো নিবিড্বছলটাকলাপো
বলাল ইতাভিহিতগুরুণার্কবর্ণ:॥
বাড়বো দেববলালো গৃহাংশভাসমধ্যম:।
প্রহর্ষে বিনিবোক্তবা: প্রোক্তোহরং মূনিনা শ্বরং॥"
(নদীতরয়াকর)

বঙ্গালিকা (জী) ভৈন্নবরাগের রাগিনী, বঙ্গালী। বঙ্গালী (জী) ভৈন্নবরাগের রাগিনী।

"ভৈরবী কৌশিকী চৈব ভাষা বেলাবলী ভথা। বলালী চেতি রাগিলো৷ ভৈরবভেষ বলভাঃ॥" (নদীভদানো") ইহার মূর্ত্তি—

"মনোজস্কা ওণভূবিতালী ওকং নধানা ধর্দীধরতা। প্রাংডঃ কুমারী কমনীরস্তির্কলালিকেয়ং ওচিসালগীতা ॥" (সলীতর্পা°)

এই রাগিণী ঔড়ৰ এবং গৃহাংশ-ভাস ও বড়্জ-ভাগিনী, ইহা 'ল' 'ধ' হীন, এবং ইহার প্রথমে স্চ্ছনা এবং এই রাগিণী পূর্বা:

"বঙ্গালী ঔড়বা জেরা গৃহাংশভাসবড়্রভাক্। অধ্যীনাচ বিজেরা মৃক্তনা প্রথমা মতা।

পূর্ণা বা মন্বরোপেতা কলিনাথেন ভাবিতা ॥" (সলীতদর্শণ)
বঙ্গাবলৈত, প্রমেন্তরোগে অবলেন্ডবিলের। বলতম চুই
রতি মধুর সহিত লেহন করিবে, পরে গুড় ও গন্ধক ২ তোলা সেবন করিবে বা গুড়ুচীর অম্ব ও চিনি দিয়া সেবন করা বাইতে পারে। ইহাতে প্রমেন্তরোগ আরোগ্য হয়। (রসেক্তশারসং)
বঙ্গাব্টক, প্রমেন্ত রোগে ব্যবহার্য ঔবধবিশেষ। প্রস্তাপ্রপালী— পারা, গন্ধক, লোহ, রূপা, ধর্পর, অন্ত ও ভার প্রত্যেক

পারা, গছক, লোহ, রূপা, থপর, অত্র ও তার প্রভ্যেক সমান ভাগ এবং সকলের সমান পরিমাণ রল একত্র মর্থন করিরা গঞ্চপ্টে পাক করিবে। তদমন্তর ঔবধ শীতল হইলে পাত্র হইতে উদ্ধৃত করিরা লইবে। মাত্রা ২ রতি প্রামাণ। জন্তপান মধু, হরিলাচুর্গ ও আনলকীর রম। ইহা সেবন করিলে বিংশতি প্রকার প্রমেহ, জামদোর, বিস্তৃতিকা, বিশ্বম জর, জন, মুবাতীসার প্রভৃতি রোগ বিমাই হয়।

ৰঙ্গিপুরম্, মাত্রাজ প্রেসিডেনীর ফুকা জেলার অন্তর্গত একটা নগর। বাণট্শা হইছে ১৯ মাইল উদ্ভরণভিনে অবহিত। এখানকার বলভরার-মন্দিরের গন্ধ-জন্তে ও অগন্তের্থর বাদীর মন্দিরগাতে কুইগানি নিলাফলক দৃষ্ট হর। প্রথম থানি ১৪৮৭ শকে বিজয়নগররাক সদানিব রামের শাসনকালে উৎকীর্ণ। এই বৎসত্তে মুস্কুমানগ্র বিজয়নগর কমেস করিয়াছিল। শেবোক বানি ২৪৭৮ শকে উক্ত রাজার শাসনস্ময়ে উৎকীর্ণ। উত্তাতে মুর্কু-রাজ্যদেব চোড় মহারাজের দান-স্তাত কিপিবক্ক আছে।

বঙ্গিরি (পুং) রাজভেদ। (ভাগবত ১২।১।৩০) বঙ্গায় (মি) ^{**}বদ-(গহাদিত্যক। পা ৪।২।১৩৮) ইতি ছ। বঙ্গদেশোহব, বজদেশ সম্বীয়।

বঙ্গুলা (ত্রী) রাগিণীভেদ। [রাগিণী দেখ।]

বঙ্গ দ (পুং) অক্সরভেদ, ইক্স এই অক্সরকে হনন করেন। "জংশতা বদৃদ্যাভিনৎ" (ক্ক্ ১)৫০৮)

'বদ্দত্ত এডংসংজ্ঞকন্তাত্মতা' (সায়ণ)

বক্ষেশ্বর (পুং) বলঃ তরামকবেশক ঈশবং অধিপতিঃ। বালালার রাজাল

বল্পেশ্ররস (শং) ঔবধবিশেষ। এই ঔবধ বলেখর ও
ব্যবদেশরসেদে বিবিধ। প্রস্তুত প্রণালী—পারাভন্ধ ৮ ভোলা,
বলভন্ধ ৮ ভোলা, গন্ধক, ভায়ভন্ম, প্রভ্যেকে ৩২ ভোলা,
আকল হুদ্ধের সহিত মর্কনপূর্বক মুখা বন্ধ করিয়া ভূধর যঞ্জে
পাক করিবে। এই ঔবধের মাত্রা ২ রতি। এই ঔবধ্যে
ঘতের সহিত পেহন করিয়া পুনন বার রস বা কাথ আর্দ্ধ ভোলা
ও গোম্ত্র বা হরিজার রসসহ পান করিবে। এই ঔবধ্যেবনে
অন্যোদর আও প্রশমিত হর। (রসেক্রসারসং উদবীরোগাধি)
অন্তবিধ—রস্সিক্র ও বন্ধ সম্ভাগ মর্কন করিয়া গুই মাযা

পরিমাণে মধুর সহিত সেবন করিলে প্রমেহ রোগনাশ হয়।

বৃহবদেশন — প্রস্তত প্রণালী — বল, পারদ, গদ্ধক, রোপ্য, কপুর, অত্র, প্রত্যেকে ২ তোলা; বর্ণ, মুক্তা প্রত্যেকে চুই মামা, কেণ্ডরের রসে ভাষনা দিরা চুই রতি পরিমাণ বটা প্রস্তুত করিবে। প্রনেহরোগাদিকারে ইছা একটা উৎকৃষ্ট ঔষদ। লোকের বলাবল আলোকে ছাণাছ্য, গোছ্য বা লগি আলুপানে সেবন করিতে হয়। এই ঔষধদেশনে লাখ্যালাগ্য বিংশতি প্রকান প্রমেষ, ব্যক্ত, পাঞ্চ, থাড়ুছ অর, হলীমক, বাড, গ্রহণ, আমানোব, মলাগি, জলাচ, বহুমুত্র, মৃত্রমেই ও মৃত্রাভিলার প্রস্তি রোগ আন্ত প্রশ্নিক হব এবং ইহাতে কান্তি, বল্, গুল, ওক ও কলার হয়। (রসেক্সনারস প্রমেষ্টের বিষ্ণু বাল্য, সন্দেশ, পরিভাবণ, উত্তি। আহাদি গরুবা বিষ্ণু আনিটি। লাই বিজ্ঞান, বিশি, বিচ্যা। লিই উলাচ, উচকুং, উরট্ডিব্ উবত্তর।

গুট্ৰজা। গৃট্ৰকাতি। গৃঙ্ অবোচং। সন্ বিবক্তি।
বচ্চুনাদি পরকৈ সক সেট্ট লট্ বাচয়তি। গৃঙ্ অধীবচং। বচ ভাদি পরকৈ সক অনিট্া লট্ বচতি।
"ন বচতাপ্রিয়ং বচং" (হলায়ুধ) প্রান্ধত প্রজ্ঞান। প্রতিন্দ বচ ল প্রতিবচন। বচ ধাতুর উত্তর অবি, অন্ত বিভক্তি হয় নাঃ
"বচেরস্তান্ত্রভ্তি প্রেয়োনাভিধীরতে।

জনতেনান্তি পঞ্চম্যা উত্তমঃ পুক্ষরং কচিৎ ॥" (তুর্গাদাস)
বচ (দেশজ) খনাম প্রানিধ বাদিক আবাবিশেষ। ইহা কটু
আখাদ এবং কাশী ছর্দির বিশেষ উপকারী। দেখিতে অনেকটঃ
গুটের মত কিন্তু বর্ণ লাল। এই গুদ্ধ মূল খণ্ড খণ্ড ক্রিয়া
মূখে রাখিলে কাসির বিশেষ উপকার দর্শে। বৈছকোত্তভবধাদিতে ইহার বহল ব্যবহার আছে। [বচা দেশ।]

বচ (পুং) বক্টীভি বচ্-জচ্। > কীন্নপকী। ২ টিন্নাপাৰী। (মেদিনী) ৩ সূৰ্য্য। ৪ কারণ।

বচঃক্রেম (পং) বচসঃ ক্রমঃ। বাংকার ক্রম, ৰাক্প্রণালী।
বচরু (পুং) বজীতি বচ্ (স্থ্বচিভোচ্ছালাগুলকুচঃ। উণ্
অ৮১) ইতি অকুচ্। ১ আক্রণ। ২ বৃহদারণাক উপনিষদ্বর্শিত
ব্যক্তিভেদ। (ক্রি) ও বাবদুক।

বচ্পোতি, রাজপুত জাতির একটা কিংবদন্তী আছে—সাহাব্ উদীন বোরি কর্তৃক দিলীশ্বর পথাবারের পরাজরের পর তাঁহার ভাতা চাহর দেবের বংশধর কংস রায় ও বরিয়ার সিংহের জনীনে কতকগুলি চৌহান শস্তুলগড় পরিত্যাগ করিয়া ১২৪৮ খুটাকে স্পতানপুর জেলার জ্বাবন নামক স্থানে জাসিয়া বাস করেন। এখানে স্প্লমানের ভরে তাঁহারা চৌহান নামের পরিবর্তে বিংভগোত্রী'নাম গ্রহণ করেন। পরবর্তিকালে বংভগোত্রী হইতে জপদ্রংশে বিচ্গোতি' হইয়াছে।

বিতীর উপাধ্যান হইতে আনা বায় বে, উপরোক্ত চাহম্ব দেবের প্রপৌত রাণা সক্ত বেবের একবিংশতি পুত্র ছিল। উাহাদের মধ্যে সর্কাকনিষ্ঠ পিতৃসম্পত্তির অধিবারীহন এবং অপর পুত্রগণ অনৃষ্ঠ পরীক্ষার জন্ত বিভিন্নদেশে গমন করেন। তন্মধ্যে বিরার সিংহ ও কংল রার মৈনপুরীতে বাইয়া আলাউদীন্ খোরীর অধীনে দৈনিক রত্তি অবক্ষান করিয়াছিলেন। তাহারা তথা হইতে ভরজাভির বিক্তরে বুরার্থ অপ্রসর হইরা অবোধার আলিয়া বাস করেন। বরিরার সিংহ কথাবনে আসিয়া বাসহাপনের পর প্রভাগগড়ের নিকটবর্তী কোট বিল্থার নাজক হালের সামস্করার্কী বিল্থারিয়া শীক্তিবিগের সর্কার রাজনবের অধীনে কর্ম প্রহণ করেন। ক্রমে তিনি উক্ত সামস্করাজের বিরুপাত্র হইরা তাহার কভার পাশিক্ষাবশপ্রকিক রাজপুত্র কণশংশ পাছ কে নিহত করিয়া তরাকার বালা হন।

এক সমরে অবোধ্যা প্রকেশে এই বচগোভি রাজপুত্রকিলের
ভাষাত্র বিশ্বত হিল। উপাও-রাজবংশেভিত্বত পাঠে জানা
বার বে, অবেশিয়ার প্রধানতম রাজা তিলকটানের সমর পর্যাত্ত
বিচগোতিরা ভ্রথাকার রাজ-সমাজে বিশেষ সন্মামাই ছিলেম।
সুকুন, রাজার অভিবেককালে তাঁহারা ভাহার কপালে ভিলক
দান করিরা রাজা বলিরা খীকার করিলে ভবে ভাহার
রাজমর্ঘ্যালা সার্থক হইত। কুর্বাবের রাজা এবং হসনপুরবন্ধার দেওধান এই বংশের প্রধান সামন্ত বলিরা পরিগণিত।

হসনপুর বন্ধরার সন্ধার বর্ত্তমান সময়ে ইস্লাম ধর্শে দীক্ষিত হইরা থান্দালা নামে পরিচিত হইলেও বনৌধার রাজন্তবর্গকে রাজনীকাদানের অধিকারী। অন্ধোরের সোমবংশী সন্ধারগণ, রামপুরের বিষেনগণ, অমেঠীর বন্ধল-গোতিরা এবং তিলোই-বাসী কানাইপুরিয়াগণ ইহাদের নিক্ট রাজনীকা না লইলে ত্ব ত্ব পূর্বপুক্ষগণের আচরিত ক্রিরাছ্ছানে অধিকারী হইতে পারেন না।

অ্লতানপুরের বংশু-গোত্তীরা বিল্থারিয়া, তবাইয়া, চল্লোরিয়া, কঠবাঈ, ডালে অলতান, রগুবংশী ও গর্গবংশীর কলা গ্রহণ করে এবং তিলকটাদ বাই, মৈনপুরী চৌহান, স্থাবংশী, গোতম, বিবেন ও বন্ধল-গোতিদিগকে কলা দেয়। জৌনপুরের বচ্গোতিয়া রযুবংশী, বাই, বৌশংথাম, নিকুল্ক, ধনমন্ত, গোতম, গহরবাড়, পণবার, চলেল, শৌনক ও দৃগ্বংশীদিগের কলা লয় এবং কল্হন,সর্বেত,গোতম, স্থাবংশী, রাজবাড়, বিবেন, কানাইপুরিয়া, গহরবাড়, বাবেল, বাই প্রভৃতিকে কলা দেয়।

বচণ্ডী (ব্রী) > সারিকা। ২ বর্ষ্টি। ৩ শত্রভেদ। (শব্দরকা•)
মেদিনীতে ইহার পাঠান্তর বচণ্ডা ও বর্মণ্ডা এইরপ দেখিতে
পাওরা বার।

বচন (রী) উচ্যতেৎনেনেতি প্রেয়নাশক্ষামক্ত তথাক্বং, বচ-লাট্ ।

১ শুটা। (শক্ষান্তিকা) ২ বাক্যা। পর্য্যার—ইরা, সরস্বতী, ত্রান্ধী,
ভাষা, বাবী, সারদা, গিরা, গির, গিরাংদেবী, গীদেবী, ভারতেম্বরী,
বাচ্, বাচা, বাগ্লেবী, বর্ণমাতৃকা, ভাবিত,উজি, ব্যাহার, লশিত,
বচন্। (শক্ষর্যাণ)

दैविष्क भग्नांत्र—थाजा, देना, त्भीः, त्भाती, शांकर्ती, शंकीता, शंकीता, सक्यां, संख्यांकर्ती, नानी, वांगी, वांगीती, वांग, शंवि, छात्रछी, धमिन, नानी, त्मां, त्मांन, र्यां, तत्रवंधी, निवंद, वांचा, वध्, छेन्नि, वांच्, कांक्ट्र, किस्ता, तांव, वद्ग, चन, व्यन, त्यां, त्यां, त्यां, त्यां, क्यां, प्रवंदी, कविष्ठि, मठी, वांक्, व्यरहेन्, त्यन, व्यन्त, शंवां, त्यां, व्यन्त, व्यन्त, व्यन्त, शंवां, त्यां, व्यन्त,
व्हिन्क्त्र (वि) व्यक्ति, व्हरम अवश्विष्ठ। व्यव्यक्तिम् (वि) > वाकाङ्गात कार्यकात्रेश्वनाकाङ्गवर्धे । বচনগোঁচর (a) বচনেন গোচরঃ। बाक्यकां दर्गाहत. "ক্ষুমরণ্ডশারাম্পি তৰ গুণকুতনামধেরানি বচনগোচরাৰি ভবস্ক" (ভাগ' ধাতা১২) वहमाधीहिन (बि) कानर शृहाजीिक अर-निमि। कारन विक, বচন অনুসারে কার্যকারী। বচনপট্ট (बि) ৰচনে পটুঃ। ৰাজ্পটু, ৰাজ্কুপলু। वहनविद्वार्थ (जि) अभागविक्क भाजवाका । বচনবিক্তম্ভ (তি) শান্তবিক্তম। व्हनभाद्ध (बि) शांनि कथा, त्व कथात्र मौनिकक चर्छना शत्रा প্রমাণিত নহে। ভি**ডিহীন বাক্য**। वहनवाकि (बि) भौनिक क्था। বচনশ্ত (ত্রি) বহ বাকা। চলিত কথার "লক্ষ কথা" বলে। ব্চনসহায় (बि) কথা কহিবার সাধী। কোন ব্যক্তির সহিছ

ব্চনসহায় (ত্রি) কথা কহিবার সাথী। কোন ব্যক্তির সহিত্ কথা কহিবার জন্ম বে বিনশ্নী ও মিটভাবী ব্যক্তিকে সঙ্গে কওরা বার। ব্যক্তনামুগ (ত্রি) বচনং জন্মগছিতি গম-ড। বাক্যের জন্মগামী,

বিনি বচন অন্ত্ৰসারে চলেন। (মার্কণ্ডেরপু॰ ২১।৫৫)
বচনাব্ (জি) ১ বাকাকুশন। ২ অ্বকা। ৩ প্রশংসাবাক্যকথনশীল। ৪ অব্যক্ত শক্ষারী। "হস্তারবাদিশক্বং"। (সারণ)
বচনীকুত (জি) তিরক্কত, লাভিত।

বচনীর (জি) বচ-অনীয়র। ১ কথনীর। (রী) ২ নিন্দা।

"মদনেন বিনাক্বতা রতিঃ ক্ষণমাত্রং কিল জীবিডেতি মে।

বচনীর্মিনং ব্যবস্থিতং রমণ স্বামন্থ্যমি বন্ধপি ৪"

(কুমার ৪।২১)

হৈতি বচনীয়ং নিন্দা? (মিরনাখ)
বচনীয়াড়া (খ্রী) বচনীয়ড ভাবং তল্টাপ্। লোকাপবাদ।
'জনপ্রবাদং কোলীনং বিগানং বচনীয়ডা।' (হেম)
"খাধীনা বচনীয়ডাপি হি বরং বজো দ লেবাঞ্গলিবার্ণো ছেব নরেজ্রনোপ্তিকবধে পূর্কং ক্লতো জৌনিমা ॥"
(বৃদ্ধক্টক ও জন)

ৰচনেস্থিত (ঝি) বচনে তিঠতি খেতি খা-জ। (তৎপুদ্ধে কৃতি বহুলং। পা ৬০০১৪) ইতি সপ্তমা অনুষ্। ছিনি বচনে অবস্থিত, যিনি বচনাছসারে অবস্থান করেন। পর্যার— বচনন্ত, বিধের, বিনমপ্রাহী, আগ্রব। (অসরটীকাকার ভরত) কাহার কাহারও মতে বস্তু ও প্রশেষ এই হুইটা শব্ধ একপর্যায়ত। বচনোপাক্রম (খং) বচনত উপক্রমঃ। বাজারত, পর্যায়— উপতাদ, বাজুধ। (অসর) বচর (পুং) অবান্তরে চরুতীতি অব-চর-অচ্, অজোপঃ।
১ কুকুট। ২ পঠ। (মেদিনী)

व्हमू (११) भवा।

'পুংসি মন্ধঃ ক্ষুপণ্যুক্ত বচলুক্র গলুতথা। ভরণুক্ত দরপুঃ ভাষমিত্রে স্থানিরতাপি ॥' (শন্মালা) (জী) জীচাতে ইতি বচ (সর্জধাতকোচন্তন । উণ ৪১৮:

বচুদ্ (ক্লী) উচাতে ইভি বচ্ (দৰ্মধাত্তোহন্ত্ন্ । উণ্ ৪।১৮২) ইভি অন্তন্ । বাক্য ।

ঁইতি প্রগণ্ডং পুক্ষাধিরাকো মৃগাধিরাকত বচো নিশম্য। প্রত্যাহতারো গিরিশ-প্রভাবাদাম্মত্বকাং শিথিগীচকার ॥"

(प्रयू २। ८३)

বচসাংপত্তি (পুং) বচসাং বাচাং পতিঃ বঠ্ঠা অসুক্। বৃহস্পতি।
"জীবোংদিরা স্থান্ত কর্বচসাং পতীজাে)" (দীপিকা)

বচদ্ধর (ঝি) করোতীতি ক্ব-ক্ষচ্, বচসঃ করঃ। বচনে স্থিত, বচনাছদারে কার্যকারী।

বচস্ত (ত্রি) বচনবোগ্য। প্রশংসনীর। বিখ্যাত। বচস্তা (ত্রী) স্বভির ইচ্ছা। "সোমবত্যা বচন্তরা" (স্বভূ ১০।১১০৮)

'ৰচন্তৰা স্বতীক্ষা।' (সাৰণ) ৮ (ত্ৰি) স্বতিকাৰ, স্বতাজিলাৰী। "সম্বীৱং ৰচন্তৰে"

বচন্ত্য (জি) অভিকান, অভ্যক্তিলানী। "স্থ্নীরং বচন্তবে" (জাৰ্ ১০।৪০।১৩) বিচন্ত্ৰৰে অভিকামান্ত্ৰৈ' (সারণ)

বচা (ত্রী) বাচরতীতি বচ্-গিচ্ অচ্, নিপাডনাৎ ক্লবঃ, বছা
অন্তর্ভাবি-গার্থাৎ বচোহচ্। গুরুধবিশেব। (Acorus calamus) চলিত বচ্; হিন্দী—বচ, গোরবচ; তৈলক, বড়ন্দ্র, নরবদ,
ববে—বেখাড়ে; তামিল—বশস্থা ইংরাজী—Orris-root।
সংস্কৃত পর্যার—উপ্রগন্ধা, বড়গ্রহা, গোলোমী, শতপর্বিবলা,
তীক্ষা, ন্দ্রটিলা, মললা, বিজয়া, উগ্রা, রক্ষেমী, বচ্যা, লোমশা,
ডল্রা খণ—অতিতীক্ষ, কটু, উষ্ণ, কম, আম, গ্রন্থিশোষ্ণ, বাতঅর ও অতিসারবোগনাশক। (রাজনিণ)

ভাৰপ্ৰকাশমতে —বচ, প্রাসানী বচ ও মহাভরীবচ এই তিন প্রকার। বচের পর্যার — উপ্রগন্ধা, বড্প্রহা, গোলোমী, দতপ্রিকা, ক্ষপত্রী, মললাা, লটিলা, উপ্রা ও লোমলা। ওপ—
উপ্রগন্ধ, কটুভিতন্তন, উক্ষীর্যা, বমিজনক, অন্নির্ভিকারক, মলস্কলোধক একং বিবন্ধ, আশ্বান, প্র, অপন্যার, কফ, উন্মান, ভূতদোৰ, ক্লমি ও বাধুনাশক।

গুরাসাদী বচ—পুরাসাদী বচকে পারসীক বচ করে, এই বচ গুরুবর্ণ, ইহার অপল সাম হৈমবজী। এই বচ পূর্ব্যোক্ত গুণাকুল, বিশেব বাহুনালের পক্ষে ইহা সর্বাঞ্চেট।

মহান্তরী বচ-পশ্চিমবেশে কুলিঞ্জন নামে প্রসিদ্ধ এবং ইহাকে কুগদ্ধাও করে। তথ-উপ্রগদ্ধবিশিই, বিশেষতঃ ক্ষ ও কাসনাশক, স্বব্রপ্রসাদক, কচিঞ্জনক এবং ক্ষর, কঠ ও মুখলোধক। ইহা তির ছুলগ্রান্থিনিট অগর আর এক প্রকার হুগন্ধি বচ আছে, এই বচ পূর্বোক্ত বচ অপেকা হীনতথাবিনিট।

তোপচিনিকে বীপান্তর-বচ কছে। অন্ত বীপে উৎপন্ন হয় বিলিনা উহার নাম বীপান্তর। ত্বণ—ঈবং তিভারন, উক্ষানির্য্য, আন্তিনীপ্রিকারক ও মনস্ত্রশোধক, বিবন্ধ, আগ্মান, শ্ন, বাত-ব্যাধি, অপন্মার, উন্মান ও শরীরবেদনানাশক। বিশেষতঃ কিরলরোগ ইহা বিশেষ উপকারী। (ভাবপ্রত)

গক্ষত্বপুরাণে লিখিত আছে বে, একমাস কাল বচ জ্বল ছথ্য বা ছতের সহিত সেবন করিলে ছতিশক্তি বৃদ্ধি হয়। চক্র ও স্থ্যগ্রহণ সময়ে এক পল বচ ছথ্যের সহিত সেবনে ধীশক্তি বৃদ্ধি হইরা থাকে।

"অভিবা পরসাজ্যেন মাসমেকত সেবিতা।
বচা কুর্যাররং প্রাক্তং প্রভিধারণসংযুত্ম ॥
চক্রপ্র্যারহং শীতং পলমেকং পরেহিবিতম্।
বচারাতৎক্রণং কুর্যারহাপ্রক্রাবিতং পরম্॥"
(গরুড়পূর্ণ ১৯৮ অং)

২ সারিকা পন্দী।

বচাচার্য্য (পুং) মাচার্যভেদ। বচাদিচুর্ণ, শুম্মরোগনাশক ঔষধ বিশেষ, প্রস্তুত প্রণালী

বচ, হরীতকী, হিন্দু, সৈশ্বৰ লবণ, অন্নবেতস, বৰকার ও যমানী একত্র সমভাগে চুর্গ করিয়া প্রাতঃকালে ৪ মাধা পরিমাণে উষ্ণজনের সহিত সেবন করিলে অন্নকাল মধ্যে গুলারোগ প্রশমিত হইয়া অগ্নির তেজোবৃদ্ধি হইয়া থাকে ।

বচার্চ (পুং) > সুর্য্যোপাসক্মাত্র। ২ পারশীক্ষাতি।
বচাদিবর্গ (পুং) বৈছোক্ত ওবিসক্ষ। (বাডটপু॰ ৩৫)
বচাদ্মস্থত (ক্লী) গওমালা রোগাধিকারে স্থতোবধবিশেব। (রসং র')
বচি (পুং) > বচন। (কাডার্থ প্রো° ৬।৭।২৪) ২ নাম,
অভিধান।

বচোগ্ৰন্থ (পুং) গৃদ্ধান্তীতি প্ৰহ-জ্বচ্, বচসাং গ্ৰহঃ। কৰ্ণ। ইহার পাঠান্তর বচোগৃহ।

वटायुक् (बि) वाकामाव।

শব্দা ৰচোমুকা ইক্ৰো বন্ধী" (বক্ ১) গাং) 'ৰচোমুকা বচনমাতেণ' (সামণ)

वट्ठां विमृ (जि) क्रम्-विम्-किथ्। चिक्रक्यनेवास्त्रत्न त्विम्छा । "वक्ष वैद्यासा वट्ठाविमः" (बक् ১।৯১।১১)

'বচোৰিয়া ছভিলক্ষানাং ৰচনাং বেদিভারঃ' (সারণ) বিচ্ছিক্বালা, বাদালার অন্তর্গত একটা প্রাচীন হান। বিচ্ছিয়া, নিৰক্ষারপ্রশেভা। য়য়ৢ, গতি। ভাষি পরবৈ স্ক' সেট্। লট্ বজতি। লাট্
বিষয়ে । লিট্ বৰাজ, ববজড়া। সূট্ বজিতা। ল্ট্ বজিবাতি।
ক্রুড্ অবজীৎ, অবাজীং। বজ—> সংস্করণ। ২ গতি।
চুরাদি পরবৈশ্ব সক' সেট্। লট্ বাজরতি। পূঙ্ অবীবজং।
ক্রুড্ (প্ং ক্লী) বজতীতি বজ-গতৌ (গজেলাগ্রবজারিপ্রেতি।
ক্রুণ্ হা২৮) ইতি রন্প্রভারেন নিপাতিতঃ। ইজের জন্ত্রবিশেব, চলিত বাজ। পর্যায়—ক্লাদিনী, কুলিশ, ভিচ্ন, পবি,
শতকোটি, স্বল, শব, বডোলি, অশনি, কুলীশ, ভিবির, ভিন্নং,
অক্লপ্, সম্ব, সব, অশনী, বল্লাশি, জভারি, ত্রিদশায়ুধ, শতধার,
ক্রালার, আপোত্র, অক্লর, গিরিক্টক, গৌ, জল্লোধ, শেবভৃতি,
গিরিজর, জাববি, লভ, ভিদ্র, জম্বল। (ত্রিকা") বৈদিকপর্যায়—
বিচাৎ, নেমি, হেতি, নম, পবি, ক্রক, ব্রুক, ব্রুধ, বজ্ল,
অর্ক, কুৎস, কুলিশ, তুল, ভিগ্না, মেনি, স্বধিতি, সায়ক,
পর্ভ। (বেদনি হা২০)

বজ্লের উৎপত্তি-বিবরে পুরাণাদিতে নানা মত দেখিতে পাওরা যার। মৎক্ষপুরাণে লিখিত আছে বে, বিশ্বকর্মা রবিকে ক্রমিয়াত্রে ভ্রমণ করাইরা তাহার তেজ পৃথক্ করিরাছিলেন, এই সহত্র কিরণাত্মক পৃথক্কত ক্র্যাতেজ বিষ্ণুর চক্র, কল্লের শৃল এবং ইক্রের বজ্লরূপে পরিণত হইরাছিল।

"তথেত্যক্তঃ স রবিণা এমৌ ক্বডা দিবাকরম্।
পূথক্ চকার তত্তেজশ্চক্রং বিষ্ণোরকরয়ৎ॥
বিশ্লক্ষাপি রুদ্রত বন্ধমিক্রত চাধিকম্।
কৈত্যদানবসংহর্তৃং সহস্রকিরণাত্মকম্॥
রূপক প্রতিমঞ্চকে দ্বরা পাদাদৃতে মহৎ।
ন শশাকাধ তদ্যতঃং পাদরপং রবেঃ পুনঃ॥

(ম্**ংভূপ্° ১১ অ°**)

বামনপ্রাণে লিখিত আছে যে, একদা ইন্দ্র দৈত্যমাতার আঠরে প্রবেশ করিয়া দেখেন যে, গর্ভত্ব বালক কটিদেশে হাত রাখিরা উর্জমুখে অবহান করিতেহে, তাহার সমীপে এক মাংসপেশী আছে, ইন্দ্র কুদ্ধ হইয়া যেমন এ মাংসপেশী গ্রহণ করিয়া মর্দ্দন করিতে লাগিলেন, তৎক্ষণাৎ ঐ মাংসপেশী অতিশর কঠিন এবং উর্জ ও অধোদেশে বৃদ্ধি পাইতে থাকে; পরে ঐ মাংসপেশী হইতে শতপ্র্বা কুলিশ উৎপন্ন হয়।

শপ্রবিশ্ব নাঠরং গুজো দৈত্যমাতৃ: প্রনার:।

দদর্শোর্জমুখং বাদং কটিন্যন্তকরং মহৎ ঃ

তক্তিবান্তেছধ দদৃশে পেশীং মাংসন্ত বাসব:।

গুজুফুটিকসঙ্গালাং করাভ্যাং নগৃহছছথ ভাদ্ ॥

ততঃ কোপসমান্ত্রাভো মাংসপেশীং শতক্রুত্ব:।

করাভ্যামর্করামাস ততঃ সা কঠিনাভবং ঃ

উৰ্চ্নোৰ্কক বৃহধে কথোৰ্ক্য বৃহতে তথা। বতপৰ্কা চ কুলিশঃ নঞ্চাতো মাংসংশশিতঃ ॥"

(बाग्रमभू • 👐 🐃)

ভাগৰতে দিখিত আছে বে, ইক্স বৃত্তাহ্বর-বিধের ক্ষণ্ণ কৰিছিল মূনির অভিযার বিশ্বকর্তাকে বন্ধনির্মাণ করিছে আবেশ করেন। বিশ্বকর্তা ইক্সের আবেশে দ্বীচিমূনির অভি যারা বন্ধ প্রস্তুত করেন। ইক্স এই বন্ধারা বৃত্তাহ্বরকে বব ক্রিরাছিলেন। (ভাগৰত ৬/১০—১১ অ°) [ভাড়িত বেখা]

আহিকতত্ত্ব লিখিত আছে যে, যথন তরানক বন্ধনিৰোৰ, হয়, সেই সমন্থ পূৰ্ব বা উত্তরমূখে কৈমিনিম্নির নাম তিনবার শারণ ক্রিলে বন্ধত্ব বিশ্বিত হয়।

> "প্রচঙ্গবনাখাতে মেবেষু ক্তনিতেবু বঃ। গ্রিঃ পঠেকৈনিনীরোংখি প্রাক্ত্বো বাপ্যুদমুধঃ। তঞ্চ মাস্কুরাং বোরং বিদ্যুতীরো>বদীদভি ॥"

> > (আহিক্তবধৃত ব্ৰহ্ণপু •)

অতিরিক্ত মহাপাতক না হইলে বক্সাযাতে মৃত্যু হর না। নারিকেলানি উচ্চশিরঃ বৃক্ষে বক্সপাত হইতে দেখা বার। বক্ষ-পতনের পর সেই গাছ মরিরা বার। অনেক সময় বক্সায়াতে মৃত বা মৃতপ্রার ব্যক্তিকে মৃতিকার প্রতিরা রাখিলে বাঁচিতে দেখা গিরাছে। ইইকনির্মিত গৃহে বক্সপাত হইলে সেই স্থান চুর্ণ হইয়া বার।

ইংরাজীতে বজ্লকে Thunder-bolt বলে। ইছা মেঘব্যের পরম্পর বর্ষণ জন্ত বিহাতের সহিত উৎপদ্ধ হর। ঐ
বর্ষণের দক্ষ উথিত হইলে তাহা বজ্লের ডাক বলিরা কথিত।
প্রবাদ আছে, গোবরগালার বা কদলী বৃক্ষে বস্ত্র মিপ্তিত হইলে
ভার উপরে উঠিতে পারে না। অনেকে বলেন, বল্ল দেখিতে
লোহশলাকার ভার, কিন্তু বাত্তবিক তাহা নহে। [বিহাৎ দেখ।]

২ রত্নবিশেব, হীরক। পর্যায়—ইক্সার্থ, হীর, ভিচ্ন, কুলিশ, পবি, অভেদা, অলির, রত্ন, দৃচ, ভার্গবন্ধ, বট্কোণ, বছধার, শতকোট। ত্থা—বড়্রনোপেড, সর্ববোগাপহারক, সকলপাপনাশক, সৌধাকর, দেহলার্ডাকারক ও রসায়ন। (রাজনি°)
[বিশেষ বিবরণ হীরক শংলা দেবা।]

০ বালক। ৪ ধাঝী। (মেদিনী) ৫ ফাজিফ। (ধরণি) ৬ বজুপুল। (লফররাণ) ৭ লৌহবিশেব, এই বজুলোই জনেক প্রকার, বধা-নীলপিও, জরপাত, বোরক, মাগকেলর, ভিতিরাল, বর্গফো, শৈবালবল, লোগবল, রোহিনী, কাফোল, প্রহিবল্লফ, মদনাধ্য। এই লোহের নারাক্তরণ চিক্ সকল থাকে। ৮ জন্রবিশেব। ভাবপ্রকাশে ইহার উৎপত্তির বিবর এইরপ লিখিত জাছে—

প্রাকালে ইক্স বন্ধন বুঝাস্থাকে দিহত করিবার করু বন্ধ উত্তোলন করেন, তথন এ বন্ধ হইছে জরিক্স কিন্দু দির্গত হইরা তরানক শব্দের নহিত পর্বাতনিবঁরে পতিত হয়। বে বে পর্বাতনিবর এ আর্থিক। নিপতিত হইরাছিল, তথার অন্তের উৎপতি হয়। বন্ধ হইতে ইহার উৎপতি বলিয়া উহার নাম বন্ধ হইরাছে। ইহা ব্যক্ষণ, ক্ষমির, কেন্ধু ও প্রত্যেকে চারিয়াতি। ব্যাকণলাতীর অন্ধ ক্ষম্পর্ণ, ক্ষমির—রক্তর্ণ, বৈশ্র—গীতবর্ণ, এবং পুত্র ক্ষম্পর্ণ। ক্ষেত্রণ রৌপ্য সংকারবিবরে, রক্তরণ অন্ত্র রসারনে, পীতবর্ণ, অন্ত ক্ষম্পর্ণ অন্ত রসারনে, পীতবর্ণ, অন্ত ক্ষমির্ণ ক্ষমির বিবরে এবং ক্ষম্পর্ণ অন্ত

পিনাক, বৰ্দ্দুর, নাগ ও বন্ধ এই চারি প্রকার অত্র। ইছার মধ্যে বন্ধ নামক অত্র অগ্নিতে নিকেপ করিলে বল্লের জার ছিরভাবে থাকে, কোন প্রকার বিক্বত হর না। এই অত্র অজ্ঞ সকল অত্র হইতে উৎক্রা। বন্ধাত্রবারা অরাধিরোগ প্রশাসিত হর এবং ইহাতে অকালমৃত্যু নিবারিত হইরা থাকে। অত্রশোধন করিরা বাবহার করিতে হর। শোধিত অত্রই গুণকারক।

শোধিতের ওণ — ক্ষার, মধুররস, শীভবীর্যা, আর্থর, থাড়ুগর্থক এবং ত্রিলোব, এণ, প্রমেহ, কুঠ, সীহা, উদর, প্রস্থি, বিব ও ক্রমিনাশক। ইহা নিজ্য সেবনে রোগনাশক, শরীরের গৃঢ়ভাসম্পাদক, বীর্যবর্ধক, অভ্যন্ত কোমগভাজনক, প্রমায়ু-বর্ধক, প্রজনক, সিংহ সৃদৃশ বিক্রমজনক, অকালমৃত্যুনাশক, এবং প্রভার একশভ স্ত্রী রমণ ক্রিবার শক্তিজনক।

অশোধিতের গুণ – মানবগণের নানাবিধ পীড়াজনক এবং ফুঠ, কর, পাণ্ডু, শোণ্ড, হৃণ্গত ও পার্বগত বেদনা এবং শরীরের গুফতা উৎপারক। (ভাব প্র•) [অভ্রশক দেখ]

৯ কোকিলাক্ষ্ক। ত বেতকুশ। (রাজনিত) ১২ সেহও-বৃক্ষ। (ভাবপ্রতি) ১২ জীরুক্ষের প্রপৌত্র, করিনী গর্ভজাত প্রস্থানের পুত্র। (গরুকুপুত ১৪৪ জঃ, ভাগবত ১১/১০ জঃ)

১০ বিশানিত্রের পুত্রভেদ। (ভারত ১৩।৪।৫১-৫১)

> বিক্তারি সপ্তবিংশভিবোগের অন্তর্গত পঞ্চৰণ যোগ। জ্যোতিব পাত্তে গিখিত আছে বে, বজ্তবোগের আদি ৯ বও নিশ্মনীর, অর্থাৎ এই নর বঙ্গে বাত্রাদি কোন ওত কর্ম ক্ষরিতে নাই।

"তাজানো পাঞ্চ বিষয়েত্ব সঞ্জ পূলে চ নাড়িকা: ।
সঙ্গালাডরো: বটু চ দৰ হৰ্ণগজনো: ॥
বৈশ্বভিত্যজীপাতে চ সমধ্যে পরিস্কৃত্যনে ॥" (জ্যোভিত্তম্ব)
সবি কোন লালক এই কোনে জন্মঞ্জন করে, ভাকা কটনে
মালক ভানী, ভানাহাই, নগনান, কেমানী, বহু ভ বছাবির
বাহীক্তম এবং শক্তমাণক কটারা বাকে।

"ধণী ওপজো ক্লনানু বহোলাং নামানকাছিলানীক্ষকা ভাৎ ১ বিলাভিগালে মধি চেৎ প্রাক্তান ক্লোপমা ভালিপুদানিনীনাং 💒 (কোনিআধীণ ১৯৯

১৫ বৌদ্ধ মতে চক্রাকার চিক্রিশের।
বক্তক (ক্লী) বজ্ঞসংজ্ঞারাং কন্। বজ্ঞসূর । (রাজনি॰)
২ সর্বতোভদ্রচক্রের অন্তর্গত প্রবাস্তোগ্য নক্ষম হইতে এরোবিংশ
নক্ষমান্ত্রক উপগ্রহবিশের।

শ্র্ব্যভাৎ পঞ্চনং থিতাং ক্রেরং বিক্সন্থ্যভিধন্।
পূর্বভাইনগং প্রোক্তং সরিপাতং চতুর্দ্ধনং ॥
কেতুমন্তাননং প্রোক্তম্বা ভাদেকবিংশতিঃ।
বাবিংশভিতবং কম্পাং এরোবিংশক বন্ধকন্।
নির্বাতক চতুর্বিংশমুকা অটাব্পগ্রহাঃ ॥ (ব্যোভিতব)
বক্তক্ষদার (পুং ক্রী) বন্ধুকার। (বৈভক্নি)

বজুক্ত (পুং) বজ্ঞ কছটো দেহাবরণমত। হন্দান্।
বজ্ঞকতিক (পুং) বজ্ঞত কটকমিব ভবারকথাং। দুহীবৃক্ষ।
(ভটাধর) ২ কোকিলাক বৃক্ষ, চলিত কুলেখাড়া গাছ। (রাজনি°)
বজ্রকতিশালালী (নী) নরকতেদ। ভাগবতের মতে জারবিংশতি
নরকের মধ্যে এই নরক জ্বোদশ। বে সকল পাশী সর্কাতিগামী, বমলোকে ভাহাদিগের এই নরকে গতি হইরা থাকে।

"যন্তিহ বৈ সর্ব্বাভিগমন্তমমূত্র নিরমে বর্তমানং বছকেটক-শাব্যনীমারোপ্য নিকর্ষস্কি॥" (ভাগবত ৫।২৬।২১)

বজুকন্দ (পুং) বক্সাকার: কন্দোহন্ত। বক্সকর্ণ, চলিত সকর-কন্দ আপু। (রত্নমা") ২ তালবুক্কের শিরোমজ্জা, তালের মাতি। ৩ বনশ্রণ, বুনো ওল।(বৈভবনি")

বদ্রকপাটনৎ (এ) মণ্ট বারবৃক্ত।

বক্তকপালিন্ (পুং) বন্তুকপালোহভাতীতি ইনি। বৃছবিলের, পর্যায়—হেরস, হেক্ক, চক্রসম্বর, দেব, নিগুলীন, শনিশেধর, বন্ধটীক। (বেম)

বজ্ঞক (গৃং) বজ্ঞকল, চলিভ সকরকল আগু। (রন্ধনাণ)
বজ্ঞকাঞ্জিক (দী) জীরোগাধিকারের ঔবধবিশেব। প্রশ্নত-প্রধানী—কাজি > সের, করার্থ শিপুল বুল, পিপুল, ও ঠ, বমালী, জীরা, দ্বকজীরা, হরিজা, হাদহরিজা, বিট্ ন্যথ্য, সচল লবণ এই সকল প্রশা নিবিভ এক পল, পাকার্থ কল ও সের, শেষ কাথ > সেঁৱ, বধা নিবনে পাক করিবে। ইয়া কর সহিত পের। ইয়া কর করিবে জীবিগের অন্তিবুদ্ধি ও আসপ্র, এবং কদ নই বইবা বল বীবা ও জনহুধ বৃদ্ধি হয়। (ক্ষেকারয়াণ)
বক্তকারক (গৃং) নবী নাসক পদ্ধ প্রশা । (বৈজ্ঞানিশ)

रक्षकानिका (श्री) कष्णांगनिका कार्गिका। ३ मानायरी। १ माकार्नित्र बांका। ও প্রমনাপক।

वस्त्रकारी (जी) > विन्निक्टिका। १ विन्द्रविन्दिका। राखकीं है (ग्रं) अन धानात्र कीत्र । देशाता आवत्र क कार्ड क्वांग्या नर्ड करत । उसकीटिंग दर भिना कांग्रिया क्रिय करत ; णाराष्ट्र गठक ग**क्की**मिना बनिता धानिक। [बळनरहे दर्थ।) वक्रकील (११) वस। বক্তকৃষ্ণি (রী) পর্বতভগভেদ। বক্তকুট (পুং) > বজ্বনর পর্বত। "সৰজকুটাজনিপাভবেগবিশীর্ণ-क्रिकः खनवन् नवान्।" (कांशवक कः) श्रामः) श नर्वाकरका । (ভাগৰ্জ ৫।২০।৪) ৩ হিমালয়শিধরস্থিত প্রাচীন সগর। ব্ৰস্কুক্ত (গ্ৰং) প্ৰাৰশ্চিতবিশেষ। বস্ত্রাকৈন্তু (প্ং) শহরভেদ, নরকরাজ। (মার্কণ্ডেরপু° ২১।২৯) बद्धकाद्भ (ज्ञी) वक्षमः करः कातः। कात्रवित्मव। भर्तात्र---वहाक, कांत्रात्वर्ध, विगातक, नांत्र, हक्तांत्र, श्रूपांच्य ।

 প্রীহরোগাধিকারে ঔবধবিশেব। প্রস্তুত্ত প্রাণালী---मामूछ नवन, रेमक्त नवन, काठ नवन, ववक्यांत्र, स्मोवर्कन नवन, সোহাগা, ও সাচিকার, সমভাগ চূর্ণ, আৰুন্দ হুগ্ধ ও সীক হুৱে ভিন দিন ভাবনা দিয়া একটী তামার পাত্রে বন্ধ করিয়া লেপ দিৰে, পরে উহা পুটপাক করিয়া চুর্ণ করিবে। পরে তিকটু, 'বিফলা, জীরা, হরিলা ও চিতা সমভাগ চূর্ণমিশ্রিত করিরা ক্লারের আর্দ্ধাংশ প্রদান করিতে হইবে। মাত্রা দোবের বল অনুসারে चित्र कतिएक इता। यनि राष्ट्र व्याधिका थाएक, काहा हरेएन উষ্ণ জল অমুপান, প্লেমার আধিক্য থাকিলে মুত, পিত্তের সাধিক্যে গোসূত্র এবং ত্রিদোবন্ধট হইলে কাঁজি অন্মুপানের স্থিত সেবন করিতে হর। এই ঔবধ সেবনে সকল প্রকার উদরী, ওম, শূল, অন্নিমান্দা, অজীর্ণ ও শ্রীহাদি রোগ আও ঞাশমিক হয়। (রুসেক্রসারস° শ্লীহরোগাধি°)

খণ-অত্যুক্ষ, তীন্ধ, কারক, রেচন; খন্ম, উদরশীড়া, বিজ্ঞ

বক্সগর্ভ (সুং) বোধিসৰভেদ। বক্সগড়, বোৰাইপ্ৰেসিডেন্সীর পুণাজেলার অন্তর্গত একটা গিরিছর্গ। বৃদ্ধগুগুন্ধু, ওবধৰিলের। (চিকিৎসাসা°) বক্তগোপ (পুং) ইন্তগোপৰীটভেষ। (বৈভক্ষিণ) ব্ৰহাত (গ্ং) বৰণাত। रेख्याच्यां (बि) रक्षणंडरनत रुएक्ए नव । बीन्डनतः। বক্সচর্মন্ (গ্রং) বলকং হর্তেজ্য চর্ম বন্ধ। 'বলনা, গওক, গওার। वस्कृष् (भूर) वृज्यनकी। (दिश्वकि) বস্তুচিক্ (ही) বজাত্তি বা বজের ভার দাব। বন্ধক্তিৎ (পুং) বন্ধা লাভি ভত ভাষাত সহসেচেতি, বি-किन्, जूनानमन्। नक्क। (द्रम)

ब्रह्मकाम् (१६)विद्याः । जीवाविमीः रक्षको (बी) रहण माना । > रहाति । (स्नाक्ष) "বৰুবালাভয়নর: শাবলন্চাভয়ালকং।" (মংক্রু ১২১।১৪) २ विद्याष्ट्रमञ्ज (भोकी। व्यक्तिक भारती, ज्यामनीवयंत्रम ७ वक्तवेदीव जावबद्यान्या। বক্তট্যিক (পুং) ব্যৱস্থা ব্যৱস্থানেন টাকতে প্রকাশতে ইভি गैर-कः। रज्ञकराणि नायक वृद्धः। (जिक्ना°) वक्ष खाकियी, बोबलाविकालत देशाच छाकियी पूर्विका। নেপালে ও ডিবৰভে এই ডাকিনীর পূজা প্রচলিত আছে, ডধার মট বিধ ডাকিনী বৃষ্ট হয়; বধা—বেতবর্ণা লাভা, শীতবর্ণা মালা, त्रकवर्ग निष्ण, क्षांबदना मुक्ता, क्षादर्भा भूमहत्वा भूमा, नीकदर्गा व्भरण प्रा, बक्यमी रीभरण बीमा धवर गवरणा इतिरवर्गा গৰা। এই শই বছভাকিনীকে অলেকে, শইমাভূকার রূপাত্তর र्याज्ञां मरम करत्रमः। বঞ্জণখা (ত্রী) সদ্দীকের। (পা° হাসার্চ্ছ) বক্তব্ৰ (পুং) গাখ্মীর মনলাবিলেব। ব্জতীর্ত্ব, তীর্থভেদ। বজ্ঞতীর্থদাহাজ্যে ইহার সবিভার পরিচর चारह। रख्यकुरु (पूर) रखुर रखकुराह करिनर कुरूर रख । > शक्य । २ शर्ममा (खिका°) ७ शृजा ३ मनका (ब्रोक्सि°) ৪ সুহীর্ক্ষ, দীলগাছ। (তি) ৫ বলুজুওধর। (ভাগবত ধাহভাত৫) বজ্ঞভুল্য (গ্ং) বজ্ৰেণ ভুলাঃ । বন্তুলদুশ। বক্সদং ট্র (গুং) বন্দু ইব দংট্রা বছা > ইপ্রগোপ কীট। ২ দাক্ষস (রামারণ বা৭৯।৬) ও অক্রডেব। (ভাগবড ৮।১০।২০) (ত্রি) s বল্লের কার নংব্রাযুক্ত। .e স্থালিবর্ণিত একলন রাকা। (স্কৃতি ৩০।১**১**৯) व्यक्तिम् (वि) स्वरं स्थिति निम्पर्छ रछ। निम्प रूछ वांत्रा रखनुष्म । "व्यवक्रदवा वृदनः रखनव्मनः" (बक् ১۱১०১١১) 'বছদব্দিশং বস্তবৃত্তেন দক্ষিণহতোপেতেন' (সামণ) दक्कमध्य (वि) स्वाभि कात्रा नसः। विकिश्नानादत्र स्वामरस्य ভাগভালানিবারণবিষয়ক কএকটা বিধি ভাছে। ব্দ্রদণ্ড (ত্রি) হীরকশোজিত বও। (দেবীপুরাণ) व्याप्तक (जी) क्यरकर। ব্যস্ত্রপত্ত (গুং) > জ্ঞানজের গ্রেজেন। (ভারত) ২ বৌদ-

अष्मात्रकः । (व्नित्ताः ५।०৯१)

((११) २ न्यूपक ।

शक्कारख (गूर) रमुमिर काँगा एका एक १ ३ मूक्ता है सुनिक १

दक्षप्रभाग (११) नमुनिय कडिमा वनमञ्जा । वृश्यिकः

वखानखा, मनीरकन । (विधिवान १३०।>)

বক্সপাম, কচ্চপদাতকাশীর একজন রাজা, লন্ধণের প্তা। ইনি গাধিনগরপতিকে পরাজিত করিরা গোপাজি অধিকার করিয়াছিকোন।

বজ্ব দৃঢ়নেত্র (পুং) বন্ধ রাজভেদ।
বজ্ব দেহ (ঝি) > বজ্ব সন্ধ কঠিন দেহ। ২ বন্ধরাম।
বজ্ব দেহ (ঝি) > বজ্ব সন্ধ কঠিন দেহ। ২ বন্ধরাম।
বজ্ব দেহ (পুং) বজুবারকো জঃ। দুহীবৃন্ধ। (অমর)
বজ্ব দেহম (পুং) বজুবারকো জমঃ। দুহীবৃন্ধ, সীজগাছ।
'সেহপ্তঃ সিংহতুপ্তঃ ভাষত্রী বজ্ব সমান্ধি চ।'(ভাবপ্রাণ)

বজু দ্রুমকেসরধ্বজ (পুং) গ্রুজনালভেন।

বজ ধর (গ্রং) ধরতীতি ধূ-আচ্। বজ্ঞাত ধরঃ। ১ ইন্তা। (হুলায়ুধ) ২ বৌহুবতিবিশেষ। (ত্রিকা•) ও বল্লালপুরাধিপতি রাজবিশেষ। (রাজতর্দিশী ৮/৫৪•)

বজ ধর, বৌৰতত্ব বর্ণিত আধিব্ৰতেষ। তিবৰতীয় বৌৰতত্ব মতে ইনি প্রধান বৃদ্ধ, প্রধান বিন, গুল্পতি, সকল তথাগতের প্রধান মন্ত্রী, অমাদি, অনস্ত ও বজুসন্থ। অপদেবতাগণ তাঁহার নিকট পরাজিত হইয়া শপথ করে বে বৃদ্ধপ্রের বিক্লছে কথন তাহারা হত্তক্ষেপ করিবেনা।

কোন কোন বৌশ্বতজ্ঞমতে বজুধন ও বজুসৰ ছই জন ভিন্ন।
বজুধনই আদিদেব, তিনি সমাক্ সমাধিতে নিরত অবহিত,
বজুসৰ হারাই তিনি মানবের কল্যাণ বিধান করিয়া থাকেন।
ধ্যানী বুজের সহিত মান্নবী বুজের যে সম্পর্ক, বজুধরের সহিত
বজুসত্তের সেইরূপ সম্পর্ক।

বজুধাত্রী (जी) বিরোচনের পদীভেদ।

ব্জুনথ (ত্রি) নৃসিংহ। (তৈত্তিরীয় আ॰ ১০।১।৬)

বজনগর (ক্রী) দানবশ্রেষ্ঠ বজনাভগুতিষ্ঠিত নগরভেদ। (হরিব°) বজুনাভ (মি) > ক্লার্লচর মাতৃভেদ। ২ দানবরাজভেদ। ৩ রাজা উক্থের পুত্র। ৪ উরাভের পুত্র। ৫ হলের পুত্র। ৬ ক্লেব জ্যোতিঃ।

ব্জনাভীয় (ত্রি) বন্ধনাও নামক দানবস্থনীর।

বস্ত্রনারাচ (রী) অন্তবিশেষ। "এতভু বস্ত্রনারাচং পটোছিত-মিদং জঝঃ।" (বোকপ্র°৪০১)

বজু নির্ছোষ (পুং) বজ্বত নির্ধোবঃ। বজ্বনিক শব্দ। (হলাচুধ)
বজ্রনিতেশ্য (পুং) বজ্বাগাং নিশেবঃ সংঘর্ষধ্বনিঃ। বজ্বনির্ধোব।
বেষকংবর্ষধ্বনিত ধ্বনিঃ। বজ্বনির্ধোব। পর্যার—ক্রুপ্।

হাজ্রপঞ্জর (পুং) ১ জুর্গাজোক্রজেন। ২ সহাত্রিবর্ণিত একরন রাজা। (সহা^ত ৩১/১৯) ও রাদকরেন।

বজ্ঞপাত্রিকা (গ্রী) বৃন্ধতেদ (Asperagus Racemosa)। হাজ্ঞপানি (পুং) বন্ধুং পাণো বছা। ১ ইক্রা । (বিকাণ) ২ বান্ধুণ। "বন্দ্রণানিত্র নিদঃ ভাৎ করং বন্ধুরথং বৃতম্। বৈভা বৈ দানবভাশ্য কর্মবন্ধা বনীরসঃ ম"(ভারত ১।১৭১।৫১)

৩ বৌদ্ধ মতে, দেৰবোনিভেদ। 🔞 ধ্যানী ৰোধিসৰভেদ। নেপাল, ভোট, সিকিম ও ভোটানে এখনও বন্ধুপাণির विज्ञ-छीरगपूर्वि शृक्षिण स्टेता थाटक। जिटमम्-दक्न-दक्क নামক ভোটগ্ৰাছে লিখিত আছে, এক সমরে সকল বৃদ্ধ মেরু-শিখরে সমবেত হইলেন। কিরুপে সমৃত্রগর্ক হইতে অমৃত আত্বত হইবে, তাহার উপায় নির্দারণের অক্ত সকলে সন্মিলিত ৷ তৎ-কালে অন্তরেরা যানবজাতির প্রতি হলাহল প্রয়োগ করিরা নর্ক-নাশ সাধনের চেষ্টা করিতেছিল; এখন অমৃত বিতরণ করিয়া মানবসমাজ রক্ষা করিবার জন্ম সকলে উদ্গ্রীব। বৃদ্ধাণ মেরু খারা সমূদ্র মছন আরম্ভ করিলেন। তাহাতে অমৃত সমুদ্রোপরি ভাসিরা উঠিল ! বন্ধ্রপাণির উপর সেই অমৃতরক্ষাভার অর্পিড হইণ। বটনাক্রমে রাহু বোধিসস্থগণের **ওপ্রকাও জা**নিতে পারিল এবং বন্ত্রপাণির অসাক্ষাতে কুম্ভ নিঃশেষ করিয়া অমৃত পান করিরা পলাইল। বজুপাণি পরে অমৃতাপহরণ জানিতে পারিয়া রাহকে ধরিবার জন্ম ছুটিলেন। প্রথমে সূর্যালোকে গেলেন। সূর্য্য রাহর ভয়ে প্রকৃত সংবাদ না দিয়া এক জনকে বাইতে দেখিরাছেন, এই মাত্র বলিলেন। তথা হইতে বন্ধু পাণি চক্রলোকে আসিলেন। চক্র সমস্ত বলিয়া দিলেন। অবিলংখ বজুপাণি রাহকে আক্রমণ করিলেন। তাঁহার বজুাঘাতে রাহর শরীর দ্বিধণ্ডিত হইল, তাহার মুখমাত্র অবশিষ্ট রহিল, নিয়াংশ এককালে উড়িয়া গেল। কেবল অমৃতপ্রভাবে ভাহার প্রাণ রহিল। তৎপরে বোধিসম্বর্গণ সমবেত হইলেন। প্রস্রাবে মহানর্থকর হলাহল উৎপন্ন হইরাছিল, তাহাতে স্ষ্টি-নাপ হইবার উপক্রম হইল। বোধিসবগণের পরামর্লে বঞ্জুপাণি সেই মূত্র পান করিরা স্টেরকা করিলেন। তথন বন্ধু পাণির অভূপণ স্থন্যরূপ বোর কৃষ্ণবর্ণ ক্ইল। চক্র স্বর্ধ্যের উপর নাহর জাতকোধ থাকিল। কেবল বন্ধুপানির কৌশলে একবারে চক্রপূর্যাকে গ্রাস করিছে পারিতেছে না।

বজুপাণি যপন রাছকে আক্রমণ করেন, তথন রাছর কত হইতে অমৃত রক্ষিত হইতে থাকে। সেই রস পৃথিবীতে বে থারে রুখানে পড়িল, সেই থানে নামা ভেষক উৎপর হইল। ভোটবেশে বে সকল ক্ষমবর্ণ জীবন বজুপাণিমূর্বি আছে, জাহাসের দক্ষিণ হতে বজু, বামহতে ঘন্টা পাশ প্রভৃতি এবং কটিনবেশ রুগুমালা।

বজুপাতি (ক্লী) বজুণাগের্ডার ছ। বজুপাতির ভাব, বা ধর্ম। বজুপাত (পুং) বজুত পাতঃ পতমং। বজুপতম। বজুপাতা (ক্লী) হয় পাবাণ, চলিত কুলবড়ি। (বৈভক্তি) विक्षं भूष (क्री) ममुक मूत्रः। समुनगतः। (देवसर्हाः २१।००) विक्षं भूष्ण (क्री) समृतिय मूर्णः। किनभूष्णः। (क्रांतः) ६ पक-भूषः क्रांताः। विद्यार होग् । समुभूषाः—नक्षांताः, क्रांताः।

बङ्ग श्रेष्ठ (प्रः) विशेषत्रका।

यञ्जान (११) चत्रवर्तानस्वर ।

বস্ত্রপ্রভারি । বী) ভরোজ দেবীকে।

बुख्य शांस (वि) वव्यत जार वर्डम ।

यञ्जर्भाष्ट्र (प्र.) > रेज । (यन् आश्रवान्) र स्वा । ७ जि । ः ड कियात अन्यन तथा ।

वञ्जवीक्षक (पर) वलनिय कडिंगर शैश्यक कन्। नाजाकत्रकः।

बङ्क्ञि (डी) नगत्राचमः

ব্জেভূমিরজস্ (हो) বৈকার গণি। (বৈছক্ষি')

বস্তুভূকুটা (हो) ভরোক দেবীকো।

বক্সভৃতী (বী) বধুৰ চূপ বিশেষ, ভড়াছু। ভগ---কটু, উঞ্চ, খান, বিজ্ঞা, কম্পা, কঠরোগ, বাভঞ্জা, শীনন এভৃতি রোগনাশক। (বৈভক্তি)

बुक्क्कुर् (बि) बक्क विश्वर्षि-छ्-किन् फूक् ह। हेळा।

(अक् ३।३००।३३)

বজ ভৈরব, বেছিতাত্রিকগণের উপাত এক ভীমকার বিকট ভৈরবমূর্ত্ত ভোটদেশে ইহাই বনান্তক শিবমূর্ত্ত বলিরা পুলিত। ইহার বহমুখ ও বহুহত্ত। সর্কা নির মুখটা মহিবমুখাকার। হত্তে নানা প্রহরণ। পদতলে বেছিশর্মবেবী অসংখ্য পাষ্ঠ নিপ্তিত।

वंज्ञमणि (११) शैत्रम ।

ব্রক্তমর (বি) বল্পদ্ধণে নরট্। বল্পদ্ধ, বল্প্য। ব্রিরাং তীপ্।

ব্দ্রবিত্রে (পুং) রাজভেদ। (ভাগবন্ত ১২।১।১৬)

ব্ৰহ্মকুট (পুং) রাজা প্রভাগ-মৃক্টের প্র।

ব্জ্রমুষ্টি (ত্রি) ১ ইক্র। (রামারণ ৬)৭২।২৯) (পুং) ২ রাজসভেন। (রামা⁶ ৫)১৮/১৪) ও লারণ্য স্রণকন, ন্রণকন্ত্র ক্লডেম। (বৈশ্বকনি⁶)

यक्तमृती (बी) स्वनित करिनः मृतः वकाः। मात्रभूते। (बाजनि) यक्तमृत् (बी) जक्षमृतं वद्यः।

रख्यांग, क्विक ब्याक्टियक वागरित्यः।

বস্ত্রবোগিনী (জী) তল্পোক দেবীতেন। ২ চাকাজেলার স্বর্গত অনিক আন । আজীন বালাবাএবে বন্ধবোগিনী নামে খাত ।

विश्वत्रथं (पूर्) स्वामिर त्राथा रकः। कवितः।

"स्थानानिव जनः छार क्या स्थाना प्रकृ।"

(क्षांत्रक अधिक)

बक्कान (ग्र.) प्रतिष वर्रगरेण। > गुण्य । १ जाएँमा रखः। बक्कान्य (जी) नगराण्य।

युक्क क्रम (जि) नरमत्र कात्र चाक्र विनिष्ठे ।

बुद्धनिशि (औ) निनिध्यकात्रस्थः । [सन्वाभवः स्व]ः

বজ্রকোপ (পুং) গাখনির নসলাভেদ। অপক ভিক্ক, অপক কণিখ, গাখলীপুন্দ, শুরুকীর বীঞ্ধ, ধ্বন-ধ্বল ও বন, প্রোপ পরিবাণ কলে সিভ করিরা উহার অইভাগাবলেন ভাগ প্রস্তুত করিবে; পরে নানাইরা ভাষাতে শ্রীবান-করন, ভগ্ওপ্, ভ্রাভক, কুন্দুক, মূলা, অভনী ও বিধ প্রাকৃতি রব্যের কর সংবোগ করিলে বস্তুবেশ প্রস্তুত হর।

এই ব্যালেণ উদ্ধান করিবা প্রানাধ, হর্ম্য, বলডী, লিগ, থেতিয়া, কুড়া ও কুণে বিলেশন করিলে, ভজারের সহস্রায়্ত বর্থকান হারী হয়। লাকা, কুন্দুল, ভগ্তপুল, গৃহধুল, কণিও, বিষধীল, নাগধনাকণ, ভিন্দুক, স্বন্ধকল, বগুড়, করিচা, স্পান্তর ও আনসন্দের কর বিশাইলে বিভীয় প্রকার কর প্রথভ হইরা বাকে। গো, মহিব ও ছাগের পুল, পর্যভারের, মহিবের চর্চ্চ, গ্রায়্ত এবং নিব ও কণিখরনে কর করিবা নিশাইলে ব্যাত্য নাবে লেণ প্রয়েত হয়। (ব্যংশংহিতা ৫২ আঃ)

সাধারণতঃ বে সকল প্রলেগ বছরেৎ কঠিন হইরা উঠে বা তবৎ দৃদ্যংলর থাকে, ভারাকে বছলেপ বলা বাইডে পারে। "বারাণভাং ক্রডং পাশং বছলেণো ভবিবাতি।" (তীর্থভর্মিনী)

বন্ধলেপঘটিত (বি) ফালেপযায় সময়। বন্ধলোকত (সী) > সাজসৌহ। বৈঞ্চন

বজ্র লোক (की) > কান্তলোক। বৈভক্ষি । ২ চুৰক।
বজ্র বটক মুপুর (কী) ঔবধ বিশেষ। প্রান্ত প্রথানী—
গোস্তা গোধিত সপুরচুর্ব ৬ পল, পাকার্য গোস্তা ৬ সের,
গাক শেষ হর হর প্ররূপ সমরে নির্নাণিখিত প্রব্যের চুর্ব প্রক্ষেপ
করিয়া উত্তমরূপে আলোড়ন করিতে হয়। পরে ৪ মারা
পরিমাণ বটক প্রান্তত করিতে হয়। অস্থপান তক্ষ। প্রক্ষেপ
প্রব্যা—শিপুন মুল, চই, চিতামুল, ভাঁঠ, মরিচ, দেবদারু, ক্রিকলা,
বিড়ল, মুতা ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ব ২ তোলা, এই কণ্ডুর সেবন
করিলে পাঞ্জু, কর্ম, প্রহর্মী, উক্তক্ত, কুনি, প্রাহা প্রভৃতি রোগ
আত প্রশ্বিত হয়। (কৈবজারস্কাৎ পাঞ্রোগাধি)

ৰক্সবঁটা (খ্ৰী) খ্ৰথবিনেষ: প্ৰছত প্ৰণালী—পান্ত, চিডা, নিন্তি, প্ৰভোকে এক ডাগ, গছত ২ ডাগ, কাঠচুকুলের বনে প্ৰকাৰন কৰন কৰিলা হৰীভকী, আনগৰী, কহেডা, গ্ৰুঁঠ, নিপুণ, মনিচ ইহাবের প্ৰভোকের ভাবে ৭ বান করিলা ভারনা বিলা বটা প্ৰছড করিছে হবঁবে। অনুপাল এবং খ্রুমানের নালে বোনের বলাবণ অনুসারে হিন্ন করিবে। এই খ্রুমানের ক্লুঁট ও পানা নোগ প্রশ্বিভ হয়। (রনেরসালন স্থুট্ডরোনারিন)

বস্ত্রবধ (গুং) ১ বলপতন ধারা মৃত্যু। ২ ঋণকাছডেন। (Cross multiplication) * বস্ত্রবরচন্দ্র (গুং) উড়িব্যারাজভেষ। वक्षवर्ग्यम्, अक्षम व्यक्तिम कवि । व्यक्तवाद्भी (जी) बलुमिय करिमा बही। অস্থিসংহারক্লতা। চলিত হাড়লোড়া বা হাড়ভালা লভা। (হারাবলী) বন্দ্ৰবাটল (বেশন) অতিশহ নৃহ। ব্জবারক (এ) ব্লনিবারণকারী, বাহাদের নাম করিলে 🦥 বন্তুভর নিবারিভ হয়। জৈমিনি, স্থমত, বৈশপারন, প্রভা ও পুলহ এই পাঁচ জন প্ৰিয় নাম ক্রিলে ব্লুপাতভর দুর হয়, এইব্ৰম্ভ এই পাঁচ জন বজুবারক বলিয়া অভিহিত। "रिमिनिन्ह इम्बन्ह रिमन्नावन এव ह। পুলত্যঃ পুলহলৈৰ পঞ্চৈতে বন্ধুবারকা: ॥" (পুরাণ) वक्कवाजाही (जी) मात्राप्ति। नर्यात-मातिही, जिम्बा, वक्-স্থানিকা, বিৰুটা, গোঁরী, পাত্রীরথা। (ত্রিকা•) रक्रवाहिका, रक्रवाहिका (औ) रखन्त्री विश्व। (निष्मपू[®] शंवरुषः) [बरक्रवती विष्ना स्मर्थ] वखविद्धाविनी (जी) वोद मनीएक। ব**ক্ত**বিক্**ত** (পুং) গলড়ের পুত্রভের। ব্ৰক্সবিহত (बि) বন্ধপাত দারা ভারত। वक्रवीक्षक (गः) वक्क्नाम गडाएक । বজ্রবীর (পুং) মহাকাল নামক মূর্ডিভেদ। ব্দ্রব্রেফ (পু:) বজুনিবারকো বৃক্ষঃ। সেহও বৃক্ত, দীল গাছ। বজ্রবেগ (পুং) > রাক্সভেদ। ২ বিভাধরভেদ। व्यक्तभारतः (११) वक्तमिव कठिमा भनाः शाजरनाम भनाका एक। শল্যক নামা কন্ত, চলিত সন্ধান । (রাজনি°) বজ্ঞশাধা (রী) বল্পদানী প্রবর্ত্তিত কৈনধর্মসন্তাদারভেদ। वक्रमिशु (प्र) वृश्वत्र भूत्रास्त्र । বক্তপুঞ্জা (ত্রী) বছবৎ পৃথ্পদং যতাঃ। জৈনমর্তি, বোড়গ বিভাদেবীর একডম। (হেম) বজ শৃথালিক। (রী) বলাহি। চলিড কুলেগাড়া, হিন্দী---फानमाथना, क्लिक-काक्कि, बरव - विथना। যজ সংখাত (পুং) > বজনগুল কটিন। ২ ভীম। (আদিপর্ম) ত গাথনির সদলা বিশেষ। অইভাগ দীনক, ছিভাগ কাংক্ত ও একভাগ বীডিকা বোগে "ৰঞ্জসংঘাত" নামক কটিন মিশ্ৰধাতু **डे**९शत हरेश शास्त्र । वक् तर्हेख (१११) वृद्धाःचर । (ननिष्ठिरि°) राष्ट्रमञ्जू (प्र.) शांनी नुषरक्य । [स्वाधन (१५ ।]

यक्ष्माञ्चाञ्चिका (जी) शानी-द्रकत भन्नी।

ব্জ্বস্থাধি (পুং) বৌদ্দত্তে ক্ল চিতের যোগনযাধি বিশেব। বক্সসমূৎকৌর্প (ত্রি) > হীরকথোদিত। ২ কঠিন বরখারা উৎপাত। বজ সিংহ (ত্রি) > একজন হিল্রাকা। ব্ভুসার (তি) বছবৎ সারঃ। ১ বছ সমনি সার, বছের ভুল্য সারযুক্ত। ২ হীরক। वक् जात्रभग्न (बि) बळ्णावचकरण मक्हा बळ्जावजन्म। হীরকনির্দ্দিত। বজ সূচি, চৌ (জী) > হীরক নির্দিত হচি। ২ শহরাচার্যা, বিরচিত উপনিৰদভেদ। বন্ধসূৰ্ব্য (পুং) অতিসাৱৰৰাৎ ৰন্ধমিৰ তেলবিবাৎ দুৰ্য্য ইব। বুছবিশেষ। (ত্ৰিকা°) বজ্নেন (পুং) > প্রাবভিপুরীর একজন রাজা। ২ জাচার্যচেদ। वक्ष्यम् (ही) नगत्राचनः। বজ স্থামিন্ (পুং) জৈন সপ্তদশ পূর্কির একতম। (স্থবিরা ১৩) वक्क हर्स्स (वि) वक्कः श्रास्त वक्तः। वसुत्रानि, हेसः। (अक् ১१०)३०) এই অর্থে অগ্নি, মরুদাণ, শিব প্রাকৃতিকেও বুঝার। দ্রিয়াং টাপ্ৰজুহন্তা—২ সমিধভেদ। ৩ বৌদ্দেবীভেদ। বভ্রুত্ত দেব, গদবংশীয় একজন রাজা। তিনি ত্রিকলিলের অধিপতি ছিলেন। কলিন্ধনগরে তাঁহার রাজধানী ছিল। তাঁহার পিতার নাম কামার্ণব ও মাতা বিনরমহাদেবী। বজ্তুণ (क्री) নগরভেদ। ব্ৰক্তা (জী) বজতি গচ্ছতীতি বন্ধ গতৌরক্টাপ্। ১ মুহী-বুকা। ২ গড়ুচী। (মেদিনী) এ ছর্গা। "বস্তাস্প্ৰরী দেবী বস্তা তেনোপণীয়তে।" (দেবীপু: ৪৫ অ°) বজাংশু (পুং) জীক্ষের পুত্তেদ। বজুকির (গুং) शैवक्थनि। বক্সাকৃতি (ত্রি) বজুের স্থার আঞ্চতিবিশিষ্ট। চিকা+বা কুশের স্থার আকৃতি। পূর্বে ব্যাকরণে জিলামূলীর বর্ণ সংজ্ঞার বে চিক্ ব্যবহৃত হইড, তাহা ব্যাকৃতি বলিয়া কথিত ৷ वक्क (च) (हो) वक्कर जांचा वक्त । > वक्कपावान, कृत्रविः। (शूर) २ त्म्रह•७ दुव्ह । (ञ्रक्षण वि° ≥ व्व°) ७ वक्षमनार्थ । বজাঘাত (পুং) > বঞ্চপাত। ২ আক্ষিক দুৰ্ঘটনা বা বিপদ। वक्ष कि (बि) व्यक्तिक्व्य । বজ্বাক্ত্ৰী (বী) তব্ৰোক্ত বেৰী বিশেষ। বজাজ (পুং) বজনিৰ অলং বছ। > লপ। (রাজনি*) ইহার পাঠান্তর 'বক্রাল'। (জি) ২ ব্রুডুল্য অলবিশিষ্ট, বাহার অল বজের ভার কঠিন। আর্থে কন্। বজালক। वकानी (जी) वकान-धीर्। > शरवध्या। (भन्न) ২ 'বহিসংহারী, হাড়ভালা লতা। (ভাৰ**এ**°)

ব সু [চার্বা, নেশালের বৌহভারিক আচার্যা লা ভক। ভিন্নতে এই বলুটার্যাই এবন গামা নামে গাড। [নামা দেখ]।

বলনেশীর তাত্তিক হিন্দুস্যাজে মন্ত্রগুক বা আচার্যার বৈ হান, নেপালে বৌকস্যাজে বজু চার্যা সেইরপ জনের ভক্তি ও পূজার পাত্র। নেপালের মুখিতকেশ 'বাড়া' নামক বৌক আচার্য্যগণ ছইভাগে বিভক্ত—ভিন্দু ও বলু চার্যা। বাহারা সংসারভ্যানী ও বাহুচর্য্যের অসুঠান করেন, তাঁহারা ভিন্দু এবং বাহারা গৃহস্থ ও অক্সম্ভরচর্যা পালন করেন, তাঁহারাই বলু চার্যা।

বলুাচার্য্য গৃহত্ব, প্রতরাং স্ত্রী পুত্র লইরা বিহারে বাস করেন বটে, কিন্তু ইনি এক প্রকার নেপালের বৌহুসমাজের কার্য্য-করী মন্ত্রণালাতা, এবং প্রধান মন্ত্রক্ষঃ এক একটা বিহার এক একজন বজুাচার্য্যের জধীন। নেপালের বহুসংখ্যক বিহার জাছে, প্রতরাং বহুসংখ্যক বজুাচার্য্যও দেখা বার। নেপালের কি বাঁড়া, কি সাধারণ বৌহু গৃহী সকলেই জ্বনত মন্তকে বজুাচার্য্যের জাদেশ ও উপদেশ পালন করিতে বাধ্য ? [নেপাল দেখ]

নেপালের সাধারণ মুখিতকেল বৌধনণ বন্ধারণ করিতে পারেন না, যিনি এই বন্ধারণে অধিকারী তিনিই বন্ধারণে আধিকারী তিনিই বন্ধারণ গণ্ডভাল' নামেও থাত। বন্ধানির্যের অনুষ্ঠের বা প্রবর্তিত মৃতই বন্ধান নামে থাত। ভোট ও নেপালের বৌধনণ প্রকাশ বন্ধান মতাবদ্ধী বোর তান্তিক। প্রকাশ বন্ধান নিম্নোক্তরণে বিভক্তঃ—



२ अक्बन धारीन करि।

वक्रांभनि (११) वसः। (जिन्नाः)

বজান্য (রী) > বোগের আননভেদ। ২ বুদ্ধের আননভেদ।
বজান্তিপৃথ্যলা (রী) কোকিলাক বুক। (রাজনি")
বজাহত (বি) কলাবাত ধারা মৃত।
বজাহিকা (রী) কপিবন্ধ, চলিত আলভুনী। (বৈভক্নি")
বজাহিক (রী) তগরপাছক। (বৈভক্নি»)
বজাহিক (রং) > ইজবিজরী। ২ গরুড়।
বজান্তি (রং) > ইজবিজরী। ২ গরুড়।
বজান্ (রং) > ইভিইনি। বছধারী ইজা। ২ বুড় বা কৈনসাধু।
(বি) ৩ বছবিলিউ। ৪ ইউক্তেদ।

বজি নী (বী) বেবীনূর্জিজেন। (সভা" ৩০)১০২)
বজি বস্ (বি) বজাগারী। (খন্ ১)১২১)১৪)
বজি (বী) বজাগোলিছাৎ তীব্। লুবী জেন। (ভাবপ্র")
বজ্রে খুর (প্রং) নেপালছ তীর্থজেন। এখানে প্রাচীন হিলু ও
বৌডমিপ্রিড তারিকাচার বিভয়ান লাছে।

वरक् भन्नी (जी) वोक्रान्नीरकन्।

বিদ্যা বিদ্যা, গুণ্ডবিভাজেন। ইহার অপর নাম বল্পবাহনিকা বিভা। বধাবিধি বল নির্দাণপূর্কক এই বিভা দারা
অভিবেক করিবে এবং কাক্ষন দারা ভাষাতে বল নিথিবে। পরে
কোন জিতেজির বাজি সেই বল এহণপূর্কক লক্ষ লপ করিরা
বল্পকৃতে শ্বভালি দারা তদ্দশাংশ হোম করিবে। ইহা দারা বল্প
সর্কা শক্ষদ্ধকারী হইরা থাকে। এইরপে লপ দারা পৃতঃ বল্প
নৃপতিগণ রক্ষা করিবেন।

পুরাকালে ইক্রের উপকারার্থ একা মহাদেবের নিকট হইতে
ক্রাকালে ইক্রের উপকারার্থ একা মহাদেবের নিকট হইতে
ক্রান করিরাছিলেন। কোন সমরে ইক্র বিশ্বরূপের উপদিট
বিভা বারা নোমরদ বরণপূর্বক বিশ্বরূপকে নিহত করেন। তদনত্তর ইক্র নোমযোগে হতঃ হবিঃ প্রার্থনা করিলে হতপুত্র প্রকাণ
ত ঘটা তাঁহাকে সোমরদ বানে ক্রীকার করেন, তাহাতে
কূপিত হার ইক্র বলপুর্বক নোমরদ পান করিলে, প্রকাণতি
ইক্রেপক রুটি হউক' বলিরা বক্রে আহতি প্রধান করিলেন।
তাহাতে কালানিসন্শ বুর নামে ক্রম্বর প্রাহত্তি হইল। ক্রমবর
নেই ক্রেরর ইক্রের পশ্চাভাবিত হইলে ভ্রবিহনে ইক্র
ব্রজার পরপাপর হইলেন। তথন ব্রজা কহিলেন, হে ক্রিক্রম
তুমি এই বক্রেররী বন্ধ বারা ক্রিক্রিক বন্ধ ত্যাগ কর, এথনই
তোমার পক্র বিনষ্ট হইবে।

এই বজেবরী মরের প্রথম গার্মী, তৎপরে ও কট্ জিছি ইত্যাদি" মন্ত । এই আন্ধীবিভা সর্বাক্তক্ষরভারিনী। ইহা ধারা বশীকরণ, বিষেব, উচ্চাটন অন্তন, মোহন, ভাড়ন, উৎসাহন, ছেলন, যারণ প্রতিবন্ধন, সেনাওন্তন প্রভৃতি সকল কর্মই গান্ধনী ধারা নিত্ত হইরা থাকে।

^{*} व्याहार्रात् व विश्वविकाणि Hodgeon's Nepal and Tibet p. 189-145 शृक्षेत्र अक्षेत्र ।

প্রভারিত, পর্যার বিপ্রভার । (ছের) "বিবিনালন্ত্র ব্রিতক্ষরীনং খনু বেহিনাং ক্ষা।" (কুষারন ও। ১০)
ব্রক্ষনতা (বী) বর্কন জভারে বস্থা, নভ ব। বর্কনবিশিষ্ট,
প্রভারিত।
ব্রক্ষনা (বী) বর্ক-পিচ্বুচ্-টাপ্। প্রভারণা।
"তে কাজং মুনরো বিব্যাং প্রেক্ষা হৈনবক্তং পুরন্।
বর্গাভিস্থি ক্ষাৎ বর্কনামির মেনিরে।" (কুমারক্ষা ২)
ব্রক্ষনীর (মি) বর্ক-ক্ষারর। প্রভারীর।

वक्तात (भाग पराजनायम् । याज्यसम् । "मदापिशाजनीयात्र सकतीयत्र विकटेनः।" (त्रामानन आफ्नातः) वक्षमण्ड (जि) पर्य-निव् पृष्ट् । यक्षमः, व्याजातः । वक्षम्रिक्ठसः (जि) वक्ष-निव् जन्म। वक्षमात्र दाना

শ্বাণাৰতাং প্ৰদৰতাঞ্চ লোকে কিমৰ্থিনাং বঞ্চয়িতব্যসন্তি" (হিভোপদেশ)

विक्रम् (वि) स्क्नाकाती।

প্ৰভাৰণার বোগা।

ব্যুক্ (বি) বছতি প্রভাররতীতি বঞ্চ-উকন্। প্রভারণ-শীল। পর্বায়--পূর্ত, বছুক। (শক্ষরান)

বঞ্চ (জি) বন্দ গ্যং (বংশর্মজৌ ৷ পা গাণাণঃ) ইতি ন ুকুৰং । গমনীয়, গমনুষোগ্য ৷

বঞ্জনাচল, পৰ্কতভেষ। (শিব উ॰ ১৬৮৮) বঞ্জরা (জী) নধীবিশেষ।

वश्चर्मा (पर) वणकीिक वस शरको सहस्रकार केन्ह, इस् हः ১ किमिनवृक्तः २ जारनाकवृक्षः ७ इनशबवृक्तः (नवव्याः)

্ । গন্ধিবিশেষ । (বলার্থ) । বেডসমূপ । (ভারঞ ।) বঞ্জুসক (গ্রং) » সুক্ষভেষ । । ২ পন্ধিভের ।

वश्चनात्म्य (११) स्थरना असः। ज्यानस्य । स्थ्यन नवार्थ। वश्चनात्मा (११) स्थान जिल्ला स्थान विश्वनात्मा

'বিহলো বেডনঃ নীডো বানীরো বঞ্গপ্রিরঃ ।' (রছনালা)

মঞ্লা (জী) বঞ্ন-টাপ্ । অভিনয় কুঞ্চন্তী গাড়ী, ইংবালগাই ।

(হেন)' ২: নবীভিশ্ব । (বাসনপু । ১০০২) - মংজ্পুরাণে

লিবিত আছে হে, এই স্বী সম্বান্তি বহঁতে উম্বৃত হুইরাছে।

"গোধাৰটা ভীনমন্ত ক্ষাক্ষী হ বন্ধা। । ।

বন্ধিপাশখনভভাগ সৰ্পানাবিনিয়াকান গ্ৰ'(নমভন্ত হলকান)
বন্ধুলাবৃত্তী (বী) বন্ধিনপৰ্যত হইছে বহিনাল নইবিন্তৰ ।
বাই, কৌন। ভ্ৰাহিন পান্ধীৰ নিৰ্ভাগ বহিনাল নই বইছি।
নোই ঘটড়া। নিই স্নাট স্বাইন্যাল নই বাইজা। সূত্
স্বাইন্য স্বাহিন বই-তের। ভ্ৰাহিন পার্যক্ষ স্বাধন নেই।

"লারাহি বর্বে দেবী" ইত্যাদি বন্ধ থারা দেবীকে আবাহনপূর্বক পূলালগাদি বাছকার্য এবং বস্তাদি ক্রিয়াক্ষরত 'রাজনেত্যাহত্যমুক্তাতা গছে বেবী বনা মুখা' বন্ধ বারা দেবীকে বিস্কান
করিবে। তার পর বহিন্দাপরপূর্ণক হোম করিবে। এই
বিতা বারা সকল প্রকার কার্যাই সিছ হইরা থাকে। বস্তার্থী
লাতিপূপা বারা অব্তরের হোম করিবে। মুতকরবীর বারা
হোম করিলে আকর্ষণ সিদ্ধি হয়। লালগাক পূপা বারা হোম
করিলে বিষেব সিছ হইরা থাকে। 'জৈল-হোমে উচ্চাটন, মধু
বারা বন্ধন, তিবহোমে বোহন, খর, গল বা উই কবিরে আফুন,
মুপরোমে পাটন, রোহীবীকে মারণ ও উন্ধানিন, পান পঞ্জারার
করন এবং সমাপিলা হোমে নৈক্রম্ভান হয়। এতভিন মুক্তরোমে
সিদ্ধি, গ্রেথ হোমে বিজন্ধি, ভিলহোনে রোগ নাল, পদ্ধ রোমে
যান, মধুকপুপা হোমে করিলে সক্ষন প্রকার করাকি নাধিক হয়।
(লিলপুণি ২০০-বহ করে।

यदकामत्री (बी) बाक्नीएका ।

বজ্ঞ বজ্ঞ, হলিকাভার ১৫ মাইন বন্দিশে অবস্থিত একটা পঞ্জাম।
এই স্থান এখন বাশিকা-বন্দররদেশ পরিগণিত। কলিকাভা
হইতে নিরস্তর মালপত্র রপ্তানীর লক্ত রেলপথ বিষ্ণুত হইরাছে।
এখানে পুটার ১৮শ শভাব্দের মধ্যভাগে নবাবলৈক্তের নহিত
ইংগালনিগের একটা বৃদ্ধ হয়। পরিশেবে ইংগালনৈক্ত ভূপ
অধিকার করে। [ক্লাইব বেখ।]

বঞ্, গমন। জানি পর্তমে সক সেই। কট্ বঞ্চি।
লোট্ বঞ্জু। নিট্ বৰ্ক। পূট্ মঞ্জি। সূত্ অবকীৎ
অবক্তিইং অবক্তিঃ। সন্বিব্যুক্তঃ যত্ বনীবচাতে।
মত্সূক্ বনীবকীডি। পিচ্ বঞ্মতি, সূত্ অববক্তঃ বচ প্রাল্ডন।
চুলানি আল্নেন । সাই বঞ্জাতে।

वक्षक (पूर) स्कारण व्यवासत्रकीकि स्क-निव्-क्ष्यक गृनांग । (जनत्र) २ गृहस्का । (बि.) ७ वन, पूर्व ।

শ্ৰুণ্ পুত্ৰ বৰুকানাং সকলকলান্ত্ৰরসালবতি কটিন্দ্।"
(ফলাবিলাস ১২২৯)

৩ চোৰ ।

ব্ৰংখ (প্ৰ) বৰুতি প্ৰভাৱতীতি বৰু (বিৰ্ণপীতি। উন্ ৩০১০) ইতি কথা ১ বৃষ্ট । ২ বৰুৱা। ৩ কোভিল। প্ৰকান (মী) বৰু-ভাবে ভাই। ১ প্ৰভাৱন ।(ত্বৰ) নীতিশালে লিখিত আহে বে, লোকেয় নিকট প্ৰভাৱিত ক্ৰলে বৃদ্ধিনান্ হাকি ভাষা প্ৰকাশ ক্ষিকো না।

শ্বকনকাশনানক ঘটিনান্ন অবশিবহুও ("(হাণান জো•)) ব্কিড (বি) বলাভে খেডি বক-নিহু ক্ষঃ বকনাবিনিই, প্রাই বাড়ু ইবিং, বটি বট। লট্ট বন্টতি। বট বন্টন, বিভাজন চুরাদিও পক্ষে ভূলিও পরকৈও সকও সেট্। এই বাড়ুও ইবিং। লট্ট বন্টরভি পক্ষে বন্টতি। "বন্টতি হাটকং বসাং প্রাণ্য বিপ্রাঃ পরন্দারম্।" (হলারুধ) এই বাড়ুর চুরাদির প্ররোগ প্রার দেখা বার না, কেবল গণেই চুরাদি বলিরা অভিহিত হইরাছে। 'অরং চুরাদে। কৈন্টির পঠ্যতে ইতি গুর্নসিংহানরঃ' (গুর্নালান) বট বেটন, ২ ভাগ। আওজ চুরাদিও পরকৈও সকও সেট্ট। লট্ট বটরতি। লুঙ্ অবীবটং।

ষ্ট (পুর্য) বউতি বেইরতি মূলেন বৃন্ধান্তরমিতি বট-পচাদাচ্। অনামধ্যাত হারা বৃন্ধ, বটগাছ (Ficus Bengalenesia ayn. Ficus Indica)। জানীর নাম, হিন্দী—বর, বড়ু, বর্গট। মহারাষ্ট্র—বট। কলিল—আল। ডৈলল—মরিটেটু, নারি, পেড়ি মরি; উৎকল—বোল। বালালা—বড়, রট; কোল—বোট; লেগছা—কান্ধি; মলরালম—পেরমু, পেরনিম্ন; গোড় — বরেয়ী; উত্তর-পশ্চিম—বোরা, কুর্কু; দেপাল—বোমন্তর; পাছ —বাগাৎ, হাজারা—কগ্রাড়ী, কণাড়ী—আলব, আনহ, আল; ব্রন্ধ—পিড-ভৌল; শিলাপ্য—মহান্তর্গ; ইংরাজী—
Bauyan tree। সংস্কৃত পর্বাধি—অগ্রোধ, বহুপাৎ, কুন্দাণ, ব্যাধীর, রক্তফল, পুলী, কর্ম্বল, এব, ক্রীরী, বৈপ্রবর্গাবার, ভাতীর, জটাল, রোহিণ, অবরোহী, বিটপী, কন্দক্ত, মণ্ডলী, মহান্ধান, ভ্লী, ব্লাবার, বন্ধান, বিদ্যাহণ, নীল, বিকার্মহ, বহুপাদ, বনস্পতি।

হিমান্যের নিম্ব প্রদেশ হইছে দক্ষিণ ভারতের প্রায় সর্ব্বত এই বৃক্ক উৎপন্ন হইতে দেখা বাব। সাধারণত: ইহা १० হইতে ১০০ ফিটু পৰ্যান্ত উৰ্ছে উঠিয়া থাকে এবং শাথাপ্ৰশাধান বিভৃত ছুইরা বছদুরব্যাশী হয়। ঐ বটছারা শীতন, আতপভাগরিই প্ৰিকের পক্ষে ইহা বড়ই খ্ৰহগ্ৰাহী। কৰ্ণেল সাইকস্ নৰ্মদা নদী-বৃক্তব্ব একটা কুল্ল বীশে স্থারহৎ বাল্লাকের উল্লেখ করিয়া গিরা-ছেন ৷ উহা সাধারণে কবীয় বটা সামে প্রাসিদ্ধঃ আনেকে फेट्टाटक Nearchus वर्षिक त्नारे क्यांतीन द्रक विनद्धा भटन ক্সরেন। পুণার (Gas Vol. xviii) আৰু উপত্যকার অভর্গত যৌগ্রামে একটা স্ববৃহৎ বটবুক ছিল। উহার ছারাতলে ২০হালার লোক অক্সক মনিতে পারিত, কুক্সে পরিবি আর ২হাকার ক্ষিট এবং উপর হইডে বড বলি কুরী বা শিক্ড (air-roots) নাৰিবাছে, ভাহার নধ্যে ৩২-টা ৰোটা ভড়ির আকার ধারণ ক্ষিয়াছে এবং প্ৰাৰ্থি আৰু ও হাজাৰ সত্ন শিক্ষ মুদ্ভিকা দংগর হইরা রহিরাছে, ঐ শিক্ষের অস্তরলৈ ৭ হাজার লোক অনাহানে গুঞ্চিয়া থাকিছে পারিছ: সর্বধার তীবৰ বস্তার के दौराम् क्यारम् धनियां वां उत्तात, तांवरीक नई रहेता निवादः।

এতবিদ্ধ ক্ষিকাভার পার্থবর্ত্তী শিবপুর প্রাথহ সরেল হোটানিকেল পার্তেনে এবং বােঘাই প্রানেশন লাভারা উভানে ঐরপ

ইইটা রুবং বটবুক আছে। নিবপুর ভৈবজা-উভানের সক্ষক
ভাঃ কিং বিশেব পর্কবেক্তন করিরা বলিরাছেন বে, ঐ বুকটা
১ গত বর্ব প্রাচীন, ১৭৮২ খৃঃ বর্জ্বর বুকের উপর উহার কর।
উহার ২৩২টা নিকত ভড়িরপে বুভিকা লগাঁ করিরাছে এবং
উহার সুলওড়ির বাাস প্রোর ৪২ কিটু। প্রান্সভাবিত পাথাপ্রাণাধার ইহার ছারার পরিধি ৮৫৭ কিটু। এবনও এই বুক
উভনোত্তর বর্তিত হইতেছে এবং আরও বাড়িবে বলিরা আশা
করা বার। ১৮৮২ খুটাকে লাভারার বটবুক পরিরাশন করিরা
বিঃ ভরাগার লিখিরাছেন বে, ইহা কলিকাভার বুক হইতে
অনেক বড়। উহার পরিধি ১৫৮৭ কিট এবং উহা উত্তর দক্ষিণে
৫৯৫ কিট ও পূর্ম্ব পন্টিবের ৪৪২ কিট।

বিভার করে বলিরা পূণা-কৃত্তরেশে গণাঃ। এই কারণে অনেক্ষেপ্রের বারে বা পূক্রিনীর তীরে পঞ্চবীর প্রতিষ্ঠা করিরা থাকে। পঞ্জারে ইহা পথিকৃকে নিশা-শিপির হইছে রক্ষা করে। এক বিকে ইহার উপকারিক বেরপ্রে, অপর বিকে উহা তেলনিই অপকারক। পক্তীরা বটকল থাইরা বদি গুরুহাদ বা সন্দিরোপরি বিঠা ত্যাগ করে, তাহা হইলে নেই বিঠারিত বীজ হইতে বৃক্ক উৎপর হইরা অভিরক্ষান মধ্যেই মেওরাল মধ্যে শিক্ষ্প সমেত গাছ উঠাইরা না কেলিলে নিতার নাই। অবহেলা করিলে গাছ শীত্রই বাড়িরা উঠিরা গৃহ ধ্বংস করিরা কেলে। হিন্দুগণ পাপ-শ্বর্দের তরে বউ বা অথব নই করিছে চাহে না। করের জীবত্ত কৃত্ব সমূলে উঠাইরা হানান্তরে প্রতিয়া রাখে।

দক্ষিণভারতের রন্তাগিরি জেলার ঘটবুক্সের উপার কর নির্দিষ্ট আছে, কারণ বাছড়েরা সাধারণতঃ Calophyllum inophyllum আছের করেন বাছড়েরা সাধারণতঃ Calophyllum inophyllum আছের করেন বাছ বিটা সহ তছপরে তাগা করিরা থাকে। ঐ বীকে তেল হয়। অনেক বট-লাছে লাক্ষাও উৎপার হইতে বেখা বার। বটের আটার ভাহার নিকি নাত্রা সর্বপ তৈল নিশাইরা আল বিলে এক প্রকার আটা প্রভাত হর, ঐ আটার পাবী নারারা আঠা-কাঠিন বারা পাথা ধরিরা থাকে। আসানীরা ইহা হইতে এক প্রকার কাগল প্রভাত করিত। লবিষপুর এক নাত্রাজের বেলরী লেলার এখনও ঐ কাগল ছর। কনেকে কুরির জাঁইল (fibro) বারা বড়ি করে, কিছ ভাহা বিশেব কোন কালে কালে না।

গুৱৰং ৰটের আটা বেদনা-নালক। ৰাজন্ম বেদনাস্থানে ঐ জাটার প্রবেশ বিলে বিশেব উপাকায় গর্গে। গারের জন্ম কাটিয়া

KVII

787

গেলে অথবা গাঁত কন্তনানি হইলে গেক ক্ষে হালে বা গড় মাড়িছে আটা লাগাইগা জিলে ঘাতনার উপান্দ হয়। ইহার ছালের কাল বলকর, কহন্তরোকের ইহা কিশেন ভাগাইল। বীজের ভাল শীতল ভ বলা। কটি বটলাভা বাটিরা উভার করিয়া লোড়ার উপার বিলে পুলিনৈত্ব ভালি করে। গণোরিগা রোগে ইহার শিক্তাপুশি বিলেব উপাকারী। উহা লালনার কার্য্য করে।

ক্ষতি শাখার জাও রজোৎকাশনাশক, রুরির কচি আগা-ভণি বন্দনিবাহক, তক বটের আটা ও কণ হাংবার (Sperma torrhea.), আমেহ (gonorrhea.)-সাশক ও কানোদীশক, কচি ভুড়ি ও হ্রপ্রতি ধারক্তপ বিশিষ্ট এবং অলীর্ণ ও উদ্বাদর-রোগে উহা বিশেষ হিডকর।

ইবার লাল বর্ণ পাকা কল ছাজিকের সমর বরিরলোকে প্রেটের আলার থার, বজী-গ্রাণিও ইবার পাতা থাইতে ভাল বাঁতে। ইবার কাঠ বিশেষ উপকারে আইলে না। কেবল সরু সরু ওছ ভালগুলি সমিধরণে খ্যবহৃত বইরা থাকে নাত্র।

Figure elastica বা আটা-বট নামে আর এক প্রেণীর বটরুক বেশা বার । উত্তার আটা রবাবের ভার ওপতুতা।

[রবার কেখ।]

খণ—ক্ষার, সধ্র, শিলির, কফ, শিন্তজ্ঞাপহা, বাহ, তৃষ্ণা, বেহ, ব্রণ ও শোকনাপক। (রাজনি॰) ভাবপ্রকাশ মডে— "বটঃ শীতো খরুপ্রাহী কম্পিত্রপাপছঃ।

বর্ণ্যো বিদর্শনাহরঃ ক্বারো বোনিলোফরং ॥" (ভাকপ্র॰)
দাঁডুগ, শুদ্ধ, প্রাহক, কৃষ্ণ, শিন্ত ও প্রণনাশক, বর্ণকর,
বিদর্শ ও ধারনাশক, ক্বায় ও যোনিলোব-নিবারক।

वृत्यम् मत्था वर्षे ७ मध्य अहे हरेति वृक्ष शृक्षनीत अवः वर्तेवृक्ष चत्रः क्रम्रधन्न ।

"ৰথং স্বাৰ্থবটো সোৱান্ধন্তনী কৰে।
নৰ্কেডোংশি ভক্তাতো কথং পূ্ৰাভনৌ হতৌ ক্লা
অৰ্থরশো ভগবান্ বিষ্ণুৱেব ন সংগরঃ।
ক্রারণো বটভাবং পানাপো একরপাধৃক্ ॥
দর্শনম্পানিবাল তে বৈ পাশহরাঃ মৃতাঃ।
দুঃধাশন্ব্যাধিছ্টানাং বিনাশকারিগো এবন্ ॥"

া (পাছোগ্ৰন্থৰ ১৬০ আৰু)

এই যুক্তের বর্ণন, লগাঁ ও সেবা করিলে গাণ বিলুরিত এবং দ্বঃৰ আগদ্ ও বাবি অভ্তি অপনিত হইনা থাকে: এই অভ এই বৃক্ত অভিশ্ব পূক্য, অভএৰ এই বৃক্ত বোণণ করিলে আনেব পূণ্য সক্ষর হয়। বৈশীধানি পূণ্য বানে এই বৃক্তে লগ-নেক করিলে পাণ কংস ও নানান্ত্রিক স্থাৰ সম্পদ্ লাভ হইনা থাকে। এই বৃদ ছারাতৃত্য ইবার ছারা অভি প্রণীতন, এই বৃদ ক্ষীৰ্থকান জীবিও বাকে।

২ ক্পৰ্য, কড়ি (কেনিনী) ৩ গোলঃ ৪ জন্মবিলের, চলিত বড়াঃ ৫ লাম্যঃ (হেখ

(क्री) । ব্রজনখনের অভ্যবন্ত বটনজন বৈজিল বল।
এই বোড়শ বট বথা—১ সক্তেত বট, ২ ভাগ্ডীর বট, ও বাবক
বট, ৪ শৃলারবট, ৫ বংশীবট, । ঐতিট, ৭ ভাটাজ টবট,
৮ কামাধ্যবট, ৯ অর্থবট, ১০ আলাবট, ১১ অশোকবট,
১২ কেলিবট, ১৩ ব্রজনট, ১৪ ক্রমেন্ট, ১৫ প্রীবরাধ্যবট,
১৬ সাবিত্রাধ্যবট। এই বোড়শ বটবন। ৬ (ত্রি) বটভীতি
বট-জচ্। ৭৩৭।

ব্টক (প্ং) বট এৰ স্বাৰ্থে কন্। পিটকৰিলেৰ, চলিত বড়া।
খণ--বিদাহী ও ভূঞাকানক।

ভাৰপ্ৰকাশে বটকপ্ৰস্তুত্বের প্রণালী ও গুণাদির বিবন্ধ লিখিত আছে;—মাৰকলানের নাইল ভিজাইরা উহাকে উত্তৰসক্ষপে পেৰণ ক্ষরিতে হর; পরে লবণ, আলা ও হিং মিশাইরা বটক বা বড়া প্রস্তুত করিবে, পরে উহা তৈল বারা মৃহ জন্নির উত্তাপে ভালিলে উহাকে বটক বা বড়া কহে। গুণ—বলকারক, পরীবের উপচরকারক, বীর্যবর্দ্ধক, বায়ুরোগনাশক, ক্লচিকারক; বিশেবতঃ আর্দিত, বায়ুনাশক, ভেদক, ক্ষকারক এবং তীক্লা-ঘির পক্ষে হিতকর।

শীরা ও হিং ভাজিরা লবণের সহিত বোলে নিজেপ করিবে, পরে ঐ বটক উক্ত বোলের মধ্যে ভিজাইরা রাখিলে তাহা ওক্রবর্ত্তক, ক্লকারক, ফচিবারক, গুরু, বিবক্লাশক, বিলাহী, কলকারক ও বাহুনাশক। ইহা আতান্ত রোচক ও পাচক। ইহা রারভার (বধি ও লবণ মিলিত কল্ম জলাবু ধণানির) সহিত ভক্ষণ করিতে হয়।

বটক অনেক প্রকার, জিন্ত জিন জব্যের বটক প্রস্তুত করা বায়, ভাহার প্রস্তুত প্রধানী জিন্ত অকার।

কারীবটক—একটা নৃতন পাত্রে কটু তৈল লেপন করির।
নির্মাণ ক্ষণ বারা পূরণ করিবে। পরে তথাগ্যে রাই সরিবা,
ক্ষীরা, লবণ, বিং, তঠ, ও ইরিফা এই ক্রেকটা ক্রব্যের চুর্ল
এবং বটকতলি ভিকাইরা ঐ পাত্রের বুব বছ করিরা ভিন বিন
রাখিরা হিবে। ভিন বিন পরে বটকতলি অর্বনাবাদু হব।
ইহাকে কারীক্রটক করে। এই বটক ক্রিকারক, বাহুনানক,
ক্ষকারক এবং প্ল, অবীপ ও বাহনানক এবং ক্রেক্ররাগের
পক্ষে বিশেব বিভকারক।

অন্নিভাষ্টক—তেতুল বলে তিবাইনা চটুলাইডে হইবে, পল্লে বৰ্ণ বেধা বাইবে বে, তেতুলেন পভ কলে নিভিড क्रेजारक, छथन क्षेत्रधनि अबिरक निक क्तिबा छाहात गरश त्मनिएक इत्र । हेशांदक अञ्चलकांवर्षक करत । हेशां अधिकात्रक, অভিশ্ৰেণীপৰ ও পূৰ্ব্বোক্ত কাজীবটকের ভার ওপর্ক

ভক্ৰবটৰ—সুগের বড়া প্রস্তত করিয়া ভক্রের সহিত পাক করিলে সংক্ষার ভবে উহা লঘু, শীভল, জিলোবদাপক হিতকারী হয়।

নাৰৰটক-ভূমরহিত মাৰ্কলারের লাইল পেৰণ করিলা হিনু, লবণ ও আদার সহিত মিপ্রণে বটক প্রস্তুত করির। क्षर्यानि वट्य एकाहेट्ड निर्दा शहर डेहा डेसमझरन एक হইলে তপ্ত তৈলে ভালিয়া জলের সহিত সিদ্ধ করিতে হর। ইহা পূর্ব্বোক্ত বটকের জার গুণবিশিষ্ট এবং ক্ষতিকারক।

কুমাওবটক-কুমড়ার উক্তরণে বটক প্রস্তুত করিতে হয়। ইহা মাববটকের ভার গুণযুক্ত, বিশেষ রক্তপিন্তমাশক এক লয়। মুন্দবটক-মুগের বড়া পূর্ব্বোক্ত মাধবটকের বিধানামুসারে আছত করিবে। এই বটক হিতকর, ফটিকারক, লবু এবং মুদেশর জার গুণবিশিষ্ট। (ভাবপ্র°)

২ বটী, চণিত বড়ি।

"ৰটকা অণ কথান্তে ভন্নামগুটিকা বটী।

মোদকো বটিকা শিণ্ডী গুড়োবন্ধিন্তথোচ্যতে ॥" (ভাৰপ্ৰ°)

७ পরিমাণবিশেষ, ऋडे मायक পরিমাণে এক বটক হয়।

পদশ গুঞ্জান্ত মায়ঃ ভাৎ শাণো মাষ্চতুইরম।

(यो मार्ग) বটক: কোণস্তোলকো দ্রহ্মণশ্চ স: ॥' (শব্দমালা)

বটকণীকা (গ্রী) বটবৃক্ষ খণ্ড।

राष्ट्रकाकात (१९) शक्किवित्मव। (देवश्वकित°)

বটকিনী (গ্রী) পৌর্ণমাসীভেদ। এ পূর্ণিমা রাত্রে বটক ভক্ষণ क्त्रिएछ इत्र ।

ব্টগৃতিছ্, খেতাম্বর জৈনদিগের সম্প্রদারভেদ।

ব্টচছ্দ (গং) খেভাৰ্জক, খেডবাবুই। (বৈগুৰুনি°)

विक्रहामा (जी) विवृत्त्वत होता।

"कूटलामकः वंगिष्ठात्रा भ्रामा जी रहेकानतः ।

শীতকালে ভবেহুকং গ্রীমকানে চ শীতসম্ 🛍 (উষ্ট)

বটজটা (ব্রী) বটক জন। বট ওলা, বটের সুরি।

বটতীর্থনাথ ক্লী) শুলরাতের ওবসগুলের অন্তর্গত একটা ভীৰ। এবন ব্যেত নামে বাড। (প্ৰভাগ ৰ' ৮০।১/৫) क्रम मुजाना अर्गक विक्रितीय माहा पार और कीर्र्यत्र निविधात

विवत्रन काटक । वर्षेषी ने (श्री) बीगरका । (भंकत माहिला २७-०६ मा: जाताव

ধৰ্মীশের রাজধানী বাজাবিয়াকে বটবীশ বলিয়া থাকেন।

[वन्दीन (गर्थ ।]

यंद्रेशख (श्रे) कीरकर नवर क्षेत्र मिलावेंक, रवेंक्रमब क्रम फूननी : (श्रीवनि°) (जी) र वर्षित्र नीखी । चार्च कम ।

विष्णिक्ता (बी) बेग्रेक्ट नवमणाः। विष्युवर्गानी प्रमान्त्रः। र पूर्णमेशिका (प्राजिम)

विष्णाकी (बी) विष्णय भक्त बचाः श्लीत्राविषार कीव्। भाषान-क्षित्रियम्ब, ठनिष्ठ वक शायत्र कृष्टि । शर्यात्र-हेमानी, क्षेत्रावरी, त्राधायकी, देवायकी, स्रामा, बंडावनामिका। सन-निष्ठन, क्ष्यु टमर्क्नामक, वनवात्रक ध्यर विगतित्नावक। (ब्रास्ति)

यहेयकिगैंडीर्थ (मी) डीर्थरित्व।

বটর (খং) > মুরুট, ক্রাটর পাধী। ২ বেট। ৩ ৮৮। B (ठोत्र! **८ ठक्का**। (भेक्त्रप्रा")

विवासित् (ग्रं) बटे वैदेशक बनडीडि बन-विनिः। अवस् যক্ষ বটবুক্ষে বাস করে এইরূপ জনপ্রবাদ আছে 🌡

(जि) २ वर्षे वृक्तवानी । जिहार डीव्।

বটসাগর, উৎকলের অন্তর্গত একটা তীর্ব।

(७८वमप- ३७१।३११)

বটসাবিত্রী ব্রস্ত, (🔊) বডভেন।

বটাকর (পুং) রব্দু দড়ি। (অনরটাকার রামাশ্রম)

विष्ठोतका (जी) त्रम्यः मिष्

"ক্লভারিত্রাং সভ্যমরীং ধর্মহৈর্ঘ্যবটারকাম্।"(ভারত ১২।৩২৯।৩৯) এই শব্দ পুংলিক্ষও মেথিতে পাওয়া বার।

"বটারকমরং পাশনথ ম**ংভঞ্জ দুর্জনি**।

মহ মহজাদি, ল তারিন্ পূজে জবেশরং ৪" (ভারা ৩৯৮৭।৪٠) বটারণা, বান্দিণাডোর অন্তর্গত একটা মহাতীর্ব। কাবেরীর পার্বে কুঞালমরের অর্থ বোজন পশ্চিমে অবস্থিত। (দেশাবলী) অগ্নিপুরাণান্তর্গত বটারণ্য-মাহান্ম্যে ইহার সবিশেষ ত্রষ্টব্য।

वहारीक (शर) कोन्नवित्मव।

'नाम (होरहा वर्गेवीकः निकटोन्ड शतकः।' (भगनाना) विभिन्नचिविष्ट (११) श्लिलाद्यांक क्रियाविष्ट्य । हेशाल বট ও অৰণ বৃক্ষ শন্নপান্তে সংলগ্ন ভাবে পুভিন্ন পূজা করিতে হয়।

वर्षि (डी) बंग्डींडि वर्षे (नर्सवाकुड़ा हेम्। छेन् डा४२৮) हैकि ইন্। উপজিবিকা, আগজিব।

'উপজিহিবকোৎপানিকা চ वर्डिकक्षिका (पदी a' (हाजावनी) (तन्त्र) मामगाज या नम्यकिष्ठकार्य। जामगा वसवानी বটি ৷ (পঞ্জলা)

वहिता (वी) बंदितर चार्च कन्छान्। बंदी, इनिक बहि, नर्शाय—निचनी । (नवहरू)

"ৰটকা অথ কথ্যতে জনামা ৰটকা ৰটা।
নাদকো ভটকা শিখী অফোৰজিজবোচাতে ল
লেহবৎ নাখ্যতে বকৌ অফো বা শৰ্কনাথবা।
ভগ্ ভনুবা জিগেজত চুৰ্গং ভলিম্মিডা বটা ল' (ভাৰপ্ৰ •)
২ বালনোপবোগি-ক্ৰয়, বড়ি, বড়ী দিল্লা ব্যৱস ক্ৰম কৰা
হম। (ভাৰপ্ৰ•)

বটিস (দেশক) অবজাজনক ক্রিয়াপদ।

'গুরে তুই কে বটিদ্ রে কে বটিদ্।'
বটি (রী) বট-জচ, গৌরাদিখাৎ তীব্। ১ বটিকা। (ভাষপ্রে•)
২ বৃহ্ণবিশেষ। পর্যার—নদীবট, বক্ষর্ক, সিভার্থ, বইক, জনরা,
ভূলিনী, কীরকার্চা। গুণ—ক্যার, মুধুর, শিশির, পিন্তনাশক, বাহ,
ভূফা, প্রাস, বাস, বিষ ও চর্জিনাশক (রাজনি৽) (রি) তরকু।
বটু (পুং) বটতীতি বট (কটিবটিক্যাক। উণ্ ১১৯) ইডি উ।
১ মাণবক। ২ ব্রহ্মচারী। ৩ বালক।

"বালকো মাণবো বাদঃ কিশোরো বটুরিত্যপি।' (শক্ষরণ •) ৪ কুটরট বৃক্ষ চলিক্ত শোপাগাছ।

বটুক (পং) বটু-খাৰে সংজ্ঞান্তাং ক্ষঞ্জন। ১ বালক । ২ বনচারী।
৩ ভৈরববিশেব, বটুকভৈরব।

"তৈরবালৈত্ব বেভালা বটুড়া নারিকাগণাঃ। শাক্তাঃ শৈবা বৈক্ষবাদ্য সৌরা গাণপভাষরঃ ॥"

(মহানিৰ্বাণত বাব ৪)

মানৰ বিশাদে পভিত ক্ৰলে বিশিল্পনারের অন্ত বটুকভৈরবের পূকা, বলি ও ভোলোধি পাঠ করিবা থাকে এবং বটুকভৈরবের প্রমাধে আহিরে বিশদ্ধ ক্ৰতে উদ্ধার হয়। বটুকভিরবের ভোলকে এইজন্ত আপন্ত্রারভোল ক্রিয়া থাকে। ভর্নারে ইহার পূলা, বন্ধ ও ভ্রাদির বিবর বাপত ক্রিয়াছে—

"উদ্বেষ্ট্ৰন (ওংকা আপন্দরণ তথা কুলবরং প্নতিংকা বটু লাকা সম্ভবেগ। একবিংশতাক্ষরাকা অভিকালে মহামহঃ॥" (ভরসার)

শ্বী বটুকার আগছকারপার ফুল কুল বটুকার ঐং হী" এই
একবিংশাক্ষর বটুকভৈরবের মত্র। এই মত্রে পূলা করিলে
আপন্ বিচ্রিত হয়। বটুকভৈরবের পূলা করিলে করিলে
সাবাভ পূলাপ্ততি অহানারে প্রথমে পূলা করিলা পীঠভান,
কভাবিভার ও বৃত্তিভারারি করিবে। পরে ধান করিলা
পূলা করিতে হয়। বটুকভিরবের ধান নাছিক, রাজনিক
ও ভারনিক তেকে ভিন প্রকার।

नाषिक शाम---

শ্বনে বালং কটিকসদৃশং সূত্রগোভাসিবজুং বিব্যাকটার্নব্যশিমবৈং কিবিনীনুপুরাতেঃ। मीश्राकातः विभावनमार प्रथानतः व्यानव्यक् इकाकाकार विष्कानिर्णः प्रशासकी प्रथानम् ॥" प्रावनकान---

"উবাভাষরসরিতং ত্রিনরনং রক্তালরাগতকং
দেরাতং বরলং কণাসমভন্ধ পূলং লধানং করৈ: ।
নীসপ্রাবমূলারভূবণশতং শীতাংশুচুড়োজ্জনং
বন্ধু কারপবাসনং ভরহরং দেবং সদা ভাবদ্বে ।"
ভাবসধ্যান—

শ্যাৱেরীলান্তিকান্তং শশিশকলধরং মুগুমালং মহেলং বিশ্বসং শিক্ষলাক্ষং ডমক্রমধশূলিং বড়সালূলাভরানি। নাগং ঘন্টাং কপালং করসহনিক্রটের্বিত্রগুং ভীমধং টুং সাশিক্রাং ত্রিনেত্রং মণিমরবিলসংকিজিনীনুপুরাচাম্॥"

এই থ্যানাস্থ্যারে ধ্যান, মানসপূজা, আবরণ ও পীঠানি
পূজা করিয়া প্নর্কার ধ্যান করিয়া বিভবাস্থপারে দশ বা
বোড়শোপচারে বটুকভৈরবের পূজা করিবে। বটুকভৈরবের
পূজার পর অসিতাল ভৈরব, রুরু ভৈরবের পূজা বিধেয়।
পরে বড়লানি পূজা করিয়া পূর্কানিক্রমে ডাকিনীপুত্র, লাকিনীপুত্র,
রাকিনীপুত্র, কাকিনীপুত্র, শাকিনীপুত্র, হাকিনীপুত্র, মালিনীপুত্র,
দেবীপুত্র ও উমাপুত্রের পূজা করিবে। পরে জ্বপ হোমানি
করিতে হয়। এই দেবভার পুরুক্তরণ করিতে হইলে ২১ লক্ষ ক্রপ
এবং দশাংশ দ্বত, মধু শর্করাবিত তিল দ্বারা হোম করিতে হয়।

ইহার বলিবিধি—প্রথমে বিদ্নাশন ও গুর্গার পূজা করিয়া বলি দিতে হয়। বলির জব্য—শালি ধান্তের অয় বা পারস, ছঙ, লাজচুর্গ, অর্করা, গুড়, ইকুরস, পিপ্টক ও মধু এই সকল জব্য মিজিত করিয়া রাত্রিকালে রক্তচন্দন ও রক্তপুলোর সহিত বলি নিবেদন করিবে, অপবা সর্ক্ষ্পক্ষণরাল্যর একটা ছাগবধ করিয়া বলিপ্রদান করিতে হয়। বলিপ্রদান করিয়া দক্রগণের সৈম্ভগণকে বলিয়লে নিবেদন করিয়া দিতে হয়। বলিমত্রে শক্রর নামোক্রেশ করিয়া নিয়োক্ত ময় পাঠ করিয়া দিবে।

"नक्षभक्तक कथिकः भिनिष्ठक मित्न मित्न ।

ভব্দৰ অগণৈঃ সাৰ্জ্য সার্মেরসম্বিতঃ ॥"

এইরপে বলিদান করিলে বটুকতৈরব সম্ভই হইরা সমস্থ শব্দের মাংস স্বগণের মধ্যে বিভাগ করিরা দেন, স্কুডরাং জচির কাল মধ্যে শব্দ নাশ হইরা থাকে। (তরসার)

অভি সংক্রিপ্ত ভাবে এই পূজা পছতি লিখিড হইল, ইহার রিশেব বিবরণ তল্পনারে লিখিত আছে। জ্বাসিরোগ, প্রক্রিভর প্রভৃতি উপস্থিত হইলে বটুক্তৈরবের স্বন্ধ্রবণ রা পাঠ ক্রিলে জ্বাদি রোগ ও পঞ্জভর প্রশ্মিত হয়। ২ বারাণদীক দেবস্ঞ্রিবিশেষ।

বটুকরণ (क्री) বটো: করণ:। উপনন্নন। (क्रिका॰) বটুরিন্ (অ) > পদধারা বেষ্টনশীল। ২ সর্বব্যান্তিবং া "ছিছি বটুরিণা পদা" (ঋক্ ১।৩৩)২) 'বটুরিণা পদা বেষ্টনন্মলেন'(সায়ণ) **युट्डि** (एनख) वाखिक । यथार्थभाका ।

'এ মেরে কেমন মেয়ে বটে' (বিছাস্থলর)

वर्টेत (मिन्क) शक्तिविश्निष (Perdix olivaces)।

বটেশ্বর (ফ্রী) কাশীরন্থিত লিঙ্গতীর্থ। (রা**ন্ডর**° ১১১৯৪) বটেশরমাহান্ম্যে এই তীর্থের বিস্তৃত বিবরণ ও পূজাদি লিপিবদ হইয়াছে। (স্বান্দে নাগরধ•)

यटिश्वत, म्जाञ्चकान नामक भ्जाबाक्तन-गिकाञ्चरन्छ। हिन গৌরীষরের পুত্র। ২ একজন প্রাচীন কবি।

বটোদকা (স্ত্রী) পুণ্যতোরা নদীবিশেষ।

"তত্র চম্দ্রদা নাম তাম্রপর্ণী বটোদকা। তৎপুণাসলিলৈনিতামুভরতাত্মনো মৃজন্ ॥"

(ভাগবত ৪।২৮।৩৫)

বট্টুকেরাচার্য্য (পুং) আচারত্ত্তপ্রণেতা। বহুনন্দী ইহার টীকা রচনা করেন।

ব্ট্য (পুং) > বটরুক সম্বন্ধীয়। ২ ধাতুবিশেষ।

বট্কারা (দেশজ) দ্রবাদির তোলমাপক পরিমাণভেদ, বাট্কারা।

বট্কারিয়া (দেশজ) তামাদাকারী।

বট্কেরা (দেশজ) তামাসা, ঠাট্টা, বিদ্রপ।

বট খারা (দেশজ) ১ ওজনমান। ২ ধর্কাকার মহযা। বাঁটুল। বঠ, স্থোল্য, সামর্থ্য। ভার্দিন পরক্রৈন সকল সেই। লট্ বঠতি। ৰুঙ্ অবঠীৎ। বঠি--বঠ ধাড় একচর্য্যা, অসহায়গমন, একাকী গমন। ভাদি আত্মনে সক সেট্। লট্বঠতে। লিট্ লুট্ বটিতা। লুড্ অবটিট। এই ধাড় ইদিৎ বলিরা মুমাগম হইরাছে।

বঠর (পুং) বক্টীতি বচ (বচিমনিভাাং চিচ্চ । উণ্ ৫।০৯) ইতি অরপ্রতারশ্চান্তাদেশঃ। ১ মূর্থ। ২ অব্দ্র। ৩ শবকার। ৪ বক্র। (সংক্ষিপ্তসার উণা•) (ত্রি) ৫ শঠ। ৬ মন। বৃড়, বড়ি-বড় ধাড়। > আরোহণ, এই অর্থে ইহা সৌত্রধাড়। ২ বিভাগ। চুরাদি॰ পরক্রৈ॰ সক্ত সেট্; ভ্রাদিপক্ষে লট্ বওতে, লিট্ববণ্ড। লুট্বপ্তিতা। লুঙ্ অব্তিষ্ট। চুরাদি-পক্ষে লট্ বঞ্জতি, লুঙ্ অববস্তং।

ব্ছু (দেশজ) বট শব্দের অপএংশ।

व्यु (तमक) तृह९, फेक, ट्यंह ।

ব্ডু, বোৰাই-প্ৰেসিডেনীয় ঠানা ৰেসায় সম্বৰ্গত

উপবিভাগ ও নগর। [বাড় দেখ]

द्र आनोमर (जातवी) त्यं जानानर, व्यथान विठातानत, शहेरकार्डे (High court)।

বড়কট্টলাই, মাজান-প্রেসিডেলীর ভালোর বেলার বাতর্গত একটা নগন্ত।

বড় কড়ি (দেশজ) > খন্মবিশেষ। (Sida graveolens) २ त्रमाकात्र नाम्जिक किए। ७ शृत्हत्र हात्म निवात स्त्र त्रहरू কাৰ্চ থপা।

বড় কড়েলা (বেশৰ) বৃক্ষভেষ (Momordica muricata)। বড়করবীর (দেশক) রুক্তের (Nerium odorum)।

বুড় কাকুড় (দেশৰ) বৃহ্ণভেদ (Crinum toxicarium)।

বড় কুদ (দেশৰ) পুশার্তীক (Jasminum arborescens)। বড় কুকুরছিট্কী (দেশৰ) ঋশভেদ (Ixora undulata)

বড় কুকৃশিম (দেশজ) বৃক্তেদ (Coryza lacera)। বড়কু-বলিয়ুর, মাল্রাজ-প্রেসিডেন্সীর ভিরেবলী জেলার অন্তর্গত

একটা নগর। নান্গণেরী হইতে ৪ জোণ দক্ষিণে অবস্থিত। অক্লা॰ ৮°২৩´ উ: এবং দ্রাঘি' ৭৭°৩৯´ পু:। ইহা একটা প্রাসিদ্ধ তীর্থ। এথানে প্রতিবৎসর বহু তীর্থবাত্রীর সমাগম হইরা থাকে। বড কেশতি (দেশজ) বৃক্তেদ (Ageratum aquaticum)। বড় কেশুরীয়া (দেশৰ) কেশুর গাছ (Scirpus grossus)। বডখীরুই (দেশৰ) বৃক্তেদ (Euphorbia hirta)।

ব্ডগাঁও, বোদাই-প্রেসিডেন্সীর পুণা জেলার অন্তর্গত একটা নগর। এখানে জি, আই, পি, রেলপথের একটা ষ্টেসন আছে। স্থানটী নিভাস্ক বাণিকাহীন নহে। প্রতি মঙ্গলবারে **এখানে হাট বঙ্গে। ১৭৭৮-৭৯ ष्ट्रोल्स এখানে ইংরাজ-মর্ব্যাদার** হ্রাসকারী একটী ক্ষুদ্র দরবার হয়। তাহাতে ইংরাক সেনাপতি বাধ্য হইরা ১৭৭৩ খুটান্দ পর্যন্ত ইংরাঞ্চদিগের অধিক্বত সমুদার বাজ্য মহারাষ্ট্রকরে সমর্পণ করিতে বাধ্য হন। রখুনাথ রাওকে পেশ্বা-পদে অধিষ্ঠিত করিতে আসিরা ইংরাজ-সেনাপতি এই লাম্বনা ভোগ করেন।

বড়গাছ (দেশৰ) ১ বৃহৎ বৃক্ষ। (Croton oblongifolium) २ वर्षेत्रमः।

ব্ডুগুব্দর, ছত্রিল রাজপুতকুলের একতম। তাহারা অবোধ্যাপতি শ্ৰীরামচন্দ্রের পুত্র লবের বংশধর বলিরা পরিচিত। এই স্নাতি এক সমরে মহাপ্রভাবসভার ছিল। কালে কছেবাহগণ প্রবল হইরা তাহাদিগকে রাজোড় হইতে তাড়াইরা দেয়। তদবধি বড়গুলরেরা অনুপ্রহরে আসিরা বাস করে। সম্রাট্ট অকবর শাহের শাসনকালেও এই কাভিন্ন প্রাধান্য নট হয় নাই। তথন তাহারা বুর্লা, দিবাই, পহাসু অভৃতি আনে ভুষাধিকারী সামস্তরূপে পরিগণিত ছিল।

তাহাদের মধ্যে বংশান্ত্রপত কিংবদত্তী এই বে, মচেরী প্রদেশের দেবতী-রাজ্যের রাজধানী রাজ্যেড় হইতে রাজ্য প্রতাপ সিংহ শীর আত্মীর ও শ্বজাতীরবর্গে পরিবৃত হইরা পিতম্প্রের নিকটাই মেরিয়া নামক স্থানে আসিরা বাস করেন। কোএল নগরে তিনি বোর-জাতীরা এক রাজপ্ত-কন্তার পাণি-গ্রহণ করিয়া বোরমাজপ্তগণের প্রীতিভালন হন। তদনত্তর তিনি দোরজিগের সাহায্যে মেবাতী ও তিহর আতিকে পদানত করিয়া ব্সক্সহরের পৃর্বাংশে গলাক্লে প্রার ২৪ লত গ্রাম অধিকার করেন। মৃত্যু সম্বে তিনি ব্রক্ষসহর জেলার পহাস্তর নিকটবর্তী চৌন্দেরা নগরে শীর রাজপাট স্থাপন করিয়াছিলেন। রাজা প্রতাপের অন্ত ও রাগু কান্ম স্থানে এবং রাগু চৌন্দেরার রাজপাট স্থাপন করিয়াছিলেন।

কলোজের রাঠোর-রাজবংশের আখ্যায়িকা হইতে স্থানা বার বে, রাঠোরপতি নরনপালের পৌত ভরত বড়গুজর-সর্দার ক্রতেনের নিকট হইতে কনকশির রাজ্য অধিকার করিয়া লন। বংশতালিকাকথিত নরনপাল খুটীয় ৫ম শতালে বিভাষান ছিলেন।

কাতিহার এবং অমুপসহরের বডগুজরেয়া অভাপিও আপনানের কুলধর্ম প্রতিপালন করিয়া আসিতেছে। কিছ অ্যান্ত স্থানের, বিশেষতঃ মুক্তঃকরনগরের বড়গুজ্বরেরা আলা-फैकीन थिनकीय बाक्षाकारन हेम्नायस्य श्रहन कतिबारछ। তাহা হইলেও তাহারা রাজপুতকুলের গৌরবজ্ঞাপক ঠাকুর উপাধি পরিত্যাগ করে নাই, তাই এখনও ঠাকুর আকবর আলী था, ठाकूत मर्फन जानी था व्यक्षि नात्मत्र व्यक्तन त्रथा यात्र। ज्यत्व पूर्राण्यान इटेरा शिमुत होनिश्व प्रशानि शान गर-कारत विरमध आस्मामधासाम कतिहा थात्कः এই ख्रथात কিছু ক্রমশ: ব্রাস ঘটিতেছে। বিবাহের সময় ইহারা গুহুছারে একটা কাহার রমণীর প্রতিমৃত্তি চিত্রিত করিয়া থাকে। প্রবাদ-কোন কাহারিন চাকরাণীর নিদেশ অমুসারে তাহাদের কোন পুর্বপুরুষ মেবাতীদিগকে ধ্বংসমূপে পতিত করিছে সমর্থ হইয়াছিলেন, সেই ঘটনা সর্থ করিয়া আজিও তাহারা কাহার রুমণীকে এইরূপে সম্মান করিয়া থাকে।

মৃত্য:করনগরবাসী বড়গুজরেরা বলে বে, তাহারা জালবার রাজ্যের দক্ষিণস্থ দোবন্দেশর নামক স্থান হইতে সন্দার কুমারসেনের সহিত এখানে আসিরাছে। এখনও তাহারা উক্ত কুমারসেনের পূর্মপুরুষ "বাধা মেঘার" করণার্থে উৎসব করিয়া থাকে। তাহারা প্রধানতঃ গ্রপোত, ভাট, ভোমর, চৌহান, কাডিহার, চাগবার ও পভিত্র রাজ্যুত্তকে ক্লা বের এবং গ্র্নোত, বাছল, পণ্ডির, চৌহান, বাঈ, রুঞ্গার প্রভৃতি শ্রেণীর কন্তা গ্রহণ করে।

বড়াগেনহল্লী, দক্ষিণ-ভারতের মহিন্দর-রাজ্যের বঙ্গপুত্র কেলার অন্তর্গত একটা নগর। অকা° ১৩°২৮´ উ: এবং জাবি॰ ৭৭°৫২´ পু:। এখানে মিউনিসিগালিটা থাকার নগরের উত্তরোত্তর শ্রীর্দ্ধি সাধিত হইতেছে। স্থানীর তুলা ও আলুর ব্যবসা লিলারতগণ এক চেটিয়া করিরাছে।

বড়গোখুরী (দেশজ) তৃণবিশেষ (Kyllingia umbellata)।
বড়চক্মা (দেশজ) বৃক্তেদ (Quercus squamosa)।
বড়চনা (দেশজ) চণকভেদ (Cicer arietinum)।
বড়চ্মা (দেশজ) ইন্দ্রভেদ (Mus decumanus)।
বড়চ্মা (দেশজ) জনজ বৃক্তেদ (Menyanthes Indica)।
বড়চ্চা (দেশজ) তৃণভেদ (Cyperus Iria)।

বড়জালগাঁথী (দেশজ) তৃণবিশেষ (Panicum setigerum)। বড়টগর (দেশজ) পুশার্কভেদ (Tabernæmontana coronaria)

বড়ডানকুনা (দেশজ) মংখ্যভেদ (Clupea vittata)।
বড়নগর, পশ্চিম-ভারতের গুজরাত-প্রদেশের বড়োলা রাজ্যের
অন্তর্গত কড়ি জেলার একটী উপবিভাগ। ভূপরিমাণ ৭৬ বর্গমাইল। এখানকার উত্তরপশ্চিম সীমায় যে থাড়ি আছে,
তাহার জল ঈষং লবণাস্ক হওয়ায় পানের অন্ত্পযোগী হইয়াছে।
প্রায় ৮০ হইডে ১০০ ফিট্ গভীর কুপ-খনন না করিলে স্থমিষ্ট
জল পাওয়ার আশা করা যায় না।

২ উক্ত উপবিভাগের প্রধান নগর। বিশ নগর হইতে ৪॥॰ ক্রোশ উত্তরপূর্বে অবস্থিত। প্রধান, অবোধ্যার স্থ্যাবংশীর কোন রাজা ১৪৫ খুটাজে অবোধ্যা রাজধানী পরিভ্যাগপুর্বক এই স্থানে আগমন করেন এবং পরমারবংশীর কোন রাজকুমারের নিকট হইতে এই স্থান জর করিয়া তথার বড়নগর রাজধানী স্থাপন করিয়াছিলেন। নাগরগোত্রীর রাজনগণের রাজধানী আনন্দপুরেই এই বড়নগর স্থাপিত হয়। এই বড়নগরের নাম হইতেই এখানকার বাজগণ নাগর ব্রাজণ নামে পরিচিত। আনন্দপুরে ২২৬ খুটাক পর্যাক্ত নাগরগোত্রীরদিগের প্রাত্তর্জাব ছিল। [বেবনাগর দেখ।]

চীন-পরিপ্রাক্তক হিউএন্ বিরাং বৃষ্টার ৭য় শতাকে এই নগরের সমৃদ্ধি ও জনতার উল্লেখ করিয়া গিরাছেন। বছফাল হইতে এখানে বড়োগা-রাজের আপ্রিড দীনোজ প্রাক্ষণগণ বাস করিতেছে। তাহারা ক্যাচারী ও দহ্যপ্রকৃতিক, ঐ প্রাক্ষণ-হিগের অক্যাচার ও উপরবের পরিচর পাইরা বোখাই গবর্মেন্ট সরাজী মহারাজের রাজস্কানে ভাছাদিগকে বড়োবা বরবারের অন্ত্রহ হইতে বঞ্চিত করেন। এখনও এখালে প্রার ২ শত বর দীনোক আক্ষণের বাস আছে। এখন ভাহারা দৃষ্যুবৃত্তি ত্যাগ করিয়াছে। সকলেই প্রার ব্যবসা বাণিক্যে বা অপর কালকর্মে লিপ্ত হইয়া ইংরাজয়াক্তমে শাস্ত হইয়াছে।

ৰড়নিবিবিষ (দেশৰ) অগডেদ (Scirpus glomeratus)। বড়নোনিয়া (দেশৰ) বৃক্ডেদ (Portulacs pilosa)। বড়নোকা (দেশৰ) > বৃহৎ নৌকা। ২ জনৰ অগডেদ (Pontederia vaginalis)

বড়ন্দ (নেশৰ) ভূগভেদ (Panicum uliginosum)। ৰড়পটুকা (ত্ৰী) মংক্তভেদ (Tetrodon fornicatus)। বড়পটোল (নেশৰ) পটোল ৰাজীয় লভাভেদ (Trichosanthes dioica)

বড়প্রাঙ্গী (দেশজ) পক্তিলে। (Merops Philippensis)। বড়পাথা-মেলপাথী, মাজাজ-প্রেদিডেলীর ভাজোর জেলার স্থজালী ভালুকের অন্তর্গত একটা নগ্র।

বড়পানীমরিচ (দেশজ) বৃক্তেদ (Polygonum pilosum)। বড়পিনিনটা (দেশজ) ভূণভেদ (Poa Chinensis)। বড়ফুটিকা (দেশজ) বৃক্তেদ (Melastoma Mulabathrica) বড়বটের (দেশজ) পক্ষিভেদ (Pordix olivacea)। বড়বডার (দেশজ) বহুভাষী। বাচাদ।

বড়ন্ত্রী (রী) বড়াতে আরুহুতেহত্তেতি বড় বাছলকাং ঋতিচ্, ক্লদিকারাদিতি ভীষ্। গৃহ-চূড়া, চলিত মুদনি। পর্য্যায়— গোপানদী, চন্দ্রশালিকা, কুটাগার। (ত্রিকা॰)

'চক্রশালা চ বড়ভী স্থাডাং প্রাসাদমূর্দ্ধনি।' (শ্রীধর)

বড়ভি, বড়ভী, বলভি ও বলভী এই চারি প্রকার রূপ হইরা থাকে। ড়ুণনির্মিত গৃহের পাইড় প্রভৃতি এবং ছাদের উপরিভাগে নির্মিত বে গৃহ, ভাহাই চক্রশালা (চিলের ঘর।) বড়ুর (বরুড়), লার্মিণাত্যবালী নিরুক্ত জাতিবিশেষ। ইহারা জাতকর্মানি অনেক বিবরে হিন্দুপ্রভির অমুকরণ বটে, কিছ শুকর, ইন্দুর প্রভৃতি ঘণিত মাংসও ভোজন করিয়া থাকে। ইহাদের মধ্যে গাড়ীবড়র, জাতাবড়র ও মাটীবড়র নামে কয়টী থাক আছে। স্ব শ্ব শ্রেণীর রৃত্তি অমুসারে ইহারা এইরূপ সামাজিক আখ্যা লাভ করিয়াছে। ইহারা রয়না, জনাই, সাতভাই ও ব্যৱহাবার পূলা দের। বিবাহের পর মান্সভিপ্রণা দিবার বিধি আছে।

ব্যুকা (ত্রী) ৰলং ৰাতীতি বল-বা-ক-টাপ, ডলরোরক্যাৎ লক্ত ড্ডং। ১ বোটকী। ২ বড়বারপধারিদী ক্রাগদী। (ভাগবত ৮০১৩৮) ০ অধিনী নক্ষত্র। ৪ নারীদিশেব। ৫ বাসী। ৬ বাস্থদেবের অনামধ্যাতা পরিচারিকা। (হরিব° ০৫।০) বাছবারি। ৮ নদীবিশের। (ভারত তা২২১)ই৪)
 তীর্বভেদ। (ভারত তা৮২।৮৮) [প্রর্গে বড়বা শক্ষ রেখ।]
 বড়বাক্কত (প্রে) বড়বরা বাজা ক্বতঃ। প্রশাসবিধ রালের অন্তর্গত বাসবিশের।

"क्ष्यमानम्ह विरक्षत्रवर्धेश्व वक्ष्याकृष्ठः ॥" (मात्रम्) 'वक्ष्या मानी करत्नावाममीकृष्णमावाः' (बादकस्मनःश्रम्)

কোন কোন ছানে ইহার 'বড়বাড়ড' ও 'বড়বাহড' এইরণ পাঠান্তর দেখিতে পাওরা যার।

বড়বান্তি (হং) বড়বারাঃ সমুত্রস্থিতারাঃ বোটক্যাঃ মুধছোহরিঃ।
সমূত্রস্থিত অন্তি, বড়বানল ।

বড়বান্ (ৰাধ্বাদ, বৰ্জমান) বোৰাই জেবিডেনীর ঝালাৰার প্রোক্ত একটা দেশীর সামস্করাজা। স্থারিমাণ ২৩৭ বর্গমাইল। বোৰে বড়োলা ও নেন্টাল ইপ্তিয়া রেলপথ এই রাজ্য মধ্যদিরা বিভ্ত থাকার এথানকার বাণিজ্যের বিশেষ হবিধা বটিয়াছে। ১৮৭৭ খুটাবে সন্ধি অহুসারে এখানকার সন্ধারণণ বিতীয় শ্রেণীর সামস্করণে পরিগণিত হইরাছেন।

এখানকার সর্দার দাজীরাল ঠাকুরসাহেব রাজকোটের রাজকুমার কলেজে শিক্ষা-সমাপন করিরা পিড়সম্পত্তির অধিকারী হইয়াছেন। তাঁহার রাজস্ব আদার ৪ লক্ষ টাকা; তন্মধ্যে ইংরাজরালকে ও জুনাগড়ের নবাবকে বার্ষিক ২৮৬৯২ টাকা কর দিতে হর। তাঁহারা ঝালাবংশীয় রাজস্ত, জ্যেষ্ঠপ্রেই পিড়-সম্পত্তির অধিকারী, কিন্তু দত্তকগ্রহণে অধিকার নাই। রাজাদ্ধ সেনাসংখ্যা ৫ শত।

২ উক্ত রাজ্যের প্রধান নগর। বোষে বড়োলা ও সেন্ট্রাল ইপ্রিরা রেলপথের এখানে একটা টেসন আছে। অক্ষা ২২°৪২´ উ: এবং স্তাথি ৭১°৪৪´৩০´ পূ:। নগরের লক্ষিণে রাজপ্রানাম ও হুর্গ। পরিখা ও প্রাকারাদি মারা নগরটা স্থরক্তিত। এখানে মৃত, তুলা, নানারকম শস্ত ও দেশী সাবানের বিস্তৃত কারবার আছে। দেশীর ভাষরগণ শিশ্লবিভার সমাক্ উরত। ভাবনগর-গোণ্ডাল রেলপথের সহিত উপরোক্ত রেলপথের এখানে মিলন হওরার স্থানীর সমৃদ্ধি উত্তরোজ্ঞর পরিবর্ধিত হইতেছে।

ও কাঠিরাবাড় এজেন্সীর ইংরাজাবাস। বর্জমান রাজ্যের মধ্যে উপরোক বড়বান নগর হইতে ও নাইল পশ্চিমে স্থাপিত। এখান হইতে রেলপথ বিরা বোখাই ও আক্ষদাবাদ এবং ভাব-নগর ও রাজকোট বাওয়া থার। পূর্কে বড়বান দরবার হইতে বার্ষিক ২২৫০ টাকা থাজনার এইহান ও ২৫০ টাকা থাজনার হধরাজ গিরাসিরার অধিকৃত হান জাড়া লইরা এই রাজ-নধর (Civil Station) স্থাপিত ইইয়াছিল। এখানে

জেল, কুল, ধর্মণালা, ঔবধানর ও ঘটিকান্তস্ত (Clock-tower)
প্রভৃতি শোভিত সুন্দর স্থার জটালিকা আছে। গিরাসিয়ার
ভূমিদানের জন্ত ইংরাজয়াজ তাঁহার সন্তান সন্ততিধিগকে রাজকুমার কলেজে পাঠের অধিকার দিরাছেন।

বড়বানল (গং) বড়বারা: অনক:। বড়বারি। পর্যার—
সলিলেন্দন, বড়বামুধ, কাকধ্বজ, বাণিজকলারি, তৃণধুক, কাঠধুক,
ঔর্জ, বাড়ব। (অমর) ২ লছার দক্ষিণে পৃথিবীর চড়র্থভাগরপ
স্থানবিশেষ। (সিনান্ত্রিশি) ও বটকোবধবিশেষ। (রসেক্রসারস
বড়বামুথ (গং) বড়বারা: বোটকা স্থমাল্রডেনান্ত্যক্ত আর্শআদিভাবচ্। > বড়বানল। (হেম) ২ মহাদেবের মুথ।

৩ মহাদেবের নামভেদ। (ভারত ১৩।১৭।৫৫)

९ कृत्यंत्र प्रिक्किक् अन्भावित्यः ।

विदेशियश्चीयश्चित्रायः (त्रामक्रमात्रमः)

বড়বাবক্ত্ৰ (क्री) বড়বাম্থ, বড়বানল।

বড়বাস্থত (পুং) বড়বারাঃ ঘোটকরপারাঃ ছটুস্থতারাঃ সংগ্রারাঃ স্থতঃ। অধিনীকুমার। এই অর্থে এই শব্দ বিবচনান্ত, অধিনীকুমার ছইজন।

ব ড়বাহ্নত (গুং) বড়বরা দাক্তা হতঃ। পঞ্চদশবিধ দাসের অন্তর্গত দাস বিশেষ। বড়বা শব্দে গৃহদাসী, যে ব্যক্তি লোভে আরুষ্ট হইরা এই দাসীকে বিবাহ করিয়া তদ্গৃহে দাসরূপে অবস্থান করে, তাহাকে বড়বাহৃত কহে। (মিতাক্ষরা)

বড়বিন্ (ত্রি) বড়বাজাত বা তৎসম্বীয়। বড়া (ত্রী) বড়-অচ্-টাপু। বটক, চলিত বড়া।

'कमरमनाथवा डाटेमय् कः यखाञ्चनः लिङः। लिखः চুराः वटोा वजा' हेंडि (मन्हरु)

বড়া কুষাছ জবা। তাল, নারিকেল, কলা প্রভৃতি বছবিধ দ্রব্যের বড়া প্রস্তুত হইয়া থাকে। যে দ্রব্যের বড়া প্রস্তুত করিতে হইবে, তাহার সহিত জ্ঞানরিমাণে চাউলের গুড়া মিশাইরা তৈল বা দ্বতে ভাজিরা লইতে হর। রসবড়া, ছানাবড়া প্রভৃতি থাক্ত ক্র্যাছ।

বডিকা (ত্রী) বটকা।

বড়িল (क्री) বলিনো মংক্তান্ শুডি মালয়তি শো-ক, লশু ড্বং।

> মংশুধারণার্থ বক্ত লৌহকন্টকবিশেষ। চলিত বড়্লী,
পর্যায়—মংশুবেধন, বলিশ, বড়শী, বড়িশা, বলিশী, মংশুবেধনী,
বলিসী, বলিস, বরিশা, বলিশি, মংশুভেদন। (জটাধর)

২ আযুর্বেগাক্ত বড়িশাকার বেধনবন্ত্রবিশেষ।

ৰড়ী (দেশৰ) ১ ঔৰধের বৃটিকা। ২ থাছজব্যবিশেব। প্রান্তত-প্রাণালী—পাকা চালকুমড়া উত্তমরূপে কুরিরা তাহা বাটিরা লাইতে হর, পরে মটরভাল এবং ঠিকুরা বাটিরা উহা একত মিশ্রিত

করিয়া উত্তমক্রপে কেনাইয়া বড়ী দিতে হয়। এই বড়ী অভিশর
শাহ। ইহা ভিন্ন কেবল ডাইলের বড়ী ও মূলার বড়ী প্রভৃতি
দেওরা যাইতে পারে।

वर्ष्णिमक (क्री) श्राठीन श्रानरण ।

বড়্বড় (দেশজ) অব্যক্ত শব্দ। পৰে নিমজনকালে বে অব্যক্ত শব্দ উথিত হয়!

ব্ডু (আ) বড়তে ইতি বড় বহুলমগুআপীতি রক্। বৃহৎ। চলিত বড়। (অনর)

বণ, শব্দ। ভাদি পরদৈ সক সেই। লট্ বণতি। লিট্ ববাণ। লুট্ বণিতা। লুঙ্ অবাণীৎ, অবণীৎ। শিচ্ বাণয়তি। লুঙ্ অবীবণৎ, অববাণৎ।

বিণিক্ (পুং) ব্যবসায়ী ব্যক্তিমাত্র। যাহারা বাণিজ্যবৃত্তিদার!
জীবিকার্জন করে। বাঙ্গালায় গন্ধবণিক্, স্বর্ণবণিক্ কাংস্তবণিক্ প্রভৃতি শ্রেণীবিভাগ আছে। উত্তর ও পশ্চিমভারতে
শেষ্টা এবং বেণিয়ারা এই শ্রেণীভূক্ত। এতদ্ভিম ইংরাজ, ফরামী,
মুসলমান প্রভৃতি অনেক বৈদেশিক বণিকেরও ভারতে অধিষ্ঠান
হইয়াছে। ভারতীয় ব্যবসায়ী বণিক্ জাতির বিবরণ বৈশ্র
শব্দে এবং বণিক্জাতির শন্বিশেষে বিবৃত হইয়াছে।

[বৈশ্র শব্দে বিস্থৃত বিবরণ দেখ।]

বৃণিকৃকর্মন্ (ङ्गी) বৃণিজ্ঞাং কর্ম্ম। বৃণিক্দিগের ক্রমবিক্রমাদি-রূপ কার্যা।

বণিকৃক্রিয়া (স্ত্রী) বণিজাং ক্রিয়া। বণিক্দিগের কার্য্য। (বৃহৎস° ৬৯/২০)

বিণিকৃপথ (পু:) বণিজাং পছা:। বণিকৃদিগের পছা। নিগম। বিপণি। বাণিজ্ঞ। (জটাধর)

"আচোরাভূত্তথা ভূমির্থথা রাত্রো বণিক্পথা:।"(রাজতর° ৬।৭)
বণিক্ত্রত (ক্লী) বণিকের কার্যা। ব্যবদার। বণিগৃর্ভি।
বণিক্সার্থ (পুং) বণিক্সমূহ। "বিক্লোর্বশ্বর্ভিন্তা মাররা
জীবলোকোধ্যং যথা বণিক্সার্থোহর্থপরঃ" (ভাগবত ১৫।১৪।১)
বণিগৃজ্জন (পুং) বণিক্লাতি।

বিণিয়াজু (পুং) বণিজঃ পণ্যাজীবত বন্ধর্মদন্তাং। নীলিবৃক্ষ। (শক্ষচ॰)

বিণিগ্ বহু (পুং) বহুতীতি বহু-অচ্ বণিজাং বহু:। উট্ট। (শক্ষচ°) বিণিগ্ভাব (পুং) বণিজা ভাব:। বাণিজ্য, বণিক্দিগের ধর্ম। পর্যায়—সভ্যান্ত, বণিক্পথ, বাণিজ্যা, বণিজ্য। (শক্ষর্মা°) বিণিগ্রন্তি (ত্ত্বী) বণিজাং বৃত্তি:। বণিক্দিগের বৃত্তি, বাণিজ্য, বণিক্দিগের জীবিকা।

বণিজ্বার্গ (পুং) বণিজাং নার্গ:। বাণিজ্য, বিপণি, বণিক্পথ। বণিজ্ব (পুং) পণতে ক্রমবিক্রমাদিনা ব্যবহরতীতি পণ- (गर्नबारमुक वः । छैन्। २१००) हेक्ट हेक्टि नक ह वः । क्रम-अविकानकर्ती, क्रांनिकाकात्रक । गर्वात- त्वरहरू , गार्ववाह, त्यन्त्रम्, व्यांनिक, गर्नवाह, विराह, विराह, वांगिक, गांनिका, क्रांतिक, विक्विक, वांगिकक, वांगिकाकात्र । (मक्तक्राण) २ देवका । (वांकिम) वांगिकाहे हेहारमत दृष्टि, धार्षेकक हेहाविशास्त्र विश्व करह । ७ क्रज़गविरम्य, वय-वांगय स्पष्ट् िक करांग्र सर्था प्रकृकत्र । (दृष्ट्यण क्रांनि क्रांनि ।

বণিজ (পুং) বণিগেব বণিজ্ স্থার্থে জণ্, অভিধানাৎ ন বৃদ্ধি:।

> বণিক্। ২ বব প্রান্তিত করণের মধ্যে বর্চকরণ। এই করণে
বাণিজ্যারম্ভ করিলে ওভ হইরা থাকে। অন্ত ওভকর্মে এই
করণ নিবিদ্ধ। বণিজকরণে কোন বাসক জন্ম গ্রহণ করিলে
বৃদ্ধিনান্, হৃতজ্ঞা, গুণবান্ এবং বণিক্দিগের ছারা ভাষার অভিলাব
সিদ্ধি হইরা থাকে।

শ্ৰ্যাজ্ঞ ক্বন্তে গুণবান্ গুণজো বণিক্জন প্ৰাপ্তমনোৱণঃ ভাৎ। বন্ত প্ৰস্তেট বণিজাভিধানং ভাগুপ্ৰধানং ত্ৰবিণং হি ভন্ত ॥"

(কোন্তাপ্রদীপ)

বৃণিজ্ব (পুং) বৃণিক্। ব্যবসায়ী।

বৃণিজ্য (শ্লী) বণিজো ভাবঃ কর্ম্ম বাবণিজ্ (দৃতবণিগ্জ্যাং। পা ১)১২১) ইতাত্র কাশিকোকো:। বাণিজ্য, দ্রিয়াং টাপ্। বণিজ্যা।

ৰ•ট, বিভাগ। চুরাদি° গরদৈ শক° সেট্। লট্ ৰ•টরভি, ৰ•টাপরতি। পুঙ্জবব-টং।

বৃক্ত (পুং) বন্টাতে ইতি বন্ট-দঞ্। ১ ভাগ। ২ দাত্রমৃষ্টি।
(হেম) বন্ট-দ্রান্থ সক্তেভাছাহ, স্ববিবাহিত। (সন্মানা)
বন্টক (পুং) বন্ট এব স্বার্থে কন্। ১ ভাগ। (স্বায়র) বন্টধুল্। (ত্রি) ২ বন্টনকারী, বিভাগকর্তা।

वन्छेन (ही) वन्छे-मूर्छ । विভाগ।

বন্টনীয় (অ) বন্ট-জনীয়র। ক্টনের বোগ্য, বিভাগের বোগ্য। বন্টিত (অ) বন্ট-ইতচ্। ক্লতবিভাগ, বাহা ভাগ করির। কেওরা ইইরাছে।

বৃণ্টাল (পুং) > শূরবৃদ্ধ। ২ নৌকা। ৩ পুনিত্র। (মেরিনী)
কোন কোন ছানে 'বঠাল' এইরপ পাঠও বেধিতে পাওরা বার।
বৃষ্ঠ (পুং) বঠতে ইতি বঠি-সচ্। > স্পর্যভোষাত, স্পবিবাহিত।
২ ধর্ম। ৩ কুরাহুধ। (মেধিনী)

বঠর (পুং) > ব্গিকারক। ২ কুর্রের লাল্য। ৩ করীর কোব। ৪ ভালপরৰ। ৪ পরোধর। (সেদিনী)

वर्काल (ग्र) [बकीन तथ]

व्यक्त (गूर) बनाए हेिंग्ड वन नहरूको (हवनश्रार छ। हैन् ११३२०) हैिंग्ड छ। असनावृद्धाः । गर्वाद क्लानी, বিনয়ক, পিণিবিট। (হেন) বাড়া। (ুঝি) ব হডাবিবর্জিট। নাজুনাবিরহিড, চলিড বেড়ে। (মেরিনী) ও ব্যৱকা। ত্রিরাং টাপ্। অনতী ত্রী। পুংখ্যনী।

वर (चरात) वाकीकि वा केकि। > नामा। नद्याव---वा, वर्षा, कथा, अव, अवर। (चर्चम)

ব্যস্ত (অবার) ১ থেব। ২ অভ্যক্তপা।

"ক বত হরিণকানাং জীবিভঞ্চাভিলোলং

চ নিশিতনিপাতা বল্লসারা: শরাতে।" (শকুভলা ১ ৩॰)

ত সভোব। ও বিশার। ৫ আনজ্ঞণ। (অমর)

বতংস (প্র) **অবভংগরতি অবভংজতেহনেদ বা ইতি অ**ব-তসি আচ্বঞ্বা **অবভালোগঃ। কর্বপূর, ফর্কুবন, জানের গ**হনা। ব শেশর, শিরোভূষর।

"চলিত-দৃগঞ্ল-চঞ্ল-মৌলিকণোলবিলোক্ষবজ্ঞাং। বাসে হরিদিহ বিছিতবিলাক শ্বরতি মনো মম ক্তশরিহাসন্॥" (শীতগোবিশা ২।২)

বতক্ (আরবী) হংগী।

বৃত্তপ্ত (পুং) বনতীতি-বন (অগুন্ রুক্তর্ঞঃ। উপ্ ১১২৮) ইত্যত্র বনতেতকারাস্তাদেশঃ। ১ মূনিকেন। (উণাদিকোন)

বতারীখ্ (আরবী) মাসের অমুক দিন।

বতায়ন (খং) ৰাতায়ন, জানালা।

বতুই (দেশজ) পক্ষিভেদ।

ব্জু (পুং) > দেৰনদী। ২ সতাবাক্। ও পদা। ৪ জনিবোগ।
বিতোকা (বী) অবগতং তোকং অপভাং বসাং, অবজালোগঃ।
অবতোকা, বে গাভীর গর্ভনাব হইরাছে।

ব্ৰক্তিশ (দেশৰ) ৰাজিংশৎ, ৩২ সংখ্যা।

ব্ৎস (পুং) বদতীতি বদ (বৃত বদি-হনি-ক্ষিক্বিভা: সঃ। উদ্ ৩৬২) ইতি স। ১ বর্ব। ২ গোনিন্দ, চলিত বাছুর। পর্যার— শরুৎক্রি, তর্গক, দোঝা, দোবক, দোব, রৌহিশের, বাহুদের, তত্ত্বত। সভোলাত বংসের পর্যার—তর্গক, তর্গত, তত্ত্বত, কচ। (কটাধর) ৩ পুত্রাধি, চলিত বাহা।

> "न वश्म नृशरण्यिकाः ज्यामारत्राहृम्हि । म मृहीरणा महा वश् वः कूकाविंग मृशासक ॥"

> > (ভাগবত ৪৮/১১)

৪ বিবোলাসের পৃত্র। (ভাগবত ১০)৩৫) ৫ দেশভেদ।
"অতি বৎস ইতি থাজো দেশো দর্শোসনাস্করে। বর্গত নির্দিতো বাতা অতিমন ইব কিতৌঃ"(ক্বাসরিৎসা° ১৮৪)

৬ কংসের অনুচর বৎসাপুর, এই অনুত্র শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃত্ব নিহত হর। (ভাগবত ১০ছ০') ৭ইপ্রবয়। (চন্দ্রমন্ত্র) (রী)৮ বনস্। (অনর) ৯ মুনিবিনেন। (বিজ্ঞাপুর ৭৪০) ব্দস, > কুমারসভবটীকারচরিতা। ২ চরকাক্ষ্পুত্তপ্রণেতা। বেষারি ইহার উল্লেখ করিয়াকেন।

ব্ৎস্ক (রী) বংস-সংজ্ঞারাং ইবার্ছে বা কন্। ১ পূলকাসীস।
(রাজনি॰) ২ বংসলকার্ছ। (গ্রং) বংস-কন্। ৩ কূটজ।
(স্মর) ৪ ইপ্রবে। ৫ নিশ্বজী, নিসিলা। (বৈভকনি॰)

वरमक्खां का, अवशस्त्र। (हिक्टिमा°)

বংসকন্টক (গং) পর্ণ চৰ, কেতপাপড়া।

व्यम्ककृत्व (जी) देखन्तः (व्यक् २०६ ७०)

वरमक्वीख (मी) वरमक्छ वीबर। हेन्रयव।

"(वारा दरनकवीलक निक्कृनिक्मार्कवम्।

চিত্রকং কোহিণীং পাঠাং লাক্ষীমভিবিবাং সমান্ ॥" (চক্রপাণিস')
বৎসাকারা (ত্রী) বৎসং কামরতে ইতি কম্-অচ্-টাপ্।
বৎসাভিলাবিণী গাভী। পর্যায়—বৎসলা। (রাজনি•)
২ পুরাদিকামা ত্রী, যে ত্রী সম্ভান কামনা করে।

বৎসপ্তরু (পুং) পুত্রের জাচার্য্য।

বৎসণুরকতীর্থ (क्री) তীর্থছেন।

বংসতন্ত্ৰী (ন্ত্ৰী) বংসন্থ ভন্তী। বংসন্থৰন মৰ্ছ্, চলিত বাছুনবাধা দড়ি।

বংস্তর (গুংঁ) প্রথম বন্ধদের বংস (বংসোক্ষাধ্বভেভ্যক্ষেতি। পা ১০০১) ইতি ইরচ্। প্রাপ্তদমনকাল গোলিন্ত, চলিত লোয়ানে বাছুর। পর্যায়—দম্য, হর্দাস্ত, গড়ি। (রাজনি৽) বংস্তরী (ত্রী) বংসতর-ত্রীপ্। তিনবংসর বয়সের ত্রীগবী, র্ষোৎসর্গে হ্রপদ্মীরূপে করিতা ত্রিহায়নী গাভী। র্ষোৎসর্গ করিতে হইলে চারিটা বংসতরীর সহিত একটা ব্র উৎসর্গ করিতে হয়। এই বংসতরী উত্তমরূপে অলম্বারাদি হারা সক্ষিত করিয়া দিতে হয়। তিনবংসরের কমে বংস্তরী হয় না।

"বিহারণীভির্মস্রাডিঃ স্করণাডিঃ স্থশোভিতঃ।

नर्त्का वक्तरपारविः नर्क्य अन्नत्ता महान्।

উৎশ্ৰষ্টাৰ্যা বিধানেন প্ৰতিশ্বতিনিম্বৰ্শনাৎ ॥" (গুছিতত্ত্ব)

द्दम्य (जी) वर्नमा छावः छ। वर्तमत्र छाव वा धर्मा।

বৎসদত্ত (পুং) গোশিশুর দক্তের স্থার তীরভেদ।

বংসদ্মিন, শ্রবেদনবংশীর রাজতেল। ইহার পিতার নাম দেব-রাজ ও মাতা বাজিকা দেবী।

বং সন্পাৎ (পুং) বক্তর বংশধর। (শতপথরা > ১৪।৫।৫।২২)
বং সনাভ (পুং) বংসান্ লভাতি হিনন্তীতি নভ হিংসারাং
(কর্ম্মগ্রণ্। পা তাহা ১) ইভাণ্। বিষয়ক্ষবিশেষ, (Aconitum
firox)। স্থাবরবিষভেদ, কন্মবিষ; চলিত—কাঠবিষ বা
মিঠেবিষ; হিন্দী—মিঠা; বব্দে—বচনাগ; ভামিল—বদনবী।
সংস্কৃত পর্যার—অন্ত, বিষ, উগ্র, মহৌবধ, প্রক্, মারণ, নাগ,

তৌকক, প্ৰাণহারক, স্থাবনাদি। তাণ—অতিমধূন, উক্চ, ৰাত, কল,কঠপীড়া ও সন্নিপাতনাশক, শিন্ত ও সম্ভাপবৰ্দ্ধক। (রাজনিং) ভাবপ্রকাশে লিখিত আছে বে,—

"দিশ্ববারসনৃক্পত্রো বৎসনাজ্যাক্ত জিঅথা।

যং পার্থেন তরোর্ছির্বংসনাজ্য স ভাষিতঃ ॥" (ভাষপ্র•)

বৎসনাভাধ্য বিষের আকৃতি গোবৎসের ছার এবং বৃক্দের
পত্র সিশ্ববার (নিসিন্দা) পত্রের ছার হইরা থাকে। যে স্থলে
বৎসনাভ বিষের বৃক্ষ থাকে, তাহার নিকটে কোন বৃক্ষই বর্দ্ধিত
হয় না। এই বিষ শোধন করিরা ঔষধাদিতে প্ররোগ
করিতে হয়।

শোধনপ্রণালী — বিষ থণ্ড থণ্ড করিয়া কাটিতে হইবে, পরে ঐ বিব তিন দিন গোমুত্রে নিময় করিয়া রাখিবে, তৎপরে উহার ছাল তুলিয়া রোদ্রে শুকাইতে হইবে, অনস্তর রক্ত-সর্বপের তৈল দারা আর্দ্রীকৃত বন্ধথণ্ড তিন দিন বাদ্বিয়া রাখিলে বিষ শোধিত হয়।

গুণ-এই বিষ প্রাণনাশক, ব্যবায়ী ও বিকাশিগুণযুক্ত। অগ্নিগুণবৃহুল, বায়ু ও কফনাশক, বোগবাহী এবং মন্ততাজনক; কিন্তু বিবেচনার সহিত হথোপযুক্ত হলে প্রবোজিত হইলে প্রাণরক্ষার কারণ হয়। ইহা রসায়ন, বোগবাহী, বাতম, কফাপহারক ও ত্রিদোবনাশক হইয়া থাকে। (ভাবপ্রত)

বৎসনাভ শব্দের ক্লীবলিকেও প্রয়োগ দেখিতে পাওয়া যায়, কিন্তু সাধারণতঃ পুংলিকে ব্যবহার হইয়া থাকে।

"চত্বারি বৎসনাভানি মুম্বকে বে প্রকীর্ত্তিত।

ত্ৰীৰান্তস্তো বংসনাভে পীতবিগা, বনেত্ৰতা ॥*

(মুশ্রত করস্থা[°] ২**স**°)

২ সহাদ্রিবর্ণিত রাজভেদ। (সহা° ২৭।৫৭)

वर्मभ (११) > वरमभानक। र जीक्क।

"পরীতো বৎসপৈর্বৎসাংক্যারন্বন্ ব্যহরবিভূঃ।

ষমুনোপৰনে কুজন্ধিজসঙ্গিতাজ্বিপে 🗗 (ভাগৰত অহা২৭)

৩ দানবভেদ। (অথব্য ৮।৬।১১)

বৎসপতি (পুং) রাজভেন, বংসরাজ। (বাসবদস্তা)

বং সপ্তন (রী) বংসরাজন্ত পদ্ধনং। ভারতবর্ষের উত্তরত্ব দেশবিশের, পর্যায়—কৌশাদী। (হেম)

বৎসপাল (প্:) বৎসান পালয়তীতি বৎস-পালি-অণ্ । শ্রীকৃষ্ণ ও বলদেব, বৃন্ধাবনে পোবৎস পালন করিয়াছিলেন, এই জঞ্জ ইছায়া বৎসপাল নামে খ্যাত হইয়াছিলেন।

"এবং ব্ৰজৌকসাং প্ৰীতিং বন্ধকৌ বালচেষ্টিতৈঃ।
ফলবাক্যৈঃ স্বকালেন বৎসপালৌ বস্তুবজুঃ "
(ভাগৰত ১০১১)৩৬)

(ত্রি) २ বৎসপালক, বৎসপালনকারিমাত্র। (ছরিব॰ ৩৭।২৪) ইৎসপ্রচেতস্ (ত্রি) প্রাবিবরে প্রকৃষ্টমনা। "ভ্যোতরি প্রকৃষ্ট-জ্ঞানঃ" (ক্ষ্ ৮।৮।৭ সারণ)

বৎস্প্রী (গ্রং) রাজতেদ, ভলন্দনের পুত্র, অপর নাম বংস্প্রীতি। ইনি বংগদের ১৮৬৮ ও ১০।৪৫,৪৬ স্কের মন্ত্রন্তী কবি।

"ভগন্দনপ্রতন্ত্রত বংগপ্রীতির্ধনন্দনাং ॥" (ভাগবন্ড ৯।২।২৩) বংসপ্রীতি (গুং) > বংগপ্রীতি, রাজভেদ। (স্ত্রী) বংগত প্রীতি:। ২ বংগের প্রতি ভাগবাদা।

বংসবন্ধা (জী) বন্ধবংসা। বংসাকাক্ষী গাভী।

বংসবালক (গুং) বহুদেবের ভ্রাতা।

বৎসভক্ষক (গৃং) বংসত ভক্ষা। স্থীয়ামূগ, হাঁড়োল, গোৰাৰা, ইহারা গোৰংস ভক্ষণ করে, এইজন্ত ইহাদিগকে বংস-ভক্ষক কহে।

ব্ স্ভুমি (ত্রী) > জনপদভেদ। বংশদিগের বাসভূমি। (ভারত বন ২৫৩৮) ২ বংশরাজের প্রত্ত। (ছরিবংশ)

বৎসমিত্র (পু:) গোভিনভেন।

বৎসমুখ (পুং) গোলিতর ভার মুধবিশিষ্ট।

বৎসর (পুং) বসম্ভান্তিন্ অরনর্জুমাসপক্ষবারাদর ইতি, বস নিবাসে (বসেশ্চ। উণ্ তা৭১) ইতি সরন্, (সং জার্চনাডুকে। পা ৭।৪।৪৯) ইতি সক্ত তঃ। বাদশমাসাক্ষক বা অরন্ধরাত্বক কাল, ১২ মাসে অথবা উত্তরায়ণ ও দক্ষিণায়নের সমষ্টিতে এক বংসর হয়। পর্যান্ধ—সংবংসর, অব্ব, হায়ন, শ্বং, সমা, শ্বদা, বর্ষ, বরিষ, সংবং। (শ্বরুষাণ)

মলমাসতবে লিখিত আছে যে, সোর, সাবন, নাক্ষ ও চাক্সভেদে বৎসর চারি প্রকার; স্বতরাং সৌর, সাবন, নাক্ষ ও চাক্সভেদে মাসও চারি প্রকার। ইহার মধ্যে বাদশ সৌর মাসে এক সৌর বংসর, বাদশ চাক্সমাসে এক চাক্রবংসর, কিন্তু মলমাস ছলে ত্রেরাদশ মাসে এক চাক্র বংসর হইরা থাকে।

"চাক্সবংসরোহণি বাদশমাগৈর্ভবতি, মলমাসপাতে তু অয়োদশমাগৈর্ভবতি। তথাচ শ্রুতিঃ—বাদশমাসাঃ সংবংসরঃ, কচিৎ ত্রেদেশমাসাঃ সংবংসরঃ" (মলমাসতত্ত্ব)

ছাদল নাক্ষত্র মাসে এক নাক্ষত্র বৎসর হয় এবং ঘাদল সাবন মাসে এক সাবন বৎসর হইরা থাকে। ক্র্য্য বতদিন এক রালিতে অবস্থান করেন, ততদিন এক সৌরমাস। ক্র্য্যের রালিতে অবস্থান জন্ত মাস হইরাছে বলিয়া ইহাকে সৌরমাস করে। সাল, লকালা প্রভৃতি সৌরমাসাম্নারেই গণনা হইরা থাকে।

তিথিবটিত মাসকে চাক্রমাস করে। চাক্রমাস মুখ্য ও গৌণ-তেনে ছিবিধ। ছাদশ চাক্রমাসে এক চাক্রবৎসর ছইয়া থাকে। ২৭টা নক্ষয়ে এক নাক্ষয় মান, ইহার ছামপ নাক্ষয় সানে এক নাক্ষয় বংসর হইরা থাকে। এনোর ও ভারতেকে সাধনমাসও বিবিধ। বে কোন দিন হইতে আরম্ভ করিরা ৩০ আহোরায়ে বে মান হর, ভাহাই সৌরসাবনমাস—বেমন ১০ই আধিন হইতে ১ই কার্ষিক পর্যান্ত ৩০ আহোরাত্রে এক সৌরসাবন মান। ধে কোন তিথি হইতে ভাহার পূর্ক তিথি পর্যান্ত ৩০ তিথিতে এক চাজসাবন মান, ইহার ছাদপ মানে এক সাবনবংদর হর।

[বিশেষ বিষয়ণ মাস, মসমাস ও ব্যক্তিসংবৎসর শব্দে দেখ] সৌরবৎসর প্রক্তবাদি ৬০টা নামে বিজ্ঞত ব্যলিয়া ব্রটসংবৎসর নামে অভিহিত

।

২ঞ্জবের পুত্র। (ভাগবত৪।১০।১) হ মুনিভেদ। (লিন্দপু° ৬০।৫১) বংস্বাক্ত (পুং) বংসদিগের নরপতি।

বৎসরাজ, > নির্ণয়দীপিকারচরিতা। ২ ভোজপ্রবন্ধ ও হান্তচূড়ামণিপ্রহ্যনপ্রণেতা। ৩ বারাণসীদর্শণ ও তাহার টীকাপ্রণেতা।
রামাশ্রমের শিষা ও রাঘব ত্রিপাঠীর পুত্র। ১৯৪১ খুষ্টাব্দে ইনি
উক্ত গ্রহণানি রচনা করেন।

ব্ৎসর্কান্ত, > চাহমানকশীয় একজন রাজা। ২ চৌপুকাবংশীয় লাটদেশাধিপতি। ৩ ককরেড়ীর মহারাণক উপাধিধারী একজন সামস্ত। ৪ মহোদররাজতেদ। ৫ চন্দেররাজ কীর্ত্তিবর্দার প্রভাগ মন্ত্রী। ৬ সিল্বরাজ প্রভেদ। ইহার অপর নাম লোহড়দেব। ইনি কনোজপতি গোবিদ্যচন্দ্র দেবের সমসাময়িক ছিলেন।

বৎসরাজদেব, একজন প্রাচীন কবি।

বৎসরাদি (পুং) বৎসরের আদি। মার্গনীর্ব, অগ্রহারণ।
বৎসরান্ত ক (পু) বৎসরত অত্তে কারতি শোভতে ইতি কৈক, যথা বৎসরতান্তো নালো যত্মাং। ফান্তন মান। (রান্সনি°)
বৎসলে (ত্রি) বংজে প্রাদিরেহপাত্রে কামোহতাতীতি বংস (বংসাংসাভ্যাং কামবলে। পা এ।২।৯৮) ইতি লচ্। > প্রেহযুক্ত। পর্যার—প্রিয়া (অমর)

শ্ব্ঞানং গুজ্তমং যত্তৎ সাক্ষাৎ ভাগবডোদিতম্।

অববোচন্ গমিবান্তঃ ক্লপন্না দীনবৎসলাঃ ॥"(ভাগবছ ১।৫।৩০)

বৎসং লাভি গৃদ্ধাতীভি লা-ক। ২ বৎসকামুক।
(পুং) ৩ শূক্ষারাদি দশবিধ রসের অন্তর্গত রসবিশেব। সাধারণতঃ
রস ৯টা স্বীকৃত হইগছে। দশটা রস স্বীকার করিপে
বৎসল দশম রস হয়। ইহার লক্ষণ—

শক্ষু নৈ চনৎকারিতয় বংসলঞ্চরদ বিহঃ।
স্থারী বংসলতা স্নেহঃ পুত্রাভালদনং মতম্॥
উদ্দীপনানি তচেতা বিভাগেতিয়াদয়াদয়ঃ।
আলিকনালসংস্পর্শনিরশ্চু খনমীক্ষুম্ ॥
পুনকানন্দবাপাভা অস্থতাবাঃ প্রকীর্তিতাঃ।

সঞ্চারিলোহনিউপতা হর্ণপ্রাধরো মতাঃ।
পদ্মপর্জন্তবির্বা দৈবজং ক্লোক্ষাভরঃ র" (সাহিত্যর এ২৪১)
বে ব্লে বর্ণনার অতিপর চনংকারিতা হয়, তথার বংসদরস
হইরা থাকে। এই রসের হারিতার বংসদতা বা দেহ; প্রাদি
ইহার আগবন; প্রাদির কেই, বিভা, লোহা ও দরাবি উদীপমতাব; প্রাদিকে ক্লানিজন, ভাহাবিগের অধন্যকার, পিরত্বন,
রর্ণন, প্রাক্ষ, জানজ ও বালাবি ইহার অন্ততাব; অনিউপতা,
হর্ষ ও গর্মানি সঞ্চারিতাব; ইহার বর্ণ পদ্মকোবের ভার এবং
ইহার অধিষ্ঠানী দেবতা লোক্ষাতা। উদাহরণ—
"বনাহ ধানো প্রথমোবিতং বচো ববো ত্রীয়মবদ্যা চালুনীম্।
অভ্যুক্ত নত্র: প্রেণিগাতলিক্ষরা পিতৃস্বাহ তেন ততান সোহর্ভকঃ ॥

(সাহিত্যহ° গ্ৰন্থ) [রসশব্দেখ] বংসল্ভ। বংসল্ভ। (সী) বংসল্ভ ভাবঃ ভল্, টাপ্। বাংসল্য, বংসল্ভ, বংসলের ভাব বা ধর্ম।

বৎস্লা (ত্রী) বংসল-টাপ্ বা বংসং লাভি লা-ক-টাপ্। বংসকামা গো।

> "লাহং গৌরিব নিংহেন বিবৎনা বৎনলা কতা। কৈকেন্যা পুক্ষব্যাত্র বালবংনের গৌর্কলাৎ ॥"

(রামারণ ২।৪২।৮১)

বংসবং (অি) বংস অব্তার্থে মতুপ্ মত বং। বংসমুক্ত।
জিলাং তীপ্। বংসমুক্তা গাভী।

"সমেতা গাৰোহণো-বৎসান্ বৎসবজ্যোহপাপারয়।"

(ভাগৰত ১০।১৩।৩১)

বৎসবর্নাচার্য্য, প্রশন্নণারিক্ষাভপ্রণেতা। বৎসবিন্দ (পুং) শ্ববিভেদ। (প্রবর্নধার) বৎসবৃদ্ধ (পুং) রাজভেদ।

°উক্লক্রিয়: স্থতন্তত্ত বংগরুকো তবিবাতি।" (ভাগ° ৯৷১২৷৯)

বৎস্কুত্ত্ (পুং) বংসের পুরে। (বিকুপুরাণ)

্ষৎস্পাল (ডি) গোৰাল বৰে ৰাত।

হৎস্থালা (जी) গোরাল पर।

বংসন্মৃতি, প্রাচীন স্বভিগ্রছবিশেষ। মাধবাচার্য্য কালমাধ্বীর গ্রছে ইহার উল্লেখ করিবাছেল।

বৎসা (ত্ৰী) ৰংগ-টালু। ৰংগা। (রাজনি)

वरमायही (जी) वरमजाकीय गांजिम्हर यकाः, यहः, ममामाखः, जिल्लार कीय्। > रमाज्याः (चन्नायमः)

ষৎসাঞ্জীব (বি) গোৰংগ পালনদারা জীবিকানির্নাহকারী। ২ পিলন ধবি।

स्ट्राम्ब (११) जवीति जर-मू, व्यमानार ज्यूनः ज्यूनः । वृष्, शासामा । (ब्राजनिर)

বৎসামনী (মী) বংগৈয়ন্ততে প্রিরন্তানিতি, অব-নাট, জীশ। অভূটী। (অমর)

বৎসার (পুং) কান্তপের প্রভেক।

বৎসাহ্যর (পৃং) অহারদেদ, এই অহার মধ্রাপতি কংলের অহার ছিল। বুন্দাবনে আইক্ষ বধন গোচারণ করিতেন, তথন এই অহার বংসরপে তথার অবস্থান করিত এবং আইক্ষের অমলন চেটার প্রিরা বেড়াইত, আইক্ষ ইহা আনিতে পারিরা এই অহারকে বধ করেন। (ভাগবত ১০ম হন্ধ)

वर्षिन् (बि) > वरमङ्कः। २ भूवममिकः। ७ श्रीङ्गः। वर्षम्मन् (बि) वानाविद्यः। व्यक्ति।

বংসীয় (এ) বংস (তলৈ হিডং। পা ধাসাধ) ইভি হিডার্থেছ। বংসদিগের হিতকারী। (গোধুক্)

বৎসেশ্বর (পুং) > রাজভেন। (রন্নাবলী) ২ বৈরাকরণভেন।

ত চিকিৎসাসাগরপ্রণেতা।

বৎস্থা (ত্রি) বংসসম্ভীর।

বথ্সর (পুং) বৈরাকরণ পৌষরসাদির মতে বৎসর শক্ষের রূপান্তর। (পাণিনি ৮।৪।৪৮ বার্তিক)

বৃদ্ধন, উক্তি। ভাদি প্ৰদেশ সক্ত সেট্। গট্বদতি।
লিট্ববাদ, উদতুং, ববদিধ। লুট্বদিতা। লুট্বদিয়তি।
লুড্ অবাদীৎ অবাদিৱাং, অবাদিবুং। সন্বিবদিবতি। বঙ্
বাবভাতে। যঙ্পুক্ বাবভি। পিচ্ বাদয়ভি-তে। লুঙ্
অবীবদং-ত। শিক্ষ বদ্ধাতু বাদনার্থ।

বোগদেবের মডে, সন্দেশ-ৰচন ও কথন। বীপ্তি, সান্ধন, জ্ঞান, উৎসাহ, বিবাদ ও প্রার্থনা অর্থ ব্যাইলে বদ ধাড়ুয় আত্মনেপদ হইয়া থাকে।

अस् + वन = अस्वार, जम्मक्थन । अभ + वम = अभवार, अकीर्डि । अकि + वम + अस्वितारम, अभाम । अस्वित्तारम अस्वितारम, अस्वितारम, अस्वितारम, अस्वितारम, अस्वितारम, जम्म । अस्वितारम, जम्म । अस्वितारम, जम्म । विज्ञम् + वम = अस्वारम, जम्म । विज्ञम् + वम = विज्ञारम । विज्ञमम = विज्ञारम । विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञमम | विज्ञमम = विज्ञारम | विज्ञमम = विज्ञम

यम् (वि) सम्र्कि स्क्रीफि स्व-गराष्ट्। स्क्राः। (क्षमत्रः) यम्रक् (वि) साक्ष्यस्थननेवाः। स्क्राः।

বৃদ্ধন (রী) ব্যব্ধানেনতি ব্য-করণে পৃষ্টি। ১ খুণ, স্থানন।
"বর্ণনবিনীভয়নো গৃহিণীকরোল্লসংকপোলভবং।
চুকননিবেধবিকতো ব্যসং শিল্পাভি পাণিভাগে।

(আন্তানন্তপতী ২৭৬)

र नवकार। "बीगकानि सायकामानि बीगक्नकामानि" (ऋक्ष ১)६) বদ-ভাবে লুট্। ৩ কথন।

বদনদস্ত্রর (পুং) জাতিবিশেষ। (মার্কণ্ডেরপু ভেগ্ন)

বদনরোগ (পুং) বদনত রোগঃ। মুখবোগ।

বদনশ্যামিকা (ত্রী) বদনভ শ্রামিকা, ৬তং। বদনকালিমা। চলিত কথার মেছতা বলে।

বদনাময় (পুং) বদনশু আমর:। বদনরোগ।

বদনামুতা (রী) বদনত অব্লতা। পিত্তন রোগভেদ, এই রোগে মুথ সর্কাদা অল্লবং হয় : (ভাবপ্র°)

বদনাসব (পুং) বদনভ আসব:। অধরমধু। (ভূরিপ্র°)

বদস্তি 🛅 (প্রী) বদ (বেদশ্চ। উণ্ ৩/৫০) ইত্যুদ্ধন-मटखां क्या बिष्, क्रिकां ब्रामिकि वा छीय्। ३ कथा। बन-धाकु লট্ অস্তি করিলেও বদস্তি হয়, এই 'বদস্তি' ক্রিয়াপদ। বদ ধাতু শতৃ প্রত্যন্ন করিয়া স্ত্রীলিকে ভীষ্ প্রত্যন্নে বদস্তীপদ হইয়া থাকে।

"বং বদস্তি তমোভূতা মূ্থা ধর্মমতছিলঃ।" (মঞু ১২।১১৫) বদন্তিক (পুং) জাতিবিশেষ। (মার্কণ্ডেরপু ৫৮।৪৫)

বদস্য (ত্রি) বদান্ত। (অমরটীকা-সারস্থলরী)

বদল, বোদাই প্রেসিডেন্সীর গোহেলবাড়প্রান্তস্থ একটা কুত্র সামস্তরাজা। এখন ছুইজন স্বহাধিকারিমধ্যে বিভক্ত হুইয়া পড়িয়াছে। রাজম্ব ২৫৫০ টাকা, তন্মধ্যে বড়োদার গাইকো-বাডকে ১৫৪ টাকা কর দিতে হয়। বদল নগর এথানকার প্রধান বাণিজ্যস্থান। ভূপরিমাণ হুই বর্গমাইল।

वम्ल (आंत्रवी) विनिमग्र।

বদলাবদলী (দেশজ) পরস্পারে একের বিনিময়ে অপরটী গ্রহণ। व्यमन्द्रम्म ।

বদলী, বোৰাই-প্ৰেসিডেন্সীর হালারপ্রান্তত্ত একটা কুদ্র সামস্ত-রাজ্য। রাজস্ব ২০০০ হাজারটাকা, তন্মধ্যে ইংরাজরাজকে ২৪৬ টাকা এবং জুনাগড়ের নবাবকে বার্ষিক ৭৮ টাকা কর দিতে হয়। বদলী গ্রাম এথানকার প্রধান স্থান, ভূপরিমাণ হুই বর্গমাইল। वमली, वाचार- এरिए भीत अन्तार् अन्तार मरीकाश विला-

গের অন্তর্গত একটা প্রাচীন নগর, ইদর হইতে ছয় ক্রোশ উত্তরে অবস্থিত। খুষ্টায় ৭ম শতাব্দে নীন-পরিত্রাজক হিউএন সিরাং এই নগরের সমৃদ্ধির উল্লেখ করিরা যান। খুটীর ১১শ শতাবে বদশী নগর একটা বিস্তীর্ণ রাজ্যের রাজধানীরূপে

পরিগণিত ছিল।

বদাগরা, নাজাজ-এেসিডেন্সীর মলবার জেলার অন্তর্গত একটা নগর, অকা॰ ১১°৩৮ উ: এবং লাঘি° ৭৫°৩৭ ১৫ পু:। ইহা সমূদ্র উপকূলে অবহিত, কোলিকট হইতে কোরন্র পর্যান্ত বিভূত রাভা এই নগরের মধ্য দিরা গিরাছে। এখানকার ছর্গটী কোলতিরি (চীর**ক্ত**ণ) রাজাদিগের প্রতিষ্ঠিত। ১**৫৬৪ খৃ**ষ্টাব্দে **উ**ক্ত রাজবংশের

কোন রাজা এই হুর্গ কোনন্তনাম রাজবংশের হতে অর্পণ করেন, অতঃপর ইহা টিপু স্থলডানের অধিকারভুক্ত হয়, টিপু ইহাকে বাণিজ্য-তত্ত্ব আদারের প্রধান রাজকার্ব্যালয়রূপে পরিণ্ড करतम । ১৭৯० पृष्टीरक देश्यासवास हिन्द्र निकृष्ठे हहेरछ এई हुनी কাড়িরা বইরা পুর্বোক্ত কোনতনাড় রাজবংশের হতে সমর্পণ করিয়াছিলেন। অনস্তর উহা তীর্থগাত্রীদিগের বিপ্রামন্তবনে পরিবর্ত্তিত হইয়াছে। এই নগর বাণিঞ্চাপ্রধান।

বদান্য (ত্রি) বদতি সর্বেষ্ট্য এব দান্তামীতি মনোহন্নবাক্য-মিতি বদ্ (বদেরাক্তঃ। উণ্ ৩।১০৪) ইতি আয়ে। বছপ্রাদ, যিনি বছধন প্রদান করেন, অতিশন্ন দাতা।

"গতে৷ বদাঞ্জান্তর্মিত্যরং মে

मासृ ९ भरीवामनवावजातः ॥" (त्रष् €।२८)

২ বলগুবাক। (অমর) ত স্থনামখ্যাত ঋষিবিশেষ।

"নিবেই কামন্ত পরা অষ্টাবজো মহাতপাঃ।

ঋবেরথ বদাজত বত্তে কতাং মহাত্মন: ॥"(ভারত ১৩।১৯।১১) वार्माञ्च (क्री) कनविंदन्य, हिन्छ बामाम। भर्यात्र-- स्कन, वाछ-বৈরী, নেত্রোপম। ইহার গুণ--উঞ্চ, স্থলিগ্ধ, বাতনাশক, গুরু ও শুক্রবর্দ্ধক। (রাজনি°) ভাবপ্রকাশমতে মধুর, ৰলকারক, উষ্ণ, কলনাশক ও রক্তপিত্রবোগনাশক।

বদাল (পুং) বদ-ঘঞৰ্থে ক, বদেন বদনেন অগতি পৰ্য্যাপ্নোতীতি বদ-অল-অচ্। মৎক্তবিশেষ, চলিত বোদ্বাল মাছ। এই মৎক্ত হব্যকব্যে ব্যবহার করা যাইতে পারে। পর্য্যায়—পাঠীন। (ত্রিকা°)

"পাঠীনরোহিতাবাজে নিযুক্তে হব্যক্রায়ো:।" (মন্থ)

বদালক (পুং) বদাল এব স্বার্থে কন্। পাঠীন মংখ্য। (ভূরি প্র') বদাবদ (এ) অভ্যন্তং বদতীতি বদ-অচ্, (চরিচনীতি।

পা ৩।১।২৩৪) ইত্যন্ত বাৰ্দ্তিকোক্ত্যা নিপাতিতং। বক্তা। क्लांक्तिन् (वि) अछात्र क्शननीमः। वष्ट्रांची।

विन (अता) > वहन मिन भरनेत्र अश्वादांश । २ हिम्सी शक्किकात्र . ক্লফপক্ষকে বদি বলে, যেমন বৈশাথ বদি।

বদিতব্য (बि) বদ-তব্য। কথনযোগ্য, ৰক্তব্য।

विमिष्ठ (बि) वम-कृष्ट्। वस्ता।

"অপৃতাহৈ বাচঃ বদিতারঃ" (ঐত' ব্রাণ ৭৷২৭)

বদিবাস, প্রাচীন স্বনপদভেদ।

বদ্ৰহরী (দেশজ) অন্তেদ। (Limodorum or Geodorum bicolor)

वमृद्वा (शावनी) পৃতিগৰ।

वस्टाल (शावनी) ध्ववश।

ব্ধ (পুং) হননমিতি হন্-অপ্ৰধাদেশ:। প্ৰাণবিলোগজনক ব্যাপার বিশেষ। পর্যায়—প্রমাপণ, নিবর্হণ, নিরাকরণ, নিশারণু, প্রধাসন, পরাসন, দিহুদল, দিহিংগন, নির্বাসন, সংক্রপন, নির্বাহন, অপাসন, নিগুইল, মিইনন, ক্রণ, পরিবর্জন, নির্বাপন, বিলাসন, মারণ, প্রতিবাতন, উন্নাসন, প্রবধন, ক্রথন, উজ্জাসন, আলক, শিঞ্জ, বিশার, বাত, উত্মছ, হিংসা, ঘাতন, বিদারণ, পিজক, পাত, পরিষ, পরিবাতন, কলন, নিবারণ, সমাঘাত, নির্বাহন, মারি, মারি, মারি, উৎপাত, মারক, মরক, মার, সংঘাত। (প্রস্কল)

্ৰোন প্ৰাণীকে বধ করিলে পাপ হইয়া থাকে। কিন্ত আন্তভাৱী শক্ৰকে বধ করিলে পাপ হয় না।

"নাডভান্নিবধে দোষো হত্তর্ভবভি কশ্চন।"

(গীতার ১া২৬ টাকার স্বামী)

পারিভাষিক বধ---

"বপনং প্ৰবিণাদানং দেশানিবাপনং তথা। এব হি ব্ৰহ্মবন্ধুনাং বধো নাজোহক্তি দৈহিকঃ॥"

(ভারত দৌপ্তিক্প°)

ব্ৰাক্ষণদিগের মন্তক্ষুপ্তন, সমন্তধনগ্ৰহণ এবং দেশ হইতে নিৰ্মাণন করিবা দিলে, ভাহাতেই ভাহাদিগের ঘধ হয়। ইহাকে পারিভাবিক বধ কছে।

কালিকাপুরাণে লিখিত আছে যে, যে হলে এক ব্যক্তিকে বধ করিলে অনেকের মঙ্গল হয়, সেই বধ পূণ্যপ্রদ এবং বর্ণটোর, স্থরাপারী, অন্ধহত্যাকারী, গুরুপদ্মীগামী এবং আত্মাতী এই সকল ব্যক্তিকে বধ করিলে তাহাতে পাপ হয় না এবং এই বধও পূণ্যপ্রদ বলিয়া অভিহিত হইয়াছে।

তিকস্ত যত্র নিধনে প্রবৃত্তে স্থ ইকারিণঃ।
বছনাং ভবতি ক্ষেমং তত্ত পূণ্যপ্রদো বধঃ ॥
রুক্মন্তেরী সুরাপক ব্রহ্মন্ত গুরুত্বগং।
আত্মানং ঘাতরেদ্বস্ত তত্ত পূণ্যপ্রদো বধঃ॥"

(ফালিফাপু • ২ • জ°)

একের অস্থা বছকে বধ করিতে নাই, কিন্তু বছলোকের শাস্তির অস্থা একজনকে বধ করা বাইতে পারে, তাহাতে গাপ হয় না।

"নৈক্সার্থে বছুন্ হস্তাদিভি শাল্লের্ নিশ্চরঃ। এফং হস্তাদ্বহুনাং হি ন পাশী ভেন স্বারতে ॥"

(বামনপু e e ভ °)

वश अतः वक्त भूकंकार्यत्र वस्त्र, व्यरीए भूकंकर्याञ्चनारत्रहे वश अवस्म क्षेत्रा थारक।

শন কলিজাত কেনাশি বধাতে হছতেংশি বা ।
বধবজে পূৰ্বকৰ্বজে নৃপতিনন্দন ॥" (বাসনপূ° ৬২ অ°)
বতিতে বৈধহিংয়া বিচারক্লে অভিহিত হইরাছে বে,

ষজ্ঞানিতে বে পশুবধাদি করা হয়, ভাহাতে পাপ হয় না, বৈধ-হিংসা ব্যতীত হিংসা ক্ষিলেই পাপ হইরা খাকে। বঞ্চার্থ বে বধ তাহা অবধ।

শ্বক্সাৰ্থে পাৰবঃ সৃষ্টাঃ বজ্ঞাৰ্থে পাৰুবাতনঃ। অতস্থাং বাতমিব্যামি তন্মাদ্ৰজে বধোহৰথঃ ৮" (স্বৃতি)

কিন্তু সাংখ্যকানের সাংখ্যতশ্বনামূলীতে বাচশাতি মিশ্র লিখিয়াছেন বে, বজালিতে পশুবধ করিলে পাপ ও পুণ্য ছই হুইবে, বধলল বে পাপ তাহা ছুইবে এবং বজের পূর্ণতাজল যে পুণ্য তাহাও হুইবে; স্তরাং পশুবধে পাপ ও পুণ্য ছুইই আছে। বজ্ঞপূর্ণ হওরার স্থাতোগ এবং পশুবধজল পাপভোগ অবভান্তাবী। তবে বজ্ঞে পুণ্যের ভাগ অধিক এবং পাপের ভাগ ক্ষম, স্তরাং অনেক স্থাতোগ করিয়া অয়মাত্র ক্টভোগ করা ভত হুংধজনক নহে। [বিশেষ বিবরণ হিংসা শব্দে বেখ]

আক্রানতঃ গো প্রভৃতি বধ করিলে তাহার প্রারশ্চিত্ত করিতে হর। প্রারশ্চিত্ত করিলে বধজন্ত পাপ হইতে মুক্তিলাভ করা যায়। যজ্ঞাদি ভিন্ন অক্তত্বলে বধ করিলেই প্রারশ্চিত করিতে হইবে।

বধক (পু:) হস্তীতি হন্-কুন্ (হনো বধশ্চ। উণ্ ২০০৯) ইতি বধাদেশ:। ১ বধকর্তা, বধকারী। ২ হিংলা। ৩ ব্যাধি। ৪ মৃত্যা (সংক্ষিপ্তসার উণ°)

বধক, (বিধিক) উত্তরপশ্চিমপ্রদেশবাসী জাতিবিশেষ, দস্যা-বৃত্তি ইহাদের প্রধান উপজীবিকা, ছলৈ ভূলাইরা অসহায় পথিক অথবা তীর্থধাঞ্জীদিগকে ৰধ করে বলিয়া ইহারা বধক নামে পরিচিত; কিন্তু জাতিগত সাদৃশ্যে বাওয়ারিয়া ও বহেলীয়া-দিগের অফুরূপ। অধু ইহাদের মধ্যে রাজপুত্দিগেরই আধিকা দৃষ্ট হয়। বর্জমানকালে অনেক ধর্মপ্রতি মূললমানও ইহাদের দল-ভূক হইয়াছে।

মধ্রা, পিলিভিং ও গোরথপুর ফেলার এই দহাদিগের বাস আছে। ইংরাজশাসনে ইহারা এক্ষণে অনেকটা শাস্তভাব বারণ করিরাছে। ইহারা সময়ে সমরে রাজনী, ভিক্ক কথবা বৈরালীর বেশে ভীর্থবাত্রীদিগের সহিত সমন করে একং আবশুক্ষত ভীর্ষক্ষেত্রে বাত্রীদিগের ভীর্ষক্ষাব্য সম্পন্ন করে। এই ক্ষবসরে ইহারা বন্ধিণা ও প্রাণামীরণে বলপূর্কক কর্থ আধার করিবার চেষ্টা পার। অনেক সমরে বাত্রীদিগকে মুত্রা সংযুক্ত প্রসাদ সেবন করাইরা ভাহাদিগের ধ্বাসক্ষিক করিবার পর।

কালীয়াতা ইহাদের প্রধান উপাস দেবতা। ইহার দেবী পূলার ছাগ বলি দের, ছাগমাংস বাতীত পূগান, বেকশিয়াল ও গোধাদি সরীক্ষপমাংস ইহার তক্ষণ করিয়া থাকে। ইহাদের বিশাস, শূগালমাংস তক্ষ্ম করিবে শীতকালের রাজিতে বিচরণ কালে শৈষ্ঠা পাৰ্শ করিতে পারে না। ইহারা রাজনিরমের প্রতিবক্কতা সন্ত্বও গোপনে মন্ত প্রস্তুত করিরা পান করে। ডাকাতী করিতে বাইবার পূর্ব্বে ইহারা কালীমাতার পূলা করে, এবং সুঠনকালে দলত্ব মৃতব্যক্তির বিধবাকে বা তাহার বালক বালিকাকে ভরণপোবণার্থ লব্ধ দ্রব্যের অংশ দিতে দেবী সমক্ষে অলীকার করিরা থাকে।

বধকর্মন্ (क्री) বধ এব কর্ম। প্রাণবিরোগক্ষক-ব্যাপার, বাহাতে প্রাণবিরোগ হর, তাহাকে বধকর্ম করে। ইহার বৈদিক পর্যার—লড়োভি, প্রথতি, ধ্বরতি, ধ্বতি, ক্লাক্তি, বৃশ্চতি, ক্লাক্তি, , ক্লাক্তিরত, ক্লাক্তিরত, ক্লাক্তিরত, ক্লাক্তিরত, ক্লাক্তিরত, ক্লাক্তি, ক্লাক্তি, ক্লাক্তি, ক্লাক্তি, ক্লাক্তি, ক্লাক্তি, ক্লাক্তি, ক্লাক্তি, ক্লাক্তিন, ক্লাক্তিন, ক্লাক্তিন, ক্লাক্তি, ক্লাক্তি, ক্লাক্তিন,
(दामिन १। ३३)

वंशकर्म्भाधिकातिम् (পুং) बस्लामः। त्रास्तिग्क श्वागरत्। वंशकाम्। (রী) वंशकामनाः। (মন্ত ৪০৯৫)

বধজীবিন্ (ত্রি) বধেন প্রাণিবধেন জীবতি প্রাণান্ধারয়তি জীব-ণিনি। যাহারা প্রাণিবধ করিয়া জীবিকা আর্জন করে, বাতৃক।ইহাদের অর ভোজন করিতে নাই।(যাঞ্চবকা° ১০১৬৪)

বধুত্র (ক্রী) বধ্যতেহনেনেতি বধ (ক্রমি-নক্ষি-ব্রিক্রমি-পতি-ভ্যোহরন্। উণ্ ৩১০৫) ইতি অন্তন্। ১ অন্তর। (উজ্জল) ২ নাশ হইতে ত্রাণকারী।

বধদণ্ড (পুং) বধ এব দণ্ডঃ। বধরূপ দণ্ড, প্রাণনাশদণ্ড। (মন্ত্র ৮।১২৯)

বধনির্কে (পুং) নরহত্যাঞ্চনিত পাপের প্রায়শ্চিত।
বধস্থমি (প্রী) বধস্ত ভূমিঃ। বধ্যস্থান, যে হলে প্রাণবধ হর।
বধ্যস্থলী (প্রী) বধস্ত বা হানং ভূমিঃ। প্রাণিবধন্থন, চলিত
মুশানা পর্য্যার—আবাত, প্রধাত, বধহান, আবাতন। (হারাব')
বধ্যম (ব্রি) > নাশকারী অস্ত। ২ ইন্সের বন্ধ।

বধ্ন (ত্রি) করকারী অন্তধারী। 'গ্রহারেণ গ্রন্তবণনীলঃ' (সায়ণ) বধা (অব্য) বঁছা শকার্থ।

ক্ষাঙ্গিক (हो) বধা বন্ধনমেবালং যত, ততা কন্। কারাবেশ্ব, কারাগার। (ত্রিকা°)

বধাৰ্ছ (ত্ৰি) বধং অৰ্ছতীতি আৰ্ছ-অণ্। বধ্য, হননবোগা।
"বধাৰ্ছঃ সুবৰ্গতে দমং লাগাভ পুকৰ:।" (বৃহস্পতি)

বধিত্রে (ক্লী) বধ (অনিত্রাদিচ্চা ইত্রোত্রে)। উপ্ ৪০১৭২) ইতি ইন্দ্রা বস্তুম। (উজ্জ্ব)

বৃথিন্ (জি) প্রাণবিদ্যোগদগক্ব্যাপারো বধঃ সমিশাত্ত্ব-নির্দ্ পিত-নিশাদক্তে নাত্যতেতি বধ-ইনি। বধক্তা, বংকারী, বংগ্ৰবোজক, অহমতা, অহ্নপ্ৰাহক ও নিমিত্তক এই পঞ্চলন মধ্যেই পাপভাগী হইয়া থাকে: (প্ৰায়ন্তিভবি') ব্যীপুর, বিক্ষপার্থই একটা প্রাচীন প্রামঃ (ভবিত নামার্থ লাভাই)

वशु (जी) वश्।

ব্ধুকা (জী) > প্ৰবধ্ । ২ নৰপরিশীতা পদী। ও সৰশীনাত্র। ব্ধুটা (জী) বধ্টা। পিত্রালয়ে বাসভারিশী বিশাহিতা বা অবিবাহিতা কলা।

বধু (ত্রী) বয়াজি কোনা বন্ধ-উ-নলোপন্চ, যরা—বহতি সংসার-ভারং উক্তে ভর্তানিভিন্নিভি রা বহু (বহের্যন্চ। উণ্ ১৮৫) ইতি উ পশ্চান্তাবেশঃ। ১ নারী। ২ সুবা। ৩ নবোঢ়া। ৪ ভার্যা। (মেনিনী) ৫ শারিবৌষধি। ৬ শটা। ৭ পূজা। (অমর) বধুক্লি (প্রং) বাসিকার বিবাহবোগ্য কাল।

বধ্গৃহপ্রবেশ (পুং) বিরাগমন। ক্ষার স্বামীগৃহে স্বাগমন-কালীন শারীয় সম্কানবিশেব।

वधुक्तम (शूर) वधुरत्रव अनः । त्यावि । (जिका)

"কিতিপ্রতিটোহিশি মুখারবিলৈ

र्प्यनम्ब्यमधन्त्रकातः।" (माय शब्द)

वश्रुष्ठभग्रम (क्री) वश्रुमाः भन्नममिव, প্ৰোদনাদিকারভাকার:। গ্ৰাক্ষ, জানালা।

'বাভায়নং গবাক্ষঃ তাৎ বণুটশয়নং তথা।' (ক্রিকা°)
বধূটী (স্ত্রী) ক্ষমবয়লা বধু: ক্রার্থেটি, পক্ষে তীব্, যয় বধূ
'বয়ত চয়ম্ ইতি বাচাং' (পা ৪।১।২০) ইত্যক্ত বাতিকোতা।
ভীপ্। > পুত্রভার্যা। ২ স্থবাসিনী। (হেম) ও ক্সয়াবধ্।
"নৃতনললধরসচয়ে গোপবধূটীত্রুলচোরায়।

তলৈ নম: কুঝার সংসারমহীর হক বীকার ॥" (ভাষাপরি)

वध्नम् (बि) वश्नम्म । शूखवध्व म्थममानन ।

वधुराथ (११) वश्व करता।

বধুমুৎ (বি) ১ পত্নীযুক্ত। ২ লাগামগুক্ত পশুসৰ্থিত। ত জুলশৃক্ত স্থানের উপযোগী স্ত্রীপশুস্ক্ত। সাজ দিবার উপস্ক্ত (পশু)।
বধুযু (বি) ১ বে পত্নীকে ভালবালে। ২ বিবাহেচছু। ত ব্রীকানী।

বধুবন্ত্র (क्री) বিবাহকালে কভার পরিধের বন্ধ।
বধুসরা (ত্রি) নদীভেদ। ভ্রতগন্ধী প্রনোমার অক্রলদে এই ়

नती अपूर्ण व्हेताहित। यदेशविन् (बि) व्मानम्बर

वर्षामर्क (कि) मत्रनकाती। यथकत्र।

বধ্যেতি (জি) ৰধার উভতঃ। বধের নিমিতু উচ্চাক্ত, জপরকে বধ করিবার জন্ত উভত। পর্যায় — সর্বন্ধ, জাততারী। (জনর)

वटशालाम (गर) रथक छेलामः। वटशम छेलाम।

"ब्झालिटेबर्द्याभादेवकरवजनकरेत्रन् भीः ।" (अह अ१२४৮)

ব্ধু (क्री) আতিবিশেষ। (ভারত ভীমপর্ম)
বধ্য (ত্রি) বধমর্হতীতি বধ-বং। বধার্হ, বধের উপযুক্ত।
পর্যায়-শীর্বছেত। (জমর)

"গোত্রাহ্মণং বৃদ্ধমথাপি স্থতং বালং স্ববদ্ধং ললনাং স্বত্তীম্, ক্বতাপরাধানশি নৈব বধ্যাদাচার্য্যসূখ্যা গুরুবত্তথৈব।"

(दामनभू° ८६ 🕶°)

বধ্যন্ত্র (ত্রি) বধ্যং হক্তি হন-ক। বধ্য-বাতক, যিনি বধ্য ব্যক্তিকে হনন করেন।

বধ্যতা (ত্রী) বধ্যক্ত ভাব: তল্টাপ্। বধ্যক, বধ্যের ভাব বা ধর্ম। বধ, হনন।

বধ্যপট্ট (পুং) বধকালে যে ঢকা নিনাদিত হয়। বধ্যপাল (পুং) বধাং বন্ধনস্থানং কারাগারং পালয়তীতি বধ্য-

> "স্বাধনী বিক্রয়ক্ষধ্যপালঃ কেশরিবিক্রয়ী। তপ্তলোহে তু পচ্যস্তে যশ্চ শুক্তং পরিত্যব্বেৎ॥"

> > (विकूश्रुवान राधा >>)

বধ্যকু (জী) বধ্যক ভূ:। ৰধ্যভূমি, বধাস্থান, যে হলে বধ হয়।
বধ্যক।

বধ্যমালা (রা) বধকালে অপরাধীর গলে যে মাল্য অর্পণ করা ধার।

বধ্যশিলা (জী) যে প্রস্তরে প্রাণিহত্যা করা হয়।

वधायान (ही) वश्यक शनः। वश्यानः।

वशा (जी) वसरवांगां। वस।

পাল-অণ্। কারাগৃহ-রক্ক।

ব্র (ক্লী) বধ্যতেহনেদেতি বন্ধ (সর্বধাতৃভাইন। উণ্ ৪।১৫৮) ইতি ইন। সীসক। (ক্মনর)

বপ্তক (পুং) দীদক।

বঞ্জি (ত্রি) ছিন্নমূদ, চলিত খানী।

বৃত্তিকা (গং) খোজা বা ছিন্নমূল প্রন্য। (পা॰ ১।২।৫২ বার্তিক৩) বৃত্তির্বাহ্ (ত্রি) ছিন্নমূলণালী। যে জীলোকের স্বামী ধ্বজভল-রোগগ্রন্থ জ্বধা রমণাক্ষম এরূপ রমণী বৃত্তিমতী পদবাচ্য।

বিপ্রিবাচ্ (তি) > জনক। বৃধা বাকাবারী।

ষ্ঠ্যাত্ব (পুং) > আক্রণ করা ঘোটক। ২ বঙ্গাবের বংগণরম্পর।।
শেষাক্ত অর্থে ইহার প্রয়োগ বছবচনাত্ত।

বন, ১ সংভক্তি, সেবা। ২ শক। জাদিও পরকৈও সকও সেট।

লাট্ বনজি। লিট্ ববান। সুত্ অবানীও। বন—১ বাণিতি।

ও হিংসা। আই অথে জাদিও পরকৈও। পিচ্ বনরতি।

সুত্ অবীবনও। বস্থ বন বাজু—প্রার্থনা। জনাদিও আজনেও

বিকও সেট্। লাট্ বন্ধনে। স্ট্ বনিজা।

গুড্ অবনিট।

বন (রী জী) বনতীতি বন-জ্ব বা বছতে সেবাতে ইতি বন-হ; (পুংসি সংজ্ঞারাং হঃ প্রায়েণ। পা এ৩১১৮) ১ বহুকুকুসম্বিত হান।

> "পরন্ত্রিরং বোহভিবদেৎ তীর্থেহরণ্যে বনেহপি বা। নদীনাং বাপি সম্ভেদে স সংগ্রহণমান্ন মাধ।" (মহ ৮০৩৫৬) বন-স্ত্রীষে তীপ্। পুল্পধ্বা, যথা,—

"কালো মধু: কুপিত এব চ পুলাধবা ধীরা বহস্তি রতিথেনহরা: সমীরা:। কেলীবনীয়মপি বঞ্লকুঞ্জমঞ্ছ্-দুরপতি: কথম কিং করণীয়মদ্য" (সাহিত্যদ°)

পর্যায়—অটবী, অরণ্য, বিপিন, গহন, কানন, দাব, দব, আটবি, ভীফক, ঝাট, গুহিন, শত্র, সমজ, প্রান্তর, বিক্ত, কাস্তার।

গৃহে কিংবা গৃহের নিকট কিরপ বন প্রস্তুত করিতে হইবে, তৎসম্বন্ধে ব্রশ্ববৈর্ত্তপুরাণের শ্রীক্ষঞ্জন্মথণ্ডে এইরূপ উক্ত হইয়াছে। যথা—আবাদ স্থলের মধ্যে স্থলর তুলদী বৃক্ষ স্থাপন করা কর্ত্তব্য। উহাতে হরিভক্তি, পূণ্য ও ধন পূত্র লাভ হইয়া থাকে। এমন কি, প্রভাতে তুলদী বন সন্দর্শনে ম্বর্ণানের ফল লাভ হয়। এতত্তির গৃহের পূর্ব্বেও দক্ষিণে মালতী, যৃথিকা, কুন্দ, মাধবী, কেতকী, নাগেশ্বর, মল্লিকা, কাঞ্চন, বকুল এবং অপরাজিতা এই সকল স্থলর স্থলের পূপ্তৃক্ষ ধারা বন প্রস্তুত করা নিঃসন্দেহ কল্যাণকর।

বরাহপুরাণে মথ্রান্থ দাদশ বনের বিবরণ উল্লিখিত হইয়াছে।
যথা—মধুবন, তালবন, কুমুদবন, কাম্যকবন, বহুলবন, ভদ্রবন,
থাদিরবন, মহাবন, লোহজ ধবলবন, বিহ্বন, ভাতীরবন ও
বৃক্ষাবন।

[এই সকল পুণা বন দর্শন, বিহরণ ও তথায় সান জন্ত ফলাফলের বিভূত বিবরণ মধুরা শব্দে দ্রষ্টবা।]

বনবিশেষে মৃত্যু ঘটিলে উত্তম ধল লাভ হয়। দেবীপুরাণের জরণ্যোবরপ্রশংসায় বলা হইয়াছে,— দৈছব, নগুকারণা, নৈমিব, পুকর, কুকলালল, উপলাবৃত, জমুমার্গ ও হিমবাস প্রভৃতি নয়্তীবনে বা জরণ্যে বাহার প্রাণ বিরোগ হয়, সে ব্রন্ধলোকে উপনীত হইয়া পরম পদ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

বন বর্ণন করিতে হইলে কবিগণ প্রধানত: সর্প, বরার, গজবুধ, সিংহাদি হিংলাজ, জনশ্রেণী, গুক, কাক, কগোত প্রভৃতি পক্ষী এবং ভিজ, ভল ও দাবালি প্রাভৃতি বর্ণন করিবেন।

উদ্ধান সৰ্থে বৰ্ণনীয় বিষয় বধা—সর্গি, সর্ক্ষলপুসার্ত ভঙ্গ, লভা, শিক, মধুকর, মধুর ও হংসাদি পক্ষী এবং ক্রীড়াবাসী ও পাছশালা প্রাকৃতি : ্রতীউভাবে সরশিঃ সর্বাক্ষপণুশালভাক্রমাঃ।

"শিকানিকেকিহংসাভাঃ জীড়াবাপ্যকাগছিভঃ।" (কৰিকয়ক্তা) २ वर्ण। "वनमूट्ट नमूट्डबब्दव भिक्रः" (ब्रम् अ१२) 🧸 জালর। ৫ চনলাখ্য বক্ষণাত্র ভেল। "অঞ্চর্যাবঃ কর্তনা अविमरित परम निर्मुकः यन केंद्रसम्म ।" (थक् २।>३।৯) 'यरन সভজনীয়ে বন উদকে নিপ্তযাপ্যায়নেন শোধিতং গোমসুলয়খন-ৰুজং নয়ত। বৰা বনে ভৰিকারে চমনে নিপুজং দশাপবিত্তেণ

শোধিতং সোমং বনে চমসে উন্নশ্বং ।' (সারণ) अवत्। (१२००कः) दन वन नक्तको ज्ञानिः नविकः বন্যতে দেবাতে শীতাদিবারণার, বন্ধা বনতি হিংলার্থ: বছতে **हिरक्टराज्य जमः अथवा वश्च याद्रत्व जनावि आश्वातः वक्टराज** ৰাচ্যতে বৃষ্টিপ্ৰদানার, কিংবা বন শব্দে ভূ° পৰ বস্তুতে শব্যতে স্কুরতে ভোক্তিরিতি পুংসি সংক্রারাং বন-ব। ৭ রশ্বি। (নিঘণ্ট্র ১।৫।৮) (পুং) ৮ শঙ্করাচার্য্যের শিব্য বিশেষের উপাধি। বে সন্যাসী আশাপাশ বিমৃক্ত হইরা প্রবন্য নির্মানের নিকট ৰনে বাস করেন, ভাঁহাকে বন বলা বার।

"হরমো নিঝ'রে দেশে বনে বাসং করোডি য:। **সালাপাশবিনির্মুক্তো বননামা স উচ্চতে ॥**"

(প্রাণভোষিণী স্বধৃতপ্রকরণ)

३ खरकः। ३० क्ट्रमः।

दमञ्जाहु (पनम) र्न्ह्रक्त।

वनव्याना (दनक) जातकरवन, व्याजाना ।

ব্নপ্তক্তা (দেশৰ) ওকড়াভেন।

वसकृ (गूर) कृट्छन, ब्र्सा कृ, देश मानकृ वरेष छत জাতি। এই কচুর লাক থাওয়া বাইতে পারে, কিন্ত কচু था उन्ना योज ना ।

दन्कन्। (बी) वमनिभनी। (देवचकनि°)

यनकथुल (श्र) मधूत मृत्रम, छेउम अन। (रेवछकनि°)

वनकम्ली (बी) बानाडवा क्यनी। कार्डक्मनी, ब्रानाक्ना।

वनकम्म (पूर) बनकाषः कमः। वनमूत्रग, वूरना छन।

ৰেভপুরণ। ধরণীকন। (রাজনি•)

वनक्त्रीवर (ग्रः) भ्नाद्व भ्वास्त्र।

यमकत्रिन् (ग्रः) वनश्की।

বনকর্কটা (বী) আরণ্যক্কী, বনকাকড়ী। (রসেপ্রসারণ)

यनकद्विष्ठि (ग्रः) बहुगुक्किष्ठिन, हनिष्ठ कैक्टलान।

वनकर्णिका (जी) गत्रकीहरू । (देरक्किन)

वनकाम (वि) वनवमानम्।

বনকাপ্রিনী (বী) বনোহবা কাণ্যিনী। বনোহব কার্ণান। लकांत-विनर्गा, जात्रवाजी, यत्नावना । (तत्रमाना)

यनकूँ ((रामक) क्रास्क, ब्लाकूँ । यनकृष्ट्रि (११) यम-कास्कृ, न्रामा क्रूका । यनकुञ्जन (प्र) रिडएक, ब्रूमा शंकी 🎼

वनदक्षिमक (मी) स्ट्लाट्स् । वहे स्टल्फ क्रिक्ट्स ১৭টা ক্রিরা অক্ষর থাকিবে। ইহার স্থান, বছ এবং চতুর্ব जनता विक्रि । अर्थे इत्तात २,२,७,४,७,७,३,३०,३२, ১०, ১८ ७ ३७ चक्त गर्, **এ**ডडित वर्ग **७३। अहे इक्**र কেকিনৰ নামেও প্ৰনিদ্ৰ।

रेरात खेलार्यण---

িলনবক্ষণেক্ষণং সমুসভাবধুলোহকরং মধুসমন্বাগমে সদ্দক্ষেলিভিক্সসিভস্। শতিশ্লিডক্সডিং শ্ৰিক্তা বনশোবিগৰুং मञ्च करावानि कर निथ ! नवा स्वि मन्त्रकृष्णम् ॥" (इस्लाम्")

ইহার লক্ষণ----

"হন-ৰতু-সাগরৈবভিযুক্তং বলি কোকিলকং" (ছল্লোমঞ্জনী) वनकु छिन् (११) वनम्बन, ब्रामा छन । (रेवडमनि॰) वनरक्ट्यांनी (जी) (चंडिन चंडी, चंडिनिनना। (देवस्कर्मि) বনকোন্ত্ৰব (পুং) বনজ কোন্ত্ৰধান্ত, বুনো কুলোধান্ড (ভাৰঞ) वनद्वांति (जी) वरनाडवां रक्तिः। वनक वपत्री, वृरमा कृतः। পর্যার--কর্মশিকা, ফলকর্মশা।

বনক্রক (বি) > সোমপাবের বৃত্দোলগমন। ২ বিভিন্ন কার্চ কাৰ্চপাত্ৰে স্থাপিত। 'কাৰ্চেৰ্ পাত্ৰের্ বিপ্রাকীর্ণং বরা উদকানা-मर्वकर' (सक् २/> ৮/१ मध्य)

दन की छ। (बी) बरन की छ। बनरक्ति, बरन रव देवना कन বার, তাহাকে বনক্রীড়া করে।

वन्थ्य (जी) वन्ति। अक्षी वन।

বনগ (অ) বনং গচ্ছতি গম-ড। বনগামী।

বনগ্ৰু (পুং) বনোত্তবঃ গলঃ। বনহন্তী।

ব্**নগৃত্ (গুং)** বনগো, গ্ৰন্থ।

ব্নগরু (দেশব)গবর।

ব্নগ্রন (সী) গভীর বন ।

বনগুপ্ত (গ্রং) খণ্ডচর।

বনগুলা (গুং) বনজাত খল।

वस्तर्भा (जी) वसक श्रीः। शवतः। (ज्ञाननि -)

वन्दर्शाञ्ज (ग्रेर) वनर त्राञ्दल लाला वक्ष । > वाथ । वनर कनर গোচরো নি্যাসভানং বভ। ২ নারারণ। (ভাগ°২।১৮।০টাভার স্বারী)

(ডি) ও জলচর।

"মুক্তবড়া বজ্ঞাংকণভিয়া লহাল চাহো বনগোচরো সুলঃ।" ু জানু কাঞাই)

8 काननिक्ति । (मञ्च ५०२६२) दन्द्रचानी (बी) अवशासानीन বনক্সরণ (क्री) পরীরের জংশবিশেষ। সারণাচার্ব্যের মতে, "वमर डिम्बर जिन्नाफ विक्वाफ दम" धरे वार्थ कनकाती त्मणि वृकात्र। वन्यक्रम्स (हो) वनकाष्टर वननर । ३ व्यक्षक । २ प्रवर्गाक । (विष) ব্নচ্ঞিক। (ত্রী) খনে চল্রিকা জ্যোৎঘেব। মল্লিকা। (রাজনিণ) বনচম্পক (পুং) বনজাতশ্লপক:। বনৰ চলকপুলাবৃক। পৰ্যার-ৰনদীপ, হেমাহন, স্থকুমার। খণ-কটু, উঞ্চ, বাত ও কল্মাপক, চকুর দীপ্তিবর্ত্তক, ত্রণরোপণ ও বর:তন্তকারক। वस्तु (बि) बरम हज्रजीिक बम-हज्र-है। > क्नहांत्री, बर्सहत्र। भग्नछ नामक ष्यहेनशी वनज्ञक्तिएव । বনচর্ব্যা (জী) > বনচারী। ২ বনবাসী। वनहांत्रिन् (वि) वत्न हत्रजीिक हत्र-शिनि । वत्न विहत्रशंकात्री, बरनहत्र । বন্টাড়াল (দেশৰ) স্বাভেদ (Hedysarum gyrans)। वन्तेष्ठ (त्रन्य) वृक्त्वर (Flagellaria Indica)। व्यश्त नाम बनहाता। वनहालिका (अनम्) रूक्ताका। বনছাগ্ম (পুং) বনত ছাগঃ। অরণ্যছাগল। পর্যার-এড়ক, **निख्वाङ्क ।** (जिका॰) यत्न होश हैव । २ भूकत । (भक्तांशा) ব্নছিদ্ (অ) বনকর্তনকারী মাজ। (পুং) কার্চ্রিয়া। वनक्रम (श्र) कार्ककर्तन। व्याक (ही) वरन वरन वाहर हेि क्न-७। > वर्ष। "দীর্ঘেষমী নির্মিতাঃ পটমগুলেযু निष्ठाः विहात वनकाकः । वनात्रुप्तश्चाः । বক্রোমণা মলিনরস্থি পুরোগতানি (महानि रेन्द्रविमाणकमानि वाशः ॥" (রঘু ৫।৭৩) (बि) २ वनकाछ, वरनांडवमाज, वरन बाहा छे९भन्न हत्र। (পুং) ও মুক্তক্। (মেদিনী) ৪ গজা। (বিশ) এ বনপুরণ, बूरमां ७ म । ७ फूपूमकन । (तास्ति ।) १ वनवी अभूतक, वूरमां (नद्। ৮ वनिकन्छ। » वनकून्थ। (दिश्वक्नि॰) दस्काराकुष् (११) वनकूक्र, तूरना कुक्षा । বনজমূৰ্দ্ধকা (ত্ৰী) কৰ' টশুলী। চলিত কাকড়া শুলী। (বৈছকনি') পুত্তকান্তনে 'বনমূছজা' পঠিও দেখা যার। यगजनभाष्ट्रे (तनक) वृक्रका। चनजन्न (जी) इत्यामन्त्री। ('वश्यनि') वनका (बी) वान बांबाफ देखि अन-छ जिवार मेंग्। > वृत्त-वर्गे। २ **णश्कासामी । ७ नि ७ छी, ह्रविष**्नितिया। ৪ খেতকক্টকারী। ৫ বনতুল্সী। ৬ বনোপোদিকা, চলিভ বনপূঁই। ৭ অখগদ্ধা। ৮ গদ্ধপত্রা। ৯ মিল্রেরা, চলিভ মউরি। ১০ জ্বল্ল। (রাজনি°)

বনজার, ভারতবাদী পণ্ডলীবি-লাভিবিশেব, উত্তর-ভারত অপেকা দক্ষিণভারতেই ইহাদের অধিক বাস। বহু প্রাচীনকাল হইতেই এই লাভির বাণিল্যপ্রভাব লক্ষিত হইরা থাকে। আর্রিরান্ (Indica, xi.) এই জাভির উল্লেখ করিয়া গিরাছেন। দশকুমার-চরিতেও ইহাদের পরিচর পাওরা বার। পাশ্চাত্য লাভিত্য-বিদ্গণ বাণিল্য বা বাণিল্যকার হইতে অপল্রংশে বণিলার বা বনলার শব্দের উৎপত্তি ঘীকার করেন। এলিরট্ সাইহেব পার্নী "বীরলার" অর্থাৎ ধাল্লবাহী অর্থ হইতে এইরপ নাম-কর্ম করনা করিয়া খাকেন। তিনি এই শন্নিদর্শন হইহছ ভারতবাসীর সহিত পার্রসিক লাভির প্রাচীন সংল্যবের স্চনা মীমাংসা করিয়া খান। স্বধ্যাপক লাউএল উক্তমত সমীচীন বলিয়া শ্বীকার করেন নাই; তিনি বলেন, হিন্দি বন্-লালনা ঝ বন্বারণা শব্দার্থ হইতেই অধিক সম্ভব "বন্লার" শব্দের বৃৎপত্তি বিদ্ধ হইরা থাকিবে।

এই লাভির নামোৎপত্তিপ্রসঙ্গে পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণ বেরপ সিন্ধান্তেই সম্পৃথিত হউন না কেন, বহু প্রাচীন কাল হইতেই যে ইহারা হিন্দু-সমাজে প্রতিষ্ঠা লাভ করিরাছে, তাহাতে সন্দেহ নাই। ঐতিহাসিক উক্তিই ভাহা সমর্থন করিতেছে। দান্দিণাত্য-বাদী বনজারগণের মধ্যে মাথুরিরা, লবাণ ও চারণ নামে ভিনটা শ্রেণীবিভাগ আছে। ইহারা আপনাদিগকে বর্ণশ্রেষ্ঠ ব্রাহ্মণ ও রাজপুত জাতির বংশধর বলিয়া স্বীকার করিয়া থাকে। মাখুরিয়া শ্রেণী মখুরা হইতে এই অঞ্চলে আসিয়া উপনিবেশ হাপন করিয়াছে। অধিক সম্ভব, রাজপুত চারণগণ তীর্ধান্তা উদ্দেশে এবং লবাপেরা লবণের বাণিজ্য লইয়া এদেশে আসিয়া উপন্থিত হয়। পরে ভাহারা স্বর্ণা ক্যার অভাবে অস্বর্ণা ক্যার পাণিগ্রহণ করিয়া মূল লাতি হইতে পৃথক্ হইয়া পড়ে। ইহারা সকলেই শির্থক্য নানককে ধর্মপ্রক বলিয়া স্বীকার করে।

মুসলমান ইতিহাস আলোচনা করিলে জানা যার বে, দিল্লীর সমাট্যানের ধাজিণাত্য-বিজ্ঞবান্ত্রসন্দের সমর হইতে সমরান্তরে রাজানেশে রসদ লইরা বন্লারগণ দক্ষিণভারতে জাসিরা উপস্থিত হয়। এইরূপে ১৫০৪ খুটান্দে দিল্লীখর সিক্ষার বাদণাহের চোলপুর আক্রমণ সমরে প্রথম বনজারদিগের উপনিবেশ ঘটে। চারণগণ রাঠোরবংশীয়। ইহায়া ১৬৩০ খুটান্দে মোগল-সেনাণতি আসক জাহের জাইনে দাজিশাত্যে আগমন করে। এ সমরে ভাহাদের সম্প্রীর ভলী ও জলী নারকেরা এখানে আসে। আসক্লাহ্ ভাহাদের কার্যকারিতা উপলব্ধি করিরা তারশত্রে

বর্ণাকরে লিখিরা একথানি সনদ দেন। উহাতে এইরূপ লিপি আছে:—

> "রশ্বন কা পানি, ছাগ্রর কা হাস। দিন কা তিন খুন মু'রাক্। আউর জহান আসক্জান্কি বোড়ে বাহন তদি বলী কা বএল।"

ঐ ভলী বংশধরগণের নিকট স্বভাপি এই ছাড় পত্র স্থাছে। ছারদরাবাদের নিজাম তাহা দেখিরা তাহাদের খেলাত দিরাছিলেন।

ইহারা যাত্ বিভার বিখাস করে এবং অনেকে বিশেষ পারদর্শিতা দেখার। ভূত তাড়াইবার কল্প ইহারা দানা মন্ত্র আরুতি
করিয় থাকে। জর, বাতবাাধি ও উদরামর প্রভৃতি রোগ ইহারা
ভাইনের দৃষ্টি বদিরা নির্দেশ করে। কোন রমনীকে ভাইনী
ধরিরাছে বদিরা বিধাস হইদে, ইহারা ভাহাকে বন মধ্যে দইরা
মারিরা ফেলিডেও কুটিত হর না।

ইহারা সাধারণত: হিন্দু দেবদেবীর উপাসনা করিয়া থাকে। वानाजी, महाकानी (मतिवार), जूनजायनी, निव, मिठ्र-जूविवा ও সভীমুর্জি ইহাদের প্রধান উপাক্ত, এতত্তির আরও অনেকগুলি ছোট থাট ঠাকুরও ইহারা ভক্তিসহকারে পূজা করে। যক্তা-কার্যো প্রবৃত্ত হইবার পূর্কে ইহারা ব ব উপনিবেশের পার্বত্ব মিঠ ভূথিরার মন্দিরে গমন করে। দহ্যতার লিগু হইবার পুর্বসন্থ্যা ভিন্ন ঐ খনে কেহ গমন করেন না। তথার প্রথমে ইহারা দ্ব্যপতি মিঠুর পূজা দিরা একটা সতীমূর্ত্তি আনরন করে এবং একটা মতের প্রদীপ আলিয়া বর্ত্তিকালোকে ওভাওভ নিরীকণ করিতে থাকে। যদি ঐ বর্ত্তিকায় শুভ লক্ষণ প্রতিভাত इस, छोड़ा इंडेरन इंडांता मनरन वर्डियंड ट्रेस फेंक्स गृह मणूबंख পতাকাতলে ভূমিষ্ঠ হইয়া প্রণামপূর্বক অভীষ্ট পথে যাত্রা করে। नुर्भनकात्न देशका त्कान कथा करह ना, देशामत नःश्वात, अपि त्कह ভুলিয়া পথিমধ্যে কথা কর, তাহা হইলে সে বাতার ওভ হইবে না জানিলা ইহারা পুনরার মিঠু-ভূথিরার মনিরে প্রত্যাগত হয় এবং পুনরার প্রদীপালোকে গুভ লক্ষণ অবগত হইরা লুঠনে বহিৰ্গত হইরা থাকে। পথে হাঁচি পড়িলেও ইহারা কার্য্যে विश्व घरिक मत्न करत्।

কাহারও পীড়া হইলে ইহারা বালাজীর নামে উৎসর্গীকৃত ইটাদিয়া (হট-জাঢ়া) নামক বুবের পূলা দিরা থাকে। এই বুবের উপর কেছ কথন কোনরূপ বোঝা চাপার না, বরং লাল কাপড় ও কড়ির গহনা পরাইয়া সজ্জিত রাখে। ইহারা অফ নানককে ধর্মাঞ্চগতের একমাত্র কর্তা বলিয়া জ্ঞান করে এবং একমাত্র ক্ষাবের সর্কাধারত বীকার করিয়া থাকে। বৃক্ত এবেশবাসী বন্ধারদিগের মধ্যে চৌহান, বহরণ, পৌড়, বালব, পণবার, রাঠোর ও তুবার নামক প্রেণীবিভাগ আহে। বহরণ ও গৌড় বাতীত সকল বংশোগাধিওলিই ইনাবের বার-পৃত লাতিকের পরিচারক। কিংবলতী এই বে, ইহারা একসমরে অবোধাা ও হিমালর সমিহিত নানা হানে আধিপত্য বিভার করিবাছিল। বরেলী হইতে কলার রাজপুত্রর্গ ইহাদিগকে তাড়াইরা দের, ১৬০২ খুটাকে পাঠানসর্দার রহল বা বরাইচ কোর নানপাড়া পরগণা হইতে এবং ১৮২১ খুটাকে চাক্লারার হকিন্ বেহেলী সিজোলী পরগণা হইতে ইহাদিগকে তাড়াইরা দেন। বেরী কেলার লালে রাজপুত্রপ ভাহাদের মিত্র বন্ধার-দিপের নিকট হইতে ভারবায়ড় প্রাপ্ত বলিরা কিংবদন্তী আছে।

হাদে হি জেলার গোপামৌ নগরের বনজার টোলাবাসী বন্ধারের। বলে বে, ভাহারা মুসলমান সাধু সৈরদ সালরের বংশধর, আবার মাজাজবাসী বন্ধারগণের মুখে ভনা বার বে, ভাহারা রামান্ত্রতর বানরপতি প্রতীবের বংশে উৎপর হইরাছে। এই সকল আলোচনা করিলে বেশ ব্ঝা বার বে, বন্ধার কোন একটা বিশিষ্ট জাতীর সংজ্ঞানহে। সমরে সমরে বিভিন্ন অমিজ বা বংশের ব্যক্তিবর্গ স্থানাস্তরে প্রবাসী হইরা ইহাদের বৃদ্ধি অবলঘন করার বন্ধার নামে অভিহিত হইরাছে। এইরূপ দস্যার্তি বা শসাবাণিজ্য হেতু বন্ধার শ্রেণীভূক হইলেও বর্তমান জাতীয় পেবা অন্থ্যারে মূল্যফরনগ্রবাসী বন্ধারনিগের মধ্যে এইরূপে ধানকুটা, লবাণ, নন্দবংশী, জাট, ভূপিরা গুরাল, কোট-বার, গৌড, কোড়া ও মুজহর প্রভৃতি শ্রেণীবিভাগ হইরাছে।

পশ্চিম প্রদেশের বন্ধারণণ সাধারণতঃ পাঁচটা বিভাগে বিভক্ত, তর্মধ্যে তুর্কিরা বা মুসলমান শ্রেণীতে ৩৬টা গোত্র প্রচলিত আছে, বথা—তোমর, চোহান, গহলোত, দিলবারী, আল্বী, কনোঠা, বৃড়কী, ছর্কি, শেখ, নাথমীর, অন্বান, বনন, চক্রিরাহ, বহরারী, পদড়, কণিকে, ঘাড়ে, চল্লোল, তেলী, চরকা, ধলগিরা, ধানকিকা, গলী, তিতর, হিলিয়া, রাহ, মরৌথিয়া, খাখর, কড়েয়া,বহলীম্,ভাট, বন্ধারী, বরগলা, আলিয়া ও থিলনী। ইহারা রোজম খাঁর অধীন মূলতান হইতে প্রথমে সুরালাবাদ এবং তৎপরে বিলাসপুর ও তৎসমীপবর্তী প্রদেশে আলিয়া বাস করিয়াছে।

বৈদ-বন্দারণণ ভাট্নের হইতে আদিরাছে। ইহাদের সর্দারের নাম হুল্হা। ঝলোই, তথার, হতার, কণাহী, গথেমি, কছনী, তারিণ, ধরণাহি, কীরি ও বহুলীম নামে ১১টা পোঞ ইহাদের মধ্যে প্রচলিত। লবাণ (লবণবাহী) বন্দারগণ আপনাদিগতে গৌড় আকর্ণের বংশধর বলিরা পরিচিত করে এবং সমাট্ অরলজেবের সমার রণজ্জনাত হাইতে বান্দিশাতো আসিরা এবাসী হয়। ইংমারে মধ্যের ১১টা গোল প্রচলিত আছে। ইহারা সকলেই ভূমিনীরী।

সুকেরী বন্ধারণণ বলে যে, নকার ভাহাদের এক নাবকের
ভাঙা (পিবির) ছিল। তবা হইতে ঐ বংশ ঝাবর নগরে
আসিরা বাস করিলে ভাহারা সাধারণে নকাই বা মুকেরী নামে
পরিচিত হয়। এই কণা সমর্থনের কল ভাহারা অভাত্ত উপাখ্যানের করনা করিরাছে। লে বাহাই হউক, ভাহাদের
ক্ষণত নামে হিন্দু ও সুসন্মানের সংমিপ্রণ দেখিরা মনে হয়
বে, ভাহারা উক্ত উত্তর আতির সংমিপ্রণ গঠিত। ভাহাদের
করে নিরোক্ত বংশাঝা প্রচলিত দেখা বার, যথা—অববান,
মোগল, মোথর, চৌহান, দিম্লী, চৌহান, ছোট-চৌহান, পক্ত ভক্রা চৌহান, ভাম্হর, কাঠেরিরা, পাঠান, ভরীন্-পাঠান,
বোড়ী, বোড়ীবান, বলারোরা, কার্ডরা ও বহুলীম।

বহন্নপ বনজারগণ সাধারণতঃ হিন্দু। ইহাবের মধ্যে মুসলনানও আছে। মুসলমান শ্রেণীর ভাষ বনজার হিন্দুগণ গৃহস্থাপ্রমাচারী নহে। ইহাদের মধ্যে রাঠোর, চৌহান, পণবার,
তোজক ও ভূজিরা মানে করটা বংশবিভাগ দেখা বার। ঐ সকল
বংশের মধ্যে জাবার গোত্রবিভাগ নির্ণীত হইয়াছে। রাঠোর
বংশের মধ্যে জাবার গোত্রবিভাগ নির্ণীত হইয়াছে। রাঠোর
বংশের মধ্যে মুছারী, রাছকী, মুর্ছাবং ও পণোত নামে চারিটা
থাক আছে, তর্মধ্যে মুছারীতে ৫২টা, বাহকীতে ২৭টা, মুর্ছাবতে
৫৬টা এবং পণোতে ২৩টা গোত্র প্রচলিত আছে। চৌহানবিগের মধ্যে ৪২ টা গোত্র বিভ্রমান, ইহারা স্ননপুরী হইতে
এবেশে আসিরাছে। ভূজিরাগণ গোড্রাজ্বনের সন্থান। চিতোর
রাজধানীতে ইহাবের বাস ছিল। সেথান হইতে ইহারা
মান্দিবাত্যবাদী বুইরাছে। ইহাবের মধ্যে ৫২টা গোত্র প্রচলিত।
পণবারগণ দিলীবাদী ছিলেন। ভাছাবের মধ্যে ৫২টা গোত্র প্রচলিত।

এই বহরণ বনয়ারগণ অভাক কাতির ভার সংগাতে বিবাহ দের না। মাট জাতির কভাবাহণ করে বটে, কিছ আপনালের কভা তাহাদিগতে সমর্পণ করে না। নাএক বা লারক বনজারগণ এই জাতিত্বক হইদেও সামাজিকভার সাধারণ প্রেণ্ট অপেকা অনেক উরত। ইহারের মধ্যে মারপুতেরই সংখ্যা অধিক। গোরুপুর বিভাগের নাএকগণ আপনালিগতে সমাতা রাজণ বলিরা পরিচিত করে এবং শিলিভিতে তাহারের আদিবাস ছিল বনিরা আনাজ। ইহারা সম্প্রিণে হিন্দু। সমাতে ইহারের বহু বিবাহ প্রচলিত আহে বটে, কিছ বিব্বাবিশ্ব প্রচলিত নাই। বদি কোল অবিবাহিতা বালিকা অপর প্রত্রের সহিত অবৈধ প্রাণ্ডে বর্গ ভারা হইলে তাহার শিতাকে একটা আতীর ভোক বিতে হয় এবং কটাকে সত্যান

নারারণের ক্যা তুনাইরা পরিষ ক্রিরা গঙ্গা হর। বিবাহের সমর ব্রের পিতার হতে ক্সার পিতার "ভিলক্ষান" বরপ ক্সি টাল্লা দিবার বিধি আছে, প্রকারতের বিচারে সকলেই ব্যক্তিটারিনী পরীকে ত্যাস ক্রিডে পারে। ইহাদের মধ্যে বিধবা বিবাহ নাই বলিরা জ রমনী আর ব্লাভি-স্থানে পরি-নীতা হইতে পারে না। জন্ম, মৃত্যু ও বিবাহ বংগার তাহারা ব্যাবিধি সম্পন্ন করিরা থাকে। শব্দেহ লাহ ও অপোচাঙে প্রাক্তি নিশার করে। স্ক্রিরা ব্রাহ্মপেরা সকল কার্য্যে ইহাদের বাজকতা করিরা থাকে।

বিবাহকালে ইহারা উপর্যুপরি ৪টা করিয়া সাত থাক কর্ম সাজার এবং তাহার মধ্যন্থলে হুটা মুবল ও একটা জন্মের কলস রাথিয়া দের। ইহার সম্মুখে মৃত্তিকালিও হালে চৌকা কাটিয়া পুরোহিত হোম করে। তলনজ্ঞর সেই নবদম্পতী গাইট হুড়া বাবিয়া সেই মুবলের চারিদিকে সাজপাক ঘুরে। পরে তাহারা একস্থানে আসিরা বসিলে ক্লার পিতা বরের পা পূজা করে এবং ক্লা সম্প্রানের বোড়ক স্বরূপ ২টা বা ৪টা টাকা দের। ইহাই বড় মরের বিবাহ। নির শ্রেণীর মধ্যে ক্লাকে সরের গ্রের ক্লাকে বরের গৃহে লইয়া 'ধরৌনা' মতে বিবাহ দেওয়া হয়। তদনজ্বর আলাতিভোল হইয়া থাকে।

বনজীর (প্ং) বনোন্তবো জীরঃ। বনজাত জীরক, কটুলীরক, চলিত বনজীরে। ইহার পর্যার—বৃহৎপালী, হল্পত্র, জরণ্য-জীর, কণ। তুণ-কটু, শীতদ ও ব্রণনাশক। পাকে— কটু, ক্ষমির, বীণন, জীব্জরহর ও কচা।

বনজীবিন্ (পুং) কাঠুদিলা। যাহারা বন হইতে কাঠসংগ্রহ করিলা বিজেদ করে।

বনজপুলী (জী) তপুলীরকের। (Amblegina polygonoides) ২ বনতপুলীর লাক।

यम् अक्ति (११) अर्ज्नवृत्त । (रेवडकि)

ব্যাতিন্তে (প্রং খ্রী) বনের বনোন্তবের মধ্যে ডিজা, ডিজা বা।
হরীতকী।

বনজিক্ষা (ত্ৰী) খেডবুহা বা গ্ৰীমা নাম গডাভের।

বন্তি ক্তিকা (জী) বন্তিকা-কন্। টাপি খত ইছং। ১ পাঠা, চলিত আকনাদি। [ইহার খণাদির বিষয় পাঠাখনে এইড।] ২ উৎপদশাক। ইহার খণ-ডিক্স ও শীতল এবং কটু ও কক্পিডর। (চরক্স' ২৩ খাঃ)

वनावश्र्य[क] (१९) > व्यक्तिवश्र्य । २ देखवाल्ये । (देवक्रिनि) वन्तृ (वि) > अन्तर्गाकारी । २ (क्रांका वा शृक्ष्य) 'वनवः वनकः नक्रकातः वदा वनाराध्यमसः ज्ञार नववदः (क्रांकातः।'

(क्ष् शाक्ष नावन)

· वर्गीवान 'वनवः' भरक 'दनवाः' वर्षाद वर्षाहे क्रिकां श्रवात দানকারী অর্থ করিয়াছেন, কিন্তু বর্তমান টাকাকুছিল 'ব্দন্' শব্দে প্রবল ইচ্ছার্ক্ত এইরুণ কর্ম করিয়া থাকেছে। 🛣 यम् (प्र) दनः जनः नगाजीकि मा-क। । (वि) ২ বনদাভূ-দাত্র। यममञ्ज (पूर) यनकारण प्रयनः । अत्रग्रप्रमनक वृक्तः । (वास्ति") চলিভ বনদনা। বনদারক (খং) জাতিবিদেষ। वनमार् (११) मायमञ्जा । अधिरवारंश वन अध्यनमा वनमीर्भ (प्रः) वनक मीर्भ हेव। वनक्रणक। বনদীয়ভট্ট (পুং) একজন প্রসিদ টীকাকার। বনতুৰ্গা (জী) > ভজোক্ত দেবীমূৰ্ত্ত। পূৰ্ববন্ধে বনছ্ৰ্গাপুৰা বিশেষ সমারোহের সহিত হইরা থাকে। এই পূজা প্রারই কোন প্রসিদ্ধ বিটপিবেষ্টিত খোলা বা উন্মৃক্ত চন্ধরে সমাহিত হয়। মানসিক করিয়াও অনেকে এই পূজা দেন। २ जन्नांमक जन्नरङ्ग । ७ উপনিষদ্ভেদ । বনদেবতা (জী) বনের অধিচাত্রী দেবতা। (উত্তরচরিত ২) বনজ্ঞ (পুং) চারবৃক্ষ। (রাজনি°) চলিত পিয়াল গাছ। वनस्वम (११) > अर्क्नर्कः । २ कांश्रेष्टः । (देककिने) বনভিপ (পুং)বনহণ্ডী। বনধারা (জী) রক্ষশ্রেণীর মধ্যবন্তী পথ। বনধিতি (খ্রী) > ছেত্তব্য বৃক্ষসমূহে নিধাতব্য (কুঠারাদি অন্ত্র)। ২ মেখুমালা। "বিমা ব্যুন্ধিতিরপক্তাৎস্বের অধ্বরে পরিরোধনা গোঃ" (ঋক্ ১١১২১।৭) 'বনধিভিবনে ছেত্তব্যে বৃক্ষসমূহে নিধান্তব্যা, * * * বৰা বনসুদক্ষমন্তাং ধীরত ইতি বনধিতি-ৰেঘমালা ।' (লারণ) বনধেকু (গুং) অরণ্যজাত গো। গবর, চলিত ব্নো গরু। व्यन्त (ही) > धन । २ हेव्हा, वामना । जित्रार गेंग्र यनन मिखा, जर्कनः अव्विधन अदन्ता। বননিত্য (গং) রৌদ্রাখের গুরভেদ। वनमीय (बि) वास्नीय। वस्त्रेर्*(कि) केंक्कविनिष्ठे। "शांशः ऋत्मकः विधिकवनविः।" (ঋৰু ১ - ১২১১৫) 'বনবভি উদকৰতি' (সাৰণ) ्र मुख्याना धन । (बक् वाप्रावः) यंग्रेश (पूर) अवनवाती। - २ कार्ट्रविता। ७ वनवक्कः। ्यनश्राम (श्राः) वनक् मर्ग। यमभक्तम् (मी) बहालाबरणम कृष्टीम काम । এই बारटन वृथितमानि **াক্ষা ক্রের কান্যক্**ষমে অবস্থিতি বিবরণ বিবৃত আছে। वनभनां पूर विकास भनां (Urginea Indice, syn.

Scille Indica.) indian equill. 44 | 44 | কংশা শিরাজ। তেলক—নকবৃদ্ধিগতঃ। বোধে—স্নানকানা। दमशङ्गद (११) क्ममिव निविष्: शङ्गद्वा वक । त्वाकांबन वृष्ट চলিত সভিমাগাছ। यमभीरक्षम (भूर) वत्म भारक्षमः भाभिक्षः । बाधः । (भूक्षम्मः) বনপাদপ (খং) বনজর্ক। বনপাৰ্ছ (পৃং) বনের পাৰ্যন্থিত খান। বনস্মীপ। वनशाम (भूर) वमतक्र । वनिश्राली (बी) वरमाख्वा निम्ननी। छणिछ वर्गानेपून, एहाउँ শিপুল ! ময়াঠী — রাণপিপুল, ক্সাড়ী---কাহিশিপ্ললী। নংকত প্রার-ক্লপিয়লী, ক্লপিয়লী, বনক্পাা ইহার ৩০--ক্টু, উঞ্চ, ডীক্ল ও স্নচা। এই ব্যাপিপুল কাঁচা অবস্থায় ওণ্যুক্ত, ওছ হইলে ওপ কমিরা যার। "আমা ভবেদ্ধণাঢ়াখ ওকাঃ বর্মধণাঃ বুডাঃ" (রাজিকি) বনপীত (গুং) ভূমিকাত গুগ্ গুৰু ৷ ২ কণপুগ গুৰু ৷ वनश्रुक्शा (श्री) वनशिव निविष्य भूनाः वज्ञाः, होन् । अक्रभूनाः, **পতাহবা। (রাজনি**°) वनश्रुक्भात्रम् (वि) वनश्रूक्षत्रकृतः यमश्रुराष्ट्रीरम्य (११) बाबहुन्। (दिक्रक्ति°) বনপুতিকা (বী) আরণাপুডিকা, চলিত বনপুঁই চার খ্বণ—কটু, ভিক্ত, উষা ও ফচ্য। यम्भूतक (पर) बनजाठः भूतकः शैक्षभूतकः। পুরক। (রাজনি°) পাঠান্তম —'বনপুর'। বনপূৰ্বব (খং) প্ৰাচীন গ্ৰামভেষ। द्रमञ्जूकः (बि) जनहाती। वस्ककः। [वस्थकः (१९।] বনপ্রবেশ (পুং) বনগদন। কোন দেবমূর্ত্তী গঠনাভিলাবে बनव वृक्ष (मोक्ष) रहमनार्थ नमनवरन वनमरक्षा यारखादनवविरनव। বনপ্রক্ (मी) > মধিতাকাহিত বন। ২ স্থানবিশেষ। ৩ বান্প্রস্থ। व्यथनात्रिय (वि) वनगमनकात्री। वसिश्र (मी) वस्तव् वनकार्ण्य् मर्गा (क्षत्रः। > वक्। (बाजिनः) (११) ६ (साविम । "ক্ষরি বনপ্রির বিশ্বত এব কিং वेशिक्टका विवटमा छवछाधूमा । বদনকৈৰ কুছুদ্বিতি বিভয়া, নপততশ্চরপৌ ধরপৌ তব 🚛 (উভট) ও বিজীতক বৃক্ষ। ও পঠী, চলিত পটী।, ৫ প্ৰথম্প 🛊 यमका (जी) बनवा वृक्त कनारका । हेरा पहिएक मिहे। वनकुता (ही) गुलदुक्तरक्यु। देशक माना नीविद्रत क्ष्यद

ल्यात । किक्क वनमूरमत माना परिवत "वनवानी" क्वेबाहिरमन ।

বনবর্বটো (বেশক) বর্বটাতেছ।
বনবর্ববার (পুং) ক্লভার্কি, ক্লভণত ক্লা ভূলগা। (রাজনি')
বনবর্ববারিকা (ত্রী) বনকাত জর্জক জাতীর পত্রশাক, চলিত
বনবাব্ই ভূলগা। নরাঠা—আজবলা নেছ। কণাড়া—অগভি
জলরা। ইহার গুণ--তুগভ, উঞ্চ, কটু, বনিম, পিশাচ ও
ভূতর এবং রাণ-স্কর্ণণ। (রাজনি')

বন্দরান্ত (দেশক) শৃকরকাতিবিশেষ (The wild Hog)।
ইহাবের ওঠের পার্থনেশ দিরা গক্ষকসন্থ দক্ত বাহির হয়।
ঐ রক্ত হারা ভাহারা ক্রোধের সমর শক্রকে আঘাত করিরা
ভাহার বের ক্ষতবিক্ষত করিরা বের। আর্থানাত্রে এই মাংস
প্রিত্ত বলিরা গৃহীত হইরাছে। সেই কারণে অনেকে ইহার
মাংস থাইছে ব্যবহা হিরা থাকেন। [বরাহ দেখ।]

বনবহিণ (প্ং) বছ সমূর।

वनवाञ्चक (शः) बाजिविध्यव ।

বনৰাজ্ব (পুং) বিভাগ লাভিজেন, (Felis caracal) ইংরাজিতে

Tiggreat বলে। ইছারা ব্যাস লাভীর এবং দেখিতে জনেকটা

- বাবিদ, হাঁন প্রভৃতি মারিয়া খার। কিন্তু মানুব দেখিলে ভরে

সরিয়া যায়। [বিড়াল গলে বিজ্ঞ বিবরণ দেখ।]

বনবীক্ত (পুং) বনত ব্যোজ্যবা বা বীজো বীজপুরক:। বনবীজপুরক, বনমাতুলদ। (রাজনি°)

यनरीक्षक (श्रः) वसवीक्ष-चार्च क्यू। वसरीक्षण्तक। (ताकिने)
यनरीक्षण्यक (श्रः) वस्ताक्ष्यता वीक्षण्यः। व्यावनाका
वीक्षण्यः। भर्गात-वसक, वसरीक्षक, वसरीक्ष, व्यावनाता, श्रवाता, व्यावनाता, स्ववन्ता, स्ववन्ता, भिक्षा, स्ववन्ता, प्रत्ये, माकृतिक्षा, भन्ती, महाक्ष्या। देशात व्यन-व्या, क्ष्ण्रे, व्यक्ष, क्षण्टिक्ष, व्यवर वाक, व्यावस्था, क्ष्या, व्यक्ष व्यवसायकः। (ताक्षिके)

यम्बूदना (जी) काक्निमा (देवक्रक्ति)

বনভোজন (বেশক) পাঁচ জন বন্ধ নিশির। কোন বনে বা কোন বাগান বাড়ীতে নিজের রাঁধিরা বাড়িরা আনোদ-উৎসবের সহিত বে থাওরা বাওরা করে, তাহার মান বন-ভোজন। পরস্পর চাবা বিরা থাত ত্রব্যাবি কিনিরা আনিরা কোন বাড়াতে রাছিয়া থাওরার নামও বনভোজন। ইহা বেশা-জরের প্রথা। ইংরাজীতে ইহাকে Pio-nio বলে। আনাবের সেপেও বনভোজন পাস্ত্রসম্মত বলিরা প্রচলিত। বনভোজন— প্রধাহ-বচন-প্রবাধ প্রকা বনভোজন-বিধি প্রহু গাঁচ করিছে উহার বিশেষক জানিতে পারা বার। কলিকাভার নিকট আজ কাল ওলাবিবির পূজা দিয়া এই পুত্রে বনভোজন প্রচলিত ক্ই-রাছে। তথার ভোজনাদি সমাপনের পর সারংকালে গৃহপ্রভাগত ব্যক্তি গৃহক্তীকে আসিরা জিজাসা করেন, "বরে কেন আলোঁ"? গৃহাভ্যন্তর হইতে গৃহিনী উত্তর দেন "গিরি গেছেন বনভোজনে ছেলেশিলে আছে ভালো।" গৃহক্ত্পণ পুত্রগণের মলন কামনার ওলাউঠা দেবীর পূজা লইরা বান এবং দেবীখানের সমীপত্ব বনারত স্থানে বীর ব্যরে বনভোজন করিরা আসেন।

वनमङ्ग् (तमक) वृक्तरणमः।

বনমঞ্জরী (জী) বননিশ্ব পী। (বৈছক্নি°)

বনম্কিকা (জী) ৰনত মক্ষিকা। দংশ। চলিত ডাঁশ।

বনমব্রিচ (দেশন) বৃক্ষবিশেব।

বনমল্লিকা (স্ত্রী) ১ খনামধ্যাত শতা, চলিত দেওতি। ২ দেওতি স্থলের গাছ।

ব্নমূল্লী (জী) বনোত্তবা মন্ত্ৰী, বনজাত মল্লিকা। (পলরজা[°]) ব্নমাকুষ (দেশক) > বনজাত মাহুৰ। ২ বনবাসী।

৩ খনামপ্রাসিদ্ধ গুরুপারী চতুম্পদ জীববিশেব, অনেকাংশে গরিশাবাপুছেহীন জাতীয় বা শ্বরপুছে বানরের মড়; কিন্তু बानरबब छात्र श्रृष्ट्रिक्ट वा श्रथक्ती नाहे। ब्रुद्वाशीव व्यानि-তত্ত্বিদ্গণ বিশেষভাবে ইহাদের হস্ত পদ, বক্ষ প্রভৃতি অভি এবং দক্তাদি পর্যাবেক্ষণ করিরা মহুষ্যকাতির সঙ্গে ঐ রকলের ৰথায়থ সানুত্র নিরূপণ করিয়া সিশ্বান্ত করিয়াছেন বে, এই জাতীর পশুশুলি চতুম্পদ বানর ও মানবের মধ্যস্থলে আসন শাভ করিতে পারে। মহুদ্যের সহিত পার্থক্যের মধ্যে ইহাদের পদায়ুষ্ঠ 😘 পদাগ্রভাগ লখা ও কোমল বলিয়া নির্দেশ করা ষাইতে পারে। পদাসুলিগুলি পরম্পর পৃথক্। স্মারও ইহানের কথালের সহিত নরক্ষালের তুলনা করিলে দেখা যার যে, মন্তুয়াপেকা ইহাদের হস্ত ও পদের আকুলি বুহৎ, আমু হটতে পালস্থি এবং **লামু হটতে কল্যাস্থি ধর্মা**কার, মণিবঙ্ক হুইডে ক্যুই পৰ্যান্ত বিভূত পঞ্জান্থিকা নিম্নদিকে অধিক বিভুক্ত, কটির অভি সক অখচ লখা ; করোটী চেপ্টা ও মুখের पिटक विश्वक । भव = कर्कन 🛊 ; (भोवन (Canine) 🔩 हिम्ली 🛔 ; চর্মাণ 🖫 লোট ৩২টা। মোট স্বধার, গেহোর্ছভাগের পঠন ধরিয়া বলিভে গেলে শিশ্পানীর সহিত মানৰ কডালের অধিক সামুক্ত আছে একা উত্তমালের কীলকার্ডাত করোটা नानीरि (Sphenoid with the parietal bonce), बावन नवराष्ट्रि क्यांकित निकृषि (Bospula in its greater broadth) ও অধোষেকের অস্থিগঠন লক্ষ্য করিলে গুরুত্ব-উটন্তেই মানবের অভি নিকট বাস্ক্রসম্ম বলিতে বইবে। এইরপ অভিনংখান লক্ষা করির। বৈজ্ঞানিকগণ ইহানিগকে ওরক, নিশ্যালী ও গিবোঁ নামে তিনটা স্বতন্ত থাকে বিভক্ত করিরাছেন। এই ওরক ও নিশ্যালীই আমানের কেনে বনমান্ত্র নামে পরিচিত। মধ্য বীপের ভাষার 'ওবক্ত উটান' প্রক্রে স্থোমান্ত্র কর্মান

মলর দীপের ভাষার 'ওরজ-উটান' খব্দে বুনোমান্ত্র ব্রার । এই অস্থ তথাকার অধিবাসিবর্গ এবং বর্ণিও .ও স্থমা রাদীপবাসিব লগ দিপদচারী এবং শাখা-মূগের ভার হতপদ-ব্যবহারভারী মসুব্যাকার এই বস্ত পত্তকে ওরজ-উটান শব্দেই উল্লেখ করিবা থাকেন। পরে ইংরাজ-ত্রমধ্বনারীদিগের অস্থগ্রহে এই ভারতীর দীপপুঞ্জাত জীব দেশীর ভাষার orang-outang শব্দে পরিগৃহীত হইরাছে। প্রাণিতত্ববিদ্ লিনিয়াস ইহালিগকে Simia প্রেণীভুক্ত করিবাছেন। বৈজ্ঞানিকের ভাষার ইহারা Pithecus জাতিগত Chimpanzeeর একটা শাখা মাত্র।

বৈজ্ঞানিকগণ বানরপ্রেণীর জীবসককে (Simindæ) আরুতি-প্রভেদে, অথবা জাতিগত পার্থক্য অনুসারে ক্ষেপ্র বিশিষ্ট থাকে বিভক্ত করিয়াছেন, নিয়ে তাহায় একটা সংক্ষিপ্ত তালিকা প্রায়ত্ত ইইল। ঐ তালিকা হইতে বানরের সহিতে ইহামের ক্ষেপ্র পার্থক্য, তাহা সহজেই উপলব্ধি হইবে।

বানরজাতি (Simiadæ)

Siminæ Hybolatinæ Colobinæ Papioninæ উল্ক (Geboon) (হন্মান্) (নীলবানর)

শিশালী (ভাক্রিকা) গরিলা (আফ্রিকা) বনমান্ত্র (Troglodytes nigar) (Tr. gorilla) (Simia satyrus)
[বিহুত বিবরণ বানর শব্দে দেখা]

এই বানর জাতির মধ্যে S. Satyrus শ্রেণীর বনমাম্ব নামক পণ্ডগুলি দেখিতে ঈবং লালবর্ণ। ইহাদের মৃথাপ্র
(muzzle) বিস্কৃত ও স্চাপ্র এবং মৃলদেলে কিছু গোল, কপাল
পশ্চাদিকে চেণ্টা, উর্দ্ধ অন্ধিপুটান্থি (Supraciliary ridges)
দ্রুখ, কিন্তু করোটার উভর পার্বাছি-মধ্যন্থ অপ্রপশ্চান্ম্পী বাণস্বেণীসন্ধি (Sagittal and lamboidal crests) অপেকার্কত
নৃদ্ধ। মৃথকোণ ৩০°; হল্কোর ক্লে, উভর পার্বে বালপটা
পঞ্জান্থি। বুলান্থি গুই ভাগে বিভক্ত (Sternum in double
alternate row), হত্তবর শুল্কপ্রছিবিলবী, পা লবা ও সক,
আনেক সমর লথ থাকে না; বিভীরবার দক্ষোন্যমের সময়
হত্ত ভাহার আভ্যন্তরিক ক্ষিত্র সংবৃত্ত হইরা বার। ইহারা
থার ৫ কিন্টের উচ্চ হর না। প্রবাজা ও বর্ণিও বীপে ইহাবের
বাল আছে।

জীবভন্দবিদ্যাপ বলেন, জীবলাভির পঞ্চ শ্রেকীর সংখ্য পরিশা

নামক পণ্ড এখন খান অধিকারে নমর্থ। বিশ্বালী ঠিক ভাষার নিরাসনে অধিটিত এবং ওরল-উটান ভৃতীর ভানের অধিকারী। ভারণ প্রাকৃতিক জানেও ইহাদের মধ্যে ভরত্বরূপ পার্থকা দৃষ্ট হয়। আশ্চর্যের বিষয়, ঐ তিন শ্রেমীর মধ্যে ওরজ্বপ সর্বাণ্ণেকা বীর্ষাকার এবং সর্বতোভাবে মহুযোর আন্কৃতিবিশিষ্ট। ইহাদের বন্ধ, বাহ ও হত্তের গঠন মাহুবের ভার ভূল্যপরিমাণ-বিশিষ্ট। বাছুবেরও বেমন পরস্পরে আন্কৃতির ভেগাভেগ দৃষ্ট হর, ইহাদের মধ্যেও সেইল্প সুপাকৃতির ইতর বিশেব আছে। ওরজের মধ্যে বাহালা বেলী বৃদ্ধিনান, ভাহারা অনারাসেই বৃধের ভাবে ও হাবভাবে বিশেব বিচলপভার সহিত বৃদ্ধনিহিত ভাবভাব ও হাবভাবে বিশেব বিচলপভার সহিত বৃদ্ধনিহিত ভাবভাব বহুবালাতর বভাবলাত হর্বজোধানি বিভিন্ন মানসিক বৃদ্ধিও প্রকাশ



649 9814 :

ইবারা ভারতীর ধীপপুঞ্জের বিভিন্ন ধীপের বনবালা-পরিবাঞ্জ সমতল প্রাক্তরে বিচরপ করিরা বেড়াব। তথার ইবারা স্থামা-কার বৃক্ষের ৪০ কিট্ উচ্চ চুড়া জখবা সৃত্তিকা হইছে ৪৫ কিট্ উচ্চে তেকাক্ডা ভালের উপর পাছের পাড়াপ ভালা ভাল লাইরা এক থানি কুড়ে বর আছেও করে। বর্ষানির ব্যাস

ই কিট্। ইহারা গাহের ভালগুলি চেটাই বুনার ভার এড়ো
ও লবাভাবে সাজার। বন মধ্যে রাত্রি বাপন করিতে হইলে
মান্ন্রবাক করির অভাবে বৃক্ষণাথা বিরা বেরূপ "ছৎরি"
প্রেক্ত করিরা ক্ষরে গরুর করিতে হর, ইহারাও ঠিক তদত্রপ
ঘরের পাটাতন করে। তৎপরে তাহার উপর গাছের কচি ও
কোমল পাতা বিছাইরা সেই কোমল শ্রার ইহারা চিৎ হইরা
ওইরা থাকে। মিল্রাকালে ইহারা হাত বা পা বাড়াইয়া নিকটছ
অপেকার্রুক্ত দৃদ্ধ শাখা বরিরা ক্ষরে নিল্লা বার। যতদিন পর্যাত্ত
এই প্রগুলি ওকাইরা ছিল ভিন্ন না হর, ততদিন তাহারা
প্রন্ধন্দে তত্পরে ওইরা থাকে; কারণ বৃক্ষণাথাগুলি গরুববিচ্নাত
হইলে সহজেই অন্প্রদারক হইরা থাকে।

বোৰ্ণিও-ৰীপবাসী ওমদগণ জড়ান্ত বিবাদপটু। বনমধ্যে ধল ফুল খাইতে বাইরা কোন সামাগু কারণে বিবাদ উপস্থিত হইলে ভাহারা আপনাপন শৌবন দস্ত হারা পরস্পত্নে কামড়াকামড়ি ইরিরা কত বিকত হর। ঐ পৌবন-দত্ত তাহাদের আত্মরকার অক্তৰ্ত্তপ। বিরোধের সময় ভাহারা শক্তর হাত বা মাথা টানিরা দ্টরা হাডের অঙ্গিওলি অথবা ওর্বর কামড়াইরা লয়। যদি কথন কোন মহুব্য বা হতী ঘটনাক্রেমে ভাহাদের বাসার সক্ষে আদিরা পড়ে, ভাছা ছইলে ভাছারা ভাছাদের তাড়াইয়া দিবার অস্ত বৃক্তের শাখা ও প্রান্তরখণ্ড লইরা তাহাদের छेभन्न मृत्यर्ग नित्कृष कृतिक बारक। इक्षिन् नीट्ड गाइ ভালিয়া তাহাদের বালা লট করিয়া লেয়, এই ভরে ভাহারা হতী দেখিলেই ডাড়াইডে অগ্রসর হয়। সময় সময় তাহারা बनमधानामा व्यनहास शिक्षिनाटक व्यन्ता निःहिताटक उत्पादनारक রূপ শক্তে পরিবৃত হইরা আক্রমণ করে। কুভিয়ার ও কাথেন পাইনের বর্ণনা জানা বার বে, এক সমরে ভাহারা নিগ্রো বালিকাদিগকে হরণ করিরা বন বধ্যে সুকাইরা রাথিরাছিল।

পিঞ্জনাবদ্ধ শিশ্পানীর অন্তক্ষণপ্রিয়তা ও সুবৃদ্ধির পরিচর
পাইরা ডাঃ ট্রেল স্থলেন হে, ভালাবের অভাব বড়ই বিজ্ঞান ।
ভালা পর্যবেশণ করিরা নিজাই গ্রুল গাল সকলন করা বাইতে
পারে। ভালারা সহকেই বলীকুছে হর, এনল কি, বাহারা
ভালাকে ভালাবের, ভালার পারে বনিরা ভোজন করে, বে বাতির
নিরম্ভর ভালাবের আলাভ্য করে, ভালাকে কেবিলেই বিরক্তিভাল প্রভাগ করিরা পারির বার । ক্রোলীর প্রধান ভালার।ও
করমর্জন করিরা আনন্দ ভালন করিরা বাকে। ভালাবের গালচর্প লোমবহল ইইকেউ, ভালারা ক্রিক্তবান হাবে বান করিতে
ভালাবের না। প্রভাগন ক্রোপন্তে ভালারা ক্রণ কড়া-

85

ইরা সংগে পড়িরা থাকে। রাগিরা উঠিকে তাহারা উঠিকঃবংর চিংকার করে এবং স্থমিষ্ট থাবার পাইকে তাহারা "হান, হান" শব্দ ধারা আনন্দ প্রকাশ করিরা থাকে।



শিশালী ৷

শরাবক হইতে সর জেমন ক্রক্ ক্লিকাতাত্ব বেলল এসিয়াটিক সোনাইটার বাছবরে ৭টা ধীর্ঘাকার বনমাছবের করাল পাঠাইরা দেন। মিঃ দ্লাইল উহাদের পার্থকা লক্ষ্য করিরা টেটা বিভিন্ন থাক নির্মেশ করিরাছেন,—১ Pithecus Brookei বা মিরান রিছ; ২ P. Sutyrus বা মিরান পাঞ্চান; ৩ P. Curtus বা মিরান ছাপিন; ৪ P. ক্রান্তাত বা মিরান কনর এবং P. Owenii, ঐ সকল বিভিন্ন থাকের বনমাছর ছাত্রতীর বীপপুরের বিভিন্ন করে। হ্লাক্রার উভরাংশে P. morio এবং ক্লিকাংশে P. Owenii লাভিন্ন বান থেখা বার। নীবভদ্ববিদ্ লাভিন্ন করিলাছবের উল্লেখ করিরাছেন। প্রতিক আল্লেকার সির্মান করিরাছেন। প্রতিক আল্লেকার সির্মান করিরাছেন। গ্লিকা আল্লিকার বিশ্বক বিশ্বর বিশ্বর বিশ্বর বিশ্বর করিরাছের করিরাছের বিশ্বর বিশ্বর বিশ্বর বিশ্বর করিরাছের করিরাছ বিশ্বর বিশ্বর বিশ্বর বিশ্বর করিরাছের করের করেরাছের করিরাছের করিরাছের করিরাছের করিরাছের করিরাছের করিরাছের করিরাছের করিরাছের কর

বন্মাল (বি) ক ক্ষালা। (পুং) ২ কুক বা বিকু । ও প্রাণ্ক্ষোভিবের জগৰভবনীর এফলন রাজা। (প্রাণ্ক্ষোভিব দেখ।)
ক্ষমালাদেব, লিগালিলি বর্ণিত একজন রাজা।
ক্ষমালা (জী) বনোত্তবা পূল-রচিতা মালা, মধ্যপদলোলী।
ক্রিকের মালা, বে মালা স্কল গড়র স্কল রক্ষম কুল্লম সমূহে
প্রণোভিত, আলু পর্যন্ত লখিত এবং মধ্যক্ষণ স্থান্যর কদপ্তু,
ভাহারই নাম বন্মালা।
ক্ষালামূলবিনী মালা সর্বার্ত্ত্ব্রেমোজ্ঞলা।

মধ্যে সুলকদখাতা বনমালেতি কীর্ম্ভিতা ॥" (শব্দমালা)

২ বনপূস্পর্চিত সাধারণ মালা ।

"প্রথিতমৌলির্নৌ বনমালহা

তক্ষপলাশসবর্গতহন্দেশ: ।" (রমু ৯।৫১)

৩ ছন্দোডেদ । ইবার প্রভি চরণে ১৮টা ক্ষকর । তর্মণে

० इत्मारका। हेरांत्र खिक इत्तरण २४ में अकता कियाया ३, २, ७, ৪, ९, ७, ४, २२, २৪, ७ ३१ वर्ष मध् व्यवस् उद्धित वर्ष अका हेरांत्र २, १, ७, ৪, ६, १, ৯, ३०, ३०, ३०, ४० ४ वर्ष मध् व्यवस्थ, ४, २१, २৪ ४ २६ अका।

িবনুমালাধর (.এি) > প্রীকৃষণ। ২. ছলোভেদ। বনুমালিক। (এী) > স্বাক্ষোভা। চলিত হাপরমালী। ২ বনুমনিকা, ক্রনিক লেউভি। ত বারাহীকন্দ। (রাশনি॰)

বনমালিদাস, বনশালা নামক গ্রন্থপ্রতা।

বনমালিন্ (পুং) বনৰালা জন্তান্তেডি ইনি। > জ্ৰীকৃক্। (জমর) ২ নারায়ৰ। (প্রহারবিকর ও অছ)

বনমালিন, > অবৈতদিভিগঞ্জনপ্রণেতা। ২ চগুমাকত ও
মাক্কতগণ্ডনরচিরতা। ৩ প্রব্যালাধন-বিধানপ্রণেতা। ৪ প্রারক্রিজার-কৌমুদী-রচরিতা। ৫ তক্তিরস্নাকর-প্রণেতা। ৬ তগবদ্দীতার এক টীকাকার। ৭ মুক্তাবদী নামক বেদার গ্রহরচরিতা। ৮ বেদান্তদীপ ও ক্টুচন্ত্রাকী নামক ব্যোতিঃশারপ্রণেতা। ৯ একজন প্রাচীন কবি।

वनमालिक्षे, अवबन गैकागविष-नेकाकातः।

বনমালিনী (খ্রী) স্বারকাগুরী। (জিকা°) ২ বারাহী। (রাজনি°)
বনমালি-মিশ্রে, বৈরাক্রণভূবণ-মডোক্সনিনী ও সিভাতত্ববিবেক নামক গ্রন্থ-রচরিতা। ইনি কোও ভটের হাজ।
২ সারমধ্যী নামক জ্যোতিগ্রন্তাগেতা।

বনমালী মিশ্রে, ত্রন্ধানশীর খণ্ডন ও বনমালিমিশ্রীর নামৰী বেলাভ-গচরিতা।

बनमानीना (जी) शर्थ।

यनसूठ्र (ग्रः) बनः समाः त्र्कणीणि सृह्-किन्। > स्मा। (नक्षकाः)(वि) २ समावर्षनकातिमात्र। (त्रष्ट् अ२२) यनसून्।(तनक) कमात्रक्षत्र। [वनक्षत्रं स्मा] বনমুদ্য (পুং) বনোজৰো মুকা:। বকুটক, ছণিত বনমুক।
(রাজনি") পর্যার বরক, নিগুরুত, কুনীনক, থতী। (কেন)
[ইহার অন্ত পর্যার ও ওপ মুকুট ও মকুট পাকে এটবা।] বর্বা—
"বনমুদ্র-ক্লার-মকুট-মহরমর্মক্লাচণক-সতীন-অিপুটক্তরেরায়কী
প্রকৃতরো বৈদলা:।" (প্রক্রত ১০০৬) প্রিরাং টাপু। (জী)
২ মুকাপর্নী, চলিত মুগানী। (রাজনি")

ব্যযুক্ত (পুং) ৰনং জলং মুজ্য বন্ধং বেন, বনং মুক্জীতি বা।
নেৰ। আনরটীকার ভরত জীমুত শব্দের ব্যৱপ ব্যুৎপত্তি করিরাহেন, তলক্ষ্যারে এই বনসূত শব্দেরও বৃংৎপত্তি নির্দিট হইল।

वनমুদ্ধস্তা (জী) वनछ मृद्धि जातरङ ইতি জন্ত। > वनवीय-পূরক। ই কর্কটপুলী, চলিত কাকড়া পুলী। (রাজনি°)

दनगृहा (तनक) अवरकर ।

বনমূলফুল (রী) বনজাত কল ও কল। বনমূগ (পুং) ছরিণবিশেষ।

वनस्थी (रामक) वृक्तात्क । (Trifolium Indioum) वनस्थिक। (श्री) भारत्मस्यक्षि, व्यक्ति ।

বনুমোচা (ত্ৰী) বলোডৰা মোচা, কাঠ কমলী। চলিও বন-কদনী গাছ। (রাজনি")

বন্যমানী (ত্রী) স্থানখাত ক্লম্প। (Linguatioum diffusum) চলিত হন্যমান। উৎকণী নাম-হিল্ম্মানী। বন্য়িত্ব (ত্রি) হার্দ্বিতা।

वनयुष्ट्र (अनम्) वृधिकारङम्।

यनत्यां नीन (लनन) बनानीएक ।

ব্নর (পুং) ৰানর-পূৰোলরাধিছাৎ আকার ক্লঃ বানর। ব্নর্ক্তক (জি) বে বন, উপৰন বা উভান ক্লা করে।

वनत्रञ्जा (जी) कांक्कमणी।

বনরসি, দাকিণাতোর মহিন্তর রাজ্যের কোলার জেলার জ্বর্গত একটা পশুপ্রাম। জক্ষা ১০°১৪ ৩০ উট এবং প্রাধিও ৭৮°১১ ৩১ পৃ:। এখানে প্রতি বংসর বৈশাখ মাসে ইরালয় দেবের উৎসবে ৯ দিন স্থায়ী একটা মেলা হয়। ঐ মেলায় জানুমানিক এক লক গ্রাদি পশু বিশ্লীত ইবরা থাকে।

वनत्रञ्जन ((समझ) मधनएडम । विकास वनत्र हिंदि ((समझ) मर्थनएडम । विकास

ব্নস্থান্ধ (গৃং) বনত বনে বা রাজা, ইতি কারাজন্-টচ্ (রাজা-হঃস্থিত্যটচ্ । পা ৫।৪।৯>) > সিংহ । ২ বনের অধিপতি, বনের বালিক। ও অবস্তব কুজ, চলিত আবৃটা । সরাজি— আংগাটা । (।বৈশ্বনিশ্ব)

यमद्राकः (१९०) रहेन्सः। (१८१७वनि । यमद्राकः [सो] (वी) २ नगरवनी, समामूर । ३ नगण्यामः नेथः।

XVII

"করীৰ সিজ্ঞপ্ৰতৈঃ পঞ্জোমূচাং ভচিবাপারে বনরাজিপবলং।" (রবু ২।৪) ৩ বহুদেবের দাসীভেদ। व्यक्तांका (जी) कमनगण्डमः ব্নরাষ্ট্র[ক] (গুং) জাভিবিশেষ। (মার্কগুপু- ৫৮।৪৯) [वनवानी (मथ ।] ব্নব্রুছ্ (क्री) পর। "নিপরিকরে নীলভুত্তলৈ-র্বনক্র্যাননং বিভ্রদাযুত্তম্।" (ভাগবত ১০।৩১।১২) ব্নপ্তৰ্ (ডি) বনগামী ৷ (ঋক্ ১।১৪৫।৫) বনজ (গ্ৰং) গুলীবৃক্ষ। वन्दि (जी) वस्तत्र ममुक्ति, वनमण्यर । त्रविष् (वि) (वर्षाक वनविश्तपकात्रिमाळ। २ वनवारी वाष् । "वनर्वरण वात्ररवा न त्यामा।" (अक् ১०।৪८।१) 'बनर्यमा वरमवू मीमकः मश्रहणात्रोर शासमार क्रफर' (मात्रन) यम्बाक्यी (जी) वसक मधी (भाका । ३ कमनी वृष्य । ३ वरनंत्र লোভা সৌন্দর্যা। र्जनलक्ष्म (तम्ब) रृक्षविष्मव। (Jussiena exultata) বনল্ডা (ত্রী) বনলাত লভা, বনী। "বনলতাত্তরৰ আত্মনি বিষ্ণুং বাশ্বরত্তা ইব পূলাফলাচ্যা:।" (ভাগবত ১-৷৩৫৷৯) ব্নল্বক (দেশৰ) শ্বদভেদ। (Ludwigia parviflora) वन्द्रलक्षां (जी) वनानार लक्षां ७ ७९। वनाधनी, वनतासि। "নবনগবনলেখা ভাষমধ্যাভিরাভি: i" (মাব ৪i৪🙌 य्भवर्द्यतिका (जी) सम्बाज वर्सविका। अवग्राकार वर्सवी। চলিত বনবাব্ই। পর্যার—স্থপন্ধি, স্থপ্রসন্তক, দোবাক্লেনী, বিবন্ধ, ক্ষুণ, ক্লপত্রক, নিত্রাপু, শোকহারী, প্রবন্ধু। ইহার খণ—উক, হুগৰি, শিশাচ, বাস্তি ও ভূতম এবং ভাগসন্তৰ্শণ-कात्री। (त्रावनि°) বন্বভিছ (পুং) বনভ বনোৱৰো বা বিভি:। দাবানদ। (হেম) "क्नाइम्र**टाणाबानबाँ**गर यनवस्ति।" (क्थानद्वि९ ६७।७८०) वनवान्त (११) बनवान्, बनानिन। বনবাভাম (গ্ৰং) ৰাভামভেব। চলিভ বনবালাম। व्यावान (थः) वरन व्यवस्थि। वरन वान, वरन व्यवस्थान । ३ मध्क-(वि) ০ বনবাসী। "ভহনভর্বনবাসবদ্বভিঃ" (পকুৰলা) यमवां गक (গং) > শাশ্বনীৰন্দ। (রাশ্বনি) ২ প্রাচীন नगराज्य । यसराम् कारवत्राक्षश्रात्व वाक्यांनी । [कारव (१४] यनयोगन (११) बनर वानविक भरकानिक वानि-मू। बहान, চলিত बाँगेलि। (बि) १ परन् पान समान।

বনবাসিন্ (খং) বনং বাসরতি স্থরতীক্ষাভি ইভি বাসি-পিনি। > वर्ष नामक खेरर । २ मूक्क्ट्रक । ७ वात्राहीकक । ८ भावजी- शैপান্তরত্ব ধর্ক্ রীবৃক্ষ। (বৈছক্নি°) বনে বসভীতি বস-পিনি। (जि)

 वनवानकात्री, त्व वाक्कि वरन वांत्र करतः । "তাপদেহেব বিপ্রেরু বাত্তিকং ভৈক্ষমাচরে**ৎ**। গৃহমেধিবু চান্যেবু বিজেবু বনবাসিবু ॥" (মন্ত্র ভা২৩) य्यामी, गाक्तिगारणात पूक्तामा नरीत वत्रमानायात जीतवर्जी একটা প্রাচীন নগর। ভৌগোলিক টলেমি Banawasei নামে ইহার উল্লেখ করিরাছেন। [কার্য রেখ।] ব্নবাস্ত্র, জনপদভেদ। দান্দিণাত্যের বনবাসী রাজা। वनविद्धाल (पूर) वनमार्व्यात्र । (देवश्वकनि) वनविद्वाधिन (वि) > वनभक्त । (श्रः) २ वर्षाश्रष्ट्र । निवास्वत পরবন্তী কাল। বনবিলাসিনী (জী) শম্পুলী গড়া ৷ (রাজনি°) वनवोक (भूर) वनवीवभूतक । ठानिक ठावा (नवू । বনবীজপুরক (পুং) বনজাত মাতুলুজবৃক্ষ। চলিত বুনো লেবুর 🦘 গাছ, টাবা। মরাঠী—বনমাছলিল, কনাড়ী—কামাধ্বল। ইহার ওণ-আন, কটু, উঞ্চ, কচ্য, বাভন্ন, আনদোব ও ক্রমি-नांभक, क्कब्र, এवः चांत्रधः (व्राव्यनि°) বনবুস্তাকী (ত্রী) বনত বৃত্তাকী বার্ডাকী। বৃহতী। (রাজনি°) বনব্ৰীহি (গং) বনক ব্ৰীহি:। দেবধান্ত, নীবার। চলিড, উড়িধান। (হেম) वन्भ्व (प्रमम) वृक्षविष्य । বনশিম (দেশৰ) শিমভেদ। **वनश्चन्त्र (** तमक) वृष्ट्यम । বনশিত্মিকা (ত্রী) অরণ্যশিষী। (ভৈৰজ্ঞার দিরোরোগচি°) ব্নশূকরী (ত্রী) বনত শৃক্রীর রোমশঘাৎ মাংসলঘাত : ১কপি-क्कू। (ताकनि°) २ क्यात्रगा-वताही। ব্নশুর্ণ (গ্:) বনজাতঃ পূরণ:। বনোক্তবৌল্ল,; চলিত বুনো ७गः। भर्गात-निष्णमूत्रम्, वस्त्र, वनक्ष्यः, व्यत्रक्षम् त्रम्, वनकः, (पेजपूर्व, वनकपून। हेरांत्र अन-क्रांत, कर्ने, केंका, क्रांति, खन, ७ मृनावि सावत्र अवर नर्क-अक्रक्रिनामक । (शक्ति°) वृष्ण । চলিত, মউল গাছ ি (বৈজকনি°) বনে বালো বস্ত । (শ্বনাশুস্কৃতি (পুং) বনত পুৰাট ইব, কটকাবৃতভাৎ ৷ গোক্র ৷ ইবার পর্যায়—সুম্বৰ, জিক্ত, খাহ্কটক, গোক্টক,গোসুরক, बनपृष्ठांहे, शणक्यां, चवरद्वां ७ हेक्स्मिकां। (कायटा २४ काम) বনপুৰাট খাৰ্থে কন্। গোকুরক। (রাজনি°) वन(भास्त्र (हो) बनः बनः भाषत्रकोषि ७४-पिচ्-म्। श्रम् । (শব্দ) (বি) ২ ববের শেষ্টাকারক্ষাত্র।

বনখন (পং) বলৈ বা খা কুছুৱা। ১ গৰুমাৰ্কাৰ, চলিত गच्दर्गाङ्गः। २ तकक, नृशांगः। ७ वाजः। (स्विमी) বন্য[খ]ও (গ্ৰ্) পথৰন। ত্ৰিয়াং জীপ্। বনষদু (জি) > বনবাসী। ১ কজ। (পার°গৃ° ০।১৫) [यनगर् (४५ ।] বনস্ (क्री) বনশীর তেজ ও ধন । "আরাহি বনসা সহ পাবঃ।" (শক্ ১০)১৭২(১) বনসা বননীয়েন ডেজসা ধনেন সার্ছং'(সায়ণ) বনস (জি) ১ ইছো। ২ আরুরজিন ও বন। वनमङ्के (११) वर्त महात्री वाहनार वज्र । मन्त्र, हानक न्छत्री । (भक्ठ°) বনসৃদ্ (তি) ১ বনবাসী। (পুং) বনবহিন, দাবানি। "বনং वृष्णगम्रख्य पाराधिकारभन गीपछोछि वनमः । "(७,इयस्: ১१।१२) ব্নস্মৃত্ (পুং) বনানাং সমূহ:। > অরণাসংহতি। পর্যার— वका, वाका। २ जनगर्ह। বনসংপ্রবেল (পুং) দারুমর দেবম্রিনির্মাণার্থ কার্চসংগ্রহের जन्न वनकार्यम्। 🌯 वनमुद्राक्तिनी (जी) रनमा मुद्राक्तिनी पश्चिमीर (पाकाकत्रवार । ° বনকার্পাসী। (শব্দরত্না°) वनमाञ्चया (जी) वश উপानकी नहा। বনস্তম্ভ (পুং) গদের পুত্রভেদ। বনস্থ (পুং) বনে ডিগ্রতীতি হা-ক। ১ মৃগ। (শব্দচ°) ২ বানপ্রাছ। গৃহস্থদিগের বিশুণ, এমাচারীদিগের ত্রিশুণ এবং বানপ্রস্থবতি-গণের চতুগুণি লৌচ হইয়া থাকে। "এতচ্ছোচং গৃহস্থানাং বিশুশং ব্রহ্মচারিণাম্। ত্ৰিগুণং স্যাঘনহানাং যতীনাত্ৰ চতুগুণিম্॥" (মন্ত্ৰ।১২৭) (ত্রি) ৩ বনবাসিমাত্র। "প্রবৃত্তচক্রে। নৃপতির্বনম্বান্, शक्षान् शर्देकः रेचतिव वीर्यामीखान्।" (इतिव १८२१२२) वनक्ली (जी) बनक्षि, अवगारमा। "বনস্থীমর্মারপত্রমোক্ষাং" (কুমার ৩২৯) ব্ৰনন্থা (ত্ৰী) বনে তিঠতীতি স্থা-ক, টাপ্। অৰখবৃক্ষ। वनकान (ही) कमनमण्डम वनटम्पर्कला (बी) इयव्हजी, हनिज मूजवाकूष । (रेवष्टकि) বনম্পতি (গুং) বনস্য পতিঃ। পারকরাদিকাৎ স্কট্। ১ পুশ-हीन क्ववान् वृत्रः। "অপূলা: ফগবডো বে তে বনম্পতর: হুতা: ৷" (মছ ১৷৪৭) २ वृष्ण्याज् । "কথং ছ শাথাকিছেয়ন্ ছিয়ম্লে বনম্পতে**ী** ।"

(बहाकांक्क आश्राश्क)

ত ছালীরুক্ষ। (রাজনি°) ইহার পর্যায়---"मनीवृत्काश्यवत्कनः व्यक्तात्वा अक्रमानमः। "হালীরুক্ষ: করভন্ন: কীরী চুঁ ভারনম্পড়িঃ a" (ভারপ্র° ১।১) s পুডরাষ্ট্রের প্রডেন। (ভাগ° el২-l২১) e **পুডপুরে**র পুত্ৰজেৰ। ৬ ৰটবৃক্ষ। (ভাৰতা°) বনস্পতিকার (গ্রং) বাগডিক বুক্সন্ত । বনস্পতিসত্ত্র (গুং) একাহতের। ব্নব্ৰদ্ধ বী) বনপ্পোডবা বা অক্। বনমালা। "ब्राह्मध्यादोव्यक्तिममञ् यमकाका दश्यूकाचिनुभाष्यु ॥" (ভাগৰত অ৮া২৫) বন্হবৃদ্দি (পুং) নগরভেদ। वनइत्रि (११) निःह। वनवृतिस्था (जो) बत्नांडवा विज्ञा। (Ourouma aromatica, Curcuma Zedoaria) जनगज रतिया, नमर्गुन । रिजी-बरनीरन्तर । महात्राद्वे-नानी । क्लांबन-अधिविनका, अतिनिम । তৈলৰ—কড়ুরি পঞ্জু, অভূবিপক্সু। ববে—বনহন্দ, কচোরা। ভাষিল-ক্তুরি মঞ্জ। সংস্কৃত পর্যার-শোলী, শোলিকা, বনারিষ্টা। খণ--কটু, স্কচিকর, ডিখ্রু, দীপন ও গৌলা। व्यक्ति (तनम) वनश्विता। वसङ्गि (पूर) वसक होन हैव ध्यक्तानकपार । ५ कानकृत । (বিকা°) ২ কুলপুলার্ক ৷ (রাজনি°) वनशामक (पूर) वनशम चार्च चन्। कानष्ट्रम । (वाक्रमि) বন্তুগ্লী, কলিকাতার উত্তর উপক্ষতিত একটা প্রসিদ্ধ গওগ্রাম। বনস্ত্ৰিন (পুং) বনোৱবঃ হতাশনঃ। বনাগি। বনা (আরবী) ১ প্রস্তুত। বাহা প্রস্তুত হইরাছে। ২ বিক্র वनां भू (ग्रः) वनकां गृः। > मनक, धत्रशाव। (विका°) बन्भार्थुक (१११) ब्रुग, प्रुग। (बिका°) बनाधि (थ्रः) बनबाठ पश्चि, बरनाइव पश्चि । বনাচার্য্য, চক্রাভরণহোরা নামক জ্যোতিঃশার-প্রণেতা। वनाम (११) वनक जनः। वनकाशः। वनकाशन, गर्गाव हेफिक, निक्ष्वाहक, शृक्ष्युक्त । (इस) वन्छिन् (जी) यत्न चछनर। वनसम्म। वनाष्ट्रे (गूर) वर्तमा, नीनविक्ता । (मस्ति) বনাত। हिन्ही) পাত্রবক্তত্ত্ব, এই বন্ধ পদমে প্রস্তুত হয়। উপা-নিৰ্শ্বিত সুগৰা । বনাতী (বেশৰ) বনাত নিৰ্শ্বিত। वनान (रम्भ)> निर्माण, गर्रन।

दनास्य (प्र) रमक चवः। > सम्बाच। १ सम्बान, सम्बारमा

यन् खुत्र (ही) महर वनर । मनव वन, महरन । বনান্তরাল (রী) বনপার্থ। ব্যাপ্র (রী) বনোত্তব নহী। এই শব্দ আর্ব, আর্বপ্রয়োগ বলিয়া আকার হ্রন্থ হট্যা ক্লাপনা স্থানে বনাপন্তন্ত চ্ইয়াছে। "महार्गरः ममामाख बनारान "मकः वथा।" (तामात्रर १।১৯)>७) 'वनर जनर ७९नूनर मनीनकर भारती द्वयः' (होका) यमां किमी (जी) लग्नवः বনাভিলার (তি) বনক্ষ্পকারী : दानाञ्चल (पूर) बनक जावनः जावनक हैव । इक्नांकरन । '(Carissa carandus) বনান্ত্রিকা (জী) দক্ত পজিস্থিতেদ। বন্ত্র (পুং) বদক্ত আত্র ইব। কোপাত্র। (রাজনি°) 🗵 যুন্যু (দেশক) বন্ধুতা, মেলামেশা। বেৰন, লোকটা বেশ विभिरत निर्देश । ব্নায়ু (পুং) > দেশবিশেষ। বিনায়ু জাভিয় বাসভূমি। 'গরা গরশ্চ বনাযুর্বনাযুর্বছসাত্বজং ।' (শব্দদ্বভা°) ি থ দানববিশেষ। (ভারত ১৮৫।৩০) ৩ পুরুরবার পুরুতেন। 8 वर्नाइ खोकि। यनाञ्चल (शः) बनाको त्मरण जानरण जन-छ। वनाय्-त्मरणाद्धव িবৈটিক। এই শব্দের রূপান্তর বানাযুক্ত। (শব্দর্যা°) খনারপুর, প্রাচীন নগরভেদ। (ভবিষ্য ব্রহ্মণও ৫৮।১৭) হনারিফ্রা (জী) বনজাতা অরিষ্টেব। বনহরিলা। (রাজনিং) বনাৰ্চ্চক (পুং) বনত ক্ষৰ্কক ইব নিয়তগ্ৰসচায়িছাৎ তথাছং। भूभजीवी, यांगाकात्र । (क्लांधत्र) युन् क्रिक (शूर) बत्नाड्य कार्क्यः । यस काना । वनार्क्तकः (जी) यनार्ककः। वनाज्यक (जी) रेगनिक, रंगनिमाणे। (देवश्वकनि°) বনালয় (পুং) বন মৰ্যাছিত বাসগৃহ। वनामग्रकी विम (पूर्र) वनकांफ छवा बाजा बीविकानिकांहकाती। বনালিকা (জী) বনং অলভি ভূবছভি অল-বুলু-টাপ্ টাপি-चक हेक्स। इक्किकी नका, हिनक शक्ति है। (हार्तावनी) वनाली (जी) वनवाबि, वनरवाति। वनाक्षित्र (पूर) वनायन वालामः । वनक्रण वालामः। यनाव्यक्रिन् (वि) बनाव्यमः जलाएकं देनि। विनि बनाव्यम कतिबाद्यम्, मानधाष्-भणीयनगी । वजात्वाय (प्र) बनरमव विश्विती वक्र। त्वापि कार्यः। (बहायत्र) (बि) २ जनगालकी, विनि वस जोलक क्षिकां क्रिकां শীবিস্বত্যবিহেনা লোকব্ৰি সুপ্ৰবাজৰে। 🗥 🌞 (NEW 3+M80)

वसाखिछ (बि) > त रत पालह नाम मंत्रितारह। । । व वान-প্রস্থাচারী। and the w वस्ति (१९) वनक चारितः । अपना । (बिका°) विन (११) वन (धनि कवि वाकि वानि वनि वनि धवनि वाहि বলিজ্যন্চ। উণ্৪।১৩৯) ইতি ই। ১ সমি। (উচ্চন) विनका (श्री) कुश्रवन । विकित्याम (११) > देशवनमश्रष्ट 🐙 । २ व्यक्तिन श्रामविरमय । বনিত (এ) বন-জ। ১ বাচিত। ২ সেবিভ ি ধেদিনী) বনিতা (রী) বন-জ-টাপ্। > প্রিরা, অন্তরকা ভার্যা। ২ স্ত্রী সামান্ত। (মেদিনী) ৩ বড়করাত্মক ছলোভেদ। ইহার ১, ২, ৪, ৫ বৰ্ণ পদু এবং ৩ ও ৬ বৰ্ণ গুরু। বনিতাদ্বিযু (পুং) স্ত্রীদেবী ৷ বনিতাভোগিন (পুং) > সর্পবং জুরা জী। ২ নাগক্ষা। বনিতামুখ (পুং) > লাভিবিশেষ। (মাৰ্কপু৽ ঌ৸০৽) .(क्री). २.**डी-**मू**थमधना.** "নলিনী মলিনী দিবসাত্যন্তে **अभिक्नाविक्ना क्रशंक्रह** । ইতি বিধিবিদধের্বনিভামুখং ভবতি বিজ্ঞতমঃ ক্রমশো জনঃ 🗚 (উড়ট) বনিতাবিলাস (পুং) > স্ত্রীলোকের ভোগেছা। ২ স্ত্রীসভোগেছা। । বনিতাস (क्री) আচীন বংশভের। বনিড় (ত্রি) ২ বাচক। 🗦 অধিকারী। বনিন (গং) বনং আঞ্রমফেনাজ্যতেতি বন-ইনি। বানপ্রস্থ। "বনী বর্বাস্থ স্থামাকৈরাণৎক্ষেইভঃ পুরাতনৈর্বা ।"(লাছচিত্তা°) ব্যক্তিন (क्री) বনজাত প্ৰাধাবি। "ব্ৰতাপ ওৰধীৰ্বনিনানি বভিয়া" (अक् > । ७५।৮) 'विनिनानि यत्नकवान् श्रमाभागीन्' (शाहन्) (ब्रि) २ वातिमानकात्री। ७ व्यनमाछा। ७ वनवानी। ৫ বনোত্তব। ৬ ইচ্ছালীল। ৭ পূজা বা অভিকাৰী ব্যামাদ (পারদী) ভিতি। विभागि (शावनी) छेरकडे जिखियुक । वाहाब कुम गर, नवरम, পুরাতন বড়মারুব, পুরাতন গুরুত্ব। বথা—বনিয়াদী ধর। विक्रि (बि) राष्ट्रकम, अखिनम राखा । अन्वद्याननम् विक्रिः" (ঋষু . গ্ৰহ্মান) 'বনিষ্ঠা ৰাজ্জনো ভৰ্তি' (সারণ) ब्रिके (ग्रे) ब्र्य वानाकक नक्त महनिरात । इतिनाह । (मान्न) ব্যাস্থ্য (পুং) অপাস ৷ (উপ্ ৩২) वनी (बी) रन । ु (अमहोकालहरू) "কেলিবনীয়মণি বনুগৰুলবন্ধু:" (সাহিত্যর" ২ প°) वसीक (वि) महत्त्व । (अमहित्स नाजव) क्वीक्रक (कि) नितः राज्यमिक्कीकि कात् प्रदक्षा व न । राज्य ।

বনীয়স্ (বি । বন্দ্ৰবস্তা । অভিনৱ বাচক।
"অঞ্চণা তেহৰাজগালৈর নান নঃ কথা মুণাং।
নিভয়াং ব্রির্মাণানাং কাসিছত বনীর্দাঃ॥" (ভাগৰ ১)১৯১৩৬)
'বনরিভা বাচরিভা বনরিভ্তমঃ বনীরান্' (বামী)

यभीषम् (बि) बननविनिष्ठे, बननवृक्तः। "बनीबारमः अत्र कृष्णत्र इक्तर" (बक्. > । १९११) 'बनीबारमा बनमक्कः' (जावन)

বনীবাহন (ক্লী) একস্থান হইছে অন্ত হানে আনন্ধন। ইতত্ততঃ সঞ্চালন বা ছানপরিবর্তন।

বন্ধু (গুং) হিংসা ৷ "সাতৌ বন্ধু বা বে" (ঋৰু ১০।৭৪।১)
'বন্ধুং হিংসাং' (সারণ)

বসুই (দেশৰ) ছগিনীগতি। বোনাই। বসুয়া (দেশৰ) বনসংকীয়। বুনো।

বকুষ্ (ত্রি) হিংসক। "বছবোহর্যজং মদং" (ঋক্ ১০।৯৬১) 'বছবং বছ হিংসায়াং হিংসকক' (সারণ) ২ সংভক্তা। "আয়ে বছবং ভামঃ" (ঋক্ ১।১৫০।৩) 'বছবং সংভক্তারঃ' (সারণ) বলে-কিংশুক (পুং) বলে কিংশুক ইব। অবাচিত প্রাপ্ত। আশা নাই এরপ দ্রব্যপ্রাপ্তি।

বলে-ফুলা (য়ী) বলে ক্লা অনুক্ সমাস:। কর#। (রত্তমালা)
 বলে-চর (য়ি) বলে চরজীভি চর ইভি ট, তৎপুক্ষকে রতীত্যলুক্। অরণ্যচারী।

"বনেচরাণাং বনিজাসধানাং দরীগৃহহাৎসঙ্গনিষজ্ঞভাস:। ভবন্তি যত্ত্রৌষধরো রজ্ঞামতৈলপুরাঃ স্থয়ক প্রদীপাঃ॥

(कूमात्रमञ्चव > नः)

ব্যুনজ্য (রী) ৪ জরণ্যে জারমান। "বসতির্বনেজাঃ জরণো জারমানঃ" (গুক্ ৬)৩৩ সারণ)

ব্রেক্তা (পু:) বনে ইল্যা: > বছরদাল, আন্তর্ক। (রাজনি°)
২ পর্পটক, ক্ষেৎপাপড়া। (বৈভকনি°)

रामञ्जा (हो) भाकवित्मव, मानीमाक। (देवश्रकिः)

বনেবিশ্বক (পুং) বনে বিশ্ব বৃক্তের ভাষ, বাহা জনাচিতরূপে প্রাপ্ত হওরা বার।

বনেষু (পুং) রৌদ্রাধের প্রভেদ। (ভাগবন্ত ১।২০।৫)

বনের জ্ব (ত্রী) বনে রাজতে রাজ-কিপ, অনুক্ সমাসঃ। বাবা-নলরপে অরণ্যে বিরাজনান। "তেজিন। বভারতির্বনেরাট্" (অফ্ ঝা২২০) বনেরাট্ বাবরপেবারণ্যে রাজমাণা' (সারণ)

ব্ৰেক্সছ্। (নী) ত্ৰিপণী কল, চলিত তিলকল। (পৰ্যাৱস্কা) ব্ৰেশয় (ত্ৰি) বনবাসী।

ক্ষেক্টে (অ) বলে কাঠের অভিভবিতা। "বিবর্জনির্বনেবাট্" ক্ষেক্ ১০)৬১।২০) 'বলেবাট্ বলেকার্চানাং অভিভবিতা' (সারণ) বনেসর্জ্জ (পুং) বনে সর্জ ইব। অসন বৃক্ষ। (রম্বানা) यर्गकरम् (११) वरनत अकारण । यर्गाट्माइ (११) शकात ७

वट्यां श्रम्भां, त्यवनित्रं, भूवतिये, छेनवनावि छेश्मर्वक्रम माजीव किंवा वित्यव ।

বনোদ, বোদাই প্রসিডেন্সীর রালাবার প্রাক্তর একটা ক্ষা নামতরাজ্য। ভূ-পরিমাণ ৫৮ বর্গ মাইল: এথানকার অধি-কারীরা এখন ইংরাজরাজকে বার্ষিক ১৯৫০ টাকা কর দিরা থাকেন। ২ উক্ত রাজ্যের অন্তর্গত একটা গণ্ডপ্রাম:

बटनार्टकमा (११९) २ वनगरील (२ वनमशाव निर्विद्धे ब्राम । बटनारमाव (११९) काळवृक्त (दिककनि॰)

विद्यासुद (जि) स्त छैडर्पा वछ। > वङ्किण। (प्राविम")

२ वनमाफूनूल, हलिछ होवा रलद्। ७ नृशासरकाली, रलहाकूण।
(পर्याप्तमूक्षण) ६ वनमूत्रम। (दिश्वकिम") ६ वनसीलनूत्रकः।
जित्राः होन् = वरनाडवा। ७ वनकानीनी। १ कांश्रेमिक्स।

४ म्नलनेनी, मुगानि। (प्राविन")

वटनांश्रञ्जव (ही) > वनपश्म । २ प्रावासक । वटनांक्वी (जी) वननमीश्रव् कान ।

বনোকস্ (পুং) বনমেৰ ওকো গৃহং ৰছ। ১ বানর। (জি) ২ বনবানী, অরণাবানী।

"धर्णाश्मिः कश्चभः भटका मूनरमा दय वटनीकनः।

চরন্তি দক্ষিণীকৃত্য প্রমন্তো যৎ সভারকা: ॥" (ভাগবত ৪।৯।২১)
(ব্রী) ও অলমোদা, রাধুনি। ৪ ওক্ষিণী, চলিত জালকুনা।

বনৌল (পুং) > বনসমূহ। (রুহৎস° ২৪।২•) ২ ভারতের পশ্চিমদিক্ত একটা পর্বান্ত ও তৎসমীপত্ত জনপদ।

वरनीयथ (जी) एक्नानि।

বস্তি (হিন্দী) বনাৎ, পশমী শীতবন্ধভেদ।

বস্তি (জি) বন-সংভকৌ তৃচ্। সংভকা। "রারো বস্তারো বৃহতঃ" (জক্ ৩।৩০।১৮) 'বস্তারঃ সংভকারঃ' (সারণ)

বন্ধলি (ৰামনত্বনী), বোৰাই-প্রেসিডেনীর সৌরাই-প্রান্তত্ব একটা প্রাচীন নগর। ক্নাগড় ইইতে ৪॥০ ক্রোল দক্ষিণ-পশ্চিমে অবস্থিত। ক্ষাণ ২১°২৮ ০০ উ: এবং জাবি° ৭০°২২ ১৫ পু:। স্থানীর প্রবাদ, ভগবান নারারণ বামনরপে এই নগরে অবতীর্ণ হইরাছিলেন, তাঁহারই নামান্থনারে পরে এই স্থান বামনত্বনী নামে থ্যাড হর। লোকে ইহাকে বামনপুর বা বামনধাম, আবার দেবতার লীলাত্বল বিষেচনার অনেকে বেব-স্থানী বা দেবলী বলিয়াও থাকে। এখানে লৌছ ও তাম্পান-নির্দ্ধাণের বিশ্বত কারবার আহে।

दम्म्, अधिवास्त्र, वसन, धनाम्,। श्रांति आसूरने तसे तहे। सह वस्ता । वह वस्ताः सुक् अवस्ति। বক্ষক[্] (জি) ক্লডে ইডি বন্ধ-ৰূল্। বন্ধনাকারী। ছডিপাঠক। বন্ধকা (জী) বন্ধক-টাণ্,। ক্লা, চলিড পরগাছা।

'বলাখা শেবরী নেব্যা কলা ৪ বলকেছতে।' (হত্ততের)
কল্পথ (গ্রং) বলতে তেনিত বলাছে, তুরতে ইতি বা অথ (বলশীঙ্পালিকগমিবভিনীবি-আনিজ্যাধন)। ১ ভোজা । ২ ভজা ।
নিভাতকৌমুদীতে বলি বাড়ুস অব্ প্রভাবে এই শল নিপার।
বলান (ক্রী) বলতেখনেনেতি বল-করণে গুট্। ১ বহন।
(পলচ°) বলভাবে গুট্। ২ প্রাণার। ইহা বোড়শ প্রকার
ভক্তির অভর্গত ভক্তিবিশের।

হরিভজিবিদাবে ১৬ প্রকার ভক্তি নির্দিষ্ট হইরাছে, তাহার মধ্যে বন্দান এক প্রকার-ভূতি । ভক্ত ভববদনভেদের জন্ত ভগ্নামে ১৬ প্রকার ভক্তি প্রবর্গন করিবেন।

"আছম্ব বৈক্ষবং প্রোক্তং শশ্চক্রাঞ্চনং করেঃ।
ধারণকার্কপুঞ্ পাহে ক্যন্তাগাং পরিপ্রবং ॥
আর্চনক জপো ধ্যানং ক্যানস্থানং তথা।
কীর্তনং প্রবণ্টকর বন্দনং পারসেবনং ॥
তৎপালোদকসেবা চ তরিবেদিতভোজনং।
তদীরাদাক সংসেবা বাল্কীরতনির্চতা ॥
তুলসীরোপণং বিজ্ঞানে বিদেবত পার্দিণঃ।
ভক্তিঃ বোড়পধা প্রোক্তা ভববর্ষবিস্কৃতরে ॥"

(হরিভজিবি৽ ১১ বি৽)

দেবপূজার বোড়শোপচারের মধ্যে শেব উপচার, দেবতাকে বোড়শ উপচারে পূজা করিতে হইলে শেবে বন্দন করিতে হয়।

"আসনং খাগতং পাভ্যম্যাচননীয়কষ্।
মধুপর্কাচননভান-বসনাভরণানি চ।
গন্ধপূলে পৃপরীপৌ নৈবেছং বন্দনং তথা ॥" (আফ্কিড্ড)
হরিভক্তিবিলাসে বন্দনের বিবন্ধ এইরপ বণিত হইরাছে,
ভগবানের অতিপাঠ করিরা বন্দন করিছে হয়। বন্দনের সমর
বাহবুগল বারা ভগবানের পদমর ধারণ করিরা নিরোদেশ অবনত
করিয়া "হে কশ। বৃদ্যুর আক্রমণরূপ সমুদ্র হইতে এত ও
আপনার আল্রিড, আমাকে পরিত্রাণ করন" ইড্যানি বাক্য বারা

"দিরোমৎপাবরোঃ রক্ষা বাছভাকি পরশ্বরন্। প্রাপরং পাহি বাদীশ ভীকং বৃদ্ধার্থবার্থবাৎ ঃ" (ব্রিভবি॰ ৮ বি॰) ইহা ভির বাহবুগল, চরপুরুগল, বক্ষঃ, শিরোবেশ, বৃটি, মন

रम्भ क्षिर्र ।

उ रहम जडीच वाजा क्यानाम धार्मिक क्षित्व। जास्त्र्यम, वास्त्र्यम, निर्द्धारम, वहम के बृद्धि धार्दे श्रमाण चाजां उत्तम कता वाज। धार्दे क्याम निविध्य बरक्ष बर्ध्य क्षांसाम र अधिकां व क्याम वाजा मम विश्वक क्षेत्रा क्षित्रक लोक क्षांस्क शास्त्र। ক্ষনকালে কচসংখ্যক গুলিকণা তাহার বেকে সংগ্রহ হয়, ডজনত মহন্তর তাহার বর্গে বাদ হইরা থাকে: বৈ ব্যক্তি জনংখ্য গাণ করিয়া অজ্ঞানে মৃথ থাকে, নেই উক্তি কেবল মাত্র ভক্তিপূর্কক হরিকে বন্দন করিলে সকল গাণ হইতে মৃক্ত চুইরা বর্গে বাদ করিতে সমর্থ হয়। অভ্যান্তর বেবক্ষন পাণনাশক ও স্থান্তর দেবগুতিমা দেখিলেই ভাহাকে ক্ষ্মন করিতে হয়, জ্ঞানতা কণতঃ দেববন্ধন না করিলে তাহার নিমর হইরা থাকে।

(হরিভজিনি - ৮ বি -) [প্রণাম ও নমন্বার শব্দ দেখ]
ত বিবনিশেব। ৪ অসুর। ৎ রাজসবিশেব। (বক্ ৭।৫১।২)
ব্যালন, বোশাই প্রেসিডেলীর অন্তর্গত একটা গিরিচ্প ও ডংপাদস্থিত গশুগ্রাম।

বক্ষনমালা (ত্রী) বন্দনার্থ বালা কর সা। ১ ভোরণ।
(হলার্থ) বন্দনার্থ মালা। ২ রস্কাকত-চতুইরবেটিত আন্ত্র-প্ররচিত মালা। চারিটী কলাগাছ পুতিরা আন্ত্রপত্র বালা বে মালা রচনা করা হর, ভাষাকে বন্দনমালা করে। স

"কুর্বাছন্দনসাবাং যো রস্তাতক্তিঃ প্রশোভনিঃ।

চূতবৃন্দোরবৈঃ পঠের্জাগরে চক্রণাণিনঃ

কুগানি পত্রসংখ্যানাং বর্গে তক্তোৎসবো ভবেং।

পুষ্যতে বাসবাবৈশ্য ক্রীড়তে চাপ্সরোবৃত্য ॥"

(হরিভজিবিদাস ১৩ বি৽)

বন্দনমালিকা (ত্রী) বন্দনমালা খার্থে কন্টাপ, ইখং। বহির্থারোপরি ওভবা মালা।

'তোরণোর্ছে তু মাললাং দাম বন্দনমালিকা।' (হেম)
বন্দনাঞ্চ (এ) বন্দি অভিবাদনন্তত্যাঃ। ইদিবার মৃ—ভাবে
ল্যাট্ তেবাং শ্রোভা। শ্রু শ্রবণে কিপি ভুগাগমঃ। স্বতির
শ্রোভা। "ইরীবন্দনশ্রদা কৃষি" (ঝক্ ধ্বা১৭)

'ৰন্দনশ্ৰৎ ৰন্দনানাং স্বন্ধীনাং শ্ৰোভঃ' (সাহণ)

বন্দনা (খ্ৰী) বন্দ-(খ্ৰী-বন্দি-বিদিভাশ্চেতি ৰাচ্ছ। পাওতাঃ ৭)
ইত্যক্ত ৰাৰ্তিকোজ্যা যুত্, টাপ্। ১ ছডি। ন্ত্ৰীনি—সমীচী।
(জিকা°) ২ বন্দন, প্ৰাৰাম। ও হোম জন্মবারা ভিলক,
হোমের কোটা।

"ঐশাভাষাহরেড্ন প্রচা বাধ ক্রবেশ হৈ। বন্ধনাং কাররেজেন শিরঃকঠাংশকেষু চ। কপ্রপত্তি মঙ্কেশ বধাস্থক্ষবেলিজঃ।" (ভিনিতর)

ক্ৰিগণ প্ৰহারতে নির্দিন্তে প্রহের পরিস্বাধিকারনার বেশভার বন্দনা করিরা থাকেন। বন্দ্যনী (ত্রী) বন্দ-সূট্-ভীপ্। ২ নডি, ভভি। ২ নীবাড়। ও বটা। ৪ বাচনকর্ম। (বেধিনী) ৫ গোরোচনা। (বৈজ্ঞানি-)

• চি**ক্**ৰিশেৰ।

बन्स्मीत्र (कि) वनि-मनीतम्। धननीत्र, वन्त्र, वन्तिधन्, नवक्र, बद्दन्न दोत्राः (न्र्रः) २ नीक्क्नतामः (त्रावनि•)

বিশ্বিরা ্ড্রী) বশনীর-টাণ্ । গুলনীরা। ২ গোরোচনা। (জিলা) বশ্বর (পরিনী) সমূত্র প্রভৃতির উপস্থাে আহাল যারা বাণিজ্য করিবার ছান, সমূত্রকূলে প্রধান সহর, বেধানে বলর ধাকে, ভ্যার লাহালাদি রাধিবার ছান ধাকে। (A port)

বৃদ্দা (ত্রী) বন্ধতে অপরবৃক্ষণিতি বহি-অচ্-টাপ্। বৃদ্দোপরি
বৃক্ষ, টলিড বাঁহ, বা পরগাছা। (Epidendrum tessellatum)
পর্যার—বৃক্ষাদনী, বৃক্ষরহা, জীবজিঞা, বন্ধানা, শেখরী, সেবাা,
বন্দর্যা, বন্ধক, নীলবরী, বন্ধাকী, পরবাসিকা, বন্ধিনী, পৃঞ্জিনী,
বন্ধাা, পরপুরা, পরাশ্রর। (শন্তঃ) ২ লভাবিশেব, ভিক্কী।
পর্যার পাদপ্রহা, শিখরী, তরুরোহিনী, বৃক্ষাদনী, বৃক্ষরহা,
কামবৃক্ষ, শেখরী, কেশরপা, তরুরহা, ভরুষা, গ্রমাদনী, কামিনী,
তরুক্ত্রক, শ্রামা, উপনী। শুণ—ভিক্ত, শিলির, ক্ষ, পিত্ত ও
শ্রমনাশক, বৃদ্ধ, ক্যার, রসায়ন। (ভাবতঃ)

ৰন্দাক (গ্ৰং) বৃংকাপরিবৃক্ষ, পরগাছা। [ৰন্দা দেও।]

বন্দাকা (খ্রী) বন্দা। (ভরতখৃত ইজ্জ)

'বন্দাকী (জী) वन्ता। (শক্ষরা•)

বন্ধার (ত্রি) বলতে তৌতি অভিবাদমতীতি বল (প্ৰস্যোরাক:।
গা অ২০০২) ইতি আরু। বল্দনীল। পর্যার অভিবাদক,
অভিবাদয়িতা। (শন্ধরা) (রী) ২ তোত্র। (ঝন্ ৪০৪ এ২)
৩ বন্দাক, পরগাছা। (বৈছকনি)

বিন্দ (রী) বন্দতে ভোতি নৃপাদিকং অমৃক্যর্থমিতি বদি
(সর্বাধাত্তা ইন্। উণ্ ১۱১১৭) ইতি ইন্। আরুট মহার্য গ্রাদি, চলিত করেদী, পর্যার প্রপ্রহ, উপগ্রহ, বন্দী, বন্দিকা।
(পলর্মা॰) ২ গ্লহ। (ভাগ॰ ৬।১।২২) (পুং) ও ভতিপাঠক,
বাহারা রাজা প্রভৃতির ভব পাঠ করিরা থাকে।

বিদ্যাত বিং) বন্দিনিব গৃহত্বং গৃহাতীতি গ্রহ-ক। অস্নাত্বধ দেবভাগারতেবক, ভণিত ভাকাইত। ইহারা গৃহত্বকে বন্দির ভার ক্ষম করিরা ভাহাদের বধাসর্বাব ক্ঠন করিয়া থাকে। মিতাক্ষরার লিখিত আছে, রাজা ইহাদিগকে প্ল আরোপ করিবেন।

"बन्धिश्राहारकथा वानि-कृक्ताभाक् कातिनः। अमक्षाकिमटेन्टव भृगामारद्वाभरवक्तमम् ॥"

(নিভাক্তরা ব্যবহারাধাা°)

বন্দিচোর (পৃং) বন্ধিনিব বিধার চৌনঃ অপজারকঃ গৃহত্বং বন্ধিনিব ক্লা সমন্তর্যবাধানপ্রারক্ষাবত ভবাজ। বন্ধিগ্রাহ, পর্কার—নাচন, বন্দীকার। (ব্রিকান)

ৰন্দিত্তব্য (.a) বৰ-তবা। বৰনাৰ, বৰনাৰ উপৰুক্ত।

বিন্দিত্ব (জি) কম-ছচ্। কম্ম, ক্ষরাকারী। বন্দিদ্রেলা, প্রাচীন ক্ষনকডেম। সভবতঃ ইহাই রাজসুভনার অন্তর্গত বুলিরাক্য। (ভালীব- এ৭ ব্যঃ)

বৃদ্দিন্ধ্ (পূং) বলতে কৌতি নৃপাদীরিতি বহি ছতে বিদি।
ছাআৰির বারাধিতে বীর্যাধি অভিনারক। পর্যায় অভিপাঠক,
নাগধ, নগধ। প্রতিবাদে করণোক্দাধি বারা রাজাদিদের ছতিপাঠ করাই ইহাদের বৃত্তি। ত্রাক্ষীর গর্তে ক্রিয়ের উম্পে
এই লাভির উৎপত্তি ক্ইরাছে।

"ক্রিরাধিএকজারাং হতো তবতি জাতিতঃ ।" (মৃত্ ১০জ০) আরততে লিখিত আছে বে, আরের পর ইহারিগ্রেক বথাপাতি বান করিতে হর, ইহারিক্রক বৃদি কিছু বান না করা হর,
তাহা হইলে আছ নিকল হইরা থাকে। আবার শান্তে লিখিত
আছে, আরের পর বান করিতে নাই, কিছ অর্জ্যুল নিখিত
আছে, আরোভরকালে বলীবিগ্রেক বথাপতি বান করিবে, ইহার
নীমাংসা এইরূপ বে, আরের পূর্বে ভোজ্যাবি ইহারিগ্রের জন্ত
উৎসর্গ করিয়া আরের পর ঐ উৎস্গীয়াত ভোজ্য ইহারিগ্রেক
বান করিবে।

"বন্দিভাশ্চৈবৰ্মাৰ্থভ্যোহভাৰিভ্যশ্চান্নমৰ্থিভঃ।

বদি তত্ৰ ন দভাভ_ু বিকলং শক্তিভো ভবেৎ ॥

'বন্দিনো বীৰ্যজোভার:। অধিভঃ সন্ বদি এভ্যোহরং ন দভাৎ তদা প্রাহ্ম বিক্লং ভবেষিতি।'

'হতাঃ পৌরাণিকাঃ প্রোক্তা মাগধা বংলনংসকাঃ।

विक्रियमण्डाकाः व्यवादमम्राभाकाः ॥

ইড়াকে:, ইবক প্রাভোজননানিবেশং প্রাভ বন্দি-প্রভৃতিভাো দানাকরণে নিশাপ্রবণান্ত প্রাভাৎ পূর্বাং তদর্গং ভোজাদিকং উৎক্ষেশ্ (প্রাভত্ত) ২ ভূতা।

"গুমিত্যাদেশমাদার নম্বা তং ক্রবন্দিন:।"(ভাগ॰ ১১।৪।১৫) 'ক্রবন্দিনো দেবভূত্যাং' (খামী)

বন্দিনীকা (বী) দাক্ষান্দীন নামান্তন । বন্দিপাঠ (গুং) ভট্ট ক্ষিগণের দীত বা বংশকীর্ত্তিবর্ণনা। বন্দিয়িন্তা, বান্চিকিৎলারচম্বিতা।

বৃদ্দিবাস (বন্ধিবাস), মারোল-থ্যেসিডেনীর উদ্ধন আর্কট জেলার অন্তর্গত একটা উপবিভাগ বা আ্রুক্ত। তুপরিমাণ ৪০০ বর্গনাটুল। এই হান শতলালী নহে। সমতল প্রান্তরে পরিবাধে হইলেও ভথাভার অধিকাংশ সুন্তিকা বানুকা ও কন্ধর বিপ্রিত। বব্যে বব্যে লাল বা রুক্তবর্গের মুন্তিকাথও কেবা বার; কিছ উহা কাম মিপ্রিত থাকার শত্তোৎপালনের উপবিভাগে মুন্তকটা প্রত্তোগত উন্তর্জ শিশ্বের মুন্তবর্গন আছে।

২ উক্ত জেলার একটা নগর এবং বন্দিবাস উপবিভাগের विচার সদর। অক্ষা ১২°৩० १० 📆: এবং ক্রাবি ৭৯°৩৮ ৪০ 🖺 পু:। এই স্থানের ঐতিহাসিক প্রাসন্ধি আছে। বিগত কর্ণাটক वृत्कत ममत्त्र এरे ज्ञात्मक युक्त चित्राहिन । व्यार्करित नवाववश्यात्र আত্মীয় এক জন মুসলমান লামস্ত বন্দিবাস-চূর্ণের অধিনায়ক ছिলেন। ১৭৫२ थुट्टेर्स हैश्त्रांब म्मानिक मब्बत नरतक विन-वान चाक्रमन करतन। फनमखत्र ১१८१ धृष्टीरम कारथन चन्-ভারকোম নগর দথ্য করিয়াও ছর্গ জয় করিতে পারেন নাই। তৎকালে ঐ তুর্নমধ্যে অবস্থিত করাসী সৈম্ম প্নঃ পুনঃ ইংরাজ-দিগকে হটাইয়া দিয়াছিল। ১৭৫৯ খুটান্দে মোনগোন ভীমবেগে হুৰ্গ আক্ৰমণ করিলেন*ু ব*টে, কিন্ত হুৰ্গজন্যে অসমৰ্থ বইয়া স্বীয় সেনাদল লইয়া প্রভ্যাব্ত হইলেন। এই সময়ে হুর্গছ ফরাসী দেনাদল বিদ্রোহী হয়। ইংরাজ দেনাপতি আয়ায়কুট হ্রবোগ বুঝিয়া সেই অবসরে ছুর্গ আক্রমণ করেন। ছুর্গবাসিগণ কিছু-দিন অবরোদের পর, ইংরাজকরে আত্মসমর্শণ করে। ফরাসীর মুণগ্রাস হস্তচ্যুত্ত দেখিয়া ১৭৬০ খুষ্টাব্দের প্রথমেই সেনাপতি লালী সদলে হুৰ্গ সন্মুখে আসিয়া উপনীত হইলেন। দেখিতে দেখিতে ছই দিবস মধ্যেই বুশি ও হাজার মরাঠা সেনাসহ সেই রণপ্রাঙ্গণে আসিয়া সমবেত হইলেন। ফরাসী সৈতা হুর্গ অব-রোধ করিল; নিরুপার বৃশিরা সর্ আয়ারকৃট একদিন তুর্গদার উন্মোচনপূর্বক সশন্ত ও সদলবলে সন্মুখে উপনীত হইলেন। ত্ই দলে ঘোরতর সংঘর্বের পর ফরাসীরা পরাঞ্জিত **হইল।** বুশি ইংরাজ করে বন্দী হইলেন। করাসীদিগের সহিত ইংরাজরাজের ভারতে আর কোথাও এরপ যুদ্ধ ঘটে নাই। ১৭৮০ খুটান্স হইতে প্রায় ৩ বংসর কাল লেপ্টনাণ্ট ফ্লিট বিশেষ কৌশলের সহিত মহিস্মরপতি হাইদার স্মালীর প্রচণ্ড স্মাক্রমণ হইতে এই তুর্গ রক্ষা করিয়াছিলেন। হায়দারের আক্রমণকালে আয়ারকৃটও ভূইটা যুদ্ধে তাঁহাকে সহায়তা করিয়াছিলেন এবং অপরগুলিতে তিনি বিশেষ দক্ষতার সহিত স্বীর বাহিনী রক্ষাপূর্বক শক্রন্গকে বিদ্বরিত করেন।

বন্দী (স্ত্রী। বন্দি 'ক্লিকারাদক্তিনঃ' ইতি ভীষ্। বন্দী, শুতিপাঠক। "পোপ্তারং জ্বনৈক্তানাং বং পুরস্কৃত্য গোত্রভিং।

প্রত্যোলেখাত শক্তভো বন্ধীনিব জয়প্রিরম্ ॥" (কুমার ২।০২)
বন্দীক (পুং) ইন্দ্র ।
বন্দীকার (পুং) বন্ধীবং গৃহত্বং করোজীতি ক্ল-মণ্। বন্দিগ্রাহ,
ভাকাইত। পর্বায়ে—মাচল, প্রসন্থচৌর, চিরাভ। (ত্রিকা৽)
বন্দীকৃত (ত্রি) কারাবক্ষ। ম্পারাধী বোধে রাজপুরুষ
কর্ম্বক ধুদ্ধ।

वन्तीशाल (प्र) कान्नानकी (Jailor)।

বন্দুক (তেপগু) আগেরান্তবিশেব।
বিদ্যাবস্ত (পারসী) কোন একটী বিধর বা কার্য্যের নিশান্তি
করিয়া দেওরা।
বন্দ্য (ত্রি) বন্দ্যতে ভূমতে ইতি বদি-গাং। বন্দনীর, স্বত্য,
বন্দনের যোগ্য।

শ্বন্দের বোগা।

"আশী:পরম্পরাং বন্দ্যাং কর্ণেক্কডা ক্লপাং কুক্ক।" (সাহিত্যদ৽)

রিরাং টাপ্। বন্দ্যা, বন্দা, পরগাছা। ২ গোরোচনা।
বন্দ্যকা (রী) বন্দ্যভ ভাবং তল্-টাপ্। বন্দ্যভ, বন্দ্যের ভাব
বা ধর্ম্ম, বন্ধন।
বন্ধ্য (রি) বন্দতে ভৌতি দেঝানীন পূজাকালে ইতি বন্দি-রক্।
পূজক। (উজ্জল)
বন্ধুর (ক্লী) > রথের নীড়বন্ধনাধারভূত জক্ষসহ ঈর্বন। ২ সারথির

বন্ধুর (ক্লী) > রথের নীড়বন্ধনাধারভূত অক্ষমত ঈর্ষয়। ২ সারথির বসিবার স্থান। সায়ণাচার্য্য বেদভাষ্যে ইতার এইরূপ অর্থ করিয়া-ছেন;—'নীড় বন্ধনাধারভূতম্, উন্নতানতরূপবন্ধনকাঠম্, বেটিতং সারথেঃ স্থানম্যধা সার্থ্যাশ্রম্থানম্।' [প্রর্ণে দেখ]

বন্ধুরস্থ (তি) রথাসনে উপবিষ্ট। রথারত ।

বন্ধুরায়ু (তি) বন্ধুরগ্রের বন্ধুরায়ু: রথে নিবাসাধারভূতকারে। বন্ধুরং তথান্।' (ঋক্ ৪।৪৪।> সায়ণ)

বন্ধুরে**ন্টা (** ত্রি) রথোপবিষ্ট (ইন্দ্র)। (ঋক্ এ৪**এ**১)

বন্ধ, বোষাই-প্রেসিডেন্সীর ঝালাবার প্রান্তম্ব একটী ক্রুদ্র সামস্ক রাজ্য, তিনথানি গণ্ডগ্রাম লইয়া গঠিত। ভূপরিমাণ ২৪ বর্গ-মাইল। এখানকার অধিবাসীরা এখন ছয় অংশে বিভক্ত হইয়া পড়িয়াছে। মোট রাজস্ব ২২৩১০১, তন্মধ্যে ইংরাজরাজ বার্ষিক ৩৭১৫ টাকা ও জুনাগড়ের নবাব ২৭৭ টাকা পাইয়া থাকেন।

বৃদ্যু (ত্রি) বনে ভব, বন-যৎ। ১ বনোঙুত, যাহা বনে উৎপন্ন-হয়। "হৈয়লবীনমাদায় বোবর্জাহুপন্থিতান্

नामरश्मानि शृक्टरको वद्यानाः मार्गनाधिनाम्॥" (त्रष् ১।৪৫)

(রী) ২ ছচ্। (রাজনি॰) ৩ কুটরট। "কুটরটং পরং বঞ্জ মুন্তাভক পরীলবং।" (বৈভকরত্বা)

(পুং) ও বনশ্রণ, বুনো ওল। ৩ বারাহীকল। ৫ দেব-নল। (রাজনি॰) ৬ কীরবিদারী। (বৈশ্বকর্ত্না°) ৭ শহা। ৮ লতাশাল।

বহ্যজা (গ্ৰী) বনোগোদকী, বনপুই। (বৈছক্নি॰)
বহ্যজীরক (ফ্লী) বনৰ কটুৰীন্তৰ, বনধীরা। (বৈছক্নি॰)
বহ্যজমন (পুং) বনৰ দমনক্প, বনদনা। মহারাই—রাণদবণা,
ক্লিক—কাদবণা। ত্থ—বীর্যভক্তক, বনপ্রেম ও আমধোৰনাশক।

वस्त्राधील (११) वस्रवी। वस्त्राधीस्त्र (जी) नीवात्र, উष्टिधान। (পর্যারস্থ) ব্যাপ্রকী (প্রা ক্ষাভ পদী। বাহার। কছলে বনে বিহার
করে। পিশ্বরাবদ্ধ পালিতপদীর বিপরীত।
ব্যাবৃক্তি (প্রা) বজাপদীবিকা। দরণাবাসীর দীবনোপার।
ব্যাবৃক্তি (স্ত্রী) বজোপদীবিকা। দরণাবাসীর দীবনোপার।
ব্যাবৃক্তি (স্ত্রী) বনানামরণানাং জলানাং বা সংহতিঃ বন্
পোলাদিত্যো বঃ। পা ৪।২।৪৯) ইতি ব-টাপ্। ১ বনসমূহ,
বনসংহতি। (মেদিনী) ২ মুক্লপর্ণী। ৩ গোপালককটী।
৪ গুলা। ৫ মিশ্রেরা। ৬ ভ্রম্তা। ৭ গদ্ধপ্রা। ৮ দশ্বগদ্ধা। (বৈল্পক্লি) ইহার পাঠান্তর কোন হলে বল্যা দেখিতে
পাওয়া গার। ৯ জলগাবন, জলসংহতি, বান। নদীতে, বান

वस्रान्त (वि) वस्रवनानी।

বন্যাপ্রম (প্র) বনাশ্রম।

বন্দ্রেতর (বি) > গৃহ পালিত। ২ শিক্ষিত। ৩ সভা।
বন্দ্রোপোদকী (স্ত্রী) বস্তা বনোয়ক্ট উপোদকী। লতাবিশেব,
বনপুই। পর্যায়—বনজা, বনসাহবরা। গুণ—তিক্ত, কটু,
উষ্ণ, বোচনী। (বাছনি॰)

व्याभिदा চाরिनिटक जनभावित हरेल वक्षा हता।

বন (গুং) বনতি ভাগমহতি বনসংভক্তে (ৰাজ্ঞোগৰপ্ৰতি। উণ্ ২০২৮) ইতি বন্ প্ৰত্যৱং। অংশী, ভাগী। (উজ্জ্ন)
বপঃ ১ ক্ষেক্তে বীজবিকিরণ, ক্ষেত্রে বীজ ছড়ান, বপন। ২ গর্জানা, নিবেক। ৩ ছেদন, মুগুন। ভাদি উভ • সক • জনিট্। লট্ বপত্তি-তে। লিট্ উবাপ, উপতুং, উবপিও, উবপ্থ। উপে। লুট্ বপ্রা। লুট্ বপ্রতি-তে। আশীর্ণিভ্ উপ্যাৎ, বপ্রীষ্ট। লুভ্ অবাপ্রীৎ, অবাধাং অবাপ্রং। অবধ্, অবপ্রাতাং অবপ্রত। সন্ বিবশ্সতি-তে। যঙ্বাবপ্রত। যঙ্বাবপ্রত। যঙ্বাবপ্রত।

নি + বৰ্ণ শ্বিৰাপ, পিত্ৰিগের উদ্দেশে দান। নির্+বণ শ্বান, উৎসর্গ। প্র+বণ শ্বান, প্রকেপ। প্রতি+বণ শ্বিকাস।

বপ (পুং) বপ-ঘ। ১ কেশমুগুন। ২ বীজ্ঞবপন।
বপন (ক্লী) বপ-ভাবে লাট্। ১ কেশমুগুন, মাথা মুড়ান।
শ্রাণাং মাসিকং কার্যাং বপনং স্থান্থবিনাং।" (মুন্ত ৫।১৪০)
শ্রেরা একমাস অন্তর মন্তক মুগুন করিবে। ২ বীজাধান।
ভূমিজে, বীজ বপন করিতে হইলে জ্যোতিবোক্ত দিন দেখিরা
ক্রিক্তে হয়, অদিনে বীজ্ঞবপন করিলে তাহাতে কল হয় না,
এইজন্ত উত্তম দিনে বপন করিতে হয়।

শ্হলপ্রবাহবদ্বীঞ্চবপনস্ত বিধিঃ স্বতঃ। চিত্রায়াঞ্চাণ্ডতে কেক্সে হিরম্মন্থলোদরে ॥" (জ্যোক্সিঃসারস")

XVII

পূর্মকর্মী, পূর্মাবাচা, পূর্মভারপদ, ছবিকা, ভরনী, জরেনী, জরেনা ও আল্রা ভিন্ন নক্ষত্রে; চতুর্মী, নবনী, চতুর্মী, আইনী ও জনাবজা ভিথিতে; গুডগ্রহ কেন্দ্রন্থ হইলে; ছিরলারে বা কুলালা ও মিপুন, তুলা, কজা, কুছ ও বছর্লারের পূর্মভাগে বীজবণন করিলে গুড হয়। বথানিবনে হলচালানা করিলা বীজবণন করিলে ভারতে স্কল হইলা থাকে।

বপনী (ব্ৰী) উপ্যতে মন্তকাদিকমভামিতি বপ্-অধিকস্থঁণে গ্যুষ্ট, গ্ৰীপ্। ১ নাপিতশালা, বে হলে ক্ষোরকার্য্য হইরা থাকে। ২ তত্তবারশালা, তাঁত্যর। ৩ মাকু।

বপনীয় (অ) বপ-অনীয়র। ১ বপনের বোগ্য, বীক্ষবপনের উপরুক্ত। ২ নিবেক্যোগ্য।

"आवृतिवाका कमाठिए न প्रकाशाचार वशनीयः"

(मस २।८> हिकात कुहुक)

আহুকামী যুক্তি কখনও পরস্ত্রীতে বীজ বপন করিবেন না।
বপারু (পাং) কেলরাজ, চলিত কেণ্ডরে। কোথাও কণ্ডজে বলে।
বপা (ত্রী) উপাতেহত্রেতি বপ্ ভিদাছত, টাপ্। > ছিত্র, রব্ধু।
"অথ বল্ধীকবপা স্থবিরা ব্যথেব নিহিতা ভবতি"(শত ব্রাভিতাতাও)

২ মেদোধাতু, চর্বিব।

বপাটিকা (ত্রী) অবগাটকা। (ক্লান্ড চি॰ ২০ অ০) বপাবৎ (ত্রি) বগা-অভার্থে মতুপ্মক্ত বং। প্রবৃদ্ধ, ম্বরুপ্ট। "বিশ্রা বগাবন্তং নাছিনা তপত্তঃ" (অক্ ধারণা)

'বপাৰকং প্ৰবৃদ্ধং পশুং' (সারণ) ২ মেদোবিশিষ্ট।
বপাবহ (ক্লী) মেদখান রূপ কোঠাল। (চরকহ্ • ৭ অ°)
বিপাল (পৃং) বপতি বীলমিতি বপ-ইলচ্। শিভা, জনক। (উজ্জন)
বপুন (পৃং) বপ-উনচ্ বা বয়ন প্ৰোদরাদিখাং বস্ত পঃ।
দেবতা। (শৰস্বয়াণ)

বপুন্দন, একজন প্রাচীন কবি।

दशूर्धद्भ (बि) धन्नकीिक ध-व्याः, रुप्ता धन्नः। त्वरुधानी। दशुर्या (बी) स्त्या। (छारुख-)

বপুক্তমা (খ্রী) > পদ্মচারিশী লভা। (ঋটাধর) ২রূপ। (ঋক্ ভা২।১৫)

ত কাশীরাজের কন্তা, পরীক্ষিৎতনর জনমেজরের সহিত ই'হার বিবাহ হর। হরিবংশে লিখিজ আছে, রাজা জনমেজর অন্ধ্রমের বজের অন্ধ্রমা করিরা জন্মন্দর করেম, বপ্রমা এই হত জন্মের সমীপে উপবিটা ছিলেন। তৎকালে দেবরাজ সেই রাজসহিবীকে সর্বাজ্যকারী বেথিরা ভাহাকে কামনা করেন। ইক্র ভবন জ্বপারীরে প্রেবেশ করিরা বপ্রমার সহিত সঙ্গত হন। জনমেজর জন্মকে জীবিজ দেখিরা প্রতিক্ষিপ্রকে কারণ জিজানা করিলে তাহারা ইক্রের হর্জিক্ষির কথা প্রকাশ করেন। তথন রাজা জ্বিজ্যর ক্ষুদ্ধ হইরা ইক্রকে

>5>

অভিসম্পাত প্রদান করেন বে, ইস্ত ৷ তুমি বেরপ হৃত্য করিয়াছ, এই গ্ৰহৰ্ষের ফলে অভাববি কেছ জার অখনেধ মজে ভোষার ष्पर्कना कतिरव ना अवः श्रिषक्षिरगत ष्यमरनारवारंग हेश घित्रार्छ वृक्षित्रा छाँशामिशस्य रम्भ श्रेट्ड विष्कृष्ठ कतित्रा एन । পরে বপৃষ্টমাকে নানারপ ভিরন্ধার ক্রিতেছিলেন, এমন সমরে বিশ্বাৰত্ব নামে গৰ্ম্বরাক্ত তথায় উপদ্বিত হইয়া তাঁহাকে কহিতে লাগিলেন, রাজন্! আপনি ত্রিশত অখনেধ যজের অনুষ্ঠান করিয়াছেন, এইজভ ইস্ত্র তাঁহার ইস্তর্যনোপের আশস্বা করিয়া রম্ভা নামক অপ্যরাকে প্রেরণ করিয়াছিলেন, এই রম্ভাই কাশীরাঅত্তিতা রূপে অস্মগ্রহণ করিয়াছেন। এই বপ্টমাই র্ম্ভা নামী অব্দরা। ইস্ত এই ছলে আপনার কার্য্য সিদ্ধ করিয়া চলিয়া গিয়াছেন, ইহাতে আপনি ঘৃঃথিত হইবেন না, ইহার **কালই** একমাত্র কারণ। ঋত্বিক্দিগকে অবমাননা করার আপনার পুণ্যক্ষ হইয়াছে। আপনা হইতে ইক্সের যে ভয় ছিল, তাহা দূর হইরাছে, অতএব আপনি বপুটুমাকে বুণা তির্ত্বার করিবেন না, ইহাকে পুনরায় গ্রহণ করুন, ইহাতে त्माव स्ट्रेट्य ना। विधावस्त्र कथाव बाका खनरमक्रम हेराटक পুনরার গ্রহণ করেন। (ছরিব • ১৯২-১৯৬ অ •) বপুত্ম ং (মি) বপুদ্ প্রশন্তার্থে মতুপ্। ২ প্রশন্তশনীরী, উত্তম-मत्रीत्रविनि**हे। २ (ग्**र) मात्रानीदौर्ग निज । বপুষ্য (এ) বপুদ্-হিতার্থে যং। শরীরের হিতকর। "বপুর্বপুর্যা সচতামিরং" (ঋক্ ১।১৮৩।২) 'বপুষ্যা বপুষি হিতা' (সায়ণ) বপুস্ (ক্লী) উপাৰে দেহান্তরভোগদাধন-বীন্ত্তানি কর্মাণ্য-মেতি বপ্ (অধি-পু-বপি-বন্ধীতি। উপ্ ২।১১৮) ইতি উসি। ১ শরীর, দেহ। "একাতপত্রং জগতঃ প্রভুত্বং नयः वराः कांख्रिमः वर्ग्नाः (त्रण् २।६१) ২ প্রশন্তারুতি। (মেদিনী) ও অংশ। "অষ্টানাং লোকপালানাং বপুধ রিয়তে নৃপঃ।" (মম্ব ১ ১৬) 'বপুল্ডেন্সোংশং' (মেধাতিথি) (স্ত্রী) ৩ স্বনামধ্যাতা দক্ষকস্তা। ইনি ধর্মরাজের পদী। (মার্কণ্ডেমপু৽ ৫০।২১) বপুঃপ্রকর্ষ (জি) শারীরিক লৌশর্যা। বপুঃত্রব (খং) বপুবঃ শরীরাৎ প্রবঃ করণং বঞ্চ : শরীরহিত রসধাড়। (রাজনি•) বপুস্সাৎ (অব্য॰) শরীরাকারে। व्दर्शानत (बि) नीबरबानत, कृषि। "कृविश्रीरव। वरशामतः" (अक् ৮१३ ११৮) 'बर्रभावतः नीबरतावतः' (नावन) वशुरा (वि) वन-चया। वननीत्र, वननरवाता। नवजीरि वीक

वलन क्षिएक मारे।

"बंशा बीजः न वश्रवार शूरमा शत्रशत्रिधरह ।" (मस् अ।६२) বপ্তৃ (গ্ৰং) বগতি বীৰমিতি বপ-কৃত্। > জনক, পিতা। ২ কৰি। ৩ নাপিড। **"বগ্ৰেব শাক্র বগসি" (ঋ**ক্ ১**।১৪২।৪**) 'বপ্তা নাপিতো ৰণতি' (मात्रग) (बि) ৪ ৰাপক। ৫ কৰ্ষক। "यरपितरण वीक्षम्था। न वर्धा। नचरक कनः । তথা নৃচে হবিদিশ্বা ন ৰাতা লভতে ফলং ॥" (মন্তু অ১৪২) বপ্প (পুং) > ৰাপ। ২ পৃত্যা দেবগুরুজন প্রভৃতি। ৩ মেবারের রাণাদিগের পূর্ব্বপুরুষ। 🔹 **तश्चित्रियो (जो)** त्रोक्षमश्चिरिष्ठम । বিপ্লিয় (পুং) একজন হিন্দু রাজা। বন্ধীহ (খুং) চাতক (Coculus Melanoleucus) ! वश्रुष्ठे, मगरभत्र भागवरनीय अथम नत्रभक्ति शाभारनत भिछा। বপ্যনীল (পুং) জনপদভেদ। বপ্র (পুং ক্লী) উপ্যতেহত্ত্তেতি বপ-(ক্ষবিপিভ্যাং রন্। উণ্ ২।২৭) ইতি রন্। ১ ছর্গ ও নগরাদির প্রাস্তম্ভ পরিথা হইতে উদ্ভ মৃত্তিকান্তৃপ 🚛রা উপরিবন্ধ প্রাকারবিশেষ। অর্থ-শাল্লে আছে, খাত হইতে উত্তোলিত মৃত্তিকা ছারা বঞ্জ নির্মাণ করিবে এবং ভত্নপরি প্রাকার সন্নিবেশ **হই**বে। ইহার পর্য্যায়,—চয়, মৃত্তিকান্তৃপ। (শব্দরত্বা•) প্রাকারের আধার স্বরূপ উত্তোলিত কুত্রিম মৃত্তিকান্ত পের নামই বপ্র। বধা-"মহোন্তানাং মহাবতাং তড়াগ-শতশোভিতামু। প্রাকার-গৃহস্থাধানিজন্যেবামরাবতীম্ ॥'' (বিকুপু ০ ২২ জ:) বপতি বীলমত্রেতি। ২ ক্ষেত্র, চলিত ক্ষেৎ। ইহার পর্যায়— কেদার, ক্ষেত্র, নিচুট, বনজ, বাজিকা, গাটীর। (জটাধর) बृह्दमःहिजात केक व्हेत्राष्ट्र,—एक वर्वाधिम व्हेरन, रेमरना-পম জলদজাল বারি বর্ষণ করে, তাহাতে বপ্র বা কেত্র পরিপূর্ণ হইরা বার, পৃথিবী নানা নৃতন শোক্লার শেষভিত হইরা উঠে, ভাহাতে প্রচুর দালি ও ইকু করে। "শালীকুমত্যপি ধরা ধরণী ধরাভ-৩ রেণু। ৪ ডট। "ৰপ্রাস্তখনিতবিবর্ত্তনং পরোভিঃ" (কিরাভ ৭।১১) ৫ পর্বতসাম্থ। "নানা-রত্নজ্যোতিষাং স্বরিপাটভঃ ছরেছভঃ **শান্ত্ব**ােভরেবু'। (কিরাত **৩।৩**৬) বপ-রন্ (বুধি-বপিজ্যাং রন্। উণ্২।২৬) ৬ দীসক। (হেন) "দীসং ৰধুঞ্চ ৰ প্ৰঞ্জ বোগেষ্টং নাগনামকম্।" (ভাবপ্ৰত পূত্প্ৰ) ৰপতি ৰীজমিতি বপ-রন্। ৭ পিতা। (মেদিনী) ৮ আংকার। প্রজাপতি। (সংক্ষিপ্তসার উণাদির্ভি)। ১০ ছাপরবৃণের চতুর্দশ বিভাগের ব্যাসভেন। ১১ চতুর্দশ মহুর পুত্রভেন।

ब्राक् (पूर) शामवृक्तित्र पत्रिधि ।

বপ্রক্রিয়া, বপ্রক্রীড়া (জী) তটাবাড। হজী বা ব্বের শৃদ দস্তাদি বারা উচ্চভূমিতে আবাতরূপ ক্রীড়া।

"বপ্রক্রীড়াপরিপতগলপ্রেক্নীরং দদর্শ।" (মেবদূত) বপ্রবাদ, চম্পারণ্যের অন্তর্গত একটা প্রাচীন গ্রাম। ভিলপর্ণী নদীঅটে অবস্থিত। (ভবিষ্যব্রহ্মখং° ৪২।২১৩)

ব্প্রা (জী) বপ-রন্টাপ্। > মঞ্জিটা: [মঞ্চিচা দেখ।] ২ জৈন অবসপিণীর একবিংশ আর্হৎ নেমিনাণের মাতা।

বপ্রানত (ত্রি) ক্রীড়ার্থ উক্তভূমি সন্মুখে অবনত মস্তক।

বপ্রাস্তর (অব) তট্মর মধ্যবন্তী (শ্বান)।

বপ্ৰাভিঘাত (পু:) ৰপ্ৰক্ৰীড়া।

বপ্রান্তঃপ্রতি (নী) নদীকূলবাহী স্রোভোজন। ২ শাধানদী। বপ্রান্ত্রদু (ক্লী) ভীরবাহী স্রোভোজন।

বপ্রি (পুং) বপতি বীজমত্র বপ-ক্রিন্ (বছু । । জণ্ ৪।৬৬)

> ক্ষেত্র। (সিদ্ধান্তকৌ) ২ হর্গতি। ৩ সমূদ্র। বিশ্রী) বন্ধী পুরোদরাদিত প্রযুক্ত 'ম' স্থানে প। ১ বন্ধীক। (হলাযুধ) চলিত উইটিপী। ২ গ**ও**শৈল।

ত্রব (পুং) একাদশ করণের অন্তর্গত প্রথম করণ, এই করণের অধিপতি ইক্স। ইহাতে বিহিত কর্ম ধণা—

"পৌষ্টকন্বিরগুভানি ববাথ্যে॥" (জ্যোতিক্তম্ব)

এই করণে জিমিলে মানব বলবান, অভিধীরপ্রকৃতি, কৃতী ও অভি বিচক্ষণ হয়। লক্ষী নিয়ত তাহার আলমে বাদ করিতে থাকেন।

"ববাভিধানে জননং হি বহা, শ্রোহডিধীরো মম্বন্ধঃ রুতী হাং। পল্লালয়া তন্নিলয়ে নিবাসং করোডি নিতাং স্থবিচকণঃ হাং॥" (কোষ্টাপ্র-)

দাক্ষিণাত্য জ্যোতির্বিন্গণের মতে 'বব' শব্দের প্রথম বকার বগীর এবং শেষ বকার অস্তঃস্থ i

বববিলায়। (দেশক) > মিথ্যাবাদী। বাহারা অর্থ নইরা আদালতে
মিথ্যা সাক্ষী দের। গঙ্গাজোলে শব্দও ইহার অক্তরুপ অর্থে
ব্যবস্তুত হইরা থাকে।

বন্দ্র, গতি। ভাগি পরত্র সক কে। সট্বল্র । বন্দ্র (পুং) মঙলী সপ্রিশেষ। (স্কুলত কর ৪ অ°)।

२ वहवरनीय क्रांत्रक धानिक वाकि । (निक्तान २ वर्°)

বক্রধাতু (পুং) হুবর্ণ-গৈরিক, চলিত বর্ণগেরিমাটী। বক্রবাহন, কর্কুনের পুত্ত। [পবর্গ দেখ]

ব্ধ্বস্ (क्री) ১ রপ। ২ বপু। "উত কা বাং লণতো বধ্বনো গীন্তিবাহিবি সদসি পিৰতে নৃন্" (ধক্ ১)১৮১৮) 'রুলতো দীপ্তক বধ্বনো রূপক্তৈব বপুৰো বা' (সামণ)

ব্মু (দেশল) গৃহছাৰোপরি পারাবতাদি ব্যাইবার লভ বংশনির্দিত

ছত্রি বিশেষ। ইহা একটা বংশদণ্ডের উপর চকুকোপ আকারে সমতল পৃঠে আঁটা থাকে। উহা পৃস্ত হানে বিদৰিত থাকে বিলার সম্ভবতঃ ব্যোম শব্দের অপঞ্জান কথিত হইরা থাকে। ব্যু (অমর) শিবপূজাতে কপোলবাভতেল। উহা উকার, অকার ও মকারাত্মক শিবের প্রথম অরুণ। বথা—
"ডিম্ ডিম্ ডিম্ ডিম্ ডিড্ম্ ডিম্ ডিড্মিরুড্মরুং বাদরন্ পুরুনাদং বম্ বম্ বম্ বম্ বষ্ বষ্ ব্যু প্রমিত্দশশিরাত্মালমানেন নৃত্যন্। কর্ণ্রাসিক্তত্মাপটিতপটু অটাল্ডির্ডাল্ডির্ডাল্রার্নীং।"

রোমণীলাম্ত)
২ বরুণবীজ। বথা—"নাসাপুটো গ্রমা বমিতি বরুণবীজ্ঞ
চত্বটিবারজপেন কুন্তকং রুভা' ইত্যাদি (তথ্যসার ভূতভভিঞা•)

বম্কী (দেশজ) বমন।
বম্, উলিগরণ, বমন। ভাগি পরদৈ সক দেট্। লটু বমতি,
লিট্ ববাম, ববমকু: ববমু:। লট্ বমিতা। লট্ বমিতা।
ল্ভ্ অবমীং অবমিটাং অবমিরু:। কেছ কেছ লিটের উস্করিয়া
'বেমু:' পদ সিদ্ধিবিধরেও মত প্রকাশ করেন। "বেমুল্চ
কেচিজ্র সিতি দেবীমাহান্তা সন্ বিবমিষ্তি, যঙ্বংবমাতে,
যঙ্লুক্ বংবস্তি। লিচ্ ৰামর্তি, বম্মতি। উপস্গপুর্কক—
উপ্বম্যতি। ঘঞ্-বাম। অপ্বম। জ্বা—বমিন্ধা, ৰাজা। অগৃচ্—
ব্যথ্। কেবল বম ধাতুর উত্তর লিচ্ করিলে 'জল হবল' ইত্যাদি
প্রযুক্ত বিকরে ভ্রা হইবে, কিছ উপস্গপুর্কক ভ্রা নিতাই
হইবে। যথা—বম্যতি, বাম্যতি। প্রম্মতি। (ভুগালাস)
বম্ (পুং ত্রী) ব্য-জচ্। ব্যন। ব্যি করা।

ব্যাপু (পুং) ব্যন্নিতি ব্য-অণুচ্ (টিকেডাইণ্ড্ পাণ্ডা৮৯) ১ ব্যি।

"নৌৰ্কাল্-শাসকাশ-জ্ব-ব্যথ্নলা-পা গুডালাইন্ড্:"

(ফ্রশ্রত উত্তর ৪৫ অ:)

২ হন্তিশুপ্ত হইতে নিগত জলকণা। ইহার পর্যার — করিশাকর।

"রজনিবমপু প্রালেরাস্কাকণক্রমসন্ত তৈ: ॥" (নৈষণ ১৯৷৬)

ব্যান (ক্রী) বম-ভাবে লাট্। ১ ছর্দন। উদরক্ষ থাছাদির উদ্পারণ।

"মধুরারৌ রসৌ বাপি ব্যানায় প্রদাপবেং।" (ক্রন্ত ১৷১২)

জ্বাদিতে রোগীকে আবশুক মত ব্যান ক্রান হাইতে
পারে। (বাভট)

২ বমনজবা। "স ধৰা বমনং ক্লাজ্যতকরমজীবরং ॥' (ক্থাসরিৎসা৹ ভঃ।১৭)

ত অৰ্দন। (মেদিনী) ৪ আহতি। (বিশ্ব) ৫ আহার।
" যা সৌরাজ্য প্রকাশাতির্ক্তো পৌরবিতৃতিভিঃ।
অর্গাতিয়ালবমনং ক্ষেবোপনিবেশিতা ৪" (রমু ১৫।২৯)
ব্যতীব গুরুবর্ণমিতি ব্য-লুঃ। ৬ শণ। (রাজনি •)

ব্যন্নী (জী) ব্যন-জীপ্। জলোকা। (রাধনি॰)
[বিস্তৃত ব্যর্থ জলোকা শব্দে ক্রইবা।]

বমনকল্প (প্রং) ব্যন্তির ব্যালি লানাবিধ যোগ-বোজন বিধি। তর্মধ্যে এই ব্যন্তব্যই প্রশাস্ত । (প্রশ্রুত, প্রত ৪৩ অ°) বমনদ্রের্য (ক্লী) উর্জ্বপদ্ধিত আমি ও বাম্প্রণাধিক বাজিকর জ্বা, বমিকার ক্রয় হথা—মরনাকল, কৃড়চি কল, বেরাভাদ্ধা পুন্দা, ভিৎলাউ ফুল, বোরা কল, খেতবোরা, খেতসর্বপ, বিদ্বন্ধ, পিপুল, করম্ব, নাগেবর, রক্তকাঞ্চন, খেতকাঞ্চন, মিম, অবগন্ধা, বেতুর, বান্ধান, অপরাক্ষিতা, আতুনী, তেলাকূচা, বচ, রাধালশশা এবং খেতরাখালশশা প্রস্ত । (স্থ্রুতত্বত্তত্ত্বত্ত) বমনবিধি (প্রং) বমনক্রিয়া। বমনক্রিয়ার কাল—পূর্ব্বাহ্ন। বিচক্রণ চিকিৎসক শরৎ, বসন্ত ও বর্ষাকালেই রোগীকে রেচন এবং বমন করাইবেন।

"শরৎগ্রীয়বসন্তে চ প্রার্ট্ কালে চ দেহিনাম।
বমনং রেচনং চৈব কাররেৎ কুশলো তিবক্॥" (ভাবপ্র•)
বে রোগী কফাক্রান্ত, বলবান্, হিকারোগাদি হারা নিপীড়িত
ও বীরচিন্ত, তাদৃশ রোগীকেই বমন করাইবে।

"বলবন্তং কফব্যাপ্তং জ্বলাসাদি-নিপীড়িতং। তথা বমনসাত্মক ধীরপিঙক বামমেং॥" (ভাবপ্র°)

বিষদোৰ, অক্সরোগ, অগ্নিমান্দ্য, শ্লীপদ, অর্ক্সুদ, কলোগ, কুঠ, বিদর্গ, মহাজীণ, বিদায়িকা, অপচী, কাদ, খাদ, পীনদ, বৃদ্ধি, অপনার,অরোকাদ, রক্তাতিদার,নাদা তালু ও ওঠ পাক, কর্ণপ্রাব,

অপামার, এরোমাণ, রক্ষাতিশার, লাশা তাপু ও ওচ পাক, কণলাব, অধিজিহুবক, গলগুণী, অতিসার, পিস্তলেম্বরোগ, মেদোরোগ ও অরুচি: এই সকল রোগে চিকিৎসক বমন ক্রাইবেন।

বমন-নিবেধ-বিষয়—কম্প, উপলেপ, নিদ্রা, তন্ত্রা, আগন্ত, নোর্গন্ধ বিষয়নিত উপসর্গ, কফপ্রসেক, ও গ্রহণী প্রভৃতি দোষ বমনকারী ব্যক্তির ক্ষমন থাকে না। বমনের গুণ,—বমনে শ্লেম লোধন হয়, তাই তক্ষনিত সমস্ত বিকার প্রশমিত হইয়া থাকে।

নিয়লিখিত ব্যক্তিদিগকে বমন করাইবে না। যথা— চক্রাণী, উর্জবাত, গুলোলর, মীহ ও ক্রিমিরোগগ্রন্থ, শ্রান্ত, হুল, ক্তক্ষীণ, ফ্ল, অতিবৃদ্ধ, মুত্রাতুর, কেবল বাতরোগী, স্বরো-প্লাতী, অধ্যয়নরত, ফুল্বিই, হাক্ষেত্রি, ভুন্সার্ভ, বালক, উর্জান্ত, পিত্ত, ক্ষ্বিত, নিক্ক ও গর্ভিগী প্রভৃতি। অব্যা বমনে রোগ দকল ক্লচ্ছ হইরা উঠে, অথবা একেবারে অদাধ্য হইরা পড়ে, তাই ইহাদিগকে বমি করাইবে না। (১)

অতি বমনে তৃকা, হিবা, উদদার, সংজ্ঞরাহিত্য, জিব্বানিঃসরণ, চকুর্বাার্ত্তি, হত্নসংহতি, রক্তছের্দি ও কণ্ঠপীড়া প্রভৃতি জন্মিয়া থাকে।

[বমনকরীর অন্তাস্ত বিধি ব্যবস্থার বিষয় বাডট করস্থানের প্রথম অধ্যারে ও স্কশত প্রভৃতি চিকিৎসা গ্রন্থে দ্রষ্টবা।] বমনব্যাপথ (রী) বমন-অসিদ্ধি পক্ষে আধ্যানাদি বিকার। [বিস্তৃত বিবরণ স্কশত চিকিৎসিতস্থানের ৩৪ অধ্যারে দ্রষ্টবা।]

বমনীয়া (জী) বময়তীতি বমণ্যথবিৰক্ষারামভিধানাৎ কর্ত্তরি অনীয়র-স্কিলাং টাপ্। > মক্ষিকা। (রাজনি॰) ২ (জি) বমন-যোগা, বমনার্ছ।

বমাল (পারসী) নষ্টদ্রব্য বা বস্ত্রবিশেষ সহিত।

বিমি (গ্রী) বমনমিতি-বম (সর্বাধাতৃত্য ইন্। উণ ৪।১১৩) ইতি
ইন্। বমন, ছর্ণন, প্রাক্তিশিকা, রোগভেদ, বমিরোগ। এই
রোগের নিদান ও চিকিৎসাদির বিষয় বৈছকে এইরপ আছে—
অতিরিক্ত তরলবস্ত্র পান, অতিশব্ধ দিয় দ্রবাভোক্ষন, অধিক
লবণভোজন, অকাল বা অপরিমিত ভোজন এবং শ্রম, ভর,
উদ্বেগ, অঞ্জীর্গ, কমিদোর, গর্ভাবস্তা ও যে কোন ছণাজনক
কারণসমূহ হারা বায়ু, পিত্ত ও কল উৎক্লিই হইরা বমনরোগ
উৎপাদন করে। এই রোগে দোষ সকল বেন্ধে, উপন্থিত হইরা
মুখকে পীড়িত ও আছ্লাদিত,এবং সর্বাক্তে ভদ্বৎ পীড়া উৎপাদন
ক্রিয়া থাকে।

এই বমনরোগ পাঁচ প্রকার। বাতজ, পিন্তজ, কফজ, সদ্নিপাতজ ও আগন্তজ। এই রোগের পূর্ব্বরূপ বমি উপস্থিত হইবার পূর্ব্বে জ্লাস, অর্থাৎ বমনোধেগ, উদ্যারাবরোধ মুখ-প্রসেক ও মুখ লবগাক্ত বোধ হর এবং আহারীয় ও পানীয় দ্রব্যে অত্যক্ত বিশ্বেষ হইয়া থাকে।

বমির সামাঞ্জ লক্ষণ—বে রোগে কুপিত দোব অত্যন্ত বেগ ও অঙ্গপীড়নের সহিত উর্জদেশে অর্থাৎ মুখের দিকে ধাবিত হইরা মুখকে পরিপুরণ করত বহির্গত হয়, ভাহাকে ছার্দি বা বমিরোগ করে।

(১) শ্ল বাবৰেৎ তৈৰিন্ধিকাৰ্ধ বাত-জ্বোদন-দীংক্ৰি-আৰাৰ্জান্।
দুলক্ষডকীগড়পাডিবৃছনুআডুৱান্ কেবলবাতরোপান্।
ব্যোপদাডাবানন্দ্ৰস্থানুক্ৰিয়েকাঠড়ড়াৰ্ডবাবান্।
উৰ্জানিকক্ৰিতা নিক্ৰমণ্ডিবৃলাবৰ্ডিনিক্ৰছিডাংক।
অব্যাধননাৎ হোগাঃ কৃক্ছ ভাং বাভি দেহিনাং।
ক্ৰমাথাডাং বা গক্ষ্ডি কৈচে বাবাাততঃ কৃতাঃ।
এতেহপাঞ্জীৰ্ঘিতা বাবাা বে চ বিবাছ্কাঃ।
ক্ৰমিচাৰ্গৰক্ষাতে চ হাৰ্ম্বশ্ৰ্বাঃ (হাক্ৰড)

বাতক ককণ—বাতক বমনে হ্বলার ও পার্কবেশে বেদনা, মৃথপোর, মন্তক ও নাতিহলে শৃগবেদনার ছার বেদনা, কাস, বরভেদ, আন্দে স্টোবেধবং বেদনা, এবং অভি কটের সহিত অতিমাত্র বেগ, প্রবল উলমার, ও অভিশব্ন শব্দের সহিত কেন-মিশ্রিত বিজিয় (থামিরা থামিরা) পাতলা ও করার রসবিশিষ্ট বস্ত বমন, এই সকল লক্ষণ প্রাকাশিত হর।

পিত্তৰ লব্দণ—পিত্তৰ ব্যনরোগে মূর্জা, পিপাসা, মুখলোহ, মক্তক, ভালু ও চকুর্বরে সন্তাপ, আছকার দর্শন, এবং পীত, হরিৎ, বা গ্রবর্ণযুক্ত, ঈবং ভিক্ত, অভি উক্ত পদার্থের ব্যন, ও ব্যন সময়ে কঠদেশে আলা, এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

ক্ষম লক্ষণ—ক্ষম ব্যনরোগে মুখ মধুর রসবিশিষ্ট, ক্ষম্রাব, ভোজনে অনিছা, নিলা, অক্চি, দেহের শুক্তা, রিয়া, খন, মধুর রসবুক্ত ও খেতবর্ণ পদার্থ ব্যন এবং ব্যনকালে শরীরে রোমাঞ্চ ও অতিশ্ব বয়গা হইরা থাকে।

সন্নিপাতজ লক্ষণ—সন্নিপাতজ ব্যনরোগে শূল, অজীর্ণ, লাহ, গিপাসা, বাস, মৃহ্বা এবং লবণ রস্যুক্ত উষ্ণ, নীল বা লোহিত বর্ণের ঘন পলার্থ ব্যন প্রভৃতি লক্ষণসমূহ প্রকাশিত হয়।

আগব্ধ ব্যন—কুৎসিত প্রব্য ভোজন ও কোনরূপ গণাজনক বস্তুর আত্মাণ বা দর্শনাদি কারণে বে ব্যন উপস্থিত হর,
অথবা ত্রীদিসের গর্ভাবস্থার যে বিদি হর, ক্রমিরোগ বা আমরদের
জন্ত বে ব্যন হইরা থাকে, তাহাকে আগব্ধর বিদ করে। এই
ব্যনরোগে বাতাদি দোব ত্ররের মধ্যে বে দোবের লক্ষণ অধিক
প্রকাশিত হয়, তদমুসারে ভাহাকে সেই দোবক ব্যনরোগ
বিদিয়া হির করিতে হইবে। কেবল মাত্র ক্রমিক্ত ব্যনরোগ
অভ্যন্ত বেদনা, অধিক ব্যনরোগ এবং ক্রমিক্ত ক্রমেরে কতিপর
ক্রমণ প্রকাশ পার। আগব্ধর ব্যনের কারণ পাঁচটী বলিয়া
ইহাও পাঁচ প্রকার, যথা—অসাত্মক, ক্রমিক, আমক, বীতৎসক ও
বার্ছ কর। এই আগব্ধর ব্যনে বাতকাদি দোবের লক্ষণ অসুসারে ইহারও বাতকাদি কারণ হির করিতে হইবে।

এই রোগের উপদ্রব—কাস, তমক খাস, অর, পিপাসা, হিলা, বিশ্বতচিত্ততা, ন্তন্তোগ এবং ক্ষকারে প্রবিটবৎ বোধ।

বমনরোগের সাধ্যসাধ্যতা—বমনরোগে বদি কুপিত বার,
মল, বৃত্ত, বেহ ও জলবাহী লোভঃসমূহকে ক্লভ ক্ষরিরা উর্ভগত
হর এবং তক্ষপ্ত বলি রোগীর কোঠ হইতে পূর্কে সক্ষিত পিড, কফ
বা বারু বৃষিত বেলানি ধাতুসমূহ উদ্পীর্ণ হইতে থাকে, আর বমি
বদি নলমূত্রের জার গছবুক্ত হর, তাহা হইলে সেই বমন-রোগাক্রোক্তরোগী ভূকা, বান, ও হিজাদি বারা পীড়িত হইরা
হঠাং বিনষ্ট হইরা ধাকে। বে বমনরোগে রোগী কীণ হইরা
বার, এবং সর্কাশ রক্তপ্রাদি বিল্লিত প্রার্থ ব্যন্ম করে, অথবা বনিজে বদি মন্ত্রপুদ্দের ভার আ্ঞা বেখিতে পাওরা বার, কিংবা বননরোপের সহিত বদি কাস, খাস, অর, হিছা, ভ্রুলা, প্রথ, বজোগ প্রভৃতি উপদেশ উপস্থিত হর, তাহা হইলে এই বন্দরোগ অসাধ্য। এই সকল সকল ভিন্ন অপন্ন সকল প্রকার ব্যসের তিকিৎসা করিলে আঞ্চ প্রতীকার হয়।

চিকিৎসা—সকল প্রকার বন্ধনারাই আমাণরে দোব সঞ্জিত হইরা উৎপার হর, এই জন্ত বন্ধনারাগে সর্বপ্রথমে লক্ষন বেওরাই কর্ত্তন্য। তাহার পার কক ও পিন্তনাপক সংশোধন (কমন বিবেচনা) ওবধ সেবন করান বিধের। কিছ একটু বিপের এই বে, কেবল বাছক বন্ধনারাগে লক্ষন অকর্ত্তনা ও বাছক বন্ধরোগে ভূল্য জলবুক হর, সৈত্বন লবণ ও বুডনিপ্রিত নূগ বা আমলকীর ব্য পান করিছে দেওরা উচিত। ওলঞ্চ, ত্রিফলা, বহেড়া, আমলকী, নিম্ব, ও পোলতা এই সকলের কাথ, মধুসংযোগে পান করিলে পিন্তল ব্যিরোগা ভাল হর। হরীত্তকীচুর্প মধু বারা লেহন করিলে দোবকে অধাগানী অর্থাৎ বিরেচিত করে, এ কারণ শীত্রই ব্যি নিবারিত হর।

বিড়ল, ত্রিফলা ও ভারী চূর্ণ সমভাবে গ্রহণ করিয়া মধুর সহিত কিংবা বিড়ল, কৈবর্ত্তমুক্তক ও ভারীচূর্ণ সমভাবে মধুর সহিত সেবন করিলে প্লেমজ বমিরোগ বিনষ্ট হর।

আমলকী, থৈ ও চিনি ৮ তোলা, একত্র পেষণ করিরা, তংগদে ৮ তোলা মধু এবং ৩২ তোলা কলমিপ্রিড করিরা বন্ধনারা ছাকিরা লইতে হইবে, পরে উহা পান করিলে ত্রিদোবজ বিমরোগ নিবারিত হর। তলক বারা হিম (শীতক্বার) প্রেড করিরা মধু সহবোগে পান করিলে ক্লফুসাধ্য ত্রিদোবজ বমিও হঠাৎ প্রশমিত হর।

হরীতকী, ত্রিকটু, ধনে ও জীরা সমভাগে চুর্গ করিরা মধ্র সহিত দেহন করিলে ত্রিলোবজ বমি ও অফটি নট হর। বেলছাল, ভলকের কাথ ও ক্ষেত পাপড়ার কাথ মধু সহবোগে পান করিলে সারিপাতিক বমি নিরাক্বত হয়। আমের জাঁটি ও বিবের কাথ মধু ও চিনি সহবোগে পান করিলে বমি ও অতীসার বিনট হয়। আম ও আমের পাতা খারা কাথ প্রস্তুত করিরা শীতল হইলে থৈচুর্গ ও মধুসংবোগে পান করিলে উন্নালক্ত বমি, অতীসার ও শিপানা নট হয়।

অবধর্কের ছাল ওকাইরা অনিতে গোড়াইতে হইবে, গরে উহা লগে নিকেপ করিরা নেই লগ গাম করিলে অতিগুঃসাধ্য বমিরোগ নিরাক্ত হর। এগাচি, গবল, নাগকেশর, কুলের আটর নাঁস, থৈ, প্রেরলু, সূতক, রক্তচন্দম ও পিয়লী এই সকল দ্রব্য সমভাগে চুর্গ করিরা মধুর সহিত লেহন করিলে বাতক, গিতক ও কক্ক এই ত্রিবিধ ব্যিরোগ্য প্রশ্নিক বুর। বীভৎস বিনি ক্ষমগ্রাহী, জব্য ছারা, লোক্সম বনি জভিলবিত হল ছারা, ও আমল বনি লব্দন ছারা নিবারণ ক্ষিতে
হর। উদ্পান আধিক্যের সহিত বনি হইলে মূর্বা, ধনে,
দুব্বক, বাইমধু ও রসাঞ্জন্তুর্প সমতাগে গ্রহণ করিরা মধুসহবোগে
লেহন অথবা সাবর্জন লবণ, ক্রমনীরা, চিনি ও মরিচচুর্ণ
সমতাপে মধুর সহিত লেহন করিলে সভা বনি নিবারিত হয়।

(ভাৰঞ - বমিরোগাধি - ক্লড)

ভাবের কল, মুড়ি বা পোড়াকটি ভিকাজন, অথবা বরকজন বনন নিবারণের উৎকট উবধ। বড় এলাইচের কাথ সেবনে বজনরোগ আন্ত নিবারিজ হয়। রাজিতে গুলুক ভিকাইরা রাখিয়া প্রাভঃকালে সেই কল নধুর সহিত পান করিলে সকল প্রকার বমি নিবারিজ হয়। ক্ষেত্রপাপড়া, বিষ্মূল বা গুলুক্ষের কাথ নধুর সহিত বা মুর্জা শ্লের কাথ চাউল ধোরা জলের সহিত সেবন করিলে সকল প্রকার বমিই তাল হইতে পারে। বাইমধু ও রক্তাচন্দন হয়ের সহিত উত্তমরূপে পেবৰ ও আলোড়ন করিরা পান করিলে রক্তবমন নিবারিজ হয়। আমলকীর রস ১ ভোলা ও কতবেলের রস ১ ভোলা, কিন্দিৎ পিশ্লাচ্প, ও মরিচচ্প মধুর সহিত একত্র মিল্লিভ করিয়া সেবন করিলে প্রবল বমনও নিবারিজ হয়। ভেলাপোকার বিষ্ঠা এ৪ টী দানা জলে ভিজাইরা ঐ জল একটু একটু থাইলে অভিপ্রেবল বমিও তৎক্ষণাৎ প্রশম্ভ হয়।

বেডচন্দন ২ তোলা, আমলকীর রস ২ তোলা একত্র কিঞ্চিৎ মধুপ্রক্ষেপ দিরা সেবন করিলে বমি থামিরা বার। ভাজা মুগ ১ পল, জল ২ সের, শেষ ২ পল, খইচূর্ণ ২ পল ও কিঞ্চিৎ মধু ও চিনি মিপ্রিড করিরা এই জল পান করিলে বমি, অভীসার, ফুকা, দাহ ও জর নিবারিড হয়। ইহা ভিন্ন এলাদিচূর্ণ, রসেক্র, র্বধ্বজন্ম ও পদ্মকান্তব্যুত প্রভৃতি: বমনরোগের উৎকৃত্ত প্রবধ। (ভৈবজ্ঞারন্ধা বিমিন্নাগাধি)

এই রোগের পথ্যাপথা।—বমি হইলেই আমানরের উৎক্রেশ হর, এই জল্প প্রথমে লক্ষন দেওরা উচিত। বমনবেগ নিরত্ত হইলে লগুপাক, বার্র অল্পোমক ও কচিকর আহারাদি ক্রমশঃ দেওরা আবন্তক । বমনের বেগ থাকিতে বদি আহার দিবার আবন্তক হর, তাহা হইলে ভাজানুগের কাব্যের সহিত থৈ চূর্ণ, মধু ও চিনি মিশ্রিত করিরা আহার করিতে দিবে। এইরূপ আহার দিলে বমন, ভেদ, অর, লাহ ও পিপানার শান্তি হইরা থাকে। বমনবেগ নিরত্ত হওরার পর সক্ষমত সকল এব্য আহার এবং জ্রাদি উপদর্গ না থাকিলে জ্বাসমত স্থামাদি করিতে পারা বার। পরিকার পানাহার, পরিকৃত ছানে বান, স্থাছ আছাপ এবং মনের প্রভ্রতা এইগুলি এই রোগে বিশেষ উপদ্বাহাণ এবং মনের প্রভ্রতা এইগুলি এই রোগে বিশেষ উপদ্বাহাণ এবং মনের প্রভ্রতা এইগুলি এই রোগে বিশেষ উপ-

কারী। যে সকল কারণে স্থপা জয়িতে পারে, সেই সকল কারণ ও রৌল্রাদির আতপ সেবন প্রভৃতি বমনরোগে বিশেষ অনিষ্টকারক।

শ্লরোগ ও অরপিত রোগে বমন করাইলেই উপকার হয়। ঐ সকল রোগে বে সকল বোগ সেবন করাইরা বমন করাইতে হয়, তাহা ডত্তদ্ শব্দে এইবা।

বমতি উন্পিরতি ধ্যানিকমিতি 'ইক্ ফুন্তানিভাঃ' ইতি ইক্।
২ আমি। (মেনিনী)ও ধৃর্ম্ম। (শব্দরমা॰)
বিমিত্ত (আি) বম্-ক্ষো। বাস্তা। বমনযুক্ষা। ফুতবমন। পীড়িত।
"বমিতং লক্ষরেৎ প্রোক্ষো লক্ষিতং ন তু বামরেৎ।
বমনে ফ্রেশবাছল্যাৎ হক্ষায়ক্ষনকর্মিতং ॥" (উএট)

২ ব্যনকৃত বন্ধ।

বমিত্ব্য (জি) বমনের উপযুক্ত। বমনোজেককারী।
বমিন্ (জি) > বমনকারী। ২ পীড়িত।
বমী (দেশজ) উদরস্থ জবোর উদগমন। বমন।
বাস্থেটিয়া (দেশজ) > জনদক্ষা। বোষাই প্রেসিডেলীর
সম্প্রোপক্লে থকাকার মুসলমান জনদক্ষাগণ পণাবাহী নৌকা-,
চালনের ভাগ করিয়া বিশিকদিগের নিকট আসে এবং স্থবিধা
পাইলে তাহাদের বথাসর্বস্থ পূঠন করিয়া লইয়া বায়। আনেকে
অস্থমান করেন, 'বন্ধে' (জনপদ) ও বেটিয়া (থর্ককার)
বা বন্ধ্বাসী অর্থ হইতে এই দক্ষা সম্ভ্রাদায়ের নামকরণ হইয়াছে।
কিন্ত তাহারা বেরপ নৌকা লইয়া সমুভ্রাক্ষে যাতায়াত করে,
ইংরাজীতে তাহা Bum-boat নামে থ্যাত। অধিক সন্তব
এই 'বন্ধোট' শক্ষ হইডেই জলদক্ষা সম্প্রদারের বন্ধেটে
মাম হইয়াছে।

২ বর্জনান সমরে হত্মসন্থ লূচকার পুরুবকেও ক্লোকে ব্যবেটে বলিরা সমোধন করে। ৩ বে সকল কর্মচারী কুল্র নৌকার আরোহণ করিরা সমুজুনুথে আসিয়া বৈদেশিক বণিক-দিগের জাহাজ ধরিরা এজেন্টের হাতে বা থালাশবোঝাই সমিতির নিকট আনিরা দের, ভাহারাও ধ্যোট নামে থাতে।

वञ्च (गूर) वरम, वीम । (मसब्र्जा°)

दश्चाद्वर (१११) स्वान्तर (अनावि)।

বন্মাগ (क्री) জনপদভেদ।

ব্ৰত্ৰ (পুং) ১ উপজিক্ষ। (ৰক্ ৮।৯১।২১) বন্ত বিবাং জীপ্। ২ উপজিকিকা। "বনীডিঃ প্ৰস্থাবা মদানং।" (ৰক্ ৪।১৯।৯) 'বনীডিক্লপজিকিকাডিঃ' (সালগ)

(পৃং) এক ধন বৈদিক ধবি-- রম্র বৈধানদ, ইনি ধধেদের ১০১৯ ক্ষেন সম্রেটা ধবি। ব্যাকৃট (দী) ববীক। বজ্রক (পুং) রবদাতীর শিশীদিদা। বয়ু, পতি। ভাদিং ভারনে সকং সেট্। দট্ বরভে। লোট্ বরতাং। শৃট্ বরিবাতে শুট্ বররে। শুট্ বরিভা।

বয় (গুং) ভদ্ধবার। বন্ধবর্দকারী। জিলাং জীপ্। বরী স্ত্রী ভদ্ধবার।

वसूर 🔏 🕼) वत्रनकार्यः।

বয়ত (গং) ৰংগৰ-ৰৰ্ণিত ব্যক্তিংজন। (ধন্ গাওএং) বয়ন (দী) ব্যাদির ক্তগ্রহণরূপ কার্যবিশেষ।

বয়নবিতা, উপা বা কার্ণানাদি প্রজ্ঞাত বন্ধনির্দাণরূপ শিল্পবিভাবিশেব। পাশ্চাতা বিজ্ঞানে ইছাকে Art of weaving বিলয় থাকে। কিরপে কত পরিমাণ কুলা লইয়া কত বিভিন্ন নধরের মোটা ও সক প্রতা প্রস্তুত করিতে হয়, তাহার পর সেই প্রতাপ্তলি টানা দিরা দিরা নরাজে প্রটাইতে হয়; তদনস্তর নরাজ তাঁতে সংযোজিত করিয়া তাহার প্রায় বেই প্রলি প্রথমে ছইটা ঝাপের মধ্যে দিয়া ও পরে সানার মধ্য দিয়া চালাইয়া দিতে হয়; তৎপর বর্থানিয়মে তাঁতবন্ধ প্রাদিসহ প্রসম্ভ করিয়া, তন্ধবায় বা বন্ধবরনকারী কিরপেই বা মাকু নামক বল্পাংশ-সাহাব্যে বন্ধ ব্নিতে পারেন, তৎসমুদার বাহাতে শিশিতে বা ব্রিতে পারা বায়, তাহাকে বন্ধবনবিক্যা বলে।

বর্ত্তমান সমরে পাশ্চাতা ক্লগংবাসী সভাজাতিগণ প্রথম বৃদ্ধিপ্রভাবে হল্কচালিত এ দেশীর তাঁতের অমুকরণ বারা বৈজ্ঞানিক ভিত্তিপ্রতিষ্ঠিত একপ্রকার গোহবরমর তাঁতের আবিকার করিনাছেন। ঐ সকল কলে একজালে হতা প্রস্তুত হুইতে বন্তবরর পর্যান্ত এতং শিরসংক্রান্ত বাবতীর কার্যাই স্ক্রসম্পন্ন হুইরা থাকে। বন্তচালনা হুইতে বিভিন্ন প্রকারের হৃতা (Yuru) নির্দ্ধাণ, হৃতা ক্লি (Dyeing) ও বন্তবর্ত্তম সকল প্রকার কার্যাই শিক্ষণীয়। বিভিন্ন প্রকার তাঁতের বিবরণ ও চালনা এবং তাহার শিক্ষণ প্রণালী পরে বিবৃত হুইতেছে।

অতি প্রাচীন কাল হইতে আমরা কি প্রাচা কি পালাতা সভা জনপদসমূহে দেহাছোদক বল্লের (বক্ ১)২৬।১১) প্রচলন দেখিতে পাই। প্রাচীনেরা তৎকালে বল্লবরনকৌশল স্থচাক্তরণে অবসত ছিলেন। অক্সংহিতার ১)১৪-।১, ১)১৪২।১, ২)১৪।৩, ৯।৮।৬, ৯।৯৬।১ প্রাভৃতি রম্ভ আলোচনা করিলে কেরী ও রক্তরানের আছোদন-বল্লের বহল ব্যবহার ব্যবহার ব্যবহার নাধারশতঃ গুরুকর্প ও কল্যাশকর (বক্ ৩৩৯২) এবং ভদ্রনাটিত ও আবস্থাকীর (বক্ ১)১৩৪।৪, ৫।২৯।১৫)। ইহা ভহকালে সাধারণে বনস্করণ বলিয়া গৃহীত হইয়াছিল (বক্ ৬)৪৭।২৩)। মাতা হার প্রাহিম পরিবেদ্ধ বাদ নির্দাণ করি-ত্যন—শব্রা প্রার্দ্ধ মাতরো বয়তি। প্রক্রার্থন); উহার

হ্মজ্ঞলি প্রশাস নিবিতৃ হইড। অথর্জকের বানত, চারাহর, ১২।এ২১, ১৪।২।৪১ মত্রে বজের উল্লেখ প্রাক্তরা বার। ভবির লাত্যারন প্রোভহ্ম (১৪)১।২০), আখলারম গৃহস্ত (১৪৮।১২), গোভিলগৃছ (৩২০) হুলে বজের আবশ্রজভাত ও ব্যবহার লিপিবছ হইরাছে। ভৌবীতকীরাজণে (২।২৯) কৃষ্ণবর্ধ বজের অচলন দেখিরা মনে বহু, ভখনকার ক্রিপণ শুক্লেতর ক্রুকানি ক্রিরা ব্যরহার ক্রিভেন এবং উহারা বে রন্ধন্যপ্রশাসী অবশৃত হিলেন এই বর হইতে ভাহারও আভান পাওরা বার।

পৌরাণিক বুলে সানা-বর্ণরঞ্জিত বস্তব্যরণের व्यक्तन विदाहित। छारे वृत्तायनविशामी क्षेत्रांनी बीव গ্রামতম্ব শীভবসমে সমান্ধানিত করিরাছিলেম। গণও রক্তবাস বা নীলবাস পরিশ্বত হইরাছিলেন। রামচক্র আন্দাদিগকে কৌশেরবল্প (রামারণ ২।৩২।১৬) शाम করিরা-ছিলেন। অবোধ্যাকাণ্ডের ৩৭ অধ্যারে রাম ও লক্ষণের ওভবসনহয় পরিভ্যাগপূর্বক চীর ধারণ করিবার কথা আছে। আবার ২৷৫২৷৮২ সোকে সীতা কর্ত্তক ত্রাহ্মণদিগতে বিবিধ বস্ত ও অরপ্রকানের উল্লেখ দেখিয়া মনে হয়, তখন নানা রঙ্ ও উর্ণাদি নানা জব্যজাত বন্ধ প্রচলিত ছিল। বিভিন্ন রাজগণের বেশভূবা ও ক্রৌপদীয় বত্তহরণ-প্রসঞ্চে বথেট বল্তপার্থক্যের নিদর্শন পাওরা বার। রামারণের আদিকাণ্ডের ৭৭ অধানে দিখিত আছে বে অবোধ্যাধি-পতি দশরণ বীর পুত্র ও পুত্রবণ্ চতুইরকে লইরা জনকগৃত হইতে বরাজ্যে প্রত্যাবৃত্ত হইলে ক্লেনবর্গ বিবিধ কাম্যবন্ধ ৰারা তাঁহার পূজা করিরাছিলেন। তথন কৌশল্যা, সুমিত্রা, কৈকেরী এবং জ্ঞান্ত রাজপদ্মীরা কৌমাবাস পরিধান করিয়া পুত্রবণ্ রাজকুমারী চতুইরের সহিত মলল আলাপনপূর্কক তীহাদের সমভিবাহারে দেবাসয়ে পূজা দিতে গমন করেন। এই সকল আলোচনা করিলে জানা বার বে, রামামণীয় যুগে ভক্ল, কাশাররঞ্জিত বন্ধ এবং ওডকার্ব্যে ক্ষোম্যবাসের প্রচলন যটিয়াছিল।

ভগৰান্ মন্থ্ৰচিত স্বভিপ্ৰেছের ৩৫২, ৯/২১৯ ও ১১/১৮১ লোকে বল্লের উত্তেশ আছে। ঐ পরিবেদ্ধ বাস ভখনও সম্পত্তি বধ্যে গণা ছিল এবং বল্লছন্ত্ৰণকারী বধনতে দভিত হইতেন (৮/২২১ লোঃ)। উক্ত প্ৰছে অভান্ত সম্পত্তির ভার বল্ল বিভাগেরও ব্যবহা দেখা বার।

া ৰদি কেই উপাশণাদি অথবা কাশানিকস্ত্ৰ অপহরণ করে, ভাহা হইলে সে ভজগ্ৰব্যের বধাস্ল্যের দ্বিগুল দিছে বাধ্য (মস্থ ৮০২৬)। ভজ্কার বদি ক্রব্যনার্থ কোন ব্যক্তির নিকট ১০ পাল পরিমিত ব্যুপ্তহণ করে এবং ব্যাধিকারীকে জক্তমগুমিত্রগের ক্লক্ত ১১ পালমান বস্ত্র না দের, তাহা হইলে রাজপগুজ্বারে সে ১২ পুল দিতে বাধ্য হইরা থাকে।

"छन्दरादा वर्णनगर वचाटमक्रमगाधिकम्।

্ধ আডোইছবা বর্জনানো দাপো বাদশকং দমন্ ॥" (মন্থ ৮।৩৯৭)
উপরোক্ত তুলার পরিমাণ দুটে উপলব্ধি হয় বে, ডৎফালে
বৈ সকল প্রমাণ বস্ত্র প্রস্তুত্ত হইড, তাহা দীর্ঘ ও প্রায়েই
বর্জনান প্রমাণ বস্ত্রের অন্তর্জন ছিল।

ভংকালে কার্ণাস, রেশন ও পশমী বজের বছল ব্যবহার

ছিল। তাঁহারা কলপ্রকালন বারা কার্পাসবজ্ঞ এবং কারজমৃতিকা
বারা বেশনী ও পশমী বজ্ঞ বিশুদ্ধ করিরা লইতেন ঃ

শঅভিত্ব প্রোক্ষণং শৌচং বছনাং ধাজবাসসাম্।
প্রকালনেনজনানামভিঃ পৌচং বিধীরতে ৪

চেলবং কর্মাণাং ওছিব্রেলানাং তথৈব চ।
শাকমূলকলানাক ধাজবং ওছিরিবাডে ॥
কোবেরাবিকরারবৈঃ কৃতপানামরিষ্টকৈঃ।
শীক্ষলৈরওপটানাং কোমানাং গোরসবঁপেঃ ॥
কৌববং শত্শুক্লনাং ক্ষিন্তমন্ত্রত চ।
ভিত্তিব্রানিতা কার্য্যা গোমূত্রেনোদকেন বা ॥"

(मञ्जारहिका ६।১১৮-১২১)

উক্ত গ্রন্থের ১০ম অধ্যারে ৩৫ ও ৫২ প্লোকে নিবাদচতালাদি হীনজাতীরের মৃতকেল পরিধানের বিধি আছে; কিছ অক্টের পক্ষে মৃতের বাস ত দ্রের কথা—রক্তকর্তৃক প্রমক্তমেপ্রদত্ত পরবাসও গ্রহণ করিতে লাই। মন্থ্যাহিতার উহার নিবেধ-বচন বিধিবছ আছে,—

"শাখালী ফলকে মন্ধে লেমিজাারেজকঃ খনৈঃ।

ন চ বাসাংসি বাসোভিনির্ছিলের চ বাসবেং ॥" ৮।৩৯৬ প্লোক
তৎকালে কুত্রভাদি বারা রক্তর্ভিত খাণকৌমাজিনাদি
নির্দিত বস্ত্র । বিক্রের বাজণের পাক্ষে বিশেব নিবিদ্ধ
ছিল (মন্ত্র ১০।৮৭)।

এই সকল আলোচনা করিলে বেল বুঝা বার বে, বৈদিকবুগ ক্ইতে স্বতিবুগ পর্যাক ভারতীর আর্থাসমাজে বরনবন্ত ও বরনবিভার প্রভূত প্রচলন ছিল। পরবর্ত্তী পৌরাণিক যুগে তাহার প্রভাব জারও বিভূত দেখা যার। রামারণ ও মহাভারতাদ্ধি ঐতিহাসিক মহাকাব্যে এবং পুরাণাদি শান্তগ্রহে বিভিন্ন বর্ণরঞ্জিত বত্তের বহুল ব্যবহারের প্রমাণ আছে; কিন্তু হৃঃথের বিবর তাহার কোন নিল্লান নাই।

🍍 বদি জগতের প্রাচীন বন্ত্রশিক্ষের নিমর্শন দেখিজে 📆 বদি ক্ষাতের সর্বাল্যানীন তাঁতের পতিষ উপসন্ধি করিবার আবশুক হর, ভাষা হইলে একবার প্রাচীন মিশররাজ্যের দিকে দৃষ্টি নিঃক্লেপ করিলে সকল সন্দেহই মিটিয়া বাইবে! তথাকার मामि-शब्ददतत्र मत्था (Mummy pits of Egypt) अञ्चलकान ক্রিলে আজিও শ্বাচ্চাদিত বজ্ঞের (মড়াজড়ান স্থাপড়) প্রভৃত निपर्मन পরিলক্ষিত হইবে। মিশরের এই লিনেন্ বত্ত পরিচ্ছর ও नीर्धकान दांत्री मिथित्रा उथाकात लाटक नमानदा উহাকে খ্যুদেহের অস্ত্যেষ্টি-ব্যাপারে নিরোজিত করিরাছে। রোজেটার প্রস্তর্নিপি হইতে জানা বার যে, তথাকার রাজসরকার হইতে প্রোহিতদিগকে তাঁহাদের চিরপ্রির কার্শাসবন্ধ দেওরা হইত। ভখাকার উচ্চলেণীর সম্ভান্তলোকেরা কার্পাস ও পশমী বাস পরিধান করিত এবং দরিদ্রগণ একমাত্র পশমী বস্তুই অব্দে ধরিত। এই পশমী বন্ধ ভারী ও তাহাতে পোকা লাগে বলিরা তথাকার পুরোহিত সম্প্রদায় লিলেনবল্লেরই বিশেষ পক্ষ-পাতী ছিলেন।

হিক্ত জাতির ধর্ম্মাজক ও পদস্থ সম্ভান্ত ব্যক্তিগণ উৎক্র চিলেন বস্ত্রই ব্যবহার করিতেন। বাইবেল গ্রন্থের ইংরাজী অন্থবাদে তাহাদের হে রেশমী বস্ত্র ব্যবহারের কথা আছে, তাহা সম্পূর্ণ প্রাথমিক, কেন না, প্রাচীন হিক্ত বা জানীরীর্দিগের মধ্যে রেশম ব্যবহারের বিশেষ জানা প্রাথমাণ পাওরা যার না। ইংলেওের British museum নামক জাত্বরে প্রাচীন কল্ম লিলেন বজের বে নিজর্শন আছে, তাহার ক্তা ২ পাউও ওজনে প্রায় ১০০ জাছ (Hank) এবং ২ ইক্স ছানের মধ্যে টানার (warp) ২৪০ খাই ও পোড়েনে (woof) ৬৪ খাই ক্তা বিশ্বমান রহিলাছে।

খেবিদ্ নগরে ও অভান্ত হানে প্রাচীন নিগরীর ওাঁতের বে
লকল নক্ষী বিভয়ান আছে, তাহার বরন-প্রণালী অবিকল
ভারতীর ভাঁতেরই অভ্যন্তপ, কেবল প্রভেদের মধ্যে এই বে,
বিশন-বেশীর তাঁত থাড়া-ভাবে পাতা (vertical), আর ভারতীর
ভাঁত পাটাভাবে পাড়া (Horisontal)। পাল্টাভ্য পণ্ডিতরপের বিশ্বান, অরণাভীত কাল হইতে ভারতীর আর্থান্থ বে
প্রথার ব্রবন্ধন করিরা আনিভেছেন, সেই চিরন্থন প্রথানিদ্ধ
ভাঁত ক্রবে পারত ইইরা প্রাচীনকালে রুরোপে প্রবেশ লাভ

^{*} কোন পান্ডাছা পৰিত ঘদেন,—"No trace of linen cloth made from flax is to be found in Manu or in any other earlier works of the Hindus, and it is probable that flax has never been made from the lineed plant for the manuscription of years for weaving." বিছ লকুনাছিছাৰ ১০৮০ মোৰেন কোনাছিছাৰ চলাই কানাছ লাখাৰ কান্ত মোৰেন কোনাছিছাৰ চলাই কানাছ

করিয়াছিল। ভাটিফানের ভার্কিল-পুথিতে বন্ধবনান (Montinuçon) কর্কুক মধাবুদীর দে তাঁতের চিত্র অভিত আছে, তাহা পুরীর ৪র্থ শতাবের বলিরা উক্ত হইবা থাকে। উহার দহিত ভারতীর তাঁতের বর্গেই সোনাগৃত্ত আছে, তবে হু এক ছানে নামাত পরিবর্তনও গৃষ্টপোচর হর। চীন জাতির বেশমী বন্ধ-বুনা-তাঁত সম্পূর্ণ বতর এবং চীনজাতির বক্ষপোল-করিত, ইহাতে বরপরিগাট্য অনেক অধিক। সভবত: এই তাঁতের অফুকরণে বর্তমান ছাওল্ম সকল গঠিত হইরাছে। আরিপ্রট্লেল রেশমের উল্লেখ দেখিরা মনে হর বে, গ্রীক ও রোমক-দিগের ক্রথসমৃত্তির সমর তাহাদের বিলাসবাসনা পূর্ণ করিতে চীন ছইতে রেশম ও তাঁত বুরোপে নীত হইরাছিল। আরিপ্রট্লের পূর্বেগে রেশমের আর ঐতিহালিক উল্লেখ বেখা বার না ৷

বন্ধ বুনান লিখিতে হইলে শিক্ষার্থীর নিপুশতা, ধৈর্যাশীলভা, ছন্ত-সঞ্চালনাদির পটুতা শিক্ষা করা আবশ্রক। সহস্রাধিক পুল ক্তা লইরা তাহার প্রত্যেক ক্তাটী ব্যানির্মে প্রস্তুত এবং পৃথক্তাবে ব্যাহানে সন্ধিবেশিত করা আবশ্রক। কোন অংশ জোড়া তাড়া দিরা তাড়াতাড়ি করা অসহিকুতার ফল ও

অভ্যধিক বিলম্বের কারণ।

আমাদের দেশে হিন্দু তাঁতি এবং মৃস্লমান জোলা আছে,
এখনও ইহারা । ইঞ্চি চওড়া এক দুট্ লখা চুলির মধ্যে ধরে
এরপ সরু স্তার প্রমাণ চাদর বৃনিতে পারে। ম্যাক্ষেরের
ব্রব্রন-নিরের প্রতিষ্ঠা হেড়ু ধীরে ধীরে আমাদের দেশ হইতে
এই নির্নিপ্ণতা অপস্ত হইল—ম্যাক্ষেরীরের ওভাগমনেই
এই বরননিরের বিপর্যার ঘটিল এবং অরাভাবে জোলা ও তাঁতির
অর ক্রাইল। সুল-বৃদ্ধি উল্লেডিরা লাভের আলার স্তার
আত্রর লইল এবং স্থা-বৃদ্ধি উল্লেডিরা মোটা প্রতার কাজ আরম্ভ
করিল। কলে "অতি লোভে তাঁতি নই," আর "লোলার গারে
গিম্টি তাঁতির পরনে নেটে।" এই প্রবাদ বাক্য রচিত হইল।
আশ্চর্যোর বিষয় এই বে, এই উভর জাতির জাতীর বাবদা এক
হইলেও কাপড় বুনানি স্থকে সকল বিবরেই জোলা ও হিন্দু
উাতি পরল্পরে বিভিন্ন পদ্ধা অবলবন করিরাছে। নিরে উভর
পক্ষের বরনোপবাদী ব্রের পরিচর প্রায়ত ইইতেছে।

১ তাঁত (Loom)—তাঁত ভারতবর্ধে কতকাল হইতে বে প্রচলিত, তাহা নির্ণর করা বার না। তবে প্রাচীন পারীর প্রহারিতে ইহার উল্লেখ ধেনিতে পাওরা বার। বে তাঁত বহ-পূর্ব হইতে প্রতদেশে চলিরা আনিতেহে; ভালাকে হাতের ভাত বা বালালা তাঁত বলে, উহা তাল কাঠে প্রস্তুত এবং স্থার্থ-কালহারী; এমন কি, তাঃ পূক্ষ পর্যন্ত একই ভাতে কাল চলিতেছে এরপ জনা বাম। ইহার নাকু এক হাতে চালাইরা
আপর হাতে ধরিতে হয়; বেশী চওকু কাপড় ইহাতে বুনান
আহবিধা, তবে এই উাতের বারা ইন্ধানত বোটা লক্ষ সহ
রক্ষ বুনানি করা বাইতে পারে; ইহাতে হতা পৃথ কথ
হিঁতে এবং বেরপ সক বুনানির কাল হর, ছাও পুনের বারা
সেরপ হওরা হরহ, তবে বালালা উাতের বারা কাল বেলী ক্রত
হর না, একজন হাকক উাতি এই ভাতে প্রতি মিনিটে ৩১।৩১
বার বাকু চালাইতে পারে। ইহার প্রধান নোহ এই বে, মাকু
নাড়াইবার জন্ম ইহাতে কোন আপ্রর হান নাই এবং চালাইতে
সকল বার ঠিক সরলভাবে বা স্বান জোরে চালান বটে না,
ভক্ষত বাকু অনেক সমর পড়িরা বাইবার সভাবনা।

কলের তাত (Fly shuttle loom)— আইবিশ পতালীর শেবভাগে জন্ কে নামক একজন নাহেব প্রথমে এই উাত প্রচলন করেন, ইহা সম্পূর্ণ বিদেশী নহে, কেবল বালালা উত্তের আজিনব সংজ্ঞরণ (Improvement) নাত্র । মূলতঃ ভাষার সহিত ইহার সম্পূর্ণ নান্ত আছে । জাল সেওপ বা শাল কার্চ নিরা উক্ত চুই প্রকার তাতই প্রস্তুত হইরা বাকে; কাঠটি বেল সকর্ণ ও ওম হওরা আর্ক্তক; নতুবা কিছুনিন পরে উহা বাহিরা বাবহারের অবোগ্য হইবার সভাবনা । ইহার জনেক জল প্রত্যক্ত আছে, কোন একটা জংগ বাকিরা গেলেট কার্যা অচল হইরা পড়ে। তাতের অল প্রত্যক্ত গুলির বিবরণ নিরে দেওয়া হইনা

ক্তিক (Lay)--- বাহার উপর দিয়া মাকু বাভারাত করে সেই কাঠখানি ও ভাহান্ন উভন পাৰ্বহু বান্ধ চুইটি একত দক্তি নামে খ্যাভ, ৰাজালা তাঁতে ৰাজবিহীন ঐ কাষ্ট্ৰী দক্তি নামে পরিচিত ছিল, বিলাতী তাঁতে তাহাই উন্নত (Improved) আকারে 🏖 রূপ ধারণ করিয়াছে। ইহাতে ২ থানি কার্চ আছে, উপরের থানির সহিত নীচের থানি অতি ক্লব্র ভাবে সংবোজিত। বধন মাকু জনবরত বাভারাত করিছে করিতে কাষ্টের উপরিভাগটী কর, শাভণা বা অসমতল (uneven) হটয়া আইনে, তথন সামাজ বাবে কঠিথানি বদলাইয়া লইলে আৰায় সেই ডাঁত ঠিক নৃতনের ছার কাজ করে। সেওণের অপেকা ইবা পুরাতন পাকা শাল কাঠের ব্রুরাই ভাল। এই कांग्रेशांनिएक "त्वन" (Shuttle race) वरण, केरांव केशंव দিয়া সাকুর চাকা চলে বলিয়াই উহার ঐক্লপ লামকরণ इटेबारकः। अहे मिक्क्वानित निर्वागठाफुरवात छैनतहे अधिक পরিমাণে সমস্ত হত্তের ভাসমশ নির্ভন্ন করে। এই কঠিখানি ২১ কি ৩ ইঞ্চি পরিসর, নির্মাণ সমতল, উপনিম্বাণ উপর हरेएक नीरका विरक कार्य छानू चर्चार काविकरवा क्रिक कारना

দিকে যে প্ৰাৰু থাকে, ভাষা ২ ইঞ্চি উচ্চ কুইলে অপন আৰু चाथ हेकि ब्हेटवका अहे छानू (Slope) क्रिक हिनाव मछ ए अमा हाहे। हान् इंडार दन्में (Abript) श्हेरण मानू উপটিয়া পড়ে বা সানাম সহিচ্ছ বেশী বুকিবা চলিতে থাকার সানা সভর নই হইয়া যায় এবং কাঁপে (বুনিবার সময় পা দিয়া চাপিয়া নাকু চলিবার রাজা করা) বেশী লোড়ে চাপিতে হয়; ডক্ষর "ৰ" এর হুড়া এবং টাকার হুড়া বেশী ফাটবার সম্ভব। আবার বদি চালু কম হয়, ভবে মাকু পড়িবার কথা এবং বাঁপে কুতা ভাল টান হব লা । এই বেলটার ঢাবুদিকে একটা জুলি काष्ट्रा (Groove) चारक, त्रकी नामा बनारेबात्र दान । त्रकी ঠিক সরগাও সামার মাপ মত সরু হওরা আবর্তক। সানা वनाहरू देका रक्का वा छिन ना दत्र, कात्रन छाहा हरेटनाई बहें শড়িরা যাইবার সম্ভাবনা। ৰক্তিপানি বেশ সোজা এবং পালিশ-যক্ত হওরা নিতান্ত ধরকার। কাপড় বুনানির সময় এই দক্তিকে कारना पिरक गिनिया ''भ'क्एरना' चुका गिनिया नारेटक सम । ইহা বেঁকিয়া গেলে কাৰ্য্যে ঝাৰাত ৰটে। কোটের ছিট বা বিচানার চাবর ইজানি মোটা কালের জন্ত এই দক্তিখানি একট মোটা রকম ও শাল কাঠের হওয়াই দরকার, জার সক কাপড় বুনানির পকে ইহা হালকা অর্থাৎ সেওণের रुहेरणहे खरिया ।

বানা (Shuttle box) -- পূৰ্ব্ধ-বৰ্ণিত ব্লেশের হুই পার্বে গাঁচার মত চুইটা বেরা স্থান আছে, তাহাকে বান্ধ বলে। মাকুটা এক বাক্স হইতে চালিত হইরা অপর বাক্সে যাইরা দাঁড়ার। এ বারা ১৫।১৬ ইঞ্চি লখা এবং মাকুর অনুরূপ চওড়া। কলের তাঁতে এই নৃতন উন্নতি লাধিত হইদাছে। এই বান্ধটা মাকুর গতিকে नियंत्रिक (Regulate) कतिया त्या वात्यात्र मत्या अकि জুলি কাটা (Groove) খাকে, ভাহাতে চৌপলা একটি কাঠের টকরা (wooden block) বসান আছে, ঐ টকরাকে "মেড়া" (Picker) বলে। একটি লোহার শিক ঐ মেড়ার উপরাংশ ভেদ করিয়া একদিকে বাল্পের মুড়ার কার্চে ও অপর দিকে পাধার সংলগ্ন একটি চকে আবদ্ধ আছে। মেডার এক প্রান্ত জ্বলির মধ্যে ও অপর প্রান্ত শিক্ষের সহিত লাগান থাকার বেশ খাডা হইরা বসিরা থাকে। বেডাটর বাহিরের দিকে গুই'ট ছিক্ত করিয়া ভাষাতে দড়ি পরান বর । ধনই দড়ির সহিত তাত ঝলাইবার আৰু দড়ির বোগাবোগ আছে, মেড়া ঐ বান্ধের একেবারে প্রাক্তভাগে এক মাসুটা সম্পূর্ণ বার্ষ্কের মধ্যে থাকে। ভাতেল ধরিরা টানিলেই বেড়ার টান পড়ে, এবং মড়াটা শিকের মধ্য দিলা চলিলা আসিরা মাকুর অঞ্চাগকে আবাত করে। তথ্ন সেই আখাতের স্থে স্থে মাকু ছুটতে বাকে, কিন্ত ৰান্ধটি সাঁকুর হাই পার্লেই পৌনা থাকে বলিয়া উন্নান্ধ গাতি নিরন্তিত (Regulated) হয়। বান্ধ বেশী চঞ্জা হাইলে মানু লাফাইয়া উঠে এবং রেল চঞ্জা হাইলে পড়িরা যান। মেড়ার সহিত বড়িটাও বেশ হিসাব করিয়া বাঁথা দরকার, যেন উত্নার টানে মেড়াটি সহজ ভাবে ও কাউ না হাইয়া আসিডে পারে এবং আঘাডাটি বেন বেশ জারের সহিত অফুডাবে লাগে। শাল কাঠির মেড়াই ভাল, সেগুণ বা অক্ত কাঠ হাইলে শীন্ত নাই হাইয়ার সন্তাবনা। অনেক জাঁতে চামড়ার মেড়া দেখা বায়, ভাহা ধীর্থকাল হারী হয়।

ষ্ট-কটি (Top-batten)—ইহা একথানি ২ঁবা ২২ঁ ললের নীরস শাল বা সেওপ কাঠ; ইহার উপরিভাগ জর্ক বৃত্তাকাল, নিমভাগ চেপ্টা এবং ভাহার মধ্য দিয়া দক্ষির রেলের জ্লির অমুরূপ ঋত্ ও সক্ষ জ্লি (Groove) আছে। ঐ কাঠখানি রেলের সমাস্তরাল ক্ষিঃ। ভাঁতের উভয় পার্ছতি কোল পাথার সহিত এরপ খাঁচ করিলা বসাইতে হইবে বে, ইছো-মত মৃট্কাঠ উপরে ভোলা বা খোলা যায়। এই উপর ও নীচের জ্লি চুইটির মধ্যে সানা বসিবে। এই চুইটি জ্লি ঠিক সরল এবং সানার অল্পরুপ সক্ষ না হইলে সানা লাগান চ্প্রুছ হয় এবং "প'ড়েনের" স্ভায় ভাল ঘা লাগে না। সক্র বৃনানির পক্ষে সেওপ এবং মোটা বৃনানিতে শাল কাঠের ভারী রক্ম-মূট-কাঠ ভাল।

পাথা (Side-bar)—কোন কোন তাঁতে তুই পার্বে ৪ বা ৫ বি ইঞ্চি চওড়া চুইথানি ডকা লাগান থাকে; কুটিরার যে প্রকার তাঁতে বস্তবন্ধন হর তাহার প্রথমে চুই পার্বে ছুইথানি ২ বা ৩২ চিওড়া এবং আবার তাহার ছুই পার্শে ছুইথানি ২ বা ৩২ চিওড়া এবং আবার তাহার ছুই পাশে ছুইথানি ১ ইঞ্চি সক্ষ পাথা থাকে। প্রকাপ বেশী লখা তাঁতে ৪ থানি পাখা দিলে বেশী মজবুৰ হয়; এই পাথা ছুইখানির নিম্নভাগে স্কৃলি ভাটিরা মৃট-কাঠ বসান থাকে। জুলি এক দিকে ৪ বা ৫ ইঞ্চি ও অক্তাদিকে পাঁবা ৮ ইঞ্চি । মূট-কাঠটা সানা পরাইবার সমন্ধ বাহির করা বরকার, সে জন্ধ যে দিকে বেশী জুলি থাকে, মূট কাঠটীর সেই মাথা উপর দিকে টানিলে সহজে সে মূথ বাহির হইয়া যার, তৎপরে অপর মূথ বাহির করা আবন্ধন। কুটিরার তাঁতের পাথাগুলি অন্ধ তাঁতের পাথা জণেকা কিছু লখা, ইহাতে ব্যাসার্দ্ধ বছর দিকা বি বা দানিবার সমন্র কম জোরে আসিয়া লা লাপে বলির টানার স্থার বেশী জারে লাগে লা এবং পড়েনের স্থাও বেশ সহজে জন্ধুজাবে চাপিরা বার।

নাথা-ভাঠ (Top-bar)—তাঁভের উপরস্থিত একথানি লখা ভাঠ; ইহা পাধাঞ্চলিকে ধরিয়া থাকে। এথানি তাঁভের বক্তির ঠিক সমাভ্যান থাকার সময় বয়নী একটা সম-চতুর্ত্ত আকারে পরিণত হইরাছে। এই বাপাকাঠ হক্তি অপেঞা ছই বিকেই কিছু কিছু ছোট থাকে। সাধা কাঠের হইপালে ছইটা সক্ষ লোহার নিক লাগান আছে, তাহার উপর সুমত ভাঁত বুলিতে থাকে।

ক্রেম (Frame)—ভাতের মাণ লইরা ক্রেমটা এবছত করিতে হয়। ভাতের মাথালাঠটা যত লখা হইবেদ, ক্রেমটাও ভত লখা হইবে। ক্রেমটার উপরে নীচে 'ৰাভা' (কাঠ) দিরা আঁটিরা খুটা করটার উপরে এড়ো দিকে ২টা পৃথক ছড় (Bar) লগাইতে হয়; সেই ছড় ইছোমত উপরে উঠান বা নীচে নামাইবার মন্ত খুঁটার পার্বদিকে ভূলি কাটা আবশুক। উপরের ছড়ের সক্রে দক্তি লাগাইরা ইছোমত ভাত নামান বা উঠান বাইতে পারে।

মাকু (Shuttle)--বাদালা বা বেশা ভাঁতে বে মাকু বাবহাত হয়, তাহা সম্পূর্ণ লোহ বা পিত্তল নির্মিত। কলের তাঁতে কাঠ ও লৌহনিৰ্দ্বিত মাকুর ব্যবহার আছে। ভবে কোন কোন হাওল্মে (Chatterton's Handloom) সম্পূৰ্ লোহ-নিশ্মিত মাকুই বাবহাত হয়; কলের তাঁতের মাকু কিছু বেশী লখা-চওড়া। উভয় প্রান্তে লোহার ঠেস লাগান ১৪।১৫ ইঞ্চি লম্বা একথানি কাঠ মাকু বলিয়া পরিচিত। তাহার অগ্রভাগ কলার মোচার মত স্থচাল (pointed) এবং ক্রমে মোটা হইরা কাঠের দলে এরপভাবে মিশিয়া থাকে বে. জোডা ভানের চিক্ত পর্যান্ত থাকে না। ইহার কাঠেরও কোনরূপ জাল দেখা যার না। প্রাক্তম্বিত হচাগ্রভাগ মাকুর ভার-কেন্দ্রের সঙ্গে এক সরল রেখার থাকে। মাকুর মধ্যভাগে ৫ ইঞ্চি পরিমাণ ন্তানের চুই পার্বে 💒 কাঠ রাখিরা ভিতরের কাঠ কাটিরা ফেলে. ঐ ফাঁকের বামদিকে একটা লোহার পেচ আর দক্ষিণ দিকে একটা সরু ছিত্র (Eye) থাকে। ঐ ছিত্রটার মধ্যে একটা লৌছ চলি দিতে হয়। চুলিটীর পরিবর্তে কাঁচের মতি দিলে ভাল হয় ৷ প'ড়েনের স্থতার নলী বা খালীর গোড়ারও পেঁচ কটো থাকে। পুতা-ভরা-নলী মাকুর পেচে জাটিরা পুতার এক প্রান্তে অর্থাৎ সেই মাকুর অপর দিকের ছিল সংলগ্ন লৌছ-চজির মধ্য দিয়া বাহির করিবা শইতে হর। মাকুর नीरहत पिटक कुट शार्च क्टेशानि लाशत हाका क्टेंगे क्रत बाता লাগান থাকে, ভাহাডেই মাকু ক্রতগতিতে চলে ও বেলী সংঘর্ষণ হর না। চাকার কুটা ঢিল করিয়া দিলে বা একটু তৈল দিয়া লইবে চাকা ভালরপ ছুরিতে থাকে। সম্ব কালের পক্ষে আপেকায়ত সক মাকুই ভাস। মাকু খুব ভারী বা খুব পাতলা ভাল নহে। তেভুল, বেল, নিরীৰ প্রভৃতি আঁশশুভ কাঠের আৰুই প্ৰণত। মাকুর পেঁচের সহিত প'ড়েনে মনীয় হতা

লাগান থাকে,তাহা নময় নময় বুটিয়া নাৰ ও ক্ষা ছি জিয়া পাছে। এই ভারণে ইত্রিএের নাতু ব্যবহৃত হইবাছে। ভারতার নময় বাবে সাবে মাকুর তলে ও পারে তৈল বিক্তে হয়।

হাজল (Handle)—দেশুণ কাঠে প্রয়ন্ত একটা ছোট লগু। উহা হাজ নিরা ধরিতে হব। ইহার সহিত উচ্চেত্র সমত বড়ি এবং মেড়ার নড়িয় বোগ থাকে। ইহা ধর্মিরা টানিলেই মেড়া বাজারাজ করে। এই হাজলটা বেলী মোটা বা জারী বগুরা ভাল নবে, কেন না এই হাজেদের ভারেও বাজের শ্রিশ্য হইতে মাকু বাহির হইতে পারে।

ভারাক্থ--- তেবের উপরে উাতের মাধাকাঠের স্মান্তরাণ আর একটা কাঠের হড় বা সরণ বংশ দও। উহা ভেনের শ্রেড়োকাঠের (Orosa bar) সঙ্গে জীটা থাকে। ইহাকে শ্রেড়াকাঠের (

হাত খিল বা খিল কাটি—ইহা এক কুট বা লগ্ডরা কুট সফ্
একথানি কাঠগণ্ড। ইহা একবিকে সক্ষ করিবা লক্ষান্তের ছিলের
নধ্যে দিতে হর এবং ইহাতে একটা বড়ি লাগান থাকে। কাপড়
কড়াইরা হাত খিল বাগাইরা ক্রেমের সহিত একটা কাঁলি দিয়া
রাখিতে হয়। সলে সকে বাহির-লরাজের মধ্যেও ঐরলপ একটা
কাঠি দিরা মাটাতে আটকাইরা রাখিতে হয়। এই কাঠটাকে খিল
বা মোড়ানি বলে। নরাজের সহিত 'Toothed wheel' লাগান
থাকিলে এই কাঠের আবক্তক হয় না।

পাশা বা পাদল (Treadles)— ক্রেন্সের নিমে লখা কাঠের মাঝখানে ইহা লাগান থাকে। ইহা পা দিয়া চাপিতে হর। "ব" এর বেগনার সহিত দড়ি দিরা এই পাদল বাঁধা থাকে। আবশ্রক্ষত এক একথানি করিয়া চাপিতে ও ছাড়িতে হর।

নরাজ (Beaus or Rollers)—প্রত্যেক তাঁতে চুইটা করিরা নরাজ থাকে। একটা কোল-নরাজ আর একটা বাহির নরাজ। ইহাকে শুট এবং পাটিও বলে। নরাজ সেওন কাঠের ভাল, লালের হইলে আরও হারা হইতে পারে বটে, কিন্ধ দ্রারী হয়। কেহ কেহ দেবলাক, ছাতিম প্রস্থৃতি কাঠের করেন, কিন্দু ভাহা সহজে কাটিয়া বা বাকিয়া অকর্মণা হইয়া পড়ে। নরাজ প্রায়ই সকলেই কুঁলাইয়া গোল করিয়া থাকেন, তবে প্রীরমপ্র অকলে চৌপলা নরাজও চলিত আছে। বাহা হউক, এরূপ চৌরস (Piane) হওয়া আবশুক বে, কোনরূপ উচু নীচু বা তেড়া বাকা না পাকে, ভাহা হইলে প্রভা বোঁচ হইয়া কুনানির সমর বিশেব অক্সবিধা ঘটে। ক্রেমটি বত বড় লখা হইবে, নরাজও তত বড় লখা করিতে হইবে এবং ভাহার হই য়াথায় মুইটা গলা করিয়া ক্রেনের পূঁটার মধ্যে ক্রতক প্রবেশ ক্রেমির বাহাতে স্কর্মনের পূঁটার মধ্যে ক্রতক প্রবেশ ক্রমির বাহাতে স্কর্মনের প্রাটিয়া থাকে, প্রস্থৃণ ক্রিমের ভারণ

ভাহাতে বুনানির সময় নরাজ ভাহিনে বাবাবে সরির জাপড়া জেড়া হইবার সভাবনা নাই। তাঁতে বড প্রস্থের জাপড় বুনানি হইবে, নরাজের মধ্য দিরা ভড়গুর পর্যান্ত আব ইকি চওড়া প্রকটি লখা জ্বিল থাকিবে। নরাজের মধ্যবিস্ ঠিক জরিরা ভথার প্রকটি চক্রাকার লাগ দিরা লগুরা ভালা। সেইরূপ ৪২%, ৪৩%, ৪৫% ইকি স্থানেও লাগ দিরা বিভিন্ন রং খারা রমিভ করিরা সইকে কাজের স্থাবিধা হয়। নরাজের লন্ধিশ দিকে ২% বা ২% ইকি কাঠি বাইতে পালে, এইরূপ কুইটি ছিল্ল থাকা উচিত। কেছ কেছ নরাজের লন্ধিশ প্রান্তি লোহার দাঁভ জুরালা চাকা (Toothed wheel) গালাইরা ভাহার উপরে একটি ছেনী আঁটিয়া লবেন।

কোল-নরাজ (Cloth Been)—এইটা কারিকরের ঠিক কোলের দিকে থাকে বলিরা ইহার নাম কোল-নরাজ। ইহার নিম দিরা পা চালাইতে হয়। তাঁত ক্রেমে ঝুলাইতে হইলে চেয়ারে বলিরা বে হানে ঝুলাইতে হইবে এবং মাটিতে তাঁত বলাইলেও বলিবার স্থানের ঐরূপ একটুকু উপরে বলাইয়া লইতে হইবে। সে: তা ক্রেমের ক্রেন একবারে না কাঁটিরা চামকার রপ বা কিতা দিরা সুলাইয়া রাধা কর্তব্য। কোল নরাজে এবং বাহির নরাজে প্রথমে হতা টান করিয়া লইতে হয়, পরে যেমন বুনানি হইতে থাকে, তেমনই কোল নরাজে কাপড় কড়াইতে এবং বাহির নরাজ চিল দিরা হতা ছাড়িতে হয়।

বাহির-নরাজ (Warp Beam)—এই নরাজে টানার প্তা অভান থাকে। ইহা ক্রেমের অপর দিকে কোন নরাজের অপেকা কিছু নীচে লাগাইরা লইতে হর। ভাষাতে টানার প্তাবেশ টান্ টান্ থাকে। ভাঁড মাটিতে বসাইলে এই নরাজ ইটা ও বথাছানে ছোট ছোট খুঁটির উপরে বসাইরা লক্কা

ওসারি বা মতি (Stretcher)— কাপড় ব্নিবার সমর ছই
নরাজের বারা বেমন প্তা ও কাপড় লবাভাবে টান্ রাখিতে হর,
সেইরূপ বে অংশ বুনা হইডেছে, ভাহার বহরের বিকেও টান্
থাকা আবন্তক; সেইকছ ভাহার সুথে টান রাখিবার অভিপ্রোরে
চইথানি বাথারির সক কাবারি বহুকের মত করিয়া নাগাইতে
হয় । ঐ কাবারি ছইখানির অঞ্জাপে আলপিন্ বা সক লোহ
বাঁথিয়া লইরা ভাহাই পাড়ের কাছে বিধিয়া থিতে হয় । কাবারি
চইথানির মাঝখানে এইরূপ ভাবে হতা বিরা বাঁথা থাকা বরকার; বেহেডু ইজ্লামত ধন্তকে বেলী ভোর বাঁকিন মোর দেওরা
থার । কাপড়ের ওসার রাখে বলিরা ইবার নাম প্রনারি"।

বেলমা বা জনগনর-শান বা নেওম আখবা অভ কাঠের ১ বা ১ কি মোটা এবং ও সুট লবা একথামি কাঠের দও। ভাহাতে ছিক্ত কলা বা বাঁচ কাটা থাকে, ভাহার উপর দিকে "ব"এর বাঁলের শরের সহিত ও নির দিকে পাদসের সহিত কড়ি বারা সংবোজিত থাকে।

বাঁণ (Healds)—ইহা ঠিক সানার পরেই থাকে এবং ইহার মধ্যে দিরা টালার শুভা চলিরা লানার ছিল্ল পার হইরা বার। শুভার শুভার একরূপ শিক্ষণের মন্ত অবৈজ্ঞা থাকে, ভাষাকে "ব" বলে। এরূপ "ব" চারি পংক্তি এবং 'ব' এর উপরে নীচে ও মধ্যস্থানে একএকটি শর (Heald Shaft) সংলগ্ন দেখা বার। উপরের শর নাচনির সহিত শুভা দিরা এবং নীচের শর বেলনার সহিত শাবর থাকে। পাদলের দক্ষে এই 'ব'ও উঠা নামা করে, ইহাকে "ঝাঁণ ভোলা" বলে। ঝাঁণের সঙ্গে সঙ্গে সালার কোলের দিকেও একটী ফাঁক হয় ভাহাই মাকু চলিবার পথ। পারে এই ঝাঁণ ভোলার সঞ্চে সঙ্গে ভাতল টানিবার একটী তাল আছে। সেইটী অভ্যস্ত লইলে ক্রন্ত কাপড় বুনিবার আর ব্যাঘাত হর না।

माना वा नाइ (Reed)-वात्मत मक थिन वा मदतत मक কাঠি ছারা এই সানা তৈয়ারি হয়। ইহা দেখিতে ঠিক চিক্রণীর লার। ইহার থিল এবং কাঁক সমান ভাবে থাকে। যে স্কল মুসলমান কেবল এই সানা প্রস্তুত করে, তাহাদিগকে "নাছি" বলে। বাঁশের বা ব্যারের উপরিস্তাগটি খুব পাতলা করিরা চাঁচিয়া र वा २३ कि गया नक नना कतिया वीधिया यात्र। हेहात উপর ও নীচে অভি পাতনা বাঁশের বেতী আছে, ভাহা হুভার মধ্যে থাকায় দেখা যার না; ভাহাতেই সানা শক্ত থাকে। বাঁলের অপেকা শরের সানা ভাল; ধুব পাকা বাঁলের সানা হইলে ভাহার ধার বেশী হর, আবার খুব কাঁচা বাঁশের হইলে ভাহার খিল বাঁকিয়া ঘাইডে পায়ে। গামছা ইড্যাদিতে ৩০০।৭০০ সানা এবং ৪০ নং স্ভাৰ ১০৫০ বা ১১০০ সানার ব্যবহৃত হয়। ৪০ ইঞ্চ দৈর্ব্যের মধ্যে যক্ত কাটি থাকে, তাহাই সালার সংখ্যা ধরা হর। কাপড় বুনানির সমরে বা কাপড় এক প্রস্থ উঠিছা গেলে সানায় তেল বিবা লইতে হয়। ভাহাতে সানা মঞ্জবুদ হয় এবং স্থভাও ভাল চলে। বহি বঞ্জির রেল অপেকা সানা ছোট হয়, তৰে সানা মধ্যভাগে বসাইরা ছই পার্বে মোটা কাগক দিয়া সানার সহিত মিল করিয়া লইডে হয়। এই মিল ভাল না হইলে মাকু পড়িরা যার: এইরূপ ফাগল দিয়া না লইলে মাকু সেই কাঁক দিরা বাহির হইতে পারে। সানার মধ্যে কোন ভানে ২।১টি খিল জালিয়া গেলে পালের বে স্থানটা কাপড়ের ৰাছিৱে থাকে, তথা হইতে ২০টী খিল খলাইয়া ঐ ভৱ খিল नवनाहरू इत्र ाना रहार है। जानेश (गल र वा रक् वर्गत्र हरण ।

নাচ্নি (Levers)—নেত্রণ কাঠের ৫ কি ৬ ইঞ্চি লক্ত্তা। ইহার সংগতালে একটা ছিত্র এবং উত্তর প্রান্তে ছুইটা বাঁজ কাটা থাকে। মংগতাগের ছিত্র নধ্যে সক্ত দড়ি বা ক্তা নিরা উপরে ভারাজ্তে বে কড়া আছে, ভারার সহিত বাধিতে হর; আর ছুই পাশে বে ২টা বাঁজ কাটা আছে "ব" এর লর (Heald shaft) পেটাইরা ক্তা আনিয়া ঐ বাঁচের সহিত বাধাইয়া দিতে হয়। নাচ্নি কাপড়ের বহর বিবেচনার ৩,৪ বা ৫টা করিয়া দিতে হয়। বে করটা বিলে "ব"র বেশ টান থাকে, ভারাই দেওয়া আবশ্রক; কিন্তু টেরছা ছিট বা বিছানার চালর ব্নিতে৮ পাটি "ব" লাগে; ভারাতে ৬টা কি ৯টা নাচনির আবশ্রক। সমরে সমরে নাচনি না লাগাইয়া ছোট ছোট বল্লক উপরের ভারাজ্তের সলে বাঁধিয়া লইলে ঐয়প কাল চলে, ঐ বল্লকগুলি ছিভিছাপক গুণবিশিষ্ট (Elastic) হওয়ার পাদল ছাড়িয়া বিলেই "ব" আপনি আবার উঠিয়া আইসে।

নাচনির পাটি—আড়াই কি তিন ইকি টুকরা তজা।
ইহার ছই প্রান্তত্ব হটী ছিল্ল থাকে। সেই ছিল্লের ভিতর দিরা
নাচনির দড়ি পেঁচাইরা উপরে ভারা-ছ্ভের সহিত বাঁধিতে
হয়। যদি "ব" উঠান বা নামান আবক্তক বলিরা বিবেচিত
হয়, ভাহা হইলে পাভি ধরিরা নীচে বা উপর দিকে টান দিতে
হইবে। তদক্রন ইহাতে বিশেব কৌশলে দড়ি লাগাইতে হয়।
সে লক্ত এই দড়িকে "ধাঁদা"র দড়ি বলে। মতাত্তরে এই পাতি
না দিরা সোলাক্ষলি নাচনির সহিত উপরে ভারা-জ্তের কড়া
পেঁচাইরা দড়ি বেড়া দিরা আনিরা দড়ির অপ্রভাগ দড়ির পাকের
মধ্যে পুরিরা রাধিলেও ঐক্তপ ছোট বড় করিতে পারা বার।

ষেচ্কা—একটা লোহার সক্ষ হচ; জন্মভাগে বড়শীর ভার জাঁকড়া আছে, কোন হড়া ছিড়িরা গেলে ইহার সাহাব্যে ছিন-হত্ত "ব" এর অথবা সানার মধ্য দিরা আনা হয়। মোজা ব্নি-বার কাঁটা লইরা অথবা বালের চটার খাঁল কাটিরা কাল চলে।

শর বা ডালি (Shaft)—বাঁশের বা অপারির ৄ ইকি বলের ছড়ি, ইহা অংগাল করিরা টাচিতে হয় এবং বক থাকিলে অগ্নির উত্তাপে সোলা করিরা লইতে হয়।

শির ভালি—অতি সক ও পাড়লা বাঁশের শর। উনিধিত শরের উপরেও "ব" ক্তার মোচড়ার মধ্যে, বাঁপের উপরে একটা ও নীচে একটা থাকে। ইহাতে মোচড়া বলি আঁটা থাকে।

জো-শর (Lease maker)—ইবাও বাঁশের পাতলা ছড়ির
মত, এইরুল তিনটা লো শর বাঁশের পরেই পাশাপাশি থাকে
এবং কাপড়ের জো ঠিক রাবে। কাপড় বেষন বুনা হইতে
থাকে, তেমনি এই কাঠিখনি সরাইরা বিভে হর। এই শর ওলি
ভক্ষা বাঁশের হইলেই হবিধা।

উদ্ধিবিভ করেক প্রকারের পর উভ্যয়ণ ইটিয়া শিরীব কাগল বারা এয়ণ পালিশ করিয়া প্রথমা আবিভাক, বেন কোন মণে করের আঁশ না উঠে।

ভগটো ভোলপুত বা "ব" পাটি—দেওণ ভাঠের ৬ ইকি লখা ও ০ ইকি পরিলর একথান টুকরা কাঠ। ইহার চেহারা কডকটা "ব" এর বড; একবিকে লক অপর্যবিকে ৩ ইকি পরিলর। লফ বিকে একটা ছিত্র আহে; ভাঠখানি খুব পালিশবুক ও পাতলা। "ব" বাবিষার লমর ইহার আবক্তক।

চয়ড় (Świt)—হোট একখানা বাঁপ কি পুণারীর কাবারিকে একটা ধুরার (axlo) বত করিরা এবং তাহার চুইদিকে গাড়ীর চাকার পাটর প্রার পাতলা কাবারির পাট লাগাইরা পুডা দিরা উতর বিকের পাটিগুলি বাঁধিরা দিছে হর; পরে উহা একটা বাঁপের চুলির বধ্যে বসাইরা লইলেই চর্রুক্তিতে পরিপত্ত হর। চরকির একদিকের চাকা কিছু হোট হওরা আবস্তক। কেই দিকে পুডা পরাইরা বোটা দিকে চাপিরা চাপিরা দিলে পুডা বেল জাঁট হইরা থাকে। পুডার টালে সহজে পুরে, এরপ হাল্লা চরকি হওরা আবস্তক।

চরকি হোট বড় হই ডিল রক্ষরে হর; প্রথম রক্ষ থাড়া (vertical) চরকি; সেগ্রলি একটা কাঠির উপরে বসাম থাকে। বিতীর রক্ষ গাড়ী-চরকি (horizontal); ধুরা সমেত গাড়ীর হই চাকা হইটা খুঁটিতে কুলাইয়া রাখিলে বেরূপ হর, এগুলিও সেইরূপ। তৃতীর রক্ষ মোচা হাত-চরকি (Conical), এগুলি হোট এবং মোচার মত্ত ক্রমে হুচাল, এই চরক্তিতে হোট কাঁদের হুতা পরাইবার বেশ হুবিধা। জোলারা টানা দিবার সমর এই চরকি ব্যবহার করে; চতুর্থ—খাওরা-হাত-চরকি—ইহার গঠন প্রথম প্রকারের ভার, ক্বেল সভ্ন কাঁদের হুতার ক্রন্তই ইহার রর্কার। ইহা এরূপ হাল্কা বে সামান্ত বাহুবেলে খুরে, সে কল্প ইহাকে "বাওরা" চরকি বলে।

নাটা বা নাটাই (Reel)—ইহা অনেকটা বৃদ্ধি উড়ানো নাটাইএর প্রার, তবে ইহার মাঝবান সরু নহে।—পোড়া মোটা, ক্রমে আগার বিক্ অর অর সরু হইরা নথাছিত বডের সহিত নিশিরাছে। ইহাও ছোট বড় চুই রকম। পুড়া পোঁচাইবার লক বাহা ব্যবহৃত হর, সেওলি হাড নাটাই, আর পুড়া বলানের (sizing) সময় বাহা ব্যবহৃত হর, সেওলি কিছু কেনী বোটা ও লখা অর্থাৎ তাহাতে ৪।৫ স্থানে পৃথক্ পৃথক্ করিরা পুড়া নাটান ঘাইতে পারে! নাটাইএর পাটার্ডনি কেন পালিশস্ক অবচ মলবৃদ্ধ হর। বেনী পাতলা বইলে পুড়া করাবিত লড়াইতে নার্থানে সরু হর। বার, তথ্য প্রতা বাহির করা বার না।

पूत्रके कांत्रे-लागेरे पूत्रदिवात दश्ये र × 🎺 देकि पूक्ता

তকা; ইহার মধ্যে নোরাতের মত একটা গর্জ কাটা আছে। নাটাইএর গোড়া উহার মধ্যে ত্রাধিরা পুরাইতে হর।

টেকো—একটা সক লোহার শিক। ইহার একদিকে কুর ছার পেচ আছে এবং অন্তদিক হুচের ছার সক। পেচওয়ালা মুখের সকে পেচের থালি অর্থাৎ প'ড়েনের ছোট নলী (Pirn) ও হুচাল দিকে বড় নলী (Bobbin) পরাইরা হুডা জড়ান হইরা থাকে। চরকার চক্রের সন্ত্থক দণ্ডের সহিত ইহা থাগাইতে হয়।

চরকা (Spinning wheel)—খনামপ্রসিদ্ধ "চক্রাকার"
বর্রবিশেষ। একখানি কার্চ চক্রের পরিধি বেড়িয়া একটী জুলি
কান্টিরা লইজে হর, জগরা ৮ খানি কাঠের পাটি লইয়া ছইথানি
চাকা প্রস্তুত পূর্বক জার একটী কাঠের ধুরার (uxle) সহিত
ভাহা আবদ্ধ করিবে, পরে দেই চাকা উভর প্রান্তোপরি পাটি,
বেত, ক্তা বা সক্ষ পাতলা ভক্রা বারা আঁটিয়া লইবে।
ধুরাটী ছইটী খুটার ছিছের মধ্যে প্রবিষ্ট করাইবে ও ঐ ধুরার
এক প্রান্তে একটী হাতল লাগাইয়া দিবে। ভৎপরে এই
চক্রের সম্মুণেই হাড়-কাঠের মত মধ্যে ফাঁক বিশিপ্ত একটী
কাঠের খুঁটা পুভিবে। একটী ক্তা বা ফিতা (মাল বলে)
চরকার চক্র বেড়িয়া এই হাড়-কাঠের সংলগ্ন টেকোভে
জড়াইয়া রাখিয়া হাতল দিয়া চরকা খুরাইলে এই টেকো খুরিতে
গাকে। চরকা যত বড় হুইবে, টেকো ভঙ্ক শীল্ল ঘুরিবে।

টানার নলী (Bobbin)—এগুলি আকারে ৪ ইঞ্চি লখা, ছুই পার্শ্বে গাড়ীর চাকার স্থার এবং মধ্যভাগে দর:। টেকোর লাগাইবার জন্ম ইহার মধ্য দিরা লখ-ভাবে ছিদ্র থাকে। নলী দেগুণ বা অন্ত কাঠের হয়। টানার হতা পেচাইতেই ইহার ব্যবহার। বাশের ক্ষি দিরাও কারিক্রের। নলী করিরা থাকে।

থালি বা প'ড়েনের নলী (Pin)—ইহা নরম রকমের বাজে কাঠে প্রস্তত। ইহার গোড়া মোটা এবং ক্রমে সরু হইরা অগ্রভাগ ক্রাল; গোড়ার ক্রপের স্তান্ত পাছে, টেকোর পেটের সজে লাগাইরা ইহাতে প'ড়েনের প্রভা জড়াইতে হর।টানার নলীর মত্ত একরকম সরু প'ড়েনের নলী আছে।

টানা-কল (Bobbin Frame)—দেশুণ কাঠের আলনার জ্ঞার থাড়া বা পাররার বোবের মন্ত একটি ছত্রী বা একটি ফ্রেন। ত'বা ৪' ইঞ্চি অন্তর লখভাবে (Lengthwise) এক একথান পাভলা ছড়-লাগান, তাহার বিধা দিরা ২২ ইঞ্চি অন্তর খুব দক্ষ লোহার শিক পার হইরা গিরাছে। টানার ননী এই সমন্ত শিকে পরাইতে হর। ইক্রাম্বত এই ক্রেমটা ছোট বা বড় আলারে গঠন করা ঘাইতে পারে। কিন্তু বড় ছইলে বন্ধিও বেশী নলী ধরে, তথাপি ভাহা টাদিন বুরিরা বেড়ান কঠিন। কেই বড় টালা কল ব্যবহান করিতে চায় না। সচরাচর প্রায় ১০৫টা নলী ধরে, এইরূপ ফ্রেম ব্যবহৃত হয়। তাহাতে ও ফুট্ প্রায় ও চারি ফুট লখা করিলেই চলিতে পারে। ইহার মাঝধানে ফুই পাশে ধরিবার ফুইটা হাতল আছে।

বার বা চালি (Lease-taker)—ইহা দেলেটের জ্ঞার এক ফুট্ পরিমাণ লখা ও চারি দিকে ভক্তার ফ্রেমে গাঁথা, ঐ সঞ্চলক অনকগুলি কাবারি চিকের মত কাঁক রাথিরা সাজাইয়া লইয়া তাহার চারিদিকে ক্রেম গাখা হর। সমন্ত কাবারিগুলির মধ্যস্থানে স্ক্র ছিন্ত থাকে। টানা দিবার সময় বার থানি দক্ষিণে এবং বামে টানিলেই আলা বা বাঁপ হইতে থাকে।

টানাহাটা শর—কিছু মোটা রক্ষ বাশের দণ্ড। অন্যন ১৩টা বা ১৭টা টানা দিবার কালে আবশ্রক। এই শরগুলি একটু মজবুদ হওয়া দরকার, কারণ ইহা মাটীতে খাড়া ভাবে পুতিয়া রাখিতে হয়।

হৃশ্কি—একপান কঞ্চির অগ্রভাগ চিরিয়া তাহার মধ্যে কাঁচের ছোট একটি কড়া লাগাইতে হর। ঐ কড়ার মধ্যে প্রতা পুরিয়া টানা দিতে হয়।

মুড়াবাড়ি বা পালাবাড়ি—সর সরল বংশণও তিনহাত পরিমাণ লখা। ইহা উত্তমরূপ চাঁচিয়া লইতে হয়। টানার পরে নরাজে জড়াইবার সময় এবং সানা ভরার সমর ইহা আবশুক।

ঝাড়ন---সরু সরু ছোট কাঠি। নরাজে জড়াইবার সময় ইহা বারা টানার স্তাগুলিকে যথাস্থানে সংযত করিতে হয়।

টানা-পেচা ডাঙ্গি—একটি মোটা রক্ম স্থপারির বা বাংশের শর। টানা জড়াইবার সমর আবস্তক, ইংগ নরাজের ছিল মধ্যে গুৰিষ্ট করাইরা যুরাইতে হয়।

সাতাশি বা চিরজ্—বাঁশের ১২ ইঞ্চি চওজা এইখানি পাতলা কাবারি। তাহার এক প্রান্ত খুব চোখা, অপর প্রান্তে সমন্ত্র ছইটা ছিল্ল থাকে। ঐ ছিল্ল মধ্যে একটি শলাকা দিতে হয়, তাহাতে কাবারি ছইখানি থাড়া হইয়া থাকে। "ব" বাধার সময় ইহা আব্দ্রাকা। মোটা শরকেও চিয়ভ বলে।

ফুল্কি—বেণার অথগ্রভাগ তুলির মত করির। প্রস্তুত করিতে হয়। জোলারা ইহা হারা মাড় এবং জল দের। ভাসনের সমর ইহার প্রভাজন। কিছু তাঁতিরা বড় ব্যবহার করে না।

মান্দন বা আস—এই আস দেড় হাত পরিমিত লখা; "হির' নামে একপ্রকার শিক্ত উত্তর্বদে পাওয়া বায়, ভন্ধারা এই আস তৈয়ার হয়। মোটা স্তার কাল করিতে জোলারা প্রায়ই এই আস বারা মাড় দেয়, ইহাকে ভাসন করা বলে। তাতিরা জালো ইয়া শার্শ করে না। এতভিন ক্লবি, কাঁচি, গুৱা, মুগুর, বড়ি, হাজবাদ, নাজন-ফিতা, গল, কোনাল, না, বাশ প্রস্তৃতি আবশুক।

बह्ब-क्षजिश्र

বন্ধ ব্নানির প্রথম সোপান হতা-প্রস্তুত (Preparation of the yaru)। সর্বাত্তে হতাকে বন্ধনোপযোগী করিয়া লইতে হয়। পাড়াগাঁরে এই হতা প্রস্তুত ব্যাপারটা প্রান্তই কারিকরদের মেরেয়া করে। তাহারা হতা প্রস্তুত করিয়া একেবারে তাঁতে চড়াইবার উপযোগী করিয়া নিলে কারিকরেয়া কাপড় ব্নিতে থাকে। কারিকরেয়া এক চড়ন ব্নিতে ব্নিতে ঐ সমরেয় মধ্যে স্ত্রীলোকেয়া আর এক চড়নের সমন্ত যোগাড় করিয়া দেয়।

পূর্বে এনেশে উচ্চদ্রেনীর হিন্দুর বরে অর্থাৎ ব্রান্ধণ কারত্ব পরিবারের জীলোকদিগের মধ্যে চরকা কাটার রীতি ছিল। ব্রান্ধনকুমারীর কাটাকুতা আছিও বিবাহাদি শুক্তবার্ঘ্যে চলিয়া গাকে। কবচাদি ধারণেও কুমারীর "ব" ক্তা না হইলে চলে না। সেই চরকা কাটার জন্ম তাহারা ক্তার সক্ষ মোটা হিসাবে গারিশ্রমিক পাইতেন। এক কোট ক্তার মক্ষ্রী।৫০ জানা পর্যান্থ ছিল। তৎকালে চরকার জন্ম এনেশে অরবত্বের হুংথ ছিল না। সকলেই বাল্যাবন্থা হইতে চরকা কাটিয়া কিছু না কিছু রোজগার করিয়া গিয়াছেন। প্রাচীনাদের মুধ্যে এখনও চরকার প্রভাবজ্ঞাপক এইরুপ একটী কিংবদন্তী শুনা বাম—

শ্চরকা আমার ভাতার পুত, চরকা আমার নাতি। চরকার দৌলতে আমার দরজার বাধা হাতি॥"

লোকপরম্পরায় অবগত হওয়া যায় যে, 'সে কালে চরকা কেটে হতা করে তাতির বাড়ী দিলে দে ছয় আনা মজুরি নিয়ে যে কাপড় বুনে দিত, তাহা পুরা এক বৎসবেও ছিঁড়িত না।' ইহার কারণ এই যে, তথনকার চরকা কাটা হতা রীতিমত পাকান হইত, তাহা সহলে ছিঁড়িত না, স্কতরাং বুনানিও সহজে হইত। ইহাতে গৃহছেরও বস্তব্যয় অনেক কম পড়িত। চরকা বছ হইয়া যাওয়ায় আমাদের দেশে বিশেষ কতি হইয়াছে; কলের হতা নিতান্ত আল্গা, হতরাং তাহাকে বয়নাপযোগী ক্রিতে অনেক মজুরী পড়ে, হতাকে শক্ত, হাচিকণ এবং শুম্বাযুক্ত করিতে না পারিলে আদেন বস্ত্রবন্ধন চলিতে পারে না। কাপড়ের লখাভাবে যে হতা থাকে, তাহাকে টানার হতা (warp) এবং ঐ টানার হতাকে হই ভাগ ক্রিয়া কতক হতার উপর দিয়া ও কতক হতার নীচে দিয়া মানুর সাহায়ে বে হতা কাপড়ের পরিষর দিকে থাকে, তাহাকে "পড়েনের হুতা" (weft thread) বলে।

টানার হতা (warp) প্রস্তুত কালে বিশেষ মনোবোগ থাকা আবস্তুত। টানার হতা বেশ মালা বা ''ভাতান বদান'' চাই; প'ড়েনের হুতা (well thread) পরিপাটী করিতে কিছু নরম থাকিলেও বিশেব কতি হর না, কিছ টানার হুডার খাটুনি পুব বেণী, তাহা বেণ শক্ত, বিজ্ঞির এবং মধাছানে সন্নিবেশিত হওয়া আবশুক।

হতা-ভালা (Unfastening)—হতা কিনিবার সমর হতার বেশী গুটী বা কাটা আছে ফিনা পরীক্ষা করিরা লইতে হইবে। প্রতি মোড়ার ২০ কুড়ি লিকলি হতা থাকে। ছই শিকলি করিরা হতা পৃথক করিবে। ছই হাঁটুর উপর বাধাইরা লিকলি ভাগ করিরা লওরাই হুবিধা। ইহাকেই হৃতা-ভালা বলে।

প্তা ভিন্ধান (Wetting)—একটা গামলা বা বাণ্তির
মধ্যে পরিকার জলে প্তা ভিন্ধাইরা রাখিবে। টানার প্তা
এইরূপে তিন দিন ভিন্ধাইরা রাখা চাই। প্রভাহই জল
বদলাইরা দেওয়া উচিত। পড়েনের প্তা এক দিনের বেণা
জলে রাখার দরকার হয় না। প্তা ভিন্ধাইলে মজবুল হয়, কিছ
ভাই বলিয়া খুব বেণী দিন ভিন্ধাইয়া রাখা উচিত নহে। রঙ্গিন
প্তা বেণী ভিন্নাইতে হয় না।

নাটা-করা (Winding the reels)—চতুর্থদিনে স্ফার লল নিংড়াইরা ভাহার মধ্যস্থ অন্ত স্থতার বাধা ফেট (skein) থালি প্রস্পারে ধ্যাইয়া লইবে। পরে একটি চরকিতে পরাইয়া চরকিটা ১১।২ হাত দূরে বদাইবে। চরকির সভাগুলি তথন চুই হাতে চিরিয়া ফেটি-(skein) গুলি পর शत माझाहेबा नहें(व। छाहाट यनि ध्वकाधिक थाहे বাহির হয়, ভাহা হইলে ভাহার একটি মাত্র লইয়া নাটার এক পাটীতে (কাৰারী দত্তে) মড়াইয়া লইবে এবং অপর খেই-গুলি চর্কির এক আতে জড়াইয়া রাখিবে, নতুবা চর্কি ঘুরিবার সময় স্তার স্তায় জড়াইবার সম্ভাবনা । তংপরে "গুর্ণী কাঠের" মধ্যন্তিত লোয়াতের ভাষে গর্ভের মধ্যে নাটার দভের আগটো রাখিয়া এবং নাটার গোড়া উপরের দিকে করিয়া নাটাট-দত্তের মধ্যত্বল ধরিয়া বৃদ্ধান্থলি দারা বামদিক হইতে দক্ষিণে ও অভান্ত অসুলি দ্বানা দক্ষিণ হইতে বামে মোচড়া নিলেই নাটাই বেশ খরিতে থাকে। তথন বামহত্তর বৃদ্ধাশ্বলি ও ভর্মনীর ছারা স্বভাটী সহল ভাবে টিশিয়া ধরিবে। তাহাতে স্থভার সহিত কোনরূপ জঞ্জাল বা গিয়া বাইতে পারে না।

মোচ্ডা (Piecing)—হতা মাঝে মাঝে ছি ছিলে গিরা দেওরা ব্যতীত এই উপারে ফুড়িরা লইতে হর। ছইটা কতার অগ্রভাগ কাম হাতের বৃদ্ধান্ত্রলি ও তর্জনী বারা ধরিয়া নজিণ হাতের ঐ অন্ত্রলি দিরা উপর সুখে চাপিয়া পাক্ নিরা কেই পাকের দলে কলে নীচ দিকে জানিয়া দক্ষিণের হতার সহিত মিলাইরা নীচনিকে একট্ট চাপিয়া একটা মোচড়া দিতে হইবে । ইহাজে প্তার কোনও গিরা পড়িবে না, অবচ এরণ কৃড়িরা রাইরে বে, অঞ্চ হান হিঁছিবে, তব্ও জোড়া গুলিবে না। নোর্ছ্যা ভালরপ কেওবা না হইলে বছ্লব্যনকালে অনেক কুলিতে হয়।

এই নোচড়া দেওবার মধ্যেও তাঁতি এবং জোলাদের তেদ আছে। উহাদের পরশারের বিপরীত প্রশালী। উপরে জোলা-দের মোচড়ার কথা লিখিত হইরাছে। হিন্দু তাঁতিরা বাম ইন্তের স্বাজুলি ও তর্জনীর মধ্যে ছই স্ভার অপ্রভাগ লইরা কীয়ুলিকে পাক বিনা ঐ সজে লক্ষে উপর দিকে কুড়িরা দের। লক্ষ্ স্থভার তাঁতিকের লোচড়া ভাল, আর মোটা স্ভার জোলা-দের জোড়া দেওবাই স্থিধাজনক।

ক্তা ভাজন ও বলান (Sizing)—মোটা প্তার ভাতের
মণ্ড অথবা চিড়া ও ধরের মিশ্রিড মন্ত্র এবং সক্রপ্তার বৈথ্যর
মণ্ড ব্যবকৃত হর। একথানি পাধার বা পাত্রে মাড় কইরা
প্রথমে প্রভার কেটী বাম হাতে ধরিরা দক্ষিণ হস্ত বারা উহার
পূর্বেট উত্তমরূপে মাড় মাথাইরা লর। পরে ঐ প্রভা মাড়ের
মধ্যে এরপ ভাবে চট্টকাইতে হইবে বে, সমস্ত প্রভার গারে
ক্রি ভালরপ মাড় লাগে অথচ প্রভা বিপৃত্যল না হয়। তলনত্তর
হোট চরকির মাথার ঐ প্রভার কেটী লাগাইরা বড় নাটা বারা
পূর্ববিৎ নাটাই করিবে। প্রথমে ভাতের মণ্ড দিরা সমস্ত
মাড়ের কান্ত হইত বণিরা আন্তর্ভ ইহাকে "ভাতান" বলে
এবং মাড় দিবার পর প্রভা নাটাই করিলে প্রভার দৈর্ঘ্য কিছু
বাড়িরা বার বলিরা ইহার নাম "বলান"।

ওকান (Drying) — নাটাকরা হইলে ঐ নাটাই রোজে

নিরা ক্তা ওকাইতে হর। ওকাইরা গেলে পূর্ব প্রকারে

কৃতা খুলিরা একটা চটার বা বালের উপর অহাইরা রাখিব।

এই সকল কার্বো বড শৃথকা রাখা বাইবে, ততই কটিনতা

কম হইবে। বলি আকাশ নেবাক্তর থাকে এবং রোজে ক্তা

ওকাইবার ক্রবিধা না হর, তাহা হইলে অন্নির উত্তাপে ক্তা

ওকাইবার ক্রবিধা না হর, তাহা হইলে অন্নির উত্তাপে ক্তা

ওকাইরা গওরা বাইতে পারে। বেনী বাদলার সমর

কারিকরেরা প্রায় ক্তার মাড় বের না।

নলীভরা (Winding the bobbine)—ত্তা ওকাইরা গোলে হতার কেটা বাম হতের বৃদ্ধান্থলি হারা চালিরা বন্দিণ হত্ত হারা ক্রমে মোচড়াইরা বেশ উন্টাইরা হিবে, এইরপ করিলে হতার মাড়ের জাটা ছাড়া হর, তথদ ছোট বাওরা চরকিতে ঐ কেটা পরাইবে। বেথাদে হতার খেই কড়াইরা বাধা জাছে, ডাহা ছিড়িরা লইরা একটা খেই টাদার নলীর (Bobbin) গারে একটু কড়াইরা ঐ নলী টেকোর বন্ধ হতাল দিকে ছাটিরা, ডানহাতে চরকার পাক বিতে থাকিবে এবং

বাম হতের চুই অভূলি বারা সেই থেই বরিরা সমত নলীর গারে কুঠা অভাইবে। বেন নলী বেশ আঁট হর অবচ সহজে কুঠা পুলিরা আইলে। নলীর মধ্যভাগে নোটা এবং চুই দিকে সক করিরা কুঠা অভাইলে ভাল হর। টানার জেনের মধ্যে পরশার বাধিরা না বার, সেই বিবেচনার নলীতে কুঠা অভান উচিত। প'ড়নের কুঠা ও বালিতে (Pirn) জিলপ প্রকারে চরকার সাহাব্যে অভাইতে হর, তবে বালি টেকোর পেচ-বুক্ত মুখের সহিত আটিতে হর। মাকুর মধ্যে সহজে প্রবেশ করাইতে পারা বার এইরাপ সোটা করিরা কুঠা অভাইবে।

টানার ক্রেম-সাজান ও বার-গাঁথা—বত জোড়া ফাপড় একেবারে জারস্ত করা হইবে তাহার আবশুক মত নলী (Bobbin) পাকান হইলে টানাকলের মধ্যন্থিত শিকে ঐ নলগুলি পরাইবে; তৎপরে প্রত্যেক নলীর স্তার থেই বাহির করিরা একটি বারের হুই শলাকার মধ্যক্ ফাঁকের মধ্য দিরা টানিরা লইবে; এইরপে বত নলী থাকিবে, অর্জেক বারের ছিল্ল মধ্যে এবং অর্জেক সলার ফাঁক দিরা স্তার থেইগুলি প্রবেশ করাইরা একত্র করিরা একটী গিরা দিয়া বাঁথিতে হর।

টানা হাটা (Warping)-চলিত কথার টানা কাড়াও বলে। তাঁভিরা প্রার এক সঙ্গে ৪ জোড়া হইতে ১২ জোড়া প্ৰায় টানা দিয়া থাকে। বড হাত কাপড হইবে বা ভাষা ১১।২ হাড বেশী শবা টানা দেওরা উচিত। টানা চক্রাকারে বা চতুকোণ করিরা দেওয়া বার। ১০×৫ হাত স্থানে ৪০ হাত লখা টানা দিতে পারা বার। প্রথমে গুই প্রান্তে ৩ বা এ হাত লখা ২টা খুঁটা পুজিৰে। প্ৰথম খুঁটার ৬ বা ৭ ইঞি দুরে বামভাগে ২টী এবং ভানদিকে ৩টা লব পুভিবে, পরে २३ वा ० राज मृत्व मृत्व धक अक नार्टेस २ है। कविवा नव পুডিবে। তথন টানার কল (Bobbin frame) এবং বার আনিৰে, হভার শেইগুলি বে একটি গিরা দেওয়া আছে, ভাহা थुनित्रा ध्यथम थुँ होत्र वैश्विदय ध्यवर बात्रधानि छान काटक बात्रहा गतारेलरे (रामन अक्षेत्र का वा काला (Loase) हरेल, कामि বান হাত বিরা তাহার এক আছে সূজা ১ম শরের মধ্যে ও ১৯ শরেদ্ধ বাহিবে দিবে এবং অপর প্রান্থ স্থতা ১ম শরের বাহির ও श्व भारत्व मधा पित्रा ठानाहिता दिस्त । अहे निकास नमण प्रवाहिता ১ম খুঁটার নিকট **আসিতে হইবে। কলতঃ অর্থেক কু**ডা প্রভ্যেক শরের বাহিরে এবং শর্মেক প্রভা ভারার ভিতর ৰিংক থাকিবে। কিন্তু খুঁটা ফুটাকে ঐক্তপে না পেচাইরা **ट्यान प्रोप्त वाहित किटकरें मुद एका पुतिशा वाहित्य।**

বে দিকে ২টা পদ্ধ সেই দিকে টানা আন্নয় এবং বে দিকে ৩টা পদ্ধ, সেই দিকে টানা শেব কমিডে হইবে। কাপড়ের বছর

दरक्रण इहेरन अवर दरक्रण यन वा भाष्ट्रमा वृत्तिरख इहेरन, সেইরূপ সানা সাগিবে। স্নভরাং সেই হিসাব করিয়া জমির ও কোল পাড়ের এবং পাড়ের প্রভার সংখ্যা ঠিক করিবে। वरुरत हिंशांव कत्रिवात समस्त्र २ है कि दिनी धतिता सहैत हुन, কারণ কুনানির সময় ভাহা ক্ষিরা বার। টানা দেওরার সঙ্গে সজে স্ভা গণনা করিরা অতি একণড স্ভা গোছ করিরা वाँभित्रा त्राचित्य। करनत नाशात्या भारकत होना ना वित्रा भूचक ভাবে দেওয়া কর্তব্য, কেননা পাছে ও কোল পাছে (ইহাকে ক্ষিও বলে) লোহর (চুই হার বা ধেই একতা) পুতা বিতে হর, মৰ্থাৎ ছই খেই এক দলে এক নাটার লড়াইরা দেই লোহর স্তা একটা "বাওরা" চরকিতে লাগাইরা চরকিটা বাম হাতে ধবিয়া ভান হাতে একটি "হদ্কি" লইবে, চন্নকি হইতে লোহর ক্তার খেই বাহির করিয়া হল্কির আংটার মধ্য দিয়া ১ম খুঁটার বাঁধিয়া লইতে হর। পরে হলকির সাহাব্যে ঐ কভা একটী শরের ভিতর দিল্লা ও অপরটির বাহির দিল্লা বুরাইল্লা লইবে। এক দিকের পাড় ও কোল পাড়ের টানা শেব হইলে শর গুলি ক্রমে ক্রমে উল্টিয়া পুতিরা লইবে এবং অপর দিকের কাছও উক্তরূপে সম্পন্ন করিবে।

অক্তথা প্রথমে একদিকের পাড ও কোল পাডের টানা দিরা কাপড়ের জমির বা থোলের টানা শেষ করিবে, পরে অঞ मिटकङ्ग शांफ हेकामित होना मिटन जात भत चुत्रहेटक हत्र ना । আৰু কাল টানা-হাটার কল হওয়ার কাল অনেক সহল এবং শ্বর সমর-সাধ্য হইরাছে, নচেৎ এই জ্বোড়া কাপড়ের টানা দিতেই দেও দিন লাগিত। টানা শেব হইলে মোটা শরের পরিবর্তে সরু জো শর পুরিয়া এবং প্রথম খুঁটা পেঁচাইয়া যে স্তা আছে, সেই স্তা কাটিয়া গইয়া যে দিকে ২টা শর আছে, त्निहे सिक हटेएक नावशान क्ला क्ला नात्रत नाक क्लारेब्रा ষাইবে। বেগানে ৩টা শর আছে, সেই প্রান্তে আসিয়া আন্দান্ত ১১ ছাত পুতা বাহিরে রাখিয়া সেই পুতাগুলি বিস্তার করত উপরে ও নীচে ছইথানি "চিরড়" দিল্লা আরো একটু জড়াইল লটবে এবং দড়ি ছারা চিরড়ের সহিত শব্দগুলি বাঁধিয়া লইবে। ুবে ৩টা জো বাহিরে রহিল, তাহাও ঐ দড়ির আর এক মুড়া দিরা বেখালে বেমন লয় আছে, সেই ভাবেই পেঁচ দিয়া রাখিবে, বেন প্রজিরা লা বার। কেবল এই ওট লো রাখিলেই বথেট হর. কিছু কোন কারণে মধ্য হইতে হতা কাটা পড়িলেও অহ-বিধা হটৰে না বলিয়া তাঁতিয়া বেশী জোলর রাখিয়া থাকে।

সানা গাঁথা—উলিখিত প্রকারে টানা পেঁচা ও বাঁথা হইরা গেলে চালের বাভার বা ঐরগ কোন একটা উচ্চ স্থানে জড়ান স্থা বাঁথিয়া যে দিকে এটা শর আছে, সেই দিক্ সুলাইরা দিবে।

ज्यम अक आंख रहेटक २०१२ हो। युका अक्क कतिहा हूँ है वीरिया बाहेटब अवर के बूँ हिक बरश अवही भागाशकी हानाहेबा निरमहे राजाश्रमि राज काँक काँक हरेंद्रा श्रीकरत। उदश्य কাপড়ের বছর বিবেচনার সানায় ও কাপড়ের মধ্যভান ঠিক ক্রিয়া পালাবাড়ীর সহিত সামাধানা আটুকাইরা সইবেঁ। এক আৰ হইতে বুঁটি পুলিয়া লো শরের নিষ্ট হইতে বাছিয়া এক জোড়া (ভিতর বাহিরের) হভা দাদার একবরে প্রবেশ করাইবে। এই সমরে দুইজন লোকের আবর্তক। একজন পুডার জোডা नामात्र कारक पतिरव, जात अकवम जनत निक् बहेरक (बाँ ह का বা কাঁটা দিরা ক্তা সামার মধ্যে গ্রেৰেণ করাইরা দিবে: এইরূপে বিশেষ সভর্কভার সহিত সালা গাঁথিরা ঘাইতে চইবে। বেমন গাঁথা হইয়া বাইৰে, অমনই ২০০০টা হতা একত পাক দিয়া নোচ ডাইছা রাখিখে। কলেও (mills) সানা গাঁথিতে ঐদ্ধপ र बन (नाक नार्ता, फारानिगरक Reacher in এक Drawer in বলে ৷ জোলার নিরমে সামাভয়া সহজ্ঞ, কারণ উলায়া প্তার মুড়া কাটে না, এক সলে কোড়া থাকে বলিরা একলনেই সানা গাখিতে পারে।

नतारक कड़ान (Beaming)—हेहा वित्नव नावधानचात्र সহিত সম্পাদন করা আবঞ্চক। সানা গাঁথা হইলে হভার প্রারগুলি খুঁটি বাধিরা বাহির নরাজের ও সানার মধারল ঠিক মিল করিরা তাহার মধ্যে একটী সক্ষ শর দিয়া বাছির মরাজের জুলির মধ্যে ঐ শর্টী ৰসাইয়া দিৰে এবং একজন টানার অপর প্রান্ত মধ্যে একটা পালাবাড়ী দিয়া ভাষা টান্ টান্ করিয়া রাখিবে : তথন নরাজের ছিত্র মধ্যে একটি টাসা-পৌচা-ডাজি দিয়া একজনে বুরাইবে, আর একজন বথাত্বানে হতা বাণিত हहेएक्ट कि ना छोहा भन्नीका कतिवा बाहेरब, मरशा मरशा क्रहा টিল বা টান না পর্যে, তচ্চান্ত সক্ষ লোশর এক একটা লড়ানের সময় দিবে, অথবা স্থানে স্থানে পাতা বা কাগৰ দিয়া বাহাতে টানার প্রতা উচ্চ নীচ না হয় সেরপ ব্যবহা করিবে। লোলারা টানার যে প্রান্তে দানা গাঁথে, সেই প্রান্ত হুইতে নরাজের সূতা জড়াইতে থাকে ও দকে দলে দানা **মন্ত** প্রাত্তে দইরা বার। ইচাতে যথান্তানে সূভা ভাপন করার বেশ স্থবিধা হয়, কিছ ভাতিরা যে প্রান্তে সানা গাঁথে, তাহার বিপরীত দিক্ বইডে নরামে জড়াইতে থাকে।

"ব" বাধা প্রণাণী—নরাকে ক্তা কড়ান হইলে নরাক্টির ছই দিক্ ছইটি খুঁটার সহিত একটু উচ্চ করিয়া বাঁথিতে হর এবং ভাহার অপর প্রাত্তে বে মুড়া-বাড়ি আহে, ভাহার উভর পার্বে ছইখানা ৯৷১০ ইকি পরা খুঁটা পুতিরা এরপভাবে আবদ্ধ করা উচিত বে, ভাহাতে বেন ক্তাভলিতে সম্পূর্ণ স্বানভাবে টান পড়ে। পূৰ্বোট্টিভিড প্ৰান্তবিদ্ধ গট বোশবের বাবা ২টি "বো" (Louse) হয়, উক্ত "লো" এয় মধ্য দিয়াই "ৰ" বাঁথিতে हत । आवसण: नवस्थत "स्मा"त विकास > बाना "विवर्ण" প্রাইরা পার্থ গড়িতে উন্না কিরাইলেই ক্তাঞ্জি কাঁক হইরা याहेट्य । और बाक-ब्रम्बिटक "त" वैश्विवात एका शताहेता थे চরকিট ১২ বা ২ বাছ মুদ্রে মাউছে পুড়িবে। চরকীর স্তার অপ্ৰভাগ একটা দ্বৰা গলের মাধার বাধিয়া "ৰো"ৰ ভিতৰ দিয়া विट्नव मानशास्त्र आदनन क्रमाहेश व्यान विक निवा वाहित ক্ৰিয়া ল**ইবে: ওলটের নক্ন** দিকের ছিল্লে ৩ বা ৪ হাত লখা এক পাই জোটা হুড়া বাধিবে। ভাল হাত দিয়া সমুধহ "কো''-এর ভিত্তরের "ব" বাধা শুভাটি এমন ভাবে তুলিবে, যেন ভাহাতে চিয়জের উপরের এক এক গাছা টানার স্থতা পেচাইরা উঠে। "ব" পুরো উঠাইরা প্রশান্তর উপরিশ্ব শির ডালির নীচ দিয়া গুৱাইয়া ঐ শিৱ-ডাঙ্গির সহিত একটি পেঁচ জাঁটিয়া স্থতাগাস্থাকে গুলটের নীচ দিয়া সম্মধের দিকে জানিশেই একটি প্রভার "व" दीश इडेटव । ध्वेड्सान धककि धक्कि कतिकां निवरण्य উপরের সম্পূর্ণ হতাদ "ব" বাধিবে। একপাটি "ব" বাধা শেব হইলেই শুলটের সক্ষ পার্বসংলয় হতাগাছা একটি মোটা শরের সহিত বাধিয়া শিরের নীচ দিয়া "ৰ"র ভিডর প্ররিবে। "ৰ"র মধ্যে শর প্রান হইলে শরের উভর প্রাক্ত শিরভালির সহিত গুইট গাইট দিবে, তৎপর উলিখিত ভাবে অপর "জো"র ভিতৰ উক্ত "চিয়ত" খানাকে পৰাইলে নীচের "লো"র হতা উপরে উঠিবে এবং ঐয়ণে ঐ স্ভাগুলিরও "द" বাধিতে হইবে । এইরপে একদিকের ছই পাটি "ব' বাধা শেষ হইরা সেলে सतास के होहेता जागत शर्छत "व" वीधित्व, धारे 'व' वीधिवात সময় পুড়া এমন ভাবে "লো"র মধ্যে পরাইতে ইইবে বে. সেই প্ৰতাগাছা যেন পূৰ্ব বাধা "ব"র মধ্য দিলা বার। একাধিক টানার প্রভা বাহাতে এক 'ৰ'ৰ মধ্যে প্রবিষ্ঠ না হয়, তৎপ্রতি বিশেষ লক্ষ্য রাগা একাক প্রয়োজন।

তাতে চড়ান (Looming the yarn.)—"ব" বাঁধা
সমাধা হইলে বাহিন নরাজের সহিত সমত হতা ও "ব" ইত্যাদি
তাতে আনিরা বসাইলে। প্রথমে বাহিন নরাজটী বধাবধরণে
ধুলাইরা মুঠকাঠ উঠাইরা সানাটা বজিল কুলির মধ্যে, মধ্যজাগ
ঠিক করিয়া বসাইবে; তর্মজন্ত কোল নরাজের কুলির মধ্যে,
মধ্যজাগ ঠিক করিয়া বসাইবে; পরে কোল নরাজের কুলির
মধ্যে একটা শন প্রিয়া ভাবার সহিজ বিতীর বে একটা শন
টানার হভার মধ্যে প্রেই প্রেরিট করান ধইরাছে, সেইটি ঠিক
সমাজ্যাল করিয়া প্রকৃষ্ট, স্বরে স্ক্ল বৃদ্ধি বা হজা দিয়া বাবিয়া
লইবে। গ্রন্থ ক্রিলে জন্মন্ত গোড়ার কাল্ড বিনা বাবিয়া
লইবে। গ্রন্থ ক্রিলে জন্মন্ত গোড়ার কাল্ড বেনী নই

ছইবে না। তথন "ব" জোড উপরে নাচনির স্থাইক একং নীচে কেল্নার সাইক বাঁথিবে; তৎপরে বেল্না পাদলের সহিত বাঁথিয়া সইবে।

তাসন-করা (Sixing and Brushing)--টানা শেষ হইলে শর সমেত টানা উঠাইছা ছই আত্তে ছইটি পালাবাড়ি পরাইরা প্রত্যেক পালাকাড়িছ ছুই মুড়াছ দড়ি বাধিরা সেই ২টি দড়ি কিছু দূরে জানিরা একটা ক্রিডুজের গ্রার করিরা একসংস গিরা দিবে এবং টানা কোমর পর্বাস্ত উচ্চ থাকে, এরপভাবে इरे आत्य इरेंडि ममन्त भूँ होत्र महिल वैधित । खरशास मत्र छ পালাবাডির উপর পুতা বিভান করিরা মাজনে (Brissh) মাড় মাখাইয়া হতার উপর দিয়া টানিবে এবং মধ্যে মধ্যে কুলকি দিরাও প্ৰভাৱ মাত মাৰাইৱা লইবে। প্ৰভাৱ মধ্যতিত লৱগুলি চুই হাতে ধরিয়া ফাঁক করিতে করিতে এক প্রান্ত হইতে অন্ত প্রাত্তে ৰাইবে, ইহাকে "উদ্বালো ভাটালো" বলে। উক্ত প্ৰকারে ১।৭ বার তাস করিলে হভা পরিমার্ক্তিত এবং মাডমাথানো শেষ হয়। মধ্যে মধ্যে শরগুলি উলটাইরা টানার অপর পিঠেও ঐর্পপে বাস করিবে ৷ পুতার মাড বসিলে ঐকপ রাখিরাই টানা চিপিয়া লইবে এবং হতা বিছাইয়া দিয়া পুনরাম ২০১ বার বাস টানিয়া একট বিলম্ করিলেই মাড় গুকাইরা আসিবে, তথন ব্রাসে তৈল মাখাইয়া "তেলমান্তৰ" করিবে, ইহাতে স্থতা বেশ স্থাচিত্ৰণ এবং বিভিন্ন চটবে। এইরূপে মাজন দিতে দিতে স্থতা লখা হয়, মুজরাং মধ্যে মধ্যে প্রান্তবিষ্ঠ খুঁটা সংলগ্ন দড়ি টানিয়া দিতে হয় ৷ কিছ কট্টদাধা হইলেও জোলাদের এই প্রণালীটি (বিশেষত: মোটা প্রভার কাজে) উত্তম এবং ছডি জন্ন মনর মধ্যে গভাতান বলানের" কার্য্য সমাধা হর। প্রাতঃকার্লেই ভাসন করিতে su. বেশা রৌক্ত বা বাতাসের মধ্যে ইহা হয় না।

ভাত-খাটান (Setting the loom)—এ কাৰ্য্যটা বেশ সভকভার সহিত সম্পন্ন করা আৰক্ষক, কিন্তু হুংখের বিষয় জনে-ভেই এ বিবনে বিশেষ জমনোৰোগী। তৈয়ারি ক্রেনে ভাত কুলানো বড় শক্ষ নহে। ভাতের বৈর্দ্ধের জন্তরণ ক্রেম লল্লা হইবে এবং প্রছে তিন ক্রেটর বেশী হইবে না। উত্ত প্রছপরিমাণকে ০ ভাগ করিয়া ২ ভাগ বাহির নরাজের দিকে হাড়িয়া ভাত খানি ক্রেনের পার্বাহিত এজাে কাঠের (cross bar) উপর কুলাইবে এক না সন্ধিয়া বার, এইজত ঐ কাঠে গাজ কাটিরা ভাহাতে ভাতের লােকা বসাইরা দিকে। বসিবার হানের ভাতির ভাহাতে ভাতের লােকা বসাইরা দিকে। বসিবার হানের ভাতির নরাল ভাতা ক্রেশেল করা ক্রিটে নামাইরা কুলাইবে। ভাবন রাহির নরাল উত্ত ক্রেটের ক্রিটের ক্রিটির ক্রিটের ক্রিটির ক্রিটের ক্রিটির
আবস্তুক মত উক্ত এড়ো কাঠখানি উঠাইরা বা নামাইরা লইতে হইবেক। তৎপরে ভারাকুতের সহিত বঞ্জি নিরা নাচ্নির পাটি ও নাচ্নি সুগাইরা ভাহার সহিত "ব" জোড এরপে বাধিবে বে, সানার মাঝাড় এবং "ৰ" এর কেওড়া (বাছার ষধ্য দিরা টানার হত। থাকে) বেন সমাব্যরাশ থাকে। ঝাঁপের নীচে বে শন আছে, ভাহারু সহিত সমান্তরাল করিয়া বেল্না এবং বেল্নার সহিত পাদল বাঁধিৰে। এখন বিসাব করিয়া দড়ি গুলি এমন ক্রিয়া বাঁধা আবশুক বে সহজে হাতল ধরিয়া টানা যার এবং হাতণ টানিলে সহজে মেড়া ভালে। প্রথমে eie হাত লখা ১নং দড়ির মধ্যভাগ ভারাছুভের **উ**পরে কোন -একটি উচ্চশ্বানে বাঁথিবে, ছুই দিকে সপ্তরা হাত পরিমিত দড়ি ছাড়িয়া তথায় ২া৩ নং দড়ি লখাভাবে স্থুলাইয়া দাও এবং ১নং मिक आंख करेंकि मिक्सि अ बारम दक्तमत्र आकारकार्कत मान টিল করিরা বাঁধিবে। হাতলের মাধার যে >টি ছিল আছে গনং সক্ষ একগাছি পড়ি হাতদে থানিক জড়াইয়া (ইজামত উচ্চ নীচ ताथिकात अञ्च) के निक्षत्र कृष्टे ध्यांक फेक्ट एवं किएलत मधा निता একহাত আন্দাল বাহির করিরা লখাভাবে প্রলম্বিত ২া০ নং ঁদড়ির (১নং দড়ির সন্ধিশ্বলের অসুমান সপ্তরা হান্ত নীচে) সহিত বাৰিৰে, তৎপর মেডা গুট বালের শেষ প্রাক্তে সরাইয়া দিরা ২৷৩নং দভির মুড়া মেড়ার ছিন্ত মধ্যে বুরাইরা বাঁধিবে, ৩ ও ৪নং দড়ির স্থিত্ব হইতে মেড়ার বন্ধসন্থান নাুনাধিক দেড় হাত क्ट्रेंदि ।

ফ্রেম এবং তাঁতের উক্ততা ও দৈর্ঘ্যের উপর এই মাপ নির্ভর করে, মোটামুটি একটী ধারণা জন্মাইবার জন্ত ঐরপ মাপ দেওয়া ছইল । কলতঃ হুই পার্থের একসেট রক্ষ্ক্ সমদূরে বাইরা অপর সেট রক্ষ্মর সহিত মিলিবে।

বাঁশের ক্রেম করিতে হইলে ভাহাও ঠিক কাঠের ফ্রেমের
মন্ত করিতে হইবেক, তবে ভাহাতে নরাল ঝুলাইবার লক্ত
পুথক্ ছোট খুঁটি আবস্তুক এবং মাটিতে গর্ভ করিরা বসিতে
হইলে পালল গর্ভের মধ্যে বলাইরা লইতে হয়। মেলের চেয়ারে
বসার ভার পা গর্ভ মধ্যে বলাইরা বসিরা কাল করিতে হয়।
কোলারা নারিকেলের মালার ছিল্লের মধ্যে দড়ি বাঁথিরা ভাহাই
কোলারা মহিতে বাঁথিরা পাদলের কাল করে।

च्याचन्त्र ।

শাপড় বুনিবার জন্ত তাঁতে বসিবার সমর ওসারি, মাতু, মেচ্না, মুরী, হাতত্রার, জল প্রকৃতি জিনিস আবন্তক। কাজের সমর সে জনি একেবারে হছতের কাছে লইরা বসিবে। তথপরে প্রকৃষে পাষল টিপিরা ব্রণি ঠিক মত উঠিতেছে কি না, ব্যক্তিশালি কোনের বিকে টানিরা ভাষা ক্থানিরকে কুলান বইবাছে কি না এই সকল পরীকা করিবে, বনি কোন লোব থাকে, তবে এখনে তাহা সংলোগন করিবা কাল আরম্ভ করিবে। লোপর করটিকে পরস্পার এফটি সরু বড়ি বিশ্বা আট্ কাইরা ভাষাতে সাবাভ এফটা ভার রুলাইরা দিবে।

বর্ত্তমান প্রচলিত বেশী ফ্লাইনাট্ল জীতের নামান্ত একটু পরিবর্ত্তন করিরা লইলে এবং বর্মকৌশল জানিলে ধৃতি, শাড়ী, রেপার, টুইল, ভোরালে, কমাল, ছিট, মশারি প্রকৃতি সকল রক্ম ব্নানির কাক চলিতে পারে। cbই। করিলে পশন ও জনবের ব্রাকিও প্রকৃত করিতে পারা হার।

জীরানপুর ও কুরীরার তাঁতে হাত ও পারের সঞ্চালন আবতাক। কার্বো বিশেব পট্ডা গাকিলে বুনানি ভাল হয়। বাধ্যম
দুঠকাঠ ঝাঁপের দিকে বামহতে ঠেলিরা প্রকটি পাবল টিপিরা
ঝাঁপ তুলিবে, ইহাকে ইংরাজীতে Shedding macion বলে;
তৎপরে ডানহাতের বুডাকুলি হাতলের মাখার উপর বিরা মুঠার
নধ্যে হাতল্ট ধরিরা, নির্নিক একটু ডেরছা করিরা টানিলেই
নেডার টান পড়িবে এবং সলে সলে মাকু চলিবে, ইহাকে Picking motion বলে। ভদনভার লে ঝাঁপ ছাড়িরা পূর্বভৃথিত
প্রশালীতে অভ ঝাঁপ উঠাইরা মুঠভাঠ কোলের নিকে টানিরা
পড়েনের হুডার ঘা দিবে, ইহাকে Beating up motion বলে।
এইরলে ভাল ঠিক রাখিরা ঘত শীল্ল এই ওটি টান চালাইতে
পারিবে, তত সম্বর কাপড় বুনানি হববে। প্রাক্তি নিনিটে বে গল
ছারা ১২০ বার মাকু চালান বার, সেই বল্লই নর্কোৎজাই এবং সেই
কারিকরকে স্থানিপুণ কারিকর বলা যান।

দেশী ভাঁতে সাধারণতঃ প্রতি মিনিটে ৮৫ বার মাকু চালাইতে পারা বার। আবার অপেকারত মাঝারি রকম কারি-করের। ৭০।৭৫ বারও চালাইতে পারে। ক্সিড্র কেবল টানিলেই যে কাজ শিক্ষা হটল ভাষা নছে, ভাষার মাত্রাও ঠিক হওরা চাই। শাদলে হঠাৎ বেশী জোর দিরা চাপিলে টানার স্থতা ছিঁভিবে. পাললে আবার জোর কম হটলে ভালরপ বাঁপে না উঠার নাক চলিবার সমর পূজা ভি জিরা বাইবে বা নলিকোঁ জ বইবে, অথবা মাকু পুভার মধ্য হুইছে গলিরা পড়িবে। ভান পাদল টিশিয়া छान निरुक्त ध्वयः बाम शास्त्र हिलिन्ना वामनिरुक्त माकू छास्त्रित्व । এটবাণ করিছে করিছে পদসকাশনের সলে হয়সকালমও জভাত হটনা ঠিক কলের নত হটনা বাইৰে। হাতল ধরিয়া টানিবার সময়ও পুব বেশী জোরে টানা উচিত নহে, ভাহাতে মাকু বাজের প্রাত্তে বাইরা আবার কিরিরা আইনে এবং পড়েনের পুতা চিল পড়িয়া বাষ, তাজত হাত দিয়া ঐ পুতা টামিলা না बिटन शांक कें शि केंडी इस । त्याक सत्तम शांटक असल क्यांटर हाम (मठवा गतकात ८५, बाक्ही थक बाक ब्हैटक क्रिक्र जानत वास्त्रत थास्त्र वाहेना शीरह। अहे छान हिस मा धहेरण साथक বুনানি ভাগ হয় না। বুঠকাঠ উদনিবারও মাজার হিলাব আছে। বন্ধবিশেৰে কম বা বেশী জোৱে মুঠকাঠ টানিতে হয় অৰ্থাৎ বদি সঙ্গ স্ভার কাজ হয়, অথবা বেশী থাপি বুনিবার অভি-প্রার না থাকে,তবে অপেকান্তত কিছু কম কোরে টানা ভাবগুক, জ্ঞার বদি ছিটু, রেপার্ম অক্তেডি মোটা কাল হর এবং চাপা বুনানির প্রয়োজন হর, তবে কাজেই একটু বেশী জোতে মুঠকাঠ টালা দরকার। কাপড়ের ভালমুক্ত এই টানের উপরে নির্ভর করে। ৭৮ ইकि বোনা ছইলেই বাহির নরাজ টিল দিয়া কোল নরাজে স্থাপড় জড়াইরা লইবে এবং তৎপরে "ব" ইত্যাদিও সরাইয়া শইতে হইবে। মুঠকাট টানিলে বদি দক্তি পড়েনের স্ভার বা না দিয়া দুরে থাকে, ভবে বুঝিতে হইবে, কোল নরাজ বেশী লড়ান হইয়াছে, স্মৃতরাং আবশুক মন্ত কোল নরাজ চিল করিয়া দিৰে বা তাঁভখানি কোলের দিকে সরাইয়া লইবে। কোল নরাজে কাপড় জড়াইবার পূর্কে তরল মাড় দিরা বোনা অংশ ভিজাইরা কড়ি বা প্রস্তরথণ্ড বারা চাঁতিরা ভালরণ মাজিরা থাকে, ইহাতে কাপড় বেশ মস্থূ এবং জনটি হয়।

মাকুর যে দিক্ষে ঢাকা আছে, সেই দিক্ দক্তির উপর ও যে দিকে ছিল্ল (Eye) আছে, তাহা কারিকরের কোলের দিকে রাখিয়া মার্কুর মধ্যে থালি (Piru) লাগাইরা পূর্ব্ববিভিত্রপে বুনিতে থাকিবে। টানার স্তা কতকগুলি একর সুঁটি বাদা থাকে বলিয়া প্রথমেই পড়েনের হতা টানার হতার ঠিক সমকোণ ভাবে বসান বার না। ২াও ইঞ্চি বুনা হইলে পর ছিলে দিরা রীভিমত কাপড় বুনিতে **আরম্ভ করিবে। ৪** বা e হিঞ্চি বুনিবার পরে ওসারি পাথাইবে, কিন্তু ভাষাতে যেন বেলী জোর না লাগে। প্রথমে বুনিবার সময় টানার হতা মাঝে মাঝে ছিড়িবে, কিছ বেমন ছি ডিবে তেমনই সেই স্ভাটি "ব"র মধ্য হইতে বাহির করিয়া জোশরের উপর উপ্টাইরা রাখিবে; নচেৎ পালের অঞ স্তার সলে অভাইয়া ঝাঁপ উঠিবার বিষ্ণ বটাইবে, এরপ কতক-টুকু বুনিবার পর ছিল স্ভাটি মেচ্কার সাহাব্যে "ব" এবং সানার मध्य मित्रा चानिता वथाशांत्म कृषिता मित्त, ध विवस चानक कतिता কাপড় বুনা ভাগ হইবে না। ধৰি বেশী হতা ছিঁড়ে, তবে বে হস্ত এরণ হইতেছে, ভাষার সংশোধন করা আবশুক।

চেক, ছিটু বা রেপার বুনিজে বে বে রজের হভার গরকার, ভাহা ভিজাইর। নলী করিরা পুথক্ পৃথক্ মাকুর নধ্যে পৃরির। লওরাই স্থবিধা, বখন বে রজের হভার গরকার হইবে, ভখন সেই মাকুটি ব্যবহার করিবে।

পাড় বুনিবার প্রতি বিদেব লক্ষ্য রাখা বরকার, কারণ বে প্তার জনি বুনানি হর, পাড়ে সেই প্রভার ২টি বা এট একজ করিরা একটি সানার প্রিরা কেওকা আবদ্ধক; কারণ সেওলিতে বেশী চাপ পড়ে; প্রতরাং ব্নিবার সমর মাঝে মাঝে বাঙ্িয়া বার, তাহা ওসারি সাগাইরা ঠিক করিতে হর।

মাড়প্রকরণ—(aize) **আমানের নেশে মোটা** স্ভার সাধারণতঃ ভাতের মণ্ড এবং সক্ষ স্ভার থইএর এবং মাঝারি স্ভার চিড়া ও থইমিপ্রিভ মণ্ড ব্যব্রহুত হইরা থাকে।

আতপ চাউন ভালরপ গলাইরা গাছ মণ্ড করিবে, পরে বাবহার করিবার সময়ে ভাহাতে একটু চুণের জল ও ভেঁতুল মিশাইরা জল দিরা পাতলা করিবে ও কাপড় নিয়া ছাঁকিরা লইবে। টাট্কা ধই থালার (f'late) বা পাথরে চট্কাইরা লইলে একটু আটা মত হইবে, তথন উহা দারা মাড়ের কাজ করিবে। বেশী থই-ভিজান মাড় ভাল নহে।

বর্ত্তমান সময়ে আলু, কচু, বালি ইত্যাদির মাড় ব্যবহারেরও চেষ্টা হইতেছে। ফলতঃ মাড় কিছু আঠা রকম হইবে, অগচ এরণ না হর বে, হতার হতার জোড়া লাগে, সেজছ উহাতে তৈলাক্ত পদার্থ থাকাও দরকার, জোলারা ভাতের মাড় দেওরার পরে তেল মাজন পৃথক্ দিয়া থাকে।

কেই কেই বলেন, ১৮ সের চাউল, ১২ লের সাওদার্না, জিলিলী তেল অভাবে বাদাম তৈল ১২ সের এবং ১৬ গ্যালন জল একতা সিদ্ধ করিলে উত্তম মাড় তৈরার হয়। অবশ্র প্রথমে উক্ত প্রব্যাদি উত্তমরূপে সিদ্ধ করিরা নামাইবার পূর্বেতিল দেওরা উচিত।

রং করা—(Dyeing) স্তার রং করার ব্যাপারটি বড় সহজ নহে। রেশম বা পশমে পাকা রং করার সহজ, কিন্তু কাপা-সের স্তার পাকা রং করা অতি কঠিন, অনেক বৈজ্ঞানিক প্রক্রিরার সংবোগ ও অনেক বন্তের সাহাব্য তির হর না। আমানের দেশে কেবল নীল, লাল, কাল ও হরিল্লাদি রক্তের স্তা ছোপান হইতেছে। ঐ রঙ্ওলি বিলাতী রঙ্ অশেকা জনেক ধারাপ। নীল রং করিতে নীল বড়ি, মাত গুড়, সাজিমাটি ও দুণ কাঠ আবস্তক। বর্তমান সমরে এদেশীর স্তার রঙ্ বেশ পাকা হই-রাছে। তবে রক্তকের রূপার অন্ত রঙ প্রোরই কারে অলিরা নই হইরা থাকে।

প্তা—(Yarus) তাঁতি লোলারা বলে "চন্নকা উঠিনা গিরা কাপড় ব্নিবার প্রথ উঠিনা গিরাছে।" বাত্তবিকই চন্নকার প্রতা তালরূপ পাকান হইত এবং বেশী শক্ত ছিল। এখনকার কলে পাকান প্রতা নিতান্ত আল্গা, প্রস্তুরাং মাড় ইত্যাদি ক্রিম উপার দারা কাল করা জ্বিয়া স্থাপার নাই। বদি লে বিষয়ে একটু ক্রাট ঘটে, ভাহা হইলে ক্রেম একশেব। আনাদের সেশে পুনরার চন্নকার প্রচলন লা হইলে এ জ্ঞাব কিন্তেই পুর হইবে না ্রক বাতিন হতার ওজন ৫ পাউত। এবানে বোদে,
নাসপুর, ওজনাট, মহিহের প্রভৃতি হানে এখনও হাজের রুক্তার
ও দেশী কলে হতা হইজেছে বটে, কিছু অনিকাংশ বিলাভ
হইতে আদিতেছে। দেশীকলৈ ০০।৪০ নং অনেকা নরু হতা
করিতেছে না। নবর বছ উর্ছ হইবে, হুভাও ভত হুজ
হইবে। প্রতি বাতিলে নিজি বোড়া হুডা এবং প্রতি
নোড়ার কুড়ি ছড়ি (Skein অর্থাৎ ১২০ পরা) হুডা বাবে।

১৬ নং ক্তাৰ উত্তৰ গান্তা, ৰাজুন ইজ্যাদি প্ৰস্তুত হয়।
ই॰ নং হইছে ২২ নং ক্তাছ রেপার, ছিট, বিছানার চাবর
ইত্যাদি এবং ৩০ হইছে ৫০ নং ক্তার বেপ নাধারণ পরিবার
কাপজ হইছে পারে। ৬০ নং হইছে ৯০ বা অজোবিক্ষ নং পর্যন্ত ক্তার সরু ধুতি প্রস্তুত হইরা বাকে। উর্জ নবরের ক্তার ধুতি
করিলে অতি পাতলা হর, তবে ধুব সরু ক্তার উত্তর উড়ানি প্রেড্ড হইছে দেখা বার। ৯০ নং পর্যন্ত প্রচলিত ক্লাইনাটেলে বেল বুনা বার।

তাতগৃহ এবং জন-বারুর জিয়া (Weaving shed atmospheric influence)।—নিয়বদের জল হাওয়া বস্তবনন কার্বের বিশেষ অস্কৃত্য হইলেও হতার থাত নরর রাখিবার জভ ব্যক্তা করা উচিত। তাহা না হইলে সকল সমরে তালরপ বুনানি হর না। দেশীতাতে বে হতা লাগান হর, তাহা মাড় দেওয়া থাকে; ক্তরাং গরম পড়িলে তাহা পটপট্ ছিড়িতে থাকে। এই কারণে সকল তাত বরেই অল্পবিতর বৈক্লানিক উপারে হতা দয়ম রাখিবার ব্যক্তা উত্লাবিত হইয়াছে।

কারখানাসমূহের মধ্যক বাছ বংগ্র জলীর বাশপূর্ণ রাখিবার লক্ত বিলগুলিতে Hamidifiers প্রফৃতি নানা বর বাবহুত হইরা থাকে। এ দেশীর সরীধ কারিকরেরা এই কার্য জতি সহলে ও উভ্তমন্ত্রণে নির্কাহ করে। ভাহারা যেবের মধ্যে পর্ত করিরা প্রাথখানি গর্মের ঠিক আধ হাত উপরেই পাতিরা লর এবং মধ্যে মধ্যে বিশেষতঃ গ্রীমকালে আবার লল দিরা লেশিরা দের। আলো রাখিবার সামান্ত পথ রামিরা ঘরটা বেশ আঁটিরা রাবে, ইহাতে মুক্তিকা মধ্য হইতে জলীর বাশা সমুখিত হইরা উপরিছিত টানার ক্তামে বেশ নরম রাথে এবং বাহিরের গরম বারু আলিতে না পারার গৃহস্থাক্ত বাহু বেশ শীতন থাকে। বাশপূর্ণ বৃদ্ধি ক্ষরারু জলেকা পাত্ররা। ওনা বার, চাকাই ক্ষনিক মুক্তিকা করে। আক্র বৃদ্ধিকা করে।

नाटक्डोरप्रत्र नामन्त्रिक्ष्णमा देखानिक शक्कि Mr. William Thomson F. C. S. शक्किंश क्षत्र दिव कतिवादक त, ১०० कामा द्याप मध्य क्षत्र च क्रामा क्ष्मीत वाण पाकित्य, क्ष्यमदे केश यज्ञयसम्बद्ध नाटक मन्त्रासमया क्रेमह्मानी स्टेटन ।

উটিখিত ফারণে চেরারে বনিরা ফাণ্ড বুনা বিশ্বেব ক্র্বিথাক্ষমক নহে। ঐকণ থাকিবার ফাল ফরিতে র্ক্তলে গর্মের
বিনে উাজের ক্রেনের নীতে তৎপরিবাণ ক্রেরে করা দির
করিরা ক্ষম করিয়া ভারতে ১ ইকি আভাজ জ্বল তরিয়া
রাখিলে একং উাজের তিন বিক্ ফাণ্ড ডিলাইরা ব্যাইরা
বিনে ক্তার বাভ নরন রাবা বাইতে পারে। উক্ত বার্রর
সংস্পর্শে টানার ক্তা অভাজ ভ্রুলা হইরা থাকিলে ভিলাইরা
ভারা নরন করা উঠিত বতে, ভারতে বাড় গুইরা বাইরা উহা
একেবারে ব্যাসের অবোধ্য হইরা পড়ে।

নবাবিশ্বত তাত ত ব্যাবি।

বর্তনান ননবে "ববেশী আন্দোলনে" ববেশী ব্যবহারের প্রহান বর্তিত হওয়ার বেশী বালালা উাতের করেই উন্নতি লাবিত হইতেছে। অনেকে বৈকেশিক উাতের অক্তরণে দেশীর উাতসংক্রান্ত কোন কোন বিবরের নংকার করিবাছেন; তরবের এককালে ৬টা বা ২২টা নাটাইরে ক্তা জ্যাইবার জন্ত বর্তনান আবিহৃত তারিশীবর; এককালে ৬টা, ১২টা বা ২৬টা টানার নলীতে (Bobbin) চরকার নাহাব্যে একজনে ক্তা জ্যাইবার জন্ত সরলাবর (ইবার হারা পড়েনের নলীতেও ক্তা জ্যান বার) এবং সাধু বিশ্বী-প্রবর্তিত টানা বেওয়ার ক্ষমর কল উল্লেখবাল্য।

হতাচক্র বা New spinning wheel—ইবা ঠিক সেলাইরের কলের মত চেরারে বসিরা পা বিরা পাবল টাপিতে হব। তুলা হটতে একেবারে ২টা হতাও প্রস্তুত করা বাইতে পারে।

আল পৰ্যান্ত যক্তৰলৈ স্কুল জাত—(Improved Handloom) উত্তাবিক ক্ষমাত্তে, নিয়ে সংক্ষেপে জাহাদের পদ্মিচর কেওবা ক্ষম,—

- । জাপানী উত্ত—(Japanese Handloom)—বিলাতী ,

 উত্ত অংশকা জাপানী উত্ত বিশেষ স্বাহ্যকারী। তবে ,

 কারখানার কত্তক চলিতে পারে। ব্যক্তিগত বিলাবে উচা

 কাল চালাইবার উপযুক্ত করে।
- হ। জাটামৃদ্ধি উভি—(Hatterely Domestic Handloom) দেখিতে গুনিতে এবং বজৰুত হিনাবে জাটামৃদ্ধি উভি পুৰ জাল এবং আজকান ইহার বাবিও নজা করিবা ১২০ টাকা করা হইরাছে; কিন্ত ইহার বারিক অংশ গুজুর সহজ নহে, হঠাৎ বিলড়াইলে বিশাবে পড়িতে ব্যু, কালও বজ থাকে। ইহাজে বৈনিক ৮ বলা কাল করিলে ৪৫ পুল ৪৪ ইন্তি বছরের ৪ বান কাপড় হব বুনা বার। ইহা প্রিচালনা করা শক্তিশালী

লোকের ব্যৱকার। কেহই তিন বন্টার বেশী কাল করিতে পারে না। এজিন বোগে চালাইবার পক্ষে বিশেষ উপযোগী।

৩। লাহোরের উর্ক্ত উাত---(Inhore Improved Handloom) ইহার নির্মাণকৌশন ভাল্প কটিল নহে। আমানের বেশের জনবার্র পক্ষে অনেকটা উপবোগী।

বিভিন্ন প্রকার বৈবেশিক ভাঁতের সংক্রিপ্ত পরিচর,—

- 8। Jacquard Looms of reed space 82"= ইহাতে টেবিল চাকার কয় নানারণ কাপড় বুনা হর।
- e | Drop Box Looms 85^{-/-} with I shuttle == চেক,
 ডিল, ভূরিরা, নাড়ী প্রভৃতি বুনা হর ।
- Drill mutious Looms 60" with I shuttle =
 ভিল ও জিনকাপড় প্রকৃতি বুনা চলে।
- ৭। Doby Looms 48" with I shuttle = পাড়ে জকর ও কুল কুলার জয়।
- ৮। Dhuty Looms 48" with I shuttle = ধৃতি ও সাড়ী কাণাড় বুলা হয়।
- ১। Calico cloth Looms 48" with I shuttle = কেলিকো-কাপক অভানের কর।
- ১০। Plain Looms 42" with I shuttle = ক্ষাণ, ডোৱালে প্ৰভৃতি বুলা হয়।
- >>। Drill mation 42" with 1 shuttle = ইহাতে কামিল ও কোটের নানারূপ কাশড় বুনা বার।

একথানি দেশী তাঁতে কত ধরচ পড়ে এবং উপরোক্ত ভাবে কাল চালাইলে কিন্নপ আর হইতে পারে, সাধারণের অবগতির কল্প নিমে তাহার একটা আরব্যবের তালিকা প্রদন্ত হইল,—

ব্যর—দেশী ক্লাইসাটেশ্ তাঁত ক্লেম ও সরজাম ৪০১ এবং অতিরিক্ত সানা মাকু ও হতা ইত্যাধি ১০১ নোট=৫০১ টাকা।

আর—১ লোড়া ৪০ নং ধৃতি প্রস্তুত করিতে ও নোড়া প্রতা লাগে, প্রতি মোড়া ।৮০ স্থানা হি: =১৮০ নাড় ইত্যানি—৴০, রঙীন প্রতার লয় স্বতিরিক্ত—৮০, প্রতি লোড়ার বোগান ধরচা—/০ মোট—১৯৮০।

প্রতি চড়নে ৪ হইতে ১২ জোড়া পর্যন্ত কাপড় বুনানি
হয়। নানকরে ৪ জোড়া প্রতার বর্জনান নিরমে পাট করিতে
৪ দিন বা ৫ দিন লাগিতে পারে। পরিপ্রামে কারিকরের
বাড়ীতে প্রতা দিলে মোড়া প্রতি ১০-১২৫ বরচে প্রতা পাট হয়।
তদভাবে ৪।৫ টাকা বেডমে কারিকর-বালকও পাওরা বার।
তব্ও আমরা এছলে ৭।০ টাকা হিলাবে বেডন বর্লান।
প্রতি জোড়া ২ টাকা (আমাদের এথানে ২।০ বিক্রম হইজেকে)
বিক্রম হইলে লোড়া প্রতি ।৫/০ জানা জর্বাৎ মানিক

>>II• वा >२८ होका शक्तिक शादत । किन्न शाका कात्रिकत ना হইলে দৈনিক > জোড়া বুনিছে পারে না। দৈনিক ৩ বানঃ আমাণ রেপার প্রস্তুত হইয়া থাকে। ডিনখান রেপার প্রস্তুত করিতে ৪ মোড়া হ'ডা লাগে, প্রতি মোড়ার দাম II আনা हिनादन---२ । श्वात अधित्रिक तर धावर माफ धत्र--। । १ **জো**ড়া রেপার এক চড়নে হর, ভাহার বোগানে ৫ দিন লাগে.সে হিসাবে—١> মোট=২৯/১ । প্রতি জোড়া রেপার ২০ টাকা হিলাবে বিক্রন্ত হইলে তিন ধানার দাম ৭॥০, তাহা হইলে দৈনিক ১০০ পর্যা অর্থাৎ মাসিক ৩২৮/০ আনা হয়। উল্লিখিত নিয়মে বস্ত্র ও রেপার বুনানির গড় পড়তা ধরিলে মাসিক ২২॥ হটতে ২৩ টাকা আর হইতে পারে। কিন্তু অনবরত বনানি সমানভাবে চলে না এবং কারিকরকেও বোগানের কাজ দেখিরা লটতে হর। সেজন্ত উক্ত আর সপেক্ষা কিছু কম দাড়াইবে। এডৱিন রেপার ৩৪ মাসের বেশী বিক্রের হয় না বলিরা চ:ত কারিকরেরা এরণ আর করিতে পারে না। কিন্তু অবস্থাপর ব্যক্তির পক্ষে উক্ত নিয়মে আর করা অসম্ভব নহে।

শিল্প ও বাণিজা।

মন্দি কথিত দেশীর তাঁতের বিশেষ কোনরূপ সংলার "
সাধিত না হইলেও এবং তাহাতে বরন বহু পরিপ্রমনাধ্য বলিয়া
বিবেচিত হইলেও, বহু প্রাচীন কাল হইতেই যে তারতে বর্জনিপ্র
পরাকার্চা লাভ করিরাছিল, তাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই।
ভারতবাসীর অধ্যবসারে ও অমান্থবিক পরিপ্রমে এবং অসাধারণ
হত্তকৌশলে বহুকাল হইতে যে সকল শুল্প, স্থলার ও বহুমূল্য বর্জ্ব
অনসাধারণে প্রচারিত হইয়াছে, জগতের আর কোথাও সেরূপ
শিলের নিদর্শন পাওয়া বার না। ব্রহ্মদেশ প্রায় প্রত্যেক
গৃহেই আসবাবরূপে তাঁত বিরাজিভ আছে। তথাকার রমণীগণ
বেন বৈদিকমার্গাহুসারী হইয়াই আপনাদের আমি-পুত্রের ও
বীর সম্পোরের অন্ত কার্পাস ও রেশমী জামার কাপড়, রুমাল ও
উড়ানি প্রস্তৃতি বুনয়া থাকে, কিন্ত হুংবের বিবর সেওলি তত্তপুর
পরিষার পরিছের নহে, কতকটা মোটা রক্ষমের। চীন ও আপানে
আক্রাল বেশমী শিলের বিশেব আদের বাড়িয়াছে বটে, কিন্ত
ভাহা আবৌ ভারতীর শিলের সমকক হইতে পারে নাই।

ভান্নত হইতে বরন-শিল্প একপ্রকার লোপ হইলেও, জাল্লিও কার্পান, শণ, রেশম ও পশমের বে সকল বন্দ্রশিলনিবর্গন বিভ্নমান আছে, তাহা দেখিলে চমৎক্ষত হইতে হয় এবং তাহার শিল্লচাতুর্বোর বিবর পুরুষ্ণাবন করিলে ক্ষরে এক অপূর্ব আনন্দ সমৃদিত হইলা আছি। চ্ঃথের বিবর, ইংরাজ কোম্পানির অন্ত্রকাণার আহেন ক্ষমর শিল্ল ভারত হইতে অন্তর্হিতপ্রার। মাক্ষের বিশ্বস্থানিতির প্রব্রসাধ্য ধৃতি ও সাচীর বাণিক্য নকা করিতে ধীরে ধীরে এদেশের তত্তবার লাতির চিরপোবিত বর্রবাণিল্যের মূলে কুঠারাখাত করা হইরাছে, এখন হডাখান তত্তবারকুল জার সেরুল উভনে কার্যা করিতে পারে মা। প্রাচীন লিন্নিগণ ইহল্পণং হইতে অপন্তত, সুভরাং তাহা-দের সলে লগে ভারতীর বর্লান একরুল অবসাদ প্রাপ্ত হইরাছে: এখন বাহারা বিশেষ চেটা করিরা সেই প্রাচীন দির-কীর্ত্তি বলার রাধিতে বদ্ধবান্ আছেন, তাঁহারাও বৈদেশিক বরের কুলনার লাভের পরিবর্তে কভির জংশ বেশী দেখিরা হ অ ব্যবসারে বীতশুদ্ধ হইরা গড়িতেছেন। কালে কাল্ডেই পূর্জা-শেকা বর্ত্তশিরে জনেক দৈক্তভা আসিরা গড়িরাছে, তবে এই শ্রীহীন বাণিজ্যেরও গৌরৰ করিবার এখনও অনেক আছে।

বারাণদীর স্থিবিয়াত জরির কিতা, সোণা বা রূপার তন্তবারা প্রস্তুত গুলবাহার সাঁটী, জামদানী, কামদানী ও জগতের অতুলনীর কিংখাপ বস্ত্র এখনও শিরচাতুর্যোর পরাকার্চা জ্ঞাপন
করিতেছে। ঐ সকল বত্র প্রধানতঃ কার্পাস বা রেশমী স্ত্রের
উপর জরির ফুলদিয়া বুনা হইরা থাকে। বুর্হান্পুর, মহিন্তর,
মার্কট, দিল্লী ও অরলাবাদ প্রস্তৃতি স্থানে এখনও তন্তশিরের বথেই আদের ও বিস্তার দেখা যার। মহাদি-লিখিত
সেই স্প্র্যাচীনবৃগ হইতে আল পর্যান্ত তারতবাসী সকল বর্ণের
রমনীদিগের মধ্যে চরকা কাটার প্রথা দেখা বার। এখনও
উপরিউক্ত স্থানসমূহে রমনীগণ চরকা কাটিরা সক্ত স্থতা প্রাত্ত করিয়া থাকে। থুটার ১৯শ শতাকে ভারতে ইংলগুদি নানা
পাশ্চাত্য ও প্রাচ্যদেশলাত ক্রব্যের আমদানী হওয়ার দেশীর চরকাহারা স্ত্রা প্রস্তুত ও প্রচারের অনেক অবনতি ঘটিয়াছে, কিন্ত এখনও যে যে হলে রেশনীবন্ধ প্রস্তুত হর, তত্তৎস্থানে প্রভূত পরিমাণে চরকার প্রচলন আছে।

বাঙ্গালার অন্তর্গত মূর্নিদাবাদ কেলার বহরমপুর সদরে দেশী তাঁতে বেশমী গরদ বন্ধ এবং মানভূম জেলার রখুনাথপুরে এখনও ভটী হইতে চরকার স্থা কাটিয়া তদর-বন্ধ বুনা হইতেছে। বীরভূম, বাঁকুড়া প্রভৃতি স্থানেও ভটী হইতে স্থা প্রস্তুত এবং বন্ধনকার্গের ব্রেই প্রভাব বিশ্বমান আছে।

এখন মাঞ্চোরের কলে নির্মিত কার্পাস স্থের প্রভৃত আমদানী হওরার বালালার রমনীগণ চরকা কাটা বছ করিরাছেন। বিলাতী হতা দরে সত্তা ও অনারাসলতা, এলভ দেশীর সতার্ক আর অকুলকামিনীকুলকে হতা কাটার কট সম্থ করিতে দেন না, বন্ধত: সেই বিলাসিতার প্রভাবে বালালার আৰু চির কৈছ আসিরা সম্পাইত। বহুবাসীকে অলাছাবল-বাসের কছ আল পরমুখাপেকী হইতে হইরাছে। উচ্চ শ্রেণীর শিক্ষিত ও সোধীন বালালীগণ কুলকামিনীধিগকে চরকা কাটার কট

হইতে অব্যাহতি দিয়া আন্ধ তাহাদের কটবানের অভাব বটাইরাছেন। তত্তবারকুল বার্থহানি দেখিরা আতীর ব্যবনার জলান্ধণি বিরাছে, তাহারাও রুণা পরিশ্রম ও কট বীকার করিরা বলেশবিরাকী বিরেশতক বাজালীগণের অভ্যাহলাকের প্রত্যাশা রাখে না, তাই দেশে এতকাল পরে ব্যবহনশিলের একশ অখংপতন ঘটিরাছে। প্রক্লতই বলিতে কি, পূর্বের বিশিপ্তের অভ্যাবাতির তার্বাক্তিত বে ব্যেরর অভ্যাবাতির হইত, সে বন্ধ আন্ধ বালালার চির আকাক্তিকত বে ব্যেরর অভ্যাবাতির পরিবর্তে এবং তাহারই অভ্যাবাতির পূর্ব ইইরাছে। তাহার পরিবর্তে এবং তাহারই অভ্যাবাতে ইংরাজ-বণিক্-সমিতির অভ্যাবহে আন্ধ নালাও ভোরাদার ভূরিরা, মলমল, অব্যানি, স্কুইস, আছি প্রভৃতি সৌধীন কন্দ্রনালোতা প্রব্যবহাতির বালালার প্রেরিত হইরা বলবাসীর মুধোজ্ঞল করিতেছে।

ঢাকার সেই প্রবিখ্যাত মসলিন্ বল্লের কথা মনে হইলে—
বালালার সেই গৌরবকীর্ত্তির ইতিহাস পাঠ করিলে মনে হর,
একদিন বালালার তাঁতিকুল বল্লবন্দিরের শীর্বহানে সমারত্ত্ হইরাহিল। বৃষ্টার বোড়শ শতান্দের মধ্যভাগে ইংরাজ-পর্যাটক রাল্ড ফিচ্ প্রবর্গপ্রামে আসিরা এখানকার কার্পান-বল্ল-বাণিজ্যের প্রভৃত স্থ্যাতি করিরা গিরাহেল। তথনকার বলরালধানী ঢাকা সহরে যে স্থা কার্পান বল্ল প্রস্তুত হৈত ভাহা "ঢাকাই মসলিন্" নামে পরিচিত। উহা প্রকৃত মোগল মগরজাত মসলিন বল্ল হইতেও উৎক্রই। এখনও মুরোপের বিভিন্ন রাজ্যে তাহার অম্ব-কৃত বল্ল প্রস্তুত্ত হইরা ভারতে প্রেরিত হইতেছে। প্রকৃত ঢাকাই মসলিন মহার্য হিল, ধনী ব্যক্তি ভিন্ন ক্ষেত্ত উহা ক্রম করিতে পাইত না। কনা বার ত্রকের স্থলতান ঢাকাই মস্বিনের শির্ম্বাণ ব্যবহার করিতেন।

ঢাকার হল্ম মসনিনের হতা পর্যবেক্ষণ করিয়া পাশ্চাত্য পতিত্যগুলী নান্মত প্রকাশ করিরাছেন। সেই গুণি আলোচনা করিলে, আমরা সহজেই প্রাচীন বল্পের হল্পতা গু তলানীন্তন কারিগরগণের কার্যানপুণ্ডার পরিচর পাইতে পারি।
মিঃ টেলর নিধিরাছেন বে, ঢাকার কারিগরগণ বিশেব বঙ্গে চরকা কারিগর বিশেব হল্পত প্রভাভ করিত, তাহাতে ৭৪০ছটাক ওজনের এককেটি হল্ডা লখাভাবে হড়াইরা গোল ১২০ মাইল হাড়াইরা বাইতে পারে। আভাবিক লৈত্য ও জলীর বাল্পপ্রধান হানে হতা কাটিলে কার্লাসের আশ নরম হওরার নীত্র বাড়িরা পড়ে বলিয়া ঢাকাই তাঁতিরা প্রাতে হর্টোবলের পুর্কো তাহা সারিয়া লয়। বধন বারু অপেকাক্ত গুক হর, তথন ভাহারা চরকার নীচে জল রাধিয়া কার্য করে। ভাহাতে বায় প্রকাশিক হইয়া তুলার আঁশকে নরম করিয়া দের। তৎপরে

গ্ৰাতঃকাল ঘ্টতে ১টা বা ১০টা পৰ্যন্ত ভাষারা বাবাসী পুড়া ভাটে। বৈভাগে এখা । টাম সময় হইছে পুর্যাজের অৰ্ভ থকা পূৰ্বা পূৰ্বান্ত পূজা কাটা কইবা থাকে। ডাঃ ব্যাটুসন हाकारे, कतानी ७ रेशनिम् कालिव् न्छात्रै **अ**न्दीक्नासात পৰীকা করিয়া লিখিয়াছেন, হুরোপে বড প্রকার হন্দ হতা প্রস্তত হইয়াছে, আহাত্ব সকলগুলির অপেকা চাকাই নসনিনের পুড়ার ব্যান অন্তেক্ ক্য এবং বুরোপীর পুড়া অপেকা প্রডোক हाकाई क्षांत जाँकि (Shamente) जातक शतिमां कर দেখা বাৰ ; কিন্তু চাকাই কুডায় জাঁদেয় ব্যাস (dismeter of the ultimate filaments or fibres) বুরোপে প্রস্তুত স্তার কলা অপেকা অনেক বড়। এই বুই কারণেই ঢাকার হত। পুন্ধভার ও বৃঢ়ভার অভান্ত সকল দেশীর স্ভাবে পরাত করিরাছে। আরও বিশেকছের যধ্যে এই বে ভূলার আঁশে নোটা হওয়ার এবং পূজা চরকার কাটা হর বলিয়া প্রতি ইঞ্চ প্রতার পাক বেশী ছবু 🕪 এখনও করালভালা (চলন নগর), সিমলা (কলিকাডা), বগড়ী, আশাস্ত্র, শান্তিপুর, কল্বে, রাধাবলভপুর প্রভৃতি হাবে কার্শাস-বন্ধ-বন্ধনের বিভৃত জাড়ত জাছে। বারা-প্রী থামে রেশনী ক্তা ও কার্শাস ক্তার উপর বেমন জরির ফুলদার বা ওলবাহার সাটা প্রস্তুত হর, অধুনা চাকার সংক্রেও একমাত্র ক্ষা কার্শাস কল্লের উপর ও বিভিন্ন বর্ণের নীলাবরীর উপর জরির কলচার পাত কাপড প্রস্তুত হইতেছে।

এতভিন্ন বাজাক ও বোবাই প্রেসিডেলীর নানা হানে বন্ধবন্ধনের বিভ্ত কারবার আছে। গুজরাট, আন্ধানার, হুরাট ও জরোচে, নানারূপ ছিটের সাড়ী পাওরা বার। রুলপুরে লাল ও কালা প্রভার একপ্রকার ফুলর ছিট প্রান্ধত হয়, তাহাতে নানা পৌরাণিক চিত্র অভিত রেখা বার। পুণা, রেওলা, নাসিক ও ধারবাড়ে নানারূপ রন্ধিন প্রতার সাড়ী প্রস্তুত হয়, নহারাইনরন্দীগণের উহা বড়ই আহরের জিনিব। নালের, মুটকল, ধনবর্ম, অমরচিতা ও আর্থিতে এখনও ঢাকার অভ্রপ মসলিন্ প্রেড হইরা থাকে। বারাণসী সাটা বা ধৃতি, কিংধাব প্রাভৃতি বর্মের প্রায় বন্ধসমূহ পৈঠান, মুহাণপুদ, নারার্গপেট, ধনবর্ম, স্থাব্র, অভ্তি হানে প্রস্তুত প্রান্ধী শাল বুলা হয়। রুপ্সর, স্থিরানা, অমৃত সম্ব প্রভৃতি হানে প্রথমী শাল বুলা হয়। রুপ্সর,

ভাগলপুর, বারাগদী, আপ্রা, লাখ্নৌ, বরেলী, কভেগড়, লাহোর, মূলভান, হিনার প্রকৃতি হানে কার্লান ও পদমী কার্লেট প্রছত হর। নাধারণভঃ কার্লান কার্লেটগুলি আছতি ও বর্মপ্রক্রিরা ভেদে, গালিচা ও চুলিচা (Cotton pile carpet) নামে থাতে। পদমী ওঁরা উক্ত হলৈ গালিচা (Woollen pile carpet) বলা বার। মহলিপটনের ছিট্, পালমপার ও কার্লেট এবং গোলাবরী বিশীপহিত মাধ্যম-পলম্ নামক স্থানজাত নাডাপালয়্ আজকাল "বৃটাল ওডল্" রূপে ভারতে আম্লানী হইতেছে। মাধ্যপদমে আর লে বন্ধ বোনা হয় না। ইংরাজবিশ্রেণ ঐ বন্ধ একটেটিরা করিবার কল্প তথার কুঠী স্থাপন করিরাছিলেন। পরে ভাহারই নমুনা লইরা অনেশ হইতে সেই বাডাপালম্ বন্ধ রহানী করিতেছেন। ছাথের বিষয়, ভাহারের কুহকে এ স্থানের সেই ব্রবালিকা লুগু হইরাছে।

এখনও ভারতবর্ষের নানা স্থানে বর্মনিরের বর্থেষ্ট সমাদর আছে। স্থান বিশেবে উভ্ন কার্পেট, কোন স্থানে বা উৎকৃষ্ট গালিচা, কোথাও কার্শাস রেশমাদি বিনির্মিত স্ক্রবাস, কোথাও পশমক শাল কথল এবং কোথাও জরি, সন্মা প্রভৃতির পাড় বোনা হইতেছে। বর্জমান (১৯০৬ খুঃ) স্বরেশী আন্দোলনে উক্ত শিরের উত্তরোজর উরতি ঘটবার সন্তাবনা। নিয়ে উৎপত্নবিরাদি ও ভাহার স্থান ও বিভাগের নাম নির্দেশ করা গোল।

चामगी,, चानहे, चानिगड़, चानाशवार, चानवात, चल्ला. অনুভাগর, অনভাগুর, অভ্যাও, আর্কট, আদোনী, আগ্রা, আন্ধ-দাবাদ, আৰ্ণি, আরা, আসাম, আরকাবাদ, আজম্গড়, বগ্রু, ৰহাৰরী, বরাইচ, বল্লুর, বাঁকুড়া, বরু, বাঙ্গাবাঁকী, বরাহনগর, वजाफ, वर्कमान, बरवती, बरवमगुत्र (मालाच , बरवमगुत्र (मूर्निमा-वान), वर्ष्णाना, वनारत, विख, वर्षाना, वज्ञात, रवनशाम, रवज्ञाती, বারাণদী, ভাচুরা, ভাগলপুর, ভাঙারা, বহাবলপুর, ভেরা, विकारनत, वीत्रकृत, विकृत्रत, विकार, वाकार, अरहाठ, वृत्रमान्द्रत, বুর্হানপুর, কলিকাডা, কালিকট, কাবে, কাণপুর, চবা, চন্দারণ্য, চাৰা, চৰেরী, ছত্রিশগড়, চিম্বলপৎ, কাকনাড়া, কাঞ্চীপুর, কড়াপা, কটক, ঢাকা, গরভাষা, গন্তিরা, দিল্লী, দেরা গান্তী খাঁ, त्वत्रा रेन्यारेण थी, ध्रवाफ, विनासभूत, बीम मनत्र, (बानाहि, এলিবৰড়,, ইলোমা, ধকুখাবাদ, ক্রোজপুর, গোদাবরী, त्राजनस्ति, त्रानन्था, कहन, क्रेन्त्रा, कर्जुनगाना, क्रम-बांहे. क्षणवर्णा, क्षणवामधूब, श्रांबाणिबत, श्रंबी, श्रांबवद्यावार (शक्तिगाका), शंत्रवत्रायोष (निष्), शंषानकुक, हमी, स्नन-আবলাল, হাজালা, হিনাল, হোলদাবাদ, হাবড়া, হলিরারপুর, ইক্লা, ইন্দোরা, ইন্দুৰ, আজামণেট, ক্কণাপুর, আকরণত, कांशनांचार, कांकांबीपातार, क्षप्रद, कांनाकपूर्व, कांन्ड्स,

[&]quot;These causes—combined with the ascertained result that the number of twiste in each of length in the Dacca yarn amounts to 110-1 and 80-7, while in the British is was only 68-8 and 66-6—not only account for the superior fineness, but also for the durability of the Dacca over the Europian fabric." Balfour's Cycle. India.

জন্মণমছন্ত, বৃদ্ধ, ঝাঁসী, ঝিলাম, বোধপুর, খেড়া, কালাদগি, कानहर्खी, कन्मी, करनास, काड्ज़, कत्राठी, करबोनी, कर्नान, কৰ্ল, কাশ্মীর, শ্রীনগর, কম্বর, কাঠিয়াবাড়, ধালবানা, ক্লা. কোহাট্, কোটা, কোট, কামালিয়া, কুস্তবোনম,লাহোর, ললিও-পুর, লোহারভাঙ্গা, লাখ্নৌ, লুধিয়ানা, মাস্তাঞ্জ, মধুরা, মলবার, मानम्ह, मार्ट्याम, मानस्य, मिल्यून, महनील्रेम, स्यो (आस्य-গড়), মৌ (ঝাঁসী), মেদেরপাক, মীরাট, মেদিনীপুর, মীর্ভাপুর, त्यात्रामायाम, महाती, सन्दर्भात, मथुता, मुखः कत्रशक्, मृखः कत्र नगत्र, মহিস্কর, নাভা, নদীয়া, নাগপুর, নেপাল, নূরপুর, উচ্ছা, পাবনা, পালমকোট্ট, পাতিয়ালা, পাটনা, পোনী, পেশাবর, পুণা, প্রতাপ-গড়, পুরী, রাষ্ট্রড়, রামপুর বোয়ালিরা, রামপুর (বুক্তগ্রাদেশ), রক্ষপুর, রৎলাম, রক্ষগিরি, রাবলপিণ্ডি, রেবাদণ্ড, রেবা, রোহ-তক (পঞ্চাব), সালেম, সমলপুর, সম্বর (কাশ্রীর), সাদনের, শাস্তিপুর, সারণ, শারঙ্গপুর, সাতক্ষীরা, সাবস্তবাড়ী, শিওনী, শাহপুর (পঞ্জাব), শাহপুর-মিসৌলী, শিকারপুর, শোলাপুর, শিল্লালকোট, সিকেন্দরাবাদ, সিমলা (পঞ্জাব), সিংহভূম, শীর্ষা (পঞ্লাব), সীভামাড়ী, স্থলভানপুর (পঞ্লাব), স্থরাট, ভালোর, ঠানা, তিলোবানাথ (পঞ্জাব), তিরুপপিলিরম্, তোড়গড়, ট্যাট রা বৃদিরহাট, ত্রিবাঙ্কোড়, ত্রিটানপ্রী, উজ্জবিনী, রলবাড়ী (মাক্রাজ), বিশার্থপাটম, বৃদ্ধাচলম্, বাল্লাজ (মাক্রাজ), বেওলা, বরঙ্গল যেরোবদা, জেলগণ্ডল।

এই সকল স্থানে সাধারণতঃ কার্পাস ও রেশমী সাড়ী এবং জরির ফিডা, লেস, সলমার পাড় প্রভৃতি বুনা ইইরা থাকে। মনেক স্থানে পশমী শাল ও কম্বল প্রস্তুত হয়। নিম্নে বয়ন-শিল্পে সমুৎপদ্ধ বিভিন্ন প্রকার ব্রাদির নাম উল্লেখ করা গেল—

দরি, সতর্জী, গালিচা, ছলিচা, দোণাট্টা, সরবতী, মলমল, আদি, তরন্দম, ভূরিয়া, শৌগাতি, আবাবান, সব্রাম, মস্লিন, গড়া, একহতি, দোহতি, চারখানা, হৃদি, নুলী, থেল, কোক্তি, ফোটা, মাগনা, নিম্লা, গব্ৰুশ (লুধিয়ানা), গাজি, থাকি, বড়কাপড়, থানিয়া কাপড় (আসাম) এবং পাটসো, তামিয়েন, থিন্দৈল (মণিপুর) প্রভৃতি কার্ণাসবস্তা।

রেশনী বত্তের মধ্যে এড়ি, মুগা, তসর ও গরদের ধূতি, সাড়ী, চাদর, পীতাম্বর, মসরু, সওলি, দোপাটা, গুলবদন, কমাল, ওড়না, হাওরার কাপড়, লুলী, খেল, মেধলা, এড়া, বড়কাপড়, হ্কাঠিরা, রিহা, গামছা, ভোরালে ইত্যাদি। পশমিনা বত্তের মধ্যে রামপর ও কাশীরী শাল, রামপুরী চাদর, আলোরান, একতারা, মলিনা, লুলী প্রভৃতি।

কাৰ্পাদ এবং রেশম বা পশমাদি মিল্রিড বল্প-গর্জস্তি

(বাঁহুড়া ও মানভূম), আগমানি (বাঁহুড়া), বাক্তা (ভাগলপুর), নেথলি (রলপুর), আজিল উরা বা আজিলি (ঢাকা), সেরাজা (ঢাকা), সালা ও লাল আসমানি সেরাজা, মছলি কাঁটা, স্বজিক্তার, লালকাতার, বুলবুল-ছাসম, লাল কদমকুলী, সাবা কদমকুলী, কাল পাটাবার, লাল পাটাবার, স্কার, সেরাজা, সাবা বড় কদমসুলি, সক্লেম কার্যার, লাল কার-বার, কালা মছলিকাটা, কোজনী মসক, অ্লাথানি, ইলাইছা, নুকী, চক্রকলা, লোপাট্যী, অনি ইত্যাদি।

ছিটের কাপড়—গন্ধি, গাড়া, ধোডিজোড়া, ফর্ল, রেজাই, লিহাক্, পাললপোব, বৃন্দুদি, বন্ধ-স্থা, আজিম, করান, নামিরানা, ছিঁট জরলা, ডোষক, ছিঁট-কান্দি, ছিট-বৃটিলার, খেলরা, নাখনি, চপেটা, ছিট-আগ্রেবাড়, গোলবৃটি, আলোহা, লালু, চুনরি, আব্রা, কলমনার, খুণছারা, ময়ুরক্তি, বেগুনি, মৌজলপুর চানতারা, পাচপাত, স্থতিভ্লাল, নরণসই, ঝিলমিলি, লহরিরা, স্লাল, নামাবলী, পটোলা, পীডাখর ইড্যানি।

শোণা বা রূপার তার (তত্ত্ব) প্রস্তুত ক্রিয়া শ্বির ফিতা, গোটা, কিনারা, আঁচলা, কালাবতুন্, ত্বর্থ বা ত্মন্ত্রী, রূপালী, ধানক, লাচ্কা, পাট্রী, বাঁকড়ী, পাটা, গধ্রী, গলাবমুনা, কিরণ, পাইমক, সল্মা, কার্চিকন, কারচোব, ধৃতি বা সাড়ীর পাড়, হাঁসিরা, তাল, লগো, ফিট্, পল্লব, কিংখাব, লুলী, বেলদার, ব্টেদার, শীকারগা, জললা, মীনা, জালদার, থত্ত, চাঁদতারা, চসমস্থল, মোহরবুটা, কামদানী, জামদানী, করেলা, তোড়ালার, টেরছা, লালছার,পালাহাজারা, ভুরিয়া, গোঁলা, পাবুর্গা, চিক্ষনলালী, কলিদা, ঝাপান, মুগা-চারখানা-কাশিলা, কাটাফানিকাশিনা, নীলাচারখানা কাশিলা, সম্প্রক্রহর ইত্যাদি। এই শেবাক্তবন্ত্রগোর বাাড় রেশম ক্রিও কাপাসক্রবোগে বুনা হয়।

হতীর সাহায্যে তসর বা গরদের কাপড়ের পাড়ে, রুমালে, ব্রীলোকদিগের অঙ্গরাধার এবং বালকদিগের পরিধের বাসে চিকনের কাল হইতেছে। রেশম ও কার্পাসমিপ্রণে স্থল্পনী প্রন্তত হর,রন্ধশীরাই প্রধানতঃ তাহার উপর হতের কাল করে। কার্পার, অমৃতসর, সুধিরানা, নৃর্পুর, গিরাপকোট ও ওক্ষাসপুরে শাল ও শালের পাড় বোনা হর। কার্মীরী উাতে বুনা খাল—ভিলিবালা, তিলিকার, কালিকার ও বিনৌট এবং হতে বুনাগুলি অস্লিকার বিলিরা থাতে। স্কলকারী উড়ানিতে কার্শাল বজোপরি রেশমের পাড় দেওরা থাকে। বোটাহতার কার্শেট গুলি সালিচা, ফ্লিচা সভরক প্রকৃতি নামে থ্যাত। পশমেও গালিচা (Carpel), ক্ষ্কা প্রস্তি বুলা হইতেতে।

মাছর, শ্বীতলপাটী ও ধন্ধনের পরদা এবং পাটের চট, ধলে প্রভৃতির উৎপত্তি বয়নলাপেক হইলেও উহাদিগকে বর্ন-

শিরের অত্তর্ক করা বার না। কেননা, উহাতে হক্ষতা ও শিরচাতুর্বোর সেরপ পরিচর লাই। অধুনা ক্রিপুরা, চট্টগ্রাম, মেদিনীপুর, মাজাজ, বেলোর, ডিরেবল্লী গ্রন্থতি ভারতের নানা স্থানে মাছর বুনা ক্টয়া থাকে। এই মাছর কাটী ও বালান্দা ভেনে চুই প্রকার। চট্টগ্রাম, নোরাধালি প্রভৃতি হানে বেতের ছাল টাচিয়া অভি কৃত্ম ও শিরষ্ক শীতলপাটী প্রস্তুত হইয়া থাকে। [ডম্বংশন্দ দেখ।] ব্যুনাড়ু, মারাজ-প্রেনিডেনীর মদবার জেলার অন্তর্গত একটা পাৰ্বত্য উপবিভাগ। [বৈনাড় দেখ।] ব্যুলপাড়, মাল্রাথ-গ্রেসিডেলীর কড়াগা বেলার অন্তর্গত একটা উপবিভাগ। ভূপরিমাণ ৮০১ বর্গমাইল। ২ উক্ত জেলার একটী নগর। বরলপাড় ভালুকের বিচার-সদর। এই নগর সদনপদ্ধী হইতে ৪ ক্রোণ উত্তরপূর্ব্বে অবস্থিত। ব্যুস (পুং) ২ পদী। (ক্লী) ২ জীবনকাল। বয়সিন্ (তি) বরদে হিত । প্রাপ্তবর্ক। ব্য়স্ক (ত্রি) বরসবৃক্ত। অভিনববরকা = নবযৌবনসম্পরা স্ত্রী। ব্য়ক্ষ্ত (ত্রি) আর্ব্যপ্রদ। পরমায়্র্ দ্ধিকর। (ঋক্ ১।৩৯।১০) ব্য়ঃক্রেম (খুং) ক্রমিক বর্গকাল। ব্যান্থ (জি) বর্ষা বৌবনে তিঠতীতি বরদ্-ছা-ক। ১প্রাপ্তবর্ত্ত। ২ যুবা, যুবক। "পিত্রা পুরো বয়ন্ত্রোংপি সততং বাচ্য এব ভূ॥" বয়সি তিষ্ঠতি এই বাক্যে 'ঙ' প্রত্যন্তেও 'বয়স্থ' পদ নিস্পন্ন हम এবং বিকরে বিদর্গ লোপে 'বর:ছ' এবং 'ব্য়ছ' ছিবিধ পদই इटेरव । वान्यापि, भक्की ७ माळ योवन এই जिन चार्थ है এস্থানে বরস্ শব্দের ব্যবহার। ৩ সমবরত্ব ব্যক্তি। বয়স্থা (জী) বরো বৌবনং ভিষ্ঠতানয়েতি বয়স্-ছা-ছঞর্থে কঃ। নিপাতনে বিষয়ে বিদর্গ-লোপ:। > আমলকী। ২ হরীতকী। ৩ সোমবল্লরী। ৪ শুড়ুচী। ৫ স্কেলা। ৬ কাকোলী। ৭ আলী। ৮ শাবলি। ৯ ক্ষীরকাকোলী। ১০ অভ্যন্নপ্নী। "বচা বশ্বস্থা গোলোমী হরিভালং মনঃশিলা। কুষ্ঠং সর্জানসনৈত্ব ভৈলার্থে বর্গ উচ্যতে 🛭 " (সূক্রান্ড উ° ৩২) >>ंवर**ङाची**। ⊁२ वृद्**ष्टी।** (ब्राव्यनि°) दश्रु न्युक्ष् भू अव विश्व । वत्र क्षित्र ग अवस्त्र के का का दशक्षान (ही) तोवन। रहाक्ष्मभूम (बि) योदनक्रका। ব্য়স্থা (পুং) বরুনা ভুলাঃ বরুন (নৌবরোধর্ম্বেভি: পা ৪।৪।৯১) हेजि वर । > नवानवब्रह, अक्वब्रनी । প्रदात-विश्व, नवब्रम् । "বছ বোৰিভি **দাক্ষারূণশিরসি বয়ক্তেন দরিভ উপহসিতে**। তৎকালকলিতলক্ষা পিওনৱন্তি সধীৰু দৌভাগ্যম্ ॥"(আর্য্যাস'৪০৩)

ব্যুস্তা (জী) বর্জ-টাপ্। ১ শৰী। (অবর) ২ ইটকা।

"একরা ন বিংশতির্বরহান্তা **একচন্বারিংশন্দিতী**য়া চিতিঃ" (শত[্] ত্রা° > ।৪।৩।১৫) 'বয়স্তা সংজ্ঞকা ইষ্টকা উপদ্যাতি' (মহীধর) ব্যুস্থক (পুং) বন্ধ। সমবন্ধ মিজ। ব্যুন্ত্যত্ব (ফ্লী) বয়ত্তত ভাবঃ ছ। বয়জের ভাৰ বা ধর্ম 🕆 বয়স্তভাব (পুং) বয়স্ত ভাৰঃ। সধ্য ভাৰ, বন্ধ ভাৰ। ব্য়স্ত্ (এি) অরব্ক। "বার: ভাম রখ্যো বর্ণত:" · (ঋক্ ২৷২৪৷১৫) 'বয়স্বতোহরস্কুক্ত' (সারণ) ব্য়ঃসৃদ্ধি (খং) বয়সং দৃদ্ধি। বাল্য যৌবনের সন্ধিকাল। যৌবনের প্রাক্কাল। "যৌবনের চারিভেদ গুন বিবরণ। ष्पारंग वयःमिक भरत्र सवीस योदस ॥ তার পরে যুবা ভাবে উন্মাদ লক্ষণ। তার পরে বৃদ্ধভাব বৃঝ বিচক্ষণ ॥" (ভারতচ° রসমঞ্জরী) ব্য়ঃস্ম (ত্রি) বয়সা সম:। সমানবয়স্ক, তুল্যবয়স্ক। (রামা°৭।৪।২৯) বয়া (জী) > শাধা। "মৃদ্ধনি বয়া ইব রুকুছ" (ঋক্ ভাগাভ) 'वद्मो हेव भाषा हेव' (नायण) २ वद्मन् । (अक् ১१:७৫ ১৫) বৃদ্ধা (পারদী) জাহাজ বাঁধিবার লোহযক্সবিশেষ (Buoy)। বয়াকিন্ (ত্রি) শাখাবিশিষ্ট। "তক্ষভিঃ স্কতে গৃভং বন্নাকিনং" (ঋক্ ৫।৪৪।৫) 'বয়াকিনং বরা: শাথা বয়াকা লতা: ভদস্তং সোমং' (সারণ) व्याटि (रम्भक) উष्ट् अन (यूवक)। ব্য়াড়া (দেশজ) স্থনামপ্রসিদ্ধ বণিজ্ঞব্য বিশেষ। বিভীতক। ব্য়াদা (দেশজ) বাওয়া ডিম্ব। যে ডিম্ব পুং শুক্র বাতীত উৎপন্ন হইয়াছে। ব্য়ানু (আরবী) > ব্যাথ্যা, অর্থ। (বদনশব্দর্ক) ২ মুখ। **ব্য়ার** (দেশজ) > বায়ু। ২ মহিষ। ব্য়াল (দেশৰ) > ভারবাহী বলদ। যে বুৰ লাক্ষণ বা গাড়ী টানে। ব্য়িষু (বি) বন্ধাদি। (ঋক্ ৮।১৯।৬৭) ব্য়ুন (দী) বীরতে গমতে প্রাপ্যতে বিষয়া অনেনেতি অজ গতৌ (অজি যমি শীঙ্ভাশ্চ। উণ্ ৩।৬১) সচ কিং। অত্তে-बोडादः। ३ छान। ূঁহন্তাগ্রাছে রচরতি বিধিং পীঠকোদুখলালৈ-শ্চিক্রং ক্স্বনিহিতবযুন: শিক্যভাণ্ডেব্ তবিং a" (ভাগ্ৰত ১০৮) 'निकालार अत् व्यक्तिविक्तिशास्त्री तत्रूनः स्थानः' (वामी) ২ দেবতাগার। (উজ্জন) (পুং) ও ধিষণা গর্ভঞ্জাত কুশা-বের পুত্র। (ভাগা ভাভাব।) ব্য়ুন্ব্ (ত্রি) প্রকাশগৃক্ত, প্রকাশবিশিষ্ট। "স্বর্গেণ বন্ধনত-कांत्र" (बक् भरः । ७) 'वब्नवर क्षकांमवर' (मात्रन) दशुनम्म् (भरा) दश्न-५नम्। क्रानक्रम्,

"অধ্বরং হোতব্যুনশো যথ" (আক্ ভাং২৷১২) বিষ্নশো জানজনেণ' (সারণ)

ব্যুনাবিদ্ (অ) বৰ্নাং বেভি বিদ্-কিশ্। প্ৰজাবেভা, জানবিশিষ্ট। "হোত্ৰা লগে বয়্নাবিদ্" (অক্ এ৮২০১) 'ব্যুনাবিদ্
বয়্নমিতি গুজানাম ভত্তদভূজানবিবরপ্রজাবেভা' (সাহণ)
বয়েদ্ (জারবী) > শান্তবাক্য। ২ লোকের চারি চরণ।

ব্যোগত (ङी) বরদে গতং। বরোহানি, রুছছ।
"বরোগতে কিং বনিতাবিদাস:়।" (উরুট)

বয়োজু (ত্রি) বলর্ছিকরণ। বয়োছতিগ (ত্রি) বৃছদ্ধান্ত।

বায়োধস (পুং) বায়ো বৌৰনং দ্ধান্তীতি বন্ন দা অসি, (বন্ধসি ধাঞা। উণ্ ৪।১২৮) স চ ডিও। > যুবা। ২ অর। "বারোধসাধীতেনাধীতং জিম্ব" (বাজসনেম্নন্ত ১৫।৭) "বারোধনা
বারো দ্ধাতি পুঞাতি বারোধা অরং' (মহীধর) (ত্রি)
ত আয়ুর্লতা। "অরিমিক্রং বারোধসং" (বাজসনেম্নন্ত ১৮।২৪)
, 'আয়ুর্ল ধাতি বারোধান্তমানুবো দাতারং ধার্মিক্রারং বা' (মহীধর)
বায়োধা (ত্রি) > বল্লাতা। ২ অর্লাতা। (সারণ) ও ব্রা।
৪ শক্তি। বল, সামর্থ্য।

বয়োহধিক (ত্রি) বয়সা অধিক:। বরোজ্যের, বৃদ্ধ, বর: প্রবীণ।
"সন্ত্রীবালবয়োহধিকা" (রামায়ণ ২।৪৭।১•)

বরোধেয় (क्री) > অয়দান। "খং নঃ গোম হুক্রতুর্বরোধেয়ায় জাগৃহি"(ঋক্ > ।২৫।৮) 'বয়োধেয়ায় অয়দানায়' (সায়ণ) ২ লক্তি। বয়েয়ানায়' (য়য়) > প্রাণ। "সজুদেবৈর্বরোনাধৈরয়য়ে ছা" (বাজসনেয় >৪।৭) 'বয়ো বাল্যাদি নক্তি বয়ির তে বয়োনাধাঃ প্রাণাঃ' (মহীধর)

বয়োবয়ঃশয় (জি) খান্তরবাপুর্ণ হানে বাস। বয়োবস্থা (জী) জীবনকাল। বাদ, তরুণ ও বৃদ্ধাদি অবস্থা। বয়োবিধ (জি) পজীপ্রকৃতিসম্বনীয়।

वर्षात्रक (जि) वार्ककाश्रीशः बरहारकार्छ।

বয়োর্ধ্ (তি) বলবৰ্জনকারী (প্রাতঃ ও সারংকালীন মরুৎ)।

वरग्राहानि (जी) स्वीवनद्यात्र। वृष् ।

ব্যা (ত্রি) বহা কুলোৎপন্ন জুর্নীতি রাজা। "জুর্নীতিং বহাং
শতক্রতো" (ধর্ ১।৫৪।৬) 'ব্যাং ব্যাকুলজং জুর্নীতিনামানং
রাজানং' (সারণ)

বরোবঙ্গ (ङ्गी) বরসা বন্ধমিব। সীসক। (রাজনি°)
বর, > বরণ। ২ বারণ। অদত্ত চরাদি° পরদৈব° সক° সেটু।
বাররভি। বোপদেবের মতে এই ধাড় পরদৈপদী, কিত্ত
মতান্তরে এই ধাড় উভরপদী দেখা বার। আত্মনেপদের
প্রায়ান—বারসতে।

বর (রী) বিরতে ইতি বৃ ক্রণি অপ্। ১ কুছুম। ২ বনাক্-বিষয় । শ্রেষ্ট

> "बत्रः श्रीभाष्णांबा। म ह निक्विनात्मबक्तिकि र्वतः स्मोमः काबार म ह वहमभूष्टर बलमृख्यः। वतः स्मीवारं काबार म ह नद्रक्तसाकित्रममर

বরং ভিকাশিকং ন চ পরধনানাং হি হরণম্ ৷"(বামনপ্°৪৬জ°)

७ वक्, शोक्रोंगित । ८ वानक । ४ जाऊ क, जाता । (शास्ति) ७ रेजकर नवन । १ ज्ञजक जून । (रेरछक्ति") व्-ज्ञन् (शूर)

৮ বরণ। পর্যায়—রুক্তি। ৯ বিবেটন। প্রার্থনাবিশেষ। (ভরত) ১০ বেবতার নিক্ট বৃড, দেব সন্ধাশ হইতে বাচিত।

"তপোভিরিয়তে বস্তু দেবেজ্যঃ স বরো বস্তঃ!" (ভরত)

>২ লামাতা। "গ্রেম্বিতবরণক্ষমেকতত্ত্বং" (রলু ৬৮৮৬)

>৩ বিড্গ, বিট্। (মেনিনী) >৪ গুণ্ গুলু। ১৫ পতি। (হেম)

১৬ নিগ্রহ। "ন বো বরার মকতামিব খনঃ সেনেব ক্ষ্টা

দিব্যা বর্গাণনিঃ।" (ঝকু ১১১৪৩)৫) 'বোহন্নিকারার বরণায়

নিগ্রহার ক্ষেতা ন ভবতি।" (সারণ) (মি) ১৭ শ্রেষ্ট। (আমর)
"রাজাসনং রাজক্ষণ্ড বরাখা বর্ষবারণাঃ।

যন্ত প্ণানি ততৈতে বহৈতৎ শাষ্য প্রক।" (বিফুপুঁ ১০১১১৮)
১৮ শিরাদ বৃক্ষ। ১৯ বকুলবৃক্ষ। ২০ বিকৃত বৃক্ষ।
২১ হরিলা বৃক্ষ। (বৈশ্বকনি°)

বর, পর্বতভেল। (ভবিষ্যক্রমণ ৩২।৫) সম্ভবতঃ ইহাই বেচারের অন্তর্গত বরাবন্ধ শৈল।

বরুম্ (অবার) মনাকৃতির । শ্রেছর, উহাপেকা ভাল । 'মনাগিটে বরং ক্লীবং কেচিদাহতদব্যরম্।' (মেদিনী)

বরংবরা (জী) বরং কূপোতীতি বৃ-অচ্-মুম্চ। > চক্রপণী, চলিত চাকুলিয়া। (শশ্চ°)

বর্ক (রী) রিরতেহনেন ইতি রু-জন্ ততঃ সংজ্ঞারাং কন্।
> পোতাজানন। (হারাবলী) হ ধোত বা অধ্যেত সাধারণ
বন্ধ। (প্লক্ষাণ) রিরতে লোকৈরিতি বু-জন্, ততঃ কন্।
(প্ং) ও বনমূলন, চলিত মুগানী। (হেম) ৪ প্রপটক,
চলিত কেংপাপড়া। (রাজনিণ) হ থিরেছু নামক ভূপধান্তভেদ,
চলিত চীনাধান, কাংনীধান। ইহার প্র্যার—ছূলকলু, কক্ষ্প ও
ফুলথিরেলু। ইহার ওপ—ম্থুর, রক্ষ্, ক্রার ও বাতপিক্তকর।
(রাজনিণ)(রী) ও প্রথম্বারী ফ্ল। (মদ্প্রণ ৬), বন্ধ স্বার্থে
কন্। (পুং) ৭ প্রার্থনাবিশেষ।

শন বত্রে ত্রগং তত্ত প্রথমং বজ্ঞকারণন্।
বিতীয়ং বরকং বত্তে পিতৃণাং পাৰনেদ্দরা ॥"(মহাভা" ৩)১০৭(৫৩)
ব্রক্ত (আরবী) আশীর্কাদ। সৌতাগ্য। দেবাছ্মহ।
ব্রক্সদাজ (পারবী) বস্ক্থারী সৈত্ত।

বর্করার (পারনী) > বিশ্রম। ২ গার্ড ।
বর্কলা (প্রেট) লারীল বৃক্ষ। (প° র°)
বরকলা (প্রী) লারীল বৃক্ষ। (প° র°)
বরকান্তকা (প্রী) পঞ্চতরাক্ত বাতিবিশেষ।
বরকান্তি (প্রী) পঞ্চতরাক্ত বাতিবিশেষ।
বরকান্ত (প্রা) বরাঃ প্রেটাঃ ক্রন্তবো বক্ত শতাব্ধমধিছাৎ
তথাক্ত। বরাঃ ক্রেড্রাং শতক্রেড্রাং তথাক্ত। ইন্তা। (হেম)
বরকোন্তব (প্রং) কোবিদারবৃক্ষ। (রাজনি॰)
বরখান্ত (পারনী) কর্ম্মে ভবাব।
বরখেলাফ্ (পারনী) বিপরীতে ।
বরখেলাফ্ (পারনী) বিপরীতে ভাব।
বরগ (লী) নগরতেল।
বরগা (দশক্ষ) গৃহচ্ছাদক্ষ্ কার্ডব্ড, ছুইটা কড়ির উপরে এড়ো
ভাবে বে ক্রেড্রাক্ত্ম কার্ডব্ড দেওয়া এবং তছপরি টালি
ক্রাক্তমা বার।

বর্গী (দেশক) মহারাইদস্ম। [পবর্গে বর্গী ও মহারাই দেখ।]
বর্ষ ভিকা (ত্রী) বৃক্ষজেদ। বরষ্টী নামেও পরিচিত।
বরঙ্গলা, দীক্ষিণাজ্যের ভারদরাবাদ রাজ্যের অন্তর্গত একটা প্রাচীন
নগর, হারদরাবাদ নগর হুইতে ৪০ ক্রেন্দ উত্তর পূর্বে অবস্থিত।
অক্ষা ১৭°৪৮ জঃ এবং জ্রাঘি ৭৯°৪০ পু:। এই নগর
নিজামের শাসনাধীন। ইহার পশ্চিমোপকঠে করিমাবাদ
(৪৪৬৫ জনসংখ্যা) এবং এক মাইল উত্তর পশ্চিমে মংবারা
(৮৮১৫ জনসংখ্যা) নগর আজিও বরজ্বের প্রাচীন সমৃদ্ধির
পরিচয় দিজেতেই।

প্রাচীন জেনিক রাজ্যের অব্বংশীর হিন্দু নরপতিগণের সমৃত্যি সক্ষরে এই নগর রাজ্যানী রূপে গণা হইয়াছিল। ছংথের বিবর, সেই প্রাচীন রাজ্বংশের প্রকৃত কোন ইতিহাস পাওয়া যায় না। ১০০৩ পৃষ্টাকে আলাউনীন তেলিলানা আক্রমণ করেন। কিন্তু তিনি রাজা জরে বিকলমনোরথ হইয়া বহন্দতি বীকার করিলা প্রত্যায়ন্ত হইতে বাধ্য হন। এই সময় হইডেই য়ুল্লমান ইতিহাসে বরল্লের প্রকৃত ইতিহাস প্রাপ্ত হবয়া বায়। ১০০৯ পৃষ্টাকে মালিক কার্ম্ম বরল্ল প্রগাধ প্রত্যায় করেন এবং জ্পাকার হিন্দু নরপতিকে কর দিতে বাধ্য করিয়াছিলেন। সিয়াস্ট্রীন্ জোগলকের রাজ্যকালে মূলকামানপণ পুনরায় বর্লণ অধিকার করে ওটে, কিন্তু অধিকালিন নিকিরোধে রাজ্যপালন করিছে পালে নাই; কারণ বহম্মণ তেগেলকের লাসনকালে হিন্দুপণ প্রসাধ নইয়াজ্য উদ্ধার করিব। লয়।

জভংগর রান্দিণাডো বান্দ**ী রান্দ**ংশের প্রভাব বিস্তৃত !

হইলে এতহ্তর জনপদবাসী হিন্দু ও মুসলমানের বোর সংঘর্ষ উপস্থিত হর। তাহাতে ১৫০৮ খুটালে বরজলরাজ হতরাজ্য প্নঃপ্রাথির জন্ত আবেদন পাঠাইলে পুনরার উভর পক্ষে ইপছিত হয়। এই বুদ্ধে বরজলরাজ গোলকোণ্ডা রাজ্য হারাইতে বাধ্য হন এবং তাঁহার পুত্র বন্দিভাবে বান্ধনীরাজ্য সমীপে নীত ও নিহত হইয়াছিলেন। উক্ত হিন্দুরাজ্যের অবশিষ্ট বাহা ছিল ভাহা ১৫১২ হইতে ১৫৪৩ খুটান্দের মধ্যে হন্তগত করিয়া কুলী কুতবশাহ কুতবশাহী বংশের প্রতিষ্ঠা করেন। গোলকোণ্ডার তাহার রাজধানী স্থাপিত হইয়াছিল। এখানে এখনও অনেক হিন্দুকীর্তির ধ্বংসাবশেষ নরনপথে সমুদিত হইয়াথাকে। [সাতবাহন বংশ ও গোলকোণ্ডা দেখ।]

বরঙ্গাওন (বরণগাও), বোষাই প্রেসিডেন্সীর থান্দেশ জেলার অন্তর্গত একটা নগর। ভূষাবল উপবিভাগের সদর হইতে ৮ মাইল পূর্ব্বে অবহিত। পূর্ব্বে এইছানের বাণিজ্ঞানম্দ্রি যথেষ্ট ছিল। ভূষাবলে বিভাগীর সদর স্থাপিত হওয়ার এই ছান ক্রমশঃ শ্রীহীন হইয়া পড়িতেছে। ১৮৬১ খুপ্লাঙ্গে সিন্দেরাজ এই ছান ইংরাজ করে সমর্পণ করেন। ইহার পূর্বেক এই নগর যথাক্রমে মোগল, নিজাম ও পেশবাদিগের অধিকারে ছিল। মিউনিসিপালিটি থাকায় নগরের শোভা ও সৌল্ব্যানই হয় নাই।

বর্চন্দন (ক্রী) বরং শ্রেষ্ঠং চন্দনং। >কালীর চন্দন। ২নেবদাক। বরজ (ত্রি) জ্যেষ্ঠ। (পা ভাতা>৬) বরেজ পাঠও দেখা যার বরজ (দেশজ) > বেথানে পর্ণলতার চাব হয়। একটী ক্ষেত্রের চারিদিক্ বাধারি ও পাখাটী দিরা ঘিরিয়া ও তাহার উপরে ছাদের স্থার পাখাটীর আছোদন বাধিয়া বে গৃহাকার পর্ণক্ষেত্র রচিত হয়, তাহা পানের বরজ বলিয়াই প্রাক্তি। ২ ব্রুক্র্বিতে "ব্রুল" শব্দ অপ্রংশে 'বর্জ' লিখিত হইরা থাকে। বরুজ, ভোজারাজ্যের অন্তর্গত একটী গ্রাম। (ভবিষ্যবৃদ্ধণ তার্বিশ্ব হ

বরজীবিন্ (পুং) সদর জাতিবিশেষ। > ব্রাদ্ধণের গুরসে
শ্লার গর্জনাত। ২ গোপ ও ভর্তবারের সংযোগ উৎপর জাতি।
বরঞ (অব্য) সংস্কৃত বরং—চ বোগে নিশ্লয়। ইহাপেকা ভাল।
বরট (য়ী) ব্রিরতে ইতি বৃ-জটন্, (শকাদিভোষ্টন্। উণ্
৪৮১) > কুন্দপুলা। (শকরত্বা৽) বরতি সেবতে সরোবরবিভি রুঞ্-সেবারাং জটন্। (পুং) ২ হংল। (মেদিনী)
ও বেদিকা, কীটবিশেষ, চলিত বোলতা। ইহার পর্যার—গজোলী,
বরটা, গজোলি, বরলা, বরলী, কুলা, কুরা, কুরাকর্কবা।(রাক্ষনিং)
বর্টক (পুং) কুরবিল। [বরট দেখ।]

व्यक्तिं (जी) वद्रष्टे-प्रान्। > इस्ती।

10/10/10/2

"মদেকপুত্রা জননী জরাতুরা নবপ্রস্থতিবরটা তপশ্বিনী।" (নৈষধ ১১৩৫)

২ কুজবীজ। ইহার গুণ— "বরটা মধুরা লিগ্ধা রক্তপিত্তকফাপহা।

ক্ষায়া শীতলা গুৰুৱী স্থাদর্য্যানিলাপহা ॥" (ভাৰপ্ৰ:পূ:প্ৰ):
৩ বরলা, অধি প্ৰকৃতি কীটভেদ, চলিত বোল্তা। ৪ বন্ধ।

তিন্তি সংগ্ৰেম ক্ষাড়ে ১ কেন্দ্ৰী: ১ কেন্দ্ৰী: ১ কেন্দ্ৰী: ১ কেন্দ্ৰী: ১ কেন্দ্ৰী: ১ কেন্দ্ৰী: ১ কেন্দ্ৰী:১ কেন্দ্ৰ

বর্টী (ত্রী) বরট-জনতে ভীষ্। ১ হংদী। (মদিনী॰) ২ গদোলী। (ত্রিকা॰)

> "হলতুগোক্তিটিল-বরটীশতপদীশৃকবলভিকাশৃদী-ভ্রমরাঃ শৃক্তুগুবিষাঃ।" (সুক্রত করস্থান ৩ অঃ)

বর্ট্টিকা (ত্রী) কুস্তবীজ। পর্যায়—বরটা। ইহার গুণ— মধুর, স্লিগ্ধ, গুরু, অর্যা ও বায়ুহর। (ভাবপ্র:-)

ব্রণ (ক্লী) বৃ-ভাবে লুট্। ১ মনোনয়ন বা পছল করিয়া কার্য্যে নিয়োজন। যাহাকে কোন মঙ্গল কার্য্যে নিয়োগ করা যাইতেছে, তৎপ্রতি শিষ্টাচার ও শ্রন্ধা দেখাইরা তাঁহার সন্মাননারূপ তদীয় সর্ববিদের সম্বর্জনা। ২ কন্তাবিবাহে বর-বরণের বীতি।

শন চ বিপ্রেম্বনীকারো বিহাতে বরণং প্রতি।

শ্বরম্বর: ক্ষত্রিয়াণামিতীয়ং প্রপিতা শ্রুভিঃ॥" (মহাজা° ১।১৯০।৭)

হোমসাধ্য যে কোন বিহিত কর্মেই হোম আরম্ভ করিবার
পূর্ব্ধে যঞ্জমান আপন শিষ্ট ও বিনীতভাব দেখাইবার জন্ত আচার্য্য প্রভৃতিকে স্বয়ং বরণ করিয়া দিবেন। আচার্য্য প্রভৃতি বরণীয় ব্রাহ্মণদিগকে গ্রুদ্ধি স্বারা প্রীতি বিধান করিয়া কর্ম্ম-করণার্থ প্রেরণ করার নামই বরণ। দানবাচন, অগ্নরম্ভ, বরণ ও ব্রত প্রভৃতি স্থলে যজ্মান-কর্তৃতাই বুঝিতে হইবে। বরণ-কালীন যজ্মানকে পূর্ব্ধমুখ এবং আচার্য্য প্রভৃতিকে উত্তরমুখ হয়া বসিতে হইবে।

"দর্কার প্রাঝ্রাংখা দাতা গৃহীতা চ উদব্ধং।" (শ্বতি)

কাত্যায়ন বরণবিধি এইরূপ নির্দেশ করিয়াছেন। যথা— প্রথমে যক্তমান আসন আনিয়া বলিবেন,—'সাধু ভবান্ আন্তা-মন্চরিশ্যামো ভবন্তং।' বরণীয় ব্রাহ্মণ উত্তর করিবেন, 'সাধ্বহমাসে' ছরিশ্যা বলেন—'অর্চরিয়ামো ভবস্তং' এই কথার পর 'অর্চর' এইরূপ প্রভিব্চন প্রযোজ্য। (সংক্ষার্ভ্রত্র)

বে কর্মে বরণ করিতে হইবে, তাহাতে নিয়োক্তরণ সক্ষ করিয়া বস্ত্র ও উপবীতাদি দিতে হইবে।

ষাহাকে বরণ করিতে হইবে তাহার দক্ষিণ জামু স্পর্শ করির।
"বিষ্ণুরোম্ তৎসদোমত অমৃকে মাসি অমৃক পক্ষে অমৃকতিথে।
অমৃকগোত্রং অমৃক প্রবরং শ্রী অমৃকদেবশর্মাণং অমৃককর্মকরণার
এতির্বন্তপুশানাগানিভিরভার্চে ভবস্তমহং বুণে" এবং অধিকৃ,
"রুভোহ্মি" বসিবেন। পরে ষলমান বলিবেন—"বথাবিহিত্যং

्चर्मक कर्ष कूङ।" चिक्कृ 'यशास्त्रामः कत्रवानि' এই कथा विगटन ।

এইরপে ঋতিক্ বরিত হইয়া তাঁহার সন্ধানিত কর্ম আরম্ভ করিবেন। ধন্দমান নিজে কর্ম করিতে না পারিলে পুরোহিত প্রভৃতিকে বরণ করিয়া দিবেন, পুরোহিত ঐ পুজাদি কর্মে বরী হইয়া কার্য্য সমাধা করিবেন। বিবাহেও জামাডাকে প্রথমে বরণ করিয়া পরে ক্যাসম্প্রদান করিতে হয়। বিবাহে বরণ স্থানে বর ও ক্যার উর্ক্তন তিন পুরুষের নাম উল্লেখ করিয়া বরণ করিতে হয়।

"বিবাহে যো বিধিঃ প্রোক্তো বরণে স বিধিঃ স্মৃতঃ।

বাক্যা ত্রৈপুর্বাধিকং কার্যাং ত্রিরার্ডিবিবজ্জিতে ॥"(উলাহতত্ত্ব)
বিবাহে বরণবাক্য এইরপ হইবে। সংপ্রানাতা বরের দক্ষিণ
জায় স্পর্ল করিয়া— বিষ্ণুরোম্ তৎসদোমন্ত জমুক মাসি জমুকে
পক্ষে অমুকতিথো জমুকগোকঃ শ্রীজমুকদেবশর্মা জমুকগোত্রশু
জমুকপ্রবরশ্ত জমুকদেবশর্মণঃ প্রথাক্ত অমুকগোত্রশু জমুকপ্রবরশ্
জমুকদেবশর্মণঃ পুত্রং জমুকগোত্রং জমুকপ্রবরশ শ্রীজমুকদেবশর্মণঃ পুত্রং জমুকগোত্রশু জমুকপ্রবরশ্
জমুকদেবশর্মণঃ পুত্রং জমুকগোত্রশু জমুকপ্রবরশ্
জমুকদেবশর্মণঃ পুত্রং জমুকগোত্রশু জমুকদেবশর্মণঃ পৌত্রীং জমুকগোত্রশু জমুকগোত্রশু জমুকগোত্রশ জমুকপ্রবরশ জমুকগাত্রশ জমুকপ্রবরশ জমুকগাত্রশ জমুকপ্রবরশ জমুকগাত্রশ জমুকপ্রবরশ জমুকপ্রবরশ করিছে জ্যাং দাতৃমেভিগন্ধাদিভিরভাচ্চ্য বর্মনে ভবস্তমহং বৃণে" বলিবেন। পরে জামাতা 'বৃত্তাহিন্মি' বলিবেন। যথাবিধি বরণ করিয়া দিলে তবে ভাহার কার্যো অধিকার হয়, এইজন্ম ব্রতাদিতে পুরোহিভাদিকে বরণ করিছে হয়।

প্রতিনিধি বা উপযুক্ত ব্যক্তিনিয়োগের নামই বরণ। যেমন রাজপদে বরণ। এই জন্ম মাঙ্গণিক কার্যাদিতে নিযুক্ত ব্যক্তির সন্মানার্থ কতকগুলি মাঙ্গণিক দ্রব্য ধারা ভাহার সম্বর্জনা করা হইয়া থাকে। যে পাত্রে ঐ মাঙ্গণিক দ্রব্যগুলি এক্ত স্থিবেশিত থাকে, ভাহাকে বরণভালা বলে।

২ বেট্টন। ৩ পূজার্চনাদি। (পুং) ৪ প্রাকার। ৫ বরণার্ক।
(অমর) ৬ উট্ট। ৭ সংক্রম, চলিত সাঁকী। (হলাযুধ)
বরণক (ত্রি) বরণকারী। আফোদন।

বরণডালা (দেশজ) মান্সনিক দ্রবাপূর্ণ একথানি পিপ্তলের গালা বা বংশথগুনিশ্বিত গোলাকার ডালা। কুলকামিনীগণ সে পাত্রে খুরি রাখিরা ভাষাতে নিমোক্ত দ্রবাগুলি সাজাইরা দেন। পুরোহিত ভাষার একটী একটী তুলিরা বরকে বরণ করেন। ক্রী-জাচারের সমরে সধবা কামিনীগণও ক্তএকথানি জ্রৈরণ পাত্র বিভিন্ন দ্রবো সাজাইরা মাথার লইরা বরের চারিদিকে শুরিরা বেড়ার এবং নির্শ্বন্ধন করে।

বরণডালার প্রব্য: — মধী (মৃত্তিকা), বেতচকান, শিলা (পুড়ি), ধাজ, দুর্কা, পুশা, ফল, বধি, ছত, অভিক, সিন্দুর, শাম, কক্ষল, হত্তিপ্রা, চাউল, সোণা, স্থানা, তামা, বেতসর্বপ, দর্শণ, স্ত্রে, চামর, দীপ, লৌহ।

वज्ञभाना (जी) वज्ञभाव या भागा। वज्ञभञ्जन्, वज्ञभञ्जन्। दव गुल्लभागापि दवश्यायात्र।

वद्गशृजी (जी) बाबांगनी। (असवकां°) 🤺

বরণক্রজ (জী) বরণমাশা। (রাজতর°১।৬১)

বর্ণা, পঞ্চাবদেশান্তবা একটা নদী। (পা ৪।২।৮২) প্রাচীন গ্রীক ভৌগলিকগণ ইহাকে Aornos নামে উল্লেখ করিরাছেন। ইহা সিদ্ধনদের দক্ষিণকূলে আটকের বিপরীত দিকে প্রবাহিত। ইহা এখন বরণস নামে খ্যাত।

বরণা (জী) বরণ-টাপ্। নদীবিশেষ। (শদর্মা°) এই
নদী বারাণসীর উত্তর সীমা এবং অতিশয় পুণা নদী। এই
নদীতে লান করিলে ব্রহুহত্যাদি পাতক বিদ্রিত হর। বিষ্ণুর
দক্ষিণপাদ হইতে এই নদী এবং ৰাম পাদ হইতে অসি নামক
নদী ধিনিগতা হইরাছে, এই ক্ষয় এই ছই নদীই পুণাবর্দ্ধিনী ও
পাপনাশিনী। এই ছই নদীর মধ্যবর্তীছান বারাণসী নামে খ্যাত।
ইহার তুল্য পুণা স্থান স্বর্গ, মর্ত্য ও রসাতলে আর নাই।
(বামনপু°৯ অ°)

২ জুবরী। (নকুল ১৩অ") চলিত অড়হর কলাই। বরশীয় (গ্রি) বৃ-অনীয়র্। বরণের বোগ্য, যাহাকে বরণ করা যায়, বরণাই। ২ প্রার্থনীয়। ৩ শ্রেষ্ঠ।

বর্প্ত (পুং) বুণোভীতি র (অপএন্ ফ্রম্ম্ড র্ঞ:। উণ্ ১।১২৮)
ইতি অপএন্। ১ অপএরাবেদি, চলিত বারাপ্তা। ২ সমূহ।
৩ মুধরোগভেদ, চলিত বরসফোড়া। (মেদিনী) ৪ বড়িলহর, গঠিরী।

বর ওক (পুং) বরও স্বার্থে সংজ্ঞান্ধাং বা কন্। ১ মাতদ্রবিদি, হাতীর হাওল। ২ যুধ্যমান গল্পদের মধ্যবর্তিনী ভিত্তি, দেওরাল। ৩ যৌবনকটক, চলিত বয়সন্দোড়া। (মেদিনী) ৪ বর্তুল, গোল। (ত্রি) ৫ বিশাল। ৩ জীত। ৭ কুপণ। (শলর্ড্বা°) ৮ বরওশলার্থ।

বরগু। (খ্রী) বরগু-টাপ্। সারিকা। ২ বর্তি। ৩ শক্তভেদ। বরগুলু (পুং) বরগু এব জানুরতা। এরগু বৃক্ষ, কন্দশাক-বিশেষ। (তিকা⁶)

বর্তর্ক (পারদী) কার্য হইতে ধবাব দেওরা।

বর্তর্কী (পারসী) বাহাকে বর্তরক্ করা হইরাছে, বাহাকে ধবাব দেওয়া হইরাছে।

ব্য়ত্তমু (জি) > হন্দরী স্থী। ২ ছন্দোভেষ। ইছার প্রভাক

চরণে ১২টা অক্ষর থাকে, তক্মধ্যে ১,২,৩,৪,৬,৭,৯,১১ লগু, তত্তির বর্ণ গুরুঃ

বরতস্ত্র (পুং) একজন প্রাচীন গবি। "কৌৎসঃ প্রাপেদে বরতন্ত্র-শিষ্যঃ" (রঘু) বহু বচনে বরতন্ত্রর বংশধর বুমার।

বরতিক্ত (পুং) বরঃ শ্রেষ্ঠিক্তিক্তিক্তরসো যন্ত। > কৃটজ বৃক্ষ, কুড়চি গাছ। ২ নিম্বর্ক। (রাজনি°) ৩ পপ্টক, ক্তে পাপড়া। ৪ রোহিতক বৃক্ষ, ররনা গাছ। (পর্যায়মুক্তা°) বরতিক্তিকা (স্ত্রী) বরতিক্ত স্বার্থে কন্ টাপ্ অত ইছং। ১ পাঠা, আকনাদি। 'বরতিক্তকা' এইরূপ পাঠ দেখিতে পাওরা যার।

বরতোয়া (গ্রী) নদীভেদ। (শত্রুপ্তর্মাণ ১।৫৪)
বরৎকরী (গ্রী) রেগুকা নামক গদ্ধপ্রা। (শক্ষণ)
বরত্রো (গ্রী) বিরতেহনেনেতি র (বৃঞ্চিচিং। উণ্ ৩)১০৭)
ইতি অত্রন্ টাপ্। হতিকক-রজ্জু, করিবদ্ধন, চলিত কাচদড়ী।
পর্যায় —চ্যা, কক্ষা। ২ চর্ম্মক্ষ্ম্। (শক্ ১০।৬০।৮)
বরস্ক (গ্রং) বরা হিতকরী স্বচা বস্তা। ১ নিম্বর্কনা (রম্বনালা)
বরদ (ত্রি) বরং দদাতীতি দা (আতোহমুপসর্গেতি। পাঁ
এ।২।৩) ইতি ক। ১ অভীষ্টদাতা, পর্যায়— সমর্দ্ধক, বাশিতার্থদ।
"বরদং তং বরং বত্রে সাহায্যং ক্রিম্বতাং ম্য।" (ভারত ১।২।২১৭)

২ প্রসর, যিনি **অ**ভিল্বিত বরপ্রদান করেন।

বর্দ, বিদ্ধাপার্ষহিত শোণনদতীরবন্তী একটা গশুগ্রাম। (ভবিষ্যবন্ধর্শ ৮০০৭)

২ বন্ধের একটা প্রাচীন বিভাগ। (ভবিষ্যবন্ধর্ম ১০০০) ব্রুদ্ধ, দাক্ষিণাত্যবাসী একজন সংস্কৃত শাস্ত্রবিৎ পণ্ডিত, ভোগ্ডীর-মগুলে ইহার বাস, ইহার পিতার নাম শ্রীনিবাস। ইনি অনজ-জীবন নামে একথানি ভাগ রচনা করেন।

বরদক্বি, কারিকাদর্পণপ্রণেতা।

ব্রদ্ধিকণা (ত্রী) > বিবাহকাদে কল্পার পিতা বরকে যে যৌতুক বা উপহার দেন। ২ নাইবল্প উদ্ধারের যে বৃথা ধরচ পত্র হয়, তাহাকে বরদক্ষিণা বলা যায়।

বরদচতুর্থী (গ্রী) বরণ চতুর্থী। শ্রাথ মাসের গুক্লাচতুর্থী। বরদত্ত (ত্রি) > বর বা অহুগ্রহরূপে প্রাপ্ত। বরদদেশিকাচার্য্য, > কাঞ্চীবাসী স্থব্দনের পুত্র, ইনি বিসন্ত-

ভিলক' নামে একখানি ভাগ রচনা করেন। ২ একখন দার্শনিক। ইনি ভব্তর ও বেদান্তকারিকাবলী

নামে ছইখানি এছ রচনা করেন।
বরদনাথ, ভক্তরচুপুকার্থসপ্রেহ নামে সংস্কৃত গ্রন্থপ্রেচা। ইহার
প্র ঐ গ্রন্থের উপর সহস্তরচুপুক নামে একখানি প্রক

श्रमदान करतन ।

বরদনীয়কসূরি, দান্দিণাত্যের এক্ষন প্রসিদ্ধ পণ্ডিত। ইনি তথ্যনিরূপণ নামে গ্রন্থ রচনা করেন।

বরদমূর্ত্তি, বাজপোরাদি সঞ্চরনির্ণর নামক বৈদিক গ্রন্থরচরিতা।
বরদযোগ, বাজালার অন্তর্গত একটা প্রাচীন ছান। তেবিয়ব্রদরাজ, > একজন বিখ্যাত তার্কিক। ইনি তর্ককারিকা,
তার্কিকরক্ষা এবং সারসংগ্রহ নামে তার্কিকরক্ষার টীকা রচনা
করেন।

২ একজন বিখ্যাত বৈরাকরণ, ইহার পিতার নাম ছ্র্গাতনর। পাণিনি-ব্যাকরণ আশ্রর করিয়া ইনি গীর্কাণপদমন্ত্রী, মধ্যসিদ্ধান্ত-কৌমুদী, লখুকৌমুদী এবং সার্জান্তকৌমুদী বা সারকৌমুদী নামে সংক্রত ব্যাকরণ প্রণয়ন করেন।

ত একজন বিখ্যাত বেদজ পণ্ডিত, বামনাচার্য্যের পুত্র ও জ্বনস্ত নারাগণের পোত্র। ইনি ধ্বেদভাগ্য, তৈত্তিরীরারণ্যক-ভাগ্য, নিধানস্ত্রগৃত্তি, প্রতিহারস্ত্রগৃত্তি, মশককল্লস্ত্রভাগ্য এবং বর্গরাজদীক্ষিতীয় নামক প্রোতগ্রস্থরচিছিতা।

৪ একলন মীমাংলক, রক্তরাজের পুত্র, দেবরাজের পৌত্র এবং স্থদর্শনাচার্য্যের শিয়্ব, মীমাংলানয়বিবেকদীপিকাপ্রণেতা ।

- একজন নৈয়ায়িক, রামদেবমিলের পুত্র, হরিদাসের ভারকুয়মাঞ্লিটীকার একজন টিপ্লবীকার।
 - ৬ শিবস্থ ত্রবার্ত্তিকরচয়িতা।
 - ৭ ব্যবহারকাও বা ব্যবহারনির্ণয়প্রণেতা।
 - ৮ যাগপ্রারন্চিত্তব্যাথ্যাকার।
- ৯ আনন্দভীর্থ রচিত মহাভারততাৎপর্যনির্ণরের মন্দ-স্থবোধিনী নামে টীকাকার।
 - ভাষামশ্বরী ও প্রমাণপদার্থ নামক ব্যাকরণ-গ্রন্থরচয়িতা।
 - ১১ ক্লারদীপিকাপ্রণেতা।
 - ১২ ভৱনির্ণন্ন নামক বৈদান্তিক গ্রন্থকার।
 - ১० कित्रगादमीत क्टेनक जैकाकात ।
 - ১৪ পুরুষস্জের জনৈক ভাষ্যকার।
 - ১৫ ক্ৰিজ্মবিনোদ নামে সংস্কৃত গ্ৰন্থরচরিতা।

বরদরাজ আচার্য্য, নামমাভূকানিখন্ট্রচরিতা। বরদরাজ চোলপণ্ডিভ, বিবেক্তিশক নামধের রামারণের জনৈক টীকাকার।

বরদরাজভট্ট, সামাজপদমশ্লরী নামে বৈদান্তিক গ্রন্থরচরিতা। বরদরাজ ভট্টারক, কামক্ষণীয় নীতিসারের টাকাকার।

ব্যাদরাঞ্জীর (বি) ব্যাদরাক্তিণিত।
ব্যাদরাঞ্জীর (বী) বেখিতে প্রণাদণা বা প্রদায়ী। (রামারণ
হাবব, ১) কেন্ত্রবর্গনী এই পাঠ অন্তর্মান করেন।

वत्रम्वियुः मृति, देवन वृत्रिरक्षम्।

ব্রদ্। (জী) বরদ-টাপ্। > ক্জা। (মেনিনী) ২ আদিত্য-জক্তা। ৩ অবগন্ধা। (ভাব প্র') ৩ অভীইদেশনালী। ৪ প্রসর-চিহুস্চক হন্তাদি বিক্তাসরূপ মুল্লাবিশেষ। ৪ স্বর্জসা, চলিত হড়হুড়ে। ৫ বারাসীকদা। (বৈক্তকনি⁶)

বরদা, হিমণাগবিনিঃস্ত নদীভেদ। (হিমবংখ- ৪।৬৯) এখানে অষ্টানশভূজা ঈবীমূর্তি বিরাজিতা। (হিম- ৪১।৩৯-৪৪)

वद्राम् (जी) मक्तिभृतित्त्रम्।

বরদাচ তুর্থী (জী) বরদাখ্যা চতুর্থী। মাধ মানের গুক্লাচতুর্থী।
মাধ মানের গুক্লাচতুর্থীর দিন গোরীপূলা করিছে হর, এই দিন
গোরীপূলা করিলে তিনি বরদারিনী হইরা খাকেন, এইজভ এই
চতুর্থীকে বরদাচতুর্থী করে। এই ভিথিতে গৌরীপূলা করিলে
সোভাগ্য ও অতুল শ্রী লাভ হর। এই চুতুর্থীতে গৌরী পূলা
করিরা পঞ্চমীতে সরবতীপূলা করিতে হর।

"চতুথী বরদা নাম ততাং গৌরী স্পৃত্তিতা।
সোভাগ্যমতৃশং কুর্যাৎ পঞ্চয়াং শ্রীরণি প্রিরং ॥" (তিবিতর)
ব্রদ্যাচার্য্য, করেকজন বছ প্রাচীন সংস্কৃত গ্রহকারের নাম। বথা—
> অনক্রস্থিঅবিলান ও অবালভাগ নামে ভাগরচ্ছিত।। "

- ২ অধিকারসংগ্রহ-ভার্যকার।
- ৩ অভয়প্রদান ও অভয়প্রদানসার-প্রণেকা।
- ৪ উৎপ্রেক্ষামঞ্জরী নামে অলম্বার-এম্বরচয়িতা।
- ৫ কাস্তালীরথগুনমগুনকার।
- ৬ পরত্রমির্ণরকার।
- ৭ কারিকাদর্পণপ্রণেজা।
- ৮ প্রমের্যালা নামে বৈদান্তিক গ্রন্থরচয়িতা।
- २ जगरकारमुकारनीकात ।
- > মঙ্গলমযুরমালিকা নামে অলকার-গ্রন্থরচয়িতা।
- ১১ যতিরাধ্ববিদ্য বা বেদান্তবিশাসনাটককার।
- >২ বিরোধপরিহারকার।
- ১৩ ব্যাক্তরণলবুর্ত্তিপ্রণেতা।
- ১৪ খেতাখতরোপনিবস্তায়কার।
- > শাৰিত্ৰী-পরিণয় নামে কাৰ্যয়চ্ছিতা।

বরদাতু (পুং) সদাতীতি লা তুন্, বরছা লাতুঃ। বৃক্ষবিশেষ,
শাকর্ক, সেগুণগাছ, হিন্দী ভূঁইনহ, পর্যার ভূমিনহ, বারদাতু,
বরহুদ। গুণ-শিশির ও রক্তণিতপ্রধাদন। (ভারপ্র)

বরদাতৃ (অ) লা-তৃণ্, বরত লাতা। **শভীই ফলএ**দাতা, বিনিবর দেন। ত্রিরাং ভীষ্। বরদাতীগ

বরদাধীশ যজুন, এক্ষন প্রসিদ সার্ভ ক্ষেটাধীশের পূঞ্জ। ইনি প্ররোগয়ন্তি ও প্রারশ্চিতপ্রশীশিকা রচনা করেন।

वद्रमान (ही) वद्रष्ठ मानः। अध्निविक विवद-श्रमान। ব্রদানম্য (অ) বরদান অরপে মরটু। বরদান অরপ। वद्रमानिक (वि) वत्रमानमस्त्रीतः। বরদাভূমি, জনপদভেদ। (ভবিষ্যবন্ধণ ভা২৭) বরদাযোগিনী, বাঙ্গালার প্রাচীন রাজধানী। এখানে গৌড়াধিপ রাজ্য করিতেন। (দেশাবলী) বর্তমান নাম বন্ধধোর্গিনী। বরদার (পারদী) > বেহারা।(ত্রি) ২ ধার্রশকারী। বরদারী (পারসী) বেহারার কার্যা। ব্রুদার্ক (পুং) > বৃক্ষবিশেষ + (Tectona Grandis) (ত্রি) শ্রেষ্ঠদারু। অবত্থ বটাদি স্থবৃহৎ বৃক্ষ। বরদারুক (পুং) রক্ষভেদ। ইহার পত্রগুলি বিষময়। वत्रमाश्चम् (बि) वत्रम। বরদাস্ত (পারনী) সহু, সহিঞ্জা। বরদেব একজন রাঠোর রাজবংশপ্রতিষ্ঠাতা। ইনি কামধ্বজ উপাধিধারী ত্রোদশ মহাশাধার একতমের আদিপুরুষ। ইনি ৰীয় জ্যেষ্ঠ ভ্ৰাতাকৰ্ত্ব বারাণদী ও ৮৪টা নগরের আধিপত্য প্রাপ্ত হইলেও তৎসমুদায় পরিত্যাগপূর্বক পাবকপুরে স্বতম্ব রাজধানী স্থাপন করেন। ইহার বংশধরগণ পাবক কামধ্বজ নামে খাতে। বর্দ্রুম (পুং) বৃহদাকার বৃক্ষভেদ । অগুরুভেদ । (Agallochum) বরধর্মা (খং) শ্রেষ্ঠকার্যা। বর্ধশ্মকুৎ (ত্রি) অপরের মঙ্গলজনক কার্যাকারী।

वत्रभाती (जी) यसती जी।

বর্রনিশ্চয় (তি) পতিনির্মাচন।

ব্যুন্ন। (দেশজ) তৃণবিশেষ। সম্ভবতঃ বালাগু। ঘাস, যাহাতে মানুর প্রস্তিত হয়।

বরপদ্ধ (পুং)বর্যাত্র।

বরপাত্র (দেশজ) বর।

বরপ্রিণী (গী) উদ্রোক্ত দেবীভেদ।

ববুপক্ষীয় (ত্রি) বরের সম্পর্কীয় বা বর্ষাত্রসম্বীয়।

বরপগ্রিত, কথাকোতুক নামক সংস্কৃতগ্রন্থরচারতা।

वतुश्र्वाशा (श्र) वज्ञानि भ्रमाञ्च, वज्ञ्रभार्गि आशा वज्ञ। ক্ষীরকঞুকী বৃক্ষ। চলিত ক্ষীরকড়ার। (রত্নমা°)

বরপীত।কী (পুং) হরিতাল।

ব্রপুত্র (পুং) বিনি দেবতার অন্থগ্রহ লাভ করিরাছেন ৷ বেমন কালিদাস সরস্বতীর বরপুত্র।

বরপোত (পুং) শ্রেষ্ঠ শাক। (নৈখন্ট প্রকা°) श्रद्धम (बि) बतः धानाजीकि श-क। बत्रनाजा, विनि बत প্রদান করেন। বিষাং টাপ্=বরপ্রদা—লোপামূল।

वत्रश्रमान (क्री) वत्रक श्रमानः । वत्रमान, वत्र (मञ्जा। বরপ্রভ ্ (তি) > অতি প্রভাবিশিষ্ট। বোধসন্বভেদ। বরপ্রস্থান (क्री) বর্ষাতা। বিবাহনিমিত্ত আগ্রীয় কুটুছ্সহ বরের কন্তালয়ে আগমন।

বরফ (পারদী) ত্বার। জল জমিরা খেতবর্ণ প্রস্তরপণ্ডের ন্তায় হইলে তাহাকে বরফ কহে। [প্রর্গে দেখ।]

বরফল (পুং) বরং ফলমভা: ১ নারিকেল বৃক্ষ। (ক্লী) २ नात्रिक्न कन। ७ (अर्छकन।

वत्रवांटलीक (क्री) कूड्म। खाकतान्।

বর্যাত্রা (স্ত্রী) বরস্থ যাত্রা। বিবাহ করিতে বরের কন্সাগৃহে গমন। পৃথিবীত্ব ক সভ্য কি অসভ্য সকল সম্প্রদায়ের সকল জ্বাতির ভিতরই ব্র্যাত্রা প্রথা প্রচ্লিত আছে। তবে বিবাহ-পদ্ধতি সকল জাতির সমান নহে। আধুনিক শিকা ও সভাতা বিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে প্রাচীন উৎসব ও আমোদের রীতি নীতি এবং আদৰ কায়দা গুলি এক একটু করিয়া উলাট পালট ছইতেছে। এট পরিবর্ত্তন শুধু যে উচ্চ সম্প্রদায়ের ভিতর ঘটিতেছে তাহা নয়; উচ্চ সম্প্রদায়ের যথাসস্তব-च्यानर्भ महेग्रा धीरत धीरत निम्न मच्छानारशत माक-मञ्जा. চাল-চলন, রীতি-পদ্ধতি প্রভৃতি গঠিত হইতেছে। এরুণ পরিবর্ত্তনের প্রথা কালের হিল্লোলে ভাসিয়া সকল জাতিকেই জ্ঞাত বা অজ্ঞাত ভাবে বরিয়া শইতে হইতেছে। তবে কণা এই, বাহিরের চাল-চলনাদির পরিবর্ত্তন-পরিমার্জন কিছু কিছু হটলেও কোন জাতিই এ সকল ব্যাপারে আপন আপন ধর্মোচ্ছল কর্মক্রম এখনও ত্যাগ করেন নাই।

বাঙ্গলার সর্বাবর্ণের হিন্দু-বিশেষতঃ উচ্চ বর্ণ ধনী হিন্দু-গণের মধ্যে এই বরষাত্রা স্থানভেদে কচিৎ কোণাও কিঞ্চিৎ পরিবর্ডিত আকার দেখা যায়। তবে এই ব্যাপারের মার্কলিক ধর্মকর্ম গুলি প্রায় সর্ব্বত্রই সমান।

যাত্রা করিবার পূর্কে অবভাত্মনারে বরের সাজ-সজ্জা হয়। কোন কোন বর হয় ভ কিরীট-কুগুল-কঞ্কাদি-মণ্ডিভ হইয়া যাত্ৰা করেন এবং কাহাকেও বা ওদ্ধ বসনে ওদ্ধ উত্তরীয়ে আর্ড হইরা যাত্রা করিতে হয়। তবে ধনীর ত কথাই নাই, বর দরিদ্র হইলেও বরষাত্রা ব্যাপারটীতে সর্ব্বত্রই সমৃদ্ধিসম্পদের কিছু না কিছু পরিচয় থাকিবেই। **অ**তি দরিজ নিরক্ষর ব্যক্তিও ভাবী খণ্ডরভবনে প্রথমগ্মনে সম্ভব্মত আ আ সম্পার ও সমৃত্ত-ভাবেরই পরিচয় দের।

বর উপবাসী থাকিয়া ধথাকালে বাত্রা করে। বাত্রা করিবার পূর্ব্বের লশাটকশক চন্দল-চর্চিত হয়। বাড়ীর রম্পীগণ ব্যের ললাটে খেড চন্দন লেপিয়া দেন এবং ব্যের বিছবিনাশের জন্ত হাহার চন্দনান্ধিত ললার্ট মধ্যে 'হুর্গা বা হরি' প্রভৃতি ভিগ-বৎ নাম নিথিয়া রাপেন। বাতাকালে একটা দধি-মধু-রাখিত সফলপলৰ পূৰ্ণকুম্ভ বরের সমুখে রাখা হয়। বর ভাহার দিকে তাকাইরা 'ফুর্গা গণেশ মাধব' প্রভৃতি ভগবৎ নাম স্মরণ করিছে করিতে বাজা করে। এই সমর গুরু পুরোহিত কিংবা অঞ্চ কোন শান্তৰ ব্ৰাহ্মণ '(ধমুৰ্ৎসপ্ৰযুক্তা' প্ৰভৃতি যাত্ৰামঞ্চণ মন্ত্ৰ পাঠ করেন, বর যাত্রা করিরা অগ্রে দেব, ত্রাহ্মণ ও পিতামাতা প্রাতৃতি অক্টান্ত নম্প্রবর্গকে প্রধাম বা নমন্বার করে। তথন নমন্বত वाकिशन वदरक व्यानीकीम कदिए शास्त्रन। धरे ममत्र व्याचीत কুটুৰ রম্বীগণ হলুধ্বনি ও শব্ধবনি করেন। অনেক স্থানে দেখা বায়, সমণীগণ পাঁচ সাভ জনে মিলিয়া এই সময় মাললিক সঙ্গীত গাইতে থাকেন। পূর্ণকুন্ডের পার্ছে একথানি বরণ-**छाना थारक। এই বরণ ডালার चरिएक, निन्द्र, शाक्र, पूर्वा,** প্রদীপ প্রভৃতি বছ মাঙ্গলিক দ্রবা সক্ষিত রাখিতে হয়। বর ধাতা করিয়া যাইবার সময় কোন রমণী হয়ে দিয়া তাহার স্থাত ধুয়াইয়া দেন।

দেশতেদে প্রথামত কলার মাঝ, মাছ-কাটারী, ছুরী, কাটারী জাঁতি দর্পনাদি বামহত্তে লইরা বর বর হইতে বাহির হইরা আইসেন। এইবার বরের দকে তাহার জ্ঞাতি কুটুম্ব আম্মীর অন্ত-রক্ত প্রভৃতিও চলিতে থাকেন। অবস্থাতেদে ও চলাচলের স্থবিধাবিশেবে বর বান, নৌকা, পান্ধী, বা অন্বে গমন করেন। অবস্থাপার বড় ঘরের বর, পথের স্থগম ও স্থবোগ হইলে প্রারই হন্তী, চতুর্দোল বা মূল্যবান্ অধ্যানে যাত্রা করিরা থাকেন।

त्राक्षा क्रमीमारतत ७ कथारे मारे । विनि धनी व्यथा महत्रवामी, ষ্ঠাহাদের বরবাত্রাব্যাপার বান্তবিক্ই দেখিবার যোগ্য। বাহার ধন আছে, তিনি অক্ত বাবদে যত ব্যয় কক্ষন আর নাই কক্ষন, বর-যাত্রাব্যাপারে ঘরের গৃহিণী বা অক্ত পরিজনের থাভিরে বাধ্য হইরা জাহাকে প্রায়ই মৃক্তহন্ত হইতে দেখা বার। খেত, পীত, নীল, লোহিত বা মিল্লবর্ণের চল্লাভণ-রাঞ্চিত রৌণা বা পিত্তৰ দশুমণ্ডিত বহু বাহক-বাহিত ঝালর-ঝলমণীকৃত সুন্দর চকুর্দোলের লোহিত মধ্মল-মণ্ডিত বেদিকার চ্ছিরা কিরীট-কুওল ককুক পরিয়া কোন রাজপুত্র বা নবাবপুত্রবৎ বর চলিতে থাকেল। ছুই পাৰ্ছে ছুইটা স্ত্ৰী বেশধারী বালক চাৰ্য় লইছা ঠাহাকে ৰাতাস করে, অস্তান্ত ব্যবাত্তিকগণ অবস্থানূসারে পরিকার পরিক্ষম বেশ ভূষা করিয়া বরের সংক সংক পদত্রকে চলিতে থাকেন। সকলেই বেশ বিছিল বাঁথিয়া চলেন, নানা तक (वतरक्य प्राणनार स्त । नाना प्रस्कत रानी विप्राणी वाकना ৰাৰে, কোণাও বা হয়েক হকৰ বাকী পুড়ে। আনাসোটা गरेबा क्लाबाट वा छान फ़रवाबान बंतिया विविध लागड़ी-वीथा বহু স্থান্তিত অস্চর সহচর কাতারে কাতারে বাকনার তালে তালে পা কেলিরা চলে; কাগজের হাতী, কাগজের অখ, কাগজের নৌকা ও ভরুপরি বাইনাচ, থেমটা নাচ প্রভৃতি ক্ষ কি রং-বেরং সং চলিতে থাকে। অগণিত আলোক-সজ্জার বর্ণকের চজু কলসিরা বার। এরূপ নিছিল দেখিবার জন্ম রান্তার তুই থারে বলে বলে লোক জনিয়া বার।

বর যথন স্বল্পবলে ক্যাক্রার বাড়ী গিরা পৌছেন, তথন ক্যাক্র্পক বর ও ব্রবাত্রিক্রিগকে সসন্মানে মিট আহ্বানে গৃহে লইয়া বান।

বাদালার আদ্ধণ, কারত, বৈশ্ব ও পুলাদি মধ্যে অবস্থায়নারে চলাচলের স্থান স্থানাগে বর্ষাত্রা খ্যাপার এইরপেই। তবে বাহাদের অর্থস্থনার তেমন নাই, তাঁহারা সমারোত্রে ভাগ অনেকটা ক্মাইরা দেন।

ভারতের, ওধু ভারতের বলি কেক্-শৃথিবীর সভ্য অসভা সমূদ্ধ অসমূদ্ধ যাবতীর জাতিরই বরবাত্রা ব্যাশার এইরপ অর-বিত্তর আন্মান উৎসব ও সমারোহ আড়খরেই পরিপূর্ণ। তবে জাতিবিশেবের বা সম্প্রদার্যবিশেবের রীতি পদ্ধতিতে অনেক পার্বকা আছে। [বিবাহ দেব।]

বর্ষাত্রিন্ (জি) বর্ষাত্রা-অন্তর্থে ইনি । বাহারা বরের অন্ত্র-গমন করে। বরের সহিত বাহারা বার, তাহাদিগকে বর্ষাত্রী করে। বর্মাত্র (পুং) বর-ণিচ্-ভূচ্। ১ তর্তা, স্বামী, প্রণন্ধী।

২ বরণকার্মিতা।

বররিতব্য (ত্রি) বর-ণিচ্-তবা। বরণের যোগা। (হেম)
বর্যু (পুং)ভারত বর্ণিত ব্যক্তিভেন। (ভারত উন্যোগপর্ক)
বর্যুবতি (ত্রী) > ছন্দোভেন, এই ছন্দের প্রতিচরণে ১৬টা
করিরা অক্তর হইবে। ভাহার মধ্যে ১,৪,৬,৮,৯, ও ১৬ অক্তর
ভব্ন, তবিয় বর্ণ শবু। ইহার শক্তণ—

"ভো নহনা নগোঁ চ বজাং বরবুৰভিরিহাণ" (ছলোম[®])

২ স্নপ্রোবনসম্পন্না জী।

বরুযোগ্য (জি) ১ বর, আনীর্কাদ বা উপহার পাইবার বোগ্য। ২ বরণীয়।

বর্রেয়েনিক (গ্রং) কেসর। (নিগ্নু প্রকাণ)
বর্রুচি (গ্রং) বরা কচিবিত। একজন প্রাচীন বৈয়া করণ ও প্রেসিদ্ধ
কবি, জাহার জণর নাম পুনর্বাস্থ। (বিকাণ) কটাধ্যারীবৃতি,
একাক্ষরকোর, একাক্ষরনিধন্টু, একাক্ষরনামমালা, একাক্ষরাভিধান, ঐপ্রনিধন্টু, কার্ডচক্রকারিকা, কলগণকারিকা, পত্রকৌমুনী, প্রয়োগবিবেক, প্ররোগবিধেকসংগ্রহ, প্রাক্ষত-প্রকাল,
কুলত্র (গুলাহ্র), বোগণতক, রাক্ষরকার্কার, রাক্ষনিতি, নিলবিশেববিধি, নিলবৃত্তি, নিলাক্রণাসন, ব্যবস্থিত্বাক্ষরা, বাদ-

তর্মিনী, বার্ত্তিক, শব্দশক্ষণ, প্রতবোধ ও সমাসপটন অভৃতি এম্ব তাহার রচিত বলিয়া একাশ; কিন্তু বন্ধতঃই তিনি এই গকণ গ্রন্থ রচনা করিরাছিলেন কিনা তদ্বিয়ে নানা সন্দেহ মাছে। অনেকে স্ব স্থ গ্রন্থ প্রচারের জ্বন্স বরক্ষচির নামে প্রকাশ করিয়া থাকিবেন। মহাকবি কালিদানের নামেও অন্তের রচিত অনেকগ্রন্থ প্রচারিত দেখা যায়। একমাত্র পাণ্ডিত্যপূর্ণ প্রাক্বত-প্র্কাশ এবং বাকাপদীয় আদি বরঙ্গচির রচনা বলিয়া অনেকের বিশাস। ভোজপ্রবন্ধে তাঁহার রচিত অনেকগুলি প্লোক উদ্ভ আছে।

সোমদেৰ ভট্টের কথাসরিৎসাগরে শিখিত আছে, বরঙ্গচির অপর নাম কাত্যারন। তিনি বৈয়াকরণ পাণিনির সহাধ্যায়ী ছিলেন। এই কারণ ঋণবা জাঁহার নামে প্রচারিত বা ডৎ-কর্ত্তক প্রকাশিত অষ্টাধাায়ী পাণিনিস্থত্তের বৃত্তি ও বার্ত্তিকাদি নানা ব্যাকরণ গ্রন্থ দেখিয়া পণ্ডিতসমান্ত ভাঁহাকে ব্রাহ্মণ-বংশোভৰ সোমদত্ত্বের পুত্র কাত্যারন বলিয়াই স্বীকার করিয়া থাকেন। কিন্তু পাণিনির শুত্র ও বার্ত্তিক জালোচনা করিলে প্রকার ও বার্ত্তিককারকে কগনই এক সময়ের লোক বলিয়া সীকার করা যায় না, বরং সুত্রের বছ শতবর্ষ পরে বার্ত্তিক রচিত रहेबारक, ভाहारे श्राष्ट्रियत हरेरव । [भागिनि सम्य ।]

নার্ত্তিক ও প্রাকৃত প্রকাশকারকেও আমরা অভিন্ন ব্যক্তি বলিয়া মনে করি না। প্রাকৃত-প্রকাশে বরক্তির অসাধারণ ক্রতিছ দেখিয়া মনে হয় যে প্রাক্ত ও পালী দাযায় তাঁহার বিশেষ বাং-পত্তি ছিল। উক্ত গ্রন্থগানি মুদ্রাস্কণকালে তাহার ভূমিকায় অধ্যাপক ই, বি, কাউয়েল লিথিয়াছেন, ব্রুফ্চি খুষ্টায় ১ম লতান্দের লোক ছিলেন। গারেট সাহেবের মতে তিনি খুষ্ট পূর্বা চতুর্থ শতাব্দে এবং চন্দ্রগুরেরও পুর্বে বিছমান ছিলেন। অভিধানকার হেমচক্রবিরচিত শ্ববিরাবলীচরিতে লিখিত আছে, নন্দবংশার বাজা ১ম নক্ষের রাজতকালে মগধের অন্তর্গত পাটলীপুত্র নগরে वतक्ति समाश्रहण करत्रम । ८५७ पृष्टे शृक्तीरक मन्मवःरभत আবিভাবকাল। এ দেশের আনেকেরই বিশাস যে বরুক্চি মহারাজ বিক্রমাদিতোর নবরত্বের মধ্যে একজন। এ সম্বন্ধ তাহারা জ্যোতির্বিদাভরণের একটা প্লোক উদ্ভ করিয়া धारकम् .---

> "४४७ तिः कश्यकामज्ञानिः र- मक्रु-বেতালভট্ট-ঘটকর্ণর-কালিদানাঃ। খ্যাতো ব্রাহমিহিরো নূপতে: সভাবাং त्रप्रांनि देव वत्रक्षत्रिन्दं विद्धमञ्ज्ञ ॥" (मवत्रप्र)

কিছু উক্ত নবরত্র বে এক সমবের লোক নহেন, লোকটা ক্বিক্রনামাত্র ভাষা প্রমাণিত হইরাছে। [বরাহমিছির দেখ ।]

নলবংশের উপাধ্যানে ব্রহ্মচির অপরাপর বিবরণ উদ্ভূত रुहेब्राटकः [नन्म (मर्थः] २ निव। বরুরুচিতীর্থ, প্রাচীন তীর্থভেদ। (স্থান্দে নাগর্প ১২৫ আ:) বর্রপ (ত্রি) ফুন্দর রূপবিশিষ্ট। (পুং) বুদ্ধান্ডেদ। বরল (পং নী) বৃণাতীতি বৃ-অলচ্। বরট। চলিত বোলতা। 'वियम् की ज़करतारमा वतमञ्जनके भाः।' (भन्न भा -) বর্লক্র (পুং) বর: উৎকর্ষো লব্ধ: পুলেষু যেন। ১ চল্পকর্ক। (ত্রিকা॰) (ত্রি) বরেণ লবঃ। ২ বরপ্রাপ্ত, যিনি বর দারা লাভ করিয়াছেন। ও রক্তকাঞ্চন। ২ নাগ্রেশর চম্পক। वतला (जी) वत्रम-छोल्। > इःमी। (यमिनी) २ वत्रछ। বরলী (ন্ত্রী) বরল-ভীষ্। বরটা। (জটাধর) চলিত বোলতা। বরবৎ সলা (ত্রী) বরে জামাতরি বৎসলা। শুগুরভাগা।, শাভড়ী। (শদ্মালা) বরবরাহ (পুং) অসভা। বর্বর বা কুঞ্চিত কেশযুক্ত বভা মহ্যা। ভাষাবিদ্গণ অহুমান করেন, এই শব্দ হইতে গ্রাক Barbaros, রোমক Barbarus ও ইংরাজী Barbarian শক্তের উৎপত্তি হইয়াছে . বরবর্ণ (পুং) > স্থবর্ণ। ২ শ্রেষ্টবর্ণ। वत्विभिन (वि) समात वर्गमानी। বুরবর্ণিনী (জী) বর: শ্রেষ্ঠো বর্ণ: প্রশন্ত: পীতাদির্বাস্তাইতি वत्रवर्ग-हेनि-डीन्। > अञ्चारहा जी, नधात्र-वतादताहा, मछ-কামিনী, উত্তমা, মন্তকাশিনী। (ভারত) "রক্ষভূতা চ কন্তেরং বাকে মী বরবর্ণিনী। ভবিশ্বং জানতা পূর্বং ময়া গোভিবিবদ্ধিতা ॥"(বিষ্ণুপু ১ ১ ১ ৫ 1 ৭) ২ লাকা। ত হরিকা। ৪ রোচনা। ৫ ফলিনী, প্রিয়ঞ্ছ। ৬ সাধ্বী স্ত্রী। ৭ গৌরী, ভগবতী। "ভদ্রকালি নমস্বভাং মহাকালি নমোহস্ত তে। চণ্ডি চণ্ডে নমস্কভাং তারিণি বরবণিনি ॥" (ভারত ৬।২২।২১) ৮ লকী। ৯ সরস্বতী। (শন্বজ্ঞাত) বরবারণ (পুং) > জাকল জীববিলেষ। ২ সুন্দর হস্তী। বরবাসি (খং) জাতিবিশেষ। वत्रविह्लोक (क्री) (अर्थ कृष्ट्रम, कृष्ट्रम । (अमत्रिका) বরব্রত (ত্রি) বর বা আশার্কাদীরূপে প্রাপ্ত। বরবন্ধ (খং) বর: শ্রেষ্ঠো বৃদ্ধঃ। পুরাতন। শিব। (বিকা॰) বরশঠি, অর্থগ্রামের অন্তর্গত একটা প্রাসিদ্ধ স্থান।(ভবিষাত্র°র'৮।৪৩)

বরশিথ (পুং) অপ্নরভেদ। ইক্স ইহাকে দপরিবারে নিহত

करतन। "रानावधीर्वत्रनिषण लावः" (अक् ७।२१।८)

'বরশিপক্ত বর্ষশিখো নাম কশ্চিদস্লর:' (সায়ণ)

বরশীত (ক্নী) জচ্, দার্শচিনি। (বৈছক্নি॰)
বর্রেশ্রাণী (জী) কুখ্ম্রা। লঘুমোরবেল। (বৈছক্নি॰)
বর্স্ (ক্নী) > তেজঃ। "পর্যুক্ষবরাংসি" (ঋক্ ৬।৬২।১)
বর্সদ্ (জী) আদিত্য, স্থ্য। "নুষদ্বরসদ্তসদ্ব্যোমসদক্ষা"

(ঋক্ ৪।৪ । ৫)

'বরসদ্বরে বরণীয়ে মগুলে সীদজীতি বরসদাদিতাঃ' (সারণ)
বরসান (গুং) র (ছন্দভাশানচ্ত্র্ভ্যাম্। উণ্ ২।৮৬) ইতি
শানচ্। দারিক। (উজ্জল)

বরস্থান রী (স্ত্রী) > স্থানী স্ত্রী। ২ ছন্দোভেদ। ইহার প্রতি চরণে ১৪টা অব্দর। ১,৫,৯,১৩,১৪ বর্ণ গুরু ও তারির লঘু। বরস্থারত (বি) স্থাতক্রিয়াভিজ্ঞ। উচ্ছ্রাল।

বরুদেন (পুং) গিরিসফটভেদ। বরুদ্রী (জী) হুলরী নারী।

বরস্থা (রী) বরণীরা, বরণের যোগ্যা। "বরস্থা বাম্যঞ্জিগৃহ বে"

্ৰাক্ (1901 ২) 'বরস্থা বরণীয়া' (সামণ)
বরস্ক্ (স্ত্রী) কভাকর্ত্ব বরের গলার যে মাল্য দেওয়া হয়।
বরহক (ক্রী) জনপদভেদ।

বরহি, পার্কভা জাভিবিশেষ।

বরা (রী) বৃ-আচ্-টাপ্। ১ ফলত্রিক। (মেদিনী) ২ রেণুকানামক গৰুদ্রবা। (শব্দচ) ৩ গুড়ুচী। ৪ মেদা। ৫ ব্রাক্ষী।
৬ বিড়ঙ্গ। ৭ পাঠা। ৮ হরিদ্রা। (রাজনি) ৯ শ্রেষ্ঠা। ১০ শণপুল্ণী। ১১ বাভিগন, বেগুণ। ১২ ওড়ুপুল্প, জবাফুল। ১৩ বন্ধ্যাকর্পেটকী। ১৪ মতা। ১৫ বেতাপরাজিতা। ১৬ দোমরাজি।
(বৈত্রকনি ০) ১৭ শত্মুলী, ব্রাক্ষীশক্। (রাজনি ০)

বরাক (পুং) ব্ণীতে তচ্ছীল ইতি (জনজিককুটুলুন্ট্ডঃ যাকন্। পা াহা১৫৫) ইতি যাক্ন্। ১ শিব। (মেদিনী) ২ যুদ্ধ। (হেম) (ত্রি) ও শোচনীয়। ৪ অবর।

শাণে শ্রীপুরুষোত্তমে ত্রিজগতামেকাধিপে চেতসা
সেব্যে স্বস্তু পদস্থ দাতরি পরে নারায়ণে তিষ্ঠতি।

যং কঞ্চিৎপুরুষাধমং কতিপয়গ্রামেশমরার্থদং
সেবারৈ মৃগরামহে নরমহো মৃঢ়া বরাকা বরম্॥"(মৃকুন্দমালা ১৭)

৫ পপটক, কেত্পাপড়া। (বৈশ্বক্লি৽)

বরাকপুর, একটা প্রাচীন গ্রাম।

বরাগাম, বোষাই প্রেসিডেন্সীর মহীকাছা বিভাগের অন্তর্গত একটা ক্ষুদ্র সামস্করাজ্য ও তাহার প্রধান নগর। এখানে ঠাকুর উপাধিধারী সামস্করাজ রামসিংহ রেহবাড়বংশীর রাজপুত। জ্যেষ্ঠ পুত্রই সম্পত্তির অধিকারী, কিন্তু দত্তকগ্রহণের ক্ষমতা নাই। রাজপ্ত ৯৫০০ টাকা।

বরাক (রী) বরমলানাং। ১ মন্তক। ২ গ্রন্থ। (অমর)

ত শুড়বক্। ৪ বোনি। (একা°) ৫ প্রের্চাবরব। ৬ চোচ।

"ডক্গত্রক বরাকং জান্ড্ললোচং তবোৎকটং।" (ভাব প্র-০)

৭ উপস্থ। ৮ কলুই। (বৈছকনি-) ৯ পাঠা, আকনাদি।

১০ হরিলা। ১১ মেদা। (রাজনি-) (পুং) বরাণি
স্থানি অলানি যতা। ১২ হতী। (ত্রিকা°) ১৩ বিফুর
সহস্রনামের অস্তর্গত নামভেদ।

"স্থৰণবৰ্ণো হেমান্সে ব্যাদশন্দনাগদী।" (বিষ্ণুর সহত্তনাম) ১৪ তিন শত চৰিবশ দিনব্যাপী নক্ষত্ৰবংসরভেদ।

ব্রাক্সক (ङ्री) বর্মজনত কপ্। ১৩জ্বক্। লাকচিনি। (আমর) (ত্রি) ২ শ্রেটাবয়বযুক্ত।

বরাঙ্গদল (জী) প্রিম্পূর্ণতা। (চরক চি॰ ৩ অ॰)
বরাঙ্গনা (ত্রী) বরা শ্রেষ্ঠা অদনা ত্রী। অভিপ্রাশন্তাদযুক্তা
ত্রী, সর্বাদস্থদারী ত্রী।

শিরঃ স পূলাং চরণৌ স্থপ্রিতৌ বরালনাসেবনময়ভোজনম্। অনগ্রশায়িত্বস্পর্কমেথুনং চিরপ্রনতীং শ্রিয়দানরন্তি বটু॥"

(লগীচরিত্র)
বরাঙ্গরাপোপেত (ত্রি) অলানাং রূপাণি অঙ্গরপাণি বরাণি
অঙ্গরপাণি তৈরুপেতঃ। শ্রেষ্ঠরূপযুক্ত, স্থানর। পর্যায় সিংহসংহনন।
বরাঞ্জিন্ (ত্রি) বরাঙ্গমন্ত্রতেতি বরাঙ্গ-ইনি। ১ শ্রেষ্ঠাঙ্গমূক,
বরাঞ্চিথিত। (পুং) ২ অন্নবেতস। ৩ গল। স্থিয়াং ভীষ্।
বরাঞ্চিণী।

বর্রাঞ্জী (স্ত্রী) বরমক্ষমস্তরবয়বে। যজাঃ। ১ হরিলো। ২ নাগদন্তী, বড়দন্তী। ত মঞ্জিলা। (রাজনি•)

বরাজীবিন্ (পু:) জ্যোতির্বিদ্। গণক।

মতে এইরূপ কড়িই বরাটক সংজ্ঞায় অভিহিত।

বরাজ্য (রী) উৎক্ট ছত। মাধন আলান ছত।
বরাটি (পুং) বরমন্দমটতীতি অট কর্মাণ আন্। > কপদ্দক,
কড়ি। (রাজনিং) শ্রেঠ, মধ্য এবং কনিষ্ঠভেদে তিন প্রকার।
পাতবর্গ গেটে ছয় মাধা ওজনের কড়ি শ্রেষ্ঠ, চারি মামা ওজনের
মধ্য এবং তিন মাধা ওজনের কড়ি কনিষ্ঠ মধ্যে গণ্য। বৈহুক

"শীতাভা গ্রন্থিলা পৃষ্টে নীর্ষ্ট্রন্থা বরাটিকা।
সার্দ্ধনিকভবা শ্রেটা নিকভাবা চ মধ্যমা।
পাদোননিকভাবা চ কনিষ্ঠা পরিকীঠিতা ॥" (রুসেক্সমা॰)
বরাট বা কড়ির শোধনপ্রণালী যথা—কড়ি এক প্রাহর
কাল কাঁজিতে স্বেদ দিলে কবে তাহা শুক্ষ হয়। প্রকারান্তর—
মাটীতে গঠ পুঁড়িরা পাতা পাতিরা তুব পুরিয়া মধ্যে বাড়ির মূঘা
রাখিরা পালিকানামক যত্ত্বে গুঁটের আগগুনে দল্প করিলে কড়িভন্ম
বা বিশুদ্ধ হয়। এই বিশোধিত কড়ি স্বার্ধেরাগ্রন। অনুস্ঠত

আমলকী কবীর কিংবা অন্ত কোন অর্বনে কড়ি ভিকাইরা উহা নীতবর্ণ হইলে পরে উঠাইরা বুইরা এইণ করিবে। তাহা হইলেই কড়ি পোবন হইরা বাইবে। ও গোড়িত কড়ির অন--পরিণাম-শৃন, কর ও প্রহনীনালক। কটু, ভিক্ত, অর্মিনীপক, তক্রবর্জক এবং বাত ও কড়-ইর।

ং রক্ষ্। (ত্রিকা॰) ও পশ্মবীকা। (মেদিনী)
ব্রাটক (প্রেটী) বরাট আর্থে কন্। > কপদক, চনিত কড়ি।
দীলাবতীতে বরাটকের সংগ্যাতেরে এইরূপ দার্থনিককি বেখিতে
পাওরা বায়। এক কুড়ি কড়ির নাম কাকিনী, চারি কাকিনীতে
একপণ, বোল পণে এক ত্রম্য এবং বোল ক্রমের নাম নিছ।

শ্বরাটকাশাং নশক্ষরং বং, সা কাকিশী তাশ্চ পণশ্চতপ্র: । তে বোড়শ ক্রম্য ইযাবগম্যো, ক্রম্যেতথা বোড়শভিশ্চ নিদ্ধঃ ॥" (শীলাঘণ্ডী)

প্রারন্ডিরতত্বে উভ্ত হইরাছে, আলী বরাটকে এক পণ, বোড়শ পণে এক প্রাণ এক সপ্ত পুরাণে এক রক্ত হর। "অলীতিভিব্রাটকৈঃ পণ ইতাভিধীরতে।

তৈঃ ৰোড়লৈঃ পুৱাণ ভাত্ৰৰতং সন্তাভিত্ত তৈঃ ।" (প্ৰায়ল্চিতত")

হক্ষিণাৰ বরাটক দিবার ব্যবহা আছে। আফণেতরে দান
ও দক্ষিণাৰীন বল্ল নই হইরা বার, ভাই এক কুড়ি বা এক পণ
কড়ি অথবা একটা কল বা একটা পুলাও অন্তঃ দক্ষিণা দিবে।

"হতমপ্রোত্রিরং লানং হতো বক্সবদন্দিণঃ। তদ্মাৎ পণং কাবিনীং বা কলং পূন্দমধাপি বা। গ্রেদছাৎ দন্দিণাং বজে তদ্মাৎ দ দকলো তবেং।" (গুডিতম্ব) (পুং) > বজ্জু। ৩ পদ্মবীকা। (মেদিনী)

বরাটকরজন (পুং) বরাটক ইব রজো বতা ১ নাগবেশর বৃক্ষ।
বরাটকবিষ (রী) বরাটক নামক অক্সারনিবাস বিষ।
(পুঞ্ত কর ২ জঃ)

"বরাটা কারিকে বিরা বাবাক্ বিববার্যার ।"
বভাজম—
ভূগতে চ সবে ওজে পৃথকীর ভাগতের হাবী:।
ভূবেণ পূর্বের ওজার কিন্দ্রিবার তিবজার
বলাটেঃ পৃথিতার মূবার ভারবে বিনিমেশবের ।
কারীবারির ওজা বরার পানিকা বর্গুভ্যন্ ও
অবের বিরতে ক্রাই ভার চারেরী করীবাবার রসের বা।
অভ্যেন্ত্রের করার বাবর শীক্ষর নার্যারার রসের বা।
অভ্যেন্ত্রের করার বাবর শীক্ষর নার্যারার রসের বা।
বভার্যারাল্যুলয় করার বাবর শীক্ষর নার্যারার রসের বা।
বভার্যারাল্যুলয় করার এইশীকরা।
কট্ ৯। বীগবা ডিকার মুখ্যা বাভককাশহার বা (রসেরানোন ক্রার্থবারণ বাঃ)

ব্রাটিকা (ত্রী) ব্রাট-বার্থে কুন্। ওডটাপ্, লত ইয়ক। ১ কপ্দক। (ভরত)

"বছকৰ্মণিবরাটিকাগণনাটৎকরকর টোৎকর: ।" (নৈবধ ২৮৮) ২ তুজ্বাচিকা।

শ্ৰেষ্ণাগে মৃত্যাতে ৰেন তক্ত গলা ৰয়াটিকা h" (উষ্কট) ত নাগেৰৱবুক।

ব্য়াটকী (a) ব্য়াটক স্বন্ধীয়। (প্রব্যাখ্যার)

বরাটা (দেশখ) রাগিণীভেদ।

বরাড়ী (ত্রী) রাগিণীভেদ। [রাস ও রাগিণী দেখ।] বরাণ (গুং) ু বিরতে ইতি বু-ব্চু, প্রোদরাদিদ এযুক্ত দীর্ঘ।

> हेन्द्र । (जिका॰) २ वक्षणंत्रका (भक्षप्रश्ना॰)

বরাণস (ত্রি) বরণা ও অসিসম্বীদ্ধ (কানী)। (পা ৪।২।৮) বরাণসী (ত্রী) প্রোদরাদিম্প্রাবৃক্ত আকার ক্রম। কান্দ্র,

বারাণসী। 'কাশী বরাণসী বারাণসী শিবপুরী চ সা' (হেম)

[रात्रांगरी या कानी (क्थ ।]

বরাৎ (পারসী) দয়কার, প্ররোজন। (দেশজ) ২ অদৃই।

ত নিজ দের অংশ শ্বরং না দিরা অপরের নিকট হইতে পাওরাইবার অদীকার। বেন নে অমুকের কাছে বরাৎ দিরাছে।

বরাতী (পারসী) দরকারী ও প্ররোজনীর।

বরাভুক্ট (দী) বৌশ্বজ্যে।

বরাদন (দী) ববৈ রাজভিরভতে ইতি আব নাট্। রাজাদন।
বরাদ (দী) বরং আরং। তজিজতথান্ত, বিবলকত লেটার।
লমীধান উত্তৰরপে তাজিরা তাহার দাইল করিতে হয়, পরে
উহা জলে উত্তমরূপে পাক করিরা স্থাসিক হইলে তাহাকে
বরায় কছে।

শনীবাজত ভূটত দালিছবা মুনিস্তবাং।
পজে দৈকে অসিদা বা ব্যায়মিতি চক্ষত।
ভূমতে মদসংখ্যাং সূত্রং ভূমতে জ্যান্ ম" (এব্যঞ্জ)

यद्गांनना (जी) बतर भागनर बजाः। स्थानी जी। यद्गांचित् (पूर) भारत्यका। (जासनि॰)

বরাবর (পারসী) > সোজাছজি। ২ স্কালে। ৩ চিয়কাল। ৪ সমতল। ৫ মন্দ্র।

বরাবর, বেহার প্রদেশের অন্তর্গত একটা গশু বৈদ্যশ্রের। গ্রাহ জেলার কাহানাবার উপবিভাগে অবস্থিত। এই শৈল নিমরো-পরি এক প্রাচীন মন্দির বিভ্নাল। ভাহাতে সিম্বের্থর নামক নিম্নিল আছে। প্রাহার বিলাজপুরের প্রীকৃত্যবিদ্ধেরী অন্তর্গাল প্রধানে এই ক্রেন্ট্র স্থাপন করিলাছিলেন। ইহার বন্দিনে প্রজ্ঞানিস্থ্য আজ্লান মানে একটা বিভ্না ভাহা লুই হয়। এ ভুহা গটার মধ্যে কর্মহাপার, স্থানা, লোলপুর্বরিও বিশ্বানির নানে চারিটার অভব নান পাওরা বার। শুহামধ্যক পালি অকরে লিখিত লিলাগিপি হইতে জানা বার বে উহার দর্ক প্রাচীনটা মুইপূর্ক ৪ব শভাবে এবং দর্কাণেকা আধুনিকটা ২৯৪ ক্টাবে উৎকীর্ণ হইরাছিল। ইহার অদ্রে পাতাল-গলা ও নাগার্জ্বনী নামে কলবারা, ডংসরিকটে গোপী, রাপীর ও বারিশী নামক অপর তিন্টা শুহা। এই তিনটা শুহাই ধুই পূর্ক ওর শভাবে অপোক-পৌর কশর্প কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত হয়। গোপী শুহার সম্রাট্ অব্যাবের দশর্পর কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত হয়। গোপী শুহার সম্রাট্ অব্যাবের দশর্পর কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত হয়। গোপী শুহার সম্রাট্

বন্ধামদ্ (পানগী) দোবারোপ। নালিশ। বন্ধাম (গং) শ্রেকোংয়াংজ, রন্ত লন্ধ্য, করমর্দ। (রন্ধমানা)

বক্লাব্লক (জী) বনং শ্ৰেষ্ঠং ধনিনম্ ৰচ্ছতি গছতি ৰ-ৰূল্। হীরক। বরাব্লফ্লক, বিদ্যাপর্কতিপাৰ্ছিত একটা গশুগ্রাম।

(ভবিষ্যব্ৰহ্মণ ৮।৪৩)

বরারণি (পুং) মাতা।

ইহার পাঠান্তর করার।

"দদর্শ রাবণতত গোর্বেজ্রবরারণিম্" (রামা° ৭।২৩।২২)

"গোর্বেক্রো মহার্বতত সাক্ষাৎ মাতরম্' (তটুীকা)
বরারোহ (পুং) হতিনঃ উচ্চছাৎ আরতপৃষ্ঠঘাক বরঃ
আরোহো যতা। > হত্যারোহ অবরোহ। উৎকৃষ্ট সওয়ার।
২ বিষ্ণু। (বিশ্ব) ও পক্ষিবিশেষ। (বৈশ্বকান-)
বরারোহা (ত্রী) বরঃ আরোহো নিতবো বতাঃ। উদ্ধনা ত্রী,
সুন্দরী ত্রী।

"যদা তু বৈদিকী দীকা দীকা পৌরাণিকী তথা। ন স্থান্ততি বরারোহে তদৈব প্রবদঃ কণিঃ।" (মহানির্বাণত ৪।৪৭)

২ কটি। (হেম) ও সোমেধর হিত নান্ধারণি মূর্কিডেন।
বরান্ধিন্ (ত্ত্তি) আশীর্কানাকাক্ষী। ঈশিত বরগাডেকু।
বরান্ধি [বরান্ধ] (গারনী) নিত্য বা অবধারিত বাবস্থা। কোন
বিষরে কত টাকা বা প্রবান্ধি নাগিবে, তাহার হিরতা।
বরান্ধিক (রী) একভাগ কুছুম, একভাগ চন্দন ও একভাগ কণ
একত্ত করিকে বরান্ধিক হয়।

"চলদং কুছুমং বারিজন্বনেতহরার্ছকন্।" (রাজনি॰)
বরার্ছ (জি) বর্জানের উপর্কা। মহাসূলা। প্রেট, সন্মানার্ছ।
বরাল (প্রেট) > লবল। (বৈছকনি॰) স্বার্থে কন্।
বরালক = বরালদার্থা।
বরালি (প্রে) > চল্লা। ২ বরাজী রাগিনী।
বরালিকে (জী) বরা আলিকা নথী ক্যাদিবলাং। ২ হুর্গা।
বরালি (প্রে) ছুলবর, বোটা কাগড়। প্রায়-—ছুল্লাটক, বরানি,

স্থানাটকা, স্থানটক। (শবর্মা) ভটাধর এইনক দীব-নিক বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন।

বব্লাস্ন (क्री) বরাবৈ হুগারৈ অঞ্জে ব্লিপাতে লীয়তে ইভি বাবং, আস-সূচই। ১ উভূপুলা। (শব্দালা) বরং প্রেই-বাবনং। ২ উত্তম আসন, প্রেই আসন, সিংহাসন। (পুং) বরাং বীরাং নারীং অঞ্জি ভারকীতি অস-সূত্ত। ৩ বিজ্ঞা। বহানপি ক্রান্ অঞ্জি দুরীকরোজি। ৪ বারপাল। (বিশ্ব)

বরাসন, একটা প্রাচীন নগন, হর্জন পর্জন্তের দক্ষিণ-পূর্জকোণে অবহিত, এই নগরের দক্ষিণে ক্ষোভক নামক মহাদৈল ও ক্ষোভক নগর বিশ্বমান। (কালিকাপুঃ ৭০/১৬১)

বরাসি (পুং) বরৈঃ শ্রেটিঃ অভতে কিপ্যতে ইতি অস-টন্।
ভূলশাটক, মোটা কাপড়। বরোহসির্বভা ২ ব্যুস্থর। (ধরণি)
বরাসী (ত্রী) মানবাস, মলিনবত্র। (শক্ষালা)

বরাস্ত্ (পুং) > বিষ্ণু। ২ মানতের। ৩ পর্বাভজের। ৪ মুক্তা। (মেদিনী) ৫ লিক্তমার। ৬ বারাহীককা। (রাজনি৽) ৭ আটাদল বীপের অন্তর্গত কুক্ত শীপবিশেষ।

"গন্ধৰো বন্ধণা সোম্যো বন্ধাহা কৰু এব চ।
কুম্দল্ট কনেকণ্ট নাগো জন্তাৰকতথা ॥
চক্তেজনদন্ধাঃ শুঝ্যবাদকগভতিয়ান্।
ভাষ্ৰাকুন্ট কুমানী চ ভাৰ বীপা দশাইভিঃ ॥" (শুক্ষালা)
৮ কুঞ্পিন্তীয় । (বৈছক্ষম্ম •)

ব্রাচ (অবতার), বিচ্ন তৃতীয় অবতার, ভগবান্ বিচ্নু বরাহ-রূপে অবতীর্ণ হইরা পৃথিবীর উদ্ধার করেন। এই অবভারের বিষয় ভাগবতে এইরূপ লিখিত আছে-প্রালরপরোধিজনে পৃথিবী নিমন্না হইলে আরম্ভূব মন্তু একার নিকট আসিরা স্থান 🛼 প্রার্থনা করেন। তথন ব্রহ্মা নিভান্ত চিন্তাকুল হইয়া ভগবান্ বিষ্ণুর তবে প্রেবৃত্ত হল। এমন সময়ে তগবান্ একায় নাসার্ভ হইতে অভুষ্ঠ প্রমাণ একটা বরাহপোত দির্গত হইল, এই বরাহ-পোড নিৰ্মৰ্ভ হইবামাত্ৰই দেখিতে দেখিতে আকাশ প্ৰমাণ বাড়িয়া উঠিল, তাহার অন্ধ প্রত্যেন পাবালের ভার অতিদৃঢ় ছট্দ। তখন ব্ৰহ্মাদি দেবগণ ইহাকে ভগৰানের অবতার দির ক্রিরা তাব ক্রিতে লাগিলেন। জগবান্ তাঁহাদের তবে পরিতৃষ্ট হটরা পৃথিবীকে উদ্ধার করিবার ক্স প্রলম্পরোধিকলে প্রবেশ-পূর্বাক পৃথিবীর অবেষণ করিছে লাগিলেন। পরে রসাভংগ বাইরা তথার পৃথিবীকে দেখিতে পাইলেন। তথন তিনি প্রালর-कारन भवरतम्ब हरेवा गर्वजीयाशाव ये श्वारक जानमाव कंटरव ধারণ করিলেন। অনন্তর অক্লেলে নিজ বস্ত বারা পৃথিবীকে ধারণ ক্রিয়া কণকাল মধ্যে ভিনি রসাড্য হইতে নির্গত হইলেন। ব্যাহদের পৃথিবীকে উভার করিয়াছেন দেখিয়া ভাঁহাকে বেবগণ



স্তব করিতে লাগিলেন। তংপরে তিনি দৈত্যরান্ধ হিরণাক্ষকে ললমধ্যে বধ করেন। [হিরণ্যাক্ষ দেখ]

(ভাগবত ৩।১৩-২০ অ০)

কালিকাপুরাণে লিখিত আছে বে, গুগবান্ বরাহনেব ধরিত্রীকে উদ্ধার করিয়া পৃথিবীতে যথেছে বিচরণ করিতে লাগিলেন, ধরা ওাঁহার ভার কিছুতেই সহ্থ করিতে না পারিয়া মহাদেবের শরণাপর হন। তথন মহাদেব বরাহরূপী বিষ্ণুকে বিলয়াছিলেন, দেব! আপনি বে ক্লপ্ত বরাহদেহ ধারণ করিয়াছিলেন, তাহা সম্পন্ন হইয়াছে, এখন ধরা আপনার বহনে অসমর্থা হইয়া বিলীগাঁহইতেছেন, অতএব আপনি বরাহশরীর ত্যাগ কর্মন। বিশেষতঃ আপনি ক্লমমর প্রদেশে কামিনী পৃথিবীর কামনা পূর্ণ করিয়াছেন। ক্রীধর্মিণী পৃথিবী আপনার তেজে দারুণ গর্ভধারণ করিয়াছেন। সেই গর্ভ হইতে বাহার উৎপত্তি হইবে, সেই পৃত্র দেবছেবী অম্প্রতাবাপর হইবে। রক্ষম্বলাসক্ষমে তুই আনিইকারক এই ক্ষামুক বরাহদেহ ত্যাগ কর্মন।

বরাহদেব মহাদেবের এই বাকা গুনিরা তাহাকে বণিয়াছিলেন যে, মহাদেব। তোমার বাক্যামুসারে আমি এই বরাহ
দেহ ত্যাগ করিব এবং পুনরার লোকহিতের জস্তু আল্চর্য্য
বরাহদেহ ধারণ করিব। বরাহদেব এই কথা বলিয়া সেইস্থানেই
অন্তর্ধিত হইলেন। বরাহদেব অন্তর্ধিত হইলে মহাদেব স্বস্থানে
প্রাধান করিবেন।

বরাহদেব সেইস্থান ছইতে যাইয়া লোফালোক পর্কতে বরাহক্রাপিণা মনোরমা পৃথিবীর সহিত রমণ করিতে লাগিলেন।
বরাহরপী বিষ্ণু পৃথিবীর সহিত বহকাল ক্রীড়া করিয়াও তৃথিলাভ করিলেন না। তদনস্তর বরাহদেবের বীথ্যে পৃথিবীর গভে
মহাবললালী প্রবৃত্ত, কনক ও লোর নামে তিনটা পুত্র জারিল।
বরাহদেব এই সকল প্রস্তেশ পরিবৃত হইয়া নানারপ ক্রীড়া
করিতে লাগিলেন। সেই ভারে পৃথিবীর মধ্যদেশ নম্ন হইয়া
পড়িল। অনস্তদেব কুর্দ্ধকে আক্রমণ করিয়া পৃথিবী মধ্যদ্বায়ী
বরাহদেবের বহনবাধার ভয়মন্তক ও আভজিত হইলেন।
এইরূপে পুত্ত-পরিবৃত্ত বরাহদেবের ভালে পৃথিবীতে নানাবিধ
উৎপাত হইতে লাগিল, স্থানকর পৃত্ত সকল ভয়, মানসাদি
সরোবর আবিল ও ক্রক্রম ভয় হইল।

অনন্তর দেবগণ লোকহিতের নিমিত্ত দেবেল ও দেবযোনি সম্বের সহিত মন্ত্রণা করিরা তগবান্ বিকুর তাব করিতে লাগিলেন। তগবান্ দেবগণের তবে তুই হটরা বলিলেন, ভোষরা বে তরে তীত হটরা আমার নিকট আগমন করিরাছ, আমা বারা কি প্রকারে দেই তরের শান্তি হটবে, তাহা দীয় করিয়া বল। দেবগণ কহিলেন, বরাহের জ্রীড়া হেডু পৃথিবী
দিন দিন শার্ণা হইডেছেন, লোক সকল সেই উদ্বেগে শান্তিলাভ করিতে পারিতেছে না। শুক আলাবু কলের উপর আঘাত করিলে তাহা বেরপ ভগ্ন হইয়া বায়, বরাহের ক্ষুরের আঘাতে পৃথিবীও সেই প্রকার বিশীণ হইডেছেন। আপনি স্টিহিভির জ্ঞা আপনার এই ভয়য়য় রূপ সংহার করুন।

তথন জনাৰ্দ্দন দেবগণের এই কথা শুনিয়া ব্ৰহ্মা ও মহাদেবকে বলিলেন, জগতের ফ্লংথের কারণস্বরূপ এই ব্রাহদেহ আমি ত্যাগ করিব, কিন্তু স্থাসক্ত এই দেহকে স্বেচ্ছাক্রমে ত্যাগ করিতে সমর্থ হইব না। অতএব ব্রহ্মন্! তুমি মহাদেবকে নিজ তেজে পুষ্ট কর, দেবগণ মহাদেবকেও আপ্যারিত করুন। রজন্মলার সঙ্গমে এবং ত্রাহ্মণাদির বধহেতু পাপপূর্ণ প্রাণকে আমি অচ্চন্দে ত্যাগ করিব। তথন ভগৰান্ বিষ্ণু দেবগণের আদেশে বরাহদেহ হইতে স্বকীয় তেজ আকর্ষণ করিতে লাগিলেন। তেজ चाक्र हे रहे व तक्षारत महिला हरेंग प्राथित महास्मय प्रविश्वा সহিত তেজোহীন ৰরাহদেবের সমীপে উপস্থিত হইলেন। ব্রহ্মাদি দেবগণ মহাদেবের তেজোবিস্তারের নিমিন্ত পশ্চাৎ পশ্চাৎ আগমন করিলেন এবং নিজ নিজ তেজ মহাদেবের দেহে সঞ্চার করার তিনি অত্যস্ত বলবান্ হইরা উঠিলেন। তদনন্তর মহাদেব উর্দ্ধ এবং অধোদেশে অষ্টচরণসমন্বিত ভরানক শরভরূপ ধারণ করিলেন। তথন বরাহ ও শরতে তুমূল যুদ্ধ আরম্ভ হটল। পরে শরভরূপী মহাদেব কর্তৃক বরাহদেব যুদ্ধে নিহত এবং তৎপরে তাহার মহাবলশালী পুত্র পৌত্রগণও শরভের দারুণ স্বাঘাতে বিনষ্ট হন।

এইরূপ কৌশলে বরাহদেব নিহত হইলে তাহার দেহ হইতে
যক্ত সকল প্রান্তভূতি হইল। লরভকর্ত্ত বরাহদেহ বিদারিত
হইলে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও প্রমণগণের সহিত মহাদেব জল হইতে সেই
দেহকে গ্রহণ করিয়া আকালে গমন করিলেন এবং বিষ্ণু স্থললনচক্র দারা সেই দেহ থও থও করিয়া কাটিয়া কেলিলেন। এই
বরাহদেবের ক্রদ্ধয় ও নাসিকাদেশের সন্ধিভাগ জ্যোতিটোম
নামক বজরণে পরিণত হইল। কপোলদেশের উচ্চহান হইতে
কর্ণমূলের মধ্যহিত সন্ধিভাগ বহ্নিহোম্বজ, চক্রু ও ক্রদ্ধের
সন্ধিভাগ পোনর্ভবন্তোম বজ্ঞ, জিহ্বাস্থলীয় সন্ধিভাগ বৃদ্ধতোম
এবং বৃহৎজ্যেম, জিহ্বাদেশের ক্রধোভাগ হইতে অভিরাত্র এবং
বৈরাজ বজ্ঞ হইল। ক্রম্বান্ধ্য, মহামের এবং নরমের প্রভৃতি
প্রাণিহিংসাকর বে সকল বজ্ঞ আছে, হিংসাপ্রবর্ত্তক সেই সকল
বজ্ঞ চরণসন্ধি হইতে; রাজস্ব, বাজপের এবং গাবিত্তী প্রভৃতি
বজ্ঞ হন্দরসন্ধি হইতে; প্রতিষ্ঠা, উৎসর্গ, দান, প্রদ্ধা এবং গাবিত্তী প্রভৃতি
বজ্ঞ হন্দরসন্ধি হইতে; প্রতিষ্ঠা, উৎসর্গ, দান, প্রদ্ধা এবং গাবিত্তী প্রভৃতি
বজ্ঞ হন্দরস্থি হইতে; উপলয়নাদি সংকারক বজ্ঞ এবং প্রার্থিত ব্রক্ত

বিধারক যজ্ঞ সকল মেচুসদ্ধি হইতে; রাক্ষসযজ্ঞ, সর্পযজ্ঞ প্রাকৃতি সকল প্রকার অভিচার বজ্ঞ গোমেধ এবং বৃক্ষজাপ প্রাকৃতি যজ্ঞ ক্র হইতে; মারেটি, পরমেটি, গীলাভি, ভোগজ্ঞ এবং অগ্নিরোম যজ্ঞ লাল লসন্ধি হইতে; তীর্ধপ্ররোগ, মান, সন্ধর্ণ, আর্ক এবং আথর্কাণ নামক যজ্ঞ নাড়ীসদ্ধি হইতে; প্রচোৎকর্ব, ক্ষেত্রযজ্ঞ, পঞ্চমার্গ, লিলসংখান এবং হেরম্বর্জ আর্দ্রান্দেশ হইতে উৎপর হইল। এইরূপে বরাহের দেহ হইতে অষ্টাধিক সহস্র যজ্ঞ উৎপর চ্ইরাছিল। অভাপিও এই সকল যজ্ঞ প্রকা সকলের উৎপত্রি সাধন করিতেতে।

বরাহের শ্রোত্র হইতে ক্রক্, নাসিকা হইতে ক্রব, গ্রীবা হইতে প্রাক্তন্য (হোমগৃহের পূর্বভাগত্ব গৃহ), কর্ণরজ্ঞ হইতে ইপাপুর্ত, দক্ষতি হইতে অধ্বর্ম ও হোতা, মন্তিক হইতে পুরোভাশ,মধাদেশ হইতে অধ্বর্ম ও হোতা, মন্তিক হইতে পুরোভাশ,মধাদেশ হইতে বজ্ঞবেদী, এবং মেচু হইতে বজ্ঞবুত্ত, পৃঠদেশ হইতে বজ্ঞগৃহ এবং হুৎপদ্ম হইতে বজ্ঞের উৎপত্তি হইল। বরাহের আত্মা বজ্ঞপুর্ব হইলেন, তাহার কন্দা হইতে মুঞ্জার উৎপত্তি হইল। এইরূপে বরাহের দেহ হইতে ভাও হবি: প্রভৃতি বৃক্তীয় সকল প্রকার ব্রবাই উৎপন্ন হইল। বজ্ঞবিপে সর্বজ্ঞার জ্বিত্তি বৃক্তীয় সকল

ত্রন্ধা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর এইরূপে যজ্ঞের কৃষ্টি করিরা বরাহদেবের স্থ্রুত্ত, কনক ও ঘোর নামক মৃত প্রাদিগের নিকট
গমন করিরা স্থ্রতাদির দেহত্তমকে ম্থবার্ সঞ্চারিত করিলে
সেই দেহ হইতে দক্ষিণাগ্রির উৎপত্তি হইল। কেশব কনকের
শরীর ম্থবায় ঘারা পূর্ণ করিলে সেই দেহ হইতে গার্হপতা অগ্নি,
ও মহাদেব ঘোরের দেহ ম্থপবনে পরিপূর্ণ করিলে তাহা হইতে
মাহবনীয় অগ্রির উৎপত্তি হইল। এইরূপে বরাহদেব হইতে
যক্ত ও যক্তীয় দ্রব্য সকল এবং ব্রাহপুত্র হইতে গজীয়
অগ্রির উৎপত্তি হইল। (কালিকাপুণ ১৯—২২ অংগ)

বরাহম্তি প্রতিষ্ঠা করিতে হইলে তাহার লক্ষণাদির বিষয় ছরিভক্তিবিলানে এইরূপ লিখিত আছে—বরাহম্তির মুখের বিতার অষ্টক্লা, কর্ণ দিগোলক, হমুদেশ সপ্তাঙ্গুল, কর্মণী বিজ্ঞান এইকলা, কর্ণ দিগোলক, হমুদেশ সপ্তাঙ্গুল, কর্মণী বিজ্ঞান বন্ধন সপ্তাঙ্গুল, লশনবর সার্জ এককলা, নাসিকাবিবর তিনহব, নেত্রবর ঘবহীন,মুখ ঈবজান্ত-বিরাজিত, কর্ণগুল রজ্জু-বর্মবিশিষ্ট সম ও আরত হইবে। কর্ণের মধ্যভাগ চারিকলা, এবং উচ্চতা ঘূইকলা হইবে। শ্রীবাদেশ অষ্টাঙ্গুল, উচ্চতা নেত্র-পরিমাণ, অবশিষ্ট আল সকল নৃসিংহ দেবের ভার হইবে। শ্রের নাগ নৃ-বরাহ দেবের চরণ ধারণ করিরা রহিরাহেন। বরাহ বাহ বারা বস্তুব্দাকে ধারণ করিরা অবহিত আছেন। ইহার বামতাগে শক্ষ ও পন্ধ, দক্ষিণতাগে গলা ও চক্র। এইরূপ বরাহ-বামতাগে শক্ষ ও পন্ধ, দক্ষিণতাগে গলা ও চক্র। এইরূপ বরাহ-

त्यत्वत्र मृर्षि अधिकी कतित्व छवनकम नृत्र स्त्र अवः हेस्त्नात्क नाना क्षय लोकाग्रा स्टेस थात्कः।

"বক্তুং কলাষ্টকারামং শ্রোত্রমন্ত বিগোলকং।
হন্ সপ্তাঙ্গুলে তক্ত শৃক্ষী বাঙ্গুলে মতে ॥
সপ্তাঙ্গুলং মুধং প্রোক্তং রনৌ সার্ক্রনা বিক্রাং।
নাসারক্তং ভবেরেত্রং যবহীনেহক্ষিণী মতে।
কিঞ্চিবক্তে ত্রিতে প্রোক্তে বিগোলকসমারতে।
চত্ত্রকাং কর্ণমধাং তলজেন তহচ্ছিতং।
বস্বস্থলা ভবেন্ত্রীবা নেত্রকং চোলতা তু সা।
শেবং নৃসিংহবৎ কার্যাং বরাহক তু বিগ্রহম্ ॥
শেবাহিবিধৃতং পাদং বাহনা ধারমন্ ধরাং।
শক্ষং বামে তথা পল্লং গনাচক্রে তু নক্ষিণে॥
এবং নরবরাহক ক্ষম বং শ্বাণরেররঃ।

ভবোদ্ধিসমুকারং রাজ্য হতক উকং ॥"(হরিড জিবি" ১৮বি")
বরাহ (পুং) বরান্ আহন্তি বর-হন-ড । পশুবিশেষ, চলিত
বরা, পর্যার — পুকর, রাষ্ট, কোল, পোত্রী, কিরি, কিটি, দংট্রী,
খোনী, শুকরেরামা, ক্রোড, ভূদার, কির, মুস্তাদ, মুখলাদ্ল,
ছূলনাসিক, দক্তামুধ, বক্রবক্র, দীর্ঘতর, আথনিক, ভূকিং,
বহুস্থ। (শক্ষরাণ) ইহার মাংসপ্তণ—বৃহ্য, বাডম, বলবর্জন,
বহুমুক্রকারক এবং স্কক্ষ। বস্তবরাহ্মাংসপ্তণ—মেদ, বল ও
বীর্যবর্জক। (রাজনি৽)

ইহার মাংস বিষ্ণুকে নিবেদন করিতে নাই। শাত্রে পঞ্চনথ জন্তর মাংস ভক্ষণ বিহিত আছে, বরাহ পঞ্চনপীর মধ্যে হইলেও প্রাম্যবরাহ ভোজন নিবিদ্ধ। বরাহমাংস ভেজন করিয়াও বিষ্ণুর পূলা করিতে নাই, বদি কেছ বরাহমাংস ভক্ষণ করে, তবে তাহার অধাগতি হইন্না থাকে। বরাহভোজী বরাহরূপে জন্ম-গ্রহণ করিনা দশ বংসর বনে বিচরণ করে, পরে ব্যাধ হইন্না পণ বংসর, ক্মিরূপে ৭ বংসর, মৃষিকরূপে ১৪ বংসর, নাক্ষস-রূপে ১৯ বংসর, শক্ষকরূপে ৮ বংসর, পরে আবার ব্যাধরূপে ৩০ বংসর জন্মগ্রহণ করিনা থাকে। তৎপত্রে বরাহ্মাংস ভোজনের পাণ বিনই হন।

অজ্ঞানতঃ বরাহমাংস ভোজন করিলে ভাহার প্রায়শিত্ত করিতে হয়, ঐ প্রায়শিত্ত দ্বারা পাপ ধ্বংস হইরা থাকে। প্রায়শিত্তের বিষয় এইরূপ লিখিত আছে। প্রথম ৫ দিন গোময় ভোজন, পরে ৭ দিন তপুলকপভোজন, তৎপরে ৭ দিন কেবল জলপান, তদনত্তর ৭ দিন জক্ষারলবণভোজন, তিম দিন শক্ত্যু-ভোজন, ৭ দিন ভিলভোজন, ৭ দিন পারাপভোজন, তৎপরে ৭ দিন ক্রমপান, এইরূপে ৪৯ দিন আহার সংহত ও ক্লিভেজির হইরা অবস্থান করিলে এই পাপ বিশ্বিত হয়। এইরূপ

প্রারন্ডির করির। পাশ মট হইলে তথম আবার বিস্তৃপুদার অধিকার করে। বিস্তৃতক্রেন শক্ষে বরাহ্যাংস ভোজন বিশেষ নিবিভঃ •

বস্তবরাহ-মাংসভোজন প্রাথারিতে বিহিত আছে। প্রাডে বস্তবরাহমাংস বারা প্রাথণ ভোজন করান বাইতে পাতে, তাহাতে পাপ হর না। কিছ বিষ্কৃপাসক কথমও এই সাংস ভোজন করিবেন না।

"বছবরাহ্মাংসং প্রান্ধানো বিহিতং। বথা অন্নতীত্যসূত্ত্তী হারীতঃ। মহারণ্যবাসিদশ্চ বরাহাত্তেবভি। এবক বিবরত্তে অপ্রামাপুকরাংশ্রেভি, বশিক্তোক্তং বেভাবেভরা ক্তবিহৃতং। করভক্ত-প্রান্ধে নিবুকানি বৃক্তত্ত্বভি, বিক্পানকভ সর্বাধা নিবেধঃ। বধা বারাহে ভগববাকাং—

"কৃক্যা বরাহমাংসম্ভ বন্ধ মানুগসপতি।
বরাহো দশ বর্বাণি ভূষা বৈ চরতো বনে ॥ (একারশীতন্ত)
"ঐপরৌর্থবারাহ-সল্মের্থানের পিতারহাঃ ॥"

(প্রান্তবন্ধ বাক্সবর)

এই শ্রেণীর ব্যৱপারী পশুর্বনিকে পান্চাড্য প্রাণিডবনিদ্যণ

Suidas নামক পশুর্বাভির অন্তর্ভুক্ত করিবাহেন। বস্তু ও

"জুকু। বারাহবাসের বা। বৈ বার্ণসর্গতি।

পতনং তক্ত কক্ষাবি তথা তবতি ফুকরি ।

বরাহে। বপববাদি তুঝা বৈ চরতে ববে।

ব্যাবাড়ুঝা বহাখালে সনাং নথা চ সপ্ততি: ।

ক্ষমিভূঁঝা সনাং সথা তিওঁতে তক্ত পুকলে।

ক্ষমোতের্ম্ম বিবাজ ক্যা বর্ধবাক চকুর্মল ।

ক্ষেক্তাইবর্মবি বাজুখানক বাছতে।

পরক্তাইবর্মবি বাজতে তবনে বহঁ।

ব্যাহার্ম্যাকিবর্মবি বাজতে শিলিতাশনং।

বব সংসায়িতাক্ষরা বারাব্যবিব্যক্তক: ।

ক্ষর প্রারশ্চিত্তঃ

(नप्राह्यु - यश्रहणारमध्यनगात्रन्ति)

পালিতভেবে এই বরাহ আভি ছুইভাগে বিভক্ত—খন-বরাহ (Sus Indicus) ইংরাজীতে প্ল (wild boar) ও প্রী (swine) ভেবে গৃহীত হুইরাছে। শুক্তরভাতি এই শ্রেণীর অন্তর্গত, কিন্তু অপেকারত সুম্লাকার জীব। সাধারণতঃ বস্ত্র বা পালিত প্রীবরাহগুলিই শুকর (pig) লাবে অভিহিত। এই শ্রেণীর অনেক পুবেরাহেরও বজোন্গম হর না। ইহারা চতুপার, চারি পার চারিটী পুর আছে। বন্ধ পুব বরাহগুলির গুরুপ্রান্ত দিয়া গলসন্ত সন্শ, কিন্তু অপেকারত অনেক সুক্ত, নত নির্ণম হইরা থাকে। দন্তবিহীন বরাহগুলিই প্রধানতঃ শুকরপদবাচা।

ভারতের নানাস্থানে এবং বুরোপে যে সকল বরাহ দেখা যায়, তাহাদের অপেকা ভারতীর দীপপুঞ্জ শুকরগুলি অনেক কুদ্র। বস্তবরাহগুলি প্রারই দিবাভাগে বনাস্করাল প্রদেশে সুক্রায়িত থাকে এক রজনীর জন্ধকারে লগৎ ভ্রমনার্ড হইরা আসিলে তাহারা আপন আপন আশ্ররকেন্দ্র পরিত্যাগ করিয়া বহির্গত হয় এবং নিকটবর্ত্তী পল্লীর শশুপূর্ণ ক্ষেত্রে প্রবেশ করিয়া ইচ্ছামত শক্ত খারা উদর পুরণ করে। বরাহ ক্ষেত্রে প্রবেশ করিলে সেই সাট ফেন চলিয়া ফেলে, ভাহাতে বছসংখ্যক চারা গাভ নই হইরা বার এবং প্রাচুর শক্ত উৎপাদনে ব্যাঘাত করে। স্থানে স্থানে বরাহেরা মৃত্তিকা খনন করিয়া মানকচু, খামজানু প্রভৃতি कम উर्ভোগনপূর্বক स्टब्स्य करता। বেখানে এই সকল উরিদাদির অভাব বটে এবং ভাহারা বেচ্ছার কলমলাদি আহার করিতে পার না, তথার ভাহারা মৃত উট্টাদি পশুমাংসও উদরসাং করে। ক্ষুধান্ব নিতাক্ত পীড়িত হইলে তাহারা নিকটবন্তী গ্রামে যাইরা গ্রামবাসীর নিক্ষিপ্ত আবর্জনা হটতে স্বীর আহার্য্য বাছিত্রা খার। মানববিষ্ঠাতেও ভাহাদের বিশক্ষণ ক্রচি দেখা যার।

এসিরার নানাছলে বে ভিন্ন ভিন্ন প্রকারের বস্তবনাহ দেখিতে পাওরা বার, প্রাণিতত্ববিদ্যাল ভাষাদের মধ্যে ৭টা শাখা বিভাগ করিরাছেন। তাঁহারা আরও বংগন বে, ভারতীর বস্তবরাহের একটি লাখা বাহা অধুনা রুরোপ ও উত্তর আফ্রিকার বিভূত হইরা পড়িয়াছে এবং হিলুস্থানের মধ্যে বাহার অন্তর্নপ বরাহ-লাভি বিভ্নান আছে, ভারা রুরোপীর সমান্তে চাইনীজ বীড' (Chinese breed) মানে ক্ষিক্ত । বিভিন্ন শাখাকৃত হুইলেও এই প্রক্রলাভি ক্রেনজেবে ভিন্ন ভিন্ন নাবে পরিচিত আছে। নিবে বিভিন্ন ক্রেন্ত্র নাকেশ করা সেল—

বিজ্ঞানেশীর নাল্য—আর্থ ও পারত—আন্দির, থানারর; সংস্কৃত ও বালালা—বরাহ ; কণাড়ি—হতি, নিজা, লেবাড়ি, বিলেবার—Syna; অক্ষাক Varkon, swijn; করানী— Verrat, Cochon, Pourceau; জন্মাণ Eber, Schwein; গোঁড়—পদ্দি; গ্রীক—Choiros, হিন্দি—শ্রার, জললীশোর, ইতালী ও পর্তুগাল—Verro, Porco; লাটন Sus Porcus, মলয়—ববি, ববি-জ্ঞালস, ববি উটান; মহারাই ছকর, কব—Svinza, স্পেন Verraco, Puerco, স্কুডেন Svin; ডেলগু আদাবি-কোকু, পণ্ডি; ওয়েলস—Hweh Hweh, হিক্র—হাজির্ছজির; শিলাপুর—বলুর।

এসিয়ার নানাস্থানে এবং ভারত সমীপবর্তী স্থানে যে বিভিন্ন বরাহশ্রেণী দেখা যায় তাহা সাধারণতঃ ৭ ভাগে বিভক্ত, ঐ ণট শাথার সংক্ষিপ্ত বিবরণ নিমে উদ্ধৃত হইল:—

Sus Indicus বা S. scrofa ভারতীয় সাধারণ বন্যবরাহ—

ক্রমণীর বহুবরাহ হইতে এই জাতির অনেক পার্থকা, কিন্তু তরিবন্ধন ইহাদিগকে একটি স্বতন্ত্র শাথাভুক্ত করা যায় না।
ভারতীয় বরাহের মন্তক বৃহৎ ও কোণাকার এবং কপালাস্থিতল
চেপ্টা, কিন্তু যুরোপায় বরাহগুলির উহা কুক্রপৃষ্ঠবৎ। ভারতীয়
বরাহের কাণ ছোট ও ছুঁচাল, পক্ষান্তরে পাশ্চাত্য বরাহের
বড় ও লোটান। ভারতীয় বরাহ দৃঢ়কায় এবং জ্বতগমনশীল; অর্মণদেশীয় বরাহ দৃঢ়কায় হইলেও সুলোদর।
এই তুই দেশের বন্য ছাড়া, পালিত বরাহের মধ্যেও নানাবিষদ্ধে
এইরূপ পার্থকা দেখা যায়।

ভারতে উক্ত শ্রেণীর বরাহই প্রধান। বাশালার নানা স্থানে এই শ্রেণীর বরাহ দেখিতে পাওয়া যায়। আহারাম্মেরণে বন হইতে গ্রামে বরাহ প্রবেশ করিলে গ্রামেরাসিগণ দক্তাগতে আহত হইবার ভয়ে সশক্ষিত হইয়া পড়ে এবং বহু লোক একত্র হইয়া বরাহ মারিতে উত্যত হয়। দেশীয় লোকে বনমালাচ্ছাদিত ভূমে যাইয়া কুকুব সাহাযেয় বরাহ শীকার করে; কিন্তু য়য়েরাপীয় শীকারীয়া প্রধানতঃ অখপুর্চে আরোহণপূর্কক বড়সা হত্তে শীকারের পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রধাবিত হয়, ইহাকে ইংরাজী ভাবায় প্রারহালের বলে।

প্রাণিতত্ববিদ্যাণের ধারণা এই যে, এই শ্রেণীর বরাহের
চীনদেশ জাত শাবকাদি হইতে মুরোপের ও উত্তর-আফ্রিকার
শ্করকুলের উৎপত্তি। উত্তরণশ্চিম ভারতে এই শ্রেণীর
শ্করকুলের উৎপত্তি। উত্তরণশ্চিম ভারতে এই শ্রেণীর
শ্করকালি কথনও ৩৬ ইঞ্চের উর্জ হয় না। কিন্তু বালাগার
সাধারণতঃ উহারা ৪৪ ইঞ্চ পর্যান্ত বড় হয়। রোমরাজ্যে যে
সকল শ্কর দেখা যার, তাহারা প্রধানতঃ চীন, কোচীন-চীন
ও ভামরাজ্য-জাত শাবকাদি হইতে উৎপর; আনাল্সিরা,
হালেরিরা, তৃক্ষ, স্ইজ্লেড এবং দক্ষিণপূর্ক মুরোপে বিভ্যান
শ্করগুলি এই শাধারই অন্তর্ক ।

বালালার অপর এক শ্রেণীর শুকর (S. Bengalensis)

আছে। পূর্ব্বোক্ত শ্রেণীর সহিত এই শ্রেণীর শারী 📭 গঠন বিষয়ে বিশেষ পার্থক্য দেখা বার। আন্দামান বীপের শুকর-গুলি S. Andamensis এবং মনর-প্রায়োদ্বীপ ও ডং স্মীপ্রতী স্থান-জাত শুক্রবংশ S. Malayensis নামে খ্যাত। যবনীপের স্থানে স্থানে S. verrucosus শ্রেণীর শুক্ষ আছে। উহাদের গণ্ডবরের পার্মত্ব মাংসপিও অপেক্ষাক্সত স্থল ও দীর্ঘ, মৃথাক্নতি দেখিলেই ভয়ের উত্তেক হয়; কিন্তু অপরাপর বরাহন্দেণীর অপেকা ইহারা স্বভাবত:ই জীয়। সিংহল বোর্ণিও প্রাকৃতি বীপের S. barbatus প্রেণীর শুকর S. Indicus শ্ৰেণী হইতে সম্পূৰ্ণ বিভিন্ন। বোণিও শীপজাত বরাহের করোটার সাদৃশ্য এবং অস্তাম্য অল প্রভালের পার্থকা দেথিয়া মি: ব্লাইথ S. Zeylanensia নামে আরও একটা শাখার উল্লেখ করিয়াছেন। নিউগিনি**দীপজাত** বরাহ S. Papuensis नारम था। उष्णत-छात्राजत भाग-वरम এक প্রকার স্কুত্রকার শুকর (Porcula aylvania) আছে, দেশীর লোকে উহাদিগকে ছোট শুরুর বা সানো বেনেশ বলে। উহার। বনের নিবিভতম দেশে দশবদ্ধ হইয়া বাস করে। উত্যাদের পুং শুকরগুলি প্রধানতঃ দলরকা করিরা থাকে। Guineapig নামে আরও একটা অভিকৃষ্ণ শুকর জাতি দেখিতে পাওয়া যায়। উহারা সাধারণতঃ মৃত্তিকাগর্ভে বা তুণমণ্ডিত ক্ষেত্রে বাস করে এবং তৃণপল্লবাদি শ্বারা জীবন ধারণ করিয়া থাকে।

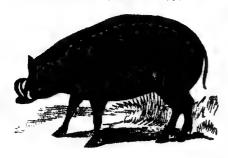
জ্ঞান ও ফর্ম্মোজা দ্বীপে Sus lencomystax নামে আরও একশ্রেণীর শুকর দেখিতে পাওয়া যায়। এতত্ত্বির জ্ঞাপানে আরও এক প্রকার বিরুত্বমুখ ও দীর্ঘ-শুক্ষবিশিষ্ট শুকর আছে। প্রাণিত হ্বিদ্যান গভীর ও কুঞ্জিত। ইংরাজীতে ইহাদিগকে musked pig বলে। আফ্রিকারও Musked Boarএর অভাব নাই। যুরোপজাত অপরাপর বরাহের অপেক্ষা ইহাদের গণ্ডান্থি প্রবর্ধিত, লোবন-দন্ত-হালীর অন্থি অপেকাক্বত বিবর্ধিত ও উন্নত; এই কারণে ইহাদের উভয় দিকের হন্থদেশ (maxillary bone) ও দন্তমুলান্থির মধ্যে একটা খাল (Canal) হইয়া পড়িয়াছে। তক্ষপ্ত উহার শেবভাগে মাংসের শুটা (Tubercle) সমুৎপাদিত দেখা বায়। পার্শ্ব গণ্ডবন্ধ ক্ষীত এবং নাসিকান্থি সমুন্নত না হওয়ার ইহাদের মুখ অতি কদাকার ও শীতিপ্রাদ হইয়াছে।

প্রাণিতত্ববিদ্ F. Cuvier বিশেষ পর্যবেক্ষণ দারা Babirussa নামে আর একটা বরাহন্দ্রেণীর উল্লেখ করিরাছেল।
তিনি মদার ভাষার 'বৰি' দক্ষে বরাহ ও 'ক্লমা' দক্ষে ছরিণ গ্রহণ
করিরা এই শ্রেণীকে একটা মাঝামাঝি নাম দিরাছেন।

ভারতীর Sua acroin হইতে এই শ্রেণীর অকেন বিবরে পার্থকা দেখা বার। নিমে উক্ত শ্রেণীক্ষরের সম্বধারা দিখিত চইন:—

S. serofa :—কর্তক উ, শৌধন ;—; ; চর্মাণ ;—; — ৪৪টা, কিন্তু Babirusea পক্ষে—কর্তক 🖟 ; শৌধন 🚉 ; চর্মাণ ;—; ;

মানাকারীপের কোন কোন অংশে, বৌরুরীপে এবং নিলেবিস্ ও টার্পেট রীপে B. slfurus শাখার বরাহ দেখা বার।
ইহাদের দেহ ছুলকার, কিন্তু পদ চতুইর অপেক্ষাকৃত সক । গাত্র
প্রার লোমপ্ত ও ধ্নরবর্ণ। ইহাদের উপরের বৃহক্ষপ্তালি
মুখচর্শের উপরে উঠিরা মানাক্ষকারির উপর বৃত্তাকারে
নত হইরা পুনরার মুখদেশ স্পর্শ করিরাছে। উচার নিয়ে
আরও চুইটি কুলাকার দন্ত আছে। ত্রীবরাহনিগের নত্ত
অপেক্ষাকৃত কুত্র, কোন কোনটার আনে নাই। নিমে
এই আতীর একটি পুণ-বরাহের চিত্র প্রাক্ত ছইল—



ভারতীয় বাপ-পূঞ্বানীবিপের বিশাস, এই বরাহাশ্রেরী কুম্রাকৃতি হরিণ ও বরাহের বোগে উৎপন্ন। তাহারা এবং বীপবাসী
বৈনেশিক বিশিক্রক্ষ সাক্ষাবের ইহার মাংস ভক্ষণ করিরা থাকে।
উহা অতি ফ্রাহা। ইহারা ক্ষাকার বরবারা শক্ষকে আক্রমণপূর্বক আহত করিতে পারে বটে, কিন্তু ভারতীর সবন্ধ বরাহের
ভার ততত্ত্ব চুর্ঘান্ধ নহে। ইহারের বীর্ষাকার বন্ধতানি বিশেষ
কার্যাকারী নহে। যথন ভাহারা স্বেগে নিবিভূ বনে প্রবেশ
করে, ভখন ঐ কন্ধ কেবল লভা ক্ষম সরাইরা ভাহারের চক্ষ্যক্ষে

Phacocherus ও Æliani P. Æthiopicus নামে ক্ষাবৰ্ণ জীবনাম্ভ ও মুন্দুৰী হই প্ৰকাৰ ব্যাহ দেখা বায়; ভ্ৰাংগ্ৰ প্ৰথমোক্ত প্ৰেণী আপেনা পোনোক্ত প্ৰেণী হীৰ্বাকায় ও জীবনাম্ব । ইংয়াজীতে এই প্ৰেণিকে Wart-hog বলে। ইংয়াজীতে এই প্ৰেণিকে Wart-hog বলে। ইংয়াজীত এই ক্ষাত্ৰ ছইটা ক্ষিয়া বে বীৰ্ণ দৰ আছে, ভাষা পাৰ্ভভাগে বিস্ত । ইংয়াজ জীবনাৰ ক্ষাত্ৰ কৰ্মান্ত হটা জি-পল (triquetrous), কিন্তু নীতে হুমুট্ট মোট মোট

ও সরল। বীর্ষদক্ষ সরল ও ঈবং উপরমুখী, কিছ অক্তান্ত সকল প্রকার বরাহের অপেকা বৃহৎ ও নোটা। গওছর মাংসল এবং ছুল পিওবং (Wart), পুছে কুল এবং পদবর ভারতীর বন্ধ-বরাহের ভার দৃঢ়কার। পৃত্তিদেশ শক্ত ও বীর্ষ লোহে আছাদিত। ইহাদের দঙ্কধারা—

কর্ত্তক হবা । পৌবন ১-১ চর্কাণ ত্রুত ৩ বা ২৪। কুভিরার বলেন, কেপরাজাে (Cape Colony) বে ওয়ার্ট হগ্ দেখা বার, তাহাদের উপর ও নির হতুতে ৩টা করিয়া চর্কাণনত আছে; কিন্ত P. Æliani শাধার উপরের চর্কাণনত আছে। কিন্তুত আছাভ বিবরে অনেক প্রভেদ আছে। নিরে আফ্রিকার স্থলমূব বরাহের (P. Æliani) চিত্র প্রবন্ধ হইন—



দক্ষিণ আমেরিকার আর্কান্সাস্ ইইতে ব্রেজিন পর্যান্ত বিভ্ত ভূজাগে পুদ্ধবিধীন এক শ্রেণীর কুলাকার পুকর (Dicotyles) দেখিতে পাওরা বার। উহাদের মধ্যে যে গুলির গলদেশে সাদা নাগ আছে, সেগুলি D. torquatus এবং বেগুলির ওঠপ্রান্ত খেত বর্ণবিশিষ্ট, সেগুলি D. labiatus নামে গাত। ইংরাজিতে প্রথমোক্ত শ্রেণীর পশুগুলি the Coloured Peccary এবং শেষাক্ত শ্রেণীর পশুগুলি the Uipped Peccary বলিরা পরিচিত। মেরিকো এবং ওরেই ইন্ডিরা বাগপুঞ্জে বে পুকর-শ্রেণী দেখা যার, তাহা প্রথমোক্ত শ্রেণার আন্তর্ভুক্ত। ইহারা আনেক বিবরে ভারতীর Sus শ্রেণীর আন্তর্জনা, কেবলরাত্র গল-তল, বন্ধ ও নারীরিক পর্যমে সামান্ত প্রক্ষেক্ত আছে। ইহারের করভান্থি (Metacarpus) ও প্রশ্বান্থি (Metatareas)

বত্তপত্তি—কর্তক হু, পৌৰদ <u>কুলা</u>, চর্মাণ <u>কুলা</u> — ওচ এই শ্রেণীর পত্তর পাছার (lains) উপরে একটা সহিত্র প্রতি আছে, তাহা হইতে নির্ভই এক প্রকার প্রশ্নমন্ত রুগ নির্গত হইরা থাকে।

D. torquains, ও D. labiatus পাধার প্রথমেরা একত

रणवष हरेंद्रा विष्ठत्रभ करत्। कथन कथन अक अकी सरण সহস্রাধিক বরাহও বেখা বার। স্ক্রিড সেনাগলের ছার ভাহারা মনুর বিভূত স্থান ব্যাপিরা প্রমন করিতে থাকে এবং এক বা ভভোধিক বরাহ ভাহাদের নেভা হইরা অপ্রভাগে অগ্রসর হয়। যদি সমুখে তাহারা নদী পার, ভাহা হইলে তীরে আসিরাই ভাহারা থামিরা পড়ে। অভঃপর কিছক্রণ ফেন চিত্তা করিয়া পরে একে একে সকলেই নদীবন্দে সন্দ্রপ্রদান-পুর্বক নদীসন্তরণ করিরা অপর পারে উতীর্ণ হয় এবং পুনরার গস্তবাপৰে অগ্ৰসর হইতে থাকে। পথিমধ্যে যদি শক্তকেত্রাদি নিপতিত হয়, তাহা হইলে তাহারা সমূলে ক্ষেত্রভাত পঞ্চাদি নষ্ট করিরা ভূত্বামীকে কতিগ্রন্ত করে। আর বদি পথে কোন অস্বাভাবিক দৃষ্ট দেখিরা ভাষারা ভীতচ্বিত হর, তাহা হইলে ভাহারা বেশ ধীরভার সহিত ঐ বিষদৃশ বন্ধটী দর্শনের জঞ ভরবিহ্বলভাবে দত্ত কভুমড়ি করিরা উঠে এবং ভরের কোন কারণ না দেখিলে ভাহারা অবিশবে সে,ছানত্যাগ করিয়া চলিয়া যার। আর বদি কোন শীকারী ঐ সমরে তাহাদের সমূথে আসিরা উপস্থিত হয়, ভাহা হইলে ভাহারা ভাহাকে সদলে হেৰিরা ধীর্ষদত্ত হারা ক্ষড়বিক্ষত বা নিহত করিয়া ফেলে। D. labiatus সাধারণতঃ ৩ হইতে আ- ফিটু লখা ও প্রায় > ০০ পাউও ওছনের হয়, কিছ D. torquatus ঋণি ০ ফুটের বেলী লখা ও ৫০ পাউওের অধিক ভারি হর না। রিজেন্ট পার্কের রাজকীয় পশুরক্ষিণা উভাবে Choiropotamus Africanus নামে আর এক প্রকার বরাহ রাখা হইরাছে।

বহু প্রাচীন স্থাল ক্ইতে জগতে বরাইের নিদর্শন পাওরা গিলাছে। হিন্দুশাল্লে বিষ্ণুর বরাহমূর্ত্তি ধারণপূর্বক ধরার ভৃতীর অবতাররূপ প্রকটন ও ধরিত্রীকে উদ্ধার কথা পূর্বেই বর্ণিত হইরাছে। এই স্থাখ্যারিকাকে রূপক বলিরা বরাহকে জগতের ভৃতীর জীবসর্গ বলিরা গ্রহণ করিলেও অপ্রাসন্ধিক হর না। পৃথিবী বেখ।

ভূতৰ আলোচনা করিলে জানা যার বে, টার্নিরারি ভূপঞ্জর-সংভিত জীবদেহাছিলমুহের মধ্যে মাইওসিন্ বুগের ঘিতীর বিভাগে এবং মিওসিন্ যুপের ভূতীর ও চতুর্ব বিভাগে বরাহের অহি-নিম্নাল পাওরা বার । প্রীক্ষিগের প্রাভ্যেও টাইকোন দেবের পবিত্র বরাহের উল্লেখ আছে। চীনদেশীর একখানি গ্রন্থে ৪৯০০ বংসর পূর্মে বরাহের বুভাত লিপিবছ আছে। মন্থ্যংহিতার বরাহ-মাংলের বিধিনিবেশ বিধিবছ হইরাছে। মহাভারতে বরাহাভারে রপজ্জের নৈত্তস্থার রাজগণ রাজচিক্তররণ বরাহ-রাভের ব্যবহার ক্রিভেন। এই বংশের প্রচারিত কর্পর্রাতেও বরাহের প্রতিকৃতি অভিত থাকার ভাষা বরাহমুলা নামে থাক হইরাহিল।

ভারতে রাজপ্তবীরগণ বাসভীমহোৎসবে মন্ত হইরা বছ-বরাহের বুগরার শিপ্ত হইডেন। ঐ বিন লীবনের বারা ভুছ্ করিরা ভাঁহারা বরাহ-শীকারে বনে প্রবেশ করিডেন। ঐ বিন বরাহ শাকার করিতে না পারিলে রাজপুত-লাভির বড়ই নিপ্রহ ঘটিবে, ভাঁহাদের এইরপ সংখার ছিল। এই হৈব ঘটনার লগস্বাভা উনাবেবী ভাঁহাদের প্রভি বে কুছ হইরাছেন, এইরপ ভাঁহারা যনে করিডেন। রাজপুত লাভির আহেরিরা উৎ-সবেও পৌরীর সমক্ষে বরাহবলি বিবার রীতি আছে।

বসন্তকালে বরাহ-শীকার শক্তাভির একটি চিরপ্রথা। হন্দনাভ-বাসী অসিকাভির মধ্যে বসন্তকালে "ক্রিরা" দেবীর মহোৎসবে বরাহ-বলি দিবারও রীতি দেখা বার। তদ্দেশবাসিগণ ঐ দিবস মরলাও লানাসসলার প্রস্তুত্ত বরাহ অগ্নিতে লগ্ধ করিরা তদ্দপ করিরা থাকে। ঐসপ করাসী বেশেও বর্ষারভের প্রথম দিন "Cochelin"-দগ্ধ সেবনের প্রথা বিভ্যমান। হেরোলোতাসের বিবরণীতে মিসরবাসীকর্তৃক মরলাথও বারা প্রস্তুত দগ্ধ শৃকরাক্ততি-ভক্তগের উল্লেখ আছে।

ব্রাহ, একলন অভিধানপ্রণেতা। ইনি শাবতের সমসাম্যিক

বরাত্ক (পং) > হীনক, চলিত হীরে। ২ শিশুমান, শুক্ত। বরাত্কক্ষ (পং) বরাত্তির: কল:। বরাহী, বারাহীকল, চলিত চামর আলু। ববে অঞ্চলে ইহার নাম ভুকরকল।

वहाइकर्न (भूर) > स्कल्प । । र वागरण्य ।

वद्राह्कर्निका (बी) व्याज्यस्म ।

বরাহকণী (জী) অবগদা (Physalis flexuosa)।

वहां एकड़ा, क्यां एक, धरे क्या छगवान् वहाश्मृष्टि शावन कतिया-

বরাহক্বচ, ধারণীর মজোবধবিশেব। কলপ্রাণে ইহা লিখিড আছে।

ব্রাহ্কান্তা (ত্রী) বরাহত কারা প্রিয়া। বারাহীরক। ব্রাহ্কালিন্ (পুং) ক্র্যানণি পুলারক, চলিত ক্র্যানণি ভূলের গাছ। প্রায়-স্থানিকা। (হারাবলী)

বরাত্কালী (ত্রী) ভাগিতাতজা,চনিত হড্তড়িয়া।(বৈশ্বকনি°)
বরাত্জান্তা (ত্রী) বরাবেশ ক্রান্তা ভাতিপ্রির্থাং। > কুণবিশেষ। (শবলা॰) পর্যায়—লক্ষানু, নমলা, নজভারিকা,
বরাহনামা, বদরা, পুকরী, ভিজ্ঞগড়িকা, নমভারী, গগুকালী,
থাদিরী, নজ্ঞানুকা, অঞ্জনিকারিকা, কৃতাঞ্চনি, গগুকারী,
ননীক্ষনা। ২ বারাহী, চলিত চামরানু। (কৃত্তি)

বরাহ গ্রাম, বোঘাই প্রেসিডেন্সীর বেল্প্রাম্ বেলার পর্যুত একট গণ্ডগ্রাম।

বরাহতীর্থ, তীর্থভেদ। (কৃশ্বপুং)

বরাহদং 💆 (পুং) কুজুরোগবিশেষ, চলিত বরাহদন্ত। (মাধবনি*) স্তিরাং টাপ্।

বরাহদন্ত, বণিকভেদ। (ৰুপাসরিৎসা ৩৭।১০০)

বরাহদৎ (ত্রী) বরাহদন্ত।

বরাহদস্ত (তি) বরাহদস্কবিশিষ্ট। (পুং) বরাহের দাঁত।

বরাহদেব স্বামিন্, গৃহত্তব্যাপ্যা-রচরিতা।

বরাহদ্বাদশী (জী) মাধমাসের গুক্লাদাদশীতে বরাহরূপী বিষ্ণুর শ্রীত্যর্থে আচন্দীর ক্লতাভেদ।

বরাহদ্বীপু (ফ্লী) বীপভেদ। [বরাহ দেখ।]

বরাহ্নগর, বালালার ২৪ পরগণার অন্তর্গত একটা প্রাচীন ও প্রাসিদ্ধ নগর। কলিকাতা রাজধানীর উত্তর উপকঠে এক মাইল দ্বে গলানদীর বামকৃলে অবস্থিত। এই স্থান পূর্বে বাণিজ্ঞাপ্রধান ছিল। গলাভজিতরলিনী প্রভৃতি প্রাচীন গ্রন্থে তাহার উল্লেখ পাওমা বায়। এখানকার কাঁচি ধৃতির বাণিজ্ঞা পূর্বে বহ বিভৃত ছিল, এখন তাহার অনেক হ্লাস ঘটিরাহে। পূর্বে ওললাজ বণিকগণের এখানে একটা কুঠা ছিল। চুঁচুড়ায় আসিবার সমন্ন ওলনাজ সওদাগরী জাহাজ এখানে নল্পর ক্রিয়া থাকিত।

এই স্থানের বরাহনগর নামকরণ সম্বন্ধে নানা কথা ভনা যায়। ঐ সময়ের একথানি প্রাচীন কাগজপত্তে প্রকাশ ওণালাগণ এথানে বরাহহতা৷ করিত বলিরা এই স্থানের বরাহনগর নাম হইয়াছে। স্থানীয় কিংবদন্তী এইরূপ যে, বিষ্ণুর বরাহ মূর্ত্তি হইডে এই স্থান দেব নামে কীর্ত্তিত হয়। আবার আনেকে বলেন যে, এথানে একজন দয়্য সর্দার ছিল, সে বরাহ অবতারের উদ্দেশে এই নগর স্থাপন করে। যাহাছ্উক, বরাহনগর স্থান ও নাম নিভাস্ত আধুনিক নহে। মহাপ্রভু চৈতজ্ঞানেব আস্থানা এখানে ভাগবভাচাগ্যকে অমুগ্রহ করিয়াছিলেন। আজ্ঞ বরাহনগরে ভাগবভাচাগ্যকে অমুগ্রহ করিয়াছিলেন। আজ্ঞ বরাহনগরে ভাগবভাচাগ্যকে পাট আছে। ভাগবভাচাগ্য দেশ।

এখানকার ওললাজ কাঁর্ডি নিদর্শন স্বরূপ এখনও অনেক চিত্রিত টালির ভয়ধণ্ড দেখিতে পাওরা যায়। ১৭৯৫ খুটাঞ্চে ওললাজ গভমেণ্ট এই স্থান ইংরাজকরে সমর্পণ করেন। ওল-লাজদিগের আগমনের পূর্ব্বে এখানে একটা পর্ক্ত ক্রীক্স উপনিবেশ স্থাপিত হইরাছিল। ইংরাজাধীনে এখানে মিউনিসিপালিটা স্থাপিত হইরাছে, উহা নির্বন্ধবর্কান্ মিউনিসিপালিটা স্থাপত হইরাছে, উহা নির্বন্ধবর্কান্ মিউনিসিপালিটা স্থাব কাল-কাটালামে পরিচিত। এখানে গলাভীরে স্থানেক ধনী ও বণিকের রাগানবাড়ী আছে। কএকখানি ঠাকুরবাড়ীও গলাসৈকত-

ভূমির শোভা বৃদ্ধি করিতেছে। আলমবান্ধারের রেড়ীর তৈণের কল ও তাহার বাণিজ্য এবং বোর্ণিও কোম্পানীর চটের কল এধানকার প্রসিদ্ধ বাণিজ্যকেক্স। আলমবান্ধারের উত্তরাংশে স্থ্রসিদ্ধ দক্ষিণেধরের কালীবাড়ী। পূজ্যপাদ পরমহংস রামক্ষণ-দেব এধানে অবস্থান করিতেন।

বরাহনামন্ (পু:) বরাহস্থ নামেব নাম যক্ত। বারাহীকন্দ।
বরাহনির্যু হ (পু:) বরাহমাংসরস। (চরক প্রস্থা•)
বরাহপণ্ডিত, প্রয়োগসংগ্রহবিবেক নামে ব্যাকরণরচয়িতা।
বরাহপত্তী (রী) অখগন্ধ। (রান্ধান•)

বরাহপিত্ত (ক্লী) শৃকরপিত্ত। ইহার শোধনপ্রণালী—শৃকর-পিত্ত ভকাইয়া লইয়া পরে নিম্বরদে ভাবনা দিলে একদিনেই বিশুদ্ধ হয়। মৎস্থাদির পিত্ত শোধনপ্রণালীও এইরূপ।

[মৎক্তপিত্ত দেখ।]

বরাহপুরাণ (ক্লী) বরাহপ্রোক্ত একথানি মহাপুরাণ। [পুরাণ শব্দে বিস্তৃত বিবরণ দেখ।]

বরাহভূম (বরাহভূমি), মানভূম জেলার অন্তর্গত একটা গও-গ্রাম ও পুলিদ থানা। এই নামে এপানে একটা পরগণাও আছে। বরাহমাংস (ক্লী) শৃক্রমাংস, বহু ও গ্রাম্যভেদে হুই প্রকার। বহু বরাহ মাংসের গুণ—গুরু, বাতহর, বৃষা এবং বল ও স্থেদ-কর। গ্রাম্য বরাহ মাংস—গুরু, মেদ, বল ও বীর্যবর্দ্ধক।

"বরাহমাংসং শুরুবাতহারি রুদ্ধং বলক্ষেদকরং বনোখন। তথা শুরুহ গ্রামবরাহমাংসং তনোতি যেদোবলবীয়ারুদ্ধি।"

(রা**জ**নি৽)

বরাহমিহির, ভারতে যত জ্যোতির্বিদ্ জন্মগ্রহণ করিয়াছেন, তন্মধ্যে বরাহমিহিরকেই সর্বপ্রধান বলিয়া সকলে মনে করেন। সাধারণের বিখাস, বরাহমিহির রাজা বিক্রমাদিত্যের নবরত্বের মধ্যে একজন। এসম্বন্ধে জনেকেই জ্যোতির্বিদাভরণের এই শ্লোকটী উদ্ধৃত করিয়া থাকেন—

"ধ্বস্তবিদ্দাপৰামরসিংহশত্ব-বেতালভট্টণটৰ্ম্পরকালিদাসা:।

ল্যাতো বরাংমিহিরো বূপতে: সভারা: রছানি বৈ বরুক্তিন বিক্রমন্ত ।"

অনেকের বিশ্বাস, রঘুবংশ, কুমারসম্ভব প্রভৃতি প্রণেতা কবি
কালিদাস উক্ত জ্যোতির্বিদাভরণের রচরিতা, স্কৃতরাং তিনি বরাহমিহিরের সমসাময়িক বটেন। প্রমাণস্থলে জনেকে জ্যোতির্বিদাভরণ হইতে এই প্লোক্টাও উদ্ধৃত করিয়া থাকেন—

"বংগ: সিশ্বরণর্শনাদরগুলৈ-(৩০৬৮) বাতে কলো সংখিতে দাসে ধাধবসংক্ষিতে চ বিহিতো এছক্রিয়োপক্রমঃ ॥"

উক্ত প্লোকাল্লসায়ে ৩০৬৮ গত কলালে বা ২৪ বিক্রম-সংবতে জ্যোতির্বিদাভরণের রচনাকাল হইতেছে, কিন্তু পরে জ্যোতির্বিদাভরণের মধ্যেই— শাক্ষ পরাভোবির্গোবিতো হতো নাক বতকৈরবাপেকা: হাঃ ।"
ইত্যাবি হলে ৪৪৫ শকের উল্লেখ একা "মন্থা বরাহমিহিরাদিমতেঃ" ইত্যাবি প্রসন্ধ পাকার জ্বোতির্বিদাতরপকে খৃঃ পূর্ব প্রথম
শতাবীর প্রন্থ অথবা এই প্রহের প্রমাণ অন্নসারে বরাহমিহিরকে
নবরম্বের একটা রম্ব বলিরা শীকার করা বার না।

আবার কেহ কেহ ব্রহ্মগুপ্তটাকাকার পৃথ্যামীর দোহাই
দিয়া এই বচনটা বলিয়া থাকেন—

"नवांतिकशक्याकारवागात्क वज्ञाविविज्ञाहारवा। जिवर शक्कः।"

ে ৫০৯ শকে বরাহমিহিরাচার্য্য স্বর্গগমন করেন। সংস্কৃত
ক্সুহিত্যের ইভিহাস-দেখক প্রসিদ্ধ প্রস্থাপ পণ্ডিত বেবের্ন(Weber)
আমরাজের দোহাই দিরা উক্ত ৫০৯ শক গ্রহণ করিরাছেন।
কিন্তু আশ্চর্য্যের বিষর গ্রই বে, পৃথুসামী বা আমরাজের
টীকার গ্রুত্রপ কোন কথার আভাস নাই।

আবার হলমঞ্জরীর দোহাই বিরা কোন কোন মহারাষ্ট্র-ল্যোতিবিদ এই বচনটা পাঠ করিয়া থাকেন,—

> "ৰাতি জীনৃপাহৰ্যসম্প্ৰকাৰক বাতে বিবেদাৰ্থন-ত্ৰৈমানান্ধমিতে গুনেহনি কৰে বৰ্ধে বসন্তাদিকে এ" "চৈত্ৰে বেতৰলে গুলে বস্তুতিধাবাদিত্যদাসাক্ষ্ণ্-ব্যোক্তে নিশুগো ব্যাহনিহিন্তে বিশ্বো ববেমানিতিঃ ॥"

অর্থাৎ ৩০৪২ যুধিষ্টিরের অবদ বা ২ বিক্রমসংবতে চৈত্র
মাদে আদিত্যদাদের ঔরসে পূর্যোর আদীর্কাদে বেদান্সনিপুণ
বরাহমিহির জন্মগ্রহণ করেন। ছঃথের বিবর, এই লোকটীও
কোন প্রাচীন জ্যোতিপ্রহি না থাকায় বিধাস্যোগ্য নহে। *

স্থতরাং দেখা যাউক, বরাহমিহির আপেনার গ্রন্থে কিরপ পরিচয় দিয়াছেন। জাঁহার বৃহজ্জাতকের উপদংহারাধ্যারে লিখিত আছে—

"আদিত্যদানভদরত্তদৰাধ্যবোধঃ কালিখকে সবিজ্ঞানবরপ্রসাধঃ। আবস্তুকো মুনিমতাক্সবলোক্য সমাগ্র হোরাং বরাছমিহিরো কচিরাং চকার ঃ"

উক্ত লোকান্থনারে বরাহমিহিরের পিতার নাম আদিত্যদান,
তিনি অবতীবাসী। কাপিথ নামক স্থানে তিনি স্ফাদেবকে
প্রসন্ন করিয়া বরলাভ করিয়াছেন। পঞ্চসিদ্ধান্তিকার রোমকসিদ্ধান্তের অহর্গণ ছিন্ন উপলক্ষে বরাহমিহির নিথিয়াছেন—

"সপ্তান্ধিৰেলসংখ্যা সক্ষকালমণাক্ত চৈত্ৰগুক্লাদোঁ। অস্কান্তন্মিতে ভানৌ ব্যৱসূত্ৰে ভৌষদিবদাদাঃ ॥"

উক্ত প্লোক অনুসারে, ৪২৭ শকে চৈত্র শুক্ত প্রতিপদ্ মক্ষণবার পাওরা বাইতেছে। নিজ সমর ধরিরাই জ্যোতির্বিদ্যাণ অবর্গণ ছির করিরা থাকেন। এরপ ছলে আমরা বরাহমিহিরকেও ঐ সমরের লোক বলিরা ছির করিতে গারি। একেশ বরাহমিহির ও ধনা সক্ষে অনেক গল প্রচলিত আছে। কেহ বনাকে করাহমিহিরের কলা, কেহ বা পত্নী, কেহ বা পূত্রবপূ বলিরা মনে করেন। কিছ ঐ সকল অভ্যান বা প্রবাদের বৃলে কিছুমাত্র ঐতিহাসিক সভ্য আছে বলিরা মনে করি না।

বরাহমিহির তৎপূর্কবর্ত্তী পাঁচগানি সিছাত্তের আগ্রন্থ করিছা পঞ্চসিছাত্তিকা রচনা করেন। ঐ পঞ্চসিছাত্তের নাম—

্রেদীলিশ-রোমক-মানিউ-নৌর-গৈতাবহাত পঞ্চান্দান্তা: 🕆

পৌলিল, রোমক, যাসিঠ, সৌর ও লৈভামহ এই পাচবামি সিছাস্ত।

বাসিঠ ও পৈভামহ এই ছইখানি সিদ্ধান্ত আলোচনা করিরা জ্যোভিঃশান্তের ইভিত্ত-দেখকগণ বঃ পূর্ক ১০শ শভাকীর সিদ্ধান্ত বিগরা বীকার করেন। কিছু পৌলিশ ও রোমক এই ছইখানির নাম দেখিরা অনেকে মনে করেন বরাহবিছির প্রাচীন পাশ্চান্তা জ্যোভিবেরও সাহাব্য গ্রহণ করিরাছিলেন।

পৌলিশসিদ্ধান্তে বৰদপুত্ৰ বা আনেক্জান্তির হইতে দেশান্তর গৃহীত হইরাছে। এদিকে আবার রোমকসিদ্ধান্তে গত দিনসংখ্যানির্পর্যাধ্য বরনপুরের মধ্যাক্ত ধরা হইরাছে।

প্রানিষ্ক মুসলমান পশুত অল্বীক্ষণী লিখিরাছেন, পৌলিশ সিছান্ত বুনানীর পৌলনের রচনা। তলক্সারে কেহ কেহ মনে করেন বে, গ্রীকভাবার Paulus Alexandrinus এর বে জ্যোডিপ্রান্থ আছে, পৌলিশসিছাত্ত ভাহারই সংস্কৃত অন্তবাদ; কিছ
বাহারা উক্ত গ্রীক্প্রছ মিলাইরা দেখিরাছেন, ভাহারা বলেন বে
গ্রীক্প্রছের সহিত উহার কিছুমাত্র মিল নাই। বিশেষতঃ পৌলিশ
সিদ্ধান্ত একখানি ছিল না। প্রন্ধসিদ্ধান্তের টাজাভার পৃথ্নক
ও ভট্টোংশল পৌলিশসিদ্ধান্ত হইতে কতকগুলি প্লোক উদ্ভৃত
করিরাছেন, ঐ সকল প্লোকের সহিত পঞ্চনিদ্ধান্তিকার অন্তর্গত পৌলিশসিদ্ধান্তর কোনরূপ ঐক্য নাই। সৌর ও আর্ব্যভটসিদ্ধান্তর মতের সহিত বরং মিল আছে।

রোমকসিভাত নাম ওনিরাও অনেকে দ্বির করিবা বসিরা-ছেন বে, আনেক্জান্তিরার প্রানিভ জ্যোতির্বিদ্ টলেমীর মূল গ্রন্থ অবলবনে সংস্কৃত ভাবার রোমকসিভাত রচিত হইরাছিল। কিন্তু ব্রন্ধগুরের ব্রন্ধসিভাত পাঠ করিলে ভাহা মনে হর না। লাট, বলিন্ন, বিজ্ঞানন্দী ও জার্যভট এই চারিজনের গণনা ভিত্তি করিরা জীবেশ রোমকসিভাত রচনা করেন। ভট্টোৎপল ও জল্বেকশীও ভাহাই বিদিরাছেন।

⁽১)" বৰবাজনলা নাডাঃ সন্তাপন্ত্যান্তিভাগসংৰ্কাঃ। বানাপনাং নিকৃতিঃ নাবৰসকল ৰক্ষানি ঃ" (পক্ষীবাজ্বিকার পৌনিব)

শহর বাদরুক্বীকিত রচিত "ভারতীর জ্যোতিশোর" এইবা।

বরাছমিহির বে ৫ থানি সিছাত্তের আলোচনা করিরাছেন, তন্মধ্যে সৌর বা স্থাসিছাত লমালোচনা করিরা জ্যোতিবিকাপ প্রমাণ করিরাছেন যে, এই সিছাত্তথানি শকাকারত্তের সময় সকলিত হইরাছিল, তৎপূর্বে পৌলিশ এবং পৌলিশের পূর্বের রোমক্সিছাত্ত রিছিল, তৎপূর্বের পৌলিশ এবং পৌলিশের পূর্বের রোমক্সিছাত্ত রিছিলন। তাঁহার গ্রন্থ এখন বিস্তা। তাঁহার পরিদর্শনকাল লইরা টলেমি প্রায় ১৫০ খুটাব্দে বীর গ্রন্থ রচনা করেন। তাঁহার গ্রন্থের সহিত রোমক্সিছাত্তের মিল নাই। এরূপ ক্লে তাঁহার বছপূর্বের রচিত রোমক্সিছাত্ত হিপাক্সের গ্রন্থ দেখিল। সভলিত হইরাছে এরূপ কণাও বলিতে পারা যার না।

এই মাত্র বলিতে পারি বে, বরাহমিহির ঘবনাচার্য্যগণের মতও উপেকা করেন নাই। তাঁহাদের মত গ্রহণ করিয়াছেন। পঞ্চসিদ্ধান্তিকা বাতীত তিনি বৃহৎসংহিতা, বৃহজ্ঞাতক, লঘুলাতক প্রকৃতি বহু জ্যোতিগ্রন্থিও তিনি রচনা করিয়া গিয়াছেন।

এতপ্তির আর্ক্টভাতক, কালচক্র, ক্রিয়াকৈরবচন্ত্রিকা, জাতক-কলানিধি, জাতকসরলী, জাতকসার বা লখুভাতক, দৈবজ্ঞবন্ধভা, প্রশ্নচন্ত্রিকা, বৃহদ্ধবর্গ, বৃহদ্ধাত্রা, ময়ুর্চিত্রক, ময়ুর্ক্তগ্রন্থ,বোগবাত্রা, যোগার্ণব, বটকলিকা, সারাবলী ও বরাহমিহিরীয় নামক কএক থানি এছ তাহার রচিত বলিরা প্রচারিত আছে।

বরাহ্মিছির, একজন জ্যোতির্বিদ্। ইনি সম্রাট্ অকবর শাহের স্থসাময়িক।

বরাহমূকা (ত্রী) মৃক্তাভেদ। [মৃক্তাশন্ধ দেখ।]
বরাহমূল (ক্রী) কান্মীরছ জনপদভেদ। এথানে বরাহরূপী
বিষ্ণুমূর্তি প্রতিষ্ঠিত ছিল। [কান্মীর দেখ।]

বরাহ্যু (a) বরাহ-ইচ্চুক, শুকরাভিলাধী কুরুর। "বরাহযু-বিশ্বসাদিজ উখর:।" (ঋক্ ১০৮৬।৪) 'বরাহযুর্বরাহমিচ্চন্ধা'

বরাহবং (অবা) বরাহসদৃশ বা তদক্রণে।

বরাছবপুষ (ক্রী) বরাহের দেহ (আ) বরাহদেহধারী।

বরাহশশ্মন্, ক্যোতিরম্প্রণেডা।

বরাহশিশ্বী (ত্রী) শ্করভোজ্য শিশী।

বরাছশিলা, হিমালরশিধরত্ব একটা পৰিত্র হান।

বরাহশৃঙ্গ (গুং) শিব।

वज्राहरेनल (११) नर्सक्रक्ष ।

বরাহসংছিতা (ত্রী) ১ বরাহমিহিরবিরচিত জ্যোতিপ্রস্থিতদ, বহুৎসংহিতা। ২ শ্রীকৃষ্ণের বৃশাবনদীলাজ্ঞাপক একখানি গ্রন্থ।

বরাহস্বামিন্ (পু:) পৌরাণিক রাজভেদ।

वज्राञ्जी (बी) क्यनवी। (देवक्रि॰)

বরাহাদ্রি (গুং) বরাহ পর্বত।

বরাহাবতার (গং) বিষ্ণুর অবভারতেন। [বরাহ দেব।]

বরাহাত্ম (গৃং) দৈত্যবিশেষ।

বরাহিকা (জী) কপিকছে। (রাজনি•)

বরাহী (ত্রী) বরাহো ভক্ষকমেনান্তাক্তেতি বরাহ-ক্সচ্পৌরা-দিয়াও ত্রীব্। ১ ভদ্রস্তা। ২ প্করকন্দ। ০ অখগদা। ৪ রুফচটকা। (বৈজকনি•)

বরাস্ত্রান্ত (পুং) ১ প্রধান শত্রুর ঘাতক, ২ উত্তম বৃষ্ট্যুদকহস্তা।
"অরোদক্রোন্ বি ধাবতো বরাহূন্।" (ঝক্ ১৮৮৮৫)

'বরভ উৎকৃষ্টভ শত্রোইস্কতৃন্।' (সারণ) ৩ হবির্ভক্ষিতা। ব্যারক, প্রাচীন স্কাতিবিশেষ।

বরিত্ (তি) > আঞ্চাদনকারী। ২ পছনকারী।

বরিন্ (পুং ক্লী) বিশেদেবাদির অন্তর্গত দেবতাভেদ। (ভারত) বরিমন্ (ত্তি) > বিছতি, ব্যান্তি, পরিধি। (ঝক্ ১া৫৫।১)

২ বরতম, শ্রেষ্ঠ, উৎক্লষ্ট, মহস্বযুক্ত, বরিষ্ঠ।

বরিয়া (বারিয়া), বোষাই প্রেরিডেঙ্গীর গুজরাত প্রদেশের রেবাকাছা বিভাগের অন্তর্গত মিত্ররাজা। অক্ষান্ত ২২°২১ হইতে ২২°২৮ জঃ এবং দ্রাঘিন ৭৩°৪১ ইইতে ৭৪°২৮ প্রমধা। ইহার পূর্ব্ধ ও পশ্চিমে ইংরাজাধিরত পঞ্চমহল বিভাগে, উত্তরে সঞ্জেশী ও স্থাত নামক সামস্তরাজা এবং দক্ষিণে ছোট উদযপুর। ইহার দৈর্ঘা উত্তর দক্ষিণে ৩০ মাইল এবং বিজ্তি ৮১৩ বর্গমাইল। এই সামস্তরাজাের দক্ষিণে ও পূর্ব্ধভাগ পর্যত্তনময় এবং রক্ষিকপুর, ছধিয়া, উমারিয়া, হাবেলী, কাকদথিলা, শাগতালা ও রাজগড় নামক ৭টী উপবিভাগে ইহা বিভক্ত, এই সকল উপবিভাগ ও পূর্ব্বক্থিত পর্বতের অধিকাংশ স্থানই জন্তানিবন্ধন এই স্থান নানা রোগের আকর হইয়াছে। বনভাগে শাল বৃক্ষ আছে। চালবাসের মধ্যে কলাই ও তৈলকর শক্তই প্রধান।

প্রধানকার সন্ধারগণ চৌহানবংশীর রাজপুত। ১৯৪৪ খুটান্দে মুসনমান সেনাকর্ত্তক তাঁহারা লাক্ষিণাভিমুখে বিভাজিত হইরা চল্পানের হুর্গ অধিকার করেন। এথানে তাঁহারা প্রায় সার্জবিশতাক্ষকাল রাজ্য করিবার পর ১৪৮৪ খুটান্দে শুর্জরপতি মহম্মদ বৈগাড়া কর্ত্তক রাজ্যন্তই হইলে রাজ্যের বনাস্তরাল প্রদেশে আসিরা উপনীত হইলেন। অবশেবে একটা বংশ ছোট উদরপুরে এবং অপরটা বরিষার রাজ্যাট স্থাপন করেন। ১৮০৩ খুটান্দে সিন্দেরাজের বিক্রমে সহায়ভা করার এখানকার সামস্তরাজ ইংরাজের বিশেষ অন্তর্গ্রহ এবং ইংরাজ প্রবর্শন বিরয়াভীল সেনাধল রক্ষার কর্ত্ত সন্ধারকে মাসিক ১৮৮০ টাকা দিবার ব্যবস্থা করেন। এখানকার সামস্তরাজ ব্যেকগছ বিরয়ার বহারাক্ষ বিশেষ । এখানকার সামস্তরাজ ব্যেকগছ

বর্ত্তমান সামস্তরাজ ইংরাজ গবমে কৈ বার্থিক ৯৩০০ টাকা কর দিরা থাকেন। জ্যেষ্ঠ পুত্রই পিতৃসম্পত্তির একমাত্র অধিকারী, কিন্তু দক্তকপ্রহণে রাজাদের অধিকার নাই। রাজার সেনাসংখ্যা ২৬০ জন। তিনি ইংরাজরাজের নিকট হইতে মাস্তস্টক ১০৮ তোপ পাইরা থাকেন। পালটিকাল এজেকেটর সহিত পরামর্শ ব্যতীত তিনি অপরাধীদিগক্তে প্রাণদণ্ডে রভিত করিতে পারেন। রাজার বারে ১৫টা বিলালর ও একটি চিকিৎসালর পরিচালিত হইতেছে এবং শুজরাত হইতে মালব পর্যান্ত বে রাজা গিরাছে, তাহার যে অংশ এই রাজ্যের মধ্য দিয়া গিরাছে তাহা এবং আরও কএকটি রাজা পাকা করা হইরাছে।

উক্ত সামস্তরাজ্যের প্রধান নগর। বড়োদা রাজধানী
 হইতে ২৫ ক্রোশ উত্তর পূর্বে অবস্থিত। অকা• ২২°১৪ উঃ
 এবং দ্রাঘি• ৭৩° ৫৬´ ৩০´ পূঃ।

বিরয়ু, মার্ভাষানবাসী একজন বণিক্, প্রকৃত নাম মগছ। খ্যামনরাজের অন্থ্যহ লাভ করিরা তিনি ক্রমে তথাকার একজন আমাতা হইরা উঠেন। রাজা কার্যাবশতঃ স্থানান্তরে গমন করিলে, তাহাকে রাজধানীর শাসনকর্তা করিয়া বান, এই সময়ে তিনি খ্যামরাজক্যাকে অপহরণ করিয়া মার্ভাবানে পাসাইয়া আসেন এবং তথাকার পাসনকর্তা আলেইন্মাকে বিনাশ করিয়া মার্ভাবানের শাসনকর্তা হন। ১২৮১ খুটাকে খ্যামরাজ ভাঁহার পার্ধিকার স্বীকার করেন। এই সমর হইছে ইতিহাসে তিনি রাজা বরিয়ু নানে পরিচিত। অতঃপর বরিয়ু কানপালানি রাজা জয় করিয়া রাজকন্তার পাণিগ্রহণপূর্কক আপনার শাসনশক্তি বিস্তার করিয়াছিলেন। তিনি চীনসেনার অত্যাচার হইডে পেগুরাজকে রক্ষা করিবার জয়্য সেনা সাহাব্য ফরিয়া ছিলেন, কিছ অচিরে উতয় রাজার বিয়োধ উপস্থিত হওয়ায়, তিনি পেগুরাজ্য অধিকার করিয়া লন। ১২৮২ খুটাকে তিনি মার্ভাবন নগরে শমর্থিরেন্না" পার্গোল স্থাপন করিয়া যান।

বরিবস্ (ত্রি) > অস্তরীক । "এবশ্বনাঃ বরিক্তনাঃ" (বাজসনের স • ১:18) বরিবঃ প্রভামগুলেন ব্রিয়ত ইতি বরিবোহস্তরিক্ষশ্ (মহীধর) ২ খন । "হুধা দেবেভ্যো বরিবশুকর্থ।" (পক্ ১)৫৯/৫) বরিবোহস্ট্রেরপঞ্জং ধনং' (সারণ) ও পূলা, শুক্রবা ।

বরিবস্কৃত্ (জি) ধনকর্জা। "এব ইক্রো বরিবস্কৃৎ" (ঋক্ ৮/১৬/৬)
'বরিবস্কৃৎ ধনক্ষ কর্জ্য' (সারণ)

বরিবস্তা (জী) বরিবদ: পৃঞ্জার: করণম, বরিবদ-কাচ্। (নমোবরিবদশ্চিঞ: ক্ষাচ্। পা ৩১১১৬।) ভড: ক্ষা,ভভটাপ্। ৩ জার। "হবে বরাং রমিবজা গুণানো" (ক্ষ্১১৮১১)

বরিবস্থিত (বি) বরিষকা গঞ্জাতা অন্ত তারকানিফানিতচ্। অথবা বরিবক্ত-জ, (কাজ বিজাবা। পা অঞাংক) পক্তে বলোগা- ভাষ:। উপালিভ, বাহাকে উপাদনা, গুলাবা বা দেবাকরা হইরাছে। (অনন) ব্যাবোদ (জি) ব্যাবং ধনং ন্যাজীতি ব্যাবন্-না-ক। ধন-দাতা। (শুরুবকু: ১৭১৪)

ব্রিলোধা (তি) ধনদাতা। "শ্রেষীদানং বরিবোধায়তি প্রবঃ।"
(থক্ ১৷১১৯৷১) 'বরিব ইতি ধনং নাম বরিবসো ধনভ লাতারম্।' (সারণ)

বরিবোবিদ্ (র্ত্তি) ধনলন্তরিতা, বিনি ধন লাভ করাইরা বা পাওরাইরা দেন। 'বিদু, লাভে, আন্নানন্তর্ভাবিভণ্যর্থাৎ কিপ' ইনি (ঝক্ ১/১০৭/১ ভারে নারণ)

वृतिनी (जी) विजित्ती। (असत्रका॰)

ব্রিষ (রী) র্-সঃ বাছলকাৎ ইট্। বৎসর। (শব্দর্যা৽)

'বর্ব: ভাদ্বরিবোহপি চ' (উজ্জনগত্তগ্বত্ত)

বরিষা (খ্রী) র-সং বছৰচনাৎ ইট্। বর্ষা। (ছিরপজোন)
বরিষাপ্রিয় (প্রং) বরিষা বর্ষা প্রেরা বন্ধা। চাতকপন্সী। (শন্তরজান)
বরিষিতে (দেশন্য) বর্ষণ করিতে, বৃষ্টি করিতে, ছড়াইরা দিতে।
বরিষ্ঠ (ক্রী) অভিশয়েন বরমিতি বর-ইটন্। তাম, তামা।
"রক্তং বরিষ্ঠা মেজাধাং তামা শুৰম্ভূবরম্।" (বৈভকরদ্মালা)
২ মরিচ। (মেদিনী)

ব্রিষ্ঠ (অ) অরমেষামভিশরেন বর উরুব'। ইটন্। প্রিয়-ভিরেতি ব্রাদেশঃ। ১ বরতম।

"হত্বা স্বরিক্থস্পৃধ আততারিনো

যুধিটিরো ধর্মস্তাং বরিষ্ঠ:।" (ভাগবত ১।১•।১)

২ উক্তম। (ধক্ ৪।৫৬)>) ৩ বংস। (জন্ম) ব—ইর্চন, পুং। ৪ তিতিরিপকী। ৯৫ নাগরক বা নারক বৃক্ষ। চলিত নারাকা লেব্র গাছ। (রাজনি•) ৬ চাকুষ মন্ত্র পুত্র।

"বরিছোঁ নাম ভগৰান্ চাকুষত মনোঃ স্থতঃ **॥**"

(ভারত ১৩২৮।২•)

৭ ধর্ম-সাবর্ণি মনতারের জনৈক ক্ষমি।

"হবিয়াংশ্য বরিষ্ঠশ্য পাঠিরক্তভাগান্দশিঃ।

নিশ্চরশ্যানহাদেব রিষ্টিশ্যাক্তো মহামুনিঃ
সংঘর্ষরে ভিত্মির নিনেবশ্য সন্তমঃ ॥"(মার্কি পু০৯ ৪1১৯)

৮ দৈতাবিশেষ।

"বরিষ্ঠশ্য গরিষ্ঠশ্য ভূতশোক্ষাবনোবিভূঃ।

সংগ্রাদ্ধ কিরীটা চ পাঠীকাজে। মহাস্ক্রম্য ॥" (ক্রিব্রু ১০১১১০০)

স্থপ্রসাদ: কিরীটা চ শ্চীবজ্যে বহাসের: ॥" (হরিব॰ ১৩২।১৩।)
বরিষ্ঠা (ত্রী) > স্থাদিতাভকা, হড়হড়ে। (রাজনি॰) ২ হরিজা।
(বৈদ্যকনি৽) ৩ গুরুভেষ (Polasins Icosandra)
ক্রিক্তিক (ত্রি) ব্রভ্যান (ক্রের্ছ গ্রীষ্টার।

ব্রিষ্ঠক (তি) বরতম। শ্রেষ্ঠ, গরীরান্। ব্রিষ্ঠাঞ্জম (গ্রং) স্থানবিশেষ।

ব্রিহিষ্ঠ (ক্লী) উনীর। ২ বালক, চলিত বালা। (কুল্লেড° চিকি॰ ১৮ অ॰) বরিহিন্তমূল (রী) উদীয় মূল। (স্থক্রত চিকিৎসিত ছান১৮স॰) বরী (রী) রুণোডীতি বৃ-পচাদ্যচ পৌরাদিছাৎ তীব্। শতাবরী (অনর) ২ স্থাপদ্ধী। (ত্ৰিকা•) ৩ লঘুৰতাবরী। ৪ মহাৰ্ভাবরী। (বৈশ্বক্রি॰) ৫ বাজীকামাগ্রিসন্দীপনরস। वद्गीकु (बि) जाम्हाननकात्री। जाम्हानक। বরীতাক (গং) দৈত্যভেন। (মহাভারত) বরীদাস (পুং) গৰ্ম নারদের পিতা। বরীধরা (জী) ছলোডেন। ইহার ১ম ২য় ৩৪ ৪র্ব চরণে ১১টি व्यक्त व वर ३, २, ८, ८, ৮, ১०, ১১ वर्ग खरू ७ व्यनव गण्। তর চরণে ১, ৩, ৬, ৭ ও ৯ লঘু এবং তত্তির বর্ণ গুরু। वदीयम् (वि) शतिथि, विष्ठि। [वित्रमन् १९४] বরী[য়স্]য়ান্ (তি) অন্ননরোরতিশরেন উর্কর্রো বা ঈশ্বস্থন্। প্রিরন্থিরেডি বরাদেশঃ। ১ শ্রেষ্ঠ। "বরীয়ানের তে প্রশ্নঃ ক্লতো লোকহিতো নূপ।" (ভাগবত ২।১।১) ২ বরিষ্ঠ। ৩ অতি যুবা। (মেদিনী) (পুং) ৪ বিক্স্তাদি সপ্তবিংশতি বোণের অন্তর্গত আইাদশ যোগ। এই যোগে জন্মিলে মানৰ দ্যালু, দাতা, ত্মন্তর, স্থবেশ, সৎকর্মকারী, মধুরক্ষভাব এবং ধন-জন-বল-সম্পন্ন হয়। "দাতা দরালুঃ স্নতরাং স্থবেবঃ, সংকর্মকর্জা মধুরত্বভাব:। नद्रा वनीवान् धनवान् बनारछा বোগো বরীয়ান্ বদি কমকালে।" (কোটীপ্র-) ৫ পুলহের পুত্র। (ভাগৰত 🕬। ১। ৩৪) জিলাং ভীব্। বরীর**দী শভ**মূলী। (রাজনি•) चत्रीवर्षः (११) वनीवर्षः (अमत्रजिका तमानाध) বরীরুত (ত্রি) পুনঃ পুনঃ আবর্তন। वतीयु (११) कामान्त । (जिका •) বরু (পুং) ১ রাজা। ২ সকলের বরণীর। (ৰক্ চা২৩া২৮ সারণ) ব্যুদ্ধ (গুং) কুধাছাভেদ, বয়ক, চীনাধান। (স্থঞ্জত হ॰ ৪অ॰) वक्रेष्ठे (शूर) क्रम्बाफि-वित्मवं, बक्कु । 'পুলিলা নহলা নিষ্ট্যা: প্ৰরা বল্টা ভটা:। মালা ভিলাঃ কিরাডাশ্চ সর্কোহণি মেচ্ছমাভরঃ ম' (হেম) বরুড় (পুং) মীচ ৰাভিবিশেব। পরাশরপভতিমতে কৈবর্ত্তের ক্সাগর্ত্তে এবং লৌভিকের উরসে এই আভির উৎপত্তি হইয়াছে। **''কৈবৰ্ডকণ্ঠ কন্তারাং নৌভিকাদেব** সৌচিকঃ। मोहिका९ भौषिकाकारका महो। वक्क अब ह ॥"

वाहे काफि ज्ञान मर्था भंगा।

"রঞ্জকশ্রকারণ নটো বন্ধু এব চ।
কৈবর্তমেদভিন্নাশ্চ সথৈতে চান্ধানাঃ শ্বতাঃ ॥"(প্রারশ্চিন্ধতন্ত)
রান্ধণ অঞ্জানতঃ বদি এই লাভির স্ত্রীগমন করে এবং
ইহাদের অরভোকন বা ইহাদের নিকট প্রতিপ্রাহ করে, ভাহা
হইলে পতিত হয়, আর আনপূর্বক করিলে ঐ সকল
লাভির সমতা প্রাপ্ত হয়। অঞ্জানপূর্বক পাণাত্মভানে প্রায়শ্চিত
করিলে পাপের শান্তি হইরা থাকে।
"এতেবান্ধ রিরো গন্ধা ভূক্বা চ প্রতিগৃত্ব চ।

পততাজানতো বিব্রো জানাৎ সামন্ত গছতি॥" (প্রারশিস্ততন্ত্র)
বরুণ (প্র:) রুণোতি সর্কাং ব্রিরতে অভৈরিতি বা বু-উনন্
(ক্লাফিডা উনন্। উণ্ ও।১৪৪) > দেবতাবিশেষ, অদিতির
গর্ডে কঞ্চণ হইতে উৎপন্ন। শ্রীমন্তাগরতে লিখিত আছে,
চর্ষী নামী পদ্মীর গর্ডে ভ্রু ও বালীকি নামে ইহার ছই
প্র ক্ষেন্থ। ইনি পশ্চিমদিক্-পাল এবং জ্বলের অধিপতি
বলিয়া প্রভিত। পর্যায়—প্রচেত্তন্, পানিন্, য়াদশাশ্গতি,
অপ্লতি, বাদঃপতি, অপাশ্শতি, জব্ক, মেঘনাদ, জলেখর, পরঞ্জর,
দৈতাদেব, জীবনবাস, নন্দপাল, বারিলোম, কুণ্ডলিন্,
রাম, সুখাদ। (জটাধর)

জনাশরোৎসর্গ প্রভৃতি অষ্ঠানে বরুণদেবের পূজা করিতে হর। হরণার্বপঞ্চরাত্রে ইহাঁর পূজা পদ্ধতি বিধিবদ্ধ হইরাছে। পূজাকালে মূর্ত্তি নির্মাণ প্রয়োজন। পৃত্তা কংল রম্বরাজি দিরা বরুণমূর্ত্তি নির্মাণ করিয়া লইতে হর। ইহাঁর চুই ভুজ, ইনি হংসপুঠে আসীন। ইহাঁর দক্ষিণহন্তে অভয় এবং বামহন্তে নাগপাশ। বামভাগে জনরাশি এবং দক্ষিণে ইহাঁর পূত্র পূজ্র। ইনি নানা নদনদী, নাগ, জনধি ও বিবিধ জনজন্ত নারা পরিষ্ত । জনাশরের তীরে বা প্রাক্তাণে বরুণদেবের এইরুণ মূর্ত্তি নির্মাণ করিরা পরে প্রতিষ্ঠান্তে অর্চনা করিবে। (১) ইহাঁর ধ্যান ব্যা—

"প্রসন্নবদনং সৌমাং হিমকুন্দেশুসন্নিভম্। সর্বাভরণসংযুক্তং সর্বাকশনক্ষিতম্ ৪

(১)"লথ বাণ্যাবতঃ কুঠাং প্ৰদানভাবিনিধিতন্। বিভূলং বংসপৃত্তিহং বন্দিশেলাভানধন্য ভ বানেল বাগণাপত্ত থালনভং বংভাগিলন্। সনিলং বাঘবাভোগং কালনেব্যাব্যাম্পতিং ভ বানে ভূ কালনেত্বিং বন্দিশে পূক্ষং ভক্তন্। বানেৰ বিভিন্নভাতিঃ সন্তা

কিরণৈঃ শীতলৈঃ সৌমোঃ প্রীণয়ন্তমবন্থিতম্। লবণ্যামৃতধারাভিত্তপরস্থমিব প্রকা:। वाखरः ननमाक्राः भागवाधाकवः ७७म्। श्रुकतारेमार्गरेनः मर्टकः ममञ्जाद भविवाविकम् ॥ গোর্য্যা কাস্ত্র্যা চাম্বগতং নদীভিঃ পরিবারিতম। नारेशर्यारम् शिरेषयुक्तः बाक्षशासिव हाशब्रः ॥ रुष्टिमःशांत्रकर्खातः नातात्रगमिवाभत्रम् ॥" এইরূপ খ্যান করিয়া পরে পূজা করিতে হইবে। रक्राव मह-७ (व)। "অপ্তাবিংশান্তবীজেন চতুর্দশন্বরেণ চ। অর্দ্ধেন্দুবিন্দুর্ক্তন প্রণবোদ্দীপিতেন চ।" (হয়নীর্বপঞ্যাত্র) প্রতিমায় প্রাণ প্রতিষ্ঠা করিয়া প্রণব দারা নিবোধমূলা প্রদর্শন করিতে হয়। অবুর্চ ও মৃষ্টি অন্তর্গত করিলেই নিবোধ-মুক্রা হইয়া থাকে। পরে পাশমুদ্রায় দেবতার সারিধ্য করিয়া शक, भून्न, धून, नीन ७ निरवन्तानि बाता भूका कतिएक इत । শপ্রতিমারাং ন্তিতিং কৃতা প্রণবেন নিবোধরে**ং**। পুরুরেদগৰপুশাদৌ: সারিধাং পাশমূদ্রা ॥" (हत्रनीर्व)

বৰুণের নমস্কার-মন্ত্র থথা —

"বৰুণো ধবলো বিষ্ণু: পুৰুষো নিমগাধিপম্।

পাশহন্তো মহাবাহস্তবৈ নিতাং নমো নমঃ ।"(জ্জাশরোৎসর্গত্য)

দেশে অনাবৃষ্টি দেখা দিলে বরুণার্চনা ও বরুণমন্ত্র জপে সুবৃষ্টি হয়। আনাবৃষ্টির কারণ বরুণার্চনা করিতে ইইলে তথন স্বতন্ত্র ধ্যান আছে। সেই ধ্যানে বরুণের রূপ চিন্তা করিয়া ভাষাকে নমস্কার করিবে।

"পুষরাবর্ত্তকৈমৈ হৈঃ প্লাবয়ন্তং বহুদ্ধরাম্। বিহাল্গার্জিভসরদ্ধং তোরাস্থানং নমাম্যহন্॥ যন্ত কেলেষু শীমৃতো নদ্যঃ সর্ব্বাদসন্দির্। কুক্ষো সমৃত্রাদত্বারস্তকৈ তোরাস্থনে নমঃ॥"

এইরপ ধ্যান করিরা মানসোপচারে বরুণকে আরাধনাপূর্কক মৃল মন্ত্র জপ করিবে। জপের পূর্কে বিনিয়োগ করিয়া
লইতে হর। বথা—"প্রজাপতির্ম বিছ্টু প্ছলো বরুণো দেবতা
এতাবদ্রাষ্ট্রমভিব্যাপা স্থর্টার্ফ জপে বিনিয়োগঃ।" মন্ত্র শুরুল মুখ হইভেই জানিরা লইতে হর। সেই মন্ত্র বথা—-

"ওঁ বৃষ্টিরিহানাব্যন্তররো মক্সতাম্পৃশতীং
গচ্ছ বশাপন্নির্দ্ধ দিবং গচ্ছত তেনো বৃষ্টিমাবহ ॥"
এই মন্ত্র সহজ্ঞবার জগের পর নিশ্চর বৃষ্টি হইবে। মন্ত্রাকর
ববা — কুর্চ্চ বন্ধী ও মারাবীজ, (হুঁ শ্রী হুঁ।, এই আক্রর মন্ত্র
বিদি নাজি পর্বাক্ত জলে মন্ত্র হইরা জগ করা হর, তবে অনাবৃষ্টি
দূর হর, এবং সদ্য সদ্য বেশে মহাবৃষ্টি হইতে থাকে। মন্ত্র জগের

সংখ্যা আই সহল, কিন্ধ তাহার চতুগুণ, অর্থাৎ বৃত্তিশ হাজার লগ করিভে হইবে। তিনদিনের পর চতুর্থ দিনে এই লপের সমাপ্তি।

"নাভিমাত্রং জলে শ্বিদ্ধা জপেদ্মন্ত্রং প্রসরধীঃ।
বহুসহত্রং জপেদ্মন্তং ত্রিদিনং ব্যাপা বন্ধতঃ॥" অথবা—
"বট্সহত্রং জপেদ্রিতাং তদা বৃষ্টির্জবেদ্ধু বম্।" (বট্কর্মনীপিকা)
কেন্তু কেন্তু অনাবৃষ্টিকালে বন্ধণের একাক্ষর মন্ত্র জপেরও
ব্যবস্থা করেন। একাক্ষর মন্ত্র বিং'।

মস্থ বিশির্গছেন,—মহাপাতকী ব্যক্তির যে, ধন দণ্ড করা হইবে, সাধুচরিত্র রাজা তাহা কখন গ্রহণ করিবেন না। কেন না লোভে পড়িরা তাহা গ্রহণ করিলে, সেই মহাপাতকীর দোবেই তাঁহাকে লিপ্ত হইতে হয়। এই জন্ত জবল প্রবেশ করিয়া রাজা সেই দণ্ডবারা লক্ষ ধন বরুণকে অথবা সমৃতি-সম্পন্ন শান্ত্রজ্ঞ রাজাণকে লান করিবেন। কারণ, বরুণ দণ্ডকর্জ্ঞা, তিনি রাজা-দিগেরও দণ্ডবর। আর বিনি বেদপারগ রাজাণ তিনি সর্ব্ধ জগতরই প্রভু। ॥ (মৃত্ব ৯ জাঃ)

অতি প্রাচীন কাল হইতেই জলাধিষ্ঠাতা বন্ধণেৰের উপা- 🍃 সনা প্রচলিত আছে। ঋথেদে তিনি রাজা, বিওদ্ধ বল, বিমান-চারী, বেগবান ও পরাক্রমশালী বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়াছেন। উক্ত রাজা বরুণ সূর্ব্যের ক্রেমান্তরে গমনার্থ পথ (উন্তরারণ ও দক্ষিণারন মার্গ) বিস্তার করিরা থাকেন। তিনি মূলরহিত অন্তরীকে থাকিয়া বননীয় তেজ্ঞপুঞ্জ উর্ব্ধে ধারণ করেন, সেই রশ্মিপুঞ্জ অধামুণ, কিন্তু তাহার মূল উর্চ্চে, ডম্বারা ডিনি জীবের মরণ রোধ করেন।- তাঁহার শত সহল্র ওষধি আছে, অর্থাৎ তিনি ওষধিপতি। তিনি নির্গাতিকে পরাত্ম্ব করিয়া মতুধা-দিগের দুরিত নাশ করিতে সমর্থ। তিনি পরমায়ু দান ও গ্রহণ-কারী, তাঁহার আজ্ঞার রাত্রিযোগে চক্ত দীপ্যমান হয়; তিনি বিদান ও অহিংসিও বন্ধনমোচনকারী ও মুক্তিদাতা এবং তাঁহার কর্মসমূহ অঞ্জিহত। 'হে বঙ্গণ। নমকার করিরা তোমার ক্রোধ অপনরন করি, বজের হবা দানধারা ভোমার ক্রোধ অপনোদন করি। হে অহরে! হে প্রচেডঃ। হে রাজন্। আমাদিগের জন্ম এই বজে নিবাস করিরা আমাদের কুতপাপ শিণিল কর। হে বরুণ। আমার উপরের পাশ উপর দিয়া, নীচের

"নাদদীত সুণ: সাধুর হাণাভকিবো খনন্ ।

আদদানস্থ ভরোভাতেন দোবেণ নিপাতে ।

অপ্ত প্রকেড জং দঙং বরুশারোপগাবরেও ।

ফতব্ডোগণরে বা রাজ্ঞণে প্রতিপান্তেও ।

উপো দঙ্গত বরুপো রাজ্ঞাং দঙ্গবো হি সং ।

নিশং সর্বান্ত অসপেতা রাজ্ঞাণে বেছুপারগং ।" (বসু ৯ জঃ)

।

পাল নীচে দিয়া এবং মধ্যের পাল মধ্য দিয়া খুলিয়া লাও। তংপরে হে অদিতিপুত্র! আমরা তোমার ব্রতখণ্ডন না করিয়া পাপরহিত হইয়া থাকিব।' (শক্ ১।২৪)৩—১৫)

এইরপে বেশ বৃধা যার বে, বরুশ দিক্পতি বা লোকপাল,

তিনি বমের জার পাপপুণাের বিচার বা নিগ্রহক্রা। তিনি
ধনাবিকারী (পক্ ১০১৭৩৪) এবং ধৃতব্রত। (পক্ ২০১৪)
পক্লংহিতার ১০১৬১০১৪ মত্রে লিখিত আছে, বরুণ সমুত্রজলের সহিত আগমন করিতেছেন। ৭৮৭৩ মত্রে তৎকর্ত্বক
সমুদ্রকে স্থাপনের কথা আছে। তাঁহার ভিতর তিনপ্রকার
হালোক নিহিত আছে; তিন প্রকার ভূমি, হর অবস্থার
ইহাতে অক্তর্ত রহিয়াছে। তিনি অক্তরীকে হিরগর দােলার
জার দীতির জন্ম স্থাকে নির্দ্রাণ করিয়াছেন। তিনি জলবিক্র
ভার বেতবর্ণ, পৌর ম্গের ভার বল্বান, উদ্কের নির্দ্রাতা ও
সমন্ত সংপদার্থের রাজা। এ৪০৭ মত্রে তিনি স্থাকর্ত্বক অত
হয়াছেন। অক্সংহিতার ৭ম মপ্তলের ৮৭-৮৯ স্কে মন্ত্রনিচরে বরুণ দেবতার নানা অতি আছে।

এতত্তির উক্ত সংহিতার ১/১৫৬/৪, ২/২৭/১০, ২/২৮/৯, ৪/১৮/৯, ৪/১৮/৯, ৪/১৮/১২, ১০/৯৯/১০, ১০/১৩২/৪ স্থলে বরুণ সর্বা-শেষ্ঠ, রাজা ও শক্তিমান এবং স্থোত্তবিশিষ্ট্র দেবতা বলিয় গুরীত হইরাছেন। অথকবিদেও বরুণ দেবগুণের মুখ্য বলিয়া কীর্তিত। "সোমো ভগ ইব বামেরু দেবেরু বরুংগা বথা।" (অথকা ৬/২১/২)

ঋকসংহিতার ৮।৪১ ও ৮।৪২ প্রক্তে বরুণদেবের স্তৃতি আছে। "ৰাচৰ প্ৰক্ৰেৰ মন্ত্ৰালচৰে অতিপৰি বৰুণ দেবভাৱ এই-রূপ তার করিয়াছেন, 'তিনি নিখি<u>ণ তুরনের অধিপতি</u> ও ্বি**টিপাতখারা পৃথিবী, অন্তরীক্ষ ও স্ব**গাকে আঞ্জ করেন।' এই থাকের মন্ত্রপুলি পাঠ করিলে স্বতঃই মনে হয়, সর্বাশক্তিমান পর্মেশ্বরই বরুণ। ঈশবের কার্য্যাবলী স্বতন্ত্র অভিধা প্রাপ্ত হট্যা বৰূণে আরোপিত হইরাছে। খাখেদের ঋষিগণ প্রকৃতির বিভয়-কর কার্যাপরস্পরা নিরীক্ষণ করিরা বঙ্গণ ইন্তাদিদেবের স্বাভন্তা কল্লনা করিরাছিলেন, পরে তাঁহালা সেই কার্যাপরস্পরার ঐক্য উপদত্তি করিয়া ঈশবের একত ভ্রমতে অভুভব করেন। ('যিনি পূর্বাছারা অন্তরীক্ষের পরিমাণ পরেন (elbele), ডিনিই নদী সকলকে এক মহাসমূদ্রে-প্রেরণ করেন, অথচ সেই মহা সমুদ্র পূর্ণ হয় না (eibelo), আবার তিনিই মহুব্যের পাপ বিনাশ ও অপরাধ খণ্ডন করিয়া থাকেন। তিনি কর্যের আত্ত-নণার্থ এবং বুক্ত সকলের উপরিভাগে অন্তরীককে বিস্তারিত করিয়াছেন, তিনি অবগণের বল, ধেছগণকে হয় ও ক্লরে मः कह पान कतिया थारकन । किनिये करन कवि:: कश्चिरक एर्श ও পর্বতে লোমণভা স্থাপন করিরাছেন।' ইত্যাদি স্বতি দেখির। অসুমান হয় যে, ধর্মপরায়ণ বৈদিক ঋষিগণ বরুণ ও ঈশ্বরকে এক ও অভিন্ন বলিয়া নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন।

এই একছ হেতৃই ১। ৩৬-১৩৭ হ'ছে পরুচ্ছেপ প্রবি, ১।১৫১-১৫২ হ'ছে দীর্ঘতমা প্রবি এবং প্রয়েদের ৭।৬৩-৬৬ হ'ছে বশিষ্ট প্রবিকর্ত্বক প্রাতে মিত্র ও বরুপের শতিমন্ত্র গীত হইরাছে। শতাহা নামপার্থকো জগতের ভিন্ন ভিন্ন মঙ্গলজনক ক্রিয়া সম্পান্দনকর্তা হইলেও মূলে এক মহানু ঈশ্বর ভিন্ন আর কিছুই নহেন, তাহা স্পষ্টই ব্ঝা যায়। তাই আমরা প্রক্সংহিতার ১।১৫৩।৪ মত্রে বিষ্ণু ও বরুণ এবং অধিবরকে একত্র স্পাবিশিষ্ট হইরা যজে মিলিত দেখিতে পাই।/ শান্ধান্নন শ্রোতহত্ত্রে (২।২০।৪) এরূপ বিষ্ণু-বরুপের সংযোগ ও একাধারত্ব বর্ণিত হইরাছে। গোভিল এ৬।১২ হত্তে বমবরুপের এক্রেয়াত্ব এবং শান্ধান্ননারান্দণ ১৮।১০ ও কাত্যান্ত্রন শ্রোতহত্ত্রে (১০।৮।২৭) অগ্রিবরুপরে একাধারত্ব নির্দেশিত আছে। গ্রেক্ ৪।১।২ মত্রে অগ্রিবরুপরে একাধারত্ব ভাতৃত্ব সম্বন্ধ আরোপিত †।/

অথর্কবেদের "ইন্তেক্ত মন্থবাঃ পরেহি সং ক্রজান্থা বরুণৈঃ সংবিদানঃ।" (অথর্ক ৩।৪।৬) মত্তে ইক্ত্র ও বরুণের একমতিত্ব হিরীকৃত হইরাছে। এইরূপ বাজসনের-সংহিতার ইক্ত্র ও বরুণের একড় দেখা যার। তাঁহারা দেবগণের স্মাট, স্থতরাং দেই ইক্তাবকুল মিত্রাবকুণের ভার কিছুতেই জন্মর ভিন্ন অপর কেইই হইতে পারেন না। ভবে স্থানবিশেষে তাঁহাকে মিত্র, আমি, ইক্ত, যম বা বায়ুর সহিত ঐশকর্ম সম্পাদন করিতে দেখিরা তাঁহার মৌলিক ঈশরুদের কিছু বিশেষত্ব নির্দিষ্ট হইরাছে, এই মাত্র বলা যাইতে পারে।

শংগদের ১।১২৬-১৩৬ স্তেক মন্ত্রপ্তলি পাঠ করিলে তাঁচাদের পরস্পরের কিছুই বিশেষদ্ব উপলব্ধি হয় না বরং তাঁচাদের
একদ্বই নিস্পাদিত হইরা থাকে। শুক্ ১।১০৬।৮-৭ মন্তে আছে
বে "আমি স্থাঁ, পৃথিবী, আকাশ, মিত্র, ও বরুণ এবং ক্রকে
নমন্বার করি। ইহারা সকলেই অভিমত ফলনারী ও স্থবদারী।
ইন্ত্র, আরি, অধ্যমা ও ভগকে তাব কর। • • আমরা ইন্ত্রকে
প্রাপ্ত হইরাছি, • • ইন্ত্র অমি, মিত্র ও বরুণ আমাদের
স্থপ্রাদ হউন, আমরা অরবান্ হইরা বেন সেই স্লখজার করি।"
১।১৫৩ স্তেন্টে ইন্ত্র ও বারুর এবং ১।১৩৩ স্তেন্টে ইন্ত্র ও বরুণের

অধর্ববেদ ৩/৪/৪ মত্রে মিক্রাবলবের প্রসম্ব আছে।

^{† &}quot;স আত্তর বরণবয় আ বর্থত আছে। হামতী ব্যাবনাসং আ্রেটং ব্যাবনাস্।
কভাবানমাবিতাং চর্পনীবৃতং রাধানং চর্পনীবৃত্তর ।
স্বে নবারসভা বর্থতাতং ন চকা রবেল রংভাতাং বল রবে।
অল্লে বৃত্তীকং বরুণে নচা বিবে নর্পক্ বিবভাত্ত্ব । বিক্ লাম্বন্ধ)

সংহ্বর্য স্থাতিত হইরাছে। ইহার বারা স্পাইই এই দেবতামগুলীর একত্ব ও ঈশ্বরত্ব প্রতিপাদিত হইতেছে। আবার— তক্র বজুলের দাওণ মত্ত্বে "ইক্রন্স্ট সমাত্বরুণশ্চ রাজা তৌ তে জ্বন্ধ তক্রত্বপ্র এতদ্।" পাঠ করিলে উভরকে এক বলিয়াই মনে হয়। উহার ভাব্যে মহীধর লিখিয়াছেন;—"তৌ দেবৌ ইক্রবরুণো তে তব এতং সোমমগ্রে প্রথম জ্বন্ধ চক্রতুঃ। তৌ কৌ ইক্রো বরুণশ্চ চকারৌ সমৃত্তরে, কিভুত ইক্রঃ সমাট পরমেশগ্যযুক্তঃ বাজপেয়্যাজীতার্থঃ। কিংভুতো বরুণঃ রাজা রাজস্বর্যাজী রাজা বৈ রাজস্ব্রেনেই। ভবতি সমাতাজালপ্রেনেতি শ্রুতেঃ।"

শ্বক্ষাহিতার ১১০৩৬। মন্তে উষাকর্ভ্ব বরুণের গৃহ আলোকী-করণের কথা আছে। শুরুষভূর্বেদের "পন্তাম্ম চক্রে বরুণঃ স্বস্থমপাণ্ড শিশুম ভিতমাস্বস্তঃ"(১০19) মন্ত্রপাঠে বৃদ্ধিতে পারি যে, সমৃদ্র বা জলগর্ভই বরুণের পৃহ। তিনি জলের শিশু, জলই তাঁহার নিবাসন্থান। ঐ মন্ত্রের ভাষো মহীধর লিখিরাছেন—'যা এবর্থিধা আপস্তাম্ম অস্তর্মধো বরুণো দেবঃ সধস্থা সহস্থানং চক্রে রুতবান্ সহ স্থীয়তে যন্মিন্ তৎ সধস্থা। কিছুতো বরুণঃ জ্বপাং শিশুঃ বালক অপাং বা এম শিশুর্ভবিতি যে রাজস্বরেন মজত ইতি ক্রুতোস্বন্ধ্য পদ্ধামিত গৃহনামন্ত্র পাঠিতম্। গৃহজ্বপাম্ম সর্কেষামাধারত্বাৎ তথা মাতৃত্যমান্ত্র অতিশরেন জগ্রিম্মানীয়ু।"

উক্ত সংহিতার ৬।২২ মন্তে বন্ধণের পাশসম্বিত স্থানের ভরতীত মানবের মৃক্তি প্রার্থনার কথা আছে;— "ধামো ধামো রাজংস্ততো বরুণ নো মুঞ্চ।" আবার শুরুবজু: ১০০১ মন্তের "র্হুন্পাতির্বাচমিন্তো জোঠার কন্তঃ পশুন্তাঃ মিত্রঃ সত্যো বরুণো ধর্ম-পতীনাম্।" এখানে মন্ত্রাংশে বরুণকে ধর্মপতি বলা হইরাছে। উহার ভাষো মহীধর তাহা বিশদভাবে ব্যাইরাছেন, "ধর্মপতীনাং ধর্মেধরাণাং ধর্মশিলানামাধিপত্যেদাং স্বতাং। স্বিভ্রাদ্বেহাইটো দেব স্ক্রিবাং দেবতাত্বাং নানাধিপত্যানি দদ্বিতি বাজ্যার্থঃ।" টেছার পরবর্তী মন্ত্রে (১৪০) বরুণাদি দেবতা কর্তৃক রাজাদিগকে মহতী ক্ষত্রপদ্বীতে নিরোগের প্রার্থনা দেখা যার। তৈতিরীর ব্রাহ্মণের অ১২। মন্তের "ক্ষত্রে রাজা বরুণোহধিরাজঃ" পদ্বে এই বাজ্য সম্বর্তিত ইইরাছে। দি।

র্পত ব্যবহার অনেক ছলে বরণকে ১কজ বা কজিয় বলা হইরাছে। কিছ
স্বোনে কজিয় আর্থ বল্যান, তথ্য কজিয় নামে অতন্ত্র বর্ণন স্কাট হইরাছিল
কিনা সন্দেহ। ভাহারা বলের পথিশতি এই কারণে পরবর্তী আদাণবুলে কজিয়
(কলপানী) রাঝাদিশের বর্ণনির্পরের নলে সলে বর্লণকেও ক্ষজিয়েয় য়াজাবিবেল অধিশতি বঙ্গাতা ও রক্ষাকর্তা বলিয়া গ্রহণ করা হইরাছে।
অক্সাহিত্যার ৭০০২২ মন্ত্রে

জ্ঞধর্মবেদের ২।১০।১ যত্ত্বে বক্<u>ষণ কীপ্রিশালী ও বড়ান্তারণ-</u> শুল ব্রলা হইরাছে। অনুতাদি ভাবগহেড় তাঁহার ফোপে গড়িলে লোকে অচিরে কলোদনাদি রোগার্ড হইরা পড়ে। / ব্রন্ধনত্ত্ব বারা বা বক্ষণবিষয়ক ভতিক্ষণ হরিছারা বা অভি ভীক্ব ভোত্রাদি বারা তাঁহাকে ভূই ক্রিলে ভাঁহার অন্তগ্রহে রোগোন্যোচন ও লোকে বলগ্রাপ্রি ঘটে †।

এক ক্রের আন্ধণ (মহ৪) পাঠ করিলে জানা বার যে, অলাধিপতি দেবরাজ বন্ধুণ দিক্পালরপে অক্রগণের সহিত যুদ্ করেন, আদিজ্ঞগণ জাঁহার সম্বে অগ্রসর হইরা মেরভাবের জীতি অপনোদন করিরাছিলেন 📭 উক্ত গ্রন্থের (৭০২৪-১৫) হরিশচক্র উপাথানে বিধিত লাছে বে, ঐক্যুকু রাজা ছুরিন্দ্রের নারবের আদেশে পুত্ৰকাৰী হইয়া বন্ধণ দেবের তপস্থা করেন। ভাঁহায় আরাধনার তথ্য হইয়া বঙ্গাদেৰ তাঁহাকে দর্শন দিয়া কহিলেন, হে রাজন ! তোরার তপভার পরিতৃত্ব হইরাছি,তুমি বন্ধ প্রার্থনা কর । ভাহাতে রাজা পুত্রবর প্রার্থনা করিলে বন্ধণ ধেব উবৎ হাত করিয়া বলিলেন, তোমার পুত্র ক্ষত্মিবে, ক্ষিত্ব ভূমি নিঃপক্ষ চিডে নেই পুত্ৰকে ফলীর পণ্ডরূপে আমার শ্রীজ্যর্থে বলি দিবে। রাজা খীকুত হইলে ভাঁহার রোহিত নামে এক পুত্র জন্মিল। পুন:পুন: পুত্তকে প্রার্থনা করিছে লাগিলেন। রাজাও বারং-বার অন্তরোধ, মিনর ও লানা আপত্তি দেখাইয়া পুরের প্রাণ-রক্ষার উপার ছির করিতেছিলেন। এইরূপে ক্রমানরে রোহিত মুলম বর্বে উপত্নিত হুইলে বন্ধুণ দেব আলিয়া বলিলেন, এখন আপনার পুত্র মনীর পত হইমার হোলা হইমাছে। ভালাকে স্থাক্তনের পর মরনেধ বজের বাদনা জানাইয়া বিদায় বিলেম একং প্রেক্তে সমীপে ডাকিয়া বলিলেম, হে প্রিয়! বে ভোষাকে আমার দিয়াছেন, জামি বঞ্জীয় পঞ্চমপে নিহত করিরা তাঁহার করে তোমার সমর্শণ করিব। পিতার একবিধ বাকাশ্রবণে পুত্র "না লা" বলিয়া খীন মন্ত্রক বলে সইয়া বনে প্রবেশ করিল। বথাসমূরে বঙ্গুণ দেব রাজস্কাশে আসিরা 'মহা-লাক বন্ধ ককুন' বলিয়া দুণান্তমান হইলেন। বালা ভগন দেবতাকে आर्मुन मरवाम काशन कतिरनन। वक्रप्यत मारश द्रांचा करणापत्री রোগে আক্রান্ত হইয়া বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন।

পিতার এই রোগের ব্যাপার ক্ষরগঠ হইরা রোহিত বনদেশ ছাড়িরা প্রামে উপনীত হইবেন-। তখন প্রাশ্বন্ধণে ইল্ল ভারাকে

শৰ্জারাকানৰ ককন্য গোপ। নিজুপতী ক্ষত্রিয়া বাড্যম্কাক্।"

ক্ষত্রে বরণকে নিজুপতি ও ক্ষত্রিয় বলা হইরাছে। কিন্তু উহার ক্ষর্থ ক্ষত্তরূপ।

† "ব্যায় দেখানাসকুরো বি রাজতি কণা বি সত্যা বরণন্য রাজঃ।

ক্ষত্রেপতি ব্রহ্মণা পাসদান্য উত্তর্গা ব্যক্তাক্ষিম্য নরামি রূপ অবর্ক্য ১০১০ ১

দেখা দিয়া বলিলেন, তুমি মূঁচ, রাজসংসারের ছঃখপরাকাঠা কেন ভোগ করিতে বাইবে, অতএব আমার পরামর্লে নিরব্তর ভ্রমণ করিতে থাক। ভবিবাতে তোমার স্থাধান্য হইবে।

'এইরপে তিনি ব্রাক্ষণরূপে বৎসরান্তে বঠ বৎসর পর্যান্ত রাজপ্রত্থে যুক্তিযুক্ত বচনে নিবেধ করিয়া বান। এই বৎসরে রাজপ্রত্থে যুক্তিযুক্ত বচনে নিবেধ করিয়া বান। এই বৎসরে রাজপ্রত্থে যুক্তিযুক্ত বচনে নিবেধ করিয়া বান। এই বৎসরে রাজপ্রত্থে আমি আসনাকে শত গাতী দান করিব। আগেনি
বীর প্রত্রেরের এক জন বারা আমার পশুরূপে বক্তে বলি
হওরার প্রবরোধ করন। তাহাতে প্রতি তাহাকে গুলারে প্রতিকে শত
নামে মধ্যম প্রতীকে দান করেন। রাজকুমার প্রতিকে শত
পাতীদানপূর্কাক ব্রাক্ষণকুমার ভনঃশেককে দাইয়া পিতৃসকাশে
উপনীত চইলেন এবং বলিলেন এই বালককে দিয়া আমি অব্যাহাতি লাভ করিব। ভদনত্তর রাজা বক্তে ব্রতী হউলে। বর্মণ শ্বয়ং
রাজস্বর্যক্তর অভিবেচনীর করিয়া বিয়াছিলেন:—

"দ পিতরবেভাগার তভ হন্তাহ্যনেনান্থানং নিজাণা ইতি দ বৰূপং রাজানদুপদারাদেন বা বজা ইতি তথেতি ভূয়ান্ বৈ বাজপঃ ক্তিয়াহিতি বৰুপ উবাচ তত্ম এতং রাজস্বং বক্তক্রস্থ গোবাচ ত্যেত্যভিবেচনীয়ে পুরুষং পশুমানেতে।"

(9136

বেরণ বলিলেন, করির পশু হওরা অপেকা ব্রাহ্মণই যজে পশু হওরা ভাল, তথন বজারস্ত হইল। বিশু<u>মিত হোতা, কমদ্রি</u> অন্নর্<u>য, বর্ণির বন্ধা এবং অবাদ্র উন্নাতা হইলেন</u>। শুনঃশেফ যথন ব্যাহিনেন বে, তিনি পশুরূপে যজে নিহত হইতেহেন, তথন ভিনি বথাক্রমে প্রজাপতি (শুক্ ১/২৪/১) অমি (শুক্ ১/২৪/২) স্বিতা (শুক্ ১/২৪/৩-৫) ও জননন্তর বন্ধণেরু (শুক্ ১/২৪/৬-১৫, ১/২৫/১-২১) শুভি করিরাছিলেন।

নেবীভাগবতের ৭ম কবের ১৪—>৭ অব্যারেও এই ঘটনা
 বিক্ত ভাবেও প্রকারান্তরে শিখিত আন্তর ।

[শুন:শেক ও বিশ্বামিত্র শব্দ দেব :]

তৈভিনীর ব্রাক্ষণের ১৷১৷৪৷৮, ১৷৪৷১৽৷৬ এবং শতপথ-ব্রাক্ষণের ১২৷৮৷৩৷১০ ও ১৩৷৩৪৷৫ স্থলে বঙ্গুল বিহিত হইরাছে।

এই উপাধ্যানদারা বরণকে প্রজ্বাপ্রদ, গুজাপালক ও প্রজা-সহারক দেবতা বলিরাই বোধ হয়। স্নতরাং তিনি স্টি, হিতি ও লবকর্তা পরম পুরুষ। তিনি রাজানিগকে রাজ্যে হিতি করিয়া থাকেন। "তদর রাজা বরণকথার স ভারত্তমত্ত র উপোন্দেহি। (ভার্ম প্রচার)

আবার বন্ধ সংহিতার তিনি রাজাদির্গের কওবাতা বদিরা উক্ত হইরাছেন (মছ ১৪৪৫) পবেদে বরণকে দেরজাগণের মধ্যে শ্রেষ্ঠ বলিরা বর্ণিত দেখা বার। তিনি জলদেবতা বলিরা কথিত। যথন সমস্ত তমোনরাশি-সমাজ্যর ও প্রস্থপ্তের স্থার ছিল, তথন ভগবানের ইচ্ছার মহাভূতাদির বিফাশ হইতে থাকে। আদিতে অপ্ স্পষ্ট হইরাছিল অর্থাৎ জলই জীম্বর্থের আদি বিকাশ; স্থতরাং জলাধি-পতি বরণকে দীম্বর এবং দেবগণের মধ্যে প্রথম বলিয়া করনা করা কিছু অসন্তব নহে।

মহাভারতের উচ্চোগ ও শল্যপর্ক্কে তিনি উদকণতিরূপে বর্ণিত আছেন। তিনি এই আধিপত্য সর্ক্লোক পিতামহের নিকট প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। "অপাং রাজ্যে স্ক্রাণাঞ্চ বিদধে বরুণং প্রাভূম।" (ভারত শ্রীপর্কা)

ভাগবতে বরুণদেব **কাশ্রুপপত্নী অ**দিতির পুত্ররূপে কীর্ণ্ডিত **হই**য়াছেন,—

"অথাতঃ ক্রয়তাং বংশো বোহদিতেরমুপূর্বনাঃ।
বত্র নারারণো দেব স্বাংশেনাবতর্মিতৃঃ।
বিবস্থানার্যমা পূবা জ্ঞাখ সবিতা ভগঃ।
ধাতা বিধাতা বন্ধণো মিত্রঃ শক্র উক্তক্রমঃ॥"

(ভাবৰত ভাভাঞ---জু)

হরিবংশ ৩র অধ্যারে বরুণাদি দেবগণের উৎপত্তি সম্বন্ধে এই একই বিবরণ গৃহীত হটয়ছে। আবার ঋক্সংহিতার ১০।৭২৮ মন্ত্রে অদিতির আট পুত্রের জন্মকথা আছে। অদিতি আটটীর মধ্যে মার্কগুকে দূরে নিক্ষেপ করিয়া অপর সাতটীকে লইয়া অর্গগমন করিলেন। ঋষেদের ২।২৭।১ মন্ত্রে ছর জন আদিতা এবং ১।১১৪।৩ মত্ত্রে সাত আদিত্যের বর্ণনা আছে। তৈত্তিরীয় ব্রাহ্মণে ধাতা, অর্যুমা, মিত্র, বরুণা, অংশ, ভগ, ইক্রন্তে বিবস্থান্ এই অন্ত আদিত্যের কথা আছে; কিন্তু মহাভারত † ও বিষ্ণু ‡

র্ক "আছে। পূজাস: পূজা সিআলনোং নিতেওঁবছি বোং নিতেওবং পরিলরীরা-জাতা। উৎপরা:। অনিতের<u>টো পূ</u>জা অধ্যব্যারারে পরিসনিতা:। তবা হি তালসুক্রমিন্যানো মির্ফিত বঁলাক বঁলাক বঁলাক বঁলাক বঁলাক বালিত্যকেতি। * * [তৈতিরীয়সংহিত ভিল্লান)। (সারণভাবা) লথাকাতীত শতপথ রাজবে ভাগতে উক্ত কন্দ্ মন্ত্রের এক্টেই বিষয়ণ প্রদ ইইনাছে।

লালো কণকটাডভেলা আবিতা। বাবল প্ৰভা: । (বিকুপু ০ ১/১৫/৯০)

শ্রেছি প্রাণে বালল আদিত্যের নাম পাওয়া বায় । শ্রুপথব্রাজ্ঞপের ১১।৬।৩।৮ বরে বালল আদিত্যের নাম পাওয়া বায় । শ্রুপ্ত আদিত্যে
বলা ইইরাছে। ,অক্সংহিতার ২।২৭।১ মত্রে দুকু আদিতির
প্রেরপে উলিখিত ইইরাছেন। নিরুক্তে (১৮২০) বাছ লিখিয়াছেন,—"অনিতের কা অজারত লক্ষান্ত অনিতিঃ পরি" অর্থাৎ
দক্ষ ইইতেই অনিতির উৎপত্তি। আবার অক্ ১০০।২ মত্রে
প্র্যেকে দুকু ইইতে সভূত বলা ইইতেছে। স্কুতরাং এরূপ স্থলে
কোন নীমাংসা করা বায় না। তবে ১উক্ত স্কুক্তের ১ম মত্রে
লিখিত আছে, 'ছে দেবগণ ! আমি স্কুখের নিমিত্ত
তাত্রে সহকারে অনিতি, বরুণ, মিত্র, অয়ি, অর্থ্যমা, তগ ও
সম্বায় রক্ষাকারী দেবগণকে আহ্বান করিতেছি।' এই সকল
আলোচনা করিলে বেরুণকে আদিত্যগণের এক্তম বলিয়াই
মনে হয়।?

মহুদংহিতার বরুণ অবিতীয় তেজঃসম্পন্ন § এবং পাশহত বিলিয়া উক্ত হইয়াছেন। তাঁহার পাশবদ্ধ ব্যক্তি পাপ প্রশাসনার্থ বারুণ ব্রতাচরণ ॥ করিলে মুক্তি পাইয়া থাকেন। বরুণ মত্তের দারা দলিল বিকারে বরুণের পূজা এবং তাহার দারা নাভিজনে দাড়াইর। জ্বপ ও হোম করিতে হয়।

"मिनिनिविकारत कूर्गा भूषाः वक्रमञ्च वाक्रमस्टिः।"

(दृह९म[°] 8७।६५)

ি হরিবংশের ৪∉ অধ্যায়ে বরুণদেবের রূপবর্ণনা এইরূপ লিখিত আছেঃ—

"চতুর্ভি: সাগরৈশু থো লেলিছঙিক পরগৈ:।
শক্ষমৃতাগদপরে বিপ্রভাগমন্তং বপু:।
ফালপাশন্ত সংগৃত্ব হরে: শশিকরোপনৈ:।
বাধীনিতজলোদগারে: কুর্কন্ দীলা সহস্রশ:॥
পাপুরোছ,ভবসন: প্রবালকচিরাধর:।
রশিক্ষামোন্তমবপুর্বতি:॥
বন্ধণ: পাশভূদ্মধ্যে দেবানীকত তদ্বিবান্।
যুদ্ধকোমভিলবন্ ভিন্ন বেল ইবার্পব: ॥" (হরিবংশ ৪৫৪>২১০৫)
ভিনি হংসারেও এবং পাশভূহ। (বৃহৎস্ ৫৮।৫৭) তাহার
এই পাশান্ত কাল বা বন্ধপপাশ নামে খ্যাত। (রামান্ত্রশ ১)২৭।৯)
এই আন্ত ধানপ করিনা তিনি দেবাত্মসংপ্রামে দেবপক্ষীন
কিন্পতিরপে অবতীর্ণ হইরাছিলেন। ঐতরেন্ধ রান্ধপে (১)২৪)
ভারা প্রসক্তম্বের বর্ণিত আছে। রামান্ধপ্র বন্ধপের যুদ্ধন্

2 44 910-0

"পাশহতো বিপাশন্ত রগে বন্ধণ এব চ।
ভন্ন: প্ররাড: সহসা মরা স্ট্রতে ভূপাংগতিঃ ॥"

(রামারণ অং৪।৯)

শ্বমেরে বিষ্ণু ও বন্ধশের স্থিত বা অভেনজের বে আভাস প্রমন্ত হইরাছে, সীভার ভাহা পূর্ণরূপে পরিবাক্ত দেখা বার। ব্যয়ং ভগবান্ট বলিভেছেন :---

শ্বনবাদামি নাগামাং বন্ধণা যাধসামহম্।
পিতৃণামর্থানা চাহ্মি যমঃ সংযমতামহম্।
আবার মহাভারতে হৃষ্ণ ও বন্ধণের বিরোধের কথা আছে।
জীকৃষ্ণ জলজন্তস্মাকীর্ণ সমূত্রগর্ভে প্রবেশ করিরা সনিলাবর্গত
বন্ধশক্ষে পরাজর করিরাহিলেন।

"প্রবিক্ত সকরাবাসং যাদোভিয়ভিসভৃতন্। জিগার বৰুণং সংখ্যে সলিলান্তর্গতং পুরা।"

(ভারত ভোগপর্ম ১১ অঃ)

ভাগবতে এই রক্ষবন্ধণবিবেরের আভাস উপাখ্যানরূপে বিগৃত হইরাছে। একদা নক্ষ একদেশীতে নিরাহারী থাকিরা ক্ষনার্ধনের অন্ত্যর্কনা করেন এবং বাদশী তিথিতে আহুনী বেলার লানার্থ কালিনীসলিলে অবগাহন করিলে কলমন্ন ইইরা বন্ধণভূত্য কর্কৃত্ব বন্ধণালরে নীত হন। ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ বন্ধণভূত্ব পিতাকে অপহত তানিরা বন্ধশ্যবীপে গমনপূর্বক পিতাকে উদার করেন। বন্ধণ তথন শ্রীকৃক্ষের পানবন্ধনা করিয়াছিলেন—

শৈষ্য মে নিভূতো বেহােইন্যবার্থাইধিগতঃ প্রভাঃ।
বংশালভাবোভগবরবাগঃ পারমধ্যনঃ ॥" (ভাগবত ১০।২৮।৫)
ভন্মপূরাণের সন্থান্তিথপ্তারগত বরুণাপুরী-মাহাদ্যো নিথিত
আছে,—

একদা পৌনক হতকে বন্ধপাপুরের মাহান্থা-বিবৃত্তি জিল্লানা করিলে তিনি বলিরাছিলেন বে,নানা রন্ধরাজিবিরাজিতা মনোরমা বন্ধণের একটা পুরী ছিল। সেই ক্ষেত্রের জনপদবাদী লোক সকল ধর্মপরারণ ও বেদার্থতক্ত। তত্রত্ব লোকসমূহ জ্যোভিটোম বিধি বারা রামকে আরাধনা করিরাছিলেন। এই বল্লে দেবতা ও পিতৃপণ সাতিশার পরিভোব লাভ করেন। পারে রাম তথার উপরিত হইরা বন্ধণকে বলিরাছিলেন, হে জলাধিপ বন্ধণা ভূমি তোমার ভবন সদৃশ আমার একটা ভবন নির্দাণ করে, এই ভবন নানারম্বিভূষিত ও সধা স্নিগণ সেবনীর হইবে। বন্ধশারে পরস্তারামের এই কথা তনিরা বীর ভবন নির্দাণ করিরা ঐ পুর পরস্তারামকে নিবেদন করেন। ভবন পরস্তারাম ঐ নানারম্বাদি বিচিত জ্বনা ভবন হেবিরা বলিরাছিলেন, হে, এই ভবন আলাবিধি বন্ধশাপর নামে থাতে হইবে এবং পরস্কার্মর এই প্রের জ্বিণতি থাকিবেন। একদা মধুনাকে ভারত্রার

HE NEST !

নবমী ভিথিতে সর্বলোক একজ হইরা সপ্তরিন্যাপী রানের মহোৎসৰ করিতে ছিলেন। এই সময় এক মহাদৈত্য তথার উপস্থিত হইয়া শ্লামমহোৎসৰকারী লোকসমূহকে অভিশব পীড়িত ৰবিতে লাগিল। বন্ধনালয়বাসী লোকসমূহ দৈতা কৰ্ত্বৰ পীড়িত হইলে প্ৰস্তৱাম ভাহাদের ক্তবে তুট হইরা তথার উপস্থিত হইলেন এবং ভাহামিগকে সংখাধন করিয়া কহিলেন, হে আন্দৰ্শণ ৷ তেমিয়া আমান প্ৰধাৰহ বাক্য প্ৰবণ কয়, তাহা হইলে তোমাদের **দৈত্যপীড়া, বিদুরিত হইবে। আ**মি নৈভাদানৰ নাশের জন্ত বন্ধ নিৰ্দ্মিত পুরীতে নহামায়াকে ত্বাপন করিয়াছি, ভোমরা লকলে ভাহার শরণাগভ হও, ভাহা হইলে এই ভর নই হইবে। তথন বহুণালরবাসী বিপ্রেগণ প্রকরামের আবেশাসুসারে মহালসা নামে মহামারার শর্ণাগভ হইয়া তাঁহার তব ও পূজাদি করিতে লাগিলেন। সভাষায়া এাদাণদিপের তবে সম্বন্ধী হইয়া তাঁহাদিগতে বলিলেন, হে বিপ্রেগণ। ভোমাদের তম নাই, আমি এই দৈতাকে বিনাশ কমিতেছি। এইনপে ভাহাদিগকে অভয় দিল্ল তিনি ঐ দৈত্যের সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন। মহামারা দৈজ্যের সহিত ঘোরতর বৃদ্ধ করিয়া তাহার মন্তব্দ কর্মন এবং বামহত্তে গ্রহণ করিয়া নিজালরে গমন করিলেন। তথন দৈত্যভব বিদ্রিত হইল, দেবগণ আকাশে পুশার্টি ও গ্রহ্ম সকল গান করিতে লাগিল। নির্মিন্নে রাম-মহোৎসৰ শেষ হইল। সেই অবধি মাঘ মাসের ওক্লা ঘটা তিথিতে কামন৷ ক্ষিয়া ও ভক্তিপ্ৰায়ণ হইয়া যে সক্ষ ব্যক্তি ত্রিভূবনেশরী দেবী মহামায়াকে পূজা করে, দেবী ভাহাদিগের অভিনাব পূর্ণ করিয়া থাকেন।

(क्मप् । महाजिब वस्तान्त्रीमाहामा ১-२ मः)

বে অন্তরীক্ষ দেখিরা বৈদিক্যুগের আর্থানিগের অন্তরে
ক্ষররের অভিবাজি প্রতিভাত হইরাছিল, বেদে তিনিই
বরুণদেব বলিরা বর্ণিত। সেই অন্তরীক্ষপ্রখ্যাত দেবতাদিগের
রাজা বরুণের সহিত গ্রীকপুরাণোক্ত উরেনাসের অনেক
সৌসালুক্ত দেখা বার। বৈদিক উপাখ্যানে দ্যোল্ কর্তৃক বেমন
বরুণের পাকু।তি ও ক্লপতিরূপে নিয়োগের কথা আছে;
সেইরূপ গ্রীনের পুরাত্ত্বে ক্রিক্তিন কর্তৃক উরেনাসের পর্চাতি
বিবৃত হইরাছে। বরুণ র্টিরাতা এবং ক্লপুহবিহারী, উরেনাস্ও
সেই কার্ব্যের অবিপতি। কিছ বছতাই মেনা ও অভিনী
এবং আর ও বরুণের সহিত অক্টাক্ত বিবরে অনেক প্রতেম দেখা
বার। বরং ক্লগ্রিকারিকে নেপচুনের সহিত ক্লণের বিশেষ
মিল আছে। [নেপচুন ক্রেথ।]

০ খনামখ্যাত বুজৰিশের । পর্বার-বছন, সেডু, ভিজ-শানু কুমারক, জনরীয়, সেডুক, বয়াণ, নিধিমভন, যেতবুজ,

বেভজুম, লাধুচুক্ক, তমাল, মানতাপহ ৷ ইহার ভণ-করু, উষ্ণ, রক্তবোৰ ও শীতীবাতহর, মিথ, বীপন, এবং বিজ্ঞধি-রোপছ। (রাজনি॰) ভাবপ্রকাশ মডে— "বৰণঃ পিতলো তেনী দ্লেমকুছ শিমাকভান্। নিহত্তি ঋশবাতাশ্ৰ-কুদাংশ্ভোকোহরিদীপনঃ। ক্বারো মধুরভিক্তঃ কটুকো ক্লক্তো শুক্তঃ ॥" (ভাবএ।) রাজবল্লভ্রতে ইহার খণ,--বাবু ও শুলহর, ভেনক, উঞ্চ, ও অশ্বরীনাশক। বরুণের পূলাওণ--পিত্তর ও আমবাতহর। (ब्रांबरब्रफ) ७ जन (द्यनिनी)। ७ नूर्या। (विश्व) "ধাভাষিত্রোহর্যামা শক্রো বরুণক্ষণে এব চ। ভগোৰিবখান পুৰা চ সৰিভা দশমন্তথা ॥" (মহাভা°১/৬৫/১৫) ৫ মুনিগর্জ্জাত কল্পপথ্র-বিশেষ। (ভারত ১।৬৫।৪৩) বকুলুক্ত (পুং) বৰুণকুন্ধ (Orateeva Roaburghii) বক্লপঞ্জ, ঔষধবিশেষ। (চিকিৎসাসার ১০৬) ব্ৰুণগৃহীত (অ) > বন্ধণ কৰ্ত্ব আক্ৰান্ত। ২ উনরী প্রভৃতি রোগগ্রন্ত। वक्रभ्शास्त्र (वि) वक्रभ्यास् । जगमिमा। ব্রুগ্রান্থ (পুং) অবের তরামক হট গ্রহ বিশেষ। অধ এই গ্ৰহাবিট হইলে ভালু, জিহনা, নেঅ, বুৰণ ও মেচু, কুঞ্চৰণ গাত্রের শুরুতা ও খেদ নির্নম হইরা থাকে। ইহার লক্ষ্ণ---"कानुकित्स्व ह म्मद्य ह दुवर्गा स्मृह्यं ह। প্রাবং রূপঞ্চ বক্ত ভাল্গাত্রগৌরবমের চা

(अद्यस्त ६१ व्यश्राद)

ব্ৰুণ্গ্ৰাম, একটা আচীন গ্ৰাম। (ভবিষ্যক্তৰ ৫৭।২৫৯) ব্ৰুণ্গ্ৰাহ (পুং) বৰুণ কৰ্ম্ব আক্ৰমণ বা বন্ধন।

कुछः श्वारः महार्थातः खबाष्ट विनिर्कित्यः ॥"

ভত্ত খেৰপরীভত্ত বৃদ্ধিমান বর্মপ্রাহৈঃ।

(তৈভিনীরস্প ভাঙাং। হর্কেণ্ড্রতম্, অন্তর্গার একটা ঔবধ। ছত ৪ সের, কাথার্থ কৃটিত বর্রশাহাল ১২।০ সের, কাগ ৬৪ সের শেব ১৬ সের। কর্চার্থ বর্রশাহাল ১২।০ সের, কাগ ৬৪ সের শেব ১৬ সের। কর্চার্থ বর্রশাহালর হাল, ক্লানি পক্তরের মূল, গুলক, শিলাকত্ব, কাকক বীজ, নৃর্বা, তিলনালের জার, পলাশ লার, বুঁইন্ল প্রত্যেক ২ তোলা। ছল বিবেচনা করিয়া নাজা ছির করিবে। বীর্ণ হইলে প্রথমতা প্রাক্তন সংযুক্ত ববির রাজ্য সেবনীর। ইহাতে জন্মরী, পর্করা ও ক্রক্তর্জু নিবারিত হয়। ব্রুক্তর্জীর্থ (রী) তীর্ষতের। কালিকাপ্রাণে এই তীর্ষ্ক্তরের লিখিত আছে বে, রূপ টনকের পূর্ববিক্তে অনিবান্ধ পর্বাত্ত তাহার সন্মুখতাপে কংলকর পর্বাত্ততেই ব্রুপকুণ্ড মানক পরিত্র সংযুক্ত। এথানে বলাধিণ বরুপ নিজ্য বাস করেন। কংলকর

পৰ্বতে ৰক্ষণদেৰের পূজা দিয়া বাক্ষণকৃত্তে সাল করিলে বছবা বল্লণলোক প্ৰাপ্ত হয়। ম হইতে পঞ্মবর্ণ ব'কারে অভ্যার বোগ ক্ষাণে বঙ্গণীক দুইয়া থাকে। ঐ বীক্ষাত্রে বঙ্গুদেবের भूषां क्षया । (क्षिकां १३/১०-১१) ব্ৰুকৃণ্ড (ক্লী) বৰুণের ভাব বা ধর্ম। ব্যক্তপদ্ভ (পুং) পাণিনিবর্ণিত ব্যক্তিভেদ। (পা ধাঅ৮৪) यद्भण्डाम् (बि) यद्भण वाहात प्रवक्ता । (गूर) २ मङ्ख्या नक्ता (বৃহৎস । ৩২।২ । । । বৰণ দেবতা। वक्रग्रेत्रवर्ष (बि) भठिषया नक्ष्य। (वृह९म॰ ১०१२) ব্ৰুপ্ঞুত্ (তি) ১ বঙ্গাব্দে প্ৰবঞ্চনা বা গোভঞাদৰ্শনকারী। २ वक्रगकर्कृक विरुनिछ। 'वक्रटगन विरुनिछः'। (अक् ११७०१३ नावन) বক্লণপাশ (পুং) > বরুণের অত্ত। ২ নক্র, হালর। বরুণপুরুষ (পুং)বহুণের ভূতা। (আৰ-গৃহ ১।১।৫) বক্লণপ্রাস (গুং) জাবাটী বা প্রাবণী পূর্ণিমার বঙ্গণের উদ্দেশ আচরণীর বিতীর স্কৃত্যভেদ। অসনিমগ্ন বা প্রাহনক্ষ্মাদির হত্তরূপ বরুণপাশ হইতে পরিত্রাণ লাভের জন্ত এই ব্রভাচরণ ক্রিতে হয় ৷ ঐ প**র্বাদিনে বঙ্গণের প্রীভার্যে** ববচূর্ণ ভক্ষণ • করিতে হর। ব্**রুণপ্রশিষ্ট (** ত্রি) বরুণ কর্তৃক শাসিত বা পরিচাসিত। ব্দ্ধার্প্রস্থান্ত, কুরুক্তের পশ্চিমহ নগরভেন। (ভ'ত্রন্ধর্ণ ¢৭।>>৪) বক্লণভট্ট (প্ং.) একজন প্ৰসিদ্ধ জ্যোতিৰ্বিদ্ । বরুণমতি (পুং)বোধিনৰভেদ। বরুণমিত্র (পুং) গোভিনভেন। বরুণ্মেনি (জী) বৃহুণের ক্রোধ। (তৈত্তিরীয় সং ৫)১/৫।৩) वक्रगत्राक्रन् (बि) वक्रग (तथात्न त्रासक्रत्भ व्यविष्ठ । (ভৈদ্বিবীরসং অধ্যদা>) বরুণলোক (গুং) > লোকভেদ (কৌশিকীউপ ১)৫) কাশীখণ্ডের ১০৮ অধ্যারে ইহার বিবরণ আছে। ২ বরুণের অধিকান্ধ স্থান বা লগ। (তর্কসংগ্রহ ৭) বক্লপাৰ্শ্বৰ্ (গ্ং) দেবাস্থ্য বুদ্ধে দেবপকীয় সেনাপভিডেন। বরুণশেষস্ (a) ১ বরুণের ব্যাসতা। (ধক্ elwele সারণ) ২ বন্ধানারী পুঞাদি বিশিষ্ট। 'বারকাঃ পুঞাঃ বেবাং' (সারণ) বক্লপঞ্জাত্ব (ही) প্রাত্তরভাগে। ব্রুপ্সব (প্র) ব্রুপ্র অভিপ্রেড ব্রু । "বো রাজস্বঃ স यम्ग्राचः (दिख्यित्रीत्रवाचन शामाः) বরুশ্সেন, শিলালিশি বর্ণিত রাজভেব। বক্লণলেনা [নেনিকা] (বী)রাজক্রাকের। (কথাসরিৎ৪৪।৪৪)

বক্লাতেন্ (গ্ং) পর্বতভেদ। (ভারত

বলগদোভন্ পাঠও বেখা বাস।

वक्रगोक्रक्रम् (ग्रं) > वक्रदश्य म्रायश्य । २ मनवायिक গোত্রাপজ্য। यक्षणांच्या (वी) वक्षण सन्त साम्राः । अञ्चवसरः। बाक्रमीत्रक, अरे मक्ष नमूज महनकारन केवृष्ट स्टेमोदिन। वक्रभांतिकाथ, वक्रमशान, चँठ, माजूब विनिष्ठ २ छाना, জল 🚁 সের, শেব 🗸 পোরা, প্রক্ষেণার্থ বৰক্ষার হ[া]নাবা, পুরাতন ঋত ২ নাবা।। এই কাথ পান করিলে বছকালের বার্ক অপ্রদীর পাত্তি হয়। वृद्ग्यक्रगाति -- यक्रगहान, ठेंड, शासूत वील, जानन्ती, কুলথকলাই, কুণাবিভূপপক্ষুল মিলিভ ২ ডোলা, জল ॥• সের, শেব 🗸 পোরা, প্রক্ষেণার্থ চিনি ২ নাবা, ববক্ষার २ मारा। देशाय जन्मती, तृबक्षका, रिजन्न ७ नितन्त নিবারিত হয় ৷ ব্রুণছালের ভাগ বা ক্ষের সহিত পুরাতন ৩৬ এবং সজিনা মূলের উঞ্চলাধ সেবন করিলে আগরী ও ভজ্জনিত ব্রণা নিবান্নিত হয়। বৰুণাদিগণ (পুং) ত্ৰবাগণভেষ, ক্ষুত্ৰতে এই গণে নিৰ্মোক্ত প্ৰবা निर्किष्ठ रहेबाट्य-वक्तनवृष्क, मीनविन्द्री, निर्मु, मध्निशु (नान সজিনা), জরতী, মেবশুলী, পৃতিকা, নাটাকরঞ্জ, মোরাটা, অন্নিমন্ত, বিপ্টা, লালঝাঁটি, আৰক্ষ, বসির, চিডা, খডম্লী, विव, अअनुकी, वर्क, बृहकी, क्लिकांत्री। धहे वक्रगामिशन करू ও মেদোনাশক এবং নির:শূন, গুরু ও আভাতরিক বিজধি-নাশক। (ব্ৰুক্ত খু॰ ৩৮ **খ**°) বরুণাক্রি (গুং) পর্বতভেদ। ব্ৰুণানী (খী) বন্ধত পদ্মী বন্ধ (ইপ্ৰবন্ধভবেতি। পা ৪।১।৪৯) ইতি ভীব্ৰ, আহুগাগ্যক। বৰূপপন্নী। (কটাধ্য) বরুণাপুর, সহাত্রিপর্বতহ একটা প্রাচীন তীর্থকের। (সহাত্রিগঞ [बक्रन (स्थ ।] বক্ণাপুরমাহাম্ম) वक्रभागग्र (११) मम्ब, मागग्र। वक्रगांदाम (१११) नम्ब, मागम् । वक्रगावि (जी) गणी। বরুণিক (পুং) বরুণমন্তের সংক্ষিপ্ত নাম। বরুণির ও বরুণিন্ পুনও প্রাযুক্ত হইয়া খাকে। ব্যুক্তেশ (ত্রি) শতভিযানক্ত্র, বরণ বাহার অধিপতি। বরুণেশ্বরতীর্থ (हो) তীর্থভেদ। वक्रर्गाम (जी) मानव। वक्रर्शांशनियम् (बी) डेशनिवन्त्वः। বুরুণোপপুরাণ, একথানি উপস্থাণ। কুর্মপুরাণে এবং রেবা-মাহান্ত্যে ইহার উল্লেখ আছে।

বক্লণ্য (ত্রি) বরুণ-সন্তব, বরুণ হইতে উৎপন্ন।
"মুক্তমা শপথ্যাদধো বরুণ্যান্ত।" (অক্ ১০১৯৭।১৬)
'বরুণাাৎ বরুণসন্তবাৎ' (সামণ)

বক্লত্র (ক্লী) বৃংগাতি আবৃংগাত্যনেনেতি বৃ-উত্ত (আশিত্রা-দিভা ইত্রোত্রো। উপ্ ৪।১৭২) উত্তরীর বন্ধ। (সিদাত্ত-কৌ-উপা৽বৃ৽)

বক্লয়ী, নামৰ ক্ষু অন্তৰ্গত নদীভেদ। (ভবিষ্য ব্ৰহ্মণ ১৬।৫০) বক্লল (প্ং) কুৰ্জন। সংভক্ত। (সংক্ষিপ্ত নাও উপা॰) বক্লম, কানভেদ। প্ৰাণে ভিন্নৰ' নাৰে থ্যাত।

বক্রস্তৃ (বি) রক্ষিতা, রক্ষক। "এতামহন্দিদনি তালনো বন্ধতা।" (বক্ ১/১৬৯/১) 'বন্ধতা বন্ধিতা রক্ষিতানি।' (সারণ)

বর্মথ (क्री) বিরতে শরীরমনেনেতি ব্-বরণে উথন্ (জুব্ঞ জ্যামুগন্।' উণ্ হাজ) ১ তছ্ত্রাণ। (হেম) ২ চর্ম। (মদিনী)
৩ গৃহ। (অক্ ১।৫৮।৩) গৃহার্থক বরুণশব্দের 'ব' বর্গীর বকার
বলিয়া গণ্য। (নিম্বন্ট্রু) ৪ সৈন্ত। "কক্ষ বরুণমতিপত্তিরণাব্যেধিং।" (ভাগবত ৯।১০।২০)। বিরহতে বরোহনেনেতি
বৃঞ্বরণ উথন্। (পুং) ৫ শক্রেক্ত অল্লাম্যাত হইতে রক্ষণ
পাইবার ক্রম্ভ রথসন্নাহের স্তায় আবরণ প্রভৃতি দ্রব্যভেদ।
ইহার পর্যায়—রথগুন্ধি, রথসংবৃতি। (ক্টাধর)

"উলগধ্যক্রর্কর স্বর্ধ স্বাকরম্।" (রামারণ ভাব।২৬) ৬ গ্রামবিশের। (রামারণ ১।৭১।১১)

ব্রাথশ্সু (অব্যর) সক্ৰণঃ, বছ সংখ্যাক।

শশু প্রারীরভবান্তবোবিতোহ-

প্যলম্বতাঃ কান্তস্থা বন্ধথশঃ।" (ভাগবভ ৪।৩)১১)
বন্ধথাধিপ (পুং) বন্ধথানাং সৈঞ্চানামধিপঃ, নন্দিতা। সেনাপতি।
বন্ধথাধিপত্তি (পুং) সেনানী, সেনানামক।

"किक् बक्रथाविशिक्षर्ग्राः

প্রায়ে আতে তুখনক বীর।" (ভাগৰত ৬) ২৭)
ব র থিন্ (পুং) বরণং অভাতীতি বরখ—ইন্। গজোপরিছ
গলাকার কাঠ বা রখত্তিমুক্ত। (গুরুমকু: ১৬৩৫) ২ বরথার্থক বন্ধমাত্রমুক্ত। জিরাং তীপ্, বর্মধিনী। ও সেনা।
"চিরিক্তর্প্তরা বর্মধিনী স্বটা ইব নবীররাং ত্তনীন্।"
(রত্ ১১।৫৮)

হাত্রাথ্য (তি) ১ ঘরণীর, সভজনীর। ২ পরিধিনন্তর পরিবৃত।
"ত্রাতা দিবো তবা বরুধ্যঃ।" (অক্ ৪।৪৪) 'বরুবো বরুণীরঃ,
সন্তজনীরঃ। যথা বরুধ্যৈ পরিধিতির্তিঃ।' (নারণ) ও গৃহার্ত্ত,
গৃহবোগ্য। (অক্ ৪।৪৬০৫) ৪ শীতবাভাতপনিবারক। (অক্
১৯৬৭ ২) ৪ গৃহহাচিত ধন। (অক্ ১।৪৭০৩)
বিবেটী (নেশক) ভূগতের (Cyperus verticilistus)।

বরেণ (পুং) বোদ্ভা। বরোদ।
বরেণা (নী) বরেণা শব্দের অপপ্রংশ।
বরেণা (পুং) বিরতে লোকৈরিভি বৃ-এণাঃ, (বৃঞ এণাঃ। উণ্
অ৯৮।) (ত্রি) ১ প্রথান। "সন্তর্শণো নাকসদাং বরেণাঃ।"
(ভট্ট ১০৪) ২ বরণীর। (মলিনাথ) "সংস্কারপুতেন বরং
বরেণাং, বংং স্থাপ্রাহ্মনিবন্ধনেন।" (কুমার ৭০৯০) (পুং)
ও পিতৃগণের অভ্যতম। "বরো বরেণো বরণো পুটিনভটিনভাগা"
(মার্কণ্ডেরপু৹ ৯৬০৪৫) ৪ ভৃগুপুত্রভেদ। (মহাভা০ ১৬৮৫০১২৯)
৫ মহাদেব। "বরো বরাহো বরদো বরেণাঃ স্মহান্থনঃ ॥"

(মহাভারত ১৩।১৭।১৩৬)

৬ কুছুম। (রাজনি॰) (ক্লী) ৭ সকলের উপাক্তছ ও জ্ঞেরছরণে সম্ভলনীর। (ঋক্ ৩/৬২।১০)

বরেণ্যক্রেভু (বি) বরণীর প্রজ্ঞাবৃক্ত হোতা। (থক্ ৮।৪০১২)
বরেন্দ্র (গং) ২ রাজা। ২ সামস্তরাজ। ইজা। ৪ বাজালা
দেশের উত্তরত্ব একটা বিভাগ। বরেক্রেভুমি নামে থ্যাভ। দেশাবলীতে লিখিত আহে, এক সমরে নাটোরই বরেক্রেভুমির রাজধানী ছিল। [বল্দেশ ও বারেক্র দেখ।]

বরেন্দ্রগতি, পরতদ্বপ্রকাশিকা নামী বৈদান্তিক প্রছ-রচয়িতা।
বরেন্দ্রী (জী) গোড়দেশ। (অকা॰) বরেক্ত্মি।
বরেয় (পুং) ক্র্যা। 'বরেরং বরনীরারাঃ ক্র্যারাঃ সম্বাদ্ধিনং
বরৈর্যাচিত্রাং বা। ক্র্যামনার্থঃ।'(অক্ ১০৮৪।১১-ভাব্যে সারণ)

वहत्रश्न (रामक) वाटमत्र नचा वाधाती ।

বরেয়ু (তি) প্রণয়প্রার্থী। বিবাহার্থ কলার যাচ্ঞাকারী। ব্রেকা (তি) সর্কেবন, বরদানকর্তা ভগবান্।

"বরং বরর জ্জংতে বরেশং স্বাভিবাহিতন্।" (ভাগবত ২।৯।২১) বন্ধেশ্বর (জি) শিব।

ব্রোট (রী) বরাণি শ্রেষ্ঠানি উটানি ন্লামি আছ। মক্লবক।(শক্ষাণ) ব্রোৎপাল (রী) খেড রজ্ঞান। (বৈছক্নি•)

ব্রোদ, বোখাই প্রেনিডেপীর ঝালাবার প্রাক্তম্ব একটা সামস্তরাজ্য। এখানকার সামস্তরাজের রাজস্ব ২১ হাজার। তল্পথো
তিনি জুনাগড়ের নবাবকে বার্ষিক ২৭৮ টাকা এবং বড়োদাপতিকে ১২৫২ টাকা কর দিয়া থাকেন।

বারোদ, পোষাই প্রেসিডেন্সীর গোহেশবাড় প্রাক্তর একটা কুড সামত রাজা। এবন হই কংশে বিভক্ত। এখানকার অধি-কারীরা বড়োলার গাইকোবাড়কে ও কুনাগড়ের নবাবকে কর দিরা থাকেন।

বারোক (প্ং) বলঃ উলঃ, কর্মা। > শ্রেষ্ঠ উল, বাহার আছর উপরিভাগ ক্রমর ও হলকণ। "বিরদকরঞান্তিনৈর্বরো-ক্রাড়ঃ।" (রুৎপা ৬৮।৪) বলঃ উল্লেখ্য ক্রমীরি। (মি) ২ শ্রেষ্ঠ উদশাসী। "বো বিশহগ্ বজগতং করোর বামনাগসং হর্মচনা-হকরোভিরঃ ৮" (ভাগবভ ৪:এ২৪)

ব্রোল (গুং জী) হু-ওলচ্ । ১ বরট। ২ ভ্ররোল। (ত্রিকা॰) চলিত ভীমকল।

বরোহশাঝিন (পুর্ব) প্রকর্ক, পাকুডগাছ। (রাজনি॰) ব্রোষ্থী (বী) > আদিত্যভকা, চলিত ক্তর্ডিরা। ২ রাজী-শাক। (বৈভকনি॰)

ব্ৰুণা (জী) তঙ্গণ ছাগী। (সংশ্ৰুত চি∙১ দঃ)

বর্কর (পুং) রুক্ততে গৃহতে ইতি বৃক-আহানে বহুলবছনাৎ
আর । (উজ্জল ৩০১০১) সুবুপণ্ড। (জনর) ২ মেরণাবক।
(জনত) ও পরিহান। আনোকপ্রবোদ।

⁴কা**তঃ** কেশিক্চিযু্বা সত্ত্বদন্তাদৃক্পতিঃ কাতরে।

কিলো বর্করকর্করেঃ প্রিয়শতৈরাক্রম্য বিক্রীরতে।" (সমরুশতকণ)
৪ ছাগ। (মেধিনী)

বর্করকর্কর (ত্রি) নানা রকমের।

বৃক্করাট (গুং) বর্করং পরিহাসং আটতি গচ্ছতীতি অট্-আচ্। ১ কটাক। ২ তরুণ তপনপ্রভা। ৩ কামিনীর পরোধরপার্থে কান্ত কর্ত্তক প্রদত্ত নথক্ষত। (মেদিনী)

বর্করীকুগু (ক্লী) কাশীস্থ সরোবরভেষ। ইহা একটা পুণাতীর্থ বলিরা পরিগণিত। [কাশী দেখ।]

বৃক্ট (পুং) গৰাল, কাটা, পিন্, থিল, অৰ্গল।

বর্করাতীর্থ, তীর্থছেদ। (কুমারিকা ১০৭।১।৭)

ৰুপু (পুং) বুজাতে ইভি বুজি-বৰ্জনে ६ঞ্। সন্ধাভীয়সমূহ।

"ব্রতায় তেনাস্করেণ ধেনো-

क्वरविध ल्यार्थश्रम्यात्रिवर्गः।" (त्रयू २।७)

২ সমানধর্মী প্রাণী বা ক্ষপ্রাণিগণোপলক্ষিত বৃদ্ধ বা সমূহ।
বধা — কবর্গ। কন্ধ বন্ধ প্রভৃতির বিজ্ঞান্তীরন্ধ থাকিলেও উহাবিগের স্থানসাম্য আছে। ব্যাকরণ মতে বর্গ পাঁচটা, বধা—
কবর্গ, চবর্গ, উবর্গ, তবর্গ ও পবর্গ। কবর্গ বলিলে ক, ধ,
গ, ম, ও; চবর্গ বলিলে চ, ছ, জ, ম, এফ; এইরুল উবর্গ বলিলে
ট হইতে 'ন' পর্যান্ত, তবর্গ বলিলে 'ড' হইতে 'ন' পর্যান্ত এবং
পর্বর্গ বলিলে 'প' হইতে 'ম' পর্যান্ত পাওরা বাইবে। ক চ ট ড
প প্রভৃত্তি লক্ষ্ণ পক্ষ পাঁচ পাঁচ বর্গ লইরাই ব্যাক্ষরণের বর্গসংজ্ঞা।
"কটেডবাঃ পক্ষ বর্গাঃ" "ডে বর্গঃ পক্ষ পক্ষ পক্ষ ইত্যাদি।

ক্ষিয়ালে এই সমষ্টি বা সমার্থে কর্গপান্তালাদি বর্গ, নানার্থ বর্গ, ভূমিবলৌব্ধি কর্গ, ক্ষমান্ত কর্ম, ক্ষম কর্ম, ক্ষমবিট, পুরাদি মর্গেম্ভ উল্লেখ দেখা বাম । (ক্ষমিপু তথ্য-তণঃ আঃ)

্ ক্ষিত জ্যোতিকে ক্ষিতিত আর্কে, ক্ষর্যের ক্ষিণতি ক্র্যা, ক্ষর্বেক ক্ষ্মিণতি ক্ষল, চবর্গের গুক্র, টবর্গের বুধ, তবর্গের কুশোভি, প্ৰবৰ্গর পনি, ব ও শব্দর্গর অধিপত্তি চক্ত। ইহার বালা পণনা করিলে নালাহি বানা বার।

ত গ্ৰন্থ পৰিফেল। কোন প্ৰন্থ বা কোন অবন্ধপ্ৰবাহের মাৰে মাৰে শে গ্ৰন্থটা ছেদ দেওলা হয়, সেই ছেদ, উচ্চ্ছান, কা আৰু প্ৰভৃতিৰ নামান্তৰ বৰ্গ।

"সংগা বর্গ পরিজেনোগ্রাভাব্যারাভস্থার। ।
উদ্ধানঃ পরিবর্জত পটদাঃ কাওবর্ত্তিয়া
হানং প্রকরণং পর্কারিকঞ গ্রহসকলঃ ॥" (ফ্রিভা ০শে)

s আতুর্বেদোক গণ। ৫ (জী) সপ্সরোবিশের।

এই অপ্সরা মুনিশাশে আহরণ প্রাপ্ত হব। পাওুনক্ষন অর্জ্ন হইতে ইহার উদ্ধার হব । ৄ বিশ্বক বিবরণ মহাভারতে ১৮১৭ অ: এইবা।]

৬ সমান অৰ্থকের পূরণ। পর্যাক্ত-কৃতি। কর্মে ক্রণফ্র কুইটা বুজ বা সমান রাশির জপক্ষা। শীলাবতীতে ইহার বিবর লিখিত হইরাছে---

শসম্বিৰাতঃ ত্বতিক্চাতেৰ্থ বাংশাংক্তাৰপোঁ। বিশ্বপান্ধানিয়:।
আন্তোপৰিচাক তথাপরেংকাত্যক বান্ধান্ধ্বপার্থ প্রনন্দ রাশিং।
বঙ্গব্যবাতিক্তিবিনিয়ী তংগগুৰুগৈ কাত্তা কৃতিবা।
ইটোনবুগ্রাশিবংক্তি ভাগিউত বর্গেণসম্বিতো বাংল্(বীলাবতী)

ইহার উদ্দেশক বা সক্তব্য নিরোক্ত বিধিবারা শাসীকৃত হুইবাছে---

"সথে নবানাঞ্চ চতুর্দ্ধশানাং ক্রেছি বিধীনক্ত শক্তব্যক্ত। পঞ্চোত্তরক্তাপাযুক্ত বর্গং জানাসি চেম্পবিধান্মার্শম ॥"

এই হত্ত অবলখন করিরা ৯,১৪,২৯৭ ও ১০০০৫ রাশির বর্গকল নির্ণর করিতে হইলে বথাক্রমে পূর্ব্বোক্ত প্রক্রিরাহার। ৮১,১৯৬,৮৮২০৯ ও ১০০১০০০২৫ রাশি পাওরা যার, অথবা অক্স প্রক্রিরার সংখ্যার থও ৪ ও ৫ লইরা নিরোক্ত প্রকামের অক্সের বর্গকল নিরে হুইরা থাকে। উক্ত রাশিররের ওপকল ২০। উহার বিনিরী ৪০। উহাদের প্রক্রেক থাকের বর্গকলন্মটি—

৪×৪ => ৬; ৫×৫ == ২৫; > ৬ + ২৫ == ৪১; ছতরাং
৪০ + ৪৯ বোল করিলে ৮১ পাওরা বাদ। উহাই ৯ বর্গমূলের
বর্গকল। এইরলে ১৪এর ৭৩ ৬ ও৮; ইহালের অপকল ৪৮ বিনিয়া
৯৬। উহালের প্রেত্যেক থণ্ডের বর্গকলের সমষ্টি ৩৬ + ৬৪ ==
১০০। উহালের বোলে ৯৬ + ১০০ == ১৯৯৮; অথবা ১০ ও ৪ ==
১৪ রালির ৭৩ ধরিরা ঐরপ প্রথার অভ করিলে ঐ কলই
লম্ম হইবে।

গ্ৰন্ত উপায়--২৯৭ মালিকে ভিন করা উন করিয়া বে

পূথকচ্যত রাশি লব্ধ হর, তাহাকে ২৯৪ × ৩০০ হারা গুণ করিলে ৮৮২০০ গুণফল হয়। পরে [©]তাহাতে পূর্ব্বত্যক্ত ৩ সংখ্যার বর্গফল ৯ বোগ করিলে ৮৮২০৯ বর্গফল পাওরা যায়। এইরূপ প্রথায় সকল রাশিরই বর্গফলনির্ণয় হইতে পারে।

বর্গকশ্মন্ (ক্লী) গণিতোক্ত বর্গকগনির্ণায়ক অস্কপ্রক্রিরা-সমাধানকার্য।

বর্গচর (পুং) পাঠীনমংখ্য, চলিত চিতল মাছ। (বৈছক্নি॰) বর্গঘুন (ক্লী) কোন বর্গরাশির ঘনফল।

বৰ্গখনখাত (পুং) অহশান্ত্ৰোক রাশির পঞ্চম বর্গপাত (Fifth power) ৷

বৰ্গণা (জী) খণন (Multiplication ।)

বৰ্গপদ (ফ্লী) বগ (Square root)

বর্গপাল (খুং) मनतकः । याত্রীদিগের নায়ক।

বৰ্গপ্ৰকৃতি (জী) গণিতোক অন্ধপ্ৰক্ৰিয়াবিশেষ (an affected equare in arithmatic)

বৰ্গপ্ৰথম (পুং) কাদি ৰগের প্ৰথম বর্ণ।

বর্গপ্রশংসিন (বি) স্ব স্ব দলের প্রশংসাকারী।

বৃগ্ফিল, কোন একটা রাশিকে তাহার সমান রাশির হারা গুণ করিলে যে ফল লাভ হয়।

বৃগ্যুক্ত (ক্লী) বগ'ল সমানাক্ষরত মূলং আছাক্ষ:। পুরিত সমান অক্ষরের আছাক। বগ'মূলে করণস্তা বৃক্ত হইয়া থাকে। শালাবভীতে বগ'মূলের বিবরণ এইরূপ আছে—

"তাক্ত্বান্ত্রান্তিয়মাৎ ক্রতিং দ্বিগুণরেক্স্লং সমে তক্তে ত্যক্ত্বালক্ষ্ণতিং তদাভবিষমালকং নিনিম্নং ক্তমেও। পঙ্ক্রাং পঙ্কিন্তে সমেহস্থবিষমাৎ ত্যক্তব্পবর্গ ফলং গঙ্ক্যাং তদ্দিগুণং স্থাসেদিতি মৃত্যু পঙ্কেন্দলং আৎ পদম।"

(শীলাৰভী)

ইহার উদ্দেশক যথা---

"মূলং চতুৰ্ণাঞ্চ তথা নবানাং
পূৰ্বাং ক্লতানাঞ্চ সংখ ক্লতীনাম্।
পূথক্ পূথ্যৰ্গপদানি বিদ্ধি
বুদ্ধেবিবৃদ্ধিদি তেহত্ৰ জাতা ॥"

রাশির বর্গনির্ণয়কালে বে প্রক্রিয়া অবলম্বন করিতে হয়, বর্গমূলে ভাষা সম্পূর্ণ বিপরীত। ২ রাশির বর্গ ৪; কিছ ৪ রাশির বর্গমূল ২:

ইংরাজীতে ইহাকে Square root বলে। প্রাকৃতপক্ষে প্রত্যেক সংখ্যাকেই ভাহার বর্মের বর্গমূল কহা যার। বে সকল সংখ্যার বর্গমূল কোন অখন্ড সংখ্যা বা ভয়াংশের ঠিক সমান ভাহাছিগকে পূর্ণবর্গ বলে; কিন্তু বে সকল অখন্ড সংখ্যা বা দলমিক ভয়াংশের সর্বাদিশন্ত আছ ২, বা ৩, বা ৭, বা ৮, তাহা পূর্ণবর্গ নহে।
৪০০এর অনধিক পূর্ণ-বর্গসংখ্যাগুলির বর্গমূল নামতার সাহায়ে
নির্ণীত হইতে পারে; কিন্তু হুইএর অধিক সংখ্যা বিশিষ্ট হুইলে
সেই সংখ্যার বর্গমূল নির্ণয় করিবার উপার স্বতন্ত্র।

একক স্থানীয় আছ হইতে আরম্ভ করিয়া বামদিকে প্রত্যেক দিতীয় স্থানীর আছের উপর বিন্দু স্থাপন কর। তাহা হইলে উক্ত রাশির উপরে এইরূপ যতগুলি বিন্দু স্থাপিত হইবে, সেই রাশির বর্গমূলের অথপ্রাংশ ততগুলি আছ বা সংখ্যাবিশিষ্ট হইরা থাকে। যেমন—

৩১৩৬ এর বর্গমূলের অথতাংশ ২ অঙ্কবিশিষ্ট এবং ১৫৬২৫ রাশির বর্গমূলের অথতাংশ ৩টা অঙ্ক বিশিষ্ট। উদাহরণ যথা----

১৫৩২৫ | ১২৫ বে আছের উপর বিন্দু স্থাপিত হয়,
১২) ৫৬ তাহা এবং তাহার বাম ভাগের
৪৪ আছটী লইয়া একটী অংশ হয়।
১২২৫ ১১২৫ এস্থলে ১,৫৬ ও২৫ এক একটা
অংশ। প্রথমে এমন একটী গরিষ্ঠ

সংখ্যা নির্ণয় কর ঘাহার বর্গপ্রথম অংশের অন্ধিক i সেই , সংখ্যাই বর্গমূলের প্রথম সংখ্যা হইবে। প্রথমাংশ হইতে ঐ সংখ্যার বর্গফল বাদ দিয়া যাহা অবশিষ্ঠ থাকিবে, ভাহার দক্ষিণদিকে দ্বিতীয় অংশী নামাও। ইহাতে নৃতন ভাজ্য (৫৬) পাওয়া গেল। এখন লব্ধ মূলাংশের সংখ্যা দ্বিগুণ করিয়া তাহাকে ভাজকরপে এই ভাজোর বামদিকে স্থাপন পূর্বক ঐ ভাজকদারা উক্ত ভাজ্যের শেষ অংশ ত্যাগ করিয়া প্রথম একটা বা হুইটা সংখাকে ভাগ কর। তাহাতে যে ভাগফল হয়, তাহা পুর্বেং লব্ধ মূলাংশের দক্ষিণে (১২) এবং উক্ত ভাজকের দক্ষিণে রাখ, এখন নৃতন ভাজক ২২কে শেষ লক মৃলাক্ক ২ দারা গুণ করিয়া দেই গুণদল ভাজা ৫৬ হইতে বিয়োগ কর। যাহা অবশিষ্ট রহিল তাহার দক্ষিণে তৃতীয় অংশ নামাও। তাহা হইলে নৃতন ভाজा ১२२৫ इटेल। এই ভাজ্যের বামে नक मूनांश्यात्र मश्या দ্বিগুণ করির। (২৪) ভালকরপে পুনরায় স্থাপন কর। এখন এই ভাজক দারা উক্ত ভাজ্যের শেষ অংশ ত্যাগ করিলে যে অংশ হর (১২২) তাহাকে ভাগ কর এবং ভাগকল ৫ কে লব্ধ মূলাংশের (১২৫) দক্ষিণে এবং উক্ত ভাজক ২৪এর দক্ষিণে (২৪৫) রাখিয়া পুনরার ভাগফল « দিয়া ভাজক ২৪**ংকে ও**ণ কর। সেই গুণফল ভাজকের সহিত হরণ করিলে আর কিছুই অব্শিষ্ট থাকিবে না। তথন শ্বির হইল ১৫৬২৫এর বর্গমূল ১২৫।

ভাগৰারা বর্গমূল নির্ণন্ন করিতে গিয়া বদি কোন নির্ণীত আছ অধিক হইরাছে দেখা বার, তাহা হইলে অপেকাঞ্চ কুন্ততর অংশ এহণ করিবে। অথবা ভাগৰারা বর্গমূলের কোন অংশ নির্ণয়কালে যদি ভাজ্য অপেকা ভাজক বড় হয় এবং যদি দেখা বায় যে, ভাগফল ১ কিন্তু অধিক গ্রহণীয় নয়, ভাহা হইলে পূর্ব্ধ লব্ধ মূলাংশের দক্ষিণে এবং ভাজকের দক্ষিণে এবং একটা শৃষ্ঠ বসাইয়া পরবর্ত্তী অংশ নামাইয়া লইবে এবং পূর্ব্ব প্রক্রিয়ায় আছ নিশাল করিবে। বর্গমূলাকর্ষণের সময় কথন কথন ভাজক অপেকা বৃহত্তর অবশিষ্ট থাকিয়া যায়। যে কোনও পূর্ণবর্গসংখ্যাকে অনায়াসে মোলিক উৎপাদকে পরিণত করা যায়, তাহার বর্গমূল অভি সহজেই নির্ণীত হইতে পায়ে।

 $V_{P200} = V_{55} \times (5 \times 05 \times 0) = 5 \times (5 \times 0 \times 0) = 50$

দশমিক ভগ্নাংশের বর্গম্লাকর্ষণ প্রক্রিয়া অথও সংখ্যার স্থার বিন্দু স্থাপনের সময় প্রথম বিন্দু এককস্থানীয় আছের উপর স্থাপন করিতে হইবে এবং তৎপরে আবশুক মত বাম ও দক্ষিণদিকের প্রত্যেক দ্বিতীয় আছের উপর বিন্দু স্থাপন করিবে। অথওাংশ হইতে মূলের যে আছওলি পাওয়া যায়, তাহার দক্ষিণে দশমিক বিন্দু পড়িবে। যে অথও সংখ্যা বা দশমিক ভগ্নংশ পূর্ণ বর্গ নহে, ভাহার বর্গমূল একটা অসীম দশমিক ভগ্নংশ হইবে। এরূপ জলে কভিপয় দশমিক স্থান পর্যান্ত বর্গমূল নির্ণীত হইতে পারে। আবশুক মত শৃস্থা যোগ করিয়া বর্গমূল নির্ণয়্যলালে দশমিক আছ-সংখ্যা যোগ করিয়া লইতে হয়।

বর্গমূল্যন, বর্গায়ন (ক্লাঁ) সঙ্গাতীয়াস্ক ময়ন্ত ঘাতঃ ঘনঃ। সঞ্জাতীয়া অকলের স্বর্গায়ন প্রকাশ অথবা কোন একটা রাশির বর্গকলের সহিত সেই রাশিদারা পুনরায় গুণ, তাহাকে মূলরাশির ঘনফল (Cubic root) বলে। লীলাবতীতে এই ঘনমূল প্রকরণ অতন্ত্র। ইহার করণস্ত্র ত্রিয়ন্তান্ত্র। তদ্যথা—

"সমত্রিঘাতশ্চ ঘনঃ প্রাদিষ্টঃ
স্থাপ্যো ঘনোহস্তান্ত ততোহস্থাবর্গঃ।
আদিত্রিনিম্নন্তত আদিবর্গ
স্থাস্থাহতোহথাদিঘনশ্চ সর্কে॥
স্থানাস্থরম্বেন যুতা ঘনঃ স্থাৎ
প্রকল্প তৎ খণ্ডযুগং ততোহস্তাম্।
এবং মুহর্ক্যবিনপ্রসিদ্ধা
বাষ্চান্ধতো বা বিধিরেমকার্যঃ॥
খণ্ডান্ডাং বা হতো রাশিস্তিয়ঃ খণ্ডঘনৈকাযুক।
বর্গমূলঘনস্থাে বর্গরাশের্যনাে ভবেৎ॥" ইহার উদ্দেশক—
"নব্দনং ত্রিঘনস্ত ঘনং তথা
কথর পঞ্চনন্ত ঘনঞ্চ মে।
ঘনপদ্ধ ততোহিপি ঘনাৎ স্থে
যদি ঘনেহন্তি ঘনা ভবতো মতিঃ॥"

>, ২৭, ১২৫ এই তিন্টী রাশির বথাক্রমে ভণনন্থারা

ঘনফল ৭২৯, ১৯৬৮০ ও ১৯৫৩১২৫ হন। অথবা » লাশির
৪ ও ৫ থও ধরিয়া কসিলে অর্গ্র উপারে উহা সিছ হইরা থাকে।
অর্থাৎ ৯ এবং ৪ ও ৫ রাশি, ঐ রাশিত্ররের পরক্পর গুণফল ১৮০।
তাহার ত্রিনিম্ন বা তিনগুণ ৫৪০। থও রাশিব্রের এক একটীর
ঘনসমটি ৪ × ৪ × ৪ = ৬৫, ৫ × ৫ × ৫ = >২৫; ৬৪ + >২৫ =
১৮৯। লব্ধ রাশি ছইটার ঘোগফল ৫৪০ + ১৮৯ = ৭২৯।
ইহাই ৯ রাশির বর্গঘন। অথবা ২৭ রাশির থও ২০ ও ৭।
ইহাদের পরক্ষার গুণফল ও ত্রিনিম্ন সংখ্যা ২৭ × ২০ × ৭ =
৩৭৮০ × ৩ = ১১৩৫০; থও রাশিব্রের ঘনফল সমটি -- ২০ × ২০
২০ = ৮০০০ + ৭ × ৭ × ৭ = ৩৪৩ = ৮৩৪৩ এই জাত্যন সমটি
ও প্রেবিক্তরাশির যোগফল ১১৩৪০ + ৮৩৪৩ = ১৯৬৮০।

অথবা ৪ রাশি— ইহার বর্গমূল ২ ও ঘনফল ৮। ইহাদের স্থা অর্থাৎ প্রস্পারের গুণফলের ৪ গুণ = ৬৪ বর্গরাশির ঘনফল হইয়া থাকে। এইরপে ৯ রাশি—ইহার মূল ৩ ও ঘন ২৭। ইহার বর্গ—৯ এর ঘন ৭২৯ অর্থাৎ ৩×২৭×৯ = ৭২৯। এতজ্বারা বুঝা যায় যে যাহা বর্গরাশিঘন তাহাই বর্গমূলঘনবর্গ = ৩×৩×৩=২৭×২৭= ৭২৯। ঘনমূল নিশাদনার্থ করণসূত্র বিবৃত্ত প্রাহে—

"আছং খনস্থানমথাখনে তে পুনপ্তথাস্ত্যান্থনতো বিশোধান্। খনপৃথক্ত্বং পরমন্ত কৃত্যা বিদ্যা তদাত্তং বিভক্তেং কলন্ত ॥ পত্ত্যাং ভানেত্তংকৃতিমস্ত্যানিয়ীং বিদ্যাং ভালেত্তংপ্রথমাৎ কলন্ত। খনং তদাত্যান্থনমূলনেবং পঙ্কিভবেদেবমতঃ পুনশ্চ॥" (দীলাবতী)

[यन ७ यनमून भरन (नथ ।].

বর্গবির্গ (পুং) বর্গের বর্গফল (Biquadratic number)
বর্গমিন্ (অব্য) দলে দলে।
বর্গস্থি (ত্রি) দল মধ্যন্থ। স্থানান্তরক।
বর্গা, (বর্গাহ, বর্গাহি), উত্তরপশ্চিম ভারতবাসী নিম্নশ্রেনীর জাতিবিশেষ। রাজপুতগৃহে দাশুবৃতিহারা জীবিকার্জন করা ভাহাদের
প্রধান ব্যবসা। এই শ্রেণীর রমনীগণও গৃহস্থপরিবারে, বিশেষতঃ
রাজপুত-সন্ধার পৃহে রাজকুমারদিগের ধাত্রীরপে বাল করে এবং
স্তনত্ত্ব দিরা ভাহাদের লালন পালন করিয়া থাকে। ভাহারা
বলে বে কনোজে ভাহাদের আদি বাল ছিল। গহরবাড়-রাজপুতগণের দলে ভাহারা আদি জয়ভূমি পরিত্যাগ করিয়া নানাস্থানবাসী হইরা পড়িরাছে। ভাহারা গোয়াল আহীরগণের
কুট্র বলিয়া পরিচিত।

তাহারা বলাতির মধ্যেই আবান প্রবান করে। গোলবিভাগ না থাকার পিওবোৰ বটিবার সভাবনা। এই কারণে
উাহারা কএক পুরুব বাদ দিরা অর্থাৎ বতদিন না পূর্য কুটুবিতাবৃতি লোপ হর, ততদিন পরে সেই পরিবারে আর পূত্র কলার
বিবাহাদি দের না। বিবাহপ্রখা সাবারণ হিন্দুর মত। অধিক
বয়সেই সাধারণতঃ বিবাহ হয়। বিবাহ উৎসব তিন দিন মাত্র
থাকে। প্রথম দিন শিল অর্থাৎ উঠানের মধ্যুরলে শিল পাতিরা
চাল শুড়ান হর এবং ত্রাহ্মণ আসিরা সৌরী পূলা করিয়া বার।
ই দিন অর্থাতির বা আতিকুটুবের তোল হয়। বিতীর নাইন্
বিন—ই বিনে মাতৃপুরা ও আত্যুদ্ধিক প্রাহ্ম এবং তৎপরে
তোল। তৃতীর দিন বয়াত—ই দিন মহাস্মারোতে বন কলার
কৃহাতিসুধ্ধ সবলে বাত্রা করিয়া থাকে।

বন্ধ আসিরা উপছিত হইলে বথালথে বন্ধ ও কন্তাকে লইনা বাঁড়ো নামক ছ্লাডলে লইনা বসার । আন পন কন্তার পিতা আসিরা বরের পদে হক্ত দিরা কন্তা সম্প্রদানের অন্তরেগ জানার এবং বানের বন্ধিপাশ্বরপ জামাভার হত্তে একটা কল দের। তদনজর উভবের বল্লের পৃট লইনা "গাঁটছুড়া" বাঁথিরা দেওরা হর এবং বর ও কন্তা মাঁড়োর চৌবিকে ৭ পাক পুরিরা আইসে। ইহার পর কন্তার পিতা বরের কপালে হরিলা ও চাউল ঠেকাইরা দের এবং জামাভা ও কন্তাকে লইনা কোহাবারে (বাসর্বরে) লইনা বায় । এখানে "গৃহস্থিত অপরাপর রমণীরা উপস্থিত হইনা হাল্ল পরিহাল করে এবং বরকে দিরা হুইটা প্রজ্ঞানিত বর্তিকার আলোকশিখা পরস্পরে সম্প্রিলিত করাইরা উভরের অভিন্তর্বর আলোকশিখা পরস্পরে স্থিলিত করাইরা উভরের অভিন্তন্বর্বর বাবের-বিবাহ নাই। মহাবীর ও পাঁচপীর ইহাদের প্রধান উপান্ধ । জনেকে ক্ষেকারিও করিরা থাকে।

ব্যাহিঞা, দালপুত ৰাতিদ্ন একটা শাখা। গালিপুরে ইহাদের বাস। ইহারা আপনাদিগকে দৈনপুদী বেলাবাসী চৌহান লাতিদ্র অঞ্জম শাখা বলিয়া মদে করে।

যগালা, বৃদ্দদহর জেলাবাদী রাজপুত লাভির একটা শাখা।
ইহালা আপনাবের চক্রবংশী বলিরা পরিচিত করে। ইহাদের
মধ্যে বিধবা বিবাহ প্রচলিত আছে। এই কারণে ইহারা
আপনাবিগকে গৌডুরা লাভির সমলেশীর বলিরা গণ্য করিরা
থাকে। ইহারা আপনাবিগকে দৃত্দাল ও ভাটপালের বংশধর
বলিরা পরিচিত করে। কংশেডিহালে প্রকাশ, উজ নাত্বর
ইলোর হইতে নালবে আদিরা বাস করেন। মহম্ম বোরী
রাজা পৃখুারারকে আজ্মেদ করিলে, ইহারা বিল্লীক্রসেনার অধিনারক হইরা রশক্ষেত্রে বৃত্ত করেন। স্লাট্ অরক্ষেত্রের রাজান্দ্র এই পাথার অনেকে ইস্লান থকে বীক্ষিক হইরাছিল।

বর্গন্ (ত্রি) বলভুক্ত। কোন পক্ষের অপ্রগত।
বর্গী, মধুরার সমিকটবাসী জাতি বিশেষ । বাসর্ভি, কবি

অথবা বনে পশু নীকার করিরা ইহারা জীবিকার্জন করিরা থাকে।
বর্গী (বেশক) মহারাইক্সা । বিশেষ । বংশগত।
বর্গীর (ত্রি) বর্গসম্বভীর। বেমন কবনীর, চবর্গীর ইত্যাদি।
বর্গোস্তম (ত্রি) বর্গেষ্ উত্তমঃ। রাশিবিগের শ্রেচ অংশ।
গ্রহণণ বর্গোন্তমে থাকিলে গুজুক্ত প্রদান করিরা থাকে।
চররাশি অর্থাৎ মেন, কর্কট, তুলা ও মকর রাশির প্রথম অংশ
বর্গোন্তম, এই সকল রাশির প্রথম অংশ গ্রহণণ থাকিলে গুজুকদদ করিরা থাকে।
ত কুলা হাইরা থাকে। এইরূপ ছির রাশির (বৃব, সিংহ, বৃশ্চিক
ও কুলারাশির) পঞ্চমাংশ; ল্লান্ডক রাশির (মিথুন, কল্পা, ধমু ও
মীনরাশির) নবমাংশ বর্গোন্তম।

"চরাণাং প্রথমে চাংশে স্থিরাণাং পঞ্চমে তথা।
নবমে কম্মকানাঞ্চ বর্গোন্তম ইতি স্বতঃ ॥" (জ্যোতিত্তক)
ইহা তির রাশিদিগের স্বকীর নবাংশকেও বর্গোন্তম করে।
রাশির স্বীর নবাংশে গ্রহণণ অবস্থিত হইলে ভাহাদিগকেও
বর্গোন্তমন্থ কলা বার।

"খনবাংশন্ধ রাশীনাং বর্গোন্তম ইতি শ্বতঃ।" (জ্যোতিত্বৰ)
বৃগ্যু (বি) কর্গদম্বনীর। (পুং) সভার সভ্য। সহযোগী।
বর্চচ, দীঝি। জ্যাদি" আত্মনে" অক" সেটু। দট্ বর্চচেত। দুঙ্
অবর্চিষ্ট।
বিচচ টী (সী) ১ ধাঞ্চভেদ। ২ বেঞা।

বর্চন (क्री) বর্চনে ইতি বর্চ (সর্বায়স্ত্রাংহন । উণ্ ৪।১৮৮) ইতি অহন । ১ রূপ । ২ বিঠা। (স্কুলত উত্তর ৩৪ অ°) ৩ তেলঃ (মেদিনী) ৪ আল । "আরাতীর্তিচাধা বজ-বাহস্ত" (শক্ ১।৬৬।২১) 'বর্চোধাঃ আরং ধেহি' (সারণ) (পুং) ৫ চন্তপুত্র । (মেদিনী) ।

"রোহিণামতবর্জন বর্জবী বেন চক্রমা:।"(অয়িপু"সতীনেহত্যাগ")
বর্চস্ক (পু: ক্লী) বর্চস্ স্থার্থে কন্। ১ বিঠা। (অমর)
২ দীখ্যি, ডেজ:। (তারত ১৩২৫।১৯)
বর্চস্ক (এ) বর্চস্কে হিডং বং.। ডেজোবর্জক, ডেজোবিবরে

বৃদ্ধক্ত (অ) বৃদ্ধনে হিডং বং। ডেলোবছক, ডেলোবছর হিডকর। "আহুবাং বর্জজন বারন্দোবনোরিদন্" (গুরুবলু°৩৪।৫০) 'বর্জজন বর্জনে ডেলনে হিডং' (মহীধর)

বর্চস্থেৎ (বি) > জীবশক্তিসম্পার। বলসম্পার। ২ সমুজ্জন,
দীবিশালী।
বর্চস্থিন্ (পুং) বর্কোংকাজীতি বর্তন্ (জনুবারাবেবেতি।
পা ধাহা১২১) ইতি বিনি। ১ চক্রই (জন্নিপু-) (বি) ২ তেলখী।
ব্যক্তিন্ (পুং) বর্ধেববর্ধিক জন্মরকের। ইক্র ইয়াকে সবংশে

নিহত করেন। (ঋক্ ২০১৪ ৬)। জাবার ঋথেদের অন্তত্তে (৭৯৯০ ৫) বর্ণিত জাতে যে, ইক্স ও বিষ্ণু ইহাকে নিহত করিরাভিলেন।

বর্চেচার হ্ (পং) মলরোধ। গুললেশের সজোচন।
বর্চেচালা [ধা] (ত্রি) শক্তিদ। বল্যনকারী।
বর্জাক (ত্রি) বর্জাকতীতি বৃজাব্দ। বর্জানকারী, ত্যাগকারী।
বর্জান (ক্রী) বৃজাব্দ। ১ ত্যাগ। ২ হিংলা। ৩ মারণ।
বর্জানীয়ে (ত্রি) বৃজাকারির। বর্জানবোগ্য, ত্যক্তব্য। বে
সকল দ্রব্য বর্জান করিতে হর।

"রাজারং নর্ত্তকারঞ্চ তক্ষোহরঞ্জকারিণঃ। গণারং গণিকারঞ্চ বগুরাইঞ্চর বর্জ্জরেও॥" (কৃর্মপুণ উপবি[°]১৬অ°) রাজার অন্ন, নর্তকের অন্ন, স্তারের অন্ন, কুমারের অন্ন, গণার, গণিকার অন্ন এবং ব্যব্দের অন্ন বর্জনীয়।

মুমুসংহিতার লিখিত আছে—উদয় বা অন্ত অবস্থায় সুর্যাদর্শন বর্জনীয়। রাচগ্রন্ত সূর্যা, জল প্রতিবিশ্বিত সূর্যা এবং আকালমগুলের মধাগত সূর্যাকে দর্লন করিতে নাই। বংস-• বন্ধনের রজ্জু উল্লন্ডন, বারিবর্ষণকালে দৌড়িয়া গমন এবং জলে আপনার প্রতিবিধ দর্শন বর্জনীয়। কামোন্মত হইলেও ব্রজ্ঞোদর্শনের নিষিদ্ধ দিনত্তার গমন বা রক্তবালা স্ত্রীভোজন করিতেছে, এমন সময় ভার্য্যাকে অবলোকন; হাঁচিতেছে, হাই তলিতেছে বা যথাসুথে জনংযত ভাবে বদিয়া আছে, এমন সময়ে ভার্য্যাকে অবলোকন; নেত্রদ্বদ্ধে কজল প্রদান করিতেছে, অনাবৃত হইয়া তৈলমুক্ষণ করিতেছে বা সম্ভান প্রস্ব করিভেছে, এমন সময়ে ভার্যাকে অবলোকন করিতে নাই। একবন্ত পরিধান করিয়া অন্তভাজন, বিবত্ত হইয়া লান: বর্জনীয় পথে. ভদ্মের উপর, গোচারণম্বলে, ফাল-কর্ষিত ভূমিতে, জলে, অগ্নিতে, শ্মশানস্থ চিতায়, পর্কতে, জীর্ণমন্দিরে, কমিকত মৃত্তিকারাশির উপর যে সকল গর্তে প্রাণিদিগের বাস, এই সকল স্থলে মল মূত্র ভাগে বর্জন করিবে। গমন করিতে করিতে দাড়াইয়া, বায়, অমি, ব্রাহ্মণ, কুর্যা, জল ও গো এই সকলের সন্মুণ অবলোকন করিতে করিতে মলমূত্রত্যাগ করিতে নাই। মুথ বারা ফুঁদিয়া অগ্নিপ্রজ্ঞানন, পত্নীকে উল্প দর্শন, ও অগ্নিতে অপবিত্র বস্ত নিক্ষেপ বর্জনীয়। অগ্নিতে পা উত্তাপিত করিবে না। শ্যার कारधारमान अधितकन निविधः बाहारक श्रारन आहारक नारत, এইরূপ কর্ম্ম করিতে নাই। সন্ধাবেলার ভোজন, ভ্রমণ এবং শন্ত্রন করিতে লাই। রেখাদি দারা ভূমি খনন করিবে না, জনেধা-निश्व वर्षाः विक्रामुजामिनिश्व बजामि क्लानन, वाममूक्रगृहर अकांकी শরন, প্রেষ্ঠ জনকে নিজা হইতে প্রবোধিত করণ, রজখণা ত্রীর স্হিত সম্ভাবণও অনিমন্ত্রিত হইরা বঞ্চাংলে গমন বর্জন করিবে।

গাড়ী বৰ্ধন ৰুপ বা হুছ পান করে, তবন ডাছাকে নিবারণ করিতে নাই, কিংবা ৰুপ বা হুছ পান করিতেছে দেখিয়া উহা কাহাকেও বলিয়া বিতে নাই। বে গ্রামে অধিক সংখ্যক অধার্মিক লোকের বাস তথার বাস নিবিছ। বে হামের লোক সকল বহদিন ধরিয়া ব্যাধিক্তা, ভাদৃশস্থলেও বাস নিবিছ। দ্রপথে একাকী গমন, দীর্ঘকাল পর্কতে বাস, শৃত্রখণবত্তী জনপদে বাস, ও দেববহিছ্ তি পাবওগণ কর্ত্বক আক্রোবদেশে বাস বর্জনীয়। বেসকল পহার্থের বেহুমর সারভাগ বাহিন্ন করিয়া লওয়া হইরাছে, তাহা ভোজন, এবং অতি প্রাতে বা অতি সায়ংকালে ভোজন বর্জন করিবে। যাহাতে দৃষ্ট বা অদৃষ্ট কোম কল নাই, ভাদৃশ কর্ম নিবিছ। অঞ্চলি হারা জল পান,ও উল্লয় উপন রাণিয়া কোন দ্রব্য ভোজন করিবে না। প্রেয়োজন না থাকিলে কোন বিবরে কুতুহলী হইবে না।

অশারীয় নৃত্যনীত বা বাদিত বাদন করিবে না । ৰাহর ভিতরে বা উপরে হস্ততন দিরা আন্দোট ধ্বনি, দরে দস্তে ঘর্ষণ করিয়া শব্দ, বা অক্ষরাগভরে গর্দভাদির ভার চীৎকার করিতে নাই। কাংগুপাতে পদধাবন, ভাগোতে ভোজন বা যে পাতে ভোজন করিবে মনোভাব অপ্রশন্ত হয়, তাহাতে ভোজন বর্জনীয়। অস্তের ব্যবহৃত চর্ম্মপাত্কা, বহু, উপবীত, মাল্য,ও অলম্বার ব্যবহার করিতে নাই। অবিনীত, ক্ষ্মিত, ব্যাধিশীড়িত, ভগ্মপুল, উৎপাটিতনয়ন, বিদীর্শক্র, বা বাহার বালাম্চি ছির্ম হইরাছে এমন অধ প্রাপ্তি চড়িয়া গমন করিতে নাই।

প্রথমেদিত প্র্যাতাপ, চিতাগুন এবং ভগ্ন আসন বর্জন করিবে। আপনা আপনি নথ ও লোম ছেলন, কিংবা দল্ধলারা নথ কর্ত্তন করিতে নাই। মৃত্তিকা বা লোক্ক অকারণ মর্দান,
নথলারা তৃণজ্জেদ ও নিক্ষলকর্দ্ম, এবং ভবিশ্বতে বে কর্ম্মে অস্থ্যোলগ্ন হইবে তাদৃশ কর্ম্ম বর্জন করিবে। কি লৌকিক, কি শাস্ত্রীর
কোন নিবন্ধ সহকারে পণবন্ধনাদিলারা কোন কথাই কহিবে না।
কণ্ঠস্থমালা উত্তরীয়ের বহির্দেশে ধারণ, গোকর পৃষ্ঠে আরোহণ,
প্রাচীরাদি লারা বেষ্টিত গ্রামে বা গৃহে লারাদি ভিন্ন অক্সন্থান দিয়।
প্রবেশ, রাত্রিকালে রুক্ষতলে অবস্থান বা রুক্ষতল দিয়া গমনাগমন, ব্যবহৃত চর্ম্মপাত্রকা হত্তে লইরা গমন, শ্যায় বসিয়া
ভোলন, হত্তলে প্রভূত অর লইয়া ক্রমে ক্রমে ভোলন, আসনে
ভোলা ক্রম রাশিরা ভোলন, রাত্রে তিল বা ভিললারা প্রস্তত
ক্রম্যভোলন, নলাবলার পরন, ও উল্লিইব্ধে কোন স্থানে গমন,
এই সকল বর্জন করিবে।

পতিত, চণ্ডাল, প্ৰশ, দৃগ', ধনাদিনৰে গৰ্কিত ও রক্ষকাদি নীচ জাতি ইহাদের সহিত ব্রাহ্মণ কিছুকালের জন্তও এফ ছারাতে উপবেশন করিবেন না।

বৰ্জনীর পায়-নত, জুৰু ও ব্যাধিযুক্ত ব্যক্তির পায় ভোজন कतिएक नाहे। कनकीविशिष्य अन्न, या हेकाथीन श्वन्त्रृष्टे अन्न, ক্রণবাতী কর্তৃক দৃষ্ট অন্ন, অভুমতী নারী কর্তৃক স্পৃষ্ট অন্ন, পঞ্চিগণ কর্ত্তক অবলীড় অন্ন, কুরুর কর্ত্তক ম্পুষ্ট অন্ন, গাভী বে অন্নের আলাণ লইলাছে, ভালৃশ আন, বে আলের ঘোষণা করা হইলাছে অর্থাৎ কে কুধিত আছ আইস, লল্ল প্রস্তুত হইরাছে, ডিভি-মাণি বারা এইরূপে সাধারণ আগন্তকের অভ বে অরবাশি উদ্দেশ করা হইরাছে, তাদৃশ অন্ন, বছলন মিলিত মঠবাসী-দিগের অন, বেভার অন্ন এই সকল অন্ন বর্জনীর। ইহা ভিন্ন চৌর, গীতবাভোগদীৰী, ভক্ষণ-বৃত্যুপৰীৰী, বৃদ্ধি উপনীৰী এই সকল ব্যক্তির অল্ল, কুপণের অল্ল, মহাপাতকী, ক্লীব, ক্ষজি-চারিণী স্ত্রী ও কপট ধর্মচারীর অন্ন বর্জন করিবে। পর্যুবিত অর, শৃদ্রের অর, উচ্চিই অর, চিকিৎসকের অর, মৃগাদি পশুহস্কা बारश्त्र अत्र, क्रुवदाकित्र अत्र, উछ्डि ट्रांसनकातीत अत्र, निष्ट्रत কর্মকারীর অন্ন, অশোচান্ন, এই সকল আন্ন বত্নপূর্বাক বর্জন করিবে। পতিপুত্রবিহীনা অধীরা জীর জন্ন, বেষকারীর জন্ন, শতক অর, পভিত বাকির অর, বে আরের উপর হাঁচিয়াছে তাদুণ অর, যে ব্যক্তি পরোক্ষে পরাপবাদ করে, যে মিথ্যা সাক্ষ্য দেয়, যে ধন-লোভে যজ্ঞকল বিজ্ঞান করে, ইহাদের আন্ন, নটবুভ, পেজীবীর আন্ন. যে ৰপ্ৰাদি সীবন দানা জীবিকা নিৰ্ম্বাহ করে, যে ব্যক্তি উপকারীর অপকার করে, কর্মকার, নিবাদ, রঙ্গোপজীবী, অর্থকার, বেণু-বিদারক, লোহবিক্ররী, কুকুরপোষণকারী, লোভিক, বস্ত্রধারক, वज्ञापित तक काती, निष्ट्रेत करे नकन वाक्तित जन वर्कनीय। याहात ন্ত্রীর উণপতি আছে, যে আতসারে ন্ত্রীর উপপতি সহ করে, যে ব্যক্তি সকল প্রকারে জীমিত, এই সকল ব্যক্তির অল্প এবং वाकात व्यव वर्कम कतिरव । (मन्न ११६ व्यः)

বর্জন্মিন্তব্য (বি) বৃঙ্গ-ণিচ্ তব্য । বর্জনীয়, বর্জনের যোগ্য । বর্জমিন্ত (কি) বৃজ-ণিচ্-ছুচ্ । বর্জনকারী, ত্যাগকারী । বর্জ্জিন্ত (বি) বৃজ-জ । ভাজ ।

"অবক্সাভঞ্বিধৃতং সরোবং বিশ্বরাধিতং।

ওরেরপি ন ভোক্তব্যার সংকারবর্জিত্তম্ ॥" (কুর্মপু৽ ১৬জ')

বৰ্জিন্ (মি) ভাৰা। ভাগৰায়ী।

दर्का (बि) द्य-गार । वर्कनीय, वर्कनरवांगा।

ব্র্ণ, ১ বর্ণন। ২ জ্রেরণ। ও রাস। চুরাদি পরত্রৈ দক । সেট্। লট্বর্ণর্ডি। সূত্ অববর্ণন। এই গাড়ু অবস্ত চুরাদি।

বর্ণ (জী) বর্ণরতীতি বর্ণ-কাচ্। কুরুম। (হেম) বর্ণ (পুং) বিরুদ্ধে (ইজি রু কুরুম্বিরূপ্তালিকলিজ্যো গিং।

ব্ৰ্ (প্ং) বিরজে (হাজ হু কুবুজু বিজ্ঞানস্থালভো । শং উণ্ ১০১০) স চ শিং। ১ আজি।

बाडि ठावि असान-आधन, कविन, देख छ पूत्र । धरे

চারি বর্ণ বা চারি জাতির উৎপত্তি সম্বন্ধ এইরূপ বেলোক্তি আছে বে, ব্যবন ভগৰান্ প্রক্রেরেপ ক্ষেবিভারে প্রবৃত্ত হন, তথন তাহার দেহ হইতে চারিটা বর্ণের উৎপত্তি হয়। ভগবানের মূথ হইতে ব্রাহ্মণ, বাহ হইতে ক্ষত্রির, উক হইতে বৈশ্ব এবং পার হইতে পুদ্র উৎপত্র হইরাছিল।

"ব্রান্ধণোধক মুখমানীৎ বাছ রাজক্য হকঃ।
উদ্ধ তদক্ত ববৈক্তঃ পদ্ধাং পূজাে অলায়ত ॥"(এক ১০১৯০১:২)
লাল্লে এই বর্ণচড়ুইয়ের পৃথক্ পৃথক্ ধর্মকর্ম নির্ণীত হইরাছে।
ব্রান্ধণ ক্ষতিয়াদি বর্ণচড়ুইয়কে লাক্সাদেশে আপন আপন ধর্মকর্মায়সারেই চলিতে হয়।

ভগবান্ মহ বর্ণচভূষ্টরের এইরপ পৃথক্ পৃথক্ কর্ম নির্দিষ্ট করিরাছেন—আন্ধণের ধর্ম অধ্যরন, অধ্যাপন, বজন, বাজন, দান ও প্রতিগ্রহ। ক্ষত্রিরের কর্ম—প্রজারক্ষা, দান, বজ্ঞান্থ-চান, অধ্যরন এবং নৃত্যগীত ও বনিভোপভোগাদিতে আত্যন্তিক ক্ষনাসক্তি। বৈভের ধর্ম-পশুপালন, দান, বজ্ঞ, অধ্যয়ন, বাণিক্ষ্য, কুসীদস্তি এবং ক্ষবিকর্ম। শ্রের ধর্ম—অহরাহীন হইরা উক্ত বর্ণত্রের গুশ্রম।

"সর্বাহ্য তু ধর্মন্ত গুপ্তার্থং স মহাত্যতি:।

মুখবাহ্রপাজনা: পূথক কর্মাণ্যকররং ॥

অধ্যাপনমধ্যরনং ধকনং বাজনং তথা।

দানং প্রতিগ্রহকৈব বাজ্যানামকররং॥

প্রজানাং রক্ষণং বানমিজ্যাধ্যরনমেব চ।

বিবরেশপ্রস্কিক ক্রিয়ন্ত সমাসতঃ ॥

পশ্নাং রক্ষণং বানমিজ্যাধ্যরনমেব চ।

বিপিক্পথং কুসীমঞ্চ বৈক্তক ক্রিমেব চ

শেক্তবিংক কুসীমঞ্চ বৈক্তক ক্রিমেব চ

শেক্তবিংক বর্ণানাং গুজাবামনস্বারা॥" (মৃদ্ধু ১৮৭-৯১)

বান্ধণ, ক্ষবির, বৈশ্র ও পুত্র সকল বর্ণেরই শান্তশাসনে
বথাবিধি আশ্রমী হইতে হয়। তল্পংগ্য ব্রান্ধণের আশ্রম
চারিটী। বথা—ব্রন্ধচর্যা, গার্হস্থা, বানপ্রেম্ব ও সয়্যাস। উপনরনের পর ক্ষিতেন্তির হইরা ওলপুতে বাল ও লালবের অধ্যরন
করিতে হয়, ইহারই নাম ব্রন্ধচর্যাশ্রম। বেলাগ্যন্ম সমাপনের
পর লারপরিপ্রহান্তে বর্ণন্তির্যালন-পূরঃসর গৃহস্থ হইতে হয়। এই
আশ্রমের নাম গার্হস্থা। তৎপত্তে পুর্বোৎপার্বনের পর বনে বাস,
অক্তইশচ্য ক্লাবি ভক্ষণ ও ক্ষরেরের আরাধনা, ইহাই হইক
বানপ্রহান্তম। তৎপত্তে গুহারি সর্বন্ধন্ত পরিভ্যাসপূর্বাক রুভিত
মন্তকে গৈরিক কৌলীন পরিয়া, রঙ্কমঞ্জন্ন গইয়া ভিন্দার্থিত
অবলবন, নির্মান প্রবেশে বা তীর্ণারিতে বাল এবং একমাত্র
পরবেশরের আরাধনা। ইহাইই নাম—সম্যাস আশ্রম।

্রিএই আশ্রম চারিটার মতি সংক্ষিপ্ত পরিচর এখানে লিপিবছ হইল। ঐ সকলের বিশ্বত বিবরণ তৎতৎ শব্দে এইবা।

ছিতীর ও তৃতীর বর্ণ-ক্ষত্রিয় ও বৈশ্র। ইহাদিগের পক্ষে শেবোক্ত সন্ধাস আশ্রম ছাড়া প্রথমোক্ত ক্রম্বার্চগা, গার্হত্বা ও বান-প্রাপ্ত এই তিনটী আশ্রমই প্রাপত। এতদ্ভির স্ক্রের পক্ষে গুরু গৃহস্থাশ্রমই নির্দিষ্ট। অন্ত কোন-আশ্রম স্ক্রের অধিকার নাই।

ঈশবের আরাধনা সকল বর্ণের—সকল আশ্রমেরই সাধারণ ধর্ম । তন্মধ্যে ধিনি বিষ্ণু উপাসক, তিনি বৈষ্ণব, শিবোপাসক শৈব, হুর্গা প্রাভৃতি শক্তি-সাধক শাক্ত, হুর্যোপাসক সৌর এবং গণেশোপাসক গাণপত্য নামে খ্যাত। ইছা পৌরাণিক মত।

চারিবর্ণের বিভিন্ন কর্ম সম্বন্ধে বিচ্চুপুরাণ বলিয়াছেন, প্রাশ্বণ দান করিবেন, বেলাধার্য্যন-পরারণ হইবেন এবং বজ্ঞানি দারা দেবগণের অর্চনা করিবেন। প্রাশ্বণকে নিজ্যোদকী হইতে হইবে ও অগ্নিপরিগ্রহ করিতে হইবে। জীবিকার জন্ম যাজ্ঞন ও অধ্যাপন করিবেন এবং যে ব্যক্তি বৈধ উপারে ধনার্জনকরিয়াছে, তাহার নিকট হইতেই স্থায়তঃ প্রতিগ্রহ লইবেন। প্রাশ্বণ সকলের হিত্যাধন করিবেন, কথন কাহার অহিত বা অনিষ্টাচরণ করিবেন না। সর্বভ্তে মৈগ্রীয়াপনই প্রাশ্বণর পরম ধর্ম। পরকীয় প্রস্তর কিংবা রক্ন উভয় বস্তুতেই প্রাশ্বণ ভুল্যজ্ঞান হইবেন। ঋতুকালে পত্নীগমন করিবেন। *

ত্রাহ্মণ উপনীত হইয়া বেদাভ্যাদে তৎপর হইবেন। এই
সময় তাঁহাকে ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বন করিয়া একাগ্রমনে গুরুপ্তে
বাস করিতে হইবে। তথন শৌচ ও আচারবান হইয়া গুরুর
গুল্লবা করিবেন এবং নিয়মত্ব হইয়া পরিত্র বৃদ্ধিতে বেদ গ্রহণ
করিবেন। উভয় সদ্ধায় সমাহিত হইয়া অয়ি ও স্থেয়াপাসনা
এবং গুরুকে অভিবাদন করিতে হইবে। গুরু দাঁড়াইলে দাঁড়াইতে
হইবে, গমন করিলে গমন করিতে হইবে এবং উপবেশন করিলে,
নিয়াসনে উপবেশন করিবে। কথনও গুরুর প্রতিকুলাচরণ
করিবে না। গুরুর আদেশে গুরুর অভিমুখে বিসয়া অনভাচিতে
বেদপাঠ করিবে। তাঁহার অয়্য়া লইয়া ভিক্লায় ভক্ষণ করিবে।
আগ্রে আচার্য্যের ক্লাবগাহন হইলে, পরে সেই কলে অবগাহন
করিবে। গুরুরুরাসকালীন সমিৎ ও কলে প্রভৃতি প্রয়োজনীয়

শ্বানং ন্যান্থৰেদেবান্ বলৈ: বাব্যায়তংপর: !
 নিড্যোন্বী কৰেছিএ: কুয়ালাগ্নিগরিএবন্ ।
 বৃদ্যাবং বাদ্যেকভাজনভানবাগ্যেকবা ।
 কুয়াবং অভিন্তং নানং কন্তাবান্তানেতা বিজ: ।
 নিক্তোক্তিং কুয়ালাহিতং ক্লচিন্তিঃ ।
 কুয়াবিন্তান প্রায় ক্ষতে চাক্ত পার্বিন: ।

 কুয়াবিন্তান প্রায় ক্ষতে চাক্ত পার্বিন: ।

সমত বস্থ থেতিবিন প্রতিপ্রভাতে শ্বরং আহরণ করিরা আনিবেন। তৎপরে বধন অবস্থ অব্যেত্তর বেদ অধ্যরম শেব হুইবে, তখন শুদ্ধর অব্যাথ নিবাধি বারপরিপ্রাহ প্রতি বারা ধনসংগ্রহ করিরা সাধানত বাবতীর গৃহত্যেচিড কার্য্য-সম্পন্ন করিতে থাকিবে। নিবাধ বারা পিতৃপুদ্ধবিগকে, বজ্বারা বেবডাদিগকে, অর্থনানে অতিথিনিগকে, শ্বাধ্যারে মুনিদিগকে অপত্যোৎপাধনে প্রজাপতিকে,বিদ্ধর্মে ভূতবর্গকে এবং বাৎসাল্য প্রকাশে সমগ্র অগৎকে আপ্যায়িত করিবেন। পুন্দর শ্ব শ্ব কর্মার্ক্তিত লোক সকল প্রোগ্ড হুইরা থাকেন। কি ভিন্দাভোলী, কি পরিব্রান্তবন্ধ, কি প্রকারী, গার্হ্যে ধর্মেই ইইাদিগের সকলেমই প্রতিচা। সেই জক্ত গার্হ্য ধর্মই সর্ব্বেথধান।

রাজ্ঞণগণ বেদাধ্যয়ন, তীর্থলান ও পৃথিবী দর্শন এই তিন কার্ন্যের জন্ত সমন্ত বহুধা পর্যটন করিয়া থাকেন। বাঁহাদিগের কোন গৃহসংস্থা নাই, বাঁহারা আহার ভ্যাগ করিয়াছেন, যেথানে লায়ংকাল, সেই থানেই বাঁহাদিগের গৃহ, জর্থাৎ বাঁহারা লায়ংনগৃহ, তাঁহাদিগের গৃহস্থাশ্রমী ব্যক্তিই প্রতিষ্ঠা এবং গৃহস্থই তাঁহাদিগের মূল। তাঁহারা গৃহাগত হইলে, গৃহস্থ তাঁহাদিগকে স্থাগত সন্তাবণাদি মধুর বাক্য বনিবেন এবং শয়ন জাসন ও পান ভোজনাদি দানে গৃহস্থ রাজ্ঞণ তাঁহাদিগকে আপ্যায়িত করিবেন। কোন না, অতিথি গৃহ হইতে হতাল হইয়া ফিরিয়া বাইবার সময় নিজ গুরুতির বিনিময়ে গৃহস্থের স্থক্তি লইয়া চলিয়া বান। অবজ্ঞা, অহয়ার, দস্ত, পরিতাপ, উপবাত ও পারুল্য প্রভৃতি গৃহস্থ ব্যক্তির পকে প্রশন্ত নহে। গৃহস্থ রাজ্ঞণ ঐ গুলি পরিত্যাগ করিবেন। বে গৃহস্থ বিপ্রে এই ভাবে স্থচাক্রমেণ গৃহধর্ম পালন করেন, তাঁহার সকল বন্ধন ছিয় হইয়া বায়, তিনি চয়মে পরম স্থান লাভ করেম।

গৃহাশ্রমী ব্রালণের যথন বরংপরণতি বটিবে, গৃহধর্ম বথাবিধি
প্রতিপালিত হওয়ার তিনি যথন ক্যুতকার্য হইবেন, তথন
পুরদিগের উপর ভার্যারক্ষার ভার দিরা অথবা ভার্যাকে সঙ্গে
লইরা বন গমন করিবেন। এই আশ্রমের নাম বানপ্রায়।
এখানে আসিরা ভারাকে কেশ, শাশ্রু ও জটাধারী হইতে হইবে।
ফল মূল ও পত্র ভারার আহার হইবে। ভূতলে শরন করিবেন।
বুনিব্রতগ্রহণ করিয়া আশ্রমাগত সকল অভিথিরই আভিথা করাইবেন। ক্লুফাজিন কাশ ও কুশ বারা আপনার পরিধান ও উত্তরীয়
করিবা লইবেন। প্রাতে, মধ্যাকে ও সারাকে ভিন বেলা জান
করিবেন। বেবার্কনা, হোম, অভ্যাগতগণের অর্কনা, ভিক্তা ও
ভূতবর্গকে বলিপ্রদান, এই শক্ষা কাজ বানপ্রস্থান্ত্রীয় প্রশান্ত।

বেন। তপঞ্চা করিতে করিতে ক্রমে শীতরীমাদিসহিষ্ণু হওর। আবশুক। যে বানপ্রস্থাশ্রমী নিরমরত হইরা উক্তরূপে যথাবিধি আপন আশ্রমধর্ম পালন করেন, তিনি অগ্নিমৎ লোহরাশি লগ্ধ করিরা সেই সনাতন পদ পাইবার পথ পরিকার করিরা লরেন।

তাহার গর চতুর্ধাশ্রম। এই আশ্রমই শেব আশ্রম। ইহা বতি বা ভিকুর আশ্রম। সমত নাৎস্ব্য ত্যাগ ক্রিয়া পুত্র, মিত্র, কণত্র ও সমস্ত দ্রব্য সম্পাদের মাদা মমতা বা প্লেহ আসস্তি ছাডিরা এই আশ্রনে প্রবেশ করিতে হয়। এ আশ্রনে ত্রৈবর্ণিক-কেই সর্বানম্ভ ভ্যাগ করিতে হইবে। সর্বান্ধতে মিত্রাদিবৎ মৈত্রী স্থাপন করিবে। বাকা, মন ও কর্মধারা জরায়ু ও অওজ প্রভৃতি কোন প্রাণীরই কখন কোনরূপ স্রোহাচরণ করিবে না। সর্ক সঙ্গ পরিত্যাগ করিবে। গ্রামে একরাত্র পর্যান্ত বাস করিবে। পরে পঞ্চরাত্র পর্যান্ত বাস করিবে। তদ্তির নিব্ধ প্রীতি অনুসারে ভিকু যেখানে দেখানে বাদ করিতে পারেন। যখন গৃহত্তের গুছের পাকারি ও পাক্ষুম নির্কাপিত হইয়া যাইবে, গৃহছেরও আহারকাণ্য শেষ হইবে, তথন ভিক্ষু বা যতি যথাকালে প্রাণযাত্রানির্বাহের অন্ত উচ্চ বর্ণদিগের গ্রহে ভিকার্থ গমন ক্রিবেন। কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ ও গ্র্কাদি সমস্ত দোষ পরিহার করিয়া নির্মান ও নিস্পৃহ ভাবে সর্বার পরিভ্রমণ ক্রিবেন। কোন হিংল্র জীব জন্ত হইতেই তাঁহার কোন ভয় शांकित्व ना । कात्रण मुनिता नर्का भौतिक रे ज्या प्रता हतन, তীহারও কখন কোন প্রাণী হইতেই ভয় উৎপন্ন হয় না। যে বিশ্র ভৈক্ষোপগত হবিছারা অগ্নিহোত্র নিজ শরীরসংস্থ করিয়া মুখে শরীরামি বছন করেন, তিনি অমিচারীদিগের সালোক্য व्याश इन। এইक्ररंग छि । कुछत्बि इहेब्रा विनि यर्थाक মোকাশ্রম ধর্ম পালন করেন, অনিমন প্রশান্ত জ্যোতির ভার তিনি বন্ধলোক লাভ করিরা ধাকেন। (বিশুপু°২র অংশ ৮৯ জঃ)

ক্ষতিরের ধর্মস্বকে বিকুপুরাণে উক্ত হইরাছে বে, ক্ষতির ব্যাহ্মপিগকে নিক্স ইজামত দান করিবেন। বিবিধ বজ্ঞামূচান ও ক্ষরায়ন করিবেন। শত্র ধারণ করিরা মহীরকাই তাঁহাদের শ্রেষ্ঠ জীবিকা, বরিত্রী পরিপালনই ক্ষতিরের প্রধান কার্য। রাজ্যরকা ও রাজ্যে শান্তিশ্বপনাদি ব্যাপারেই তাঁহাকে কৃতকার্য। হইতে হইবে। ক্ষতির পালন ক্ষতিরেরই ধর্ম। ক্ষতির রাজ্যকে অধিষ্ঠিত হইবেন। ক্ষত্রির রাজ্যাকে স্ক্রবর্ণের সংখ্যারক হইতে হইবে। ক্ষত্রির এইরূপে শান্ত্রসক্ষত স্বধর্ম পালন করিরা চর্বকে পর্য পরের অধিকারী হইতে পারেন।

বৈশ্বের ধর্ম কর্ম সম্বন্ধে উক্ত আছে, পণ্ডপালন, বাণিজ্য, ও কৃষি-কর্ম এই তিনটা বৈক্তের ধর্ম-সম্বন্ধ নীবিকা। ক্ষিকর্তা এইরূপ নীবিকাই বৈশ্বপক্ষে নির্ণীত করিবাছিলেন। বৈশ্ব অধ্যয়ন, নিতা নৈমিত্তিকাৰি কর্মাম্চান, যক্ত এবং দানধর্ম্বের অমুচান করিবেন। বৈশ্রের কর্মা ছিলাতি সংগ্রামে সম্পন্ন হইবে এবং ক্রমবিক্ররজাত ধন বা কাক্ষকার্যাজাত ধন দারা তিনি দান ক্রিয়া সমাধা করিবেন। *

ক্ষত্রিয় এবং বৈশ্ব এই বর্ণবন্ধের মোটামূটী গার্হস্থা জীবনের জীবিকাধর্ম ঐক্লপই। তবে আশ্রমান্তর পরিপ্রতহে বর্ধাশাক্র তৎতৎ আশ্রমধর্মই পালন করিতে হয়।

শুদ্রও দান করিবে এবং পাক্ষজ্ঞ ছারা পিতৃপুরুষ প্রাভৃতির অর্চনা করিবে।

"নানঞ্চ দছাৎ শৃত্যোহপি পাক্য**জৈর্যজেনপি।**

পিত্রাদিকঞ্চ সর্ব্বং বৈ খূদ্রঃ কুর্ব্বীত তেন চ ॥" (বিষ্ণুপু•)

কি রাদ্ধণ, কি ক্ষত্রিয়, কি বৈশ্ব, কি পুদ্র সকল বর্ণেরই ভূতা, অমাতা ও আত্মীয়বর্ণের পরিপালন করা কর্ত্তর। সকলেই যথাকালে দারপরিগ্রহ করিয়া ঋতুকালে ব স্ব স্ত্রীতে অভিগমন করিবেন। সর্কাপ্রাণীর প্রতিই দয়া থাকা চাই, ভিতিকা থাকা চাই। কোন বর্ণ ই অভিমানী বা গর্কান্ধ হইবেন না। সভ্যানি, অনায়াস মঙ্গলচেষ্টা, প্রিয়ভাষণ, সর্কাত্র মৈত্রবন্ধনম্পূহা ন এবং অকার্পণ্য ও অনস্মা এই সকল সর্কার্থেরেই সাধারণ গুণ।

"ভ্ত্যাদিভরণার্থার সর্কেবাঞ্চ পরিগ্রহ: ।
ঋতুকালাভিগ্যনং স্থলারের মহীপতে ॥
দরা সমস্তভ্তের তিভিক্ষা নাভিমানিতা ।
সভ্যং শৌচমনারাসো মঙ্গলং প্রিরবাদিতা ।
মৈত্রী স্পৃহা তথা তহদকার্পাগং নরেশ্ব ।
জানস্রা চ সামান্তা বর্ণানাং কথিতা গুণাঃ ॥" (বিশ্বুপু•)

 গ্রামানি দদ্যাদিক্ষাভো ছিলেক্য: ক্ষত্রিরোছণি হি। शरकक विविदेशवंदेक अभीशील 5 शार्चिय । প্রারীবো মহীরক্ষাগ্রবরা তক্ত জীবিকা। ভগাপি প্রথমে করে পৃথিবীপরিপালনম্ ॥ ধরিত্রীপালনেনৈষ কুডকুড্যো নরাধিপঃ। ভবস্তি দৃপতেরংশা যতো ধর্মানিকর্মণাস্ # ভুটানাং লাগনাজালা নিষ্টানাং পরিপালনাৎ ৷ প্রায়োত্যভিষ্ঠান লোকান বর্ণদ্বারকে। বৃপঃ । शास्त्रशाहार ब्रांगिकाक कृषिक मन्द्रक्षपत्र । रेवणात जीविकाः उमा तको लाक्लिणावहः ॥ क्रताभाषाच्याः स्टब्सः शानश्रांक मनारकः। নিতানৈনিভিকাদীনামস্থানক কর্মণান্। ছিলাভিসংঅবং কর্ম ভারাব্যং ভেস গোৰণম। ज्ञविक्रवरेक्षवीति धरेनः कांत्रस्थान या ।" PITTE WRITE (विकूण्- ७ व्याम ४---३ व्यः) আপংকাদে বাদ্ধণ করির বা বৈশ্বর্থন্ত এবণ করিতে পারেন এবং করিরেরও বৈশ্বর্থন্ত ক্ষরার বাধা নাই। তবে ঐ উজর বর্গ কোন কালেই শ্বর্থন্ত গ্রহণ করিবেন না। এই যে বাদ্ধণ করিরবৃত্তি লইবেন, কি করির বৈশ্বর্থন্ত লইবেন। কি ইহারা কথন শ্বর্থন্ত লইবেন না, ইহা শুধু একান্ত আপংকালেরই বিধি। পারতপক্ষে উজর বর্গের উহা ভ্যাগ করাই কর্ত্তব্য। সহসা কেহই এই কর্ম্মসকর ব্যাপারে হত্তক্ষেপ করিবে না।

বর্ণগণের আপদ্ধর্ম সম্বন্ধ মহাভারতের শান্ত্রিপর্কের বিস্তৃতভাবে লিপিবদ্ধ হইরাছে। প্রপুরাণ স্বর্গথণ্ডের মতে সর্ব্বাঞ্জে

এক তেলোমর দিবা পল্ম শৃষ্টি হইল। সেই পল্ম হইতে ব্রদ্ধা
ক্রমিলেন। ব্রদ্ধা ইইতে মামুখ শৃষ্টি ক্ষারন্ত হইল। প্রকা শৃষ্টির
প্রারন্তেই প্রকাপতি ব্রদ্ধা ব্রাদ্ধণকে শৃষ্টি করিলেন, ব্রাদ্ধণ আদ্ধা
তেলে অগ্নি ও পূর্যাবৎ উনীপ্ত হইরা উঠিলেন। ভার পর সভ্য,
ধর্মা, তপঃ, ব্রদ্ধপদার্থ, জাচার ও শৌচ প্রভৃতি ব্রদ্ধা হইতে শৃষ্ট
হইল। এই সকল শৃষ্টির পর দেব, দানব, গর্ক্ম, দৈত্য, অস্তর্ম,
মহোরগ্য, যক্ষ, রক্ষ, রাক্ষ্য, নাগ, পিশাচ ও মন্ত্র্যা সকল শৃষ্টি
করিলেন। তৎপরে ব্রাদ্ধণ, ক্ষার্র্য, বৈশ্র ও শৃদ্ধ এই চারি
প্রকার বর্ণগৃষ্টি হইল। তন্মধ্যে ব্রাদ্ধণের বর্ণ সিত, ক্ষাত্রিরের
লোহিত, বৈশ্রের পীত এবং শৃদ্ধের বর্ণ অসিত অর্থাৎ ক্ষম।

মান্ধাতা নারদের কাছে প্রশ্ন করেন—আছো, যদি খেতপীতাদি বর্ণের পার্থকোই ব্রান্ধণ করিরাদি বর্ণ-বিভাগ হইরা থাকে,তবে ত সকল বর্ণেরই বর্ণসন্ধর দেখা যার। কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ, ভয়, শোক, চিন্তা, ক্ষ্মা প্রভৃতির আদিপত্য ত সর্বর। মূত্র প্রীয়াদি সকলেই ত্যাগ করে, মৃত্যু সকলের প্রভু, দেহ-কর্ম সকলেরই অনিবার্যা। স্থতরাং এ অবস্থার বর্ণবিভাগ হইল কিরপ এবং তাহাতে কলই বা কি ? আর এক কথা—জগতে স্থাবর জক্ষম কত অসংথ্য জাতি রহিয়াছে, তাহাদিগের বর্ণও নানা প্রকার; স্থতরাং বর্ণনির্ণর কেমন করিয়া হইবে ?

এই প্রশ্নের উত্তরে নারদ বলিরাছিলেন, রাজন্ ! বর্ণসমূহের কোনই বিশেষত্ব নাই। এই সমগ্র জগৎই ব্রহ্ময় ৷ ব্রহ্মা সকলেরই শৃষ্টিকর্তা। ব্রহ্মশৃষ্ট সকলেই এক ব্রাহ্মণ, তবে কর্মা-স্থারে এক এক সম্প্রদার ও এক এক বর্ণ অংথার অভিহিত। বে সকল ব্রাহ্মণেরা অংশ্র ত্যাগ করির। কাম্ডোগে রত, বাহার তীক্ষ বভাব, ফোধন, মিরসাহস ও লোহিভাল, তাঁহাঁরাই ক্রির হইরাছিলেন। বাঁহারা ক্লবিকর্মে লিপ্ত হইরা ভাহা বারাই ক্রীবিকা নির্বাহ করিছে লাগিলেন, গ্রানি পশুপালনে আসক্ত হইলেন, অধর্মকে পরিত্যাগ করিলেন, তাঁহাদের বেহ পীতবর্ণ ছিল, তাঁহারই বৈশুলাতি মধ্যে গণা হইরাছিলেন। আর বাঁহারা হিংসা ও অসতা আশ্রর করিলেন, যে কোন কর্মেই ক্রীবিকা নির্বাহ করিছে লাগিলেন, পৌচাচার ত্যাগ করিলেন, এবং অত্যন্ত সূত্রযভাব হইরা উঠিলেন, তাঁহাদের বর্ণ ছিল ক্ষ্ম, তাঁহারা বিল হইলেও তাঁহারাই শুদ্র সংজ্ঞার অভিহিত হইরাছিলেন।

এইরূপে কর্মান্থসারে ব্রাজ্ঞপেরাই বিভিন্নবর্ণে বিভক্ত হন।

এইরপে কণাছুদারে আদ্ধণেরাই বিভিন্নবর্ণে বিভক্ত হন।
চারিবর্ণের অন্তই বেদবাণী বিহিত ছিল, লোভে ও অক্তানে
পড়িয়া অনেকে সে আদ্ধী বাণী হারাইরাছিলেন। থাহারা
ধর্মতত্ত্বে একান্ত আসক্ত ছিলেন বলিরা সে আদ্ধীবাণী ভূলেন
নাই এবং থাহারা বেদাবল্যন, বেদবোধিত নিভা নৈমিভিক এতনিরম ও শৌচ সনাচারাদি সাধুসেবিত পথে থাকিয়া ব্রহ্মণ্ট
দেবপ্রতিপান্ত পরব্রহ্মকান প্রাপ্ত হইরাছিলেন, তাঁহারাই ব্রহ্মণ।

নারণ মান্ধাতার প্রস্নের উত্তরে চাতুরিবর্ণের এইরূপ শক্ষণ নির্দেশ করেন, যথা—যিনি জাতকর্মাদি দশবিধ সংকারে সংস্কৃত, শুচি ও বেদাধ্যরনসম্পন্ন, বিনি শৌচাচারে রভ থাকিয়া যজন বাজনাদি বট্কর্মে অবস্থিত, যিনি নিতা শুরুপ্রির, নিতাত্রতী ও সত্যরত, তিনিই আন্ধা নামে অভিহিত। সত্য, দান, আনুশংস্ক, অন্দোহ, রূপা, মুণা ও তপস্থা এই কর্মী বাঁহার কাছে নিত্য বিশ্বমান, তাঁহাকেই আন্ধা বলা যার।

যিনি বেদাধ্যমন সম্পন্ন হইরা নিয়ত ক্ষত্রিয়েচিত কর্ম আচ-রণ করেন, যিনি দান ব্যতীত কথন প্রতিগ্রহ করেন না, তাহাকে ক্ষত্রির বলা যার। যিনি পবিত্রভাবে বেদাধ্যমন সম্পন্ন হইরা পশুপালন ও ক্ষবিকর্মেরত, তাহারই নাম বৈশ্ব।

বাহার কোন থাডাথাড বিচার নাই, সর্বদা অপবিত্র অক্ষায় যে কোন কর্ম্মেট জীবিকা নির্বাহ করে, তাদৃশ বেদবজ্জিত, সন্ধাচারহীন ব্যক্তিই শুদ্রনামে খ্যাত। (মহাতা° ও পদ্মপু° সর্পথক)

চতুর্থের পশাকর্ম সমজীর বিধি বাবস্থা মন্ধানি শ্বতিসংহিতার এবং ভারির প্রার সমত প্রাণেই চতুর্থের ধর্মকর্মবিষরক বিভৃত উল্লেখ আছে। বাহুলাভরে সে সমত উক্ত হইল না। নরসিংহ-পুরাণ ৫৯ অধ্যার, মার্কণ্ডেরপুরাণের মলালনা উপাখ্যান, কুর্মাণের ২ ও ৩ অধ্যার, পর্মুগুরাণ শ্বর্গবাধের ২ ৫, ২৬ ও ২৭ অধ্যার, বামনপুরাণ ১৪ অধ্যার, এবং গরুড়পুরাণের ৪৯ অধ্যার, এ সম্বন্ধ বিভৃত বিবরণ এইবা।

বর্ণ (পুং) > গজচিত্রকখন, চলিত হাতীর খুল: পর্যায়-

XVII

 [&]quot;ক্ষাং কর্ম ছিলনোকেং বৈভক্ষ তথাপদি।
 রালক্ষ্য চ হৈছোকং গৌলং কর্ম ন চৈতলোঃ।
 সামর্থ্যে স্থিত ভদ্যালাস্থাকানিশি পার্থিব।
 তলেবাশনি কর্মবাং ন কুর্বাং কর্মবাধনার।" (বিকুপ্-)

প্রবেণী, আন্তরণ, পরিস্তোম (গং) কুপ, কুপা (অমর) প্রবেণি, পরিষ্টোম (ক্লী) কুপ। (তরত) ২ গুক্লাদি, চলিত বঙ্।

এই বৰ্ণ বা নত্বত প্ৰকাৰ, বধা - খেড, পাণ্ডু, গুনুর, রুক্, পীত, হবিত, বিক্তা, শোণ, অরুণ, পাটল, স্থাৰ, গুনু, পিলল এবং কর্ম্ব (অমর)। কুখাবোধের মতে ছব্ন মানের সময় গর্ভত্ব বালকের বর্ণ হয়।

ত যপ। ॥ গুণ। ৫ স্কৃতি। (মেদিনী) ৬ সুর্ণ। ৭ ব্রত। বর্ণাতে ভিন্ততে ইতি বর্ণ-ঘঞা (পুংক্কী) ৮ ভেদ। ৯ শীতক্রম। ১০ চিত্র। ১১ ভালবিশেষ। ১২ অক্সাগ। (হেম) বর্ণাতে ভিন্ততে আনেনেতি বর্ণ-ঘঞা। ১৩ ক্লপ। বর্ণস্থিত বর্ণ-আচ্। ১৪ অক্সা। বর্ণস্থিত বুলাতে ইতি বর্ণ ঘঞা। ১৫ বিলেপনা। (মেদিনী)

বর্গ তৃই প্রকার—ধর্মভাত্মক এবং অক্ষরাত্মক। দেহিগণের মূলাধারে একটি নাড়ী আঁছে। ঐ নাড়ীটা সর্পের ভার কুণ্ডলী
ভূত। উহা সর্কান মূলাধার মধ্যে কুণ্ডলাকারে থাকে বলিরা
উহার নাম কুণ্ডলী। কুণ্ডলী চক্ষ্র কুর্য্য ও অনলর্মণিনী, দিচছারিংশদ্বর্ণমরী অর্থাৎ ভূতলিপিমন্ত্রশালিনী এবং পঞ্চাশদ্বর্ণমরী

অর্থাৎ মাতৃভাবর্ণস্বর্মপিনী। ঐ কুণ্ডলী সকল বর্গে পরম্পার্ক

মিলিত হইরা মন্ত্রময় জগৎ প্রকাশ করে। এই কুণ্ডলী শক্ষ

ও শক্ষার্থের প্রবর্তিনী এবং ত্রিপুদ্ধর অর্থাৎ জোই, মধ্য ও কনিইভেদে তীর্থত্রর ও উদাত্ত অন্থদান্ত প্রভৃতি কর সমাহারের প্রকাশক। তত্তপালের কুণ্ডলী পর্য দেবতা নামে অভিহিত।

বক্তু ও শ্রোত্রপথ অপরিকার থাকে, তাই ঐ কুগুলী যথন অস্পষ্ট বর্ণে অথাৎ অক্ষুট ধ্বনিতে আলাপাদি করিতে উন্নত হয়, তথন মূলাধারে গিয়া ধ্বনিত হয় এবং স্বয়া নাড়ীও বার বার ঐ ধ্বনিতে আলোড়িত হইতে থাকে। ক্রমে এই ভাবেই বিস্পষ্ট ও অস্পষ্টরূপে বর্ণসমন্টি প্রকাশমান হটয়া পড়ে।

পূর্ব্বে বে তল্পেক পরদেশতা কুপ্তনীর কথা কহিরাছি, তিনি ছিচ্মারিংশহর্ণে মিলিত হইরা এইরূপ ক্রমণরম্পরার অকার হউতে সকার পর্যান্ত ছিচ্ডারিংশদাক্ষক বর্ণমালার উদ্ভাবন করেন। এই ছিচ্ডারিংশদাক্ষক বর্ণমালাই ভূতলিপি মন্ত্র। কুপ্তলিনী সর্ক্ষণাক্তমনী ও শক্ষক্রমণিনী। তিনি যে ক্রম ধরিরা বর্ণমালা প্রস্ব করেন, ভাহা এইরূপ, বধা—প্রথমতঃ কুপ্তলিনী হইতে

"কুঙনীকৃতসর্গাগারজজিববুলের্বী।
তিথামন্ত্রনী বেবী শক্তজ্জন্তন্ত্রী।
হিচছারিংশ্বর্ণান্ত্রা গকাশ্বর্ণন্ত্রী।
ংগিতা সর্বাগাত্রের কুঙলী গরবেবতা।
বিষাক্রনাগবৃদ্ধা না করে মন্ত্রমন্ত ক্ষমণ ।
তব্য গুলিভা শক্তিং সর্বাধিবতার্থনী।
তিপ্তরং বরান্ বেবী একালীনাং তারং কার্ ।" (সারবাভিনক)

শক্তির বিকাশ। শক্তি হইতে ধর্মন। ধর্মি হইতে নাদ।
নাদ হইতে নিরোধিকা। নিরোধিকা হইতে অর্জেন্দ্ হইতে বিন্দু; বিন্দু হইতে জ্বানে অক্তান্ত সমন্ত। সমন্ত অফর উৎপত্তি সুম্বজ্বই পরশারা এইরূপ। (১)

চিচ্ছকি স্বস্থানিত ছইরা শশুপদবাচা হর। তিনি আবার ঐ স্বস্থানিত অবস্থার আকাশস্থ হইরা রজোপ্তণে অফু-বিদ্ধ হইরা পাকেন। ধ্বনি অক্ষর অবস্থার তমোপ্তণে অস্থবিদ্ধ হইরা নাদশন্ধবাচা হর। ঐ অব্যক্তা-বন্থা তমোপ্তণের আধিকাবশে নিরোধিকা শশে অভিহিত। ঐ নিরোধিকা আবার রত ও মত উভরপ্তণের আধিকা হেতু অর্দ্ধেশ্প শশে অভিধের। অসম্বারকৌশ্বত ও পদার্থাদেশ প্রভৃতি প্রছে লিখিত আছে,—

পরা, পশ্রস্তী, মধামা এবং বৈধরী, অবস্থাভেদে বর্ণের এই করেকটী সংজ্ঞাসক্ষেত আছে। বর্ণ যথন নাদরূপে মূলাধার হুইতে প্রথম উৎপন্ন হয়, তথন তাহাকে পরা বলে। পরে যথন ঐ বর্ণ নাদরূপে মূলাধার হুইতে উঠিয়া ক্রুমে হুদরগত হয়, তথন তাহা পশ্রস্তী, তৎপশ্রাৎ যথন হুদর হুইতে উঠিয়া ক্রুমে বৃদ্ধি বা সম্করের সহিত সংযুক্ত হয়, তথন উহা মধামা এবং তার বৃদ্ধি বা সম্করের সহিত উঠিয়া ক্রুমে কণ্ঠগত হইয়া মূধদারা অভিনাক্ত হয়, তথন তাহা বৈধরী। এই বৈধরী অবস্থাপন্ন নাদ হুইতেই পরন প্রেরিত হইয়া বর্ণসমূহ বাহিরে সকলের গোচরী-ভূত হয়। শারা ও পশ্রস্তী দশাপার বর্ণ বোণীদ্বিগেরই প্রভাক্ত হয়, অঞ্চের পক্ষে উহা প্রভাক্ত হয়া অসম্ভর । (২)

ব্যাকরণ মতে, বর্ণসমূহের উৎপত্তিস্থান আটটী। বথা—ক্ষনয়, শির, শ্লিছ্বা, দল্ক, নাসিকা, ওঠছর এবং তাপু•। ইহার মধ্যে অ, ক, ঝ, গ, খ, ঙ, হ, ও বিদর্গ (ঃ) এই কয়েকটী বর্ণের উচ্চা-রণস্থান কণ্ঠ। ই,চ, ছ, জ, ঝ,ঞ, য়, শ,এই কয়টী বর্ণের উচ্চারণ-স্থান তাপু; ঋ,ট, ঠ,ড, ঢ, ণ, র, য়, ইহাদিগের উচ্চারণস্থান মুদ্ধা

(>) "বিচ্ছারিশেতা সূলে ভণিতা বিষনাবিদা।

সা প্রস্তুতে ছুওলিনী শ্বাবজনরী বিজু:

শক্তিব্যতঃ ধানিক্তবাদ্ধারক্তবাদ্ধিকা।

ওতে।ংক্তিবৃত্তে বিশ্বতবাদ্ধারীৎ পদা ভক্তঃ ৪° (সামানিকাক)

"মূলাধারাৎ প্রথমসূদিতে। বছ ভারঃ পরাধ্যাঃ
পকাৎ পক্তবাধ কনমগো বুকিবৃত্বধ্যমাধ্যঃ।

বক্তে বৈধর্যধ কনমগো বুকিবৃত্বধ্যমাধ্যঃ।

বক্তবাধ্যক পদাবোসসালভাঃ ত্র্যাবক্তবাদ্ধানি বর্ণনাম্যক্তি বক্তবাং॥" (ক্ষকারকোক্ত)

"গেটো ছানানি বর্ণনাম্যক্তিক শিক্তবা।

নিষ্ণাৰ্শক বছাল্ড নাসিকেটেই চ ভাগু চ ঃ" (শিক্ষাহ্তা.)

५, ३, छ, थ, ४, ४, न, न, न हेशिनिशित डेकात्रभद्दान नख। छ, छ, ११, छ, व, छ, य, जात छेभधानीत हेशिनिश्तत छेकात्रभद्दान छत्ते। 'व' पढ ७ ७६; 'के के, कर्न ७ छान् क्षर किस्तान्नीत्त्रत উक्तात्रभद्दान किस्तान्न।

"অবৰ্ণ-কৰ্ম-হ-বিসৰ্জনীয়াঃ কণ্ঠাঃ। ইবৰ্ণ চৰ্ম্-বলা-ভালবাঃ। ধৰ্ম-টবৰ্ম-ব্যাঃ মৃদ্ধভাঃ। ৯বৰ্গ-তৰ্ম-লসা দখ্যাঃ। উৰ্ম-প্ৰৰ্মোপথানীয়া ওঠাঃ। বো দজোঠাঃ। এ ঐ কণ্ঠাতালবাৌ। ও ও কণ্ঠোঠোঁ। জিহ্বামূলীয়ত জিহ্বামূলম্।"

প্রপঞ্চনারের তৃতীর পটলে দেহমধ্য হইতে পঞ্চাশংবর্ণ বা অক্ষরের উৎপত্তি সম্বন্ধ এইরপ লিখিত হইরাছে—বর্ণসমূহ সমার-সঞ্চালিত হইরা অবুয়া নাড়ীর রন্ধু মধ্য দিয়া বহির্গত হইডে থাকে। পরে কণ্ঠাদি স্থান আলোড়িত করিয়া বদনবিবর দিয়া বাহিরে প্রকাশ পায়। উচ্চ উন্মার্গ বায়ু উদান্ত স্বর উৎপাদন করে। ঐ বায়ু নীচগত হইয়া অমুদান্ত এবং তির্যাগ্ ভাবে গিয়া স্বরিত স্বরের উৎপাদক হয়। এইরূপে একার্ধ, এক, দিও ত্রিসংখাক মাত্রায় লিপি সকলের সন্টি। উহারা ব্যঞ্জন ক্রম্ব, দীর্ম ও প্রত সংজ্ঞায় অভিহিত।*

বিণাভিধানে অ হইতে হ পর্যান্ত প্রত্যেক বর্ণের স্বরূপ ও অর্থাদির বিভূত বিবরণ লিপিবদ্ধ হইয়াছে। 'অ' হইতে 'হ' পর্যান্ত প্রতি বর্ণে বর্ণের উৎপত্তি, স্বরূপ ও অর্থাদির বিভূত বিবরণ দেইবা।]

বর্ণক (রী) বর্ণয়তীতি বর্ণ-গ্ল্। > হরিতাল। (রন্ধমান)
২ গাত্রাম্লেপনযোগ্য পিট বা গ্রষ্ট প্রগান্ধ প্রবা। ০ চন্দন।
(শন্ধরতান) (পুং) ৪ বিলেপন। বর্ণয়তি নৃত্যাদীন্ বিস্তারমতি।
৫ চারণ। (মেদিনী) ৬ মণ্ডল। (পুং স্ত্রী) বর্ণাতে রন্ধাতেহনেনেতি, বর্ণ-থঞ্, স্বার্থে কন্। ৭ হিন্দুল হরিতাল কাচ
নীলিকাদি। (অময়ভরত)

"কন্তাং নিশ্বতি কৃশ্পতি কং শারফলকন্ত বর্ণকং মৃধ্যঃ।
কো ভবতি রব্ধকণ্টকমমৃতে কন্তাঞ্চিদ্দেতি॥" (আর্থ্যান° ১৮৯)
বর্ণক (পুং খ্রী) ১ মহা। (লিক ৭।২৩) ২ মুখোন, অভিনেত্বর্ণের পরিচ্ছদ। ৩ বিলেপনজ্ঞবা।
বর্ণক্টি (ক্রী) জুখ, (বৈভক্তিন) চলিত ভুঁতে বা ভুতিরা।

ু "সমীরিতঃ সমারেশ প্রধ্বারক নির্গতাঃ।

ব্যক্তিং প্রধান্তি ববনে কঠানিপ্রানকটিতাঃ ঃ
উচ্চেক্সমার্থনো বাষ্ত্রকান্তং ক্রতে পরন্।
নীত্রৈর্গতোহস্বভাতক পরিতং তির্গাসতঃ ঃ
আর্ত্রেকীট্রিকার্থায়তির আিতিলিপিরা ক্রমাধ।
সমান্ত্রনমুক্তীর্কার্কী ক্রমান্তে তাতি তাঃ । প্রপ্রধান ক পটল)

वर्गकंत्रक (११) > क्रिक्राप्तत्र जुनिकारक। े र स्टामारकः। বৰ্ণক্ৰয় (তি) বিচিত্ৰ বৰ্ণমঞ্জিত। वर्गकिति (१९) क्रावत्रभूख । (जिका॰) বৰ্ণকিতে (জি) বৰ্ণবিশিষ্ট। (পা ধাহাত ভারকাদিনণ) বর্ণকৃত্যিকা (জী) বর্ণানাং কৃণিকেব। মংভাধার। মাছের পাত্র। 'ষ্পীধানী মসিমণিমে লাভুর প্রুপিকা।' (জিকার্ড) वर्षकृ (वि) वर्गनानकाती। বর্ণজ্রেম্ম (পুং) ১ রঙের পর্যার। ২ উচ্চনীচভাডেদে জাভি-পরম্পরা। ৩ অব্দরশ্রেণী। বৰ্ণগাক্ত (জি) ১ বৰ্ণসম্বনীয়। ২ জাডিগত। ৩ বীজগণিতঘটিত। বর্ণচারক (বি) বর্ণান্ নীলাধীন্ চারম্বতি বিভাগমতি চন-ণিচ্ থল। চিত্রকার। (শক্ষালা) বর্ণচোরা (দেশৰ) প্রকৃত বর্ণের অপলাপ। "বর্ণচোরা আম।" বর্ণজ্র (ত্রি) বর্ণাৎ জায়তে ইতি জন-ড। জাতি। বর্ণোন্তব। वर्ग कि (भूर) बर्गव हफूव् मरवा रक्तकेः धावरमादभन्नाद खरगाद-রুষ্টভাচ্চ। ১ ব্রাহ্মণ। চারিবর্ণের মধ্যে ব্রাহ্মণই প্রথমে স্ট্র হইয়াছেন। [ব্রাহ্মণ দেখ।]

(ত্রি) বর্ণেন জ্যোতিবোক্তপারিভাষিক্বর্ণেন জ্যেষ্ঠঃ শ্রেষ্ঠঃ । শ্বরণাপেকা উত্তমবর্ণ, নিজে বে বর্ণ, সেই বর্ণ হইতে উত্তমবর্ণ। বিবাহে বর্ণমেলক দেখিতে হয়। হীনবর্ণ পুরুষ বর্ণজ্যেষ্ঠা নাবীকে বিবাহ করিলে ছয় মানের মধ্যে ভাহার মৃত্যু হয়।

"মীনকর্কট-বৃশ্চিকবিপ্রাঃ সিংহতুলাগল্পঃক্ষারা উজাঃ।
কুন্তনস্বর্মবাবিশঃ স্থার্মকরব্বত্রী কথিতা বর্জাতিঃ ॥
বর্ণজোষ্ঠা চ যা নারী বর্ণহীনশ্চ বং পুমান্।
তরোর্বিবাহে মৃত্যুঃ ভাৎ বন্ধানে নাত্র সংশন্তঃ ॥"(জ্যোতিক্তব)
[মেলক শক্ষ দেখা]

বর্ণতিপু (ত্রী) সরস্বাচী দেবীর উদ্দেশক মন্ত্রবিশেষ।
বর্ণতাল (ত্রী) বর্ণ-তল্-টাপ্। বর্ণের ভাব বা ধর্ম।
বর্ণজ্বলি (ত্রী) বর্ণালাং জুলিরিব। লেখনী। (শক্ষমাণ)
বর্ণজ্বলি (ত্রী) বর্ণালাং জুলিরিব। লেখনী। (ভারাবলী)
বর্ণজ্বলি (ত্রী) বর্ণালাং জুলীব। লেখনী। (ত্রিকাণ)
বর্ণজ্ব (ত্রী) বর্ণালাং জুলীব। লেখনী। (ত্রিকাণ)
বর্ণজ্ব (ত্রী) বর্ণালাং ভাবং ছ। বর্ণের ভাব বা ধর্ম।
বর্ণদ্ব (ত্রী) বর্ণালালীতি লা (আজোহমুণসর্গে কং। পা ভাবত)
ইতি ক। ১ কালীরক। (ত্রি) ২ বর্ণলাজ।
বর্ণদাক্তি (ত্রি) বর্ণলি গালা। বর্ণারক।
বর্ণদাক্তী (ত্রী) বর্ণং ব্যাকীতি লাক্ত্র, জ্বিরাং জীব্। হলিজা।
বর্ণদাক্তী (ত্রী) বর্ণং ব্যাকীতি লাক্ত্র, জ্বিরাং জীব্। হলিজা।

शतक, पश्चिम्थ । (जिना)

বর্ণদূষক (ত্রি) বর্ণান্ দ্বলতীতি ছ্ব-বুল্। বর্ণসমূহের
লোবোৎপাদক। জাতিভংশকর।

"शक (चरक शतिभ्वरमा आंत्रतस वर्गम्बकाः।

রাষ্ট্রিকঃ সহ ডদ্রাষ্ট্রং ক্ষিপ্রমেষ বিসম্ভণ্ডি ॥" (মহ ১০।৬০) বর্গনেশানা (খ্রী) শব্দশিক্ষা।

বৰ্ণৰয়ময় (তি) ছইটা পদাংশসম্বাভ ।

বর্প ধর্মা (পুং ক্লী) বর্ণানাং ব্রাহ্মণাধীনাং ধর্মঃ। বর্ণাশ্রমধর্ম।
ব্রাহ্মণ, ক্ষব্রির, বৈশু ও পুত্র এই চারি বর্ণের কর্ম্বরা কর্মা।
বর্ণশক্ষে উক্ত চারি বর্ণের বর্ণাকর্ম্বরা কর্মা ও ধর্মের বিধিনিবেধাদি এবং ব্রাহ্মণ, ক্ষব্রির, বৈশু ও পুত্র বিবরে বর্ণবিশেষের
আচারাদি বিশেষ ভাবে বর্ণিত হইরাছে। রাজধর্মা ও আপদ্মর্মাদি
বর্ণাশ্রমধর্ম পক্ষে ব্যাসংক্রেশে বিবৃত্ত হইল। এতারির ক্ষমুলোম
ও প্রতিলোম প্রভৃতি বিভিন্নজাতির মহাভারতবর্ণিত ধর্মবিধান
নিম্নে বিবৃত্ত হইতেছে:—

তীয় কহিলেন, পূর্বকালে গুজাপতি বজের নিমিত্ত চতুর্বার্ণের कर्य-अग्रमम् ध्वरः क्ष्यन वर्गठकृष्टेत्र ल्ली कतित्रोहित्नन । आकारणत চারি ভার্য্যা, ভন্মধ্যে ব্রাহ্মণকজা ও ক্ষব্রিয়কজাতে বে পুত্র ক্ষাে, তিনি বান্ধণের আত্মা বা বান্ধণ এবং বৈশ্বকলা ও শুত্রকল্পার মাড়লাডীর পূত্রগণ ক্রমাহরে পূর্ব্বোক্ত উভর হুইতে হীনরূপে প্রস্ত হয়। ব্রাহ্মণ হুইতে দূলার গর্ডে বে পুত্ৰ ক্ষয়ে, সে শৰ অৰ্থাৎ শৰস্থান খ্ৰশান-তুৰ্য, শুদ্ৰ অংপক্ষা পর অর্থাৎ শ্রেষ্ঠ, এই নিমিন্ত পণ্ডিতেরা শুদ্রা-পুত্রকে পারণব कृष्टिया शास्त्रन । त्महे भूव चनीय कृत्मत्र छञ्जवक हहेरद विदः নির্ভ নিজ চরিত্র পরিত্যাগ করিবে না। সে সমস্ত উপায় व्यवशादन कतिहा निव्य कृत्नत्र जैनकतन नमाक्तरन जैकात कतिरव ; পার্দ্ব ব্রাহ্মণাপেকা বয়োক্ষ্যেষ্ঠ হইলেও ব্রাহ্মণের নিকট কনিটের ছার ব্যবহার ও ওজবা করিবে এবং দানপ্রারণ হট্রে। ক্রিরের ভার্যাত্ররের মধ্যে ক্রিয়া ও বৈশ্রাতে ক্রিয় পুত্ৰ কৰে, আন পুত্ৰা ভাগ্যাতে হীনবৰ্ণ উগ্ৰ নামক পুত্ৰ জাতি बारबा, हेहाहे चत्रण जाटक। देवटचत्र हरे कार्या, हरे भन्नीटकरे উহার বৈশ্র পুত্র করে। শুদ্রের একমাত্র শুলা ভার্যা, ভাহাতে শুদ্রস্থাতীর পুত্র স্বন্ধগ্রহণ করে। নিজ জনক হইতে অবশিষ্ট অধম পুত্ৰ ৰদি প্ৰাক্ষণ-দারাদি প্রধর্ষণ করে, তবে চাতুর্ব্বর্ণা-বিগহিত চণ্ডালাদি ৰাছবৰ্ণ উৎপাদন করিয়া থাকে। ক্ষতিয় ব্রাক্ষণীতে চতুর্বেদের বহিতৃতি ভূপত্তিগণের ততিকারক শত-জাতীর সন্তানের জন্ম দান করে। বৈশ্ব এান্দণীতে অভঃপূর-तक्त-कार्याकांत्री मरबाजांगई देवत्तर-काफीत भूज छेरभागन করিরা থাকে। পুত্র ত্রাহ্মন্টতে অভি উপ্রহভাব বধার্হ চৌরাদির শিরক্ষে প্রভৃতি কার্ব্যের কারণ প্রাম-বহির্ভাগে বসভিকারী

চঙাল-পুত্ৰ উৎপাহন করে : এই সমস্ভ প্রতিলোমকাত কাতি সকল কুলপাংসন। ইছারাই বর্ণসম্বন্ধাত। বৈশ্র হইতে ক্তিরাতে বাক্টবীবী বন্দী শাগধলাভীর পুত্র করে, সার শুদ্র হইতে ক্ষত্রিরাতে ব্যতিক্রমে মংভবাতী নিবাদ পুত্র উৎপন্ন হয়, আৰু বৈশ্ৰাতে গ্ৰাম্যধৰ্মবিশিষ্ট পুত্ৰ জন্মে, তাহাকে আরোগৰ বলা যায়; স্বধনজীবী তক্ষা প্রাহ্মণগণের অপ্রতিগ্রাহ্ন। অষষ্ঠ, পারশব, উগ্র, হুত, বৈদেহক, চণ্ডাল, মাগধ, নিষাদ ও আয়োগৰ, ইহারা স্যোনি ও অনম্ভর যোনিতে অর্থাৎ বাবহিত নীচ যোনিতে সদুশবর্ণ ও মাভূজাতীর পুত্র প্রসব করে। বর্ণচভূষ্টরের মধ্যে ব্রাহ্মণাদি ভার্যাহেরে স্বজাতীয় সম্ভান সম্ভূত হয়, স্বজাতির আনস্তর্যা বশতঃ প্রধানামুসারে বাছবর্ণ সকল জন্মগ্রহণ করিয়া থাকে। ভাহারাও সযোনিতে সদৃশ বর্ণ উৎপাদন করে, আর পরস্পরের পত্নীতে বিগর্হিত পুত্রসমূদরের জন্ম দান করিয়া থাকে। শুদ্র বেমন वाक्रगीटक व्यक्ति शैनवर्ग क्लाटनत केंद्रशानन करत. कक्रश চতুর্ব্বর্ণের বহিভূতি হীনবর্ণ হইতে অভিশয় হীনভার বর্ণ জন্ম গ্রাহণ করিয়া থাকে। হীনতর বর্ণহইতে প্রতিলোমজাত বর্ণের বৃদ্ধি হয়, হীন হইতে দাসাদি পঞ্চদশ হীনতর বর্ণ প্রস্ত হইয়া থাকে।, ষ্পাম্যাগমন নিবন্ধন বর্ণসন্ধরের উৎপত্তি হয়। চতুর্ববর্ণের বহিভিড বর্ণ সকলের মধ্যে সৈরক্ষী ও মাগধজাতিতে ভূপালগণের প্রসাধন-কার্যাক্ত এবং তাঁহাদিগের দিবা অঙ্গরাগঘর্ষণ ও স্তবাদি ছারা সম্ভোবজনক অদাস অথচ দাসজীবন জাতির জন্ম হইয়া থাকে। মাগধ-বিশেষ কর্তৃক সৈরন্ধ্-যোনিতে বাগুরাবন্ধলীবী আরোগ্র জাতির উৎপত্তি হয়। মাগধীতে বৈদেহ-কর্ত্তক ম্প্রকর নৈরেম্বক নামক পুত্র উৎপাদিত হইয়া থাকে। নিষাদক্তাতি মদ্গুর অর্থাৎ मन्ध नामक मरस्कानकारी ७ मोरकानकारी नाम-मञ्जान अमर করে, আর চণ্ডাল খপাক নামে বিখ্যাত মৃতপ অর্থাৎ শ্রদানাধি-কারী সন্তান প্রসব করিয়া থাকে। মাগধী বাগুরোপজীবী কর পুত্রচত্ট্য প্রদ্র করে, তাহাদিগের কার্যা মাংস্বিক্রয় ও মাংস-সংস্থার। এই কার্য্য ছইতেই উহাদের হুই জনের মাংস ও স্বাহ্তকর নাম হইরাছে; অপর গুই জান ক্লোদ্র ও সৌগন্ধ নামে কথিত আছে। এইরূপ মাগধন্ধাতির বৃত্তিচতুইর নির্দিষ্ট হইরাছে। আলোগবীতে পাপিষ্ঠ, বৈদেহ হইতে নাংসোপ-बीवी कृत, निवान स्टेंटि अंत्रवानगामी मजनां धवर हंखान स्टेंटि ধরাৰগল-ভোলী পুৰুশলাতি লয়ে, ইহারা মৃতের বন্ত ঢাকে এবং ডিব্ল ভাজনে ভোজন করিয়া থাকে; আরোগবীতে **এই जिन हीनवर्ग अन्य शहर करता। निवामीएक देवामह हटेएक** क्ष, बाब ७ बावगानध-दिश्यानधीवी कोमाव-नामक हर्वकात এই পুত্রুর প্রস্তুত হর, ইহারা গ্রামের বহির্ভাগে বস্তি করিয়া

থাকে। নিবাদীতে চর্মকার হইতে কারাবর ও চাওাল হইতে বেণুব্যবহারোপনীবী পাপুদোপাক লাভি লছে। বৈদেহীতে नियान-कर्त्तक आहि अक नामक शूख धाल्फ रहा छथान হটতে সৌপাকে চাঙালদম-ব্যবহার-বিশিপ্ত পুত্র উৎপন্ন হইয়া थारक। निवासी छ्छान हरेएछ वास्वर्णन बहिङ्कछ भागान-বাদী অন্তাৰশায়ী সন্তান প্ৰদৰ করে। পিত-মাত-ব্যতিক্রম-नगठः এই ममुनन महत्रकां ि उर्णन हन, हेराना अस्त्रकार्यहे থাকুক অথবা প্রকাশভাবেই থাকুক, ইহাদিগের ব্ধর্ম দারাই ইহাদিগকে জানা বার। শাত্রে ব্রাক্ষণাদি বর্ণচত্তরৈর ধর্ম বিহিত হইয়াছে, অপরাপর ধর্মহীন জাতিভেদের মধ্যে কাছারও ধর্মের নিরম অথবা ইরতা নাই। গ্রাহ্মণাদি বর্ণচ্ছার হইতে অমুলোম-ব্দাত ছয় এবং বিলোমজাত ছয়, এই ছাদশবিধ স্থীৰ্ণ বৰ্ণ হইতে বটুবটি অনুলোমনাত এবং বটুবটি প্রতিলোমনাত: এতদারা ১৩২ প্রকার বর্ণসম্বর লাভি হয়, মাপিচ ভাষা-দিগের অন্তলোম ও প্রতিলোম গণনা খারা অনস্ত ভেদ হইরা উঠে, অতএব এই সমূলয়েরই আধিক পঞ্চল ভেনের মধ্যে অন্তর্জাব হইরা থাকে, এজন্ত সকলের পরিসংখ্যা প্রদর্শিত হয় নাই। বদুজাক্রমে অর্থাৎ জাতিগত নিরম না থাকার মিপুনী-ভাৰপ্ৰাপ্ত, বন্ধ ও সাধুগণ হইতে বহিষ্কৃত বাছ বৰ্ণসভন-জাতি সকল ব্যুদ্ধাক্রমে কর্মাস্থলারে জীবিকা ও জাতিবিশেব প্রাপ্ত হইয়া থাকে। ইহারা চতুপথ, খুনান, শৈল ও অস্তান্ত হনস্পতির নিকট সকলের বিজ্ঞাত হইয়া বাস ও নিরত ক্লফবর্ণ লৌহময় আল্ডার পরিধান করিয়া নিজ কর্ম বারা জীবিকার্জন করিবে এবং অলম্বার ও গৃহোপকরণ জ্বাসমূদর প্রস্তুত করিতে থাকিৰে। ইহারা গো ব্রাহ্মণ সকলের:সাহায্য করিবে, সংশন্ধ নাই। আনুশংশু, দরা, সভাবাকা, ক্ষমা এবং স্বশরীর বারা বিপল্লগণের পরিত্রাণকরণ বাহ্ববর্ণসমূহের সিন্ধির কারণ; হে नजवत्र। एन विवदा व्यामात्र भः भन्न नारे। वृक्षिमान मानव উপদেশালুসাবে পরিকীর্ত্তিত হীনজাতি বিবেচনা করিয়া পুত্রোৎ-পাদন করিবে; বেহেডু ক্ল-মধ্যে ভরণেচ্ছু মানবকে প্রান্তর ব্যেমন অবসর করে, তত্রপ নিতাক্ত হীনবোনিকাত-তনর বংশকে জবসন্ন করিব। থাকে। ইহলোকে রমণীগণ বিভান অথবা অবিখান ব্যক্তিকে কাম-কোধের বন্ধভূত করিয়া নিতার কুপথে गहेश बाब । नातीशरणत चलावरे लात्वत चाकत. अञ्जव বিপলিৎ বাজি সকল প্রমদাগণে অতিশর প্রসক্ত হন না।

যুধিটির বলিলেন, পাপয়োনিজ হীনবর্ণ ব্যক্তিকে বিশেষরূপে জানিরা আর্যাপ্ত জন্মগ্রহণ করিয়াছে বলিরা আর্যারূপ অথচ উৎপত্তি বলতঃ অনার্য ব্যক্তিকে আম্বা কি প্রকারে অবগত কটতে সমর্থ হটব ?

ভীম কহিলেন, অনাৰ্গগণের পুথক্ পুথক্ ভাব ও চেঠা-गमविक मानवरक नक्त्रावानिक जानित्व, जात्र नक्कनाठतिक कर्न বালা বোনিওছতা বিজ্ঞাত হটবে। ইহলোকে অনার্থাকা, অনাচার, ক্রুরতা ও নিজিখামতা ফলুববোনিক পুরুবেই প্রকাশ হইরা থাকে। স্থীৰ্ণজাতি পিডার অথবা মাডার চরিত্র কিংবা পিডা মাতা উভরের স্বভাব প্রাপ্ত হয়, সে কথনও আপন প্রকৃতি গোপন রাখিতে পারে না। তির্যাক্ষোনিকাত খ্যাত্র প্রভৃতি যেমন বিচিত্র ৰৰ্ণের সহিত সাতা পিতার রূপের সদৃশ হইরা ঋষে, ডক্রপ পুরুষ ৰীৰ বোনি প্ৰাপ্ত হয়। বংশক্ষোতসংক্ষয় হইলে বাছার বোনিসভর হয়, সেই মানব যে ব্যক্তিয় ঔরসে জয়ে, ভাহার আর অথবা বহুচরিত্র ভাবপ্রই জাশ্রম্ম করে। ভার্যারূপে ক্রতিমপথে विष्ठशुलील बाक्ति लोक्स्स वर्ग वा सिक्रड वर्ग, हेडांब सिन्ध्य-বিবরে ভাহার শ্বভাবই ভাহা প্রকাশ করিয়া দের। প্রবর্ণ বেমন বাছতঃ কঠিন হইরাও কার্য্যকালে বুচু হয় এবং চুর্বার্ণ অর্থাৎ রক্ষত যেষন নিয়ত ষ্ট থাকিয়া কাৰ্যাকালে কঠিন হইয়া উঠে, ছকাত ও চর্জাত পুরুষগণের জন্ম ও চরিত্র তক্ষণ। বিবিধকর্ণারত বছৰিধ চৰিত্ৰ জীবগণের জন্ম ও চৰিত্ৰ উপচিত ব্যবহার পরিচার ক্রিরা অস্কথারূপে অবস্থান করে। সম্বর্জাত বর্ণের শরীর শাস্তীর বৃদ্ধি বারা নীচমার্ম হইতে আরুষ্ট হর না, বীলঞ্চশের প্রবদ্তা বৃশতঃ কালভেদে বৃদ্ধিবৃত্তির প্রাধান্ত ক্রিলেও পরীরারত্তক ক্ষরের **(काईफ. मश्रमक ७ व्यवज्ञ व्यक्तांता यांश कुना इत्, काहारे** अमृतिक इहेबा शास्क, जाइ चय फेरशब इहेशायांक, भवरकारमन মেখের श्राव. नीन हहेवा याद। वर्गटकाई वास्ति विन निर्मातात-বিহীন হয়, তবে তাহাকে সন্মান করিবে না, আর পদ্র যদি স্দাচারস্পার ও ধর্মঞ হর, তবে তাহাকে স্থান করিবে। মহুয শুভাশুভ কর্মা, সুশীলতা, সজ্জিত্র ও কুল বারা আপনাকে প্রকাশ করে, কল নাই ভাইলে পুরুষ নিজ কর্ম ছারা পুনরার জবিলংখ ভাহার উভার করিয়া থাকে। এই সমন্ত সভীর্ণ ও ইতর বোনির মধ্যে প্ৰত্যোৎপাদন ক্রিছে নাই, প্রিত ব্যক্তি এরপ বনিতা পরিত্যাগ করিবেন । (ভারত অতুশাসন ৪৮ অঃ)

[&]quot;গুৰু উষাচ।

চাত্ৰণীয় কৰ্মাণি চাত্ৰণীয় কেবসৰ।

অসমৎ স হি বজাৰ্থে পূৰ্কবেৰ অলাপতিঃ
ভাষান্ত কৰ্মাণ বিপ্ৰক ক্ষোৱালা প্ৰলামতঃ
আনুপ্ৰ্য্যাপ্ৰাহাইকৈ মাড্লাতেটা প্ৰস্তমতঃ।

পৰাং পৰাধ্ৰান্তবিভাৰ পূৰঃ শ্ৰাপুৰাং পাৰাশনা ভ্ৰাছঃ।

ভঞ্জন বং পঞ্চ কুলত স ভাং পঢ়াবিন্ধা নিভানখো স ৰক্ষাণ ।

স্বান্পায়ানৰ সমাচাৰ্য্য সমূৰ্বদেক সভা কুলস্য ভ্ৰাৰ্ঃ

লোটো বহীয়ানলি সো ভিন্নত শুৰুষ্যা গানপ্ৰায়ণং ভাং ॥

বৰ্ণন (দ্লী) বৰ্ণৰতে বিভালে স্বৰনাৰো সূট্ । ১ কৰন ।

"ইবং নিশস্য দৰবোৰস্তঃ ক্ৰীঠান লা হুখাৰ ক্ৰমণ্ডণবৰ্ণনকাত্ৰসমূহ।" (ভাগ° ১০।৭৪।৩০.)

২ বিজ্ঞান । ৩ জাৰিবৰ্ণনাক্ৰন ।

> रिक्षः कवित्रमक्षाक्रतात्रशिक्ष कां**तर**के । হীনবৰ্ণাক্তীয়ায়াং পূজা উলা ইতি স্বৃত্তিঃ ঃ বে চাশি কাৰ্ব্যে বৈক্তঞ্চ কৰোৱাক্সাঞ্চ কাৰ্মতে : मुका मुक्का होरशुका मुक्काव क्र**कारक** । व्यरहार्मा लिडेब्र्यरमा क्ष्मचानव्यव्यक्तः। 🛷 ৰাজ্য বৰ্ণৰ জনমুক্তি চাতুৰ বাঁষিগৰিকমু 🚛 বিগ্রাহাং ক্ষরিয়ে বাহুং পুডং ছোমজিয়াপর্যু। रेश्रा रेश्रप्रकचर हाणि योगमनामणवर्ष्क्रञ्ज् ॥ न्त्रफाकानमञ्जातः वशक्तः वास्वानिमम्। अभागीर गत्त्वकाचन वैट्डाटन कुमगीरमेगाः । " এতে মতিখভাং জেট বৰ্ণাভয়জাঃ লভো ১ यनो जू साप्रक रेक्छाबानरथा योकासीनमः। শৃত্তাব্রিষ্টেশ সংক্রম্ম ক্ষতিমান্ত ব্যক্তিকবার চ नुजाबादकान्त्रवन्तानि देवकाताः श्रामायविनः। जाकरेनप्रअक्टिआक्ष्यका वधनबीयनः । এতেছপি সমূলান্ বর্ণান্ ক্লরডি ক্বোনির্। माकृबाछार अपुत्रस्य क्षत्रः। रीमश्रामितः । ৰথা চতুৰু' দৰ্শেকু **বংগারাক্ষাদ্য ক্ষারতে** । व्यामस्योगं । अवाहास स्था पांकीः अवानसः ॥ एक झिनि जङ्ग्याः वर्गः क्ष्माचि व्यव्यानिवृ । । शक्षणतमा संदर्भ **अवस्थि विश्वविकान्** ३ वया नृत्कावनि जाव्यनारं सकः वाकः अन्तरक । अवः पाक्षकाषाक्रकाकृर्वनीय व्यवागरः । প্ৰতিলোক্ত মুখনৰ বাদাৰাক্ষতনাং পুনঃ ৷ होनाक्रीमाः अञ्चलक वर्गाः पक्करेनव कू ह व्यवशासनगरेक्षय बाह्यक व्यवस्थाः। वाकामावन्यातस्य टेमब्ब्युतः वानत्वव् ह । अमाद्यानकासम्बद्धानाः नामकोषनम् ३ वाक्रणाटकान्यः एटक नाक्षणायकानिमन्। रेमरक्ष्मर ६ टेनलस्सः मध्योष्ट्रस्थितं वासूकत् ॥ निवादश मन्धन्तः एटक शीनः नांद्र्यन्तीयमन्। मुख्यार ठामि ठाखानः चराक्विति किम्बन् । इकुरमा जानकी चरक कुमर बारमानजीविनः। माःमः बाह्रकतः क्लोबः क्लोनकनिकि विक्रकम् । ' देवदश्काक नानिकेर क्षार मोद्यांनकीविनम्। मिश्राक्षश्रमाकः ह अवयोगश्रमादिनम् । চাওালাৎ পুরুষ্য চাপি বরা**ধনরভোত্তিনন্**। इंडरेक्शशक्तिकः शिक्षणासम्बन्धानिनम् ।

বর্গনা (রী) বর্গ-পিচ্-কুচ্-টাপ্। া া শুলজ্বন, পর্যার—ইড়া, তথ্য, তোত্র, ভতি, ক্তি, রাষা, প্রশোলা, অর্থনার । শবিষয়া অপি বর্গতে বিট্বপানরা দ্বিয়া। "(ক্তাসরিৎসাৎ ৩২।১৬৬)

> জারোগবীবু জারতে হীনবর্ণান্ত ডে জয়: 🕫 क्रजा देवलश्काष्ट्रा पश्चिम् । কারাবরো নিবাদ্যাং ডু চর্মকার: প্রস্কতে 🎮 চভালাৎ পাও সৌপা কৰ্কারবাবহারবাব্ ঃ আহিওকো নিবাদেন কৈনেছাৎ স্বাস্থ্যতে। চাওালেৰ ভূ দৌগান্দে চঙালসমৰ্জিবাৰ্ 🗈 नियारी ठाणि ग्रंकाणांद शुक्रमत्क्षप्रमातिनम् । শ্বশানগোচরং পুডে বাঞ্চৈরপি বহিছুভব্ 🚛 ইভাতে সহরে জাঙা: পিডুমাড়ব্যতিক্রবাৎ। अञ्चल्ला वा अकामा वा (विविख्या: चकर्मकि: ह চতুৰ্ণামেৰ বৰ্ণানাং ধৰ্ম্মো নাক্তঞ্চ বিদাতে ৷ বৰ্ণানাং ধৰ্মহীদেৰু সংখ্যা নাজীয় ক্তচিৎ 🖠 বৰ্জনোপসন্দল্পেইজনাথ্বছিত্বতৈঃ ৷ यांशाचारेशक कांत्रस्थ वयांत्र्यिः वयाध्यक्षत् । **চতুপাৰত্ব**াৰালি বৈলাপেডাতান্ ৰলপাতীন্ ৷ কাক রিসমলভারং পরিপূহ্য চ নিত্যশং ॥ খনেরুরেতে বিজ্ঞাত। বর্তরন্তঃ খকর্মজি:। বু**লভো বাণ্যবভারাংভবোণকরণা**ণি চ 🛊 शोडोक्सपोन माहोग्राः सूर्कीयो देव न मेरलबः a चान्नाकत्रम्राज्ञानाः महावानाः छवा सन्।। चनहीरेवद्रभि कांगः चाकांगाः विश्विकात्रपद् । . . ভৰতি মনুজনাত্ৰ ভত্ৰ মে নাজি সংলয়: ৫ **ৰখোগদেশ্য পরিকীর্দ্ধিভাত্ব নরঃ গ্রন্ধানেত বিচার্গ্য বৃদ্ধি**সান্ । निरीम्प्यापिरि प्रकाश्यनामराविकीर्यमानर हि नप्यानामान । व्यविवारमभगः लाटक विवारमयी या भून:। यक्षि क्षापर गाँधः काम्याध्यक्षक्षम् । च्छावटेन्डव नाजीनाः मजानानिह पूर्वनद् । পড়ার্থং ব প্রসক্ষত্তে প্রবর্গার বিপশ্চিতঃ 🛊

যুবিক্তির উবাচ। বর্ণাগেডসবিজ্ঞায় বরং কলুখবোনিলয়। আব্যক্তশবিবাবাবাহ কথং বিকাশবং বয়ন্ ॥

তীম উবাচ।

বোৰিনক্তন্ত কাজ নানাখাৰসন্থিতন্। কৰ্মজিঃ স্থানাটাৰ্থবিকজনা বোনিকজ্ঞা । আনাগ্যননাচামঃ জু এবং নিন্ধিরাজ্ঞা । পূলবং ব্যালস্থীত নোকে কন্মবোনিজন্ । দিলং বা কথকে নীলং বাক্লং বা অবোজনন্। নু কথকৰ স্থানি প্ৰস্থৃতিং বাং নিৰক্ষতি । বাংলিকজ্ঞা। বোনিং পূল্য বাং নিৰক্ষতি । বর্ণনাল (পু:) বর্ণন্ত লাশ: ৬তং। বর্ণের দাল।

"বর্ণাসমো সংবেপ্রান্দী সিংহে বর্ণবিশক্ষর:।

বোড়শালৌ বিকার: ভাষর্শনাল: প্রোম্বরে।
বর্ণনীয় (জি) বর্ণ কর্মণি জনীরন্। বর্ণা, বর্ণিতব্য, বর্ণনার
বোগ্য। ২ ভবার্হ।

"এতত্তে আদিরাজন্ত মনোশ্চরিতমমুতম্।

ৰাণতং বৰ্ণনীয়ন্ত তদপ্ত্যোদরং পৃণ্ ॥" (ভাগৰত এং২।৩৭) বৰ্ণপত্তে (পুং) মক্ষণ কাঠকলকবিশেব। যাহার উপর বিভিন্ন রঙ্রাধিরা চিত্রকর রঙ্কশার।

বর্ণপাত্ত (পুং) বর্ণজ্ঞ পাতঃ। উচ্চারণকালে শক্ষান্তর্গত বর্ণ-বিশেষের পতন বা উচ্চারণরাহিত্য।

বর্ণপাত্ত (দ্রী) বর্ণক পাত্রং। চিত্রকারের রঙ্রাখিবার পাত্র, যে আধারে নীলী প্রভৃতি রঙ্থাকে।

'মলিকা বর্ণাত্রং তাৎ তৃলিকা লেখাক্তিকা।' (শন্দানা) বর্ণপুক্ষা [ক] (গুং) বর্ণবিদ্ধি পুলাণি যত কণ্। রাজভঙ্গনী পুলার্ক। (রাজনি৽)

 বর্ণপুষ্পা (রী) বর্ণবন্ধি পুলাণি বসাং তীব্। উট্টকাতী পুলার্ক। (রাজনি॰)

বর্ণপ্রকর্ম (পুং) বর্ণের আতিশব্য, ঔজ্জন্যের আধিকা।
বর্ণপ্রসাদন (ক্লী) বর্ণন্ত প্রসাদনং বত্মাং। অগুরুচন্দন।(রাজনি)
বর্ণবিপর্য্যায় (পুং) বর্ণের বিপর্যার। বেমন—হিংস ধাড় হইতে
অক্ষরবিপর্যার হইরা সিংহ হইরাছে।

শ্বৰ্ণাগমো বৰ্ণবিপৰ্যাৱক্ত ৰৌ চাপানৌ বৰ্ণবিকারনালো। ধাতোগুদ্ধাতিশব্দেন বোগগুছচাতে পঞ্চবিধা নিক্ষতা ॥"
(কাতব্ৰটীকার হুৰ্গসিংহ)

কুলে শ্রোতিনি সংক্রমে বস্য স্থাব্যেনিসকর: ।
সংশ্রমেতোর তারীসং নরোহন্দ্রমথবা বহু ৪
আর্থান্দ্রশস্যালয় চরকার কৃতকে পবি ।
হ্বর্গরক্তরণ বা বাশীলং পাতি নিশ্চনে ৪
নারাক্তরের কৃতকের নানাকর্দ্রহতের চ ।
অস্তর্গরাকর করেনে ক্রমির ন বিক্রমাতে ৪
আর্থানার সবার কুল্যসবার প্রবেশতে ৪
আ্রারাংনগণি শীনেন বির্বানে নেব প্রয়েবে ।
অপি শুরুরে ও ধর্মকর সব্যুক্তরাতিপ্রয়েবে ৪
আ্রানার্যাতি হি কর্মির রা ক্রমীকর্মানার্যকর গুলাভ্রমির ক্রমির ক্রমির রা ক্রমীকর্মির গুলাভ্রমির রা বির্বানির ক্রমির রা ক্রমীকর্মির বির্বানির ক্রমির রা ক্রমির বির্বানির ক্রমির বির্বানির ক্রমির ক্রমির বির্বানির ক্রমির বির্বানির ক্রমির বির্বানির ক্রমির বির্বানির বি

বর্ণ ভেন্ন (গ্রং) বর্ণক জেনার বর্ণের জেনা, আমানাদি বর্ণের ভিন্নতা। ব সভেন্ন জেন। বর্ণ ভেন্নিনী (বী) লভাবিশেষ। বর্ণ নাম (বি) বর্ণবিশিষ্ট।

বর্ণমাজু (ত্রী) বর্ণত মাতের কলারাভক্ষ প্রস্থাৎ। ১'লেখনী।
বর্ণমাজুকা (ত্রী) বর্ণনাং বর্ণনালানাং মাজুকের। সরবতী।
বর্ণমাজা (ত্রী) বর্ণনাং বর্ণনালানাং মাজুকের। সরবতী।
বর্ণমাজা (ত্রী) বর্ণনাং মালা। ১ লাতিমালা, বর্ণন্রেণা।
২ জক্ষরপ্রেণা। সংস্কৃতে বর্ণনালা ২০টা, লপবিবরে বর্ণনালা
২০টা। তত্রে ২০টা বর্ণনালার নির্দেশ ও তাহার জপের বিধান
আছে। ইংরালী বর্ণনালা ২০টা, করাসী ২০টা, আরবীর ২৮টা,
পারসীর ৩০টা, ভুরুকী ৩০টা, হিক্র ২২, রবীর ৪১, প্রীক্ ২৪,
লাটিন্ ২০, ডচ্ ২৬, ল্পানীস্ ২৭, ইতালীর ২০, তাতার ২০২,
ব্রন্ধ ১৯, টানবেশে বর্ণনালা ব্যান্তক্ষ, এই ব্যক্ষে সংখ্যা প্রার্থ
৮০০০০ হালার। ব্রিলিশি দেখ।

বর্ণয়িত্তবঃ (জি) বর্ণনীয়, বর্ণনালোগ্য। বর্ণরান্তি (গ্রং) বর্ণনাত্ত, বর্ণনালা।

वर्गद्रिश्च (जी) वर्ग निवारकश्नामणि निध-कन्नतम वळ् तनाम-देनकार। करिनी, विश्व। (जिका॰)

वर्गनिष्णि, वर्ग वा अक्षत्रव्यकानक (नचनव्यगाणी (Alphabetic writing !)

সভালতি য' ভাষার মনোভাষ ও সরপ্রকাশ করিবার জন্ত বে সকল চিক্র ব্যবহার করিরা থাকেন, চাহাকেই আমরা সাধারণতঃ বর্ণ বা অক্ষর বলিরা থাকি। জলতে সভালতির সংখ্যাও বত বেশী, ভাষাভেলে ভাঁহালের মধ্যে অক্সনের প্রকার-ভেষও তত বেশী। সভাতার পৃত্তির সহিত বর্ণনালার স্থাই।

ভাষাক্রানের সঙ্গে সলে অকর বা বর্ণমালার উৎপত্তি হইলেও সর্ক্ষপ্রথম কোবার ও কি রূপে বর্ণমালার উৎপত্তি হইল, ভাষাই আমাদের প্রথম আলোচা।

বর্ত্তমান সঞ্চাতার ইতিহাস আলোচনা করিব। সকলেই বীকার করিতেছেন বে, ববৈদিক সঞ্চাতাই জগতের সর্কাদিন সঞ্চাতা। ভারতীর আর্থাগণ সেই বৈদিক সভাগণের বংশধর। দেখা বাউক, বৈদিককালে বর্ণমালার উৎপত্তি হইরাছিল কি না এবং ভারতীর বশলিপির কোনু সমরে উৎপত্তি হইল।

পাশ্বাভা বত ।

নোকন্তর প্রমুখ পাক্ষাজ্য পশ্চিতগণের কথা এই, পুইপুর্ব ৪র্ব পতাবীর পূর্বে ভারতে নিশি বা লেবনপদ্ধতি সম্পূর্ণ অক্ষাত ছিল, অথচ ভারার সহস্রাধিক বর্ব পূর্বে বেলের বয়, রাজণ ও প্রভাগ প্রচলিত হইরাছিল। একমাজ কর্মেনের ১০টা মধ্যনের

মধ্যে ১০৫৮-টা ঋক এবং প্রায় ১৫৩৮২৬টা শব্দ পাওয়া বার। ব্ধন লিপি অজ্ঞাত ছিল, তথন এডগুলি ঋৰ বিশুদ্ধ ও সংপূৰ্ণ ছন্দোবদ্ধে কিরূপে রচিত ও এত দীর্ঘকাল রক্ষিত হইল ? তাহা ্কবল স্বতি ছারা মূথে মূথে চলিরা আলিরাছে। মোকমূলর বলেন, একথা ওনিতে বিশ্বর্জনক বটে, কিন্তু বিশ্বরের কোন কারণ নাই। ভারতীয় ছাত্রগণের কিন্নপ অসাধারণ স্থতিশক্তি ও পাঠ্যাবস্থায় কিরূপ শিক্ষাপদ্ধতি ছিল, ভাহা আলোচনা করিলে जात नत्सर शक्तिय ना। जिनि निष উक्तित नपर्धानत कर ধরীর গম শতাব্দের শেবে লিখিত চীন-পরিবান্ধক ইৎসিং বর্ণিত শিশুশিক্ষার প্রতি উদ্ভ করিরাছেন। ইৎসিং ভারতীর বালক-দিশের এইরূপ শিক্ষার পরিচর দিখাছেন—"প্রথমে শিও ৪৯টা অক্সর শিথে, তৎপরে ৬ চবর্ষে ছরমালের মধ্যে ১০০০০ वक्ताकृत वा कार्कमना कालाग करत। हेशएक छाराजन দাঝিংশং অব্দরাত্মক (বা অতুইপ ছন্দের) ৩০০ শ্লোক অভ্যাস করা হয়। পরে জাট বংসরে ভাহারা পাণিনিব্যাকরণ শিক্ষা করে : ইহাতে ১০০০ পুত্র আছে, লিখিতে ৮ মান সময় লাগে। ত্তৎপত্তে থাতপাঠ ও এটা খিল শিখিতে আরম্ভ করে। দশ वर्ष बहुन होहेएछ जात्रक कतिहा जरहांगन वर्ष मर्र्था थिन शार्क स्थ হয় : পঞ্জপ বৰ্ষ বন্ধ:ক্ৰমকালে পাণিনির প্ৰভাষ্য পিখিতে আরম্ভ করে, ৫ বর্ষ মধ্যে পাঠ সমাধা হর। প্রভান্ত পাঠকালে একদণ্ড भागक वितरण চलिएय मा। वियोगीय मुभक कतिएक स्टेरिय। এই প্রভান্ত সম্পূর্ণ জারত করিতে না পারিলে অপর শাস্ত্রে সমাৰ অধিকার হছে না।' এই প্রকার শিক্ষারীতির উল্লেখ করিরা ইৎসিং লিখিরাছেন বে, 'এরপ ব্যক্তি একবার মাত্র পাঠ করিয়া চুইখানি বৃহৎ গ্রাছ কণ্ঠত্ব করিতে পারে।' তৎপরে তিনি ব্রাহ্মণদিগকে লক্ষ্য করিয়া লিখিরাছেন, 'তাঁহারা তাঁহাদের চারি-বেদকে অভিশয় ভক্তিশ্ৰদ্ধা করেন, ঐ চারি বেদে প্রায় শক্ষ প্লোক चारक। त्यस्ठकृदेत कांशरक निश्चिष्ठ इस ना, मूर्ण मूर्थरे हिनतां আসিভেতে। প্ৰভোক বংশেই এমন কভকগুলি ব্ৰাহ্মণ আছেন ্র, সেই লক বেদমা আরম্ভি করিতে পারেন। আমি কচকে এরূপ লোক দেখিরাছি।' ইৎসিংএর বিবরণী প্রমাণ স্বরূপ উদ্ধ ত ক্রিয়া অধ্যাপক মোক্ষ্বুলর বলিতে চান যে, সেই প্রাচীন বৈদিকবুলে শিক্ষারীতি অভি কুঞালীবন্ধ থাকিলেও তৎকালে পুত্তক, প্ৰস্থ, চৰ্দ্ধ, পত্ৰ, কলম, লিপি বা মণির কোন প্রকার উলেখ পাওয়া বার না। ভারতবাসী এই সকলের নাম পর্যান্ত অবগত ছিলেম লা। জাতাদের বিশাল সাহিত্য ছিল বটে, সে সমুদারই অভিবন্ধ সহকারে মূখে মূখে রক্ষিত হইয়া আসিতেছে।+

ভবে কোন সময়ে ভারতে বর্ণলিপির উৎপত্তি হইল ? ইহার উত্তরে মোক্ষমূলর বলেন বে, এ পর্যান্ত ভারতে বড লিপি আবিষ্ণত হইরাছে, তরাধ্যে অশোকনিপি সর্ব্বপ্রাচীন। প্রকার অশোকনিপি গাওয়া গিয়াছে-এক প্রকার নিপি দক্ষিণ হইতে বামদিকে লিখিত, এই লিপি স্পষ্টতঃ অরমীর (Aramean) বা দেমিটিক বর্ণলিপি হইছে উৎপন্ন। অপর প্রকার নিপি বামদিক হইতে দক্ষিণদিকে নেখা। এই নিপি ভারতীয় ভাষার প্রয়োজন অফুসারে ব্যানিরমে সেমিটিক বর্ণদিপি হইতেই পরিপুষ্ট হইয়াছে। ভারতীয় নানা প্রাদেশিক লিপির এবং বৌদ্ধাচার্যাগণের হত্তে ভারতের বাহিরে বছ দুরদেশে যে সকল লিপি ছড়াইরা পড়িরাছে, সে সমুদারের মূলই উক্ত দিতীয় প্রকার বৰ্ণনিপি। তবে এটাও অসম্ভব নহে যে, অতি প্ৰাচীন কালে সেমিটক নিপি হইতে সাক্ষাৎ ভাবে তামিল বৰ্ণনিপি গৃহীত **इहेबाहिन ।†** এইक्रा अधारिक साक्रमनत य वृक्ति हाता ७ অক্তর- বিস্থাস দেখিয়া ভারতীয় বর্ণলিপিকে বিদেশীয় লিপিফাত ৰলিভে চান, ভাহা নৃতন কথা নহে। তাঁহার বহু পূর্বো ১৮০৬ খুষ্টাব্দে শর্ উইলিরম্ জোব্দ ভারতীয় লিপির সেমিটিক উত্তরের आकाम विद्या वान ।

তৎপরে কণ্, লেশ্সিয়াস, বেবের, বেন্ফী, ছইট্নি, পট, বেল্টারগার্ড, ন'ল্, লেনরমন্ট প্রভৃতি পাল্টাত্য পণ্ডিতগণ্ড অপোকলিপির আকারের উপর নির্ভর করিয়া ভারতীর লিপির সেমিটিক-মূলভা ঘোষণা করিয়াছেন। ইহাদের মধ্যে অধ্যাপক বেবের সাহেবের বিশেষ মত এই যে, পুরাতন ফিনিক বণলিপি হইতে এবং ডিকের মতে প্রাচীন দক্ষিণ সেমিটিক দিয়া আসীরীয় কীলালিশি হইতে বাহির হইয়াছে। টেলর প্রভৃতি কোন কোন পাল্ডাত্য পণ্ডিতের মতে ভারতীর লিপি দক্ষিণ আরবের কোন প্রকার সেবীর (Sabian) লিপি হইতে উত্তুত, কিন্তু এ পর্যান্ত তাদৃশ প্রাচীন কোন সেবীর লিপি আবিত্বত না হওয়ায় অবশেষে ডিনি এরপও প্রকাশ করিয়াছেন যে, ভারতীর লিপির আদি নিদর্শন হয় ড ওয়ায়, হাডাুম, অরমা, নেবা অথবা অস্তু কোন অক্টাত রাজ্য হইতে আবিত্বত হইতে পারে।

এদিকে অধ্যাপক ডৌসন, টমাস, কানিংহাম্ প্রভৃতি
প্রাওৰবিদ্গণের মতে ভারত বীয় বর্ণমালার কল্প কোম দেশের
নিকট ঋণী নহেন! ডৌসন স্পাষ্টাক্ষরে লিখিরাছেন,—ভারতবাসী আপনারাই বে অক্ষরের উভাবন করিরাছেন, ভাহাতে
সক্ষেহ করিবার কোন কারণ নাই! ভাষাভবের স্ক্লাভিস্ক্রবিহরে হিম্মুগণ সভ্যকাতে সর্ক্রের্চ পণ্ডিত ছিলেন, ভাহারা

[&]quot; Max Müller, India, what can it teach us, p. 207-216.

[†] Max Müller's India, what can it teach us, p. 206.

শব্দশারের বেরূপ অপুর্ব উৎকর্ম সাধন করিরা গিরাছেন এবং বর-ভানের বেরূপ ক্র পার্থকা জানিতে পারিরাছিলেন, তাহাতে অক্সরের উদ্ভাবন একান্ত আবগুক হইরাছিল। এ ছাড়া তাঁহারা অক্সান্তের চিক্গঠনে বে অসাধারণ প্রতিভা দেশাইরা গিরাছেন, তাহাও অনস্ত্রসাধারণ। প্রফুডক্ষবিৎ কানিংহাম্ বলেন বে, ভারতবাসীর অক্ষর মিশর দেশের চিত্র-লিপির স্তার একই উপারে বাধীনভাবে গঠিত হইনছে। বেমন খননবন্ধ হইতে অশোকলিপির ধ, যব হইতে অন্তঃত্ব হ, দত্ত হইতে দ, পাণ্তিল হইতে প, বাঁপা হইতে ব, লাক্ষ হইতে দ, হন্ত হইতে হ, প্রবণিদ্রির হইতে শ। ইত্যাদি।

ইহার পর কেনেডি সাহেব প্রকাশ করেন বে, ৭০০ খৃঃ
পৃঃ হইতে ৩০০ খৃঃ পূর্বাল পর্যান্ত বাবিলনের সহিত দক্ষিণভারতের বাণিজ্য চলিয়াছিল। ফিনিক জাতিই সর্কপ্রথম
ভারতের সহিত বাণিজ্যকার্য্যে লিপ্ত হন। সেই সময়েই
ভারতীর লিপির উৎপত্তি ঘটে।

উভর পক্ষের মতামত জালোচনা করির। প্রসিদ্ধ সংস্কৃত-শার্রবিৎ ডাক্তার বৃহ্লর, ১৮৯৮ খুটান্দে এইরপ প্রকাশ করেন— কানিংহাম যে ভারতীয় চিত্রলিপির উৎপত্তি স্বীকার করিয়াছেন, তাহা অসমীটীন। দান্ধিণাতো ভটিপ্রোপু হইতে বে লিপি বাহির হইয়াছে, তাহার পর্যাবেক্ষণ করিলে কথনই চিত্রলিপির সৃহিত সামঞ্জ করা হাইতে পারে না। বৃহ্লর নিজমত সমর্থন করি-বার জন্ত প্রকাশ করেন,—

খুষ্টপূর্ব্ব ৮৯০ আন্ধে উৎকীর্ণ মেসার পাহাড়ে বে প্রাচীনতম দেমিটিক অক্ষরের ধ্বন্তাত্মক (Phonetic) লিপি দৃষ্ট হর. ভাহার সহিত বান্ধীলিপির বহু অক্সরের অনেকটা সামঞ্জ রহিয়াছে, তল্মধ্যে হ এবং ত এই ছুইটা আবার দক্ষিণ মেলো-পোটেমিয়ার শৃষ্টপূর্ক ৮ম শতাশীর মধ্যভাগের হে এবং ভউ **এই क्रुंटे फिनिक अक्टूब इटेएड वारिब इटेबाएड।** এटेक्स्प म এবং ব এই অক্ষরও শুষ্টপূর্ব্ব ৬৪ শতাব্দীর অরমীর অক্ষর হইতে পাওরা বার। অবশ্র ইহাও স্বীকার করিতে হইবে বে, সাহিত্যিক ও निभिनातीत ध्यमार ७०० ७ ६०० वृष्टेभूकारसत मर्गा र সকল অনুমীয় শিশি আবিষ্ণত হইবাছে, তাহা হইতে ত্রান্ধীশিপির উৎপত্তি হইতে পারে না, এমণ অনেকেই মত প্রকাশ করিয়া-ছেন বটে, কিন্তু ভারভক্ষেত্রে প্রাচীন জরমীর লিপির জহরণে আধুনিক স, ব, ল, অক্ষর গঠিত হইরাছে, ভাগা বেল বুঝা যার। ৮৯- ও ৭৫- খুইপূর্বান্দের মধ্যেই ভারতে সেমিটক বর্ণমালা প্রবেশ লাভ করিয়া থাকিবে। বৌছদিগের বাবেকজাতক পাঠে লাদা বাদ বে, বাবেল (Babylon) হইতে ভারতে বাণিলা চলিরাছিল। খুটার অধম শতাব্দ পর্যান্ত পশ্চিমভারতে ভরুকক্ত (ভরোচ) ও ভূপারক (ভূপারা) নামক হান সমুত্র-বাণিজ্যের ক্রের বলিরা পরিগণিত ছিল।" বৌধারন ও গৌতরধর্মস্থারেও বাত্রীর উপর শুক্ত আদারের ব্যবস্থা দেখা বার ও প্রথমেও সমুত্র-বাত্রার উলেখ আছে। নিরীর বিশিক্সণ বহু পূর্বজ্ঞাল হইতেই পারজ্ঞোপসাগর দিরা ভারতে বাণিজ্য করিছে আশিত। এই-রলেপ খুইজান্সের প্রার ৮০০ বর্ব পূর্বে আর্থাৎ প্রায় ২৭০০ বর্ব হুইতে চলিল ফিনিকীয় (Phoenician) বণিশ্বন্ধিগের বড়েই-ভারতে সেমিটিক লিপি আসিরাছে এবং ক্রমশঃ ভারাই যুক্ত-ভারতে সেমিটিক লিপি আসিরাছে এবং ক্রমশঃ ভারাই যুক্ত-ভারতীর লিপিতে পরিণ্ড হইরাছে।

ডাক্টার বৃহ্ লর্ বে মত প্রকাশ করিবাছেন, ভাহাই একণে পাশ্চাত্য প্রস্কৃতবিদ্ধ ও ঐতিহাসিকাণ স্থীটীন বলিরা প্রহণ করিরা থাকেন। কিন্ধ আমরা বতনুর আলোচনা করিরাছি তাহাতে বৃথিয়াছি, বে বে প্রমাণ ও বৃক্তিবলে প্রসিদ্ধ কর্মণপশ্ডিত কিনিকলিপি হইতে ভারতীয় বর্ণমালার ক্ষি বীকার করিরাছেন, ভাহা স্থীটীন বলিরা গৃহীত হইতে পারে না। কারণ ফিনিক বর্ণনালা এত অসম্পূর্ণ ও এত অল্প সংখ্যক বে, তদ্বারা ভারতীয় শাস্ত্রন্মহের উচ্চারণপ্রক্রিরা বা লিখনপ্রণালী কিছুতেই নিছ হইতে পারে না। তিনি বে যে লিপির সহিত্য ব্রাদ্ধী লিপির তুলনা দেখাইরাছেন, ভাহাও আমাদের বিবেচনার ঠিক নহে। উভর প্রকার লিপি পাশা পাশি রাখিলে আকাশ পাতাল প্রভেদ লক্ষিত হয়। বিশেষতঃ ভারতবর্ষীর ৪৮টী বর্ণমালার মধ্যে ভূই একটীর সামল্লক্ত দেখিয়া সকলগুলিকে ক্ষিন্ধিক-বর্ণমালার সম্প্রতি বলিরা কোনক্রমে গ্রহণ ক্ষরা যার না। এ সক্ষক্ত আমাদের যুক্তি ও প্রমাণ পরে লিপিবছ ইইতেছে।

হৈছিত বৰ্ণমালার উৎপত্মিকাল।

অতীত ইতিহাস বোষণা করিতেছে বে বহু সহল বর্ব, এমন কি হিমপ্রলবের পূর্ক হইতেই আর্ব্যসভাতার স্থবীল অছ্রিত হয়। বথন হিমালর ভূগর্ভ হইতে মতকোজোলন করে নাই, বধন সমূত আল্পশৈল একটা নাত্যক্ত পর্কাতরূপে উঠিতেছিল, বধন বর্তমান এক্রিরা ও আজিকা মহাবেশ ক্ষুদ্র ক্রীপসমাধীর আধার ছিল, ভূতব্যবিদ্যা আমাদিগকে আনাইরা দিতেছে, সেই ক্ষুদ্র অতীক্ত বুলে পশ্চিমে উত্তর ক্ষমনাত কইতে পূর্বে উত্তর আমেরিকা পর্যান্ত আর্ব্যলাতির 'প্রস্থোক্সন্প' বা আদি জন্মভূমি প্রবিভূত ছিল। আল বে হান চির ভূষারমন্ত বলিরা প্রথী মানবের কইমান্ত ও অসহ এবং উপাধের কলম্বার্কটাদি উৎপাধনের সম্পূর্ণ অক্সবৃক্ত বলিরা গণ্য হইতেছে, সেই উত্তর-বহাদেশই এক সমর আর্থানেবগণের নক্ষমনান্ত বলিরা গণ্য ছিল। বতদিন হিমপ্রেশয় ঘটে মাই, বতদিন ভূষারসম্পাতে আর্থা-

ভূমি স্থনেকর (Arctic regione) আকৃতিক বিপথ্যর সাধিত হর নাই,—নেই অতীত যুগে এসিরা ও যুরোপের উত্তর নের নাতন গ্রীয় এবং উক্ষ নাত করুমভিত অর্থাৎ চিরবসত্ত বিরাজিত সকল উপাদের ফল মুলের উত্তান অরুপ ছিল, সেও ২১০০০ বর্ষের ও পূর্বকাম কথা।।' তথন ইইতেই বৈদিক স্লাধ্যগণের মধ্যে সন্ত্যতার লোত বহিতেছিল, তথন ইইতে তাঁহারা নানা যাগ্যন্ত ও জ্যোতিষিক তর অবগত ইইবাছিলেন।

নানা সত্রের সম্পাদনকরে প্রবিশবের ক্ষারে জ্যোতিথিক কঠিন সমস্তা উদিত হইরাছিল। [বেদ দেখ] অফবিলা বাতীত দেই সকল সমস্তাপুরণ সম্ভবনর মহে! অফপাত বাতীত কঠিন গণনা সাধিত কিরপে হইত ? কোন প্রকার চিচ্ন বা বর্ণবিস্থাস বাতীত কিরপে অফপাত করা যাইবে? স্থতরাং স্থীকার করিতে হইবে বে, সেই অতিপ্রাচীন যুগ হইতেই বর্ণ বা অক্ষর-বিশেষের উৎপত্তি। কিন্তু কিরপে লিপির সাহায্যে সেই সকল বর্ণ অফপাত হইত, তাহা আনিবার উপার নাই। তবে যে সেই আদি বৈদিক্যুগেই নানাবর্ণমালার বা অক্ষরের স্টেই হাছিল, ভাহা বৈদিক্যুগেই নানাবর্ণমালার বা অক্ষরের স্টেই হইয়াছিল, ভাহা বৈদিক্যুগেই নানাবর্ণমালার বা অক্ষরের স্টেই হইয়াছিল, ভাহা বৈদিক্যুগেই সকল বৈদিক শব্দ সমুচ্চারিত হইবার সম্ভাবনা নাই।

হিমপ্রলয়েম পূর্বে যথন বৈদিক সভ্যতা স্কুপ্রতিষ্ঠিত इहेशाहिन, उथन सांग्रेज़ी चौकान कवा यात्र त्य, दिशिक वर्ग-মালার বিকাশও সেই সময়ে ঘটিয়াছিল। প্রাতিশাধা বা প্রতি-লাখার বৈদিক পঠনপাঠনবিধি অন্তুসারে প্রতি মন্ত্রই 'স্বর্তঃ' ও 'বর্ণজঃ' পাঠ করিবার নিয়ম আছে। স্ততরাং আদি বৈদিক মন্ত্রসমূহ কেবল যে অবাছাল্রিড ছইড ভাষা নহে, বর্ণবিশিষ্ট ছিল, ভাষাও সকলে জানিতেন। অবশ্ব এমন কোন প্রবল প্রমাণ নাই দে আমরা লোর করিয়া বলিতে পারি বে, হিমপ্রলবের পূর্বে প্রমের-নিবাসী বৈদিক দেববিগণ বে লক্ষ্য মন্ত্র উচ্চারণ করিভেন. ভাগ অবিকৃত আকাৰেই আৰ্যাবৰ্ছে পৌটিয়াছিল এবং এখন যে সকল বৈদিক মন্ত্ৰ পাওৱা যাইতেছে, তাহার সমস্তই হিম-প্রসায়ের পুর্বেষ বিশ্বদান ছিল। কিন্দু এটা অসম্ভব নছে, হিম-প্রসারের সময়ে বিষম ভুবারসমূল্যের তর্জাখাত হইতে বে ক্রজন कार्गामश्चान तका शाहेबाहित्यन, छारात्मव अञ्चित्वय घट नारे । ভাছাদের বংশগরদশ মেক (Passie) ও সমুক্ত হিমালত शासरन कारहानकारन छोहारवत पूरवह या कालि दिविक मध ক্ষনিহাছিলেন, ডাহাই 'শ্ৰুডি' ঘলিয়া প্ৰা ব্ইৰাছে। দেশ, কাল, পাত্ৰ ও জনবায়ুৰ অবস্থাকেৰে প্ৰথতিকালে নেই অতিব के क्रांतरणत त्यं किक किक लाईका मा गरिवादिक, जाना नरह धवर স্থানবিশেৰে আৰ্যাসন্তান যে কেহ সেই আছি মন্ত্ৰগুলিও স্থ স্থ ব্যবহারোপযোগী করিয়া না সইয়াছিলেন, এমন নহে।

বেদের মন্ত্রপরিচায়ক আঙ্গণগ্রন্থে শিখিত আছে—

"পথ্যা স্বান্তিরুলীটীং দিশং প্রাঞ্চানাং। বাগ্ ৰৈ পথ্যা স্বন্ধি:। ত'সাহনীচাাং দিশি প্রক্ষাততরা বাশুছতে। উদক্ষে উ এব যান্তি বাচং শিক্ষিতুম্। বো বা তত আগচছতি তক্ত বা শুক্রাবন্তে ইতি সাহ। এবা হি বাচো দিকু প্রক্ষাতা।"

(শাঝারনব্রাদ্ধণ ৭৩)

অর্থাৎ প্রধাবতি উত্তর দিক জানেন। প্রধাবতিই বাক্।
উত্তরদিকেই বাক্য প্রক্রান্ত বর্ণিরা কীর্তিত হইরা থাকে।
লোকেও উত্তরদিকে ভাষা শিখিতে যার। যে লোক সেই
দিক্ হইতে আসিরা থাকেন, সকলে 'তিনি বালতেছেন' এই
বর্ণিরা তাঁহার (বেদবাণী) শুনিতে ইচ্ছা করেন। কারণ এই
হান বাক্যের দিক বলিরা থাতে।

ঐ উত্তরদিক্ কোথার ? সেই স্থান কশ্মীরের উত্তরে» দেরুর নিকট, যে স্থান হইতে সরস্বতী নদী বাহির হইয়াছে।

রাহ্মপথ্যন্থের ছায় পারসিকদিণের বেদ বা আদিধর্মগ্রাপ্ত

জবস্তাতেও 'হরকুইতি' বা সরম্বতী বাগুংপত্তির হান বলিয়া
নির্দিষ্ট হইয়াছে। কিন্তু আবিস্তিক মতাবলম্বিগণ সারস্বত
প্রেদেশ ছাড়িয়া অনার্য্যসমাকুল স্থান্ত উত্তরপশ্চিমে বিভ্ত
ইইয়া পড়ার হানীয় প্রভাব ও বহু পুরুষ ধরিয়া ধর্মবিয়্রবহত্ত্ আদি আবস্তিক বা বৈদিক বাক্ বা শ্রুতি কথ্যিৎ রূপান্তরিত
করিয়া ফেলিয়াছেন, ভাই অবস্তার এবং বেদে ভাষায় ও উচ্চারণে
এত পার্থকা ঘটয়াছে। কিন্তু আব্যাবর্ত্তবাসী বৈদিক আব্যাসন্তানগণ সারস্বতসংশ্রব পরিস্তাগ না করায় এবং উত্তর্দিকের সেই
প্রাচীন বাক্ধারা শ্রুতিতে সম্বত্তে রক্ষা কয়িয়া আসায় ভারতীয়
বেদ আজ্বও প্রাচীনভা রক্ষায় সমর্থ হইয়াছে। ভাই আমাদের
বেদ আজ্বও প্রাচীনভা রক্ষায় সমর্থ হইয়াছে। ভাই আমাদের

ভারতীয় ঘর্ণমালা ছ জিপির উৎপঞ্জি।

ভারতীয় জ্যোতিঃশাল্লের ইতিহাসদেশক প্রাসিদ্ধ জ্যোতি-বিদ্ শব্বর বাসকৃষ্ণ দীকিও জ্যোতিরিক প্রমাণ উদ্ভ করিয়া বেশাইরাচেন বে, তক্লবক্রেবিদর শতপথবাদ্ধশে এখন কুইতে

^() B. G. Tilak's Arctic Home in the Vedas, p. 26.

শাঝাধন-প্রাক্ষণের ভাষাকার বিনায়ক কট্ট লিখিরাছেল,---

^{&#}x27;প্ৰকাৰতরা যাঞ্চাতে কামীয়ে সম্বতী দীৰ্চাতে *৷*'

এইরপে তিনি ক্লীঙই সর্বতীর স্থান বলিয়া ক্লিনা ক্রিনানে। স্বভ-পুরাণ্যতে সর্বতীর উৎপত্তিস্থান বিশ্বসর (১২০১৮০), বর্তমান নাম সরীকুল ক্লা। এক সমরে এই সরীকুল পর্বাপ্ত ক্লীন গেশ বিশ্বফ হিল। ইং। আর্গাঞ্জির বাক্ বা বৈশিকী ভাষা শিক্ষার স্থান বলিয়া সর্বতীর অপর নাম বাক্ষা ভাষা হ্ট্রাছে।

প্রার ৫ হাজার বর্ব পূর্ব্বকার জ্যোতিবিক বিবরণ সহিয়াছে, স্তরাং শতপণত্রাহ্মণের কতকাংশ যে ঐ সময়ে প্রকাশিত হই**রাছে,** তাহাতে সন্দেহ নাই। **শতপধব্রাহ্মণেরও বহ**পূর্কে যক্সংহিতা এবং তাহার বলপুর্বে ঋক্সমূহ প্রকাশিত হইমা-ছিল। মহারাষ্ট্র-পণ্ডিত বালগলাধর ভিলক ভৈত্তিরীয়সংহিতা व्यारमाठना कतिहा स्थारेग्रास्ट्न, वामस विवृत्यिन मृशनिता-সংক্রমিত হটবার পৃর্বের অর্থাৎ ৪০০০ খঃ পূর্বাবেদ ভারতীয় আর্যাঞ্জাতি জ্যোতিবিক আলোচনা করিতেন এবং ঋক্সংহিতার আচীনতর জ্যোতিবাংশ গণনা করিরা দেখিলে স্থির হুইবে যে, ৩০০০ থাঃ পূর্নান্দে হিন্দুগণ জ্যোতিষিক আনেক বিষয় লিপিবছ করিরাছিলেন। কেবল মহামতি তিলক বলিয়া নহে। প্রসিদ্ধ জর্মণ-জ্যোতিষী ও পুরাতত্ববিদ জাকোবি (Jacobi) বেদের ক্যোতিষাংশ আলোচনা করিয়া সিদ্ধান্ত করিয়াছেন যে, হিন্দুগণ ৩০০০ খুষ্টপূর্কান্দে বা এখন হইতে প্রায় ৫০০০ বর্ষ পূর্বের ঞ্ব-নক্ষত্র আবিষ্ঠার করিয়াছিলেন। [জ্যোতি**ব শব্দে ২**৭২-২৭৪ পৃষ্ঠান্ন বিহুত বিবরণ দ্রষ্টবা।]

উদ্ধৃত প্রাণবলে বলিতে পারা বায়, বেদসংহিতা ও তদস্তর্গত জ্যোতিধনিদ্ধান্ত সংরক্ষণ করিবার জন্ম জনতঃ হ হাজার বর্ষ পূর্ব্বে বৈদিক বর্ণমালা ও কোন প্রকার লিপিপদ্ধতি প্রচলিত হইয়াছিল। কেহ কেহ এথানে এই আপত্তি করিতে পারেন, বেদের কোন অংশ যদি লিপিবদ্ধই হইয়া থাকিবে, তবে বেদের অপর নাম শ্রুতি হইল কেন ? এবং বেদসংহিতার বা প্রাচীন কোন বৈদিক গ্রন্থে লিপিব। লিপিবাচক কোন প্রকার শদ্দের প্রমাণ পাওয়া যায় নাই বা কেন ?

পূর্বেই বলিরাছি বে, হিমপ্রলয় উপছিত হট্নে আদি বাস ছাড়িরা আবাসন্তালগণ পূর্ব ক্রতি লইয়া দকিণমুণে সরপস্ (পৌরাণিক বিন্দুসর ও বর্তমান সরীকৃল) ব্রুদের নিকট আসিয়া উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিলেন, এই স্থানই পরবর্ত্তী বৈদিক ও আবত্তিক আর্যাক্সাতির নিকট, পরে "প্রফ্রোকন্" বা প্রাচীনবাসভূমি বলিয়া গণ্য হইয়াছিল। বেদের আনেক মন্ত্র হানে প্রকাশিত ছইয়াছে এক এই স্থান হইতেই বৈদিক আর্যাগণ সিদ্ধ, শতুদ্র, আপরা, গলা ও সরস্বতী-প্রবাহিত পঞ্চনদ ও সাম্বত ভূলাগে আসিয়া উপনিবেশ স্থাপন করেন, তাহা ঋক্সংহিতা হইতেই পাওয়া বায়। [আর্যানক দেখা] আর্যানকালন যে "ক্রতি" লইয়া ভারতে প্রবিষ্ট হইয়াছিলেন, সেই ঋক্সংহিতায় (১-19১৪) আময়া এইয়প মন্ত্র পাইতেছি—

"উত্তৰঃ পশুৰ্ম কৰ্ম বাচমুত ৰ শুদন্ন শুণোত্যেনাম্। উতে। কৰৈ তন্বঃ বি সলে জাগেব পতা উপতী হ্বামাঃ ॥" উক্ত থক্টীয় ভাষার্থ এই—কোন কোন গোক বাকাকে থেখে অবচ পেথে না। আবার অপর লোকে বাকাকে ওনে, অবচ জনে না। অপর লোক ওনাইলেও বাকাক ভাষার নিকট অলতের মত থাকে, অর্থাৎ ওনাইলেও নে ব্রিডে গারে না। কামরমানা মননি শোডনব্যাদি বারা বিভূমিতা হবরা নিজ পতিকে কেরপ নেহ সমর্পন করে, বাকা সকলও সেইরপ (পুর্বোক্ত) বিবিধ লোক ব্যতীত অভ এক প্রকার লোককেট নিজ মৃতি বা অক সমর্পন করিয়া থাকেন।

উদ্ভ প্রমাণে ময়ের দর্শন, প্রথণ ও মৃত্তি পরিপ্রহ হইতে আমরা কি মনে করিতে পারি না বে অজ, বিজ্ঞ ও মন্ত্রসভ এই তিন প্রকার পাঠকই ছিল এবং এই সজে দর্শনের বিষয়ীভূত ক্রতি ও মন্ত্রমূর্তি বা মৃত্তিবিশিষ্ট লোপ এই তিনেরই আভাস পাওয়া বাইডেছে। কোন ক্রম্কর বা চিছ্ন। থাকিলে বাক্যকে দর্শন করা যায় কিরপে দু সংছিতার অধ বাজনে অনেকটা বিশদীকৃত হইরাছে। খংগেদের ঐতিরের বাজনে (৩৩৪) আচে—

"তে বা ইমে ইতরে ছলাসী গায়ত্রী মভাবদেতাং বিরং নাবক্ষরাণান্ত পর্যাগুরিতি নেতাত্রবীদ্ গায়ত্রী যথাবিত্ত মেব ন ইতি তে দেবের প্রান্ন নৈতাং তে দেবা অক্রবন্ যথাবিত্ত মেব ব ইতি তত্মান্ধাপোতার্ছ বিন্তাাং র্যান্তর্যথাবিত্ত মেব ন ইতি তত্তো অস্তাক্ষরা গায়ত্রাভবন্দ্রারা ক্রিইবেকাক্ষরা অগতী সাম্ভাক্ষরা গায়ত্রী প্রাতস্পবন মৃত্যক্ষং তাং গায়ত্রাত্রবীদান্তপি মেহত্রাত্বিতির সাত্রেরার্থী ক্রিইপ্ তাং বৈ মৈতেরইতিরক্ষরেকপসক্ষেত্রীভিত্ত তা মৃপ সমদধাদেতাকৈ তদ্গায়ব্রা মধান্দিনে যথাক্ষতি তথেতি তা মৃপ সমদধাদেতাকৈ তদ্গায়ব্রা মধান্দিনে যথাক্ষরে প্রতিপদো যণ্চান্তরেঃ সৈকাদশাক্ষরা ভূষা মাধ্যন্দিনং স্বন মুদ্রছন্ন" ইত্যাদি।

অর্থাৎ সেই অপর হুইটা ছন্দ (এই পু ও জগতা) পায়ত্রার নিকট আসিয়া বলিলেন — তোমরা যে যাহা পাইয়াছ, তাহা আমাদের; সেই অক্ষর কমটা আমাদের নিকট ফিরিয়া আসক। গায়ত্রী বলিলেন — না, আমরা যে যাহা পাইয়াছি, তাহাই তাহার পাকুক। তথন তাহার দেবগণের নিকট প্রশ্ন উপত্তিত করিলেন। সেই দেবগণও বলিলেন — তোমাদের যে যাহা পাইয়াছ, তাহার তাহাই থাকুক। তথন গায়ত্রী আট অক্ষর, এই ভের তিন অক্ষর ও অগতীর এক অক্ষর হইল। সেই অহাক্ষরা গায়ত্রী প্রাতঃসবন নির্মাহ করিমাছিলেন, কিছ ক্রাক্ষরা ত্রিই প্রাধ্যান্তিন সবন নির্মাহ করিমাছিলেন, কিছ ক্রাক্ষরা তিই প্রাধ্যান্তিন সবন নির্মাহ করিছে পারেন নাই। গায়ত্রী তাহাকে বলিলেন—ভাষা আসিতেছ, এখানে আমারও স্থান হউজ। তিইপ বলিলেন—ভাষাই হইবে, তবে তুমি সেই আমাকে আট অক্ষর হারা যুক্ত কর। গায়ত্রী তাহাই হউক বলিয়া তাহাকে

আট অব্দর যুক্ত করিলেন। তথন মাধ্যব্দিন স্বনে মক্স্থতীর শক্ষের বে ছুই উত্তরবর্তী প্রতিপৎ আর বে অস্তুচর আছে, তাহা গান্ধগ্রীকে দেওরা হইল। ত্রিষ্টুপ্ও একাদশাব্দরা হইরা মাধ্যব্দিন স্বন নির্বাহ করিলেন।

ঐতরের ব্রাশ্বশের অন্ত স্থলেও (১)১।৫) দেখা বার—
"নস্টান্তৌ পর্কমান কুর্বীত গরোবা অন্তট্ডোল্ডত্বান্টরক্ষরাণি।"
বিনি প্রপ্রমানা করেন, তিনি হুইটা অন্তট্ভ ব্যবহার
করিবেন। হুই অনুষ্টান্ত ওঁও অক্ষর আছে।

ঋক্প্রাতিশাখ্যের মতেও অস্টুতে ৩৪ অক্ষর আছে,—
"গাত্রিংশনক্ষরাস্টুপ্ চড়ারোহ্টাক্ষরাঃ সমাঃ।" (ঋক্প্রা॰ ১৬।২৭)
অর্পাৎ প্রতিপাদে ৮টা অক্ষর করিরা চারি পাদে ৩২টা
অক্ষরে অস্টুপ্ ছবাঃ।

ঐতরের বাদ্ধণের অঞ্চরানেও "তেজ্যোহভিতত্তেভাররো বর্ণা অঞ্চারত্ত অকার: উ-কার: মকার: ইতি তানেকথা সমতবং তদেতং ওমিতি।" অর্থাৎ তাহার ভিতর তিনটা বর্ণ হইরা থাকে—অঞ্চার, উকার ও মকার; এই তিনটা একত্র হইরা তবে 'ওম' হইরা থাকে।

এইরূপ উক্তি বারা অক্ষর শব্দের স্পষ্টই বর্ণবাচকতা প্রতিপর কটতেচে।

- এত**খ্যতীত ঐতরে**র ব্রা**দ্ধণে** (১।৪।৪)

"ভৌরিতোতৈরেবৈনং ডৎ কামৈঃ সমর্মন্ত্রীতি রূ পূর্কং পটলং" খাধেদের আখলারন প্রৌতস্ত্রেও উচ্চ প্রমাণটী পাওরা বার। (আখলারন প্রৌত ৪।৬।৩)

এখাদে 'পূর্ব্ধ পটল' গ্রন্থাংশবাচী, স্থতরাং স্বীকার করিতে হইবে বে, সেই আতীব প্রাচীন কালেও গ্রন্থবিভাগ ছিল এবং কুক্ষমক্ প্রভৃতি কোন কিছুতে গ্রন্থ নিশিত হইত।

শ্বেদে এরপ ক্ষান্ত প্রমাণ থাকিলেও কেবল পাল্টাত্য
যুন্নালীর পণ্ডিত বলিরা নহে, এদেশীর ইংরাজী অভিজ্ঞ অনেক
পশ্চিতের বিখাল বে, বেল মুখে মুখেই চলিরা আসিরাছে, বৈদিক
কালে লিখিষার প্রথা ছিল না। এ কারণ বেদে লিখিবার
উপকরণ বা লিপির কোনে উল্লেখ নাই,—এমন কি কিছুতেই
জাহারা বিখাল করিছে প্রস্তুত হইবেন না বে, বৈদিক আর্থাগণ
লিপির বাবহার জানিতেন। বাঁহারা সেই বহু সহম্রবর্ষ পূর্বেধ
নানা বিবরে বর্থেই উন্নতি লাভ করিরাছিলেন, শিক্ষা দীক্ষার
বাঁচাগের সমকক সে সমরে অপর কেই ছিল কি না সন্দেহ,
গুরহারা পড়িতে জানিতেন, অখচ লিখিতে জানিতেন না,—
গ্রহণ উক্তি কি প্রশাপ্রাক্ষা নহে ?

আমরা পূর্কেই দেখাইরাছি, ঋষেদের সমন্ন অক্সর ছিল, বর্ণ ছিল এবং মন্ত্রমূর্কিও আনেকের জানা ছিল। শুরুষজুর্কেদে (১৫।৪)—"অক্সরপঞ্জ কিল্ছন্দাং পদপঙ্ তিশ্ছন্দাং বিষ্টান্নপঙ্ জিশ্ছন্দাং সুরোভ্রজশ্ছন্দার অর্থ সাওয়া যায়। এখানে ভাষ্যান্দার মহীধর সুরোভ্রজশ্ছন্দার অর্থ করিরাছেন, 'কুর বিলেখন-খননয়োঃ সুরতি বিলিখতি ব্যাম্নোতি সর্কমিতি' 'প্রাজতে দীপাত ইতি ভ্রজং' অর্থাৎ সুর অর্থে বিলেখন ও খনন। বিলেখন ও খনন হারা অক্সরবদ্ধ যে ছন্দাঃ ভাজমান বা প্রকাশিত হয়, ভাহাকে সুরভ্রজশ্ছন্দ বলে। এই সুরভ্রজ শন্দ হারা কি মনে ইইতেছে না যে, এখন বেমন উড়িয়ার ধন্তী নামক সুরশলাকা আছে, বৈদিককালে সেইরূপ খুলিয়া লিছিবার উপযুক্ত কোন প্রকার লেখনী ছিল এবং লেখনী হারা ছন্দাং লেখা হইত। এই লেখন হারা কি মনে হয় না বে, বৈদিক আর্য্যগণ কোন প্রকার বর্ণলিপির ব্যবহার জানিতেন।

পাশ্চাত্য পশ্ভিতগণ বেদের নিকক ও প্রাতিশাখাগুলিকে বৃদ্ধেবের পূর্কবর্তী অর্থাৎ খুষ্টপূর্ক বর্চ শতালীর পূর্ক প্রন্থ বলিরা মনে করেন। আমরা পূর্কে প্রমাণ করিরা দেখাইরাছি যে, নিকক্তের পূর্কে পাণিনি বিভ্যমান ছিলেন, কারণ নিক্তকার বান্ধ পাণিনির মত উচ্ত করিরাছেন।

[পাণিনি দেখ।]

পাণিনি লিপি, লিবি, লিপিকর, গ্রন্থ, বর্ণ, জক্ষর প্রভৃতি বে বহুতর শব্দ প্ররোগ করিরাছেন, তন্ধারা তাঁহার সময়ে যে বর্ণলিপি ছিল, তাহা নিঃসন্দেহে প্রমাণিত হইরাছে। এমন কি, তাহার সময় "শিশুক্রন্দীয়" নামক বালবোধক পুস্তৃক প্রচলিত ছিল, সে কথাও পাণিনি উল্লেখ করিরা গিরাছেন।

পাণিনির পূর্কে বেদের প্রাতিশাখ্যের রচনা। এরপ স্থলে অন্ততঃ খৃষ্টপূর্ক ১০ম শতাব্দীরও পূর্বে প্রাতিশাখ্যের কাল ধরিতে হইবে। বেদের বিভিন্ন শাখার পঠন পাঠনে যে কিছু য়াতিক্রমের সম্ভাবনা হইতেছিল, সেই সকল দোবপরিহারের কন্ত প্রাতিশাখ্যের ক্ষিঃ

পাণিনি হত্র করিরাছেন, "লোপোহর্শনম্" অর্থাৎ কোন বর্ণের অন্বর্ণনকে লোপ বলা হর। এই লোপ সম্বন্ধে প্রপ্রাচীন প্রাতিশাখ্যগুলিতেও বহু হত্ত দৃষ্ট হর বধা—

"লোপ উদংখাতভো: সকারত।" (অথর্কপ্রাতিশাব্য ২।১।১)—
(বাজসনেরপ্রা: ৪।৯৫, তৈভিনীরপ্রা: ৫।১৪।)

"আৰহোদ্ম লোশঃ!" (অধর্মপ্রা° ৩৩২, = ঋক্প্রাতি° ৪।৫, বাৰদনের আতি° ৪।১, তৈতিদীরপ্রাতি° ১৩২।)

বেদ কেবল শ্রোভবা হইলে, ক্বমই লোপের প্রার্থিকতা থাকে না। ভার পর রেকের প্ররোগ। ক্বনু রক্তুঃ, অথক

^{*} laac Taylor's Alphabet, Vol. I. p. 2-3.

প্রস্তৃতি সকল প্রাতিশাখোই রেকের নিরোগ ও রেকের পর বাশ্বনের বিশ্ববিধান বর্ণিত আছে।

(ঋক্প্রাতি ১৫, বাজসনেরপ্রা° ১১১৪, অথর্কপ্রা° ১৪৮) পুল্পবাবি-প্রণীত সামপ্রাতিশাখাতেও এইরল লোপ, রেক ও অবগ্রহের কথা পাইতেভি।

বেদ যদি কেবল শ্রুতিতে পর্যাবসিত থাকিত, তাহা হইলে বেদে রেক, অবগ্রহের প্রয়োগ ও লোপ কোথায় হইবে এবং দিছ কোথার হইবে; এক্লপ নিয়ম বিহিত হইবার কোন কারণ ছিল না।

তৈতি রীয় সংহিতায় দেখিতে পাই যে, সেই আতি পূর্কালে বাকেরণ রচিত হইরাছিল এবং ইক্সই সর্কাদিম শাদিক। বথা—
"বাক্ বৈ পরাচী অব্যাক্তা অবদং। তে দেবা অক্রবন্ ইমাং
নো বাচং ব্যাকুক। সোহববীং বরং বৃশৈমহং চৈব বায়াব
চ সহ গৃহতা ইতি। তথালৈক্রবায়বঃ সহাত। তামিক্রো
মধ্যতোহবক্রম্য ব্যাকরেবং। তথাদিয়ং ব্যাক্তা বাওছতে
তদ্দভ্যাকরণ্ড বাকেরণ্ডম্॥"*

ভাবার্থ এইরপ —প্রাতনী বাক্ অর্থাৎ বেদরপ বাকা প্রথমে মেঘগর্জনের স্থায় অথপ্রাকারে আবিভূতি ছিল। তন্মধ্যে কতটা বাকা, কতটা পদ তাহা কেহ ব্রিত না। তথন দেবগণ প্রার্থনা করেন যে, বাকা প্রকাশ করুন। ইন্দ্র বেদরপ বাকাকে মধ্যে মধ্যে বিচ্ছিন্ন করিয়া বাকা, পদ, প্রত্যেক পদের প্রকৃতি প্রের্মাছিলেন। বাকা, পদ ও পদের অন্তর্গত প্রকৃতি-প্রত্যানিশ্যা শব্দ বিশেষরপে ব্যক্ত করাই ব্যাকরণের কার্যা। ব্যাকরণ যথন ছিল, তথন বর্ণলিপি গাকিবারই কথা। বেদ হইতে আরও ঘই একটা প্রমাণ উচ্চুত করিয়া দেখাইতেছি। বাজসনের-সংহিতার (১৭।২) আছে — "একা চ দশ চ দশ চ শতক শতক সহস্রক সহস্রং চাবৃতক চাযুতং চ নিযুতক নিযুতক প্রার্থ্ন: চ সমুক্রত বায়ক প্রার্থ্ন: ।"

পরার্দ্ধ সংখ্যা ব্রাইতে কেবল শ্রুতির সাহায্য লইলে চলিবে না, অস্কপাত করিরা ব্থাইতে হইবে। অক্সংহিতার (বাওনা৯) দেখুন—

্ষং হৈ কুৰ্যাং স্বৰ্ভামুক্তমসাবিধাদাহর:।

चात्रसमत्रिक्तन् नक्षत्र चनकृतन् ॥"

ভাৰাৰ্থ এই — অসুর রাহ নিক ছারার হারা সুর্বাকে যে বিভ করে, সে বেধ অতিগণই জানিতেন, অস্ত কবিরা ভাহা কানিতে সমর্থ হন নাই!

উक्त वक् रहेरक नहरबाहे माम जिन्न हहेरव (क् च्याव्यक्रशर्गेहें अवनगरनात्र चानि कहा। अवरवृथ पर बूर्ट्स बूर्ट्स व्हेरक भारतं, काहा जाबाद्यत बुक्ति चलमा।

উপরোক্ত প্রমাণ বারা বৈদিক বুগে বদি বণিলিপিয় বিভ-মানতা বীকার করা হর, তাহা হইলে অক্সবুৰে শুনিরা মুখে মুখে বেদাভাগে করিবার নিরম রহিয়াছে কেন

প্রীয় ৮ম শতাকে চীনপণ্ডিত ইংসিং ভারতে আসিরা কচকে দর্শন করিবা ঐরপ বেদাধারনের কথা লিপিবছ করিলেন কেন

প্র

বর্মণান্ত শুলর মুখে শুনিরা শিবা কঠন্ত করিবে, এইরূপই নিরম ছিল। কেবল বেল বলিরা নহে;—ইৎসিংএর বিবরণ পাঠ করিলে জানিতে পারি বে, বৌদসমাজেও ঐরূপ ধর্মগ্রছ শুরুমুখে শুনিরা কঠন্ত করিবার রীতি ছিল।

অধারন ও অধাপিনার পছতি ঐরপ থাকিলেও বেদ লিপি-বছ হইত, তাহারও প্রমাণ পাওরা যার। বেলের নিরুক্তকার গার লিখিয়াছেন,—

"সাক্ষাৎক্রতধর্মাণ ঋবরো বভূব্রেছবরেভোছসাক্ষাৎক্রত-ধর্মক উপদেশেন মন্ত্রান্ সম্প্রান্তঃ। উপদেশার মারস্কোহবরে বিদ্ গ্রহণারেমং গ্রহং সমান্ত্রাসিবুর্বেদক বেদালানি চ ॥" (নিক্লক ১।২০)

বাহারা ধর্মের সাক্ষাৎকার বা দর্শন লাভ করিয়াছেন, সেই সকল ঋবি, বাহারা ধর্মসাক্ষাৎকার লাভ করেন নাই অর্থাৎ প্রভাৱিদিগকে উপদেশ নারা মন্ত্রসমূহ প্রদান করেন, সেই প্রভাৱিগণ আবার উপাধ্যারদ্ধণে উপদেশ নারা 'গ্রহতঃ' ও 'অর্থতঃ' মন্ত্রগুলি শিথাইরাছিলেন। তাহারা আবার অর্থ-প্রহণে অক্ষম শিব্য দেখিয়া খেলযুক্ত হইয়া বুঝাইবার জন্ত এই প্রহণ করেন। কাহার নারা সেই বেদ বেদাল সকলেত হয় ? তবিবরে নিককটীকাকার চুর্গাচার্য্য লিখিয়াছেন,—

"প্রথগ্রহণার ব্যাসেন সমায়াতবক্তঃ। তে একবিংশতিধা বহন চান্। একশতধা আথবর্যবং সহক্রধা সামবেদং। নবধা আথবর্ধং। বেদালান্তণি। তদ্ বধা। ব্যাকরণমইধা নিজ্ঞাক চতুর্দ্দধা ইত্যেবমাদি। এবং সমায়াসিদুর্ভেদেন গ্রহণার্থং। কথং নাম ভিরাভেতানি শাগান্তরাণি লঘুনি স্রথং সৃষ্টীরুরেতে শক্তিহীনা আয়ায়ুরো মুছ্বা। ইত্যেবমর্থং সমায়াসিব্রিত।"

সহজবোধা করিবার জন্ত ব্যাসের বারা তাঁহার। বেদ
সক্তমন করাইলৈন। (তথ্যধ্যে) বহুখক্ষুক্ত কথেদ ২১টা লাগার,
অধ্বর্গ্ধ কার্য্য সক্ষমীর বস্তুর্কেদ ১০১ লাখার, সামবেদ ১০০০
লাখার, অথকবিদ ৯টা লাখার বিভক্ত হর। রেলালও এইরুপে
ভাগ করা ক্রাছিল, (বধা) ব্যাক্ষরণ ৮ ভাগ, মিকক্ত ১৪ ভাগ।

ভ 'জন্ত পরাচী পুরান্তনী কাক্ বেদরাপিনী আব্যাস্থাতা মেগল্ডনিতবৰণপথা-কারা আবিশিতপথ্যাক্তরেভেগেডি থাবং। তানিক্রো স্থান্ডেহ্নফ্রনা নিজ্জির এতাব্দিব্ধ আক্যা বাক্যে হৈভানি পালানি প্রেন্থু হৈভাঃ প্রকৃত্যা এটে চ প্রভাষা ইভোব্যবহাসকার আব্ধকা বাহোবিভেন্নং কুম্বেভানি' (ভাষ্)

^{*} Max Muller's India, what can it teach us ? p. 811.

এরপ সম্বাদের কারণ কি? এইরপ ভিন্ন ভিন্ন ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র শাখা সংকেই শক্তিহীন জন্নারু মন্থবা প্রহণ করিতে পারিবে। •

বেদ প্রস্থাকারে যে শিশিবদ্ধ হইন্দ, মহাভারতের এই বচন কর্মী পাঠ ক্রিলে ভাহান্তে আর কাহারও সন্দেহ থাকিবে না-

"বনেতহ্তং ভবভা বৈদ্যান্তনিদর্শনন্। এবনেতদ্বধা চৈতমিগুল্লাতি তথা ভবান্ ॥ ধার্যাতে হি করা প্রস্কৃতবোর্কেদ্যান্তরোঃ। ন চ প্রস্কৃত ভবকো বথাতক্ষ নম্বের।। বো হি বেনে চ গাল্ডে চ গ্রহধান্তবংপরঃ। ভারং ল বহতে ভক্ত গ্রহ্বার্থন ন বেন্ধি য়ঃ। বন্ধ প্রহার্থতবক্তো নাভ গ্রহার্থনো বুবা॥"

(শান্তিপর্ব্ব ৩০০।১১-১৪)

(বিশিষ্ট জনককে সংখাধন ক্ষরিরা বলিজেকেন)—আপনি বেদ ও ধর্মপাত্রের যে এই নিন্দর্শন বলিলেন এবং মনে মনে বেরূপ ধারণা ক্ষিরাছেন, তাহা ঐরূপই বটে। আপনি বেদ ও ধর্মপাত্র উভর এছই অভ্যাস ক্ষিরাছেন, কিছু তাহার বধাবৎ অর্থ এছণ ক্ষিতে পারেন নাই। বিনি বেদের ও ধর্মপাত্রের প্রস্থ অভ্যাসে ক্ষেত্রক হইরা তাহার তম্ব বধাবৎ প্রহণ ক্ষিতে না পারেন; তাহার প্রস্থ অভ্যাস বিকল। যিনি গ্রন্থের অর্থ ব্বিতে না পারেন, তাহার পক্ষে গ্রন্থের ভারবহনই সার। আরু বিনি গ্রন্থের অর্থ ব্থাবধরণে জানিতে পারেন, তাহার অভ্যাস বিকল হর না।

এখন আমরা নিঃসংশহে জানিতেছি বে, অভি পূর্বকাল ছইতেই প্রতিও ধর্মাত্র লিপিবছ ও গ্রহ' বলিরা পরিচিত হইরা আসিতেছে। তাই মন্ত্রসংহিতার (৭।৪০) ট্রকার কুর্ক-ভট্ট লিখিরাছেন— "ত্রিবেদীরপবিভাবিদ্ধাঃ ক্রিবেদীমর্থতো গ্রহতশাভাবেৎ।"
রয়ুনন্দনও বৃহস্পতির প্রাচান বচনটা উভ্ ভ করিয়াছেন,—
"বাশ্বাদিকেংশি সমরে প্রান্তি সংকারতে বতঃ।
ধাত্রাক্ষরণি স্টানি পরার্চান্যতঃ পুরা॥" (ক্যোতিত্তব)
অর্থাৎ ৬ মানের পর লোকের ভূল হইরা থাকে, তাই
বিধাতা পুরাকালে অক্তর স্টি করিয়া পঞ্চনিবন্ধ করিয়াভিলেন।

অতি পূর্বকাল হইতেই বে ভারতে সম্লান্ত রীপুরুষ উভয়েই বণলিপি অভ্যাস করিতেন, তাহারও প্রমাণ পাওয়া গিরাছে। বাঝাকি রামারণ পাঠে ফানিতে পারি বে, সর্বাশাস্ত্রক্ষ মহাবীর হন্মান্ অপোকবনে উপস্থিত হইরা সীতার দর্শন পাইলেন এবং আপনার ও রামের পরিচর দিরাও বধন সীভার সন্দেহ দূর করিতে পারিলেন না, তথন তিনি সীভার বিধাস জন্মাইবার জন্ম রামাছিত অনুরীয়ক বাহির করিয়া দেখাইয়াছিলেন।

"বানরেছিং মহাভাগে দুতো রামশু ধীমত:।
রামনামাভিতক্ষের পশু দেবাস্থলীরকম্ ॥" (ক্রন্সকাপ্ততাং)
উচ্ত রোকটা প্রকিপ্ত বলিয়া উড়াইয়া দিবার জো নাই,
প্রাচীন টীকাকারগণ সকলেই ঐ প্লোকটা ধরিয়াছেন। রামনামাভিত অসুরীর উপর স্কর্মাণ্ডের ভিত্তি স্থাপিত। স্থতরাং
বীকার করিতে হইবে বে, প্লোকটা বান্ধীকির নিজন্ম। তৈতিরীয়প্রাতিশাখাস্থ্রে পূর্বতন আচার্যার্যপে বান্মীকির নাম গৃহীত হইরাছে। এরূপ স্থলে বান্ধীকির সময়ে মর্থাৎ বৈদিক্যুগের শেষভাগে
অস্ততঃপক্তে খৃঃপূর্ব ১০য় শতাব্দেরও পূর্বে ভারতীয় শিক্ষিতরীলোকদিগের মধ্যেও বর্ণলিপিক্রান ছিল, ভাহার লগ্রন্থ আভাস
পাওরা বাইভেছে। অতি প্রাচীন বৈদিক্যুগ হইতেই বে ভারতে
রীপিকা প্রচলিত ছিল, ভাহার উল্লেখ এক্সলে জনাবশুক।
স্থতরাং খুঃ পূর্বে ৮ম শতাব্দীর পর ফিনিক (Phœuician)
নামক বণিক্দিগের নিকট হইতে ভারতবাসী লিপিক্রান শিক্ষা
করিয়াছেন, এ যুক্তির কিছুতেই সমর্থন করা বার না।

খুইপূর্ব বর্চ শতাবে শাকাবৃত্তের অভ্যানর। তাঁহার নির্বাণের কিছু পরেই তাঁহার ধর্মোপরেশনমূহ রক্ষা করিবার কল্প তাঁহার প্রধান প্রধান বিধান শিকাগণ একত্র হইরা ১ম বৌদসক্র আহ্বান করেন। ফরাসী পণ্ডিত ফুকো (Foucaux) ও রাজা রাজেল্র নাল মিত্র মহাশর শ্লালিতবিত্তরের সমার্কৌচনাকালে দেখাইরা-ছেন বে, ললিতবিত্তরের মধ্যে বে সকল গাখা আছে, তাহা ঐ সমরে (খু: পূর্ব ৩ই শভাবে) রচিত ও সংগৃহীত হইরাছিল। ও সেই গাখার এইরূপ বর্ণিত হইরাছে—

 [&]quot;সাকাৎকুছো বৈগর্পঃ সাকাদ ইং অতিবিটেন তপ্রা। তে মে সাকাৎ-কৃতধর্মাণ:। কে পুনতে ইতি উচাতে। ধবর: কবভি অমুখাৎ কর্মণ এবদ বিতা নাছেণ সংৰ্ক্তাদমূলা প্ৰকাৰেণৈৰা লক্ষণকৰ্মিপালো ভৰতীতি क्षमः विष'र्ननाविक्ति क्षाकि । अवक्रिक्षम् क्षाविनविनावपर्ननात्रोनातिका। বুড়োজং নান্দাৎকৃতধর্মাণ ইভি। ন হি ধর্মন্য কর্মনমন্তাহভাপুর্কো হি ধর্ম:। আহ কিং ডেবানিডাচ্যতে। (कश्यातकाश्याकारक्ष्यक्षाः वेगामध्य মন্ত্ৰান সম্প্ৰান্তঃ। তে বে সাক্ষাৎক্ৰভবৰ্ত্বানভেহতক্ৰেছে।হৰৱকানীনেভাঃ পঞ্জি-হীবেজ্য স্বভাবিজ্য:। ভেনাং হি স্বস্থা ভক্তঃ পক্ষাবৃদিধসুণস্বাস্থ্য ন হথা गृर्त्सवार गाव्यारङ्ग्छवर्त्तवार अवनवस्तरेतव। आह-किर (स्था हेकि। (स्थ-बरबका क्रेमरनरम्ब निरम्हाभागातिकता नुक्ता बद्धान् रक्का देखि । उदस्यतका উপবেশন নিয়োপাথারিকরা <u>বুড়া বছান্ এছডোহর্কত সন্মান্ত:</u> সমান্তরত:। **७५१णि क्रांगरमध्यय अवृष्टः। ...छगरम्भाग् छगरम्भार्यः। 'क्यः** मात्र छन्-विकास तरिए नोहे वुन रीकृतिक अववर्षनिकृता प्राप्तक विकासीतीः रक्षणुहरस उरमूकम्मात्रा (करामाद्वा: महक्राहमरक्या कामामूक्क्षणाक अक्नामाद्वा: विक-अवगरवयः अवः नेवानिस्वयनकासः नेवासक्यः किः अवस्थरकरमञ्जाहारः ।"

Dr. Rajendra Lal Mitra's Lalita Vistara, Intro. p. 56,

"না গাওলেখনিখিতে গুণ অৰ্থসূক্তা

বা কর ইবৃশ ভবেন্ মম ভাং বরেখাঃ।" (ললিভবিস্তর১২জঃ)
(শাক্তাসিংহ বলেন) বে কন্তা গাধালেধ লিখিতে এবং গাধার
অর্থগ্রহণে গুণবতী হইবেন, তাহাকে আমি বিবাহ ক্রিব।

উক্ত গাণা হইতে কি আমরা জানিতে পারিতেছি না বে, আড়াই হাজার বর্ব পূর্ব্বে এদেশে লিপিজ্ঞানকুশলা সন্নান্ত-মহিলারও অভাব ছিল না। আড়াই হাজার বর্ব পূর্বের বেগানে কল্পা লিপিকুশলা না হইলে রাজকুমারের পদ্ধী হইবার যোগ্যা হইজেন না, সে দেশে বর্ণলিপির চর্চা কত প্রাচীন তাহা সহজেই অল্পমের। ললিতবিক্তরের গাণাতেই লিপিশাল (১)ও লিপিশালেরের(২) উল্লেখ থাকার স্পষ্ট জানা যাইতেছে যে, দেই পুরাতন কালেও লিপিশিক্ষা দিবার উপযোগী পাঠশালা এবং নানা দেশীর লিপিজ্ঞানের উপযুক্ত লিপিশার (Palæography and Epigraphy) প্রচলিত ছিল।

ব্রান্ধী প্রস্তৃতি লিপির উৎপত্তিকাল।

যে প্রাচীন কালের কথা হইতেছে, সে সময়ে ভারতে কিরুপ অক্ষর প্রচলিত ছিল, তাহাই এখন আলোচা।

উক্ত ললিতবিস্তরে ৬৪ প্রকার লিপির উল্লেখ দৃষ্ট হয় ঘণা—
রান্ধী ২, প্রক্রনারী ৩, অললিপি ৪, বললিপি ৫,
মগধলিপি ৬, মালল্যলিপি ৭, মহুষ্যলিপি ৮, অনুলীরনিপি ৯,
শকারিলিপি ১০, রন্ধবলীলিপি ১১, জাবিড়লিপি ১২, কিনারিলিপি ১৩, দক্ষিণলিপি ১৪, উপ্রলিপি ১৫, সংখ্যালিপি ১৬,
অন্থনোমলিপি ১৭, অর্ধ্বমূর্লিপি ১৮, দরদলিপি ১৯, খান্তলিপি
২০, চীনলিপি ২১, হুণলিপি ২২, মধ্যাক্ষরবিস্তরলিপি ২৩,
পুলালিপি ২৪, দেবলিপি ২৫, নাগলিপি ২৬, বৃক্ষলিপি ২৭,
গঙ্কর্মলিপি ২৮, কিন্নরলিপি ২৯, মহোরগলিপি ৩০, অন্থরলিপি
৩১, গরুড়লিপি ৩২, মৃগচক্রলিপি ৩০, ক্রক্রলিপি ৩৪, বায়ুমর্ক্রলিপি ৩২, ভৌমদেবলিপি ৩৬, অন্তর্নীক্রদেবলিপি ৩৭, উত্তরকুর্মনীপলিপি ৩৮, অপরগোড়াদিলিপি ৩৯, পূর্ম্ববিদেহলিপি ৪০,
উৎক্ষেপ্রিপি ৪১, নিক্ষেপ্রিপি ৪২, বিক্ষেপ্রিপি ৪০, প্রক্রেপ

নিশি ৪৪, নাগরনিশি ৪৫, বছানিশি ৪৬, দেখ প্রছিলেখনিশি ৪৭, অহক্রেতনিশি ৪৮, খাত্রাবর্জনিশি ৪৯, গণনাবর্জনিশি ৫০, উৎক্ষেপাবর্জনিশি ৫১, বিক্ষেপাবর্জনিশি ৫১, বারানিখিতনিশি ৫৩, বিক্রেরপদস্থিনিশি ৫৪, ধনোর রপদস্থিনিশি ৫৫, অব্যাহারিশ্বিনিশি ৫৬, সর্ক্রনতসংগ্রহিনীনিশি ৫৭, বিছাল্পনাসনিশি ৫৮, বিমিপ্রতিনিশি ৫৯, খবিতপত্যানিশি ৬০, বর্মীপ্রেক্ষণানিশি ৬১, সর্ক্রোবধিনিব্যক্ষানিশি ৬২, সর্ক্রারসংগ্রহণী ৬০ ও সর্ক্রভৃতক্ষত-গ্রহণীনিশি ৬৪, এই ৬৪ প্রকার নিশি। (স্বিভবিতর ১০ জঃ)

त्य ननिष्ठित्यत्व प्रेक निनिमानाव नाम प्रेक्ष ७ इहेन. সেই গ্রন্থানি চু-ক লন কর্মক ৩৯ খুটাকে চীনভাষার অমুবাদিত হর»। এরূপ **হলে মুল এছ সর্বাত্ত প্রচারিত এবং ত**ৎপরে চীনদেশে নীত হইতে অল সমর লাগে নাই। পাশ্চাতা ও এ দেশীর রাজেজ্রলাগ মিত্রপ্রমুখ পণ্ডিভগণ শলিভবিভরকে খু: পূর্ব্ব ২র শতাবীর গ্রাছ বলিয়া খীকার করেন। আমরা কিন্তু তরপেকা প্রাচীন বশিরাই মনে করি। সমাটু সংশাকের যত্নে বেমন বৌদ্ধধর্ম প্রচারার্থ পশ্চিমে গ্রীদ, উত্তরে মোদশীর, পূর্বে কথোজ ও দক্ষিণে সিংহণ পর্যান্ত ধর্মাচার্য্যগণ প্রেরিড হুইয়াছিলেন, সেইরূপ সম্ভালগতের আর সক্ষণ স্থান হুইতে লোক আসিয়া অশোকের সাম্রাক্ষা মধ্যে নানাকার্যা উপলক্ষে বস্তি আরম্ভ ক্রিয়াছিলেন,--এসময়ে ভারতে নানা বিদেশীয় সংস্রবে যত প্রকার লিপি বা বর্ণমালা প্রচলিত হইরাছিল, ভৎপুর্কে আরু কোন সমরে এমন হইয়াছিল বলিয়া আমরা মনে করি না।। ভারতীয় বৌদ্বগণের সেই স্থবর্ণয়গে এখানে যতপ্রকার লিপি প্রচলিত হইয়াছিল, সম্ভবতঃ ললিতবিত্তরকার সেই সমুদয় লিপিরট উল্লেখ করিরাছেন।

সিংহল, ব্রহ্ম ও শ্রামদেশীয় প্রাচীন বৌদ্ধগ্রছ মতে, ৫৪০ পৃষ্টপূর্কান্দে বৃদ্ধদেবের নির্কাণ এবং নির্কাণের ২১৮ বর্ব পরে অর্থাৎ ৩২৫ খুঃপূর্কান্দে অশোকের সাম্রাজ্যাভিবেককার্য্য সম্পন্ন হয়। [প্রেরদর্শী শক্ষে বিস্তৃত বিবরণ এটব্য]

তৎপরে অশোকের রাজধানীতে ৩৪ প্রকার লিপি প্রচলিত থাকা কিছু বিচিত্র নহে। ঐ সমরে গ্রীক নাবিক নিরাপুসের (Nearchus) বিবরণীতে প্রকাশ বে, ভারতবাসী কার্শাসবন্ধ অথবা কাগজে অক্ষরবোজনা করিত। তাঁহার কিছুকাল পরে

^{(&}gt;) "পান্তাণি বানি প্রচরন্ধি চ দেবলোকে
সংখ্যা লিপিক গণনাহণি চ খাড়ুতজং ৷
যে পিজবোগ পৃথু লৌকিক অগ্রমেরাস্তেব্নের পিকিড়ু পূরা বহুকরকোট্টা ও
কিন্ত ক্রম্ম অস্থবর্তনভাং করোতি
জিপিনাল্যাগড়ুং স্লাশিকতাশিকণার্থ: ।" (লাল্ডবিশ্বর ১০ আং)

⁽ ২) "লোকোন্তরের চতু: সতাপথে বিধিজ্ঞা হেন্তু প্রতীভ্যকুশলো বধ সম্ভবতি। বধ চানিরোধকরু সংক্রমুসীতিকার-গুলিব্রিধিজ্ঞা কির্মো নিপিলাক্সমতে।" ঐ

^{*} Beal's Romantic Legend of Sakya Buddha, Introduction.

⁺ শকাধিশ কনিছের অধিকার উত্তরে বোডন, পশ্চিমে পারত এবং পূর্বে পূর্ববন্ধ পর্যান্ত বিশ্বত হইয়াছিল অটে, কিন্তু তিনি খ্রীর ১য় শতাবে বিব্যানার ছিলেন; তংপুর্বে বে ললিত্যিতর রচিত হয়, তাহা প্রীয় ১য় শতাবাহি চীন অনুবাদ হইডেই অমানিত।

গ্রীকদত মেগেছিনিদ্ মগধরাজ্যের বর্ণনা উপলক্ষে শিথিয়া গিরাছেন বে, ভারতবাসী ১০ টেডিরাদ অন্তর শাথাপথ ও তদন্তবিত্তী স্থানের দুরছবিজ্ঞাপক ক্রোশাক্যুক্ত প্রভাবকলক (mile-stone) রাখিতেন। প্রস্তারে দিপি উৎকীর্ণ করিবার প্রথা সে সমন্ন বিশেষ প্রচলিত ছিল; অশোকের অনুশাসন এবং তাঁহারও বহুপূর্বে কপিশবান্তর নিকটবর্তী পিপরাবা আম হইতে আবিষ্কৃত বৃদ্ধদেবের দেহাবশেব-সংরক্ষিত প্রস্তরপাত্তের উপর উৎকীর্থ খোদিত লিপি ভাহার সাক্ষ্যদান করিতেছে। পিপুরাবা-লিপি হইতে এখন দৃঢ় বিশাস হইতেছে যে, খুঃ পুর্ব ৬৳ শতানীর পূর্বেও ভারতবর্বে প্রস্তবে লিপি উৎকীর্ণ করিবার প্রথা প্রচলিত ছিল। মগ্রপতি জ্বাসন্ধের রাজধানী গিরিত্রজে জরাসন্ধ-কা-বৈঠক ও ভীমজরাসন্ধের রণরকভূমির মধান্তলে চি এ-লিপি ও কীলরপা শিল্পলিপির মধ্যাকারের লিপি পর্বতগাত্তে উৎকীর্ণ রহিয়াছে। তাহার উপর দিয়া বছকাল হইতে গো-মহিষাদির গমনাগমনের পথ হওয়ায় সেই প্রাচীনতর লিপি অনেকটা জম্পষ্ট ও অবোধ্য হইয়া পড়িয়াছে। আমাদের বিশ্বাস, এ পর্যাস্ত ভারতবর্ষে যতপ্রকার লিপি আবিছত হই-য়াছে, তন্মধ্যে সেই মগধলিপি সর্কাপেকা প্রাচীন। কে বলিতে পারে, ভাহা জরাসদ্ধের সময়কার বিপি নহে ?

যাহা হউক, এখন মামরা জানিতেছি যে ২২ শতবর্ষ পূর্বে ভারতবাসী ৬৪ প্রকার লিপি অবগত ছিলেন। ঐ ৬৪ লিপির মধ্যে কতকগুলি সমাট্ অশোকেরও বহপুর্বে হইতেই ভারতে প্রচলিত ছিল। ফৈন্দিগের স্থপ্রাচীন "সম্বার্হ্ত্ত" নামক ৪৩ অলে লিখিত আছে—

"ৰক্ষী এণং অঠারসবিহ লেখ্ কবিহানে। বস্তা জবণালিয়া দবউরিয়া ভ থানোটিয়া পুক্থবসানিয়া † পহারাইয়া উচ্চস্কুরিয়া অথ কয়পৃথিয়া ভোমবইয়া ‡ বেক্থেইয়া নিথ্কেইয়া ৡ
য়াকলিবি গণি মলিবি গন্ধবিলিবি আদস্দগলিবি মাহেসরলিবি
দামিলিকিছি বোলিদিলিবি।"

রানী প্রান্থতি ১৮ গ্রান্থনার লেখন প্রক্রিয়ার নাম—রান্ধী ১, ঘরনানী ২, দ্রণোত্তরিক! ৩, খরোষ্ট্রীকা ৪, পুন্ধসারিকা ৫, পার্কাভিকা ৬, উত্তরকুক্ষকা ৭, অন্ধরপুত্তিকা ৮, ভৌমবহিকা ৯, বিক্রেপিকা ১১, মন্দ্রেপিকা ১১, আন্দর্শকিলিপ ১৬, আবিজ্ঞীনালপ ১৪, আন্দর্শকিলিপ ২৫, মাহেশ্বর্লিপি ১৬, জাবিজ্ঞীনালপ ১৭ ও বোলিদী বা পোলিলা লিপি (१)।

জৈনদিগের ৪র্থ উপান্ধ পরবনা (প্রজ্ঞাপনা) স্থরে উক্ত ১৮টা লিপির উল্লেখ আছে। লিপিক্রের দোবে বিভিন্ন পুথিতে সামান্ত পাঠতেদ মাত্র লক্ষিত হয়। প্রজ্ঞাপনাস্থত্তের টাকাকার মলরগিরি লিপিরাছেন—

"প্রান্ধী ব্যনানীত্যাদরে লিপিভেদান্ত সম্প্রদারাদ্বশেষঃ"
অর্থাৎ প্রান্ধী, ব্যনানী ইত্যাদি ১৮ প্রকার লিপি বিভিন্ন
সম্প্রদার হইতে উত্তব।

জৈনশাস্ত্র মতে জৈনাক্ষসমূহ মহাবীর স্থামীর সমরে প্রথম প্রচারিত এবং বীরনির্বাণের ১৬৪ বর্ষ পরে (৩৬০ খুটপূর্বান্দে) পাটলিপুত্রের শ্রীসজ্বে সংগৃহীত হয়। এরূপ স্থলে বলিতে পারা যার যে, সমাট অংশাকের পূর্বে ভারতে ব্রান্ধী প্রভৃতি ১৮ প্রকার লিপি প্রচলিত ছিল।

ধ্বনানী।

যবনানীলিপি দেখিয়া কেহ কেহ বলিতে চান যে, মাকিদন-বীর আলেকসান্দারের সময় এদেশে গ্রীক যবনগণ যে লিপি প্রবর্তন করেন, তাহাই ঘবনানীলিপি। এই ঘবনানী শব্দের উল্লেখ পাইয়া মোক্ষমূলর প্রভৃতি কোন কোন পাশ্চাত্য অধ্যাপক অষ্টাধ্যায়িস্তত্রকার পাণিনিকে ও ঐ সময়ের লোক বলিতে চান। কিন্তু পাণিনিস্তত্তের বার্ত্তিককার ও মহাভাষ্যকার 'ধবনানী' শব্দের লিপি * অর্থ করিলেও পাণিনি কোথাও স্পষ্টাক্ষরে এরূপ অর্থ প্রকাশ করেন নাই, স্ত্রীলিকে যে সকল শব্দের উত্তরে 'আণুক্' হয়, তিনি দৃষ্টান্তস্বরূপ সেই সকল শব্দের মাত্র উল্লেখ করিয়াছেন । যাহা হউক, যবনানী শব্দ আধুনিক সন্দেহ করিবার কোন কারণ দেখি না। যবন (Ionian)-দিগের অভাদয় অতি প্রাচীন। সামরা অন্তত্ত দেখাইরাছি যে, খঃ পূর্ব্ব ১০ম শতাব্দে থবন বা যোনস্বাতির পরাক্রম সর্বত্র ঘোষিত হইয়াছিল। তৎপুর্বে ঘবনজাতির অভ্যুদয়। রামায়ণ মহা-ভারত প্রভৃতি প্রাচীন সংস্কৃত গ্রন্থেও যবনজাতির বিশেষ উল্লেখ ष्पाइ । यवमानी विनादन वह धाहीन कीनक्रभा (Cuneiform) লিপিই বুঝাইত। [যবন দেখ।]

পুক্রদারী।

সমবারাক ও কলিতবিস্তরে যে "পুকরসারী" লিপির উল্লেখ আছে, তাহাও ভারতের এক অতি প্রাচীন লিপি। পাণিনি পুকর-সারীর উরেখ করিয়াছেন।

উত্তরকুলক। ও সম্বর্জাদিশি প্রভৃতি।

ঐতবেষরাক্ষণে উত্তরকুক ও উত্তরমজের উল্লেখ আছে।

 ^{&#}x27;सत्रमासिका-- लाठे। कृतः । † '(मानकितिका'-- लाठे। कृतः।

^{ै &#}x27;(काभवक्का'---गांशका।

^{\$ &#}x27;বেলপতিলা' 'পিলাছইলা' বা 'বেপপিলা মিৰ্ট্লা'--পাঠান্তল

^{+ &#}x27;पवनाक्रिशाम् देखि पक्षपान्'—पार्विकः! '(पारवः वरता वरानीः। वयनाक्रिशाम् । वयनामी निशिः।'—प्रशंकामा (३।১।३३। ग्रंटकः)

^{† &#}x27;ই<u>ক্রম্পত বশক্ষিকর্তৃহিমারণা</u>য্ব-ব্যন্মাজুলযার্গাণামাণুক্' পাচ।১।৯৯।

ভণার বৈধিক বাগ বজ্ঞ প্রচলিত ছিল, ভাহাও ঐত্যরের প্রাক্ষণ হইতে কানা বার। বাগ বজ্ঞের নির্দারণের কন্ত বেমন ক্যোভিবের প্রয়োজন, নেইরূপ ওবহরও কানা আবক্তম। বিক্তন্ত দেখ। এই কন্ত অন্তলিপি ও গণিতালিপিও সেই প্রাচীনকালে প্রচলিত কইরাছিল। প্রভাবে প্রচলিত লিপিই সক্তবতঃ গ্রহ্ম-লিপি। প্রভাবের সহিত অতি প্রাচীনকাল হইতেই বৈধিক আর্থা-গণের সম্প্রেব। এথানকার লিপিও নিভাব আধুনিক নহে। থরোষ্ঠালিপির প্রস্কে এ বিবর পরে আলোচিত হইবে।

মাহেশয়লিপি।

পাণিনিহত্তে বে ১৪টা প্রজ্যাহার আছে, সেই ১৪টা নিবছত্র বণিরা বর্ষচি, গতঞ্জনি প্রভৃতি বৈরাক্রণের নিকট পরিচিত। এদেশে সর্ক্রাধারণ বৈরাক্রণগণের বিধাস বে মহেধরই সর্ব্ধপ্রথম ব্যাক্রণ প্রকাশ করেন। বেলালের অন্তর্গত শিক্ষাতেও বেখা বার বে মহেধরই ৬৪ অক্ষর প্রকাশ করেন। বাহা হউক, পাণিনির বহু পূর্ব্ধে বে শিবহুত্বের উৎপত্তি, ভাহাতে সন্দেহ নাই। চীনপরিব্রাক্তর ইংসিং খুরীর ৭মশভালের শেবভাগে ভারতবর্বে আসিয়া সংস্কৃত শাত্রশিক্তা করেন। তিনি নিধিরাছেন বে, 'সিদ্ধিরন্ধ হইতে আরম্ভ করিয়া বর্ণমালাসবদ্ধীর বে মহেখর রচিত "সিদ্ধান্ত" ৬ বর্বের বালকেরা প্রথম মুখত্ব করিয়া থাকে, ইহাতে ৪৯টা অক্ষর, ভাহার সংযুক্তাক্ষরগুলি আবার ১৮শ ভাগে বিভক্ত, ইহাতে সর্ব্বন্ধ ১০০০ শক্ষ এবং অন্তর্হপ ছন্দের ৩০০ প্রোক।' অধ্যাপক মোক্ষমূলরের বিধাস বে উহাই 'শিবহুত্র'।(১) কিন্ত ইংসিং পাণিনির্বৃতিত ১০০০টা স্ব্রকেই শিবের প্রভাবিষ্ট স্থ্র বিলার প্রকাশ করিরাছেন।

দেই নিবহুত্ত ৰে নিশিতে নিশিবছ হয়, তাহাই সম্ভবতঃ সাহেধরনিশি। অথবা পাশিনিতে বে মাহেধর সম্ভাগারের উল্লেখ আছে, তাহাদের বাবস্তুত নিশিই মাহেধর নিশি।

আনুৰ্দক্ষিপি।

পতশ্বলি মহাভাষ্যে আর্যাবর্তের সীমানির্দেশকালে লিখিবা-ছেন,—"প্রাগাদর্শাং প্রত্যক্তবাক্বনাং," আদর্শের পূর্বে ও কালকবনের পশ্চিমে, হিমালরের দক্ষিণে ও পরিপাত্তের উত্তরে আর্যাবর্ত্ত অর্থাং আর্যাবর্তের পশ্চিম সীমার আদর্শ। মহু-সংহিতার আর্যাবর্তের পশ্চিম সীমার সমৃত্র নির্দিষ্ট হইরাছে। এরূপন্থলে সমৃত্রের পূর্ব পার হইতে আর্যাবর্তের অবস্থান হির করিতে হর। বিষ্ণুপ্রাণাদিতেও ভারতের পশ্চিম সীমা ববন (Ionia) নির্দেশ আছে। এরূপ হলে আদর্শ প্রাচীন মিশর বা ডুকৰ রাজ্য হওরাই সম্ভব। ভথাকার ক্র্যাচীন নিনিই সম্ভবতঃ আমর্শকনিশি। সেই নিনিম আমর্শ সইয়া পাল্ডাভ্য সভ্যরাভিসমূহের নিশির উৎপত্তি হওরার সেই ক্র্যাচীন চিত্রদিশির "আনর্শনিশি" নাম হওরা কিছু বিচিত্র সহে।

वाक्किमिनि ।

দাব্দিশাভ্যের লিপিডৰ প্রশেষ্ঠা বূর্ণেল সাহেবের মডে ত্রাবিড়ীলিপি অশোকের (ত্রান্ধী) লিপি হইছে বছর হইলেও ইহাও সেই এক মূল লিপি বা সেমিটিক লিপি হইতে উত্তত। জাৰিছের ৰট্টেলেব্ৰু নামক প্রাচীন নিশির "ই" ও "উ" এই इंटेंगे यत "र" ७ "र" स्टेट्ड नामाझ्टे পृथक्, अथह त्निशिक লিশির সহিত সাদৃশ্য আছে। ভারতের ব্যবহারোপযোগী করিয়া লইলেও অসম্পূর্ণতা রহিয়া গিয়াছে। ডাজার বৃহ্লর বলেন বে, বান্দিণাড্যের ভট্ট-প্রোপু বইতে বে স্থপ্রাচীন জলো-কাক্ষরের লিপি বাহির হইরাছে,উত্তরভারতীর অশোকলিপি হইডে ইহার সামান্তই পার্থকা লক্ষিত হয়। ব্যক্ষিণভারতীয় উক্ষ লিপির 'আ' উত্তরভারতীয় 'অ'কারের মত: উত্তরভারতীয় অশোক-গিপির ব্যশ্ননের পহিত আকারের চিক্ত একটা সমান্তর রেখা, কিন্ধ দক্ষিণভারতীর লিপিতে ঐক্লপ সমান্তর রেখার পরিবর্ত্তে ব্যঞ্জনের সাধার (।) এইরূপ এফটা উর্জনেখা অভিত আছে। ইহাতে বোধ হয়, অতি পূৰ্ককাল হইতেই এই চুই লিশির কিছু কিছু পাৰ্থক্য ছিল। উক্ত পাশ্চাত্য পঞ্জিগৰ বলেন, ফিনিকীর বণিক্ষিগের সহিত দক্ষিণভারতের সাক্ষাৎ সমস্ক ঘটিরাছিল। বাইবেলে সলোমনের মহুর 'কৃকি' নামে পরিচিত, জাবিড়ে এখনও নমুরকে 'তোকেই' বলে। প্রভরাং বাই-বেলোক 'তৃকি' দক্ষিণভারত হইতে গিনাছিল, ভাহাতে সন্দেহ নাই। এইব্লপে দক্ষিণভারতে বাণিলাকরে ফিনিক্সিগের ৰদ্ধে বে লিশি প্রচারিত হয়, ভাহাই উত্তরভারতে ক্রমে বিভ ড ब्हेबाक्टिन।

ত্রাবিদ্দের সহিত ফিনিকবিগের বছ পূর্ববাদ হইতে সংগ্রহ ঘটিলেও ফিনিকবিগি ত্রাবিদ্দেরা গ্রহণ করিরাছেন, অন্থ্যান ভিন্ন তাহার প্রকৃত্ত প্রমাণের অভাব। রামারণের সমর হইতে ত্রাবিদ্দে বৈদিক আর্থ্যসভ্যতা বিস্তৃত হইরাছিল, বান্দিণাত্যবাসী হন্মান সর্বাভ্রনী বেলক বলিয়াই বান্দীবিদ্দর রামারণে পরিকীর্ত্তিত হইরাছেন, তিনি রামনামান্তিত অসুরী লইরা লক্ষার গিরাছিলেন। এরপহলে সলোমানের বছপূর্বেব বেলকগাণথের ফুতবিভ জনগণের মধ্যে বর্ণলিপি প্রচলিত ছিল, তাহার সন্দেহ করিবার কারণ ধেবি না। ত্রাবিদ্দী সভ্যত্তা অভীব পুরাতন, তাহা পুরাবিদ্দ নাত্রেই বীকার করিরা থাকেন। ইহাও অসম্ভব নহে বে, ত্রাবিদ্দী সভ্যভার ছিনিক-

^{(&}gt;) Maxmuller's India, what can it teach us, p. 848.

⁽२) "जानमूजार कू देव नृत्तीर जानमूजार कू निक्वार। करशासकावतार जिर्दा। जाद्यानकी विकृत्याः ॥" (२।२२)

গণ জ্বালোকিত হটরা থাকিবেন। এ সম্বন্ধে এন্থলে চুই এক কথা বলা জ্ঞাসলিক মনে করি না।

ক্লিক-(Phœnician)-গণ প্রাচীন গ্রীক ও জর্মণগণের নিকট কোনিক বা ফনিক নামে পরিচিত। ফনিক জাতিকে আদি বণিক্জাতি বলা ঘাইতে পারে। ফণিক্ ও বণিক্ শঙ্গে উচ্চারণগত বেশী পার্থকা নাই। সেমিটিক কে = প।

ঋর্যেদের বছন্তানে 'পণি' শব্দের উল্লেখ আছে। ৬ঠ মগুলের ৩০ হজের ভারে সারণাচার্যা 'পুণি' শব্দের 'বুণিক' অর্থ করিরাছেন। এদিকে পাণিনির উণাদিস্ত অনুসারে 'পণ'ধাত হইতে 'বণিক' শব্দ নিষ্ণান্ন হইয়াছে, স্নতরাং পণিক ও বণিক একট কথা। ঋপেদে পণি-গণ গোত্ত্ব-বাবসায়ী অথচ সমৃদ্ধিশালী জাতিরপেই পরিচিত। চন্ধ, কীর ও বড়াদি প্রস্তুত করিবার উপযোগী তাঁহাদের চিতৃ: শুল্প ও দিশ্যন্ত উৎস' (৬।৪৪।২৪) নামক বন্ধ ছিল। অন্সিরা প্রভৃতি বেদোক্ত যাজিকগণ তাঁহাদের ঘোর শত্রু ছিলেন: সর্বাদাই তাঁহাদের গোধন কাড়িয়া লইতেন। একারণ উভয় দলে ঘোরতর সংগ্রাম হটত। প্রিগণ 'অক্রতু' ও 'অবজ্ঞ' বলিয়া ঋষিদিগের নিকট হেয় ছিল। ঋকসংহিতা মনোযোগপুৰ্বক পাঠ করিলে মনে হটবে যে, বৈদিক আর্য্যগণ ভারতে যথন প্রবেশ করেন. সেই সময়ে পণিগণ এথানে বসতি করিতেছিল। তৎকালে এখানকার লোক সমুদ্রবাত্রা করিত, ভাহাও ঋকসংহিতা হইতে কানা যায়। প্রতিরা ব্যবসা বাণিক্য করিত (১)৩৩। । আনেকের বেশ টাকা কড়ি ছিল (৪।২৫।৭)। টাকাও ধার দিত। বৃদ্ধিমান বলিয়াও গণা ছিল। খুঃ পুঃ ৫ম শতাবে হিরোদোতস লিখিয়াছেন, 'ফিনিকৃগণই আদি বণিক বলিয়া পরিচিত ছিল। ভাহার। পূর্বে পারভোপদাগরকুলে বাদ করিত'। কেহ কেহ এরপও লিখিয়াছেন যে, আফগানিস্থানেই ভাছাদের আদিবাস। * ফিনিকগণ 'কেদমস্' (Kedmus) বা প্রাচ্য বলিয়া আপনাদিগের পরিচয় দিও। গ্রীক ঐতিহাসিকগণ পুক্ষভারতকে (মগ্ধ) Prasii বা প্রাচ্য বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। এরপ ক্তলে মনে হর যে, পণিগণের সর্ব্বাদিম বাস কীকট বা মগধ। ঋখেদেও কীকটের গোপ্রাধান্ত বর্ণিত হইয়াছে ।। গোই পণিগণের সর্বাস্থধন। বৈদিক বাজ্ঞিকগণের উৎপীড়নে ও আক্রমণে পরাম্ভ হইয়া ক্রমে তাহারা কেহ দাক্ষিণাজ্যে, কেহ বা পশ্চিম দিয়া প্রথমে আফগানিস্থান, তথা হইতে পারক্রোপদাগরের উপকৃষ, তথা হইতে আরব এবং আৰুৰ কটতে ভাতাৰা ভাতাদেৱ সৌভাগাকেন্দ্ৰ কিনিসিয়ায়

গিরা উপনিবেশ করিরাছিল। তৎপরে সভ্যতার লীলান্থলী মিশরপ্রান্ত ও ভূমধ্যসাগর তাহাদের অধিকারভূক্ত হয়।

এখন কথা হইতেছে, পণিক-(ফনিক) গণ যথন ভারত হইতেই যুরোপে গিয়াছে, তথন যুরোপীয় ফনিক হইতে ভার-তীয় লিপির উৎপত্তি কিরুপে স্বীকার করা যায় ? আমাদের বিশ্বাস, সভাতার শীলাভূমি ভারত হইতেই অসম্পূর্ণ কণিকলিপির উৎপত্তি ঘটিয়া থাকিবে। পণিগণের মধ্যে যাহারা লাক্ষিণাত্যে গিয়াছিল, সম্ভবতঃ তাহারাই দ্রাবিড়ীয় সভ্যতার মল। তাহারা যক্ষবিদেষী ছিল এবং স্থানত্যাগের সহিত তাহাদের স্বভাবপরি-বর্ত্তন বটিয়াছিল। সম্ভবতঃ পরবন্ত্রী কালে তাহাদেরই কোন শাথা বাক্ষসরূপে এবং তাহাদের মধ্যে অপর কোন শাথা বস্তু ফল মূল দারা উদরপূর্ত্তি করিত বলিয়া "বানর" নামে প্রসিদ্ধলাভ করিয়া থাকিবে। অতি পূর্বাকালে তাহাদের এক শাখা মিসরে গিয়া তথাকার চিত্রলিপি ভাঙ্গিয়া ৫ হাজার বর্ষ পুর্বেষ সংক্ষত লিপির (Hieratic) সূত্রপাত করেন। দক্ষিণভারতের স্বপ্রাচীন বট্রেলেড, লিপির 'অ', 'ই' প্রভৃতির রূপ সেই অতি প্রাচীন সক্ষেত লিপির অমুরূপ, হইতেও কতকটা লাক্ষিণাত্যর সংস্রব প্ৰিত হইতেছে।

বাণিজ্য কার্য নির্ব্বাহের জক্ত সামাল্ত লেখা পড়ার দরকার।
স্বতরাং পণিকদিগের বৈদিক বা সংস্কৃত বর্ণমালার মত বহুসংখ্যক
বর্ণলিপির প্ররোজন হয় নাই, এই কারণেই ফণিক-বর্ণমালায়
অতি অয় সংখ্যক অক্ষর দেখা যায়। ধরোষ্ঠালিপিমালার
উৎপত্তিপ্রসঙ্গে এবিষয় আলোচিত হইবে'। দ্রাবিড়ীয় সভ্যতা
সমুদ্রপথে স্বন্ধর পাশ্চাত্য ও প্রাচ্য জ্ञনপদসমূহে বিস্কৃত হইলেও
ভারতে আর্য্যবৈদিকগণের প্রভাবে তাহা অক্তদিকে ধাবিত
ইইয়ছিল। এথানে অগত্যাদি আর্য্যশ্বিগণ দ্রাবিড়ী সমাজের
সংস্কার করিয়া তাহাকে আর্য্যভাবাপয় করিয়া লইয়া ছিলেন।
তাই আজও অগত্যশ্ববি দ্রাবিড়ে বর্ণমালাও ব্যাকরণ-প্রবর্ত্তক
বলিয়া পরিগণিত এবং দ্রাবিড়ীলিপিতে ব্রাক্ষীলিপির আদশে
বর্ণমালার সংখ্যাও বাড়িয়া গিয়াছে।

ব্রাশ্দীলিপির উৎপস্থি।

অল্ বেরুণী ভারতীয় পণ্ডিতগণের মুখে গুনিয়া লিথিয়া গিয়াছেন যে, পরাশরপুত্র বেদবাাসই বর্ণলিপির উদ্ভাবদ্বিতা। জৈনদিগের মতে, ঝবভদেব দক্ষিণ হস্ত দ্বারা ১৮ প্রকার লিপি শিক্ষা দেন, তরুধেয় আদি লিপির নাম ব্রান্ধী। ভাগবতের মতে ঝবভদেব ভগবানের ৮ম অবতার। (১০০১০) তিনি লোক, বেদ, ব্রাহ্মণ এবং গো সকলের পরম শুরু.

^{*} Pococke's India in Greece, p. 218.

^{† &#}x27;कि: (७ कृष्णि कीम्स्टेव् शाव: ।" (बक् अवकाऽ)

 [&]quot;অথ বীশ্ববন্ধবেন ব্রাকী বৃদ্ধিশৃহজ্ঞেন জন্তাহল লিগরো দূর্নিভাঃ ,"
 (লক্ষ্মীবন্ধক্ষদ্রিভিত করপুত্তক্রক্রদক্ষিক) ;

তিনি সকল ধর্ম্মের মূল গুছ ব্রাহ্ম ধর্ম্ম (বেদরহস্ক) ব্রাহ্মণদর্শিত
মার্গাহ্মসারে শাখাদি উপার অবলদনপূর্কক সাধারণকে উপদেশ
করিরাছিলেন। (৫।৬ আ:) ব্রহ্মাবর্ত্তে ব্রহ্মধিগণের সভায় তিনি
ব্রাহ্মধর্ম্ম প্রচার করিরাছিলেন। (৫।৪।১৬-১৯) রাজ্মধি ভরত
এই শ্বন্ড দেবের পূত্র। তাঁহা হইডেই ভারতবর্ত্বের নামকরণ।
তিনি ব্রহ্মক্ষর জপ করিতেন। (৫।৮/১১)

মহাভারতে লিখিত আছে— "ইত্যেতে চতুরো বর্ণা ঘেবাং ব্রাহ্মী সরস্বতী। বিহিতা ব্রহ্মণা পূর্বং লোভাস্বজ্ঞানতাং গতাং॥"

(শান্তিপর্য্য ১৮৮/১৫)

ব্রাহ্মণ হইতেই বর্ণান্তর প্রাপ্ত চারি বর্ণেরই ব্রাহ্মী ভাষা পূর্ব্ধকালে ব্রহ্মা কর্ত্তক নির্দিষ্ট হইয়াছে।

উদ্ভ প্রমাণ ইইতে বেশ বুঝা যাইতেছে যে, এক্স শব্দের অর্থ বেদ, প্রাক্ষী অর্থ বৈদিকী। ঋষভদেবই সম্ভবতঃ প্রক্ষাবিস্থার জন্ম লিপিকোশল উদ্ভাবন করেন। স্থতরাং দেখা
যাইতেছে যে, প্রাক্ষী লিপি বলিলে পুরাকালে বৈদিকী লিপিই
বুঝাইত। বেদ যে লিপিবছ হইত, ভাহা পুর্বেই প্রমাণিত
হইরাছে। ঋষভদেবই সম্ভবতঃ প্রক্ষবিত্যাশিকার উপযোগী প্রাক্ষী
লিপি প্রচার করেন, হয়ত সেই জন্মই তিনি ৮ম অংশাবতার
বলিয়া পরিচিত হইয়াছেন। প্রক্ষাবর্তে এই লিপি প্রথম
আবিষ্কৃত হয় বলিয়া প্রাক্ষীলিপি নাম হইলেও হইতে পারে।
বেদসঙ্কলনকালে বেদব্যাস এই লিপি ব্যবহার ক্রিয়াছিলেন
বলিয়া, তিনিও লিপিপ্রচারক বলিয়া গণ্য হইতে পারেন।

যাহা হউক, ত্রান্ধীলিপিই ভারতীয় আর্য্যগণের আদিলিপি, এই ত্রান্ধীলিপি হইতেই ভারতীয় সকল লিপির উৎপত্তি।

ভাক্তার বৃহ্ লর্ অশোকলিপিকেই ব্রান্ধীলিপি বলিয়া ধরিয়াছেন। কিন্তু আমরা ভাষা নিঃসন্দেহে স্বীকার করিতে পারিলাম না। অশোকের সময়েই ভারতে ৬৪ প্রকার লিপি প্রচলিত
ছিল। তৎকালে পাটলিপুত্রে তাঁহার রাজধানী। এরপ স্থলে
তাঁহার অমুশাসনগুলিকে মাগধ-ব্রান্ধীলিপি বলিয়া গ্রহণ করা
যাইতে পারে। এ ছাড়া বিভিন্ন প্রদেশ হইতে যে সকল অশোকলিপি বাহির হইয়াছে, তাহার বর্ণ ও শক্ষণোজনা অবিকল একরূপ
নহে। বেহারের বরাবরের গিরিলিপিতে 'অনপিতম্' আবার
লাক্ষিণাত্যের স্বন্থলিতে 'অনপার্মতি' ও উত্তর-পশ্চিমপ্রদেশের স্বন্থলিতিত 'আনাপিসতি' পাঠ দৃষ্ট হয়। দক্ষিণদেশীয়
লিপিতে 'এতারিসম্' ও 'অনথেম্ব', কিন্তু উত্তরদেশীয় লিপিতে
'এতানিসম্' ও 'অনথেম্ব' এই বর্ণবিপর্যায়্ম দেখা বায়। এ
ছাড়া দক্ষিণদেশীয় ও উত্তরদেশীয় লিপির মধ্যেও ব্যক্ষনের
ছত যুক্ত আকার ও ইকারের প্রভেদ দেখা বায়। ইহাতে

সহক্ষেই মনে হইবে বে, দেশজেদে যেমন জাৰার সামাল্য ভেদ ছিল, বর্ণালিপিরও সেইরূপ সামাল্য ইতর্বিশেব ছিল। ইহাতে মনে হর বে, অশোকের পূর্বেজ ভদমূরূপ এক প্রকার নিপি ছিল। বর্ণযোজনার পার্থক্য, প্রবোগ ও রীতি অনুসারে এক বালী নিপি হইতে সকল দেশীর নিপির উৎপত্তি ঘটে।

এখন পর্যান্ত ভারতে যত প্রকার লিপি আবিষ্কৃত হুইরাছে. তর্মধ্যে কপিলবাস্থ (বর্ত্তমান পিপ্রাবা) গ্রামের বৌদ্দিপিই দর্মপ্রাচীন। এই লিপিখানি প্রায় ৪৫০ খুইপূর্ম্বান্দের অর্থাৎ ২৩৫ - বর্ষের পূর্ব্বতন। এই লিপির সহিত এথানকার আশোক-লিপির অক্ষরের পার্থকা নাই। প্রতরাং খীকার করিতে হইবে বে, আড়াই হাজার বর্ষ পুর্বেষ ব্রান্ধী লিপিরই পরিণাম মগধলিপি প্রচলিত ছিল। উক্ত লিপির পূর্ব্ববর্ত্তী লিপি এ পর্যান্ত সাধারণে প্রচারিত না হওয়ার গ্রন্থতক্ষ্বিদ্গণের বিশ্বাস বে, অশোকই প্রথম অমুণাদন প্রচারের বন্দোবন্ত করেন, তৎপুর্বে এরপ অফুশাসনপ্রচারের বাবস্বা ছিল না: এরপ বিশ্বাসের মল নাই। যতদিন পিপ্রাবার বৌদ্ধলিপি আবিষ্কৃত হয় নাই, ততদিন পুরাবিদগণের এরূপ বিশ্বাস ছিল বটে, কিন্তু এখন তাঁহা-দের শে বিখাদ দূর হইয়াছে। অলোকাবদান প্রাভৃতি বছতঃ প্রাচীন বৌদ্ধগ্রন্থ হইতে জানা যায় যে, অশোক ৮৪০০০ ধর্ম-রাজিকা প্রতিষ্ঠিত করেন, কিন্তু এখন তক্মধ্যে ২৫।২৬টা মাত্র विश्वमान। এরপ ফলে মনে করিয়া দেখুন, তৎপূর্ববর্তী কীর্ত্তি গুলির কি পরিণাম! সে দিনও বারাণসীর পার্যন্ত সারনাথের ১০ হাত মৃত্তিকার নিম হইতে বহুতর প্রাচীন বৌদ্ধকীর্তি, অশোকারুশাসন ও কনিছের লিপি বাহির হইয়াছে। এরপ অনুসন্ধান চলিলে বছ নিম ভূগর্ড হইতেও যে প্রাচীনতর লিপি বাহির হইতে না পারে, এমন নহে। শত শত বার ভক্তে প্রাকৃতিক বিপর্যান্তে লক লক স্থপ্রাচীন ভারতীয় কীঠি ভগর্ভশারী হইরাছে, কে তাহার ইয়তা করিবে? যথন ৮৪ ছালার আশোককীরির মধ্যে মাত্র ২০।২৫টা পাওয়া ঘাইতেছে, তথন সহজেই অমুমেয় যে, তৎপুর্কেকার কত লক্ষ লক্ষ কীর্তি বিশুপ্ত ! স্থতরাং পিপ্রাবার বৌদ্ধলিপির পূর্বাতন কোন শিলালিপি এ পর্যান্ত বাহির হর নাই বলিয়া এমন আমরা মনে করিব না যে, তৎপূর্কে রাজকীয় শাসনলিপির প্রচলন

ভারতীয় ধর্মশারগুলি অধিকাংশই বে বৌদ্ধর্গের পূর্ববরী। তাহা আমরা খীকার করিতে গারি। [স্বৃতি লব্দে বিভৃত বিবরণ এইবা] যাঞ্চবদা, বশিষ্ঠ, ব্যাস, বৃহস্পতি, কাড্যারন প্রভৃতি ধর্মশাস্ত্রকারগণ সকলেই রাজলেখা ও রাজাত্মশাসন-লিশির উল্লেখ করিয়াছেন।

कतिवा मिरवन ।

নাহার্বি বাজনকা ও নির্দেশ করিয়াছেন—

"দস্তা ভূমিং নিবকং বা কৃষা লেখাং ভূ কাররেং।

জাগামিডজনুগতিপরিজ্ঞানীর পার্বিবঃ ॥

গটে বা ভাজপটে বা অমুদ্রোপরিচিভিতন্।

জডিলেখ্যান্ধনো বংশুনান্দ্রনক মহীপতিঃ ॥

প্রতিপ্রহণরিমাণং লানজেলোপর্বর্শনন্।

স্বহতকালসম্পরং শাসনং কাররেং হিরম্ ॥" (১।৩১৭১৯)

রাজা ভূমিলান বা কোন চিরহারী বন্দোবক করিলে তাবী

তল্প নুপতিগণকে জানাইবার উপবোদী লেখ্য ক্রাইবেন। রাজা
কার্পানানি পটে বা ভাজকলকে নিজ বংশীর পিতৃপুক্ষগণের ও
প্রতিগৃহীভার নাম, প্রতিপ্রহের পরিমাণ ও প্রাম ক্ষেত্রান্ধি প্রদক্ত
ভূমির চতুংসীমা ও পরিমাণ নির্দেশ করিবেন। উক্ত পত্রে

উহার নিজ দত্তগত, সন ভারিথ ও নিজ মুল্লার চিহ্নিত শাসন

গ্রীকলেথক নিরার্থু স্থাইপূর্ম ৪র্থ শভাব্দে বে কার্ণাসাদি লেখোর উল্লেখ করিবাছেন, ভাহাকেই আমরা বাক্কবড্যোক্ত পটা বলিরা মনে করিতে পারি।

অশোকলিপির পূর্বাতন শিপ্রাবার বৌদ্দলিপির জন্দর
পূর্ণাবয়বদশার। এই লিপির পূর্ণাবয়ব গঠিত হইতে বহু শত
বর্ষ অতীত হইরাছিল। বখন ঐরপ স্থপ্রাচীন লিপিতে ভারতীর
সকল বাম হইতে দক্ষিণ লিপির মূল পাওয়া বাইতেছে, তখন
রান্ধী লিপিকেও আমরা ঐরপ লিপি বা ভাহার প্রাচীন রূপ
বলিরা গ্রহণ ক্রিতে পারি। প্রতি, স্থতি ও স্থ্রাচীন হিন্দুরাজ্ঞগণের অমুশাসন সেই ব্রান্ধী লিপিতেই লিণিত হইত।

ঋণেদে দর্শনবোগা মন্ত্রনৃত্তি ও বর্ণের উল্লেখ আছে। মিসরে বেমন একই সময়ে চিত্রলিগি (Hieroglyphics) ও ভাষার সভেত লিগি (Hieratic characters) প্রচলিত ছিল, বৈদিক আর্য্যদিগের মধ্যেও সেইরূপ মন্ত্রনৃত্তিরূপ চিত্রলিগি ও বর্ণলিগি প্রচলিত ছিল। গাণিরল্ (Papyrus) নামক গত্রে বেমন মিসরীর আদি সভেত লিগি অভিত হইত, বৈদিক কালেও সেইরূপ ভূক্তগত্রে অথবা কুরত্র যারা কোন পটে লিখিবার প্রথা ছিল।

বেদাদের অন্ততর শিকাগ্রহে বর্ণিত আছে,—'শস্কুর মতে— প্রাক্ততে এবং সংকৃতে বথাক্রেরে ত্রিবাই ও চতুংবাই বর্ণ প্রসিদ্ধ। তন্মধ্যে স্বরবর্ণ একবিংশভিটা, লগন বর্ণ অর্থাৎ ক হইতে ম পর্যান্ত বর্গীর বর্ণ পঁচিশটা, যাদি বর্ণ অর্থাৎ ব ব র ল ল ব স হ এই আটটা এবং বম বা ব্যাবর্ণ (?) চান্নিটা। এতত্তির অস্থার, বিসর্গ, কিহবাস্শীর, উপগ্রানীর, হংল্পৃষ্ট >কার এবং প্লান্ত, এই সমষ্টি লইরা চতুংবাই বর্ণ।

'আত্মা বৃদ্ধির সহিত মিলিয়া বচনরচনবাসনার মনকে প্রেরণ করেন। তথন মন কারামিকে আহত করিছে থাকে। আমি বায়কে প্রেরণ করে। বারু ক্ষরদেশে বহিরা ধীরে ধীরে ধীরে বার উৎপাদন করে। ঐ বর প্রাতঃলানের সাহচর্ব্যে গায়গ্রীচ্চন্দে, মধ্যাকে কঠোখিত মধ্যম ত্রিষ্টুভূচন্দে এবং সারাক্তে অত্যুক্ত দীর্বণ্য জগতীজ্ঞন্দে পরিণত হয়। বায়ু জ্লমে উথিত হইরা দীর্বদেশে অভিহত হয়, পরে তথা হইতে য়ুবে আসিয়া বর্ণ-সমষ্টি প্রকাশ করিতে থাকে। ঐ বর্ণসমষ্টি পাঁচ ভাগে বিভক্ত। বথা,—বর, কাল, ছান, প্রবন্ধ ও অভ্প্রাদান। বর্ণাভিজ্ঞাণ উক্ত পাঁচ ভাগেই বর্ণ বিভাগ নির্দেশ করিরাছেন।

'শ্বর ত্রিবিধ—উদান্ত, অন্থবাত ও স্বরিত। আচ্ বা শ্বর বিবরে উক্ত তিন শ্বর এবং হ্রম্ম, দীর্ঘ ও প্লুত ইহারাই কালত: নিয়ত বা নিয়মবদ্ধ। উলাত স্থার হইতে নিবাল ও গান্ধার, অন্থ-লাত হইতে স্থায় ও বৈবত, এবং শ্বরিত হইতে বড়্ক, মধ্যম এবং পঞ্চম শ্বরের উত্তব।'

'বর্ণ-সমষ্টির উচ্চারণের স্থান আটটী, বথা—হাদর, কঠ, শির, জিহ্বার্ল, দত্তসমূহ, নাসিকা, ওঠ ও তালু। 'ও' ভাব, বিবৃত্তি, ল ব স, রেফ, জিহ্বামূল ও উপগ্না, এই আটটী হইল উন্ন বর্ণের প্রেসিছ গতি। 'ও' ভাবটী উন্ধারাস্থাদি পদে সংহত দেখা যার বটে, কিন্তু ঐরপ পদ স্থরান্ত বলিরাই বৃত্তিতে হইবে। এতত্তির অপরত্র যে বে পদে উন্নবর্ণের অভিব্যক্তি, সেই সেই পদও ভক্তপ স্থরান্ত বলিরাই বিজ্ঞের। হকার পঞ্চ স্থারে ও অভ্যন্থ বর্ণসমূহে মিলিত হইলে তাহা ক্লবোৎপর আর অমিলিতাবস্থায় কঠোখিত বলিরাই আনিতে হইবে।'

এবন বে করবানি ধর্মপাল প্রচলিত দেখা বার, তরংখা বাজস্কান্যংছিতার সহিত বানবধনাপ্রের সম্পূর্ণ ঐকা। এই কারণ পাক্চান্তা সংস্থাতকা পাতিতগণ প্রচলিত ধর্মপালভাগির মধ্যে বাজস্কা স্মৃতিকে অভি কাচীন বনিরা মনে করেন। মন্তুর বাব বিভাগে সকল মোক রামারণ ও বহাতারতে তত্ত্ত হুইরাছে, তাহার অনেক মোক আনরা বাজস্কান্যভিতে পাইরাছি।

একণ প্রনে বাজস্কা ধর্মপালতকে বৃত্তদেশের বহু পূর্ববর্তী বনিরা প্রস্থা করিতে আর আপতি থাকিতেহে বা।

 [&]quot;ত্রিবাইক্ততুংবাইবা বর্ণা: শস্কুরতে রঙা: ।
গ্রাকৃতে সংস্কৃতে চাপি বরং থ্রোক্তা বরস্কুরা ॥
বরা বিলেন্ডিরেক্ত পর্লানাং প্রকারণানিতে ।
বাবরুক্ত পুতা করেঁ। চহাক্তে বসা: স্কুডা: ।
অকুবারো বিদর্গক ২ ক ২ পৌ চাপি পরাক্রিতে ।
ব্যুংপ্টক্তেভি বিজেরো ১কার: মৃত্ এব চ ॥
আছা, বুছা। স্বেড)।বার্বো বৃত্তে বিষক্ষর। ।
বরঃ কারাস্বিবাহনি স প্রেরম্ভি বার্ক্তম্ ।

প্রথমতঃ ৬৩ বা ৬৪টা বর্ণ বেদাকে বিদ্ধ হইলে বেদে ভাহার প্রয়োগ থাকিলেও লৌকিক ভাবার অনেকওলি অকর পরিত্যক্ত হয়। ললিভবিত্তর হইতে জানিতে পারি বে, বৃহ্দেব ৪৫টা মাত্র বর্ণনিপি অভ্যাস করিবাহিলেন।

क्शां—च, चाहे, हे, छे, छे, छ, छे, छ, छे, चः चाः। कंश पढ़ा हह संदर्भाः

টিঠিভাচণ। তৰ্দধন।

भक्ष**क्ष**। यत्रा

শ ব স হ क । (ললিতবিতার ১০ জধারে)

লনিতবিত্তরে অকারাদি ক্ষারায় উক্ত ৪৫টা অক্ষরমাতৃকা বলিরা গৃহীত হইরাছে। তত্তে ৫০টা মাতৃকা ও ৪২টা ভূত-লিপি বলিরা নির্দিষ্ট। যথা---

"কুণ্ডলী ভূতসর্পাণামকব্রিরমূপেছ্বী। ত্রিধামজননী দেবী শক্ষব্রশাসকপিনী॥ গুণিতা সর্ক্ষগাত্রেণ কুণ্ডলী প্রদেবতা।" (সারদাতিলক) "কিচ্বারিংশনিতি ভূতলিপিমরমন্ত্রী,পঞ্চাশনিতি মাতৃকালিপিঃ।" বাহাহউক, উত্তরভারতে বিভিন্ন স্থানে ভিন্ন ভিন্ন শতাকে বে

মাসতত রসি চরন্ মন্ম জনরতি বরন্। প্রাতঃদৰনবোগং তং ছন্দোগার্জ্বদালিতন্ । कर्छ प्राथास्मिनयूगः प्रथामः टेखडे छ। प्रणम् তারং তার্জীয়দবদং শীর্ষণ্যং জাগতাসুগদ্ । লোমীর্নো মুর্কাভিহতো বজু মাপদা মালত:। ৰ্ণান সনমতে ডেবাং বিকাপঃ পঞ্চধা পুত: । व्यक्षः कामकः द्वानां व्यक्तं वृद्धानामकः। हेकि वर्गविषः आहर्तिभूना छत्रियोषणः । উদ্ভিশ্চাসুদ্ভিশ্চ স্থিতিক স্থান্ত বুৰো দীৰ্ঘ: মুত ইতি কলতো নিয়মা অপি । উদাত্তে নিৰাদপকারাবসুদাত গুৰভাগৰতো। ক্ৰিডপ্ৰক্ৰা ছেতে বঢ় অস্থানপ্ৰদাঃ a व्यक्ति द्यानामि वर्गामामृतःककेः निवस्त्या । বিকাৰ্ণক গভাক বাদিকোটো চ ভালু চ। গ্ৰঞ্জাকত বিবৃত্তিত পৰসা শ্ৰেক এব চ। জিক্ষাবুসমূপদ্মা চ গতিরট্রবিধান্দবঃ। बरहाकावश्रमकाममूकाताविभावः भवत्। ৰৱাজ্য তাবুশং বিব্যাব্যক্ষৰাজবৃদ্ধ :। হকারং পঞ্জিব্রুক্রডার জিল্ড সংবৃত্তব্। উরস্তং ডং দিলানীয়াৎ কঠানাহরসভ,তন্ ।" (পাণিনীর লিকা) প্রকার দিশি প্রচলিত ছিল, অধার পৃঠার ভাষার ভালিক। বেওরা হইল। বেধা বার, অলোকনিশি হইতেই ক্রমশঃ ভারতীঃ সকল দিশি পৃষ্টিলাত করিয়াছে।

প্রজ্ঞাপনাথ্ড নামক জৈনবিংগার উপার্চে লিবিড আছে—
"জেবং অন্ত মগহাঞ ভাষাঞ ভানেত্তি জন্ম ব নই বন্তী বিপৰ্ভই ৷"
ভাষাং আন্ধানগৰী ভাষা বাহাতে প্রকাশ করা বাহ, ভাষাই
ভাষীকিলি ৷

পূর্ব্বেট বলিয়াছি বে অংশাব্দের পূর্ব্বে আব্দী অভৃতি ১৮টা লিপি এচলিত ছিল, ভখনও মগ্যলিপি, অঞ্চলিপি প্রভৃতির বিভিন্ন নামকরণ হর নাই। সে নমর কৈল ধর্মণাত্রক্তিও স্থপ্রাচীন ব্রাক্ষীলিপিতেই লিখিত হইড, তাই বোধ হয় পাশ্চাত্তা প্রস্তুত্তব্যক্তিণ মগ্যাদি স্থানে প্রচারিত অংশাক্ষণিপিকেও ব্রাক্ষী-লিপি বলিয়াই গ্রহণ করিয়াহেন।

ধ্যাত en শতাকে সম্বলিত ফৈনধৰ্মণাত্ৰ সন্দীপুত্ৰে ৩৬ প্রকার নিশির উল্লেখ পাওয়া বার। বধা---ছংসনিপি >, জুত-निनि २, रक्तिनि ७, ज्ञाक्तीनिनि ६, वेब्हीनिनि ६, यायनी-निशि ७, फुक्कीनिशि १, कीत्रीनिशि ४, आविकीनिशि २, देशक्वी-লিপি ১০, মালবীলিপি ১১, নতীলিপি ১২: নাগরীলিপি ১৩, भावनीनिशि ১৪, नांगिनिशि ১৫, अनिमिन्निशि ১७, চांगव्ही-निनि ১৭, योगामवी ১৮। मनीएरजंत्र मण्ड थरे ১৮টা निनि ধ্বতদেবের দক্ষিণ হতে প্রদর্শিত হয়। এ ছাড়া অস্ত ১৮ প্রাফার লিপির উল্লেখ দৃষ্ট হয়। বধা—লাটা ১৯, চৌড়ী ২০, ডাহলী ২১, কাণড়ী ২২, ওজারী ২০, সোরঠী ২৪, মরহঠী ২৫, কোছণী ২৬, ধুরাসানী ২৭, মাগধী ২৮, সৈংহণী ২৯, হাড়ী ৩০, কীরী ৩১, হৰীরী ৩২, পরতীরী ৩৩, মদী ৩৪, মাদবী ৩৫ ও মহাবোধী ৩৬। ননীপুত্রের রচনাকালে এই 🦇 প্রকার নিপি ভারতে প্রচলিত ছিল। ননীপুজের মতে দেশবিশেষের নামান্ত্রসারে ঐ সকল লিশি ও ভাষার নামকরণ হইরাছে। পুটার ১২শ শভালে শেষ-কুকা ভটা মূল প্ৰাকৃত ও ২৭টা অপলংশ ভাষার উল্লেখ ক্রিয়া-ছেন। এ সকল প্রাক্তত ভাষার ভার তৎকালে বিভিন্ন লিপিও প্রচলিত ছিল। শেষক্রকের প্রাক্তচিক্রিকা হইতে এইরূপ নাম পাই---মহারাক্তী ১, স্ববন্তী ২,সৌরসেনী ৩, স্বর্জমাগধী ৪, বাহনীকী ৫, মাগধী ৬, আচগু ৭,লাট ৮, বৈদতী ৯, উপদাগরী ১০, নাগরী वार्सत्री ३२, चारवा २७, शांकान ३८, हांस ३८, घांनदी ३७, देकका ১१, त्योक २४, केंब्रु २४, देवच २०, लाम्हाका २३, णाखा २२, क्लेंचन २७, रेतरहन २३, क्लिना २३, व्याहा २७, কর্ণাটা ২৭, কাঞ্চা ২৮, ত্রাবিড় ২৯, গৌর্জন ৩০, আজীর ৩১. मधारमनीव ७२ ७ विकास ७०।

[मिनमार्भन माम विकाध विवेतन विवे

ভারতবর্বে এইরূপে নানা নিপি প্রচনিত থাকিলেও সকল নিপির ঠিক রূপে নির্দেশ করা কঠিন। ভারতের বিভিন্ন রাজ-বংশের রাজস্বকালে কোন্ বংশের ব্যবহৃত নিপি কতদ্র প্রচনিত ছিল, সংক্ষেপে ভাহারই পরিচর দেওরা যাইতেছে।

मागव आश्री वा (मोशामिणि ।

মৌর্য-সন্ত্রাট্ অশোক যে প্রাক্ষী লিপি ব্যবহার করিতেন, হিমালরের তরাই হইডে সিংহল পর্যান্ত সেই লিপির নিদর্শন বাহির হইয়াছে। মহাবংশ হইতেও আমরা জানিতে পারি যে, অশোকের এক পুত্র ও এক কল্পা সিংহলে বৌদ্ধর্ম্ম প্রচার করিতে গিরাছিলেন। তাঁহাদের সহিত মাগধ ব্রাক্ষীলিপিও গিরাছিল, তাহারই নিদর্শন সিংহলে খৃইপূর্ব্ধ ১ম শতাকে উৎকীর্ণ মভয়গামিনীর শিলালিপিতে পাওয়া গিয়াছে। কেবল সিংহল বলি কেন, চীনসমুদ্রের তীরবন্তী কম্বোক্ষ ও অয়ম রাজ্য হইতেও ব্রাক্ষী লিপির বিকাশ দৃষ্ট হয়। পূর্ব্বেই লিথিয়াছি যে, লাক্ষিণাতোর ক্ষমান্তেলার ভটিপ্রোলু হইতে যে লাবিড়-ব্রাক্ষীলিপি আবিছত হইয়াছে, তাহার যুক্তস্বরের সামান্ত প্রভেদ ছাড়া অপরাপর বর্ণের সহিত সেরুপ পর্যাব্দ নাই। স্থানভেদে লিপিকরের হাতে ক্রমে ক্রমে পৃথক্ হইয়া পড়িতেছিল।

লিপ্রাবার খুইপুর্ব ৬ ই শতাশীর লিণি ও তংপরবর্ত্তী খুইপূর্ব ১৫০ অন্দে উৎকীর্ণ নানাঘাটের আদুলিণি অর্থাৎ ঐ
সমরের আর্যাবর্ত্তের সম্পর লিণি প্রায় একই রূপ;—ইহাতে বেশ
দেখা যাইতেছে যে, ভারতবর্বে প্রায় ৫০০ বর্ষ কাল একই লিণি
সমভাবে চলিয়াছিল, লিপ্রাবার পূর্ণাবয়র লিণি হইতে মনে
হইবে বে, তংপুর্বের অন্ততঃ ৫০০ বর্ষ কাল অর্থাৎ বর্তুমান
সময় হইতে প্রায় ৩০০০ বর্ষ ভারতে সেই এক প্রকার রাজীলিপি প্রচলিত থাকাই সম্ভবপর। যাহা হউক, আবিদ্ধত শিলালিপিসমূহ আলোচনা করিয়া মনে ইইতেছে, প্রাচীন লিছেবিবংশ,
নন্দবংশ, মৌর্যাবংশ, চেত্তবংশ এবং শুক্ষমিত্রবংশের রাজত্বকালে
প্রায় এক প্রকার রাজী লিপিই প্রচলিত ভিলা

তৎপরে ভারতের উত্তরপশ্চিম সীমায় শক্ষাধিপত্য বিস্তারের সহিত প্রাক্ষী লিশির আকার সামাত্ত সামাত্ত পরিবর্তন হইতে থাকে; সেই ব্রাক্ষীলিপি ইতিহাসে শক্লিপি নামে গণ্য হইবার যোগ্য। মথুরা, স্থরাষ্ট্র প্রভাত স্থান হইতে শক্তিপি আবিষ্কৃত হুইয়াছে। এই সমরে দাজিণাত্যে সাতবাহন-রাজ্ববংশের যে সকল লিপি পাওয়া গিয়াছে, তাংা মৌর্যা বা শক্লিপির সংস্কার বলিয়াই মনে কার। নাসিকে কাশ্ব, জ্বর ও জগ্যাপেটে অন্ত্রুত্ত এবং কাঞ্চী প্রভৃতি স্থানে পল্লব রাজবংশের যে সকল লিপি আবিষ্কৃত হুইয়াছে, শক্লিপির অক্ষরের সহিত ঐ সকল লিপির সানুত্র আছে। এই শক্তান্ধী লিপি হুইতে ক্ষিত্রপে বর্ত্তমান

উত্তর-ভারতীয় নাগরী ও গোড়লিপি উৎপত্তি হইল, অপর পৃষ্ঠায় ভারতীয় ব্রান্ধী লিপির তালিকা দেখিলেই জ্বানা যাইবে।

দাক্ষিণান্তালিপি।

বিদ্যান্তির দক্ষিণে গুজরাত, কাঠিয়াবাড় পর্যান্ত যে লিপি প্রচলিত, তাহাকেই স্থামরা দাক্ষিণাত্য লিপি বলিয়া গ্রহণ করিলাম। পূর্বেষে দ্রোবিড়ী ব্রান্ধী লিপির কথা লিধিরাছি, ভাহাই সমস্ত দাক্ষিণাত্য লিপির জননী।

কৃষ্ণা জেলার ভটিপ্রোলু হইতে আবিষ্কৃত দ্রাবিড়ী বান্ধীর কথা পূর্বে জানাইরাছি, আর্যাবর্তে গুপ্ত ও তদক্রবর্তী বিভিন্ন বংশের লিপির জ্ঞান্ন দান্দিণাত্যেও সেই দ্রাবিড়ী লিপি হইতে তথাকার আন্ধু, শক, গুপ্ত, বলগুন, গুরুর, বাকাটক, কদম, প্রাচ্য ও প্রতীচ্চ চালুক্য, চের, চোল, পল্লব, গঙ্গ, রাষ্ট্রকৃট, কাক-গুন্ন, বাণ, পাণ্ডা প্রভৃতি রাজবংশের বিভিন্ন সমন্নে ব্যবহত লিপিসমহ ক্রমশং পরিপুষ্ট হইন্নাছে।

জুনাগড়, গিরুনার প্রভৃতি স্থানের খুষ্টার ১ম হইতে ৩য় শতানীর শকক্ষত্রপ লিপি, নাসিক, কুড়, জুন্নব, কণেরি প্রভৃতি ন্থান হইতে খুষ্টায় ১ম হইতে ৩য় শতানীয় সাতবাহন-লিপি, কৃষ্ণা জেলার জগযাপেট হইতে খুষ্টায় ৩য় শতাবেদ উৎকীর্ণ অবস্কৃত ইকাকুরাজ 'সিরিবীর পুরিসদত্তে'র লিপি, কাঞ্চীপুর হইতে খুষ্টার ৪র্থ শতাব্দে উৎকীর্ণ পল্লবালপি, সাঞ্চী ও মন্দ্রসোর হইতে খুষ্টায় ৫ম ও ষষ্ঠ শতান্দে প্রচলিত গুণ্ডলিপি, স্থবাই ও গুজরাত হইতে খুষ্টীয় ৬৪ হইতে ৮ম শতাবে উৎকীর্ণ বলভী-রাজবংশের লিপি, ৬৪ ও ৮ম শতাকীর মধ্যে উৎকীর্ণ গুর্জার-রাজবংশের লিপি, মধ্যপ্রদেশে ৫ম ও ষষ্ঠ শতাকে উৎকীর্ণ, বাকাটক রাজবংশের লিপি, নাসিক জেলার খুষ্টায় ৫ম শতান্দে উৎকীর্ণ কদম্বাঞ্চগণের লিপি, কর্ণাট ও মহারাষ্ট্র হইতে খুষ্টায় ৬৪ হইতে ৮ম শতাব্দের প্রতীচ্য চালকা রাজবংশের লিপি গোদাবরী ও রুষ্ণা জেলা হইতে খুষ্টায় ৭ম শতাব্দের প্রাচ্য চালকা রাজগণের শিপি, কাঞ্চী ও তাহার নিকটবর্ত্তী স্থান হইতে খুষ্টীয় ৫ম হইতে ৭ম শতাব্দীর পল্লবরাজগণের লিপি, মহিন্তর হইতে প্রষ্টার ৭ম শতাকীর গঙ্গ (দক্ষিণশাথা) ও চেবরাজগণের লিপি. গুজরাত ও কর্ণাট হইতে আবিষ্কৃত রাষ্ট্রুটলিপি, কলিকের খুষ্টায় ৯ম হইতে ১ংশ শতাবে উৎকীণ গঙ্গরাজগণের লিপি উল্লেখযোগ্য। ঐ সকল বিভিন্ন লিপি আলোচনা করিলে আমরা বেশ ব্রিতে পারি কলিকের গঙ্গলিপি হইতে বর্তমান উড়িয়া, চালুকালিপি হইতে বর্তমান তেলগু ও কণাড়ী এবং চের ও চোলালপি হইতে তামিল লিপি গঠিত হইরাছে।

দাব্দিণাত্যের লিগিভয়প্পণেতা ডাক্তার বুর্ণেল, দাব্দিণাত্যের লিপিমালাকে প্রধানতঃ চারিভাগে বিভক্ত ক্রিয়াছেন— > তেলগু কণাড়ী, ২ গ্রন্থতামিল, ৩ বট্টেলেন্ড গু ৪ দক্ষিণীনাগরী। বেলী, প্রাচ্য ও প্রতীচাচানুক্য ও যাদবলিপি ভেলগু কণাড়ীর ক্ষম্বর্গত, ঐ সকল লিপি হইতেই প্রাচীন ও আধুনিক ভেলগু ও কণাড়ী লিপির পুষ্টি। চের ও চোললিপি গ্রন্থতামিলের অন্তর্গত অর্থাৎ ঐ হই প্রাচীন লিপি ইইতেই প্রাচীন ও আধুনিক তামিল-গ্রন্থ ও তুলু-মূলরাল লিপির উৎপত্তি।

.পূর্ব্বেই বলিয়াছি যে, প্রাচীন তামিল লিপির পূর্ব্বে বট্টেলেন্ডু নামক এক প্রকার খাঁটী দ্রাবিড়লিপির উৎপত্তি হইয়া অল্ল দিন হইল অপ্রচলিত হইয়া পতিয়াছে।

বট্রেলন্ত্র

বট্রেলেন্ত্র অর্থাৎ বর্জু ললিপি, এই লিপি গোল গোল হাতের মত বলিয়া এই নাম হইয়া থাকিবে। কত পুর্কে এই লিপির উৎপত্তি, তাহা নিশ্চয় করা এক প্রকার অসম্ভব।

ডাজার বুর্ণেল সাহেবের মতে, এই লিপি অলোকলিপি হইতে সমুদ্ধ নহে। অলোকলিপির সহিত ইহার ধন্তাত্মক নাল্ভা নাই। সংস্কৃত বৈয়াকরণদিগের লাক্ষিণাত্যে আগমনের পুর্বের এই লিপিই দ্রাবিড়লিপিরপে প্রচলিত ছিল। উাহার মতে, অলোকের মোর্যালিপির ক্যার এই স্প্রাচীন লিপিও সেমিটিক লিপি হইতে উছুত। লেনরমন্ট বট্টেলেজু ও সাসনীয় (পহলবী) লিপি মিলাইয়া উভয় অক্ষরে মথেষ্ট সাদ্ভা বাহির করিয়াছেন। কিন্তু বট্টেলেজু বহুকাল হইতে রাক্ষীদ্রাবিড়ী-লিপির প্রভাবে ক্রমেই অচল হইতে থাকায় ইহার প্রাচীনতম রূপ বাহির হইতেছে না।

পূর্বেই বলিয়াছি, উত্তরভারত হইতে পণিকগণের এক শাখা দাক্ষিণাতো গিয়া পড়িয়াছিল, তাহারাই আদি বটেলেভ লিপি ব্যবহার করিত, তাহারা দেই অতি প্রাচীনকালে কাহারও নিকট হইতে লিপি গ্রহণ করে নাই। মিসরে অতিপ্রাচীন সক্ষেত (Hieranc) লিপিতে অকার ও ইকার লিপি উত্তারণের যে সক্ষেত আছে, তাহার সহিত বটেলেভ রুর সৌসাক্ত রহিন্যাছে। এরূপ হলে আমরা মনে করিতে পারি, প্রাবিভ্বাসী পণিকদিগের বাণিজালিপি স্থদ্র নিসরে প্রচারিত হইয়া সক্ষেত্রিলার বাণজালিপি স্থদ্র নিসরে প্রচারিত হইয়া সক্ষেত্রিলার আকার ধারণ করিয়াছে। ডাক্তার টেলর দেখাইয়াছেন যে সেই সক্ষেত্রিলিপিই সিলোন, মোআব, অরমা, সেবার, যোক্তান প্রভৃতি স্থানীয় ফিনিক বা সেনিটিক লিপির জননী। স্থতরাং জাবিড়ের আদি লিপিকেও আমরা স্থপ্রচীন বছ পাশ্চাত্য-লিপির মূল বলিয়া গণা করিতে পারি।

খুষ্টায় ৮ম শতাব্দের প্রারক্তে দ্রাবিড়ের হিন্দ্রাজগণ সিরীয-দিগকে যে শাসন দান করেন, তাহাতেও বটেলেত, অকর পাওরা গিরাছে। ঐ সমরেরই অলকাল পরে (বুইর ১ম শতাব্দে) চোলরাঞ্চাণ মছরা অধিকার করিয়া ভামিল অক্ষর চালাইতে থাকেন, এই সময় হইতেই বট্টেলেন্তু, বিরলপ্রচার হইল, অবলেবে খুটীর ১৫ শতাব্দে জাবিড় হইতে এই লিপি একবারে উঠিয়া গেল। কেবল মলবার উপকূলে খুটীর ১৭শ শতাব্দী পর্যান্ত হিন্দৃগণ ঐ লিপি বাবহার করিতেন। এই সময়ে বট্টেলেন্ত্র অক্ষরই একটু বিক্বত করিয়া কোলেলেন্ত্র নাম ধারণ করে, হিন্দুরাঞ্চাণ দানপত্রে ঐ লিপি চালাইয়া গিয়াছেন। তেলি-চেরি ও নিকটবন্তী শ্বীপবাসী মাগ্লিলাগণ সে দিন পর্যান্ত বট্টেলেন্ড্র অক্ষরেই লেথাপড়া করিত, সম্প্রতি ধর্মের গোড়ামীতে তাহারা ঐ লিপি ছাড়িয়া আয়বী অক্ষর বাবহার করিতেছে।

নশীনাগরী।

দাক্ষিণাত্যে যে নাগরী লিপি প্রচলিত হয়, তাহা নন্দী-নাগরী নামে প্রসিদ্ধ। ১০৩১ খুষ্টালে অল্বীকণী যে 'সিদ্ধমাতৃকা' লিপির উল্লেখ করিয়াছেন, ঐ সময়ে এই লিপি বারাণসী. মধ্যদেশ ও কাশ্মীরে প্রচলিত ছিল, তাহাই খুটীয় ১১শ শতাবে দাক্ষিণাত্যে আনীত হয়। তাই আমরা পুষীয় ১১শ শতাব্দীর পূর্বে দান্দিণাত্যে সিদ্ধমাতৃকার ব্যবহার দেখি না, সমস্তই ১০ম শতাব্দীর পরবর্ত্তী। কেবল মহাবলিপুরের শালবনকঞ্চং নামক গ্রামের নিকটবর্ত্তী অতিরণচণ্ডেশরের মন্দিরে দাক্ষিণান্ডা-লিপির সহিত নাগরীলিপি দৃষ্ট হয়, এই লিপিথানি দাক্ষিণাত্য-বাসীর জন্ম নহে, উত্তরভারতীয় তীর্থ্যাত্রীর উদ্দেশ্রে উৎকীর্ণ इटेग्नाइन, जाहा मिथितनहें तीथ हम। ১৩১১ शृष्टीतम मानि-ণাত্যে মুসলমান অভিযান ঘটিলে এবং সংস্কৃতচর্চার লীলাভূমি বিজয়নগর মুসলমানকবলিত হইলে সংস্কৃত ও দেশীয় সাহিত্যের অধঃপভনের সহিত এথানে নাগরীলিপির প্রচারও বিরশ হইয়া পড়িল। এ সময়ের পর দাক্ষিণাত্যে যে সকল নাগরীলিপি (रलकक्षड़) श्रुषि ७ मामनामि भा । या यात्र, তाराट निभि-পদ্ধতির বিক্লাত ও অধোগতিই দৃষ্ট হয়।

মরাঠার তঞ্জার অধিকার করিয়া এথানে যে নাগরী প্রচলিত করেন, তাহা 'বালবোপ' নামে সাধারণতঃ পরিচিত। এছলিপি।

দাজিণাতো এক সময়ে ধর্মণান্ত লিণিতে যে লিপি ব্যবহাত হইত, তাহাই "গ্রন্থ" নামে পরিচিত। এই গ্রন্থলিপি আবার হই প্রকার, তর্মান্য তল্পোর প্রদেশের ব্রাহ্মণেরা যে লিপি ব্যবহার করেন, তাহা কতকটা চতুরল্ল এবং অরকত্ত ও মাল্রান্তের নিকটবটা জৈনেরা যে লিপি ব্যবহার করেন, তাহা কতকটা বস্তুলাকার। দাক্ষিণাতো ব্রাহ্মণদিগের অধিকাংশ ধর্মগ্রন্থই উক্ত গ্রন্থলিপিতে লিপিত। দাক্ষিণাতোর পশ্চিমাংশে তুলু-মলয়ালম্ নামে আর একপ্রকার গ্রন্থলিপি বহুকাল হইতে প্রচলিত

আছে: এই দিপি কেবল সংখ্যত নিৰিবার কালেই ব্যবস্থত **हरेएड (स्था वांच** ।

এছদিপি হইতে আবায় এছভাষিণ জিয়। গ্রহতামিলের ব্যবহার রুক্তা ও গোলাবরীর বহীপাংশেই অধিকাংশ প্রচলিত।

বালী হইতে জাত ভারতের বর্তমান কিপিস্বত (

বৰ্ত্তমান ভারতবৰ্ষে নির্নাদিখিত শিশিখালি প্রচলিত, বর্ণামুক্রমে ভাচাদের নাম লেখা হটল-

चारतोता (निष्ध्यासान), जानामी, डेजिया, एवा (त्वशादत्र ব্ৰাহ্মণ মধ্যে), কণাড়ী, করাড়ী, কার্থী, গুলরাডী, গুলুমুখী (পঞ্চাবে শিখদিপের মধ্যে), গ্রন্থন্ন (তামিল ব্রাহ্মণদিগের মধ্যে), তামিল, তিববত, তুলু (মললুরে), তেলগু, থল (পঞ্চাবের দেরাজাতে), দোগ্রী (কাশ্মীরে), দেবনাগরী, (মধা প্রদেশে), নেপালী, পরাচী (ভেরার), পাহাড়ী (কুমাউন ও গড়বালে), वंगिन्ना (निर्मा ও হিসারে), वालाना, वस्तनश्रुती, বিশাতি, বড়িরা, মণিপুরী, মলরালম, মরাঠী, মারবাড়ী, মূলতানী, দৈখিলী, মোড়ী, রোরী পঞ্জাবে), লামাবাদী, লুঙী (লিয়ালকোটে) সরাফী বা প্রাবকী (পশ্চিমা বশিরার মধ্যে), সারিকা (পঞ্চাবের দেরাজাতে), স্ইশী (উদ্ভরণশ্চিমা ভূতাদিগের মধ্যে), সিংহলী, শিকারপুরী, দিছি। এ ছাড়া ভারতের অনুধীশসমূহে বন্ধী, খ্রাম, লেরস, কাথোজ, পেগুরান এবং ববছীপ ও ফিলিপাইনেও নানা প্রকার লিপি প্রচলিত আছে।

थरताकी मिनि ।

য়ুরোপীর পঞ্জিজগণ স্থির করিয়াছেন বে, থরোটা লিপি ফিনিকলিপির অর্মীর শাখা চইতে বাহির হইয়াছে। পণ্ডিতবর वर नव त्वथादेवात्कम---

অরমীয় অনেক ও গরোষ্ট্রীয় অ পরম্পর অভুরপ, স্কারার শিলালিপি মিলাইলে লেখা বার। এইরূপ ভারমীর পেপিরির বেথ - খরোটা ব: মেসার শিলাকলকের সিমেলের সহিত গ: মেসোপোটমিয়ার শিলালিপি ও অরমীয় পেপিরির দলেও = দ: তিমার অন্নমীয় গিপির গোলাকার হে - হ, ডিমার শিলালিপি ও দিদিদির সত্রপ-মূলার বাও - ব, ডিমালিপির জইন = জ: সভারা ও ডিমা লিপিয় চেখ্ = খ; রোদ্ = য়; বাবিলোনীর ক্ষ্ - ক ; লমের - ল ; স্কারালিপি ও বাবিলোনীর মোহরের त्यम = म : नकाता, किया, जल्लीत ও वावित्नानीत निनानिनित श्य - म ; मराजीत राज्यानात गरमा - म; मिनिक स - भ ; সেমিটিক ৎসৰে = 5; সেরাপিরামের অরমীর শিলালিপির কোফ – খ; নকারানিপির রেব – র; প্রাচীন স্বন্ধরীয় নিপির ७६ = १ थवर जकावांनिनिव ७६ = १। थवेंबरन वृत्नव गारहर धरताक्रीमिनित २० है। अन्नत्रहे स्व स्थित वा সেবিটিক লিপি ছইডে উভড, ভাছা প্রমাণ করিছে চেটা ক্রিয়াছেন।

পূর্ববর্ত্তী পাশ্চাত্য ঐতিহাসিকগণ এই খরোটালিপিকে क्ट बरका-भागी (Bactro-Pali) वा हैरका भागी, क्ट ৰা গাৰারী নামে উল্লেখ করিয়াছেন। কিন্তু সমবারাল ও ললিতবিক্তরে গদ্ধর্ক বা গদ্ধারী লিপির পুথক্ উল্লেখ থাকার এবং পাণীলিপি ব্ৰান্ধী হইতে বাহির হওয়ার খরোষ্ট্রাকে একটা স্বতন্ত্র প্রাচীন লিপি বলিরাই মনে করি। উত্তরপশ্চিমদীমান্তে শাহবান্ধগড়ী ও মানদেরা প্রাকৃতি স্থানে সম্ভাট অলোকের যে দক্ষিণ হইতে বামমুখী অর্থাৎ বিশ্বান্তলিপি বাহির হইরাছে. ভাহাই ধরোটা বলিয়া পরিচিত। আশ্চর্ব্যের বিষয় হিন্দুকুশের উদ্ভৱে এমন কি বাল্থে (বক্তিয়া)ও এই শিপির কোন সন্ধান পাওয়া যায় নাই। প্রাচীন গন্ধাররাকো প্রচলিত থাকাডেই কলিংহাম 'গন্ধার-লিপি' নাম দিরাছেন। কিন্তু বৃহ্লর, রাপ্সোন প্রভৃতি ইদানীং পাশ্চান্ত্য পুরাবিদ্গণ সকলেই থরোষ্ঠা বলিয়া প্রহণ করিয়াছেন: কিন্তু আমরা কনিংহামের স্থায় উহাকে "গন্ধার" বা ললিতবিন্তরোক্ত 'গন্ধর্বলিপি' বলিতে প্রস্তে। আর্যাবর্তে ব্রান্ধীলিপি হইতে বেমন মগধ, অঞ্ বন্ধ প্রাকৃতি ভারতীয় লিপিসমূহের পৃষ্টি ঘটিয়াছে, সেইরূপ প্রাচীন থরোষ্ঠা হইকত গদ্ধর্কলিপি, কিন্নরলিপি, ক্রুদলিপি, শকারিলিপি, থাক্তলিপি, ছুণলিপি, ফুললিপি, অস্থর (Assyrian) লিপি, অর্থমু লিপি (Cunciform), উত্তরকুক ও উত্তরমূত্র (North Mediau) প্রভৃতি স্বপ্রাচীন লিপিন্মত পরিপুট খরোষ্ট্রকে এত প্রাচীন লিপি বলিবার ভইরাভিল। কারণ কি ?

অমত ৰবিদ্ ক্নিংহাম্ লিখিরাছেন,—পারসিক্দিগের আদি-ধর্মগ্রহ অবভার মন্ত্র বা গাখাওলি জরপুত্র (Zorossier) কৰ্ত্ব স্থলিত। দারমবুদ্ বিস্তাম্পের (Darius Hystarpes) সমর ভাষাই প্রচলিত কোন লিপিতে লিপিবছ হইরাছিল। সেই লিপি জরপুরের নামান্ত্রারে 'থরোটা' নাম প্রাপ্ত হটয়া ক্রমে লিখিত হয়।

প্রেক্সভাষ্থিক ক্লিংহাম দারববুসের সময় ধরোষ্ট্র প্রাষ্ট্র লিখিলেও তাহা আমরা ঠিক বলি না; কারণ লিপিতস্ববিদ বুহু শনু নিজেই বুখন খীকার করিয়াছেল বে, অর্মীর সেপিরি হটভেও খরোজীয় কোন কোন বর্ণ প্রাচীন, তখন পারুসাগতি বরায়ুসের সমর পুটক্ষকের হর শতাক পূর্ব্বে ধরোঞ্জীর উৎপত্তি, ভাহা কিন্নগে বলিব গ

আর্থ ঐতিহাসিক মন্ত্রী পুরীয় ১০ই শভাবে লিখিয়া

গিরাছেন বে, জরগুল প্রচারিত জন্দ অবস্তা ১২০০০ গোচর্বে তাঁহারই উভাবিত বর্ণনিপিতে নিপিবত হইরাছিল।

ভারতীয় ভবিষাপুরাণ ও পারসিক আদিধর্ম পুত্তক অবতা পাঠেও জালা বার বে সৌরদিগের মধ্যে অন্নিপুরাপ্রবর্ত্তক জরণন্ত্র বা লরপুরা শ্বন্ধ প্রকি প্রতিহাসিক হেরোদোতস্ পৃথ কম শভাবে প্রসিদ্ধ প্রীক প্রতিহাসিক হেরোদোতস্ লিথিরাছেন বে, শাক্রীপীরগণের মধ্যে আরিজ্ঞান (Ariaspa) (আর্জি) শাখা বহুপূর্বকালে প্রবন্ধ হইরা অস্করীর, মিণীর প্রভৃতি প্রাচীন রাজ্য অধিকার করিয়াছিল। ভবিষাপুরাণমতে অন্ধিনা নামে মিহিরগোত্রে একজন লবি ছিলেন। প্রাহারক কন্তার গর্ভে জরণাত্রের (বা জরপুরের) জন্ম। তাঁহার জন্ম ঠিক বৈধরণে লা হওয়ার তিনি ও তাঁহার বংশধরগণ ভবিষ্যপুরাণমতে 'অন্বিজ্ঞান্তা' থকাং তাঁহার পিতৃকুল অজ্ঞাভ থাকার হেরোদোতান্ তাঁহার বংশধরগণকে মাতৃকুল ধরিরা আরিজ্ঞান বা আর্কের্ব (অর্থাৎ অন্ধিরার গোত্রাপত্য) বিলিরাই প্রাকাশ করিয়াছেন।

লিদিয়ার প্রানিক গ্রীক্ পণ্ডিত জ্ঞানথোদ্ ৪৭০ খুঃ পূর্ব্বাব্দে লিথিয়াছেন বে, জরপুত্র টুরমুক্তের প্রান্ন ৬০০ বর্ষ পূর্ব্বে আবিস্কৃতি হইরাছিলেন। আরিউটল্ ও ইউডোক্সাসের মতে, প্রেটোর ৬০০ বর্ষ পূর্ব্বে জরপুত্রের অভ্যানর। আবার প্রানিক ঐতিহাসিক প্রিনি টুরমুক্তের ৩০০০ বর্ষ পূর্বের জরপুত্রের আবির্ভাব বীকার করিয়াছেন। এ দিকে বাবিলোনের ঐতিহাসিক বেয়োসন্ দেখাইয়াছেন বে, জরপুত্র একসমর বাবিলোনের জনীখর ছিলেন। তাঁহার বংশধরগণ এখানে ২০০০ খুঃ পূঃ হইতে ২০০০ খঃ পূর্বাব্দ পর্যান্ত আধিপতা করিয়া গিয়াছেন। উক্ত নানা ঐতিহাসিকের প্রমাণাবলী হইতে বুঝিতেছি বে, জরপুত্র একাধিক ছিলেন। জরপুত্রের বংশধরগণও জরপুত্র নামে পরিচয় দিতেন। চারিছাজার বর্ণেরও বহপুর্ব্বে তাঁহাদের অভ্যান্ধ। তাঁহাদের প্রভাবেই শক্ষিগের আদি মিত্রধর্ম্বের আধংশতন বটে এবং অগ্নিপুজাই সর্ব্বের প্রচলিত হয়। পূর্বেক্ট আভাস দিয়াছি,

(১) "নোনো মিহিনসিচ্যাক একং জু এাক্ষমুক্তমন্। কলিখা নাম ধর্মায়া কবিয়ানীং পুরানখ হ" (কবিয়াপুত ১৩৯।৩৪)

(২) "বেলোকং বিধিস্ংস্কা বংগাহং লব্দিকজ্ঞ। গুলাং সগং সমুংশাল্পৰ পুত্ৰো কৰিবাতি । জনপন্ন ইতি গ্যাতো বংশকীর্ডিবিবর্জনং।

অধিলান্তা মগা প্ৰোক্তা দোমলান্তা বিলান্তঃ ঃ"(ভবিবা ১০৯:৩৩-৪৪)
(৩) ভবিবাপুরাণ হউত্তেও লামা বায় বে শাক্ষীপে মংগরা আবিপত্য

"এতিৰ্বাহ ভূমিটা ভাষিণ্ বীপে স্বাধিশাঃ। বিষয়বাছ: কুলে শ্ৰেটাঃ শৌচাচারস্ক্ষিতাঃ ঃ" (১৪০ আ:) মগগণ বিশরীভভাবে পাঠ করিডেম। ভবিশ্বপুরাণে নিধিত ভাবে---

"ৰিপৰ্বজ্ঞেন বেদেন মধা গান্নস্তাতো মুগাঃ।…… ৰাষেদোহথ বন্ধ্বৰিং সামৰেদস্বধৰ্মণঃ। আমশোক্তাতথা বেদা মধানামণি ভ্ৰম্ভ ॥

ত এব বিপরীতাত্ব তেবাং বেলা: প্রকীর্মিতাঃ ।" (১৫০ আঃ) ইহারা বিপরীতক্রমে বেলাধারন করেন বলিরাই 'মগ' নামে আত হইরাছেন। আমেদ, বস্কুর্মেদ, সামবেদ ও অথকাবেদ এই চারিবেদ বেমন আজ্ঞাবের, মগদিগেরও ইবার বিপরীত চারিখানি বেদ আছে, তাহার নাম বিদ, বিশ্বরদ (বা বিস্পর্য), বিশাদ ও আজিরন।

ভবিব্যপ্রাণের এই উজি হইছে বেশ ব্রা বাইছেছে বে ভারতের চারিবেদ বেমন বাম হইছে দক্ষিণবিকে অর্থাৎ ব্রাক্ষীলিপিতে লিখিত হইড, শাক্ষীপীর মধ্যেরা তাঁহাদের আদি ধর্মগ্রহণ্ডলি ব্রাক্ষীলিপির বিপরীত ভাবে অর্থাৎ দক্ষিণ হইছে
বামদিকে পাঠ করিত ও দিপি বন্ধ করিত। এই পাঠবিপর্যার
হইতেই তাঁহাদের 'মগ' নাম হইরাছে। এই 'মগ' নাম অবভার
প্রাচীনাংশ গাথাতেও পাওরা গিরাছে। এরপ বলে ৪০০ হাজার
বর্ষ পূর্কে যে 'বিপর্যান্ত' লিপি বা থরোন্তীর উৎপত্তি ঘটিরাছিল,
ভাহাতে সক্ষেহ নাই। প্রাচীনতর ঐতিহাদিকগণ ও এদেশীর
পোরালিকগণ প্রার সক্ষেই আভাস দিরা গিরাছেন যে ৪০০
হাজার বর্ষপূর্কে শাক্ষীপ॰ হইতে বাবিলোন, এমন কি মিসন্নের
উপকৃল পর্যন্ত মগাধিপগণের আধিপত্য বিস্থৃত ইইরাছিল।
ভাহাদের আধিপত্য বিস্তানের সহিত প্রাচীন ধরোন্তী লিপিও
বে সর্ক্রে প্রচারিত হইরাছিল, ভাহাতে সক্ষেহ নাই। ভাই

करिएकम---

⁽a) ভবিলুপ্রাণের প্রমাণ যদিরা কেছ বেন আধুনিক সনে করিবেন না। বোঘাই হইতে প্রকাশিত ভবিলুপ্রাণের 'রাজপর্মণ' তির অপরগুলি আধুনিক বলিয়া মনে করিবার ববেট কারণ থাকিলেও রাজপর্ম বা প্রচীন। ববজপুরাণ, বরাবপুরাণ ও নারদপুরাণে এই আন্দের ব্যাহ উল্লেখ্যাং। এই বালপুরাণ, বরাবপুরাণ ও নারদপুরাণে এই আন্দের কি আণভাবর্ত্ত্ত্বে (হাংচাব-০) এই ভবিল্যপুরাণের উল্লেখ রহিরাছে। এই বর্ত্ত্ত্ত্বানি অব্যাপক বৃত্ত্ত্ত্রের মতে অভতং বৃত্ত্ত্ত্বের শ্তাবারী। এই প্রছে মুক্তপ্রভাবের নির্দান বা বাকার আনরা ইবাকে বৃত্ত্ত্ব বাংলার প্রবাধি প্রাণ্ডির বাংলার প্রবাধি প্রবাধি বিদ্যান বাংলার প্রবাধি প্রবাধি বিদ্যান বাংলার উৎপত্তি।

ক পূর্বাক্তন প্রীক ইতিহাসিক্সণের বর্ণনা অলুনারে বর্তনান বুরোপীর পূরাবিদ্পণ ছিল্ল করিলাছেন যে বর্তনান ভাতার, এনিলাছ কবিলা (নাইবেরিলা, কভোবী, ফিমিলা), গোলাভ, বলেরিলার কভকাগে,নিগুরনিরা, কার্কনির উত্তরাগে, কুইডেন, নরওয়ে প্রকৃতি অনশন সহলা প্রাচীন কিবিলা বা শাক্ষীণ বিকৃত ছিল। [অক্সের লাজীর ইতিহাস, রাজ্যবলাভ, ওর্বাগে ৬-৭ পূঠা প্রইব্য।]

অসুরীর (Assyria), বাবিলোন প্রভৃতি স্থানের লিপির সহিত থরোটা লিপির সাদৃশ্র রক্ষিত হইস্কাছে। [ভোজক ব্রাহ্মণ দেখ।]

এখন আমরা বুঝাইয়া দিতে পারি যে অরমীর শ্রেণীর ফণিকলিপি হইতে থরোষ্ঠার উত্তব ঘটে নাই। বহলিপিবিদ্ আইজাক্ টেলর ভাহার "বর্ণমালা" পুত্তকে লিখিয়াছেন যে নেবুকাদনেজার ও নেরিয়িলারের (৫৬০ খুঃ পূর্বাজে) ইউকের উপরই অরমীর লিপির স্পষ্ট নিদর্শন পাওয়া যায়। কিছ ভাহারও পূর্ব্বেকার বাবিলোনীর লিপি হইতে থরোষ্ঠার নিদর্শন বাহির হইরাছে এবং ভাহারও বহুপূর্বে যে এখানে জরপুত্র-বংশ আধিপতা করিতেন, সে কথা পূর্বেই বলিয়াছি। কেবল বাবিলোন বলিয়া নহে, অস্তত্তানেও খুঃ পূর্ব ৭ম শতাশীর পূর্বেক অরমীয় লিপির পৃষ্টিলাধন হল্ব নাই।†

গ্রার খুঃপুর্ব্ধ ৭ম শতাব্দে কনিকদিগের রাজশক্তি ও বাণিজ্ঞা-প্রভাবের অবসান ঘটিলে ফিনিসিয়ার আদিবর্ণমালা হইতেই উত্তর সিরীয়ার অরমীয়লিপি গঠন লাভ করিয়াছিল। আদি ফনিকলিপিও ছুই প্রকার দৃষ্ট হয়। তন্মধ্যে যে সর্ব্বপ্রাচীন লিপি আবিষ্কৃত হইরাছে, তাহা খুটপূর্ব্ব ১০ম শতানীর শেষে অথবা ১১শ শতানীর প্রথমে উৎকীর্ণ হইরাছিল।! প্রাচীন নিনেভে নগৰীতে কীল্ডপা শিল্পলিপির সহিত প্রাচীন ফনিক-লিপি উৎকীর্ণ দেখা যায়। যাহা হউক,বেরোসাসের মত ধরিলেও আমরা দেখিতেছি যে, খুষ্ট জন্মের ছুই সহস্র বর্ষেরও পুর্বে ঞ্রথক্রের বংশধরগণ অস্থরীয়ায় রাজত্ব করিতেছিলেন, সেই স্প্রাচীনকালে ফনিকলিপির সন্ধানই পাওয়া যায় নাই। মিসরপতি আহমেশের চিত্রলিপিতে প্রার ১৪৬২ খুট পুর্বাবে আমরা "ফেনেখ" নামে ফিনিকদিগের উল্লেখ পাই। ঐ সময়ের পূর্বেই যে এখানে ফনিক দংশ্রব ঘটিয়াছিল, তাহাতে বিলেষ সন্দেহ করিবার কারণ দেখি না। তথনও তাঁহাদের ছারা বিপর্যায় বা দক্ষিণ হইতে বামমুখী লিপির স্টি হয় নাই। এই সময়ের পরপটে অন্ধিত (Papyrus) সন্ধেতলিপিতে (Hieratic) যে অক্ষরের আভাস পাই, তাহার কএকটা বর্ণ দাকিণাতোর স্থপ্রাচীন বট্টেলেড, অকরের মধ্যে পাওয়া গিয়াছে, দে কথা পুরেই লিখিয়াছি। ভারতীয় পণিকগণ খুষ্ট-লব্মের বছসহস্র বর্ষ পুর্বেষে মিদর প্রভৃতি স্থানে বাণিজ্য করিতে আসিত,সংশামনের ইজিহাস হইতেই তাহার আভাস পাওয়া গিয়াছে। পণিকদিগের ক্ষেত্র ক্ষেত্র আদিরা জাবিড়ীর সভ্যভার রেখা পাত করেন

এবং তাঁহাদের সঙ্গেই দাক্ষিণাত্যের অতি প্রাচীন বট্টেলেভ শক্ষেতলিপির স্থান অধিকার করে। তৎপূর্ব্বে মিদরে কেবল চিত্রলিপিরই প্রচলন ছিল। জাবিড়ীয় পণিকদিগের সহিত সঙ্কেতলিপি ইজিষ্টে প্রবেশ করিলে তাহাতেই পত্রপট (Papyrus) অন্ধিত করিবার প্রথা চলিল। বাঁহারা বলেন যে, পাশ্চাত্য দেশ হইতে ফনিকগণ গিয়া দ্রাবিড়ে সেমিটিক সভ্যতার বীজ প্রবর্ত্তন করেন, তাঁহাদের মতের সহিত আমাদের মিল নাই। তাহা হইলে মিসরে যেমন চিত্রাক্ষর প্রচলিত, দাক্ষিণাত্যেও সেইরূপ চিত্রাক্ষরের কোন প্রকার সন্ধান পাইতাম। তাহা যথন নাই. অথচ দাক্ষিণাত্যের বট্টেলেন্ড্র অ, ই, প্রভৃতি কোন কোন বর্ণের সহিত মিসরের সঙ্কেতলিপির মিল পাইতেছি, অথচ সেই সময়ে চিত্রাক্ষরের অসম্ভাব ছিল না, তথন যে ভারতবাসী গ্রহণ না করিয়া তাঁহাদের নিকট হইতেই বরং মিসববাসী স্থবিধাজনক সক্ষেত্তিলিপি গ্রহণ করিয়া থাকিবে, ভাহা কিছু আ । চর্যাজনক নহে। এই সক্ষেত্লিপিরই ভিন্নরূপ নিদশন স্থপাচীন বাবিলোন ও অস্করীয় কীল্লিপ্রিতে রহিয়াছে। কেবল মিদর বলিয়া নহে, বাণিজ্য ব্যপদেশে ফনিকগণ জর্থুস্ত্র-গণের অধিকারভুক্ত রাজ্যে আসিয়া বিপর্য্যন্তলিপির ব্যবহার শিক্ষা ক্রিয়া মূরোপে গিয়া প্রচার ক্রিয়া থাকিবে, এই কারণ সেই স্থপাচীন গ্রীক ঐতিহাসিকগণের নিকট ফ্রিকুরাই লিপি-মালার প্রবর্ত্তক বলিয়া পরিচিত। বাস্তবিক তাঁহাদের অভ্য-দয়ের বহুপুর্কে বিপর্যান্ত বা থরোষ্ঠালিপির উৎপত্তি। এখন আমরা বৃঝিতেছি যে, ব্রাশ্নীলিপি যেমন ভারত, ব্রন্ধ, সিংহল, ও ভারতমহাসাগরীয় দ্বীপপুঞ্জে প্রচলিত, প্রাচীন শিপিসমূহের জননী থরোষ্ঠীও সেইরূপ সকল বিপর্যান্ত লিপির জননী। ফণিকগণ এই বিপি লইয়া গিয়া মুরোপে প্রথম প্রচার করিয়া ছিল বলিয়াই গ্রীকদিগের নিকট ফনিকেরাই বর্ণলিপির উদ্ভাবয়িতা বলিয়া থাতিলাভ করিয়াছে। বেমন মোন্সাব ও সিদোনে ফনিকদিগের প্রচারিত লিপির কালবশে পরস্পরের রূপে অনেকটা পার্থক্য ঘটিয়াছিল, সেইরূপ অশোকের ব্যবগৃত খরোষ্ঠার সহিত উক্ত শিপিসমূহের পার্থকা দৃষ্ট হইয়া থাকে। যেমন স্থান ও . কালবশে দেবীয় ও বোক্তানের দেমিটক লিপি 🕻 মোআব. সিদোন ও অরমার লিপি হইতে বছলাংশে পৃথক হইয়া পড়িরাছে. সেইরূপ অশোকের বাবগুত খরোটার সহিত অপর স্থানের বিপর্যান্ত লিপিরও পার্থকা ঘটিয়াছে। টেলর, বৃহ্লর প্রভৃতি লিপিতৰবিদগণ এসিয়া মাইনর বা আরবের প্রাচীন লিপির

[.] Taylor's Alphabets, Vol. I. p. 247.

⁺ Taylor's Alphabets. Vol. I, p. 198,

¹ Taylor's Alphabets, Vol. 1. p. 216

[্]ৰ ক্ষিক্তাজ সমতিক।সৃ হইতে স্মিতিক বা সেমিটিক নামের উৎপত্তি।
স্বত্তাং ক্ষিক্ত ও স্মিতিক একগ্ৰ

সহিত অশোকের বিপর্যান্ত নিশির সাদৃশ্রস্থাপনে বেরূপ অগ্রসর ইংরাছেন, তাহা অনেকটা কট করনা মাত্র, তাঁহাদের উদ্দেশ্র শিক্ষ হর নাই । *

আর একটা কথা—প্রাচীন ফণিকলিপিসমূহে ২০টার অধিক বর্গ মিলিবার উপায় নাই.—সেই ২০টা বর্ণের নাম— অলেক, বেথ, গিমেল, দলেখ, হে, বাও, জইন, চেথ, রোদ, কফ্, লমেদ, মেম্, স্থন, সমেছ, ফে, ছ'লে, কোফ্, রেষ, বিন্, তও। এই ২০টা বর্ণের উচ্চারণ ধরিয়া বথাক্রমে জ, ব (বগীয়), গ, দ, হ, ব অন্তঃস্থ), জ, চ, য়, ক, ল, য়, য়, য়, প, ছ, ঝ, য়, য় এবং ত বা ট এই বর্ণ বাহির হইতে পারে। কিন্তু ভারতের উত্তরপশ্চিম সীমা হইতে আবিষ্কৃত অশোক, ববন, শক ও কুবণরাজগণের সময়ে ব্যবহৃত ধরোষ্ঠা লিপিগুলি একত্র করিলে তাহা হুইতে আমরা ৩৯ বর্ণ দেখিতে পাই, যথা—

ष हे है । ७ व्यः

ক থ গ ঘ

ठ इंड व दा व

हे के उठ ह

क शांक धान

. . . _ _

शत न त भ घ म

থরোষ্ঠী যে ভাষায় প্রথম ব্যবহৃত হয়, সেই অবস্তার মুপ্রাচীন গাথা আলোচনা করিলে আ, ঈ, উ, ঐ, ঐ, এই এটা অধিক পাওয়া যায়। মুতরাং থরোষ্ঠীর ৪৩টী বর্ণের মধ্যে ফলিকেরা স্থ ব বালিজো ব্যবহারোপ্যোগী ২০টী অক্ষর মাত্র গ্রহণ করিয়াছিল। মেমন সংস্কৃত শাস্ত্রে ৫০টীর অধিক বর্ণমালা থাকিলেও সাহিত্যিক হিসাবে না ধরিয়া বাঙ্গালীর উক্তারণ ধরিলে এদেশে যেমন ৩০।৩২টী অক্ষরের বেশা আবশ্রুক নাই, স্বীকার করিতে হয়, [বাঙ্গালা ভাষা দেখ] অথচ বেমন বঙ্গালিপি ব্রাক্ষীলিপিরই সম্ভতি, সেইরূপ আবস্ত্রিক ধর্মশিত্রে ৪৪টী বর্ণের ব্যবহার থাকিলেও ফণিকদিগের ২০টীর অধিক ব্যবহারে আসে নাই, অথচ ঐ ২৩টী আদি ধরোষ্ঠী লিপিরই সম্ভতি।

এখন মূরোপীয়গণ যেরপে স্ব স্ব দেশপ্রচলিত লিপির উৎপত্তি স্বীকার করিরা থাকেন, তাহাই আলোচা। মূরোপীয় লিপিতক্ষিন্গণ বর্গলিপির স্ষষ্টির পূর্ব্বে এইরপে নাক্ষেতিকলিপির উৎপত্তি স্বীকার করেন –

বৰ্ণলিশির পূৰ্ব্ববৰ্ত্তী সাজেতিক চিহ্ন।

গ্রাচীন যুগের মন্ত্র্যাপ্রকৃতিক ইতিবৃত্ত আলোচনা করিলে স্পষ্টই ক্ষরশ্ব হয় যে, মানবন্ধাতির উন্নতির ক্রমবিকাশের সঙ্গে সংশ্বই শিপিকার্য্যের আবশ্রকতা অনুভূত হইয়াছিল। তাঁহারা কএকটা অভাবমোচনের জন্ম চিল্মাত্র অভন করিতে অভ্যান করেন। তাঁহারা বিশেষ বিশেষ কার্য্যালুটানের জন্ম, সময় বিশেবের নির্দারণ জন্ত, অমুপন্থিত অথবা বাহার সহিত সহজে সাক্ষাৎকারের স্থবিধা নাই এরপ ব্যক্তির নিকট ভাব বিশেষ জ্ঞাপন নিমিত্ত কতকগুলি সান্ধেতিক চিক্লের প্রয়ো-জন উপলব্ধি করিতে থাকেন। সেই আদিম বুগের অধি-বাসিবৰ্গ আপনাপন অন্ত্ৰ, শন্তাদি, স্ব স্থ পাসিভ গবাদি পশুকে পরস্পারের স্বাধিকার ও স্বাতস্তা নির্দিষ্ট রাখিবার জন্ম অথবা স্বহন্তে নির্মিত মুৎপাত্রাদি বা অপর কোন জ্রবোর অপর সাধা-রণ হইতে পার্থকানির্দেশের জন্ম বিশেষ বিশেষ চিক্র ব্যবহার করিতেন। অভাপিও ভূগর্ভনিহিত মুৎপাত্রসমূহে ঐরূপ বিভিন্ন চিক্ত বিভ্যমান দেখা যায় এবং তাহা আলোচনা করিলে বেশ বুঝা যায় যে, খুষ্ট জন্মের বছ পূর্বে হইতে বিভিন্ন সময়ে বিভিন্ন ব্যক্তি ছারা ঐ সকল পাত্রাদি নিশ্মিত হইয়াছিল। এখনও ভিন্ন ভানের মুৎপাত্তে তৎকালের ভার কুম্বকারের সাক্তেতিক চি**ৰু ব্যবহৃত হইয়া থাকে। প্রাচীন কা**লে যাহা ব্যক্তি বিশেষের পারিবারিক সম্পত্তির স্বাতন্ত্র্য চিহ্নরূপে গৃহীত হইয়াছিল, বর্তমান যুগে তাহাই ক্রমশঃ উন্নতির পরিণতি প্রাপ্ত হইয়া "টেড্ মার্কে" পর্যাবসিত হইয়াছে।

সকলেই জানে, আমাদের দেশের অজ্ঞ রমণীরা পরিধেয় বন্ধ বা কুমালাদিতে চিকুত্বরূপ ভাহার কোণে এছি দিয়া রক্তক্তে দিয়া থাকেন। সাঁওভাল, কোল প্রভৃতি বর্ণজ্ঞানবন্ধিত জাতির মধ্যে এখনও ঋণপ্রচণকার্যো অর্থের সংখ্যা নিরূপণার্থ করে বা রজ্জধতে গ্রন্থি দেওয়া চইরা থাকে। পূর্ববঙ্গের নিরক্ষর গোপ-গণ চথ্ম ক্রেমবিক্রায়ের হিসাব বাঁশের চটায় দাণ কাটিয়া রাথে। ইচাও অনেক সময় দেখা গিয়াছে, যদি কথনও হিসাবের টাকা আদান প্রদান লইয়া আদালতে মোকদমা উপত্নিত হইয়াছে. তথন বিচারক ঐ সকল দাগ দেখিয়া মোকদমার সভ্যাসভা ত্তির কবিহাছেন। পাশ্চাত্য স্বগতেও এরপ এক সমরে ঋণসংখ্যার্থ গ্রন্থিচিক ব্যবস্থাত হইত। হেরোদোতালের (IV. 78) বিষরণীতে জানা বাম যে, শকাভিযান কালে দরায়ুস ইষ্টার নদী অতিক্রম করিয়া সেড়ুরক্ষক গ্রীক সেনাদলের হল্ডে বচ श्रीष्टियक अक्री मीर्च उच्च द्वाधिया एमन अवः वरमान, देदारक यक গ্রাছ আছে, ততদিন তোমরা এই সেতু রক্ষা ক্রিবে এবং প্রত্যহ এক একটা গ্রান্থ খুলিরা ফেলিবে। যদি শেষ গ্রান্থ

^{*} Taylor's Alphabets, Vol. I & Indische Palægraphie von G. Buhler এই এছ সইবা।

খুলিবার দিনে রাজার প্রভাগেষন না ঘটে, ভাষা হইলে গ্রীকগণ সেতু ভালিয়া চলিয়া বাইবে ।

উহারই উন্নত প্রকরণ পেদ্ধ রাজ্যের কুইপু রক্ষ্তে দৃষ্ট হয়। উহা প্রথমে সংখ্যাগণনাকার্যে ব্যবহৃত হইত। পরে কালবণে ক্রমণঃ উহার উন্নজি সাধিত হয়। নির্মাতার কৌললে ভাহাতে ঐতিহাসিক বটনানিচর, রাজবিধিপ্রাপতি প্রকৃতি সক্ষেত প্রথিত হইতে থাকে এবং ভদ্মারা বেশ হইতে দেশান্তরে, রাজ্য হইতে রাজ্যান্তরে সংবাদ-প্রেরণের ব্যবহা প্রচলিত হয়। তৎকালে প্রত্যেক প্রধান প্রধান নগরে কুইপুর ব্যাখ্যা করিবার জন্ত এক এক জন রাজকর্মচারী নির্ক হইতেন। তিনিই কুইপু পাঠের পর প্রন্তার কুইপুর সাহাব্যে উত্তর বাধিরা দিকেন। হঃধের বিবর, কুইপুর অপুর্বা ব্যাখ্যাকৌশল সুপ্ত হইরাছে। এইরূপ সাক্ষেতিক প্রথা এক দিন চীন, ভিক্তত এবং প্রোচীন ভূখগুবাসী আদিম জনগণের মধ্যে প্রচারিত ছিল। ক

चार्ह्रेलिहात चानिय चित्रवानीनिरशत मरशा कुरेशून छात्र কার্যাগানলীল 'লোত্যদণ্ড' বিভ্যান আছে। উহা একটা বৃক্ষ-শাখা মাত্র: পত্রবেধক গাত্রোপরি পূর্ব্বে শামূক দিয়া (এখন ছবিকা সাহাযো) কডকগুলি আঁচড় কাটিত। বর্গ্তমান "সট-ক্লাঞ্ৰ^ত লেখার ক্লায় ঐ **জাঁচড়গুলি স্বতঃ ব্যাখ্যাত** নহে। উহা বাহ্নি বিশেষের মনোভাব স্বতিপথার্ক্ত করিবার নিদর্শনমাত্র। मधक वधन के चाहफ होनिएड शास्त्रन, उधन निकार के बन দত বা পত্ৰবাহক দাভাইয়া থাকে। বেমন একটা আচড বক্ষজালে জাঁকা হয়, অমনি লেখক পত্রবাহককে এরপ অভনের আন্তিপ্ৰায় ও আৰ্থ জ্ঞাপন করিয়া দেন। এইরূপে ঐ দঙ্গের অন্তন সমাধা হুইলে প্রবাহক দুওটা হতে লইয়া প্রোদির ব্যক্তির নিকট সইরা আইনে এবং বরং এক একটা আচড লক্ষা করিয়া এক একটা ভাবের কথা জানার। উপরোক্ত ৰীপের ভিটোরিয়া বিভাগের বিশ্বেরা নদীভীরবাসী বোটজো-वहक क्रांजिह माथा अहेक्सन अधान नाजन चालान असान वहेका থাকে: গুৰাৰ প্ৰবাহক এক সন্ধাৰের নিকট হইতে পাছিত लोजान नहेंबा जानावत करक मधर्मन करत धारा कांकारक জনাজিকে লইরা গিরা পরত্রেয়কের নাম জানাইরা দের ও পত্র-হৰ্ম জ্ঞাপন করে। এই নৌভানতের অভিত আচড বা লিপিওলি विक हारे वाकित मत्या मित्रकत हानिक रह, खारा रहेरन काराता উত্তরে উত্তরের মনোভাবের অঞ্চিত আচক্তপুলি ব্রিতে পারে।

কালে অস্থপদ্বিত ব্যক্তির পত্তমর্শ্বক্রাপনের অভাব অন্ত-ডুড হুইল। কোন শুভর প্রবার নাধারণে পরস্পারের অভিপ্রার- খলি গরস্পরের হৃতিপথে সমার্ক্ত করিবার জন্ত কতকগুলি প্রতে (mnemonics) অন্ধুমোদিত করিরা লইলেন। ইহাই বাত্তবিক বর্ণলিপির প্রাথমিক অবস্থা। ইহা হইতেই পরবর্ত্তী সমর্কার নিশির আংশিক গঠন সংসাধিত হইরাছিল।

সর্গাতীত কালের নম্বাঞ্জতির প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলে প্রথমতঃ আমরা এবস্তুত অর্থাঞ্জক ও মনোভিপ্রার্ক্তাপক ছই প্রকার লিপির নিম্বর্ণন দেখিতে পাই। অন্ধিত উহার একটা করিল প্রত্তর বা অহিখতে খোদিত দৃত্ত বন্ধর চিত্র এবং বিতীরটা অন্ধিত রেখাটা কলিত চিত্র মাত্র আছে। সেই পৌরাপিক বুগের (Prehistoric times) মন্থ্রসমাজ ওহাদি খোদিত করিরা তাহার সমতল গাত্রে হরিণ, মহিব ও তদ্বুগের পথাদির বে সকল প্রতিকৃতি উৎকীর্ণ করিরা রাখিরাছে, তাহাই প্রথমোক্ত শ্রেণীর বলিত্রা গণ্য এবং M. Ed. Piette কর্ত্বক আবিষ্কৃত এরিজন নদীকুলের সচিত্র প্রত্তরর প্রত্তর প্রত্তিত প্রত্তর্যক্ষণক (marked pebble) Reindeer বুগের পেব তার ও Neolithic বুগের প্রথম করের মধ্যবর্ত্তী কালে অন্ধিত হইয়াছিল বলিয়া গণনা করা হয়।

এই যুগীর স্তর প্রার ২ ফুট মোটা এবং লাল ও রুষ্ণ-বর্ণ। ইহার মধ্যন্থিত সন্দিদ্র হরিণদন্ত (মালার জন্ত), বিভিন্ন **জীবদেহান্তি প্রান্ততির মধ্যে ইতন্ততঃ বিক্লিপ্ত বে চিহ্নান্তিত** প্রস্তরথও বিরাজিত দেখা বার, তাহা বর্ণমালাগুলি প্রধানত: গুই শ্ৰেণীতে বিভক্ত ;--> সংখ্যাবোধক শ্ৰেণীবদ্ধ কভকগুলি আচড (Series of strokes) এবং ২ স্থচিত্রিত চিত্রাবলী (graphic symbols)। ঐ সকল প্রান্তরলিপির অর্থ যাহাই इफेक ना रकन, छेश रव आक्तिक मधुड्ड नरह, छारा महस्बई বীকার করা যাইতে পারে। বিশেষ পরীকা করিরা দেখিলে উহার কোনটাতে বুল্টক, ওঁরা বা দর্শ, কোন কোনটাতে বৃক্ষ, ল্ডা, শুলা ও নভাদির জম্পাই আভাস, এবং ভব্নি অধিকাংশ अध्यक्षतं वर्गमानात हिल्लामुल E, I, T, O, A, ⋈, Д, প্রভতি অক্ষরমালা উৎকীর্ণ দেখা বার। মহামতি পিকটে উহার मत्था नाना श्राह्म तनवानी, किनिकीय नावेश्वान तन-বাসীর কতকগুলি বর্ণমালা ও শকাংশ '(Syllabaries) এবং মাস দে' আজিলের প্রাচীন বর্ণদিসির নরটা জকরের সালভ দেখিতে পান। বর্ণমালার এডালুশ ক্ষবস্থা দেখির। উहाटक कथनहे वर्गमानाव जाति वा छै८ पछि निवर्णन विश्वा সিদ্ধান্ত করা বাব না.বরং উহাকে প্রাচীন কালের কোন ভৌতিক চিকেরা বা আডি বিশেষের নির্ভারিত লাভেভিক বিষয়ণেত जिल्लांज विवाहे अरुप कहा संदेख भारतः। कारण अधनक

^{*} Ethnologische Parallelen und Vergleiche, i. p. 184.

মধ্য অব্ট্রেলিরার পর্বাভগুহা মধ্যে এবং আমেরিকাবালী ইণ্ডি-ব্লানদিগের মধ্যে কুরা প্রভৃতি খেলার এক্সপ নাক্তেতিক চিচ্ন প্রচলিত আছে।

প্রাচীন ভূপপ্তের বিভিন্ন জনপদ হইতে নৰাবিষ্কৃত আমেরিকা ভূপপ্তে সর্বাদেশা প্রাচীন চিত্রলিপির (Picture-writing) আদর্শ বিশ্বমান আছে। উহা মিসরীয় বা চীনদেশীর চিত্রলিপি হইতে জনেকাংশে উৎকর্বতা লাভ করিরাছিল, কিন্তু ইঞ্জিপ্ত বা চীনের স্থার আমেরিকাবাদীর চিত্রলিপি বর্ণ রা শক্ষবাঞ্জক হয় নাই। চিত্রগুলি কেবল চিত্রেরই উল্লোধক হইত।

চিত্রনিপি ব্যতীত আমেরিকাবাসিগণ সংখ্যাগণনার্থ এক প্রকার ছড়ি ব্যবহার করিত। উহার সাক্ষেতিক আঁচড়গুলি গণনা করিয়া তাহারা যুদ্ধাতিবানের ব্যাপ্তিকাল, তত্তদ্ বুক্ষে নিহত শক্তর সংখ্যা ও তদহরূপ পরিচরাদি ব্যক্ত করিতে পারে। এতপ্তির তাহাদের মধ্যে বিশ্পুম্' নামক মালার ব্যবহার আছে। উহার সাদা দানাগুলি সন্ধি বা শান্তিস্থাপনের উল্লেখক এবং বেগুণে দানাগুলি যুদ্ধঘোষক। ১৬৮২ খুটান্দে লেনী লেনপে সন্ধারণণ সন্ধিস্থাপনার্থ উইলিয়ম পেন্কে বিভিন্ন বর্ণের যে মালা দান করে, তাহার মধ্যস্থলে সন্ধির উদ্বোধক হইটা মন্ত্রসৃত্তি পরস্পরে হন্ত ধারণপূর্বক দণ্ডারমান ছিল। এইরূপ মেক্সিকোবাদীর ফান চিহ্ন চৌর্য্য বা শান্তিজ্ঞাপক এবং কালিকোর্ণিয়ার পার্ব্যতাচিত্রে অঞ্চার্যক্রনান্ত প্রতিকৃতিই পোক্স্ঞাপনার্থ উৎকীণ ইইয়াছে।

আমেরিকাবাদী আদিম জাতির মধ্যে এই চিত্রলিপির প্রাচীনতম আদেশ বিপ্রমান থাকিলেও বাস্তবিক পক্ষে উহা ক্রমশঃ উরত হইয়া বর্ণমালার পরিণত হইতে পারে নাই। প্রাচীন ভ্যত্তের অস্থরীয়, মিশর ও চীন রাজ্যে সভ্যতার বিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে চিত্রলিপির যথেই উরতি সাধিত হয় এবং উহা কালে শব্দ বা বর্ণমালার প্রকৃষ্টরূপ প্রাপ্ত ইইয়া তত্তন্ জন-পদবাসীর মনোভাব ও তদর্গজ্ঞাপনে নির্দারিত বা অধি-কারী হয়।

চীনদেশেই সর্ব্ব প্রথমে এই চিক্লিপি হইতেই বর্ণ বা শব্দ লিপির ক্রমোরতি ও বিকাশ সাধিত হয়। তথাকার বর্তমান লিপির মৌলিকাবস্থার সহিত সামঞ্চল নির্ণরার্থ সেই আদিম চিত্র-লিপির নিদর্শন দৃষ্টি গোচর না ছইলেও নিঃসন্দেহে বলা যাইতে পারে যে, চীনদেশী বর্ণলিপি আফুমানিক ৮০০ হইতে ১০০০ খৃষ্ট পূর্বান্থ হইতে প্রচলিত হইয়াছে। চীনদেশীর প্রাচীন অভিধানলিখিত শাক্ষলিপি ও বর্তমান বর্ণ বা শব্দলিপির বৈষমা দর্শন করিলে স্পষ্টই ইহার উন্নতি ও বিকাশ উপলব্ধি হইতে পারে। হথন তাহারা প্রস্তুর বা ত্রহৎ কঠিন পদার্থে শৌহন শলাকা বারা চিত্রলিশি অভিত করিত, তথন তাহারা গোলকপিতে পূর্যা এবং অর্ক চন্দ্রাকারে চক্রকে বৃথাইত। পরে বথন
কাগজ, রেশম ও তৎসত্ল কোন কোমল বন্ধর উপর বর্ণমালা
বিভালের আবন্ধক হয়, তথন তাহারা লৌহশলাকার পরিবর্কে
তুলির ভাষ কেবল লেখনী বা চিত্রতুলিক। বাবহার করিতে আরন্ধ
করে। সেই সময় হইতেই বাত্তবিক পক্ষে তুলির টানে বৈপরীতা সাধিত হইরা বর্ণগুলি বর্ত্তমান ছাকে রূপান্তরিত হইরা
আসিয়াছে।

চীন শব্দলিপি হইন্ডে জাপলিপ গৃহীত হইলেও উচা আনকাংশে সংস্কৃত হইনা ভিন্নাকৃতি প্ৰাপ্ত হইনাছে।» এই জাতীয় লিপিন্ন হাঁদ ভিন্ন জাপানে গৃহীন পঞ্চম শতাল্পে ভাবত প্ৰচলিত সংস্কৃত বৰ্ণমালান লিপিও বিছমান আছে। তথাকায় বৌদ্ধধৰ্ম সম্বানীয় আনেক গ্ৰন্থই সংস্কৃত হাঁদে লিখিত।

মিসরীর বর্ণলিপিই প্রথমে সম্ভবতঃ পাশ্চাতা লগতের সর্ব্ব প্রাচীন লিপি বলিয়া বিদিত। এখানে চিত্রলিপির (Hieroglyphics) এক সময়ে বিশেষ প্রচলন ছিল, তদ্দেশস্থ উৎকীর্ণ ফলকাদি নিরীক্ষণ করিলে তাহার সমাক্ বিবরণ জ্ঞাত হওরা যায়। চীনগণ যখন বস্ত্ববিশেষকে চিত্রলিপির হারা ব্যাটবাব পরিবর্তে শম্পলিপির উদ্ভাবনে সচেট ছিলেন, তখন তাহারা শ্লামুসারে প্রবাবিশেষের কতক চিহ্ন সামশ্রত অবধারণ করিয়া লন। তাহাতে আদিম চিত্রঘটিত লিপির আংশিক চিত্রের বিলয় ঘটে এবং মূলতঃ তাহা বিশুপ্ত হইয়া পড়ে।

ভাষাবিদ্যাণ প্রাচীন ভূখণ্ডের এই তিনটা বিশ্বত চিত্রলিপির উৎপত্তিনির্গর করিতে গিয়া বলিরা থাকেন বে, এক সমরে ইছা মধ্য এসিরাখণ্ডবাসী জাতির মধ্যে বিশ্বত ছিল। কেচ কেহ্ বলেন, চীনগণ বাবিলোন হইতে ক্রমণঃ পূর্ব্বাভিমুখে আসিরা বর্ত্তমান চীনসাম্রাজ্যে বাস করিয়াছে। আবার কাহারও কাহারও ধারণা, ইউফ্রেটিস্ প্রবাহিত উপত্যকাভূমে প্রথমে মিসরীর সভ্যতার বিস্তার হইরাছিল অর্থাৎ প্রাচীন আর্থা (ছিল্কু)-দিগের ক্সার ইউফ্রেটিস্ তীরবাসী জনলোত সেমিটিক অভিযানে লিশ্ত হইরা রাজ্য হইতে রাজ্যান্তরে সভ্যতা বিস্তার করিতে করিতে মিসর রাজ্যে আসিরা প্রভূত্ব বিস্তার করিরা-ছিল। এই মিসরীরগণ প্রাচীন সোমালী জাতির মন্ত্র একটী শাখা ভির আর কিছুই নহেন।

মিসরের প্রাচীন ইভিত্ত আলোচনা করিলে জানা বার বে, বক্তকাল ব্যাপিয়া অস্থ্রীয় (অস্ত্র)-গণের সহিত মিসরীয়-দিগের রাজনৈতিক সংঘর্ব (বৃত্তবিগ্রহ) চলিরাছিল, সেই

^{*} See Taylor's The Alphabet, i, p. 34,

যুদ্ধে লিপ্ত হইরাই তাহারা ক্রশমঃ পশ্চিমাভিমুথে উপনীত হয়।
এবং তত্তল্ হানে আপনাদের জন্মভূমির প্রচলিত চিত্রবর্ণমালার
প্রচার করে। বাত্তবিক পক্ষে, এই মিসরীর সভেতলিপিপ্রথা
(Hieratic writing) নীল নদের উপত্যকাদেশে সমাক্
পৃষ্টি লাভ করে নাই; অথবা যে প্রাচীন চিত্রলিপি (Pictographic System) হইতে অস্থরীর ও তৎসমীপবর্ত্তী হানের কীললিপি ক্রমশং পৃষ্ট হইরাছে, তাহা হইতে এই মিসরীর সভেতলিপি
উচ্চ বা নিম্ন ধারায় অস্থসত বলিরা খীকার করা বার না।

চীনবাসীর জায় মিসরবাসিগণও একই উদ্দেশ্যে স্বতঃপ্রবৃত্ত
হইরা (চিত্রলিপি ছইতে) বর্ণমালা নির্দারণে অগ্রসর হন।
তাঁহাছ্রাও বল্ধবিশেবের আরুতি এবং বল্ধগত ভাব সাদৃশ্রের
উপর নির্জর করিয়া সেই চিত্রগুলির ছাঁট বাদ দিরা এক একটা
"বর্ণশন্ধ" স্পপ অক্ষর নির্ণয় করেন; পরে তাহা চইতেই এক
প্রকার মুরোপের প্রচলিত ভাষাগুলি বেরূপ আক্ষরিক, মিসরীয়
ভাষা সে ভাবে কথনও আক্ষরিক হর নাই। কারণ প্রাচীন
মিসরবাসিগণ স্বভাবতঃই আয়ুগোরবরক্ষণশাল এবং চিত্রবিভাবিশারদ ছিলেন। তাঁহারা স্বকীর এই শোভাবদ্ধক ও সৌইবশালী চিত্রলিপিরই পক্ষপাতী হইরা তৎপরিবর্ত্তে বর্ণমালা চিহ্নব্যবহারবাসনাকে বিলক্ষণ ক্ষতির বিষয়ই জ্ঞান করিতেন।

সেই কারণেই তাহারা চীনবাদীর স্থার বর্ণমালা দখনে বিশেষ কোন উরতি সাধন করিতে পারেন নাই। তাঁহারা শব্দপরশপরার সংযোগ লক্ষ্য করিয়া সেই শব্দ যে বন্ধ, পশু, পক্ষী বা মন্থব্যের উদ্যোভক শব্দকে ব্ঝায়, সেই বন্ধর হারাই ভাষালিপি অন্ধন করিয়া যাইতেন। যেমন জল ব্ঝাইতে চিচ্ছের ছারা তরলায়িত জলপৃষ্ঠ আঁকিত, ভূষা ব্যাইতে জলের চিচ্ছ আঁকিয়া একটা গোবৎস ছুটিয়া জলের আভমুথে যাইতেছে, দেথাইলেই চলিত। যুদ্ধ ব্যাইতে একহন্তে ঢাল ও অপরে বড়শা বা তরবারিযুক্ত বারমূর্ত্তি লিখিত। এই সকল চিত্রলিপির মধ্যে পরম্পর সম্বন্ধনদেশার্থ ভাষারা কতকগুলি চিন্ছও বাবহার করেন। ডাক্তার আইজাক টেলার বলেন, সেই সকল অক্ষরমূলক (Alphabetic symbol) চিচ্ছ হইতেই বন্ধমান ইংরাজী বর্ণমালার বীক্ষকীট প্রস্থপ্ত ছিল, কালে তাহা প্রবন্ধ ও প্রকাশিত ইরা পড়িয়াছে।

এই হাইরোমিফিক চিত্রালাপ হইডে কিরপে মিসররাজ্যে হিরাটিক লিপির প্রচলন হইরাছিল, সাধারণের অবগতির জন্ত নিমে তাহার একটা দৃষ্টান্ত দেওরা গেল:—ইংরাজী দ বর্ণের উৎপত্তি দেখাইতে গিরা পাল্চান্তা ভাষাবিদ্গণ বলেন যে, প্রাচীন মিসরী-ভাষার পেচকের নাম মূলক — উলুক। প্রথম চিত্রালিপি অন্থসারে পেচক পক্ষী বা সেই বস্কর ধারণা (এ৪ ৪

idiogram) বুঝাইতে পেচকপক্ষিচিত্রই অন্ধিত হইরাছিল। পরে তাহা পেচক শব্দার্থের (Phonograms) বোধকরপে ব্যবহৃত হয়। শেষোক্ত অর্থে তাহার শন্তরণ পরিণতি ঘটে এবং শব্দামুসারে তাহাতে উ যুক্ত হইরা mu পদ হর। প্রাচীন হায়রোমিফিকের পেচকচিত্র প্রস্তরান্ধণের পরিবর্ত্তে যথন পাপি: রাস (Papyrus) পত্রে লিখিতে আরম্ভ হয়, তখন ক্রতলিপির জন্ম স্থাপন্ত পেচকাকৃত না লিখিয়া মোটামূটি উহার চারিপার্ছের রেখাই লিখিত হইত। পরে লেখার তারতমামুসারে ক্রমে আদি পেচকচিত্রের লোপ ঘটে এবং পদ ও প্রচিবিহীন পেচক রেখার জার ইংরাজী হস্তলিখিত জেড্ বর্ণ বা সংস্কৃত "দ" বর্ণের অমুরপ আকুতিতে দিখিত হয়। ডেমোটীক দিপিতেও উহা ক্রমশঃ বিক্লত হইরা আইসে। আবার সেমিটিক বর্ণমালার প্রতি লক্ষ্য করিলে দেখা যায় যে, উক্ত অক্ষরগুলি মিসরীয় সঙ্কেতলিপি (Hieratic) হইতে যেন গুংগত। মোআবাইট প্রস্তরফলকে সেমি-টিক অক্ষরে যে স্কপ্রাচীন শিলাফলক উৎকীর্ণ আছে তাহাতে mঅক্সর স্থলে wy অক্সর অন্ধিত দেখা যায়। উহার সহিত মিসরীয় সঙ্কেতলিপির m বর্ণের অনেক সাদৃশ্য আছে। স্তরাং মোআ-বাইটু **অক্তর হইতে প্রাচীন গ্রীকের** খা অক্তরের উৎপত্তি। কল্পনা করা যায়। উহা হইতে পরবন্তী সময়ে পরিবর্ত্তন নিয়মে গ্রীকভাষার M বা м অক্ষর উত্তত। ইহার পরে গ্রীকলিপি ইতালীতে উপনিবেশ স্থাপন করে। সেই গ্রীকদিগের সংস্পর্শে আসিয়া রোমকগণ বর্ণমালার Roman capipal M গ্রহণ করিয়াছিল। সেই রোমক অব্দর হইতে স্বছাঁদবিশিষ্ট ইংরাজী m অক্ষাবৰ উৎপত্নি।

মিসরীয় সংক্ষতনিপিতে ব্যক্ষন ও অগ্ধব্যক্ষন বর্ণের প্রাধান্ত থাকায় মিসরীয় ধাতুগুলি সাধারণতঃ তিনটী অক্ষরে গঠিত হইয়াছে, এ সম্বন্ধে চীনভাষার সহিত মিসরীভাষার অতি নিকট সম্বন্ধ। টলেমিবংশের অধিকার পর্যান্ত স্থপ্রাচীন মিসর-রাজ্যে সক্ষেত্তলিপিরই প্রচলন ছিল। পরে অপেকারুত স্থবিধান্তনক ও সহজ্ঞানেথ গ্রীক বর্ণমালার প্রচলন হওরায় উহা একবারে লুপ্ত হইয়া গিরাছে।

১৮০২ খুটাকে আকেররাদ্ নামক একজন স্থইড্ মিসরীয় বর্ণমালার উদ্ধারের চেটা পান, ঐসমরে গ্রোটকেও পারছ রাজ্যান্তর্গত কতকগুলি কীলকলকের পাঠোদ্ধার করিয়া তাহার প্রথম উদ্ধান সাধারণের গোচরার্ধ প্রকাশ করেন। তৎপরে কান্দোলিরোঁ ও টমাস ইরাং বিশেব অধ্যবসারের সহিত মিসরভাষা আলোচনা করিতে থাকেন। তাহারা অনেক গবেষণার পর, রোজেটার প্রস্তর্গলিপির সাহায্যে প্রাচীনভাষা উদ্ধারে পথ বিস্থত করিয়া দেন। গ্রোটকেও ও সর হেন্রী রালন্সন

৫১৬ খুই পূর্কাব্দে দরাহুস বিত্তাল্য কর্তৃক উৎকীর্ণ কীলকলকের পাঠোছার করিরা কীলকলকপাঠের যথেষ্ট প্রবিধা করিরা দেন। কীললিপির পাঠোছার হইতে প্রকৃতপক্ষে পারসিক্দিগের পবিত্র ধর্ম্মগ্রছ অবন্তালাত্রপাঠেরও বিত্তর প্রবিধা হর। কারণ কীল-লিপির ভাষা ও অবন্তার ভাষা প্রশ্পরে বিশেষ নৈকটাসখন্দ্রক।

যথন প্রাচীন পারক্তিদির পাঠোছার হয়, তথন স্থপান ও বাবিলোনিয়ার সমান্তরাল স্বস্তুশ্রেণীর গাত্রোৎকীর্ণ লিপি পাঠের আলা হয়। পারবর্তিকালে এলিয়া মাইনরের নানাস্থানে কীলালিপি আবিষ্ণত হওয়ায় উক্ত ভাবালোচনার পথ অনেক স্থাম হইয়াছে এবং নিনিভে ও বাবিলনের ধ্বন্ত অুপরাশির অভ্যন্তরনিহিত মুৎফলকসমূহের পাঠোছার হইয়া য়ুব্রেটিস্ উপত্যকার ইতির্ত্তকে সন্ধীব করিয়া তুলিয়াছে। আকেদিয়ান ভাষায় কর্ণকে "পি" বলে। কীলাকার লিপিতে "পি" লিখিতে যে ভাবে কীলকগুলি (হা) বিশ্বন্ত হয় ভাহায় সহিত বালালা প্, হিক্র "পি" ইংরাজি P এবং সংস্কৃত শ্বন্তর বিশেষ সার্গ্র্ভ আছে।

অন্থ্যীয় ও বাবিলোনীয় হইতে এই কীলাকার লিপি বিভিন্ন দেশে বিস্তৃত হয়। কিন্তু ঐ সময়ে অপরাপর জাতির মধ্যে আর একটী ভিন্ন ভাষা প্রচলিত ছিল। তাহা কীললিপির উৎপাদক ক্রমারীয় জাতি বা তাহাদের বিজেতা সেমিতিক বাবিলোনীয় দিগের তাবা হইতে সম্পূর্ণ বিভিন্ন। এসিয়ার বিভিন্ন স্থানে, এমন কি, ইজিয়ান সাগরন্থিত বীপপ্রান্ধে এই ভাষার বহশত শিলাফলক বিশ্বমান আহে। ঐ ভাষা হিটাইট (Hittite) নামে কথিত। ইহার লিপিকৌশল প্রথমাবস্থার চিত্রলিপি সন্তুত হইলেও আক্রমিক পরিণতিতে ইহা বাবিলোনীয় লিপি হইতে সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র। অনেক চেটার পর, এই ভাষার ক্লাক-লিপিসমূহের পাঠোদ্ধারকার্য্য আরম্ভ হইয়াছে বটে, কিন্তু এখন ও ভাষার প্রস্তু পছা নির্দ্ধারিত হয় নাই।

প্রাচীনকালে পিলোপেনিজ্ হইতে একটা গ্রীক উপনিবেশ সাইপ্রাস্থাপে বাইয়া বাস করে, তাহারা যে ভাষায় কথা কহিত, তাহা অনেকাংশে আর্কেডিয় ভাষার অমুরুপ। সমগ্র গ্রীক জাতির মধ্যে এই শাখাই বর্ণমালার লিখিতে জানিত না, তাহারা এনিয়া-বাসীর সংস্রবে পড়িরা ধস্তাত্মক বর্ণলিপির অমু-সরণ করে। বিখ্যাত পারস্ত্যুদ্ধের অবসানে সাইপ্রাস্থাপ গ্রীকরাজের অধীন হইলে, গ্রীক ঔপনিবেশিকগণ অলাতীয়ের সংস্রব লাভ করে বটে, কিন্তু তাহারা মূল গ্রীকদিগের অভ্যন্ত বর্ণলিপি গ্রহণ না করিয়া আপনাদের পূর্ব্বতন শন্দলিপিই ব্যবহার করিতে থাকে।

সম্রতি বৃটাশ মিউজিয়মের কর্তৃপক্ষদিগের বত্তে সাইপ্রাস

বীপের থবত তৃপরাশির খননকার্য আরত হইরাছে। ভূগত আবেবণ করিতে করিতে তর্মায় হইতে খুই পূর্ব ৪র্ম শতাকে উৎকীর্গ এক থানি শিশাকলক দেখিতে পাওরা বার। ঐ কলক থানিতে ডেমিটার ও পার্শিকোনের উদ্দেশে উৎসর্গীকৃত ব্যাপারাংশ গ্রীক বর্ণমালার এবং তরিয়ের ঘটনাবলী শক্ষাপিতে উৎকীর্গ রহিরাছে। উহার গ্রীক বর্ণমালার পাঠপ্রগালী বাম-দিকে আরম্ভ করিরা ক্রমশঃ দক্ষিণে আনিতে হর এবং শক্ষাপির প্রথা তাহার সম্পূর্ণ বিপরীত অর্থাৎ বর্তমান আরবী বা পারসীর ভার দক্ষিণ হইতে বাম দিকে। এই শাক্ষাপিতে ৫টা খর-বর্ণের চিক্ক আছে, কিন্তু তাহার রুল বা দীর্ষ খরের পার্থকা নির্ণয়ের স্থবিধা এবং বাঞ্জনবর্ণে ও জিক্ষামূলীর ভালতা বা অন্থ-নাসিকাদির উচ্চারণনির্ণয়ের উপায় নাই।

পাশ্চাভা বর্ণমালার উৎপত্তি।

গভীর গবেষণার সহিত সাইঞ্রীয় বর্ণমালা আলোচনা করিতে করিতে বত:ই মনে বর্ণমালার উৎপত্তিপ্রসন্ধ আসিরা সমূদিত হর। পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণের বিশাস, এই শর্ণমালা ফিনিসিরা ও গ্রীস হইতে প্রথমে ভূমধ্যসাগরোপকুলবন্তী দেশসমূহে এবং পরে তথা হইতে দুৱবৰ্ত্তী জনপদসমূহে পরিব্যাপ্ত হইয়াছিল। ১৮৫৯ খুঠাকে ইমানুয়েৰ ডিক্লান Academie des Inscriptions সভার শিপিতবের যে অভিমত প্রকাশ করেন, তাহাতে তিনি মিসরীয় হাররোমিফিক বা চিত্রলিপির অভিশপ্ত বা কুৎসিত আরুতি হইতেই ফণিক বর্ণমালার উৎপত্তি শীকার করিরাছেন। তিনি এতছভয় বৰ্ণমালার সামগ্রন্থ সাধনকালে উভয় ভাষাগভ কতকতলৈর অপুর্ব বৈষ্মা অবধারণ করিরা গিরাছেন। ১৮৭৭ খন্নালে অধ্যাপক Dercke ইমান্তএল ক্ষত্তের মত খণ্ডন করিয়া বলেন যে, অপেক্ষাকৃত পরুষ্ঠি-কালের বিকৃত অস্তরীয় কীল-লিপি হইতে সেমেটিক বর্ণমালার উৎপত্তি এবং ফণিক ভাষাও সেই অসুরীয় বর্ণমালার নিকট ঋণী: কিছু এ বিষয়ে প্রমাণা-ভাব। যদি প্রমাণ পাওয়া যার, তাহা হইলে অবপ্রই স্থীকার করিতে হইবে যে, কণিক বর্ণমালা বর্ত্তমান নির্দ্ধারিত যুগ অপেক। আরও সহস্রাধিক বৎসরের প্রাচীন বলিয়া গ্রহণ করিতে হইবে এবং বর্ণমালার ইভিহাসে একটা বুগান্তর সাধিত হইবে।

আবার মিসরের ধব্দ ন্তুপ্রাশি আবেশ করিতে করিতে অধাপক ক্লিগুলে পিটি ১৯০০ খুইান্দে আবিভোদ নগরের রাজসমাধিকত্তে বে লিপি (Symbols like alphabetic obaracter) উৎকীণ দেখিতে পান, তাহা প্রাচীন হাররোগ্লিফিক্ ও চিক্লিপির সংযোগে উৎপার। মিসর রাজ্যের ইতিহাসোক্ত প্রথম রাজবংশের রাজক্লালেরও পূর্ব্বে অথবা বৃষ্টপূর্ব্ব ৬০০০ বংসর হইতে ১২০০ খুঃ পুঃ পর্যন্ত ঐ চিক্লিপি অবাধে মিসররাজ্যে

প্রচলিত ছিল। খু: পু: ৮০০ অব্দেরও পূর্ববৃগের উৎকীণ ক্রীট বীপের শিলাফলকেও ঐ চিক্লিশির নিদর্শন আছে। ইহা বারাও পরবর্ত্তী মিশরী ভাষার বর্ণমালা হইতে জিণিকগণ কর্ত্ত বর্ণনিপির পরিপৃষ্টি সম্বন্ধীর পূর্বাসভান্তিত মীমাংসাও অপ্রতিপর হইতেছে।

১৯০০ খুঙাকে ক্রীট খীপের ভূগর্ডে মি: ইভাল বে সকল লিপিপূর্ণ মুংকলক পান, তাহার লিপিগুলি মিপরীর চিত্রলিগির অন্থরূপ। উহার ৮২টী চিত্রমধ্যে তটা মন্থব্য বা তাহাদের শ্রেডিক্লতি ১৭টী অল্লাক্লতি, বন্ধ ও বাছবন্ধ, গৃহ, গৃহাংশ বা রক্তন পাত্রাদি; তটা সামৃদ্রিক জীবচিত্র; ১৭টা পশু ও পক্ষীমূর্ত্তি; ৮টা রক্ষ ও গুলাদি, ভটা গ্রহনক্ষত্রাদি, ১টা ভৌগোলিক চিত্র, ৪টা জ্যামিতমূলক চিক্ত এবং ১২টা অপর চিক্ত ছিল। এই ১২টা কি বর্গ ভাহা আজিও আবিষ্কৃত হয় না। নোসদের (Kuosson) প্রবিধ্যাত প্রাসাদের ধ্বত্তত্বপূপ হইতে প্রাপ্ত ফলক-থানি মাইকিনি খাঁপের আদিম অধিবাসীর উৎকীর্ণ বলিয়া সাধারণের ধারণা।

ইভাল ঐ মৃৎফলক পাঠে অবগত হইয়াছিলেন যে,এখানকার অধিবাসিবর্গ মাইকিনীর বিজেত্ললের অধীন ছিল। মাইকিনীরগণ এখানে নবাগত হইলেও ভাহাদের লিপিও অপেকারত প্রাচীনতম ছিল, কেন না এখনও আবিভোস্ হইতে প্রাপ্ত ফলকে মাইকিনীর লিপির বে প্রতিকৃতি রহিয়াছে, তাহা মিসরের প্রথম রাজবংশের পূর্কবন্তী সমরের মৃৎপাত্রন্থ চিত্রলিপি অপেকা প্রাচীন না হইলেও যে ভাহার সমসাময়িক, ভাহাতে কোন সন্দেহ নাই। এই লিপিপ্রথার বর্ণগুলি আক্রিক কি

এক সমরে এই বীপ হইতে সভ্যতালোত কারিরা ও
লাইসিয়ার প্রবাহিত হয়। কারিয়াগণ ক্রীট হইতে এসিয়ার
উপকৃলে আসিয়া উপনিবেশ হাপন করিলেও, তাহাদের ভাষা
বা লিপির সহিত কৌমাস্ (Caunus)-বাসিদিগের লিপির
অনেক সাল্ত দেখা বায়। নোসসের ফলকপাঠে অহুমান হয়
বে, কারির ও মাইকিনীয়গণ পরস্পরে নিকট সম্বক্ত এবং
কারিয় ও লাইসিয়গণও পরস্পরে বিশেষ ভাবে সংলিই, কিন্ত
ছ:থের বিবয় ভাহাদের ভাষাগত সাল্ত কত্তর। উহা আদৌ
ইন্দোব্রোপীয় কেল্ডসভ্ত বলিয়াই ধারণা করা বায় না।
পক্ষারের ক্রিলীয় ভাষায় উৎকীর্ণ ফলকাদিতে গ্রীক লিপির বথেই
সাল্ত অন্ত্রত হয়। উপরোক্ত ভাষাক্রের উৎকীর্ণ শিলাফলক
গুলিয় মধ্যে একটাও বৃষ্ট পূর্ম ১৯ শভানীর পরবন্ধী নহে।
গ্রিরা-মাটনর (বিশেষভঃ লাইসিয়)-বাসিগণের ক্ষিত ভাষার
সহিত গ্রীকভাষার অনেক শক্ষেব্যয় লক্ষিত হয়। এভক্রয়।

প্রতীরমান হয় বে গ্রীক অকর হইতে ঐ ভাবার বর্ণচিক্ অনেক বতাঃ। অনেকে এমনও অকুমান করেন বে, রোডস্ বীপের ভোরিয়া লিপির সহিত প্রীক অকর মিশিয়া এই বর্ণমালার উৎপতি হইরাছে।

উপরে যে মোজাবাইট্ প্রান্তর্কশকের বিবরণ বর্ণিত হইরাছে, তাহা নি:সন্দেহে খুই ৮৯৫ জন্মের পূর্ববর্ত্তী সময়ে উৎকীণ বলা বাইতে পারে। ঐ মোজাব ভাবা বা তাহার বর্ণচিক্ত আক্ষরিক পরিপুটির কীর্ত্তিক্ত বলিরা গৃহীত হইলেও, সমগ্র মুরোপের বর্ণচিক্তের বিভারকর্তা ফণিক ভাষা হইতে পৃথক্। ১৮৭৬ খুইান্দে সাইপ্রাস্ বীপে ব্রোঞ্জ ধাতু নির্মিত যে পাত্র পাওয়াছে, তাহা সিদোনীয়রাজ হিরামের ভূতা কর্তৃক বাল্লেবেনোনের উদ্দেশে উৎস্গীকৃত হইয়াছিল। উহাতে যে খোদিত লিপি আছে, তাহা ফণিকলিপির প্রাচীনতম নিদর্শন। কেহ কেই উহাকে মোজাবাইট্ ফলকের পূর্ববন্তী, কেই বা পরবর্তী বলিয়া গ্রহণ করিয়া থাকেন।

উপরে বর্ণালপির উৎপত্তি, পরিণতি বা বিস্তার প্রসক্ষে বাহা লিখিত হইল, তাহার কোনটী হইতে যে পাশ্চাত্য বর্ণ-লিপি গৃহীত হইয়ছে তাহা কোন পাশ্চাত্য পণ্ডিডই মীমাংসা করিতে পারেন নাই। তাহাদের ধারণা ফণিক বর্ণমালাই মুরোপীয় সমগ্র বর্ণমালার আদি। অধ্যাপক পিটর গাইল লিখিয়াছেন:—"Whenever the Symbols originated, it was to the Phoenicians that the Western world owed its alphabet, as is clear (1) from the forms of the letter themselves; (2) from the names which the Greeks gave to them; (3) from the Greek tradition of their origin."

১৮৯৬ খুষ্টাব্দে থেরা দ্বীপে কডকগুলি প্রাচীন শিলালিপি আবিষ্কৃত হয়। পতিতবর Freiherr Hiller Von Gartringeu উহার পাঠোদ্ধার করিয়া দেখাইরাছেন বে, প্রাচীন গ্রীক বর্ণমালার সহিত ফণিক বর্ণমালার মথেই সাদৃশু আছে।

বাহা হউক, এই ফণিক জাতীর বণিকসমিতির দ্বারা পশ্চিম
রুরোপ খণ্ডে এবং ভূমধাসাগর তীরবর্ত্তী প্রদেশে বর্ণমালার
বিস্তারকরে মানবজাতির বিশেব উরতি ও ঐতিহাসিক পরিণাত
সাধিত হইরাছিল। অনম্য উৎসাহে ও অধ্যবসায়ে এই ফণিক
লাতি অতি প্রাচীন কালেই মিসর রাজ্যবাসীর সহিত বাণিজ্য
সক্ষ বিস্তার করে। এই সমরে তাহারা বাণিজ্যের প্রয়োজনীয়তাভূসারে মিসরীর লিপিপ্রথা কতক পরিমাণে পরিবর্তিত করিয়াছিল। এরূপ হলে ইহাই শ্রীকার করা বাইতে পারে বে,
ভাবারা সম্বেশে থাকিরাই জটিল চিঞ্লিপি বর্জন করিতে

শিধিরাছিল এবং অক্তান সম্ভেড চিক্ত আপনাদের বর্ণমালা মধ্যে সল্লিবিট করিল। কাইরাছিল। কিন্তু বান্তবিক পক্ষে ফনিক সম্প্রদার মিসরীয় সঙ্কেতলিপি ও তাহার উচ্চারিত স্বরাদি গ্রহণ করিয়াছিল কি না, অথবা তাহারা মিসরীয় সভেতলিপি গ্রহণ করিয়া তাহাতে স্থাপনাদের শ্বর সংযোজনা করিরাছিল কি না তাহা সঠিক নির্ণন্ন করা ছঃসাধ্য। তবে স্বীকার করিতে হইলে এই মাত্র বলা বাইতে পারে বে, সান্ধেতিক ও তাহার অমুদ্ধণ প্রাচীন শব্দই কণিকদিগের উদ্ধাবিত হওয়াও বিচিত্র নছে। তবে এ কথাও ঠিক,ফনিক বর্ণমালার যে সকল নাম প্রদক্ত হইয়াছে এবং মিদরীয় সঙ্কেতলিপিতে বে সকল মৌলিক বন্ধর চিত্র উদ্বাটন করে, তহুভয়ের মধ্যে কোন সম্বন্ধ নাই। বেমন হিক্র "আলেফ্"এর সহিত ফনিক বর্ণমালার বে তুলা আছক্ষর, তাহার সহিত বুষমুণ্ডের কারনিক সাদৃত্য আছে এবং দিতীয় হিক্র অক্ষর "বেধ্"এর সহিত একটা চতুরত্র বাটীর সৌসাদৃশ্য দেখা যায়। কিন্তু বন্ধতঃ বুৰুমুখাক্লতি ঐ ফনিক বৰ্ণটী ছাড়া-তাড়ি লিখিতে হইলে বুষমুখের পরিবর্ত্তে অনেকটা ঈগল পক্ষীর ঠোটের ক্রার হইয়া আইসে এবং সেইরূপ ক্রত প্রণালীতে বেথ অক্সরটাও বক্ষের ভার বক্রগ্রীব হইরা বার। ইহাতে পাশ্চাতা পশ্চিতগণ অনুমান করেন যে, ফনিকগণ চিক্ত ও শব্দ বা সর্মাত গ্রহণ ক্রিয়াছিল, কিন্তু তাহারা বর্ণের নামগ্রহণ করে নাই।

পরবর্ত্তিকালে ফনিকদিগের হারা ফনিক বর্ণমালার কতদ্র পৃষ্টী সাধিত হইয়াছিল, তাহা লিপিচিত্র এবং ফলকাদি নিরীক্ষণ করিলেই স্কুম্পষ্ট প্রতিভাত হইবে। উত্তর ইজিপ্টের আর্সিম্বেল নগরন্থ স্কুরুছৎ প্রতিম্বিল্রম্ভের পাদমূলে সমেতিকাসের বেতন-ভোগী গ্রাক্, কোরিয়া ও ফনিকসেনাদল হু হু জাতীয় ভাষায় আপনাপন নাম অন্ধিত করিয়াছিল। ইহার পরে, খুইপুর্কা প্রায় ৩০০ অন্দে বাইরোসের ষ্টেলিতে, এসমাল্লারের প্রস্তর-নির্দ্ধিত শ্বাধারে, কার্থেজের ধ্বস্তস্থূপ মধ্যে এবং প্রাচীন সিডোন্ উপনিবেশে ঐ সকল লিপির যে সকল ফলক পাওয়া গিয়াছে, বাহ্ম আকৃতিকে ভাহা প্রায় একরূপ; কিন্তু সর্ক্রিরারই অভিসামান্ত প্রভেদ দৃষ্ট হয়।

এই সকল শিলা বা মৃৎফলকে বে সকল আক্ষর বাবকৃত হইরাছে, তাহা পূর্অবর্তী জাক্ষরিক লিপিচিক্লাপেক। সরু ও লখা; অতরাং বেশ ব্যা যার বে ঐ লিপিপ্রগালী তথন শিলা-ফলকের পরিবর্তে বাণিজ্ঞাকার্যোর উপযোগী হইরা দীড়াইরাছে। কারণ বাণিজ্যের ব্যস্ততার লেখা কিছু ক্রত ও সক হইরাই পড়ে। পাথরে খুদিবার জন্ত মোটা ইাদের আক্ষর আবস্তুক।

ষ্থন ফ্নিক্ব্ণুমালা পাশ্চাভাভূথতে আপনার অলোভূত

অক্রালিপির পরিপৃষ্টি ও উৎকর্মতাসাধনে তৎপর ছিল, ঠিক সেই সময়েই প্রাচ্যজনপদসমূহে ভ্রমজ্রোতে বর্ণমালা ও লিপি-প্রচার কার্য্য চলিতেছিল। পাশ্চাভা-পশ্ভিদ্ধগুণের বিশ্বাস, পূৰ্কাথণ্ডে দেমিটকজাতিই দৰ্কপ্ৰথমে কতকগুলি অসম-বণীয় চিহ্ন লইয়া ভাষালিপিয় প্রতিষ্ঠা করে এবং তথা হইতে ক্রমশ: দূরদেশে বিভূত হয়। কিন্তু উহা কওদুর যুক্তিসিছ, তাহা পূর্ব্বাপর আলোচনা করিলে বেশ বুঝা যায়। মেদার কর্ত্তক আরব দেশ হইতে আবিষ্কৃত গুপ্ত লীর কোন কোনটার লিপি খুষ্ট পূর্ব্ব ১৫০০ অব অপেকাও প্রাচীন : স্থাতরাং যদি ভাষা হইতে **বর্ণমালার উৎ**পত্তি ও প্রচার স্বীকার করা বায়, ভাহা হইলে পূর্ক মীমাংসিত লিপিতত্ত্বের ভিত্তি আরও প্রাচীন যুগে আসিয়া পড়ে। তৎপরে খুট পুর্বা ৭০০ অব্দের প্রাচীন করটি সেমেটিক লিপির নিদর্শন পাওরা বার। হোজ-কিয়ার রাজত্ব কালে মোআবাইট প্রস্তব্বে এবং নিলোরামের প্রকরিণীর স্রডন্ত মধ্যে প্রাপ্ত হিন্তেলিপি এবং বল লেবানোনের পাত্রত্ব লিপিতে ফনিক ছাঁদের সেমিটিক অক্ষরের লিপি বিশ্বমান আছে। এতদ্বির লাফিদ ও অস্তান্ত নগরে প্রাপ্ত মৃৎ-পাতাদিতে যে সকল হিত্ৰখৰ্ণ চিষ্ণ এবং হিত্ৰু শিলাশিপি পাওয়া গিয়াছে, ভাহাও ভদমুরূপ প্রাচীন বলিয়া গৃহীত হইয়া থাকে। ফনিকমিগের স্থার এই হিক্র চিক্রুপেলিও বিশেষ বক্রাক্রতি।

দ্বিহুদীগণ নির্মাননের পর ক্রমে ক্রমে অনমীর্দিপি অভ্যাস করিতে থাকে। তাহা হইতেই ক্রমে চতুকোণ হিক্রবর্ণ-লিপির উৎপত্তি হয়। এক মাত্র সামারিটান্ কাতিই সেই প্রাচীন ও বক্রাক্লতি হিক্রনিপিই আশ্রম করিয়াছিল, সেই কারণে তাহারা আপনাদিগকে প্রকৃত হিক্র বলিরা গৌরব করিয়া থাকে।

অর্মীয় লিপির প্রাচীনতম নিদর্শন সিরিয়া রাজ্যের অন্তর্গত নিন্দ্ লিলি নগরে পাওয়া গিয়াছে, উক্ত ফলকলিপি প্রায় ৪০০ খুই পূর্ব্বাকে উৎকীর্ণ হইয়াছিল। এই অর্মীয় লিপির সহিত পূর্ব্বাকে মোজাবাইট্ প্রেল্ডরলিপির তেমন ইতর বিশেষ নাই। আত্মমানিক ৫০০ খুই পূর্ব্বাকে পাপিয়াস্ পত্রপটে যে সকল অর্মীয় লিপি লিখিত হইয়াছিল, সেইরূপ অক্ষরমালা খুই পূর্ব্ব ২০০ অব্দ পর্যান্ত বিশ্বমান থাকে। এই সমরে মিসরদেশে পারক্তরাজপ্রতাব অপ্রতিহত ছিল। এইরূপ বক্তাক্তি বা জড়ানে অয়মীয় লিপির সহিত অক্সরীয় কীলক্ষক পার্থই চূক্কাংশ লিখিত অর্মীয় লিপির সহিত অনেক সোসাদ্তা আছে। অর্মীয় লিপি তাড়াতাড়ি ও জড়ানে লিখিতে ক্রনে গোলভাব ধারণ করে, কারণ ক্ষমিক লিপিতে অক্সরের হলগুলি সাধারণতঃ স্বান ছিল। অক্সরের চান বা হলগুলি গোল হওয়ায় অর্মীয় অক্সর ক্রনে চতুক্ত হিক্ত

লক্ষরে পরিণত এবং তাহা হইতেই ক্লমে Palmyraর অক্রত দিপির (Ornamental writing) বিকাশ ঘটিয়াছে।

আরবজাড়ির নবতীরদিগের মধ্যে পূর্কে এই অর-মীয় বর্ণলিপি প্রচলিত ছিল। **উহাদের অ**ক্ষরের ছাঁদ**গু**লি অন্ন পরিবর্ত্তনেই ভাহা বর্ত্তমান আরবী অক্ষরে রূপান্তরিত হইয়া যায়। উত্তরপূর্ক আর্বদেশের তিসার মন্দিরভত্তে এই শ্রেণীর লিপি বিশ্বমান আছে। উহা খুইপুর্ব ৫ম শতান্দের পূর্বে উৎকীণ হইয়াছিল। এই লিপিতে প্রাচীন অৱমীয় দিপির অনেক ছাঁদ বিছমান দেখা যার। তৎপরবর্ত্তী সময়ের অনেকগুলি নবতীয় শিলালিপি আবিষ্ণত চইরাছে। সমরের ভারতম্যামুসারে ঐ কলকলিপিগুলির যথেষ্ট পরিবর্তন ঘটিয়াছে। চাল স ডৌট, হবার ও ইউটিং প্রকৃতি পঞ্চিমগুলী বিশেষ গবেষণার সহিত ঐ ফলকের পাঠোন্ধার করিয়া সেই লিপি-ালার বর্ণসমহের ক্রমবিকাশ দেখাইবার জন্ম একটা ভালিকা উদ্ধান্ত করিয়াছেন। ঐ শিলাফণক প্রধানতঃ ৯ খুষ্ট পূর্ব্বাফ এইতে ৭৫ খুষ্টান্দ মধ্যে উৎকীর্ণ হইয়াছিল। ইহার লিপিপর্যায় অনুসূৰণ করিলে সহজেই কঠমান আর্বী লিপির বর্ণবিস্থাস অমুভৰ করা যাইতে পারে।

আরব দেশে কিউফিক ও নয়কি নামে ছই প্রকার বর্ণমালার ব্যবহার ছিল। শিলালিপি ও মুদ্রাদিতে সাধারণতঃ প্রথমোক্ত লিপিই ব্যবহৃত, এই কারণে সাধারণ কার্য্যে তাহা অস্ত্রবিধাননক বোধে পরিত্যক্ত এবং সাধারণ লিপিতে অপেক্ষাকৃত শুড়ানে ছাঁদের বর্ণমালা গৃহীত হইরাছে। এই শেবোক্ত মহ্কি লিপিই বর্গমান আরবীলিপির জননী।

দিরিয়ার উত্তরবাসী খুষ্টানদিগের মধ্যে এট্টালালিয়া নামে
ভাব একপ্রকার অরমীয় লিপির প্রচলন আছে। নেষ্টো-

রীর মিসমরীদল ঐ লিপি ষধ্যএনিরার লইরা বার, পরে ভাহা ক্রমে তুর্কমান্ হইডে মাঞ্রিলা পর্যান্ত হুদীর্ঘ জনপদ্বাসীর লিপিরণে পরিগণিত হয়।

উপরোক্ত নিপি বাতীত, আরবদেশের দক্ষিণস্থিত বেনেন প্রদেশে আর এক প্রকার নিপি প্রচলিত ছিল। উহার বর্ণগুলি দক্ষিণ দেমিটিক, বা ইথিপুশির নিপি নামে পরিচিত।
ব্যাকরণ ও বাক্যবিস্থানের ক্রমনির্ণর বারা এই সকল
ক্ষণ সেমিটিক নিপিরও সেবীর ও মাইনীর নামে হুইটি
বিভাগ গঠিত হইরাছে। ক্ষম্পান্ত শিলানিপির ভার, এই সেবীর
লিপি দক্ষিণ হুইতে ক্রমশঃ বামন্ত্রিক লিখনেরই রীতি ছিল,
কিন্তু কতকপ্রলি ইথিওপিক ক্ষলকলিপিতে বাম হুইতে ক্রমে
ক্ষিণে লিখিয়া বা পড়িয়া ঘাইতে হয়। কোন সময়ে দক্ষিণ
আরবে সেবীয় ও মাইনীয় লিপির প্রান্তর্ভাব ছিল এবং
কোন সময়েই বা চিরস্তান প্রশিক পাছর্ভাব ছিল এবং
কোন সময়েই বা চিরস্তান প্রশিক বিরাগ তিম্বিগীত অর্থাৎ বাম
হুইতে দক্ষিণাভিমুখী ইথিওপিক প্রথা প্রবর্ত্তিত হয়, তাহা
আজিও নির্ণীত হয় নাই *।

ভারতীয় খরোষ্টালিপির স্থার, পারহা, আরব, সেমিটিক, সাইপ্রির লাটন, ফিনিক প্রভৃতি বাবতীয় পাশ্চাত্য ভাষারই লিপিপ্রণালী দক্ষিণ হইতে বামমুখী ছিল, খুইপুর্ব ৮ম শতাব্দেব উৎকীর্ণ ডিপিলনের স্থ্রহৎ পাত্রোপরিস্থ প্রাচীন আটিক লিপি, কিউরীয় হইতে প্রাপ্ত সাইপ্রীয় কলকলিপি ও তাহার নিমন্থ গ্রীক সমবর্গগুলি এবং প্রিনেষ্টির গোল্ড ফাইবিউলার উপরিস্থ প্রাচীন লাটিনলিপি প্রভৃতি দক্ষিণ হইতে বামমুখীলিপির নিদর্শন।

[সংখ্যালিপি, স্বর, দেবনাগরী প্রভৃতি শব্দ দেখ।]

পাশ্চান্ডা মঙ্গে বর্ণমালার ক্রমবিকাশ হাইরোগ্লিফিক (চিত্রলিপি) হাইরাটক (সঙ্কেতলিপি) আচীন গ্ৰীক - দেমিভিক = কীললিপি (Cuneiform) আকাডিয়ান ৰাবিলোনীয় গ্রীক সেমিতিক অস্থরীয় সামারিটান অর্মীয় কোপ্তিক প্রাচীন আরব হিক্র প্রোটোমিডিরা এই ক্লোলীয় রোমক বা লাটন কণিক পারসিক সিরীর বর্তমান আরব সেবীয় ই:লিস আংলো সাক্ষমন মঙ্গোলিয়া 지학

লেপ্নিউদ্ বলেন, এই ইথিওপিক বর্ণনালার অধিকাপে আচীন ভারতীয় লিপি হইতে পরিসৃহীত।

বর্ণলৈথিকা (ত্রী) বর্ণলেখা স্বার্থে কন্। টালি অভ ইন্ধ:।
কঠিনী। ২ খড়ি। ২ লেখনোপধোগী খুব্ধি।
বর্ণবিধ (ব্রি) বর্ণোহস্তান্ত বর্ণ (রসাদিভাশ্য:) পা ধাহা৯৫) ইভি
মতুপ মক্ত বঃ। বর্ণবিশিষ্ট। ক্রিরাং ঙীব্। বর্ণবতী ছরিক্রা।
(প্রটাধর)

বর্ণবর্ত্তি, বর্ণবর্ত্তিকা (জী) লেখনী (Pen বা Pencil)। বর্ণবাদিন্ (পং) প্রদাংসাকারী। স্ততিকারক। বর্ণবিকার (পং) বর্ণের বিকার। যেমন ষোড়শ। বষ্দশ, দ স্থানে উ ও য স্থানে ড ইহার পদ হইল = যোড়শ।

(কাতন্ত্ৰপঞ্চিকায় ক্রিলোচনদাস)

বর্ণবিলাশিনী (ন্ধী) হরিদ্রা।
বর্ণবিলোড়ক (পুং) বর্ণান্ বিলোড়য়জীতি বি-লোড়-খুল্।
শ্লোকন্তেন, যে ব্যক্তি অন্তের লিখিত বিষয় চুরি করিয়া নিজের
বলিয়া পরিচয় দেয় । ২ সন্ধিচৌর, সিঁদেল চোর।
বর্ণবৃত্ত (ক্লী) অমুঠুভ, ইক্লবন্ধা প্রভৃতি সাধারণ লোক, যাহাদের
বর্ণ ধরিয়া ছনেলাগণনা করা হয় । [মাত্রাবৃত্ত দেখ ।]
বর্ণবৃত্ত (স্থী) বর্ণাভ্যাস ।
বর্ণবিশ্বন্ত (পুং) বর্ণের্ শ্রেষ্ঠ । বর্ণের মধ্যে শ্রেষ্ঠ রাহ্মণ ।
চারিবর্ণের মধ্যে রাহ্মণ প্রধান ।

বর্ণস (ত্রি) বর্ণযুক্ত। (পা ৪।২।৮০ তৃণাদিগণ।।
বর্ণসংযোগ (পুং) সবর্ণ বিবাহ।
বর্ণসংস্ক্র (পুং) অসবর্ণ বিবাহ।
বর্ণসংস্কার (পুং) অসবর্ণ বিবাহ দারা সবর্ণের নাশ। ২ আক্ষ

ণাদি চারিবর্ণের একত্র সন্মিলনী। বর্ণসক্ষর (পুং) বর্ণতো ত্রাহ্মণাদিভাঃ বর্ণানাং বা সঙ্করো নিশ্রণং

বর্ণসঙ্কর (পুং) বণতো ব্রাহ্মণাদিজঃ বণানাং বা সকরে। নির্পং

যত্র। মিশ্রিভজাতি, ব্রাহ্মণাদিকর্ণের অন্থলোম বা প্রতিলোমে

জাত জাতি।

গীতায় লিখিত আছে বে, যথন অধর্মের অত্যক্ত প্রাহ্র্জাব হয়, তখন কুললনাগণ দৃষিত হয়। তাহারা দৃষিত হইলে ঐ ললনাগণ হইতে বর্ণসক্ষর জাতির উৎপত্তি থাকে। বর্ণসক্ষর হইলে দেব ও পিতৃকার্যা লোপ এবং কুলধর্ম্ম ও জাতিধর্ম নাই হয়। মৃতরাং তখন সকলের নরক হইয়। থাকে।

"অধ্বাভিতবাং ক্লক ! প্রচ্বাক্তি কুলব্রিয়:।
ক্রীব্ হুষ্টাস্থ বাকের ! জারতে বর্ণসঙ্কর:॥
সক্রো নরকারের কুলমানাং কুলগু চ।
পতত্তি পিডরো ত্বোং লুপ্রপিণ্ডোলককিরা॥
দোবৈরেতে কুলমানাং বর্ণসন্ধরকারকৈ:।
উৎসাপ্তক্তে জাতিধর্মাঃ কুলধর্মান্ড শাবতা:॥

উৎসামুলধর্মাণাং মন্থ্যাণাং জনার্কন। লরকে নিয়তং বাসো তবতীভাতুওখনঃ ॥"

(ভগবদুগীতা ১ অ॰)

বান্ধণ, ক্ষত্রির, বৈশ্ব ও শুদ্র এই চারিটা বর্ণ, এই চারি বর্ণের ক্ষতিরিক্ষ আর বর্ণ নাই। চারিবর্ণের ক্ষতিরিক্ষ যে সকল লাভি দেখিতে পাওরা বার, তাহারা সম্বর লাভি: এই চারি বর্ণ হইতেই সম্বর লাভির উৎপত্তি হইরাছে। শাজে লিখিত ক্ষাহে বে, জীবিগকে ক্ষতি সামান্ত গ্রুংসল হইতে বঙ্গপূর্কক রক্ষা করিবে, ভাহা বা করিলে সেই স্তী পিভা ও বামী এই উভর কুলেরই সম্ভাগের কারণ হয়। পদীকে সর্কতোভাবে রক্ষা করা সকল ধর্ম্ম হইতে শ্রেষ্ঠ। কি হর্মল, কি সবল, কি ক্ষর, সকলেই নিজ নিজ ভার্মা রক্ষা করিতে ব্যর্থান, ইইকেন, এক ভার্মাকে রক্ষা করিলেই ধর্ম ও কুগ প্রিত্র হয়।*

ভাষ্যা স্থ্যক্ষিতা না হইলে তাহাদের মধ্যে ব্যভিচার ঘটিয়া থাকে, ভাহাতে বর্ণসন্ধর হয়। বর্ণসন্ধর হইলে ধর্ম ও কুল নাই হয়। ধর্ম ও কুল নাই হইলে ঐহিক ও পার্ম্মিক কোন রূপ নাকলের সন্ভাবনা থাকে না। এইলয় যাহাতে বর্ণসন্ধরত্ব না হইতে পারে, এবং বর্ণসন্ধরের মূল কারণ বে স্ত্রী জাতি ভাহাদিগকে অভিলয় বন্ধের সহিত রক্ষা করিতে হইবে। ইহাই শারের উপদেশ।

ইহা ভিন্ন আক্ষণাদি বৰ্ণজন্ধ বদি অধৰ্ম ত্যাপ করেন, তাহা হইলে তাহারাও বৰ্ণসন্ধর নামে অভিহিত হন। মন্ত্ৰতে লিখিত আছে বে, অভ্যোক্ত স্ত্ৰীগমন, সগোত্ৰে বিবাহ এবং উপনমুনাদি স্বধর্ম ত্যাপ প্রকৃতি কার্মেণ আন্ধণাদি বর্ণজ্বের মধ্যে বর্ণসন্ধর হ ঘটনা থাকে।

"ব্যক্তিচারেশ বর্ণানামবেক্সাবেদনেন চ। স্বকর্মণাঞ্চ ত্যাগেন কারতে বর্ণসঙ্করাঃ ॥" (মন্ত্র ১০।২৪)

"প্লেভ্যেইণি প্রসঙ্গেতঃ দ্বিরোইক্ষা বিশেবতঃ।
 র্য়েছি কুলরোঃ শোকমাবহেবুরবিক্তাঃ ॥
 ইমং ছি সর্কারণানাং পক্তরো ধর্মমুজমন্।
 বততে রক্ষিতৃং ভার্যাং কর্মারানিরেই চ!
 বচং প্রস্থিতঃ চরিএক কুলমারানিরেই চ!
 বচ্ছ ধর্মাঃ প্রক্রন্ম বি রক্ষতিঃ।
 ক্ষি ক্ষার্যাং বক্ষন্ম ক্ষার্যাং বক্ষ্মি।
 বি রক্ষ্মিকারা
 বি রক্ষ্মিকার
 বি রক্

 'ব্রাহ্মণাদিবর্ণানাং অস্তোভন্তীগমনেন সংগাত্রাভবিবাহা-বিবাহেন উপনৱনকপ্রকর্মভাগৈন চ বর্ণস্করে। নাম জায়তে' (কুল্লক)

শান্তামুসারে দেখা বার, ছই প্রকারে বর্ণসন্ধর হইয়া থাকে,

এক ব্রীদিগের ব্যক্তিচার হইতে চারি বর্ণের অভিরিক্ত যে

সকল জাতি ভাহারা প্রথম বর্ণসন্ধর আরু ব্রাহ্মণাদি বর্ণত্রয় অধর্ম
ভাগে হারা হিতীয় বর্ণসন্ধর হইয়া থাকে।

চারিবর্ণ হ**ইতে অন্থলো**ম ও প্রতিলোম ক্রেমে বর্ণসন্ধর আভি উৎপদ্ধ হয়। বিভিন্ন জাতি মধ্যে পরস্পন্ধ আসক্তিবশতঃ অন্যলোম ও প্রতিলোম ক্রেমে এই বর্ণসন্ধর জন্মে।

"नकीर्गानाता ए ज् अञ्जलामाञ्चलामकाः ।

অপ্রোপ্তবাতিষকাশ্চ তান্ প্রবক্ষাম্যশেষতঃ । (শক্ত ১০।২৫) ব্রাহ্মণাদি চারিবর্ণ কর্তৃক পরিণীতা স্ত্রীতে উৎপন্ন সন্তান বাহ্মণাদি বর্গ হইয়া থাকে। ইহা ভিন্ন অসবর্গা পদ্ধীতে উৎপন্ন সন্তান কনকের সমানবর্গ হয় না, তাহাদের কাত্যন্তর ঘটিয়া থাকে। মহাদি ঋষিগণ বলিয়াছেন যে, বিক্তবর্গন্তর কর্তৃক অসুলোমক্রমে অনন্তরবর্গনা পদ্ধীর গর্ভসম্ভূত তনরেরা মাতার হান জাতি হইলেও পিতার সদৃশ ক্ষাতি প্রাপ্ত হইনা থাকে এবং তাহারা বথাক্রমে মূর্দ্ধাবসিক্তা, মাহিষা এবং করণ এই তিন আখ্যা প্রোপ্ত হয়।

ব্রাহ্মণ ফর্ক একান্তরজ বা বৈশ্বাগর্ভসমূত সন্তান অষ্ঠ ও দ্বান্তরঙ্গ শূদ্রাগর্ভসমূত সন্তান বিশ্বাদ বা পারশব এবং ক্ষত্রিয়কর্ত্বক শূদ্রাগর্ভসমূত সন্তান উগ্র নামে অভিহিত। ক্ষত্রিয় কর্তৃক ব্রাহ্মণীগর্ভসমূত সন্তান হত, বৈশ্ব কর্তৃক ক্ষত্রিয়াগর্ভসমূত হাগ্রদ এবং ব্রাহ্মণীগর্ভসমূত সন্তান বৈদেহ নামে অভিনিত্ত। শূদ্র কর্তৃক বৈশ্বাগর্ভক সন্তান আয়োগব, ক্ষত্রিয়াগর্ভক কন্তা, ব্রাহ্মণীগর্ভক চঙাল। শূদ্র কর্তৃক প্রতিলামক্রমে লাভ এই ভিন লাভি অভি নিক্ট। ব্রাহ্মণ কর্তৃক উগ্রক্তাগর্ভসমূত তানয় আর্ত, অষ্ঠক্ত্যাসমূত আভীর এবং আরোগব-ক্তাগর্ভক বিগ্রণ উপাধি প্রাপ্ত হইয় থাকে।

চণ্ডাল, স্ত, বৈদেহ, আবোগব, মাগধ এবং ক্ষতা এই ছয়টা প্রতিলোমক বর্ণসকর। চণ্ডালাদি বড়্বিধ বর্ণসকর জাতির পরস্পর অন্থলোম বা প্রতিলোম ক্রমে পরস্পর জাতীয়া কল্যাগর্ভে বে সকল সন্তান হয়, তাহায়া তৎপিতা মাতা অপেকা সর্বতোভাবে হীন, নিন্দাই ও সংক্রিয়াবহিভূতি। পুত্র কর্ত্তক ব্রাক্ষণীগর্জনাত চণ্ডালাদি সন্তানেরা বেরপ অপ্রক্রই বানিয়া পরিগণিত, চণ্ডালাদি বড়্বিধ সকরকর্তৃক ব্রাক্ষণাদি চার্বিবর্গে সমুৎপাদিত সন্তানেরা তাহাদের অপেকা সহস্র গুণে

পরম্পর মিত্রভাবে পরম্পর বর্ণজা পত্নীগর্ছে যে সন্তান উৎপাদন করে, তাহাদের সংখ্যা পঞ্চল। তাহারা জনকাপেকা আরও হীন। দম্মকাতি কর্ত্ব আয়োগৰ স্ত্রীগর্ডে যে সম্ভান সমুৎ-পাদিত হয়, তাহার নাম দৈরিক, ইহারা কেশরচনাদি কার্য্য-कुमन। हेराता यपि अक्रुष्ठ मान नरह, उथानि मानकार्याान-कोरी এবং পान वात्रा मृशानि वध कतिया कीविका निर्काह करत । বৈদেহক জাতি কৰ্তৃক আয়োগবী ত্ৰীগৰ্ভে যে সম্ভান উৎপন্ন হয়, তাহার নাম মৈত্রের। ইহারা স্বভাবত: মধুরভাবী, প্রাত:কালে ঘণ্টা বাজাইরা নুপতি প্রভৃতির স্তুতিপাঠ করা ইহাদের কার্যা। নিষাদ কর্তৃক আয়োগৰন্ত্রীগর্ভে সমুৎপাদিত সম্ভানের নাম মাৰ্গৰ বা দাশ। ইহাৰ নৌনিৰ্মাণকৰ্মকুশল। আয়োগৰী ন্ত্ৰীগৰ্ভে জনকভেদে সৈরিদ্ধ, মৈত্রেন্ন এবং মার্গব এই জাতিত্রন জন্মগ্রহণ করে। নিষাদ কর্ত্ত বৈদেহীগর্ভসম্ভূত সন্তানের নাম কারাবর, ইহারা চর্মচেছদকারী। বৈদেহজাতি কর্ত্তক কারাবর ব্রী হইতে অন্ধ ও নিবাদন্ত্রী হইতে মেদজাতি, চণ্ডাল रहेट देवरमही जीए दर्गुगुबरांत्रश्रीवी পाश्रुरमांभाक, निधाम বৈদেহীতে আহিণ্ডিক ও চণ্ডাল হইতে পুরুষীস্ত্রীগর্ভে সোপাক জাতি জন্মগ্রহণ করে। এই সোপাক জাতি জল্লাদের কার্যা क्तियां भौतिकां निर्माहं करत। ठुआन हटेएउ नियामीशई-সন্ত যে সন্তান, তাহারা অন্তাবসায়ী (গলাপুত্র), শাশানকার্য্য ইহাদের উপস্থীবিকা। এই সকল বর্ণসন্থর জাতি নিন্দনীয় এবং নিন্দাকর্মকারী। (মসু > । অ । ও কুন্নুকভট্ট)

বর্ণসক্ষরদোষ দারা বহতর শঠ জাতির উৎপত্তি হইয়াছে, তাহাদের নাম ও সংখ্যা নির্দেশ করিতে কেহই সমর্থ নহেন।

"वर्गमञ्जरामारयम वस्वानः मर्ठकाख्यः ।

তাসাং নামানি সংখাা≄ কো বা বক্তুং ছিজোভ্য ॥"

(ব্ৰন্ধবৈৰ্ত্তপু• ১ ব্ৰন্ধ• ১• অ°)

[এই বর্ণসঙ্করের বিশেষ বিবরণ জাতি, সঙ্করজাতি ও তত্তৎ শব্দে স্কটবা।]

বর্ণসঙ্করিক (ত্রি) বর্ণসঙ্করসম্বন্ধীর। অসবর্ণ বিবাহ দ্বারা সঙ্করজাতির উৎপাদনকারী।

वर्गमः चां (११) वर्गमाना ।

বর্ণসংলাত (পুং) বর্ণসমূহ।

वर्गभ्यास्ताय (११) जनव्याना ।

বর্ণ সি '(পুং) রুগোতি স্থলমিতি বৃঞ্জ আবরণে (সানসিবনসি পর্ণসীতি। উণ্ ৪।১০৭) ইতি অসি ধান্ডোছ ক্ চ। জল। (উজ্জল)

বৰ্ণস্থান (রী) বর্ণ বা শক্ষাদির উচ্চারণস্থান :

বর্ণস্থানের (পুং) ক্যোভিবোক ওভাওভজ্ঞানের প্রকার বা নিরমবিশের। নরপতিজ্বরচর্যা-বরোদরগৃত ব্রহ্মধানলে উভ্ত হইরাছে,
মান্তকার বনের সংখা বোড়শ বনিরা নির্দিষ্ট। এই বোড়শ
বরের মধ্যে অস্তাবর হুইটা—আং, অং। এই বর হুইটা ত্যাগ
করিয়া লইতে হুইবে। বোড়শ বরের চারিটা বর দ্বীব,
মধা—খ, য়, ১, ৯। প্রতরাং এ চারিটা বরও ত্যালা।

অবলিট দশটা সরের মধ্যে ছই ছইটা করিরা পাঁচটা যুগ্ম হইবে। এই পঞ্চ গুগোর আদি পাঁচটি স্বর—অ, ই, উ, এ, ও। ইহারা ক্রস্তব্য মধ্যে গণনীর। স্ক্তরাং এই পাঁচটি স্বরই স্বরোদরে অবলম্মীয়।

এই ব্রোদয় হইতে লাভালাভ, স্থত:খ, জীবন-মরণ, জয়-প্রাজয় ও সন্ধি এই সকল বিবয় বিদিত হওৱা যায়।

া মাতৃকাবর্ণেই চরাচর পরিবাণে, কিন্তু মাতৃকাবর্ণগুলি শ্বর তির উচ্চারণ করা অসম্ভব, স্কুতরাং এই চরাচর নিথিলজ্গৎ শ্বর হইতে উত্তুত হইয়াছে, তাই স্বরোদন বারাই সমস্ত জ্ঞাত হুইতে পারা যায়।»

আকারাদি পাচটি খব, ব্রহ্মাদি পঞ্চ দেবতা বলিরা কথিত।
যথা—অকারে ব্রহ্ম, ইকারে বিষ্ণু, উকারে রুজু, একারে পবন,
ওকারে সদাশিব। এইরূপ ঐ অকারাদি পঞ্চয়রে নিবৃতি,
প্রতিষ্ঠা, বিষ্ণা, শান্তি ও শান্তাতীতা এই পাচটি কলা এবং
ইচহা, প্রজ্ঞা, প্রভা, শ্রহা ও মেধা এই পাচটি শক্তি
নির্দিষ্ট আছে।

ঐ পঞ্চারর অকারাদিক্রমে চতুরত্র, অর্দ্ধচন্ত্র, বিকোণ, বড় বিন্দুত্ত, গোলাকার ও শুদ্ধ গোলাকার এই পঞ্চক্রে, পৃথিবী, জল, তেজ, বায়ু, আকাশ এই পঞ্চৃত; গদ্ধ রস রূপ স্পর্শ শক্ষ এই বিষয়পঞ্চক এবং সন্মোহন, উন্মাদন, শোষণ, তাপন ও স্তম্ভন এই পাচটি পঞ্চ বাণের বাণরূপে নির্নীত।

"অকারাদি শ্বরাং পঞ্চ ব্রহ্মান্তাং পঞ্চদেবতাং। নিতৃতাদ্যাং কলাং পঞ্চ ইচ্ছাদ্যাং শক্তিপঞ্চকম্। মান্তান্তক্রকোশ্চ ধরাত্তং ভূতপঞ্চকম্। গন্ধান্তা বিষয়ান্তে চ কামবাণা ইতীরিতাং।"(শ্বরোদয়)

"মাত্কারাং করাং গ্রোক্তাং বরাং বেড়েশসংখাকাং ।
তেবাং বাবতিয়ো তালোঁ চছারক নপুংসকাং ।
শেবা দল করাতের তালেকৈকো বিকে বিকে ।
ক্রোর অতং করারাকে ব্রবাং গঞ্চ করোবের ।
লাভাগাঁভং প্রথং ক্রাবিভং নরবং তথা ।
ক্রাং পরাক্রাং স্বিশ্বং ক্রেরং করারের ।
করাং বার্কিকারা নাক্রাাঝা চরাচরন্ ।
তলাং করোব্য পর্কাং নৈলোকাং সভ্যাতরন্ ।

করাং বার্কিকারা নাক্রাাঝা চরাচরন্ ।

করাং বার্কিকারা স্বিশ্বং নির্কালাং সভ্যাতরন্ ।

ব্রবাধিকার্কারেরং সর্কাং নির্কালাং সভ্যাতরন্ ।

ব্রবাধিকার্কারেরং সর্কাং নির্কালাং সভ্যাতরন্তর ভ্রাক্রাম্য স্বাধ্যার ।

ব্রবাধিকার্কারের ব্রক্তাব্যাক্রার্কার ভ্রাক্রাম্য স্বাধ্যার ।

ব্রবাধিকার্কার ব্রক্তাব্যাকর্কার ভ্রাক্রাম্য সভ্যাতরন্তর্কার ব্রক্তাব্যাকর্কার ভ্রাক্রাম্য সভ্যাতর ব্রক্তাব্যাকর্কার ভ্রাক্রাম্য সভ্যাতর ব্যাক্রাম্য সভাযাতর ব্যাক্রাম্য সভাযাতর ব্যাক্রাম্য সভ্যাতর ব্যাক্রাম্য সভ্যাক্রাম্য স

অকারাদি পঞ্চর আটভাগে বিভক্ত। বংগ---বাজা, রুর্ণ, গ্রহ, জীব, রাদি, নক্ষর, শিশু এবং বোগছর।

বৰ্ধন মাত্ৰাশ্বর বলবান্ থাকে, তথন মন্ত্রসাধন, বন্ধসাধন ও অভাভ অংবামুৰ কাব্য করিবে।

বর্ণস্থর প্রথমন থাকিলে ওভাওত কর্ম করিবে, বর্ণস্থর সকল সমরে বিলেবতঃ বৃদ্ধকালে সিদ্ধিপ্রদা

এইবর বলবান্ থাকিলে মারণ, মোহন, অস্তন, বিছেবণ, উচ্চাটন, বশীকরণ, বিবাদ, মুছ, প্রহার ও সংহার এই সমুদার কার্য্য কর্তব্য :*

जीवयत रनवान् शांकितन बत्त, जनकात, कृष्ण, विভातक, विवाह, यांजा ও পানাनि कार्य कतित्व।

রাশিষর বনবান্ থাকিলে প্রানাদ, হর্ম্মা,উভান, দেবতাতাপন, বাজ্যে অভিবেক ও দীকাকার্য্য করিবে।

নক্ষত্রর বলবান্ হইলে শান্তিক, পৌষ্টক, গৃহাদিপ্রবেশ, বীষ্ত্রপন, বিবাহ ও বাতা কার্য্য বিধেয়।*

পিগুল্বর প্রবদ হইলে শত্রুপক্ষের দেশভল, সেনাপতি ও মত্রিনিয়োগ এই সকল কার্যা করিবে।

জার যোগস্বর প্রবদ হইলে জ্ঞানসম্ভব আগব অর্থাৎ অণিমাদি অটেইখর্যপ্রাপ্তিবিবরক, শাস্তব ও শাক্তেন ইন্ড্যাদি শারীরিক যোগ সাধন ক্রিবে।

বে নাম ধরিয়া নিজিত ব্যক্তিকে ডাকা বাম, যে নাম লইয়া ডাকিলে মাসুৰ গমন করে, সেই নামের আগাবর্ণে যে মাত্রা অর্থাৎ স্বর হইবে, তাহার নামই মাত্রাস্থর। যেমন রজনীকাঞ্চ

^{(&}gt;) "দাধনং মন্ত্ৰনত্ৰক বন্তবোগক সৰ্ব্বনা। অধ্যেদ্ধানি কাৰ্যাখি মাত্ৰাখনবলে মুক ।"

⁽২) "বৰ্ণবয়ৰলে সৰ্বাং কৰ্মবাঞ্ গুজাগুজৰ : সিন্ধিবঃ সৰ্বাকাৰ্য্যৰু বৃদ্ধকালে বিশেষতঃ «"

⁽ ৩) "মারণং মোধনং শুরুং বিবেষেক্রটেনে বলমু। বিবাদং বিগ্রহং ঘাতং কুর্যালগ্রন্থরোদ্যে ॥

^{(=) &}quot;वाजाशानाभिकः नकीः वद्यानकात्रसृवगृत्। विनातकाः विवाहकः सूर्वाक्नीवनःसामसः ॥"

⁽ ৫) "আসাধারামহর্ম্মানি দেবতাস্থাপনানি চ ৷ রাজ্যাভিবেচনং দীক্ষ্য কর্মবাং রাশিকে পরে ॥"

^{(•) &}quot;নাভিক্য দৌউক্টক্য ক্ষরেশে। বীজ্ঞান্যন্ । ইটিযাহতথা বাজা কর্ম্বরা ভবরোররে।"

⁽৭) "লফ্ৰ্ণাং দেশভদ্দ ভূটবুদ্ধণ খেইমন্ : সেনাথাক্তথা বল্লী কৰ্ত্ব্যং শিশুকোলনে ॥"

⁽ ৮) "त्यातम नायरस्याता त्यस्यः व्याननवयम् । व्यापनः नावनरेयम नात्यसम् कृतीसकृत् ॥" (यदासम्)

• च्य	\$	Q	Œ	Ø		
	কি	क्	কে	কো		
*	খি	4	ধে	খে৷		
গ	পি	•	গে	গো		
য	ধি	श्रू	খে	বো		
Б	हि	Þ	CD	চো		
Ę	ছ	•	CE	(F)		
*	ঞ	জু	ভে	জো		
₹	ঝি	दू	ঝে	ঝো		
6	ि	Ř	८डे	८छे१		

এক্ষণে বর্ণ প্রান্থতি অস্থাস্থ্য সপ্তাররের বিষয় বসা যাইতেছে।
অকারের নিয়ে ক ছ আদি বে ছরটী বর্ণ আছে, তাহা
অবরের অন্তর্গত। এইরূপ ই ব্যরের নিয়ত্ব ছরটী বর্ণ ইব্যরের অন্তর্গত এবং উ-ব্যরের নিয়ত্ব ছরটী বর্ণ উ-প্রের অন্তর্গত,
এ-ব্যরের এবং ও-ব্যরের নিয়ত্ব ছর ছরটী বর্গ, এ-ব্যরের এবং
ও-ব্যরের অন্তর্গত হইবে।

উল্লিখিত বর্ণস্বরচক্রের নিরম বর্ণা— স্পন্ধক্র

ক্	\$	₹ .	Œ	8
4	4	গ	য	Б
ē	₩.	ক	हे	b
æ	5	35	খ	¥
*	4	4	*	4
4	ম	व	র	Ħ
व	۳	4	7	₹

s ঞ ণ এই ডিনটি অক্ষর ভ্যাস করিয়া অব্লিষ্ট 'ক'

ক্ষৰথি 'হ' পথ্যন্ত সমন্ত ক্ষন্তর পঞ্চাবরের নিম্নে তির্যুক্ পঙ্জি-ক্রমে বিস্তাস করিবে। স্বরবর্ণের পঞ্জি সমেত সাতটি পঙ্জি হইবে এবং সর্কাসমেত প্রক্রিপটি বরে প্রক্রিপটি জ্বক্ষর বিহান্ত হইবে। (উপরের চক্র ক্রাইবা!)

বেমন রসিক্ষোহন নামের আত্মকর 'র'। 'র' একারের পর্যায়ে আছে, স্থতরাং একার বর্ণস্থর হইতেছে।

ঙ ঞ ণ এই তিন বর্ণ নামের আদিতে থাকে না, এই জন্ত তাহা ত্যাগ করা হইল। যদি কোন নামের আছে বর্ণ 'ছ' 'ঞ' অথবা 'ণ' হয়, তবে 'ঙ' এই বর্ণের পরিবর্ত্তে 'গ', 'ঞ' এই বর্ণের পরিবর্ত্তে 'জ' এবং 'ণ' এই বর্ণের পরিবর্ত্তে 'ড' এই বর্ণ স্থাপন করিতে হইবে।

যদি নামের আছক্ষর সংযুক্ত বর্ণ হয়, তাহা হইলে এক-বামলের উক্তি অস্থসারে ঐ সংযুক্ত বর্ণের মধ্যে আছে বর্ণ মাত্র গ্রহণ করিবে। †

একণে গ্রহম্বরের বিষয় বলা হইডেছে। আ স্বরে মেষ, সিংছ ও বৃশ্চিক; ই অরে কক্সা, মিগুল ও কর্কট; উ স্বরে ধফু ও মীন, এ স্বরে তুলা ও বৃষ; ও স্বরে মকর ও কুন্ত; এই সকল রালি-সন্তুত গ্রহম্বর হইবে। যে গ্রহ বে রাশির অধিপতি, তাহাকে সেই স্বরের নিয়ে স্থাপন ক্রিবে।

307363

ष	₹	উ	ন্ত্	
	কন্তা মিপুন কৰ্কট	ধ্যু মীন	ভুলা বুষ	মকর কুম্ব
वान त्र मः	কুমার বুচং		রু জ	মৃত শ

- "নরনারাধিমো মর্নো করাব বরাবধারিক:।
 স বর্ণক কবির ইন্টোচাকে ৪" (করোবর)
- † "বং আছা ৫-জ-বর্ষণা নাবাবে) সন্থি তে সহি।
 চেত্রবন্ধি করা কেরা গলভাকে ব্যাক্তব্ব ৪
 বদি নারি করেবর্থ: সংবৃত্যক্তরকক্ষণঃ।
 আক্তরাদিবো বর্ণ ইড়াকো একবারনে ৪

নামের আছ বর্ণে বে রাশি হইবে, সেই রাশির অধিপতি বে প্রাহ, সেই প্রহ বে অরে পতিত হইবে, সে অরকেই প্রহ্মর বলা বার। বেমন রসিকচন্দ্র, এই নামের আছক্ষর 'র'। 'র' ডুলা রাশি, ঐ ডুলা রাশির অধিপতি গুক্র। গুক্র একার অরে পতিত, তাই রাশিয়র হুইল—''এ'।

একণে জীবখরের কথা বলা হইতেছে। 'জ' বর্ণের জকর বোলটি। ক বর্ণাদি পঞ্চবর্গে পাঁচ পাঁচটি করির। জকর। হ বর্গ ও শ বর্গে চারি চারিটি করিয়া জকর। প্রত্যেক বর্ণের প্রত্যেক জকরে এক হইতে জারস্ত করিরা বর্ণাত্ব হির করিতে হইবে। বথা—

ঞ্জীখন্তর চক্র

অ	ঝা	\$	3	\$	উ	刺	휁	۵	डे
>	ર	9	8	a	৬	٩	ь	6.	>0
G	à	.6	હ	কং	ज:	奉	*	গ	च्
>>	>ર	20	28	>0	১৬	>	2	•	8
E	Б	ē	-	ঝ	ds	हे	à	ড	ট
¢	>	ર	٥	8	æ	٥	2	૭	8
9	•	থ	#	Ħ	4	প	₹	ব	&
Œ	٥	ર	٥	8	æ	٥	2	9	8
Ħ	য	র	ল	ব	m	য	স	₹	
œ	>	ર	9	8	٥	ર	9	8	•

নামে বতশুলি জ্বন্ধ থাকিবে, তাহার বর্ণসংস্থান সংখাক্রমে জ্বন্ধ করিয়া ৫ ছারা ভাগ দিরা বাহা জ্বনিটি
থাকিবে, তাহা ছারা জীবস্থর নিরপণ করিবে। বেমন রসিকমোহন এই নামে র ২ স ০ ই ৩ ক ১ ম৫ ও ১৩ ছ ৪ ন ৫
ইহার ৩০। ইহা পাঁচ ছারা বিভক্ত করিলে শেব ১; স্তরাং
জীবস্থর জ্বন্ধ ১ ।

জ-বরে নেবসিংহালিরিঃ ক্রভাব্যক্তিই। ।
উ-বরে চ ধ্বুরীনৌ এ-বরে চ জুলাকুনো ।
ও-বরে নুসকুভো চ রাশীপাকু এক্বরঃ।
বরাধঃ ছাগরেৎ পেটানু রাগেবোঁ বন্ধ নারকঃ ॥ (বরোধর)

"বোড়দাক্ষমকোহবর্ত্ত তাৎ কাবিবর্ত্ত গণ্ড না: ।
 চড়কর্বে । বলৌ বর্গো নংবার কর্মিকাঃ ।
 নারো কর্মা: বরা আছা বর্মাণাং বর্ণনব্যের।
 পিডিজা: গণ্ডিউক্সা: শেবং জীবধরং বিচ্নঃ ।" (করোবর)

একণে রাশিবর নিজগণ করা বাইভেছে,— রাশিবজঞ

99	ŧ	\$	Ø	
মেৰ	মি পু ন ৩	কন্ <u>ত্</u> যা	বিছা ৬	म क त ७
वृष	कर्क	ভূলা	ধন্ম	क् ब
মি খু ন ৬	সিংহ	বিছা ৩	মকর ৬	মীন

অকার ব্বরে মেব, বুব ও মিপুন রাশির প্রথম বড়ংশ লক্ষিত হইবে। ই-বরে মিপুনের শেব তিন অংশ, কর্কট রাশি ও সিংহ রাশি লভ্য হুইবে। উ-বরে কক্ষা তুলা এবং বৃশ্চিকের তিন অংশ পাওরা যাইবে। এ ব্রের বৃশ্চিক রাশির শেষ চর অংশ, ধরু ও মকর রাশির প্রথম ছর অংশ ধরিতে হইবে। ও-বরে মকরের অন্তিম তিন অংশ কুজরাশি ও মীন রাশি প্রাপ্ত হওরা বাইবে।

বেমন রসিকচক্ত এই নামের আছ অকর 'র'। 'র' তুণা রাশির প্রথমাংশে উ-বরে পতিত, তাই উ-বর রাশিবর হইতেছে ইহার সংখ্যা—৩: «

একণে নক্ষত্ৰ ব্যের কথা বলা হইতেছে,—

a	₹	8	G	9
ર ૧ ১	9	>>	39	22
ર	۵	>8	25	₹8
೨	30	24	२०	२०
8	>>	70	२५	२७
Q				
9				

জ-বরে রেবতী, জরিনী, জরণী, কৃত্তিকা, রোহিণী, মুগশিরা, আর্ল্লা, এই সাতটী নক্ষত্র গান্দিত হইবে। ই-বর প্রভৃতি

"বেববৃহাবকারে চ বিশুনাছাঃ বছণেকাঃ।
কিথুনাংলাজনলৈব ইকারে নিহেককটাঃ ।
কভা জুলা উকারে চ বুন্দিকজ এবোহংশকাঃ।
কভারে বুন্দিকজাংলাঃ বইচাপাক্ বুন্দিবাঃ।
জংগালনে। বুন্ধজাল্যাঃ কুজনীনৌ তবৌনরঃ
এবং রাশিবয়ঃ কোনোক্যনেগরঃ।" (বংরাদর)

শরচত্টরে পুনর্বস্থ হইডে পাঁচটা করিরা নক্ষত্র বথাক্রমে গভা

• ইবৈ ৷ অর্থাৎ অ-শ্বর ২৭) সাংখাজারাঝা, ই-শ্বর ৭। দালা ১০। ১১।

উ-শ্বর ১২। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬, এ-শ্বরে ১৭। ১৮। ১লা২না২না, ও-শ্বরে ২২। ২৬। ২৪। ২৫। ২৬।

শতপদচক্রবারা নামের আছে অক্সরে যে নক্ষত্র হইবে, সেই নক্ষত্র যে ব্যরে পড়িবে, তাহাই নক্ষত্র পর, যেমন শতপদ চক্রবারা রসিকচন্দ্র এই নামের আছক্ষর 'র' বারা ১৪ চিত্রা নক্ষত্র হয়। চিত্রা নক্ষত্র উকার প্রয়ে পতিত, প্রতরাং নক্ষত্র-পর উকার, সংখ্যা—৩।

শিওপরচক্র ।

অ	₹	উ	এ	8
মাত্রা	মাত্রা	মাত্রা	মাত্রা	মাত্রা
বৰ্ণ	বৰ্ণ	বৰ্ণ	বৰ্ণ	বৰ্ণ
জীব	জীব	জীব	জীব	दर्भ
e	¢	¢	œ	æ

মাত্রাম্বর, বর্ণম্বর ও জীবস্বর, এই সমুদায় সংখ্যা একত্র করিয়া পাঁচ দিয়া ভাগ করিয়া যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, ডাহা দারা পিওস্বর ঠিক হইবে। যেমন পূর্ব্বোক্ত মাত্রাম্বর জ-১, বর্ণম্বর এ-৪, পূর্ব্বোক্ত জীবস্বর জ-১ ইহার শেষ ৬, ইহা পাঁচ দিয়া ভাগ করিলে শেবে ১ থাকে, স্কুতরাং পিওস্বর জ-১।

ভা	\$	Ē	9	9
मাত্রা	म्।	मा	মা	मा
বর্ণ	ব	4	ৰ	ব
গ্ৰহ	গ্ৰ	গ্ৰ	গ্ৰ	গ্ৰ
জীব	की	की	ঞী	बी
রাশি	রা	त्र	न	1 1
নক	ન	4	अ	a
পিও	PH	भि	পি	পি
e	¢	e	¢.	ŧ

নামের মাতা ও বর্ণ সমূলার হইতে বর লইয়া ভাহার সমষ্টি

করিবে, পরে তাহাকে ৫ দিয়া তাগ করিয়া বাহা থাকিবে, তাহাই বোগস্বর। বথা পূর্কপ্রক্রিয়া অনুসারে মাত্রাস্বর ১, বর্ণস্বর ৪, গ্রহস্বর ৪, কীবস্বর ১, য়াশিস্কর ১, এই সমস্ত একত্র যোগ করিবে ১৭ হয়, ইহাকে ৫ দিয়া ভাগ করিবে ২ অবশিষ্ট থাকে, অতএব যোগের ই-উহার সংখ্যা ২।

[অনোদয় শব্দে জটব্য]

বর্ণা (স্ত্রী) র্ণাতে ভক্ষাতে ইতি রূপু ভক্ষণে কন্মণি বঞ্। তত-প্রাপ্। আঢ়কী। (হেম)

বর্ণাস্কা (গ্রী) বর্ণা অস্কান্তেংনরেতি আরু করণে দঞ্, ভতত-স্তাপ্। লেখনী। (শব্দরত্বা°)

বর্ণাট (পুং) বর্ণান্ অটজীতি অট-অচ্। > গায়ন। ২ চিত্রকর।
ত প্রীকৃতজীবন। (মেদিনী)

বর্ণাজুন্ (পুং) বর্ণ: অক্ষরম্ আত্মা অরূপং যন্ত। শব্দ। (জটাধর)
বর্ণাধিপ (পুং) বর্ণানাং ব্রাহ্মণাদীনামধিপঃ। ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রির,
বৈশু ও শুল্র ইহাদিগের অধিপতি গ্রহ। বৃহস্পতি ও গুক্র
ব্রাহ্মণের অধিপতি, মদল ও রবি ক্ষত্রিয়ের অধিপতি, চক্র বৈশ্যদিগের, বৃধ শুক্রের এবং শনি অন্ত্যুক্ত জাতির অধিপতি।

"ব্রাহ্মণে শুক্রবাগীশৌ ক্ষত্রিয়ে ভৌমভান্নরৌ।

চক্রো বৈশ্রে বৃধঃ শৃদ্রে পতির্ম দ্যোহস্কানে ॥"(জ্যোতিস্তর) বর্ণান্যত্ত্ব (ক্লী) ক্ষা বর্ণের ভাব। বর্ণের পরিবর্তন। বর্ণাপেক্ত (ত্রি) বর্ণানপেতঃ। বর্ণহীন, সম্বর জ্যাতি।

শবর্ণাপেতমবিজ্ঞাতং নরং কলুষযোনিজম্।
আর্থ্যরূপমিবানার্যাং কর্ম্মভি: স্থৈবিভাবরেং ।* (মন্ত্ ১০।৫৭)
বর্ণাপেতং বর্ণহাদপেতং মনুষ্যং সম্কর্ম্মাতং (কুরুক)

বৰ্ণাশ্ৰম (পুং) ৰণানাং চাতুৰ্বণানাং আগ্ৰম:। চাতুৰ্বণাশ্ৰম, চাহিবণেৰ আগ্ৰম।

বর্ণাপ্রমধর্ম্ম (পুং) চারি বর্ণের আশ্রমধর্ম। ত্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশু ও শুদ্র এই চারি বর্ণ আশ্রমে অবস্থান করিয়া যে বৃত্তি বারা জীবিকা ও বে কর্ম্ম বারা ঐহিক ও পায়ত্রিক মকল লাভ করিতে পারেন, তাহাকে আশ্রম ধর্ম্ম কহে। ইহা প্রত্যেক বর্ণের ভিন্ন প্রকার। মহাভারতে লিখিত আছে যে, বুধিষ্টির ভীমনেবকে জিজ্ঞালা করিয়াছিলেন বে, লর্মবর্ণের লাধারণ ধর্ম্ম কি
 ত্রং চারি বর্ণের পৃথক্ পৃথক্ ধর্মাই বা কি
 কোন্ কোন্ বর্ণের ক্ষাশ্রমম অধিকার। জীমনেব ইহার উত্তরে বলিয়াছিলেন বে, চার্মি বর্ণের আশ্রমধর্মের বিষয় কীর্জন ক্রিছেছি, শ্রবণ কর। ক্রোধপরিত্যাগ, সভাবাক্যপ্রমান, সমাক্রমণ ধনবিভাগ, ক্ষমা, নিক পত্নীতে প্রত্যোৎপাষন, পবিত্রতা, আহিংলা, সরলতা ও ভ্রত্যের ভরণণোষণ এই নয়টী লর্ম্ম বর্ণের লাধারণ ধর্মা।

रें जित्रप्रम ७ त्रपाधावनरे आकारणंत्र ध्राप्तान धर्म । माख

অভাব, জ্ঞানবান্, আত্মণ যদি অসং কার্য্যের অনুষ্ঠান পরিত্যাগ করিরা সংপথে ধনপাত করিতে পারেন, তাহা হইলে লার-পরিগ্রহ করিরা সন্তান উৎপাদন, দান ও যজাফুটান করা তাঁহার কর্তব্য। আত্মণ অস্ত কোন কার্যের অসুষ্ঠান কর্মন বা না কলন, তিনি বেদাধারননিরত ও সদাচারসম্পন্ন হইলেই তাহার বর্ণাশ্রম ধর্ম রকা হয়।

ধনদান, বজামন্তান, অধ্যয়ন ও প্রজাপালনই করিরের প্রধান ধর্ম। যাচঞা, যাজন বা অধ্যাপন ক্ষরিয়ের পক্ষে নিতান্ত নিষিদ্ধ। নিয়ত দফ্ষরেধে উত্তত হওয়া ও সমরাঙ্গণে বিক্রম প্রকাশ করা ক্ষরিয়ের অবশ্য কর্ত্তরা। দফ্ষাবিনাশ ব্যতীত ক্ষরিয়ের প্রধান কার্যা আর কিছুই নাই। দান, অধ্যয়ন ও যজ্জ দ্বারাই ক্ষরিম্নিগের মঙ্গল লাভ হইয়া থাকে। রাজা অন্ত কোন কার্যা করনে, বা না কর্পন আচারনিষ্ঠ হইয়া প্রজাপালন ক্রিলেই ক্ষরিম্বাধারকা হয়।

দান, অধ্যয়ন, যজাসুষ্ঠান, সত্পায় অবসম্বনপূক্ত ধনসঞ্য এবং পুত্রনির্বিশেষে পশুপালন করাই বৈশ্রের নিত্যধর্ম। এতদ্বাতীত অন্ত কোন কার্ণোর অনুষ্ঠান করিলে বৈশ্রকে অধ্যের লিপ্ত হইতে হয়।

ভগবান্ প্রক্রাপতি ব্রাহ্মণাদি বর্ণত্রয়ের দাস হইবে বলিয়া
শুদ্রের ক্ষষ্টি করিয়াছেন। অতএব তিন বর্ণের পরিচর্যা করাই
শুদ্রের প্রধান ধর্ম। শুদ্র অর্থসঞ্চয় করিলে ব্রাহ্মণ প্রস্তৃতি
উৎক্র ক্রাভি তাহার বশীভূত হইতে পারেন এবং ভরিবন্ধন
ভাহাকে পাপগ্রন্থ হইতে হর, অতএব ভোগাভিলাফে ভাহার
অর্থসঞ্চয় করা অতিশয় নিষিদ্ধ। কিন্তু রাজার আদেশামুসারে
দর্শ্বকার্য্যের অনুষ্ঠানার্থ অর্থসঞ্চয় করা শুদ্রের অবিহিত নহে।
ব্রাহ্মণাদি বর্ণত্রয় শুদ্রকে ভরণ, পোষণ এবং ছত্র, বেইন, শয়ন,
আসন, উপানংযুগল, চামর ও বন্ধ সকল প্রদান করিবেন।
এই সকল দ্রা শুদ্রের ধর্মালন্ধ ধন। শুদ্রের অর্থকার নাই। ভাহার বে ধন উদ্ধৃত হইবে, প্রাম্নু
ভাহার সেই ধন গ্রহণ করিবেন।

যঞ্জ নানাপ্রকার এবং তাহার ফলও বছবিধ। আহ্বণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্ব ও শূদ্র এই চারি বর্ণ ই সকল যজ্ঞের অফুষ্ঠান করিবেন। শূদ্রের যজ্ঞে অধিকার থাকিলেও মদ্ধে অধিকার নাই। চারি বর্ণের সম্দার যঞ্জ মধ্যে সর্কাণ্ডো শ্রদ্ধায়জ্ঞের অফুষ্ঠান করা কর্ত্বর। শ্রদ্ধা মহদ্দেবতাশ্বরূপা। উহা যাজ্ঞিক-দিগের পবিত্রতা সম্পাদন করিয়া থাকে। চারি বর্ণের মধ্যে অতিশ্ব শ্রদ্ধান্তর ক্ষত্রেমান করেছা। প্রকাশকর হইলেই বজ্ঞামুষ্ঠানের অধিকার জ্ঞান বিলাধে চৌর্যা প্রক্রিটা পাশকার্য্যে আসক্ত হইরাও যদি বজ্ঞান করে, তাহা হইলেও সাধু বলিয়া নির্দেশ করা বাইতে

পারে এবং মহবিগণও প্রেশংসা করিরা থাকেন। বিলোক মধ্যে বজের তুলা আর কিছুই নাই। জভএব বর্ণচতুত্তর অংয়াশৃঞ্জ হইরা পরম প্রভাসভুকারে স্থায়ত্তরণ বজ্ঞাল্পটান করিবে।

লোকে বানপ্রায়, তৈজা, গার্ছ ও ব্রহ্মটা এই চারিটা আত্রম অন্নর্থন করিয়া থাকে। ব্রহ্মটা আত্রমে কেবল বাহ্মদেবই অধিকার। আত্রমানসম্পন্ধ কিতে ক্রিয় বাহ্মদেগ প্রথমে উপনর্নাদি সংখ্যার সংস্কৃত হইরা ব্রহ্মদেগ্রহণ, অঘ্যাধানাদি কার্য্য সমাধান, বেদাধারন ও তৎপরে তিনি গার্হন্থ প্রতিপালন করিয়া কেবল পদীর সহিত বানপ্রায় অবলঘন করিবেন এবং ঐ আত্রমে তিনি আরণ্যক শাস্ত্র অধারনপূর্ব্ধক উদ্ধর্মেতা হইরা অনাঘানে ব্রহ্ম লীন হইতে পারেন। ব্রহ্মচর্য্য সমাধান করিয়াই মোক্ললাভার্যে ভৈক্ষা ধর্ম আত্রম করা ব্রাহ্মণের দোবাবহ নহে। ঐ আত্রমে তিনি স্লথত:খবহিত, নিকেতনবিহীন, যদ্ভাগকর্মীবী, দান্ত, জিতে ক্রির, সকলের প্রতি সমৃদ্ধিসম্পন্ধ, ভোগকামনাশৃত্য ও নির্ক্ষিকার্টিক হইয়া পরিশেষে ব্রহ্মপদ প্রাপ্ত হন।

ক্ষতিয়াদি বর্ণও আক্ষণদিগের দৃষ্টাস্তায়সারেই বানপ্রস্থাদি আশ্রম অবলম্বন করিয়। থাকেন। স্বধর্মনিরত ক্ষতিয়, বৈশুও পুলেরও তৈক্ষাধর্মগ্রহণে অধিকার আছে। ক্ষতকার্যা পরিণতবয়য় বৈশুও রাজার অন্তমতি লইয়া আশ্রমান্তর গ্রহণ করিতে পারে। ক্ষতিয় বেদও রাজনীতি অধ্যয়ন, সন্তানোৎপাদন, সোমরস পান, রাজস্ম ও অখ্যমেধ প্রভৃতি যজ্জের অন্তর্ভান, বেদপাঠ করাইয়া ব্রাক্ষণকে দক্ষিণাদান ও শ্রাদ্ধাদি হায়া পিতৃদিগের তৃত্তিসম্পাদন করিয়া শেষাবহাদ্দ আশ্রমান্তর অবলম্বন করিতে পারেন। ক্ষতিয় গৃহত্বধর্ম পরিত্যাগ করিয়া আপনার জীবনরকার নিমিন্তই ভিক্ষার্তি অবলম্বন করিতে পারেন। ভিক্ষার্তি অবলম্বন ক্ষতিয়াদি তিনবর্ণের কাম্যধর্ম, নিত্যধর্ম নিহে।

মানবমগুলীর মধ্যে এক ক্ষত্রিরবর্ণ ই শ্রেষ্ঠতর ধর্ম্মের সেবা করিয়া থাকেন। বেদে কথিত আছে বে, অক্স তিন বর্ণের বাবতীয় ধর্ম ও উপধর্ম সমস্তই ক্ষাত্রধর্মের আয়ন্ত। বেমন সম্পন্ন প্রাণীর পদচিক্ হজীর পদচিক্তে লীন হইয়া বায়, তজ্ঞপ সমস্ত ধর্ম্মই রাজধর্মে লীন হইয়াছে। পঞ্জিতগণ অক্সান্ত থক্নাবেদ অর্ফলপ্রদ এবং ক্ষত্রিরধর্মকে আর্ত্রমের সারভূত ও কল্যাণের একমাত্র নিদান বলিয়া কার্ডন করিয়াছেন, ক্ষাত্রধর্ম—সমুদ্দর ধর্মের সারভূত। এক রাজধর্মের প্রভাবেই সমুদ্দর লোক প্রতিপালিত ইইডেছে। দগুনীতি না থাকিলে বেদ ও সমুদ্দর ধর্ম্ম এককালে নই হইয়া বাইত। চারি আ্রাম্মের ধর্ম, ইতিগর্ম্ম লোকাচারপ্রথা ও কার্য্য সমুদার এক ক্ষত্রিরধর্ম-প্রভাবে কন-সমাকে প্রভিত্তিক রহিরাছে।

(ভারত শাস্তিপ বর্ণাপ্রমধর্ম ৩০-৭০ আ)
তগৰান্ মন্ত্র এইরপ বর্ণাপ্রমধর্ম নির্দেশ করিরাছেন,
আহ্নণ সালবেদাধ্যরন, অধ্যাপন, বজন, বাজন, দান ও প্রতিগ্রাহ এই বট্ কর্ম করিরা জীবনবাত্রা নির্দ্ধাহ করিবেন। এই
বট্ কর্মের মধ্যে অধ্যাপন, বাজন এবং লংপ্রতিগ্রহ এই
তিনটা আহ্নণের উপলীবিকা। ক্রিছ হাজন, অধ্যাপন এবং
প্রতিগ্রহ এই তিনটা ক্রিছের পক্ষে নিবিছ। কেবল দান,
অধ্যরন ও বাগ এই তিনটা কর্মেয়। ক্রান্তরের ভার বৈভ্যের
পক্ষেও বাজনাদি নিবিছ। প্রজাগণের রক্ষার জন্ম আন্তর্পন্তধারণ ক্রিরের বৃত্তি, পশুপানন, কৃষি ও বাণিক্যা বৈশ্রের
জীবিকা, এবং দান, বাগ ও সধ্যরন উভরেরই ক্রবণ্ডকর্ম্বা।
মহদর্ম মধ্যে আহ্মণের বেদাধ্যাপন প্রশন্ত, ক্রিরের প্রজাপাদন
এবং বৈশ্রের বাণিক্যাও পশুপানন।

যদি এই সকল অকৰ্মের দারা জীবিকানিকাছ না হর, ভাছা চটলে নিয়োক আপদৰ্শোক বিধানামুসারে চারিবর্ণ নীবিকা নিৰ্কাহ ক্ষিতে পারিবেন ৷ বহি ব্ৰাহ্মণ বধ্যেক অধ্যাপনাদি নিজ বৃতিধারা কুটুৰ সংগদ্ধনপূর্ণক শীবিকা নির্দাহ করিতে অসমর্থ হন, ডাছা ছইলে গ্রামনগররকারি ক্তিরবৃত্তি হারা জীবিকার্কন করিবেন। কারণ ইহাই ভাষার আসরবৃত্তি। নিজবৃত্তি ও ক্ষত্রিরবৃত্তি এই উভয়বিধ কর্মবারা বধন গ্রাক্ষণের জীবিকানিৰ্বাহ কঠিন হইবে, তখন তিনি কবিবাণিজ্ঞাদি বৈশ্রমুদ্ধি অবস্থা করিয়া জীবসখালা নির্মাচ করিবেন। বৈশ্ববৃত্তি দারা শীবিকা নির্মাহ ক্ষিতে হইলে ব্রাহ্মণ এবং काळिक डेटाका डेक्टबर्ट विश्मावस्म शवामि शवाधीन क्रविकार्यः পরিজ্ঞাগ করিবেন ৷ ব্যবিও কেই কেই কৃষিকীবিকার প্রশংসা कतिया शारकत, किन्न छाहा रहेरल ६ हेरा नक्कर्गनिक । कावन এডচুপদক্ষে হলকুদালাদি স্কালনদারা ভূমিহিত বহু প্রাণীর প্রাণনাশ হইরা থাকে। ব্রাহ্মণ ও ক্ষত্রিয়ের নিক্রছির অসরাব এবং ধর্মনিটার ব্যাহাত চটলে নিবিদ্ধ বন্ধ বর্জন করিবা হৈত্যের বিক্ৰেডবা বৰ্ষাত বিক্ৰয় বাহা বীৰিকা নিৰ্বাহ করিতে शासित्यम ।

সর্বার্থকার রস, ডিগ, প্রায়র, সিমার, সবণ, পণ্ড এবং মন্তব্য এই সকল প্রবেদ্ধ বিজ্ঞান নিবিদ্ধ। কুমুকাদি বারা রক্তবর্ণ ক্রানিবিদ্ধি সর্কবিধ বার, শশ ও অকসীভক্তমার বার এবং রক্তবর্ধ না হইকেও মেবলোম বিনিবিদ্ধি কর্মসাধি এ সকল বস্তার বিজ্ঞায় নিবিদ্ধ। অস, শার, বিব, মাংস, সোনস্তস, সর্বাধ্যার গ্রহ্ময়, ক্রিয়, রমি, সম, মুড, হৈলা, মধু, ওড়, কুন,

সর্ব্ধ প্রকার আরণাগণ্ড, বিশেষতঃ গলাধি মাত্রী, পণ্ড, অথপ্তিতথ্র আযাদি; এতন্তির পলী, নীল, মান্ত এবং লাকা এই সকল বন্তর বিক্রম ব্রাক্ষণের পক্ষে নিবিদ্ধ।

বারং কর্ষণধারা তিল উৎপাদন করিয়া অচিরকাল মধ্যে বিশুদ্ধাবারের বিক্রম করিতে পারে, কিন্তু লাভপ্রত্যাপার বিলক্ষে বিক্রম নিবিদ্ধ। তোলন, মর্কন এবং লানবাতীত বদি কেই উলবিক্রম করে, তাহা হইলে তিনি পিতৃপুরুষদিগের সহিত রুমির প্রাপ্ত হইরা কুরুরবিষ্ঠার নিমর্ম হইরা পাকে। আদ্ধান্দান, লবণ এবং লাক্ষা বিক্রম করিবামাত্রই পতিত হন, কিন্তু ক্রমাগত তিনদিন মুগ্ধ বিক্রম করিলে শুদ্রম্বপ্রপ্রপ্রক ক্রমাগত ৭ দিন বিক্রম করিলে আদ্ধান বিক্রম করিলে একরপ রস্ক্রবার বিনিমরে অপর রসক্রব্য লওয়া বাইতে পারে, কিন্তু রসদ্রবারর সহিত লবণের বিনিমর হয় না। সিদ্ধান্নের বিনিমর আ্লামারের সহিত এবং থাপ্তের বিনিমরে তিল লওয়া বাইতে পারে, কিন্তু সমান পরিমাণ দিতে হয়।

ব্রহ্মণের আপংকালে যেরূপ জীবিকা অভিহিত হইল.
ক্রিরেও এইরূপ বৃত্তিবারা জীবিকা নির্দ্ধাহ করিবেন। অধ্যা
নিরুষ্ট হইলেও তাহার আচরণ করা সর্বতোতাবে বিধেয়।
পরধর্ম অকীর ধর্ম হইজে উৎকৃষ্ট হইলেও ধদি কেহ আচরণ করে,
তাহা হইলেও রাজা তাহার দওবিধান করিবেন। অধ্যা নিরুষ্ট
হইলেও তাহা অন্তর্হের। পরকীর ধর্ম অন্সর হইলেও লোকের
অন্তর্হের নহে। বেহেতু আতাত্তরধর্মবারার জীবনবাপন করিলে
নম্ব্য তৎক্ষণাৎ অভাতি হইতে পরিভ্রষ্ট হয়।

বৈশ্ব খবর্ণ বারা জীবিকা-নির্কাবে অসমর্থ হইলে উচ্ছিট্ট ডোজনাদি অনাচার পরিহারপূর্বক বিশুগুরাদি শূদুবৃত্তি হারা জীবিকা-নির্কাহ করিবে, কিন্ত আপদ্ মুক্ত হইলেই শুদুবৃত্তি পরিত্যাগ করিবেন। শূদ্র যদি নিজ রৃতি বারা পুত্র কল্যাদির ভরণপোরণে অক্ষম হর, তবে কাক্ষকাদি কর্মা বারা জীবিকা-নির্কাহ করিবে। বে কর্মাচরণে বিশ্বগুশ্রবা নির্কাহ হয়, এই-রূপ বিবিধ কাক্ষকর্ম ও শির্কার করিবে।

খণথাৰত আদ্দাব্যক্তভাবপ্ৰাণীড়িত হইরাও বদি ক্ষত্রির বা কৈচাবৃদ্ধি অবলখন না করেন, তাহা হইলে এইরূপ বৃত্তি জাহার অবলখনীর। বিপন্ন আদ্দা ব্যবহুত রূল ও জান্তির ভার পরির । আদ্দাধ্যকার বাদ্দার বাদ্

বৃত্ত কি বাবি সজীগর্জ নিজ তনরের আগসংহারে সম্ভত হইরাছিলেন, তথাপি স্থেতীকার ইহার উলেন্ড বনিরা তিনি পাপে লিপ্ত হন নাই। বামদেব থবি স্থার্ড হইরা প্রাণরকার্থ কুরুরনাংল ভোজনেজু হন, তাহাতে তিনি পাপলিপ্ত হন নাই, সতএব ব্রাহ্মণ আগৎ কালে অতিনিক্তিত কর্মের আচরণেও পাপতালন হন না।

ব্রান্ধণের নিন্দিতাধ্যাপন, যাজন ও প্রতিগ্রহ এই তিনের
মধ্যে প্রতিগ্রহই অতীব নিশ্লই। উপনরনসংস্কারে সংস্কৃতাত্তা
ব্রান্ধাদিপের যাজনও অধ্যাপন কর্ম্ম নিতা কর্ত্তব্য, কিন্ত আপথকালে নিশ্লই জাতি বা শেবজন্মা শূদ্র হইতেও প্রতিগ্রহ
বিধের। ব্রান্ধণের রূপ ও হেমে হারা শূদ্রাদি নিশ্লই জাতির
বাজনাধ্যাপনজনিত পাপ নই হর। শ্বরতি হারা জীবিকা
নির্মাহে অক্ষম হইলে ব্রান্ধণ উপপাতকী প্রভৃতির নিকট হইতে
লিলোভ্রতি হারা জীবিকানির্মাহ করিবেন। কারণ অসং
প্রতিগ্রহ অপেকা শিল্বতি শ্রেষ্ঠ এবং তদপেকা উদ্বৃত্তি
আরও প্রশন্ত। ধনাভাবে অবসর ব্রান্ধণ ধান্ধ ব্রাদি, তাম
ও কাংখাদি নির্মিত ক্রয় ক্রিবেরর নিকট যাক্ষা করিবেন।

কৃষ্ঠ ভূমি অপেক্ষা অকৃষ্ট ভূমির শশু প্রতিগ্রহ করা প্রশন্ত
থবং গো, ছাগ, মেব, হিরপা, ধান্ত ও সিদ্ধার এই সকল
দ্রব্যের মধ্যে উভরোজর দ্রব্য অপেক্ষা পূর্ব্ব প্রব্যের
প্রতিগ্রহ প্রশন্ত । সকলেরই ৭ প্রকার ধনাগম ধর্মানজত,
বথা—দার প্রাপ্ত ধন, মিত্রের নিকট হইতে লব্ধ ধন, ক্রন্ত ও
ধান্তাদি বৃদ্ধি লব্ধ্বন, ক্রবি বাণিজ্যাদি কর্ম্ববোগে লব্ধ ধন এবং
সংপ্রতিগ্রহ লব্ধ ধন। এই বিজ্ঞা, লির্লাহ্যি, সেবা, গোরক্ষা,
বাণিজ্যা, অর প্রোপ্তিতে সজ্যোব, ভিক্ষাবৃত্তি এবং স্থানের জন্ম ধনপ্রব্যেগ এই সকল জীবিকার হেড়ু। আক্রণ বা ক্ষত্রিরের ক্যাচিৎ
ক্রম্ব গ্রহণ ক্রিরা প্রণ দান কর্ত্ত্ব্য নহে। কিন্তু ক্ষের্বার্থ প্রব্য ক্ষাহ্যি
কর্ম্বার্থ অর ক্ষ্যে নিক্ষাইকর্মাকে প্রণ দান করিতে পারেন।

বিপ্রদেবার জীবিকা না চলিলে শৃত্র বদি বৃদ্ধান্তরাজিলাবী হয়, তাহা হইলে করির তাহার দেবা, ইহার অভাবে বৈশ্রের সেবা করিয়া জীবিকা নির্মাহ করিতে পারেন। স্বর্গ ও জীবিকা লাভার্থ রাজণ শৃত্রের জারায়ঃ। শৃত্র রাজণদেবক এই বিশেবণ মাত্রই ফুতার্থতা লাভ করে। শৃত্রের রাজণদেবক এই বিশেবণ মাত্রই ফুতার্থতা লাভ করে। শৃত্রের রাজণদেবা ভিন্ন আর বৈ কিছু কার্য্য তাহা নিক্ষন। রাজণ শৃত্রন্থতায় পরিচর্যা, সামর্থ্য, ভার্যনৈপ্রশ্য এবং উহার পোইবর্দের পরিমাণ বিশেষ বিবেচনা করিয়া বেভদ অবধারণ করিবেন। রাজণ জাপ্রিত শৃত্রের ভক্যার্থ উল্লিট করে, পরিধানার্থ জীর্ণ বসন, শহনার্থ জীর্ণবায় এবং হাত্রের প্রশাক প্রসাধ করিবেন।

লভনাৰি অপত্ৰব্য ভক্তেৰ পূত্ৰের পাপ নাই। উপন্যনাধি সংকার এবং অবিহোত্তাবি বজে অধিকার নাই। কিছু পাক কালৰি কাৰ্য নিবিছ নহে। বৰ্গজ খুল ধর্মেকু হইরা রাজপানির অহুটের পঞ্চ বলাবজানি মন্ত্ৰ বর্গজ খুল বলিকে। অহুবাণ্ড পূত্র বজপ সম্ব ভাছহালে প্রবৃত্ত হর, ভবছুস্কলে ইহলোকে যান্ত এবং পরলোকে অর্থানাভ করে। রাজা খুত্রকে লার্থ সুক্তর করিছে দিবেল লা, কারণ খুল বলনকে মন্ত হইরা রাজণকে অব্যাননা করিতে পারে। এই জন্ত খুন্তের অর্থসঞ্চর নিজনীর।

ठांति वर्ग अवैक्षण वृद्धि यात्रा जीविकानिकांच कत्रिरसम ।

(ম্ভু ১১ **খ**ে

বৰ্ণাজ্ঞমবৎ (জি) ৰণাজ্ঞম জন্তাৰে মতুণ্ মত বঃ। বৰ্ণাজ্ঞম-বিশিষ্ট।

বৰ্ণা আমিন্ (জি) বৰ্ণা শ্ৰমঃ স্বস্তাৰ্থ ইনি। বৰ্ণা শ্ৰমধৰ্ম বৃক্ত।
(জাগৰভ ৭।৪।১৪)

বর্ণাসা, আসামের অন্তর্গত একটি নদী। (দেশাবদী)
বর্ণার্চ (পুং) বর্ণমর্ছতীতি অর্ছ-আণ্। সুদদ। (রাজনি॰)
বর্ণি (রী) বর্ণাতে ভুরতে ইতি বর্ণ ভতৌ ইন্। স্বর্ণ। (পুং)

বাণা কোন বলাতে ভূৰতে হাত ৰণ অভোহ্যুঃ খুণা (পুং) - ২ বলি। (বৰ্ণেবলি-চাহিল্লণ্যে উণ্ডা>২৩)

বর্ণিক (পুং) বর্ণা লেখ্যখেন সন্ধি অক্তেতি বর্ণ-ঠন্। ১ লেথক। 'লেখকেংকরপূর্ব্বাঃস্থান্তগন্ধবীক্চক্ষঃ।

বণিকো লিপিকরশ্চাক্ষরভাবে নিপিনিবি:॥'(ছেম)
বর্ণিকা (গ্রী) বর্ণা অক্ষরাণি লেখ্যদেন সম্ভাভাঃ ইতি বর্ণ-ঠন্-টাপ্। ১ কঠিনী। খড়ি।

"লেগজাং কণিকাপি জাৎ কঠিজামপি বৰ্ণিকা।" (হারাবলী) ২ মসি। ৩ কাকমের উৎকর্ম।

'বৰ্ণকান্যগেশ্বী তু চন্দনে চ বিলেপনে। ছয়োলীলাদিবু বী ভাছৎকৰে কাঞ্চনভ চ ॥' (মেদিনী)

বর্ণিন্ (পুং) বর্ণা অক্ষরাণি লেখ্যকেন সন্ত্যক্তেতি বর্ণ-ইনি।

> লেখক। বর্ণা নীলপীতাদরঃ লেখ্যকেন সন্ত্যক্তে।

২ চিত্রকর।

"अजातकूनप्रकानार शनानभववर्गनाम्।

বৰসেকনদিশ্বানাং কালনেত চ সক্ষান্ ।" (ভারত ১২।৬৯।৫৭) বর্ণ (বর্ণাদ্রকানিদি। পা ধাং।১০৪) ইতি ইনি। ৩ বন্ধচারী।

'বনী' স্যাৎ লেখকে চিন্নকরেছণি ব্রন্ধারিনি' (বেদিনী) (বি) ৪ বর্ণবিনিষ্ট। বর্ণোজরণনাজু (ধর্ণানীলবর্ণাজাচ। পা বাংচিত্র বিভি ইনি। ব ব্রাহ্মণ।

"वाजनाशाभरम खर्ड विश्वकाक व्यक्तिश्वः। वृक्तिवर्तमनर व्यक्तिवृत्तिः (वर्शकविनः ४"(कामकक ११२)३३) বর্ণিনা (খ্রী) বর্ণিন-জীপ্। > বরিপ্রা। ২ বনিতা। (হেম)
বর্ণিক্ত (ত্রি) বর্ণ-ক্ষা। > ক্তিযুক্ত, পর্যার—ফীলিত, শন্ত,
পণায়িত, পনায়িত, প্রপুত, পনিত, পণিত, গীর্ণ, অভিষ্ঠুত,
ফিড়িত, ক্ষত, স্নতা (ক্টার্থির) ২ বিভারিত।

"চতুৰ্থমেতৰিপূলং বৈরা**টং পর্ব্ধ বর্ণিতং।**" (ভারত ১।২।২০৯) ও ক্থিত।

শ্বভর্ত্ত ন মরা দরিজস্যাপি বর্ণিকং।" (কথাস০ ১৯০৬)
বর্ণিল (ত্রি) বর্ণ-লোমাদি-পামাদিপিচ্ছাদিভাঃ শনেলচঃ। (পা
বাং।১০০) ইতি প্রান্থ ইলচ্। প্রান্তবর্ণবিশিষ্ট, বর্ণযুক্ত।
বর্ণ্ (পুং) বৃঙ্ সংভক্তৌ (অজিবুৰীভো) নিচ্চ। উণ্ ৩০৮)
ইতি-পু-সচ্-নিং। ১ নদবিশেষ। ২ আদিত্য। ৩ দেশবিশেষ।
[পবর্গে বল্লু দেখ।]

বর্ণ্য (ক্রী) বর্ণ-গাৎ। ১ কুছুম। (আ) ২ বর্ণকর। (পুং)
ত খেতার্কক। বর্ণাগণ—রক্তানন, পুরাগ, পদ্মকার্চ, বেনারমূল,
গাষ্টমধু, মঞ্জির্চা, জনস্তমূল, ভূইকুমড়া, চিনি ও দুর্বা। এই
দশটী বর্ণাগণ। (চরক স্ত্রত ৪ জ০)

বৰ্ণ (পুং)গৰক। (বৈভক্নি॰)

বর্ত্তক (क्री) বর্ততে ইতি বৃত-গুল্। > বর্ত্তনোহ, চলিত বিদারি। (হেম) (ত্রি) ২ পূজক।

> "নিবেশ্য সেনাং ভরতঃ পদ্ধাং পাদবতাং বরঃ। অভিগন্তং স কাকুৎস্থমিয়েষ গুরুবর্তকঃ ॥"(রামা[ং] ২৮১০ ৭৮২২) (পুং) ৩ পক্ষিবিশেষ, চলিত ভারই পাখী।

৪ অক্টের কুর। (অমর)

ষর্ত্তকা (রী) বর্ত্তক-টাপ, 'বর্ত্তকা শকুনো প্রাচাং' ইতি বার্ত্তিকোন্ড্যা-ন-জ্বত-ইত্তং। বর্ত্তকপক্ষী। (অমরটীকার রায়মুকুট) বর্ত্তকাঁ (রী) সপ্রশা, সাতশা।

বর্ত্তজম্মন্ (পুং) বর্তনি আকাশপথে জন্ম যগু। মেঘ। (শন্দমালা) বর্ত্তত্বিক্ষু (ফ্লী) কল্মগোহ, বিদ্রী। (রাঞ্নি -)

বর্ত্তন (ङ्गी) বর্ততেখনেনেতি বৃত্ত-করণে ল্যাট্। ১ বৃত্তি, গীবনোপায়, বেতন।

"বিনা বর্তনমেবৈতে ন তাক্সন্তি মমান্তিকং।"

২ সাধারণ বর্তুল। ও তুলনালা। ৪ তরুপীঠ। তুলার পাইজা ৫ জীবন। (মেদিনী)

"দেবতাপিভূমর্ক্যানামতিথীনাঞ্চ বর্জনম্।

ষস্তাৰশিৱেনারেন প্ংস্থক্ত গৃহং ব্রক ॥" (মার্ক°পু• ৫০।৭১)

পুং ৰৰ্ক্তে ইতি বৃত-(সম্পাত্তেভণ্ড হলাদে:। পা অ২।১৪৯)

ইতি যুচ্। < বামন। (মেদিনী)(ক্রি) ৬ বর্জিঞ্। "এব দৈনন্দিনঃ সংগী আক্ষেলোক্যবর্জনঃ।

ভিষ্যঙ্বৃপিভূদেবানাং সম্বাধা দ্ব কণাভিঃ ॥"১ছাগ" ৩,১১১২৬)

(क्री) ৭ পরিবর্জন। ৮ নির্ভের বর্জনীকরণকর্ম।

৯ শন্যকম্পনকর্ম। (স্থক্ষত প্রস্থাণ ৭ অণ) ১০ দ্বিতি,

অবস্থিতি। ১১ নিরোগ। ১২ র্জিযুক্ত। ১৩ বর্জমান।

১৪ স্থিতিশীলা। ১৫ বারস। ১৬ স্থাপন। ১৭ পেষণ।

বর্জনি (পুং) ১ পুর্বদেশ। (ব্রী) বর্জতেখনর্মেতি রৃত (র্তেশ্চ।

উপ্ ২০১৭) ইতি অনি। ২ পছা। (উজ্জ্বল)

বর্জনিন্ (ব্রি) পথিক।

বর্জনিন্ (ব্রি) বর্জনি কৃদিকারাদিতি পক্ষে ভীষা। ১ পছা।

বর্ত্তনী (স্ত্রী) বর্ত্তনি ক্লিকারাদিতি পক্ষে ঙীষ্৷ ১ পছা। ২ পেষণ। (শব্দর্ভা•)

বর্ত্তনীয় (ত্রি) বর্তনযোগা।

বর্ত্তমান (পং) বর্ততে ইতি বৃত-শানচ্। প্রয়োগের অধিকরিণীভূত কাল। পর্যায় অগ্বতন, অধুনাতন। (রাজনি ।
ব্যাকরণ মতে আরম্ভের অসমাপ্তি পর্যান্ত বর্ত্তমান। এই
বর্তমান প্রবৃত্তেপরত, বৃত্তাবিরত, নিত্যপ্রবৃত্ত ও সামীপ্য
এই চারি প্রকার।

"প্ৰব্ৰভোপরতকৈৰ বৃত্তাবিরত এব চ।

নিত্যপ্রবৃত্ত: সামীপ্যো বর্তমান চতুর্বিধ: ॥"

(মুগ্ধবোধটীকার ত্র্গাদাস) এই চারিপ্রকার বর্ত্তনানের মধ্যে সামীপা দ্বিবিধ ভূতসামীপা ও ভবিষাৎসামীপা। এই চারিপ্রকার বর্ত্তমানের উদাহরণ যথা 'মাংসং ন থাদাতি' এই স্থলে আদিতে প্রবৃত্ত যে মাংসভোজন তাহা নিবর্ত্তিত করিতেছে, এইজ্ঞা ইহা প্রবৃত্তোপরত বর্ত্তমান। 'ইহ কুমারাঃ ক্রীড়ম্ভি' এই স্থলে কুমারগণের তদানীস্কন ক্রীড়নাভাবেও পূর্কে তাহারা ক্রীড়া করিরাছিল, এই বোধ হওয়ায় ইহা বৃত্তাবিরত বর্ত্তমান। 'পর্ক্তাভিন্তিপ্তি' এইস্থলে পর্কতিদিগের ভূত ও ভবিষ্যৎকালে অবস্থানের সম্বৃত্তবিক্ষাহেত্ব বর্ত্তমানত্ব থাকায় নিত্যপ্রবৃত্ত বর্ত্তমান।

কিলা আগতোহসি ইতি প্রশ্নে অধ্বেশ্বলাদের্বস্তমানত্ত্বাং এবাংহং আগচ্ছামি ইতি আগতোহি বলতি অর্থাৎ কথন আসিয়াছ এইরপ প্রশ্ন করিলে আগতবাক্তি এই আমি আসিলাম এইরপ উত্তর দেয়, এইবংশে তাহার আগমনক্রিরা হইয়া গেলেও আগমন কল্প পওশ্রমাদির বর্তমানতা থাকার এইবংল ভূতসামীপা বর্তমান হইয়াছে। 'কলা গমিষাসি ইতি প্রশ্নে এবাংহং গচ্ছামি ইতি গমনক্রিয়মাণোল্প মোহণি বল্তি' কখন গমন করিবে এইরূপ প্রশ্ন করিলে গমন করিতে উল্পত ব্যক্তি এখনই গমন করিতেছি এইরূপ উত্তর দেয়, এইবংলে গমনক্রিয় আরক্ত না হইলেও ভবিশ্বতের সামীপা হেতু এইবংল ভবিশ্বত্বসামীপা বর্তমান হইয়াছে। এই চারিপ্রকার বর্তমান। ছৃত, ভবিশ্বৎ ও বর্তমান ভেলে কাল ক্রিবিং। প্রায়ক্ত অসমাপ্রকালই বর্তমান, উপস্থিত বা উপস্থিতের সমীপ বর্তমান। [ধাতু ও কালন্দ দেখ]

হইয়া থাকে।

বর্তমান কালে নট্ বিভক্তি হয়। (ঞ্জি) ২ বিছমান, উপস্থিত, বাহা চলিতেছে। ৩ সাক্ষাৎ। ৪ স্থিতিশীল। বর্তমানতা (ত্রী) বর্তমানত ভাবা তল্টাপ্। বর্তমানত, বর্তমানের ভাব বা ধর্ম।

বর্ত্তমানাকেপ (পুং) বর্তমান ঘটনায় অগন্মতি বা অস্বীকার।
বর্ত্তরেক (পুং) বর্ত্তো বর্তনং রাতি গৃহাতীতি বা বাহনকাৎ
উক। ১ নদীভেদ। ২ কাকনীড়া ৩ জলাবট। (মদিনী)
৪ ধারপাল। 'মন্ত্রী গ্রন্থিহেরোংমাতোা লাংছিতো বেত্রধারকঃ।
দৌংসাধিকো বর্ত্তরতো গর্জাটো দশুবাসিনি॥' (গ্রিকাণ)
বর্ত্তলোহ (রী) বর্ততে ইতি বৃত্ অচ্, ততঃ কর্মধারয়ঃ।
লোহবিশের, চলিত বিদ্রি লোহ। পর্যার—বর্ত্তীক্র, বর্ত্তক,
লোহসম্বর, নীনক, নীললোহ, নীল্জ, বর্ত্তলোহক। ইহার শুণ—

करू, जिल, निनित, मधुत, कक, नार ও পিত্তনাশক এবং পিত-

দাহপ্রশমক। (রাজনি°) এই লোহ শোধিত হইলে উক্ত গুণ

বর্দ্তিস্ (ক্লী) পদ্মপঙ্জি। "ছাবা পৃথিবী বর্জোভ্যাং বিন্যতং' (শুক্লবন্ধু° ২৫।১) 'বর্জাঃ পঙ্জিঃ ভাভ্যাং' (মহীধর) বর্ত্তি (জ্লী) বর্ততেহনমেডি বৃত্ত (ছাপিষি কহি বৃত্তীতি। উণ্ ৪০১৮) ইতি ইন। ১ দীপদশা, বাতি, শলতে।

'ষ্থা প্ৰদীপো স্বতৰ্ষ্টিমন্ত্ৰ শিশাঃ সধ্যা ভজতি হতালা সম্।'' (ভাগ° ৫।১১৮)

২ ভেষজনির্মাণ। ৩ নয়নাঞ্জন। ৪ লেখ। ৫ গা<u>আরু</u>-লেপনী। ৬ দীপ। (মেদিনী)

গঞ্জপুরাণে লিখিত আছে যে কতক্ষল, শৃথ, দৈছব, জুবুগ, বচ, ফেন, রসাঞ্চন, মধু, বিজ্ঞাও মনঃশিলা এই সকল জবেয়ের বর্তি কাস, তিমির ও পটল রোগ নাশ করে।

শকতক্ত ফলং শৃশং সৈদ্ধবং অ্যুষণং বচা। ফেনো ৰসাঞ্জনং ক্ষোত্ৰং বিভূজানি মনঃশিলা।

এবাং বৰ্ত্তি হৃষ্টি কাসং তিমিরং পটলং তথা ॥" (গরুড়পু° ১৯৮**অ**°)

ভাব প্রকাশে রোপণী ও রেছনীবর্ত্তির বিষয় এইরূপ আছে— রোপনীবর্ত্তি—তিলপুন্স ৮০টী, পিপুলদানা ৬০টী, আতীফুল ৫০টী, এবং মরিচ ৩টা এই দকল দ্রব্য জলে উত্তমরূপে পেষণ ক্ষরিয়া বর্ত্তি ক্ষরিবে, এই বর্ত্তি ঘারা নয়নে অঞ্চন প্রয়োগ ক্ষিণে কাস, ডিমির, অর্জ্জন, শুক্ত ও মাংসর্ভি নই হয়। মাত্রা এক মটর কলার পরিমাণ।

লেগনীবার্ত্তি — আমলকী বীজ ১ তোলা, বাহেড়া বীজ ২ ভোলা, ও হরীতকী বীজ ৩ তোলা এই কএকটা দ্রবা জল হারা পেবল করিরা মটর কলার প্রমাণ বর্তি প্রস্তুত করিয়া নরনে স্কলন প্রবােগ করিবে। এই বৃত্তিতে স্কল্লাব ও বাতরক্ত জান্ত শীড়া প্রশিষ্ঠ হয়। (ভাৰপ্র° বিতীয় ৩০) বর্ততেহনরের্ডি হুত (রুডেন্দ্রশাস। উণ্ ৪।১৪০) ইডি ই। ৭ বোগকর্মজন্য। দ বর্ত্তিক (গ্রং) পন্দিবিশেষ, দিন্দী বটেয় পাখী। পর্যায় বার্তিক, বন্ধী, গাঞ্জিকায়। ইহার মাংসঞ্চপ-নির্দোধ, বীর্য্য ও প্রতিক্ষণ। (রাজনি°)

বাৰ্ক্তিক। (জী) বৰ্জনি বৰ্জতে ইডাচ্, বৰ্জ বাৰ্থে ক-টাঁপ্। বৰ্জনী পক্ষী, চলিত ভারই। ইহার মাংসপ্তপ-মধুর, কক্ষ, কম ও বায়্নাশকর। (রাজব°) ২ অজপুলী। (রাজনি°) বার্তি বার্থে কন্টাপ্। ৩ বর্জি, বাতি, পলিতা বা পলিতা। কালিকাপুরাণে লিখিত আহে যে, বর্জি পাঁচ প্রকার।

"পদাস্ত্ৰতবা দৰ্ভগৰ্ভস্ত্ৰভৰাথবা।

শালজা বাদরী ৰাপি ফলফোবোডবাথবা।

বর্ত্তিকা দীপক্রত্যের সদা পঞ্চবিধা স্থতা ॥" (ফালিফাপু° ৭৮ছা°)
পদ্মস্ত্রতব, দর্ভগর্তস্ত্রতব, শালাল, বাদরী ও ফলফোরোছব
এই পঞ্চবিধ স্ত্রহারা দীপের বর্ত্তিকা করিতে হর। এই বর্ত্তিকা

হারা দেবপূজার আারতী দিবার বিধি আছে। ৪ পিটকবিশেষ। (চরকচি॰ ১০০)

বর্ত্তিতব্য (জি) বৃত-ভবা। বর্ত্তনযোগ্য, স্থাতব্য, স্থিতিশাল। বর্ত্তিত (জি) বৃ-দিচ্-জ্ঞা > সম্পাদিত, নিশাদিত। ২ ক্বতসম্পন্ন। বর্ত্তিন্ (জি) বৃত-ইন্। বর্ত্তনশাল, বর্ত্তিম্, বর্ত্তন। অবস্থান। বিজির (পুং) কণিঞ্জল সদৃশ পক্ষী, তিজির পক্ষী। (চরক) বিজিম্বু (জি) বর্ত্ততে ইতি বৃত্ত (অলম্কঞ্নিরাক্তঞ্প্রস্থানাং-প্রেদ্দেচ্যপ্রপবৃত্ত্বপুসহচর ইক্ষ্চ্। পা তাং।১৩৬) ইতি । ইক্ষ্চ্। > বর্ত্তনশীল, পর্যায় বর্ত্তন, বর্ত্তী। (হেম)

শনিরাকরিক বৃত্তিক বৃত্তিক পরিতো রণম।

উৎপতিক সহিক্চ চেরতৃঃ ধরদ্বণী ॥" (ভটি ।।>)

বিশ্বিষ্যমাণ (ত্রি) বৃত ভবিষ্যতি ক্সমানপ্রত্যরঃ। ভবিষ্যৎ-কালাদি, বর্ত্তমান প্রাগভাষাশ্রম। (রাজনি•)

"वृद्धवर्ष्धिवामानानाः कथाःनानाः निप्तर्यकः।

সংক্ষিপ্তাৰ্থন্ধ বিজ্ঞের আদাবন্ধক দশিতঃ ৪'' (সাহিত্যদ • ৬০০৮) বৃদ্ধিস (ক্লী) গৃহ। "ত্তিবৃদ্ধিবাতঃ চিনন্ধবৈতে" (ঋক্ ১।৩৪।৪) 'বৃদ্ধিস বৃদ্ধিকেইত্রেতি বৃদ্ধি গুড়িং' (সারণ)

বৰ্ত্তী (ব্ৰী) ৰাউ-কৃদিকারাদিতি ভীব্। বৰ্তি, সদিতা, পদিতা।
"আসীদভাধিকা চান্ত ব্ৰীঃ প্ৰিন্নং প্ৰামৃত্যুক্ত।
নিৰ্বাণকালে দীপক বভীমিব দিংক্তঃ ॥" (ভারত ৪০০১।২৩০

নিবাণকালে দাশক বড়ামিব দাশক্ত ল' (ভারত চাই সং বস্ত্রীর (পুং) বটের পাধী, ভিত্তির পদী। (চরক)

বস্ত্র (বি) বর্তত ইন্ধি বৃত বাহলকাছ্লত্। গোলাকার বন্ধ,
পর্বান্ন নিজল, বৃত্ত, মথালাবিত। (শন্ধরত্বা °) ২ সম্পূর্ণার্ভবৃত্ত।
বি নী) ও গ্রন। বোলনি •) ৪ কলাব বিশেষ, বাটুল, মটর।

"কলারত এরো ভেলাত্রিপুটো বর্জুলোহনটা।" (শন্দমাণ)

৫ ওঠ্নণ। ৬ টন্থালার। ৭ মণিভেল। (বৈভকনিণ)
বর্জুলা (ত্রী) বর্জুল-টাপ্। ওর্জুপাটা, টেকোর বাটুল।
বর্জুলা (ত্রী) বর্জুল-টাপ্। ওর্জুপাটা, টেকোর বাটুল।
বর্জুকে (ত্রি) ২ বর্মুক্ত। ২ নেঅপক্ষমুক্ত।
বর্জুকর্দের। পুং) নেঅবর্জুগত রোগবিশেব। (ক্ষম্পত উত্তর তক্ষ্প)
বর্জুকর্দ্মন্ (ক্রী) পথ বা রাত্যপ্রভক্ত কার্য্য (Engineering)
বর্জুক্ (পুং) অথব্যভেলের শাখাভেল।
বর্জুন্ (ক্রী) বর্গুভেলের শাখাভেল।
বর্জুন্ (ক্রী) বর্গুভেলের শাখাভেল।
শাস্তাসিত্রক তন্মধ্যে নেঅরোম গুলং হি বং।
প্রজ্যাদনং ভবেদ্বর্ম্ব চাক্ষিক্টমতঃ পরম্॥" (আখাবৈ ২ ২।২০)
বর্জানি (ত্রী) বর্গুভে ইভি বৃত্ত (বৃত্তেন্চ। উণ্ ২।১০৭) ইভি

বজুনি (জী) বর্জত ইতি বৃত (বৃতেশ্চ। উণ্২।১০৭) ইতি অনি-চকারাৎ মৃড়াগমোহণাত্রেতি কেচিং। ১ পছা, মার্গ, পথ। বজুবিদ্ধা (পুং) নেরপক্ষগত রোগ, চকুর পাতার এই রোগ হর। "কঞুমতারতোদেন বন্ধ শোকেন বো নরঃ।

ন সমং ছাদয়েদকি ভবেষকা স বয়নি:॥"

(সুশ্রুত উ• ৩ ব্ল•) [নেত্ররোগ দেখ]

বর্মাক্ষিক (পং) বর্গনাকিক। (বৈশ্বকনি॰)
বর্জারোগ (পং) বর্জনো রোগং। নেত্রপক্ষণত রোগ, চকুর
বর্মণত রোগ। পৃথক পৃথক দোষ সকল মিলিত হইরা চকুর
বর্মকে আশ্রয় করিলে এই রোগ উৎপন্ন হর। এই বর্জারোগ
২> প্রকার, যথা—১ উৎসঙ্গিনী, ২ কুন্তিকা, ৩ পোথকী,
৪ বন্ধাকরা, ৫ বর্মার্ল, ৬ শুকার্ল, ৭ আন্ধনপ্রিকা, ৮ বহুলবর্ম্ম,
১ ব্যাবক্ষক, ১০ কিইবর্মা, ১১ বর্মক্ষম, ১২ শ্রাববর্মা,
১৩ প্রাক্ষরবর্মা, ১৪ আক্লিরব্মা, ১৫ বাতহতবর্মা, ১৬ বর্মার্ম্মদ,
১৭ নিমের, ১৮ শোণিতার্লা, ১৯ নগণ, ২০ বিরব্মা, ও
২১ কুঞ্চন এই একবিংশতি প্রকার বর্মারোগ।

हेहारमञ्जलन---

ত্রিলোবের প্রকোপতে কৃষ্মধান্তন কও বৃক্ত, বাহিরে
বক্তবর্গ এবং অভান্তরে মুখবিশিষ্ট পীড়কা উৎপন্ন হইলে ভাহাকে
উৎসন্ধিনী কহে। বে নেত্ররোগে বন্ধ্যমধ্যে দাড়িমকলের স্থার
ফলবিশেবসন্দ পীড়কা উৎপন্ন হয়, ঐ পাড়কা ভিন্ন হইর।
আব নির্গত হয় এবং পুনর্কার স্মীত হইরা উঠে, ভাহাকে
কুন্তিকা করে।

কণ্ডুও প্রাবযুক্ত, ওদ ও বেলমাবিশিষ্ট রক্তসর্বপের আরুতি পীড়কা উৎপন্ন হইলে ভাহাকে পোধনী করে।

বন্ধ মধ্যে কুড় কুল্ল পীড়কাগরিবৃত কঠিন স্থল ও ধরস্পর্শ লীড়কা উৎপন্ন হইলে তাহাকে বন্ধ শর্করা করে। কাঁকুড় বীল সন্শ পৃদ্ধ তীক্ষ অগ্রবিশিষ্ট অথচ জন্ধবেদনাযুক্ত পীড়কা উৎপন্ন হইলে ভাষাকে বন্ধান্দি কৰে। বন্ধেন অভ্যন্তনে দীর্থ অব্ধ্রবৃক্ত কর্কশ, অভ্যন্ত কঠিন, অথচ শুদ্ধ মাংসাত্মর উৎপন্ন হইলে ভাষাকে শুদ্ধান্দ কৰে। বন্ধা মধ্যে দাহ ও প্রচিবিদ্ধবং বেদনাযুক্ত, কোমল ও অন্নবেদনাযুক্ত ভামবর্ণ পৃদ্ধ পীড়কা উৎপন্ন হইলে ভাষাকে দূৰিকা কহে।

সমস্ত বন্দের উপর চর্দের স্থায় বর্ণবিশিষ্ট ও কঠিন পীড়কা হইলে ভাহাকে বহুলবন্ধ কহে। বন্ধবিদ্ধবোগে বন্ধবি কণ্ডু, (माथ ও णज (तमनायुक स्टेंग्रा थात्क এवः রোগী বন্ধ नाता অকিগোলক সম্যক্ আজ্ঞাদন করিতে অসমর্থ হয়। বর্মাহয় ব্দলবেদনাযুক্ত ও তাত্রবর্ণ হইয়া অকন্মাৎ রক্তবর্ণ হইলে তাহাকে ক্লিরবর্ম কহে। ক্লিরবর্মরোগ পিতামুবিদ্ধ হইরা যথন রক্তকে বিদশ্ব করে ও অর অর আব নির্গত ২ইয়া আর্ক্রভাবাপর হয়,তথন তাহাকে বন্ধ কৰ্দম কহে। বন্ধের বাহে ও অভ্যন্তরে কণ্ডু যুক্ত শ্রামবর্ণ অল বেদনাবিশিষ্ট অথচ ক্লিক্ষভাবাপর শোথ হইলে শ্রাব-বর্ম্ম ; বহিদেশে কিঞ্চিৎ বেদনাযুক্ত শোথ হইয়া উহার উপাস্ত অত্যন্ত ক্লিন্ন হইলে প্রক্লিরবর্ত্ত ; বন্ধবিয় পাকে না অথচ প্রক্ষালন না করিলে পরস্পর সংলগ্ধ হইয়া থাকে এবং পুনঃ পুনঃ ধৌত করিলে পৃথক্ হয়, ভাহাকে অক্লিরবন্ধ ; যে নেত্ররোগে বেদনার সহিত হউক বা বেদনাবিহীন হউক, বৰ্মসন্ধিবিশ্লিষ্টপ্ৰযুক্ত নিমেষ ও উন্মেৰরহিত হয় এবং সঙ্গোচনে অশক্ততাহেতু নেত্র মুদ্রিত হয় না, তাহাকে বাতহতবন্ম ; বন্মের অভ্যন্তরে বিষম কিঞ্চিৎ বেদনাযুক্ত ঈষৎ রক্তবর্ণ অথচ অপাকী গ্রন্থির ভার হুইলে তাহাকে বন্ধৰ্মিকুদ; যে নেত্ৰবোগে বন্ধ ও গুক্লের সন্ধিন্থিত মিলন উন্মীলনকারী শিরাসমূহে কুপিত বায়ু প্রবিষ্ট হইয়া বন্ধ-হয়কে অত্যস্ত চাৰনা করে, তাহাকে নিমেষ ; কুপিত রক্ত কর্ভুক বম্মধো রক্তবর্গ কোমল মাংসাত্রর উৎপন্ন হইলে তাহাকে শোণিতার্শ করে; (এই রোগ ছিন্ন হইলে পুনর্ব্বার বন্ধিত হয়।) বমের উপরিভাগে কঠিন, স্থা কণ্ডু যুক্ত, পিচ্ছিল, অথচ অপাকী বদরী পরিমাণ এছি উৎপন্ন হইলে নগণ, যে নেত্রোগে ত্রিদোবের প্রকোপ হেডু বর্ম্মের বহিষ্ঠাগে শোথ উৎপন্ন হইয়। ঐ শোপের অভ্যন্তরে বহুসংখ্যক ছিদ্র হর এবং ঐ ছিদ্রদার। **জলের ভার অত্যন্ত লাব নির্গত হর, ইহাকে বিববন্ধ** এবং বাতাদি দোৰতার কুপিত হইরা বখন বন্ধ হরকে সভূচিত করে, তথন রোগীর দর্শনশক্তির অভাব হয়, এই রোগকে কুঞ্চন কৰে। এই একবিংশতি প্ৰকার বন্ধ রোগ। (ভাৰপ্র• নেত্র-রোগাধি•) [নেত্ররোগ বেধ।]

২ অবের নেত্রবর্দ্ধ গড় রোগ। (জরদন্ত ৩০ জ:)
ব্যমু বিবন্ধক (পুং) বর্ম রোগবিশেন। [বর্তনোগ দেখ।]

বন্ধ শিক্ষা (জী) বন্ধ রোগবিশেব।
বন্ধ বিয়াস (পুং) গধকেল, গধলান্তি।
বন্ধ বিষাধ (পুং) চনুর বন্ধ গভরোগভেদ। (ক্লাভ)
বর্ত্ত্ব (জি)> নিবারবিভা। ২ প্রেরক। (সারণ)
বর্ত্ত্ব (জি)> বারবিভা। ২ রক্ষণশীল। (ক্লী) ও প্রণালিকা।

বর্ত্ত্র (ত্রি) ২ বাররিতা। ২ রক্ষণশীল। (ক্লী) ৩ প্রণালিকা বংর্স (পুং) চোরালের ভিতর মাড়ীর উপর ক্ষীতি। বংস্যা (ত্রি) বংর্সাক্ষীর।

বর্দ্ধরতি। নৃঙ্ অববর্দং।
বর্দ্ধ (ক্লী) বর্দ্ধরতি প্রয়তি বর্দ্ধ-অচ্। ২ সীসক। (হেম)
(পুং) র্ধ-অচ্। ২ আক্ষণবৃষ্টিকা। (জটাধর) ও পৃর্ধি,
পূরণ। ৪ ছেদ।

বর্দ্ধিক (পুং) বর্দ্ধতে ইতি বৃধ-ধূল। (এ) > পূরক। ২ ছেদক।
বর্দ্ধিকি (পুং) বর্দ্ধতে ছিনজীতি বর্দ্ধ-অচ্, বর্দ্ধং কবতীতি কব
হিংসায়াং বাহলকাং ডি। স্বন্ধার, ছুতার।

"কর্মান্তিকান্ শিল্পরান্ বর্দ্ধকীন খনকানপি। গ্লকান্ শিল্পিনদৈচৰ তথৈৰ নটনর্ত্তকান্॥" (রামারণ ১।১৩)৭)

গণকান্।শালন্যের ওবের নচনত্তা। (সানাম্য সাস্তা)

বর্ত্তিন্ (পুং) বর্জকো বর্জোহন্তি অস্তেতি বর্জক-ইনি।
বর্ণসন্ধর জাতিবিশেষ। পর্যায়—ছপ্তা, বর্জকি, ভক্ষা, ক্রধার,
র্থকার, র্থকর, কাঠতট্, কাঠতক্ষক। (শব্দর্যা)

"অর্ডন্ধে ব্লভেনো নেমা। নাশো বল্ভ বিক্ষের:।

অর্গক্রোংকভঙ্গে তথানিভক্ষে চ বর্দ্ধবিনঃ ॥" (রুংংস । ৪০০ ২২)
বর্তমান সমরে বড়্হি, বহিঁ, বধিঁ, বিদ্ধিক বা বর্ছি নামে
পরিচিত। উত্তরপশ্চিমে ইহারা আপনাদিগকে বিশ্বকশারে
সন্তান বলিরা মনে করে। একংগে প্রকৃত বর্দ্ধকী জাতি দেখা
যায় না। মধার্ত্ত নানা শ্রেণীর লোকে ছুতার বৃত্তি অবক্ষন
করিরা এই নামে একটী শ্বত্ত শ্রেণীভূক্ত হইয়া পড়িয়াছে।

বেহারের বর্জকীরা ছয় থাকে বিভক্ত। তাহারা পরস্পরে আলান প্রদান করে না। কনোজিয়ারা কেবল কাঠের কাজ করে, আর মঘবর্হিরা লোহা ও কাঠ লইয়া জানালা দরজা প্রস্তৃতি প্রস্তৃত করিয়া থাকে। ভাগলপুরে এই জাতির লোহার নামে একটা থাকের বাস আছে। উহারা প্রকৃত লোহার হইতে পৃথক্। কামারক্রা থাকের বর্জকিগণ কাঠের পুতৃল নাচাইয়া বা ধেলা দেখাইয়া পথে পথে পুরিয়া বেড়ায়।

উত্তরপশ্চিমভারতের হিন্দুমূদগমান বড় হিদিগের মধ্যে জনেক দাধা আছে। তল্মধ্যে হিন্দু বিভাগে ৭৯টা খতত্র থাক আছে। ঐ দকলের মধ্যে নিমোক্ত গুলি স্থানভেদে বিশেষ পরিচিত। শাহরাণপরে —বন্দলীয়া, চোলী, মূলতানি, নাগর, তরলোইয়া; মূলঃক্তর নগরে ঢালবাল, লোটা; মীরাটে ক্সুবার, বৃশন্ধ-

সহর—জীল; আলীগড় — চৌহান, মধুরা—ৰাজন, নোশনিরা, আগ্রান্থ—নাগর, অভ্যার ও উপ্রোত্ত; কুরুথাবাক—পারিভিরা, মৈনপুর—উমারিরা; ইটা—জগবারিরা, বারমাণিরা, বিশারী, জলেবরীরা; বাগিরা—গোকুলবংশী; বভিজেলার – দক্ষিণান্থ, সর্বরিরা, সরবুণারী, গোগু।—কৈরাতী বা ধরাড়ী, লোহার বহৈ, কোকালবংশী, নগবিরা বা নগহিরা পুরবীরা, উত্তরীরা, ও ক্রী বা থাটি সহমান, মধুরীরা, লহোরী, কোকাল ইত্যাদি। এতদ্বির মহর, টাক, প্রঝা ও বা্মন বড়হি ও চামার বড়হি প্রভাগ দৃষ্ট হর। বারাণসী বিভাগে জনাউধারী নামক একটা থাক আছে, তাহারা বক্তরে ধারণ করে। তাহারা মন্তর্মাংস প্রকৃতি অথাত্ত লগাভ করে না। প্রথা থাকেরাও বক্তস্ত্র ধারণ করিরা থাকে।

সেতৃবদ্ধানেশ্বর নামক বৰ্দকীরা কেবল কাঠের দেবমৃত্তি গড়িয়া বিক্রম করে। জাতীর বাবসারে উচ্চ ছান অধিকার করিলেও ইহারা ভিক্লা করে বলিয়া সমাজে নীচ শ্রেণীরূপে গণ্য হইরাছে। থাটীরা কেবল গাড়ীর চাকা গড়ে এবং নিলীবানী কোকাসগণ টেবিল, চেমার প্রভৃতি প্রস্তুত করিরা থাকে। খাটী ও কোকাসেরা জলাচরণীর নহে। টাঁক, উকাট, দিভান ও জন্তাবেরা জন্মার রাজপ্তজাতির জন্ততম শাখা বলিয়া গণ্য। চুণিয়ারা, কুলের ও কুর্দেরা প্রভৃতি পর্বতবাসী বড় হিলা

মগহিয়াদিগের মধ্যে ও হইতে ৫ বৎসরের মধ্যে বালিকার বিবাহ হইয়া থাকে। কিন্ধু উত্তরপল্ডিমাঞ্চলে বালিকার ৭ হইতে ১১ বৎসর এবং বালকের ৯ হইতে ১৩ বৎসরের মধ্যে বিবাহ হয়। মাতৃকুলে অথবা পিতৃত্বসার বংশের পিশুবাধা পর্যাপ্ত তাহারা বিবাহাদি করেনা। তাহার মধ্যে ধনীর পক্ষে চারহোবা প্রথার,নিধনীর পক্ষে "দোলা" প্রথার এবং সাধারণতঃ 'আদল বদল' ও সাগাই মতে বিবাহ হইতে দেখা বায়। বিববাবিবাহ প্রচলিত আছে। বিধবাপণ দেবর বাতীত অপর ব্যক্তিকে বিত্তির পারের পতিরূপে প্রহণ করিতে পারে। জীলোকের চরিত্র-দোব ঘটিলে তাহাকে আতিচ্নত করা হয়। যদি সে এই সমাজদক্তের পর পুনরার ধর্মপথ্যেও সন্মানে জীবন বহন করে, তাহা হইলে সে সমাজদুক্ত হইরা আবার সাগাই মতে বিবাহ করিতে পারে। পুনরার ওত্তাপাধারের প্রার্হিত বার্মিকের বার্মিকের বার্মিকের বার্মিকের বার্মিকের করিতে পারে। পুনরার সত্ত্বপাপাধির প্রার্হিত বার্মিকের বার্মিকের বার্মিকের অব্যাধ্যাতীর্থে, গলার বা সরষ্ঠে সান।

তাহারা বীরাচারী লৈব। মন্ত ও মাংসভোজন ও ধারা প্রহণ করে না। পাঁচশীর, মহাবীর, দেবী, ফুল্হাদেও, বিবিরাদেব, বিশ্বকর্মা প্রভৃতি দেবতার পূজার তাহারা বিশেষ ভক্তি প্রদেশন- পূর্কক পূজা করে। তাহারা শবদেহ লাহাত্তে ভত্ম বা অছি

গটরা গলা বা কোন নদীর জলে নিক্ষেপ করিরা থাকে।

সাধুসুক্রবিগের সমাধিস্থানের উপর তাহারা আধিনমানের

মহালরার দিন জল দের এবং অরোদশী তিথিতে সেই স্থলে চাউল

ও গুরু দিরা আন্দাদিগাকে কিছু খান্ত এবাাদি দান করিরা থাকে।

বসত বা বিস্তিভা রোগ্নে মৃত্যু ঘটিলে তাহারা শবদেহ প্রোথিত

করে অথবা নদীর জলে তাসাইয়া বের। তির দেশে কোন

আন্মীয় বা বজনের মৃত্যু ঘটিলে তাহারা কুশপুত্রিকা দাহ করে।

বেহারের বড় হিরা জলাচরণীর। তাহারা উপ্রমহারাজ, বন্দি, গোরাইরা ও পাঁচণীর প্রভৃতি গ্রাম্য দেবতার পূজা করে। গোরালা, জোইরী, হজাম প্রভৃতির স্থার তাহারা সমাজে তুল্য জাসন পাইরা গাকে। স্বাঠের কার্য ব্যতীত ভাহারা চারবাসও করে!

বর্দ্ধন (ি) বর্দ্ধরতীতি বৃধ-নন্দ্যাদিশাৎ ন্যু, বন্ধা বর্দ্ধতে ভচ্ছীন ইতি বৃধ-পূর্ব্তে (অনুনাত্তেভাতে । পাতাং।১৪৯) ইতি বৃচ্। ১ বর্দ্ধিন, বর্দ্ধনশীন। ২ বৃদ্ধি, উরতি। ৩ বাড়ান। ৪ পূরণ। ৫ ছেদন। ৬ বৃদ্ধিকারক।

বর্দ্ধনকোট, (বর্দ্ধনকূটা)—বস্তুড়া জেলার অন্তর্গত বগুড়া হইতে উদ্ভরে অক্ষাণ ২৫°৮/২৫′ উ: ও জাবি॰ ৮৯°২৮ পূ:, গোবিল-গঙ্গের নিকট, করতোরা নদীতীরে অবস্থিত। একণে রাজ-বাড়ী নামে খ্যাত। কাহারও মতে, এখানে এক সমরে প্রাচীন পৌপু বর্দ্ধনরাজ্যের রাজধানী ছিল। সংস্কৃত ব্রদ্ধপণ্ডের মতে, বন্ধনকোট নিস্তি দেশের অন্তর্গত। একণে প্রাচীন রাজ-বাড়ীর ধ্বংসাবশেব দৃষ্ট হয়। বর্দ্ধমান কালেও বর্দ্ধনকোটে এক বাবেন্দ্র কারত্ব রাজবংশ বিভ্যমান।

वर्कमकृष्ठित्र-ताम्रयःम ।

বর্জনকৃতী বছকাল বারেক্স কারত্বের অধিকারে ছিল। এখানকার ইতিরুক্ত ইইতে জানা যার বে, গুরীর চতুর্জল শতাক্ষে আলমান গোরীর দেববংশে রাজেক্স নামে এক ব্যক্তি প্রবল ইইরা
ইন্রাকপুরের অন্তর্গত বহু ভূসম্পত্তি অধিকার করিয়া বসেন।
কোম্পানীর আমলে গুড্লাড সাহেব ইন্রাক্পুরের বে রাজবিবরণ সংগ্রহ করেন, ভাহা ইইতে জানা যার বে, এখানকার
প্রম রাজার নাম রাজেক্স, তৎপরে বংশাত্ক্রমে রাজা ভগীরও,
রাজা প্রগাত্ত, রাজা ভ্রগাগ্রসাদ, রাজা রামহলাল, রাজা
গোপীরমণ, রাজা অনরকান্ত, রাজা গৌরহরি, রাজা আর্যাবরের ও
আর্যাবরের প্র রাজা ভগবান্ রাজ্য করেন। + বারেক্স কারত্বগণের ঢাকুর নামক কুলগ্রহে লিখিত আছে,—

"তৎপরে কহি এক **কেব পরিপাটী**। আর্য্যাবর মণ্ডল বাস ফৈলা বর্জনকুটা।। তার পুত্র ভগবান করিয়া চাতুরী। রাজা ভগবান মৈলে নিলা জমিলারী॥ যবে মানসিংহ রাজা বাজালাতে আইলা। নয় আনা সাত আনা ভূমি বন্টন করিলা।। ক্রমে ক্রমে ভাগ্যশন্মী প্রচুর হইল। হন্দী নিশা রাজ্টীকা পাতসা করিল। তাহার সন্তান হইল কুমুদানশন। তশু পুত্ৰ রগুনাথ ৰড়ই সদগুৰ। মনোহর তম্ম হাত ডক্ত পুত্র হরি। রাজা বিখনাথ তম্ম স্কুত গিরিধারী। প্রধান বারেন্দ্র সনে কুলক্রিয়া কৈল। কুলীন সমাজ মাঝে মণ্যাদা পাইল & নিরাবিল সিদ্ধ ঘরে হইল করণ। সেই অফুসারে দেব হইল চলন ॥"

বর্জনকূটীর নিকটবর্ত্তী রামপুরের বাহ্নদেবের মন্দিরে এইরূপ ইটকবোদিত লিপি পাওরা যায়—

"গুণাক্ষিশরচক্ষেণ যুতে শাকে ভবচ্ছিদে। ভবাক্ষিতীতো ভগবান্ দদৌ শ্রীবিঞ্চৰে মঠম্॥"

অর্থাৎ সংসারসাগরভীত ভগবান্ ১৫২০ শকে অর্থাৎ
১৬০১ খৃঠানে ভবভরহারী শ্রীবিকুর উদ্দেশ্তে এই মঠ দান করেন।
উক্ত প্রমাণ অর্থারে খুটার ১৬শ শতানে আর্যাবর মগুলের
অন্তাদর শ্রীকার করিতে হয়। মিঃ গুড্লাড্ সাহেব ১৭৮১
খুঠানে লিখিরাছেন বে, রাজা আর্যাবরের পুত্র রাজা ভগবান্
নির্বোধ ছিলেন। এই রাজা ভগবানের দেওরানের নামও
ভগবান্ছিল। দেওরান স্বিধা মত তখনকার ঢাকার স্থবাদারকে
উৎকোচ দিয়া নিজ নামে সম্পত্তি লিখাইরা সইলেন। আরু দিন
পরেই রাজা ভাহা জানিতে পারিলেন। তৎপরে উভরে ভরতর
বিবাদ উপস্থিত হইল। রাজার পক্ষ হইতে এ সমর দরবার
হইরাছিল। দীর্ঘকাল দরবারের পর ছির হয় বে, রাজা নয়
আনা ও দেওয়ান সাত আনা জংশ পাইবে। এই সাত আনা
দিনাকপুর রাজ্যের অন্তর্গত হইরাছিল।

ক্ষিত ঢাকুরের উক্তি পাঠ করিলে একটু গোলে পড়িতে হর, আব্যাবরের পূর্বে এই বংশ রাজোগাধিতে ভূষিত ছিলেন কি না, সন্দেহের বিষয় হয়। আব্যাবরের "মঞ্জন" উপাধি দৃষ্টে মনে হয়, এই বংশ পূর্ব্ব হইতেই সম্পদ্ধিশালী ছিলেন। তৎপুত্র তপৰান্ বর্জনকৃটীর কেওবান ছিলেন কি না, দে বিষয় সন্দেহ আছে। বেওৱান থাকিলে বারেজে ছাকুরকার সে কথা লিখিতে

^{*} Mr. Goodlad's Account of Edrakpur, no. 12. p. 69.

ভূলিতেন না। তবে দেওয়ানী কথাটা কিরপে আদিল ?
দিনাজপুরের ইতিহাস হইতে আমরা জানিতে পারি বে, দিনাজপুরপতি বিকুদত হইতে বর্তমান মহারাজ গিরিজানাথ ১১ল
পুরুষ । বর্তমান মহারাজের উদ্ধৃতিন ৬৮ পুরুষ রাজা রামনাথ
নবাব মুর্লিদকুলীর সমসামন্তিক। রামনাথের পিতা হরিরাম
পুর্বতন দিনাজপুরপতি শ্রীমন্ত দত্তের ক্যার পাণিগ্রহণ করেন।
হরিরাম রায় ইদ্রাক্পুর বা বর্জনকুটারাজের দেওয়ান ছিলেন।
এই হরিরামের পুত্র শুকদেব রায় মাতামহের উত্তরাধিকারপ্রে
দিনাজপুররাজ্য লাভ করেন। [দিনাজপুর শক্ষ দেখ!]

১৬৭৭ খৃষ্টাব্দে শুকদেব রার পরলোক গমন করেন। একপ স্থলে তাঁহার পিতা বর্ধনক্টীর দেওয়ান ছরিরাম রার রাজা ভগবানের সমসাময়িক হইতেছেন। ইদ্রাক্পুরের সাত আনা অংশ হরিরামের বংশ অধিকার করিয়া বদেন, এই করণেই বোধ হয় দেওয়ান কর্তৃক বর্ধনক্টীর ।১০ আনা গ্রহণের প্রবাদ প্রচ-লিত হইয়াছে। প্রকৃত প্রস্তাবে আর্যাবরের প্রস্কুপুরুষগণ স্থপ্রাচীন বর্ধনক্টীর রাজবংশের আত্মীয় মঞ্জাধিপ বা সামস্ত-রাজ বলিয়া গণ্য ছিলেন, তজ্জ্য তাঁহাদের বংশতালিকার তাঁহারা রাজা উপাধিতে ভ্ষতি ইইয়াছেন।

হু প্রাচীন বর্জনক্টী-রাজবংশের প্রতাপস্থ্য অন্তমিত হইবার কালে তাঁহারই আত্মীয় আ্যাবিরমণ্ডণ বর্জনক্টী রাজবাটীর নিকট রামপ্র নামক হানে আদিয়া বাদ করেন। বর্জনক্টীর পূর্বতন রাজা ভগবানের মৃত্যু হইলে আ্যাবিরের পূত্র ভগবান্ মুদলমান রাজদরকারে নিজ নাম পন্তন করিয়া বর্জনক্টী রাজ্য অধিকার করিয়া বদিলেন। এ সময়ে পূর্বতন রাজমন্ত্রী হরিয়াম রায় জীবিত ছিলেন, তিনি ভগবানের অভ্যায় কার্য্যে যথেষ্ট বাধা দান করেন। এই বিবাদের সময় রাজা মানসিংহ বাজালায় আদেন। তিনি উভয় পক্ষের গোলাযোগ মিটাইয়া রাজা ভগবান্কে॥৴০ আনা এবং দেওয়ান হরিয়ামকে।৴০ আনা ভাগ করিয়া দিয়া যান। হরিয়ামের পূত্র রাজা ভকদেব রায়ের সময় ।১০ আনা আংশ দিনাজপুর-রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত হয়।

রাজা ভগবানের বহুকীর্তি বর্দ্ধনকৃটী ও নিকটবর্তী রামপ্র প্রভৃতি স্থানে দৃষ্ট হয়। তাঁহার পুত্র কুমুদানন্দন। কুমুদানন্দন আরকাল রাজত করিয়া পরলোক গমন করেন। এই সময় তৎপুত্র রঘুনাথ নাবালক। মধুসিংহ নামে এক অমিদার তাঁহার জমিদারীর। ০ আনা অংশ দখল করিয়া বসেন। এই সময় শাহস্কল বাঙ্গালার নবাব। রাজা রঘুনাথ আপনার পৈতৃক সম্পত্তি উদ্ধার করিবার জন্ম বাদশাহ অরক্তেবের নিকট প্রার্থনা জানাই-লেন। ভদ্মারে ১১ই জুনুস্ অরক্তেবে মধুসিংহকে উচ্ছেদ করিয়া রাজা রঘুনাথকে উপযুক্ত সনন্দ প্রদান করেন। গুড্লাড্

সাহেব সেই ফরমাণ বর্জনকূটার রাজবাটাতে দেখিয়া ছিলেন্ত।
রাজা রঘুনাথের পুত্র মনোইরের সমর্ত্তেও এই বংশের বংগেই
শীবৃদ্ধি হইরাছিল। এই সমরে কুণ্ডী, নেরপুর, পলাদশী প্রকৃতি
পরগণা বর্জনকূটারাজ্যের অধিকারভুক্ত ছিল।

রাজা মনোহর জ্বাদিন রাজ্যভোগ করিয়া পরশোক গমন করিলে তৎপুত্র হরিনাথ পৈড়ক অধিকার লাভ করেন। বাদশাহ অরম্বজ্বে তাঁহার ১৭শ বর্ষে (১৬৭৫ খুটাকে) এক ফরমাণ দিয়া হরিনাথকে ইদ্রাক্পুরের রাজা বলিয়া খীকার করেন।

त्राका रुतिनारथव शुक्र विश्वनाथ । विश्वनारथव शुक्र शिविशाती, তৎপুত্র শিবনাথ। এই শিবনাথের সহিত ইল্লাকপুর জমিদারীর নৃতন বন্দোৰত হয়। গিছিধারী উচ্চ বারেক্স কুলীনকভাব পাণি-গ্ৰহণ করিয়া বারেক্সকারস্থ-সমাজে বিশেষ সন্মানিত হন। শিব-নাথের পুত্র গৌরীনাথ কোম্পানীর আমধ্যের রাজা বলিয়া খ্যাত। এই সময় ইদ্রাকপুর স্থমিদারীর অন্তর্গত চাকলা ঘোড়াঘাটের মধ্যে ইন্তাকপুর, ইসলামপুর, জালীগঞ্জ, বাঞ্চিপুর, বাহির वाड़ावाड, शाक्डेडनन, थनानी, मुक्तावश्रव, विसी, दरमगाड, ভিয়েনকুও, দেরপুর, কানবালা, দেরপুর নওয়াবাদ প্রভৃতি পরগণা ছিল। দশশালা বন্দোবতের সময় বর্ষনকৃটীরাজোর আয়তন অনেক কমিয়া আদে : এই সময়ে ইদ্রাক্পুর-রাজের অধীনে ৬৯টি প্রগৃণা এবং তাহার ১৬০১৯৬, টাকা রাজস্ব নির্দ্ধারিত ছিল। দশশালা বন্দোবন্তের লময় যে ৬৯টী পরগণা ছিল, তাহাও একে একে নিলাম হইয়া অধিকাংশই পরহস্তগত হয়। এমন কি, অর্লিন মধ্যেই ইল্রাকৃপুর কমিলারীর নাম পৰ্যান্ত মানচিত্ৰ হইতে উঠিগা বাগ ।

গৌরীনাথের জােচপুত্র রাজা গাাকুলনাথ এবং মধানপুত্র রাজা গৌরকিলোর, গৌরকিশােরের পুত্রসক্তান হয় নাই। তাঁহার দত্তকপুত্রের নাম খ্যাসকিশাের, এই খ্যামকিশােরের পুত্র কুমার চক্সকিশাের এখন বর্ত্তমান।

এক সমরে স্থবিত্তীর্ণ বর্জনকৃটীয়াজ্য খাঁহাদের অধিকারে ছিল, বাহাদিগকে লক্ষাধিক মূলা রাজত্ব দিতে হইত, এখন প্রাথাদিগের অবস্থা অতি শোচনীয়, ২০০ টাকার অধিক রাজত্ব দিতে হয় না। বর্জনগড়, বোত্বাই প্রাণেশ সাভারা জেলার অন্তর্গত একটা গিরিত্র্গ। কোরেগা ও খটাও উপবিভাগের সীমার ব্যবধানে মহাদেব শৈলমালার একটা লাখার উপর; সাভারা সহর হইতে ১৯ মাইল উত্তরপুর্বেক্ব অবস্থিত।

ধটাও বা পূর্ববিক্ দিয়া একটা কুঞ্চ দিয়া এ গড়ে উঠিতে হয়। ইহার পার্ব দিয়া সাভারা-পুরন্দর রাজা গিরাছে। এই রাজার হুই শত গঞ্চ দূরে ছুইটা প্রাচীন সরোবন্ধ আছে।

নবন্ধিত রাজ্যের পূর্কাসীমা ক্ষমা করিবার এন্ত ১৭৬৩ খু ষ্টান্দে

মহারাইকেশরী শিবাজী এই ছর্গ নির্মাণ করেন। ১৮০০ খৃ টালে মহানজি সিন্দিরা হওঁ০০ দৈছা সাইরা প্রতিনিধির হস্ত হইতে এট ছর্গা দগল করিয়ালয়েন। এ সময় সিন্দিরার ভাগিনী সর্গোবৎ ঘোড়পড়ের স্ত্রীর মধ্যস্থভার কেন্দ্র অভ্যাচার নটিতে পারে নাই। ১৮০৩ খৃ টালে ছর্গাধ্যক বলবন্ধ রাও বক্সি এখানে ঘেসাই তিরন্দির সহিত বৃদ্ধ করেন। ১৮০৫ খৃ টালে কডেসিংছন্মানে ছর্গ আক্রেমণ করিয়াছিলেন, ও বছ অখ লইরা বান। তাহার নিন্দিশু গোলকের তিক্ আদ্যাপি ছর্গবারের থিলানের উপর দৃষ্ট হর।

[৬২৬]

১৮০% খুটান্দে বসস্তগড়ের বৃদ্ধের পর বাপু গোখলের হস্তে চর্গ সমর্পিত হয়, তিনি ১৮১১ খুটান্দ পর্যন্ত কর্তৃত্ব চালাইয়াভিলেন, তৎপরে গেশবা সেই ভারগ্রহণ করেন। ১৮১৮ খুটান্দে
বিনা যুদ্ধে এই তৃর্পেন্ত তুর্গ ইংরাজগবর্মেন্টের অধিকারভুক্ত হইল।

এখন ত্র্গের অবস্থা নিভান্ত মৃদ্যা অধিকাংশ ভবনই ধ্বংসাবশেৰে পরিণত। মৃত্তিকারাশির মধ্যে এখনও ছইটী কামান প্রজিয়া আহছে।

২ লাজারা জেলাছ মহাদেব লৈলমালার পূর্বাংশে উন্নত একটা শাখা খটাওর মোল হইতে চল্দনবন্দন শৃক্ষ পর্যান্ত প্রায় ১৬ মাইল বিস্তৃত ! সাধারণতঃ "বন্ধনগড় মছিক্রগড়" নামে পরিচিত। এই বিস্তৃত শৈলমালার উপর উত্তরে বর্ধনগড়, করাঢ়ের নিকট স্বাশিবগড় এবং স্বাশিবগড়ের ১২ মাইল দক্ষিণে মছিক্রগড় স্ববৃহিত।

বৰ্দ্ধনসূত্ত্তি (পুং) একজন গুলির জৈনাচার্য।
বৰ্দ্ধনিকা (জী) যজাদির পবিত্র জল রাখিবার পাত্রভেদ, বদ্না।
বৰ্দ্ধনী (জী) > জলপাত্রবিশেষ। (মেদিনী) ২ সম্মাঞ্চনী,
ঝাটা। (হেম) ৩ সনাল পাত্রবিশেষ, কমওলু বা বদ্না।

'আলু: স্ত্রী কর্করীপারী বর্দ্ধনী চ ললন্তিকা।' (জটাধর) প্রতিষ্ঠাদি কার্য্যে এই বর্দ্ধনী পাত্রের আবস্তুক হইলা থাকে।

"প্রতিষ্ঠা যক্ত দেবত তদাখাং কলসং ছাসেও। ঐলাফ্যাং পুরুরেদ্যাম্যে অক্টেশের চ বর্জনীম্॥ কলসং বর্জনীকৈর গ্রহান্ বাজ্যোম্পতিং তথা। আসনে তানি সর্বাণি প্রাণবাধাং রূপেদ্ওকঃ॥"

(গরুত্পু ০ ৪৮ আ ০)

বৰ্জনীয় (বি) বৰ্জ-জনীয়ন । বৰ্জনবোগ্য, বৰ্জনাৰ্ছ।

"জাতয়ো বৰ্জনীয়াজৈওঁ ইচ্ছজান্মনঃ গুজুম্।" (উন্যোগপ॰)
বৰ্জমান (পুং) বৰ্জতে ইভি বৃধ-বৃজ্জী লানচ্। ১ এরওবৃক্ষ।

(অমর) ২ পশুভেছ। ৩ শরাব, শরা।

"তথা গাঃ কপিলা দোঘুাঃ সুবৎসাঃ পাপুনন্দনঃ।

ংমপুলী ক্লপুনুষ্বা দ্বা চক্তে প্রাক্ষিণম্।

ক্তিকান্ বৰ্জমানাংশ্চ মক্ষ্যাবৰ্ডাংশ্চ কাঞ্চন্মন্ ॥"(ভার° ৭।৮০।১৯)
এই অর্থে এই শব্দ ক্লীবলিকও কেথিতে পাওৱা বার।
"ম্যান্থ তিলপূর্গানি বর্জমানানি নানবঃ।
প্রদার পুত্রপশুমানিই প্রেড্য চ মোনতে ॥" (ভারত ১৩৬৪:১২)
৪ বিষ্ণু । (দেখিনী) ৫ জিনবিশেষ। পর্যান্ধ—বীর, চরম-ভীর্থক্তৎ, মহাবীর, দেবার্য্য, জ্ঞাতনক্ষন। (হেম) [মহাবীর দেখ।]
৬ ধনীদিগের গৃহবিশেষ।

'স্বন্ধিকো বৰ্দ্ধমানত নন্দ্যাবৰ্ত্তাৰয়োহপি চ।' (হলামুধ) বৃহৎক্ষহিতায় লিখিত আছে যে, এই গৃহের দার দক্ষিণদিকে ক্ষরিতে নাই।

"ধারালিন্দো হস্তগতঃ প্রদক্ষিণোহয়ঃ গুভস্ততকান্তঃ। তথচ বর্দ্ধমানে ধারম্ভ ন দক্ষিণং কার্য্যমৃ॥" (রুহৎসংহিতা ৫৩।৩৩)

৭ বনামধ্যাত দেশ, বর্জমান প্রদেশ।
"প্রাচ্যাং মাগধশোণীে চ বারেন্দ্রী গৌড়রাঢ়কাঃ।
বর্জমানতামলিপ্রপ্রাগ্রোতিবোদয়াদ্রয়ঃ"(জ্যোতিস্তবধৃত কুর্ম্মচ°)

৮ ভদ্রাশ্বর্ধের অন্তর্গত কুলপর্বতবিশেষ। ভদ্রাশ্বর্ধের ৭টি কুলপর্বত। তাহার মধ্যে বর্দ্ধমান সপ্তম কুলপর্বত। "বিশালঃ কম্বলঃ রুক্ষো জয়ন্তো হরিপর্বতঃ। বিশোকো বর্দ্ধমানশ্চ স্টিপ্ততে কুলপর্বতাঃ॥"(মার্কণ্ডেয়পু°৫৯।১২)

াকে। বন্ধমানক সংস্তাতে কুলপন্ধতাঃ ॥"(মাকণ্ডেয়পু" ৫৯।১ (ত্রি) ৮ বৃদ্ধিবিশিষ্ট, বৃদ্ধিশাল, বৰ্দ্ধিকু।

ক্রিমান, বাশালার ছোটলাটের শাসনাধীন একটী বিভাগ,
একজ্বন কমিসনরের অধীনে পরিচালিত। অক্ষা ২১°৩৫ হইতে
২৪°৩৫ উ: এবং দ্রাঘি ৮৬°৩৫ হইতে ৮৬°৩২ ৪৫ প্র্রিম্য ।
বর্জমান, হগলী, হাবড়া, মেদ্নীপুর, বার্ড্ডা ও বীরভ্ন জেলা
লইয়া এই বিভাগ গঠিত। ইহার উত্তরসীমার সাঁওভাল
পরগণা ও মুর্লিধাবাদ, পুর্বে নধীয়া ও ২৪ পরগণা জেলা বা
গঙ্গানদী, দক্ষিণে বঙ্গোপসাগর ও বালেশ্বর জেলা এবং পশ্চিমে
ময়্রভঞ্জ রাজ্য এবং শিংহভূম ও মানভূম জেলা।

বর্জমান, বাঙ্গালার অন্তর্গত একটা জেলা। ছোটলাটের
শাসনাধীন। অক্ষাও ২২°৫৫ ইইতে ২৩°৫৩ উ: এবং লাখিও
৮৬°৫২ ইইতে ৮৮°৩০ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ প্রায় ২৬৯৭
বর্গমাইল। এই জেলার উদ্ভরে বীরভূম, সাঁওতাল পরগণা ও
মূশিবাবান, পূর্বে ভাণীরথীতীরবর্ত্তী নদীরা জেলা, দক্ষিণে হুগলী,
মেধিনীপুর ও বাঁকুড়া জেলা এবং পশ্চিমে মানভূম।

এই জেলার প্রার সর্ব্বেই সমতল, কেবল সাঁওতাল পরগণার সমীপবতী উত্তরপশ্চিম কোণাংশ ক্রমোচ্চ নিম্ন পার্ব্বতঃ ঢানু ভূমিতে ও জললে পূর্ণ। এই বনভাগে নেকড়ে, চিতা, ও অক্সান্ত হিংশ্রক্তর বাস আছে। অপরাপর স্থান স্থামল শক্তক্ষেত্রে পূর্ণ। মধ্যে মধ্যে তাল, আম, কদলী ও বাশবন সমাজ্য গণ্ডগ্রাৰ খলি প্রকৃতির একীতাব বিদ্রিত করির। জন-কোলাহলে সেই সেই গ্রামসমীপবতী স্থানসমূহে সভাবের সমূদ্ধি বিরাজিত রাখিরাছে। কোন কোন স্থান দিল্লা ধলকিলোর বা দারিকেখন নদ, দামোদর, অজয়, থারী, বাঁকা, ধর বা মন্দ্রগামী হইয়া ভাগীরণী সলিলে আসিরা মিশিরাছে। এতজ্ঞি বরাকর নদী এই জেলার উত্তরপশ্চিমাংশে দামোদর নদে আসিরা পড়িয়াছে, এভেন খাল দামোদর ও বাঁকাকে সংযুক্ত করিয়াছে। দকিশে কাণা নদী প্রবাহিত।

এইরপে নদীমালাসমাছর হওরার এবং বিত্তীর্ণ ভামন প্রান্তরের মধ্যে মধ্যে ভালবৃক্ষ পরিলোভিত দীর্ষিকাসমূহ বিরাজিত থাকার এখানকার চাসবাসের বিশেব স্থবিধা দটিয়াছে। ঐ সকল নদীপথে কাল্না, কাটোরা, গাইহাট, ভাউদিংহ, মিল্লীপুর, উবণপুর প্রভৃতি গলাতীরবর্তী প্রসিক্ষ নগরে বাণিজ্য পরিচালিত হইতেছে। ঐ সকল বন্দরে লবণ বন্ধ ও পাটের ব্যবসাই অধিক। রাগীগঞ্জ উপবিভাগে কয়লা, লোহ, চুনেপাথার প্রভৃতি যথেষ্ট পাওয়া যায়। [রাগীগঞ্জ ও কয়লা দেখ।]

খুষ্টীয় ১৬শ শতাব্দে রচিত ব্রহ্মখণ্ড নামক সংস্কৃত ভৌগোলিক গ্রান্থে লিখিত আছে —

বর্দ্ধমান মণ্ডলের বিস্তার ২০ বোজন। এখানকার চারি-বর্ণের লোকই ক্রমিকর্মারত। কলির ৪৪০০ বর্ধ গত হইলে। অর্থাৎ এখন হইতে প্রায় ৬ শত বর্ধ পূর্ব্দের) দামোদরের সমীপে হেমিসিংহ নামে এক প্রথম পরাক্রান্ত রাজা হইবেন, তাহার সাত মহাল বাড়ী। এই হেমিসিংহের পুত্র বীরসিংহ। ইনি নিজ বাছবলে ভারলিপ্তা, কর্ণহর্দা, বরদাভূমি, স্কল্পেন ও বীরদেশ নিজারত্ত করিবেন। এই বীরসিংহের চারি পুত্র ও বিখ্যা নামে এক কন্তা হইবে। কন্তা পণ করিবে যে, যে তাহাকে বিদ্যায় হারাইতে পারিবে, সেই তাহাকে বিবাহ করিবে। এ সংবাদ কাঞ্চিপ্রে পৌছিলে কাঞ্চিপ্রপতি গুণাসন্ত্রর পুত্র স্কলর বন্ধমানে আসিবেন। তিনি দামোধরতটে এক মালাকারের ঘরে আশ্রয় লইবেন। কুট্টনী মালিনীর সাহাব্যে তপোবলে এক শুড়ক্ষ করিয়া বিদ্যাকে হরণ করিবেন। ক্ষেবল কালাদেবীর প্রসাদে স্কলর রক্ষা পাইবেন। গোড়াদির লোকেরা সেই বিদ্যাস্কলর চরিত্র গান করিবে। • ব্রশ্বপ্তর উচ্ত কাহিনী

হইতে মনে হর বে, খুটার ১৬শ পভাষীর পূর্ম হইভেই বর্জমানন বিদ্যাত্মশরের গান প্রচলিত ছিল। তথনত ক্রমান রাজবংশের অভানর হর নাই।

প্রক্ষণতের ভার প্রাচীন সংস্কৃত প্রকৃ বিধিকর প্রকাশেও আমরা বিভাক্ষর ও বর্জনানের বিষয়ণ এইরুণ প্রাপ্ত হইরাছি। আবশুক বনে করিয়া এই রামে উন্ধৃত হইল—

"অজয়াদন্দিশে ভাবে শিলাবত্যাশ্চ ব্যুত্তর।
গলারাঃ পশ্চিমে পারে দারিকেশিহি পূর্বতঃ॥ ৭৭০
অইবোজনবিমিতো দেশো সদস্বীযুতঃ।
ক্রবোজনবিমিতো দীর্ঘো চৈব মহীপতে ॥৭৭১

शास्त्रास्त्रमत्रीत्र ह नवशास्त्रास्त्र जुरा । ক্রিয়ণোত্রমধ্যে চ ছেমসিংছে৷ ভবিষ্টে ১১৬ ছেমসিংছ-নৃপক্তাপি সম্পত্তিরচলা **বিজা:**। প্রতাপখান ধার্মিকল্ট নির্ভয়ো রণকর্কণঃ র২৪ সর্বাকশসম্পর্যো সহাবলপরাক্রম:। কুলদীপো বীনসিংছো পুরোক্ষক্ত ভবিষ্যতি বং এ বীরসিংহস্থে। রাজা ন ভাষী বর্ষনাথকে। নিঞ্ছাত্ৰলেটে ব বছৰেশান্ করিবাতি ঃ২৩ ভাত্রলিপ্তং কর্ণহর্ণং ধরণাকৃষিকং তথা। कुकारमार वीत्रामार निकाशका कतिवाछि ३२० बीत्रिंग्रिक्ष जुलाङः धर्माणकार बिल्बासमाः। ক্ষতিয়ে চ বেদ পূজান মহাবলপরাক্রমা: ॥২৮ কল্পৈকা হালারী বিদ্যা মতে গুণখন্তী মুখা। ক।কিপুরজ নুপতিঃ গুণসিম্নু পোড্য: । ১৯ বুগসারং তক্ত পুত্র: শুন্দরে। হি ভবিবাভি। কালীভক্ত: পণ্ডিতো ভি সক্ষবিদ্যাস্থ পারগঃ ।৩-বিদ্যাপৰক বিদ্যালা: কলিয়াতি সহৎবস্তু। মা জেডুং যেন বিদ্যাকিঃ স মে কর্মা কবিষ্যতি একং **७**हेष्ट्च म्लन्शकः नीकः मृशास्त्राः। नानारमणः खालनार्थः बास्का मुटला गमिगाणि ।०० विगार टक्कुः श्रीवाधि वहरवा मृशवानकाः। পরাভূতা: পলায়ন্তে দেশাত বর্মানকাং ১০০ কাঞ্চিদেশে মহারালে। গুণ্সিক্ষা প্রতাপণান। ভত পুরো কুলরত জ্রাদা দৃতমুখাৎ ঋণন্ ১০০ व्यापटेनम उपकर रहणाय मर्फमानर श्रीनगाँक । नारमानज्ञात्रात्राच्या वाणांच्यात्रात्र देव मृद्ध ॥॥॥ वन्रिक्ष्मतः वैयान् विशावाधिनिविधक्त् । बालाकात्रक लृक्तिर विश्वास कृतिनीर बुरा । বিদ্যাঞ্চ পর্যবার্গেশ ছরিবাতি ভণোম্বলাৎ ৪৪৬ কালীদেব্যা: প্রসাদেন ন মরিব্যতি ভূসিণাৎ। करलः माहचिमः ठिवाः विमाश्चिमश्चादिकाः इतन পাক্ততি লোকাঃ চামিত্রাং গৌড়াবৌ মূলিসম্ভনাঃ।"(ভারত রদাধভ ৬ খা-)

 [&]quot;বিংশতিংগিজনানাক বর্ত্তমানত দওলন্।
লোকান্তএ তবিবাধি তাগাবতো সুগাইকে এই
চত্তাগ্যকনহলানি চত্তাগ্যকশতানি চ।
কলেগ্যাগ্যবাধি বহ্তমানে তথা বিজ্ঞাঃ ৪১৫

সাধারণভূমিকক বর্জমানো২তি সুন্দর:। नात्मानवननी वर्ष वहरू मधीकांत्रक ॥ ११२ মুখেৰরী বহুলা চ পূর্বে সরস্বতী বরা। প্রায়শো বহুলা নম্বঃ সদা দক্ষিণগা মডাঃ ॥ ৭৬৩ ত্ৰপ্ৰাপ্তাদিভেদানাং সপ্তদশ ভৰম্ভি চ। কার্শাসো রক্তবেডণ্ড পাটলন্ড বিশেষভঃ । ৭৭৪ পঞ্চেদান্ডেক্ষৰণ্ট জান্নজে বত্ৰ নিজ্যশঃ। সর্কেবাং বর্জনারিতাং বর্জমানমতো বিহু: ॥ १९৫ विकूशानाक्षाकाक मार्यानत्रवनाविः। বৰ্দ্ধমানমন্ত্ৰবাংশ্চ গায়ন্তি ভূবি মানবাঃ ॥ १৭৬ ⋯ অধোরভূমিপশুত্র রা**জ্ঞকুলসম্ভব**ঃ। বৰ্জমানপ্ৰজাঃ সৰ্কাঃ শাস্তি ধৰ্মবৃদ্ধিতঃ॥ ৭৭৮ करमर्दिषमञ्ज्ञाणि शक्तवित्र यहां नृश । বীরসিংহরাজগেহে কৌতৃকং জাতমেব হি॥ ৭৭৯ কাঞ্চিপুরে মহারাজ গুণসিন্ধর্মহীপতি:। তত্ত পুত্র: স্থন্দরন্দ বর্দ্ধমানমুপাগতঃ ॥ ৭৮০ বীরসিংহত হুহিতা বিষ্ণা নামীতি শোভনা। নানাশাল্রপারগা চ বিনোপনিষদং নূপ ॥ ৭৮১ ভূমিমার্গে স্থন্দরশ্চ গন্ধা তত্র বিবাহিতা। জিত্বা বিদ্যাং বিচারের সজোগং ক্রডবান বর:॥ १৮২ বিদ্যান্ত্রন্দরবৃত্তান্তং চৌরপঞ্চাশদাখ্যকে। গ্রন্থে সমীচীনতন্ত্রা বর্ত্ততে নুপশেধর ॥ ৭৮৩ অবোরত তুতঃ শ্রীমান্ চক্রাঙ্গ মহীপতিঃ। বিবৃতির্যক্ত বছলা গণেশাখ্য পুরাণকে ॥ ৭৮৪ ক্র্যবংশোরবঃ জীমান্ কান্তিচক্রো মহীপতিঃ। কুলবংশ প্রস্তৃত বর্জমানস্ত শাসকঃ 🛊 ৭৮৫ কুশাদতিথিঃ পুত্ৰণ্ড স্থক্সায়ামজায়ত। आज्ञात्राक वीवाक इिंदिक महावनः। পুগুরীকো হি গ্রহণো স্থান্ড নৃপলেধর॥ ৭৮৬ উলুপ্যাং পুগুরীকক্তাপ্যমোঘরেতসঃ সদা। ক্ষেমধৰ্মা মহাবোগী জাতশ্চ কুলপাবন: ॥ ৭৮৭ রভিদাখ্যা ক্ষেমধর্কো বীর্যাতো হি মুনের্বরাৎ। (भवानीरका **(भवधन्याध्यरकार्थ वर्षमान**रक । १৮৮ মেবামীকন্ত বীৰ্যাচ্চ ফুলায়াঃ সমজায়ত ৷ পারিস্লাভোহতিকুশলো বৃত্তবিদ্যাবিশারদ: ॥ ৭৮৯ থট্টশৈলে নৃপোড়ভঃ চৰচকীসন্নিভন্তটে। পারিক্সাভাৎ পল্লো নৈব পুরুবোহর মহীপভিঃ ॥ ৭৯০ থঞ্জাং পারিজাতাক নাডুকঃ সম্ভারত। हिञ्जानकामस्य बाजाजुकाजुरला हि निर्फवः ॥ १৯১

নাতুলাৎ মারিষারাঞ্চ অর্কপুরো হি দিক্পতিঃ। দিক্পজিং প্রমীলারাঞ্চ প্রেরন্নামাস বৈ পুরা ॥ ৭৯২ क्षमभावात्मकवीयां। एको भूरको वानिमाः वरत्रो । বছনাভো রুদকলির্বামনশ্ছরুমল্পক: ॥ ৭৯৩ গোৰ্বৰ্দনাখ্যদেশে চ জীমৃতক্ত নদীভটে। বঙ্কনাভশু বীর্ঘাচ্চ মেনকারাং মহীপতে। স্বগণো গণচুড়ন্চ জাতৌ ছৌ চাতিলোভনৌ 🛭 ৭৯৪ ষমকরে নদীপার্বে গণচুড়ো হি লুক্কক:। বস্তিং ক্লুতবান্ ভেন পাট্শিগ্রামসল্লিধৌ ॥ ৭৯৫ মোদমত্যাঞ্চ স্বগণবীর্ঘাটেচব মহীপতে। বিভৃতিশ্চ স্বভৃতিশ্চ রামভৃতিরঞ্জায়ত ॥ ৭৯৬ রামভূতিঃ কীকটপ্র রা**জা পর্ব্বতবেষ্টিতে**। দেশে জদশসভূতে নীচকাতিপ্রশাসকঃ॥ ৭৯৭ পালাসনগরে রাজা রামভৃতিরভূৎ পুরা। কিরণো ভূমিকা যত্র প্রাপ্নোতি চক্তপূর্যায়ো:॥ ৭৯৮ বিভূতি: গুক্রতো জাতো মহাবলো পরাক্রম: ৷ ... কেরলে শতশৃকে চ থৌবনে প্রাপ্তবান স চ! রাজ্যং শুদ্রভূমিকায়াং ক্রতং পৌরাণিকং বচ: ॥ ৮৮০ ষিজকন্তা ভুঙ্গলেখাগর্ভে পুষ্পান্ধরো মহান্। ততঃ কোমশপ্রকৃতিইটাখণ্ড ঋষিত্রতঃ॥ ৮০১ অগন্তান্ত বরেণৈর একামে বিপিনে স চ। রাজাভূৎ চোৎকলভাত্তে জগন্নাথত সন্নিধৌ ॥ ৮০২ গওকা জাতঃ পুতো হি চলনাথ্যো হি সুন্দরঃ। পুল্পাত্মত বীর্যাচ্চ চন্দনোপবনে ভদা॥ ৮০৩ **অংশারশংক্তকন্তত চন্দনতামুজোহভব**ং। চন্দনকাননে রাজাসীস্তুলাথ্যে বিষয়ে ভিদি 🖟 ৮০৪ দেশিকায়ামঘোরাক্ত করণোহতুলবিক্রমঃ। বৰ্দ্দানং পরিতাজ্য গতো গ্রামং কলাপ্কম্ ॥ ৮০৫ পুকরাননক্ষতিরক স্বরাজ্যে সিক্তবান নূপ। সংক্ষেপাৎ বৰ্জমানত ভূপালবৰ্ণনং কৃতম্ ॥ ৮০৬ সাধারণানাং দেশানাং মধ্যে শ্রেষ্ঠতমোত্তম:। বৰ্দমানক্তম ভূপ পুরাণে বিবৃতা প্রথা 🛭 ৮০৭ পুষরাননবংশীর: রাজভো বর্ষমানকে। ताला निवस्तर विमान् मननारनरीभूकनार ॥" ৮०৮

(দিখিজসংগ্রকাশে সপ্তজালগাবিবরণ)

আজর নদীর দক্ষিণে, শিলাবতীর উত্তরে গলার পশ্চিমে
এবং দারিকেশির পূর্বে একটি অতি স্থানর সাধারণভোগা
ভূতাগ আছে। রাজন্ ! এই ভূতাগের নাম বর্জনান । এই
বর্জনান দেশে নানা নদ নদী প্রবাহিত । ইহার দৈখ্য একাদশ

বোজন এবং প্রশ্ন আই বোজন। এই দেশের মধ্যতাগ দিরা দামোদর নদী প্রবাহিত হইতেছে। ইহার পূর্বা দিকে বে সকল নদী আছে, তল্পধ্যে সুপ্তেখর, বকুলা, ও সরস্বতী এই তিনটিই প্রধান। এতদ্বিম ইহার দক্ষিণ দিকেও বহুতর নদী প্রবাহিত। তুণধাত্তাদিভেদে সপ্তদশ প্রকার ধান্ত এদেশে উৎপর হর। রক্ত, খেত ও পাটলবর্ণ কার্পান এখানে প্রচুর পরিমাণে জলে, ইহা ছাড়া পাঁচ প্রকার ইক্ত্রক্তের এখানে বার মাস চায় হইস্বা থাকে। ফল কথা, সমন্ত বস্তুরই এদেশে বর্দ্ধন অর্থাৎ উপচর হর বলিরা ইহার নাম বর্দ্ধমান। দামোদর-জল বিষ্ণুর পাদপন্ম হইতে সন্তুত। স্কুতরাং দামোদর নদীর উভর পার্ববাপী বর্দ্ধমানের অধিবাসী মন্থ্যদিগকে বিভিন্ন দেশবাসী লোকেরা বথেই প্রশংসা করিয়া থাকে।

অংশার নামধের জানৈক ক্ষত্রির নরপতি ধর্মান্ত্রারে বর্দ্ধমানবাদী প্রজাপুঞ্জকে শাসন করিতেন। হে রাজন্! কলির চারি হাজার বর্ষ অতীত হইলে, এই বংশীর রাজা বীবসিংহের গৃহে একটা বড় কোতুককর ঘটনা ঘটিয়াছিল।

কাঞ্চিপুরে গুণসিদ্ধ নামে রাজা ছিলেন। তাঁহার পুত্রের নাম প্রন্মর। স্থানর একসময়ে বন্ধমানে আগমান করেন। বন্ধমানাধিপতি বীরসিংহের বিভানামী এক পরমাস্থান্দরী ছহিতাছিল। বিভা উপনিষংশান্ত বাতীত জ্ঞান্ত সমস্ত শাস্ত্রেই বিশেষ ব্রংপত্তি লাভ করেন। স্থান্দর ভূ-বিবর দিয়া গিয়া রাত্রিকালে বিভাকে বিবাহ করেন। বিভা শাস্ত্রবিচারে স্থান্দরের কাছে পরাত্ত হন। পরে স্থান্দর তাঁহাকে সন্তোগ করেন। হে নূপবর! এই বিভাস্থান্দরের বৃত্তান্ত চৌরপঞ্চান্ত্রছে বিশেষভাবে উল্লিখিত চইরাছে।

রাজা অন্বারের পূত্র শ্রীমান্ চক্রাজদ। ইনিও রাজা ছিলেন। গণেশপুরাণে এই রাজার বিস্তৃত বিবরণ লিপিবফ হইরাছে।

জীমান কাজিচক্ত জনৈক স্থাবংশীর রাজা ছিলেন। ইনি
কুশের বংশে উৎপর। এই কাস্তিচক্ত এক সময় বর্জমান
শাসন করেন।

কুশ হইতে স্বক্ষার গর্ভে অতিথি নামে এক পুত্র জন্ম।
অতিথি হইতে আক্ষার গর্ভে মহাবল পুগুরীকের জন্ম হর।
অমোঘবীরা পুগুরীক হইতে উলুপীর গর্ভে কেমধর্মা নামে এক
পুত্র উৎপর হয়। কেমধর্মা যোগীপুরুষ ছিলেন। ইহাঁষারা
কুল পবিত্র হইয়াছিল। ইনি এক সুনির নিকট বরলাভ করেন। এই বরপ্রতাবে তৎপরী রতিলার গর্ভে দেবধর্ম নামে ভাঁহার এক পুত্র হয়। দেবধর্ম ইইতে দেবানীক
জন্মগ্রহণ করেন। ইহাঁদিগের সকলেরই জন্মভূমি বর্মনান।

দেবানীকের ওরসে ভুলার গর্ভে গারিলাত নামে এক পুত্র উৎপর হয়। ইনি রাজকার্য্য । বিচক্ষণ এবং বুছবিভার পরম भट्टे हिरमन । हैनि एट्टेरमम् हक्कि नदीत्र जीरत समाध्या করেন। পারিকাত হইতে পুরুষকারতংপর শ্রেষ্ঠ রাক্ষা আর त्करे छथात्र हिरणन ना। এই পাत्रिकाछ इदेरछ भुक्रनीत গর্ভে নাতৃত্ব নামে এক পুত্র হয়। নিজীক্চিত্ত নাতৃত্ব হিল্লাল-কাননে বাস করিতেন। নাতৃত্ব হইতে মারিবার গর্ভে অর্কপুত্র এবং অর্কপুত্র হইতে প্রমীশার গর্ডে বিরুপতি উৎপর হন। দিক্পতি হইতে অদর্শার গর্ডে ছই বলবান পুত্র জন্মগ্রহণ করেন। তৎপরে বন্ধনাভ, রয়াকলি, বামন ও ছত্রমত্তক নামে চারিপুত্র জন্মে। গোবর্জনদেশে জীমৃতনদীর তটে বঞ্জনাডের মেনকানায়ী পদ্মীয় গর্ডে স্বগণ ও গণ্ডুড় নামে চুই পরম স্থলর পুত্র উৎপন্ন হয়। গণ্চুড় পাটলি গ্রামের নিকট ব্যক্তর নদীর পাৰ্ষে বাসন্থাপন করেন। ইনি অতি সুত্রস্বভাব ছিলেন। স্বগণের ওবলে মোদামতীর গর্জে বিভূতি, স্কুতি ও রামভূতি নামে তিন পুত্র করে: রামভূতি কীক্টবেলে রাজগাট স্থাপন করেন: ঐ দেশ তথন পর্বাত-পরিবেটিত ও জনগাকীর্ণ ছিল। বছসংখ্যক নীচলাতীয় প্ৰজা তাঁহার শাসনাধীন হইরাছিল। স্কৃতি প্লাসনগরে রাজা করিতেন। তাঁহার রাজস্বস্থান চক্রপুর্য্য-কিরণের কেন্দ্রখল ছিল। বিভৃতি অভি বলবিক্রান্ত রাজা ছিলেন। তিনি বৌবনকালেই কেরল ও শতপুল এলেশে রাঞ্যন্থাপন করেন। তাঁহার রাজ্যে বছতর শুদ্রজাতীয় প্রভা বাস করিত। ইহাই পৌরাণিক মন্ত। পরে বিশ্বক্সা তৃত্রপেখার গর্ডে পুলাভুর জন্মগ্রহণ করেন। পুলাভুরের পুত্র হটার। ইনি বড কোমণপ্রকৃতির রাজা ছিলেন। ইহার তপোল্ডান ছিল। অগতা ইহাকে বর দেন। সেই বরপ্রভাবে ইনি উৎকলের অন্তলীয়ার জগ্যাথকেত্ত্তের অনুরে একাত্রকাননে बाक्षा इन । १७४की नांग्री शक्रीय शक्क उन्मनस्त, उन्मन नार्य हेहात এक क्ष्मत भूज करम । उत्परनत्र अक कमिक्रे गरहामत ছিল, তাহার নাম অবোর। ইনি ভুলাদেশের চন্দনকাননে রাকা করেন। অংথার হইতে ভৎপদ্ধী দেশিকার গর্ভে করণ ক্ষমগ্রহণ করেন। করণ অসাধারণ বিক্রমসম্পন্ন ছিলেন। ইনি বৰ্জমান পৰিত্যাপ কৰিব। কলাপক গ্ৰামে গমন কৰেন। প্রহরানন নামক জনৈক ক্ষত্রির তদীর রাজ্যে অভিবিক্ত হন। সংক্ষেপে বৰ্জমানাধিপতি ভূপালদিগের বিষয়ণ লিপিবছ হটল। অক্তান্ত সাধারণ দেশের মধ্যে বর্ত্তমান একটি শ্রেষ্ঠতম দেশ। এখানকার ভূপালদিলের বিষরণ পুরাণে বর্ণিত আছে। পুরুরা-ননের বংশধর ভূপালগণই পরে মললাদেশীর অর্জনার ফলে বৰ্দ্ধমানে রাজ্য করিয়া আসিতেছেন। (দিখিজরগ্র°)

পুরাতম।

মার্কণ্ডেরপুরাণে এই বর্ত্মানের উল্লেখ আছে। জৈনদিগের মতে, মহাতীর বা বন্ধমানস্বামী রাড়দেশের যে অংশে অসভ্য জাতির মধ্যে ধর্মপ্রচার করিরাছিলেন, তাঁহার নামান্ত্র্নারে সেই স্থান্তই পরে বর্দ্ধমান নামে খ্যাত হয়। এখন বর্দ্ধমান মধ্যরাঢ় নামে খ্যাত। এই জেলার এক সমরে অনেক স্থাচীন রাজ-বংশ রাজত করিক্না গিয়াছেন এবং তাঁহাদের বহু প্রাচীন কীর্ত্তি নানা স্থানে পজিরা আছে। সেরগড় পরগণার সিংহারণ নামে एव नदी बाटक, अहे नदीत छीटत त्रिःहभूत नाम्य अवसी धारीन রাজধানী ছিল। এখানে সিংহবাছ নামে রাজা রাজত করিতেন, সিংহপুর নগর ধ্বংস হইলে এই স্থান সিংহারণ্য নামে প্রসিদ্ধ হয়। এই সিংহারণা হইতেই বর্তমান সিংহারণ নদীর নাম-করণ হইয়াছে। এই ক্ষেণায় সাতলৈকা পরগণা সপ্তৰতী ত্রাহ্মণগণের আদি উপনিবেশ। এই জেলায় তাঁহারা বে সকল গ্রাম লাভ করেন, সেই সকল গ্রাম নাম হইতে সপ্তানতীদিগের বিভিন্ন গাঞি বা উপাধির স্ষষ্ট হইন্নাছে। গৌড়াধিপ আদিশ্র জয়ত্তের অভ্যদয়ের পূর্কে এখানে সপ্তশতী ত্রাদ্ধণগণেরই আধি-পত্য ছিল। নারায়ণের ছন্দোগপরিশিষ্টপ্রকাশ হইতে জানিতে পারি যে, কোন কোন রাঢ়ীয় ব্রাহ্মণের পূর্ব্যপুক্ষ ভাঁহাদেরই নিকট বহু কুলম্বান লাভ করিয়াছিলেন, তাহা হইতে কোন কোন রাট্রীয় ত্রাহ্মণের গাঞি ছইয়াছে। গৌড়ে পালরাজগণের আধি-পতা বিশ্বত হইলে আদিশ্রক্ষীয় শ্রনরপতিগণ বছকাল এই জেলার রাজ্য করিয়া গিয়াছেন, তাঁহারাও রাটীয়শ্রেণির আহ্মণ-গণকে এই জেলার বহু শাসমগ্রাম দান করিয়াছিলেন, সেই সকল গ্রাম ছইভেই রাটীয় আন্ধণগণের পূর্বপুরুষগণের বহুতর গাঞি নাম হইয়াছে।

প্রিরাজগণ যে সমরে বারেক্সে বৌদ্ধপর্মপ্রচারে উন্থত ছিলেন, সেই সমরে রাচ্ছেশে শ্বনরপতিগণ এথানকার বৌদ্ধ-সমাজকে হক্তগত করিবার ক্ষম্ম আবশুক মত শৈব ও শাক্তধর্ম প্রচার করিতেছিলেন। গৌড়ে বৌদ্ধাধিকারকালে এথানকার চেকুর নামক স্থানে লোমবোবের পূত্র ইছাই ঘোর নামে একজন শাক্ত নৃপত্তি অভিশন্ন প্রবন্ধ হইরাছিলেন। তাঁহার প্রতিষ্ঠিত গ্রামরূপার গড়ই এক্ষণে দেনপাহাড়ী গড় নামে পরিচিত। ইহার ক্রায় প্রোচীন হুর্গ এ জনেশে আর নাই। গৌড়েশ্বর তাহার নিকট ক্রক বার পরাক্ত হইরাছিলেন। অবশেষে ধর্মের সেবক লাউন্যেনের নিকট ভিনি পরাজিত হন। ইছাই ঘোষের গড়েব ভারিশ্রেশ আরও সেনপাহাড়ীতে পড়িরা আছে।

এই বেধার অর্থত বর্তমান ভূরতট্ পরগণার ভূরিপ্রেষ্ঠ
নামে একটা সমৃতিশালী নগরী ছিল: এথানে খুটার ৯ম শতালী

পর্যান্ত কারস্থ নৃপতিগণ রাজ্য করিয়া গিয়াছেন। এখনকার পাগুরা হিন্দু ও মুদলমান উভর রাজগণের সমরেই প্রসিদ্ধ ছিল। সেমবংশীয় রাজাদিগের মধ্যে বিজয়সেন এখানে বিজয়পুর নামে একটী নগর প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন।

এখানে বছদিন হইতেই মুসলমান সংক্রম ইইয়াছিল। মেমা-রির উত্তরপশ্চিমে বহা বা শ্রীকৃষ্ণনগর নামক গ্রামে সৈয়দ জলাল্ উদ্দীন্ তাব্রিজী কিছুকাল অবস্থান করিয়াছিলেন। ৬৪২ চিজনী বা ১৯৪৪-৪৫ খুটাজে পাঞ্যায় তাঁহার মৃত্যু হয়। উক্ত শ্রীকৃঞ্নগরে জ্বাল্ উদ্দীনের নামামুসারে মাদ্রাসা-ই-জলালিয়া নামে একটা মাজাসা প্রতিষ্ঠিত আছে। বর্জমান জেলার নানা স্থানে প্রাচীন হর্নের ধ্বংসাবশেষ দৃষ্ট হয়। ছুটিপুর প্রগণায় মেমারি ষ্টেলনের দক্ষিণে কুলীনগ্রামের নিকট অনেক প্রাচীন গড়ের ভগ্নাবশেষ পড়িরা আছে। আজমতশাহী পর-গণায় ভাটাকৃল গ্রামের নিকট রাম5ক্সগড় এবং অভয়নদের নিকট শেরগড় শরগণায় রাণাগঞ্জের উত্তরে আরও কএকটা গড় দৃষ্ট হয়। বৰ্দ্ধমান সহরেই প্রসিদ্ধ বহরম সন্ধা নামক প্রসিদ্ধ মুস্তা-মান কবির গোরস্থান দৃষ্ট হয়, এই গোরস্থান ঠিক গুর্গের মত। আগ্রা হইতে সিংহলে যাত্রাকালে কবিবর ১৫৭৪ খুষ্টাকে বন্ধমানেই প্রাণত্যাগ করেন। ঐ বর্ষে মুসলমান ইতিহাসে, বর্দ্ধানের প্রথম উল্লেখ দৃষ্ট হয়। রাজমহলে দাউদ থানের পরাজয় ও মৃত্যু ঘটলে অক্বরের সৈভাগণ বদ্ধমানে আসিয়া দাউদের পরিবার-বর্গকে আক্রমণ করেন। তৎপরে দশ বর্গ কাল দাউদের পুত্র কুতলু খান্ এই বন্ধমানে মোগলবিক্তকে খোরতর সমরানল প্রজনিত করেন। [কুতলুখাদেখ।]

তাঁহার কবরের নিকট ন্রজাহানের সামী সের আফগান ও বঙ্গের শাসনক্ষা কুতব্ উদ্দীনের সমাধিমন্দির দৃষ্ট হয়। দিলীখরের আদেশে কুতব্ উদ্দীন্ নুরজাহানকে দিলীতে পাঠাই-বার ছত্ত সের আফগানের সহিত যুদ্ধ করেন। বদ্ধমান ষ্টেসনের দক্ষিণে স্বাধীনপুর নামক গ্রামে বেখানে উত্তর বীরে যুদ্ধ হইয়া-ছিল, আজও সকলেই সেই স্থান বেখাইয়া থাকেন।

১৬২৪ খৃত্তীব্দে শাহজালা খুর্ম্ (পরে শাহজ্ঞহান্) বর্জমান প্রগাঁও সহর জার করিয়া দিলীর শাসনভূক্ত করেন। বাদণাহ অরক্তেবের পৌত্র আজিম্ উস্সান্ ১৬৯৭ হটতে ১৭০৪ খৃত্তীক মধ্যে বন্ধমানে একটি স্বন্ধর মস্জিদ্ নির্মাণ করাইরা ছিলেন, আজেও সেটি দেথিবার জিনিস।

वर्तवान वर्तमान-तासवाम ।

পঞ্চাব-এদেশস্থেপত লাহোর নগরত্ব কোটলি মহল্লা-নিবাসী সন্ধ্য রাল, বঙ্গনান রাজবংশের আদি পুরুষ। বুটার বোড়শ শতাব্যের শেষভাগে সন্ধ্য রার সপরিবারে জগরাধ দর্শনোক্ষেশ্র শ্রীক্ষেত্রধামে গমন করিয়া প্রভাগিমনকাবে, বর্ত্তমানের সন্নিকটে রাইপুর গ্রামে ব্যবসা উপলক্ষে বাস করেন। এই স্থান হইতে শস্তাদি ক্রের করিয়া, স্থানাস্তরে বিক্রের করাই জাহার ব্যবসার ছিল। ক্রমে জাহার ব্যবসার বিলক্ষণ উন্নতি হইতে লাগিল।

সঙ্গম রাধের মৃত্যুর পর, তনীয় পুত্র বন্ধৃবিহারী রায়ও রাই-পুরে অবহিতি করিরা শিভার স্থায় বাবসা করিতে লাগিলেন এবং সৌভাগ্যবশতঃ ক্রমেই বাবসারের উরতি হইতে লাগিল।

বন্ধ্বিহারী নারের মৃত্যুর পর তদীয় পুত্র আবু রার রাইপুর হইতে আসিরা বর্জমানে বাস করেন। তিনি এতদ্বেশ মধ্যে একজন বিখ্যাত ব্যবসায়ী ছিলেন। কোন সময়ে দিলীখরের কতক শুলি সৈপ্ত এই স্থানে আসিলে আবু রার তাহাদিগের জন্ত যাবতীর আহারীয় সামগ্রী ও গোশকটাদি সংগ্রহ করিয়া দেওয়ার উক্ত সৈত্যাধ্যক্ষের অন্থাহে, ১০৬৪ হিজ্পির ইং ১৯৫৭ খ্ব: অবে বন্ধমানের ফৌজনারের অধীনে, রেকাবি বাজার, ইবাহিমপুর ও মোগলট্লীর কোভোয়াল ও চৌধুরী পদ প্রাপ্ত হরেন। তংকাণে উক্ত স্থানগ্রহের বার্ষিক রাজস্ব ৫৩২ টাকা মাত্র ধার্য ছিল। প্রবিশাল সমৃদ্ধিশালী বর্জমান রাজ্যের ইহাই স্ত্রপাত।

আবুরায়ের মৃত্যুর পর তদীয় পুত্র বাবুরায় পৈতৃক পদ ও সম্পত্তির অধিকারী হয়েন। ক্রমে তিনিও বন্ধমান প্রগণার অন্তর্গত আরও কয়েকটি স্থান প্রাপ্ত ইইয়াছিলেন।

বাবু রায়ের মৃত্যুর পব তদীয় পুত্র ঘনশ্রাম রায় পৈতৃক পদ ও সম্পত্তির উত্তরাধিকারী হয়েন। বর্জমানের স্থপ্রসিদ্ধ শ্রাম-সাগর নামক স্থবিশাল সরোবর ঘনশ্রাম রান্তেরই অতুল কীর্তি।

ঘন্তাম বাদ্ধের মৃত্যুর পর তদীয় পুত্র রুফরাম রায় পৈতৃক
পদ ও সম্পত্তি লাভ করেন। ১৯৯৪ খুঃ (১১০৭ হিজরি) ২৪
রবিয়ল আয়ল তারিথে দিলীশ্বর অরক্তের বাদসাহের রাজরের
১৮ বর্বে (জুলুস) তাঁহার নিকট হইতে চাকলে বর্দ্ধমানের
কামদার ও চৌধুরিপদের সনন্দ প্রাপ্ত হয়েন। এই ফরমাণে
তিনি অনেকগুলি অমিদারি প্রাপ্ত হয়েন। এই ফরমাণে
সেনপাহাড়িগড় বিশেষ উল্লেখযোগ্য। এখনও উক্ত রুফরাম
বাব্রের প্রপ্রের মহারাজাধিরাজ তিলক্চক্র বাহাত্রের বাজন্বকালেও উক্ত তুর্ব পূর্ণাব্রবে বর্ধনান ছিল।

কৃষ্ণবাম রারের জীবিতকালে, বরণা ও চিতুরার জনিদার শোতাসিংই ; বিষ্ণুপুরের জনিদার গোপালসিংই এবং চক্রকোণার জনিদার রঘুনাথ সিংই বিজোধী ইইরা প্রবল প্রতাপে মোগল-সমাটের বিক্ষকে জন্তধারণ করিয়া মূর্নিধাবাদ, বীরভূম ও বছমান আক্রমণ করেন। শোভাসিংই বর্জমান আক্রমণ করিয়া কৃষ্ণবাম বারের সহিত যুদ্ধ করেন এবং সেই সমরে কৃষ্ণবাম বার হত হল, শোভাসিংহ রুজরান রাবের পুরী আক্রমণ করিরে, তবীয় পরিবারত্ব >০ জন ত্রীলোক কছরপানে প্রাণ্ড্যাগ করেন। রুজনাম রাবের কক্তা শোভাসিংহের হতে গুতা হইলে, শোভাসিংহ তাঁহাকে স্বীয় অন্ধ্যান্তিনী করিবার অভিপ্রারে, যখন বাহবর মধ্যে ধারণ করিতে ঘাইবে, সেই সময়ে বীরবালা তদীয় অন্ধ্যত্ত মাণিত ছুরিকা বাহির করিয়া পিরা ভাহার পাপময় জীবনের অবসান করিয়া বিলেন এবং সেই ছুরিকাখাতে তৎক্ষণাৎ স্বীয় জীবনান্ত বিস্কল্পন করিয়ালিকেন।

কুক্সাম রাম্বের শোচনীর মৃত্যুর পর তদীয় পুত্র জগংখাম রায়, পৈতৃক পদ ও সম্পত্তি লাভ করেন। ১১১১ হিজার < हे समानियम **भाउँयम** ७ निज्ञीयदत्तत ३० वर्ष तास्त्रकारम (सून्म) জগৎগ্ৰাম বায় দিলীখন অৱলজেৰ বাদশাহের নিকট হইতে মহল অমিদারী এবং অমিদার ও চৌধুরী উপাধি সম্বলিত এক থানি ফরমাণ প্রাপ্ত হন। তাহার জীয় নাম এজ-কিশোরী, তদীয় গর্ডে কার্ত্তিচক্ত ও মিত্রপেন নামে গুইটি পুত্র क्या धर्ण करदेन। ১৭०२ थुः कृष्णमांगत महत्तावहत सान করিবার সময়ে জনৈক গুপ্তহ্ত্যাকারীর ছুবিকাখাতে তাহার প্রাণবিয়োগ হয়। তদবধি রাজপরিবারত্ব কেহই অপ্রিম্-বোধে কৃষ্ণসাগরের জল পান বা তাহাতে স্নান করেন না। বর্দ্ধনান-রাজবংশের যে স্কল অতুল কীর্ত্তি চতুর্দ্দিক সমুক্ষ্মণ করিয়া আছে, তাহার অধিকাংশই কীন্তিমতী ব্রন্ধকিশোরীই স্থাপন করেন। বন্ধমানের সাগ্রসম স্থাবিখ্যাত রুফ্সাগ্রই কুঞ্চরাম বাবের অতুলকীতি।

জগৎরাম বাবের শোচনীর মৃত্যুর পর তদীয় জোটপুর কাতিচক্র পিতার পদ ও সম্পত্তির উত্তরাধিকারী হইলেন, তদীয় লাতা
মির্নেরন মাসিক বৃত্তি প্রাপ্ত হইতেন। ১১১৫ হিজার ২০এ
সওয়াল ৪৮ জুলুস দিল্লীশ্বর অরক্ষজের বাদশাহের নিকট হইতে
কাতিচক্র পৈতৃকপদ ও সম্পত্তিপ্রাপ্তির ফরমাণ লাভ করেন।
তিনি বায় বাহবলে, বরদা ও চিতুমার জমিদার শোভাসিংহের
ল্রাতা হিম্মত সিংহকে পরাজর করিয়া তদীয় জমিদারী অধিকার
করেন। চক্রকোণার জমিদার রগুনাথ সিংহ, পোভাসিংহের
সহিত মিলিত হইয়া বন্ধমান জাক্রমণ করিয়াচিলেন বলিয়া
কীতিচক্র রগুনাথ সিংহকে পরাজ করিয়া তদীয় জমিদারী চক্রকোণা অধিকার করেন, পরে তিনি বিষ্ণুপ্রের জমিদার গোণালসিংহকেও বৃদ্ধে পরাত্ত করেন বটে, কিন্তু তিনি তাহায় কোন
সম্পত্তি গইতে পারেন নাই, কেবল তাহার তরবারিধানি
কইয়াছিলেন। ভূমস্কট, য়াবদা ও বেলগরের জিলাবদিগতে
পরাত্ত করিয়া তাহাদিগের জমিদারী হত্তগত করিয়াছিলেন।

• কীৰ্কিচ দিলীখন আবৃদ কতে নসকলীন মহন্দ শাহের নিকট হইতে ১৫ রমজান ১৭ কুলুস তারিবে একখানি করমাণ প্রাপ্ত হন। তাহাতে উক্ত বিজিত সম্পত্তি ও কতাহপুর পরগণার অধিকার প্রদত্ত হইরাছিল। কীর্কিচ্ছ অতান্ত সমরকুশল ছিলেন, ভিনি বলের নবাব বাহাছরের অন্তমত্যস্ত্রসারে বিষ্ণুরের রাজার সহিত মিলিড হইরা কাঁটোরার নিকট হইতে ছালাভ মরাঠাছিগকে বিতাজিভ করিয়াছিলেন। কীর্কিচন্দ্র বাদশাহের নিকট হইতে রাজা উপাধি প্রাপ্ত না হইতেও দেশমধ্যে ভিনি মহারাজ বলিরা খ্যাত ছিলেন, প্রাধশমকল কাব্যে কবিবল্প খনরাম তাহাকে মহারাজ বলিরাই উল্লেখ করিয়াছেন—

"অধিলে গাঁহার কীর্তি, মহারাজ চক্রবরী, কীর্ত্তিক নরেজ-আধান। চিস্তি তার রাজোলতি, ক্রফণুর নিবস্তি, দ্বিশ্ব বনরাম রস্প গান॥"

বলের নবাব বাহাছরের নিকট কীর্ত্তিচক্রের অত্যন্ত প্রতিপত্তি ছিল, একলা তাঁহার মাতা জ্রীক্ষেত্রে গমনকালে, বলেবর উড়িয়া-প্রনেশত্ব কৌজদার ও বাবতীর কাঁড়িদারদিগকে তাঁহার বিশেষ রূপে তত্বাবধারণ করিবার জন্ম আদেশ প্রদান করেন।

বর্দ্ধমানের সন্নিকটন্থ কাঞ্চননগর নামক যে মহা সমূদ্ধিশালী জনপদের ধংলাবশেব বর্ত্তমান আছে, কীর্ত্তিমান্ কীর্ত্তিক্রই তাহা স্থাপন করেন। ১৭৪০ খৃঃ অঃ কীর্ত্তিচন্দ্র পরলাক গমন করেন। তাহার ছত্তবিত অন্থপম তরবারিখানি অত্মাপি রাজধনগোরে পরমধ্যে রক্ষিত আছে, উহাকে কৌরিচক্রের তেগা বলিয়া থাকে। কীরিচন্দের আনেকগুলি ক্রিমান রাজবংশের মুখোজ্ঞল ক্রিয়া আছে।

কার্তিতক্রের মৃত্যুর পর তদীর পুত্র চিত্রপেন রায় বর্জমানের জামদারী প্রাপ্ত হরেন। তিনি বাদশাহের নিকট হইতে পরগণা মণ্ডল বাট, জারসা, ত্রাক্ষণভূমি প্রভৃতি কতকপুলি জমিদারী প্রাপ্ত হইরাছিলেন। দিলীখর জাবুল কতে নসকদীন মহন্দদাহ বাদশাহের নিকট হইতে ১৫ সওয়াল ১২ জুলুস রাজা উপাধিস্কুক করমাণ ৪ পারচা খেলাত এবং এক জোড়া মুজল প্রাপ্ত হথেন। ঐ সমত্তে কীর্তিতক্ত জীবিত ছিলেন।

উক্ত বাদশাহের ২>শ বর্ষ রাজস্বকালে ২০ রমজান তারিথে ১৭৪০ খুঃ চিত্রলেন রাজা উপাধিসহ চাকলে বর্জমানের জমিদারী সনন্দ প্রাপ্ত হন। ১৭৪২ খুঃ পুনরার দিরীবরের নিকট হইতে ছত্র, জাসকি, নাকারা ও আড়ানি খেলাভ সহ, একথানি সনন্দ প্রাপ্ত হরেন। এ সময়েও কীর্ভিচন্ত জীবিত ছিলেন। এইজ্বপে রাজা চিত্রলেন স্ক্রিয়েত ১২ খানি ক্রমাণ ও সনন্দ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। তিনি বার্বিক ২২৭০৪৭২ টাকা রাজ্য প্রদান করিতেন।

তাঁহার হই পদ্ধী, উভরেই বন্ধা ছিলেন। ১৭৪৪ খৃ: চিত্র-সেনের মৃত্যু হর। তাঁহার প্রতিষ্ঠিত দেবালয় কালনায় বর্ত্তমান আছে। ইহার রাজস্বকালের অনেকণ্ডলি কামান অভাবধি রাজবাটীতে বিভ্যান, তাহাতে পারসী অক্ষরে তাঁহার নাম খোদিত দৃষ্ট হর।

রাজা চিত্রদেন রায়ের মৃত্যুর পর তদীর খুরতাত মিত্রদেনের প্রত তিলকচক্র বর্জমান রাজ্যপ্রাপ্ত হন। সন ১১৪০ সালের ১২ই অগ্রহারণ তারিখে মহারাজ তিলোকচক্র জন্মগ্রহণ করেন। তিনি ১৭৪৪ খ্র: ২৪ জুপুন্ ৯ জমাদিরাল আউঅল তারিখে দিলীখর আবৃল কতে নসক্ষীন্ মহম্মদ শাহ বাদশাহের নিকট হইতে বর্জমান প্রভৃতি জমিদারীর রাজা উপাধিসহ প্রথম সনল পান। পরে আবৃল নসর্ মূজা উদ্দীন্ আহম্মদ শা বাদশাহ গাজীর নিকট হইতে ৭ জুপুস ৭ রজব তারিখে পুনরার একথানি করমাণ প্রাপ্ত হন। দিলীখর আলম্যীর বাদশাহের নিকট হইতে তিনি ১ জুপুস ২৬ মহরম তারিখে একটি হস্তী উপহার পাইয়াছিলেন।

দিল্লীখন শাহ আলম্ বাদশাহ 'ফিদবী থাস' উল্লেখে তাঁহাকে একথানি পত্র এবং তদীন প্রথান সেনাপতি তাঁহাকে (ধ হাজার জাত ও হাজার সওয়ার) চারিছাজারি জাত ও রাজা বাহাত্র খেতাবযুক্ত একথানি ফরমাণ দিয়াছিলেন। ফিদবী থাস অর্থে বাদশাহের খাসের কর্মাচারী, এরূপ সম্মান রাজ্যের প্রথান কর্মাচারী ভিন্ন অপর কেহই প্রাপ্ত হইতেন না, এবং বঙ্গদেশে অপর কোন ভূপতিই উক্ত উপাধি প্রাপ্ত হরেন নাই। ইই ইপ্রিয়া কোন্দানীর তদানীস্ত্রন গ্রহণ্ড জনারেল বাহাত্রর 'ফিদবী থাস' শল ব্যহার করিতেন। ঐ সঙ্গে তিলকচন্দ্র নহবত ও বালরলা'র পালকীও প্রাপ্ত হইরাছিলেন। পুনয়ার দিল্লীখরের নিক্ট (১৭৬৮ খঃ) ৯ জুলুস ৪ঠা রমজান ৫ হাজার জাত ৩ হাজার সওয়ার (পঞ্চহাজারি জাত), মহারাজাধিরাত খেতাব, তোপ, নাকারা ও পতাকাপ্রাপ্তির কর্মাণ লাভ করেন।

১৭৫৫ থা ইট ইণ্ডিরা কোম্পানির তদানীন্তন গ্রথণ্য মিঃ হেনরি রিসবেট দিল্লী সমাটের আদেশালুসারে মহারান্ত তিলক-চন্দ্রকে একটা খেলাত ও একটা হস্তী প্রেরণ করেন। পলাসীর বৃদ্ধ কালে ভিলকচন্দ্র আব দিরা ইংরাজদিগকে বথেট সাহাব্য করিনা-ছিলেন। ১৭৬০ থা ইট ইণ্ডিরা কোম্পানি মহারান্ত ভিলকচন্দ্র ও ভবীর দেওরান এবং আল্লাক্ত প্রধান কর্ম্মচারিগপকে ৭৫২৫ টাকা মুলোর খেলাক্ত পাঠাইরা ছিলেন।

ইট ইপ্রিরা কোম্পানীকে তিলকচন্দ সাহাব্য করিলেও জর-

কাল পরেই কোম্পানী সেই উপকার বিশ্বত হন ; এমন কি শগ্র-কাশ পরেই সম্মতগোলাম ইংরাজনৈত্তের সভিত রাজনৈজগণের একটা সৃদ্ধ হয় এবং সেনপাহাড়ী ও ইট ইন্ডিয়া কোম্পানীর কুঠীর সৈম্প্রগণের সহিতও ছইবার বুদ্ধ হইবাছিল। এ সমগ্রের রাজসরকারে ১৫ সহত্র সৈতা থাকার প্রমাণ পাওরা বায়। তৎকালে বৰ্জমান একটা করদ রাজ্যরূপে পরিগণিত ছিল। রাজ্যের দেওয়ানি ও কৌজলারি বিচার মহারাজের নিজ আদালতেই নিম্পত্তি হইত, দম্রা ও তম্বর্দিগকে মহারাজ वराष्ट्रे मध धानान कतिएकन । यहाताक जिनकहम्म ताहाकुरतत অধীনে ১২টী গড় (ছুর্গ) বর্তমান ছিল, এখনও ঐ লকল कूटर्नब स्तः मायर नव वर्षमान ति जारह । ১৭৬१ युः बाज्यमत्रकारतत वद्रात्मत छानिकाम पृष्ठे हव (य, উপরোক্ত ১২টী জূর্বে ২৯৬ জন ম্রদক্ষ সভয়ার এবং ১১৯১ জন ম্রাশিক্ষিত পদাতিক সভত দুর্গ-রক্ষায় নিযুক্ত ছিল, তম্ভিন্ন বস্কুতর দেশীয় পাইক ও পদাতিকও নিবুক্ত থাকিত। ইট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর সহিত গোলযোগ মিটিবার পরই শোভাৰাজারের রাজা নবক্ষা বন্ধমানের স্থানো-রাল হইরা আদেন। ১৭৬৫ খুঃ মহারাজ তিলকচন্দ ইট ইণ্ডিয়া ्कान्नानीरक ४०৯४৮৯०५८० होका ताज्रय अमान कतित्रा ए দাখিলা প্রাপ্ত হয়েন, তাহ। অম্বাবধি রাজবাটীতে রক্ষিত আছে।

তিলকচন্দ বহুতর সংকীপ্তি এবং বিস্তর দেবত্র ও এক্ষত্র প্রদান করিলাছিলেন। তীহার রাজস্বকাল পর্যন্ত সর্কাসমেত ৪ লক্ষ ৬৭ হাজার বিঘাজামি কেবল প্রস্কাত্র প্রদত্ত ইইলাছিল। ১১৫৭ সালে ইং ১৭৭০ খুং তিলকচন্দ প্রলোক গ্রমন করেন। তাহার তুই পত্নী, তন্মধ্যে মহারাণী বিষণকুমারীই পুত্রবতী ছইলাছিলেন, ইহার সভে মহারাজ ভেলচন্দের জন্ম।

সন ১১৭১ সাল ৬ই মাথ (১৭৬৪ খুঃ ১৭ই জাত্বমার্নাতে) তেজচন্দ জন্ম গ্রহণ করেন এবং তদীয় পিতার পরণোকগমনের পর ৬ বংসর বয়ংক্রমকালে পৈতৃক পদ ও সম্পত্তি প্রাপ্ত হন। কিন্তু তৎকালে নিভান্ত শৈশবাবস্থা হেতৃ তদীয় জননী অসাধারণ বৃদ্ধিনতী মহারাণী বিষণকুমারীই তাহার অভিভাবিকা অরুপ সমুদর রাজকার্যা পর্যাবেক্ষণ করিছেন। ১৭৭১ খুঃ তেজচন্দ বাহাত্র দিল্লীখর শাহআলম্ বাদশাহের আজ্ঞান্ত্রসারে তদীর প্রধান দেনাপতির নিকট ইইতে সন ১-৮৪ হিজর। ১২ সওয়াল ১২ জুলুদ, তারিণে পৈতৃক পদ অর্থাৎ মহারাজাধিরাক বাহাত্র খেতাব, পঞ্চাক্তারি ক্লাত এবং তিন হালার সওয়ার, নাকারা, তোপ প্রভৃতি রাথিবার ক্লনতাস্থলিত ফরমাণ প্রাপ্ত হরেন। তেজচন্দ্র দাবালক হইরা অত্যন্ত বিশাসী হইরাছিলেন এবং তাহার রাজকার্যে অত্যন্ত অমনোযোগ হেতু, অরুকাল মধ্যেই জনেক গুলি ক্রমিনারী বাকী থাজনার প্রকাল নিলামে বিক্রের হইরা যার, সেই

XVII

সকল অমিলারী অরিধ করিয়াই এডকেনীয় বহু অমিলারঅর্থ্রের স্থাই হইরাছে। ১৭৯৩ খুঃ দশশালা বন্দোবজের সমরে মহারাজ তেজচদদ বাহাছর বার্ধিক ৪০১৫১০৯ টাকা রাজন্ম এবং ১৯৩৭২ ১০টাকা প্রাক্তম পরেও মহারাজের কতকগুলি অমিলারি বিক্রম ছইরা গিয়াছিল, পরুষ্ঠ তৎপরেই সহলা ভালের অভাবের পরিবর্তন হর এবং শ্বয়ং রাজ্যার্থা পর্যাবেক্ষণ করিতে থাকেন ও সমূদ্র অমিলারি পণ লইরা পান্তনী বন্দোবজ করিরা এককালে বিপুল অর্থ প্রাপ্ত হয়েন। এই বিপুল পণরাশিই বর্জমান-রাজধনাগারের ভিত্তি; ভদবিদ একাল পর্যান্ত রাজ্যের বারতীয় বায়নির্জ্ঞানতে সমন্ত উদ্পূত্ত অর্থই উক্ত ধনাগারে রক্ষিত হইয়া আসিতেছে। ১৭৯০ খুঃ ইট ইণ্ডিয়া কোং মহারাকের হস্ত হইতে দেওরানি ও ফৌজলারী ক্ষমতা, জেলখানা, এবং ১৭৯০ খুঃ পুলিস বিভাগ উঠাইয়া লানে। তৎপূর্ব্ব পর্যান্ত ঐ সকল ক্ষমতা তিনি ও তৎপূর্ব্ব প্রস্করণণ অক্তম ভাবে উপভোগ করিতেছিলেন।

মহারাজ তেক্ষচন্দ্র বাহাছর নর্টী দারপরিগ্রহ করিয়াভিলেন. তশ্বধ্যে মহারাণী নানকী কুমারীই পুত্রবতী হইল্লাছিলেন। সন ১১৯৮ সালে জাঁহার গর্ডে মহারাজ প্রতাপচক্র জন্মগ্রহণ করেন. শেষাবভার মহারাজ তেজচজ বাহাত্র পুত্তেই রাজাভার প্রদান করিয়া শ্বরং নিশ্চিত্ত হইবেন দ্বির করিয়া প্রভাপচল বর: প্রাপ্ত হুইলে তাঁহাকে বৌৰায়াজ্যে অভিবিক্ত করেন। মহারাজ প্রতাপচক্র অভাস্থ বুদ্ধিমান ও কার্যাক্ষম ছিলেন। রাজ্যভার প্রাপ্ত হটরাই ভিনি বিশেষ বন্ধ করিরা ৮ন আটন প্রণয়ন করাইরা খীয় রাজা রক্ষা করিয়া যান। जन ১২২৮ সালের পৌষ মালে ২৯ বংসর বয়:क्रम काली মহারাজ প্রতাপ<u>চল্ল</u> পরলোক গমন করেন। এই প্রতা^ল চক্রকে লইরাই জাল প্রতাপটাদের ক্ষ্টি: মহারাজ তেলচক্র বাহাত্র পুত্রের প্রলোক্গমনে পুনরায় রাজ্যভার এহণ করেন এবং স্থালক পরাণচন্ত্র কপুরের পুত্র চুনিলাল বাবুকে দত্তক পুত্র প্রহণ করিয়া ভাঁহার মহতাবচল নামকরণ করেন। তেজচক্র বাহাত্তরের বহুতর কীর্তিতে বর্জমান-রাজধংশ সমজ্ঞার বৃহিষ্ণান্ধে। সন ১২৩৯ সালের ভারমাসে তেজচক্ত প্রধ্যেক গমন করেন।

১৮০০ খু: ১৭ নবেশ্বর তারিশে মহারাজ ফ্রান্ডারন্তর বাহাত্র জন্মগ্রহণ করেন এবং ১৮২৭ খু: ১১ ফেররারি তারিখে জিনি তেজনক্র বাহাত্রের পরলোকগমনের পর তদীয় মহিবী মহারাণী কমলকুমারী (পরাণচন্দ্র কপুরের জগিনী) পুত্রের রাজোপার্দি প্রাধ্যির জন্ম ভারতবর্ষের তদানীক্তন গ্রপ্র জেনারেশ কর্ড উইলিয়ম বেণ্টিক বাহাত্রের সমীপে এক্থানি পত্র প্রেরণ

কঁরেন। অভিরকাশ মধ্যেই তিনি (১৮৩০ খৃঃ ৩০ আগই) গ্রণর °জেনারেশ বাহাছ্রের নিকট হইতে মহারাজাধিরাজ খেতাব ও ধেলাভ পাইলেন। ভাঁহার নাবালকাবহার ভণীয় মাতা महातानी कमन्द्रवाती ७ शतांश्रक कशूतरे ख्यात अख्डिलादक পরণ রাজকার্যা পর্যবেক্ষণ করিছেন। ১৮২৯ খ্র: ৮ই ফেব্রেরারি তারিখে মহতাবচন প্রথম দান পরিপ্রহ করেন। তদীর গর্ভে রাজকুমারী **ত্রীমতী ধনদেরী দেবী জন্ম গ্রহণ ক**রেন। ছঃধের বিষয় বে, কুমারীয় অজের ৭ দিন পরেই মহারাণী পরলোক গমন করেন, শৈশৰে মাড়হীনা রাজকুমারী বিবাহের অত্যরকাল পরেই বিধৰা হয়েন। সম ১২৯২ সালের ২রা আবাঢ় তারিখে রাজ-কুমারী লালা অবনীনাথ মেহেরা বাবুকে দত্তক পুত্র এহণ করেন। ১৮৪৪ খঃ ২৪ জুন ভারিখে মহভাবচন্দ বাহাত্র আমতী নারারণকুমারী দেবীর পাণিগ্রহণ করেন। মহারাণীর গর্ডে সম্ভানাদি না হওয়ার ১৮৬৬ বৃ: ১৯ মার্চ ভারিবে মহারাজের খালক ৺লালা বংশগোপাল চক্ক বাবুর জ্যেষ্ঠ পুত্রকে বতক-পুত্র প্রহণ করিয়া কুমার আক্ভাব্চক মহতাব বাহাছর नामकत्रण करत्रन।

১৮৩৯ খঃ মহারাজ পুনরার গ্রথর জেনারেল বাহাছরের নিকট হইতে খেলাভ প্রাপ্ত হইরাছিলেন।

১৮৫৫ খঃ সাঁওতাল বিদ্রোহের সমন্ব এবং ১৮৫৭ খঃ
সিপাহী বিদ্রোহের সমন্ন মহারাজ বিবিধ প্রকারে গবর্ণমেন্টের
বিস্তর উপকার করেন। ভক্ষান্ত তিনি গবর্ণমেন্ট হইতে ভূরি
ভূবি ধন্তবাদ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন।

১৮৬৪ খুঃ মহতাব চলা ভারতবর্ধের বাবকাপক সভার সনক্ষপদ লাভ করেন, এতদেশীরগণের মধ্যে তিনিই সর্ব্ধপ্রথম উক্ত পদপ্রাপ্ত হইরাছিলেন। উক্ত পদের আবক্তবীর ব্যর নির্বাহের জক্ত গ্রবর্ণমেন্ট হইতে প্রতি বংসরে ১০ সহস্র টাকা দিবার নিরম আছে, মহারাজ তিন বংসর উক্ত পদে সমাসীন থাকিয়া এক কালে ৩০ সহস্র টাকা প্রাকাই তিনি আলিসুরহ প্রশালানির্মাণার্থে প্রদান করেন।

১৮৬৬ খ্ আন্দে তীবণ ছতিন্দের সমরে মহারাজের অসাধারণ বদাঞ্চতা দৃষ্টে ভারতবর্ধের ওদানীন্তন গব্দরি ক্রেনারেল সার জন লরেন্দ বাহাছর মহারাজকে অহতে একথানি পত্র লিখিরা বিশুর ধন্তবাদ প্রবাদ করেন। ১৮৬৮ খ্যু মহারাজ বংশান্তক্রনে মহানালা সমাজীর ছাজচিক (Armous and ampporters) ধারণ করিবার ক্ষমতা প্রোপ্ত হরেন।

১৮৬৯ श्वः वर्षमान आस्त्र छत्तकत्र महालितियास महामातीत आहर्जान क्रेसन, फरअजीकातार्थ त्यकत शर्नात्मरेजेन क्रक বর্জমানপতি এককালে ৫০ সহস্র টাকা প্রদান করিরা গ্রথমেন্টের নিকট বিত্তর ধয়বাদ প্রাপ্ত হরেন। ১৮৭০ খ্বঃ মহামাতা সম্রাক্তীপত্র ডিউক ক্ষর এডিনবরা বর্জমানস্থ রাজভবনে গুভা-গমন করিয়া বর্জমানপতিকে সন্মানিত করিয়াভিগেন।

১৮৭৪ খুঃ ভীৰণ ছর্ভিজের সময় মহারাজ নিজ ব্যবে চুঁচ্ড়া, কালনা ওবর্জমানের ছানে হানে অরসত্ত করিয়া অসংখ্য দীনহীনের জীবন রক্ষা করিয়াছিলেন, বলের তৎকালীন লেক্টেনেন্ট গ্রণ্র সার জর্জ ক্যাবেল বাহাছর হল: ঐ সক্ষল অরসত্ত দর্শন করিয়া বর্জমানরাজের জীবূল বলাঞ্জার জঞ্চ ভূমনী প্রশংসা করিয়া হাততে একথানি পত্ত লিখিয়াছিলেন। ১৮৭৭ খুঃ মাল্রাজ প্রদেশে ছর্ভিজের জঞ্চ তিনি ১০ সহল টাকা প্রধান করেন।

১৮৭৭ খৃং দিল্লী দরবার হইতে বর্জমানপতি His High-এ০০০ খেতাব এবং আজীবন সন্ধানস্বরূপ ১৩টা তোপ লাভ করেন। ১৮৭৮ খৃঃ বর্জমানপত্তি ভারতসম্রাজ্ঞীর একটা প্রভরমরী প্রতিমূর্ত্তি কলিকভোর মিউজিয়নে স্থাপন করেন।

বৰ্দ্ধমান ও কাল্নার অবৈভনিক বিভালয়, দাতবা চিকিৎসালয়, বালিকা-বিভালয় প্রাকৃতি বছতর দেশহিতকর কীর্তি স্থাপন করিরা মহতাবিচন্দ বাহাছর এতদেশীয় জনগণের নিকট চির-শারণীয় হইরাছেন। তারের তাঁহার নৃতন ক্রীত বিশাল জমিদারী উড়িয়া প্রদেশস্থ কেলা কুজল ও মেদিনীপুর জেলায় প্রজামুঠা পরগণায় ২টা আবৈভনিক বিভালয় ও ২টা দাতব্য চিকিৎসালয় স্থাপন করিয়া গিরাছেন।

সন ১২৬৫ সালে তিনি মহর্ষি বাত্মীকিক্কত মূল ও সরল ব্যাথ্যা সহ রামারণ এবং মহর্ষি বেগব্যাসকৃত মূল ও ব্যাথ্যাসহ মহাভারত মূদ্রিত করিয়া সাধারণে বিভরণ করিতে আরম্ভ করেন, কিন্ত ভঃখের বিষয়, আরন্ধ কার্য্য সম্পূর্ণ হইবার পূর্কেই তিনি পরলোক গমন করেন। সন ১৮৭৯ খৃঃ ২৬এ আক্টোবর ১৯ বংসর বরঃক্রমকালে, ভারলপুর নগরে ভাঁহার মুক্যু হর।

উনবিংশতি বংসর বর্ষক্রমকালে মহারাজাধিরাক আফতাব মহতাব বাহাছর বর্জনান রাজসিংহাসন প্রোপ্ত হরেন; তংকালে তিনি পূর্ণবৃদ্ধ না থাকার, বর্জনানরাজ্য কোর্ট অব ওরার্ডের অধীন হইবার প্রস্তাব হর, কিন্ত মহারাজ মহতাবচন্দ বাহাছরের রাজকার্যপ্রধালী এতই ফুলর ও স্থবলোবজের সহিত সম্পাদিত হইতেছিল, তাহার নিকট স্থানিক্তি তদীর প্রাতৃপুত্র তংকালীন দেওরান-ই-রাজ কনবিহারী কপুর নাহেক এরপ বোগ্যতার সহিত রাজকার্য্য পরিচালনা করিতেছিলেন বে, বজেরর সার আন্তি এডেন বাহাছর, বর্জনানরাজ্য অর্কালের ক্লপ্ত কোর্ট-অব ওরার্ডের অধীন না কহিরান্ত্রেরণ ভাবে পরিচালিত হইতেছে, ভক্রপই রাধিবার অন্ত্র্যতি প্রধান করেন। মহারাক আক্তব চল বাহাছরও শ্বরং রাজকার্ব্যে হন্তক্ষেপ না করিরা রাজমন্ত্রী বনবিহারী কপুর সাহেবের উপর সর্কডোভাবে নির্ভর করিরা রাখিরাছিলেন। ১৮৮১ খৃঃ আকভাব
বাহাছর মহাসমারোহে গবর্ণমেন্টের নিকট খেলাতসহ রাজসনল প্রাপ্ত হরেন। ভিনি অভি জরকাল রাজ্য করিরাছিলেন, কিন্তু এই জয় সমরের মধ্যেই ভিনি করেকটা মহাকীর্ত্তি হাপন করিয়া এবেশের মহৎ হিভসাধন করিয়া গিরাছেন। ১৮৮১ খৃঃ লাজিলিকে রুরোলীর লাভব্য চিকিৎসালর শ্বাপিত হইলে ভিনি তাহার সাহাব্যার্থ এককালে ১০ সহল্র, ও বর্জমান নগরে জলের কল প্রশ্বত করিবার জন্ত বর্জমান নিউনিসি-পালিটকে এককালে ৫০ হালার টাকা প্রদান করেন।

মহারাজ মহতাবচন্দ বাহাছর বে বিশ্বাসন্থ হাপন করেন, তাহাতে কেবলমাত্র এন্ট্রেল পর্যান্ত পাঠ হইত। আকতাবচন্দ ঐ কুলটিকে ২র শ্রেণী কলেজে উন্নীত করিয়া বিনা বেতনে এল, এ, পরীক্ষা পর্যান্ত পাঠ করিবার স্থবিধা করিয়া দেন, এই কার্যো তাঁহার ৮০ হাজার টাকা বার হর।

তিনি বৰ্দ্ধমান সাধারণ পুত্তকালর স্থাপন করিরা গিরাছেন, পুত্তকালরটা ত্থাপন করিতে উাহার ৯ সহত্র টাকা বার হইরা-ছিল। এই সকল সাধারণ হিতকের কার্যা দৃষ্টে গবর্ণমেন্ট ভাঁহাকে ভূরি ভূরি ধ্যাবাদ প্রদোন করেন।

সংস্কৃত নিক্ষার উর্রাভিকরে তিনি গ্রথমেন্টের হল্পে এককালে

সৈহল টাকা প্রদান করেন। মহতাবচন্দ বাহালুরের অরণার্থে
বর্জমান গ্রথমেন্ট দাতবা চিকিৎসালয় ও চক্ষ্ম পীড়াগ্রান্থ রোগীদিগের বাসোপবোগী একটা গৃহ নির্দ্ধাণ করিয়া দেন। তিনি
তদীর পিতৃদেবের পূণ্যতম কীর্ত্তি রামান্ত্রণ ও মহাভারত সম্পূর্ণ
মন্ত্রিত করিয়া সাধারণে বিতরণ করেন।

সন ১২৯১ সালের ১৩ চৈত্র তারিখে ২৪বংসর বর:ক্রমকালে আফ্ডাব্চন্দ মহতাৰ বাহাছুর অকালে প্রলোক গ্রুম করেন।

আফ্তাবচন্দ মহতাব বাহাহরের পরলোকসমনের পর তদীর নাবালিকা মহিবী মহারাণী অধিরাণী বেনদেরী দেবী বর্জমানরাব্যের উত্তরাধিকারিণী হরেন। মহারাজ আফ্তাব চন্দ বাহাহরের উইলে মহারাণীর দক্তকপুত্র গ্রহণ করিবার অকুমতি থাকার, তিনি রাজা বনবিহারী কপুর মহাশরের পুত্র শ্রামান বিজনবিহারী (বিজরচন্দ) কপুরকে ১৮৮৭ খৃঃ ৩১ জুলাই তারিখে বজেররের আদেশান্ত্রনারে দক্তক পুত্র গ্রহণ করেন। এই দক্তক প্রবণ স্বাধ্বে তদীর খাল শ্রীমানী নারারণকুমারী দেবী, বহুতর আপত্তি করিয়া উচ্চতম আঘালতে অভিবোগ করিয়াছিলেন, কিন্তু উপত্বিত মোকজ্মারী অব-শেবে আপোনে নিশান্তি হইরা সিয়াছিল। দক্তকগ্রহণের

অভ্যয়কাল পরেই ১৮৮৮ খৃঃ ১৩ বে ভারিখে মহারাণী পরলোক গমন করেন।

১৮৮১ বৃং ১৯ অটোবর তারিখে মহারাজাবিরাজ বিজরচন্দ্র বছতাব বাহাছর কলপ্রবণ করেন। নহালালী বেলবেরীর মৃত্যুর পর মহারাজ বিজরচন্দ্র নাবালক থাকার কোর্টিজবওরার্ডের জনীলে তদীর কল্লবাতা পিতা, বর্জনানরাক্ষ্যের ত্রাবধানে আনিক্ষ করেন। ১৮৯২ বৃং ১৯ অটোবর তারিখে সাবালক হইরা বর্জনানরাক্ষ্যের রাজসিংহাসনে অধিরত্ন ইইরাহেন।

রাজা বন বিহারী কপুর সাহের ১৮৫০ খুটাকে ২১ই নবেরর বর্জমান কেলাছ সোঁরাই প্রানে জন্ধগ্রণ করেন। তাহার যতে বর্জমানরাজ্যের বহু বিষয়ে উন্নতি বট্টনাছে। তিনি বৃটীশগবর্নেটের নিকট ১৮৯৩ খুটাকে হরা জাছরারী রাজা উপাধিলাভ করেন। বিগত ১৯০১ খুটাকের আবন্দখ্যারীর সমর তিনি নিজ জাতির পদমর্য্যান্না রক্ষা করিবার জভ বরেলীতে এক ক্ষত্রিরসভা আহ্বান করেন। ভারতবর্বের সকল ছানের অলাভিবৃন্দ তাহাকে সভাপতিপদে বরণ করিরা তাহাকে বিশেব স্থানিভ করেন। তাহারই বত্তে ও অধ্যবসারে বৃটীশ গ্রপ্নেন্ট বর্জমানরাজ ও ভাহার অলাভিবৃন্দকে ক্রির বলিরা ত্রীকার করিতে বাধ্য হন।

প্রাচীদ স্থাদ

ব্রহ্মধণ্ডের মতে বর্জমানের মধ্যে ব্রহ্মধ্যক নগর ও গ্রাম আছে, তদ্মধ্যে এই কর্টী প্রধান---

थाउँन, नातित्कनिनमीत्र नात्र्यं काशनावात्र, मात्रान्त्र, नकत-স্বিৎ পার্দে গরিষ্ঠগ্রাম, মুখেশরীর নিকট শ্রীকৃষ্ণনগর (এগানে অভিরাম-প্রতিষ্ঠিত স্থামস্থলর), দামোদরের পার্যে রাজবল্পত, ভাগীরণীর পার্ছে বিভান্থান নববীপ (গৌরান্তের লক্ষ্মান), मानारकात, এकनकक, त्राघरवांक्रिका, अविका, वानुशाम. মীরগ্রাম, ভূরিখেটক, দেনাপি, জনামি, ক্রুরণ, আছন, তট, স্বৰ্ণ টীক। বৰ্দ্ধমানের দক্ষিণে পাঞ্চ (এখানে বিষয়াভিনন্দন রাজা हरेरका), कूमानवीधिका, कुनक्रिया, क्रान, लोहपूत, शावर्कन, হাত্তক, জীরামপুর, বেলুন,অগ্রমীপ, পাটলি,কর্ণগ্রাম, জোতিবনি, हळ्लात, वनिहातिशृत, विक्किशाना, कुनमान, गन्छाति, **सा**वहे. চক্রবেশ। অঙ্গলের নিকট রসগ্রাম, এ ছাড়া ৮টা পত্তনের নাম ৰথা -- বৈজ্ঞপুর (ভাগীরথীর পশ্চিমে ছই বোজন দূরে, (ভিলির অধিকারে), পাটলি (গলার পার্বে কারস্বরাজের অধিকারে), निनावजी नमीत्र भार्ष (लाश्मा, मारमागरत्रत्र निक्रे कविरत्रत्र अधि-কারে চক্রবাটা,বর্ত্তমানের পূর্কাংশে বুল্চকগন্তন,দামোদরের তাঁরে ত্রিবক্রাসরিৎপার্বে হাটক নগর, ভাগীরথীর পশ্চিমে বিবপত্তন,

বর্ত্ধমানের ২০ জ্বোশ দূরে সামরপত্ম, (এখানে ক্রভোরানণী-প্রবাহিত)। (৭ ক্লথায়)

উদ্ভ প্রামনগরাদির নাম ছইতে বোধ ছইতেছে বে, বর্তমান চগলী, মধীরা ও পাঁথনা জেলার ফডকাংশ পৃর্বে বর্ত্মান প্রদেশের অন্তর্গত চিল।

বর্ত্তমান সবারে বর্জমান জেলার জনাকীর্ণ নগরসমূহের মধ্যে বর্জমান, কালনা, স্থামবাজার, রাবীগঞ্জ, জাহানাবাদ, বালী, কাটোয়া,দাইহাট প্রই ৮টী সহর প্রধান। এই ৮টির মধ্যে বর্জমানে প্রায় ৪০ হাজার প্ররুগ দীইহাটে প্রায় ১০ হাজার লোকের বাস। বর্জমান গাঞ্জমসমূহের মধ্যে ধগুবোর, ইন্দাস, সলিমাবাদ, গালুরিরা, সাহেবগঞ্জ, ভাতুরিয়া, মদ্রেবয়, ভাউসিংহ, ভগবতীপুর, মল্ললকোট, উজানপুর, বৃদ্বুদ্, আউল্পাম, সোণামুণী, কসবা, দিগ্রনগর, লানকর, কাক্সা, নিয়ামতপুর, গোঘাট, কোতলপুর, বামনা ও সলিমপুর এই ২৪ থানি গ্রাম প্রধান। প্র সকল গগুগ্রামে বহু লোকের বাদ।

উক্ত নগর প্রামাদির মধ্যে কালনা একটি বাণিজ্যকেন্দ্র,
এগানে সক্তলাধিক বিপনী কুণোভিত। মুসলমান আমণেও এই
জানের বিশেব সমৃত্তি ছিল। সে সমতে ফাল্মার পার্ব দিলা গলা
প্রবাহিত ছিল। প্রাচীন কাল্নার আর বাণিজ্যকেন্দ্র না
পাক্ষেত্র ভবার বহু সন্তান্ত লোকের অভাপি বাস আছে। বহু
বিপনীমণ্ডিভ নৃক্তন কাল্না বর্দ্ধমানের মহারাজের যত্ত্বে নির্মিত।
বাণীগভের ক্যলার খনি জগ্ছিগাত। [রাণীগঞ্জ দেখ।]

দারিকেশ্বরনদীর তীরে জাহানাবাদ, এখানে মহকুমা ও বছ সন্থান্ত লোকের বাস জাছে। বালিগ্রাম ও দারিকেশ্বরের তীরে, পূর্বে এই স্থান বাজ্ঞগকারছের সমাজ বলিরা গণ্য ছিল। জালীনগী ও অঞ্জারের সক্ষমস্থানে প্রাসিক কাঁটোয়া নগরী, এখানে বহ দুনী বলিকের বাস। বহু পূর্বে হইতেই কাঁটোয়ার সমৃদ্ধির পরিচন্ন পাওয়ায় যায়। নবাব আলীবন্দীর সময়ে মরাঠাদিগের উৎপাতে কাঁটোরার বথেই ক্ষতি হইরাছে। এখনও কাঁটোরা একটি প্রধান বাণিজ্য স্থান বলিরা খ্যাত। [কাঁটোরা দেখ।]

ভাগীবৰীর তীরে গাইহাট অবছিত। — পূর্বে এই স্থান ও বেশের সমৃদ্ধিশালী বলিয়া গণ্য ছিল। এখনও এখানে নানা ব্যবসায়ীর বাস দেখা যার ও বাণিজ্যের জক্ত প্রসিদ।

বৰ্জনান জেলায় পতিত আমি নাই। সকল জমিতেই প্ৰায় চাৰ হইয়া থাকে।

এখানে বন্ধ পৰাদির মধ্যে রানীগজের জকতে অবসংধ্যক ব্যান্ত, ভরুক ও নেকড়ে দেখা যার। বিষধর সর্পের আভাব নাই। পন্ধীর মধ্যে বন্ধ কুছুট, পাতি হাঁস, মর্ব, রাজহাঁস, বন্ধ কপোত, ভিত্তির ও বটের পাখী প্রারই দেখা যার।

व्यक्तिमी ७ व्यवहां।

এই জেলার শতকরা ৮০ জন হিন্দু, ১৮ জন মুসলমান, বাকী ভিন্ন ধর্মাবলধী। হিন্দুর মধ্যে বাকী ও সংলগাপের সংখ্যাই অধিক। তৎপরে সংখ্যাইসারে যথাক্রমে আন্ধ্রণ, বাউরি, গোরালা, চামার, ডোম, বেথিরা, কারছ, কৈবর্ত, তেলী, কলু, চাড়ী, তন্ধ্বার, কর্মকার, ভঁড়ি, নাপিত, চণ্ডাল, কুন্তার, মোদক, ছুভার (বড়ই)। মুসলমানের মধ্যে সকলেই প্রায় স্তর্মী, অরই শিয়া। খুটান সম্পাদারের সংখ্যা সহস্রাধিক হইবে না। তন্মধ্যে , ঘুরোপীর ও ইউরেসিয়ান্দিগের সংখ্যাই বেশী, দেশী খুটানের সংখ্যা সার্ম্ধ শাতাধিক হইবে না।

পূর্বে বর্দ্ধমান জেলায় বছ লোকের বাস ছিল। ১৮৬৬ খুটাকে মালেরিরা দেখা দেয়, সেই পর্যান্ত ম্যালেরিয়ার এথানকার লোকসংখ্যা বড়ুই কমিয়া আসিতেছে। অর দিন হইতে সামান্ত উরতি বোধ হইতেছে। মাথ হইতে স্মাধাঢ়ের প্রথমাংশ পর্যান্ত এই জেলা বেশ স্বাস্থ্যকর থাকে, ভৎপরে বৃষ্টিপাতের সঙ্গে সঙ্গে জরেরও প্রাহ্ভাব ঘটে। জলে অধিকাংশ স্থলই আর্দ্র থাকে, জলনিকাশেরও তেমন স্থবিধা না থাকার ঠাণ্ডার ও আহারের লোৰে অনেকেই পীড়িত হইরা পড়ে। কোন কোন বর্ষে আবার **ভীষণাকার ধারণ করে। সাধারণের বিধাস, যে রেলেও**য়ে বাঁধ হওরা পর্যান্ত জল নিকাদের অস্ত্রিধা ঘটার, বড় বড় নদীর গতি পরিবর্তিত হওয়ার, বস্থা আসিরা পূর্ব্ব সঞ্চিত আবর্জনা সকল ধৌত করিবার স্থাবিধা না থাকায়, ছোট ছোট নদী নালা শুক্ষ হওয়ায় এবং সেই সঙ্গে অনেক স্থলে বিশুদ্ধ পানীয় জলের **অভাব বটায় বন্ধমান জেলা এরপ অস্বাস্থ্যকর হইয়া পড়িয়াছে।** ভাই জেলার উন্নতিবিধানের জন্ম দামোদর হইতে এডেন থাল, বর্দ্ধমান সহরে জলের কল ও অপরাপর স্থানে ভাল পানীয় জল সরবরাহের বন্দোবন্ত করা হইয়াছে ও হইতেছে।

রেলওরের স্থাবিধার জন্ত দামোদরের বাঁধ নির্দ্মিত হইবার পূর্কে বর্জমান জেলার নিরত বস্তা হইত। ১৭৭০,১৮২৩ ও ১৮৫৫ খুষ্টাব্দে যে বস্তা হইয়াছিল, ভাহাতে বহু লোক ধনে প্রাণে মারা যার। বাঁধ হওরা পর্যান্ত বস্তার প্রকোপ কমিরাছে।

১৮৬৬ খুঠান্দে বর্জনানে ছণ্ডিক্ষ দেখা দেয়। এ সময়ে মোটা চাউলের মণ ১৪০ টাকা কইতে ৫৪০ টাকা হইয়াছিল।

सनिशा ।

এখানে দেশীরগণের মন্ত্রে ধুন্তি, সাজী প্রান্তত হইরা নান।
ফানে প্রেরিড হইরা থাকে। বোণা, রূপা ও পিড্রু কাঁসার
জিনিসও এখানে বথেষ্ট ভৈরারী হইতেছে। এখানকার জমি
বেশ উর্কার, সেই জভ একটুও পড়িরা নাই। শক্তানিও যথেষ্ট
উৎপল্ল হয়। এখানকার ধরচ কুলাইরা উদ্ভূত থাকে। এখান

হইতে চাউল, তামাক, নানাপ্রকার কলার, গোম, সরিবা, পাট, চিনি, লবণ, দেলী ধুতি, তুলা প্রভৃতি অন্ত স্থানে রপ্তানী হর এবং এখানে বিলাতী কাপড়, বিলাতী জিনিস, লোহ, লবণ, গরম মসলা, নারিকেল ও এরও তৈল আমদানী হুইরা থাকে।

এই জেলার ইষ্ট ইণ্ডিরা রেলওরের মেমারি, শক্তিগড়, বর্জমান, কামুজংগন, মানকর, পানাগড়, তুর্গাণুর, অপ্তাল, রাণী-গঞ্জ, সিরারসোল, নিম্চা, আসন্সোল, সীতারামপুর, বরাকর, শুস্করা ও ভেদিয়া প্রভৃতি ষ্টেশনেই অধিকাংশ আমদানী রপ্তানীর চালান হইয়া থাকে। রাণীগঞ্জে বরণকোম্পানীর এক বৃহৎ কারপানা আছে, তাহাতে পাইপ, ইষ্টক ও নানা প্রকার স্কৃষ্ট টালিখোলা প্রস্তুত হউতেতে।

এই জেলায় ৪টি জেল ও ১৭টি পানা আছে। এত মধ্যে ৮টি থানা সদরের অধীন যথা—বর্জমান, সাহেবগঞ্জ, খণ্ডবোষ, রায়না, গাঙ্কুড়, সলিমাবাদ, বুদ্বুদ্ ও আউস্গ্রাম। ৩টি থানা রাণী-গঞ্জের অধীন যথা—রাণীগঞ্জ, আসন্সোল ও কক্সা। ৩টি থানা কাঁটোয়ার অধীন যথা—কাঁটোয়া, কেতুগ্রাম ও মঞ্জলকোট এবং ৩টি থানা কাল্নার অধীন যথা—কাল্না, পূর্বস্থলী ও মজেখন। ঐ গুলি আবার ৭১টি প্রগণায় বিভক্ত।

ও উক্ত জেগার সদর মহকুমা, জক্ষা ২২° ৫৭'৩ • "হইতে ২৩° ৩২' উ: এবং জাবি ৮৭° ৩২' ৪৫ " হইতে ৮৮° ১৬' ৪৫ " পু:। ভূপরিমাণ ১২৪২ বর্গমাইল।

৪ উক্ত জেলার প্রধান নগর ও সদর, বাকা নদীর তীরে অবস্থিত। অক্ষা ২০°১৪ ১০ উঃ ও দ্রাঘি ৮৭°৫০ ৫৫ পুঃ। লোকসংখ্যা প্রায় ৩৫ হাজার। ১৮৬০ খুষ্টান্দ ইইতে অনর্থ-কর জরে এই সহর উৎসরপ্রায়। এখন মহারাজের বারে জলের কল ও মিউনিসিপালিটির চেটায় বর্জমান সহরের অনেকটা উরতি হইয়াছে। পুর্বের এখানে বর্জমান বিভাগের কমিসনর সাহেব বাস করিতেন। এখানকার বর্জমান-মহারাজের স্ব্যুহৎ প্রাসাদ, তাঁহাদের প্রতিষ্ঠিত অটোত্তরশত শিবমন্দির এবং পীরবহরমের মস্কিন্দ দেখিবার জিনিস। ১৬২৪ খুটান্দে শাহজাদা খ্রম্ (পরে শাহজাহান) বর্জমান অধিকার করেন। ১৬৯৫ খুটান্দে শোভাসিংহ বর্জমানাধিপতিকে নিহত করিয়া বর্জমান অধিকার করেন। অবশেষে বর্জমান-রাজকুমারীর হত্তে তাঁহার আয়ু শেষ হয়; বর্জমান জেলার ইতিহাস প্রসঙ্গে প্রের্কিই সেক্থা বলা হইয়াছে। এখানে ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোন্দানীর বড় টেসন আছে। এখানকার সীতাতোগ ও মতিচুর প্রসিদ্ধ।

বর্জমান (মের বর্জমান), উত্তরতারতের কান্সীর উপত্যকার
পূর্বপার্থবত্তী একটা স্থদীর্ঘ উপত্যকা। একটা উচ্চচূড় পর্বতধারা উক্ত উভয় উপত্যকা পরস্পারে বিচ্ছির। ইহা উত্তর-

ৰন্ধিংশ থার ৪০ মাইল লখা এবং প্রান্থ প্রান্থ সিকি মাইল।
ইহার চতুঃসীমান্থিত পর্কাতয়ালি তুবারার্ত নিধরে, কণ্ডায়মান।
এই উচ্চতুত পর্কাতগুলি চারিদিকে বিভ্নান থাকার ইহার নিয়লেশে প্রাক্র শপন করিতে পারে না। বর্দ্ধমান নদী এই পর্কাতমালা ভেদ করিয়া চক্রভাগার মিলিত হইয়াছে। এখানে
করেকথানি গ্রামে অতি জয়লোকেরই বাস আছে, তাহায়া
এখানকার কঠোর শীত সহু করিতে সমর্থ।

বর্দ্ধমান, খনামধ্যাত কএকজন গ্রন্থক্তা। > কাড্মবিস্তর-রচরিতা। ২ ক্রিয়াগুপ্তক, সিদ্ধান্তর্গন ও গণর্জমহোদ্ধি-প্রণেতা। ইনি >>৪০ খুটালে শেষোক্ত গ্রন্থানির একধানি টাকা রচনা করিয়াছিলেন। স্থাসিদ্ধ পণ্ডিত গোবিন্দ করি ইহার গুরু ছিলেন। ও নানাশাস্ত্রার্থনির্গয়রচয়িতা। ৪ শ্রাছ-প্রনিপ্রগতিরা ও ক্রমন প্রাতীন কবি। ৬ একজন বিখ্যাত জ্যোতির্বিদ্, বরাহমিহির ইহার নামোরেণ করিয়াছেন।

বৰ্দ্ধমান উপাধ্যায়, > কিরণাবলী প্রকাশ, খণ্ডনখণ্ডখাছ প্রকাশ, তরচিন্তামণিপ্রকাশ, ভারকুম্মাঞ্জলিপ্রকাশ, ভারনিবন্ধ প্রকাশ, ভারলীলাবতী প্রকাশ এবং প্রমেরতন্ধবের পুরি
প্রতি গ্রন্থ রচনা করেন। ইনি গলেশ বা গলেশবের পুরি
মধ্যে পরিগণিত।

২ এক অন বিধ্যাত পণ্ডিত। ইনি কবিলের ও মহাধন্মাপিরাজ ভবেশের পুত্র; পিতার নিকট বিভালিকা লাভ করেন।
গঙ্গাক্ততাবিবেক, দণ্ডবিবেক, ধর্মপ্রদীপ, পরিভাষাবিবেক, শ্বতিতর্ববিবেক, শ্বতিভ্রামৃত, শ্বতিভ্রামৃতসারোধার ও শ্বতিপরিভাষা প্রভৃতি গ্রন্থ ইহার রচিত বলিরা প্রকাশ। রুল্নশন,
কমলাকর ও কেশব ইহার মত উদ্ধৃত করিরাছেন।

বর্দ্ধনাক (ত্রি) বর্দ্ধনান স্বার্থে সংজ্ঞায়াং বা কন্। ১ রুদ্ধিবিলিট্ট। (পুং) ২ লয়াব। (আনস্তান এর ওত্ত্বক।
ও আর্ত্রিক, আর্তি।

"नहनर्खकग्रस्तिः भूगीकर्गक्यागरेकः।

নিত্যোদ্যোগৈক **ক্রীড়াভিত্ত**রাপ্যপরিহর্ষিতাঃ ॥"

(ভারত শাববার)

বর্দ্ধমানগণি, কুমারপ্রশক্তিকাব্যয়চরিতা। ইনি হেমচক্রের শিধ্য ছিলেন।

বৰ্দ্ধমানভার (রী) ১ বৰ্দ্ধমানের প্রবেশপথ। ২ হবিনাপর-রাজ্যের প্রবেশহার।

বর্দ্ধমানপুর (রী) গ্রামবিশেষ। গুৰুরাতের একটি গ্রহাম নগর। বর্দ্ধমানপুরীয় (ত্রি) বর্দ্ধমান নগর সম্বন্ধীয়। ত্রগম্বলাত। বর্দ্ধমানপতি (পুং) বর্দ্ধমানশ্রত । বর্দ্ধমানশ্রতি ।

বর্দ্ধনানতি (পুং) বোধিসরতেদ।
বর্দ্ধনানমিঞা, ইনি বর্দ্ধনানপ্রক্রিরা দামক ব্যাকরণ প্রণরণ করেন।
বর্দ্ধনানসম্ভক (मैं) সটকর্তেদ। ইহার প্রাক্তপ্রণালী—ঘন
ধি মহন করিয়া ভাহাতে সম্ভব মত শর্করা, মরিচ, ওঁঠ, পিপুল,
জীরক এই সকল প্রবেয় চুর্প মিপ্রিত করিতে হয়। পরে উত্তম
রূপে ইহা হত্তবারা আলোড়ন করিবে। তৎপরে পক দাড়িমরস
উহাতে মিশাইরা বন্ধ বারা ছাকিরা লাইলে এই সট্টক হয়। এই
সট্টক গুরু, অরিনীপ্রিকর, বলকারী, তৃথিকারক, কফ, বাত, পিত্ত,
শ্রম, গ্রানি ও ভুকানাশক।

"সাক্রং দবি গৃহীতা তু কিঞ্চিন্মখা চ মহরেং।

কর্মনারিচং গুল্লী পিশ্লনী জীষ্চূর্ণকম্ ॥

নিক্ষিপ্য চ বথাযোগ্যং হন্তেনালোড্য বহুত:।

বেরেণ গাদারেডনিন্ পরুদাড়িমবীজকম্ ॥

নিক্ষিপ্য সিন্ধমেতত, সটুকং বর্দমানকম্ ।

তঃক্দীপ্রিকন্মং ক্লচাং বলদং তৃপ্তিকারকম্ ।

ক্ষবাত্তক পিশ্রক শ্রমং মানিং ত্বাং জরেং ॥"

(বৈছকনি৽ প্রবাধা৽)

বর্জমানসূরি, জৈনস্রিভেদ। অভরদেবের শিব্য, ইনি ১০৩২
খুঠানে বিঞ্চমান ছিলেন। কথাকোষ বা শরণকারবলী এবং
উপমিতিভব-প্রপঞ্চনাম-সমূত্যে ১৯৮৮ সংবতে রচনা করিয়াছিলেন।

বর্জমানস্থামী, কৈন ভার্মজরভেদ। [মহাবীর দেখ।]
বর্জমানেশ (পুং) বর্জমানগু ঈশঃ। ১ বর্জমানপুরের রাজা।
২ শিবলিক ও মন্দিরভেদ।

বর্দ্ধয়িত্ব (বি) বর্দ্ধ-শিচ্-তৃচ্। বর্দ্ধনকারক।
বর্দ্ধা, মধ্যপ্রদেশের চীফ্ কমিশনরের অধীনস্থ একটা জেলা।
আক্ষা ২০°১৮ ছইতে ২১°২১ উঃ এবং ৭৮°৪ ৩০° ছইতে ৭৯°১৫ পৃঃ মধ্য। এই কেলা ত্রিকোণাক্ষতি, পালমূলে চান্দা জেলা,
পূর্ব্বে নাগপুর এবং পশ্চিমে বর্দ্ধান্দী প্রবাহিত থাকিয়া বেরার
ছইতে এইছান বিজ্ঞিয় রাখিছাছে। ভূপরিমাণ ২৪০১ বর্গমাইল। বর্দ্ধান্গর এধানকার বিচার সদর।

এই জেলার অধিকাংশ স্থানই পর্ব্যভনদ । সাওপুরা পর্বাতনালার ক্রেকটা পাথা উত্তরদিক হইতে এই জেলার দক্ষিণ-পূর্বাংশ পর্যন্ত আছের করিবা রাধিবাছে। এই ক্রেনোচ্চনির এবং উপলগওবিক্রিপ্ত ভূমিভাগে বিশেব কোনরূপ বৃক্ষণতা বা শভাদি উৎপর হয় না। গ্রীয়কালে পর্বাতের চালু বেলে সামান্ত মাত্রার ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র করিবালে ক্রিমাণে ক্রেমিভিত হইরা উঠে। তথন তথার বলে দলে গোমহিবাদি আসিরা বিচরণ করিবা

থাকে। অটি ও থানালী পরগণার পর্কতাংশ শাল ও সেওণ বৃক্ষ মণ্ডিত জন্মলে পূর্ণ। এই সকল পর্কতশাধার মধ্যবতী উপত্যকা ভূমি বিশেষ উর্কারা এক শক্তসমৃদ্ধিশালী।

এই জেলার উত্তর বিভাগ হইতে ছলেগাঁও, চিচোলী, ধামকুণ্ড ও থানেগাঁও নামে কএকটা গিরিপথ নাগপুর অভিমৃথে
গিয়াছে। ঐ সকল পর্কাভমালার মধ্যে মালেগাঁও, নন্দগাঁও ও
জৈত্রগড় (২০৮৬ ফিট্) শিশর সর্কোচ্চ। তাহারই মধ্য দিরা
আবার পর্কাতগাত্রপ্রস্ত জলরাশির অববাহিকাভূমি। কএকটা
কুদ্দ কুদ্র স্রোভিখনী কুল কুলনাদে সেই গিরিকল্পর ভেল করিয়া
পর্কাতপার্থিত নিয় প্রাদেশের সমতল প্রান্তরে প্রবাহিত হইয়া
বর্দ্ধাসলিলে আসিয়া মিশিরাছে। ঐ সক্ললের মধ্যে ধাম, বোর,
অশোড়া ও বসা নামে কয়তী শাথা বর্দ্ধার কলেবর পৃষ্টি করিতেছে। বৃহদাকার বৃক্লের মধ্যে এখানে আমা, তেঁতুল, বউ ও
অখপ দেখা যায়। পূর্কাবিভাগের বনদেশে সেয়প দীর্ঘাকার
বৃক্ষ নাই। হিলন্টাট তহসীলে এবং গিরাড় নগর সারিহিত
প্রোদেশের ভূগর্ভত্ব কর মধ্যে স্থামিই জলপ্রবাহ বিভ্যমান আছে।

বিগত ছয় শতাব্দ পূর্বে শেথ খালা দরিদ নামে একজন মুসলমান সাধু এথানকার পর্বতশিপরে আসিয়া বাস করেন। প্রবাদ, এক সমরে কএকজন বণিক্ নারিকেল লইয়া এই স্থান দিয়া বাণিজ্যার্থ গমন করিতেছিল, তাহারা মুসলমান সাধুকে ভণ্ড মনে করিয়া তাঁহার প্রতি বিদ্ধাপ বাক্য প্রয়োগ করে, তাহাতে সাধু কৃপিত হন এবং তাঁহার অভিশাপে সমন্ত নারিকেল পাথরে রূপাস্তরিত হইয়া পর্বাভন্তর পরিণত হয়। এখনও ঐ পর্বতের শিথরদেশে বহুসংখ্যক মুসলমান সাধু বাস করিয়া থাকেন।

এগানে বিশেষ কোন খনিজ পদার্থ পাওয়া যায় না। পর্বাতাংশে যে কএক প্রকার পাথর পাওয়া যায়, তাহা গৃহনিশ্বাণ-কার্য্য ব্যতীত কোন উপকারেই আইসে না। কোন ছানে চৃ'ণে পাথর পাওয়া যায়, তাহা পোড়াইরা চুণ প্রস্তুত হয়। ক্লাগ্র্নৌন্ ও ব্লাক্রেসাল্ট পাথরের অভাব নাই।

বনভাগে চিভা, হারনা, নেকড়ে, বনবরাছ ও বক্তপুগাল প্রভৃতি জন্ধ প্রচুর দৃষ্টিগোচর হর। হরিণ, নীলগাই ও ব্নোভেড়া পর্বতভাগে যথেষ্ট। পক্ষীর মধ্যে তিন্তির, টিষ্টিভ, বটের, পার্বতঃ কপোত প্রভৃতি প্রধান। সকল প্রকার সর্প, শতপদী ও বৃহৎকায় বিচ্চু বিত্তর দেখিতে পাওরা যার।

এধানকার প্রাচীন ইতিহাস সদদে বিশেষ কিছুই পাওরা যার না, তবে সহাভারতের উক্তি এবং স্থানীর প্রবাদ অকুসরণ করিলে কানা যার বে, এথানকার উত্তরপশ্চিমাংশ বিদর্ভরাক ভীমকের শাসনাধীন ছিল। ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ এই ভীমকনন্দিনী। করিনী দেবীর পাশিগ্রহণ করেন। বিশাপুর্কাংশে গৌলীকাতির বাদ ছিল। সুর্যাবংশীর ক্ষত্রিয়-রাক পবন পৌণার, পরি ও পোছরা নামক স্থানে স্থীর শাসন বিতার করিরা ছিলেন। প্রবাদ, তাঁহার একথানি পরেশ পাথর ছিল। প্রকাগণ তাঁহাকে থাজনা না দিরা লাজলের লোহকলা দিত এবং তাহারই স্পার্লে ফলগুলি বর্গে পরিণ্ড হইত।

অরশেবে সৈরদ সালর কবীর নামে এক জন মুসলমান বাছ-কর তথার আসিরা উপনীত হয়। সেই ব্যক্তি রাজার নিরক্ষেদ্ধ কৌশল অবগত হইয়া পৌনর নগরে প্রবেশের পূর্কেই ঐক্র-জালিক বিভাপ্রভাবে স্বীয় মন্তক স্থানাজ্বরে রাখিয়া নগরে প্রবেশ করিল। রাজা কবীরের প্রভাব লক্ষ্য করিয়া এবং ভাহার ভৌতিকবিদ্ধা স্বীয় মায়ার অতীত জানিয়া লাজ্নার ভয়ে পৌনর ছুর্গের সন্মুখে সন্ত্রীক ধামনদীর জলে প্রবেশ করেন। তদবধি সেই জলাবর্ত্ত নানা ভৌতিক চিত্রের উৎপাদক হইয়াছে।

কিংবদন্তী আছে, এক সময়ে এক রাখাল এই স্থানে নদীতীরে গোরু চরাইত। তাহার পাল মধ্যে একটী রুক্ষবর্ণ গাতী
বিচরণ করিতে দেখিয়া দে মনে মনে ভাবিল, এ গোরুটী
কাহার ? বহু দিন হুইতে ইহাকে চরাইয়া বেড়াইতেছি, কিন্তু
অত্যাপিও তাহার জন্ম পারিশ্রমিক কিছু পাই না, অথবা গোরুটী
কোন দিনও আপনার স্বামীর কাছে যায় না। ইহা চিন্তা
করিয়া সেই ব্যক্তি গীরে দীরে সেই গাতীটার কাছে গেল এবং
জিজ্ঞাসা করিল, তুমি কাহার ? গাতী সেই প্রশ্নের কোনকপ
উত্তর না দিয়া দীরে ধীরে জল মধ্যে প্রবেশ করিল। তথন
স্বীয় প্রোপা মূল্যের আশায় বঞ্চিত ভাবিয়া রাখাল গাতীর পুষ্চ
ধরিয়া পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিল এবং গাতীর সহিত জল মধ্যে
নিয়ে হইল।

রাথাল জল নধ্যে আসিয়া দেথে যে, একটা ফুলর দেবমালির তথার বিগুমান রহিয়াছে। সেই মিলির হইতে এক
জন দিব্যকার পুরুষ বহির্গত হইয়া তাহার নিকট আসিল এবং
গোরুটী বন্ধন করিতে লাগিল। তথন সেই রাথাল গাভীর স্বড্ডাধিকারীর নিকট গোচারণের মূল্য প্রাথনা করিলে সেই ব্যক্তি
তাহাকে কতকগুলি ফলমূল অর্থন করিল। তাহাতে সে বিরক্ত
হইয়া পুনরার গোপুছে ধারণপূর্বাক উপরে আইসে। পর দিন
সে বিশেষ অনিছোগত্বে একবার সেই ফলমূলাদির প্রতি দৃষ্টি
নিক্ষেপ করিয়া বড়ই আশ্চর্যাধিত হইল। সেই ফল মূলাদি
যেন কোন ঐশ্বজালিক শক্তিপ্রভাবে স্থবর্গে পরিণত হইয়াছে।
এই পৃক্রিণীতে কেই তথুল উৎসর্গ করিলে সে প্রু আর পাইতে।
পরে এক দিন কোন ব্যক্তি অন্তর্গার স্বর্গ থালা প্রত্যেপন না
করার তদব্ধি আর সেরপ প্রশাদ পাওয়া বার না।

এরণ অসংখ্য কিংবদন্তী রাজীত এখানকার বিদেশ জোন ইতিহাস নাই। মহাজারজীর তীন্ত্রক প্রাক্তার রাজকাটোর পর এই হান ক্রমণ: লাজিপাডেয়র দ্বিভিন্ন ক্রমণানর রাজগণ কর্তৃক অধিকৃত হর। এই ছানে অভন্ন রাজনাট স্থাপিত হর নাই, কিন্তু আছু গ্রভৃতি হাজিপাডেয়ের প্রথমিত রাজবংশীরেরা এখানে বে বা বা শাসন প্রভাব বিভার করিয়াছিলেন, ভাহাতে সলেহ নাই।

নাজিপাড়োর বিভিন্ন মুস্লমান-রাজবংশের প্রার, বধ্ব মহারাই শক্তি অভ্যুখিত হর, তথন এই হান মহারাই অদ্ধিন্দ্রের
রক্তরণ হইরাছিল। ইংরাজাধিকারে এই হান নাগপুর জ্লোর
অস্তর্ভুক্ত হওরার নাগপুরের সহিত এখানকার বিচার বিভাগীর
সধন স্থাপিত হইরাছে। পেলারি বহুমেলের উপত্রবে এখানকার
আধ্বাসিবর্গ বিশেষ উত্তাক্ত হইরাছিল। এই সময়ে এখানকার প্রায় প্রত্যেক পরিতে মৃতিকাছারা গঠিত হর্গসমূহ স্থাপিত
হর। নাগপুর দেখা]

নাগপুর, চালা, হারণরাবাদ প্রভৃতি স্থানের সহিত এখান্তার বাণিজ্য অবাধে চলিতেছে। হিল্লন্থাটের কার্পাস বাণিজ্যই প্রশন্ত বর্ষাভেগী প্রেটু রেলপথ এবং গ্রেট ইণ্ডিয়ান পেনিন্
ক্রলার রেলপথ এই জেলার মধ্য দিয়া বাওয়ায় আভ্যন্তরিক বাণিজ্যের ও পণ্যন্তব্যের আমদানী রপ্তানীর পক্ষে বিশেষ প্রবিধা ঘটয়াছে। সোণগাও ও হিল্লন্থাট নামক স্থানে প্রথমোক্ত রেলপথের সুইটা এবং পালগাও, বর্দ্ধা, দেগরির, পাওনাড় ও দিল্লী নামক ভানে থিতীয় লাইনের কয়টা ট্রেসন এই জেলায় অবস্থিত। তুলা ব্যতীত এখানে তিসি, চর্ম্ম ও গোধ্মের বিভৃত্ব

২ উক্ত জেলার মধ্যন্থিত একটা তহনীল। ইহার ভূপরি-মাণ ৮০০ বর্গমাইল। ইহার মধ্যে ৫টা দেওয়ানী ও ১১টা ফৌজদারী আদালত আছে।

ত উক্ত ক্ষেলার প্রধান নগর ও বিচার সদর। অক্ষাং ২ ° ৪ ৫ জ: এবং দ্রাঘি ° ৭৮° ৪ ৫ পুরু । ১৮৬৬ খুটান্দে প্রাচীন পালক-বাড়ী গ্রামের উপর এই স্থরম্য হন্দ্যাপূর্ণ নগর স্থাপিত হয়।

বৃদ্ধি, মধ্যপ্রদেশে প্রবাহিত একটা নদী। নাগপুর ও বেহুলের
মধ্যবন্তী সাতপুরা পর্বতন্তেশী হইতে উহুত। পরে নাগপুর,
বন্ধা ও চান্দা জেলার সীমা দিয়া এবং বেরার ও নিজামরাভাকে
বিভিন্ন করিয়া এই নদী মন্দ গতিতে দক্ষিণপূর্ব্বাভিমুখে
১৯০ মাইল অপ্রসর হইয়া অকা° ২০°৬ ৩০ তিঃ এবং আহি
৭৯°১০ পুঃ বেণগলায় মিলিত হইয়াছে। তদনস্তর চান্দার
কিছু উদ্ভরে, প্রার ২০৪ মাইল আসিয় ইহা বেণগলায় সহিত
মিলিত হইয়া পুইক্লেবরে প্রাণহিতা' নাম ধারণ করিয়া

গোদাবরী ললে নিপতিত হইরাছে। সকল সমরেই এই নদী হাঁতিরা পার হওরা বার। কিন্তু বস্তার লালে এক এক সময় ইহার লল এক এক সময় ইহার লল এক এক সময় ইহার লল এক এক সময় বীবলন্ধ ভাসিরা বার। চালার অনুরবন্ধী সোইত গ্রামে এই নদীবল্দে একটা স্থবিখ্যাত ললপ্রপাত আছে। বর্ষাকালে এ হানে নদীর লল ৮০ গল প্রস্থ হইরা একটা স্থবীর্ঘ থাতমধ্যে পতিত ইহতে থাকে। এ সমরে ললোচ্ছাসিত কেনরাশির অপূর্ব সৌল্বা লালন্দ্রে নিপতিত হইরা বড়ই মনোজ্ঞ দৃপ্র বিরা জ্ঞান হর। আখিন মাসের শেবে এই প্রপাতের দৃপ্র স্বর্ধাপেকা স্থলর।

ক্লগাওর নিকটে এই নদীবকে একটা লোহসেতু স্থাপিত আছে। উহা ৬০ কিটু বিস্তৃত, ১৪টা লোহ গার্ডার বোগে নদীবক্ষ ইইকনির্দ্ধিত অস্তোপরি রক্ষিত। বর্দ্ধানদীপ্রবাহিত উপত্যকাভূমিতে প্রচুর তুলা উৎপন্ন হয়। নদীকৃলে স্থানে দেখা নার, সমাধিক্ত ও মুসলমান সাধুর কবর বিভ্যান দেখা বার। দেউলপাড়া নামক স্থানে প্রতিবৎসর অগ্রহারণ মাসেতিন সপ্রাহ্বাপী একটা মেনা বসে।

বন্ধাপক (ত্রি) > নাড়ীচ্ছেদনকালীন ক্রিয়াবিশেষ সম্পাদনকারী।

২ উক্ত উৎসবে প্রদন্ত উপহারাদি।

বদ্ধাপন (क्री) নাড়ীচ্ছেদন।

"অর্দ্ধরাতে বলোধ রিং পাতরেদ্গুড়সর্পিষা।
তত্তো বর্দ্ধাপনং যঠিং নামাদেঃ করণং মম॥"
বিদ্ধাপনং নাড়ীচ্ছেদনং।' (তিথিতক্ত্ত) ২ মহারাষ্ট্রদেশে
সন্মতিথিতে পুরুষদিগের অভ্যক্ষাদি ক্রিয়াকে বন্ধাপন করে।
"প্রুরেন্মার্লভিব্রে বালবদ্ধাপনে সতি।"

'বদ্ধাপনং নাম প্রতিসম্বংসরং জন্মদিনেরু পুরুষপ্ত ক্রিয়মাণ-মভালাদিকং মহারাষ্ট্রদেশে প্রসিদ্ধং।' (স্বভাধনাগর)

> বিপ্রান্তিকে পিতৃন্ ধ্যারন্ শনকৈর পনিক্ষিপেৎ ॥"(মন্ত্ ৩২২৪) বিদ্যিতং পূর্ণং (কুরুক্) বৃধ-ণিচ্-ক্ত । ে৫ বৃদ্ধিপ্রাপিত। "দৃষ্টবান্থানং প্রচয়সমেকলা বৈণ্য স্বান্থান্য।

> আত্মনা বৰ্মিতাশেষস্বাহ্মৰ্গঃ প্ৰস্থাপতিঃ॥"(ভাগৰত ৪।২৬।২)

বাদ্ধ ভূ (তি) র্ধ-ভূণ্। বর্জক, বর্জনকারী। বন্দ্ধিন্ (তি) বর্জনশীল।

বৃদ্ধিয়ু (বি) বৃদ্ধতে ইতি বুধ-(অলম্কুক্তি। পা তাহাত্তভ এত ইঞ্চ্। বৃদ্ধনশীল, পর্যায় বৃদ্ধন। (অমর)

"নিরাকরিমূ বর্তিমূ বর্তিমূ পরিতে। রণন্। উৎপতিমূ সহিমূচ চেরডুঃ খরদূরণো ।" (ভাট ৫।১) বধুনি (তি) হৃদ্ধি সম্বনীয় বা বৃদ্ধিনীল। অন্তবৰ্ধন্ শব্দবোগে ইহার ব্যবহার দেখা যায়। অন্তবৃদ্ধি রোগ (Hernia)। বদ্ধানিয়াগ (পুং) অন্তবৃদ্ধি (Hernia)।

বর্ধ (রী) বর্ধতে দীর্ঘাভবতীতি বৃধ-(বৃধিবপিজ্ঞাং রন্। উপ্২।২৭)ইতি রন্। ১চর্ম। (উজ্জ্ল)

বদ্ধিক। (ত্রী) ১ চর্মপটী। চর্মরজ্বৎ কোমল ত্রী বা প্রক্ষ।
বজ্বী (ত্রী) বর্দ্ধ গৌরাদিখাৎ গুরি। চর্মরজ্ব, চামড়ার দড়ী,
চলিত বলী। পর্যায়—নজুী, বরতা, বন্ধী। (ভরত)

বর্পাস্ (ক্লী) বুণীতে সংপ্রকং ভবতীতি বৃ-(র্ঙ্নীঙ্ভাং শ্বরণাঙ্গরোঃ পুট্চ। উণ্গা২০০) ইতি অহন্পুড়াগমন্চ। ১ রূপ। (উজ্জাল) ২ জোত্র। "মহি বর্পঃ করিক্রভঃ" (শ্বক্ ১/১৪০।৫) বর্পঃ কোত্রং' (সারণ)

বফ, ১গতি। ২ বধ। জ্বাদি৽ পরকৈ • সক • সেট্। লট্ বফডি। লুট্জবক্থি।

वक म् (क्री) वर्षम्। (উप् शर००)

বর্ণ্মক (পুং) > মহাভারতোক্ত জনপদভেদ, বর্তমান নাম বন্ধা, ব্রহ্মদেশ। [ব্রহ্মদেশ দেগ।] ২ তক্তনপদবাসী মাত্র।

বশ্মকণ্টক (গুং) পর্প টক, ক্ষেত্তপাপড়া। (রাছনি•)

বৰ্ম্মক্ষা (স্ত্ৰী) বৰ্ম কৰতীতি কৰ-অচ্টাপ্। সপ্ৰা, চণিত ভাষায় চামরক্ষা।

বর্মাণ (পুং) নাগরঙ্গবৃক্ষ। (ত্রিকা৽)

বশ্মন্ (ক্লী) বুণোতি আচ্ছানয়তি শরীরমিতি বৃ-মনিন্। ১ তন্ত্র, তন্ত্রাণ, কবচ, সাঁজোয়া।

"অভাভূমত বাহানাং চরতাং গাত্রশি**ন্ধিতৈঃ।**

বর্মভিঃ প্রনোক্তরাজভালীবনধ্বনিঃ ॥" (রঘু ৪।৫৬)
ভাতি প্রাচীন কাল হইতেই ভারতে বর্মপরিধানের রীভি

আত প্রচিন কাল হইতেই ভারতে বর্ণাগরিধানের রীতি প্রচলিত দেখা বার। এই লোহনিন্মিত কবচ আদে ধারণ করিয়া আয়া বোদ্ধ্রণ শত্রের করাল কুপাণ হইতে আত্মরশা করিছেন। অক্সংহিতার ৬ মগুলের ৭৫ ফুডেল প্রথম মন্ত্রে লিখিত হইরাছে;—সংগ্রাম উপস্থিত হইলে (এই রাজা) যথন বর্মা পরিধান করিয়া গমন করেন, তথন তাঁহার জীমৃতের স্তার রূপ হর (হে রাজা)! তুমি অবিদ্ধানীরে জয় লাভ কর। বর্মের সেই মহিমা ভোমাকে রক্ষা করুক।" আবার উক্ত ফুডেলর ১৮ মত্রে শেম্মাণি তে বর্মাণা ছালয়ামি" মন্ত্রাংশ হারা মার্মাইই বুঝা বার বে, আর্যাগণ বর্মালারা মার্মাইনানসমূহ আচ্ছাদন প্রথা অবগত ছিলেন। এতজিয় অবেদের চা৪৭৮,১০১০৭৭ এবং অবর্মাবেদের চা৪৭৮ ও মারাহণ মত্রে বর্ম্মের কার্যাকারিকের উল্লেখ আছে। রামারণ এওং অধ্যারে এবং মহাভারতের আছি, বন, বিরাট ও উভোগ পর্মের বর্মাবিধানের যুক্তেই

উপস্থিত দেখা মার। এতত্তির শ্রীমন্তাগবত, বৃহৎসংহিতা প্রভৃতি গ্রন্থেও বর্ষ্মের প্রচার ও প্রভাবের পরিচয় লিপিবদ্ধ হইয়াছে। কিন্ত হৃঃখের বিষয়, তৎকালে কিন্নপ বর্মনির্মাণ করিয়া ভার-তীয় আহা যোদ্ধণ যুদ্ধকালে স্ব শ্বীর আচ্ছাদন করিতেন, তাহার কোন নিদর্শন পাওরা যায় না।

প্রাচীন অস্থরীয়দিগের উৎকীর্ণ শিলাখণ্ডের যুদ্ধচিত্রে বর্মাবৃত বোদ্ধুর্দ্দের প্রতিকৃতি এথিত রহিয়াছে। ভারতের নানায়ানের মন্দিরগাত্তঃ প্রস্তর্থতে এরূপ অনেক বর্মপরিবৃত মূর্তি বিভামান Ce था यात्र । आत्रवीत्रमिट शत्र विश्वाम, धर्म श्राहत का छेम প্রথমে সাঁজোয়া (Cont of mail) প্রস্তুত ও প্রচার করিয়া-ছিলেন। প্রাচীন রোমক ঘোদ্ধগণ সাঁলোয়ার সর্বাদেহ আবৃত করিয়া বৃদ্ধ করিত। তৎপরে ক্রমে অপবাপর জনপদবাসীর মধ্যে যুদ্ধকালে সাঁজোয়া পরিধানের ব্যবস্থা প্রচারিত হর। পরে যখন কামান, বদুক প্রভৃতি আগ্নের যুদ্ধান্ত প্রচলিত হর, দেই সঙ্গে ইহার ব্যবহার ক্রমশঃ কমিরা আইদে।

২ গৃহ। (নিঘণ্টু ৩।৪) (পুং) ৩ ক্রিয়ের উপাধি। ব্রাহ্মণ শর্মান্ত এবং ক্ষত্রির বর্মান্ত নাম রাথিবেন।

"শর্দান্তং ত্রাহ্মণত ভাষর্দ্মান্তং ক্ষত্রিয়ত চ। গুপুৰাসাত্মকং নাম প্ৰশক্তং বৈশুশ্দ্ৰোঃ॥" (শাতাতণ) ৪ পর্ণ টক, কেতপাপড়া। (ভাবপ্র৹)

বর্মাবং (তি) কর্ম বিশ্বতে হক্ত মন্তুপ্ মক্তঃ ব । বৰ্মযুক্ত, বৰ্শ্ববিশিষ্ট।

বর্মাহর (তি) হরতীতি ছ-অচ্ হবঃ, বর্মণো হবঃ। বর্মহাবক, কবচহারী।

वर्ण्या (পুং) মংস্তৰিশেষ, বানমাছ। ইহার গুণ—গুরু, বল-কারক, ক্ষায় ও রক্তপিত্নাশক। (রাজব॰)

"বর্ম্মিন (স্তো হরেছাতং পিস্তং ক্ষচিকরো লঘু:।" (ভাবপ্র•) ভাৰপ্ৰকাশমতে এই মংস্ত লছুপাক এবং বায়ু ও পিন্তনাশক।

বশ্মিক (অ) বশ্মপরিবৃত। বশ্মধারী।

বৃশ্মিত (ত্রি) বর্ণ করোতীতি বর্ণ-পিচ্, ততঃ কর্মণি ক্ত, বৰ্দ্ধ সঞ্চাতমভেতি ইতচ্বা। বৰ্দ্মবৃক্ত, পৰ্যায়—কৃতসনাহ, সন্নদ্ধ, সন্ধ্ৰ, দংশিত, বৃ।চুক্ষট, উচ্চক্ষট। (স্কৃতি)

"বাজিনাং বৰ্ত্মিভালানাং জুবন্ত মন সারকাঃ। অন্ত ভিৰা প্ৰবেক্ষান্তি শরীরাণি মরেরিভাঃ॥" (ब्रामावन राक्ष्माव)

বৰ্মিন্ (পুং) নাদের মংক্তবিশেষ, বানিমাছ। (রাজব°)

२ अवहशात्री। वर्षावृकः। কৰ্ম্ম ব (পুং) মৎক্তৰিশেষ। চলিত বামিকষমাছ, ইংার ওণ---বাতনালক, স্নিগ্ধ ও প্রহদোষনালক। (রাজবল্পত)

বঠা (ত্রি) বর্গতে প্রার্থাতে ইতি বর ঈশারাং (আচো বং । পাঞ্চানণ) ইতিবং। ১, প্রধান। 🕡

শহথা ধর্মাদরকার্থা মুনিবর্য্যাসুকীর্ষিতাঃ।

ন তথা বাহুদেৰত মহিমা হতুৰবিত: ॥" (ভাগৰত ৩।১।৫৭) ২ প্রেষ্ঠ। (পুং) ৩ কামদেব। (মেদিনী)

বৰ্মা। 🖟 औ) ব্ৰিনতে ইচি বু (অবম্পণাৰৰ্ঘোডি। পা অ১।১০১) हेकि व्यक्षिक्टक वर । > পতিংবরা । २ क्छा (मुद्रादवाधवाा") ० जुजाहकी, हनिङ টোঙর कमाग्रः (भगात्रमुका°) आहकी, অভ্হর। (রাজনি°)

বর্য্যাঞ্জন (ফ্রী) রসাঞ্চন। (বৈছক্নি")

বৰ্ষট (পুং) খনামধাত ফলায়জেন, (Doliehos catjung) বৰ্কটা। এই শতা দেখিতে অনেকটা সিধি শতার ছার। সীম প্রকার ভেদে নানা নামে পরিচিত এক কিছু চওড়া হয়; किन्द वर्कानीय अंति शनि नया अवह नक् इहेवा वाटक। हैश वाश्वनामिट्ड बांहेटड फेडम नार्छ। शाका वर्किं कनाहे झरन ভিজাইরা তরকারীতে দিয়া বা কাঁচাই পাওরা বায়। জালু ও वर्कांट এकवा निक कत्रिवा मननारवारण "वृष्क्निमाना" ह्या । छेश বাজারে বিজন হইরা থাকে।

हानीत नाम--वानाना-वत्रवंदि, क्याफ़ी-- छड़शवि, कूरन न পারবত, গুদ্ধরাতী—ছোরা, হিন্দি—বেবে, ব্রুর; সংস্কৃত--লসাজ্র, মলরালম্—মদেন্দী, শিকাপুর—লিদী, তামিল—করমণি, তেলগু--দন্ত পেস্পু, বোত্ৰা, বোবাপু । D. Sinensia বা ভিন্ন আর এক প্রকার বরবটির ভিরদেশীয় নাম—দাক্ষিণাত্য—ছৌলী, हिन्मी ७ शांत्रमी--(नाविद्य, आनस्त्र-त्रावन्, कांडण--त्रावनी, মল্যাল্য-প্র ; পঞ্চাব -ছোট হাড়কানা, সিম্লা-রবক্র ; সিদ্ধ-বৌরো, শিশাপুর-বন্দুর-মী, তামিল-জালা-চন্দালক আলসন্দা, করমণি ও বোবালু। খেত, ক্লফ ও গুসর বর্ণতেনে এই রাজমাধ বা বর্কটির প্রকার নির্ণীত হইরা থাকে।

ইহার রাসারনিক জব্যসংস্থান--- অলীরাংশ---১২-৪৯, যবক্ষারিক পদার্থ---২৪০০০, সার---৫৯০০২, তৈল বা বসাবৎ भमार्थ-->-8>, शांखवाःम (**हाँ**है)---७-३७।

বৰ্মবণ্ (শ্ৰী) বরিভাবাক্তশব্দেন বণতি শন্ধান্ততে ইতি বণ শংক অচ্টাপ্। নীলমকিকা। (অমর) 'নীলাকার মকিক। বৰ্মণা মলিকাখা। বামিতোকে' (ভরত)

বর্ববর (ক্লী) বুগুতে বরষ্তি নানাঞ্গানিতি বু (কু গূ শ্বড়িভ্যঃ শরচ্। উপ্২।১২৩) ইতি শরচ্। ১ हिणून। ২ পীতচৰদন। ৩ বোল। (রাজনি[°]) বুণোতি দোবানিতি বৃ-ৰরচ্। ৪ পামর। ৫ নীচলাতিবিশেষ। ৬ কেশ, চলিত বাবরী-কেল। ৭ চক্রল। ৮ জেশবিশেষ। ৯ ডক্ষেশবাসী।

" "कारपाका पराप्राटेन्डव वर्वाना व्यवस्थाः।"

(মার্ক্ডেরপু° ৫ ৭৷৩৮)

১০ পঞ্জিকা। ১১ বৃক্ষবিশেষ, চলিত কালবাব্ই। পর্যার — সমুধ, গরস্ব, কৃষ্ণবর্ষকাক, পুকলার, গাছপত্র, পুতগার, হুবাহক। ইহার তাপ—কটু, উষ্ণ, স্থান, বৰন, বিসর্প, বিষ ও বগ্লোব-নালক। (রাজনি)

বর্ববন্ধ, ক্লেছ লাতিবিশেষ। এই লাতির বাসভূমি প্রাচীন গ্রছাদিতে বর্মন জনপদ নামে উক্ত হইরাছে। কিন্ত প্রকৃতপক্ষে সেই স্থান কোথার তাছা আজিও স্থান্সপ্রকলে নির্ণীত হর নাই। মহাভারত জীয়পর্মে ৯/৫০ জঃ, বামন ১৩/০৯, মার্ক ৫৭/৩৮, মংক্ত ১২০/৪০ জঃ প্রভৃতি ছলে বর্মন লাতির উল্লেখ দেখা বার। শেরিয়াসে Barbarikon শব্দে এই লাতির পরিচয় আছে। পাশ্চাত্য ভৌগোলিকগণ সিদ্ধনদের মধ্য মোহানার সমীপবর্জী স্থানকেও এবং ভারতীর কোন কোন গ্রহকর্জা সহারাষ্ট্রেরা অংশ বিশেষকে প্রাচীন বর্মন জনপদ বলিরা নির্দেশ করিরা থাকেন। হিন্দুপাত্রোক্ত বর্মন জনপদে একটা শ্বতর অপ্রংশ ভারাও প্রচলিত ছিল। যথা—

"বর্ষরাবন্তাপাঞ্চালাঃ টাকুমালবকৈকরাঃ।" (প্রাক্লডচন্ত্রিকা)
আমরা প্রাচীন রোমক্লাভির ইভিবৃত্ত পাঠে জানিতে পারি
বে, বর্ষর (Barbarian) নামে একটা চর্চর্য জাভি রোমসামাল্যকে বিধবন্ত করিরাছিল। সেই বর্ষর জাভির বাসভূমি
সন্তবতঃ পশ্চিম ও মধ্য এনিরাধণ্ডে ছিল বলিয়া বিধান।
গ্রীকগণ Barbaros শব্দে বৈদেশিক ব্যক্তি বা বন্তুই ব্রিভেন।
যাহারা গ্রীকভাষা জানিত না, তাহাদিগকেও গ্রীসের লোকেরা
বর্ষর বলিত। গ্রীসবাসীর নিকট হইতে এইরুপ অর্থে রোমকেরাও বৈদেশিককে বর্ষর বলিতে শিক্ষা করে। সেই শক্তুপ
প্রভৃতি চ্র্বর্থ প্রাচ্য জনশ্ববাসী যোক্লাভি পাশ্চাভ্য রোমকদিগের নিকট বর্ষর নামে সুপরিচিত হইরাছিল। (রোম দেখ।)

গ্রীকের বৈদেশিক জ্ঞাপক Barbaros শব্দের ন্থার বিভিন্ন জাতির মধ্যেও ঐরপ একটি শব্দের অভিধা প্রচলিত আছে। রিহুদী দিগের Gentile লকে বক্তেন্ধেবীন ব্যক্তি মাত্রকেই একং হিন্দু-দিগের মধ্যে ঐরপ "রেক্ষ্ম" শব্দে বিক্রমন্তর্তী ব্যক্তিমাত্রকেই বুবার। ঐরপ কাকের শব্দে ইল্লামধর্ণে অবিবালী ব্যক্তি মাত্রনির্দেশক। চীনবালীরা কন্ বা ই শব্দে এবং ভোটজাতি গ্যা শব্দে বৈদেশিককে অভিহিত্ত করে। আরবগণের বিশাস, বাণিত্যস্ত্রে বে সকল ভারতীয় বণিক্ আরবী ভাষা শিক্ষা করিয়াহে, অধ্ব

আরবে বার নাই, কিছুভেই দেরপ লোকের ভাষাগত উচ্চারণ দোবের সংগোধন হইতে পারে না, এরপ ভারতবাসী অথবা উচ্চারণ বৈলক্ষণ্যবৃক্ত ক্রীতবাসলিগকে ভাষার বর্ষরাং-উল্
হুল্ বলিত। গ্রীক "বর্বরোল্" শব্দ সংস্কৃত "বরবরাহ" লালের
অন্তক্ত বলিরাই পাশ্চাভা পঞ্চিতগদের বারণা। বরবরাহ
শালে কুকিতকেশ বন্ধ বা পার্মভীর অসভা অধিবাসী বা বিদেশবাসী বা প্ররপ হানবাসী অলভা বর্ষরদিগকেই বুমাইরা থাকে।
আরব ভিন্ন তরিক্টবর্তী হাসসমূহ আরবী মুসলমানের নিকট
অল্ আজন্ নামে পরিচিত। তাহারা আরববাসী ভিন্ন অপর
দেশবাসী ব্যক্তি মাত্রকেই "আজিনী" সংজ্ঞার বিভক্ত করিয়া
থাকে।

আরববাদী, পারদিক অথবা বোগলগণ ভারভের প্রাচীন অধিবাদীদিগকে অবজ্ঞাকর "কালা আদমী" শব্দে অভিহিত করিত। পক্ষান্তরে পাশ্চাত্য বিশিক্সম্প্রদার এবং ইংরাম্বপুরুব-গণও ভারতের অধিবাদিবর্গকে "কালা আদমী" বলিয়া দুণা করিতেছেন। সেইরূপ স্থ্রোচীন আর্যাদিগের মধ্যেও বৈদিক-যুগে দাস, দুস্মু বা শুদ্রপদে আর্য্য ও অনার্য্যের অর্থাৎ দ্বিজ বা শুদ্রের স্বাভন্ত্য গৃহীত হইরাছিল।

বর্কারক (क्री) বর্কার স্বার্থে কন্। চন্দনভেদ। পর্যায় বর্কারোখ, খেতবর্কারক, শীভ, স্থান্ধি, পিতারি, স্থাভি। ইহার গুণ শীতল, ডিক্তা, কফা, বায়ু, পিত্ত, কুঠ, কণ্ণু ও ত্রণ এবং বিশেষতঃ রক্তদোষনাশক। (রাজনি°)

বর্ববা (প্রী) পুলান্তেব আরুতিরস্কান্তা ইতি বর্ধর-আচ্-টাপ্।
> পুলান্ডেন। ২ শাকভেন। (মেদিনী) বর্ক ইতি শব্দং
রাতীতি রা-ক। ৩ মিককান্ডেন। (শব্দর্যাণ)

বর্বব্রী (স্ত্রী) বর্ষর টাপ্ পক্ষে বিশ্বাৎ শ্রীষ্। > কুন্ত বৃক্ষ-বিশেষ। ২ বাবৃই। পর্যার---কবরী, তুলী, ধরপুলা, অব্বস্থিক।, অব্বসন্থা, কবরা, ধরপুলিকা। (ভাৰপ্র°) ০ মুনিভেদ। (লিকপু° ৭।৪৭)

বর্ববারিক (গং) রুগুতে ইতি কৃঞা ব্রণে (শৃণু বুজাং বে কক্
চাভাগসভা উণ্ ৪০৯৯, ইতি ঈকন্ দ্বিচনং অভ্যাসভা কুগাগমশ্চ। ১ ব্রাদ্ধণয়টকা বৃদ্ধ। ২ কুটিনকুত্বল। ও অজগদ্ধিকা, চলিত বাবুই তুলনী। (শক্ষত) ৪ মহাকাল। (হেম)
বর্ষা (রী) বর্ষারী। (শক্ষত)

বর্ধার, আতিবিশেষ। বৈস্ রাজপুতনিগের একটা শাখা।
গুতিরখেরা নামক হান হইতে ইহারা শতাক্তর পূর্কে বরিয়ার
সিংহ ও চাহসিংহের অধীনে ফৈলাবাল অকলে আসিরা বাস
করিরাছেন। বরিয়ার সিংহের অধীনত্ব গল হইতে বর্কার শাখা
এবং চাহ হইতে ভাছশাধার উৎপত্তি।

^{*} Ind. Ant. XIII p. 857.

⁺ Wil, Mack, 59,

ক্রবাদ আছে, —উভর প্রাভাই অকবর পাহের সমরে দিরী সরকারে করী হন। ভাঁহারা মুক্তিলাভের পর অপ্নাদেশ মত ভূগর্ড ছইতে দেবমূর্তি উঠাইরা পশ্চিমরাঠ পরগণার অন্তর্গত চিতাবন নামক হানে প্রতিষ্ঠা করেন। এখনও উভর শাখার লোকেরা ঐ মূর্তির পূজা করিরা থাকে। অবোধ্যার পূর্বাবংশীয় ঠাকুর সন্ধারদিপের ঘারা অবোধ্যা হইতে ভাড়িত হইবার পর তাহাদের সন্ধার পিলাসী সিংহ বেগমগঞ্চের অন্তর্গত রাম্বাটে আর একটী পবিত্র দেবতীর্থ হাপন করেন।

আর একটা আখ্যারিকা হইতে জানা বার যে, জরপুরের দক্ষিণ-পশ্চিমন্থ মুক্তী পাচন বা পাচানপুরে তাহাদের বাস ছিল। এথানে তাহাদের রাজা শালিবাহন রাজত করিতেন। তথা হইতে তাহারা চিতাবনকারিরা নামক হানে আসিরা তরজাতিকে তাড়াইরা দের এবং কনোজরাজ-কন্তা পরিনীকে অপহরণ করিরা দিরীখরকে প্রত্যপণ করে বলিরা তাহারা পারিভোবিক অরুণ ১৬ ক্রোশব্যাপী জারনীর প্রাপ্ত হর।

বর্জারগণ শিশুক্র। ইইলে প্রারই মারিয়া কেলে, বেহেড্ ই ক্সার বিবাহে ভাহাদের বিশেষ কই পাইতে হয়। ভাহারা • সাধারণতঃ পালবার, কচ্ছবাহ, কৌশিক প্রভৃতির ক্সা গ্রহণ করিয়া থাকে। বালিয়ার বর্জারেরা উচ্ছয়িনী, হৈহয়বানী, নরবাণী, কিন্বার, নিকুন্ত, সেনাগার ও থাটাধিগের ক্সাগ্রহণ করে এবং হৈহয়বানী, উজ্জয়িনী, নরবাণী, নিকুন্ত, কিন্বায়; বিষেন, বাঈ ও রঘুবানীধিগকে ক্যাদান করিয়া থাকে।

আজমগড়ে তাহারা ছত্রিবা ভূঁইহার বলিয়া পরিগণিত।
দিল্লীর নিকটবক্তা চের নগর হইতে আগত বলিয়া এই নামে
পরিচিত হইরাছে। সন্দার গোরকদেও (১৩৩৬-১৮৫৫ খুঃ ;
ভাহাদিগকে আজমগড়ে আনয়ন করেন।

বিনি (এ) র (রুদভাং বিন্। উণ্ ১।৫০) ইতি বিন্। দমর। (উজ্লে)

বর্বের (পুং) ব বাহলকাৎ বৃরচ্। বৃশ্ববিশেষ, বাবলা গাছ।
প্রার - বুগলান্দ, কটানু, তীক্ষকটক, গোলৃদ, পংক্রিবীজ,
দীর্ঘকট, কফান্তক, দৃঢ়বীজ, অন্তক্ষ। গুণ-ক্ষার, উঞ্চ, কফ,
কাদ, আমরক্ত, অতীদার, পিক, দাহ ও আর্দরোগনাশক।

[वावना (मथ ।]

বশ্ম ন্ (গং) জন্মভাষায় এই শব্ধেরশ্যন্ লিখিত হইয়। গাৰে। [ভোজকতাৰণ দেখ]

বৰ্ষ, ৰৰ্ষ, (বৃষ্) ১ সেচন, বৰ্ষণ। ২ ছিংসা। ৩ ক্লেশ। ৪ গৰ্ডপ্ৰহণ। ৫ কৈৰ্যা। ভুগদি পৰ্যমে সৰু সেট্।বৰ্ডি। লিট্ বৰ্ষ। সৃঙ্ অৰব্যং।

वर्ष (गूर हो) व्यारक रेकि इन् रमध्य (जिल्हरेने ज्वानीनानुग-

সংখ্যানম্) ইতি অচ্ অথবা ব্রিরতে প্রার্থতে ইতি হু-স (রু তৃ বদি হনি কমি অবিজ্ঞা: স:।, উপ্ ৩।৬৯) > সুষ্টী, জলবর্ষণী। "বিহাৎস্তানিজবর্ষেদ্ মহোজানাঞ্চ সংগ্লবে।

चाकानिकमनशात्रासरणवृ महत्रद्ववै ॥" (मह 812-७)

২ লৰ ্ৰীপাংল। ও লৰ ্ৰীপ। ৪ পৃথিবীয়া সমন্ত ৰীপের ভূবিভাগ।

শৌরাণিক ভূ-বৃদ্ধান্ত পাঠে জানা বার, পৃথিবী সাভটী বীপে বিভক্ত। উক্ত সপ্ত বীপের নাম, বথা—জবু, প্লক্ষ, পাল্মলি, কুপ, কৌক, শাক ও পুকর। এই সাভটী বীপের মধ্যে জাবার এক একটী বীপেরও বিভাগ বিভিন্ন নামে বিভক্ত। সেই সেই নাম-ধের বিভিন্ন ভূবিভাগের নামই বর্ব। বর্বসমূহের নাম, সংখান-বিবর্গ, পরিমাণ এবং ভন্নভা অধিবাসী প্রভৃতির বৃদ্ধান্ত ক্রমে পরে বিবৃত হইতেছে।

শ্রীমন্তাগবতে লিখিত আছে, প্রিয়ন্তরে রখচক্রে সাভটা থাত হইরাহিল, ঐ লপ্ত খাতই কালে সাভটি সমুক্রমণে পরিণত হয়। সেই সপ্তসাগর হারাই প্রেলিখিত হয় প্রেলি প্ত হয় প্রেলিখিত হয় পরিলাগ পূর্বা হয় বিশ্বার আলেকা উত্তরোভর হিপ্তল। য়েমন সমুক্রসমূহের বাহিরে চারি হিলে বিশ্বত। য়েমন সমুক্রসমূহের বাহিরিরে চারি হিলে বিশ্বত। য়েমন সমুক্রসমূহের বাহিরিরে চারি হিলে বিশ্বত। য়েমন সমুক্রসমূহের বাহিরিরের ছারিরে প্রেলি, ক্রিরেলিংক এক এক সমুক্র। ঐ সম্ব্রেলি, ক্রিরেলিংক শ্রীপসমূহের বে পরিমাণ, তর লা ব্যাহিরের ক্রিক্রিইত হীপসমূহের বে পরিমাণ, তর লা ব্যাহিরের ক্রিকেট ব্যাপ্তিত,—অভাব্রেরে নহে।

প্রিয়ত্তের পশ্পীর নাম বর্টিশ্বতী। তাঁহার সাতটা পুত্র, সকল পুত্রই সক্তরিত্র। ঐ সকল পুত্রের নাম—ক্ষমীও, ইশ্বজিক্স, ইশ্ববাহ, হিরণায়েতা, ত্বতপৃষ্ঠ, মেধাতিখি ও বাঁতিহোত্র। এই সাতটা পুত্রকে প্রিয়ত্তত এক এক করিছ। উল্লিখিত এক এক বীশের আধিপতো অভিকেক করেন।

প্রিয়ন্ততের ভাৎকালিক কীর্ত্তি বর্ণন প্রসালালে এইরূপ রোক শীত হইমাছিল বে, এক ঈশ্বর ভিন্ন কে প্রিয়ন্তভূত কার্য্যের অল্পকরণ করিতে পারে ? তিনি অককার দূর করিবার লগু শ্রমণ করিতে করিতে নিজ চক্রাগ্র হারা সাতিটী সমুদ্র থমন করিয়াছিলেন। তিনি বিভাগক্রমে শ্রীপ রচনা করিয়া পৃথিবীর সংস্থান নির্ণয় করিয়া পিরাছেন এবং প্রাণিবর্গের বিপদ্ বারণ বা অস্থ্যিয়া দুরীকরণজ্ঞ নব, নবী, পর্বতে, বর্ব প্রভৃত্তি হার। প্রত্যেক শ্রীপের সীমা নির্দেশ করিয়া দিরাছেন। ্ৰিই বিষয়ে ভাগৰতে এইন্নপ শ্লোক পাওয়া বায় : —

প্রিমত্তক্তং কর্ম কোৎমুক্যামিনেখনম্।
বা নেমিনিরৈরকরোচ্ছামাং মন্ সপ্তবারিধীন্ ।
ভূসংস্থানং কৃতং বেন সরিদিসরিবনাদিভিঃ।
সীমা চ ভূতনির্ত্তা বীপে বীপে বিভাগশঃ ॥"

(ভাগৰত ৫৷১ জঃ)

প্রিয়ত্ত বথাকালে পরনার্থচিন্তার মগ্ন হইলেন। পিতার অঞ্নাসনে পূত্র অগ্নীত্র ধর্মায়ুসারে অব্বীপারাসী প্রজাগণের প্রতিপালন করিতে লাগিলেন। অগ্নীত্র অপরা পূর্বাচিত্তির পালিগ্রহণ করেন। পূর্বাচিত্তির গর্ভে রাজর্বি অগ্নীত্র হইতে নর্মটা পূত্র উৎপর হর। তাহাদের নাম, বথা—নাভি, কেন্দুলন, হর্মিবর্ব, ইলাবৃত, রম্যক, হিরপ্নর, কুরু, ভদ্রাথ ও কেত্মাল। অগ্নীত্রের এই সকল পূত্র মাতার অম্প্রাহে স্থতান্তঃই দৃচ্দেহ ও বললালী হইয়া উঠেন। অগ্নীত্র ঐ পুত্র-গণের মধ্যে বথাকালে পৃথিবী তাগ করিয়া দেন। পূত্রগণ বিভাগক্রমে নিজ নিজ নামাত্রসারেই জন্ম্বীপের এক একটা বর্ষ মধিকার করিয়া লয়েন। উক্ত বর্ষাধিপতিগণের পত্নীর নাম বথাক্রমে মেরুদেবী, প্রতিরূপা, উগ্রাহংট্রা, লতা, রম্যা, নারী, ভল্লা ও বেদদীধিতি। এই রম্ণীগণ সকলেই মেরুব কল্পা।

ৰীপসমূহের মধ্যে অব্বীপই প্রথম। ইহার দীর্বতা নিগৃত বোজন এবং বিস্তার লক্ষবোজন, এই বীপ ক্ষলপত্রের ভাগ চারিলিকে সমান বর্জুলাকার। এই বীপে নয়টী বর্ব আছে। ইহালের মধ্যে জন্তার ও কেতুমাল বর্ব ভিন্ন প্রত্যাকের বিস্তার নয় সহল্র বোজন। ঐ নববর্ব আটটী সীমা পর্কতে পরম্পর কুম্মর্ম্বসেরি বিভক্ত।

বর্ষসমূদের মধ্যে ইলাবৃত নামক বর্ষ অভ্যন্তর বর্ষ। উহার মধ্যক্ষে পর্বত-কুলের রাজা প্রবর্গমর প্রমেক গিরি বিরাজ-মান। ঐ প্রমেকর উচ্চতা উক্ত বীপের বিতারপরিমাণের তুল্য সক্ষবোজন। উহার মন্তক্ষের দিকে বাত্রিংশৎ সহপ্র বোজন, এবং মূলে সহপ্রবোজন বিশ্বত। ভূমির মধ্যতাগেও তত সহপ্রবোজন দেখা বার। উক্ত পর্বতে ঐ প্রকারে ভূমওল-রূপ প্রকাত ক্ষদের ক্ষিকারবৎ প্রতিভাত।

ইলাবৃত্তহর্ষের উত্তরভাগে উত্তরাদি দিক্জনে জনশং নীল, খেড, শৃন্ধবান এই তিন পর্কাত এবং বধাজনে রমাক, ছিনগার ও কুল নামক বর্ষজন্মের সীমা পর্কাত অরূপ। উক্ত তিন পর্কাত পূর্কালিকে দীর্ঘ। উহাদের উক্তর পার্বে লবণ সমূদ বিভাত। ইহাদের বিজ্ঞার ছিস্তল্রবোজন। অগ্রন্থিত পর্কাত হুইতে পরবর্ত্তী পর্কাত কেবল একাদশ অংশ দৈর্ঘা পরিমাণে হয়। এইরপে ইলাব্ত বর্ষের লক্ষিণে নিষধ, হেমকুট এবং হিমালয়
নামে তিন পর্বাত বিশ্বমান। ঐ তিন পর্বাত উল্লিখিত নীলাদি
পর্বাতের ভার পূর্বাদিকে আরত এবং প্রত্যেকে তিন সহস্রবাজন
উরত। উক্ত পর্বাতত্তর বধাক্রমে হরিবর্ধ, কিম্পুক্ষবর্ব এবং
ভারতবর্বের সীমা পর্বাত। এইরপে উক্ত ইলাব্ত বর্বের পূর্বা
ও পশ্চিমদিকে বধাক্রমে মাল্যবান্ ও গন্ধমাদন পর্বাত পর্বাত্ত।
এই পর্বাত হুইটী—উক্রের নীল ও দক্ষিণে নিবধ পর্বাত পর্যাত্ত
দীর্ঘ ও হুই সহস্রবাজন বিস্তার্থ। এই হুই পর্বাত্তই বথাক্রমে ও
কেতুমাল ও ভল্লাববর্বের সীমাপর্বাত্রমণে বিরাজিত।

মনেকর চারিদিকে মন্দর, মেকমন্দর, স্থপার্থ ও কুমুদ নামে চারিটী অবইন্ত পর্বাত বিশ্বমান। ঐ পর্বাত গুলির প্রত্যেকটীর বিভার ও উচ্চতা দশহাজার বোজন। উক্ত চারি পর্বাতের মধ্যে পূর্ব্ব ও পশ্চিম দিকের পর্বাত দক্ষিণোত্তরে বিভূত এবং দক্ষিণোত্তর দিকের পর্বাত পূর্ব্বপশ্চিমে আয়ত। উক্ত চারি পর্বাতে যথাক্রমে আয়, য়য়ৄ, কদম্ব ও বট এই চারিটি রক্ষ আছে। ঐ সকল তরুর বিস্তার শতবোজন। উহারা পার্বাত্য পতাকাবং একাদশ শত যোজন উচ্চ। উহাদের শাধা সকল সেইরূপ শতবোজন বিস্তৃত। উক্ত বৃক্ষ চারিটীর নিকট চারিটি ব্রুদ আছে। তাহার মধ্যে একটী হুদজল, বিতীয়টী মধুজল, তৃত্যটী ইক্তুরস জল, চতুর্বটী শুদ্ধলা। এই চারিটী হুদেরই জল অতি মনোহর। উপদেবগণ এই ব্রুদ্ধলস্বনে স্মাভাবিক মহিমমন্তিত হইয়াছেন। ঐস্থানে উল্লিখিত চারিটী ব্রুদ ভিন্ন চারিটী উন্থানও আছে। তাহাদের নাম,—নন্দন, চিত্ররথ, বৈত্রাক্তক ও স্ক্রত্যেভ্রু।

ঐ সকল উন্ধানে স্থরবরেরা প্রক্লেরীগণসহ মিলিয়া একসঞ্জে বিহার করিয়া থাকেন। এইরূপ বিহারকালে গন্ধর্কাণ তাঁহা-লের মহিমা গান করেন।

মলর পর্বতের ক্রোড়দেশে দেবচ্যত নামে একটা বৃক্ষ আছে। তাহার উচ্চতা একাদশ শত বোজন। ঐ বৃক্ষের জগ্রভাগ হইডে নিরত রাশি রাশি অমৃত ফল পড়ে। সেই সকল ফল পর্বতের চূড়ার মত ছুল। ফলগুলির অফলবর্ণ প্রচুরতর অবাল রবে এক নদী জল্পিরাছে। ঐ নদীর নাম অফলোদা। অফলোদা নদী মলারশৈলের শিধরদেশ হইডে বাহির হইরা প্রকাদকে ইলার্ড বর্ব মাবিক করিতেছে। তবানীর অফ্রেরী বক্ষালনাগণ ঐ রনের সেবিকা, তাই তাহাদের অক্ষেপার সৌগছ। তাহাদের অক্ষেপার সৌগছ। তাহাদের অক্ষেপার সৌগছ। তাহাদের অক্ষেপার সৌগছ। তাহাদের অক্ষেপার সোগছ। তাহাদের অক্ষেপার স্থানাদিত হর।

জৰ্বুক্ষের কল সকল গঞ্জগাত্রবং অতি ধূল। ভাছাদের বীৰাধানি অতি ক্ষা। নেই সকল কল উচ্চ হুইভে পড়িয়া ফাটিয়া বার; তথন তাহাদের রসে अব্নদী নামে এক নদী হর, দেই নদী মেকমন্দর লৈলের লিধর হইতে অব্তবেজন অস্তরে ভূমগুলে পড়িয়াছে। ঐ নদী যথার পড়িতেছে, তথা হইতে আপন দক্ষিণদিকে সমগ্র ইলার্ড বর্ধ ব্যাপিয়া প্রবাহিত হইতেছে। ঐ নদীর মৃত্তিকা তাহার জলরসে অস্থ্রিক হওলায় বায় ও ক্র্যা-সংবাগে বিশেষ প্রতা পাইয়া জাব্দুন্দ অর্থাৎ স্থবর্ণে পরিণত হয়। ঐ স্বর্ণই অমর ও অমরকামিনীগণের আভরণ।

শ্বপার্থ পর্বতের পার্থদেশে মহাকদৰ নামে এক বৃক্ষ আছে।
তাহার কোটরনিকর হইতে পঞ্চব্যাম পরিমিত পাচটি মধুধারা

ঐ শৈলশিথরে পড়িয়া পশ্চিমস্থ ইলার্তবর্ষকে স্বীয় সৌগদ্ধে
আমোদিত করিতেছে। বাহারা ঐ পর্বতের মধুধারা সেবন
করেন, তাঁহাদের মুগ-মাকতে চারিদিকের শত্যোজনবাাপী ভূভাগ
স্ববাসিত।

কুমুদ পর্বতে শতবলশ নামে একটা বটবিটপী আছে।
তাহার স্বন্ধনেশ হইতে অধােদিকে দদি, হয়, মৃত, গুড়, অর
প্রভৃতি এবং বসন ভ্রণ শরন আসনাদি অভীপিত বস্তু দােহনকারী নদ সকল ঐ পর্বতের অগ্রভাগ হইতে বাহির হইরা তাহার
উত্তর দিক্ত্ ইলার্ভবর্ষবাসী লােকদিগের অশেষ উপকার
সাধন করিতেহে। তথাকার অধিবাসী প্রজাবর্গ ঐ সকল
সমিগ্রী সেবন করিয়া কথন অঙ্গবৈক্রয়া, ক্লান্তি, দর্ম, জরা, রোগ,
অপমৃত্যু, শীত বা উষ্ণজন্ম বৈবর্গ এবং অভাভ উপসর্গ কিছুই
ভোগ করে না। এজন্ত ঐ বর্শের অধিবাসীরা যাবক্ষীবন কেবল
স্বগভোগে দিন যাপন করে।

অন্নীত্রের যে নর পুত্রের নামে নরটী বর্ষ চলিরাছে, ঐ পুত্র গণের মধ্যে নাভি জোষ্ঠ, নাভি বর্ষাধিপতি হইলেও তাঁহার অধি-কৃত বর্ষ তদীয় পৌত্র ভরতের নামেই প্রান্থিক হইরাছে। নাভির পুত্র ঝ্যন্ত, শ্বয়ত হইতেই প্রসিদ্ধ ভরতরাজের জন্ম। এই ভরতের নামামুদারেই এই বর্ষ ভারতবর্ষ নামে অভিহিত। ভরতের পিতা শ্বয়ত অজনাভ নামক একটি বিশিষ্ট প্রদেশে প্রভূষ করিয়াছিলেন এই জন্ম তাঁহার অধিষ্কৃত সমগ্র বর্ষ অজনাভ নামে প্রথিত ছিল। পরে তংপুত্র ভরত রাজা হইলে তাঁহারই নামে এই বর্ষ বিশাত হইয়াছে।

এই ভারতবর্ষে বহু নদ নদী ও বহুতর লৈগল্পেণী আছে। লৈলসমূহের মধ্যে মলয়, মদলপ্রস্থ, মৈনাক, ত্রিকৃট, ঝবত, কৃটক, কোথ, সহু, দেবগিরি, ঝয়ামুঝ, ক্রীলৈল, বেছট, মহেল্র, বারিধার, বিদ্ধা, শুভিনান, ঝক্লগিরি, পারিপাত্র, ল্রোণ, চিত্রকৃট, গোবর্জন, রৈবহক, ককুভ, নীল, ফোকামুঝ, ইক্রকীল, ও কামগিরি এই কয়টী পর্ববৃত্ত জনেকটা প্রথিত। এতম্বির আরও বেকত শত পর্বত আছে, তাহার ইর্জা হর না।

XVII

फेंक रेनन नकरनत निजयम्य इटेरज कजुरा नम अमी বাণির হট্রা ভারতবর্ষ বন্ধ বিধৈতি করিতেছে, ভাহারও সকলের সংখ্যা হওরা অসম্ভব: সেই সকল নদ নদীর জলেই ভারত-সম্ভানেরা পানাবগাহন সমাধান করেন। ভন্মধ্যে চন্দ্রবলা, তাপ্রপণী, অবটোলা, ক্লডমালা, বৈহারনী, কাবেরী, বেগা, भवविनी, नर्कवावर्षा, जुल्डमा, क्रकट्दश, खीमवर्गी, त्रामावती. নিৰ্ব্বিদ্যা, পদোকী, ভাপী, বেবা, স্থবসা, নৰ্ম্মদা, চৰ্ম্মদতী, আদ-নদ (বৃদ্ধপুত্র), শোণনদ, মহানদী, বেদস্বতি, ব্রিলোমা, কৌশিকী, मन्त्राकिनी, यमूना, नतप्रकी, पुनष्ठी, शामठी, नत्र्य, अध्वकी, বৰ্চৰতী, সপ্তৰতী, সুৰমা, শতক্ৰ, চক্ৰডাগা, মক্ৰখা, বিডক্তা, व्यक्तिकी, এবং विश्रा এই छनि महानती। डेक महानतीमभूत्व নামোচ্চারণ মাত্রেই লোক পবিত্র হয়। পরস্ক ভারতবরীয় श्रक्षांगंग वहें करन व्यवगारन कतिहा शास्त्रन। श्रक्रांसता वहें বৰ্ষে জন্ম লইয়া স্বাস্থ সান্ত্ৰিক, রাজসিক ও ভাষসিক কর্ম স্থারা আপনাদের দিব্য, মামুধী ও নারকী গতিই নিশ্মাণ করিয়া থাকে। যে বর্ণের বেরূপ মোক প্রকার নির্দিষ্ট আছে, তদত্ব-সারে মৃতি এই বর্ষেই হইরা থাকে। থাবতীয় বর্ষ মধ্যে ভারতবর্ষকেই কর্মকেত্র বলা যায়। অস্ত আট বর্ষ স্বর্গীদিগের পুণালেষে উপভোগের স্থান।

ক্ষমূখীপ এই ভারতবর্ষ ভিন্ন অভাঞ্জ কাইবর্যে যে সকল পুরুষ বাস করেন, তাঁহাদের পুরুষ পরিমাণে অসুতবর্ষ পরমান্ত্র অনুত হন্তীর তুল্য বল এবং বক্সবং স্থান্ত শ্বীবগঠন। ঐ লবীরে এরূপ বল, যৌবন এবং হবঁ যে, তন্ধারা মহাস্থরতব্যাপারে স্ত্রী-পুরুষ অত্যধিক প্রস্থানিত হয় এবং সন্ভোগান্তে একবংসর আন্থ শেষ থাকিতে ভাছাদিগের কলত্র একবার মাত্র গর্ভ ধারণ করে। এইরূপে বিষয়স্থের উৎকর্ষ হেতু এই সকল বর্গের পুরুষেরা ত্রেতার্গের ক্রার পরমন্ত্রে কাল বাপন করে।

এই স্কল বর্ষে দেবাধিপগণ স্ব স্থা অস্ত্রের পরিচারকদিগের স্বারা মহা উপচারে অর্কিত হন। স্বেচ্ছামত আপ্রমায়তনসমূতে, গিরি-গছররে এবং অমল মলালরাদিতে ক্রীড়া করিরা বেড়ায়। তথার স্বরম্ন্রীগণের মলক্রীড়া, অস্তাত্ত কেলিকলা বা কামোন্মাদিনীদিগের সবিলাস হাত ও লীলাললিত বিলোকনে তথাকার পুরুষদিগের চিত্ত ও নেত্র আতৃষ্ঠ হইরা থাকে।

এই সকল বর্ষহিত বে সমত্ত আশ্রম আরতনে পুরুষপুলবদিগের বিহারের কথা বলিলাম, তাবার শোভা বে কত চমৎকার
তাহা আর কি বলিব? তথাকার ভরুরাজির শাখা-প্রশাখাগুলি
সকল ঋতুর পুলাওবকে, কলে ও নবীন কিললরসকরে সমৃদ্ধির
সহিত পরপর নত হইরা পড়িরাছে; সেই শাখার আবার বহু
লতা আশ্রর সইবাছে। আর সেই সকল জলাশর! সে শোভা

অবর্ণনীয়। বিক্সিত নব নব কমলকুলের সৌরভ—রাজহংস, ললকুরুট ও কারওব প্রভৃতি কিংলকুলের কলালাপ এবং প্রমন্ত্র নিকরের মধুর ঝছার, এই সকলে তথাকার সেই সরসীসমূহের শোভা অভুলনীয়।

উলিখিত নৰ বৰ্ষেই ভগৰান্ নারারণ বিভিন্ন সূর্বিতে বিরাজিত। তয়াধ্যে ইলাবৃত বর্ষে ভগৰান্ ভবই এক মাত্র পুরুষ। সেখানে অন্ত পুরুষ নাই। কারণ বে সকল পুরুষ ভবানীর শাণের বিষয় বিধিত আছেন, তাঁহারা কখন সে স্থানে প্রবেশ করেন না। বে সকল পুরুষ না জানিরা তথার প্রবেশ করে, তাহারা তৎক্ষণাৎ ত্রীষ প্রাপ্ত হয়। ঐ বর্ষে ভগৰান্ ভব—ভবানী এবং তাঁহার অধীন সহস্র অর্ক্ত্ব সংখ্যক ত্রীগণ কর্মক সর্কতোভাবে সেবিত হন।

ভদ্রাখ বর্বে ধর্মপুত্র ভদ্রশ্রবা নামে বর্ষপতি এবং তাঁহার প্রধান প্রধান সৈবকের বাস। ভগবান্ হয়প্রীব মূর্জি ইইাদিগের আবাধা।

হরিবর্বে ভগবান্ নুসিংহ মুর্ত্তিতে অবস্থিত। পরম ভাগবত প্রস্থাদ এই বর্ববাসী প্রজাগণের সহিত ভক্তিভরে তাঁহার উপাসনা করেন।

কেতুমাল বর্ষে ভগবান্ কামদেবরূপে বিরাজিত। লক্ষ্মী, সংবংসর এবং তাঁহার কল্পা রাত্র্যতিমানিনী দেবতা ও তাঁহার পুত্র দিবসাভিমানী দেবগণের প্রিরসাধনই তাঁহার ইচ্ছা। সেই সকল দিবসাভিমানী দেবগণের সংখ্যা ঘট্তিংশং সহস্র। এ বর্ণের অধিপতি মহাপুরুবের চক্রত্তেজে দিবসাভিমানী কল্পাগণের মন উদ্ভিশ্ন হয়, তাহাতে তাহাদের গর্ভ নই হইয়া সংবংসরাভে পতিত হইয়া যাব।

রম্যক বার্ণর অধিপতি মহ। তগবান্ তাহাকে মৎক্ষমূর্তি প্রদশন করেন। মহু অভাপি ভক্তিভবে সেই মূর্তির উপাসনা ক্রিয়াথাকেন।

হিরগার কর্মে ভগৰান্ হরি কুর্মাণরীয় পরিগ্রহ করিয়া অব-থিত। পিভুগণের অধিপতি অধ্যমা এই বর্ষবাদী প্রজাগণসহ নিমন্তর উচ্চার উপাসনা করেন।

উত্তর কুকবর্ধে জগবান বক্তপুক্ষই বরাহমূর্ত্তি ধরিরা জব-হিত। দেবী পৃথিবী কুকগণসহ অক্তিভাবে তাঁহার জর্চনা করেন। কিজ্যুক্তর কর্বে পরম ভাগবত হন্মান্ ঐ বর্ববাসী প্রস্লাগসহ ভগবান্ প্রীয়ামচক্ষের উপাসনা ক্রিভেছেন।

(ভাগৰত ৫ 📭 ১--১৯৯:)

তৰ ৰীণত্ব বৰ্ষিভাগের সংক্রিপ্ত বিবরণ করা হইল। একংগ ভাগৰত মতে জভাভ বীপত্ব বৰ্ষিভাগের বৃত্তান্ত সংক্রেপে বিবৃত্ত করা বাংতেছে।

অধু নীপের পর প্রক্ষীপ । প্রক্ষীপ অধু নীপ অপেকা বিশ্বণ বিস্ত । এই বীপে একটা স্থাৰ্ণসর প্রকারক আছে । প্রিররতের বিভীর পূত্র ইয়জিক্ত এই বীপের অধিপতি । ভিনি উহাকে সপ্তবর্ধে ভাগ করিরা আশনার এক এক প্রকে এক এক বর্ধের অধিপতি করিরা দেন । তাঁহার সাত প্রের নামাল্লসারেই সেই সাতবর্ধের নামকরণ কর । বথা—শিব, ব্যুস, স্কেন্ত, শাব, ক্ষেম, অমৃত এবং অভর । এই সপ্তবর্ধে ব্যুতি বহু নথ নদী ও শৈলপ্রেণী আছে, তথাচ সাভটী নদী ও সাতটী পর্যাতই এখানে প্রেখ্যাত । সেই সাত নদীর নাম— অরুণা, নুমণা, আলিরুনী, সাবিত্রী, স্থপ্রভাতা, বভন্তরা এবং স্তান্তরা । সেথানকার সেই সাত সীমাণর্বভের নাম—বক্সকৃট, মণিকুট, ইন্ত্রাসন, জ্যোতিল্লান্ স্বর্ণ, হিরণ্ডলির একং দেবণাল । এই সকল বর্ধবাসীরা ত্রিবেদমর স্ব্যোর উপাসনা করিরা থাকেন ।

শাব্দনীপের অধিপতি ছিলেন প্রিয়্রতায়ল ব্রুবাহ। তিনি এই বীপকে আপনার সাতপুত্রের মধ্যে তাহাদের নামান্ত্রনারে সপ্তবর্ধে বিভাগ করিয়া দেন। সেই সপ্তবর্ধের নাম— স্থরোচন সৌমনত্ত্র, রমণক, দেববর্ধ, পারিভদ্র, আপ্যারন ও অভিজ্ঞাত। এই সাতবর্ধের সাতটী প্রধান সীমাপর্কতের নাম—স্রুম্ন, গতশৃন্ধ, বামদেব, কুন্দ, কুম্দ, পুন্দবর্ণ এবং সহজ্র প্রতি। সাতটী প্রধান নদীর নাম—অন্তমতি, সিনীবালী, সর্ম্বতী, কুহু, রজনী, নন্দা এবং রাকা, এই বর্ধবাসী লোক সকল প্রতিধ্বর, বীর্থধর, বমুদ্ধর এবং ইর্দ্ধর নামক চতুর্কর্ণে বিভক্ত। তাঁহারা বেদমর সোমদেবের উপাসনা করেন।

কুশহীপ, স্থরোদসাগরের বহির্ভাগে, উহা পুর্বোক্ত দ্বীপ অপেকা ছিগুণ। প্রিরব্রতের পুত্র হিরণারেতা কুশ্দীপের রাজা। তিনি তাঁহার সাতপুত্র মধ্যে নিজ অধিকৃত দ্বীপ সাতভাগে বিভাগ করিবা দেন। ঐ সপ্ত পুত্রের নামান্ত্রসারেই তথার সাতটী বর্ব প্রথিত। বধা—বস্তু, বস্থদান, দৃচ্নচি, নাভিগুপ্ত, সমাব্রত, বিপ্রনাম ও বেদনাম। এই সাত জনের সাতবর্বে সাতটী গিরি এবং সাতটী প্রসিদ্ধ নদী আছে। এই বর্ষের অধিবাসীরা কোবিদ, অভিযুক্ত ও কুশক প্রভৃতি নামধারী হইরা কর্মকোশলে অজির অর্চনা করেব।

ক্রোঞ্ছীপের অধিপতি প্রিরত্যুত্ত হুতপুঠ। তিনি ই দীপকে বীর সপ্তপুত্রের নামে সপ্তবর্ধে বিভাগ করিয় সেই সকল বর্ধে সেই সাতপুত্রকে রাজা করিয়া দেন। ঐ সাত পুত্রেয় নামে প্রচলিত সাতটা বর্ধের নাম—আজা, মনুহহ, মেষপুঠা, স্থামা, প্রাজিঠ, গোহিতবর্ণ এবং বনম্পতি। এই সাতবর্ধেও সাত্তটা প্রমিদ্ধ পর্কাত ও নদী আছে। ঐ বর্ধবাসী লোকেরা পুক্র, ব্যক্ত, প্রবিণ এবং দেবক এই চারিবর্ধে বিভক্ত। শাক্ৰীপের রাজা প্রিয়রভপুত্র মেধাতিথি। এই বীপের বিস্তার ৩২ সক্ষরোজন। মেধাতিথি ঐ বীপকে স্বীর সাত পুত্রের নামে বথাক্রমে পুরোজন, মনোজ, বেপমান, ধুমানীক, চিত্ররেক, বছরপ এবং বিধাধার—এই সাভবর্ষে বিভাগ করিয়া প্রভাককে এক একটা বর্ষের রাজা করেন। এই সপ্রবর্ষেও সাভটা সীমাপ্র্কাভ এবং সাভটা প্রসিদ্ধ নদী স্নাছে। উক্ত বর্ষবাসী মহারাগণ—ধৃতত্রত, সভারত, দীনত্রত ও অমুত্রত, এই চারিবর্গে বিভক্ত।

পুন্ধ দীপের ক্ষমিপতি প্রিয়ন্ত্রতের পুত্র বীতিহোত্র। তাঁহার রমণক ও ধাতক নামে ফুই পুত্র হয়। বীতিহোত্র রাজা ঐ দ্বীপকে ফুই বর্ষে বিভাগ করিরা জ্ঞাপনার চুই সন্তানকে বর্ষপতি নিযুক্ত করেন। (ভাগবড এ) ২২১৬) ১৯ ও ২০ জঃ)

পৃথিবীত্ব বর্ষবিভাগ সম্বন্ধে সংক্ষেপে ভাগবত মতই উক্ত করা হইল। মার্কণ্ডেম, বরাহ, বামন, কৃশ্ব প্রাভৃতি বাবতীয় পুরাণগ্রন্থেই অয়বিশুর বর্ষবিবরণ বেশিতে পাওয়া বায়। বাহল্য-ভয়ে সে সকল আর এখানে উদ্ধৃত হইল না।

বৰ্ষতীতি বৃষ অচ্। ৫ মেখ! (কেমচক্ৰ) (ত্ৰি) ৬ বৰ্ষক দাত্ৰ।

"নমাম্যভীক্ৰং নমনীয়পাদং

সরোজমনীয়সি কামবর্দ্ম॥" (ভাগৰত অ২১৷২১)

৭ বংসর। প্রভবাদি ষ্টি সংবংসরের বিষর এবং সেই সেই বংসরে পূজা ষ্টি প্রকার দেবতার নামাদি সংবংসর শব্দে প্রত্যা। বর্ষক (তি) বর্ষণশীল। বর্ষার স্থার পতনশীল। ২ বংসর-সম্মনীয়। বেমন পঞ্চবর্ষক।

वर्षकत (१९) > (मव। १ दृष्टिमानकाती।

বর্ষকরী (জী) ৰগং তৎস্থচনং রবেণ করোতাঁতি বর্ষ-রূট, গ্রীপ্। বিলিকা। (হেম)

वर्षकर्णम् (क्री)वर्षणकार्षाः २ वरमञ्जूषाः

वर्षकाम (श्रः) बृष्टि शार्थनाकाती।

वर्षकारमञ्जि (११) वागरसम्। (नामः (सी राज्या)

वर्षकाली (जी) बीडक। (देवक्रकनि°)

বৰ্ষকৃত্য (ত্রি) বংগরে আচরণীর শান্তবিহিত কার্য্যাদি।

বর্ষক্রে পুং) বর্ণভার্টো কেতুরিব সতি বর্ণে ভূরিদ;উৎপর-খাদভাতথাজং। রক্তপুনর্ননা। (রাজনি⁶) ২ জনর্কবংশীর কেতুমালের পুত্র। (জ্রিবংশ ৩২।৪০)

বৰ্ষকোষ (গুং) বৰ্ণভ ৰংগনভ কোন ইৰ সৰ্কাৰ্যজ্ঞানবৰাৎ তথাছনভ। > দৈবজ্ঞ। (শন্মভা°) ৰৰ্গভ অভুছিত কণ-ইৰ কোষঃ। ২ মায়। (শন্মখানা)

वर्षतिति (ग्रः) वर्षणक्षिणः [वर्षणकः सम्] वर्षत्र (खि) ३ तृष्ठेनामकात्री। २ भवनः। বৰ্ষজ (মি) বৰ্গাং আডমিছি জন-ড । ১ বৃটিলাড । ২ বংগ্র-আড, সৰু বীপলাত। ৩ বীপাচুপলাত। , ৪ মেজলাত। বৰ্ষণ (রী) ব্য-সূট্। '১ বৃটি। "তমেব মুক্তঃ সর্কাং রকাং বৈ কলপার বং।

রণনাপারকং ভাষং ডলে বেহার তে নমঃ র'(মার্কীপু" ১০৪/২১)

২ বর্ষোপদ। (অবদ") বর্ষানি (ত্রী) র্থ-খনি। ১ বর্ষন। ২ ছড়িঃ (উজ্জ্বন) ৩ ফ্রড়। ৪ বর্ষন।

वर्षः । वर्षः । २ त्याचा नाम । ७ व्यवः पृत्रक्षी । वर्ष्टभवं (पूरः) २ व्यवः पृत्रक्षी । त्याचा नाम ।

বর্ষধার (পুং) নাগাহরতের।

বর্যনারাধর (कि) মেখ।

কৰ্মনিৰ্পিজ (জি) বৰ্ণকারী। বৰ্ণক। 'নিৰ্পিক্শকো দ্বপৰাচী নিৰ্ণিয়ন্তিবিভি ভৱাৰত্ব পাঠাৎ, বৰ্ণণ দ্বপাং বভাৰো বেলাং তে বৰ্ণনিৰ্ণিকো বৰ্ণকাঃ।' (বন্ধু অ২৬।৪ সারণ)

বর্গপ (পুং) বর্গতি।

বর্ষপতি (গুং) বর্ষত্ব পতিঃ। বংসরাধিপতি প্রবেগণ। বর্ধপ্রায়েশে হর্ষা চন্দ্র প্রাকৃতি গ্রহণণ এক এক বর্ষের আধিপতো
অধিষ্ঠিত হইরা থাকেন। কোন্ প্রাহের আধিপতো কোন্ বর্ষ
কিরূপ ফলপ্রাদ হর্ম, তাহার বিভৃত বিবরণ বর্ষাধিপ শব্দে ন্তইবা।
২ বর্ষাধিপতি রাজগণ। পৃথিবী সপ্তবীপে বিভক্তা, এই সকল
দীপ্রের ভূবিভাগগুলি ভিন্ন ভিন্ন নামে বর্ম বর্ষে পরিচিত। ঐ
সকল বর্ষের অধিপত্তিগণ বর্গপতি সংক্রার অভিহিত। বির্ব দেখ
বর্ষপান (রী) পঞ্জিকা।

ব্র্যপূর্ববিক্ত (পুং) বর্ণাপাং ভারতাদীনাং বিভাগকঃ পর্কতঃ, মধ্যপদলোপী সমাসঃ। কর্ববিভাগক গিরি।

'हिमवान् (हमक्रेन्ट निष्या सम्हादव ह।

চৈত্ৰ: ক্লী চ শৃঙ্গী চ নবৈতে বৰ্ণপৰ্কতাঃ ॥' (হারাক্লী)
বৰ্মপাকিন্ (গং) বৰ্ষে বৰ্ষাকালে পাকেছভাতীতি ক্লিপাক-ইনি ৷ আত্ৰাতক বৃক্ষ । (বেষ) "আত্ৰাতকো বৰ্ষপাকী"।

(देवक्रक्तक्रमांगा)

বর্ষপুরুষ (পুং) পৃথিধীর বাষভীর বর্ষবাদী বিভিন্ন শ্রেণীর প্রঞাঃ (ভাগবত ৫ কম, ১৮, ২৪, ২৯, ২০ ও ২৭ জ্বগার)

বর্ষপুত্প (পুং) ব্যক্তিছে। (সংভারকে))
বর্ষপুত্পা (গাঁ) বর্ষে বর্ষণকালে পুত্পা বতাঃ। সহকেবী
স্তাঃ (রাজনি) ইহার বিস্তৃত বিষয়ণ সহকেবী দলে বেখ।
পর্মপ্রবেশ (পুং) বর্ষত প্রবেশঃ। নীলক্ষতাজিকোক্ত
প্রপ্রাবিশ্ব। এই সপনা বারা কর্ষের প্রবেশ হিরীক্তে হয়।
আতক বে লগ্যে লক্ষ্যাহণ ক্রিরাছে, প্রবংসর কোন্-সমর্

ঠিক বৎসর পূর্ণ হইরা নববর্বের আরম্ভ হইল, তাহা ইহা বারা "সম্প্রমণে জানা বার,।

বৰপ্ৰবেশ বারা আতকের বংসবের শুভান্তত কলনির্ণর করা বার, বর্বপ্রবেশ লগ্ধ বির করিয়া বারশ মাসের কোন্ মাসে গুভান্তত কি কল হইবে, তাহা ইহা বারা উত্তমরূপে আনা বায়। তাজিকৈ বর্বপ্রবেশের প্রণালী এইরূপ বর্ণিত আছে —

জন্মসমরে রবি বে রাশির বত আংশাদিতে অবন্থিতি করেন,
পুনর্কার রবি বে সমরে সেই রাশির তত অংশাদিতে আগমন
করেন, সেই সমরই বর্ণপ্রবেশ সমর। রবিক্ষুট ছিন্ন করিরাও
বর্ণপ্রবেশ সমর নির্ণন্ন করা বার। কিন্ত তাহা অতি আরাসসাধ্য। এই রবিক্ষুট হারা বর্ণপ্রবেশ সমর ছিন্ন করিলে অতি
ক্ষ্রবেশ সমর ছিন্ন হন।

গ্রহণনের গোচরফলের যে ভারতমা, ভাষা প্রতিবংশর বর্ধপ্রবেশকালীন লগ্ধ ও গ্রহগণের ছিভিন্নারা নিরপণ করা বার। প্রভাকে ব্যক্তির জনমাস হইজে নৃত্ন বংশর আরম্ভ চইরা থাকে। সচরাচর ২৬৫ দিনে এক সৌর বংশর গৃহীত হর। কিছু প্রাক্ত সৌর বংশর উহা আপেকা আরম্ভ ১৫ দত্ত, ৩১ পল, ৩১ বিপল, ২৪ অফুপল অধিক। যে বারে বংশর আরম্ভ হর, ভাহার পরবারে পরবংশর হইরা থাকে। অভ্যেব জন্মদিন ইইভে যত বংশর গাত হইনে, ভাহা নারা ১ বার ১৫ দত্ত, ৩১ পল, ৩১ বিপল ২৪ অফুপল অণ করিবে এবং সেই গুণকলে জন্মবার ও দণ্ডাদি লোগ করিলে যে যোগকল চইবে, ভাহাই বর্ধপ্রবেশের বার ও দণ্ডাদি জানিতে হইবে। উক্ত কলে বোগ করিলে বদি বারের অভ সাতের অধিক হয়, ভাহা হটলে ৭ হারা হরণ করিরা ১ অবশিষ্ট থাকিলে রবিবার, ২ অবশিষ্ট থাকিলে সোমবার ইভাাদি বিবেচনা করিতে হইবে।

বৰপ্ৰবেশ নিৰ্ণয় করিবার নিরম—
"ব্ৰক্ষনসাধনাৰ্থং ব্ৰপ্ৰবেশসমনমাৰ—
গভাঃ সমাঃ পালব্ভাঃ প্ৰকৃতিহসমাগলাং ।
থবেদাপ্ৰবীষ্কা ক্ৰাৰারাদিসংক্তাঃ ।
অক্সবেৰেৰে বারাদিঃ সপ্ততেইংত্র নির্দ্ধিলেং॥"(নীলক্সতাজিক)

আলপ্রবেশে বারাদি: সপ্রভাইংত্র নিশ্বশেশ । "(নালকগুডাজক)
বাহার বে বংসরে বর্ধপ্রবেশ নির্পন্ন করিতে হইবে, তাহার
সেই বংসরের পূর্বে বন্ধ বংসর অভীত হইরাছে, তাহাতে বীয়
চতুর্বাংশ বোগ করিরা একছানে রাখিবে। পরে পুনরার অভীত
বর্বাছকে ২১ দিরা তাশ করিরা তাশকলকে ৪০ বারা ভাগ করিলে
হাহা ভাগকল লক্ষ হইবে,ভাহাকে পূর্বহাপিত আছের সহিত যোগ
করিতে হইবে। এইয়পে বোগ করিলে বে আছপ্রেণী হইবে,
ভাহাকে বার, হও ও পল বিবেচনা করিয়া ভাহাতে অস্থবার,
দও ও পল বোগ করিলে হে বার, যন্ড হও ও বত পল হইবে,

জন্মদিবসে সেই ৰাব্ৰে তত দও ও তত পল সমৰে বৰ্ষপ্ৰাবেশ হইৱাহে, হিব্ৰ ক্ৰিতে হইবে।

বারের আছ বদি সাতের অধিক হন, তাহা হইলে তাহাকে । দিরা ভাগ করিরা অবশিষ্ঠ আছ প্রহণ করিতে হইবে। ঐ আছের
স্ববিধার ২ সোমবার ও মঞ্চলবার ইত্যাদি বৃদ্ধিতে হইবে।
বর্ণপ্রবেশগণনার নানা প্রকার নিরম আছে। সেই সকল প্রণাণী হারাও বর্ধপ্রবেশ হির করা যার।

অন্তবিধ—প্রথমে ১ এক, ১৫ পনের, ৩১ এক ত্রিশ ও ৩০ ত্রিশকে গভ বর্বান্ধবার গুণ করিয়া চারিস্থানে রাখিছে হইবে, এইরূপে গুণ করিলে যে চারিটী গুণফল হইবে, তাহার প্রথম অন্তকে বার, দিতীয় অন্তকে লগু, ভৃতীর অন্তকে পল, চতুর্থ অন্তকে বিপল জ্ঞান করিয়া তাহাদিগের সহিত জন্মবার, দগু, পল ও বিপল যোগ করিয়ে। পরে বিপলের অন্তকে ৬০ দিয়া ভাগ করিয়া লনান্ধ পলের সহিত যোগ করিছে হইবে। অব-শিষ্ট অবশিষ্ট অন্ত যথায়ানে রাখিয়া দিবে। এইরূপে আবার পলান্ধকে ৬০ দিয়া ভাগ করিয়া লনান্ধকে দগুরাকে ও দগ্রাভাগ করিয়া লনান্ধকে বারাজে যোগ করিয়। অবশিষ্ট অন্ধ পূর্কবেৎ যথাস্থানে রাখিয়া দিবে।

এইদ্ধপ গণনা দারা যে কয়টা অবশিষ্ট অহু থাকিবে, তাহা দারা বর্ধপ্রবেশের বার, দণ্ড, পল ও বিপল জানিতে পারা যাইবে:

অন্তপ্রকার—৫ পাঁচ, ২ ছুই, ও ৬ ছয়কে গতবর্ধাক দার।
ওপ করিয়া যে তিনটা ওপকল ইইবে, তাহাদিগকে তিন স্থানে
রাশিরা দিবে, তৎপরে প্রথম অককে বার, দিতীয় অককে দও
ও তৃতীয় অককে পল মমে করিয়া তাহাদিগের সহিত কল্মবার,
দও ও পল যোগ করিবে। পরে পলের অককে ৪ দিয়া তাগ
দিতে ইইবে। তৎপর লক্ষাককে দওে এবং দঙাককে ৪ দিয়া
ভাগ দিয়া লক্ষাক বারে বোগ করিবে ও বারাককে ৭ দিয়া
ভাগ দিতে ইইবে। অবশিষ্ট অক ব্ধাক্রমে বর্ধপ্রবেশের বার,
দও ও পল ইইবে।

অন্তবিধ — গত বর্বাছকে ১০০৭ দিরা গুণ করিরা সেই গুণকলকে ৮০০ ছারা গুণা করিলে বাহা জাগলত্ত হইবে, গুলাই বর্বপ্রবেশের বার, অবশিষ্ট অছকে ৩০ দিরা গুণ করিয়া পুনর্কার ৮০০ দিরা ভাগ দিলে বাহা লক্ত হইবে, তাহা দও, এইরূপ প্রশালীতে পলাদিও পাওরা বার। পরে উহার সহিত জন্মবার, দণ্ড ও পলাদি বোগ করিলে বর্বপ্রবেশের বার, দণ্ড ও পলাদি স্থিমীয়ত হয়।

নিরোক্ত প্রকারেও বর্ধপ্রবেশ ছির করা বার। গভর্বাক্তে ভাছার চতুর্বাংশ বোগ করিরা বারস্থানে এবং ঐ গভ বর্বাক্তকে হ দিরা ভাগ করিরা ভাগ ল্যাক্তকে যণ্ডস্থানে এবং দেড় শুণ করিয়া শুণফলকে পলছানে রাখিবে। পরে এই সকল বারাদির সহিত জন্মবারাদি বোগ করিলেই সেই সেই অম্বনারা বর্ধপ্রবেশের বারাদি নির্ণীত হয়।

বে করটী নিরম নির্দিষ্ট হুইল, এই সকল নিরমেই বর্ধ-প্রবেশ গণনা করা হার।

নিমে একটা তালিকা দেওরা গেল, ইহাতে অতি সহজে বর্ধপ্রবেশ স্থির করা বাইবে। ইহা দেখিলে অতি সহজে কোনরূপ গণনা না করিয়া বর্ধপ্রবেশের বার দণ্ডাদি জানিতে পারা বাইবে।

বরস	বার	मध	পল	বিপল	বয়স	বার	P 9	পল
>	٥	>0	එබ	೨೦	२०	Œ	00	>4
2	ર	٥)	9	•	ર•	8	>0	9.
9	9	8৬	•8	೨೦	•	ર	8¢	8¢
8	a	ર	৬	0	80	>	२ऽ	0
a	৬	39	৩৭	೨೦	40	y	৫৬	24
৬	٩	೨೨	۵	0	೬೦	¢	٥)	೨೦
9	<u>م</u>	86	80	೨۰	9.	8	৬	8¢
ь	9	8	ડ ર	0	ь.	>	8२	•
৯	×	አ ል	89	•	৯০	>	39	>e
					১০৩	•	৫૨	8•

উল্লিখিত তালিকার বর্বের অন্তের সংলগ্নে যে বার ও দণ্ডাদি লিখিত আছে, তাহাতে কন্মবার ও দণ্ডাদি বোগা করিলে বর্ব-প্রবেশবার ও দণ্ডাদি প্রাপ্ত হওরা ঘাইবে। ১০ ও ২০, ২০ ও ৩০, ৩০ ও ৪০, ইত্যাদি বংসরের মধ্যে বল্পক্রম হইলে ১০, ২০, ৩০ ইত্যাদি বর্বের সংলগ্নে যে অছ আছে, তাহাতে ১, ২, ৩ ইত্যাদি বর্বের সংলগ্ন আছ এবং জন্মবার ও দণ্ডাদি বোগ করিলে অভীট বন্ধসের বর্বপ্রবেশবার ও দণ্ডাদি হইবে। এ স্থলে বক্তব্য এই বে, কথন কখন জন্ম তারিখের পূর্ব্ব বা পর দিনে বর্বপ্রবেশ হইরা থাকে।

উক্ত প্রণালী অসুসারে বর্বপ্রবেশের বার ও দণ্ডাদি নির্দারিত হইলে সেই সময় অবলম্বনপূর্কক অস্থপত্রিকার অসুত্রপ এক-থানি বর্বপত্রিকা প্রস্তুত করিয়া ভাষাতে বর্বদাও ভাংকালিক

গ্রহন্দুট সংখাপন করিবে। পরিশেবে জন্মকাল হইতে জীত-লগ্ন বত অন্তর ছিল, বর্ব প্রবেশকালে বৃহস্পৃতি হইতে উক্তা লগ্ন-সঞ্চালন করিয়া ডভ অন্তর রাখিবে। ইহার কারণ এই রুহম্পতি শীৰকারক, এই নিমিত্ত উহার অপর একটা নাম জীব এবং মানবের জন্মলগের উপর উহার এতাদুশ আন্তর্হা আকর্ষণ-भक्ति आह्र त्व, त्व हात्न छेहा नित्रता वाष्ट्रक मा त्कर्म, के नश উহার অন্তবর্তী হইরা থাকিবেই ; স্মুক্তরাং প্রান্তি বৎসর বৃহস্পতি যেরপ এক রাশি করিয়া সরে, জন্মবন্ধও সেইরূপ এক রাশি হইতে সরিয়া পর রাশিতে যার এবং আজীবন কাল এই প্রকারে উজ্বের সমনুরতা রক্ষিত হয়। কিন্তু বৃহস্পতির কথন শীল্ল কথন বক্রগতি: অভএব স্থারপে গণনা করিতে হইলে জন্মকালে বুহল্পতির ক্ট রাখ্যাদি হইতে বাম বা দক্ষিণাবর্তে সম্মান্য যত অন্তর ছিল, বর্ণপ্রবেশকালে বৃহস্পতির স্ফুট রাস্তাদি নির্ণয় করিরা তাহা হইতে জাতলয় সঞ্চালনপূর্বাক ভড় অন্তর সংস্থাপন করিবে এবং ঐ সঞ্চালিত লয়ে গুভাগুড গ্রহের বোগ বা দৃষ্টি অন্থুলারে বর্ষফল বিচার করিতে হইবে। বৃহম্পতির ক্ষুট-অভাবে জন্মকালে বৃহস্পতি হইতে বাম বা দক্ষিণাবর্তের জন্মলগ্র যত অন্তর ছিল, বর্ষপ্রবেশকালে বুহুম্পতি হইতে ঐ লগ্ন তত-রাশি অন্তর রাখিবে, অথবা বর্ষপ্রবেশকালে যত বয়স হটবে, জন্মলগ্ন তত রাশি সরাইরা অতীত বরসের আছ বে রাশিতে শেব হইবে, ভাহার পর রাশিতে উহা সংস্থাপন করিবে: অর্থাৎ একবর্ষ অতীত হইরা বিতীয় বর্ষে পদার্পণ করিলে জন্মলগ্ন হইতে দিতীর রাশিতে, প্রইবর্ণ জতীত হইরা ততীরবর্ষে পদার্পণ করিলে জন্মলগ্ন হইতে তৃতীর রাশিতে, এইরূপ নির্মে জন্মলপ্রের লঞ্চার হুইরা থাকে। কিন্তু এই প্রাকার কুল-গণনার বখন বর্ধপ্রবেশের পূর্বে বৃহস্পতি অতিচারী হইরা পররালিতে কিংবা বক্রগতি দারা পূর্ব্বরালিতে গমন করে, তথ্ন গণনার ব্যতিক্রম হইবার সম্ভাবনা। উক্তরূপ সঞ্চালিত सन्त्रनशर्क भड़ा करह।

একটা উদাহরণ দেওরা হাইতেছে। উমাহরণ ১৭৫৩ শকে
৭ই আখিন বৃহস্পতিবার ১৭৩৫ পল সমছে ধর্মুলার কোন
ব্যক্তির স্তম্ম হয়। ১৮০৪ শকের ৭ই আখিনে ৫১ বৎসর
অভিক্রেম করিয়া বে ব্যক্তি ৫২ বৎসরে পদার্শণ করিয়াছিল।
বর্ষভালিকা দৃত্তে ঐ অভীত ৫১ বৎসরে—

	ৰার,	WO,	পল,	ৰিণ্শ,	অসুপল,
	বংগদুভা	461	>61	3.1	•
>	বৎসর১৷	541	७५।	જા	२ 8
6.5	বৎসর৮৷	331	891	168	२८ स्त्र

উহাতে তাহার সম্মবার ও দঙাবি ০৷১৭৷৩৫ বোগ করিলে

>40

১০ বার ২৯ দশু, ২২ পল, ৪১ বিপল, ২৪ অলুপল হয়। কিন্তু বীরের অন্ধলন আবিদ্ধান আবিদ, অতএব ঐ অন্ধলে ৭ দিরা ভাগ করিলে ৬ অবলিট থাকে। স্করোং ৭ই আবিন গুক্রবার ২৯ দশু, ২২ পল, ৪১ বিপল ২৪ অলুপল সময়ে তাহার বর্ধ-প্রবেশ হইরাছিল ঐ সময় গণনা করিয়া দেবিলে দেখা যায় যে, তখন মীনরালির পূর্কদিকে উদয় হইয়াছে। অতএব ঐ মীনরালিই বর্ষগা।

পূর্ব্ধে বলা হইরাছে বে, উক্ত সময়ে ঐ ব্যক্তি ৫০ বংসর
অভিক্রেম কমিনা ৫২ বংসরে পদার্পণ করিমাছিল। ভাষার
কর্মলগ্ন ধন্ম, ৫০ রাশি সরাইলে শেষ কুন্ত হর এবং তংপর রাশি
মীন, অভএব ৫২ বংসর আরম্ভে পূর্ব্বোক্ত নিরমান্নসারে মীন
রাশিতে ভাষার ক্ষমলগ্ন সঞ্চার হইরাছিল। কিন্ত ১৮০৪ শকালার
আদিন নাসে বৃহস্পতি অভিচারী হইরা মিশ্ন রাশিতে ছিল,
স্বত্রাং ঐরপ ক্ষমলগ্র সঞ্চালন করিলে গণনার ব্যতিক্রম হয়।
এছলে প্লাগণনার আবস্ত্রক। ঐ ব্যক্তির ক্ষমলালে বৃহস্পতি
মকরের প্রার ২২ আংশে অবন্থিত ছিল, এবং ভাষার ক্ষমলগ্রন্ত্র
৮০১১৫০, অর্ভাৎ বৃহস্পতি হইতে দক্ষিণাবর্ত্তের ক্ষমলগ্র ভারা
৪০ অংশ অক্তর। ভাষার বর্ধপ্রবেশকালে বৃহস্পতির ক্র্
২০৮৪০, অভএব উহা হইতে দক্ষিণাবর্ত্তে ৪০ অংশ অন্তরে
অর্থাৎ মেবরাশির ২৭ অংশে ক্ষমলগ্র সঞ্চালিত।

এইরপে প্রতিবংসর ক্ষরণধ্বে সঞ্চার হর বলিয়া ক্ষরাশি হতে গ্রহগোচরফল বিচার করা যার। একণে ঐ সঞ্চালিত লগ্ন ও বর্ষলগ্ন হইতে যেরপে ঝাংসরিক ভভাশুন্ত ফল নির্ণীত হর, তাহা অভিসংক্ষেপে বলা যাইতেছে।

এইগণ জন্মকালে গুড ইইরা বর্বপ্রবেশকালেও গুড ইইলে গুডফলের আধিকা হয়। কিন্তু জন্মকালে গুড ইইরা বর্বপ্রবেশ-কালে অগুড ইইলে বর্বের প্রথমার্দ্ধে গুড এবং শেবার্দ্ধে জগুড হয়। আরু বলি জন্মকালে জন্তভ ইইরা বর্বপ্রবেশকালে গুড হয়, তবে ব্বের প্রথমার্দ্ধে জন্তভ এবং শেবার্দ্ধে গুড ইইরা গাকে।

বণলগ্ধ, জন্মলগ্ধ, সঞ্চালিত জন্মণগ্ধ ও জন্মরালিতে গুড-প্রাহের যোগ বা দৃষ্টি থাকিলে, অথবা তদবিপতি গ্রহণণ গুড গৃহ-গত হইরা গুড্যুক্ত বা দৃষ্ট হইলে লে বর্ষে বিষিধ প্রকার হথ হর, ইহার বিপরীতে অগুড হইরা থাকে।

জন্মলগ্ন বা জন্মরাশি হটতে স্টেম রাশিতে স্থবা জন্মবানে বে রাশিতে শনি কিংবা মূলল ছিল, সেই প্লাশিতে, বর্বলগ্ন কিংবা সঞ্চালিত জন্মলগ্ন হটলে সেই বর্বে বিশেষতঃ ঐ লয়ে বদি পাপ-প্রহের বোগ বা দৃষ্টি থাকে ভাষা হইলে মানব পীড়াবুক্ত ও বিপদাপন্ন হয়।

क्रमाकानीन व्यष्टेमक शांभग्रह वर्षमांच वाक्रिक वित्यव व्यक्त

ফল হইরা থাকে। বদি বর্বপ্রবেশের অরদিন পূর্বের বা পরে পাপগ্রহণণ বক্রী হয় এবং বর্বলয়ে পাপগ্রহের ঘোগ বা দৃষ্টি থাকে, তাহা হইলে সেই বর্বে নানাবিধ কট্ট ও ব্যাধি হয়।

বর্ধপ্রবেশকালে চক্র ক্ষরাশিতে ক্ষর-ক্ষরবৃক্ত হইর। বর্ধলব্যের চতুর্থ, বর্চ, সপ্তম, অন্তম, কিংবা হাদশ গৃহ জির ক্ষরগৃহে
ক্ষবহান করিলে এবং ভাহার প্রতি গুভগ্রহের দৃষ্টি থাকিলে, সে
বর্ষে বিবিধ গুভক্ল হইরা থাকে। নচেৎ বিপরীত ফল হয়।
বর্ষলাধিশতি, ক্ষরলাধিপতি, সঞ্চালিত ক্ষরলাধিশতি ও
ক্ষরকালীন বলবান্ গ্রহণণ বর্ষপ্রবেশকালে নীচন্থ ক্ষথনা তুর্মল
হইলে রোগ, শোক ও ক্ষর্থনাশ হয়।

বৰ্ষপ্ৰবেশকালে ধন্নপন্ন শুভগ্ৰহবুক বা দৃষ্ট হইলে ধনাগম, কিন্তু পাপগ্ৰহবুক বা দৃষ্ট হইলে ধননাশ হয়। জন্ম ও বৰ্ষলমে চতুৰ্ব, বছ, সপ্তম, অইম, কিংবা ধানশে সঞ্চালিত লগ্ন হইলে অথবা উহাতে যদি পাপগ্ৰহের যোগ বা দৃষ্টি থাকে তাহা হইলে অণ্ড হয়।

জন্ম ও বর্ষ এই উভন্ন লগ্ন হইতে উক্ত স্থান ভিন্ন অন্ত কোন গৃহে জন্মলগ্ন সঞ্চালিত হইলে শুভফলের আবিক্য হর। কিন্তু ঐ সঞ্চালিত লগ্ন জন্মলগ্ন হইতে শুভভাবস্থ হইরা বর্ষলগ্ন হইতে অশুভ গৃহগত হইলে বর্ষের প্রথমার্দ্ধে শুভ এবং শেষার্দ্ধে অশুভ হইরা থাকে। জার যদি উহা জন্মলগ্ন হইতে অশুভভাবস্থ হইরা বর্ষলগ্ন হইতে শুভগৃহগত হয়, তাহা হইলে বর্ষের প্রথমার্দ্ধে অশুভ এবং শেষার্দ্ধে শুভ হইরা থাকে। সঞ্চালিত জন্মলগ্ন চতুর্থ কিংবা সপ্তম গৃহগত হইরা যদি কোন শুভ গ্রহযুক্ত হয়, তাহা হইলে পূর্কোক্তভাবে অশুভ না হইরা বরং শুভ হইরা থাকে। ঐ লগ্ন রবিযুক্ত হইলেও শুভ-ফললাভ হয়।

বর্ষলয়ে জয়লয়ের সঞ্চার হইলে সন্মান, অপত্যা, রাজপ্রসাদ ও ধনলাভ, প্রতাপর্ছি, শরীরের পৃষ্টি এবং শক্রনাশ হয়। ছিতীর লানে হইলে সন্মান, বশ, অর্থ, বছু, রুথ এবং স্থান্য লাভ হয়। তৃতীয় স্থানে হইলে নিজ উৎসাহে ধন, যশ ও প্রথলাভ, ধর্ম্মর্ছি, শরীরপৃষ্টি এবং রাজসন্মান লাভ হয়। চতুর্ছ স্থানে হইলে পীড়া, শক্রভহু, ক্ষলগণের সহিত কলহ, মনন্তাপ, জনাপবাদ ও মনংকট হয়। পঞ্চম হানে হইলে আত্মন, ধন ও রাজপ্রসাদ লাভ, প্রতাপর্ছি এবং ধর্ম্মান্নতি হয়। বঠ হানে হইলে শক্রবৃদ্ধি, রোগ, চৌয় বা রাজভয়, কাব্য ও অর্থনাখ এবং চুর্ছিবশতঃ অন্থতাপ হয়। সহাম হানে হইলে পুত্র, কলত্র, মিত্র ও অর্থনাশ, শক্রবৃদ্ধি, কলহ, দূরবাত্রা একং উৎসাহভঙ্ক হয়। আইম স্থানে হইলে ক্ষক্রয়, বজহানি, রোগ, পোক্ষ, বিশ্বা বা স্কুত্র, হয় ও অর্থক্রয়, বজহানি, রোগ, পোক্ষ, বিশ্বা বা স্কুত্র, হয় ও অর্থক্রয়, বজহানি, রোগ, পোক্ষ, বিশ্বা বা সূত্য হয়। নবম স্থানে হইলে অর্থনাতি,

ধর্মোর্রাভি, পুত্র, ক্ষাত্র, বন্ধু, বশোলান্ত এবং ভাগ্যোদর হয়।
দশম স্থানে হইলে সৌভাগ্যা, পদ ও কীর্তি লাভ এবং পরাক্রম
হৃত্তি হয়। একাদশ হানে হইলে মনস্তাই, স্বাস্থ্যা, সন্মিত্র, পুত্র,
রালাশ্রম, হর্ষহৃত্তি, সৌভাগ্যা ও বাহনাদি লাভ হয়। ছাদশ হানে
হইলে ব্যরাধিক্যা, ঝণ বা কারাবাস, রোগ, সক্ষনের সহিত কলহ
ও ওপ্রশক্র বৃত্তি হয়। কিন্তু শক্র হইতে অর্থলাভ হইবার
সন্তাবনা।

জন্মকালে গ্রহণণ তথাদি খাদশ ভাবত হইরা বে সকল ফল উৎপন্ন করে, বর্গপ্রবেশকালেও উহারা সেইরূপ ফল প্রদান করিয়া থাকে। জ্বথাৎ গুডগ্রহণণ ফেল্ফে বা ত্রিকোণে রবি ও মঙ্গল উপচয়ে, এবং শনি, তৃতীর, ষষ্ঠ, একাদশ ও খাদশ স্থানে থাকিলে গুডফলপ্রাদ হয়।

বৰ্ষণ ছাৰ্য কৰিয়া ছাদশ বাশি ছারা ছাদশ মাসের ফল ছিরীক্ষত হইয়া থাকে। বে যে গ্রহ বৰ্ষলগ্নে থাকে, অথবা বর্ষলগ্ধকে দৃষ্টি করে, প্রথম মাসে তদ্ধন্ত ফলভোগ হইয়া থাকে। এইরূপ যে যে গ্রহ ছিতীয়, ভূতীর ইন্ড্যাদি গৃহে থাকে, অথবা সেই সকল গৃহকে দৃষ্টি করে, ছিতীয় ভূতীয় ইন্ড্যাদি মাসে সেই সমন্ত গ্রহদন্ত ফল হইয়া থাকে। যে গৃহে কোন গ্রহের যোগ বা দৃষ্টি না থাকে, সেই মাসে সেই গৃহাধিপতির ছিতি ও ক্রভাক্ত সম্বন্ধ ক্ষম্যায়ী ফল হয়।

বর্ষলয় হইতে দাদশ গৃহের যে যে গৃহে মঞ্চল ও শনি থাকে, সেই সংখ্যক মাদে পীড়া বা মন:কট হয়। জয়কালীন চক্র হইতে গ্রহণত গুডাশুভ কল নিরূপণ করিয়া দেখিতে হইবে যে, কোন্ কোন্বৰ রিষ্ট্রণায়ক। তয়াধ্য যদি কোন বর্ষে বর্ষলয়, সঞ্চলিত জয়লয় ও তাহাদের অধিপতিগণ পাপযুক্ত বা দৃষ্ট কিংবা অশুভ গৃহগত হয়, তাহা হইলে সেই বর্ষে মৃত্যু হইবার সাম্ভবনা।

বর্গাধিপানরন—বর্ধপ্রবেশে বর্ধের অধিপতি কোন্ এছ, তাহা ছির করিরা তবে কলাকল নির্ণয় করিতে হয়। বর্ধাধিপ ছির করিতে হইলে ত্রিরাশিপতি কোন্ কোন্ গ্রহ, এবং তাহার মধ্যে কোন্ গ্রহ বলবান্, তাহা নির্ণয় করিতে হয়। বখন দিবাতাগে বর্ধপ্রবেশ হয়, তখন বর্ধপ্রবেশলয় মেব হইলে রবি, র্বহইলে গুরুল্পতি, কলা হইলে লান, কর্কট হইলে গুরুল্পতি, কলা হইলে চন্তা, তুলা হইলে বৃষ্ ও বৃশ্চিক হইলে মুকল ত্রিরাশিপতি হইয়া থাকে। রাত্রিতে বর্ধপ্রবেশ হয়ল বর্ধপ্রবেশ লায় হয়ি মেব হয়, তাহা হইলে বৃহল্পতি, এবং বৃহ বর্ধপ্রবেশ লায় হইলে চন্তা, মিখুন হইলে চন্তা, কর্কট হইলে কলা, নিংহ হইলে রবি, কলা হইলে ডক্সা, তুলা হইলে দল্ল, ক্রিই হইলে ক্রমান, ক্রিট হইলে জলা, স্বাহি ক্রমান ত্রাহা হাইলে স্বাহ্নিক স্বাহ্নিক জলা, নিংহ হইলে প্রাহ্নিক ভাইলে ডক্সা, তুলা হইলে ভাসা, তুলা হুলে ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলা ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলা ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলা ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হুলি ভাসা, তুলা হু

দিখা বা রাত্রিকালে বর্ণপ্রবেশ হাইলে ধছুর শনি, নকরের নগল, কুজের বৃহস্পতি এবং নীলের চন্ত্র তিরাশিপতি হাইরা থাকে।

জন্মণদ্বের অধিপতি, বর্বপ্রবেশনধ্বের অধিপতি, মুস্থাবিপতি ও বিরাশিপতি, নিবাতে বর্বপ্রবেশ হইছে ক্রান্তোগ্য রাশির অধিপতি ও রাত্রিতে বর্বপ্রবেশ হইলে চন্ত্রভোগ্য রাশির অধিপতি এই পাঁচটা প্রবেশরা বর্ধাধিপতির বিচার করিতে হয়।

এই পাঁচ প্রহের মধ্যে পঞ্চবর্গী বলবার। বলবান্ হইনা যে গ্রহ লগ্ধকে দৃষ্টি করে, সেই গ্রহ বর্বাধিপতি হইনা থাকে। বে গ্রহ লগ্ধকে দৃষ্টি লা করে, সেই গ্রহ বর্বাধিপতি হর না। উক্ত পঞ্চপ্রহ তুলাবলী হইলে বে গ্রহের দৃষ্টি অধিক, সেই গ্রহই বর্ষাধিপতি হর। উক্ত পাঁচ গ্রহ হীনবল হইনা যদি সমান দৃষ্টি করে, তাহা হইলে মুন্নাধিপতি গ্রহ বর্বাধিপতি হইনা পাকে। আর উক্ত পঞ্চগ্রহই যদি লগ্ধকে দৃষ্টি লা করে, তাহা হইলে বলাধিক গ্রহ বর্ষপতি হয়। ইহাতে কেই কেই বলেন যে, বল ও দৃষ্টির সমানতা ও অভাব হইলে নিবাতে ত্র্যাভোগা রালি রালিপতি ও রাজিতে চক্তভোগ্য রালিপতি বর্ষাধ্পতি হয়।

বর্ণপ্রবেশে বোদ্ধা থাকার যোগ নির্দিষ্ট ছইরাছে, এই সকল যোগদারা ওতাওছ দ্বির করা যার। যোগ সকলের নাম বথা—> ইছবাল যোগ, ২ ইন্দ্রার বোগ, ৩ ইছখাল যোগ ৪ ঈশরাফ যোগ, ৫ নক্তযোগ, ৭ বমরাযোগ, ৮ মহন্ত থোগ, ৯ কছ্ লযোগ, ১০ গৌরিকবৃল্যোগ, ১১ গলাল্যযোগ, ১২ বন্ধ-বোগ, ২৩ ক্রাল্যুথযোগ, ১৪ চুখোখদবীরযোগ, ১৫ ভর্নীর-ব্যাগ, ১৬ কুছবোগ, মতাক্তরে হুরুহবোগ।

এই সকল যোগের বিশেষ বিষয়ণ নীলকণ্ঠোক্ত তাজিকে বর্ণিত হইরাছে। এই সকল বোগ নির্ণন্ন করিরা সহম ছিল করিতে হয়। সহমঞ্জ ৫০ প্রকার, তৎপরে বর্ষপ্রবেশের দশা নিরূপণ করিরা কলাকল ছিল্ল করিতে হয়। বর্ষপ্রবেশে বর্ষকুপুলী ও জন্মকুপুলী এই উচ্চন দেখিয়া কল ছিল্ল কয়া আবস্তক, কেবল বর্ষকুপুলী দেখিয়া কল নির্ণন্ন করিলে তাহা মিলিবে
না, জন্মকুপুলীল সহিত সক্ষা বিচার করিলা কল নিরূপণ করিতে হইবে। (বীলক্ষ্ঠভাজিক)

বর্ষপ্রাবন্ (তি) অভাধিক বৃষ্টিপাত। (তৈভিদীয়ত্রা গৈও>০০১)
বর্ষপ্রিয় (গুং) কর্ষো বর্ষণং গ্রিবং বন্ধ। চাতকগন্ধী।(ত্রিকা)
বর্ষক্রল (ক্লী) বংসরের ক্লাকল। [বর্ষ ও সবংসর কেন।]
বর্ষক্রের (গুং) গর্গর্গতি। পৃথক্ পূধক্ জনপদের অধীন্ধর।
(ভাগবত ১০৮৭।২৮)

বর্ষমর্য্যাদাপিরি (গুং) বর্ণসমূহের সীমাণর্গত।

(कांशक दार ।१५०)

বর্ষমাত্র (অব্য) এক বংসর।
বর্ষমেলস্ , (পুং) বৃষ্টিরসার। (অথব্য ১২।১।৪২)
বর্ষবর (পুং) বরতীতি বর আবিরণে অচ, বর্ষত রেতো বর্ষণত
বর আবরকঃ। নক, চলিত খোলা।
"নটং বর্ষবরৈশ্বর্ষাসপ্সভাবাদপত ত্রপা-

মন্তঃ কণ্ডিকণ্ড বিপতি আসাদয়ং বামনঃ।"

(त्रप्रावनी २ व्यक्षांत्र)

বর্ষবৃদ্ধন (क्री) বর্ষসের বৃদ্ধি।
বর্ষবৃদ্ধ (ত্রি) বর্ষসের বৃদ্ধি।
বর্ষবৃদ্ধি (ত্রী) বর্ষশু বৃদ্ধিরাধিকাং যত্র । জন্মতিথি। [বিশেষ
বিবরণ জন্মতিথি শব্দে দেখ] ২ বর্ষোর্দ্ধি।
বর্ষশত (ক্রী) শতাক্ষ।
বর্ষপত (ক্রী) শতাক্ষ।
বর্ষস্থিত (ত্রি) শতাক্ষেরও অধিক।
বর্ষস্থিত (ত্রি) শতাক্ষেরও অধিক।
বর্ষা (ত্রী) বর্ষো বর্ষণমত্ত্যাক্ত ইতি বর্ষ-অর্শআদিখাদচ্, টাপ্
যথা ত্রিরন্ধে ইতি (বৃত্ বৃদ্ধীতি। উপ্ ৩৬২) ইতি সঃ, তত্তাপ।
ক্রাম্মগাত অন্তু। পর্যার—প্রার্ট্, ঘনকাল, জলার্গর, প্রের্ট্,
মেখার্গম, ঘনাগম, ঘনাকর। (শক্ষরক্রাও) সৌর্শ্রাবণ ও সৌর্জান্র এই মাস ধ্রাক্ষক্ষালই বর্ষাকাল। "নভাশ্চ নভগ্রশ্চ
বার্ষিকার্ড্র্য" (মলমাসত্ত্বধুণ্ড শ্রুতি) এই বর্ষাকাল দক্ষিণারন,
ইয়া দেকভাদিগের রাত্রি।

আবাঢ়াদি মাস চতুইরাস্থক কালকেও বর্বা করে। আবাঢ়, পাবণ, তাজ ও আবিন মাস। চাতুর্মান্ত বিধানত্বলে আবাঢ় মাস হইতে এই ব্রতের বিধান আছে, এবং এই চারি মাস বর্বা বলিয়া অভিহিত হইরাছে।

শ্বাবাদ্তক্ষবাদ্যাং পৌর্থনাত্রামথাপি বা।
চাতুর্মান্তরতারন্ধং কুর্যাৎ কর্কটসংক্রমে ॥
অভাবে তু তুলার্কেশি মন্ত্রেপ নির্মাং ব্রতী ।
কার্কিকে গুরুবাদ্যাং বিধিবত্তৎ সমাপরেৎ ॥ (বরাহপু•)
চতুর্থাপি চ ভক্তীর্ণ চাতুর্মাক্তং ব্রতং নরঃ ।
কার্কিক্যাং গুরুপক্ষে তু বাহস্তাং বহুৎ নরঃ ।
চতুরো বার্কিন্ মাসান্ দেবতোখাপনাবধি ।
মধুম্বরো ভবেরিভাং নরো গুরুবিবর্জনাৎ ॥
একরাব্রং বসেদ্প্রামে নগরে পঞ্চরাব্রক্র।
বর্ষভ্যোর্বক্রবর্ষিশ্ন মাসাংশ্চ চতুরোবনেং ॥" (মৎক্রপু•)
ভারপ্রভালে লিখিত আছে বে, বর্ষা ঋতু শীতল, বিনাহশাক্ষনক, মন্দান্তিকারক এবং বার্বর্জক । বর্ষাকানে পিত্রের
সঞ্চন হর এবং বারু প্রবণ হর, অত্রব ঐ বারু শাক্তির
নিষ্কি মধুর, আর ও লবণ রস্বুক্ক ক্রব্য বিশেবরূপে সেবন

করা কর্তব্য। এই সমর শরীর ক্লিয় হর, এই ক্লিয়তা নিবা-রণের জন্ম কটু, তিজা ও ক্যাররস সেবন করা বিধের।

বর্ণাকালে বেদকর এবা নেখন, অলমর্কন, দ্বি, উঞ্চরতা, আললমাংস, গোধুম, লালিত ভূলের অল, মাবকলায়, কূপোছৰ জল ও চূতফল সেবনীয়। পূর্বাদিগ্তব বায়ু, বৃষ্টি, রৌদ্র, হিম, পরিশ্রম, নদীতীরে গমন, দিবানিল্লা, রক্ষ্প্রতা ও নিতানৈথুন এই সকল বৃহ্মনীয়।

ন্বত, মধুর, কবার ও তিক রস্ফুক দ্রবা, গলুপাক দ্রবা, র্
রুগ, বছ অবচ শুরুবর্ণ ইক্ষ্বিকার, গবণ, অর পরিমাণে জাজনমাংস, গোধুম, বব, মৃগ, শালিত পুল, কর্পূর, রক্তচন্দন,
রাত্রির প্রথমতাগের চক্রকিরণ, মাল্যধারণ, নির্দ্মলবন্ত্র পরিধান,
ব্যারামরাহিত্য, স্ফুল্ব্যক্তিগণের সহিত মধুর আলাপ, সর্বোবরে
কলক্রীড়া এবং পিতাধিক ব্যক্তির বিরেচন ও বলবান্ ব্যক্তির
পক্ষে শিরাবেধ হারা রক্তমোক্ষণ, বর্ধার অবসানসমন্ত্র হিতক্রনক। দ্বি, ব্যায়াম, অন্ন দ্রব্য, কটু দ্রব্য, উষ্ণ দ্রব্য, তীক্ষ্
দ্রব্য, দিবা নিদ্রা, হিম এবং রোদ্র, এই সকল বর্ধা অবসানে
বর্জনীয়। (ভাবপ্রত)

বাভটে লিখিত আছে যে, বর্ধা, শরং ও হেমন্তকাল দক্ষিপারন, ইংা দিন দিন লোককে বল বিস্পর্জন অর্থাৎ বল দান করে
বিশিয়া ইংাকে বিসর্গকাল কছে। এই কালে চক্র বলবান্ ও
রবি হীনবলা হর, আর শীতল মেঘ রৃষ্টি ও বায়ুযোগে মহীতলের
তাপ শান্ত হইয়া থাকে। এই জল্ল দ্রব্য সকল ক্ষেহ্যুক্ত হয়।
আয়, লবণ ও মধুর রস প্রবল হয়। বর্ধার আয়, লরতে লবণ
এবং হেমন্তে মধুর রস প্রবল হইয়া থাকে।

বর্ধাকালে কালধর্মবলে মানবের অগ্নিভেজ মাল্য হর।
ইহাজে শরীর মানিবিশিট হইরা থাকে। তথন আকাশ জলভারাবনত ও জলনজালে ব্যাপ্ত হওয়ার সহসা শীতল তুষারসিক্ত
পবনে, ভূতলোখিত বান্দে ও অয় বিপাকবারিতে এবং
আর্মির মলতাবশতঃ বাত, পিত্ত ও কফ হুট হয়। বাত, পিত্ত
ও কফ এইরূপে পরম্পরকে দ্বিত করে বলিয়া পাচফাল্লি কীণ
হয়। এই কালে সাধারণতঃ এইরূপ জব্য ব্যবহার করা উচিত,
বাহা পাচকাল্লির উত্তেজক। এই কালে শরীর শোধন
করিয়া মেহবত্তি, প্রাতন ধাল্ল, স্থশংল্লত মাংসরস, জাললমাংস, মূলগালির ব্র, প্রাতন মধু ও অরিট, সৌবর্চন্যুক্ত মঞ্জ
(ব্যির মাত) বা পঞ্চলোল্প এবং আকাশ জল, কৃপজল বা
অতিদিক কল সেবন ক্রিবে। অতিশ্র হৃদ্দিনে তীক্ষ, আর,
নবণ ও মেহ সেবন, শুক্ ও লল্ব ভোজন এবং মধু পান করিবে।

বৰ্ণাকালে পদত্ৰজে শ্ৰমণ বিশেষ নিবিদ্ধ। এই সময় সুগন্ধি শেবন ও ধূপিত বসন পরিধান এবং বাম্পনীত শীকয় বর্জিত হৰ্দ্যপৃঠে বাদ প্ৰশন্ত। নদীজন, উদমন্থ (প্পত প্ৰক্ষেপ দহ-বোগে জনসিক শক্ত, বারা যে বাভ প্রস্তুত হয় ভাহাকে উদমন্থ কহে) দিবানিল্রা, পরিশ্রম ও আতপ পরিহার কর্মবা।

(বাভট স্ক্রন্থা• ৩ জ•)

বৰ্ষকালে এই সকল বৈভকোক্ত বিধিনিবেধ মানিরা চলিলে ব্যাধির প্রকোপ হয় না, শরীর স্কৃত্ব থাকে।

স্থানতে নিথিত আছে বে, এই কালে দিবারাত্রির মধ্যেও সংবংসরের স্থার শীত, গ্রীর, ও বর্ষাদির মত ছয় ঋতুর লক্ষণ এবং সন্ধাকালে বর্ষাঋতুর লক্ষণও প্রকাশ পার। এই জন্ম বর্ষাকালের নিবিদ্ধ দ্রব্য সন্ধাকালে আহার করিবে না।

কবিকরনতার নিধিত আছে যে, বর্বা বর্ণন করিতে হইলে শিখী, স্ময়, হংসাগম, পদ্ধ, কলল, উদ্ভেদ, জাতী, কদদ, কেতক, ঝলানিল, নিম্নগা ও হলিপ্রীতি এই সকল বর্ণন করিতে হয়।

শবর্ষাস্থ ঘনশিথিস্ময়ংংসাগমাঃ পদকললোডেনে।
জাতী কদৰকেতকএঞ্জানিলনিয়গাংলিগ্রীতিঃ ॥"(ক্বিকর্মলতা)
শপত্রী কুজতি কাননে চ সরসী মানাম্পূর্ণা তথা
হংসা মানসমাত্রজন্তি কমলাজ্ঞমানতাং ঘান্তি চ।
গর্জন্মেবমহেন্দ্রকল্পরদরী শভাবৃতা ভামেলা
ভাত্যেবং প্রনন্ত কোপনকরো বর্ষাশ্বভুঃ শোভিতঃ॥"

(হারীত ১া৪ **অ**°)

এই শব্দ নিত্য বহুবচনাস্ত, 'দারাদেনি তাং' এই স্থাসুসারে দার, অপ্, বর্বা, এই তিন শব্দ নিত্য বহুবচন, এই স্কল শব্দের উত্তর একবচন বা দ্বিচন হয় না।

বর্ষাংশ[ক] (পুং) বর্ষস্ত বংসরক্ত অংশঃ। মাস। (ত্রিকা॰) বর্ষাকাল (পুং) বর্ষাঋতু। আবাঢ় ও প্রাবণ মাসম্ম বর্ষা। বর্ষাকালীন (ত্রি) বর্ষাসমরোপ্যোগী।

বর্ষাগম (পুং) বর্ষারম্ভ। রুষ্টপাত।

বর্ধানোর (পুং) বর্ধান্ত ঘোষো মহান্ শংকাহত। মহামপ্তৃক। বর্ষাক্ষ (পুং) বর্ষত বংসরত অজমিব অভিধানাৎ পুংকৃষ্। মাস। (হারাবলী)

বর্ষাঙ্গী (ত্রী) বর্ষাস্থ কলং যন্তাঃ তত্র জাতাভ্রদর্শনাৎ তক্তা-তথাত্বন্। পুনন বা। (পক্ষরত্বাবদী) ইহার বিভৃত বিবরণ পুনন বা শব্দে এইবা।

বৰ্ষাচর (এ) বৰ্ষার বিচরণকারী। 'বর্ষাচরোহন্ত ভৃতকঃ' (ভারত ১৩ পর্ম)

বৰ্ষাজ্য (ত্ৰি) বৰ্ষাকালেংপন্ন ছত সম্বন্ধীয়। (অথৰ্ক ১২।১,৪৭) বৰ্ষাৎ (হিন্দি) বৰ্ষাকাল।

বৰ্ষাতি (ত্রি) ১ বৰাকাল-সৰন্ধীর। ২ বৰ্ষাকালে পরিধের পরিচ্ছদভেদ। ৩ প্রাথাদির বর্ষাক্ষনিত রোপবিশেষ।

বৰ্ষাধিপ (পুং) বৰ্ষাণামধিপঃ ৬তৎপূক্ষঃ। > বৰ্ষসমূহের অধিপতি। [বৰ্ষ দেখা] °

২ বর্ণাধিপ গ্রন্থগণ। এক এক নয় হর্ষে এক একটা গ্রন্থ অধিপতি ছইরা থাকেন। গ্রন্থানুনারে কুর্বের কলাকণ ছির করিতে হয়। এই বর্ষক্লাকলের উপরই পৃথিবীর মক্লা-মকল নির্ভয় করে।

বরাহমিহির এ সবলে বৃহৎসংহিতার লিপিরাছেন, স্থা থে বার বর্ধাধিপতি, মাসাধিপতি বা দিনাধিপতি হন, সে বার পৃথিবীর সর্ব্ধত্র আর শক্ত হর। বনবিভাগ বৃত্তু লং ট্রগণে পূর্ণ হইরা উঠে, নবীগণ প্রচুর বারিক্ষরণ করে না, শীড়ার প্রযুক্ত ঔবধ সকল তাল্শ বলকারক হর না। শীতকালেও স্থা প্রথর তাপ দিরা বাকেন। পর্বতোপম মেঘঙলি বেশী বর্বণ করে না, আকাশের নক্ষত্ররান্ধি, এমন কি স্বরং চক্রমা পর্যান্ত দীপ্তিহীন হইরা উঠে, গোও ভাগসকুল বিষাদগ্রন্ত হয় এবং হস্তী, অস, পদাতি প্রভৃতি বলবাহনমুক্ত নরপতিগণ অন্ত্রন্ত সহচর সম্ভিন্যাহারে বহু বাণ, ধন্ত ও অসি প্রভৃতি অক্ত লব্ধ লক্ষ্যাহারে বহু বাণ, ধন্ত ও অসি প্রভৃতি অক্ত কন।

চক্র বর্ণাধিণ হইলে, প্রচ্লিত পর্কাতোপম মেবলল, রক্ষনর্প, কক্ষল, প্রমর বা মহিববৎ ক্ষমবর্ণ হইরা আকালমগুল ছাইরা ফেলে, লোকের উৎকণ্ঠাত্তক গভীর শব্দে অধিল দিয়াওল পূর্ণ হইরা উঠে। নির্মাণ সলিলে পৃথিবী প্রিত হর। সরোবর সকল পার, উৎপল ও কুমুদমালার মাওত হইরা উঠে। উপবনস্থ জন্মদল প্রস্কৃত্তর ও প্রমর ব্যক্তার করে। গাভী সকল প্রচ্ন হ্রমন্তিট হর, ক্ষমরী কামিনীরা অন্তর্নাগভরে নিরত পুক্রসক্ষ করে। পৃথিবী গোধুম, শালি, বব, প্রেষ্ঠ ধান্ত ও ইক্ষণালিনী হইরা নানা নগর ও চৈডাসমূহে শোভিত, পবিত্র হোম ধ্বনিতে পূর্ণ এবং নরপভিগণ কর্ম্বক পালিত হইরা থাকে।

মঞ্চল বর্ণাধিপতি হইলে প্রনাছ ও প্রাপ্তবহি,—প্রাম, বন ও নগর দয় করিতে উভত হর, পৃথিবীতে মর্ভাবর্গ দয়াগণে আহত ও নিঃম্ম হইরা হাহাকার করিয়া বিচরণ করে, পশুকুল নির্মুল হর,নেম্বলল শৃক্তে অভারত ও সংহত মূর্ত্তি হইরাও কোথাও প্রচুর জল বর্ষণ করে না, পক্তার শক্ত শোষ প্রাপ্ত হর এবং কোনয়পে নিশার হইলেও অবিন্য বলে অপর ব্যক্তিয়া তাহা হরণ করিয়া লয় । মঞ্চলের সংবৎসরে নৃপত্তিগণের চিত্ত প্রজাপালনে তাদৃশ অভ্যরক হয় না । পিতলাত রোগের প্রাচুব্য হয় । ফুরুল্পণের প্রকোপ বৃদ্ধি পার । এইরপে প্রজাবর্গ শক্তবিন, বিপার ও উপহত হইয়া উঠে ।

বুধ বর্ষাধিপতি হইলে, মারা, ইজারাণ ও সুহক্কারী নাগর-গণ এবং গাড়র্ম, দেখা, গণিত ও অস্ত্রবিদ্পাণের বৃদ্ধি হর নর্বপতিরা পরস্পর প্রীতিকামনার অহত দর্শন ও তুটিকর এবা দ্বাক্ষ পরস্পরকে দান করিতে অভিনাবী হন। কর্তা ও অধীশাস্ত্র জগতে অধিকন ও সভ্য থাকে। কাহারও বৃদ্ধি শাস্ত্রজানে
অভিনিবিট এবং কেহ কেহ আবীক্ষিকী শাস্ত্রে পরম পদ লাভে
চেটিভ হয়। বৃধ্গহের নিজবর্ব ও মাসে এইরপে পৃথিবী
হাসাজ, দৃত, কবি, বালক, নপুংসক, যুক্তিজ্ঞ, সেতু জল ও
পর্বতবাসিগণের তৃত্তি ও পৃথিবীতে ওবধিগণের প্রচুরতা
সম্পাদন করেন।

বৃহস্পতি বর্ধাধিপতি ছইলে, যজ্ঞোচারিত বিপুল আকাশগামী বেদধ্বনি বজ্ঞদ্রোহিগণের মন বিদীপ করিয়া, বিজ্ঞবর ও
যক্তাংশভাণীদিগের হৃদয়ানন্দকররূপে ভ্রমণ করে। ক্ষিতি
উত্তম শহাবতী, আনেক হতী, আন, চতুরঙ্গ সেনা, মহাধন,
গোকুল ও দনশালিনী হটয়া নরপতিগণে পালিত ও বর্জিত
হটতে থাকে। জনগণ স্থগীর লোকের ভায় স্পর্জার সহিত
বিরাজ করে। গগনোলত বিবিধ বর্ণের পরোদগণ তৃপ্তিকর জল
ভারা পৃথিবী পূর্ণ করিতে থাকে। স্তরগুল বৃহস্পতির শুভবর্ষে
এইরূপে পৃথিবী বহু শহাবুতা ও সমৃদ্ধিশালিনী ইইয়া উঠে।

শুক্র বর্ধানিপতি হইলে, ধরাধর তুলা জলদপ্টল বারিধারা বর্ধণ করিতে থাকে। তাহাতে পৃথিবী পূর্ণ হইরা যায়, তড়াগ ফুলর সরোক্তজালে আকীণ হয়। পৃথিবী নবালকারে অলঙ্কত হইরা উজ্জ্বলালী নারীর ভায় শোভা পায় এবং বহু শালী ও ইক্ষু উৎপাদন করে। ভূপতিগণের জয়শন্দে দিঙ্মগুল ধর্বনিত হয়। শক্রদল বিধ্বস্ত হয়, রাজগণ হয়্ট দমন ও শিষ্ট-পালন করিয়া নগর ও আকর সহ সমুদায় পৃথিবী পালন করিতে থাকেন। বসস্ত ঋতুতে মানবগণ কামিনীগণসহ পুন: পুন: মুদুপান করিয়া বেণু বীণা সহ বার বার শ্রবণমধুর গান গাইতে থাকে এবং অতিথি স্কৃৎ ও অজনগণসহ একত অয়ভোজন করে। শুকের ববেণ এইরপে মঞ্চল প্রাধান্তই স্থিতি হয়।

শনি বর্ণাদিপতি হইলে তৃক্ত দহাগণের উপদ্রে ও বহু সংগ্রামে রাজ্ঞা সকল আকুল হইরা উঠে, অনেক ধর্ম ও পশু নই হইরা নরগণ বন্ধুজন বিরোগে অতিশন্ধ রোদন করিতে থাকে। কুধা ও সংক্রামক ব্যাধির প্রকোপে মাছ্ম আকুল হইরা পড়ে। অন্তরীক্ষে বায় বিক্ষিপ্ত মেখ আর দেখা যার না। ধরাতলে একটা পারব ও অক্ষত বা অক্ষা অবস্থার থাকে না। আকাশে চক্র ও স্থাকিরণ অত্যধিক ধূলিপতনে ঢাকিরা কেলে। অলাশর জলহীন একং সরিৎ সকল কীণজোত ইইরা পড়ে। কোথাও জলাভাবে শতু সকল নই হইরা যার। কোথাও বা জলস্কিক ভূতাগে উহারা পুটি প্রাপ্ত হয়। এইরূপে দিবাকরবংশধর পানর বর্ধে ইক্র পঞ্চশত্র প্র জল কর্বণ করিয়া থাকেন।

ফশতঃ যে গ্রহ কুল, অপটুকিরণ, নীচগামী বা অগুদারা বিজিত হন, তিনি সকল ফল ও পুষ্টিদাতা হইতে পারেন না। অভভগ্রহ বর্ষাধিপতি ও মাসাধিপতি হইলে তাহার মাসজাত ফলের বৃদ্ধি হয়, অগুণা ভড়ফল ও যাপ্য হইয়া থাকে। (বৃহৎসং ১৯ আঃ)

বৰ্ষাধ্বত (ত্ৰি) বৰ্ষান্ধানে লব্ধ। বৰ্ষাপ্ৰাপ্ত। (কাত্যা°শ্ৰৌ° ৪৮৬১৮) বৰ্ষাপ্ৰাভ্ঞান (গং) নাটকাণ। বৰ্ষাপ্ৰায় (গং) চাতৰূপক্ষী। (ত্ৰিকাণ) বৰ্ষাবীক্ত (ক্ষী) মেষ।

ব্যাপান্ত (দেশজ)ভেক।

বর্ষাভিব (পুং) বর্ষাস্থ ভবতীতি ভূ-অচ্ বর্ষাস্থ ভব উৎপত্তি র্যন্ত বা। বক্তপুনন বা। ২ পুনন বা। (রাজনি°)(ত্রি) ও বর্ষার উৎপন্ন মাত্র।

বর্ধান্ত (পুং ব্রী) বর্ধাস্থ্য, ভবতীতি ভূ-ক্লিপ্। > ভেক।

"মণ্ড্ কঃ প্রবংগা ভেকো বর্ধান্ত দিদুরো হরিঃ।" (ভাব প্রত পূঃ)

> ইন্দ্রগোপ। (রাজনি•) ও ভূলতা। (মেদিনী) (র্বী)
৪ বক্ত পুনর্ন বা। (পর্যায়মুক্তাবলী) ৫ খেতপুনর্ন বা। (চক্রদ)
৭ পুনর্ন বা। "ভিলপর্ণিকা বর্ধান্ত চিত্রমূলকপোতিকালস্থানপলাগুকলায়প্রভূতীনি।" (স্ক্রন্ড স্বস্থান ৪৫ জঃ) ৭ ভেকী।
(ভরতধৃত রসরক্ষাকর) (ব্রি)৮ বর্ধান্ধাত মাত্র।
বর্ষান্ত্রশাক (পুং) পুনর্ন বা শাক্, চলিত খেতপুণ্যা শাক।

মরাঠা— ঘেণ্টুল, কণাড়ী,—বেলড়কিলু। ইহার গুণ—কফ, অগ্নিমান্দা ও বাতহর, রুক্মজর এবং গুলা, প্লাহা ও শূলনাশক। বর্ষাভূী (সী) বর্ণাভূ-ঙীপ্। ১ ডেকী। ২ পুনন্বা।

বর্ষামদ (খং) বর্ষাস্থ মাখতি ইতি মদ-জচ্। ময়র। বর্ষাস্থ (ফী) বৃষ্টিজল।

বর্ষাস্থ্রবাহ (পুং) বর্ষাজলসঞ্চয়ার্থ জলধারা।

বর্ষান্তঃপারণব্রত (পুং) বর্গান্তো বৃষ্টিরুলং ভক্ত পারণং উপবাসান্তে শানং ব্রভমিব ব্রতং যক্ত। চাডকপক্ষী।

বর্ষাযুক্ত (क्री) অযুত বংসর।

ব্ধারাত্র (পুং) বর্ণাণাং রাত্রিঃ ভতঃ সমাসাজ্যেহচ্। ১ বর্ধা-কালীন রাত্রি। ২ বর্ণাশভু।

বর্ধার্চিস্ (গং) বর্ধান্থ অর্কিনীপ্তিরন্ত। মললগ্রহ। (শব্দর্দ্ধা) বর্ধান্ত (গং) পূকা, চলিত পিড়িং। (বৈছকনি°)

ব্যালস্কায়িক। (ত্রী) প্ৰা, পিড়িং শাৰ। (ভরত)

বৰ্ষালী, পাণিনীয় উৰ্যাদিগণোচ্ত একটা শব্দ। (পা ১।৪।৬১) বৰ্ষাব্দ (অি) বৰ্ষাসদৃশ।

বৰ্ষাবজী ় (ত্ৰী) ভূকীটবিশেৰ, চলিত ইন্ত্ৰগোপ কীট। ২ ভেক-পত্ৰী। ৩ পুনৰ্ন বা। (অমরমালা)

ব্ধাবসান (পুং) ব্ৰীণান্বসান্মত। ১ শর্ৎকাল। (রাজনি°) २ (ज़ी) वर्तारमय। বর্ষ। শাটি (জী) বর্ণাঝভূতে বৌদদিগের পরিধের বাসভেদ। वर्षाभाद्रामी (जी) वर्षा अ मंत्र कान। वर्षा ज्ञाया (थ्रः) वर्षा कान । বর্ষাস্কুজ (বি) বর্ষাকালভাত। (পা ভাতা বাতিক) বর্ষাহিক (পু:) বিষবিহীন দর্পভেদ। (সুশ্রুত কল °৪ জ:) বর্ধাহ (জী) বর্গাভূ। ভেকী। (বাজসনেমূদং ২৪।৩৮) বর্ষাহবা (জী) পুনর্ম বা। (চক্রদ°) বর্ষিক (অ) ১ বর্ষাসম্বীর। ২ বর্ষসম্বীর। বর্ষা ও বর্ষ এই উভয় শব্দের উত্তরই ফিক্ প্রত্যয় করিলে 'বর্ষিক' পদ শিদ্ধ হয়। বর্ষিত (क्री) রুষ্টি। ব্র্যিক (ত্রি) বর্ষণকর্তা (নিঙ্গক্ত ৪/৮) বর্ষিতা (স্থী) বর্ষিন্ভাবে তল্ততপ্তাপ্। বর্ষণকর্তা। বর্ষিন্ (ত্রি) বর্ষিণকারী। প্রাবিন্। ু বর্ষিমুন্ (পুং) বৃদ্ধের ভাষ। দীর্মজীবিদ্ধ। (শুক্লযজু° ১৮।৪) বর্ষিষ্ঠ (ত্রি) > অভিশন্ন রুদ্ধ। (ঋক্ ৫।৭।১) 'অরমনয়োরতি-শংয়ন বৃদ্ধঃ' এই অর্থে বৃদ্ধ স্থানে বর্ষ আদেশ করিয়া পরে ইষ্ঠ প্রত্যয়ে 'ব্রিষ্ঠ' পদ সিদ্ধ হইয়াছে। ২ অত্যন্ত বলবান্। বর্ষিষ্ঠাকৃত্র (ত্রি) > অভিশব্ধ ক্ষমতা বা শক্তিশালী। ২ মিত্রাবরুণ। (ঋক্ দান্ত। ১) वर्षीका (जी) इत्नाइन। ব্যীণ (ত্রি) বর্ষণসম্বন্ধীয়। (পা बाসচঙ) वर्षीय (कि) वर्मन वा वन्नमम्बीम । বর্ষীয়স্ (ত্রি) অন্তমনব্রেরিভিশবেন বৃদ্ধঃ ; বৃদ্ধ ইয়স্থন্ ততে৷ वर्वारमणः। व्यक्ति वृक्तः। পर्यात्र-मममी, क्यावान्। (व्यमतः) "ছিয়তে বিষয়ে: প্রায়ো বর্ষীয়ানপি মাদৃশঃ।" (ভারবি >> সঃ) শ্বতিশাল্লে উক্ত হইয়াছে, যোড়শ বৰ্ব পৰ্য্যস্ত বালক, তাহার পর ভরুণ বা যুবক। তৎপরে সপ্ততি বর্ষের পর বৃদ্ধ এবং নবভির পর বর্ষীয়ান্ সংজ্ঞার অভিহিত হটতে হর। **"আ**ঘোড়শাদ্ভবেদ্ বাল**ন্তকণত্ত**ত উচ্যতে। বৃদ্ধঃ স্তাৎ সপ্ততেরদ্ধ ং বর্ষীয়ান্ নবতেঃ পরম্॥" (স্বতি) ব্যু (ত্রি) বর্ষপ্রভব ভূণাদি, বর্ধকালোৎপন্ন। শ্বৰো বৰীয়দি ৰজে বজপতিং" (গুৰুবৰু° ৬١১১) 'কৰোঁ বৰাছৎপন্নং বৰু': তৎসংখাধনং কৰোঁ বৰ্বপ্ৰভব ছে তৃণ' ((वनगी १) ব্যু ক (ত্ৰি) বৰ্ষতি ভাষীল ইতি বৃষ-(লৰ-পতপদস্থাভূ-বৃষ-হন-

কম-গম-পূভ্য উকঞ্। পা অং।১৫৪) ইভি উক্ঞা বৰুণ-কর্তা, বর্ষণকারী, বর্ষণশীল। 🔹 "बग्गूः धारापः विक्यानगामि छोर्वव् का धन्नव्यः वस्त्रव । निर्वाकियेका रवराज बहन्छ कृत्या बखारव यूनिमा क्यांतः ॥" (PO|: DB) বযু কাৰ্য (পুং) বৰু কণ্টানৌ অৰুণ্টেভি কৰ্মাননঃ। বৰ্ষণীক মেল। যে মেল হইছে বৃটি পতন হইডেছে। (জটাধর) বৰ্ষেক্ত (ত্রি) ৰৰ্ষে জান্নতে ইতি জন-ড, সপ্তম্যা অনুক্ ৷ ১ বর্ষা-কা**লজাত। ২ বংগমুজাত।** বর্ষেশ্ (পুং) বর্ষস্ত ঈশঃ। বর্ষাধিপ, বৎসরের অধিপতি। तर्राभ्रल (प्रः) वर्षांगामूननः। स्वयनाष्ठ निना, कत्रकः। "বৰ্বোপলৰক্ষাডং ৰা**যুক্তৰাত সপ্ত**যাদ্**ভ**ইং। হ্রিরতে কিল থানিবৈয়ন্তড়িৎপ্রভং মেঘসম্ভূত**ম্ ॥**" **্বুহৎসংহিতা** ৮১।২৪ ; व(र्याच (११) सक्। ध्यस्त्रम । বস্ত্র (ত্রি) বৃষ্টিকারী। "জাতি বীঞ্চং বর্টা পর্জন্ধ পক্তা শহুদ্।" (তৈভিরীয়সং গাধারণা১) ব্র্ম্ম (ক্লী) শরীর। (বিরূপকো") "বর্ম্মের ছব্মি সমামানাম্।" (পারস্বরগৃহ্ব ১।৩) ব্র্মুন্ (क्री) বর্ষতি ব্যুতে বেতি বৃষ মনিন্। শরীর। "দদর্শ চ সমীপে২ন্ত পিশাচানাং শতৈরু তং। কাণভূতিং পিশাচং তং বর্ম গা লালসন্নিভম্॥" (क्थानविष्ना[°] २।६) ২ প্রমাণ। (অমরটাকা) স্বামীর মতে প্রমাণ শব্দে উরতি। 'প্রমাণ্মত্যোন্নতিরিতি স্বামী' (অমরটীকা ৩।৩)২২৩) "অথাপঞ্চদ্ধীন্ ব্রস্থান্ অসুঠোদর বন্ম শ:। প্ৰাৰ্যুদ্ভিকামেকাং বহতঃ সংহতানু পথি ॥"(ভারত ১৷৩১.৮) ৩ ইয়ন্তা। (ভরত) ৪ অতি স্মারাক্লতি। সারস্কারী) (আরি) ৫ উরভ। ৬ ছির। "नम्भ ऋष्टो वित्रमन्ना পृथिवग्राः" (अक् > । २ ৮। २) 'বন্ধ ণ শব্দ উন্নতবচনঃ ছিন্নবচনো বা' (সান্ধণ) ৭ বৰীয়ান্ অতিশন্ন বৃদ্ধ। "নমো বন্ধণৈ নমো কৃষ্ণে" (ভাগবত ৫।১৮।৩০) 'तम्र'(न वरीम्नरम'(न्यामी) ৮ জলরোধক:। 'উদকশু বারক:।' (সাম্বণ) ব্যুল (তি) বর্ম মন্বর্ধ (সিশ্বাদিভাশ্চ। পা বাং।৮৭) ইতি नह्। वर्षायुक्त, वर्षाविभिष्ठे। বৃদ্ম**্বৎ** (মি) শরীরসদৃশ। वश्च वीर्या (मी) भारीतिक भक्ति। ব্যাভি (क्री) আকার বা গঠনবিশিষ্ট।

বর্ষ্য (অ) বর্ষাসৰদ্বীর । বর্ষণবোগ্য ।
বর্ষ্য , বর্ষ । স্থীবি । চুরান্দি পর্মের্শ বর্ধার্থে সক্ষণ দীপ্তার্থে
অক' সেট্ । লাট্ বর্ষর্জি । পূঙ্ অববর্ষ্য । বর্ষ—শ্রেষ্ঠ ।
জানি আত্মনে সেট্ । লাট্ বর্ষ্যজে । পূঙ্ অবহিষ্ট ।
বর্ষ্য (ক্রী) বর্ষ্যজি দীপাতে ইজি বর্ষ-জচ্ । মর্মপিছে ।
"বধা বর্ষাণি চিত্রাণি বিভর্জি জ্লাপানানা ।
তথা বন্ধবিধ রাজা রূপং ক্রীতি ধর্মবিধ ॥"
(তারত ১২০২০।৪)

২ এছিপর্ণ। (ভেক) বর্ছতীতি বৃহ বৃদ্ধৌ সচ্। ৩ পত্র। (শব্দয়সা•)

"বিলাসিনী বিশ্রমণ্ডপত্রমাপাঞ্জং কেতকবর্ত্মক্ত:। প্রিলানিতবোচিতসলিবেশৈবিশাউলামাস বুবা নখাঠিঃ ॥" (রবু ৬১১৭)

৪ পরীবার। (হেম)

বৰ্ছণ (জী) বৰ্ছ জীতি বৃহ-বৃদ্ধো দুট্, বৰ্ষ জি শোক্ততে ইতি বৰ্ছ-দীধৌ দুৰ্বা। পত্ৰ। (শক্ষরত্বা•)

বাৰ্চ সূ (পুং) বুংৰতি বৰ্জতে ইতি বৃহি বৃহজী (বৃহেন লোপণ্ট।
উণ্ ২০৯০) ইতি ইসি নলোপণ্ট। ১ আমি। (মেদিনী)
২ দীপ্তি। (উজ্জ্বল) ২ বজ্ঞ। (হেম) "মা নোবাৰ্ই:পুৰুষতা"
(ঋক্ ৭০৭৪৮) 'নো জন্মাকং বহিৰ্যজ্ঞাং' (সারণ) ৬ চিত্রক।
(জ্মর) ৫ বৃহত্রাজের পুত্র।

"বৃহদ্ৰা**লন্ত ভক্তা**শি ব**হিন্দ**ৰাৎ **কৃতঞ্চন:।**"(ভাগবভ৯।১২।১৩) (প্ৰং ক্লী) ৬ কুশ। (মেদিনী)

বর্চসু (রী) বৃংহতীতি বৃহিবৃত্তে ইনি নলোপভ। ১ এছিপত্ত। (শব্দর্শাণ) ২ কুশ।

°অবচিতবলিপুশা বেদিসমার্গদকা।

নিরমবিধিজ্ঞলানাং বহিবাকোপনেত্রী।" (কুমারন' ১।৬১)
বহিঃপুক্প (ক্লী) বহিঁবীপ্রিকন্মুক্তং পুশ্সক। ১ এছিপর্ণ।
বহিঃশুক্লন্ (পুং) বহিবা কুশেন বহিবি বজে বা তম তেজা
বক্তঃ ১ অঘি। (অষম)

বহিন্ত (ক্লী) বাইরিৰ ডির্চন্ডীতি হা-ক। ১ বহিন্ত। বহিন্তু হ্লুম (ক্লী) বাইবৰ্ত্ত কুৰুসং বঞ্চ। এছিপর্ণ। (প্ৰচ°) বহিন্ত (পুং) বহ্নজাভেতি বহ ; কেনব্রিজ্ঞানিনচ্ ইতি ইনচ্। ্যন্ত ।

শুরুক্তি ওতান প্রান্ প্রশাক্ত বহিণঃ।" (মহু>২।৬৫) (ক্লী) ২ তগর। (ভাবগ্র-)

বহিণবাহন (পুং) বাইলো মর্নো বাহনং বছ। কার্কিকের। বহিৎকলা (বী) বহী থালো বাহনং বছাঃ। চঙী। (বিকা•) বহিন্ (পুং) বহঁনভাগীতি বহ'-ইনি। মর্র। (অনর) শসদা মনোজাবুদনাদসোৎস্থকং বিভাতি বিভীৰ্ণকদাপশোভিতং সবিত্ৰমালিকনচুদনাকুলং প্ৰবৃত্তনৃত্যং কুলমভ বৰ্টিদাম্ ॥''

(अकूमश्हांत्र २।७)

২ প্রধাগর্কে সম্ভূত কপ্তপের পুরজেন। (ভারত ১০০১৪৭)
ব্লু, ১ প্রাণন। ২ ধাজাবরোধ, সমৃদ্ধির প্রতিবন্ধক। ৩ নিরুপণ।
। হিংলা। এ দান। জুদি পরক্ষৈ প্রাণনার্থে চুরাদি পরক্ষে। নিরুপণ, হিংলা ও দানার্থে ভুগদি আত্মনে সক নেটু।
লট্ বলভি। বলতে। পুঙ্ অবলীং। অবলিই। চুরাদি- "
পক্ষে বলরভি, বালরভি, বালরতে। পুঙ্ অবীবলং।

বল (গং) > নেব। ২ অস্থরভেদ। ইনি দেবতাদিগের গাড়ী
অপহরণপূর্বক গুহামধ্যে দুঞ্জারিত হন। ইস্র সেই গুহা অবরোধ করিরা গোধন উল্মোচন করেন। (অক্ ১০।৮৮।৯)। পরে
ঐ অস্থর ব্যরণ ধারণ করিলে বৃহস্পতি তাহাকে নিহত করেন।
অক্সংহিতার অক্তান্ত হানে এই অস্থর মেঘরপে বর্ণিত।

[भवर्ष (पथ ।]

বলংক্লজ (গুং) মেঘনাশকারী।

ব্লক (পুং) > বলনামক দানব। (ছরিবংশ) ২ তামস মন্বন্ধরোক্ত সপ্তর্বিভেদ। (মার্ক° পু° ৭৪।৫৯)

বলক (দেশল) হগ্ধ জাল দিবার সময় প্রথমে উৎলাইরা উঠিলে তাহাকে বলক কহে। ঐ হগ্ধ নামাইয়া রাখিলে তাহাকে বলকা হগ্ধ বলে।

বলকাত্মধ (দেশজ) অর আল দেওরা হয়।

ব**লকেশ্বরতীর্থ (ক্রী) তী**র্থভেদ।

वलक्रम् (११) । भर्गाविक वन ।

বঙ্গক্ষ (পং) খেডবর্ণ।

বলক্ত (গং) ভনাংভ চক্র।

ব্লাগ (क्री) বধ্য ব্যক্তির প্রতি জাচরিত ক্বত্যাবিশেষ।
পরাজিত রাজনেরা প্লারনপূর্বক ইস্তাদি দেবগণের বধের
জম্ব অহি কেশ ও নথাদি পদার্থ ভূগর্ভে নিথাত করিরা যে
বে আভিচারিক ক্বত্যা সম্পাদন করিত, তাহাই বলগ।

"পরাজয় প্রাপ্য পলায়মানে রাক্সৈরিক্রাদিবধার্থমভিচাররূপে ভূমৌ নিখাভা অন্থিকেশনখাদি পদার্থাঃ ক্লড্যাবিলেখে।
বলগাঃ।" (বাজসনেরসং বেঘদীপ ৫।২৩)

বলগৃত্নু (কি) ৰশগান্ হতীতি বশগ-হন-ক্লিণ্ । (পা তাং৮৮) কুত্যাহননকারী। (গুরুষক্" হা২৩)

বলসিন্ (জি) বলগদম্বিত। (অধর্ম ৫।৩১/১২)

বলজিমান, নাজাল-প্রেনিডেনীর তাজার জেনার কুছকোন্ তানুকের অন্তর্গত একটা নগর। অকা° ১০° ৫০' উ: এবং জানি° ৭৯°২৫' পুঃ। এবানে স্থানজাত শক্তাহির বিভৃত কারবার আছে। বলতী (बी) আদাদোপদি দওলিকা, বলভি।

বলভেক্ন (গুরানটেরার), নাজান গ্রেনিডেনীর বিদ্যাগাণাট্য বেশার অন্তর্গত একটা নগর। অহ্না" ১৭° ৪৪´ উ: এবং দ্রাঘি ৮৩ ২২ তথ পু:। বর্তমান ইংরাজী মানচিত্রে বা ভূগোলে (Waltair) নামে বিখিত। বলোপসাগরোপকৃলসমীপে স্থাপিত হওয়ার এই হান বিশেব স্বাস্থ্যাদ। এখানে সিবিল ও মিলিটারী বিভাগের অনেক রুরোপীর কর্মচারী বাস ভরিয়া ু থাকেন। বিশাধপন্তন হইতে এই স্থান তিন মাইল **উত্ত**রে অবস্থিত এবং উক্ত নগরের রুরোপীরদিগের বাসভূমিও উপক বলিরা পরিপণিত। সমূত্রপৃষ্ঠ হইতে এই স্থান ২৩০ কিট্ উচ্চ ध्येर शक्ष्रीननमानाद शतिशृष्ठ। देष्टेरकाहे द्वननथ धरे मगत-সারিধ্য দিরা মাক্রাঞ্চাভিমুখে প্রধাবিত হইরাছে। এই কারণে এখন এখানকার প্রীবৃদ্ধি অনেকাংশে বর্দ্ধিত হইরাছে। পূর্বে এখানে পানীর জলের বিশেষ অভাব ছিল। এখন ভাছা অনেকাংশে দূর হইরাছে, পরস্ত এথনও ফলমূল ও উৎকৃষ্ট খাভ দ্রব্যের অভাব আছে। এখানকার ইংরাজটোলা হইতে বালালী-টোলা অনেক খারাপ।

বলদবুর, (বল্দব্র), মাজাজ-প্রেসিডেন্সীর দক্ষিণ আকটি জেলার বিষপুরম্ ভালুকের অন্তর্গত একটি গগুপ্রাম। পুঁদিচেরী হইতে ৯ মাইল উত্তরপদ্চিমে অবস্থিত। অক্ষা° ১১°৫৮' ৪০' উ: এবং জাঘি° ৭৯° ৪৪' ৩০' পু:। করালীগণ পুঁদিচেরী রাজধানী স্পূলীকরণার্থ এই স্থানে প্রথমে তুর্গ স্থাপনপূর্কক সেনা-স্তিবেশ করিয়াছিলেন। ১৭৬০ খুটান্দে ইংরাজনেনানী কৃট পুঁদিচেরী অবরোধকালে তাহা অধিকার করিয়া লন।

১৮৮২ খুষ্টাব্দের ৩০এ জুন পর্যান্ত স্থলপথগামী পণ্যস্তব্যের উপর শুব্ধ আদারের জন্ম এখানে ফরাসীদিগের একটা শুব্ধ-কার্যালয় ছিল।

यलिय (११) रेख।

বলন (রী) প্রচনক্ষরাদির সায়নাংশ হইতে বিচলন (deflection), ইহা সাধারণতঃ আয়নবলন নামে প্রসিদ্ধ। ভাররাচার্য্য বলনানরন সম্বন্ধে লিথিয়াছেন:—

"বিদ্যন্তালে বলনং সাধাং তদ্মিন্তালে বা নবৰ্ষটিকাতাঃ থালা ৯০ হতাশ্চলপ্ৰহে রাঞ্জিন ভক্তা অৰ্কগ্ৰহে দিনাৰ্জেন ফলমংশাঃ স্থাঃ তেবাং ক্ৰমজাংশক্ষারা ওপ্যা গ্ৰাজোবরা ভক্তা লক্ষ্য চাপং পলোভবং বলনং আর্ডে। প্রাভ্নতে সৌবাং পশ্চিমনতে বাবাং।" ০ ০ ০ (সিদ্ধান্তাশিণ গণিতাধ্যার)

কুটবলন ও দৃক্বলন সম্বাদ্ধ বিশেষ বিবরণ ততন্ত্রক এবং আর্দ্ধবলন শব্দে বিভ্তরণে আলোচিত হইরাছে। বলন্বাসনা (ত্রী) গ্রহাদির অরন্চাতি প্রতিপাদন। বলনাশন (পুং) > বলধানক। ২ ইন্ত।
বলনিসূদন (পুং) ইন্ত।
বলনাংশ (নী) বজগতিয় অংশ (degree of deflection)
বলন্ধিক। (নী) সদীভগানোক স্বয়ক্তমতেছ।

विश्वास्त्र (ही) वननायक गानत्व भूती।

বঙ্গজি [জী] (জী) বলজি-ভ্ৰদিকারাদিতি বা জীব্। কড়জী।
১ গৃহের কাঠাম। ২ ছাদের উপরিত্ব গৃহ। ৩ গৃহচুকা। ৪ ছাদ।
"হন্দ্য-প্রানাদবলভীবিধান নোহত্রমন্তি।"

(কথাসরিৎসা• ৮৭।১২)

পুরীবিশেষ : [বলজীরাজবংশ বেথ ।]
 শ্বাবাসিখং বিহিতং মরা বলভাং
 শ্রীধরনেননরেরপানিভারাং ।
 বীর্ত্তিরভা ভবভার পঞ্চ ভঙ্গ

ক্ষেমকর দিতিপো বতা প্রকানান্ ॥" (ভাই ২০০২)
বলভীরাজবংশ, হারাষ্ট্রের একটী হুপ্রাচীন রাজবংশ। হারাষ্ট্রের
(বর্জনান কাঠিরাবাড়ের) অন্তর্গত, ভাওনগরের ১৮ নাইন

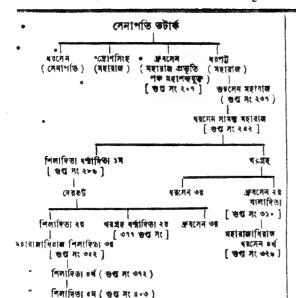
উত্তরপশ্চিমে অবস্থিত। বর্তমান বলা নামক স্থান পূর্কে বলজী নামে থাতে ছিল। প্রাচীন বলজীরালধানীর ধ্বংসাবশেব উক্ত বলা নামক স্থানে বিভয়ান। এথানকার প্রাচীন নরপতিবংশই

"বলন্তীরাজবংশ" বলিরা ইতিহাসে পরিচিত।

খুটার ৫ম শতালে ভটার্ক নামে এক সেনাপতির অভ্যানর হয়। তিনি মৈত্রক বা মিত্রবংশীর ছিলেন। ভটার্ক সম্ভবতঃ অরাষ্ট্রের শব্দ-নরপতিগণের কোন সেনাপতির বংশধর। বলভীরাজগণের বহু শিলালিপি ও তামশাসন হইতেও জানা বার বে, ভটার্কের মত তাঁহার ছোর পুত্র ১ম ধরসেনও "সেনাপতি" উপাধিতে ভ্রিত ছিলেন। পাশ্চাত্য ঐতিহাসিকগণ ইহামিগকে বৈরেশিক বলিয়াই মনে করেন। আবাবেরও মনে হয় বে, ভটার্কও এক জন শাক্ষীপীর ক্ষত্রির-মংশসভুত ছিলেন। অতি পূর্বাকালে বে সকল শাক্ষীপীর জারতে আসিরাছিলেন, তাঁহারা মিত্রনামক স্বর্ঘোপাসক ছিলেন। এই কারণ অনেকেই মৈত্রক বা মিহির উপাধি ধারণ করিতেন। শেবে তাহাই বংশোপাধিরপে গণ্য হয়,—ভটার্কও ঐরণ কোন নৈত্রক-মূলোংগয়, ভাঁহার বংশবহুসণ্ও "মৈত্রক" বলিয়া পরিশ্চিত। এই বংশের বহু ভাষাশাসন পাওয়া পিয়াহে, ভাহা হইতে সংশল্ভা বাহির হইরাছে। পির পূর্চার প্রমৃত্র হইল)

নেনাপতি ভটার্ক এই বংশের বীলপুরুষ হাইলেও তাঁহার তর পুত্র প্রথম প্রস্থাননই প্রকৃতপ্রভাবে "গঞ্চমহাশব"-কুক্ত রাজোপাধি প্রদণ করেন এবং এই বংশীর রাজগণের বে সুক্তা ভারশাসন আবিভূত হইরাছে, তর্মধা ঐ প্রস্থাসনের निर्मापिका **७४ (७ थ** गर ८७)

भिनामिला १म अपक्र (७४ मः १८०)



ভামশাসনই সর্ব্বপ্রাচীন, ভাহাতে ২০৭ 🗪 দৃষ্ট হয়। ঐ অহকে কোন কোন প্রত্নতত্ত্ববিদ্ "বলভীসংবৎ" নামে নির্দেশ কুপ্রসিদ্ধ মুদলমান-পণ্ডিত অল্বেরুণী থুষ্টায় করিয়াছেন। ১০ম শতাব্দীর শেষে লিখিয়া গিয়াছেন, যে 'বল্লভ' বংশ ধ্বংস হটলে ২৪১ শকালে ঐ সংবৎ প্রচলিত হয়। কিন্তু আমরা দেখিতেছি যে, সেনাপতি ভটার্ক হইতে বলভীবংশের অভ্যাদয়। এমপ স্থলে তাঁহার জন্মের শতাধিক বর্ষ পূর্বেক কিরুপে বলভী-রাজবংশের ধ্বংসের কথা স্বীকার করা যায় ? আমাদের বিশাস, এक সময় বলভী সুরাষ্ট্রে শকরাজগণের অধিকারে ছিল। ২৪১ শক্ষে বা ৩১৯ খু**টাবে শকরাল্য ধ্বংস ও গুপুসা**য়াল্য প্রাজিটিত হয়। ২৪১ শকানেই গুপ্তসংবতের আরম্ভ। তাহার বহু বর্ব পরে সেনাপতিবংশের অভাদর ঘটিলেও বলভীরাজগণ তাঁহাদের সন্মা-নিত **গুপ্তসমাট্গণের সংবৎ গ্রহণ করিতে বাধা হন।** এরপ খাল বলভীরাজা ধাংস হইতে বলভী-সংবৎ আরম্ভ হওয়ার প্রবাদ अठिति छ इश्रा कि**डू जनस**र नरह। **উक्ट** २०१ आ**रह** + २८১ = ৪৪৮ শকে (বা ৫২৬ খুটাবে) ১ম এবংসন রাজ্য করিতেছিলেন। তিনি ও তৎপরবর্তী রাজগণের তামশাসন হইতে জানা যায় যে, তাঁচারা "প্রমহাশব্দ" ব্যবহার করিতেন। সামন্ত, মহাপ্রতীহার, মহাদওনারক ও মহাকার্তায়তা। ঐ সকল উপাধিগুলি সম্ভবতঃ তাঁহাদের পূর্বপুরুবগণের রাজ-কার প্র-নির্দেশক ছিল, অধস্তন বংশধরণৰ লে স্থতিলোপ कता कर्छवा भाग करतम नाहै। ३४ अवरमन निर्म अक्सन বৌদ্ধ হইলেও ভিনি অপর ধর্মবিষেধী ছিলেন না। বছ তাইশাসনে তাঁহার ভগিনী হুক্তা 'পরমোপাসিকা' নামে সম্মানিত
হইরাছেন। বলজীরান্ধ শিলাদিতা ১ম ধর্মাদিতা সম্রাট্
হর্ষদেবের নিকট পরান্ধিত হন।

বালাদিতা ২য় ধ্রবসেনের ৩১০ সংবৎ চিহ্নিত (৬২৯ খঃ জঃ) ডাম্রশাসন পাওরা পিয়াছে। এই ধ্রবসেনকে চীন-পরি-ব্রাজক হিউএন্ সিয়াং, 'ভূ-লু-হো-পো-ট' বা ধ্রবভট নামে পরিচিত ক্রিয়াছেন।

তিনি ৰল্ডীপতিকে মালবপতি শিলাদিত্যের ভাগিনেয়. কান্তকুৰপতি হৰ্ষবৰ্দ্ধনের পুত্রের জামাতা এবং ক্ষত্রিয় জাতীয় বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। সেই বলভীরাক্ত পূর্ব্বে হিন্দুধর্মা-ৰলম্বী থাকিলেও ঐ সময় তিনি বৌদ্ধ ত্রিরত্বের উপাসক হইয়া বৌদ্ধর্ম অবলম্বনের সঙ্গে অতিশয় লয়ালু, বিস্তোৎসাহী ও ধার্ম্মিক হইয়া পড়িয়াছিলেন। প্রতিবর্ষেই তিনি মহাধর্ম-সভা আহ্বান করিতেন, শ্রমণদিগকে বহু ধনরত্ব ও উৎক্লপ্ত খান্ত সামগ্রী দান করিতেন, আচার্য্যদিগকে ৩ থানি পরিচ্ছন, रेज्यकानि ও मृगावान् मनित्रक्वानि विजन्न क्रिट्जन । वह नृत দেশ হইতে যে সকল আচার্য্য বদজী-সভান্ন উপস্থিত হইতেন. তাঁহারা রাজার নিকট বিশেষ সম্মানলাভ করিতেন। তৎকালে বলভীরাজ্যের আয়তন ৬০০০ লি বা হাজার মাইল, ইহার ताक्रधानीत প्रतिभाग ७० **गि। এই জনপদের অ**ধিবাসী, জলবায়, ও ভূসংস্থান মালব রাজোর মত। এই স্থান বহ জনাকীণ্. রাজধানী ধনী জনের প্রাসাদে সমাচ্চর, এখানে বহু কোটীপতির বাস। নানা দুরদেশের রত্মরাশি এথানে স্ফিড। এথানে শতাধিক সঙ্ঘারাম এবং তাহাতে প্রায় ৩০০০ আচার্য্যের বাস। তাঁহারা সকলেই প্রায় সম্মতীয় শাথার হীন্যান। শত শত দেব-মন্দিরেরও অভাব নাই। চীনপরিব্রাজক এইরূপে বলভীর পরিচয় দিয়া শেষে শিথিয়াছেন, তথাগত অনেক সময় এখানে পদার্পণ করিতেন, তক্কভ অশোকরাল তাঁহার স্বরণার্থ এথানে কএকটী স্থতিত্ব নির্মাণ করিয়াছিলেন। বলজীনগরের জনতি-দূরে চীনপরিব্রাজক অর্ছৎ জাচারের প্রতিষ্ঠিত গুণমতি ও স্থিরমতির স্থতিনির্দেশক বৃহৎ সম্থারাম দেখিয়া গিয়াছিলেন।

সমাট্ হর্বর্জনের :মৃত্যুর পর যথন বর্জনসামাল্য লইয়া গোলবোগ ঘটে, সেই স্থবোগে ৪র্থ ধরসেন বহু রাজ্য জর করিয়া "পরমভট্টারক পরমেবর চক্রবন্তী মহারাজাধিরাল" উপাধি গ্রহণ করেন। তিনি ত্রীপুক্ষ উভরকেই রাজকার্য্যে সমান অধিকারী মনে করিতেন। তাহার ৩২০ বলজী-সংবতে (৩৪৯-৫০ খুটাকে) উৎকীর্ণ ভাম্রশাসনে তাহার ব্রির ছহিতা ভূপা দৃত্ক অর্থাৎ দানপত্রের কার্য্য সংসাধনে প্রধান রাজপুক্ষ বলিয়া পরিচিত। ভিনি ভরুক্তে বর্তমান ভরোচ সহরে আপন রাজধানী প্রতিষ্ঠা করেন !

বলভী-ধ্বংস হইলেও পরে বছকাল বলভী-সংবতের প্রচলন ছিল। বেরাবল হইতে আবিষ্কৃত চৌলুকারাক অর্জুনদেবের শিলালিপিতে ৯৪৫ বলভী সংবৎ অন্ধ (=>২৪৬ খুটাল) দৃষ্ট হয়। বলভীধ্বংসের পর বলভীক্ষীয় কোন কোন ব্যক্তি রাজ-পুতনার আশ্রম লাভ করেন। [ব্রর দেখ।]

বলস্কু (পুং) প্রাচীন জনপদভেদ।

ব লক্ষ্ম (গুং) অবশষ। সরলরেথার উপরিস্থ লম্বরেধা (Perpendicular)।

বলয় (পুং ক্লী) বলতে আর্ণোতি হস্তাদিকমিতি বল (বলি-মলি-তনিভাঃ কথন। উণ্ ৪।১৯) ইতি কথন্। স্বৰ্ণাদি রচিভ কোঠাভরণ, চলিত বালা, করাভরণ। পর্যায়—আবাপক, প্রিহার্য্য, শৃষ্থক, ক্পু, কুপুল। (এটাধর)

"সহেমস্টত্রম ণিডিঃ কেয়ুরৈব লব্যৈরপি ।" (রামায়ণ ২।৩২।¢)

২ মপ্তলা

"অপ্রান্তঃ সকলং ভূমেব লিয়ং তুরগোত্তমঃ।
সমর্থঃ ক্রান্তমর্কেগ তবায়ং প্রতিপাদিতঃ ॥"(মার্ক°পু• ২•1৪৯)
৩ অস্থিবিশেষ। (স্কুশ্রত শারীবস্থা• ৫ অ°) ৩ বৈছাকোক্ত
অগ্নিকর্ম্মবিশেষ।

"বোগাধিষ্ঠানভেদাদিরিকর্ম চতুর্ধ। ভিন্ততে। তদ্যথা—
বলমবিন্দ্লেথাপ্রতিসারণানীতি দহনবিশেষাঃ" (স্থ্রুত ১)১২)
ফুর্জুতের মতে রোগের স্থানভেদে অগ্নিকর্ম চারিপ্রকার।
যথা—বলম, বিন্দু, বিলেখন ও প্রতিসারণ। অর্কুদ ও গলগঙাদি
দৃদ্মূল রোগে বালার স্থায় গোলাকার্রপে দগ্ধ করিলে
ভাহাকে বলম কছে। ৪ বেইন।

"স বেলাবপ্রবলয়াং পরিথীক্তসাগরাম্। অনভূশাসনামূক্ষীং শশাসৈকপুরীমিব॥" (রযু ১।৩০)

(পুং) বলয়বদাকৃতিরস্তান্তেতি অর্শ আদিখাদচ্। ৫ অস্তা-দশ প্রকার গলবোগের অন্তর্গত গলবোগবিশেষ। ইহা গলগণ্ড-রোগ নামে পরিচিত। ইহার লক্ষণ--

"বলাস এবায়তমূহতঞ্চ শোপং করোৎপরগতিং নিবার্যা। তং সর্ব্ববৈধাপ্রতিবার্য্য বীর্য্যংবিবর্জনীয়ং বলয়ং বদন্তি ॥"(ভাবপ্র°)

কফ কর্তৃক বিষ্কৃত, উন্নত এবং অন্নবহা নাড়ী অবরোধ-কারী শোথ গলে উৎপন্ন হইলে তাহাকে বলমবোগ কছে। এই বোগ অসাধা। এই রোগ চিকিৎসা করিলে একেবারে সারে না।

৬ বেলা। ৭ কছণ। ৮ দণ্ডব্যহবিশেষ।
"স্থাখ্যো বলন্দৈত দণ্ডভেদঃ স্মূচর্জনঃ।"

(কামলকীয় নীতিদা৽ ১৯।৪৫)

त्मग्रय (अ) वनत अन्तर्ध मञ्जूष मञ्ज वः । वनप्रविनिष्ठे । वनप्रविनिष्ठे । • •

বলয়িত (ত্রি) বদরবং ক্রতমিতি বদর তৎকরোজীতি ণিচ্ ততঃ জঃ, বদা বদরং ভদাক্তির্লাভদতেতি বদর-ইতচ্। বেষ্টিত, পরিবৃত, যেরা।

"ইন্ধনমালাবগায়িতবাহঃ প্রধনহরণে সাক্ষাজ্ঞাহঃ।" ক্রাবোবনভন্ধনবীরঃ কীর্তনপ্তনে মলপ্রীরঃ॥" (উড্রট) বল্যান্ (ক্রি) বলয় বা ব্রাক্ষারে শোজিত। বেমন জ্যোতিলেপাবলায়ন্।

বলয়ীকৃত (ত্রি) ১ বলগাকারে বেটিত। ২ হৃতবলন। যাহা বলগালভারে পরিণত করা ছইয়াছে। ৩ কুঞ্জীকৃত।

বলয়ীকুতবাহ্নকী (পুং) শিব।

বলয়ীভুত (बि) > বলয়াকারে ছন্ত। ২ বেটিত।

বলরাম রায়, বারেজ-কায়স্থ-সমাজের দেববংশে বণরাম বায় জালগ্রহণ করেন। বর্তমান জেলা পাবনা ও পরগণা কাটার মহলার অন্তর্গত তাড়াশ (১) গ্রামে ইঁহার বাসস্থান। বলরাম ও ভাহার জ্ঞাতিবংশ তাড়াশের কমিদার বলিয়া পরিচিত।

উক্ত তাড়াল গ্রামের উত্তরপূর্বাদিকে প্রায় ১০ দশ মাইল দূরে দেবচড়িরা নামক পলীতে জীরামদেবের প্ত নারায়ণ দেব চৌধুরী বাদ করিতেন। এ দমর রাজমহল হইতে ঢাকা স্হরে রাজধানী স্থানান্তরিত হয়। নারায়ণ দেব একলা ঢাকা গমনোদেশে বর্তমান ভাড়াশ নামক স্থানে উপনীত হইয়া একস্থলে তিনি একটা অনায়ত বার্ণলিঙ্গের উপর কামধেপ্লকে দুগ্রহণ করিতে দেখিয়া বিশ্বহাপর হন। ভিনি কামধেসকে দেখিবামাত্র সেই ধেমু অন্তর্হিত হইল। চলনবিলের একাংশে জনপ্রাণিশৃন্ত স্থানে এইরূপ ঘটনা মিতার আশ্র্যাজনক বটে। তিনি ঢাকা হইতে প্রত্যাগমন করিয়া বাণলিক স্বীয় ভবনে প্রতিষ্ঠিত ক্রিতে সংকর করেন। চাকার বে উদ্দেশে গমন করেন, তাহা সফল হওরার বাণলিকের প্রতি ভক্তিপরবশ হইয়া তাহা উত্তোলন অশু বন্ধ করেন। কিছ উক্ত বাণলিকের মূলদেশ গভীর মৃত্তিকার নিছে গ্রোখিত থাকার তাঁছার অভিনায পূর্ণ হটল না। নারারণ দেবের স্থাপিত 🗎 🕮 গোপীনাথ দেবের নামাকুদারে তদীয় ভদ্রাসন চড়িয়া গ্রাম "চড়িয়া গোপীনাথ পুর" নামে কথিত হইতেছে। সেই সমর হইতেই উক্ত বিগ্রহের

⁽১) প্রসিদ্ধ চলন বিলেয় একপার্বে তাড়াল প্রায়। ইবায় পৃথ্যদিকে
প্রাচীন কীর্ত্তিকলাপের জানোবশেবপূর্ণ নিমপাহী নামক হানে বিপুত্ত করতোয়।
তেওঁ সংস্থাপিত নিমপাহীকে সাধারণে বিয়াটয় দক্ষিণ প্রোপৃত্ত নামে অভিহিত
করেয়। তথায় লয়সাগয় বায়ক সুর্বার্থ ললাপর ও অট্টালিকায় তয়াবশেয়
প্রাচীন ঐবর্গয় পিয়িয়র প্রধান করিতেছে।

দেবত্র সম্পত্তি পোপীনাথপুথ এবং চড়িয়া **অভ্**ডি করেকথানি তালুক ছিল। নারায়ণ দেব ও চাকুম প্রবেদ্ধ অকলেব একই ব্যক্তি ছিলেন। চাকুরে লিখিত আছে—

"ठक्षित्रा आस्मरेक बाम एकरवव मात्र ।

শুক্ৰেপ্ত ৰাজনেৰ ভাস্কলার ।
ভাহার বংশের কথা গুলহ বিভার ॥
ধনবান্ কীর্ত্তিনত বিবর ব্যাপারে ।
ভার পুত্র চাকুরী কৈলা নবাব সরকারে ॥
সেই বংশে উম্বিলা বসরাম রার ।"

বাস্থ্যের কর্তৃক ভাড়াগের জ্ঞানন নির্মিত হয়। বাস্থ্যের দিতার নিকট উক্ত জনাদি বাণলিকের মহিমা প্রথণ করিরাছিলেন। নারারণদেব বিশেব চেটা করিরাও উক্ত বাণলিক চড়িরা প্রায়ে স্থানান্তরিত করিতে সমর্থ হরেন নাই। বাস্থ্যের রাজকার্য্য বলভঃ ঢাকার বান। উক্ত বাণলিককে প্রণাম করিবার কন্ত ভাড়াশে জ্ঞানেন, এখানে একক্তে একটা ক্তেককে সর্প ধরিতে দেখিরা ভ্রার জ্ঞানন নির্মাণ করিরাছিলেন। (১)

নারারণদেব ঢাকার ববাব সরকারে কি কার্য করিতেন, তিবির পরিজ্ঞাত হওয়া বার না। তাঁহার নির্মিত বে সকল আট্রালিকা ও পুকরিনীর পরিচর পাওয়া বার, দেবপ্রতিষ্ঠা এবং অতিথিসেবাদি নিতাকর্পের বে বশংসোরত আছে. সেই সকল বিবর বিবেচনা করিলে, তাঁহার সম্পত্তি বে নিতান্ত সামান্ত ছিল না, তাহা প্রতীরমান হয়। নারারণদেব উক্ত বাগলিকের মন্দির নির্মাণ করেন। বাণলিকটা এ প্রবেশে অনাদি শিক্ষ বলিরাই খ্যাত এবং ভাষা কণিলেকর নামে পরিচিত। ঐ যন্দিরের প্রবেশবারের বহিন্দিকের শিরোভাগে নির্মাণিকত প্রোক্ত আল্লানিও বর্জমান আছে :—

"লাকে বাজিলরাজগেলুগণিতে জীরামদেবাৎ গরঃ
জীনারারণদেব এব ক্সকৃতিঃ অর্জোকলোকোজনম্।
গ্রানাদং ক্রতিচৃষ্টিতো নিক্রপার জক্যা বনৌ পক্তবে
বাজুং অর্গপরগ্রাপকরণং লোপাননেকং তুবি a
ইতি গুডনার পকালাঃ ১৫৫৭ জীগৌরালো জরতি।"
বাক্তবের নাবাজন নারারণ বেব। জীরামদেব উচ্চার
লিতা ভিলেন।

ৰাজ্যৰে বাবের প্ৰথম পুত্ৰ জন্মক ও বিতীয় পুত্ৰ নামনাথ।

ইহারা ছই প্রাভা ঢাকার নবাব সরকারে বিবর কর্ম করিতেল। এই বিবরকর্ম হইতেই রার চৌধুরী উপাধি হর।
বাস্থানেবের কার্যো নবাব অতি সন্তই হইরাছিলেন। ইনিই
প্রথমে "চৌধুরাই ভাড়াল" নামক সম্পত্তি অর্জন করেন।
পরগালে কাটার মহলা তৎকালে সাক্তিলের রাজার জমিনারী
ছিল। তরকর্গত হুইপতেরও অধিক মৌলা সইরা এই চৌধুরাই
ভাড়াশ নামক সম্পত্তির ক্ষেই হর। চৌধুরাই ভাড়াশের অধিকাংশ
মৌলাই ভাড়াশের চতুলার্থবর্তী।

জররক রারের সাতিটা পুত্র সন্তান করে। তথাব্যে বলরাম, রামদেব ও রামরাম তির অন্ত কাহারও বংশবৃদ্ধি হর নাই। রামদেব ৪র্থ, বলরাম এব রামরাম ৭ম পুত্র।

ইত্রাহিন্ খাঁ বে সমর নবাব, সেই সমরেই সম্লাট্পোত্র আজিম ওস্পান বাজালার অবাদার হইরা আগমন করেন। বলরাম রার এই অবাদারের দেওয়ানী কার্য করিয়াছিলেন।

এ সময়ে রছ্নকনের আধিপত্যের প্রপাত। মুর্নিদাবানে রাজধানী স্থাপিত ছইলে কাননগো দপ্তরে তাঁহার একাধিপত্য ও অতির্দ্ধি আরম্ভ হইরাছিল। পৃঠিয়া-রাজসংসারে কার্য্য কালে তিনি সাতৈদের কমিদারীর বিবর বিশেবরূপে অবগত ছিলেন। তক্ষ্প সাতৈদের কমিদারীর প্রতিই তাঁহার প্রথম দৃষ্টি নিপতিত হয়। সাতৈদের তদানীক্তন কমিদার রাণী সর্কাণী অতির্দ্ধা ও রাজকার্য্যে অসমর্থা এবং তাঁহার ক্ষমিদারীর কার্য্য-নির্কাহের অস্ত উপযুক্ত কর্মচারীর অসভাব থাকার, তিনিই তৎপ্রতি বিশেব গক্ষা রাখিতে আরম্ভ করেন। নবাব মুর্লিদ্ধ কুলিখার প্রসৃষ্টি রঘুনক্ষনের প্রতি নিপতিত হইয়াছিল। তক্ষপ্র তাঁহার প্রতিহন্দিতা করিতে কেই সাহসী হন নাই।

সাতৈল অমিদারীর অশৃত্যলার কার্যপ্রণালীর জন্ত অনৈক অভিজ্ঞ কর্মচারীর আবন্ধক হইরাছিল। তাড়াল প্রাম সাতিল ছইতে প্রায় ২২ মাইল উভরে অবস্থিত। জয়কৃষ্ণ চৌধুরীর পুত্রগণ পৈড়ক সম্পত্তি ও নবাব সরকারের বিষয়কর্মের জন্ত প্রাস্থিক ছিলেন। রখুনন্দন সাতৈল অমিদারী-পরিচাসনে উপযুক্ত ভাবিয়া বলরামরারের কনির্ভ্ত প্রায়াম রারকে ছির করেন। বলরাম নবাব সরকারে ও রাময়াম রার বাটাতে থাতিরা পৈড়ক বিষয়ের তথাবধারণ করিভেন। শৈড়ক বিষয়কর্মের তথাবধার হতু অনেকে তাঁহার অমিদারী পরিচালনের পরিচর পাইরাছিলেন।

রখুনক্ষন বে সমর রামরামকে খীর প্রাভা রাজা রাজ্জীরনের বেওরানী পদে নিরোগার্থ নির্মাচন কর্মেন, তৎকালে বলগ্রাম রাবের চাকার ক্ষর্যন হেডু রামরাম ক্ষেত্রের মন্ত প্রহণ ক্রিডে পারেন নাই। বিশেষতঃ তৎকালে সাতৈল প্রভৃতি ক্ষরিয়ারীয

⁽১) ভারাদের জবিবাদ-বাটার বে সাবে বাজের বাটা বাবে কবিত হব, নেইছালে ভেক কর্মুক সর্ব মুক্ত হওৱার, বাহুবের কর্মুক্ত ভবাছ বনসায় দেবী নির্মিত হইয়াছিল। ঐ বেদী কয়াশিও কর্মনান আছে।

পরিণাম দেখিরা রামরাম কেন, এ দেশের অনেক অমিদারই ভীত হইরাছিলেন। তিনি ঢাকা হইতেই তদীর প্রাতা রাম-জীরন বা রঘুনন্দনের দেওরানী ফার্যগ্রহণের বিবর প্রবণ করিরা ক্রোধে ও ক্ষোভে প্রিরমাণ হইরা প্রাতার মুখাবলোকন করিবেন না বলিরা পত্র লেখেন।

বলরাম প্রাতার প্রতি অসম্ভই হুইরা কিছু দিন বাটাতে আগমন করেন নাই। তিনি অতি মাতৃতক ছিলেন। কনিষ্ঠের প্রতি কৃষ্ণ হুইরা বাটাতে আগমন না করার মাতৃবিরোগের সমর জননীর চরণ দর্শন করিতে না পারিরা তুঃখিত হুইরাছিলেন। মাতৃপ্রাক্ত অতি সমারোহের সহিত করিতে হুইবে এবং সেই কার্য্যের বার সংসার হুইতে বা প্রাতা কর্তৃক স্থচারুরূপে নির্মাহ হুওরা অসম্ভব মনে করিরা তাহাকে পত্র লেখেন বে, তুমি সামান্ত জমিনারের কর্ম্ম কর, একটা বুহুৎ দানসাগর প্রাদ্ধের বার নির্মাহ করা তোমার সাধ্য হুইবে না। অতএব সামান্ত মত একটা প্রাদ্ধের আরোজন করিবে। আমি বাটাতে উপাহিত হুইরা যথাকালে দানসাগরের আরোজন করিব।

রাক্সা রামজীবন এই পত্রের বিষয় অবগত হইরাছিলেন। তোঁহার দেওয়ান মাতৃপ্রাদে দানসাগরের আয়োজনে অসমর্থ এ কথা তাঁহার হৃদরে লেকের ক্সায় বিশ্ব হয়। দেওয়ানের কার্যাদকতায় জমিদারী ক্রমশঃ বৃদ্ধিত হইতেছে জানিয়া রামজীবন তাঁহার উপর যথেষ্ঠ প্রীত ছিলেন।

এখন তিনি আদেশ প্রচার করিলেন যে, নিরূপিত দিবলে দেওয়ানের মাতৃপ্রাদ্ধে দানসাগরব্যাপারের আয়োজন করিতে হইবে। রাজার অমাত্যগণ প্রাদ্ধের আয়োজনে প্রস্তুত্ হইবেন। অত্যক্ত কাল মধ্যেই বিবিষ্ণ সামগ্রীতে তাড়াশ-ভবন পূর্ণ হইয়াছিল।

বলরাম মাতৃপ্রাদ্ধের জন্ত এক লক্ষ টাকা বায় করার সংকর করিয়াছিলেন। তিনি একটা নীল বৃহ মাত্র ও নগদ অর্থ সঙ্গে করিয়া প্রাদ্ধের করেক দিবস পূর্ব্ধে বাটাতে উপনীত হরেন। তৎকালে রাজা রামজীবনের জমিদারীর প্রত্যেক গ্রাম হইতে প্রবাদিসহ বহুতর নৌকা তাড়াশে আসিয়াছিল এবং সমস্ত প্রবা রাখিবার স্থান সংকুলান না হওয়ার অধিকাংশ দ্রবা নৌকাতেই ছিল। বলরাম রার দানসাগরের প্রত্যুক্ত আরোজন দেখিরা প্রতাতকে বলিয়াছিলেন "দানসাগরের বিপুল আরোজন হইয়াছে। এ সমস্তই তোমার স্থান্ধ। অতাবের মধ্যে একটা নীলত্ব দেখিতেছি। বাকুপ্রাদ্ধে কেবল এই সামন্ত্রী সংগ্রহ করাই

বল্রাম রারের মাতৃস্রাভ তরীয় কনিট রামরাম কর্তৃক রাজা রামজীবনের সাহাব্যে অতি সমারোহের সহিত সম্পর হয়। বলরাম রার মাতৃতজ্ঞির নিম্নশি স্বরূপ জননীর স্বর্গস্থ্কামমার, লামসাগর প্রাছে বে লক্ষ টাকা বাঁর করা সংকর করিছাছিলেন, ঐ টাকা মাতৃতজ্ঞির স্থতিত্বাপনার্থ বার করাই উচিত মনে করেন। এই অর্থের হারা তিনি রসিক্রার্থিগ্রহপ্রতিষ্ঠা ও প্রাতন কুঞ্চনম নামক দীবী ধনম, গৃহরিশী ধনম, কোলমক্ষ নামক মন্দির নির্দ্ধাণ, কণিলেহরের মন্দির সংজ্ঞরণ এবং কাশা, গ্রাও বৃক্ষাবনধানে ছত্তস্থাপন করেন।

কশিলেখরের মন্দিরে পূর্বোভ্ত গ্লোকের নিয়ে এই লোকটা বিশ্বমান আছে---

"কালায়িতকেন্দ্মিতে শকাৰে বরং শিবজালয়মিটকাটৈয়া। বীৰ্ণং ক্ষ্টকোন্ধ্যতে শ্ব জক্যা তশ্বিন্ প্ৰবীণো বলরামদাসঃ ॥"

কাল, অগ্নি, তর্ক, ইন্দু শব্দ ছারা ১৬৩৬ শ্বাদ (১৭১৪ খু: আ:) উপলব্ধি হইডেছে। বলরাম রার মাত্রিরোগের পর নিজ্ঞ ভবনে রাসক রার নামক বিগ্রহ স্থাপন করেন। উক্ত বিগ্রহের পাদপল্লে বলরাম রারের নাম লিখিত আছে। বলরাম উক্ত বিগ্রহের জন্ত ত্রিতল দোলমঞ্চ নির্দ্ধাণ করেন। তাহাতে নিয়োক্ত শ্লোক আছে:—

"नात्करुक्तत्वरण्डक्लूमिएल व्यानावमुख्यम्। क्रिक्षात्र माने क्षिनवनत्रात्मा महाचात्म ॥"

১৬৪০ শকান্দে শ্রীরনিক রার বিএব্যের শ্রীমন্দির রামরাম রার কর্তৃক নিশ্মিত হর। শ্রীমন্দিরটা বিভল গৃহ। তাহাতে এইরপ লিখিত আছে:—

"রসবেদৰাতুকোণীমিতশাকে মহান্দনা।

🔊 हरकात्र मरमो 🖾 जवनद्रामा গৃহং ওভম্।"

রস, বেদ, ঋতু, কোণী, শক ধারা ১৬৪৬ শকাক (১৭২৪ খুটাক) হইতেছে। বলরাম রার পরগণে বড়বাকু হসেনশাহীর হিল্লা কমিদারী অর্জন করেন। মূলীদকুলির পর ফুলা বা বে রাজত্ব বন্দোবত করেন, ভাহার কাগল পত্র মধ্যে বলরামের পূত্র মধ্যাম ও ভাহার আতৃশুত্র হরিদেব প্রভৃতির নাম দৃষ্ট হর। ১১৪১ সালের পূর্কেই বলরাম রার ইহলোক পরিত্যাগ করেন।

রামরাম রার অতি পরোপকারী ছিলেন, জাঁচার বন্ধে এই প্রেলনের অনেক লোক ও কতিপর আস্ত্রীর অজন নবাব সরকারে বিষয় কর্ম্ম লাভ করেন। দেবসেবা, অভিবিসেবা, প্রভৃতি পূণা কার্য্যে জাঁচার অভিনয় আহা ছিল। এভদেশে তৎকালে ঐ সকল কার্য্যই একমাত্র সকল্পচান বলিয়া পরিপণিত ছুইত। বল্যাম রারের পরলোকপমনের কিছু দিন পরও

তদীর পুত্র এবং রামণেব ও রামরাম রারের পুত্রগণ একত্র ছিলেন, পরে পৃথক্ হইরাছিলেন। বলরামের বংশ বড় তরফ, রামণেবের বংশ মধ্যম তরফ ও রামরাম রারের বংশ ছোট তরফ নামে পরিচিত।

রামরাম রায়ের উদারতা ও জীক্ন বৃদ্ধি সম্বন্ধ বিবিধ প্রবাদ প্রচলিত আছে। তাঁহার লোক কন ভাল আহার করিত, কিন্তু নিজে কথনও ভাল আহারের কক্ত লোলুপ ছিলেন না। তিনি বে সমর রাজা রামজীবনের দেওরান, তৎকালে তাঁহার স্বগ্রামবাসী এক ব্যক্তি মূলী ছিলেন। তিনি রামরাম রারকে অপদস্থ করিবার কক্ত জনেক কাগজের মধ্যে একথানি তালুক দানপত্র সহি করিরা লয়েন। তিনি "বরাত আদমান" কথা লিখিরা দেন। রাজা রামজীবন মূনলীর নিকট দেওরানের দানের কথা ভনিরা তৎপ্রতি জুদ্ধ হরেন; কিন্তু পরে প্রকৃত অর্থ ক্রমর্থম করিয়া সংক্রার লাভ করেন।

রামরাম নাটোর জমিদারীর শৃষ্টি হইতে রাজা রামজীবনের প্রবোক্ষমনের পরও জতার কাল দেওয়ানী করেন। রাজা রামজান্ত বৌবনের প্রারম্ভে প্রাচীনদিগের সৎপরামর্শ জবহেলা ক্রায় ও রামরারের বার্জস্বশতঃ সেই বর্বে তিনি কর্ম্ম পরিত্যাগ করেন।

বলরামী, বৈশ্বৰ সম্প্রদায়ভেদ। বলরাম হাড়ি এই সম্প্রদায়ের প্রবর্তক, এই নিমিন্ত ইহা বলরামী নামে কথিত। নদীয়া জেলার অন্তর্গত মেহেরপুর গ্রামের মালো-পাড়ায় তাহার অস্ম হয়। তাহার পিতার নাম গোবিন্দ হাড়িও মাতার নাম গৌরমণি। ১২৫৭ সালের ৩০এ অগ্রহায়ণ অন্ত্রমান ৬৫ পরবাট বৎসর বয়াক্রমে তাহার মৃত্যু হয়।

বলরাম ঐ প্রামের মন্ত্রিক বাবৃদিগের বাটতে চৌকিলারি কশ্ম করিত। তাঁহাদের ভবনে জ্ঞানন্দাবহারী নামে এক বিগ্রহ জ্ঞাছে, একদা ঐ বিগ্রহের স্থালভার চুরি বাওয়াতে, বাবুরা বলরামকে কিছু শাসন করেন। তাহাতে সে বাটা পরিত্যাগ করিয়া গেঞ্চয়া বন্ধ পরিধানপুক্ষক, উদাসীন হইয়া যায় এবং এই সনাম-প্রাস্থ উপাসক-সম্পাদ্ধ প্রবর্তন করে।

বলরামের শিখ্যেরা ভাষ্যকে শ্রীরামচন্দ্রের অবতার বলিয়া বিধাস করিত। কিন্তু বলরাম বয়ং যে এরূপ অভিগ্রার প্রকাশ করিবাছিল, এনম বোধ ব্যু না। শুনিতে পাওরা বার, সে বয়ং প্রাই-বিভিপ্রেলর-কর্মা বলিয়া আভালে আপমাকে পরিচয় বিত। ভাষ্যার শিব্যেরা করে, "বলরাম বাচক' ছিলেম এবং সভা ব্যবহার করিকে উপরেশ বিভেষ।

বলরার বাক্য-চজুর ছিলেন এবং সংসারের বাবজীর ব্যাপারের নিযুচভাব ব্যাখ্যা করিজে পারিজেন; এই নিমিত্ত তিনি বাচক বলিয়া প্রানিছ। এক বিবস তাঁহার কোন কোন শিষ্য বিজ্ঞানা করিল, পৃথিবী কোথা হইতে হইল ? তিনি উত্তর করিলেন, 'ক্লয়' হইতে হইরাছে। দিবোরা বিজ্ঞানা করিল, 'ক্লয়' হইতে হইরাছে। দিবোরা বিজ্ঞানা করিল, 'ক্লয়' হইতে কিরপে হইরাছে ? তিনি পুনরার বিশেব করিয়া বিলেন, আদিকালে কিছুই ছিল না, আমি আপন শরীরের 'ক্লয়' করিয়া অর্থাৎ আপনার শরীর হইতে এই পৃথিবী স্পষ্ট করি। এই নিমিত্ত ইহার নাম কিতি। ক্লয়, ক্ষতি ও ক্লেত্র একই পদার্থ। লোকে আমাকে নীচ হাড়ি আতি বলিয়া আনে, কিছ তোমরা বে হাড়ি সচরাচর পেথিতে পাও, আমি লে হাড়ি নই। আমি ক্লডলার গড়নদার হাড়ি, অর্থাৎ বে ব্যক্তি গুল্কত করে তাহার নাম বেমন বরামী, সেইরপ আমি হাড়ের স্প্রীক বিরাছি বলিরা আমার নাম হাড়ি।"

এক দিন বলরম নদীতে লান করিতে গিরা দেখিল, কলেক জন ব্রাহ্মণ তথার পিতৃলোকের তর্পণ করিতেছেন। সেও উচাদের জার জল-তলী করিরা নদী-কূলে জল সেচন করিতে লাগিল। ইহা দেখিয়া একটা ব্রাহ্মণ তাহাকে জিজাসা করিলেন, "বলাই তুই ও কি করিতেছিন ? সে উত্তর করিল, আমি শাকের ক্ষেতে জল দিতেছি। ব্রাহ্মণ কহিলেন এখানে শাকের ক্ষেত কোথার? বলরাম উত্তর দিল, আপনারা যে পিতৃ-লোকের তর্পণ করিতেছেন, তাহারা এথানে কোথার ? যদি নদীর জল নদীতে নিক্ষেপ করিলে, পিতৃ-লোকেরা প্রাপ্ত হন, তবে নদী-কূলে জল সেচন করিলে শাকের ক্ষেতে জল না পাইবে কেন ?"

দোলের সমরে বলরাম শ্বরং দোলমঞ্চে আরোহণ করিয়া বসিত এবং শিষ্যেরা আবীর ও পুস্পাদি দিরা তাহার অর্চনা করিত।

এ সম্প্রদারী গোকের মধ্যে জাতিভেদ প্রচলিত নাই। ইহাদের অধিকাংশই গৃহস্থ; কেহ কেহ উদাসীন। উদাসীনেরা বিবাহ করে না, অথচ ইন্সির-দোবেও লিপ্ত নহে। গৃহত্তেরা আপন আপন কুলাচার মতে বিবাহ-সংকার সম্পন্ন করিরা থাকে।

ইহাদের সাম্প্রধায়িক এছ নাই; বিগ্রহ সেবাও রেখিতে পাওয়া বার না; গুক নাই বলিলেও হব। এক মানোনী নামে একটী শ্রীলোক ছিল, বলরাম ভাহাকে ভালবাসিত; এই কারণে লে কিছুদিন গুকুর কার্য্য করিয়াছিল।

বলরানী সম্প্রদার মুই শাখার বিভক্ত। এক শাখার লোকেরা বলরামের মৃত্যু-স্থানের উপর একখানি কুন্তু বর প্রস্তুত করিরা রাখিরাছে; সন্থ্যাকালে তথার প্রবীপ দের ও প্রথাম করে। ছিতীর শাখার লোকেরা, বলরামের এক্রপ আভ্যা নাই বিদ্যা ভাষার মৃত্যু-স্থানের কৌনক্রপ গৌরব করে না। বলরামের বিরচিত করেকটি বচন এখনে উদ্ভ হইল ; উহা পাঠ করিলে কৌড়ক জন্ম, এবং এ সম্মানমের মতও কিছু কিছু জানিতে পারা বার।

১—"রাঁছনি নেই ছো রাঁদ্দে কে রারা মেই তো খেলেম কি। রে রাঁদ্লে সেই খেলে এই ছনিরার তেকি।

বেরেও আছে বেক্টেও নাই, ভেমনি তুমি আর আমি রে । ভামরা বয়ে বঁচে বেঁচে বরি ।

৩ – ছিনি তাই, তুনি ঘাই, যা ভিনি ভাই তুনি, তিনি তুমি আমি ভাবি ভাবি অধোগামী।

৪ — যম বেটা ভাই ছয়ু (ঝা থিলি, ভাই লয়ে ওয় আবংটা থালি।
 ও কেবল থাচে, থাচে,

শুর পেটে কি কিছু থাকচে থাক্চে থাক্চে।
८— চকু মেলিলে সকল পাই, চকু মুদিলে কিছুই নাই।
দিনে কৃষ্টি রেভে লয়, নিয়য়য় ইয়াই য়য়।"

বলবং (ত্রি) বল অন্তার্থে মতুপ্মশু ব:। বলবুক, বলবিশিষ্ট। বলবক্তা (ত্রী) বলবতো ভাব: তল্টাপ্। অভিশন্ন বল, শক্তি, সামর্থ্য, বলবন্ধ।

বলবনূর, মাস্তাজ-প্রেসিডেন্সীর দক্ষিণ ও আর্কট জেলার বিষ-পুরম্ তালুকের অন্তর্গত একটি সমৃদ্দিশালী গণ্ডগ্রাম। পুঁদিটেরী হইতে আড়াই জোল দক্ষিণপশ্চিমে অবস্থিত। জক্ষা ১১° ৫৫ উ: এবং দ্রাঘি ৭৯° ৪৮ পু:। এখানে স্থানীর ক্ষবিজ্ঞাত দ্রব্যের ক্রমবিক্রয়ার্থ একটী বিস্তৃত হাট জাছে।

বলবুত্ৰন্ন (পুং) ধল ও বৃত্তনাশক ইন্দ্ৰ।

বলর্ত্তনিসূদন (পং) ৰস্ব্ত্তো নিস্পর্তি স্প স্থা। বস্ত্ত-হল্পাইক্স।

वल मृत्रम (११) वनाः समग्रिक सम-म्। हेता ।

বলসু (বলাসন), বোষাই প্রেসিডেলীর মহিকাছা বিচাণের বলসু (বলাসন), বোষাই প্রেসিডেলীর মহিকাছা বিচাণের অর্ভান্ত একটি কুল সামস্তরাজা। এখানকার সন্ধার ঠাকুর মানসিংহলী রাঠোরবংশীর রাজপুত। তাঁহাদের দত্তকগ্রহণের অধিকার নাই, কিন্দু রাজনিরনে জােঠ পুত্রই রাজভক্তের অধি-কারী হইরা থাকেন। রাজস্ব ৭২৪০, টাকা, ভল্পথা বার্ষিক ২৮০, টাকা কর স্বরূপ বড়োলার গাইকোরাজ্বক বিতে হর।

रामहरु (११) > वनमामक अञ्चरनामक हेन्छ । २ वनमा मकाती । वना छे (११) वरमम अहारक श्रामारण हेणि अहे प्राम् । मूनम, कृत । (१२)

বলারাতি (গুং) বলত পরাতি:। ইস্ত ।

বলাস্ক (পুং) বলেন হীক্ষতে ইতি বল-হা-সুন্, বৰা বালীণাঃ
বাহকঃ প্ৰোদ্যাদিবাৎ সাধুঃ। ১ কেব। কৰাপ্ৰদাৰে সক্তিত
সপ্তবেৰের একতম। ২ মুক্তক। (ক্ষমান) ও পর্বত।
৪ লৈত্যবিশেষ। ধনাগবিশেষ। দর্শতেক। (ক্ষিমী) এই সর্প দর্শীকর সর্শলাজীর। "বলাহক্সপতি ক্ষীকরাণামত্র্পতঃ"।
স্থাত কল্লা" ৪ অ")

৬ রমাগর্জোত্তব ক্ষিদেবের প্ত ৷ (ক্ষিপু • ০১ শ্ম)

अङ्गरकत्र त्ररथत्र व्यवस्थितः।

"ভদ্দনত পভাদন্যঃ সার্থিশ্যাত দারুকঃ।

कृतका टेनराञ्चतीरमध्यून्यवनाष्ट्याः ॥^५ (जिका^०)

৮ জর্মধের ব্রন্থবিশেব। (ভারত ৩/২৫৪/১২)

৯ নদবিশেষ, এই সদ লকাসমূত্রগাসী ৷

"बनाहकण वावकण्ठरात्ना देगमाक अय ह ।

বিনিষিটা অভিনিশং নিময়া সম্পাক্ষিং ॥" (মংজপু° ১২০।৭২)

৮ কুন্দীপত্ব পৰ্কডবিশেষ। (মংস্তপু ১২১।৫৫)

৯ কাদবর্গক রাজা জারাশীড়ের খনামব্যাক বনাধিকারী। রাজা ভারাশীড় চক্রাশীড়কে আনিবার জন্ত বলাহককে প্রেরণ করিয়াছিলেন। (কাদবরী)

> বক্বিশেষ। [প্ৰৰ্ণো বলাছক ক্ষেথ।]

বলি (প্র:) প্রোপহার। ২ দেবসমন্দে হলিয়ণে নিহত্তব্য পত।
৩ নাভির উপরে হেহোইকোগে রমনীগণের লোলমাংসে হে থার পড়ে। ৪ রাজকর। ৫ অহ্বর্যের, প্রকালের পৌত্র। ৬ শ্রেণী।
৭ অর্ণোরোগে নির্গত মাংসপিগু। [পবর্গে বলি দেখ।]

বলিবাক (প্ং) ভারতবর্ণিত শ্ববিষয়---বলি ও বক।
(ভারত ২।৪ অ°)

বলিক্রিয়া (ত্রী) > উপহার দান। ২ কোন ব্যক্তির গাতে রেণাঙণ।

বলিত (ত্রি) ১ বেটিত। ২ গাঁলযুক্ত। বলিন (ত্রি) ১ গাঁলযুক্ত কুকিত গাত্রমালে। ২ বলশানী।

विल्लिस (वि.) विल-मक्सर्व (कृत्मिवनिवस्प्रेक्षः। श्री हाराज्ञः) वित्रकुक, विगविनिष्ठे।

"नधाना विगण्डः मधार" (जा ।।>+)

विमिन्थ (११) वामन।

বলির (জি) ৰলভে সংযূগেতি চকুছারাবিতি খণ ব্যয়সকাং কিরচ্। কেক্য বা টেরা চকুবিশিষ্ট।

বলিবও (পুং) রাজপ্রকে।

বৃদ্যিশ (ক্লী) বলিনা গছবদ্যব্যাছাগহারেণ শুডি হিনন্তি মংকা-নিডি শো-ক। বড়িশ। (শবর্মা)

विमिनान (ग्रः) स्वतः (देवसके अ)०)

বলিশি (রী) বলিনা আহারোপহারেণ মৎভাগীন্ ভড়ি, বিনাণর-

ুঠীতি ুশো ৰাহলকাৎ কি। বজিল। (পৰৱলা॰) বলিশি-डीव्। बनिषी, विक्रिण्, वक्रमी।

বলী (রী) ১ এপ্রদীসমূহ। অঞ্জনচন্দনাদি বারা অন্দে বে রেখা (बखन्ना हन्न । ७ वनिमन्त्रार्थ ।

বল্লীক (क्री) বদতি সংবৃণোডীতি বল সম্বরণে (অণীকাদরণ্ড। উণ্ ৪।২৫) ইতি कीकन् । > পটগঞান্ত, চলিত ছাটি।

"বঞ্চামদেবত নম্বলীকাঃ সমং বধ্তিবলভীযু বানঃ।"

(মাহ ৩৫০)

বলীদপুর, যুক্তপ্রদেশের ভাজমগড় জেলার অন্তর্গত একটি নগর। ভোঁসনদী তীরে আক্ষণড় হইতে । ক্রোপ দূরে অবস্থিত। खका १ २ ७ ० ० ४ के विद्यासी कि एक १ ४ कि प्राप्त का नगति क्ष हरेरमथ दान नमुद्रिमानी। नश्चारह क्रेवांत हाँवे वरन। ्पर शां कि कि वेव की शांतकांक नाना अरवात शांमानी रहेंगा থাকে। এখানে প্রায় ২৫০ উাত লইরা, তাতিরা বয়নকার্য্য ठानाहेत्रा शास्त्र । स्त्रोमन्यूत्रवानी यथम्म स्नथ भूरमतिस्तत वश्म-ধরণণ এখানকার প্রধান জমিদার। উক্ত ব্যক্তি খুটীয় ১৫শ লভান্দের শেষভাগে জৌনপুরের শেষ রাজা স্থলতানের নিকট হুইতে ঐ জমি জারণীর স্বরূপ পাইরাছিলেন।

वलीय (बि) जनकाव्का।

विलीमुक्ष (बि) बनीयुक्तः मूक्षः यष्टः। वानत्रः। (अमत्)

वलीवाक (११) विशिष्ठमः [विनयोक रमधः]

বলুক (क्री) বলতে ইতি ৰল সংবরণে (বলেক্লক:। উণ্-৪।৪•) ইভি উক। ১ পশ্মমূল। (পুং) ২ পক্ষিবিশেষ (উচ্ছাল) বল্ল, ভাষণ। চুরাদি পরবৈত সক সেট্। লট্ বরুরতি। मूड् व्यवस्य ।

বল্লু (ত্রি) বলতে বল সংবরণে (শৃকবদোকা:। উণ্ ৩।৪২) ইতি কপ্ৰতান্নান্তো নিপাতিত**্ব। বৰুণ** ।

"গুণবৃৎ স্কৃতরোপিডভিন্নঃ পদ্মিণামে হি দিলীপবংশবাঃ। भवनीः जक्ष्यकवानमाः अवजाः সংविद्या आपिएत ॥"

(রঘু ৮।১১) ২ শব । (পুং) ৩ পট্টকা লোও । (রাজনি ০)

वद्भक्ष (गूः) ब्रांडिविटनव । (विकृत्)

বক্ষতক্ত (পুং) ৰৰপ্ৰধানস্তমন্ত্ৰিতি কৰ্মধানন্তঃ। পুগর্ক।

বস্তুক্তম (পুং) বছঞ্জধানো ক্রমঃ। ভূচ্চবৃক্ষঃ (রাজনি•) दक्कल (जी) वनटड मःतृत्वाडीडि वन-वाहनकार कनन्। पर्,

চলিত দারচিনি। (পুং क्री) ২ বৃক্তবন্, চলিত বাৰুদ্। পর্যায়---বক্, বৰ্ম, স্বচ্, চোচ, চোলক,শৰ্ম, ছৰল,ছল্লি,চোডক। (শব্দর°)

"ভৌ ডু পূৰ্বেণ কালেন ডপোৰুপেন বছৰড়:।

কুৎপিপাসাপরিভাতে। **কটাব্রুস্থারিপৌ** ॥"

(ভারত ১৷১৫৬/২) |

অভি প্রাচীনকাশ হইডে বন্ধশারিধানপ্রথা প্রচলিভ ছিল ৷ রামারণীর বুগে আমরা রামচক্রকে সীতা ও লক্ষণসহ (রামা° ১/১): এবং মহাভারতীর বৃগে পঞ্চপাওবকে জটাধারী ও অজিনবক্তন-পরিধারী হইরা মাডা কুত্তীদেবীর সহিত (মহাভারত ১৷১৫৭৷১-২) বনাস্তরভ্রমণকার্য্যে নিযুক্ত দেখিতে পাই। সাধু-সন্ন্যাসিগণ সেই পূর্ব্বতনকালে হত্ত্বনির্দ্বিতবাসের পরিবর্ত্তে ব্রুলনির্দ্বিত কৌপীন ব্যবহার করিভেন। প্রাচীন নাটকাদি গ্রন্থে ভাহার ভূরি ভূরি প্রমাণ পাওরা বার। বস্ততঃ এই পরিধের "বন্ধন" পর্ণাচ্ছাদনের মূল (leaf-wearing) স্থার বৃক্ষত্বক্ রূপেই ব্যক্তত হইত অথবা বৃক্তকের **অভ।ত্তরভাগত্ব 'নাড়'** বা স্কু ভদ্তময় আঁটিসের স্ক্রতম স্ক্র ধারা বস্ত্ররূপে বোনা হইত, তাহার কোন প্রমাণ পাওরা যার না।

বর্ত্তমান সমরে আমরা দেখিতে পাই যে, বৃক্ষত্বকের এই কোষময় নাড় (Cellular tissue) ভাঙ্গিয়া ক্ষু ক্ষু তন্ত্ (fibrous material) প্রস্তুত করা হর, পরে তাহা হইতেই স্থত্ত বা মাছ ধরিবার 'কড়' (Cordage) এবং গালিচা, জাজিম প্রভৃতি বোনা হইতেছে। ব্রহ্মদেশে এই গুকৃতত্ত "ষ" নামে পরিচিত। ইংরাজীতে ইহাকে bast বলে। ক্র্যদেশজাত Linden শ্রেণীর বৃক্ষোন্তব স্বকৃতন্ত স্বারা বিনির্মিত বন্ধলবাস যুরোপের মধ্যে সর্কোৎকৃষ্ট। এডন্তির Tilia Europea নামে আর এক প্রকার স্বতম্ভ শ্রেণীর বৃক্ষ দেখা যায়। তাহারও ছালের আঁইনে মেজে পাতিবার গালিচা ও উৎকৃষ্ট জুতার কাপড় (কাব্দিসের স্থার) প্রস্তুত হইরা থাকে।

ভারতবর্ষে এবং পূর্বভারতীয় দীপপুঞ্চে Grewin, hibiscus ও Mulberry শ্রেণীর বৃক্ষত্বক্ হইতে উৎকৃষ্ট তন্ত্র পাওয়া যায়। তুথ ফলের গাছ হইতে মুগা নামে একপ্রকার ত্বক্জ তম্ভ উৎপন্ন হয়। উহা রেশম অপেকা দৃঢ় এবং বছকালছানী। মংক ধরিবার জন্ত বড়শি ঐ ক্তে গাঁপা হইরা থাকে। আরা-कान (मर्गत (५७)-वम्-व, भ-५-रबो = व, व-क्रा, ८०)९रमोळ् व, ব-নী ও এগ্ৰোৎ-২ নামক বৃক্ষ হইতে প্ৰচুৱ বছলতত্ত্ব পাওয়া গিরা থাকে। আকারাব ও ব্রহ্মবিভাগে হেন্-ক্যো-ব, দম্-ব, মনোৎ-ৰ, ৰাঞীলু-ৰ, ৰ-গৌৰ প্ৰভৃতি নানা ৰাতীয় বৃক্ষ হইতে **লাল প্রেকৃতি প্রান্তত হয়। ঐ বর্ষল তন্ধ প্রব্যের ই**ডর বিলেবে नाशांत्रनंखः ১५० निका हरेटल ०१० होका मन नत्र हिः विक्रम **ब्हेन्ना शांद्य** ।

আকারাবের ওয়াল-বৌধ-ব বৃক্তের ছক্ তস্কতে স্নৃচ্ জাল ও बाहाब दौथा काहि अचल हत । हेहाउहै চनिल बाबात हत তা॰ হিঃ যণ। মালাকা বীপের মাম্গাছের (Melaleuca viridiflors) ও তালী ছালের (Artocarpus) সূত্র বারা সহজে উৎক্ট মাছধরা জাল প্রস্তুত হইয়া থাকে। শিলাপুরের তালী তারালের ডক্ততে এবং খ্রামদেশের বৃক্তত্বতে টোন প্রতা(Twine) বুনা হয়।

মণন-প্রাম্বীপে এবং কেদা নামক স্থানে সেমল্পজাতি কর্ত্বক বৃক্ষাক্তন্ত হারা এক প্রকার বহলবাদ প্রস্তেত্ত্ত্বর থাকে। দিলেবিদ্ বীপের (কাইলি) বিভাগ বিলেবে একপ্রকার তুপ গাছের (mulberry paper) ছালে বে হত্ত্র প্রস্তুত্ত্বর, ভাগাও "বহুলবাদ" বলিয়া পরিগণিত। ১৮৫৭ গুপ্তাব্দের মাস্ত্রাজ প্রদর্শনীতে মিঃ জাফ্রি Eriodendron anfractuo-sum নামক বৃক্ষের জক্ হইতে হত্ত্র বাহিব করিয়া ভাহার দৃঢ়ভা ও বস্ত্রব্যনোপ্যোগিতা সাধারণের নরনগোচর করাইয়াছিলেন।

বর্তমান সমধে ছাল্টা কাপড় নামে এক প্রকার রেশমী স্থানর কাপড় প্রস্তুত হইতেছে, উহা সম্পূর্ণরূপে বৃক্ষজ্প তন্তু হইতে উৎপন্ন। বেনারসদিক নামে যে মোটা গাত্রবন্ধ চলিত আছে, তাহা Rhea fibre হইতে প্রস্তুত,ইহাতে সিকের চাদরের স্থার পাতলা ও শীতকালোপধোণী মোটা গাত্রবন্ধ এবং কোট-প্রস্তুতি প্রস্তুত হইমা থাকে।

পরিধের তির এই বকল হইতে নানারূপ ঔবধ এবং চামড়া পরিছার কবিবার জন্ম এক প্রকার কম প্রস্তুত হইরা থাকে। সিন্কোনা (Cinchona) বৃক্ষের ছালে কুইনাইনের স্থায় তিক্ত এবং তদদ্ শুণবিশিষ্ট ঔবধ প্রস্তুত হয়। বাকসছাল, নিমছাল, জামছাল,বঙ্গুলাল প্রভৃতি এক একটা রোগে বিশেব উপকারী। আয়ুর্কোনোক্ত ভৈষজ্যতক্ষে এতদ্কির আরও অসংখ্য প্রকার গাছের ছালের রম ঔবধ বা অমুপানরূপে বাবহারের বিধি আছে। Oaks, Rhus, Eucalyptus ও বাবলা (Acacia Arabica) প্রভৃতি বৃক্ষপ্রেণীর ত্বক চামড়া পরিছার করণের (tanning) বিশেষ উপযোগী। Acacia leucuphlosa বা সক্ষেত্র করে ছাল আরক চোরাই কার্য্যে প্রচুর বাবহৃত হয়। এই Acacia প্রেণীভৃক্ত অস্ট্রেলিয়ার Wattle বৃক্ষ-সমূহের ছালও চামড়াপরিছার কার্য্যে বহুলপরিমাণে ব্যবহৃত ইতেছে। একপ্রকার ওক্গাছের ছাল ছিপি (Cork) রূপে বাজারে বিক্রীত হইতেছে।

ভূক্ষণত্র নামে বে আর এক প্রকার হন্দ্র স্কন্ধ আঁদ দেখা বার, তাহাও বন্ধল মধ্যে পরিগণিত। উহাতে পাপ-গ্রহের অপ্রভদৃষ্টিদুরীকরণার্থ গ্রবকবচাদি লিখিরা আলে ধারণ করা হইরা থাকে। প্রাচীন শাত্রগ্রন্থাণিও এই ভূক্ষণত্রে লিখিত ছইত। এখন আর উহার বিশেষ প্রচলন নাই। পাট, শণ প্রভৃতিও বন্ধন্ত্র তন্ত্রমধ্যে গণা হইতে পারে। বঙ্কলক্ষেত্র (পুং) পৰিত্র হানভেদ। রন্ধাওপুরাণ ও অধ্যাপ্ত রামারণের অন্তর্গত ৰভলন্দ্রে মাহান্দ্রো ইহার বিভৃত বিবরণ আছে।

वस्क्रलवर (बि) वदम अच्छार्थ मङ्ग् मछ वः। वदगरिनिष्टे, वदमधाती।

বঙ্গুলসন্থিত (তি) বৰণার্ভ।

বহুলা (বী) বছল-টাপ্। > শিথাৰছা। ২ গুরুপাযাগভেদ, শাদা পাথরকুচি। (রাজনি•) ও তেজোবলা, চলিত তেজোবল। বহুলান্ (পুং) > খেতলোএবৃন্ধ। (বৈভকনি•) (বি) ২ বছলবিশিষ্ট, বছলধারী।

বহুদোপ্ত (গ্ৰং) বৰপ্ৰধানো লোৱা: । পট্টকা লোৱা: বহুদ্বং (গ্ৰং) বৰং শৰোহত্তাতেতি বৰ-মতুণ্ মঞ্চ বঃ। ১ মংখ্য। (ব্ৰিকা•) (ব্ৰি) ২ বৰযুক্ত।

বল্ক্ষ, মধ্যভারতের অন্তর্গত একটা ক্ষুদ্র হল।
বল্কান, কাম্পান সাগরোপক্লের পূর্বদিক্ত হইটা গণ্ড
শৈল্মালা। সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে প্রোয় ও হাজার দিট্ উচ্চ।
অক্ষা ৩৯°৩° উ: এবং দ্রাঘি• ৫৪°৩° পুঃ। এবানে নানাপ্রকার ধনিক মণিরত্ব পাওয়া যায়।

বৃদ্ধিল (গুং) বছোংখাতীতি বছ-ইতচ্। কণ্টক। (শব্দপ্প।) বৃদ্ধু তে (ক্লী) বছল। (শব্দে ।)

বল্থ (বাল্থ), আফ্ গান তুকী ছানের অন্তর্গত একটা ছাপ্রাচীন নগর। অক্ষা ৩৬ ৪৮ উত্তরে কাবুল রাজধানী হইতে ৩৫৭ মাইল উত্তরপশ্চিমে, কুন্দুজ হইতে ১২০ মাইল পশ্চিমে এবং হিরাট হইতে ৩৭০ মাইল উত্তরপূর্ব্বে অবস্থিত। এই জনপদের উত্তরপূর্ব্বে বংকুনদী, পূর্ব্বে কুন্দুজ, পশ্চিমে ধোরাসান এবং দক্ষিণপশ্চিমাংলে হাজারা ও মৈমুনার পর্বাতমালা।

রামারণাদি প্রাচীন সংস্কৃত গ্রন্থে বাহলীক নামে এই স্থবিস্কৃত জনপদের উল্লেখ আছে। তৎকালে আর্য্য হিন্দৃগণের সহিত বাহলীকবাসীদিগের বে ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ ছিল, তাহা ভারতবৃদ্ধ পাঠ করিলে বেশ বৃদ্ধা বার। পরবর্জিকালে এই জনপদ হইতেই ভারতে শকাভূদের ঘটিরাছিল।

[বাছনীক ও শকশনে বিষ্ণুত বিবরণ দ্রেইবা ।]
এই জনপদের দক্ষিপপূর্কাংশ শীতপ্রধান ও পর্কতমর এবং
উত্তরপশ্চিমাংশ বাস্কাপূর্ণ হওয়ার অপেকারত উষ্ণপ্রধান ও
সমতল । এখানে প্রীন্মের সমর অতার গরম বোধ হইয়া থাকে।
এখানে উজবেক, আক্পান, মোকল, তুর্ক ও তাজক জাতির
বাস আছে, কিন্তু গোকসংখ্যা অভিলর অয় । কৃতকগুলি
লোক কুল্ল কুল্ল প্রানে শ্রেণীবন্ধ হইয়া বাস করে, আবার কৃতকগুলি লোক গ্রাদি পণ্ড একস্থান হইতে অক্সন্থানে চলাইয়া গইয়া

ঁ বেড়ার ও সেই সঙ্গে আগনাদেরও বাসভূমির পরিবর্তন করির।

থাকে
ভব্বেক লাভি স্তুলচিত্ত, সাধুপ্রকৃতিক এবং দরাসু।
ভাঞেৎ বা ভালকগণ মদ্যপ ও পাপরত, ছর্ম্মর্ব, কঠিন জ্বদর
এবং নষ্টাচারী।

বর্তমান বা নৃতন বল্থ্ নগরে ১০ হাজার আফ্গান,

ৰ হাজার কপ্চক্, কতকগুলি উজবেক, হিন্দু ও দ্বিহণীর বাস
আছে। নৃতন নগর তত দুর শ্রীসম্পন্ন নহে। এই নগরাংশের
অপুরে ২০ মাইল পরিধিবিশিষ্ট স্থ্রাচীন বাহলীক রাজধানীর
ধ্বংসাবশেষ পৃষ্টিগোচর হয়। ইহারই বহির্ভাগে প্রস্তুত্তবাস্থসন্ধিংস্থ মূরক্রফ্ট ও শুর্থবীর সমাধিক্তক্ত বিভ্যমান আছে।
পূর্বেই উল্লেখ করিয়াছি বে, রামারণীয় ও মহাভারতীর যুগে
এই জনপদ বিশেব সমৃদ্ধ ছিল। গুদ্ধ হিন্দুর নিকট নহে, পশ্চিম
এসিয়াপগুবাসীর নিকটেও এই স্থানের যথেষ্ট গৌরব ছিল।
গুলারা এই রাজধানীকে আস্-উল্-বালাদ বা নগর্মাতা বলিয়া
উল্লেখ করিত। পারভ্যবাসীরা ইহাকে প্রাচীন ধর্ম্মের কেন্দ্রস্থান ও জ্ঞানভাগার বলিয়া জানিত। প্রবাদ, পারভ্যাসী
কাইরংম্ক্র এই নগর স্থাপন করেন এবং প্রসিদ্ধ দার্শনিক ও
ধর্মপ্রাছিলেন।

মাকিদনবীর আলেকজানদার এই স্থান অধিকারপূর্বক বক্তিয়া রাজাভ্ক করেন। এক্ষণে এই নগর হানীয় লৈল-শ্রেণী হইতে তিন ক্রোন দূরে সমতলক্ষেত্রোপরি নির্দিত। এখানকার স্বাস্থ্য তত ভাল নহে। নগরে জল সরবরাহের জন্ম নদীতট হইতে জলনালী (aqueducts) চালিত আছে।

এক সময়ে ছর্জ্ব বিজ্ঞিরারাজগণ সেনাদল নইরা রণক্ষেত্রে বৃদ্ধকৌশলের বিশেষ পরিচয় দিয়া গিরাছেন। বাল্ধ্রাজ ১ম অস্কেশ প্রকাবংশীর ছিলেন। ছোরেণীবাসী মোজেস্ জীহার বীর্থের পরিচর দিয়াছেন, মতাক্তরে অস্কেশ সোগ্দ-জনপ্লাধীশ্বর বলিরা ক্ষিতে।

চেলিস্ থার সমন্ব পর্যান্ত বাল্থ নগরী শীর সৌন্দর্যা সমৃদ্ধিতে এসিরার অপর সকল নগর হইতে শ্রেষ্ঠ স্থান অধিকার করিরাছিল। তৈমূর রাজ্যবিজয়বাসনার শীর বিভূত মোগলবাহিনী লইরা সমন্ব সমন্ত আসিরা এই নগর ভূমিসাং করিরা থান। বিখ্যাত পরিব্রান্ধক মার্কোণোলে এই স্থানের প্রাচীন সমৃদ্ধির কভক্মিদর্শন প্রত্যক্ষ করিয়া গিরাছিলেন। ১৭৩৯ খুটান্দে পারক্তপতি নাদিরশা বল্ধ ও কুশুক্ত অধিকার করেন। তাঁহার মৃত্যুর পর এই স্থান গ্রাণাবংশের অধিকারে আইসে। ১৮২০ খুটান্দে কুন্তুরপতি শাহ মুরাদ শাবীনতা অবলবন করিলে এই স্থান আফগান-শাসন হইতে বিচ্যুত হয়। তৎপরে ইহা বোখারার

অধিকারভূক্ত হইরাছিল; পরে পুনরার আন্ধ্যানস্থানের সীমা-ভূক্ত হইরা পড়িরাছে।

বন্ধা, গতি, ভাগি পরত্বে অক সেট। লট্ বল্গতি। লুঙ্ অব্ল্গীৎ। ভট্মার ও হুর্গাদাস এই ধাতুর অর্থ মৃ্ত গতি বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন।

বন্ধন (ক্লী) বন্ধ-সূট্। > প্লুডগমন। ২ বছজাবণ।
বন্ধা (ব্লী) বন্গ্যতেহনর্থেডি বন্গ-করণে বঞ্, টাণ্। দণ্ডানিকা,
চলিড লাগাম্। পর্যার—অবক্ষেপণী, রশ্মি, কুশা (হেম)

"বল্গন্মধ্যে×খবারা**ণাং নৃত্যতে বাগ্রবাজিনা**।

বল্গাকেনোদ্বহল্লথ শিক্ষক বামপাণিনা ॥"(রাজতর • ৫।৩৪৭) বঙ্গিত (ক্লী) বল-ভাবে ক্ত। অধ্যের বিশেষ গমন, অধ্যের গতি-ভেদ, বেগে বিক্ষিপ্রোপরিচরণ। ২ প্লুডগমন।

"অনিৰোড়িতকাৰ্য্যন্ত বাগ্জালং বাগ্মিনো বৃথা। নিমিন্তাদপরাক্ষেবোধ প্লিক্সেব বল্গিতম্॥" (শিক্সপালবধ ২।২৭) ৩ বছভাবণ।

বল্প (পুং) বলতে ইতি বল প্রাণনে বল-উ, (বলেও ক্চ। উণ্ ১৷২০) ধাতুর উত্তর গুণাগম। ১ ছাগ। (তি) ২ স্থলর। (মেদিনী)

"তম্বনা যুগপছন্মিষিতেন তাবৎ,

সন্তঃ পরস্পরতুলামধিরোহতাং ছে।" (রঘু ৫)৬৮)

বস্তুক (ঐী) বন্ধ সংজ্ঞায়াং স্বার্থে বা কন্। ১ চন্দন । ২ বিপিন । ৩ পণ। (ত্রি) ৪ ক্ষচির। (জ্ঞান্তর) ক্ষচিরার্থক বন্ধক শব্দের ব বর্গীয়।

বস্তুজ (মি) ২ বন্ধদাত। ২ ছাগ। ব্রিরাং টাপ্।

বন্ধুজ্জে (ত্রি) ১ প্রশার জন্মাবিশিষ্ট। ২ বিশ্বামিত্রের পুত্রভেদ।

বন্ধপত্র (গং) বন্ধ মনোজ্ঞং পত্রং বন্ধ । বনমূলগ। (শক্চ°) বন্ধপোদকী (ত্রী) লতাভেদ (Amaranthus polygamus) বন্ধলা (গং) উৰাম্বী খেঁকশিৱাল।

বজ্বলা (ত্রী) বন্ধ লাভাতি লা-ক-টাপ্। ১ বাকুটী। ২ পক্ষি-বিশেষ। এই অর্থে ব্যবহৃত বন্ধ লন্দের পর্যায়—চক্রবিষ্ঠা, দিবাদা, নিশাচরী, বৈরিণী, দিবাখাপা, মাংসেটা, মাতৃহারিণী। বজ্বলিকা (ত্রী) বন্ধ সংজ্ঞারাং কন্, টাপি অত ইবৃঞ্চ। তৈল-পারিকা। আরম্বলা, তেলাপোকা।

"বৰ্ত্তলিকা মুখবিদ্ঠা পরোকী তৈলপারিকা।' (ছেম")

"ততো বন্ধনিকাতন্তং দৃষ্ট্ৰা পটমদৰ্শন্নং।"(কথাসরিংসা° ee।৭৯) বন্ধনৌ (ত্রী) নাত্রিচর পশ্চিবিশেব।

বৃদ্ধদোম, এক্ষন আচীন প্রহক্রা। গোভিনগৃহস্কভাষ্যে ইহার উল্লেখ আছে। বল্ভ, ভক্প। ভাদি, আগ্রনেপদী, সক° সেট্। লট্ বল্ভতে। লিট্ববল্ভে। লুট্বলিভতা। "বল্ভতে আরং লোকঃ"। (হুর্গাদাস)

বল্ভন (ক্নী) বণ্ড ভকণে ভাবে লাট্। ভকণ। (হেমচন্দ্র)
বিল্মিক (পুংক্নী) বলীক। (শন্তর্মাণ)
বিল্মিক (পুংক্নী) বলীক। (অমুরটীকা ভরত)
বল্মীক (পুংক্নী) বলতে ইতি বল সংবরণে (অলীকাদরশ্র।
উল্ ৪।২৫)মুমাগম: বীকনাস্তো নিপাতঃ। (উজ্জ্বদন্ত) > উরিকাকৃত মৃদ্ভিকাত্প। ইহার পর্যায়,—বামল্র, নাকু, বলিক
বাল্মীক, বাল্মীকি, বাল্মিকি, পুগলক, শক্রম্মা, ক্লি,
শৈলক। (শন্তর্মাণ)

"বলীকাগ্রাৎ প্রভবতি ধন্ধংগগুমাগণ্ডলন্ত।"(মেলদ্ত প্: ১৫)
আমরা বাড়ীর দেওয়ালে, কড়িকাঠে অথবা ফার্চনির্মিত
আসবাব প্রভৃতিতে একপ্রকার পুতিকাকীট বা উইপোকা
(Termites) দেখিতে পাই। তাহারা দেয়ালে বা কাঠোপরি
মাটার ঢাক্নি করিয়া তন্মধ্য দিয়া যাতায়াত করে, আবার
কথন কথন কাঠথণ্ডের অভ্যন্তরে স্তৃত্ব কাটিয়া কাঠের বিশেষ
কতি করিয়া থাকে, কোন কাঠে একবার উই লাগিলে তাহার
আর উদ্ধারের উপায় নাই। আল্কাতরা, সাবান ও চুণ
সমভাগে উত্তাপযোগে মিশাইয়া কাঠের উপর মাথাইলে
উইপোকার আক্রমণ নিবারিত হয়। কথন কথন মাম ও
তারপিন্ গলাইয়া উই নাশ করা হইয়া থাকে। বৎসর বৎসর
বর্ষার পূর্ব্বে কাঠথণ্ডে ব্রহ্মদেশজাত মেটেভেল লাগাইলে আর
পোকা ধরে না।

ইক্লেত্রেও প্রচুর পরিমাণে উই থাকে। উহা ইক্ কাটিয়া
নই করিয়া দের। এই জন্ত ইক্লেত্র হইতে উই দ্বীকরণাথ
কতকগুলি উপার অবলম্বন করা হইয়া থাকে। হিরু
৮ ছটাক, সরিবা ৮ সের. পচা মাছ ৪ সের, অতিবিষামূলচুর্ণ
২ সের উপযুক্ত পরিমাণ জলে দিছ করিয়া কাথ প্রস্তুত করিবে।
সেই কাখ ক্লেত্রে ছড়াইয়া দিলে উই মরিয়া যায় বটে, কিন্তু
অতিবিষার প্রভাবে ইক্লুগাছ বিহুত হইয়া যায় এব: তাহ
থাজের অন্তুপথালী হইয়া পড়ে। ময়দা বা ছাতুর সহিত
সেঁকোবিষ মিলাইয়া শুড় মাথিবে, পরে সেই পিণ্ড লইয়া উইচিপির সক্ষ্পে রাখিয়া থিবে। উহা ভক্ষণে উইকুল নির্মান
হয়া বায়। বক্ষ্পৃশনির্যাস (Dammer oil) ১২ ও গাস্তীর
ক্লনির্যাস (Uncaria gambir) ৬ মাত্রার মিলাইয়া কাঠে
লাগাইলে উই লাগিতে পারে না। তুঁতে, সেঁকো চুর্ণের সহিত
নিলাইয়া কাঠে বসিলে, অথবা সেঁকো, মুসকরে, সাবান ও
সালিয়াটী একত্র ভাগে একণ্ডটাকাল গলাইয়া নামাইয়া রাথিলে,

পরে সেই জলে পুনরার ঠাওাজল দিরা ভারমার্জন ভরিবেণু উই মরিরা বার। [উই দেখ। বু

এই উই বা পুত্তিকাকীট (White Ant.) মাঠে, ক্ষেত্রে ও পল্লীর পথপার্ধে এক একটী মৃত্তিকান্ত্রপ পঠন করিল্লা ভন্মধ্যে বাস করে। উহাকে চলিত কথার উইপোতা বা উইটিগ্নি এবং সাধুভাবার বন্ধীক (Ant-hill) বলা হইলা থাকে।

ভারতবর্ষে বিশেষতঃ নিরবদের আন্তর্মপ্রানেশে, সিংহলবীপে, উন্তয়াশা অন্তরীপে ও সেণ্টহেলেনা বীপে বছ উইচিপি দেখিতে পাওরা যার। উহাদের সশৃক ও কোণাকার মৃদ্তপুণাকৃতি দেখিলে বতঃই মনে বিক্সরের উদ্রেক হর। কুলবিশেবে এইগুলি ২ হইতে ১৬১৭ ফিট পর্যান্ত উচ্চ হইতে দেখা গিরাছে।

পুলনা অথবা গোরালনক্ষ যাইবার রেলপথের ধারে ধারে এবং অদৃরত্ব ক্ষেত্রমধ্যেও ৪।৫ কূট অনেক বল্নীকন্তম্ভ দেখিতে পাওয়া বার। ঐ বল্নীককৃটাভাত্তরত্ব ক্ষীটগুলি বে পরিমাণে মৃতিকাত্তপ উচ্চ করে, সেই পরিমাণে তাহারা ভূগর্ভে গহুরর কাটিয়া উপরে মাটী উঠার এবং সেই মৃতিকাহারা তাহারা অতি স্ফাকরণে এবং বিশেব শিরচাতুর্যাের সহিত তদভাস্তরে আপনাদের আবশুক মত গৃহাদিখনন করিরা লয়; অর্থাৎ বিদি একটা বল্নীকের ভূপ্ঠোপরিত্ব কোণাকার গুণ ৭ কিটু উচ্চ হয়, ভাহা হইলে আনিতে হইবে বে, উইদিগের হারা মৃতিকাগতেও তদক্ররণ গর্ভ উৎথাত হইরা সেই মৃতিকা সাহাযাে ও তাহাদের অপুর্ব্ধ নির্ম্বাণকৌশলে একটা বল্নীক-গৃহ নির্মিত হইরাছে।

তথু তাহাই নহে,এই মূদাক্ষাদিত অদৃশ্য বাটিকামধ্যে তাহারা রাণীকীটের বাসার্থ একটা প্রবিশ্বত রাজপ্রকোঠ প্রস্তুত করিরাছে এবং তাহারা চতুস্পার্থে অসংখ্য ধারীপ্রকোঠ বা শিশুকীটগুলির বাসগৃহ আছে। এই বরগুলি খিলানকরা ছাদযুক্ত এবং থিলানকরা সহাদ সোপানশ্রেণীবারা পরস্পারে সংযুক্ত। এতজি একস্থান হইতে অঞ্চন্থানে যাইবার প্রস্পিথে, বারাখা, দালান, প্রবেশবার প্রস্তুতি স্বচাসক্রণে বিশ্বত আছে, উহাদের গঠন-নৈপুণা দেখিলে চমৎকৃত হইতে হর। নিরে আফ্রিকাশেশ-কাত একপ্রকার পুত্তিকার বিষরণ সম্বাতি হইল। উহারা সামরিকপুত্তিকা নামে খ্যাত।

আফ্রিকার সাময়িক পৃত্তিকাঞ্চলি বেরূপ ভাবে ব্যাহিক প্রস্তুত করে ভাষা উর্জাধোভাবে ছেদন করিলে দেখা বার বে, কি অপূর্ম গঠন-কৌশলে ভাষারা এই বাসহান নির্দাণ করিরাছে। বে সকল সামরিক পৃত্তিকা বর্ত্তীক প্রস্তুত করে, ভাষারের দারীরের দৈর্ঘ্য ১ এক বুরুলের চতুর্তাংশ অপেকাও নান, কিন্তু ভাষারের নির্দ্ধিত বাসগৃহ সচরাচর ৭৮ হাত উচ্চ হর। অনেক অনেক ব্যাহ্য ভাষারেও উন্নত হইরা থাকে।

উদ্লিখিত বন্ধীক সকল বেমন উন্নত, উহান্ত নিশ্মাণ-পরিপাটীও তদমূরণ। উহার অভাতক ভেদ করিয়া দেখিলে, সামরিক পুত্তিকাদিগের নিপুণতা ও বিচক্ষণতার স্থাপট প্রমাণ প্রত্যক করিয়া চমৎক্ষত হইতে হয়। তাহাদের সুন্দররূপ আহার বিহার সম্পাদনাৰ্থে বাসগৃহের বেরূপ শৃত্যুলা আবক্তক, তাহারা তাহা স্কুচারুরণে সম্পন্ন করিয়া থাকে। রাজ-প্রাসাদ, ভাগুরি-গৃহ, বিশু-শালা, পথ, সেতু, সোপান প্রভৃতি অভি পরিপাটী রূপে প্রস্তুত করে। প্রকোষ্ট সকল খিলান করা। এক প্রকোষ্ঠ ছইতে অন্ত প্রকোঠে গমন করিবার নিমিত স্থগম পথ প্রস্তুত शास्त्र । এक श्रातम इहेरल अस श्रातम अभग कतिएल इहेरल, বে বে স্থলে কুটিল পথ দিয়া অনেক ঘুরিয়া গমন করিতে হয়, তাহারা সেই সেই ছলে এক এক ধিলান করা সেতু নির্মাণ করিয়া গভায়াতের স্থবিধা করিয়া রাখে। এই রূপে ভাহারা আপুনাদের বাসবাটী স্কাক্সক্রন্তর করিয়া ভাহার মধ্যে স্থাৰে অৰ্ডিভি করে। উহা এমন স্থান্ত ও কঠিন যে, ৪।৫ জন মনুষ্য, উহার উপর দশুায়মান হইলেও, ভাঙ্গিয়া পড়ে না।

সামরিক পৃত্তিকাদিগের কার্য-প্রণালীও অতি হন্দর। ঐ প্রণালী এমত পরিপাটী বে, উহাকে এক উৎকৃষ্ট রাজ্যের ব্যবহাপ্রণালী বলিলেও বলা যার। ইহারা তিন শ্রেণিডে নিবিষ্ট, প্রমন্ত্রীবী পৃত্তিকা, সৈনিক পৃত্তিকা ও বিশিষ্ট পৃত্তিকা। শ্রমী পৃত্তিকারা গৃহ, পথ, দেতু প্রভৃতি প্রস্তুত করে। সৈনিক পৃত্তিকারা গৃহের রক্ষণাবেক্ষণ করে এবং প্রয়োজনামুদারে শক্রর সহিত যুদ্ধ করিয়া থাকে। তাহাদের শরীর শ্রমজীবী পৃত্তিকানিগের শরীর অপেক্ষায় প্রায় ১৫ গুণ বড়। আশ্রেণ্টার বিষয় এই যে, শ্রমী পৃত্তিকারা কথনও দৈনিক পৃত্তিকার কর্মে প্রত্ত হয় না এবং দৈনিক পৃত্তিকারাও কথন শ্রমী পৃত্তিকার কার্য্যে নিযুক্ত হয় না।

বিশিষ্ট পৃত্তিকারা না গৃহাদি নিশ্মাণ করে, না যুদ্ধ করিতেই প্রবৃত্ত হয়, তাহারা আপনার রক্ষণাবেশণ করিতেও সমর্থ নয়। কিন্তু তাহাদের কলেবর সর্ব্বাণেশা পরিণত ও উৎকৃষ্ট এবং অলে পালক উঠিয়া থাকে। তাহাদের দেহ, সৈনিক পৃত্তিকাদিগের ২ বিশুণ ও শ্রমজীবী পৃত্তিকাদিগের শরীবের ৩০ ত্রিশ গুণ। অভ অভ পৃত্তিকারা তাহাদিগকে সর্ব্বাপ্রধান র্যামাভ করে ও প্রধান পদে অধিক্রচ করিয়া রাখে। তাহারা ঐ পদে অভিবিক্ত হইবার পর করেশ সপ্তাহ মধ্যেই উজ্জীরমান হইয়া অল্পত্র গমন করে। কিন্তু উড়িবার কিন্তিৎকাল পরেই, পালক সকল বরিয়া পড়ে, তথন পক্ষী পভলাহি আসিয়া, তাহাদিগকে আহার করে। আইক্রণে প্রার সমুদ্ধির বিশিষ্ট পৃত্তিকা, নই

হইরা বার । বদি ২।৪ ছই চারিটা কোন ক্রমে রক্ষা পার, পুর্বোক্ত শ্রমী পুত্তিকারা, দেখিতে পাইলে, তাহাদিগকে গ্রহণ করিয়া রাজার ও রাজীর পদে বরণ করে এবং এক মৃত্তিকামর প্রকোঠ মধ্যে স্থাপন করিয়া, যত্ত্বপূর্বক পরিপালন করে। পরে যথন রাজীর সন্তান উৎপত্তির উপক্রম হয়, তথন এক কাঠমর প্রকোঠ প্রস্তুত করিতে প্রস্তুত্বর । রাজী, যে সমস্ত অপুর প্রস্তুত্বর, তাহা সম্বর গ্রহণ করিয়া, সেই প্রকোঠ স্থাপন করে।

ভারতে সাধারণতঃ সদ্ধার প্রাকাশে সপন্ম পুত্তিক। উড়িতে দেখা যার। উহাদিগকে বাদলা পোকা বলে। যথন তাহারা দলে দলে মেঘাকারে ভূগর্জস্থ নিবাস হইতে আকাশ মার্গে উঠিতে থাকে, তথন কাক, বাহুড় প্রভৃতি নানা জাতীয় পক্ষী তাহাদিগকে থাইতে আরম্ভ করে। ডানা ভাগিয়া যাহা মাটিতে পড়িরা যায়, তাহা পর দিন প্রাতে কাকের উদরস্থ হয়, কোথাও কোথায় নিহুষ্ট শ্রেণীর লোকে উহা সঞ্চয় করিয়া মতে ভাজিয়া থায়।

উল্লিখিত পুত্তিকা-মহিষী, গর্ভাবস্থায় যাদৃশ অবস্থান্তর ও রূপাস্তর প্রাপ্ত হয়, তাহা গুনিলে, বিষয়াপন্ন হইতে হয়। উহার বস্তি-দেশ ক্রমশঃ ক্ষীত হইয়া অবশিষ্ঠ সমুদায় অঙ্গ অপেকা ১৫০০ দেড় সহস্র অথবা ২০০০ চুই সহস্র গুণ স্থুল হইয়া উঠে। উহার শরীর স্বীয় স্বামীর শরীর অপেক্ষায় ১০০০ এক সহস্র গুণ ভারী হয় এবং শ্রমী পুত্তিকাদিগের শরীর অপেকা ২০৷৩০ সহস্র গুণ বিস্তৃত হইয়া পড়ে। এক জন পণ্ডিত, গণন। করিয়া দেধিয়াছিলেন, এক পুত্তিকামহিষী এই অবস্থায় ৬০ ষাট্ দত্তে, আশী হাঞ্চার অত প্রস্ব করিয়াছিল। প্রস্ব-কালে কতকগুলি শ্রমী পুত্তিকা তাহার নিকট নিযুক্ত থাকে; তাহার। ঐ সকল অও গ্রহণ করিয়। পূর্ব্বোক্ত কার্চময় প্রকোষ্ঠ মধ্যে স্থাপন করে। ঐ সমস্ত ডিম্ব ফুটিরা, যে সকল পুত্তিকা শাবক উৎপন্ন হয়, শ্রমী পুত্তিকারা তাহাদিগকে সম্যক্ প্রকারে লাগন পাগন করে। ভাহাদের রক্ষণাবেক্ষণার্থে যথন যে বিষয় আবশুক, তথন তাহা অবাধে সম্পাদন করিয়া থাকে। শাবকগণ এইরূপে লালিত ও পালিত হইয়া শক্তিসম্পন্ন ও শ্রমক্ষম হইলে, বন্মীক-রূপ সুরুষ্য রাজ্যের কার্য্য করিতে নিযুক্ত হয়।

পণ্ডিতের। প্রত্যক্ষ দেখিরাছেন, যদি কোন প্রকারে বর্মীকের কোন স্থান তয় করিরা দেওয়া বার, তাহা চইলে, তৎক্ষণাৎ > একটা দৈনিক প্রত্তা, নেই ভয় স্থানে আসিরা উপস্থিত হয়। অনতিবিলম্বে আর ২।০ হই তিনটা আগমন করে। তলনত্তর ভূরি ভূরি প্রতিকা বাহির হইতে ধাকে। এইয়ল বডক্ষণ ব্রীকের উপর আঘাত করা বার, তডক্ষণ

দৈনিক পুত্তিকা সকল বহিৰ্গত হয় এবং ইতন্ততঃ ধাবিত হইয়া এক প্রকার শব্দ করিতে থাকে, তাহারা আততায়ীকে আক্রমণ করে, দংশন করে ও দুরীভূত করিয়া দিবার নিমিত্ত সাধ্যমত চেষ্টা করে, কিন্তু বন্ধীকের উপর আঘাত করিতে নিরস্ত হইলে, ভাহারা ভৎক্ষণাৎ নিরন্ত হট্যা বল্মীকের মধ্যে প্রবেশ করে। অনস্তর সহত্র সহত্র প্রমী পুতিকা বাহির হইরা, ঐ ভয় স্থান পুনর্কার নির্মাণ করিতে প্রবৃত্ত হয়। আশ্চর্যোর বিষয় এট যে, লক লক পৃত্তিকা একত্র কর্ম করিতে থাকে, অথচ কেহ কাহারও কর্মে ব্যাঘাত জ্বনার না এবং এক নিমিষের নিমিত্তও নিজ কার্য্য করিতে নিবৃত্ত হয় না। এক একটা দৈনিক পুত্তিকা, এক এক দল শ্রমী পুত্তিকার সঙ্গে সঙ্গে থাকে, বোধ হর, ভাহারা অধাক্ষ বা প্রহরীর স্বরূপ হটয়া ভব্তাবধারণ করে। বিশেষতঃ একটা প্রতিকা ভগ্ন স্থানের অভি নিকটে রভার্মান থাকে, দে এক এক বার শব্দ করে, আর শ্রমী পুত্তিকারা তৎ-ক্ষণাৎ উক্তিঃম্বরে আর এক প্রকার শব্দ করিয়া, পূর্বাপেক্ষা দি গুণ ত্রাহিত হইয়া, কর্ম করিতে আরম্ভ করে।

সেনেগেল নামক স্থানের সমীপবত্তী কোন কোন স্থানে একত্র এত বল্গীক দেখিতে পাওয়া গায়, বোধ হয়, যেন সেই সেই স্থানে এক এক থান গ্রাম বিগয়া গিয়াচে।

সিংহল, স্থমাত্রা ও বোর্থিও দ্বীপ এবং ভারতের কোন কোন স্থানে Termes taprobanes নামে একজাতীয় পৃত্তিকা দেখা যায়। সিংহলদ্বীপে T. monoceros শ্রেণী গাছের কোটরে বাসা করে। অনেক সময় সেই স্থানে গোপুরা সাপের বাস দেখা যায়। মান্ত্রাজ্ঞানিত সীরে বসরপাড় নামক স্থানে যে সকল বল্মীক দেখা যায়, তাহাদের অধিকাংশগুলির অভান্তরেই নহুসংখ্যক বিষধর সূপ থাকে। কুইন্সলাণ্ডের উত্তরন্থ সমাদে টি নগরের ১ মাইল দূরে আলবাণী গিরিস্কটের মূথে ১৬ ফিট উচ্চ বহুপত বল্মীক বিশ্বসান আছে।

বন্ধীক মৃত্তিকালার শৌচ করা নিষিদ্ধ। বিষ্ণুপুরাণে লিখিত আছে যে, বন্ধীক বা মৃথিককণ্ড্ক উৎপাত মৃত্তিকালি লারা শৌচক্রিরা করিতে নাই।

"বল্মীকম্বিকোংখাতাং মৃদমন্তর্জাং তথা।
শৌচাবলিষ্টাং গেহাচ্চ না দক্ষালেপসন্তবান্।
অন্তঃপ্রাণাবপরাঞ্চ হলোংগাতাং ন কর্দমান্॥"

(আছিকাচারতবধৃত বিষ্ণুপু°)

কোন দেববিগ্রহ প্রতিহার পূর্বে নিরিব্যক্তির স্পান্দাব-পান্তির জন্ত বল্মীক মৃত্তিকা, গোমর ও তাম এই তিন বস্তু দারা বিগ্রহটী ধৌত করিরা লইতে হয়। উক্ত বন্ধতার দারা সান করাইবার কোন পুথকু মঞ্জ নাই, একন্ত শ্লপাণি গায়্মী বা সেই সেই দেবভার মূল মন্ত্র ছারাই স্থান্রিথি নির্দ্ধেশ করিয়াছেনঃ

"বন্দীকমৃত্তিকাভিন্ত গোমরেন স্কুডম্মনা"। কালরেৎ শিলিসংস্পর্দাবাণামুপশান্তরে ॥*

(দেবগুডিঠাডৰ)

(পং) ২ বালীকি মুনি। ও রোগবিশেষ। ইছার লক্ষণ—
"গ্রীবাংশককাকরণানদেশে সজৌ গলে বা ত্রিভিরের নোরৈ:।
গ্রন্থির নে বলীকবদক্রিরাণাং জাতঃ ক্রমেনৈর গতপ্রবৃদ্ধিঃ ॥
মুথৈরনে কৈছাভিতোদবিভার্বিদর্শবং দর্শতি চোরভার্টিঃ।
বলীকমান্তভিবলো বিকারং নিপ্রতানীকং চিনজং বিশেবাং ॥"
বে রোগে ত্রিদোবের প্রকোপ হেতু গ্রীবা, অংস, কক্ষ, হস্ত,
পদ ও সন্ধি স্থানে এবং গলদেশে বলীকের স্থার গাঢ়মূল অথচ
প্রান্থ বিশ্বরমূক্ত ও উন্নতগ্রন্থি উৎপত্র হয় এবং তাহা যদি চিকিৎসা
না করা বার, তাহা হইলে ক্রমশই বৃদ্ধিপ্রাপ্ত ইইতে থাকে, ও
ইহাতে স্টীবেধবং বেদনা অন্তত্তব হয়, ইহার জনেক মুখে
আব হইতে থাকে ও উন্নত স্থান্তর সহিত বিদর্শের স্থায় প্রস্থিতি
হয়। এই সকল লক্ষ্প ইইলে তাহাকে বলীকরোগ কহে।
এই রোগ উপযুক্তরূপে চিকিৎসা না করিলে কালক্রমে গুঃসাব্য
হইয়া থাকে।

ইহার চিকিৎসা— বর্ত্মীকরোগ প্রথমতঃ শক্ত দ্বারা উৎপাটন করিয়া ক্ষার ও অফিকর্ম দ্বারা দ্বা এবং অব্বৃদ্ধ রোগের প্রায় শোধন ও রোপণ করিবে। বাহার মর্ম্মন্থান বাতীত অস্তু স্থানে বন্মীক রোগ হয় এবং যদি উহা অত্যন্ত বৃদ্ধিত না হয়,তবে প্রথমে সংশোধন ও তৎপরে রক্তমোক্ষণ করিয়া তাহার চিকিৎসা করিবে।

কুলথ কলায়ের মূল, গুড়াটা, দৈশব, সোঁলালমূল, লাস্তম্ল,
ভামালতার মূল, মাংস ও শক্ত, এই সকল পেষণ করিয়া
তন্ধারা প্রলেপ দিতে হইবে এবং উহাতে ছত মিলিড ও ঈষৎ
উক্ত করিয়া উপনাহ (পুল্টাশ) প্ররোগ করিলে বন্ধীকরোগে
বিশেষ উপকার হয়।

বন্ধীকরোগ পাকিরা যদি তাহাতে নালী হয়, তাহা হইলে উহার সমন্ত নালী অবেষণ করিরা তাহা ছেলন করিবে এবং তাহাতে পুলটাশ প্ররোগ করিবে। যদি এই রোগে মাংস দ্বিত হর,তাহা হইলে ক্ষার প্ররোগ বারা তাহা নিভাবিত করিবে,পরে এণ বিশুদ্ধ হইলে রোপণ ঔষধ প্ররোগ করা বিধের। নিভাবিত ও সের, করার্থ মনঃশিলা, হরিতাল, ভরাতক, ছোট এলাচি, অঞ্জন, রক্তচশন, আতীপত্র ও ইক্রয়ব এই সকল মিলিত এক সের লইবে,পরে ব্যাবিধানে পাক করিরা এই তৈল বন্ধীকরোগে প্ররোগ করিলে বিশেষ উপকার হর। এই তৈলকে মনঃশিলাভ্যাতক, বহু । হত্ত বা প্রেরুগ উপর বহু ছিন্তবিশিষ্ট অথ্য শোষ-

য়ক বন্ধীকরোগ হইলে তাহা অসাধা। চিকিৎসক এইরপ বোগীকে,ত্যাগ করিবেন। (ভাবপ্র ক্রেরোগাধি) বন্ধীক মৃত্তিকার প্রকোপ দিলেও এই রোগে উপকার হয়। "ক্রোদ্রস্কপবন্ধীকমৃত্তিকাসংস্তং ভিবক্। গাদৃস্ৎসাদনং কুর্যাদৃশ্বত্তে প্রকোনম্॥"

(বৈশ্বকচক্রপাণিসণ)

বল্মীকমাত্র (ত্রি) বলীকন্ত পের অন্তরপারুতিবিশিষ্ট। বল্মীকল্ল (প্রং) করডেম।

বল্মীকশীৰ্ষ (রী) ব্লীকণ্ড শীৰ্ষমিব শীৰ্ষমণ্ড। প্রোভোৎঞ্চন, বক্তপূর্ণা। (রাজনি⁶)

বল্লীকস্ম্ভব। (ত্রী) অলাব্বিশেষ। নাগস্থর তৃষী। (মদনপাল) বল্লীকি (গ্রং) বন্ধীক। (শন্মনালা)

বল্মীকুট (क्री) ৰব্মীকছা ৰব্মীকসঞ্চিতং বা কূটং। বন্মীক। (হেম)
ান্ত্ৰীকৃট এইরূপ পদও হয়।

বলাল (লাগে), ১ ছেদন ও প্রণ! আদম্ভ চুরাদি° পরতৈর° সক'সেট্। লট্বল্লিয়তি। লুঙ্আববল্লেৎ।

বল্ল, সংবরণ। ভাগি° আবানে° সক° সেট্। সট্ বলতে। নিট্ববলে। স্ট্বলিতা। সূঙ্আবলিট।

বল্ল (পং) বল্লভে সংবৃণোতীতি বল-অনচ্। পরিমাণবিশেষ, ভঞ্জাত্রয় পরিমাণ।

"বন্ধরিগুলো ধরণঞ্জ তেহটো" (দীব্দাবতী)
বৈহাক পরিভাবার মতে দিগুলা পরিমাণ। রাজনিদ্দিটর
মতে সার্দ্ধগুলা পরিমাণ।

"গোশুমন্বিতলোন্মিতা তু কথিতা গুঞ্চা তথা সাৰ্দ্ধরা। বলো বলচত্টবেন ভিৰজাং মাধামতশুচ্ছতু: ॥ (রাজনি°) २ मछविरमधः। ७ महाकौकृषः। ७ वाष्ट्रांतकः, रवरफ्नाः। बला (পুং) वन-य९। ১ ডাক্ষ্য। (क्री) ২ গুড়্ছক্। (রাজনি°) (ত্রি) ৩ বলকর। জিয়াং টাপ্। বল্যা, পাতালগরুড়ী লভা। বল্ল, প্রাচীন শকজাভির একটী শাখা। পূর্বেই ইহারা সৌরাষ্ট্রে ধারত করিতেন। ইহারা রাজপুতনার রাজকুলের একতম। ভট্টকবিদিগের বর্ণনা হইতে জানা যায় যে, ইহারা এক সময়ে সিদ্ধনদের কুলে ঠট্ট ও মূলতান প্রদেশের রাও ছিলেন। কিন্ত এখন ইহারা আর আপনাদিগকে শক বলিয়া স্বীকার করেন না। বরং স্থাবংশীয় অধোধ্যাপতি রামচক্রের পুত্র লবের বংশে আপনাদের বল বা বর্ম নামক কোন পূর্বাপুরুষের উৎপত্তি कतना कतित्रा ज्याभनामिशक त्र्यायः नीत्र विनत्राहे थाकन। প্রথমে তাঁহারা মূলিপাটনের অন্তর্গত প্রাচীন ধাছ নগরে আসিয়া বাস কল্পেন এবং পার্থবতী স্থানসমূহ কর করিয়া আপনাদের রাজশক্তি বিস্তার ক্রিরাছিলেন। তাঁহাদের এই রাজ্য বল্পকেত্র ও রাজধানী বলীপুর নামে প্রতিষ্ঠা লাভ করে এবং তথাকার রাজবংশ বল্পরার উপাধি ধারণ করিলা আপনাদের প্রভাব বিস্তার করিয়াছিলেন।

সৌরাষ্ট্রের রাজশক্তির প্রতিষ্ঠার পর বল্লগণ আপনাদিগকে মেবারের গছলোত বংশীরগণের সমশ্রেণী বলিরা স্বীকার করিতে থাকেন। কিন্তু রাজেতির্ভ পাঠে শানা যায় যে, গহলাতগণ শিবোপাসনার পূর্ব্জে স্থেন্টার উপাসনা করিতেন, পক্ষাস্তরে সৌরাষ্ট্রের বল্লেরা আপনাদিগকে ইন্দ্রংশোন্তর ও বলিকপুত্র বলিরা নির্দ্দেশ করিরা থাকেন। বলিকপুত্রগণ সিক্তীরবর্তী অরোর নামক স্থানে রাজত করিতেন। খুরীর ১৬শ শতাকে বল্লগণ অতিশর হর্দ্ধর্ম ইইরা উঠে এবং উপর্যুগরি মেবার আক্রন্থা করে। রাণা হামীর একটী যুদ্ধে চোতিলার বল্লসর্দারকে নিহত করিরাছিলেন। ধাজের বল্লস্কারবংশ অভ্যাপি জাতীয় গৌরব রক্ষা করিরা আসিতেছে। [বলতীরাজবংশ দেখ।]

বল্লকরঞ্জ (পুং) করঞ্জভেদ।

ব্লকী (স্ত্রী) বলতে ইতি বল্প-কৃন্, গৌরাদিখাৎ ভীষ্। ১বীণা।

"বল্লকীং বাল্কমানে। হি সপ্তস্তরবিম্জিতাম্।"

(হরিবংশ ৮৪I**১**১১)

২ সন্নকী বৃক্ষ। (রাজনি°)

বল্লগুণপূগ (क्री.) পূগবিশেষ, স্থপারিবিশেষ। (রাজনি⁶) বল্লটভট্ট, একজন প্রাচীন কবি। স্থর্ততিলকে কেমেক্র ইহার উল্লেখ করিয়াছেন।

ব**ল্লটভাগবত,** একজন কৰি। বল্লন, একজন প্ৰাচীন কৰি।

বল্লপুর, লাক্ষিণাত্যের অন্তর্গত চুইটা প্রাচীন নগর, চিক্ক ও দোক্ষ বল্লপুর নামে থ্যাত। উক্ত নগরন্ধর পরস্পরে ৭ কোল ব্যব-ধানে অবস্থিত। হারদার আলী কর্তৃক ধ্বক্ত হইবার পূর্ব্বে এই নগর অতি সমৃদ্ধিলালী ও ধনজনপূর্ণ ছিল। চিক্কংলপুরের স্বায়্য নিভান্ত মন্দ নছে। এখানে মোরস্থ বকলিগবংশীর কএকটী কৃষিলীবি-লোক্ষের বাস আছে। ভাহাদের বিশ্বাস, দক্ষিণ হন্তের গুইটা অস্থূলি কর্তুন ভাহাদের স্বীবনের একটা কর্ত্বর কর্ম্ব, এই কারণে উক্ত বক্তৃ শাখাভুক্ত রমনীরা স্বধর্ম্মরকার জন্ম স্ব স্কুলীন্বর ছেলন করিরা দের। ঐ সমরে ভাহারা ঘণাসাধ্য পূজামুদ্ধান করে এবং গ্রামন্থ কামারকে ডাকাইরা ভাহাকে কিছু কাটাই মক্ষ্বী দিরা কন্থাদিগের অস্থূলী গাঁটের মাথার কাটিয়া লর। ইহা আইনবিক্স হইলেও ১৮৭৪ খুটাক্ষের প্রারম্ভে বন্ধ ক্রায়ের প্রায়ম্বর ক্রম্বর প্রারম্ভে বন্ধসহোলি গ্রামে এক রমনীকর্তৃক কর্ত্ববাস্থ্রের প্রম্বর

এইরপ অন্ত্রিক কাটা হইয়াছিল। আন্ত্রুক কাটবার সমর চিত্রু নামক বন্ধ সাহায্যে এক আঘাতে কাটাই রীতি।

এই অন্তত ক্রিয়া সম্বন্ধে তাহাদের মধ্যে একটা কিংবদস্তী আছে:--পুরাকালে বুক নামে এক রাক্ষস ছিল। সে বছ সহত্র বৎসর কঠোর তপস্তা করিয়া মহাদেবকে ভূষ্ট করে। রাক্ষনের তপে পরিতৃষ্ট হইর৷ মহাদেব রাক্ষনকে দেখা দিরা বলেন, বংস! আমি ভোমার তপস্তায় প্রীত হইরাছি, একংশ यथा छिनविक वत्र आर्थना कत्र । त्रीक्रम स्वामित्वव महास्वतत्र এবন্ধিধ বাক্য শ্রবণ করিয়া বলিল, দেব! যদি অধীনের প্রতি क्रभा कतिया पर्नन नियारहरन, जरव आगांत्र এই वर निन रान আমি মাথায় হাত দিবামাত্রই সেই ব্যক্তি ভদ্ম হইয়া হায়। আশুতোষ রাক্ষদের অসদভিপ্রায় জ্ঞাত না হইয়া "তথান্তু" বলিয়া প্রস্থান করিলে চর্ত রুক দেবপ্রদত্ত এই অসাধারণ শক্তির পরীক্ষার্থ মহাদেবের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবিত হইল। শিব উপায়া-স্তুর না দেখিয়া ক্রতপদে প্লায়মান হইলেন, রাক্ষ্স তাঁহার পশ্চাদমুসরণ করিয়া ক্রমশঃ নিকটবতী হইলে মহাদেব একটা বনে প্রবেশ করিলেন। রাক্ষ্য হাফাইতে হাফাইতে দৌড়িয়া আসিয়া বন সন্মুখন্ত ক্ষেত্রে এক কুষককে দেখিতে পাইল এবং জিজাসা করিল-শীঘ বল, তুই এথান দিয়া কাহাকেও যাইতে দেখিয়াছিদ ? ভীষণদশন দেই রাক্ষসকে দেখিয়া তথন ক্লয়ক মনে মনে চিন্তা করিল, যদি আমি এই রাক্ষদকে মহে-খারের সংবাদ না বলিয়া দিই, তাহা হইলে এ এখনই জোধের বশবর্ত্তী হইয়া আমাকে সংহারপ্রবাক ভক্ষণ করিবে: আর যদি শিব এই বিষয় জানিতে পারেন, তারা হইলে আমায় হরকোপা-নলে দ্বীভূত হইতে হইবে; স্থতরাং কি কর্ত্তরা অনুসরণ করিবে এই দারুণ বিপদ হইতে অব্যাহতি পাই। রুষককে চিম্তাশীণ দেথিয়। রাক্ষদের দৃড় বিশাস জবিল, সে নিশ্চয়ই মহেশবের সংবাদ জানে। তথন সে পুনঃ পুনঃ হজার ছারা কৃষককে ভয় প্রদর্শন করিতে লাগিল, ক্লয়ক উপায়ান্তর না দেখিয়া চিৎকার-পুর্বকে বলিল, 'আমি মহাদেবের কোন সংবাদ রাখি না" পর-ক্ষণেই সে আত্তে আত্তে রাক্ষসকে মহাদেবের গুপ্তভান (मथाहेबा मिन।

যথন রাক্ষ্য বৃক সেই বনে প্রবেশ করিয়া মহাদেবকে ধরিতে অগ্রসর হইল, এমন সময়ে, বিশ্বু মহাদেবের উদ্ধারার্থে মোহিনী-বেশ ধারণ করিয়া রাক্ষ্যের সল্পুথ উপনীত হইলেন। যুবতীর মোহনরপে মুগ্ধ হইরা রাক্ষ্য মহাদেবের প্রতিহিংসা ভূলিয়া ধীরে ধীরে মোহিনীর অগ্নসরণ করিতে লাগিল, কিন্তু সেই বরবপ্ লাশ করিতে পারিল না, রাক্ষ্যের প্রেমবিহ্বল ভাব দেখিয়া যুবতীর দর্মার উদ্রেক হইল। তথন সে বলিল, আমি ব্রাক্ষণ-

কল্পা, কিরূপে তোমার জ্ঞায় অপৃত্যের রাজনের প্রার্থনা পূর্ণ করিতে পারি। তুমি অথ্যে সন্ধ্যা বন্ধনাদি ধারা পৃত্যেন্ত হও, তবে তোমার বাসনা পূর্ণ हুইতে পারে এবং ভূমি আমাকৈ স্পর্ণ করিতে পার।

বিষ্ণুর ছলনা রাক্ষস ব্রিডে পারিল না। নারীর লুপে মুগ্ধ হইরা সে শীর দক্ষিণহন্তের প্রভাব ভূলিরা গেল। সন্ধা করিবার সময় রাক্ষ্য অবস্থাসকালে স্বীর অভাদিতে যথাক্রমে দক্ষিণহত্তের অনুলি ম্পর্শ করিতে লাগিল। অনন্তর যেমন মন্তকে হল্প স্থাপন করিবে, অমনি ভদ্মসাৎ হট্টয়া গেল। তদনস্তর মহাদেব সেই খণ্ড স্থান' হইতে বহিৰ্গত হইয়া বিষ্ণুর নিকট বীর ক্লভজভা জাপনপূর্বক অভভজ ও বিশ্বাস গাতক ক্রমকের অপরাধের বিচারে প্রবৃত্ত হইয়া আদেশ করিলেন, যে অনুলি ছারা তুই আমার গুপ্ত স্থান নির্দেশ করিয়া দিয়াছিল, তোর সেই অকুলি আমি নষ্ট করিয়া দিব। এই বলিয়া মহাদেব তাহার অঙ্গুলি কাটিতে উন্নত হইলেন। এমন সময়ে অকলাৎ ক্লবকপত্নী স্বীয় স্বামীর অরব্যঞ্জনাদি লইয়া সেই ক্ষেত্রে আসিয়া উপস্থিত হইল, সে মহাদেবকে তদবন্ধ দেখিয়া খীর খামীর অসুলি রক্ষার্থ মহাদেবের চরণতলে নিপতিত হইল এবং বিশেষ অনুনয় বিনয়ের পর বলিল, ছে প্রভো । যদি আপনি আমার স্বামীর অঙ্গলি নট করিয়া দেন, তাহা হইলে অরাভাবে এই দরিদ্র পরিবার মৃত্যুমুখে পতিত হইবে, স্থতরাং তাঁহার পরিবর্তে আমি হুইটা অনুনি নিতে প্রস্তুত আছি! মহাদেব রুষকর্মণীর এই প্রকার পতিভক্তি দেখিয়া বলিলেন, তোমার এরপ স্থামিভক্তিতে আমি শ্রীত হইরাছি। আৰু অবধি তোমার বংশে যে সকল রমণী জন্মগ্রহণ করিবে, সেই আমার মন্দির সমক্ষে ভাহার ছইটা অন্থূলী বলি দিয়া ভোমার এই অসাধারণ পতিভক্তির মহিমা খোষণা করিবে। ভাই অন্থাবনি (महे तमनीत वः भीता कलाता अक्रमि नाम कतिता आमिएउटक । ভाराता वाक्वविधित निरंवध ना मानिया मण शहन क्विएक वर्तः ইচ্ছুক, তথাপি দেবাদেশ লক্ষ্যন করিছে ইচ্ছুক নছে। এখনও মহিস্তরে প্রায় ২ সহজ পরিবার ঐরপ অঞ্লিদান করিয়া থাকে।

বল্লপুর, মান্তাজপ্রেসিডেশীর সলেম জেলার অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম। কোলিমলর পর্বতোপরি স্থাপিত নামকল নগরী হইতে ১৬॥০ মাইল পশ্চিমোন্তরে অবস্থিত। এখানে তোরিয়্র উপত্যকার সন্মুখ্য কলরমূথে আরপল্লেমর স্থামীর মন্দির ও পূর্ব। এ পূথ্বে কতকগুলি মাছ আছে। প্রত্যহ ঘণ্টা বালাইয়া ঐ মাছগুলিকে থাত্ত দেওরা হয়। ঘণ্টাশক হইলেই মাছগুলি বাধের তীরে আসিরা উপস্থিত হয়। এই ক্লা আনেকে ঐ মন্দিরতে

মৎক্রমন্দির বলে। মন্দিরগাত্তে অনেকগুলি শিলাকণক উৎকীর্ণ আছে। ভন্মধ্যে একধানি ১৩৫০ খুটান্দে উৎকীর্ণ। ব্যান্ত ("ত্রি) বল্ল-অভচ্। ১ প্রের।

"পুরেজ্যন্ত নমস্ক্র্য্যাৎ ব্রুজেভান্ত ভূপতে: ।"

(**कामनाकी**यनी किमा (धार्य)

্ অধ্যক্ষ (অমর) স্থামীর মতে অমরটীকার অধ্যক্ষ শক্ষে পরাধ্যক্ষ ব্যার। ৩ স্থাকশাক্রাক্ত অস্থ । ৪ ক্ষান্তক। ৫ রাক্ষণিধী। (ভাবপ্র•)

বল্লভ, একজন রাজা। দশপতিরাজের পিতা। ২ রাজকুমারভেদ।
ত্থাসিক রূপ ও সনাতন গোত্মামীর দ্রাতা। [সনাতন দেখাঃ]
বল্লভ, কএকজন কুপ্রাসিক প্রছক্তা—১ বল্লভাচার্যা। ২ একজন
বৈরাকরণ। মলিনাথ ও রারসূক্ট ইচার মত প্রহণ করিরাছেন।
৩ মাক্ষেপ্রীবিশাসপ্রণেতা। ৪ বিহুজ্জনবল্লভ নামক জ্যোতিপ্রতির্বিশ্ব হিন্তির । ৭ শব্দেশ্পের্টীকাপ্রণেতা। ইচার প্রকৃত
নাম হরিবল্লভ। ৮ সম্পশ্যভার্থরচ্মিতা। ৯ বৈশ্বব্লভ নামক

ব্রভিক্যুত, ক্রেগেরে উপকারক ঔষধভেদ। প্রস্তুত প্রণালী— হরীভকী •েটা, সচল লবণ ২ পল একত্র মৃত্তপাক করিয়া পান করিলে ক্রাস, মূল, উদররোগ ও বায়নাল হয়।

(ভৈষদারত্বাবলি হুদ্রোগাধিকা৽)

ব্য়ন্তগড়, বোদাই প্রেসিডেন্সীর বেলগাম্ জেলার অন্তর্গত একটা গিৱিছৰ্গ। চিকোড়ি হইতে ১৫ মাইল দক্ষিণপশ্চিমে অবস্থিত। লৈলশিখরোপরিস্থ চুর্গাংল প্রান্ন গোলাকার (২৭৫×২০০) এবং কোন স্থানে কুত্রিম ও কোথাও বা পর্বাতগাত্র ইধাকে প্রাচীর-রূপে বেষ্টন করিয়া আছে। উহার ছইটা প্রবেশঘার, ৪টা প্রত্রবণ, একটা স্থরহৎ কুপ এখন সম্পূর্ণ নষ্টপ্রায়, সংস্কার অভাবে ত্রেরও অধিকাংশ ধ্বংস হইবার উপক্রম। বলভগড় তুর্গ ১৬৮० चुडोरम महाता हेरकभन्नी भिवासीत व्यविकारत हिन्। উठा বেলগামের ১০টা প্রাসিদ্ধ ছর্মের একতম। ১৭৮৬ খুটান্দে নেস্গীর দামস্ত দর্দার কোল্হাপুর-রাজ্যের বিশ্বকে অল্প ধারণ করিয়া তাঁহার নিকট হইতে বরন্তগড়, গন্ধর্গড় ও ভীমগড় অধিকার করিয়া লন: কিন্তু কোলহাপুরপতি পরবর্ষেই বিল্রোমী লামস্তকে পরাজিত করিয়া তুর্গ পুনক্ষার করেন। ১৭৯৬ খুটাকে যথন পরওয়াম ভাউ পুণার অবস্থিতি করিতেছিলেন, তথন কোলহা-প্ররাজশক্র উপরোক্ত সন্দার পুনরায় বলভগড় হুর্গ হন্তগত सर्वम ।

বল্লভগণক, গণিতদভাপ্রণেভা।

বল্লভগুণি, হেমচক্রকড অভিধানচিন্তামণির সারোদ্বার এবং শেব-সংগ্রহের টাকাপ্রণেডা। ইনি জানবিমলের শিব্য ছিলেন।

বল্লভূজী, ১ হস্তশ্রাদ্ধরচয়িতা। ২, নাগরপণ্ডের সারশ্লোক ও অধ্যারামুক্রমণি, মহাভারতাধ্যারামুক্রমণি, মহাভারতাদ্ধ্রসার এবং ব্রুমালা-সকলছিতা।

বল্লভূজী গোস্বামী, একজন প্রসিদ্ধ পণ্ডিত। বল্লভূত্ম (ত্রি) অতিশয় প্রিয়।

বল্লভ্তা[ত্ব] (স্ত্রী) বল্লভন্থ ভাবঃ ধর্মে বা তল্টাপ্। প্রিয়তা, বল্লভের ভাব বা ধর্ম।

বলভ তাতিয়া, একজন মহারাষ্ট্র প্রধান। ইনি সিন্দেরাজের প্রধান অমাত্য ছিলেন। ১৭৯৫ খুটান্দে পেশবা মধুরাওর মুড়ার পর, পেশবার গদি লইয়া গোলযোগ উপস্থিত হয় ৷ এই সময়ে বিধৰা বাজমহিষী যশোদাবাই দত্তকগ্ৰহণের সঞ্চল করেন। বল্লভ ভাহাতে বাধা প্রদান করিয়াও বিশেষ কিছ করিতে পারেন নাই। অবশেষে তিনি ১৭৯৬ খুষ্টাব্দের জামুয়ারী মালে বাজীরাওর ষড়বল্লে যোগদান করিয়া তাঁহাকেই রাজ্যের করিবার ব্যবস্থা করেন, কিন্তু বাজীরাও পুণায় আসিয়া নানা ফড়নবিশের সহিত সাকাৎ করিলে, উভয়ের পূর্বমনোমালিত-বিদুরিত হয় এবং নানা রাজমন্ত্রী থাকিলে বাজীরাও পেশবা হইবেন, এইরূপ একটা যুক্তি হয়। এই সন্মিলন বিশেষ আশা প্রদ নহে, ভাবিয়া বল্লভ তাতিয়া উভয়ের গুপুপরামর্শে বিপরীতা চরণ করিতে চেষ্টা পান। তিনি স্বীয় বুদ্ধিবলে চিম্নাজী আপাকে যশোদাবাইর দত্তক সাবান্ত করাইলেন এবং কৌশলে প্রভ রাম ভাউকে মন্ত্রিপদাধিকারে অঙ্গীকার করাইয়া বাঞ্চীরাওর नर्सनामनाभरम अनुद ध्वेरलम्। नामा कड्नविन मन्त्री द्विरलम् এবং পরশুরাম রাজাচালনের ভার গ্রহণ করিলেন। এই সময়ে পাছে দৌলতরাও সিন্দে শত্রু হইয়া উঠে,তাহার প্রতিবিধান জ্ঞ বল্লভ নানার পরামশান্ত্রসারে উভয় পক্ষের মিলনচেষ্টা পাইলেন।

এই সময়ে চিম্নাজী আপা, বাজীরাও ও নানা ফড়নবিশ পরগুরাম ভাউকে গইয়া মহারাত্ত্র-সরকারে যে বার রাজবিপ্লব হৈচিত হইয়াছিল, তাহা মহারাত্ত্রের ইতিহাসে স্প্রুটরূপে লিখিত আছে। চিম্নাজী আপাকে নৃতন পেশবা করিবার অভিপ্রায়েনানা ফড়নবিশ সাতারার আসিয়া রাজসনক গ্রহণ করিলেন, এদিকে পরগুরামের কৌশলে ব্রন্ত কর্তৃক বাজীরাও হস্তগত দেখিয়া তাহার সন্দেহ জয়িল, তিনি তাহাদের সহিত মিলিত না হইয়া বালী হইতে রাজসনক প্রেরণ করিলেন। ২৬এ মে চিম্নাজী পেশবা পদে অভিষিক্ত হইলেন।

ইহার পর পরওরাম নানা কড়নবিপকে পুণার ভাকাইরা আনিরা বল্লভ তাতিরার সহিত মিলন করাইতে চেটা পাইলেন, কিন্তু ফলে কিছুই হইল না। উভরপকে শক্রভার্ত্তির সহিত বৃদ্ধ অবশ্রকাবী হইরা উঠিল। নানা বিশেষ কৌশনে রযুকী ভোন্দ্ৰেকে হত্তগভ করিলেন। সিন্দেরাক ও বোলকর্ণতি এবং পেশবার সেনাগতি মি: বরেড্ সজিত হইলেন। ৮ই আটোবর বাজীয়াও মসমদে বসিলেন এবং ২৭০ আটোবর বর্লড ডাজিরা সিন্দেরাক কর্তৃক অবরুদ্ধ হটলেন। অতঃপর সিন্দেরাক তাঁহাকে মুক্তিদান করিয়া প্রনরার মন্ত্রিপনে নিরোগ করেন। কিছ ১৮০০ বৃত্তীকে নানা কড়নবিলের মৃত্যুর পর, পেশবা বাজীরাওর সহিত সিন্দেরাজের বার পঞ্চতা উপস্থিত হর। সেই সমনে সিন্দেরাক পুমরার বিঞোহাশভার বর্লডনে নিহত করেন। [মহারাট্র ও অপরাপর শক্ষ দেব।]

বল্লভদাস, বৈক্ষবাহিকপ্রণেতা।

বল্লভদীক্ষিত (পুং) ৰলভাচাৰ্ব্য। [বলভাচাৰ্ব্য দেখ]

বাস্থ্যভেদেব, ১ হুভাবিভাবনিপ্রশেষা। ইনি খুরীর বোড়শ শতাব্দে বিস্তমান ছিলেন। তাঁহার হত্তে শার্কধরণক্ষতির সক্ষনকার্য্য আরক্ষ হয়। ২ যোগমুক্তাবলীরচরিতা। ৩ একজন কবি। ও কুমারসভবের অপ্রাধায়-টীকা, মেঘদ্ভটীকা, রখুবংশপঞ্জিকা, বক্রোক্তিপ্রদানিকাটীকা, শিশুপালবধ্টীকা ও কুর্যাপভক্টীকা-প্রণেতা। মল্লিনাথ ইহাঁর মত উদ্ধৃত করিয়াছেন। ইনি আনন্দদেবের পুত্র এবং আনন্দবর্ধনকৃত দেবীশতকের টীকাকার ক্যাটের (১৭৭ খুঃ) পিতামহ।

বল্লভন্মানার্ধ্য (পুং) ভারনীলাবজীপ্রণেতা। গলেশতর-চিন্তামণিতে ইহার উল্লেখ করিরাছেন।

বল্লভপালক (ত্রি) বল্লভানাম্ অধবিশেষাগাং গালক:।
অধ্যক্ষক। (ভ্রিপ্রয়োগ)

বল্লভপুর (রী) কলিকাতার উত্তরত গলাতীরবর্ত্তী একটি গণ্ড-গ্রাম। এথানে বল্লভন্তীর মন্দির বিভ্যাম। প্রতি বংসর রথ-বাত্রা উপলক্ষে এখানে হাললগোপালের উৎসব হইয়া থাকে। এই স্থান ইঠ ইণ্ডিয়া রেলপথের শ্রীরামপুর টেশন হইতে ক্ষর্ম ক্রোল মাত্র। [মাহেল দেখ।]

বল্লভরাজ, অন্হিলগড়ের একজন রাজা। চামন্দরাজের পুত্র। বল্লভশক্তি (ত্রী) একজন রাজপুত্র। (কথাসরিৎসা° ১০।১৭) বল্লভস্মিন্ (পুং) বল্লভাচার্য।

বল্লভা (রী)প্রিয়া।

'প্ৰেম্বনী দয়িতা কান্তা প্ৰাণেশ বন্ধতা প্ৰিয়া।

सम्दर्भा व्यागनमा (व्यक्ते व्यगतिनी ह ना ॥' (दश्म)

বল্লভাচারী, বৈক্ষব-সম্প্রদারভেদ। অপর নাম ক্রস্তানার। বল্লভাচার্য ইহার প্রবর্তক, এই নিমিত্ত লোকে এই সম্প্রদারী বৈক্ষবদিগকে বল্লভাচারী বলিরা থাকে। ভারভবর্বের উত্তর-পশ্চিমে রাম্পীতার উপাসনাই প্রচারিত বেখা বার, কিন্তু ঐ স্থানের পশ্চিমভাগে ঐপর্বাবান্ ও ভোগবান্ গৃহস্বের মধ্যে

আগ্রই রাধাক্তকের উপাদনা আচলিত। ঐ প্রথেশে ধর্মতা-চার্য্য এবর্তিত বালগোপালের, দেখা কিছুদিন কইলা বিশেষভাবে প্রথম হইরা উঠে। গোকুলছ গোখানীরা এই ধর্মা উপদেশ দেন, একড ইহা গোকুলছ গোখানীবিগের ধর্মা ধনিরা প্রাসিদ্ধ।

প্রবাদ আছে, — নর্বপ্রথমে থেব-ভায়কার বিষ্ণুবানী এই বাজের সারভার প্রচার করেন। ভিনি কর্মানাশ্রনী রাজণ বাজীত অন্তর্গক শিশু করিডেন না। তাঁহার শিশু আমানের। আনকেবের শিখা নানদের ও নিলোচন। তাঁহারের অব্যবহিত কাল পরে তৈলকদেশীর লক্ষণ অটের পূত্র বারভাচার্য্য গুরুন্দল অভিবিক্ত ইইয়া, খুরীর প্রকাশ পভালীর পেবভাগে, সবিশেষ যার সহকারে ঐ মত প্রচার করিতে প্রবৃত্ত ইন। প্রথমে তিনি গোকুলে ও বাস করিডেন। তথার কিছুকাল বাপন করিয়া তীর্থপরিটনে বারো করেন। ভক্তমালে লিখিত আছে, তিনি ভারভবর্বের দক্ষিণথণ্ডে বিক্রমসারাধিপতি ক্লমনেরের সভার উপস্থিত ইইয়া তথাকার স্মার্ত-রাজ্যবিদ্যাকে বিচারে পরাত্ত করেন, এবং ওত্রভা বৈক্ষবস্থাকার সার্ত্ত-রাজ্যবিদ্যাক বিয়া প্রতিবিক্ত ইন। তথা ইইতে উজ্জারিনী নগরীতে গমন করিয়া শিপ্রাভটে অথব্যক্ত-তলে অবস্থিতি করেন। থা হান অভাপি তাঁহার বৈঠক বলিরা প্রসিদ্ধ আছে।

মধ্বার ঘাটে তাঁহার জন্ধ আর এক বৈঠক বেখা বার।
চনারের এক জ্বোল পূর্বে তাঁহার নামে একটি বঠ ও বলির
বিভ্যমন রহিরাছে। ঐ মঠের প্রালণে বে কূপ আছে, তাহা
আচার্য্য কুঁরা নামে গ্যাত । উজ্জারনীতে কিছু দিন অবস্থিতি
করিরা তিনি বৃন্ধাবনে প্রত্যাগমন করেন। শ্রীকক্ষ তাঁহার
অচলা ভক্তি ও ধর্মার্থকেশ বীকার দেখিরা পরম পরিতৃষ্ট হন,
এবং অতি মনোহররণে দর্শন দিয়া তাঁহাকে বালগোপালের সেবা
প্রচার করিতে আদেশ করেন।

বল্লভাচার্য্যের সৃত্যুঘটনাবিবরক আখ্যান অতিমাত্র অন্ত । তিনি শেবাবস্থার কিছুদিন বারাণসীর জেঠনবড়ে বাস করিতেন । ঐ জেঠনবড়ের নিকটে অভালি উাহারা একটি মঠ আছে । তিনি মর্ত্তা-লীলা সম্পন্ন করিরা এক দিবস হন্মান্থাটে গলা-সলিলে অবস্তর্গ করিলেন এবং অবগাহন করিতে করিতে একফালে অর্ভিত হইরা গেলেন । গুলনতার ভাহার অবসাহন-হান হুইতে এক দেদীগামান অর্থি-শিষা প্রবীধ্য হইরা উঠিল, তিনি বহুতের দর্শক সমক্ষে অর্গারেরংণ করিতে লাগিলেন, ও অবনেরে আহালে লীন হইরা গেলেন।

বনিও মহাতারতাদি প্রছে বিষ্ণু ও ক্লকের পাডেদ রূপ বর্ণনা আছে এবং প্রভাগৰতে ভাঁহার কেনি-কৌতুকপরিপূর্ণ বৌবন-

বধুনার বারতটে নবুরার আর ভিন্দ মেশ্ব পুরের গোসুল প্রান ।

পীলার সবিত্তর বর্ণনা পাওরা বার, তথাপি বিষ্ণু অংশকা ক্ষমের প্রাথান্ত-বর্ণন ঐ ছই প্রান্তর কোন অংশে দৃই হর না; কিন্তু কোন কোন বলে শ্রীক্তকের বাল-রূপের উপাসনার ফুল্পট বিধি আধি হওরা বার ৩।

ব্ৰহ্মবৈষ্ঠপুরাণে লিখিত আছে—বৃন্ধানন-বাসী গোপাল হইতেই এই চরাচর বিব উৎপন্ন। তাঁহার দক্ষিণ পার্থ ইইতে নারারণ, বাম পার্থ ইইতে মহাদেব, নাভি-পন্ন ইইতে বন্ধা, বৃদ্ধ ইইতে সর্বাহতী, মন ইইতে লামী, বৃদ্ধি ইইতে চুর্গা, জিহা ইইতে সাবিত্রী, মানস ইইতে কামদেব এবং বামাল ইইতে রভি ও রাধিকা উৎপন্ন হন; রাধার লোমকৃপ ইইতে জিংশং কোটি গোপান্ধনা এবং ক্রিক্সর লোমকৃপ ইইতে জিংশং কোটি গোপান্ধনা এবং ক্রিক্সর লোমকৃপ ইইতে জিংশং কোটি গোপান্ধনা এইণ করে; প্রথমে গোলোকবাসী, পরিশেবে বুলাবন-নিবাসী, গাতী ও বৎস পর্যন্তও তাঁহার লোমকৃপ ইইতে উৎপন্ন হন্ন, ক্রক্ষ অন্ত্র্যাহ করিরা তাহার একটি গোক মহাদেবকে দিরাছিলেন। ঐ পুরাণের ক্রিই-প্রকরণে ক্রিক্সরে কিশোর-রূপই ক্রিক্সর বিন্য়া বর্ণিত আছেন।

বল্লভাচার্য্য বলিরা গিরাছেন, পরনেখরের উপাসনাতে উপবাসের আবশুক্তা নাই, অন্ধ বস্ত্রের ক্লেশ পাইবারও প্রেল্লেন নাই, বন-বাস বীকার প্রঃসর কঠোর তপভারও আবশুক নাই; উত্তম বসন পরিধান ও স্থায় অন্ধ ভোজনাদি সমস্ত বিব্যবহর্ষ সন্তোগপূর্ককে তাঁহার সেবা কর। বন্ধতঃও এ সম্প্রদারী বৈক্ষবেরা অভিমাত্র বিবরী ও ভোগবিদাসী। গোলামীরা সকলেই গৃহস্থ। সম্প্রদার-প্রবর্ত্তক বন্ধভাচার্য্য

কিন্তু শীনভাগদতে বালকুঞ্চের ইবন-ভাব বর্ণিত আছে। লিখিত
আছে, বহুদেব নব-প্রাহৃত শিশুকে চতুর্তুল, প্রীবংগ-চিহ্ন-বারী, পীতাবরপরিধান ও শঝ্চফারি-বৈক্ষান্ত-বিশিষ্ট দেখিলাছিলেন।

"তমভুতং বালকমন্ত্ৰেকণং চতুত্ব কং শব্দগণাৰ্গিণাৰ্থন।

বিবংসলক্ষা পলশোভিকৌব্ৰতং শীভাষরং সাম্রেপরে।বসৌভগন্ ।

মচাৰবৈদ্ধাকিনীটকুওলবিবা পদিবকসহস্কুৰণন্ ।

উদামকাঞ্জদকৰণাধিভিকিবোচনানং বহুণেৰ ঐকত।"

(ভাগৰত ১০|৩|৯-১০)

ঐ পুয়ানের স্থানায়নে যদিও আছে, জীকুক সুখব্যানান করিলে, বংশানা ভ্যাংগ অধিক একাও অবলোকন করিলেন।

আবার নহাভারতের বনপর্জে ১৮৮ আথারে একণ একট উপাথান আছে বে, বার্কণ্ডের বুনি, প্রবার-কালে, বিখ বিচরণ করিছে করিছে থেখিলেন, এক প্রকার বট-কুন্দের উপরিভাবে বিখাতিরণ-ভূবিত পর্বক্তে একট বানক শরন করিরা রহিয়াকে। বার্কণ্ডের বিকালবেতা বইলাও উরহাকে লাকিতে পারিলেন না বেখিরা, সেই বানক কৃত্বর্শ ও জীববন-চিছ্-বানিক্রণে কর্মন হিরা কহিবেন, "মার্কণ্ডের। আমি ভোমাকে লানি, ভূবি পর্বাচন করিরা পরিভাত হর্মার, একবে আমার বেরাজ্যারণ আবিই হুইয়ার, একবে আমার বেরাজ্যারণ আবিই হুইয়ার, একবে আমার বেরাজ্যারণ আবিই হুইয়ার ব্যবিদ্ধারী করি বানিকর।

বিশিও প্রথমে সন্নাসী ছিলেন, কিন্তু লোঁকে বলে, তিনি পুনর্কার গার্হসাপ্রম অবলঘন করিয়ছিলেন। সেবকেরা গোত্থামী-দিগকে পরিধানার্থ উত্তমোত্তম বছ-মূল্য বন্ধ প্রদান করে এবং চর্কা, চোবা, লেফ, পের নানাবিধ প্রস্তম দ্রব্য ভোজন করার।

শিষাদিগের উপর গোখামীদিগের অভ্যন্ত প্রভূত্ব দেখিতে পাওরা বার; এমন কি, শিব্যেরা তাঁহাদিগকে তমু, মন ও ধন এই তিনই সমর্শন করিবে; এরপ স্থাপট বিধি আছে। সেবকেরা অনেকেই ব্যবসারী। গোখামীরাও বহ-বিষ্তুত বাণিজ্য-ব্যবসারে ব্যাপ্ত থাকেন এবং তীর্থত্রমণোপলকে দ্রদ্রান্তরে গমন করিরা বাণিজ্য-ভার্যা নির্কাহ করেন।

বেৰ-সেৰার বিষরে অক্সান্ত সম্প্রদারের সহিত ইহাদিগের বিশেষ বিজিরতা নাই। ইহাদিগের গৃহে ও মন্দিরে গোপাল, রাধাকৃষ্ণ এবং কৃষ্ণাবতার সম্বন্ধীর অক্সান্ত প্রতিমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত থাকে। এই সমস্ত প্রতিমূর্ত্তিই প্রার ধাতুনির্দ্মিত, ইহারা প্রতি-দিবস শ্রীকৃষ্ণের আট্যার সেবা করিয়া থাকে।

- ১ মদলারতি। প্র্রোদয়ের অর্দ্ধ ঘন্টা পারে প্রীক্ষককে শব্যা হইতে উজোলনপূর্বক আসনার্ক্ত করিয়। তাব ল-স্বলিত বংকিঞ্চিৎ জলপানের সামগ্রী প্রদান করিতে হয় এবং সে সমরে তথার দীপ রাখা হইয়া থাকে।
- ২ শৃলার। চারি দও বেলার সমরে এক্তিক তৈল, চন্দন, ও কর্পুর বারা সুগন্ধিত ও বক্তালভারে বিভূষিত হইরা বার দিয়া বসেন।
- ও গোরালা। ছয় দও বেলা হইলে ঐক্নঞ্চ যেন গোচারণে যাত্রা করিতেছেন, এইরূপ বেশ ধারণ করেন।
- ৪ রাজভোগ। মধ্যাক্তকালে জ্রীক্তক গোষ্ঠ হইতে যেন গৃহে প্রত্যাগমূন করিরা ভোজন করিতেছেন, এই মনে করিরা, দেবাল্যের পরিচারকেরা বিগ্রহ সমীপে নানাবিধ মিষ্টার ও জ্ঞান্ত স্থান্ত সামগ্রী স্থাপন করেন এবং জোগ সমাপ্ত হইলে পর, প্রসাদী জব্য ও জ্ঞান্ত সামগ্রী, উপস্থিত সেবকলিগকে পরিবেশন করিরা থাকেন এবং কোন কোন ধনাতা ও সম্ভ্রান্ত শিব্যের বাটাতেও প্রেরণ করেন।
- উথাপন। ভোগান্তে বিগ্রহের নিজা হর, পরে ছর দও
 বেলা থাকিতে জাগরিত করিয়। উখান কয়াইতে হয়।
 - 🗣 ভোগ। উত্থাপনের অর্দ্ধ ঘণ্টা পরে বৈকালিক ভোগ হর।
- ৭ সন্ধা। প্র্যান্ত সময়ে উল্লেখন সায়ংকালিক সেবা হয়। তথন তাঁহার দিবা-পরিছিত সমুদার অলভার উল্লোচন করিয়া পুনর্কার তৈল ও গছ-ত্রব্যাদি বারা অল সেবা করিতে হয়।
 - ৮ শরন। অভ্যান ছয় দণ্ড রাত্রির সময়ে বিগ্রহকে শ্রাহ

হাপনপূর্বক, তৎসন্নিধানে পানীর মল, তাবুলাধার ও অস্তান্ত প্রাতিহর এবা সম্বান্ত রাধিরা, পনিচারকের। বেবালরের হার কড করিরা প্রধান করেন।

এই সকল সমরে প্রায় এক প্রকারই সেবা হয়; বথা পুন্দ, গছ ও ভোগদান এবং ভোত্ত-পাঠ ও সাষ্ট্রান্তপ্রধাম। বিগ্রছ-সেবক এবং অক্তাক্ত লোকও এই সমুদারের অনুষ্ঠান করেন, কিন্তু কুক্ত-ভোত্ত প্রায় ঐ সেবকেরাই গাঠ করিয়া থাকেন।

নিত্য-সেবা ব্যতিরেকে কতকগুলি সাংবৎসরিক মহোৎসব আছে। কাশীধামে ও পশ্চিম প্রদেশীর অন্তান্ত অনেক স্থলে জন্মাইনী ও রাস-যাত্রা উৎসবে অতিশয় আমোদ হয়। গ্রাম-সন্নিহিত কোন চছরে সমারোহপূর্বকে রাস-বাজান কার্য্য সম্পন্ন হইরা থাকে। কত লোকে বেত, শীত, লোহিতাদি কত উৎকৃষ্ট বদন পরিধানপূর্বক রাদ-ভূমিতে দমাগত হয়, কভপ্রকার অতি মনোহর নৃত্য, গীত, বাছের অফুঠান হর ও ভামত্রন্সরের স্থলনিত লীলামুদ্ধপ কত কোতৃকই প্রদর্শিত হয়। স্থানে স্থানে গায়ক, বাদক ও নর্ত্তক সকল বেচ্ছান্সারে উপহিত হইয়া নিজ নিজ গুণ প্রকাশ পুর:দর শোকের মনোরন্ধন করে এবং দর্শকরণ পরম পরিতৃষ্ট হইয়া তাহাদিগকে মনোমত পারিতোধিক श्रमानभूकांक भूत्रकृष्ठ करत्र। ज्ञान्न ज्ञान्न छ्रान ज्ञान् छ প্ণ্য-শালা প্রস্তুত হয়, মধ্যে মধ্যে মনোহর দোলনা ও ঝোলনা সকল আলম্বিত থাকিয়া লোকদিগকে অতিশয় আমোদিত করে, অপ্র্যাপ্ত ফল মূল ও নানাবিধ মিষ্টার সামগ্রী পরিপাটীক্রমে সজ্জিত থাকিয়া সর্বাহান স্থানাভিত করে এবং দর্শকগণ পরম কৌতহলাবিষ্ট হইয়া হৰোৎফুল্ল চিত্তে চতুন্দিকে বিচরণ করিতে থাকে। অসংখ্য লোকের সমাগম! বিচিত্র বসন! বিচিত্র ভূষণ ! বিবিধ কৌতুক পরমাশ্চর্য্য স্থদৃভা ব্যাপার ! এই সমস্ত সম্মূর্ণন ক্রিয়া লোকের আমোদের আর ইরন্তা থাকে না বুন্দাবনেও চাক্ত আখিন মানে দশমী অবধি করিয়া পূর্ণিমা পর্য্যস্ত এই উৎসব হয়। তথায় নদী-কৃতে পাবাণময় ক্রতিয বেদির উপর ঐক্তকের রাসদীলার স্মবিকল প্রতিরূপ প্রদর্শিত হইরা থাকে।

বল্লভাচারীরা ললাটে হই উর্ক পুঞু করিরা নাসামূলে অর্কচল্লাকৃতি করিরা মিলাইরা দেন এবং ঐ হই পুঙ্রের মধ্যতলে
একটি রক্তবর্গ বর্জুলাকার তিলক করিরা পাকেন। এ
সম্প্রলারের ভক্তেরা শ্রীবৈক্ষবদিগের হ্যার বাহ ও বক্ষংহলে শঝ্র,
চক্র, গলা ও পরের প্রতিক্রতি অন্ধিত করেন, এবং কেহ কেহ
শ্রামবন্দী নামক ক্ষমৃতিকা অথবা ক্ষম্বর্ণ অক্তরূপ ধাতু হারা
উল্লিখিত বর্জুলাকার তিলক আলিখিত করিরা থাকেন।
ইহারা কঠে তুলনীর মালা এবং হতে তুলনীকাঠের ক্ষপমালা

রাংশন, একং 'জীকুক' ও 'লরগোপাল' বলিয়া পরত্নর অভি- •
বাদন করেন।

বন্ধভাচার্য জীমডাগবভের বে টীকা রচনা করেন, তাহা ইহাদিগের প্রধান সাম্মদায়িক গ্রন্থ। ভাহাতে ভাগবভের বাদৃশ ব্যাখ্যা আছে, ইহারা ভাহাই অবলম্ম করিয়া চলেন। তথাতিরেকে, ভিনি বন্ধস্বভাব্য, সিগ্ধান্ত-রহজ, ভাগবভ-লীলারহজ, একাশ্ত-রহজ প্রভৃতি অনেকানেক সংস্কৃত গ্রন্থও রচনা করিয়া বান। [বন্ধভাচার্য দেখ।]

এডভিন্ন, সামান্ত সেবকলিগের মধ্যেও ক্লুকলীলাপ্রতি-গাদক ভাবার লিখিত বহুতর সাক্ষাদারিক গ্রন্থ প্রচলিত জাছে। বথা,—

বিকুপদ—এ এছ ভাষার লিখিত। ইহা বল্লভাচার্যা-ক্লড, ইহাতে বিকুখণ-প্রতিপাদক কতকগুলি পদমাত্র আছে।

ত্রক বিদাস—ত্রকবাসী দাস এই গ্রন্থখানি ভাষার রচনা করেন। ইহাতে জীক্তকের বৃন্দাবনলীলার বর্ণনা আছে।

আইছাশ-এই গ্রছে বল্লভাচার্য্যের আট জন প্রধান শিব্যের উপাধ্যান আছে।

বার্ত্তা—এই ভাষা-গ্রছে বন্ধভাচার্য্য ও তাঁহার মতান্থবর্ত্তী
৮৪ জন ভজের অতাঙ্কুত চরিত বর্ণিত আছে। ঐ ৮৪ জনের
মধ্যে ত্রী প্রুষ উভরজাতীর ও সকলবর্ণোত্তব লোকই ছিল।
এই সাম্প্রদারিক শাল্পে জীব ও ব্রন্ধের অভেদ ভাব স্পষ্টত:ই
উক্ত হইরাছে। সিদ্ধান্তরহন্তের পরামৃত্তি বা জীবক্রশ-মিলন
সম্বদ্ধীর প্রসন্ধ চৌরাদি-বার্ত্তা নামক গ্রছের একস্থলে এইরূপ
লিখিত আছে। বল্লভাচার্য্য শ্রীকৃক্তের সহিত এ বিবরে কথোপ-কথন করিরা উহার মর্ম অবগত হইরাছিলেন। বথা,—

শতব্ প্ৰীআচাৰ্ব্য জী মহাপ্ৰভূ আপ কহৈ জো জীব কো বৰূপ তো তুম্ জানত হী হৌং লোববস্ত হৈ সো তুম দোঁ। সম্বদ্ধ কৈসে হোৱ, তব্ প্ৰীঠাকুর জী আপ কহৈ জো তুম জীবন কো ব্ৰহ্মসম্বৃদ্ধ করাবোগে তিন কোঁ হোঁ অস্বীকার করজো তুম জীবন কোঁ নাম দেউগে তিনকো সকল দোব নিবর্ত্ত হোরদে।"

'তথন জাচার্য্য কহিলেন, তুমি জীবের বভাব জাত আছ, ভাহার সকলই দোব, তবে কিরণে তোমার সহিত ভাহার সংবোগ হইবে ? ভাহাতে ঠাকুরজী (জর্বাৎ শ্রীকৃষ্ণ) কহিলেন, তুমি ব্রহ্মের সহিত জীবের বেরপ সংবোগ সাধন করিবে, আমি ভাহাই বীকার করিবা লইব।'

এই করেকথানি ছাড়া আরও বিতর সাম্মাদাদিক গ্রন্থ বিছ-মান আছে, কিন্তু সে সমত তাদৃশ প্রচলিত নহে। ভক্তমানেও এ সম্মাদার সংক্রান্ত অনেক উপাধ্যান আছে। কিন্তু বল্লভাচারীর। অপরাপর সম্মাদারের ক্লার উহাকে মূল শাস্ত্র বলিরা অলীকার করেন না । উলিখিত বার্কাই ইইালের ভক্তবাল হানীর হইরাছে ।
 তক্তরালের ভার ঐ এছেও ঐক্তকের প্রসাদ ও আবির্তাব হতক জনেকানেক আনৌফিক ও অনভাবিত উপাধ্যান
 বির্বেশিত ইইরাছে ।

উক্ত প্ৰছেত্ব অন্তৰ্গত প্ৰকৃতি দালপুতানী বা বাৰপুত্ৰ-লাতীয় শ্ৰীলোকের উপান্ধান পাঠে জাধ হয়, বে এই সম্প্রদারে সহ-मजरगत्र विशान किन ना । जनकाथ ७ जागायान नाट्य हुई निया সঙ্গে লইয়া বলভাচাৰ্য্য লক্ষীজীৰ্বে স্থান ক্ষিজেছিলেন। এমন সমরে ঐ প্রী খীর স্বামীর সহগ্রনার্থ তথার উপস্থিত চইল। ইহা বেধিরা জনমাথ সভীর্থ রাণাব্যাসকে জিল্লাসিলেন, "স্ত্রী-লোকে সভীদ-বৰ্ম-প্ৰকাশের বে প্ৰথা প্ৰচলিত আছে, ভাচাব ব্যাপারখানা কি ?" রাণাঝান শিরভাগনপূর্কক কহিলেন, ^শশবের সহিত সৌন্দর্ব্যের অনর্ব সংবোগমাত্র।" রাজপুতানী তাঁচার শিরশ্চালনের ভাৎপর্য্য বঝিতে পারিয়া সহগমনে নিবৃত্ত হইল। কিছু দিন পরে রাজপুতানী অকলাৎ এক দিন উছোদিগকে দেখিরা আপনার সহমরণ নিবারণ-সংক্রান্ত পूर्व वृक्षां व्यवसाद निर्देशन कविन, धनः जरकारन जांशास्त्र গুট অনের কি কথা বার্ত্তা হইরাছিল, তাহাও জানিতে প্রার্থনা করিল। রাণাব্যাস নিশ্চিত জানিলেন, রাজপুতানীর উপর ঞ্জীআচার্যোর ক্লপা হইরাছে, এবং লগরাথের সহিত তাঁহার যে কথোপকথন হইরাছিল, তৎসমুদার সবিশেষ অবগত করিয়া কহিলেন, ভোমার রূপলাবণ্য শ্রীঠাকুরজীর সেবার সমর্পিত না করিয়া শবের উপর নিক্ষিপ্ত করা অভিশন অক্রচিত ও অভ্যন্ত চংখের বিবর। অনস্তর রাজপুতানী রাণাব্যাস-সরিধানে উপদিও হইরা আঠাকুরজার পরিচর্যাকার্য্যে নিযুক্ত থাকিয়া जायःकः कतिताहित्सम्।

বল্লভাচার্য্যের পুক্ষ বিট্ঠনাথ পিতৃপদে অভিবিক্ত হন।
এ সম্প্রাবেদ লোকেরা তাঁহাকে ঐপোসাঁইলী বলিরা লানে।
বিট্ঠলনাথের সাত পুত্র, গির্ধরি রার», গোবিন্দ রার, বালরুঞ,
গোকুলনাথ, রবুনাথ, বহুনাথ, ও বনস্তাম। ইহাঁরা সকলেই
ধর্ম্মোপদেশক ছিলেন, এবং ইহাঁদের মতান্মবর্ত্তীরা বলিও পৃথক্
পূথক্ সমাজভূক, কিন্ত প্রধান প্রধান বিবরে প্রার সকল
সমাজেরই ঐক্য আছে। কেবল গোকুলনাথের শিহ্যদিগের
কিন্ধিং বিভিন্নতা বেখিতে পাওরা বার। তাহারা অপর হয়
সমাজের মঠের প্রতি কিন্তুই শ্রহা রাখে না, অকীর সমাজের
গোত্বামী ব্যতিরেকে আর কাহাকেও শ্রহা করে না, এবং
ব্যকীর সমাজের গোত্বামী ব্যতিরেকে আর কাহাকেও শাত্র-

বিহিত শুক্ত বলিয়া খীৰার করে না। বিট্ঠননাথের অস্ত কোন পুত্রের মতান্ত্রবন্তী লোকদের এরণ একতর পক্ষপাত নাই।

নানাম্বানের, বিশেষতঃ ওজরাত ও মালবদেশের, বহুতর वर्गनिक ७ वानमात्री लाटक बहाजाहार्यात्र मजावनकी क्रेगाहरू এ নিমিত্ত এ সম্প্রবাবে অনেকানেক ধনাতা লোক দৃষ্ট হইয়া থাকে। ভারতবর্ষের সর্কান্থানে, বিশেষতঃ স্থুরা ও বুন্দারনে, ইহাঁদিগের বিস্তর মঠণও দেবালয় আছে। কানীতে এ স্প্র-नारमञ्जू शरें हो अतिष मन्त्रिम चारकः नामकीम मन्तिम ७० প্রস্ববোত্তমজীর মন্দির । ঐ গুই মন্দিরের বিগ্রাহ অতি বিখ্যাত ও বহু সম্পত্তিশীল। জগন্নাথক্ষেত্র ও ছারকা এ সম্প্রদারের অতি-মাত্র পবিত্র তীর্থ, এবং আজমীরের অন্তঃপাতী শ্রীনাথছারের মঠ দর্মাণেক। মহিমারিত ও সমৃদ্ধি-সম্পন্ন বলিরা প্রসিদ্ধ আছে। প্রবাদ আছে, এ মঠের বিগ্রহ পৃর্বে মধুরার ছিলেন; অৱদঙ্গেব ৰাদশাহ তথাকার মন্দির ভান্ধিয়া ফেনিতে অনুমতি করিলে পর, ঐ সর্কান্তগ্যামী বিগ্রহ তথা হইতে আলমীরে अञ्चल करत्रन । ज्याकात्र वर्त्तमान मन्तित्र अधिक निरमत नरह, কিন্তু সেবক-নত ধনে ভত্রস্থ বিগ্রাহের বিস্তর সম্পত্তি হইয়া উঠিরাছে †। বল্লভাচারীদিণের অস্ততঃ এক বারও শ্রীনার্থ वर्णन कतिए इस, धवर धार्यान शांचामीत महिशारन छविवरसद আমাণ-পত্ৰ গ্ৰহণ করিয়া মঠের আমুকুল্যার্ছে ব্লাসম্ভব কিছ किছ नाम कतिएछ रहा।

সাম্প্রদারিক বাসক্দিগকে গোঁসাঞীরা গলার তুলসী মালা ধারণ করাইরা "প্রীকৃষ্ণ: শরণং মম" এই অষ্টাক্ষর মন্ত্র পাঠ করিরা ধর্ম্মসম্প্রদারভূক্ত বলিরা গণ্য করে এবং ঘাদশ বা ডভোবিক বর্ষে বধন ঐ বালক জীবনের কর্ম্মবাকর্ম্মতা ও শুরুত্ব করিরা দৈনন্দিন ক্রিরাকলাপ আচরণ করিতে সমর্থ হর, তথন গোঁসাঞীরা ভাষাদিগকে দীকা ছিয়া ধাকেন, তথন ঐ বালক প্রীগোপাল চরণে আপনার যথা সর্ম্মস্থ অর্থাৎ ভন্ম, মন ও ধন সমর্শন করিতে অন্ত্যাস করে। বিরোক্ত মত্ত্রে ভাষা স্থাপট বর্ণিত হইরাছে:—

শর্ভ প্রীকৃষ্ণ: শরণং মম সহত্র পরিবংশরাবিজ্ঞানসঞ্জাত-কৃষ্ণবিরোগন্ধনিত্যতাপক্রেশানস্কতিরোভাবোহং কুসবডে কৃষ্ণার মেহেজির-প্রাশাহত্তঃ-কর্মাতভূষ্মাংশ্যু দারাগারপুরাস্তবিত্তেহ-পরাশ্যান্ধনাসহ সম্পরামি দাসোহং কৃষ্ণ ভ্রান্ধি ।"

কারীছ পোকারের। থাড়োক কণ্ডীতে এক পরলা করিরা দেবালরে হান
 করে। আর ভর্থাকার বয়-ব্যবসায়য়য় প্রভিবারের বয়বিয়রে ছই পরসাকরিয় বয়।

[†] প্রভাক সন্দিরের ভিন স্থানে বান করিতে হয়, বধা বিগ্রাহ সয়িধানে,
প্রকর্তকের সহিতে, ও য়নাধবারের বায়ে;

ই নারবশক্ষাতে ইহার অপুরূপ ভাষের লোক পাওলা বার

বোধ হর সংস্কৃত বিশ্বিধারী বাদের অপকলে।

বল্ল ভাচার্য্য, বল্লভাচারীনামক বৈশ্ববমত প্রতিষ্ঠাতা একজন আচার্য্য। তিনি লন্ধণভট্টনামক এক জন তেলগু বান্ধণের বিতীয় প্ররূপে ১৪৭৯ খৃষ্টান্দে জন্মগ্রহণ করেন। তাঁচার পিতামাতা দান্দিণাত্যের স্থান গৈলে প্রান্ত হইতে তীথবাত্রা উদ্দেশে উত্তরভারতে আদিরা উপনীত হন। এইপানে বারাণ্দীর অদূরবর্ত্তী চম্পারণ্য নগরে তিনি প্রস্তুত হইন্নাছিলেন। এই কারণে উত্তর-পশ্চিম-ভারতবাদী পতিতগণ তাঁচাকে উত্তরভারতবাদী বিল্লা গোরব করিরা পাকেন।

বল্লভের পিতা বিষ্ণুস্বামী» সম্প্রদায়ভুক্ত ছিলেন। বারাণসী ধামে অবস্থিতিকালে ধর্মাচার লইয়া তৎস্থানবাসীর সহিত তন্মতাবলম্বীদিগের যোর বিরোধ উপস্থিত হয়। এই কারণে তাঁহাকে বারাণ্দী ছাডিয়া অন্তত্ত ঘটতে হটয়াছিল: ঐ সময়ে তাঁহার পদ্মী পূর্ণগর্ভা ছিলেন। অতি ক্রত প্লায়ন কালে পথাতিক্রমণ কটে অকালে অষ্টম মাসে তাঁচার পত্নী এই নব-কুমার প্রস্ব করেন। তাঁহার। আপনাদের জীবন বিপদ্সমুগ জানিয়াই হউক, অথবা পুত্ৰের দেবালয়লাভের আবাসেই হউক, সেই সন্তঃপ্রস্ত তনম্বকে একটা বৃক্ষতদে ফেলিয়া রাখিয়া যান। এইরূপে দুরান্তরে গমনপূর্বক কিছুদিন অভিবাহনের পর, যথন তাঁহাদের প্রাণের আশকা দুরীভূত হইল, তথন তাঁহারা ধীরে ধীরে দেই পথে পুনরায় আসিয়া শীয় পুত্রকে ভদবন্তার অক্ষত শরীর ও জীবিত দেখিরা আনন্দাশ্রা বিসর্জন ক্ষরিতে করিতে কোলে তুলিয়া লইলেন। তদনস্তর পুলক-পুরিতহাদয়ে তাঁহারা সপুত্র বারাণসীতে উপস্থিত হইয়া তণায় কিছকাল অবস্থানের পর, শ্রীরন্দারণ্যের সমীপবত্তী গোকুল নগরে আসিয়া বাস করেন।

এখানে নারায়ণভটের অধীনে কোমলপ্রকৃতি বালক বল্লভের অধ্যাপনা চলিতে লাগিল। স্বীয় স্থকৃতি ও অধ্যবসারবলে বালক অতি অল্লকালের মধ্যেই নানা শাল্পে স্থপন্তিত হইয়া উঠেন। প্রবাদ এইরূপ যে, তিনি চারি মাদের মধ্যে সংস্কৃত সাহিত্য ও দর্শনশাল্পে সমাক্ ব্যুৎপত্তি লাভ করিয়াছিলেন।

একাদশ বর্ধ বর:ক্রমকালে তাঁহার পিতৃবিরোগ হয়, এই সয়য়
ছউতেই সাংসারিক বিশৃষ্থলা তাঁহার পাঠা জীবনকে তমসাচ্চর
করিরা কেলে। তাহাতে তাহার শাস্তিময় চিতে ঘোর সাংসারিক
বিরহ আসিরা সম্পত্তিত হয়। সেই বিশৃষ্থলার সঙ্গে সজে
সাম্পারিক আচারাম্প্রানের বৈসাশৃষ্ঠ দেখিয়া তিনি আয়ও হতভান হইরা পড়েন। এই সকল দেখিয়া তানিরা তিনি প্রকৃত

এই উদ্দীপনার বলবন্ত্রী হইরা বল্লভ বাল-গোপাল উপাসনারূপ বীর অভিনব মত প্রচার করেন। উত্তর-ভারতে তাঁহার
মত বিত্তার করিবার পূর্কোই, কায়াবাপদেশে তাঁহাকে একবার
মাতৃত্বমি দশন কারতে দাকিগাতো গমন করিতে হইরাছিল,
এখানে আচরেই তাঁহার কীপ্তিত্তন্ত প্রপ্রতিষ্টিত হয়। তথার
দামোদর দাস নামক একজন লক্ষপ্রতিষ্ঠ ব্যক্তি সর্কাপ্রথমে
তাঁহার নিকট দীক্ষিত হইরা তাঁহার ধন্মমতের আল্রর গ্রহণ করেন।
অতঃপর তিনি বিজ্বনগরে বার মাতৃলালরে গমন করেন।
এখানে বিজ্বনগর রাজদরবারে রাজপাঞ্জিলণ তাঁহার মতনিরাসের জন্ম একটা প্রকাশ্ত শভার তাহাকে বিচারে আহ্বান
করিলে তিনি তথার যাইয়া উপস্থিত হন। প্রতিতমগুলী
তাঁহার তর্কে পরাজিত হইলেন। রাজা কৃষ্ণদেব স্বরং তর্কস্থলে উপন্থিত ছিলেন। তিনি অপরিচিত সেই যুবকের বাগ্মিতা
ও জ্ঞানবত্তা দেখিয়া চমৎকত হইলেন এবং স্বরং তাঁহার শিব্যক্ব
গ্রহণ করিরা তাঁহাকে আপনার ধর্মগুল বলিয়া পূজা করিলেন।

এই ঘটনা ইইতেই বল্লভাচাটোর ধর্মমতের প্রতিষ্ঠাভিতি আরও দৃঢ়তর হইল। তিনি অতঃপর যে হানে গমন করিতে লাগিলেন, সেই ছানে অনেকেই তাঁহার শিব্যক্ত গ্রহণ করিতে লাগিল, এইরণে উজ্জানিনী, বারাণসী, হরিষার, প্রয়াগ প্রভৃতি প্রসিদ্ধ ও পবিত্র ধর্মক্ষেত্রে তাঁহার নবীন মতে অসংখ্য ব্যক্তি দীক্ষিত হইল। তাঁহার মতে, আলীবন ব্রহ্মচর্যাবল্যন স্থায়-সঙ্গত বা ধর্মপ্রণাদিত নহে। বারাণসী অবস্থানকালে তার্হ তিনি শ্বং বিবাহ বন্ধনে আবদ্ধ হইয়াছিলেন। এই বিবাহের কালে ১৫১১ খুটাকে গোপীনাথ এবং ১৫১৬ খুটাকে বিট্ঠলনাথ নামে তাঁহার ছইটী পুত্র সন্তান হর।

তিনি শেষ শীবনে প্রারই ব্রক্ত্মি ত্যাগ করেন নাই।
তথার ১২২০ খুটান্দে তিনি গোবদ্ধন শৈলের পার্বে শ্রীনাথের
কুপ্রসিদ্ধ ও ক্ষুর্ছৎ মন্দির স্থাপন করেন। একদা রুদ্ধাবনে
তগবদ্ধানে নিরত থাকিরা তিনি শ্রীক্রক্তের সাক্ষাৎ লাভ
করেন। ভগবান্ ঐ সমরে তাঁহাকে বীর পূজার বা উপাসনার
একটা অভিনব প্রথা প্রবর্তন করিতে আদেশ দেন এবং বলেন
বে, ঐ প্রথার তাঁহার বালকস্থিরই উপাসনার ব্যবহা জানিবে।
তলক্ষ্পারে বালক্ষ্প বা বালগোপাল নামে ঐ উপাসনাপদ্ধতি
প্রচলিত হইরাছে।

ৰারাণসীতে ভাঁছার বাসভবন ছিল। সেধানে ভিনি বাস

ধর্মপথাশ্ররই চিত্তভারাপনোদনের এক মাত্র অবণখন জামিরা ধর্মপাল্লালোচনার প্রার্ভ হন • এবং ক্রেমণঃ সার্ম্পারিক ও দামাজিক জাচারাদি সংস্কার দারা একটা জুভিন্য ধর্মসত-স্থাপনের জাপা উহার হুদরে জাগিয়া উঠে।

 [&]quot;त्रावाकुकर कै: चौठटक मध्यावाद्यक्षपूर्व थः ।
 कैदिकूचामितर क्रटक। निधानिकार वृद्धन्तमः ।" (व्यवानकारमहत्त्वको)

ু করিতেন এবং মধ্যে মধ্যে প্রীকৃষ্ণের লীলাভূমি প্রীর্ন্ধাবনে আসিরা আসনার ধর্মমর প্রীণকে ভগৰৎ-প্রেমসলিলে নিষিক্ত করিরা সইয়া মাইতেন। বারাণদীতে অবস্থানকালে তিনি বীর মতপ্রতিষ্ঠাপক কএক থানি ধর্মগ্রন্থ রচনা করেন। তর্মধ্যে প্রবেখিনী নারী প্রবিশ্বত ভগবন্দীভাটীকা অভি প্রসিদ্ধ। ১৫৩১ পৃত্তাকে বরভাচার্যের ভিরোধান বটে। তিনি বাধারণে বৈধানর বলিরা পৃত্তিত হইতেন। প্রহাধিতে ভাহার বরভদীক্তিত নামও পাওরা বার।

তাঁহার রচিত গ্রন্থাবদী—সত্তঃকরণপ্রবোধ ও ভাহার টীকা, আচার্য্যকারিকা, আনন্দাধিকরণ, আর্যা, একান্তরহন্ত, কৃষ্ণান্তম, চতুঃপ্লোকিভাগৰভটীকা, জনভেদ, জৈমিনিপুত্রভাষ্য (মীমাংসা), তম্বদীপ বা তম্বার্থদীপ ও তটু ীকা, ত্রিবিধলীলানামা-বলী, নবরত্ব ও ভট্টীকা, নিরোধলক্ষণ ও বির্ত্তি, পত্রাবলম্বন, পথ, পরিত্যাগ, পরিবৃঢ়াইক, প্রুবোডমসহত্রনাম, পুষ্টি-প্রবাহমর্যাাদাভেদ ও টীকা, পূর্বমীমাংসাকারিকা, প্রেমামৃত ও টীকা, প্রোচ্চরিজনামন, বালচরিজনামন, বালবোধ, ব্রশ্বহুজরুত্তি, ব্ৰহ্মসুত্ৰামুন্তাৰা, ভক্তিবৰ্দ্ধিনী ও টাকা, ভক্তিসিদ্ধান্ত, ভগবদগীতা-ভাষা, ভাগবভতৰদীপ নামে টাকা, নিবদ ও ভাগবভপুরাণটীকা মুবোধিনী। এছাড়া ভাগৰতপুরাণ দশমস্বনামুক্রমণিকা, ভাগৰত-পুরাণ পঞ্চম ক্ষরটীকা, ভাগবতপুরাণৈকাদশক্ষরার্থনিরূপণকারিকা, ভাগবতসারসমূত্র, মঞ্লবাদ, মধুরামাহাত্মা, মধুরাইক, বমুনাইক, बाकनीनानामन्, विरवक्रेषणाञ्चव, रवनक्रिकाविका, जाक्रशक्रवन, শ্রুতিসার, সন্ন্যাসনির্ণন্ন ও ভট্টীকা, সর্ব্বোত্তমন্তোত্রটিপ্লণ ও টাকা, সাক্ষাৎপুরুবোভ্যবাকা, সিদ্ধান্তসূক্তাবলী, সিদ্ধান্তরহন্ত, সেবাফল-বোত্র ও তাহার চীকা, স্বামিক্সটক।

বল্লভাচার্যের মৃত্যুর পর, তাঁহার বিতায় পুত্র বিট্ঠল নাথ মঠের গদিতে উপবিট থাকিয়া অসীম বদ্ধে ও উভ্তমে এবং বিশেষ আগ্রহের সহিত দক্ষিণ ও পশ্চিমভারতে খীর পিতার প্রবর্ত্তিত ধর্মাত বিস্তারে সফলমনোরথ হটরাছিলেন। তিনি এই প্রচারকার্য্যে অধর্মাভূক্ত ২৫২ জন সাধুর সাহায্য পাইয়াছিলেন। ঐ সকল পবিত্রচন্ত্রিত্ত বৈক্ষবহিগের জীবনী "দোপোবাভ্যনবার্ছা" নামক হিলীগ্রহে লিপিবছ আহে।

বিট ঠগনাথ ১৫৬০ গৃটাকে গোজুলে আসিয়া বাস করে। এথানে ৭-বংসর বয়ঞ্জনকালে পবিত্র গোবছন শৈলপিথরে ওছার ভবলীলা শেব হয়। ওছার ছই পদ্ধী এবং গিরিধর, গোবিল, বালক্ষক, গোকুলনাথ, রখুনাথ, বছনাথ ও বনস্তাম নামে গাভটী পুত্র ছিল; ভবাগে গোসাঞ্জী গোকুলনাথ বিভা ও বুছিতে সমধিক প্রসিদ্ধ। গোকুলনাথ, বীয় পিডামক ক্ষাভাচাথ্য ক্ষত বিভাস্করক্ষেত্র টাকা বচনা ক্ষিয়াছিলেন। ব্যক্তাচাথ্যের

বংশধরণণ গোসাঞী উপাধিতে পরিচিত। বোদাই মঠের গোঁসাই তাঁহাদের একজন প্রধান প্রতিনিধি।

শ্বভাগধ্যের ধর্মতঃ

ব্যক্তচাৰ্য্য-প্ৰবৰ্ত্তিত ধৰ্ম্মতন্ত্ৰেম্ন মূলমন্ত্ৰ প্ৰদানস্থা। এই কথা তিনি তগবানের নিকট লাভ করিয়াছিলেন এবং ভাছাই তাঁহার সিদ্ধান্তরহত্তে লিখিরা গিরাভ্রেন। উহা সাধারণের অভিশন্ত আদনরের বন্তবোধে এখানে উদ্ধৃত হইল:—

"প্রাবণভাষণে পক্ষে একাদখ্যং বহানিশি। সাক্ষাৎ ভগবতা প্রোক্তং তদক্ষরণ উচ্যতে ॥ একসবদ্দারাণাং সর্বেবাং দেহজীবরোঃ। नर्करणाविमवृद्धिरि रणावः शक्षविधः चुन्तः ॥ সহজা দেশকালোখা লোকবেদনিক্সপিভাঃ। गःरवांशकाः न्यानकान्छ न मखवाः कथकम ॥ षक्रशा नर्सारगवांगाः न निवृष्टिः स्थक्त । অনমণিতবন্ত_নাং ভন্মাৎ বর্জনমাচরেৎ ॥ নিবেদিভি: সমপোৰ সৰ্বং কুৰ্য্যাদিভি ছিভি:। ন মতং দেবদেবস্ত স্থামিভুক্তসমর্পণং ॥ তত্মাদাদৌ সর্বাকার্য্যে সর্বাক্ষসমর্শণম। দত্তাপহায় বচনং তথা চ স্কলং হরে: # ন গ্রাহ্মতি বাক্যং হি ভিন্নমার্গপরং মভম। সেবকানাং বথা লোকে ব্যবহার: প্রসিদ্ধাতি **॥** তথা কাৰ্যাং সমপ্ৰৈৰ সৰ্বেষাং ব্ৰদ্ধতা ভভ:। शक्रापः नर्कामाथाः श्रभामायिक्यांना ॥ গঙ্গাছেন নিরূপ্যং স্থাত্ত্বদত্রাপি চৈব হি। ইতি শ্রীবন্নভাচাথ্যবিরচিতং সিদ্ধান্তরহক্তং সম্পূর্ণম 🛚

[বিহুত বিবরণ বল্লভাচারী শব্দে জন্তব্য।]
বল্লভানন্দ, বট্কারক নামক ব্যাকরণপ্রণেতা।
বল্লভান (গ্রী) গুলুরাভত্ব একটি প্রাচীন নগর ও জনপদ।
[বলভীরাজবংশ দেখ]

২ রাড়ীর কুলীন প্রাহ্মণসমান্দের মেল। বছাত হইতে এই মেলের স্বস্টি।

বল্লভেম্ব, কৌতুক্চিন্তামণি, লিবপুৰাসংগ্ৰহ ও সনৎকুমার সংহিতাটীকা প্রণেজা। ইহার উপাধি সরস্বতী। ২ বৈছচিন্তামণি-রচারতা। ইনি তেগঞ্জাজণ, পিতার নাম অমরেখর ভট্ট।, বল্লভেম্বর (পুং) রাজপুরভেদ। বল্লম (বেশন) > বড়না। ২ সিংহল বীপনাত লৌকা বিশেষ। বল্লম (বেন্দ্ম), মাজাক প্রেসিডেন্সীর উত্তর আর্কট জেলার অন্তর্গত একটা গঙ্গাম। বন্ধীবাস নগর হইতে ৪ ফ্রেন্স

পশ্চিমে ক্ষরস্থিত। এখানে প্রাচীন চোলরামবংশের প্রতিষ্ঠিত

ſ

একটা প্রাচীন মন্দির এবং উহার স্থলপুরাণ স্নাছে। এখানস্থার নিলালিপির মধ্যে একথানি ১১৬৯ খুটান্সে রণসিংছ দেব মহারার নামক:রান্সার রাজস্ব কালে উৎকীর্ণ।

বল্লর (ক্লী) বলতে ইতি বল জ্বরন্। কুফাওকা। (রাজনি•) ২ মঞ্জরী। ৩ গছন । ৪ কুজা। (ধরণি)

বল্লরি [রो] (ত্রী) বল্ল-কিপ, বল্লং, সংবরণং ঋচছতীতি ঋ-জচু-ই, ক্লিকারাদিতি বা ভীষ্ । > মঞ্জরী।

"অনপায়িন সংশ্রমক্রমে গজতাে পতনার বর্মী।"

(কুমারস ৪।৩২)

২ চিত্রমূল। ৩ মেধিকা (রাজনি॰) ৪ বচা। (বৈছকনি॰) বল্লব (পুং) বল্ল-প্রীতে কিপ্বলং প্রীতিং বাতীতিবাক। ১ গোপ। (জনের)

"শনিন্মিৰ স্থরোঘাঃ সারমুক্জুমেতে।
কলসিমুদ্ধি গুৰুবাং বল্লবা লোড়য়ন্তি॥" (মাঘ ১১৮)
২ জীমসেন, বিরাট নগরে ধধন অজ্ঞাতবাস অবস্থার অবস্থান
করেন, তথন তিনি এই নামে পরিচিত ছিলেন।
"পৌরোগবো ফ্রনাণোহহং বল্লবো নাম নামতঃ।
উপস্থাস্থামি রাজানং বিরাটমিতি যে মতিঃ॥"

(ভারত ধা২া১)

(জি) ও কপকার। (অমর)
বল্লভী (জী) বল্লভ-ভাষ্। বলবজাতি জী, বলবপদ্ধী। পর্যায়—
আভীরী, গোপিকা, গোপা, মহাশূলী, গোপালিকা। (শব্দর্যাত)
বল্লাপুর (ক্লী) নগরভেদ। (রাজতর গং২০)
বল্লা (জী) বলতে সংযুগোতি বল্ল সর্বধাতুভা ইন্। > লভা।

"বল্লিশেষ্টয়তে বৃক্ষং সর্ব্বত?"চব গচ্ছতি।" (ভারত ১২/১৮৪/১৩)

২ পৃথিবী। (শব্দমালা)
বল্লিকণ্টকারিকা (জী) বলিরপা কণ্টকারিকা। অগ্লিনমনী-কুপ, শোলা। (রাশনি॰

বল্লিকন্টারিকা (ত্রী) শক্সিমনীকুণ।

বিল্লাক। (জী) > বৃত্তমন্নিকা, চলিত বেলফুল। (রান্ধনিক)

২ উপোদকী, পুই। (বৈভকনিক) বন্ধি-মার্থে কন্

ইলে। ও লতা।

টাগ্। ৩ গতা।
বিলিক্ (ক্নী) মরিচ। (রাজনি॰)(আ) ২ বলিজাতমাত্র।
বিলিক্ (ক্নী) মরিচ। (রাজনি॰)(আ) ২ বলিজাতমাত্র।
বিলিক্
বিলিক্
কর্মান ক্রামান কর্মান কর্মান কর্মান ক্রামান কর্মান কর্মান কর্মান কর্

ভালুকের অন্তর্গত একটা গওগ্রাম। পুর্বে ইছা হর্গানি পরিশোভিত নগরে পরিণত ছিল। পেরানী নবীতীরবর্তী **मिल्लाको आय वहेरछ ३ माहेल পশ্চিমে ও চিखुत वहेरछ এই** शास ३१ मारेन मिक्शभूर्क व्यविष्ठ। भूर्क अथारत देवन সম্প্রদার প্রবল ছিল, কালে শৈবগণ প্রবল হইছা সিলোগাস্ক্রার প্রভাব বিভার করেন। ভাঁহারা পর্কডোপরিছ প্রাচীন জৈন-मिना व्यक्षिकाद कतिहा छात्। खूबक्षग्रमिन्द शतिश्क करतन। পর্বতগাতে জৈনকীর্ত্তির নিয়র্শনশ্বরূপ অনেকগুলি মৃত্তি ও শিলা-ফলক উৎকীৰ্ণ আছে। মন্দিনের গঠননৈপুণ্য দেখিরা অছ-मान इत्र ८४, 8•×२• किंग्रे शक्तिमत्रक्क अक्ती शक्क करा मत्या क्षे मस्त्रिकी निर्मिष रहेबाट्य । ध्यवाप, क्रानबाबवरमब स्थान वांबा के मिन्द्र निर्द्धांग क्यारेशिक्षणन। भर्त्सकत मिन्नाराम পর্বতচ্ছা কাটিরা সমতল ভূমিতে পরিণত করা হইরাছে, তাহার চতুস্পার্বে প্রাচীরের ধ্বংসাবশের দেখিরা লোকে বলিরা থাকে বে, জৈন-প্রাহ্ভাবের সময় ঐ স্থানে একটা ক্ষুদ্র গিরিছর্গ স্থাপিত ছিল। নগরের প্রধান রাস্তার পূর্বাংশে একটা স্থবিষ্ঠ চূর্বের ধ্বস্ত নিদর্শন অভাপি দৃষ্টিগোচর হইয়া থাকে।

বিনিযুর, নাজান্ধ প্রেসিডেনীর ভিনেবলী জেলার করণত একটা গওগ্রাম। নানগুণেরী তালুকের সদর হইতে ৪ জোল দক্ষিণপশ্চিমে কুমারিকা অস্তরীপ হইতে ভিনেবলী সদরে আসিবার রাজার পশ্চিম থারে অবস্থিত। এথানে একটা দীর্ঘিকার থারে বহুসংখ্যক প্রস্তরাবলী নিপতিত আছে। উহার শিরনিপুণ্য ও তল্মধ্যে অন্ধিত প্রতিকৃতি প্রভৃতি পর্যবেক্ষণ করিলে সহজেই সেশুলি জৈনমন্দিরের ধ্বংসাবশেষ বালরা মনে হয়। ঐ পাথরের মধ্যে কতকগুলি শিলালিপি উৎকীর্ণ আছে। এথানে যে জিনস্থি পাওয়া গিয়াছিল, তাহা বিশপ সাক্ষেত্র লইয়া রক্ষা করিতেছেন।

এতব্রির এখানে কুলনেধর পাণ্ডোর স্থাপিত একটা সূব্যুহৎ নিবমন্দির আছে। বিষ্ণু ও স্থব্দ্ধণ্য দেবের অগু গুইটা মন্দিরও বহু প্রাচীন। পাণ্ডা রাজবংশের প্রতিষ্ঠিত একটা সূদ্দু গুর্পের ধ্বংসাবশেব অভাপি দৃষ্টিগোচর হইনা থাকে।

বলিরাষ্ট্র (গুং) জনপদবালী লোকডেন। স্পণর নাম মলরাষ্ট্র। (বিষ্ণুপু')

ব্দ্নিশাকটপোতিকা (ত্রী) ব্দ্নিপ্রধানা শাক্টপোতিক। মূলপোডী, চলিত ক্চিম্লা। (ব্লাকনি॰)

বিল্লিন্নি পূল্ বিল্লেখন (পং) ৰলিকাবান: প্ৰণ:। অভালপণী।
বলি (জী) বলি-ভীৰ্। কভা। এই লভার ছিতিকাল একবৰ্ষ
মাত্র। ইহা ভূপ্ত বিলা বিশ্বত হইবা পড়ে। ইহা ভূমাও বা
ভূমভা কভা কান্তিৰ নামে গাভি। (স্থাক স্বস্থান ২৮ জঃ)

্দুলভাৰলীশ্চ গুৰাংশ্চ ছান্নশ্মন এব চ।

স্থনাত্তে চক্রিবে মার্গং ছিন্দত্তো বিবিধান্ জ্ঞান্॥"

(রামারণ ২৮৮০।৬)

২ কৈবৰ্জমুতা, চলিত কেওটমুক্তা। (রাজনি॰) ৩ অজমোলা, চলিত রাজনী। ৪ চব্য, চই। (রাজনি॰) ৫ আমি-দমনী, শোলা। ৬ কৃষ্ণাপরাজিতা। (বৈশ্বকনি॰) বল্লীকর্প (পুং) সম-বিষ্মারপালি কর্ণ। (সুক্রত স্॰ ১৬ জঃ)

বল্লীকর্ন (পং) সম-বিষমায়পালি কণ। (স্কুলত স্থা ১৬ জঃ) বল্লীথদির (প্ং) আরুকনামক ধনিরভেদ। ইহার গুণ—তিক্ত, ্টু, উঞ্চ, কবার, অন্তরস এবং ধাস-কাসন্থ ও পিন্ত-রক্ত ত্রিলোধ-চর। (বৈস্তক্ষিণ)

বল্লীগড় (পুং) ৰলিক্সপো গড়ঃ। মৎসাভেদ, চলিত কথার কোণাও ভোলা, কোণাও বেলে এবং কোণাও বালিকড়া বলে। ইহার গুণ —লঘু, ক্লফ, জনভিয়ান্দী, বায়ুক্র ও কফনাশক। বল্লীফ্ল (রী) বল্লাং লভারাং জারতে ইতি জন-ড। মর্নীচ। বেলাকিন, শক্তে) ভারুপদসংজ্ঞক বংসরে বল্লীজ সকল পরিপক হয়। অক্ত শক্ত হয় না।

"ভান্তপদে বন্ধীৰং নিশক্তিং বাতি পূৰ্কণক্তঞ্চ।"(বৃহৎসং৮।১৩) বন্ধীপঞ্চমূল (ক্লী) গড়া পঞ্চমূলৰ

"विशात्री मात्रिवात्रमनी अङ्ग्हाशस्मान्नी ८५७ ।"

(কুঞ্ত ক্৽ ৩৮ আ:)

পরিভাষা প্রদীপের মতে উক্ত পঞ্চমূদ কফনাশে প্রশন্ত।
প্রশ্নত চিকিৎসাস্থানে সপ্তদশ অধ্যারেও ইহার উল্লেখ দেখা ঘার।
বল্লীপ্রশাশকন্দা (রী) ভূমিকুমাও। (বৈশ্বকনি॰)
বল্লীবৃত্ত (ক্লী) বর্কটিকাদি। (স্প্রশুত চি॰ ১৪ জঃ)
বল্লীবৃত্ত (ক্লী) বর্টাকুল ভেদ।
বল্লীবৃদ্ধী (রী) বল্লীকুপা বদ্ধী। ভূবদ্ধী, চলিত মোটা কুল।
বল্লীবৃদ্ধী (পুং) বল্লীবৃজাতো মূদ্ধ:। মুকুইক। (রাজনি°)

বল্লীমূল্য (পুং) বল্লীবু জাতো মূল্য:। মুকুছক। (রাজান')
বল্লীব্যক্ত (পুং) বল্লীবং দীর্ঘো বৃক্ষ:। সাগবৃক্ষ। (রাজনিও)
বল্লুর (ফ্লী) বল্লাতে আত্রিয়নে লতাদিনেতি বল্ল বাহলকাং
উরচ্। > কুঞা। ২ মল্লরী। ও ক্ষেত্র। ৪ নির্ক্ষণ হান।
ব শাহল। (হেমচও) ৬ গহন। (মেদিনী) বিশ্বধররত্নাবলীতে বল্লুর স্থানে বল্লর পাঠ দেখিতে পাওরা বার।

বল্লুর (ত্রি) বল্লাতে সংবিদ্ধতে ইতি বল্ল-উরচ্ (থর্জিপিঞ্জাদিতা উরোলটো। উপ্ ৪।৯০) ১ আতপাদি বারা তক মাংস। (অমর°) মঞ্ এইরূপ মাংস ভক্ষণ নিবেধ করিরাছেন।

"নিমজ্জত বংকাদান্সোনং বর্রনের চ।" (মহ ৫।৬৩) 'বর্বং গুৰুষাংসম্'(কুর্ক)

২ শৃক্রমাংস। (মেদিনী) ও বনক্ষেত্র। ৪ বাছন। ৫ উবস্তৃমি । (হেষচক্র) ব্রুর (বসুর), কাশ্মীর উপত্যকান্থ একটা স্থবৃহৎ ক্রম। বিলাম
নদীর বিস্তার কারা গঠিত। ইহার পূর্কপশ্চিমে ২১ মাইল এবং
উত্তরদক্ষিণে ৯ মাইল বিভূত। ইহার ঠিক মধ্যস্থানের অক্ষা
৩৪°০০ উ: এবং জ্রাবি ৭৪°৩০ পু:। ইহার মধ্যস্থানের অক্ষা
ক্রুর বদ্ধীপ আছে, তত্পরি একটা প্রাচীন বৌদ্দানের ধ্বংসাবশেষ বিস্তমান। এই বিস্তৃত বৌদ্দীর্ত্তি যে এক সমরে
এপানকার অপূর্বামী সম্পাদন করিরাছিল, তাহাতে সম্পেহ নাই।
প্রাক্তিক সৌন্দর্য্যেও ইহার তটভূমি উজ্জ্বল রহিয়াছে।
এখানে প্রায়ই ভীষণ বাটকা হইরা থাকে।

বল্লুর, (রায়-বল্লুর) মাস্ত্রান্ধ প্রেসিডেন্সীর উত্তর আর্কট জেলার একটা তালুক। ভূপরিমাণ ৪৫৪ বর্গমাইল। এই উপ-বিভাগের পালর নদী প্রবাহিত উত্তরাংশ সমতল এবং অপর সকল হানই প্রায় জন্মলাকীর্ণ পর্বতমালার পরিপূর্ণ। এখানে ছর্টী থানা আছে।

২ উক্ত জেলার অন্তর্গত একটা নগর। পামীর নদীর তীরে অবস্থিত। অক্ষণ ১২°৫৫ ১৭″ উ: এবং দ্রাঘি ৭৯°১০ ১৭ পু:। উপরিভাগীর বিচারকার্যোর স্থবিধার জক্ত এপানে ১টা দেওয়ানী ও ৪টা ফৌজদারী আদালত আছে। নগরটা মিউনীদিপালিটার অধীন। এখানে এক জন স্ব্কলেস্টার্থাকেন। একটা সেনানিবাস প্রতিষ্ঠিত থাকার এথানে সামরিক কর্মচারীদিগের বাসের জক্ত গৃহাদি নির্মিত আছে। এতদ্বির জেল থানা, গির্জা, হাসপাতাল প্রভৃতি রাজকার অট্টালিকা এই নগরের শোভা সম্পাদন করিতেছে। মাল্রাজ্বে দক্ষিণপশ্চিম শাথা এই নগর দিয়া গিরাছে। এখানে একটা ষ্টেন আছে।

১২৭৪-৮০ খুটান্দের মধ্যে এখানকার হুর্গ নির্দ্মিত হয়।
হানীয় কিংবদন্তী এই বে, ভজাচলবাসী এক ব্যক্তি এই
হুর্গ নির্দ্মাণ করিরা বিজ্ঞরনগর রাজকরে অর্পণ করেন।
খুটীর ১৭শ শতান্দের মধাভাগে বিজ্ঞাপুরের স্থলতান এই
নগর অধিকার করিরা লন। অতঃপর ১৬৭৬ খুটান্দে তুকাজীরাওর অধীনে মহারাইরগণ সাড়েবার মাস অবরোধের পর
বলুর হুর্গ জর করেন। ১৭০৮ খুটান্দে দিল্লী হইতে লাউদ
খা নামক এক জন ট্রুমোগলসেনানী দাক্ষিণাত্যে প্রেরিত
হন। তিনি মহারাইর্দিগান্দে পরাজিত করিরা ১৭১০ খুঃ অঃ
হুর্গ শীর জামাতা লোকআলীকে দান করেন। লোকআলীর
পুত্র মুর্ব্রলা আলী ১৭৪০ খুটান্দে এখানে সব্দর আলীকে
গোপনে নিহত করিরাছিলেন। অতঃপর প্রার ২০ বংসর
কাল মুর্ব্রজাআলী এই স্থল্ড হুর্গের সর্ব্রমর কর্তা হইরা আর্কটের
নবাব এবং উচার ইংরাজনিত্রকেও উপেকা করিরাছিলেন।

>^{५ - প্রীক পর্যন্ত মূর্ত্তলা নির্কিবাদে এই ভূগাধীশন থাকেন।} উক্ত বৰ্ষে এক দল ইংরাজদেনা হুৰ্গঞাচীর সন্মুখে আদিয়া গোলাবর্থণ করিতে থাকে। তখন কেরায়ারের বিনীত প্রার্থনার ইংরাজ দেনাপতি সদলে প্রভ্যাবৃত্ত হন।

ইহার কিছুদিন পরে, বলুর ইংরাজদিগের হল্পত হইলে তথার ইংরাজনেনারাপনের ব্যবস্থা হয়। ১৭৬৮ খুটাকে হারদার আলী সলৈক্তে চুর্গ সমীপে আসিরা চুর্গাধিকারে প্রবৃত্ত হইলেন। ইহার পর হারদার পুনরার ১৭৮০ খুটাকে এই নগর অবরোধ করেন। এই অবরোধ প্রায় ছই বৎসর খাকে। व्यवस्थात कांत्रमात्र कांगीत मृज्य क्रेस्स मिक्स्त्रदेशस्थ स्थ ত্যাগ করিয়া বার।

১৭৯১ थुडोरम गर्ड कर्गछत्रानिम् এथान हरेरछ रमनुत्र जाक-মণে অগ্রসর হন। ১৭৯৯ খুটান্দে প্রীরদপত্তনের প্রনের পর, টিপু স্থলতানকে কিছুদিন এথানে অবক্ষম রাথা হয়। এই সময়ে সেনাদলের মধ্যে রাজবিদ্রোহজনক একটা বড়বন্ত চলিতে পাকে, তাহাতে ১৮০৬ খুষ্টাব্দে এখানে একটি সামাক্ত সিপাহী-বিজ্ঞাহ ঘটে। ভাহাতে অনেক মুরোপীয় নিহত হয়। কর্ণেল किरमम्भि विद्यार नमन कतिरम गीयर मिरुदात्र तालकुमात्रिभितक বাঙ্গালায় স্থানান্তরিত করিয়া ইংরাজগণ ভাবি-বিল্রোহের আশহা হইতে মুক্ত হন।

উপরি উক্ত হুর্গ ভিন্ন, এখানে উল্লেখযোগ্য আরও অনেক ষ্ট্রালিকা ও মন্দির আছে। তুর্গাভ্যস্তরত্ব জলকঠেবর স্বামীর মন্দির (শৈব) এখনও স্থন্দর অবস্থার রক্ষিত আছে। স্থানীর প্রবাদ, ১২৭৪ খুষ্টান্দে ঐ মন্দির নির্দ্ধিত হয়। কেহ কেহ বলেন, ১২৯৪ খুষ্টাব্দে তুর্গস্থাপনের পর উহা গঠিত হইরাছিল। কেহ কেহ বলেন, বিজয়নগরাধিপ কৃষ্ণ দেবরাম্বের রাজ্যা-ধিকারের কিছু পূর্বে সম্ভবতঃ ১৪৮৫ খুটাব্দে ঐ হর্গ প্রতিষ্ঠিত হয়। রাজা কৃষ্ণদেব রাম এখানকার সূর্যাপ্তর্গ পুকরিণী এবং ज्लीत महिरी क्रकासी जमानगीजीत इंहों मिनत वानन करतन। वानीय विक्रमनित ও চাঁদ সাহেবকৃত स्थासनित, रावनात वः भव সমাধিক্ষেত্র এবং কএকটি হিন্দুকীর্তির নিদর্শন দেখিবার জিনিস। বল্লুর, মান্তাভ প্রেসিডেন্সীর রুঞ্চা জেলার বেজবাড়া ভালুকের ব্দত্তর্গত একটি নগর। বল্পুর কমিদারীর রাজধানী। নদীতীরে বেজবাড়া হইতে ১৫ মাইল দক্ষিণে অবস্থিত। ব্লুকু, মান্ত্ৰাজ প্ৰেসিডেনীর বাপট্না তান্তের অন্তর্গত একটি গওগ্ৰাম। বাপট্লা হইতে > মাইল উভয়ে অৰ্ছিত। এখানকার গোপাল্যামিমন্দিরে ও মঞ্চপের ব্যস্তগাতে চুই পানি শিলাফলক উৎকীর্ণ আছে। তৎপাঠে জানা বার বে, ১৫৭৩ খুটানে ঐ মঞ্বণটি নির্দ্তিত হ**ই**য়াছিল।

वह्नक (११) सम्बन्धः [समूत्र (१४)] বল্লবর, স্নাতিবিশেষ : বলের, নাজান্ধ প্রেদিডেলীয় উভয়বিভাগত ধালত লাতি-বিশেষ। ইকারা বের-বলের নামেও পরিচিত্। वद्यश्र (जी) वय-कारव वक्क, वयात्र मध्यम्भात्र माधूः, वय-वर । धांबीहरू। (शंत्रावनी) ব**ত্তক্ত** (পুং) বৰে পৰ্বতে ভাৰতে ইতি জন-ড। ১ উপগ। উপলভূপজেদ, বাবভূপ। চলিত উলুখড়। (असह) "সুশাভাবে তু কর্তব্যাঃ কুলাশ্বস্তব্যুট্যাঃ। ত্ৰিবৃতাগ্ৰন্থিনকেন ব্ৰিডিঃ পঞ্জিবেব বা ॥" (মৃদু ২।৪২) বব্দ্ধা (জী) বৰদ-টাপ্। ভূণবিশেষ। প্ৰ্যায়--- দৃঢ়পত্ৰী, कृरगक्, कृगववका, सोबीभजा, मृत्कृगा,भागीवाचा, मृतक्ता। सग---মধুর, শীঙল, পিন্ত, দাহ ও ভৃষ্ণানাশক, বাতবৰ্জক, কচিকর ও कश्चिकात्रक। (त्राव्यनि) वन्न (পুং) শাখা। "শত वन्मा वहः" (ভাগ° লা>ভা২৫) বল্হ, ১ কাভি। ২ শ্ৰেষ্ঠ। চুরাদিও পরত্যৈও অকও শ্ৰেষ্ঠাথে ভু।দি॰ আত্মনে॰ সৃত্ত সেই। লট্ বল্গছতি। সূঙ্ভাবৰত্লং। ভাদি পক্ষে লট্বল্হতে। বল্ছিক (গৃং) স্বাতিবিশেষ। সম্ভৰতঃ বাহ্নীক স্বাতি। [পৰর্গে দেখ।] ব্ব (পুং) সমন্দর্শনার্থ জ্যোভিবোক্ত একাদশ করণের প্রথম। ববাঙ্গ (রী) বরাগ। (ত্রিঞ্চ°) ববজুষী (ত্রী) বে ব্যক্তি পাপক্ষালন করিয়াছে। স্বতপ্রায়ণ্ডির। বত্র (এ) > বেটিড। (সারণ) (পুং) ২ জন্ধকারান বারক। (সারণ) ৩ গর্ত্ত, গহ্বর। (সারণ) ৪ কুপ। (निष्कु ७।२७) विद्ध (भूर) भन्नीबावनक सन्ना। "विद्याः कृष्णाः भन्नीनमान्छावा-বিতাং ব্যান্' (খক্ ১।১১৬।১০ সারণ) ২ রূপ। (নৈখন্টু তাণ) বব্ৰিবাসস্ (ত্ৰি) ৰূপৰ্ক বসনশালী। 'বব্ৰিবাসসং ববিঃ রূপনাম রূপোপেতবদনবস্তম্।' (অথকা ৮।৬।২) वस्त ((स्ता)म (प्रः) वस्तू वृक्त, व्रनिष्ठ वावना । "বৰ্ম লঃ কিং কিরাডঃ স্তাৎ কিং কিরাটঃ দশীতকঃ। স এব কথিতভঞ্^{তিভ্রাভা} বট্পদমোদিনী। वस्तृ नः कक्प्रम् शारी कृष्ठक्र मिविवानहः ।" (खाव 210) বকালনির্যাস (পং) বন্ধু রক্ষের নির্যাস, বাবলার জাটা, র্গদ্। ইহার গুণ-গ্রাহী, পিছ ও বাহুম, এবং রক্তাভিসার, পিকাল, মেহ, ও প্রদর্নাপক। ভঙ্কি ইহা ভগ্নহানসভান-কারী, শীত ও রক্ষালবায়ক। (আরেয়ন•)

বৰৰ ল্যাভিন্নিক (গং) গ্ৰহণীলোগাধিকানোক ঔৰধভেদ

বাবনা ছাল ২৫ সের, পাকার্থ জল ২৫% সের, শেব ০৪ সের,
শুড় ০৭॥ সের, ধাইকুল ১৬ পল, পিপুঁল ২ পল, সারকল,
কাকলা, শুড়ঘক্, এলাইচ, ডেল্পেঅ, নাগেষর, লবল, মরিচ
প্রভাবে ১ পল । এই সমত একজ করিরা এক মাস বাবৎ
আবৃত পাত্রে রাধিবে। ইহা সেবদ করিলে অতিসার প্রভৃতি
নানা গীড়ার শান্তি হর । (ডেবলারগ্রাবদী গ্রহণাধিকার)

বশ, > কাজি। ২ ইজা। অধাদি পদকৈ সক পেট্। লট্
বিটি, উঠ: উপজি। ছি—উড্টি: লিঙ্ উভাং। লঙ্
অবট্ ঔঠাং ঔপন্। লিট্ উবাশ, উপজু: উবশিধ, উপিব।
লুট্ বশিতা। লুট্ বশিহাতি। লুঙ্ অবশীং। অবাশীং।
সন্ বিবশিবতি। বঙ্ বাবস্তে। বঙ্লুক্ বাবটি। শিচ্
বাপরতি। লুঙ্ অবীবশং।

ব্দা (ক্লী) বল (ৰলিরণ্যোরুপসংখ্যানং । পা ৩০০০৮) ইত্যন্ত বার্ত্তিকোক্ত্যা অপ্। ১ ইছো। ২ প্রেড্ড। ৩ আরম্ভতা। "বলে বলবতাং ধর্মঃ সুখং জোগবতামিব ॥"(ভারত ১২।১৩৪।৭)

(ত্রি) বঁটাতি বশ-অচ**্। ৪ আরন্ত**। (শব্দর্ভা•)

"গুণাল্যোহলি ভদাকর্ণ্য সন্থঃ খেদবলোহভবৎ।"

(কথাসরিৎসা৽ ৮/১৭)

পুং) বল-ভাবে আচ্। ৫ ইছো। (আমর) উক্ততে ইন্ততে ইতি বল-কশ্বি আপ্। ৬ বেশ্তাগৃহ। ৭ আরওতা। ৮ প্রভূষ। (ত্রিকা৽) ৯ জন্ম। (হেম)

বশংবদ (ত্রি) বশং তবাহং বশ ইতি বাক্যং বদতীতি বশংবদ (প্রিয়বশে বদঃ থচ্। পা অং।৩৮) ইতি থচ্, (অফ্র্রিবদন্তঞ্জ মুম্। পা ভাএ৬৭) ইতি সুম্। আমি তোমার বলীভূত এই কথা যিনি বদেন। ২ বলীভূত।

"স অহার হ্রাচারো ভূত্ৎ লোভবশংবদ:।"

(রাজতরঙ্গিণী ৪৷৩৯৫)

বশংবদত্ত্ব (রী) বশংবদন্ত ভাব: দ । বশংবদের ভাব বা ধর্ম । বশকের (তি) বশংকদোতীভি। ধাহাকে বশ করা যায়। বশু, বশীভূত।

বলাকা (রী) বশেন আর্ম্বতরা কারতি শোভতে ইতি কৈ-ক। বস্তানারী। (শব্দমাণ)

বশক্তিয়া (জী) বশক্ত ক্রিয়া। বশীকরণ। পর্যায়---সংবদন।
(জমর)[বশীকরণ বেশ।]

বুশাগ (ঝি) ৰশং গাছতীতি গম-ড। বশগত, বৰীভূত। "বদাৰি তে হস্ত বরং বমিছদি

প্রশাধি মৎজ্ঞান্ বশগোহন্মহং তব।" (ভারত ৪।৩।১২)
দ্রিরাং টাপ্। বশগা—বশীভূতা।

বশ[ং]গত (ত্রি) বশংগতঃ। বন্ধত্ত। (ভাগ- গাংগ্রং)

বশগুড় (দ্লী) বশগুড় ভাষা স্ব। বশগুর ভাষ বা ধর্ম, বশুড়া ব্দাগুম্ম (দ্লী) বশ হওরা, বশীভূত হওরা।

বশগামিন্ (মি) বশং গছতীতি গম-শিনিঃ বিনি ৰশীভূত হইয়াছেন, বশ হইয়াছেন।

বৃশ্কু। (ত্রী) বশক্ত ভাষঃ ওল্-টাপ্। বশন্ধ, রশের ভাব বা ধর্ম, বশন্ধ।

বশনীয় (তি) বশবোগ্য, বস্তু।

বশ্বর্তিন্ (জি) বশে বর্ততে বৃত-পিনি। বশীভূত, বিনি বশে অবস্থান করেন।

বশন্ম (ত্রি) বশে ডিঠতীতি হা-ক। বশবর্তী।

বৃশা (ত্রী) বশ-জাচ্টাপ্ (বশিরগ্যোরপসংখ্যানং। পা ওাওছে) ইতি জাপ্বা। > বন্ধ্যানারী। মন্ত্র মতে, রাজা কন্ধ্যানারীর ধন রকা করিবেন।

"ৰশাংপুত্ৰাস্থ চৈবং ভাত্ৰকণং নিচুলাস্থ চ।

পতিব্ৰতাস্থ চ শ্ৰীৰ্ বিধৰাস্বাভূরান্থ চ 🗗 (মন্থ ৮/২৮)

> হতা। ২ যোবা। ৩ শ্রীগবী। ৪ করিনী। (মেদিনী) ৫ বন্ধাগবী। "ভারতাগ্নে বশাভিক্লভঃ" (ঋক্ ২।৭।৫) বিশাভিক্লাভির্নোভিঃ' (সারণ) ৬ বশীভূতা।

"সপ্তভিম বিতং হলা করবীরত পুশাকম্।

স্ত্ৰীণামগ্ৰে ভ্ৰামন্ত্ৰেচ্চ কণাৰ্টেৰ সা বশা ভবেৎ ॥"(গক্লড়পু° ১৮৩ অ°) বশাকু (পুং) পক্ষিবিশেৰ।

বশাঢ়্যক (পুং) বশরা জাঢ়্যক:। গ্রচুরবশাবস্থাৎ তথাস্থং। শিশুমার। (শক্তরত্বা•)

বশাতল (পুং) জাতিবিশেষ। (ভারত সভাপর্ম)

বশামুগ (অ) বশস্ত অহুগঃ। বশবতী, বশীভূত। ২ দাস বা দাসী। বশাস্ত্র (অ) > বশাস্ক অর। ২ বশারবিদিট। (শক্ ৮।৪৩১১)

বশাপায়িন্ (গ্ৰং) বশাং পিবতীতি পা-ণিনি । কুকুর ।(শব্দরকাণ) বশামুত (ত্রি) বশাযুক্ত । (পা ৮।২।৯ ধ্বাদিগণ)

বশায়াত (বি) বশং আয়াতঃ। বশীভূত। বশপ্রাপ্ত।

"প্রাক্সংস্কারবশায়াতবৈরলেহ:" (ক্পাসরিৎসা° ২৩৫১)

বলি (রী) বল-ভাবে ইন্। বলিছ। (শক্ষালা)

বৃশিক (बि) 🕶 । (अमन्र)

বৃশিক। (জী) ৰশী বশীক্ষণং সাধ্যক্ষেনাভ্যক্তা ইতি বশ-ঠন্ টাপ্ঃ অশুক্ষাঃ (শক্চ•)

বশিতা (জী) বশিনো ভাবঃ বশিন্-ডল-টাপ্। বশিদ্ধ, বশীর ভাব বা ধর্ম।

বশিতৃ (তি) বশ-ড়চ্। সভন্ন, স্বাধীন।

ঁ(থা বৈ মন্তাৰমাপন্ন ঈলিজুৰ্শিজুঃ পুমান্।" (ভাগ ১৯৷১৫৷২৭) 'ব্শিজুঃ খতৱন্ত' (খামী) বিশিক্ষ (क्री) বশিম্ ভাবে ও। আরত্তর।
"শাত্রং স্কৃতিস্তিতমপি প্রতিচিন্ধনীরমারাবিতোহপি নৃপতিঃ পরিশন্ধনীর:।
ভাবে হিতাপি ব্বতিঃ পরিরক্ষণীরা
শাত্রে নৃপে চ ব্বতৌ চ কুতো বশিষং॥" (বড়ুছ ১)
২ অপিমাদি অইবিধ ঐশব্যের মধ্যে ঐশ্যবিশেষ। যে

২ ব্দণিমাদি আইবিধ ঐশব্যার মধ্যে ঐশ্যবিদেশ। যোগ বারা এই ঐশ্যা লাভ হইয়া থাকে। এই ঐশ্যা লাভ হইলে বতত্রভাবে বিচরণ করিবার ক্ষমতা হর এবং সকলই ডাহার বশ হইয়া থাকে।

'শ্বণিমা লখিমা প্রাপ্তিঃ প্রাকাম্যং মহিমা তথা।
ক্রীণিম্বক বশিস্ক তথা কামাবশান্তিতা॥' (ভরত)
বশিন্ত্ (ত্রি) বশ-ইনি। জিতেজির, বশযুক্ত।
ক্রিনিটি (ত্রি) বলো বলীজনগং সাধাতেনাক্রপ্রো ইজি বশ-ইনি

বৃদ্ধিনী (স্ত্রী) বশো বলীকরণং সাধ্যছেনান্তঃক্সা ইন্তি বল-ইনি জীপ্। ১ বলা। ২ শমীবৃক্।

বশিষ্কন্ (ত্রি) যোগের ঐশব্যভেদ।

"বশিদ্ধাৎ বশিমা নাম যোগিনঃ সপ্তমোগুণঃ।"

(মার্কপু• ৪০।৩২)

বশির (ক্রী) উপ্রতে ইয়তে ইতি বল বাহসকাং কিরচ, যথা বলং বলফং রাজীতি রা-ক। ১ সামূল লবণ। ২ গজশিয়লী। (অমর) ৩ চবা। (রাজনি॰) ৪ অপামার্গ। (মেদিনী) ৫ বচা। (শব্দক্রিকা)

বশিষ্ঠ প্ং) বশবতাং বশিনাং শ্রেষ্ঠঃ, বশবৎ-ইষ্ঠন্ (বিশ্বতোপুক্। পা বাতাওব) ইতি মতোপুক্, যথা বরিষ্ঠঃ প্রোদরাদিখাৎ সাধুঃ। অনামপ্যাত মুনি, পার্যার—অরক্ষতীজানি, অরক্ষতীনাথ, বাশিষ্ঠ। (হেম। বশিষ্ঠ ব্রহ্মার প্রাণ হইতে জন্মগ্রহণ করেন, কর্মমন্ত্রা অরক্ষতী ইহার প্রী এবং পুর সপ্রবি। (ভাগবত) কৃপাপুরাণের মতে ইহার ৭ পুর ও এক কঞা। [বসিষ্ঠ দেখ।]

ত হার । পুন ও এং বিচান দ্বিনার ।

"বলিষ্ঠন্ট তরোজারাং সপ্ত পুতানজীজনং ।

ক্সাঞ্চ পুণরীকান্দাং সর্কশোভাসমধিতাম্ ॥" (কৃর্মপু">২অ")

২ মিত্রাবন্দনের পুত্র । (অলিপু•)

বশীকরণ (রী) বল-ক্ল-ভাবে লা্ট, অভ্ততভাবে চি । দণিমন্ত্রৌবধাদি বারা আরত্তীকরণ, আথর্মপক্রিরাজেন, বে ক্রিরা বারা
সকলে বল হর, জাহাকে বলীকরণ কহে, ইহা মণি, মন্ত্র ও
প্রবিধ বারা হইরা থাকে। মণি প্রভৃতি ধারণ এবং মন্ত্র ও ঔবধ
প্রবোগ করিলে বলীকরণ হর। তত্ত্বে বলীকরণের মন্ত্রোবাধর
বিশেব বিবরণ বর্ণিত হইরাতে, অতি সংক্রেপে ভারার বিবর
আলোচনা করা হইল।

বিনি মারণ, উঠাটন ও বলীকরণাদি কার্যা করিবেন, তাহার মন্ত্রনিত্ব হুইতে হুইবে, মন্ত্রনিত্ব না হুইরা এই সকল অফিয়া করিলে ভাহা দিছ হইবে লা । সাথক বিশ্বন্তিতে বিংশতি সহত্র মন্ত্র কল করিয়া এই বলীকরণ করিবে, বলীকরণ করিছ করিছে। ভাহাকে দর্শনমাত্র ত্রিভূবন কুক্তহুইয়া থাকে।

ভূমিকুমাণ্ড ও বটর্জের মূল ধালের সুহিত ধর্বণ করিয়া বিভূতির সহিত কপালে ভিলক করিবে, এই করিয়া বাহাকে সেখা বার, ভিনিই বলীভূত হন। প্রানক্ষত্রে প্নর্নবার মূল ও কক্রমন্ত্রীর মূল উজোলন করিয়া এই মূলের সহিত বববীর বজনকালে 'ও এই পুরং ক্ষোভর ভগবভি গভীরর মুং খাহা' এই মন্ত্র নারা ৭ বার অভিমন্ত্রণ করিবে। ইহা বন্ধন করিবার পূর্কে এই মন্ত্র বিংশতি সহল ক্রপ করিবে। ইহাতে লোক সকল বলীভূত হয়। বায় ঘারা উৎক্ষিপ্ত প্র, মঞ্জিন, অর্জ্নবৃক্ষ, তগবকাল এই সকল দ্রবা সমভাগে বাহাকে ভক্ষণ এবং বাহার গাত্রে ক্ষ্মান বার, সেই ব্যক্তি বলীভূত হয়।

প্র্যানক্ষরে কণ্টকারীর মূল উত্তোলন করিয়। কটিতে বন্ধন এবং রুফ্পক্ষের চতুর্কশীর রাত্তিতে প্রশানস্থিত মহানীল হুকের মূল উদ্ধৃত করিয়া নরতৈল্যারা অঞ্জন করিলে জগৎ বলীভূত হয়।

শাশানোৎপর মহানীলবুক্ষের মূল ও বীর ওক্ষ একত্র পেষণ করিরা অঞ্জন করিলে বলীক্ষরণ করিতে পারা যার এবং উক্ত মূল হয়ে বন্ধন করিলে সেই ব্যক্তি সর্কলোকপ্রিয় হয়। প্রয়ানক্ষত্রে ইড়া নাড়ী বহন সমরে প্রক্ষার্যীর মূল উদ্ভোলন করিয়া ঘাহাকে ভোজন করান যার, সে বক্স হয়। পেচকের সদয়, ঘতকুমারী ও গোরোচনা, এই সকল ক্রব্য সমপরিমাণে লইরা চক্ষতে অঞ্জন করিলে ক্রিয়ুবন বলীভূত হয়। চক্ষতে অঞ্জন দিবার পূর্বের "ওঁ নমো মহাবন্ধিণি অমূকং মে বন্ধনানর যাহা" এই মন্ত্র > হাজার জপ করিতে হয়। মূগশিরানক্ষত্রে রক্তকর্নীর মূল উদ্ধৃত করিয়া তাহার নয় অক্ল প্রিমাণে কালক — 'ওঁ ঐং আহা' এই মন্ত্রে ৭ বার অভিমন্ত্রিত করিয়া যাহার নাম উল্লেখ করিয়া ভূমিতে নিখনন করা যার, সেই বংক্তি নিশ্চরই বণীভূত হয়। ই মন্ত্র প্রথমে > হাজার জপ করা আবশ্রক।

অপামার্গের মূল উত্তোলন করিয়া তাহার তিন অসুল পরিমিত কীলক ৭ বার অভিমন্ত্রিত করিয়া ধারার পূছ মধ্যে নিক্লেপ করা বার, নেই ব্যক্তি বলীভূত হইয়া থাকে। 'ওঁ মদন কামদেবার বাহা' এই মত্র অস্টোত্তরশত বার অপ করিয়া সিদ্ধ হইলে এই কার্যা করিবে। অভিমন্ত্রণত এই সম্ভ্রায়া হইবে। অপামার্গের মূল হারা কর্ণালে ভিলক করিলেও বলীকরণ হর।

বরকুকুত্রম বস্ত্র মধ্যে প্রহণ করিয়া ত্রিপাণের মধ্যস্থানে শনি বা সক্ষণবারে কয় করিবে। তৎপরে ঐ বল্রদগ্ধতন্তরারা কপালে তিলক করিবে। ইহাতে রাজাও বশীভূত হন। কয় করিবার সময় 'ওঁ সমাে তৈরবীতারে আক্রাকালে ক্ষলসূত্ রাজমোছনে প্রজাবশীকরণে ত্রীপক্ষমরঞ্জনিগোকবস্তমোহনি মে ুসাহং 'ওঁ গুরুপ্রসালেন' এই মন্ত্র পাঠ করিতে হয়।

ক্ষণাঁকের চতুর্কনীর রাজিতে ইবলাললিয়ার বৃণ, নরতৈল, মধু ও ছরিতাল এই সকল জব্য একজ করিয়া কণালে তিলক করিলে সর্বলোককে বনীভূত করিতে পারা বার।

বুমানীবৃক্ষের মূপ ও হরিভাগ একতা পেবণ করির। গুটিকা করিবে, ঐ গুটিকা মুখমধ্যে রাখিরা বাহার নিকট যে প্রব্য প্রার্থনা করা বাইবে, তিনি বলীভূত হইরা তৎক্ষণাৎ সেই দ্রব্য প্রানান করিবেন। "ও অলাকর্ণেবিরে ক্র্বলে আর্হি কেশিক জটাকলাপে চকারকেৎকারিশি আহা' এই মন্ত্র পাঠ করির। ইহার অনুষ্ঠান করিতে হয়।

বটপত্র ও ময়ুরশিখা ভুল্য পরিমাণে লইরা ঘবিরা ভিলক করিলে সর্কলোক বলীভূত হয় এবং ক্রফাপরাজিতা, ভূলরাজের মূল, গোরোচনা, বেড়েলা ও খেতাপরাজিতার মূল এই সকল দ্রব্য একত্র পেবণ করিরা অবিবাহিতা কল্পার হতে লেপন করিবে, তৎপত্রে ঐ লিপ্ত বস্ত জলের সহিত ঘর্ষণ করিরা তিলক করিবেল সর্কলোক বলীভূত হয়।

রক্তকরবীর পুলা, কুড়, খেতসর্বপ, খেত আক্ষের মূল, তগর, খেতগুলা ও রাধান-শসার মূল এই সকল দ্রব্য প্রামক্ষত্রত্ত ক্ষাষ্টমী বা ক্ষণা চড়ুর্ঘলী ভিথিতে একত্র করিয়া পেষণ করিবে, তৎপরে ঐ শিষ্টদ্রব্য দারা ভিলক করিলে সকল লোক বশীভূত হয়।

অপামার্গের মৃগ ও গোরোচনা একত্র পেবণ করিরা কপালে তিলক করিলে ত্রিজগৎ বশীভূত হয়। "ওঁ নমো বরজালিনী সকলোকবদত্বরী স্বাহা" এই মন্ত্র ৮ হাজার জপ করিরা উক্ত কার্য্য করিবে। পেচকের চন্দ্র উৎপাটন করিরা লইরা ভাহার সহিত গোরোচনা মিশ্রিত করিরা বাহাকে জলের সহিত পান করিতে দিবে, সেই ব্যক্তি বশীভূত হইবে।

পোচকের হুই কর্ণ এবং চটক পঞ্চীর চক্ষ্ এই ছুই স্তব্য একত্র চূর্ণ করিবে, এই চূর্ণ দ্বারা কপালে ভিলক করিলে লগৎ বলীভূত করিতে পারা বার। জার এই চূর্ণ কোন ব্যক্তির ভক্ষ্য স্তব্য ৪ পানীর জলের সহিত প্রেদান করিলে অথবা গছক্রবা ও পুলোর সহিত জাল্লাণ করাইলে বা কোন ব্যক্তির মন্তব্যে অর্পন করিলে সে বলীভূত হর।

পেচকের মাংস, কুছুম, অগুল, রক্তচন্দন ও গোরোচনা এই সকল দ্রব্য সমপরিমাপে একত্র পেষণ করিয়া ভক্ষণ কিংবা পাণের সহিত প্রালান করিলে জিকাগৎ বলীভূত হর। ইং। করিবার পূর্কে 'ওঁ হ্রীং হ্রাংক্সং প্রেং কট্ট নমঃ' এই মন্ত্র সহস্রবার কপ করিলা করিতে হয়। ইহাতে কি স্ত্রী কি পূক্ষৰ সকলেই বলীভূত হয়। পূর্কাবিস উপবাসী থাকিয়া রাখালনসার মূল উত্তোলন করিয়া,

উত্তরাতিমূথে উদ্পাদে ঐ মৃদ কুটিত করিবে, অনস্তর ঐ মৃদ ও ত্রিকটু তুল্য পরিমাণে লইরা ছালমূত্রে পেবণপূর্কক ছারাতে শুকাইরা বটী প্রস্তুত করিবে। তৎপরে ঐ বটিকা ও রক্ষচন্দন একত্র ঘর্ষণ করিরা বীর অঙ্গুলিতে লেপন করিরা ঐ অঞ্লি বারা বাহাকে স্পর্ণ করা বাইবে, সেই ব্যক্তি বশীভূত হয়।

পূৰ্কোক বঁটা, দেবদাক ও খেডচন্দন তুলা পরিষাণে লইয়া একত্র কলে ঘর্বণ করিয়া বাহার আলে লেপনার্থ প্রাদান করা বার, সেই ব্যক্তি বলীভূত হইয়া থাকে।

পূর্বাঞ্চত বটা ও গোরোচনা এই ছই দ্রব্য তুল্য পরিমাণে লইরা জলের সহিত পেবণ করিরা কণালে তিলক করিলে সেই ব্যক্তি সর্বাঞ্জর লাভ করে। 'ওঁ নমঃ শটী ইন্তানী সর্বাবশঙ্করী সর্বার্থসাধিনী স্বাহা' এই মন্ত্র স্বশ্ব ব্যক্তির করিবে।

ক্ষণ চতুর্দশী বা ক্ষণাইমী তিথিতে উপৰাসী থাকিরা দেবতাকে বলিপ্রদানপূর্বক বেড়েলার মূল উদ্ভোলন করিরা চূর্ণ
করিবে। এই চূর্ণ ডাম্বুলের সহিত যাহাকে ভক্ষণ করিতে দিবে,
সেই ব্যক্তি বলীভূত হইরা থাকে।

গোরোচনা ও বেড়েলা এক ব্র পেষণ করিয়া তিলক করিবে লকল লোক বলীভূত হয়। মনঃশিলা ও বেড়েলার মূল এক ত্র পেষণ করিয়া অঞ্জন করিলেও সর্বলোক বলীভূত হয়। বেড়েলার মূল সংগ্রাহ পর্যান্ত তাখুলের সহিত প্ররোগ করিলে রাজাও বলীভূত হয়। বেড়েলার মূল চূর্ণ করিয়া মন্তকে ধারণ করিলে বলীকরণ হয়। ঐ মূল মূখে রাখিয়া যে নারীকামনা করা যার, সেই নারী বলীভূতা হইয়া থাকে। ইহা করিবার পূর্বের্ক 'ওঁ নমো ভগবতি মাতলেখরি সর্বম্খরশ্বনি সর্বেষাং মহামারে মাতলি কুমারিকে লেপে লবু লখু বলং কুরু স্বাহা' এই মন্ত্র সহস্র অপ করিয়া উক্ত প্রক্রিয়া করিতে হয়।

শ্বণানের দলার ও শূগালের রক্ষ একত করিরা বাহার মন্তকে নিক্ষেপ করা বার, দেই ব্যক্তি নিক্ষর বশীভূত হয় । মর্রের পিন্ত, গোরোচনা, আতীপুলা এই সকল জ্বর অবিবাহিতা কল্পাবারা পেবণ করাইরা বাহাকে লার্ল বা পান করান বার, সেই ব্যক্তি বশীভূত হইরা থাকে । চক্তগ্রহণ কালে খেত অপরাজিতার মূল আহরণপূর্বক তদ্বারা অঞ্জন করিরা কপালে তিলক করিলে সকল লোক বলাভূত হয় । কাটা নাট্যার মূল মুখে রাখিলে বশীকরণ করিতে পারা বার এবং প্রতিবাদী সূক হয়, বা অক্সত্র পলারন করে । ক্ষণপক্ষের চতুর্জনী তিখিতে খেতগুলার মূল উচ্ ত করিয়া তাশুলের সহিত বাহাকে দেওরা বার, সেই ব্যক্তি বশীভূত হয় । এই প্রেক্রিয়া বারা দকল লোককে বশীভূত করিতে পারা বার ।

মনংশিলা, গোরোচনা ও খেত অপরাজিতার মূল একত্র করিয়া পেবণ করিবে, পরে উহা ধারা কপালে ডিলক করিয়া থাহার সহিত আলাপ করা থার, সেই ব্যক্তি বলীভূত হয়। অর্ণ-বেষ্টিত খেতাপরাজিতার মূল মূল্রামধ্যগত করিয়া বে ব্যক্তি ধারণ করে, তাহার বাক্যে সকল লোক বলীভূত হয়। খেত অপরাজিতার মূল চর্কাণ করিয়া তন্ধারা তিলক করিবে, নারী কিংবা নয় উক্ত তিলকধারী ব্যক্তিকে দর্শনমাত্রই তাহার বলীভূত হয়। এই প্রক্রিয়া করিবার পূর্কে 'ধং বল্লকিয়ণে শিবে রক্ষ রক্ষ ভগরতি মমাল অমৃতঃ কুল কুল বাহা' এই মন্ত্র সহল জপ করিতে হয়।

পুষ্যানক্তবৃক্ত কৃষ্ণপক্ষের অইমী তিথিতে বাধক উপবাসী া থাকিয়া পূজা, ধূপ, বলি ও য়তপ্রদীপ প্রদানপূর্বক 'ওঁ ৰেড-বর্ণে সিতপর্কতবাসিনি অপ্রতিহতে মম কার্য্যং কুরু কুরু ঠঃ ঠঃ স্বাহা' এই মন্ত্র হান্ধার আটবার ৰূপ করিবে। তৎপরে শ্বেড গুঞ্জাফল ও সেই স্থানের মৃত্তিকা আহরণ করিয়া ঐ ফল গুড বারা লেপন করিবে, তানেস্তর ঐ বীজ ও মৃত্তিকা একটা নৃতন পাত্রে নিকেপ করিয়া ক্লাচডুর্দনী বা মাইমী ডিথিতে মৃত্তিকা मास পुलिया बाथित । यछनिन की बीक इटेटल तुक इटेंगा कन না হয়, ততদিন 'ওঁ শেতবর্ণে সিতবাসিনি খেতপর্কতবাসিনি সক্ষকার্য্যাণি কুরু কুরু অপ্রতিহতে নমো নম: স্বাহা' এই মত্ত্রে জলদেক করিতে হইবে। ঐ বক্ষের ফল হইলে পুনরায় পুষাা-নক্ষত্তে শুচি ছইয়া উপবাসী থাকিয়া ধূপাদি উপহার প্রদান করিবে, পরে 'ওঁ ঝেতজ্বলার নমঃ' ওঁ পল্নমূথে শিরসি স্বাহা. ওঁ সর্বজ্ঞানময়ৈ শিখায়ৈ বষট, ওঁ নমঃ সর্বশক্তিমতৈ কবচার হং, ওঁ নমঃ নেত্রয়ায় বৌষট্ ওঁ পরমন্তভদনে অল্লায় ফট্ এট মত্তে স্থান করিয়া খেতগুলার মূল উৎপাটন করিবে। ইহার পুরেষ ওঁনমো ভগবতি হীং খেতবাদে নমঃ নমঃ খাহা খেত গুঞ্জার মূল তুলিয়া এই মন্ত্র দশহান্তার ৰূপ এবং হৃত মিশ্রিত তিল ও খেতদুর্কা দারা সহত্র হোম করিতে হইবে। পরে ঐ খেত গুঞ্জার মূল ও খেতচন্দন একত্র পেবণ করিয়া আলে লেপন করিলে উত্তম বশীকরণ হয়, উক্ত মূল মধুর সহিত লেপন করিলেও সকল লোক বশীভূত হয়।

মনঃশিলা পূর্বোকরণে উচ্চ খেত গার মূল ও খেত-চলন এই তিন দ্রব্য একত কলের সহিত খর্বণ করিয়া কপালে তিলক ক্রিণে স্ক্লোক ব্লীভূত হর।

পূর্বারূপ খেতগুলার মূল, খেতসর্বপ ও প্রিরন্ধ, এই তিন দ্রব্য সমপরিমাণে লইরা চূর্গ করিরা সেই চূর্গ বাহার মন্তব্ধে নিক্ষেপ করা বার, সেই ব্যক্তি বশীভূত হয়। 'ওঁ নমঃ খেত-গাত্রে সর্বালোকবশকরি ছটান্ বশং কুফ কুফ যে বশমানয় খাহা' এই বন্ধ আটোতরপত লগ করিবা সিছ হইলে ভবে করিবে। এই বন্ধ সিছ না হইলে এই ব্ৰীকরণ হয় না।

বাসকের মৃল, প্রের্ছু, ুকুচ, এলাচ্চি, নাগকেশর ও বেঁড-সর্বপ এই সকল ক্রয়া একত্র করিয়া বাহার অলে ধৃপপ্রধান করা বার, সেই বাজি বলীভুত হইরা থাকে। 'ওঁ জাসিনি নাধবি নাধবি নমঃ' এই মত্রে ধৃপ অভিমন্ত্রিত করিয়া লিতে হইবে। এই মত্রে একটা পূলা লইরা শতবার অভিমন্ত্রিত করিয়া যাহাকে দেওরা বার, সেই ব্যক্তি বলীভুত হয়। অল ভোলন করিবার সমর এই মত্রে অল অভিমন্ত্রিত করিয়া বাহাকে বলাভুত করিতে হইবে, তাহার নাম করিয়া গদিন ভোলন করিলে সেই ব্যক্তি বলীভুত হয়। অলভোজনের পূর্কে 'ওঁ কটং কটে বোররুগিণি ঠঃ ঠঃ' এই মন্ত্র সহলবার লপ করিবে।

সাধক 'ক্লীং জনকে আহা' এই বন্ধ ছই গক্ষ লপ করিয়া স্বভাক্ত গুপ্ত হারা জপের দশাংশ হোন করিবে। এইরূপে লপ হোম করিলে বেবী সৌভাগ্য প্রদান করেন এবং স্পর্শনাত্রে সাধক ত্রিভূবন বশীভূত করিতে পারে।

আৰখর্কে আমোহণ করিয়া 'ওঁ নমো ভগবতে করার সিদ্ধরণিণে শিখিবদ্ধ সর্কোবাং শিবমন্ত শিবমন্ত হন হন রক্ষ রক্ষ সর্বভূতেভাশ্চ নমঃ' এই মন্ত্র দল হাজার ক্রপ করিয়া পরে একটা করবীর পুশা উক্ত মত্রে ৭ বার অভিমন্ত্রিত করিয়া বাহাকে দেওরা বার, সেই ব্যক্তি ভৎকণাৎ বলীভূত হইরা থাকে।

'ওঁ নমো ভূতনাথার বং ভূপালং বশং কুরু কুর ভূবনকোতক সর্কলোকান কোভর কোভর কে: ব্লীং ব্লীং ব্লুং আহা' এই মন্ত্র লক্ষ লপ করিলে সাধকের প্রতি ভূতনাথ অর্থাৎ মহাদেব সম্ভট হন এবং ঐ সাধক বাহাকে সমণ করে, সেই ব্যক্তি তৎক্ষণাৎ বলীভূত হইরা থাকে।

রাজবলীকরণ—কুছুম, রজ্জচন্দন, গোরোচনা ও কর্ণুর এই সকল জব্য সমপরিমাণে লইরা গোছধের সহিত মিশ্রিত করিরা তিলক করিবে, ইহাতে রাজবলীকরণ হয়। এই তিলক করিবার পূর্বে 'ওঁ ক্লীং সং অমুকং মে বলং কুল কুল আহা' এই মত্র হাজার জপ করিবা করিতে হইবে।

মজিনা, কুছুম, বমানী, শ্বতকুমারী, চিত্যাভন্ম ও আপন শরীরের রক্ত এই সকল এবা একত করিয়া বীর ওক্ত বারা ভাবনা দিতে হইবে, পরে প্রানক্তাে উহার ওটিকা করিবে। এই ওটিকা বাহাকে ভক্ষান্তব্য বা পানীর জলাদির সহিত ভক্ষণ করাইবে, সেই বাজি নিশ্চরই বশাভূত হয় এক উক্ত ভটিকা রাজাকে স্পর্ণ করাইলে চগুমত্তএভাবে রাজাও বশীভূত হন। চগুমত্র 'ওঁ ব্রীং রক্তচায়ণ্ডে কুক কুক অমুকং মে বশ্নানর বাহা' এই মত্র হাজার লগ করিয়া করিতে হর।

চত্রগ্রহণকালে কেত অপরাজিতার মূল উদ্ধৃত করির। প্রজ্বে ভালম করাইলে চগুমরবলে নেই প্রকৃত্তহলাও বলীভূত হইরা থাকে। ইহাত্তও উক্ত চগুমর সহক্র লগ এবং ভোলন-কালেও ঐ মত্ত পাঠ করিতে হর। উত্তরকানী, উত্তরাবাঢ়া কিংবা উত্তরভালপদ নক্ষত্রে প্রাভঃকালে অবধ্যক্ষের মূল উদ্ধৃত করিরা হতে থারণ করিলে রাজবারে বা অক্সাভ হানে কর লাভ হইরা বাকে।

ভরণীনক্ষত্রে আবলকী বৃক্ষের মূল, বিশাধানক্ষত্রে আন্ত-রক্ষের মূল এবং পূর্বকন্ধনী নক্ষত্রে লাড়িদর্কের মূল প্রহণ করিয়া হজে ধারণ করিলে লেবরাল ইক্ষণ ভাহার প্রভি বলীভূত হম। আরোনক্ষত্রে নাগকেশরের মূল প্রহণ করিয়া করে বন্ধন করিলে রাজা বলীভূত হন। রক্ষোৎপলের মূল, আঁকোড় কলের তৈলে ঘর্ষণ করিয়া পূর্ব্যোক্ষ চণ্ডনত্ত্রে ৭ বার অভিমন্ত্রিত করিয়া কপালে ভিলক করিলে রাজা বলীভূত হন। ইহাভেও চণ্ডমন্ত্র সহপ্রবার ক্ষপ করিজে হয়।

রক্তচন্দন, খেতসর্থপ ও কটু তৈবের সহিত চওদত্রে সহস্র হোম করিলে তৎক্ষণাৎ রাজাকে বনীভূত করিতে পারা বায়। রাত্রিকালে স্বীয় গৃহে ছাগরক্তের সহিত খেতসর্থপ বারা উক্ত চওমত্রে সহস্র হোম করিলে রাজাকে বনীভূত করিতে পারা বায়। রাত্রিকালে মধুর সহিত সর্বপ-পূপা বারা চওমত্রে সহস্র হোম করিলে সমস্ত পৃথিবীর অধিপতিও তৎক্ষণাৎ বনীভূত হইয়া থাকে। *

শ একটিঅ: হিজে মন্ত্রী মন্ত্রং লকু । বৃত্তবংশ ।
তক্ত: কোজনতে লোকাল্ দর্শনাবের সাধকঃ ।
বিদারিবটনুলর কলেদ সহ বর্ষাধে ।
বিজ্ঞা সংবৃতং মন্ত্রী ভিদকং লোকবভারং ।
প্রের পুনর্ম বারুলং করেদজীরবৃলিকা ।
বববীলং তথা বছা করে সপ্রাভিনত্রিতন্ ।
প্রেরা অবতি সর্বাভ মন্ত্রের কথাতে ।

ও বং পুনং ক্ষোভর ভগৰতি গভীয়ন সুং বাহা এতস্তরসমূহকাং অধ্। দিছো ভবতি।

উৎবাজগনং ব্যক্তিইং ক্ষুক্তং ওপনং সনং।
বাবে পাৰে তথা শাৰ্শেইতে বন্ধং তথকালন্।
নিংহীনুলং হনেও পুৰো কটাং বন্ধা লগংকিছে।
নিনি কুক্তমুৰ্ভিভাং নহানীনং স্থানিবতঃ ।
উদ্ধ্যা নহাতিলেক অঞ্জনে লোকবন্ধনুও।
তম্পং বন্ধ ওকেশ অঞ্জনে লোকবন্ধনুও।
তম্পং বন্ধা ওকেশ অঞ্জনে লোকবন্ধনুও।
তম্পংশ সন্তু ভা বন্ধাৰীন্দ্ৰিক।
ভোলাবেং সৰ্ব্যু ভা বন্ধাৰীন্দ্ৰিক।
ভোলাবেং সৰ্ব্যু ভা বন্ধাৰীন্দ্ৰিক।

ত্রীবনীকরণ—পারাবডের ক্রমর ও চক্তু এবং স্বাপরীরে রক্ত, গোরোচনা ও বিহ্নার মলা এই সকল একত্র করিয়া অঞ্চন করিলে ত্রী বলীভূতা হয়।

> छेण्कस्वतः जूणाः क्षांद्रीत्तांत्रनः स्वीः। अक्षनः लाग्ना वक्षमानतस्त्रुवनकत्रम्॥

ওঁ নমে। মহাবন্ধিৰি অমুকং বৰ্ণবানর খাহা, অন্ত মন্ত্ৰত পূৰ্কমেৰাযুতং জব্¹ উত্তাভণআদি সকোঁ বোগা কওঁবাঃ। শতধারমভিসতা সিভা ভৰতি।

সংবাধনেৰ মন্ত্ৰাণাং মন্ত্ৰধানং পৃথক পৃথক ।
উক্ত স্থানে বৰাসংখ্যকদুন্তেৰবৃত্ত জুপেং ৪
সুগৰীকেতু সংগ্ৰাহ্ণ প্ৰবক্তক্ষৰীবকং ।
নবালুসং কীলকৰ সংখ্যাবাভিমন্ত্ৰিতৰ ।
বক্ত নামা লিংগভূমো সৰক্ষো ভবতি প্ৰথম ৪

ওঁ ঐং স্বাহা প্রথমসমূতক্ষণঃ।

অপানার্থক কীলত্ত মূলমূৎসার্থ্য ভাজুলন্।

সন্তাভিমন্তিত: যন্ত গৃহে কি প্রাকৃশিতবেং এ

उ मनस्कामस्वतात्र कर्षे चाहा ।

লতসটোজন কথা পূৰ্ববেৰাভবন্নন: ।

সিজো তথতি তৎদতাং ডিসকং কুনতে খনং ॥

ব্যক্ত্ৰুখনং ৰজে গৃহিছা জিলাৰে দৃহেং ।

দনিভৌগন্ত ৰানে বা তক্তমন্তিলকং কৃতং ।
বক্তং নমতি রাজানসভবোকের কা কথা ।

ওং নমো ভৈরবীতরে আজাকালে কসলমুখে রাজমোহনে প্রজাকণীকরণে ব্রীপুক্ষরজনি লোকবজমোহনি যে সোহহং ও গুক্তপ্রসাদেন।

> নাত্রো কৃষ্ণতভূমিতাং লাঞ্চলীন্তমুক্তরেং । বেতজ্বগদিকাগতে শব্যালাং দরতৈলকং । কৌত্রতালকসংগুক্তং ভিলকং দর্ববিশ্বজুৎ ॥ অজনোগনমূলেন ভূমনীগর্ভলবালা । ইরিভালক সংশিক্ত ক্সক্তিবাল্ববধালে । বহু বন্ধান্ বাচতে বক্ত তক্তবেল গুলাভাবে) ।

ওঁ অন্নকৰ্ণেত্তে ভূৰ্বলে আৰ্হকেশিকজটাকলাগে চকায়কেংকারিণি স্বাহা।

বিক্তাভা ভূলরাজং রোচনং সহবেবিকা।
বেতাপরাজিতাবৃদং কলাকতে প্রচেপরেং।
বাবিনা তিলকং কুর্যাৎ সর্গনোকবশহরঃ।
কলাবনারপূপাঞ্চ কুর্রুক বেতস্বপং।
বেতার্ক্রুলং ভগরং বেতগুলা চাবাকী।
কুলাইন্যাং পুরাবৃক্ত চতুর্ফলাং ভবাবিধং।
পেবরেৎ কলাবাতে ভিনাকং সর্ববিশ্বকৃত এ
কানার্বাল বৃদ্ধ পেবরেন্তার্করে জু।
কলাটে ভিনাকং কুর্যাৎ বশীকুর্যাক্রবাল্ মু।
কলাটে ভিনাকং কুর্যাৎ বশীকুর্যাক্রবাল্ মু।

ওঁ নমো গ্ৰহালিনী সৰ্বলোক্ষণভাৱী আছা। উল্কচ্ছ্যালাভ গোলোচনসম্বিতং। বারিগা সহ পাডবাং পানাবভ্রকাং প্রকৃ। উল্কড ভু কর্ণে । বৌ চটক্ড বিসোচনং। গোরোচনা, চিডাভন, মহুবাতৈল ও স্বীর গুক্ত এই সকল দ্রুব্য একত্ত প্রেবণ করিয়া যে ব্রীকে প্রদান করা বার, সেই ব্রী ডংক্লাং বনীভূতা হয়।

চিতাকৰ, বসা,কুড়, তগরকাঠ ও কুছ্ম এই সকল দ্রবা সম-পরিমাণে লইরা চূর্ণ করিবে। এই চূর্ণ বে স্ত্রীর মন্তকে ও পূরুবের পদে নিজেপ করা বার, সেই স্ত্রী ও পুরুষ বন্ধীভূত হইরা থাকে।

ধুক্ষরীয়া, ছোলন লেব্র বীনা, জিহ্বামল, দত্তমল, চকুর
মল, কর্ণমল ও নাসামল একত্র করিয়া বে ত্রীকে ভক্ষণ করাইবে
সেই ত্রী বশীভূতা হয়। ৩০টী ছোলা, ১৬টি ইত্রেবৰ, গোদস্ত ও
নর্গস্ত ভৈলের সহিত পেষণ করিয়া সলাটে ভিলক করিবে,
ইহাতে ভিলোত্তমাও বশীভূতা হয়।

শাহাগা, ষ্টিমধু, গোরোচনা, চিভাভত্ম ও কাকজিহনা, এই সকল জবা সমপরিমাণে লইরা একত্র মধুর দহিত তিলক করিলে জীগণ বলীভূত হয়। পুরানক্ষত্রে ক্ষপুস্তুরের মূল, ভরণীনক্ষত্রে কল, বিশাধানক্ষত্রে শত্র, মূলানক্ষত্রে মূল উদ্ভূত করিয়া একত্র পেষণ করিয়া তাহার দহিত কুছ্ম, কর্পুর ও গোরোচনা মিপ্রিত করিরা তিলক করিলে জী বলীভূত হয়।

কাক্সকা, বচ, কুড়, বিপ্রপদ, কুছুম ও খীর রক্ষ একত করিরা কপালে তিলক করিলে ত্রী বলীভূত হর। কাক্সকা, বচ, কুড়, শুক্র ও শোণিভ, এই সকল একত্র করিরা যে স্ত্রীকে খা ওরাইবে, সেই ত্রী যাবজ্ঞীবন তাহার বলীভূত হইবে।

চটক পক্ষীর মন্তক, খেত আকন্দের মূল, মঞ্জিঠা, ও থদির এই সকল বাহাকে পান করাইবে, সেই স্ত্রী বলীভূত হয়। সর্পের খোলস, দাড়িম্বকাঠ ও এরওতৈল, এ সকল সমপরিমাণে লইয়া ধুপ প্রাদান করিলে সেই স্ত্রী বলীভূত হয়।

অখিনীনক্ষত্তে প্লাশবৃক্ষের মূল সংগ্রহ করিয়া করে বন্ধন

তচ্চুৰ্ণং তিলাকে পানে ভক্ষণে গদ্ধপুলাগে। ।
কিপেছা মন্তকে বক্ত সবজো লাহতেছ চিরাং ।
লাংসং আৰু মুকুকক্ত কুছুমাঙকচন্দ্ৰণং ।
পোরোচনা সনং পিটং ভক্তে পানে লগছনন্।
দ্বিলো বা পুক্ৰো বাপি সহজ্ঞ ক্ষপনাছৰে ।

ভ ব্লীং ব্লীং ব্লঃ ক্ষঃ ক্ষা ।

ক্ষেত্ৰপাৰাসো গৃহীয়াৎ সৰ্লাকেক্সবানশীং ।

উভরাভিদ্ধেশৈৰ কুটানভাচ্পলে ও

তৎককং ত্ৰিকট্ং তুলাসকাদ্ত্ৰেণ পোৰৰে ।

চাগাভভাং বঁটাং কুৰ্বাাৎ সা বঁটা নজকলন ।

কুট্যাথ আঞ্লীং লিভাং তথা স্পৃষ্টে ক্ষাখনৰ ।

সাবটা বেকানক তুলাক সিতলোনা ।

ক্ষেত্ৰ কুট্যা বিকোশায় গৃহুং বন্ধ ক্ষাবশাং ।

ইডাাৰি ।

(तिक्राशक्त्र क्क्पूरे)

ক্রিলে নারিকা বলীভূতা হয়। বজোহ্বরের মূল, বুগশিয়ান নক্ষমে আহরণ ক্রিয়া হজে বন্ধন করিয়া বাহার আলে লানি ক্যাইবে, সেই কামিনী বলীভূত হয়।

ধনিষ্ঠানক্ষত্রে নিরীবর্ষের মূল প্রহণ এবং স্থানিক্ষত্রে থাতকীমূল আনরম করিয়া করে থারণ করিলে নারীসণ বলীভূতা হইয়া থাকে। রেবতীনক্ষত্রে বটের কুড়ি আহরণ করিয়া হত্তে বছন করিলে সক্ষত্রে বলীভূত করিছে পারে এবং মূলানক্ষত্রে বলনী মূল উজ্জোলন করিয়া বে রীকে ভোজন করাইবে, সেই রী বলীভূত হইবে।

অর্থপাত্তে কুন্দর্ক্ষের মূল, র্যথণ করিয়া বে জীর পৃচ্চরেশে দেওরা যার, সেই জী নিশ্চরই বলীভূত হয়। অগ্রহারণ মাসের পূর্ণিমা তিথিতে অপামার্গের মূল উজোলন করিয়া যে র্ত্তীকে থাওরাইবে, সেই জী বলীভূত হইবে। খেত ওঞ্জার মূল, এবং পঞ্চমল, ভিছরা, লভ, চন্দুঃ, কর্ণ ও নালামল এই সকল একত্র করিয়া চওমন্ত্র পাঠপূর্কক বে ক্রীকে ভোজন করান হার, সেই বলীভূত হয়।

এই যে সমন্ত রীবলীকরণ লিখিত হইল, ইহার প্রত্যেকট চণ্ডমত্র জ্বপ ও পাঠ করিরা করিতে হয়। চণ্ডমত্র ভির উহা নিক্দে হয়। প্রাত্তংকালে দপ্ত প্রকাশন করিয়া যে রীর নাম উল্লেখ ও 'ওঁ নমঃ ক্রিপ্রং কামিনীং অমুকীং বশমানয় হং ফট্ খাহা' এই মঞ্জে ৭বার অভিমন্ত্রিত করিয়া ৭ গঞ্হ জলপান করিবে, সেই রী বনীভূতা হইরা থাকে।

নাগকেশর পুশা, প্রিরপু, তগরকাঠ, পল্পকেশর, বচ, জটা-মাংসী এই সকল দ্রব্য একত্র চূর্ণ করিরা বে বাজি 'ওঁ মূলি মূলি মহামূলি রক্ষ রক্ষ সর্কাসাং কেত্রেজ্যে পারেজ্য আহাও এইমছ পাঠ করিয়া উক্ত চূর্ণ হারা বীর শরীরে ধূপ প্রদান করিবে, সেই ব্যক্তিকে কামদেবের ফ্লার ক্ষান করিয়া রীগণ তাহার বহা হইবে।

বীর জিহ্বামণ, নাসামণ ও কর্ণমণ এই সকল একজ করিরা 'ওঁ মমঃ স্বাবৈ মমঃ স্বাবৈ দাঃ স্বাদ্ধ আমুকীং যে বলমামর আহা' এট মন্ত্র পাঠ করিয়া প্রয়ার সহিত্ত বে স্ত্রীকে ভোজন করাম গার, সেই স্ত্রী নিশ্চর বলীভূতা হইরা থাকে। 'ওঁ মমঃ বাচাট পথ পথ ছিট-ভাবহি বাহা' এই মত্ত্রে গালে। 'ওঁ মমঃ বাচাট পথ পথ ছিট-ভাবহি বাহা' এই মত্ত্রে গালে অভিমন্ত্রিত করিরা বেড়ে-লার মূল বা কল আংরণপূর্কক বে স্ত্রীকে দেওরা বার, সেই ত্রী অবশ্রু বণীভূত হর।

অপামার্গ বৃক্ষের মধ্যভাগের চতুরসূস পরিমিত কাঠ 'ওঁ দ্রাবিণি বাছা ওঁ হর্মিলে বাছা' এই মত্ত্রে গ্রার অভিমন্ত্রণ করিবা বেক্সাগৃহে নিক্ষেপ করিলে সেই বেক্সা ব্রীফুড হয়।

পেচকের চকু ও মাংগ, রক্তচন্দন; গোরোচনা, কুরুর এবং

মংশু তৈল এই সকল একত্র করির। "হ্রীং ব্রীং গ্রাং গ্রাং কটু নদাং' এই মরে স্বীর পরীরে অভ্যক্ত করিলে ত্রীগণকে বলীভূত করিতে লারা বার। একত্রী ককলালের লন্ধিশ পদ আনিরা মুণে ধারণ পূর্বাক বে ত্রীর সহিত রতিক্রিরা করা বার, সেই ত্রী বলীভূত হইরা থাকে এবং ক্লকলালের বামনেক্র মধুও তৈলের সহিত একত্র করিরা চক্ততে অব্ধন প্রধান করিরা বে ত্রীর প্রতি লৃষ্টিপাত করা বার, সেই ত্রী বলীভূত হর। ত্রীলোক লেখিবার সমর 'ও আনন্দ এক স্বাহা ও ব্রীং ক্লীং প্রাং কালি কপালি স্বাহা' এই মন্ত্র পাঠ করিতে হর। ক্লকলালের দন্ধিণ চক্ত্র, কাঁকি ও মধু একত্র করিরা বন্ধিণ চক্ত্রত করল দিরা 'ও পূলিভার স্বাহা' এই মন্ত্র পাঠ করিরা বে ত্রীকে দেখা বার, সেই ত্রী বলীভূত হইরা থাকে।

'श्रं नमः कामामनाम महकन महमन महाम महानित्य वरक् ध्ननश्रनः समामना छै९कडिलः कुक कुक मक्क ७५त कुक्रम्वालन हन हन चाहा' धरे ता नात्रीम छित्कतन मश्रीहकान कर्ण कमा गाहेर्य, त्महे नात्री निकटि काशमनशृक्षक छाहान वनीकृछा हहेर्य।

রাত্রিকালে কামাক্রান্ত চিত্তে বাহার নাম উল্লেখ করিরা 'ওঁ সহবলীং বলীং করবলীং কামপিশাচ অমুকীং কামং গ্রাহর অগ্রেন মম মপেণ নথৈবিদারর জাবর অেদেন বন্ধর শ্রীফট্' এই মজ কপ করা বাইবে সেই নারী বশীভূত হইবে!

এই বশীকরণ কার্যোও পুর্বোক্ত চপ্তমন্ত দশসহত্র জপ করিরা করিতে হইবে, চণ্ডমন্ত জপ না করিরা ইহা করিলে ফলদ হইবে না।

লবণ, তিল, হগ্ধ, মধু ও হাত এই সকল দ্রবা একত্র করিরা সপ্তাহ্কাল হোম করিলে শ্লগহীন ব্যক্তিও তিলোভমাকে বশী-ভূত করিতে পারে। সর্বপ, লবণ, হগ্ধ, মধু, হাত এই সকল দ্রবা হারা সপ্তাহকাল হোম করিলে খ্রীগণ বশীভূত হর।

চতুরভূল পরিমিত এর ওকাঠ বারা মন্ত্রপাঠপুর্ক কটু তৈল ও লবণের সহিত অটোন্তরশত হোম করিবে। হোমকালে বাহার নাম উল্লেখ থাকিবে, সেই ব্যক্তি বশীভূত হইবে। মহানিখের পূলো বৃত্ত মিশ্রিত করিরা প্রতিদিন আটোন্তরশত হোম করিবে, এইরূপে সপ্তাহকাল হোম করিলে মনোরমা নারী বশীভূত হর। 'ও' ব্লীং রক্তচামুখে কুরু কুরু অমুকীং মে বশমানর বাহা' এই মন্ত্রপাঠ করিরা হোম করিবে।

তিনটা গোম্প আনিরা তাহা বারা চুরী প্রস্তুত করিতে হইবে, তাহাতে মানবের মন্তকের খুলীতে ধান বিরা থৈ ভাজিবে, ভাজিবারকালে বে সকল থৈ ঐ খুলী হইতে বাহিরে পড়িবে, ভাষা চুর্ব করিরা এক স্থানে রাখিয়া দিবে এবং খুলীর মধ্যহিত থৈ চুর্ব করিরা অন্ত এক স্থানে সংস্থাপন করিবে। পরে বহির্গত ধৈ চূপ যে জীর মন্তকে দেওরা বার, সেই জী বনীভূত হয়। মধ্যগত থৈ চূপ বারা বনীকরণ নির্তি হয়। এই বোগে বিনা মত্রে কার্য্য সিদ্ধি হইরা থাকে।

মানৰ মন্তক্ষের মধ্যভাগ, গৰ্দতের মন্তক মধ্যগত মজ্জা দ্বারা পূর্ণ করিরা তাহাতে ভূলরাজের রস্বারা ৭ দিন ভাবনা দিয়া গুলাইবে। পরে কাপাসভূলার শলিতা করিরা ঐ মজ্জাপাত্রে দিরা প্রদীপ জালিবে, শনিবারে এই প্রদীপের শিখার নরকপালে কল্পনাত করিরা সেই "কল্পন বারা চন্দুতে অঞ্জন দিরা যে নারীকে দেখা বার, সেই নারী বনীভূত হইরা থাকে!

মন:শিলা, হরিতাল, বীর গুক্ত, আকোড় ফলের তৈল এবং হন্তীর গণ্ডের মদ, এই সকল একক্ত মিশ্রিত করিয়া কপালে তিলক করিলে স্ত্রী বশীভূত হইরা থাকে। মন:শিলা, প্রিমন্ত্র, নাগকেলর পূলাও গোরোচনা এই সকল একক্ত করিয়া চকুতে অঞ্জন করিলে মনোরমা কামিনীকেও বশীভূত করিতে পারা যায়।

প্রিয়ন্ত্র, বচ, তেলপত্র, গোরোচনা, রসালন ও বক্তচন্দন, এই সকল তার্য একত্র ক্রিয়া চক্তে অঞ্চন দিয়া যে নারীকে দেখা বাইবে, সেই নারী বন্মভূতা হর। সোনরালী, আকন্দ-মূল বা চারুলিয়া মূল যে ত্রী বা পুরুরের কাম ক্রিয়া কটিদেশে বহুন করা বার, সেই ত্রী ও পুরুষ,বিশীভূত হয়।

ক্ষাইনী বা ক্ষা চতুর্দশী তিথিতে উচ্ ত পীতধুতুরার মূল, কুড় ও দেবদারু, এই সঙ্গল দ্রব্য সমপরিমাণে লইরা চূর্ণ করিবে, এই চূর্ণ বে ত্রী বা প্রক্রবর মন্তবে নিক্ষেপ করা বার, সেই ত্রী ও পুরুষ বলীভূত হবরা থাকে। কলের সহিত আমলকী বৃক্ষের মূল, ঘর্ষণ করিয়া চক্ষতে অঞ্জন কিংবা কপালে তিলক করিলে বে ত্রী ও পুরুষকে দেখা বার, সেই ত্রী ও পুরুষ বলীভূত হয়।

রাথান শশার মূল প্রানক্তরে নশ্ন হইরা উন্তোলন করিবে, পরে ঐ মূলের সহিত মরিচ, পিশ্ললী ও ভাঁঠ এই সকল প্রব্য গব্যছয়ে একত্র পেবণ করিরা বটিকা করিবে। এই বটিকা ছয়িয়া রক্তচন্দনের সহিত কপালে ভিলক করিরা ত্রীগণকে দেখিলে ত্রীগণ বন্দীভূত হইরা থাকে। স্বাতীনক্ষত্রে বরবটার মূল এবং অন্তর্মাধানক্ষত্রে বদরী মূল উচ্চ করিরা হত্তে ধারণপূর্কক্ষ্রীগণকে অবলোকন করিলে ভাছারা বন্দীভূত হইবে। উর্জপুলী, অধ্যংপুলী, লক্ষাবতী ও অপরাক্ষিতা এই সকল গাছের ফুল আনিয়া সপ্তাহ পর্যন্ত বীর ভক্তে ভাবনা দিবে, পরে তাহার সহিত জহুরা, দস্ত, কর্ণ ও নাসা এই সকলের মল একত্র করিরা বে নারীকে ভক্ষপ্রব্য অথবা পানীর কলের সহিত ভক্ষণ করাইবে, সেই নারী বন্দীভূত হইবে।

ওরণকে প্রাদক্তে সম্মকাদে বছপূর্কক বোনিছিত উত্তরের বীর্থ্য বাসহত হারা গ্রহণ করিয়া শ্রীর বাম হতত্তে ম্পর্শ করাইলে সেই স্ত্রী বশীভূত হয়। ক্ষপক্ষের প্রদানক্ষত্র এইরূপ করিলেও বশীকরণ হয়।

"শুক্লপক্ষযুতে পুষো সংগৃছ রতিসন্তমে!
যোনিভ্রমুভরোবীর্যাং যন্ততো বামপাণিনা॥
তেন স্পৃষ্ঠাঃ দ্রিরো বঞা বামপাণিতলে কিল।
কৃষ্ণপক্ষরুতে পুষো পূর্ববং স্ত্রীবশা ভবেং॥" (সিদ্ধনাগার্জ্ঞ্ন)
শেত আকন্দ, লাকলিয়া, বচ, লুজ্জাবতী, মল এই সকল প্রবা
সমপরিমাণে চূর্ণ করিয়া কৃষ্কুরের হান্ধের সহিত মিশ্রিত করিবে,
পরে ইহা ধুহুরা ফলের মধ্যে রাখিবে, ইহা কামবাণস্বরূপ, যে
স্ত্রীকে এই ঔষধ ভোজন করাইবে,সেই স্ত্রী বশীভূত হইবে। এই
সকল বশীকরণে চগুমন্ত্র দশসহস্র জপ করিতে হইবে, তাহা হইলে
সিদ্ধ হইবে। পূর্বোক্ত চগুমন্ত রাতীত বশীকরণ সকল ছদ্ধ না।

৭ বার জলাঞ্চলি প্রদান করিয়া—'ওঁ বিখাবহুন'ম গছর্কঃ কল্যকানামণিপতিঃ স্করপাং সালস্কারাং দেহি মে নমস্তলৈ বিখাব-সবে স্বাহা' এই মন্ত্র একমাস কাল জপ করিলে স্ন্দরী ব্রী বশী-ভূত হয়। (সিশ্ধনাগার্জ্ঞনকক্ষপ্ট)

যট্কর্মদীপিকায় মারণ, উচ্চাটন ও বলীকরণাদির বিষ্তৃত বিবরণ বর্ণিত হইরাছে, এই মতে বলীকরণের বিষয় সংক্ষিপ্ত-ভাবে আলোচনা করিয়া দেখা যাউক।

"অথ বক্ষামি মন্ত্রাভ্যাং বলীকরণমূত্রমং।

যেন বিজ্ঞানমাত্রেণ বশীকুর্যান্নর: স্ত্রিরং। ক্সভাঞ্চলিঃ শিথিশিখা বিভীতা গিরিকর্ণিকা। চাগুলীসহিতা পিষ্ট্ৰা গব্যক্ষীৰপরিপ্লতা ॥" (ষট্কশ্দীপিকা) अनुस्त वनीकत्रागत विषय वना गाहराउटक, हैशांत कान জন্মিলে নর ও নারী উভয়কে বশীভূত করিছে পারা যায়। লক্ষাপু-লতা, অপামার্গের জটা, বহেড়া, অপরাজিতা ও চাণ্ডালীলতা এই স্কল একত্র গবা চুয়ের সহিত পেষ্ণ করিয়া কর্দমের ভায় ক্রিতে হইবে, পরে ইহা এক খণ্ড পট্টবক্সে লেপন ক্রিয়া তন্দায়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। এই বর্ত্তি পল্পনালের মধ্যগত স্থ্র ছারা বেষ্টন করিরা রাখিবে। তৎপরে একবর্ণা গাভীর গুগ্ধ হইতে য়ত প্ৰস্তুত করিয়া সেই য়ত ধারা পূর্বাক্ত বর্ত্তি আর্দ্র করিয়া লইবে। ভদনস্তর ঐ বর্ত্তি প্রজালিত করিয়া ভাগার শিধায় কজ্জন করিবে। তৎপরে চতুর্দশীর রাফ্রিভে ভৈরবের পূঞা করিয়া ঐ কজ্জলপাত করিবে, এই কজ্জল ছারা স্ত্রী পুরুষ যাহাকে ইচ্ছা করা যার, তাহাকেই বশীভূত করিতে পারা যার। এই वनीकत्र मटकी छम, चत्रः महास्मय धहे वनीकत्रत्वत छे भरमण मित्रा-ছেন। সাধকের ইহা মরপূর্কক গোপন করিরা রাখা উচিত, ক্রুর, অন্নবিশ্ব, নিক্ষক ও চপল এই সকল ব্যক্তির নিকট ইছা প্রকাশ कत्रित ना ।

এই মন্ত্র যতদিন সিদ্ধ না হয়, ততদিন সাধক 'ওঁ, ব্রীং মোহিনি আহা' জপ করিবে, পরে মন্ত্রসিদ্ধ হইলে চন্দ্রন, পুন্পা, বন্ধ অথবা কোন প্রকার উত্তম কর্ল উচ্চ মন্ত্রে আষ্টোভরশত বার অভি-মন্ত্রিত করিয়া যাহার হতে প্রদান করা বাইবে, সেই ব্যক্তি কলিভূত হইবে।

সাধক 'ওঁ চিটি চিটি চাণ্ডালি মহাচাণ্ডালি অমুকং মে ৰশমানম আহা' এই মন্ত্ৰ ভালপত্ৰে লিখিয়া ঐ ভালপত্ৰ চুগ্ধ-মিশ্ৰিত জলে নিক্ষেপ করিয়া পাক করিবে। এই মন্ত্ৰ মধ্যে যাহার নাম লেখা থাকিবে, সেই ব্যক্তি মিশ্চন বলীকৃত হটবে। কেহ কেহ বলেন বে, উক্ত মন্ত্ৰ বিশ্বক্তন্টক দিল্লা লিখিতে হইবে এবং ঐ ভালপত্ৰ হুখো পাক ক্লিলা তিন দিন কাৰার মধ্যে রাখিয়া দিবে, পরে উহা তুলিয়া হুগোৎসবমগুপবারে প্রোণিত করিয়া রাখিবে। এইশ্বপ ক্লিলেও বলীক্সণ হয়।

পূৰ্ব্বোক্ত ওঁ চিটি চিটি ইত্যাদি মন্ত্ৰ বিষক্ত কৰা ৰা তালপত্ত্ৰ লিখিয়া যথাবিধানে ভদ্ৰকালীয় পূৰা কৰিবা সেই গৃহে উচা পুতিয়া রাখিবে। ইচাতেও বশীক্ষণ হয়।

'রং সর্বালোকং বশমানর স্বাহা' এই মন্ত্র রূপ ও এই মন্ত্রে পূজা করিলে অভিলয়িত ব্যক্তিকে বশীভূত করিতে পারা যায়।

'ওঁ রাজমুখি রাজাভিমুখি বশুমুখি ব্রীং শ্রীং ক্লীং পেৰি দেবি মহাদেবি দেবাধিদেবি সংগ্রজনশু মুখং বশুং কুক স্বাহা'

'গ্ৰীং নমো ব্ৰশ্বশ্ৰীবাজিতে বাৰপুলিতে জন্মে বিজন্ম গৌৰি গান্ধরি ত্রিভবনবশহরি সর্বালোকবশহরি সর্বাত্তীপুরুববশহরি স্ত্রহোর স্ত্রহোর ব্রীং স্বাহা' এই চুইটা মন্ত্র দশ হাজার জপ করিয়া তৎপত্নে দ্বতসংঘক্ত পার্স দারা জ্বপের দশাংশ হোম कतिरक हरेरव । दशमावनारन अन्यस्वका, अष्टमाङ्का अनन-দিক্পালের পূজা করিয়া পুনর্কার আত্ত্যুক্ত ভিলভগুল, মধুর ফল এবং পুতবুক্ত রক্তপন্ম ছারা হোম করিবে। এইরূপে ডিন দিন হোম করিরা সূর্যামওলাধিষ্ঠাতী দেবতার আরাধনাপুর্বাক কুর্মাভিষ্পে অটোত্তর্শত অপ ক্রিবে। ইছাতে অচির্কাল মধ্যে বলীকরণ সিদ্ধি হটরা পাকে। মন্ত্র মধ্যে অভিলবিত ব্যক্তির নাম উল্লেখ করিতে চর। এই महत्त्र अक श्रवि, নিবুট ছদাঃ ও গৌরী দেবতা, ইহাতে এইরাণে স্বাদ্যাদ क्तिए इत । हीर गरमा उमानीवामिएक वामश्रीकरक ममुक्रीकार নম:, ভবে বিভবে গৌরি গাছারি তর্জনীভাং ছাহা, ত্রিভূবন-वनइति वधामानाः वयष्टे, नक्रानाकवनद्वि समाविकानाः हर, সর্বস্ত্রীপুরুষশক্ষরি কনিঠাভাাং বৌষট, প্রত্থোর প্রত্থোর ব্রীং স্বাহা করতলপুঠাভাগে ফট্। এইক্লপ ব্রহাদিতে জাস করিতে হয়। এই দেবতার পূজাকালে নিমোক্তমত্র ধ্যান করার বিধি আছে ৷

"অমনশনিবিরাজমোলিরাবছপালাছুশক্ষচিরকরাকা বছুলীবারপালী।
অমর্নিকরবন্ধ এাকণা লোগবর্গাং
ওক্তুস্ময্ত্রা তাৎ সম্পদে পার্কতীব ॥"
এই প্রণালী অনুসারে বলীকরণ ক্রিলে সকলকেই বলীভূত
ক্রিতে পারা বার।

'মদ মদ মাদর মাদর ত্রীং বশর কামুকং আহা' এই মত্ত্রের নাম মদনমন্ত্র।

"কনক রচিত্তমূর্ত্তিঃ কুগুলাক্সইচাপো যুবতিজ্বদয়মধ্যে নিশ্চলা রোপিতাকঃ।"

মদনদেবের শরীর পুরণিরচিত, আরুণ পর্যন্ত ধছুর্বাণআরুট এবং যুবতীদিসের হৃদর মধ্যে নিশ্চলভাবে চকু আরোপিত করিয়া আছেন। এইরূপে মদনদেবকে চিন্তা করিয়া মদন
মন্ত্র দশ হাজার জগ ও মদনদেবকে সহস্র রক্তপুশ প্রদান করিতে
হর। ইহাতে মন্ত্র সিদ্ধি হইরা থাকে। এই মন্তবলে সমস্ত
জগৎকে বনীভৃত করিতে পারা বার।

'ওঁ চামুডে জয় চামুডে মোহর বশমানর আমুকং আহা' এই
মন্ত্র লক্ষ জপ করিরা শিরীববৃক্ষ সমিধ্ হারা দশ সহলে হোম
করিবে। নিয়োক্ত ধ্যানে দেবভার পূজা করিতে হর।
ধ্যান যথা —

শনং ব্রীকোটিবিশকটা স্থবননা সাক্রাক্ষনের ছিতা
থট্রাঙ্গাসিনিগ্রচদক্ষিণকরা বামেন পাশং শিরঃ।
আমা শিঙ্গশম্বিক্ষা তরকরী শার্কি লচন্দ্রার্তা
চামুগুল শববাহিনী জপবিধৌ ধোরা সদা সাধকৈঃ॥"
বিধিপুর্বাক এই ধানে পুজা করিলে মন্ত্র সিদ্ধ হর, এই মন্ত্রপ্রভাবে সকলকে বন্ধীভূত করিতে পারা বার।

'ও নমঃ কামার সর্বজনপ্রিয়ার সর্বজনসন্মোদনার জ্বল জ্বল প্রজালর প্রজালর সর্বজনত ক্ষরং মম বশং কুরু কুরু আহা' এই মন্ত্রজ্ঞপ করিলে নর ও নারীকে বলীকরণ করিতে পারা বার।

'ওঁ নম: ভগৰতি প্ৰচিচাণ্ডালিনি নম: স্বাহা' এই মন্ত্ৰে মধ্ছিই (মোম) বাবা অভিলবিত ব্যক্তির একটা প্রভিক্ষতি করিছে হইবে। প্রতিমূর্দ্ধি প্রস্তুত করিরা ভাষার প্রাণ প্রভিক্ষ করিবে তাহার প্রাণ প্রভিক্ষ করিবে তাহার প্রাণ ওঁ নম: ভগৰভি' ইভাাবি মন্ত্র কণ করিবা অভারামি বারা ঐ মূর্দ্ধি ভাণিত করিতে হটবে। এইরূপ করিলে অভিলবিত ব্যক্তি বশীভূত হইবা থাকে। (বট্কুর্মনীপিকা)

বৃহরীশন্তম, উড্ডীশ প্রকৃতি ডামে বন্ধীকরণাদির বিস্কৃত বিবরণ স্থানিত আছে, বাহণাভায়ে তাহা আর দিখিত হইল না। বশীকরণকার্যা বসস্ত ঋতুতে বা পূর্ব্বাহ্ন কালে করিতে হয়। ইহাতে সপ্রমী ও দশমীতিথি প্রশন্ত।

"বস্তাকর্ষণকর্মানি বসজে যোজমেৎ প্রিয়ে।
গ্রীমে বিদেষণং কুর্য়াৎ প্রার্থি জন্তনং ভবেৎ ॥
বসস্তদৈতব পূর্বাকে গ্রীমে মধ্যাক উচাতে।
বর্ষা জ্ঞেয়া পরাফ্লে জু প্রদোবে শিশির: কৃতঃ ॥
বশীকরণকর্মাদিঃ সপ্তম্যাং কারমের ধঃ।
দশমামিতি সপ্তম্যাং তথা চ বস্তাকর্মবৈ ॥" (উজ্জীশ)

পৃথিব্যাদি তত্ত্বের উদয়কালে বশীকরণাদি কার্য্য করিতে চন্ত্র। জ্যেষ্ঠা, উত্তরাবাঢ়া, অন্তরাধা, রোহিণী, এই সকল নক্ষত্র পৃথীতত্ত্ব, এই সকল নক্ষত্রাদি নিম্নপণ করিরা বশীকরণ কার্য্য করিতে হর।

এই বে বলীকরণের প্রক্রিরা সকল বর্ণিত হইল, ইহা করিবার পূর্ব্বে সাধকের মন্ত্রসিদ্ধ হইতে হইবে। করিবা মন্ত্রের সিদ্ধি লাভ না করিবেল এই সকল সফল হয় না। এইজন্ত সাধক প্রথমে সর্ব্বেপ্তমে মন্ত্রের আরাধনা করিরা সিদ্ধি লাভ করিলে পর মারণ, উচ্চাটন, বলীকরণ প্রস্কৃতি হে কোন আভিচারিক ক্রিরা করিবেল, ভাহাতেই তিনি তৎক্ষণাৎ সফল কাম হইবেন।

বলীকার (গং) বলীকরণ। [খলীকরণ দেখ।]
বলীকৃতি (জী) বছজাপ্রান্তি। মন্ত্রম্ম।
বলীক্রিয়া (জী) কলীকরণ। বলে আনরনরপ কার্য।
বলীভূ (ত্রি) ধে বলীভূত হইরাছে।
বলীভূ ক্ত (ত্রি) খাবলো বলো ভূত ইত্যর্থে চ্ঃ। ১ বছাতাপ্রাপ্ত।
বলীর (গুং) বল-জরন্। > গজপিপ্রলী। (জটাধর) ২ চবিকা,
চলিত চই। ৩ অপামার্গ, চলিত আপাঙ্। (বৈভক্নি•)
(ক্লী) সামুদ্রশ্য।

বলে। (দেশজ) অধীনে। তাঁবে।
বিশ্বিক (পুং) অগ্রহারভেদ। (রাজতর ১০৪৫)
বাদ্য (রী) বাদার বদীকরণার সাধু ইতি বদ-যৎ (তত্ত্ব সাধুং
পা ৪।৪।৮৯) > লবদ। (শক্তে) বদমধীনদ্ধ গত ইতি বদ-ধং (বদং গতঃ। পা ৪।৪।৮৬) (ব্রি) > আরত্তা-প্রাপ্ত, বদীভূত।
ইহার পর্যায়—প্রণের ও বদ।

"মৃত্তং দেবামানাত্ত সিংহশার্জ্যকুলরা:।

বধা বাত্তি তথা প্রাণো বক্তো ভবতি বোগিন:॥"

(মার্কণ্ডেরপুণ ৩৯০১৭)

২ জায়িঞ্জের পঞ্চম পুত্র। (মার্কডেরপুত ৫০।৩৪) বৃশ্যুক (ত্রি) বশু-বার্থে কন্। ১ বলীভূত, বলগ। ত্রিরাং টাপ্। ২ বলগা নারী। **লু**ট্ বিষিতা।

বশ্যকর (ত্রি) বশযোগ্য। বশ করিবার উপবোগী। বশ্যকর্মন্ (ক্রী) বশীকার্য্য।

বশ্যতা (ত্রী) বশীভূতের ভাব বা ধর্ম। বশীকার। অধীনভা। বশ্যত্ত্ব (ক্রী) অধীনত। বশীভূতত্ব।

বশ্যা (জী) বশ্ব-টাপ্। বশীভূতা নারী। পর্যার—বশগা, বশাহাও বশ্বকা। (শন্বরা•)

শং রাহ্মণমিরং দেবী বাগ্বপ্রেবাসুবর্ত্তে" (উত্তরন্নামচ ১ জঃ)
২ নীলাপরাজিতা। (মদনপাল) ও গোরোচনা। (বৈজকনি ০)
বশ্যাত্মন্ (পুং) বশুঃ আত্মা কর্মধা। ১ বনীভূত আত্মা।
বশু আত্মা যগ্নেতি বহরী। (পুং স্ত্রী) ২ বনীভূতচিতেন্ত্রির,
বাহার চিত্তেন্ত্রির বশাস্থা হইরাছে। (চরক ০ স্ত্র ০ ৮ জঃ)
বৃষ্ বধ, হিংসা। ভূদি ০ পর ০ সক ০ সেট। লট্ বহতি। লোট্
ববতু। লুট্ বহিষ্তি। লিট্ ববাষ। লুঙ্ অবাবীৎ।

ব্যট্ (অবায়) দেবোদেঞ্চক হবিত্যাপমন্ত্র, যে মন্ত্র পড়িয়া দেবতার উদ্দেশ্রে তৃতাহতি দেওরা হয়। (অমর)

২ অক্সাস ও কর্মাসালিতে অক্বিশেষে সাসবোধক মন্ত্র।
ইহা অক্সাসে শিধান ও কর্মানে মধ্যমালুলীতে ব্যবহৃত
হইয়া থাকে। ৩ তাপ্ত্রিক পূজাদিতে এব্যবিশেষ দামে প্রযুক্ত মন্ত্র।
অমরটীকাকার ভরত বলেন — কেবল ব্যট্শাল নম, আহা,
প্রোষট, বোষট, ব্যট্প অধা এই পাঁচটা শক্ষ দেবোজেপ্তে
বিহ্নিস্থে মৃতাহতি দানে বিহিত। এইলে দেব শক্ষে ইক্রাদি
দেবগণকেই ব্নিতে ইইবে।

"ইভি স্বায়ে বৃষ্টিংহাত্রত পুত্রা উপস্ক তাদ শ্বয়োহবোচন্।
তাংশ্চ পাহি গৃণতশ্চ প্রীন্ বষ্ড ববড়িতুর্কালো অনকন্॥"
(শ্বক্ ১০।১১৫।৯)

"বাহা দেবহবিদানে পিড়দানে স্থা মতা।
ইক্সদানে ব্যট্প্রাক্ত ইতি দানত্রক স্থতম্॥" (স্থতি)
ব্যট্কুর্ত্ (পুং) ব্যট্মল্লোকারণপূর্কক যাগকারী পুরোহিত।
ব্যট্কার (পুং) ব্যট্ ইত্যক্ত কার: করণং ঘর।
১ দেবোদেকাক যাগ। প্যায়—দেব্যক্ত, আহতি, হোম,
হোত্র। (হেমচ০)

২ বেদোক্ত ৩৩টা দেবতার একতম। তণ্যথা---জইবহ, একাদশ ক্লু, বাদশ আদিভ্য, প্রকাপতি ও ববট্কার।

वयष्ठे कात्रनिथन (क्री) नामरण्यः।

ৰষট্কারিন্ (a) বৰট্মন্নবোগে হোমকারী। বৰট্মন্তোচ্চারণ ধারা হোমকালে অন্নিতে উৎনগাঁকত।

ব্ৰট কৃতি (ত্ৰী) বৰট কার। বৰট কারবুক উৎসর্গ।
"ব আহতিং পরিবেণা বৰট কৃতিম্" (শব্ ১০৩১৫)

'ৰংট্কুভিং বৰট্কারস্ক্রাং'(সারণ)
বষট্কুভা (ক্রী) বৰট্কারবাগ বা হোম।
বষট্ক্রিয়া (জী) হোমকার্কা।
বষট্কুভ (ত্রি) বৰড়িতি মন্ত্রেণ ক্রডং। হত।

"আমৌ হতত বলুবাং তংভাত্তিবু বৰট্ হতত্ব।" (শব্দর্গা') ব্যট্ফল (দ্লী) কৰোল। (গালনি -)

বৃদ্ধ গতি। ভাগি আয়৽ সক৽ সেট্। লট্ বছতে। লোট্বছতাং। লিট্ববছে। পুঙ্জবদিটা পুট্ৰছিতা। কিপ্করিলে পদ হইবে বট্।

বক্ষয় (পুং) বহুতে ইতি বহু-গতে বাহুলকাৎ অন্তন্। একছায়ন বংস। (অসরটাকার রারমুকুটমুত শাকটারন)

বক্ষয়(য়ি) পী (বী) বন্ধ একহারনো বংসঃ, তেন নীরতে ইতি
নী-কিপ্, গৌরাদিছাং তীব্, পদ্ম। (পূর্বপদাং সংক্ষারামগঃ।
পা ৮।৪।০) বন্ধনিতি পাঠে বন্ধরাহত্তাতা ইতি। 'অন্ত ইনি
ঠনৌ' ইতি ইনিঃ, আট্ কুপাঙিতি গদ্ম। চিরপ্রেস্তা গাজী।
'বন্ধতে পরিক্রামতি বন্ধনিতরকালীনবংসঃ। চলিত বক্না। বদ্ধ
গতৌ নানীতি অরঃ, বন্ধরত্বেকহারনো বংস ইতি (কোহঃ)
তদ্বোগাং বন্ধরিণী নৈকালাদিভি ইন্। বন্ধরণীতি পাঠে
গোড়পেত্যাদিনাপামাদিদ্যাং নঃ, নদাদিদ্যাং উপ্। দ্বাসুষ্তী
গবেবিতবন্ধরিণীতি মৃষ্ধন্তব্যধ্যে গদসিংহঃ।' (অমর্টীকার্ম জনত)
বিস্তি (বি) কামরমান, প্রার্থনাকারী। "পরিচিষ্ট্রেমা দধুং"
(ঋক্ বাণনার) 'বইরঃ অন্মানের কামরমানাঃ' (সারণ)

বস নিবাস : ভাগি পরশৈ জক জনিট । লট বসভি, লিট্
উবাস, উবজু : উবসিধ, উবস্থ । লট্ বংছাত ।
লৃঙ্ জবংছা । জবনীনিজং উবাং । লুঙ্ জবাংসীং,
অবাঙাম, অবাংকা । কর্মণি উবাতে । অবাসি । "উবাস
পর্ণশালাঘাং" (ভটি ৪) শু সন্—বিবংসতি । যঙ্বাবংছতে ।
যঙ্লুক্ বাবতি । পিচ্ বাসমতি । জবীবসং । ক্যা—উবিভঃ
ক্ত—উবিভ। অধি-অধিবাস, (কুমার ১। ৫৫) উপ—উপবাস । "গ্রামম্প্ৰস্তি" (পা ১।৪।৪৮) নি — নিবাস । নির্—
নির্বাসন । গ্রা—গ্রাব্য । বস ধাড় উপসর্গপূর্ব বছ অর্থে
ব্যবহৃত দেখা যায় ।

বৃদ্, স্থৃতি, আচ্ছাদন, পরিধান। আদাদি আত্মা সক শোট্।
লট্বতে, বসাতে বসতে। লিট্ববসে। লুট্বসিডা। লূট্
বসিহাতে। লুঙ্ অবসিষ্, অবসিষাতাম, অবসিহত। "বসনং
ববসে মা" (ভাট ১৪।৯২) সন্—বিবসিহতে। হঙ্বাবস্ততে।
যঙ্লুক্ বাৰতি। শিচ্ বাস্থতি-তে। নি-বস, আছে বহু
পরিধান (ভাট ১৪।৭) বি-বস-পরিধান। "মনোরমে ন ব্যবসিষ্ট
বত্তে।" (ভাট ১৪।৭)

বস, তত্ত, নত্রতাহীনতা। দিবাদি পর অবণ নেট্। লট্
বৃহতি। লিট্ ববাস। লৃট্ বসিবাভি। লৃঙ্ অবসং।
অবাসীং, অবসীং। কৈহ কেছ পুরাদি প্রবৃক্ত এই বাতুর
উত্তর নিতাই স্বাঙ্ করনা করেন। উদিবহেত্ জ্বা পরে
থাকিলে এই ধাতুর বিকলে ইট্ছইবে। জ্বা—বসিধা, বভা।
"বো বহাতারিদ্র" (হলার্ধ)

বুস, > বেং প্রীতি। ২ ছেং। ও আশংকার। চুরাদি পর আক সেট্। লট্বাসম্ভি। ল্ড্ আবীবসং। তুর্গাদাস এই ধাতু বধার্থেও অভিনিত করিয়াছেন।

বস, বাস। আৰম্ভচুৱা পর আৰু সেট্। লট্ বসরভিঃ (হুর্গাদাস)

বসই শ্বীপ, বোৰাই প্রেনিডেন্সির অন্তর্গত, বোৰাই সহর হইতে ৩২ মাইল দূরে অবহিত একটা শ্বীপ। অন্তর্গ ১৯°২৪ হইতে ১৯°২৮ উ: এবং জাখি° ৭২°৪৮ হইতে ৭৪°৫৪ পৃ: পর্যন্ত, দৈর্ঘো ১৯ মাইল, প্রন্থে ৫ মাইল, ভূপরিমাণ ৩৫ বর্গ মাইল। এই কুদ্র শ্বীপের উত্তরে দন্তরা শাঁড়ী, দক্ষিণে বসইপ্রণালী, পলিনে আরব সমৃত্র এবং পৃত্রে সমৃত্রের সরু খাড়ী ভারতভূমি হইতে এই শ্বীপকে পৃথক্ করিরাছে।

এই কুম বীপটা অতি পূর্বকাল হইতেই কি পাশ্চান্তা কি প্রাচ্য উভর জগংবাসীর নিকট পরিচিত। কাহারও মতে সংক্ত 'বসতি' মুসলমান আমলে 'বসই', পর্জু গীলদিগের নিকট বলইম্ (Basaim) এবং ইংরাজদিগের নিকট বেসিন (Basain) মামে আখ্যান্ত। হিন্দু পৌরাশিকগণের মতে এই প্রাভূমি পরশুরাম কেত্রের অন্তর্গত সপ্তকোজলের মধ্যে বর্বাটের সামিল। সন্ধান্তিখণ্ডে কেরল, ভুপুব, গোরাই, কোলণ, করহাট, বরলাট ও বর্ষর এই সাভটী লইরা পরশুরাম ক্ষেত্র বা সপ্তকোজণ—

"কেরণাক্ত ভূলুবাশ্চ তথা পোরা हुवाসিনঃ।

কৌছণাঃ করহাটাশ্চ বরলাটাশ্চ বর্জরাঃ ॥" (উত্তরার্জ ৮০ছঃ)
তল্মধো বসইবীপ বরলাটের অন্তর্গত। আরতনে ক্র
চইলেও তুলারি, নির্মাণ, কল্যাণ, জীহান ও প্র্ণারক নামক
মুগ্রাচীন তীর্থছান কলি এই বীপের মধ্যে থাকার ঐতিহাসিক ও
প্রস্তুত্তবিদের জ্ঞাতব্য অনেক তথা এখানে রহিয়াছে।

জুলারি প্রভৃতি পঞ্চক্ত দাবিশাতোর হিন্দুগণের নিকট আতি পুরাতীর্থ ও মোক্ষধাম বলিরা গণ্য। ক্রিরণে ঐ সকল তীর্থের উৎপত্তি হইল, পদ্মপুরাণ ও কন্মপুরাণে ভাষার সংক্ষিণ্ড পরিচর আছে।

পদ্মপুরাণীর জুকারি মাহাছ্যে লিখিত আছে— অক্সরেরা ব্যলাটের আন্ধবিগের উপর ববেট অভ্যাচার করিত। রাহ্মণেরা পরস্তরামের পরপাপর হইলেন। প্রাহ্মণ রক্ষার জন্ত পরস্তরাম বরলাটে আসিলেন। জন্মনেরা তাঁহার আক্রমণ সহু করিতে পারিল না। সমূদ্রে পলাইরা আত্রমক। করিল। অন্তরপতি বিমল মাধার করিরা তুক্স নামে একটা শৈল আনিরা সমূদ্রে হাপনপূর্মক ভাহাতে বাস করিতে লাগিলেন। এখানে তিনি শিবের তপভার নিরত হইলেন। শিব সভট হইরা তাঁহাকে অমর করিলেন, শিবের প্রসাদে এখানে তীর্থ হইল। বিমল এখানে দিব্যলিক প্রতিষ্ঠা করিলেন, তাঁহার নাম হইল ভূকেশ্বর।

ভূকারি এক্ষণে 'ভূকান' পাহাড় এবং একটী শ্রেষ্ঠ স্বাস্থ্যবাস বিদিয়া থ্যাত, ইহার পার্য দিয়া রেলপথ গিরাছে।

পদ্মপুরাণীয় নিশাল মাহান্যো লিখিত আছে---অসুরপতি বিমল তুল্পলৈ হইতে ঋষিদিগোর মূখে পরগুরামের গুণামুকীর্ত্তন প্রবণ করিতেন। তাঁহার শত্রুর প্রশংসা-বাদ শুনিরা অভিশর ক্রন্ধ হইরা বিমল অবিদিগের হোমকুত্তের উপর এক রহৎ প্রস্তর চাপাইয়া আদেন। খবিরা দিবের নিকট অভিযোগ করেন। শিব আপনার প্রতিশ্রুতি বিশ্বত হইয়া বিমলকে শাসন করিবার জন্ম পরগুরামকে পাঠাইরা দিলেন। পরওরামের সহিত বিমলের বুদ্ধ বাধিল। বিমল শিবের বরে অজের। যতবারই পরশুরাম তাঁহার মাথা কাটেন, ততবারই মাথা জোডা লাগে। অবশেষে পরশুরাম শিবের পরামর্শে পরশু বারা বিমলকে পরাক্ত করিলেন। বিমল সংগ্রামে পতিত হইয়া পরগুরামের স্তব করিতে লাগিলেন। স্তবে পরশুরামের মন টলিল। যেখানে বিমল পজিয়াছিলেন, সেখানে পরভরাম শ্বরণার্থ 'বিমলেশ্বর' নামে একটি লিবলিন্ধ প্রতিষ্ঠা করিলেন এবং বিমল নাম পরিবর্ত্তন করিয়া "নির্দ্মল" নাম রাখিলেন। তথন হইতে এই ক্ষেত্ৰ "নিৰ্মাণ" নামে খাত হইণ।

নির্মণ-মাহান্ম্যের ৮ম অধ্যান্তে লিখিত আছে,—নির্ম্মণক্রের বৈতরণীতীর্থ যিনি কার্ত্তিক-কৃষ্টিকলাদলীতে স্থান করেন, তাঁহার সর্ববিপাপ দূর হয়।

পর্ভ দীর্জাদগের হত্তে বিষদেশরের ক্সপ্রাচীন মন্দির ও বিদ বিধান্ত হইরাছে, চিক্ট মাত্র নাই। ডৎপূর্কপর্যান্ত বিমদেশর কর্ণাটকবালীর একটি প্রধান তীর্থ বলিয়াই পরিচিত ছিল। ১১৮৩ শকে (১২৬১ খুষ্টাব্দে) উৎকীর্ণ চালুকাবংশীর প্রীক্ষত-দেবের ভাত্রশাসন পাঠে জানা বার যে সে সময়ও বিষলতীর্থ জডি প্রাসিত্ব ও এখানকার শিক্ষ পুজিত হইতেন। চালুকা-

ভায়েশাসনে এইয়প বর্ণনা আছে—
 "ভভ ভীর্থের্ বিবলং নির্মাণ বাস ফুলরং।
 দংবার খল-নির্মাক্তং বত্র যান্তি পরং পরং ।

রাজ বিমলেশ্বর লিজের উদ্দেক্তে জাতকেশ্বর নামে এক প্রাম দান করিয়াছিলেন। নির্ম্বল-মাহান্দ্যে এখানকার বহু ক্ষুপ্রতীর্থ ও ক্ষুপ্রের উল্লেখ আছে। পর্কুগীজ অধিকার কালে দেই সমস্ত তীর্থই লুপ্ত হইরাছিল। তৎপরে মহারাইগণ এই স্থান অধিকার করিয়া বিমলেশ্বর-মন্দিরসংজার ও লিজের স্থানে দত্যাত্রেরের লাহ্নকা প্রতিষ্ঠিত করেন। এই সমর কতকগুলি তীর্থের পূনক্ষার সাধিত হয়। অধিবাসী সাধারণের প্রদেক্ত মূলধনে শুক্ত করার গাধিত হয়। অধিবাসী সাধারণের প্রদেক্ত মূলধনে শুক্ত করারী মালে মালে এথানে আসিয়া থাকেন। এই মন্দিরের পার্থেই এথানকার প্রথম শঙ্করার্চার্য স্থামীর সমাধি ও প্রাক্ষণার্শিই এথানকার প্রথম শঙ্করার্চার্য স্থামীর সমাধি ও প্রাক্ষণার্শির অভ্যানে একটি বাত্রা বা মেলা হয়। তাহাতে বহুল্রদেশ হইতে বাত্রীসমাগম হইরা থাকে।

টতিগ্ৰাস।

এখানকার প্রাচীনতর ইতিহাস অম্পষ্ট। আলেক্সান্দারের দ্মরকার আরিয়ান প্রভৃতি গ্রীক-ঐতিহাসিকগণ পশ্চিম ভারতের যে সংক্ষিপ্ত পরিচয় দিয়া গিয়াছেন, তাহা পড়িলে মনে হয় যে সেই সময় এই দ্বীপ সুরাষ্ট্র বা লাটের অন্তর্ভুক্ত ছিল। আরিয়ান निधियारहन य औक्शन छाहात नमस्त्रत रहभूसं हरेर छहे कनारन বাণিজ্য করিতে ঘাইতেন। এমন কি কোন কোন ঐতিহাসিকগণ কবিবার চেষ্টা করিয়াছিল, ভাহার উদ্দেশ্য, দাক্ষিণাত্য অধিকারে তাহাদের স্থবিধা হইবে। রোমকেরা ইঞ্জিপ্ট অধিকার করিলে ভারতীয় বাণিজ্য তাহারা একচেটিয়া করিয়া কইয়াছিল,এই সময়ে कात्रयमभुटक विरामीत्रभटभन्न कात्र व्यादम।धिकात तहिम ना। গ্রীক ঐতিহাসিক লিখিয়াছেন যে তৎকালে 'সারগনদ' (Saraganus) = नातक नाम এक ताला कन्यान, वनहें अ भूषहे অভৃতি স্থানের অধিপতি ছিলেন, গ্রীক্দিগের সহিত তাঁহার মিঞ্জা हिन, किंद गामानम् (Sandanes) - 5मानम छोहात त्रासा অধিকার করিয়া বিদেশীয়দিগের প্রতি বাণিঞানিবেধাঞা খোষণা করেন, এমন কি কএকজন বিদেশীকে কড়া পাহা-রার ভবোচে (Burace) পাঠাইরা দেন। এইরপে গ্রীকগণ নিবারিত হইলেও রোমকেরা ভারতে বাণিজা সংস্রব ভাাগ করে নাই। জ্ঞাটিনিরাদের রাজ্যকালেও কল্যাণের বাণিজ্ঞাপ্রভাব বিশ্বপ্রসিদ্ধ ছিল। মিদরের প্রসিদ্ধ বণিক্ কন্মন্ (Kosmos Indikopleustes) প্রায় ৫৪৭ খুটাকে কল্যানে কাগমন করেন, তিনি এথানে বহু সংখ্যক পৃষ্টান দেখিরা চমৎকৃত হইরাছিলেন,

ভত্ৰ নদী বৈভৱনী যুক্তগশ্চিমনিজুনা । একাঃ কানেন হানেন ন গল্পেৎ ব্যহাতনা ॥" ঐ সকল খুটান পারতের নেটোরিয়ান্ বিশপের ধর্মনাসনাধীন ছিল। তৎপরে খুটার শ্ব শতাব্দে চীন-পরিব্রাক্ত হিউএন্ সিরং আসিরা এখানকার বাণিকাসবৃদ্ধি উচ্চান্স ভাষার বর্ণনা করিয়া গিরাকেন।

এই বীশের অন্তর্গত শ্রীকান বা ঠানা বহপূর্বকাল হইতে রাজধানী বলিরা গণ্য ছিল। খুটীত ১ম শতাকীর নেবজাগে এথানে শিলাহার-রাজবংশের অভ্যানর। তাঁহাদের সমগ্য শ্রীকান লন্ধী সরস্কার থ্রিরভান, এথানেই অশেব-শার্রবিৎ জীমৃতবাহন রাজক ক্রিতেন।

খুইার ১০শ শতাব্দ পর্যন্ত বরলাট শিলাহার বংশের অধিকারে ছিল, তৎপরে বালবরাজবংশের অধিকারভূক্ত হইরাছিল। বসই হুইতে ১১৯৪ ও ১২১২ খুষ্টাব্দে উৎকীর্ণ বালবরাজবংশের শাসনপত্র পাওরা সিরাছে। বালবেরা মুসলমানের অধীনতা খীকার করিলে কোজবের এই অংশ গঙ্গে বিভক্ত হুইরা মহিমের ভীমরাজ, দেবগিরির রামদেব, এতদ্কির নারক, বব্লোলি ও ভাগুরী উপাধিধারী সামস্তগণের শাসনাধীন হুইরাছিল।

১২৯৪ খুঠালে মিরীখর আলাউন্দীনের নিকট রামনেব পরাজিত হইলে অর্রানি মধ্যেই সুমুক্ত দান্ধিণাতা মুসলমান করকবলিত হইরাছিল বটে। কিছ তথনও বসইথীপণতি স্বাধীনতা
রক্ষার সমর্থ ইইরাছিলেন। তিনিসের প্রানিক শার্যাটক মার্কো
পোলো ১২৯৫ খুটান্থে শ্রীছানে (ঠানার) আগমন করেন, তিনি
এখানকার সমৃত্বিদর্শনে চমৎক্রত হইরাছিলেন। তিনি লিখিয়াছেন বে, এই স্থান প্রতীচ্যের একটা স্থবিস্থত অনপদের রাজধানী,
এখানকার মরণতি কাহারও অধীন নহেন। এখানকার অধিবাসীরা পৌত্তলিক, তাহারা ধেশীভাষার কথা কর। তাহার
সমরে এখানে উৎক্রই চর্শের ও কার্পানের নানা সাল সক্ষা,
মসলিন এবং সোণা স্থপার ব্যবদা চলিত। শ্রীছানে নদী ইইতে
জলমস্ত্রপণ বাহির ইরা বধেট অভ্যাচার করিত।

১৩১১ খুঠানে ব্দলদান বিজেত্গণের পরসৃষ্টি এই অঞ্চলে নিপতিত হইল। ভাষাদের উপত্রবে ও অভ্যাচারে বীর্থকাল এখানকার অধিবাসিগণ নিপ্রহ ভোগ করিয়াছিল। সেই সময় কেবল খানার লোক বলিয়া নহে,কত নিরীহ বিদেশী ধর্মপ্রচারক জীবন উৎসর্গ করিতে বাধ্য ইইয়াছিল। ১৩০০ খুঠাকে প্রেউনিনিবাসী সল্লাসী ওমেরিক (Briar Oderic of Prioli) বর্ণনা করিয়া গিয়াহেল বে ১৩২০ খুঠাকে ফান্সিভান্ খুইয় সম্প্রায়ক অর্মন্স্ (Jordanus) নামে একজন সল্লাসী ভাঁহার সজী চারিজন বভিতে সমাধিছ করিয়ার পর মুন্নমান-হত্তে জীবন উৎসর্গ করিয়াছিলেন। গ্রেরিক অনেপে প্রভ্যাগননকালে কাহালে করিয়া সেই সকল খুঠান সাধুগণের অধি লইয়া গিয়

ভিলেন। তিনি কিছুকাল পরে ভারতে ফিরিয়া আসেন এবং
বৃত সহচর লইয়া বসইবীপেই কাল যাপন করেন, মুসলমান
কাজিগণ এসমরে বিশ্বীয়নিগ্রের উপর কিরপ অত্যাচার করিত,
তাল ওদেরিক লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন। বিশপ জেরোনিমো
ওজারিও (Jeronimo ozrio) লিখিয়া গিয়াছেন যে সেই
সকল ফ্রান্সিয়ান্ সাধ্গণ করঞ্জীপে এক স্বর্হৎ খুইমন্দির প্রতিষ্ঠা
করিয়াছিলেন। লেওনার্দে পাএদ্ (Leonardo Pnes)
নামক খুন্টান লেথকের বর্ণনা হইতেও জানা যার যে, করঞ্জীপে
নীল পাণরে গাঠিত কুমারী মেরির একটি স্থান্সমৃত্তি ছিল,
পাঠ্গীজেরা ভাহাকে "Norsa Senhor da Pensa" বলিত,
পারে পার্ডুলীজ অধিকারকালে করঞ্জীপ উক্ত পার্ডুলীজ নামেই
আগ্যান্ড হইয়াছিল।

১৫০৯ খুটান্দে পর্জ্ব বিষ্ণ বিষ্ণ বসই উপকৃষ্টে দেখা দিলেন। ইহার ১৭শ বর্ষ পরে এখানে পর্জ্ব গীলেরা বাণিজ্য ধুঠীর পত্তন করিলেন। ছজার্টে বর্ণোনার বিবরণীতে প্রকাশ শে, তৎকালে বসই সহর গুজরাতের মুসলমান নূপতির অধিকারভুক্ত একটি বাণিজ্যকেন্দ্র বিশ্বরা গণ্য ছিল। এখানে নানা দেশ বিদেশ হইতে জাহান্ধ জ্বাসিয়া লাগিত। মলবার উপকৃল ১ইতে পদির, নারিকেল ও নানা প্রকার গরম মদলা এখানে জামদানী হইত।

১৫০০ খুটান্দে পর্কুগীজেরা বসইদীপে নামিয়া খ্রীছান ও কল্যাণ আক্রমণ করিয়া কর আদায় করেন। তাহাতে গুর্জরপতি বাহাত্র শাহের সহিত তাহাদের বিবাদ বাঁধে। বাহাত্র শাহ নানা কারণে অন্থবিধা দেখিয়া সন্ধি করিতে বাধ্য হন, তাহাতে পক্তুগীজেরা মুম্বই, মহিম, খ্রীউ, দমন, চেউল ও বসই লাভ করেন এবং হুগাদি নিশ্মণ এবং আর্বসমূদ্রগত বাণিজ্ঞাণ্ড আদায়ের অধিকার পাইলেন।

১৫৩৬ খুঠান্দে মুনো-দা কুন্ছা বসইন্ধীপের দক্ষিণাংশে একটি
ছগ নির্দাণ কবিয়া তাঁছার প্রাালক গার্সিরা ডিসা'কে ছুর্গের
অধ্যক্ষ করিলেন। জোরাওঁ ডি কাষ্ট্রোর মৃত্যুর পর উক্ত
ছুর্গাধাক্ষই ১৫৪৮ খুটান্দে ভারতীয় পর্কুণীক্ষ অধিকারের গবর্ণর
হইয়াছিলেন।

পর্জু শীন্ধদিগের লিপিত বিবরণী হইতে জানা বার যে বসই জুর্গ স্থান্চ প্রান্তর প্রাচীরপরিবেটিত, ১১টী উচ্চ বৃষদ্ধ শোভিত, তাহাতে ৯০টি কামান সংযোজিত ছিল। এছাড়া এই দ্বীপের মধ্যে আর যে সকল কুত্র কুত্র গড় ছিল, তাহাতে ১২৭টি কামান থাকিত। এখানকার বন্দর রক্ষা করিবার জন্ম ২১টি কামানবাই। সমৃত্যপোত নিয়ত প্রস্তুত থাকিত, এক একথানি পোতে ১৬ হইতে ১৮ টা পর্যান্ত কামান লইত।

পর্ত্ত গীল অধিকারেও বসই বিশেষ সমৃদ্ধিশালী ও শ্রেষ্ঠ ধনী বণিকগণের আবাস বলিয়া গণ্য ছিল। তৎকালে এখানে যে সকল বিদেশী প্র্যাটক ও লেখক উপস্থিত হইয়াছিলেন, তাঁহা-দের বর্ণনায় জানিতে পারি যে এখানকার রাস্তা ঘাট প্রশন্ত. বিপণিতে অত্যাক্ত অট্রালিকা, নগরের উপকর্ষ্ঠে উৎক্লপ্ত আত্র, তাল, ইকু প্রভৃতির বিস্তৃত উত্থান ও গ্রামসমূহের চারিপার্ষে নানা-বিধ শহাক্ষেত্র ছিল। খুষ্টান্ত মুদলমান ও হিন্দু এই ত্রিবিধ প্রজা-গণের যত্নে এথানকার ক্রষিকাগ্য সম্পন্ন হইত। গৃহনির্ম্বাণোপযোগী উৎক্রপ্ত কড়ি কাঠ, ভক্তা, ও দানাদার পাথর উৎপন্ন হয়। স্থানীয় ও গোয়ার স্থবহৎ গীর্জা ও প্রাসাদগুলি এখানকার পাথরেট নিশ্মিত। বর্ত্তমান সময়ে যেমন কুঁচুকি ফুলিয়া শত শত লোক প্লেগে মারা যাইতেছে, খুষ্টায় ১৭শ শতাব্দের শেষভাগেও বস্ইদ্বীপে সেইরূপ প্রেগ দেখা দিয়াছিল, ভাহাতে আরু সময়ের মধ্যে বসই-সহর এককালে প্রায় জনশুগু হইয়াছিল।* তৎপরে পুনরায় জনসমাগম হইলেও নগরের উত্তর ভাগ (সমস্ত নগরের প্রায় একতৃতীয়াংশ) বছকাল পরিত্যক্ত ছিল।

পর্ভাগীজদিগের আধিপতার্দ্ধির সহিত খুষ্টানধর্মোর গোঁডামীও যথেষ্ট বৃদ্ধি হয়। খুষ্টান ভিন্ন আর সকলকেই তাঁহারা অভি ঘুণার চক্ষে দেখিতেন। খুষ্টানদিগের মধ্যেও যাঁহারা ভাঁহাদের ধর্মাত্ববর্তী হইয়া না চলিতেন, তাঁহাদিগকে কারারুদ্ধ করিয়া বিশেষ কট দিত। বসই কারাগারে এরপ বহু খন্তান ও অখন্তানকে নিয়তই নিগ্রহ ভোগ করিতে হইত। ক্রমে এখনকার শাসন-কন্তা নিয়ম করিয়া দিলেন যে খুটান ভিন্ন আর কেহই সহরে ৰাস করিতে পারিবে না, সম্ভান্ত হিন্দু মুসলমানেরও আর প্রবেশাধিকার থাকিল না। এমন কি খুষ্টান ভিন্ন আর কাহারও সহিত পর্ত্ত গীঞ্জের জমি জ্মার বন্দোবস্ত ঋণ আদান প্রদান বা কোন প্রকার বৈষয়িক বা রাজনৈতিক কোন কার্য্য করিতে পারিত না। कि হিন্দু কি মুসলমান যাহাকে স্পবিধা পাইত, বলপুর্বক ধরিয়া আনিয়া খুষ্টান করা হইত, খুষ্টানের আচারবিধি পালন না করিলে আবার সাজা নেওয়া হইত। অধিবাসীরা এইরপে উত্তাক্ত হইরা দিল্লীখরের নিকট অভিযোগ করিল। দিল্লীখর পর্ত্ত্রীজদিগকে শাসন করিবার জন্ত মহারাষ্ট্র-দিগের উপর ভার দিলেন।

Churchhill's Voyages, Vol. iv, p. 191.

⁺ ডাজার গেনিরি কাবেরি ১৯৯৫ খুইাখে বসই গর্পন করিয়া লিখিয়া বিষয়েল—"the contagious and pestilential disease carozzo that used to infect all the cities of northern coast. It is exactly like a bubo, and so violent that it not only takes away all names of preparing for a good end, but a few hours depopulates whole cities."

মরাঠাসৈত্ত প্রথমে অর্ণজনদীর পরপারে অব্দ্বিত একটা ক্ষুদ্র ত্র্ব অধিকার করিয়া বসিল। এই সমরে লুই-ডি-বটেলছো বাল-সেটার শাসনকর্তা, তিনি করঞ্জরকায়, কাপ্তেন পেরিয়া বদই তুর্গরক্ষায়, এবং কাপ্তেন কেরাজ বনোরা সেনাবাদ-রক্ষার নিযুক্ত হইলেন। এদিকে ভোন্দেরা গোয়া আক্রমণ করিলেন। মহারাষ্ট্রসেনাপতি চিমনাজি অগ্না বহু সৈন্ত লইয়া ছুর্গভেদ করিয়া পর্জ্ত গীজদিগের সহিত সমুখ যুদ্ধে অগ্রদার হইলেন। অপরদিকে मजाठाटेमळ याल्टमजै व्यवस्ताध कतिया वत्ररमावा ७ धातावि श्रील দথল করিয়া বস্টর পূর্কাংশের থাড়ী আটুকাইয়া বসিল, কাজেই বাহির হইতে পর্ত্ত গীজদিগের সাহায্যের আশাও দূর হইণ। ১৭০৯ খুষ্টাব্দে ১৭ই ফেব্রুয়ারী মরাঠালৈন্ত বসই তুর্গ অবরোধ করে, তিন মাদের অধিককাল অবরোধের পর পর্ত্তীব্রেরা আত্মসমর্থন করিতে বাধ্য হইল। সেই পরাজয়ের সহিত এথান-কার পর্ত্ত গীজদিগের গৌরবস্থা অন্তমিত হইল, অষ্টাহের মধ্যে পর্ত্ত গীজেরা স্ব স্ব ধনজন লইয়া চিরদিনের জন্ম সাধের বসই পরিত্যাগ করিল।

বসই মরাঠাদিগের হন্তগত হইলেও এথানকার রাজধানীর সৌলগ্য নই হয় নাই, অল্ল দিন মণ্ডেই একজন 'স্বৃস্তা' নিযুক্ত হইলেন, বাণকোট নদী হইতে দমন প্যান্ত ঠাহার শাসনাধীন হইল। এ সময়ে বসই নগরে সন্ধান্ত হিল্পুর বাস ছিল না, এখানকার অধিকাংশ অধিবাসীই পর্ভুগীজনিগ্রহভূরে খুইধর্ম গ্রহণ করিতে বাধ্য হইয়াছিল। পেশবা মাধবরাও তাহাদিগকে প্ররায় হিন্দুসমাজে তুলিয়া লইবার জন্ম কএকজন রাক্ষণ নিযুক্ত করিয়া দিলেন। সেই সকল ব্রাক্ষণের ভ্রণপোষণের জন্ম এক কর নির্দারণ করেন। বলিতে কি পেশবার এই সহাদস্যায় হছ জাতিচ্যুক্ত হিন্দু প্রায়শিত্ত করিয়া আবার হিন্দুসমাজে ছান পাইল। ক্রমে ক্রমে মহারাষ্ট্র ও গুর্জার হইতেও বছ সম্বান্ত গোক আসিয়া এগানে বসতি করিল, তন্মধ্যে প্রভুকারস্থগণই প্রধান। অভাবণি বসতি সহরে প্রভুকারস্থগণই ধনে জনে শ্রেষ্ঠ।

বর্তনান বসই সহর বাজিরাওর নামান্তসারে বাজিপুর নামে থাত এবং সমস্ত বসই জেলা ১৬১টী মৌজায় বিভক্ত, ইহার মধ্যে ৪ খানি ইনাম্। এই সকল মৌজা গ্রামের মধ্যে থানিবড়েমে একটী ছোট বন্দর, দক্ষিণপূর্কে মাণিকপুর মহলে রেলওয়ে ষ্টেসন, উত্তরে অঘনাসি বা অগাসি মহাল, সরবনে প্রাসিদ্ধ হর্গ, শৈলমর তুলারিতে প্রসিদ্ধ তুলাবেশবের মন্দির, নির্মাণে প্রসিদ্ধ বিমলেশবাতীর্থ, শূর্ণারকে বা স্থানে প্রাচীন তীর্থ ও প্রসিদ্ধ বন্দর, এবং বাজীপুরের নিকটবর্তী, পাপরি গ্রামে বহু সংখ্যক চিৎপাবন, করাড় ও দেশস্থ ব্রাহ্মণ এবং পলশা,সোণার প্রভৃতি অপরাপর নিম্ন শ্রেণীর বাস আছে। বার্থিক রাজত্ব আদার প্রায় ১৮০৩০ টাকা।

১৭৮০ খুরাকে ইংরাজ সেনাপতি গড়ার্ড ১২ দিন অবরোগ্রের পর বসই অধিকার করেন, তৎপরে ১৭৮২ খুরাকে সরুবাইর সন্ধি অকুসারে ইইইগুরা কোম্পানী মুদ্রাঠাদিগর্কে এই স্থান ছাড়িরা দেন। অবশেবে ১৮১৮ খুরাকে পেশবাকে পদ্যুক্ত করিরা তাঁহার অপরাপর অধিকারের সহিত বসইদ্বীপও বোদাই-প্রোসিডেন্দ্রীর সামিল হইল।

১৮৪০ খুইান্সে বসইর পার্থবন্তী কল্যাণ-খাড়ীতে বাধ প্রস্তুত্তের জন্ম কোট অব্ ডিরেক্টার আদেশ করেন। এই বাধ হওরার সমুদ্রের জল আর উঠিতে পারে না, তাহাতে অনেক জমি উদ্ধার হইরাছে। ১৮৭২ খুইান্সে রেলওয়ে কোম্পামি একটা স্তুল্যু লোহ-সেতু নির্মাণ করিয়া বসইকে বোদাইর সহিত সংযোজিত করিয়াছেন। মহারাষ্ট্র অধিকারে আসিলে এখানকার বহু প্রাচীন হিন্দুতীর্থ যেমন উদ্ধার হইয়াছিল, সেইরূপ বছু পর্কুণীল কীর্ষি নই হইয়াছিল, তন্মধ্যে ১০টি প্রাচীন গীর্জা খুইান পালী-দিগের যত্ত্বে পুনরুজার বা পুনঃসংশ্বার হইয়াছে; ঐ সকল গীর্জার কারুকার্যা ও শিয়নৈপুণ্য দেখিবার জিনিদ।

ভিপো-জো-কোটো লিখিয়াছেন যে, পর্জুগীজেরা বসই অধিকার করিয়া এখনকার প্রসিদ্ধ মন্দির (এলিফান্টা) ধ্বংস করিতে যান। তাঁহারা মন্দিরের সিংহছারে একথানি স্নুক্ত প্রস্তরে লিপি গোদিত দেখিনে পান। সেখানে উঠাইয়া আনিয়া পর্কুগীজ গবর্ণর এখানকার হিন্দুমুসল্মানের দ্বারা পাঠোদ্ধারের চেটা করেন। কিন্তু কেচই পাঠোদ্ধার করিতে না পারায় ভিনি পর্কুগালরাজের নিকট পাঠাইয়া দেন। পর্কুগীজপতি ভি জোর্মাও (৩য়) পাঠোদ্ধার করাইবার জন্ম সাধ্য মত যত্ন করেন। তাঁহার চেটা বিফল হয়। অবশেষে ১৭৯৫ গুটালে জেম্মুম্ফি (একজন স্থপতি) তাঁহার পর্কুগাল-ল্রমণ প্রস্তুকে জিলাফলকের প্রতিক্রতি প্রকাশ করেন। সম্প্রতি প্রতিক্রতির পাঠোদ্ধারের সঙ্গে উটা সংস্কৃতলিপি এবং এখানকার দেব ও হিন্দুরাজের প্রশন্তি বলিয়া জানা গিয়াছে। বর্ত্তমানকারে সেই অতি উর্ক্র ও শসাশালী ভূতাগ বলিয়া পরিগণিত। এখানে ইক্, কদলী ধাতা ও ভাবুলের যথেই চার আছে।

বাস্ত্যকর ছান ভাবিরা অনেকেই এপানে বাযুপরিবর্ত্তনের ক্ষন্ত গিয়া থাকেন। •

Periplus Maris Erythraei; Hudson, Geog. Vol I. 30, Hist du Christianisme des Indes, by V La Croze, Vol I. p. 40-50, Linschoten, Voyages into the East and West India, Boke I. ch 44 Brigg's Ferishta, vol I p. 30I-304; Travels of Marco Polo; P. Francisco de

নিম্বলিণিত গ্রন্থে বসই শ্বীপের পরিচয় ও ইতিহাস পাওয়া বাইছে ---

বস্পারদী) এই পর্যান্ত। লেব। আর না। दैन् (तमक) बबै्ग्छ। प्रदीन। বস্থ (দেশৰ) বাস্বাটী। ° বস্ত্ৰাটা (দেশৰ) বাৰ্ডিটা। বস্তি (রী) বদ নিবাদে ভাষাধিকরণে অভি: (বহিবত্ত-র্বিভানিত। উণ্ ৪।৩০) ১ বাস। "গ্রামীণৈর অতো জনন্ত বস্তিগ্র'মে নিবিদ্ধা বধা" (অমকুশ° ১১) ২ যামিনী। ৩ নিকেজন। **"রজনীতিমিরাবগুর্গিতে পুরমার্গে ঘনশন্ধবিদ্ধবাঃ।** ৰসতিং প্ৰিয়। কামিনাং প্ৰিয়াম্বদুতে প্ৰাণয়িত্য ক ঈম্বর:"। (কুমার ৪।১১) ৪ জৈনমঠ। ৫ জনপূর্ণ ও অট্টালিকা-পরিলোভিত স্থান। ইহার অপ্রংশে "বন্তি" শন্দ হইরাছে। বসতিক্রম (গুং) রুক্তেন। বস্তী (জী) বদতি কৃদিকারাদিতি ভীব্। ১ বাস। ২ বামিনী। ৩ নিকেতন। (মেদিনী) বস্তীবরী (রী) সোম প্রস্তুত কালে বাবহার্যা পানীয়ভেন। বসন (রী) বস্ততে আচ্ছান্ততেংনেনতি বস-দ্যুট। ১ বস্ত্র। "বংগি বপুষি বিশদে বসনং জলদাভং। হলহতি ভীতিমিলিত-যমুনাভম্।" (শীতগোবিন্দ ১!১২) বসনমিতি বস-ভাবে লাট্। ২ ছাদন। (মেদিনী) বস-আধারে ল্যুট্। ৩ নিবাস। "মৌনার স মুনির্ভাতি লাবণ্যরস্নান্থনি:। স্বলক্ষণত্ত যো বেদ স মুনিঃ শ্রেষ্ঠ উচ্যতে ॥" (মহাভা° ১।৪৩।৬০) ৪ স্ত্রীকটীভূষণ। (শব্দরত্বা॰) বসন (রী) তেজপত্র। (রাজনি॰) প্রিয়াং তীপ্র ২ পীত-কার্পাদ। (বৈশ্বক্রনি॰)

Souza, Oriente conquistado; Faria y Souza, tome I. pt iv 2 ; Tuhfatul Muzahidin, p. 136-7 ; J. S. Lafitian Hist Dis. Decouvet cong. de Port, Vol ii. p. 215. Dict. Hist. Exp. art. Bacaim (Goa edition) p. 10; Chonista de Tissuary, Vol iii, p. 250-58, Decada Vii, liv. iii cap x-xi, James Murphy's Travels in Portugal (1795); Narracao de Inquisicao de Goa, p. 48, 187, Viagem de Francisco Pyrard, Vol ii p. 226-7; A Voyage round the World, by Dr. J Gemelli Careri; Capt. A. Hamilton's New Account of the East Indies, Vol. I. p. 180, J. Ovington's Voyage to Surat in the year 1609, p. 206-7, Senhor Aranches Garcia in Instituto Vasco da Gama, no 27, p. 66-67; Archivo Potuguez oriental. fasc. iii p. 106-288, Mrs Poston's Western India, vol 1. p. 183-4, Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, vol 1. p. 3-5 and vol. x. p. 316-317.

বসনময় (জি) বর্ত্তমন । (লাট্যারন ৮।১১।২০)
বসনবং (জি) বদনশালী। বন্ত্তধারী।
বসনবীরপুর, বোঘাই প্রেসিডেলীর রেবাকাছা বিভাগের
সজ্জেড় মেবাসের অন্তর্ভুক একটা কুল সামন্তরাজ্য। এখানকার সন্দার দহিমা জিংবাবা নামে পরিচিত। রাজন্ম ১০ হাজার
টাকা, তন্মধ্যে বার্ষিক ৪৩২ টাকা জিনি বড়োলার গাইকোবাড়কে কর দিরা থাকেল।

বসনদেবদা, বোদাই প্রেসিডেন্সীর বেবাকাছা বিভাগের, সন্মেত্যবাসের অন্তর্গত একটা কুলু সামস্ত রাজ্য। এখানকার সন্দারবংশ রাঠোর কাশুবাবু নামে আথ্যা। বার্ষিক ৫৭২০ টাকা বড়োলারাজকে কর দিতে হয়।

বসনা (স্ত্রী) বস-যুচ্-টাপ্। স্ত্রীকটীভূষণ। 'সারসনং সারশনং বসনা বশনা তথা।

বসনং বল্লনঞ্চি জীকটীভূষণে ভবেৎ ॥' (শব্দর্মাবলী) বসনার্গ (ক্লী) বসন শ্বণ। কাপড় ধার। বসনার্গবা (জী) সমুদ্রবসনা। সমুদ্রপরিরতা (মহী)।

"দৈত্যানাং কিল ধর্মজ পুরেরং বসনার্থবা।" (রামা° ৭।১১।২৬)
বসনার্হ (আ) ১ বসনযোগা। (পুং) ২ গার্ছপত্য বা বাসকাদি
আচ্ছাদক কৃষ্ণনাশক অধি। (গ্রুক্ ১।১১২।৩) [বসার্ছন্ দেখ]
বস্নিয়া (দেশজ) বাসন্দা, অধিবাসী।

বসন্ত (পুং) বসন্তাত্র মদনোৎসবা ইতি বস-মচ্ (তুভুবার্হবিস-ভাসিসাধিগড়িমগুলিনজিভাক। উণ্ ৩১২৮) ঋত্বিশেষ। মলমাসতত্বে উদ্ভ ফাতিনির্দেশ এই বে, "মধুশ্চ মাধবশ্চ বসান্তিকস্তু:।" অর্থাৎ চৈত্র এবং বৈশাথ এই ছই মাস বসন্ত ঋত্। কেহ কেহ কান্তন ও চৈত্র এই ছই মাসকে বসন্ত ঋত্ বিসার উল্লেখ করেন।

ইহার পর্যার—পূব্দসমর, স্থরভি, মধু, মাধব, ফস্কু, ঋতুরাজ, পুব্দামান, শিকানন্দ, কান্ত ও কামদব।

"জ্ঞানাঃ সপুন্দাঃ সলিলং সপন্ধং

ব্ৰিয়া দকামাঃ প্ৰনঃ স্থাৰিঃ।

ऋषाः धारमाया विवसान्। ब्रमाः

নর্কাং প্রেরে চাক্ষতরং বসন্তে॥" (ঋতুসংহার ৬।২)

শুধু কবিবর্ণনার বা কবি করনার নর, সতা সত্যই বসংস্তর থর মধুর মোহন-মহিনার প্রকৃতির পরম রমনীয়তা প্রকট হইরা উঠে। পার্থিব কগতের যে দিকে তাকাও, বসন্তে সকলই অন্যর—সকলই প্রির্দর্শন। এমন মানব মানবী নাই, এমন কীট পতক নাই, এমন বল-জল-চর কীব করে দেখি না, এমন ভক্তভাও দৃষ্টিপথে পড়ে না. বাহারা বসন্তসমাগতের প্রহ্মপ্রস্কৃতার বিশ্ব সৌম্য মাধুরী মাধিরা, কি মেন কি এক

উন্মাদনার কিছু-না-কিছু আত্মতৃথি বা আত্মপ্রসাদের ত্বন্ধ পারি সনিলে সিক্ত হইতে থাকে। বলিডে কি, বসন্ত প্রকৃতির এমনি মহিমা! চিরদ্রণ, চিরভগ, চিরবিবাদমগ্রের মনে এ কালে অন বিন্তর হাসির ভাব তাসাইরা উঠার। বৃহক বৃহতীর ত কথাই নাই, বাসন্তী প্রকৃতির প্রমোদপ্রবর্তনার অভি বড় বৃদ্ধ ব্যক্তিকেও আত্মহারা করিরা তলে।

শীতের সে কঠোর স্পর্শ মাই। গ্রীয়ের প্রধরতারও পূর্ণ অধিকার অপ্রতিষ্ঠ। আকাশ ও দিও মঞ্চল প্রদার। দিবস নাতি-শীতোকঃ। প্রদোব পরম রমা। যামিনী প্রমোদিনী। উবা মধুরহাসিনী। জল নির্মাল। তুল সুগম। তুলে ভূলপ্রা, . ও জালে জালপদ্ম প্রেফ্টিত। চূতাব্র মুকুলিত। দ্রুমদল নবোদগত লিগ্ধ পদ্ধবে উত্তাদিত। বনস্থলী মধুকরনিকরের মধুর ঝন্ধারে মুধরিত। মলরাগত স্থগদ গদবহ মশ মন্দ প্রবাহিত। স্লিগ্ধ-মধ্র তরুকতাকুক নানাজাতীর প্রচুরতর কুসুমভারে অবনত। কুসুমদমূহের সৌরভছটোর বন, উপবন, উন্তান আমোদিত। লভার পাভার, ফলে, ফ্লে, মুকুলে বাসস্তী বনভূমি নবীন সাজে নবীন বেশে সদাই হাত্তময়ী। চত্তের ত্ত্বস্বিশ্ব জ্যোৎলা, বিহলের কলকুজন, কোকিলের কাকলী, মলয়ের মৃত্যুক্ত হিলোল, কুরুমের সৌরভ, আশোকের শোক-হর স্থবুমা, সকলই এ কালে মন: প্রীণন। তাই ভারতের প্রাচীন কবিরা বসত্তে সকলই কান্ত, সকলই রম্য এক সকলই खुम्मत्र विनिद्या वर्णन कविशारहर ।

এই ভারতবর্ষই বদস্ত ঋতুর মাধুরী মহিমার পূর্ণ লীলাভূমি।
ভাই মদনোৎদব বা বদস্তোৎদবাদি বসস্ত ঋতুর অফুগুণ
অফুটানাদি এই ভারতেই প্রথম প্রচলিত ছিল এবং কালের
বলে বিলয় পাইয়াও সে উৎসব অফুটানের দলীবতা এখনও
অনেক স্থানে বিরাজমান। [মদনমহোৎদব দেখ।]

বসন্তকালের অধিষ্ঠাত্দেবের উৎপত্তি সম্বত্তে পৌরাণিক উপাখ্যান এইরপ-—

বিধাতার আহ্বানে মন্ত্রথ আসিরা এক সমর তাঁহাকে বলিলেন, বিডো! আমি আপনার আদেশে ত্রিপ্রহর হরের মোহবিধানে সমর্থ। কিন্তু কামিনীই আমার মহান্ত। সেই মহান্ত্র
কামিনী আপনি স্পষ্ট করুন। আমি শল্পকে সম্মোহিত করিলে,
সেই কামিনী তাঁহাকে পর পর আরও মুদ্ধ করিয়া রাধিব।
স্কুতরাং হরসম্মোহনে একটা মনোহারিলী কামিনীর বিশেষ
প্রয়োজন। কিন্তু বক্ত কামিনী আছে, তাহালের মধ্যে হরনোহিনী কামিনী আমি দেখি না। স্কুতরাং বিধাতঃ ! এ কর্ত্তবা
সম্পাবনের ক্ষন্ত আপনাকেই কোন উপার বিধান করিতে
চইতেছে।

ফলর্শের ফথাবসামে, কি করিরা শল্পুরু সংলাহিত করা বাইবে, ইহা ভাবিরা চিজিরা বিধাতা বাকুল কইলোন। চিজা করিতে করিতে তাঁহার একটা নিখাস নির্মাত হইল। সেই নিখাস হইতে কুমুনসমূহ-ভূবিত বসজের উৎপত্তি হইল। চ্তাঙ্কর, চৃডকলিকা, সমরমালা এবং কিংশুক প্রভৃতি বসজের করে বিরাজিত। বলিতে কি, তখন বসভ একটা প্রকৃত্তর পালপবৎ শোভিত ইইল। বসজের আরুতি রক্তকোকনদ-নিত, সর্মন্তর প্রকৃত্তন শভ্তবং মুশোভন, মুখমগুল সংলাদিত পূর্ণ শশাকের ভার সম্কৃত্তন, নাসিকা মুন্তর, কবিবর শল্প সমূল, কেশকলাপ কুন্তিত ও ভারবর্গ, কর্ণের চুইটা কুগুল আভােমুখ অংগুনালীর ভার সমূক্ত্তন এবং ক্রান্তর বিত্তীর্ণ। এতদ্ভির তাহার গতি মন্ত মাঙ্কবৎ, ভূজবর শীন তুল ও আরত, কর্ত্তর কঠিনম্পর্ল, উরত্ত কর্ত্তর, ক্রীবা কর্ত্তর, ক্রান্ত, কর্ত্তরে প্রকৃত্তর, ক্রান্তর্তর, ক্রান্তর্তর, ক্রান্তর্তর, ক্রান্তর্তর, ক্রান্তর্তর, ক্রান্তর্তর, ক্রান্তর ক্রান্তর, কর্ত্তরে প্রকৃত্তর ক্রিনম্পর্ল, উরত্তর, ক্রান্তর্তর ক্রিনম্পর্ল, উরত্তর, ক্রান্তর পূচ এবং ক্রন্তরনেশ শীন ও সর্কন্তর্তর সম্পূর্ণ।

ঐরপ সম্পূর্ণ প্রশক্ষণ প্রকৃষ্ণারাক্ষতি বসজের উত্তব হইবা মাত্র সৌরভময় বায়ু বহিতে লাগিল, ক্রমরাজি কুস্থমিত হইরা উঠিল, কলকণ্ঠ কোকিলেরা পঞ্চমে গান গাইতে লাগিল, সরোবরসমূহে অন্ত সলিল গৃষ্ট হইল এবং তাহাতে বহুপত শতদল ফুটিরা উঠিল। (কালিকাপু°৪ আঃ)

হরসখোহন যাপারে বসম্ভ কন্মপের কিরণ সহারতা করিরাছিলেন, তৎসক্তে উক্ত প্রাণের ৭ম অধ্যারে দিখিত আছে যে, মদন বখন হরের থৈম্হরণে উক্তত, তখন তাঁহার একান্ত-ক্ত্ৎ বসন্ত হরের আশ্রম ও আশ্রমের চারি দিকে কিংকক, কেতক, বক, প্রাগ, নাগকেলর, মাধবী, মরিকা, পর্ণসার ও ক্রবক প্রভৃতি বতগুলি পুশাগদপ ছিল, তৎসমন্তই কূটাইরা তুলিল। বসন্তেম সহায়ভার সরোবরস্তলি কূরপরে উদ্ধানিত হইল, মৃত্যুম্ম মল্যানিল বহিতে লাগিল, তাহাতে শতরের সমগ্র আশ্রম প্রথমের হইরা উঠিল, লভারান্তি দৃত্য দৃত্য কুলকান্তরে সোহাগে চলিরা পড়িরা পার্মন্ত পালপ্তন কুলিকান্তরে সোহাগে চলিরা পড়িরা পার্মন্ত পালপক্তনের মন প্রমানোদে পূর্ণ হইল; কিন্তু কঠোর সংমী হরের মন ভাহাতেও টলিল না। ইত্যাদি (কালিকাপ্ত ৭মঃ)

বসস্তকালের কবিবর্ণনীয় বিষয়খলি এই বর্থা—
শ্বরতৌ দোলা-কোকিলযারত-স্বাগতিতরদলোদ্ভিদা: ।
জাতীতরপুশাচয়াত্রমঞ্জনীত্রমরখারাঃ ॥"

(কৰিকল্লগতা ১ ভবক)

বসন্তকালের গুণ--ক্ষার, সধুর ও কক্ষ। (রাজনি•) হেমরকালে প্লেক্ষ উপচিত হুর, বসন্তকাল আদিলে উত্তা

396

প্রকৃপিত হইরা উঠে। একালে বারু একরপ প্রশমিত এইরাই বার।

"হেমত্তে চীরতে প্রেমা বয়তে চ প্রকুপ্যতি। প্রায়েণ প্রথমং বাতি স্বর্মের সমীরণঃ ॥ শরৎকালে বসম্ভেচ পিন্তং প্রার্ডুতৌ কফ:"। (শার্ল ধর) ৰারীতসংহিতার বসব্তোপচারে লিখিত আছে,—এই বসস্ত-কালে প্রামৃদিত কোকিলকুলের কলকুলনে কানন মুধরিত হইয়া উঠে, কিংশুক কুকুমঙাল মদনাগমের হুচকরণে শোভা পার, ভূধরনিকর কুত্মসৌরভে রঞ্জিত হইরা উঠে, মন্ত মধু-करतता सभूरनाएक कूछोक्कि करत, शक्त भनी मानव नकन जीवहे মদনবাণের বিবরীভূত হইয়া পড়ে, গুণবৃত মলয় মারুত বহিতে থাকে, ফলে এই সমন্ত ৰূগৎটাই কেমন বেন এক প্রমোদে পূর্ণ হইরা উঠে। কিন্তু এই বসম্ভ ঋতু কফবর্দ্ধক, স্নতরাং এই কালে কফপ্রকোপ উপশ্যের জন্ম বমনাদি ও রুক্ষদেবন একাস্ত প্রধ্যোজনীয়। এতন্তির আনন্দবছল বিবিধ স্থরতক্রীড়ান্সনিত পরিভামও কদবারণের প্রধান ।উপায়। কফের উপচয়ে কটু, ক্ষার ও অম দ্রব্য দেবা করা উচিত। এ কালের আর এক স্বাস্থ্যকর মিনিস—ব্যায়ামাদি নানারপ শারীরিক পরিশ্রম।

চরকের প্রস্থানে লিখিত আছে, হেমস্তকালে প্রেয়া সঞ্চিত হয়, বসতে উহা দিনকর-করম্পর্লে কুপিত হয়য় পাচকারিকে দুষিত করিয়া দেয়। এই জয় বসত্তে প্রেয়জয় বিবিধ ব্যাধি জয়িবার সঞ্চাবনা। স্থতরাং এই সময় বমনাদি ছারা প্রেয়নাল করা উচিত। এই কালে লয়ুপাক, রুক্ষবীর্য্য, কটু-তিজ্ঞাল লবণ রসমূত জয়াদি; হয়িণ, শশ, নাব ও চটক প্রভৃতি লঘুমাংস ও যব গোধুম এবং জড়াত হইলে লাক্ষাজাত পুরাতন মছাদি পান এবং স্নানপান, আচমন ও পৌচাদি কার্য্যে স্থপ্রেরা ঈর্দ্ধক জল ব্যবহার করা কর্ত্তব্য। অগুরু-চন্দনাদি অমুলেপন এবং পরিছের ও শ্যাদি হেমস্তকালের স্লায় ব্যবহার্য্য। মুবতী ত্রীসভোগ ও কাননের রমনীরতা উপভোগ এই কালে একাস্ত প্রশন্ত। গুরুপাক, স্মিয় এবং জয় ও মধুর রসমূত দ্রব্য ভোষান ও দিবানিলা প্রভৃতি বসস্তকালে জনিউজনক।

"হেমন্তে নিচিতঃ শ্লেমা দিনকুভাভিরীরিতঃ।
কারামিং বাধতে রোগাংকতঃ প্রকুকতে বহুন্ ॥
তত্মাবদত্তে কর্মাণি বমনাদীনি কারম্বেং।
গুর্মস্লিয়মধুরং দিবাস্থাঞ্চ বর্জন্মেং॥
ব্যায়ামোর্বজনং ধূমং কবড়গ্রহমজ্জনম্।
স্থাম্না শৌচবিধিং শীলয়েং কুস্মাগমে।
চন্দনা গুরুদিয়ালো ব্যুগাধ্মভোজনঃ॥
লারজং শশমেণেরং মাংসং লাবকপিঞ্জলম্।
ভক্ষমেরিগদং সীধুং পিবেক্মাধ্বীক্মেব বা।
বসক্রেহমুভবেং ব্রীগাং কামীনানাঞ্চ বৌবনম্॥"

(চরকস্ত্র । ৬ জঃ)

এতত্তির স্থাত ষষ্ঠ অধ্যায় এবং বাগ্ভট স্ক্রছান তৃতীর অধ্যান্তেও বসস্তচ্য্যার বিষয় উল্লিখিত আছে। বাছ্ল্যভন্নে সে সকল এখানে উদ্ধৃত হইল না।

বসস্ত (পুং) > অতিসার। (শব্দরক্লা০:) ২ ছয় রাগের অন্তর্গত ্রিতীয় রাগ। সঙ্গীতদামোদরে সিখিত আছে, রাগ ছয়টা এবং রাগিণী ত্রিশটা। পুর্ব্বোক্ত ছয় রাগের মধ্যে বসস্ত একটা। বথা—"রাগাঃ বড়েব তু প্রোক্তা রাগিণান্তিংশদেব তু।

ভৈরবোহথ বসস্তশ্চ নটনারায়ণন্তথা ॥" (সঙ্গীতদামোদর)
সঙ্গীতদর্পণের মতে পঞ্চবক্তু শিবের বামদেব নামক দ্বিতীয়
বক্তু হইতে এই রাগের উৎপত্তি হইয়াছিল।

"সভোবক াভ প্রীরাগো বামদেবারসম্ভক:।"

(সঙ্গীতদ০ রাগাধ্যায় ১০)

শ্রীরাগ, বসস্ত, ভৈরব, পঞ্চম, মেঘরাগ ও বৃহয়াট এই ছয়টী রাগ পুরুষপদ-বাচা। এই ছয় রাগের মধ্যে এক একটা রাগের অন্থগামিনী ছয় ছয়টী রাগিণী আছে। বসস্ত রাগের অন্থগামিনী ছয়টী রাগিণী য়থা,—দেশী দেবগিরী, [দেবকিরী] বৈরাটী,ভোড়িকা, ললিভা ও হিন্দোলা। এইরূপ অস্থাস্থ রাগেরও রাগিণী আছে। করিনাথ মতে বসস্তরাগের অন্থগামিনী ছয় রাগিণীর নাম স্বতয়। বথা,—আছুলী, গমকী, পঠমঞ্জরী, গোড়করী, ধামকলী ও দেবশাধা।

সঙ্গীতদামোদরে বসস্তরাগের স্বভুগামিনী মাত্র পাঁচট রাগিণীর উল্লেখ দেখা যার। যথা—

(मनोक्ष्यर्पन द्रांशांशांत्र २०-३४)

মুগিতকোহিলক্ষিতকালনং মনন্দ্ৰক কিংওকশোভিতন্ ।
কুল্মসৌরভর্জিতভূগরং কলিতমন্তনপুত্রতলালনন্ ।
মলরমাক্ষতকুতগুলাবিতঃ ক্ককরো হি বনন্ত গুডুর্তবেং ।
মলরমাক্ষতকুতগুলাবিতঃ ক্ককরো হি বনন্ত গুডুর্তবেং ।
ক্কল্লোবিনাপনালনং ব্যনবামনক্ষনিবেশপ্ ।
বিবিধঃ কুরতানশ্য সংখ্যাঃ ক্ষমারার।
ক্ট্মারার্কাঃ সেবাাঃ পোগনং ক্ষমতবে ।
ব্যাহামখনসংরোগবিলো বিশাভ্যানসং ।
এবং ক্রিল্যাল্যোগরো নরং শীক্ষা ক্বী তবেং ।
(ব্যরিতসং > ছান । শাং)

 ^{&#}x27;' ঐরাগেহিশ বসন্তক্ত কৈরবঃ প্রকান্তবা;
 নেবরাগো বৃহরাট: বড়েতে প্রকান্তরা; ।
 দেশী বেবসিরী চৈব বৈরাদী ভোড়িকা ভবা।
 লানিতা চাব হিশোলী বসন্তস্য বরালনা: ।"

আন্দোলিতা চ দেশাখা লোলা প্রথমনক্ষরী।

মন্দারী চেতি রাগিণ্যো বসস্তত সদামুগাঃ ॥" (সঙ্গীতদামো•)

এই বসস্ত রাগের ধ্যান যথা,—

"শিখণ্ডিবর্ছোচ্চরবন্ধচ্ড: পৃঞ্চন্ পিকং চ্তলভাঙ্করে।
ভ্রমন্ মুদা বামমনোজ্ঞমৃত্তির্গতলমতঃ স বসন্তরাগঃ॥"
বসন্ত রাগের স্থরক্রম যথা—

"मा, त्रि, श, म, भ, ६, नि, म"।

এই রাগের গানের সমরস্থনে সঙ্গীতদামোদরে উক্ত হইরাছে,—শ্রীপঞ্চনী হইতে আরম্ভ করিয়া হরির শরন পর্যন্ত যক্তকাল, উক্ত কালের মধ্যেই সঙ্গীততন্ত্রবিদেরা বসন্তরাগ গান করিবার সময় নির্দ্ধারণ করিয়াছেন।

শ্বীপঞ্চম্যা: সমারভ্য যাবৎ স্থাচ্ছয়নং হরে: ।
তাবন্ধসন্তরাগস্থ গানমুক্তং মনীবিভি: ॥" (সঙ্গীতদামো ।
সঙ্গীতদর্শণের মতে বসস্তামগামিনী রাগিণীর সহিত
বসস্তরাগ বসস্ত ঋতৃতেই গেন্ন।

"বসস্তঃ সসহায়ন্ত বসন্তর্কে প্রগীয়তে।"

(সঙ্গীতদর্পণ রাগধ্যায়, ২৭)

দিবারাত্র মধ্যে বসস্তরাগে গান ধরিবার সময় প্রভাত হইতেই আরস্ত।∗

বসস্তরাগের আকার, তাল, লয়, স্থানক্রম ও সময়াদি সম্বন্ধে বাঙ্গালী-সঙ্গীতকবি রাধামোহন সেন দাস তৎক্রত সঙ্গীত-তরঙ্গ গ্রন্থে সংক্ষেপে যে বর্ণন করিয়াছেন, নিম্নে তাহা উদ্ধৃত হইল—

"নৰত্ব্বাদল জিনি বৰ্ণফা।
বালা পূৰ্ণভাবে-মুখচন্দ্ৰ ছটা।
শিথিপুছে শিরস্তাণ ক্ষপ্রকাশে।
শরীরের শোভা করে রক্তবাদে।
নানা পূক্ষম ক্ষতমাল্য-গলে।
উন্মন্ততা—যৌবন মন্ত-বলে।
কর দক্ষিণে আন্তের মঞ্জলরে।
পূগ্-কর্পুর-ভাত্মল সব্যক্রে।
তাল-বাল্য- সমন্বিত নৃত্য গান।
এ বসন্ত মাগিণীর বিভ্যমান।
দুমিদং দুমিদং স্কুদ্বল বাজে।

ক "মধুমাধৰী চ দেশাখ্যা ভূপালী তৈরবী তথা।
ব্যোগলী চ মন্ত্রাই কারী মোমগুর্জারী ৪
ধনাশীর্মালবাদীক মেঘরাগক পঞ্চার।
দেশকারী ভৈরবক ললিভা চ বসপ্তক:।
এতে রাগা: প্রাণীরভে প্রাত্রারভা নিতাল: ৪"
(স্লীত্রপর্ণির রাগাখ্যার ২০,২১)

ধিধি ধিকট ধিকট বিকট বেই ।

থা থা থুং পুকুথং খুকুথং থুকুথেই ।

ন্ধু-মন্দিরা ঠিন্সিনি ঠিনি গার্কে ।

ঝননং ঝননং জগঝান্দ ঝাঁকে ॥

কামিরা ভাধিরা পদ নৃত্য করে ।

মধুর ধ্বনি রঞ্জিত বংশীবারে ॥

রণ রক্ষণ রক্ষণ মঞ্ছু পদে ।

বীণা নিকাণ নিকাণ আছ নাদে ॥

জাতি সম্পূর্বণ রীতি মধ্যে গণি ।

স্থারমেন্দ্রেণী সা-রি-গম-পধ-নি ॥

থারন্দের খরে রাগিণীরে ধরে ।

শুনি-উক্ত গান দিবাছিপ্রাহরে ॥

শিশিরান্তে ঋতু মতে ধার্যা পাবে ।

স্থাবসন্তে ঋতু মন্ত ধার্যা পাবে ।

वज्रस्य (११) जाननित्मध।

"জন্মজলগদ্ধমকরন্দ্রিভলমা:।
রভিতালো বদন্তণ্ড জগল্পান্থে গান্ধণি।" ইত্যাদি
"বসন্ততালে কর্ত্তব্যো নগণো মগণতথা।

অগজ্ঞান্দে গুরুকৈকে বিরম্যক্ত গ্রহ্ম (সলীতদামোদর)
বসন্ত (গ্রং) ১ গ্রাণ ও নাটকোক্ত প্রসিদ্ধ ঋতুপতি দেবতাতেদ। ইনি কামদেব ও মদনের চির সহচর। বসন্তদেবের
আগমনে ধরা বাসন্তিক মাধুরীমালায় পরিপ্লাবিত হইমা
হর্বোৎজুল হইয়া থাকে। নবীন শ্রামল শক্তক্ষেত্রনিচয়
চূতমুকুসকলিকাকীর্ণ নব কিশলরগুলি কোমল পত্রবর্লীর মধ্যে
নবীনরাগে রঞ্জিত হইয়া যেন তাঁহারই ফুপার অপুর্ক্ত ধারণ
করে। সেই বসজ্জের প্রেরণার ধরাবাসী বসক্তকালের মান্ত্র্যা
অসুক্তব করিয়া থাকে।

২ ব্যোগভেদ (Small pox)। [মহারিকা দেখ।]
বসস্তক (পুং) বসন্ত সংজ্ঞায়াং কন্। ১ পৃথ্-শিদ, ভোনাকবিশেষ। (রাজনি॰) ২ কথাসরিৎসাগর-বর্ণিত ক্ষমধানের
নশ্বস্থাদের পুত্র।

"হুপ্রতীক্ত পুত্রন্ত রুমধানিতারায়ত। যোহত নর্দ্বহুদ্ব তত্ত পুত্রোহন্দনি বসস্তকঃ ॥"

(কথাসরিৎসা• ৯।৪৪)

বসস্তকরল (দেশজ) পদ্ধিবিশেষ।
বসস্তকাল (গং) বসতঃ কালঃ কর্মধা। বসত ঋতু,
বসন্তসময়। "বসত্তকালে কিল বৌ-কথাক"। (উউট)
বসন্তকুসুম (গুং) বসতে কুসুমং বছ। বৃক্ষবিশেষ।
"বসত্তকুসুম (সনু: শায়িতো ভিজাকুৎসিডঃ।" (শক্ষা))

वमस्त्रकृष्ट्याकद्र (श्रः) वृत्तवित्व ।

বসঁস্তকু স্কাকর, ভ্রথবিশের। প্রান্তত করিবার প্রণানী—
প্রবাল, রসসিন্দ্র, মৃক্তা, জঙ্কি, প্রত্যেক ও ভাগ, গৌহ, সীসা,
বঙ্গপ্রত্যেক ও ভাগ এই সমুদার একজ করিয়া বাসক, হরিদ্রা,
ইন্ধু, পল্ল, চন্দন ও কলনীমূলের মসে, ছঙ্কে এবং মৃগনাভির
ভাবে ব্যাক্রমে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ
বাটকা করিবে। দোবালুসারে জন্তুপান ব্যবক্রে। ইহা সেবন
করিলে বিবিধ রোগের শান্তি হর।

বসন্তকু সুমাকররস, > কালাদিকারে ঔষধ ভেদ। প্রস্তত-প্রশালী — স্বর্ণ হ ভাগ, রৌপা হ ভাগ, (রৌপার পরিবর্তে কেছ কেছ কর্পর ব্যবহার করেন) বন্দ, সীনা, লৌহ প্রত্যেক ও ভাগ, অন্ন, প্রবাল, মুক্তা প্রভােক ৪ ভাগ। এই সমুদার একত্র মাড়িয়া যথাক্রমে গবাল্ডা, ইক্রস, বাকসছালের রস, লাক্ষার কাথ, বালার কাথ, কদলীমূলের রস, মোচার রস, পল্লের রস, মালতীক্লের রস ও মুগনাভি এই সমুদার জব্য ছারা ভাবনা দিয়া হ রতি প্রমাণ বটকা প্রস্তুত করিবে। অমুপান ছত, চিনি ও মধু। ইছা মেছ রোগের অভি উৎকৃষ্ট ঔষধ। ইছাতে অক্যান্ত অনেক রোগেরও উপশম হইরা থাকে। চিনি ও চন্দনের সহিত সেবন করিলে অম্লপিত্র প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার

২ সোমরোগাধিকারে ঔষধভেদ। প্রস্তুতপ্রণালী;—বৈক্রান্ত ১ ভাগ, স্বর্গ, অন্ত্র, মুক্তা, প্রবাদা প্রভ্যেক ২ ভাগ, বদ ১ ভাগ, রসদিন্দ্র ৪ ভাগ এই সমুদার গোড়ানেবুর রসে, গবাতথে, বেণারমূলের কাথে, বাদকছাল ও ইক্ষুর রসে ৭ বার ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। মধু সহ সেবা। ইহা ছারা সোমরোগ, বহুমূত্র, প্রমেহ, ভূকা, দাহ এবং স্মন্তান্ত বিবিধ রোগ প্রশমিত ও বল বীর্বা বৃদ্ধি হয়। ইহা উৎকৃষ্ট রসায়ন ঔষধ।

বসন্তগত, দান্দিণাত্যের বোষাইপ্রেসিডেনীর অন্তগত একটা প্রাচীন হুর্গ। প্রবাদ ১১৯২ খুটান্দে পনালারাজবংশের একজন রাজা কর্তৃক উহা প্রতিষ্ঠিত হর। পরে মহারাষ্ট্রীর জভ্যুদরে উহা লিবালী মহারাজের অধিকারভূক্ত হইরাছিল। ১৬৯৮ খুটান্দে রাজারামের নিকট হইতে মোগলসমাট্ অরলজেব তিনদিন অব-রোধের পর এই হুর্গ অধিকার করিয়া লন। বহুকাল হইতে এই হুর্গ হুর্ভেজ বলিরা খ্যাত ছিল। সম্রাট্ হুর্গজ্বরের পর উহার নাম "কুলীদ্-ই-কডে" রাখেন।

বসন্তগন্ধিন্ (পুং) বৃদ্ধতেশ। (গলিভবিতন)
বসন্তগন্ধিন্ (গণন্ধ) পন্ধিতেদ। বসন্তকাল।
বসন্তগান্ধী (দেশন্ধ) ন্দান ও কৃষ্ণবর্ণের কৃত্র নাতার পন্ধিবিশেষ।

বসস্তভোষিন্ (বি) বসংৰ বসন্তলালে খোৰতি বিরোজি, ববা, বসন্ত খোৰরতি বিজ্ঞাপরতীতি বসন্ত-বুৰ-পিনি। কোকিল। এই অর্থ সর্প্রবাদি-সন্মত নর। কেছ কেছ এই অর্থের পক্ষপাতী। বস্তভ্ত (বি) বসংৰ ভারতে ইতি জন-ড। বসন্তলাগেপর মাত্র। বস্তভা (বী) > বাসন্তী লভা। ২ গুল্ল বৃথিকা। ৩ বাসন্তী-বৃক্ষ। চলিত ছোট বাসক। (রাজনি৽)

 ৪ চৈত্রমাসের প্রারম্ভে বসম্প্রের উলোধনভোতক কামদেবের প্রকারপ উৎসবাস্থ্রচানভেদ।

বসস্তাতিশক (क्री) বসস্তত ভিলক্ষিব। > পুলাৰিলেব। ২ চতুর্দলাক্ষরপাদযুত ছলোবিলেব। এই ছলের ছলোমঞ্চরী-নির্দিষ্ট গণ, যথা—ত, ভ, জা, জ, গৌ, গ।

"ক্রেয়ং বসস্ততিসকং ত-ভ-জা-জ-গৌ-গঃ।" (ছল্মোমঞ্জরী) উদাহরণ—

"কুরং বসপ্ততিলকং তিলকং বনাল্যাঃ লীলাপরং পিককুলং কলমত্র রৌতি। বাত্যের পুশাস্থ্যবিভিন্নলয়াজিবাতো যাতো হরিঃ স মধ্রাং বিধিনা হতাঃ দ্বঃ ॥" (ছল্মোম॰)

বসন্ত ক্তিলক (পুং) ঔষধবিশেষ। এই ঔষধ শুদজরোগে প্রয়ন্ত্র্য। "অক্ষারলুদহনসৈদ্ধববিশ্বশক্ত-চুর্গং করশ্বসহিতং মণিতেম শীতং।

> নৈবং প্ররোহতি পুনগুর্নজঃ স্বচেতো-গুল্ম বসন্ততিলকৈরশি করকরম্ ॥" (বৃভরত্বাবলী)

২ অন্থাবিধ ঔষধ। এই ঔষধ কাস খাস প্রভৃতি কতিপর রোগে প্রযুক্তা। ইহার প্রস্তুতপ্রণালী;—ম্বর্গ এক ভোলা, অন্ত ২ ভোলা, লোহ ও ভোলা, বৃদ্ধ ২ ভোলা, পারন, গছক, মুক্তা, প্রবাল প্রভ্যেকে ৪ ভোলা লইরা পরে গোক্ষর, বাসক ও ইক্রমে ভাবনা দিরা বন্ধহন্তীর ঘুঁটের ক্ষমিতে সাভবার পুটপাক করিরা কন্ধ্বরী ও কপুর মিন্তিত করিবে। ইহাতে কাস, খাস, বাত, পিত্ত, কন্দ, ক্রম, শ্ল, পাপু, গ্রহণী,বিংশতি প্রকার প্রমেহ, বিষ, হল্যোগ ও অর প্রভৃতি রোগ নই হর। এই প্রবধ ব্রা, বলকর ও প্রেষ্ঠ পৃষ্টিকর, ইহা মৃত্যুক্তর্ক্ত ক্ষিত।

শ্রেরা ভত্মকমন্ত্রক বিভিন্তি লোঁহালল: পাললাসভারেহিনিরতির বলবুগলং তৈকীকৃতং বর্জরেং ।

স্কাবিক্রবরে। রসেন সমতা সোক্রবাসেকৃবা,

সর্বাং বল্প করিছকেশ প্রকৃত্য ভবং পাছে সক্ষরা ।

কত্রীখননারম্ভিতরনঃ শাতাং ক্রিক্রো ভবেং

কামবানস্পিভ্রাতকক্রিং পাঞ্জলানীর্ হরেং ।

প্রাধিং এইবাং বিবাদিকরণং বেহাল্রীবিংশভিন্

করোগাসহরে। ক্রাভিন্তরা ব্রোধ্রাক্রিঃ

ক্রেটঃ পুটাকরে। বসভাতিলকো মৃত্যুল্লেরেবিভিঃ ।" (রসেক্রসার বারীকর»)

বসন্ত তিলক তন্ত্ৰ (ফী) তত্ৰগ্ৰহণ্ডে ।

বসন্ত তিলক বুস, কাসবোগের ঔবধণ্ডে । প্রস্ততপ্রণালী—

বর্ণ > তোলা, জত্র ২ তোলা, লোহ ও তোলা, পারদ ৪ তোলা,

গারক ৪ তোলা, বল ২ তোলা, মুকা ৪ তোলা, প্রবাল ৪ তোলা

এই সমুদার দ্রব্য গোকুর, বাসক ও ইক্সরনে মর্কন করিয়া
বন্ধুমায় বিলপ্টিয়ার অগ্নিতে বালুকাষ্ট্রে ৭ প্রহর পাক
করিবে । পরে ঔবধ উদ্ভুত করিয়া তাহার সহিত মৃগনাভি

৪ ভোলা ও কর্পুর ৪ ভোলা মিপ্রিত করিয়া মাড়িয়া লইবে ।

ইহা কাস ও কর্মরোগের মহোবধ । ধাঝা ২ রতি ।

বস্তদৃত (পুং)বদত্তভ্ত ইব। ১ আনত্তন। ২ কোকিল। ৬ পঞ্চন রাগ। (বিখ)

, বসস্তদুতী (প্রী) বসস্তম্ম দৃতীব। পাটলীর্ক, চলিত পারুল গাছ। (রাজনি°) "পাটলা বসস্তদ্তী" (ডবণ) ২ পুন্দর্ক-বিশেষ। কোরণে এই বৃক্ষ গণিকারী নামে প্রসিদ্ধ। ও কোকিলা। ৪ মাধবীলতা। (রাজনি°)

বসস্থাদেব, এক জন প্রাচীন কবি।

বসন্ত ক্রেন্ মি (পুং) বদন্ত জ ক্র ক:। আমর্ক। (শব্দালা)
বসন্ত পঞ্চমী। প্রী) বদন্ত জ পঞ্চমী। শ্রীপঞ্চমী। মৎ ক্রমতে কর
পঞ্চ-পঞ্চালৎ পটলে লিখিত আছে, প্র্যা মকররালিস্থ হইলে
শুক্রপক্ষীর পঞ্চমীতে লন্ধীদহ জগদ্ধাত্রীকে স্থান করাইরা পূজা
করিতে হয়। এই রানক্রিরা প্রভাতে মরকতমন্ত্র ক্রেন্ড নদীক্ষল
দ্বারা স্মাধা করিবে। এই বদন্তপঞ্চমী সর্ব্বপাপনাদিনী। এই
দিনে বসন্তকে এবং রভিসহ কন্দর্গকেও পূজা করা কর্তবা।
ভত্তির এই দিনে বসন্তরাগের গান শুনিলে অভীই শ্রীলাভ
হইয়া থাকে। কোন কোন মুনি এই বসন্তপঞ্চমীকে শ্রীপঞ্চমী
নামে অভিহিত করিয়াছেন। যাহা হউক, এই দিনে একাহারী
থাকা কর্তবা। ইহাতে লন্ধী সর্ব্বদাই প্রসন্না থাকেন।

"মকরত্বে সহস্রাংশে শুরুপকে বশবিনি।
ইত্যারভ্য--- "পঞ্চমাঞ্চ জগদ্ধাঝীং প্রাভরের নদীজলৈঃ ॥
রাপদ্বিদ্ধা সসন্ধীকাং কুক্তৈমারকতৈরপি।
বসন্তপঞ্চমী নাম সর্ব্ধপাপগ্রমোচনী ॥
বসন্তঞ্চ সমভ্যর্চ্চা কন্দর্শন সর্বিচ্ প্রিয়ে।
বসন্তর্মাপ্রবর্শাৎ প্রিরমায়োত্যজীক্ষিতাম্ ॥
শ্রীপঞ্চমীত্ব কেচিন্তাং মূনয়ঃ প্রবদ্ধি বৈ।
বর্ষেক্ষেক্তক্রেন প্রিয়ো ন বিচ্যুতির্ভবেৎ ॥"

(মংক্তহ্ত ৫৫ পটন)

হরিতজিবিদানে দিখিত আছে, সাধ্যাদের গুরুপকীর পঞ্চনীর দিন মহাপূকা করিতে হয়। এই পূজার বিশেষত এই বে, ইহাতে নব প্রবাদ, নব কুন্তব ও মানা অকুলেপনদান একান্ত আবক্তক। এতত্তির বিশেষ সমারোহে নীরান্দনা, ভুজিভরে বৈক্ষবদিগকে সন্মাননা এবং বসন্তরাগময় সদীত ও নৃত্যাদি
করিবে। কথিত আছে,— ব্রীপক্ষমী ইইতে আঁরম্ভ করিয়া
ব্রীহরির পরন পর্যন্ত এই বসন্তরাগে গান গাইবার সময়। অভ্য সময়ে নিবিভ। বসন্তপক্ষমী হিমে এইরপে বৃন্দাবনবিহারী
ব্রীহক্তের প্লোৎসব সমাধা করিপে বসন্তবঃ প্রিয়
হওরা বার। ভ ব্রীপক্ষমী বেখ।

বসস্তপাল, শিলালিগি বর্ণিড রাজডেন। বসস্তপুর, প্রাচীন বিশাল জমপদের অন্তর্গত একটা নগর।

(ভবিষা ব্ৰহ্মৰ° ৩৯/২৩)

২ মন্নত্মির অন্তর্গত একটা গওগ্রাম। বিকুপ্রের উত্তর উপকঠে অবস্থিত। (দেশাবলী)

तमस्त्र भूष्म (११) धृगीकम्म । (त्रांक्रि । (क्री) २ वनस् कारगांश्यक्ष कृष्य ।

"বসন্তপুশাভরণং বহন্তী"। (কুমার ০ সর্গ)
বসন্তবন্ধু (পুং) কামদেব।
বসন্তভানু (পুং) রাজপ্রভেদ। (দশকুমারচরিত)
বসন্তর্মগুল (ক্নী) > সিল্র। ২ রক্তপন্ম (বৈছকনি•)

বস্ত্রহাৎস্ব (পুং) বসজোৎসব। বসক্তালে আমোদ-প্রযোগার্থ অন্তটিত লোকিক ক্রিয়াবিশেব।

ঞ দিন জগতের যাবতীর দেশবাসী মহবাসমাজ লীতের জড়তা পরিত্যাগ করিয়া বসত্তের আগমন জ্ঞাপনার্থ আনজে উৎ ফুর হটরা বেড়ায়। প্রাচীনকালে হিল্পুমাজে মদনমহোৎসব প্রচলিত ছিল। একণে তাহা বাসত্তিক হোলীপর্বে পর্য্যান্তির হইরাছে। কিন্তু প্রস্তুতপক্ষে শ্রীপঞ্চমীপূজার পর্যাদনই এখন বসজ্ঞোৎসব আচরিত হইয়া থাকে। ঐ দিন কি বালালার, কি হিল্পুয়ানে লীতবাস পরিত্যাগ করিয়া গুলু বা বাসত্তীবর্গে রঞ্জিত বাস পরিধানপূর্বাক সকলে বসত্তের আগসনভোতক চূত্রকুল সন্দর্শনার্থ ইত্ততেঃ পরিপ্রস্থাক। কুমারনে এবনও এ চিত্র জ্ঞাক্ষন্মান রহিয়াছে।

বাখন্য অলপকয়াং বছাপুলাং সনাচরেও।

সবৈং এবণলৈঃ কুইবললুলেশৈবিশেবতঃ
বীরালনোৎসবং কুছা তজ্যা সন্মান্ত বৈক্ষবান্।

থসভরাগলনাং বীতনুত্যানি কারবেও
বীপলনীং সমাযুত্য বাবৎ স্যান্তরনং হরেঃ।

ঘসভরাবঃ কর্তব্যো নাজনা ডু ক্লাচন ।

কুষা বসন্তপক্ষাং বীকৃক্স্যার্জনোৎসবন্।

স্যাধনত ইব এয়ান্ বুলাবনবিহারিলঃ।"

(इक्किक् वि: २० विगाग)

ু দিন এবং হোলীপর্বাদিন রক্ষনীতে ভোক্ষন ও আমোদের ঘটাও নিতান্ত ক্য নহে। রাজপুতজাতির মধ্যে বসন্তোৎসবের দিন উমাবা গোরীর পূর্বা ও মৃগন্তার রীতি আছে। প্রাচীন গ্রীস, রোম, স্বলনান্ত প্রভৃতি দেশের ফর্ৎসব ব্যাপার সেই এক বসন্ত-আবাহনের অন্তক্ষমাত্র। মিদনমহোৎসব দেখ।

বসন্ত মালেতীরস, ঔষধবিশেষ। প্রস্তুত করিবার প্রণালী—বর্ণ
১ ভাগ, সূক্তা ২ ভাগ, হিঙ্কুল ও ভাগ, মরিচ ৪ ভাগ এবং কপূরি
৮ ভাগ এই সকল দ্রব্য প্রথমে অর পরিমাণ মাথন সহ মর্দন
করিয়া পরে পাতিনেব্র রঙ্গের সহিত বেশ উত্তমরূপে মর্দন
করিবে, যেমন মাথনের স্নেহাংশ দেখা না যায়। ২ রতি মাত্রায়
মধু ও পিপ্ললী চূর্ণ সহ সেবা। ইহা সেবনে, জীর্ণজ্বর, বিষম
কর, উদরাময় ও কাস প্রস্তুতি বিবিধ পীড়া সম্বর উপশ্মিত
হয়। ইহা পশ্চিমপ্রাদেশের প্রাস্কি ঔষধ।

বসন্তমালিকা (জী) ছনোভেদ।

বস্ত্যাতা (রী) ক্ষভোৎসব।

বসক্রয়োধ (পং) কামদেব।

বসন্তর্রাজ, একজন প্রসিদ্ধ বৈয়াকরণ। ইনি প্রাক্তসঞ্জীবনী নামে প্রাক্তপ্রকাশের একথানি টাকা প্রণয়ন করেন।

ব্দশুরাভ, কুমারগিরির একজন রাজা। ইনি কাটয়বেম নামক গণ্ডিতবরের প্রতিপালক ছিলেন। ইহার রচিত বদশুরাজীয় নাটাশাস নামে একগানি গাস্থ পাওয়া যায়। মলিনাথ শিশুপাল-ব্দ টাকায় উক্ত এম্বের উল্লেখ ক্রিয়াভেন।

বসন্তর্জাজন্তট্ট, শকুনার্গব বা শাকুনশাস্ত্র প্রচেন। ইনি মির্গিনার্গীখর চন্দ্রদেবের প্রাথনামুসারে উক্ত গ্রন্থ রচনা করেন। ইহার পিতার নাম বিজয়রাজ এবং জ্যোষ্ঠলাতা শিবরাজ।

বসন্তরাজীয় (জী) বসন্তরাজকৃত নাটাশারভেদ।

বসন্তর্যুয় (রাজা), বঙ্গের স্বাধীন বাঙ্গালী বীর প্রভাপাদিতোর খুলতাত। বঙ্গজ-কায়স্কৃলে গুহবংশে গুণানন্দের

উরসে উচ্চার জন্ম। প্রকৃত নাম জানকীবলভ, কিন্তু তিনি
বসন্তবায় নামেই সাধারণে স্থপরিচিত ছিলেন। গুণানন্দের
অগ্রজ ভবানন্দের পুত্র বিক্রমাদিতাই প্রতাপের পিতা।

বাল্যকাল হইতেই বিক্রম ও বসন্তর্বায়ে বিশেষ সন্তাব ছিল। বাজমান্ত্রপদে নিযুক্ত হইবার পর উত্তর প্রাতা গৌড়ে বাস করেন। এই সময়ে বিক্রম চাদ খাঁ নামক জায়ণীর পাইয়া তথায় য়মুনা ও ইচ্ছামতীর সলমত্বলে নগর ও গড় পত্তন করিয়া পুত্র ও পরিবারাদি প্রেরণ করেন, কিন্তু উভয় প্রাতা রাজধানীতে রহিলেন। মুনাইম খার বলাক্রমণকালে, গৌড়বাসী বাছধানী ভাগে করিলেও, উভয় প্রাতা ছয়বেলে তথায় বাস করেন। লাউদের মুড়ার পর টোডরমলকে বালালার রাজস্ব-

বিষয়ক কাগজ পত্র বুঝাইয়া দিয়া তাঁহারা উভয়েই মোগল সরকারের অনুগৃহীত হইলেন। দিল্লীখরের নিকট ছইতে রাজা টোডরমল বিক্রমাদিত্যকে মহারাজ এবং বসন্তরায়কে রাজা উপাধি আনাইয়া দিতে প্রতিশ্রুত হইয়া তাঁহাদের জায়ণীর বাহাল রাখিলেন।

প্রতাপ কৌশলে ১৮ বৎসর বয়সে পিতাও পিতৃব্যকে জায়গীর হইতে বঞ্চিত করেন। অতঃপর বিক্রমানিতার মৃত্যু ঘটে। তিনি স্বীয় পুত্রকে দশ আনা এবং প্রাতাকে ছর আনা করিয়া দেন। প্রাত্তশুর প্রতাপকে রাজ্যাভিষিক্ত করিয়া বসস্তরায় বার্কিকাবশতঃ গঙ্গাতীরে রায়গড় নামক স্থানে নির্মন্ধাট হইয়া বাস করিতে থাকেন। প্রতাপের কহা বিদ্দুন্যতীর বিবাহোপলক্ষে তিনি বিশেষ অহ্মন্দ্র হইয়া যশোহরে আইসেন। এই সময়ে রামচন্দ্ররায়ের পলায়নের জহা গুল্লতাতের উপর প্রতাপের বিদ্বেষ উপস্থিত হয়। যশোহরে বাস কালেই পিতৃশ্রাদ্রের বার্ষিক তিথি উপস্থিত হয়য়য় বসস্তরায় প্রতাপ ও আত্মীয় স্বজনকে নিমন্ত্রণ করেন। প্রতাপের সাম্বায় বিসন্তর নিমন্ত্রণ করেন। প্রতাপান্তর সম্পুত্র বসস্তরায় প্রতাপের হস্তে নিহত ইইয়াছিলেন। প্রতাপাদিত্য দেখ।

রাঘবরার, চক্তশেথররার প্রভৃতি বসন্তরায়ের অপর পুত্রগণ ঘটনাচক্রে অন্তর থাকার রক্ষা পাইয়াছিলেন। এই জ্ঞাতিশক্রনিগের ষড়যন্ত্রে প্রতাপের সর্ব্বনাশ সাধিত হইল। মানসিংহ
যশোহরজিৎ উপাদিসহ কচুরায়কে যশোহরে অভিষিক্ত কবিয়া
দিল্লীযাত্রা করেন। কচুরায় নিঃসন্তান ছিলেন, কিন্তু তাহার
ভ্রাতা চক্রশেধরের বংশধরগণ অত্যাপি খুলনা জেলার অন্তর্গত
ন্রনগর ও বসিরহাট উপবিভাগের মধান্থিত খোড়গাছীতে বাস্করিতেছেন।

রাজা বসস্তরায় একজন উৎকৃষ্ট ভাবুক কবি ছিলেন। পদ-কঠা গোবিলদাদের সহিত তাহার প্রায়ই কবির লড়াই চলিত। বসস্ত রায়, একজন প্রাসিদ্ধ বৈষ্ণব কবি। নরোভ্রম ঠাকুর মহাশয়ের শিষা। নরোভ্রমবিলাসে কবি নরহরি ইহাকে মহা-কবি বলিয়া অভিহিত করিয়াছেন—

''জয় ভয় মহাকবি শ্রীবসন্ত রায়।

সদা মন্ন রাধাক্তক চৈতপ্রতীবার ॥" (১২শ বিবাস)
ভক্তির্দ্ধাকর হইতে আমরা জানিতে পারি যে ইনি শেষ
বয়সে বৃন্দাবনবাসী হইরাছিলেন, মধ্যে জীব গোস্বামীর পত্র
শইয়া একবার শ্রীনিবাসাচার্য্যের নিকট আসিয়াছিলেন।

"হেনই সময় বিজ্ঞ জীবসন্ত রায়।

পত্রী লৈয়া আইল তেঁহো আচার্য্যসভায় ॥" (১০ তরঙ্গ) পদকল্পতরুতে বসস্ত রারের পদ উদ্ধৃত হইয়াছে। বসন্তরোগ, মহরিকা। ব্রণোদ্গমরূপ সাংঘাতিক কতরোগ-বিশেষ। ইংরাজীতে ইহাকে Small pox বলে। বৈজ্ঞানিক সংজ্ঞা Variola!

ইহা একটা বিশেষ সংক্রামক ও স্পর্শাক্রামক সন্দোটক জর।
এই পীড়ার বিষ শরীরে প্রবেশ করিলে কিয়দ্দিস গুণ্ডভাবে
থাকিয়া প্রবল জর ও চর্ম্মে এক প্রকার কণ্ণু উৎপাদন করে। ঐ
কণ্ণুগুলি প্রথমে প্যাপিউল্, পরে ভেসিকেল্ ও পষ্টিউলে পরিবর্তিত হইতে দেখা যায় এবং অবশেষে শুক্ক হইলে কচ্চু অর্থাৎ
চামড়ি পতিত হয়। এই ব্যাধি একবার হইলে প্রায় দিতীয়বার
হয় না।

এই পীড়ার সংক্রামক বিষ বোণীর রক্ত, শ্লোটক ও কচ্ছুতে অবস্থিতি করে; সময় সময় ঘণ্ম, মৃত্র, প্রশ্নাদ এবং অস্তান্ত অপস্তাব দ্বারাও পরিচালিত হয়। বন্ধ, গাড়ী ও গৃহাদিতে উক্ত পদার্থ বহু দিবস লিপ্ত গাকে; এবং উঠা অধিক দূরে চালিত হইতে পারে। বসন্তরোগে মৃত্যু হইলে মৃত্যুন্থ ইটতে জীবিত শ্রীরে উক্ত বিষ প্রায়ই হইবার সন্তাবনা। পৃষ্ম জন্মিবার সময় ঐ পদার্থের সংক্রামণশক্তি বৃদ্ধি পায়। কোন কোন গ্রন্থকার বলেন যে, উক্ত কোটক ওলিতে এক প্রকার অতি সন্ধা পদার্থ অবস্থিতি করে। উঠাই ভিন্ন দ্বাক্তির শ্রীরে সংক্রামণিত হয়।

নাহাদের টীকা হয় নাই এবং কাফ্রী জাতি ও ক্ষাক্ষার বাক্তিরই এই পীড়া অধিক হইতে দেখা যায়। এতদ্ভিন্ন সাধা-রণ্তঃ অপরিক্ষত অবস্থায় থাকা, কুংসিং আহার প্রাকৃতি হইতেও এই পীড়া হইবার সভাবনা। কোন কোন বাক্তির শারীরিক অবস্তা এইরূপ যে, তাহার। ইহাব বিষ কর্তৃক সহজে আক্রাস্থ হয় না। উত্তমরূপে টীকা দেওয়া হইলে এই পীড়া কলাচ হয় লা। উত্তমরূপে টীকা দেওয়া হইলে এই পীড়া কলাচ

এই পীড়া হেতু নানা স্থানের চয়ে সীমাবদ্ধ প্রদাহের চিহ্ন পাওয়া যায় এবং ভাহার মধ্যে অগে পাপেউল দৃষ্ট হয়। প্রকৃত চয়ে নব নব কোষ উৎপর হওয়াতে এপিডার্মিসের নিমে তরল বস এবং পরিশেষে লিক্ষ ও পুয় জলাে। পরিপক্ক অর্থাৎ সপ্তমনিনের ভাট ভেদ কবিয়া অগুনীক্ষণ ছারা দেখিলে ভাহার মধ্য কোটব শৃত্য বা সঙ্কৃতি দেখা যায়, কিন্তু উহার প্রাচীর কৌষিক বিধানের ক্রুক্ত থপ্ত ছারা চয়ের্ম সংযুক্ত থাকে। মৃতদেহের নানা স্থানে অর্থাৎ চর্মা, গলদেশ, চক্তু, নাদিকা, ব্রহাই, কথন কথন পাকাশয় ও অস্তমধ্যে ক্লোটক দেখিতে পাওয়া ষায়। স্কংপিশু, মৃত্রমন্ত্র, গরহার ও বাধীন পেনী সকল কোমল এবং ব্যাপকৃত্রভাবিশিষ্ট হয়। প্রাহা বিবর্দ্ধিত ও কোমল হইয়া থাকে। স্থানে স্থানে পেটিকিব বা রক্তর্মাবের চিক্ষ্ দেখিতে পাওয়া য়ায়। মৃতদেহ শীঘ্ব পচিয়া উঠেন

前衛生 1

১ম গুপ্তাবস্থা।—সংক্রমণ ছারা রোগোৎপর হুইলে ১২.দিন এবং টীকা ছারা হইলে ৭°দ্ধিন; এই অবস্থায় রোগী কিঞিৎ অসুস্থ থাকে; কোন বিশেষ লক্ষণ দেখা যায়,না।

(২) আক্রমণাবস্থা—শীত ও কম্প দারা অকন্মাৎ পীড়ারম্ভ হর এবং রোগী অরের লক্ষণ সকল অস্থতন করে। ক্ষেতিক বহির্গত হইবার পূর্ব্বে তাপ-পরিমাণ ক্রমণ: বৃদ্ধি পাইয়া ১০৪ হইতে ১০৬ ডিগ্রী পথ্যস্ত হয়। এতদ্বির উদরোক্ষণেশে বেদনাও ভারবোধ, বিবমিষা কিংবা অতিশয় বমন এবং কটিদেশে প্রবল্প বেদনাইত্যাদি করেকটি বিশেষ লক্ষণ দেখিতে পাওয়া যায়। অস্তান্ত লক্ষণের মধ্যে শিরোবেদনা, মৃথমণ্ডল আরক্তিম, হস্ত পদাদির স্পন্দন, আলন্ত, অতান্ত চর্ব্বলতা, প্রপাপ, অস্তিবতা, অচৈতন্ত এবং শিক্তদিগের দর্বাদা আক্রেপ প্রভৃতি বন্ধনান থাকে, কোন কোন হলে সান্ধি বা গলায় বেদনা হয়। ইহাকে প্রাথমিক () rimary Fever) জর কহে। উক্ত লক্ষণ সকল ভূই দিবস প্রয়ন্ত বর্তমান থাকিয়া ফোটকাবস্থায় পরিণত হয়।

(৩) ক্ষেটিকাবছা।—জ্বের তৃতীয় দিবসে মুখে, কপালে ও হত্তে ক্ষুদ্র ক্ষু লাল দাগ দেখা যায়। ইহারা দলে দলে উৎশা इटेब्रा २।> निरमत भर्मा नमछ भनीरत वााश्व रहा। महनाहत ইহার সংখ্যা ১০০ হইছে ৩০০ ; কখন কথন সহস্র প্রান্ত হইছে পারে। মুখমগুলেই অধিক সংখ্যক হইয়া পাকে। টীকা দিবার পর, অথবা সংক্রামক রূপে বসস্তরোগ উপস্থিত হইলে েল্টেকাবভার পুকো উদরে ও উরুর অভ্যস্তরে বৃহদাকার . লাল দাগ সকল বহিৰ্গত হইতে দেখা যায়, তাহাকে প্ৰোড্ৰোম্যাল এক্জেছেম্ (Prodromal Exanthem) वरण । तमरञ्ज গুটিগুলি স্বতন্ত্র, সংশ্লিষ্ট, বা অস্ত প্রকার হইতে পারে। 'গুটি হইবার পূর্বের প্রথমে কুন্ত কুন্ত লাল দাগ উৎপন্ন হয়। কোটকের দ্বিতীয় দিবলে কণ্গুলি সর্বপের ন্তায় উচ্চ দেখায়, ইংরাজীতে প্যাণিউল্ কহে, ভৃতীয়দিবলে স্পূৰ্ণ করিলে ছিটা **ওলির স্থা**য় কঠিন বোগ হয়, চতুর্থ দিবলে গুটির মধ্যে মধ্যে রস (সিরম্) সঞ্চিত হও-য়াতে কোমল হইয়া থাকে এবং মুক্তার তায় ভেসিকেল্ দৃষ্ট হয়। পঞ্চম দিবদে উহাদের উপরিভাগ নত কিংবা নাভির মত কিঞিৎ নিয় হয়, ইহাকে অম্বিলাইকেটেড্ (Umbilicated) বলে। ক্ষেটি-কের পরিধি রেটিমিউকোসম্ (Retemucosum) সিরম্ স্বারা ক্ষীত এবং মগান্থ কোষ সকল এপিডাশ্মিসের সহিত সংলগ্ন হওয়াতে ঐ নবভাব উপস্থিত হয়। কোটকের মধ্য দিয়া একটা হেয়ার কিংবা ম্যাণ্ড ভক্ত (Hair or gland duct) গমন করিলেও উক্ত প্রকার নত হইতে পারে। বর্চ হইতে সথ্য দিবস পর্যাত্ত স্ফোটকের মধ্যস্থলে অচ্ছ ও তর্ম দিরম্ থাকে এবং চতুম্পার্থে

ক্রমশং পৃশ্ন সঞ্চিত হইতে দেখা যার। ঐ অফ রস ও পৃরের মধ্যে এক প্রবার আবরণ থাকে; পৃন্ন র্ছি প্রাপ্ত হইলে উহা অদৃত হইনা বার, এই অবহাকে পৃত্তিউল্ (Pustale) করে। এই সমরে প্রদাহ কক শুটির চতুলার্বে লাল রেখা দেখা দের। অইম দিবনে ক্ষোটকগুলি পৃন্ন বারা পরিপূর্ণ হওরাতে গোলাক্ষতি ও উঠি দেখার। ইহাকে পরিপকাবছা (Maturation) বলে। এই সমর উহার কোটর বেন নানা আংশে বিভক্ত বোধ হয়। ৯ হইতে ১০ দিবদের মধ্যে কতকগুলি বিদীর্ণ হইরা ঘার এবং অবলিইগুলি গুল্ল হইনা আইলে। বিদীর্ণ হইলে শীতাভ পাটল বর্ণ কল্প উৎপন্ন হয়। ১০ হইতে ১৪ দিনের মধ্যে উক্ত কল্পুগুলি শ্বনিজ হইতে থাকে। কল্পু পতিত হইলে চর্দ্দে লাল লাল গাণ থাকিরা যার; ক্ষোটক গুলুতর হইলে লাগসমূহ কিঞ্চিৎ গভীর হর, ইহাকে Pits বলে।

গুটিকার সংখ্যাতুসারে সাধারণ লক্ষণের অনেক পরিবর্ত্তন ঘটে। গুটির সংখ্যা অধিক হইলে মন্তক, গ্রাদেশ, অক্সিপল্লব ও শরীরের অফ্রান্ত স্থান স্বীত, চর্ম্ম গাড় লালবর্ণ এবং উহাতে ক গুয়ন থাকা বশত: নথাঘাড্যারা বৃহৎ বৃহৎ ক্ষত্যুক্ত এবং নানা গুনের দৈয়িক বিদ্ধীও আক্রান্ত দেখা বার। গলাভান্তরে শুটি হুইলে বেদনা, লালা নিঃসর্গ এবং আহার করিতে কট হয়। नामिकारक रहेरण नामिकात निःव्याव तृष्कि शाप्त ७ नामात्रक सक হইয়া যায়। লেরিংস, টেকিয়া, বা ব্রন্ধাই আক্রান্ত হওয়াতে কাসি, অরভন্ধ এবং সময় সময় খাসকুছে উপস্থিত হয়। মূত্র-মার্গের হৈথিক থিলী আক্রান্ত হইলে মূত্রত্যাগে জালা ও কথন কখন রক্তলাব অর্থাৎ হিমেটিউরিয়া (Hæmaturia) হইয়া পাকে। চকু আরক্তিম, সমল, বেদনাযুক্ত এবং কীভ হর। রোগী আলো দেখিতে কষ্ট বোধ করে। কখন কখন রোগীর উদরাময় हरेगा थारक। शांज हरेरक अक अकांत कृतंक वाहित हन। ন্দোটক বহিৰ্নত হুইলে জন্মের কিঞ্চিৎ বিরাম হয় ; কিন্তু পূদ্র হুই-বার সময় পুনর্কার শীত ও কম্পের সহিত অর উপস্থিত হইতে দেখা বাম ৷ উহাকে দিতীয় অন বা সেকেপারি (Secondary) ফিডার করে। এই সমরে উত্তাপ ১০৪ হইতে ১০৫ পর্যান্ত উঠিরা থাকে এবং ভাষা ক্রমণঃ হ্রাস পার। নাড়ীর গভি ক্রত, লিপাসা বৰ্ষিত, জিহ্বা ও মুখাভাত্তর শুক; রোগ কঠিন হইলে বিকারের লক্ষণ সকল উপস্থিত হইয়া পাকে।

ইহার কণ্ গুলি সাধান্তগতঃ সানাপ্সকারের হইরা থাকে।
বথা—(১) ডিস্ক্রিট্ (Discrete) অর্থাৎ অসংস্করা
ইহাতে জীবনের আশস্থা নাই; সক্ষণ সকল বৃহ। শিশুদিসের
দর্ভাদন্যকালে হইলে গুলুক্তর হইতে পারে।

(२) कन्क्रुद्रक्षे (Confluent) व्यर्थीय मरिन्नेहे ; हेशास्त्र ।

প্রথমে শরীরে বহুসংখ্যক কুল কুল ও সামান্ত উচ্চ প্যাণিউল্
বহির্গত হর এবং শীত্র পরস্পর মিলিত হইতে দেখা বার। তেসিকেল্ ও পাইউল অবস্থার উহারা অধিক মিলিত হর। গুটি
সকল দেখিতে অস্তচ, কিন্তু বিভূত এবং জলবৎ সিরম্, পূর, কিংবা
রক্তে পরিপূর্ণ থাকে। মন্তক, মুখমগুল এবং কঠদেশেই বহুসংখ্যক দেখা বার। উহারা ওক হইলে মুখোপরি একটা বৃহদাকার ওক চর্ম্মগুল পতিত হয়; তাহা উঠিয়া সেলে, গভীর দাপ
সকল উংগর হইরা থাকে। গুটিগুলির মধ্যকর্তী স্থানে রেখা
দেখা বার না, সমন্ত অক্ কুফাভ লোহিত বর্ণ হয়। ইহাতে প্রথম
অবের বিরাম হয় না, কিংবা হিতীর অর বিশেবরূপে প্রকাশ পার
না। অস্থিরতা, প্রকাপ প্রভৃতি কঠিন স্বায়বিক লক্ষণ সমূহ
বর্তমান থাকে। ইহা অভান্ত সাক্ষাতিক এবং ইহাতে নানা
প্রায়ন কঠিন উপসর্গও উপস্থিত হয়। ডাজ্বর কলি (Colli)
বলেন বে, গুটিগুলিতে যদি পূর না জন্মে এবং রোশীর মুখ্মগুল
মরদার আঠার বর্ণ দেখার, তবে রোগ সাংঘাতিক হয়।

- (৩) আর্দ্ধনারত (Semiconfluent), উহা উপরোক্ত প্রকারনারে মধাবতী। ইহাতে শুটিশুলি শতন্ত্র কিন্তু নিকটবন্তী থাকে; জীবনের আশহা নাই।
- (৪) নশবদ্ধ (Corymbose)— অর্থাৎ নেধিতে জাকা গুচুবং; ইহা অত্যন্ত সাক্ষাতিক।
- (৫) ম্যালিগ্নেক (Malignant) অর্থাৎ সাক্ষাতিক। ইহাতে গুটিগুলি দেখিতে ক্লক্ষবর্ণ কিংবা রক্তে পরিপূর্ণ থাকে। কথন কথন নানাস্থান হইতে রক্তপ্রাব; মুখমগুলে মালিগু, অন্থি-রতা, প্রবাপ, অচৈতন্ত প্রভৃতি লকণ সকল বর্তমান থাকে। চর্মে ক্ষত বিগলন,বা পেটক দৃষ্ট হয়। প্যাপিউলার,ভেসিকিউলার কিংবা পরিউলার অবস্থায় গুটির মধ্যে রক্তপ্রাব হইলে, যথাক্রমে ভোর-ওলা, হেমরেজিকা,প্যাপিউলোজা,ভেলিকিউলোজা ও পষ্টিউলোজা প্রভৃতি নামে অভিহিত হয়। এই প্রকার বসন্তরোগাক্রন্ত ব্যক্তি-দিপের গাত্র হইতে একটা বিশেষ পূর্ণত্ব বহির্ণত হইরা থাকে। মল শুত্রের সহিত রক্তপ্রাব হইতে দেখা বার এবং বঠ, সপ্তম বা অটম দিবসে মৃত্যু হয়। এতথ্যতীত তেরিওলা নাইপ্রা(Variola Nigra) অর্থাৎ রাাক্ স্থল পদ্ম (Black Small Pox) একটা অভি সাংগতিক প্ৰকার বনত। ইহার ভাটগুলি পেখিতে বেগুনি বৰ্ণ বা কালির লাগের স্থার। ইহাতে চকুর শৈত্মিক বিল্লীতে রক্ত-আৰ হয়, ও কনীনিকার চতুস্বার্থে শোশিক সংবত হয়। এই শীড়ার মৃত্যু পর্যান্ত জ্ঞান বর্তমান থাকে। শীড়ার ভৃতীর বা **शक्य भिष्टम मृज्य २३**।
- (৬) বিদাইন্ (Benign) হরণ্ (Horn) বা ওরার্ট্ পক্ (Wart pock)—ইহাতে প্টিসন্বের অভ্যন্তরে পুর সঞ্জিত্ত

হর না এবং ৪।৫ ছিনের মধ্যেই শুক হইরা বার। বিতীয় জ্বর প্রকাশিত হর না। এই প্রাকার বসস্ত টীকা দিবার পর উপস্থিত হইরা থাকে।

উপদর্গ ও আহ্বালিক পীড়ার মধ্যে নিউমোনিরা, গ্লুরিদি, গ্লাইটিন্, গাাষ্ট্রাইটিন্, এপ্ট্রাইটিন্, উদরাময়, নানাহানে প্রদাহ ও ক্ষেটিক, স্থ্যেটিম্ ও লেবিয়াতে কত বা বিগলন; এরিদিগ্লাদ, পাইমিয়া, এল্বুমিন্উরিয়া, হিমেটিউরিয়া, এপিন্ট্রাক্ষিন্ এবং মেনোর্থেজিয়া প্রভৃতি বিভাষান গাকে।

এই পীড়া অভিশন্ধ সাজ্যাতিক, শতকরা ৩০ জনের মৃত্যু ঘটে। প্রায় একাদশ দিবসেই মৃত্যু হইরা থাকে। অভ্যন্ত অর, ত্র্বাপতা, খাসক্ষতু তা, গাত্রে পৃষ্ণ এবং রক্তরাব প্রভৃতি লক্ষণসমূহ উপস্থিত হইলে রোগ গুজতর বদিয়া জানা যার। অভি শিশু, মধ্যবয়ন্ত ও গর্ভবতী স্ত্রীলোকদের হইলে প্রায়ই অসাধ্য হইলা থাকে। ১০ হইতে ১৫ বৎসর বন্ধ বালকেয়া প্রায় আরোগ্য হয়। জোটক বহির্গত হইবার পর উত্তাপাধিক্য, কটিদেশে অভিশন্ন বেদনা, অভ্যন্ত ব্যন্ত ও রক্তরাব প্রভৃতি উপস্থা উপস্থিত হইলে ভাহাকে কঠিন বলা যায়। কন্দ্রুমেণ্ট ও করিখোল প্রকার প্রায় সাজ্যাতিক। এই পীড়া স্থালোটনা, হাম ও জলবদন্তের সহিত প্রম হইতে পারে।

চিকিৎসা।

নিম্নলিথিত প্রণালী অন্থসারে বসন্তের ডাজনারী চিকিৎসা করা হয়। (১) সাধারণ শুশ্রবা, (২) শুটিগুলি যাহাতে স্বচাক রূপে বহির্গত হয় এবং ভবিব্যতে চর্ম্মে বিশেষতঃ মুখ্মখুলে দাগ না পাকে, (৩) উদ্ভাপাধিকা নিবারণ করা (৪) বলকায়ক শুষধ্যের ব্যবস্থা, (৫) বিষয় বিশেষের চিকিৎসা, (৬) প্রধান প্রধান উপসর্কোর চিকিৎসা, (৭) প্রতিবেশক চিকিৎসা।

- (১) পূর্ব্বকালে বসন্তরোগীকে উত্তপ্ত গৃহে অবরুদ্ধ রাথা হইড, এখন আর উহা থাটে না। আরু কালকার মতে বায়ু-প্রবাহিত আলরে রাথাই উচিত, কিন্তু ছেন কোন প্রকারে রোগীর শ্রীরে শীতল বায়ুসংলয় হইতে না পার। প্রথমাবহার লঘু পথা ও কোনেড, বরুদ্ধ ইত্যাদি শীতল পানীর এবং কমলালের প্রেভৃতি স্থবস ফল ব্যবছা করিবে। পুর সঞ্চর কালে কিংবা রোগী হর্বাল হইলে বিফ্লি, স্থপ, জেলি ও অরমাত্রার স্থরা দেওরা আবশ্রুক।
- (হ) শুটিশুলি স্টাক্ষণে বহিন্ত করিবার কর কার্কলিক, কণ্ডিক্ কিংবা সল্কিউরন্ এসিড্ লোসন বারা গার স্পাক্ত করিবে। কণ্ড্রন নিবারণার্থ মহলা, এরাক্ট অথবা অন্ত কোন ইচিচ্চ গাত্তে লাগাইবে। তবিবাতে চর্মোগরি বাগ না হইতে পারে, তক্ষণ পরিপক শুটিশুলির উপর ক্রমণ: নাইট্টেট্ অব্

দিশ্ভার পেশ্চিন্ অথবা উহার লোসন সংলয় করিবে। কিংবা মার্কিউরিরেল্ অথবা সলকার অরেন্টনেন্ট, টিং আই-প্রভিনু, করোসিব্ সব নিষেট লোমক (৩ আউজ জনের কহিত ২ এেগ) এবং লাইকর গটাপার্কা ইত্যাদি সংলুম করিতে পারা বার। ডাং ভাজান্ (Dr. Sanosm) বলেন বে, কার্কিকি এসিড্ থাইমল অরেল মিশ্রিড করিরা লাগাইলে উপকার কর্নো। যদি উপরোক্ত মলমসমূহ হারা যন্ত্রপা বোধ হয়, ভবে কোল্ড্ ক্রিম্ বা গোলাপ-জল মিশ্রিড মিসিরিগ্ সংলগ্ধ করিবে। কোন কোন গ্রহুকার ভেসিকেল অবহার কার্কাশিক্ এসিড্ সংলগ্ধ করিতে বলেন। কিন্তু ডাক্টার মার্সন (IDr. Marson) বলেন বে, পৃষ্ব নির্শুত হইলে পর গুটির উপর কোল্ড ক্রিম বা মিসিরিগ লাগাইলে বর্রণা ও হাগ পড়েনা। উগ্র রস হারা চর্ম্মে উজেরনা হইলে তথার উঞ্চজনের স্পাল করিয়া তহপরি মর্যা, এরাক্ট, টরেলেট পাউডার কিংবা ক্যালেমাইন সংলগ্ধ করিবে।

- (৩) উত্তাপনিবারণ জন্ম গাত্রম্পার এবং মৃত্ বিরেচক ও ধর্মকারক ঔষধ সকল বাবছের। উত্তাপাধিকা হইলে এক্টি-কেত্রিন্ দিবে।
- (৪) পুর জন্মিবার সময় টাইকমেড লক্ষা, সকল উপছিড হইলে এমোনিয়া ও বার্ক প্রস্তৃতি উত্তেজক ঔবধ দিবে। ব্রাতি, ও বর্ধ জাহায়ার্থ বিশেষ। গলার বেদনা নিবারণার্থ নানা প্রকার কুলি দেওয়া যাইতে পারে। রক্তনার কল্প এসিড্ গ্যালিক, তার্পিণ তৈল ও জার্গট্ দিবে। জনিদ্রা ও প্রলাপ থাকিলে কেছ কেছ জহিকেন বা মর্কিয়া ২।৯ রাত্রি দিয়া থাকেন, কিন্তু ফুস্ফুসের প্রদাহ থাকিলে জহিকেন কিংবা মর্কিয়া ব্যবহার করা উচিত নহে। সিক্তি গ্রেশ মাত্রায় বেলেডোনা দিলে কথন কথন উপকার দর্শে।
- (৫) বিশেষ চিকিৎসার মধ্যে সল্ফো কার্মলেটস্, কার্ম লিক্ এসিড, হাইপোক্রোরাইটস্ও সল্ফিউরস এসিড, প্রভৃতি এন্টিসেপ্টিক ওবধ সকল প্ররোগ করা বিধের। কেহ কেহ জালিসিলেট্ কাব্ সোডিরস্ বিতে পরামর্শ দেন।
- (৬) উপসর্বের চিকিৎসা—চক্ষুতে প্রদাহ হইলে চক্ষুর উপরে সর্বান শীতল জল কিংবা ফরোনিব, সব্লিমেট, লোসন (৬ ওকা জনের সহিত ১ গ্রেণ) ও নিজ্ঞ বন্ধ্রথ সংলগ্ধ করিবে; জথবা পোতের চেড়ির খেন দিবে। জভাক্ত করুটেভাইটিস্থাকিলে টেম্পেল ব্লিটার দেওয়া কর্তব্য। কর্ণিরাতে ক্ষত চইলে তত্তপরি নাইটেট্ট জব্ সিন্ভার পেন্দিল্ বা উহার সোসন লাগাইবে। চক্ষুর উপর সর্বানা সর্ব্বর্ণের পর্দা রাগ্ধ উচিত। কাসি থাজিলে ক্ষ-নিঃসারক ঔবধ সক্ল, ব্যবহের।, ক্ষেটিক

্ষ্টলে ছেৰন করিয়া কার্কালিক তৈলযুক্ত লিন্টের পটি দিবে।

(१) প্রতিবেধক—বিশ্বেরপে আরোগা না হইলে রোগীকে কোন ছানে যুাইতে দিবে না। এতদেশে এইরপ প্রথা আছে যে, কোন গ্রামে বসস্ত রোগের প্রাহ্মজাব হইলে, অথবা বাদালা নিকা লইলে অন্ত গ্রামের লোক সেই গ্রামে বার না। যে গৃহে বসস্তরোগাক্রান্ত রোগীকে রাখা হয়, সেই গৃহে চুল লেপন করিয়া ডিস্-ইন্ফেক্টেণ্ট ঔবধ সকল ছড়াইবে। শ্যা ও বন্ধাদি ধৌত কিংবা দগ্ধ করিবে। এই পীড়া উপস্থিত হইলে বাহাদের টীকা হয় নাই তাহাদিগের জীকা দেওয়া উচিত। সমুদ্রগর্ম্জে জাহাজের উপর বসস্ত রোগ প্রকাশিত হইলে এবং ভ্যাকৃসিন্ লিক্ষ্ না গাকিলে, যাহাদের টীকা হয় নাই ভাহাদিগকে বসস্তবীক হারা নিকা দেওয়া বিধের। কারণ তদ্বারা বসত্ত রোগ মৃহ লক্ষণাক্রান্ত হইয়া গাকে। বসত্তের পুয়পুর্ণ অবস্থার নিয়্রোক্ত ঔবধ—

এক মাত্রা তিন ঘণ্টা অন্তর বাবহার্যা।

বালালা টাকা (Inoculation)

ইংতে বসন্তের বীজ দাবা টীকা দেওয়া হয়। টীকা দিবার পর দিবটার দিবদে ছেদিও স্থান কিঞ্চিৎ লালবর্ণ দেখার। চতুর্থ কিংবা পঞ্চম দিবদে ঐ স্থান প্রদাহযুক্ত ও তথার একটি ভেসিকেল্ উৎপন্ন হয়। উপরোক্ত দিবদে উহার চতুস্পার্থে এরিওলা হইয়া থাকে। এই সময়ে প্রাথমিক ক্ষর উপস্থিত হয়; এবং ৩।৪ দিবদের মধ্যে সর্কাক্ষে গুটি বহির্গত হইতে দেখা যায়। ইতিমধ্যে টীকার গুটি প্যযুক্ত হইয়া ক্রমশ: শুক্ত হয়। ইহাতে গুটির সংখ্যা ন্যুন ও লক্ষণগুলি মৃত্ব দেখা যায় বটে, কিন্তু কথন কথন রোগ সাক্ষাতিক হইরা থাকে।

ভেরিওলয়েড্ (varioloid)— টীকা দিবার পর বসন্ত রোগ ছইলে তাহাকে ভেরিওলয়েড্ কহে। ইহাতে দিতীয় জরের লক্ষণগুলি প্রায় প্রকাশিত হয় না। গুটির গতি মৃহ ও ভেসিকেশ গঠিত হইয়াই শুক হইতে থাকে। সময় সময় পষ্টিউল্ হইলেও শীত্র কাইয়া যায়। গাত্রে গভীর দাগ জন্মে না। কোন কোন স্থলে গুটি বহির্গত হইবার পূর্বে গাত্রে বৃহৎ বৃহৎ গলে দাগ দেখা বার; যাহাকে রাাদ্ (Rash) কহে।

ইংরাজী টাকা (vaccination)

ৰছকাল পূৰ্বে ইতালিদেশীর চিকিৎসকেরা: জানিতে পাবেন যে, গাড়ী ও অফ্টাক্স প্রাদিয় দেছেও এক প্রকার বসস্ক বহির্গত হইয়া থাকে। ১৭৪৫ খুটালে ইংলগুদেশে প্রথমে এই বিষয়ের আলোচনা হয়। ১৭৮০ খুটালে ডাং জেনার (Dr. Jenner) টাকা দিবার উপযোগিতা সম্বন্ধ একটা প্রবন্ধ লেখেন। তিনি ঐ প্রবন্ধ উপদেশ দেন যে, নরদেহে গো-বীজ প্রবেশ করিলে গুটির গতি মৃছ হইয়া থাকে। অনেক সময় দেখা গিয়াছে যে, বসন্ত সংক্রামক হইলে গাভীর পরোধরেও ভ্যাক-সিনা বা গো-বসন্ত হয়। মানব-বসন্ত-বীজ গাভীর উদরের নিকট ইনোকিউলেট করিলে শরীরের মধ্যে বিশেষ পরিবর্তন হেতু বসন্ত-গুটি না হইয়া গো-বসন্ত বাহির হইয়া থাকে; তাহার ক্রিয়া বসন্তের ক্রিয়া অপেকা মৃছ। এই গো-বসন্তের লসিকা বারা টাকা দেওয়া যায়।

গাভীর স্তনের উপর গুটি হইলে তাহাকে ভ্যাকনিনা (Vaccina) বা গো-বসস্ত কছে। ঐ গুটর রসকে কাউ লিক্ষ অর্থাৎ গোবীঞ্ক বলে। এতদারা টীকা দেওরা হইরা থাকে। যে প্রণালীতে ঐ বীজ দারা মন্ত্র্যাদেহে টীকা দেওয়া যায়, তাহাকে ভ্যাকসিনেসন ৰলা যায় এবং উহা দারা নরদেহে যে গুটি উৎপন্ন হয়, তাহাকে ভ্যাকসিন প**ষ্টিউল বলে। সপ্তম দিবসের গু**টিকা হইতে যে রস পাওয়া যায়, তাহা লসিকা বা লিক্ নামে খ্যাত। উহা নিমলিথিত উপায় দারা রক্ষা করা হয়—(১) অতি হন্দ্র প্লাসটিউবে. (২) ছই খণ্ড কাচের মধ্যে, (৩) লসিকঃ ম্বল্ল হইলে তাহার সহিত মিসিরিন মিশ্রিত করিয়া রাণা যায়। সপ্তম বা অষ্টম দিবসে অর্থাৎ এরিওলা হইবার পূর্ব্বে ক্ষোটকের শীর্ষস্থানে অস্ত্র বিদ্ধ করিয়া লসিকা গ্রহণ করিবে। পার্ন্দে বিদ্ধা করিলে মধ্যপ্রাচীর ভেদ করিয়া লসিকা অস্ত্রোপরি আসিতে পারে না এবং তাহাতে লসিকার রক্ত মিশ্রিত হইবার সম্ভাবনা। শীতকালে ৬।৭ এবং গ্রীম্মকালে ১।৬ দিনের গুট হইতে বীঞ্চ গ্রহণ করা উচিত। এক ব্যক্তির হস্ত হইতে বীজ লইরা অন্তের হতে টীকা দিলে বিশেষ উপকার দর্শে। স্তম্ভ বালকের টীকা হইতে বীল লওয়া বিধেয়। কোন শিশুর চর্মবোগ, অথবা গুঞ্ছার বা জননেব্রিয়ে উপদংশক্ষনিত উচ্চ ক্ষোটক, কিংবা সন্দি ও গলায় ক্ষত থাকিলে তাহার বীজ লইবে না। পরিস্কুত ল্যান্সেট্ (Lancet) ব্যবহার্যা, অপরিস্কুত অস্ত্র বাবহার করিলে, চশ্মের উত্তেজনা বৃদ্ধি পার। ২ হইতে ৪ মাস বয়ত্ব শিশুদিগকে টীকা দিলে বিশেষ ফলপ্রাদ হয়। শিশু জ্বরা-ক্রান্ত হইলে, অথবা চর্মরোগ, উদরামর বা দভোদগমের স্ক্রা-বনা থাকিলে টীকা দেওয়া নিষিদ্ধ। বিশেষ আবশ্রক না হইলে ১॥ বাং বংসর বয়সের সময় টীকা দেওয়া উচিত। ইদানীং অনেকানেক গ্রন্থকার কাফ্-লিন্দ, অর্থাৎ গোবৎসে যে ভ্যাক্-সিনা উৎপন্ন হয়, তাহার লসিকা দারা টীকা দিতে পরামর্শ

দেন। ইহা হারা শিশুদিগকে একবার ও পরিণত ব্যারদিগকে ফুইবার টীকা দিলে বিশেষ ফললাভ হইয়াছে।

টীকা দিবার স্থান—সাধারণতঃ যে স্থানে ডেল্ট্য়েড্ পেশী শেষ হইয়াছে, তাহার উর্ক ও অবঃ পরস্পার এক বা দেড় ইঞ্ অস্তরিত স্থানের চর্ম আরুষ্ট করিয়া অস্তরারা উপদ্ধকের নিম্ন পর্যান্ত বীজ প্রবেশ করাইতে হয়। প্রত্যেক হন্তে হইটী টীকা দেওয়া উচিত। নিম্নলিখিত চারিটি প্রণালীতে টীকা দেওয়া বিধেয়। (১) ল্যান্সেটের অগ্রভাগে বীর্জ নিপ্ত করিয়া তাহা বক্রভাবে প্রক্রত চর্মা পর্যান্ত বিদ্ধ করিয়ে ; এরপ ভাবে অস্ত্রাঘাত করিতে হইবে, যেন কেবল বিন্মাত্র রক্ত বহির্গত হয়। এভ সেকেগু পর্যান্ত ছেদিত স্থানে অস্ত্র রাখিয়া পরে বাহির করিবে। (২) অস্ত্রনারা সমান্তরালভাবে এভ টি ছেদ করিয়া তহুপরি লিক্ষ্ লিপ্ত করিবে। (৩) উল্লী দিবার মত স্থানিল ছারা উপর লিক্ষ্ সংলগ্য করিবে। (৪) অস্ত্র কিংবা লাইকর্ এমানিয়া দ্বারা উপত্বক্ উন্মোচন করিয়া বীল দিবে।

শুটির গতি—টীকা দিবার পর তৃতীয় দিবসে ছেদিত স্থানে লাল ও উচ্চ প্যাপিউল্ দৃষ্ট হয়। দিন দিন উহার উচ্চতা ও আরক্তিমতা বৃদ্ধি পায়। এ৬ দিনের মধ্যে প্যাপিউল্গুলি ভেসিকেলে পরিণত হয়। উহারা দেখিতে গোল বা অগুকার. মধান্তল নত, বৰ্ণ নীলাভ খেত। ৭ম দিবসের শেষে উহাদের চতুর্নিকে একটা লালবর্ণ বেথা দেখা যায়, তাহাকে এরিওলা (Areola) কহে এবং তৎসময় গুটিগুলি পূর্ণতা প্রাপ্ত হয়। ৮ম দিবস হইতে গুটি সকল ক্রমশঃ বদ্ধিত হইয়া থাকে এবং দেখিতে গোল, আরুষ্ট, ধার উচ্চ, বর্ণ মুক্তার গ্রায় উজ্জল ও তক্মধাস্থ লিক্ফ কিঞ্জিৎ গাঢ় হয়। অব্বীক্ষণ দ্বারা সচল পদার্থ দেখিতে পাওয়া যায়; তাহাকে ডাক্তার বিল্(Dr. Beale) ৰাইওপ্লাজ্ম বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। ছই দিবস পর্যাস্ত এরিওলা (Areola) বিবর্দ্ধিত হয় এবং উহাদের ব্যাস ১ হইতে ৩ ইঞ্চ প্র্যাস্ত বাড়ে। ক্রমে উহার চতু:পার্শ্বর স্থান ক্ষীত ও দৃঢ় হয়। ১১ দিবদের পর ক্ষোটকগুলি ক্রমশঃ শুক্ষ হইতে থাকে এবং একত্র হইয়া চতুর্দশ বা পঞ্চদশ দিবসে একটা বুহৎ লোহিতাভ পাটল কচ্ছু উৎপাদন করে। ঐ কচ্ছু ১১ হইতে ২৫ দিবসের মধ্যে খলিত হইতে দেখা যায়। টীকা দেওয়া সফল হইলে ভাহার দাগটি গোলাকার খেতবর্ণ এবং চর্মাপেক্ষা কিঞ্চিৎ নিম দেখায়। উহার বাাস 🕹 ইক্ষের নান হয় না এবং তল্পেশ সৃদ্ধ সৃদ্ধ গঠি থাকে। এতহাতীত মধ্য-ক্ষল হইতে চতুপার্থ প্রাস্ত রেথাবং চিহ্ন দেখা যায়। ঐ প্রকার দাগ থাকিলে টীকা সফল বলা যায়: দাগটি ঐক্লপ বৃহৎ কিংবা পূৰ্কোক্ত প্ৰকাণ চিহ্নযুক্ত না হইলে অসম্পূৰ্ণ বা সন্দেহজনক এবং দাণটি সামান্ত হইলে বিষণ বলা বার ।
সময় সময় গুটিগুলি উক্ত নির্মাল্পনারে বহির্গত না হইলা ভির
হানে ২ বা ৩টি কিংবা অনেক গুলি ভেলিকেল্ বহির্গত হইতে
দেখা বার । অপরিবর্গতি গোঁ-বীক হইতে টীকা হইলে ৮।৯
দিন পর্যন্ত প্যাণিউল্ উৎপন্ন হর না; বরং ১৪ কিংবা ১৬
দিন পরে বেগুণী বর্গ এরিওলা দৃষ্টিগোচর হর। এত্তির
অনেকানেক অনির্মিত কল কলিতে থাকে।

টীকা দিবার পর প্রথমে অর হয় না, কিছ গুটগুলি পরিপক্ষইবার সমর অর ও অঞ্চান্ত লক্ষণ সকল প্রকাল পায়। গাতে ১০৪° ডিগ্রী পর্যন্ত উত্তাপ উঠে। ঐ সময় টীকা-ছানে কপ্তুমন, উক্তা, বেদনা ও আরুইতা অর্ভুত মা এবং কক্ষের মাও-সমূহ ক্ষীত ও বেদনাযুক্ত হইরা থাকে; তজ্জন্ত লিওরা হত্তচালনা করিতে কইবোধ করে। কথন কথন এরিসিগ্লাস্ বা কত এবং চ্কাল শিশুদিগের অন্থিরতা, উদরাময়, ও অক্তান্ত কঠিন লক্ষণ ঘটে। কোন কোন ছলে বিশেষতঃ গান্তীর গাত্র হইতে লিক্ষ্ হইরা টীকা দিলে প্রায় গাত্রে পাটনিকা, শৈবালিকা বা রসপ্তানী বহির্গত হইতে দেখা যায়।

এরপ অবস্থায় অর্নিবারণার্থ শিশুদিগকে মৃত্ বিরেচক ঔষধ, যথা—১ ভূাম্ ক্যান্তর, অয়েল্ ও সামান্ত ঘর্মকারক ঔষধ দিবে। হত্তের প্রদাহ নিবারণ করিবার জন্ত জার্জ বস্ত্রথগু, গোলাড্স লোবণ, বা কোল্ড্ ক্রিম্ অথবা চন্দন লেপন করিবে।

পুনটিকা প্রদান (revaccipation)—টকা দেওয়া বিফল কিংবা অসম্পূর্ণ হইলে, অথবা বসস্ত রোগের প্রাত্তাব কালে, পুনরায় ইংরাজি টাকা দেওয়া যায়। সচরাচর বয়ঃপ্রাপ্তির পর পুনরায় টাকা দেওয়া হয়। কোন কোন গ্রন্থকার বলেন, ৭ বংসর অস্তর টাকা দেওয়া উচিত। কিন্তু বিতীয়বার তাল করিয়া টাকা দেওয়া হইলে পুনর্কার টাকা দেওয়া আবহুল করে না। প্রথম দেওয়া টাকার প্রটি হইতে বিতীয় বা তৃতায় বাবের প্রটির অনেক বিভিন্নতা আছে। ইহার ঘোটক গাঁয় বহির্গত হয় এবং বাছ দিনে রসপ্রটা(Vesicle) পূর্ব হইয়া থাকে। ৮।৯ দিবসে শুক্ত হয়ত থাকে। পুনরায় টাকা দিবার পরভ অরের সক্ষণ সকল প্রান্ধ প্রবাদ থাকে এবং কথন কথন এরিসিস্লাস্ উপস্থিত হয়। পুনটাকা প্রদানকালে কথন কথন কোন তুর্বলচিত্ত ব্যক্তি মৃত্রে বার।

একবার টীকা ছইলে পর যাহার দিওীরবার টীকা দেওয়া হয়, তাহার দেহে আর কথনও বসন্ধরোগ প্রবিষ্ট হইতে পাবে না। কোন কোন দ্বলে যদিও বসস্থ হইতে দেখা যায় বটে, কিন্তু লক্ষণ স্কল মৃত্ হর ও গাতে দাগ পড়ে না। টীকা দিবাব প্রধা প্রচলনের পর বসন্তের সংক্রামকতা কম হইরাছে।

গানিবদত্ত বা জল-বদত্ত (Varicella)

ইংরাজিতে ইহাকে chicken-pox বলে। ইহা একটা সংক্রান্তর্ভ প্রাণি কর্ম ব্যাপি। এই ব্যাপি কথন কবল অধিক বান বালিলা উপস্থিত হর। উক্ত রোগ একবার হইলে বিক্তীর বার হর না এইরূপ সংস্থার বটে, কিন্তু কথন কবল এক ব্যক্তির হর না এইরূপ সংস্থার বটে, কিন্তু কথন কবল এক ব্যক্তির ছইবারও ছইতে দেখা গিরাছে। ইহা সচরাচর ৪ বৎসর বরত্ব বাজকনিগকে আক্রেল্ড করিরা থাকে; কিন্তু সময় সমর ব্যক্ত ব্যক্তিগণ ও বরত্ব স্তীলোকনিগকে আক্রেল্ড হইতে বেথা বার। কেন্তু কেন্তু বলেল বে, ইহা একপ্রকার বসত্ত রোগ; কিন্তু পরীক্ষা করিরা কেন্ত্রিল হিলেল ইহাকে বতর শীড়া বলিরাই অস্থান হর। কারণ গ্রেক্ত বসত ও পান-বসত্তে মূলতঃ বথেই পার্থক্য। আগ্রীকণ বারা বিশেষ পর্যাবেক্ষণ করিরা দেখা গিরাছে যে, ইহার লসিকা বা প্রের মধ্যে এক প্রকার ক্ষা ক্রিক্ত বিশ্রমান আছে।

কোন কোন ছলে ১০ হইতে ১৪ দিবদ পর্যান্ত ইহা গুপানবার থাকে, তথন ইহাতে কোন বিশেব লক্ষণ দেখা যার না। আবার অনেক ছলে কোন অরের লক্ষণ উপস্থিত না হইরাই অত্যে কণ্ঠু বহির্গত হইতে দেখা যার। কিন্তু অপরাপর ছলে কণ্ঠ বহির্গত হইবার ২৪ বা ৩৬ ঘন্টা পূর্কে শিরোবেদনা, আলভ ও সামান্ত অর উপস্থিত হয় এবং সামান্ত কাশি ও বায়্নলীর প্রদাহের লক্ষণ সকল বর্তমান থাকে।

অরের প্রথম বা বিতীর দিবসে কোটক গুলি সহসা বহির্গত চর। অত্যে বক্ষাস্থল ও ক্ষকে দেখা দেয়; পথে ৪।৫ রাত্রি মধ্যে হলে হলে ক্রমণঃ হল্ত প্রাদিতে ব্যাপ্ত ছইতে থাকে এবং মুখমখল সামান্ত ভাবে আক্রান্ত হয়। কোন কোন গ্রন্থকারের মডে, প্রথম হইতেই ফোটকগুলির মধ্যে কিঞিৎ জনবং বুদ থাকে। কিন্তু অধিক স্থান কিঞ্চিং উচ্চ ও উজ্জন লালাবর্ণ দাগ বহির্গত হয় এবং ৫।৬ বন্টার মধ্যে উহাকে রসপ্রটীতে পরিণত হইতে দেখা বার। তখন গুটগুলি দেখিলে ৰোধ হয় যেন উষ্ণ জল ছিটা দিয়া রোগীয় গায়ে কোছা উৎপর कता इंदेशांट । २८ वन्तात मध्य एजनिएकरनत मध्य तम किकिए আবদ্ধ হর এবং ডুডীর দিবনে কভকগুলি ভেসিকেল পুর শুটি-কার মত দেখার। ভেসিকেল সমূহ দেখিতে গোল বা অধ্যক্ততি এবং বসন্তের গুটির মত। উহাদের শীর্বজাগ অবনত কিংবা উহারা কোটর-বিজ্ঞক নহে। বিদ্ধ ক্রিলে শুটিগুলি সম্পূর্ণরূপে সম্বৃতিত হয় এবং এবিওলা থাকে না। ২৪ মন্টার মধ্যে উক্ত প্রটিসমূহ জবং গাঢ় ও অবচ্ছ হইরা পড়ে। চতুর্ব ও পঞ্চম দিবলে কণ্ড ওৰ হয় ও পাতলা কল্পু নিৰ্মাণ করে; পরে ভাষা ক্রমশঃ চণভাবে **খলিত হইয়া পড়ে। কল্পু পতিত হইলে কিবনিবসের** জন্ম গাত্রে সামান্ত লাল কাগ থাকে; স্থলবিশেবে বাগগুলি গভীর লেখা যার। সাধারণ লক্ষণের মধ্যে সামান্ত জ্বর, সর্কি ও চর্মে ক্তব্যন বর্তমান থাকে এবং গাত্র হইতে এক প্রকার গদ্ধ বহির্গত হয়।

নির্গর ভাল দিবার পর বসন্ত রোগ হইলে কথন কথন জল-বসন্ত বলিরা শ্রম হইতে পারে। বসন্তের শুটি বহির্গত হইবার পূর্বেক কটিদেশে বেলনা, বমন ও শিরোবেদনা প্রভৃতি করেকটি বিশেব লক্ষণ বর্তমান থাকে; কিন্তু এই পীড়ার তাহা দেখা বার না। জল-বসন্তের আবরণ বসন্তের মত দৃঢ় নহে। ভেসিকেল্ অবস্থার পরিণত হইলে তলদেশ বসন্তের শুটির মত উচ্চ বা কঠিন হয় না। প্রচিকা হারা বিদ্ধ করিলে চিকেন্-পর্ম সম্পূর্ণরণে সম্কৃতিত হয়। কিন্তু বসন্ত ভক্রপ হয় না।

ভাবিফল—সর্বাণা শুভ এবং লহজে আরোগ্য হয়; কিন্তু রোগারোগ্য হইবার পর রোগী কিয়দিন পর্য্যন্ত চুর্বল থাকে।

চিকিৎসা—সচরাচর কোন ঔবধ প্ররোগের আবশ্রক নাই।
কোষ্ঠ পরিকার রাথিয়া লঘু আহার দিবে। জর ও কাশি
থাকিলে তরিবারণার্থ উপবৃক্ত ঔবধ সকল ব্যবহার করিবে।
সাধারণতঃ গৃহত্বেরা পান বসস্ত হইলে কুড়বাবুই, পেরাজ প্রভৃতি
বোগে একপ্রকার পাঁচন খাইতে দের, উহাকে বসন্তের "জাড়ি"
বলে। বেণের দোকানে বসন্তের জাড়ি চাহিলেই পরিমাণ মত
মিলিত জাড়ি কিনিতে পাওরা যার।

বসন্ত ঋতুতে আমাদের দেশে বসন্তরোগের প্রাচ্ছতাব হর।
এই রোগের উপদ্রবশান্তির জক্ত আমাদের দেশে শীতলার পূজা
ও শুবকবচাদি পাঠ এবং শান্তি স্বন্ধ্যেরনের রীতি আছে: মা
শীতলাই বসন্তরোগের অধিষ্ঠাত্রী দেবী, অরাস্থর তাঁহার সহকারী।

মলয়ানিল সঞ্চালিত ভারতে এই রোগের প্রাবল্য বহুকাল হইতে ওনা বার। অথর্কবেদে (১।২৫।১) "তন্ধন্" শব্দে শীতলা রোগের উল্লেখ আছে। লান্দিশাত্য প্রভৃতি নানা হানে আজিও বসন্তের পরিবর্ত্তে শীতলা নামেই এই রোগ কথিত হইরা থাকে। পিচ্ছিলাতত্ত্রে শীতলাদেবী বিস্ফোটকের উপ্রভাগনাদিনী এবং ক্ষমপুরাণে তিনি বিস্ফোটকবিশীর্ণের অমৃতবর্বিশী ও গলগগুদি লাকণ গ্রহরোগবিনাশিনী বলিরা উক্ত হইরাছেন। এই কারণে প্রণক্ষকত বসন্তরোগের তিনিই অধিষ্ঠান্ত্রী।

হিন্দ্যতে, একমাত্র শীতলাবেশীর সেবাইত ব্রাহ্মণ বা ডোফ পণ্ডিতগণ বসন্তরোগ চিকিৎসার একমাত্র অধিকারী। তাঁহারা বে প্রণাশীতে চিকিৎসা করিয়া থাকেন তাহা সংক্রেশে নিরে বির্ত হইল। রেশির গায় বসন্ত দেখা দিলে, ডফণ্ডেই তাহাকে শতক্র গৃহে ও পবিত্রভাবে রাখিবে । রাজিবাসের পর বাসি কাপড়ে বা মন্সভাগাদি কয় সভচি বক্তে ঐ রোশীর বরে প্রবেশ করিবে না। দিবসে ৩ বা ৪ বার ঘরে গঙ্গাজল ছড়া ও ধুনা দিবে। বাটীর কেহ মাছ পাইবে না, লালপাড় কাপড় পরিবে না, অথবা পান গাইয়া ঠোঁট রাঙ্গা করিবে না। এমন কি, পায় পর্য্যন্ত আলতা দিয়া এয়োরা বেড়াইতে পারিবে না, ইহাতে মা শীতশার নিষেধ আছে। কারণ বসস্ত হইলেই গুহে মা শীতলার অধিষ্ঠান হইয়া থাকে। এই জন্ম লোকে ঐ সময় গৃহে ঘট পাতিয়া মার পূজা করে। মা খেতাঙ্গী বলিয়া বর্ণিত হ্ইয়াছেন, কিন্তু সাধারণে মার মূর্তি খোর লালবর্ণ করিয়া গঠন করে। রোগী ঐ সময়ে একমনে মার মৃষ্টি ধ্যান করিয়া থাকে, লালপাড় বা রাঙ্গা ঠোঁট রাসভগু মেতাঙ্গী দেবীর অপমানকর ভাবিয়াই সম্ভবতঃ ঐরপ নিষেধাক্তা প্রচারিত হইয়াছে। বর্ত্তমান কোন বৈজ্ঞানিক স্থির করিয়াছেন যে, বসন্ত রোগগ্রন্তকে লালবর্ণহীন ঘরে রাথিলে ভাল হয়। কেননা লালবঙ্গের সহিত বসস্তের বিশেষ সহযোগিতা আছে। তাই বোধ হর, আমাদের জ্ঞানী মনীষিগণ শীতলাদেবীর লালমূর্ত্তি করনা করিয়াছিলেন। দেবীমূর্ত্তির ধ্যানে রোগমূক্তিরূপ লৌকিক ও মোকরূপ পার-লৌকিক মূর্ত্তি বিনিবিষ্ট আছে। রোগারোগ্যের পর বসস্তের দাগ গাত্রচম্মের সহিত মিলাইবার জন্ম অনেক বহুদর্শী লোক নারি-কেলোদক গায় মাখিতে বলেন।

শীতলার পণ্ডিতগণ প্রথমে রোগীর উষ্ণ রক্তের তাপ নিবারণ জন্ম এবং গাত্রস্থালা শীতল করণার্থ বৈথক শাস্তের মস্থিকা-ধ্যায়োক্ত কএকটী পাচন ও মকরধ্বজাদি ঔষণ ব্যবস্থা করিয়া থাকে এবং সঙ্গে সঙ্গে শীতলামাতার স্তবাদি পাঠ করিয়া রোগীর চিত্তে শীতলা মার প্রভাব বিস্তার করিয়া দেয়।

যদি গায় বসন্ত ভাল করিয়া না ফুটে, তাহা হইলে তাহারা আপনাদের অভ্যন্ত ঔষধ প্রয়োগ করিয়া বসন্ত উঠাইবার চেষ্টা পায়, এইরূপে যথন বসন্ত গুলি গায়ের সর্ব্ধ হলেই উঠিয়া ক্রমণঃ স্থাক হয়, তথন তাহারা রোগীর গাত্রে চন্দন, কাঁচা হলুদের রস ও মাথম সংযোগে একটা ছোব্ লাগায়। তাহাতে রোগীর গাত্র শীতল হয়। তার পর কাঁটা দিবার বাবস্থা। ঐ দিন তাহারা বেলকাঁটা রণের উপরে বিধাইয়া বসন্ত গুলিব মূণ উরাইয়া দেয়। কাঁটা দিবার পূর্ব্ধ রাত্রে তাহারা রোগীর গৃহে পঞ্চপাত্রে গলাক্রল, তূলা, থাটাত্র্য় ও ৫টা বেলকাটা রাপিয়া বলে "মা আদিয়া কাঁটা দিবেন। তার পর আবশ্রুক মত আমরা দিব, আবশ্রুক না হইলে দিব না।" বেলকাটা দিয়া বসন্তের মূণ উন্থাইয়া দেওয়া বিলেষ উপযোগী, কেন না তাহাতে কোণাকার ছুঁচাল রণের মূণে কাঁটার গোড়া স্পর্শ করায় বড়

 পরদিন থাত:কালে ঐ ংটা কাটা, তুলা, চক ও গলালল নিখবুকের বুলে ফেলিয়া দিতে হয়। বসলের ছেঁচে ফাটিলে "নিব্ছলুল" ছোয়াইবার বাবছা আছে। হইরা পড়ে, অথচ কাঁটার স্থচাগ্র প্রণক্ষতের গঞ্জীরতম তলদেশ লগাঁশ করিয়া থাকে। ইহাতে পুরনির্গমের বিশেষ স্থবিধাঁহয়। ক্ষতের পর গাঁগুলানিবায়ুগের জন্ত জাহারা সর্কালে মাঁথমের প্রেলেপ দিয়া থাকে। কথন কথন ক্ষতের খা বা "বসস্তেব গোড়" আরোগ্যের জন্ত ভাহারা বসত্তর্কুমারী প্রাকৃতি নানা প্রকার তৈল প্রস্তুত করিয়া ব্যবহার করায় এবং ক্ষত জ্বথবা আক্রোস্ত স্থানের উপর লাগাইতে বলে। ইহাতে বিশেষ উপকার হইতে দেখা গিয়াছে।

মা শাঁতলার রূপায় বসন্তের উগ্রজালা বিদ্রিত হইলে, হিন্দ্ মাত্রেই গৃহে গৃহে শাঁতলার গান দেয় এবং দেবীর সমূহে পূজা ও ছাগ বলি দেয়। এই শাঁতলা পূজাব জহা স্থানে স্থানে গ্রাহ্মণ সেবাইত এবং কোণাও কোণাও ডোম পণ্ডিত নিযুক্ত আছে। ইজারাই বসন্তর্রোগের চিকিৎসা ক্ষিয়া থাকে। ইলানের চিকিৎসাগ্রণালী স্বতন্ত্র। বসন্তরোগের চিকিৎসা ক্রিয়া কোন কোন ডোম পণ্ডিত গ্রমেন্টের নিক্ট ডিপ্রোমা পাইয়াছেন।

শীতলার পণ্ডিতমূথে এবং দৈবকীনন্দম কবিবল্লভ ও নিত্যা-নন্দের শীতলা-মন্দলে আলকুনী, ধুকুড়িয়া, চামদল প্রভৃতি ৬৪ প্রকার বসস্তের উল্লেখ শুনা যায়।

"চৌষট্টি বসন্ত সলে, উরিলে পরম রজে
নানাদেশ বুলেন শ্রমিয়া।
বিষম প্রবন্ধ বল, ধুকুড়িয়া চামদল,
লোকে দেহ বসস্ত যাইরা এ'
উক্ত গ্রন্থের আর এক স্থলে আছে,—
'আগে শীত আরম্ভ পশ্চাতে মাথা বাথা।
চৌদ্দ প্রহর জর ভোগ আমি করি তথা।'

চৌক প্রহর অর্থাৎ দেড় দিন জরতোপের পর, প্রার্ট বসত্ত দেখা দেয় এবং মাথাব্যথা কম্পসংস্কু জরই বসস্থাবিভাবের প্রধান লক্ষণ। বিভিন্ন প্রকার বসস্তের নাম ও বসস্তরোগমুক্তির নিদানভূত শীতলান্তর ও শীতলার গান শীতলাদেবী প্রসক্ষে বিশ্ত হইল। [শীতলা দেখ।]

বসন্তলতা (গ্রী) নারিকাচেদ।

तमञ्जलम्म (जी) अक्र पृथी, हिन्छ (चंडगूँहै। (देवश्रक्ति॰)

বসন্তলেখা (জী) রাজক্সাভেদ। (রাজতর৹ ৭।>৫৭)

বসন্ত্ৰিতল (পুং) বিষ্ণুষ্ঠিভেদ।

বসস্তাত্রণ (क्री) বসন্তনামক রোগজনিত ত্রণ, মহুরিকা।

বসস্তত্ত্ত (পং) কোকিল। (বৈশ্বকনি॰)

বসস্তশেখর (গুং) কিরুরভেদ।

বসন্তস্ত্র (পুং) বসন্তভ স্থা (রাজাহঃস্থিভাইচ্। ¹

a1812) हेक्टि हेह्। कामरनव । (इनामुध)

বসস্তাসমন্ত্রোৎস্ব (প্রং) বসন্তসময়ত উৎসবঃ। বসন্ত সময়ের উৎসব, বসন্তোৎসব, কান্তনমাসের পূর্ণিবাভিথিতে ঐক্তকের উদ্দেশে বে উৎসব হয়। ২ বসন্তুকালের উৎসবমাত্র।

বসস্তাসেন (পুং) রাজপুত্রভেদ। (কথাসরিংসা। ৩০।৬৩)
বসস্তাসেনা (রী) নহাকবি রাজা পুত্রক-প্রেণীত সুদ্ধকটিক নামক
প্রকরণের নারিকাভেদ। অবস্তীপুরীতে চারুদত্ত নামে অনৈক
সাধবাহ আত্মণ বুবা ছিলেন, বসন্তাসেনা বেশর্বনিতা হইরাও
ফ দরিপ্রবৃহকের গুণাস্থরাগিনী হইরা পড়েন। বসন্তাসেনা
কসন্তাশোতার ভার রমনীরা, এইজপই ক্ষির বর্ণনা।

"অৰ্কীপুৰ্যাং বিজ্ঞানাৰ্থবাহো

থ্বা দ্বিদ্ৰঃ কিল চাৰুদক্তঃ।
গুণামূৰকা গণিকা চ যন্ত,

বসন্তালোডেব বসন্তালনা।" (মৃক্কটিক > আঃ)

বসস্তাপ্তি (পৃং) বিভীতক রক্ষ। (বৈছকনি॰)
বসস্তাপ্তয়ন (রী) বসম্ভসহাচরিত অধ্যয়ন। (পা ৪।২।৬০)
বসস্তিকা (রী) অপ্যরেভেদ।

বসন্তে । কাৰ্ডিনার দিন বৈশ্ববংগণসহ প্রীক্তকের প্রিয় ভক্ত বসন্তের পূর্ণিমার দিন বৈশ্ববংগণসহ প্রীক্তকের প্রিয় ভক্ত বসন্তের পূর্ণোৎসব করিতে হয়। এই উৎসবের বিধি ব্যবহা প্রভৃতি ভবিয়োত্তরপতে ভগবান্ বরংই যুধিষ্টরের নিকট ব্যক্ত করিরাজেন। ইহার ফলপ্রতি সম্বন্ধে এইরূপ বলিরাজেন যে, যে জন শাস্ত্রশাসনমত এই কাল্ডনোৎসব অক্স্তান করিবে, আমার প্রসাদে তাহার সমন্ত মনোরপই পূর্ণ হইবে। ভ ভূষারকাল অতীত হইকে বসন্তকালে বাসন্তী-পূর্ণিমার দিন প্রাতে যে জন চন্দান সহকৃত চৃতকুষ্কম ভক্ষণ করে, নিশ্চরই শতবর্ষকাল পর্যান্ত তাহার বীবন প্রথমর হইরা থাকে।

শ্বতে ভূষার সমরে সিতপঞ্চনশাম, প্রাতব্যক্তমরে সমুপন্তিতে চ চ সম্প্রাপ্ত চুতকুস্থমং সহ চলনেন। সভাং হি পার্থ পুরুবোহলণতং স্থথাকাং।"

(হরিভজি বি॰ ২৪ বি॰)

वनस्कारमाद्य উৎनवमाळ ।

"অথ তদ্মিন্ মহাবেশো বসজোৎসৰবাসরে। আমবেটা প্রথমে বামে কুমালসচিবো নিলি ।"(কথাসরিৎসা॰ ৪।৪৯) [মধনমহোৎসৰ দেখ।]

বসন্তোৎসবমগুল (क्री) হরিতাল। (বৈছকনি॰)
বসন্তন্ (পুং) > নানা বেশধারী। ২ অগ্নি। "মমন্তন্নং পরিস্থান
বগর্হা' (শুক্ ১/১২২/৩) 'বসর্হা বসনার্হো গার্হপত্যাদিরপেণ,
বদ্ধা বাসকানাং আজ্ঞাদকানাং বৃহ্মাদিনাং হস্তাগ্নিং অথবা,
বসর্হা বাসার্হো বাসরগু গমনিতা' (সারণ)। [বসনার্হ দেখ]
বস্ব, (বৃষ্ড শব্দের কনাড়ী অপত্রংশ)—দান্দিণাত্যের বীরনৈব
বা লিলায়ত-সভ্যাদ্যের প্রবর্তক। বীরনৈবিদিগের নিক্ট ইনি
শিবাস্থতর নন্দীর অবতার বলিয়া প্রসিদ্ধ। দান্দিণাত্যে আজও
লক্ষ্ক লক্ষ লোক এই বসবের মত অন্থসারে চলেন, স্কৃতরাং ইনি,
এক্ষন সামান্ত ব্যক্তি নহেন। ইহার মাহাম্ম ও ধর্মমত
বীরনৈবদিগের 'বসবপুরাণে' ও 'চ্রবসবপুরাণে' বর্ণিত আছে।

বসবপুরাণে লিখিত আছে,—জৈন, বৌদ্ধ ও চার্বাকাণগের এডাবে ভারতভূমি হইতে শৈবধর্ম একপ্রকার বিলুপ্ত হইবার উপক্রম হয়। সেই সমহ নারদ ঋবি কৈলাসে গিল্পা মহাদেবকে ভারতভূমির হরবছা জানাইলেন। শিব ও পার্বাতী উভয়েই নারদের কথার বিচলিত হইলেন। ক্ষথকাল চিস্তার পর শিব সভাধর্মপ্রচারের জন্ত নশীকে পাঠাইলেন।

ৰগুবরী নামক প্রামে মাদিরান্ধ নামে এক শৈববান্ধণ তাঁহার সাধবী পদ্মী মদলাখিকার সহিত বাস করিতেন। তাঁহাদের সম্ভানাদি ছিল না। পুত্র কামনা করিরা তাঁহারা নন্দিনাথের পূজা করার, নন্দিনাথ বান্ধণের বাসনা পূর্ণ করেন। তাহাতেই বান্ধণ-পদ্মী গর্ভবতী হইলেন। তিনবর্ষ কাটিয়া গেল, গর্ভতারে বান্ধণী অতিশ্ব পীড়িতা হইরা নন্দিনাথের নিকট কন্ধ আনাইলেন, নন্দী বথে বান্ধণীকে দেখা দিয়া কহিলেন, আমি নিজেই তোমার গর্ভে অবতীর্ণ হইব, কোন চিন্তা নাই। অনতিকাল পরে বান্ধণী কঠে লিকণোভিত্ত এক শিশু প্রস্বৰ করিলেন, তাঁহার নাম হইল বসব।

অর্মনিন মধ্যেই বসৰ শিখিতে পড়িতে শিখিলেন। ৮ম বর্ধে ভাঁহার উপনরনের সময় আনিল, পিতা উপনরনের আয়োজন করিলেন, কিছ ডিনি যজোগৰীত লইতে সমত হইলেন না। ডিনি প্রকাশ করিলেন, —'আমি শিবভক্ত, আমি ব্রন্ধুক্ চাহি না। স্বাভিডেমরূপ বুক্স্লফেষনে আমি রুঠার স্বরূপ।'

এই সমর কল্যাণপতি বিজ্ঞালের মন্ত্রী বলদেবও তথার উপন্থিত ছিলেন; তিনি বালকের অপূর্ব শক্তির পরিচর পাইর। ভাস্তিত হইলেন। এমন কি তিনি আপেনার কল্পা গলাদেবীর সহিত বসবের বিবাহ দিলেন। অর্থিন মধ্যেই বলবের মত

^{- &}quot;লাক্সজাং পৌর্বাজান্ত বিষধ্যাহৈকাবৈ: সব :

- একুকাতিয়াক ক্ষা ক্ষান্তভাতিবোৎসবস্
- ভাবিব্যাজনতো ক্ষেত্রভাতিবিশেলকাতে ;

ব্য: প্রিবৃদ্ধিরন্যোকো ব্যাকাং কাবতা ব্যবস্
- এবং বং কুকতে পার্ব পাক্সোকং কাব্যবাধ্যবস্থ ;

- এং অসানাক্য নিধাবি ক্ষা সর্ক্ষে ক্ষ্মান্তব্য:
- ১ ব্যানাক্য নিধাবি ক্ষ্যা সর্ক্ষে ক্ষ্মান্তব্য:
- ১ ব্যানাক্য নিধাবি ক্ষ্যা স্ক্ষে ক্ষ্মান্তব্য:
- ১ ব্যানাক্য নিধাবি ক্ষয় স্ক্ষে ক্ষ্মান্তব্য:
- ১ ব্যানাক্য নিধাবি ক্ষ্যা স্ক্ষে ক্ষ্মান্তব্য:
- ১ ব্যানাক্য নিধাবি ক্ষ্যা স্ক্ষেক্ষ্মান্তব্য:
- ১ ব্যানাক্য নিধাবি ক্ষ্যা স্ক্ষ্মান্তব্য:
- ১ ব্যানাক্য নিধাবি ক্ষয় স্ক্ষ্মান্তব্য:
- ১ ব্যানাক্ষ্য নিধাবি ক্ষ্যা স্ক্ষ্মান্তব্য:
- ১ ব্যানাক্ষ্য নিধাবি ক্ষ্যা স্ক্ষ্মান্তব্য:
- ১ ব্যানাক্ষয় নিধাবি ক্ষয় স্ক্ষ্য নিধাবিক্ষয় নিধাবিক্সয় নিধাবিক্ষয় নিধাবিক্য

1

চারিদিকে রাষ্ট্র হইল। ব্রাদ্ধণেরা উহার নিপ্রহ আরম্ভ করিলেন। কাকেই তাঁহাকে কর্মুদ্ধি গরিত্যাগ করিতে হইল। তিনি কর্মুদ্ধী প্রায়ে আসিয়া বাস করিলেন, এখানে প্রসিদ্ধ সক্ষেশরের মন্দির। সক্ষেশরের প্রত্যাদেশ হইল "গুহাকে শৈবণর্দ্ধ প্রচার করিতে হইবে। সক্ষমদিগকে আমারই ব্যক্ষণ ভাবিৰে,—সহস্র অপরাধ করিলেও তাহাদের বেষ করিবে না। পরব্রী বা পরধনে ক্রক্ষেণ করিবে না, সর্বাদা সত্য বলিবে এবং সত্যপালন করিবে।"

কর্মড়ী গ্রামে উৎসব হইল। এ উৎসবে নন্দীমৃত্তিরও পূজার বাবভা ছিল, রাজ্মণেরা বরারর যে ভাবে পূজা করিরা আসিরাছেন, সেই ভাবেই সঙ্গমেশবের পূজা করিলেন, কিন্তু বসব আসিয়া ভিন্ন ভাবে পূজা করেন, তথন রাজ্মণেরা চটিয়া বসবকে মারিতে উদ্ভত হইলেন। এই সময় জলমেশর জলদ গভীর নিনাদে সকলকে জানাইলেন 'তোমাদের পূজা বুধা, বসবের পূজাই প্রক্তত পূজা,' এই ঘটনার বসবের মাহাশ্মা সর্পত্র প্রচারিত হইরা গড়িল।

কল্যাণ-রাজমন্ত্রী বলদেবের মৃত্যু হইলে, বিজ্ঞালরাক আশ্মীর বজনের পরামণে বলবকেই মন্ত্রিও প্রদান করিলেন। যথন বসব রাজমন্ত্রিরণে কল্যাণে প্রথম প্রবেশ করেন, তথন কল্যাণ-রাজধানী মাঙ্গলিকচিকে স্থাণেভিত হইরাছিল। স্বরং বিজ্ঞান রাজ অতি সমাদরে আগবাড়িয়া বলবকে লইরাছিলেন। তিনি রাজমন্ত্রিক ব্যতীত প্রধান সেনাপতি ও প্রধান কোবাধাক্ষপদও লাভ করেন? বলিতে কি কল্যাণপতি ভিন্ন তাঁহার উপরে আর কেহ রহিল না।

বিজ্ঞানাল তাঁহার অসাধারণ গুণে মুগ্ন হইরা তাঁহার কনিষ্ঠ ভাগিনী নীললোচনাকে বসবের করে সম্প্রদান করিলেন। বসবের উন্নত চরিত্র, সদাশরতা ও স্বাধীন ধর্ম্মোপদেশে রাজ্যের সকলেই বিমুগ্ধ, দেশ বিদেশে তাঁহার কীন্তি বিঘোষিত। এমন উন্নতচন্নিত্র মহাপুক্ষবেরও ১২ হাজার কুক্মনিরত লিলান্নত আচার্য্য ছিল, বেঞ্চাশরেই তাহারা বাস ক্রিত!

রাজমন্ত্রিকলালে রাজকীরকার্যা বাতীত তাঁহার হারা বছ
আমান্থ্রিক কার্য্য সাধিত হইরাছে। তিনি সোম ওজনের
বাটধারাকে লিকরণে ও জোরারীর বতা সুক্তার পরিণত করেন।
বাচুরের ত্থ বাহির করিরা শিবাদিগকে থাওরাইরাছিলেন, চিত্র
হইতে কাঁঠাল বাহির করেন, রাজসভার বিসরা হইক্রোল দ্রবার্ত্তিনী গোণালনার কাতরবাধী শ্রবণ ও তাহাকে উছার করেন।

বিজ্ঞানরাজ একবিন গুনিলেন যে, মন্ত্রী তাঁহার ধনাগার পৃষ্ঠ করিরা জলমকে অর্থ বিভারণ করিতেছেন। রাজা এ সংবাদ পাইরা বস্বের উপর অতিশ্ব বিরক্ত হন এবং তাঁহাকে ডাকিয়া আানরা বলেন, "তুমি কি মনে করিবাঁছ বে, জুমি বাহা ইচ্ছা তাহাই করিবে। এরপ লোককে আমি চাহি না। বসর হাসিরা উত্তর করিবেন, বত্তবিদ আমার কাছে ক্যুমথেছ ও করতক আছে, তত্তবিদ আমার চিতা কি ?" এই বলিরা তিনি হালাকে ধনাগার দেখাইলা বিভিত্ত করিকেন।

এক্লিন রাজসভার বদ্ধ জন্মধারণের সাহান্ত্য প্রকাশ করেন, রাজা জৈন ধর্মাবলখী। ভঙ্গধারণ বা নিলোপাসনার উপর জাহার কিছু বাত্র আছা ছিল না। বসবের মুখে জল-শাহাত্ম ওনিরা হাসিরা একজন নীচলাতীর ত্রীলোককে বেধাইরা উত্তর করেন,এই বেশ ভঙ্গারত হাড়ীতে কেমন পৰিত্র স্থরা লইয়া বাইভেছে। বসৰ ভংক্ষণাৎ উত্তর করিকেন, ঐ পৰিত্র পাতে কথনই স্থরা থাকিতে পারে না, এইরূপ বলিয়া রাজাকে প্রয়ার भतिवर्ष <u>एक स्थारेका मिर्गन। गकरनारे</u> हमएकुछ हरेन। किक्कमिन পরে একজন বৈদায়িক ক্ল্যাপের রাজসভার উপস্থিত হন, ভাহার मान वहमारशक हाज जवर मणी राजी वासाई महेरछ भारत এত পুঁথি ছিল। সভাস্থ সকলেই উঠিয়া বৈদান্তিকের সন্মাননা क्तिरमन, रक्षम यनव करक्ष क्षिरमन मा। देशासिक তাহা লক্ষ্য করেন। পণ্ডিতবর তাঁহাকে লক্ষ্য করিয়া রাঞ্চক নিজাসা করেন, ঐ ভন্মার্ড-মৃত্তিটা কে! রাজা অভি-ত্রখ্যাতি করিয়া নিজ মাত্রর পরিচয় দিলেন। অনজন বেদালিক তাহার সহিত শাল্লাণাপে প্রবন্ধ হইদেন। বসর একে একে তাঁহার সকল ভক্তাল ছেনন করিলেন। অবশেষে বৈদায়িক शिरवत्र निका आवश्य कतिरागन, छथन वनव विगरगन, शिरवत्र निम्ला कतियां अभाव धक्की माथा शिवाहिन, छाहात यक শিবনিশকের মাথা পঞ্জাই উচিত, এরণ গোলের সহিত গান্ত-বিচার আমার শোভা পার না। খড়ের পুরুষ এইরূপ অর্কাচীনের সহিত শান্ত্রবিচার করিতে পারে। বৈদান্তিক একটা খড়েছ পুতृन रिजाती कतिया वनवरक स्थाइरनन। कि कामधी वनव त्मरे थएए जीवनवान क्विजा छाशाबरे बाजा देवलाखित्कन দর্প তুর্গ করিলেন। তথন বৈদান্তিক সদস্বলে বসবের শিষ্যত चीकात्र कतिरमन ।

একদিন বছলোকের কোণাছলে বিজ্ঞানরাজের নিজাভল হইন, তিনি সেই গভীর নিশিথে প্রাসাদের ছাদে উঠিরা দেখিলেন চারিদিকে লোকারণ্য, আলোকমালার সমত পথ ঘাট যেন দিবালাকের মত হইরাছে। রাজা দেখিলেন, লক লক্ষ নিজারত শৈবে তাহার রাজধানী জার্ত করিরা কেলিয়াছে, শৈবের পোবণের জক্ত তাহার বরী তাহার রাজকোষ নিঃশেষ করিয়া কেলিতেছেন, ভাবিরা জাতার কুছ হইলেন। পর্যাদন মন্ত্রীকে বৃত্তর পূর্ব স্থাপ্রানা বৃত্তর ক্ষাত্রিয়া বৃত্তর পূর্ব স্থাপ্রানা বৃত্তর ক্ষাত্রিয়া বৃত্তর স্থাপ্রানা বৃত্তর স্থাপ্রানা বৃত্তর স্থাপ্রানা বৃত্তর ক্ষাত্রিয়া বৃত্তর স্থাপ্রানা বিশ্বর স্থাপ্রানা বৃত্তর স্থাপ্রানা বিশ্বর স্থাপ্র স্থ

হাত দিলেন, পরাধীনতা তাহার অসহ বোধ হইল। তিনি ডৎ
কণাৎ রাজাকে তাহার বাহা কিছু ছিল সমত অর্পণ করিয়া

॰ কল্যাণব্রাজধানী ভ্যাগ করিয়া চলিলেন।

প্রথর রৌক্রতাপে জনাছারে পদক্রজে ১২ ক্রোল পথ আদিয়া
এক প্রোহিতের সহিত দেখা হইল। তিনি বদ্ধ করিয়া তাঁহাকে
নিজালরে আনিলেন। এথানে ভগবান্ তাঁহাকে স্বপ্নে দেখা দিয়া
জানাইলেন, 'তোমার চিন্তা নাই। অমুক স্থানে গর্ত মধ্যে একহারা মালা পাইবে, তাহাতে তোমার সকল উদ্বেগ দূর হইবে।
সেই গর্তে হাত দিবা মাত্র এক ভয়য়র বিষধর সর্প বাহির হইয়া
পঢ়িল। কিন্তু কি আল্চার্যা। লপ্ল মাত্র সেই সর্প টী মূল্যবান্
হারে পরিণত হইল। সেই হার বেচিয়া বসব প্রভৃত অর্থ পাইলেন এবং তন্দারা মহাসমারোহে অলম সেবায় ব্যাপ্ত হইলেন।
বিজ্ঞানাক তাঁহার অপুর্ব্ব কমতা দর্শনে বিমুদ্ধ হইয়া আবার
তাহাকে মন্ত্রিছ প্রদান করিলেন। বসবের ক্ষমতা আবার বাড়িয়া
গেল, সহত্র সহত্র লোক আদিয়া তাঁহার ভস্ত হইলে।

ছন্নবদৰপুরাণে লিখিত আছে, বদবের চরিত্রবল, জান-প্রভাব ও আলোকিক শক্তির ফলে লৈবসম্প্রদায় প্রতিষ্ঠিত হইল, তথন বসবের জ্যেষ্ঠা ভগিনী নাগলাখিকার গর্ভে স্বয়ং ভগবান শিব অবতীর্ণ হইলেন। নাগলাখিকা চিরকুমারী অথচ বয়ন্তা. ভাঁছার গর্ভণক্ষণ দেখিয়া নানা জনে নানা কথা রটনা করিল। রাজার কাতে ও অভিযোগ আসিল। রাজা বিচার করিবার জন্ম মাগলাখিকাকে আনাইয়া তাঁহার গর্ভের কারণ জিজ্ঞাসা করি-त्वन। माध्वी कूमात्री अकूष्ठिं जात्व ताजात्क जानाहरमन, खाः ভগ্যান ভাঁহার গর্ভে আদিয়াছেন। ইহা তাঁহার দেবপরিচ্গার ফল। রাজা সহক্রে তাঁহার কথায় বিশ্বাস করিলেন না, কিন্তু কি আশ্র্যা! নাগণাধিকার গর্ড হইতে স্বয়ং ভগবান্ হন্কার করি-লেন। সকলে অভিত হইল। যথাকালে স্বয়ং ভগবান শিব ভূমিষ্ঠ হটলেন, ভাঁহার নাম হইল ছরবসব। বসব ও তাঁহার মতাত্ত্বতী জন্মগণ পূর্বেই পথ করিয়া রাখিয়াছিলেন। এখন ভগবান অব-তীর্ণ হটয়া নিজমত প্রতিষ্ঠা করিলেন। পিবর্গে বসব ও লিজায়ত **লক্ষে অপরাপর বিবরণ ডাইবা**]

বসবান, বাসক, আচ্ছাদক। "তে হি বলো বসবানা:।" (ঋক্সানাং)
'বসবানা বাসকা আচ্ছাদ্যিতাবঃ:' (সায়ণ)

বসবা (ক্লী) ধন, অর্থ, সম্পত্তি। (ঋক্ হা৯া৫)
বসা (ক্লী) বসতে বত্তে বা বস-নিবাসে বস-আছোদনে বা
বস-অচ্। ব্রিয়ামাপ্। ১ মাংসবোহিণী। ২ মেনোধাড়। (রাঞ্চনি°)
ত পুরুষাংসভব বেহ, চলিত চক্ষী।

"ওছমাংসক্ত বং লেহং সা বসা পরিকীবিভা ।" (স্থক্ত শারীরছান ৪ জঃ) বদা ও লেহের পার্থক্য নির্দেশ করিয়া মহীধর শিথিয়াছেন— "ভাপামানস্থ বা লেহো মেদসঃ সা বদা মভা"

(ওর যকু: ২৫।৯ ভাষা)

বৈশ্বকশাল্পে বসাবিশেষের বিশেষ বিশেষ গুণের উল্লেখ জাছে। মথা—

"বদা মজ্জা চ বাতমী বলণিত্তকজ্পা। শৌকরী মাহিবী বদা বাতলা শ্লেমবর্জিনী। সার্পনাকুলগোণেয়া ৰলপনে ব্রণকুঠহা।" (অতি ১৪ আঃ)

মওন্ত, শিশুমার ও মকরাদি গ্রাহ প্রভৃতির বসার গুণও ° ঐকপ। উহাবিসপহর, হৃত্য ও কুঠরোগদ। [মেদ: শব্দ দেখ।]

বহু প্রাচীন কাল হইতে বসার প্রচলন আছে। তৈত্তিরীয় সংহিতায় "বসাহোমের" (৬।৩)১১।১) ব্যবহা দেখা যায়। স্থাতে বরাহবসার উপকারিতা নির্দিষ্ট হইয়াছে। ধবল রোগে শুকরবসানির্দ্ধিত প্রেলেপ গাত্রস্ককের বিশেষ উপকারী। বাত রোগে শুকরবসা মার্জন সন্থ রোগনাশক।

এই বরাহ বসা বা শৃকরের চর্জির ঐতিহাসিকতা সম্বন্ধে আমরা ভারতের স্থবিথাত সিপাহী বিলোহের উল্লেখ করিতে পারি। যে টোটা কটো লইয়া ১৮৫৭ খুটানে হিন্দু ও মুসলমান সিপাহী দল ইংরাজ কোম্পানীর বিপক্ষে অভাগিত হইয়াছিল, সেই টোটা উক্ত উভয় জাতির নিষিদ্ধ গো ও শৃকরবসামিশ্রণে প্রস্তুত বলিয়া তাহাদের বিশ্বাস ছিল।

জীবশরীরের মেদ বা চর্কিব তাপযোগে গলাইয়া তাহা হইতে ঝিলিজপদার্থগুলি (Membranous matters) পৃথক্ করিয়া लहेटल चूळव९ शतिकांत्र **७ मानामांत्र दमा शाउ**त्रा गांव। क्रि বদার কোনরূপ ভাল আস্বাদ পাওয়া যায় না, উহাকে একরূপ श्वामरीन भगार्थ दनिरम् ठरम । वानिरकात्र क्रम्य समस्मास्टरत যে বসা প্রেরিত হইয়া থাকে, তাহা কতকপরিমাণে অপরিষ্কার ও ঈষৎ হরিদ্রাবর্ণ। জীবদেহের ভেদাসুসারে এবং পদার্থের তারতম্যামুসারে ইহা সাধারণতঃ নানা প্রকার হইতে দেখা यात्र। औ श्वनित्र मर्था रा श्वनि छै९क्डे, छारा श्वेष्ध (मनम = ointment প্ৰভৃতি) ও বৰ্তিকা (candles!) প্ৰস্ততকাৰ্য্য সম্পাদিত হর। বসার মশম বা প্রবেপ প্রস্তুত করিয়া ক্ষত-क्षात्म नागाहेरन वा नीष नीय व्याद्यागा हरेशा फेटर्ट ! Tallow candles বা চৰ্বির বাতি যাহা ঝাড়, সেল, সামাদান প্রভৃতিতে আলান হয়, তাহাও উৎকৃষ্ট শ্রেণীর বসা হইতে প্রস্তুত। অপেক্ষাকৃত নিকৃষ্টতর বসা হইতে সাবান (60ap) প্রস্তুত হর। চামড়া পালিল (Leather dressing) ও নরম করিতে চর্বির বিশেষ প্রয়োজন। কলকবজার (Machinery) ও ধানাদির চক্রে চর্কি না লাগাইলে কার্য্যের বিশেষ ব্যাঘাত জন্মে

ইংলগু, ক্রান্স, জর্মণি, ক্বান্সিনেবিয়া, ইতালী, কব প্রভৃতি মূরোপীয় রাজ্যে দাবান ও বর্ত্তিপ্রস্তুতের জন্ম প্রচুর পরিমাণে বসা গালান হইয়া থাকে। অধুনা আমেরিকা, জাপান ও ভারতের স্থানে স্থানে জীবদেহের চর্কি হইতে বসা গালাইয়া লইয়া সাবান, বর্ত্তি প্রস্তুতি প্রস্তুতের কারথানা স্থাপিত হইয়াছে। ঐ সকল স্থানে কি রূপে বসা গালান হয়, তাহা নিয়ে বিবৃত হইল—

কসাইগণ পশুমাংসবিক্রয়ের কপর, চর্ব্বিসমষ্টি (fat and sult) কারখানায় বিক্রয়ার্থ আনে। বসাকারী Renderer) সেই ৰসাগুলি লইয়া ছুবীর সাহায্যে খণ্ড শণ্ড করিয়া কাটিয়া উষ্ণজ্বলে ফেলিয়া অগ্নিয়াগে ফুটাইতে থাকে, এই প্রক্রিয়ায় চর্ব্বি ক্রমণ: গলিয়া ঝিল্লী হইতে বিযুক্ত হয় এবং ধীরে ধীরে জলের উপরে ভাসিয়া উঠে। তৎপরে গাদ কাটাইবার স্থায় আন্তে আন্তে সেই বসা হাতায় উঠাইয়া পার্যান্তরে রাখা হয়। ঝিল্লীসংলিপ্ত হইয়া যে চর্ব্বি তপনও পাত্রত থাকে, ভাহাকে উপযুক্ত মাড়নযন্ত্র' সাহায্যে উত্তমন্ত্রপে পিবিয়া বাহির করিয়া লওয়া হয়। ঝিল্লীপিণ্ড বা খাঁখ্রী (Graves বা Cracklinga) নামে পরিচিত। পুনরায় ঝিথাঁখ্রীগুলি জলে সিদ্ধ করিলে নর্ম হইয়া আইসে ও ফুলিয়া মোটা হয়। তথন ভাহা গৃহপালিত পক্ষী, কুকুর ও অক্যান্ত পশুলিগকে খাওয়ান হইয়া থাকে।

জীবহত্যার পর বসানয়নকার্য্য শীঘ্রই সম্পাদনকরা আব-শুক্, কারণ শবদেহ হইতে অচিরে চর্ম্মি স্থানাস্করিত না করিলে, তৎসংশ্লিষ্ট তন্ত্র ও মাংসম্ব্রগুলির পচাধরার সঙ্গে সঙ্গে চর্মিও শীঘ্র পচিয়া উঠে।

পৃথিবীর মধ্যে একমাত্র ক্ষরাজ্যেই সর্বাপেক্ষা অধিক পরিমাণে বসা উৎপন্ন হয়। তদ্দেশবাসিগণ প্রায় প্রতি বৎসরে ২৫ কোটি পাউও ওজনের বসা বিভিন্ন দেশে রপ্তানী করিয়া থাকে। ইহা ছাড়া তাহারা আপনাদের অদেশবাসীর ব্যবহারার্থ বসা প্রস্তুত করে। ঐ পরিমাণ বসা সাধারণতঃ মুরোপীর ক্ষরাজ্যের দক্ষিণস্থ পোন্টাইন্ টেপী (Pontine steppes) নামক স্থবিত্বত তুণপ্রান্তর মধ্যেই সংগৃহীত হইরা থাকে। তথার যে সকল অনুহৎ বসার কারথানা আছে, তাহাকে Salgans বলে। ঐ কারথানাগুলি কেবলমাত্র গ্রেট-ক্ষরিচার অধিবাসির্ক্রের কর্তৃথাধীনে পরিচালিত। তথাকার কর্মকর্তারা সহস্র সহস্র গ্রাহানের গাত্র চর্ক্রিপ্ করিয়া লয়। বথন ঐ সকল পশুগাত্র হইতে চর্ক্রি নিছালন আবিশ্রক ও উপযোগী বলিয়া বিবেচিত হয়, তথন তাহারা সেই প্রাক্তিকে সাল্গান্ মধ্যে তাড়াইয়া লইয়া নিহত করে।

এই সকল সাল্গান বাটিকার মধ্যে সাধারণতঃ একটা বিভঙ উঠান এবং তাহার চতুস্পার্যে বসাকরণস্কপ ব্যবসায়ের উপগোঁগী কএকটা খর থাকে। তথাধোঁ একটা নিহত গোমাংস বিক্লয়-স্থান, কএকটাতে মাংসদি**ছ করিবার বরলার প্রতিষ্ঠিত ও কো**ন গ্যহে চামড়াগুলি লবণন্ধারিত থাকে। অপর কএকটাতে দপ্তর-ধানা ও কর্মচারিবুন্দের বাসভবন। গ্রীমকালে কেইই সালগানে পাকে না, কেবল কুকুর ও শিকারী পক্ষিগণ এখানে মাংসের পৃতিগৰের আখাদে বাস করে। গ্রীয় অতীত হটয়া আসিলে তাহারা প্রথমে সামান্ত সংখ্যক মাত্র পৃষ্টকার বুব এখানে আনিয়া বিনাশ করে। তৎপরে বর্বা ঋতর প্রারম্ভে ভাচারা প্রকৃত প্রস্তাবে কার্য্যারস্ত করিয়া থাকে। তথন দলে দলে সালগান মধ্যে পশু আনিয়া অতি নৃশংসভাবে নিহত করিয়া থাকে। পশুহত্যার পর, ঐ পশুর গাত্রের ছাল ছাড়ান হয় : তৎপরে পাছা ও পৃঠের যে স্থানের মাংলে চর্কি নাই, দেই সেই স্থানের তিন চার টুকরা মাংস-কাটেরা লইরা ভাহারা বাজারে বিক্রয় করিতে পাঠার। নিষ্ঠুররূপে মারা হেতু ঐ মাংস এরূপ খারাপ হয় যে, কোন ভদ্ৰাক্তিই তাহা ক্ৰয় করে না। একমাত্র দরিদেরাই ভাষা ক্রয় করিয়া থাকে।

অবশিষ্ট শবদেহ তাহারা নাডিভুড়ি বাদে কাটিয়া টকরাটুকরা করে এবং তারপর বয়লার (Boiler) মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া চর্বিব বাহির করে। এক একটা বরদারে ১০ হইতে ১৫টা বুৰমাংস ধরিতে পারে। প্রতি সাল্গানে এইরপ ১।৬টা বরলার আছে। পাছে কটাহের গাতে মাংদ লাগিরা পুড়ির। উঠে, তাই বয়লার মধ্যে ভাহারা সামার মাতার জল দেয়। কটাহন্তিত মাংসান্তি মজ্জা "Soup" নামে খ্যাত। কটাহের উপরে চৰ্কি গলিয়া উঠিলে হাতা দিয়া কাটাইয়া ভাগাকে পিপার রাখে. পরে ভাছাই আটিয়া বৈদেশিক বণিকের হল্তে ভিন্ন জিন দেশে প্রেরিভ হয়। প্রথম যে বসা উৎলাইতে থাকে, ভাষা সর্বাপেকা সালা ও উৎকৃষ্ট। তৎপরে যে বদা পাওয়া বার তাহা ঈষৎ ভবিদ্রারণ। লিপা না থাকিলে চামড়ার সেলাই করিয়া এক একটা কুপা বা থলি প্রস্তুত করিয়া তাহাতে বসা রাপা হর। এট ছিতীয় শ্রেণীর বুসা উথিত হইলে পর, বয়লার পাত্রছ অবলিষ্ট মাংস ও অস্থি কলের ভরানক চাপে নিস্পেবিত করিরা ভাষা হইতে নিরুইতর এক প্রকার বসা, বাহির করা হর। ইহা মর্লাযুক্ত কুঞ্বর্ণ বসা সাধারণতঃ কলের চাকার অভ বাৰ্জত হয়।

একটা পৃষ্টদেহ বৃষকে এইরূপে আল দিলে সাধারণতঃ
২৫০ হইতে ২৯০ পাউও বসা পাওরা বার। উহার দার
১৫০ কর্লের কম নর।

• উপরে যে গ্রাদির পরিত্যক সম্বাদির কথা লিখিত হইল, তাহাও একবারে নৃষ্ট হর না। বসাব্যবসায়ীরা ব্যবসা বৃদ্ধির লক্ত শুক্ষরও রাখে। সেই শুক্রওলি ঐ অন্ন ধার। তাহাতে শুক্রের গার চর্কির মাত্রা বাড়ে। পরে ঐ শুক্রওলিও বসা-নির্বাদকরে কটাই মধ্যে নিকিথা, আলোড়িড ও নিশিষ্ট ইইয়া থাকে।

বদাব্যবদানীরা খেত ও ছরিজাবর্ণ বদার মধ্যে যে পিপাপ্তলি বাতির উপবোণী এবং যেগুলি সাবানের উপযোগী তাহা স্বতর কাথিরা বিক্লয় করে।

জীবণরীরের স্থানবিশেষজ্ঞাত চর্মি কঠিন ও কোষণ হইরা থাকে। বৃহত্তকর পার্থত্ব চর্মি অভাবতঃই কঠিন, কিন্তু আন্তি-গহরর মধ্যে বে দেখানে চর্মি জন্মে, তাহা উহা অপেকা অনেক কোমল। তত্তির মাংসপেনা ও অভাক্ত কমনীর দেহাংশে যে সকস চর্মি থাকে, ভাহা সর্মাপেকা কোমল ও অর্ছ-তৈলাক্ত মজ্জা বলিলে চলে। এইরূপ জীবদেহেরও ভারতম্যায়সারে বসা কঠিন ও কোমল হয়। ব্য বা অব্যের চর্মি অপেকা ছাগ, হরিণ প্রভৃতি কোমলকার পশুর চর্মি কোমল এবং অভি অন্তর্ভাপেই গলিয়া উঠে। ৭২° হইতে ৯২° ডিগ্রী-ভাপে সকল চর্মিই গলিয়া উঠে।

ভৌতিক কাৰ্য্য-সম্পাদন করিতেও বিভিন্ন জাতীয় পশু পক্ষী প্রান্ততির বসার আবশ্রক হয়।

মধুষা, নানা জাতীয় পণ্ড এবং জলচর মৎস্তনকোদির শরীরে বিভিন্ন প্রকার বদা জন্মে। ঐ সকল বদার গুণ ও স্বাভন্তা বৈশ্বক শাল্রে বির্ত আছে। [জাবজন্তদিগের পৃথক্ নামে এবং বৃত্তি শালে চর্কির বিশেষ বিবরণ জ্বরৈ।]

বসাকেতু (পুং) ধ্মকেতুবিশেষ। যে সকল কেতৃ পশ্চিমে উদিত অথচ উত্তর দিকে স্বায়ত, বহুৎ ও লিগুমুর্বি, তাহাকে বসাকেতু বলে। এই কেতৃ উদিত হুইলে মড়ক ও উত্তম স্থতিক হুইলা থাকে। (বুঁ স° ১৯১২)

বসাঢ়া (পুং) বসরা আঢ়াঃ প্রচুরবসাবরাদক্ত তথাছং। শিশুমার, চলিত শুশুক। (ত্রিকা•) [শুশুক দেখ]

বসাত্যক (পুং) শিশুমার (Dolphinus Gangeticus)
বসাতি (পুং ত্রী) জনপদ। ২ উত্তর জনপদবাসী জাতি।
৩ জনমেশ্বরের পূত্রভেদ। (ভারত জাদি প॰) ৪ ইক্ষাকুর
পূত্রভেদ। (ছরিবংশ)

বসাতিক পুং) বসাতি নামক উত্তর জনপদবাসী। (বৃ° স° ১৪।২৫) বসাতীয় (অ) ১ বসাতিজাতিসঘনীয়। ২ বসাতিরাজ। বসাদনী (স্ত্রী) পীতশিংশপা। (বৈছকনি॰) বসাপায়িন্ (পুং) বসাং পিবতীতি পা-গিণি। কুকুর। (শক্ষালা)

বসাপাবন্ (ত্রি) বসাপানকারী দেবতা। (গুরু বছু: ১৯)
বসাম্য (ত্রি) বসা বরুপে, মরট্। বসাবরূপ। ত্রিরাং তীপ্।
বসা মাধান।

বসামুর (পুং) প্রাচীন জনপদভেদ।

বসামেত্ (গুং) বাতজন্ত প্রমেহরোগ । বায়ু কুপিড হইয়া মেহরোগ উৎপদ্ধ হয়। বসামেতে বসাড়ুল্য অথবা বসা মিপ্রিত মূত্র বারংবার নিঃস্ত হইয়া থাকে। কেহ কেহ এই বসা-মেহকে স্পিমেহ বলিয়া থাকেন। (স্কুক্রুড নি॰)

বসামেছিন্ (ত্রি) বসামেহবিশিষ্ট ব্যক্তি। ধাহার বসামেহরোগ হইরাছে। (স্কশত)

বদার (রী)ইছা, অভিপ্রায়।

বসারোহ (পুং) ছত্রিকা, কোঁড়কছাতা। (হারাবলী)

বসিত্রা (অব্য) পরিধান করিরা।

বসাবশেষমঙ্গিন (ত্রি) বসাশেষ দারা মণিনতাপ্রাপ্ত।

বসাবি (রী) বস্থসমূহ। "ৰসাব্যামিজ ধারর" (ঋক্ ১০।৭৩।১)
'বসাব্যাং বস্থসমূহং' (সারণ)

বিসি (পুং) বতে আচ্ছাদয়ত্যনেন বহুতে আছোদনপূর্বক গ্রিয়তে ইতি বা বস আছোদনে (খনিকয়গ্রীতি। উণ্৪।১৩৯) ইতি ই। বসন। (উজ্জ্বশ)

বিদিক (ত্রি) শৃত্য। [বশিক দেখ।]

বসিতব্য (বি) পরিধানযোগ্য।

বসিতৃ (বি) আজ্ঞাদয়িত। বন্ত দারা আবরণকারী।

विभिन् (श्रः) वमा । विभिन्न (शांत्रमी) व्यक्षिवामी ।

ব্সির (ক্রী) বস-কিরচ্। > সামুদ্র শবণ। ২ গজপিঞ্লী। (সুশ্ত)(পুং) ও রক্তাপামার্গ। (ভাবঞা•) ৪ বার্লিছ। জলনিম।

বিসিষ্ঠি, একজন প্রসিদ্ধ মন্ত্রন্তী ঋষি। ঋথেদের ৭ম মওলের অধিকাংশ ঋক্ই বসিষ্ঠ বা বসিষ্ঠগণের দৃষ্ট। বসিষ্ঠের জন্মসম্বন্ধে

বৃহদ্দেবতা নামক বৈদ্বিক্সছে শিখিত আছে—

"তরোরাদিতারোঃ সত্তে দৃষ্টাপ্সরমূর্কশীম্।

রেতক্ষন্দ তৎকুন্তে স্পত্বসতীবরে ॥

তেনৈব তু মৃহর্জেন বীর্যাবজ্যে তপখিনো ।

অগন্তাক বসিচ্চ তত্রবী সংবভ্বত্য ॥

বহুধা পতিতং রেতঃ কলসে চ বালে ছলে।

হলে বসিচ্ছ মৃনিঃ সংবভ্ববিস্তমঃ ॥

কুন্তে ভগত্যঃ স্কুডো বালে মংক্রো মহাছাতিঃ।

তত্তাহক্ষ্ গৃহ্মাণাম্থ বসিচঃ পুক্রে হিডঃ।

সর্বতঃ পুক্রে তং হি বিখেবো অধারহন্॥

"

মিত্র ও বরুণ এই তুই আদিতা যক্তর্লে উর্কাশিকে দেখিলা তাঁহাদের রেড: খলিত হয় এবং তাহা বসতীবর নামক মন্ত্রীর কুন্তে পতিত হইয়াছিল; তাহাতে মুহূর্ড মধ্যে আগত্তা ও বসিষ্ঠ নামে তুই বীর্যাবান্ তপ্যী ঋষি আবিভূতি হইলেন। ঐ রেড: কলসে এবং জলে হলে বহুধা পতিত হইয়াছিল। ঋষি-সম্ভম বসিষ্ঠমুনি হলে, অগত্য কুন্তে এবং মহাছাতি মংশু জলে উৎপদ্ধ হইয়াছিলেন। জল ঢালিলা লভনা হইলে বসিষ্ঠ পুকরে (জলে) ছিলেন, তথন দেবগণ সকল দিক্ হইতে সেই জলে তাঁহাকে ধারণ করিয়াছিলেন। ঋক্সংহিতায় বসিষ্ঠের উৎপত্তি সম্বন্ধে ঐরন আভাস পাওয়া যাম—

"উত্তাসি মৈত্রাবরুণো বসিটোর্ব ছা ব্রন্ধন্ মনসোহধি জাতঃ।
দ্রুপণ ক্ষয়ং ব্রন্ধণা দৈবোন বিঝেদেবা প্রুরে ছাদদংত॥
স্প্রকেত উভয়য় প্রবিগায়্ সহয়দান উত বা সদানঃ।
ঘমেন ভতং পরিধিং বয়য়য়য়য়য়য়য়য়য় পরি লজে বসিষ্ঠা॥
সত্রে হ জাতাবিষিতা নমোভিঃ কুজে সিধিচতুঃ সমানং।
ততো হ মান উদিয়ায় মধাাততো জাতমুষিমাহর্বসিষ্ঠা॥"

(शारयम १। २०।३५ ५०)

অর্থাৎ হে বিসিষ্ঠ ! তুমি মিত্র ও বরুণের পুত্র। হে ক্রন্ধন্
উর্বেশীর মন হইতে তুমি জাত। তথন (মিত্র ও বরুণের)
রেতঃ ঝালন হইয়াছিল, বিশ্বেদেবগণ দৈবা ভাত্রে ঘারা পুদর
মধ্যে তোমার ধারণ করিয়াছিলেন। প্রেরুই জ্ঞানসম্পন্ন বিসিষ্ঠ
উভন্ন (লোক) অবগত হইয়া সহস্র দান করিয়াছিলেন।
যম কর্তৃক বিত্তীপ্রস্বয়নকরণেছায় বিসিষ্ঠ উর্বেশী হইতে
জন্মিয়া ছিলেন। সত্রে প্রাথিত হইয়া (মিত্র ও বরুণ) কুন্ত
মধ্যে ঘূগণং রেতঃসেক করিয়াছিলেন। অনন্তর মধ্য হইতে
মান প্রাত্তৃতি ইইলেন। লোকে বলে বিসিষ্ঠ ঋষিও তাহা
হইতেই জন্মিয়া ছিলেন।

বসিষ্ঠ কি রূপে ঋষি হইলেন ? এ সম্বন্ধে ঋষেদ হইতে এইরূপ বর্ণনা পাই—

"আ বদ্রুহাব বরুণত নাবং প্রবং সমুদ্রং ঈর্যাব মধা। অধি বদপাংসভিত্রাব প্রপ্রেখ ইংধ্রাবহৈ ভতে কং ॥ বসিষ্ঠং হ বরুণো নাব্যাধাদ্বিং চকার অপা মহোভিঃ। ভোতারং বিপ্রঃ স্থানিজে অহুণা বারু ছাবস্ততনভাত্বাসঃ॥"

(बार्यस १।७४१७-८)

যধন আমি (বসিষ্ঠ) ও বরুণ উভরে নৌকার চড়িরাছিলাম, সমুদ্রের মধ্যে নৌকা স্থলররপে প্রেরণ করিয়াছিলাম, এবং জলের উপর গমনশীল নৌকার ছিলাম, তবন শোতার্থ গোলার কুথে থেলা করিরাছিলাম। বরুণ বসিষ্ঠকে নৌকার লইরাছিলেন, তাহার মহাতেকে তিনি নিজ স্থক্য হারা বসিষ্ঠকে ববি করিরা

ছিলেন। তাঁহার দিন ও উবা বর্তিত হউক, এইয়াপ শুব করিবেন বলিয়াই স্থাদিনে তাঁহাকে স্তোজা করিয়াছিলেন। °

কংশধরগণ অধান রাজের পুরোহিত ছিলেন। অধান পিজারনের পুরে, দেববতের পৌত্র এবং দিবোদালের বংশধর। বিনিষ্ঠ বৈজ্ঞবন অধানের পৌরোহিত্যকালে রাজার নিকট হইতে বছতের ধনরত্ব পাইরাছিলেন। কংখদে অধান শৈকবনের দানততিবিয়ক ককে দেখা বার, বসিচট ঐ কক্ষের কবি।

(भारपास १ मधन ३৮ मूखा ।)

ঋংখদের ৭ম মণ্ডলের ৩০ কৃষ্ণে লিখিত আছে—
"উভামিবেকৃষ্ণ জো নাখিতাদোহদীগর্দাপরাজে বৃতাসঃ।
বাসিঠন্ত স্তবত উল্লো আপ্রাহকং তৃৎক্ষেতা অকলোহ লোকং ॥॥
দণ্ডা ইবেদেগা অজনাস আসন্ পরিজিয়া ভরতা অর্তকাসঃ।
অভবক পুর এতা বসিঠ আদিত্ৎক্নাং বিশো অপ্রথংতা ॥৬০০

ভূফাত্র রাজগণ কর্ত্বক পরিবৃত র্টিপ্রোর্থী বসিষ্ঠগণ দশ রাজার সহিত সংগ্রামে আদিত্যের প্রায় ইক্রকে উর্চ্চে উথাপিত করিয়াছিলেন। ইক্র স্বতিকারী বসিচের ভোত্র প্রথশ করিয়া-ছিলেন এবং রাজগণের জন্ম বিস্তীর্ণ লোক প্রদান করিয়াছিলেন, গোত্রের দণ্ডের স্থার ভরতগণ (শক্তগণ) পরিচ্ছির ও অর-সংথ্যক ছিল। অনস্তর বসিষ্ঠ ভাহাদিগেরই পুরোহিত হইলেন এবং তৃৎস্থদিগের প্রজার্ছি ইইতে লাগিল। এশানে বসিষ্ঠ ভরতগণেরও পুরোহিত হইতেছেন।

ঐতরেয় ত্রাক্ষণে বর্ণিত আছে —

"এতেন হ বৈ ঐত্যেশ মহাজিবেকেণ ব্যিষ্ঠ: প্রদাসং পৈজবনম-ভিষিবেচ। তামাহ হলা: পৈজবন: সমস্ক: সর্বন্ধত: পৃথিবীং জয়ন্ পরীযার অবেন চ মেধ্যেন জকে।" (৮/২১)

এইরপে বসিষ্ঠ ঐক্র মহাভিষেক দারা ক্লান্ পৈশবনকে অভিবিক্ত করিয়াছিলেন। তাহাতেই ক্লান্ পৈশবন সমস্ত পৃথিবী জয় করিয়া অখনেধ যক্ত করিয়াছিলেন।

বসিঠ স্থানের পুরোহিত হইলেও সৌদাস বা স্থানের পুত্রগণ তাঁহার শতপুত্রের প্রাণসংহাককরিয়াছিলেন। এ সম্বন্ধে রহদেবতার লিখিত আছে—

"শ্ববিদ নির্দা রক্ষোথং প্রশোকপরিপ্র তঃ।

হতে প্রশতে ক্ষঃ গৌদালৈছ্ঃখিসন্তলা ॥"

সামণ বৃহদ্দেবতার বচন উদ্ভ করিরা দেখাইয়াছেন,—
"হত্বা প্রশতং পূর্কাং বসিষ্ঠত মহাস্থনঃ।

বসিষ্ঠং রাক্ষসোহসি দং বাসিষ্ঠং রূপমান্থিতঃ॥

অহং বসিষ্ঠ ইত্যেবং জিযাংক্স রাক্ষসোহববীং।
অব্যোভরা গুলো দৃষ্ঠা বসিষ্ঠেনেতি নঃ ক্রুডম্মুঃ"

• অর্থাৎ মহাক্মা বসিঠের শতপুত্র নিধন করিরা এক জিবাং র রাক্ষণ বিষ্ঠের রূপ ধারণ করিরা তাঁহাকে বলিরাছিল, তুমি রাক্ষণ, আমি বসিঠ। এই উপলক্ষে বসিঠ কতকগুলি থক্ দেখিরাছিলেন। তাহাই ঋক্দংহিতার ৭ম মণ্ডলে ১০৪ ক্তে ১২ হইতে ১৬ সংখ্যক মন্ত্র, তক্মধ্যে ১৬শ খাকে স্পষ্ট আছে—

"বো মারাজুং বাজুধানেত্যার যো বা রক্ষাঃ ওচিরত্মীত্যাহ। ইক্স অং হন্দ্র মহতা বধেন বিশ্বস্ত সম্বোরকস্পনীই ॥"

বে আমাকে "বাডুধান" (রাক্ষস) এই সংখাধন করিতেছে এবং যে রাক্ষস, 'আমি শুচি' এই কথা বলিতেছে, ইক্স মহা-আর্থ থারা তাহাকে বিনাশ করুন, সে সকল জন্তর অধম হইরা পতিত হউক।

বসিষ্ঠ সন্থাকে বেদে ঐকাপ উল্লেখ দেখিয়া অধ্যাপক মূইর সাহেব লিখিয়াছেন—"বলিও বসিষ্ঠ পরবর্তী বৈদিক গ্রান্থ ব্রাহ্মণ বলিয়াই গণ্য হইরাছেন, কিন্তু প্রকৃত প্রস্তাবে তিনি ব্রাহ্মণ ছিলেন না, তাঁহার অন্ম সন্থাক গোল ছিল, এই কারণেই কোন স্থান তিনি ব্রহ্মার মানস পুত্র, কোথাও মিত্রাবন্ধণ ও উর্বাণীর পুত্র বলিয়া অভিহিত হইরাছেম।"

অধ্যাপক মোক্ষমূলর বেদের প্রমাণ উক্ত করিয়া তাঁহাকে আর্য্য ব্রাহ্মণ বলিয়াই এহণ করিয়াছেন। তাঁহার মতে বেদে বসিষ্ঠ মিত্রাবহুণের পুত্ররূপে বর্ণিত হইলেও তাঁহাকে মিত্র বা ক্র্যা বলিয়াই মনে হয়।

রুক্তযজুর্বেদ বা তৈতিরীয়সংহিতা হইতে জানা যায় বে, সৌদাস কর্ত্ব বসিঠের পুত্র হত হইলে, তিনি তাঁহার প্রতিশোধ লইবার জন্ত চেষ্টা করেন—

"বসিঠো হতপুরোহকাষরত বিলের প্রজামতি সৌনাসান্ ভবেরমিতি। স এতমেকস্মার পঞ্চালমপক্তা তমাহরৎ তেনায়জত। ততো বৈ সোহবিক্ষত প্রজামতি সৌনাসমন্তবং।"

অর্থাৎ বসিঠের প্রগণ হত হইলে তিনি কামনা করিয়া-ছিলেন, আমার সস্তান হউক, যেন আমি সৌলাসদিগকে পরা-তব করিতে পারি। তিনি 'একমারাপঞ্চাপ' মন্ত্র পাইয়াছেন, তাহা লইলেন, তাহাতে যক্ত করিলেন। তাহাতে প্রকা হইল এবং সৌলাসগণ পরাভৃত হইল।

কোবীতকী ব্রাহ্মণে (৪র্থ অধ্যারে)ও এইরূপ বসিঠের পুত্র লাভ ও সৌলাসপরাভবের কথা আছে ৷

মন্ত্ৰসংহিতার দেখা বার—
"মহবিভিড দেবৈত কার্যার্থং শপথাঃ কৃতাঃ।
বলিষ্ঠতালি শপথং সেপে পৈজবনে নৃপে
" (৮)১১০)
মহবিগণ ও দেবগণ কার্যসম্পাদনের জক্ত শপথ করিরা

থাকেন। এইরূপে বসিষ্ঠ ঋষিও পৈজবন নৃপতির জন্ম শপথ করেন । কেন শপথ করেন । মহাটীকার কুলুক লিথিরাছেন, "বসিষ্ঠোহণ্যনেন পুত্রশতং ভক্ষিতমিতি বিশ্বমিত্রেণ আকৃষ্টো অপরিশুদ্ধরে পিজবনাপত্যে স্থদায়ি রাজনি শপথং চকার।'

অর্থাৎ বিশামিত্র কর্তৃক বসিষ্টের শতপুত্র ভক্ষিত হইলে তিনি কুছ হইরা নিজ প্রিওছির জন্ত পিজবদের পুত্র স্থলামন্ রাজার নিকট শপথ করিয়াছিলেন।

এখানে কুলুক বিশ্বামিত্রকে রাক্ষস বানাইরাছেন এবং ক্লামন্ রাজার নাম করিতেছেন, বাস্তবিক বেদে এরপ কথা নাই। বিশ্বামিত্র শতপুত্র জক্ষণ করেন নাই, এক রাক্ষস জক্ষণ্ণ করের। সেই আপনাকে বসিষ্ঠ বিশিল্পা পরিচয় দিবার চেষ্টা করিয়াছিল। ৭1> •৪1>২ ঋকের ভাল্পে সায়ণাচার্য্য বৃহদ্দেবতার মত উক্ত করিয়া দেখাইয়াছেন, পূর্কে সে কথা বলা হইয়াছে। আর পিজবনের পুত্রের নাম স্থলান্ন নহে, তাঁহার নাম স্থলান্। শাট্রামন ব্রাহ্মণে আছে—"সৌদাসৈরছো প্রক্ষিপ্যমাণঃ শক্তিরস্তাং প্রগাথমালেন্ডে সোহর্জিচে উক্তেম্জক্ষত। তং পুত্রোক্তং বিসিষ্ঠঃ সমাপয়ত ইতি।"

(বসিঠের প্রত্র) শক্তি সৌদাস কর্তৃক অগ্নিতে নিক্লিপ্ত হইবার কালে প্রগাথের শেষাংশ পাইয়াছিলেন। অর্দ্ধ ঋক্ বলার শেষকালে তিনি দগ্ধ হইলেন এবং বসিষ্ঠ প্রত্যাক্ত ঋক্ সম্পূর্ণ উচ্চারণ করিয়াছিলেন।—এইরূপে বসিষ্ঠ আপনার শপথ রক্ষা করিয়াছিলেন।

কাঠকে (৩৭৷১৭) শিখিত আছে---

শ্বিষয়ে বৈ ইক্সং প্রভাক্ষং ন অপখ্যান্তং বলিষ্ঠ: এব প্রভাক্ষ-মপশ্রুৎ। সোহবিভেদিভরেভ্যো মা ঋষিভা প্রবক্ষাভীতি। সোহরবীদ্ রাক্ষণং তে বক্যামি বধা ছৎ পুরোহিভাঃ প্রক্রাঃ প্রাঞ্জনিবান্তে।

অথ মা ইতরেভা: ঝবিভাো মা প্রবোচ: ইতি তকৈ এতান্ ভোমভাগান্ অরবীং। ভভো বদির্চ পুরোহিত: প্রজা প্রজারতঃ।"

ঋষিগণ ইক্সকে প্রত্যক্ষ দেখিতে পান নাই। একমাত্র বর্লিটই তাঁহাকে দেখিতে পাইরাছিলেন। পাছে বর্লিট ঋষি সমক্ষে তাঁহার (ইক্সের) বিষর বর্ণন করেন এই ভরে তিনি বর্লিট সাক্ষাতে আসিরা গোপনে বলিলেন, আমি তোমাকে ব্রাহ্মণ বলিরা বীকার করিতেছি। তুমি আমার বিষর এই ঋষিগণের সাক্ষাতে বলিও না। পরে বাহারা জন্ম গ্রহণ করিবে, ভাহারাই ভোমার পৌরোহিত্যে বরণ করিবেন।' সেইছেতু ইক্স বলিটকে জোমজাগ বলিরাছিলেন। বড় বিংশ ব্রাহ্মণ (১০৯) দিখিত আছে,—"ইক্রো হ বিশ্বা
মিত্রায় উক্থ মুবাচ বসিষ্ঠায় বন্ধ বাগুক্থমিত্যেব বিশ্বামিত্রায়
মনো ব্রহ্ম বসিষ্ঠায়। তহৈ এতদাসিষ্ঠং ব্রহ্ম। অপি হ এবংবিশম্বা ব্রহ্মণং বা কুবন্ত।" ইন্দ্র বিশ্বামিত্রকে উক্থ ও
বসিষ্ঠকে ব্রহ্ম বলেন। উক্থই বাক্ তাহাই বিশ্বামিত্রকে এবং
ব্রহ্মই মন তাহাই বসিষ্ঠকে। তাই এই মননই বসিষ্ঠের নিজন্ম।
পুলাণে বসিষ্ঠা

বেদে বিশামিত ও বসিঠের প্রসঙ্গ থাকিলেও কোণাও বসিঠের আশ্রমে নৃপতি বিশামিত্রের গমন ও উভয়ের বিবাদের শ্পষ্ট উল্লেখ পাওয়া যায় না।

, বৃহদ্দেৰতায় (৪।২২) লিখিত আছে ৰটে,—

"পরশ্চতশ্রো যাগুত্র বসিষ্ঠছেমিণীর্বিতঃ।

বিশামিত্রেণ তাঃ প্রোক্তা অভিশাপা ইতি স্মৃতাঃ॥

দেমদেষাস্থ তাঃ প্রোক্তাঃ বিভাঠিডবাভিচারিকাঃ।
বসিষ্ঠাস্থ ন শুণস্থি ভদাচার্যাকসন্মৃতম্।"

পরবর্ত্তী বিশ্বামিত্রপ্রোক্ত চারিটা ঋক্, বসিষ্টেরা ঐ মন্ত্র-চকুষ্টয় শুনিবেন না, ইছাই তাহাদের আচার্যোর মত।

এইরূপে বিধামিত্র ও বসিষ্টের মধ্যে প্রপার বিদ্বের আভাস থাকিলেও বসিষ্টের ঐধ্যাদর্শনে বিধামিত্রের ঈর্বা। এবং তাহা হইতে তাঁহার ব্রাহ্মণদ্বলাভের কথাও বেদসংহিতার পাওয়া যায় না। রামায়ণ, মহাভারত ও পুরাণাদিতে এ সম্বন্ধে বিস্তৃত বিবরণ বর্ণিত হইয়াছে।

[বিখামিত্র শব্দে বিশ্বত বিবরণ দ্রষ্টবা]

বিষ্ণুপ্রাণে শিথিত আছে, দক্ষকন্থা উর্জার গর্ভে রঞ্জ; গাত্র, উর্জারি, সবন, অনন, স্বতপা ও শুক্র এই সাত জন সপুর্বি জয়ে। ভাগবতপুরাণ মতে বিদিটের অপর পত্নীর গর্জে শুকু নামে এক পুরের জন্ম হয়। মনুসংহিতার বিদিটের অক্ষমানা নামী আব এক পত্নীর উল্লেখ পাওরা যায়। অক্ষমানা নিম্কুল্লাতা হইলেও ভত্তার শুণে উল্লেভ ইইয়াছিলেন।

"যানুগ্ গুণেন ভত্ত গি স্থী সংযুক্তাতে বণাবিধি।
তানুগ্ গুণা সা ভবতি সমুদ্রেণেব নিয়গা।
অক্ষমালা বসিঠেন সংযুক্তাহণময়োনিজা।" (মছ ৯)২২-২৩)
মহাভারতে বসিঠের প্রধানা পদ্দীর নাম অক্ষতী। রামায়ণে
লিখিত আছে, বসিঠের হুজারে বিশ্বামিত্রের শত পুত্র দথ হুইয়াছিল। রামায়ণ ও মহাভারত হুইতে জানা যায়, ইক্ষ্কুপুত্র নিমি
হুইতে স্থাবংশীয় রাজগণের বংশপরস্পরায় বসিঠ পুরোহিত
ছিলেন। বিষ্ণু ও প্রক্ষাগুপুরাণ মতে ৮ম লাপরে বসিঠ ব্যাস
রূপে অবতীর্ণ হুইমাছিলেন। ঐ পুরাণেই দেবা যায় যে
ব্যিষ্ঠ আষাড় মাসে প্র্যোর রথে অবস্থান করেন।

ভয়ে বসিষ্ঠ।

মহাচীনাচারক্রমতত্তে এইরূপ বর্ণিত আছে---

भूक्तकारन अकाव मानन न्यूज विजनश्वमी वनिष्ठ मूनि नीना-চলে ভারাদেবীর আরাধনা করিয়াছিলেনণ ভিনি অধৃতবর্ব প্রান্ত ভারিণীর আরাধনার কালাভিপাভ করিলেও ভারা তাঁহার প্রতি কোন অমুগ্রহ করিলেন না। ভাহাঙে মুনিবর অত্যন্ত ক্রুদ্ধ হইরা একার নিকট গমন করিলেন ও তাঁহাকে जानाहरनन, जामि नीमभर्कारण हिरवानी ध्वर मध्यमी इहेश দেবী তারিণীর স্থারাধনা করিলাম, তাহাতে বধন দেবীর করণা हरेंग मां, उपन मांज धक शक्ष जनशान कतिता कर्छात जात अयु ठवर्ष भर्षा ख भूनतात्र प्रतीत आताधना कतिमाम, किन्ह गणन ভাহাতেও আমার প্রতি দেবীর করণা হইল না,তগন আমি নীল পর্বতোপরি একপদে দশুরমান হইয়া প্রম্নমাধি অবলম্বলপূর্বক নিরাহারে দেবীর ধাানে সহজ্ঞ বৎসন্ত অভিবাহিত করিলাম এবং পুনরার ঐরপ কঠোরভাবে দল সহস্র বংসর কামাণ্যার অভীত করিয়াছি: কিন্তু আৰু পৰ্যান্তও তাঁহার কোন অনুগ্রহ দেখিতে পাইডেছি না। অতএব হঃসাধ্যা এই বিভাকে আমি অভি হঃখের সহিত ত্যাগ করিতেছি। ব্রহ্মা বশিষ্ঠকে সাম্বনা করিবার *অগ্ন* ৰলিলেন, বশিষ্ঠ ৷ তুমি পুনরায় নীলাচলে যাও, লেখানে থাকিয়া কামাপ্যা যোনিতে দেই পরমেশ্বরীর আরাধনা কর। জতি শীঅই তোমার দেবতাসিদ্ধি হইবে। মুনিবর ৰশিষ্ঠ পিভার এইরূপ বাকা গুনিয়া সহস্রবর্ষ পর্যান্ত ভারার আরাধনা ভরিলেও যথন মহেশ্বীতারা তাহার প্রতি কোনজুপে শ্রীতা হটলেন না তথ্ন মূনিবর কোপাবিষ্ট হইরা দেবীকে অভিশাপ দিবার ক্ষম জল গ্রহণ করিলেন। এই সময় মনিবরের জ্রোধ অবলোকন ক্রিয়া বন কানন পর্বতাদি সহ সমগ্র পুণিবী খন ঘন কাঁপিতে লাগিল, সমন্ত দেব এবং দেবীগণের মধ্যে মহান হাহাকার ধ্বনি উথিত হইল। তথন সংদারতারিণী ভারাদেবী ৰশিষ্ঠ মনির পুরোভাগে আবিভূতা হইলেন। মুনিবর বশিষ্ঠ তাঁচাকে দর্শন করিয়া অতি কঠোর অভিশাপ দিলেন। অনস্তর কটুদিছি-দাত্রী তারিণী বশিষ্ঠ মুনিকে বলিংকন, মুনিবর। তুমি রোখবলে কেন আমাকে অভিশাপ দিতেছ। আমার আরাধনাপ্রক্রম একমাত্র ব্যৱসী জনার্গন ভিন্ন অন্ত কেহ জানে না, তুমি বিক্লছা-চার আগ্রয় করিয়া বুগাই বহু বংসর অভিক্রম করিয়াছ, বাস্তবিক তত্ব কিছই জানিতে পার নাই। অতএব সম্প্রতি উদবোধক্ষপী বিশুর নিকট গ্যন কর এবং ভাহার নিকট হইতে আমার অবিধনক্রিম সকল আবার অবগত হটরা আমার আরাধনায় রত হও, তবে আমি নিশ্চয়ই তোমার প্রতি সম্ভই হইব।

ভগন বলিষ্ঠ দেবীকে প্রগাম করিয়া মহাচীন দেশে চলিলেন,

হিমালয়ের পার্বদেশে লোকেশরনেবিভ এক সমস্র সহত কামিনীগগ্ল-পরিবেটিত মদিরাপানে মদমভ্রলোচন বৃদ্ধদেবকে मर्गन कतितारे विकशाविडे क्रेटनम । किनि बटन भटन गरमात-ভারিণী ভাষাকে শ্বরণ করিরা ভাবিলেন, একি বৃদ্ধনণী বিষ্ণু এ কোন আচার অবলবন করিলেন ? ইহান্ত দেব ও দেবাচার-বিক্ষ। এই সময় দৈববাৰী হইল, "হে মুনে ! ভারিৰীয় পরমার্থিত এই आচার, देशत विकक्षाणाटक जिनि ध्यमता इन ना ; अन्छ এव विन ভূমি তাহার অনুগ্রহ চাও, তবে এই আচারে তাঁহাকে ভলনা কর।" মুনিবর বর্লিষ্ঠ এই আকাশবাণী গুনিয়া মণ্ডবৎ ভূমিতে পতিত হইলেন, পরে উঠিয়া কুডাঞ্চলপুটে বৃদ্ধালী বিশুর নিকট গমন করিলেন। মদমন্ত প্রসন্ধালা বৃদ্ধ তীহাকে দেখিয়া জিজাসা করিলেন, তুমি কি মন্ত এখানে আসিয়াছ়৷ মুনিও ভক্তি সহকারে প্রণাম করিয়া ভারিণীর আদেশবাণী বলিকেন। ভগবান বৃদ্ধ বলিলেন, মুনিবর ৷ যদিও এ আচার অপ্রকাশ্র, তণাপি আমি ভোমাকে বলিতেছি প্রবণ কর,—ভারাদেবীর আচারামুঠান করিলে আর সংসারে আসিতে হর মা. এই चाচाরে यानानि नक्नरे मानित्रक, এবং नक्न कानरे ७७. কোনই অন্ত কাল নাই এবং এই জাচারে ওয়াদির অপেকা এবং মন্তাদির দোষ নাই। সর্বাদা কি লাভ কি অপ্লাভ, কি ভুক্ত কি অভুক্ত সর্কাদাই দেবীর পূজা করিবে,—ইত্যাদি রূপে বছতর মহাচীনাচারক্রম তাঁহাকে উপদেশ করিলে মহামুনি বলিছ বুজরূপী र्श्वत राका अवन क्रिया शूनतात छोराक क्रिकामा क्रियान এভো! তুমি তত্বজানমর, এই মহাচীনাচারক্রমে স্ত্রী ও মদ উভয় সক্ষত; কিন্তু এই উভয়ের মধ্যে কোনটা প্রধান। বৃদ্ধ বলিলেন, মুনে ! এই জাচারে উভয় তুলা হইলেও খ্রীর শরীরে মনেক দেবতার বাসহেতু ত্রীই প্রধান, তত্ত্ত ভগবান এতগ্রভরের বহু গুণকীর্ত্তন এবং কৌলিকদিগের মাংস ও কুলাচার প্রব্যের লক্ষণ ও মাহাত্মা এবং সমগ্র মহাচীনাচারক্রম বর্ণনা করিলেন। •

ৰ্নিবর বশিষ্ঠ সে সম্পার জাত হইরা ঐ আচার অবলখন করিলেন এবং সংযতচিত্তে দেবীর আরাধনার নিরভ হইলেন। কিছুদিন পরে নীলাচলে দেবী মহামারা তারা প্রভাক্ষ দেখা দিয়া

> व्यातात्रभातमात्र्याभ्यः छात्रिमेनायस मृत्य । এতথ্যিক জাচারদ্য গভে নাদৌ প্রদীদভি ৷ বদি ত্যাঃ অসাদক্ষচিরেণাভিবাঞ্জা। এতেন চীনাচারেণ ভিনা ভাং ভক্ক ক্ষত্রত 🛊 আকাশবাৰীয়াক্ৰী ছোমাঞ্চিতকলেবর:। ৰশিষ্ঠে। দঙ্খন্ত্ৰো পণাডাতীৰ হৰিত: । ভবোখার প্রবন্ধানো কুডাঞ্জলিপুটো মুনি:। क्षत्राम विरक्षाः नमीतर वृक्षक्षत्रना शाकेष्टि ॥ व्यथारमे व्यः नमारमाका मनिवारमानविक्यमः। আহ বৃদ্ধ: অসরাস্থা কিমর্বং স্ববিহারত: ঃ व्यथ युक्तः व्यनमाह कक्तिनद्वा महामृतिः। বছকা তারিবাদেব। নিজারাধনহেতবে । তল্ড। ভগবান বৃদ্ধগুল্পান্মরো হরি:। यभिकेः व्याह् क्ष्मानन्त्रीमातावाधिकातवान् । অঞ্চাভোহ্মমাচারভারিণ্যাং সর্বাণা মুনে। তৰ ভজিৰণাদলি প্ৰকাঞানীৰ ভংগৱা 🛭

वृष्ट छेवाह।

व्यथानात्रविधिः वत्का छात्रात्वनाः ममुक्षितः। ত্য্যামুঠান মাৰেণ ভবাৰো ন নিমঞ্জতি ৷ সমন্তলোকশমনামশালের বিভৃতিক: : তত্তান্দ্ৰং সাক্ষ্যিমৃত্তিকল্পার্কণ্ 🛭 व्यानापि मानमः (मोहर मानमक क्षाः ब्रहः। शुक्रमः मानगः निवाः मानगः कर्णगाविकः । माज छक्तान्यराष्ट्रांचा न ह मनाविष्ट्रवर्रः। मर्क्या भूकतात्मरीयप्राठ: कुटलाकम: । जीव्यवः देनव कर्जस्या विस्मयोश भूकमः विद्यः । তাদাং প্রহারনিশাক কেটিল্যস্থিয়ত্বথা ঃ नक्षण न ह कर्डवाम्ब्रश्च निकित्नांबक्र । षित्रो (स्वा: क्रिज: व्यावा: क्रिज अव विकृत्तः s जीर्गाजना रामा कायानकथा पश्चितारह । **मयागम।विकल्ला मठात्मस्यारमनः ।** শ্বশানালয়শাপত্য মুক্তকেশো বিপদসঃ। वराठीनव्ययग्जारबहित्का युक्तियाश्चार । ক্সন্ধিবেতলৌহিত্যকুত্বন্ধর্চরেভিবং। विरेचन सम्मारेक्क कुमगीवर्ष्मिरेकः छरेकः । अक्निरक क्रभारन का निर्वारण वा उकुन्मरक । ভটছ: সাধরেৎ বোদী ভারাং ভূমনভারিশীং 🛊

[&]quot;ততঃ প্রশ্ম তাং বেবীং খলিটোৎনৌ বহামূলিঃ।
কর্পানাচায়বিজ্ঞানবাঞ্চঃ বৃদ্ধরূপিব ।
ততো গলা মহাটানে বেলে জ্ঞানবয়ে মূলিঃ।
লবর্প হিলবৎপার্থে লোকেমরক্সমিতিক ।
বিদ্যালানসংক্ষাতং ব্যবস্থারেলালাকর ।
বুধানের বিনোক্যানং খলিটো বৃদ্ধরূপিক।
বিশ্ববেদ সধাবিইঃ অরন্ সংসারতারিশীন ।
বেববেদ বিরুদ্ধেছলটালায় সম্বাত্তি বৃদ্ধরূপিক।
বেববেদ বিরুদ্ধেছলটালায় সম্বাত্তি বৃদ্ধরূপিক।
বিশ্ববেদ্ধানী বিরুদ্ধেছলটালায় সম্বাত্তি বিরুদ্ধের বিরুদ্ধেছলটালায় সম্বাত্তি
বিরুদ্ধের বিরুদ্ধেছলটালায় সম্বাত্তি
বিরুদ্ধের বিরুদ্ধেছলটালায় সম্বাত্তি
বিরুদ্ধের বিরুদ্ধের বৃদ্ধির বৃদ্ধরূপির ।
ব্যব্দানানীর প্রাহাতি এবং ভিত্তর প্রস্তুত্ত ।

বলিলেন, বংস বলিষ্ঠ ! বর লও। বলিঞ্চ বলিলেন, মহামারে !
বস্তুপি আপনি আমার প্রতি সব্তই হইরা থাকেন, তবে আরাকে
এই বর দিন "যে এই আচার আগ্রন্থ করিয়া তোমার আরাধনা
করিবে, তুমি অবক্ত ভাহার প্রতি স্থ প্রসর হইবে।" দেবী ভথাক্ত
বলিয়া বর দিলেন। দেবী ভারাও বলিলেন, বংস ! অনিমাদি
দিন্দিসমূহ ভোমাকে নিরন্ধর সেবা করিবে। মূনিবর বলিষ্ঠ মহামায়ার নিকট এইরূপ বরলাক্ত করিয়া নক্ষত্র লোকে আগ্রমপূর্কক
আভাবিধি তথার দীপ্রি পাইতেছেন।

বসিষ্ঠ (পুং) বশিষ্ঠ পুৰোদরাদিখাৎ শস্ত সঃ। বশিষ্ঠমূন।(ছিরপকোe) বসিষ্ঠ, এক জন প্রানিদ্ধ পণ্ডিত। ইতিহাস, গণ্ডান্তাদি খোব-, বিচার, গ্রহশান্তিপদ্ধতি ও শান্তিবিধি নামক গ্রন্থর বিভা। এই শেষোক্ত গ্রন্থধানি বাশিষ্ঠীশান্তি নামে পরিচিত।

বসিষ্ঠক (পুং) বশিষ্ঠ ৰাখি বা তৎসৰ্থীয়। বসিষ্ঠতন্ত্ৰ (ফ্লী) তথ্যভেদ।

বসিষ্ঠত্ব (क्री) বশিষ্ঠের ভাব বা ধর্ম।

বসিন্ঠনিহব (পুং দ্লী) সামভেদ। (লাট্যা॰ অ৯।১২)

বিসিষ্ঠপুত্র (পুং) বসিচের পুত্র বা বংশধরগণ, ই হারা ঋথেনের ৭।৩৩।১০-১৪ মন্ত্রন্তা বনিরা ক্ষিত। গঙ্গুড্গান্তার ৫ম অধ্যারে বসিষ্ঠপুত্রগণের এইরূপ বিবরণ পাওয়া যাম।

"উৰ্জ্বয়ান্ত বদিষ্ঠভ সপ্তা জায়ন্ত বৈ হুতা:।

রজোগাত্রোর্কবাহন্চ শরণকানঘন্তথা।

স্থতপা: গুক্রইত্যেতে সর্ব্ধে সপ্তর্ধয়ো মতা: ॥" (গরুড় el: e)
বিসিষ্ঠপ্রমুধ (ত্রি) বসিষ্ঠপুরত:। বশিষ্ঠপুরি যে কার্য্যে অগ্রনী।

विभिष्ठ था है। (जी) कम्प्रास्थम।

বসিষ্ঠশফ (পুং ক্লী) সামভেদ। (লাট্যা• ১।৬।৩১)

বিস্প্ত নংস্প (পুং) महामोएडन। (আৰ প্ৰৌ° ১০।২।২৫)

 বসিষ্ঠ সংক্রিড়া (রী) ধর্মধার্মবিশেন। উদ্বিশেন্ধবিভার
কথা একথানি সংহিছা, বসিঠ মুনি এই সংহিছা প্রণায়ন করেন,
এইকড় ইবার নাম বসিঠনীট্রিড়া হুইরাছে। এই সংহিছা
২০ অধ্যারে সমার। ইহাতে প্রথমে ধর্ম ও ধর্মের লক্ষণ,
বর্ণাশ্রমধর্ম, স্বাচার প্রভৃতি নামাবিধ বিষয় ব্যিত আছে।

"অথাতঃ পুৰুষনিঃশ্ৰেষসাৰ্থং ধৰ্মীৰজ্ঞাসা। জাছা ভাছতিৰ্চন্ ধাৰ্মিকঃ প্ৰশক্তমো ভবতি।" (বসিৰ্চসংহিতা ১৮১)

২ ৰোগৰাসিষ্ঠ। যোগৰাসিষ্ঠও বসিষ্ঠসংহিতা নামে . ৰণিত হইরা থাকে।

বসিষ্ঠসিদ্ধান্ত (গ্ৰং) জ্যোজিবোক নিছাৰ গ্ৰহবিশেষ। ব্যসিষ্ঠাক্কশ (গ্ৰং) নামজেন।

বসিষ্ঠামুপদ (পুং) নামভেদ।

বসিষ্ঠাপবাৰু (পুং) সরস্বতীনদী তীরবর্তী একটা স্থান। বিধামিত্রের ক্রোও হইতে বশিধকৈ রক্ষা করিবার মানলে সরস্বতী এখান হইতে বশিষ্ঠকে ভাসাইরা গইরা গিরাছিলেন।

বসিচ্চোপপুরাণ (রী) একথানি উপপ্রাণ। দেবীভাগবডে এই প্রাণের উল্লেখ আছে। কেহ কেছ ইহাকে বাশিষ্ঠ লৈদপূরাণ বলিরা থাকেন।

বসীয়স্ (জি) খনবান্। (কাঠক ২৪।৯) বৃহ্যু (ক্লী) বসভানেনেতি বস (শৃ-স্ছিনীতি। উপ্১।১১) ইতি উ। ১ রছ। ২ ধন।

"বলমার্জভয়োপশাস্তমে বিছ্বাং সংস্কৃতরে বন্ধ্রাতম্ । বস্তু তক্ত বিভোল ক্ষেবলং গুণবজাপি পরপ্রয়োজনম্ ॥"

(対理 計(の))

৩ বৃহদ্বাৰধ। ৪ জাম। (মেদিনী) ৫ ছাটৰ । (বিশ্ব)
৬ জন। (উজ্জ্বন) (খ্ৰী) ৭ নীপ্তি। ৮ বৃহদ্বাৰধ। (পদস্মাণ)
৯ নকের ক্যাবিশের। নক্ষ্যক্তা বস্ত্র ধর্মপন্তীদিগের মধ্যে
আন্ততম। (বিষ্ণুপ্ ১)১৪/১০৫) (জি) ১০ মধুর। ১১ গুছ।
বস্তু (পুং) বসতীতি বস-উ। ১ বস্কুল। ২ জনল। ৩ মদির।
৪ গণদেবতাবিশেষ। এই গণদেবতার সংখ্যা আটটী। ব্যা----ধর, ধ্বে, সোম, বিষ্ণু, জনিল, জনল, প্রত্যুব ও প্রভাগ। এই
আটজনই প্রসিদ্ধ জাইবস্থ।

"ধরো এবল নোমল বিজুলৈবানিলোহনলঃ।
প্রাকৃষক প্রভাগত বসবোহটো ক্রমাৎ দ্বভাঃ ॥" (ভরত)
অধ্যেদসংহিতার বস্ত্রগণের উল্লেখ দেখা বার। পুরাণাদি
লাল্ল প্রান্থেও তাঁহারা আই সংবাক বলিয়া কীউভ। এট দেবগণের প্রভাব ও কার্যাকারিতা সম্বন্ধে সহাজারতে তীল্লোপাধ্যামে
ববেই বর্ণিত হইরাছে, কিন্তু বৈদিক বিবরণ অন্তুসর্ব ক্রিলে
ভাচাদিগকে এক একটা প্রাকৃতিভন্নের নিবাসভূত-দেবতা

ৰ্লিরাই বোধ হয়। আমরা অক্সংহিতায় খুলবিংশবে বসুগণকে আপ, জব, সোম, ধর, অনিল, অনল, প্রভাস ও প্রতার প্রভৃতি প্রকৃতিপুঞ্জের নিরামক কর্ত্বলপে দেখিতে পাই। রামারণে এই বস্থাণ অদিতির পুত্র বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে। अক্সংহিতার হাহপা>>, পাৰহা>-হ, চাচচা>e ছলে তাঁহারা আদিতা বলিরাই পরিগণিত। আবার কোথাও তিনি অরি ৫।৬।১, ৫।২৪।২, elesiso; কোবার মকল্গণ elecib, ভাতে।৪, ণাতভাইণ; কোণাও ইক্স ১১১-১৭, ৪।০২১১৪, ৭৩১১৩; কোণাও উবা ৬৬৬৪), কোথাও অধিবয় ১)১৫৮)১ ; কোথাও কল ১)৪৩)৫ এবং কোপাও বা বাৰু ৪।৪০।৫ রূপে উক্ত হইরাছেন। উক্ত সংহিতার ১০১৬৩২ মত্রে দেখা বার বে, বস্থাণ সূর্যা হইতে অখকে নির্দাণ করিয়াছিলেন। ২।৩।৪ মল্লে তাঁহাদিগকে ঘুডাক্ত বহিতে (স্থন্নপ অলি) উপবেশন করিবার জন্ম আবাহন ক্রা হইয়াছে! বাজসনেয়সংহিতার ৫০১১ মত্তে তাঁহারা অষ্ট সংখ্যক গণদেবতা; ২া৫ ও ১১া৫৫ মন্ত্রে আদিতা ও রুদ্রে; ৮।১৮ মল্লে নিবাসপ্রদ দেবগণ এবং অথব্ধবেদের "অম্মিন্ বস্থ ৰদৰো ধারয়স্থিতঃ পুষা বক্তণো নিত্রো অগ্নিঃ। ইমমাদিত্যা উত বিখেচ দেবা উত্তরশ্মিন্ ক্লোভিষি ধারমুক্ত॥" (১।৯।১) মন্ত্র পাঠ করিলে জানা যায় যে, উক্ত গণদেবভারা ধরার নিয়ন্তা ছিলেন। তাঁহারা ধনরক্ষক এবং ইক্স ও অধি প্রভৃতির অন্তগত সহকারী। সায়ণাচার্য্য উক্ত মন্ত্রের ভাষ্যে বস্থগণের এইরূপ বাংপত্তি করিয়াছেন :--

"অস্মিন্ জনে সর্বাসপাধানি ফলকামে বসবঃ নিবাসহেতুত্তা এতৎসংজ্ঞা দেবা। বস্তু অভিলয়িতং ধনং ধারমন্ত স্থাপমন্ত। ধূঞ্ ধারণে অস্মাৎ নিচ্ বসব ইতি। বস নিবাসে। শব্দ মিহি-রুপাসিবসিহনিফিনিবজিমনিভাল (উন্ ১০১১) ইতি উপ্রভামঃ। তত্র ধানো নিৎ (উন্ ১০১০) ইতাম্বরেও ঞিলুভানিনিভাম্ ইতি আহাদারত্বম্)"। বস্থগনের এই ধনাধিগতা হেতু তাঁহারা প্রবৃত্তিকালে বিষ্ণু ও কুবের রূপে করিত ইইয়াছেন।

এই বস্তুগণ পিড়বিশেষ। মন্ত্ৰংহিতায় নিধিত আছে, আৰুকালে পিড়গণের বস্তাদিরূপে ধ্যান করিতে হয়।

"বস্ন্ বদান্ত বৈ পিতন কজাংশৈচৰ পিতামহান্। প্ৰপিতামহাংবাদিত্যান্ শ্ৰতিরেলা সনাতনী ॥"(মন্থ ০) ৮৫) উক্ত শ্লোকের টাকায় কুলুক বিধিয়াছেন, 'ব্ৰাৎ পিতাদয়ো

উত্ত লোকের টাকায় কুলুক লিখিয়াছেন, 'বল্লাৎ পিতাদরো
ধর্মান ইতি এবা অনাদিভূতা প্রতির্বিত অতঃ পিতৃন্ ব্যাথানেবান্ পিতামহান্ কুলান্ প্রপিতামহানানিত্যান্ মবাদরে। বদন্তি
ভত্ত কিরবোধনবৈম্বগাৎ প্রাক্ষে পিতাদরে। ব্যাদিরূপেণ ধ্যেয়া
হাত বিধিঃ ক্রাতে। অভএব পৈঠানসিঃ—য এবং বিবান্
প্রন্যগ্রতে ব্যবে ক্রা আদিত্যাক্ষান্ত প্রীতা ভবত্তি।'

শ্ৰীমন্তাগৰতে লিখিত আছে,—দক্ষ প্ৰজাপতি বৰ্তমৰস্তৱে ছিতীয় কল্মে অসিকীর গর্ডে বষ্টি কন্তা উৎপাদন করেন। এই সমন্ত ক্যাই প্রজাপতিগণকে প্রদত্ত হইরাছিল। ভদ্মধ্যে ধর্মকে দশ্টী কন্তা দান করা হয়। উক্ত দশ কন্তার মাম যথা,—ভামু, नवा, ककू९, शमि, विथा, मांशा, मक्याजी, वस्र, मृह्र्छा ও मक्ता। ইহাদিগের মধ্যে বস্থ নামী কস্তার গর্ভে আটপুত্র উৎপন্ন হয়। এই আট পুত্রই অষ্টবস্থ। এই অষ্টবস্থর নাম যণা,— দ্রোণ, প্রাণ, এব, অর্ক, অগ্নি, দোষ, বান্ধ ও বিভাবস্থ। দ্রোণের • অভিমতী নামী পত্নীর গর্ভে হর্ব, শোক ও ভয় প্রভৃতি পুত্র ৰূগ্নে। উদ্দেশ্বতীর গর্ভে প্রাণের তুই পুত্র উৎপন্ন হয়। তাহাদের নাম— লায় ও পুরোক্তব। ধারণী পদ্নীতে প্রবের পূর নামে একটি পুত্র হয়। বাসনা নামী পদ্মীতে অর্কের তর্বাদি পুত্র জয়ে। অগ্নি হইতে বস্থবারার গর্ভে দ্রবিণক প্রভৃতি পুত্র উৎপন্ন হয়। শর্বরীর গর্ভে দোষ হইতে এক পুত্র মধ্যে, এই পুত্র হরির সংশ-স্বরূপ, উহার নাম শিশুমার। বাস্ত হইতে আঙ্গিরদী নামী পত্নীতে বিশ্বকর্মার উদ্ভব। বিশ্বকর্মা চাকুষ নামধের মন্ত্র হইতে উৎপন্ন। মনুর পুত্র বিশ্বদেবগণ ও সাধাগণ। বিভাবস্থ হইতে উষা নামী পদ্মীর গর্ভে তিন পুত্র জন্মে, তাহাদিগের নাম,—বুাই, রোচিষ ও তপ।

মহাভারতের **দানধর্মে অষ্ট-বস্থর** এইরূপ নাম নির্দিষ্ট হইয়াছে, যথা---ধর, ধ্রুব, সোম, সাবিত্র, জ্বনিল, জ্বনল, প্রত্যুষ ও প্রভাষ।

অগ্নিপুরাণে আই বস্তর নামনিককি ও বংশবির্তি এইরপ দেখিতে পাই। নাম যথা,—আপ, ধ্রুব, সোম, ধর, অনিল, আনল, প্রত্যায় ও প্রতিলা। ইহার মধ্যে আপের পুত্র বৈত্তা, শ্রুম, লাস্ত ও মুনি। ধ্রুবের পুত্র লোকাস্তকারী কাল। সোমের পুত্র বর্জাঃ। ধরের পুত্র প্রবিণ, হত, হব্যবহ, লিলির, প্রাণ ও রমণ। অনিলের পুত্র পুরোক্রব ও অবিজ্ঞাত। অগ্নির বা অনলের তনয় কুমার। ইনি শরস্তব্যে জন্মগ্রহণ করেন। শাখ, বিশাখ, ও নৈগমের এই তিনজন কুমারের পুঠজা। উক্ত কার্ত্তিকেয় ও যতি সনৎকুমার রক্তিকা হইতে উৎপন্ন। প্রত্যুষ হইতে দেবল এবং প্রভাস হইতে বিশ্বকশ্যার জন্ম। এই বিশ্বকশ্যাই দেবলিরী। ইহাঁ হইতেই বিবিধ শিরের আবিহার।

দেবীভাগৰতে অন্তবস্থ এইরূপ বিবরণ নিপিবছ হইরাছে।
এক সময় অন্তবস্থ অ আ পত্নীসহ অভাবিহারে বাহির হইরা

। নাক্রমে বশিষ্ঠা শ্রমে আগমন করেন। পৃথু প্রভৃতি বস্থগণের

মধ্যে ভৌ নামধের প্রধান বস্তর পত্নী বশিষ্ঠধেয় নিন্দনীকে

দেখিয়া আমীর কাছে ভাহার পরিচর ক্ষিঞ্চালা করেন। আমী

ভৌ প্রভ্যুত্তরে বলেন, প্রিয়ে । এই প্রধানা ধেয়ুর প্রভূ মহর্বি

বশিষ্ঠ। নারী হউক, পুরুষই হউক, এই দেগুর ছগ্ধ পান করিলে, অযুত বর্ষ পরমাগ্ধ লাভে সমর্থ হয়। তাহার যৌবন কথন নট হয় না, ছগ্ধপানের গুণে যৌবন চিরদিনই সমান থাকে।

বস্থর কথা শুনিয়া বস্থপত্নী বলিল, মহাভাগ! এই ধেহছক্ষের যদি এমনি গুণ, তবে মর্তালোকে আমার একটী স্থলরী
সধী আছে; সধী আমার রাজর্বি উলীনরের তনরা; তাহারট
জক্ত এই কামছ্বা নিদ্দনী ধেছকে লটয়া চল। ইহার ছগ্ন পান
করিয়া মর্তাগামে একমাত্র আমার সেই স্থীই জরারোগাহীন
হইয়া স্থে অফ্লেন কাল কাটাইনে। পত্নীর অল্পরোধে মন্তাল্য
বস্থাণের সাহায়ে বস্থ ছৌ, বশিষ্ঠের অক্সাত্রারে উাহার
ধেমু হর্মণ করিল।

প্রাদ্দকে তপোধন বলিষ্ঠ বন হইতে ফলাহরণ করিয়া আপ্রমে আসিলেন। আসিলা দেখিলেন নান্দিনী নাই, নান্দিনীর বংসটীও নাই। কে তাহাদিগকে হরণ করিলা লইলা গিয়াছে। বলিষ্ঠ তথন কাননে কলরে নান্দিনীর অবেষণ করিতে লাগিলেন। বহু অনুসন্ধানেও নান্দিনী মিলিল না, তথন দেই শাস্ত দাস্ত জিতেজির মহর্ষির মনে কোগের উদ্রেক হইল। তিনি ধ্যানে জানিলেন, ব্যুগণ তাহার আপ্রমধেষ্ট নান্দিনীকৈ অভার ভাবে হরিলা লইলাছে। আর কি রক্ষা আছে। অমনি মূনির মুখ হইতে অমোঘ অভিশাপ নির্গত হইল। ঋষি বলিলেন, আমায় অবজ্ঞা করিলা ব্যুগণ যথন আমার আপ্রমধেষ্ট অপহরণ করিলাছে, তথন ভাহাদিগকে অনিরাৎ মনুবাবোনিতে জন্ম লইতে হইবে।

বশিষ্ঠ এইরপ অভিশাপ দিলেন। তপন সেই শাপ-বিবরণ জানিতে পারিয়া অভিশপ্ত বস্থাপ হংথিতমনে সেই শ্বিষি পদ-প্রান্তে উপনীত হইলেন এবং ধ্ববির শর্মাপের হইরা অনেক অসুনয়-বিনয়ে তাঁহাকে প্রসাদিত করিতে চেষ্টা করিতে লাগি-লেন। তথন ধ্ববি তাঁহাদিগকে বলিলেন, আচ্ছা, আমার প্রসাদে সম্বংসর মধ্যেই তোমরা শাপমুক্ত হইতে পারিবে। তবে তোমাদিগের মধ্যে যে বস্থ আমার নন্দিনীকে হরণ করিয়া লইয়াছিল, মাত্র তাহাকেই দীর্ঘকাল মন্থ্য-লোকে বাস করিছে হইবে।

শ্বনির কথার বঙ্গাণ আর আপত্তি তুলিলেন না, তাঁহার।
বিনিবাকা অলীকার করিয়া সকলেই বশিষ্ঠাপ্রম হইতে বাহির
হইলেন । হাইতে বাইতে পথি মধ্যে সরিং-প্রবরা গলার সহিত
তাঁহাদিগের সাক্ষাং হইল । অভিশাপ বলে এই সময় বহুগণের
মহিমা বিলুগু, হ্বর চিক্তাগ্রের জর্মারিত । তাঁহারা পাবনী
গলাকে দেখিহাই প্রণাম করিলেন এবং প্রণামান্ত বলিগেন,
দেবি । আমরা অবির লালে হতমাহাত্তা হইয়াছি । হায় ।
আমরা স্থাতোজী দেব হইয়া কি করিয়া প্রধন বে মসুলা-

বানিতে কল লইব, তাহাই আমাদের মহাচিন্তা হইবাছে।
তাই বলি, হে স্বিৎপ্রেকে । মাপুরী হইরা আপনিই আমাদিগছে
উৎপাদন করুন। হে নিস্পাপে । রাক্ষমি শাস্তহ এবন এ
ভূমগুলের নারক। আপনি গীরা তাহারই তার্যা হউন।
আপনার কঠেরে আমরা এক এক করিয়া করিয়। কাতমাত্র
আপনি আমাদিগকে এক একটা করিয়া করে ফেলিয়া লিবেন।
এইরূপ করিলেই শ্বন্নকাল মধ্যে আমাদিগের শাপমুক্ত হবৈ।
প্রসাকে এইরূপ অন্তুরোধ করিয়। ব্রুগণ স্ব স্থানে প্রস্থান
করিলেন। গলাদেবীও এ সম্বন্ধ বার বার চিন্তা করিছে
করিতে তথা হইতে চলিয়া গেলেন। (দেবীভাগ্রত হাএ২৪-৪৪)

 ং বাক্ত্র । ও রাজা। ৭ ধনাধিপ, কুবের। (বিশ্ব)
 ৮ সাধু, দক্ষন (শলরত্রা) ১ পীতর্কা। ১০ বৃক্ (হেমচল্রা)
 ১০ পুর্বিণী (সিকাকৌণ উণাধিবৃত্তি) ১২ পিব। ১০ পুর্বা (অনেকার্থকোর) ১৪ বিকু।

"বস্প্রালে বাস্থানবে বস্কুর্মনা হরি: ।" (মহাভা" ১৩)১৪৯৮৩)

'বসন্ধি ভূতান্তর এতের স্বয়নপীতি বস্তু: ।' (শাৰ্থকার্য)

১৫ কুলীন কারন্থের প্রতিবিশেষ :

১৬ আই সংখ্যা ৷ যথা,—
"যুগালিকতভূতানি বন্ধু,জোৰক, ৰূলো: :" (তিখ্যাদিত ব)
১৭ বকুল, চলিত বৃহল্ বোল বা সরী ৷ ইহান পর্যান্ন,—
"দিবমল্লী পাশুপত একাষ্ট্রিলো বুকো বস্ক: "

(ভাৰপ্ৰ' পূৰ্ব্ব ১ ভাগ)

বহুক (রুই) বহুবং কাঘতীতি কৈ-ক। স্বান্তরগণ।
(অমর) ২ পাংগু লবণ। ও বান্ত্ক। ৪ রুকাওক।
৫ কারলবণ। (ভাবপ্রত) (পুং) বহুং হ্রান্তরারা কাঘতীতি
কৈ আন্তোহমপ্রতি ক:। ৫ আক্রুক। ৬ শিবমরা। (মেদিনী)
৭ পশ্পবিশেষ। এই পুন্প বেড ও রন্তম্ভেদে ছই প্রকার।
পর্যায়—বহুং, শৈব, বক, শিবমরিকা, পাওপত, শিবমত,
হুরেই, শিবশেষর। গুণ—কটু, তিরু, উন্ধু, পাকে শীতন, নীপন,
অমীণ, বাত ও গুন্মনাকা। বেড পুন্দ-ন্যায়ন। (রাজনি)
৮ রক্তার্ক। ৯ মন্দারার্ক। ১০ পীতস্কা। (বৈত্তকনি)
বার্ত্বর্ক (পুং) বহুক গোত্রসভ্য অবিভেদ। ইনি অক্সংহিতার
১০ মন্তালের ৬৫-৬৬ হুক্তের মন্ত্রম্ভার্ক।
বার্ত্বক্র, এক জন প্রাচীন কবি। ইনি বীর প্রন্থে কেন্ট, বাঞ্চ

বস্ত্ৰক্ষণন্ত, এক জন প্ৰাচীন কবি। বস্ত্ৰকৃষ্টি (প্ং) বস্থান ধনে কীট ইব প্ৰাৰ্থকৰাং। বাচক। (হারা) বস্ত্ৰকৃষ্ট (পুং) বস্থাজ পোত্ৰসমূত ধ্বিভেদ। ইনি ধংগদের ১০ম মগুলের ২০-২৬ প্রকের মন্ত্রন্থা ধবি। কংসের আবেশে ছয়টা প্রস্তে বাসককে শিলাতরে নিঃক্রেপ করিরা নিহত করা হইল। সপ্তমগর্জ বোগমারা কর্তৃত রোহিনীর গর্জে সঞ্চারিত • হইরাছিল । বেবলীর অষ্ট্রম গর্জে ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ করা পরিগ্রহ করেন। ঐ সমরে গোকুলে নন্দপরী ধশোদার গর্জে বিকুশরীরসম্ভবা বোগনিত্রা আবির্ভূত হন।

্বস্থানৰ রাজিলান্ত শীর আইন পুত্রকে প্রীবৎসলান্থিত ও
দিব্যালক্ষণসম্পন্ন দেখিরা কংসভরে ভীত হইরা বলিলেন, হে
আধাক্ষর । এ রূপ সংহার কর । তোমার অপ্রকাত আমার
লোট পুত্রগুলিকে ছুর্জু ভংস নিহত করিরাছে । বস্থানে
বাক্যে নারারণ শীর রূপ সংহার করিরা বলিলেন, পিতঃ !
পোপপতি নক্ষকে আমার পিতৃতে অন্থান্য করিরা আমাকে
কান্ত উহার গৃহে লইরা চনুন । তদন্তসারে পুত্রবংসল বস্থানে
প্রীক্তকে জোড়ে লইরা ব্যুনা অতিক্রমপূর্কক ক্রতপদে
গোকুলাভিমুখে প্রস্থান করিলেন এবং বশোদার অক্রাভসারে
সেই গৃহে শীর পুত্রকে রাখিরা ভাষার কল্পাকে প্রহণপূর্কক
শীর আলবে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন । অনন্তর কংস সমীপে উপন্থিত
চইরা শীর কল্পারড্পারবের বার্ডা ক্রাপন করিলেন।

[करम ७ क्रका (मथ।]

শ্রীকৃষ্ণ যথন ধারকার রাজা হন, তথনও বহুদেব ও দেবকী জীবিত ছিলেন। বিচ্চুপুরাণ মতে, বহুদেবের মৃত্যু হইলে দেবকী ও রোহিণী একত্র চিতার শরন করিয়াছিলেন। বস্তুদেবতে (ক্লী) ১ ধনিষ্ঠানকত্র। (বৃহৎস০ ৮/২২)(পুং)

বহুদেবত (ক্লী) ১ ধনিষ্ঠানকজ। (বৃহৎস॰ ৮।২২)(পুং) ২ বহুদেব।

বসুদেবতা (রী) বদবো দেবতা বজাঃ। ধনিচানক্র।

"দেবপায়কথিবান্যা দেবাক্ত বস্থদেবতা।" (হরিবংশ ১২২।৩৫)

বস্থদেবপ্রসাদ, সচিধানকাত্তবপ্রদীপিকাপ্রণেতা।

বস্থদেবপ্রস্থাপাদ (পুং) গ্রন্থকারভেদ।

বস্থদেবভূ (পুং) বস্থদেবগাছিল। জীকক।

বস্থদেবাদ্ধক্র (পুং) বস্থদেবগাছিল। জীকক।

वक्षरम्या (वी) > धनिष्ठानक्यः

यस्ट्रीम्य (ज्ञी) धनिक्रानक्त । (वृह९ग॰ १।১১)

বস্তুদৈৰত (ক্লী) ধনিষ্ঠানক্ষত্ৰ। (বু° স° ১৫।৩०)

तस्यक्तमः (शः) केन्यत्रकः, वक्तप्रवृत्त गोष्ट । (देवक्रकि °)

বস্থর, এক জন প্রাচীন কবি।

বস্থুধরা (খ্রী) বৌদ্ধ ভিত্সকভেন।

বস্ত্ধৰ্মান্ (গুং) রাজভেদ। (ভারত কর্ণবর্ম)

वस्थिका (जी) किन।

বস্ত্রা (ত্রী) বহনে রয়ানি দ্বাভি ধাররতীতি ধা-ক। ক্রণা-নীনামাকরতাৎ ভবাকং। পৃথিবী। "রাজ্যে সারং বহুধা বহুধারাং পুরং পুরে সৌধং।
সৌধে তরং তরে বরাসনালসর্বাহ্ম ।" (সাহিত্যদ ১০পরি)
বহু ধনং দ্যাতি ধত্তে ইতি ধা-কিপ্। (ি) ২ ধনদাতা।
"বহুশেতিটো বহুধাতমশ্চ।" (শুকুবঞ্জু ২৭।১৫) 'বহুধাতমঃ
বহুনাং ধনানাং দাতৃতমঃ' (মহীধর)

বস্ত্রধাথজ্জু রিকা (গ্রী) বস্থধালাতা ধর্জ্রিকা। ভূধর্জ্বিকা, ধর্জ্বীরুক, ছোট থেজুর গাছ। (রাজনি°)

বস্ধাধর (ত্রি) ১ পর্কীত। ২ বিষ্ণুর সহত্র নামের অন্তর্গত নামছের।

বন্ধাধিপ (পু:) বন্ধায়াঃ অধিপ:। রাজা, পৃথিবীপতি, বন্ধধাধিপতি।

বস্থাধিপত্য (ক্লী) বস্থাদ্যা আধিপত্যং। বস্থার আর্থি-পত্য, রাজস্ব।

বস্থান (জি) খনরকা। (শুরুষক্: ২১।৪৮ ভাষ্যে মহীধর)
বস্থাপতি (পুং) বস্থারাঃ পতিঃ। পৃথিবীপতি।
বস্থাপরিপালক (পুং) বস্থারাঃ পরিপালকঃ। বস্থাপালনকারী, রাজা। যিনি বস্থা পরিপালন করেন।

বস্থাপাল (পুং) বস্থাপালনকারী। বস্থার (ত্রি) পর্বভ্রেদ। (মার্কপ্° ৫৫।৭)

বস্থার। (জী) বস্তবৎ রন্ধতৈব ধারা বলো বস্তা:। > জিন-শক্তিবিশেব। পর্যার—তারা, মহাঞী,ওন্ধার, স্বাহা, শ্রী,মনোরমা, তারিণী, জয়া, অনস্তা, শিবা, লোকেশ্বরী, আত্মলা, থদ্রবাদিনী, তত্তা, বৈশ্যা, নীলসরস্বতী, শন্ধিনী, মহাতারা, ধনংদাতা, তিলো-চনা। (হেম) ক্সনাং রন্ধানাং ধারা সম্ভতির্যত্ত। ২ কুবের-পুরী। (শন্ধ্যালা) ৩ ভীর্ঘবিশেষ।

^শভতো গচ্ছেত ধর্ম**জ বস্থধারামভিট**ুতাং।

গমনাদেব তভাং হি হরমেধমবাগুরাং ॥" (ভারত ০৮২।৭২)
বসোশ্চেদিরাজভ প্রিরা ধারা,বস্থনো স্বভ্য বা ধারা। ৪ চেদিরাজ বস্থর উদ্দেশে স্থতের বে ধারা দেওরা হর, তাহাকে বস্থধারা
কহে। নান্দীমুখ প্রাছে বস্থধারা দিতে হর। এই ধারা চেদিরাজ বস্থর অভিশন্ন প্রিরা, এই জল্প ইহাকে বস্থধারা কহে।
কেওরালের ভিত্তিতে এই ধারা দিতে হর। নান্দীমুখ প্রাছে
প্রথমে বহীমার্কতেরাদির পূজা করিরা বস্থধারা দিবে। বস্থধারার পর প্রাছ করিতে হয়।

"বন্ধ জবাং ব্যতমাজ্যমনৃতং হবিকামিকন্।
তক্ত ধারা সহা দেয়া বসোধারা হি সা মতা॥
ইতি দেবীপুরাণোক্তবচনাৎ বন্ধনো বৃত্তত ধারা।
বৃত্তিভাতপুর্বক্তব্যচেদিয়াজবস্ক্তে কুডালগ্রমুভ্যালা ধ্বা
ছন্দোগপরিশিটে কাজ্যালমঃ—

বস্থানের (রী) তালীশপত্র। (রাজনি°) বৃত্ব্ রুন (গুং) ঐক্র গোত্রসম্ভব গবিভেন। ইনি গক্সংহিতার > মগুলের ২৭, ২৯ ও ২৮ হচ্চের কিম্নণলের মন্তর্জী পবি। ২ বাসিষ্ঠ গোত্রক ঝবিভেন। ইনি ঝক্সংহিভার ৯ যণ্ডলের ৯৭ প্রেকর ২৮-৩০ মন্ত্রন্তী। বস্থ ক্রে(🔊), এক জন বৈরাকরণ। গণরক্ষমহোদণিতে ইহাঁর উল্লেখ আছে। বস্তুপ্তপ্ত, সিদ্ধান্তচন্ত্রিকা, স্পন্নস্ত্ত্তী ও স্পন্নকারিকা-রচরিতা। ইনি ভট কলট ও রাজানক জীরামের গুরু। সর্কদর্শনসংগ্রহে ইছার উল্লেখ দেখা যার। ইনি বস্থপ্রাচার্য্য নামে প্রসিদ্ধ। বস্থচন্দ্ৰ (পুং) মহাভারভোক্ত ব্যক্তিভেদ। (ভারত **টোণ**প•) বস্কুচারুক (क्री) খর্ণ। (বৈষ্ণকনি°) বহুছিদ্রা (খ্রী) মহামেদা। (রাজনি²) বস্থজিৎ (ত্রি) বস্তুজয়কারী। (অথর্ক ৻।২০।১৯) বস্তা (জী) বস্পৰা। ধনবতা। (ঋক্ ভাসাস্ত) বস্থতাতি (ব্রী) ধনবিন্তার। 'বস্নতাতি বস্ননাং ধনানাং তাতিঃ বিস্তারঃ তনোতেঃ ক্তিনি।' (ঋক্ ১।১২২।১২ সারণ) বস্ত্তি ্ত্রী)ধনলাভ ৷ "সনো অন্ত বস্তুরে ক্রত্রিদ্" (ঋক্ ৯।৪৪।৬) 'বস্তুরে ধনলাভায়' (সারণ) বস্তু (क्री) বসোভাব: ছ। বসুর ভাব বা ধর্ম। (ঋক্ ১০।৬১।১২) বস্তুত্বন (क्री) বাদক, বস্তুত্ত্ব । "প্রবর্গরিভ্যা অমৃতং বস্থ-দ্বনং" (ঋক্ ণা৮১।৬) 'বস্থুলং বাসকং বস্থযুক্তং' (সাগণ) বস্তুদ (পুং) বহুনি দদাতীতি দা ক। কুবের। "সনন্দর্গোপত গৃহং বাসায় বহুদোপমঃ। অবতী**ঠ্য ভ**তো যানাৎ প্রবিবেশ মহাবলঃ॥* (হরিবংশ ৮১।১৫) ৰস্থ ধনং দদাতীতি দা-ক। ২ বিষ্ণু। (ভারত ১৩)৪৯।৪২) (🗖) ৩ ধনদাতা সাত্র। "ब्राम्याक्षाप्रस्थ वदः कृष्णावत्विक्ः। আৰু প্ৰত্যরকোষত বস্থানৰ বস্ত্ৰরা 🕫 (ভারত ১২।১২০।৫০) বস্থানত (পু:) কথাসরিৎসাগরোক্ত ব্যক্তিভেদ। (কথাস° ২১।৫৩) বস্দত্তপুর (রী) নগরভেদ। (ক্থাসরিৎসা[°] ২৯) ১৩৪) बञ्चल (बि) > धननात्रिनी। २ वन्त्रसंकृत्स्य। ७ मानि नामक গৰুৰ্কের পদ্মী। (কথাসরিৎসা^{ও ৭।৫।3>}) বস্থান (জি) ১ ধনদান। (পুং) ২ বিবেহরাজভের। (ভারত

वञ्चनमम् (भः) वृह्द्यत्पत्र भुजालन । वञ्चलामा (बी) वनमाष्ट्रण । (बाहर नगानर्स)

২।৪।২৬) ৩ বৃহদ্রবেদ পুত্রভেদ। ৪ হিন্নপুরেকার পুত্রভেদ।

(ভাগৰত-১।২০।১৪)

वञ्चनांवम् (वि) बङ्गाः धमनामकात्री। वद्धातम् (ही) अध्यक्ष धनवाता । "मरमा पद्धातमा कूँव" (बर्क्)। १ वद्भावतात्र जन्मकामिककथनामात्र (नावन) বস্তুদেব (পুং) বহুনা ধনেন ধীৰাজীতি দিবু-শচ্। ঐদ্ধানন পিতা। পর্যার—আনক্ষুক্তি, পুর, ক্রুপিতা। (প্ররুদ্ধি) বহুদেব পূর্বপুণাকলে একককে পুতরপে প্রাপ্ত **इरेग्नाइ**रनन ।

শৃকপ্তপো বস্থদেবত দেবমাতা চ দেবকী। পূর্বপূণ্যকলেনৈব সংগ্রাপ জীহরিং স্থতম্ ॥" (उत्तरिवर्षभू व्यक्तिकसमार्थ १ वन) [इक तर्थ] ২ খনামধ্যাত কলিবুগরাকবিশেবের অমাত্য। ইনি দেব-ভৃতিকে হনন করিয়া স্বয়ং রাজ্য করিয়াছিলেন। "७५९ ३५। (দयভূতিং কৰোৎমাড্যন্ত কামিনম্। বরং করিব্যতে রাজ্যং বহুদেবো মহামতিঃ ॥" (ভাগ° ১২।১।১৮) (क्री) ৩ বসুবো দেবতা যক্ত। ৩ ধনিষ্ঠা নক্ষত্র। "(यात्रा अवनवाद्वेर क्ल्एक्यर वाजनेटक्य ।" (दृह९मर्रहिका १।>>) वस्ट्राह्मव, यनमाननिर्गत्रण्डमात्रवारणण । বস্তুদেব চক্রবংশীর যহকুলোম্বর ধেবমীচুব-তনর শ্রের প্রভেদ। তিনি বহকুলপতি ভগৰান্ জীক্ষের পিতা এবং পাওবদাতা কুস্তীদেবীর ভ্রান্তা। স্বন্মকালে স্বর্গে গুলুভিধ্বনি হওরার তাহার অপর নাম আনকহন্তি রাখা হয়। ইহার মাতার নাম মহিবী। বহুদেৰ পিতার জোঠপুত্র, শ্র, হুন্দর ও চল্লমার

ন্তার সমৃত্রন কান্তিশালী। বস্থদেব পৌরবী, রোহিন্ট, মদিরা, ধরা, বৈশাধী, ভলা, ञ्चनामी, जहरतवा, भाखिरसवा, ज्यानवा, स्वत्रक्किका, वृक्रसवी, अ (परकी नात्म वन्नवर्गिनी ठकूर्मनगन्नी ध्वर मछम् ६ राष्ट्रया नात्म তুইজন পরিচারিকা বেশধারিণী ছিলেন। ভাঁছার প্রথমা ও ব্যেষ্ঠাপদ্ধী রোহিনী বাহনীকের ক্ষা। উপরিউক্ত পদ্ধীগণের মধ্যে শেব সাজ্জন আহকপুত্র দেবকের কল্পা বিশেষ সৌভাগ্য-বভী ছিলেন। তথাধ্যে দ্ৰ্বা কনিষ্ঠা দেবকীই মহাবশা এককের মাডা। দেবকের আডা উগ্রসেমভনর কংল মধুরার রাজা। এই হত্তে বহুদেৰ ভাষার ভগিনীপতি।

একলা মহৰি নাৱদ ৰংগ সমীপে আদিয়া বলিল, মহায়াৰ ! জামি ত্রজাদি দেবগণের মত্রণার জানিতে পারিশাম বে এই মধ্যাপুরীতে বেঘকী নালে ভোষার বে পিতৃষ্ণা আছেন, ভাহারই অইমগর্জনাত পুত্র ভোষার মৃত্যুসমূপ হইবেন। নারদের মূখে আত্মবিদাশ বৃত্তান্ত অবগত বইরা অন্তর কংস দেৰকীয় গাওঁজেবনে কৃতসংখ্য হইলেন। ভালুসারে ভিনি त्मवर्गी ७ वज्रत्मवरक कामायक हाक्तिमन्। ध्यरक ध्यरक हाका কুওলনাং বসোৰ নিং সপ্তবারান্ হতেন তু।
কারবেৎ পঞ্চবারান্ বা নাতিনীচাং নচোছি তাম্॥
কার্মানিতি শাস্তার্থং কপ্ত নুক্তিত সমাহিতঃ।
বড়্তাঃ পিতৃতারদপ্ত আন্ধানমূপক্রমেৎ॥" (প্রান্ধত ব)

বন্ধ শব্দে মৃত, চেদিরাজ বন্ধর প্রীতিকামনার মৃতের বারা পাঁচ বা সাতটা ধারা দিতে হয়। এই ধারা অনতিদীর্থ ও নাতিক্রম হইবে। তিত্তি দেশে নাভি পরিমিত স্থান হইতে এই ধারা দিতে হয়। এই বন্ধধারা সাম, ঋক্ ও বন্ধ্বেল্গীদিগের ভিন্ন ভিন্ন হয়।

প্রথমে দেওরালে নাভিপরিমিত স্থানে ৭টা নিন্দ্রের এবং তাহার নীচে ৭টা চন্দনের কোটা দিরা স্থতের ধারা দিতে হইবে। সামবেদিগণ প্রথমে কোশী করিরা স্থত শইরা নিরোক্ত মন্ত্র পাঠ পূর্বক বস্থধারা দিবেন। মন্ত্র যথা—

শ্যৰজে ছিন্নপাক্ত যথা বর্জো গবামূত। সভ্যক্ত ব্ৰহ্মণো বর্জজেন মাংস সংস্কামসি॥ মঞ্জুর্জেনিগণ নিমোক্ত মদ্যে বস্থারা দিবেন—

"বংসাং পবিত্রমসি শতধারং বংসাং পবিত্রমসি সহস্রধারং দেবছা স্বিতা পুনাতু বংসাং পবিত্রেণ শতধারেণ রুষা কামধুক্ষু।" এই মন্ত্র পাঠ করিয়া এক একটী ধারা দিবেন। প্রত্যেক ধারা দিবার সময় এই মন্ত্র পাঠ করিতে হয়। কিন্তু ঋগ্বেদী-দিগের পৃথক্ ৭টী মন্ত্র ছারা ৭টী ধারা দিতে হইবে। ঋগ্বেদী-দিগের মন্ত্র।

- ১। অপ সঞ্চর আগচছারী ভ্রিধারে পরস্বতী। হৃতপ্রথাতে স্কলতে স্থাচিত্রতে। রাজ্যা যক্ত যক্ত ভ্রনক্ত রোদসী আত্ম রৈত বিশিতং যক্ষমক্তম্।
- হ। অক্তাইব বছরুমে তবাহঞ্জনা অভিচাকসীমি। য়য় লোমং আরতে য়য় য়য়েলা পঠতে শ্বতভাগারা মধুমপ্লবদক্তে।
- ৩। ত্বতবতী ভূবনানামভিশ্রেরোবর্বী পৃথ্বী মধুত্বে স্থাপশঙ্গা ছাবা পৃথিবী বরুণক্ত ধর্মণা বিভভিতে অঞ্জরে ভূরি রেতসা।
- ৪। শতধারমুৎসমীক্ষমাণং বিপশ্চিতং পিতরং রুক্থানা
 অভিমনত পিত্রোরুপত্তে রোদদী পিপৃতং সত্যবাচম্।
- ধ। শভধারং বাযুম্কবর্জিবং নৃচক্ষ্বেরন্তেইভিচক্ষতে হবিঃ।
 যে চ প্রশক্তি প্রকছিতি সক্ষমেতি হৃহতে সপ্তধারম্।
- । বলোঃ পবিত্রমসি শভধারং বলোঃ পবিত্রমসি সহল্রধারং ঝেষত্বা সবিতা পুনাতৃ। বলোঃ পবিত্রেণ শভধারেণ প্রতা কামধুক্বৃ।
- १। বৃদ্ধানন্দিবোরতিং পৃথিব্যা বৈশ্বানরমৃত আজামিরিং
 কবিং সম্লাজমতিথিং জনানামাসয়াঃ পাত্রং জবয়ন্ত দেবাঃ
 বাহা। (সর্বসংকর্তপভতি)

এই সাতটা মন্ত্র ছারা ৭টা ধারা দিতে হয়। পরে এই ছত ধারার চেদিরাজ বহুর পূজা করিয়া 'আয়ুর্বিখায়ুর্বিখাং' ইত্যাদি মন্ত্র জপ করিতে হয়। দেবীপুরাণে ৩৫ অধ্যায়ে বহুধারার বিষয় দিখিত আছে, বাহলাভয়ে তাহা এই স্থলে উল্লেখ করা হইন না।

৫ বৌদ্ধ ভিকুণীভেদ। ৬ নদীভেদ। (হরিবংশ) ৭ জৈনশক্তিভেদ।
 বস্তধারিন্ (অি) > বস্থধারাযুক্ত। ২ সম্পত্তিশালী।

বস্থাস্ত (পুং) নরকার।

বস্থাধিত (পুং) স্থাধিতবস্থাধিতনেমধিতেতি। পা ৭।৪।৪৫। ' ইতি বেদে নিপাতাতে। বস্থাহিত।

'বস্থহিতমগ্নৌ জুহোতি' (পা ৭।৪।৪৫)

বস্থাতি (ি) ১ যজমানের অভীষ্ট ফলরূপ ধনদান। "সহি দেবা বস্থাতিং" (ঋক্ ৪।৮।২) 'বস্থাতিং যজমানাভীষ্টফলরূপ-ধনশু দানম্' (সায়ণ) ২ ধনদাতা। (ঋক্ ১।১৮১।১)

ব্যুপ্রে (ङ्गी) ধনরকা। (নিকক্ত ১।৪২।৪৩)

"বস্থবনে বস্থাবয়ত বেডু যজা" (শুক্ল যজু: ২৮/১২)

'বস্থবনে বস্থবননায় ধনদানায়, বস্থধেয়ার বস্থনো ধানায় নিধানায় যজমানগৃছে নিধননায় বেডু আজাং পিবতু। বস্থবনে বস্থধেয়ভোতি সপ্তমীধটো চতুর্থার্থে।' (মহীধর)

বস্থনন্দ (পুং) রাজপুরভেদ। (রাজতর ১।৩০১)

ব প্রনন্দ, এক জন গ্রন্থকার। ইনি স্মরশাস্ত্রকৎ বলিয়া প্রসিদ্ধ। ক্ষিতিমন্দের পুত্র। (রাজতর° ১।৩৩৯)

वञ्चनम्नक (थः) (थठेक । (हाद्रावनी) ·

বস্থনাগ, এক জন প্রাচীন কবি।

বস্ত্রনাতি (পুং) বন্ধা। (অথব ১২।২।৬)

বস্থনীথ (তি) অগ্নি। 'হে বস্থনীথ ! বস্থধনং তলিমিত্তা নীথা স্তুতিগপ্ত যথা বস্থনি নম্বতীতি বস্থনীথঃ তৎসম্বন্ধী হে ধনমেত।' (গুরুষজ্ব: ১:188 মহীধর)

বস্থনেত্র (পং)বৌদ্ধভেদ। (ভারনাথ ৫।৯৩)

বস্থনেমি (পং) নাগাস্থরভেদ। (কথাসরিৎসা° নাচন)

বস্ধার (পং) প্রক্ষীপের বর্ষপুরুষভেদ। "ভ্রবপুরুষা: শ্রুভিধর-বার্যাধর-বস্থারসুদ্ধরসংক্ষা ভগবস্তং বেদমরং সোমমান্মানং বেদেন যজন্তে" (ভাগবভ ৫।২০।১১)

বস্থার, এক জন কৰি।

বহুদ্ধরা (খ্রা) বহনি ধাররতীতি ধু (সংজ্ঞারাং ভূতবৃদ্ধিধারি-সহিতপিষম:। পা ০। হা৪৬) ইতি ধচ্ (খচি হুম্ম:। পা ৬।৪।৯৪) ইতি হুম্ম: (শাক্ষিবদক্ষক মুম্। পা ৬।৩,৬৭) ইতি মুম্। পৃথিবী।

"नित्रीका छर नदा (दवी भाषान्यनमांग्र्यम् । कृदोद श्रम्का कृषा कक्निममा बस्कता ॥" (विकृष्ण ১।৪।১১) ং খফতের কন্তা ও শাবের পদ্ধী।

"বিশ্রুতা শাবমহিবী কন্তা চাক্ত বস্থারা।
ক্রপবৌবনসম্পানা সর্কাসন্তমনোহরা।" (হরিবংশ ক্রাঃ৩০)
বস্থারাধার (প্রং) ধরতীতি ধু-অচ্ধার বস্থারায়াঃ ধরঃ।
ভূধন, পর্কাত।

বহুদ্ধরাধ্ব (পুং) কহুদ্ধারাঃ ধবঃ। পৃথিবীপতি। বহুদ্ধারেশ (ত্রি) বহুদ্ধারাঃ ঈশঃ। বহুদ্ধাপতি, পৃথিবীপতি। বহুদ্ধারেশ। (ত্রী) শ্রীরাধা।

বস্থপতি (পুং) বস্থনাং পতি:। ধনপালক। "ছং বৃত্তহা বস্থপতে সরস্বতী" (ঋক্ ১/১/১১) 'বস্থপতে ধনপালক' (সারণ) বস্থপত্মী (স্ত্রী) ক্ষীরদধি আজ্যাদি বহুবিধ ধনের সর্ববদা পালন-ক্রারিণী। "বস্পত্মী বস্থনাং বৎসমিচ্ছন্তী" (ঋক্ ১/১৬৪/২৭) 'বস্থপত্মী ক্ষীরদধ্যাজ্যাদি বহুধনানাং সর্ববদা পাল্যিরী' (সারণ) বস্থনাং পত্মী। ২ বস্থদিগের গত্তী।

বস্তপাতৃ (পুং) > শ্রীরুঞ্চ। ২ ধনরক্ষক কুবের। বস্তপাল (পুং)পৃথিবীপতি, রাজা।

"তরাকপালবস্থপালকিরীট্যুইপাদাস্কঃ রঘুপতিং শরণং প্রপ্রতা" (ভাগ ১০১০২১) 'নাকপালা দেবা বস্থপালাঃ বস্থাপালাশ্চ তেঘাং কিরীটেযুঁ ইং' (স্বামী) বস্পালিত (পুং) ব্যক্তিভেদ। (দশকুমারচরিত ৬৭০১০) বস্পুজ্যরাজ (পুং) জৈন অবস্পিণীর দ্বাদশ অহতের ভ্রাতা। বস্পুদ্ধ (ত্রি) ১ ধনদ। ২ শিব। ৩ স্কন্দাস্ক্রভেদ।

বস্থপ্রভা (স্থী) অগ্নির সপ্ত জিহ্বার একটী।

বস্থপাল (পুং) বস্থ দীপ্তিঃ প্রাণা ইবাস্ত। অয়ি । (শনবরা°)
বস্তব্যু, মহাযানমতবিস্তারকারী একজন প্রদিদ্ধ বৌদ্ধর্গর ।
ইনি পুরুষপুর জনপদের কৌশিকগোত্রীয় জনৈক প্রাক্ষণ সামস্তরাজের পুত্ররূপে আবিভূতি হন। কথিত আছে, এই ব্রান্ধণের
তিন পুত্র ছিল, তিনি তিন জনেরই নাম বস্তবন্ধ রাণিয়া ছিলেন।
তৃতীয় পুত্র সর্ব্বান্তিবাদ-শাথাধাায়ী হইয়া অর্হদর্ম আচরণ
করিয়া জ্ঞানমার্গায়্পারী হইয়াছিলেন। তিনি স্বীয় মাতার
নামে বিলিঞ্চীবৎস নামে থাতে হইলেন। জ্ঞান্ত বস্তবন্ধ কনিষ্ঠের
রার সমমার্গায়্পারী হইয়াও প্রকৃত জ্ঞান বা মোক্ষলাতে বঞ্চিত
হইয়া আত্মহত্যার হেয়া পান। পরে তিনি মৈত্রেয়ের নিকট
মহাঘান-মতবির্তি লাভ করিয়া সে সংক্রান্তাগপুর্বক অন্থলীপে
ফিরিয়া জ্ঞানেন এবং একাস্তমনে জ্ঞানালোচনায় প্রবৃত্ত হন।
এই কারণে তিনি অসক বস্তবন্ধ বিলার প্রসিদ্ধি লাভ করেন।
জপ্বীপে অবস্থানকালে তিনি মহাযানস্ত্র অবলম্বন করিয়া
উপ্রেশ রচনা করিয়া বান।

ষিতীর প্রাতা সর্বাতিবাদ-শাধাধারী হইয়া অপর প্রাত্তরের

ভার আত্মজান লাভ করিরাছিলেন। তাঁহার ভার বছলনী ও জ্ঞানবান তৎকাদে কেইই ছিল না। ভিনি কেবল হাঁত বস্তবদ্ধ নামে বিধিত হইরাছিলেন।

বৃছনির্জাণের ৯ম খডাল পারে, বিদ্যাপর্কতপার্থবাসী বিদ্যালয় তীর্থক নামক একজন পাঞ্জি অবাধ্যা নগরে আসিয়া একজা রাজা বিক্রমাদিভারে রাজদরবারে উপছিত হইলেন। তিনি রাজসভার বসিরা তথাকার বৌদ্ধ প্রোহিতগণের সহিত শাসীয় বিচারের প্রার্থনা জানাইলেন। তথন মণিরাত, বস্তবন্ধ প্রভৃতি বৌদ্ধ মনীবিগণের কেহই নগরে উপন্থিত হিলেন না। তাহারা কার্য্যোপলক্ষে রাজ্যাক্তরে বাস করিতেহিলেন। তথকালে কেবলমাত্র বস্তবন্ধর শুরু অভিত্যুক্ত হিলেন। তথকালে কেবলমাত্র বস্তবন্ধর শুরু আজি তথার উপন্থিত হিলেন। রাজাদেশে তিনি সভার শাল্পবিচারার্থ আছে হইলেন বটে, কিন্তু বার্দ্ধর নিবন্ধন তিনি বিশেষ কোন তর্কের অবভারণা করিতে পারেন নাই। কাজে কাজেই তাহাকে পরাত্র বীকার করিতে হইল। রাজা তীর্থককে প্রস্কৃত্ত করিলে তিনি বীয় বাসভূমি বিদ্যাপর্কতে প্রস্কৃত্ত করিলে তিনি বীয় বাসভূমি বিদ্যাপর্কতে প্রস্কৃত্ত

বস্থবন্ধ প্রভ্যাগত হইরা যখন শুনিবেন, তাঁহার ঋন বৃদ্ধ-মিত্র একজন তীর্থকের বিচারে পরাভূত হইরাছেন, তখন তিনি সেই তীর্থকের সহিত পুনর্বিচারের জন্ম তাঁহার আনেক অবেবণ ক্রিয়াচিলেন। হুর্ভাগ্যবশতঃ উভরের সাক্ষাৎ হয় নাই।

বস্থবদ্ধ উপায়ান্তর না দেখিয়া, সেই তীর্থকের মত নিরাশার্থ একগানি বৃহৎ গ্রন্থ রচনার প্রবৃত্ত হইলেন। ঐ গ্রন্থগানি সমাপ্ত হইলে রাজা তাঁহাকে তিন লক্ষ স্থান্দ্রা পারি-তোবিক দিয়াছিলেন। ঐ অর্থে বস্থবদ্ধ তিনটা বৃদ্ধসূত্তি স্থাপন করেন। তর্মধ্যে একটা ভিক্লীদিগের ক্ষপ্ত এবং অপর ভুইটা সর্ব্বান্তিবদি শাখাধ্যায়ী ও মহাবান সাম্প্রদায়িকদিগের ক্ষপ্ত নির্দিষ্ট হইরাছিল।

অতঃপর বহুবন্ধ্ন পরিত্র বৃদ্ধর্ম পুন:সংস্থাপনার্থ বিশেষ
যারের সহিত বৈভাষিক তর অভ্যাস করেন। পরে তিনি, সেই
মন্তপ্রচারে রুতসংকর হন। এইরপে তিনি মূলের অর্থসঙ্গতি
রক্ষা করির। তাঁহার দৈনিক বক্কুতা বা উপদেশের বিষয়ীতৃত অংশগুলির সার গাণার রচনা করির। একথানি তাশ্রফলকে উৎকীর্ণ করির। রাণিতেন এবং তাহাই মন্তমাভঙ্গপুঠে
জড়াইর। নগরের পথে পথে চকাবাছ সহকারে ঘ্রাইর। লইর।
বেড়াইতেন। তাঁহার গাণার অর্থবিকাশ ও অপূর্ক মীমাংসা
লেখিরা কেহই তাঁহার বিক্তরে মত প্রকাশ করিতে সাহসী হন
নাই। এইরপে ছরশতাধিক গাণা রচিত হইর। সমগ্র বৈভারের
ব্যাধ্যা নিপার হর। উহা কোষ বা কোষকার নারে প্রথিত।

ৰহাবন্ধ

অতঃপর বস্থবদ্ধ অভিধর্মকোষ লিখিতে আরম্ভ করেন।
এই গ্রাছে তিনি সর্কান্তিবাদমতের বিশেষরূপ পোষকতা করিয়া
ছিলেন এবং যে সকল মত শুত্রপথন্তই তাহাদিগের নিন্দা
করেন। তাহাতে কাবুলের বৌদপভিতমগুলীর সহিত তাঁহার
যোর বিরোধ উপস্থিত হয়।

পূর্বকথিত অযোধ্যারাজ বিক্রমাদিত্যের পুত্র প্রাদিত্য ও
তাহার মাতা বহুববুর নিকট হইতে বৌদ্ধর্ম্মে দীক্ষাগ্রহণ করেন।
পিতার মৃত্যুর পর প্রাদিত্য পিতৃসিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইয়া বৃদ্ধা
মাতার অপ্ররোধে স্বীয় গুরুকে অযোধ্যায় আনাইয়া বাস করান।
এপানে তীর্থক-সম্প্রদায়ত্ত ও প্রাদিত্যের তগিনীপতি ব্রাহ্মণতনয় বহুরাত ব্যাকরণের মতামুসারে বহুববুক্ত কোষগ্রন্থের
প্রতিবাদ প্রচার করেন। বহুববুক্ত সপক্ষসমর্থনার্থ সেই প্রতিবাদের থণ্ডন করিয়া একথানি গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন।
তাহাতে বৌদ্ধর্ম্মে আস্থাবান্ রাজা পণ্ডিতবরকে লক্ষ এবং
ধর্ম্মনীলা রাজমাতা ছই লক্ষ বর্ণমূলা পারিতোর্ষিক দিয়াছিলেন।
এই অর্থ লইয়া বহুববুক্ কাবুলে, পুরুষপুরে এবং অযোধ্যায়
তিনটী বৃদ্ধসৃত্তি স্থাপন করিয়াছিলেন।

বস্থবন্ধর এইরপ প্রতিপত্তিবিতারে তীর্থকগণ অপ্রতিভ হইয়া পড়িলেন। তাঁহার গর্কা ধর্মা করিবার জন্ম তাঁহারা সিংহভদ্র নামে একজন মহাপণ্ডিতকে অযোধাায় আনিলেন। উক্ত পণ্ডিতবর বস্থবন্ধরুত কোষের মত খণ্ডন করিবার জন্ম হুইখানি গ্রন্থ রচনা করেন। তন্মধো ১০ সহস্র গাথাযুক্ত এক-থানি গ্রন্থে বৈভাষিকের ব্যাখাা প্রতিপাদিত হইয়ছিল। অপর থানি ১২ হাজার গাথায় লিখিত, উহাতে তীর্থকরাজ স্বীয় পক্ষ সমর্থন করিয়া অভিধর্মকোষের বিপরীত অর্থ প্রতিপাদনে চেটা পান।

এই গ্রন্থবন্ধ সমাপানের পর, সিংহতদ্র বস্থবন্ধকে তর্কযুদ্ধ আহ্বান করিলেন, কিন্তু বস্থবন্ধ আন্ধ রুধা বাদাস্থাদে প্রবৃত্ত হইলেন না। তিনি পশ্চিতমগুলীর নিকট উভরের বিশ্বসমতের মীমাংসাভার অর্পণ করিলেন।

ক্ষিত আছে, বস্থবন্ধ প্রথমে অষ্টান্দ শাধার ধর্মমন্ড আলোচনায় প্রবুত হইয়া হীনধানমতেরই পক্ষপাতী হইয়া-ছিলেন। তিনি প্রথমে মহাবানমতে বিশ্বাস স্থাপন করেন নাই। তিনি বলিতেন, প্রকৃত প্রস্তাবে ইহাতে বৌদ্ধমতের কিছুই নাই। পাছে তিনি মহাবানমত থ**ওন করি**য়া কোন গ্রন্থ প্রণয়ন করেন, এই ভবে অসঙ্গ স্বীয় ভ্রাতা বস্থবন্ধকে পুরুষপুরে আনয়নপুর্বক তাঁহাকে মহাযান মতে দীক্ষিত তথন তাঁলীর মনে মহাযানমতের অয়ৌক্তিক সমালোচনার জন্ম পরিতাপ উপস্থিত হইল, তিনি নিজ জিহবা $^{\circ}$ কাটিয়া ফেলিতে উন্নত হইলেন। তাঁহার ভ্রাতা এই সময়ে বিশেষ অন্নরোধপুর্বাক তাঁহাকে এই ছবিব্যহ কার্য্য হইতে বিরত করেন এবং বলেন যে, ইহার পরিবর্ত্তে তুমি বরং মহাযান মতের প্রতিপোষক কএকথানি গ্রন্থ লিখিয়া সাম্প্রদায়িক উন্নতির চেষ্টা কর। প্রাতা কণ্ডক এইরূপে অনুফদ্ধ হইয়া বসুবদ্ধ অবস্তুসক. নিৰ্বাণ, সন্ধৰ্মপুণ্ডনীক, প্ৰজ্ঞাপারমিতা,বিমলকীঠি ও অক্সান্ত সূত্ৰ-গ্রন্থের টীকা রচনা করেন। ইহা ব্যতীত তিনি মহাধান মতের বিস্তারাথ কএকথানি শাস্ত্র গ্রন্থ করিয়াছিলেন।

স্থাধা নগরে স্নীতি বর্ষ বয়:ক্রমকালে বস্তবন্ধ ভবলীলা সম্বরণ করেন। তিবতের তারানাথকত মগধরাজবংশেতিবৃত্ত ° পাঠে জানা যায় যে, পূর্বজনপদাধীশ্বর (বঙ্গরাজোশ্বর) শ্রীচন্দ্রের পুত্র রাজা ধর্মচন্দ্রের সভায় বস্তবন্ধ বিভ্যমান ছিলেন।

বস্তু (ক্লী)ধনিষ্ঠা নক্ষ। (বু° স° ১০।১৬)

বঞ্জরিত (ফি : ধনপূর্ণ i

বহুভাগ, এক জন প্রাচীন কবি।

বস্তুত (পুং)গৰ্মবভেদ।

বস্বস্তৃতি (পুং) > বৈশুভেদ। (মন্থ ২।৩২ টীকায় কুল্লুক) ং ব্রাহ্মণভেদ। (কথাসরিৎসা° ৭৩)২১৬)

বৈস্ভূতান (পুং) > সপ্তৰ্ষির মধ্যে একজন ঋষি। ২ বসিচের পুত্রভেদ।

"উবণো বহুভূজানো ছামান্ শক্তানরোহপরে ॥"(ভাগ° ৪।১।৩৭) বহুম্ (ত্রি) ধনযুক্ত, অর্থবান্।

বস্ত্রমতী (রী) বহনি ধনর্জানি সম্ভাক্তাঃ ইতি কম্ব-মতুপ্-ভীপ্। পৃথিবী।

"ওদলং তদপায়চিস্কয়। বিপত্নংপত্তিমতামুপস্থিতা। বস্থাধ্যমবেক্ষ্যতাং কয়া বস্থ্যমত্যা হি নূপাঃ কল্ফিণ:॥°

(রম্ব ৮/৮৩)

বস্নতীপতি (পং) বস্নত্যাং পতি:। পৃথিবীপতি, রাজা। বস্নতা (রী) বস্ন জন্তার্থে মতুপ্, বস্নতো ভাবং তল-টাপ্। বস্নতের ভাব বা ধর্ম, ধনবস্তা। ব্হুম্নস্ (পুং) রৌহিদখ পবিভেদ। ইনি প্রেদের ১০১১৭৯।৩ মন্ত্রদুপ্তা।

বস্তমত (তি) বহু অন্তার্থে মতুপ্। ধনযুক্ত, ধনবিশিষ্ট। "বস্থাতা রথেন গিরো জুষাণা" (ঋক্ ১১১১৯১১০) 'বস্থমতা ধনযুক্তেন রথেন' (সায়ণ)

বস্তম্য (তি) বহু স্বরূপে ময়ট্। বহুস্বরূপ। জিয়াং ভীষ্। বস্তমিত্র, এক জন প্রসিদ্ধ বৌদ্ধর্যতি। ইনি বৈভাষিক মতের ইনি মরুবংশীয় এবং এক জন প্রধান ধর্মাচার্য্য ছিলেন। কাশ্মীরজনপদের পশ্চিমস্থ অশ্মাপরাস্তবাদী।

বস্থমিত্র, শুঙ্গমিত্রবংশীয় এক জন অভি প্রবন্ধ পরাক্রাস্ত নুপতি, কালিদাসের মালবিকাগিমিত নাটক হইতে জানা যায় বে . ইনি স্থপ্রসিদ্ধ বৈদিকমার্গপ্রবর্ত্তক ও অখ্যমেধ্যাগকারী অগ্নি-মিত্রের পৌত্র। ইনিই যজ্জীয় অধ্বরকার নিযুক্ত ছিলেন। দিছু তীরে যবনদিগকে পরাজয় করিয়া জয়ত্রী অর্জন করিয়াছিলেন। ইহারই বীরতে পাটলিপুত্রে অখ্যমধ যক্ত সুসম্পন্ন হইয়াছিল। খুঃ পুঃ ২য় শতাদীতে এই মহাবীরের অভাদয়।

वासुभूतानीय ताक्षग्र-माहारक्षा वर्निक हहेसारक-'भूत्राकारम বস্থ নামে একজন রাজা ছিলেন, তিনি ব্রাহ্মণবংশীয় ও মহাবীর; তাঁহার পৌক্ষ ত্রিভূবনে বিধ্যাত, রাজগৃহবনে তিনি অখনেধ যক্ত করিয়াছিলেন। তিনি জাবিড়, মহারাষ্ট্র, কণাট, কোছণ, তৈলক প্রভৃতি নানা দেশ ২ইতে শ্রেষ্ঠ গুণসম্পন্ন, ফুনাল ও বেদবেদাক্ষপারগ দাক্ষিণাত্য বিপ্রগণকে আনাইয়া ছিলেন। তাঁহাদের গোত্রনাম গণায়ণ বলিতেছি---> বৎস, ২ উপময়া, ৩ কৌঞ্জিনা, ৩ গর্গ, ৫ ছারিত, ৬ গৌতম, ৭ শাণ্ডিল্যা, ৮ ভর-দ্বাজ, ৯ কৌশিক, ১০ কাশ্যপ, ১১ বশিষ্ঠ, ১২ বাৎস্তা, ৩ সাবৰ্ণি ১৪ পরাশর; এই ১৪টী গোত। উক্ত মহাঝা সকলেই ঋথেদী আশ্বলায়ন-শাথাধাায়ী। রাজা যজাবসানে তাঁহাদিগকে রাজগত-পুর শাসন দিয়াছিলেন। এ ছাড়া নরপতি তাঁহাদিণের মধ্যে অতিগোত্রদিগকে গিরিবজে ও তাঁহাদিগের মধ্যে অধিকাংশকে বৈকুণ্ঠপাৰের নিকট প্রাহ্মণ-শাসন দান করেন। এ ছাড়া নর-পতি তীহাদিগকে পৃথক্ পৃথক্ দক্ষিণাও দিয়াছিলেন। সেই भधा**र উ**क्ट विश्रगन এই জीखं পूषिक रहेशा स्नामित्करधन ।*

 "बक्नामा पुत्रा (मनी बक्न नुगमखमः । ब्रक्सवानिम हानवः दिल्लाका बाजरणोक्तवः । २० ट्टान्डेर वाकित्यस्य श्माण्यास्त्रपुरः यान । তেনানীতা গুণাদগ্ৰা দাক্ষিণাড্যা বিলোভমা: । ২৪ নানাবেশাৎ সুশীলাক বেববেদাঙ্গপারগাঃ। ৰতং প্ৰেণ্ডয়া: বিপ্ৰা: সপ্তসাহপ্ৰসংবাদা: । २० লাবিডাক বহারাট্রাৎ কর্ণাটাৎ কোছবাদলি। ডৈলকাত সহাভাগাতে চতুর্বপ্রোত্তিশ: ৪ ২৬

এখন জিলাভ, উক্ত আত্মণবংশীৰ বহুৱাত কে ? ভারতে ও পুরাণে অরাদক্ষের পিডামহ গিরিক্তপ্রতিষ্ঠাতা বে বছুয়াজের উরেধ আছে, তিনি লাভিডে করির, আত্মণ নহেম। এরপ-হলে ব্ৰাহ্মণ বহুৱাৰ যে খণ্ডৱ ব্যক্তি, ভাছাতে সন্দেহ নাই।

भूटर्सारे विनिवाहि त्व थुः भूक्तं २व मछात्म ' कनवरत्नेत म्या-ৰয় বটে। বিষ্ণু ও ভাগৰতপুৱাণ মতে—মোৰ্য্যবৰংশীৰ শেষ নুপতি বৃহত্তথকে নিহত ক্রিয়া পুশামিত ওলবংশের প্রতিষ্ঠা করেন। পুর্ভামিত্র দারুণ বৌছবিধেবী ছিলেন। দিব্যাবদান नामक व्याठीन द्योद्धश्रह हरेएड जाना वाद 'ए, जाना श्वामित অলোকপ্রতিষ্ঠিত ৮৪০০০ ধর্মরান্ত্রিকা ধ্বংস করিবার অমুমতি ক্রিয়াছিলেন। তাঁহার পুত্রই কালিলাদের "মালবিকারিমিত্র" লাট্যতের লায়ত অধিমিত। অধিমিতেও অধ্যমধ-বৃদ্ধ এবং বৈদিক ক্রিয়াকাও উদ্ধার ক্রিয়া প্রাসিদ হইয়াছিলেন। এই এই অগ্নিমিত্রের পৌত্র বস্থমিত। বোধগরা হইতে তাঁহার শিলা-লিপি এবং নানা স্থান হইতে ভাঁহার মুদ্রা আবিষ্কৃত হইমাছে ৷ এই বস্নামত্তই রাজগৃহমাহাত্মাবণিত বস্তরাজ। আত্মণভক্ত বক্ত-মিত্র দাক্ষিণাত্য-বিপ্রকে রাজগৃহনগরী দান করিয়া পূর্বভারতে ব্রাহ্মণাধর্মপ্রচার করিবার জন্ম তাঁহাদিগকে প্রতিষ্ঠিত করিয়া-ছিলেন। বস্তুমিত্রের পর জারও ৫ জন ওলবংশীয় নুপতি বাজত্ব ক্রিলে পর ক্রগোত্র বাস্থদেব নামে গুল-সেনাপতি নিজ প্রভুকে বিনাশ ও ওল্পান্রাজ্য অধিকার করেন। [বলদেশ শব্দ দেখ] वस्त्रत (श्रः) वस्न, (नव। (बि) छहे, नहे।

বস্থরক্তি (পুং) বৌদ্ধাচার্য্যভেদ। বস্তর্থ, এক জন কবি।

বস্তরাত (পুং) ঋবিভেদ। (মার্কপু* >>৪।১৩) বস্থকচ ্ (ত্রি) দেবতাভেদ। "জাণ্যং বস্থকটো দিখা জভান্যত"

> নাম তেখাং প্ৰৰক্ষামি গোতাপাত বৰ্গভবৰ। ৰংদোপদস্যা-কৌঞ্চিদ্য-গৰ্গ-ছান্নিফ-গৌতমাঃ ঃ ২৭ লাভিল্যোথ ভরবালঃ কৌশিকঃ ৰাজপথাবা। ব্লিষ্ট্ৰণ্ড পুৰব্বিজ্ঞ: দাব্দিন্ড পরাশরঃ রবদ চত্ত্ৰলৈতে কলিত। গোড়াগ্ৰেবাং খহান্ধনাৰ্। करवत्रावीकिनः मरक्षे कावनावनमाविनः ४२. वकारक भागनः तकः एएका। ब्रांकपृष्टः पूत्रम् । व्यक्तिः शक्तरणा त्यसार शिक्षात्वसार विश्वित्रका ॥७० विकासार जानसर त्ववि वस्त्रयान् बच्चाधिनीः। खरमरबाारजाक्षिकामार देव देवकुकेनवमांत्रदवी ४०३ विक्ता ह छवा वसा आकरतकार गुनक् गुनक । ততা অভৃতি তে বিহা লাভাতীৰে অপুলিতা: ১৬২"

(別研切を判定(第) 4 年:)

• (किनांगार' (मात्र) বস্তরুচি 🗸 প্ং) গদুর্ক। (অ্থর্ক ৮।১০।২৭) ব্যুব্রপ (পুং) শিবের নামজেন। (ভারত ১৪ প॰) বহুরেতস্ (क्री) > पति। ২ শিব। বহুরোচিস্ (क्री) বদবং ক্লোচন্তে অন্মিরিভি রুচ-দীর্থ্যে (বদো करकः गरकातार। छन् २।>>२) हेकि हेनिन्। वकः। (छन्दन) (भू१) २ शास्त्रपदम् ४।०८। २७ मञ्जूष्टो अधिरक्त । বস্থল (পুং) বহং দীঝিং দাভি গৃহাতীভি দা-ক। দেবতা। বসুবৃণি (অ) > ধনপোৰ, ধনপোৰণ। ২ যঞ্জনান। "স দেবতা **बस्चिन: मधाफि" (अक् १।)।२७) 'वस्**चिन: धमरशावः मनािछ, बबा न दिवला व्यक्तिर स्वतीः चलमान्तः (नाम्) বস্থমৎ (ত্রি) ধনবান্। বস্ত্রন্ (পুং) বহুদান। (क्री) ২ ঈশানকোণছিত দেশভেদ। বস্থবাছ (পুং) ১ ধনী। ২ ঋষিভেদ। বস্থবাহন (बि) কোববৃক্ত। ব্যুবিদ (बि) বহুনি নিবাসন্থানানি বিন্দতে বিদ্-কিপ্। নিবাস-স্থানের লক্ষয়িতা, নিবাসম্থানের প্রাপক। "ধিরা দেবা বস্ত্বিদা" (ঋক্ ১/৪৬/২) 'বস্থবিদা নিবাসন্থানত লম্ভয়িতারৌ' (সায়ণ) २ व्यक्ति। वञ्चत्रष्टि (जी) धनमान । বস্ত্রশক্তি (গ্রী) বৌদ্ধ ভিন্দুণীভেদ। ব্যুপ্রেবৃদ্ (ডি) ১ ধনের জন্ত প্রাসিদ্ধনবান্। ২ ব্যাপার। বফু∰ (খ্রী) রুন্দান্তর মাতৃভেদ। (ভারত ৯ প৹) ব্সঞ্চত (ত্রি) > ধনের ক্স বিখ্যাত, মহাধনী ৷ ২ জত্রি-গোত্ৰসভূত থবিভেদ। বস্তুভোষ্ঠ (ही) বহুনা দীখ্যা শ্রেষ্ঠং। রূপ্য। (রাঞ্চনি॰) বস্থাৰেণ (পুং) বহুসেন, কৰ্ণরাজ। (ত্রিকা•) বস্তুসার (পুং) ঋষিভেদ। জিয়াং টাপ্। বহুসারা— कूरवज्ञभूजी। दश्रम्भ, धक कम कवि। বস্থানে (পং) কর্ণরাজ। (ত্রিকা•) 'বস্থবেণ' পাঠান্তর। ব্দ্রন্থলী (ত্রী) বহুনাং ধনানাং হুলী। কুবেরপুরী। (শক্ষা•) বস্তুত্ত্ত্ত্তি (খং) বহুনাং দীপ্তীনাং হট্ট ইব। বৰুবুক্ষ। (রন্ধমালা) ব্সুহৃট্টক (পুং) বস্থই স্বার্থে কন্। বকর্ক। (শব্দালা) বস্থামে (পুং) > বস্থর উদ্দেশে (হাম। ২ আলরাকভেদ। বসুক (क्री) সাম্বরণবদ। (হেম) ২ বকপুন্স। (ছিরপকো•) বসুজ্ব (ত্রি) ১ ধনাভিনারী। (পুং) পথেদের ৮।২৫ স্কেড্রা अधिवः नीव सविष्ठम ।

(ৰক্ ৯/১-১/৬) 'দিব্যা বহুক্ত: দিবিভবা বহুক্চোনাম

বসূত্তম (পুং) महाधनवान्। বসুমতী (গ্রী) বস্নতী, পৃথিবী। বৃদ্যা (জী) ধনেচ্ছা। "হ্ৰগাডুৱা বহরা চ ঘলামহে" (ঋক্ ১।৯৮।२) 'बरुवा धरनष्ट्या' (मात्रण) বসূয়ু (ত্রি) ধনেছু। বস্বয়, গতি। ভাদি আত্মনে সক সেই। কট্ বন্ধতে। নিট্ বৰম্বে। লুঙ্অবস্থি। বস্কু (পুং বন্ধ-ভাবে ঘঞ্। অধ্যবসায়। (ভূরিপ্রত) বস্ক্রথ (পুং । বস্কতে ইতি বন্ধ-গতে বাছলকাৎ অথন্। একহায়ন বৎস, এক বৎসরের বাছুর। (অমরটীকা রায়মূকুট) ব্যুম্মী (জী) বন্ধথ একহারনো বংসা, তেন নীয়তে ইতি নী-কিপ্ ভীষ্। চিরপ্রহতা গাভী। ইহার হয়গুণ— ত্রি**দো**ষ্ নাশক, তর্পণ ও বলকর। 'বঙ্করিন্তান্ত্রিদোষসং ভর্পণং বলরুৎপয়ঃ।' (ভাবপ্রকাশ) বস্করাটিকা (জী) র্শ্তিক। (হারাবলী) বস্তু, বধ। চুরাদি আস্থানে সক সেট্ । লট্ ৰন্তয়তে। লুঙ্অববস্ত। ২ (পুং) বস্তাতে যজার্থং বধাতে ইতি বস্ত কর্মণি ঘঞ্। ছাগ্। "যশু বস্তসমো গন্ধো গাত্রে শবসমোহপি বা। ওস্তার্দ্ধমাসিকং জ্ঞেমং যোগিনো নূপ জীবিতম্।"(মার্কপু° ৪৩) ১২) বস্তুক (क्री) কৃত্রিম লবণ। (হেম) বস্তকর্ণ (পুং) বন্ধজ ছাগজ কর্ণাক্ষতিঃ পত্রাবচ্ছেদে অন্তাক্ষেতি वछकर्ग व्यर्भ व्यानिशानम् । भागतृक्तः । (রাজনি ।) বস্ত গদ্ধা (ত্ৰী) বস্ত শ্ৰু ইব গদ্ধো যশুঃ। ছাগের ক্রায় গদ্ধ-বিশিষ্ট। (রাজনি॰) বস্তমোদা (রী) বতং ছাগং মোদরভীতি মৃদ-পিচ্ আচ্। অন্ধমোদা। (রাজনি॰) व्सुतु (बि) वम-छवा। बामाई, वात्मन खाना। "পরাজিতৈইি বন্তব্যং ভৈশ্চ **দানশ বৎসরান্।" (ভারত আ**দিপ॰) বস্তব্যক্তা (স্ত্রী) বস্তব্যক্ত ভাবং তদ্-টাপ্। বস্তব্যের ভাব বা शक्तं, वाम। বস্তান্ত্রী (ব্রী) বস্তক্তেব অন্তম্ভাঃ, গৌরাদিছাৎ ভীষ্। ছাগলাক্ষি-क्ष्र, पर्याद-चृवशकाथा, स्वाडी, त्वपविका, व्याडी, तात्रकी। গুণ-কটু, কাসবোধনাশক, গর্ভধনক ও শুক্রবর্দ্ধক। (রাজনি•) ব্স্তি (পুং খ্রী) ৰদতি মূত্রাদিক্ষত্র, বদ (বদেন্তি। উণ্ ৪।১৭৯) ইতি ডি। ১ নাভির অধোভাগ। তলপেটু। ২ মূত্রাশরপুটের নাম বতি, মৃত্যাশয়, প্রানাবের থলে। ৩ বভিসমূশ বন্ধ, চলিড পিচকারী। বৈভকে ৰজিবিধির বিষয় অর্থাৎ পিচকারী দিবার প্রণালী এইরূপ লিখিড আছে---

"বিভিন্নিধাস্বাসাথো নিরহণ্ট ততঃ পরঃ।

যঃ স্নেইন্ট্রতে স জালস্বাসননামকঃ॥

ক্যারক্ষারতৈলৈথো নিরহং স নিগন্ধতে।

বিভিন্নিরতে যক্ষাৎ তত্মাবভিরিতি শ্বতঃ ॥" (ভারপ্র০)

বস্তি ছই প্রকার, অম্বাসন বস্তি ও নিরহবন্তি। এই

ইই প্রকার বস্তির মধ্যে সেহ নারা যে বস্তিপ্রয়োগ করা হর,

ভাহাকে অম্বাসন বস্তি এবং কাথ, চ্থাও তৈল নারা যে বস্তিপ্ররোগ করা হর, তাহাকে নির্চ্বন্তি কহে। বস্তি নারা
(মৃগাদির ম্ত্রাশ্র নারা) প্রযোগ করিতে হর বলিয়া ইহাকে
বিস্তি কহে।

মাত্রাবন্তি অমুবাদনবন্তির ভেদমাত্র। ইহার মাত্রা তুই বা একপল। ক্লকব্যক্তি, তাঁক্রায়িদম্পন্ন বাক্তি এবং যাহা-দের কেবল বায়্প্রবল তাহার। অমুবাদন বন্তির উপযুক্ত। কুঠরোগী, মেহরোগী, স্থাকায় ও উদরবোগীর পক্ষে অমুবাদন-বন্তি উপকাবক নহে।

অজীপরোগী, উন্মানরোগী, তৃঞ্চারোগী এবং শোধ, মুর্জা, অরুচি, ভয়, খাস, কাস ও ক্ষয়রোগাক্রান্ত ব্যক্তির পক্ষে অনুবাসন ও আত্থাপন এই উভয়বিধ বস্তিই প্রশস্ত।

স্থবর্গদি ধাতু, বৃক্ষ, বাঁশ, নল, দস্ত, শৃক্ষাগ্র বা মণি প্রভৃতি ছারা নল প্রস্তুত করিতে হইবে। বন্তিপ্রয়োগে এক হইতে ছয় বংসর বয়ক্ষ রোপীর নিমিত্ত ৬ অকুলি প্রমাণ, ৬ বংসরের উর্দ্ধ ১২ বংসর পর্যান্ত রোপীর নিমিত্ত ৮ অকুলি প্রমাণ, ১২ বংসরের উর্দ্ধবয়ক্ষ রোপীদিগের নিমিত্ত ১২ অকুলি প্রমাণ, নি নল করিতে হইবে। ঐ নলের ছিল্ল যথাক্রমে মূলাপ্রমাণ, কলায় প্রমাণ ও বদরী বীজের প্রমাণ হইবে। উহা প্রাক্তবং গোপ্তেছের আক্রতিবিশিষ্ট হওয়া আবশ্রক। নলের মূলভাগ গোপ্তেছের ভায় করিয়া মূণের দিকে ক্রমানর ক্ষাকরিতে হইবে।

বিশ্বক্রিশার নলের পরিমাণ বোণীর বৃদ্ধান্থলির ভূলা ব্যাস নলিকার মূলে ছির রাখিয়া কনিষ্ঠান্থলীর ভূলা বাদে অগ্রভাগ শ্রেম্ভ করিবে এবং মূখ অভ্যন্ত মন্থণ অণচ বটিকার স্থার গোলাকার করিবে। নলিকার চতুর্থ ভাগে এরূপ ভাবে কর্ণিকা (গোকর্ণাদিবৎ) প্রস্তুভ করিতে হটবে, যে বস্তির ধ্যাকে নলিকার অপ্রমাণ ভাগ অভ্যন্তরে প্রবিষ্ট না হয় এবং মূলের দিকে ও চতুর্থ ভাগে বস্তিবন্ধনের নিমিত্ত ভূটটী কর্ণিকা প্রস্তুভ করিরা দিবে।

মৃগ, ছাগ, শৃকর, গো অথবা মহিষের মৃতকোববতি ধারা বস্তিকার্যা করিতে হইবে। সকল প্রকার বস্তিই ক্যারাদি প্রারারঞ্জিত করিরা লইতে হইবে এবং উহা মৃহ, সিগ্ধ, অধ্চ ল্চ হওরা আবস্তক। এপে বে বর্তিপ্রবোগ করা বার, ভাষার নল, লক্ষ ও অটাপুল পরিমিত, পরিণাকে গুএ পন্দীর নলিকার ভার এবং মুদ্দাকৃতি ছিন্তবিশিষ্ট প্রস্তুত্ত করিবে।

সমাক্ প্রকারে বল্তি প্রবৃক্তি, ছাইলে শ্রীরেপ্প উপচন্ন, বর্ণের উৎকর্ষতা, বল ও আরোগ্য এবং পরমান্ত বৃদ্ধি ছাইরা থাকে।
পীত ও বসন্ত কালে দিবাভাগে বেছবন্তি এবং গ্রীম্ম, বলা ও শরংকালে অনুবাসনবন্তি প্রয়োগ করিবে। অত্যন্ত বিশ্ব ক্রমান করাইরা অনুবাসনবন্তি প্রয়োগ করিবে না। ক্যারণ এক সমরে সেহভোজন ও অনুবাসন এই উভয় প্রকার কেহ সেবিত হাইলে মন্ততা ও মূর্জা জন্মে এবং অত্যন্ত কল্প ক্রমান ভোজন করিরাও অনুবাসন বিধের নহে, এইরূপ করিবে বল ও বর্ণের ছাস হইয়া থাকে। অত্যন্ত বিচল্প বৈভ মিন্ধ ক্রমা ভালন করাইরা অনুবাসনবন্তি প্রয়োগ করিবেন না।

বত্তি প্ররোগ করিতে হইলে প্রথমে মাত্রার উপর বিশেষ লক্ষা রাণিতে হইবে। কারণ হীনমাত্রার বত্তি প্রয়োগ করিলে তাহাতে কোন কল হর না এবং মাত্রা অধিক হইলে আনাহ, কান্তি ও অতীসার জন্মে।

অনুবাসনবস্থির শ্রেষ্ঠমাত্রা ৬ পল, মধ্যম মাত্রা ৩ পল এবং
নীনমাত্রা ২ পল। বে ক্ষেত্ব ধারা বন্ধি অবেরাগ ক্ষরিতে ভ্রতির,
পেই বেত্বের সহিত শলুফা ও লৈক্ষর চুর্গ মিশ্রিজ ক্ষরিরা দিভে
নহবে। ঐ চূর্ণের পূর্ণ মাত্রা ৬ মাবা, মধ্যম মাত্রা ৪ মাবা এবং
নীনমাত্রা ২ মাবা।

বিরেচনের পর বত্তি প্রয়োগ করিতে ছইলে ৭ দিন গত এবং শরীরে বলোপচর হইলে আহার করাইরা সায়ংকালে অঞ্ব-বাসন বত্তি প্রয়োগ করিতে হইবে। অঞ্বাসনক্রিরা করিতে হইলে রোণীর শরীরে তৈল মাখাইয়া অন্ধ অন্ধ উক্তঞ্জল হারা স্থান ও পরে ভোক্ষনাক্তে শতপদ গমন করাইবে। তৎপরে বায়, মৃত্র ও মলত্যাগ হইলে স্লেহবক্তি প্রয়োগ করিবে।

যৎকালে স্নেহবন্তি প্ররোগ করিতে হটবে, তথন রোগীকে বামপার্থে শরন করাইরা বামকল্যা প্রদারণ ও দক্ষিণকল্যা কুঞ্চিত করিরা গুজ্নেশে সেহ রক্ষণ করিবে; তৎপরে চিকিৎসক বন্তির মূথ পরেরা দক্ষিণ হত হারা গুজ্নেশে বোজনা করিরা নধ্যবেগে পীড়ন করিতে হটবে। ত্রিশ মাত্রাকাশ এইরপে পীড়ন করিতে হয়। ইহার অতিরিক্ত সমর কথন পীড়ন করা বিধের নহে। ব্যক্তিপ্রয়োগকালে কুন্তুগ, কাস ও হাঁচি প্রাকৃতি বর্জন করিবে।

এই প্রকারে ক্ষেত্র অন্তঃ প্রবিষ্ট চইলে একশন্ত বাক্য উচ্চারণ করিতে যত সময় লাগে, ততকণ রোগী উদ্ভানতাবে শরন করিরা থাকিবে। পূর্কেবে মাত্রা ও কালের বিবর বলিরাছি, ভাহার বিষয় এইরূপে বির করিতৈ হয়। অফীর জান্তর উপরি জন্পী দুট্কাইরা হাত গুরাইরা জানিতে বত সমরের আবশুক, দুসই পরিমাণ সময়কে একমাত্রা কহে। জ্বধা চকুর একবার নিমীলন ও উলীপনে বে সমধ্যের আবশুক বা জন্পুলিহারা তৃড়ি দিতে বা একটি,গুলবর্ণ উচ্চারণ করিতে বে সময় সাগে, সেই পরিমিত সময়ের নাম মাত্রা।

সুমাক্রণে বভিপ্ররোগ করা হইলে বভিবীর্থ সমত শরীরে শীল প্রসারিত হইবার কয় চিকিৎসক রোগীর ক্ষতবাহর ও বাহুছর তিনবার আকুঞ্জ ও তিনবার প্রসারণ করিবে। তৎপরে রোগীর কর্জন, পদতল ও কটিদেশ এই সকল হানে হত্ত হারা আঘাত এবং কটিদেশ ধরিরা শ্যাতে তিনবার নিক্ষেপ করিবে। পার্কিছর হারাও পূর্ববৎ শ্যার আঘাত করিবে। এইরূপে নির্হণ করিব করিবে বারীকে স্থশ্যাতে শরন ক্রাইলা নির্দ্রা আ্বর্ধব্যের কল্প বন্ধ করিতে হইবে।

অন্ধবাসন ক্রিয়ার পর যথপি বিনা উপদ্রবে ৰাষ্ ও মনের সহিত দ্বেহ সম্বর নির্গত হয়, তাহা হইলে ঐ ব্যক্তির অন্ধবাসন-ক্রিয়া সম্যক্রপে হইরাছে জানিতে হইবে। ঐরপে দ্বেহ নির্গত হইলে বলি ক্ষ্ধার উদ্রেক হর, তাহা হইলে সারংকালে স্থাসির জর বা লঘু দ্রব্য ভোজন করিতে দিতে হইবে। প্রদিন রোগীকে উঞ্জল বা ধ'লে ও ওজীর কাথ ক্রিয়া পান ক্রাইবে। এই নির্ম অন্থসারে ৬ বার, ৭ বার, ৮ বার বা ৯ বার দ্বেহবন্তি প্রয়োগ ক্রিয়া তৎপরে নিরহবৃত্তি প্রয়োগ ক্রিবে।

প্রথম বে বৃত্তি প্রয়োগ করা যায়, তদ্বারা মৃত্যাশন্ন ও বৃত্তেগ দিয়ে হয়। দিতীয় বারে নিরোগত বায়ু বিনষ্ট হয়, তৃতীয় বারে বল ও বর্ণের উৎকর্ষতা জব্মে এবং চতুর্থ বারে রস, পঞ্চমবারে রক্ত, বছবারে মাংস, সপ্রমবারে মেদ, অন্তমবারে অতি এবং নব্যবারে বৃত্তি প্রয়োগ দারা মক্ষা দিয় হইরা থাকে। অন্তমদাদিবল পর্যান্ত বথাবিধি বৃত্তি প্রয়োগ করিলে শুক্তরত দোব প্রশাসিত হয়। প্রতি অন্তম্যান্ত দিবদ অন্তর্ম বে ব্যক্তিবানিয়মে বৃত্তিক্রিয়া করে, সেই ব্যক্তি ইন্তীর ভার বলবান, অব্যের তুলা বেগবান এবং দেবতুলা প্রভাববালী হয়।

ক্ষতা ও বারুর প্রকোপ থাকিলে প্রতিদিন দেহবন্তি প্ররোগ করিবে, কিন্তু অক্তান্ত ক্লে অধিমান্দা হওরার আশকা থাকার তিনদিন অন্তর বন্তিপ্ররোগ কর্ত্তবা। কল্ম ব্যক্তিদিগের অর-মাত্রার দীর্থকাল ক্ষেহ প্রধান করিলে বেমন কোন অনিষ্ট হন্দ্র না, ভক্রণ স্থিত ব্যক্তিদিগকে অন্তর্মান্তার নিরহ বন্তি প্রেরোগ করিলেও কোন অপকার না হইরা বিশেব উপকার হইরা থাকে।

ৰ্ত্তিপ্ৰবোগ করিলে বছপি উহা সমাক্রণে অভান্তরে

আবেশ না করিলা আলোগনাজ্ঞই বহিনত ইইলা বাল, ছৈবে পুনর্কার পূর্কমাত্রা হইতে জলমাত্রার প্রয়োগ করিবে।

বমন বিরেচনাদি ছারা যদি দেহ শোধন না করিয়া জন্মবাসন বজিপ্রয়োগ করা হয়, তাহা হইলে ঐ দেহ মলের সহিত সংযুক্ত হইয়া বহির্গত না হইলে শরীরের অবসরতা, উদরাধান, শূল, বাস এবং পকাশরের গুরুত্ব উপস্থিত হয়, এইস্কপ অবস্থার নিরহবত্তি কিংবা তীক্ষ ঔবধ সহযোগে তীক্ষ ফলবর্ত্তি প্রয়োগ করিবে। বায়ুর অন্থলোম্কারক, মলশোধক, অথক সিম্মকারক এরূপ বিরেচন এবং তীক্ষ নতাও এই অবস্থার প্রাশন্ত।

সেহবন্তি নির্গত না হইলে যদি কোন প্রকার উপদ্রব না ঘটে, তাহা হইলে ক্লমতা প্রযুক্ত উহা নির্গত হর নাই, ব্রিতে হইবে। অতএব তৎকালে কোনক্রপ প্রতীকারের চেটা করিবে না। এক অহোরাত্র কাল অপেক্ষা করিয়া দেখিবে, যদি তর্বাধ্যে সেই নির্গত না হর, তবে সংশোধক ঔবধ ছারা দোবের শান্তি করিবে। কিন্তু মেহ নির্গত করাইবার জন্ম পুনর্কার মেহ প্রয়োগ করিবে না। এইক্রপ মেহপ্রয়োগে বিশেষ অনিষ্ট ঘটিয়া থাকে। গুলঞ্চ, এরও, পৃতিকর্ম, বামনহাটী, বাদক, কতুণ, শৃত্মূলী, বিশৌও কাকম্মকা এই সকল প্রত্যেকে একপল; যব, মাষকলাম, মিনা, বদরীও কুলখ কলার এই সকল প্রত্যেকে ২ পল, এই সকল দ্রব্য একত করিয়া চারি দ্রোণ জণছারা সিদ্ধ করিয়া এক লোগ (৬৪ সের) অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ভদ্মারা ১৬ সের তৈল পাক করিবে। কছার্থ জীবনীয়পণের ঔবধ প্রত্যেক ২ পল, করিয়া গ্রহণ করিবে। এই তৈল ছারা অহ্বাসনবন্তিপ্রয়োগ করিলে সকল প্রকার বাতম্ব রোগ বিনষ্ট হয়।

প্রমূপযুক্ত নদাদি দ্রব্যধার। বন্ধিক্রিয়ার দোবে বছবিধ রোগ জন্মে, এইজন্ত বিশেষ সাবধান হইয়া বন্ধিক্রিয়া করিবে। স্লেছ পানে আহারাদির যে ব্যবস্থা আছে, ইহাতেও সেই ব্যবস্থাত্ব-সারে চলিবে।

নিরংবত্তি—নিরংবত্তি কারণভেদে বছ প্রকার। ইছ।
দোব ও ধাতুসমূহকে বথাখানে স্থাপন করে বলিয়া উহার এক
নাম আস্থাপন। নিরহবত্তির শ্রেষ্ঠ মাত্রা ১।• প্রস্থ (আড়াই
সের) মধ্যমমাত্রা > প্রস্থ (তুই সের) হীনমাত্রা দেড় সের।

বে ব্যক্তি অভাস্ত খিড, উৎক্লিষ্ট দোবসম্পন্ন, উরঃক্ষত-রোগাক্রান্ড, রুশ এবং উদরান্মান, বমি, হিন্ধা, অর্শ, কাস, শ্বাস, গুরুরোগ, শোথ, অভীদার, বিহুচিকা, কুঠ, মধুমেহ ও জলোদরাদি রোগাভিত্ত ব্যক্তি ও গর্ডবভী স্ত্রীকে আস্থাপন প্রবােগ করিবে না।

বে ব্যক্তি বাতব্যাধি, উদাবর্ত্ত, বাতরক্ত, বিষমজন্ন, মুদ্ধ্যি, ছুঞ্চা, উদন, আনাহ, মূত্রকৃত্তু, অসমী, বৃদ্ধি, অস্তব্দন, মন্দান্তি,

জীমেন, শূন, ক্ষমণিত এবং ক্ন্রোগাক্রান্ত, এই সকল ব্যক্তিকে যথাবিধানে নিরুহবন্তি প্রয়োগ করিবে।

বায়ু, মল ও মূত্র পরিত্যাগের পর ক্ষেহাতাল ও উক্ত জলে লান করাইরা কৃষিত অবস্থার (আহার না করাইরা) মধ্যাক্ষালে গৃহ মধ্যে রাখিরা বখাযোগ্য নির্দ্ধণ প্রায়োগ করিবে।
নির্দ্ধনতি সম্যক্ প্ররোজিত হইলে উহার বহিনিঃসরণ প্রতীক্ষার মূহুর্ত্তকাল উৎকট ভাবে উপবেশন করিবে। যদি মূহুর্ত্তকাল আন্তেও বহির্গত না হয়, তাহা হইক্লে শোষক ঔষধ বা ক্ষার, সূত্র, আয় ও সৈদ্ধব হারা পুনরার নির্দ্ধবিত প্ররোগ করিবে।

কক, পিত্ত, বারু ও মল ক্রমাণ্য বহির্গত হইয়া শরীর পণু
হইলে তাহাকে প্রনিরহ বলা যার এবং যাহার বিত্তবেগের
আরতাহেতু মল নিঃসারণ না হইরা মূররোগ জড়তা ও অকচি
উৎপার হয়, তাহাকে ছর্মিরহ কহে। আফাপন ও মেহ বন্ধি
সমাক্ প্রযোজিত হইলে বন্ধিয়ার প্রক্রিপ্ত উষধ নিঃসরণ,
মনজন্তি, দেহের অ্বিতা ও বাাধি প্রশমিত হইয়া থাকে। এই
নিরমে ছইবার, তিনবার বা চারিবার যথোপযুক্ত বিবেচনা
ক্রিরা পণ্ডিতগণ নিরহবন্তি প্ররোগ করিবেন।

নিরহবন্তি বায়ুরোগে উষ্ণ রেছের সহিত একবার, পৈতিক ব্যাধিতে উষ্ণ হয়ের সহিত ছইবার এবং লৈমিকরোগে উষ্ণ ক্ষায়, কটু ও মুরাদির সহিত তিনবার প্রয়োগ করিবে। উক্ত প্রকারে নিরহ বন্তি প্রদান করিয়া পৈতিক ব্যাধি সম্পরকে হয়, লৈমিক ব্যাধিসম্পরকে ধূব ও বায়ুরোগসম্পরকে মাংস-রদের সহিত ভোজন ক্রাইয়া পরে অমুবাসন প্রয়োগ করিবে।

স্থকুমার, বৃদ্ধ এবং বালকদিগের পক্ষে মৃত্বত্তি হিতকারক, ইহাদিগকে তীক্ষ বন্তি প্রয়োগ করিলে উহাদিগের বল ও পরমান্ত্র হ্লাস হর। প্রথমে উৎক্লেশন বন্তি, মধ্যে দোবহর বন্তি এবং পশ্চাৎ সংশমনীয় বন্তি প্রয়োগ করা বিধের।

উৎক্রেশন বন্ধি—এরগুবীল, ঘটিবধু, পির্নানী, সৈদ্ধন, বচ, এবং হন্বাঞ্চলের কন্ধ নারা নে বন্ধি প্রামোগ করা বার, তাহাকে উৎক্রেশন বন্ধি কহে। দোষহর বন্ধি—শতমূলী, বন্ধিমধু, বিশ্ব এবং ইন্দ্রেশন, এই সকল দ্রব্য কাঁজি ও গোস্ত্রের সহিত সংস্ক করিরা বে বন্ধি প্ররোগ করা বার, তাহাকে দোবহর বন্ধি কহে। সংশমনীরবন্ধি—প্রিরম্পু, বৃদ্ধিমধু, মৃত্তক ও রসাঞ্জন; এই সকল দ্রব্য ক্রের সহিত মিলিত করিরা যে বন্ধি প্রয়োগ করা বার, তাহাকে সংশমনীর বন্ধি কহে। সেখনবন্ধি—ক্রিকণার কাথ, গোস্ত্র, মধু এবং ব্যক্তারের সহিত উষণাদিগণের চুর্ণ প্রক্রেশ দিরা তন্থারা বে বন্ধি প্ররোগ করা বার, তাহাকে সেখন-বন্ধি কহে।

वुरह्णविक-नुरह्णम्यातात्र काथ ७ कीवमीत्रशालत करकत

সহিত ছক্ত ও মাংসরস মিলিভ করিনা ভশানা বে বক্তি প্রয়োগ করা বার, ভাহার নাম রুংগবন্তি।

পিছিলবতি ভূমিকুয়াও, নারদী, বহবারক এবং শার্রদী পুলোর অন্থ্য এই সকল এবঃ প্রথম সহিত সিদ্ধ করিবা বধু ও রক্ত মিলাইরা যে বতি প্রয়োগ করা বার, তাহাকে পিছিল বতি কহে। ছাগ, সেব ও ক্ষুণার ইহাবের রক্ত প্রহণ করিতে হর। ইহার মাঞা বালশাল অর্থাৎ দেড় সের।

নিরহবন্তির থেক প্রস্তুত বিধান—প্রথমে ২ তোলা সৈত্বৰ ও চারিপল মধু একত্র আলোড়ন করিয়া পরে ৬ পল ক্লেক, ছুইপল কল ক্রব্য, আটপল কাথ এবং চারি পল প্রক্রেপর ক্রব্য এই সকল একত্র মন্থন করিয়া তত্মারা নিরহবন্তি প্রদান করিবে, উক্ত প্রধানীতে প্রস্তুত সামগ্রীর পরিমাণ সর্কাসমেত ২৪ পল হইবে!

বাতৰভ বোগে চারিপল মধু ও ছর পল দেহ, পিছৰরোগে চারিপল মধু ও তিনপণ দেহ এবং কফলরোগে ৬ পল মধু ও চারিপল দেহ বারা নিরহবন্তি প্ররোগ করিবে।

মগুণৈভাকবন্তি—এরও কাথ ৮ পান, মধু ও তৈল উভর মিলিত ৮ পান, শানুফা আর্দ্ধপান এবং সৈত্বৰ আর্দ্ধপান এই সক্ষল জব্য একতা করিরা একটা কাঠ থও বারা সমাক্ আলোড়ন করিয়া বে বন্তি প্রায়োগ করা যার,তাহাকে মধুতিলক্ষকি করে। এই বন্তি দারা মেদ, গুলা, কুমি, মীধা, মন ও উদাবর্ত্ত নত্ত এবং শরীর উপিন্তি, বল, বর্ণ, গুক্র ও আরি ধি ইইরা থাকে।

বাপনবন্তি—মধু, দ্বত ও প্রশ্ব প্রতোকে গুইপল এবং হবুবা ও দৈশ্বব প্রত্যেকে গুই তোলা পরিমাণ গ্রহণ করিয়া সমস্ত একর উত্তমরূপে আলোড়ন করিয়া বন্ধি প্রব্যোগ করিবে, ইছাকে যাপন-বন্ধি করে।

বুক্তরখোৰজ্বি — এরগুমুলের কাব, মধু, তৈল, দৈকব, বচ এবং লিয়লী এই সকল একত্ত করিয়া তন্থায়া বে বজিপ্রয়োগ করা যায়, ভাষাকে সুক্তরখোবজি কৰে।

সিঙ্কবিত্ত —পঞ্চমুলের কাথ, তৈল, শিল্পলী, মধু, সৈন্ধব এবং ঘটি মধু, এই সকল একত্র করিয়া বে বতিপ্রয়োগ করা নায়, ভাহাকে সিঙ্কবিত্ত করে।

নিত্রহৰত্তি প্রবোগের পর উষ্ণজলে স্থান করিবে, দিবানিজা, ও স্থানীর্গজনক দ্রব্য পরিত্যাগ বিধের।

উত্তরবন্তি — উত্তরবন্তিনল ১২ আছুল দীর্ঘ হইবে এবং ঐ
দলের মধ্যদেশে একটা কর্ণিকা (পোকর্ণাদিবং) প্রান্তত করিবে।
নলের অপ্রভাগ মালভীপুশের বৃত্তের ভার এবং ছিন্তটী এরপ
হওরা আবক্তক বে, ভাগার মধ্যদিরা একটা সর্বপ নির্বাত
হুইতে পারে।

প্রিল বংসরের ন্মী বরক ব্যক্তির পক্ষে ক্রেছের মাত্রা ৪ তোলা এবং তদ্র্ভ্জ ব্যক্তির পক্ষে মাত্রা ৮ তোলা নির্দিষ্ট ইইরাছে। ব্রোণীকে প্রথমে আহাপন হারা শোধন করিয়া লান করাইবে, তংপরে তৃত্তির সহিত তোলন কুরীইরা আসনোপরি লালু পাতিরা বসাইবে, তংপরে লেহসিক্ত ললাকা হারা প্রথমে অবেবণ করিয়া পাতাৎ ত্বতান্তিক নল লিলমধ্যে ধীরে ধীরে প্রবেশ করাইবে। তথ্যক্রিকা পরিমাণ প্রবিষ্ট ইইলে ব্যিপীড়ন হইবে, পরে ধীরে ধীরে নল বাহির করিয়া লইবে। তৎপরে লেহ প্রত্যাগত হইলে ক্রেহবিয়র বিধানান্ত্রপারে ক্রিরা করিবে।

ত্রীলোকদিগের অস্ক দশ অসুলি দীর্ঘ এবং কনিষ্ঠাসুলির স্থার দুল করিয়া নল প্রান্ধত করিবে, উহার ছিন্তানী একটা মূলগ প্রাবেশের উপায়ক করা কর্তব্য। ইহা অপথ্য পথে চারি অস্কৃত প্রমাণ এবং মূত্রক্ষজ্বের জন্ত ভদন্তরূপ করা নল প্রান্তত করিয়া ২ অকুলি প্রমাণ প্রবেশ করাইয়া বস্তিপ্রেরাগ করিবে। বালকদিগের মূত্রক্ষজ্বেরাগে এক অসুলি প্রমাণ নল প্ররোগ করিবে। চিকিৎসক স্থাদিগের যোনি মধ্যে আত্তে আত্তে ক্ষে নল প্রবেশ করাইবেন যেন উহা কম্পিত না হয়। নলের আক্রতি মালতী প্রশের বৃদ্ধবৎ হওরা আরক্তক। গর্ভাশর শোধনের নিমিত্ত মেহ চুইপল এবং মৃত্রক্ষজ্ব এক পল পরিমাণে প্রয়োগ করিবে।

দ্রীদিগকে উত্তরবন্তি প্রয়োগ কবিতে হইলে প্রথমতঃ উত্তান-ভাবে শয়ন করাইরা জাত্বয় ডভোলন করিয়া বন্তিপ্রয়োগ করিবে। ঐ উত্তরবন্তির বছাপি বহিনিঃসরণ না হয়, তাহা হইলে পুনর্কারে সংশোধক দ্রব্য সহযোগে বন্তি প্রদান করিবে। জাথবা বোনিমার্গে মৃত্রনিঃসারক জাথচ লিম্ম সংশোধক দ্রব্য-সংযুক্ত দৃঢ় কলবন্তি প্রয়োগ করিবে।

বন্ধিক্রিয়া ছার। কোন ছানে দাহ উপস্থিত হইলে ক্লীরি-রুক্তের কাথ ও শীতণ জল ছারা পুনবার বস্তি প্রয়োগ করিবে। বন্ধিপ্রয়োগ ছারা পুকবের শুক্রদোব এবং ত্রীদিগের আর্ত্তব দোষ বিনট হর, কিন্তু প্রমেহরোগাক্রোক্ত ব্যক্তিকে কথনও উত্তর বন্ধি প্রয়োগ করিবে না। (ভারপ্রত পূর্ক্থে)

[স্থশতোক নির্মাহবন্তির বিষয় নির্মাহবন্তি শব্দে দেখ।] বস্তিক (পুং) বন্তি শোধনে দণ্ডভেদ।

'বন্তিকঃ শলাৰওসজৌ শিথিলন্তকোছরণে শলাং বন্তিমধ্যে সক্ষতি দণ্ডমাত্রং নিঃসরতি। অভে বন্তক ইতি পঠিছা শূলঘটিত ইতি বাচপুঃ। (ভারত জোণপর্ক টীকায় নীলকণ্ঠ)

विश्वकन्त्रम् (ज्ञी) विष्णानकार्यः।

বস্তিকশ্মাত্য (গং) বন্ধিকশ্বণা ডচ্ছোধনব্যাপারেণ আতঃ। বন্ধিশোধনে এবান্ধ প্রচুরকার্যকরম্বাৎ তথামং। অনিষ্ট চুক্ক, চলিত ভূরিটা। 'অরিষ্টো বজিকর্মান্ডো বেশীরঃ কেনিসরঃ কুনঃ।' (শক্ষচজিকা)
বিত্তিকুগুলিকা (ত্রী) মৃত্রামাত রোগভেদ। ইহার লক্ষণ
ক্রতবেগে পথগমন, পরিশ্রম, অভিষাত ও পীড়ন বারা মৃত্রাশর
বহান হইতে উর্জগত হইরা গর্ভের স্তার স্থুলাকৃতি হইলে শূল,
ক্রান্দর ও লাহের সহিত অর অর মৃত্র নির্গত হর। নাভির অধোদেশে পীড়ন করিলে ধারাবাহিকরূপে মৃত্র নির্গত হর, মৃত্রাঘাতরোগে এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পাইলে তাহাকে বত্তিকুগুলিকা
কহে। এই রোগে প্রারই বার্র আধিকা থাকে। ইহা শক্র ও
বিষের স্তার ভরতর। এই রোগ উৎপন্ন হইবামাত্রই
বিশেষ স্থাতিকিৎসক বারা চিকিৎসা করা কর্তব্য। এই রোগে
পিত্তাধিকা হইলে দাহ, শূল ও বিবর্গ হয়। কফাধিকা হইলে
দেহের গুরুতা ও শোগ, সিন্ধ, শ্বতবর্গ অথচ গাঢ়মৃত্র নির্গত
হইরা থাকে।

বস্তিক ওশিকা রোগে যদি বস্তির মুথরন্ধ কফ কর্তৃক আবৃত কিংবা বস্তিতে পিত্ত সঞ্চিত হয়, তাহা হইলে অসাধ্য হয়। যদি এই রোগে বস্তির মুথরন্ধ কফ কর্তৃক আবৃত ও বস্তি মধ্যে বায়্ কুওলীভূত হইয়া অবস্থিতি না করে, তাহা হইলে সাধ্য হয়। বস্তি মধ্যে বায়্ কুওলীভূত হইয়া অবস্থিতি করিলে রোগীর পিপাসা,মোহ ও শাস উপস্থিত হয়।

(ভাবপ্র° মূত্রাঘাত রোগাধিক°)

বস্তিবিল (ক্লী) বন্ধিবার, মূত্রবার। (ক্ষপ্° ১।৩৮) বস্তিমল (ক্লী) মূত্র। (হেম)

বস্তিবাক্ত (পুং) স্থনামধ্যাত বাতৰাাধি রোগভেদ। লক্ষণ—
"মাহুতেহন্নগুণে বস্তৌ মূত্রং সমাক্ প্রবর্ততে।

বিকার। বিবিধাশ্চাপি প্রতিলোমে ভবন্তি হি ॥" (মাধব্নি°) বে বাতব্যাধি রোগে বায়ু বিশুণ হইরা বন্তিদেশে মূত্র সম্যক্রণে প্রবৃত্তিত করে এবং প্রতি লোমকুণে বিবিধ প্রকার বিকার উপস্থিত হয়, তাহাকে বন্তিবাত করে।

বস্তিশীর্ষ (क्री) প্রত্যঙ্গ বিশেষ, বন্ধির উপরিভাগ।

(চরক শারীরহা° ৭ 🖦°)

বস্তিশূল (क्री) বন্ধিবেদনা, ৰন্ধিদেশে অভিশন্ন বেদনা হইলে ভাহাকে বন্ধিশূল কহে। (মাধবনি°)

বস্তিশোধন (রী) > মদনফল। ২ বস্তিশোধক দ্রব্যান্ত, যে এবা হারা বস্তিদোব প্রাশমিত হয়, তাহাকে বস্তিশোধন কছে। ৩ মদনকুক্ষ।

বস্তু (ক্নী) বসতীতি ৰস (বসেন্তন্। উণ্ ১।৭৬) ইতি তুন্। ১ দ্ৰবা।
শগৃহেৰু লাৱেৰু হুতেৰু ৰন্ধুবু
দিলোৱনতক্ষনবাদিবতকু।

অক্ষর রক্ষাভরণামরাদি

ব্দনন্তকোবেশকরোদসন্মতিম্ ॥'' (ভাগবত ৯।৪।২৭)
২ পাত্রভত।

"অবন্ধায়ত্তা" বসূব্রত্ত জেলা হি বস্তু পৃথিত। প্রাদীদতি। (রযু ৩২৭)

ৈনরারিকদিগের মতে—পরিদৃশুমান জগতে ছই প্রকার বস্তু আছে, ভাব ও অভাব।

"ৰগতি বস্তবয়ং ভাবোহভাবন্ট" (স্থায়শান্ত্ৰ)

বেদান্তদর্শনের মতে জগতে বন্ত এক, সচিদানক্ষ অধর ব্রহ্মই বন্তু, ব্রহ্ম ভিন্ন আর বন্তু নাই। অজ্ঞানাদি কড়সমূহ অবস্তু।" (বেদান্তসার) ৫ কার্যা।

"বস্তম্পক্ষেয়ু সমুশুমণেতং শক্ষেয়ু মোহাদসমুশ্বমণত। শক্যেয়ু কালেন সমুগ্ৰমণত ত্ৰিধৈব কাৰ্য্যবাসনং বদন্তি॥" (কামন্দকীয় নীতিসার ১৫।২৫)

অর্থ। (কুমার এ৬৫ মিলনাথ) ৬ ইতিরক্ত। "অহমস্তাং কালিদাসএথিতবন্ধনা নবেন গোটকেনোপত্বাস্তে"
(বিক্রমোর্কশী) ৬ বৃত্তান্ত। ৭ সংপাত্র। ৮ সতা।

বস্তুক (ক্নী) বন্ধ সংজ্ঞারাং কন্। বাজুক শাক, চলিত বেতোশাক। বস্তুকী (ক্নী) বন্ধক গৌরাদিখাৎ জীব্। খেড চিল্লীশাক। (রাজনি°) বস্তুত্তস্ (অবা) বন্ধ-ভদিল্। ফলতঃ, বাত্তবিক, বংগার্থতঃ। বস্তুতা (ত্ত্রী) বন্ধ ভাবে তল্টাপ্। বন্ধর ভাব বা ধর্ম,

বস্তুধর্ম (পুং) বন্ধর ধর্ম, বন্ধ ।

বস্তুপাল (গুং) স্থবাট্রের একজন প্রসিদ্ধ জৈনকবি।

वञ्चवल (ही) वस्त्र छन।

বস্তভাব (পুং) বস্তর ধর্ম বারূপ

বস্তুভেদ (গং) বন্ধর প্রকার।

বস্তুবিচার (পৃং) বন্ধর গুণ নির্দারণ।

বস্তুবিবর্ত্ত (ক্লী) বেলান্তমতে বাথার্থ্যের বিবর্ত্ত ।

বস্তুশক্তি (ত্রী) বস্তুর শক্তি, দ্রব্যের শক্তি, 'নহি বস্তুশক্তি-র্ত্তব্যস্তশমপেকতে' (ভাগবত ১০ম হঙ্গে স্বামী)

वखनामन (है) वडनिर्वतः

वञ्चन्य (बि) जवाहीम।

বস্তৃত্থাপন (क्री) ভোজবাজীতে বছর রুগান্তরকরণ।

वस्तुभमा (बी) উপमानकात्राज्य ।

XVII

"রাজীবনিব তে ৰজুং নেত্রে নীলোৎপদে ইব।"

(कावानर्न) [जनमा (तृप]

বস্ত্য (নী) বস-জিন্ ৰভিৰ্বাসজ্জাং সাধু ৰভি ইভি বং। (তত্ৰ সাধু:। পা ৪।৪।৯৭) গৃহ। জমর।

বস্ত্র (রী) বস্ততে আচ্ছাছতে জনেনেতি বন আচ্ছাননে ট্রন্
(সর্বধাতুতাঃ ট্রন্। উণ্ ৪।১৫৮) পরিধানাবির, উপত্তল
কার্ণাসপ্রাদি প্রস্তাভ বস্তু, চলিত কাপছ। পর্যার—আচ্ছানন,
বাসন্, চেল, বসন, জংগুক, (অনর) সিচর, প্রোত, লুক্তক,
কপট, খাটক, কলিপ্র, (কটাধর) বাসন, বিচর, ছাল,
বাস। (শলরক্তা॰) ধর্মাগ্রকার তৃথ বল্লের পরিধানবিধি
নব্দে বলেন, বিকক্ষ অর্থাৎ একেবারে মৃক্তকচ্ছেও কভকটা
কুক্তকচ্চ, উত্তরীয়হীন, অর্থ উলক্ষ বা একেবারে উলক্ষ হটর।
কোন প্রোত কিংবা দ্বার্থকর্দে লিপ্ত হইবে না।

"বিক্লোহযুদ্ধরীয়ত নগতাবস্ত্র এব চ।

লোতং আৰ্ডং তথা কৰা ন নগান্চিত্তদেদশি 🖫 (ভৃগু)

পরিধানের বাহিন্ন দিরা বদি কক্ষ নিবন্ধ থাকে, তবে তাহা আহারী প্রথা হইরা পড়ে, তাই সম্পূর্ণ সংবৃতক্ষ হওরাই উচিত। "পরীধানাধহিং কক্ষা নিবন্ধ ছাহারী তবেং।" (স্থতি) বৌধারন মতে, বামদিক্, পৃষ্ঠ এবং নাজি, এই তিনটী হানে তিনটা কক্ষ, এই কক্ষ তিনটা বধাবধ ঠিক করিরা দিরা বে বাদ্ধণ বন্ধ পরিধান করেন, তিনি গুচি হইরা থাকেন।

"বামে পৃঠে তথা নাভৌ কক্ষরস্বাহতম্।

এতিঃ ককৈঃ পরীধত্তে বো বিঞাং স শুচিঃ শ্বতঃ॥"(বৌধারন)
প্রচেতা বলেন, যে বন্ত নাতিদেশে পরিলে ছই দিকের
জাত্ত্বর পর্যান্ত আচ্ছাদিত হয়, তাহার নাম অন্তরীর (ইজের)
এই বন্ত প্রশান্ত বন্ত । ইহা অভিনির হওরা আবশ্রক।

"নাভৌ খৃতক বংগ্রমাজাদরতি লাহনী।

অন্তরীরং প্রদক্তং তদক্ষিরসূভরোরপি॥" (প্রচেডাঃ)

দ্বতিশালে আছে, "দশা নাজৌ প্ররোজনেং। নতাং কর্মণি কঞুকীতি। উত্তরীরধারণং চোপবীতবং।" অর্থাৎ দশা বা বত্র-প্রান্ত-ভাগ নাভিদেশে গুজিয়া দিবে। কঞুকী হইরা অর্থাৎ কোনরূপ পিরান বা জামা গারে দিরা কোন বিহিত কর্ম করিবে না, কর্মকালীন উপবীতবং পবিত্র উত্তরীয় ধারণ করিবে। (১)

পূর্কোক্ত ভৃগুর বর্ণনাত্মসারে বৃথিতে বইবে, সকলেরই চুই চুই বন্ধ অর্থাৎ পরিধেয় ও উত্তরীয় ধারণ কর্তব্য। পারন্ধর বলেন,

⁽১) "বৰা বজোপৰীতক ধাৰ্বাতে চ বিজ্ঞান্ধনৈ: ৷ তথা সৰাৰ্বাতে বস্থাপ্ৰসাক্ষানৰ গুৰুষ্ (বৃতি)

বৃদি একখানি বৈ কাপড় না থাকে, আবে ডাহার একদিক্ পরিধান এবং অপর দিক উত্তরীয় করিয়া লইবে।

বছধারণের ৩৭, — মির্দ্ধন ক্ষমর ধারণে কামোকীপন, প্রশংসালাভ, দীর্ঘায়, ক্ষমনীমাশ এবং আত্মপ্রসাদ হয়। উহাতে দেহের নৌন্দর্যাও সভ্যস্থাল-ব্যব্দের বোগাভা ক্ষম।

"कामार वनश्रमाद्वामनश्रीहर अव्वंगम्।

ख्येमर পরিষদং শক্তং নির্বাচনবর্গান্তবন্ধ a" (রাজবন্ধ)

লানের পর উত্তযক্ষণে বজের সাহায়ে গাত্র মার্জন করিতে হব। তাহাতে দেহকাভি প্রকাশ পার এবং দেহের নানা কণ্ডু-দোব দ্রীভূত হইরা যায়। সকল রকম কোবের বজ্র অর্থাৎ পট্টবন্ত বা তসর বন্ধ, অথবা বিবিধ চিত্রবন্ধ ও রক্তবন্ধ, নীতকালে ব্যবহার করা উচিত, কারণ উহাতে বাত ও প্রেয়কোপ প্রশাসত হব। পবিত্র প্রশীতকালার বন্ধ পিত্তহর, স্কৃতরাং উহা গ্রীমনকালে ব্যবহার করাই করিছে। এই বন্ধ বত লঘু হর, ততই উত্তয়। শীতাতপমিবারণে গুরুবন্ধ গুডুর এবং উচ্চও নর, নীতও নর এইরপ বন্ধ বর্ধার ব্যবহার্য। মানুষ মলিন বসন কথনই ধারণ করিবে না, উহাতে কণ্ডু ও কৃমি কল্পে এবং উহা গ্রানিকর ও লন্ধীতাগাহর। •

অথবাগে বস্তাদি দর্শন একার ওভগ্রদ। কয়া, গুরুবত্র পদ্মিধারী গৌরবর্ণ তেকাক্ষ্ বিযুত ছোট ছোট বালক, ছত্র, দর্শণ, বিব ও আমির এবং গুরুবর্ণ সুস্পরাশি, বস্ত্র ও অপবিত্র আলেপন সংগ্ল এই সকল বন্ধ দর্শনে আয়ু, আরোগ্য এবং ক্রবিত্ত লাভ হইরা থাকে।

"কভাং কুমারকান্ গৌরান্ গুরুবন্তান্ স্থতেজসং।
বং পশ্চেরততে যো বা ছ্রাদশবিবাদিবম্ ॥
গুরুাঃ স্থানলো ব্রুদ্মেধ্যালেপনং কলম্ ॥
বঞ্চ ভালাছ্রারোগাং বিস্তং বহু চ সোহস্কুতে ॥"

(বাভট শারীরস্থান ৬ আ:)

নববন্ধ পরিধান করিছে হইলে শান্তাছ্সারে দিন দেখিয়া লইতে হয়। অশান্তীয় দিনে বস্তব্যবহারে প্রভাবায় আছে। জ্যোতিস্তব্যে দেখিতে পাই, নিজের জন্ম নক্ষত্রে ও অন্ধ্রাধা বিশাধা, হঞা, চিক্রা প্রভৃতি ক্তিপন্ন বিহিত নক্ষত্রে এবং ইহা ভিন্ন বৃহস্পতি, শুক্র ও ব্ধদিনে বা কোন উৎসব ব্যাপারে নব বসন ধারণ বিধেয়।

"একাম্বরাধবম্বতিব্যবিশাধহত্তচিত্রোভরাগ্লিপবনীদিভিরেবতীবু।
কল্মক জীববৃধগুক্রদিনোৎসবাদৌ
ধার্য্যং নবং বসনমীধরদেবকুটো॥" (জ্যোভিক্তভ্ব)

দিন না দেখিয়া যে কোন দিনে নৰবন্ত ধারণে নানা অমকল যটে, আর বিছিত দিনে নব বসন পরিধানে উহার বিপরীত কল অর্থাৎ মকলগাত অবগ্রস্তাবী। কর্মলোচনে লিখিত আছে, রবিবারে নববসন ধারণে অয় ধন, সোমে রণ এবং মকলে সতত নানা ক্লেশ হর। অক্তদিকে বিহিত দিনে অর্থাৎ বৃধ, বৃহস্পতি ও গুক্রবারে নববন্ত ধারণে বথাক্রমে প্রভূত বন্তলাত, বিভা ও বিভসমাগম এবং নানা ভোগ ক্ল্প, প্রমোদ লয়া ও বরালী সঙ্গ ঘটে। এতিক্রিম শনিবারে নববন্ত কিছুতেই ব্যবহার করিবে না, কারণ, ঐ দিনে নববসন পরিধানের কল রোগ, শোক ও কলহ বিত্য সহচর।

"কুৰ্য্যে চাৱধনং প্ৰণঃ শশিদিনে ক্লেশঃ সদা ভূমিজে।
ৰক্ষাণাং বছতা বুধে ক্লয়গুরে) বিদ্যাগমঃ সম্পদঃ।
নানাজ্যোগ্রুডঃ প্রমোদশ্বনং দিব্যাক্ষনা ভার্গবে
শৌরে স্থাঃ থকু রোগদোককলহা বস্তে গ্রুডে নৃতনে ॥"

মলিন বদন পরিষার করিতে হইলে উহাতে ক্ষার সংযোগ আবশুক। এই ক্ষার সংযোগ করিবারও আবার দিনাদিন দেখিরা ক্ষতে হর। কারণ নিবিত্ত বিনে ক্ষারসংযোগে বরুষামীর সপ্তকুল মার হইরা থাকে। বজ্ঞে ক্ষারসংযোগের নিবিত্ত দিন বথা,—শনি ও মদল, বন্ধী ও ভাদনী এবং তত্তির বে কোন আত্ত বিন।

"মন্ধ-নদল-বর্তীর্ বাদপ্রাং প্রান্ধবাদরে। বত্রাদাং করিকংবোগো দহত্যাসপ্তমং কুলম্ ॥"

বরাহমিহিরের বৃহৎসংহিতার লিখিত আছে, ব্রের কোণ সমূহে দেবগণের এবং উহার দশান্ত ও পাশান্ত মধ্যে নরগণের বাস। অবশিষ্ট তিন অংশে নিশাচরগণ বাস করে। নব বসন বা প্রাতন বসন বহি মধী, গোমর বা কর্মনে লিগু হর, কিংবা হিম গ্রেমণ্ড বা ক্ষুটিত ইইবা বার, তবে স্থুপ্ত ওত বা অওত ফল

(শাহিকাচারডৰ)

 [&]quot;প্রতিস্থানন্তরং সন্তব্যেশ ততুরার্জনর ।
 কাজিএবং শরীরক্ত ককু হারোবরাশনান্ ।
 ক্রেবরং চিত্রব্যাক রক্তরার তবৈব চ ।
 বাজ্যেব্যবং তেলু শীতকালে বিধাররেব ৪"
 কোবেরং পটালরং কারারং ব্যানুহাতে ।
 ত্রোরংগ্রুক কালে তত্তাপি লগু শক্ততে ।"
 কারারং কোকটাভি লোকে । কারাররাররক্ত্রের রা ।
 কারারং কোকটাভি লোকে । কারাররাররক্ত্রের রা
 কারারং কোকটাভি লোকে ।
 কারারং কোকটাভি লোকে ।
 কারারং কার্বর্যাক ব্যান্তব্যান্
 ব্যান্তব্

আর, আরতর বা অধিক হওরার সম্ভাবনা। উত্তর বন্ধ ঐরপ হইলেও উত্তরূপ শুভাওত ফল ঘটিরা থাকে। বারের বৈ ভাগ রাক্ষসাধিকত ভাহা ঐরণ হইলে রোগ বা মৃত্যু ঘটে। মমুষ্য-ভাগ ঐরপ হইলে পুত্র জন্মেও তেলোর্ছি হর এবং দেবভাগ ঐরপ ঘটিলে ভোগ বৃদ্ধি হইয়া থাকে। কিন্ধ প্রান্ধভাগ বদি ঐরপ হয়, তবে অনিষ্ঠ ঘটিবারই বিলক্ষণ সম্ভাবনা। বল্লের উক্ত চিক্পালি এইরপই ফলাকল প্রকাশ করিয়া পাকে।

ৰক্ষের দেবাধিক্ত ছিন্ন আংশে ঘদি কৰা, প্লব, উলুক, কপোত, কাক, ক্রব্যান, গোমান্ব, ধর, উট্ট রা সর্গ তুলা আকার দেধা বায়, তবে পুরুষদিগের মৃত্যুসম ভর জলাইয়া থাকে। বল্লের রাক্ষসাধিকত ছিন্ন আংশে ছত্র, ধ্বজ, স্বস্তিক, বর্জমান, শ্রীরুক্ষ, কুন্দ, অপুর ও তোরণ প্রভৃতির আকার বাক্ত হইলে অচিরাৎ প্রক্ষয়গের লক্ষীলাভ ঘটে।

নর যথন নববত্র পরিধান করে, তথন চক্র অধিনীনক্ষত্রগত হইলে প্রভূত বন্ত্রনান্ত, ভরণী গত হইলে অপহরণতয়, ক্রজিলাগত হইলে অপরিধান করে প্রাথতয় এবং রোহিনীগত হইলে অর্থসিছি হইয়া থাকে, তারির মৃগানিরার মৃবিক্তর, আরা নক্ষরে প্রাণহানি, প্রক্রেতে গুভাগমন এবং প্রানক্ষরে ধনলাভ কটে। অপ্রেয়ার বিলোপ, মঘায় মৃত্যু, পূর্বক্রনীতে রাজতয় এবং উত্তর ফর্তনীতে ধনাগম ঘটে। হতার কর্মসিছি, চিত্রায় গুভাগম, স্বাতীনক্ষরে গুভভাজা প্রাপ্তি, এবং বিশাখায় জনপ্রিরতা হয়। অস্তরাগায় প্রহেৎসমাগম, জ্যেন্তায় বক্রক্রয়, মৃলায় জলপ্রাবন, এবং পূর্বাবালায় নানা রোগ হইয়া থাকে, উত্তরাবালা নক্ষরে মিট জয়, প্রবণায় নেররোগ, ধনিষ্ঠায় ধাস্তলাভ ও শতভিষায় বিষক্রত মহাতয় উপস্থিত হয়। পূর্বভারণাকে স্বিলা জয়্ল ভর, উত্তর ভারেপদে প্রলাভ ও রেবতীতে রঙ্কলাভের সন্তাবনা।

ি যিনি উলিখিত নক্ষত্রে নগবন্ধভোগে অভিশাবী হন, তাঁহার সম্বন্ধে ফলাফল প্রস্কপই হইয়া থাকে। কিন্তু নক্ষত্র গুলি গুল-বর্জিত বা অমঙ্গলকর হইলেও, ত্রান্ধণের আক্সার ঐ সকল নক্ষত্রে নববন্ধ ভোগ ইইফলপ্রদ হয়। তদ্বিদ ভূপতি-প্রদন্ত বা বিবাহবিধিলন্ধ বন্ধভোগও অফলপ্রদ হইরা থাকে। স্থল কথা—বিবাহে বালসন্ধানে এবং ত্রান্ধণগণের সম্বতিক্রমে গুল-বর্জিত অপ্রশন্ত নক্ষত্রেও নবৰ্দন ভোগ ক্রিতে পারা বার। (বৃহৎস্৽ ৭১ আ:)

বন্ধ দান করিলে আশেৰ ফল হয়। শাস্ত্রে ইহার আনেক কথা আছে। গুড়িতত্বে দেখিতে পাই, ৰত্মদানকর্তা চক্র-লোকে উপনীত হইয়া থাকেন।

"বাসোদ"চক্রসালোক্যমনিসালোক্যমন্বরঃ।" (ওছিতর) যাহারা আন্দর্শনিগকে সভত উত্তম বন্ধ দান করে, চরমে ভাষাদিসের পথ জনদিদ-দীতদ এবং বন্ধও গদ্ধ-পদ্মিপূর্থ ক্ষরা থাকে।

"বিশানাং বে জু সভতং 'ভভুৰত্মগ্ৰনা' নরাং।
বত্মগৰ্তঃ প্ৰাভেৰাং মূলক্ৰীতলং ॥" ু(অগ্নিপ্)
অন্নিপ্রাশের বম ও পদিলোগাখ্যানে এই বত্মলানের প্ণ্যমাহাত্মা বার্তা বিবৃত হইলাছে। বাহুলাভাবে উক্ত হইলানা।

সর্কাদেবদেবী পূজার ব্যাহান আবশুক। কিন্তু কোন্
পূজার কোন্ বন্ধ বিহিত বা নিবিছ, ভাষা খাল্লাছসালে জানিয়া
লাইলা দেবোলেশে লান করিলে বা পরিধানপূর্বাক পূজা করিলেই
প্রাক্ত পূজা-কললাভ ঘটে।

অনিপ্রাণের ক্রিয়াবোগ নামক অধ্যাহে লিখিত আছে, চুক্ল, পট্ট, কৌবের, বাকল ও কার্পান প্রাকৃতি নিজের প্রির ও কুথকর ক্ষার ক্ষার ক্ষার বার বারা বিকৃত্ব পূজা করিতে হর।

"হকুলগট্টকৌষেরবাছকার্শাসকাদিভিঃ। বাসোভিঃ পৃদরেছিকুং স্বওটেরয়ন্ত্রনঃ প্রটিরঃ ॥"

(অধিপু জিয়াবো)

কিন্ত এই বিষ্ণু পুনার সীল রক্ত ও অক্তান্ত বা অপবিত্র বসন পরিধান নিবিছ। পুনাক বদি নীল, রক্ত কি অক্তান্ত অপবিত্র বন্ত্র পরিয়া বিষ্ণুপুনার ত্রতী হন, তবে লাগ্র-লাসনে তাহাকে অপরাধী হইতে হয়। সেই অপরাধের বিশেষ বিশেষ প্রায়-লিন্ত উক্ত আছে। সেই সেই প্রায়ন্তিত করিয়া তবে তিনি নিরপ্রাধ বা নিশ্লাপ হইতে পারিবেন।

বরাংপুরাণে ভগবান্ বরং বলিরাছেন, বে জন নীল বসন পরিরা আমার কর্বে লিপ্ত হর, চরমে ভাষাকে পাঁচ শভ বর্ব পর্যান্ত কৃমি হইরা কাল কাটাইতে হইবে। ক্ষিত্র এই অপরাধ-শোধনের প্রারন্তিত্ত আছে। লে প্রারন্তিত—বিধিমত একটা মাত্র চাক্রায়ণ। চাক্রায়ণ করিলেই সে বাক্তি উক্ত পাণ বা অপরাধ হইতে মুক্ত হইতে পারিবে।

এইরপ রক্ত বন্ধ পরিবাধ বিষ্ণুপ্রাদি ক্রীকরা নিবিছ। উক্ত বরাহপুরাণের অভ্যত্ত আছে, রক্ত বন্ধ পরিয়া বিষ্ণুপুরা করিলে, রুলখুলা রুমণীদিগের বে রক্তমোষ্প হর, সেই রক্তে লিপ্তার হইরা উক্ত পুরুক্তক গঞ্চ দশ বর্ষকাল নরকে বাল করিছে হটবে। এই অপ্রাধশোধনের প্রারশ্চিত—সপ্তরণ দিন একাহার, তিন দিন বাযুক্তকণ এবং একদিন বাত্ত কলাহার। ৬

[্]ধ বারাহ উবাচ — "জুবিডো নীলবজেণ বে। টি বামুপদর্শতি। বর্বাণাক শতং পঞ্চ কুমির্জু বা দ তিউতি ও ভক্ত ক্ল্যামি কুজোণি অগরাধবিশোধনদ্। গ্রোরন্ডিডাং বিধানাকি বেন মুচ্যেত কিমিবাং এ

কৃষ্ণৰ বন্ধ পরিষাও বিষ্ণু পুজাদি করিছে নাই। তাহাতে পুলুকের অপরাধ হইবে। সেই অপরাধীর পরিপানে উক্ত পুলুককে প্রথমে পঞ্চ বর্ধকাল বুল হইরা অন্মিতে হইবে, তাহার পর অক্ত কোন, কাঠভক্ষক কীট, তৎপরে ভিন্ন বর্ধ মলক, আনত্তর আট বর্ধ কছেপ এবং ইহার পর চৌদ্দবর্ধকাল পারাবত বোনি ভোগ করিছে হইবে। এই জন্মে উক্ত ব্যক্তি সিত পারাবত হইরা কোন প্রতিষ্ঠিত বিজ্ববিগ্রহের কাছেই বাস করিতে পারিবে। এই অপরাধের প্রারন্তিত—সন্তাহকাল মাত্র বাবক ভক্ষণ এবং ভিনারাত্র বাত্র তিনটা শক্ত পিও ভোজন। এইরূপ প্রারন্তিভেই ভাহার অপরাধনোক্ষণ হইবে।

व्यातीक वच शतिशानशृक्षक विकृश्कानि निविक। देशारके অপরাধ আছে। সেই অপরাধের ফলে পূজাকর্তাকে চরনে এক-লম্ম উন্মন্ত গল্প, একলম উট্টা, একলম গৰ্মড, একলম শৃগাল, একলবা অখ, একলবা সারক এবং একলবা মুগ হইতে হর। এইরূপ সপ্তজ্ঞার পর শেষে মাত্রুষবোনি লাভ হইলে মদীর ভক্ত গুণজ্ঞ ও মৎকর্মাতৎপর হইবে। তাহাতেই তাহার অপরাধ মৃক্তি ঘটিবে। কিন্ত ইহজন্মেই এইরূপ অপরাধ মোচনের প্রারভিত্ত আছে। ভক্তিযুক্ত হইয়া তাহার অমুষ্ঠান করিতে হইবে। প্রারশ্চিত যথা—যাবক ভোজনে তিন দিন এবং পিণ্যাক ভোজনে তিন দিন অতিবাহিত করিবে। এতদ্ভির তিন দিন কণ্ডক হট্য়া এবং তিন দিন মাত্র পায়স আহার করিয়া কাটাইবে। এইরূপ করিলেই অধ্যেত বা উচ্ছিষ্ট বস্ত্র-পরিধারী বিষ্ণুপুজকের অপরাধশোধনের প্রারশ্চিত হইবে। প্রার-निहाल भाभक्य इटेरनटे हतरम मुक्तित भथ छेबुक इटेशा तहिरव। পরকীয় বন্ধ পরিধান করিয়াও বিষ্ণুপূজাদি করিতে নাই। এইরূপে বিষ্ণুপুঞ্জাদি করিলে অপরাধী হইতে হয়। সেই অপ-

ব্ৰংং চাজাৰণং কুজা বিধিনুটেন কৰ্মণা।
মূচাতে কিৰিবাং কুমে এখনেতর সংশালঃ ।
রক্তবন্তেশ সংবৃক্তো যো হি মামুশসপতি।
তল্পালি পূলু হুলোদি কর্ম সংসারমেক্ষেশস্থ ।
রক্তবালে নারীযু নারা যক্তং প্রবর্তিত।
তেনাসৌ রক্তনা স্পৃট্টো কর্মহোবেশ কানতঃ ।
বাহালিতরং এখকামি তক্ত কার্মিলোবন্ধ।
যেন তথাকি বৈ কুমে সুক্রবাং পাছবর্জিতাঃ ।
বাহালিতরং ক্তর্জা দিনানি দশ সপ্ত চ।
বাহালিতরং ক্তরা দিনানি দশ সপ্ত চ।
বাহালিকে ক্তরা ক্রমিলি দিনমেকং ক্রলাশনঃ ।
এবং স মূচাতে কুমে সম্বর্তিব্রক্ষরক:।" (ব্রাহপুণ)

"বা পুনা কুক্তব্যেশ সম ক্রমণরায়ণাঃ।
 বেদি কর্মানি কুক্তিত তক্ত বৈ প্তনাং পূর্ঃ।

নাধের ফলে, একবিংশ বর্ষ মৃগবোনি ভোগ করিতে হয়।
তৎপরে একজন্ম থঞ্জ অবস্থার মূর্থ ও ক্রোধন হইলা কাল
কাটাইতে হইবে। কিন্তু এ অপরাধ হইতেও মুক্তি পাইবার
প্রোয়শ্চিত্ত আছে।† বর্ণা— শ্রীবিকুর প্রতি ভক্তিবৃক্ত হইবে।
আর আহার করিয়া রহিবে। মাঘ মাসের শুক্রপক্ষীয় ঘাদশীর দিন
কান্ত, দান্ত ও জিতেন্দ্রির ভাবে অনক্রমনে বিক্র্ণানে ময় হইয়া
জলাশরে অবস্থান করিবে। পরে যখন নিশাবসানে দিনমণি
উদিত হইবেন, তখন পঞ্চাব্য পান করিয়া অচিরাৎ সর্ক্ষ কিবিষ
হইতে মুক্তি পাইবেন।;

বৃণা বৈ শক্ষবৰ্ধাণি কাটভক্ষ জায়তে।

मनक्षीनि वर्गनि कष्टब्रीनि ह शक ह । পারাবতক জারতে মববর্বাণি পঞ্চ । কাতো মমাপরাধেন সিড: পারাবডো ভূবি। তিটেত মম পাৰ্বে তু বত্ৰৈবাহং প্ৰতিষ্ঠিত:। প্রারশ্চিত্তং প্রবন্ধ্যামি তণ্ড সংসারমোকণ্ড। নথাহং বাবৰং ভূজা। ত্ৰিরাজং শস্তাণিওকান্। জীণি শিশুন্ জিয়াজন্ত এবং মুচ্চোড কিৰিবাৎ ৪ বাসস্য ন চ থেতিন হো নে কর্মাণি কাররেং। ন্ডচির্ভাগবড়ে ভূড়া সম সার্গানুসারক: । ডক্ত দেখিং প্রবক্যাসি অপরাধং বস্তব্যর। দেবি ভূষা পজো মন্তবিষ্ঠত্যেকং নরোভূবি। উট্টান্ডকং ভবেজ্জন্ম জন্ম চৈকং ধরগুৰা लामाबुरब्रक्कमा देव क्रमा हिक्र इत्रख्या । भावन्रदेशक्यम्या देव मृत्तां कवित देवकाः। সপ্তৰুত্ৰান্তৰং পশ্চাৎ ততো ভৰতি মাধুব: 🛭 मक्कार क्षेत्रकार यम कर्षान्त्रायनः। বিষ্ণরাধে দক্ষত অহমারবিবর্জিত: ৷৷ वाष्ट्रक्त मिनः जीनि भिनाट्यन भूनप्रशः। क्षंड(का मिनजीनि शांतरमन मिमजत्रम् ह এবং কুছা মহাভাগে বাসসোচ্ছিট্ৰারিণঃ। **भ्यभाषा न वित्नाज मामाज्ञ न नाक्छि ॥" (यज्ञाह्युज्ञान)** † "यः नोक्रकान पर्यान नायमुख्य व मानवि ! প্রায়শিস্তী পুমান্ মূর্বে। মম কল্মপরায়ণঃ। भुरत्रा देव बाबरक स्मिव वर्गानि जीनि मश्च ह। হীনপাদেন কাষেত চৈকলম বস্থকরে ৷ मूर्थ-७ (ज्ञांधमरेक्टन महक्तरेक्टन जातरक। তক্ত বন্ধ্যামি হুজোৰি প্রায়ন্তির: মহে।জসম্। 🗜 "অট্টভজং তভঃ কুছা মন কৰ্মপরারণঃ। মাবজৈৰ ভূ মানত শুকু পক্ত ৰাজনী। ভিটেম্ফলাশরে ভার স্পাস্থে। রাজে। স্বিতেজির: । व्यवस्थानस्मा कृषा यथ विसानतात्रनः । এভাভায়াত্ত শৰ্মব্যা মুদিতে চ দিবাক্ষে। गक्तवाः उठः गीवां पैजाः बृद्धान्तं किषियां ।" (वज्राह्भू •)

নশাবিত বন্ধ পরিধান করাই বিধেয়। দশাহীন বন্ধ আবৈধ, তাহা ধর্মকর্মে অফুপযুক্ত।
করিবিশেষ প্রতিগ্রহ করিতে হয়। হারীত বলিয়াছেন, "মণিবালোপবাদীনাং প্রতিগ্রহে সাবিত্রাইশতং লপেও।" 'অইসহলং মাষ্ট্রাত্রন সহল্রমিতি' (ভাজতার)

কালিকাপুরাণে উক্ত হইয়াছে, কার্পাস, কাম্বন, বারুল ও
কৌষেরজ ডেদে বন্ধ কচবিধ। এই সকল বন্ধ দেবাদেশে
সময়ক পুলা কবিয়া উৎসর্গ করিবে। • কিন্তু যাহা দশাহীন মলিন,
জীর্ণ, ছিন্তু, প্রকীয়, মৃষিকদন্ত, স্টোনিদ্ধ, বাবহৃত, কেশ্যুত,
অধ্যত কিংবা শ্লেমা ও মুরাদি দারা দৃষিত, তার্শ বন্ধ দেবোদেশে কিংবা দৈব বা পৈয়া কর্ম উপলক্ষে দান করা অকতবা।
এপ্রভাত ঐ সকল বন্ধ এ কেন্তু বক্ষান করাই উচিত।

'কোপাস' কাম্বল বাজং কৌষজং বন্ধমিষাতে। তৎ পূৰ্বং পূজ্জিটেৰৰ মন্ত্ৰৈদে ৰাম চোৎস্পতেও ॥ নিজ্ঞশং মালনং জীৰ্ণং ছিল্লং গাত্ৰাব্যাসিক্তম্। পদ্ৰকীয়ং বাধুণন্তং হৃচিবিদ্ধং তথোষিতং॥ উপ্তকেশং বিধোতক শ্লেমমূত্ৰাদিদ্ধিতম্॥ প্ৰদানে দেবতাভাশ্চ দৈবে পৈত্ৰে চ কৰ্মণি।

বর্জারেৎ শাপযোগেন ষজ্ঞাদাবুপযোজনে ॥" কালিকাপু ৬৮ জ্ঞা উক্ত পুরাণে অন্ত স্থলে আছে, উত্তরীয়, উত্তরাসদ, নিচোল, মোলচেলক এবং পরিধান নামক পঞ্চবিধ বন্ধ অস্থাত অর্থাং শোলাইহীন অবস্থায় ব্যবহার বা দান করার বিধি আছে; কিছ শুল্পুরনির্দ্ধিত বন্ধ, নীশার (মুশারি), আতপত্তর, চপ্তাতক, অর্থাৎ স্ত্রীলোকের উরুর অর্দ্ধ লখিত বন্ধ এবং দৃষ্য অর্থাৎ বংগৃহ (তাঁবু) এ সকল স্থাত অর্থাৎ সেলাই করা অবস্থায় দৃষিত হয় না।

"উত্তৰীয়োৱাসকো চ নিচোলো মোদচেলকঃ।
পরিধানঞ্চ পরিকাতাগ্রস্থাতানি প্রযোজ্ঞরেও।
লাগবন্তং নীলারক তথিবাতপবারণম্।
চণ্ডাতকং তথা দ্বাং পঞ্চ স্থাডান্তত্তীরে।"(কালিকার্য ৭৮)
এতদ্বির পতাকা ও ধ্যক্তম গুলিতে সেলাই করা বক্তই প্রযোজা।
দেবতাভেদে বল্পবিশেষ দারা আর্চনা ক্ষরিতে হব। কোন্
দেবতাকে কি কি বন্ধ দিতে হয়, তৎসদক্ষে কালিকাপুরাণে
এইরপ লিথিত আছে—

"পতাকা ধ্বজনগুলো স্তেবক প্রবোজরে। অন্তর্বরণাদৌ চ তবিনা শন্ততোহলি চ ।" কালিকাপ") রক্তবর্ণ কৌবের বন্ধ মহাদেবীকে দেওরা গ্লন্ড;এইরুপ পীত-বর্ণ কৌবের বসন বাস্থ্যেবকে, রক্তক্ষ্ম দিবকে এবং বিচিত্র চিত্রবৃক্ত বন্ধ সকল অপরাপর দেব ও শেরীকে নিবেদন করা বাইতে পারে। ভারে কার্ণাস বন্ধ সর্বাদেবতার উদ্দেশ্রেই নিবেছ। যে বন্ধ একার রজ্যবর্ণ, তাহা রুইদেবকে ও শিবকে দেওরা নিবিছ। নীল ও রজ্যবর্ণমিশ্রিছ বে বন্ধ, তাহা সর্বাদেরই আবৈধ। দৈব ও শৈত্রা কর্মাদিতে বিজ্ঞ ব্যক্তি উহা একেয়ারেই ব্যবহারে জানিবেন না। বে বিজ্ঞ হইরাও প্রমানবলে নীল জ্ঞ রজ্যবর্ণ বা বিস্পুলার বের, তাহার লে প্রার কোন ফলই হর না। বিচিত্র বন্ধ নীলবর্ণে রঞ্জিত হইলে, তাহা এক্সমাত্র মহাদেবীকে নিবেদন করা বাইতে পারে, তারির জল্প দেবাকেলে ভাহা দেওরা নিবিছ। বিপাদের মধ্যে বেমন ব্যক্তি প্রধান। বন্ধ মধ্যে বেমন বাসব, সেইরূপ ভূষণসমূহ মধ্যে বন্ধই প্রধান। বন্ধ বার লক্ষা নিবারণ হর, বন্ধ পাল নালে সমর্থ, বন্ধ হইতে সর্বাসিতি ঘটে এবং বন্ধ চচ্চুক্ষর্গ কল বিভরণ করে।

আসন, বসন, শব্যা, জারা, অপতা ও কমগুলু, এই ক্রেকটা ।রনিব অকীর হইলেই শুচি হর। আর ঐ গুলি পরকীর হহলেই অপবিত্র হইরা থাকে। বসন যদি জীবৎ থোত, ত্রীজন কর্তৃক ধোত, কিংবা রজকধোত হয়, অথবা উহা যদি গুকাইবার জন্ত দক্ষিণ বা পশ্চিমান্র প্রাসারিত থাকে, তবে সে বসন অধোত বলিরাই জানিবে অর্থাৎ ঐ প্রকার বসন অপবিত্র হইতা থাকে।

"ঈষকোতং দ্রিরা ধোতং যদ্বোতং রঞ্জকেন তু। অধোতং ত্রিলানীরাদশা দক্ষিণপশ্চিমে ॥ আত্মনঃ ওচিরেতানি ন পরেষাং ক্যাচন। আসনং বসনং শ্যা। স্বারাপত্যং ক্মওশুঃ॥" (ক্র্মণোচন)

"त्रक्षः (कोरभद्रवृक्षक महारागरेषा अभक्तरक । পীতং তবৈদ কৌনেয়ং ৰাস্থ্যদেবার চোৎস্থলের : রক্তম কৰ্মণ সদাধি শিষার প্রমায়নে । चिक्तिकाः भनवरमध्याः । सन्तिरकाकाः कः मिरनमस्तरः । কার্শানং সকাভোভন্নং দর্যাৎ সর্কোন্ত; এব চ। दिनाचन्नाः प्रकाशः वास्ट्रानाः त्राम्यः। ख्वा देवकाळत्रकच्छ निवास विनि**रम्परा**व ह मोनावक्षक ग्रेकाः ठर मस्यक्ष विवर्षक्षित्रम् । रमस्य रेनध्य स्थानस्यारम् वर्ष्कस्यख्यिकसन्। । नोतीतक धमानाकु वा मनग्रविकास वृथः। নিক্লা ডক্ত ডংগুলা ডলা ভৰ্তি ভৈরব। নিচিত্রে বাসসি পুনল'য়ং নীলীবিমঞ্জিভম্। राज्यः मन्त्रानाद्यारमरोगा नाष्ट्रारम कु व्यवस्थान ह ष्ट्रिया: अक्षार्था यवर (प्रयानार वामरवा वया : ভথা কৃষণৰৰ্গেনু বস্ত্ৰসমূচাতে 🛭 ब्राञ्चन ज्ञांबर्रक शक्काः ब्राञ्चन ज्ञांबरक च्रम्ब् । বন্ধাৎ সাগৎ সৰ্বচন্দ্ৰ: সিদ্ধিক্ষাক্ষৰ্প সং 📭

(কালিকাশুলান ৬৮ জ:)

ধৌত বন্ধ আগগগ্র বা উদগগ্র করিয়া প্রদারিত করিবে।
কন্ধরির প্রকাশনে ওচি করিয়া লইতে হয়।
 "প্রাপগ্রম্পর্গরে বা ধৌতং বল্ধ প্রসারয়েও।
 শ্লিমাগ্রং দক্ষিণাগ্রং পুনং প্রকাশনাও ওচি। (সভ্যতপাং)
 প্রতি বা বিশাহিদন, বিজ্ঞা ব্যক্তি বল্প নিজ হতে ধৌত করিয়া লইয়া সেই বল্পে ধর্মকার্যা করিবেন। কিন্তু রক্ষক পৌত কিংবা একেবারে মধ্যেত বল্পে ক্ষান্ত স্থলাতি, বন্ধ্বাক্ষর ভ্রতাবৈতি বল্পের, মিন্ত্র, কল্মান, অভাক্ত স্থলাতি, বন্ধ্বাক্ষর ভ্রতাবৈতি বল্পের পবিত্রতার হানি হয় না।

বন্ধ ধারণ করিতে হন্ন। স্থাত, দগ্ধ, মৃষিকোৎকীর্ণ, বা জীর্ণ, বিশেষতং পরকীয় বন্ধ পরিয়া ধর্ম কায়্য করিতে নাই। "রাজহংদনিভং প্রাপ্য উন্ধীবং শিথিশার্পিতম্। জলক্ষ্মনিমিত্তং বৈ বেইয়ামাস মৃষ্কনি।" 'ন স্থাতেন ন দগ্ধেন পারকোশ বিশেষতং। মৃষিকোৎকীর্ণ জীর্ণেন কর্মকুর্যান্তিকশং।" (মহাভারত) কিঞ্চিৎ রক্তবর্ণ, আতান্ত রক্তবর্ণ, নীলবর্ণ, মলপূর্ণ বা দশাহীন বন্ধ প্রশক্ত নহে।

মানের পর মন্তকের জলাপনয়নের জন্ত প্রথ ভাবে উষ্টাব-

'ন রক্তমূৰণং বাসো ন নীলঞ্চ প্রশশুতে।

মলাক্তঞ্চ দশাধীনং বর্জয়েদম্বরং বৃধঃ ।'' (নারসিংহপুং)

কিন্তু আচাররতে লিখিত আছে, দশাধীন বল্লেও অভাব
পক্ষে ধর্মকর্ম ক্রিবে।

''নশাহীনেন বস্ত্রেণ কুর্য্যাৎ কর্ম্মাণ্ডাবতঃ ॥'' (আচাররত্ন°)
অন্তথ্যতবন্ধ এবং রস্ত্রু, মলিন, বা দশাহীন বসন ব্যবহার
নিষিদ্ধ; কেবল খেত বস্ত্রই যড়ের সহিত ধারণীয়। সামর্থ্যে
কুলাইলে নীর্ণ বা মলিন বাস ব্যবহার করিতে নাই:

°বন্ধ নাজ্জ্বত ধার্বাং ন রক্তং মলিনং তথা। জীর্বং বাপদশকৈব খেতং ধার্বাং প্রবন্ধতঃ॥

শ্ৰয়ং বৌতেন কর্মবাঃ ক্রিয়া বর্গার বিগ'লচজঃ।

স চ রক্তকবৌতেন না বৌতেন ভবেৎ ক্রিং ;

পুত্রতিক্রকনত্রেণ বর্কাভিবাক্তন চ।

রাগ্রতেশি ব্রেভিঙ ভংশবিত্রতিতি বিভিন্ন ভালকং

উপানহং নান্তগ্রতং ব্রহ্মস্তর্জ ধার্বহেং।
ন জীর্ণমান্তলােলা ভবেচ্চ বিভবে সতি ॥" (বিষ্ণুধর্ম্মান্তর)
সানাব্দ ধােত অক্সিন্ন বাস পরিধের। ধােতবিজ্ঞের অভাব
পক্ষে শণ, কোম, আবিক, নেপালদেশীয় কখল, কিংবা যােগপট্ট
দারণ করিবে। স্থল কথা, ঐক্সপ বজ্ঞের যে কোন একখানি
বসন দারা দিতীয় বস্ত্রধারী হইতে ছইবে। অধােত-বসন পরিয়া
নিভানৈামিত্তিক ক্রিয়া করিলেও তাহা নিজ্ল হইয়া থাকে।*

স্নানান্তে তর্পণ না করিয়া বস্ত্রনিষ্পীড়ন করিবে না। স্বাবাদি বলিয়াছেন, তর্পণের পূর্ব্বে যে স্নানবস্ত্র নিষ্পীড়ন করে, তাহার পিতৃগণ সহ দেবগণ নিরাশ হইয়া চলিয়া যা'ন।

"নিব্দীভূমতি যাং পূর্বাং স্নানবস্ত্রস্ত তর্পণাৎ।
নিরাশাস্ত্রস্ত গচ্ছান্ত দেবাং পিতৃগগৈং সহ॥" (জাবালি)
স্নান করিয়া আর্দ্র বসন সম্ভেও যে বাজি বিষ্ঠা বা মৃত্র পরি-

ত্যাগ করে, তাহাকে তিন বার প্রাণায়াম করিয়া পুনরায় স্থানাত্তে শুদ্ধ হইতে হয়। আর একমাত্র আর্দ্রবসনই সর্বাদা পরিধান করিয়া থাকিবে না। আর্দ্রবসনও সপ্তবার বাতাহত হইণে শুদ্ধ হইয়া থাকে।

"লানং কথার্থবাসাস্ত বিশু বৃহং কুকতে যদি।
প্রাণায়ামত্রয়ং কৃষ্ণা পুন: লানেন গুণাতি॥
নার্গ্রেমকঞ্চ বসনং পরিদ্যাৎ কথকন।" (হারীত)
'আর্গ্রঞ্চ সপ্তবাতাহতমপি শুদ্ধমিতি' (মদনপারিজ্ঞাত)
বট্রিংশমতে ও নিগমে সংক্রান্তি প্রভৃতিতে বস্ত্রনিশীভূন
নিধিদ্ধ। সংক্রান্তি, পূর্ণিমা, অমাবতা, হাদনী এবং প্রাদ্ধ দিনে
বন্ত্রনিশীভূন বা ক্ষার সহ বস্ত্র যোগ করিতে নাই।

"সংক্রান্ত্যাং পঞ্চদশ্রাঞ্ছ দাদশ্রাং প্রান্ধবাসরে। বস্ত্রং ন পীড়রেওত্র ন চ ক্ষারেণ যোজরেও ॥" (ভিণ্যাদিতত্ব)

কাছাকৈবং বাসনী থোঁতে অক্লিকে পরিবার চ ।
প্রকাল্যাক মুদ্বিশ্চ হত্তো প্রকালনেত্বতঃ ।
কভাবে গৌতবক্সগাং লাগক্ষোমাধিকানি চ ।
কৃত্তপো বোংগটো বা বিকাস। বেন বা ভবেং ।
ক্রেন কলং ন বাপ্লোভি দ্বার তর্বতি নিজ্ঞার ।
ক্রেন কলং ন বাপ্লোভি দ্বার তর্বতি নিজ্ঞার ।" (বোসি-বাজ্ঞাক্ত্য)